☆ सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै ☆

निहकलंक हरिशब्द भंडार

दसवां भाग

✪ तत्करा ✪

मिती-सम्मत	नाम	स्थान		पन्ना नं:
१६ मग्घर २०१७ बिक्रमी	गुरमेज सिँघ दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	०१
२७ मग्घर २०१७ बिक्रमी		हेमराज पुर	गुरदासपुर	०३
२८ मग्घर २०१७ बिक्रमी	पाल सिँघ दे गृह	भलाईपुर डोगरा	अमृतसर	०६
०१ पोह २०१७ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१०
०८ पोह २०१७ बिक्रमी	बिशन दास जलंधर वाले दे नवित			२१
२५ पोह २०१७ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२१
२६ पोह २०१७ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२४
२६ पोह २०१७ बिक्रमी	सच्चे साहिबज़ादे दा भेव दस्सणा	जेठूवाल	अमृतसर	४४
२७ पोह २०१७ बिक्रमी	राष्ट्रपती नूं मिलण वास्ते	जेठूवाल	अमृतसर	५६
१ माघ २०१७ बिक्रमी	महिंगा सिँघ दे गृह	हरीपुर	अमृतसर	६२
२ माघ २०१७ बिक्रमी	प्यारा सिँघ दे गृह	डरोही	अमृतसर	७१
२ माघ २०१७ बिक्रमी	परगट सिँघ दे गृह	लल्लीआं कलां	अमृतसर	७८
३ माघ २०१७ बिक्रमी	नसीब सिँघ दे गृह	बोपा राए	अमृतसर	८०
३ माघ २०१७ बिक्रमी	लाल सिँघ दे गृह	हेर	जलंधर	८३
४ माघ २०१७ बिक्रमी	प्रीतम सिँघ दे गृह	झंडेर	जलंधर	९०
५ माघ २०१७ बिक्रमी	गुरदेव सिँघ दे गृह	दोसांझ खुरद	जलंधर	९५
६ माघ २०१७ बिक्रमी	गुरदेव सिँघ दे गृह	नवां पिंड	जलंधर	१०१
७ माघ २०१७ बिक्रमी	हज़ूरा सिँघ दे गृह	गुराइया	जलंधर	१११
८ माघ २०१७ बिक्रमी	गुरमेज सिँघ दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	११८
९ माघ २०१७ बिक्रमी	गुरदयाल सिँघ दे गृह	चीमा कलां	जलंधर	१२६

1
१०

१० माघ २०१७ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे गृह	चीमा कलां	जलंधर	१३७
१० माघ २०१७ बिक्रमी केसर सिँघ दे गृह	डलेवाल	जलंधर	१३६
१० माघ २०१७ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह	कोटली थान	जलंधर	१४७
११ माघ २०१७ बिक्रमी जमांदार भाग सिँघ दे गृह	टांडा अड्डा	जलंधर	१५०
१२ माघ २०१७ बिक्रमी ओम प्रकाश दे गृह		जलंधर	१६७
१२ माघ २०१७ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह	अहिमद पुर	जलंधर	१७३
१३ माघ २०१७ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह	अहिमद पुर	जलंधर	१८२
२१ माघ २०१७ बिक्रमी	जेठूवाल	अमृतसर	१८५
२३ माघ २०१७ बिक्रमी	जेठूवाल	अमृतसर	१८८
२४ माघ २०१७ बिक्रमी विश्व नाथ वरमा ऐडीशनल सैक्टरी दे घर राष्ट्रपती राजिंदर प्रसाद वास्ते शब्द			२०७
२६ माघ २०१७ बिक्रमी लाल सिँघ पंडत नाल गोबिन्द घाट	पुश्कर	अजमेर	२०७
२७ माघ २०१७ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	गुड़गाउँ	२०६
२ माघ २०१७ बिक्रमी शब्द सिँघासण	पहाढ़गंज	दिल्ली	२१७
३० माघ २०१७ बिक्रमी रेशम सिँघ दे गृह	मेरठ छावनी	मेरठ	२२६
१ फग्गण २०१७ बिक्रमी दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२३३
११ फग्गण २०१७ बिक्रमी दरबार विच सरजीत सिँघ दे जन्म दिन तेरवे साल मनौण दे समें	जेठूवाल	अमृतसर	२४६
१६ फग्गण २०१७ बिक्रमी लखा सिँघ, चतर सिँघ	ओगरा	गुरदासपुर	२४६
१७ फग्गण २०१७ बिक्रमी मनशा सिँघ दे गृह	नौशैहरा	गुरदासपुर	२५५
१७ फग्गण २०१७ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे गृह	जीर पुर	गुरदासपुर	२६०
१७ फग्गण २०१७ बिक्रमी बचन सिँघ दे गृह	काणा कौटां	गुरदासपुर	२६३

2
१०

3
१०

१८	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	धिरता सिँघ दे गृह	काणा कौटां	गुरदासपुर	२६६
१८	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	दीदार सिँघ दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	२७२
१६	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	सन्ता सिँघ दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	२८१
१६	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	करतार कौर दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	२८७
१६	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	मनुशा सिँघ मेला सिँघ दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	२६३
२०	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	भाग सिँघ दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	३००
२०	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	हज़ारा सिँघ दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	३०५
२०	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	वरखा सिँघ दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	३०८
२०	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	विरसा सिँघ दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	३०६
२०	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	गंडा सिँघ दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	३१२
२०	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	आसा सिँघ, प्यारा सिँघ दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	३१६
२०	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	गिरधारा सिँघ नवां जन्म दिता			३२३
२१	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	हज़ारा सिँघ बलाका सिँघ दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	३२४
२१	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	बीबी पूरो दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	३२६
२१	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	मुनशा सिँघ दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	३२८
२१	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	सवरन सिँघ दे गृह	बाबूपुरा	गुरदासपुर	३२६
२१	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	जमांदार किशन सिँघ दे गृह	अल्लड़ पिंडी	गुरदासपुर	३३०
२२	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	जमांदार किशन सिँघ दे गृह	अल्लड़ पिंडी	गुरदासपुर	३४०
२२	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	बीबी दीपो दे गृह	दोस्त पुर	गुरदासपुर	३४६
२२	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	गुरमुख सिँघ दे गृह	शोन	गुरदासपुर	३५१
२३	फग्गण	२०१७	बिक्रमी		शोन	गुरदासपुर	३६०
२३	फग्गण	२०१७	बिक्रमी	सुंदर सिँघ दे गृह	रोसे	गुरदासपुर	३६६

3
१०

२३ फग्गण २०१७ बिक्रमी	अजीत सिँघ दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	३७१
२३ फग्गण २०१७ बिक्रमी	मस्सा सिँघ दे गृह	बल पुरीआ	गुरदासपुर	३७६
२४ फग्गण २०१७ बिक्रमी	बूआ सिँघ दे गृह	पुरीआं	गुरदासपुर	३८३
२६ फग्गण २०१७ बिक्रमी	रतन सिँघ दे गृह	करोल बाग	नवीं दिल्ली	३८७
३० फग्गण २०१७ बिक्रमी	शब्द सिँघासण		दिल्ली	३९१
१ चेत २०१८ बिक्रमी	शब्द सिँघासण		दिल्ली	३९५
१ चेत २०१८ बिक्रमी	तलवार राष्ट्रपती नूं दिती		दिल्ली	३९६
१ चेत २०१८ बिक्रमी	प्रीतम सिँघ दे गृह	करोल बाग	दिल्ली	४०२
२ चेत २०१८ बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	शकूर बस्ती	दिल्ली	४११
२ चेत २०१८ बिक्रमी	लाल सिँघ दे गृह	प्रताप नगर	दिल्ली	४१३
३ चेत २०१८ बिक्रमी	चंदा सिँघ दे गृह	प्रताप नगर	दिल्ली	४२२
३ चेत २०१८ बिक्रमी	हरचरन सिँघ दर्शन सिँघ	धीरपुर	दिल्ली	४२४
३ चेत २०१८ बिक्रमी	रेशम सिँघ दे गृह	मेरठ छौणी	मेरठ	४२६
४ चेत २०१८ बिक्रमी	ठाकर सिँघ दे गृह	नानकपुर	करनाल	४३४
५ चेत २०१८ बिक्रमी	हरबंस सिँघ दे गृह	ठीकरी छंना	करनाल	४४०
५ चेत २०१८ बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	कौमी फारम	करनाल	४४४
५ चेत २०१८ बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	कौमी फारम	करनाल	४४८
६ चेत २०१८ बिक्रमी	निरंजण सिँघ दे गृह	लुधियाणा	लुधियाणा	४५७
६ चेत २०१८ बिक्रमी	निरंजण सिँघ दे गृह	लुधियाणा	लुधियाणा	४५६
१ विसाख २०१८ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	४६४
२६ विसाख २०१८ बिक्रमी	दरबार विच अनंद कारज अते सगन	जेठूवाल		४७५
२६ विसाख २०१८ बिक्रमी	हजूर साहिब नूं शब्द भेज्जया	जेठूवाल	अमृतसर	४७६

१ जेठ २०१८ बिक्रमी दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	४६१
७ जेठ २०१८ बिक्रमी चेला सिँघ दे गृह		जम्मू	४६८
८ जेठ २०१८ बिक्रमी बीबी अमरो देवी दे गृह		जम्मू	५०६
७ जेठ २०१८ बिक्रमी तेजभान दे गृह	शेख़सर	जम्मू	५१२
६ जेठ २०१८ बिक्रमी शिव सिँघ दे गृह	शेख़सर	जम्मू	५१८
१० जेठ २०१८ बिक्रमी फरंगी राम दे गृह	तूतां वाली	जम्मू	५२५
१० जेठ २०१८ बिक्रमी सरदार सिँघ मेहर सिँघ किरपा राम दे गृह	शेख़सर	जम्मू	५२७
१० जेठ २०१८ बिक्रमी शाहनी दे गृह	शेख़सर	जम्मू	५३१
१० जेठ २०१८ बिक्रमी गूहड़ा राम दे गृह	शेख़सर	जम्मू	५३२
११ जेठ २०१८ बिक्रमी राम चंद दे गृह	देवा	जम्मू	५३७
११ जेठ २०१८ बिक्रमी मलूका राम दे गृह	देवा	जम्मू	५४२
११ जेठ २०१८ बिक्रमी सरदार सिँघ दे गृह	सरदारी	जम्मू	५४३
१२ जेठ २०१८ बिक्रमी प्रेम चंद दे गृह	सरदारी	जम्मू	५५०
१२ जेठ २०१८ बिक्रमी राम लाल दे गृह	सरदारी	जम्मू	५५२
१२ जेठ २०१८ बिक्रमी कथा सिँघ जीवन सिँघ दे गृह	मोयल	जम्मू	५६३
१२ जेठ २०१८ बिक्रमी देवा सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	५६८
१३ जेठ २०१८ बिक्रमी फग्गा सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	५७५
१३ जेठ २०१८ बिक्रमी इन्दर सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	५८०
१४ जेठ २०१८ बिक्रमी सन्त राम दे गृह	बाणीआं	जम्मू	५८६
१४ जेठ २०१८ बिक्रमी अनंत राम दे गृह	बाणीआं	जम्मू	५६०
१४ जेठ २०१८ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	५६६

5 १०

१४	जेठ	२०१८	बिक्रमी	करम सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	५९९
१४	जेठ	२०१८	बिक्रमी	मेला राम दे गृह	धंगाली	जम्मू	६०१
१४	जेठ	२०१८	बिक्रमी	लछमण सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	६०३
१५	जेठ	२०१८	बिक्रमी	बीबी गुरदई दे गृह	धंगाली	जम्मू	६०८
१५	जेठ	२०१८	बिक्रमी	जगत सिँघ बेला सिँघ दे गृह	धंगाली	जम्मू	६११
१५	जेठ	२०१८	बिक्रमी	ज्ञान चंद दे गृह	खैरवाला	जम्मू	६१८
१६	जेठ	२०१८	बिक्रमी	प्रेमो देवी दे गृह	खैरवाला	जम्मू	६२७
१५	जेठ	२०१८	बिक्रमी	दोलत सिँघ दे गृह	नवा चक	जम्मू	६२६
१५	जेठ	२०१८	बिक्रमी	संकर दास प्रीमी देवी दे गृह	मलक कैंप	जम्मू	६३१
१५	जेठ	२०१८	बिक्रमी	भाग सिँघ दे गृह	मलक कैंप	जम्मू	६३६
१७	जेठ	२०१८	बिक्रमी	साहिब सिँघ रसाल सिँघ दे गृह	मनावर	जम्मू	६४३
१७	जेठ	२०१८	बिक्रमी	फरंगी राम दे गृह	झण्डे	जम्मू	६४६
१७	जेठ	२०१८	बिक्रमी	सांई दास दे गृह	झण्डे	जम्मू	६५५
१७	जेठ	२०१८	बिक्रमी	धरम चंद दे गृह	बाले वाल	जम्मू	६५७
				"गुरू ग्रन्थ जी मानिउँ, परगट गुरां दी देह ""			६६१
				""जां का हिरदा सुध्ध है, खोज शब्द में ले ""			६६१
१८	जेठ	२०१८	बिक्रमी	गुरदित सिँघ दे गृह		जम्मू	६६३
१८	जेठ	२०१८	बिक्रमी	सरदार सिँघ दे गृह	छंब	जम्मू	६६४
१८	जेठ	२०१८	बिक्रमी	गुरदित सिँघ संसार सिँघ	छंब	जम्मू	६६६
१८	जेठ	२०१८	बिक्रमी	सरदार चंद दे गृह	छंब	जम्मू	६७१
१६	जेठ	२०१८	बिक्रमी	धंनो देवी दे गृह	छंब	जम्मू	६८१
१६	जेठ	२०१८	बिक्रमी	ईशर सिँघ दे गृह	दड़	जम्मू	६८२

6
१०

6
१०

१६	जेठ	२०१८	बिक्रमी	लभ्भू राम दे गृह	जौड़ीआं	जम्मू	६८६
१६	जेठ	२०१८	बिक्रमी	मंगत राम दे गृह		जम्मू	६८६
१६	जेठ	२०१८	बिक्रमी	हरनाम सिँघ दे गृह	चड़दा ग्राम	जम्मू	६६०
२०	जेठ	२०१८	बिक्रमी	पारो देवी दे गृह	चड़दा ग्राम	जम्मू	६६७
२०	जेठ	२०१८	बिक्रमी	कथा सिँघ दे गृह	चड़दा ग्राम	जम्मू	६६७
२०	जेठ	२०१८	बिक्रमी	मंगा राम दे गृह		जम्मू	६६८
२०	जेठ	२०१८	बिक्रमी	देवां देवी दे गृह		जम्मू	६६८
२०	जेठ	२०१८	बिक्रमी	केसर सिँघ दे गृह	झम्मां	जम्मू	६६६
२०	जेठ	२०१८	बिक्रमी	बीबी बंती दे गृह	झम्मां	जम्मू	७०५
२०	जेठ	२०१८	बिक्रमी	शिव राम दे गृह	अंबा राए	जम्मू	७०८
२०	जेठ	२०१८	बिक्रमी	ओम प्रकाश दे गृह		जम्मू	७०८
२१	जेठ	२०१८	बिक्रमी	अंग्रेज सिँघ दे गृह	नवी बसती	जम्मू	७१५
२१	जेठ	२०१८	बिक्रमी	बीबी केसरी दे गृह	राणी बाग	जम्मू	७२२
२१	जेठ	२०१८	बिक्रमी	सरदारा सिँघ दे गृह	सीड़	जम्मू	७२४
२२	जेठ	२०१८	बिक्रमी	माई लच्छमी दे गृह	सीड़	जम्मू	७३१
२२	जेठ	२०१८	बिक्रमी	पुनूं राम दे गृह	चकरोई	जम्मू	७३६
२२	जेठ	२०१८	बिक्रमी	माया देवी दे गृह	सीड़	जम्मू	७३६
२२	जेठ	२०१८	बिक्रमी	देवी सिँघ दे गृह	मग्घोवाली	जम्मू	७३८
२२	जेठ	२०१८	बिक्रमी	दौलत राम दे गृह	कोटली राईआ	जम्मू	७४४
२२	जेठ	२०१८	बिक्रमी	प्रकाश चंद दे गृह	मघोवाली	जम्मू	७४८
२३	जेठ	२०१८	बिक्रमी	प्यारा सिँघ सेवा सिँघ दे गृह	कलोए	जम्मू	७५४
२३	जेठ	२०१८	बिक्रमी	मंगल सिँघ दे गृह	नवी बसती	जम्मू	७५८

7
१०

२३ जेठ २०१८ बिक्रमी चेला सिँघ दे गृह		जम्मू	७६१
२४ जेठ २०१८ बिक्रमी रसीआ राम दे गृह	बदीपुर	जम्मू	७६७
१ हाढ़ २०१८ बिक्रमी दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	७७०
१६ हाढ़ २०१८ बिक्रमी दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	७८८
१७ हाढ़ २०१८ बिक्रमी दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	७६५
१६ हाढ़ २०१८ बिक्रमी दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	८५१
१ सावण २०१८ बिक्रमी दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	८५६
२ सावण २०१८ बिक्रमी अमरीक सिँघ दे गृह	रूपो वाली	अमृतसर	८७८
३ सावण २०१८ बिक्रमी गुरदित सिँघ दे गृह	राम दिवाली	अमृतसर	८६३
३ सावण २०१८ बिक्रमी टैहल सिँघ दे गृह	रूपो वाली	अमृतसर	६००
५ सावण २०१८ बिक्रमी गज्जण सिँघ दे गृह	रुड़का कलां	जलंधर	६०७
६ सावण २०१८ बिक्रमी प्रीतम सिँघ साधू सिँघ	फगवाड़ा	जलंधर	६२०
७ सावण २०१८ बिक्रमी गुरमीत सिँघ दे गृह	हरदो फराला	जलंधर	६२८
२२ सावण २०१८ बिक्रमी भगवान सिँघ दे गृह	सैदपुर		६३८
२३ सावण २०१८ बिक्रमी गिरधारा सिँघ दे गृह	बलोवाली		६६२
२४ सावण २०१८ बिक्रमी बंता सिँघ दे गृह	पंज गराई		६७०
२५ सावण २०१८ बिक्रमी करतार कौर दे गृह	पंज गराई		६८०
२५ सावण २०१८ बिक्रमी महिंदर सिँघ दे गृह	दय्या		६८२
२५ सावण २०१८ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह	बटाला		६८६
२६ सावण २०१८ बिक्रमी काशी राम दे गृह	सनय्या		१००३
२५ सावण २०१८ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह	बल		१००६
२७ सावण २०१८ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे गृह	कादराबाद		१०२८

8 १०

२५ सावण २०१८ बिक्रमी	बख़शीश सिँघ दे गृह	कादराबाद		१०३१
२८ सावण २०१८ बिक्रमी	सवरन सिँघ दे गृह	सरीपुर	हुशियारपुर	१०३६
२६ सावण २०१८ बिक्रमी	संकर सिँघ दे गृह	सरीपुर	हुशियारपुर	१०५३
२६ सावण २०१८ बिक्रमी	वतन सिँघ दे गृह	सरीपुर	हुशियारपुर	१०६८
३० सावण २०१८ बिक्रमी	धंना सिँघ दे गृह	कुलीआं	हुशियारपुर	१०७२
३० सावण २०१८ बिक्रमी	ख्याल सिँघ दे गृह	रूपोवाल	हुशियारपुर	१०७७
१ भादरों २०१८ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१०८५
६ भादरों २०१८ बिक्रमी	गुरदयाल सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	१०६४
१३ भादरों २०१८ बिक्रमी	मस्सा सिँघ दे गृह	कोटली थान सिँघ	जलंधर	११०८
१४ भादरों २०१८ बिक्रमी	लाल सिँघ दे गृह	डलेवाल	जलंधर	१११३
१४ भादरों २०१८ बिक्रमी	निरंजण सिँघ दे गृह	लुधियाणा	लुधियाणा	१११८
१५ भादरों २०१८ बिक्रमी	लाल सिँघ दे गृह			११२६
१५ भादरों २०१८ बिक्रमी	बाबू सिँघ दे गृह	डेलों	लुधियाणा	११३५
१६ भादरों २०१८ बिक्रमी	नछत्तर सिँघ दे गृह	दोराहा	लुधियाणा	११४४
१६ भादरों २०१८ बिक्रमी	हरी सिँघ दे गृह	महिमा सिँघ वाला	लुधियाणा	११४७
१६ भादरों २०१८ बिक्रमी	धंना सिँघ दे गृह	ढै पई	लुधियाणा	११५२
१७ भादरों २०१८ बिक्रमी	नाज़र सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुधियाणा	११६२
१८ भादरों २०१८ बिक्रमी	पोलो सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुधियाणा	११७३
१८ भादरों २०१८ बिक्रमी	सरदारा सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुधियाणा	११७८
१८ भादरों २०१८ बिक्रमी				११८२
१८ भादरों २०१८ बिक्रमी	हरजीत सिँघ दे गृह	लील	लुधियाणा	११८४
१६ भादरों २०१८ बिक्रमी	दयाल कौर दे गृह	लील	लुधियाणा	११६१

१८ भादरों २०१८ बिक्रमी नछत्तर सिँघ दे गृह बुरज (हरी सिँघ वाला) ११९८
२० भादरों २०१८ बिक्रमी गुरमेल सिँघ दे गृह बुरज (हरी सिँघ वाला) १२०८
२० भादरों २०१८ बिक्रमी बाबू सिँघ दे गृह दद्दा हूर १२१०
२० भादरों २०१८ बिक्रमी दरबारा सिँघ दे गृह किरपाल सिँघ वाला १२१४
२१ भादरों २०१८ बिक्रमी करम सिँघ दे गृह गुड़े लुधियाणा १२२५
२२ भादरों २०१८ बिक्रमी बख़तौर सिँघ दे गृह सिध्धवां लुधियाणा १२३५
२२ भादरों २०१८ बिक्रमी दयाल सिँघ, माधा सिँघ नवां रामूवाला फिरोज़पुर १२३९
२२ भादरों २०१८ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे गृह नवां रामूवाला फिरोज़पुर १२४२
२३ भादरों २०१८ बिक्रमी उजागर सिँघ दे गृह नवां रामूवाला फिरोज़पुर १२४९
२३ भादरों २०१८ बिक्रमी केहर सिँघ दे गृह रजीवाला अमृतसर १२५५
२३ भादरों २०१८ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह मुंडी जमाल अमृतसर १२५७
२४ भादरों २०१८ बिक्रमी बागीचा सिँघ दे गृह मुंडी जमाल अमृतसर १२६४
२९ भादरों २०१८ बिक्रमी दर्शन सिँघ दे गृह शब्द सिँघासण दिल्ली १२६९
१ अस्सू २०१८ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल अमृतसर १२७६
३ अस्सू २०१८ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल अमृतसर १२८८
३ अस्सू २०१८ बिक्रमी राष्ट्रपती अते पंडत नेहरू नूं शब्द भेज्जया १२९४
७ अस्सू २०१८ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल अमृतसर १२९५
१३ अस्सू २०१८ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल अमृतसर १२९८
१७ अस्सू २०१८ बिक्रमी ठेकेदार ठाकर सिँघ दे गृह जेठूवाल अमृतसर १३००
२१ अस्सू २०१८ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल अमृतसर १३०२
२२ अस्सू २०१८ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल अमृतसर १३०६
२३ अस्सू २०१८ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल अमृतसर १३१५

२७	अस्सू	२०१८	बिक्रमी	हजारा सिँघ दे गृह	फीने जसतर वाल	अमृतसर	१३२१
२८	अस्सू	२०१८	बिक्रमी	गुरदित सिँघ दे गृह	मानां वाला	अमृतसर	१३३५
२८	अस्सू	२०१८	बिक्रमी	चरन सिँघ दे गृह			१३३७
२८	अस्सू	२०१८	बिक्रमी	सरिंदर सिँघ दे गृह	भुल्लर	अमृतसर	१३३६
२६	अस्सू	२०१८	बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	लेलिआं	अमृतसर	१३४६
२६	अस्सू	२०१८	बिक्रमी	मंगल सिँघ दे गृह	सारंगड़ा	अमृतसर	१३५३
३०	अस्सू	२०१८	बिक्रमी	अवतार सिँघ दे गृह	काउके	अमृतसर	१३५६
३०	अस्सू	२०१८	बिक्रमी	नरायण सिँघ दे गृह	गुमान पुर	अमृतसर	१३६१
३१	अस्सू	२०१८	बिक्रमी	हरबंस सिँघ बलवंत सिँघ	माहल	अमृतसर	१३७२
१	कत्तक	२०१८	बिक्रमी	जेठूवाल दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१३७५
३	कत्तक	२०१८	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१४०४
११	कत्तक	२०१८	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१४१६
१८	कत्तक	२०१८	बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१४२४
१८	कत्तक	२०१८	बिक्रमी	श्री गुरू नानक देव जी नूं सट्टां किस तरां लग्गीआं			१४२६
१६	कत्तक	२०१८	बिक्रमी	जेठूवाल दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१४३०
१६	कत्तक	२०१८	बिक्रमी	भगत दवार दी नींह रक्खण समें	जेठूवाल	अमृतसर	१४४१
२०	कत्तक	२०१८	बिक्रमी	जेठूवाल दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१४५१
२२	कत्तक	२०१८	बिक्रमी	जेठूवाल दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१४६६
२३	कत्तक	२०१८	बिक्रमी	जेठूवाल दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१४७६
२७	कत्तक	२०१८	बिक्रमी	जेठूवाल दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१४८८

11
१०

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

★ १६ मग्घर २०१७ बिक्रमी गुरमेज सिँघ दे घर पिण्ड रुड़का कलां ज़िला जलन्धर ★

हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा भगतन मीत। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा सति अनीत। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा गुरमुखां वसे चीत। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा गुरसिख रहे अतीत। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा होए पतित पुनीत। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा वेखे साची रीत। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा सुणे सुहागी गीत। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा वेखे धाम अनडीठ। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा नाता तुट्टे मन्दिर मसीत। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा लेखा चुक्के हस्त कीट, हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा माणस जन्म जाए जीत। हरि किरपा गुर पाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि परखणहारा नीत। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा भगतन रंग। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा सन्तन संग। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा गुरमुखां वज्जे नाम मृदंग। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा गुरसिख दर्शन पाए आत्म अंदर लँघ। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा मिले सेज सुहावी पलँघ। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा हउमे हंगता ढहे झूठी कंध। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा आए परमानंद। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा घर चढ़े जोत निरँजण चन्द। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा ख़ुशी होए बन्द बन्द। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा गुर नाउँ गाया बत्ती दन्द। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा पंच विकारा करे खण्ड खण्ड। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा जगत तृष्ना माया ममता चुक्या मोह गंद। हरि किरपा गुर पाया, गुर किरपा गुर सतिगुर होए बख्शंद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरसिखां चुकाए दो जहानां पन्ध। हरि किरपा गुर पेख्या, गुर किरपा भगतन प्यार। हरि किरपा गुर लिखे लेखया, गुर किरपा होए आधार। हरि किरपा गुर दर दरवेशया, गुर किरपा गुरमुख वेखे दर दरबार। हरि किरपा

गुर लेखा लिखाए ब्रह्मा विष्न महेश्या, गुर किरपा गुरसिख पाए सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बैठ ठांडे दरबार। ठांडा दरबार हरि निरँकारा, गृह मन्दिर इक्क वसाईआ। नर हरि नरायण हरी हरि हो उज्यारा, अनुभव अनदृष्ट आपणा रूप प्रगटाईआ। बोध अगाध शब्द धुन नाद बोल जैकारा, ब्रह्म ब्रह्माद आदि जुगादि सुणाईआ। लोकमात खेल न्यारा, करे कराए परवरदिगार सांझा यारा, तौफ़ीक इक्क ख़ुदाईआ। ख़ालक ख़लक रूप अगम्म अपारा, कागद कलम ना लिखणहारा, रसना जिहवा ना कोई सिफ्त सालाहीआ। पवण पाणी ना कोई आधारा, जगत बसन्तर ना कोई हुलारा, पृथ्मी आकाश ना कोई वड्याईआ। गगन मंडल ना कोई सितारा, रवि ससि ना कोई तारा, पुरी लोअ आकाश प्रकाश ना कोई जणाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपारा, करे खेल हरि करतारा, करता पुरख बेपरवाहीआ। हरि किरपा गुर पाए इक्क दुआरा, गुर किरपा मिले नाम आधारा, हरि नामे हरि समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, हरी हरि आपणा रूप धराईआ। हरी हरि रूप अनूपा, रेख रंग ना कोई जणाइंदा। सति सतिवादी सति सरूपा, सति सति सति आपणी खेल खिलाइंदा। नौ सत वसणहारा चारे कूटा, एका दूआ आपणा रंग रंगाइंदा। लोयण तीजा आपे पेखा, चौथा पद डेरा लाइंदा। पंचम जाणे साचे लेखा, छेवें छप्पर ना कोई छुहाइंदा। दोहां सति सति करे आदेसा, अठ्ठवें अठ्ठां तत्तां वेख वखाइंदा। नौवें नौ दर भरम भुलेखा, भगवन भेव कोई ना पाइंदा। दसवें दहि दिशा होए दरवेशा, गुरसिखां सेव कमाइंदा। ना कोई मुच्छ दाढ़ी दिसे केसा, मूंड मुंडाए ना रूप वटाइंदा। आदि जुगादि रहे हमेशा, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाइंदा। आपे जाणे आपणा पेशा, पेशवा आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, अवर संग ना कोई रखाइंदा। हरि किरपा गुर सगला संग, गुर किरपा मिले वड्याईआ। गुर किरपा पार जाए लँघ, शौह दरया ना कोई रुढ़ाईआ। हरि किरपा गुर लाए अंग, गोद सुहञ्जणी आप सुहाईआ। गुर किरपा उपजे परमानंद, निजानंद सहिज सुखदाईआ। गुरमुखां बणे सदा बख्शिंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग जीव भागां मंद, नेत्र दरस कोए ना पाईआ। अन्तिम टुट्टी ना सके गंढ, मानस मनुक्ख मानव जन्म गंवाईआ। साहिब सुल्तान सुत्ता दे कर कंड, कलि करवट ना लए बदलाईआ। भरमे भुल्ला जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज सुरत ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लगाए आपणे लड़, लक्ख चुरासी विच्चों फड़, आपणे पल्लू गंढ बंधाईआ। हरि किरपा गुर गुरमुख मेला, गुरमुख वज्जे वधाईआ। एका रंग रवे गुरु गुरु गुर चेला, शब्द मेला सहिज सुभाईआ। पारब्रह्म प्रभ पाया सज्जण सुहेला, विछड़ कदे ना जाईआ। धन्न सो वक्त धन्न सु वेला, जित वेले

घर मिल्या साचा माहीआ। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, कलिजुग निरगुण निरवैर निहकलंक जामा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बख्शे चरन कँवल कँवल चरन ध्यान, जीआ दान एका झोली पाईआ।

★ २७ मग्घर २०१७ बिक्रमी पिण्ड हेमराज पुर ज़िला गुरदासपुर ★

त्रेता तोड़या द्वापर रोढ़या, भेव अभेद रखाइंदा। कलिजुग जोड़या सतिगुर बौहड़या, लेख अलेख गंवाइंदा। मिट्ठा करे रीठा कौड़या, अमृत मेघ मुख चुआइंदा। घर पाया जिहा लोड़या, नर साचा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब पूर्ब वेख वखाइंदा। पूर्ब लेखा त्रेता धार, त्रैगुण तत्त जणाइंदा। पंज तत्त प्रभ खेल अपार, रती रत वेख वखाइंदा। जगत विद्या ना पावे सार, चार वेद मुख शरमाइंदा। पुराण अठारां करन निमस्कार, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। गीता ज्ञान ना कोई आधार, राम रामायण ना लेख लिखाइंदा। भगत भगवन्त खेल अपार, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। जुगा जुगन्तर एका कार, अकल कल धारी आप कराइंदा। बजवाड़ा करतारा कर प्यार, वाटे मानस वेख वखाइंदा। बालमीक लाशरीक हरि तौफ़ीक, रहिमत रहिमान इक्क दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्मड़ा वेस वटाइंदा। वाटे मानस मारनहारा, बालमीक जणाईआ। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, त्रैभवन रिहा समाईआ। अवण गवण खेल न्यारा, लोक परलोक आपणे हथ्थ रखाईआ। जुगा जुगन्तर हो उज्यारा, सरगुण निरगुण रूप वटाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, ऊँचां नीचां वेख वखाईआ। धर्मी धर्म वरते विच संसारा, अधर्मी भेव ना राईआ। निहकर्मी कर्म करे अपारा, कर्मगत ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पूर्ब लेखा दए समझाईआ। बालमीक बलम बहु बिध भांता, भेव अभेद खुल्हाइंदा। वाटे माणस मारदा ना कोई दिवस ना कोई राता, सूरज चन्न ना कोई रुशनाईआ। निरगुण रूप मिल्या इक्क इकांता, निरवैर खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। हरि हरि भेव चुकाइंदा, अलख अगोचर अगम्म अपार। हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा, देवे शब्द भण्डार। आपणा राग आप सुणाइंदा, नाद अनाद सच्ची गुफ्तार। गहर गम्भीर पर्दा लांहयदा, दूई द्वैती दए उतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रक्खे करतार। हथ्थ करतार खेल अपारा, भेव कोए ना पाइंदा। पंचम पंच करे प्यारा, पंचम वेख वखाइंदा। एका नारी कन्त भतारा, दोए

धारा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। बालमीक बल जवान, मन माया ममता तन हल्काईआ। शस्त्र बस्त्र तीर कमान, चिला खण्डा हथ्थ चमकाईआ। फिरनहारा जंगल जूह उजाड़ बीआबान, दहि दिशा फेरी पाईआ। खेले खेल श्री भगवान, आपणी खेल आप रचाईआ। आपे रिखी मुनी होए नौजवान, बिरध बाल आपणा रूप धराईआ। आपे भारद्वाज कर परवान, भईआ भईआ संग रखाईआ। भईआ सपुत्री नार रकान, जगत मुटयार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, दूसर भेव कोए ना पाईआ। जगत दुलारी कर प्यारी, लोकमात नाता वेख वखाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारी, साचा मेला मेल मिलाइंदा। राज जोग खेल न्यारी, जुगत जगत ना कोई जणाइंदा। एका भूप सति सरूप करे खेल न्यारी, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का भेव कोई ना पाइंदा। भारद्वाज बण विचोला, लोकमात खेल खिलाइंदा। भईआ सपुत्री तोल एका तोला, मईआ मईआ मेल मिलाइंदा। माणक मोती आप विरोला, जगदी जोती जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का रूप अनूप दिस किसे ना आइंदा। जगत जोड़ी जुड़या जोड़ा, लोकमात खेल खिलाया। भारद्वाज एका बौहड़ा, सप्त रिख नाम वड्याआ। पुरख अबिनाशी गृह मन्दिर आपे आया दौड़ा, आपणा लेखा दए समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मति दए समझाया। साची मति हरि निरँकार, निरगुण निरगुण आप जणाईआ। घर सख़ीआं मंगलचार, वाह वाह गीत सुहागी गाईआ। माता पिता कर प्यार, धी सपुत्री इक्क विहाईआ। लाड़ी लाड़ा हो त्यार, उठ चले वाहो दाहीआ। राह खैहड़ा वेख संसार, भुल्ले पान्धी राहीआ। अग्गे मिल्या बालमीक बजवाड़, फड़ लए शहिनशाहीआ। पति पत्नी दोवें करे ख्वार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खेले खेल हरि, हरि का खेल दिस ना आईआ। पत्नी रोवे धाहां मार, भईआ भईआ रही पुकार,। भारद्वाज नेड़ ना दिसे कोए सहार, ऊँची कूके रोवे ज़ारो ज़ार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। हरि हरि रूप प्रगटाया, निरगुण पुरख अगम्म। बालमीक हरि नज़री आया, जगत मिटाई तृष्ना तम। एका शब्दी हुक्म सुणाया, आत्म अन्तर दिता बन्न्। एका रागी नाद अल्हाया, इक्क जणाया साचा कम्म। तेरी सेवा सच समझाया, तेरा लेखे लग्गे दम दम। हरि आपणा भेव खुल्हाया, त्रेता प्रगट होवे रामा रम। पति पत्नी बन्द कटाया, एका नाम सुणाया कन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा डन्न। बालमीक हरि दरस कर, दासी दास दास अख्वाया।

चरन कँवल परस हरि, निउँ निउँ सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी तरस कर, हउँ सेवक नीच उत्तम ज़ात ना कोए रखाया। मुड़ मुड़ आया जन्म मर, मरन जन्म गेड़ा वेख वखाया। जुग जुग तेरा रिहा डर, भउ किसे ना सीस झुकाया। इक्क नहाउणा साचे सर, दूजा सर ना कोए दरसाया। आपणी किरपा आपे करनी हरि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त दए समझाइंदा। बालमीक उठ कर ध्यान, निरगुण हरि हरि आप समझाइंदा। मेरा नाम तेरा ज्ञान, तेरा ज्ञान जगत अलाइंदा। मेरा चरन तेरा ध्यान, तेरा ध्यान सर्ब समाइंदा। मेरा शब्द तेरा धुन्कान, तेरी धुंन जीव जंत सर्ब गाइंदा। तेरा रूप वेखे आण, श्री भगवान रूप वटाए रमइया राम, राम रूप आप हो जाइंदा। तेरा लेखा करे परवान, लिख्या लेखा ना कोए मिटाइंदा। पति पत्नी बाल नादान, दोहां विचोला इक्क बणाइंदा। अन्तिम चुक्के जम की काण, दो जहान खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, अनुभव आपणी खेल खिलाइंदा। बालमीक उठ कर निमस्कार, निरगुण अग्गे सीस झुकाइंदा। पति पत्नी कवण दुआर पावे तेरी सार, कवण रूप दरस वखाइंदा। तूं विचोला बणया अन्तिम वार, हरि करतार तेरा संग कवण रूप निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। दोए जोड़ झुकाए सीस, निउँ निउँ करे निमस्कारा। किरपा कर हरि जगदीश, हउँ मंगे मंग भिखारा। गा गा थक्के दन्द बतीस, तेरा भेव अगम्म अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर सच्ची सरकारा। बालमीक हरि शब्द जणाया, भेव अभेद खुलाइंदा। तेरा लेखा कवण झोली पाया, त्रेता वेला वक्त सुहाइंदा। द्वापर आपणी गोद बहाया, लोकमात ना मुख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, पंज तत्त काया चोला तेरा रंग रंगाइंदा। आपणा नूर करां रुशनाया, जोती जामा भेख वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, हरि बिन अवर ना कोए दरसाइंदा। बालमीक कलिजुग अन्तिम आउणा हरि, साचा सच जणाइंदा। तेरा रूप आप प्रगटाउणा, त्रैगुण मेला वेख वखाइंदा। निरगुण जोती जामा पाउणा, रूप रंग ना कोए जणाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेस वटाउणा, जेरज अंडां खेल खिलाइंदा। वरभण्डी हरि रूप धराउणा, शब्दी आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। एका दर मेल मिलाउणा, दर सुहञ्जणा इक्क सुहाइंदा। निरगुण निरगुण रंग रंगाउणा, सरगुण साचा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, हरि हरि मन्दिर डेरा लाइंदा। बालमीक सुण हरि संदेशा, इक्क ध्यान लगाया। कवण रूप वटाएँ वेसा, कवण मन्दिर कर रुशनाया। कवण नाउँ होए आदेसा, कवण ढोला इक्क सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका तत्त दए समझाया। एका तत्त

निरगुण धार, निरवैर पुरख प्रगटाईआ। तेरा मेला करे विच संसार, लोकमात वेख वखाईआ। जगत जुगत चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क समझाईआ। दीपक जोती एका बाल, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। तेरी दिवस रैण करे प्रितपाल, प्रितपालक वड शहिनशाहीआ। दोहां विचोला बण दलाल, शब्द शब्दी लए मिलाईआ। पति पतणी दस्से राह सुखाल, तीजे जुग करे कुड़माईआ। त्रैगुण माया पति ना लग्गे कोए डाल, जगत फुलवाड़ी ना कोए महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण विचोला निरगुण ढोला निरगुण सोहला इक्क सुणाईआ। निरगुण मेला हरि करावणा, कलिजुग अन्तिम वार। शब्द विचोला इक्क रखावणा, मरे ना जम्मे विच संसार। काल रूप आप वटावणा, महाकाल सच्ची सरकार। गुरमुख बाल अञ्याणे गोद उठावणा, दो जहानां करे पार। जगत काज आप रचावणा, लोक लज्जया मारे मार। जगत आयू आपणे हथ्थ रखावणा, बत्ती साल ना चढ़े कोई बुख़ार। दुःख दर्द ना कोई उपजावणा, सुक्ख उपजे पुरख नार। एका ढोला सोहँ गावणा, नौ खण्ड सत्त दीप ब्रह्मण्ड होए जै जैकार। ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकावणा, राह तक्कण दस गुर तेई अवतार। अठारां भगतां सीस झुकावणा, जिस तख़्त बैठा आप निरँकार। साचा हुक्म आप वरतावणा, करे खेल अगम्म अपार। जोड़ी जोड़ा जोड़ जुड़ावणा, एथे ओथे पावे सार। जगत विछोड़ा पन्ध मुकावणा, त्रै भवण कर ख्वार। अमृत जाम इक्क प्यावणा, काया करे ठंडी ठार। सिर आपणा हथ्थ रखावणा, पिछला कर्ज़ा दए उतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जन गावणा, जै जै जैकार होए सच्चखण्ड सच्चे दरबार।

★ २८ मग्घर २०१७ बिक्रमी पाल सिँघ दे घर भलाई पुर डोगरा ज़िला अमृतसर ★

सो पुरख निरँजण सच प्रीत, सति सतिवादी इक्क जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण सच प्रीत, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। आदि निरँजण सच प्रीत, सच सिँघासण मेल मिलाइंदा। एकँकारा सच प्रीत, जोती जोत जोत जगाइंदा। अबिनाशी करता सच प्रीत, सच सिँघासण मेल मिलाइंदा । श्री भगवान सच प्रीत, ठांडा सीत दर सुहाइंदा। पारब्रह्म सच प्रीत, सचखण्ड दुआरा इक्क समझाइंदा। बैठा रहे इक्क अतीत, रूप रंग रेख ना कोई जणाइंदा। दो जहानां साचा मीत, सगला संग आप रखाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। देवे नाम शब्द अनडीठ, नाद अनादी नाद वजाइंदा। करे कराए पतित पुनीत, पतित पापी आप तराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, साची रीत आप वखाइंदा। साची प्रीत चरन गुरदेव, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। लेखा जाणे पुरख अभेव, अलख

अगोचर शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। देवे वड्याई वड देवी देव, देवणहारा इक्क रघुराईआ। अमृत आत्म बख्शे नाम निधाना साचा मेव, अमिउँ रस आपणा रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, घर साचे सोभा पाईआ। सच प्रीत सतिगुर धार, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, जुग जुग खेल खिलाइंदा। भगत भगवन्त लए उधार, लक्ख चुरासी फोल फुलाइंदा। एका नाम सति दए अपार, वणज वणजारा इक्क अख्वाइंदा। गतमित जाणे जानणहार, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। पंज तत्त करे प्यार, हड्ड मास नाड़ी रत वेख वखाइंदा। सर्ब कल आपे समरथ हरि निरँकार, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, हरि हरि मन्दिर सोभा पाइंदा। सच प्रीत गहर गम्भीर, गुणवन्त वडी वड्याईआ। जन भगतां बख्शे अमृत सीर, निझर नीर आप वहाईआ। हउमे हंगता दूई द्वैती कढ्ढे पीड़, सांतक सति संतोख इक्क दरसाईआ। तन पहनाए शब्द साचा चीर, शब्द दोशाला हथ्थ उठाईआ। एथे ओथे दो जहानां बन्ने बीड़, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। एका चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, जोलाहा कबीर गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, हरि बिन अवर ना कोए वड्याईआ। सच प्रीत साचे घर, हरि सतिगुर आप समझाइंदा। गुरमुखां देवे साचा वर, वर दाता भेव कोए ना पाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर ना जाए मर, जन्म मरन खेल खिलाइंदा। भगत सन्त आपे फड़, भगवन आपणे दर बहाइंदा। आपणी विद्या आपे पढ़, गुरमुखां निॎअक्खर आप पढ़ाइंदा। काया किला कोट वेख गढ़, उप्पर चढ़ डेरा लाइंदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, चोटी जड़ ना कोई वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, हरि हरि जू आपणा रूप धराइंदा। सच प्रीत सतिगुर दरस, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। गुर पूरा अमृत आत्म मेघ देवे बरस, त्रैगुण तत्त रहे ना राईआ। जगत तृष्ना मिटे हरस, नर हरि आपणा दरस दखाईआ। जीव जंत साध सन्त लक्ख चुरासी लए परख, नाम कसवटी हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल एका हरि, जुग जुग आपणी चाल चलाईआ। जुग जुग चाल चलाइंदा, हरि कर किरपा गुण निधान। सो पुरख निरँजण वेस वटाइंदा, हरि पुरख निरँजण हो मेहरवान। एकँकारा आपणी कल आप धराइंदा, आदि निरँजण जोत महान। श्री भगवान सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा, अबिनाशी करता थिर घर वसे जगत मकान। पारब्रह्म आपणे रंग आप समाइंदा, दूसर होर ना कोए निशान। शब्द अगम्मी नाद वजाइंदा, साचे तख़्त बैठ सच्चा सुल्तान। धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा, आपे गाए आपणा गान। आपणी रचन आप रचाइंदा, आपे वेखणहारा दो जहान। आपे शब्दी हुक्म

वरताइंदा, आपे नाम निधाना कर प्रधान। नाउँ निरँकारा आप उपाइंदा, आपे लेखा लिखे महान, आपे ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचाइंदा, आपे लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान। आपे रवि ससि चमकाइंदा, आपे जोती जोत जगाए आप मेहरवान। आपे विष्नूं रूप धराइंदा, आपे कँवल नाभी करे परवान। आपे ब्रह्मा ब्रह्म रूप प्रगटाइंदा, आपे चारे मुख करे ज्ञान। आपे शंकर धूंआँधार समाइंदा, आपे सुन अगम्मी होए प्रधान। आपे तिन्नां एका गुर वखाइंदा, सच वखाए इक्क मकान। आपे एका गोद बहाइंदा, एका माई देवे दान। आपे एका अक्खर आप पढ़ाइंदा, सो पुरख निरँजण वखाए सच निशान। आपे चारे वेद लिखाइंदा, आपे रक्खे आपणी आण, आपे त्रैगुण रंग रंगाइंदा, आपे पंचम बख्शे इक्क ज्ञान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच प्रीती देवे दान। सच प्रीती चरन दुआर, विष्नूं विश्व समझाइंदा। ब्रह्मा दोए दोए जोड़ करे निमस्कार, पुरख अबिनाशी एका घर वखाइंदा। शंकर निउँ निउँ चरन कँवल कँवल चरन मंगे इक्क आधार, जटा जूट सेव कमाइंदा। तिन्नां विचोला शब्द करतार, तिन्नां संदेशा इक्क सुणाइंदा। सो पुरख निरँजण सभ तों वसया बाहर, हथ्थ किसे ना आइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, सच भाणा इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, सच प्रीती इक्क समझाइंदा। सच प्रीती त्रैगुण धार, त्रै त्रै एह समझाया। विष्न तेरा सच भण्डार, पुरख अबिनाशी आप वरताया। ब्रह्मे तेरा इक्क पसार, पारब्रह्म हरि वेख वखाया। शंकर तेरा अन्त सँघार, जो घड़या भन्न वखाया। करे खेल सच्ची सरकार, साचे तख्त सोभा पाया। चरन प्रीती दस्से इक्क आधार, आदि जुगादि विछड़ ना जाया। जाग्रत जोत जगे अपार, जुग करता खेल खिलाया। लक्ख चुरासी बण वरतार, गृह मन्दिर सेव कमाया। जुग जुग करे सच विहार, लेख अलेख आप बण जाया। भेख धरे आप निरँकार, लोकमात वेख वखाया। निरगुण सरगुण लए उभार, निरगुण सरगुण विच टिकाया। जुग जुग वण्डे वण्ड अपर अपार, जुग चौकड़ी बन्धन पाया। सतिजुग त्रेता द्वापर बणया रहे सहार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। नौ खण्ड दए आधार, नौ दुआर खोज खुजाया। चार वरन पावे सार, चार जुग मेल मिलाया। चारे बाणी लए उभार, चारे खाणी विच समाया। परा पसन्ती मद्धम बैखरी एका धार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रूप प्रगटाया। करे खेल सच्चा शाहकार, शहिनशाह आपणी धार आप वरताया। जुग जुग वरते इक्क वरतार, वेद कतेब भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, सच प्रीती दए समझाया। सच प्रीती विष्नूं नाता, हरि विष्नूं जोड़ जुड़ाइंदा। ब्रह्मे तेरी उत्तम ज़ाता, पारब्रह्म रूप दरसाइंदा। शंकर तेरी साची गाथा, त्रिलोकी नाथा आप सुणाइंदा। तिन्नां पूरा करनहारा घाटा, सच सलोक इक्क अल्लाइंदा। सतिजुग

त्रेता द्वापर कलिजुग जुग चौकड़ी वेखे वाटा, हरि जू आपे पन्ध मुकाइंदा। नव नौ चार खेल बाज़ीगर नाटा, स्वांगी आपणा सांग रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच प्रीती इक्क दृढ़ाइंदा। सच प्रीत विष्नूं रंग, हरि हरि आपणा आप रंगाईआ। ब्रह्मा तेरी पूरी करे मंग, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। शंकर तेरी कटे भुक्ख नंग, तृष्ना तृप्त आप कराईआ। तिन्नां वजाए इक्क मृदंग, सो पुरख निरँजण हथ्थ उठाईआ। हरि पुरख निरँजण लाए अंग, एकँकार होए सहाईआ। सो पुरख निरँजण सूरा सरबंग, अबिनाशी करता मेल मिलाईआ। श्री भगवान साचे अश्व कसे तंग, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे परमानंद, आत्म अनन्द आप समझाईआ। इक्क सुणाए साचा छन्द, सो आपणा रूप धराईआ। हँ ब्रह्म मुकाए पन्ध, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच प्रीत इक्क अतीत, आपणी आप समझाईआ। सच प्रीती हरि समझाइंदा, आदि जुगादी खेल अपार। विष्नूं विश्व रूप धराइंदा, निरगुण सरगुण भेव न्यार। ब्रह्मा ब्रह्म रूप प्रगटाइंदा, लक्ख चुरासी दए आधार। शंकर अन्तिम सेव कमाइंदा, वेख वखाए सर्ब संसार। हरि जू आपणी खेल खिलाइंदा, लेखा जाणे घड़न भन्नणहार। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जुग चौकड़ी आप भवाइंदा, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गेड़ा गेड़नहार। अवतार गुर रूप प्रगटाइंदा, सन्त भगत भगवन्त लए उभार। गुरसिख साचे आपे उठाइंदा, गुरमति देवे नाम आधार। मनमुख एका रंग रंगाइंदा, दाता दानी दो जहान बणे श्री भगवान। दोए दोए आपणी धार चलाइंदा, निरगुण सरगुण खेल न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, हरि मन्दिर बैठ सच्चे दरबार। हरि मन्दिर हरि सुहाइंदा, सचखण्ड सच दुआरा। निरगुण आपणा आसण लाइंदा, रूप अनूप अगम्म अपारा। नूरो नूर नूर उज्यारा। साचे तख्त सोभा पाइंदा, तख्त निवासी हरि करतारा। हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा, धुरदरगाही परवरदिगारा। आपणी करनी आप कमाइंदा, करता पुरख हो त्यारा। लोकमात वेस वटाइंदा, निरगुण निरगुण लै अवतारा। नव नौ चार बेड़ा पार कराइंदा, लेखा जाणे समुंद सागर मँझधारा। धरत धवल फोल फुलाइंदा, ज़िमीं अस्मानां वेखे पाड़ा। गगन मंडल फेरा पाइंदा, आकाश प्रकाश वेखे सच अखाड़ा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव दए अधारा। करोड़ तेतीसा सीस झुकाइंदा, सुरपति राजा इंद करे निमस्कारा। गुरसिख तेरा माण रखाइंदा, गुर पूरा लै अवतारा। कोट जन्म दे पाप गंवाइंदा, देवे वस्त नाम हरि थारा। चरन प्रीती इक्क रखाइंदा, सच वखाए चरन दुआरा। डुबदे पाथर आप तराइंदा, तरनी तर बण संसारा। कागद कलम भेव ना आइंदा, लिख लिख थक्के वेद चारा। पुराण अठारां सर्ब कुरलाइंदा, शास्त्र सिमरत

ना कोए विचारा। खाणी बाणी भेव ना आइंदा, ना कोई कातब बणे लिखारा। गुर का रूप घट घट अंदर डेरा लाइंदा, जिस जन बख्शे चरन सरन सरन चरन इक्क प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, एका बख्शे नाम अधारा। नाम आधार वस्त अनमुल्ल, गुर सतिगुर हट्ट विकाईआ। चौदां भार ना सके तुल, ना कोई तोले तोल तुलाईआ। गुरसिख उपजे साची कुल, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। अमृत आत्म ना जाए डुल्ल्, सर सरोवर हरि भराईआ। फुल्ल फुलवाड़ी जाए फुल्ल, रुत्त बसन्ती इक्क सुहाईआ। चरन प्रीती जो जन जाए घुल्ल, घोली घोल घोल घुमाईआ। लोकमात ना जाए रुल, जिस सिर सतिगुर पूरा हथ्थ टिकाईआ। सिंमल रुक्ख ना जाए हुल, पत डाली आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीत इक्क समझाईआ। सच प्रीत चरन जन जोड़, गुर सतिगुर सच समझाइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण सरगुण जाए बौहड़, गुर शब्द विचोला रूप प्रगटाइंदा। मिट्ठा करे रीठा कौड़, अमृत आत्म रस भराइंदा। चौथे घर लगाए एका पौड़, चौथे पद आप समाइंदा। पंच विकारा देवे होड़, पंचम शब्द धुन सुणाइंदा। नाता तुट्टे मढ़ी गोर, ख़ाकी ख़ाक ना कोए समाइंदा। दरगाह साची सचखण्ड निवास देवे तोर, तुरीआ राग नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, सच प्रीत आप निभाइंदा। सच प्रीत जाए जुड़, जिस जन आपणी दया कमाईआ। गुरमुख गुरसिख चढ़े साचे घोड़, गुर सतिगुर आप चढ़ाईआ। जन्म जन्म दी बुझाए लग्गी औढ़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। दरस दखाए काया मन्दिर अंदर डूँग्घी अन्ध घोर, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। पंचम पंच ना पाए शोर, हरि सखीआं मंगल एका गाईआ। सुरत सुआणी बन्न्हे शब्दी डोर, नाम पतंग इक्क उडाईआ। चरन कँवल कँवल चरन जिस जन रखाई एका ओट, दूसर दर ना मंगण जाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी लभदे फिरदे कोटी कोट, हरि का रूप दिस ना आईआ। माया ममता जगत तृष्ना जीवां जंतां भरी ना पोट, सांतक सति ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, सच प्रीत इक्क सिखाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, देवणहारा इक्क ज्ञान, ध्यान ध्यान विच रखाईआ।

★ पहली पोह २०१७ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

आदि जुगादी दीन दयाल, हरि ठाकर बेपरवाहीआ। निरगुण नरायण खेल निराल, अनुभव भेव ना राईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी चाल, बेपरवाह आप चलाईआ। इक्क इकल्ला हो त्यार, सचखण्ड दुआर आप सुहाईआ। थिर घर

बैठ सच्ची धर्मसाल, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। साचे तख्त बैठ सुल्तान, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। आदि जुगादी धुर दी बाण, धुर दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कोटन कोटि बीते काल, हरि का भेव कोई ना पाईआ। पुरख अकाल बण दलाल, आपणी खेल आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त वेख वखाईआ। आदि अन्त हरि वेखणहारा, एका रंग समाया। निरगुण रूप अगम्म अपारा, जोती नूर डगमगाया। निरवैर वसे सभ तों बाहरा, पुरख अकाल भेव ना राया। अजूनी रहत गुप्त ज़ाहरा, नाद तूरत आप सुणाया। सो पुरख निरँजण आपे जाणे आपणी कारा, हरि पुरख निरँजण कार कमाया। एकँकारा ठांडा दरबार, जोत निरँजण आदि निरँजण डगमगाया। अबिनाशी करता उच्च महल्ल अटल मुनारा, सच दुआरा आप वसाया। पारब्रह्म कर प्यारा, आपणी बन्न्हे आपे धारा, आप आपणा रूप प्रगटाया। दर घर साचे ख़बरदारा, आपे सुणे आपणी आप पुकारा, सुणावणहारा आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाया। आदि अन्त खेल महाना, हरि का भेव कोई ना पाइंदा। इक्क इकल्ला नौजवाना, नर निरँकारा आपणा नाउँ रखाइंदा। साचे तख्त बैठ श्री भगवाना, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। एका एक इक्क दरबाना, दर दरवेश आप अख्वाइंदा। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, एका धारी धार रखाइंदा। एका जोद्धा सूरबीर बलवाना, एका आपणा बल उपजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि अन्त हरि हरि खेल, आपणी आप कराइंदा। आपे निरगुण जोती मेल, आपे जोती सरगुण रूप वटाइंदा। आपे कमलापाती सज्जण सुहेल, सज्जण सुहेल कमलापाती आप अख्वाइंदा। आपे वसे रंग नवेल, नवेल रंग आपणा आप धराइंदा। आपे गुरु आपे चेल, चेला गुर आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त आपणी बणत आप बणाइंदा। आदि अन्त हरि भगवाना, आपणी खेल आप खिलाइंदा। करे खेल दो जहाना, रूप अनूप आप वटाइंदा। आपे जोती आपे शब्द तराना, आपे नादी नाद वजाइंदा। आपे वसे मन्दिर सच मकाना, सचखण्ड दुआरा आप उपाइंदा । आपे थिर घर सोहे राज राजाना, शाहो भूप आपणा नाउँ धराइंदा। आपे होए जाणी जाणा, जानणहार आप अख्वाइंदा। आपे वरते आपणा भाणा, आपणे भाणे आप समाइंदा। आपे होए दानी दाना, भिखक भिच्छया झोली पाइंदा। आपे होए माण निमाणा, आपे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। आपे जाणे आपणा आवण जाणा, दूसर भेव कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त श्री भगवन्त, आपणी कल आप धराइंदा। आदि अन्त हरि करतारा, आपणी खेल आप खिलाईआ। आपे पुरख आपे नारा, नर नरायण आप हो जाईआ। आपे मात पित सुत दुलारा, साची

गोद आप सुहाईआ। आपे नाउँ निरँकार बोल जैकारा, उच्ची कूक आपे गाईआ। आपे निरगुण जोती कर उज्यारा, दीपक दीआ इक्क जगाईआ। आपे अमृत होए ठंडा ठारा, सर सरोवर इक्क वखाईआ। आपे आपणा दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपे वणज आप वपारा, आपे आपणा हट्ट चलाईआ। आपे रूप अगम्म निराकारा, ना मरे ना जाईआ। आपे खोल्हे सच किवाड़ा, थिर दरबारा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त एका कन्त, नारी आपणी आप प्रनाईआ। आपे नारी कन्त कन्तूहल, आपे साचा धाम सुहाइंदा। आपे शब्द पंघूड़ा रिहा झूल, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। आप चुकाए आपणा मूल, लहणेदार आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त आपणी धार आप बंधाइंदा। आदि अन्त पुरख अबिनाशा, आपणा खेल खिलाईआ। निरगुण निरगुण निरगुण कर तमाशा, निरगुण मंडल रास रचाईआ। निरगुण अंदर निरगुण कर कर वासा, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण पूरी करे आसा, निरगुण आस तकाईआ। निरगुण सेवक दासी दासा, निरगुण शाह सुल्तान वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त आपणा भेव आप खुल्हाईआ। आदि पुरख हरि भेव न्यारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़ा, थिर दरबारा दए वड्याईआ। साचे तख्त शाह सिक्दारा, वरते

१२ वरतावे हुक्म अपारा, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। आपणी करे आपे कारा, ना कोई दूसर मीत मुरारा, सगला संग ना १२

कोई रखाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, अनादि अनादी हो त्यारा, आपणा रूप अनूप धराईआ। सच सुहाए बंक दुआरा, करे खेल अपर अपारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। मेल मिलावा कन्त भतारा नारी नर इक्क दरबारा, दर घर साचे सोभा पाईआ। हरि हरि बणया मीत मुरारा, नर हरि मेला एका वारा, नारी पूत सपूता जाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहरा, निरगुण दीआ इक्क उज्यारा, रूप रेख ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत आप बणाईआ। आदि पुरख बणत बणा, आपणा रूप धराया। आपे जननी जन अख्वा, आपणी गोद सुहाया। आपणा रंग आप रंगा, रंग रंगीला वेख वखाया। आपणा संग आप निभा, सगला संग आप हो जाया। आपणा मन्दिर आप वड़या, आपे वेख वखाया। आपणा नूर आप टिका, आपे डगमगाया। आपणा नाउँ आप धरा, आपे रिहा बुलाया। आपणी करनी आप करा, आपे वेख वखाया। आपणी सरनी आपे पा, आपे होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणा नाउँ धराया। आदि पुरख नाउँ रक्ख, करे खेल अपर अपारा। निरगुण रूप हो प्रतक्ख, निरगुण नूर करे उज्यारा। आपे जाणे आपणा पक्ख, ना कोई दूसर धारा। इक्क जैकारा अलखणा अलख, बोले हरि निरँकारा। आपणा

परदा आपे ढक, आपे लेखा लिखणहारा। आप आपणा कीता वक्ख, ना कोई वेखे होर दुआरा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे करे निमस्कारा। आपणे मन्दिर आपे वस, आपे सोए पैर पसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपारा। आदि पुरख खेल अपारा, आपणा आप कराइंदा। निरगुण दीआ कर न्यारा, आपणा बंक सुहाइंदा। आपणे नूर हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपणे रंग रवे करतारा, रूप अनूप आप दरसाइंदा। आपणा संग आपे वेखे वेखणहारा, वेख वेख आप बिगसाइंदा। आपणी इच्छया भरे भण्डारा, आपणी इच्छया आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। आपणा बन्धन आपे पा, आपणा हुक्म वरताया। आपणी नारी आप प्रना, नारी कन्त आप अख्वाया। आपणी सेज आप हंढा, आपणा संग निभाया। आपणी खेल आप खिला, वेखणहार आप हो जाया। आपणी रुतड़ी आप सुहा, रुत रुतड़ी दए वड्याआ। आपणी कुखड़ी भाग लगा, पूत सपूता एका जाया। निरगुण निरगुण लए प्रगटा, निरगुण निरगुण धार चलाया। आपणे अंक आप समा, आपे अंक लगाया। आपणे बंक दए बहा, बंक दुआरी वेख वखाया। आपणा रूप आप प्रगटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणा खेल खिलाया। आपणा रूप प्रगटाए आप, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। आपे जाणे वड प्रताप, महिमा अकथ
१३ कथी ना जाईआ। ना कोई माई ना कोई बाप, भैण भाई ना कोई दिसाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई साक, सगला १३
संग ना कोई वखाईआ। आपणे अंदरों आपे प्रगट्या आपा आप, आपे नूर नूर दरसाईआ। आपे वसया इक्क इकांत, इक्क इकल्ला सच्चा शहिनशाहीआ। आपे जाणे आपणी ज़ात, अज़ाती नूर नूर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि पुरख प्रभ हो त्यार, आपणा रूप दरसाया। अलख अगोचर अगम्म अपार, अलख अलखणा नाउँ धराया। मूर्त अकाल हो उज्यार, अजूनी रहत डगमगाया। साचा मन्दिर कर त्यार, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया। तख्त निवासी ख़बरदार, सच सिँघसण सोभा पाया। पुरख अबिनाशण मीत मुरार, ना मरे ना जाया। उच्च महल्ले हो त्यार, अटल धाम वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा रूप वटाया। आदि रूप श्री भगवान, एका एक धराइंदा। सचखण्ड दुआरे बैठ मकान, थिर घर चरनां हेठ दबाइंदा। थिर घर साचे हो प्रधान, आप आपा वेख वखाइंदा। निरगुण निरगुण कर पछाण, आप आपणा बल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। थिर घर बैठ हरि निरँकारा, सचखण्ड आपणा रंग रंगाईआ। आदि आदि बन्ने आपणी धारा, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। कवण रूप वरते वरतारा, कवण खेल खिलाईआ। कवण नाउँ धराऊ दूजी

वारा, एकँकारा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर आपणा मता पकाईआ। सचखण्ड दुआरे खेल करतारा, एका धार रखाइंदा। थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, चरनां हेठ दबाइंदा। पहला रूप निराकारा , रंग रेख ना कोई वखाइंदा। दूजी आपणी पाए सारा, आपणा मता पकाइंदा। कवण धार होए उज्यारा, कवण नार पुरख प्रनाइंदा। कवण सेज सोहे भतारा, कवण अंग लगाइंदा । कवण भोगे भोग हरि करतारा, कवण भस्मड़ रूप वटाइंदा। कवण दाई दाया बणे विच सच दरबारा, कवण सेव कमाइंदा। कवण उपजे सुत दुलारा, कवण गोद बहाइंदा। कवण बोले मेरे नाउँ जैकारा, कवण चरन सीस टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड दुआरा हरि करतारा, एका रंग समाया। थिर घर साचे पाए सारा, चरन कँवल टिकाया। एका रूप अगम्म अपारा, शाहो भूप दरसाया। आपणी इच्छया करे विचारा, लेखा लेख ना कोए गंवाया। आपे प्रगट होए आपे वेखे वेखणहारा, दूजा नैण ना कोए बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना लए रचाया। रचन रचावणहार हरि, आपणी दया कमाइंदा। आपणे मन्दिर बैठ घर, आपणा मता पकाइंदा। कवण घाड़न लए घड़, घाड़त घड़त कवण घड़ाइंदा। कवण अक्खर लए पढ़, कवण नाम दृढ़ाइंदा। कवण घर बहे चढ़, कवण संग रखाइंदा। कवण पल्लू लए फड़, कवण बन्धन पाइंदा। कवण पुरख लए वर, कवण नारी कन्त हंढाइंदा। कवण जोती दए धर, कवण जोत जगाइंदा। कवण देवे साचा वर, कवण पूर कराइंदा। आपणी किरपा आपे कर, आपणी इच्छया साची भिच्छया आपे झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। पहलां आपणी करे सलाह, सति पुरख निरँजण बेपरवाहया। फेर बणां आपणा आप मलाह, आपणा बेड़ा लवां चलाया। कवण रूप वसां सचखण्ड दुआरे साचे थाँ, थिर घर साचा कवण वेस वटाया। कवण रूप बणां साची मां, कवण पिता रूप धराया। कवण बालक गोद लवां बहा, कवण रूप सिर हथ्थ टिकाया। कवण घर देवां ठंडी छाँ, समरथ आपणा नाउँ वड्याआ। कवण रूप पकड़ां बांह, आदि अन्त वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहला आपणा नाउँ धराया। आदि पुरख आपणा ना धरा, आपणी सेवा आप लगाइंदा। आपणा हुक्म आप वरता, आपे बन्धन पाइंदा। विष्न रूप लवां वटा, विश्व खेल खिलाइंदा। आपणा रंग लवां रंगा, रंग रंगीला इक्क चढ़ाइंदा। छैल छबीला रूप धरा, सच कबीला आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि पुरख आदि विष्न, आदि आदि समाया। नेत्र नैण किसे ना दिसण, वेखणहारा दिस ना आया। आपणे मन्दिर साचे वसण, थिर घर साचा इक्क बणाया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आदि आपणे हथ्थ रखाया। आदि पुरख हरि खेल खिलाया, विष्न आपणा रूप धराइंदा। अन्त लेखा दए समझाया, आपणा पन्ध आप मुकाइंदा। दोहां मेला मेल मिलाया, मेल मिलावा इक्क जणाइंदा। सचखण्ड दुआरा दए वड्याआ, थिर घर साचे डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त एका कन्त, नर नरायण आप अख्वाइंदा। आदि पुरख विश्व धार, वास्तक रूप दरसाइंदा। रूप अनूप कर त्यार, आप आपणा वेख वखाइंदा। आपणे मन्दिर पाए सार, आप आपणा तेल चढ़ाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, गुप्त गुप्ती वेख वखाइंदा। अमृत रस अमर भण्डार, अमरापद दरसाइंदा। देवणहार इक्क दातार, निराकार निरँकार वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलाइंदा। विष्नूं भगवान हरि हरि मेला, एका घर कराया। सचखण्ड वसे हरि गुरु थिर घर चेला, विष्न बहाया। आपे होए सज्जण सुहेला, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त दए समझाया। विष्न अंदर हरि हरि धार, आपणी आप रखाईआ। अमृत भरया ठंडा ठार, नाभी कँवल खुल्हाईआ। खुल्हिआ कँवल होया उज्यार, रुतड़ी रुत्त सुहाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, खेले खेल सच्चा शहिनशाहीआ। ब्रह्म पारब्रह्म भेव न्यार, आपणी वण्ड आप वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका ब्रह्म दए दरसाईआ। ब्रह्मा वेता नेतन नेत, नर हरि नरायण उपाया। आपे जाणे चेतन्न चेत, आप आपणा खेल खिलाईआ। आपे करे साचा हेत, हितकारी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा नाउँ धराया। आपे ब्रह्म कर पसारा, पारब्रह्म वड्याईआ। आपे विष्नूं दए आधारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपे करे खेल करतारा, करनहार भेव ना राईआ। आपे वरते आपणा वरतारा, लेखा जाणे सहिज सुभाईआ। आपे जाणे ठांडा दरबारा, सीतल धारा आप वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा हुक्म आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शब्दी धार, हरि हरि रूप वटाया। आपणे अंदरों आए बाहर, आपणा मुख दिखलाया। निरगुण सरगुण हो उज्यार, आपणा मार्ग आप लगाया। थिर घर आया आपे बाहर, धूंआँधार आप समाया। सुन अगम्मी पावे सार, सुन्न अगम्म आपणा नाउँ धराया। आपे ब्रह्मा लए उभार, आपे मस्तक लेख लिखाया। आपे अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज करे त्यार, आपे शंकर खेल खिलाया। तिन्नां विचोला बणे निरँकार, एका माई गोद बहाया। दाई दाया बण करतार, साची सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, एका हुक्म वरताया। आदि पुरख हुक्म वरताया, भुल रहे ना राईआ। आपणी अंस आप उपजाया,

सरबंस वेख वखाईआ। एका नारी कन्त हंढाया, एका घर वज्जी वधाईआ। एका माई गोद बहाया, एका वेखे चाँईं चाँईंआ। एका रंगण आप रंगाया, रंग रंगे बेपरवाहीआ। इक्क मृदंग दए सुणाया, नाउँ निरँकारा आप अल्हाईआ। इक्क पलँघ दए विछाया, सेज सुहञ्जणी आप सुहाईआ। एका पन्ध दए मुकाया, आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, इक्क ज्ञान दृढ़ाईआ। आदि पुरख हरि ज्ञान दृढ़ाया, विष्न आप समझाइंदा। तेरा रूप अनूप धराया, हरि साचा खेल खिलाइंदा। ब्रह्मा तेरी रत वखाया, फुल्ल फुलवाड़ी आप महिकाइंदा। शंकर तेरी सेवा लाया, पत डाली तोड़ तुड़ाइंदा। तिन्नां विचोला हरि रघुराया, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख समझाइंदा। आदि पुरख सुणाए हरि, हरि आपणा भेव आप खुल्हाईआ। विष्नूं मंगे सदा दर दर, पुरख अबिनाशी भिच्छया पाईआ। ब्रह्मा नहाउणा चरन कँवल सर सर, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। शंकर मंगे डर डर, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तिन्नां विचोला एका बण, एका रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। आदि पुरख शाह पातशाह, शहिनशाह अख्वाइंदा। आदि आदी बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलाइंदा। विष्न देवे सच सलाह, एका हुक्म अल्हाइंदा। ब्रह्मे देवे एका नाँ, साची वस्त झोली पाइंदा। शंकर वखाए एका थाँ, चरन दुआर सुहाइंदा। तिन्नां बणे पिता मां, बालक गोद खिडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे विच छुपाइंदा। आपणा भेव आप छुपाया, विष्न हरि समझाईआ। तेरी सेवा सच लगाया, वस्त अमोलक दए वड्याईआ। साची गोलक हथ्थ फड़ाया, इक्क भण्डार दए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आप वरताईआ। ब्रह्मे हरि दए सहारा, आपणी बूझ बुझाइंदा। तेरा रूप अपर अपारा, हरि साचा आप प्रगटाइंदा। निरगुण जोती कर उज्यारा, दीआ बाती आप टिकाइंदा। साचे मन्दिर खेल न्यारा, अंदरे अंदर वेख वखाइंदा। वरते वरतावे हरि वरतारा, आपणी धार आप चलाइंदा। तेरा भरे इक्क भण्डारा, अतोट अतुट रखाइंदा। लक्ख चुरासी होए उज्यारा, घड़ भाण्डे डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भाणे सद रखाइंदा। शंकर हरि सच समझाया, भुल रहे ना राईआ। कंठ माला गल पहनाया, बाशक तशका दए लटकाईआ। तन भिबूत इक्क लगाया, जटा जूट जूट वड्याईआ। इक्क त्रिसूल हथ्थ फड़ाया, तिन्नां माण वखाईआ। जो घड़या सो भन्न वखाया, थिर कोए रहिण ना पाईआ। अन्तिम ढोला इक्क सुणाया, आपणा परदा दए चुकाईआ। सो पुरख निरँजण आपणा नाउँ सुणाया, हँ रूप विष्न ब्रह्मा शिव लए उपजाईआ। सोहँ रूप निरगुण सरगुण खेल खिलाया, पंज

तत्त त्रैगुण माटी हाटी ना कोए विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां एका घर वखाईआ। विष्न ब्रह्मे शिव सुणया हरि का राग, दोए चरन सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी घर तेरे आई जाग, नेत्र नैण इक्क खुल्हाया। तेरे दरस रहे वैराग, दूजा दर ना कोए वखाया। तेरी सरन गए लाग, हउँ बालक सेव कमाया। तेरी जोती जगे चिराग़, दीपक दीआ इक्क टिकाया। आपणे विच्चों आपणा नूर आपे काढ, विष्न ब्रह्मा शिव साडा नाउँ धराया। बिन तेरे कवण लडाए लाड, कवण गोदी लए बहाया। कवण देवे साची दाद, कवण नाम झोली पाया। कवण रक्खे सानूं याद, भुल कदे ना जाया। असीं आदि जुगादि करदे रहीए फ़रयाद, तेरे अग्गे सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, धुर मस्तक लेख लिखाया। धुर लेखा लिखणहार निरँकारा, विष्नूं लेखा इक्क समझाइंदा। हरि जू बणया मीत मुरारा, विछड़ कदे ना जाइंदा। पूत सपूता कर उज्यारा, पारब्रह्म ब्रह्म उपजाइंदा। शंकर रक्खे एका धारा, एका तन्द बंधाइंदा। करे खेल अपर अपारा, पारब्रह्म भेव ना आइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, हुक्मी हुक्म खेल खिलाइंदा। आपे वरते सभ तों बाहरा, रूप रेख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणी करनी करे करतार, खेले खेल सहिज सुखदाईआ। विष्नूं तेरा सच प्यार, भुल कदे ना जाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म दए आधार, आप आपणे अंग लगाईआ। शंकर बख्शे चरन सहार, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। तिन्नां विचोला रहे निरँकार, आदि जुगादि वेख वखाईआ। परदा खोल्हा इक्क दरबार, थिर घर साचे वज्जे वधाईआ। सचखण्ड वसे आप निरँकार, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल एका हरि, एका एक एक टेक समझाईआ। एका टेक श्री भगवाना, हरि साची सच जणाइंदा। आपणा लिख धुर फ़रमाना, हरि आपे आप वखाइंदा। आपे देवणहारा दाना, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। आपणे दर कर परवाना, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आप बन्ने साचा गाना, हरि साचा सगन मनाइंदा। आपे बणे साचा कान्हा, आपे सखीआं वेख वखाइंदा। आपे वरते आपणा भाणा, सद भाणे आप समाइंदा। आपे बणे साचा राणा, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, एका दर वखाइंदा। एका दर धुर दरबारा, हरि साचा सच समझाया। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, आदि पुरख आप कराया। आपे वसे धाम न्यारा, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्याआ। थिर घर साचे हो उज्यारा, ठांडा दरबारा आप सुहाया। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यारा, आपणी सिख्या इक्क सिखाया। सोहँ सच सच जैकारा, तेरा मेरा मेरा तेरा रूप धराया। निरगुण निरगुण करे प्यारा, निरगुण निरगुण मेल

मिलाया। खेले खेल विच संसारा, त्रै त्रै लेखा इक्क बणाया। पंज तत्त वरते वरतारा, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश जोड़ जुड़ाया। लक्ख चुरासी भरे भण्डारा, वड भण्डारी दया कमाया। एका नाम बोल जैकारा, शब्द शब्दी नाद दए सुणाया। निःअक्खर कर विचारा, साचा अक्खर दए बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका दर दए समझाया । दर दुआर हरि समझाइंदा, कर किरपा गुण निधान। विष्न तेरी सेवा लाइंदा, ब्रह्मण्ड खण्ड लोअ पुरी कर प्रधान। ब्रह्मे तेरी वण्ड वंडाइंदा, लक्ख चुरासी इक्क निशान। पंज तत्त भाण्डा आप घड़ाइंदा, त्रैगुण माया बन्ने गान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल श्री भगवान। श्री भगवान खेल खिलाइंदा, धुरदरगाही एकँकार। लक्ख चुरासी रचन रचाइंदा, ब्रह्मा वेता कर प्यार। आपणा हुक्म आप जणाइंदा, चारे मुख वेद चार। चार जुग वण्ड वंडाइंदा, चारे खाणी दए आधार। चारे बाणी भेव खुल्हाइंदा, चार वरनां पावे सार। चारों कुण्ट वेख वखाइंदा, चार यारी दए आधार। अन्तिम सिख्या इक्क समझाइंदा, नौ दुआरे जगत किवाड़। नौ खण्ड पृथ्मी वण्ड वंडाइंदा, चार जुग करे खेल करतार। नव नौ गेड़ा आप दवाइंदा, चार चार करे ख्वार। रूप अनूप आप दरसाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यार। निरगुण सरगुण धार वखाइंदा, भगत भगवन्त कर उज्यार। साध सन्त मेल मिलाइंदा, एका बख्शे चरन प्यार। गुरमुख गुर गुर रंग रंगाइंदा, गुरसिख मेले साचे दरबार। गुर पीर रूप वटाइंदा, रूप अनूप सच्ची सरकार। जगत गेड़ा आप चलाइंदा, आपे गेड़े गेड़नहार। जगत खेड़ा आप वसाइंदा, चौदां लोक वेख विचार। चार जुग वण्ड वंडाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग दए आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख देवे वर, विष्न ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदार। विष्न ब्रह्मे शिव जणाया, धुर फ़रमाना हरि रघुराईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग सेवा लाया, सेवादार भुल ना जाईआ। गुर पीर अवतार साध सन्त भगत भगवन्त जुगा जुगन्तर वेस वटाया, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। लोकमात बहु बिध भांत पुरख अकाल दीन दयाल आपणा नाउँ लए जपाया, साचा भेव ना किसे खुल्हाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त रसना कह कह जस गाया, आत्म अन्तर ध्यान लगाईआ। लक्ख चुरासी जून विष्नूं तेरा रूप धराया, घट घट तेरी वण्ड वंडाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म दरसाया, आत्म जोती नूर रुशनाईआ। पंज तत्त शंकर बन्द कराया, जेरज अंडज उत्भुज सेत्ज आप समाईआ। आपणी वण्ड आपणे हथ्थ रखाया, आदि पुरख अबिनाशा विष्न ब्रह्मा शिव करे तमाशा, त्रैगुण मंडल रास रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। हरि साचा भेव खुल्हाइंदा, शब्द अनादी बोल। विष्नूं सीस झुकाइंदा, पुरख अबिनाशी कवण कंडे तोले तोल। ब्रह्मा एका मंग मंगाइंदा,

कवण रूप बख्शें नाभ कँवल। शंकर रो रो नीर वहाइंदा, कवण रूप वड्याई देवें उप्पर धवल। पुरख अबिनाशी आप सुणाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, जोत सरूपी आपे मवल। नव नौ बेड़ा पार कराउणा, चार जुग रहिण ना पाईआ। गुर पीर अवतार साध सन्त सभ राह तकाउणा, पुरख अकाल ध्यान लगाईआ। कलिजुग वेला अन्त सुहाउणा, निरगुण निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निहकलंक नाउँ रखाउणा, विष्नूं भुल कदे ना जाईआ। तेरा मेला मेल मिलाउणा, तेरी रचना आप वखाईआ। ब्रह्मे पारब्रह्म दरस कराउणा, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। शंकर तेरा भार उठाउणा, जगत जगदीश वडी वड्याईआ। तिन्नां विचोला आप अख्वाउणा, अन्त खेल करे बेपरवाहीआ। आपणा नाउँ फेर प्रगटाउणा, सति जैकारा एका लाईआ। सोहँ ढोला हरि जू हरि हरि आपे गाउणा, दूसर कोए ना दए वड्याईआ। शंकर तेरा पन्ध मुकाउणा, अन्त अन्त जोत मिलाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म लोक तजाउणा, पारब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। विष्नूं उँगली ला ला नाल फिराउणा, दिस किसे ना आईआ। भगवान भगवन आपणी जोत जगाउणा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। एका डंका शब्द वजाउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड गगन पाताल पृथ्मी आकाश सुणे सर्ब लोकाईआ। तिन्नां उठ उठ राह तकाउणा, प्रभ साचा जाग खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ दए समझाईआ। आपणा नाउँ हरि समझाए, वेला अन्तिम आप दरसाइंदा। सोहँ शब्द हरि साचा उपजाए, ना कोई मेट मिटाइंदा। सोहँ रूप निरगुण सरगुण खेल खिलाए, आदि जुगादि आपणी रचना आप रचाइंदा। महाराज निरगुण आपणा ख़िताब वड्याए, शेर सिँघ सरगुण वेस वटाइंदा। अन्तिम ख़ाकी ख़ाक समाए, विष्नूं तेरा मेला मेल मिलाए, आपणी धारा आप चलाइंदा। विष्नूं रूप साकार हरि रघुराय, भगवन भगवान जोती जोत रुशनाए, रूप रेख ना कोए वखाइंदा। तिन्नां लोकां तिन्नां धारा तिन्नां सिक्दारा इक्क वखाए, विष्न ब्रह्मा शिव सीस हत्थ टिकाइंदा। आपणा नाअरा आप सुणाए, वेद कतेब भेव ना पाइंदा। कोटन कोटि अवतार दर दुआर बैठे सीस झुकाए, निउँ निउँ चरन ध्यान सर्ब लगाइंदा। कोटन कोटि गुरु गुर मंगण भिच्छया जाए, पुरख अबिनाशी वड भण्डारी आप वरताइंदा। कोटन कोटि साध सन्त रहे बिल्लाए, नेत्र नीर सर्ब वहाइंदा। कोटन कोटि भगत भगवन्त राह तक्कण जाए, अद्धविचकार सर्ब डुबाइंदा। कोटन कोटि ईसा मूसा संग मुहम्मद ख़ाकी ख़ाक रमाए, ख़ालक नज़र किसे ना आइंदा। कोटन कोटि जुग बीते काल, कोटन कोटि ब्रह्मा शिव विष्न बणे कंगाल, कोटन कोटि भरम भुलाइंदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट आप होए दीन दयाल, मंगण दर किसे ना जाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग ब्रह्मा विष्न शिव अवतार गुर पीर पैग़म्बर साध सन्त औलीए पीर शेख़ करदा आया प्रितपाल, प्रितपालक आपणा नाउँ रखाइंदा। कलिजुग अन्तिम

अन्त श्री भगवन्त नर नरायण साचा कन्त बण के आया एका मंगत, लक्ख चुरसी विच्चों लभ्भी मुठी संगत, दूसर दिस किसे ना आइंदा। विष्नूं तेरा भण्डारा गुरसिख दुआरा नौ दुआर चढ़ी रंगत, तृष्ना भुक्ख ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आपणी खेल खिलाइंदा। अन्तिम खेल खिलावणहारा, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। विष्न भण्डारा देवणहारा, विश्व रूप धराईआ। ब्रह्मे ब्रह्म उपजावणहारा, ब्रह्म आपणे लेखे पाईआ। शंकर जगत सँघारनहारा, शंकर संसा दए चुकाईआ। तिन्नां विचोला बण निरँकारा, पिछला लेखा दए मुकाईआ। अग्गे करे आपणी कारा, प्रभ पूरे हथ्थ वड्याईआ। थिर ना रहे कोई दरबारा, जो उपजे सो बिनसाईआ। कलिजुग मेटे धूंआँधारा, रैण अन्धेरी रहे ना छाहीआ। सतिजुग वरते सच वरतारा, सतिगुर पूरा दए वरताईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, गुर शब्द दए ग्वाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव तेरा लहिणा लहणे पाईआ। तिन्नां लहिणा लहणे पैणा, लहणेदार आप हो जाइंदा। आपणे घर आपे बहणा, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। तिन्नां लोचण एका नैणा, नैनण नैण आप खुल्हाइंदा। तिन्नां मेला साचे सैणा, साक सज्जण दया कमाइंदा। तिन्नां मन्नया एका कहिणा, एका हुक्म सुणाइंदा। सोहँ शब्द हरि का रूप आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद लोक परलोक ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीस सुरपति राजा इंद गण गंधर्ब लक्ख चुरासी भूत प्रेत सभ ने कहिणा, हरि साचा दए जणाईआ। राए धर्म उठ उठ रसना कूक राह तक्के हरि साचे सज्जण सैणा, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। लाड़ी मौत उठे डैणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव तेरा पूरा करे वर, कीता कौल भुल ना जाईआ। कीता कौल निभावण आया, आदि पुरख वड वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, निहकलंक साचा माहीआ। रूप रंग ना रेख बणाया, पंज तत्त ना कोए दसाईआ। औंदा जांदा दिस ना आया, फिर फिर थक्के पान्धी राहीआ। शरअ मज़्हब ना किसे बन्द कराया, चार वरन अठारां बरन नाता जोड़ ना कोए वखाईआ। आपणी करनी करता आपे करन आया, कलिजुग काल संग रलाईआ। दीन दयाल साची तरनी आपे तरन आया, गुरमुख साचे लए तराईआ। आदि विछड़े कलिजुग अन्त विष्न ब्रह्मा शिव फड़न आया, जो सेवक सेव लगाईआ। निरगुण रूप सरगुण नाल लड़न आया, निरवैर भेव ना राईआ। विष्न शिव ब्रह्मा तेरे मन्दिर आपे चढ़न आया, आपणा पौड़ा आपे लाईआ। गुरसिखां दुआरे खड़्हन आया, ख़ालक आपणा रूप वटाईआ। गुरसिखां दा नाउँ आप पढ़न आया, आपणा नाउँ गुरसिखां अंदर आप टिकाईआ। गुरसिखां मस्तक मेख जड़न आया, बिधना रेख दए मिटाईआ। गुरसिखां दी तरनी आप तरन आया, रातीं सुत्तयां सेव कमाईआ। गुरसिखां दी चरनी आप पढ़न आया,

आपणे चरन अग्नी विच जलाईआ। करता पुरख आपणी करनी करन आया, कर कर के सच्ची धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ना मरे ना जाईआ।

★ बिशन दास जलन्धर वाले दे नवित ★

बिशन दास संग विष्न समाया। श्री भगवान सिर हथ्थ रखाया। आवण जावण गेड़ कटाया। राय धर्म ना दई सज़ाया। चित्रगुप्त ना लेख वखाया। लाड़ी मौत ना अन्त प्रनाया। अमृत वेला गुर अमर कराया। मन का मणका प्रभ आप फिराया। रसना जिहवा हरि हरि गाया। नर नरायण होए सहाईआ। आप तरया कुटम्ब तराया। मात पित कुख सफल कराया। जगत मिटया दुक्ख, घर साचा पाया। लेखे लग्गा उलटा रुक्ख, माणस देव देव निहकेव आपणे विच मिलाया। ना सोग ना हरख निरगुण निराकार निरवैर दिता दरस कर तरस, पूर्ब लहिणा झोली पाया। अमृत मेघ एका बरस मिटाई हरस, संसा रोग चुकाया। लेखा चुक्या अर्श फर्श, मुक्ती चरनां हेठ दबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, जन भगतां कढु काया खोट, हिरदे हरि सोहँ आपणा नाम जपाया। बिशन दास सचखण्ड निवास, जोती जोत प्रकाश, पूरी होई आस, जगत सास ग्रास, खाणा पीणा आउणा जाणा रहिणा बहणा सिर भाणा सहिणा, साचा हुक्म मनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, त्रैगुण पेटा पंज तत्त ताणा, आपणी हथ्थीं आपणा अन्तिम काया माटी कीता वाण पुराणा। साथीआं छड्डे साथ, कोई ना लभ्भया साचा हाणा। पुरख अबिनाशी आप सुणाई आपणी गाथ, सोहँ शब्द साचा गाणा। अन्त मुकाई जगत वाट, जन्म जन्म दा पूरा करया घाट, पलँघ रंगीला छैल छबीला लै के आया त्रिलोकी नाथ, नाथ अनाथां लए चढ़ाया। अन्तिम कीता आपणा हीला, हरि भगत मिलाया। गुरसिख कबीला, घर मन्दिर वज्जे वधाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत कुटम्ब देवे दान, पुत्तर धी भाई भैण साक सज्जण नेत्र नीर ना कोए वहाया।

★ २५ पोह २०१७ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

इक सत्त जाए बीत, कोटन कोटि काल रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल चले आपणी रीत, इक्क अतीत सच्चा शहिनशाहीआ। शब्द अगम्मी बोल गीत, गुण गोबिन्द आप सुणाईआ। निरगुण निरवैर होए ठांडा सीत, सीतल धार विच समाईआ। आदि

जुगादी पतित पुनीत, पतित पावण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल दीन दयाल, आपणी कार आप कराईआ। आपणी कार करावण आया, इक्क सत पार कराइंदा। सति सतिवादी भेव ना राया, रूप अनूप ना कोए दरसाइंदा। निरगुण निरगुण नाउँ धराया, निरवैर आपणा बल रखाइंदा। कोटन कोटि काल आपणे विच समाया, नेत्र नैण ना कोए दरसाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अगम्मड़ी खेल खिलाया, लेखा लेख ना कोए लिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल एका हरि, हरि आपणा वेस वटाया। वेस वटाया हरि भगवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आदि जुगादी खेल महान, जुग करता आप कराईआ। सच सिँघासण बैठ श्री भगवान, अगम्म अथाह करे खेल बेपरवाहीआ। शाहो भूप बण सुल्तान, सच सुल्ताना सच्चा शहिनशाहीआ। देवणहारा धुर फ़रमान, जुगा जुगन्तर हुक्म चलाईआ। गुर अवतार बख्शे इक्क ध्यान, दर दरबान इक्क दसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल एका हरि, आपणी धार आप बंधाईआ। साची धार बंधाइंदा, आदि जुगादी कार। नव नौ चार गेड़ा आप दवाइंदा, चार नौ उतरे पार। रूप अनूप आप धराइंदा, सति सरूप परवरदिगार। चारे कूट वेख वखाइंदा, दहि दिशा खोल्ह किवाड़। एका चोट नगारे लाइंदा, उच्ची कूक कर पुकार। निरगुण जोत आप जगाइंदा, तत्व तत्त ना कोए प्यार। आपणा घाड़न आपे वेख वखाइंदा, आपे होए भन्नणहार। आपणे रंग आप समाइंदा, रंग रंगीला एकँकार। एका सति आप उपाइंदा, आपे रक्खे धुर दरबार। आपणा हुक्म आप जणाइंदा। करे खेल आप करतार। कलिजुग आपणी वण्ड वंडाइंदा, वण्डणहार विच संसार। लहिणा देणा झोली पाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर गए हार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, पुरख अकाल आपणा नाउँ धराइंदा। पुरख अकाल नाउँ करतारा, निरगुण आपणी धार चलाईआ। करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर बेपरवाहीआ। जीव जंत ना पावे सारा, साध सन्त भेव ना राईआ। गुर अवतार बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह गए विच संसारा, लेखा लेख ना कोए लिखाईआ। आपे जाणे आपणी कारा, जुग करता आप कराईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जोती नूर नूर उज्यारा, नूर नुराना सच्चा शहिनशाहीआ। सुत रलाया शब्द दुलारा, गोबिन्द आपणे अंग समाईआ। अमृत प्याया ठंडा ठारा, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल एका हरि, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। इक्क इकल्ला पुरख अकाला, आपणी खेल खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल निराला, वेद कतेब भेव ना आइंदा। फल लगाए आपणा डाला, फुल्ल फुलवाड़ी वेख वखाइंदा। सचखण्ड बैठ सच्ची धर्मसाला, दर घर साचे सोभा पाइंदा। दर दुरकाए काल महाकाला, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल एका नर, नर नरायण आपणा नाउँ धराइंदा। नर नरायण हरि करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। नूरो नूर नूर कर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। आपे जाणे आपणी कारा, करता पुरख आप कमाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल करे विच संसारा, दिस किसे ना आईआ। इक्क सत्त उतरे पार किनारा, मँझधार ना कोए वखाईआ। सम्मत सम्मती पावे सारा, भेव अभेदा भेव खुलाईआ। लेखा जाणे थित वारा, बरस मास आपणे विच टिकाईआ। वदी सुदी ना कोए धारा, सूरज चन्न नैण शरमाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, पुरख अकाल आप कराईआ। गोबिन्द मेला सुत दुलारा, जगत विछोड़ा ना कोए वखाईआ। इक्क सत्त करे प्यारा, सम्मत सतारां दए ग्वाहीआ। साल सतारां पार किनारा, सति सतिवादी आप वखाईआ। छब्बी पोह दिवस दिहाढ़ा, लोकमात वेख वखाईआ। एकँकारा आवे साचा लाड़ा, छैल छबीला साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। हरि हरि भेव जणाइंदा, शब्द निष्अक्खर बोल। चार जुग चार वरन चार वेद चार बाणी चार खाणी आपणे विच छुपाइंदा, दूसर तोले ना कोए तोल। अगम्म अगम्मड़ा शब्द नगारा एका ढोल वजाइंदा, आदि जुगादी रक्खे आपणे कोल। चार यारी चार कहार चार चार मूल मुकाइंदा, लक्ख चुरासी जंत वरोल। पंचम पंच मुख सालांहयदा, नाम देवे नाम अनमोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल देवे वर आपणी जोत आपे मौल। देवणहारा वर करतार, पंच प्यारे पंच जणाईआ। छब्बी पोह चुक्के डर, पूर्ब लहिणा लेखे लाईआ। आपणी किरपा देवे कर, गुरमुख रत्ती रंग रंगाईआ। आपणे सिँघासण पुरख अबिनाशण आपे चढ़, दो जहानां वेख वखाईआ। गुरसिखां लड़ लए फड़, सृष्ट सबाई दए भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहारा इक्क समझाईआ। छब्बी पोह विहार कराउणा, भुल रहे ना राईआ। पंजां प्यारयां हुक्म सुनाउणा, पीले बस्त्र तन छुहाईआ। कमरकसा इक्क कराउणा, नौ खण्ड पृथमी गंढु पवाईआ। गुरसिखां रत ब्रह्म मति एका तत्त आपणे मस्तक लाउणा, सीस जगदीश वडी वड्याईआ। कलिजुग कूड़ कुपत्त मनमुखां झोली पाउणा, चारों कुण्ट कुण्ट दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा सगन आप मनाईआ। हरि साचे सगन मनावणा, थित वार ना कोए विचार। पंजां प्यारयां इक्क इक्क कतरा आपणा ख़ून इक्क प्याले पावणा, दूजा दर ना कोए सहार। नौ दस वक्त सुहावणा, पुरख अबिनाशी लए विचार। हस्स हस्स आपणे मस्तक लावणा, लाल गुलाला रंग चढ़े अपार। कलिजुग जीव ख़ाकी ख़ाक मिलावणा, अश्व हो आप अस्वार। गुरसिख तेरी रत एका तत्त साचा खण्डा हथ्थ चमकावणा, जगत जुग झल्ले ना कोए वार। तेरी पति आपणे सीस रखावणा, आपे

निउँ निउँ करे निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पूर्ब लेखा रिहा विचार। पूर्ब लेखा चुकणा, पुरख अकाल चुकाए। गोबिन्द सूरा उठणा, आपणा लेखा आपणे लेखे लए लगाए। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, ना कोई मेटे मेट मिटाए। सिँघ शेर नौ सौ चरानवें चौकड़ी जुग दा भुक्खा एका वार बुक्कणा, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड आपणे मुख विच पाए। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप शाह सुल्तानां घर रातीं सुत्तयां जा जा ढुकणा, गुरमुख जांञी नाल रलाए। नौ सौ नड़िनवे धरत मात आपणी गोद सुहाए कुक्खना, सुरत सुवाणी लए प्रनाए। गुरसिखां भार आप चुक्कणा, गुरसिख हौले भार रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा तिलक एका मस्तक लाए।

★ २६ पोह २०१७ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

आदि पुरख अगम्म अथाह, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल नाउँ धरा, अजूनी रहत खेल खिलाईआ। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, हरि पुरख निरँजण रूप वटाईआ। एकँकारा वेस वटा, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। श्री भगवान भेव ना रा, अबिनाशी करता धार चलाईआ। पारब्रह्म आप आपणा आप प्रगटा, अलख अलखणा खेल खिलाईआ। आपणी इच्छया आप फुरा, आपणी बणत आप बणाईआ। आपणा मन्दिर आप उपा, सचखण्ड दुआरा नाउँ धराईआ। आपणी जोत आप जगा, निरगुण निराकार करे रुशनाईआ। आपणा खेल आप खिला, वेखणहार आप हो जाईआ। आपणा हुक्म आप वरता, आपे उच्ची कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आपणा नाउँ रखाईआ। आदि पुरख हरि खेल अपारा, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यारा, हरि पुरख निरँजण मेल मिलाइंदा। एकँकारा बण भतारा, आदि निरँजण जोत प्रनाइंदा। अबिनाशी करता सच दुआरा, श्री भगवान आप सुहाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो त्यारा, सचखण्ड दुआरे आसण लाइंदा। सच सिँघासण खेल अपारा, निराकारा आप कराइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, शाह सुल्तान नाउँ धराइंदा। आपणी करनी करे कारा, करता पुरख खेल खिलाइंदा। घाड़न घड़े अगम्म अपारा, दूसर संग ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आप बंधाइंदा। साची धार हरि निरँकार, आदि पुरख आप बंधाईआ। आपणी इच्छया कर वरतार, आपे वेखे सच्चा शहिनशाहीआ। आपणे मन्दिर हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। आपणे तख्त बैठ सच्ची सरकार, राज राजान आप अख्वाईआ। आपणा हुक्म वरते वड मेहरवान, इक्क

इकल्ला एका मार्ग आप लगाईआ। सच महल्ला खोल्ह किवाड़, सचखण्ड दुआरे दए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। आदि पुरख हरि रचना रच, आपणी खेल आप खिलाइंदा। आपणा रूप धरया सच्च, दूसर रूप ना कोए वखाइंदा। आपणे मन्दिर आपे वस, आपणा संग आप निभाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा आपणा वेखे आप तमाशा, वेखणहार दिस ना आइंदा। आदि पुरख हरि बेअन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सो पुरख निरँजण खेले खेल नारी कन्त, हरि पुरख निरँजण सेज सुहाईआ। एकँकारा मंगे मंगत, आदि निरँजण झोली डाहीआ। अबिनाशी करता आप लगाए आपणे अंगत, श्री भगवान मेला सहिज सुभाईआ। पारब्रह्म आपे जाणे आपणी मन्नत, दूसर इष्ट ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख अवतारा, करे खेल अगम्म अपारा, जोती नूर नूर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। आदि पुरख प्रभ हो त्यार, आपणी कल आप वरताइंदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़, आपणी इच्छया इच्छया विच समाइंदा। साचे तख्त बैठ हरि निरँकार, निरगुण आपणा रूप आप वखाइंदा। आपे होए वेखणहार, नेत्र लोचण नैण ना कोए खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, दर घर साचे सोभा पाइंदा। दर घर सच सुहाया, कर किरपा गुण निधान। निरगुण आपणा आसण लाया, रूप रंग रेख ना कोए निशान। जोती जोत जोत डगमगाया, आपे जाणे आपणी जाण पछाण। साचे तख्त आप सुहाया, देवणहारा धुर फ़रमान। आपणा राग आप अल्हाया, आपे बोल सच धुन्कान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आपे रिहा सुणाया। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, तख्त निवासी आप सुणाइंदा। आपे जाणे आपणा भाणा, आपणे भाणे सद समाइंदा। आपणा खेल करे महाना, खेलणहारा आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा वेस आप वटाइंदा। वेस अवल्लड़ा एकँकारा, आपणा आप धराईआ। आपणी बन्न्हे आपे धारा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। करे खेल अपर अपारा, खेलणहारा बेपरवाहीआ। रूप अनूप सच्ची सरकारा, आपणा आप आप प्रगटाईआ। आपणा चरन वखाए थिर घर दुआरा, घर घर विच वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर अंदर आपे वड़, आपणा रूप आप प्रगटाईआ। थिर घर अंदर हरि हरि वड़या, लेखा लेख ना कोए जणाइंदा। आपणी सेजा आपे चढ़या, नारी कन्त रूप वटाइंदा। आपणा घाड़ण आपे घड़या, घाड़णहार ना कोए अख्वाइंदा। आपणी करनी आपे करया, करनी किरत आप कमाइंदा। आपणे अंदर आपा धरया, आप आपणा मेल मिलाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे आपे वड़, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। थिर घर हरि हरि आदिन अन्ता, निरगुण आपणी धार आप चलाइंदा। खेले खेल अबिनाशी करता, अबिनाशी करता वेख वखाइंदा। आपणी करे पूरी आसा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। आपे होए दासी दासा, दाई दाया आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे मेल मिलाइंदा। थिर घर साचा हरि सुहाया, सुहावणहार इक्क अख्वाइंदा। सरगुण अंदर निरगुण आप टिकाया, निरगुण मात पित बण जाइंदा। निरगुण दाई दाया नाउँ धराया, निरगुण वेला वक्त ना कोए जणाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण बाहर, निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहर, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दुआरे आपे खड़, आपणा चरन आप टिकाइंदा। साचा चरन सचखण्ड, हरि साचा आप उठाइंदा। थिर घर वण्डे तेरी वण्ड, वण्डणहारा आप अख्वाइंदा। आपे जाणे आपणा परमानंद, अनन्द अनन्द आपणा मंगल आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे बह आपणा खेल आप खिलाइंदा। हरि साचा खेल खिलाया, थिर घर खोल्ह किवाड़। नारी कन्त आप अख्वाया, पुरख अबिनाशी बेऐब परवरदिगार। साची सेज आप सुहाया, मेल मिलावा अपर अपार। जनणी जन आप बण जाया, दाई दाया बण आप निरँकार। शब्द दुलारा एका जाया, नाउँ रखाया नाउँ निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धार। मात पिता आपे बण, आपणी दया कमाइंदा। आपे होए जननी जन, जन जननी वेख वखाइंदा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपणे कंध उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे घाड़ण घड़, घड़णहार आप हो जाइंदा। साचा घाड़न थिर दुआरे, हरि साचा सच घड़ाइंदा। एका जणया सुत दुलारे, पूत सपूता नाउँ रखाइंदा। रूप रंग रेख ना कोए विचारे, ज़ात पात ना कोए बणाइंदा। शब्द अगम्मी एका नाउँ विचारे, दूसर धार ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे एका हरि, सुत दुलारा आपे फड़, आप आपणा मेल मिलाइंदा। सुत दुलार शब्द अपार, थिर घर दुआर सुहाईआ। करे खेल आप निरँकार, निरवैर नाउँ धराईआ। सो पुरख निरँजण हो उज्यार, हरि पुरख निरँजण दए सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण दए समझाईआ। निरगुण मात पित सुत जाया, शब्द शब्दी कर प्यार। निरगुण जननी गोद बहाया, निरगुण वेखे विगसे करे वीचार। निरगुण आपणा धीर धरवास धराया, निरगुण निरगुण करे सच विहार। निरगुण आप बणाया, आप आपा उत्तों वार। निरगुण जगत जगदीश अख्वाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कार। सुत

दुलार बालक अमुला, पुरख अबिनाशी आप उठाइंदा। भाग लगाए आपणी कुला, कुल कुलवन्ता नाउँ धराइंदा। साचे तोल एका तुला, तोलणहार आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत कर प्यार, थिर घर साचे दए वाड़, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। सचखण्ड आसण हरि निरँकार, अचरज खेल खिलाईआ। थिर घर साचा खोलृ किवाड़, हरि शब्द दए वड्याईआ। सेवा लाए सुत दुलार, हुक्मी हुक्म जणाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह आपे जाणे आपणी कार, करनी करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत मंगे वर, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। शब्द सुत हो त्यार, एका एक लए अंगड़ाईआ। मात पिता वेखे हरि निरँकार, दूसर अवर ना कोए दिसाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कार, निउँ निउँ जगदीश सीस झुकाईआ। हउँ बालक सेवा सेवादार, साची सेव कमाईआ। तूं बख्शणहारा शाह पातशाह शहिनशाह सच्चा सिक्दार, राज राजान आप अख्वाईआ। हउँ दर दरवेश बण मंगां दर दुआर, भिखक भिच्छया झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तूं मात तूं पिता तूं ही सच्ची माईआ। पुरख अकाल दया कमाइंदा, सुत दुलारा गोद बहा। सो पुरख निरँजण वेख वखाइंदा, आप आपणा परदा लाह। हरि पुरख निरँजण मेल मिलाइंदा, मेल मिलावा सहिज सुभा। एकँकारा अंग समाइंदा, अंगीकार आप अख्वा। आदि निरँजण नूर धराइंदा, जोती रूप कर रुशना। श्री भगवान संग निभाइंदा, सगला संग आप रखा। अबिनाशी करता सिर हथ्थ टिकाइंदा, शहिनशाह सच्चा पातशाह। पारब्रह्म आपणे मार्ग आपे लाइंदा, आपे देवे सति सलाह। तेरा नाउँ आपणे विच टिकाइंदा, आप आपा विच समा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आदि जुगादि होए सहा। साचा वर हरि करतार, शब्द सुत दए जणाईआ। आदि जुगादि तेरा रहे प्यार, तुट ना जाए राईआ। सिर हथ्थ रक्खे समरथ करतार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। मेरी वथ तेरी धार, तेरी धार सर्ब समाईआ। सगल वसूरे जायण लथ, पिता पूत मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, अभुल्ल भुल कदे ना जाईआ। शब्द सुत उपाया, घर घर विच ख़ुशी मनाइंदा। थिर घर साचे कर रुशनाया, आपणा नूर नूर चमकाइंदा। सचखण्ड दुआरा राह तकाया, नेत्र नैण उठाइंदा। दोए जोड़ सीस झुकाया, सच सिँघासण वेख वखाइंदा। पुरख अबिनाशी आसण लाया, सीस ताज इक्क टिकाइंदा। पंचम पंचम मुख वखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। आप आपणा खेल खिलावणहारा, सीस ताज इक्क दरसाईआ। पंचम मुख हो उज्यारा, निरगुण निरगुण निरगुण रूप वटाईआ। निरगुण सुत शब्द दुलारा, निरगुण पिता निरगुण माईआ।

निरगुण मन्दिर घर दरबारा, निरगुण बैठा आसण लाईआ। निरगुण आपे खोल्ह किवाड़ा, निरगुण बैठा मुख छुपाईआ। निरगुण साचा ताज रक्ख सीस, निरँकार निरवैर आपणी खेल खिलाईआ। पंचम मुख दए सहार, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराईआ। पहला मुख दए सहार, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हँ रूप कर करतार, शब्द सुत ल्ए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। लेखा हरि समझाइंदा, सुत दुलारे पकड़ उठा। पंचम मुख आप खुल्हाइंदा, अगम्म अगम्मड़ा बेपरवाह। आपणा रूप आप दरसाइंदा, जोती जोत जोत रुशना। आपणा हुक्म आप सुणाइंदा, नाद अनादी नाद वजा। दूजा मुख तेरी कुक्ख पाइंदा, सुत दुलारे सच्चा शहिनशाह। आदि जुगादी वेख वखाइंदा, मुख उज्जल आप करा। लुक लुक आपणा वक्त लँघाइंदा, तेरा नाउँ करे रुशना। तेरा पलँघ रंगीला इक्क विछाइंदा, हरि थिर घर साचे दए डाह। पावा चूल ना कोए बणाइंदा, बाढी बणया बेपरवाह। सच प्रेम नाल उणाइंदा, सेवा करे सच्चा शाह। आदि जुगादि विछड़ ना जाइंदा, मेल विछोड़ा कोई जाणे ना। एका आपणे रंग रंगाइंदा, आपणे अंगण ल्ए बहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका शब्द दए समझा। शब्द सुत हरि समझाया, कर किरपा गुण निधान। सुत दुलारे तेरी साची सेवा लाया, पंचम मुख इक्क निशान। चौथा तेरा घर वसाया, बैठा रहे दर दरबान। तेरा मन्दिर दए सुहाया, हरि होए निगहबान। आपे वेखे आपे जाणे आपणा नाँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त दए झोली पा। साची वस्त हरि झोली पाइंदा, आपणी इच्छया भर भण्डार। पहला आपणा मुख सालांहयदा, दूजा शब्द कर त्यार। तीजे आपणा रंग रंगाइंदा, आपणी किरपा करे करतार। रूप अनूप आप धराइंदा, शब्दी शब्द कर पसार, सचखण्ड दुआरा आपणा आप सुहाइंदा, साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार। थिर घर आपे डगमगाइंदा, नूर नुराना एका धार। धार धार विच चलाइंदा, धरनी धर करे प्यार। रक्त बूंद ना कोए वखाइंदा, नारी कन्त ना कोए श्रृंगार। आपणी सेज आप विछाइंदा, पीआ प्रीतम मीत मुरार। आपणा आप आपे बाहर कढाइंदा, आपे वेखे वेखणहार। नूर नूर विच्चों प्रगटाइंदा, नूर नुराना खेल अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तीजा मुख आप प्रगटाईआ। तीजा मुख खेल करतार, हरि साचा आप कराईआ। आपे जाणे आपणी कार, शब्दी शब्द सार रूप वटाईआ। सार शब्द खेल अपार, बिन हरि अवर ना कोए जणाईआ। सार शब्द करे प्यार, प्यार शब्द विच टिकाईआ। बणे विचोला गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। सार शब्द विच्चों विष्नूं कढे बाहर, दाई दाया इक्क अख्वाईआ। तीजा मुख खोल्ह किवाड़, मुख मुख मुख सालाहीआ। आपणी करनी कर अपर अपार, हरि हरि करे

खेल, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अकल कला नाउँ धराईआ। अकल कला हरि नाउँ रक्ख, आपणी धार हरि साचा आप चलाइंदा। शब्द सुत कर कर वक्ख, जोत शब्द विच समाइंदा। विश्व रूप आपे दस्स, निरगुण आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा। विष्नूं अंदर आपे वस, आप आपणी खेल खिलाइंदा। आपे देवे आपणा रस, रस रसीआ आपणा नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख वसे एका घर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। एका घर इक्क दरबार, दर दुआर इक्क सुहाईआ। एका नूर इक्क उज्यार, नूर नुराना एका डगमगाईआ। शब्द सुत इक्क दुलार, एका पिता एका माईआ। एका वस्त इक्क भण्डार, एका रिहा वरताईआ। एका विष्नूं इक्क आकार, निराकार आप कराईआ। एका रस अमृत धार, अमर अमर आप बरसाईआ। एका कँवल इक्क गुलज़ार, एका एक रिहा महिकाईआ। एका नाभी भरे भण्डार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणी रचना आप रचाईआ। एका कँवल एका फुल्ल, एका आपे वेख वखाइंदा। एक करता एका पाए मुल, एका कीमत हरि चुकाइंदा। एका धारन एका बोल, एका बोल सुणाइंदा। एका बैठा रहे अडोल, आदि जुगादि आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख आपणा बंक आप वड्यांअदा। बंक दुआरी आपे हरि हरि, हरि बिन अवर ना कोए रहाइंदा। आपे आपणे घाड़न घड़ घड़, घड़णहार आप हो जाइंदा। आपे आपणी सेजा चढ़ चढ़, साची सेज आप सुहाइंदा। आपे आपणे अंदर वड़ वड़, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। आपे दरस दखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी नाउँ धराइंदा। आपे विष्नूं लगाए आपणे लड़ लड़, एका पल्लू हत्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि करतार। हरि का भेव समझ तों न्यार, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। विष्न अंदर ब्रह्म धार, शब्दी शब्द टिकाईआ। शब्द कँवल शब्द गुलज़ार, शब्द फूल फूल समाईआ। शब्द पंखड़ी आए बाहर, शब्द वेखे साचा शहिनशाहीआ। शब्द रूप अपर अपार, रेख रंग ना कोए जणाईआ। शब्द पिता शब्द माता शब्द बणे सुत दुलार, शब्द विष्नूं घाड़त लए घड़ाईआ। शब्द अमृत शब्द रस शब्द अंदर जाए वस, शब्द शब्द करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे बैठा चढ़, तख्त निवासी एका सच्चा शहिनशाहीआ। शब्द खेल हरि कराइंदा, जननी जन ना कोए। विष्न तेरी गोद सुहाइंदा, कँवल नाभी फुल्ल परोए। आपणी वस्त विच टिकाइंदा, आदि निरँजण करे लोए। आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा, पारब्रह्म आपे जाणे आपणी सोए। आपणा अंग आप कटाइंदा, आपे लै के आया

ढोए। ब्रह्म आपणा नाउँ धराइंदा, आपे अमृत मुख मुख चोए। चौथा मुख आप सालांहयदा, सीस ताज एका सोहे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, थिर घर साचे आपे टोहे। चौथा मुख खेल अवल्ला, हरि साचे सच कराया। ब्रह्मे फड़ाया आपणा पल्ला, पारब्रह्म संग निभाया। करया खेल वल छला, अछल छल धारी नाउँ धराया। आपे वसया निहचल धाम अटल्ला, महल्ल अटल इक्क वसाया। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, अकल कल आपणी लए वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाया। हरि साचा भेव जणाइंदा, आप आपणी किरपा धार। शब्दी शब्द शब्द समझाइंदा, नाद अनादी बोल जैकार। विष्नूं आपणा बंस सुहाइंदा, करे कराए सच प्यार। ब्रह्म सुत आप प्रगटाइंदा, पारब्रह्म दए आधार। पहला मुख आपणा आप खुल्हाइंदा, दूजे शब्द करे प्यार। तीजे विष्नूं गोद बहाइंदा, चौथे ब्रह्मा करे उज्यार। पंजवें आपणा रंग रंगाइंदा, थिर घर विच्चों आए बाहर। सुन अगम्म सर्ब वखाइंदा, एका दिसे धूंआँधार। सूरज चन्द ना कोई चढ़ाइंदा, रवि ससि ना कोए उज्यार। मंडल मण्डप ना कोई वखाइंदा, धरत धवल ना कोई सहार। जल बिम्ब ना रूप प्रगटाइंदा, करे खेल अपर अपार। सुत दुलारा आप हिलाइंदा, इक्क हलूणा देवे मार। आपणा खेल आप कराइंदा, आपणी जोती आपणे अंदर वाड़। लोकमात ना कोई वखाइंदा, जंगल जूह उजाड़ पहाड। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा खोल्हया, निरगुण दाता बेपरवाह। थिर घर शब्द अनादी आपणा बोलया, आपे जाणे आपणा साचा राह। विष्नूं अंदर विश्व धार आपे मौलया, आपे कँवल कँवला लए खिड़ा। आपे ब्रह्मा रक्खे अडोलया, पारब्रह्म सिर हथ्थ टिका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणी रचना आपे जाणे, दूसर सके ना कोए लिखा। दूसर लेखा कोए ना लिखदा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आपणा मार्ग आपे दस्सदा, आपणा शब्द आप उपजाईआ। विष्नूं अंदर आपे वसदा, आपणी करे आप कुड़माईआ। ब्रह्मे अग्गे आपे बह बह हस्सदा, आपे करे सच पढ़ाईआ। आपणा मुख आपे कजदा, आपे परदा रिहा वखाईआ। आपे शब्द हो हो गज्जदा, दूजा दर आप खुल्हाईआ। आपे विष्नूं नाल नाल रहि रहि सजदा, घर साचा सहिज सुखदाईआ। आपे ब्रह्मे घाड़न घड़ साचा मार्ग दस्सदा, साची करे पढ़ाईआ। आपे थिर घर विच्चों बाहर नस्सदा, सुन्न अगम्म समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया ब्रह्मा धर, ब्रह्मा इच्छया आपणे अंदर कर, ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाईआ। ब्रह्मे इच्छया पारबब्रह्म धार, हरि साचा खेल खिलाइंदा। सुन अगम्म कर विचार, धूंआँधार फोल फुलाइंदा। आपणी करनी कर विचार, करता पुरख वेस वटाइंदा। निरगुण निरवैर

निराकार हो त्यार, रूप अनूप आप वखाइंदा। ब्रह्मा पावे ना कोई सार, कवण नारी कन्त प्यार, कवण जननी जन गोद बहाइंदा। आपणी कुक्खों आपे कढ्ढे बाहर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धूंआँधार आपे वड़, सुन अगम्म वेखे खड़, शंकर आपणा खेल खिलाइंदा। शंकर खेल कर करतार, पंचम मुख दए सुहाईआ। निरगुण निरगुण कर प्यार, सरगुण सरगुण विच टिकाईआ। सरगुण सरगुण दए आधार, निरगुण दाता सच्चा शहिनशाहीआ। करे खेल अपर अपार, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख करतार, करे कराए आपणी कार, करनहार आप हो जाईआ। शंकर ब्रह्मा विष्न धार, हरि हरि आप चलाइंदा। शब्द अगम्मी कर प्यार, जोती जोत मिलाइंदा। जोती जोत कर उज्यार, नूरो नूर दरसाइंदा। शब्दी शब्द शब्द जैकार, हुक्मी हुक्म अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, आदि पुरख आपणा खेल खिलाइंदा। आदि पुरख खेल खिलावणहारा, एका रंग समाया। थिर घर खेले खेल अपारा, शब्द शब्दी मेल मिलाया। सचखण्ड दुआरा खोलू किवाड़ा, सच सिंघासण आसण लाया। पंचम मुख सीस दस्तारा, राज राजाना आप सुहाया। शाहो भूप बण सिक्दारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा निशान हरि मेहरबान, दो जहान रिहा वण्डाया। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, शब्दी मेल मिलाया। एका हुक्म हरि निरँकार, धुर फ़रमान जणाया। मेरा नाद सच्ची धुन्कार, आदि जुगादि वजाया। मेरी इच्छया सच भण्डार, सति भण्डार दए वखाया। शब्द तेरी सेवा अपर अपार, हरि निरँकारा दए लगाया। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी रचन रचाया। विष्नूं देवे इक्क आधार, घर घर रिज़क सबाया। ब्रह्मा लेखा लिखे अपार, भेव अभेदा भेव खुलाया। चारों कुण्ट कर विचार, चारे मुख मुख सालाहया। चारे वेद दए आधार, अक्खर अक्खर निष्अक्खर दए प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा तत्त दए समझाया। हरि साचा तत्त समझाइंदा, निरगुण निरगुण निरगुण धार। विष्नूं ब्रह्मा सेवा इक्क वखाइंदा, आदि जुगादि करना इक्क प्यार। ब्रह्मा तेरी वण्ड वंडाइंदा, लक्ख चुरासी कर पसार। शंकर तेरा हिस्सा इक्क रखाइंदा, तेरी तृष्ना मिटे ना विच संसार। जो घड़या भन्न वखाइंदा, थिर रहे ना अन्तिम वार। तिन्नां विचोला आप हो जाइंदा, करे कराए साची कार। नव नौ चार वण्ड वंडाइंदा, चौकड़ जुग खेल अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म करे आप वरतार। ब्रह्मा विष्न शिव सुण फ़रमाना, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। हउँ बालक सुत बाल नादाना, तूं पिता साहिब सच्ची माईआ। तूं बीना तूं दाना, हउँ भुल तूं अभुल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर हथ्थ समरथ

टिकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगण मंग, नेत्र नैण नैण विगसाया। कवण सो वेला चाढ़ें रंग, कवण रूप होए सहाया। कवण शब्द वजाए मृदंग, कवण नाद सुणाया। कवण घर सुहाए पलँघ, कवण सिँघासण आसण लाया। कवण सुत दुलारा उपजे चन्द, कवण गोदी गोद दए सुहाया। कवण धार नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग मुके पन्ध, जुग गेड़ा कवण रखाया। कवण रूप सुणाए सुहागी छन्द, बत्ती दन्द लक्ख चुरासी मात समझाया। कवण रूप सोए दे कर कंड, आपणी करवट ना लए बदलाया। कवण रूप बख्शे आपणा परमानंद, अनन्द अनन्द विच टिकाया। कवण रूप निरगुण तेरे नालों तुट्टी सरगुण रूप विच लएँ गंढु, तन्दी तन्द कवण बंधाया। कवण जवानी कवण बुढेपा कवण बाल अवस्था जाणे पन्ध, कवण जोती लएँ बंधाया। कवण सुहागण कवण नार दिसे रंड, कवण कन्त अंग लगाया। कवण रूप लेखे लाएँ भागण मंद, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग धक्के खाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरा विष्न ब्रह्मा शिव बाल नादाना मंगण आया। बाल नादाना बाली बुध, चरन कँवल सीस झुकाइंदा। आदि जुगादि ना आवे सुध, तेरा भेव ना कोए पाइंदा। कवण रूप अश्व चढ़ें कुद्द, लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची वस्त एका मंगण मंग मंगाइंदा। मंगण आए चल भिखारी, ब्रह्मा विष्न शिव चरन ध्यान लगाया। निरगुण रूप साडी जोत बिन हरि हरि रहे कँवारी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाया। कवण घर मिले अटारी, कवण महल्ल दएँ वसाया। कवण रूप पुरख मिले साची नारी, करता पुरख आपणा नाउँ धराया। कवण रूप नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग उतरे पार वारो वारी, आपणा गेड़ा आप दवाया। कवण रूप लोकमात निरगुण लएँ अवतारी, गुर अवतार आप अख्वाया। कवण रूप लक्ख चुरासी दएँ आधारी, आप आपणा भेव खुल्ाया। कवण रूप सतिजुग लाएँ साची फुलवाड़ी, हरि कवण रूप सिच अमृत हरा कराया। कवण रूप त्रेता बन्ने धारी, त्रैगुण आपणा खेल खिलाया। कवण रूप द्वापर करें फेरी, आप आपणी सेव कमाया। कवण रूप कलिजुग वढ्ढें आपणी हाढ़ी, कवण किरसाण वेस धराया। कवण रूप लेखा जाणे बहत्तर नाड़ी, कवण रूप हड्ड मास चोली सुहाया। कवण रूप लोआं पुरीआं मारें उडारी, कवण रूप ब्रह्मण्ड खण्ड आपणयां चरनां हेठ रखाया। कवण रूप लक्ख चुरासी परखें नर नारी, चारे खाणी फोल फुलाया। कवण रूप बोलें सच जैकारी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी, बाणी आपे गाया। कवण रूप आपे लभ्भें आपणे हाणी, घर घर फेरी पाया। कवण रूप देवें ठंडा पाणी, अमृत ताल इक्क भराया। कवण रूप आपणे भगत सन्त गुरमुख गुरसिख बणाएँ साची सवाणी, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। आपणी दस्से सच निशानी, तेरा निशाना हथ्थ किसे ना आया। ब्रह्मा विष्न शिव तेरे दर आए भुल्ले प्राणी, प्राणपति तूं इक्क रघुराया। मंगण आए

तूं दिसया सच्चा दानी, भिखक भिच्छया झोली कवण दए भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव मिले आया। विष्नूं ना रो, हरि साचा सच समझाइंदा। ब्रह्मे उठ मुखड़ा धो, हरि साचा दया कमाइंदा। शंकर हरि चरन छोह, तेरी धूढ़ दर्द मिटाइंदा। तेरे अंदर वाड़े एका निरगुण सो, सो पुरख निरँजण आपणा खेल खिलाइंदा। हरि पुरख निरँजण करन आए मोह, मोह विकारा सर्ब मिटाइंदा। एका अमृत मुख चो, शब्द प्याला हथ्थ रखाइंदा। आदि निरँजण जोती जोत करे लोअ, दीवा बाती ना कोए जगाइंदा। पुरख अबिनाशी दरस दखाए अग्गे हो, आपणा रूप आपे प्रगटाइंदा। श्री भगवान देवे साचा ढो, ढोआ आपणे हथ्थ रखाइंदा। पारब्रह्म आपणा बीज देवे बो, शब्द बूटा एका लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मे शिव देवे वर, दर आयां आस पुजाइंदा। आसा मनसा पूर करंदड़ा, हरि सच्चा शहिनशाह। विष्नूं आपणी गोद बहंदड़ा, सिर समरथ हथ्थ रखा। ब्रह्मे एका माण वखंदड़ा, चरन कँवल ध्यान लगा। शंकर सेवा सच कमंदड़ा, केसी चरन चवर झुला। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी गेड़ा आपणे हथ्थ रखंदड़ा, निरगुण दाता दए समझा। चार जुग वण्ड वडंदड़ा, जुग चौकड़ी गेड़ा दए गिड़ा। निरगुण सरगुण वेख वखंदड़ा, पंज तत्त चोला लए हंढा। रजो तमो सतो संग साचा संग वखंदड़ा, आप आपणा विच छुपा। आप आपणी धार रखंदड़ा, जोती जोत डगमगा। थिर घर आपणा चरन उठंदड़ा, एका धक्का देवे ला। शब्द शब्दी खेल खिलंदड़ा, आपणी धार सुन अगम्मी विच्चों दए वहा। आप आपणा राह तकंदड़ा, लोकमात बेपरवाह। माणस मानुख आप उठंदड़ा, लक्ख चुरासी विच्चों माण दुआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा हरि, एका अक्खर दए समझा। निष्अक्खर हरि समझाइंदा, शब्दी रूप अगम्म। लिखण पढ़ण विच ना आइंदा, आदि जुगादि करे कराए आपणा कम्म। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे संग समाइंदा, ना कोई तृष्ना ना कोई तम। नव नौ चार खेल खिलाइंदा, आपे बेड़ा देवे बन्न्। लक्ख चुरासी घाड़न आप घड़ाइंदा, आपे होए जननी जन। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मेल मिलाइंदा, आपे देवे आपणा सच्चा नाम धन। सच ख़ज़ीना इक्क भराइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा लेखा आप लिखाइंदा। हरि लेखा लिख्या निरगुण धार, कलम शाही ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपे पढ़े आप निरँकार, दूसर पढ़ण कोए ना जाईआ। जुग जुग खेल करे अगम्म अपार, अलख अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। अवतार गुर भेजे विच संसार, आपणा अक्खर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। मात गर्भों कढ्ढे बाहर, फिर धुन नाद वजाईआ। सुरती खिच्चे शब्द सतार, सतार निराकार विच टिकाईआ। निराकार जाणे आपणी कार, साकार भेव ना

राईआ। आपणा हुक्म देवे धुर फ़रमान, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। लोकमात भगत भगवन्त मंगदे रहिण बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। देवणहार सच्ची सरकार, सीस आपणे पंचम मुखी ताज टिकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बणया रहे वरतार, तोट कदे ना आईआ। कोटन कोटि जुग बीते वारो वार, कोटन कोटि गुर पीर अवतार मुख मुख गए सालाहीआ। कोटन कोटि मंगदे रहे भिखार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। जिस उप्पर होया आप कृपाल, आपणी किरन इक्क इक्क इक्क हिस्सा लोकमात झोली पाईआ। जिस मिल्या बण सच्चा दुलार, तिस पाया साचा माहीआ। ब्रह्मा विष्न शिव जुगो जुग रोवण ज़ारो ज़ार, राह तक्कण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सिँघासण बैठा चढ़ ना कोई सीस ना कोई धड़, ब्रह्मा विष्न शिव बठाए आपणे चरन दुआर, चरन कँवल नाल ना किसे छुहाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव हरि चरन छोह ना सकया, प्रभ बैठा मुख छुपाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पैंडा अजे ना मुक्या, भुल्ले पान्धी राहीआ। कोटन कोटि रूप कर कर कदे ना अक्कया, अमृत देवे सच्चा माहीआ। जिस सुफ़ने अंदर मेरा नाम रस चख्या, सो भगत मिले सच्चे शहिनशाहीआ। तेरा भाणा किसे ना डक्कया, दोए जोड़ जोड़ गए सीस झुकाईआ। आदि जुगादि तूं साहिब सुल्तान कदे ना अक्कया, आपे घड़े आपे भन्ने आपे वेखे जगत लोकाईआ। तेरा खेल जुगा जुगन्तर आपे तक्कया, विष्न आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे विष्न शिव देवे एका वर, अभुल अभुल अभुल आप अख्वाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन फ़रयाद, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। तेरा नाम साडी दाद, आदि जुगादि एका वस्त झोली पाईआ। जुग जुग रक्खीए तैनूं याद, भुल कदे ना जाईआ। कवण सु वेला आपणे गेड़े विच्चों लए काढ, खेवट खेटा बण सच्चा मलाहीआ। कवण सिँघासण लडाए लाड, बाल अंञाणे गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। साचा वर हरि सुणाया, लेखा लेख ना किसे रखाया। विष्नूं अंदर आप टिकाया, ब्रह्मे झोली आपे पाया। शंकर सीस आप टिकाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव आप खुल्हाया। भेव खुल्हावणहार हरि निरँकारा, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। आदि पुरख हो उज्यारा, सचखण्ड खोल्ह इक्क किवाड़ा, थिर घर साचे सोभा पाइंदा। शब्द उठाए इक्क दुलारा, ब्रह्मा विष्न शिव दए आधारा, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जुगा जुगन्तर वरते वरतारा, त्रैगुण माया बणे सहारा, पंचम तत्त मेला मेल मिलाइंदा। लक्ख चुरासी बणे इक्क अखाड़ा, नौ खण्ड पृथ्मी बणे धारा, लोआं पुरीआं वण्ड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग वेस वटाइंदा।

जगत वेस वटावणा, निरगुण सरगुण धार। सतिजुग साचा संग निभावणा, भगत भगवन्त लए आधार। साचे सन्त मेल मिलावणा, साची देवे इक्क गुफ्तार। अनहद साची धुन सुनावणा, ब्रह्म ब्रह्मादी खोल्ह किवाड़। गुर अवतार आपणे रंग रंगावणा, रंग रंगाए बहत्तर नाड़। गुरमुख साची सेज सुहावणा, साचे पौड़े देवे चाढ़। एका घर आप वखावणा, नाता तोड़ नौ दुआर। दस्म दुआरी कुण्डा लाहवणा, निरगुण जोत कर उज्यार। सुरती शब्दी मेल मिलावणा, नारी कन्त करे प्यार। रुत्त बसन्ती इक्क सुहावणा, अठ्ठे पहर रहे गुलज़ार। अमृत मेघ इक्क बरसावणा, बरखणहार ठंडा ठार। बूंद स्वांती इक्क प्यावणा, सांतक सति करे वरतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव देवे वर, आप आपणी किरपा धार। किरपा धारे हरि निरँकारे, हरि साचा सच सुल्तानया। जुग जुग करे खेल अपारे सिरजणहारे, लोकमात होए प्रधानया। निरगुण सरगुण लै अवतारे, बोले शब्द जैकारे, एका नाम करे परवानया। दुष्ट सँघारे हउमे मारे, माया ममता मोह चुकानया। ग़रीब निमाणे दए सहारे, बख्शे चरन कँवल प्यारे, धरत धवल आप वड्यानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, शहिनशाह सच्चा सुल्तानया। शहिनशाह हरि सुल्ताना, तख्त निवासी इक्क अख्वाइंदा। सति सरूपी नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। जुगा जुगन्तर खेल महाना, जगत करता आप कराइंदा। सतिजुग साचे सच निशाना, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। त्रेता तेरी धार महाना, त्रै त्रै मीता आप कराइंदा। दुष्ट हँकारी मारे रावण रामा, पुरख अबिनाशी खेल खिलाइंदा। दो दो लहिणा आप चुकाणा, जगत लोचण वेख वखाइंदा। नैण मुँधारी कँवल मुंधाना, कँवल नैण आप मटकाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, भगवन आपणी कल वरताइंदा। लेखा जाणे धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी बाण आप लगाइंदा। आपणी करे आप कल्याणा, वेखणहार आप हो जाइंदा। आपणा रूप आप प्रगटाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, ब्रह्मा विष्न शिव आप समझाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव उठ कर ध्यान, हरि साचा सच समझाईआ। कोटन कोटि बीतन काल, काल ग्रास इक्क कराईआ। महाकाल खेल निराल, दीन दयाल आप वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। कान्हा कृष्ना बण दलाल, ब्रह्मा विष्न शिव वेख वखाईआ। फल वेखे लक्ख चुरासी लग्गा डाल, पत्त डाहली फोल फुलाईआ। नाल रखाए एका काल, सृष्ट सबाई दाढ़ां हेठ चबाईआ। गुरमुखां देवे नाम सच्चा धन माल, भगत भगवन्त लए मिलाईआ। त्रिलोकी दा बणया रहे दलाल, सचखण्ड सच्चा पातशाह नज़र ना आईआ। अन्तिम होवे हल्ल ना इक्क सवाल, गीता ज्ञान अठारां अध्याए अर्जन गया सुणाईआ। त्रिलोकी करदा रिहा भाल, गऊआं चारे बछड़े बन्न्हे बण बण माहीआ। अन्तिम कूक कूक

धुरदरगाही कर कर पुकार, इक्क आवाज़ गया मार, पुरख अकाल मिले सच्चा शहिनशाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर नव नौ चार बीते विच जहान, कोटन कोटि राम कृष्न गए फेरा पाईआ। तेरा मन्दिर उच्च मकान सच्ची धर्मसाल, धुर दरबारे बैठा आसण लाईआ। जगत जुगत जग सख़ीआं पावे रास, मंडल गया वखाईआ। साचा कान्हा आदि जुगादि जुगा जुगन्तर वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। हरि का धुन नाद शब्द साची बंसरी होवे कदे ना नास, मटी वंञ ना कोए रचन रचाईआ। एका जोत पुरख अबिनाश, जुग जुग गुर पीर अवतार साध सन्त रिहा जोत टिकाईआ। करदा आया पूरी आस, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कोटन कोटि त्रिलोकी रहे साज इक्क ना लग्गे पास, चरन धूढ़ी रती ख़ाक कोटन कोटि गुर पीर अवतार तृप्त कराईआ। ब्रह्मा विष्न शिव आदि जुगादि ध्यावणहार, हरि का भेव कोई ना पाईआ। आपणी कीमत जाणे आप करतार, दूसर कीमत ना कोई वखाईआ। सचखण्ड बैठ सच्ची सरकार, आपणी रचना आप रचाईआ। मरे ना जन्मे विच संसार, जुग जुग गेड़ा आप भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां देवे एका वर, त्रैगुण नाता दए समझाईआ। विष्न ब्रह्मे शिव तेरा प्यार, रजो तमो सतो तेरे अंग लगाइंदा। आपणी चरन धूढ़ी पाए ख़ाक छार, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जुग जुग खेल आप खिलाइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। लोकमात पावे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा अक्खर नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग, किसे कलम ना कोई लिखाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग कलम शाही लेख ना लिख्या, हरि का भेव ना दए जणाईआ। जो आया सो होया मिथ्या, थिर कोए रहिण ना पाईआ। पंज तत्त चोला गुर अवतार किसे ना रक्खया, घड़न भन्नणहार इक्क शहिनशाहीआ। आपे जाणे आपणी कीत्या, करता करन आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम चौथा जुग जाए बीतया, करे खेल हरि रघुराईआ। आदि जुगादि इक्क अजीतया, ऊँचां नीचां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न देवे एका वर, ब्रह्मे फड़ाउणा आपणा लड़, शंकर भुल रहे ना राईआ। कलिजुग उपजे काली धार, हरि साचा सच सुणाइंदा। मंगण आए मेरे दुआर, दर सवाली इक्क वखाइंदा। साची वस्त देवे झोली डार, आपणा हुक्म पल्ले गंढु बंधाइंदा। चौथे वेद करे शृंगार, ऐड़ा अक्ख इक्क खुल्हाइंदा। अथर्बण ऊँची कूके करे पुकार, ब्रह्मा चारे मुख खुल्हाइंदा। पुरख अबिनाशी हो त्यार, सुन्न अगम्म फोल फुलाइंदा। सुन्न अगम्म साची कार, करनी करन आप कराइंदा। धूंआँधार विच्चों ईसा मूसा कढ्ढे बाहर, लोकमात जन्म दवाइंदा। किरन किरन किरन इक्क इक्क इक्क पंज तिन्न अठ्ठ अंदर देवे वाड़, त्रै सौ सठ्ठ वेख वखाईआ। आपे गेड़े आपणी लठ्ठ करतार,

गेड़ा आपे रिहा दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग तेरी साची कार करे करतार, काला रंग रंगे सूरा सर्बंग, काला सूसा तन छुहाईआ। काला सूसा खेल अपार, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण करे प्यार, आप आपणा बल धराइंदा। कलमी कलमा कर प्यार, एका हुक्म सुणाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका हुक्म सुणाइंदा। काला सूसा तन श्रृंगार, काली धार कलिकाती आप चलाईआ। लेखा जाणे मुहम्मद संग चार यार, अल्ला राणी आप प्रनाईआ। तीस बतीसा कूक कूक करे पुकार, आयत शरायत करे पढ़ाईआ। शरअ शरीअत वेख विचार, धरत धवल दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ब्रह्मा विष्न शिव मेरा लेख लिख ना सके कोई राईआ। कलिजुग अन्तिम वेस वटावणा, जोती जोत हो उज्यार। निरगुण सरगुण मेल मिलावणा, पंज तत्त दए आधार। नानक नानक नानक नाउँ रखावणा, वेखे काया गढ़ बंक घर बार। एका नाम विच टिकावणा, नाम सति सति जैकार। पुरख अकाल वेख वखावणा, ना कोई दूसर मीत मुरार। चार वरना संग निभावणा, ऊँचां नीचां पार किनार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मे शिव देवे एका वर, करे खेल विच संसार। एका जोती दस दस धार, हरि साचा खेल खिलाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल आपणी किरपा आपे धार, नानक जोती जोत जगाइंदा। जामा बदले विच संसार, भेव कोई ना पाइंदा। कोई कहे अंगद कोई कहे अमरदास, कोई रामदास कह कह गाइंदा। कोई कहे अर्जन कोई कहे हरिगोबिन्द, कोई हरिराय सीस झुकाइंदा। कोई कहे हरिकिशन कोई कहे तेग़ बहादर, बहादर तेरा दर दिस किसे ना आइंदा। आदि सच्चखण्ड ताणी बैठा चिट्टी चादर, सन्तां भगतां उप्पर परदा आपे पाइंदा। गुर अवतारां देवे आदर, सगला संग आप निभाइंदा। करे खेल हरि करता कादर, करीम रहीम रहिमत रहिमान आपणी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। नौ गुर नौ दुआर, पन्ध गए चुकाईआ। जोती मिले जोती धार, जोती जोत विच समाईआ। पुरख अकाल भेव न्यार, चारे बाणी भेव ना पाईआ। शाह पातशाह हो त्यार, शहिनशाह साची खेल आप कराईआ। साचे तख्त बैठ आप निरँकार, पंचम ताज सीस टिकाईआ। थिर घर विच्चों शब्द दुलारा सुत ल्या उठाल, एका धुर फ़रमाना दए जणाईआ। गुजरी घर ना जन्मे बण के लाल, पुरख अकाल तेरा पिता माईआ। तेरी जोती बेमिसाल, पाया एका एक सच्चा शहिनशाहीआ। तेरे फल लग्गे डाल, पुरख अकाल आप लगाईआ। चारे जुग तेरे चरनां हेठ वगाए धार, धरनी धरत धवल तेरा राह तकाईआ। तेरा करे सच प्यार, जुगा जुगन्तर भुल ना जाईआ। सतिजुग

आया रूप धार, सिँघ अजीत नाउँ रखाईआ। त्रेता आया आपणी वार, झुजार झूज झूज धरत मात प्यास बुझाईआ। जोरावर जाए दर बलिहार, द्वापर तेरा करे हौला पिछला भार, कँवल नैण गया राह तकाईआ। कलिजुग कूड़ा करे ख्वार, फ़तहि डंका वज्जे विच संसार, सिँघ फ़तहि इक्क गजाईआ। मेरा नाम तेरी धार, तेरी धार मेरा प्यार, तेरे विच समाईआ। मेरा रूप अगम्म अपार, सो पुरख निरँजण रिहा समझाईआ। हँ रूप सर्ब संसार, गोबिन्द वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे एका वर, आपणी करनी आप समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नौ सौ चुरानवे चौकड़ी तेरा पन्ध मुकावणा, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख वखावणा, रूप अनूप आप दरसाईआ। आपणा सुत इक्क उपजावणा, आदि पुरख आदि आदि जो ल्या उपजाईआ। गोबिन्द नाउँ मात रखावणा, देवे वड वडी वड्याईआ। कल्गी तोड़ा सीस टिकावणा, जोती जोड़ा मेल मिलाईआ। साचे घोड़े आप चढ़ावणा, वाग फड़े आदि शक्ति सहाई होवे सच्चा शहिनशाहीआ। आपणा खेल आप करावणा, चौथे जुग दए ग्वाहीआ। चार खाणी पन्ध मुकावणा, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। चारे बाणी भेव खुल्ावणा, चारे वेद देण ग्वाहीआ। चारे वरनां एका रंग रंगावणा, एका लाए मस्तक टिक्का बेपरवाहीआ। पंज प्यारे माण दवावणा, पंचम वेखे आप आपणा राहीआ। पंचम मुख ताज सुहावणा, हरि हरि जू लए सुहाईआ। गोबिन्द गुर गुर नाम वड्यावणा, सिँघ सिँघ आपणा रूप धराईआ। साचा खण्डा हथ्थ फड़ावणा, लुहार तरखाण ना कोई घड़ाईआ। उच्चे टिल्ले चढ़ के हवन करावणा, प्रेम अहूती एका पाईआ। एका गढ़ु केस वखावणा, केस दस्मेश सीस सुहाईआ। जगत जगदीश वेख वखावणा, नर नरेश वडी वड्याईआ। आपणा रूप आप धरावणा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। पंचम अंग पंच लगावणा, पंचम वेखे थाउँ थाँईंआ। पंचम प्रधान आप बणावणा, पंचम निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पंचम साची जोत जगावणा, पंचम अमृत रस आप प्याईआ। पंचम सीस धड़ आपणे लेखे लावणा, रती रत प्रेम नाल आपणा तन रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा दए जणाईआ। पंचम प्यारे आप प्रगटा, गुर चेला रूप धराइंदा। पंचम बैठा सीस झुका, पंचम राज जोग समझाइंदा। पंचम मार्ग रिहा वखा, चार वरनां मेल मिलाइंदा। पंचम सोग रिहा गंवा, हरख सोग ना कोई रखाइंदा। पंचम अंग रिहा लगा, माया ममता हउमे हंगता रोग नेड़ कोई ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा संदेश नर नरेश निरवैर आप सुणाइंदा। गोबिन्द वेला अन्त चुकावणा, हरि साचा खेल खिलाईआ। सूलां सत्थर इक्क वछावणा, सत्थर यारड़ा आप हंढाईआ। आपणा सुनेहड़ा आप सुणावणा, सुनणहार आप हो जाईआ। आपणा मेला

आप मिलावणा, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। पुरख अकाल इक्क मनावणा, दूजा इष्ट ना कोई वखाईआ। अन्तिम पिता गोद बहावणा, बिना पूत ना सोहे माईआ। चारे कूटां वेख वखावणा, गुरसिख साचे लए जगाईआ। हुक्मी हुक्म इक्क दरसावणा, भुल कोई ना जाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आवणा, वाक भविख्त आपणे विच टिकाईआ। आपणा लिख्या सरसा भेंट करावणा, शब्द शब्द करे कुड़माईआ। निहकलंक हरि जामा पावणा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गोबिन्द संग सदा निभावणा, शब्द गुर दए वड्याईआ। सम्बल नगरी धाम सुहावणा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। ब्रह्मे विष्न शिव तेरा पैंडा फिर मुकावणा, वेखणहारा आप हो जाईआ। निरगुण लेखा आदि आदि अन्त लोकमात लिखावणा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। पंचम मुख ताज सीस लगावणा, बण आए सच्चा शहिनशाहीआ। लक्ख चुरासी आपणे गल परोवणा, कली कली नाल बंधाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तेरा पन्ध मुकावणा, रविदास चम्यारा दए ग्वाहीआ। वेद व्यासा लिख्या पूर करावणा, उच्चे टिल्ले पर्बत पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा घर मन्दिर डेरा लाईआ। नानक तेरा निरगुण रूप सच दरसावणा, पंज तत्त ना कोए वड्याईआ। अर्जन गुर गुर शब्द धार वेख वखावणा, बोध अगाध अगाध बोध इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव वखाए एका घर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा लेख चुकावणा, चौथे जुग जहान। निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहत आपणा जामा पावणा, आपणा पद रखाए इक्क निरबाण। शब्द बिबाना इक्क उडावणा, लेखा जाणे दो जहान। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पावणा, करे खेल श्री भगवान। लोकमात वेख वखावणा, वीह सौ बिक्रमी हो प्रधान। छब्बी पोह माण दिवावणा, जोती नूर नूर महान। शब्द रूप गोबिन्द दुलारा नाल रलावणा, लक्ख चुरासी करे कल्याण। सम्बल नगरी भाग लगावणा, आपणा वेखे सच निशान। इक्क दो तिन्न चार पन्ध मुकावणा, पंचम लेखा जाणे गुण निधान। छेवें छप्पर छन्न ना कोए सीस धरावणा, सत्तवें सति पुरख निरँजण हो मेहरवान, अठ्ठां तत्तां पन्ध मुकावणा, सुन अगम्म ना करे कोई पछाण। थिर घर आपणा रूप दरसावणा, आपे वेखे आपणा हाणी हाण। सचखण्ड सच्चे आसण लावणा, प्रगट होए आप गुण निधान। लोकमात फेरा पावणा, निहकलंक बण बली बलवान। माता कुक्ख ना कोई टिकावणा, भैण भाई ना सके कोई पछाण। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कुल ना कोई बणावणा, मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला ना करे कोई कल्याण। पंडत पांधे दान ना कोई दवावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मे शिव देवे वर, तेरी अन्त करे कल्याण। तेरी अन्त करन कल्याण, हरि साचा खेल खिलाईआ। कलिजुग अन्तिम होए प्रधान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। निरगुण सरगुण खेल महान, सरगुण निरगुण भेव चुकाईआ। निरगुण

सरगुण हो प्रधान, निरगुण सरगुण लए उठाईआ। दीवा बाती इक्क महान, कमलापाती लए जगाईआ। साची खाटी श्री भगवान, अबिनाशी करता आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका सिख्या रिहा समझाईआ। कलिजुग वेला अन्त सुहावणा, हरि साचा खेल खिलाईआ। इक्क दस मेल मिलावणा, साढे तिन्न हथ्थ कर रुशनाईआ। दो दस दर वखावणा, हरिसंगत लए जगाईआ। त्रै दस तार हिलावणा, राज राजाना शाह सुल्ताना साधां सन्तां दए हुलाईआ। चार दस चौदां लोक वेख वखावणा, चौदां तबकां पन्ध मुकावणा, आप आपणा फेरा पाईआ। पंदरां अंदरां रंग रंगावणा, तीर्थ तट्टां आपणे चरन बहावणा, गंगा सुरस्ती जमना गोदावरी अठसठ अमृत सीर रहिण ना पाईआ। दस छे सोलां सोलां शृंगार जगत मिटावणा, भगतां सोलां इच्छया पूर करावणा, साची भिच्छया झोली पावणा, विष्नूं तेरा माण चुकावणा, तेरा आप विच समाईआ। दस सत सतारां खेल खिलावणा, आपणा बल आप धरावणा, सीस ताज इक्क रखावणा, शहिनशाह बणे सच्चा शहिनशाहीआ। छब्बी पोह दिन वड्यावणा, आपणा हुक्म आप वरतावणा, नौ खण्ड पृथ्मी शब्द घोड़ा इक्क दौड़ावणा, नौ दस वक्त भुल ना जाईआ। नौ सौ निड़नवे शाह पातशाह राज राजान पकड़ उठावणा, रातीं सुत्तयां लए दबाईआ। कीता कौल पूर निभावणा, कीता कौल भुल ना जाईआ। पंच प्यारे आपणे अंग लगावणा, अंगीकार आप अख्वाईआ। पिछला लहिणा मूल चुकावणा, पूर्ब लेखा रहे ना राईआ। इक्क सत्त पंज छे साढे दस आपणा खेल खिलावणा, खेलणहार आप हो जाईआ। आपणा खण्डा आर पार गुरसिख प्यार आप करावणा, रत ब्रह्म रत नाल रंगाईआ। कलिजुग बीज साचा गया घत्त, बण के माली बूटा गया लाईआ। अन्त संभालण आया आपणा वत, वड किरसाना भुल ना जाईआ। बणया आप गंवार जट्ट, पंडत पांधे मुलां शेख़ मुसायक पीर ग्रन्थी पन्थी दए भुलाईआ। करे निबेड़ा हक हक, हकीकत वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव राह रहे तक्क, कवण वेला मिले सच्चा माहीआ। पलँघ रंगीला वछाए सुहाई खाट, जो आपणी आप वछाईआ। त्रैगुण नाता तुट्टे मोह चुक्के चौदां हाट, चौदां लोक ना कोए फिराईआ। अन्तिम पूरी करन आया घाट, घाटा कोए रहिण ना पाईआ। पहलों गुरसिख लक्ख चुरासी विच्चों कढ जम की फाँसी दित्ती काट, लक्ख चुरासी गुरसिख तेरी आपणी झोली पाईआ। गुरसिख विके ना किसे हाट, मंगण दर ना कोई जाईआ। काया चोला सभ दा जाए पाट, शाह पातशाह रहिण ना पाईआ। घर घर आप जगाए जोत लिलाट, जोती आपणी आप जगाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरी मुकावण आया वाट, गुर गोबिन्द दए सालाहीआ। रचया स्वांग बणया नटूआ नाट, बाज़ीगर आपणा खेल आप खिलाईआ। ना कोई पूजा करे किसे दा पाठ, ना कोई तीर्थ नहावण जाईआ। ना कोई लेखा जाणे

ज़ात पात, दीन मज़्ब ना कोए वखाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई साक, मात पित भैण भाई ना कोए अख्वाईआ। ना कोई घोड़ा ना कोई शाह सवार ना कोई चढ़े मार पलाक, ना कोई वागां हथ्थ उठाईआ। आपणा करन आया पूरा भविख्त वाक, जो लेखा गया लिखाईआ। बण के आया पाकी पाक, कोटन कोटि नबी रसूल बैठे राह तकाईआ। चौथे जुग खोल्हण आया ताक, आपणी हथ्थीं कुंजी लाईआ। हरिसंगत बन्हावण आया नात, चरन कँवल दए वड्याईआ। पंज प्यारे मेटण कलिजुग तेरी अन्धेरी रात, सतिगुर पूरा नाल सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा शिव आपणे नाल रलाईआ। छब्बी पोह दिवस सुहाया, विष्नूं दर बुलाइंदा। पूर्ब लहिणा झोली पाया, ख़ाली झोली आप भराइंदा। साची डोली आप बहाया, आपणे कंध उठाइंदा। हौली हौली रिहा तुराया, औंदा जांदा दिस ना आइंदा। साचा बचन रिहा समझाया, पुरख अकाल सुणाइंदा। बिन गुरसिखां तेरा पन्ध ना सके कोए मुकाया, गेड़ा गेड़े विच रखाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो रिहा लुका, निरगुण आपणा नाउँ धराइंदा। कलिजुग अन्तिम सिँघ शेर शेर रूप हो के बुक्का, आपणी भबक सर्ब वखाइंदा। तीर निराला पुरख अकाला आप चलाए गोबिन्द निशाना कदे ना उका, दो जहानां आप लगाइंदा। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला ढुका, पारब्रह्म अबिनाशी करता गुरमुख साचे साचे हाजी आपणे नाल लिआइंदा। मूधा करे संग मुहम्मद चार यार हुक्का, अग्नी कोला उप्पर इक्क लगाइंदा। पाणी अमृत दो दो आब सभ दा मुक्का, हयाते आब हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न देवे एका वर, एका शब्द सुणाइंदा। ब्रह्मा आए दर भिखार, हरि साचे आप बुलाया, राह तक्के दूर दुराडा निउँ निउँ उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण करे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाया। चारों कुण्ट गुर संगत लाया अखाड़, राह खैहड़ा नज़र ना आया। पुरख अबिनाशी दए हुलार, छोटे बाल आपणी उँगली लाए खिच्चे चरन दुआर, देवे माण सच्ची सरकार, शाह सुल्तान वडी वड्याईआ। ब्रह्मे मंग मंग हरिसंगत बण जगत वणजार, वस्त अमोलक गुरसिखां कोलों तेरी झोली भराइंदा। तेरा गेड़ा दए हरि आप निवार, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जो देंदा आया लारा, अन्तिम आपणी जोत मिलाइंदा। कोटन कोटि जन्म रिहा कुँवारा, हरि कन्त ना कोए हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी एका नर, नर नरायण आप अख्वाइंदा। विष्नूं उठ खेल वेख, हरि करतार आप कराईआ। ब्रह्मे उठ पारब्रह्म धरया भेख, रूप रेख ना कोए जणाईआ। शंकर आया खुलड़े केस, तन बभूती ख़ाक रमाईआ। हथ्थ त्रिसूल करे आदेस, नौ नौ जोजन नेड़ ना आईआ। पारब्रह्म तेरा राह नैण मूंद मैं रिहा वेख, राह खैहड़ा दिस ना आईआ। आपणा दरस सच वेस, कवण

दुआरा बैठा आसण लाईआ। पुरख अबिनाशी पंजां प्यारयां हथ्थ घल्लया इक्क संदेश, शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणाईआ। करया वेस माझे देस, प्रगट होया नर नरेश, ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूढ़ मुंडाईआ। विष्न ब्रह्मे शिव तेरी कोई ना चले अग्गे पेश, हुक्मी हुक्म सर्ब रिहा भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख आदि आदि आदि आपणा आप लए प्रगटाईआ। शंकर सुनेहड़ा हरि सुणाया, अन्तर अन्तर ध्यान। मन्त्र शब्द इक्क जणाया, नौ नौ होए प्रधान। नौ नौ पन्ध आप मुकाया, सूरबीर बली बलवान। आपणा दर आप सुहाया, चरन कँवल वखाए इक्क ध्यान। धूढ़ी मस्तक रिहा लगाया, बणया बाल अजाण। हरिसंगत तेरी सेवा करन आया, कलिजुग अन्तिम रुत्त पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि बिन अवर ना कोए सहाया। पंच प्यारे पंचम माणा, पंचम हरि समाया। पंचम शाह पंचम सुल्ताना, पंचम राज जोग कमाया। पंचम धर्म पंचम ध्याना, पंचम धुर दी धार जणाया। पंचम शब्द नाद धुन पंचम रूप ब्रह्म पछाणा, पंचम पारब्रह्म सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, पूर्ब लेखा रिहा मुकाया। पूर्ब लेखा मुकावण आया, पारब्रह्म हरि करतार। गोबिन्द मेला मेल मिलावण आया, पंचम पंचम कर उधार। साची सिख्या इक्क समझावण आया, साख्यात रूप करतार। चारे वरनां एका रंग रंगावण आया, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे इक्क प्यार। पंच प्यारयां पंचम मोह चुकावण आया, नाता तोड़े काम क्रोध लोभ मोह हँकार। गुरसिखां साची सेज हंढावण आया, नारी कन्त करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि अपार। खेल अपार करावणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। वीह सद सतारां बिक्रमी छब्बी पोह दिवस मनावणा, निरगुण निरगुण हो उज्यार। गोबिन्द लहिणा लहणे पावणा, लेखा चुक्के पूर्ब उधार। पंजां प्यारयां आप उठावणा, रती रत मंगे सच दरबार। इक्क इक्क बूंद आपणे लेखे लावणा, लक्ख चुरासी उतरे पार। सिख सिख्या विच समावणा, साची सिख्या इक्क करतार। धुर दा लिख्या आपे पढ़ वखावणा, ब्रह्मा वेद ना पावे सार। गुरसिख तेरी रत रती मस्तक टिक्का लावणा, सृष्ट सबाई होए ख्वार। शाह सुल्तानां ख़ाक मिटावणा, राज राजानां मारे मार। पहली चेत्र दिवस सुहावणा, पुरख अबिनाशी हो त्यार। पंज प्यारे नाल रलावणा, बस्त्र पीले तन शृंगार। सीस ताज आप टिकावणा, चुरासी कलीआं गल विच हार। वाली हिन्द आप उठावणा, शब्द हलूणा देवे मार। साचा लेख आप लिखावणा, सृष्ट सबाई करे ख़बरदार। भुलया कोए रहिण ना पावणा, पुरख अबिनाशी एका दस्से जगत विचार। अन्तिम सभ ने एका राह तकावणा, निहकलंक चरन दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम

वर, करे खेल साचा हरि, ब्रह्मा विष्न शिव तेरा पन्ध दए निवार। मुकाए पन्ध, पान्धी बणे सच्चा माहीआ। लेखा मुक्के सूरज चन्न, मंडल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। ध्रू प्रहिलाद मिलाए आपणे अनन्द, अनन्द अनन्द आपणे विच मिलाईआ। आदि जुगादि करे खेल श्री भगवन्त, गुर पीर अवतार भगत भगवन्त देंदे आए ग्वाहीआ। आपे जाणे आदि आपे जाणे अन्त, बेअन्त आप अख्वाईआ। आपे काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। आपे तोड़े गढ़ हउमे हंगत, साची संगत लए मिलाईआ। गुरसिख दूजे दर ना जाए मंगत, सतिगुर पूरा नौ खण्ड पृथ्मी गुरसिख तेरे चरनां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा डंक आप वजाईआ। गोबिन्द अंक सुहावणा, छब्बी पोह हो त्यार। गुरसिखां रत आपणा तिलक लगावणा, उठ दया सिँघ कर प्यार। साचा सुत आप जगावणा, आपे होए पहरेदार। रुत्त मास बरख ना कोए वखावणा, घड़ी पल ना कोए विचार। अबिनाशी अचुत आपणा हुक्म आप जणावणा, हुक्मे अंदर सर्ब संसार। भुले भटके आप उठावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होए हरि करतार। हरि करतार प्रगट होया, भुल रहे ना राईआ। पन्थ ख़ालसा क्यों रिहा रोया, सोइआं सोइआं रैण विहाईआ। पुरख अबिनाशी नवां नरोया, ना मरे ना जाईआ। गोबिन्द सूरा जिस तेरे अंदर अमृत चोया, भर प्याला राह तक्के सच्चा माहीआ। दूजे दरों मिले ना कदी कोई ढोआ, कोटन कोटि सवाली भिखक भुखिआं नंग्गयां कोलों मंगदे मारन धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दिल्ली दुआरे जाए बेपरवाहीआ। दिल्ली दुआरे जावणा, हरि साची खेल खिलाईआ। पंचम ताज सीस छुहावणा, शाहो भूप वडी वड्याईआ। खिच्च कटार हथ्थ रखावणा, निरभउ भय ना कोई रखाईआ। शाह पातशाह राज राजाना आपणा हुक्म सुणावणा, दूसर हुक्म मन्नण कदे ना जाईआ। कलिजुग वरते आपणा भाणा, मेटे जूठी झूठी शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अन्त कन्त भगवन्त साचे सन्त लए मिलाईआ। साचे सन्त संग रलाए, आदि जुगादी कार। गुरमुखां अंदर मृदंग वजाए, आप हिलाए आपणी नाम सितार। आप बण मलंग विच नच्चण जाए, सृष्ट वेखे अपर अपार। ना हिन्दू ना सिख मुस्लिमान किसे नज़र ना आए, दर्शन सिँघ बन्नया काला सूसा तन शृंगार। ईसा मूसा एहदे तन रखाए, मक्का काअबा चरनां हेठ लताड़। पुरख अबिनाशी वेखे जगत तमाशा, आपे रोवे आपे करे हासा, आपे भरे ख़ाली कासा, जगत भण्डारा वेख वखाया। आपे पंचां बणे दासी दासा, दासन दास लए सेव कमाया। सतिजुग तेरा सति भरवासा, सतिगुर पूरा

४३

दए बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा बल आप धराया। एका सूरबीर बलकारा, हरि सच्चा शहिनशाहीआ। लोकमात देवे शब्द ललकारा, निरगुण आप सुणाईआ। जिस उपज्या सो पावे सारा, भुल भुल पन्थ खालसा क्यों गया वक्त गंवाईआ। अन्तिम सभ नूं आउणा पए चरन दुआरा, वीह सौ वीह बिक्रमी वेख वखाईआ। सियासत विरासत रोवे ज़ारो ज़ारा, घर कूके दए दुहाईआ। बिन कन्त दुहागण दिसे नारा, कलिजुग कूड़े यार रही हंढाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी अन्तिम लाया इक्क अखाड़ा, हरिसंगत संग रलाईआ। मेटण आया झूठी धाड़ा, फड़ खण्डा शब्द तेज सच्चा शहिनशाहीआ। चार कुण्ट करे एका वारा, नाम नामा चार कुण्ट आप फिराईआ। गुर संगत हरिसंगत पहली दूजी वार कीता इक्क प्यारा, एका ढईआ विच रखाईआ। अन्तिम बख्शे माण विच संसारा, मानस जन्म ना जाए हारा, हरि की पौड़ी दए चढ़ाईआ। ठांडा वखाए इक्क दरबारा, दर दरवेश बणे निरँकारा, गुरसिख बाहों फड़ फड़ ल्ए लँघाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव राह तक्कण अद्धविचकारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। संग मुहम्मद चार यार करन पुकारा, ऊँची कूक कूक देण दुहाईआ। दे दरस जिस मिल्या निहकलंक नरायण नर अवतारा, साडा फांदी फंद दए कटाईआ। साडा वास होया चौदां लोक बणया इक्क अखाड़ा, चौदां लोक हरि की सार ना राईआ। गुरसिख सज्जण दर आए पुकारा, दोए जोड़ करे बेनन्ती इक्क इक्क इक्क अक्खर रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद, आपणी रचना आप रचाईआ।

४४

★ तारा सिँघ चम्बल नूं : साहिबज़ादे दी पुछ : सच्चे साहिबज़ादे दा भेव दस्सणा ★

साहिबज़ादा एका सुत्त, लक्ख चुरासी जगत लोकाईआ। आप उपाए अबिनाशी अचुत, रक्त बूंद ना मेल मिलाईआ। सदा सुहाए आपणी रुत्त, ख़िज़ां बसन्त ना कोई वड्याईआ। आपणी गोदी रिहा चुक्क, दूजी सेज ना कोई वखाईआ। भण्डारा देवे इक्क अतुट, आपणी इच्छया झोली पाईआ। आदि जुगादि ना जाए निखुट, अतुट अतोट रखाईआ। आपे चढ़ चढ़ वेखे साची चोट, घर मन्दिर कर रुशनाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, पंज तत्त ना कोई हंढाईआ। आपे जाणे आपणा ओत पोत, पिता पूत वेख वखाईआ। आपे धागा आपे सूत, ताणा पेटा आपे पाईआ। आपे काया वेखे कलबूत, आपे आत्म ब्रह्म तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिबज़ादा इक्क प्रगटाईआ। साहिबज़ादा इक्क

दुलार, आदि जुगादि समाया। ना कोई दूसर करे प्यार, ना कोई मेल मिलाया। आपणा वणज करे वणजार, वणज वणजारा आप हो जाया। आपे मार्ग दस्से संसार, आपे वेख वखाया। आपे होए दाता दानी देवणहार, सति भण्डारा आप भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, एका सुत लए प्रगटाया। सुत प्रगटाए शाह सुल्तान, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जुगा जुगन्तर होए निगहबान, भुल कदे ना जाईआ। चरन कँवल बख्शे माण, धरत धवल दए वड्याईआ। आपे करे आपणी कल्याण, काल महाकाल नेड़ ना आईआ। आप बिठाए आपणे सच बिबाण, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। भुल जाए ना गुण निधान, गुणवन्ता सच्चा शहिनशाहीआ। साचे सुत फड़ाए सच निशान, लोआं पुरीआं आप झुलाईआ। साहिबज़ादा होए परवान, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सुत दए समझाईआ। साहिबज़ादा इक्क सपुत्तर, पुत्तर ना कोई प्यारा। करे खेल आप बचित्र, चित्र नज़र ना आवे कोई संसारा। आदि जुगादी बणे हितड़, करे हित्त अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत दए हुलारा। साहिबज़ादा आप उठाया, कलिजुग अन्त वारी। शब्दी पुत मेल मिलाया, नाता तोड़ सर्ब संसारी। पंज तत्त बुत ना कोई वखाया, त्रैगुण बन्ने ना कोई धारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे साहिबज़ादे पावे आपे सारी। साहिबज़ादा आप उठाया, कर किरपा हरि करतार। चौथे जुग भुल ना जाया, नर हरि नरायण सच्ची सरकार। शब्द सूरबीर नाल रलाया, आपणी हथ्थीं खिच्च सतार। जगत धार ना कोई रखाया, अगम्म अगम्मड़ी करे कार। हड्ड मास नाड़ी चमड़ा ना वेख वखाया, मनमति बुध ना कोई विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बच्चा लए उठाल। एका बच्चा बाली बुध, शब्दी शब्द उठाया। पुरख अकाल करे कारज सुद्ध, कारज करने आपे आया। आप बणाई आपणी बिध, विद्या पढ़न किसे घर ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा साहिबज़ादा आपणे अंदर आप बहाया। साबिहज़ादा बहाया अंदर, हरि साचा तख्त सुहाया। आपणी हथ्थीं लाया जंदर, ना कोई तोड़ तुड़ाया। वेखणहारा डूँघी कंदर, लक्ख चुरासी फोल फुलाया। जीव जंत ना जाणे भागां मंदड़, कवण रूप हरि खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आपणे दर, सुत दुलारे लए कराया। सुत दुलारे मिल्या मेला, भगत विछोड़ा आप कटाइंदा। आपे गुरु आपे चेला, आपे खेल खिलाइंदा। आपे जाणे आपणा वेला, थित वार ना कोई जणाइंदा। आपे वसे इक्क इकेला, आपे सगला संग निभाइंदा। आपे सगन मनाए चाढ़े तेला, आपे सखीआं मंगल गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त बहाए आपणे घर, आपणा दर

आप वसाइंदा। पिता पूत दर होए वारस, पुरख अकाल समझाईआ। बिन हरि शब्द ना दिसे कोई होर ख़ालस, तत्व तत विकार भरी लोकाईआ। जगत मात पित भैण भाई, साक सज्जण सैण सौं जाण कर के आलस, सतिगुर पूरा विसर जाईआ। सच्चा साहिबज़ादा सदा चरन कँवल चरन बणया रहे बालक, जवान रूप ना कोए वटाईआ। वेखणहारा ख़लक ख़ालक, मख़लूक लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। आपे बणे आपणा सालस, दूसर मंगे ना किसे दी सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा सुत इक्क समझाईआ। एका सुत शब्द धार, गोबिन्द नाउँ प्रगटाया। पुरख अबिनाशी आपणा आप आपे लए विचार, दूजा मति दे ना कोई समझाया। आपणी पावे ना कोई सार, दूजे दा वर मंगण बण निधान बण के आया। अजे लहिणा नहीं मुक्कया चुक्कया नौ नौ जामे, प्रभ डन्न देंदा आया। पहलों मंगी आपणी रंगण, सतिगुर पूरा दए चढ़ाया। जो दर ते मंगदे संगण, प्रभ धक्का देवे लाया। आपे सुत बिठाए अंगण, गुरसिख साचे नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक बणाए साहिबज़ादा, देवे आपणी दाद, वस्त अमोलक झोली पाईआ। साची वस्त हथ्थ फड़ाई, लेखा रहे ना राईआ। पिता पूत वज्जी वधाई, सुणे सर्ब लोकाईआ। जीव जंत भुल्ले राही, साचा पन्ध ना कोई मुकाईआ। बण के चातर रहे समझाई, भगवन भरम भुलेखे आपणे आप गया भुलाईआ। जन्म जन्म दी लथ्थी ना मस्तक शाही, कालख टिक्का ना कोई धुआईआ। जो जन साहिब सतिगुर पूरे दा हुक्म मन्ने नाही, दर घर साचे ना मिले वड्याईआ । पिता पूत पूत पिता कोलों मंगे चाँईं चाँईं, देवणहार थाउँ थाईआ, आदि जुगादि करे न्याईं, निवण सो अक्खर इक्क पढ़ाईआ। पकड़ उठाए आप लगाए गल आपणी बाहीं, आपणीआं भुजां आप वखाईआ। सदा सुहेला देवे ठंडीआं छाईं, सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। क्या कोई सिख्या देवे मति, मतहीण जगत संसारा। जिस आदि जुगादि आपणा कीआ उतप्त, उतप्त होए वेखणहारा। दो जहानां चलाए रथ, रथ रथवाही खेल निरँकारा। आपणी महिमा जाणे अकथ, ब्रह्मा चार मुखी ना पावे सारा। आपणा सुत उपजाया बिन बूंद रत, निरगुण नारी निरगुण कन्त भतारा। सिँघ तारा क्यों बैठा सत्थर घत्त, हरि का शब्द ना मन विचारा। क्या कोई समझावे कर कर अरथ, भगवन कदे ना भुलणहारा। बिन भगवन कोए ना सके परख, पूर्ब जन्मां करे ना कोई विचारा। ना कोई सोग ना कोई हरख, निहकलंक रूप अनूप बणया आप निरँकारा। गुरसिखां उत्ते अमृत मेघ देवे बरस, काया करे ठंडी ठारा। जो जन नेत्र लोचण नैण करे दरस, त्रै काल दरसी करे पार किनारा। आवण जावण पतित पावण त्रैभवण धनी मेटे हरस, नाता तोड़ सर्ब संसारा। लेखा जाणे

अर्श फर्श, कुर्श कुरा चरन दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा सुत दुलारा। सुत दुलारा साध संगत, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। अठ्ठे पहर रहे मंगत, देवणहार आप हो जाईआ। दर आयां चाढ़े साची रंगत, रंगत उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़े हउँमे हंगत, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए वड्याईआ। साचा सुत जेठा पुत, गुरमुख वड सालाहीआ। जिस उप्पर साहिब जाए तुट्ठ, गुरमुख साचा जाणीए, जिस अन्तर ब्रह्म प्यार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस हिरदे वसे मुरार। गुरसिख सच्चा जाणीए, हरख सोग तों वसे बाहर। गुरसिख सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे जणाए साची सार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जगत नाता तोड़े मोह। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर चरन जाए छोह। गुरसिख सच्चा जाणीए, दुरमति मैल लेवे धो। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर गोदी जाए सौं। गुरसिख सच्चा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे थाउँ थाँ। गुरसिख सच्चा जाणीए, जो भाणा मन्ने करतार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जो नाता तोड़े जगत संसार। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर चरन धूढ़ी करे शृंगार। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर नाउँ करे अधार। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर अमृत मंगे अमर भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी देवणहार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस गुर के नाउँ रंग। गुरसिख सच्चा जाणीए, आत्म सोए सेज पलँघ। गुरसिख सच्चा जाणीए, घर अठ्ठे पहर अनहद शब्द वज्जे मृदंग। गुरसिख सच्चा आखीए, आपणे अंदर आपणे मन्दिर आपे जाए लँघ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी वण्ड। गुरसिख ओह ना आखीए, जो माया रहे लपटाए। गुरसिख ओह ना आखीए, जो तृष्ना भुक्ख वधाए। गुरसिख ओह ना आखीए, जो जन शृंगार वेसवा रूप वटाए। गुरसिख ओह ना आखीए, गुर संगत विच उच्चा बह बह आपणा रूप प्रगटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त रिहा समझाए। गुरसिख ओह ना आखीए, जिस आत्म अन्तर ना इक्क ध्यान। गुरसिख ओह ना आखीए, जिस मन भरया माण अभिमाण। गुरसिख ओह ना आखीए, जो मंगे पीण खाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी आपे जाणे आपणी सच पछाण। गुरसिख सच्चा आखीए, जो भाणा मन्ने निरँकार। गुरसिख ओह ना आखीए, जगत तृष्ना होए ख्वार। गुरसिख सच्चा आखीए, दर मंगे ठंडा दरबार। गुरसिख ओह ना आखीए, तन भरया रहे काम क्रोध लोभ मोह हँकार। गुरसिख सच्चा आखीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेखे विगसे करे विचार।

हरि पुरख निरँजण वड्याई धन्न, आपणी महिमा आप गणाइंदा। सो पुरख निरँजण वड्याई धन्न, आपणी खेल आप खिलाइंदा। हरि पुरख निरँजण वड्याई धन्न, आपणी वेल आप वधाइंदा। एकँकारा वड्याई धन्न, आपणा मेल आप मिलाइंदा। आदि निरँजण वड्याई धन्न, बिन तेल बाती निरगुण जोत आप जगाइंदा। श्री भगवान वड्याई धन्न, सगला साथी संग निभाइंदा। अबिनाशी करता वड्याई धन्न, आपणी घाटी आपे पार कराइंदा। पारब्रह्म वड्याई धन्न, आपणी बाकी आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हरि खेल खिलाइंदा। कर किरपा गुण निधान, सतिगुर आपणा रूप प्रगटाइंदा। दो जहानां हो प्रधान, भगत भगवन्त वेख वखाइंदा। लोकमात चुकाए कान, साचे सन्त कन्त हंढाइंदा। आदि जुगादी हो मेहरवान, गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा। वेखणहारा बाल नादान, गुरसिख साचे रंग रंगाइंदा। रंग मजीठी इक्क महान, चौहां मेला आप मिलाइंदा। चौथे जुग हो प्रधान, मानस जन्म फेर दवाइंदा। मानस मानस कर निशान, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। मेल मिलाए हरि हरि आण, ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाइंदा। काया कपड़ करे कल्याण, झूठी माटी आप धुआइंदा। धोबी बण श्री भगवान, साची भट्ठी आपे ताइंदा। आपणा लम्बू आपे लाया आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साचा वेख वखाइंदा। चौथे जुग साचे सन्त उभार, भगवन्त मेल मिलाईआ। गुरमुख गुरसिख सोहे इक्क दुआर, दर दुआरा आप खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी पावे सार, सत्तां दीपां फोल फुलाईआ। अठ्ठां तत्तां करे विचार, नौ दुआरे खोज खुजाईआ। सुखमन टेढी जाणे नाड़, बंक दुआर सच्चा शहिनशाहीआ। अनहद शब्द जाणे धुन्कार, नाद अनादी आप वजाईआ। निझर झिरना वेखे अपर अपार, कँवल नाभ आप झिराईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, आपणा परदा दए उठाईआ। आपे सेजा करे प्यार, दस्म दुआरी आप सुहाईआ। आपे आसण लाए सच्ची सरकार, निरगुण बण के साचा माहीआ। आपे सुरत सुवाणी आपणे दुआर, खिच्च बहाए वाहो दाहीआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जोग अभ्यास हठ तप करदा रिहा विचार, लेखा लेखे विच लगाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक लए अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। चार जुग दे मेल विछड़े यार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तिम भुल ना जाईआ। कोई रवे राम राम करे पुकार, कोई कृष्न रहे ध्याईआ। कोई आदि शक्ति करे निमस्कार, नमो नमो कोए अख्वाईआ । कोई ऊँची कूक करे पुकार, ऐहनलहक सदा लगाईआ। कोई मुकामे हक लभ्भे यार, हक हकीकत दए ग्वाहीआ। कोई नाम नाम सति रहे उच्चार, कोई वाहिगुरु फ़तहि गजाईआ। सभ दा सांझा इक्को यार, पुरख अकाल नाउँ धराईआ। करन आया जगत प्यार, सृष्ट सबाई वेखे थाउँ थाईंआं। लक्ख चुरासी विच्चों लए उभार, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। आपणा गुंदन

आया साचा हार, जोत अकालण बण के मालण, तिन्नां लोकां चौदां हट्टां पन्ध मुकाईआ। गुरसिखां अग्गे बणया आप सवालण, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि हरि आपणी दया कमाईआ। चार जुग दा जगत विछोड़ा, हरि हरि पन्ध मुकाइंदा। पुरख अबिनाशी चढ़या साचे घोड़ा, हरि का घोड़ा दिस ना आइंदा। दो जहानां फिरे दौड़ा, लोआं पुरीआं पन्ध मुकाइंदा। एथे ओथे लाया इक्को पौड़ा, एका डण्डा उप्पर वखाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेखे मिट्ठा कौड़ा, घट घट अंदर फोल फुलाइंदा। हरिसंगत हरि जू आपे बौहड़ा, हरि मन्दिर इक्क सुहाइंदा। जन्म जन्म दी बुझाए प्यास लग्गी औड़ा, सांतक सति सति कराइंदा। सस्से उप्पर लाया एका होड़ा, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। गुरसिख तेरे राह विच ना अटकाए कोई रोड़ा, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड आपणे चरनां हेठ दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग साचे सुख गुरसिख लेखे आपे रक्ख, सन्तन पावे साची भिक्ख, भगतन नेत्र आपे पेख, पेखणहार दया कमाईआ। भगत सन्त गुरमुख गुरसिख, जगत अन्तिम मेल मिलाया। धुर दा लेख अपे लिख, पिछला लेख चुकाया। साची सिख्या सच समझाए सिक, सबर सबूरी संग रखाया। पुरख अबिनाशी साचा पित, पिता पूत दए वड्याआ। कलिजुग अन्तिम करन आया हित्त, नित नवित जो खेल खिलाया। लेखा जाणे दहि दिश, चार कुण्ट फोल फुलाया। दर आए लाहे झूठी वख, अमृत एका जाम प्याया। पुत्तरां देवे साची भिक्ख, भिच्छया साची झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए वड्याआ। हरिसंगत हरि वड्यांअदा, आए चरन दुआर। भुक्ख्यां भुक्ख गंवाइंदा, देवे नाम आधार। आपणे आप मनाइंदा, जुग जुग विछड़े यार। झूठयां सच कराइंदा, देवे दरस दीदार। लुटिआं घर वसाइंदा, उजड़े फेर ना विच संसार। मावां पुत्तरां गोद सुहाइंदा, पूत सपूता दए आधार। ख़ाली गोद ना कोई रखाइंदा, जो नारी मंगे सुत दुलार। पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा, निरगुण सरगुण कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे चरन प्यार। चरन प्यार रक्खो आस, चरन कँवल चित लाया। करे खेल हरि शाहो शाबाश, शास्त्र सिमरत भेव ना राया। गुरसिखां अंदर करे वास, वास निवासा आप धराया। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड प्रभाश, डूँग्घी कंदर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए वड्याआ। हरिसंगत वड्याई वड, वड वड्डा वड आप वड्यांअदा। छब्बी पोह लडाए लड, आपणी खेल आप कराइंदा। सतारां साल जो आपणा फ़रमान आपणे विच्चों रिहा कढ्ढ, आपे बन्द कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। आपणी धार शब्द गुण, गुणवन्ता गुण जणाईआ। सन्त मनी सिँघ

तेरी पुकार लए सुण, सुनणहार इक्क अख्वाईआ। तेरा लेखा देवे चुण चुण, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। मेरा नाद तेरी धुन, तेरी धुन जगत शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा लए उठाईआ। आपणा परदा हरि उठवाणा, सन्त मनी सिँघ कीता कौल इकरार। सम्मत सतारां वेस वटावणा, प्रगट हो हरि निरँकार। आपणा शब्द आपणे नाल रखावणा, जाए दिल्ली दरबार। नौ नौ मीत इक्क बंधावना, नौ नौ लेखा जाणे सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत अग्गे करे आप पुकार। हरिसंगत कोलों मंगे दान, हरि दाता बेपरवाहीआ। लिख्या लेख जो लिख्त महान, गुरसिखां सिख समझाईआ। पहली चेत्र लै के जाए नाल निशान, निशान निशाना दए लगाईआ। आपणा दस्से सच विधान, जगत विधान दए मिटाईआ। पंच प्यारे होवण प्रधान, पंज शब्द देण ग्वाहीआ। नौ दर झूठ मकान, नौ खण्ड जगत रहिण ना पाईआ। नौ बन्द बन्द करे नौजवान, बन्दीख़ाना इक्क सुहाईआ। इक्क इक्क लेखा जगत महान, लिख्या लेख ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। इक्क इकल्ला पीला रंग, आपणी खेल खिलाइंदा। दूजा रूप सूरा सर्बंग, सति पुरख निरँजण आप उठाइंदा। तीजे वजाए नाम मृदंग, चौथे पद आप सुणाइंदा। पंचम होवे साचा संग, सगला संग संग निभाइंदा। छेवें छप्पर छन्न ना मंगे कोए मंग, जगत सवाली ना सवाल रखाइंदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण कसे तंग, अश्व घोड़ा आप दौड़ाइंदा। अठवें अठ्ठां तत्तां करे नंग, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश मनमति बुध मूल चुकाइंदा। नौवें नौ दर सुत्ता रहे दे कर कंड, आपणा मुख ना कोई वखाइंदा। शाह सुल्तानां राज राजानां इक्क सुणाए सुहागी छन्द, नौ नौ अनन्द अनन्द रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोत शब्द शब्द जोत जोत शब्द एका संग रखाइंदा। शब्द जोत ना तुट्टे नाता, आदि जुगादि रखाया। हरि का शब्द गुर की गाथा, गुर का शब्द जगत कमाया। हरि का शब्द साची दाता, गुर का शब्द पूजा पाठ वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, ऐड़ा एका रंग सूरा सर्बंग, निष्अक्खर दए समझाया। निष्अक्खर हरि हरि बोलणा, आपणी विद्या कर प्रधान। चौदां विद्या मात रोलणा, ना दिसे कोई निशान। सच दुआरा एका खोल्हणा, करे खेल श्री भगवान। जीव जंत एका कंडे तोलणा, तोलणहारा गुण निधान। साचा ढोला एका बोलणा, सोहँ सो ज़िमीं अस्मान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दो जहानां पावे आण। दो जहानां रक्खे आण, पुरीआं लोआं आप समझाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म मकान, पारब्रह्म वेख वखाईआ। गुरसिख साचा सूरबीर नौजवान, छत्रधारी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। शंकर तेरा अन्त मुकावणा, भुल रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी वेख वखावणा, वेखणहारा दिस ना आईआ। गुरसिख साचे साचे तख्त बहावणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा अन्तिम अन्त करावणा, गतमित मितगति आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस घड़या तिस भन्न वखावणा, घड़न भन्नणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। इंदर तेरा इंद इंदरासन, अन्त रहिण ना पाया। करे खेल पुरख अबिनाशण, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। करे खेल शाहो शाबाशण, शाह सुल्तान वडी वड्याआ। गुरमुख वखाए दासी दासण, बाल नादाना सेव कमाया। लेखा जाणे पृथ्मी अकाशण, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इंद बिन्द ना कोए प्रगटाया, इंद बिन्द ना कोई नाता, पुरख अबिनाशी आप मिटाइंदा। ब्रह्मा शिव सुणाए आपणी गाथा, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाइंदा। हँ ब्रह्म एका साथा, सोहँ आपणी धार वखाइंदा। सर्ब कला आपे समराथा, समरथ पुरख आपणा नाउँ धराइंदा। जुग जुग चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत देवे साचा वर, दयानिध गहर गुण ठाकर देवे नाम रत्ती रत्नागर, गुरसिखां रती रत तिलक लगाइंदा।

५१

रती रत चढ़ी भेंटा, गुरसिख लड़न कोई ना जाईआ। होए सहाई जिउँ पिता पूत बेटा, सिर रक्खे हथ्थ ठंडी छाईआ। आपे शब्द नाम लपेटा, सच दुशाला दए वखाईआ। कलिजुग जीव रहे वेखी वेखा, हरि का रूप नज़र ना आईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल धरया भेसा, वाक भविख्त दए ग्वाहीआ। मेल मिलावा दस दस्मेशा, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। हरिसंगत ब्रह्मा विष्न शिव तैनूं करे आदेसा, जिस मिल्या हरि रघुराईआ। निरगुण गुरमुखां पिच्छे फिरे देस परदेसा, पान्धी आपणा पन्ध मुकाईआ। लेखा जाणे नानक सरगुण हथ्थ खूंडी मोढे भूरी खेसा, सेल्ही टोपी सीस गुंदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा बाण आप लगाए श्री भगवान, कलिजुग मिटे कूड़ निशान, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया मिटणा अन्ध, जगत अन्धेरा रहे ना राया। कलिजुग मुकणा झूठा पन्ध, सतिजुग मार्ग दए लगाया। सृष्ट सबाई गाउणा एका छन्द, इष्ट देव इक्क जणाया। हरिसंगत तेरा प्यार तेरा तेरे कोलों मंगे मंग, दर तेरे मंगण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख दर आए लए तराया।

गुरसिखां दस्से राह सुखाला, चरन कँवल सच्ची शरनाईआ। देवे डन्न ना मंगे हाला, अग्नी तत्त ना कोई तपाईआ। मंगे दान ना शाह कंगाला, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। हथ्थ ना फड़ाए कोई माला, मणका मन का दए भवाईआ। तीर्थ तट ना घाले कोई घाला, चरन धूढ़ अशनान कराईआ। पूजा करे ना हवन ज्वाला, घर निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां फंदन दए कटाईआ। गुरसिखां मार्ग देवे दस्स, दयानिध दया कमाईआ। हिरदे अंदर जाए वस, जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रसना गाईआ। मिटे रैण अन्धेरी मस, वदी सुदी ना कोई वखाईआ। सदा सुहेला वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। नाता तोड़े दस दस मास, मात गर्भ फंद कटाईआ। गुरसिख होए ना कदे निरास, जो जन इक्क वारी दर्शन पाईआ। लेखे लग्गे स्वास स्वास, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क दरसाईआ। साचा मार्ग राह सुखाला, निरगुण आप जणाया। दो जहानां फिरे इक्क इकल्ला, नौ खण्ड फेरा पाया। गुरसिखां फड़ाया आप आपणा पल्ला, गुरसिख लभ्भण किते ना जाया। गुरसिखां पिच्छे फिरे हो हो झल्ला, आपणी मति ना कोई वखाया। गुरमुख जोती आपे रला, आपणी जोत गया बुझाया। वसणहारा निहचल धाम अटला, गुरमुख तेरा धाम वड्याआ। दूई द्वैती मेटे सल्ला, सिर आपणा हथ्थ रखाया। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छला, सिख साचे लए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग दए वखाया। साचा मार्ग हरि करतार, सतिजुग साचे आप जणाईआ। बिन सतिगुर पूरे दूजे दर ना कोई निमस्कार, बिन जगदीश सीस भेंट ना किसे चढ़ाईआ। राग छतीस गुरसिख तेरी गाउँदे वार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सतिगुर तेरा रहे सदा ख़बरदार, ग़फ्लत विच कदे ना आईआ। देवे सदा दरस दीदार, दीन दयाल वडी वड्याईआ। करे तरस विच संसार, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। लए परख परखणहार, जगत जौहरी वेस धराईआ। कंगण ठग्ग चोर उतरया पार, लहिणा देणा रिहा मुकाईआ। गुरसिखां करया हौला भार, सिर आपणा भार उठाईआ। छोटे बाले कर त्यार, साचा मार्ग लए वखाईआ। पिच्छे आउणा वारो वार, भुल कोए ना जाईआ। पाए मुल्ल आप करतार, करता कीमत आप चुकाईआ। सोहँ गाउणा जै जै जैकार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप सहाईआ। होए सहाई सर्ब सुक्ख दाता, दीन बंधप दीन दयाला। एथे ओथे पुछे वाता, करे खेल निराला। रल मिल संगत हरि जू नाल करे बाता, जिस मिल्या धुर दलाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां देवे एका वर, फल लगाए आपणे डाला। गुरसिख डाली पत फुल्ल फलवाड़या, हरि साचा सच महिकाइंदा। बूटा लाया पहली हाढ़या, हरा सिच आप कराइंदा। आपे

होए पिच्छे अगाड़या, दो जहानां सेव कमाइंदा। नेड़ ना आए मौत लाड़या, राय धर्म ना डन्न लगाइंदा। गुरसिख सुरती रहे ना कुँआंरया, जिस जन आपणे लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका दस्स, दरगाह साची मेल मिलाइंदा। साचा मार्ग सतिगुर चरन, अवर ना कोई सुणाईआ। लेखा चुक्के मरन डरन, मरन डरन रहिण ना पाईआ। नेत्र लोचण दर्शन हरन फरन, हरन फरन आप खुल्हाईआ। किरपा करे करनी करन, करनहार इक्क अख्वाईआ। जो जन दोए जोड़ एका वार सरन पढ़न, मात गर्भ फेर ना आईआ। नाता तोड़े ज़ात पात वरन बरन, चार वरन अठारां बरन रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लाए आपणे लड़, आपणे पल्लू आप बंधाईआ। साचा मार्ग करो ध्यान, हरि सतिगुर आप लगाया। ना कोई कराए तन अशनान, झूठी माटी ना पोच पुचाया। अंदरे अंदर बख्शे इक्क ज्ञान, नाम निधाना झोली पाया। सुरती शब्द देवे माण, अभिमाना मोह चुकाया। अमृत बख्शे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाया। नारी कन्त मिले हाणी हाण, गुर चेला वेख वखाया। जुग विछड़े आपे मेले आण, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राह सुखाला इक्क रखाया। राह सुखाला सतिगुर दीना, दीनन उत्ते दया कमाईआ। पंज वार रसना मुख जिस जन चीना, पंच विकारा रहे ना राईआ। काया चोली रंग चाढ़े भीन्ना, भिन्नड़ी रैण दए वड्याईआ। गुरसिखां करे ठांडा सीना, अमृत मेघ बूंद स्वांती मुख चुआईआ। लेखा चुकाए जिउँ जल मीना, पुरख अबिनाशी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे रिहा चलाईआ। आपणे मार्ग आप चलाए, करे मेहर मेहरवाना। गुरसिख सज्जण कदे भुल ना जाए, जिस बख्शे चरन ध्याना। त्रैगुण माया रुल ना जाए, मेल मिलाए श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका देवे जीआ दाना। जीआ दान जीवण दात, जुगत जगत हरि समझाईआ। निरगुण अक्खर निरगुण पूजा निरगुण पाठ, निरगुण करे पढ़ाईआ। गुरसिख तेरा लेखा लिखे ना कोई हाथ, समरथ हथ्थ वड्याईआ। कागद कलम गाए तेरी गाथ, शाही लिख लिख रही शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस साचा हरि, गुरसिख साचे आप जगाईआ। गुरसिख कदे ना डर, केहर रूप किहर सिँघ आप वखाइंदा। जिस ने घाड़न ल्या घड़, कर किरपा पार लँघाइंदा। जिस फड़ाया आपणा लड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच ना कदे डुबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप तरया गुरसिख आपणे नाल तराइंदा। तारनहारा आ गया, निरगुण जोत कर उज्यार। नाउँ निरँकारा आपणा नाउँ रखा ल्या, निरगुण रूप अपर अपार। सतिजुग साचा मार्ग ला ल्या, चार वरनां इक्क आधार। हँ ब्रह्म मेल

मिला ल्या, पारब्रह्म करे प्यार। पंज तत्त काया नाउँ ना कोए वडया ल्या, निरगुण नाउँ होए जैकार। सरगुण तेरा पन्ध मुका ल्या, लेखा चुकया गुर अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां देवे साचा वर, तरनी तरन आप करतार। तरनी तरन पुरख समरथ, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो जन दर्शन पाईआ। लहिणा देणा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, त्रैगुण जाल ना कोए विछाईआ। गुरसिख विके सतिगुर हट्ट, गुर का हट्ट चरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा जीआ दान, जीवण मुक्त आप कराईआ।

त्रैगुण तेरी साची रत, हरि करते आप उपाईआ। निरगुण प्रगटाए पंच तत्त, सरगुण दए वड्याईआ। मनमति बुध अंदर घत्त, सच शृंगार वखाईआ। ब्रह्म रूप हो कमलापति, हरि मन्दिर लए सुहाईआ। तन बणाए जगत रथ, हरि रथवाही लए चलाईआ। पंच विकारा पाए नथ्थ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलाईआ। आसा तृष्ना देवे रस, रसक रसक हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन मन्दिर लए बणाईआ। तन मन्दिर आप उसारया, बाढी बण आप निरँकार। आपे लाए इट्टां गारया, करे कराए साची कार। आपे खोल्हे नौ दुआरया, आपे करे बन्द किवाड़। आपे पावणहारा सारया, निरगुण रूप अपर अपार। आपे वेखे बंक दुआरया, बंक दुआरी हो उज्यार। आपे वसे अन्ध अँध्यारया, डूँग्घी कंदर निराकार। आपे चन्द सूरज उज्यारया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। पंज तत्त मेल मिलाया, ताणा पेटा आपे पाईआ। साचा ताणा आप तणाया, त्रैगुण साचा रंग रंगाईआ। तणनेहारा तणने आया, लोकमात वेस वटाईआ। साचा कपड़ तन वखाया, ख़ाकी चमड़ा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। खेल खिलावणहार करता, भेव अभेव जणाइंदा। रोग सोग दुःख आपे भरदा, हरख सोग आप मनाइंदा। दर दर घर घर आपे डरदा, आपणा सीस आप झुकाइंदा। आपणे मन्दिर आपे वड़दा, आपे मुख छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाइंदा। दयानिध दया धारे, दीन दयाल वज्जी वधाईआ। मात गर्भ पैज संवारे, दस दस मास वेख वखाईआ। अमृत बख्शे ठंडी ठारे, तृष्ना तृप्त कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणे नाम दए वड्याईआ। नाम वड्याई डूँग्घी कंदर, हरि हरि लिव लाइंदा। लेखा जाणे अंदरे अंदर, भेव कोए ना पाइंदा। आपे तोड़नहारा जंदर, आपे वेख वखाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। पंज तत्त काया जगत हाट, साचा हट्ट वखाया। लेखा चुक्या आणबाट, धरत धवल सुहाया। जगत विछाउणा वेखी खाट, एका बस्त्र लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खेड़ा दए समझाया। झूठा खेड़ा झूठी धाड़, कूड़ी क्रिया नाल बंधाईआ। बिन हरि शब्द ना कोई आधार, सगला संग ना कोई रखाईआ। मर मर जम्मे सर्ब संसार, मरे जम्मे आवे जावे वारो वारीआ। राज राजाना शाह सुल्ताना बण सिक्दार, हुक्मी हुक्म चलाईआ। दर दरवेश बण भिखार, दर दर अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हुक्म आप फिराईआ। हुक्म अंदर कार कमाइंदा, पंज तत्त काया कर आकार। माता मुम्मे आपे पाइंदा, सीर देवे सीरख़्वार। अन्न जल ना कोई वखाइंदा, तृष्ना तृप्त करे विचार। बाल अवस्था रूप वटाइंदा, जोबन जगत दए हुलार। जगत तृष्ना आप रखाइंदा, आसा तृष्ना करे प्यार। आपणा नाम आप भुलाइंदा, एका धक्का देवे मार। जगत माया विच फसाइंदा, बन्धन पाए अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कार। ब्रह्म रूप ब्रह्म छुपाया, भेव रहे ना राईआ। जगत सिक्दार मन बणाया, मन मनूआ शहिनशाहीआ। खाणा पीणा पहनणा तिस सदा भाया, मंगदा रहे चाँईं चाँईंआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार संग रलाया, थान थनंतर दए वड्याईआ। आसा तृष्ना नार प्रनाया, भुल रहे ना राईआ। जगत सेज रिहा हंढाया, कलिजुग विकार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जगत जीव जगत ज्ञान, जुग जुग विच रखाइंदा। जिस जन रक्खया रसना रस इक्क ध्यान, तिस जगत रस मुख लगाइंदा। गुरमुख विरले देवे इक्क ज्ञान, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। अमृत रस पीण खाण, साचा सीर आप प्यांअदा। मज्झ गाँ बारां सीर कोई ना देवे वक्त आए जाए नस्स, सगला संग ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे संग रखाइंदा। जिस जन रक्खे हरि संग, सगली चिंत मिटाईआ। भगतां चाढ़े भगती रंग, भगवन आपणी दया कमाईआ। नाम अमोलक वस्त लैण मंग, काया गोलक विच रखाईआ। लोकमात ना होए नंग, जगत नगेज़ ना कोई वखाईआ। जो जन मंगे माझा दुध्ध मिट्ठा शहिद माखिउँ खण्ड, हरि नाम तुल ना राईआ। ना ओह सुहागण ना ओह रंड, जो बस्त्र जगत रही हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे एका वर, नौ अठारां सेव कमाईआ। जगत बस्त्र मंगे रोटी, दाल प्याला नाल। अठ्ठे पहर वासना रहे खोटी, ना शाह ना कंगाल। बिन गुरसिख चढ़े ना कोई चोटी, कोटन कोटी रहे भाल। दर दर मंगदे बोटी बोटी, मेल मिले ना दीन दयाल। तेड़ बन्न्ह्ण झूठी धोती, आत्म उठाए ना कोई

सोती, परदा देवे ना कोई उप्पर डाल। जगत तृष्ना झूठे मोती, माया ममता सुरत ना सके कोई संभाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत खेले खेल निराल। पैरीं मंगे जीव जुत्ती, जीवण जुगत ना कोई वखाईआ। आसा तृष्ना लड़ फड़या वासना कुत्ती, कूकर सूकर बैठे जून वटाईआ। हउमे हंगता विच्चों ना पुट्टी, साचा रंग ना कोई चढ़ाईआ। पंज तत्त काया चोली वेले अन्तिम जाए लुट्टी, ना सके कोई बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन श्रृंगार एका जगत दए वखाईआ। तन तागा सूत देवे वट्ट, ताणा पेटा आपे पाइंदा। खेले खेल नटूआ नट्ट, स्वांगी आपणा सांग वरताइंदा। मनमुख फिरदे हट्टो हट्ट, साची वस्त हथ्थ ना कोए फड़ाइंदा। जो सौंदे उप्पर दुशालयां पट्ट, अन्तिम राय धर्म भठ तपाइंदा। सीस हथौड़े वज्जण सट्ट, हथ्थकड़ी ना कोई तुड़ाइंदा। जो जन सतिगुर पूरे उप्पर ओट बैठे रक्ख, भुक्ख्यां नंग्गयां गले लगाइंदा। जगत जंजाला देवे कट्ट, मानस जन्म लेखे लाइंदा। पाटे चीथड़ वेखे समरथ, रविदास चम्यारा ग्वाह रखाइंदा। कंगण वेखणहारा फिरे तीर्थ तट, पंडत ब्रह्मण भेव ना आइंदा। अन्तिम वज्जी एका सट्ट, पिछला कीता भुल बख्शाइंदा। अग्गे लावे ना मूल हथ्थ, चंगी वस्त ना अग्गे कोई टिकाइंदा। एका मंगे साचा दरस, दिवस रैण बिल्लाइंदा। सतिगुर पूरा करे तरस, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। एका अमृत साचा सीर देवे बरख, मज्झ गाँ ना कोई वखाइंदा। गुरसिख गुर चरन प्यार मंगो बेधड़क, सतिगुर पूरा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द दुशाला दो जहानां करे मालो माला, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाइंदा।

★ २७ पोह २०१७ बिक्रमी जेठूवाल राष्ट्रपती नूं पहली चेत नूं मिलण वास्ते ★

करे खेल कोटन कोटि वार असंख, असंख असंखां गणित ना राईआ। करे वेस कोटन कोटि रूप बणाए बणत, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। कोटन कोटि वार करे आदि अन्त, आदि अन्त आपणी खेल खिलाईआ। कोटन कोटि वार आपणी महिमा गाए बेअन्त, बेअन्त बेअन्त बेपरवाहीआ। कोटन कोटि वार आप आपणी करे मन्नत, कोटन कोटि सीस झुकाईआ। कोटन कोटि रूप अनूप आप अनन्त, अनन आपणा नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आपणे विच रखाईआ। कोटन कोटि रूप, सो पुरख निरँजण आप आपणे विच रखाइंदा। कोटन कोटि भूप, हरि पुरख निरँजण आपणी गोद बहाइंदा। कोटन कोटि दिशा कूट, आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

५६

किरपा कर, आप आपणा भेव जणाइंदा। कोटन कोटि रूप हरि निरँकार, निराकार आप धराईआ। कोटन कोटि रूप आदि निरँजण हो उज्यार, जोत निरँजण लए जगाईआ। कोटन कोटि रूप खेल करे आप करतार, कोटन कोटि किरन करते विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस रखाईआ। कोटन कोटि रूप श्री भगवान, भगवन भगवन संग रखाइंदा। कोटन कोटि रूप अबिनाशी करता ना आए विच ध्यान, ध्यान ध्यान ना कोए वखाइंदा। कोटन कोटि रूप वखाए आपणे सति निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। कोटन कोटि रूप पारब्रह्म, पारब्रह्म आप उपजाईआ। कोटन कोटि रूप ना मरे ना पए जम्म, कोटन कोटि विच समाईआ। कोटन कोटि रूप खेल करे अगम्म, अलख अगोचर शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे विच रखाईआ। कोटन कोटि रूप सचखण्ड, सच साची धार रखाइंदा। कोटन कोटि रूप वण्डे वण्ड, वण्डणहार दिस ना आइंदा। कोटन कोटि रूप आपे जाणे आपणा अन्त, अन्त आपणे विच रखाइंदा। कोटन कोटि रूप बणे नारी कन्त, कन्त नार आप हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बल रखाइंदा। कोटन कोटि रूप थिर घर दरबार, कोटन कोटि गढ़ सुहाईआ। कोटन कोटि घाड़त घड़े बण सुन्यार, कोटन कोटि कुठाली रिहा गाल, कोटन कोटि दाई दाया बणे आप करतार, कोटन कोटि करनी किरत रहे कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाईआ। कोटन कोटि रूप आदि, आदि वेस धराइंदा। कोटन कोटि रूप नाद, अनाद अनादी नाद वजाइंदा। कोटन कोटि रूप बोध अगाध, अगाध बोध आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। कोटन कोटि रूप मार्ग ला, निरगुण खेल खिलाया। कोटन कोटि रूप सच दुआर वसा, बंक दुआर दए सुहाया। कोटन कोटि रूप थिर घर वड़या, थिर दुआर दए वड्याआ। कोटन कोटि रूप आपणा मेला आप मिला, आपणी सेज आप सुहाया। कोटन कोटि रूप जननी बणे आप मेहरबां, जन जणेंदी माया। कोटन कोटि रूप पुरख अकाल पिता मां पूत लए उपा, सुत दुलारा एका जाया। कोटन कोटि रूप आपणा नाउँ प्रगटा, नाउँ निरँकारा दए वड्याआ। कोटन कोटि रूप सुत दुलारा लए जगा, शब्दी नाअरा लाया। कोटन कोटि रूप हुक्म दए सुणा, हाकम बणे सच्चा शहिनशाहया। कोटन कोटि रूप सच सिँघासण दए वछा, आसण सिँघासण इक्क दरसाया। कोटन कोटि रूप आपणा रूप आप सुहा, आपे वेख वखाया। कोटन कोटि रूप बणे शाह पातशाह, शहिनशाह सच्चा शहिनशाहया। कोटन कोटि रूप सीस ताज लए टिका, जगत जगदीश वड वड्याआ। कोटन कोटि रूप अपणी हदीस आप रखा, आपे

करे पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आपणा वेस वटाया। कोटन कोटि रूप करतारा, किरतम भेव ना कोए जणाईआ। कोटन कोटि खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ा आप कराईआ। कोटन कोटि रूप निरगुण जोत निरवैर निराकारा, पुरख अकाल आप कराईआ। कोटन कोटि रूप समरथ पुरख करे खेल अपारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। कोटन कोटि रूप वेखे विगसे करे विचारा, वेखणहारा आप हो जाईआ। कोटन कोटि रूप नारी कन्त भतारा, बैठे सेज सुहाईआ। कोटन कोटि रूप उच्ची कूकण करन पुकारा, आपणा नाउँ आप सुणाईआ। कोटन कोटि रूप बणे शाह दारा, कोटन कोटि बैठे सीस झुकाईआ। कोटन कोटि रूप बणे भिखारा, कोटन कोटि बैठे अलख जगाईआ। कोटन कोटि रूप आपे जाणे आपणी सारा, दूसर भेव ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा भेव जणाईआ। कोटन रूप असंख असंखा, निरगुण निरगुण धार प्रगटाया। जुग चौकड़ी काल किसे ना परखा, दीन दयाल बेपरवाहया। विष्न ब्रह्मा शिव मंगदे रहे दरसा, दासी दास रहे ध्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप वखाया। असंख गुण असंख अजाता, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। ना कोई पिता ना कोई माता, दाई दाया ना कोए वखाईआ। ना कोई बंधप ना कोई नाता, ना कोई साक सैण ना भाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, ना कोए करे पढ़ाईआ। आपे जाणे आपणी वाटा, आपे बणे पान्धी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। साची खेल हरि निरँकार, आपणे हथ्थ रखाइंदा। करे खेल अपर अपार, पारब्रह्म भेव ना आइंदा। जगत जुग चौकड़ी वसे बाहर, दिस किसे ना आइंदा। जुग जुग वेस करे विच संसार, वेस अनेका आप वटाइंदा। निरगुण सरगुण कर उज्यार, सरगुण निरगुण संग मिलाइंदा। देवे वस्त अनमुल्ल अपार, मुल्ल कोए ना लाइंदा। जोती जाता बण करतार, अन्धेरी राता मेट मिटाइंदा। शब्द गाथा धुर धुन्कार, नाथ अनाथां आप सुणाइंदा। सर सरोवर अमृत मारे एका ठाठ, बूंद स्वांती मुख चुआइंदा। जुगा जुगन्तर फिरे नाठा, साची सेवा सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आपणी धारा आप रखाइंदा। आपणी धार खेल करतार, भेव अभेद रखाईआ। जगत जुग कर विचार, जोग जुगत दए वड्याईआ। जुगा जुगन्तर साची कार, सच साचा आप कराईआ। सतिजुग त्रेता करे पार, द्वापर वेस वटाईआ। कलिजुग नूर हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। आपणी कुदरत करे प्यार, कादर बेपरवाहीआ। आपणा ब्रह्म लए विचार, पारब्रह्म सच्चा शहिनशाहीआ। आपणा कर्म करे करनेहार, दूसर कर्म ना कोए वड्याईआ। आपणा धर्म जाणे निराकार, वरन बरन ना कोए वखाईआ। साची सरन सिरजणहार, सृष्ट सबाई दए समझाईआ। मरन डरन

चुक्के विच संसार, भय भउ ना कोए वखाईआ। तरनी तरन हरि करतार, तारनहारा इक्क अख्वाईआ। लेखा जाणे पुरख नार, नर नरायण वड वड्याईआ। जाग्रत जोत कर उज्यार, जोती नूर डगमगाईआ। साची सख़ीआं मंगलाचार, गीत सुहागी गाईआ। बणया रहे कन्त भतार, लक्ख चुरासी नारी आप हंढाईआ। सन्त सुहेला साचा यार, भगतन मीता इक्क अख्वाईआ। दर वसाए ठांडा दरबार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। ग़रीब निवाज़ा ग़रीब निमाणयां पावे सार, निमाण निमाणयां आसण लाईआ। अश्व घोड़ा ताजा आपे बणे शाह सवार, शब्द अगम्मी आप दौड़ाईआ। रचया काजा खेल न्यार, जगत जहाज़ आप चलाईआ। मारे वाजां भिखक बणे आप निरँकार, होका देवे वाहो दाहीआ। कलिजुग रैण अन्धेरी अन्धयार, सूरज चन्द बैठे मुख शरमाईआ। गुर का शब्द ना सके कोए विचार, मूल मन्त्र ना कोए पढ़ाईआ। दुरमति मैल ना सके कोए उतार, अठसठ नारी पुरष नंगे तारीआं रहे लाईआ। आपणा घर महल्ल ना सके कोए उसार, आपणा मन्दिर ना कोए वखाईआ। आपणी नारी ना करे कन्त प्यार, नार दुहागण सर्ब हंढाईआ। सुघड़ सुवाणी ना दिसे विच संसार, अमृत भर पाणी साचा आपणे हथ्थ उठाईआ। सुणे ना बाणी हरि करतार, हरि करता नज़र ना आईआ। चारे खाणी होई गंवार, गंवारन फिरे वाहो दाहीआ। नौ खण्ड सत्त दीप बणे भिखार, वस्त हथ्थ किसे ना आईआ। डूमणी कुलक्खणी लभ्भणी फिरे कूड़े यार, साचा मित्र बैठा मुख छुपाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, दिस किसे ना आईआ। आपे जाणे आपणी कार, करता पुरख आप कमाईआ। आपणे मन्दिरों आपे आए बाहर, आपणा कुण्डा दए खुल्हाईआ। गुरसिख साचे लए भाल, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। घर घर वजाए आपणा ताल, ताल तलवाड़ा आप उठाईआ। गुरसिखां घाल आपे रिहा घाल, गुरसिख लभ्भण कोए ना जाईआ। गुरसिख मस्तक दीपक थाल, रवि ससि विच टिकाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड गुरसिख तेरे गीत गाण, जिस मिल्या हरि रघुराईआ। कलिजुग अन्तिम करी पछाण, अभुल भुल कदे ना जाईआ। देवण आया आपणा माण, आपे आयां नाल मिलाईआ। बिरहों मारे निराला बाण, अणयाला तीर इक्क लगाईआ। गुरसिख होया जगत बेहाल, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। आंढी गवांढी कढ्ढण गाल, नाता तोड़न साक सज्जण सैण संग ना कोए रखाईआ। सतिगुर पूरा होया आप कृपाल, लक्ख चुरासी विच्चों वण्ड वंडाईआ। आपणी हथ्थीं सति सरूपी फड़ रुमाल, गुरसिखां मुखड़े नैणां नीर आप पुंझाईआ। बणया विचोला महां सिँघ दलाल, लोकमात जामा फेर दवाईआ। ख़ाक रुले लए उठाल, गोबिन्द गोद बहाईआ। सेवा सिँघ सिँघ बिशन लाल, मस्तक नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख साचे लए उठाईआ। असंख असंखा अनन्त गुण, कथनी कथ ना सके कोइ। गुरसिख तेरी पुकार

आदि जुगादि रिहा सुण, सुनणहारा आपे होए। लक्ख चुरासी विच्चों लाल अनमुल्लड़े चुण, आपणे हार आप परोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लै के आया साचे ढोए। साचा ढोआ लै के आया, धुरदरगाही दाता। गुरसिख सोया लए जगाया, मेटे अन्धेरी राता। आपणा दरस आप कराया, रूप प्रगटाए इक्क इकांता। त्रैगुण माया परदा लाहया, अन्तिम पुछे बातां। एका दूजा भउ चुकाया, चरन कँवल बंधाया नाता। तीजा लोचण आप खुल्हाया, अमृत बख्शे बूंद स्वांता। चौथे पद आप बहाया, पिछला पूरा कीआ घाटा। पंचम हथ्थ वाग फड़ाया, कलिजुग मेटे अन्तिम वाटा। छेवें छतर सीस झुलाया, जगत जलाए अग्न ललाटा। सत्तवें सति पुरख निरँजण काज रचाया, पंज तत्त वेखे काया माटा। अठ्ठवें अठ्ठां तत्तां नाच नचाया, नौ दुआरे फिरे नाठा। दस्म दुआरी परदा लाहया, गुरमुख गुरसिख मिल्या पुरख समराथा। नारी कन्त आप प्रनाया, आप चढ़ाए साचे राथा। रथ रथवाही बण के आया, चरनां हेठ रखाया त्रिलोकी नाथा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप निभाए आपणा साथा। आपणा साथ निभावण आया, निरगुण निरवैर पुरख अकाल। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाया, प्रगट हो हरि दीन दयाल। लक्ख चुरासी दए सुणाया, ब्रह्मा विष्न शिव रलाए नाल। करोड़ तेतीसा भुल ना जाया, सुरपति इंद दए उठाल। एका हुक्म दए सुणाया, लेखा जाणे शाह कंगाल। निहकलंका जामा पाया, ना कोई सके भाल। नौ खण्ड पृथ्मी दिस ना आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बणे आप रखवाल। नौ खण्ड पृथ्मी नज़र ना आए, निरगुण आपणी कल वरताईआ। चार वरन रहे कुरलाए, घर घर पई लड़ाईआ। अठारां बरन करन हाए हाए, कलिजुग अग्नी तत्त जलाईआ। कोई गुरु कोई पीर मनाए, पीर पीरां सिर नज़र ना आईआ। कोई हवनी कोई हवन कराए, निरगुण जोत ना दर्शन पाईआ। कोई अठसठ तीर्थ नुहाए, हरि चरन धूढ़ मस्तक कोए ना लाईआ। कोटन कोटि बैठे धूंणीआँ ताए, अग्नी तत्त ना कोए बुझाईआ। कोटन कोटि बैठे स्वास चढ़ाए, स्वासां वाला अंग ना कोए रखाईआ। कोटन कोटि बैठे रास रचाए, साचा काहन गोपी अंग ना कोए लगाईआ। कोटन कोटि जंगल जूह प्रभास बैठे ताड़ी लाए, निज ताकी ना कोए खुल्हाईआ। कोटन कोटि साकी बण बण रहे जाम प्याए, सच प्याला हथ्थ किसे ना आईआ। कोटन कोटी राम रहे ध्याए, राम रमइया दिस किसे ना आईआ। कोटन कोटि कान्हा कृष्ना बंसरी रहे वजाए, नाद धुन ना कोए सुणाईआ। कोटन कोटि जोग अभ्यास रहे कमाए, जोगी जती सती कोटन कोटि आपणा माण रहे वधाईआ। कलिजुग अन्तिम सभ बेआस तड़फाए, पूरी आस ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख साचे आप

तराए, आपणे बेड़े लए चढ़ाईआ। साचे बेड़े हरि चढ़ाइंदा, निरगुण चप्पू एका ला। दो जहानां पार कराइंदा, सतिगुर सच्चा बण मलाह। सच किनारा इक्क वखाइंदा, त्रैगुण अग्नी ना लग्गे भाह। सच चुबारा वण्ड वंडाइंदा, सचखण्ड दुआरा कुण्डा देवे लाह। गुरमुख साचे आप उठाइंदा, सच सरूप सिँघासण वछा। फड़ बाहों उप्पर उठाइंदा, जननी जन बणे पिता मां। चरन चरनोदक सीर प्यांअदा, रस मिले एका थाँ। हस्स हस्स गले लगाइंदा, देवे सिर ठंडी छाँ। नस्स नस्स वेख वखाइंदा, पान्धी आपणा पन्ध मुका। रस रस मुख चुआइंदा, सोहँ मम्मा मुख लगा। हिरदे वस वस वेख वखाइंदा, आपणी कुदरत आपे मेल मिला। गुरसिख लक्ख चुरासी विच्चों खस खस आपणे खाते पाइंदा, आपणा खाता दूसर किसे ना दए वखा। गुरसिखां रत आपणे मस्तक लाइंदा, रती रत गुरसिखां चरनां थल्ले दए वहा। गोबिन्द साची खेल खिलाइंदा, चारे बाणी समझे ना। जगत पूत आपे लेखे लाइंदा, धार धार नाल सीस कटा। आपे म्यान विच टिकाइंदा, करे खेल बेपरवाह। आपे ओट अकाल रखाइंदा, पुरख अकाल संग बणा, आपे सत्थर यार हंढाइंदा, आपे सुत्ता दे सराहणे बांह। आपे कीता कौल निभाइंदा, रूप अनूप लए प्रगटा। आपणी धारा आप वखाइंदा, आपे देवणहार सलाह। आपे संगत संग निभाइंदा, जुग विछड़े लए मिला। आपे कलिजुग जड़ उखड़ाइंदा, छोटा बाला नीहां हेठ दबा। आपे साढे तिन्न हत्थ पन्ध मुकाइंदा, जो घड़या सो भन्न के दए वखा। आपे नौ दुआर पन्ध मुकाइंदा, नौ खण्ड वेखे चढ़े चाअ। आपे खण्ड खण्ड कराइंदा, शब्द कटारा इक्क चमका। आपे बाल बाला लेखे पाइंदा, हुक्मी भाणा आप वरता। आपे शाह सुल्तानां ख़ाक उडाइंदा, चारों कुण्ट फेरा पा। आपे जगत निशाने सारे ढांहयदा, सच निशाना दए चढ़ा। आपे कसुंभड़े रंग सर्ब वखाइंदा, सत्त रंग निशाना लए रंगा। आपे सीस ताज टिकाइंदा, आपे गोबिन्द मेला लए मिला। आपे सिँघ संगत नाल आपणा सीस जगदीश वटाइंदा, वटांदरा करे दो जहां। आपे तेज़ चण्ड प्रचण्ड चमकाइंदा, नाम खण्डा हत्थ उठा। आपे आपणी वण्ड वंडाइंदा, करे कराए सच न्याँ। आपे सम्मत सोलां खेल खिलाइंदा, सम्मत सतारां पकड़े बांह। छब्बी पोह हुक्म सुणाइंदा, वरते वरतावे इक्क मेहरवां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपे लए समझा। हरि लेखा सच समझाइंदा, नव नौ हरि धार। नौ नव लेख लखाइंदा, नव नौ होए पार। नौ नव रंग रंगाइंदा, नव नौ दए आधार। नौ नव लेख लखाइंदा, नौ नव मारे मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नौ खण्ड पृथ्मी तेरा इक्क बणाए साचा दरबार। नौ खण्ड तेरा दरबार बणावणा, हरि साचे दया कमाईआ। दिल्ली दुआरा इक्क सुहावणा, सन्त मनी सिँघ गया निशान लगाईआ। पुरख अबिनाशी चरन छुहावणा, कलिजुग मेटे झूठी शाहीआ। सृष्ट

सबाई डोर आपणे हथ्थ रखावणा, दूसर संग ना कोए वखाईआ। शब्द घोड़ा चार कुण्ट फरावणा, पवण पवणां भेव ना राईआ। आपणा फ़रमान राज राजान आप जणावणा, हुक्मी हुक्म इक्क सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव खण्ड पृथ्मी बन्ने धार, इक्क बणाए सच दरबार, दर दरबारा आप सुहाईआ। दर दरबार जाए, हरि साचे वड वड्याईआ। नौ संग आप रखाए, इक्क अठ्ठ जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौवां गिणती दए समझाईआ। पहला होवे जोती धार हरि निरँकार, विष्नूं भगवान जगत वड्याईआ। दूजा शब्द गोबिन्द कर प्यार, एका सम्बल रथ चले संसार, रथ रथवाही आप चलाईआ। नाल रलाए पंज प्यार, पंज दो सत्त दए वड्याईआ। अठवां रक्खे नाल लिखार, सिँघ दर्शन वड वड्याईआ। नौवां हुक्म धुर फ़रमान, नौ ग्रन्थां विच बन्द कराईआ। लै के जाए राज राजान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। वाली हिन्द उठाए उठ नादान, बाली बुध दए समझाईआ। घर आया चल भगवान, भुल विच ना वक्त गंवाईआ। जिस दिता राज जोग माण, तिस अग्गे सीस झुकाईआ। जिस पंज तत्त बणाया तेरा निशान, रक्त बूंद मेल मिलाईआ। अन्तिम करे सर्ब कल्याण, करनहार इक्क हो जाईआ। बण भिखारी मंग लै भूमी साढे तिन्न हथ्थ देवे दान, कलिजुग सीआं वण्ड वंडाईआ। सभ दा दाता बणे आप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उपाए दया कमाए आपे घर घर रिज़क पुचाईआ। अगला लेखा ना दस्से गुण निधान, आपणा लेखा आपणे विच छुपाईआ।

★ पहली माघ २०१७ बिक्रमी पिण्ड हरी पुर महिंगा सिँघ दे घर ★

आदि पुरख हरि निरँकारा, निरवैर वडी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण अकल कल धारा, इक्क इकल्ला सच्चा शहिनशाहीआ। एकँकारा रूप रंग ते वसया बाहरा, रेख भेख ना कोए जणाईआ। आदि निरँजण नूर उज्यारा, जोती दीपक डगमगाईआ। अबिनाशी करता शाह सिक्दारा, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। श्री भगवान बेऐब परवरदिगारा, नूर ज़हूर इक्क दरसाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, निरगुण आपणा आप कराईआ। सचखण्ड खोल्ह सच दुआरा, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। सच सिँघासण कर त्यारा, अनुभव आपणा रूप प्रगटाईआ। राज राजाना बण सिक्दारा, हुक्मी हुक्म आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। आदि जुगादी खेल अपार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड

निवासी सचखण्ड सुहाए इक्क दुआर, सच सिँघासण आसण लाईआ। पारब्रह्म अगम्म आपणी करे आपे कार, करनी करता आप अख्वाईआ। थिर घर साचे पावे सार, गृह मन्दिर वड वड्याईआ। नारी कन्त बण भतार, नर नरायण सेज सुहाईआ। जननी जन बण अपर अपार, पूत सपूता एका जाईआ। दाई दाया भेव न्यार, इक्क इकल्ला हरि रघुराईआ। अबिनाशी अचुत मीत मुरार, साचा सुत लए वड्याईआ। शब्दी नाउँ रक्ख धुर दरबार, दरगाह साची वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। इक्क इकल्ला खेल अवल्ला, एकँकार आप कराइंदा। आपे वसे सच महल्ला, सचखण्ड दुआर सुहाइंदा। थिर घर डेरा आपे मल्ला, दूसर संग ना कोए रलाइंदा । आपे होए अछल अछला, अछल छलधारी आप आपणा नाउँ धराइंदा। आप फड़ाए आपणा पल्ला, सगला संग आप निभाइंदा। आपणी जोती आपे रल्ला, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, सचखण्ड दुआरा आप वड्यांअदा । सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि पुरख निरँजण आप वड्याईआ। एकँकारा आपे बणया नारी कन्त, साची सेज आप सुहाईआ। आपे चाढ़े रंग बसन्त, आदि जुगादि उतर ना जाईआ। आपे जाणे महिमा अगणत, अगणत लेखा लेख ना कोए जणाईआ। आप बणाए साची बणत, घड़न भन्नणहार समरथ पुरख आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आपे खोल्ह, आदि पुरख आपणा आप सुहाईआ। आदि पुरख पुरख अबिनाशा, एका रंग समाया। आदि जुगादी खेले खेल तमाशा, खेलणहारा दिस ना आया। थिर घर साचे पावे रासा, मंडल मण्डप आप सुहाया। आपे पूरी करे आपणी आसा, इच्छया भिच्छया आप भराया। आपणे अंदर कर कर वासा, आप आपणा मेल मिलाया। आपे शाहो आप शाबाशा, सति सुल्ताना आपणा नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अलख अगोचर भेव ना राया। अलख अगोचर अगम्म अथाह, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। सचखण्ड दुआर सुहाए साचा थाँ, थान थनंतर आप सुहाइंदा। एकँकारा बण मलाह, खेवट खेटा आपणा बेड़ा आप चलाइंदा। आप आपणा नाउँ धरा, नर निरँकारा आपणा नाउँ रखाइंदा। अजूनी रहत वेस वटा, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। साचा तख्त आप सुहा, तख्त निवासी डेरा लाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म आप फ़रमा, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। साचा सुत आप जगा, बाल निधाना सेवा लाइंदा। लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां रचन रचा, सुन्न अगम्म वेख वखाइंदा। निरगुण मेला आप मिला, सरगुण साचा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, दर घर साचा आप सुहाइंदा। निरगुण रूप पुरख अगम्म, शब्द अनादी नाद वजाइंदा।

निष्अक्खर बोल आपे जाणे आपणा कम्म, आदि जुगादी आपणी खेल रचाइंदा। ना कोई तृष्ना ना कोई तम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी इच्छया आपे पूर कराइंदा। आपणी इच्छया हरि करतार, आपे पूर कराईआ। आपे पुरख आपे नार, सुत दुलारा आपे जाईआ। आपे विश्व विष्नूं कर त्यार, वास्तक आपणी जोत धराईआ। आपे खोल्ह किवाड़ भर भण्डार, निझर झिरना आप झिराईआ। आपे अंदर आपे बाहर, आपे गुप्त आपे ज़ाहर, आपणी कल आप वरताईआ। आपे वण्डण वण्डे निराकार, साकार आपणी खेल खिलाईआ। आपे ब्रह्म कर पसार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे ब्रह्मा वेता दए आधार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आपे नाद शब्द धुन्कार, नाद अनादी आप सुणाईआ। आपे वसे सभ तों बाहर, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा लए उपाईआ। विष्न ब्रह्मा आप उपाया, आपणी अंस सुहाइंदा। आपणी गोदी आप सुहाया, दाई दाया आप अख्वाइंदा। निरगुण हुक्म निरगुण फ़रमान निरगुण आप सुणाया, निरगुण निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। निरगुण सच्चखण्ड दुआर आसण सिँघासण इक्क विछाया, निरगुण थिर घर सोभा पाइंदा। निरगुण विष्न ब्रह्मा आपे लए उपाया, निरगुण धूंआँधार आपणा रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, आपणी खेल आप खिलाइंदा। खेल खिलावणहारा हरि हरि, बेऐब परवरदिगारया। आपणी किरपा आपे कर कर, वेखे विगसे करे विचारया। आपणी जोती आपे धर धर, धूंआँधार करे उज्यारया। आपे ब्रह्मा विष्न घाड़न घड़ घड़, आपे शंकर नाल रला ल्या। तिन्नां माई एका बण बण, एका रूप दरसा रिहा। आपे जननी होए जन जन, जन जणेंदी माउँ आपणा नाउँ धरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, आपणी रचना आप रचा ल्या। विष्न ब्रह्मा शिव हरि कर त्यार, एका तत्त समझाया। एका अक्खर दए आधार, निष्अक्खर लए पढ़ाया। एका चरन इक्क दुआर, एका कँवल नाभ भराया। एका मुख इक्क विचार, एका धुन नाद अगम्म अपार, एका राग दए सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आदि आपणा रंग आप रंगाया। आदि पुरख हरि रंग रंगाया, एका गुण समझाईआ। ब्रह्मा वेता आप उठाया, दूसर दिस किसे ना आईआ। शंकर आपणा हुक्म सुणाया, भुल कदे ना जाईआ। तिन्नां विचोला हरि रघुराया, साचे तख्त बैठा सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी धार बंधाईआ। विष्न धार हरि चलाइंदा, हुक्मी हुक्म धुर फ़रमान। ब्रह्मा पारब्रह्म उठाइंदा, आपे होया जाणी जाण। शंकर साचा राह वखाइंदा, देवे नाम निधान। तिन्नां एका मार्ग लाइंदा, पुरख अबिनाशी वाली दो जहान। आपणा भण्डारा

आप वरताइंदा, देवणहार आप भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां विचोला एका बण, एका धाम सुहाइंदा। साचा धाम सुहंदड़ा, पारब्रह्म बेपरवाह। विष्नूं निउँ निउँ सीस झुकंदड़ा, ब्रह्मा नेत्र नीर रिहा वहा। शंकर गल विच पल्लू पांदड़ा, ना दूसर दिसे कोए सहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सीस जगदीश रक्खे हथ्थ टिक्का। विष्न विष्न विष्न धार, विश्व हरि हरि आप समझाइंदा। लक्ख चुरासी दाता बणे वरतार, देवणहारा आप हो जाइंदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म प्यार, पारब्रह्म हरि समझाइंदा। मेरी रचना तेरी धार, तेरा तेरे विच समाइंदा। साची सिख्या अपर अपार, अपरम्पर आप दरसाइंदा। शंकर उठ बाल नादान, गुण निधाना आप उठाइंदा। जगत मिटणा अन्त निशान, जो घड़या भन्न वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तिन्नां एका हुक्म सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव उठ कर निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कवण रूप तेरा हरि निरँकार, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी कवण भण्डार, कवण दाता बणे बेपरवाहीआ। कवण तत्त लए विचार, त्रै त्रै कवण वण्ड वंडाईआ। पुरख अबनाशी हो मेहरबान, धुर फ़रमाना इक्क जणाईआ। त्रैगुण माया कर त्यार, रजो तमो सतो साची झोली दए भराईआ। पंज तत्त दए आधार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश एका गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाईआ। लक्ख चुरासी घाड़ण घड़या, निरगुण अंदर निरगुण वड़या, सरगुण निरगुण एका धार वखाइंदा। आपणे पौड़े आपे चढ़या, आपणा मन्दिर आप वड़्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाना एका हरि, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। विष्न सरनी गया पड़, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। ब्रह्मा फड़ाए एका लड़, छुट्ट कदे ना जाइंदा। शंकर जटा जूट धार एका वेखे साचा गढ़, दूसर दर ना कोए सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा हरि, आदि जुगादि आपणा खेल आप बुझाइंदा। आदि जुगादी खेल अपारा, हरि करता आप कराईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग विष्न ब्रह्मा शिव तेरा रहे वरतारा, लोकमात वज्जे वधाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार लए अवतारा, भगत भगवन्त लए प्रगटाईआ। साध संगत दए हुलारा, आप आपणी सेव कमाईआ। गुरमुखां देवे चरन कँवल सहारा, सरगुण सरगुण वेख वखाईआ। गुरमुख साचे लाए पारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी करे ख्वार, सच्चा बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए समझाईआ। चार जुग चौकड़ धार, चार कुण्ट वहाइंदा। लोआं पुरीआं हो उज्यार, ब्रह्मण्ड खण्ड शब्द नाद वजाइंदा। रवि ससि कर त्यार, मंडल मण्डप

आप सुहाइंदा। धरनी धरत धवल दए सहार, जल बिम्ब आप टिकाइंदा। लक्ख चुरासी करे विचार, घट घट आपणा आसण लाइंदा। निरगुण दीआ निरगुण बाती निरगुण कमलापाती निरगुण साचा साकी, अमृत जाम आप प्यांअदा। निरगुण सरगुण वेखे हाटी, खेले खेल बाज़ीगर नाटी, नटूआ नाट आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे एका वर, एका हुक्म आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी सेव लगाउणी, हरि साचा आप समझाइंदा। लोकमात लक्ख चुरासी बणत बणाउणी, नौ खण्ड पृथ्मी वण्ड वंडाइंदा। अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाउणी, भुल कदे ना जाइंदा। परा पसन्ती मद्धम बैख़री बाणी आप जणाउणी, आप आपणा परदा लांहयदा। चारे वेदां एका धार बंधाउणी, बन्नृणहार आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वण्ड वंडाइंदा। साची वण्डण हरि करतार, आपणी आप वण्डाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कर त्यार, कलिजुग चौथा जुग संग रलाईआ। त्रै त्रै लेखा करे पार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जो उपजे सो बिनसे विच संसार, गुर अवतार देण ग्वाहीआ। सतिजुग सति सतिवादी प्रगट हो वार अठार, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण गया जोत प्रगटाईआ। त्रेता त्रिया कर विचार, राम रामा रूप दरसाईआ। द्वापर खेल करे करतार, खेलणहारा दिस ना आईआ। कान्हा कृष्ना मीत मुरार, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। साची सख़ीआं मंगलचार, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आपणी रास आप रचाईआ। ग़रीब निमाणयां दए आधार, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यार, ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार अल्ला राणी ऊँची कूके दए दुहाईआ। ऐनलहक करे पुकार, हक हकीकत वेखे साचा माहीआ। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला तौफ़ीक इक्क ख़ुदाए, रहिमत रहिमान इक्क दरसाईआ। निरगुण सरगुण कर त्यार, पंज तत्त दए आधार, नानक जोती जोत उज्यार, नाम सति करे पढ़ाईआ। निष्अक्खर जगत वक्खर हरि गिरधार, वरन बरन चार कुण्ट दहि दिशा आप सुणाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे इक्क प्यार, राउ रंक ना कोए जणाईआ। अन्तिम उच्ची कूक गया पुकार, भुल ना जाए कोए जीव गंवार, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, धुरदरगाही आप सुणाईआ। नानक लेखा अपर अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ । नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जुग करता लै लै आए अवतार, लोकमात करे रुशनाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल करे अपार, महाबली आपणा नाउँ धराईआ। निहकलंक आए आप आपणी वार, माता पिता गोद ना कोए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। सचखण्ड दुआर सुहाइंदा, निरगुण दाता हरि करतार। आपणा आसण आपे लाइंदा, शाहो भूप बण सिक्दार । साचा ताज सीस टिकाइंदा,

तख़्त निवासी बेऐब परवरदिगार। कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा, वेखणहार एकँकार। नानक निरगुण जोती डगमगाइंदा, नूर नुराना शाह सुल्तान सच्ची सरकार। दस दस रूप आप वटाइंदा, रूप अनूप भेव न्यार। नाम खण्डा हत्थ चमकाइंदा, ब्रह्मण्डां पावे सार। जेरज अंडां वेख वखाइंदा, ख़ालक ख़लक दए आधार। सालस आपणा नाउँ रखाइंदा, गोबिन्द जोद्धा सूरबीर बलकार। पुरख अकाल इक्क मनाइंदा, सुत दुलार दए आधार। सूलां सत्थर सेज आप हंढाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर सुहञ्जणा, सति पुरख निरँजण आप सुहाईआ। जोत जगाए आदि निरँजणा, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर लए तराईआ। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, अठसठ नहावण कोए ना जाईआ। जन भगतां परदा आपे कज्जणा, सिर समरथ हत्थ टिकाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक सूरा सर्बंग एका गज्जणा, सम्बल नगरी आसण लाईआ। जो घड़या सो भज्जणा, भन्नणहार आप भन्नाईआ। काल नगारा सभ दे सिर ते वज्जणा, ना सके कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर साची कार, हरि करता आप कमाईआ। हरि साची कार कमाइंदा, आदि जुगादी वड मेहरवान। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराइंदा, कलिजुग मेटे अन्त निशान। नौ खण्ड पृथ्मी फोल फुलाइंदा, सत्तां दीपां मार ध्यान। चार वरन खोज खुजाइंदा, दिवस रैण निगहबान। कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा, नाता तोड़े पंज शैतान। कलिजुग ख़ाली ठूठा हत्थ वखाइंदा, अन्तिम लुट्टी जाए दुकान। सच धर्म हत्थ किसे ना आइंदा, जीव जंत सर्ब कुरलाण। सच निशान ना कोए वखाइंदा, धूंआँधार ज़िमीं अस्मान। राज राजान साचा हुक्म ना कोए चलाइंदा, नौ खण्ड पृथ्मी होई बेईमान। गुर का शब्द ना कोए कमाइंदा, रसना जिहवा सर्ब हलाण। इष्ट देव ना कोए मनाइंदा, नेत्र लोयण लोचण दरस ना कोए पाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल श्री भगवान। कलिजुग अन्तिम खेल खिलावणा, हरि साचा कार कराइंदा। जूठ झूठ मेट मिटावणा, माया ममता मोह चुकाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी शब्द खण्डा इक्क चमकावणा, सृष्ट सबाई डेरा ढांहयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां तख़्तों लाहवणा, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका धाम बहावणा, ऊँच नीच ना कोए बणाइंदा। एका नाम एका जाप सर्ब जपावणा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। एका नगर ग्राम खेड़ा सच दरसावणा, सच्चखण्ड दुआरा कुण्डा लांहयदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल जन भगतां गृह अंदर मन्दिर दरस दखावणा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। चौदां तबकां माण मुकावणा, चौदां लोक चरनां हेठ दबाइंदा। करोड़ तेतीसा रहिण ना पावणा, सुरपति राजा इंद वक्त चुकाइंदा।

शंकर अन्तिम जोती मेल मिलावणा, हथ्थ त्रिसूल ना कोए उठाइंदा। ब्रह्मे पारब्रह्म समावणा, चारे मुख चारे वेद ना कोए अलाइंदा। विष्नूं तेरा रिज़क आपणी झोली पावणा, घर घर रिज़क ना कोए पुचाइंदा। एका डंका नाम वजावणा, पुरख अकाल खेल खिलाइंदा। कलिजुग कूड़ा रहिण ना पावणा, जगत अन्धेरा आप गवाइंदा। सतिजुग साचा मार्ग लावणा, साची सिख्या सिख समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। कलिजुग बन्धन पावणा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। नौ खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी वेख वखावणा, घट घट वेखे थाउँ थाँ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप आप धरावणा, रूप रंग रेख ना सके कोए जणा। शब्द खण्डा हथ्थ चमकावणा, ब्रह्मण्डां खण्डां दए दरसा। मनमुखां कंडां आप वढावणा, अन्तिम सत्थर दए वछा। गुरमुख विरला आप तरावणा, हरि साचे सच्चे शहिनशाह। जिस जन आपणी बूझ बुझावणा, दूई द्वैती परदा दए चुका। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आवणा, आसा तृष्ना दए मिटा। सुरती शब्दी मेल मिलावणा, सुरत शब्द लए प्रना। डूँग्घी भँवरी पार करावणा, सुखमन टेडी बंक पकड़े बांह। त्रबैणी आपणे नैणी पार करावणा, आपे होए सद सहा। अमृत जाम इक्क प्यावणा, निझर झिरना दए झिरा। हँस काग आप बणावणा, दुरमति मैल धवा। सोहँ हँसा मोती चोग चुगावणा, आत्म परमात्म दए मिला। आत्म सेजा इक्क सुहावणा, दस्म दुआरी सेज वछा। नारी कन्त इक्क हंढावणा, पलंग रंगीला आप हंढा। मिल सखीआं मंगल गावणा, गीत गोबिन्द अला। सति सतिवादी एका नज़री आवणा, वाहिगुरु राम इलाही नूर ख़ुदा। जल्वा आपणा आप वखावणा, आपे होए कुरबान आपे होए फ़िदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए मिला। निहकलंक श्री भगवान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सति सतिवादी इक्क वखाए इक्क निशान, दो जहानां आप झुलाईआ। चार वरनां देवे इक्क ज्ञान, अठारां बरन रिहा समझाईआ। एका रूप सति सरूप वड भूप हरि मेहरबान, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। चार वेद शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी देंदी आई ज्ञान, ज्ञान ज्ञान विच दृढ़ाईआ। बिन सतिगुर पूरे एथे ओथे देवे ना कोए माण, दरगाह साची ना कोए सहाईआ। भरमे भुल्ले जीव नादान, जीवण जुगत हथ्थ किसे ना आईआ। पढ़ पढ़ थक्के होए बेईमान, हरि हरि हिरदे ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाँईआ। लक्ख चुरासी वेखणहारा, घट घट आप जगाइंदा। कलिजुग करे पार किनारा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। रैण अन्धेरी मेटे अन्ध अन्धयारा, कूड़ कुड़यारा डेरा ढांहयदा। सच सुच साचा चन्द करे उज्यारा, साची सिख्या इक्क समझाइंदा।

वरनां बरनां वसे बाहरा, दीन मज़्ब ईमान ना कोए रखाइंदा। निरगुण जोत निराकारा, शब्द शब्दी वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इष्ट इष्ट गुरदेव एका पारब्रह्म अलख अभेव, एका सेवा सर्ब कमाइंदा। एका सेवक सेवादार, आदि जुगादि सेव कमाईआ। एका एकँकारा ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, निरगुण जोत लोकमात करे रुशनाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। सन्त कन्त मेला दो जहान, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुखां बख्शे इक्क ज्ञान, आत्म अन्तर करे पढ़ाईआ। गुरसिखां देवे जीआ दान, जीवण मुक्त कराईआ। मनमुख जीव होए नादान, हरि का रूप दिस ना आईआ। नाता जुड़या पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। कूड़ी क्रिया पन्ध मुकावणा, चौथा जुग आप चुकाइंदा। वेद अथर्बण रहिण ना पावणा, ऐड़ा अक्ख इक्क खुल्हाइंदा। एका इष्ट दृष्ट सर्ब दरसावणा, एका भूप नज़री आइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा नाम डंक इक्क वजावणा, राउ रंक राज राजान सर्ब उठाइंदा। इक्क निशान सत्त दीप आप झुलावणा, नौ खण्ड एका हुक्म वरताइंदा। एका ताज सीस टिकावणा, पंचम पंचम पंचम जोग कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर हरि आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमान, कलिजुग अन्तिम आप जणाईआ। खेले खेल दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चौदां लोक त्रैभवन अवण गवण आपणा रूप धराईआ। आप वखाए सति निशान, पुरख अबिनाशी हो मेहरबान, जगदीश साची सेवा आप कमाईआ। जन भगतां देवे धुर फ़रमान, शब्द अनादी धुर दी बाणी ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणाईआ। आदि जुगादी खेल महान, कलिजुग अन्तिम वेखे आण, सृष्ट सबाई जगत लोकाईआ। गुरमुख सज्जण लए पछाण, चरन कँवल देवे सच्चा माण, मन मणका आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, निरगुण निरगुण निरगुण धार आप चलाईआ। निरगुण धार हरि निरँकार, निरवैर पुरख चलाइंदा। कलिजुग अन्त खेल अपार, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। सम्बल नगरी धाम न्यार, गोबिन्द सूरा आसण लाइंदा। एका बोल शब्द जैकार, साचा नाअरा आप सुणाइंदा। सृष्ट सबाई मारे मार, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। सम्मत सतारां रिहा विचार, धरत धवल सर्ब हिलाइंदा। अठ्ठ दस करे ख्वार, नव नौ गेड़ा आप दवाइंदा। बीस बीसा हो त्यार, जगत जगदीशा वेस वटाइंदा। सोहे सीस सच्ची दस्तार, इक्क इकीस कल वरताइंदा। सृष्ट सबाई पीसण जाए पीस, कलिजुग चक्की आप चलाइंदा। लेखा चुक्के अञ्जील कुरान हदीस, तीस बतीस ना कोए सणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। अञ्जील कुरान पन्ध मुकाउणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। चारे वेद मुख भवाउणा, चौथे जुग देवे पन्ध मुकाईआ। शास्त्र सिमरत आपणे विच टिकाउणा, गीता ज्ञान ना कोए वड्याईआ। खाणी बाणी वेख वखाउणा, एका नाम दए वड्याईआ। राम कृष्न कृष्न राम कोटन कोटि रूप आप दरसाउणा, सीता सुरती आप प्रनाईआ। कलिजुग रावण मार मुकाउणा, कंस हँकारी मेट मिटाईआ। काला सूसा तन छुहाउणा, ईसा मूसा लए उठाईआ। संग मुहम्मद चार यार चौदां तबकां फेरा पाउणा, चारों कुण्ट करे रुशनाईआ। सचखण्ड निवासी आपणा खेल आप खिलाउणा, निरगुण निरगुण निरगुण लए मेल मिलाईआ। नानक बंक इक्क सुहाउणा, गोबिन्द वज्जे वधाईआ। नौ खण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड एका नाम पल्ले गंढु बंधाउणा, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। अठसठ तीर्थ पन्ध मुकाउणा, जमना सुरस्ती गंगा गोदावरी नहावण कोए ना जाईआ। घर घर दीपक आप जगाउणा, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। अनहद शब्द सच्ची धुन्कार आप उपजाउणा, अठ्ठे पहर वज्जदी रहे वधाईआ। काया मन्दिर डूँघी कंदर आप सुहाउणा, हरि मन्दिर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए फड़, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। गुरमुख साचा सतिगुर फड़या, आदि जुगादी सेव कमाईआ। आपणे पौड़े आपे चढ़या, काया बंक दए वड्याईआ।
चौथे घर आपे वड़या, तीजा लोयण दए खुल्लाईआ। दोए दोए लेखा आपे करया, इक्क इकल्ला सच्चा शहिनशाहीआ। एकँकारा बोल जैकारा निरभउ भय चुकावे डरया, राए धर्म नेड़ ना आईआ। गुरमुख गुरसिख हरिभगत हरिसन्त पुरख अबिनाशी एका वरया, कन्त कन्तूहल वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि ना जम्मे ना कदे मरया, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। जन्म मरन विच कदे ना आया, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। आवण जावण खेल रचाया, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तिम लए हंढाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा पन्ध दए मुकाया, ब्रह्मा विष्न शिव आपणी सरनी पाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मा बैठे दर सीस झुकाया, कोटन कोटि विष्नूं बैठे झोली डाहीआ। कोटन कोटि शंकर गल बाशक तशका रहे लटकाया, हथ्थ त्रिसूल इक्क उठाईआ। कलिजुग अन्तिम पन्ध दए मुकाया, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। गुरमुख साचे लए जगाया, सोया कोए रहिण ना पाईआ। पूर्ब लहिणा इक्क वखाया, नेत्र नैणां दरस दिखाईआ। भाणा सहिणा हुक्म जणाया, हरि भाणे वड वड्याईआ। तन बस्त्र गहिणा इक्क सजाया, नाम भूशन आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल एका हरि, हरि मन्दिर जोत जगाईआ। हरि मन्दिर अंदर निरगुण जोत, निरगुण निधान आप जगाइंदा। ना कोई किला ना कोई कोट,

चार दीवार ना कोए रखाइंदा। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना वण्ड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख गुरमुख गुर गुर आपणे लेखे पाइंदा। गुरसिख गुर गुर जाणया, आदि जगादी कार। गुरमुख गुर गुर रंग माणया, मिल्या मेल पीआ प्रीतम साचे यार। मनमुख सुत्ते जीव नादानया, कलिजुग रैण अन्धेरी अन्ध अन्धयार। दिस ना आए श्री भगवानया, मस्तक टिक्का काली छार। जिस जन उप्पर होए आप मेहरबानया, दर्शन देवे दीन दयाल। चरन कँवल कँवल चरन सरन बख्शे श्री भगवानया, गुरमुख बणाए साचे लाल। दरगाह साची करे परवानया, नाता तोड़े शाह कंगाल। जिस जन गाया ब्रह्म पारब्रह्म साचा गाणया, तिस मिल्या हरि जू हरि हरि आण। तीर निराला मारे बिरहो बाणया, जो जन घालण रहे घाल। होए मेहरवान सुघड़ सयाणया, लेखे लाए मूर्ख मुग्ध अञ्याण। कलिजुग जीवां वेला अन्त पछतानया, अन्तिम सुंञा दिसे सर्ब जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका शब्द एका धार, एका रंग रंगे सर्ब संसार, दूसर अवर ना कोए दुआर।

७१

१०

★ २ माघ २०१७ बिक्रमी प्यारा सिँघ दे गृह पिण्ड डरोली ★

एका ओट पुरख अकाल, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर दीन दयाल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। रूप अनूपा शाह कंगाल, सति सरूप आप समाईआ। इक्क इकल्लड़ा चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, अनुभव आपणा रूप धराईआ। अनुभव रूप श्री भगवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। एका वसे मन्दिर मकाना, सचखण्ड दुआर सोभा पाईआ। सच सिँघासण इक्क सुहाणा, दर घर साचे दए वड्याईआ। शाहो भूप बण राज राजाना, हुक्मी हुक्म इक्क वरताईआ। एका नाद धुर फ़रमाना, अगम्म अगम्मड़ा आप सुणाईआ। आपे होए जाणी जाणा, जानणहार इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। साचा खेल हरि निरँकारा, एका एक कराइंदा। साचे तख्त बैठे सच्ची सरकारा, धुर दरबारा आप सुहाइंदा। थिर घर साचे खोल्ह किवाड़ा, चरन कँवल आप टिकाइंदा। रूप रंग ते वसया बाहर, अलख अलखणा अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी धार आप बंधाइंदा। अजूनी रहत हो त्यार, निरवैर पुरख आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, बंक दुआर इक्क वड्यांअदा। बंक दुआर हरि भगवन्त, आपणा आप सुहाईआ। आपे नारी आपे कन्त, आपे सेज सुहाईआ। आप बणाए आपणी बणत, सुत दुलारा आपे जाईआ। आपणा लेखा जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका हरि, हरि जू हरि मन्दिर आसण सिँघासण इक्क सुहाईआ। सिँघासण सुहाया हरि भगवान, निरगुण आपणी जोत जगाया। पुरख निरँजण हो मेहरवान, एकँकारा संग रलाया। आदि निरँजण देवे दान, श्री भगवान वेख वखाया। अबिनाशी करता वाली दो जहान, पारब्रह्म आपणा नाउँ धराया। नाउँ निरँकारा कर पछाण, साचे तख्त सोभा पाया। तख्त निवासी दो जहान, शब्द अनादी नाद सुणाया। धुर दी बाणी साचा बाण, बोध अगाध अगाध बोध आपणे विच छुपाया। लेखा लिखे ना कोए निधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप उपाया। आपणी धार आपे प्रगटा, आपे वेख वखाया। आपे साचे मन्दिर डेरा ला, सच सिँघासण सोभा पाया। आपे निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल आपणा नाउँ धरा, आप आपणा डंक वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर संग ना कोए रखाया। ना कोई संग ना कोई साथ, हरि साची खेल कराइंदा। आपणा रूप धर पुरख समराथ, समरथ कल आप वरताइंदा। आपे जाणे आपणी गाथ, आपणी महिमा आप गणाइंदा। आपे उतरे आपणे घाट, आपणा बेड़ा आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा एकँकारा निराकारा आपणा रूप धराइंदा। सचखण्ड दुआरा सोहया, हरि साचा आप सुहाइंदा। आपणे मन्दिर आपे प्रगट होया, मात पित ना कोए बणाइंदा। लोकमात करे लोआ, दीवा बाती ना कोए रखाइंदा। आप आपणा लै के आया ढोआ, शब्द दाता शब्द झोली पाइंदा। बैठा आपे इक्क इकांता, आप आपणे विच समाइंदा। ना कोई वरन बरन ना दिसे ज़ाता, ना कोई वण्ड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा। सचखण्ड दुआर वसाया, कर किरपा गुण निधान। दीवा बाती इक्क जगाया, नूर नुराना नूर महान। घर घर विच लए उपजाया, थिर घर साचा खोल्ह मकान। आप आपणा रूप प्रगटाया, प्रगट होवे गुण निधान। आपणा मार्ग आपे वेख वखाया, आपणा सुत वेख निशान। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाया, ब्रह्मा विष्न शिव देवे दान। साची सिख मति आप समझाया, करे मेहर वड मेहरवान। आपणी गाथा आप सुणाया, धुर दी बाणी एका बाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणा नाउँ धराया। आपणा नाउँ आप जणाए, पारब्रह्म वड वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव अक्खर इक्क पढ़ाए, निश्अक्खर

आप जणाईआ। आप आपणा नाउँ धराय, आपणा नाद आप सुणाईआ। आपणी करनी करता पुरख आप कमाए, करनहार इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म धुर फ़रमाना, आप सुणाए साचा राणा, साचे तख्त बैठ श्री भगवाना, तख्त निवासी एका सच्चा शहिनशाहीआ। तख्त निवासी हरि निरँकार, आदि जुगादि समाया। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, आप आपणा खेल रचाया। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलार, शब्द हुलारा इक्क लगाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे महल्ल अटार, उच्च अटल आपणा आसण लाया। आपे जाणे आपणी धार, धार धार विच्चों प्रगटाया। सार शब्द कर त्यार, सगला संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आपे रिहा मनाया। साचा हुक्म धुर दरगाह, हरि साचा सच जणाईआ। शब्द सरूपी बण मलाह, आपणा बेड़ा आप तराईआ। लेखा जाणे दो जहां, दो जहानां वाली सच्चा शहिनशाहीआ। दूसर सके ना कोई भेव पा, भेव अभेदा बैठा भेव छुपाईआ। अलख अलखणा अगम्म अथाह, अलख अगोचर महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपणा संदेश हरि सच्चा नरेश नर नरायण दए सुणा, नर हरि आपणा हुक्म आप वरताईआ। ब्रह्मा विष्न शिव लए जगा, जाग्रत जोत करे रुशनाईआ। आपणे मार्ग साचे धन्दे दए लगा, अभुल अभुल अभुल बेपरवाहीआ। साचे कंडे तोला तोल लए तुला, तोलणहारा इक्क अख्वाईआ। वस्त अनमोल झोली

दए पा, नाम भण्डारा आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गेड़ा आपे दए समझाईआ। हरि गेड़ा सच समझाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव उठाल। त्रैगुण माया झोली पाइंदा, पंज तत्त देवे सच्चा धन माल। लक्ख चुरासी घाड़न आप घड़ाइंदा, निरगुण सरगुण करे प्रितपाल। घट घट जोती आप जगाइंदा, दीवा बाती दीन दयाल। साचा जाम आप प्यांअदा, आत्म ताकी खोल्ह मकान। साचे राकी आप चढ़ाइंदा, किरपा कर श्री भगवान। चौदां हट्ट वण्ड वंडाइंदा, काया मन्दिर वेख मकान। बजर कपाटी कुण्डा लांहयदा, ना कोई जाणे जीव नादान। आत्म सेजा आप सुहाइंदा, आत्म ब्रह्म हो प्रधान। धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा, अनहद शब्द सच्ची धुन्कान। गृह मन्दिर वेख वखाइंदा, वेखणहारा नौजवान। आप आपणा मुख छुपाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव कर कल्याण। जुग जुग गेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा, दाता जोद्धा सूरबीर बली बलवान। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग एका हुक्म सुणाइंदा, धुर दा शब्द ना कोई मेटे मेट निशान। गुर पीर अवतार देवे वर, भगत भगवन्त कन्त आपणे गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव हरि समझाया, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग एका तत्त दृढ़ाईआ। जगत गेड़ा आपणे हथ्थ रखाया, चार जुग चौकड़ी वण्ड वंडाईआ। चारे वेद झोली पाया, चारे बाणी करे पढ़ाईआ। चारे खाणी

ल‌ए प्रगटाया, जोती जोत कर रुशनाईआ। चारे वरनां दए समझाया, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप करे जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर दए मुकाया, नव नौ चार गेड़ा रहिण ना पाईआ। नौ दुआरे खोज खुजाया, नौ खण्ड पृथमी वेख वखाईआ। अनन्द बिनोद बिमल रूप आप समाया, पारब्रह्म सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, त्रै त्रै एका गुण वखाईआ। त्रै त्रै गुण जणाया, गुणवन्ता गुण निधान। साचा मार्ग आपे लाया, करे खेल श्री भगवान। लोकमात आपे वेख वखाया, आदि जुगादी खेल महान। सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढाया, आपणी करे आप कल्याण। काल महाकाल आपणा रूप वटाया, आपे होए जाणी जाण। आपे शब्द खण्डा तीर चलाया, आपे मारनहारा बाण। आपे पंज तत्त चोला जगत हंढाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा जीआ दान। जीआ दाता हरि दातार, आदि जुगादी खेल खिलाइंदा। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड कर पसार, जेरज अंडज उत्भुज सेत्ज वेख वखाइंदा। आपे जाणे परमानंद, निज़ानंद आपणा रंग रंगाइंदा। आपे गाए सुहागी छन्द, आपणा नाउँ आप परगाइंदा। आपे चाढ़े साचा चन्द, रैण अन्धेर आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे एका वर, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाना शब्द जणाया, भुल रहे ना राईआ। नव नौ चार लेखा इक्क वखाया, लोकमात वज्जे वधाईआ। कलिजुग वेला इक्क दरसाया, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। कूड़ कुड़यारा डंक वजाया, उच्ची कूक कूक अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। भेव खुल्हाए हरि निरँकारा, आदि जुगादि समाया। विष्न ब्रह्मा शिव बणे वरतारा, पुरख अबिनाशी दए कराया। जुग चौकड़ी उतरे पारा, तेरा पन्ध मूल दए चुकाया। निरगुण निरवैर पुरख अकाल ल‌ए अवतारा, जोती जामा भेख वटाया। शब्द डंका कुण्ट चारा, दहि दिशा दए वजाया। राउ रंक शाह सुल्तानां करे ख़बरदारा, सोया कोए रहिण ना पाया। भगतां देवे नाम आधारा, साचे सन्तां वेख वखाईआ। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़ा, पंचम धाड़ा दए गंवाया। गुरमुखां करे सच प्यारा, पीआ प्रीतम वेख वखाया। सृष्ट सबाई नार दुहागण होए नार विभचारा, हरि कन्त ना कोए हंढाया। जूठ झूठ धूंआँधारा, जगत अन्धेरा एका छाया। गुर का शब्द ना किसे विचारा, रसना बह बह सर्ब गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त इक्क भगवन्त खेले खेल जुगा जुगन्त, जाग्रत जोत कर रुशनाया। जुग जुग कार कमाइंदा, हरि साचा करनेहार। जुग जुग वेस वटाइंदा, निरगुण सरगुण लै अवतार। जुग जुग वेख वखाइंदा, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार। जुग जुग रेख मिटाइंदा, थिर रहे ना कोए विच संसार। जुग जुग भेख वटाइंदा, भेखाधारी भेख करे

अपर अपार। निरगुण रूप सति धरा मुच्छ दाढ़ी केस ना कोए रखाइंदा, मूंड मुंडाए ना हरि निरँकार। घट घट अंदर आपणी जोत जगाइंदा, लक्ख चुरासी करे प्यार। गुरमुख विरले बूझ बुझाइंदा, जिस जन देवे नाम आधार। मनमुख गूढ़ी नींद सवाइंदा, ना कोए सके सुरत संभाल। कलिजुग वेला अन्तिम आइंदा, कूड़ कुड़यारा वज्जे ताल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाया, पारब्रह्म प्रभ गहर गम्भीर। जोती जामा वेस वटाया, नाता तुट्टा पंज तत्त सरीर। साची चोटी चढ़ के आसण लाया, घर वसाया ठांडा दरबारा अमृत प्याए साचा सीर। कोटन कोटी बैठे राह तकाया, किसे हत्थ ना आए शाह हकीर। पीर दस्तगीर रहे कुरलाया, मुल्ला शेख़ मुसायक गल पाई तसबी जगत ज़ंजीर। पंडत पांधे देण दुहाया, मस्तक खिच्चे त्रिसूल लकीर। ग्रन्थी पन्थी किसे नज़र ना आया, शाह पातशाह हरि निरँकारा वड पीरन पीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरा अन्त अख़ीर। कलिजुग अन्त अख़ीर, सृष्ट सबाई रही कुरलाईआ। शाह सुल्तानां लथ्थे चीर, बस्त्र तन ना कोए वखाईआ। अमृत हत्थ ना आवे सीर, अठसठ ख़ाली देण दुहाईआ। वेले अन्त ना कट्टे कोए भीड़, सीस जगदीश ना हत्थ टिकाईआ। हउमे हंगता लग्गी पीड़, माया ममता होई हल्काईआ। त्रैगुण माया वज्झा

७५

ज़ंजीर, पंज तत्त ना कोए छुडाईआ। नाता तुट्टा हस्त कीट, ऊँच नीच रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मेटे झूठी शाहीआ। कलिजुग अन्तिम कूड़ पसारा, चार कुण्ट कुरलाया। साचा ना दिसे कोए दुआरा, हरि मन्दिर काया बंक ना किसे वसाया। साध सन्त रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार लग्गा इक्क अखाड़ा, आसा तृष्ना नाच नचाया। माया ममता पीता हाढ़ा, सिदक सबूरी ना कोए धराया। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ा, बिन सतिगुर पूरे ना कोए बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा अग्नी तत्त आपे वेख वखाया। कलिजुग तेरा तत्त अग्ग, हरि साचा वेख वखाइंदा। सृष्ट सबाई रही दग, अमृत सिंच शांत ना कोए कराइंदा। कलिजुग जीव होए कग्ग, हँस रूप ना कोए वटाइंदा। सतिगुर सरनाई ना गए लग्ग, मन का मणका ना कोए भवाइंदा। दरस ना पाए कोई उप्पर शाह रग, नौ दुआर सर्ब कुरलाइंदा। गहर गम्भीर हरि निरँकार सूरा सर्बग्ग, जुग जुग वेस वटाइंदा। गुरमुख गुरसिख सज्जण लए कढ्ढ, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। पंच विकारा देवे वढ्ढ, नाम खण्डा इक्क चलाइंदा। सति निशाना काया मन्दिर दस्म दुआरी देवे गड्ड, दिवस रैण आप वखाइंदा। इक्क ख़ुमार देवे अठ्ठे पहर नाम मदि, दूसर नेड़ ना कोए आइंदा। भाग लगाए गुरमुख यद, साचा बंस आप सुहाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, गुर गुर आपणा रूप वटाइंदा। गुर गुर रूप हरि करतार, शब्दी शब्द जणाईआ। गुर का शब्द सच्चा शाहकार, शहिनशाह दए मिलाईआ। शाह पातशाह सच्ची सरकार, दो जहानां हुक्म चलाईआ। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, लोकमात वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, नव सत फेरा पाईआ। चौदां लोक चरनां हेठ दए लताड़, चौदां तबकां कुण्डा लाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव लेखा करे पार, सुरपति राजा इंद करोड़ तेतीसा रहिण ना पाईआ। गण गंधर्ब करे ख्वार, किन्नर यच्छप आपणा राग ना कोए सुणाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दाता इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी मेटे कूड़ी शाहीआ। कूड़ी शाही वक्त चुकाउणा, थिर कोए रहिण ना पाया। एका हुक्म आप वरताउणा, हरि साचे शब्द जणाया। पुरख अकाल इक्क दरसाउणा, दूसर इष्ट ना कोए वखाया। नौ खण्ड पृथ्मी एका नाअरा लाउणा, रसना जिहवा आप जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख साचे सन्त लए मिलाया।

 ७६

★ २ माघ २०१७ बिक्रमी प्रगट सिँघ दे गृह पिण्ड लल्लीआं कलां ★

हरि सतिगुर पूरा दीन दयाल, दयानिध वडी वड्याईआ। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादी खेल निराल, निरगुण निरवैर पुरख अकाल आप कराईआ। लेखा जाणे दो जहान, रूप अनूप सति सरूप रिहा प्रगटाईआ। लोकमात होए प्रधान, अनुभव आपणा भेव खुल्हाईआ। गुरमुख साचे वेखे लाल, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। सति वखाए सेज मृगशाल, हरिजन साचे आप बहाईआ। जुगा जुगन्तर फल लगाए साचे पत्त डाल, पत डाली आप महिकाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत इक्क वखाईआ। चरन प्रीती निभे नाल, सगला संग आप निभाईआ। देवे नाम सच्चा धन माल, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। आदि पुरख हरि पुरख अबिनाशा, अलख अगोचर आपणा नाउँ धराइंदा। सचखण्ड वासी खेल तमाशा, थिर घर साचे वेख वखाइंदा। मंडल मण्डप पावे रासा, लोआं पुरीआं नाच नचाइंदा। लक्ख चुरासी कर कर वासा, घट घट दीप जोत जगाइंदा। दीवा बाती कर प्रकाशा, जोती नूर डगमगाइंदा। भगत भगवन्त पूरन करे आसा, आस निरास ना कोई वखाइंदा। आपे होवे दासी दासा, नित नवित सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखाइंदा।

आदि पुरख हरि मेहरबान, इक्क इकल्ला एकंकारया। सचखण्ड निवासी श्री भगवान, करे खेल अगम्म अपारया। थिर घर वेखे मार ध्यान, निरगुण रूप आप निरंकारया। शब्द अगम्मी धुर फ़रमान, नाद अनादी बोले सति जैकारया। करे खेल दो जहान, आपणी खेल आप करा रिहा। त्रै त्रै चेला कर प्रधान, साचा मेला मेल मिला रिहा। लक्ख चुरासी देवे दान, साची वस्त इक्क वरता रिहा। लोकमात खोल्ह दुकान, नौ खण्ड वण्ड वण्डा रिहा। करे खेल गुण निधान, लेखा लेख ना कोई जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे वेख वखा ल्या। आदि पुरख एकँकार, अकल कल आपणी खेल खिलाइंदा। सचखण्ड दुआरे हो उज्यार, जोती नूर डगमगाइंदा। थिर घर साचे पावे सार, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण सोभा पाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, राज राजाना हुक्म चलाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पावणहारा सार, जेरज अंड फोल फुलाइंदा। उत्भुज सेत्ज दए हुलार, सच हुलारा इक्क रखाइंदा। करे खेल विच संसार, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। शब्द अनादि सच्ची धुन्कार, गृह मन्दिर आप वजाइंदा। हरिजन साचे लए उभार, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। इक्क वखाए चरन दुआर, सच घर बारा इक्क बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप समझाइंदा। गुरमुख साचा आप समझाया, आपणा परदा दए उठाईआ। आपणे मार्ग आपे लाया, रूप अनूप आप दरसाईआ। त्रैगुण माया बन्धन तोड़ तुड़ाया, जगत जंजाला मूल चुकाईआ। शब्द अनादी छन्दन इक्क सुणाया, गीत सुहागी आपे गाईआ। परमानंदन आप समाया, निजानंद वज्जे वधाईआ। साचा चन्दन मस्तक टिक्का आप लगाया, जोत लिलाट कर रुशनाईआ। गुरसिख बख्शंदन नाउँ धराया, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। मनमुखां कंडां वढ्ढुण लोकमात जग फेरा पाया, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख साचा सुत दुलारा, हरि साचा सच उठाइंदा। आदि जुगादी हो उज्यारा, निरगुण सरगुण रूप मेल मिलाइंदा। दीनां नाथ सन्तन दए सहारा, दर्द दुःख भय भञ्जण आपणा नाउँ धराइंदा। माया ममता मोह चुक्के जगत विकारा, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाइंदा। महल्ल अटल वखाए उच्च मुनारा, सच घर बारा इक्क सुहाइंदा। निरगुण दीवा बाती कर उज्यारा, कमलापाती डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर गुरमुख वेख वखाइंदा। गुर गुर गुरमुख गुर गुर दास, दासन दासी सेव कमाईआ। पूर्ब जन्म पूरी होई आस, आसा तृष्ना पूर ना कोई कराईआ। एका वर मंगे , चरन ध्यान लगाईआ। अठारां भार मेरी करे ना बन्द ख़लास, सत समुंदर लिख लिख थक्के शाहीआ। बिन तुध हरि जू कोई ना बुझाए मेरी प्यास, तेरा दरस

७७

मेरी तृप्त पूरन दए कराईआ। कोटन कोटि जन्म रसना गाए स्वास, लेखा इक्क ना लग्गे राईआ। कोटन कोटि जुग बीते खाए रिहा काल ग्रास, जमकाल वेख वखाईआ। महाकाल होए उदास, आत्म रो रो नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, गुरमुख चात्रिक रिहा बिल्लाईआ। गुरदास गुरमुख गुरमुख लेख जाणया, पुरख अबिनाशी हो त्यारा। मानस देही हरि रंग माणया, अलख अगोचर अगम्म अपारा। वेखणहारा बाल अञ्याणया, देवणहारा नाम सहारा। मूर्ख मूढ़ चतुर सुघड़ बणाए सयाणया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपे जाणे आपणे भाणयां। गुरदास गुर सरन सरनाईआ। गुर गुरमुख हरि हरि पाया, आत्म अन्तर वज्जे वधाईआ। गृह मन्दिर होए रुशनाया, मिल्या मेल साचे माहीआ। विछड़ कदे ना जाया, दोए जोड़ पए सरनाईआ। सीस जगदीश इक्क झुकाया, हउँ मंगां ठंडी छाईंआ। सिर आपणा हत्थ रखाया, तेरा संग वेखां चाँईं चाँईंआ। चेतन्न रूप आप धराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुरमुख तेरी चले सच रज़ाईआ। गुरदास गुर लेखा अनन्द, अनन्द मंगल हरि गाया। निरगुण सति सरूप सुणाया सुहागी छन्द, रसना जिहवा ना कोई हिलाया। तेरा रूप मेरा शब्द सीतल धार गंग, सतिजुग दए वहाया। तेरी मेरी एका गंढ, ना कोई खोल्हे खोल्ह खुल्हाया। तेरा मेरा सगला साथ विच ब्रह्मण्ड, लोआं पुरीआं तेरी गोद बहाया। बिन तेरी कलम नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग होया रंड, हरि कन्त सुहाग ना कोई मिलाया। बिन तेरी कलम नौ खण्ड पृथ्मी कोए ना मेटे भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया ना दए गंवाया। बिन तेरी कलम कोई ना गाए हरि का छन्द, गीत सुहागी इक्क गाया। बिन तेरी कलम लोकमात ना करे खण्ड खण्ड, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाया। बिन तेरी कलम कलिजुग करे ना कोई बन्द, सतिजुग साचा मात धराया। बिन तेरी कलम गुरमुखां देवे ना परमानंद, चार वेद छे शास्त्र पुराण अठारां रहे कुरलाया। बिन तेरी कलम जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निष्अक्खर गया पढ़ाया। निष्अक्खर हरि पढ़ाया, लेखा लिखण विच ना आईआ। कलमी कलमा बन्द कराया, काग़ज़ कलम ना लिखे शाहीआ। धुर फ़रमाना इक्क जणाया, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। गुरदास आस इक्क लगाया, मिले मेल सच्चे शहिनशाहीआ। दो जहानां पन्ध मुकाया, मंडल रास वेख वखाईआ। दोहां विचोला मेल मिलाया, सतिजुग कलिजुग वेखे थाउँ थाँईंआ। पूर्ब लहिणा दए मुकाया, अगला लेखा आपणे हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर का दरस गुरु गुर प्यार, गुर अमृत बख्शे ठंडी ठार, निझर धार आप चलाईआ। निझर धार अमृत रस, सो पुरख निरँजण आप प्यांअदा। हरि पुरख निरँजण हिरदे वस, एकँकारा मेल मिलाइंदा। आदि निरँजण जोती नूर

करे कोटन रवि ससि, नूर नुराना डगमगाइंदा। श्री भगवान मार्ग साचा दस्स, साचा घर इक्क वसाइंदा। अबिनाशी करता नस्स नस्स, जुग जुग आपणा मेल मिलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ होया वस, विछड़ कदे ना जाइंदा। करे कराए पूरी आस, चरन भरवासा इक्क रखाइंदा। लेखा चुक्के दस दस मास, मात गर्भ फंद कटाइंदा। सचखण्ड दुआरे कर निवास, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन हरि हरि वेख्या, निरगुण सरगुण धार। पूर्ब देणा वेखे लेखया, मानस मानस कर विचार। जोती जामा धारे भेख्या, कल कल्की लए अवतार। आपणा लेख आपे वेख्या, ना कोई मेटणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, हरि दर्शन नैण दीदार। हरि दर्शन नैण दीदारया, दिवस रैण प्रभात। गुरदास गुर पैंज संवारया, पूरी करे आस। जगत बणाया सच लिखारया, कलिजुग करे नास। गुरमुख उठाए सच दुलारया, होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड विच प्रभास। आपणा खेल आप करा रिहा, करे खेल पुरख अबिनाश। रूप रंग रेख ना कोई जणा रिहा, जोती जोत नूर प्रकाश। पृथ्मी आकाश वेख वखा रिहा, गगन मंडल पावे रास। रूप रंग रेख ना कोई जणा रिहा, जोती जोत नूर प्रकाश। गोपी काहन आप नचा रिहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन रक्खे सदा पास। गुरदास हरि भाया, पाया गहर गम्भीर। प्रभ सांतक सति वरताया, ठांडा जगत सरीर। आत्म रस चखाया, अमृत जिउँ अनमुल्ला सीर। हस्स हस्स गोद बहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे साची धीर। साची धीर धराइंदा, कर किरपा गुण निधान। गुरदास तेरी पूरी आस कराइंदा, दो जहान वखाए इक्क निशान। राती सुत्तयां ब्रह्मण्डां विच नाल फिराइंदा, किरपा करे जाणी जाण। ब्रह्मा विष्न शिव तेरी उँगली लाइंदा, खेले खेल श्री भगवान। साचे सतिजुग सोभा पाइंदा, आदि जुगादी नौजवान। सच्चा सीस ताज टिकाइंदा, पंचम मुखी निगहबान। जगत जगदीश सेव कमाइंदा, भगत भगवन्त लए पछाण। हरि साचे सन्त आपणे लेखे पाइंदा, धुरदरगाही धुर दी एका बाण। गुरमुख साचे आप उठाइंदा, शब्द जणाए सच फ़रमान। गुरसिख आपणी गोद टिकाइंदा, वेखणहारा बाल निधान। शब्द नगारे चोट लगाइंदा, काया मन्दिर चढ़ सच मकान। दरस दुआरी डेरा लाइंदा, कर किरपा आप मेहरवान। शब्द अनादी नाद वजाइंदा, आप सुणाए सच्ची धुन्कान। अमृत साचा जाम प्यांअदा, निझर झिरना झिरे महान। सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा। इक्क रखाए साची आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे देवे माण। माण निमाणयां देवणहारा, एका एकँकार। आदि जुगादी पावे सारा, लोकमात लए अवतार। कलिजुग अन्तिम खेल

न्यारा, ना कोई जाणे जीव गंवार। प्रगट होया हरि करतारा, रूप अनूप सच्ची सरकार। हुक्मी हुक्म करे वरतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान।

★ ३ माघ २०१७ बिक्रमी नसीब सिंघ दे गृह पिण्ड बोपा राय ★

हरि जुग जुग वेस वटाया, आदि जुगादी एकँकार। हरि जुग जुग वेस वटाया, जुगा जुगन्तर खेल अपार। हरि जुग जुग वेस वटाया, निरगुण सरगुण लै अवतार। हरि जुग जुग वेस वटाया, पंच तत्त करे प्यार। हरि जुग जुग वेस वटाया, करे खेल अगम्म अपार। हरि जुग जुग वेस वटाया, नाउँ धराए विच संसार। हरि जुग जुग वेस वटाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए सच विहार। हरि जुग जुग वेस वटाइंदा, अलख अगोचर अगम्म अथाह। हरि जुग जुग वेस वटाइंदा, निरगुण दाता बेपरवाह। हरि जुग जुग वेस वटाइंदा, अलख अलखणा सच्चा शहिनशाह। हरि जुग जुग वेस वटाइंदा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल नाउँ निरँकार आप प्रगटा। हरि जुग जुग वेस वटाइंदा, शब्द अनादी नाद दो जहानां दए वजा। हरि जुग जुग वेस वटाइंदा, जोती नूर कर रुशना। हरि जुग जुग वेस वटाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बणे सच मलाह। हरि जुग जुग वेस अवल्लड़ा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। हरि जुग जुग वेस अवल्लड़ा, सो पुरख निरँजण भेव ना राईआ। हरि जुग जुग वेस अवल्लड़ा, हरि पुरख निरँजण रूप अनूप आप धराईआ। हरि जुग जुग वेस अवल्लड़ा, एकँकारा अनुभव प्रकाश आपणा आप धराईआ। हरि जुग जुग वेस अवल्लड़ा, आदि निरँजण नूरो नूर नूर नुराना डगमगाईआ। हरि जुग जुग वेस अवल्लड़ा, श्री भगवान सचखण्ड दुआरा आपणा आप सुहाईआ। हरि जुग जुग वेस अवल्लड़ा, थिर घर सच सिंघासण एका आसण लाईआ। हरि जुग जुग वेस अवल्लड़ा, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेखे खेल तमासन, हुक्मी हुक्म आप वरताईआ। हरि जुग जुग वेस अवल्लड़ा, साचे तख्त बैठ शाहो शाबासण, राज राजान भूपण भूप आपणी दया आप कमाईआ। हरि जुग जुग वेस अवल्लड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणी खेल आप खिलाईआ। हरि जुग जुग वेस अपारा, हरि करता आप कराइंदा। हरि जुग जुग हो उज्यारा, शब्द धार आप चलाइंदा। हरि जुग जुग ब्रह्मा विष्न शिव लाए सेवादारा, साची सेवा इक्क समझाइंदा। हरि जुग जुग त्रैगुण माया भरे भण्डारा, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। हरि जुग जुग पंज तत्त करे पसारा, लक्ख चुरासी कंचन गढ़ वसाइंदा। हरि जुग जुग खेल अपारा, निरगुण सरगुण मेला कन्त भतारा, साची

सेजा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका नर, नर नरायण आपणा नाउँ उपजाइंदा। हरि जुग जुग जोत जगाइंदा, जोती जाता हरि निरँकार। हरि जुग जुग घाड़न घड़त आप घड़ाइंदा, घड़ण भन्नणहार समरथ पुरख करतार। हरि जुग जुग रथ चलाइंदा, रथ रथवाही बणे सच्ची सरकार। हरि जुग जुग महिमा कथ आप सुणाइंदा, आपे गाए आपणी वार। हरि जुग जुग साची वथ लोकमात वरताइंदा, नाम अनमुल्ला इक्क भण्डार। हरि जुग जुग आपणा हट्ट आप खुल्हाइंदा, गुर पीर बण अवतार। हरि जुग जुग धीरज सति आप धराइंदा, सति सन्तोख दए आधार। हरि जुग जुग ब्रह्म मति इक्क समझाइंदा, आत्म अन्तर कर विचार। हरि जुग जुग रती रत नाम रंगाइंदा, रंग रंगीला मीत मुरार। हरि जुग जुग साचा बीज एका घत्त अमृत फल इक्क उपजाइंदा, फुल्ल फुलवाड़ी वेखे सर्ब संसार। हरि जुग जुग चरन कँवल नाता आप बंधाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कार। हरि जुग जुग कार कमाईआ, कमावणहारा एकँकार। लक्ख चुरासी खेल रचाईआ, लेखा जाणे अगम्म अपार। घर घर बैठा सेज हंढाईआ, लक्ख चुरासी कन्त भतार। साचा मंगल एका गाईआ, जुगा जुगन्तर शब्द अनाद सच्ची धुन्कार। साची सख़ीआं आप सुणाईआ, सख़ा सुहेला बण मीत मुरार। इक्क इकेला वेखे चाँईं चाँईंआ, जुगा जुगन्तर हो त्यार। भगत भगवन्त वेखे थाउँ थाँईंआ, नौ खण्ड पृथमी एका नैण उग्घाड़। सन्त सुहेले पकड़े बाहींआ, मेट मिटाए पंचम धाड़। गुरमुखां देवे ठंडी छांईंआ, सिर हथ्थ रक्ख करतार। गुरसिख साचे लए समझाईआ, जगत विद्या करे पार किनार। एका अक्खर दए पढ़ाईआ, आप आपणी किरपा धार। जुग जुग आपणा रूप धराईआ, सतिजुग साचा कर वरतार। त्रेता लेखा आप मुकाईआ, त्रैगुण भाण्डा भन्न भण्डार। द्वापर आपणा खेल खिलाईआ, खेलणहारा सच्चा शाहकार। कलिजुग कूड़ कुड़यारा डंक वजाईआ, चारों कुण्ट हाहाकार। वेला अन्तिम दए दुहाईआ, ना कोई पावे सार। हरि करते खेल रचाईआ, खेले खेल बेऐब परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे उज्यार। हरि जुग जुग खेल खिलंदड़ा, खेलणहार सदा बेअन्त। निरगुण आपणा वेस वटंदड़ा, जोती नूर श्री भगवन्त। साचा मन्दिर आप सुहंदड़ा, महिमा गणत अगणत। नेत्र लोचण नैण ना कोए वेख वखंदड़ा, भरमे भुल्ले कलिजुग सन्त। गुरमुख साचे आप उठंदड़ा, लक्ख चुरासी विच्चों वेखे आपणा जंत। एका दरस दरसी सच वखंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, गढ़ तोड़े हउमे हंगत। हरि जुग जुग गेड़ गढ़ाया, सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार। कलिजुग अन्तिम वेखण आया, निरगुण नूर कर उज्यार। जोती जामा वेस वटाया, दिस ना आए विच संसार। शब्द खण्डा हथ्थ चमकाया, दो जहानां रिहा हुलार।

लोआं पुरीआं दए उठाया, ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सार। लक्ख चुरासी फोल फोलाया, नव खण्ड पृथ्मी करे बेहाल। गुरमुख साचे संग रलाया, लग्गी प्रीती निभे नाल। गृह मन्दिर नाम मृदंग इक्क वजाया, छत्ती राग सुरत ना सकण संभाल। रागी नादी बाहरा एका रूप धर के आया, ना शाह ना दिसे कंगाल। साचा संग आप रखाया, सुहाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। गुरसिख गुरमुख अनन्द मंगल एका गाया, घर पाया पुरख अकाल। आवण जावण लक्ख चुरासी बन्धन इक्क तुड़ाया, नाता तुट्टा जगत जंजाल। परमानंदन विच समाया, सतिगुर पूरा दीन दयाल दिवस रैण करे प्रितपाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेल करे दीन दयाल। हरि जुग जुग खेल खिलाइंदा, ख़ालक ख़लक रूप भगवान। सति सतिवादी सच निशान इक्क रखाइंदा, आप झुलाए दो जहान। चौदां लोक एका हुक्म वरताइंदा, चौदां तबकां पाए आण। ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकाइंदा, पुरख अबिनाशी देवे धुर फ़रमान। सच संदेशा इक्क सुणाइंदा, कलजुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान। चौथे जुग पन्ध मुकाइंदा, कूड़ी क्रिया मेटे जगत निशान। गुरमुख साचे वेख वखाइंदा, आदि जुगादी निगहबान। निरवैर पुरख वैर ना कोए कमाइंदा, करे खेल वड मेहरवान। जीव जंत कर्म झोली पाइंदा, आपे बणया रहे बेपछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, इक्क इकल्ला नौजवान। जुग जुग वेस मात धर, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख वेख वखाईआ। निरभउ चुकाए भय जगत डर, भयानक आपणा नाउँ रखाईआ। सन्त सुहेले साचे फड़, सज्जण मेले थाउँ थाँईंआ। किला कोट तोड़ हँकारी गढ़, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। शब्द फड़ाए साचा लड़, गुर शब्दी वड वड्याईआ। आदि अन्त ना जाए मर, जुग जुग सगला संग रखाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, सतिगुर पूरा इक्क सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप प्रगटाईआ। जुग जुग नाउँ प्रगटाइंदा, पारब्रह्म हरि करतार। रामा रूप आप वटाइंदा, आपे लेखा जाणे कृष्न मुरार। ईसा मूसा आपणी खेल खिलाइंदा, लेखा जाणे संग मुहम्मद चार यार। नानक निरगुण नाउँ धराइंदा, गोबिन्द जोती एका धार। सुत दुलारा आप अख्वाइंदा, पिता पूत करे प्यार। साचा हुक्म आप वरताइंदा, हुक्मी हुक्म सच्ची सरकार। आपणा भाणा आपणे विच रखाइंदा, आपणे भाणे करे सदा निमस्कार। आपणा भाणा आपणा बन्धन पाइंदा, जुग जुग लोकमात लै अवतार। चौथे जुग वेस वटाइंदा, चारे खाणी चारे बाणी वसया बाहर। चारे वेद भेव ना आइंदा, चारे मुख ब्रह्म ना करे विचार। पुरख अबिनाशी आपणा खेल खिलाइंदा, कल कल्की लै अवतार। कागद कलम ना लेख लिखाइंदा, सत्त समुंदर मस रोवे ज़ारो ज़ार। बनास्पत वण्ड ना कोए वंडाइंदा, तोल

तुले ना अठारां भार। अमुल अमुल अमुल आप हो जाइंदा, निरगुण दाता हरि निरँकार। गुरमुख विरले बूझ बुझाइंदा, जिस जन बख्शे चरन प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, आदि जुगादी गुर अवतार। हरि जुग जुग गुर अवतारया, रूप अनूप अपार। करे खेल विच संसारया, सति सरूप परवरदिगार। आपे राम नाम आधारया, आपे कृष्ना बोल जैकार। आपे हू हू नाअरा ला ल्या, आपे ऐनलहक रिहा विचार। आपे निउँ निउँ सीस झुका ल्या, आपे सजदा करे परवरदिगार। आपे मन्त्र नाम सति दृढ़ा ल्या, सति नाम करे प्रधान। आपे वाहिगुरु फ़तह गजा ल्या, वाह वा गुरु बली बलवान। आपे आपणी ओट तका ल्या, आपे वेखे सच निशान। आपे आपणा रूप धरा ल्या, निरगुण निरगुण हो मेहरवान। आपे शब्द डंका इक्क वजा ल्या, आपे सुणे सुणाए आपणे कान। आपे जुग जुग वेस वटा ल्या, कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान। आपे निहकलंक नर नरायण नाउँ धरा ल्या, मात पित ना सके कोए पछाण। आपे गुरमुख अंग लगा ल्या, गुरसिख साचा चतुर सुजान। आपे ब्रह्मण्ड खोज खुजा ल्या, जेरज अंड करे कल्याण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, हरिजन साचे देवे माण। जुग जुग भगत तराया, भगतन मीता आप भगवान। जुग जुग सन्त मिलाया, सन्त सतिगुर सति पछाण। जुग जुग गुरमुख वेख वखाया, आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञान। जुग जुग गुरसिख संग निभाया, स्वच्छ सरूपी दरसी दरस देवे दर घर आण। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, वेस अवल्लड़ा जीव जहान। ख़ालक ख़लक दिस ना आया, आपे होया बेपहचान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

८३ ८३

★ ३ माघ २०१७ बिक्रमी लाल सिँघ दे घर पिण्ड हेर तहिसील नकोदर ज़िला जलन्धर ★

वड भाग गुरसिख पाया, हरि सतिगुर सच्चे भाल। वड भाग जुग विछोड़ा पन्ध मुकाया, जिस मिल्या साचा लाल। वड भाग लोड़ींदा वर पाया, पुरख अबिनाशी दीन दयाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर वेख सच सच्ची धर्मसाल। सच्ची धर्मसाल कुल्ली कक्ख, सो पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। निरगुण निरगुण हो प्रतक्ख, सरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां करदा आया पक्ख, सेवक सच्ची सेव कमाइंदा। शब्द अगम्मी मार्ग सच्च, संदेश इक्क सुणाइंदा। हिरदे अंदर हरि जू वस, हरि मन्दिर सोभा पाइंदा। करे प्रकाश कोटन रवि ससि, सूरज चन्न मुख शरमाइंदा। दिवस रैण नस्स नस्स, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

आप आपणा खेल खिलाइंदा। वडभाग गुरसिख जाणया, हरि सतिगुर फेरी पा। लेखे लाए बाल अञ्याणयां, सुघड़ सयाणा बेपरवाह। देवे निष्अक्खर नाम निधानया, चौदां विद्या मति गंवा। इक्क वखाए सच निशानया, सचखण्ड दुआरा चरन कँवल सरना। एका देवे नाम बिबाणया, गुरमुख सज्जण लए चढ़ा। एका बख्शे अमृत ठंडा पाणीआ, अन्तर आत्म जाम प्या। इक्क सुणाए अनहद अनादी बाणीआ, धुन आत्मक आप प्रगटा। एका लेखा चुकाए चारे खाणीआ, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज पन्ध मुका। एका मेल मिलाए साचे हाणीआ, गुर सतिगुर पकड़े बांह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाह। कुल्ली कक्ख शाह सुल्ताना, सच सिँघासण सोभा पाईआ। आपे मर्द आप मरदाना, नाम मृदंग आप वजाईआ। आपे गोपी आपे कान्हा, आपे गुरमुख सख़ीआं मंडल रास रचाईआ। आपे देवे धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। आपे होया जाणी जाणा, भेद अभेदा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे बेपरवाहीआ। वड भाग गुरसिख पेख्या, हरि जू नेत्र नैण उग्घाड़। आपे जाणे धुर दा लेखया, जगत लेखा देवे पाड़। भेव खुल्हाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश्या, करे खेल अपार। दो जहानां कर कर वेसया, तिन्नां लए उभार। आपे होए दस दस्मेशया, आपे जोती जल्वा नूर उज्यार। आपे हथ्थ खूंडी मोढे धरे खेसया, आपे नानक निरगुण दए आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, करे खेल अगम्म अपार। कुल्ली कक्ख हरि हरि मन्दिर, हरि साचा आप सुहाइंदा। जगे जोत अंदरे अंदर, दीवा बाती ना कोई वखाइंदा। भाग लगाए डूँग्घी कंदर, गुर दर मन्दिर खोज खुजाइंदा। मन मन्दिर भवे ना बन्दर, दहि दिशा वेख वखाइंदा। बजर कपाटी तोड़े जंदर, नाम कटारा इक्क लगाइंदा। कलिजुग लेखा चुक्के खण्डर, सच मुनारे आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाइंदा। वड वड्याई गुरसिख भाग, हरि सतिगुर सेव कमाइंदा। दीपक जगे जोत चिराग़, घर नूर नुराना डगमगाइंदा। त्रैगुण माया बुझे आग, पंज तत्त आप बुझाइंदा। हरि हरि पतित पुनीता बणया सज्जण साक, जगत नाता तोड़ तुड़ाइंदा। पतित पुनीत करे पाकी पाक, साचा साकी जाम प्यांअदा। बन्द किवाड़ा खोल्हे ताक, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। शब्द घोड़े चढ़ाए राक, हरि शब्द लोआं पुरीआं आप फिराइंदा। नाता तोड़े अठ्ठ तात, मन मति बुध ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। बिन रंग रूप हो उज्यारा, निरवैर पुरख खेल खिलाइंदा। अजूनी रहत करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। भगतां हित्त नित नवित लए अवतारा, लोकमात वेख वखाइंदा । गुरमुख वेखे साचा लाड़ा, धुरदरगाही दर घर साचे मेल मिलाइंदा। गुरमुखां

बख्शे चरन प्यारा, चरन कँवल धरत धवल आप वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल एका नर, नर नरायण आप अख्वाइंदा। वडभाग गुरसिख मेलया, मेल मिलावा धुर दरबार। एका रंग गुरु गुर चेलया, दूजा रंग ना कोए संसार। सो पुरख निरँजण चाढ़े तेलया, हरि पुरख निरँजण सगन मनाए पहली वार। आपे एकँकारा जाणे आपणा वक्त वेलया, आदि निरँजण होए मीत मुरार। अबिनाशी करता सज्जण सहेलया, श्री भगवान विछड़ कदे ना जाए सांझा यार। पारब्रह्म आपणा खेल आपे खेलया, खेलणहार आप करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, आप आपणी किरपा धार। साचा गढ़, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। सति सरूप बन्न धार अंदर बैठा वड़, दिस किसे ना आइंदा। बोध अगाधा शब्द अनादा आपे पढ़, ब्रह्म ब्रह्माद आप सुणाइंदा। गुरमुख सज्जण आपे लध्ध, पिता पूत मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए घर, ठांडा दरबार आप सुहाइंदा। वड वड्याई गुरसिख घर, घर विच घर गृह मन्दिर खोज खुजाइंदा। आदि जुगादि वसे दर, जन भगतां दर सुहाइंदा। जुगा जुगन्तर देंदा आया वर, वर दाता आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। कुल्ली कक्ख सचखण्ड, हरि साचा सच सुहाइंदा। कलिजुग अन्तिम वण्डी वण्ड, वण्डणहारा आप हो जाइंदा। करे खेल विच ब्रह्मण्ड, वरभण्डी रूप धराइंदा। आपणा करे आप पखण्ड, हरि पखण्डी दिस ना आइंदा। मनमुखां वढुणहारा कंड, नाम खण्डा हथ्थ चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, आप आपणा मेल मिलाइंदा। वडभागी शाहो शाहबाश्या, हरि पाया सज्जण शाह। साचे मंडल साची रासया, पुरख अबिनाशी वेखे बेपरवाह। आदि जुगादि ना कदे विनासया, जुगा जुगन्तर रिहा वेस वटा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तरा। हरिजन साचे तारया, कर किरपा दीन दयाल। जन्म जन्म दा रोग निवारया, दिवस रैण करे प्रितपाल। माणस जन्म पैज संवारया, पूर्ब जन्मां घाली घाल। काल आए ना चल दुआरया, महाकाल होए आप रखवाल। देवे नाम शब्द आधारया, नाता तोड़ जगत जंजाल। वेखणहारा शाह अस्वारया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचे लाल। हरिजन लाल अनमुल्लड़ा माणक मोती, गुर सतिगुर आप प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण जगाए जोती, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सुरत सुवाणी उठाए सोती, गुर शब्द वडी वड्याईआ। लक्ख चुरासी लभ्भदे फिरदे कोटन कोटी, सतिगुर पूरा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुल्ली कक्ख दए वड्याईआ। कुल्ली कक्ख वड वड भागा, भगवन हरि हरि पाया। जन्म जन्म दा धोया दाग़ा, निर्मल

८५

नीर मुख चुआया। फड़ फड़ हँस बणाया कागा, कागों हँस उडाया। सतिगुर पूरा एका जागा, गुरसिख साचे लए जगाया। चरन धूढ़ कराए मजन माघा, दुरमति मैल रहे ना राया। कलिजुग अन्तिम आया भाजा, निरगुण आपणा वेस वटाया। शब्द अगम्मी रक्खया ताजा, सति सिँघासण आसण आसण लाया। सो पुरख निरँजण मारे वाजां, हँ ब्रह्म आप उठाया। करे खेल देस माझा, औंदा जांदा दिस ना आया। शाहो भूप वड राजन राजा, सीस साचा ताज टिकाया। आपणा करे आपे काजा, दूसर संग ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाया। कुल्ली कक्ख घर सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। देवे वड्याई आदि निरँजणा, दूसर संग ना कोए वखाइंदा। दर घर आया दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराइंदा। धूढ़ कराए एका मजना, मस्तक टिक्का नाम लगाइंदा। आदि अन्त परदा कज्जणा, सिर समरथ हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। कुल्ली कक्ख गहर गम्भीरा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। कट्टणहारा जगत ज़ंजीरा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। अमृत बख्शे ठांडा सीरा, सांतक सति सति वरताईआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीरा, जोग अभ्यास ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए तराईआ। कुल्ली कक्ख हीरे जड़त जड़ाया, माणक मोती पन्ने लाल। पुरख अबिनाशी वेखण आया, गुरसिख सज्जण साचे लाल। चार जुग दे विछड़े नाल मिलाया, नाल ल्याया रविदास कंगाल। आपणा कंगण आपे पेखण आया, आपे बणया हरि दलाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल हरि गोपाल। गोपाल दीन दयालण, दयानिध वडी वड्याईआ। करे खेल जोत अकालण, कुल्ली कक्ख कक्ख रुशनाईआ। आप आपणे चढ़या भालण, दिवस रैण सेव कमाईआ। गुरसिखां अग्गे बणे सवालण, आप आपणी झोली डाहीआ। मंगे मंग मैं बणया रहां सदा प्रितपालण, गुरसिख तेरी सेव कमाईआ। तेरे अंदर वजौंदा रहवां तालण, अनहद आपणी तार हलाईआ। तेरे दुआरे बणया रहां मालण, तेरा प्रेम सीस खारी इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कुल्ली कक्ख दए वड्याईआ । कुल्ली कक्ख पूरी आस, आस निरास ना कोए जणाइंदा। साहिब सतिगुर वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ प्रभास, जल थल महीअल वेख वखाइंदा। लेखे लाए रसन स्वास, पवण पवणां आप समाइंदा। चरन कँवल दए धरवास, धुर दा बन्धन आपे पाइंदा। नाता तोड़े दस दस मास, मात गर्भ फंद कटाइंदा। लेखा चुक्के धरत आकाश, आकाश आकाशां पार कराइंदा। सचखण्ड दुआरे बख्शे इक्क निवास, अन्तिम जोती जोत मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन

साचे पार कराइंदा। हरिजन करे पार किनारा, सतिगुर पूरा आप कराईआ। कुल्ली कक्ख सोहे दुआरा, लोकमात वज्जे वधाईआ। विष्नूं आए तक्क भण्डारा, ब्रह्मा आपणी झोली रिहा डाहीआ। शंकर रोवे ज़ारो ज़ारा, हथ्थ त्रिसूल सुटाईआ। सुरपति राजा इंद मारे एका नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। करोड़ तेतीसा बणे भिखारा, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। हरि पुरख निरँजण कलिजुग अन्तिम करे खेल न्यारा, निरगुण भेव कोए ना आईआ। निहकलंका लै अवतारा, लोकमात करे रुशनाईआ। देवे सति भण्डारा, सति सतिवादी सच्चा शहिनशाहीआ। लोआं पुरीआं करे ख्वारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। वडभागी वडभाग पाया गुरमुख दुलारा, गुर गुर वेखे चाँईं चाँईंआ। कुल्ली कक्ख बण वरतारा, आत्म झोली दए भराईआ। होए प्रतक्ख विच संसारा, आपणा परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सज्जण वेखे थाउँ थाँईंआ। थान थनंतर वेखणहारा, एका रंग समाइंदा। आदि जुगादी गुर अवतारा, पारब्रह्म हरि आपणा नाउँ धराइंदा। करता पुरख करे कम्म अगम्म अपारा, अलख अगोचर खेल खिलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जन भगतां देंदा रिहा आधारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। चारों कुण्ट धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोए चमकाइंदा। सृष्ट सबाई होई नार विभचारा, हरि कन्त ना कोए हंढाइंदा। मन्दिर मस्जिद मठ हाहाकारा, हरि का रूप दिस ना आइंदा। चार वरन होए ख्वारा, चार यारी संग ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा बल आप धराइंदा। आपणा बल आपे धार, हरि आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण नूर कर उज्यार, जोती जाता वेस वटाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, हुक्म हाकम आप हो जाईआ। मंगण ना जाए किसे दुआर, दर सीस ना किसे झुकाईआ। लेखा जाणे राज राजान, शाह सुल्तान शहिनशाह बेपरवाहीआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे मार ध्यान, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, आप आपणा नाउँ प्रगटाईआ। नाम खण्डा तीर कमान, दो जहानां आप वखाईआ। मेट मिटाए कूड़ निशान, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। नाता तोड़े बेईमान, अन्तकाल वेखे कूड़ी शाहीआ। गुरमुख साचे लए उठाल, अनुभव आपणा दरस वखाईआ। नाता तोड़े शाह कंगाल, शाह कंगालां एका रंग रंगाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माण, निमाणयां आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साचा दान, साचा दान सर्ब गुणवन्त, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। आप उठाए साचे सन्त, सन्त सतिगुर वेख वखाइंदा। प्रीआ प्रीतम बण बण कन्त, नर नरायण सेज सुहाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। शब्द जणाए मणीआ मंत, मन का मणका आप भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा।

गुरमुख रंग चढ़ाए चलूल, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। जुगा जुगन्तर ना जाए भूल, अभुल आप अख्वाईआ। पूर्ब जन्म चुकाए मूल, पिछला लेखा रहे ना राईआ। अग्गे बरख़े आपणे फूल, पुरख अबिनाशी सेव कमाईआ। सच सिँघासण इक्क वखाए ना कोई पावा ना कोई चूल, निरगुण आपणी सेज सुहाईआ। नारी मिले कन्त कन्तूहल, गुरमुख आत्म वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाईआ। गुरसिख उठ उठ जाग, हरि सतिगुर आप जगाइंदा। कुल्ली कक्ख लग्गा भाग, वड भागी दरस दिखाइंदा। एथे ओथे पकड़े तेरी वाग, समरथ पुरख सेव कमाइंदा। चार जुग आपणे विच रक्खे तेरी याद, आपणी फ़रयाद गुरसिखां अग्गे आप सुणाइंदा। सेवक बण बण देवे दाद, देवणहारा दिस ना आइंदा। गुरसिख तेरी महिमा बोध अगाध, अदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरि लिखाइंदा। गुरसिख सच्चा सन्त साध, गुरसिख भगत भगवन्त रूप वटाइंदा। गुरसिख वजाए नाम नाद, गुर सतिगुर तुरीआ राग आप सुणाइंदा। गुरसिख लँघे जगत पार हद्द, जगत किनारा डेरा ढाइंदा। गुरसिख लडाए साचा लाड, गुर सतिगुर गोद सुहाइंदा। गुरसिख सुहाए साची यद, बंस सरबंस नाउँ धराइंदा। गुरसिख आपणा भार गुर पूरे उत्ते देवे लद्द, हौले भार आप उठ धाइंदा। सतिगुर पूरा डूँग्घी कवरी भँवरी लेवे कढ्ढ, आप आपणी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख एका धाम सुहाइंदा। गुरसिख धाम सुहाया, सोभावन्त रमनीक। पुरख अबिनाशी चरन छुहाया, एका मिल्या लाशरीक। वाहद आपणा रूप दरसाया, जगत मेटी अन्धेर तारीक। एका अलिफ़ रूप वटाया, पुरख अबिनाशी सच तौफ़ीक। रहिमत रहिमान आप कमाया, सद वसदा रहे नज़दीक। काया कुरा फोल फोलाया, लेखा चुक्या हस्त कीट। साची शरअ इक्क समझाया, बिस्मिल वसे सदा चीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आरफ़ आपणा तुआरफ़ दए कराया, इक्क वखाए सच प्रीत। सच प्रीती सच दरबार, हरि साचा सच जणाइंदा। जुग जुग विछड़े मेलणहार, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जीव जगत जुगत ना पाए सार, भगत भगवन्त खेल खिलाइंदा। सन्त कन्त राह तक्कण साचा यार, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। गुरमुख मंगे मंग भिखार, भिखक भिच्छया झोली पाइंदा। गुरसिखां जाए पैज संवार, आप आपणा रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कौल आपे पूर कराइंदा। निरगुण कौल सरगुण धार, निरवैर खेल खिलाया। जगत जुग बीते चार, चारे दिशा वेख वखाया। चारे वेद करन पुकार, चारे वरन रहे कुरलाया। चार यारी आई हार, चारे खाणी वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे वेख वखाया। गुरसिख वड्याई वड, हरि सतिगुर आप वड्यांअदा। लक्ख चुरासी

विच्चों कढ्, आप आपणा मेल मिलाइंदा। गीत सुणाए सुहागी छन्द, छंत आपणा आप अलाइंदा। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, बन्दी छोड़ बन्द कटाइंदा। आत्म उपजाए परमानंद, निजानंद रस चखाइंदा। जोत निरँजण चाढ़े चन्द, आत्म अन्ध अन्धेर गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे विच समाइंदा। आपणे विच हरि समाया, सिरजणहार सर्ब सुखदाए। गुर गुर गुरसिख वेख वखाया, जगत जुगत आप बणाए। गृह मन्दिर खोज खुजाया, घट घट आपणा फेरा पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप आप धराए। निरगुण सरगुण हरि हरि रंग, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण सरगुण हरि हरि मृदंग, मर्द मरदाना आप वजाइंदा। निरगुण सरगुण हरि हरि पलँघ, आत्म सेजा आप हंढाइंदा। निरगुण सरगुण हरि हरि मंग, भगत दुआरा मंगण आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, हरि मन्दिर सोभा पाइंदा। हरि मन्दिर सच सुहावणा, कुल्ली कक्ख दए वड्याईआ। मिल सख़ीआं मंगल गावणा, वाहवा वजदी रहे वधाईआ। मिल्या मेल जिउँ बल बावणा, बल बावण रूप आप वटाईआ। धुरदरगाही साचा ज़ामना, एथे ओथे होए सहाईआ। आप फड़ाए आपणा दामना, दामनगीर सच्चा शहिनशाहीआ। रूप वखाए रामा रामना, राम रामा होए सहाईआ। खेल कराए कृष्ना काहनना, एका बंसरी नाम वजाईआ। नाम सति कर प्रधानना, नानक तार सतार हलाईआ। फ़तह डंका इक्क वजावणा, वाहवा गोबिन्द हरि सरनाईआ। चारों कुण्ट वेख वखावणा, दहि दिशा फेरा पाईआ। ब्रह्म रूप सर्ब दरसावणा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। ज़ात पात ना कोए रखावणा, दीन मज़्ब ना कोए वड्याईआ। पंज तत्त चोला ब्रह्म हंढावणा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सोभा पाईआ। त्रैगुण माया तत्त सुहावणा, रजो तमो सतो होए कुड़माईआ। मन मति बुध नाच नचावणा, करे खेल बेपरवाहीआ। घर घर विच आप सुहावणा, आप आपणा बंक उपाईआ। सुखमन नाड़ी टेढी बंक राह वखावणा, ईड़ा पिंगल नाल रलाईआ। कँवल नाभी अमृत रस भरावणा, निझर झिरना आप झिराईआ। घर मन्दिर नाद वजावणा, अनहद शब्द सच्ची शनवाईआ। आपणा परदा आप उठावणा, बजर कपाटी दए तुड़ाईआ। सुरती शब्द मेल मिलावणा, दस्म दुआरी सोभा पाईआ। आत्म सेजा इक्क सुहावणा, शब्द रंगीला पलँघ वछाईआ। नारी कन्त मेल मिलावणा, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरसिख आपणी गोद बहावणा, आपे बणे पिता माईआ। सिँघ लाल संग निभावणा, लाल लाल लालण आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म सेजा आपे चढ़, गुरसिख सुरती लए फड़, नाम डोरी एका पाईआ। नाम डोरी हथ्थ करतार, गुरसिखां बन्धन पाइंदा। दस्म दुआरी बैठा शाह अस्वार,

आपणा घोड़ा आप दौड़ाइंदा। सोलां कलीआं कर शृंगार, सोलां इच्छया वेख वखाइंदा। नौ खण्ड सत्त दीप करे पार किनार, महां दीप आपणा चरन छुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख लगाए आपणे लड़, एका पल्लू नाम फड़ाइंदा। पल्लू नाम फड़ाए डोर, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। आपे फड़ फड़ मारे पंजे चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। सेवा करे जिउँ रविदास चमारे ढोए ढोर, पाहनां गंढ़ु अद्ध विच आसण लाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई और, गुरसिखां दए बुझाईआ। लक्ख चुरासी कलिजुग पावे शोर, जगत शोहरत लुट्टी सर्ब लोकाईआ। गुरमुखां सतिगुर पूरा जाए बौहड़, मख़लूक ख़लक ख़ुदा बौहड़ी बौहड़ी कर रही कुरलाईआ। दो जहानां लाया एका पौड़, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। सतिगुर पूरे नूं गुरसिखां दी सदा लोड़, गुरसिखां घर आवे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म दी बुझाए औढ़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। अमृत मेघ बरसावणा, गुरसिख निझर धार। सांतक सति सति करावणा, अग्नी तत्त नवार। रती रत रंग रंगावणा, रंग रंगे आप करतार। साची सख़ी कन्त मनावणा, घर मिले हरि भतार। गुरमती बह समझावणा, हरि शब्द नाम भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए संभाल। जुग जुग सुरत संभालदा, जाग्रत जोत जगा। बाल अञ्याणे आप उठालदा, दीनां नाथां होए सहा। आपणा रूप आप वखाणदा, दूई द्वैती परदा लाह। आपणे भगतां आपे जाणदा, हरि जू बणया रहे मलाह। खेवट खेटा दो जहान दा, सेवक सेवा रिहा कमा। गुरसिख बेटा श्री भगवान दा, ना कोई दूसर पिता मां। नाता तुट्टे जगत जहान दा, मिल्या हरि सच्चा शहिनशाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुल्ली कक्ख साचा मन्दिर दए रूप वटा। कुल्ली कक्ख रूप वटाउणा, कंचन गढ़ सुहाईआ। हरि मन्दिर हरि जू चरन छुहाउणा, हरी हरि वडी वड्याईआ। सीस जगदीश ताज सुहाउणा, तख़्त ताज जगत रहिण ना पाईआ। सो पुरख निरँजण सदा सद गाउणा, हँ ब्रह्म वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचा घाड़न घड़, घड़नहार आप हो जाईआ।

★ ४ माघ २०१७ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड झण्डेर ★

सो पुरख निरँजण दीन दयाला, दाता दानी वड वड्याईआ। आदि जुगादी खेल निराला, जुगा जुगन्तर आप कराईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, थिर घर साचे सोभा पाईआ। शब्द अनाद वजाए एका ताला, नाद आनादी धुन उपजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे प्रितपाला, त्रै त्रै मीता इक्क शहिनशाहीआ। त्रैगुण देवे धन सच्चा धनमाला, वस्त अमोलक झोली पाईआ।

पंज तत्त चले अवल्लड़ी चाला, लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणा खेल आप खिलाईआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़, हरि सतिगुर खेल खिलाइंदा। निरगुण सरगुण अंदर वड़, निरवैर पुरख आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म फड़ाए लड़, आत्म सेजा आप सुहाइंदा। निष्अक्खर विद्या आपे पढ़, साची सिख्या आप सिखाइंदा। वसणहारा साचे घर, गृह मन्दिर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपे पाए आपणी मंडल रासा, जगत तमासा वेख वखाइंदा। लक्ख चुरासी खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, एकँकारा वेख वखाइंदा। आदि निरँजण वसे ठांडे दर सच्चे दरबारा, श्री भगवान सोभा पाइंदा। अबिनाशी करता करे खेल अकल कल धारा, पारब्रह्म आपणी धार आप बंधाइंदा। शब्दी शब्द कर पसारा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचाइंदा। निरगुण जोत रवि ससि सितारा, सूरज चन्न मंडल मण्डप आप टिकाइंदा। गगन मंडल दए सहारा, आकाश प्रकाश डेरा लाइंदा। निरगुण सरगुण खेल करतारा, करता पुरख आप खिलाइंदा। विश्व रूप बण वरतारा, वास्तक आपणी वस्त लक्ख चुरासी आप उपजाइंदा। ब्रह्मा देवे नाम आधारा, पारब्रह्म ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। चारे वेदां बण लिखारा, चारे जुगा वण्ड वंडाइंदा। लक्ख चुरासी कर उज्यारा, घर घर जोती दीप जगाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी खेल आप खिलाइंदा। वरते वरतावे विच संसारा, महासारथी रूप वटाइंदा। शंकर देवे इक्क हुलारा, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, जगत महल्ला आप वसाइंदा। लक्ख चुरासी जगत महल्ला, नव खण्ड पृथ्मी आप बणाईआ। करे खेल इक्क इकल्ला, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण सरगुण बणया रहे मलाह, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। सति सतिवादी लाए राह, साचा मार्ग इक्क जणाईआ। लक्ख चुरासी गेड़ा आपणे हथ्थ रखा, जुग चौकड़ी आप भवाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा खेड़ा लए वसा, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज कर रुशनाईआ। आपणी वण्ड लए वण्डा, वण्डणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, नर नरायण सहिज सुखदाईआ। नर नरायण हरि निरँकारा, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट आपणी जोत टिकाइंदा। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, अनहद साचा ताल वजाइंदा। सुरती सुरत करे विचारा, अकाल मूर्त खेल खिलाइंदा। अजूनी रहत वसे सभ तों बाहरा, दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, जुग जुग आपणा खेल खिलाइंदा। जुग जुग खेल खिलाइंदा, करता पुरख हरि करतार। जुग जुग

वेस वटाइंदा, निरगुण सरगुण लै अवतार। जुग जुग मार्ग लाइंदा, लक्ख चुरासी पावे सार। जुग जुग शब्द नाद वजाइंदा, धुन नाद अपर अपार। जुग जुग बोध अगाध सुणाइंदा, लेखा जाणे आपणा आप दूजा सके ना कोए विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, एका खेल खिलाइंदा। जुग जुग खेल खिलाया, सतिजुग त्रेता द्वापर आण। ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगाया, एका देवे धुर फ़ुरमान। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, चौथे जुग हो प्रधान। चारों कुण्ट जीव जंत कुरलाया, दहि दिशा होए हैरान। सांतक सति ना कोए वरताया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। श्री भगवान साचा मीता, आदि जुगादि समाया। वसणहारा घर ठांडे सीता, सचखण्ड दुआरे सोभा पाया। इक्क इकल्ला पतित पुनीता, पतित पापी लए तराया। कलिजुग आप चलाए आपणी रीता, सतिजुग साचा मार्ग लाया। जन भगतां देवे नाम इक्क अनडीठा, लिखण पढ़न विच ना आया। मिट्ठा करे कौड़ा रीठा, दूई द्वैती मेट मिटाया। त्रैगुण माया तत्त ना तपे अंगीठा, काया अग्न ना रहे राया। आपे हरि जू वसे चीता, गृह मन्दिर होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कूड़ी क्रिया दए मिटाया। जुग जुग वेस वटाइंदा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराइंदा, कलिजुग अन्तिम बणे मलाह। सृष्ट सबाई वेख वखाइंदा, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पा। सत्तां दीपां आप उठाइंदा, शब्द हलूणा एका ला। चार वरनां खोज खुजाइंदा, अठारां बरनां पकड़े बांह। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप समझाइंदा, एका ब्रह्म विद्या दए पढ़ा। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका घर वखाइंदा, दूसर अवर ना कोए थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा नाउँ लए प्रगटा। एका नाउँ हरि निरँकारा, आपणा आप प्रगटाईआ। कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा, बंक दुआर सुहाईआ। साकत निन्दक करे ख्वारा, गुरमुख साचे लए जगाईआ। मेट मिटाए धूंआँधारा, कलिजुग रैण अन्धेरी रहिण ना पाईआ। साचा चन्द करे उज्यारा, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। धरत धवल दए सहारा, धरनी धवल आप वड्याईआ। चारों कुण्ट इक्क जैकारा, सृष्ट सबाई दए समझाईआ। एका गुर इक्क अवतारा, इष्ट देव इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखणहारा कूड़ी शाहीआ। कलिजुग अन्तिम वेखणहारा, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। निहकलंका लै अवतारा, लोकमात वेस वटाइंदा। शब्द डंका सच नगारा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप वजाइंदा। दो जहानां वेखे लग्गा अखाड़ा, कोटन कोटि गोपी काहन आप नचाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। चार वेद करन पुकारा, पुराण अठारां सर्ब कुरलाइंदा। शास्त्र सिमरत रोवन ज़ारो

ज़ारा, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, निहकलंक बली बलवान। निरगुण निरगुण जोत जगाया, जोती जाता हरि भगवान। साचे मन्दिर डेरा लाया, साढे तिन्न हथ्थ इक्क मकान। उच्चा टिल्ला पर्बत दए सुहाया, लेखा चुक्के ज़िमीं अस्मान। चौदां लोकां चरनां हेठ दबाया, चौदां तबकां पाए आण। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, शरअ शरीअत वेखे दो जहान। सच अमाम बण के आया, लेखा जाणे अञ्जील कुरान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग मेटे अन्त निशान। कलिजुग अन्त निशान मिटाउणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। चौथे जुग पन्ध मुकाउणा, वेला अन्त दए दुहाईआ। सतिजुग साचा मात धराउणा, धरत धवल दए वड्याईआ। गुरमुख साचे संग रलाउणा, सगला संग आप समझाईआ। नाम निधाना झोली पाउणा, वस्त अमोलक इक्क वखाईआ। धुर दी बाणी बाण लगाउणा, अणयाला तीर चलाईआ। अमृत ठंडा पाणी जल पिआउणा, निझर झिरना आप झिराईआ। सुरत सुवाणी शब्द हाणी आप मिलाउणा, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, हरि साचा सच कराइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, निरगुण आपणी कार कमाइंदा। नाता तोड़े कूड़ कुड़यारा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। ऊँचां नीचां करे पार किनारा, एका रंग सर्ब रंगाइंदा। एका मन्दिर गुरदुआरा, मस्जिद मठ शिवदुआला इक्क वखाइंदा। एका शब्द नाद धुन जैकारा, एकँकारा एका लाइंदा। एका अमृत ठंडा ठारा, भर प्याला आप प्यांअदा। एका पुरख एका नारा, लक्ख चुरासी रूप वटाइंदा। एका भगत एका भगवन्त एका घर बारा, एका मन्दिर हरि वसाइंदा। एका सन्त सुत दुलारा, हरि सज्जण वेख वखाइंदा। एका गुरमुख दए हुलारा, गुर गुर आपणी गोद सुहाइंदा। एका गुरसिख करे प्यारा, सच प्रीती आप निभाइंदा। एका मुरीद एका मुर्शद एका दर सच्चा दरबारा, दरगाह साची आप सुहाइंदा। एका ख़ालक ख़लक रूप वेखे सर्ब संसारा, मख़लूक आपणे रंग रंगाइंदा। एका मुकामे हक बोले साचा नाअरा, परवरदिगार आप अल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि साचा खेल खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल खिलावणा, चार कुण्ट विचार। नौ खण्ड पृथ्मी आप हिलावणा, दहि दिशा कर ख्वार। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावणा, मानस जन्म आए हार। गुरमुख विरला आप उठावणा, जिस जन बख्शे चरन प्यार। दूई द्वैती परदा लाहवणा, बजर कपाटी खोल्ह किवाड़। स्वच्छ सरूपी रूप धरावणा, रूप अनूप सच्ची सरकार। शाहो भूप आप अख्वावणा, साचे तख्त बैठ आप निरँकार। सीस जगदीश ताज सुहावणा, पंचम मुखी मुख विचार। राज जोग एका रंग

रंगावना, ग़रीब निमाणयां पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी क्रिया दए निवार। कलिजुग करया पार किनारा, अन्तिम पन्ध मुकाया। सतिजुग उपजाए सुत दुलारा, पुरख अबिनाशी लए प्रगटाया। सति सति वरते विच संसारा, सति सांतक नाल रलाया। सतिजुग बणाए आप निरँकारा, नर हरि आपणा खेल खिलाया। चारे वरन बहाए इक्क दुआरा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा वेस वटाया। करे वेस अवल्लड़ा, करे कराए पुरख अगम्म। सचखण्ड दुआरा एका मलड़ा, आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म। आपणी जोती आपे रलड़ा, आपणा बेड़ा रिहा बन्न्ह। गुरमुखां फड़ाए पलड़ा, देवे नाम सच्चा माल धन। सच संदेश एका घलड़ा, लक्ख चुरासी देवे डन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए फड़। गुरमुख साचा हरि सतिगुर फड़या, दिस किसे ना आइंदा। डूँग्घी कँवरी काया भँवरी आपे वड़या, आपणा मुख आप छुपाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आपे वरया, नारी कन्त रूप धराइंदा। अमृत आत्म नुहाए साचे सरया, सर सरोवर इक्क वखाइंदा। चुरासी लक्ख चुक्के डरया, जम का भउ ना कोई जणाइंदा। आपणी विद्या आपे पढ़या, गुरमुखां आप पढ़ाइंदा। आदि जुगादि ना जन्मे ना कदे मरया, जीवण मुक्त आप अख्वाइंदा। जन भगतां कारज आपे करया, भगत वछल आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। हरिजन मेला साचे घर, गुरमति गुर आप कराईआ। लक्ख चुरासी विच्चों लए फड़, आप आपणा बन्धन पाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। आपणी करनी करता आपे कर, करनहार खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए जगाईआ। गुरमुख सच्चा आप जगाया, पूर्ब कर्म विचार। पूर्ब लहिणा झोली पाया, देवे दरस अगम्म अपार। नेत्र नैणां हरस मिटाया, कर तरस सच्ची सरकार। अमृत मेघ बरस वखाया, काया होए ठंडी ठार। अर्श फर्श एका रंग रंगाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां करे सदा प्रितपाल। गुरमुखां सदा प्रितपालदा, प्रितपालक आप निरँकारा। जुग जुग करे खेल शाह कंगाल दा, निरगुण सरगुण लए अवतारा। भगत भगवन्त आपे भालदा, मंगदा फिरे भगत दुआरा। सन्त कन्त आप संभालदा, नर नरायण सच्ची सरकारा। गुरमुख साचे गोद उठालदा, देवे शब्दी सच हुलारा। गुरमुखां अमृत जाम प्यालदा, प्याए रस निझर धारा। राह दस्से इक्क सुखालदा, मिले मेल गुर अवतारा। लेखा चुक्के आवण जाण दा, नाता तुट्टे सर्ब संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख देवे इक्क आधारा। गुरमुख इक्क उधारीअन, कर किरपा हरि भगवन्त। लोकमात पैज संवारीअन, लेखा चुक्के जीव जंत। एका बख्शे सच अटारीअन, आदि जुगादी महिमा अगणत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, काया चोली चाढ़े रंगत। काया चोली रंग अपारा , गुर सतिगुर आप चढ़ाईआ। गुरमुख गुरसिख गुर बूझे, अवर कोए भेव ना जाणे राईआ। एका दूजा भउ चूके, तीजे नैण करे रुशनाईआ। चौथे पद आपा सूझे, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे ठांडे घर, घर ठांडा इक्क सुहाईआ। ठांडा घर गुर चरन दुआरा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। ठाकर स्वामी बणे प्रीतम प्यारा, विछड़ कदे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सारा, सगला संग आप निभाईआ। भव सागर करे पार किनारा, मँझधार ना कोई रुढ़ाईआ। रसना देवे नाम आधारा, सो पुरख निरँजण इक्क जणाईआ। हँ ब्रह्म खोल्हे बन्द किवाड़ा, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। सोहँ शब्द पंचम मेटे झूठी धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। आसा तृष्ना करे ख्वारा, माया ममता मोह चुकाईआ। गृह मन्दिर होए दीप उज्यारा, घट घट जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण एका दए बुझाईआ। गुरसिख सज्जण एका बूज्झया, हरि सज्जण सच्चा मीत। गुर गुर भेव चुकाए गूज्झया, दरस दिखाए इक्क अतीत। गुरमुख विरला हरि चरन सरनाई झूजया, होया पतित पुनीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सुणाए सुहागी गीत। गीत सुहागी हरि करतार, शब्दी शब्द सुणाईआ। गुरमुख सच्चे लए उभार, आप आपणी गोद बहाईआ। कलिजुग बेड़ा करे पार, खेवट खेटा बेपरवाहीआ। एथे ओथे पावे सार, दो जहानां होए सहाईआ। जिस जन बख्शे चरन प्यार, चातरक रूप आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप समझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान देवणहारा जीवण दान, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ ५ माघ २०१७ बिक्रमी गुरदेव सिँघ दे घर पिण्ड दोसांझ खुरद ज़िला जलन्धर ★

हरि पुरख अगम्मड़ी धार, आदि जुगादि चलाइंदा। गुर गुर रूप अगम्म अपार, अलख निरँजण वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त लए उभार, आप आपणा मेल मिलाइंदा। सन्त साजण वेखे मीत मुरार, लक्ख चुरासी फोल फुलाइंदा। गुरमुख सज्जण पाए सार, दूई द्वैती परदा लांहयदा। गुरमुख साचे करे प्यार, करवट आपणी आप बदलाइंदा। एका बख्शे चरन

प्यार, चरन प्रीती सच वखाइंदा। एका देवे नाम आधार, नाम भण्डारा आप वरताइंदा। एका नूर करे उज्यार, जोती नूर डगमगाइंदा। एका शब्द नाद धुन्कार, धुन आत्मक राग आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणी खेल आप खिलाइंदा। हरि हरि पुरख खेल अवल्लड़ा, आदि जुगादि कराइंदा। गुर गुर मार्ग इक्क सुखल्लड़ा, लोकमात आप लगाइंदा। जन भगत फड़ाए एका पलड़ा, नाम पल्लू हथ्थ वखाइंदा। सन्तां सति सिँघासण एका मलड़ा, सति सिँघासण हरि वड्यांअदा। गुरमुख जोती शब्दी रलड़ा, जोती जोत मेल मिलाइंदा। गुरसिख वखाए धाम अवल्लड़ा, नेहचल धाम आप वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणा रूप आप धराइंदा। निहचल धाम अगम्म अपारा, सो पुरख निरँजण आप उपाइंदा। हरि पुरख निरँजण खेल न्यारा, निरगुण निरगुण निरगुण आपणा आप कराइंदा। एकँकारा कर पसारा, पुरख अकाल वेख वखाइंदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, जूनी रहित डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा सच दुआरा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। श्री भगवान साचा मीत मुरारा, दर घर साचे संग निभाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो त्यारा, रूप अनूप आप धराइंदा। सचखण्ड खोल्ह् किवाड़ा, साचे मन्दिर डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा रंग रंगाइंदा। सचखण्ड दुआरा हरि करतार, आपणा आप खुल्ह्राईआ। थिर घर साचे हो त्यार, रूप अनूप आप वटाईआ। सच सिँघासण परवरदिगार, शाह पातशाह आप सुहाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, साचा हुक्म इक्क जणाईआ। शब्दी सुत वड बलकार, पारब्रह्म आप उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल खिलाईआ। शब्द सुत हरि दुलारा, निरगुण आपणा आप उपाया। आपे वणज आप वणजारा, आपे साचा हट्ट खुल्ह्राया। आपे वसे धाम न्यारा, उच्च महल्ल अटल डेरा लाया। आपे विष्न ब्रह्मा शिव कर पसारा, त्रैगुण आपे वण्ड वण्डाया। आपे लक्ख चुरासी दए आधारा, घट घट आपणी जोत जगाया। आपे गुर गुर बण अवतारा, शब्दी एका डंक वजाया। आपे भगतां भगती दए हुलारा, भगवन आपणा खेल खिलाया। आपे सन्तन देवे सति जैकारा, आपणा नाअरा आप सुणाया। आपे गुरमुखां खोल्ह्रे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी दए तुड़ाया। आपे गुरसिखां मेटे पंचम धाड़ा, पंच पंचायण नेड़ ना आया। आपे सतिजुग त्रेता द्वापर पावे सारा, जुग जुग आपणा वेस वटाया। आपे चारे वेदां बण लिखारा, आपणी धारा आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका नर, नर नरायण बेपरवाहया। चारे वेदां शब्द जणा, एका ब्रह्म करे पढ़ाईआ। भेव अभेदा आप खुल्ह्रा, बोध अगाधा इक्क समझाईआ। अछल अछल आप करा, वल छलधारी भेव कोए ना पाईआ। जल थल महीअल आप समा, आपे बैठा मुख

छुपाईआ। रवि ससि सूरज चन्न चमका, मंडल मण्डप करे रुशनाईआ। धरनी धरत धवल जल बिम्ब टिका, शब्द डोरी बन्धन पाईआ। मंडल मण्डप लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे थाउँ थाँ, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आपे बणे जण जणेंदी मां, जन जननी आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अकल कल आपणी आप धराईआ। अकल कल धार हरि निरँकार, एका रंग समाया। निरगुण सरगुण हो त्यार, लोकमात वेस वटाया। लक्ख चुरासी खोल्ह किवाड़, गृह मन्दिर डेरा लाया। दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती सोभा पाया। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, अनहद आपणा राग अल्हाया। भगतन मीता हो त्यार, त्रैगुण बन्धन दए तुड़ाया। ठांडा सीता धुर दरबार, साचे सन्तां वेख वखाया। गुरमुखां बणाए बणता अपर अपार, घड़न भन्नणहार आप हो जाया। गुरसिख उठाए सच दुलार, पिता पूत मेल मिलाया। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, लोकमात फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाया। हरि आपणा भेव चुकाइंदा, शब्द अनादी निष्अक्खर बोल। नव नौ चार पन्ध मुकाइंदा, आदि जुगादी इक्क अडोल। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाइंदा, तोलणहारा तोले साचा तोल। चार जुग पान्धी पन्ध मुकाइंदा, आपे करे पूरा कीता कौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साजण लए टोल। हरि सज्जण साचा टोलया, लक्ख चुरासी कर विचार। निरगुण सरगुण अंदर बोलया, आप आपणी किरपा धार। जीवां जंतां कर के बैठा ओहलया, ना सके कोए विचार। आपणा बदले आपे चोलया, कूड़ा कप्पड़ देवे पाड़। आपणी शक्ती आपे मौलया, आपे वेखे खिड़ी सच्ची गुलज़ार। भाग लगाए उप्पर धरत धौलया, निरगुण रूप हरि निरँकार। गुरमुखां अमृत भरे नाभ कवलया, जगत तृष्ना रोग निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल विच संसार। सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। हरि पुरख निरँजण रूप वटाइंदा, चार वेद ना पायण सार। एकँकारा नाउँ धराइंदा, नाउँ निंरकारा हरि करतार। आदि निरँजण जोत जगाइंदा, रवि ससि होए शर्मशार। अबिनाशी करता भेख वटाइंदा, इक्क इकल्ला परवरदिगार। श्री भगवान डंक वजाइंदा, शब्द अनाद सच्ची धुन्कार। पारब्रह्म प्रभ वेख वखाइंदा, जोती जामा लै अवतार। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म आपणी गोद बहाइंदा, आत्म ब्रह्म दए आधार। ईश जीव वेख वखाइंदा, जगत जगदीश हो त्यार। साचा छत्र सीस झुलाइंदा, तख्त निवासी एकँकार। राग छतीस दिस ना आइंदा, रागां नादां वसे बाहर। गुरमुख विरला बूझ बुझाइंदा, जिस जन बख्शे चरन प्यार। एका दूजा भउ चुकाइंदा, तीजा खोल्हे नैण किवाड़। चौथे पद आप बहाइंदा, पंचम मेला नारी कन्त भतार। छेवें छप्पर छन्न ना कोए सुहाइंदा, सत्तवें सति पुरख निरँजण साची कार। अठ्ठां

तत्तां मूल मकाइंदा, नौ दुआरे करे ख्वार। दस्म दुआरे गुरसिख रंग रंगाइंदा, रंग चाड़्हे अपर अपार। आत्म सेजा आप सुहाइंदा, किरपा करे आप करतार। सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा, मेल मिलावा मीत मुरार। गीत सुहागी एका गाइंदा, हँ ब्रह्म दए आधार। सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा, ख़ालक ख़लक पावणहारा सार। वरन बरन ना कोए जणाइंदा, वरनां बरनां वसया बाहर। ऊँचां नीचां एका गोद सुहाइंदा, राउ रंक राजानां करे सच प्यार। सच सलोक इक्क सुणाइंदा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जीवण मुक्त आप कराइंदा, जिस जन देवे नाम आधार। बूंद रक्त लेखे लाइंदा, लक्ख चुरासी दए निवार। जम की फाँसी आप कटाइंदा, राय धर्म ना करे ख्वार। पूरन आसी आप कराइंदा, गुरमुख साचे लए उभार। दासी दास सेव कमाइंदा, दाता दानी सिरजणहार। पृथ्मी आकाश फोल फुलाइंदा, दो जहानां करे विचार। आलस निन्दरा विच ना आइंदा, आदि जुगादी ख़बरदार। भगत भगवन्त वेख वखाइंदा, कलिजुग डूँग्घे सागर पावे सार। सन्त कन्त मेल मिलाइंदा, बणाए बणत अगम्म अपार। गुरमुख आपणे अंग लगाइंदा, अंगीकार करे करतार। गुरसिखां साचा संग निभाइंदा, विछड़ ना जाए सांझा यार। गृह मन्दिर नाम मृदंग वजाइंदा, धुर दी बाणी खिच्चे सच सतार। सूरा सर्बंग दया कमाइंदा, मरदन मर्द रूप आप करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपे जाणे आपणी कार। हरि साची कार कमाइंदा, इक्क इकल्ला करनेहार। सो पुरख निरँजण रूप धराइंदा, हरि पुरख निरँजण करे सति प्यार। एकँकारा वेख वखाइंदा, आदि निरँजण हो उज्यार। श्री भगवान संग निभाइंदा, अबिनाशी करता वेखे दर ठांडा दरबार। पारब्रह्म प्रभ भरम भउ चुकाइंदा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म पावणहारा सार। आत्म अन्तर खोज खुजाइंदा, डूँग्घी भँवरी होए उज्यार। आपणा परदा आपे लांहयदा, आपे मुखड़ा दए वखाल। आपणे रंग आप समाइंदा, आपे शाह आपे कंगाल। कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा, जोत जगाए सच सच सच्ची धर्मसाल। साढे तिन्न हथ्थ महल्ल आप सुहाइंदा, लक्ख चुरासी विच्चों भाल। दीवा बाती आप टिकाइंदा, कमलापाती हो कृपाल। दिवस राती ना कोए वखाइंदा, अठ्ठ पहर एका ताल। आपणी गाथी आपे गाइंदा, गीत सुणाए गोबिन्द लाल। साचा साथी संग निभाइंदा, धुरदरगाही बणया इक्क दलाल। औखी घाटी आप चढ़ाइंदा, शब्द अगम्मी मार उछाल। राती रुती थित वार आप सुहाइंदा, बरस मास चले अवल्लड़ी चाल। कोटन कोटि रूप धराइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए जाणी जाण। हरि हरि हर घट जानणहारा, घट घट एका जोत जगाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल अपारा, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। नूर नुराना परवरदिगारा, ज़ाहर ज़हूर नूर इक्क दरसाईआ। कलमी कलमा बोल नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मुकामे हक एका यारा, नबी

रसूल देण ग्वाहीआ। मुलां शेख़ मुसायक पीर सजदा करन निउँ निउँ निमस्कारा, सीस जगदीश इक्क झुकाईआ। चौदां तबकां इक्क घर बारा, चौदां लोक खोज खुजाईआ। चौदां हट्ट जगत पसारा, पुरख अबिनाशी आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेखा जाणे थाउँ थाँईंआ। लेखा हरि हरि जाणदा, आदि जुगादि समाया। जग करता जग पछाणदा, जुग जुग आपणा वेस वटाया, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा रंग माणदा, कलिजुग अन्तिम वेखण आया। लक्ख चुरासी पुण छाणदा, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाया। लेखा जाणे पंज शैतान दा, घर घर बैठा डौरू वाहया। नाता तुट्टे जीव जगत जहान दा, पुरख अबिनाशी इक्क भुलाया। झूठा रस पीण खाण दा, जिहवा गुण ना कोए गाया। अन्तिम वेला आया हाण दा, ना सके कोए बचाया। गुरमुख गुरसिख विरला हरि सतिगुर आप पछाणदा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। कलिजुग भुल्ला जीव नादान रूप धराए बाल अञ्याण दा, सुध बुध ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गेड़ा आप दवाया। कलिजुग कूड़ निशाना, लोकमात वेख वखाईआ। नव नौ होए बेईमाना, बेऐब ना कोए दसाईआ। माया ममता हउमे हंगता जूठा झूठा बद्धा तन गाना, साचा सगन ना कोए मनाईआ। काया मन्दिर अंदर सर सरोवर अमृत आत्म मिल्या ना पीणा खाणा, रसना काग वांग हल्काईआ। धुन आत्मक अनहद शब्द ना सच्चा गाणा, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। पाया पद ना इक्क निरबाणा, महल्ल अटल बैठे डेरा लाईआ। गुर का शब्द ना किसे वखाणा, रूप अनूप ना दर्शन पाईआ। कलिजुग वरते आपणा भाणा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। तख़्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे बीआ बाना, नगर खेड़ा ना कोए दसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए जगाईआ। गुरसिख आप जगाया, कर किरपा गुण निधान। अमृत आत्म जाम प्याया, चरन धूढ़ सच्चा अशनान। जन्म जन्म दी मैल गंवाया, एका देवे ब्रह्म ज्ञान। रंग रंगीला इक्क चढ़ाया, उतर ना जाए विच जहान। छैल छबीला गुरसिख आप बणाया, सेवा करे गुण निधान। जगत कबीला वण्ड वण्डाया, आपे होए निगाहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख बणाए चतुर सुजाण। चतुर सुजान बणाया, मूर्ख मुग्ध अंञाण। आपणे मार्ग आपे लाया, देवणहारा देवे जीआ दान। स्वच्छ सरूपी दरस दिखाया, आत्म दरसी हो मेहरवान। जगत तृष्ना हरस मिटाया, किरपा कर श्री भगवान। अमृत मेघ बरस सांत कराया, निझर झिरे झिरना महान। अर्श कुर्श एका रंग वखाया, लेखा चुक्के दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए पछाण। गुरमुख सज्जण मीतड़ा, गुर सतिगुर आप पछाणया। काया चोली

रंगे चीथड़ा, देवे नाम निधानया। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, गुणवन्ता गुण वखाणया। मिट्ठा करे काया रीठड़ा, फल अमृत आप चखानयां। मानस जन्म लोकमात जग जीतड़ा, नाता तुट्टा पंज तत्त शैतानयां। गुरसिख आपणे जेहा आपे कीतड़ा, जोती देवे नूर महानया। करे पाक पतित पवित आप पुनीतड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख उठाए बाल नादानया। गुरसिख बाल नादाना, बाली बुध हरि समझाईआ। एका बख्शे चरन ध्याना, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। शब्द अगम्मी देवे सच बिबाना, गुरमुख साचे लए चढ़ाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराना, एका घर दए वखाईआ। सो पुरख निरँजण आप सुणाए आपणा गाना, हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। सोहँ शब्द जिस पछाणा, जन्म मरन विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख एका अक्खर दए बुझाईआ। गुरसिख एका अक्खर बुझिआ, चौदां विद्या होए हैरान। गुर गुर भेव खुल्हाए गुझिआ, आत्म अन्तर इक्क दृढ़ाए ब्रह्म ज्ञान। भेव चुकाए एका दूजया, नज़री आए इक्क भगवान। गुरमुख गुर सरनाई गुरचरन आदि जुगादि झूजया, गुर पूरा करे परवान। सच दुआरा एका बूज्झया, सद झुलदा रहे निशान। देवे दरस जो बैठा लुकया, कलिजुग अन्तिम होए मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे देवे माण। माण निमाणयां जीआं दान, एका वस्त अमोलक झोली पाईआ। होए सहाई एथे ओथे दो जहान, जगत विचोला साचा माहीआ। शब्द सरूपी बिठाए इक्क बिबाण, सेवा करे हरि सच्चा शहिनशाहीआ। थिर घर वखाए इक्क मकान, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। सचखण्ड दुआरे साचे तख्त बैठ श्री भगवान, सच सिँघासण दए सुहाईआ। गुरमुखां कराए चरन कँवल ध्यान, चरन चरनोदक मुख छुहाईआ। लेखा चुक्के आवण जाण, गेड़ा गेड़ ना कोई भवाईआ। अन्तिम जोती मेला गुण निधान, शब्दी शब्द जाए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए उठाईआ। गुरमुख विरला उठया, जिस जगाए आप निरँकार। निरगुण रूप हो तुठया, लोकमात खेल अपार। जाम प्याए साचा घुट्टया, अमृत आत्म ठंडा ठार। माल धन देवे नाम निखुटया, लुट्ट सके ना कोई चोर यार। गुरसिख लभ्भे विच्चों कोटन कोटिया, लक्ख चुरासी जीव जंत रोंदे ज़ारो ज़ार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कल कलेश दए निवार। कल कलेश निवारया, हरिजन फड़या सज्जण मीत। दर दरवेश हरि निरंकारया, सेवा करे भगत अनडीठ। आवे जावे वारो वारया, नित नवित साची रीत। जोती जामा आपे धारया, लेखा जाणे हस्त कीट। शाह सुल्ताना तोड़े हंकारया, गुरमुख करे पतित पुनीत। चौथा जुग आप विचारया, नव नौ चार चौकड़ी रही बीत। चौदां तबकां वेखे अखाड़या, जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल इक्क अनडीठ। अनडीठ खेल खिलाइंदा, नेत्र लोचण नैण दिस ना आईआ। लक्ख चुरासी फोल फुलाइंदा, नौ सत्त आपणी जोत कर रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उठाइंदा, सुरपति राजा इंद करोड़ तेतीसा संग रखाईआ। धुर संदेश शब्द सुणाइंदा, हुक्मी हुक्म इक्क वरताईआ। जो घड़या भन्न वखाइंदा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम मूल चुकाइंदा, चौथा जुग मेटे कूड़ी शाहीआ। कूड़ कुड़यारा शौह दरयाए आप रुढ़ाइंदा, माया ममता नाल रलाईआ। हउमे हंगता आप डुबाइंदा, आसा तृष्ना दए खपाईआ। मनमुख अन्तिम राय धर्म दर बहाइंदा, चित्रगुप्त दए सलाहीआ। गुरमुख साचे वेख वखाइंदा, लोकमात चाँई चाँईआ। त्रैगुण माया परदा लांहयदा, पंज तत्त करे रुशनाईआ। कागद कलम भेव ना पाइंदा, लेखा लिखे ना कोई शाहीआ। ऐड़ा अथर्बण वेद अन्त कुरलाइंदा, उच्ची कूके मारे धाहींआ। अल्ला राणी मुख शरमाइंदा, नेत्र नैण ना सके उठाईआ। चार यार संग मुहम्मद राह तकाइंदा, पुरख अबिनाशी भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन जनहरि वेखे थाउँ थाँईआ।

१०१

१०१

★ ६ माघ २०१७ बिक्रमी गुरदेव सिँघ दे घर नवां पिण्ड ज़िला जलन्धर ★

सो पुरख निरँजण खेल अपारा, आदि अन्त आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण भेव न्यारा, अलख अगोचर भेव कोई ना पाइंदा। एकँकारा निराकारा, निरवैर आपणा नाउँ धराइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा, जोती जोत डगमगाइंदा। अबिनाशी करता बेऐब परवरदिगारा, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणी धारा, दूसर संग ना कोई रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आपे जाणे आपणी कारा, करता पुरख आप कराइंदा। सचखण्ड सुहाए सच दुआरा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। सति सरूपी खेल न्यारा, थिर दरबारा आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आपणी रचना आप रचाइंदा। सचखण्ड दुआरा साचा घर, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण किरपा कर, आपणा बल आप धराइंदा। एकँकारा घाड़न घड़, घड़न भन्नणहार आप हो जाइंदा। आदि निरँजण जोत उज्यार कर, नूर ज़हूर इक्क दरसाइंदा। अबिनाशी करता निरभउ भय ना रक्खे कोए डर, आप आपणा रंग रंगाइंदा। श्री भगवान सच दुआरे आपे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। पारब्रह्म आपणी सरन सरनाई आपे पढ़, सीस जगदीश आप झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचे घर, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्यांअदा। सचखण्ड दुआरा

सोभावन्त, पुरख अकाल आप उपजाईआ। अजूनी रहत महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोई लिखाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, भगवान आपणी धार चलाईआ। आपे नारी आपे कन्त, आपे साची सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआर सुहाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। आपे आपणा आसण लाइंदा, सच सिँघासण कर त्यार। जोती जाता डगमगाइंदा, अलख अगोचर अगम्म अपार। साचा ताज सीस टिकाइंदा, तख्त निवासी सच्चा शाहकार। शहिनशाह आपणा नाउँ धराइंदा, रूप रंग रेख तों वसया बाहर। आपणा हुक्म आप वरताइंदा, देवे हुक्म सच्ची सरकार। आपणी इच्छया साची भिच्छया आपे झोली पाइंदा, देवणहारा सच भण्डार। थिर घर साचा दर खुल्ह्इंदा, सचखण्ड निवासी खेल अपार। निरगुण निरगुण विच समाइंदा, निरगुण अंदर निरगुण बाहर निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता, आपणी कल आप वरताइंदा। सचखण्ड दुआरे साची कल, हरि साचा सच वरताईआ। सच सिँघासण बैठा मल्ल, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। आपणी जोती आपे रल, जोती जोत जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे दए वड्याईआ। थिर घर साचा हरि सुहञ्जणा, इक्क इकल्ला आप सुहाइंदा। करे खेल आदि निरँजणा, शाह सुल्ताना नाउँ धराइंदा। आदि

१०२ जुगादी दर्द दुःख भय भञ्जणा, आप आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। आपे बणे साचा सज्जणा, सगला संग आप निभाइंदा। आपे १०२

घड़े आपे भन्नणा, घड़न भन्नणहार आपणी खेल आप खिलाइंदा। आपे चरन धूढ़ कराए साचा मजना, आपे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वसे साचा हरि, हरि बिन अवर ना कोई वखाइंदा। थिर घर साचा खोल्ह किवाड़ा, हरि साचा वेख वखाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ी चाल चलाइंदा। आप उपजाए सुत दुलारा, शब्दी शब्द प्रगटाइंदा। देवे हुक्म सच्ची सरकारा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, दर घर साचे सोभा पाइंदा। दर घर सुहाया, कर किरपा गुण निधान। पूत सपूता एका जाया, शब्द सुत नौजवान। सिर आपणा हथ्थ टिकाया, एकँकारा होया मेहरवान। आपणे रंग आप रंगाया, रंग रंगाए श्री भगवान। साचा मृदंग इक्क वजाया, आप सुणाए दो जहान। आपणे पलँघ आप बहाया, साची सेजा कर परवान। गुण निधान वेख वखाया, सचखण्ड दुआरा खोल्ह मकान। आपणा मार्ग आपे लाया, आपे होए जाणी जाण। वस्त अमोलक आप वरताया, सति भण्डारा इक्क निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, थिर घर बैठ सच्चे मकान। थिर घर साचा वसया, पुरख अबिनाशी आप वसाए। सुत दुलारे साचा मार्ग

एका दस्सया, हुक्मी हुक्म आप सुणाए। अन्तर अन्तर आपे वसया, वसणहारा दिस ना आए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना कोए जणाए। शब्द दुलार उठाया, कर किरपा गुण निधान। एका हुक्म सुणाया, आदि पुरख श्री भगवान। तेरी महिमा आप जणाया, लेखा जाणे गुण निधान। तेरा रूप लए प्रगटाया, रूप अनूपा हो मेहरवान। तेरी कुक्ख दए सुहाया, उज्जल मुख इक्क महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल वड मेहरवान। सफ़ल कुक्ख शब्द दुलार, हरि साचा सच कराइंदा। रूप अनूप कर त्यार, निरगुण जोती जोत जगाइंदा। आपणे अंदरों आपा कढ्ढ बाहर, आपे विष्नूं रूप धराइंदा। आपे अमृत कँवल भरे भण्डार, सति वरतारा आप वरताइंदा। आपे पंखड़ीआं बण खिड़े गुलज़ार, पत्त डाली आप महिकाइंदा। आपे ब्रह्मा करे पसार, पारब्रह्म आपणी वण्ड वंडाइंदा। आपे शंकर वेखे धूंआँधार, सुन्न अगम्म फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द खेल खिलाइंदा। हरि शब्दी खेल खिलाया, विष्न ब्रह्मा शिव धार। धुर दी धार आपणे हथ्थ रखाया, ना कोई सके विचार। हुक्मी हुक्म इक्क वरताया, आदि पुरख एकँकार। सच सुनेहड़ा इक्क सुणाया, विष्नूं विश्व लए उठाल। सति भण्डार झोली पाया, लेखा जाणे शाह कंगाल। ब्रह्मे ब्रह्म जोत जगाया, पारब्रह्म प्रभ दीन दयाल। शब्द चोट इक्क लगाया, आप सुणाए सच्ची धुन्कान। सच संदेशा इक्क सुणाया, पुरख अगम्मड़ा गुण निधान। लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाया, घाड़त घड़े आप मेहरवान। शंकर तेरा वेस वटाया, भोले नाथ बाल निदान। तेरी सेवा इक्क जणाया, अन्तिम मेटे सर्ब निशान। तिन्ना विचोला इक्क रघुराया, शब्द सरूपी पाए आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल दो जहान। विष्न ब्रह्मा शिव दया कमा, एका तत्त समझाइंदा। लक्ख चुरासी रचन रचा, शब्दी डोर बंधाइंदा। त्रैगुण माया वण्ड वण्डा, पंज तत्त खेल खिलाइंदा। आपणा नूर आप धरा, जोती जोत जोत जगाइंदा। कंचन काया गढ़ सुहा, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। नौ दुआरे जगत खुल्ह्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क जणाइंदा। साची सिख्या त्रै त्रै सिख, दोए दोए जोड़ सीस झुकाया। प्रभ अबिनाशी पाई भिख, सति भण्डार इक्क वरताया। साचा लेखा देणा लिख, कवण जुग सेव कमाया। जो उपजे सो दीसे मिथ, थिर कोए रहिण ना पाया। तेरा नाम अक्खर निश, लिखण पढ़ण विच ना आया। तूं वसें धाम अनडिठ, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया। हउँ बालक मंगण भिख, भिखक भिखारी दर ते आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा नाउँ भुल कदे ना जाया। तेरा नाउँ कदे ना भुल्ले, विष्नूं रो रो सीस झुकाईआ। ब्रह्मे तेरे तोल तुले, पारब्रह्म साचे कंडे लैणा तुलाईआ।

१०३

लक्ख चुरासी फुल फलवाड़ी तेरी मौले, धरत धवल मिले वड्याईआ। कवन कूट कवण घर कवण वसे परदे ओहले, कवण रूप अनूप छुपाईआ। कवण नाउँ धराए पंज तत्त काया चोले, लोकमात वज्जे वधाईआ। कवण रूप गायण भगत सुहागी सोहले, अनन्द मंगल देण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव बैठे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी शब्द जणाया, तिन्नां आप उठाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग सेवा लाया, जुग जुग गेड़ा आप दवाइंदा। त्रैगुण तत्त झोली पाया, रजो तमो सतो मेल मिलाइंदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश लए उपाया, सगला संग निभाइंदा। मन मति बुध वण्ड वण्डाया, काया गढ़ सुहाइंदा। बहत्तर नाड़ी जोड़ जुड़ाया, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी वेख वखाइंदा। डूँघी कंदर फोल फुलाया, घर घर विच डेरा लाइंदा। नौ दुआरे राह चलाया, जगत वासना विच टिकाइंदा। पंच विकारा गोद बहाया, काम क्रोध लोभ मोह हँकार वेख वखाइंदा। आसा तृष्ना नाल बंधाया, हउमे हंगता जोड़ जुड़ाइंदा। सुखमन टेडी बंक सुहाया, ईड़ा पिंगल खेल खिलाइंदा। अनहद शब्द विच छुपाया, धुन नाद ना कोई सुणाइंदा। अमृत आत्म कँवल धराया, उलटा कँवल आप धराइंदा। बजर कपाटी परदा लाया, ना कोई तोड़ तुड़ाइंदा। दस्म दुआरी वेस वटाया, जोत निरँजण डगमगाइंदा। अन्ध अन्धेर रहे ना राया, नूर नुराना इक्क दरसाइंदा। निरगुण बैठा आसण लाया, आप आपणा थान सुहाइंदा। ईश जीव वेख वखाया, जगदीश दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव देवे वर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। हरि हरि भेव खुल्हाइंदा, शब्द अगम्मी धाड़। नौ सौ चुरानवे जुग सेवा लाइंदा, जुग जुग खेल करे अपार। लक्ख चुरासी घाड़न आप घड़ाइंदा, आपे खेले खेल खेलणहार। आपणा नाम आपणा काम आपे मार्ग लाइंदा, आपे हुक्मी हुक्म वरते विच संसार। आपे ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्माद जोत जगाइंदा, आपे देवे सर्ब आधार। आपे चारे कुण्ट वेख वखाइंदा, चारे मुख लए उग्घाड़। आपे चारे वेदां गाइंदा, आप हिलाए तार सतार। आपे चारे खाणी वण्ड वंडाइंदा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज कर त्यार। आपे चारे बाणी बोल सुणाइंदा, परा पसन्ती मद्धम बैख़री धार। आपे चारे जुगा वण्ड वंडाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग कर विचार। आपे आपणा भेव खुल्हाइंदा, लोकमात लै अवतार। आपे गुर गुर नाउँ प्रगटाइंदा, शब्द अनादि बोल जैकार। आपे भगत भगवन्त वेख वखाइंदा, धुरदरगाही साची कार। आपे सन्त कन्त मिलाइंदा, नाता तुट्टे दुहागण नार। आपे गुरमुख गोद बहाइंदा, आत्म अन्तर दए आधार। आपे गुरसिख संग निभाइंदा, जुगा जुगन्तर साची कार। आपे जुग जुग गेड़ा जगत दवाइंदा, लेखा जाणे आप निरँकार। विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाइंदा, पुरख अबिनाशी करे ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे

कराए साची कार। हरि साची कार कराइंदा, करता पुरख दीन दयाल। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा, शब्द शब्दी बणया रहे दलाल। लक्ख चुरासी कोटन कोटि रूप आप वटाइंदा, आपे शाह आपे कंगाल। आपे जूनी जून भवाइंदा, आपे सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल। आपे रागी नादी आपणा नाउँ गाइंदा, आपे सुंन अगम्म करे खेल निराल। आपे सतिजुग साचा खेल खिलाइंदा, लोकमात हो प्रधान। सति सतिवादी आपणा नाउँ धराइंदा, एका देवे सच ज्ञान। साचे भगतां मेल मिलाइंदा, वड दाता गुण निधान। गहर गम्भीर आपणा नाउँ रखाइंदा, धर्म वखाए इक्क निशान। साचे मार्ग आपे पाइंदा, एका विद्या कर बलवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान। दाता दानी हरि करतारा, साची वस्त आप वरताईआ। नाम अतोट अतुट्ट भण्डारा, जुगा जुगन्तर हथ्थ रखाईआ। गुर गुर रूप लै अवतारा, आपणी धार आप बंधाईआ। आपे तोड़े गढ़ हँकारा, आपे ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। आपे खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, हथ्थ त्रिसूल आप उठाईआ। आपे चिल्ले तीर कमान खिच्चे आपणी वारा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान आपणा नाउँ रखाईआ। आपे सतिजुग त्रेता करया पार किनारा, आपे द्वापर फेरा पाईआ। आपे सखीआं मंगलाचारा, आपे मंडल रास रचाईआ। आपे बंसरी नाद धुन सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक आप सुणाईआ। आपे भगत भगवन्त दए सहारा, भगवन आपणी कल वरताईआ। कलिजुग वेखे हो उज्यारा, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। आपे लेखा जाणे ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारा, आपे अल्ला राणी पर्दा दए उठाईआ। आपे होए बेऐब परवरदिगारा, जल्वा नूर नूर इलाहीआ। आपे वसे मुकामे हक ठांडे दरबारा, ऐनलहक आपणा नाउँ धराईआ। आपे तीस बतीसा बोल जैकारा, आपणा कलमा दए सुणाईआ। आपे निरगुण निरगुण कर प्यारा, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, कलिजुग कल वेख वखाईआ। नानक नाम कर उज्यारा, सतिनाम करे पढ़ाईआ। एका अक्खर एका धारा, एका वस्त दए वरताईआ। चार वरन करे प्यारा, ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका रंग रंगाईआ। एका जोती दस अवतारा, पुरख अकाल वेख वखाईआ। एका शब्द सुत दुलारा, गोबिन्द नाउँ धराईआ। एका नाद धुन जैकारा, पंचम शब्द दए वड्याईआ। पंचम चुक्के मोह विकारा, पंचम तत्त रहिण ना पाईआ। पंचम मेला विच संसारा, पंच प्यारे लए जगाईआ। पंचम देवे अमृत ठंडी ठारा, साचा रस आप प्याईआ। पंचम बणे दर भिखारा, अग्गे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पंचम छोड़ सर्ब संसारा, सीस ताज गया गंवाईआ। मिले मेल इक्क निरँकारा, सत्थर यार इक्क हंढाईआ। उच्ची कूके करे पुकारा, लक्ख चुरासी भेव अभेव समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी पाए सारा, कोटन कोटि जुग बीते काल, पुरख अबिनाशी वेखे

चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सीस जगदीश आपणा हथ्थ टिकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हरि जणाया, भेव अभेद खुल्हाइंदा। नव नौ चार तेरा पन्ध दए मुकाया, चार वेद वेख वखाइंदा। चार जुग चौकड़ी इक्क बणाया, जुग गेड़ा आप गिड़ाइंदा। शास्त्र सिमरत विच टिकाया, पुराण अठारां रंग रंगाइंदा। गीता ज्ञान दए समझाया, अञ्जील कुराना आप सुणाइंदा। खाणी बाणी भेव खुल्हाया, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तिम दए मिटाया, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। हरि पर्दा आप उठावणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। विष्नूं वंसी आप जगावणा, देवे शब्द हुलार। ब्रह्मा सोया रहिण ना पावणा, आलस निन्दरा करे बाहर। भोला नाथ आप हिलावणा, तन बभूती वेखे शृंगार। करोड़ तेतीसा पकड़ जगावणा, सुरपति राजा इंद करे ख्वार। गण गंधर्ब वक्त चुकावणा, किन्नर जच्छप ना दिसे कोए नचार। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा पन्ध मुकावणा, पुरख अबिनाशी हो त्यार। कोटन कोटि राम कृष्न आपणे दर वखावणा, जुग जुग लैण मात अवतार। कोटन कोटि ईसा मूसा मुहम्मद अद्ध विचकार रखावणा, राह तक्कण मीत मुरार। निउँ निउँ सजदा सर्ब करावणा, नानक मिल्या हरि करतार। सच्चखण्ड दुआरा इक्क सुहावणा, कबीरा कूके करे पुकार। सृष्ट सबाई एका तत्त जणावणा, पुरख अबिनाशी सांझा यार। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर साचा कन्त हंढावणा, मरे ना जम्मे विच संसार। आवे जावे धारे भेख जिउँ बल बावणा, आपे जाणे आपणी कार। आपे दुष्ट सिँघारे मारे रामा रावणा, आपणा रूप करे करतार। कान्हा कृष्ना द्वापर तेरी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी पाए सार। हरि जुग जुग सार संभालदा, निरगुण दाता बेपरवाह। सतिजुग त्रेता द्वापर मात उठालदा, कलिजुग देवे जगत वसा। अन्तिम खेल करे काल महाकाल दा, दीन दयाल भेव ना रा। नाता तोड़े त्रैगुण माया जगत जंजाल दा, पंज तत्त वेखे थाउँ थाँ। गुरमुख गुरसिख सज्जण आपे भालदा, निरगुण सरगुण ल्ए मिला। नाता तोड़े शाह कंगाल दा, शहिनशाह सच्चा पातशाह। फल वेखे पत्त डाल दा, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पा। सत्तां दीपां वेख वखाण दा, लोआं पुरीआं चरन टिका। ब्रह्मण्ड खण्ड आपे जाणदा, जेरज अंडां रिहा समा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव दिता वर, कलिजुग अन्तिम मेला ल्ए मिला। कलिजुग अन्तिम मेल मिलावणा, कूड़ी क्रिया दए निवार। चौथे जुग मुख छुपावणा, वेद अथर्बण आए हार। चार यारी रहिण ना पावणा, चारों कुण्ट धूंआँधार। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावणा, राज राजानां करे ख्वार। जीवां जंतां भरम मिटावणा, तोड़े गढ़ जगत हँकार। एका डंका नाम वजावणा, सृष्ट सबाई करे

ख़बरदार। राउ रंकां आप समझावणा, निरगुण सरगुण कर प्यार। साचा मार्ग इक्क वखावणा, आत्म ब्रह्म दए आधार। सो पुरख निरँजण घट घट नज़री आवणा, ज़ात पात दीन मज़्ब ना कोए धार। विष्नूं तेरी साची सेव वखावणा, विश्व रूप वरते विच संसार। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म नाद वजावणा, हँ करे ख़बरदार। शंकर तेरा संग रखावणा, तिन्ना लोकां करे ख़बरदार। त्रिलोकी आपणे चरनां हेठ दबावणा, चौदां लोकां नेत्र दए उग्घाड़। चौदां तबकां पन्ध मुकावणा, प्रगट हो आप निरँकार। कलिजुग अन्तिम वेस वटावणा, जोती जामा अपर अपार। वेद व्यासा लिख्या पूर करावणा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत जोती नूर करे उज्यार। नानक लेखा इक्क समझावणा, महांबली उतरे अगम्म अपार। गोबिन्द खेल आप खिलावणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। निहकलंक नाउँ रखावणा, जोती जाता आप करतार। मात पित ना कोए बणावणा, भाई भैण साक सज्जण ना विच संसार। साचा हुक्म आप सुणावणा, दो जहानां दए आधार। कलिजुग अन्तिम मेट मिटावणा, कूड़ी क्रिया दए निवार। सतिजुग साचा मार्ग लावणा, सति सतिवादी चले कार। सृष्ट सबाई एका रंग रंगावणा, एका मन्दिर एका गुरदुआर। एका मस्जिद मठ शिवदुआला वखावणा, एका इष्ट होए संसार। एका भूप हरि उपजावणा, राज राजाना निराकार। चारे कूट वेख वखावणा, दहि दिशा पाए सार। शंकर तेरा वक्त चुकावणा, अन्तिम देवे इक्क हुलार। सुरपति राजा इंद तख़्तों लाहवणा, शब्द अगम्मी मारे मार। ब्रह्मा पारब्रह्म जोत मिलावणा, जोत मिलाए आप करतार। विष्नूं विश्व रंग वखावणा, आदि जुगादी साची कार। सो पुरख निरँजण आपणा धाम सुहावणा, धुर धाम सच्ची सरकार। हरि पुरख निरँजण वेस वटावणा, वेस अवल्ला करे आप करतार। एकँकारा संग रखावणा, सगला साथी मीत मुरार। आदि जुगादी आदि निरँजण डगमगावणा, नूरो नूर होए उज्यार। अबिनाशी करता साचा तख़्त सुहावणा, तख़्त निवासी हो त्यार। श्री भगवान साचा ताज सीस टिकावणा, पंचम मुख दए आधार। पारब्रह्म प्रभ आपणा गीत आपे गावणा, आपे होए गावणहार। थिर घर साचा आप सुहावणा, निरगुण दीआ बाती कर उज्यार। कमलापाती सोभा पावणा, सोभावन्त एकँकार। कलकाती मेट मिटावणा, खण्डा फड़ शब्द दो धार। लहिणा देणा बाकी सर्ब चुकावणा, लेखा रहे ना विच संसार। गुरमुख विरला औखी घाटी आप चढ़ावणा, डूँग्घे सागर विच्चों कढ्ढे बाहर। आत्म ताकी आप खुल्हावणा, दूई द्वैती पर्दा दए उतार। साचा साकी बण बण जाम प्यावणा, अमृत आत्म ठंडा ठार। साचे राकी आप चढ़ावणा, शब्द अगम्मा कर त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जुग चौकड़ी करे ख्वार। जुग जुग पार उतारया, सतिजुग त्रेता द्वापर धार। कलिजुग अन्तिम वेस वटा ल्या, निहकलंक लै अवतार। सम्बल नगरी धाम

सुहा ल्या, साढे तिन्न हथ्थ बंक दुआर। शब्द सूरा आसण ला रिहा, जोद्धा सूरबीर बलकार। चारे कुण्टां वेख वखा रिहा, दहि दिशा दए हुलार। ब्रह्मा विष्न शिव उठ उठ राह तका रिहा, नेत्र लोचण नैण उग्घाड़। कवण कूटे हरि हरि डगमगा रिहा, शब्द बोले सच जैकार। सो पुरख निरँजण आपणा नाउँ प्रगटा ल्या, हँ ब्रह्म करे ख़बरदार। एका दूजा भउ चुका ल्या, तीजा नैण दए उग्घाड़। चौथे पद आपणा आसण ला ल्या, पंचम मेला साचे यार। छेवें छप्पर छन्न ना कोए छुहा ल्या, सत्तवें सति सतिवादी साची कार। अठ्ठवें अठ्ठां तत्तां पन्ध मुका ल्या, नाता तोड़े नौ दुआर। गुरमुख दस्म दुआरी मेल मिला ल्या, सुरती शब्द कर प्यार। साची सेजा आप सुहा ल्या, ब्रह्म पारब्रह्म पाए सार। घर गीत गोबिन्द अला ल्या, अनहद धुन सच्ची धुन्कार। कलिजुग जीवां नज़र किसे ना आ रिहा, गृह बैठा मीत मुरार। माया ममता हउमे हंगता जूठ झूठ पर्दा पा ल्या, काम क्रोध हँकार तन शंगार। गुर का शब्द हिरदे ना किसे वसा ल्या, पढ़ पढ़ थक्के मुग्ध गंवार। काग हँस ना रूप वटा ल्या, अन्तिम रलया कागां डार। जन्म जन्म दा दाग़ ना मात धवा ल्या, अमृत मिल्या ना ठंडा ठार। हरि कन्त ना किसे हंढा ल्या, लक्ख चुरासी दुहागण नार। कलिजुग आपणा वेस वटा ल्या, काला सूसा तन शंगार। घर घर आपणा नाच नचा ल्या, नटूआ नट खेल करे अपार। सतिगुर पूरे गुरमुख विरला आप बचा ल्या, जिस सिर हथ्थ धरे करतार। कक्खों लक्ख आप बणा ल्या, करता कीमत पाए आप निरँकार। कलिजुग जीव कौडी कौडी हट्ट विका ल्या, माणस जन्म जूए गए हार। नेत्र लोचण नैण दरस किसे ना पा ल्या, कोटन कोटि कोटी रोवण ज़ारो ज़ार। सुरत सुवाणी सोती ना कोई उठा रिहा, शब्द प्रीतम करे प्यार। वरन गोती भरम भुला ल्या, आत्म ब्रह्म ना पावे कोए सार। वासना खोटी सर्ब करा रिहा, कलिजुग होया पहरेदार। गुरमुख विरले चोटी आप चढ़ा रिहा, किरपा कर सच्ची सरकार। निरगुण जोती जोत जगा ल्या, जाग्रत जोत कर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाए आपणा लड़, आपणा पल्लू आप वखा रिहा। विष्न ब्रह्मा शिव लड़ फड़ाउणा, कलिजुग वेला अन्तिम आया। जुग चौकड़ी लेखा आप मुकाउणा, पान्धी पन्ध मुकावण आपणा फेरा पाया। गुरमुख विरला संग मिलाउणा, जुग जुग विछड़े लए मिलाया। सतिजुग त्रेता द्वापर टुट्टी गंढु अन्तिम गंढु वखाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, ब्रह्मा विष्न शिव किरपा देवे कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाउणा। विष्न ब्रह्मा शिव बाला, पुरख अबिनाशी आप उठाईआ। एका देवे धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी बाण शब्द जणाईआ। विष्नूं तेरा चुक्या पीणा खाणा, आपणा भण्डारा आपणे विच टिकाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म लक्ख चुरासी बन्नृया गाना,

लोकमात वेख वखाईआ। शंकर जो घड़या सो भन्न वखाणा, भुल कदे ना जाईआ। तख्त बैठा एका तख्त निवासी राणा, दो जहानां रईयत वेख वखाईआ। आपे वरते आपणा भाणा, आपणे भाणे सद समाईआ। गुरसिखां देवे नाम निधाना, अमृत अमिउँ रस जाम प्याईआ। आवण जावण चुक्के काना, राय धर्म ना दए सज़ाईआ। लक्ख चुरासी फंद कटाणा, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। अन्तिम जोती जोत मिलाणा, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। गुरसिख रंग रंगाए श्री भगवाना, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आदि जुगादी एका हरि, जुगा जुगन्तर खेल रिहा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तिम आपणी कार आप कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीवण दाता देवे जीआ दान, जगत जुगत जोग आपणे हथ्थ रखाईआ।

हरिसंगत सुणना कन्न ला, एका एक एक जणाईआ। गुर शब्द बणाउणा जगत मलाह, दूजा दर ना मंगण जाईआ। हरि का नाउँ सच सलाह, सिफ्त सालाही इक्क अख्वाईआ। रसना गाओ थाँ थाँ, भुल कदे ना जाईआ। पुरख अकाल लैणा मना, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। आदि जुगादी बणे पिता मां, गुरसिख बाल अञ्याणे गोद उठाईआ। चार वरन बणना भैण भ्रा, नेत्र नैण ना कोई तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए समझाईआ। हरिसंगत सति करो ध्यान, एका शब्द जणाइंदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका एक रूप नज़री आइंदा। हर घट वसे हरि भगवान, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। ऊँचां नीचां राउ रंकां देवे माण, जो जन रसना गाइंदा। एथे ओथे होए सहाई आण, भुल कदे ना जाइंदा। गुर शब्द सदा बलवान, जुग जुग सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत सति वड्यांअदा। हरिसंगत सति विचार, सति सन्तोख दए जणाईआ। काम क्रोध हँकार लोभ मोह दए निवार, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। साचे शब्द करना इक्क प्यार, घर वज्जदी रहे वधाईआ। अठ्ठे पहर रहे धुन्कार, आत्म धुन सच्ची शनवाईआ। काया मन्दिर अंदर बैठा मीत मुरार, अठ्ठे पहर राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या सिख समझाईआ। साची सिख्या गुर विचार, गुरमुखां बूझ बुझाइंदा। सृष्ट सबाई वेखे संसार, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। एका मिलणा एकँकार, एका घर हरि सुहाइंदा। नाता तोड़ जगत विकार, आत्म धार इक्क दरसाइंदा। रसना गाउणा वारो वार, रसना जिहवा गुण इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची संगत साचा तत्त इक्क वखाइंदा। साचा तत्त शब्द गुर ज्ञान, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। मूर्ख मूढ़

 ११०

बणाए चतुर सुजान, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। घर घर दर्शन देवे आण, दासी दास सेव कमाईआ। भगवन्त भगत लए पछाण, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर संगत एका गुण जणाईआ। हरिसंगत तेरी वड्याई वड, हरि सतिगुर आप कराइंदा। कूड़ कुड़यारा विच्चों देणा कढ्ढ, सच सुच्च विच समाइंदा। आपणा भार आपे लैणा लद्द, दूसर वण्ड ना कोए वंडाइंदा। आप सुहावणी आपणी यद्द, साचा बंस आप वड्यांअदा। अमृत पीणा साची मदि, सच ख़ुमार इक्क समझाइंदा। धर्म निशाना आत्म अन्तर लैणा गड्ड, सति धर्म इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत एका रंग रंगाइंदा। संगत तेरा साचा रंग, गुर सतिगुर आप रंगाया। तेरे अंदर सच पलँघ, साची सेजा आप सुहाया। हरि बैठा सूरा सर्बंग, दिवस रैण तेरा राह तकाया। नौ दुआरे जाणा लँघ, गुर शब्दी शब्द कमाया। मानस जन्म ना होए भंग, लक्ख चुरासी विच्चों माणक मोती हथ्थ आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए सालाहया। हरिसंगत तेरी वडी वड्याई, जुग जुग आप कराइंदा। उच्चा तेरा दर सभ थाँईं, हरिजू आप वखाइंदा। वेखणहारा भेव ना राई, सति संग एका नाम वखाइंदा। इक्क इकल्ला बेपरवाही, जो जन सति संगत विच समाइंदा। निवण सु अक्खर आपणी झोली पाई, हँकार विच कदे ना आइंदा। साध संगत वडी वड्याई, निउँ निउँ सर्ब निमस्कारदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच उपदेश एका एक वखाइंदा। सति उपदेश सतिगुर चरन धूढ़, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। चतुर सुघड़ बणे मूढ़, जो गुर सतिगुर दर्शन पाईआ। गुर संगत नाता तुट्टे कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया मेटे झूठी शाहीआ। इक्क दूजे दी आस करन पूर, मिल भईआ भईआ संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत एका घर वसाईआ। गुर संगत घर एका वसे, सच दुआर इक्क बणाइंदा। एका अमृत एका रसे, रस रसीआ आप चखाइंदा। मिटे रैण अन्धेरी मस्से, साचा चन्द आप चमकाइंदा। गुरसिख गुरमुख बह बह हस्से, घर साचा सगन मनाइंदा। मनमुख गुर संगत तेरे कोलों नस्से, तेरा संग ना कोए रखाइंदा। जिस जन हिरदे हरि जू वसे, सो संगत साचा कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत सद सुहाइंदा। हरिसंगत तेरा उच्च मकाना, सति पुरख निरँजण आप बणाया। गुरसिख तेरा शब्द बिबाना, गुर सतिगुर लए उठाया। बणे विचोला श्री भगवाना, लोकमात वेस वटाया। देवे नाम सति निशाना, दरगाह साचे आप झुलाया। हरि हरि नाउँ मिल मिल गाणा, गुर गुर सेव कमाया। एथे ओथे मिले थाउँ टिकाणा, दरगाह साची माण दवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत मार्ग इक्क वखाया। सोहँ शब्द गोबिन्द धार, पिता पूत वड्याईआ। दस्म ग्रन्थ करो विचार,

अन्तिम अंक लेखा गया लिखाईआ। चिल्ला तीर कमान भथ्था होए मेरी कटार, सोहँ शब्द वडी वड्याईआ। सृष्ट सबाई मारे मार, कलिजुग अन्तिम वेस धराईआ। हँ ब्रह्म पावे सार, पारब्रह्म सच्चा शहिनशाहीआ। मेल मिलाए पुरख अकाल, दीन दयाल इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ रूप रूप दरसाईआ । सोहँ रूप सच समाया, हरि साचा खेल खिलाईआ। आदि अन्त आपणे विच समाया, आपणा वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण हो हो नानक गाया, सोहँ शब्द एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा कर पसारा, सोहँ धारा आप चलाईआ। सोहँ धार खेल संसारा, पुरख अकाल आप चलाइंदा। आपे होए वेखणहारा, अजूनी रहत वेस वटाइंदा। वसणहारा सच दुआरा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। कलिजुग करे पार किनारा, चार जुग मूल चुकाइंदा। सतिजुग साचा करे वरतारा, सृष्ट सबाई आप समझाइंदा। सोहँ शब्द वरते वरतारा, लक्ख चुरासी झोली पाइंदा। लक्ख चुरासी बोले इक्क जैकारा, निश्अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ लोकमात आप प्रगटाइंदा। सोहँ शब्द मात प्रगटाया, सतिजुग साचे दए वड्याईआ। चारे वरनां दए समझाया, एका मन्त्र दए वड्याईआ। पुरख अकाल अतुट इक्क रखाया, हँ रूप सर्ब लोकाईआ। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण इक्क मृदंग वजाया, वजावणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ शब्द सचखण्ड हरि पाई वण्ड, सतिजुग साचे झोली रिहा भराईआ।

★ ७ माघ २०१७ बिक्रमी हज़ूरा सिँघ दे घर गुराया ज़िला जलन्धर ★

आदि पुरख सर्ब घट वासा, आदि पुरख वडी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण वेखे खेल तमाशा, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कमाईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क इकल्ला सर्ब जी दाता, जुगा जुगन्तर खेल खिलाईआ। एकँकारा पिता माता, पूत सपूता वेखे थाउँ थाँईंआ। श्री भगवान सर्ब कल समराथा, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। अबिनाशी करता आप चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही इक्क अख्वाईआ। पारब्रह्म आप निभाए आपणा साथा, सगला संग आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। सर्ब कला हरि समरथ, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आदि जुगादि चलाए रथ, जुग जुग वडी वड्याईआ। आपणा नाउँ प्रगटाए अकथ, लेखा कथ ना सके कोए राईआ। निरगुण सरगुण मार्ग दस्स, सच संदेश दए सुणाईआ। इक्क इकल्ला सच महल्ला सचखण्ड निवासी पूरी करे आस, आस निरास ना कोए वखाईआ । लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, धरत धवल दए वड्याईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड करे

निवास, गगन मंडल फेरा पाईआ। रवि ससि करे प्रकाश, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। गृह मन्दिर पावे रास, वेस आपणा आप धराईआ। दाता दानी शाहो शाबाश, शहिनशाह शाह पातशाह इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणा रूप आप धराईआ। सो पुरख निरँजण रूप धराइंदा, निरगुण दाता बेपरवाह। हरि पुरख निरँजण वेस वटाइंदा, अलख अगोचर अगम्म अथाह। एकँकारा आपणी कल आप वरताइंदा, अकल कलधारी आपणा नाउँ धरा। आदि निरँजण जोती जोत नूर डगमगाइंदा, नूर नुराना हो रुशना। अबिनाशी करता आपणा खेल आप खिलाइंदा, आपे वसे हर घट थाँ। श्री भगवान आपणा रंग रंगाइंदा, रंग रंगीला एका शहिनशाह। पारब्रह्म आपणा बन्धन पाइंदा, आपणी धारा आप समा। सचखण्ड दुआरा आप उपाइंदा, निरगुण निरगुण सेव कमा। छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा, चार दीवार ना लए बणा। दीवा बाती इक्क टिकाइंदा, कमलापाती सहिज सुभा। सच सिँघासण इक्क विछाइंदा, पावा चूल ना ल्या रखा। उप्पर आपणा आसण लाइंदा, एकँकारा साचे तख्त बैठ करे सच न्याँ। राज राजानां आपणा नाउँ धराइंदा, भूपन भूप एका एक रिहा अख्वा। सति सरूप सदा समाइंदा, रूप रंग रेख कोए जाणे ना। आपणा सीस जगदीश आपे वेख वखाइंदा, आपे छत्र रिहा झुला। आपे ताज सीस टिकाइंदा, आपे बणे सच्चा पातशाह। आपणा हुक्म आप सुणाइंदा, धुर फ़रमाना आप सुणा। दर दरबाना आप अख्वाइंदा, आपे बैठा सीस झुका। आपे गल विच पल्लू पाइंदा, आपे चरन कँवल ध्यान रिहा लगा। सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा, दूसर कोए वेखे ना। आदि पुरख आदि निरँजण आपे डगमगाइंदा, आपणी कल आप धरा। आपणी कार आप कराइंदा, करता पुरख खेल खिला। आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा, आपे भिच्छया देवे झोली पा। निरगुण आपणी धार आप धराइंदा, सुते प्रकाश आप करा। आपणा रंग आप चढ़ाइंदा, लाल गुलाला पुरख अकाला दीन दयाला आप सुहाए साचा थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा नाँ। सचखण्ड दुआर सुहाया, कर किरपा गुण निधान। सच सिँघासण आसण लाया, तख्त निवासी हो मेहरवान। साचा हुक्म आप फ़रमाया, धुर फ़रमान श्री भगवान। आपणा नाउँ आप प्रगटाया, आपे होए जाणी जाण। नर निरँकारा आप अख्वाया, आदि जुगादी नौजवान। बिरध बाल ना रूप वटाया, जुगा जुगन्तर खेल महान। साचे मन्दिर सोभा पाया, सचखण्ड दुआरा इक्क मकान। आपणे रंग आप समाया, दूसर रंग ना करे वखाण। आपणा कंचन गढ़ आप बणाया, बाढी बण गुण निधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआरे आपणी करे आप पछाण। सचखण्ड दुआर सुहाया, हरि साचा सोभावन्त। एकँकारा आसण लाया, आदि जुगादी जुगा जुगन्त। आपणा रूप आप धराया, करे खेल

बेअन्त बेअन्त बेअन्त। नारी कन्त नाउँ रखाया, सेज सुहाए श्री भगवन्त। निरगुण मेला मेल मिलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप बणाए आपणी बणत। बणत बणाए हरि निरँकारा, दूसर भेव ना कोए जणाईआ। नारी बण कन्त भतारा, घर साची सेज हंढाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहरा, रूप अनूप आप छुपाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर इक्क अख्वाईआ। आपणा बणे आप वणजारा, साचा वणज इक्क कराईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची धाम वड्याईआ। सचखण्ड साचे कर पसारा, आपणी कल आप वरताईआ। मात पित बण जणे सुत दुलारा, दाई दाया आप हो जाईआ। उच्ची कूक कूक बोले इक्क जैकारा, नाउँ निरँकारा ल्ए धराईआ। लिखण पढ़ण ते होए बाहरा, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। शाहो भूप हरि बण सिक्दारा, तख्त ताज सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, निरगुण निरगुण घाड़न घड़, निरगुण माता निरगुण पूत निरगुण पिता सुत दुलारा इक्क उठाईआ। सुत दुलार उठाया, कर किरपा श्री भगवान। आपणी इच्छया पूर कराया, आपे देवे दानी दान। आपणा दर आप वखाया, आप वखाए सच निशान। घर घर विच ल्ए प्रगटाया, आपे होया मेहरवान। थिर घर साचा आप धराया, पारब्रह्म बली बलवान। आपणी वण्डण आप वण्डाया, वण्डे वण्ड गुण निधान। सचखण्ड आपणा आसण लाया, थिर घर खेल करे महान। सुत दुलारा इक्क बहाया, चरन कँवल बख्शे सच ध्यान। सीस जगदीश हथ्थ टिकाया, दिस ना आए वाली दो जहान। सीस आपणा छत्र झुलाया, सेवा कर हरि भगवान। आपणा भाणा आप समझाया, आदि जुगादी खेल महान। तेरा रूप अनूप आप वटाया, रूप अनूप इक्क निशान। तेरी सेवा दए समझाया, भुल ना जाणा बण नादान। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी रचन वखाया, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी सन्तान। त्रैगुण तेरी ख़ाक रखाया, पंज तत्त तेरा विधान। लक्ख चुरासी घाड़न ल्ए घड़ाया, लेखा जाणे जीव जहान। आपणी भिच्छया दए वरताया, विष्नूं देवे इक्क ज्ञान। ब्रह्मा ब्रह्म रूप दरसाया, पारब्रह्म करे पहचान। शंकर एका राह वखाया, अन्तिम लेखा जाणे श्री भगवान। तिन्नां विचोला शब्द बणाया, पूत सपूता नौजवान। चारे कूटां वेख वखाया, दहि दिशा होए प्रधान। साचा रिज़क आप पुचाया, विष्नूं देवे विश्व दान। ब्रह्मा एका नाम समझाया, चारे मुख चारे वेदां करे ज्ञान। शंकर इक्क त्रिसूल फड़ाया, घड़या भन्ने विच जहान। पुरख अबिनाशी खेल रचाया, आपे होया निगहबान। आदि जुगादी वेस वटाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दिता वर, एका बख्शे चरन ध्यान। साचा सुत हरि समझाया, विष्न ब्रह्मा शिव कर कुड़माईआ। आपणा हुक्म तेरा नाउँ धराया, तेरा नाउँ वरते वरताए सच्चा शहिनशाहीआ। आपणा नूर तेरे विच टिकाया, तेरी जोत करे रुशनाईआ। तेरी

जोत रवि ससि लए चमकाया, मंडल मण्डप वेख वखाईआ। तेरा नूर विष्न ब्रह्मा शिव विच टिकाया, आठ पहर रहे रुशनाईआ। तेरी अंस लए प्रगटाया, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। तेरा सरबंस दए सुहाया, लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाईआ। तेरा रूप कोटन कोटि सहँस लए प्रगटाया, त्रैगुण माया जोड़ जुड़ाईआ। तेरा राज जोग पंज तत्त लए कमाया, धुर संजोग लए मिलाईआ। तेरा खेल लोक परलोक दए वखाया, ज़िमीं अस्मानां होए सहाईआ। तेरा नाउँ साचा ढोला चौदां लोक दए सुणाया, त्रै भवन धनी सच्चा शहिनशाहीआ। तेरा चोला लोकमात लए बदलाया, गुर पीर अवतार नाउँ धराईआ। तेरा सोहला घर घर दर दर दए सुणाया, घट घट अंदर अनहद शब्द नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, हरि सुत भुल ना जाईआ। शब्द सुत सुणयां ज्ञान, हरि शब्दी शब्द सुणाया। दोए जोड़ करे प्रनाम, निउँ निउँ सीस झुकाया। हउँ बालक मुग्ध अञ्याण, तूं पिता मेरा माया। जुग जुग देणा साचा दान, विसर कदे ना जाया। लोकमात करां खेल महान, लक्ख चुरासी बणत बणाया। दीवा जोती जगे महान, घट घट नूर होए रुशनाया। तेरा भण्डारा अमृत पीण खाण, नाभी कँवल ताल भराया। तेरा रूप ब्रह्म पछाण, पारब्रह्म वेस वटाया। तेरी भूमका सच अस्थान, चरन कँवल इक्क दरसाया। तेरा वेखे सच निशान, दो जहानां रिहा झुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण रूप तेरा तेरे विच जाए समाया। सुत दुलारा मंग मंगाए, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कवण रूप तेरा मेल मिले सच्चे शहिनशाहे, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। कवण कूट तेरा दर वेख वखाए, कवण घर वज्जे वधाईआ। कवण कोट किला दए वसाए, कवण बंक होए रुशनाईआ। कवण रूप निरगुण जोत डगमगाए, जोती जाता नाउँ धराईआ। कवण रूप लक्ख चुरासी वरन गोत मेट मिटाए, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म रूप सर्ब जणाईआ। कवण रूप निहकर्मी होए कर्म कमाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर रक्खे ठंडी छाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा, देवे वर वरदान। शब्द दुलारे तेरी सेव लगाइंदा, तेरा रूप दो जहान। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां तेरा रंग रंगाइंदा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज तेरा मात निशान। गुर अवतार तेरी धार रखाइंदा, पंज तत्त होए प्रधान। भगतन तेरी गोद बहाइंदा, सन्तन देवे तेरा माण। गुरमुख तेरे अंग लगाइंदा, गुरसिख गीत तेरे गाण। तेरा नाउँ प्रचण्ड वखाइंदा, जुग जुग करे जगत कल्याण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आप जणाए धुर फ़रमान। धुर फ़रमाना सुणया शब्द सुत्त, एका अन्तर ध्यान लगाईआ। करे खेल प्रभ अबिनाशी अचुत, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। जुग जुग सुहाए तेरी रुत्त, फुल्ल फुलवाड़ी मात महिकाईआ। आपे जाणे वार थित, दूसर भेव कोए ना पाईआ।

नित नवित करे हित्त, पीआ प्यार इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। साचा वर हरि झोली पा, सुत शब्द उठाया। तेरा नाता जुड़या बेपरवाह, टुट्ट कदे ना जाया। दो जहानां वखाए तेरा थाँ, तुध बिन अवर ना कोए रहाया। नव नौ चार गेड़ा तेरा तेरे हथ्थ दए फड़ा, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी सेव कमाया। लोकमात खेड़ा देणा वसा, त्रैगुण पंज तत्त मेल मिलाया। आपणा गेड़ा दए गिड़ा, जुग जुग पन्ध मुकाया। अन्तिम उखेड़ा देवे ला, तेरा हलूणा इक्क रखाया। जो घड़या सो भन्न दए वखा, थिर कोए रहिण ना पाया। पीर पैग़म्बर गुर अवतार जुग जुग देण सलाह, बिन हरि अवर ना कोए सहाया। एका शब्द जपणा नाँ, कोटन कोटि आपणे नाउँ लए प्रगटाया। निष्अक्खर वसे अनडिठड़े थाँ, नेत्र लोचण नैण वेखे ना कोए जीव लोकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाया। सुणया धुर फ़रमान, हरि शब्द लए अंगड़ाईआ। तूं दाता मेहरवान, तेरी महिमा अकथ कथी ना जाईआ। तूं आदि जुगादी शाह सुल्तान, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। तूं वसें सचखण्ड सच्चे मकान, सच सिँघासण आसण लाईआ। तेरा रूप रंग रेख ना कोए निशान, तेरी महिमा तेरे विच समाईआ। हउँ बाल अञ्याणा सुत नादान, ढह प्या तेरी सरनाईआ। मंग मंगे याचक दान, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग झुलावां तेरा इक्क निशान, सच निशाना हथ्थ उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पावां एका आण, हुक्मे हुक्म सर्ब फिराईआ। लक्ख चुरासी खेलां खेल महान, चारे खाणी वेख वखाईआ। तेरा फ़रमान देवां इक्क ज्ञान, चारे वेद करां पढ़ाईआ। चारे बाणी कर प्रधान, परा पसन्ती मद्धम बैख़री तेरी धार वखाईआ। जुग जुग लोकमात करां कल्याण, गुर अवतार रूप वटाईआ। भगतां करां सच प्यार, साचे सन्तां गोद बहाईआ। गुरमुखां देवां इक्क आधार, गुरसिख साचे संग रखाईआ। मनमुखां करां ख्वार, थाउँ ना कोए पाईआ। दुष्ट हँकारी दवां निवार, हँकारी गढ़ रहे ना राईआ। माया ममता मारां मार, आसा तृष्ना रोग चुकाईआ। सुरती सुरत करां प्यार, अकाल मूर्त तेरी सेव कमाईआ। अजूनी रहत वरतां वरतावां विच संसार, अनुभव प्रकाश कराईआ। निर्भय होए फिरां चारों कुण्ट बोल जैकार, तेरा भउ इक्क मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शब्द सुत बैठा सीस झुकाईआ। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, एका दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण वखाए सच निशान, सति सतिवादी आप उठाइंदा। एकँकारा बख़्शे इक्क ध्यान, एका घर मेल मिलाइंदा। आदि निरँजण हो प्रधान, जोती नूर डगमगाइंदा। श्री भगवान बणया साचा काहन, अबिनाशी करता खेल खिलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ गुण निधान, गुण अवगुण ना कोए रखाइंदा। सुत दुलारा कर परवान, एका हुक्म

जणाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग खेले खेल दो जहान, सतिजुग त्रेता द्वापर चौकड़ी जुग वण्ड वंडाइंदा। अन्तिम कलिजुग होए प्रधान, जोती जामा भेख वटाइंदा। करे खेल बली बलवान, बलधारी आप हो जाइंदा। आपे वेखे आपणा सति निशान, सति सतिवादी पर्दा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेद खुल्हावणहारा, एका रंग समाईआ। आदि जुगादी खेल न्यारा, जुगा जुगन्तर वेख वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, चारे वेद भेव ना राईआ। शास्त्र सिमरत करे पुकारा, पुराण अठारां देण दुहाईआ। गीता ज्ञान दए आधारा, अठारां अध्याए एका गुण जणाईआ। अञ्जील कुराना रखाए एका नाअरा, तीस बतीस कूक कूक सुणाईआ। बाणी बाण मारे न्यारा, मेहरबान सच्चा शहिनशाहीआ। गुर गुर रूप विच संसारा, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। आपे वसे सभ तों बाहरा, आपे हर घट आसण लाईआ। आपे सृष्ट सबाई बणे कन्त भतारा, लक्ख चुरासी नार लए प्रनाईआ। आपे विष्न दए हुलारा, आपे ब्रह्मा गोद बहाईआ। आपे शंकर पावे सारा, संसा रोग दए मिटाईआ। आपे त्रैगुण वेखे अखाड़ा, आपे पंज तत्त करे लड़ाईआ। आपे काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, आपे आसा तृष्ना रूप वटाईआ। आपे पंचम शब्द नाद धुन्कारा, गृह मन्दिर अनहद तार सतार हिलाईआ। आपे सुखमन टेढी बंक डूँग्घी गारा, आपे ईड़ा पिंगल मेल मिलाईआ।
११६ आपे जोत निरँजण हो उज्यारा, घर घर करे रुशनाईआ। आपे वसे धूंआँधारा, सुन्न समाध आप समाईआ। आपे लाए बजर कपाटी ताला, आपे त्रै त्रै तोड़ तुड़ाईआ। आपे दस्म दुआर बणाए सच्ची धर्मसाला, आपे बैठा आसण लाईआ। आपे करे खेल निराला, निरगुण निरवैर पुरख अकाल वडी वड्याईआ। आपे सतिजुग त्रेता द्वापर चले अवल्लड़ी चाला, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। आपे लक्ख चुरासी फल वेखे लग्गा डाला, घर घर आपणा फेरा पाईआ। आपे चरन कँवल रखाए काल महाकाला, काल ग्रास आप हो जाईआ। आपे जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँग्घी कंदर फिरे बेहाला, आपे दर दर घर घर आपणी अलख जगाईआ। आपे शाहो भूप बणे कंगाला, दर दरवेश आपणा नाउँ धराईआ। आपे सतिजुग साची करे प्रितपाला, भगवन आपणा रूप आप प्रगटाईआ। आपे त्रेता फड़े तीर कमाना, दुष्ट हँकारी रावण दए खपाईआ। आपे होए कृष्ना कान्हा, मुकंद मनोहर लखमी नरायण बंसरी नाम आप वजाईआ। आपे रथ रथवाही बणे गुण निधाना, आपे अठारां अध्याए गीता अर्जन दए समझाईआ। आपे ईसा मूसा काला सूसा तन करे निशाना, आपे अल्फ़ी गल हंढाईआ। आपे जाणे हदीस अञ्जील कुराना, शरअ शरीअत आप वखाईआ। आपे वसे मुकामे हक धुरदरगाही बेऐब परवरदिगारा सच टिकाणा, साचा धाम इक्क सुहाईआ। आपे जाणे आपणा राग तराना, तार सतार आप हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी ११६

किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, शब्द शब्दी खेल खिलाईआ। शब्द वणजारा साचा हाजी, हज्ज काया काअबा आप कराइंदा। हरि शब्द हयात आब दो दो आबी, आपणा आप आप प्यांअदा। हरि शब्द बण सवाबी, भेव कोए ना पाइंदा। हरि शब्द शाह सुल्तान बणे नवाबी, रईयत आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, शब्द सुत तेरा वेस वटाइंदा। साचा वर हरि घर पाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। निरगुण निरगुण वेख वखाया, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण चेला निरगुण गुर रूप वटाया, निरगुण सतिगुर होए सहाईआ। निरगुण पंज तत्त आसण लाया, लोकमात वज्जे वधाईआ। नानक निरगुण नाउँ धराया, नाम सति सति पढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म विच समाया, दोए दोए एका धार वखाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा नाउँ धराया, भेव कोए ना पाईआ। एका डंका शब्द वजाया, चार वरनां दए समझाईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां एका संग रखाया, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका मार्ग रिहा वखाईआ। मुलां शेख़ मुसायक पीर एका कलमा हक जणाया, हक हकीकत दए ग्वाहीआ। लाशरीक इक्क ख़ुदाया, बेऐब नाउँ वड्याईआ। जगत तारीक दए मिटाया, जल्वा नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोती दस दस धार, नाता तुट्टे नौ दुआर, नौ खण्ड पृथ्मी पावे सार, आप आपणा बल धराइंदा। शब्द गुर सूर बलकारा, पुरख अकाल उपाया। नाउँ रखाया सुत दुलारा, पंज तत्त गोबिन्द मेल मिलाया। नाम फड़ाया सच कटारा, ब्रह्मण्ड खण्ड आप चमकाया। तिक्खी रक्खे दोवें धारा, दो जहानां वेख वखाया। अमृत बख़्शे ठंडा ठारा, भर प्याला जाम प्याया। साची रीती विच संसारा, लोकमात रिहा दरसाया। ऊँचां नीचां बहाए इक्क दुआरा, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाया। पंजां मुख कर उज्यारा, पंचम सीस दस्तार टिकाया। पंचम अग्गे कर निमस्कारा, आपणा सीस निवाया। पंचम राज जोग सिक्दारा, पंचम शाह पातशाह दए वड्याआ। पंचम हुक्म वरते विच संसारा, हरि शब्द दए वरताया। अन्तिम करया पार किनारा, पंज तत्त नाता आप तुड़ाया। ऊँची कूक करे पुकारा, इक्क आवाज़ लगाया। कलिजुग अन्तिम पावे सारा, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाया। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जोत जोत रुशनाया। शब्द सुत तेरी पावे सारा, गोबिन्द मेला सहिज सुभाया। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा पार किनारा। त्रैगुण नाता दए तुड़ाया। पंज तत्त तोड़े गढ़ हँकारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणा मेल मिलाया। प्रगट होवे शाह सुल्तान सच्चा सिक्दारा, निरगुण निरगुण निरगुण आपणा नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, अभुल अभुल अभुल आप सुणाया। कलिजुग अन्तिम आवणा, जुग चौकड़ी रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी वेस वटावणा, निरगुण जोत कर

रुशनाईआ। निहकलंक नाउँ धरावणा, चार जुग देण ग्वाहीआ। गुरमुख साचे वेख वखावणा, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। सत्तां दीपां फोल फुलावणा, आप आपणा बल धराईआ। शब्द तेरा डंका इक्क वजावणा, तेरा नाउँ दए वड्याईआ। सो पुरख निरँजण आपणा खेल खिलावणा, हँ ब्रह्म ल्ए मिलाईआ। सोहँ रूप पिता पूत एका तागा एका सूत एका गंढु पवावणा, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। पूर्ब लेखा पूर करावणा, अगला आपणे हथ्थ रखाईआ। जीव जंत भेव किसे ना पावणा, चौदां विद्या रोवे मारे धाहीं‌आ। निरगुण रूप नज़र किसे ना आवणा, कोटन कोटि बैठण ध्यान लगाईआ। कलिजुग आपणा पर्दा उप्पर पावणा, ना सके कोए चुकाईआ। नार विभचार सृष्ट सबाई करावणा, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। गुरमुख विरले शब्द आपणा रूप आप दरसावणा, धुन अनादी नाद वजाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर अंदर बह बह गावणा, जगत शिवदुआला मठ मन्दिर मस्जिद खोजण कोए ना जाईआ। करे खेल प्रभ समरथ गुरसिखां करे पूरी भावना, भावी भय ना कोए सिर रखाईआ। दो जहानां बणे ज़ामना, एथे ओथे होए सहाईआ। शब्दी शब्द फड़ाए साचा दामना, दामनगीर आप अख्वाईआ। काया खेड़ा वसाए साचा नगर ग्रामना, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। करे प्रकाश कोटन भानना, रवि ससि मुख शरमाईआ। सोहँ शब्द देवे ब्रह्म ज्ञानना, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त एका हरि, करे खेल साचे घर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे आप कल्याण, डोर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ।

★ ८ माघ २०१७ बिक्रमी गुरमेज सिँघ दे गृह पिण्ड रुड़का कलां ★

हरि सतिगुर वड्याई धन्न, आदि अन्त खेल खिलाइंदा। गुर गुर वड्याई धन्न, हरि शब्दी नाद वजाइंदा। भगत वड्याई धन्न, भगवन राह तकाइंदा। सन्त वड्याई धन्न, हरि कन्त वेख वखाइंदा। गुरमुख वड्याई धन्न, आत्म अन्तर खोज खुजाइंदा। गुरसिख वड्याई धन्न, एका नाउँ रसना जिहवा ध्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप मिलाइंदा। सतिगुर वड्याई धन्न, आदि जुगादि समाया। गुर गुर वड्याई धन्न, निरगुण सरगुण रूप धराया। भगत वड्याई धन्न, घर मन्दिर करे रुशनाया। सन्त वड्याई धन्न, निज आत्म वेख वखाया। गुरमुख वड्याई धन्न, चरन कँवल ध्यान लगाया। गुरसिख वड्याई धन्न, नेत्र नैण इक्क उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जगादी खेल खिलाया। सतिगुर वड्याई धन्न, एका रंग समाइंदा। गुर वड्याई धन्न, जुग जुग आपणा

नाउँ प्रगटाइंदा। भगत वड्याई धन्न, लोकमात खेल खिलाइंदा। सन्त वड्याई धन्न, जीवां जंतां आप सुहाइंदा। गुरमुख वड्याई धन्न, रंग बसन्त इक्क रंगाइंदा। गुरसिख वड्याई धन्न, मन का मणका आप भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख आपणा रूप आप धराइंदा। सतिगुर वड्याई धन्न, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। गुर गुर वड्याई धन्न, लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाँईंआ। भगत वड्याई धन्न, भावी सीस ना कोए जणाईआ। सन्त वड्याई धन्न, संसा रोग रहे ना राईआ। गुरमुख वड्याई धन्न, काम क्रोध लोभ मोह हँकार गढ़ तुड़ाईआ। गुरसिख वड्याई धन्न, सगली चिंत गंवाईआ। पुरख अबिनाशी एका जणे साचा जन, जन जणेंदी साची माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि सुल्ताना, साचा खेल खिलाइंदा। सति पुरख निरँजण हो प्रधाना, जुगा जुगन्तर वेस वटाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी बाण अल्लाइंदा। सति सरूपी सति निशाना, दो जहानां आप झुलाइंदा। निरवैर पुरख हो प्रधाना, लोकमात खेल खिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे इक्क ज्ञाना, आत्म अन्तर बूझ बुझाइंदा। लक्ख चुरासी नाद तराना, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। करे खेल दो जहानां, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा बन्धन आपे पाइंदा। साचा बन्धन हरि करतार, शब्दी शब्द इक्क रखाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, लोकमात वेख वखाइंदा। सतिगुर रूप सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणा नाउँ धराइंदा। गुर गुर वरते इक्क वरतार, वास्तक आपणा रूप दरसाइंदा। भगतन देवे नाम आधार, भगवन आपणी सेवा लाइंदा। सन्तन बख्शे ठांडा दरबार, दर दरवाज़ा आप खुल्लाइंदा। गुरमुखां निरगुण जोत करे उज्यार, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। गुरसिखां बख्शे अमृत ठंडा ठार, चरन चरनोदक मुख चुआइंदा। जुगा जुगन्तर साची कार, करता पुरख आप कराइंदा। जूनी रहित वसया सभ तों बाहर, दिस किसे ना आइंदा। वेद पुराण शास्त्र सिमरत उच्ची कूकण करन पुकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणा बल आप रखाइंदा। आपणा बल आपे धार, बल बावण रूप धराईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, हुक्मी हुक्म इक्क वरताईआ। कागद कलम ना लिखणहार, नव सत रो रो नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपार, बोध अगाध एका शब्द करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस वटाइंदा, पारब्रह्म गुर करतार। आपणा खेल आप खिलाइंदा, निरगुण दाता बेऐब परवरदिगार। लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा, लेखा जाणे पुरख नार। धरत धवल डेरा लाइंदा, समुंद सागर लए विचार। ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पाइंदा, जेरज अंड दए आधार। उत्भुज

सेत्ज मेल मिलाइंदा, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। धुर दरबार सुहाइंदा, हरि सतिगुर सज्जण मीत। गुर गुर आपणी खेल खिलाइंदा, आदि जुगादी रीत। भगतन साचा मेल मिलाइंदा, सन्तन बख्शे चरन प्रीत। गुरमुख साचे गोद बहाइंदा, गुरसिख काया करे ठंडी सीत। साची रीत इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बैठा रहे इक्क अतीत। इक्क अतीत हरि निरँकारा, आदि जुगादि समाया। जुग जुग खेले खेल न्यारा, खेलणहारा दिस ना आया। सचखण्ड वसे सच दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। थिर घर साचे पावे सारा, निराकारा रूप वटाया। लोकमात होए उज्यारा, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। सतिजुग त्रेता करया पार किनारा, द्वापर आपणा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा खेल खिलाया। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, लोकमात रहिण ना पाईआ। गुर गुर हरि हरि लै अवतार, भगत भगवन्त वेख वखाईआ। सन्त कन्त दए आधार, नर नरायण वडी वड्याईआ। गुरमुख गुरसिख लए उभार, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। डुब्बदे पत्थर जाए तार, चरन कँवल बख्शे सच सरनाईआ। कलिजुग अन्तिम होए उज्यार, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जोती जामा लै अवतार, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाइंदा, कलिजुग अन्तिम वार। सचखण्ड दुआरा आपणा आप रखाइंदा, आपे होए वेखणहार। शब्द दुलारा नाल रलाइंदा, थिर घर वासी पावे सार। सुन अगम्म आप तजाइंदा, करे कराए सच विहार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाइंदा, वेखणहार आप करतार। रवि ससि जोत जगाइंदा, नूर नुराना कर प्यार। आपणा भेव आप रखाइंदा, ना कोई खोल्हे विच संसार। गुर पीर अवतार सर्ब गाइंदा, रसना जिहवा जै जैकार। चार वेद जगत कुरलाइंदा, पुराण अठारां हाहाकार। गीता ज्ञान सर्ब दृढ़ाइंदा, अञ्जील कुरान करन विचार। खाणी बाणी भेव ना आइंदा, बेअन्त हरि करतार। विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ सीस झुकाइंदा, दोए दोए जोड़ करन निमस्कार। करोड़ तेतीसा धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाइंदा, सुरपति राजा इंद करे पुकार। कलिजुग वेला अन्तिम आइंदा, लक्ख चुरासी होए ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। हरि करता खेल खिलाइंदा, कलिजुग अन्तिम वार। सो पुरख निरँजण रूप धराइंदा, निरगुण जोत कर उज्यार। हरि पुरख निरँजण रंग रंगाइंदा, रंग रंगीला मीत मुरार। एकँकारा वेख वखाइंदा, आदि निरँजण हो उज्यार। श्री भगवान संग निभाइंदा, अबिनाशी करता वसे ठांडे दरबार। पारब्रह्म प्रभ आपणा पर्दा लांहयदा, ब्रह्म करे ख़बरदार। लोकमात जोत जगाइंदा, निरगुण निरगुण लै अवतार। निहकलंका नाउँ रखाइंदा, लक्ख चुरासी सांझा यार। घट घट

अंदर आपणी जोत जगाइंदा, जोती जाता परवरदिगार। ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा, लेखा जाणे अंदर बाहर। सच जैकारा एका नाअरा लाइंदा, उच्ची कूक कूक पुकार। नौ खण्ड पृथ्मी आप हिलाइंदा, सत्तां दीपां दए हुलार। शाह सुल्तानां आप उठाइंदा, राज राजानां मारे मार। कूड़ कुड़यारा फोल फुलाइंदा, जूठ झूठ करे विचार। मन मति दर दुरकाइंदा, गुरमति पावे सार। गुरमुख साचे वेख वखाइंदा, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। गुरसिख आप जगाया, कर किरपा गुण निधान। एका मन्त्र नाम दृढ़ाया, आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान। जगत नाता आप छुडाया, आपे होया सदा मेहरवान। साची गाथा इक्क सुणाया, सोहँ शब्द बली बलवान। सर्ब कला समराथा वेख वखाया, दिवस रैण निगहबान। पूजा पाठा ना कोए कराया, जीवत देवे जीआ दान। साचे राथा आप चढ़ाया, रथ रथवाही बणे गुण निधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे कर परवान। गुरमुख आप मिलाया, कर किरपा गुण निधान। लक्ख चुरासी भरम भुलाया, माया भुल्ले जीव नादान। कूड़ी क्रिया विच रुलाया, दिस ना आए श्री भगवान। काया कुल्ले अग्ग लगाया, नाता जुड़या पंज शैतान। फले फुल्ले सिंमल रुक्ख फल ना कोए लगाया, सुंञा दिसे जगत जहान। अन्तिम करता कीमत कोए ना पाया, झूठी विके मात दुकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे बाल अञ्याण। गुरमुख अञ्याणा बालड़ा, हरि सतिगुर वेख वखाइंदा। गुर गुर रंगे आपणे लालड़ा, लाल रंगीला रंग चढ़ाइंदा। भगतन बणाए सच कबीलड़ा, सन्तन खेल खिलाइंदा। गुरमुखां देवे सच दलीलड़ा, गुरसिख आपणे अंग लगाइंदा। आदि जुगादी नित नवित कर कर हित्त आपे करे आपणा हीलड़ा, हरि जू आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा। गुरमुख विरला सज्जण लाधा, हरि सतिगुर दया कमाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों काढा, गुर गुर शब्द वज्जे वधाईआ। भगतन करे साचा लाडा, जिउँ बालक माता गोद सुहाईआ। सन्तन शब्द जणाए बोध अगाधा, घर वज्जदी रहे वधाईआ। गुरमुखां नाद धुन सुणाए अनहद नादा, अनहद बाणी आप अलाईआ। गुरसिख मेला मोहण माधव माधा, घर मिल्या साचा माहीआ। लक्ख चुरासी विच्चों काढा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लहिणा वेख वखाईआ। पूर्ब लहिणा पेख्या, गुण अन्तर गुण निधान। गुरमुख लग्गे साचे लेखया, भरमे भुल्ले जीव नादान। मेल मिलावा दस दस्मेशया, घर सज्जण मिले आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे परवान। गुरमुख सदा सालाहया, गुरसिख दीन दयाल। गुर सतिगुर वेख वखाया, हरिजन एका लाल। लक्ख चुरासी मुख भवाया, त्रैगुण माया जगत जंजाल।

निरगुण रूप नज़र ना आया, फल दिसे ना किसे डाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग चली अवल्लड़ी चाल। चाल निराली आपे रक्ख, करता पुरख खेल खिलाइंदा। गुरमुख सज्जण लए रक्ख, मनमुख शौह दरयाए आप रुढ़ाइंदा। बीस बीसा कर इकट्ठ, जगत जगदीशा राह तकाइंदा। जुग विछड़े मेले हस्स, घर शब्दी मेल मिलाइंदा। साचा मार्ग एका दस्स, आप आपणा बन्धन पाइंदा। तीर निराला मारे कस्स, आत्म अन्तर पार कराइंदा। हिरदे अंदर जाए वस, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। जगत अन्धेरा जाए नस्स, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे आप उठाइंदा। गुरसिख आप जगाया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। पूर्ब लहिणा झोली पाया, आदि जुगादी देवणहार। नेत्र नैणां दरस दिखाया, लोचण मात उग्घाड़। बस्त्र गहिणा तन छुहाया, शब्द अगम्मी कर प्यार। साचा शस्त्र हथ्थ फड़ाया, नाम खण्डा तेज़ कटार। एथे ओथे होए सहाया, राए धर्म ना करे ख्वार। जिस रसना जिहवा गाया, वेले अन्तिम पावे सार। कलिजुग अन्तिम वेखण आया, जुग जुग विछड़े यार। निहकलंका नाउँ धराया, जोद्धा सूरबीर बली बलकार। कूड़ी क्रिया दए मिटाया, कूड़ कुड़यार कर ख्वार। साचा चन्द दए चढ़ाया, नव खण्ड हो उज्यार। ब्रह्मण्ड डंक दए वजाया, सोहँ शब्द जै जैकार। जेरज अंड दए समझाया, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए उठाल। गुरसिख विरला उठया, जिस सतिगुर आप उठाए। गुर गुर रूप हो हो तुठया, गुर शब्दी मेल मिलाए। लोकमात ना जाए लुट्टया, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाए। पंच विकारा फड़ फड़ कुट्टया, काम क्रोध लोभ मोह हँकार जलाए। तीर निराला एका छुट्टया, ना कोई मोड़े मोड़ मुड़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम खेल खिलाए। कलिजुग अन्तिम खेल खिलावणा, पुरख अबिनाशी हो त्यार। कलिजुग कूड़ कुड़यारा पन्ध मुकावणा, पन्ध मुक्के विच संसार। सतिजुग साचा सति वरतावणा, सति सतिवादी हरि निरँकार। शब्द अनादी नाद वजावणा, लोआं पुरीआं करे ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग रवे निरँकार। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। सतिजुग पावे साची सारा, जलधारा वेख वखाइंदा। तन्दूआ तन्द चार दीवारा, चारों कुण्ट वेस वटाइंदा। रोवे गज ज़ारो ज़ारा, फंदन फंद ना कोए कटाइंदा। अन्तिम सिर ते वज्जे काल नगारा, काल फाँस ना कोए कटाइंदा। उच्ची कूक करे पुकारा, अन्तर ध्यान इक्क लगाइंदा। तूं मात पित सर्ब रखवारा, हउँ बाल निधाना सीस झुकाइंदा। तूं आदि जुगादि बख्शणहारा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। रखसश बणे विच संसारा, बिन तुध अवर ना कोए दसाइंदा। हउँ डुब्बा विच जलधारा, मञ्झधार पार ना कोए कराइंदा। तेरा रूप अपर

१२३

अपारा, हर घट आसण लाइंदा। जल थल महीअल तेरा सहारा, जंगल जूह उजाड़ पहाडा, तेरी ओट रखाइंदा। तेरा नाम खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, तेरा चक्कर सुदर्शन सर्ब घाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गज एका मंग मंगाइंदा। मंगे मंग गज अधीन, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बिन तुध लेखा चुक्के जिउँ जल मीन, सास ग्रास ना कोए वखाईआ। तेरी ओट लोकां तीन, त्रैगुण तेरा रूप धराईआ। तूं साहिब सच्चा प्रबीन, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। हउँ निमख निमख रिहा चीन, चितवत इक्क ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा फंद दए कटाईआ। फांदकी फंद फांदिआ, ना सके कोए तुड़ाए। हउँ गावां बत्ती दंदिआ, तेरा नाम रघुराए। तूं आदि जुगादि सदा बख्शंदिआ, हउँ सरन पड़ां सरनाए। जीवण आया अन्तिम कंढिआ, ना लेखा कोए मुकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम अन्त हो सहाए। अन्तिम अन्त दिसे काल, ना सके कोए बचाईआ। चरन कँवल राह तक्के दीन दयाल, सीस जगदीश इक्क झुकाईआ। मेरी कर हरि प्रितपाल, हउँ बाला बाल निधान तेरी ओट रखाईआ। चरन प्रीती निभे तेरे नाल, तेरा संग सदा सखाईआ। हउँ होया हाल बेहाल, सुरत सुद्ध ना कोए वखाईआ । मेरा तोड़ तन्दूआ जाल, तन्द तन्द कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। गज कूक पुकारया, निर्धन हो हो मीत। पुरख अबिनाशी लै अवतारया, आप चलाए अचरज रीत। हरी हरि रूप आपे धारया, विष्नूं भगवान इक्क अनडीठ। साचा खण्डा फड़ कटारया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप चलाई साची रीत। हरी हरि रूप अवल्लड़ा, निरगुण आप धराइंदा। गज दुआरे आपे खलड़ा, गृह मन्दिर वेख वखाइंदा। एका वार कीता हलड़ा, एका हुक्म सुणाइंदा। इक्क फड़ाया पल्लड़ा, विछड़ कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाइंदा। दयानिध दया हरि धार, आपणा भेव खुल्हाइंदा। उठ गज कर विचार, हरि साचा सच सुणाइंदा। सतिजुग तेरा करया आधार, तेरी सेव कमाइंदा। त्रेता तेरा करे प्यार, तेरा संग रखाइंदा। द्वापर वेखे आप निरँकार, तेरा रूप धराइंदा। कलिजुग अन्तिम दए आधार, भेव अभेद खुल्हाइंदा। माणस रूप कराए विच संसार, आपणी वण्ड वंडाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, वेद कतेब भेव ना आइंदा। निरगुण रूप निरगुण गुफ्तार, निरगुण शब्द सतार हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गज सुणया धुर फ़रमाना, निउँ निउँ सीस झुकाया। तूं साहिब सतिगुर बणया दाना, हउँ सेवक सेव कमाया। जुग जुग हउँ वक्ख कीना, तेरा विछोड़ा मोहे ना भाया। लोकमात मरना तेरे घर जीणा, जीवण मुक्त सदा अख्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वेले अन्त होए सहाया। पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। गज तेरा बेड़ा आप चलाइंदा, जुग जुग पावे सार। त्रेता तेरा बल रखाइंदा, शाह भबीखन दए आधार। द्वापर आपणे अंग लगाइंदा, करे खेल अपर अपार। सुत द्रोपद घर उपजाइंदा, द्रोपद लज्जया रक्खे आप निरँकार। कलिजुग आपणी जोत जगाइंदा, पंज तत्त दए आधार। नारी पुरख रूप वटाइंदा, पुरख पुरखोतम पावे सार। साची सिख्या इक्क समझाइंदा, भुल ना जाए विच संसार। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाइंदा, वेखणहार अगम्म अपार। अलख अगोचर भेव ना आइंदा, पारब्रह्म सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच आधार। सच आधार समझाया, कर किरपा हरि करतार। गज तेरा संग रखाया, सतिजुग त्रेता द्वापर करे विचार। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, लेखा जाणे सच्ची सरकार। माणस रूप अनूप धराया, त्रैगुण माया तत्त भण्डार। पंचम चोला आप हंढाया, मन मति बुध कर उज्यार। घर विच घर खेल खिलाया, सुरती शब्द शब्द प्यार। जीव जंत भेव ना राया, मात पिता ना पावे सार। भैण भाई ना भेव खुल्हाया, साक सज्जण सैण सके ना कोए विचार। पुरख अबिनाशी लए मिलाया, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। हरी रूप निराकार, निरगुण आप कराया। बिन गज ना वेखे कोए विच संसार, दिस किसे ना आया। शब्दी शब्द दए आधार, शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणाया। कलिजुग आए अन्तिम वार, तेरा लेखा लेखे लए लगाया। कलिजुग आए आपणी धार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। माता पुत्तर करे प्यार, भैण भइया राह तकाया। पुरख अबिनाशी आपणा खेल करे अपर अपार, अपरम्पर बेपरवाहया। निरगुण रूप होए उज्यार, जोती जामा वेस वटाया। साचा खण्डा खड़ग तेज़ कटार, नाम निधाना लए चमकाया। प्रगट होए आप करतार, कलकाती वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाया। कलिजुग अन्तिम आवणा, हरि साचा सच दृढ़ाइंदा। तेरा रूप मात धरावणा, लोकमात खेल खिलाइंदा। आपणा नाउँ आप प्रगटावणा, निहकलंक आपणा डंक वजाइंदा। दोहां विचोला शब्द रखावणा, औंदा जांदा दिस ना आइंदा। सो पुरख निरँजण रूप धरावणा, हँ ब्रह्म वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, जुग जुग लेखा आप मुकाइंदा। जुग जुग लेख मुकावणा, लोकमात हो उज्यार। तेरा लहिणा आप चुकावणा, कलिजुग अन्तिम पावे सार। आपणा भेव आप खुल्हावणा, दूई द्वैती पर्दा दए उतार। जगत जुगत जग आप सिखावणा, जाग्रत जोत कर उज्यार। रक्त बूंद लेखे लावणा, तत्व तत तन श्रृंगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेले अन्तिम लए संभाल। कलिजुग अन्त संभालणा,

पुरख अबिनाशी बेपरवाह। कीता कौल आपे पालणा, भुल ना जाए शहिनशाह। निरगुण सरगुण करे खेल श्री भगवानना, पारब्रह्म ब्रह्म रूप वटा। जोत जगाए इक्क अकालणा, पुरख अकाल अगम्म अथाह। शब्द बणाए जगत दलालणा, सच दलाली इक्क रखा। फल वेखे लग्गा डालणा, पत्त डाली फोल फुला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा दए मुका। अन्तिम लेखा मुकाउणा पन्ध, हरि सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। गुर गुर होए सदा बख्शंद, जुग जुग आपणा रूप धराईआ। भगतन देवे परमानंद, सन्त निजानंद समाईआ। गुरमुख गाए सुहागी छन्द, गीत गोबिन्द इक्क अलाईआ। गुरसिख गाए बत्ती दन्द, रसना जिहवा आप हिलाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी जुग जुग टुट्टी लए गंढ, गंढणहार आप हो जाईआ। पहलों तोड़या तन्दूआ तन्द, दूजे शाह सीस ताज वखाईआ। तीजे चीर लुहाए होया आप बख्शंद, करे खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम नंगी होण ना देवे कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेखा चुक्के विच ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म सच सच्ची शरनाईआ। नाता तोड़े जेरज अंड, मात गर्भ फेर ना आईआ। लक्ख चुरासी टुट्टे फंद, गेड़ा गेड़ ना कोए भवाईआ। दर घर साचे चढ़े चन्द, सति सति सति होए रुशनाईआ। सिँघ गुरमेज गुरु सदा बख्शंद, गुरमुख भुल कदे ना जाईआ। जुग जुग दा मुक्या पन्ध, पान्धी आपणा जाए पन्ध मुकाईआ। अन्तिम गाया एका छन्द, सोहँ
१२५ शब्द वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। पूर्ब लहिणा झोली पा, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। नाम गहिणा तन सजा, गुरमुख वेख वखाइंदा। चरन प्रीती इक्क समझा, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। साची रीती इक्क चला, साचे पौड़े आप चढ़ाइंदा। खेल अनडीठी आप करा, आपणा कीता कौल निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित गुरसिख हित्त आपणा रूप धराइंदा। गुरसिख हित्त हरि करतार, जुग जुग खेल खिलाईआ। दूसर करे ना किसे प्यार, लक्ख चुरासी रही कुरलाईआ। नज़र ना आवे विच संसार, कोटन कोटि बैठे राह तकाईआ। कोटन कोटी पढ़ पढ़ करन विचार, चौदां विद्या होई हल्काईआ। कोटन कोटी तीर्थ तट्टां होण ख्वार, अठसठ बैठे धूंणीआँ ताईआ। कोटन कोटि सिर पाई बैठे छार, कोटन कोटि जल धारा रहे वहाईआ। कोटन कोटि जोग अभ्यास करन विच संसार, कोटन कोटि जंगल जूह उजाड़ पहाड बैठे ताड़ीआं लाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना पावे सार, देवे दरस ना हरि रघुराईआ । कलिजुग अन्तिम हो उज्यार, हरिजन साचे लए मिलाईआ। जन्म जन्म दा लाहया भार, पूर्ब लेखा रहे ना राईआ। अन्तिम शब्द तन्द बन्ने आप निरँकार, तन्दूआ तार ना कोए वखाईआ। दो जहान ना कट्टे कोए कटार, तीर तलवार ना कोए अंग लगाईआ। फड़ फड़ बाहों जाए तार, तारनहारा इक्क अख्वाईआ। नाल रलाए

१२५

सर्ब परवार, बिरध बाल जवान दए वड्याईआ। मनमुख रोवण ज़ारो ज़ार, हरि करता कवण खेल खिलाईआ। दिवस मास बरख़ घड़ी पल आपे रिहा विचार, थित वार भेव ना राईआ। गुरसिख अटल रहे तेरा मुनार, जगत मुनारा ढह ढह ख़ाक मिलाईआ। गुरसिख तेरा गुर गुर मंगे दरस दीदार, गुरसिख गुर गुर एका धाम सुहाईआ। अन्तिम मेला अन्तिम धार, जोती जोत जोत मिलाईआ। जिस जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाया एका वार, एकँकारा लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार जुग दा पिछला लेखा लिखणहार दीन दयाला, करे खेल जगत निराला, लहिणा चुक्के काल महाकाला, सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाला, धुरदरगाही होए आप सहाईआ।

★ ६ माघ २०१७ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड चीमा कलां ★

आदि पुरख हरि जोत जगाइंदा, आदि जुगादी साची कार। सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा, तख्त निवासी खेल अपार। थिर घर साचा आप सुहाइंदा, अलख अगोचर अगम्म अपार। नूर नुराना डगमगाइंदा, जोती नूर कर उज्यार। आपणी कल आप धराइंदा, अकल कल कर पसार। रूप अनूप आप वटाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी हरि निरँकार। आदि जुगादी खेल खिलाइंदा, इक्क इकल्ला बेपरवाह। सो पुरख निरँजण नाउँ धराइंदा, हरि पुरख निरँजण बण मलाह। एकँकारा सच दुआरा आप सुहाइंदा, आदि निरँजण जोती नूर कर रुशना। श्री भगवान वेख वखाइंदा, अबिनाशी करता आपणा मन्दिर दए आप सुहा। पारब्रह्म प्रभ रूप धराइंदा, रेख रंग कोए जाणे ना। सचखण्ड दुआरा आपणा आप उपाइंदा, आपणी सेवा आप कमा। सच सिँघासण इक्क सुहाइंदा, पावा चूल ना कोए रखा। हरि निरँकारा निराकारा आपणा आसण लाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बणे सच्चा शहिनशाह। शहिनशाह हरि निरँकारा, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाह भूप आप अख्वाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, आदि जुगादी धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। आपे बन्ने आपणी धारा, करनी करता आपणी किरत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआर दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआर श्री भगवन्त, इक्क इकल्ला आसण लाइंदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, भेव कोए ना पाइंदा। आप बणाए आपणी बणत, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपे नारी आपे कन्त, आपे साची सेज हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

इक्क इकल्ला खेल अपारा, करे कराए करनेहारा, पुरख अकाल आपणा रूप आप धराइंदा। पुरख अकाला खेल निराला, दर घर साचे आप कराइंदा। आपे चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखाइंदा। आदि जुगादि आपणी करे आप प्रितपाला, आपणी सेवा आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे वड़, आपणा आसण आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा हरि सुहाइंदा, कर किरपा गुण निधान। निरगुण निरगुण आसण लाइंदा, राज राजाना शाह सुल्तान। सीस ताज इक्क टिकाइंदा, तख्त निवासी हो मेहरवान। साचा हुक्म आप वरताइंदा, आपे पाए आपणी आण। आपणा बन्धन आप रखाइंदा, आपे लेखा जाणे दो जहान। सगला संग आप निभाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। हरि आपणा भेव खुल्हावणहारा, आपणी महिमा आप प्रगटाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची वज्जी वधाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, परवरदिगारा जल्वा नूर नूर दरसाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्मड़ी कार कराईआ। आपणे मन्दिर हो उज्यारा, दीवा बाती कमलापाती इक्क टिकाईआ। आपे पावे आपणी सारा, पारब्रह्म आपणा पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा वेस आप वटाईआ। वेस वटाए हरि निरँकारा, निरगुण निरगुण खेल खिलाइंदा। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर आपणी धार चलाइंदा। मेल मिलावा नारी कन्त भतारा, कन्त कन्तूहल आप अख्वाइंदा। शब्द अनादी बणाए सुत दुलारा, शब्द शब्दी आप उठाइंदा। इक्क कराए वणज वपारा, एका वस्त एका हट्ट विकाइंदा। एका चरन कँवल बख्शे सच सहारा, सच अशनान इक्क समझाइंदा। एका देवे धुर फ़रमाना, धुन नाद नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणी गतमित आपणे हथ्थ रखाइंदा। सुत दुलारा जाया, कर किरपा गुण निधान। शब्दी शब्द नाउँ रखाया, ना कोई दीसे तत्त निशान। दाई दाया आप अख्वाया, सेवा करे श्री भगवान। आपणा रूप आप जणाया, आपे होया निगहबान। जोती जाता भेव ना राया, जाग्रत जोत जगाए इक्क महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना आप सुणाया। शब्द दुलारे उठ जाग, हरि साचा आप जगाइंदा। निरगुण निरगुण कुक्ख लाया भाग, रोग सोग दुःख ना कोए वखाइंदा। मेरा रूप तेरा मुख, तेरा मुख मेरे विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, एका राह जणाइंदा। शब्द सुत उठ बलकार, हरि साचा दए वड्याईआ। तेरे सिर हथ्थ रक्खे करतार, आदि जुगादि होए सहाईआ। तेरे रंग रवे आप निरँकार, आपणा रंग तेरे विच समाईआ। तेरा मृदंग वज्जे अपर अपार, अलख अलखणा

आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द देवे वर, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। वस्त अमोलक हरि निरँकारा, आपणी आप वरताइंदा। सति सरूपी भर भण्डारा, अतोट अतुट वखाइंदा। तेरा खेल करे न्यारा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल आप कराइंदा। अजूनी रहत होए उज्यारा, अनुभव प्रकाश कराइंदा। तेरा मन्दिर सच दुआरा, थिर घर इक्क बणाइंदा। ना कोई दिसे चार दीवारा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। रवि ससि ना कोए उज्यारा, मंडल मण्डप ना कोए वखाइंदा। एका नूर जोत उज्यारा, शाह पातशाह आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, अभुल अभुल अभुल इक्क समझाइंदा। साची सिख्या हरि करतार, एका एक जणाइंदा। आपणी इच्छया तेरा वरतार, तेरी इच्छया साची खेल खिलाइंदा। तेरा नाउँ प्रगट करे आप निराकार, निरगुण नाउँ निरँकारा आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, एका रंग आप रंगाइंदा। साची वस्त हरि झोली पा, एका गुण समझाया। सुन अगम्म खेल खिला, धूंआँधार आकाश प्रकाश आपणा रूप प्रगटाया। एका इच्छया दए वखा, निरगुण सरगुण खेल खिलाया। वास्तक रूप आप धरा, विष्न डंक वजाया। शब्दी शब्द लए प्रगटा, मात पित ना कोए बणाया। ना कोई गोदी लई सुहा, सीरख़्वार सीर ना कोए प्याया। आपणे अनन्द आप समा, अनन्द मंगल आपे गाया। आपणा फ़र्ज़न्द आप बणा, आपे वेख वखाया। आपणा बन्धन आपे पा, आपे होए सहाया। आपणा छन्दन आप सुणा, गीत सुहागी इक्क सुणाया। आपणा अमृत आप वहा, निझर धारा आप टिकाया। आपणा कँवल आप खिला, आपे रिहा महिकाया। आपणा अंग आप कटा, पारब्रह्म आपणी वण्ड आप वण्डाया। आपे ब्रह्म रूप लए धरा, भेव किसे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर साचे सुत्त, शब्द शब्दी लए उपजाया। शब्द उपजाया विष्न धार, विश्व आपणी खेल खिलाइंदा। विष्न करे सति प्यार, अमृत बरखे घर गुलज़ार, फुल फुलवाड़ी वेख वखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर पसार, ब्रह्म आपणा नाउँ धराइंदा। वसणहारा धूंआँधार, सुंन अगम्म फोल फुलाइंदा। जोती जाता हो उज्यार, कमलापाता आपणा भेव आप चुकाइंदा। शंकर चलाए एका राथा, तत्व तत सुहाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बणाए साथा, शब्द डोरी आपणा बन्धन पाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाशा, आपणी कल आप वरताइंदा। अंदर बाहर आपे जाणे आपणा सच तमाशा, वेखणहार आप हो आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच दुआरा इक्क जणाइंदा। सच दुआरा त्रैगुण धार, एका एक समझाइंदा। एका जोत हरि निरँकार, जोती जोत डगमगाइंदा। एका माता करे प्यार, साची गोद आप सुहाइंदा। एका शब्द होए सिक्दार, आपणा नाउँ सर्ब सुणाइंदा। एका

१२८

करे सच वरतार, साची सिख्या सिख रखाइंदा। एका वस्त बणे वरतार, पुरख अबिनाशी आप वरताइंदा। एका तोला तोलणहार, आदि जुगादी तोल तुलाइंदा। एका बोला बोलणहार, हरि हरि आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। आप आपणा पर्दा आपे खोल्ह, विष्न ब्रह्मा शिव दर्शन पाइंदा। आप आपणा जाणे चोला, रूप अनूप आप धराइंदा। आपे रक्खे पर्दा ओहला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना कोए जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव उपजाया, शब्दी शब्द वडी वड्याईआ। पुरख अबिनाशी हुक्म सुणाया, भुल कोए ना जाईआ। आपणा खेल आपे रिहा खलाया, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। आपे बणे दाई दाया, आदि जुगादी सेव कमाईआ। आपणा दर आप खुल्हाया, किरपा कर सच्चे शहिनशाहीआ। साचे तख्त बैठ हुक्म सुणाया, सच्चखण्ड वज्जी वधाईआ। विष्नूं उठ उठ सीस झुकाया, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। ख़ाली हथ्थ रिहा वखाया, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमाया, दे मति रिहा समझाईआ। चरन कँवल मस्तक इक्क लगाया, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साचा भाणा आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्नूं सुणना कर ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। हउँ दाता देवणहारा दान, आदि जुगादी आप वरताइंदा। सदा सदा रक्खे संग गुण निधान, विछड़ कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,
१२६ आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साची सिख्या इक्क रखाइंदा। साची सिख्या हरि भगवान, एका एक जणाईआ। १२६
विष्नूं करना चरन ध्यान, चरन चरनोधक मस्तक टिक्का दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, घर घर रिज़क सबाईआ। साची वस्त अमोलक झोली पा, हरि साचे सच सुणाया। तेरा भण्डारा इक्क रखा, तेरा तेरी सेव कमाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरी सेवा दए लगा, भुल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ब्रह्मा सुत लए प्रगटाया। उठ सुत बाल नादान, ब्रह्मे हरि समझाइंदा। पारब्रह्म हो प्रधान, आपणी धार आप वखाइंदा। मेरा नाउँ तेरा ज्ञान, तेरा ज्ञान आप वड्यांअदा। मेरा रूप तेरा निशान, तेरा निशान आप झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आदि पुरख आदि आदि आपणी खेल आप खिलाइंदा। आदि पुरख भेव न्यार, हरि साचा सच जणाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, तेरी वण्डण आप वण्डाईआ। सिर हथ्थ रक्खे समरथ करतार, सगला संग निभाईआ। देवे वथ अपर अपार, आप आपणी गंढु पवाईआ। चलाए रथ विच संसार, महांसारथी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका तत्त रिहा समझाईआ। एका तत्त हरि का नाउँ, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाहो,

आप आपणी कल आप धराईआ। आदि जुगादि करे सच न्याउँ, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। आपे पिता आपे माउँ, आपे बाल अञ्याणे आपणी गोद सुहाईआ। सदा सुहेला रक्खे ठंडी छाउँ, समरथ हथ्थ वडी वड्याईआ। आदि अन्त करे सच न्याउँ, दूसर संग ना कोए वखाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच ग्राउँ, नगर खेड़ा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। शंकर उठाया भोला नाथ, पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा। आप सुणाए आपणी गाथ, आपणा भेव आप जणाइंदा। तेरा वखाए एका घाट, सच किनारा आप जणाइंदा। मेरी जोत तेरी ललाट, साचे हट्ट आप विकाइंदा। तेरा बस्त्र मेरी खाट, मेरी खाट तेरा आसण इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साची बूझ आप बुझाइंदा। साची बूझ हरि बुझाए, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। शंकर एका हुक्म सुणाए, हुक्म हाकम सच्चा शहिनशाहीआ। जो घड़या सो भन्न वखाए, हथ्थ त्रिसूल इक्क वखाईआ। जुगा जुगन्तर तेरी सेव लगाए, आपे वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हरि बन्धन पाया, शब्द डोरी हथ्थ रखाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल आपणा छन्दन आप सुणाया, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। आपणा चन्दन चरन धूढ़ मस्तक टिक्का इक्क लगाया, जोती नूर करे रुशनाईआ। अमृत आत्म परमानंदन इक्क वखाया, कँवल कँवला आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां एका राह वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव एका राह, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण बण मलाह, साचे मार्ग आपे लाइंदा। एकँकारा दए सलाह, सिफ्ती सिफ्त आप वड्यांअदा। आदि निरँजण जोत जगा, जोत उजाला इक्क वखाइंदा। अबिनाशी करता पकड़े बांह, सगला संग निभाइंदा। श्री भगवान जपाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप अख्वाइंदा। पारब्रह्म सिर हथ्थ टिका, साची सिख्या इक्क वखाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न लैणा घड़ा, घड़न भन्नणहार एका हुक्म जणाइंदा। विष्नूं बैठा सीस झुका, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। ब्रह्मा अग्गे झोली रिहा डाह, ख़ाली हथ्थ वखाइंदा। शंकर होए निमाणा चरन कँवल रिहा राह तका, जगदीश कवण खेल खिलाइंदा। कवण रूप बणत लवां बणा, कवण वस्त वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, एका आपणी कल आप धराइंदा। आपणी दया आपे धार, अकाल पुरख दया कमाईआ। आपणी इच्छया कर विचार, साची सईआ ल्ए मनाईआ। सतो गुण सति प्यार, विष्नूं झोली पाईआ। रजो गुण एका हार, ब्रह्मे वण्ड वंडाईआ। तपो तेरा अन्त सार, शंकर हथ्थ रखाईआ। तिन्ना विचोला बण निरँकार, तिन्नां एका बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

१३१

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी वासना आपणे विच टिकाईआ। आपणी वासना विष्न धर, वास्तक रूप धराया। ब्रह्मे अंदर आपे वड़, आपणा पर्दा लाहया। शंकर अग्गे आपे खड़, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाया। तिन्नां फड़ाए एका लड़, छुट कदे ना जाया। लक्ख चुरासी घाड़न लैणा घड़, निरगुण सरगुण रूप वटाया। पंज तत्त ब्रह्म इच्छया प्रभ अग्गे कर, आप आपणा भेव दए खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आप आपणा रंग रंगाया। त्रैगुण नाता पंज तत्त, ब्रह्मा विष्न शिव करी कुड़माईआ। इक्क बुझाए निरगुण निरवैर कमलापति, आपणा बन्धन आप पाईआ। एका वस्त अंदर घत्त, आपणी वण्डण वण्ड वंडाईआ। निरगुण सरगुण अंदर रक्ख, सरगुण निरगुण दए जणाईआ। आपे हड्ड मास बणे नाड़ी रत, बूंद रक्त आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी घाड़न घड़, आपे वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़या, त्रै त्रै धार चलाइंदा। आपे जाणे नौ नौ दरया, नौ नौ खेल खिलाइंदा। आपे घर विच घर साचा सरया, घर घर विच आप उपाइंदा। आपे निरगुण सरगुण अंदर वड़या, डूँग्घी कंदर आपे आसण लाइंदा। आपे जोती नूर करे उजरया, प्रकाश प्रकाश आप वखाइंदा। आपे अमृत नुहावे साचे सरया, सर सरोवर इक्क भराइंदा। आपणा पर्दा लाह के आया डरया, भय भयानक आपणा नाउँ वखाइंदा। आपे फड़या आपणा लड़या, आपे नाद धुन वजाइंदा। आपे शब्द अनहद खेल साचा करया, आपे पंचम बह बह गाइंदा। आपे आत्म सेजा साची चढ़या, आपे कन्त रूप प्रगटाइंदा। आपे सुरत सुवाणी लाए लड़या, आप आपणी गोद सुहाइंदा। आपे पंज तत्त खेल आपणा करया, जोती जोत मेल मिलाइंदा। आपे लेखा जाणे सीस धड़या, गुप्त ज़ाहर, आपणा नाउँ वटाइंदा। आदि जुगादि कदे ना मरया, आपणा वेस आप वटाइंदा। विष्नूं भण्डारा एका भरया, लक्ख चुरासी आप वरताइंदा। ब्रह्मे नाउँ एका पढ़आ, चारे वेद गाइंदा। शंकर बाशक तशका गल विच धरया, कंठ माला आप सुहाइंदा। तिन्नां विचोला आपे बणया, आदि आदि आपणी बणत बणाइंदा। आपे होए नर नरायण नरया, निरवैर पुरख अकाल आपणी खेल खिलाइंदा। अग्नी हवन कदे ना सड़या, जोती जोत डगमगाइंदा। आपणी विद्या आपे पढ़या, आदि जुगादि आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव दिता एका वर, वर दाता आप हो जाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सच वस्त हरि दर पा, उठ उठ लए अंगड़ाईआ। त्रै त्रै बैठे सीस झुका, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। तेरी इच्छया रचना लई रचा, लक्ख चुरासी वण्ड वंडाईआ। कवण धार दएँ टिका, कवण थान दएँ सुहाईआ। कवण सेवा लए कमा, कवण होए सहाईआ। कवण लेखा लिखे थाउँ थाँ, भुल कदे ना जाईआ। कवण जपाए तेरा नाँ, नाउँ निरँकारा दए सुणाईआ। कवण

बणे पिता मां, आपणी गोद लए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव बैठा सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगे मंग, हरि अग्गे झोली डाह। कवण चाढ़े साचा रंग, लक्ख चुरासी बणे मलाह। कवण डोरी उडे पतंग, कवण लेखा जाणे दो जहान। कवण रक्खे साचा संग, लोकमात बणे मलाह। कवण कटे भुक्ख नंग, लक्ख चुरासी पर्दा देवे पा। कवण वजाए नाम मृदंग, घर घर ढोल दए सुणा। कवण सुहाए सेज पलँघ, आत्म अन्तर बैठे आसण ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तिन्ने ढह पए सरना। तिन्ने ढह पए सरनाई बालक, बाली बुध इक्क जणाईआ। तूं साहिब सुल्तान सच्चा ख़ालक, ख़लकत तेरी धार चलाईआ। बेऐब परवरदिगार कवण रूप तेरा बणे सालस, दो जहानां वेख वखाईआ। कवण रूप मिटाए निन्दरा आलस, जाग्रत जोत कर रुशनाईआ। कवण रूप धराएँ आपणा ख़ालस, तत्व तत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सरन सरना, एका ओट तकाईआ। एका बख्शिश हरि मेहरबां, दर तेरे मंगण आईआ। कवण वेला कवण वक्त दएँ सुहा, वार थित कवण वड्याईआ। कवण रूप निथाव्यॉं देवें थॉं, थान थनंतर इक्क सुहाईआ। कवण अंग पकड़े बांह, बाल अञ्याणे लएँ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा आपणा नाउँ, नाम नामा झोली पाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा, निरगुण दाता हरि निरँकार। विष्न ब्रह्मा शिव सुहाइंदा, आप आपणा कर प्यार। लोकमात खेल खिलाइंदा, निरगुण सरगुण हो उज्यार। आपणा नाम मृदंग वजाइंदा, ब्रह्मा दए आधार। चारे वेद आपे गाइंदा, आपे होए सुणनेहार। साची वण्ड आप वंडाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग कर विचार। चारे खाणी आप बणाइंदा। अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज लए उभार। चारे बाणी आप प्रगटाइंदा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी पाए सार। चारे वरन आप बणाइंदा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कर उज्यार। लक्ख चुरासी गेड़ा आप दवाइंदा, आपे होए गेड़नहार। शंकर तेरा संग रखाइंदा, किरपा करे दीन दयाल। महाकाल आपणी कल वरताइंदा, वसे सच सच्ची धर्मसाल। काल आपणा रूप धराइंदा, तेरा बणया रहे दलाल। राए धर्म नाल रलाइंदा, मार्ग दस्से इक्क सुखाल। चित्रगुप्त हिसाब लिखाइंदा, वेखणहारा पत्त डाल। धर्म राए घर सपुत्तरी एका जाइंदा, किरपा करे गुण निधान। लाड़ी मौत नाउँ धराइंदा, जगत दिसे ना कोए निशान। सीस जगदीश आप गुंदाइंदा, आपे होए निगहबान। जो घड़या भन्न वखाइंदा, थिर दिसे ना कोए निशान। आपणी करता कीमत आपे पाइंदा, लक्ख चुरासी हो प्रधान। आपणा नाम मृदंग वजाइंदा, सति सतिवादी हथ्थ उठाए इक्क निशान। भगत भगवन्त वेख वखाइंदा, आपे होए जाणी जाण। साचे सन्तां मेल मिलाइंदा, धुर

दी बाणी मारे बाण। गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा, लक्ख चुरासी विच्चों पछाण। गुरसिख साचे अंग लगाइंदा, आपे वेखे बाल अञ्याण। अवतार गुर आपणा नाउँ प्रगटाइंदा, निरगुण सरगुण हो प्रधान। जुग जुग आपणी खेल खिलाइंदा, जोद्धा सूरबीर बणे बलवान। गढ़ हँकारी आप तुड़ाइंदा, आपे मेटे पंज तत्त निशान। आपे हुक्मी हुक्म सुणाइंदा, आपे देवणहारा धुर फ़रमान। विष्न ब्रह्मे शिव तेरी सेवा सच लगाइंदा, भुल ना जाणा बण अञ्याण। नव नौ वण्ड आप वंडाइंदा, नव नौ वेखे गुण निधान। चारों कुण्ट फेरा पाइंदा, दहि दिशा खेले खेल श्री भगवान। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जगत हिस्सा आप वंडाइंदा, धरत धवल देवे माण। ज़िमी अस्मानां वेख वखाइंदा, मंडल मण्डप आपे पाए आण। गगन गगनंतर फोल फुलाइंदा, रवि ससि करे पहचान। चौदां लोक आपणी जोत जगाइंदा, चौदां हट्ट खोलृ दुकान। चौदां तबकां चरनां हेठ रखाइंदा, दाता दानी श्री भगवान। आपणी विद्या आप पढ़ाइंदा, चौदां विद्या कर प्रधान। जुग जुग नाता आप जुड़ाइंदा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण। जगत महिमा आप जणाइंदा, आपे होए गुण निधान। अञ्जील कुराना आपे गाइंदा, ईसा मूसा काला सूसा आप वखाए तन निशान। सच हदीसा इक्क पढ़ाइंदा, तीस बतीसा आपे गाए अञ्जील कुरान। पीर फ़कीर आप अख्वाइंदा, मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर होए हैरान। अज़मतो कसमतो आपणे हथ्थ रखाइंदा, लेखा जाणे संग मुहम्मद चार यार अल्ला राणी होए निगहबान। कलमा कलमी आप पढ़ाइंदा, आबेहयात दो दो आबा देवे दान। आपे निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा, आपे नानक नाम जाणे दो जहान। सति नाम मन्त्र आप दृढ़ाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्न ब्रह्मे शिव देवे वर, भुल ना जाणा बण नादान। विष्न ब्रह्मा शिव ना भुल्लणा, हरि साचा सच सुणाइंदा। एका कंडे साचे तुलणा, पुरख अबिनाशी आप तुलाइंदा। लक्ख चुरासी बूटा हुलणा, फुल्ल फुलवाड़ी मात लगाइंदा। अमृत आत्म घर घर डुल्लृणा, निझर झिरना आप झिराइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग लोकमात भण्डारा खुल्लृणा, गुर अवतार आप वरताइंदा। अन्तिम कलिजुग किसे ना पए कोई मुल ना, कीमत करता कोई ना पाइंदा। जीवां जंतां ख़ाकी ख़ाक रुलणा, ख़ाकी ख़ाक सर्ब उडाइंदा। हरि का नाउँ एका भुलणा, इष्ट देव ना कोई मनाइंदा। शब्द अन्धेर एका झुलणा, लक्ख चुरासी जड़्ह उखड़ाइंदा। सिम्मल बूटा अन्तिम हुलणा, पत्त डाली फुल्ल ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, आपणा भेव आप खुल्लृाइंदा। साचे हरि भेव खुल्लृाया, पुरख अबिनाशी हरि अगम्म। नव नौ चार गेड़ा आपणे हथ्थ रखाया, ना मरे ना पए जम्म। जुग चौकड़ी पार कराया, गुर गुर बेड़ा बन्नृ। भगत भगवन्त वेख वखाया, सतिजुग सति चढ़ाए चन्न। गुरमुख साचे रंग रंगाया, द्वापर जाए मन्न। गुरसिख

साचे राह लगाया, कलिजुग वेख अन्धेरा अन्ध। सृष्ट सबाई भरम भुलाया, ना कोई मुकाए आपणा पन्ध। हरि का रूप नज़र ना आया, रसना गा गा थक्की छन्द। निजानंद किसे ना पाया, आत्म आया ना परमानंद। घर कन्त ना किसे हंढाया, नार होई दुहागण रंड। घर मन्दिर ना कोई वखाया, जुग जुग टुट्टी ना देवे गंढ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाए दया कमाए कलिजुग खेल करे हरि हरि गोबिन्द। नव नौ चार चौकड़ी कलिजुग उतरे पार, हरि साचा सच जणाइंदा। कोटन कोटि राम लए अवतार, कोटन कोटि कृष्न नाच नचाइंदा। कोटन कोटि सखीआं मंगलाचार, कोटन कोटि मंडल रास रचाइंदा। कोटन कोटि ईसा मूसा करन पुकार, कोटन कोटि मुहम्मद अद्ध विचकारे राह तकाइंदा। कोटन कोटि भगत भगवन्त सन्त राह तक्कण मीत मुरार, कोटन कोटि गुरसिख एका ज्ञान दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे एका वर, आपणा पर्दा आप लांहयदा। नव नौ चार उतरे पार, हरि साचा सच जणाइंदा। करे खेल हरि अगम्म अपार, लोकमात वेख वखाइंदा। निरगुण जोती कर उज्यार, नानक सरगुण नाउँ धराइंदा। एका शब्द नाद धुन्कार, नाद अनादी आप वजाइंदा। मेल मिलाए सचखण्ड सच्चे दरबार, सचखण्ड निवासी वेख वखाइंदा। निरगुण जोत जोत उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपे बणे नारी कन्त भतार, आपे साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। आपे दाता दानी बण वरतार, पुरख अकाल दया कमाइंदा। नानक निरगुण हरि हरि विच समाइंदा। आपे पंज तत्त रूप धरे बालक, लोकमात खेल खिलाइंदा। एका नाम आपे देवे सालस, सति नाम मन्त्र आप दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे नानक आपे गोबिन्द धार, आपे सुत दुलार लए उभार, आपे बणे मीत मुरार, सगला संग आप बणाइंदा। आपे सगला संग रक्ख, आपणी धार चलाइंदा। आप निरगुण हो प्रतक्ख, सरगुण रूप प्रगटाइंदा। आपे आपणयां करदा आया पक्ख, जुग जुग सेव कमाइंदा। आपे ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका मार्ग साचा दस्स, साचे मार्ग आपे पाइंदा। आपे हर घट हिरदे अंदर वस, हरि जू आपणा दरस दिखाइंदा। आपे नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाया नस्स नस्स, कलिजुग वेला अन्तिम आइंदा। नौ खण्ड सत्त दीप रैण अन्धेरी होई मस, साचा चन्द ना कोई चढ़ाइंदा। त्रैगुण माया डसनी डस्से डस, सांतक सति ना कोई कराइंदा। पंच विकारा होया वस, हरि का शब्द ना कोई ध्यांअदा। जूठ झूठ काम क्रोध लोभ मोह कलिजुग जीवां अंदर रिहा वस, कूड़ा बंक इक्क सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव अन्तिम लेखा आप समझाइंदा। लेखा अन्त समझाया, हरि करतार हो मेहरवान। नव नौ चार रहिण ना पाया, जुग चौकड़ी मिटे निशान। कलिजुग अन्तिम वेख

वखाया, पारब्रह्म श्री भगवान। गोबिन्द सूरा नाल रलाया, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। शब्द खण्डा इक्क चमकाया, रक्खे विच ना किसे म्यान। ब्रह्मण्डां खोज खुजाया, लेखा जाणे दो जहान। लोआं पुरीआं फोल फुलाया, विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल। करोड़ तेतीसा दए हिलाया, सुरपति उठाए बाल नादान। अन्त लेखा दए मुकाया, लुकया रहे ना विच जहान। आपणा नाउँ लए प्रगटाया, पुरख अबिनाशी वड मेहरवान। भेव अभेदा दए खुल्हाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए जाणी जाण, आपणा भेव खुल्हावणा, कलिजुग अन्तिम वार। जोती जामा वेस वटावणा, निरगुण निरगुण निरगुण लै अवतार। निहकलंक नाउँ रखावणा, दिस ना आए विच संसार। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावणा, राज राजानां मारे मार। कूड़ी क्रिया मेट मिटावणा, कलिजुग रहे ना धूंआँधार। सतिजुग साचा चन्द चढ़ावणा, चार वरन कर प्यार। गीत सुहागी एका गावणा, लक्ख चुरासी बोल जैकार। आत्म परमात्म एका रंग रंगावणा, चारे जुग दए आधार। सगला संग आप रखावणा, ग़रीब निमाणयां पावे सार। सृष्ट सबाई शाह पातशाह इक्क बणावणा, दूसर अवर ना कोए सरकार। धुर फ़रमाना हुक्म जणावणा, धुर दी बाणी इक्क आधार। पुरख अकाल इक्क मनावणा, एका बोल नाम जैकार। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका नाउँ रसना गावणा, एका मन्दिर एका गुरदुआर। मस्जिद मठ शिवदुआला इक्क वखावणा, एका घर सच्चा घर बार। नाद अनादी इक्क वजावणा, अनहद धुन सच्ची धुन्कार। गृह गृह आपणा भेव चुकावणा, घर घर विच मेला मीत मुरार। गुर चेला रूप धरावणा, सज्जण सुहेला परवरदिगार। इक्क इकेला खेल खिलावणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा पन्ध मुकावणा, पावणहारा साची सार। आपणा बेड़ा आप चलावणा, खेवट खेटा बणे हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे आपणी कार। निहकलंक इक्क निरँकारा, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। दूजे जाणे आपणी धारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। तीजे तिन्नां लोकां वसे बाहरा, त्रैगुण माया विच कदे ना आईआ। चौथे चौथे घर वसे करतारा, चौथे पद मेल मिलाईआ। पंचम नाद शब्द धुन्कारा, पंचम गायण सहिज सुभाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोए सहारा, पुरख अकाल आपणा मन्दिर आप सुहाईआ। सत्तवें सति सतिवादी साची धारा, सति पुरख आपणी आप चलाईआ। अठ्ठवें अठ्ठां तत्तां वसे बाहरा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोए वड्याईआ। नौ दुआरे करे पार किनारा, जगत वासना रहे ना राईआ। दसवें दहि दिशा पावे सारा, गुरमुख साचे लए जगाईआ। देवे दरस अगम्म अपारा, घर घर विच निरगुण जोत कर रुशनाईआ। धुन अनादी नाद वजाए सच्चा जैकारा, आत्म सुन्न आप खुल्हाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों चुण, गुरमुख

सज्जण लए मिलाईआ। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, कथनी कथ ना सके कोए राईआ। सर्ब पुकार रिहा सुण, सुणनहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाँईंआ। लक्ख चुरासी फोलणहारा, घट घट आप समाइंदा। निरगुण सरगुण खेल न्यारा, सरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। शब्द शब्दी कर प्यारा, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। बजर कपाटी खोल किवाड़ा, गुरमुखां मुख वखाइंदा। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़ा, त्रैगुण तत आप बुझाइंदा। शब्द वखाए साचा लाड़ा, सुरती नारी कन्त प्रनाइंदा। इक्क वखाए सच अखाड़ा, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, जोती नूर नूर डगमगाइंदा। मनमुख जीव कलिजुग सुत्ते पैर पसारा, दूई द्वैती पर्दा ना कोए लांहयदा। कलिजुग लुट्टी जाए बणया ठग्ग चोर यारा, ठग्ग ठगौरी एका पाइंदा। कोई बचया रहे ना नारी नारा, घर घर आपणी अलख जगाइंदा। गुरमुख विरले सतिगुर मिल्या एकँकारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। नाता तोड़े सर्ब संसारा, चरन कँवल प्रीत बंधाइंदा। लक्ख चुरासी करे पार किनारा, जूनी जून ना कोए भवाइंदा। मात गर्भ ना आए दूजी वारा, जो जन नेत्र लोचण दर्शन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख विरले मात तराइंदा। गुरमुख विरला तारया आदि जुगादी कार। संसा रोग निवारया, हउमे हंगता कर ख्वार। एका बख्शे नाम आधारया, आपणा नाम सति वरते वरतार। ब्रह्म तत्त आप विचारया, पारब्रह्म सच्ची सरकार। चरन कँवल नत बंधा रिहा, ना कोई तोड़े विच संसार। आपणी गाथा आप सुणा रिहा, सतिजुग साची कर विचार। सोहँ शब्द आप प्रगटा ल्या, ब्रह्म पारब्रह्म करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण निरवैर आप आपणी किरपा धार। निरगुण निरवैर पुरख अकाला, मूर्त अकाल वडी वड्याईआ। आदि जुगादी दीन दयाला, दयानिध सच्चा शहिनशाहीआ। लेखा जाणे काल महाकाला, काल दयाल आप हो आईआ। कलिजुग अन्तिम तोड़े जगत जंजाला, त्रैगुण फंदन दए कटाईआ। गुरमुख वेखे साचे लाला, लाल अनमुल्लड़े आप उठाईआ। गल पाए एका माला, मन का मणका दए भवाईआ। दिवस रैण वज्जे एका ताला, घर मन्दिर होए शनवाईआ। एका दस्से राह सुखाला, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन आप उठाया, लक्ख चुरासी भाण्डा फोल। आपणा तरस आप कमाया, देवे वस्त नाम अनमोल। कीट हस्त एका रंग रंगाया, एका वसणहारा कोल। साची रीत मात चलाया, अमृत आत्म बख्शे पौहल। गीत सुहागी एका गाया, अनहद वज्जे अगम्मी ढोल। काया मन्दिर दए सुहाया, सतिगुर पूरा अंदरे अंदर बोल। अमृत कँवल दए

भराईआ, उलटी करे नाभी कौल। धरत धवल दए वड्याआ, लेखा जाणे धरत धौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अबिनाशी एका हरि आदि जुगदि जुगा जुगन्तर जन भगतां बुझाए लग्गी बसन्तर, आत्म अन्तर जाए मवल।

★ १० माघ २०१७ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे घर चीमां कलां ★

गृह मन्दिर हरि सुहञ्जणा, घट भीतर खेल खिलाइंदा। दीप जगाए जोत निरँजणा, निरवैर पुरख वेख वखाइंदा। आदि जुगादी दर्द दुःख भय भञ्जणा, दीनां अनाथां वेख वखाइंदा। गुरमुख विरले नेत्र पाए नाम अंञणा, अज्ञान अन्धेर गवाइंदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, दुरमति मैल धवाइंदा। दो जहानां बणे साचा सज्जणा, साक सज्जण सैण आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। गृह मन्दिर सोभावन्त, हरि सतिगुर पुरख सुहाया। पुरख अबिनाशी महिमा अगणत, वेद कतेब भेव ना राया। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। मेल मिलावा नारी कन्त, घर सुहञ्जणी सेज हंढाया। चोली चाढ़े रंग बसन्त, रंग मजीठी उतर कदे ना जाया। गढ़ु तोड़े हउमे हंगत, माया ममता मोह मिटाया। आसा मनसा पूरी करे जो जन आया मंगत, तृष्ना तृखा रहे ना राया। मेल मिलावा साची संगत, सगला संग आप हो जाया। नाता तोड़े भुक्खे नंगत, गुरु ग्रन्थ विच ग्वाह रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, गृह मन्दिर वेख वखाया। गृह मन्दिर हरि प्रकाश, जोती जोत नूर उज्यारा। जन भगतां देवे साची रास, नाम धन्न अपर अपारा। सदा सुहेला वसे पास, विछड़ कदे ना जाए विच संसारा। पूरन पूरी करे आस, पुरख अबिनाशा अकल कल धारा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मंडल दए सहारा। निज घर आत्म निज गृह मन्दिर कर कर वास, नाता तोड़े जगत विकारा। अन्तिम अन्त करे बन्द ख़ुलास, लक्ख चुरासी उतरे पारा। लेखा लग्गे दस दस मास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा जगत दुआरा। जगत दुआरा जगत मन्दिर, जुग जुग वेस वटाया। गुर सतिगुर वेखे गुरमुख काया डूँघी कंदर, सच मुनारा इक्क वड्याआ। आपे तोड़े लग्गा जंदर, आपणा पर्दा आप उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर दए सुहाया। घर मन्दिर इक्क जणाया, हरि सतिगुर सज्जण मीत। काया कोठड़ी इक्क बणाया, घर घर विच रक्खे आप अनडीठ। नौ दुआरे आप खुल्ह़ाया, आपे वेखे बैठ अतीत। आपणा मार्ग आप चलाया, सुखमन टेडी रक्खी रीत। ईड़ा पिंगल दर दरबान रखाया, अठ्ठे पहर चेतन्न चीत। गुरमुख विरला आपणे संग रखाया, आपे करे पतित पुनीत। साची डोरी शब्द बन्न्ह़ाया,

आप सुणाए सुहागी गीत। साची पौड़ी आप चढ़ाया, सतिगुर सज्जण बण बण मीत। सर सरोवर आप नुहाया, लेखा चुकाए हस्त कीट। अनहद शब्द आप सुणाया, धुन अनादी एका गीत। घर मन्दिर दए वड्याआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखणहारा गुर दर मन्दिर देहुरा मठ मसीत। घर मन्दिर शब्द धुन्कार, अनहद वज्जे वधाईआ। घर सखीआं मंगलचार, घर होए सदा रुशनाईआ। घर वसे बंक दुआर, आत्म सेजा सच सुहाईआ। घर मेला कन्त भतार, नर नरायण वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, काया कंचन फोल फुलाईआ। काया कंचन साचा गढ़, सति पुरख निरँजण आप बणाया। गुरमुखां अंदर वेखे चढ़, दूसर दिस किसे ना आया। ना कोई सीस ना कोई धड़, रूप रंग रेख ना कोए बणाया। आप फड़ाए आपणा लड़, शब्द शब्दी मेल मिलाया। आपणी विद्या आपे पढ़, गुरमुख नाद लए पढ़ाया। दरस दिखाए अग्गे खड़, घर मन्दिर होए सहाया। गुरसिखां आप लगाए लोकमात जड़, पत डाली आप महिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, एका मन्दिर एका घर, एका गृह वखाया। साचा मन्दिर हरि चरन दुआर, गुर शब्दी शब्द जणाइंदा। हरि बिन अवर ना कोए उतरे पार, आदि जुगादि खेल खिलाइंदा। जुगा जुगन्तर पावे सार, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। सन्त वेखे सुत दुलार, पिता पूत खेल खिलाइंदा। गुरमुख गुर गुर लए उभार, गुर ज्ञान इक्क दृढ़ाइंदा। गुरसिख बणाए साचे लाल, लाल अनमुल्लड़े आपणे हट्ट विकाइंदा। लोकमात बण दलाल, जगत जुगत आप वखाइंदा। नाता तोड़े शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा रूप आप दरसाइंदा। नेड़ ना आए काल महाकाल, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आप बहाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, दूजा घर ना कोए वखाइंदा। सदा सुहेला चले नाल नाल, सिर समरथ हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। गृह मन्दिर हरि जू वसया, कृपानिध गुण निधान। करे प्रकाश कोटन रव सस्या, जोती नूर नूर महान। गुरमुखां हिरदे अंदर आपे वसया, आपे देवे धुर फ़रमान। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, नाता तुट्टे पंज शैतान। तीर निराला एका कस्सया, शब्द अगम्मी मारे बाण। मन हँकारी अन्तिम ढट्ठया, ना कोई दिसे होर निशान। नाता तुट्टे तीर्थ अठसठया, जो जन गुर चरन धूढ़ी करे अशनान। भाग लग्गे काया मटया, मिले मेल श्री भगवान। सतिगुर पूरा जन्म जन्म दा पूरा करे घाटया, देवणहारा जीआ दान। गुरमुख गुरसिख गुर गुर सोवे आत्म सेजा साची खाटया, घर वसदा रहे मकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला इक्क इकेला होया रहे निगहबान।

★ १० माघ २०१७ बिक्रमी केसर सिँघ दे गृह पिण्ड डलेवाल ★

सो पुरख निरँजण जुग जुग खेल खिलाइंदा, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार। हरि पुरख निरँजण जुग जुग वेस वटाइंदा, आदि जुगादी बेऐब परवरदिगार। एकँकार जुग जुग रूप धराइंदा, इक्क इकल्ला कर पसार। आदि निरँजण जुग जुग नाउँ प्रगटाइंदा, अलख अलखणा भेव न्यार। अबिनाशी करता जुग जुग खेल खिलाइंदा, खेलणहार आप करतार। श्री भगवान जुग जुग आपणी धार चलाइंदा, लेखा लिख ना सके कोए कर विचार। पारब्रह्म जुग जुग आपणा बन्धन पाइंदा, आपे जाणे आपणी सार। जुग जुग सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा आप सुहाइंदा, थिर घर खोले सच किवाड़। सच सिँघासण आसण लाइंदा, महल्ल अटल उच्च मुनार। शाह सुल्तान आप अख्वाइंदा, राज राजाना बण सिक्दार। सीस ताज इक्क रखाइंदा, तख्त निवासी हो त्यार। अनुभव आपणा रूप प्रगटाइंदा, जूनी रहित पुरख अकाल। धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल न्यार। जुग जुग खेल खिलाइंदा। हरि करता बेपरवाह, इक्क इकल्ला रूप वटाइंदा। आपे बणे सच मलाह, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। निरगुण निरगुण दए सलाह, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। आपे आपणा नूर धरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशा, आपे जाणे आपणा सच तमाशा, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। सो पुरख निरँजण आदिन अन्त, आपणी खेल आप खिलाईआ। हरि पुरख निरँजण महिमा अगणत, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। एकँकारा आपे नारी आपे कन्त, कन्त कन्तूहल आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आदि निरँजण आपे होए सोभावन्त, नूर नुराना एका नूर डगमगाईआ। अबिनाशी करता आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नणहार आप अख्वाईआ। श्री भगवान आपे जाणे आपणा आदि अन्त, मध्ध आपणी खेल खिलाईआ। अबिनाशी करता पारब्रह्म आपणे दर दर दरवेश बणे मंगत, आपणी भिच्छया आपे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा रूप आप धराईआ। जुग जुग रूप वटाइंदा, अलख अलखणा बेपरवाह। आपणा नाउँ आप रखाइंदा, नाउँ निरँकारा सच्चा शहिनशाह। आपणी इच्छया साची भिच्छया आपे झोली पाइंदा, सति भण्डारा दए वरता। आपणा तख्त आप सुहाइंदा, तख्त निवासी सच्चा शहिनशाह। धुर फ़रमाना आप जणाइंदा, हुक्मी हुक्म दए सुणा। आपणी रचना आप रचाइंदा, आपे बणे पिता मां। सुत दुलारा आपे जाइंदा, आपे गोदी लए टिका। शब्दी शब्द नाउँ रखाइंदा, रूप रंग कोए जाणे ना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा वेस आप धरा। वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, आदि जुगादि धराईआ। वसणहारा सचखण्ड महल्ला, थिर घर साचे सोभा पाईआ। आपणी

जोत आपे रला, नूर नुराना डगमगाईआ। आपणा आसण आपे मल्ला, दूसर संग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना आप रचाइंदा, किरपा कर गुण निधान। आपणा घर आप सुहाइंदा, आपे निरगुण हो प्रधान। आपणा नूर आपे डगमगाइंदा, आपे वेखे सति निशान। आपणा संग आप निभाइंदा, आपे होए निगहबान। आपणी भिच्छया आपे झोली पाइंदा, आपे देवणहारा दान। आपणा हुक्म आप वरताइंदा, आप सुणाए धुर फ़रमान। आपणा सुत आप उठाइंदा, शब्दी शब्द वड बलवान। आपणा खेल आप खिलाइंदा, खेलणहारा नौजवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे घर, वसणहारा सचखण्ड सच्चे मकान। सचखण्ड दुआरा हरि सुहाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। साचे तख्त सोभा पाइंदा, तख्त निवासी हरि करतार। शब्द दुलारा इक्क उठाइंदा, दर घर साचे करे प्यार। साची सेवा आप जणाइंदा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर त्यार। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी गोद बहाइंदा, तेरा रूप अगम्म अपार। आपणा नाम तेरा घर वसाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी आपे जाणे आपणी कार। हरि करता पुरख कार कराइंदा, आदिन अन्ता हो त्यार। निरगुण दीवा बाती आप जगाइंदा, कमलापाती मीत मुरार। साची ताकी आप खुल्हाइंदा, थिर घर खोल्हे आप किवाड़। शब्द दुलारा विच वसाइंदा, आप आपणी किरपा धार। विष्न ब्रह्मा शिव झोली पाइंदा, सिर रक्ख हथ्थ समरथ देवे इक्क आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे धुर दरबार। धुर दरबार सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाया। हरि पुरख निरँजणा दुःख भय भञ्जणा, आपणा दर्द आप वण्डाया। एकँकारा आपे बणे आपणा सज्जणा, आप आपणा संग रखाया। आदि निरँजण आपे करे आपणा मजना, आप आपणा मेल मिलाया। श्री भगवान ना घड़या ना भज्जणा, घड़न भन्नणहार भेव ना राया। अबिनाशी करता आपणे मन्दिर आपे बह बह सजणा, सच सिँघासण आप सुहाया। पारब्रह्म आपणा पर्दा आपे कज्जणा, आपे साची सेव कमाया। शब्द दुलारा एका गज्जणा, पुरख अकाल आप उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा खलाया। शब्द दुलारा उठया, हरि साचा आप उठाइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता आपे तुठया, आप आपणा बल रखाइंदा। एका जाम प्याए साचा अमृत घुटया, आप आपणा जल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आदि आदि आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। आदि शब्द हरि हरि धार, सार शब्द दए वड्याईआ। सार शब्द हरि कर त्यार, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण जोती जाता एकँकार कल कल विच टिकाईआ। आपे बख्शे आपणा सच प्यार, चरन देवे कँवल सच सरनाईआ। आप वखाए

आपणा खोल्ह किवाड़, रूप अनूप इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, शब्द दुलारा आप समझाईआ। शब्द दुलारा हरि समझाया, आप आपणी किरपा धार। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी सेवा लाया, सेवा कर हो त्यार। विष्न विश्व वास्तक आपणा रूप धराया, विश्व करे खेल न्यार। आपणी बूंद अमृत जाम विच रखाया, झिरना झिरे अपर अपार। कँवला कँवल आप खिलाया, आपे अंदर आपे बाहर। आपे पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वण्ड वण्डाया, आपे जाणे आपणी धार। आपे सुन्न अगम्म धूंआँधार फोल फुलाया, नूर ज़हूर कर उज्यार। आपे शंकर संग निभाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द घाड़न रिहा घड़, दूसर होर ना कोए जणाया। घाड़त घड़े बण ठठयार, हरि शब्द वडी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, एका गुण दए समझाईआ। एका वस्त अपर अपार, निरगुण दाता झोली पाईआ। आदि जुगादि दस्से साची कार, भुल कोए ना जाईआ। विष्नूं बणा दर वरतार, सेवक सेवा इक्क समझाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसार, लक्ख चुरासी दए वड्याईआ। आपणा नाउँ इक्क जैकार, तेरे मन्दिर दए वसाईआ। तेरा मन्दिर होए उज्यार, एका नूर जोत रुशनाईआ। धुर फ़रमाना देवे आपणी वार, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। एका नाद इक्क धुन्कार, एका राग आप सुणाईआ। एका हुक्म हरि करतार, अभुल अभुल अभुल आप जणाईआ। चारे वेदां पावे सार, चार चार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी रचना आपे वेख वखाईआ। साची रचन रचाइंदा, कर किरपा गुण निधान। विष्न ब्रह्मा शिव आप उपाइंदा, आपे होया मेहरवान। शब्दी धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा, आपे जाणे जाणी जाण। आपणा भेव आप खुल्हाइंदा, निरगुण निरगुण हो प्रधान। विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ सीस झुकाइंदा, पुरख अबिनाशी देणा एका दान। साची वस्त मंग मंगाइंदा, कवण रूप धरे तेरा इक्क ध्यान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, होणा मेहरवान। सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव दए जणाईआ। आपणा रूप आप धराइंदा, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। हँ तेरी वण्ड वंडाइंदा, सोहँ आपणा बन्धन पाईआ। करता कम्म आप कराइंदा, आपे चले आपणी सच रज़ाईआ। लक्ख चुरासी तेरी झोली पाइंदा, आपणी वण्डण आप वण्डाईआ। चारे वेदां आप सुणाइंदा, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। चारे कुण्टां वेख वखाइंदा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। चारे जुग वण्ड वंडाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग खेल खिलाईआ। चारे बाणी आप प्रगटाइंदा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आप सुणाईआ। चारे वरन आप उपजाइंदा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश तेरा अंग लगाईआ। घट घट आपणी जोत जगाइंदा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। शब्द अनाद धुन विच समाइंदा, घर घर विच आसण लाईआ। राज

जोग आप कमाइंदा, दो जहानां वेखे थाउँ थाँईंआ। पुरीआं लोआं बन्धन पाइंदा, मंडल मण्डप आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। गगन गगनंतर फोल फुलाइंदा, रवि ससि आपणी जोत दए रुशनाईआ। आदि जुगादी गेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा, गेड़नहार आप हो जाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी सेवा सच वखाइंदा, चुरासी लक्ख रंग रंगाईआ। नव नौ तेरी गोद बहाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। नव नौ गेड़ा हरि करतारा, आदि आदि आप जणाइंदा। चार चार चार बन्ने धारा, चार चार वेस वटाइंदा। चार जुग दए आधारा, एका रूप वटाइंदा। जुग जुग लए मात अवतारा, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। सतिजुग बोले सति जैकारा, सति सतिवादी आप अल्हाइंदा। साचे मन्दिर हो उज्यारा, निरगुण निरवैर डगमगाइंदा। हरि का भेव कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा लिख ना कोए वखाइंदा। आदि अन्त श्री भगवन्त आपे वसे सभ तों बाहरा, हर घट आपणा आसण लाइंदा। जुगा जुगन्तर गुप्त ज़ाहरा, आपणा रूप आप धराइंदा। आपे पुरख आपे नारा, नर नरायण आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा आपे वेखे जगत तमाशा, साचे मंडल पावे रासा, ब्रह्मा विष्न शिव आप उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी धार, चार जुग वज्जे वधाईआ। नव नौ चार खेल करे करतार, लेखा जाण सृष्ट सबाईआ। धरनी धरत धवल दए आधार, जल बिम्ब आप टिकाईआ। रवि ससि कर प्यार, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। करे खेल पुरख समरथ अगम्म आपार, जुग जुग रथ आप चलाईआ। महिमा अकथ ना कोई लिखे लेख लखार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणा वेस आप वटाईआ। हरि साचा वेस वटाइंदा, जुगा जुगन्तर कार। आपणी रचना आपे वेख वखाइंदा, निरगुण सरगुण लै अवतार। भगत भगवन्त आप उठाइंदा, निरगुण जोत कर उज्यार। सन्त साजण मेल मिलाइंदा, बजर कपाटी खोल्ह किवाड़। गुरमुख आपणी गोद सुहाइंदा, करे कराए सच प्यार। गुरसिख साचे संग रखाइंदा। चरन कँवल दए आधार। जुग जुग आपणा नाउँ धराइंदा, आपे बोले उच्ची कूक करे पुकार। सतिजुग सति सतिवादी आप हंढाइंदा, वार अठारां हो त्यार। त्रेता तेरे रंग समाइंदा, त्रैगुण वसणहारा बाहर। आपणी कल आप वरताइंदा, पंज तत्त करे प्यार। जगत चोला आप हंढाइंदा, सरगुण रूप अपर अपार। साचा तोला इक्क अख्वाइंदा, लक्ख चुरासी तोलणहार। आपणा बोला आप अल्हाइंदा, राम रूप आप करतार। जगत होला आप खिलाइंदा, तोड़णहारा गढ़ हँकार। दुष्ट हँकारी आप मिटाइंदा, आपे मारनहारा बाण। ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा, आपे देवणहारा दान। जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा, जुग जुग करे मात कल्याण। आपे आपणा रंग रंगाइंदा, वेखणहारा नौजवान। आपे

सखीआं मंगल गाइंदा, आपे लेखा जाणे गोपी काहन। आपे मंडल रास रचाइंदा, आपे मुकंद मनोहर लखमी नरायण गाए आपणा गान। आपे भगतां संग निभाइंदा, ग़रीब निमाणयां देवे माण। आपे शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा, जोद्धा सूरबीर बण बलवान। आपणी महिमा आप सुणाइंदा, आपे दस अठ्ठ करे परवान। आपे जुग गेड़ा आपणे लेखे पाइंदा, करे खेल श्री भगवान। आपे जुग जुग जुग मात उपाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर बीते कलिजुग होए मात प्रधान। साची सिख्या इक्क समझाइंदा, गुणवन्ता गुण निधान। काला सूसा तन छुहाइंदा, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। अन्त हदीसा इक्क पढ़ाइंदा, देवणहारा धुर फ़रमान। तेरे सीस ताज टिकाइंदा, उठ बाले हो जवान। तेरा वेला वक्त सुहाइंदा, लोकमात कर ध्यान। धरत मात दी गोद बहाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करे खेल महान। धरत मात दी गोद बहाया, कलिजुग हरि करतार। साचा हुक्म आप सुणाया, सुणाई धुर सच्ची गुफ़्तार। तेरा नूर ज़हूर प्रगटाया, लेखा जाणे परवरदिगार। आपणा कलमा आप सुणाया, कागद कलम ना करे कोए विचार। तेरा रूप सिक्दारा लोकमात वखाया, चारों कुण्ट होए उज्यार। जूठ झूठ तेरी पल्ले गंढु बंधाया, तेरा भरया रहे भण्डार। आसा तृष्ना नाल मिलाया, नाता जुड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकार। हउमे हंगता नाल प्रनाया, माया ममता कर विचार। भुक्खा नंगता तेरा दर इक्क वसाया, चारों कुण्ट तेरा जैकार। शाह सुल्ताना राज राजान तेरी रयत दए वखाया, आपणा धुर फ़रमान। तेरी नौबत दए वजाया, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। कलिजुग जीवां तेरा रंग रंगाया, सच सुच्च ना मिले कोए निशान। तेरा मृदंग दए वजाया, उठ जोधे सूरबीर बलवान। कलिजुग निउँ निउँ सीस झुकाया, दोए जोड़ करे प्रनाम। पुरख अबिनाशी तेरा भाणा मोहे भाया, सद करदा रहां सलाम। पहलां एका मंग मंगाया, मेरे नाल देणा मेरा ग़ुलाम। मेरा हुक्म घर घर दए सुणाया, भुल्ला रहे ना जीव जहान। पुरख अबिनाशी एह समझाया, किरपा कर गुण निधान। तेरा गंग दए वखाया, किरपा कर श्री भगवान। पंज तत्त चोला दए हंढाया, काया चोला वेखे इक्क निशान। तेरी आसा विच दए टिकाया, ईसा मूसा कर प्रधान। चारों कुण्ट वेख वखाया, इक्क मुहम्मद देवे जीआ दान। चार यारी गंढु पवाया, चौथे जुग करे खेल महान। अल्ला राणी नाल प्रनाया, कलमी कलमा सुणाए कान। मुकामे हक इक्क ख़ुदाया, रहिमत करे आप रहिमान। बेईमान तेरे संग रलाया, खेले खेल पंज शैतान। आपणा कासद आप उडाया, जबराईल मेकाईल अजराईल असराफ़ील करे सेव महान। उच्ची कूक आप सुणाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपे होए जाणी जाण। जुग जुग भेव जणाइंदा, हरि करता पुरख अगम्म। कलिजुग आपणी कारे लाइंदा, निरगुण करे साचा कम्म। चार कुण्ट वेख वखाइंदा,

नौ खण्ड पृथ्मी पवण स्वासी दम। हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा, आपे बेड़ा रिहा बन्नु। ईसा मूसा आप प्रगटाइंदा, लेखा जाणे जननी जन। धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा, आप वखाए तृष्ना तम। आपणा कलमा आप पढ़ाइंदा, ना ख़ुशी ना कोए ग़म। ग़फ़्लत विच कदे ना आइंदा, आदि जुगादी आपे रिहा मन्न। आपणा नाद आप सुणाइंदा, आप जणाए साची धुन। अञ्जील कुराना आपे गाइंदा, आपे लेखा जाणे छाण पुण। तीस बतीसा आप बुलाइंदा, आपे जाणे गुण अवगुण। पीर दस्तगीर आपे सेव लगाइंदा, मुला शेख़ मुसायक लए चुण। आलम उल्मा आप पढ़ाइंदा, आपे पुकार सभ दी रिहा सुण। कलिजुग साचा संग निभाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करे खेल एका हरि, आपे बेड़ा देवे बन्नु। साचा बेड़ा आप बनाइंदा, चार यारी संग प्यार। संग मुहम्मद खेल खिलाइंदा, उल्फ़त आपणे हथ्थ रक्खे करतार। अलिफ़ एका अक्ख खुल्लाइंदा, ख़ालक ख़लक रूप वरते विच संसार। मुकामे हक डेरा लाइंदा, ऐनलहक इक्क जैकार। कलिजुग तेरा पन्ध मुकाइंदा, मिल्या मेल मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा बन्धन आपे पाइंदा। जुग जुग बन्धन पाए हरि हरि, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपणी किरपा आपे कर कर, वेस अनेका आप वटाईआ। निरगुण सरगुण रूप धर धर, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। आपणा भाणा आपे जर जर, सद भाणे आप समाईआ। आपणी करनी आपे कर कर, करता पुरख खेल खिलाईआ। आपणी सरनी आपे पड़ पड़, आपे बैठा सीस झुकाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़ पढ़, लोकमात करे पढ़ाईआ। आपणे पौड़े आपे चढ़ चढ़, आपे वसे सच्चे धाम सच्चा शहिनशाहीआ। आपणे मन्दिर आपे खड़ खड़, स्वच्छ सरूप आप प्रगटाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़ घड़, घड़न भन्नणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप आप धराईआ। निरगुण खेल करे करतारा, सरगुण वेख वखाइंदा। पंज तत्त तत्त दए आधारा, तत्व तत इक्क वखाइंदा। नानक नाम नाम कर उज्यारा, पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाइंदा। मिल्या मेल सचखण्ड दुआरा, विछड़ कदे ना जाइंदा। पुरख अबिनाशी बण वरतारा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। सतिनाम सति भण्डारा, एका गुण वखाइंदा। चार जुग दए सहारा, चौथे जुग पन्ध मुकाइंदा। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां करे इक्क प्यारा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। उतर पूर्ब पच्छिम दक्खण नौ खण्ड पृथ्मी बोल जैकारा, नानक निरगुण सरगुण आप समझाइंदा। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ारा, उच्ची कूक कूक नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। लुटी जाए नानक दिन दिहाढ़ा, ठग्ग चोर यार दिस कोए ना आइंदा। किरपा कर आप निरँकारा, बिन तुध अवर ना सीस हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, इक्क ज्ञान आप

समझाइंदा। कलिजुग देवे हरि ज्ञान, आपणा भेव खुल्हाया। नानक निरगुण मारे बाण, शब्द निराला तीर चलाया। सृष्ट सबाई भुल्ले बण अञ्याण, सार कोई ना पाया। नज़र ना आए श्री भगवान, माया पर्दा ना कोई उठाया। चारे वरन होए हैरान, हरि की पौड़ी ना कोई चढ़ाया। चारे वेद अन्त पछतान, अथर्बण कूके दए दुहाईआ। अल्ला राणी बणे बाल निधान, मुख घूँगट एका पाया। पुरख अबिनाशी करे खेल महान, एका जोती दस दस रूप धराया। नानक मंगे एका दान, पुरख अबिनाशी सिफ्त सलाहया। निहकलंक उतरे बली बलवान, मात पित ना कोई जाया। तेरी अन्त करे कल्याण, धरत धवल वेख वखाया। करे खेल श्री भगवान, एका जोत नूर रुशनाया। गोबिन्द सूरा नौजवान, सुत दुलारा पुरख अकाल आप प्रगटाया। नाम खण्डा तीर कमान, चण्ड प्रचण्ड हथ्थ फड़ाया। ब्रह्मण्डां वेखे मार ध्यान, उत्भुज सेत्ज जेरज अंडां फोल फुलाया। कलिजुग अन्तिम आपे जाणे पार कन्ढा, पार किनारा वेख वखाया। गुरमुखां अमृत आत्म जल देवे ठंडा, अमृत रस मुख चुआया। मेट मिटाए भेख पखण्डा, कूड़ी क्रिया रहे ना राया। दो जहानां लाउणा एका डण्डा, हरिजन साचे लए चढ़ाया। कलिजुग कूड़ कुड़यारा मिटे गंदा, थिर कोए रहिण ना पाया। सतिजुग चढ़ाए साचा चन्दा, प्रकाश प्रकाश विच टिकाया। जन भगतां देवे परमानंदा, निज आत्म सहिज सुखदाया। इक्क सुणाए सुहागी छन्दा, वाहिगुरु फ़तहि इक्क गजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेल करे हरि, आप आपणा वेस वटाया। कलिजुग खेल अवल्लड़ा, हरि साचा सच कराईआ। गुरु गोबिन्द फड़ाया पलड़ा, पुरख अकाल वज्जे वधाईआ। निरगुण सरगुण सच सिँघासण एका मलड़ा, तख्त निवासी सोभा पाईआ। सच संदेश नर नरेश एका घलड़ा, सत्थर यार दए वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम आप फड़ाए आपणा पलड़ा, विछड़ कदे ना जाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्लड़ा, सचखण्ड करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा रूप आप प्रगटाईआ। जुग जुग वेस श्री भगवान, आपणा आप वटाइंदा। सतिजुग खेल करे महान, सति सतिवादी धार चलाइंदा। त्रेता होया जाणी जाण, सीता सुरती शब्दी राम मिलाइंदा। द्वापर बणया साचा काहन, नाम बंसरी हथ्थ उठाइंदा। कलिजुग वेखे हो प्रधान, ईसा मूसा खेल खिलाइंदा। नानक दस्से एका पद निरबाण, पारब्रह्म प्रभ सेव कमाइंदा। गोबिन्द मारे इक्क निशान, तीर निराला इक्क चलाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी खेल खिलाइंदा। कलिजुग कूड़ी क्रिया पहचान, लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा। घर घर नच्चे पंज शैतान, आसा तृष्ना ना कोई मिटाइंदा। सच सुच्च ना दिसे कोई निशान, जूठ झूठ सर्ब वड्यांअदा। गुर का शब्द ना कोई ज्ञान, रसना जिहवा सर्ब कुरलाइंदा। चारे वरन होए नादान, अठारां बरन मुख शरमाइंदा। अनहद शब्द ना उपजे कोई धुन्कान,

रागी नाद ना कोई अलाइंदा। अमृत आत्म मिले ना पीण खाण, सांतक सति ना कोई वरताइंदा। आत्म ब्रह्म ना सके कोई पछाण, सच सिँघासण सोभा कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस धराइंदा। जुग जुग खेल खिलावणहारा, आपणा बल धराईआ। आपे गोबिन्द बण लिखारा, लेखा लेख गया जणाईआ। कलिजुग आए अन्तिम वारा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मात पित करे प्यारा, भैणां भईआ सेज हंढाईआ। सृष्ट सबाई होए नार विभचारा, साचा कन्त नज़र ना आईआ। त्रैगुण बणे तत्त अंग्यिारा, घर घर अग्नी इक्क जलाईआ। हरि का रूप नज़र ना आए विच संसारा, साख्यात ना कोई दसाईआ। पुरख अबिनाशी करे विचारा, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। धरत धवल करे पुकारा, खुल्ह्ड़े केस दए दुहाईआ। गुरसिख आत्म रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोई धराईआ। ना कोई दिसे शाह सिक्दारा, साचा तख्त ना कोई हंढाईआ। ग़रीब निमाणयां ना पावे कोई सारा, पल्लू हथ्थ ना कोई फड़ाईआ। रवि ससि करन पुकारा, बैठे मुख शरमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगण जायण हरि दुआरा, गल गल पल्लू एका पाईआ। तुध बिन दिसे ना कोई सहारा, कलिजुग आपणा बल रिहा धराईआ। पुरख अबिनाशी लए तेरी चरन सरन वडी वड्याईआ। तेरा नाम सच्ची कटारा, खड़ग खण्डा इक्क चमकाईआ। आदि जुगादि तिक्खीआं धारा, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सतिगुर पूरा हो दयाल, पुरख अकाल दया कमाइंदा। आप उठाया बाल निधान, शब्द दलाल इक्क बणाइंदा। जोती देवे जल्वा जलाल, नूर नुराना डगमगाइंदा। नाल रखाए काल महाकाल, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। सचखण्ड वासी वसणहारा सच सच्ची धर्मसाल, आप आपणा पर्दा लांहयदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। लक्ख चुरासी तोड़े त्रैगुण माया जगत जंजाल, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। गुरमुखां करे पूरी घाल, जो जन रसना जिहवा गाइंदा। गगन मंडल वेखे आपणा दीपक थाल, रवि ससि आप चमकाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, लोकमात वेस वटाइंदा। प्रगट होवे दीन दयाल, साचा धाम आप सुहाइंदा। सम्बल नगरी इक्क ग्राम, साची नगरी भाग लगाइंदा। करे प्रकाश कोटन भान, रवि ससि ना कोई चमकाइंदा। शब्द अनादी गाए गान, तार सतार आप हिलाइंदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। सति उठाए आप निशान, सति सतिवादी इक्क झुलाइंदा। प्रगट होए वाली दो जहान, दो जहानां वेख वखाइंदा। कलिजुग करे अन्त कल्याण, शाह सुल्ताना ख़ाक मिलाइंदा। ना कोई चिला ना तीर कमान, शस्त्र बस्त्र ना कोई सजाइंदा। हुक्मी हुक्म पाए आण, हुक्म अंदर सर्ब वखाइंदा। कलिजुग मेटे कूड़ निशान, वेला अन्तिम आइंदा। दस सति देवे इक्क ज्ञान, अठ्ठ दस आप पढ़ाइंदा।

नौ दस करे पहचान, पहचान विच किसे ना आइंदा। दस दस बीस करे खेल हरि जगदीश, सच निशान आप झुलाइंदा। इक्क इकीस कलिजुग पीसण जाए पीस, पुरख अबिनाशी घट घट वासी लक्ख चुरासी चक्की आप चलाइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी आपे पाए आण सच हदीस, चार वरन इक्क ज्ञान दृढ़ाइंदा। सतिजुग सति सतिवादी सति सति एका छत्र झुले सीस, दूसर अवर ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल एका हरि, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत हथ्थ रक्खे दे कर सीस।

★ मस्सा सिँघ दे घर पिण्ड कोटली थान सिँघ ज़िला जलन्धर ★

कलिजुग अन्तिम हरि निरँकारा, निरवैर पुरख खेल खिलाइंदा। निरगुण सरगुण साची धारा, लोकमात चलाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। लक्ख चुरासी पावणहारा सारा, घट घट अंदर फोल फुलाइंदा। गुरमुख साचे कर प्यारा, आप आपणा मेल मिलाइंदा। दीवा बाती कर उज्यारा, कमलापाती डगमगाइंदा। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, सति प्याला आप प्यांअदा। मेट मिटाए अन्ध अन्धयारा, कूड़ कुड़यारा मोह चुकाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन गुर सतिगुर बख्शे इक्क सहारा, सच सरनाई इक्क दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण भेव न्यारा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। एकँकारा कर पसारा, अजूनी रहत वेख वखाइंदा। आदि निरँजण वसणहारा ठांडे दरबारा, जोती नूर डगमगाइंदा। श्री भगवान आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपे जाणे आपणी कारा, करता पुरख कार कमाइंदा। अबिनाशी करता देवणहारा नाम सहारा, नाम नामा आप प्रगटाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म करे प्यारा, आत्म ब्रह्म मेल मिलाइंदा। गुरमुख वेखे सच दुलारा, नव नव सत सत आपे फेरा पाइंदा। पावे सार डूँघी कंदर काया मन्दिर सच मुनारा, घट घट आपे फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलिजुग अन्तिम हरि निरँकार, आपणी खेल आप खिलाईआ। निहकलंका लै अवतार, दो जहानां निरगुण जोत करे रुशनाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड होए उज्यार, दीप लोअ पाताल आकाश गगन गगनंतर, आपणा नूर नूर रुशनाईआ। आप जणाए आपणा साचा मन्त्र, शब्द नाद धुन सुणाईआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्तर, जुग करता आप हो जाईआ। आप बुझाए त्रैगुण माया लग्गी बसन्तर, पंज तत्त जल धार आप वहाईआ। आपे सर्ब जीआं बिध जाणे

अन्तर, घट घट बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। थान थनंतर वेखणहारा, अलख अगोचर पुरख अगम्म। लक्ख चुरासी परखणहारा, आदि जुगादि ना मरे ना पए जम्म। आपणा नाउँ आप धरावणहारा, करता पुरख आपे करे आपणा कम्म। आपणा बेड़ा आप चलावणहारा, आपे बेड़ा देवे बन्नू। जुग जुग गेड़ा आप चलावणहारा, आपे रथ रथवाही बणे श्री भगवंन। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करावणहारा, कलिजुग अन्तिम आप चढ़ाए निरगुण साचा चन्न। अन्ध अन्धेर मेट मिटावणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप सुणाए गुरमुख विरले कन्न। गुरमुख विरले नाम जणाया, लक्ख चुरासी भरम भुलाईआ। आपणा मन्त्र आप दृढ़ाया, बोध अगाध वडी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण दया कमाया, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ। शब्द विचोला इक्क रखाया, ना मरे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, निरगुण जोती जाता हरि रघुराईआ। कागद कलम भेव ना राया, लक्ख चुरासी थक्की मस शाहीआ। निरगुण निरगुण निरगुण आपणा नाउँ धराया, नर हरि सच्ची वड्याईआ। हरिजन साचे वेखण आया, गुर सतिगुर आपणा रूप धराईआ। आप आपणा मेल मिलाया, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। सुरती शब्दी बन्धन पाया, शब्द सुरत विच समाईआ। आपणा घर आप वखाया, काया मन्दिर सोभा पाईआ। डूँघी भँवरी पार कराया, साचे मार्ग आपे लाईआ। शब्द अनाद मृदंग वजाया, घर घर विच होए शनवाईआ। आपणा रूप आप धराया, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। गुरमुख लाल अनमुल्लड़ा आप उठाया, लक्ख चुरासी विच्चों कीमत पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह पुरख समरथ, आदि जुगादि समाया। जुग जुग महिमा अकथना अकथ, चार वेद रहे जस गाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज लक्ख चुरासी शब्द डोरी पाए नथ, आपणा गेड़ा आप गिड़ाया। जन भगतां देवे साची वथ, नाम भण्डारा इक्क वरताया। लक्ख चुरासी विच्चों करे वक्ख, मार्ग पन्थ इक्क दरसाया। लहिणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, त्रैगुण माया नेड़ ना आया। लेखा चुक्के तीर्थ अठ सठ, जिस जन हरि हरि दरस दिखाया। निरगुण जोत जगाए ललाट, मस्तक नूर नूर रुशनाया। बजर कपाटी जाए पाट, साची हाटी दए खुल्हाया। चौदां लोक खोल्ह ताक, गुरमुख गुरसिख शब्द राक साचे घोड़े दए चढ़ाया। सर्ब कल होए आपे समरथ, महिमा कथ आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन हरि हरि वेख्या, कर किरपा गुण निधान। देवणहारा पूर्ब जन्म लेखया, लेखा लिखणहार आप मेहरवान। तख्त निवासी शाहो शाबास नर नरेश्या, नर नरायण श्री भगवान। आदि

जुगादि जुगा जुगन्तर जुग जुग इक्क आदेसया, एका देवणहारा धुर फ़रमान। किसे दिस ना आए रूप रंग रेख्या, रेखा जाणे दो जहान। हरि का रूप मुच्छ दाढ़ी ना दिसे कोए केसया, ना कोई सीस मूंड मुंडान। निरगुण जोत जोत प्रवेश्या, शब्दी शब्द नाद धुन्कान। कोटन कोटि मंगदे विष्न ब्रह्मा शिव महेश्या, पुरख अबिनाशी एकँकारा एका देवणहारा दान। गुरमुख विरला जुग जुग गुर सतिगुर लाए आपणे लेखया, जगत नाता तोड़े माण अभिमान। दरस दिखाए दस दस्मेशया, जोद्धा सूरबीर बलवान। जोती जामा धारे भेख्या, दिस ना आए गुण निधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग देवणहारा धुर फ़रमान। धुर फ़रमाना शब्द जणाई, गुरमुख विरले बूझ बुझाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेखे चाँईं चाँईं, चातरक तृखा आप बुझाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले आप उठाए फड़ फड़ बाहीं, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। सिर रक्खे सदा ठंडीआं छाईं, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। आपे पिता आपे माई, गुरसिख बाल अञ्याणे गोद सुहाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेखणहारा थाउँ थाईं, सृष्ट सबाई फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। हरिजन रंग रंगाया, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। नाम मजीठी इक्क वखाया, वेखणहार सच्चा शहिनशाह। साचे मार्ग आपे लाया, त्रैगुण माया जगत जंजाला कट्ट फाह। लक्ख चुरासी फंद कटाया, राए धर्म ना दए सज़ा। जिस सिर आपणा हत्थ रखाया, आवण जावण पतित पावन गेड़ा दए मुका। जिस जन चरन कँवल ध्यान रखाया, एथे ओथे दो जहानां होए सहा। गुरमुख साचे लए तराया, तारनहार इक्क मलाह। खेवट खेटा बेड़ा रिहा चलाया, समरथ पुरख आपणी नईया नाम उठा। भगत भगवन्त लए चढ़ाया, साचा सईया करे सच न्याँ। साचे सन्तां वेख वखाया, दरस दिखाए दया कमाए आप उठाए फड़ फड़ बांह। कागों हँस आप बणाया, सोहँ हँसा मोती चोग दए चुगा। विष्नूं बंसा आप सुहाया, ब्रह्म पारब्रह्म गीत सुहागी दए गा। शंकर निउँ निउँ सीस झुकाया, दोए जोड़ परे सरना। गुरमुख गुरसिख गुर सतिगुर पूरा आदि जुगादि लए तराया, धरनी धरत धवल हौला भार करा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, करे कराए सच न्याँ। सच न्याउँ हत्थ करतार, राज जोग आप कमाईआ। जुग जुग मात अवतार, गुर गुर आपणा रूप वटाईआ। शब्द अनादी नाद जैकार, धुर दी बाणी बाण अल्हाईआ। जिस जन उप्पर होए आप किरपाल, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, दीनां अनाथां होए सहाईआ। ग़रीब निमाणया सदा सदा करे प्रितपाल, जो हिरदे हरि हरि रिहा वसाईआ। गुरमुख विरला घालण जाए घाल, लक्ख चुरासी गूढ़ी नींद ना कोई खुल्हाईआ। सभ दे सिर

१४६

ते कूके काल, चारों कुण्ट काल दुहाईआ। बिन सतिगुर पूरे दिसे ना कोई रखवाल, वेले अन्त होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख मेले सहिज सुभाईआ। गुरमुख गुर गुर मेल मिलाया, घट अन्तर भीतर जाण। आप आपणा पर्दा दए उठाया, धर्म वखाए इक्क निशान। साख्यात आपणा नाउँ जणाया, पारजात बणाए गुरमुख बाल अञ्याण। साची दात आप वरताया, नाम निधाना गुण निधान। काया ताक आप खुल्हाया, वेखणहार पंज शैतान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल श्री भगवान। कलिजुग खेल अवल्लड़ा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। गुरमुखां फड़ाए आपणा पलड़ा, दूसर दिस किसे ना आइंदा। जोती शब्दी आपे रलड़ा, पवण पवणां विच समाइंदा। सच संदेस एका घलड़ा, सोहँ सो आपणा रूप वटाइंदा। जन भगत दुआरे आपे खलड़ा, जुग जुग अलख जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गुर आपणा नाउँ धराइंदा। गुर गुर नाउँ शब्द हरि धार, शब्दी गुर वड वड्याईआ। शब्दी शब्द सर्ब पसार, गुर शब्दी वेख वखाईआ। गुर शब्द दाता वड भण्डार, हरि भण्डारा आप वरताईआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पावणहारा सार, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका रंग वखाईआ। सर्ब जीआं एका भगवान, देवणहारा साचा माण, आपणा इष्ट आप हो जाईआ। गुरमुख विरला चतुर सुजान, जिस जन आपणा भेव खुल्हाईआ। घर सुरत सुवाणी मिले साचा काहन, शब्दी शब्द इक्क वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए फड़, निरगुण रूप आप धर, सरगुण लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ ११ माघ २०१७ बिक्रमी जमादार भाग सिँघ दे घर जलन्धर शहर टांडा अड्डा ★

सो पुरख निरँजण खेल अपारा, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण अगम्म अपारा, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। सो पुरख निरँजण करे खेल अपर अपारा, आप आपणी धार बंधाइंदा। हरि पुरख निरँजण आपे जाणे आपणी कारा, करनी करता आप कमाइंदा। एकँकारा वसणहारा धाम न्यारा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता आदि जुगादी खेल अपारा, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा, दर ठांडे दरबारा, दर घर साचा आप सुहाइंदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, अगम्म अगम्मड़ा अगमढ़ी खेल खिलाइंदा। वसणहारा सचखण्ड दुआरा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। तख्त निवासी बेऐब परवरदिगारा, नूर नुराना नूर उपजाइंदा।

१५०

शाहो भूप बण सिक्दारा, शहिनशाह आपणी खेल खिलाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। निरगुण निरगुण बण सच्ची सरकारा, साचा मार्ग आपे लाइंदा। निरगुण वेखे निरगुण पेखे निरगुण होए आप दुआरा, निरगुण निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। निरगुण मंगे बण भिखारा, आपणी इच्छया आपणी भिच्छया आपे झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, आपणा रूप आप धराइंदा। आदि पुरख खेल अवल्ला, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। वसणहारा सच महल्ला, महल्ल अटल उच्च मुनार सोभा पाइंदा। आपणी जोती आपे रला, जोती जोत नूर उपजाइंदा। सच सिंघासण आपे मल्ला, सोभावन्त सोभा पाइंदा। आप फड़ाए आपणा पल्ला, सगला संग आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। आपणा रूप आपे धर, आपणी खेल आप खिलाईआ। आपे निरगुण हो निराकार, निरवैर आपणा नाउँ धराईआ। अजूनी रहत आपे जाणे आपणी कार, दूसर संग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणी कल आप धराईआ। आपणी कल आपे धार, हरि साचा खेल खिलाइंदा। आपणी करनी आप विचार, आपे वेख वखाइंदा। आपे मन्दिर हो उज्यार, दीवा बाती कमलापाती आप टिकाइंदा। आपे साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, राज राजान आपणी धार आप बंधाइंदा। आपे वसणहारा सचखण्ड सच दुआर, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। आपे घर विच घर करे त्यार, गृह मन्दिर खोज खुजाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, थिर घर साचा आप प्रगटाइंदा। थिर घर वसे वसणहार आप आपणा बल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणी कार आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण एका हरि, अकल कला वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण जोत धर, आप आपणा लए प्रगटाईआ। एकँकारा आपे वेखे आपणा दर, दर दुआर आप खुल्हाईआ। आदि निरँजण आपणी किरपा आपे कर, आपे होए सहाईआ। अबिनाशी करता बणे नर, नर नरायण वडी वड्याईआ। श्री भगवान मंगे मंग, दर आपणी अलख जगाईआ। पारब्रह्म प्रभ फड़ाए लड़, सगला संग आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, हरि निरँकारा आप कराइंदा। आपे नारी कन्त भतारा, हरि हरि आपे सेज सुहाइंदा। आपे वसे थिर घर ठांडे दर दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। आपे अंदर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहरा आपणी कार कमाइंदा। आपे जननी जन जणे सुत दुलारा, मात पित आप हो जाइंदा। आपणी इच्छया आपणे अंदरों आपे कढे बाहरा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। नाउँ रखाए सुत दुलारा, शब्दी शब्द आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड

१५२

दुआरे बैठा चढ़, सच सिँघासण आप सुहाइंदा। सच सिँघासण सोभावन्त, हरि साचा आप सुहाइंदा। करया खेल नारी कन्त, निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। आप बणाई साची बणत, जन जननी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारा इक्क उपाइंदा। सुत दुलारा आप उठाया, कर किरपा गुण निधान। दाई दाया बण बण सेव कमाया, करे सेव श्री भगवान। मात पित बण बण गोद उठाया, लेखा जाणे आपणे दर वेखणहारा आप निगाहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा साचा दान। शब्द उठाया बाल निधाना, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवाना, एका रूप दए दरसाईआ। एकँकारा बख्शणहारा साचा दाना, वस्त अमोलक झोली पाईआ। श्री भगवान आपणी हथ्थीं बन्न्हे गाना, साचा सगन मनाईआ। अबिनाशी करता नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। पारब्रह्म आप वसाए सच मकाना, थिर घर साचे वडी वड्याईआ। साचे सन्तां हो मेहरवाना, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आदि आदि आपणी खेल आप खिलाईआ। आप उठाए सुत दुलारा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। किरपा करे आप करतारा, आपणी दया कमाइंदा। एका वस्त देवे हरि थारा, अतोट अतुट रखाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, शब्दी शब्द नाउँ धराइंदा। शब्द उठाया हरि करतार, आपणा रूप आप प्रगटाईआ। देवे वर सच्ची सरकार, शहिनशाह सच्चा पातशाहीआ। थिर घर खेल अगम्म अपार, पारब्रह्म आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आदि रूप अनादि आपणा आप धराईआ। आपणा रूप आप धराया, जोती जोत जोत जगाईआ। आपणी शक्ती आप उपाया, शक्त शक्त विच समाईआ। आपणा जल्वा आप रखाया, वेखणहार आप हो जाईआ। आपणा मन्दिर आप बणाया, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। आपणा दीप आप जगाया, तेल बाती ना कोए रखाईआ। आपे साकी बण बण आपे जाम प्याया, आपणा रस आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी ताकी खोल्ह आपणा रूप आप प्रगटाया, सचखण्ड दुआर वज्जे वधाईआ। आपणा पर्दा आप उठाया, थिर घर वेखे बेपरवाहीआ। आदि आदि हरि पुरख आपणा वेस आप वटाया, ना कोए बणया पिता माईआ। सुत दुलारा एका जाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। सुत दुलारा उठया, सो पुरख निरँजण आप उठाइंदा। हरि पुरख निरँजण आपे तुठया, आपणी कुक्खी भाग लगाइंदा। एकँकारा आप प्याए साचा अमृत घुट्टया, आदि निरँजण सेव कमाइंदा। अबिनाशी करता आदि जुगादि ना जाए कदे लुटया, सच भण्डार हथ्थ रखाइंदा। श्री भगवान उपाए साचा

कोटया, सचखण्ड दुआरा आप वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर जगाए निर्मल जोतया, जोती जाता आपणा भेव आपणे विच रखाइंदा। आपणा भेव आप छुपा, आपणी खेल आप खिलाइंदा। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। आपे बणे हरि मलाह, खेवट खेटा आपणा नाउँ धराइंदा। आपे देवणहारा सच सलाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सुत दुलारा आप उपाइंदा। सुत दुलारा हो त्यार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। हउँ सेवक तूं बण रखवार, हउँ भिखक एका भिच्छया मंग मंगाईआ। तूं समरथ पुरख निराकार, तेरी महिमा अकथ कथी ना जाईआ। दे वस्त अपर अपार, आदि जुगादि तोट ना आईआ। मेरा रूप ना कोई घड़े ना कोई भन्ने तेरा बणया रहे प्यार, जोती जोत जोत रलाईआ। तेरी इच्छया मेरी धुन्कार, मेरी धुन तेरा प्यार, प्यार प्यार विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सुत दुलारा ढह प्या सरनाईआ। सुत दुलारा मंगे दान, पुरख अबिनाशी अग्गे सीस झुकाइंदा। हउँ सेवक बाल निधान, तेरी ओट इक्क तकाइंदा। दर दुआरे देणा माण, जुग जुग तेरी सेव कराइंदा। सचखण्ड दुआरे कर परवान, थिर घर तेरा इक्क सुहाइंदा। तख्त निवासी हो मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ एका मंग मंगाइंदा। मंगणहारा मंगे मंग, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तेरा नाउँ वज्जे मृदंग, वजावणहार इक्क हो जाईआ। तेरा दुआरा वेखां लँघ, बख्शी सच सरनाईआ। नंगी होए ना मेरी कंड, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। दो जहानां रक्खीं ठंड, तूं दाता बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि रहे तेरा अनन्द, अनन्द अनन्द समाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शब्दी शब्द संग निभाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। सुत दुलारा कर परवान, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। एका देवे दानी दान, आपणी इच्छया झोली आप भराइंदा। आपे बणया साचा काहन, साचे मंडल रास रचाइंदा। आदि जुगादि होए सदा निगहबान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, वर दाता श्री भगवान। हरि भण्डार वरताया, कर किरपा श्री भगवान। आपणा भेव आप खुल्हाया, भेव अभेदा भेव महान। साचे सुत तेरी सेवा इक्क रखाया, सेवक सेवा दो जहान। आपणा रूप तेरा नाउँ प्रगटाया, तेरा नाउँ ना कोए निशान। तेरी इच्छया इक्क वखाया, गुण दाता गुण निधान। तेरे मन्दिर डेरा लाया, थिर घर वेखे सच मकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे सच पछाण। सच पछाण जणाइंदा, हरि करता मेहरवान। जननी जन वेख वखाइंदा, वेखणहारा दो जहान। आपणी गोद आप सुहाइंदा, सुत दुलारा देवे दान। शब्दी शब्द आप वड्यांअदा,

१५३

जोद्धा सूरबीर बली बलवान। आपणा रूप आप धराइंदा, निरगुण निरगुण हो प्रधान। विश्व आपणी कार कमाइंदा, आपे विष्नूं देवे दान। आपे अमृत आपणा आप धराइंदा, आपे वेखणहार गुण निधान। आपे कँवला कँवल खिलाइंदा, आप बणाए सच सन्तान। आपे आपणी वण्ड वंडाइंदा, पारब्रह्म करे खेल महान। पत्त डाली आप महिकाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपे होया जाणी जाण। विष्नूं उपाया विश्व धार, वास्तक आपणी खेल खिलाईआ। आपे होए वेखणहार, आपणी कल प्रगटाईआ। सार शब्द खेल न्यार, धार धार लए बंधाईआ। जोती नूर नूर उज्यार, नूर नुराना नूर नूर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। विष्न खेल हरि खिलाया, खेलणहार पुरख अगम्म। आपणा रूप आप धराया, ना मरे ना पए जम्म। आपणा रंग आप रंगाया, आपे जाणे कम्म। आपणा आसण आप सुहाया, आपे बेड़ा रिहा बन्न्। आपणा हुक्म आप सुहाया, आपे रिहा मन्न। आपणा बन्धन आपे पाया, आपे बणे जननी जन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल श्री भगवन। श्री भगवान खेल खिलाया, आप आपणी किरपा धार। आपणा मन्दिर आप सुहाया, आपे होए उज्यार। आपणी इच्छया आप प्रगटाया, आपे भरे भण्डार। आपणा रस आप चुआया, साचा अमृत कर त्यार। आपणे अंदर आप टिकाया, आपे बख्शे धार। आपणी नाभ आप वहाया, आपे करे विचार। आपणा कँवल आप उपाया, आपे अंदर आपे बाहर। साची पंखड़ीआं आप सुहाया, आपे करे उज्यार। आपणी वण्ड आप वण्डाया, पारब्रह्म ब्रह्म हो न्यार, ब्रह्म आपणा नाउँ रखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कार। ब्रह्म आप प्रगटा, आपणा खेल खिलाइंदा। आपणे अग्गे सीस झुका, आपे मंग मंगाइंदा। ब्रह्म बाल अञ्याणा पकड़ीं बांह, इक्क तेरी ओट रखाइंदा। चरन कँवल देणा साचा थाँ, साचा घर समरथ मोहे भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंग मंगाइंदा। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका तत्त समझाइंदा। एका सरन इक्क सरना, इक्क दुआरा जणाइंदा। सदा रक्खां सिर ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका रूप दयाँ दरसा, महिमा अनूप ना कोई गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा हुक्म जणाइंदा। ब्रह्मा दोए जोड़ करे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तूं बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। तुध बिन अवर ना कोई सहार, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। तेरा दर सच्चा दरबार, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। आदि अन्त तेरा प्यार, भुल कदे ना जाईआ। तेरे अंदरों आया बाहर, तेरा पुत्त अख्वाईआ। तूं शाह पातशाह सच्ची सरकार, तख्त निवासी बेपरवाहीआ। सच सरनाई तेरी निरँकार, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। तेरा हुक्म

१५४

सति वरतार, सति सतिवादी सच चलाईआ। आदि आदी तेरी कार, आदि पुरख वडी वड्याईआ। तेरा नाद सच्ची धुन्कार, धुन धुन विच उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सिर हथ्थ समरथ रखाइंदा, कर किरपा हरि मेहरवान। आपणी गाथा आप अलाइंदा, आपे देवे धुर फ़रमान। चारे वेदां आप जणाइंदा, आपे होए जाणी जाण। साचा मार्ग आपे लाइंदा, खेले खेल श्री भगवान। आपणी वण्ड आप वंडाइंदा, आपे वेखे आण। चारे जुग वेस वटाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग कर प्रधान। चारे खाणी आप उपाइंदा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज देवे दान। चारे बाणी आप सुणाइंदा, परा पसन्ती मद्धम बैख़री गाए गान। चारे कुण्ट आपणा रूप धराइंदा, पारब्रह्म ब्रह्म पहचान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा शिव इक्क वखाए सच निशान। हरि सच निशान वखाइंदा, सचखण्ड दुआरा एकँकार। इक्क इकल्ला आसण लाइंदा, तख्त निवासी सच्ची सरकार। आपणा हुक्म आप उपाइंदा, आपे होए मन्नणहार। आपे शब्दी रूप वटाइंदा, आपे विष्न ब्रह्मा शिव आपणी बन्ने धार। आपे त्रैगुण तत्त प्रगटाइंदा, आप पंचम करे प्यार। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाइंदा, आपे लोआं पुरीआं दए आधार। आपे रवि ससि जोत चमकाइंदा, आपे मंडल मण्डप दए सहार। आपणी कल आप वरताइंदा, अकल कल हो त्यार। आपे लक्ख चुरासी खेल खिलाइंदा, घर घर विच पावे सार। आपे घाड़न सच घड़ाइंदा, आपे बणया आप ठठयार। आपे रक्त बूंद मेल मिलाइंदा, पंज तत्त दए आधार। आपे नौ दुआरे खेल खिलाइंदा, आपे डूँघी कंदर पावे सार। आपे आसा तृष्ना आपणा नाउँ धराइंदा, आपे बणया काम क्रोध लोभ मोह हँकार। आपे हउमे हंगता गढ़ बणाइंदा, आपे उच्ची कूक करे पुकार। आपे आपणी वण्ड वंडाइंदा, निरगुण निरगुण हो त्यार। आपे मन मति बुध नाउँ धराइंदा, जोती अंस कर आकार। आपे सुखमन राह वखाइंदा, आपे टेढी बंक होया धूंआँधार। आपे ईड़ा पिंगल बन्धन पाइंदा, आपे खड़ा रहे दुआर। आपे अमृत सरोवर ताल भराइंदा, आपे निझर झिरना झिरे अपार। आपे धूंआँधार वखाइंदा, घट भीतर ना कोए विचार। आपे बजर कपाटी कुण्डा लाइंदा, आपे होए तोड़नहार। आपे शब्दी डंक वजाइंदा, आपे अनहद धुन सच्ची धुन्कार। आपे शब्द रूप वटाइंदा, आपे करे खेल अपर अपार। आपे आत्म सेज सुहाइंदा, आपे नारी कन्त भतार। आपे सुरती शब्द मिलाइंदा, शब्द मिलावा एकँकार। आपे दस्म दुआरी आसण लाइंदा, निरगुण जोत कर उज्यार। आपे आपणा बल रखाइंदा, दस्म दुआरी होवे बाहर। आपे धूंआँधार समाइंदा, आपे सुन अगम्मी करे पार किनार। आपे कोटन रवि ससि नूर आपणी जोती चमकाइंदा, आपे होए वेखणहार। आपे ब्रह्मा विष्न शिव चरनां नाल रखाइंदा, आपे देवणहार आधार। आपे लोआं पुरीआं

१५५

ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाइंदा, आपे निरगुण सरगुण करे प्यार। आपे निरगुण नूर आप धराइंदा, शब्दी खेल अपर अपार। आपे थिर घर आसण लाइंदा, आप सुहाए बंक दुआर। आपे उच्चे पौड़े चढ़ अपणा पन्ध मुकाइंदा, आपे वसे सचखण्ड सच्चा निरँकार। आपे आदि पुरख आपणा नाउँ धराइंदा, आपे सो पुरख निरँजण मीत मुरार। आपे हरि पुरख निरँजण आपणे गीत गाइंदा, आपे एकँकारा बोले सति जैकार। आपे आदि निरँजण आपणी जोत डगमगाइंदा, आपे अबिनाशी करता बणे साचा यार। आपे श्री भगवान आपणा मन्दिर आपे वेख वखाइंदा, आपे पारब्रह्म करे सति श्रृंगार। आपे ब्रह्म मेल मिलाइंदा, आत्म ब्रह्म दए आधार। आपे विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाइंदा, आदि जुगादी दस्से साची कार। लक्ख चुरासी आपे वेख वखाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, एका आपणा नाउँ समझाइंदा, साचा नाउँ हरि समझाया, त्रै त्रै वण्ड वंडाईआ। आदि जुगादी खेल रचाया, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण लए मिलाया, सरगुण दाता निरगुण अख्वाईआ। जोती जोत लए मिलाया, जाग्रत जोत कर रुशनाईआ। चारे खाणी चारे जुग चारे बाणी वण्ड वण्डाया, इक्क इकल्ला वेख वखाईआ। दूजा दर आप सुहाया, गुर पीर अवतार आपणा रूप वटाईआ। तीजा नैण लए खुल्हाया, निज नेत्र कर रुशनाईआ। चौथा पद आप बणाया, घर बैठा साचा माहीआ। पंचम मेला आप सहिज सुभाया, पंचम सखीआं मंगल गाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोए छुहाया, निरगुण जोत इक्क रुशनाईआ। सत्तवें सति सतिवादी आपणा खेल वखाया, ना मरे ना जाईआ। अठ्ठां तत्तां विच कदे ना आया, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध बन्धन कोए ना पाईआ। नौ दुआर ना डेरा लाया, दसवें आपणी खोज खुजाईआ। निरगुण निरवैर दया कमाया, विष्नूं तेरा संग रखाईआ। एका हुक्म हरि सुणाया, भुल कोए ना जाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वण्ड वण्डाया, चार जुग एका चौकड़ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सेवा दए समझाईआ। नव नौ चार सेव अपार, हरि साचा सच जणाइंदा। विष्नूं मंगे दर दरबार, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। कवण वेला नव नौ चार उतरे पार, कवण पन्ध मुकाइंदा। कवण खेल करे विच संसार, लोकमात जोत जगाइंदा। कवण डंका वजाए अगम्म अपार, कवण आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। कवण जुग जुग गेड़ा दए निवार, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। कवण मातलोक खेड़ा दए उजाड़, उजिड़आ खेड़ा कवण वसाइंदा। कवण मारनहारा मार, कवण कटार हथ्थ चमकाइंदा। कवण देवणहार आधार, कवण संग निभाइंदा। कवण रुत्ती होए उज्यार, रुत्त बसन्त कवण वखाइंदा। अबिनाशी अचुत कवण वेले पावे सार, कवण मार्ग राह तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एक देणा साचा वर, हउँ

बाली बुध मंग मंगाइंदा। ब्रह्मा उठ उठ करे ध्यान, चरन कँवल ध्यान लगाया। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, तेरा हुक्म मोहे भाया। नव नौ चार सेवा करां विच जहान, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाया। लोकमात वेख निशान, नव नव आपणा रंग रंगाया। चौदां लोक खोल्ह दुकान, चौदां हट्ट दए विकाया। चौदां विद्या कर प्रधान, चौदस चौदां भेव खुल्हाया। तेरा इक्क सलोक श्री भगवान, भुल कदे ना जाया। सो पुरख निरँजण सद बणया रहिणा निगहबान, ब्रह्मा हँ रूप तेरा इक्क अंस अंसी जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वक्त लएँ मिलाया। कवण मेला पारब्रह्म, ब्रह्म साची मंग मंगाईआ। कवण वेला संवारें आपणा कम्म, निहकर्मी कर्म कमाईआ। कवण वेला घड़ें कवण वेला दएँ भन्न, थित वार कवण रखाईआ। कवण वेला जननी जणें जन, कवण वक्त गोद सुहाईआ। कवण वेला बेड़ा देवें बन्न्ह, लोकमात हो सहाईआ। कवण वेला लेखा चुक्के सूरज चन्न, नूर नूर विच टिकाईआ। कवण वेला लक्ख चुरासी देवें डन्न, बचया कोए रहिण ना पाईआ। कवण वेला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ भिखक एका मंग मंगाईआ। शंकर उठ ललकारया, नेत्र नैण उग्घाड़। पुरख अबिनाशी तेरा नाम तेज़ कटारया, हथ्थ त्रिसूल रिहा वखाल। बाशक तशका गल शंगारया, कंठ माला इक्क निशान। जो उपजे सो अन्त सँघारया, भन्नणहारा जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला तेरे चरन अन्त मिले बिसराम। कवण वेला अन्तिम आउणा, शंकर मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी भेव खुलाउणा, तेरा तेरे विच समाईआ। जोती जोत जोत रलाउणा, सरगुण निरगुण विच टिकाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग कवण रूप हो पन्ध मुकाउणा, पान्धी चल के आए साचा राहीआ। कवण रूप बख्शंद अख्वाउणा, बख्शणहार सच्चा शहिनशाहीआ। कवण रूप आपणी गंढु आप पवाउणा, दूसर कोए खोल्ह ना सके राईआ। कवण रूप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परमानंद विच समाउणा, अनन्द अनन्द अनन्द इक्क वखाईआ। पुरख अबिनाशी सुण पुकार, इक्क ज्ञान दृढ़ाइंदा। शब्दी चोला अपर अपार, आपणा बोला आप अल्हाइंदा। बणया तोला आप करतार, नाम कंडा हथ्थ उठाइंदा। जुग जुग खेल करे अपार, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाइंदा। लक्ख चुरासी पावे सार, घट घट फोल फुलाइंदा। भगतन देवे नाम आधार, एका तत्त वखाइंदा। सन्तन बख्शे सच प्यार, सांतक सति कराइंदा। गुरमुख साचे लए उभार, आप आपणा मेल मिलाइंदा। गुरसिख नाता तोड़ जगत संसार, सगला साथा आप निभाइंदा। सतिजुग करे साची कार, सति सतिवादी खेल खिलाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, वार अठारां रूप प्रगटाइंदा। अन्तिम पन्ध लए विचार, आप आपणा बल रखाइंदा। थिर रहे ना विच संसार, जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाइंदा। सतिजुग करे पार किनारा। हरि साचे सच वड्याईआ। भगत भगवन्त दए सहारा, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। तोड़णहारा गढ़ हँकारा, हँकारी दुष्ट दए खपाईआ। आपणी गोदी आपे दए हुलारा, सतिजुग आपणी गोद सुहाईआ। आप उठाए बाल अञ्याणा, त्रेता अक्ख खुल्हाईआ। आपे होया सुघड़ सयाणा, दे मति हरि समझाईआ। धरत मात दा संग निभाणा, विछड़ कदे ना जाईआ। एका पाउणा पद निरबाणा, निरवैर पुरख इक्क अख्वाईआ। करे खेल श्री भगवाना, आपणा खेल आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पावे सार दो जहानां, दोए दोए जोड़ आप जुड़ाईआ। दोए दोए जोड़ हरि करतारा, भगवन आपणी खेल खिलाइंदा। आपे सरगुण निरगुण शब्द कराए आधारा, शब्दी सुरत आप मिलाइंदा। आपे दो दो अक्खर कर उज्यारा, निराकारा साकारा रूप वटाइंदा। आपे राम रूप हो उज्यारा, आप आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा शिव इक्क समझाइंदा। आपे त्रेता त्रिया धार, जनक सपुत्री आप प्रनाईआ। आपे तोड़े गढ़ हँकार, आपे लंका गढ़ तुड़ाईआ। आपे भगत भगवन्त करे प्यार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। आपे त्रेता उतारे आपणी धार, आपणे मार्ग लगाईआ। आपे द्वापर करे सच प्यार, साचा लेखा आप समझाईआ। आपणी विद्या आपे लए विचार, वेद व्यास करे पढ़ाईआ। दर मेला इक्क दुआर, सच दुआरा दए समझाईआ। बारां अख्शर कर प्यार, निष्अक्खर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। मुकंद मनोहर लख़मी नरायण हो उज्यारा, साँवल सुंदर आपे मंडल रास रचाइंदा। आपे बंसरी देवे नाम हुलारा, आपणा शब्द आप अल्हाइंदा। आपे लजया रक्खे विच संसारा, आपे ग़रीब निमाणे गोद बहाइंदा। आपे रथ रथवाही बणे विच संसारा, आपे अर्जन शब्द जणाइंदा। आपे आपणा आप सभ तों करे वक्ख, आपे आपणा मेल मिलाइंदा। आपे दस्से आर पार किनारा, दुष्ट हँकारी आप खपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खिलाइंदा। आदि जुगादि महिमा अकथना अकथ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराइंदा, कलिजुग आप चलाए रथ। घट घट आपणा वेस धराइंदा, जोत जगाए घट घट। आपे उप्पर पर्दा पाइंदा, अंदर मन्दिर बैठा छुप। आप आपणा बल रखाइंदा, आप उपजाए जोती सति। चारों कुण्ट एका रूप धराइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अबिनाशी अचुत। अबिनाशी अचुत खेल खिलाया, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आपणा खेल आप खिलाया, वेखणहार आप हो जाईआ। लोकमात फेरा पाया, नौ खण्ड पृथमी वज्जे वधाईआ। नूर इलाही

एका कलमा दए सिखाया, आप आपणी दया कमाईआ। काया ताक खोल् हरि मन्दिर दए जणाया, निज आत्म कर रुशनाईआ। सृष्ट सबाई गया समझाया, भुल रहे ना राईआ। बिन हरि दूसर कोए ना पार लँघाया, कलिजुग बेड़ा डोबे शौह दरिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा खेल आप खिलाईआ। साचा हुक्म हरि सुणाया, राउ रंकां करया ख़बरदार। साचा सुत आप उठाया, पुरख अकाल मनाया इष्ट सच्ची सरकार। साचा खेल आप कराया, आप आपणी किरपा धार। झूठा नाता तोड़ तुड़ाया, दए सुनेहड़ा साचे यार। साचा सत्थर इक्क हंढाया, तेरा मेल धुर दरबार। विछड़ कदे ना जाया, पुरख अबिनाशी हो त्यार। आप आपणा पर्दा लाहया, जुग चौकड़ी खेल करे निरँकार। गुर अवतार रूप वटाया, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करदा आया कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे इक्क आधार। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा पन्ध मुकाउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। वेद कतेब शास्त्र सिमरत पुराण भेव किसे ना पाउणा, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां लक्ख चुरासी नाच नचाउणा, नटूआ नाट आप हो जाइंदा। कागद शाही लिख लिख लेखा भगत भगवन्त सन्त गुरमुख गुरसिख आप समझाउणा, शब्द शब्दी शब्द प्रगटाइंदा। जुग जुग राम कृष्न बल बावण वेस वटाउणा, जुग जुग नानक गोबिन्द धार चलाइंदा। जुग जुग वेद व्यासा लेख लिखाउणा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाइंदा। जुग जुग नानक भविख्त वाक इक्क जणाउणा, जोद्धा बली इक्क प्रगटाइंदा। जुग जुग गोबिन्द सुत इक्क समझाउणा, पुरख अकाल दया कमाइंदा। जुग जुग पन्ध हरि आप मुकाउणा, ब्रह्मे तेरा मनवन्तर आपणे विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वेला अन्त आप समझाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग उतरे पार, हरि साचा सच जणाईआ। निरगुण निरगुण लै अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण सज्जण निरगुण मीत मुरार, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण नारी निरगुण कन्त भतार, निरगुण सेज लए हंढाईआ। निरगुण मन्दिर निरगुण दुआर, निरगुण बैठे आसण लाईआ। निरगुण हुक्म निरगुण वरतार, निरगुण निउँ निउँ सीस झुकाईआ। निरगुण शाह भूप सिक्दार, निरगुण रईयत नाउँ वखाईआ। निरगुण शब्द नाद धुन्कार, सुणनहार निरगुण आप हो जाईआ। निरगुण राज राजान शाह सुल्तान वड सिक्दार, निरगुण घर घर भिख्या मंगण जाईआ। निरगुण दर दरवेश बणे दो जहान, निरगुण लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। निरगुण ब्रह्मा विष्न शिव देवे दान, निरगुण भण्डारा सच सच वरताईआ। निरगुण उपजाए सरगुण निशान, सरगुण मेटे अन्त निरगुण निरगुण आपणी कल वरताईआ। निरगुण दाता दो जहान, दो जहानां खेल खिलाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणा भेव रिहा

समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव वेला अन्त दए वखाईआ। नव नौ चार पार कराउणा, जुग जुग गेड़ दवाइंदा। अन्तिम गेड़ा वेख वखाउणा, आप आपणा बल जणाइंदा। लोकमात जामा पाउणा, मात पित ना कोए बणाइंदा। पुरख अकाल वेस वटाउणा, अजूनी रहत डगमगाइंदा। आदि शक्ति आपणे अंग लगाउणा, चतुर्भुज रूप वटाइंदा। बल बावन वेख वखाउणा, आप आपणा भेव जणाइंदा । राम रामा नाउँ रखाउणा, सीता सुरती आप प्रनाइंदा। कान्हा कृष्ना वेख वखाउणा, नाम बंसरी नाद सुणाइंदा। ईसा मूसा नाउँ धराउणा, एका अल्फी गल हंढाइंदा। आलम उल्मा आप समझाउणा, एका नुकता मेट मिटाइंदा। नानक निरगुण रंग रंगाउणा, रंग रंगीला इक्क वखाइंदा। गोबिन्द डंका नाम वजाउणा, चार कुण्ट आप सुणाइंदा। अन्तिम आपणा खेल खिलाउणा, भेव कोए ना पाइंदा। निहकलंका नाउँ रखाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। निहकलंका कलि जामा पा, आपणी खेल आप कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हरि रिहा समझा, आदि पुरख वडी वड्याईआ। गुर पीर अवतार जो रिहा घला, एका एका शब्द जणाईआ। त्रिलोकी नाथ सगला साथ रूप रिहा वटा, आप आपणा बल वखाईआ। सच हदीस जो रिहा पढ़ा, चौदां तबकां कुण्डा लाहीआ। सचखण्ड मकान जो डेरा रिहा ला, थिर घर साचे करे रुशनाईआ।
१६० हरी हरि नर नरायण आपणा रूप आए धरा, भेव कोए ना पाईआ। कलिजुग रैण अन्धेरी दए मिटा, धूंआँधार रहे ना राईआ। १६०
जूठा झूठा भाण्डा दए भना, घड़न भन्नणहार आप हो जाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए गंवा, आसा तृष्ना नाल रलाईआ। मनमुख जीवां दए मिटा, मनमति दए दर दुरकाईआ। वरन गोत कोई रहे ना, ज़ात पात ना कोए बणाईआ। एका ब्रह्म दए समझा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जिस जन दया दए कमा, आप आपणा पर्दा लाहीआ। जोग हठ अभ्यास ना दए कोए वखा, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। अठसठ तीर्थ आपणा चरन कँवल दुआरा दए वखा, गंगा जमना सुरस्ती गोदावरी एका धार वहाईआ। हरि मन्दिर जोत लए जगा, घर घर विच कर रुशनाईआ। शब्द अनादी नाद दए सुणा, गुरमुख पढ़न किते ना जाईआ। आपणा मेला मेले सहिज सुभा, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। कलिजुग तेरा मेटे अन्त निशां, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां देवे ख़ाक मिला, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग दए रंगा, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। सति सतिवादी तागा देवे एका पा, जति सति धीरज आप वखाईआ। साची गाथा दए सुणा, सोहँ शब्द आप जणाईआ। हँ ब्रह्म पारब्रह्म जाए समा, विश्व धार इक्क बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस वटाइंदा,

निरगुण सरगुण लै अवतार। कुदरत कादर वेख वखाइंदा, करनी करता करे आप निरँकार। धरनी धरत धवल हौला भार आप कराइंदा, आपे पावणहारा सार। भगत भगवन्त आप उठाइंदा, लक्ख चुरासी विचों लए उभार। कलिजुग अन्तिम आपणा भेव आप खुल्हाइंदा, लेखा जाणे गुप्त ज़ाहर। आपणी हथ्थीं कुंजी लाइंदा, बणे विचोला हरि निरँकार। साची पूंजी गुरसिखां हथ्थ फड़ाइंदा, नाम वस्त भण्डार। गुरमुख दूजे दर ना मंगण जाइंदा, जिस सतिगुर पूरा मिल्या आण। अठ्ठे पहर नेत्र लोचण नैण दर्शन पाइंदा, दिवस रात ना कोए वखान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम मेटे तेरा निशान। कलिजुग निशान मिटावणा, जगत जगदीश हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग साचा मार्ग लावणा, सति सतिवादी धार बंधाईआ। सृष्ट सबाई एका ब्रह्म दरसावणा, दूसर होर ना कोए जणाईआ। भैणां भइया सर्ब बणावणा, चार वरन कर कुड़माईआ। एका नईया आप चलावणा, ग़रीब निमाणयां लए बहाईआ। आपणी सेवा आप कमावणा, सागर सिन्ध लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा बल आप रखाईआ। कलिजुग पैंडा जाए मुक, सो पुरख निरँजण आप मुकाइंदा। हरि का भाणा ना जाए रुक, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। मनमुखां मुख पैणा थक्क, हरि हरि नाउँ जो ना रसना गाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत हरि जू हरि मन्दिर गोदी लए चुक, आप आपणी गोद सुहाइंदा। दरस दिखाए जो बैठा लुक, घर घर विच आपणा रूप जणाइंदा। उज्जल करे मात मुख, जो जन रसना जिहवा गाइंदा। मात गर्भ ना होए उलटा रुख, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। सफल कराए मात कुक्ख, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। अमृत जाम प्याए घुट्ट, निझर झिरना आप झिराइंदा। आवण जावण जाए छुट्ट, राए धर्म ना डन्न लगाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, गुरमुख साचे मेल मिलाइंदा। कलिजुग अन्त सुहावी रुत, भिन्नड़ी रैण मेल मिलाइंदा। मेल मिलावा जिउँ मावां पुत्त, गुर सतिगुर गुरसिख संग रखाइंदा। मनमुखां भाग गए निखुट्ट, हरि का रूप दिस ना आइंदा। आसा तृष्ना माया ममता अजे ना भरी पोट, शाह करोड़ी सर्ब हल्काइंदा। गुरमुख विरला रक्खे एका ओट, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। आप उठाए आहलणिउँ डिगा बोट, सच दुआरे आप बहाइंदा। लभ्भणे फिरदे कोटी कोट, निरगुण रूप दिस किसे ना आइंदा। चारों कुण्ट फिरदे बन्न्ह लंगोट, उच्चे टिल्ले पर्बत कोटन कोटि आसण लाइंदा। कोए ना कढ्ढे वासना खोट, निर्मल नीर ना कोए प्यांअदा । किसे नज़र ना आए घर मन्दिर जोत, जगत दीवाली सर्ब वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता आपणी खेल आप खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल खिलावण आया, पारब्रह्म हरि करतार। सतिजुग त्रेता द्वापर

कलिजुग विछड़े मेल मिलावण आया, निरगुण निरगुण लै अवतार। जन्म जन्म दा पूर्ब लहिणा झोली पाया, लेखा रहे ना विच संसार। फड़ फड़ बाहों लए तराया, डुब्बदे पाथर जाए तार। सतिजुग साचा राह चलाया, लेखा जाणे आप करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख गुरसिख आत्म अन्तर एका नाम दए आधार। गुरमुख नाम जणाया, बन्द किवाड़ा खोल्ह। शब्द नाद वजाया, अगम्म अगम्मड़ा बोल। एका घर वसाया, सद वसे हरि जू कोल। दूर दुराडा पन्ध मुकाया, आप आपणे कंडे तोल। काया किला कोट सुहाया, सुरती शब्दी आपे मौल। साची चोट तन लगाया, करे खेल बैठ अडोल। साचा तख्त आप सुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां उलटा करे नाभ कँवल। उलटा कँवल आप उलटाया, नैण मूंद मुँधारा। अमृत बूंद मुख चुआया, सांतक सति करे वरतारा। कलिजुग अग्नी अग्ग बुझाया, त्रैगुण मारे मारा। पंच विकारा रहे ना राया, जिस जन बख्शे चरन दुआरा। आत्म जोती जोत जगाया, नूर नुराना कर उज्यारा। घर विच घर दए सुहाया, गुरमुखां कर प्यारा। वणज वणजारा इक्क कराया, देवे वस्त नाम हरि थारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए उधारा। हरिजन सच उधारीअन, कर किरपा गुण निधान। कलिजुग अन्तिम पैज संवारीअन, इक्क वखाए सच निशान। झूठा नाता तोड़ तुड़ाईअन, सच सुच्च वरते सच वरतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी अन्त सुणे पुकार। अन्त सुणे पुकार हरि हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। विष्न तेरे आवे दर दर, आप आपणा रूप धराईआ। ब्रह्मा वेखे आपे खड़ खड़, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़ पढ़, ब्रह्म लेखा दए वखाईआ। आपणी करनी आपे कर कर, शंकर एका तत्त समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा देवे थाउँ थाँईंआ। लहिणा देणा हरि करतारा, आदि जुगादि मुकाइंदा। विष्नूं मेला धुर दरबारा, हरि साचा आप कराइंदा। ब्रह्मा जोती दए हुलारा, जोती जोत समाइंदा। किरपा करे आप निरँकारा, चरन चरनोदक मुख चुआइंदा। तिन्नां वखाए इक्क दुआरा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका हरि, जुग जुग पन्ध मुकाइंदा। जुग जुग पन्ध मुकाइंदा, हरि पान्धी बेपरवाह। सतिजुग त्रेता द्वापर आपणी धार बंधाइंदा, निरगुण सरगुण बण मलाह। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाइंदा, अगम्मड़ी कार आप करा। हड्ड मास नाड़ी चमड़ा ना कोए रखाइंदा, पवणी पवण ना लए साह। खड़ग खण्डा ना कोए चमकाइंदा, तीर कमान ना ल्या हथ्थ उठा। शस्त्र बस्त्र ना कोए सजाइंदा, चरन रकाब ना रिहा रखा। शाही फौज लशकर ना कोए उठाइंदा,

दूसर संग ना ल्या कोए रला। इक्क इकल्ला जोत जगाइंदा, शब्दी हुक्म दए वरता। नौ खण्ड पृथ्मी भेड़ भड़ाइंदा, सत्तां दीपां लए जगा। आपणी जोती अग्नी लाइंदा, मन मति बुध जगत वड्या। पंडत कांशी भेव ना पाइंदा, मुलां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर कोई सके भेव ना पा। ग्रन्थी पन्थी सर्ब कुरलाइंदा, हरि मिले ना बेपरवाह। गुरसिख विरले आप जगाइंदा, आप आपणी दया कमा। ज़ात पात ना कोए रखाइंदा, वरन बरन ना वण्ड वण्डा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका चण्ड प्रचण्ड दए वखा। चण्ड प्रचण्ड दुर्गा धार, अष्टभुज दए वड्याईआ। चतुर्भुज बण निरँकार, आप आपणा रिहा छुपाईआ। एका दूजा करे पार किनार, तीजा नैण आप खुल्हाईआ। चौथे घर हो त्यार, पंचम लेखा दए मुकाईआ। छे शास्त्र कर विचार, छेवें घर खोज खुजाईआ। सति सरूपी सच सतार, हरि निरँकार घर घर विच दए वजाईआ। चौदां विद्या ना पाए सार, वेद कतेब रहे जस गाईआ। गुरमुखां करे इक्क गुफ्तार, रसना जिहवा ना कोए हिलाईआ। बत्ती दन्द ना कोए पुकार, आपणी कल आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा अन्त कराउणा विष्न ब्रह्मा शिव मिलाउणा, कीता कौल पूर कराईआ। कीता कौल कदे ना भुल्लदा, हरी हरि वडी वड्याईआ। करे खेल आप अतुल दा, ना कोई तोले तोल तुलाईआ। त्रैगुण माया विच कदे ना रुलदा, त्रैभवन धनी वडी वड्याईआ। झूठे निशान कदे ना झुलदा, सच निशाना लए उठाईआ। लेखा जाणे आपणी कुल दा, भगत सन्त गुरमुख गुरसिख आपणा बंस बणाईआ। गुरमुख बूटा कदे ना हुलदा, सृष्ट सबाई लक्ख चुरासी पत्त डाली ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख विरले लए जगाईआ। गुरसिख विरला जागया, जिस जगाया आप निरँकार। सतिगुर सरनाई लागया, नाता तोड़ सर्ब संसार। बिशन दास वड वड भागया, पाया पुरख अगम्म अपार। सिँघ भाग जगया नाल चराग़या, जोती जोत होई उज्यार। दुरमति मैल धोया दाग़या, काग रल्लया हँसां डार। आत्म उपज्या इक्क वैराग्या, अठ्ठे पहर राह तक्के मीत मुरार। हरि मेला कन्त सुहागया, गुरसिख होए सुहागण नार। सतिगुर पूरे लक्ख चुरासी विच्चों काढया, जन्म मरन गेड़ निवार। लेखे लग्गा मास रत नाड़ी हाडया, रती रत दए आधार। हरिजन हरिभगत लडाए लाडया, जिउँ ध्रू प्रहिलाद पावे सार। एथे ओथे आप बंधाया साचा नातया, ना कोई तोड़े तोड़णहार। सोहँ शब्द गाई गाथया, अन्तिम मिल्या ओम रूप निराकार। लग्गा तिलक ललाट मस्तक साचे माथया, निरगुण नूर होया उज्यार। दस्सदा गया सज्जण साथया, बिन हरि नाम ना उतरे कोई पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरले लए वर, आप आपणी किरपा धार। किरपा धारे

हरि निरँकारे, अकल कला वड्याईआ। भगत उधारे करे शंगारे, तन कपड़ इक्क वखाईआ। जोत उज्यारे शब्द अनहद धुन्कारे, नाद अनादी गीत सुणाईआ। पुत्तर धीआं ना कोए प्यारे, नारी कन्त ना रोवे ज़ारो ज़ारे, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। उतरे पार सर्ब परवारे डुबदे पाथर आपे तारे, चरन पाहन नाल छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आप चलाए आपणा मन्त्र, गुरमुखां बुझाए लग्गी बसन्तर, अग्नी तत्त ना कोए वखाईआ। अग्नी तत्त देवे कढ्ढ, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। नाम जणाए नाद अनहद, धुन आत्मक आप सुणाईआ। जाम प्याए साची मदि, अमृत रस इक्क चखाईआ। आवण जावण मेटे पन्ध, सगला संग आप हो जाईआ। जगत विकार तजाए गंद, हरि का नाउँ रसना जिहवा गाईआ। निज आत्म मिले परमानंद, निज मन्दिर वज्जे वधाईआ। हरि कन्त सुणाए सुहागी छन्द, मिल सख़ीआं मंगल गाईआ। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना आप तुड़ाईआ। नाता तुट्टा जेरज अंड, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। सीतल धारा सीतल चढ़या चन्द, घर साचे होई रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले लए वर, गुर चेले मेल मिलाईआ। गुर चेला मेल मिलाइंदा, निरगुण सरगुण कर प्यार। इक्क इकेला वेख वखाइंदा, दो जहानां हो त्यार। शब्द सुहेला नाल रलाइंदा, दिवस रैण पावे सार। आपणा वेला आप सुहाइंदा, थित वार ना सके कोए विचार। धर्म राए दी जेला आप कटाइंदा, चित्रगुप्त लेखा देवे पाड़। लाड़ी मौत गुरसिख ना कोए प्रनाइंदा, जिस जन सतिगुर पूरा मिल्या आण। विष्न ब्रह्मा शिव राह तकाइंदा, आदि जुगादी खेल महान। भगवन आपणी गोद बहाइंदा, भगती देवे साचा दान। जीवण मुक्त आप कराइंदा, मुक्ती दस्से बाल अञ्याण। गुरसिख मुक्ती कदे ना मंग मंगाइंदा, एका मंगे चरन कँवल ध्यान। कलिजुग अन्तिम साची जुगती आप जणाइंदा, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। शक्ती भगती गुरमुखां सेव कमाइंदा, सेवा करे आप परवान। बूंद रक्ती लेखे लाइंदा, होया हरि हरी मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख वेखे चतुर सुजान। गुरमुख चतुर सुजान, मूर्ख मूढ़े आप बणाईआ। जिस जन देवे जीआ दान, चरन धूढ़ मस्तक टिक्का लाईआ। एका राग सुणाए कान, नाद अनादी धुंन उपजाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म करे पहचान, ब्रह्म विद्या इक्क सिखाईआ। घर विच मेला घर विच गुरु घर विच चेला घर विच आसण घर विच सिँघासण दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख वखाए साचा घर, घर घर विच दए प्रगटाईआ। घर नारी कन्त भतार, घर साची सेज सुहाइंदा। घर पीआ प्रीतम यार, घर प्रेम प्यार वखाइंदा। घर शब्द नाद धुन्कार, घर सख़ीआं मंगल गाइंदा। घर अमृत ठंडा ठार, घर भर प्याला जाम प्यांअदा। घर

जोत निरँजण करे उज्यार, घर नूर नुराना डगमगाइंदा। घर दीवा बाती कमलापाती कर त्यार, आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां अंदर आपे वड़, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। गुरमुखां अंदर आपे वड़या, औंदा जांदा दिस ना आईआ। आपणे पौड़े आपे चढ़या, आप आपणा बल धराईआ। आपणे दुआरे आपे खड़या, गुरमुखां राह वखाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़या, हरिजन साचे लए पढ़ाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़या, पंज तत्त ना कोई वखाईआ। अग्नी हवन कदे ना सड़या, मढ़ी गौर ना कोए दबाईआ। गुरमुख विरला गुर गुर आपे वरया, गुर शब्द होई कुड़माईआ। निरभउ चुकाए जगत डरया, भय भयानक होए सहाईआ। आसा मनसा पूरी करया, जो जन रहे सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख एका रंग रंगाईआ। गुरमुख रंगे रंग अनडीठड़ा, गुर सतिगुर आप रंगाया। काया चोली रंगे चीथड़ा, पंज तत्त दए वड्याआ। अमृत रस प्याए एका मीठड़ा, रीठा कौड़ा आपणा रस चखाया। धाम वखाए इक्क अनडीठड़ा, जगत नेत्र दिस ना आया। सर्ब जीआं दा सांझा मीतड़ा, पारब्रह्म सच्ची सरनाया। ब्रह्म गाए सुहागी गीतड़ा, छत्ती राग भेव ना राया। बैठा रहे इक्क अतीतड़ा, साचे मन्दिर सोभा पाया, कलिजुग अन्तिम आप चलाए आपणी रीतड़ा, गुरसिख काया मन्दिर गुरदुआर मन्दिर मठ शिवदुआला वखाए मसीतड़ा, घर इष्ट देव इक्क प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा राह वखाया। नमो देव निमस्कार वास्तक रूप, पारब्रह्म बोध अगाध परवानया। निरवैर पुरख अकाल ठाकर स्वामी सति सरूप, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सुणाए धुर फ़रमानया। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज पावे सार दहि दिशा चार कूट, निरगुण निराकार इक्क इकल्ला श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि शक्ति आदि भवानी सार शब्द सच निशानया। पारब्रह्म ब्रह्म खेल महान, ख़ालक ख़लक रूप वेखे दो जहान, मख़लूक आपणी धार रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला साचा हरि, गुरमुख साचे आप मिलाइंदा। गुरमुख मिल्या सतिगुर पाया नाता तुट्टा जगत, माणस जन्म जूए ना हारया। पुरख अबिनाशा घट घट वासा दासी दासा दीन दयाल, खेले खेल अगम्म अपारया। कलिजुग अन्तिम अवल्लड़ी चाल, चरन भिखार रखाए काल महाकाल, वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, लोकमात होए उज्यारया। भगत भगवन्त लए भाल, साचे सन्त राह दस्से इक्क सुखाल, गुरमुखां तोड़ जगत जंजाल, गुरसिखां बणे आप दलाल, बेड़ा करे पार किनारया। जो जन आए सरना एका मंग लए मंगा, पुरख अबिनाशी दया दए कमा, लोचण तीजा दए खुल्हा, अनहद शब्द दए वजा, अमृत जाम दए प्या, निरगुण जोत कर रुशना, औखी घाटी दए चढ़ा, आपणा पल्ला आप फड़ाईआ। आपणा

१६५

पल्ला आप फड़ाया, गुरसिख भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण सरगुण दुआरे मंगण आया, जुग जुग आपणा बिरद धराया, हरिजन आपणे अंगण आप उठावण आया, आप आपणी गोद सुहाया। हरि का नाउँ मंगण जो संगण, दरगाह साची मिले ना थाया। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा तन पहनाए नाम साचा कंगण, जिउँ कसीरा रविदास चमारा गंगा आप वटाया। हरिभगत बणे साचा हीरा माणक मोती, जगे जोती सुरती उठे सोती, गुर सतिगुर लए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द हुलारा इक्क लगाया। शब्द हुलारा आप लगाइंदा, कर किरपा गुण निधान। गुरमुख आत्म आप जगाइंदा, परमात्म होया निगहबान। सनातन धर्म इक्क वखाइंदा, सांतक रूप श्री भगवान। विष्नूं खेल आप खिलाइंदा, घर घर देवे जीआ दान। ब्रह्म जोत सर्ब जगाइंदा, पारब्रह्म हो प्रधान। शंकर संसा सर्ब मिटाइंदा, जो भुल्ले जीव शैतान। गुर का शब्द अन्त प्रनाइंदा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। जुग जुग आपणा बल रखाइंदा, नौ खण्ड पृथमी पावे आण। गुर अवतार आपणी रसना जिहवा गाइंदा, देवणहारा हरि फ़रमान। कलिजुग वेला अन्तिम आइंदा, पुरख अबिनाशी होया मेहरवान। शब्द बबाणा आप उठाइंदा, लोकमात रक्खे आण। निरगुण निरवैर निहकलंक सेव कमाइंदा, गुरसिख उठाए बाल अञ्याण। आपणी हथ्थीं आप चढ़ाइंदा, आपणे कंध चुक्के श्री भगवान। जगत कहार ना कोए बणाइंदा, ना कोई काहनी करे पछाण। उलटा गेड़ा आप दवाइंदा, मुख फिरे दो जहान। जगत भण्डारन आप भराइंदा, करे खेल हो मेहरवान। गुरसिख अर्थी आपणे धाम पुचाइंदा, ना कोई परखे जीव जहान। पंज तत्त काया अग्नी विच जलाइंदा, त्रैगुण मेटे अन्त निशान। ब्रह्म पारब्रह्म विच समाइंदा, जोती मेला जोत महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत देवे माण। हरिसंगत वड्याई धन्न, हरि सतिगुर पुरख मनाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, हरि मन्दिर हरि जस गाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, जगत तृष्ना भुक्ख गंवाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, संसा रोग रहे ना राया। हरिसंगत वड्याई धन्न, पुरख अबिनाशी सेव कमाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, अर्श फर्श कुर्श कुरा एका काया काअबा दए वड्याआ। हरिसंगत वड्याई धन्न, दो दो आबा आबेहयात दए बरस, आपणी धार आप वहाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आए लेखे लए लगाया। लेखे लग्गे आया दर, भुल रहे ना राईआ। दरस दिखाए घर घर, रातीं सुत्तयां लए जगाईआ। विष्नूं रूप आपे कर, आपणा रूप आप प्रगटाईआ। सीस ताज आपे धर, मोर मुक्ट सीस टिकाईआ। धनुख बाण आपे फड़, जंगल जूह उजाड़ प्रभास दए वखाईआ। सेली टोपी सिर रक्ख, नाम सति करे पढ़ाईआ। चरन रकाबे आपे रक्ख, गोबिन्द रूप दए दरसाईआ। किरपा करे पुरख समरथ, गुरमुख शब्दी बन्धन पाईआ।

मन मनूआ दहि दिशा ना जाए नस्स, पंछी उड ना डारी लाईआ। बुध बबेकी दए रस, एका तत्त वखाईआ। मति मतवाली तीर मारे कस, बाण निराला इक्क चलाईआ। पंच विकारा करे भठ, पंचम शब्द धुंन उपजाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत देवे दरस, लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ, रविदास चमार दए ग्वाहीआ। सगल वसूरे जायण लथ, जो जन आत्म अन्तर दर्शन पाईआ। कोई कहे झूठ कोई कहे सच, गुरमुख विरले हिरदे अंदर गया रच, ना कोई सके बाहर कढ्ढाईआ। हरि का नाउँ हरिजन विरले गया पच, दूसर अंदर टिके ना राईआ। कलिजुग जीव जगत दुआरे रहे नच्च, गुरदुआर दिस किसे ना आईआ। माण अभिमाण पंज तत्त काया माटी कच्च, सच निशान ना कोए वखाईआ। गुण जाणया जगत भोग बिलास रस, हरि गुण कहिण सुणन कोए ना जाईआ। सूरबीर बलवान राज राजान मन वासना होए वस, सुरत शब्द ना कोए मिलाईआ। जगत माया ममता रक्खी आस, हरि मिलण दी आस ना कोए रखाईआ। पी पी मदि ना मिटी प्यास, नाम ख़ुमारी ना कोए चढ़ाईआ। जगत बबाण उडाए आकाश, आपणा घर वेखण कोए ना जाईआ। जीव जहाना जंतां खाधा मास, आपणा मास गुर के हट्ट ना कोए विकाईआ। घर घर रक्खे दासी दास, दासी दास बण सतिगुर सेव ना कोई कमाईआ। पुत्तर धीआं जन्मे दस दस मास, दस दस मास फंद ना कोए कटाईआ। रसना खाधा जगत ग्रास, हरि स्वास स्वास ना कोए ध्याईआ। बिन सतिगुर पूरे वेले अन्त ना करे कोए बन्द ख़लास, मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण ना सके कोए बचाईआ। जो दीसे सो होए विनास, थिर ना रहे पृथ्मी आकाश, पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादि एका एक रघुराईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त गुरमुखां करे बन्द ख़लास, जो जन रहे ध्यान लगाईआ। गोपी काहन बण बण पावे रास, गृह मन्दिर अंदर आपणा नाच नचाईआ। सीता राम वसे पास, राम सीता सुरती शब्दी विछड़ कदे ना जाईआ। नानक गोबिन्द करे बन्द ख़लास, गोबिन्द गुर गुर जो जन दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरी हरि आपणी खेल खिलाईआ।

★ १२ माघ २०१७ बिक्रमी ओम प्रकाश दे गृह जलन्धर ★

इक इकल्ला रक्खणहारा, आदि जुगादि समाइंदा। सचखण्ड वसे धाम न्यारा, सच दुआरे सोभा पाइंदा। थिर घर साचे हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी साचा तख्त हंढाइंदा। हुक्मी हुक्म करे वरतारा, हुक्मी हुक्म खेल खिलाइंदा। दर दरवेश बण भिखारा, आपणी मंग आप मंगाइंदा। आप कराए साचा वणज वणजारा,

आपणा वणज आपे वेख वखाइंदा। निरगुण रूप अगम्म अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह आपणी कल आप धराइंदा। अजूनी रहत आदि जुगादि करे सच न्याँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खिलाइंदा। इक्क इकल्ला खेल अपारा, आदि जुगादि कराइंदा। सचखण्ड वसाए इक्क दुआरा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। शब्द सुत सुत दुलारा, हरि निरँकारा आप उठाइंदा। देवे वर एका हरि, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। त्रै त्रै नूर कर उज्यारा, त्रै त्रै मेल आप धराइंदा। लक्ख चुरासी कर पसारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बल रखाइंदा। आपणा बल आपे धार, आपणी दया आप कमाईआ। लक्ख चुरासी कर पसार, त्रैगुण बन्धन एका पाईआ। पंज तत्त घाड़न घड़े अपार, घड़णहारा आप हो जाईआ। रक्त बूंद अपर अपार, हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ाईआ। काया गढ़ कर त्यार, वेखणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला आपणी खेल आप खिलाईआ। इक्क इकल्ला हरि बेअन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। आदि जुगादी नारी कन्त, एका आपणी सेज हंढाईआ। आपे जाणे आपणी बणत, आपणा रूप आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्क इकल्ला आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। इक्क इकल्ला खेल अपार, रक्खणहार लक्ख चुरासी कर पसार, विष्न ब्रह्मा शिव सेवा लाइंदा। निरगुण तत्त तत्त कर प्यार, ब्रह्म मति इक्क टिकाइंदा। वसणहारा धाम न्यार, जाग्रत जोत कर उज्यार, जोती जाता आपणा नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सगला संग आप निभाइंदा। लक्ख चुरासी हरि हरि धार, निरगुण सरगुण आप चलाईआ। देवे हुक्म सच्ची सरकार, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। जुग जुग गेड़ा अपर अपार, जगत वण्डण वण्ड वंडाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दी बाणी बाण शब्द अलाईआ। शब्द नाद सच्ची धुन्कार, आपणा राग आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाईआ। हरि हरि वेस वटाइंदा, इक्क इकल्ला बेपरवाह। चारे खाणी आप सुणाइंदा, आपणा आसण बैठा ला। घट घट दीपक जोत जगाइंदा, आपणी धुन आप उपजा। घर घर शब्द नाद वजाइंदा, आपणी धुंन आप जणा। आपणा भेव आप खुल्हाइंदा, आपे बणत लए बणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा एका घर, घर सुहञ्जणा आप सुहा। घर घर हरि सुहञ्जणा, हरि साचे सच वड्याईआ। दीपक जगे आदि निरँजणा, तेल बाती ना कोए पाईआ। करे खेल दर्द दुःख भय भञ्जणा, दरदी दर्द ना कोए जणाईआ। आदि जुगादी साचा सज्जणा, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, एका धाम सुहाईआ। एका धाम सुहंदड़ा, हरि साचा वड मेहरवान। सच्चखण्ड दुआरे आसण लंदड़ा, जोती नूर जगे महान। साचे तख्त सोभा पंदड़ा, उप्पर बैठ श्री भगवान। आपणा हुक्म आप सुणंदड़ा, आपणा भाणा धुर फ़रमान। आपणा भाणा आप रखंदड़ा, आपे करे परवान। आपे लक्ख चुरासी वेख वखंदड़ा, आपे निरगुण सरगुण होए मेहरवान। आपे शब्द संदेश सुणंदड़ा, लक्ख चुरासी वेख निशान। आपे आपणा पर्दा उठंदड़ा, पंज तत्त होए आप मेहरवान। आपे भगत भगवन्त वेख वखंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल महान। इक्क इकल्ला एकँकारा, जुग जुग खेल खिलाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, महल्ल अटल उच्च मुनार दर घर साचे सोभा पाइंदा। निरगुण जोती कर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, नाद अनादी आप वजाइंदा। लोकमात करे खेल न्यारा, आपणा रूप आप धराइंदा। भगत भगवन्त खोल्हे बन्द किवाड़ा, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, माया ममता मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, एका खेल खिलाइंदा। इक्क इकल्ला बेपरवाह, आदि जुगादि समाया। जुग जुग बणे मात मलाह, हरि सन्तन दए मिलाया। इक्क जणाए आपणा नाउँ, निष्अक्खर आप पढ़ाया। सदा सुहेला बणे पिता माउँ, सीस आपणा हत्थ टिकाया। वेखणहारा नगर खेड़ा ग्राउँ, पंज तत्त काया चोला फोल फुलाया। गुरमुख विरले आप उठाए फड़ फड़ बाहों, जिस जन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकार करे खेल अगम्म अपार, दूसर संग ना कोए रलाया। सो पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, दर घर साचे सोभा पाईआ। हरि पुरख निरँजण वसणहारा सच महल्ला, दर दरबारा इक्क वड्याईआ। एकँकारा आप फड़ाए आपणा पल्ला, आपणा संग आप निभाईआ। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बला, निरगुण निरगुण निरगुण करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा जला थला, जल थल महीअल आप समाईआ। श्री भगवान सच संदेश नर नरेश एका घल्ला, घट घट धुन नाद वजाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आपे रला, अभेद अभेद आप हो जाईआ। हरिभगत फड़ाए आपे पल्ला, छुट्ट कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्क इकल्ला सृष्ट सबाई पिता माईआ। सृष्ट सबाई एका दाता, एका रंग समाइंदा। जन भगतां सुणाए साची गाथा, जगत विद्या ना कोए पढ़ाइंदा। आत्म अन्तर वखाए तीर्थ ताटा, सर सरोवर आप नुहाइंदा। आपे पूरा करे घाटा, दूसर दर मंगण गुरसिख कदे ना जाइंदा। निरगुण जोत जगाए ललाटा, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। अनहद शब्द मारे साटा, तन नगारा आप वजाइंदा। आत्म सेजा वेखे खाटा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, जन भगत चाढ़े तन रंगत, रंग रंगीला आपणा रंग आप रंगाइंदा। जुग जुग भगत तराइंदा, हरि साचा साची कार। एका हुक्म आप सुणाइंदा, हुक्मी हुक्म सच्ची सरकार। आपणे भाणे सद रहाइंदा, सिर हथ्थ रक्ख समरथ करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला करे खेल अगम्म अपार। अगम्म अपार खेल खिलाइंदा, निरगुण सरगुण हरि हरि मीत। सन्त कन्त भगवन्त आपणे थान बहाइंदा, धाम वखाए इक्क अनडीठ। अठ्ठे पहर वेख वखाइंदा, दिवस रैण वसे चीत। आपणा राग आप अलाइंदा, तुरीआ नाद वजाए इक्क अतीत। सुफ़न सखोपत खेल खिलाइंदा, जाग्रत वेखे ठांडा सीत। त्रैगुण विच कदे ना आइंदा, हरिजन करे पतित पुनीत। हस्त कीट खेल खिलाइंदा, इक्क इकल्ला गाए सुहागी गीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, लक्ख चुरासी परखे नीत। लक्ख चुरासी परखणहारा, एका रंग समाइंदा। करे खेल विच संसारा, भगत भगवन्त आप उठाइंदा। सन्तन देवे सति सहारा, साची सिख्या इक्क वखाइंदा। गुरमुखां अन्तर खोलू किवाड़ा, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। गुरसिखां मेटे पंचम धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। जुग जुग करे साची कारा, करनी करता आप कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार उतारा, आपणे लेखे पाइंदा। लेखा जाणे गुर अवतारा, शब्द गुर गुर सतिगुर आप वड्यांअदा। पंज तत्त दए सहारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मेल मिलाइंदा। मन मति बुध पावे सारा, आप आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। इक्क इकल्ला बन्धन पाए, बन्दी छोड़ आप हो जाईआ। लक्ख चुरासी घट घट अंदर मृदंगण आप वजाए, नाम मृदंगा इक्क वखाईआ । जन भगतां कंगण तन इक्क पहनाए, सति सन्तोख वडी वड्याईआ। आत्म अन्तर परमानंदन इक्क उपजाए, जगत तृष्ना हरस रहे ना राईआ। गीत सुहागी छन्दन इक्क सुणाए, ना कोई लेखा लिखे कलम जगत शाहीआ। मस्तक तिलक चन्दन आप लगाए, निरगुण जोत नूर ललाट कर रुशनाईआ। दूई द्वैती भरमां कंधन आपे ढाए, निरभउ भय ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला आपणी धारा आप चलाईआ। इक्क इकल्ला धार चलाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार। कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा, लेखा जाणे धुर दरबार। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पाइंदा। गगन पातालां चरनां हेठ लताड़। विष्न ब्रह्मा शिव आप उठाइंदा, करोड़ तेतीसा दए हुलार। सुरपति राजा इन्द नाल मिलाइंदा, निरगुण खेल अगम्म अपार। दहि दिशा फेरा पाइंदा, चार कुण्ट होए उज्यार। त्रैगुण माया वेख वखाइंदा, पंज तत्त जानणहारा धार। निरगुण निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा, शब्दी गुर गुर अवतार। गुर शब्दी डंक वजाइंदा, नाद अनादी एकँकार।

कलिजुग जीव भेव कोए ना पाइंदा, अन्तिम सुत्ता पैर पसार। मन का मणका ना कोए भवाइंदा, पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार। गुर गुर शब्द दिस किसे ना आइंदा, पंज तत्त करन प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका वार। इक्क इकल्ला एका वार, आपणा खेल खिलाइंदा। जुग चौकड़ी दए सहार, गेड़ा गेड़े आप भवाइंदा। आप प्रगटाए गुर अवतार, हुक्मी हुक्म सर्ब फिराइंदा। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, निरगुण निरवैर पुरख अकाल लोकमात जोत जगाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। तोड़णहारा जगत जंजाल, जाग्रत जोत इक्क जगाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। हरि हरि भेव जणाइंदा, कर किरपा दीनन दीन। सन्त साजण वेख वखाइंदा, जो जन आत्म अन्तर रहे चीन। चारों कुण्ट फेरा पाइंदा, हरिजन वेखे लाए आपणे लेखे जगत विछोड़ा कट्टे जिउँ जल मीन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल लोक तीन। त्रैगुण माया खेल अपारा, हरि अन्तिम पार कराइंदा। कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा, इक्क इकल्ला वेख वखाइंदा। सम्मत सम्मती भेव न्यारा, बीस सतारां आपणा बल धराइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। एका हुक्म हरि वरतंत, शब्दी शब्द वज्जे वधाईआ। गुरमुख विरला जाणे सन्त, दूसर बूझे ना कोए राईआ। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण वेखे थाउँ थाँईंआ। निरगुण सरगुण काया मन्दिर, हरि साचा वेख वखाइंदा। भरम भुलेखे आया शहर जलन्धर, भगतां लेखा आप चुकाइंदा। वसणहारा डूँग्घी कंदर, अनुभव प्रकाश आप कराइंदा। जिस जन तोड़े आपणा जंदर, तिस आपणा दरस दखाइंदा। जीव जंत चार कुण्ट दहि दिशा मन वासना भौंदा बन्दर, बिन गुर शब्द बन्धन कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला पुरख अकाल आदि जुगादी दीन दयाल, वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, जुग जुग भगत भगवन्त लोकमात करे प्रितपाल, लक्ख चुरासी विच्चों भाल आपणा भेव खुल्लाइंदा। इक्क इकल्ला खेल कराइंदा, खेलणहार आप भगवान। घट घट अंदर वेख वखाइंदा, वेखणहारा सच निशान। डूँग्घी भँवरी फोल फुलाइंदा, सुखमन नाड़ी जाणे दुकान। ईड़ा पिंगल पन्ध कटाइंदा, आत्म अन्तर हो मेहरवान। निझर झिरना आप झिराइंदा, कँवल कँवला कर परवान। अनहद शब्द नाद वजाइंदा, धुंन अनादी एका गान। जोत निरँजण आप जगाइंदा, किरपा कर हो मेहरवान। कागों हँस आप बणाइंदा, सर सरोवर नुहाए इक्क नहान। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा, सति सरूपी आप वखाए इक्क निशान। आत्म सेजा आप सुहाइंदा, आत्म ब्रह्म हो प्रधान। ईश जीव खेल खिलाइंदा, खेले

खेल गुण निधान। आपे सुरती आपे शब्द आपे आपणा बन्धन पाइंदा, आपे मेल मिलावा वेखे आण। एका हुक्म आप वरताइंदा, गुरमुख विरला जाणे चतुर सुजान। कोटन कोटि चार कुण्ट दहि दिशा उठ उठ धाइंदा, पन्ध मुके ना विच जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला नौजवान। इक्क इकल्ला नौजवाना, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आदि जुगादी खेल महाना, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। लेखा जाणे धुर दीबाना, धुर फ़रमाना आपणी गाथ अलाईआ। कलिजुग अन्तिम होए प्रधाना, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। गुरमुख विरले देवे आपणा दाना, जीवण दात झोली पाईआ। घर घर मिले साचा कान्हा, रूप अनूप आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन अंदर जाए वड़, औंदा जांदा दिस ना आईआ। सन्तन वेखे जगत लिबास, काया चोली खेल खिलाइंदा। मन्दिर अंदर खेल प्रभास, जंगल जूह उजाड़ रूप वटाइंदा। तेई घंटे मन उदास, चवी पल खेल खिलाइंदा। रसना गावे जगत स्वास, पवण हवास नाल रलाइंदा। नैण तक्कण पृथ्मी आकाश, मन चार कुण्ट फेरा पाइंदा। सुरती सद रहे उदास, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। सच वस्त ना दिसे पास, चौदां हट्ट वेख वखाइंदा। गोपी काहन ना पावे रास, सुरती शब्द ना मंगल गाइंदा। लेखा लिखे चमार रविदास, कलिजुग लेखा सर्ब मुकाइंदा। अंदरे अंदर बैठे रहिण निरास, हरि जू हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे जगत बस्त्र काया चोली आत्म अन्तर, त्रैगुण माया वेखे बसन्तर, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाइंदा। आत्म अन्तर डूँघा खाता, हरि साचा आपणे हथ्थ रखाइंदा। चौदां विद्या जगत गाथा, कलिजुग जीवां आप पढ़ाइंदा। कोई कहे राम नाम साथा, कोई मंगे दान त्रिलोकी नाथा, कोई नानक नाम कहाइंदा। कोई कहे गोबिन्द चलाए राथा, कोई ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारी राह तकाइंदा। इक्क इकल्ला आदि जुगादि पारब्रह्म पुरख समराथा, जन्म मरन विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द शब्द गुर बलवान, आदि जुगादि झुलाए इक्क निशान, सच निशाना इक्क वखाइंदा। काया अन्तर लग्गी अग्ग, कलिजुग जीव भेव ना राईआ। सीस दस्तार ना सोहे पग्ग, जिस मिल्या ना बेपरवाहीआ। दरस ना पाया उप्पर शाह रग, नौ दुआर जगत वासना फिरे हल्काईआ। हँस ना बणया जीव कग्ग, वासना कांग वांग कुरलाईआ। जिस सतिगुर मिल्या सूरा सर्बग्ग, सो सन्त साजण घर वज्जदी रहे वधाईआ। क्या कोई ताअना मेहणा देवे जग, जिस जगत ईश्वर आपणे अंग लगाईआ। माणस जन्म ना होए भंग, जिस भगत भगवन्त आपणी गोद बहाईआ। काया चोली चढ़े रंग, बसन्त बसन्त रुत्त दए ग्वाहीआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क दरसाईआ। नाता तोड़े भुक्ख नंगत, नाम ख़ज़ाना इक्क वखाईआ। चार वरन हरि का रूप साची संगत, ईश

जीव जीव ईश ब्रह्म पारब्रह्म, एका नूर नूर नूर लए उपजाईआ। नूर उपाया नूर धार, नूरी नूर खेल खिलाइंदा। नूर निरगुण होए उज्यार, नूर सरगुण संग निभाइंदा। नूर करे सर्ब पसार, नूर धूंआँधार डेरा लाइंदा। नूर आदि अन्त करे खेल अपार, नूर मध्ध आपणा रूप वटाइंदा। नूर गुर नूर अवतार, नूर जीव जंत समाइंदा। नूर भगत नूर सन्त, नूर गुरमुख नूर गुरसिख नूर नारी नूर कन्त, नूर नूर सेज हंढाइंदा। नूर गढ़ हउमे हंगत, नूर काम क्रोध लोभ मोह हँकार बणत बणाइंदा। नूर आसा तृष्ना बणे मंगत, नूर दर दरवेश फेरी पाइंदा। नूर नूर करे खण्डत, नूर खण्डा नूर कटार, नूर हुक्म नूर अवतार, नूर शब्द नूर दीबान, आप आपणा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल अपार, सन्तन वखाए इक्क दुआर, दूजा दर ना कोए वखाइंदा। अन्तश्करन करे जन विचार, चारों कुण्ट सृष्ट सबाई धूंआँधार। ना कोई सज्जण ना कोई मीत, ना कोई पुरख ना कोई नार। ना कोई गाए सुहागी गीत, दर दर दिसे विभचार। बिन गुरमुख गुरसिख कोए ना दिसे मात अतीत, नौ खण्ड पृथ्मी नाता जुड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकार। अन्तशकरन हरि हरि ध्यान, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। जिस जन देवे आपणा दान, नाम निधाना झोली पाईआ। चरन कँवल पुरख अबिनाशी घट घट वासी इक्क वखाए सच ध्यान, ब्रह्म ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट घट वेखे थाउँ थाँईंआ। अन्तर आत्म जगत विचार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काया। सच सुच्च ना दिसे कोए विहार, काया मन्दिर हरिमन्दिर रूप ना कोए बणाया। चारों कुण्ट कुण्ट करे विचार, दहि दिशा नेत्र लोचण नैण रहे उठाया। गुरमुखां गुर गुर शब्दी आपे पाया हिस्सा, आप आपणी वण्ड वण्डाया। जो जन सिख्या साची सिखा, सिखी सिख्या इक्क वखाया। आपे जाणे धुर दा लेखा लिखा, लिख्या लेख ना कोई मेट मिटाया। सतिगुर रूप इक्क अनडिठा, जगत नेत्र दिस किसे ना आया । आत्म सेजा सुत्ता दे कर पिट्ठा, आपणी करवट ना लए बदलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तश्करन जाणे हरि हरि, काया मन्दिर आपे वड़ वड़, पहले दूजे तीजे चौथे पौड़े चढ़ चढ़, पंचम शब्द नाद सुणाए खड़ खड़, सुरत सुवाणी शब्द हाणी आपे फड़ फड़, अमृत आत्म ठंडा पाणी इक्क वखाए सर सर, हरि हरि नर नर नारी कन्त सन्त भगवन्त एका रूप समाया।

★ १२ माघ २०१७ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड अहिमद पुर ★

सति पुरख निरँजण साची धारा, सति सतिवादी आप चलाइंदा। अगम्म अगम्मड़ा करे अगम्मड़ी कारा, आप आपणा

खेल खिलाइंदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यारा, आपणा बल आप धराइंदा। हरि पुरख निरँजण भेव न्यारा, भेव अभेदा भेव छुपाइंदा। एकँकारा आपे जाणे आपणी कारा, करनी करता आप अख्वाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा, जोती नूर डगमगाइंदा। श्री भगवान वसणहारा धाम न्यारा, धाम अवल्लड़ा इक्क सुहाइंदा। अबिनाशी करता शाहो भूप बण सिक्दारा, आपणा हुक्म आप जणाइंदा। पारब्रह्म बण भिखारा, आपणी मंग आप मंगाइंदा। करे खेल हरि निराकारा, निरवैर आपणा बन्धन आपे पाइंदा। जूनी रहित हो त्यारा, पुरख अकाल दीन दयाल आपणा नाउँ धराइंदा। आपणी इच्छया आपे बण वरतारा, साची भिच्छया झोली पाइंदा। आपे खोले सच दुआरा, बंक दुआरी आप अख्वाइंदा। सचखण्ड साचा कर त्यारा, आपणा रंग आप रंगाइंदा। रूप रंग दिसे ना कोए आकारा, तत्व तत ना कोए रखाइंदा। ना कोई बणाए चार दीवारा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। निरगुण दीवा बाती कर उज्यारा, कमलापाती आप टिकाइंदा। घाड़न घड़े घड़णेहारा, घड़ण भन्नणहार आपणी रचना आप रचाइंदा। सच सिँघासण कर त्यारा, आपणा आसण इक्क सुहाइंदा। ना कोई बाढी पावे सारा, पावा चूल ना कोए रखाइंदा। शाहो भूप बण निरँकारा, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। जगत जगदीश खेल न्यारा, निराधारा आप कराइंदा। सच निशाना कर त्यारा, दर घर साचे आप झुलाइंदा। साचा ताज सीस दस्तारा, निरगुण आपणा आपे वेख वखाइंदा। दूसर ना कोई मीत मुरारा, सगला संग ना कोए जणाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, राज राजान आपणा हुक्म सुणाइंदा। दर दरवेश बण भिखारा, आपणे दुआर आपे सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अजूनी रहत अनुभव आपणा प्रकाश उपजाइंदा। आदि पुरख खेल अवल्ला, हरि साचा सच कराईआ। सचखण्ड सुहाए सच महल्ला, सच सिँघासण आसण लाईआ। आपणे दीपक आपे बला, असुते प्रकाश इक्क वखाईआ। आपे वसे नेहचल धाम अटल्ला, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। आप फड़ाए आपणा पल्ला, आप आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह वडी वड्याईआ। बेपरवाह हरि निरँकार, दर घर साचे सोभा पाइंदा। जोती जाता हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपणे मन्दिर खेल करे अपर अपार, अपरम्पर आपणी धार आप चलाइंदा। आपे लेखा जाणे धुर दरबार, धुर धाम आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा। हरि साचा मन्दिर सुहाइंदा, निरगुण जोत कर उज्यार। निरवैर पुरख आसण लाइंदा, आप आपणी किरपा धार। आपणा अन्तर आपे वेख वखाइंदा, ना कोई दूसर अवर विचार। आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा, आपे भरे भण्डार। आपणी सिख्या हरि समझाइंदा, आपे होए

ਸਿਖਣਹਾਰ।

सिखणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। आदि पुरख आदि अन्त, आपणा बन्धन आपे पाईआ। सो पुरख निरँजण नारी कन्त, नर नरायण खेल खिलाईआ। हरि पुरख निरँजण आप बणाए साची बणत, घड़न भन्नणहार आप हो जाईआ। एकँकारा महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आदि निरँजण साचा धाम आप सुहंत, दर घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा आदि आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि पुरख कर प्रकाश, आपणा खेल आप खिलाइंदा। आपणे अंदर पावे रास, आपे वेख वखाइंदा। इक्क इकल्ला नाउँ रखाए पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, इक्क महल्ला आप सुहाइंदा। सच महल्ला धुर धाम अपारा, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। आपे वसे सभ तों न्यारा, आपणा रंग आप रंगाइंदा। आपे बेऐब होए परवरदिगारा, नूरी जल्वा आपे डगमगाइंदा। आपे सचखण्ड खोल्हनहार किवाड़ा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। आपे धुरदरगाही बणे लाड़ा, आपे नारी कन्त प्रनाइंदा। आपे हुक्मी हुक्म देवे धुर फ़रमाना, आपे आपणा हुक्म वरताइंदा। आपे चले आपणे भाणा, वड भाणा आप समझाइंदा। आपे होए ग़रीब निमाणा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। आपे तख्त सोहे साचा राणा, तख्त निवासी आपणा बल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आदि आदि आपणा खेल आप खिलाइंदा। आदि पुरख सचखण्ड निवासा, सच साची जोत जगाईआ। अगम्म अगम्मड़ा करे घर घर वासा, शाहो शाबासा आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे पावे आपणी रासा, आपे वेख वखाईआ। आपे इच्छया आपे आसा, आपे पूरन रिहा कराईआ। आपे देवे आपणा सच भरवासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे चले हुक्म रज़ाईआ। आपणी आसा आप विचार, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। आपणी किरपा आपे धार, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणी जोत कर उज्यार, आपणा नूर आप प्रगटाइंदा। आपणा घाड़न घड़ अपर अपार, हरि जू हरि हरि आप वेख वखाइंदा। आपे वरते आपणा सति वरतार, सति सतिवादी साची वस्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपे करे करनी साची कार, करता पुरख आपणी कल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, एका आपणा वेस वटाइंदा। सचखण्ड दुआरा हरि सहाया, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। आपणा खेल लए खलाया, खेलणहारा बेपरवाहीआ। घर विच घर लए प्रगटाया, सचखण्ड अंदर थिर घर दए बणाईआ। आपणा मन्दिर आप सुहाया, नारी कन्त वज्जी वधाईआ। साची सेजा सोभा पाया, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण मात निरगुण पित निरगुण दाई निरगुण दाया, आपणा

रूप आप धराईआ। निरगुण सुत दुलारा जाया, सार शब्द नाउँ रखाईआ। थिर घर दुआरे आप बहाया, चरन कँवल बख्शे सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आप आपणा वेख वखाईआ। सुत दुलारा जाया, कर किरपा गुण निधान। अबिनाशी अचुत खेल खिलाया, आपे होया मेहरवान। साची रुत्त आप सुहाया, रुतड़ी वेखे श्री भगवान। आपणे उप्पर तुट्ठ आपणा आप बाहर कढाया, आपे होया निगहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा सुत लए उठाया। सुत दुलारा हरि निरँकार, शब्दी शब्द उपाइंदा। थिर घर साचा खोल्ह दुआर, बंक दुआरा इक्क वखाइंदा। सिर रक्ख हथ्थ समरथ करतार, आपणा भेव आप जणाइंदा। महिमा अकथ गाए आपणी वार, गीत सुहागी इक्क सुणाइंदा। साचा सोहला कर त्यार, एका ढोला आप उपाइंदा। तोला बणया आप परवरदिगार, साचे कंडे तोल तुलाइंदा। पर्दा ओहला दए नवार, घर घर विच वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आपे चढ़, थिर घर आपणा रंग रंगाइंदा। थिर घर रंग रंगाया, सो पुरख निरँजण दया कमा। हरि पुरख निरँजण वेख वखाया, रूप अनूप धरा। एकँकारा पर्दा लाहया, आप आपणा मुख दए वखा। आदि निरँजण कर रुशनाया, एका नूर दए चमका। श्री भगवान सेव कमाया, अबिनाशी करता बणे मलाह। पारब्रह्म प्रभ मार्ग लाया, सुत शब्द दए समझा। आपणा नाउँ तेरा रूप वटाया, हरि निरँकारा दए सलाह। आपणी इच्छया तेरे विच रखाया, सच भण्डार इक्क वरता। आपणा लेखा तेरे हथ्थ फड़ाया, दूसर दिसे कोए ना। निरगुण निरगुण निरगुण वेस वटाया, निरगुण पिता निरगुण मां। निरगुण सुत दुलारा जाया, निरगुण रक्खया निरगुण ना। आपणा हुक्म आप समझाया, आप उठाए फड़ फड़ बांह। आदि पुरख आपणी गोद इक्क सुहाया, सफ़ल कुख लए करा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा मार्ग दए समझा। हरि साचा सच समझाइंदा, साची सिख्या एकँकार। धुर फ़रमाना आप अल्हाइंदा, धुर धाम बैठ सच्ची सरकार। हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा, आपे होए वेखणहार। एका शब्द सच अल्हाइंदा, सेवक सेवा करे अपार। तेरी रचना तेरे विचों बाहर कढाइंदा, तेरा तेरा करे आधार। तेरा नाउँ मृदंग वजाइंदा, सुन अगम्मी खेल न्यार। आपणा अंग आप लगाइंदा, अंगीकार करे करतार। आपणा रूप आप वरताइंदा, आपे होए वेखणहार। आपे विष्न नाउँ धराइंदा, आपे कँवल कँवला पावे सार। आपे पारब्रह्म ब्रह्म वण्ड वंडाइंदा, ब्रह्मा वेता कर त्यार। आपे शंकर संग निभाइंदा, लेखा जाणे धूंआँधार। एका माता गोद बहाइंदा, करे खेल अपर अपार। शब्द डोरी इक्क बंधाइंदा, नाता जोड़ जुड़ाए सिरजणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सुत दुलारा आप

उठाइंदा। सुत दुलारा आप उठाया, कर किरपा गुण निधान। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी झोली पाया, भुल ना जाणा बण नादान। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी रचना दए रचाया, लोआं पुरीआं लेखा जाणे गगन पाताल। रवि ससि तेरी जोत करे रुशनाया, मंडल मण्डप करे प्रधान। जल बिम्ब तेरी धार वहाया, धरत धवल वेखे ज़िमी अस्मान। त्रैगुण तेरी चरन धूढ़ ख़ाक उपाया, विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान। सतो रजो तमो तेरा मंत दृढ़ाया, किरपा करे आप भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपे होए जाणी जाण। साची वस्त हरि अमोलक, शब्द शब्दी हथ्थ फड़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बणाई एका गोलक, त्रैगुण वस्तू विच रखाइंदा। आपणा शब्द वजाए साची ढोलक, तार सतार ना कोए हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द वखाए एका घर, विष्न देवे साचा वर, आपणी इच्छया भण्डारा देवे भर, अतोट अतुट आप रखाइंदा। ब्रह्मे देवे ब्रह्म ज्ञान, हरि साचा वड वड्याईआ। आदि जुगादि चरन कँवल ध्यान, निरवैर पुरख इक्क सरनाईआ। एका बख्शे साचा माण, माण अभिमाण ना कोए जणाईआ। तेरा रूप प्रगटाया आप श्री भगवान, आपणी वण्डण आपणे हथ्थ रखाईआ। पंज तत वखाए इक्क निशान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपे लए प्रगटाईआ। लक्ख चुरासी कर प्रधान, पंज दस मेल मिलाईआ। पंज पचीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपे देवणहारा वर, आपे पूर कराईआ। आपे विष्न विश्व समाया, निरगुण दाता बेपरवाह। आपे पारब्रह्म ब्रह्म जाया, आपे गोदी लए उठा। आपे शंकर उँगली लाया, सिख मति दए समझा। जो घड़या भन्न वखाया, थिर रहे कोए ना। तिन्नां एका गुण वखाया, आप आपणा पर्दा लाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द विचोला मेल मिलाया। शब्द विचोला सतिगुर धार, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाइंदा। दोए जोड़ करन निमस्कार, ख़ाली झोली सर्ब वखाइंदा। देवणहारा इक्क दातार, साची भिच्छया आप वरताइंदा। मंगदे रहिणा वारो वार, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। लक्ख चुरासी सेवा करनी विच संसार, लोकमात राह वखाइंदा। पंज तत देणा इक्क आधार, त्रैगुण माया जोड़ जुड़ाइंदा। माणस मानुख इक्क विचार, आप आपणी कल रखाइंदा। आसा तृष्ना कर त्यार, पंच विकार आप उपजाइंदा। नाता जोड़े काम क्रोध लोभ मोह हँकार, बहत्तर नाड़ा आप समझाइंदा। तिन्न सौ सठ्ठ हाडी करे खेल करतार, ब्रह्म ब्रह्मादी वेस वटाइंदा। लेखा जाणे बंक दुआर, गढ़ आपणा आप सुहाइंदा। जगत वखाए नौं दुआर, जगत वासना विच रखाइंदा। आपणा खेल करे अपर अपार, आपणी वण्ड आपणे हथ्थ रखाइंदा। घर विच घर कर त्यार, आपणी हथ्थीं कुंडा लाइंदा। कोए ना पावे सार विच संसार, दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द रिहा

१७७

घाड़न घड़, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव साची सेव कमा, पंज तत्त गढ़ बणाया। मन मति बुध विच टिका, निरगुण वण्ड वण्डाया। दोए जोड़ पए सरना, तेरा रूप नज़र ना आया। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका तत समझाया। आपणा मन्दिर दए सुहा, आपणा राह आपणे विच छुपाया। गुरमुख विरले दए बुझा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाया। सन्त साजन लए जगा, निरगुण सरगुण हो रुशनाया। भगत भगवन्त वेखे थाउँ थाँ, आप आपणा रूप वटाया। आपणा मार्ग दए वखा, नौं दुआरे पार कराया। सुखमन टेढी बंक पन्ध दए मुका, ईड़ा पिंगल मुख शरमाया। दूई द्वैती पर्दा लाह, त्रैगुण तत ना कोए जणाया। पंच विकारा करे स्वाह, एका जोती अग्नी लम्बू लाया। अमृत आत्म दए प्या, निझर झिरना इक्क झिराया। घर नाद घर शब्द घर धुन दए उपजा, धुन आत्मक खेल खिलाया। घर मेला घर गुरु घर चेला बणे सहिज सुभा, घर सुरती बन्धन पाया। घर ताक दए खुला, घर साकी जाम इक्क प्याया। घर राकी शब्द घोड़ा साचे घोड़े दए चढ़ा, अंदरे अंदर पन्ध मुकाया। घर सिंघासण रिहा वछा, साची सेजा डगमगाया। घर पति पतिवन्ता तके राह, घर कन्त सुहाग आपणा नाउँ धराया। घर मेला जाणे बेपरवाह, बेपरवाह वेस वटाया। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म करे रुशना, जोत निरँजण डगमगाया। रवि ससि रहे शरमा, नेत्र नैण ना कोए उठाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणा खेल दए खला, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप वटाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक्क बणाए सच मलाह, गुर सतिगुर शब्द नाउँ धराया। विष्न ब्रह्मा शिव भुलणा ना, बिन हरि शब्द ना दिसे अवर कोए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आप आपणा खेल खिलाया। शब्द गुर खेल अपारा, हरि साचा सच कराइंदा। आदि जुगादी इक्क अवतारा, एका गुर गुर नाउँ धराइंदा। लक्ख चुरासी पावे सारा, घट घट अंदर वेख वखाइंदा। भगतन देवे सति सहारा, सति सतिवादी मेल मिलाइंदा। सन्त बणाए सच दुलारा, आप आपणे रंग रंगाइंदा। गुरमुखां नेत्र नैण इक्क उग्घाड़ा, दोए दोए लोचण बन्द कराइंदा। गुरसिखां वखाए सच अखाड़ा, घर मन्दिर अंदर आपणा ताल वजाइंदा। आपे सभ तों वसया बाहरा, भेव कोए ना पाइंदा। जुगा जुगन्तर साची कारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। आपे गुर आपे अवतारा, आपे भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। आपे सन्त कन्त रलीआं माणे अपर अपारा, कन्त कन्तूहल साची सेज हंढाइंदा। आपे गुरमुख बणाए नाम वणजारा, साचा बंक आप वखाइंदा। आपे गुरसिखां देवे सच भण्डारा, आपणी हथ्थीं सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता, एका साचा खोल्ह दर, सच वस्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची वस्त हरि निरँकार, गुर सतिगुर हथ्थ रखाईआ। जुगा जुगन्तर बण

वरतार, हरिजन साचे झोली रिहा भराईआ। जुग चौकड़ी करे पार, सतिजुग त्रेता द्वापर लोकमात रहिण ना पाईआ। चौदां लोक करे खेल करतार, चौदां हट्ट वेख वखाईआ। त्रै भवण धनी आपे जाणे आपणी कार, त्रैगुण माया विच ना आईआ। वल छल खेल करे संसार, अछल अछल आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलाईआ। जुग जुग खेल अवल्लड़ा, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। गुरमुखां अंदर सच सिँघासण एका मल्लड़ा, सोभावन्त सोभा पाइंदा। सुरती शब्दी अकाल मूर्त आपे रलड़ा, जूनी रहित दिस ना आइंदा। आप फड़ाए शब्द सरूपी साचा पलड़ा, छुट्ट कदे ना जाइंदा। जुगा जुगन्तर गुर अवतार आपे घल्लड़ा, रामा कृष्ना बावन खेल खिलाइंदा। ईसा मूसा जोती आपे रलड़ा, संग मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी खेल खिलाइंदा। नानक मेला इक्क इकल्लड़ा, सच्चखण्ड दुआरा वेख वखाइंदा। शब्द सनेहुड़ा एका घलड़ा, नाम सति सर्ब वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द एका गुर एका लेखा जाणे धुर, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। दूसर भेव ना जाणे कोए, हरि महिमा अगणत गणी ना जाईआ। ब्रह्मा चारे वेद लै के आया ढोआ, अलखना अलख ना लख्या जाईआ। शास्त्र सिमरत पुराण अठारां उच्ची कूक कूक लोकमात रोया, हरि हरि लेखा लिखण कोए ना पाईआ। गीता ज्ञान आपे जोया, त्रिलोकी नाथ तिन्नां लोकां भेव खुल्हाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद एका बीज बोया, चौंदा तबक फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। परवरदिगार बेऐब ख़ुदाई आप आपणे जेहा होया, नूरो नूर नूर समाईआ। मुकामे हक आदि जुगादि नवां नरोआ, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त जुग जुग आपणा रूप धराईआ। शब्द गुर नानक धार, निरगुण खेल खिलाया। सरगुण साजण दए आधार, पंज तत वेख वखाया। काया कपड़ खेल न्यार, डूंघी कंदर वेस वटाया। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म पसार, ब्रह्म लेखा दए मुकाया। एका नाद धुन सतार, अनहद तार सतार हिलाया। आपे जाणे आपणी गुफ्तार, गोशे विच नज़र किसे ना आया। मदहोश गाए इक्क निरँकार, ख़ामोश चुप्प रहिण ना पाया। सोच सोच तों वसया बाहर, शब्द शब्द वड्डी वड्याआ। लोक परलोक गायण एका वार, सच सलोक आप प्रगटाया। हरि का मन्दिर किसे दिसे ना किले कोट, चार दीवारी बन्द ना किसे कराया। जुग जुग जन भगतां तन नगारे लौंदा आया, चोट, आपणा पर्दा आप उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द शब्द गुरदेव, आदि जुगादी अलख अभेव, निर्मल रूप सदा निहकेव, निर्मल धाम आसण लाईआ। निर्मल धाम हरिभगत घर, घर मन्दिर होए रुशनाईआ। गुर सतिगुर अंदर जाए वड़, औंदा जांदा दिस ना आईआ। कलिजुग चार कुण्ट वेखे खड़, नौं खण्ड पृथ्मी फोल फुलाईआ।

सतिजुग त्रेता द्वापर काल रूप आपे धर, काल नगारा आप वजाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल खिलाइंदा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। निरगुण जोती जोत जगाइंदा, जोती जाता आप करतार। शब्दी शब्द संग रलाइंदा, गुर शब्द हो त्यार। काल महाकाल आप उठाइंदा, एका बख्शे चरन ध्यान। दयाल काल आपणा रूप धराइंदा, आपे होए मेहरवान। दोहां विचोला वेख वखाइंदा, सदा सहाई निगहबान । लोआं पुरीआं फेरा पाइंदा, ब्रह्मण्ड खण्ड होए प्रधान। विष्न ब्रह्मा शिव आप उठाइंदा, एका देवे सति निशान। लक्ख चुरासी डंक वजाइंदा, सोया रहे ना जीव नादान। चारे वरनां फोल फुलाइंदा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कर पहचान। चारे खाणी आप भुलाइंदा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज देवणहारा दान। चारे वेद आप सुणाइंदा, चारे मुख ब्रह्म कर प्रधान। चारे जुग वेस वटाइंदा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। राज राजाना आप अख्वाइंदा, इक्क इकल्ला नौजवान। साचे तख्त सोभा पाइंदा, शाह पातशाह वड मेहरवान। कलिजुग कूड़ी क्रिया पार कराइंदा, लक्ख चुरासी मिटे निशाना बेईमान। झूठी नौबत ना कोए वजाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द गुरु होवे मेहरवान। शब्द गुर सद दातारा, दातार दया कमाईआ। कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा, निरगुण आपणा रूप धराईआ। गुरमुखां करे सच प्यारा, सच सहारा इक्क वखाईआ। आपे खोले बन्द किवाड़ा, पंचम धाड़ा दए मिटाईआ। निरगुण नूर कर उज्यारा, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, भर प्याला जाम प्याईआ। भाग लगाए काया मन्दिर मुनारा, गुरदुआर मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले खोजण कोई ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द गुर इक्क अख्वाईआ। एका शब्द गुरु गुर दाता, गुरदेव नमो निमस्कार। आदि पुरख हरि पुरख बिधाता, अलख अगोचर अगम्म अपार। जुग जुग वेखे खेल तमाशा, लोकमात लै अवतार। सन्तन देवे सति भरवासा, चरन कँवल आधार। दूजे घर पावे रासा, तीजा नेत्र इक्क उग्घाड़। चौथे पद कराए वासा, देवे दरस अपर अपार। पंचम शब्द नाद धुन लेखा जाणे पवण स्वासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार। गुर सतिगुर पार कराइंदा, कर किरपा वड मेहरवान। जिस जन आपणी दया कमाइंदा, नाता तोड़े जगत जहान। आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा, माया ममता ना दिसे निशान। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा, जिस जन देवे जीआ दान। अन्ध अन्धेर आप गंवाइंदा, आत्म जोती जगे महान। वरन गोत ना कोए रखाइंदा, गुरमुख साचे आप पछाण। ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका रंग रंगाइंदा, जो सरन सरनाई डिगे आण। तन मन सीतल सति कराइंदा, अमृत बरखे मेघ महान। मनूआ

१८०

उठ ना दहि दिश धाइंदा, गुर शब्द सुणाए धुर फ़रमान। बुध बिबेक आप कराइंदा, आपे देवे नाम निधान। मति मतवाली लेखे पाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका देवे सति ज्ञान। सति ज्ञाना चरन कँवल, कँवल चरन सरनाईआ। भगत वड्याई उप्पर धवल, धवल गुरमुख चरन सीस झुकाईआ। आप उलटाए नाभ कँवल, कँवल नाभ अमृत धार वहाईआ। आपे सुरती शब्दी जाए मवल, मौला आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सज्जण लए फड़, डूँग्घी भँवरी आपे वड़, साचे पौड़े आपे चढ़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सच सिँघासण हरि सुहाइंदा, गुरमुख आत्म साची सेज। मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा, आपे जाणे आपणा जोती जल्वा नूरी तेज। आपणा रूप आप प्रगटाइंदा, आपे शब्द सुनेहड़ा रिहा भेज। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लिखणहारा लेख। जिस जन लेखा लिख्या, सो मीता हरि निरँकार। जिस जन पाई भिच्छया, सो सदा सद देवणहार। जो जन पूरी करे इच्छया, सो समरथ पुरख करतार। जगत नेत्र किसे ना दिस्सया, सृष्ट सबाई रोवे ज़ारो ज़ार। कलिजुग विद्या पाया हिस्सया, चौदां विद्या कूक करे पुकार। हरि का मन्दिर इक्क अनडिठया, बिन गुरमुख कोए ना पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन आप उभारीअन, सिर रक्ख हथ्थ समरथ करतार। जुग जुग पैज संवारीअन, जुगा जुगन्तर साची कार। कलिजुग अन्तिम खेल अपारीअन, खेले खेल खेलणहार। गुरमुख मेला सच दुआरीअन, दर दुआरा इक्क अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका वस्त वस्त वरताए गुरसिखां अंदर आप टिकाए, आप आपणी किरपा धार। गुरसिखां सतिगुर सेव कमाइंदा, सेवक सेवा करे अपार। आपणा पर्दा आपे लांहयदा, दूई द्वैत कर ख्वार। आपणी जोत आप जगाइंदा, दीवा बाती कर उज्यार। आपणा जाम आप प्यांअदा, भर प्याला कर त्यार। आपणा शब्द नाद आप वजाइंदा, आप सुणाए सच्ची धुन्कार। बोध अगाध आप पढ़ाइंदा। लिखण पढ़न ते वसया बाहर। निष्अक्खर आप सुहाइंदा, आप वखाए धाम न्यार। आपणा नाम गुरसिखां घर बहाइंदा, घर मन्दिर दए संवार। शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी अञ्जील कुरान हरि का नाउँ सर्ब जस गाइंदा, हरि दा नाउँ सके ना कोए वखाल। बिन सतिगुर पूरे भेव कोए ना पाइंदा, लक्ख चुरासी बणी कंगाल। नाम अनमुल्ला माणक मोती हीरा हथ्थ किसे ना आइंदा, साध सन्त जीव जंत जगत जज्ञासू रहे भाल। गुरमुख विरला घर मन्दिर डूँग्घी कंदर आपणा ताल वजाइंदा, बंक सोहे सच्ची धर्मसाल। जिस सिर समरथ हथ्थ टिकाइंदा, फल लगाए साचे डाल। जोग अभ्यास हठ तप तीर्थ तट ना कोए वखाइंदा, चरन धूढ़ कराए इक्क अशनान। रती रत

आपणे रंग रंगाइंदा, ब्रह्म मति एका दए सखाल। जल धारा सीस ना कोए वखाइंदा, अग्नी तत किसे कुठाली ना देवे डाल। जंगल जूह उजाड़ पहाड उच्चे टिल्ले पर्बत डूँघी कंदर ना कोए वखाइंदा, काया मन्दिर अंदर वखाए सुहावा ताल। जगत जंजाला तोड़ तुड़ाइंदा, दिवस रैण करे प्रितपाल। वेला अन्त कन्त समझाइंदा, गुरमुख साचे मात उठाल। राए धर्म नेड़ ना आइंदा, चित्रगुप्त लेखा सके ना कोए वखाल। लाड़ी मौत ना कोए प्रनाइंदा, अन्त ना खाए जम जम काल। जो जन सतिगुर सरनाई आइंदा, अन्तिम आपणी गोद ल्ए उठाल। लोआं पुरीआं पार कराइंदा, आप आपणे रक्खे नाल। सुन अगम्मी पन्ध मुकाइंदा, एका मारे सच उछाल। थिर घर साचे आप वसाइंदा, सच्चखण्ड निवासी वखाए सच्ची धर्मसाल। अलख अगोचर आपणा मेला आप मिलाइंदा, निरगुण निरगुण कर प्रितपाल। आदि पुरख सति सतिवादी साचा संग निभाइंदा, लेखा जाणे दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां चुकाए काल डर, महाकाल नेड़ ना आइंदा।

★ १३ माघ २०१७ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड अहिमदपुर ★

१८२

हरि सतिगुर काज संवार दा, आदि जुगादी साची कार। डुबदे पत्थर पार उतार दा, खेवट खेटा बण विच संसार। नाता तोड़े जगत प्यार दा, चरन कँवल दए आधार। लेखा जाणे धुर दरबार दा, धुर दरगाही एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आपणी वार। हरि सतिगुर काज संवारीअन, जुगा जुगन्तर कार। गुरमुख नाम उधारीअन, देवे वस्त अपार। माणस जन्म पार उतारीअन, लक्ख चुरासी गेड़ नवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा करे अगम्म अपार। काज संवारे करता निध, किरती आपणी किरत कमाईआ । माणस मानुख जन्म करे सिद्ध, सुध आत्मा आत्म परमात्म आप बणाईआ। आप बणाए आपणी बिध, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा जाणे आत्म निज, निज घर बैठा ताड़ी लाईआ। जो जन चरन कँवल कँवल चरन पवन प्रीती गया भिज, अमिउँ रस अनडिठा रस मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कारज करता आप कराईआ। गुरमुखां पैज संवार, देवे नाम वडी वड्याईआ। बाल जवान बिरध अवस्था बख्शे शीर ख़ुार, सीर नीर आप प्याईआ। आप कढाए दया कमाए जगत पीड़, पीड़ पीआ प्रीतम मिलण दी इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा फंदन आपे दए कटाईआ। हरिजन फंदन कट्टदा, कट्टणहार गोपाल। करे खेल पुरख समरथ दा, परम पुरख दीन

दयाल। जुग जुग जन जननी भगत आपे रक्खदा, अगम्म अगम्मड़ा बण दलाल। लेखा जाणे शाह कक्ख दा, राज राजाना शाह कंगाल। गुरमुखां अंदर आपे वसदा, सदा सुहेला चले नाल। साचा जाम प्याए अमृत रस दा, सर सरोवर एका मार उछाल। गृह मन्दिर मार्ग दस्स दा, निज नेत्र दए वखाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए सदा प्रितपाल। प्रितपाल करे सदा प्रितपालक, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। हरिजन वेखे अञ्याणे बालक, बाली बुध आप समझाईआ। वसणहारा ख़लक ख़ालक, मख़लूक आपणी धार चलाईआ। लोकमात बणे सालस, शब्द शब्दी रूप धराईआ। गुरमुख वेखे ख़ालस, आप आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर निन्दरा आलस विच कदे ना आईआ। गुरसिख गुरमुख गुर गुर उठाया, दयानिध दीन दयाल। जगत तृष्ना भुक्ख गंवाया, देवे नाम सच्चा धन माल। अन्तर आत्म एका सुख वसाया, घर घर विच बणाए सच्ची धर्मसाल। जो बैठा लुक आपणा मुख दए वखाया, जन हरि हरिजन साचे भाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर हरिजन रिहा सुरत संभाल। सुरत संभाले शब्दी रंग, रंगण रंग चढ़ाईआ। नाम वजाए इक्क मृदंग, शब्द मृदंगा हथ्थ उठाईआ। आत्म सेजा वेख पलँघ, सच सिँघासण इक्क सुहाईआ। आप आपा करे अंगी अंग, आपणा अंगण आपे वेख वखाईआ। गुर गुर गुरसिख वसे सदा एका संग, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। थाउँ थाईं वेखणहारा, एका रंग समाइंदा। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा खेल करे अपर अपारा, नव सत फेरा पाइंदा। लक्ख चुरासी वेखे बन्द किवाड़ा, डूंग्घी गारा आपणी धार चलाइंदा। गुरमुख वेखे साचा लाड़ा, गुर सतिगुर आप उठाइंदा। नाम खण्डा देवे सच कटारा, तन गात्रे अंदर आप लटकाइंदा। जाम प्याए निझर धारा, निरवैर रूप दरसाइंदा। दीवा बाती जगाए इक्क उज्यारा, नूर नूराना डगमगाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, सेज सुहावी आप सुहाइंदा। गुरसिख गुर गुर करे प्यारा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। सुरती शब्दी लाए इक्क अखाड़ा, आपणा मंगल आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुर गुर वेख वखाइंदा। गुर गुर दीन दयाल गहर गुण ठाकर, सूरबीर वडी वड्याईआ। हरिजन निर्मल कर्म करे उजागर, निहकर्मी कर्म कमाईआ। सच वणजारा एका वस्त साचे हट्ट विकाए बणे सौदागर, वस्त अमोलक आपणी आप वखाईआ। एका नाम रती रत्नागर, जगत तोल ना कोए तुलाईआ। गुरमुख विरले देवे काया गागर, आपणी हथ्थीं आप टिकाईआ, सदा सुहेला करे आदर, गुरसिखां सेव कमाईआ। सेवक सेवादार करीम कादर, करता पुरख वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुर गुर मेले फड़ फड़ बांहीआ। फड़ फड़ बाहों आप उठाल दा, निरगुण सरगुण कर प्यार। करे खेल पुरख अकाल दा, दीनां अनाथां साचा यार। लेखा जाणे शाह कंगाल दा, शाह पातशाह सच्ची सरकार। रूप वटाए जगत दलाल दा, हरिजन वेखे विच संसार। नाता तोड़ काल महाकाल दा, आप आपणी किरपा धार। राह दस्से इक्क सुखाल दा, हरि चरन कँवल प्यार। गुरसिख गुरमुख जुगा जुगन्तर लोकमात आपे पालदा, अमृत प्याए प्यावणहार। दूजा दर ना कोए वखाल दा, आपे गुर आप अवतार। आपे सन्तां सुरत संभाल दा, देवे शब्द नाम आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, आप बुझाए लग्गी बसन्तर, गुरसिख काया सीतल सांतक सति सति आपे ठार। गुरसिख काया सीतल धार, सति सतिवादी आप कराईआ। अग्नी तत दए नवार, त्रैगुण माया रहिण ना पाईआ। नाता तोड़े मोह विकार, हँकार संघार ना कोए जणाईआ। तृष्ना चुक्के जगत विभचार, नार दुहागण ना कोए वखाईआ। साचा कन्त इक्क निरँकार, भगत भगवन्त लए मिलाईआ। साची सखीआं मिल मिल मंगलाचार, पंज दस वज्जे वधाईआ। पाया वर हरि घर नर एका वार, नारी नरायण नर इक्क प्रनाईआ। वसे महल्ल अटल उच्च मुनार, सोभावन्ती नार सुहागण, घर साचे सोभा पाईआ। गुर चरन धूढ़ी बणे नाल लागण, सौहरे पेईए सगला संग निभाईआ। पाया कन्त होई वैरागण, बिरहों बिरहों बिरहों आप जगाईआ। नाता तुट्टा सौणा जागण, सोवत जागत एका रंग वखाईआ। तन श्रंगार बस्त्र भूशन अपर अपार, नेत्र नैणां कजला धार, प्रेम प्रीतम आत्म रस जोबन तत इक्क वखाईआ। सुघड़ सुवाणी सतिगुर चरन दुआरे होए वस, दूसर नैण ना कोए उठाईआ। हरि जू हरि हरि हिरदे अंदर जाए वस, हरयावल रुत्त बसन्त एका महिक महिक महिक महिकाईआ। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिस सतिगुर पाया साचा कन्त, कन्नी सुणन नाउँ दूजे घर ना जाईआ। घर मन्दिर घर गुरदुआर, घर ठाकुर घर स्वामी घर भतार, घर बह बह करो मिन्नत, निवण सो अक्खर एका गुण समझाईआ। कलिजुग अन्तिम कोई पा ना सके करके आपणी हिम्मत, सतिगुर पूरा आप आपणी किरपा कर, पूर्ब जन्म वेख लेख, मेला लए मिलाईआ। साध सन्त जीव जंत उतर पूर्ब पच्छिम दक्खण वेखण चारे सिम्मत, सिमर सिमर सिमर रसना जिहवा बत्ती दन्द घसाईआ। अन्तर आत्म गुण ना आया इक्क निमरित, निम्मरताई तन ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुर गुर मेला सहिज सुभाईआ। गुर मेला घर गहर गम्भीर, गुणी गहिन्द गुण गाया। तन मन सांतक सति सरीर, त्रैगुण अग्न बुझाया। शब्द निराला अणयाला वज्जे तीर, तिक्खी मुखी जगत दुखी दुःख गंवाया। भर प्याला बख्शे अमृत सीर, वड पीरन पीर शहिनशाह सच्चा पातशाहया। लक्ख चुरासी कटे ज़ंजीर,

चोटी चाढ़े इक्क अख़ीर, सिर आपणा हथ्थ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख वेखे ग़रीब निमाणा, सरन सरनाई चरन कँवल रखाए इक्क ध्याना, आत्म अन्तर उपजाए ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म बहाए पद निरबाना, निरबाण आपणा बाण लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां देवे आपा दान, गुरसिख जीवत मुक्त सदा जग जाण, साहिब सतिगुर होए मेहरवान, मेहरवान वडी वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी एका काहन, लक्ख चुरासी चार खाणी जीव जंत साध सन्त गुर पीर अवतार नारी रूप सर्ब प्रनाईआ।

★ २१ माघ २०१७ बिक्रमी जेठूवाल ★

एका ओट हरि निरँकार, आदि जुगादि होए सहाईआ। हरिजन हरि सतिगुर लए उभार, जुगा जुगन्तर वेख वखाईआ। कोटन कोटि जन्म दी मैल दए उतार, दुरमति मैल आप धवाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्म धार, धुर दरबारी हरि रघुराईआ। एका ओट आदि जुगादि, सति पुरख आप रखाईआ। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्मादि, पारब्रह्म भेव ना आइंदा। शब्द वजाए अनादी नाद, धुर दी बाणी बाण अल्हाइंदा। लेखा जाणे बोध अगाध, अनुभव आपणी खेल खिलाइंदा। मेल मिलावा सन्तन साध, सन्त साजन वेख वखाइंदा। गुरमुख विरले हरि हरि लाध, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। मेल मिलावा मोहन माधव माध, मेहरवान मेहरवान सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका ओट पुरख अकाल, दूसर दर ना कोई वखाइंदा। एका ओट पुरख अकाला, हरि भगतन वड वड्याईआ। पारब्रह्म पति परमेश्वर जुगा जुगन्तर दस्से राह सुखाला, हरिजन साचे मार्ग पाईआ। शब्द सरूपी बण दलाला, दो जहानां वेख वखाईआ। काया मन्दिर अंदर आप सुहाए सच्ची धर्मसाला, डूँघी कंदर फोल फुलाईआ। रसना जिहवा बणाए साची माला, मन का मणका आप भवाईआ। अनहद शब्द वजाए ताला, ताल तलवाड़ा इक्क वखाईआ। अमृत आत्म जाम प्याए मदि प्याला, निझर झिरना आप झिराईआ। लहिणा देण चुकाए काल महाकाला, त्रैकाल दरसी आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। फल लगाए साचे डाल्हा, गुरमुख गुरमुख पत डाल्ही आप महिकाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाला, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन एका ओट दरसाईआ। एका ओट श्री भगवान, दूसर अवर ना कोई जणाइंदा। एका बख्शे चरन ध्यान, चरन प्रीती इक्क समझाइंदा। एका अक्खर शब्द ज्ञान, निश अक्खर आप पढ़ाइंदा। एका तीर निराला बाण, नाम निधाना आप लगाइंदा। एका मन्दिर

सच मकान, काया गढ़ बंक सुहाइंदा। एका अमृत पीण खाण, घर घर विच आप प्रगटाइंदा। एका शब्द नाद धुन्कान, अनादी धुंन आप वजाइंदा। एका जोत नूर महान, जोत निरँजण डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन एका ओट चरन कँवल समझाइंदा। एका ओट श्री भगवन्त, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। मेल मिलावा साचे कन्त, घर मेला सहिज सुभाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। एका नाम मणीआ मंत, मन वासना रहे ना राईआ। गुरमुख साजण सोभावन्त, गुरमुख जिस पाया शाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट एका तत, एका देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म रूप सर्ब दरसाईआ। एका ओट आदि निरँजण, आदि अनादी खेल खिलाइंदा। एका दाता दर्द दुःख भय भजन, भव सागर पार कराइंदा। एका चरन धूढ़ी बख्शे मजन, नेत्र नैण इक्क खुल्हाइंदा। एका दो जहानां बणे साचा सज्जण, सगला संग आप निभाइंदा। एका होए पर्दे कज्जण, समरथ सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन एका ओट तकाइंदा। एका ओट लैणी रक्ख, गुर सतिगुर सति दरसाया। पुरख अबिनाशी होए प्रतक्ख, जन भगत दरस दिखाया। लक्ख चुरासी विचों लए रक्ख, ढूंडत ढूंडत आपणी सेव कमाया। जन भगतां सदा करदा आया पक्ख, पारब्रह्म वडी वड्याआ। गहर गम्भीर मार्ग साचा दस्स, आपणा पर्दा आप उठाया। हिरदे अंदर हरि जू वस, हरि के पौड़े दए चढ़ाया। गृह मन्दिर करे प्रकाश कोटन रवि ससि, नूरो नूर समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका ओट एका हरि, हरिमन्दिर बैठा डेरा लाईआ। हरिमन्दिर हरि हरि आसण, हरि साची सेज सुहाईआ। इक्क इकल्ला पुरख अबिनाशन, निरवैर सोभा पाईआ। जन भगतां बणे दासी दासन, जगत जुगत सेव कमाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशन, गगन मंडल वेख वखाईआ। साचे मन्दिर पावे रासन, रूप अनूप आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट एका आस, एका इष्ट जणाईआ। एका इष्ट हरि गुरदेव, सेवक सेवा सच जणाइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता अलख अभेव, अलख अलखणा आपणी खेल खिलाइंदा। गुरमुख विरला गाए रसना जिहव, जिहवा रसना आपणी धार चलाइंदा। अमृत आत्म बख्शे साचा मेव, अंमिउँ रस आपणा आप चुआइंदा। सदा सदा हरि निहकेव, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका ओट एका राह, एका गुर इक्क मलाह, एका बेड़ा आप तराइंदा। एका बेड़ा सतिगुर मलाह, शहिनशाह सेव कमाईआ। जुगा जुगन्तर लोकमात तेरा धरनी धवल दए वड्याईआ। नाउँ निरँकारा चप्पू ला, चार कुण्ट चार जुग चार वरन सेव कमाईआ। हरिजन लभ्भे थाउँ थाँ, नौं खण्ड सत्त दीप ब्रह्म पारब्रह्म आप खुजाईआ। करे कराए सच

न्याँ, तख्त निवासी शाहो भूप तख्त बैठा बेपरवाहीआ। हँस बणाए फड़ फड़ काँ, जिस जन आपणी दया कमाईआ। जन भगतां देवे सदा सद ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका ओट इक्क ध्यान, एका शब्द इक्क ज्ञान, एका रूप श्री भगवान, एका नूर दए दरसाईआ। एका नूर हरि करतारा, करता पुरख आप दरसाइंदा। लेखा जाणे अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ा वेस वटाइंदा। दो जहाना हो उज्यारा, आपणी खेल खिलाइंदा। सन्त कन्त कर प्यारा, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। आदि अन्त नाम अधारा, जीव जंत इक्क रखाइंदा। नाद धुन बोल बोल जैकारा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। घट घट अंदर रूप उज्यारा, जोती जाता जोत जगाइंदा। घर विच घर कर पसारा, अंदर अंदर आसण लाइंदा। डूंघी भँवरी हो उज्यारा, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर रूप ना कोई दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका ओट एका हरि, इक्क दुआर एका दर, इक्क नरायण एका नर, नर हरि आप अख्वाइंदा। नर हरि हरी नरायण, वड दाता बेपरवाह। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर साक सज्जण सैण, जन भगतां पिता मां। आप चुकाए लहण देण, वेखणहारा थाउँ थाँ। लक्ख चुरासी वहे आपणे वहण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे एका वर, एका अक्खर एका नाँ। एका अक्खर नाउँ दृढ़ाया, कर किरपा गुण निधान। सो पुरख निरँजण रूप धराया, हँ रूप सर्ब पछाण। सोहँ आपणा वेस वटाया, आपे वेखे श्री भगवान। ब्रह्म पारब्रह्म मिलाया, मेल मिलावा दो जहान। पंज तत ना तत रखाया, तत्व तत ना कोए ध्यान। रती रत ना कोई रंगाया, करे खेल हरि मेहरवान। साचा रथ आप चलाया, रथ रथवाही नौजवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे माण। हरिजन माण रखंदड़ा, हरि सतिगुर दीन दयाल। गुरमुख सज्जण मेल मिलंदड़ा, कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान। आप आपणे रंग रगंदड़ा, रंग रंगाए इक्क महान। जोती भट्ठी आप तपंदड़ा, हरि साचा बली बलवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे चतर सुजान। चतुर सुजान गुरमुख लध्धा, हरि सतिगुर सेव कमा। सति सरूपी तन तागा बध्धा, ना कोई देवे मात तुड़ा। लक्ख चुरासी विचों कढ्ढा, डूँघी भँवरी कलिजुग सागर कलिजुग गोता ना जाए खा। आप लडाए आपणा लडा, आपणी गोदी आप बहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तरा। तारन को हरि एक गुर, गुरु गुर वडी वड्याईआ। मेल मिलाए लिख्या धुर, धुर संजोगी आप हो जाईआ। चेला गुर गुर चेला एका दर गए जुड़, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। नाता तुट्टा मोर तोर, तोरा मोरा रहे ना राईआ। होए प्रकाश अन्ध घोर, अन्ध अन्धेर दए चुकाईआ। पंचम पंच ना पाए शोर, पंचम

पंच ना कोई वड्याईआ। पंचम बंधाए आपणी डोर, पंचम मोह चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जणाए आपणा नूर, पंचम नाद शब्द शनवाईआ। पंचम नाद शब्द धुन्कार, गुरसिख रंग रंगाया। गुर सतिगुर पाया एका वार, दूजे दर ना मंगण जाया। गुरचरन सदा बलिहार, बलिहारी बलिहार गुर विचों मोह चुकाया। नेत्र नैण दरस कर दीदार, त्रै त्रै धार फंद कटाया। नाता छुटा सर्ब संसार, जिस जन सतिगुर पूरा नज़री आया। कागद कलम जुगा जुगन्तर उच्ची कूके करे पुकार, वेद कतेब शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान बाणी खाणी दए ग्वाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेले आपणे घर, एका ओट चरन रखाया। एका ओट चरन गुर सागर, गहर गम्भीर दरसाईआ। जन भगत भगवन्त देवे नाम रती रत्नागर, रतन अमोलक आप बणाईआ। काया धरत वखाए सिन्ध सागर, ताल सुहावा आप सुहाईआ। जिस जन कराए नाम सौदागर, वणज वणजारा हरि निरँकारा एका हट्ट दए खुल्हाईआ। मेल मिलावा करता कादर, कादर कुदरत वेखे बे परवाहीआ। आदि जुगादि दरगाह साची जन भगतां देवे आदर, जो जन बैठे ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका ओट हरि निरँकार, डुबदे पाथर जाए तार, जिस पाहन आपणा चरन छुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग करता करता पुरख आप अख्वाईआ।

★ २३ माघ २०१७ बिक्रमी जेठूवाल ★

सो पुरख निरँजण सच्चा पातशाह, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजन बेपरवाह, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। एकँकारा इक्क इकल्ला बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलाईआ। आदि निरँजण जोती नूर डगमगा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। श्री भगवान वसणहारा साचे थाँ, सचखण्ड दुआर सोभा पाईआ। अबिनाशी करता आपे कर सच न्याँ, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। पारब्रह्म आपे बणे आपणा पिता मां, सुत दुलार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, आपणी कल आप धराईआ। इक्क इकल्ला खेल न्यारा, हरि निरँकार आप आपणी धार चलाइंदा। वसणहारा धाम सचखण्ड दुआरा, महल्ल अटल मुनार आप सुहाइंदा। निरगुण दीवा बाती कर उज्यार, बैठा ठांडे दरबार, सोभावन्त हरि भगवन्त आदि अन्त सोभा पाइंदा। घाड़न घड़े अपर अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, आपणी धार आप चलाइंदा। सो पुरख निरँजण साची धार, हरि पुरख निरँजण आप चलाइंदा। एकँकारा खेल महान, आदि निरँजण रूप धराइंदा। श्री भगवान वसणहार सचखण्ड मकान, अबिनाशी करता

सोभा पाइंदा। पारब्रह्म हरि हो प्रधान, आपणा बल आप उपजाइंदा। दूसर ना अवर कोई निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। साचा खेल खेलणहारा, एका रंग समाया। आदि पुरख निरँजण एकँकारा, अनुभव प्रकाश कराया। अजूनी रहत निरभउ निरवैर अभेव अभेद अलख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह आपणा आप लए प्रगटाया। आपे लए आपणा मार्ग ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका हरि, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा साचा धाम आप सुहाया। सो पुरख निरँजण साचा घर, थिर घर आप सुहाईआ। निरगुण निरवैर जोत धर, अंदर वड़ आसण लाईआ। आपणी करनी आपे कर, आपणी कल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, दर घर साचे सोभा पाईआ। साची धार हरि करतार, आपणी आप चलाईआ। अनुभव रूप कर प्रकाश, पुरख अबिनाशी साचे मन्दिर आपे सोभा पाईआ। आपे खेले खेल तमाश, आपणी रास आपणे मंडल आप चलाईआ। आपे वसे आपणे पास, दूसर संग ना कोई रलाईआ। आपे आपणी पूरी करे आस, आपणी इच्छया भिच्छया आपे झोली पाईआ। आपणा गुण आपे लए प्रगटा, सर्ब कला भरपूर आप अख्वाईआ। आपणा मन्दिर आपणे अंदर आपे घाड़न रिहा घड़ा, आपे बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाश आपे जाणे खेल तमाशा, आपणी खेल आप खिलाईआ। साचा खेल खेल तमाश, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। आपे सेवक आपे दासी दास, आपणा हुक्म धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा आपे खोल्ह, आपणी दया कमाइंदा। आपणा तोले आप तोल, तोलणहारा आप अख्वाइंदा। एकँकारा बैठा रहे अडोल, अडुल आपणा नाउँ धराइंदा। साची वस्त रक्खे आपणे कोल, आपणे हट्ट आप विकाइंदा। आपणा नाउँ निरँकार आपे बोल, आपणा गीत आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आप आपणा वेस वटाइंदा। वेस वटंदड़ा हरि करतारा, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। सुते प्रकाश हो उज्यारा, नूर ज़हूर इक्क दरसाईआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगारा, आप आपणा एका रंग दए चढ़ाईआ। एका बोल इक्क जैकारा, एका नाअरा हक लगाईआ। एका नाम एका धारा, एका करे साचा काम एका राम राम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साचे मन्दिर बैठा चढ़, तख्त निवासी सच्चा शहिनशाहीआ। श्री भगवान आपणा घाड़न घड़, आपणी दया आप कमाइंदा। आदि निरँजण आपणा लड़ आपे फड़, आप आपणा मेल मिलाइंदा। एकँकार ना पुरख ना नारी नर, निरँकार आपणा नाउँ धराइंदा। आदि निरँजण आपणे अंदर आपणी जोत आपे बल, नूरो नूर डगमगाइंदा।

अबिनाशी करता आपे वसे धाम अटल, महल्ल साचे आसण लाइंदा। श्री भगवान आपे होए अछल अछल, अछल छल आपणा खेल खिलाइंदा। पारब्रह्म सचखण्ड बैठा आसण मल, आप आपणा आसण लाइंदा। नर नरेश आपणा संदेश आपे घल्ल, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। आपणा वेख धारे आपे बल, बल देवणहार हरि मेहरबान, आपणी कल आप वरताइंदा। आपणा बिरद आपे पाल आपे होए नौजवान, रेख भेख ना कोई जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका आपणी खेल आप खिलाइंदा। आपणी खेल खिलावणहारा, एका खेल खिलाईआ। आपणा नूर कर उज्यारा, नूरो नूर विच धराईआ। आपणे मन्दिर कर पसारा, आपे वेख वखाईआ। आपणी इच्छया आपे बणे वरतारा, साची भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी आस आपे लए प्रगटाईआ। आपणी आसा आपे रक्ख, श्री भगवान खेल खिलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ पुरख समरथ, आपणा रथ आप चलाइंदा। हरि मन्दिर बणाए इक्क अनडिठ, रूप अनूप ना कोई हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपणे अग्गे प्रगटाइंदा। आपणी इच्छया आपणे अग्गे रक्ख, पारब्रह्म आपणी दया कमाईआ। आपे देवणहारा वर, वड दाता बेपरवाहीआ। आपणी खेल आपे कर, खेल खिलारी दर साचे सोभा पाईआ। आपणा रूप आपे धर, नर नरायण नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी बणत आपे लए प्रगटाईआ। आपणी बणत आप बणा, आपणा आप धराया। आपणी नारी आप प्रना, साचा कन्त आप हंढाया। आपणी सेज आप सुहा, सगला संग आप रखाया। आपणा सुत दुलारा आपे जा, आपणी गोद सुहाया। दो जहाना नाउँ धरा, पुरख अबिनाशी सेव कमाया। साचे मन्दिर आसण ला, सच सिंघासण सोभा पाया। निरगुण दीवा बाती कर रुशना, आदि निरँजण आप जणाया। आपणा हुक्म धुर फ़रमाना आप जणा, आपे निउँ निउँ सीस झुकाया। तख्त निवासी सच्चा पातशाह, आपणा नाउँ आप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा बन्धन आपे पाया। आपणा बन्धन हरि हरि पा, आपे मेल मिलाइंदा। आपे नारी नर रूप धरा, आपे सुत दुलारा जाइंदा। आपे हुक्मी हुक्म वरता, आपे हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप वखाइंदा। आपणा बल वड बलवान, आपे आप धराईआ। आदि पुरख नौजवान, दूसर रूप ना कोई वटाईआ। आपणा भेख करे वाली दो जहान, दो दो लेखा आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव अभेद आपे दए खुल्हाईआ। हरि भेद अभेद खुलाइंदा, आप आपणी किरपा धार। सो पुरख निरँजण आप आपणा नाउँ प्रगटाइंदा, हरि पुरख निरँजण करे प्यार। एकँकारा मेल मिलाइंदा, आदि निरँजण

मीत मुरार। अबिनाशी करता संग निभाइंदा, हरि भगवान सांझा यार। पारब्रह्म वेख वखाइंदा, अनुभव रूप कर उज्यार। साचे मन्दिर सोभा पाइंदा, सचखण्ड सच्चे दरबार। आपणा हुक्म आप वरताइंदा, आपे करे करनी कार। आपणी इच्छया वेख वखाइंदा, आपे भरे सति भण्डार। आपणा तख्त आप सुहाइंदा, आपे घाड़न घड़े अपार। पावा चूल ना कोई बणाइंदा, ना कोई बाढी करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप कमाइंदा। साची सेवा आपे कर, आपणा तख्त आप वड्याईआ। सच सिँघासण आपे धर, आपे वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआरे उप्पर बैठा चढ़, रूप रेख ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण सोभावन्त, इक्क इकल्ला श्री भगवन्त, दूसर संग ना कोई रखाईआ। सच सिँघासण सच्ची सरकार, हरि साचा आसण लाईआ। निरगुण रूप निरगुण धार, निरगुण आपे प्रगट होया मात पित ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण सोभावन्त, पुरख अबिनाशन इक्क सुहाईआ। साचे तख्त शाहो भूप, हरि साचे सच सुहाया। आपे वेखे आपणा रूप, निरगुण निरगुण वेस वटाया। लेखा जाणे आपणी कूट, दूजी दिशा ना कोई वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाया। हरि साचा खेल खिलाइंदा, कर किरपा गुण निधान। आपणा हुक्म आप सुणाइंदा, आपे देवे धुर फ़रमान। साची घाड़त घड़त आप घड़ाइंदा, लेखा जाणे जाणी जाण। सो पुरख निरँजण सेव कमाइंदा, हरि पुरख निरँजण हो मेहरवान। श्री भगवान बन्धन पाइंदा, पंचम रंग इक्क वखान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा रूप आप धराइंदा। पंचम मेला जोड़ जुड़ा, हरि साची खेल खिलाईआ। पंचम मुख मुक्ख धरा, पंचम देवे माण वड्याई। पंचम जोत जोत रुशना, पंचम नूरो नूर डगमगाईआ। पंचम देवे साचा थाँ, थान थनंतर सोभा पाईआ। पंचम देवे दरस बेपरवाह, पंचम आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मुख मुख हरि ताज, आपणा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग हरि करतार, आपणा आप चलाइंदा। निरगुण निरगुण कर प्यार, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण बाहर, निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहर, साची खेल खिलाइंदा। निरगुण नूर जोती धार, निरगुण धूंआँधार समाइंदा। निरगुण राज राजान शाह सिक्दार, निरगुण आपणा हुक्म सुणाइंदा। निरगुण शाह पातशाह हुक्म सुणाए आपणी वार, निरगुण निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अलख अगोचर अगम्म अथाह, एका खेल करे बेपरवाह, बण मलाह आपणा बेड़ा आप चलाइंदा। साचा बेड़ा कर त्यार, हरि आपणी दया कमाईआ। सच सिँघासण बैठे सच्चा दरबार, हरि सच्चा शहिनशाहीआ। एका हुक्म इक्क

वरतार, एका भाणे रिहा समाईआ। आपे होए जाणी जाण, हरि निरँकार जानणहार इक्क अख्वाईआ। आपणी इच्छया आपे लए उच्चार, सचखण्ड मिले वधाईआ। घर विच घर लए उभार, थिर घर साचा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। साचा घर उपजाया, कर किरपा मेहरबान। मन्दिर अंदर आप सुहाया, आपे होया निगहबान। आपणा दीप आप जगाया, आपे वेखे मार ध्यान। छप्पर छन्न ना कोई छुहाया, ना कोई दीसे चार दीवार। सूरज चन्न ना कोई चढ़ाया, मंडल मण्डप ना दए सहार। गगन पाताल ना कोई वखाया, ज़िमीं अस्मान ना दए सहार। इक्क इकल्ला वेस वटाया, आदि पुरख एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कार। थिर घर साचा खोल्या, घर घर विच कर त्यार। करे खेल हरि अडोल्लया, इक्क इकल्ला एकँकार। आपणी धार आपणे विचों आपे बोल्लया, आप आपणा करे उज्यार। आपणा भण्डारा आपे खोल्या, आपे लए परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे पाए आपणी सार। सचखण्ड थिर घर अपारा, हरि साचे सच उपजाया। सचखण्ड दुआरे आप निरँकारा, थिर घर शब्दी मेल मिलाया। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, गृह मन्दिर आप सुणाया। आपे होए सुनणहारा, दूसर अवर ना कोई जणाया। आदि पुरख खेल अपारा, आपणी धारा आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याआ। हरि इच्छया शब्द नाउँ, नाम नामा नाम वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करे चाउ, चाउ घनेरा इक्क वखाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल पकड़े बांहो, पकड़नहारा सहिज सुखदाईआ। सति सतिवादी बणया पिता माउँ, अजूनी रहत दिस ना आईआ। शब्द सुहेला इक्क अकेला सद देवे ठंडी छाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्दी शब्द सुत दुलारा कर त्यारा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। सचखण्ड जोत जगाए अगम्म अपारा, थिर घर अनादी नाद वजाइंदा। लिखे लेख अपर अपारा, अपरम्पर आपणा रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा। आपणी इच्छया आपणा बल धार, आपे सेव कमाईआ। आपे पुरख आपे नार, कन्त कन्तूहल आपणे मन्दिर सोभा पाईआ। आपे करे सच प्यार, सच सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। आपे गाए आपणा मंगलाचार, गीत गोबिन्द आप अलाईआ। आपे खेल करे अपार, खेलणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निराकार वडी वड्याईआ। निराकार निरवैर निराहार समाया, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपणा भेव ना किसे जणाया, भेव अभेदा आप अख्वाईआ। बोध अगाध अगाध बोध जणाया, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। आपणी इच्छया आपणा नाद

वजाया, आपे लए सुणाईआ। आपणी इच्छया साची वस्त एका दाद झोली पाया, आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता इक्क इकल्ला एकँकारा, साचे मन्दिर हो उज्यारा, थिर घर वेखे आप पसारा, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, हरि साचा सच जणाइंदा। साचे तख्त बैठा साचा राणा, शहिनशाह आपणा खेल आप खिलाइंदा। आपणा देवे आपे माणा, आपणा माण आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपे होए जाणी जाणा, जानणहार आपणा रंग आप रंगाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण धर, निरगुण खेल कराया। निरगुण मन्दिर निरगुण वड़, निरगुण मेल मिलाया। निरगुण सेजा निरगुण बैठा चढ़, निरगुण रंग रंगाया। निरगुण विद्या निरगुण रिहा पढ़, निष्अक्खर आप प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराया। हरि मन्दिर रूप धराइंदा, निरगुण दाता मेहरवान। आपणी कुक्ख आप सुहाइंदा, आपे देवे दानी दान। आपणा मुख उज्जल आप कराइंदा, आप वेखे आपणा आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। श्री भगवान दया कमा, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणा रूप आप प्रगटा, विष्न विश्व आपणा नाउँ धराईआ। वास्तक खेल आपे रिहा खिला, आप आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त वस्त अनमोल आपणे कंडे देवे तोल, साचा कंडा हथ्थ उठाईआ। विष्नूं अंदर विश्व भण्डार, हरि साचे सच धराया। आपणी किरपा आपे धार, आप आपणा मेल मिलाया। आपणे चरना आपे बख्शे सच प्यार, आपे लेखा दए समझाया। आपणी धारा ठंडा ठार, आपे अमृत मेघ बरसाया। आपे नाभी कँवल कर त्यार, आप आपणा विच समाया। आपे हुक्मी हुक्म कराए साची कार, हुक्म हाकम आप अलाया। आप कँवल कँवला खिड़ी गुलज़ार, पत डाली आप महिकाया। आपे पारब्रह्म आपणी वण्ड वण्डे निरँकार, हरि निरँकार भेव किसे ना पाया। आपे वेखे पंखड़ीआं खिली गुलज़ार, महिक महिक आप महिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणी धार एका हरि वेख वखाया। आपे फुल कँवल नाभ, नाभी कँवल आप उपजाईआ। आपे विष्न मेला माधव माध, आपे भगवान वेस वटाईआ। आपे देवणहारा दाद, आपे झोली अग्गे डाहीआ। आपे होए रहे विस्मादि, विस्मादी विसमादि भेव ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे आपणी रचना आपे वेख वखाईआ। आपे कँवल कँवल उज्यार, आपे नाभी अमृत कँवल मुख चुआइंदा। आपे पारब्रह्म ब्रह्म भेव न्यार, दिस किसे ना आइंदा। आपे ब्रह्म कर पसार, पारब्रह्म खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे

विष्न आपे ब्रह्मा, आपणे अंदरों आपे जम्मा, मात पित ना कोई बणाइंदा। आपणा जन्म आपे धार, आपे वेख वखाइंदा। आपे विष्न करे प्यार, आपे ब्रह्मा सेव कमाइंदा। आपे आपणा लेखा जाणे हरि निरँकार, लेखा लेख ना कोई वखाइंदा। मेल मिलावा सचखण्ड दुआर, सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा। आपे थिर घर साचा खोल्ह किवाड़, आपणा पर्दा लांहयदा। आपे अमृत बख्शे ठंडा ठार, चरन चरनोदक मुख चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाइंदा। आपे वसे धाम न्यार, आपे धूंआँधार समाया। आपे सुन्न अगम्मी खेले खेल न्यार, आपे आकाश प्रकाश समाया। आपे वसया सभ तो बाहर, दिस किसे ना आया। आपे आपणी इच्छया बण वरतार, आपे साची भिच्छया लए प्रगटाया। आपे ब्रह्मा वेता करे प्यार, आपे शंकर मूल रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, अनादी सुत नाउँ धराया। अनादी सुत हरि निरँकार, आपणा आप प्रगटाईआ। आपे विष्न करे प्यार, आपे ब्रह्मा पारब्रह्म मिलाईआ। आपे शंकर लेखा एका धार, गुणवन्ता गुण वड्याईआ। तिन्नां विचोला बण करतार, करता पुरख खेल खिलाईआ। देवे वस्त अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाईआ। विष्न उठाया हरि करतार, एका हुक्म सुणाइंदा। तेरा रूप अगम्म अपार, पुरख अबिनाशी आप बणाइंदा। साची वस्त देवे थार, अतोट अतुट रखाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची सोभा पाइंदा। आदि जुगादि किरती कार, करता आपणी आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव आप खुलाइंदा। विष्नूं उठ कर ध्यान, हरि साचे सच जणाया। मेरा हुक्म सच्चा फ़रमान, तेरी सेवा इक्क जणाया। तेरा रूप दो जहान, दो जहानां लए प्रगटाया। मेरा नाउँ तेरा निशान, हरि निरँकारा लए झुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे आपणा दान। आपणी दया आप कमाया। विष्नूं सुणया कर ध्यान, हरि साचे सच जणाया। अग्गे उठया बाल नादान, निउँ निउँ सीस झुकाया। तूं शाह पातशाह राज राजान, हउँ सेवक सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दुआरा मंगण तेरा आया। विष्नूं मंगे मंग अपार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। कर किरपा आप निरँकार, दर दरवेश बैठा सीस झुकाईआ। कवण दुआर करां कार, कवण सेवा मोहे बण आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सिख्या दए समझाईआ। हरि पुरख निरँजण सति समझाइंदा, निष्अक्खर आप पढ़ा। विष्नूं तेरा विश्व रूप वखाइंदा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। आपणी धारा तेरे विच टिकाइंदा, जोती जोत जोत समा। तेरा किला कोट इक्क वसाइंदा, तेरे बंक डेरा ला। आपणा रंग आप रंगाइंदा, उतर कदे ना जा। एका मृदंग सच सुणाइंदा, नाद

अनादी धुंन वजा। आपणा पन्ध आप मुकाइंदा, स्वच्छ सरूपी दरस दिखा। साचे धन्दे आपे लाइंदा, घर घर देणा रिज़क पुचा। आपणी वण्डन आप वंडाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सिफ्त सालाह। साची मंग मंग दुआर, विष्नूं सीस झुकाया। कवण घर कवण दर कवण हर करां पसार, कवण वेस अनेक वटाया। कवण भउ कवण भय कवण रक्खां डर, कवण नेत्र नैण शरमाया। कवण दुआर सरन सरनाई जावां पड़, सीस जगदीश इक्क झुकाया। कवण दुआरा जाणा वड़, सच सिँघासण वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, विष्नूं विश्व बैठा अग्गे झोली डाहया। पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा, हरि वड्डा बेपरवाह। विष्नूं तेरी सेवा सच लगाइंदा, हर घट अंदर जाणा समा। तेरे वस्त इक्क हथ्थ रखाइंदा, घर घर देणा रिज़क पुचा। नव नव तेरा बंध आपे पाइंदा, चार चार लेखा दए समझा। जुग चौकड़ी तेरी गोद बहाइंदा, वड दाता बेपरवाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, अभुल्ल रूप आप अख्वा। विष्नूं वर घर साचा पाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। ब्रह्मे उठ सीस निवाया, हरि चरन कँवल ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेख वखाया, हरि एका हरि हरि नज़री आईआ।

१६५ नूरो नूर डगमगाया, तत्व तत ना कोए बणाईआ। सच संदेशा रिहा सुणाया, रसना जिहवा ना कोए हिलाईआ। काग़ज़ कलम ना कोए रखाया, ना कोई रक्खे शाहीआ। हरि नर नरेश साचे तख्त बैठा सोभा पाया, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। ब्रह्मा वेता बाल अंञाणा आप उठाया, दे मति रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणी रचना आपे रिहा रचाईआ। ब्रह्मे उठ बाल नादान, हरि साचा आप उठाइंदा। पुरख अकाल होया मेहरबान, दीन दयाल दया कमाइंदा। अमृत आत्म बख्शे पीण खाण, तृष्ना तृप्त ना कोए जणाइंदा। चरन कँवल वखाए सच मकान, मंडल मण्डप आप सुहाइंदा। दाता दानी देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। तेरा नाउँ साचा बाण, आत्म बाण इक्क लगाइंदा। तेरा रूप इक्क महान, पारब्रह्म ब्रह्म आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा सोभा पाइंदा। ब्रह्म धार चलाई पारब्रह्म, ब्रह्म वज्जी वधाईआ। आदि पुरख ना मरे ना पए जम्म, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। करता पुरख जाणे आपणा कम्म, करनी किरत रिहा कमाईआ। हरख सोग ना ख़ुशी ग़म, एका रंग रखाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, पारब्रह्म ब्रह्म लेखा दए जणाईआ। आपे जणया बण जणेंदी माई जण, दाई दाया सेव कमाईआ। आपणा राग सुणाया कन्न, आपणा पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दिता एका वर, भुल कदे ना जाईआ। ब्रह्मे वर घर हरि साचा पाया,

दर साचे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाश तेरी सरनाया, हउँ बालक मंग मंगाईआ। कवण रूप सति सरूप तेरा दर्शन पाया, कवण नूर रुशनाईआ। कवण कूट हरि डेरा लाया, कवण रसन सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ मंगण भिखारी आईआ। हरि भिखक भिखारी याचक देवे दान, दीना नाथ दया कमाइंदा। ब्रह्मे देवे धुर फ़रमान, सच संदेश इक्क सुणाइंदा। तेरा मेरा एका माण, तेरा रूप आपणा रूप धर वखाइंदा। मेरा नाउँ सच्चा निशान, नाउँ निरँकार आप प्रगटाइंदा। लेखा जाणे श्री भगवान, लिख्त लेख ना कोए वखाइंदा। निश्अक्खर रूप कर प्रधान, पारब्रह्म ब्रह्म वेख वखाइंदा। सोहँ रूप चले महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण वसे एक घर, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। ब्रह्मे तेरी साची सेव, अलख अभेव आप जणाइंदा। मेरा नाउँ तेरी जिहव, तेरी जिहव गीत एका गाइंदा। मेल मिलावा हरि निहकेव, नेहचल धाम सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, दर घर साचे वेख वखाइंदा। साचा वर हरि इक्क जणाया, अतोट अतुट वडी वड्याईआ। लक्ख चुरासी तेरी झोली पाया, घड़नहार इक्क शहिनशाहीआ। शंकर तेरा मेल मिलाया, धूंआँधार सुन्न अगम्म फोल फुलाईआ। आपणा लेखा हथ्थ फड़ाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख पुरख हरि, निरभउ ना रक्खे कोए डर, भय विच कदे ना आया। शंकर उठाया किरपा निध, आपणी खेल आप खिलाईआ। आपे जाणे आपणी बिध, आपणा भेव आप समझाईआ। एका नाम निधान देवे अमृत सिंच, हरयावल हरया आप कराईआ। आपे मन्दिर रिहा भिंच, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका खण्डा हथ्थ फड़ाईआ। किरपा कर गुण निधान, एका खेल खिलाइंदा। इक्क वखाए सच निशान, चरन धूढ़ आप वखाइंदा। सच बिभूती देवे दान, ख़ाकी ख़ाक रमाइंदा। एका अन्तर इक्क ज्ञान, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। एका वेखे होए निगहबान, एका साची सेव कमाइंदा। एका देवे धुर फ़रमान, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। शंकर मेटणा इक्क निशान, जो घड़या भन्न वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। शिव विष्न ब्रह्मा हरि बन्धन पा, एका हुक्म सुणाया। तिन्नां बण विचोला मलाह, साचा बेड़ा आप वखाया। तिन्ने ढह पए सरना, नेत्र नैणां नीर वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ख़ाली हथ्थ रहे वखाया। तिन्नां वखाए ख़ाली हथ्थ, वस्त अमोलक हथ्थ ना कोए जणाईआ। पारब्रह्म पति साडी रक्ख, दर आए बैठे राह तकाईआ। साची वस्त झोली घत्त, तेरी सेव लईए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, आपणी

दृष्टी आपे पाईआ। आपणी दृष्टी हरि हरि पाए, विष्न ब्रह्मा शिव तृप्त कराया। आपणी सृष्टी आप रचाए, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरपा आपणी वण्डण आप वण्डाया। आपणी किरपा आपे धार, आपे दया कमाइंदा। तिन्नां देवे वस्त अपार, त्रैगुण आपणे रंग रंगाइंदा। सतो गुण सति विचार, विष्न करे इक्क प्यार, एका रंग रंगाइंदा। रजो रंग जाणे निरँकार, ब्रह्मा लेखा जाणे अंदर बाहर, दर दुआर आप सुहाइंदा। तमो करे आप विचार, शंकर संसा दए निवार, एका रंगण एका बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां मेला एका घर, एका रूप दरसाइंदा। त्रैगुण नाता हरि जुड़ाया, आपणा बन्धन पाईआ। विष्नूं हुक्म आप सुणाया, ब्रह्मा सुत लए उठाईआ। भोले नाथ आप जगाया, आलस निन्दरा दए गंवाईआ। शंकर मेला सहिज सुभाया, आपणी इच्छया नाल मिलाईआ। आपणी इच्छया लछमी रूप वटाया, आपणी सेव आप कमाईआ। आपणा लेखा आप जणाया, आपे चारों कुण्ट वेख वखाईआ। चारे दिशा आपे वण्ड वण्डाया, दहि दिशा आपणा भेव अभेद आप खुल्हाईआ। आपणा ज्ञान आप दृढ़ाया, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। आपणे वेदां आप पढ़ाया, आपे करे सच पढ़ाईआ। आपणा शस्त्र आप उपजाया, आपे तिन्नां मेले थाउँ थाँईंआ। इक्क त्रिशूल हथ्थ उठाया, ब्रह्मा विष्न शिव मुखी उप्पर लाईआ। जीव जंत किसे भेव ना पाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा मार्ग आपे लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हो त्यार, साची सेवा सेव कमाईआ। त्रैगुण मंगी वस्त अपार, सतो रजो तमो हरि हरि झोली पाईआ। एका वस्त रक्खे धुर दरबार, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। ब्रह्मा देवे कर प्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपे कर कर आपणा वास, शाहो शाबास आपणा मेल मिलाईआ। मेल मिलाया पंचम नाता, हरि हरि जोड़ जुड़ाया। करे खेल पुरख बिधाता, चतुर्भुज भेव ना राया। लेखा जाणे आदि जुगादा, आपणा खेल आप खिलाया। आपणा रूप अनूप धरे ब्रह्मादा, नाद अनादी नाद सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव दिता वर, साचा घाड़न लए घड़ाया। साचा घाड़न हरि घड़ाइंदा, देवे धुर फ़रमान। लक्ख चुरासी जोत टिकाइंदा, खेले खेल श्री भगवान। त्रैगुण मेला मेल मिलाइंदा, पंज तत करे प्रधान। काया बंक आप सुहाइंदा, वेखे सच निशान। नौं दुआरे आप खुलाइंदा, आपे वसे सच मकान। घर घर विच सोभा पाइंदा, दीपक जोत जगाए महान। घर नाद शब्द सुणाइंदा, आपे जाणे आपणा गान। घर अमृत ताल भराइंदा, कँवल नाभी कर परवान। घर सुन्न अगम्म रखाइंदा, घर धूंआँधार मसाण। घर बजर कपाटी कुण्डा लाइंदा, घर पंच विकार नचाए शैतान। घर आसा तृष्ना आप

उपजाइंदा, घर माया ममता करे प्रधान। घर टेढी बंक उपाइंदा, सुखमन नाड़ी कर पछान। घर ईड़ा पिंगल वेख वखाइंदा, घर चौदां लोक हट्ट दुकान। घर रवि ससि चमकाइंदा, घर मंडल मण्डप वेखे इक्क निशान। घर पारब्रह्म वण्ड वंडाइंदा, ब्रह्म देवे एका माण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव दिता एका वर, आप बणाए चतुर सुजान। चतुर सुजान त्रैगुण मेला, हरि साचे घर कराया। घाड़न घड़े सज्जण सुहेला, लक्ख चुरासी वेख वखाया। जोत जगाए इक्क इकेला, निरगुण रूप आप धराया। ना कोई जाणे वक्त वेला, वेद कतेब भेव ना राया। चारे मुख आपे खोल्ह, आपणा गीत आप अल्हाया। आपे गाया साचा ढोला, सोहँ आपणा रूप वटाया। आपणी शक्ती आपे मौला, आदि शक्ती आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आदि ब्रह्मा आदि विष्नूं आदि शिव आपे लए उठाया। आदि विष्न हरि जगाए, आपणी अंस आप प्रगटाईआ। आदि ब्रह्मा भेव खुल्हाए, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। आदि शंकर अंग लगाए, अंगीकार इक्क हो जाईआ। आदि नाद शब्द ब्रह्मादि नाद वजाए, तार सतार ना कोई हिलाईआ। आदि पुरख आपणा भेव खुल्हाए, आपणी किरन वण्ड वंडाईआ। आपणा नूर आपणी जोत आपणा प्रकाश आप धराए, आकाश प्रकाश आप समाईआ। आपणा सुनेहड़ा फ़रमान आपे भेज आपणी कारे आपे लाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव सेवा ला, लक्ख चुरासी रचन रचा, घट घट अंदर जोत करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़या, प्रभ माया पाई बेअन्त। निरगुण रूप हो अंदर वड़या, महिमा हरि हरि अगणत। साचे पौड़े आपे चढ़या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे लेखा जाणे आदि अन्त। आदि पुरख हरि खेल खिलाया, विष्न ब्रह्मा शिव समझाइंदा। साचा हुक्म इक्क जणाया, धुर फ़रमाना इक्क जणाइंदा। गगन पाताला मंडल मण्डप डेरा लाया, धरत धवल वेख वखाइंदा। जल बिम्ब आप समाया, कँवल रूप आप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। हरि साचा खेल वखाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव कर विचार। चारे वेदां आप अल्हाइंदा, आप आपणी किरपा धार। चारे कुण्टां वेख वखाइंदा, चारे जुग करे विचार। चारे बाणी आप अल्हाइंदा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी धार। चार चार गेड़ा आप बणाइंदा, लेखा जाणे अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वरते वरतावे सच वरतार। सच वरतार वरतावणा, हरि साचा खेल खिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आप समझावना, जगत वाटड़ी राह वखाईआ। मनवन्तर आपणी वण्ड वण्डावना, वेद विदातां जस गाईआ। आदि पुरख ना भेव जणावना, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत रिहा जणाई। एका तत्त जणाया, वड दाते हरि

१६६

मेहरवान। आपे तेरी सेव वखाया, नौं दर वेखे जगत दुकान। शंकर तेरा भण्डार वरताया, वरतावनहार इक्क भगवान। शंकर तेरी मार सर्ब रखाया, मारे मार निगहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां देवे इक्क ज्ञान। हरि सच ज्ञान दृढ़ाया, भुल रहे ना राईआ। धरत धवल वण्ड वण्डाया, नौं नौं वेख वखाईआ। सति सति रंग रंगाया, सति सतिवादी सच्चा शहिनशाहीआ। चार जुग चार चौकड़ी एका गंढु पवाया, सरगुण निरगुण रूप लए प्रगटाईआ। लोकमात वज्जे वधाई पंज तत्त चोला लए प्रगटाया, साचा खेल खिलाईआ। मन मति बुध लए प्रनाया, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। अवतार गुर आपणा नाउँ रखाया, खेले खेल सच्चा शहिनशाहीआ। कन्त भगवन्त लए जगाया, जाग्रत जोत करे रुशनाईआ। शब्द कन्त लए प्रनाया, नार सुहागी इक्क मिलाईआ। गुरसिख गुर लए बहाया, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरसिख आत्म अनन्द इक्क वसाया, परमानंद विच समाईआ। जुग जुग सति सतिवादी आपणा नाउँ चन्द चढ़ाया, मेटे रैण अन्धेरी शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दर रिहा दरसाईआ। नौं नौं चार हरि खेल खिलावणा, विष्न ब्रह्मा शिव दया कमाइंदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग आपणा भेव रखावणा, भेव कोई ना पाइंदा। सतिजुग साची वण्ड वण्डावणा, आप आपणा रूप प्रगटाइंदा। वार अठांरा खेल खिलावणा, ब्रह्मा सुत चारे मुख चार चार आप वड्यांअदा। आप सुहाए आपणी रुत्त, पुरख अबिनाशी इक्क अचुत, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। सतिजुग साचा सच वरतावणा, आदि पुरख धार चलाईआ। आपणा रूप आप धरावणा, निरगुण निरगुण खेल खिलाईआ। धरत धवल डूंग्घी कंदर आपे डेरा लावणा, जीव जंत जगत जहाना, भगत भगवन्त मेल मिलाईआ। आपणी महिमा अगणत आप गणावणा, आपणा लेखा आपे लए प्रगटाईआ। सतिजुग सति सतिवादी पार करावणा, इक्क सति संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी रचना आप रचाईआ। सतिजुग साचा पार कर, हरि आपणी खेल खिलाईआ। ब्रह्मा चारे वेद गा गा लोकमात धर, हरि का भेव सके ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, अनुभव आपणी खेल खिलाईआ। त्रेता तेरी धार निराली, हरि साचा खेल खिलाईआ। जोती जोत जगे महानी, पंज तत चोला तन हंढाईआ। ग़रीब निमाणा बण सवाली, साकत निन्दक दुष्ट दुराचार आप खपाईआ। आपे हउँमे हंगता गढ़ हँकार, आप सीता सपुत्री जनक कर प्यार, आपे लए प्रनाईआ। आपे जाणे आपणी धार, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोए दोए लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। द्वापर रंग रंगाया, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण रूप वटाया, कँवल

नैण रूप वटाइंदा। साची बंसरी नाम वजाया, मधुर धुन इक्क सुणाया, आपणा भेव आप चुकाया, आपणा मुख आप छुपाइंदा। आपे वेद व्यासा हो हो गाया, पुराण अठारां आप अलाया, आपे विष्न ब्रह्मा वेता संग निभाइंदा। आपे नाद धुन वेख वखाया, आपे बारां अक्खर लए प्रगटाया, बारां रासी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका धार, जुग जुग ब्रह्मा विष्न शिव करे प्यार, आप आपणी खेल खिलाइंदा। कलिजुग रंग आप रंगाया, काला सूसा रंगे शाहीआ। ऐड़ा अक्ख इक्क खुलाया, अथर्बण देवे माण वड्याईआ। यजुर शाम आपणी झोली पाया, रिग लेखा रहे ना राईआ। आपणा रूप आप धराया, आपणा जल्वा आप वखाईआ। मुकामे हक डेरा लाया, आपे लेखा जाणे ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, भेव अभेदा आपणा भेव आपणे विच रखाईआ। आपणा भेव आप खुलाइंदा, पारब्रह्म सच्चा शहिनशाह। ईसा मूसा नूरी जल्वा आप जगाइंदा, आपे पर्दा लए उठा। आपे काया काअबा वेख वखाइंदा, दो दो आबा मेल मिला। आबे हयात आप प्यांअदा, सच सुराही हथ्थ उठा। सच भूप साचे तख्त नज़री आइंदा, शाहां सिर सच्चा शाह। अञ्जील कुरानां आपे गाइंदा, आपे संग मुहम्मद चार यार मेला लए मिला। आपे ऐनलहक सलोक सुणाइंदा, आपे प्रगट होए बेऐब परवरदिगार ख़ुदा। आपे ख़ालक ख़लक रूप धराइंदा, आपे मुशक्कत आपणे सिर लए उठा। आपे निरगुण सरगुण डंक वजाइंदा, शब्द अनादी नाद सुणा। आपे पंज तत काया चोला वेख वखाइंदा, नानक नाउँ गाया इक्क निरँकार उच्ची कूक कूक अला। आपे गोबिन्द गढ़ सुहाइंदा, सुत दुलारा वेस वटा। चार जुग इक्क चौकड़ी आपे बन्धन पाइंदा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा दए भवा। कोटन कोटि आपणा रूप राम कृष्न आपणा खेल खिलाइंदा, जोती जोत जोत जाए समा। कोटन कोटि ईसा मूसा संग मुहम्मद अद्धविचकारे राह तकाइंदा, हेठ मुसल्ला बैठे वछा। कोटन कोटि नानक गोबिन्द हरि हरि गाइंदा, सचखण्ड दुआर राह तका। विष्न ब्रह्मा शिव साची सेव कमाइंदा, लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाँ। कोई घड़े कोई भन्ने कोई मुख छुपाइंदा, कोई प्रगट हो हो लोकमात फेरा पा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव दिता एका वर, आपणा नाम दृढ़ा। साचे नाउँ दृढ़ाया, गुणवन्त गहर गम्भीर। विष्न ब्रह्मा शिव भुल ना जाया, प्रभ आपणा खेल जणाए अख़ीर। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा रहिण ना पाया, जुग चौकड़ी तुट्टे धीर। गुर पीर अवतार देण सलाहया, मुलां शेख़ मुसायक जायण घत्त वहीर। थिर कोए रहिण ना पाया, नाता तुट्टे अठ सठ नीर। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती राह तकाया, दर मंगे अमृत रस ठांडा सीर। पुरख अबिनाशी दए समझाया, अन्तिम वेखे सभ दे चीर। निरगुण जोत करे रुशनाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, वड जोद्धा सूरबीर। विष्न ब्रह्मा वेला अन्तिम आवना, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिलावना, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। निरगुण नूर लोकमात धरावना, जोती जामा भेख वखाईआ। आपणा खेल आप करावना, ख़लक ख़ालक वेखे सच्चा शहिनशाहीआ। सालस आपणा नाउँ धरावना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आदि अनादि आपे रिहा समाईआ। आदि अनादि खेल खिलाइंदा, ब्रह्म ब्रह्मादि हरि हरि धार। जुग जुग बेड़ा आप चलाइंदा, सेवा करे अपर अपार। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराइंदा, कलिजुग आए अन्तिम वार। गुर पीर अवतार सर्ब सलांहयदा, मुखों गा गा गए आपणी वार। बिन हरि बेड़ा कोई ना बन्ने लाइंदा, कलिजुग भँवरी डूँग्घी गार। चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा, नौं खण्ड पृथ्मी झूठी धार। सच सुच ना कोई जणाइंदा, घर घर दिसे धूंआँधार। नारी कन्त ना कोई हंढाइंदा, मात पित ना कोई प्यार। साचा हित ना कोई वखाइंदा, जूठा झूठा नाता जुड़या विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, विष्न ब्रह्मा शिव पाए तेरी सार। विष्न ब्रह्मा शिव करे पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तूं पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। दो जहाना बणया सच्चा सिक्दार, सीस जगदीश ताज सुहाईआ। जुग चौकड़ी नौ नौ चार उतरे पार, लोकमात रहिण ना पाईआ। कवण रूप धरे विच संसार, कवण कूट डेरा लाईआ। कवण दर खोल्ह दरबार, कवण वणज दए कराईआ। कवण नाम सति जैकार, कवण नाद धुन वजाईआ। कवण सख़ीआं मंगलचार, कवण गोपी काहन नचाईआ। कवण सीता सुरती करे राम प्यार, कवण काया बण खण्ड फेरा पाईआ। कवण ऐनलहक करे पुकार, कवण हक हकीकत वेख वखाईआ। कवण लाशरीक बणे सांझा यार, मख़लूक बख्शे इक्क सरनाईआ। कवण नाम सति सति करे वरतार, तत्व तत्त ना कोए रखाईआ। कवण फतिह होए गुंजार, कवण डंका दए वजाईआ। कवण ब्रह्म कवण पारब्रह्म वखाए इक्क दरबार, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। कवण घोड़ा होए अस्वार, कवण अश्व ल्ए दौड़ाईआ। कवण डोर रक्खे हरि निरँकार, लक्ख चुरासी बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला कवण वक्त कवण रूप कवण शक्त कवण सन्त कवण भगत कवण भगवान रूप धराईआ। तिन्नां सुण हरि अरदास, हरि साचे सच जणाया। किरपा करे सर्ब गुणतास, अलख अलखना भेव खुल्हाया। नव नौ चार होवे अन्त नास, थिर कोए रहिण ना पाया। लेखा जाणे पृथ्मी अकास, गगन मंडल वेख वखाया। घट घट अंदर रखणहारा वास, लक्ख चुरासी फोल फुलाया। पारब्रह्म प्रभ शाहो शाबास, साचे तख्त आसण लाया। कलिजुग अन्तिम देवे फास, राए धर्म नाल रलाया। चित्रगुप्त करे खुलास, लेखा कोए रहिण

ना पाया। हरिजन हरिभगत हरि जू आपे करे दासी दास, आप आपणा मेल मिलाया। अन्त अन्त कट्टे जम फास, आप आपणा संग निभाया। विष्न ब्रह्मा शिव रखणी आस, पुरख अबिनाशी होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा समझाया। पंचम लेखा हरि समझाइंदा, गुणवन्ता गुण निधान। कलिजुग वेला अन्तिम आइंदा, सचखण्ड वेखे मार ध्यान। लोआं पुरीआं खण्ड ब्रह्मंड फोल फुलाइंदा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज होया जाणी जाण। चारों कुण्टां फेरा पाइंदा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। आपणा नाउँ डंक वजाइंदा, देवे धुर फ़रमान। राज राजानां शाह सुल्तानां आप मिटाइंदा, राउ रंकां देवे इक्क ज्ञान। आपणा रूप आप धराइंदा, प्रगट हो आप भगवान। विष्नूं तेरा संग रखाइंदा, लेखा जाणे दो जहान। पंचम आपणा राह वखाइंदा, नेत्र नैण रहे वखान। कागद कलम भेव ना आइंदा, सत समुंदर मस होई निधान। चार भार ना वण्ड वंडाइंदा, चौदां लोक ना कोई ज्ञान। चौदां तबकां एका हुक्म सुणाइंदा, देवे धुर फ़रमान। चौदां विद्या ख़ाक मिलाइंदा, धुर दरगाही मारे बाण। शब्द अनादी इक्क प्रगटाइंदा, हरि पुरख निरँजण हो मेहरवान। हँ ब्रह्म मेल मिलाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे जाणी जाण। कलिजुग अन्तिम पार करावना, ब्रह्मा विष्न शिव वज्जे वधाईआ। तिन्ना लोकां पन्ध मुकावना, त्रैभवन फेरा पाईआ। त्रिलोकी नाथ खेल खिलावना, आप आपणी रचन रचाईआ। चौथे पद डेरा लावना, चार वरन इक्क सरनाईआ। पंचम सुनेहड़ा नाद सुणावना, नाद अनादी आप वजाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोई बणावना, सच सिँघासण आसण लाईआ। सत्तवें सतिवादी नाम आप वरतावना, ना कोई मेट मिटाईआ। अठ्ठां तत्तां डेरा ढाहवणा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध रहिण ना पाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी नौं दुआरे वेख वखावणा, जगत वासा थाउँ थाँईंआ। जन भगतां दस्म दुआरी पन्ध मुकावणा, आप आपणा मेल मिलाईआ। हँ ब्रह्म सोइम रूप विच आप समावणा, सोहँ हँसा रूप वटाईआ। चार वरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका वरन बनावणा, अठारां बरन ना कोए कराईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां एका धाम बहावणा, एका बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। सृष्ट सबाई रसना जिहवा एका अक्खर हरि हरि नाउँ गावणा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। सर सरोवर इक्क नुहावणा, गुर चरन सच्ची सरनाईआ। हरि मन्दिर काया अंदर वखावणा, घर घर विच आप प्रगटाईआ। इष्ट देव गुर इक्क मनावणा, एका हवन कराईआ। फूलन बरखा एका लावणा, आप सुगंध महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि आदि आपणा भेव आप जणाईआ। कलिजुग अन्तिम कर पार, आपणे घाट उतारना। पुरख अबिनाशी खेल अपार, लेखा मुकाए लक्ख चार बत्ती हज़ार, कर्म कुकर्मां फंद कटावणा। गुरमुख विरले लए उभार, जिस जन आपणा

दरस दिखावणा। लक्ख चुरासी करे ख्वार, एका अन्तिम धक्का लावणा। ना कोई सहाई मीत मुरार, भैण भाई संग ना जावणा। दोए लोचन रोवन ज़ारो ज़ार, तीजा नैण ना किसे खुल्हावणा। चारों कुण्ट हाहाकार, माया जाल ना किसे तुड़ावना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकावणा। कलिजुग पन्ध जाए मुक, हरि साचा आप मुकाईआ। हरया बूटा जाए सुक्क, सुक्का हरा ना कोए कराईआ। मनमुखां मन रहे दुःख, दुखियां रैण ना कोए विहाईआ। गुरसिखां आत्म देवे सुख, आत्म अग्न बुझाईआ। सुफ़ल करे मात कुक्ख, जिस बख्शे चरन सरन सरनाईआ। उलटा होए ना गर्भ रुक्ख, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। आपणी गोदी लए चुक्क, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। अमृत प्याए जाम घुट्ट, आपणा रस आप चुआईआ। आवण जावण जाए छुट, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जिस जन रक्खी हरि हरि ओट, वेले अन्त होए सहाईआ। लभ्भणे फिरदे कोटी कोट, चारों कुण्ट फेरीआं पाईआ। माया ममता भरी ना पोट, आसा तृष्ना होई हल्काईआ। हउमे हंगता रख्या खोट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना बन्धन कोए तुड़ाईआ। शब्द नगारा तन ना लग्गी चोट, सुरती राम ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन साचा उठया, आदि जगादी कार। जिस उप्पर साहिब सतिगुर तुठया, देवे दरस अगम्म अपार। लुकया रहिण ना देवे कोई किसे गुट्ठया, वेखणहार निरँकार। मनमुख जीवां भाग निखुटया, कलिजुग अन्तिम आई हार। जूठा झूठा बूटा जाए पुटया, जड़ रहे ना विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे जाए तार। हरिजन पार उतार दा, हरि दाता बेपरवाह। जुग जुग पैज सवारदा, भगत वछल बण मलाह। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े कलिजुग अन्तिम सुरत संभालदा, इक्क जपाए आपणा नाँ। नाता तोड़े शाह कंगाल दा, निथाव्याँ देवे साचा थाँ। घट घट अंदर निरगुण जोती दीपक आपे बालदा, अज्ञान अन्धेरा दए मिटा। अमृत नाम निधान जाम इक्क प्याल दा, दिवस रैण ख़ुमार रखा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन सिर आपणा हथ्थ दए टिका। जिस सिर हथ्थ टिकाया, नाता तुट्टा संसार। आत्म अन्तर एका रूप दरसाया, गृह मन्दिर खोल्ह किवाड़। घट बाती दीपक जोती नूर करे रुशनाया, डूँग्घी भँवरी कवरी पावे सार। गुरमुख हरिजन माणक मोती आप उठाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कलिजुग अन्तिम वार वार वार सृष्ट कुरलाईआ। नव नव आई हार, सत्त सत्त सत्त दुहाईआ। त्रै त्रै लेखा आर पार, पंच पंच कराईआ। करे खेल आप करतार, करता कीमत कोए ना पाईआ। सम्मत सम्मती करे ख्वार, साख्यात रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपे जाणे

आपणी कार, करनहार आप अख्वाईआ। वरभण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज देवे दंड नाम तेज कटार, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, आदि पुरख वडी वड्याईआ। हरिजन नाता जोड़या, जगत जुगत गुरदेव। पुरख अगम्मा निरगुण रूप आपे बौहड़या, जन्म जन्म दी जाणे सेव। मिट्ठा करे रीठा कौड़या, अमृत आत्म देवे मेव। गुरमुख विरले आपे बौहड़या, पुरख अबिनाशी अलख अभेव। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे रसना जिहव। रसना जिहवा लेखा जाणदा, बत्ती दन्द गुण विचार। घट घट अन्तर आपणा रंग माणदा, निरगुण रूप अपर अपार। मूर्ख मुग्ध ना कोए पछाणदा, त्रैगुण माया जगत नाता होया संसार। गुरमुख विरला राह तक्के श्री भगवान दा, नेत्र लोचण नैण उग्घाड़। फड़ बाहों आप उठाल दा, जुगा जुगन्तर साची कार। दिवस रैण रैण दिवस मात गर्भ अग्नी कुण्ड त्रैगुण तत्त आपे प्रितपाल दा, प्रितपालक आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा विष्न शिव देवे आपणा वर, आपे बिरद समालदा। हरिसंगत दया कमाइंदा, दीना बंधप दीन दयाल। घट मन्दिर वेख वखाइंदा, वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। जो जन सरनाई आइंदा, करे कराए सदा प्रितपाल। गुरमुख साची वस्त आप वरताइंदा, देवे नाम धन, सच्चा धन माल। सच भण्डारा आप भराइंदा, नाता तुट्टे जगत जंजाल। आत्म रंग आप रंगाइंदा, रंग मजीठी इक्क महान। साचा संग आप निभाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे माण। जो जन मंगे जगत मंग, हरि झोली दए भराईआ। जो जन मंगे भुक्ख नंग, भुक्ख नंग दए कटाईआ। जो जन मंगे नंगी होवे ना कंड, सिर हत्थ दए रखाईआ। जो जन मंगे आत्म अन्तर परमानंद, निजानंद दए वखाईआ। जो जन मंगे सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ शब्द साची वस्त इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आयां घट घट वेखे भुल कदे ना जाईआ। जो जन मंगे उतरे जगत दुःख, दलिद्र आप मिटाइंदा। जो जन मंगे जगत सुख, जगत जीवण जुगत आप समझाइंदा। जो जन मंगे उज्जल होए मुख, लोकमात वड्याई आप दिवाइंदा। जो जन मंगे दरस अंदर बैठा लुक, स्वच्छ सरूपी प्रगट हो आपणा दरस दिखाइंदा। जो जन मंगे पंच विकारा अंदरों कढे कुट्ट, नाम खण्डा इक्क वखाइंदा। जो जन मंगे आवण जावण जाए छुट्ट, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। जो जन मंगे अमृत घुट्ट, निझर झिरना आप झराइंदा। जो जन मंगे लग्गी प्रीत ना जाए तुट्ट, नाम बन्धन आपे पाइंदा। जो जन मंगे कढ्ढे वासना खोट, दुरमति मैल आप धवाइंदा। जो जन मंगे जगत जीव आहलणिउँ डिगे बोट, आप आपणी गोद उठाइंदा। जो जन मंगे चरन सरन सरनाई एका ओट, अन्त जम जमकाल नेड़ ना आइंदा। जो जन मंगे खुल्ल्हे सोत, दिब नेत्र

आप खुल्लाइंदा। जो जन मंगे लग्गे भाग ओत पोत, पुत पोतरे मेल मिलाइंदा। जो जन मंगे साचा नाउँ रसना जिहवा ना हिले होंट, अजपा जाप आप कराइंदा। जो जन मंगे नेड़ ना आए लाड़ी मौत, वेले अन्त दरस दिखाइंदा। जो जन मंगे मंग सुहाए काया किला कोट, घर घर विच सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आया आस पुजाइंदा। जो जन मंगे जगत सुत्त, रक्त बूंद खेल खिलाईआ। जो जन मंगे सोहे बसन्ती रुत्त, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। जो जन मंगे दरस अबिनाशी अचुत, रातीं सुत्तयां दरस दिखाईआ। जो जन मंगे सतिगुर पूरा एका जाए तुठ्ठ, अनडिठी वस्त झोली पाईआ। जो जन मंगे पारब्रह्म अबिनाशी करता निरवैर निराकार तन नगारे लाए चोट, ताल तलवाड़ा आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आया आस पुजाईआ। जो जन मंगे तन लथ्थे चीर, बहत्तर नाड़ी वेख वखाइंदा। जो जन मंगे मन रक्खे धीर, मन पंखी बन्न्ह वखाइंदा। जो जन मंगे अमृत सीर, भर प्याला आप प्यांअदा। जो जन मंगे दरस वड पीरन पीर, प्रगट हो हो निरगुण सरगुण दरस दिखाइंदा। जो जन मंगे जगत ज़ंजीर, जगत नाता तोड़ तुड़ाइंदा। जो जन मंगे चोटी चढ़े अख़ीर, साचे मन्दिर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखाइंदा। जो जन मंगे चरन प्यास, चरन कँवल सरन बख़्शे सच सरनाईआ। जो जन मंगे काया मन्दिर साची रास, सुरती शब्द गोपी काहन आप नचाईआ। जो जन मंगे दासी दास, सेवक सेवा आप कमाईआ। जो जन मंगे घर मन्दिर अंदर वखाए मंडल मण्डप पृथ्मी आकाश, खण्ड ब्रह्मण्डां एका रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आया लेखे लाईआ। जो जन मंगे नाता तुट्टे नौ दुआर, नौ दुआर रहिण ना पाईआ। जो जन मंगे सुखमन टेडी बंक होए पार, अन्तिम पार कराईआ। जो जन मंगे ईड़ा पिंगल ना होए ख्वार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए मिटाईआ। जो जन मंगे आसा तृष्ना देवे मार, हउमे हंगता दए मिटाईआ। जो जन मंगे निझर धार, अमृत झिरना दए झिराईआ। जो जन मंगे निरगुण जोत नूर उज्यार, नूरो नूर दरसाईआ। जो जन मंगे आत्म सेजा हरि हरि कन्त भतार, साची सेजा हरि जू दए वखाईआ। जो जन मंगे साची सख़ीआं मिल मिल मंगलाचार, गीत सुहागी इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आयां लेखा लेखे पाईआ। जो जन मंगे मिटे फुट्ट, दूई द्वैत रहिण ना पाए। जो जन मंगे सतिगुर हित, साचा हित इक्क वखाए। जो जन मंगे मुक्के पन्ध तीर्थ तट, अठसठ एका राह आप दरसाए। जो जन मंगे दुरमति मैल देवे कट्ट, सर सरोवर इक्क नुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाए। जो जन मंगे माल धन, धन ख़ज़ीना इक्क वखाईआ।

जो जन मंगे अग्ग लग्गे तन, तत्व तत रिहा मिलाईआ। जो जन मंगे अन्तिम डन्न, साचा डन्न दए लगाईआ। जो जन मंगे जिस घड़या सो देवे भंन, भन्नणहार देर ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत सद समाईआ। हरिसंगत सदा रंगणा, एका नाम करतार। काया चोला आपे रंगणा, अठ्ठे पहर नाम ख़ुमार। दर आया मूल ना संगणा, हरि भरया वड भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी देवणहार। हरिसंगत वडिअई वड, वड वड्डा हरि हरि पाया। हउमे हंगता देणी विचों कढ्ढ, गुर शब्दी शब्द प्रनाया। दु:ख दलिद्दर अग्नी लाए ना कोई हड्ड, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी वेख वखाया। निर्धन सरधन सदा लडाए लड, आप आपणी गोद बहाया। जगत विकार जगत दुआर जगत परिवार पार करे हद्द, आपणा मन्दिर आप वखाया। मां पिओ पुत दादा कोटन कोटि जीव जंत गए लद, थिर कोए रहिण ना पाया। शाह पातशाह राज राजान भर प्याला पी पी थक्के मदि, साचा रस ना किसे वखाया। बिन सतिगुर पूरे ना कोई पाए साचा पद, साची पदवी हरिसंगत नाउँ धराया। गुर चरन कँवल उप्पर धवल धरनी धरत बहाए सद, शब्द संदेश इक्क सुणाया। लक्ख चुरासी विचों लए कढ्ढ, आप आपणा मेल मिलाया। नार सुहागण हरिजन होए ना कदे रंड, दुहागण नार ना रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे एका वर, आसा आसा विच समाया। आसा तृष्ना करे पूर, तृखा आप बुझाईआ। नाता तोड़ना कूड़ो कूड़, सच सुच सच समाईआ। मूर्ख मुग्ध चतुर बणाए मूढ़, तत्त ज्ञान इक्क समझाईआ। जोती मस्तक लाए धूढ़, पूर्ब लेखा रहे ना राईआ। जोती बख़्शे जोती नूर, मस्तक लिलाट कर रुशनाईआ। दिवस रैण हाज़र हज़ूर, आप आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे माण वड्याईआ। जो जन आए मन हँकार, हँकार नाल हँकार रलाईआ। जो जन रक्खे मन विभचार, विभचार नाल करे कुड़माईआ। जो जन आए तन ख्वार, जगत ख्वारी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा निरासा ना कोई रखाईआ। जैसी मन रक्खे आसा, वैसी वस्त वरताइंदा। गुरमुख विरला गुर दरस प्यासा, मनमुख आपणा मुख छुपाइंदा। दोहां विचोला खेल तमाशा, पर्दा ओहला आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत अंदर हरि हरि वासा, हरिजन हरि की पौड़ी आप चढ़ाइंदा।

★ २४ माघ २०१७ बिक्रमी विश्व नाथ वर्मा ऐडीशनल सैक्टरी दे घर राष्ट्रपती राजिंदर प्रसाद वास्ते शब्द ★

पंज फ़रवरी वक्त सुहावना, हरि वड्डा वड वड्याईआ। भगत भगवन्त विचोला इक्क रखावना, विश्व वर्मा मिले वड्याईआ। राष्ट्रपती संदेश सुणावना, पारब्रह्म इक्क रघराईआ। कलिजुग अन्तिम पहरया बानना, निरगुण निरवैर आपणी कल धराईआ। नौं खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्याना, सत्तां दीपां फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी देवे इक्क ज्ञाना, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। नाउँ धराए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना, ना मरे ना जाईआ। चौदां मार्च दिवस वखाना, सतिजुग साची धार बंधाईआ। नौ ग्रन्थ लेख लिखाना, लिख्या लेख ना कोई मिटाईआ। शब्द खण्डा हथ्थ चमकाना, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमाना, जन भगतां भगवन्त आप सुणाईआ। सति सन्तोखी बन्ने गाना, धीरज जत इक्क जणाईआ। सच सुच वरतावे हो मेहरवाना, जूठ झूठ कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। अल्ला वाहिगुरु राम नाम राधे कृष्न सति तत्त इक्क वखाना, ब्रह्म मति इक्क जणाईआ। सर्ब कला समरथ श्री भगवाना, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। दिल्ली दरबार सुहाए जगत मकाना, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी जणाए सच निशाना, सति रंग रंग वक्ख कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण लए वर, राष्ट्रपत पत राजिंदर प्रसाद, धुर दरगाही देवे दाद, शाह भबीखन सुण फ़रयाद, राम रामा होए सहाईआ।

★ २६ माघ २०१७ बिक्रमी पुष्कर, लाल सिँघ पंडत नाल गोबिन्द घाट पुष्कर अजमेर ★

इक सत्त छे दो गुबिन्द धार, गोबिन्द आपणे विच रखाईआ। पंडत पांधा ना कोई करे विचार, बैठे पुष्कर आसण लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बैठे दुआर, सीस जगदीस झुकाईआ। नेत्र नैण रोवण ज़ारो ज़ार, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। हरि का रूप अगम्म अपार, सति सरूप दिस ना आईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, लोकमात जगत वधाईआ। नाता वेख सर्ब संसार, जगत जगदीश खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव अछल अछेद गोबिन्द गया समझाईआ। गोबिन्द घाट हरि का घाट, हरि हरि आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तक्कण वाट, नेत्र लोचण नैण सर्ब उठाइंदा। इक्क सत्त खेल तमास, छे दो गंढु पवाइंदा। लेखा जाणे तत्त आठ, नौं दर फोल फुलाइंदा। आदि जुगादी एका हाट, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा आप खुल्हाइंदा। आपे जाणे आपणी वाट, आपणा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गोबिन्द एका धार, एका खेल करे करतार, एका दर सच्चा दरबार, एका भिखक ब्रह्मा विष्न शिव दुआर, देवणहारा इक्क अख्वाइंदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, सति पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। इक्क सत्त करया प्यारा, एका इक्क सात जोड़ जुड़ाईआ। छे घर वसया बाहरा, दर घर साचे सोभा पाईआ। दोआं दो जहानां खेल करे पसारा, अलख अगोचर बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। सतारां सौ बासठ बिक्रमी लिख्या लेख अपर अपारा, भेव कोए ना पाईआ। साची लिख्त भविख्त दस्स गया बण वणजारा, पंडत पांधे बैठे मुख छुपाईआ। गोबिन्द रूप ना किसे विचारा, गोबिन्द घाट ना कोए नहाईआ। दुरमति मैल ना उतरे विच संसारा, आत्म अन्तर अशनान ना कोए कराईआ। कलिजुग कूके आपणी वारा, चारों कुण्ट दए दुहाईआ। एका ढईआ जगत सहारा, साची नईआ नज़र कोए ना आईआ। भैणा भईआ कर कर प्यारा, साचा सईंया रहे मनाईआ। नज़र ना आए किसे घनईया, रूप अनूप जगत वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द लेखा जाणे आपणे घर, एका साता छीका दूआ दो छे सत इक्क आपणे विच टिकाईआ। इक्क सत्त कर प्यार, छे दो जोड़ जुड़ाया। गोबिन्द आया गोबिन्द धार, गोबिन्द गोबिन्द विच समाया। अठसठ तीर्थ चरन कँवल खिच्च लिआए आप दुआर, रूप अनूप आप धराया। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश किसे नज़र ना आए विच संसार, अठारां बरन चार वरन रहे कुरलाया। दो पंज पंज बोल जैकार, दो पंज पंज आपणा रूप धराया। वदी सुदी ना सके कोए विचार, किसना सुकला पख विच फस कदे ना जाया। करे खेल आप निरँकार, जोती रूप अपर अपार, शब्द खण्डा तेज कटार, साचे घोड़े हो अस्वार, दो जहाना पार किनार, आप आपणा बल रखाया। गोबिन्द लेखा गोबिन्द लए विचार, दूसर लिखण पढ़न विच कदे ना आया। इक्क सत नौ अठ्ठ गोबिन्द लेखा दिता पाड़, आपणा लेख विच रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गोबिन्द मेला जाणे साचे घर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाया। गोबिन्द गुर गुर गोबिन्द रूप अनूप, दिस किसे ना आईआ। गुरसिख दो अठ अठाई जो संगत रखाए इक्क सति छे दो अमृत मेघ दिता बरस, कलिजुग अन्तिम आपणे नाल रलाईआ। लेखा जाणे अर्श फर्श, कुर्श कुरा कायनात ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज जीव जंत वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द लेखा जाए मुक्क, गुरमुख बूटा जाए ना सुक्क, अमृत सिंच हरया आप कराईआ। गोबिन्द आया गोबिन्द दुआर, गुरसिख काया अंदर गोबिन्द गढ़ बणाईआ। करे खेल अपर अपार, जगत विद्या ना पावे सार, चौदां विद्या पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। एका मन्त्र सर्ब देवा आत्म ब्रह्म जोत प्रकाश निरवैर धार, पारब्रह्म बेअन्त बेपरवाह आप आपणे विच रखाईआ। पंडत पांधा

२०८

गुरसिख दस्से की कोई राह, जिस मिल्या गोबिन्द सच्चा शहिनशाहीआ। आपणा लेखा आपणी हथ्थीं गया लिखा, आपणी हथ्थीं देवे ढाहीआ। सतारां बीस बीस सतारां बिक्रमी बणया आप मलाह, अठाई सिख नाल लिआईआ। सचखण्ड वसे शहिनशाह, पंडत लिखणा आपणी कलम शाहीआ। जगत जहान किसे दिसे ना, दो दो लोचन तक्के सर्ब लोकाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, सिँघ दया नाल रलाईआ। दया कर घर गया आ, घर आपणा दए समझाईआ। सूरज चन्न ना करे कोई रुशना, मंडल मण्डप ना कोई वड्याईआ। ब्रह्मा वेद ना रिहा कोई सुणा, पुराण अठारां ना कोई गाईआ। शास्त्र सिमरत ना रिहा कोई जणा, गीता ज्ञान ना कोई वड्याईआ। अञ्जील कुरान ना रिहा कोई पढ़ा, खाणी बाणी ना कोई दृढ़ाईआ। साचे घर वसे आपे बेपरवाह, जिस घर वसे गोबिन्द सच्चा माहीआ। पुष्कर बैठे तक्कण राह, मन्दिर अंदर टल खड़काईआ। गुरमुख विरले बणे आप मलाह, जगत सरोवर बेड़ा पार दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आपे रक्ख, गोबिन्द रूप हो प्रतक्ख, जोत सरूप अलखना अलख, शब्द अनूप होए वख दिस किसे ना आईआ। पहला घर सच्चखण्ड, आपणा बंक आप बणाया। दूजा डाकख़ाना पाई वण्ड, ब्रह्मण्ड रचन रचाया। तीजी तहसील चढ़या चन्द, ब्रह्मा विष्न शिव उपजाया। चौथा ज़िला इक्क परमानंद, घट घट अंदर आपणा आसण लाया। आदि जुगादि निरगुण सरगुण किसे ना पाया बंध, बन्धन विच कदे ना आया। पुष्कर आ सुणाया सुहागी छन्द, हरि का घर पंडत भुल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा दए समझाया। हरि का ठाणा इक्क अपारा, हरि साचे सच बणाया। रपट लिखे चित्रगुप्त आपणे बैठ दुआरा, दिस किसे ना आया। धर्म राए बणे हल्कारा, घर घर संदेश दए सुणाया। जम का रूप खेल अपारा, पंडत पांधे जीव जंत ग्रन्थी पन्थी मुल्ला शेख़ मुसायक फड़ फड़ बन्नूण छुट्ट कोए ना जाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पुरख अबिनाशी घट घट वासी मनमुखां देवे दंडन, अठारां अठाई कुण्ड खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा ठाणा इक्को इक्क बणाया।

२०६

★ २७ माघ २०१७ बिक्रमी बिशन सिँघ दे घर गुड़गाउँ ★

निरगुण जोत पुरख अकाल, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। आदि जुगादि सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल, थिर घर साचे सोभा पाईआ। अगम्म अगम्मड़ा आप वजाए अगम्मी ताल, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। अनुभव प्रकाश अजूनी रहत करे खेल दीन दयाल शाहो भूप बण सिक्दार, तख्त निवासी साचा तख्त सुहाईआ। निरवैर निराकार चले अवल्लड़ी चाल, आपणी

इच्छया आपे धार, विष्न ब्रह्मा शिव लए उपजाईआ। आप अपरम्पर खेल अपार, करे कराए करनेहार, रूप अनूप सच्ची सरकार, त्रैगुण धार आप बंधाईआ। जोती नूर नूर उज्यार, अलख अलखना अगम्म अगोचर बेपरवाह, एकँकार सति सतिवादी आपणी खेल आप खिलाईआ। आपणी इच्छया भर भण्डार, वरते वरतावे हरि करतार, करे कराए आपणी कार, करता पुरख वड वड्याईआ। एका तत्त लए विचार, पारब्रह्म समरथ महिमा अकथ आपे जाणे आपणी धार, धार धार विच प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि इक्क इकल्ला एकँकारा, आपणी कल आप धराईआ। आपणी कल आपे धार, सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। हरि पुरख निरँजण वसणहारा सचखण्ड दुआर, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। एकँकारा हो त्यार, थिर घर मन्दिर आप आपणा रंग रंगाइंदा। आदि निरँजण नूरो नूर नूर उज्यार, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा खेल आप खिलाइंदा। श्री भगवान वसणहारा ठांडे दरबार, दर दरवाज़ा राजन राजा शाहो भूप आप खुल्हाइंदा। अबिनाशी करता आप आपणा कर उपकार, लेखा जाणे अंदर बाहर, गुप्त ज़ाहर आपणा रूप प्रगटाइंदा। पारब्रह्म प्रभ एका एका होया ख़बरदार, दूसर ना कोए मीत मुरार, आपणी इच्छया आपे धार, आपणा खेल आप खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, एका मन्दिर सोभा पाइंदा। एका मन्दिर सोभावन्त, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आदि पुरख पुरख बेअन्त, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। लेखा जाणे नारी कन्त, नर नरायण आपणे रंग आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, एका घर दए वड्याईआ। घर सुहञ्जणा थिर दरबारा, पुरख अकाल खेल खिलाइंदा। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारा, जोती नूर डगमगाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, साचे तख्त आसण लाइंदा। हुक्मी हुक्म कर वरतारा, धुर फ़रमान आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, शब्द अखाड़ा इक्क लगाइंदा। त्रैगुण माया भर भण्डारा, वस्त अनमुल्ल आप वरताइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, अलख अलक्खना आपणा लेखा आपणे हत्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव भर भण्डार, त्रै त्रै हरि वण्ड वंडाइंदा। दूसर ना कोई पावे सार, भेव अभेद अछल अछेद आपणा खेल आप खिलाइंदा। आपणे रंग रवे निरँकार, निराकार निराधार रूप अनूप आपणा आप धराइंदा। आपे पाए साची सार, महासारथी आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एका हरि, आपणा भेव आप खुलाइंदा। हरि साचा भेव खुल्हाइंदा, लेखा आदि जुगादि। त्रै त्रै आपणी धार बंधाइंदा, शब्द जणाई बोध अगाध। निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा, आत्म अन्तर आप अराध। आपणा रंग आप रंगाइंदा, आपे

देवणहारा दाद। आपणा संग आप निभाइंदा, आप आपणे विचों काढ। आपणी गंढु आप पवाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, इक्क वजाए नाद। एका नाद अगम्मी तूर, आदि पुरख आप वजाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव हाज़र हज़ूर, हरि का रूप आप दरसाइंदा। जोती देवे एका नूर, जोती जोत डगमगाइंदा। दाता दानी जोद्धा सूर, आप आपणी दया कमाइंदा। सर्ब कल आपे भरपूर, समरथ पुरख नाउँ धराइंदा। ना नेड़े ना दिसे दूर, दूर नेड़ पन्ध ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका नर, हरि नरायण आप अखवाइंदा। नर नरायण हरि निरँकारा, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यारा, साची वस्त झोली पाइंदा। पंज तत्त दए सहारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़े अपर अपारा, घड़न भन्नणहार आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची रीती आप चलाइंदा। साची रीती हरि नरायण, आपणी आप चलाईआ। लक्ख चुरासी आपे वेखे आपणे नैण, एका नैण आप खुल्हाईआ। पंज तत्त त्रैगुण ब्रह्मा विष्न शिव इक्क वखाए साक सज्जण सैण, सगला बन्धन आपे पाईआ। ब्रह्मंड खण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, एका मंत दए समझाईआ। एका मंत शब्द ज्ञान, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर ध्यान, बाल अंजाणे आप उठाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमान, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। लक्ख चुरासी हो प्रधान, घट घट अंदर जोत जगाइंदा। घर घर वेखे मार ध्यान, आप आपणा मुख छुपाइंदा। वजाए नादी धुन्कान, अनहद रागी राग अल्हाइंदा। पवण पाणी कर परवान, आत्म अन्तर जल भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता आप हो जाइंदा। देवे वर हरि निरँकारा, पंज तत्त तत्त वड्याईआ। करे खेल अपर अपारा, ब्रह्म मति इक्क रुशनाईआ। एका तत्त विच संसारा, नाता बिधाता लए जुड़ाईआ। एका गाथ ठांडे दरबारा, आप आपणी लए सुणाईआ। एका रथ चलाए हरि गिरधारा, आप आपणी सेव कमाईआ। करे खेल अपर अपारा, आपणी वण्डण आप वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका पवण आपणे अंग लगाईआ। एका पवण लाई अंग, हरि साचा दया कमाइंदा। देवे दान सूरा सर्बंग, भेव कोए ना पाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मंड खण्ड जाए लँघ, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। घट घट अंदर चाढ़े रंग, स्वास स्वासां नाल रलाइंदा। आप जणाए आपणा अनन्द, अनन्द मंगल आपे गाइंदा। आप सुणाए आपणा छन्द, छन्द सुहागी आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका पवण पवण धार, दूसर ना सके कोए विचार, लेखा लिख्त विच ना आइंदा।

पवण प्यारी हरि निरँकारी, जोती रंग रंगाया। चरन कँवल मिली सिक्दारी, साचा दर सुहाया। किरपा करे सच्चा शाह सिक्दारी, शहिनशाह सिर आपणा हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराया। शाह पातशाह हरि मेहरवाना, साचे तख्त सोभा पाइंदा। आपणे चरन कँवल आपे मार ध्याना, आपे वेख वखाइंदा। आपे अमृत आपे सरोवर आपे भरया प्याला, आपे रसीआ रस चुआइंदा। आपे अग्नी जोत ज्वाला, आपे नूरो नूर डगमगाइंदा। आपे ख़ाकी ख़ाक समाला, ख़ाकी ख़ाक रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे दर सोभा पाइंदा। साचा अमृत हरि चरन कँवल दुआर, चरनोदक नाउँ धराईआ। आपे बरखे किरपा धार, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। आदि पुरख आप चलाई आपणी कार, करनी करता आप कमाईआ। नीर वरोले अंदर बाहर, नर नरायण सचा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सर्ब वड्याईआ। देवे वड्याई जगत नीर जल, जल रूप उपाइंदा। धरत धवल उप्पर वखाए थल, महीअल आपणी खेल खिलाइंदा। करे कराए वल छल, अछल छल धारी आपणी कल आप वरताइंदा। आपे सच सिँघासण बैठा मल, आपे घट घट रूप वटाइंदा। आपे जोती शब्दी रिहा रल, आपे पवण स्वास चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धार आप बंधाइंदा। चरन छोहे नीर जल, तृप्त तृप्त कराईआ। निमस्कार करे घड़ी घड़ी पल पल, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हउँ सेवक बाल अंञाण, दर दुआर आया चल, एका भिख्या मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। चरन छुहाया हरि निरँकार, नीर नीर वड्याआ। लक्ख चुरासी तेरी धार, त्रैगुण मेल मिलाया। धरत धवल कर पसार, धरनी गोद सुहाया। करे खेल हरि करनेहार, अभुल भुल कदे ना जाया। लोकमात बणे तेरा सहार, तेरा संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा एका वर, धुर फ़ुरमान इक्क जणाया। धुर फ़रमान हरि सुणाइंदा, नीर सीर कर प्यार। धरनी धरत धवल वड्यांअदा, सिर हथ्थ रख समरथ निरँकार। जुग चौकड़ी खेल खिलाइंदा, वण्ड वण्डाए वण्डणहार। जीव तेरी पैज रखाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर सचा दातार। साचा वर हरि करतार, एका एक समझाईआ। जुग चौकड़ी तेरा रहे वरतार, नौ नौ चार खेल खिलाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी तेरा भण्डार, सत्तां दीपां आप जणाईआ। पंज तत्त होए आधार, त्रैगुण तेरे विच समाईआ। निरगुण सरगुण हो उज्यार, तेरी सेवा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सचा शहिनशाहीआ। निरगुण सरगुण धार चलाइंदा, हरि पुरख अगम्म। जल नीर आप उपजाइंदा, आपे

बेड़ा देवे बन्न। लोकमात माण दिवाइंदा, आपे जननी जणया आपे हरि हरि जन। आपे रूप अनूप प्रगटाइंदा, आपणा भाणा आपे मन्न। आपे गुर अवतार अख्वाइंदा, आपे भगत भगवन्त कहे धन्न धन्न। आपे सन्त कन्त हंढाइंदा, आपे नार सुहागण जाए मन्न। आपे जीव जंत सोभा पाइंदा, आपे घड़े आपे लए भन्न। आपे सर सरोवर नाउँ धराइंदा, आपे मारनहारा विच उछल्ल। आपे आपणा मुख छुपाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल वड प्रबल। वड प्रबल हरि प्रबीना, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। चारे मुख चार वेद ब्रह्मा चीना, चारों कुण्ट उठ उठ गाईआ। चारे जुग रंग भीन्ना, एका एक एक चढ़ाईआ। चारे खाणी लेखा जाणे गुण तीना, त्रैगुण भेव रहे ना राईआ। करे प्यार हरि निरँकार लए अवतार जल जल मीना, मीना जल रूप समाईआ। आपे सांतक आपे सति आपे करे ठांडा सीना, आपे अग्नी तत्त तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। सर सरोवर माण रखाइंदा, लोकमात आप प्रगटाईआ। चरन चरनोदक विच रखाइंदा, चरन सरन सची सरनाईआ। सतिजुग त्रेता आप उपजाइंदा, द्वापर वेखे चाँईं चाँईंआ। कलिजुग आपणी कल धराइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वण्डण आप वण्डाईआ। नीर वरोल्लया चरन कँवल, अमृत साची धार। करे खेल प्रभ उप्पर धवल, निरगुण सरगुण लै अवतार। जोती शब्दी जाणा मवल, जगत जुगत करे विहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे सब तों बाहर। सब तों बाहर वसे निराला, निरवैर भेव ना राया। जुगा जुगन्तर खेल करे पुरख अकाला, भेव कोए ना पाया। सतिजुग त्रेता द्वापर चली अवल्लड़ी चाला, लेखा लेख ना कोए लखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत सरोवर आप समाया। जगत सरोवर गंगा जमना सुरस्ती धार, लेखा लेखे विच लिखाईआ। रिख मुन करन विचार, आत्म अन्तर ध्यान लगाईआ। कवण कन्धे ठंडा ठार, अग्नी तत्त दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बूंद बूंद स्वांत देवणहार इक्क इकांत, एका वार मुख चुआईआ। बूंद स्वांती अमृत रस, हरि हरि आप चुआया। मुन रिख राह तक्कण नस्स नस्स, जगत पन्ध ना कोए मुकाया। करे खेल प्रभ हस्स हस्स, जगत जुगत वेस वटाया। जन भगतां मार्ग साचा दस्स, आप आपणा मेल मिलाया। हिरदे अंदर आपे वस, हरि अमृत रस चखाया। पंच विकारा देवे झस, मोह विकार नेड़ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अबगत आपणी चाल चलाया। अबगत अगोचर अलख निरँजण, अलख ना लख्या जाईआ। जुगा जुगन्तर दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर वेख वखाईआ। नाम नरायण निरँकार एका पाए अंजन, नेत्र

ज्ञान इक्क खुल्हाईआ। सदा सुहेला बणे सदा सज्जण, विछड़ कदे ना जाईआ। इक्क सरोवर एका मजन, एका दुरमति मैल दए धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नीर आपे लए उपजाईआ। नीर उपजाया पारब्रह्म, आपणी किरपा धार। किसे कुक्ख ना प्या जम्म, मात पित ना कोए विचार। करनी करता करे कम्म, काग़ज़ कलम लिखणों बाहर। धरत धवल आप उठाए बिन थम्म, आकाश प्रकाश होए उज्यार। जुग जुग देवणहारा डन्न, लोकमात लए अवतार। जो घड़या सो देवे भन्न, थिर रहे ना विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे अमृत जल साची धार। अमृत धार सुहाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार। कलिजुग खेल खिलाइंदा, चार कुण्ट होए उज्यार। नव नौं गेड़ा आप मुकाइंदा, लेखा जाणे आपणी वार। ब्रह्मा विष्न शिव हरि उठाइंदा, शब्द दए हलूणा मार। सोया कोए रहिण ना पाइंदा, आलस निन्दरा ना कोए विचार। रवि ससि आप जगाइंदा, जोती नूर कर उज्यार। कोटन कोटी जीव वेख वखाइंदा, फड़ सोटी शब्द करतार। उच्ची चोटी चढ़ आसण लाइंदा, सचखण्ड सच्चे दुआर। रूप अनूप आप धराइंदा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। निरगुण आपणी खेल खिलाइंदा, सरगुण करे प्यार। सरगुण भेव कोए ना पाइंदा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त रसना कह कह गए उच्चार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त आपे जाणे आपणी कार। आदि पुरख हरि आदि समाया, मध्ध आपणी खेल खिलाईआ। अन्तिम आपणे हथ्थ रखाया, गुर अवतार देण ग्वाहीआ। चारे वेदां कूक सुणाया, पुराण अठारां उच्ची कूकन एका राग अल्हाईआ। गीता ज्ञान ज्ञान दृढ़ाया, एका तत्त समझाईआ। अञ्जील कुरानां हाहाकार मचाया, तीस बतीसा आप सुणाईआ। खाणी बाणी भेव खुलाया, आप आपणा पर्दा उठाईआ। हरि का भेव किसे ना पाया, चार जुग चार वेद चारे खाणी भेद अभेद चारे बाणी अछल अछेद चार वरन आप रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त एका रंग रंगाईआ। आदि पुरख अबिनाश्या, अन्त अगम्मी धार। जुग चौकड़ी खेल तमाश्या, शास्त्र सिमरत वेद ना पाए सार। गुर अवतार घल्ले आपणे दासी दासया, सेवा करन विच संसार। रवि ससि पाए मंडल रासया, जोती नूर नूर उज्यार। लेखा जाणे पृथ्मी अकासया, गगन मंडल वसे बाहर। आपे करे आपणी पूरी आसया, आस निरासा आप निरँकार। साचे तख्त बहे शहिनशाह शाहो शबासया, शाह पातशाह सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम हो त्यार। कलिजुग अन्तिम चौथा जुग, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी गेड़ा आप दवाईआ। आप सुहाए आपणी रुत्त, रुत्त रुतड़ी वेख वखाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, चितवित ठगौरी ना कोई पाईआ। हड्ड मास ना नाड़ी दिसे बुत्त, पंज तत्त ना कोई वखाईआ। शब्दी

शब्द उपाया सुत्त, पिता पूत एका बंक सुहाईआ। आप बणाया साचा किला कोट, चार कुण्ट चार दीवार छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। साहिब सतिगुर आपणे उप्पर आपे तुट्ठ, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग खेल करे बेपरवाहीआ। कलिजुग खेल खिलाइंदा, जोद्धा सूरबीर बलकार। सतिगुर शब्दी मेल मिलाइंदा, पिता पूत करे प्यार। गोबिन्द गुर गुर धाम सुहाइंदा, लेखा जाणे इक्क निरँकार। लक्ख चुरासी भेव ना आइंदा, लिख लिख थक्का सर्ब संसार। पढ़ पढ़ पन्ध ना कोई मुकाइंदा, नज़र ना आए सच दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप निरँकार। हरि निरँकार खेल खिलाइंदा, कलिजुग अन्तिम वार। गोबिन्द सूरा आप उपजाइंदा, शब्दी गुर गुर अवतार। हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा, धुर दरगाही धुर दरबार। साचा मेला मेल मिलाइंदा, लोकमात कर प्यार। पंज तत एका संग रखाइंदा, त्रैगुण मेला कन्त भतार। सुरत सुवाणी आप प्रनाइंदा, शब्द हाणी इक्क निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए शाह अस्वार। शाह अस्वारा हरि निरँकारा, अश्व घोड़ा इक्क वखाईआ। आपे चढ़े आपणी वारा, सच सिँघासण आसण लाईआ। आपे खड़ग आप कटारा, आपे चण्ड प्रचण्ड चमकाईआ। आपे कल्गी तोड़ा दस्तारा, आपे सीस जगदीस सुहाईआ। आपे पंचम करे प्यारा, आपे पंचम मोह चुकाईआ। आपे चौथे जुग जाणे पार किनारा, चारो कुण्ट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत नीर देवे धीर, शब्दी शब्द शब्द मिलाईआ। जगत नीर सीर शब्द मिलाया गुर गोबिन्द दया कमाइंदा। सर सरोवर इक्क सुहाया, सरसा धार बंधाइंदा। आपणा बेड़ा जगत वखाया, जगत बेड़ा आप चलाइंदा। आपणा खेड़ा आपे ढाहया, गुरमुखां खेड़ा आप वसाइंदा। आपणा नेड़ा आप कराया, भेव कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भार आप उठाइंदा। आपणा भार चुक्क हरि सीस, जुग जुग खेल खिलाईआ। करे खेल साहिब जगदीश, जगत भेव ना राईआ। भेव ना पाइन राग छतीस, रसना जिहवा जगत हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे विच टिकाईआ। आपणा लेखा आपणे हत्थ रखाइंदा, दूसर हत्थ ना कोई डोर। जुग जुग आपणा रूप धराइंदा, जोती जल्वा नूरो नूर। शब्दी नाद आप वजाइंदा, तुरीआ राग एका तूर। सर्ब कला समरथ आप अख्वाइंदा, समरथ पुरख सदा भरपूर। आपणा रथ आप चलाइंदा, रथ रथवाही दाता जोद्धा सूर। आपणी कथा आप सुणाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए हाज़र हज़ूर। हाज़र हज़ूर हरि निरँकारा, हरि मन्दिर सोभा पाईआ। गोबिन्द आपे लेखा लिखणहारा, लेखा लेख ना कोई मिटाईआ। निरगुण सरगुण लए अवतारा, सरगुण निरगुण विच समाईआ।

निरगुण होए मात उज्यारा, जोती जामा भेख वटाईआ। निहकलंक करे खेल अपर अपारा, पारब्रह्म सच्चा शहिनशाहीआ। गोबिन्द मेला सुत दुलारा, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गोबिन्द लेख चुकाइंदा, कलिजुग अन्तिम वार। आपणा लेखा आप मुकाइंदा, कलिजुग लेखा देवे पाड़। गुरमुख साचे नाल रलाइंदा, दिवस रैण करे प्यार। आपणा पान्धी पन्ध मुकाइंदा, पन्ध रहे ना दूजी वार। साची सांझ जहान पाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वड्यांअदा। हरिजन वड्याई गुर गोबिन्द, एका माण रखाया। सगल मिटाई झूठी चिन्द, चिंता रूप ना कोए दरसाया। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर नाउँ धराया। गुरसिख उपजाए आप बणाए आपणी बिन्द, आप आपणी गोद सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा रूप आप प्रगटाया। गुरसिख रूप अपार, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। गुरसिख उतरे पार, गुर पूरा पार कराईआ। गुरसिख तृष्ना तृखा दए निवार, संसा रोग रहे ना राईआ। गुरसिख राज जोग जगत दए दुरकार, माया ममता पोह ना सके राईआ। गुरसिख हउमे हंगता तोड़ हँकार, काम क्रोध नेड़ ना आईआ। गुरसिख मंगण पए गुर चरन दुआर, दूजी वस्त ना कोए मंगाईआ। गुर गोबिन्द बंधी साची धार, ढाब किनारा इक्क सुहाईआ। सुत दुलार कर प्यार, आप आपणी गोद उठाईआ। महां सिँघ वर मंग संसार, वर देवणहार इक्क अख्वाईआ। गुरसिख नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, बिन तेरे दरस दूसर वस्त ना कोए भाईआ। तूं सख़ा सख़ाई मीत मुरार, हउँ सेवक सेव कमाईआ। मैं सुत्ता तेरी गोद चरन पसार, बिन तेरे अवर ना कोए जगाईआ। तूं शाह बणया रहीं सच्चा अस्वार, तेरे घोड़े वाग मेरे हथ्थ सेव कमाईआ। तेरा तन मेरा उधार, मेरा मन तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। महां सिँघ नेत्र नीर वरोल्लया, गुर गोबिन्द अग्गे मारी धाह। आपणा पर्दा बिन तेरे अग्गे किसे ना फोल्लया, जगत आयू गई विहा। आपणा जन्म तेरे कंडे तोल्लया, तोला बण के तोलणा सच मलाह। तेरी काया अंदर तेरा आपे मौल्लया, पत्त डाली रही महिका। हउँ रिहा तेरा गोल्लया, तेरी सेव कमा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरु गोबिन्द आप समझाया। गुर गोबिन्द दया कमाइंदा, गुरसिख गोदी चुक्क। सिँघ दया नाल रलाइंदा, करे उज्जल मुख। मुख अमृत आप चुआइंदा, दो जहानां मेटी भुक्ख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपे लिख। आपणा लेख लिखाया, गुर गोबिन्द कर प्यार। महां सिँघ तेरा रूप मेरे विच समाया, मेरा तन तेरा शंगार। जगत विचोला संग रलाया, पंचम मीता पंचम उधार। साचे घोड़े वाग उठाया, आपे चले आपणी वार। जगत जहाना पन्ध मुकाया, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। खेल करे करतार हरि, हरि हरि सच्चा शहिनशाह पातशाहीआ। गुरमुख गुरसिख आपे वर, दर घर साचे सच रखाईआ। निरभउ चुकाए जगत डर, भय भयानक होए सहाईआ। लेखा जाणे आपणे सर, सर सरोवर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत नीर नेत्र वेख वखाईआ। नेत्र नीर वेखणहारा, आपणा खेल खिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। इक्क सत छे दो हो उज्यारा। वदी सुदी आपणे विच टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे खेल आप खिलाइंदा। जगत नीर तेरा पन्ध मुकावणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। गोबिन्द आपणा चरन छुहावणा। चरन कँवल वडी वड्याईआ। दो अठ्ठ मेल मिलावणा, अठारां अठाई रूप वटाईआ। जगत माण वड्याई जगत जीव रखावणा, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना कोए चतुराईआ। महां सिँघ गुर गोद बहाया, आपणी झोली आप भराईआ। आपणा खेल रिहा खिलाया, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। सालस आपणा नाउँ धराया, सच सालसी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत पर्दा दए उठाईआ। गोबिन्द आया गोबिन्द घाट, गोबिन्द नगरी आप सुहाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तक्कण वाट, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। अठाई सिँघ कपाल पाट, पट पात्र रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। महां सिँघ गोबिन्द नाल लाया, आपणी गोद उठाईआ। देह नाल नाता जगत बंधाया, तुट कदे ना जाईआ। दया सिँघ विचोला विच बणाया, भुल रहे ना राईआ। एका वर एका हरि एका घर झोली पाया, बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप खुल्हाईआ। सिँघ अठाई महां सिँघ, सगला संग रखाइंदा। निभे नाल मंगी मंग, विछड़ कदे ना जाइंदा। आपणी हथ्थीं कसे तंग, वागां महां सिँघ हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का भेव कोए ना पाइंदा।

★ २८ माघ २०१७ बिक्रमी शब्द सिँघासण मकान ६७८६ गली नं० ७, मुलतानी ढांडा पहाडगंज दिल्ली ★

सचखण्ड दुआरा साची धार, सति सतिवादी सति सति चलाइंदा। सो पुरख निरँजण रूप अंगम अपार, महिमा अनूप भेव ना आइंदा। हरि पुरख निरँजण खेल न्यार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी खेल खिलाइंदा। एकँकारा

हरि निरँकारा, आपे जाणे आपणा राह, निराकारा निराधारा आपणी धार उपाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा ठांडे दरबारा, दर घर साचे आप उपाइंदा। अबिनाशी करता कर पसारा, वेखणहारा आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। श्री भगवान खोलू किवाड़ा, निरगुण निरगुण कर प्यारा, निरवैर पुरख आपणी कल धराइंदा। पारब्रह्म प्रभ सति भण्डारा, पुरख अकाल बण वरतारा, अनुभव आपणी वस्त आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। सचखण्ड दुआरा भेव अवल्ला, हरि साचा सच रखाइंदा। आदि पुरख वसया इक्क इकल्ला, आप आपणी दया कमाइंदा। सोभावन्त सुहाए महल्ला, सति पुरख निरँजण साची खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा एकँकारा आपणी कल आप रखाइंदा। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा, आपणा आप सुहाईआ। करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर भेव ना राईआ। बणाए बणत सच्ची सरकारा, आपणी घाड़त आप घड़ाईआ। देवे वर धुर दरबारा, वर दाता इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणी रचना आपे लए रचाईआ। सचखण्ड दुआरा हरि सुहाया, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। छप्पर छन्न ना कोई छुहाया, चार दीवार ना कोए बणाईआ। रवि ससि ना कोई चमकाया, मंडल मण्डप ना कोई वड्याईआ। सरगुण रूप ना कोई दिसाया, निरगुण निराकार आपणी खेल खिलाईआ। किला कोट ना कोई बणाया, घाड़त घड़ ना कोई वखाईआ। आपणी रचना आपे वेख वखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सचा आप उपाईआ। सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा, सचखण्ड दुआरा एकँकार। आपणी रचना आप रचाइंदा, आपे होए वेखणहार। आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा, आपे पावे सार। आपणा हुक्म आप समझाइंदा, आपे करनहार विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि करे कराए साची कार। सचखण्ड दुआर सुहञ्जणा, हरि साचा सच समझाइंदा। करे खेल आदि निरँजणा, आदि पुरख आपणा पर्दा लांहयदा। साचे मन्दिर सच महल्ल अटल मिनार आपे बह बह सजणा, आप आपणा वेख वखाइंदा। ना घड़े ना भज्जना, थिर आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा एका घर, घर साचा इक्क सुहाइंदा। आप उपाया साचा घर, दूसर अवर ना कोई जणाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल बैठा अंदर वड़, अजूनी रहत आपणा रंग ना कोई जणाईआ। आपणी करनी करता पुरख आपे कर, करनहार आप हो जाईआ। आपणी सरन सरनाई आपे पड़, आपे धुर फ़रमान सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अगम्म अगम्मड़ी खेल खिलाईआ। अगम्म अगम्मड़ा खेल अपारा, हरि साचा सच कराइंदा। साचे घर हो उज्यारा, निरगुण आपणा रूप धराइंदा।

२१८

आपणी भिच्छया भर भण्डारा, आपे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा हुक्म रक्खे हथ्थ, हरि साचा वड सुल्तानया। सर्ब कला आपे समरथ, लेखा जाणे श्री भगवानया। आपणी महिमा आपे गाए अकथ, कथनी कथ ना कोई वखानया। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही नौजवानया। आप उपाए आपणी वथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि महानया। खेल महाना हरि भगवाना, सचखण्ड दुआरे आप कराइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाना, आपणा हुक्म आप उपाइंदा। आपणे मन्दिर आपे बण राज राजाना, शाह सुल्ताना नाउँ धराइंदा। आपे बणे दर दरबाना, दर दरवेश अलख अलखना आपणी अलख आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसाए इक्क महल्ला, बैठा रहे इक्क इकल्ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। सचखण्ड सुहाए सच सिँघासण, हरि साची बणत बणाईआ। आसण लाए पुरख अबिनाशन, आदि पुरख वडी वड्याईआ। आपे पाए आपणी रासन, आपणा मंडल आप सुहाईआ। आपे पूरी करे आसण, आसा आसा विच समाईआ। आपे होए दासी दासन, सेवक सेवा आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर दए सुहाईआ। सचखण्ड दुआर सुहाइंदा, हरि सज्जण सच्चा शहिनशाह। सति सतिवादी आसण लाइंदा, निरगुण निरवैर बेपरवाह। धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। आदि पुरख बण मलाह, आपे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्यांअदा। सचखण्ड दुआर वड्याई वड, हरि वड्डा वड वड्यांअदा। निरगुण निरगुण एका घर लडाए लड, आप आपणा मेल मिलाइंदा। आदि पुरख आपणे विचों आपा कढ्ढ, रूप अनूप आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, इक्क इकल्ला वेस वटाइंदा। वेस वटाए हरि करतार, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, हुक्मी हुक्म खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर साचे वज्जे वधाईआ। साचा दर हरि सुहाइंदा, सचखण्ड दुआरा खोल्ह। सच सिँघासण इक्क विछाइंदा, आदि पुरख अबिनाशी करता हरि अनमोल। सच सिँघासण सोभा पाइंदा, बैठा रहे सदा अडोल। एका वस्त हथ्थ रखाइंदा, तोलणहारा आपणा तोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे अन्तर आपे जाए मौल। आपणी अन्तर आपे जाण, हरि हरि खेल खिलाइंदा। साचे तख्त बैठा श्री भगवान, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। शाहो भूप बण राजान, शहिनशाह आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमान, सच संदेशा आप अल्हाइंदा। आपे बण दर दरबान, निउँ निउँ आपणा

सीस झुकाइंदा। आपे मंगणहारा दान, बण भिखारी झोली डांहयदा। आपे बख्शणहारा माण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बल उपजाइंदा। आपणा बल आपे धार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, साचा हुक्म इक्क जणाईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार, पारब्रह्म ल्ए उठाईआ। सचखण्ड होया ख़बरदार, घर साचे ल्ए अंगड़ाईआ। एका नाउँ मेरा निरँकार, सच जैकार आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे तख्त आपणा चरन छुहाईआ। साचा तख्त सुहाया, कर किरपा हरि मेहरबान। सच सिँघासण आसण लाया, सति झुलाया इक्क निशान। पारब्रह्म आपणे दर आपे मंगण आया, आपे बणया बाल नादान। आपे भिच्छया झोली पाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप महान,। खेल महान कराइंदा, सचखण्ड सच्ची सरकार। साचा हुक्म आप सुणाइंदा, अलख अगोचर अगम्म अपार। पारब्रह्म प्रभ भुल ना जाइंदा, वरते वरतावे सच वरतार। आपणी वस्त आपणे हथ्थ रखाइंदा, आपे होए घड़न भन्नणहार। आपणा नाउँ सच आप धराइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़। सचखण्ड दुआरा खोल्हया, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। आपणा नाउँ आपे बोलया, साचा ढोला रहे गा। आपणा तोल आपे तोलया, तोलणहारा बण मलाह। आपणी शक्ती आपे मौलया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच सलाह। सच सलाही हरि मलाह, सिफ्ती सिफ्त विच ना आईआ। एका हुक्म रिहा मना, लेखा लिख्त ना कोई लिखाईआ। सो पुरख निरँजण बण पातशाह, पारब्रह्म दर दरबान बणाईआ। एका हुक्म दए वरता, दूसर अवर ना कोई जणाईआ। थिर घर घाड़न लैणा घड़ा, घर घर विच आप टिकाईआ। मेरी धार लैणा उपा, पारब्रह्म सेव समझाईआ। नारी कन्त खेल खिला, घर सुहञ्जणी सेज दए वड्याईआ। सुत दुलारा लैणा जा, शब्दी नाउँ धराईआ। थिर घर साचे देणा बहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अगला लेखा दए जणा, भुल रहे ना राईआ। विष्नूं तेरा रूप वटा, निराकार साकार आप हो जाईआ। आपणा रस दए चखा, अमृत नाउँ प्रगटाईआ। आपणा कँवल दए खुल्हा, आपे महिक महिकाईआ। आपणी वण्ड लैणी वण्डा, पारब्रह्म आदि पुरख आप समझाईआ। आपणा अंग लैणा कटा, अंगीकार रिहा समझाईआ। आपणा रूप लैणा वटा, हरि अनूप दए सलाहीआ। आपणा ब्रह्म नाउँ लैणा रखा, ब्रह्म लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआर तख्त निवासी, हरि साचा सोभा पाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाशी, भेव कोए ना पाइंदा। पारब्रह्म बणया दासन दासी, हरि साची सेव लगाइंदा। आपणी इच्छया आपे करे पूरी आसी, आपणी भिच्छया वण्ड वंडाइंदा। आपे विष्न

जोत करे प्रकाशी, आपे पारब्रह्म ब्रह्म सुत उपजाइंदा। आपे जाणे मंडल रासी, आप आपणा खेल खिलाइंदा। आपे शंकर सुन्न अगम्म धूंआँधार जोत प्रकाशी, आपणा बल आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म देवे एका वर, एका हुक्म सुणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म सुण कर ध्यान, आदि पुरख मनाया। निरगुण खेल करे महान, रूप रंग रेख ना कोई जणाया। सचखण्ड वसे सच मकान, सच सिँघासण सोभा पाया। शब्द अनादि दए धुन्कान, एका एक जणाया। ब्रह्मा विष्न शिव कर प्रधान, तेरी गोद सुहाया। मेरा नाउँ तेरा निशान, तेरा निशान आप प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराया। बल वखाए हरि बलकारा, बलधारी खेल खिलाइंदा। सचखण्ड साचे हो त्यारा, निराकार रूप प्रगटाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, साचा हुक्म वरताइंदा। पारब्रह्म आपणे अग्गे आपे करे निमस्कारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर उज्यारा, साचा खेल खिलाइंदा। देवे वस्त नाम हरि थारा, एका वण्ड वंडाइंदा। एका हुक्म सच्ची सरकारा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा रूप आप धराइंदा। एका जोत नूर उज्यारा, किरन किरन आप उपाइंदा। एका रवि ससि सितारा मंडल मण्डप आप सुहाइंदा। एका त्रैगुण बण वरतारा, आपणी चरन धूढ़ आप उपजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। हरि हरि भेव खुल्हाइंदा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। लक्ख चुरासी तेरे रंग रंगाइंदा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा, वेखणहार इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आपे दए चढ़ाईआ। पारब्रह्म सच सेवा लाया, भेव कोई ना पाइंदा। शब्दी धार विष्न ब्रह्मा शिव आपे जाया, आप आपणा रूप वटाइंदा। निरगुण बणया दाई दाया, घर साचे सेव कमाइंदा। एका मईआ नाउँ रखाया, दूसर मात ना कोई रखाइंदा। साचा सुत गोद उठाया, आप आपणे अंग लगाइंदा। साची वस्त अमोलक इक्क वरताया, एका हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा एका वर, साचा घाड़न आप घड़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म घाड़न घड़या, करया खेल अपारा। विष्न ब्रह्मा शिव ताणा तणया, त्रैगुण कर प्यारा। आपणा माण आपणा ताण आपे बणया, आपे दए सहारा। आपे जननी जन साचा जणया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे साची कारा। हरि साची कार कमाइंदा, आदि पुरख अबिनाश। लक्ख चुरासी खेल खिलाइंदा, करे खेल आप तमाश। आपणी जोत आप जगाइंदा, आदि अन्त ना जाए विनास। आपणा संग आप निभाइंदा, आपे होए दासी दास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट घट आपे करे वास। लक्ख चुरासी कर त्यार, पारब्रह्म आपणी खेल खिलाईआ। सचखण्ड वेखे सच दुआर, सच दुआरा सोभा पाईआ। सो

पुरख निरँजण तेरा रूप अपर अपार, लोकमात आप वटाईआ। एका दर अबिनाशी सरकार, हउँ याचक मंगे दान, दर दुआरे आईआ। तेरा मेरा इक्क मकान, तेरा मेरा इक्क निशान, तेरा मेरा इक्क ब्यान, एका नाम शब्द वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे राजा आपे रंक, आपे वस्त अमोलक रिहा वरताईआ। सो पुरख निरँजण उठया, आदि पुरख हो मेहरवान। शाह पातशाह हो हो तुठ्ठया, देवणहारा दान। पारब्रह्म तेरा नाउँ तेरा रूप ना जाए लुट्टया, खेले खेल दो जहान। तेरा नाद शब्द नगारा वज्जे चार कूटया, दहि दिशा होए फ़रमान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे सच देवे ब्यान। तेरा मेरा सांझा घर, दूसर वण्ड ना कोई वण्डाईआ। तेरा मेरा रूप नारी नर, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। तेरा मेरा एका सर, अवर सर ना कोई वड्याईआ। तेरा मेरा भए डर, निरभउ आपणी खेल खिलाईआ। तेरा मेरा एका घाड़न ल्या घड़, ना कोए भन्न वखाईआ। तेरा मेरा एका मन्दिर, एका सेजे बैठे चढ़, एका पलँघ सुहाईआ। तेरा मेरा एका लड़, छुट कदे ना जाईआ। पारब्रह्म सुत्ता अग्गे खड़, सो पुरख निरँजण आप समझाईआ। लक्ख चुरासी अंदर जाणा वड़, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वर आप आपणी झोली पाईआ। पारब्रह्म करे निमस्कार, दोए जोड़ सीस झुकाया। सेवा करां अपर अपार, भुल कदे ना जाया। लक्ख चुरासी करां प्यार, घट घट अंदर आपणी जोत जगाया। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म दए अधार, ब्रह्म आपणा अंग वखाया। सोहे दर तेरा दरबार, दर दरवेश आस तकाया। शाहो भूप बण सिक्दार, तूं साचा हुक्म सुणाया। कवण वेला कवण वक्त कवण वार कवण थित करां तेरी विचार, कवण रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा मेरा मेरा तेरा एका दर सुहाया। सो पुरख निरँजण हरि समझाइंदा, पारब्रह्म दया कमा। लोकमात तेरी सेव लगाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रला। शब्दी शब्द वेख वखाइंदा, हरि वेखणहार सच्चा शहिनशाह। नौं नौं चार वण्ड वंडाइंदा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरा पन्ध दए वखा। जुग जुग गेड़ा आप भवाइंदा, गेड़नहारा बेपरवाह। निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा, आप आपणा रूप धरा। पंज तत्त चोला आप हंढाइंदा, गुर अवतार नाउँ धरा। भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा, सन्त साचे संग रला। गुरमुख आत्म मृदंग वजाइंदा, अनहद शब्द नाद सुणा। गुरसिख साचे गोद बहाइंदा, सिर आपणा हथ्थ टिका। मनमुख आपणे रंग रंगाइंदा, पंच विकारा झोली पा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर नाच नचाइंदा, आसा तृष्ना नाल रला। मन मति बुध वेख वखाइंदा, वेखणहारा दिस ना आ। जुग जुग आपणा रूप धराइंदा, आवे जावे भेख वटा। ब्रह्म तेरी सेवा इक्क जणाइंदा, लक्ख चुरासी नौं नौं चार एका गोद लए बहा। सतिजुग त्रेता द्वापर

कलिजुग तेरा राह तकाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा निष्अक्खर आपे लए पढ़ा। निष्अक्खर हरि पढ़ाया, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। पारब्रह्म तेरी सेवा सच जणाया, सेवक सेवा इक्क बण आईआ। लक्ख चुरासी तेरा रूप धराया, पंज तत्त करे कुड़माईआ। घड़न भन्नणहारा साची खेल खिलाया, लक्ख चुरासी गेड़ा रिहा चलाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गिण गिण आपणा पन्ध मुकाया, कोई भेव ना पा सके राईआ। जगत विद्या मात धराया, चारे वेद करे रुशनाईआ। पुराण अठारां तेरा जस गाया, शास्त्र सिमरत देण ग्वाहीआ। गीता ज्ञान मेरा नाउँ वटाया, उच्ची कूक कूक अल्ल़ाईआ, अञ्जील कुराना रौला पाया, तीस बतीसा दए मिलाईआ। खाणी बाणी भेव खुल्ल़ाया, बोध अगाध करे जणाईआ। शब्द हाणी मेल मिलाया, विछड़ कदे ना जाईआ। लक्ख चुरासी सुरत सुवाणी एका कन्त लए प्रनाया, हरि कन्त सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतार जुग जुग आपणी सेवा लाया, धुर फ़ुरमाना दए सुणाईआ। रामा कृष्ना रूप वटाया, ईसा मूसा खेल खिलाईआ। नानक गोबिन्द धार चलाया, जोती शब्दी नूर रुशनाईआ। पारब्रह्म तेरा जीउँ पिण्ड आप वसाया, ब्रह्म लेखा थांउँ थाईआ। वेला अन्त दए समझाया, भुल रहे ना राईआ। कलिजुग वेला अन्त रखाया, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल लोकमात जोती नूर करे रुशनाया, पंज तत्त ना कोए हंडाईआ। जोती

२२३ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण आपणा पड़दा आप चुकाईआ। नौ नौ चार पन्ध मुकावणा, सो पुरख निरँजण शब्द जणाइंदा। कलिजुग वेला अन्तिम आवणा, भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण रूप पुरख अबिनाशी आप वटावणा, जोती नूर डगमगाइंदा। निहकलंका नाउँ रखावणा, वेस अनेका आप वटाइंदा। सचखण्ड दुआरा लोकमात बणावणा, जिस दुआरे जोत जगाइंदा। सच सिँघासण इक्क उपजावणा, साचा बाढी बणत बणाइंदा। उप्पर आसण हरि हरि लावणा, माणस रूप ना कोए जणाइंदा। धुर फ़रमाना इक्क सुणावणा, शाह सुल्तानां आप उठाइंदा। सीस ताज इक्क टिकावणा, नव नव मूल चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क समझाइंदा। सचखण्ड दुआरा मातलोक, निरगुण निरवैर आप उपजाईआ। वसणहारा बिन किला कोट, चार दीवार ना बन्द रखाईआ। आपणे शब्द नगारे लाए चोट, दो जहानां आप सुणाईआ। आपणी रक्खे आपे ओट, दूसर सीस ना किसे झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग वेला अन्त सुहावणा, त्रैगुण वेख वखाइंदा। ब्रह्म मेला पारब्रह्म मिलावणा, पारब्रह्म आपणे रंग वखाइंदा। जोती जामा वेस वटावणा, दिस किसे ना आइंदा। लक्ख चुरासी वासना खोटी आप कढावणा, घट घट आपणा रूप वटाइंदा। आपणी चोटी चढ़ के आपे आसण लावणा, सच सिँघासण

सोभा पाइंदा। तख्त निवासी एका तख्त सुहावणा, राज राजानां ख़ाक मिलाइंदा। काग़ज़ कलम किसे भेव ना पावणा, हरि का लेखा लिख लिख पन्ध ना कोए मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक्क वड्यांअदा। सच सिँघासण हरि निरँकार, लोकमात वड्याईआ। नव खण्ड नौं दर मारे मार, नव जेठ दए वड्याईआ। नौ सत खेल आर पार करे कराए करनेहार, दो धार आप चलाईआ। निरगुण सरगुण इक्क प्यार, सरगुण निरगुण इक्क वरतार, निरगुण सरगुण इक्क जैकार, जै जैकार आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त सोभा पाईआ। साचा तख्त सुहावणा, कलि कल्की लै अवतार। नव नव चार पन्ध मुकावणा, पुरख अबिनाशी खेल अपार। लक्ख चुरासी चरन लगावणा, एका हुक्म सच्ची सरकार। लिख्या लेख ना किसे मिटावणा, ना कोए मेटे मेटणहार। आपणा मन्दिर आप उपावणा, साचा बंक इक्क न्यार। आपे चढ़ चढ़ आसण लावणा, आपे निरगुण दीपक जोत करे उज्यार। आपे शब्दी नाद वजावणा, आपे धुनी धुन सुणे सुणनेहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। सची सरकार हरि निरँकार, एका एक अख्वाईआ। कोटन कोटि जुग बीते विच संसार, कोटन कोटि राज जोग लए हंढाईआ। कोटन कोटि बणे सिक्दार, कोटन कोटी कोटि ख़ाक मिल जाईआ। अन्त आदि ना सके कोए विचार, चौदां विद्या भेव ना राईआ। चार वेद करन पुकार, कूक कूक कूक सुणाईआ। पुरख अबिनाशी सभ तों वसया बाहर, सो पुरख निरँजण सचा शहिनशाहीआ। अन्तिम अन्त पारब्रह्म तेरा कर्ज़ा दए उतार, मकरूज कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अदल आदल इक्क वखाईआ। अदल आदल करे इन्साफ़, लोकमात तख्त सुहाइंदा। जन भगत सन्त गुरमुख गुरसिख करे मुआफ़, दूजा बचया कोए रहिण ना पाइंदा। कूड़ कुड़यारा नाता तोड़े जीव जंत सज्जण साक, साख्यात रूप धराइंदा। दो जहानां खोल्हे आपणा ताक, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां एका वार वेख वखाइंदा। लोकमात दिसे जगत खाट, हरि सच सिँघासण नाउँ धराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुका के थक्के वाट, वेला अन्तिम आइंदा। चौदां लोक खुले हाट, चौदां तबक सीस झुकाइंदा। हरि जू हरि मन्दिर बह बह गाए आपणी गाथ, आप आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। अन्तिम वार छुट्टा साथ, सगला संग ना कोए निभाइंदा। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथ, त्रैभवन खोज खोजाइंदा। आदि पुरख आपणा पूरा करनहारा आपे वाक, अभुल आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म तेरा मेला आपे आपणे विच मिलाइंदा। सो पुरख निरँजन पारब्रह्म समाया, ब्रह्म भेव ना राय। आदि पुरख आपणा नाउँ धराया, अन्त रूप आप हो जाए। मध्ध आपणी खेल खिलाया, हरि सचा शहिनशाहे। जुग जुग आपणा

२२४

नद उपाया, आप आपणा नाउँ प्रगटाए। आपणे विचों आपा कढ्ढ लक्ख चुरासी घाड़न ल्या घड़ाया, अन्तिम लए मिटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण सोभा पाए। सच सिँघासण सुहाइंदा, घाड़त अपर अपार। कलिजुग भेव ना आइंदा, पढ़ पढ़ थक्के ना करे कोए विचार। साढे तिन्न हथ्थ वण्ड वंडाइंदा, नव सत मारे मार। जेरज अंडज फोल फोलाइंदा, उत्भुज सेत्ज पावे सार। आपणा हुक्म आप वरताइंदा, हुक्मी हुक्म खेल न्यार। तख्त निवासी तख्त सोभा पाइंदा, शाहो भूप सच्चा सिक्दार। सीस ताज जगदीस टिकाइंदा, पंचम मुख विचार। गुरमुखां दुःख गवाइंदा, नाता तोड़ कूड़ संसार। धरत मात दी कुक्ख सुहाइंदा, देवे वर आप निरँकार। उज्जल मुख मात कराइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर सच्ची सरकार। सच सरकार हरि निरँकारा, निरवैर खेल खिलाया। कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, राउ रंक रहिण ना पाया। चारे वरनां लेखा मुकाए आर पारा, बरन अठारां पन्ध मुकाया। पुरख अकाल इक्क इकल्ला एकँकारा, एका आप कराया। एका शब्द इक्क जैकारा, एका नाअरा दए सुणाया। एका राम कृष्न अवतारा, एका ईसा मूसा दए मिलाया। एका नूर संग मुहम्मद चार यारा, एका नानक गोबिन्द रूप वटाया। एका ब्रह्म सर्ब पसारा, एका पारब्रह्म वरतारा, एका आदि पुरख सहारा, आदि जुगादि खेल खिलाया। एका मेटे कलिजुग धूंआँधारा, एका सति सति करे वरतारा, सति सतिवादी खेल खिलाया। एका साचे तख्त बहे हो त्यारा, एका राज राजानां शाह सुल्तानां मारे मारा, एका गढ़ हँकार तुड़ाया। एका ऊँचां नीचां करे प्यारा, एका राउ रंकां दए सहारा, एका वरनां बरनां वसे बाहरा, एका बोले शब्दी सचा नाअरा, एका घट घट जोत जगाया। एका सिँघासण सोहे सच्ची सरकार, एका सतिजुग बन्ने साची धारा, एका सति सतिवादी सचखण्ड सुहाए बंक दुआरा, थिर घर एका आसण लाया। एका नारी नर दए आधारा, एका बिरध बाल जवान लेखा जाणे अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आपे चढ़, नाम खण्डा एका फड़, दो जहाना वेख वखाया। सच सिँघासण हरि जी चढ़या, साचा तख्त सुहाया। निरवैर पुरख एका खण्डा फड़या, दो जहाना रिहा चमकाया। लोहार तरखान किसे ना घड़या, विच म्यान ना बन्द कराया। अग्नी तत्त ना किसे सड़या, जगत धार ना कोए रखाया। आपणा खेल आपे करया, वेखणहारा आपे आया। आपणा घाड़न आपे घड़या, हरि आपे भन्न वखाया। आपणी विद्या आपे पढ़या, आपे जगत पढ़ावण आया। आपणे दुआरे आपे खड़या, आपे रिहा हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण सोभावन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत दुआरे आपे खड़या।

★ ३० माघ २०१७ बिक्रमी रेशम सिँघ दे गृह मेरठ छावनी ★

हरि पुरख अगम्म खेल अवल्ला, निरगुण आदि जुगादि कराइंदा। निरवैर निराकार वसणहार सचखण्ड सच महल्ला, जोती नूर डगमगाइंदा। जुगा जुगन्तर सति सतिवादी शब्द संदेश एका घल्ला, ब्रह्मण्ड खण्ड आप सुणाइंदा। अजूनी रहत जोती दीपक आपे बला, नूरो नूर डगमगाइंदा। वसणहारा नेहचल धाम अटल्ला, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा आपे जाणे आपणी रासा, आपणे मन्दिर सोभा पाइंदा। सो पुरख निरँजण पारब्रह्म बेअन्त, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणी खेल खिलाईआ। तख्त निवासी शाहो शाबासी पुरख अकाला दीन दयाला सोभावन्त, दर घर साचे सोभा पाईआ। भेख वटाए दया कमाए जुगा जुगन्त, जगत जुग आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। नाम दृढ़ाए शब्द अगम्मा मणीआ मंत, घट घट आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अगम्म ना मरे ना पए जम्म, अनुभव आपणी धार चलाईआ। अनुभव धार पुरख अकाला, अकल कलधारी आप चलाइंदा। आदि जुगादी खेल निराला, शाह कंगाला रूप धराइंदा। करे खेल थिर घर सच्ची धर्मसाला, गृह मन्दिर आपणा रूप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अनादि लेखा जाणे आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादि, भेव अभेदा भेव छुपाइंदा। एकँकारा खेल अपारा, ख़ालक ख़लक रूप समाईआ। एका नाद इक्क जैकारा, धुर फुरमाना आप सुणाईआ। एका पुरख एका नारा, एका कन्त इक्क भतारा, एका आसन सिँघासण सोभा पाईआ। एका सुत इक्क दुलारा, एका करे सच प्यारा, गोद सुहञ्जणी इक्क सुहाईआ। एका हुक्म इक्क वरतारा, एका शाह इक्क सिक्दारा, एका रईअत नाउँ वटाईआ। एका नूर इक्क उज्यारा, एका वसे सभ तों बाहरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, दर घर साचे सोभा पाईआ। एका घर एका दर, दर दरवाज़ा इक्क सुहाइंदा। एका चुकाए आदि अन्त डर, निरभउ आपणी खेल खिलाइंदा। एका घाड़न लए घड़, भन्नणहार आप हो जाइंदा। एका करता पुरख करनी रिहा कर, कादर कुदरत वेख लेख लिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, सो पुरख निरँजण आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा तख्त इक्क सुहाना, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। नाउँ निरँकार धुर फ़रमाना, आपणा आप प्रगटाईआ। आपे जाणे आपणा भाणा, दूसर भेव ना किसे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख प्रभ अपार, लेखा जाणे आपणी धार, धार धार विच समाईआ। धार धार विच

समाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। आपणी खेल आप खिलाइंदा, खेलणहार बेऐब परवरदिगार। आपणा नूर प्रगटाइंदा, नूरी जल्वा कर उज्यार। आपणी तूर आप सुणाइंदा, अनादी नाद सच्ची धुन्कार। आपणा शब्द आप प्रगटाइंदा , बोध अगाध इक्क जैकार। आपणा घर आप वसाइंदा, आपे पुरख आपे नार। आपे सुत दुलारा जाइंदा, आपे हित करे प्यार। आपे नित नवित खेल खिलाइंदा, खेलणहारा खेल करे अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, दूसर अवर ना कोए जणाइंदा। दूसर अवर ना कोए जणाया, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। गृह मन्दिर अंदर आपणा आसण लाया, निरगुण निरगुण आपणा रूप प्रगटाईआ। दीवा बाती इक्क जगाया, जोती नूर नूर रुशनाईआ। कमलापाती सोभा पाया, कँवल नैण वडी वड्याईआ। आपणी आरती आपणा हवन आप कराया, आपे आपणा आप पूज वखाईआ। आपे निउँ निउँ मस्तक सीस झुकाया, आपे मंगे चरन धूढ़ मस्तक सच्ची शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका घर, गृह मन्दिर आप सुहाईआ। गृह मन्दिर हरि सुहञ्जणा, सोभावन्त श्री भगवान। दीप जगाए जोत निरँजना, दीपां लोआं कर परवान। करे खेल सूरा सर्बंगना, जोद्धा सूरबीर वड बलवान। नाम मृदंग एका वज्जणा, हरि वजाए दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दर आपे मंगणा, आपे राज आप राजान। आपे राजा बण भिखारी, हरि साची खेल खिलाइंदा। आपे बणे चोबदारी, आपे शाह पातशाह रूप वटाइंदा। आपे देवणहारा साची दारी, आपे अग्गे झोली डांहयदा। आपे वणज आप वणजारी, आपे साचा वणज कराइंदा। आपे निरगुण जोत नूर उज्यारी, आपे धूंआँधार समाइंदा। आपे शब्द नाद धुन्कारी, आपे सुन अगम्म आपणी खेल खिलाइंदा। आपे निरगुण सरगुण पैज संवारी, रूप अनूप आप धराइंदा। आपे विष्नूं करे सच प्यारी, विश्व आपणा अंग वखाइंदा। आपे अमृत सच भण्डारी, आपे कँवल नाभ रखाइंदा। आपे फुल्ल आपे फुलवाड़ी, पत्त डाली आप महिकाइंदा। आपे पारब्रह्म ब्रह्म भेद अपारी, आप आपणा अंग कटाइंदा। आपे शंकर आपे शाह अस्वारी, सगला संग रखाइंदा। आपे विष्न बण भण्डारी, सति भण्डारा आप वरताइंदा। आपे ब्रह्म बण लिखारी, साचा लेखा आप जणाइंदा। आपे शंकर होए आधारी, भेव कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा हरि सुहाया, आदि पुरख पुरख अगम्म। आपणे मन्दिर आपणा आसण लाया, ना कोई सूरज ना कोई चन्न। मंडल मण्डप ना कोई रखाया, ना कोई बेड़ा रिहा बन्न्ह, आपणा बन्न्ह आप चलाया। आपे जननी आपे जन, आपे साची गोद सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे नाद आपे धुन, आपे सुणे आपणा राग, आपे कन्न सुणाया। राग निराला आप सुणाइंदा,

आदि पुरख बेपरवाह। आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव लए उपा। तिन्नां एका दर वखाइंदा, पुरख अबिनाशी आप खुला। साचे तख्त सोभा पाइंदा, जोती जाता डगमगा। सीस ताज इक्क टिकाइंदा, शहिनशाह सच्चा पातशाह। समरथ पुरख आपणा नाउँ धराइंदा, महिमा अकथ कथी ना जा। निरगुण आपणा बेड़ा आप चलाइंदा, आपे चप्पू देवे ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आपणे विच रखाइंदा। हरि आपणा भेव छुपाइंदा, आदि जुगादी कार। विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाइंदा, दोए जोड़ करन निमस्कार। दर भिखारी मंग मंगाइंदा, देवणहारा वड दातार। देवणहारा दिस ना आइंदा, क्या कोई करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख करे खेल अपार। साची वस्त अमोलक हरि करतारा, आपणी आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यारा, एका तत्त समझाईआ। एका सुत इक्क दुलारा, एका नाम इक्क प्यारा, एका मन्दिर कर उज्यारा, एका नूर नूर दरसाईआ। एका अमृत ठंडा ठारा, एका देवे जाम न्यारा, भर प्याला आप प्याईआ। एका वस्त हरि थारा, देवणहारा हरि निरँकारा, दूसर अवर ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता, करनहार करनेयोग आपणी किरत आप कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा रूप उपा, आपणी दया कमाइंदा। निश्अक्खर दए पढ़ा, आपणा भेव आप चुकाइंदा। धुर फ़रमाना दए सुणा, भुल कोई ना जाइंदा। विष्न तेरा अंग लगा, अंगीकार सोभा पाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म तेरा अंग कटा, रूप अनूप आप धराइंदा। शंकर हथ्थ त्रिसूल फड़ा, त्रै त्रै धार आप जणाइंदा। त्रैगुण माया तत्त समझा, सतो रजो तमो आपणी खेल खिलाइंदा। करे खेल बेपरवाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख एका नर, नरायण नाउँ धराइंदा। नर नरायण हरि निरँकारा, बाल बिरध जवान ना रूप कोई वटाईआ। एका मन्दिर इक्क घर बारा, एका गृह दए वसाईआ। एका नूर इक्क उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा शिव एका गुण जणाईआ। हरि साचा गुण जणाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यार। धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा, सुणावणहारा एकँकार। ब्रह्मण्ड खण्ड साची रचना आप सुहाइंदा, लोआं पुरीआं दए सहार। थान थनंतर वेख वखाइंदा, बेअन्त बेऐब परवरदिगार। साची बणत आप बणाइंदा, घाड़न घड़े अपर अपार। सच ठठयारा आपणा नाउँ धराइंदा, आपे जाणे आपणी साची कार। त्रै मेला मेल मिलाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव आधार। ब्रह्म एका मंग मंगाइंदा, निउँ निउँ चरन सरन करे निमस्कार। पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा, पंज तत बणे वरतार। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश एका रंग रंगाइंदा, रंग रंगीला मोहण माधव मीत मुरार। लक्ख चुरासी आपे वण्ड वंडाइंदा, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप निरँकार। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ना, हरि विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाया। घट घट अंदर हरि जू वड़ना, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। दीपक जोती एक धरना, जोत निरँजण डगमगाया। आत्म अमृत एका भरना, निझर झिरना आप झिराया। घर विच घर आपे घड़ना, घर घर विच सोभा पाया। ब्रह्म रूप पारब्रह्म वरना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव दिता एका वर, भुल कदे ना जाया। विष्न ब्रह्मा शिव हरि समझाइंदा, कर किरपा गुण निधान। लक्ख चुरासी बणत बणाइंदा, पंज तत्त कर परवान। त्रैगुण आपणा खेल खिलाइंदा, खेलणहार श्री भगवान। जेरज अंडज आपणा रूप धराइंदा, उत्भुज सेत्ज करे परवान। आपणा हुक्म आप उपाइंदा, चारे बाणी गुण निधान। परा पसन्ती नाउँ रखाइंदा, खेले खेल सुंञ मसाण। मद्धम आपणे कंठ वखाइंदा, बैखरी बत्ती दन्द गान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा देवे एका वर, आदि पुरख श्री भगवान। आदि पुरख फ़रमाया, एका शब्द सलोक। विष्न ब्रह्मा शिव उठाया, लेख जणाया तीनां लोक। सिर आपणा हथ्थ रखाया, आत्म अन्तर बख्शी मोख। गुण अवगुण ना कोए रखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क जणाए साची ओट। एका ओट नरायण नर, सो पुरख निरँजण आप समझाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़, सेवक सेवा वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी देवे वर, निरभउ भय डर इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप जणाइंदा। निर्भय भउ जणाया, आप आपणी किरपा धार। जो घड़या भन्न वखाया, थिर रहे ना विच संसार। आवण जावण रचन रचाया, रच रच वेखे आप निरँकार। अडोल अडुल वेस वटाया, वेस अवल्ला करे आप करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव दए इक्क आधार। लक्ख चुरासी गेड़ चलावणा, हरि साचा हुक्म चलाइंदा। चारे खाणी वण्ड वण्डावणा, चारे जुग बन्धन पाइंदा। चारे वेद रंग रंगावणा, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। चार वरनां बन्धन पावणा, शतरी ब्रह्मण शूद्र वैश एका ब्रह्म उपजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका तत्त ज्ञान गुण निधान आप समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुण हरि फ़रमान, दोए जोड़ करन निमस्कारा। तूं दाता दानी वड मेहरवान, हउँ सेवक दर भिखारा। सेवक बण सेवा करे विच जहान, भुल ना जाए विच संसारा। कवण वेला कवण वक्त मिलें हरि तूं हरि हरि आण, बख्शे चरन प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह पए चरन दुआरा। ढह ढह सरनाई मंगी मंग, चरन कँवल ध्यान लगाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता सूरा सरबंग, देवणहार इक्क अख्वाया । जुग चौकड़ी खेले खेल श्री भगवान, भगवन आपणा रूप प्रगटाया।

लेखा जाणे सूरज चन्न, रवि ससि आप उपाया। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा बेड़ा देवे बन्न, बन्नणहार आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए चुकाया। हरि आपणा भेव चुकाइंदा, बेऐब बेपरवाह। नौं नौं चार जुग चौकड़ी तेरी सेवा लाइंदा, विश्व विष्न ल्या समझा। ब्रह्म तेरी वण्ड वंडाइंदा, चार नौं नौं एका रंग रंगा। शंकर तेरा पन्ध मुकाइंदा, त्रै त्रै लोकां वेखे थाउँ थाँ। निरगुण हुक्म निरगुण फ़रमान, निरगुण शब्द निरगुण पद निरबान, निरगुण साचा धाम वड्यांअदा। निरगुण अन्त प्रगट होए विच जहान , निरगुण रूप ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव हरि उपजाया, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आपणा हुक्म आपणे विच टिकाया, कोई लिखे कलम ना शाहीआ। चारे वेद भेव ना राया, ब्रह्मा चारे मुख सालाहीआ। चारे जुग मुख शरमाया, जुग चौकड़ी देण दुहाईआ। चारों कुण्ट दिस ना आया, हरि सच्चा इक्क रघुराईआ। कलिजुग अन्तिम अन्त पर्दा दए उठाया, मेट मिटाए झूठी शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वक्त सुहेला आपे दए जणाईआ। वक्त सुहेला साचा आवणा, हरि साचा सच जणाइंदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ रखावणा, लोकमात वेख वखाइंदा। अवतार गुरु पीर सेवा लावणा, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। आपणा अन्त ना किसे जणावणा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सर्ब गाइंदा। त्रलोकी नाथ रूप वटावणा, त्रै त्रै एका गंढु बंधाइंदा। जुग जुग शब्द संदेश आप सुणावणा, आपणा नाउँ आप धराइंदा। कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकावणा, जुग चौकड़ी रहिण ना पाइंदा। लक्ख चुरासी वेख वखावणा, गगन गगनंतर फोल फुलाइंदा। आपणा नाद ब्रह्म ब्रह्माद आप वजावणा, रागी राग ना कोए अलाइंदा। आपणी धुन आपणे विचों काढ आप सुणावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप जणाइंदा। कलिजुग अन्त सुहावणा, हरि साचा सच समझाए। निरगुण निरवैर पुरख अकाल आपणा रूप धरावणा, लोकमात विच दसाए। विष्न तेरा संग रखावणा, विछड़ कदे ना जाए। पारब्रह्म रूप धरावना, सो पुरख निरँजण वेस वटाए। ब्रह्म रूप सर्ब उठावणा, हँ आपणी अंस जणाए। शाह पातशाह आप अख्वावणा, राज राजाना मेट मिटाए। नव खण्ड एका हुक्म सुणावणा, धुर फ़रमाना आप अलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, इक्क इकल्ला बेपरवाहे। बेपरवाह हरि निरँकारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। निरगुण रूप धरे विच संसारा, जोती नूर नूर रुशनाईआ। शब्दी शब्द शब्द वरतारा, नाम भण्डारा आपणे हथ्थ रखाईआ। शाह सुल्तानां करे ख्वारा, राज राजानां खाक मिलाईआ। नाता तोड़े ममता माया मोह विकारा, जूठ झूठ ना कोए वड्याईआ। गढ़ तोड़े हउमें हंगता जगत हँकारा, हँकारी गढ़ रहिण ना पाईआ।

२३०

लक्ख चुरासी बन्ने एका धारा, इष्ट देव इक्क वखाईआ। चार वरन करे ख्वारा, बरन अठारां रहिण ना पाईआ। एका तीर्थ एका तट इक्क वखाए सच किनारा, एका घाट आप प्रगटाईआ। एका जप एका तप वखाए हरि निरँकारा, एका रूप अनूप आप दरसाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी पाए सारा, सारंगधर भगवान बीठलो आपणा रूप अनूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, आपे पूर कराईआ। आपे वर दीआ करतार, हरि आपे वेस वटाइंदा। आपे घाड़न घड़ संसार, हरि जू आपे भन्न वखाइंदा। आपे विष्न ब्रह्मा शिव लाए सेवादार, हरि आपे आपणे विच समाइंदा। हरि आपे रवि ससि सूरज चन्न कर उज्यार, हरि आपे मंडल मण्डप डेरा लाइंदा। हरि आपे सतिजुग त्रेता द्वापर लै लै अवतार, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। आपे कलिजुग लेख लिखे लिखणेहार, लिख लिख आपणा लेख वखाइंदा। आपे मार्ग दस्से गुर अवतार, आपे गुर गुर रूप वटाइंदा। आपे गुर गुर भिच्छया मंगे अपार, आपणी झोली आप उठाइंदा। आपे देवणहार सच्ची सरकार, सति भण्डार आप वरताइंदा। आपे पंज तत्त करे प्यार, आपे जोती नूर डगमगाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यार, वेद कतेब भेव ना आइंदा। निरगुण जामा हरि हरि रामा, निहकामा आपणी खेल खिलाइंदा। घट घट होए अन्तरजामा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पन्ध आप मुकाइंदा। आपणा पन्ध मुकावण आया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखावण आया, जुगा जुगन्तर साची कार। भगत भगवन्त आप उठावण आया, लक्ख चुरासी कर विचार। सन्त कन्त मेल मिलावण आया, धन्न सभागण होए नार। गुरमुख गोद बहावण आया, आप आपणी किरपा धार। गुरसिखां मार्ग इक्क समझावण आया, सच सुच धरे प्यार। दर घर साचा इक्क वखावण आया, चरन कँवल सचा दरबार। दर दरवाज़ा आप खुलावण आया, काया मन्दिर अंदर बन्द किवाड़। हरिजन तेरा पन्ध मुकावण आया, लक्ख चुरासी गेड़ा दए नवार। घर घर विच आप वखावण आया, कर किरपा हरि निरँकार। डूंघी भँवरी पार करावण आया, कलिजुग सागर करे पार। अमृत आत्म सति प्यावण आया, निझर झिरना झिरे अपार। बजर कपाटी तोड़ तुड़ावण आया, शब्द खण्डा देवे मार। निरगुण जोती जोत जगावण आया, जोती जाता हो त्यार। सुरती शब्दी मेल मिलावण आया, शब्द वचोला विच संसार। राती रुत्ती आप सुहावण आया, सुहञ्जणी रैण हरि निरँकार। भिन्नड़ी आपणे रंग रंगावण आया, सिर आपणा हथ्थ रक्ख करतार। आत्म सेजा आप सुहावण आया, गुरमुख विरले कर प्यार। जुग जुग विछड़ी कलिजुग पंजां तत्त आप मिलावण आया, निरगुण रूप अगम्म अपार। आपणी गोद आप सुहावण आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सची सरकार। सच सरकारा हरि निरँकारा, आदि जुगादि इक्क अख्वाइंदा। कलिजुग

अन्तिम हो उज्यारा, विच संसारा निरगुण धार आप चलाइंदा। भगत भगवन्त करे प्यारा, साचे सन्तां दए हुलारा, नाम हलूणा एका लाइंदा। गुरमुख दर दुआरा खोल्ह्णहारा बन्द किवाड़ा, डूंघी भँवरी फोल फुलाइंदा। गुरसिखां बख्शे इक्क दुआरा, धरनी धरत धवल उप्पर सच सहारा चरन कँवल इक्क दरसाइंदा। विष्नूं ब्रह्मा शिव मेल मिलाए इक्क दरबारा, दर दरवाज़ा आप सुहाइंदा। अकल कला कल खेल न्यारा, कल काती भेव ना आइंदा। लिखण पढ़ण ते वसया बाहरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा बन्धन आप तुड़ाइंदा। कलिजुग बन्धन तोड़ना, कर किरपा गुण निधान। गुरमुख विरला चरनी जोड़ना, जिस देवे आत्म अन्तर इक्क ज्ञान। मनमुख जीव दर तों होड़ना, अंदर धरे माण अभमान। गुरमुख विरले आपे बौहड़ना, अन्त मिटाए जम की काण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन लक्ख चुरासी विचों लए पछाण। हरिजन आप उठालदा, जुगा जुगन्तर साची कार। दीपक जोत आपे बालदा, मेट मिटाए अन्ध अन्धयार। अमृत सीर सच प्याला आप प्यालदा, सति सन्तोखी देवे धीर। घर घर विच आप वखालदा, वड दाता पीरन पीर। आत्म सेजा आप बहालदा, आपे चोटी चढ़े अख़ीर। गुरसिख लेखा जाणे साचे लाल दा, लाल अनमुल्लड़ा एका हीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेखणहार तन बस्त्र काया कप्पड़ चीर। काया कप्पड़ चीर तन, हरि साचा वेख वखाइंदा। माया ममता मोह हँकार विकार रस माणे झूठा मन, मन मनूआ ना कोए भराइंदा। चार कुण्ट जगत अन्धेरा घर मन्दिर ना चढ़े साचा चन्न, जोती नूर ना कोए वखाइंदा। गुरसिख विरला रसना कहे धन्न धन्न धन्न, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। राए धर्म ना देवे डन्न, चित्रगुप्त ना हिसाब खुल्हाइंदा। लाड़ी मौत भाण्डा ना देवे भन्न, कुम्भी नर्क ना कोए फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन विरले मात उठाइंदा। हरिजन विरला उठया, जिस उप्पर आप कृपाल। सतिगुर साहिब हाजर हज़ूर हरि हरि तुठया, दाता दानी दीन दयाल। देवे राम नाम इक्क अतुट्टया, जगत पित सदा कृपाल। लोकमात जाए ना लुट्टया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन बणे आप दलाल। जगत दलाल साचा गुर, दूसर अवर ना कोए जणाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लेखा लिख्या जाणे धुर, धुर लेखा आपणे हथ्थ रखाया। विष्न ब्रह्मा शिव प्रभ दरसन को लोचन सुर, करोड़ तेतीस ध्यान लगाया। कलिजुग अन्तिम अन्त श्री भगवन्त गुरमुख सज्जण जाए बौहड़, कलिजुग जीव बौहड़ी बौहड़ी कर सर्ब रवाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्त बुझाए लग्गी औड़, दे दरस तृखा गंवाया। लक्ख चुरासी जीव जंत वेखे रीठा मिट्ठा कौड़, रस वख खेल खिलाया। एथे

ओथे दो जहानां अवण गवन त्रैभवन लोक परलोक खण्ड ब्रह्मण्ड लोआं पुरीआं लाया एका पौड़, गगन पातालां जीव जहानां हरि जू हरि हरि वेख वखाया। किसे हथ्थ ना आए ब्रह्मण गौड़, पूत सपूता सम्बल नगर वसे लेखा जाणे ना कोए लम्बा चौड़, भेव अभेद ना किसे जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भगवन्त सन्त कन्त हरि मन्दिर घट अंदर गृह खोज खोजत खोजत गुरमुख गुरसिख आपणा मेल मिलाया।

★ १ फग्गण २०१७ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

जगत मसला जगत धरत महल्ला, हरि दातार आप बणाइंदा। नूर नूरानी नूरी अल्ला, अल्ला हू आपणा खेल खिलाइंदा। परवरदिगार इक्क इकल्ला, लाशरीक रूप वटाइंदा। करे खेल अछल अछला, भेव कोए ना पाइंदा। आदि अन्त सदा सद सहेला, बिस्मिल आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत मसला आपणे हथ्थ रखाइंदा। जगत मसला ख़ाकी ख़ाक, ख़लक ख़ालक वेख वखाईआ। शाह अस्वारा चढ़या साचे राक, साची ज़ीनत जीन कसाईआ। वेखणहारा मुकामे हक उच्च महिराब, आफ़ताब ना कोई रुशनाईआ। आपणा जाणे हक हकीकत पुन्न सवाब, साबत आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत मसला इक्क समझाईआ। जगत मसला पीरन पीर, परवरदिगार आप बणाइंदा। आपे जाणे आपणा बस्त्र चीर, आप आपणा रूप धराइंदा। आपे शहिनशाह शाह होए दस्तगीर, दस्त बरदार भेव ना आइंदा। लेखा जाणे आकबत उकबत इक्क हकीर, रज्जत आपणा मुख समझाइंदा। सोहबत साबत सय्याद ना बदले कोई तदबीर, तकदीर तकसीर आपणी खेल खिलाइंदा। करे खेल हरि बेनज़ीर, नज़र विच किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत मसला इक्क वखाइंदा। जगत मसला एका अलिफ़, ख़ुदावंद आप उपाईआ। आपणा लै लै आया आपे हलफ, दूसर संग ना कोई रखाईआ। आपणे उत्ते कदे ना करे तरस, आपणा कीता ना कदे उलटाईआ। लेखा जाणे अर्श कुर्श, फर्श चरनां हेठ फिराईआ। दो जहाना मिटाए आपणी हरस, हवस होर ना कोई दरसाईआ। आपणी करन आया आपे परख, बेऐब नाम ख़ुदाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता ग़म ना कोई रखाईआ। ना कोई लिख्त ना कोई पढ़त, शब्दी शब्द ना कोई सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क मसला दए समझाईआ। साचा मसला हरि ख़ुदा, आपणा आप बणाया। आपणे नालों हो जुदा, आपणी

खेल खिलाया। आपणे उत्तों हो फ़िदा, एका नाम मिटाया। आपणा लेखा आप मुका, आपे दए समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत मसला हथ्थ रखाया। जगत मसला हरि मेहरवान, आपणे हथ्थ रखाइंदा। शाह पातशाह नौजवान, नूर नूराना रूप धराइंदा। तालब तालबा वेखे दो जहान, आप आपणा भेव खुलाइंदा। आदि जुगादि जानणहारा सच ईमान रहिमान, आपणी दया कमाइंदा। आपे लेखा जाणे आपणे मकतब आपे पढ़े सच कुरान, आपणी हदीस आप अलाइंदा। आप वखाए सच निशान, सच निशाना आप सुहाइंदा। आपे हक हकीकत देवे दान, हक बहक आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मसला दो जहान, आपे वेख वखाइंदा। मसला वेखण आया, निरगुण नूरी नूर अल्ला। जल्वा जल्वा आप उपजाया, बेऐब हो रुशना। कलमी कलमा आप सुणाया, आप आपणा ढोला गा। बण बण कातब आप लिखाया, ना कोई लिखे कलम शाह। मकीर आपणा रूप धराया, आकबत जाणे दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मसला आपे ल्या बणा। साचा मसला हरि बणाया, भेव कोई ना पाइंदा। पीर फ़कीर शाह हकीर दस्तगीर आप उपजाया, आपे खेल खिलाइंदा। मुला मुसायक आपे लैण पढ़ाया, आयत शरायत आप जणाइंदा। सच ईमान धुर फ़रमान निगहबान इक्क दरसाया, रहिमान आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मसला आप सुणाइंदा। मसला बणाया श्री भगवन्त, आदि पुरख वडी वड्याईआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, जाग्रत जोत कर रुशनाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहत पारब्रह्म आप बणाए आपणी बणत, अनुभव प्रकाश कराईआ। आपणी इच्छया पाए भिच्छया करे रिच्छया सर्ब गुणवन्त, दूसर अवर ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलाईआ। भेव खलाए हरि निरँकारा, आदि पुरख वडी वड्याईआ। खेले खेल अपर अपारा, अलख अगोचर भेव ना राईआ। साचे मन्दिर हो उज्यारा, सचखण्ड करे रुशनाईआ। घर विच घर कर त्यारा, थिर घर घाड़न लए घड़ाईआ। बाढी बण आप करतारा, आपणी सेवा आपणे हथ्थ रखाईआ। सच सिँघासण साची धारा, पुरख अबिनाशी आप सुहाईआ। पावा चूल ना कोई सहारा, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। आपणा बल आपे धारा, आपणी शक्ती शक्त रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड साचा इक्क सुहाईआ। सचखण्ड सच हरि सुहाइंदा, आदि पुरख सच्ची सरकार। सच सिँघासण इक्क विछाइंदा, पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार। आपणा चरन आप टिकाइंदा, जोती जाता हो उज्यार। आपणा हुक्म आपणे विचों आप प्रगटाइंदा, आपे होए सुणनेहार। आपे सच फ़रमाना आपणा राग अलाइंदा, आपे करे कराए साची कार। आपे सच सच दर सुहाइंदा, घर

२३४ २३४

साचे जै जैकार। आपे सच सच धार वखाइंदा, सति सतिवादी एकँकार। आपे सचखण्ड डेरा लाइंदा, आपे थिर घर खोल्हे चरन किवाड़। आपे सुत दुलारा शब्द वसाइंदा, करे कराए सच प्यार। आपे हुक्मी हुक्म वरताइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, हरि सच्चा शाह कार। हरि हरि खेल खिलाया, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपणा घाड़न आप घड़ाया, रूप रंग ना कोई रखाईआ। आपणे मन्दिर कर रुशनाया, दीवा बाती इक्क जगाईआ। आपणा हाणी आप मनाया, आपे नार सुहागन हो हो ख़ुशी मनाईआ। आपणा नाम बैरागन हो हो आपे गाया, गीत आपणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणा भेव आपणे विच छुपाईआ। आदि पुरख एकँकारा, अकल्ल कल अख्वाइंदा। जोती नूर नूर उज्यारा, जल्वा नूर आप धराइंदा। आपे होए साचा यारा, साचे तख़्त सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आप छुपाइंदा। सचखण्ड दुआर सुहाया, कर किरपा हरि मेहरवान। थिर घर साचा आप उपाया, शब्द वसाए नौजवान। एका बन्धन आप वखाया, आदि पुरख श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बन्धन पाए गुण निधान। साचा बन्धन हरि करतारा, शब्दी शब्द बंधाइंदा। एका हुक्म इक्क वरतारा, एका वार सुणाइंदा। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका घर वसाइंदा। एका नूर इक्क उज्यारा, एका दीप टिकाइंदा। एका मीत इक्क मुरारा, एका संग निभाइंदा। एका गीत इक्क जैकारा, एका हरि सुणाइंदा। एका दर इक्क भिखारा, एका वस्त वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। हरि साचा राह चलाया, शब्द अनादी हो मेहरवान। आपणा रूप आप प्रगटाया, आपे देवणहारा दान। आपे विष्नूं विश्व समाया, आपे पारब्रह्म ब्रह्म लेखा जाणे आण। आपे शंकर रंग रंगाया, करे खेल श्री भगवान। तिन्नां एका बन्धन पाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर फ़रमान। धुर फ़रमान जणाइंदा, हरि दाता पातशाह। एका शब्द राह वखाइंदा, आप आपणा पर्दा लाह। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाइंदा, निरगुण निरवैर बण मलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका देवे सच सलाह। आदि पुरख आदि, सच सलाह इक्क जणाइंदा। मेरी इच्छया साचा नाद, शब्दी नाउँ उपजाइंदा। साची सेवा ब्रह्म ब्रह्मादि, घाड़न घड़नहार आप घड़ाइंदा। मेरी महिमा बोध अगाध, साची वस्त इक्क दरसाइंदा। मेरा अन्त मेरा मध्ध मेरा आदि, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रक्खणा याद, निरगुण आपणा हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा। भेव खुल्हाए हरि भगवान, विष्न ब्रह्मा शिव पढ़ाया। बाल अञ्याणे फड़ नादान,

बाली बाला वेख वखाया। चरन सरन सरन चरन बख्शे इक्क ध्यान, दीनन नाथ दया कमाया। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, लिखण पढ़ण विच ना आया। साची सेवा देवे दान, जुग जुग सेव लगाया। करे खेल श्री भगवान, आदि पुरख पुरख बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा रूप समझाया। हरि आपणा रूप समझाइंदा, सो पुरख निरँजण हो मेहरवान। हरि पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा, एकँकारा देवे दान। आदि निरँजण जोत जगाइंदा, श्री भगवान बख्शे माण। अबिनाशी करता रंग रंगाइंदा, पारब्रह्म नौजवान। शब्द साचा सुत उठाइंदा, बख्शणहारा चरन ध्यान। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाइंदा, आदि पुरख रक्खे एका आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, भुल ना जाणा बण नादान। विष्न ब्रह्मा शिव हरि समझाया, एका तत्त दृढ़ाइंदा। शब्द विचोला नाल मिलाया, सगला संग रखाइंदा। आपणा रूप दए दरसाया, रूप अनूप आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। मेरा रूप सो धार, आदि पुरख समझाया। हँ रूप शब्द प्यार, सुत अनादी जाया। शब्द सो ख़बरदार, ना मरे ना जाया। हँ रूप विष्न ब्रह्मा शिव करे प्यार, पूत सपूता इक्क वखाया। मेरा नाउँ विष्न ब्रह्मा शिव सो रंग रंगाया, त्रैगुण माया दए आधार, जगत रूप प्रगटाया। मेरा नाउँ त्रैगुण विचार, हँ पंज तत्त खेल खिलाया। आदि जुगादी करां कार, भेव किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाया। सो पुरख निरँजण आप समझाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यार। पारब्रह्म आपणा नाउँ धराइंदा, हँ वण्डण वण्डे आप करतार। लक्ख चुरासी घाड़न आप घड़ाइंदा, निरगुण सरगुण लए उभार। सोहँ आपणा अंग बणाइंदा, आदि पुरख साची कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव दिता वर, लक्ख चुरासी भर भण्डार। लक्ख चुरासी सोहँ धारा, हरि साचा सच जणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म करे प्यारा, एका घर वेख वखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म मेला नारी कन्त भतारा, हरि साची सेज सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी खेल खिलाइंदा। लक्ख चुरासी खेल खिलाया, पुरख अबिनाशी भेव ना राया। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा लाया, सेवक सेवा इक्क समझाया। सो पुरख निरँजण वेख वखाया, हँ बण बण दाई दाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचे हरि, सोहँ आपणा नाउँ प्रगटाया। सोहँ साची धार, हरि साचे आप चलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म उज्यार, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। करे खेल सच्ची सरकार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। एका हुक्म इक्क गुफ्तार, आपणी आप समझाईआ। जुग चौकड़ी लए विचार, जगत जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव भुल ना जाणा विच संसार,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म जणाईआ। सुणया हुक्म धुर फ़रमान, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाइंदा। तूं शाह पातशाह सच्चा सुल्तान, हउँ सेवक सेव कमाइंदा। तेरा दर सच्चा दरबार, हउँ बाल अञ्याणा बणां दरबान, दर दरवेश सीस झुकाइंदा। तेरी सेवा करां विच जहान, भुल कदे ना जाइंदा। किरपा कर एका देणा वर, कवण वेला कवण वक्त मेला करें आण, निरगुण निरगुण खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वण्ड आप वंडाइंदा। साची वण्ड वण्डे भगवान, विष्न ब्रह्मा शिव समझाया। जेरज अंड उत्भुज सेत्ज खोल्हे मात दुकान, चारे कुण्टां वेस वटाया। चारे जुग करे प्रधान, भइया भइया मेल मिलाया। चारे हुक्म दए फ़रमान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाया। चारे वेद बणाए विधान, विद्दत आपणे विच टिकाया। नौं नौं वेखे जीव जहान, चार चार आपणा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाया। हरि लेखा सच समझाइंदा, नौं नौं चार खेल अवल्ला। जुग चौकड़ी रूप वटाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग फड़ाए पल्ला। निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा, दीपक जोती आपे बला। शब्द अनादी नाद वजाइंदा, सच सिँघासण बैठ इक्क इकल्ला। बोध अगाधी आप सुहाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा बला। बलधारी वड बलकार, एका इक्क अख्वाइंदा। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, मुकामे हक डेरा लाइंदा। सचखण्ड खोल्हे आप किवाड़, आपणी हथ्थीं कुण्डा आप तुड़ाइंदा। ब्रह्मण्ड पावणहारा सार, सूरज चन्न आप चमकाइंदा। लोआं पुरीआं बन्न्हे धार, गगन पातालां डगमगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे प्यार, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बीतण विच संसार, गुर पीर अवतार सेवा आप लगाइंदा। निरगुण सरगुण रूप धर आए आप निरँकार, पंज तत्त चोला आप हंढाइंदा। आपे मंगे बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डांहयदा। आपे देवणहार दातार, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। आपे बणे सच्चा सिक्दार, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। आपे दर दरवेश बणे भिखार, आपे आपणी अलख जगाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव रहिणा ख़बरदार, हरि साचा सच जणाइंदा। कलिजुग आए अन्तिम वार, नौं नौं चार रहिण ना पाइंदा। गुर पीर अवतार उच्ची कूकण करन पुकार, पीर दस्तगीर राह तकाइंदा। सभ तों वक्खरा सभ दा यार, हर घट मेल मिलाइंदा। उल्फ़त विच ना आए कदे संसार, ग़फ्लत विच नींद वखाइंदा। साचा मसला करे त्यार, दूसर संग ना कोए जणाइंदा। आलम उल्मा आप करे विचार, आलमगीर भेव कोए ना पाइंदा। कोटन कोटि पीर पैग़म्बर बणाए तुलबा विच संसार, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, मुख आपणे पर्दा पाइंदा। क्या कोई करे जीव विचार, हरि का रूप दिस ना आइंदा। विष्न

ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी आप उठाइंदा। प्रगट हो के आवे नर निरँकार, सरगुण लेखा पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा हरि सुहाइंदा, सोभावन्त गहर गम्भीर। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा, चोला बस्त्र पहरे नील। कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा, पारब्रह्म ब्रह्म छैल छबील। कील विच किसे ना आइंदा, ना कदी मन्ने किसे दी दलील। जगत वकील ना कोए बणाइंदा, आपे चोटी चढ़या इक्क अख़ीर। जगत फ़कीर ना कोए मनाइंदा, ना पढ़े किसे दी कोई तकबीर। गल तसबी ना कोए पाइंदा, शाह पातशाह वड पीरन पीर। सजदा सीस ना किसे झुकाइंदा, करे खेल बण हकीर। वुज़ू बांग ना कोए रखाइंदा, सजदा पावे ना कोए ज़ंजीर। आयत शरायत पढ़न किते ना जाइंदा, ना कोई काअबा वेखे गुणी गहीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, करे खेल आप अख़ीर। हरि मसला शब्द बणाया, नूरी सदा बांग आवाज़ । आपणे हुजरे बह बह गाया, पुरख अबिनाशी शाह नवाब। ताब कोए झल्ले ना राया, देवणहारा सर्ब अज़ाब। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल शाह नवाब। शाह नवाब शाह सुल्ताना करे मुख़ातब, मख़लूक आप जणाईआ। लेखा लिखण आया बण के कातब, कलमा आलमीन आपणे हथ्थ रखाईआ। कायनात पीर पैग़म्बर औलीआ शेख अन्त रिहा ना कोए साबत, तकदीर सभ दे सिर ते आप भवाईआ। जो आया वजा के गया मेरा नाउँ नौबत, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। चौदां लोक सुणदे मेरी सोहबत, चौदां तबक राह तकाईआ। कलिजुग अन्तिम आए हैबत, चारों कुण्ट कुण्ट दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव दए सुणाईआ। हरि सुणाया धुर फ़रमाना, लिखण पढ़न विच ना आया। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवाना, चरन कँवल सीस झुकाया। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी चोला होए पुराणा, थिर कोए रहिण ना पाया। गुर अवतार जा जा गायण तेरा गाना, बेअन्त तेरा नाउँ वड्याआ। तेरा भेव किसे ना पाना, भेव अभेदा आप छुपाया। कलिजुग अन्तिम होवे आप मेहरवाना, पारब्रह्म सच सच्ची तेरी सरनाया। लोकमात जोती पहरे जामा, जोती जोत नूर रुशनाया। शब्द वजाए सच दमामा, कायनात आप सुणाया। जबराईल मेकाईल असराईल असराफ़ील बणन तेरे गुलामा, साची सेवा इक्क जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव दर मंग मंगाया। वर देणा हरि निरँकारा, हउँ बाल सेव अंजाणया। जुग चौकड़ी वरते तेरा भाणा, गुर कोई रहे ना सुघड़ सयाणा, जग खेले खेल बेमुहाणया। लक्ख चुरासी तणया ताणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचे वड्डा माणया। देवे वड्याई माण, हरि एका शब्द सुणाया। जुग

२३८

चौकड़ी बीत जायण, हरि कोटन कोटि रूप खलाया। कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत लए धर, पारब्रह्म रूप वटाया। सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा खेल कीता वेखे खड़, भुल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क ज्ञान दए दृढ़ाया। हरि सच ज्ञान दृढ़ाइंदा, एका अन्तर ध्यान। कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा, चार कुण्ट हो प्रधान। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड वंडाइंदा, चार वरन करन परवान। हरि का रूप दिस किसे ना आइंदा, नव नौ होए अन्धान। चार चार ना कोए समाइंदा, साचा दर ना दिसे कोए मकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम खेल करे श्री भगवान। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, हरि साचा सच समझाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल खिलाउणा, निरगुण नूर नूर आप उपजाइंदा। शब्दी सुत नाल रलाउणा, शब्द शब्दी वेख वखाइंदा। माणस मन्दिर आप टिकाउणा, साढे तिन्न हथ्थ मेल मिलाइंदा। सस्सा सतिगुर इक्क अख्वाउणा, शाह पातशाह आपणा बल धराइंदा। बब्बा बोध अगाधी शब्द सुणाउणा, चार जुग भेव ना आइंदा। लल्ला लेखा पिछला आप मिटाउणा, अगला आपणे हथ्थ रखाइंदा। गग्गा गुर इक्क अख्वाउणा, दूसर धार ना कोए चलाइंदा। बब्बा बिन्द इक्क उपजाउणा, पूत सपूता नाउँ धराइंदा। दद्दा दुःख दलिद्र आपे लाउहणा, आप आपणे रंग रंगाइंदा। सम्बल आपणा घर बणाउणा, गोबिन्द गोबिन्द विच सुहाइंदा। पुरख अबिनाशी भेख वटाउणा, जोती जल्वा आप प्रगटाइंदा। चार वरनां खेल खिलाउणा, घट घट एका रूप धराइंदा। कलिजुग अन्तिम ऐड़ा अथरबन आपणी गोद बहाउणा, आप आपणा संग निभाइंदा। ऐड़ा अक्ख इक्क खुल्ाउणा, ऐनलहक राह तकाइंदा। ऐड़ा आस इक्क पुचाउणा, पीर फ़कीर ध्यान लगाइंदा। ऐड़ा आबेहयात आपणे हथ्थ रखाउणा, सभ दे ठूठे आप रुढ़ाइंदा। हो प्रतक्ख खेल खिलाउणा, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। आपणे विचों होए वक्ख गोबिन्द मेल मिलाउणा, दिस किसे ना आइंदा। सम्बल नगरी भाग लगाउणा, साढे तिन्न हथ्थ गढ़ सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत मसला हथ्थ करतार, क्या कोई करे जीव विचार, जगत जुगत ना कोए जणाइंदा। साचा मसला घड़ के आया, पारब्रह्म करतार। निरगुण रूप धर के आया, इक्क इकल्ला एकँकार। शब्द घोड़े चढ़ के आया, शहिनशाह सच्चा अस्वार। आपणी विद्या पढ़ के आया, जगत विद्या वसे बाहर। आपणा खण्डा फड़ के आया, तिक्खी रक्खे दोवें धार। आपणी जोती आपे सड़ के आया, आपणे दीप होए उज्यार। आपणे अग्गे आपे खड़ के आया, आपे शाह आपे सिक्दार। आपणी चरनी आपे पड़ के आया, आपे निउँ निउँ करे निमस्कार। आपणे हुक्म ब्रह्मा विष्न शिव चरन फड़ के ल्याया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। सच सरकार शाह सुल्ताना, हरि वड्डा वड

वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगटया निहकलंक बली बलवाना, पारब्रह्म रूप वटाईआ। करे खेल दो जहानां, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। नव खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्याना, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड बीआबाना, समुंद सागर फोल फुलाईआ। आदि जुगादी बणया दाना, दाना बीना आप हो जाईआ। लेखा चुकाए लोक तीनां, चौदां हट्ट खोल्ह खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि ब्रह्मा विष्न शिव प्रभ दिता वर, अन्त, आपणे विच मिलाईआ। अन्त मिलावा हरि करतारा, करनी करता आप कराइंदा। कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा, पुरख न्यारा खेल खिलाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, जगत विद्या भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पिछला लेखा आप चुकाइंदा। पिछला लेखा हरि चुकाउणा, भुल रहे ना राया। निरगुण सरगुण मेल मिलाउणा, मिल्या मेल विछड़ कदे ना जाया। एका दोआ रंग रंगाउणा, दो दो आपणा संग रखाया। दोहां निशाना दिस ना आउणा, सिफ़रा नाउँ धराया। सिफ़रे अग्गे एका लाउणा, एकँकारा आपणा रूप वटाया। एके अग्गे साता धराउणा, सति पुरख निरँजण खेल खिलाया। साता आपणे रंग रंगाउणा, एका आपणा बन्धन पाया। सिफ़रे माण साचा दवाउणा, दोआ दो जहानां वेख वखाइंदा। वीह सौ सतारां पन्ध मुकाउणा, दोआ सिफ़रा एका साता आपणा भेव चुकाया। हरि दोआं भेव खुल्हाइंदा, निरगुण सरगुण धार। हरि दोआ भेव चुकाइंदा, निरगुण निरगुण प्यार। निरगुण आपणा पर्दा लांहयदा, आपे होए ख़बरदार। पुरख अकाल निरगुण आपणा नाउँ धराइंदा, निरगुण गोबिन्द मीत मुरार। गोबिन्द निरँकार दिस किसे ना आइंदा, अग्गे सिफ़रा करे विचार। सिफ़र रूप हो सर्ब विच समाइंदा, आपणा अंक किसे ना दस्से कदे विचार। सिफ़रा आपणा बल उपजाइंदा, इक्क इक्क ओंकार करे आकार। सति पुरख निरँजण सति सतिवादी आपणा संग रखाइंदा, आदि जुगादी साची कार। वीह सौ सतारां बिक्रमी हरि सालांहयदा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग कलिजुग तेरी अन्तिम वार। तेरा अन्तिम मास वेख वखाइंदा, फलगुण रुत्त खिड़ी बहार। पुरख अबिनाशी आपणी जोत धराइंदा, साचे तख्त होए उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार। फलगुण रुत्त सुहाइंदा, पारब्रह्म निरँकारा। कलिजुग उठ उठ वेख वखाइंदा। नेत्र नैण होया शर्मसारा। जीव जंत सर्ब भुलाइंदा, घर वड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकारा। हरि का रूप दिस किसे ना आइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकारा। वीह सौ सतारां बिक्रमी अन्त धार, विष्न ब्रह्मा शिव आप जणाया। पहली फलगुण खिच्च ल्याया आपणे चरन दुआर, पुरी विच रहिण ना पाया। करोड़ तेतीस बण भिखार, सुरपति राजा इन्द मंगण आया। मिलन आए गुर अवतार,

लोकमात सरगुण रूप जो गए सेव कमाया। भगत आए बण परवार, सन्त साचा मंगल गाया। गुरमुख निउँ निउँ करन निमस्कार, गुरसिख बैठे सीस झुकाया। रुत्त बसन्त खिड़ी गुलज़ार, पुरख अबिनाशी आप महिकाया। इक्क कबीरा बण वरतार, सच सुगंधी रिहा सुंघाया। इक्क नानक बोल जैकार, सति सति दए समझाया। दोहां विचोला बणया अन्तिम वार, निहकलंक आपणा नाउँ रखाया। चार जुग दे गुर पीर अवतार साध सन्त खिच्च ल्याया चरन दुआर, पहली फलगुण रुत्त सुहाया। औलीए पीर शेख़ मुसायक नौं नौं जोजन खड़े दुआर, गल विच पल्लू एका पाया। अल्ला राणी करे पुकार, तेरा कलमा तेरे विच समाया। तूं साचा सईया मीत मुरार, क्यों सनम बैठा मुख छुपाया। हउँ फिरां दुहागण जगत नार, कन्त सुहागी नज़र कोए ना आया। फिरी दरोही चार यार, उच्ची कूक कूक सुणाया। मक्का काअबा सुणे ना तेरी कोई आवाज़, उच्च मुनार बैठे मुख शरमाया। सच मज़ार ना देवे दीदार, हज़ार बैठे तसबीआं पाया। बिन तुध कोए ना करे मेरा शंगार, मेरी अल्फ़ी ना कोई सवाया। तुध बिन ना करे कोए प्यार, आपणे गले लै लगाया। बिरहों विछोड़ा मारे मार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। तेरे नाउँ दी करां पुकार, मिल महबूब मैख़ाना इक्क सुहाया। तेरे बिनां मन्ज़ूर करां ना कोए कलबूत, कुफ़र कलमा ना कोए सुणाया। तेरा नैण दरस मेरा हजारा दरूद, बसरी इस्म तेरी सरनाया। मैं होई वैरागण तेरी हूर, शाह ग़फ़ूर ना मेल मिलाया। बिन तुध कोई ना देवे सच्चा सरूर, जगत प्याले पी पी आपणा वक्त गंवाया। नूरी बख़्श साचा नूर, नूर तेरा मोहे भाया। सदा रहो हाज़र हज़ूर, हज़रत तेरा वेस दूसर दर दिस किते ना आया। तूं मेरे पिच्छे बण दरवेश, मुर्शद मुरीद मुरीद मुर्शद एका घर सुहाया। कर कर अवल्लड़ा वेस, अमाम अमामा सिर तूं सच्चा शहिनशाहया। मेरी मैहन्दी हथ्थीं लिखी रेख, अमाम मैहन्दी आपणे नेत्र आपणा रंग चढ़ाया। दर दर फिरदी खुल्ह्ड़े केस, मेरा सीस ना कोए गुंदाया। पुरख अबिनाशी वीह सौ सतारां बिक्रमी पहली फग्गण घलाया संदेश, जगत सुवाणी लए मनाया। अगले सम्मत आपे लए वेख, नारी वर निरगुण कन्त रूप प्रगटाया। साचे तख्त बहे सचा नरेश, आप आपणा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीह सौ सतारां बिक्रमी अन्तिम आपणा भेव खुल्हाया। हरि सज्जण भेव खुल्हाइंदा, पारब्रह्म बेअन्त। नव नव वेख वखाइंदा, लक्ख चुरासी जीव जंत। घट घट अंदर फोल फुलाइंदा, आपे होए खोज खुजंत। गुरमुख साचे आप उठाइंदा, शब्द जणाए मणीआ मंत। सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना कोए रखाइंदा। सम्मत सतारां वीह सद बिक्रमी खेल अपारा, हरि साचा सच कराइंदा। गुरसिख साचे करे प्यारा, चरन कँवल इक्क दरसाइंदा। गुरमुखां देवे नाम अधारा, आपणा नाउँ आप सुणाइंदा।

२४१

सन्तां मेल मिलावा कन्त भतारा, नारी कन्त रंग रंगाइंदा। भगत भगवन्त सोहण इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। पहली फलगुण साची वार थित विचारा, चार जुग पूर्ब लेखा वेख वखाइंदा। भुल ना जाए हरि अभुल निरँकारा, भरम भुलेखा सर्ब कढाइंदा। गुरमुख गुरसिख सन्त भगत आपे करे सच प्यारा, अन्तर आत्म मेल मिलाइंदा। लक्ख चुरासी विचों कढ्ढे बाहरा, जिस जन आपणे खाते पाइंदा। सृष्ट सबाई ना मिले कोए दुआरा, राए धर्म हथ्थ फड़ाइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी तक ग्यारां लक्ख दए आधारा, बाकी शौह दरयाए आप रुढ़ाइंदा। वीह सौ सतारां बिक्रमी आपणी हथ्थीं लाए पार किनारा, जिस जन आपणे बेड़े आप चढ़ाइंदा। लोकमात ना आए दूजी वारा, मात गर्भ ना फेरा पाइंदा। तीर्थ तट्टां मारे मारा, भेख पखण्डा सर्ब गंवाइंदा। निहकलंक नर नरायण ना किसे विचारा, अन्त जीवण मुक्त ना कोए कहाइंदा। सो उतरे पार जिस देवे दरस आप करतारा, जप तप हठ जोग अभ्यास कोए रहिण ना पाइंदा। जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा ना बुझाए किसे दी प्यास, प्यासा जीव सर्ब कुरलाइंदा। बिन हरि पूरी करे ना कोए आस, नानक गोबिन्द एह समझाइंदा। मूसे ईसे संग मुहम्मद करन तरास तरास, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। लाड़ी मौत धर्म राए संग हथ्थ विच फड़ के बैठी फास, पुरख अबिनाशी शब्द फाँसी इक्क लटकाइंदा। बचया रहे ना कोए पंडत कांसी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

२४२ आप आपणा भेव चुकाइंदा। वीह सौ सतारां बिक्रमी अन्तिम मास, भगतन हरि वड्याआ। हरिसंगत पूरी करे आस, सृष्ट सबाई शोह दरया रुढ़ाया। लेखा जाणे पृथ्मी आकास, गगन गगनंतर वेख वखाया। जिस जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाया आपणे इक्क स्वास, स्वास लैण मुड़ के लोकमात विच ना आया। लेखे लाए जगत ग्रास, रसना चख जो रस वखाया। गुरसिखां बणे पहलों आप दास, फिर गुरसिखां साची सेव कमाया। गुरसिख होए ना कोए विनास, विष्न ब्रह्मा शिव आदि जुगादि रहे जस गाया। जिस जन मिल्या आप पुरख अबिनाश, जंगल जूह उजाड़ पहाड लभ्भण किउँ किसे घर जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बिन गुरसिखां रिहा उदास, गुरसिख उपजावण ख़ातर गुर अवतार रिहा घलाया। कलिजुग अन्तिम प्रगटाए आपणे अक्खर ना कोई लाए लग मात्र, सिहारी बिहारी कन्ना औंकड़ बिन्दी टिप्पी ना मेल मिलाया। एका अक्खर दस्से सुधाख्र, सुध असुध होए कदे ना जाया। लक्ख चुरासी नाम मधाणा वरोल गुरसिख कढ्ढे माखण, प्रेम नेत्रा एका पाया। गुरसिख सदा बणया रहे चातर, हरिजू हरि हरि मूर्ख मुग्ध आपणा नाउँ धराया। गुरसिखां करन आया अन्तिम ख़ातर, आप आपणा भस्म कराया। शब्द सुणाए साची गाथड़, पारब्रह्म प्रभ आप अल्हाया। क्या कोई भेव जाणे बातन, जमाल बातन गुरमुखां विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया, बीस सतारां साची धार, हरि सज्जण आप चलाइंदा। बावन बावन भेव न्यार, बावन आपणा रूप वटाइंदा। बावन अक्खर कर प्यार, निष्अक्खर विच टिकाइंदा। बावन बरस विच संसार, रूप अनूप आप वखाइंदा। बावन सभ तों वसे बाहर, हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेई अठारां दस इक्क आपणा खेल खिलाइंदा। इक्क दस खेल खिलाया, अठारां चरन वड्याईआ। तेई रूप मात वटाया, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। इकावन आपणा अंग लगाया, बावन निरगुण संग रखाईआ। निरगुण साचा राह चलाया, महांसारथी बण शहिनशाहीआ। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, वेखणहारा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन आप उठाया, दीनां नाथ दीन दयाल। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, लेखा जाणे शाह कंगाल। गुरमुख साचा पार कराया, गुर शब्दी बण दलाल। हाल मुरीदां आप सुणाया, सति पुरख पुरख अकाल। दीदा दानिस्ता रूप वटाया, दीनन हरि नर गोपाल। आहिस्ता आहिस्ता आपणी धार चलाया, चाल अवल्लड़ी आप वखाल। सच फ़रिशता इक्क उडाया, शब्द सरूपी काल महाकाल। मेल मिलाया, पारब्रह्म सुरत संभाल। अगम्म रंग रंगाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होया जाणी जाण। जानणहारा जाणदा, आदि जुगादी कार। वेद कतेब ना कोई पछाणदा, खाणी बाणी ना कोई विचार। जुगा जुगन्तर खेल श्री भगवान दा, जाग्रत जोत करे उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख सज्जण लए उभार। गुरसिख आप उभारया, कर किरपा करतार। माणस जन्म संवारया, जिस बख्शे चरन प्यार। नाता तुट्टे अन्त संसारया, मिले हरि जू मीत मुरार। मसला आपणा आप बणा ल्या, हरिसंगत नाल कर प्यार। सृष्ट सबाई धक्का ला ल्या, गुरसिखां दा लए सहार। धरत मात माण दिवा ल्या, हरिसंगत बख्शे तेरी चरन धूढ़ छार। आपणा नाउँ तेरी झोली पा ल्या, तेरा विकारा आपणी झोली डार। आपणा भान तेरे अंदर चमका ल्या, तेरा अन्धेरा आपणी रक्खे साची खाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिखां उप्पर होया आप मेहरवान। मेहरवान सदा जग मंगदा, मंगे मंग करतारा। गुरमुख तेरा दुआरा इक्को लँघणा, नाता तोड़ सर्ब संसारा। गुरसिख कोल आ कदे ना संगदा, लक्ख चुरासी कोलों सुत्ता पैर पसारा। कलिजुग अन्तिम गुरसिख तेरा काया चोला आपणी हथ्थीं रंगदा, निरगुण बणया सरगुण ललारा। करया खेल सूरे सरबंग दा, दूजे दर ना बणे भिखारा। मनमुखां एका हुक्म धर्म राए दर टंगदा, शब्द अगम्मी बण लिखारा। गुरसिखां वेला आया परमानंद दा, निज आत्म दे हुलारा। मनमुख काची वंग भन्नदा, घड़न भन्नणहार इक्क ठठयारा। लेखा

२४३

जाणे कोटन कोटि ब्रह्मण्ड दा, ब्रह्मा विष्न शिव की करे विचारा। जेरज अंडज उत्भुज सेतज त्रैगुण माया पंज तत्त इक्को दान मंगदा, हरि का नाउँ अपर अपारा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग युग जुग टुट्टी आपणी हत्थीं गंढु दा, गंढु देवे देवणहारा। लेखा जाणे इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड दा, सचखण्ड वसया आप निरँकारा। सचे साहिब नूं क्या कोई निन्द दा, निन्दया उसतत वसया बाहरा। वेखो खेल गुणी गहिन्द दा, कलिजुग अन्तिम होए उज्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर बैठ ठांडे दरबारा। ठांडे घर हरि जू वसया, सचखण्ड सच्चा दरबार। आदि जुगादि फिरे नस्सया, जन भगतां रिहा पैज संवार। हिरदे अंदर चतुर्भुज हो हो आपे वसया, हरि का चित्तर चित्र ना सके कोए विच संसार। मनमुख जीवां कोलों सदा नस्सया, भज्जया जाए वाहो दाह पार कराए जंगल जूह उजाड़ पहाड। गुरसिख ग़रीब निमाणयां अगे हो हो आपे हस्सया, बणया रहे फ़रमाबरदार। फड़ फड़ बाहों मार्ग आपे दस्सया, दिवस रैण ना करे कोए विचार। आपणा मन्त्र गुरसिखां मन उत्ते आप झस्सया, दूई द्वैत दुरमति मैल दए उतार। शब्द निराला तीर एका कस्सया, एका वार मारे मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे प्यार। करे प्यार प्यारा मीतड़ा, बिरहों रोग कढ्ढे अग्ग। काया चोली रंगे चीथड़ा, दरस वखाए उप्पर शाह रग। अमृत जाम प्याए इक्क अनडीठड़ा, भर प्याला सूरा सर्बग्ग। पतित पापी करे पुनीतड़ा, जो जन सरनाई जाए लग्ग। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, माणस हँस रूप वटाए कग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे साचे हीरे नग। हीरा नग जवाहर माणक मोती, गुरसिख गुर गुर वड्यांअदा। निरगुण निरवैर जगाए निर्मल जोती, नूर नुराना डगमगाइंदा। फड़ बहाए एका चोटी, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। एका वार कढ्ढे वासना खोटी, वास्तक आपणा रूप दरसाइंदा। लभ्भणे फिरदे कोटन कोटी, काया कोट ना कोए फोलाइंदा। मनी सिँघ तेरा पूरा कीता कौल कर्म सिँघ दर आया डेरा लगाया मरदान होती, सुरती सुरती सोती आप जगाईआ। वीह सौ सतारां बिक्रमी पहली फग्गण आप मनाई आत्मा रोती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हत्थ रक्खी वड्याईआ। कर्म सिँघ तेरा कर्म गुण, निहकर्मी वेख वखाइंदा। सन्त भगवन्त पुकार रिहा सुण, भुल्ल कदे ना जाइंदा। दूजे जामे ल्या चुण, पिछला लेखा लेखे रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाली बुध मेल मिलाइंदा। बाली बुध हरि मेल मिलाया, दया करे दीन का नाथ। कर्म घाट हरि पार कराया, लेखा मुकाया आपणी वाट। माणस रूप माणस धराया, माणस रखाई साची ज़ात। ओत पोत पुत पोतरा एका रंग वखाया, मिटे अन्धेरी रात। विचला लेखा ना किसे जणाया, पुरख अबिनाशी आपणे विच समाई तेरी गाथ। माण सिँघ तेरा बाप

बणाया, सिँघ नरायण पोतरा दात। मनी सिँघ मिल हरि दरसन पाया, पहली फग्गण सुहावी रात। भिन्नड़ी रैण ख़ुशी मनाया, हरि मिल्या कमलापात। गुरमुख सख़ीआं मंगल गाया, घर वज्जया साचा नाद। हरिसंगत तेरा मेल मिलाया, मेल मिलावा आदि जुगादि। कलिजुग जीवां लेखा रहे ना राया, पूरा करे ना कोए घाट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत सतारा राए धर्म सुहाए तेरी खाट। राए धर्म तेरा खाट खटोला, हरि साचा वेख वखाइंदा। अठ अठारां अठाई तेरा गोला, साचा हुक्म सुणाइंदा। निरगुण निरवैर बणया तोला, साचा कंडा इक्क उठाइंदा। गोबिन्द गुर बण विचोला, साचा मेल मिलाइंदा। अन्तिम सभ दा पड़दा खोल्ह्ा, जगत पड़दा ना कोए रखाइंदा। कलिजुग मिटे झूठा बोला, सोहँ ढोला इक्क सुणाइंदा। मन मति बुध पाए रौला, चौदां चौदां सर्ब कुरलाइंदा। पंदरां अंदरां चुक्कया डोला, मन्दिरां कंदरां फोल फुलाइंदा। सोलां सोलां सोलां खेले होला, गुरमुखां रंग रंगाइंदा। सम्मत सतारां बणया भाला भोला, सृष्ट सबाई आप रुढ़ाइंदा। रूप वटाए मौला मौला, मौला आपणी कल रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मसला हरिसंगत तेरा प्यार, विच संसार आप धराइंदा। साचा मसला हरिसंगत मेला, श्री भगवान बणाया।
२४५ एका रंग रंगाए गुरु गुर चेला, रंगणहारा इक्क अख्वाया। एका घर मिले सज्जण सुहेला, घर सुहञ्जणा इक्क वड्याआ। २४५
एका दर चढ़े तेला, एका साचा सगन मनाया। एका वक्त एका वेला, एका हरि जू होए सहाया। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, एका एक भेव किसे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मसला इक्क समझाया। साचा मसला सुणना कर ध्यान, हरिसंगत हरि जणाइंदा। वेले अन्त होणा परवान, गुरसिख विछड़ कदे ना जाइंदा। सृष्ट सबाई काया पंज तत्त होए वैरान, तत्त तत्तां विच समाइंदा। धन्न गुरसिख धन्न गुरसिख धन्न गुरसिख जिस हरि जू करे पछाण, हरि हो निमाणा गुरसिखां दर दर लभ्भण आइंदा। आप मन्नदा रहे आपणा भाणा, गुरसिखां भाणा आपणे सिर उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नूर इलाही आपणा देवे इक्क ब्याना, ब्यान आपणे अग्गे रखाइंदा।

भुलयां मार्ग पांवदा, पिता पूत आधार। जगत दुःख भुक्ख गवांवदा, किरपा कर आप करतार। जगत सुख इक्क वखांवदा, चरन कँवल दे आधार। सच परीत माणस मनुख गुरमुख आप उपजांवदा, देवे नाम शब्द ख़ुमार। काग हँस रूप वटांवदा, माणक मोती चोग चुगे इक्क दुआर। बुझी जोती फेर जगांवदा, जोती जाता जगावणहार। माणक मोती आप वखांवदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लहिणा वेख विचार। पूर्ब दुःख नवारया, सुख सांतक

सति कृपाल। आपणा दरस आप वखा ल्या, पति रखे दीन दयाल। पिछला घाटा मूल चुका ल्या, अगे भरे इक्क भण्डार। जगत निमाणी गले लगा ल्या, वड गुण होए विच संसार। सिर समरथ हथ्थ टिका ल्या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुहाए दर बंक दुआर। बंक दुआर सुहावणा, घर होए सोभावन्त। सतिगुर जगत दुःख मिटावणा, घर उपजे रुत्त बसन्त। बंस अंस इक्क वखावणा, पति रखे हरि पतिवन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे भण्डारा अतुट अगणत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा चुकाए बाल नादान, अग्गे बणाए साची बणत।

★ ११ फलगुण २०१७ बिक्रमी काका सरजीत सिँघ सपुत्र बीबी रणजीत कौर दे जन्म दिन तेरवें साल मनाउण दे समें जेठूवाल दरबार विच दया होई ★

गुरसिख सदा प्रितपालदा, आदि जुगादी एकँकार। लेखा जाणे दो जहान दा, पारब्रह्म बेऐब परवरदिगार। करे खेल श्री भगवान दा, निरगुण रूप अगम्म अपार। आपणा खेल आपे जाणदा, जानणहार शहिनशाह सच्ची सरकार। कुदरत कादर वेख वखाणदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर साची कार। गुरसिख रंग रंगाइंदा, रंग रंगीला हरि निरँकार। सच कबीला आप बणाइंदा, जुगा जुगन्तर हो उज्यार। छैल छबीला मेल मिलाइंदा, तख्त निवासी शाह सिक्दार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। गुरमुख रंग अपार, सो पुरख निरँजण आप चढ़ाईआ। गुरसिख मीत मुरार, हरि पुरख निरँजण मेल मिलाईआ। गुरसिख वसे ठांडे दर सच्चे दरबार, एकँकारा एका घर बहाईआ। गुरसिख मेला हरि हरि नारी कन्त भतार, नाउँ निरँजण वड वड्याईआ। गुरसिख सोहे बंक दुआर, श्री भगवान सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुरसिख मंगे मंग बण भिखार, अबिनाशी करता वस्त अमोलक झोली पाईआ। गुरसिख चरन कँवल चरन होए सेवादार, पारब्रह्म एका घर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख देवे माण वड्याईआ। गुरसिख माण रखाइंदा, आदि जुगादी साची कार। निरगुण सरगुण रूप धराइंदा, लोकमात खेल अपार। विष्न ब्रह्मा शिव वेख वखाइंदा, वेखणहारा सर्ब संसार। लक्ख चुरासी फोल फुलाइंदा, घट घट अन्तर हो उज्यार। आपणी करनी करता किरत कमाइंदा, कागद कलम ना लिखणहार। बंक दुआरा इक्क सुहाइंदा, घर मन्दिर कर त्यार। शब्द अनादी गीत अलाइंदा, गोबिन्द ढोला बोल जैकार। साचा अमृत जाम प्यांअदा, भर प्याला निझर ठंडा ठार। दीपक जोती आप जगाइंदा, बण कमलापाती मीत मुरार। साचे मन्दिर आप बहाइंदा, गुरमुख

सज्जण लए उभार। सीस जगदीश छत्र झुलाइंदा, पवण उणंजा निमस्कार। तख्त निवासी शाहो शबासी साचे तख्त सोभा पाइंदा, राज राजाना वड सिक्दार। कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा, जोती जाता भेव न्यार। रूप अनूप आप धराइंदा, वेद कतेब ना पावण सार। गुर अवतार सर्ब राह तकाइंदा, राह तके परवरदिगार। पीर दस्तगीर नेत्र नैण उठाइंदा, मंगण धूढ़ी ख़ाक सार। कातब लिख लिख लेख वखाइंदा, काया कुरा कर विचार। आपणा नाम आपणे हथ्थ रखाइंदा, लेखा जाणे हड्ड मास नाड़ी चाम। पंज तत्त खेल खिलाइंदा, काया खेड़ा नगर ग्राम। मन मति बुध बन्धन पाइंदा, लेखा जाणे जीव जहान। लक्ख चुरासी जोत जगाइंदा, चारे खाणी कर परवान। शब्द निधानी बाणी आप अलाइंदा, सुणे सुणाए धुर फ़रमान। साची हाटी हट खुल्हाइंदा, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। वणज वणजारा जगत कराइंदा, दीन दुनी हो प्रधान। गुरमुख आपणे लेखे लाइंदा, एका देवे धुर फ़रमान। शब्द संजोगी मेल मिलाइंदा, नाता तोड़ जगत जहान। जन्म जन्म आपणे अंग लगाइंदा, अंगीकार करे श्री भगवान। गृह मन्दिर नाद वजाइंदा, घट भीतर सच निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख गुर गुर लए पछाण। गुरसिख गुर गुर जाणदा, गुरमीता गुर गुरदेव। गुरसिख गुर गुर रंग माणदा, गुर सतिगुर मिले अलख अभेव। गुरसिख मेला गुरु गुर साचे हाणदा, गृह मन्दिर अंदर करे साची सेव। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मेले आपणे घर, मेल मिलावा वड देवी देव। देवी देव वड दीन दयाला, दया निध वडी वड्याईआ। इक्क इकल्ला पुरख अकाला, अकल कल आपणी खेल खिलाईआ। सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, थिर मन्दिर दए सुहाईआ। लेखा जाणे काल महाकाला, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। गुरसिखां करे सदा प्रितपाला, प्रितपालक बेपरवाहीआ। नाता तोड़े शाह कंगाला, शहिनशाह एका नाम वस्त झोली पाईआ। कलिजुग अन्तिम बण दलाला, जगत विछड़े जुगत लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पिता पूत पोत एका गंढु पवाईआ। पिता पूत पोत, पारब्रह्म आपणे रंग रंगाइंदा। लेखा जाणे काया गढ़ किला कोट, कंचन आपणा खेल खिलाइंदा। शब्द नगारे लग्गे चोट, नाद धुंन धुंन आत्म परमात्म ब्रह्म ब्रह्मादि आप वजाइंदा। करे प्रकाश निरगुण जोत, अन्ध अन्धेर सर्ब चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुर गुर गोद सुहाइंदा। गुरसिख गुर गुर पाया, हरि सतिगुर गहर गम्भीर। गृह मन्दिर हरि वसाया, तन मन शांत सरीर। माया ममता मोह चुकाया, नाता तुट्टा जगत ज़ंजीर। आपणा मन्दिर आप सुहाया, आपे चोटी चढ़े अख़ीर। गुरमुख साचे वेख वखाया, वेखणहारा बेनज़ीर। नज़र विच किसे ना आया, वड दाता पीरन पीर। शाह पातशाह आपणा नाउँ धराया, लेखा जाणे शाह हकीर। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख बख्शे एका धीरज धीर। धीरज धीर सति सन्तोख ज्ञान, हरि साचा सच जणाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन गुर ध्यान, गुर मन्त्र इक्क समझाइंदा। धृग जीवण जीव नादान, बिन सतिगुर पूरे पार ना कोए कराइंदा। मनमुख भुल्ले जीव अञ्याण, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। मिल्या मेल पंज शैतान, घर घर अंदर काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाच नचाइंदा। जिस जन उप्पर होए आप मेहरवान, तिस जन आपणा मार्ग आप वखाइंदा। शब्दी शब्द देवे दान, दाता दानी आप वरताइंदा। आसा तृष्ना तृखा त्रैकाल सर्ब मिट जाण, त्रैकाल दरसी आप मिटाइंदा। गुरसिख होए चतुर सुघड़ सुजान, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग गुरसिख गोबिन्द घाट गुर सतिगुर आप बहाइंदा। गोबिन्द घाट हरि चरन कँवल, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। जन भगतां मेले उप्पर धवल, धरनी धरत आप सुहाईआ। अमृत बख्शे नाभ कँवल, कँवल नाभी निझर झिरना आप झिराईआ। सुरती शब्दी जाए मवल, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख लेखा दए समझाईआ। गुरसिख लेखा हरि समझाइंदा, कलिजुग अन्तिम वार। नौं सौं चुरानवे चौकड़ी जुग गुरसिख सेव कमाइंदा, माणस माणस धर प्यार। सतिजुग त्रेता द्वापर मात हंढाइंदा, कलिजुग आए अन्तिम वार। निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा, जोती जामा विच संसार। पंज तत ना कोए रखाइंदा, त्रैगुण रूप ना धरे हरि निरँकार। शब्दी डंक इक्क वजाइंदा, आदि जुगादी साची कार। गुरसिख गुरमुख मेल मिलाइंदा, गुर चेला इक्क दुआर। पूर्ब लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा, चित्रगुप्त ना करे कोए विचार। राए धर्म ना मुख वखाइंदा, लाड़ी मौत ना करे शंगार। काया गगरी आपणे खाते पाइंदा, आपे होए घड़न भन्नणहार। आपे गोदी गोद सुहाइंदा, लेखा जाणे गोदावरी धार। आपे अन्तिम मोख वखाइंदा, पुरख अबिनाशी खेल अपार। आपे मोहण आपणे रंग रंगाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए साची कार। साची कार कमावणहारा, मोहण माया मोह चुकाईआ। धुर दा लेखा धुर दरबारा, धुर मन्दिर दए समझाईआ। धुर दा कातब बण लिखारा, लिख्त भविख्त आप जणाईआ। उच्च महल्ल अटल मनारा, एका एक एक समझाईआ। लेखा जाणे अन्तिम धारा, भगवन्त सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख लेखा लेखे लाईआ। गुरसिख लेखा भगतन नाउँ, नाउँ निरँकार जणाइंदा। दसवें घर गया सौं, सोया सुत ना कोए जगाइंदा। दूजी वार आया भौं, इक्क इक्क नाल मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग रखाइंदा। इक्क इक्क दिवस सुहाया, दोए दोए धार चलाईआ। दोए दोए लोचण पेखण नज़र ना आया, लोयण लोयण विच समाईआ। पूर्ब लेखन

लेखे पाया, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सरगुण सरगुण रूप धराया, निरगुण निरगुण बणे आप मलाहीआ। पिता पूत पोत पतिवन्त आपणी कल धराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इक्क इक्क त्रै इक्क एका तत्त जणाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। त्रैगुण मीता खेल अपार, इक्क इकल्ला वेख वखाइंदा। इक्क इकल्ला त्रैगुण वसया बाहर, भेव अभेदा भेव छुपाइंदा। त्रैगुण संग सच्चा संसार, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। इक्क इकल्ला नाम मृदंग वजाए अपार, त्रैगुण दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखाइंदा। गुरसिख गुर गुर धार, गुर गुर गुर आप उपजाईआ। गुर सज्जण गुर मीत मुरार, गुरसिख गुर गुर सगला संग निभाईआ। गुरसिख गुर सोहण इक्क दुआर, दर घर साचे वज्जी वधाईआ। गुरसिख गुर जीते जगत संसार, जुगत जोग एका दए समझाईआ। धन्न गुरसिख गुर करे प्यार, धन्न धन्न धन्न जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरसिखां बिध जाणे अन्तर, अन्तर आत्म आपणा मेल मिलाईआ। माहराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ ज्ञान ज्ञान गुर मन्त्र, आत्म परमात्म परम पुरख आपणा मेल मिलाईआ।

२४६

★ १६ फलगुण २०१७ बिक्रमी लक्खा सिँघ, चतर सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर ★

१०
शाह पातशाह एका हरि, हरी हरि आदि जुगादि समाइंदा। आदि पुरख एका नर, नर नरायण नाउँ धराइंदा। सचखण्ड वसे साचे घर, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। तख्त निवासी उप्पर बैठा चढ़, निरगुण निरवैर पुरख अकाल आपणी खेल खिलाइंदा। अलख अगोचर आपणा घाड़न आपे घड़, बेपरवाह बेअन्त आपणा रूप आप धराइंदा। एकँकारा हरि निरँकारा, आपणा अक्खर आपे पढ़, आपणा नाउँ आप धराइंदा। श्री भगवाना खेल महाना, दो जहाना आपणा भाणा आपे जर, साचे भाणे सद रहाइंदा। अजूनी रहत अनुभव प्रकाश आपे कर, करता पुरख कादर करीम नूरी जल्वा नूर डगमगाइंदा। मुकामे हक खोल्ह दर, सच तौफ़ीक ख़ुदाए आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणी धार आप चलाइंदा। धार अगम्म जोती जाता, पुरख पुरखोतम आप चलाईआ। बैठा रहे इक्क इकांता, अकल कल वडी वड्याईआ। आपणा रूप आप पछाता, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। आपणी जाणे आपे गाथा, अलख अलखना लेखा हथ्थ ना किसे वखाईआ। सर्ब कल हरि समराथा, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। आदि जुगादि खेले खेल तमाशा, निरगुण निरवैर आपणी रास रचाईआ। थिर घर मन्दिर रक्खे वासा, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका नर, आदि पुरख एका हरि, रूप अनूप इक्क धराईआ। रूप अनूप श्री भगवाना, साहिब सतिगुर आप धराइंदा। सचखण्ड निवासी हो प्रधाना, आपणी कल आप वरताइंदा। तख्त निवासी शाह सुल्ताना, शाह पातशाह आपणी खेल खिलाइंदा। सति सरूप राज राजाना, भूपन भूप वेस वटाइंदा। नाद अनादी धुर फ़रमाना, अनद बिनोदी आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। भेव अवल्ला हरि इकल्ला, आपणे हथ्थ रखाईआ। वसणहारा सचखण्ड दुआर सच महल्ला, सति मुनारा इक्क सुहाईआ। आदि जुगादि होए अछल अछला, वल छल आपणी खेल खिलाईआ। सच संदेश नर नरेश आपणे मन्दिर आपे घल्ला, सुणनहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आदि पुरख हरि सुल्ताना, सो पुरख निरँजण साची खेल खिलाइंदा। हरि पुरख निरँजण मर्द मरदाना, एकँकारा आपणे अंग लगाइंदा। आदि निरँजण जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, अबिनाशी करता मेल मिलाइंदा। श्री भगवान देवे दाना, पारब्रह्म झोली डांहयदा। आपणा रूप आप पछाना, वेखणहार आप अख्वाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाना, आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा। साचे मन्दिर वसे सच मकाना, सचखण्ड दुआरा आप उपाइंदा। थिर घर खोल्ह किवाड़ गुण निधाना, आप आपणी कल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आप जणाइंदा। हरि हरि भेव अगम्म अपार, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। निरगुण नूर कर उज्यार, नूर नूराना डगमगाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। घर विच घर कर उज्यार, मन्दिर अंदर डेरा लाईआ। लेखा जाणे नारी कन्त भतार, सुत दुलारा आपे जाईआ। दाई दाया सिरजणहार, दिस किसे ना आईआ। आपणी इच्छया भर भण्डार, साची भिच्छया लए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, निरगुण दाता पुरख बिधाता, जोती जाता बन्न्हे नाता, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। जोती जाता हरि निरँकारा, निरगुण निरगुण खेल खिलाइंदा। आदि पुरख खेल अपारा, सो पुरख निरँजण रूप वटाइंदा। हरि पुरख निरँजण वसे ठांडे दर दरबारा, एकँकारा इक्क इकल्ला आसण लाइंदा। आदि निरँजण जोती कर उज्यारा, जोती जोत डगमगाइंदा। अबिनाशी करता सुहाए सच दुआरा, दर दरवेश दर घर आपणे सोभा पाइंदा। श्री भगवान मंगे मंग बण भिखारा, अग्गे आपणी झोली डांहयदा। पारब्रह्म प्रभ निउँ निउँ करे निमस्कारा, सीस जगदीश आप झुकाइंदा। करे खेल करनेहारा, करता पुरख आपणी खेल खिलाइंदा। एका हुक्म एका धारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि पुरख

अलख निरँजण, महिमा अकथ, कथी ना जाईआ। आपे मीत आपे सज्जण, हरि हरि आपणा संग निभाईआ। आपे घड़नहार आपे भज्जण, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। आपे होए परदे कज्जण, आपणा पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आदि पुरख खेल खिलाया, निरगुण आपणा रूप धराइंदा। आपणा जोबन आप हंढाया, हरि जू हरि हरि आपे वेख वखाइंदा। आपणी इच्छया नारी इक्क प्रनाया, कन्त सुहाग आप हो जाइंदा। आपणा सुत दुलारा आपे जाया, शब्द शब्दी नाउँ धराइंदा। आपणी सेवा आपे लाया, साची सेवा इक्क कराइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाया, लोआं पुरीआं बन्धन पाइंदा। नूरो नूर नूर आप उपजाया, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। आपे विष्न विश्व कल धराया, आपे अमृत सति भण्डार वरताइंदा। आपे नाभी महिक महिकाया, कँवल कँवला आपणा रंग रंगाइंदा। आपे ब्रह्म ब्रह्मवेता जाया, चारे मुख आप सालांहयदा। चारे कूटां एका रंग रंगाया, एका रूप हरि हरि नज़री आइंदा। आपे शंकर बन्धन पाया, सुन्न अगम्म धूंआँधार हरि निरँकार आपणी कार कराइंदा। तिन्नां विचोला इक्क बणाया, शब्द ढोला साचा गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा रूप आप धराइंदा। आदि पुरख निरगुण धार, हरि साचा रूप धराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, हुक्मी हुक्म इक्क जणाईआ। एका वस्त सति भण्डार सति सन्तोखी आप वरताईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, शाहो भूप राज राजान करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका मंत दए दृढ़ाईआ। हरि साचा मंत जणाइंदा, पुरख अगम्मा बेपरवाह। आपणा पर्दा आप उठाइंदा, नूर नूराना नूरी जल्वा दए वखा। साचे तख्त सोभा पाइंदा, साबत सूरत इक्क खुदा। आपणा कलमा आप पढ़ाइंदा, आपे नाअरा दए लगा। आपे लेखा लिख्त लिखाइंदा, कातब होए सच्चा शहिनशाह। एका मक्तब आप खुल्ल्हाइंदा, एका दसणहारा राह। बेऐब परवरदिगार आपणा नाउँ धराइंदा, बिस्मिल रूप रिहा समा। विष्न ब्रह्मा शिव आप उठाइंदा, निरगुण जोती जोत जगा। सो पुरख निरँजण आपणा नाउँ प्रगटाइंदा, हँ रूप ब्रह्म लए वटा। सोहँ एका खेल खिलाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव एका गोद बहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप जणाए आपणा नाँ। हरि साचा नाउँ जणाइंदा, कर किरपा गुण निधान। एका दरसी दरस कराइंदा, सति वखाए हरि निशान। एका हरस एका वार मिटाइंदा, देवणहारा जीआ दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। श्री भगवान दया कमाइंदा, आदि पुरख अगम्म। विष्न ब्रह्मा शिव उपजाइंदा, ना कोई पवण स्वासी लए दम। धुर फ़रमाना इक्क जणाइंदा, शब्द अनादी कम्म। आपणे मार्ग आपे लाइंदा,

हरि जू हरि हरि बेड़ा बन्नू। साची वस्त इक्क धराइंदा, त्रैगुण माया देवे धन। पंचम आपणी गंढु पवाइंदा, लेखा जाणे जननी जन। लक्ख चुरासी वेस वटाइंदा, शब्दी राग सुणाए कन्न। जोती नूर सर्ब टिकाइंदा, मन मति बुध वसाए तन। पवण स्वास आप चलाइंदा, करे वसेरा काया छप्पर छन्न। आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवन। विष्न ब्रह्मा शिव जणाया, हरि साचा सच दृढ़ाए। साची सेवा इक्क वखाया, लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाए। घट घट आपणी जोत जगाया, घर मन्दिर हो रुशनाए। पंज तत्त एका मेल मिलाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बख्शे सच सरनाए। त्रै त्रै साचा बन्धन पाया, छुट्ट कदे ना जाए। विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म सुणाया, एका धन्दा दए वखाए। जुग जुग गेड़ा आप बंधाया, आपणी वण्डन आप वण्डाए। आपणा भेव आप खुल्लाया, चारे वेदां हरि जस गाए। विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ सीस झुकाया, ढह ढह पए सरनाए। कवण वेला कवण वक्त प्रभ साचे होए सहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए वखाए। विष्न ब्रह्मा शिव कर पुकार, चरन कँवल निमस्कारया। तूं साहिब सच्चा सिरजणहार, बेऐब परवरदगारया। हउँ बालक सेवक सेवा करे विच संसार, लक्ख चुरासी जीव उधारया। जुग चौकड़ी खेल न्यार, वरते वरतावें सच वरतारया। तेरा रूप कवण कूट होए उज्यार, कवण वेखे वेखणहारया। कवण वेला जाएँ तुट्ठ, बख्शें चरन कँवल प्यारया। कवण अमृत बख्शें घट घट, सांतक सति सति भण्डारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ आए दर दवारया। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, आपणी दया कमाइंदा। तिन्नां देवे इक्क सलाह, एका हुक्म जणाइंदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग बणना जगत मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आप चलाइंदा। गुर अवतार प्रगट हो हो जपाए मेरा नाँ, नाउँ निरँकारा कर प्यारया। पंज तत्त मिटे अन्त निशां, ना कोई दीसे महल्ल अटल मुनारया। चारे वेद ब्रह्मा वेता चारे मुख रिहा गा, आपे गाए गावणहारया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग खेल करे श्री भगवान, जुग जुग लए मात अवतारया। जुग चौकड़ी कोई रहे ना, करे खेल हरि निरंकारया। नौं नौं वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर इक्क सुहा रिहा। चार चार ना पकड़े कोई बांह, चार कुण्ट ना कोए सहारया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग अन्तिम किसे ना मिले साचा थाँ, सृष्ट सबाई धूंआँधारया। उच्ची कूक पुकारे धरत मां, धरनी धवल देवे ना कोए सहारया। पारब्रह्म अबिनाशी करता करनहार अन्तिम करे सच न्याँ, वेख वखाए सर्ब संसारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क जणा रिहा। धुर फ़रमाना हरि जणाइंदा, निॼअक्खर वक्खर बोल। लिखण पढ़न विच ना आइंदा, हरि का शब्द अनमुल्ला तोल। विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाइंदा, पुरख अबिनाशी बैठ कोल।

नव नौं चार आपणा भेव छुपाइंदा, करे खेल आप अनभोल। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा, कोटन कोटि आपणा नाउँ वजाए ढोल। कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा, सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरा आपणा खोल्ह। सच सिँघासण आसण लाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वस्त इक्क अनमोल। वस्त अमोलक हरि निरँकारा, एका इक्क समझाइंदा। कलिजुग आए अन्तिम वारा, भेव कोए ना पाइंदा। वेद कतेव शास्त्र सिमरत लेखा जाणे पुराण अठारां, गुप्त ज़ाहरा रूप धराइंदा। अञ्जील कुराना मारे नाअरा, गीता ज्ञान इक्क जैकारा, खाणी बाणी आप सालांहयदा। गुर अवतार करन पुकारा, साध सन्त बणे भिखारा, भगत भगवन्त खेल करे न्यारा, भगवन एका रूप धराइंदा। निरगुण जोत होए उज्यारा, जोती जामा भेख वटाइंदा। दिस ना आए विच संसारा, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे हरि प्यारा, तेरा अन्तिम पन्ध मुकाइंदा। जुग जुग विछड़े मेले मेलण हारा, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। जीव जंत ना पावे सारा, कलिजुग अन्धेरा छाइंदा। आपे वसे सभ तो न्यारा, घट घट अंदर आपणी जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाइंदा। विष्न कर ध्यान, हरि साचे सच जणाईआ। प्रगट होए श्री भगवान, नव नौं चार पन्ध मुकाईआ। ब्रह्मा तेरी करे कल्याण, कल आपणी कल उपजाईआ। शंकर होए आप मेहरवान, महिबान वडी वड्याईआ। लेखा जाणे दो जहान, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे थांउँ थाईंआ। अन्त कन्त भगवन्त करे कल्याण, लेखा जाणे ना कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत आप समझाईआ। साचा तत हरि जणाया, भेव अभेद खोल्ह। कलिजुग अन्तिम लए मिलाया, आप आपणा तोले तोल। निहकलंका नाउँ रखाया, लक्ख चुरासी घट घट वासी पर्दा लए फौल। एका बंक दए सुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा पूरा करे कौल। आपणा कौल निभावणा, करे कराए साची कार। पवण पवणां विच समावणा, अग्नी तत तत अंग्यार। जल जल धारा रूप वटावना, जल थल महीअल दए अधार। बनास्पत आपणी खेल खिलावना, लेखा जाणे अठारां भार। अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणे रंग रंगावना, रंग रंगीला हरि निरँकार। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा कबीला वेख वखावना, त्रैगुण माया पंज तत लक्ख चुरासी जीव जंत काया इक्क अकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। धुर दरबार लेखा लिख, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी मेटे तृख, तृष्ना तृखा रहिण ना पाईआ। नौ सत किसे ना आए वस, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। राज राजान वण्डायण हिस, साची वस्त हथ्थ किसे ना आईआ। अन्तिम कलिजुग पीसन जाए पीस, पुरख अबिनासी एका गेड़ा रिहा दवाईआ।

विष्न ब्रह्मा शिव पढ़न इक्क हदीस, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म छत्र झुलाए हरि जगदीस, सोहँ रूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सचा शहिनशाहीआ। हँ रूप हँ संसारा, हरि हरि खेल खिलाया। सो पुरख निरँजन वसे सभ तो न्यारा, दिस किसे ना आया। विष्न भरया विश्व भण्डारा, वास्तक रूप आप वरताया। ब्रह्मा ब्रह्म बण लिखारा, पारब्रह्म सालाहया। शंकर धूढ़ी मंगे चरन दुआरा, मस्तक टिक्का एका लाया। अन्तिम लेखा रहे ना विच संसारा, लेखा लेखे लए लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा पड़दा दए उठाया। हरि पड़दा आप उठावना, दीना बंधप दीन दयाल। सृष्ट सबाई पड़दा पावना, दर दर घर घर कूके अन्तिम काल। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा संग निभावना, त्रैगुण माया तोड़ जंजाल। तेरा रूप विश्व वखावना, पुरख अबिनासी हो कृपाल। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म उपजावना, काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल। शंकर साख्यात रूप वटावना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम होए दयाल। होए दयाल दीनन दीना, दीना नाथ दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आदि पुरख आपणे नालो वक्ख कीना, अन्त आपणे विच लए मिलाईआ। आपणा रंग चाढ़े भीन्ना, उतर कदे ना जाईआ। लेखा जाणे लोक तीना, चौदां हट्टां खोल्ह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, विष्न ब्रह्मा शिव एका रूप दरसाईआ। कलिजुग अन्तिम रूप धराया, पारब्रह्म बेअन्त। विष्न ब्रह्मा शिव दर बहाया, मेल मिलावा साचे कन्त। शब्द अनादी गीत सुणाया, विष्न गाया सोहँ छंत। नेत्र नैणा दरसन पाया, गढ़ तुट्टे हउमे हंगत। विष्न ब्रह्मा शिव उठ उठ नैण उठाया, कवण रूप धरया भगवन्त। निरगुण जोत नूर नूर रुशनाया, करे खेल आदि अन्त। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, लक्ख चुरासी माया पाई बेअन्त। गुरमुख विरले अंग लगाया, आप बणाई आपणी संगत। गुरसिख दूजे दर ना मंगण जाया, देवणहार इक्क श्री भगवन्त। गुर अवतार रहे राह तकाया, लेखा जाणे जुगा जुगन्त। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे शब्द आपे मंत। विष्न मंत नमो देव, वास्तक विश्व रूप जणाईआ। ब्रह्मा मंत सर्ब सेव, सेवक सेवा इक्क समझाईआ। शंकर गाए अलख अभेव, तन बिभूत ख़ाक रमाईआ। अदि जुगादि सदा निहकेव, निहचल आपणे धाम बैठा आसण लाईआ। गुरसिख देवे वड्याई रसना जिहव, जो जन सोहँ रसना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपण जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, विष्न ब्रह्मा शिव हरिसंगत संग रखाईआ। हरिसंगत वड्याई, वड वड्डा हरि हरि पाया। कलिजुग अन्तिम एका घर वज्जे वधाई, दूजा घर कोई रहिण ना पाया। आत्म परमात्म होए कुड़माई, सुरती शब्दी मेल मिलाया। सोहँ रूप हरि सरनाई, सरनगति इक्क

रखाया। जोती जोत करे रुशनाई, घर दीपक आप टिकाया। विष्नूं वेखे चाँईं चाँईं, हरिजन तेरी सेव कमाया। ब्रह्मा उठ उठ पकड़े बांही, गुरमुख मन्दिर हरि सुहाया। शंकर चल्ले अग्गे बण के राही, हथ्थ त्रिशूल उठाया। कलिजुग अन्तिम हरिजन विरले पाया साचा माही, पुरख अबिनाशी इक्क मनाया। साचे तख्त बैठा सच्चा शहिनशाही, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा नाउँ आप प्रगटाया। हरि साचा नाउँ प्रगटाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। निरगुण दिस किसे ना आइंदा, वसणहारा धाम न्यार। गुरमुख विरले आप जगाइंदा, जाग्रत जोत करे उज्यार। शब्द अनादी नाद सुणाइंदा, धुन आत्मक सच्ची धुन्कार। गुण अवगुण ना कोई वखाइंदा, जिस जन बख्शे चरन प्यार। डुब्बदे पत्थर पार कराइंदा, भवजल बेड़ा देवे तार। तारनहार इक्क अख्वाइंदा, आदि पुरख साची कार। विष्न ब्रह्मा शिव राह तकाइंदा, नेत्र नैण रिहा उग्घाड़। कवण कूटे हरि हरि आपणा वेस वटाइंदा, कवण घर होए उज्यार। कवण मन्दिर डेरा लाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपारा खेल करतारा, हरि आपणा आप कराइंदा। लिखण पढ़ण तों वसे बाहरा, भेव कोए ना पाइंदा। लेखा जाणे गुप्त ज़ाहरा, अंदर बाहर वेख वखाइंदा। निरगुण निरवैर लै अवतारा, निहकलंका नाउँ धराइंदा। एका डंका शब्द संसारा, चार कुण्ट आप वजाइंदा। राउ रंकां राज राजानां करे ख़बरदारा, शाह सुल्तानां आप उठाइंदा। गुरमुखां करे सच प्यारा, दर घर साचे मेल मिलाइंदा। मनमुख जीव दुहागण नारा, हरि हरि कन्त ना कोई हंढाइंदा। चार वरन चार कुण्ट होया धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोई चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। मेल मिलावा हरि निरँकार, आदि जुगादि कराया। भगत भगवन्त लए उभार, सन्त कन्त वेख वखाया। गुरसिख साचे करे प्यार, गुरमुख वेखे थाउँ थाँया। निरगुण सरगुण लए अवतार, सरगुण निरगुण होए सहाया। कलिजुग खेल करे न्यार, रूप रंग रेख ना कोए वखाया। जोती जोत दए अधार, जोत निरँजण वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मेले साचे घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विष्न ब्रह्मा शिव देवे पन्ध मुकाया।

★ १७ फग्गण २०१७ बिक्रमी मनशा सिँघ दे घर, पिण्ड नोशैहिरा ज़िला गुरदास पुर ★

नौ नव चार खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण हो त्यारा, नव नौ चार वेख वखाइंदा।

लेखा जाणे एकँकारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह, भेव कोए ना पाइंदा। आदि निरँजण करे खेल अपर अपारा, नव नौं चार जोती नूर डगमगाइंदा। नव नौं चार लेखा जाणे श्री भगवान धुर दरबारा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। अबिनाशी करता मीत मुरारा, नव नौ चार वसे बाहरा, दिस किसे ना आइंदा। नव नौ चार हरि भण्डारा, देवणहारा इक्क करतारा, पारब्रह्म प्रभ आप वरताइंदा। आदि जुगादी साची कारा, जुगा जुगन्तर खेल खिलाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल वसणहारा धाम न्यारा, सच्चखण्ड निवासी दर घर साचे सोभा पाइंदा। शाहो भूप राज राजान बण सिक्दारा, तख्त निवासी एका तख्त सुहाइंदा। इक्क इकल्ला बन्ने धारा, दूजा रूप अपर अपारा। तीजे आपणे रंग रवे निरँकारा, चौथे खोल्हे सच किवाड़ा, पंचम एका बंक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नव नौ चार भेव कोई ना पाइंदा। नव नौ चार हरि करतार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। नव नौ चार अलख अगोचर अगम्म अपार, अलख अलखणा सच्चा शहिनशाहीआ। नव नौ चार सभ तों वसे बाहर, रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। नव नौ चार हुक्म वरतार, हुक्मी हुक्म खेल खिलाईआ। नव नौ चार करे कराए आपणी कार, करता पुरख आपणी करनी किरत कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे एका हरि, दूसर भेव ना कोई रखाईआ। साचा लेखा हरि करतारा, आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि पुरख हो उज्यारा, आपणी धारा आप चलाइंदा। आप प्रगटाए सुत दुलारा, मात पित पिता पूत आपणी गोद सुहाइंदा। आप कराए वणज वापारा, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। आपे वेखे विगसे करे विचारा, वेखणहारा मुख छुपाइंदा। आपे आपणा नाउँ रक्ख निरँकारा, साचा नाअरा आपे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपे जाणे आपणा सच तमाशा, सचखण्ड दुआरे आप कराइंदा। सचखण्ड दुआर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, गुणवन्त सहिज सुखदाईआ। नर निरँकार रूप वटाए नारी कन्त, सच सुहञ्जणी सेज हंढाईआ। आपणी इच्छया मणीआ मंत, नाम निधाना आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, नव नौ चार लेखा जाणे थाउँ थाँईंआ। नव नौ चार खेल अपारा, श्री भगवान आप खिलाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाहो भूप आपणा हुक्म सुणाइंदा। सचखण्ड अंदर खोल्हू किवाड़ा, थिर घर आपणा बंक वड्यांअदा। देवणहारा धुर फ़रमाना, शब्दी शब्द आप जणाइंदा। शब्दी शब्द इक्क हुलारा, सति सति सतिवादी आदि अनादी आप सुणाइंदा। बोध अगाधी एका धारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, नर नरायण खेल खिलाइंदा। नर हरि नरायण बनवारी, अनुभव प्रकाश कराइंदा। निरगुण जोत कर उज्यारी, पुरख

अकाल खेल खिलाइंदा। अजूनी रहत सहिज सुखधारी, दर घर साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा आप वड्यांअदा। दर घर साचा हरि वड्याआ, वड वड्डा आप अख्वाइंदा। निरगुण नूर नूर धराया, मात पित ना कोई बणाइंदा। छप्पर छन्न ना कोई छुहाया, जाग्रत जोत आप उपाइंदा। आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाया, कागद कलम भेव कोए ना पाइंदा। आदि पुरख पुरखोतम आपणा रूप धराया, परम पुरख परमात्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वण्डन आप वंडाइंदा। सचखण्ड दुआरा हरि सुहा, आपणा खेल खिलाइंदा। आपणा हुक्म शब्द जणा, आपे सीस झुकाइंदा। आपणा दर दरबान सेवा रिहा कमा, सेवादार भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आदि जुगादि आपणी बणत आप बणाइंदा। बणत बणाए हरि निरँकारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। करे खेल अपर अपारा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डा खण्डा आपणी रचन रचाईआ। करे प्रकाश रवि ससि सूरज चन्न सितारा, किरनी किरन डगमगाईआ। एका शब्द इक्क आधारा, एका पवणी पवण विच समाईआ। नौ चार वसे सभ तो बाहरा, नव नौ चार करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। नौ चार रंग करतारा, करता पुरख आप कराइंदा। सति सतिवादी हो न्यारा, सति सतिवादी आपणा नाउँ धराइंदा। सो पुरख निरँजण हरि निरँजण मेल मिलावा एकँकारा, आदि निरँजण विछड़ कदे ना जाइंदा। अबिनाशी करता मीत मुरारा, श्री भगवान रूप नारी कन्त भतारा, पारब्रह्म साची सेज हंढाइंदा। सुत दुलारा कर प्यारा, अठ्वां आपणा बन्धन पाइंदा। नौवां रंग करे निरगुण धारा, सरगुण आपणी खेल खिलाइंदा। सरगुण रूप अपर अपारा, पुरख अबिनाशी आप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नव नौं चार आपणा मार्ग आपणे हथ्थ रखाइंदा। नौं चार हरि भेव खुल्हाए, एका पर्दा आप उठाईआ। आदि पुरख आपणा नाउँ धराए, पहला घर वण्ड वंडाईआ। दूजा दर सचखण्ड सुहाए, तीजे थिर घर दए वड्याईआ। चौथे घर शब्द उपजाए, शब्दी शब्द मेल मिलाईआ। नौं चार निरगुण आपणे रंग रंगाए, आदि पुरख वडी वड्याईआ। नव नईआ आप उठाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेवट खेटा बणे साचा माहीआ। नव नईआ कर त्यार, हरि साचा खेल खिलाइंदा। नौ नौं करे इक्क प्यार, चार चार बन्धन पाइंदा। एका वस्त दस्से थार, थिर घर साचे आपे रखाइंदा। निरवैर पुरख बण वरतार, अजूनी रहत आप वरताइंदा। आपणी इच्छया आपे ल्ए अधार, रूप अनूप आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नव नौं चार आप समझाइंदा। नव नौं चार निरगुण दाता, नर हरि नरायण अख्वाइंदा। शब्द अगम्मी गाए गाथा, आदि जुगादी आपणी

२५८

गाइंदा। सति सतिवाद चलाए राथा, रथ रथवाही सेवा आप कमाइंदा। आप निभाए सगला साथा, साचा सति ना कोई तुड़ाइंदा। एका अक्खर पूजा पाठा, एका मन्त्र नाम उपाइंदा। एका मन्दिर एका हाटा, एका गृह वखाइंदा। एका नूर एका जोत इक्क लिलाटा, एका घाट लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नव नौं चार आपणे विच छुपाइंदा। नव नौं चार निरगुण छुपाया, लेखा लिखण विच ना आईआ। पुरख अबिनाशी रूप धराया, सरगुण खेल सच्चा शहिनशाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव उपजाया, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। त्रैगुण मेला मेल मिलाया, पंच विचोला सच्चा शहिनशाहीआ। पर्दा ओहला सारा लाहया, भेव कोए ना पाईआ। साचा घाड़न लए घड़ाया, तत्व तत लए मिलाईआ। अन्तिम ढोला आप जणाया, अनहद नाद वजाईआ। जोती नूर कर रुशनाया, जोत निरँजण आप प्रगटाईआ। साची सेवा सहिज सुभाया, लोकमात वेख वखाईआ । चौदां लोक चरन छुहाया, रूप अनूप आप धराईआ। रवि ससि सीस झुकाया, मंडल मण्डप चरनां हेठ दबाईआ। घड़न भन्नणहार पुरख समरथ खेल रचाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नव नौं चार दए समझाईआ। नव नौं चार खेल अपारा, हरि साचा सच कराइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा। नव नौ खोल्हे जगत दुआरा, जगत वासना विच रखाइंदा। नव नौं करे खेल न्यारा, नव नौ आपणा रूप धराइंदा। नव नौ देवे इक्क सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धारा आप बंधाइंदा। नव नव धार हरि संसार, सति पुरख निरँजण आप चलाइंदा। नव नव करे पार किनार, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यार, सरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। दोहां विचोला एकँकार, अकल कल आपणा रूप धराइंदा। जुग चौकड़ी वण्डे वण्ड गिरधार, कोटन कोटि काल आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे गुर अवतार, भगत भगवन्त सन्त एका गुण वखाइंदा। गुरमुख मेला जगत दुआर, गुरसिख आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नव आपणा खेल खिलाइंदा। नव नव खेल खिलाया, ख़ालक ख़लक रूप निरँकार। जुग जुग आपणा वेस वटाया, लोकमात लए अवतार। सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढाया, कलिजुग पावणहारा सार। नव नौ चार पन्ध मुकाया, जुग चौकड़ी गए हार। चौथा जुग रूप धराया, चार कुण्ट हो उज्यार। चारे वेद वेख वखाया, चारे बाणी करे पुकार। चारे वरनां नैण शरमाया, चारे यारी रोवे ज़ारो ज़ार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौं चार दए आधार। नव नौं चार सर्ब कुरलाया, लक्ख चुरासी दए दुहाईआ। निरगुण रूप नज़र किसे ना आया, सरगुण मस्तक लग्गी कूड़ी छाहीआ। चारों कुण्ट अन्धेरा छाया, दहि दिशा ना कोए रुशनाईआ। ब्रह्मण्ड वरभण्ड रिहा कुरलाया, जेरज अंड धीर ना कोए धराईआ। विष्न ब्रह्मा

शिव नेत्र नैण रिहा उठाया, राह तक्कण साचे माहीआ। करोड़ तेतीसा नेत्र नैणां नीर वहाया, सुरपति राजा इन्द दए दुहाईआ। गुर पीर अवतार बैठे सेज विछाया, घर मिले कन्त सुहेला चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, नव नौं चार आपणा रंग आपे वेख वखाईआ। नव नौं चार रंग अपारा, हरि साचा वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, आदि शक्ति आदि भवानी एका हुक्म धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। एका जल्वा नूर नूरानी, महिबान बीदो बी खैर या अल्ला इलाही नूर आप धराइंदा। आपे जाणे आदि जुगादि जुगा जुगन्तर शब्द अनाद अनादी बाणी, लोकमात आप सुणाइंदा। कलिजुग अन्तिम अन्त हरि इक्क वखाए सच निशानी, आत्म ब्रह्म सर्ब जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नव नौं चार पन्ध मुकाइंदा। नव नौं चार आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म उपजाया। लेखा जाणे भगत कर्म, निहकर्मी कर्म कमाया। निरगुण निरवैर एका धर्म, अधर्मी धर्म वेख वखाया। निराकार वखाए एका वरन, बरन कोए रहिण ना पाया। अबिनाशी करता साची सरन, दूसर ओट ना कोए तकाया। जन भगतां खोल्ह़े हरन फरन, नेत्र आपणा आप वखाया। सन्तन चुकाए मरन डरन, काल फास नेड़ ना आया। गुरमुख साची तरनी तरन, राए धर्म ना दए सज़ाया। गुरसिख दर घर साचे वड़न, चित्रगुप्त ना लेख वखाया। मनमुख जीव आपणी करनी भरन, लक्ख चरासी गेड़ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौं नौं चार लए प्रनाया। नव नौं चार प्रनावणा, हरि साचा कन्त कन्तूहल। आपणा कीता कौल भुल ना जावणा, करे खेल सदा अनभूल। निरगुण सरगुण वेख वखावणा, तोलणहारा पूरा तोल। शब्द अगम्मी खण्डा हथ्थ रखावणा, आपे वेखणहारा घट घट अंदर मौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धरनी धरत धौल। धौल धर्म तेरा वेखणहारा, दया धर्म पूत कवण अख्वाईआ। पुरख अबिनाशी हो उज्यारा, लोकमात जोत जगाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी पावे सारा, नौं दर खोल्ह़े थाउँ थाँईंआ। चार कुण्ट फिरे हल्कारा, शब्द दूत इक्क दौड़ाईआ। दिस ना आए विच संसारा, पारब्रह्म अबिनाशी अचुत आपणी खेल खिलाईआ। चारे वेद करन पुकारा, पुराण अठारां देण ग्वाहीआ। वेद व्यासा बण लिखारा, नानक गोबिन्द आप सालाहीआ। कलिजुग अन्तिम प्रगटे निहकलंक नरायण अवतारा, आपणा बल आपणा रूप प्रगटाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे विच संसारा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। सति सति वरताए हरि निरँकारा, सतिजुग साचा राह चलाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख्वारा, तख्त ताज ना कोए हंढाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, निर्धन अपणा रंग रंगाईआ। एका बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक आत्म अन्तर बूंद स्वांती मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप

२६०

हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नव नौं चार लेखा दए मुकाईआ। नव नौं चार लेखा मुकणा, हरि साचा आप मुकाइंदा। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। शब्द गुर शब्द रूप हो हो बुक्कणा, कलिजुग झल्ल वेख वखाइंदा। अठसठ तीर्थ पाणी सुक्कणा, अमृत सीर ना कोए नहाइंदा। बिन हरि पुरख अकाल, दूजे दर सीस ना झुकणा, अन्तिम खेड़ा आपे ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नव नौं चार अगला पन्ध मुकाइंदा। नव नौं चार मुके पन्ध, हरि साचा आप मुकाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी नौं दर चार वरन गाए एका छन्द, सोहँ शब्द वडी वड्याईआ। माणस मनुख रसना लाए ना कोए मदिरा मास गंद, जिस जन आत्म ब्रह्म करे जणाईआ। घर जोत निरँजण चढ़े चन्द, घर घर विच करे रुशनाईआ। घर गीत घर गोबिन्द घर गाए सुहागी छन्द, घर मिले सतिगुर सच्चा माहीआ। घर परमानंद घर मिले हरि बख्शंद, गुरमुख विरला बत्ती दन्द एका गुण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौं चार तेरा डेरा देवे ढाहीआ। नव नौं चार डेरा ढावणा, नाता तोड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकार। काया खेड़ा इक्क वसावणा, पंच शब्द धुन नाद कर जैकार। मन मति बुध आप समझावणा, गुर सतिगुर कर प्यार। दूई द्वैती पर्दा लाहवणा, आसा तृष्ना कर ख्वार। धुन आत्मक नाद वजावणा, अनहद शब्द सच्ची धुन्कार। एका रूप सर्ब दरसावणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दए आधार। राउ रंकां राज राजानां एका घर वखावणा, हरि पुरख निरँजण चरन दुआर। शाहो भूप साचा ताज सीस टिकावणा, पंचम मेला विच संसार। एका मन्त्र नाम दृढ़ावणा, नौं नौं चार होए जैकार। सति सतिवादी सति वरतावणा, सच सुच करे प्यार। काया कच्च कंचन रूप बणावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वार।

★ १७ फग्गण २०१७ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे गृह वज़ीर पुर ज़िला गुरदास पुर ★

नव नौं चार सूरा सरबंगन, सर्ब कल आपणी खेल खिलाइंदा। नव नौं करे हरि खण्डन, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। नव नौं देवे प्रभ दंडन, सृष्ट सबाई वेख वखाइंदा। नव नौं चलाए चण्ड प्रचण्डन, पारब्रह्म भेव ना आइंदा। नव नौ भागांमंदन, भाण्डा भरम ना कोए भनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस धराइंदा। नव नौं चार वेस धर, हरि साचा खेल खिलाइंदा। नौं दुआर जायण हर, हरि जू हरि हरि वेख वखाइंदा। नौं खण्ड भय भउ

२६०

रही डर, भयानक रूप सर्ब दरसाइंदा। नव नौं घाड़न घड़, घड़नहार भन्न वखाइंदा। नव घर पार कर, हरि साचा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराइंदा। नव नौं उतरे पार, जगत नईया रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, सचखण्ड सहिज सुखदाईआ। निरगुण सरगुण पावे सार, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जुग चौकड़ी कर ख्वार, वेला वक्त दए चुकाईआ। गुर अवतार पावे सार, अभुल हरि इक्क शहिनशाहीआ। कलिजुग अन्तिम हो उज्यार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौं चार निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। नौं दर सरगुण रंग, सारंगधर भगवान बीठलो आप चढ़ाइंदा। नव खण्ड विच वरभण्ड, लक्ख चुरासी वण्ड वंडाइंदा। चार जुग चार वेद चार खाणी चार बाणी चारे मुख आपे पढ़, भेव अभेद अछल अछेद आप खुल्हाइंदा। नर निरँकार हरि करतार महल्ल अटल उच्च मुनार आपे खड़, खण्ड ब्रह्मण्ड लोअ पाताल पुरीआं वेख वखाइंदा। सागर नीर सरोवर वेखे सर, टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड फोल फुलाइंदा। कोटन कोटि रूप लोकमात धर, धरनी धरत धवल माण दिवाइंदा। रूप अनूप शाहो भूप पारब्रह्म ब्रह्म लए वर, आप आपणा बन्धन पाइंदा। नव नौं खोल्ह दर, दर दरवाज़ा जगत वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा मंगल आपे गाइंदा। नव नौं हरि हरि नाद, शब्दी शब्द आप वजाइंदा। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्मादि, कुदरत कादर आपणी खेल खिलाइंदा। जीव जंत हरि भगवन्त नाम निधाना देवे दाद, वस्त अमोलक गृह गृह अंदर आप रखाइंदा। अगम्म अगम्मड़ा लेखा बोध अगाध, बोध अगाधी आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुण फ़रयाद, निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहत जोती जामा भेख वटाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवन्त आपे लाध, लक्ख चुरासी विचों माणक मोती आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलिजुग शौह दरयाए विचों लए काढ, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। निर्धन सरधन लडाए लाड, आप आपणी गोद सुहाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, वख अमृत रूप बणाइंदा। लेखा जाणे साचे साध, सांतक सति सिदक सबूरी इक्क समझाइंदा। करे खेल जुगादि आदि, जुगा जुगन्तर जुग करता वेस वटाइंदा। आपे जाणे आपणा घात, खड़ग खण्डा कटार चण्ड प्रचण्ड हथ्थ ना कोए वखाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला मीत मुरारा हरि निरँकारा आपे रक्खे साचा साथ, गुरमुखां संग निभाइंदा। शब्द अगम्मी आदि पुरख अपरम्पर स्वासी आप चढ़ाए एका राथ, रथ रथवाही साची सेवा आप कमाइंदा। एकँकारा सर्ब कला समरथ लेखा जाणे अकथना अकथ, रसना जिहवा ना कोए लिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौं चार खेल संसार, वड संसारी आप कराइंदा। नव नईया चलाए मात, नौं खण्ड वज्जे वधाईआ। चार वरन

बणाए एका ज़ात, जात अज़ाती मेट मिटाईआ। चार जुग अन्त जणाए एका शब्द करामात, सोहँ शब्द वडी वड्याईआ। चार वेद एक मन्त्र दृढ़ाए पाठ, हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। चार कुण्ट इक्क सरोवर मारे ठाठ, हरि चरन सच्ची सरनाईआ। चार यारी नेड़े करे वाट, कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाईआ। लेखा जाणे आपणे खात, दूसर अवर ना कोए दसाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी बणाए एका हाट, नव वणजारा इक्क फिराईआ। चार जुग देवे साची दात, दाता दानी सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख सज्जण रक्खे साथ, जुग जुग आपणा रूप धराईआ। लेखा जाणे तत्त आठ, अठ तत्त करे कुड़माईआ। वसे धाम सति पुरख निरँजण सतिवादी सात, सत सत इक्क समझाईआ। छे घर बैठ आप रघनाथ, निअक्खर करे पढ़ाईआ। पंचम मेला कमलापात, पुरख अबिनाशी आप मिलाईआ। चौथा पद चौथा घर एका मंडल वखाए साची रास, गोपी काहन आप नचाईआ। तीजे लोयण वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। दोए दोए रूप धरे मात, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। एका इक्क इकल्ला इक्क इकांत, आदि जुगादि समाईआ। कलिजुग अन्तिम मेटे अन्धेरी रात, धूंआँधार रहिण ना पाईआ। गुरमुख साचे आप उठाए चरन कँवल बंधाए साचा नात, आपणा बन्धन आपे पाईआ। अन्त काल कल पुच्छे वात, समरथ पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। लेखा मुकाए ज़ात पात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाईआ। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनन दया आप कमाईआ। सगल विसूरे जायण लाथ, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नव नईया विच संसार, नौं दर चलाए आप निरँकार, चौथे जुग चार वरन आप चढ़ाईआ। चार वरन एका नईया, नव खण्ड पृथ्मी आप चलाइंदा। नव दुआर एका सईया, पुरख अबिनाशी नज़री आइंदा। चार वरन भैणां भइया, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। नौं दुआर इक्क गवैय्या, मन रागी राग सुणाइंदा। नव घर करे प्यार , आसा तृष्ना मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नव नौं चार लेखा जाणे सिरजणहार, वेद कतेब भेव ना पाइंदा। चार लेखा चार जुग, चार कुण्ट रुशनाइंदा। नव खण्ड पृथ्मी नव दुआर औध गई पुग, जूठा झूठा मोह चुकाइंदा। नव नौं चार चोग लई चुग, वेला अन्तिम अन्त वखाइंदा। नव नौं चार लेखा जाणे लुक लुक, भेव अभेद भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। नव नौं चार वेला गया ढुक, पान्धी आपणा पन्ध मुकाइंदा। नव नौं चार धरत मात सफल करे तेरी कुक्ख, कलिजुग अन्तिम दुःख मिटाइंदा। नव नौं चार उज्जल करे एका मुख, गुरमुख विरले आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। नव नौं चार हरि हरि मेला, गुर सतिगुर आप कराईआ। नव नौं चार पार किनार एका घर सुहाए गुरु गुर

चेला, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। नव नौं चार सुहञ्जणा होया वेला, पुरख अबिनाशी घट घट वासी, हरिजन साचे लए उठाईआ। दरस दिखाए गहर गम्भीर, गुणी गहिन्द इक्क इकेला सच्चा माहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सज्जण सुहेला, साख्यात पुरख अबिनाश विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख गोबिन्द आपणी गोद बहाईआ।

★ १७ फग्गण २०१७ बिक्रमी बचन सिँघ दे गृह पिण्ड काणा कौंटा ज़िला गुरदास पुर ★

दीदार तक्कया एका राह, सतिगुर पूरा आप जणाइंदा। पतिपरमेश्वर बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। गुरमुख गुरसिख सज्जण वेखे थाउँ थाँ, नौं खण्ड पृथ्मी फोल फुलाइंदा। नव सुणाए साचा नाँ, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। ग़रीब निमाणे फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस आप उडाइंदा। एथे ओथे दो जहान सदा सुहेला सिर रक्खे ठंडी छाँ, अग्नी तत्त ना कोए बरसाइंदा। बाल अञ्याणे आपणी गोद बिठाए लाड लडाए जिउँ पिता मां, मात पित हो हो सेव कमाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची सचखण्ड दुआरा एका घर वखाइंदा। पकड़ उठाए फड़ फड़ बांह, लक्ख चुरासी फोल फुलाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करे सच न्याँ, तख्त निवासी शाहो भूप राज राजाना श्री भगवाना आपणा हुक्म आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। दीदार दरस हरि पाया, मिटया अन्ध अन्धयार। गुर सतिगुर होए सहाया, निरगुण सरगुण लै अवतार। सरगुण आपणे लेखे पाया, निरगुण जोती जोत दए आधार। चौदां लोक वेख वखाया, त्रैभवन हो त्यार। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पाया, गगन पातालां दए आधार। रवि ससि सूरज चन्न धरत धवल पृथ्मी आकाश समुंद सागर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। दीदार दरस हरि दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। गुरसिख गुर गुर नेत्र नाम निधाना पाए अंजना, अज्ञान अन्धेर गंवाईआ। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, दुरमति मैल रहे ना राईआ। दो जहानां बणे सज्जणा, सतिगुर साचा संग रखाईआ। अन्त काल त्रैकाल दरसी हरिजन तेरा पर्दा कज्जणा, नाम दोशाला इक्क वखाईआ। आदि जुगादि चलाए सच जहाज़ना, एका नईया आपणी आप उपाईआ। जन भगतां संवारे हरि हरि काजना, करता पुरख बेपरवाहीआ। शब्द अगम्मी मारे वाजणा, धुन अनादी नाद अल्ह़ाईआ। अश्व रक्खे साचा ताजणा, निरगुण आपणा आप दौड़ाईआ। होए सहाई ग़रीब निवाज़ना, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। दीदार दरस हरि पाया, मिटया अन्ध अन्धयार। नौं नौं गेड़ा आप मुकाया, नौं दर तुट्टे नाता जगत संसार। चारे कुण्टां वेख वखाया, चौथे जुग रूप करतार। गुरमुख साचे लए जगाया, शब्द हलूणा एका मार। माया ममता हउमे हंगता झूठा बन्धन दए तुड़ाया, एका बख्शे चरन प्यार। काया मन्दिर कर रुशनाया, लेखा जाणे डूँग्घी गार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन साचे आप उठाल दा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। करे खेल दीन दयाल दा, दीनां नाथ सच्चा शहिनशाह। लेखा जाणे शाह कंगाल दा, वेखणहारा दो जहां। लुटाए ख़ज़ाना सच्चे धन माल दा, गुरमुखां झोली आप भरा। आदि जुगादि सदा प्रितपाल दा, बख्शे चरन कँवल सच्ची सरना। हाल मुरीदां आपे जाण दा, मुर्शद बणया बेपरवाह। सच रसीदा इक्क वखाण दा, नौबत वजाए सच्चा शहिनशाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए मिला। हरिजन मिलाया दरस दीन, जगत जुगत आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। लक्ख चुरासी विचों वक्ख कीन, कीमत करता आपे पाईआ। लेखा जाणे गुरसिख गुर गुर जिउँ नाता जल मीन, जल मीन आप अख्वाईआ। एका रंग चढ़ाए भीन्न, भिनड़ी रैण नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। वेख वखाए दरस दीदार, नेत्र लोचण नैण आप खुल्हाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। थिर घर खोल्ह आप किवाड़, आपणा मन्दिर आप उपाइंदा। सुन्न अगम्मी आपे कार, करता पुरख हरि कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। भेव अवल्ला हरि निरँकारा, आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि पुरख रूप अपारा, रेख रंग ना कोए वड्याईआ। आदि अन्त वसे सभ तों बाहरा, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण आप समझाईआ। आदि पुरख पुरख अबिनाशा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सो पुरख निरँजण खेले खेल तमाशा, हरि पुरख निरँजण नाल रलाईआ। एकँकारा निज घर आपणा कर कर वासा, आदि निरँजण जोत जगाईआ। श्री भगवान होए दासी दासा, अबिनाशी करता सेव कमाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रूप प्रकाशा, अनुभव आपणी धार चलाईआ। आपणे मन्दिर आपे पाए रासा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए उठाईआ। सचखण्ड हरि वसणहारा, आदि जुगादि समाया। आपणा मार्ग आपे दस्सणहारा, आपणा रूप आप धराया। आपणा रस आपे रसनहारा, नारी कन्त हरि भगवन्त आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाया। नारी कन्त श्री भगवाना, घर साचे सोभा पाइंदा। करे खेल मर्द मरदाना, मरदन आपणा आप जगाइंदा। शब्द अगम्मी

धुर फ़रमाना, आदि जुगादी आप उपाइंदा। साचे तख्त बैठ सच सुल्ताना, सीस जगदीस आप सुहाइंदा। लेखा जाणे दो जहाना, आपणा बल धराइंदा। सुत दुलारा हरि निरँकारा इक्क रखाए बाल निधाना, विष्न ब्रह्मा शिव गोद बहाइंदा। त्रैगुण माया देवे दाना, पंज तत जोड़ जुड़ाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़त घड़े साचे मन्दिर बैठ गुण निधाना, आपणी सेवा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आपणे विच रखाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़, ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगाईआ। निरगुण सरगुण अंदर वड़, सरगुण निरगुण होए सहाईआ। चरन कँवल अमृत आत्म साचा हरि, कँवल नाभी साचा सर वहाईआ। जोत निरँजण आपणी अंस आपे धर, दीपक दीप करे रुशनाईआ। आपणा अक्खर आपणी विद्या आपे पढ़, घर घर आपणा राग सुणाईआ। आपणे मन्दिर आपे वड़, घर घर विच दए वड्याईआ। आपणी सेजा आपे चढ़, नारी कन्त आप अख्वाईआ। आपणा रूप आपे धर, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। आपे दाता दानी देवे वर, आपे आपणी झोली रिहा भराईआ। आपे पंज तत्त खोले नौं दर, पुरख अबिनाशा भेव ना राईआ। आपे काम क्रोध लोभ मोह हँकार बन्ने लड़, आसा तृष्ना हउमे हंगता माया ममता मेल मिलाईआ। आपे लेखा जाणे चोटी जड़, मध्ध आपणी खेल खिलाईआ। आपे अग्नी आपे जोती आपे तत्त जाए सड़, धूंआँधार आप समाईआ। आपे दरस दिखाए अग्गे खड़, निरगुण सरगुण दए वड्याईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख आपणी रचना आप रचाईआ। आपे करे आपणी परख, परखनहार आप हो जाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता रोग ना कोई सताईआ। आपणे उत्ते आपे करे तरस, वड दाता बेपरवाहीआ। आपणी मेटे आपे हरस, दूसर हवस ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी दए वड्याईआ। लक्ख चुरासी खेल अपारा, हरि साचा सच कराइंदा। निरगुण सरगुण बण वरतारा, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। धरनी धरत धवल दए सहारा, लोकमात खेल खिलाइंदा। अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज वण्डे वण्ड अगम्म अपारा, साची वण्डन आप वंडाइंदा। एका अक्खर बोल जैकारा, चारे वेदां आप सुणाइंदा। आपणी बाणी बाण लगाए एका हुक्म इक्क वरतारा, एका शब्द इक्क जैकारा, एका मन्दिर इक्क दुआरा, इक्क शाह इक्क सिक्दारा, हरि एका हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी घाड़न घड़, मानस मानुख आप धराइंदा। मानस मानुख उत्तम ज़ात, हरि साचा सच बणाइंदा। नौं नौं देवे आपणी दात, नौं नौं खेल खिलाइंदा। आपे पुच्छणहारा वात, आपणा भेव आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मानस आपणा तत समझाइंदा। मानस हरि समझाया, कर किरपा गुण निधान। लक्ख चुरासी विचों दए वड्याआ, बख्शे इक्क ज्ञान। आपणा

नाउँ आप सुणाया, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। आपणा दरस आप दिखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे सच पछान। मानस देवे वड्याई हरि, एका शब्द जणाइंदा । तेरा मेरा रूप एका घर, गृह मन्दिर इक्क वखाइंदा। तेरा मेरा एका सर, अमृत सरोवर इक्क नुहाइंदा। तेरा मेरा एका लड़, सच्चा पल्लू इक्क फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मानस मानुख आप जगाइंदा। मानस जगाया किरपा निधान, आपणा भेव आप खिलाईआ ।शब्द वखाए इक्क निशान, सति सतिवादी हथ्थ उठाईआ। प्रेम मारे निराला बाण, पीआ प्रीतम सच्चा शहिनशाहीआ। इक्क रखाए साची आण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम निधाना देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। करे प्रकाश कोटन भान, ब्रह्म आत्म पारब्रह्म कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लेखा दए समझाईआ। मानस लेखा हरि समझाइंदा, कुदरत कादर कर विचार। निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा, पंज तत्त करे प्यार। आपणी जोत विच टिकाइंदा, जोती जाता हो उज्यार। काया किला कोट सुहाइंदा, महल्ल अटल उच्च मिनार। साची चोट शब्द लगाइंदा, नाम नामा करे ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शे आपणा सच दीदार। मानस जन्म नौं धार, हरि हरि आप जणाया। मानस मरे मानस जन्मे मानस मेला विच संसार, दूजा संग ना कोए रखाया। मानस मात मानस पित मानस पूत जाया। दूजी गोद ना कोई हुलार, मानस बूंद मानस रक्त मानस सीर एका मुख रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौं नौं लेखा आप वखाया। नौं नौं लेखा विच संसारा, जन्म जन्म भवाईआ। मानस घर मानस लए अवतारा, मानस होए पिता माईआ। लक्ख चुरासी ना कोई अधारा, जूनी जून ना कोई भवाईआ। किरपा करे आप निरँकारा, जिस देवे मात वड्याईआ। वेखण आए नर निरँकारा, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा लए उठाईआ। नौं नौं जन्म आए वारो वार, मानस मानस रूप वटाया। भगवान पाए साची साची सार, लोकमात लए जगाया। देवे दरस आप दीदार, नेत्र लोचण आप खुल्हाया। भगत करे आप उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाया। नौं नौं पार किनारा, नौवें जन्म मेल मिलाईआ। सो भगत सो सुत दुलारा, सो सन्त मिले वड्याईआ। सो गुरमुख सोहे चरन दुआरा, जिस जन चरन चरनोदक मुख चुआईआ। सो गुरसिख उतरे पार किनारा, मँझधार ना कोई रुड़ाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरिजन विरले देवे आपणा दरस दीदारा, लक्ख चुरासी भरम भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म जन्म कर्म कर्म कर्म धर्म धर्म धर्म एका रंग रंगाईआ। नौं नौं जन्म उतरे पार, हरि सतिगुर दरस दिखाइंदा। नौं

नौं चार चौकड़ी जुग बीते विच संसार, पुरख अबिनाशी निरगुण मेल मिलाइंदा। आपणा कीता ना कोई जाणे करे विचार, श्री भगवन्त आदि जुगादि वेख वखाइंदा। गुरमुख सज्जण गुर सतिगुर करे प्यार, लोकमात खेल खिलाइंदा। घर घर देवे दरस दीदार, ईद दीद एका गुरसिख चन्द चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन बख्शे आपणा दरस, जगत तृष्ना मेटे हरस, तन मन हरयावल इक्क वखाइंदा। तन मन हरया दरस करया, दुःख दलिद्र नाठा। सतिगुर पूरे गुरसिख तेरा लड़ फड़या, नौं खण्ड पृथ्मी फिरे नाठा। मनमुखां तों आपे डरया, आपणे हथ्थ रखाए आपणा घाटा। गुरसिख तेरे काया मन्दिर अंदर वड़या, निरगुण जोती नूर कर ललाटा। आपणे पौड़े आपे चढ़या, चौथे पद मुकाई वाटा। गुरसिख तेरा नाउँ शब्द पढ़या, तेरी आत्म सेजा सुत्ता साची खाटा। आदि जुगादि ना जन्मे ना कदे मरया, जन भगतां पुछे सदा वातां। सिँघ दीदार कर दरस गुर दुआर भव सागर तरया, कलिजुग मिटे अन्धेरी राता। साध संगत सतिगुर एका वरया, पुरख अबिनाशी इक्क बिधाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए जोती जाता। जोती जाता हरि निरँकारा, निरवैर पुरख अख्वाया। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निरगुण निरगुण रूप धराया। सतिजुग त्रेता द्वापर लेखा जाणे आपणी वारा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाया। धुर फ़रमान सुणाए लोकमात गुर अवतारा, खाणी बाणी बाण अल्ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा, पारब्रह्म बेअन्त। गुरमुख साचे आप जगाइंदा, देवे वड्याई जुगा जुगन्त। नाम निशाना इक्क रखाइंदा, इक्क इकल्ला श्री भगवन्त। कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत। चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा, ना कोई रसना ना कोई जिहवा मणीआ मंत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप बणाए आपणी बणत। हरि साची बणत बणाइंदा, जुगा जुगन्तर एका कार। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराइंदा, कलिजुग अन्तिम खेल करे निरँकार। हरिजन साचे आप उठाइंदा, सुणाए शब्द नाद धुन्कार। मन्दिर मस्जिद गुरदुआर शिवदुआला मठ इक्क वखाइंदा, घर घर विच खोल्ह किवाड़। तीर्थ अठसठ पन्ध मुकाइंदा, झिरना झिरे अपर अपार। दीपक जोती जोत जगाइंदा, जोती नूर कर उज्यार। साची चोटी आप चढ़ाइंदा, फड़ फड़ बाहों दए हुलार। वासना खोटी आप कढाइंदा, सोहँ शब्द जै जैकार। गुरसिख माणक मोती आप बणाइंदा, आपे होए परखणहार। सुरती सोती आप जगाइंदा, शब्दी शब्द कर प्यार। अकाल मूर्ति दरस दिखाइंदा, मूर्त अकाल अपर अपार। नाद तूरत आप वजाइंदा, तुरया पावे साची सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण

नर, हरिजन बख्शे दरस दीदार। हरिजन दरस दीदार पावणा, गुर सतिगुर सज्जण मीत । माया ममता मोह चुकावणा, एका गाउणा सुहागी गीत। काया बंक आप सुहावणा, मन होए पतित पुनीत। चरन कँवल कँवल चरन ध्यान लगावणा, तन होए ठांडा सीत। माल धन धन माल एका झोली पावणा, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पुरख अबिनाश चलाए आपणी रीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका रंग रंगाए हस्त कीट। हस्त कीट दरस दुआरा, शाह सुल्तान ना कोए वड वड्याईआ । जो जन आए बण भिखारा, भिखक झोली आप भराईआ। कराए वणज नाम वणजारा, साचा हट्ट इक्क खुल्हाईआ। वखाए दर ठांडा दरबारा, सांतक सति धार चलाईआ। ऊँचां नीचां करे इक्क प्यारा, राउ रंक ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे दरस दिखाईआ। दरस वखाए गुरु गुरदेव, गोबिन्द आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। जन्म जन्म दा लेखा जाणे कीनी सेव, पूर्ब लेखा भुल ना जाईआ। आदि जुगादि सदा अभेव, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। हरिजन रसना रस देवे एका मेव, सोहँ शब्द सच्ची पढ़ाईआ। कौस्तक मणीआ मस्तक लावे थेव, जोत ललाटी नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे देवे दरस, दे दरस तृखा बुझाईआ। देवे दरस दरस दीदारा, दहि दिशा खेल खिलाइंदा। नव नौं लेखा जाणे हरि करतारा, नौं नव वेस वटाइंदा। चार चार इक्क अधारा, चार चार मेल मिलाइंदा। एका तत पुरख करतारा, तत्व तत इक्क समझाइंदा। साध संगत बख्शे इक्क दुआरा, सच दुआरा आप सुहाइंदा। हरिसंगत मेला हरि हरि कन्त भतारा, विछड़ कदे ना जाइंदा। मंगे मंग गुरसिख याचक बण भिखारा, मेहरवान दान अतुट आप वरताइंदा। जो जन दर्शन पाए आए चल दुआरा, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। राए धर्म ना करे ख्वारा, चित्रगुप्त ना लेख वखाइंदा । लाड़ी मौत ना करे शंगारा, जम का डण्ड ना कोए लगाइंदा । अन्तिम देवे दरस घर घर आए दे सहारा, गुरसिख बिन दरस देह ना कोए तजाइंदा । सचखण्ड वखाए इक्क दुआरा, आपणी हथ्थीं आप बणाइंदा। ना कोई लाया इट्टां गारा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। तेल बत्ती ना करे कोए उज्यारा, निरगुण जोती जोत जगाइंदा। हवन दीप धूप ना कोए सहारा, जगत सुगंधी ना कोए प्रगटाइंदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जिस जन देवे दरस निहकलंक नरायण नर अवतारा, जन्म मरन विच ना आइंदा। गुरसिख तेरा भेव कागद कलम ना लिखणहारा, ब्रह्मा चारे मुख शरमाइंदा। नौं नौं जन्म उतरे पार विच संसारा, अन्तिम लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरसिख गाओ गीत एका वारा, गीत गोबिन्द आप सुणाइंदा। करया दरस दर दीदारा, दीनां नाथ दीनन आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन बख्शे चरन ध्यान, चरन चरनोदक मस्तक टिक्का धूढ़ी आप लगाइंदा ।

★ १८ फग्गण २०१७ बिक्रमी धिरता सिँघ दे गृह पिण्ड काणा कौंटा ज़िला गुरदास पुर ★

सतिगुर दरस नित नवित, गुरमुखां वण्ड वंडाईआ। आदि जुगादी करे हित, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। ना कोई वार ना कोई थित, वेला वक्त ना कोए जणाईआ। दिवस रैण वसे चित, चितवित ठगौरी कोए ना पाईआ। दो जहानां साचा पित, पीत पीतम्बर सीस सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस सच्चा शहिनशाहीआ। साचा दरस काया मन्दिर, मधुर नैण आप कराइंदा। मेल मिलाए अंदरे अंदर, ब्रह्म पारब्रह्म समाइंदा। तोड़नहारा आपणा जंदर, एका खण्डा हथ्थ चमकाइंदा। मनूआ बन्नृणहारा बन्दर, नाम डोरी हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे डूँघी कंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। साचा दरस काया बंक, बंक दुआरी आप कराइंदा। हरिजन लेखा जाणे आदि अन्त, जुग जुग भेव कोए ना पाइंदा। लक्ख चुरासी विचों वेखे साचे सन्त, सन्त सतिगुर मेल मिलाइंदा। नार सुहागण वरे एका कन्त, कन्त कन्तूहल सेज हंढाइंदा। सति सतिवाद बणाए बणत, बसन बनवारी आपणी दया कमाइंदा। गढ़ तोड़े हउमें हंगत, गुरमुख जन जननी आपणी गोद सुहाइंदा। धन्न वड्याई हरि हरिसंगत, हरि सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दासी दास सेव कमाइंदा। साचा दरस काया गढ़, गृह मन्दिर आप कराईआ। निरगुण सरगुण अंदर वड़, सच सरूपी रूप धराईआ। सुरती शब्दी आपे फड़, शब्द सुरती मेल मिलाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़, साची सिख्या दए समझाईआ। सच दुआर फड़ाए लड़, फड़या लड़ छुट्ट ना जाईआ। चारों कुण्ट वेखे दर, नेत्र आपणा आप उठाईआ। वसणहारा साचे घर, घर सच्चा इक्क सुहाईआ। निरगुण जोती दीपक धर, बिमल करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। साचा दरस घर घर, घर सज्जण मेल मिलाइंदा। हरिजन चुकाए जगत डर, भय भयानक वेख वखाइंदा। अमृत नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क वखाइंदा। करता पुरख आपणी करनी कर, कर किरपा मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण भेव कोए ना पाइंदा। साकत निन्दक दुष्ट दुराचार माणस जन्म जायण हर, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन भगत सन्त गुर सरनाई जायण तर, सतिगुर साचा आप तराइंदा। निरभउ निरवैर निराकार अवरनी वरन, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हरि आपणा लेख लिखाइंदा। साचा दरस पंज तत्त, त्रैगुण आपणा रंग रंगाईआ। अन्तर आत्म बीज घत, फुल फुलवाड़ी आप लगाईआ। वेखणहारा डाली पत्त, आपणी पंखड़ी आप खुल्हाईआ। भँवरा बणे पुरख समरथ, गूंजणहारा इक्क शहिनशाहीआ। आपणी नचोड़े आपे रत, रती रत आप सुकाईआ। गुरसिखां अंदर बैठा सत्थर घत, जगत सेज ना कोए विछाईआ। भेव ना पाए बुध मति, मनूआ रक्खे ना कोए चतुराईआ। गुरमुख विरले मार्ग देवे दस्स, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। आत्म रसया इक्क वखाए साचा रस, रसक रसक आपणी बूंद आप वहाईआ। मेटे रैण अन्धेरी मस, साचा चन्द इक्क चढ़ाईआ। जुग चौकड़ी पैंडा मुकाए नस्स नस्स, गुरसिख तेरा राह तकाईआ। तेरी क्रिया होया वस, आपणी क्रिया ना कोए जणाईआ। आपणा मन्दिर वेखे जगत रिहा ढट्ठ, गुरसिख तेरा मन्दिर आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस सच्चा शहिनशाहीआ। साचा दरस बहत्तर नाड़, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। माया ममता अग्नी ना सके साड़, अमृत मेघ आप बरसाइंदा। गुरमुख बणाए साचे लाड़, लक्ख चुरासी फोल फुलाइंदा। निरगुण सरगुण घड़या घाड़न घाड़, घड़न भन्नणहार वेख वखाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी चबाए आपणी दाढ़, दाढ़ां हेठ सर्ब रखाइंदा। गुरसिख मेल मिलाया सतारां हाढ़, एका साता एका घर बहाइंदा।

२७०
सृष्ट सबाई वसे डूँग्घी गार, जगत कंदर पार ना कोए कराइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी करे विचार, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। गा गा गए गुर अवतार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सर्ब सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणा दरस आपणे विच रखाइंदा। साचा दरस तिन्न सौ सट्ठ, हाडी हाडी आप समाईआ। पारब्रह्म महिमा अकथना अकथ, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कीना वस साढे तिन्न अंदर हथ्थ, हथ्थो हथ्थ लेखा रिहा चुकाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत आदि अन्त शब्द डोरी पाए नथ, चार कुण्ट दहि दिशा आपे रिहा भवाईआ। निरगुण सरगुण नाम निधान देवे वथ, वस्त अमोलक आपणे हथ्थ रखाईआ। भाणा वरते हरि समरथ, भावी भाणे अग्गे सीस झुकाईआ। गुरमुख सगल विसूरे जायण लथ्थ, जिस जन आपणा दरस वखाईआ। कोटन कोटि उच्चे टिल्ले पर्बत प्रभ दर्शन को रहे तरस, नेत्र नैण नज़र किसे न आईआ। कोटन कोटि होए अर्श फर्श कुरा कायनात वेखण मार झात, जगत निजात ना कोए दवाईआ। रैण अन्धेरी दिसे रात, सगला निभाए ना कोए साथ, सगला संग बैठा मुख छुपाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम घाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराईआ। साचा दरस रती रत, रक्त आपणी खेल खिलाइंदा। करे खेल कमलापति, कँवल

नैण आप मटकाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन इक्क रखाए साचा तत्त, दूजा जोड़ ना कोए जुड़ाइंदा। वसणहारा घट घट, घट घट अंदर वेख वखाइंदा। करे स्वांग नटूआ नट, भेव कोए ना पाइंदा। चौदां लोक वेखणहारा आपणा हट्ट, वणज वणजारा फेरा पाइंदा। नीर वरोले तीर्थ अठसठ, नाम मधाणा इक्क रखाइंदा। जोत ज्वाला वेखे लट लट, जंगल जूह उजाड़ पहाड आपणा खेल खिलाइंदा। पन्ध मुकाए मन्दिर मस्जिद गुरदुआर मठ, शिवदुआला चरनां हेठ दबाइंदा। गुरसिखां हिरदे अंदर आपे वस, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। करे प्रकाश कोटन कोटि रवि सस, नूर नूराना नूरो नूर डगमगाइंदा। जुग जुग विछड़े अन्तिम पूरी करे आस, जगत निरासा ना कोए वखाइंदा। जन्म जन्म दी बुझे प्यास, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बल आप धराइंदा। बल धारे हरि हरि बावण, बावण भेव कोए ना जाणया। लेखा जाणे हरि हरि रावण, रावण होए बाल अंञाणया । आपे पकड़े कंस दामन, दामनगीर शाह सुल्तानया। त्रै जुग जन भगतां बणदा आया ज़ामन, देंदा आया मात सहारया। कलिजुग अन्तिम आपणा पूरा करे कामन, चार जुग पन्ध मुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखा रिहा। चार जुग भगत भगवन्त प्यारा, लोकमात आप रखाइंदा। निरगुण सरगुण बण बण देंदा रिहा सहारा, छिन भंगर रूप धराइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल करे न्यारा, जोती जामा भेख वटाइंदा। अठ्ठे पहर दिवस रैण घड़ी पल गुरमुखां दए सच आधारा, आपणी सेवा आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दरस इक्क दीदारा, एका दीआ बाती कर उज्यारा, एका नेत्र लोचण नैण खुल्ाइंदा। गुरसिख दीदार आत्म अन्तर, जगत दीदार हड्ड मास नाड़ी चम्म कराईआ। करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार आप कराईआ। सरगुण निरगुण दोवें धार, एका वार करे सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुखां अंदर इक्क प्यार, आत्म दृष्टी दृष्ट समाईआ। कलिजुग जीवां खेले खेल विच संसार, सरगुण भरम भुलेखा पाईआ। आपणा भेव ना देवे हरि निरँकार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। काया माटी भाण्डा पोचे गिरवर गिरधार, पंज तत्त तत्त हंढाईआ। अंदर बैठा सिरजणहार, दिस किसे ना आईआ। हरिजन साचे वेख विचार, जगत सोए लए उठाईआ। दुरमति धोए कर प्यार, आपणा रंग आप चढ़ाईआ। अमृत बरखे ठंडी ठार, निझर झिरना इक्क झिराईआ। सकल कुसल कुसल कर्म किरतम किरत आपणी झोली लए डार, दूसर संग ना कोए रखाईआ। नौं नौं जन्म पैज दए संवार, माणस मानस आपणे धन्दे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दरस दए वड्याईआ। एका दरस जगत उधारा, जिस जन अन्तर मेल मिलाया। रातीं सुत्तयां करे प्यारा, घर घर आपणा फेरा पाया। सो सिख सो सुत दुलारा, पूत सपूत सो अख्वाया।

सो भगत सो सन्त जिस मिल्या हरि निरँकारा, निरगुण सरगुण खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा दरस, दूजी वार लोकमात ना फेरा पाया। कलिजुग अन्तिम खेल अवल्लड़ा, हरि साचा सच कराइंदा। आपणा मार्ग जन भगतां दस्से राह सुखलड़ा, लेखा लिख्त ना कोए जणाइंदा। जिस जन फड़ाया आपणा पलड़ा, दो जहान ना कोए छुडाइंदा। गुरसिखां सिराणे आपे खलड़ा, राती सुत्तयां पन्ध मुकाइंदा। शब्द संदेश एका घल्लड़ा, जगत सतार ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे मेल मिलाइंदा। रातीं सुत्तयां जिस जन दरसन देवे, दस्म दुआरा मेल मिलाईआ। पन्ध मुकाए आप अलख अभेवे, गुरसिख घालन घाल ना कोए वखाईआ। जोग अभ्यास हठ तप क्रिया कर्म इक्क वखाए वड देवी देवे, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मार्ग आप चलाईआ। साचा मार्ग आप चलाया, सतिगुर आपणा हीआ धार। गुरसिखां लभ्भण आपे आया, लोकमात लै अवतार। गुरसिख जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँघी कंदर कोए ना फेरा पाया, अठसठ फिरे ना कोए करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग करे सच विहार। कलिजुग करया खेल निराला, सतिगुर पूरे दया कमाईआ। दीना बंधप होया दीन दयाला, दीनन एका रंग रंगाईआ। संग रखाए काल महाकाला, कँवल नैण वडी वड्याईआ। निरगुण बण सच दलाला, हरिजन माणक मोती वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाया, कलिजुग अन्तिम वार। शाह पातशाह बण के ग़रीब निमाणे लभ्भण आया, निरगुण निरगुण लै अवतार। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढण आया, शब्द उछाला एका मार। आपणे विछड़े आपे सद्दण आया, आप आपणी किरपा धार। आपणा भार आपे लद्दण आया, आपे होया भार बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह सच्ची सरकार। शाह पातशाह दीन दयाला, आपणी दया कमाईआ। शाह पातशाह सदा होए रखवाला, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। गुरमुख गुरसिख गुर गुर होए कृपाला, किरपा निध वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दरस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा रूप आप धराईआ।

★ १८ फग्गण २०१७ बिक्रमी दीदार सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुरा ज़िला गुरदास पुर ★

नाम सुखाला सतिगुर दीआ, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हरि पुरख निरँजण बीजया बीआ, अमृत फल आप

लगाईआ। एकँकारा अमृत बरखे मींहा, मेघ मेघला धार वहाईआ। आदि निरँजण निर्मल करे जीआ, अज्ञान अन्धेर गंवाईआ। हरिजन बणाए साची नींहा, नेंहु चरन कँवल जन लाईआ। श्री भगवान लहिणा देण चुकाए साढे तिन्न हथ्थ सीआ, धरत धवल वण्ड वंडाईआ। पारब्रह्म प्रभ गुरसिख सुवाणी मिल्या एका मीआं, मिल बह बह मंगल गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ इक्क समझाईआ। साचा नाउँ हरि निरँकार, आदि जुगादि समाइंदा। जुगा जुगन्तर वरते सति वरतार, आदि जुगादी आप वरताइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी बोल जैकार, नाद अनादी आप सुणाइंदा। आत्म साधी विच संसार, जीव जंत वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नाउँ आप रखाइंदा। एका नाउँ पुरख अगम्म, आपणा आप उपाईआ। आपे जाणे आपणा कम्म, करता पुरख कार कमाईआ। जन भगतां रसना जिहवा पवण स्वास चले दमां दम, आपणी धार आप चलाईआ। हरिजन बेड़ा देवे बन्न्, बन्न्णहार सच्चा शहिनशाहीआ। आपणा नाउँ सुणाए राग कन्न, राग रागनी मुख शरमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। एका नाम हरि निंरकारा, हरि हरि साचा आप उपाइंदा। सचखण्ड निवासी खोल्ह किवाड़ा, थिर घर साचे आप बहाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल आपणा नाउँ बणाए साचा लाड़ा, साचा सगन आप मनाइंदा। वेख वखाए दो जहानां लोकमात जगत अखाड़ा, नव सत आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाउँ आप धराइंदा। आपणा नाउँ आप प्रगटा, हरि आपे वेख वखाइंदा। साचे मन्दिर दए वसा, थिर घर साचे सोभा पाइंदा। साचा रूप आप चढ़ा, अनूप सोभा पाइंदा। चारों कुण्ट हो रुशना, दहि दिशा डगमगाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड राग अला, लोआं पुरीआं आप सुणाइंदा। जुगा जुगन्तर वेस वटा, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। पंज तत्त काया चोला ल्ए हंढा, जाग्रत जोत आप जगाइंदा। आपणी गंढु आपणी कन्नी ल्ए पवा, कुदरत कादर खेल खिलाइंदा। आपणी वन्नी आपे ल्ए प्रना, पारब्रह्म भेव ना आइंदा। आपणी छप्पर छन्न डेरा ला, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। दुःख दर्द भय भंजन आपणी सेवा आप कमा, सेवक सेवा चाकर पाखाक आपणा नाउँ धराइंदा। आपणे मजन साची धूढ़ी आप नहा, चरन चरनोदक सर सरोवर इक्क सुहाइंदा। आपणा बन्धन आपे पा, आपणा नाउँ एका डोरी हथ्थ रखाइंदा। आपणा छन्दन आपे गा, पुरख अकाला दीन दयाला साचा ढोला आपे गाइंदा। आपणा नाउँ तन साची माला पा, मणका मणका ना कोई फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ इक्क दृढ़ाइंदा। साचा नाउँ इक्क दृढ़ाए, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। जुगा जुगन्तर आप वरताए, गुर अवतार सेवा लाईआ। भगत भगवन्त झोली पाए, दूसर हथ्थ ना किसे आईआ। साचे सन्त

लए जगाए, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुख विरले बूझ बुझाए, अन्तर आत्म एका दृष्ट खुलाईआ। गुरसिख साचे लए उठाए, जिस जन आपणी दया कमाईआ। आपणा नाउँ आपणे हट्ट विकाए, जगत हट्ट ना कोई तुलाईआ। तीर्थ तट किसे हथ्थ ना आए, गंगा गोदावरी सुरस्ती जमना नीर रही वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा नाउँ आप रखाए, प्रगट थाउँ थाईंआ। आपणा बंक आप सुहाए थान थनंतर सोभावन्त, सति पुरख निरँजण आप सुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ साचा कन्त, दर घर साचे सोभा पाइंदा। हरि पुरख बणाए आपणी बणत, बणत बनवारी आप बणाइंदा। श्री भगवान महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोई जणाइंदा। एकँकार करे खेल वार अन्त, अकल कल आपणी खेल खिलाइंदा। अबिनाशी करता मेल मिलाए साचे सन्त, सन्त सतिगुर वेख वखाइंदा। आदि निरँजण जोत जगाए जीव जंत, लक्ख चुरासी डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा नाउँ इक्क समझाइंदा। साचा नाउँ हरि सुखाला, आदि जुगादि उपाया। नाता तोड़े काल महाकाला, भय भयानक होए सहाया। दो जहानां होए दलाला, पुरख अबिनाशी सेव कमाया। त्रैगुण माया तोड़े जंजाला, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाया। काया मन्दिर अंदर वखाए सच्ची धर्मसाला, जिस जन आपणा नाम बुझाया। गुरमुख उठाए साचे लाला, लाल अनमुल्लड़े आपणी गोद रखाया। दीपक जोती एका बाला, अज्ञान अन्धेर चुकाया। तन पहनाए आपणी माला, आपणा नाउँ इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम सुखाला दए समझाया। नाम सुखाला हरि चरन दुआरा, दूसर अवर ना कोई जणाईआ। गुर गुर रूप इक्क निरँकारा, नर नरायण वडी वड्याईआ। ठांडा सीता धुर दरबारा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। खेल करे करनेहारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। अन्न दाता हो उज्यारा, निरवैर रूप धराईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ लताड़, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। दो जहाना लेखा जाणे आर पार, पार आर आपणी धार चलाईआ। लक्ख चुरासी कन्त भतार, ईश जीव वडी वड्याईआ। जगत जगदीश सांझा यार, लोकमात करे रुशनाईआ। राग छतीस करे पुकार, उच्ची कूके दए दुहाईआ। हरि का नाउँ अपर अपार, गुर अवतार रहे सालाहीआ। जिस जन बख्शे कर प्यार, वस्त अमोलक झोली पाईआ। गुरसिख मंगे ना कोई दुआर, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। राह सुखाला दरस दीदार, नेत्र लोचण आप कराईआ। शाह कंगाल बहाए इक्क दरबार, ऊँच नीच ना कोई वड्याईआ। घाड़न घड़े सच्चा सुन्यार, जगत ठठयार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा नाउँ इक्क वड्याईआ। साचा नाउँ आत्म रस, हरि सतिगुर सति समझाइंदा। साचा नाउँ हरि हिरदे जाए वस, हरि की पौड़ी आप चढ़ाइंदा। हरि का नाउँ मेटे

रैण अन्धेरी मस, साचा नूर इक्क चमकाइंदा। हरि का नाउँ मार्ग देवे दस्स, लक्ख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। हरि का नाउँ तीर अणयाला मारे कस, बजर कपाटी पार कराइंदा। हरि का नाउँ सुण झूठा मन्दिर जाए ढठ, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। हरि का नाउँ पुरख समरथ, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। हरि का नाउँ जुग जुग चलाए रथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। हरि का नाउँ एका साची वथ, जन भगतां झोली पाइंदा। हरि का नाउँ करे प्रकाश जोती लट लट, जोत जवाला डगमगाइंदा। हरि का नाउँ एका घर वखाए चौदां हट्ट, चौदां लोक मुख भवाइंदा। हरि का नाउँ तन पहनाए साचा पट, सति दुशाला इक्क वखाइंदा। हरि का नाउँ पार कराए आन बाट, मात गर्भ फंद कटाइंदा। हरि का नाउँ किसे ना वसे छप्परी छत्त, चार दीवार बन्द ना कोई कराइंदा। हरि का नाउँ किसे ना उपजे मानस रत, रक्त बूंद ना कोई रखाइंदा। हरि का नाउँ मेल मिलाए कमलापति, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा नाउँ आप धराइंदा। साचा नाउँ आप धरा, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। जुगा जुगन्तर वेस वटा, लोकमात करे खेल बेपरवाहीआ। भगत भगवन्त लए उठा, सेवक साची सेव कमाईआ। साचे सन्त लए मिला, सन्त सुहेला इक्क हो जाईआ। गुरमुख सज्जण लए हला, नाम हुलारा एका लाईआ। गुरसिख गोदी लए बहा, अंगीकार आप कराईआ। साची सोटी हथ्थ उठा, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। कोटन कोटी जीव दए तड़फा, आपणा नाम ना किसे बुझाईआ। जिस जन आपणी दया दए कमा, एका नाम दए समझाईआ। गुरसिख भुल्ले कदे ना राह, साचा मार्ग इक्क रखाईआ। हरि का नाउँ बणाए हँस काँ, कागों हँस आप उडाईआ। हरि का नाउँ पिता मां, सभ थाईं होए सहाईआ। हरि का नाउँ देवे ठंडी छाँ, दिवस रैण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाम आप रखाईआ। हरि का नाउँ गहर गम्भीर, गुणवन्त आप उपाया। हरिजन करे सांत सरीर, सांतक सति सति कराया। मन मति बुध्ध देवे धीर, सति सन्तोख आप समझाया। अमृत आत्म बख्शे साचा नीर, निर्मल सीर आप प्याया। जगत विकारा कटे ज़ंजीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप धराया। नाम धराए हरि करतारा, करता पुरख वडी वड्याईआ। दरस दिखाए दर दीदारा, दीनां नाथ दया कमाईआ। आप विचोला सिरजणहारा, दूजा संग ना कोए रखाईआ। आदि जुगादी साची कारा, जुगा जुगन्तर आप कमाईआ। जगत बसन्तर धूंआँधारा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, साक सैण ना कोए दसाईआ। मात पित ना कोए प्यारा, दए सहारा ना भैण भाईआ। हरि का नाउँ वस्त हरि थारा, सति पुरख निरँजण आप जणाईआ। डुबदे पाथर लाए पारा, पाहन आपणा भार चुकाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, नेत्र

रोवे जगत शाहीआ। साकत निन्दक दुष्ट ना किसे विचारा, गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर मंगदे आए बण बण भिखारा, गुर अवतार भगत भगवन्त अग्गे झोली डाहीआ। दोए दोए जोड़ करन निमस्कारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। नेत्र रोवण ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह सर्ब पुकारा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। सचखण्ड वसणहारा एकँकारा, एका किरन कोटन कोटि ब्रह्मण्ड रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आप उपाईआ। एका नाउँ हरि निरँकार, सति पुरख निरँजण आप उपाया। एका नाउँ शब्द धार, शब्दी शब्द आप समाया। एका नाउँ विष्न ब्रह्मा शिव लए उधार, एका नाउँ आपणा मन्त्र नाम दृढ़ाया। एका नाउँ भरे भण्डार, विष्न झोली आप भराया। एका नाउँ बोल जैकार, ब्रह्मा वेता लए समझाया। एका नाउँ लेखा जाणे वेद चार, चारे मुख एका गाया। एका नाउँ शंकर धार, धूंआँधार आप समाया। एका नाउँ त्रैगुण विचार, त्रैगुण माया लए प्रगटाया। एका नाउँ विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया पाए सार, पंचम मेला सहिज सुभाया। एका नाउँ पंज तत्त करे आकार, एका नाउँ पंझी प्रकृति वण्ड वण्डाया। एका नाउँ रवि ससि करे उज्यार, एका जोती जोत करे रुशनाया। एका नाउँ नारी कन्त खेले खेल अपर अपार, एका नाउँ सेज हंढाया। एका नाउँ अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर, एका नाउँ जननी जन गोद बहाया। एका नाउँ दाई दाया बणे सेवादार, सेवक सेवादारा रूप प्रगटाया। एका नाउँ लक्ख चुरासी भाण्डे घड़े बण ठठयार, एका नाउँ चारे खाणी वण्ड वण्डाया। एका नाउँ चारे बाणी लए उच्चार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे दए सुणाया। एका नाउँ चारे जुग वण्डण वण्डे संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नाउँ धराया। एका नाउँ चारे वरनां खेल करे अपर अपार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आपणा रंग रंगाया। एका नाउँ काया मन्दिर अंदर कर पसार, डूँग्घी कंदर नाद सुणाया। एका नाउँ अनहद शब्द सच्ची धुन्कार, एका नाउँ पंचम सखीआं मंगल बह बह गाया। एका नाउँ आत्म ब्रह्म दए आधार, एका नाउँ ईश जीव मिलाया। एका नाउँ वसे सचखण्ड सच्चे दुआर, एका नाउँ लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां आप समाया। एका नाउँ जुग जुग लोकमात होए उज्यार, पंज तत्त चोला तन हंढाया। एका नाउँ खेल करे आप निरँकार, निरगुण सरगुण रूप धराया। एका नाउँ पारब्रह्म ब्रह्म दए आधार, भेव अभेदा आप रखाया। एका नाउँ जुगा जुगन्तर करे साची कार, करता पुरख आपणी कार कराया। एका नाउँ भगत भगवन्त लए उभार, एका नाउँ साचे सन्तां राग सुणाया। एका नाउँ गुरमुख साचे पाए सार, एका नाउँ गुरसिख आपणे रंग रंगाया। एका नाउँ सतिजुग साचे करे प्यार, एका मन्त्र नाम सुणाया। एका नाउँ त्रेता त्रिया करे विचार, दोए दोए लेखा जोड़ जुड़ाया। एका नाउँ द्वापर होए उज्यार, त्रैगुण माया मूल चुकाया। एका

नाउँ चौथे जुग वरते वरतार, घर घर आपणा डंक सुणाया। एका नाउँ करे सर्ब ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाया। एका अक्खर उच्चे टिल्ले चढ़ कबीरा कूके वारो वार, कंचन गढ़ महल्ल अटल सोभा पाया। एका नाउँ सतिनाम कर वरतार, सतिगुर पूरा साचा मार्ग दए वखाया। एका नाउँ नानक गाए निरँकार निरँकार निरँकार, निरगुण आपणा रूप धराया। एका नाउँ एका घर पावे सार, एका मन्दिर दए सुहाया। एका नाउँ राह तक्के साचे यार, जुग जुग आपणा नैण उठाया। एका नाउँ मंगे मंग भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहया। एका नाउँ वर मंगे कन्त भतार, हरि साचा ल्ए प्रनाया। कलिजुग अन्तिम आई वार, पुरख अबिनाशी खेल खिलाया। आपणे नाउँ करे आप प्यार, लोकमात वेख वखाया। आपे देवे गुरसिखां दरस दीदार, बिन दीदार दरस हरस मिट कदे ना जाया। आपे आपणे नाउँ करे प्यार, प्रीतम प्यारा आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ दए वड्याआ। हरि नाउँ वड्याई चार जुग, जुग करता आप दिवाईआ। हरि नाउँ वड्याई गुरसिख सुत्त, सतिगुर पूरा आप वड्याईआ। हरि नाउँ वड्याई सुहाए रुत्त, भिनड़ी रैण नाल रलाईआ। हरि नाउँ वड्याई मिले पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, रूप अनूप धराईआ। हरि नाउँ वड्याई पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, जूठ झूठ दए मिटाईआ। हरि नाउँ वड्याई अमृत जाम प्याए घुट, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। हरि नाउँ वड्याई आवण जावण जाए छुट्ट, बन्धन बंध ना कोए भवाईआ। हरि का नाउँ ना सके कोए लुट्ट, कलिजुग ठग्ग चोर यार बैठे मुख भवाईआ। हरि का नाउँ सदा अतुट्ट, निखुट कदे ना जाईआ। हरि का नाउँ गुरसिख एका ओट, सदा सदा होए सहाईआ। हरि का नाउँ निर्मल जोत, घर नूर ज़हूर रुशनाईआ। हरि का नाउँ ओत पोत, पिता पूत वंस इक्क वखाईआ। हरि का नाउँ साचा किला कोट, शस्त्र अस्त्र ना कोए घाईआ। हरि का नाउँ लग्गे साची चोट, गोबिन्द नगारा इक्क वजाईआ। हरि का नाउँ चढ़ाए साचे मन्दिर उच्चे कोट, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम वस्त आपणे हत्थ रखाईआ। नाम वस्त हरि सिरजणहारा, हरिजन साचे झोली पाइंदा। हरिजन देवे दरस दीदारा, दृष्ट इष्ट आप खुल्हाइंदा। साचा नाम सति भण्डारा, सति सतिवादी आप वरताइंदा। साचा दरस धुर दरबारा, धुर दरगाही आप कराइंदा। साचा नाउँ हरिजन साचा करे प्यारा, जिस जन आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग इक्क जणाइंदा। साचा मार्ग राह सुखल्ला, परवरदिगार आप उपाया। गुरमुख आसण सच सिँघासण आप मल्ला, सति सतिवादी डेरा लाया। करया खेल अछल अछला, वल छलधारी भेव ना राया। वसणहारा जला थला, जल थल महीअल फेरा पाया। हरिजन जोती आपे रला, शब्दी डंक वजाया। जोती जोत सरूप

२७८

हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखाया। साचा मार्ग नाउँ हरि हरि, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। सोहँ शब्द अग्गे धर धर, धरत धवल दए सुहाईआ। सतिगुर करनी आपणी कर कर, गुरमुख किरत लेखे पाईआ। निर्धन निरवैर आपे वर वर, आपणे अंग लगाईआ। लक्ख चुरासी विचों फड़ फड़ आपणी गोद बहाईआ। आपणा नाउँ आपे पढ़ पढ़, गुरसिखां रिहा सुणाईआ। आपणी अग्न आपे सड़ सड़, गुरमुखां अग्ग बुझाईआ। आपणे पौड़े आपे चढ़ चढ़, आपणा रूप दरसाईआ। आपणी हिम्मत आपे हरि हरि, गुरमुखां हिंमत रिहा वधाईआ। आपणी किरपा आपे कर कर, गुरसिखां डर भय भउ चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुखाला एका मार्ग संसार सागर दए तराईआ। संसार सागर डूँघी धार, जीव जंत ना पार कराइंदा। नौं चार आई हार, नईआ नौका ना कोई वखाइंदा। खेवट खेटा सुत्ता पैर पसार, नेत्र नैण ना अक्ख खुल्हाइंदा। भव सागर वगे वैहन्दी धार, वेले अन्त ना कोई बचाइंदा। झूठी गागर जगत प्यार, काया ठीकर भन्न वखाइंदा। बिन सतिगुर पूरे कोई ना देवे आदर मानस जन्म गए हार, हरि का रूप ना कोई दरसाइंदा। कुदरत दिसे ना साचा कादर, करीम कर्म ना कोई कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा राह वखाइंदा। साचा राह सरन गुर सरनगत, चरन कँवल ध्यान वखाईआ। अन्त कन्त भगवन्त रक्खे पति, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। सन्त सहेले गुरमुख सज्जण आप आपणे लए रक्ख, तत्ती वाओ ना लग्गे राईआ। चारों कुण्ट होए सहाई पुरख समरथ, कोटन कोटि रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मार्ग लए वखाईआ। हरि सतिगुर मार्ग पेख्या, गुरसिख तेरा दर दुआर। निरगुण धर के आया भेसया, जोती जामा लए अवतार। मुछ दाढ़ी ना कोई केसया, रूप रंग रेख ना सिरजणहार। दर दरबान होया दरवेश्या, उच्ची कूके करे पुकार। जुग जुग दर मेटे लेखया, जुगा जुगन्तर चुक्कया भार। मेल मिलाए दस दस्मेशया, दर दरवाज़ा खोल्ह किवाड़। चरन बहाए ब्रह्मा विष्न महेश्या, क्रोड़ तेतीसा करे निमस्कार। गुरसिख तेरे अंदर बह बह चतुर्भुज हो हो आपे खेडिआ, खेलणहार आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरा मंगे दरस दीदार। सतिगुर दीदारा मंगदा, गुरसिख तेरा नूर नुरानी मुख। आदि जुगादि कदे ना संगदा, घर आए मिटावन दुःख। रस माणे तेरी आत्म सेज पलँघ दा, डूँघी कंदर आपे लुक। करे खेल सूरे सरबंग दा, निरगुण निरवैर होए रिहा बुक्क। आपणे अश्व आपे तंग कसदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप सुणाए सच सलोक। गुरसिख तेरे दरस प्यासा, हरि सतिगुर सज्जण मीत। जुग जुग वेखे तेरा काया कासा, निरगुण बैठ अतीत। तेरे गृह करे वासा, तेरा रूप पतित पुनीत। आदि जुगादि रहे दासी दासा, जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, लेखा जाणे हस्त कीट। गुरसिख तेरे मिलण दी सिक, सतिगुर साचे आप रखाईआ। जुग चौकड़ी ना बणया किसे दा मित, कोटन कोटि नाता रहे जुड़ाईआ। रसना जिहवा गा गा हरि हरी वसाउण चित, चेतन्न चित विच ना आईआ। पंडत पांधे मन्नौदे पित्तर पित, सूरज जल चढ़ाईआ। बारां कुण्डली वेख वार थित, वदी सुदी हिसाब लगाईआ। छे रुतड़ी रहे चित, मन मति बुध ध्यान लगाईआ। नौं गृह करन हित, हरफ़ हरफ़ जगत पढ़ाईआ। हरि का रूप ना सके कोई वेख, वेखणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख तेरे मिलन दी एका आस, सतिगुर पूरे आप रखाईआ। सतिगुर पूरा मिलण आया, मिलनी करे जगदीश। साचा सगन नाल ल्याया, शब्द अगम्मी पढ़े हदीस। नैण नाई ना कोई वखाया, आपे छत्र झुलाए हरि जगदीश। आपणा पीसण आपे पीस सेव कमाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बीस इकीस। गुरसिख तेरा दरस दिलासा, दीर्घ रोग गवाइंदा। गुरसिख तेरा ख़ुशीआं हासा, गुर गोबिन्द मेल मिलाइंदा। गुरसिख तेरी मंडल रासा, घर गोपी काहन नचाइंदा। गुरसिख तेरी रसन स्वासा, आपणा नाम चलाइंदा। गुरसिख तेरा सच भरवासा, भरम गढ़ तुड़ाइंदा। गुरसिख तेरा ब्रह्म प्रकाशा, सूरज चन्न मुख शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरा मुखड़ा वेखण आइंदा। हरिजन तेरा मुखड़ा नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। नेड़े आया जो दिसे दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। शब्द अनादि सुणाए तूर, तुरीआ राग दए अल्लाईआ। सर्ब कला आपे भरपूर, पुरख पुरखोतम सच्चा शहिनशाहीआ। दाता जोद्धा वड सूरन सूर, बीरन बीर आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे एका नाम दृढ़ाईआ। एका नाउँ सोहँ जाप, सतिगुर पूरा सच जणाइंदा। कोट जन्म दा उतरे पाप, पतित पुनीत आप कराइंदा। त्रैगुण माया तुट्टे ताप, सांतक सति वरताइंदा। ब्रह्म जणाए पारब्रह्म पाठ, पाठसाला काया मन्दिर इक्क बणाइंदा। आप उतारे आपणे घाट, साचा बेड़ा पार कराइंदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ इक्क दरसाइंदा। नाउँ सुखाला सोहँ सो, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। दुरमति मैल हरिजन धो, सतिगुर पूरा चरन सरन सरनाईआ। हरि बिन अवर ना दिसे को, कवण वेले अन्त लए बचाईआ। जगत नाता तुट्टे मोह, जिस जन आपणा नाम पढ़ाईआ। सुरती शब्दी जाए छोह, छहबर बरखा आप लगाईआ। हरिजन वेले अन्त ना जाए रो, हँस मुख मुख सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम सुखल्ला इक्क दरसाईआ । सोहँ सो नाम निरँकारा, कलिजुग अन्तिम आप प्रगटाइंदा। चार जुग दी साची धारा, सतिगुर लोकमात धराइंदा। आत्म

ब्रह्म पारब्रह्म कर प्यारा, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। एका मन्दिर एका गुरदुआरा, एका बंक सुहाइंदा। एका पुरख एका नारा, एका कन्त रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। राह सुखाला मार्ग पन्थ, गुर सतिगुर आप जणाया। भेव ना पाए कोई ग्रन्थ, पुरख अबिनाशी खेल रचाया। हरिजन विरला जाणे सन्त, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाया। कलिजुग माया पाई बेअन्त, मनमुख गूढ़ी नींद सवाया। लक्ख चुरासी हउमे हंगत, जूठा झूठा गढ़ बणाया। ना कोई जाणे मणीया मंत, मन का भरम ना कोए मिटाया। पुरख अबिनाशी करे खेल जुगा जुगन्त, कलिजुग अन्तिम वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाया। हरिजन साचा उठया, कलिजुग अन्धेरी रात। सतिगुर पूरा एका तुठया, शब्द अगम्मी देवे दात। चार कुण्ट रहिण ना देवे लुकया, पूर्ब जन्मां वेखे मार झात। गुरसिख बूटा कदे ना सुक्कया, आप उपाए पारजात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे मस्तक माथ। लहिणा देणा मस्तक माथ, पूर्ब कर्म जन्म कर्म आप चुकाईआ। जिस जन सुणाए साची गाथ, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे तत्त आठ, नौं दुआरे खोज खुजाईआ। सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, छे घर बैठा आसण लाईआ। पंचम मीता आदि जुगादि, चौथे पद रिहा समाईआ। तीजे नेत्र देवे दात, दूजे निरगुण सरगुण रूप धराईआ। इक्क इकल्ला बैठ इकांत, वेखणहारा ख़लक ख़ुदाईआ। कलिजुग अन्तिम हरिसंगत बणाई इक्क जमात, दूसर करे ना कोए पढ़ाईआ। अठ्ठे पहर रहे प्रभात, सन्धया अन्धेरा ना कोए छाईआ। नाता तुट्टा ज़ात पात, ऊँच नीच दए वड्याईआ। जन्म जन्म दा पूरा करे घाट, जो जन आए सरनाईआ। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हाथ, जगत उधार ना कोए वखाईआ। रक्खे पति कमलापात, पति पतिवन्ता साचा माहीआ। ग़रीब निमाणयां पुछे वात, ग़रीब निमाणा हो हो फेरा पाईआ। गुरसिख तेरे चरनां रिहा झाक, आपणे नेत्र बन्द वखाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा पूरा करन आया आपणा भविख्त वाक, आदि पुरख जो आदि ल्या सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ख़्होल बैठे ताक, राह तक्कण बण बण पान्धी राहीआ। कवण वेला गुरसिख मिले साचा सज्जण साक, लक्ख चुरासी नाता कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दो जहान चौदां लोक शब्द अगम्मी आप लै के आए डाक, दूजा हल्कारा ना कोए बणाईआ। घर घर वण्डे आपणी शब्द गाथ, राती सुत्तयां आप उठाईआ। आपे होया दीनां नाथ, दीनन साची सेव कमाईआ। पहलों मेटी आपणी ज़ात, गुरसिख तेरी ज़ात फेर बणाईआ। आपणा खेल करे बहु बिध भांत, गुरसिखां एका रूप दरसाईआ। राह सुखाला मिल्या कमलापात, जंगल जूह उजाड़ पहाड लभ्भण कोए ना जाईआ। देवे दरस आप रघुनाथ, रघबंस इक्क वड्याईआ। जोती

२८१

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे सगला संग रखाईआ। सगला संग रखावण आया, रिखी मुनी करन पुकार। कलिजुग जीव गुरसिख गुरमुख बिरहों विछोड़े कुठी आत्म आप मिलावण आया, वेस अवल्लड़ा आपे धार। जन्म जन्म दी सुतड़ी सुवाणी आप उठावण आया, निरगुण निरगुण लै अवतार। आपणी पिछली बीती गुरसिखां सुणावण आया, अगला खेल करे निरँकार। अनडिठी अन रस मिठी आपणी रस गुरमुखां मुख चुआवण आया, अमृत प्याला भर भण्डार। आपणी धार तिक्खी आप वखावण आया, ना कोई खण्डा मारे मार। चार वरन दी साची सिखी आप बणावन आया। गुर गोबिन्द कर प्यार। पुरख अकाल आपणा सुत विछड़या आप मिलावण आया, मेल मिलाए विच संसार। आपणी रुत्त आप सुहावण आया, फुल फुलवाड़ी वेखे इक्क गुलज़ार। आपणा मेघ आप बरसावण आया, आपे बरखे निझर धार। साचा मार्ग इक्क सिखावण आया, गुरसिखां कर प्यार। पिछला लेखा आप चुकावण आया, आपणी हथ्थीं देवे पाड़। रस फिका मिठ्ठा आप बणावण आया, सोहँ शब्द कराए जै जैकार। गुरसिख तेरा हिस्सा आप वण्डावण आया, तोला बणया आप निरँकार। तेरा पीसण पीसा जन्म जन्म दा आप खावण आया, दर दरवेश बणया आप भिखार। तेरा भोरा डिग्गा आपणी हथ्थीं उठावण आया, विष्नूं तेरा भरे भण्डार। गुरसिख तेरा झोरा आप मिटावण आया, तेरे अंदर वड़ वड़ करे प्यार। तेरा वक्त थोड़ा आप मुकावण आया, शब्द घोड़े हो अस्वार। तेरा जोड़ा आप बणावण आया, जोड़ा जुड़े नारी कन्त भतार। गुरसिख तेरी आत्म सेजा आप हंढावण आया, पीआ प्रीतम आपे सुता पैर पसार। गुरसिख तेरा मुख मुख दिखलावण आया, जगत पर्दा झूठा घुंड दए उतार। एका सुख माणस मानुख आप वखावण आया, पुरख अबिनाशी हो त्यार। मात कुक्ख सफल करावण आया, जिस जन बख्शे चरन दुआर। उलटा रुख पन्ध मुकावण आया, मर जम्मे ना दूजी वार। आपणी गोदी चुक्क सचखण्ड बहावण आया, आपणी हथ्थीं खोल्ह् किवाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दस्से राह सुखाला आपे देवे दरस दीदार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

★ १६ फग्गण २०१७ बिक्रमी सन्ता सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर ★

साचा मार्ग साचा राह, सो पुरख निरँजण आप बणाया। बैठा रहे बेपरवाह, हरि पुरख निरँजण वेस वटाया। एकँकारा जाणे आपणा साचा थाँ, दरगाह साची भेव ना राया। आदि निरँजण अनुभव प्रकाश बणे मलाह, अबिनाशी करता साचा बेड़ा लए चलाया। श्री भगवान आपणे मन्दिर बह बह गाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप धराया। पारब्रह्म आदि जुगादि जुगा

जुगन्तर करे खेल सच्चा मेहरवां, मिहबान आपणा हुक्म चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखाया। साचा मार्ग हरि करतारा, दरगाह साची आप रखाइंदा। दिस ना आए विच संसारा, लोकमात भेव कोए ना पाइंदा। हरि का राह तक्के ब्रह्मा विष्न शिव कर विचारा, नेत्र नैण ना कोए दरसाइंदा। पुरख अबिनाशी करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर आपणी धार चलाइंदा। धाम अवल्लड़ा ठांडा दरबारा, चार कुण्ट ना कोए दुआरा, दर दरवाज़ा ना कोए खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप बणाइंदा। साचा मार्ग निहचल धाम, अस्थिल दुआरे आप उपाईआ। आवे जावे एका राम, दूसर अवर ना कोए चढ़ाईआ। करे कराए साचा काम, करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपणा पन्थ आपे वेख वखाईआ। साचा मार्ग सच महल्ला, हरि साचे सच लगाया। अंदर बाहर इक्क इकल्ला, निरगुण निरगुण फेरा पाया। थान सुहाए उच्च अटल्ला, महल्ल अटल आप वड्याआ। सच सिँघासण आपे मल्ला, सोभावन्त रिहा सुहाया। आप फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू दूसर हथ्थ किसे ना आया। आपणी जोत आपे रला, जोती जोत डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आपे वेख वखाया। साचा राह सचखण्ड, सति पुरख निरँजण आप बणाईआ। आदि पुरख वण्डी वण्ड, वण्डणहार आप हो जाईआ। राह तक्कण कोटन ब्रह्मण्ड, दिस किसे ना आईआ। शब्द अगम्मी किला कोट कंध, निरवैर पुरख आप बणाईआ। कोई करे ना प्रकाश, सूरज चन्द, आपणा नूर ज़हूर रुशनाईआ। आपे जाणे आपणा पन्ध, हरि पान्धी सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क रखाईआ। साचा मार्ग उच्चे मन्दिर, सो पुरख निरँजण आप लगाया। आप जाणे अंदरे अंदर, आपणी खेल आप रचाया। साचे धाम आप सुहंदड़, सति पुरख निरँजण बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे राहे आपे पाया। आपणा राह हरि करतार, हरि दर साचे आप जणाईआ। ना कोई जाणे आर पार किनार, दो जहान वडी वड्याईआ। ना कोई बाढी बणाए विच संसार, रूप अनूप ना कोए दरसाईआ। ना कोई लेखा लिखे बण लिखार, कातब बैठा मुख शरमाईआ। ना कोई तालब तल्ब करे परवरदिगार, तुलबा मात ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई अक्खर सके विचार, पैंतीस अक्खर देण दुहाईआ। ना कोई गुर खोल्ह सके किवाड़, बैठे ताड़ीआं लाईआ। ना कोई अवतार वखाए किसे संसार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त रहे सभ गाईआ। हरि का मन्दिर अगम्म अपार, मार्ग अगम्म आपणे विच छुपाईआ। जुगा जुगन्तर साची कार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा राह सर्ब गुणवन्त, दर घर साचे आप लगाइंदा।

आवे जावे इक्क भगवन्त, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। राह तक्कण कोटन कोटि सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। वेस अनेका करे अनन्त, अनन्त कल आपणी खेल खिलाइंदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लिख्त ना कोए लिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क समझाइंदा। साचा मार्ग हरि निरँकारा, लोकमात जणाईआ। गुर अवतार वसण थिर घर दुआरा, शब्दी शब्द वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी हो उज्यारा, थिर घर आपणा पन्ध मुकाईआ। थिर घर साचे होए बाहरा, निरगुण निरगुण धार चलाईआ। निरगुण पौड़ा निरगुण चढ़नेहारा, निरगुण डण्डा इक्क वखाईआ। निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहरा, निरगुण अंदर बाहर वेस वटाईआ। निरगुण जाणे आपणी कारा, करे कार सच्चा पातशाहीआ। सचखण्ड वेखे आपणी धारा, धार धार विच प्रगटाईआ। आपणा राह रक्खे न्यारा, निरवैर भेव ना आईआ। सचखण्ड साचे हो उज्यारा, जोती नूर नूर दरसाईआ। सच सिँघासण कर त्यारा, पुरख अबिनाशन आसण लाईआ। दर दरवेश बण भिखारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणा सीस झुकाईआ। सीस जगदीस सोहे दस्तारा, पंचम पंच पंच वड्याईआ। छत्र झुलाए अपर अपारा, शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। करे कराए सच विहारा, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। सचखण्ड तों होए बाहरा, आपणा मार्ग आपे वेख वखाईआ। रूप रंग रेख ना कोई करे प्यारा, इष्ट ईश ना कोए धराईआ। आपणे अन्तर आपे वसे हरि निरँकारा, किला कोट ना कोए सुहाईआ। आपणा चरन रक्खे विच सचखण्ड दुआरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपणे विच टिकाईआ। आपणा मार्ग आपणे विच रक्ख, आदि पुरख दया कमाइंदा। सचखण्ड दवारिउँ हो वक्ख, आपणा भेव आपणे विच छुपाइंदा। आपणे अन्तर आपे हो प्रतक्ख, आपणी खेल खिलाइंदा। आपे जाणे आपणा पक्ख, वेला वक्त ना कोए वखाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे राह चलाइंदा। आपे रूप होए पुरख समरथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मेला आप मिलाइंदा। आपणा मेल मिलावणहारा, आदि पुरख अख्वाया। सो पुरख निरँजण रूप धर न्यारा, सचखण्ड डेरा लाया। हरि पुरख निरँजण कर पसारा, सच सिँघासण सोभा पाया। एकँकारा भेव न्यारा, दर दरबाना सीस झुकाया। आदि निरँजण कर पसारा, मेटणहारा धूंआँधारा, जोती जोत नूर रुशनाया। श्री भगवान साचा लाड़ा, सचखण्ड दुआरे लाया पाड़ा, घर घर विच लए प्रगटाया। श्री भगवान मीत मुरारा, सेवक सेवा करे अपारा, थिर घर साचा बंक उपाया। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, थिर घर वसे एका धारा, निरगुण निरगुण सच विहारा, नारी कन्त रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग दए समझाया। थिर घर साचे नारी कन्त, पारब्रह्म ख़ुशी मनाईआ। आपणी चोली आपे रंगे बसन्त, रूप अनूप आप चढ़ाईआ। आपणी बणाए

आपे बणत, अंदर बाहर खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग वेख वखाईआ। नारी कन्त सच प्यारा, हरि हरि आपणी सेज हंढाइंदा। जननी जन बणे निरँकारा, साची गोद आप सुहाइंदा। सुत बणाया शब्द दुलारा, आपणी कुक्खों बाहर कढाइंदा। दाई दाया बण अगम्म अपारा, आपणी खेल खिलाइंदा। हरि का मार्ग ना कोई जाणे आपे होए जानणहारा, आपणा राह आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे आपे वड़, पिता पूत माता आपणा नाउँ धराइंदा। मात पित पुत बालक, हरि साची खेल खिलाईआ। निरगुण निरगुण बण बण सालस, साची सालसी इक्क वखाईआ। आपणा रूप धरया ख़ालस, दूसर अवर ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सुत दुलारा हरि हरि जाया, जननी जन सोभा पाइंदा। दाई दाया बण बण सेव कमाया, सेवा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा मार्ग दए समझाया, पान्धी आपणा पन्ध वखाइंदा। धुर फ़रमाना इक्क जणाया, हुक्मी हुक्म आप अलाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दरस दिखाया, जोती नूर डगमगाइंदा। समरथ हथ्थ सिर आप टिकाया, महिमा अकथ आप पढ़ाइंदा। आपणा रूप आप प्रगटाया, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क समझाइंदा। साचा मार्ग हरि हरि सुत्त, हरि साचा सच दृढ़ाईआ। किरपा करे अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। आप सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुतड़ी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग लावणा, हरि साचा सच जणाइंदा। सुत दुलारा इक्क उठावणा, आप आपणा हुक्म सुणाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचावणा, सूरज चन्न आप चढ़ाइंदा। मंडल मण्डप आप वसावणा, धरत धवल जल बिम्ब आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क समझाइंदा। साचा मार्ग कर त्यार, हरि साचा सच जणाईआ । शब्द सुत दए आधार, सीस जगदीस हथ्थ टिकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रैगुण मेला दए मिलाईआ। पंज तत्त करे प्यार, खेले खेल सच्चा शहिनशाहीआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ संसार, लोकमात दए धराईआ। माणस मनुख कर प्यार, मानव जाती दए वड्याईआ। देवे दाती धुर दी धार, धुर दरबारी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग लोकमात आप चलाईआ। लोकमात हरि राह चलाया, लक्ख चुरासी कर विचार। गुरमुख साचे लए जगाया, आत्म अन्तर इक्क आधार। सन्त साजन लए उठाया, देवे अमृत रस ठंडा ठार। भगत भगवन्त मेल मिलाया, राह दस्से इक्क न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। साचा राह विच संसारा, सतिगुर पुरख आप जणाईआ। घर विच

घर कर त्यारा, बंक दुआरा दए वड्याईआ। गृह मन्दिर दीपक कर उज्यारा, जोती नूर करे रुशनाईआ। अनहद शब्द नाद सच्ची धुन्कारा, दिवस रैण वजाईआ। घट वेखे धूंआँधारा, अन्ध अन्धेरा आपणे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका एक दए वड्याईआ। काया अंदर खेल अवल्ला, हरि साचा सच कराइंदा। पंच फड़ाया एका पल्ला, एका धार बंधाइंदा। त्रैगुण माया आपे रल्ला, त्रै त्रै लेखा ना कोए जणाइंदा। दूई द्वैती लाया सल्ला, सांतक सति ना कोए वरताइंदा। पंच विकार करे हल्ला, दिवस रैण उठ उठ धाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा मार्ग हरि निरँकारा, लोकमात आपणे हथ्थ रखाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, आपणा पर्दा आप उठाईआ। जगत जुग मेटे धुँदूकारा, धूंआँधार रहिण ना पाईआ। साचा नाउँ करे सच जैकारा, शब्दी शब्द आप सुणाईआ। संसार सागर वेखे डूँघी गारा, कवरी भँवरी फोल फुलाईआ। गुरमुख विरले बणाए सच सौदागर, वस्त अमोलक एका वणज कराईआ। लेखा जाणे काया गागर, काची माटी हाटी साचे हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क प्रगटाईआ। साचा मार्ग लोकमात, सतिगुर पूरा आप जणाइंदा। शब्दी शब्द बंधाए साचा नात, जगत नाता इक्क रखाइंदा। अगम्म अगम्मड़ी सुणाए गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। सदा सुहेला वसे साथ, सगला संग निभाइंदा। आप चढ़ाए आपणे राथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वड्यांअदा । साचा मार्ग गुर चरन कँवल, चार जुग वड्यांअदा। देवे वड्याई उप्पर धरत धवल, जो जन मार्ग एका पाइंदा। आत्म अन्तर खिले कँवल, उलटा कँवल आप भवाइंदा। पवण स्वासी जाए मवल, रुत्त बसन्ती आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग आपे लाइंदा। साचे मार्ग आपे ला, गुर गुरसिख आप तराईआ। जुगा जुगन्तर बण मलाह, साचे बेड़े लए चढ़ाईआ। कर किरपा जणाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकार आप धराईआ। मेल मिलाए थाउँ थाँ, सृष्ट सबाई फोल फुलाईआ। पकड़नहारा आपे बांह, बाज़ू बल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप उपाईआ। साचा मार्ग साचा पन्थ, मघ आपणा आप जणाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, बेअन्त बेपरवाहीआ। हरिजन बणाए साची बणत, घड़न भन्नणहार आप अख्वाईआ। रसना जिहवा एका मंत, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। हँ हउमे गढ़ तुट्टे हंगत, हिंसा कोए रहिण ना पाईआ। सचखण्ड दुआरा साची संगत, सति पुरख निरँजण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन दुआरा दस्से साची जन्नत, घर साचा इक्क वखाईआ। चरन दुआरा राह सुखाला,

गुर सतिगुर आप लगाया। नेत्र दरस सच्ची माला, मन का मणका आप भवाया। उधरे पार शाह कंगाला, शहिनशाह ना कोए वड्याआ। सति पुरख निरँजण बण दलाला, जगत दलेरी आप वखाया। नाता तोड़ काल महाकाला, गुरमुख लाल लए उठाया। जगत जुग चली अवल्लड़ी चाला, भेव कोए ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा वेख वखाया। राह सुखाला सहिज गुणवन्त, गुणी गुण आपणा गुण जणाइंदा। धन्न वड्याई गुरमुख गुर गुर सन्त, सतिगुर साजण खेल खिलाइंदा। नाम विहूणा जीव जंत, जाग्रत जोत ना कोए वखाइंदा। माया ममता देव दंत, त्रैगुण भेड़ भिड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। वाह वा मार्ग सतिगुर लाया, घर वजदी रहे वधाईआ। वाह वा मार्ग सतिगुर लाया, खोजण बन कोए ना जाईआ। वाह वा मार्ग सतिगुर लाया, तीर्थ तट किनारा अठसठ फेरी ना कोई पाईआ। वाह वा मार्ग सतिगुर लाया, मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला वेखण कोए ना जाईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, दुरमति मैल कट्ट, एका अमृत जाम प्याईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, इक्क वखाए साचा हट्ट, नाम वस्त आप विकाईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, गुरमुख विरला लाहा लए खट्ट, मनमुख बैठा मुख भवाईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, हरिजन अमृत आत्म रस लए चट्ट, मनमुख थुक्कां मुख भराईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, गढ़ हँकारी जाए ढट्ठ, सति सन्तोखी एका बुरज बणाईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, हरिजन जोत जगाए लट लट, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, दूई द्वैती मेटे फट्ट, एका रूप सर्ब दरसाईआ । वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, एका रूप वखाए घट घट, दूसर धार ना कोए जणाईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, शब्द अगम्मी मारे सट्ट, हरिजन सोए आप जगाईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, गुरमुखां तन पहनाए नाम पट, जगत चीथड़ा पन्ध मुकाईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, आपणा राह जाए दस्स, निहकलंक चरन सरन सच्ची सरनाईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, हिरदे अंदर जाए वस, वास्तक रूप आपणा आप बुझाईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, विष्न ब्रह्मा शिव चरन दुआरे आयण नस्स, वेला वक्त आप समझाईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग लाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका घर बणाईआ। वाह वा सतिगुर मार्ग ला, लाशरीक दया कमाइंदा। वाह वा सतिगुर मार्ग ला, जगत तारीक अन्धेर मिटाइंदा। वाह वा सतिगुर मार्ग ला, जगत भगत भगवन्त रूप अनूप बारीक दिस किसे ना आइंदा। वाह वा सतिगुर मार्ग ला, हरिसंगत दसे इक्क तरीक, एका वक्त एका वेला गुरमुख गुरसिख हरिजन साचे पार कराइंदा। वाह वा सतिगुर मार्ग ला, अन्त ना देवे पीठ, मनमुख आपणा दरस दिखाइंदा। वाह वा सतिगुर

मार्ग ला, मिट्ठा करे कौड़ा रीठ, जिस जन आपणा चरन छुहाइंदा। वाह वा सतिगुर मार्ग ला, काया करे ठंडी सीत, जिस जन आपणा इष्ट वखाइंदा। वाह वा सतिगुर मार्ग ला, इक्क सुणाए सुहागी गीत, सोहँ शब्द आप गाइंदा। वाह वा सतिगुर मार्ग ला, गुरसिखां करे आप प्रीत, प्रीतम आपणा रूप वटाइंदा। आपणी परखे आपे नीत, गुरसिख जौहरी मात प्रगटाइंदा। जगत अवल्लड़ी चलाई रीत, चार जुग गुर अवतार राह ना कोए वखाइंदा। छड्ड सिँघासण बणया मीत, गुरसिख भगत सुदामे चरनां हेठ रखाइंदा। कलिजुग काल रिहा बीत, पतित पुनीत ना कोए कराइंदा। रविदास चमार करे प्यार लेखा लिखे इक्क अनडीठ, अनडीठ रूप आप लिखाइंदा। जुग जुग अभुल जो करी बिप्रीत, आपणी भुल गुरसिखां कोलों आप बख्शाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा मार्ग आपणा राह जन भगतां मात दए वखा, दूसर नैण ना कोए खुल्हाइंदा।

★ १६ फग्गण २०१७ बिक्रमी करतार कौर दे गृह पिण्ड बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर ★

२८७ हरि सतिगुर मार्ग पाइंदा, गुर गुरसिख बाल नादान। लक्ख चुरासी विचों आप उठाइंदा, शब्द जणाए धुर फ़रमान। २८७
अन्तर आत्म वेख वखाइंदा, वड दाता गुण निधान। जगत बसन्तर आप बुझाइंदा, अमृत बरसे मेघ महान। साचा शस्त्र हत्थ फड़ाइंदा, नाम खण्डा तेज़ कृपाल। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप फिराइंदा, लेखा जाणे दो जहान। अंडज जेरज वेख वखाइंदा, उत्भुज सेत्ज वेखे जगत मकान। कागद कलम भेव ना आइंदा, गणती गिणे ना कोए ज़बान। बेअन्त बेअन्त बेअन्त प्रभ आपणी खेल खिलाइंदा, वड दाता श्री भगवान। जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। साचा मार्ग आप रखाइंदा, लक्ख चुरासी रक्खे आण। घट घट अंदर वेख वखाइंदा, जोती जाता नूर महान। आपणी विद्या आप पढ़ाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला इक्क मेहरवान। गुरसिख आप उठाइंदा, कर किरपा गुण निधान। जन्म जन्म दा लेख मुकाइंदा, वेखणहारा मार ध्यान। आपणा पन्ध आपणे हत्थ रखाइंदा, पान्धी बणे श्री भगवान। गीत सुहागी छन्द सुणाइंदा, कलमा कलमी इक्क ईमान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी निगहबान। निगहबान निरवैर पुरख अकाल, हरि वडा वड वड्याईआ। सचखण्ड निवासी हो दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। थिर घर सच्ची वसे धर्मसाल, दर दरबारे सोभा पाईआ। शब्द अगम्मी इक्क उछाल, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर दलाल, त्रैगुण लेखा दए समझाईआ। नाल रलाए काल महाकाल,

पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, जगत जुग अवल्लड़ी खेल खिलाईआ। खेल अवल्लड़ा हरि निरँकारा, आपणा आप कराइंदा। साचे मन्दिर हो उज्यारा, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। शब्दी शब्द सुत दुलारा, आदि पुरख कर प्यारा, साची सेवा आप लगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बण वणजारा, एका वस्त देवे हरि थारा, साची वण्डण वण्ड वंडाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ करे खेल अपर अपारा, पंज तत्त मेला विच संसारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणा बन्धन पाइंदा। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारा, आत्म जोती जोत जगाइंदा। कँवल नाभी ठंडी ठारा, अमृत झिरना निझर रस आप भराइंदा। आपणा नाद सच्ची धुन्कारा, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। अनहद वज्जे वारो वारा, ताल तलवाड़ा दिस कोए ना आइंदा। माणस मानुख कर प्यारा, हरि जू हरि हरि आपणा भेव खुल्हाइंदा। निरगुण सरगुण पावे सारा, सरगुण निरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। आवे जावे वारो वारा, जुगा जुगन्तर आपणी खेल आप खिलाइंदा। करे खेल श्री भगवन्त, भगवन भेव कोए ना पाइंदा। वास निवासा जीव जंत, जाग्रत जोत डगमगाइंदा। सर्ब जीआं हरि एका कन्त, लक्ख चुरासी नार प्रनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी खेल आप खिलाइंदा। कन्त कन्तूहल हरि निरँकारा, नर नरायण वड वड्याईआ। सचखण्ड वसे धाम न्यारा, थिर घर बैठा सेज सुहाईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट आपणी जोत जगाईआ। देवणहारा धुर फ़रमाना, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। आपे जणाए आपणी कारा, करता पुरख कादर करीम बेऐब परवरदिगार सच्चा शहिनशाहीआ। मुकामे हक हक नाअरा, लाशरीक आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाइंदा, आदि जुगादी साची कार। लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा, वण्डे वण्ड अपर अपार। आपणा हिस्सा आपणे हथ्थ रखाइंदा, ना कोई दूजा पावे सार। आपणा नाद आप अल्हाइंदा, ब्रह्मा वेता गाए मुख चार। चारे मुख सालांहयदा, चारे वेद दए आधार। चारे जुग वण्डे आपणी वण्ड वण्डणहारा एकँकारा आपणी खेल आप खिलाइंदा, निरगुण सरगुण दए आधार। सरगुण साचा संग निभाइंदा, दिस ना आए विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। धुर दरबारी लेखा जाणदा, आदि अन्त भगवन्त। करे खेल श्री भगवान दा, जुगा जुगन्त महिमा अगणत। वेस वटाए काल महाकाल दा, लेख चुकाए जीव जंत। आपणा मन्त्र आपणा नाउँ आप सिखाल दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि बेअन्त। नाउँ निरँकारा आपे दस्स, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। पंज तत्त काया अंदर जाए वस, रूप रंग रेख ना कोए दरसाईआ।

कर प्रकाश कोटन रवि ससि, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपणे अंदर आपे बह बह रिहा हस्स, चिंता ग़म ना कोए रखाईआ। आप आपणे होया वस, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे अंक समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सच्चा शहिनशाह हरि भगवाना, आदि जुगादि समाया। लक्ख चुरासी देवे दाना, जीआ दान झोली पाया। ईश जीव खेल महाना, जगदीश आप खिलाया। आपणा नाउँ धुर फ़रमाना, लोकमात आप सुणाया। लक्ख चुरासी विचों माणस मानुख कर परवाना, हरिजन आपणा मेल मिलाया। आप सुणाए आपणा गाना, राग नाद आप वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाया। हरिजन हरि हरि उठाइंदा, कर किरपा श्री भगवन्त। आपणी बूझ आप बुझाइंदा, आप जणाए मणीआ मंत। मति बुध आप समझाइंदा, सुरती शब्दी मेला नारी कन्त। साचे तख्त आप बहाइंदा, वड दाता गहर गम्भीर गुणवन्त। भगत भगवन्त वेख वखाइंदा, करे खेल आदि अन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप लेखा जाणे जीव जंत। जीव जंत हरि जाणया, लक्ख चुरासी काया फोल। गुरमुख विरला आप पछाणया, साचे कंडे हरि हरि तोल। चरन कँवल कँवल चरन देवे साचा माणया, वड्याई देवे उप्पर धरत धवल। किसे हथ्थ ना आए राजे राणयां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आत्म अन्तर रिहा मवल। आत्म अन्तर वसया, पुरख बिधाता बेपरवाह। आदि जुगादी फिरे नस्सया, जन भगतां बणे मलाह। शब्द निराला तीर एका कसया, एकँकारा एका वार देवे ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए समझा। हरिजन हरि समझाइंदा, आप आपणा पर्दा खोल्ह। माणस जन्म मात दिवाइंदा, लक्ख चुरासी विचों अनमोल। आपणी बूझ आप बुझाइंदा, अंदर वड़ अनहद वजाए ढोल। बजर कपाटी आप खुल्हाइंदा, सदा सुहेला वसे कोल। अमृत जाम आप प्यांअदा, सच सुच्च देवे आपणी पहुल। आपणा कीता कौल निभाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप चुकाए पर्दा ओहल। पर्दा ओहला चुक्कणा, हरि सतिगुर आप चुकाए। गुरसिख तेरा पैडा मुक्कणा, रविदास चमारा लेख लिखाए। अन्तिम वेला नेड़े ढुकणा, जुग चौकड़ी रहे विहाए। सति सरूप हो हो श्री हरि बुक्कणा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहे। गुरसिख तेरा उज्जल करे मुखना साचा मुखड़ा आप सालाहे। तेरी जन्म जन्म दी मेटे भुक्खणा, आत्म अन्तर दरस दिखाए। तेरी पूरी करे सुखणा, सुखी घर इक्क वसाए। उलटा मात गर्भ ना होए रुक्खणा, लक्ख चुरासी फंद कटाए। पंच विकारा तेरे विचों पुट्टणा, जड़ लग्गी रहे ना राए। तेरा अंदरों तेरा सतारा आपे फुटणा, सतिगुर पूरा दए प्रगटाए। तेरा झूठा गढ़ गुर पूरे आप लुट्टणा, माया ममता मोह मिटाए। तेरा विकारा आपणी हथ्थीं कुठणा, देवे अन्त

२८६

सज़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लेखा आप गणाए। नौं नौं जन्म ना लेखा जाणया, माणस माणस रूप धरा। फिरदा रिहा बाल अंञाणया, मति मन बुध ना चले कोए चतरा। आपणा घर ना किसे पछाणया, दर दर रिहा फेरी पा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरगाह। धुर दरगाही लेखा लिख दा, आदि अन्त एकँकार। सिख्या किसे कोलों ना सिख दा, सिख सिख्या सिखावणहार। हरि का भाणा कदे ना मिटदा, ना कोई होए मेटणहार। रविदास चमारा राह दस्से प्रभ मिलण दी सिक दा, सिक एका मीत मुरार। नाता तुट्टे ऊँच नीच दा, राउ आए रंक दुआर। करे खेल हरि जगदीस दा, जगत जुगत दए आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे लिखणहार। लेखा लेख लिखाइंदा, लिखणहार गोपाला। रविदास चमारे दया कमाइंदा, दीना बंधप दीन दयाला। हथ्थ कसीरा इक्क वखाइंदा, जगत जाणे ना कोए माला। गंगा राम क्यों पछताइंदा, करे खेल हरि निराला। कसीरिउँ कंगण आप वटाइंदा, करया खेल बण दलाला। मन ममता आप वधाइंदा, त्रैगुण माया जगत जंजाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फल वेखे लग्गा डाल्ला। साचा कंगणा एका कंगण, कंधी पार कोए ना जाईआ। तन मन काया चाढ़े रंगण, उतर कदे ना जाईआ। किसे हथ्थ ना आए विच ब्रह्मण्डन, खोजे सर्ब लोकाईआ। एका कंगण देवे दंडन, जन्म जन्म दी मैल धवाईआ। लेखा जाणे विच वरभण्डन, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। रविदास चमारा गाए एका छन्दन, अन्तर राम नाम लिव लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लिख्या लेखा दए समझाईआ। लेख लिखाया हरि गोबिन्द, लेखा लेख ना कोए मिटाइंदा। रविदास चमारे ना कोई हरख सोग दिसे चिन्द, चिंता चिखा ना कोए वखाइंदा। एका ओट रक्खे हरि बख्शिंद, चरन कँवल ध्यान लगाइंदा। भगत भगवन्त बणाए बिन्द, नादी सुत आप उपजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाइंदा। कंगण गया कंगण दुआर, कंगण कंगण हथ्थ ना आईआ। रसना बोल बोल जैकार, रविदास चमार इक्क सुणाईआ। तूं ठग्ग मैं ठगणहार, पारब्रह्म ठगौरी रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ठग्ग नाल ठग्ग करे कुड़माईआ। रविदास ठग्गया गया बाहमण, आपणा भेव ना मूल जणाया। गंगा राम ठग्गया रविदास ना बणया ज़ामन, कंगण इक्क चुराया। करे खेल हरि भगवानन, दोहां आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए वखाया। गुण वखाए हरि भगवन्त, रविदास रंग रंगाईआ। रवीदास मिल्या हरि हरि कन्त, नारी आपणी ख़ुशी मनाईआ। पाटे चीथड़ चढ़या रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त दए समझाईआ।

ब्रह्मण रोवे करे पुकार, नेत्र नीर उछालया। कंगण वेख होया हँकार, माया ममता मोह वधा ल्या। नाता तुटया एकँकार, माणस जन्म ऐवें गालया। चरन धूढ़ी ढह ढह मंगे चरन छार, अग्गे आपणी झोली डाह ल्या। हौं भिखक भिखारी आया दुआर, मंगे बण सवालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख बण दलालीआ। रविदास चमार सुणाइंदा, अन्तर आत्म कर ध्यान। तेरा मेरा मेरा तेरा एका कन्त नज़री आइंदा, एका मन्दिर इक्क मकान। तेरी महिमा पंडत ना कोए गणाइंदा, तेरे उप्पर मेहर करे भगवान। गंगा होए तेरे नाल हथ्थ मिलाइंदा, कंगण बख्शया आपणा दान। जीव जगत भेव कोए ना पाइंदा, भुल्ले बाल नादान। तेरी मेरी मेरी तेरी आपणी हथ्थीं गंढु पवाइंदा, शब्द जणाए धुर फ़रमान। कलिजुग कन्ढे आप बहाइंदा, दोहां वखाए इक्क अस्थान। परमानंद आप समाइंदा, परम पुरख वड मेहरवान। मेरा मेरा आपणे विच मिलाइंदा, तेरा धरे जगत निशान। नौं नौं गेड़ा आप चलाइंदा, चौथे जुग करे कल्याण। माणस माणस रूप वटाइंदा, मानुख होए चतुर सुजान। मानव आपणी गोद बहाइंदा, एका देवे साचा दान। अन्तिम पन्ध मुकाइंदा, खेले खेल श्री भगवान। कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा, वेखणहारा नौजवान। बाल बिरध ना रूप धराइंदा, एका नूरो नूर महान। औंदा जांदा दिस ना आइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप जणाया हरि फ़रमान। कलिजुग अन्तिम आवणा, जुग चौकड़ी रहिण ना पाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी पन्ध मुकावणा, गुर अवतार देण ग्वाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणी गोद बहावणा, भेव अभेद आपणे विच छुपाईआ। निरगुण रूप आप धरावना, जोती जामा जोत जगाईआ। रवि रवि तेरा साथ निभावना, दास दास सेव कमाईआ। शब्दी शब्द मेल मिलावणा, शब्द विचोला इक्क रघराईआ। साचा ढोला इक्क सुणावणा, आपणा नाउँ कर रुशनाईआ। सो पुरख निरँजण आपणा रूप धरावणा, हँ मेले सहिज सुभाईआ। सोहँ अक्खर इक्क बणावणा, नारी कन्त ब्रह्म पारब्रह्म एका सेज सुहाईआ। गंगा राम तेरा जन्म फेर दवावणा, पंज सत्त दए वड्याईआ। पंजां तत्तां भेव खुल्हावणा, सति सतिवादी सत्तवां दर आप वखाईआ। सतवंजा साल मुख छुपावणा, माणस पर्दा फेर चुकाईआ। पिछली आयू आपणे लेखे लावणा, अग्गे मार्ग आपे पाईआ। बारां हाढ़ लिख्या पूर करावणा, भुल कदे ना जाईआ। जो सुणाया सो आपणे विच टिकावणा, आपा तेरे विच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। पूरी आस करे करनेयोग, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। पहलां पिछले जन्म दा कट्टे वजोग, कूड़ा रोग दए गंवाईआ। दूजे शब्द सुरत करे संजोग, गुर सतिगुर मेल मिलाईआ। तीजे आत्म सेजा भोगे भोग, भस्मड़ मर कदे ना जाईआ। चौथे घर इक्क वखाए साचा जोग, सोहँ शब्द आत्म परमात्म

एका रंग रंगाईआ। पंचम लेखा जाणे काया किला कोट, पंचम नाद शब्द धुन सुणाए सच्ची शनवाईआ। छेवें घर अगाध बोध, बोध अगाधी एका अक्खर दए पढ़ाईआ। सत्तवें सति सतिवादी लेखा जाणे चौदां लोक, लोक परलोक होए सहाईआ। अठ्ठवें अठ्ठां तत्तां देवे मोख, मुक्ती गुर चरन गुरसिख तेरे पैरां हेठ दबाईआ। नौं दुआर हरख चुकाए सोग, चिंता चिखा ना कोए जलाईआ। दसवें दरस दखाए अमोघ, सोवत जागत एका रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। हरि हरि भेव खुल्हावणा, काया अंदर बंक दुआर। आपे ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलावणा, साची सेजा करे प्यार। जोत निरँजण दीप जगावणा, आठ पहर रहे उज्यार। अनहद नादी नाद वजावणा, आपे गाए मंगलाचार। बजर कपाटी तोड़ तुड़ावणा, नाता तोड़े धूंआँधार। अग्नी तत्त आप बुझावणा, अमृत बरखे ठंडी ठार। नाभी कँवल आप उलटावणा, कँवल कँवला पावे सार। ईड़ा पिंगल आप समझावणा, देवे मति सच्ची सरकार। टेढी बंक पार करावणा, सुखमन रक्खे आपणी धार। जगत वासना मेट मिटावणा, मन मनूआ ना करे ख्वार। साची मति बुध इक्क दसावणा, हरि चरन प्रीती सच प्यार। जगत रीती वेख वखावणा, पतित पुनीती किरपा धार। पहली बीती की फोल फुलावणा, उप्पर पर्दा देवे डार। अग्गे होए आप ज़ामना, मार्ग दस्से इक्क सुखाल। नेड़ ना आए कामनी कामना, गुरसिख होए ना तेरा ज़वाल। मेटे रैण अन्धेरी शामना, जल्वा नूर वखाए इक्क जलाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे लाल। लाल अनमुल्लड़ा मेलया, गुरसिख कर प्यार। एका मन्दिर वसे गुरु गुर चेलया, सोहे बंक दुआर। हरि पाया सज्जण सुहेलया, विछड़ ना जाए विच संसार। राए धर्म दी कट्टे जेलया, चित्रगुप्त ना करे ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे एका साचा वर, हरिजन बणे दर भिखार। हरिजन भिखारी मंगदा, एका नाम अनडिठ। सतिगुर पूरा चोली रंगदा, जुग जुग करे साचा हित। वजाए ताल नाम एका मृदंग दा, वेस अवल्लड़ा नित नवित। रस माणे सेज पलँघ दा, आत्म सेजा बह बह मित। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, माणस जन्म लेख चुकाए, पूर्ब कर्मां जित। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अठ्ठे पहर इक्क जमाल रखाए, सुफन सखोप्त जाग्रत तुरीआ एका रूप दरसाए, ना कोई वार ना कोई थित।

२६२

★ १६ फग्गण २०१७ बिक्रमी मनुशा सिँघ मेला सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर ★

आदि पुरख एका हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। वसणहारा साचे घर, घर मन्दिर आप उपाईआ। निर्भय भउ ना रक्खे कोए डर, भय आपणा सर्ब जणाईआ। करे खेल अगम्म अपर, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रूप आप धराईआ। सो पुरख निरँजण रूप अवल्ला, हरि हरि साचा आप धराइंदा। करे खेल इक्क इकल्ला, अकल कल धारी आपणा बल उपजाइंदा। आपणे नूर आपे रला, आपणा मेल आप मिलाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, सच दुआरा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। हरि पुरख निरँजण निराकारा, निरवैर नाउँ धराइंदा। आपे वसे सभ तों बाहरा, भेव कोए ना पाइंदा। आपे जाणे आपणी धारा, धार धार विच रखाइंदा। अलख अलखना खेल अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। एकँकारा पुरख अकाल, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। वसणहारा सच घर सच्ची धर्मसाल, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। सदा सुहेला चले नाल नाल, आपणा संग निभाईआ। आपणी करे आप प्रितपाल, प्रितपालक वड शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। आदि निरँजण नूर उज्यारा, नूरो नूर डगमगाइंदा। आप आपणा कर पसारा, हरि हरि आपे वेख वखाइंदा। आपणा घाड़न घड़ ठठयारा, साची बणत आप बणाइंदा। आपे वसे सच दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। अबिनाशी करता पुरख अबिनास, एका रंग समाया। आपे जाणे आपणा खेल तमाश, साची मंडल रास रचाया। आप आपणा होए दासी दास, सेवक सेवा आप कमाया। आपे लेखा आपणे निज मन्दिर कर कर वास, घट आपणा रूप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आपणे विच रखाया। श्री भगवान सर्ब गुण दाता, एका एक वडी वड्याईआ। आप बणाए आपणी ज़ाता, उत्तम आपणी ज़ात रखाईआ। ना कोई पिता ना कोई माता, गोदी गोद ना कोए बहाईआ। ना कोई सुणाए सुणे गाथा, करे कराए ना कोए पढ़ाईआ। सर्ब कल आपे समराथा, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। आपणे प्रकाश हो उज्यारा, नूर ज़हूर आप कराइंदा। आप सुहाए आपणा सच दुआरा, दर घर साचा आप बणाइंदा। करे खेल एका वारा, दूजी धार ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल निरगुण हरि, निराकार

आपणी कल वरताइंदा। सचखण्ड दुआरा साचा घर, हरि मन्दिर हरि सुहाइंदा। आपणा घाड़न आपे घड़, आपे वेख वखाइंदा। आपे बैठा अंदर वड़, भेव कोए ना पाइंदा। आपे सच सिँघासण बैठा चढ़, सच दुआरे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप वखाइंदा। थिर घर साचा आपे खोल्ह, आपणी दया आप कमाईआ। आपे बैठा रहे अडोल, अडुल बेपरवाहीआ। आपे तोले आपणे तोल, तोलणहारा इक्क हो जाईआ। आप वजाए आपणा ढोल, सति मृदंगा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, आपे होए पिता माईआ। पिता मात हरि निरँकारा, आपणा खेल खिलाइंदा। आपे जणे सुत दुलारा, शब्दी नाउँ धराइंदा। आपे वणज करे वणजारा, आपणा हट्ट आप चलाइंदा। आपे देवे सच भण्डारा, वस्त अमोलक आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप प्रगटाइंदा। आपणी धार आपे धर, हरि साचा खेल खिलाइंदा। आपणी किरन आपा विच आपे कढु, करे खेल साचा हरि, हरि आपणी खेल खिलाइंदा। रूप धराए नारी नर, नारी कन्त आप हंढाइंदा। आपणी सेजा आपे चढ़, आप आपणा मेल मिलाइंदा। आपणे अंदर आपे वड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म धुर फ़रमाना आपणे हथ्थ रखाइंदा। धुर फ़रमाना राज राजाना, हरि आपणा आप सुणाईआ। साचे तख्त बैठ श्री भगवाना, साचा सीस ताज सुहाईआ। सति सरूपी इक्क कमाना, वड बलवाना आप उठाईआ। आपे जाणे आपणा भाणा, आपणे भाणे सद समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। आपणी इच्छया आपणे अग्गे रक्ख, हरि हरि साची खेल खिलाइंदा। आपणा रूप कर प्रतक्ख, विश्व विष्नूं नाउँ धराइंदा। आप आपणा कीता वक्ख, भेव कोए ना पाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। विष्नूं अंदर बन्धन पा, आपणी धार वहाईआ। परमानंदन गया समा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। आपणी चरन धूढ़ी चन्दन मस्तक इक्क लगा, एका नूर नूर रुशनाईआ। एका कँवल लए खिल्हा, कँवल कँवला आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। विष्नूं अंदर कँवल धार, हरि अमृत अमर कराइंदा। पुरख अबिनाशी हो त्यार, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। जोती जोत होए उज्यार, तत्व तत ना कोए बणाइंदा। आपणी वण्ड वण्डे अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। आपे ब्रह्म कर पसार, आपणा नाउँ आप उपजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची रचना आप रचाइंदा। आपे ब्रह्मा वेता जाया, जननी जन आप अख्वाइंदा। आपे विष्नूं गोद उठाया, आप आपणी गोद सुहाइंदा। आपे शब्द अगम्मी

इक्क सुणाया, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। आपे दाई दाया बण बण सेव कमाया, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपे वेख वखाइंदा। आपे थिर घर पार कराया, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपे विष्न ब्रह्मा घाड़त लए घड़ाया, घड़नहार आप हो जाईआ। आपे आपणे रंग समाया, रंग रंगीला साचा माहीआ। आपे आपणी सुन्न अगम्म डेरा लाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। सुन्न अगम्मी हरि समा, आपणा खेल खिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा दर बहा, एका हुक्म सुणाइंदा। करे खेल सच्चा शहिनशाह, भेव कोए ना पाइंदा। आपणी इच्छया लए प्रगटा, साची भिच्छया झोली पाइंदा। एका शंकर चरन धूढ़ी लए ता, रूप अनूप आप वखाइंदा। मस्तक टिक्का देवे ला, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। तिन्नां लेखा दए समझा, एका गुण जणाइंदा। आपे पिता आपे मां, आपे बालक रूप वटाइंदा। विष्नूं फड़े हरि हरि बांह, ब्रह्मा शंकर हथ्थ मिलाइंदा। शंकर रक्ख चरन ध्याँ, पुरख अबिनाशी इक्क मनाइंदा। करे खेल हरि वड मेहरवां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कराइंदा। विष्न विश्व कर त्यारा, हरि साचे दया कमाईआ। एका बख्शे चरन सहारा, एका ओट रिहा समझाईआ। एका सति दए भण्डारा, सतो गुणी नाम रखाईआ। एका ब्रह्मा करे भिखारा, एका वस्त रिहा दरसाईआ। एका नाम करे उज्यारा, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। चारे मुख दए सहारा, रसना जिहवा आप हिलाईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, पारब्रह्म ब्रह्म एका गुण जणाईआ। आपे बणे सच लिखारा, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरगाहीआ। धुरदरगाही खेल खिलाइंदा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। भोला नाथ आप जगाइंदा, चरन कँवल लए छुहा। साची धूढ़ी ख़ाक रमाइंदा, सीस जगदीश आपणे चरनां हेठ दबा। एका हुक्मी हुक्म सुणाइंदा, हरि जू रखे आपणी सद रज़ा। एका शस्त्र हथ्थ वखाइंदा, तिन्नां मूल त्रिसूल दए वखा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त दए फड़ा। साची वस्त हरि निरँकारा, सति सति आप वरताईआ। विष्नूं देवे इक्क आधारा, भुल कदे ना जाईआ। ब्रह्मे देवे चरन कँवल इक्क सहारा, एका दर वखाईआ। एका शब्द इक्क जैकारा, एका करे पढ़ाईआ। शंकर बणाए इक्क वणजारा, एका गुण दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राजस तामस तामस राजस सांतक संग आप निभाईआ। त्रैगुण तत्त आप उपा, हरि त्रैगुण मेल मिलाया। करया खेल बेपरवाह, भेव किसे ना आया। चारे वेद रहे सालाह, सिफ्ती सिफ्त हरि सालाहया। विष्न ब्रह्मा शिव ढह ढह पए सरना, चरन कँवल ध्यान लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाया। हरि पर्दा आप

उठाइंदा, कर किरपा गुण निधान। विष्नूं इक्क निशान वखाइंदा, सति पुरख निरँजण हो मेहरवान। ब्रह्मा इक्क ज्ञान दृढ़ाइंदा, सो पुरख निरँजण गुण निधान। शंकर एका घर बहाइंदा, हरि पुरख निरँजण देवे दान। एकँकारा हुक्म सुणाइंदा, भुल ना जाए बण नादान। आदि निरँजण दीप जगाइंदा, जोती नूर होए महान। श्री भगवान मार्ग पाइंदा, देवे धुर फ़रमान। अबिनाशी करता उँगली लाइंदा, आप वखाए सच मकान। पारब्रह्म आपणा दरस दिखाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए जाणी जाण। पारब्रह्म हरि जाणदा, जानणहार करतार। विष्न ब्रह्मा शिव की लेखा जाणे श्री भगवान दा, श्री भगवान गुण निधान। आदि जुगादि लेखा इक्क मेहरवान दा, मेहरवान नौजवान। बाल अंञाणे आप उठाल दा, दर दुआरे देवे माण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क रखाए साची आण। हरि एका आण रखाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव जगा। हरि एका बन्धन पाइंदा, ना सके कोए तुड़ा। हरि एका अंदर बहाइंदा, चरन कँवल दए समझा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद दए खुल्हा। हरि साचा भेद खुल्हाइंदा, नाउँ निरँकारा आपे बोल। विष्न ब्रह्मा शिव जगाइंदा, नाद वजाए आपणा ढोल। साची सेवा आप वखाइंदा, त्रै त्रै कंडे तोल। लक्ख चुरासी झोली पाइंदा, आप बणया रहे अनभोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी जोत आपे रिहा मौल। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ना, सो पुरख निरँजण आप समझाइंदा। त्रै त्रै लेखा आपे वरना, दूसर अवर ना कोए प्रनाइंदा। इक्क दूजे दा लड़ फड़ना, भुल कोए ना जाइंदा। विष्नूं भण्डारा घर घर धरना, दर दर रिज़क सबाइंदा। ब्रह्मा ब्रह्म रूप जीव जंत करना, तेरी वण्ड वंडाइंदा। शंकर तेरे हथ्थ रखाया मरना, जो घड़या भन्न वखाइंदा। तिन्नां विचोला आपे बणना, शब्द सनेहुड़ा इक्क सुणाइंदा। मेरा लेख किसे ना पढ़ना, लोकमात हथ्थ किसे ना आइंदा। मेरे पौड़े किसे ना चढ़ना, आपणा पौड़ा आपणे विच छुपाइंदा। आदि जुगादि विष्न ब्रह्मा शिव आपणी बख्शे साची सरना, चरन कँवल ध्यान इक्क वखाइंदा। आपणी करे आपे करना, करता पुरख आपणा नाउँ धराइंदा। ना जम्मे ना कदे मरना, अनुभव आपणा रूप प्रगटाइंदा। एका लड़ हरि हरि फड़ना, पुरख अबिनाशी आप फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाइंदा। हरि समझाया शब्द गुण, त्रैगुण तत्त विचार। आदि जुगादि फ़रयाद लए सुण, अभुल गुर करतार। आपणे विचों कढ्ढे चुण, आप आपा कर प्यार। आप वजाए आपणी धुंन, नाद अनादी इक्क सतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां देवे इक्क आधार। तिन्नां सुणया हरि का भाओ, भय विच बैठे सीस झुकाईआ। प्रभ तेरी सेवा करन दा सदा चाउ, चाउ घनेरा इक्क रखाईआ। साडी दात तेरा नाउँ, विसर

कदे ना जाईआ। साडी मात तूं साची माउँ, पिता तेरी गोद सुहाईआ। आदि जुगादि पकड़ना बाहों, हउँ बालक बाल सखाईआ। सदा सद रक्खणी ठंडी छाउँ, समरथ तेरी वड्याईआ। तेरे हथ्थ साडा न्याउँ, निउँ निउँ बैठे नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि होए सदा सहाईआ। सदा सहाई होवणा, तिन्नां करी पुकार। लक्ख चुरासी तेरा नाउँ बीज बोवणा, लोकमात होए उज्यार। तेरा रूप तेरा रंग तेरा संग कदे ना खोवणा, बेऐब परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शी सच प्यार। सच प्यार मंगदा, विष्नूं नैण उठा। हरि हरि चोली रंगदा, रंग मजीठी इक्क चढ़ा। शंकर वेखे खेल सूरे सरबंग दा, चरन धूढ़ी तन रमा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां देवे इक्क सलाह। सच सलाह देवणहारा, एका हुक्म जणाईआ। लक्ख चुरासी कर आकारा, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। घर घर अंदर भर भण्डारा, वस्त अमोलक आप वरताईआ। घट घट अंदर कर उज्यारा, जोती नूर करे रुशनाईआ। घर घर अमृत भर भण्डारा, कँवली मुख सुहाईआ। घर नाद सच्ची धुन्कारा, अनहद आप अलाईआ। घर घर मन्दिर कर पसारा, घर घर विच दए वड्याईआ। घर घर नारी कन्त भतारा, घर घर सेज हंढाईआ। घर घर सखीआं मंगलचारा, घर घर गीत गोबिन्द अलाईआ। घर घर वसे धूंआँधारा, घर घर सुंज मसाण वखाईआ। घर घर वसाए काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, घर घर आसा तृष्ना नाच नचाईआ। घर घर जूठ झूठ कर पसारा, घर घर हउमे हंगता गढ़ बणाईआ। घर घर भुक्खा नंगता फिरे वारो वारा, घर घर करे सच्ची शहिनशाहीआ। घर घर होवे चोबदारा, घर घर बैठा अलख जगाईआ। घर घर विष्नूं दए सहारा, घर घर ब्रह्मा ब्रह्म जोत प्रगटाईआ। घर घर शंकर वजाए ताल नगारा, हथ्थ त्रिशूल उठाईआ। घर घर लक्ख चुरासी करे खेल आप करतारा, दिस किसे ना आईआ। ब्रह्मा विष्न शिव हरि दए हुलारा, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। सेवक सेवा लाए सेवादारा, साची सेवा इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, ब्रह्मा विष्न शिव शंकर मनाया। पुरख अबिनाशी तेरी धार, तेरे अग्गे दए टिकाया। हउँ सरगुण रूप घड़नेहार, निरगुण तेरी वण्ड वण्डाया। तूं दाता अंदर बाहर, गुप्त ज़ाहर तेरा खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला कवण वक्त कवण वार कवण थित कवण रूप करे हित, कवण धाम कवण राम कवण रूप धरे भगवान, निरगुण निरगुण मेला लए मिलाया। निरगुण हरि समझाइंदा, निरँकार करतार। लक्ख चुरासी सरगुण रूप वखाइंदा, लोकमात खेल अपार। पंज तत्त चोला आप हंढाइंदा, मन मति बुध दए आधार। जुग जुग आपणी वण्ड वंडाइंदा, आपे होए वण्डणहार।

आपणा वेस आप कराइंदा, वेस अवल्लड़ा एकँकार। आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा, आपे बोले सच जैकार। आपणा पर्दा आप उठाइंदा, आपे अंदर आपे बाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपारा खेल खिलावणा, हरि साचा सच समझाए। लक्ख चुरासी तन हंढावणा, घट घट अंदर जोत जगाए। निरगुण सरगुण मेल मिलावणा, सरगुण निरगुण एका रंग रंगाए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणी अंस बणावणा, सुत दुलारे लए उठाए। चारे वेदां आप पढ़ावणा, आपणी विद्या आप जणाए। चारे खाणी आप उपजावणा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणे लेखे लए लगाए। नौं दुआरे आप खुल्ावणा, जगत वासना विच रखाए। नौं खण्ड पृथ्मी आप प्रगटावणा, धरनी धरत धवल दए वड्याए। चार जुग गेड़ा आप दिवावणा, चारे कुण्टां फेरा पाए। चारे वरनां आप उपजावणा, शतरी ब्रह्मण शूद्र वैश नाउँ धराए। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा आपणे हथ्थ रखावणा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाए। गुर अवतार सेवा लावणा, लोकमात करे रुशनाए। भगत भगवन्त भेव खुल्ावणा, साचे सन्तां एका बूझ बुझाए। गुरमुख गुर गुर गोद बहावणा, आप आपणा दरस कराए। गुरसिख साचा संसा लाहवणा, सतिगुर पूरा नज़री आए। जुग चौकड़ी आपणा बन्धन पावणा, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाए। ब्रह्मा विष्न शिव भुल ना जावणा, पुरख अबिनाशी आप समझाए। दुआरे बह बह एका गावणा, सो पुरख निरँजण इक्क ध्याए। कलिजुग वेला अन्तिम आवणा, अबिनाशी करता होए सहाए। निरगुण आपणा वेस वटावणा, जोती जामा कर रुशनाए। मन्दिर मस्जिद गुरदुआर ना कोए बणावणा, आपणी कल आप वरताए। साचा शब्द अगम्मी ढोला एका गावणा, लिखण पढ़न विच ना आए। दो जाहानां खेल खिलावणा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा हुक्म सुणाए। गुरमुख साचे मात जगावणा, जुग जुग विछड़े लए मिलाए। चारे वेदां फोल फुलावणा, ब्रह्मा वेता नाल रलाए। पुराण अठारां भेव खुल्ावणा, वेद व्यासा आप उठाए। गीता ज्ञान आप दृढ़ावणा, अठारां अध्याए आपे गाए। अञ्जील कुराना पर्दा लाहवणा, तीस बतीसा एका गृह दए सुणाए। खाणी बाणी आपे गावणा, राग छतीस रहे शरमाए। विष्नूं तेरा कौल निभावणा, पुरख अबिनाशी होए सहाए। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म रूप तेरे विच टिकावणा, सिर आपणा हथ्थ रखाए। शंकर तेरी प्यास बुझावणा, लक्ख चुरासी तेरी झोली पाए। पूर्ब लेखा पूर करावणा, पारब्रह्म बेपरवाहे। नानक मेला मेल मिलावणा, गोबिन्द एका घर वखाए। सम्बल नगरी धाम सुहावणा, धरत धवल ना कोए वड्याए। बाढी कोए ना बणत बणावणा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाए। तिन्न सौ सठ्ठ हाडी जोड़ जुड़ावणा, बहत्तर नाड़ मेल मिलाए। अंदर वड़ वड़ आसण लावणा, उच्चे टिल्ले पर्बत सोभा पाए। गौड़ ब्रह्मण खेल खिलावणा, पूत सपूत एका जाए। विष्नूं फड़ाए आपणा दामना, दामनगीर सच्चा पातशाहे। ब्रह्मा तेरा

अंक आपणे विच समावणा, अंगीकार आप कराए। शंकर तेरा पन्ध मुकावणा, थिर कोए रहिण ना पाए। चौथे जुग आप मिटावणा, निहकलंक नाउँ रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, वर दाता हरि रघराए। वर दीआ हरि भगवान, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। अन्तिम मिटे कल निशान, काल महाकाल करे सफाईआ। प्रगट होए आप दयाल, दीनन वेखे थाउँ थाँईंआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, हरिजन साचे लए मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जन्म जन्म घाल जो रहे घाल, पूर्ब लेखा लेखे पाईआ। हाल मुरीदां सुणे आण, मुर्शद बणे बेपरवाहीआ। दीद ईद दो जहान, जल्वा नूर आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। कलिजुग अन्तिम आवणा, पुरख अगम्म अपार। निरगुण रूप धरावणा, दिस आए ना विच संसार। शब्द खण्डा इक्क चमकावणा, दो जहानां मारे मार। ब्रह्मण्डां वेख वखावणा, लोआं पुरीआं दए हुलार। विष्न ब्रह्मा शिव पन्ध मुकावणा, करोड़ तेतीसा कर ख्वार। सुरपति राजा इन्द रहिण ना पावणा, वेले अन्तिम आवे हार। चौथे जुग पन्ध मुकावणा, जुग चौकड़ी पार किनार। चारे वेदां वक्त मुकावणा, पुराण अठारां बन्ने भार। शास्त्र सिमरत मुख छुपावणा, उच्ची कूक ना करे पुकार। गीता ज्ञान आपणे विच टिकावणा, धर रूप श्री भगवान। अञ्जील कुराना मुख शरमावणा, कोए ना गाए आपणी वार। बाणी खाणी इक्क समझावणा, निरगुण दाता परवरदिगार। लाशरीक आप हो जावणा, करे खेल सांझा यार। निरगुण निरवैर पुरख अकाल आपणा रूप आप प्रगटावणा, जामा लोकमात विच धार। महांबली बल वखावणा, आपे उतरे आपणी वार। माता कुक्ख ना किसे रखावणा, पिता करे ना कोए प्यार। अबिनाशी करता आपणा खेल खिलावणा, जोती जोत हो उज्यार। सम्बल नगरी भाग लगावणा, आप आपणी किरपा धार। साचा तख्त आप सुहावणा, उप्पर बैठ सच्ची सरकार। सीस साचा ताज टिकावणा, हथ्थ ना आए विच संसार। कलिजुग सतिजुग आपे काज रचावणा, करे काज आप निरँकार। कूड़ी क्रिया पन्ध मुकावणा, लेखा लिखे अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदार। ख़बरदार हरि ख़बर कराइंदा, कलिजुग अन्तिम जोती जामा पा। शब्द अगम्मी डंक वजाइंदा, निरगुण निरवैर रिहा सुणा। सोया कोए रहिण ना पाइंदा, घर घर फेरी रिहा वखा। चारों कुण्ट उठ उठ धाइंदा, दहि दिशा पन्ध मुका। राह विच ना कोए अटकाइंदा, सभ बैठे सीस झुका। सजदा सभ दा वेख वखाइंदा, पीर दस्तगीर मुला शेख मुसायक करन दुआ। जगत काअबा वेख वखाइंदा, नूरो नूर हो रुशना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क इकल्ला नौजवां। नौजवां परवरदिगारा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। मुकामे हक बोले एका नाअरा,

सच महिराबे आसण लाईआ। चार कुण्ट वेखे एका वारा, चौदां तबक फेरा पाईआ। अल्ला राणी सुणे पुकारा, लेखा जाणे संग मुहम्मद चार यारा, यारी यार नाल निभाईआ। करे खेल अपर अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हक हकीकत वेखणहारा, हक हक हक आपणी धार रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग राह रिहा तक, कलिजुग वेला अन्तिम आया, अन्त देवे पन्ध मुकाईआ।

★ २० फग्गण २०१७ बिक्रमी भाग सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर ★

हरि खेले खेल तमाश, कल आपणे हथ्थ रखाइंदा। आकाश कर निरगुण प्रकाश, आपणी किरन जोत जगाइंदा। जोती नूर शाहो शाबास, जल्वा आपणा आप धराइंदा। आपणी इच्छया अंदर कर कर वास, आप आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अंग आप रखाइंदा। आपणी धरनी आप उपा, धवला धवल आप हो जाईआ। जल जल रूप आप वटा, आपणा नीर आप वहाईआ। आपणी बिम्ब आप प्रगटा, आपे वेख वखाईआ। आपे महीअल नाउँ धरा, महिमा आपणे विच रखाईआ। आपे थल थल डेरा ला, आपणी धूढ़ी आप उडाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना वेख वखाईआ। आपे सूरज सूर्या देवे दात, अनडिठ आप वरताइंदा। आपे आपणे प्रकाश वेखे मार झात, आपणी किरन नैण खुलाइंदा। आपे सेवा लाए बौह बिध भांत, सेवक सेवा सच जणाइंदा। आपे लेखा जाणे आदि जुगादि, आपणा गेड़ा आप भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आप वखाइंदा। आपे धवल दए सहारा, हरि जगदीस वडी वड्याईआ। आपे जल करे प्यारा, नीर सीर उपाईआ। आपे दोहां विचोला सिरजणहारा, अन्तर अंदर करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपे लए समझाईआ। आपणी किरन हो उज्यारा, अनुभव धार चलाइंदा। आपणा नेत्र कर पसारा, इक्क इक्क इक्क नाल वण्ड वंडाइंदा। आपे वेखे वेखणहारा, आपणा तत्त विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप रखाइंदा। धरती धवल चरन ख़ाक, हरि आपणी आप उपाईआ। आपे करे पाकी पाक, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। आपणी किरपा आपे लए रक्ख, आपणी इच्छया उप्पर टिकाईआ। दूजा कोए ना सके भार चुक्क, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। प्रिथम पृथ्मी करी वक्ख, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। सूरज जोती एका धार, हरि दाता आप धराइंदा। आपणा नैण कँवल उग्घाड़, एका किरन प्रगटाइंदा। एका

पलक होए उज्यार, ख़ालक आपणा खेल खिलाइंदा। एका फ़लक करे पसार, आपणा नूर ज़हूर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा तत्त आप प्रगटाइंदा। आपणे चरन मल मल धो, हरि आपणी सेव कमाईआ। आपणा चरन आपे छोह, आपणी बणत बणाईआ। आपणी करनी करे आपे लो, प्रकाश प्रकाश आप जणाईआ। आपे जाणे आपणी सो, सो पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धूढ़ी ख़ाक दए वड्याईआ। चरन धूढ़ी जाए लथ्थ, हरि साचा आप लहाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, भेव कोए ना पाइंदा। आदि आदि जाणे आपणी गथ, आपणी महिमा आपे गाइंदा। आप चलाए आपणा रथ, निरगुण सेवा सच कमाइंदा। चरन धूढ़ी उप्पर रक्ख, चरनां हेठ दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। चरन धूढ़ी ख़ाक दबा, दयावान दया कमाइंदा। चरन चरनोदक नाल रला, सिंच सिंच वेख वखाइंदा। दोहां मेला सहिज सुभा, निरगुण निरगुण आप कराइंदा। लेखा जाणे पूत मां, पिता साची गोद सुहाइंदा। इक्क जणाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। खेल खिलंदड़ा हरि भगवाना, आदि पुरख वडी वड्याईआ। नूरो नूर नूर महाना, किरनी किरन किरन प्रगटाईआ। आफ़ताब देवे दाना, उल्फ़त आपणी आप वखाईआ। मेहरबां होए मेहरवाना, मेहबान सच्चा शहिनशाहीआ। आपणा वेखे मार ध्याना, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। धरनी धवल दए टिकाणा, सच मकाना आप बणाईआ। जल जल रूप विच समाना, आपणा अमृत आप वहाईआ। करे खेल आप महाना, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आपणा आपणे विच छुपाईआ। धरती जल जल मेल मिलाया, ख़ाकी ख़ाक समाइंदा। धूढ़ी धूढ़ टिक्का लाया, उतर कदे ना जाइंदा। चरन कँवल कँवल नीर छुपाया, एका रस भराइंदा। दोहां विचोला बेपरवाहया, एका घर बहाइंदा। अन्तर अंदर मेल मिलाया, दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरन आप प्रगटाइंदा। एका किरन दीन दयाल, हरि साचे सच उपाईआ। आपणी इच्छया प्रगट लाल, आपे देवणहार वड्याईआ। आपे दसे राह सुखाल, साचे मार्ग आपे पाईआ। आपे दरस दिखाए नाल नाल, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। आपे चलाए आपणी चाल, चलन फड़ कोए ना पाईआ। हुक्मे अंदर खेल अकाल, पुरख अकाल आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरन आपणे नाल बंधाईआ। आपणी किरन आपे बंध, हरि हरि साचा खेल खिलाइंदा। आपे जाणे आपणा पन्ध, सदा सुहेला आप मुकाइंदा। अद्धविचकार ना कोए कंध, पर्दा ओहला ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, किरन किरन विच धराइंदा। किरनी किरन कर पसारा, पसर आपणा खेल खिलाइंदा। अन्तर अंदर कर उज्यारा, आपे कुण्डा लांहयदा। इक्क इक्क इक्क वण्ड कर निरँकारा, एका एके नाल प्रनाइंदा। एका एका रक्खे अद्धविचकारा, दिस किसे ना आइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अलखना खेल खिलाइंदा। आपणा मस्तक कर उज्यारा, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपे सूरया दए आधारा, सूरबीर आप हो जाइंदा। आपे सीतल कर चमत्कारा, ठांडा दरबारा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपे मस्तक पर्दा खोल्हदा, कर किरपा गुण निधान। आपणे कंडे आपे तोलदा, आप आपणा कर पछाण। आपणे रूप आपे मौलदा, मौलणहारा इक्क भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दीबाण। धुर दीबाण लेख अवल्ला, भेव कोए ना पाइंदा। करे कराए इक्क इकल्ला, अकल कल आपणा खेल खिलाइंदा। आपणे नूर आपे बला, आपणा प्रकाश आपे वण्ड वंडाइंदा। आपे वसे निहचल धाम अटल्ला, सच दुआरे सोभा पाइंदा। आपणी किरन आप फड़ाया पल्ला, छुट कदे ना जाइंदा। आपणे सांतक आपे रला, सति सतिवादी नाउँ धराइंदा। आपणी इच्छया पाए भिच्छया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। आपणी इच्छया भर भण्डारा, इच्छया इच्छया विच प्रगटाईआ। आपणा मस्तक वेख दुआरा, आपणा नूर नूर धराईआ। आपणा नूर दए सहारा, सांतक सति सति कराईआ। आपणा प्रकाश आपणे विचों कढ्ढे बाहरा, पति परमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे आपणी लए अंगड़ाईआ। हरि अंगड़ाई आपणी लै, आपणी खेल खिलाइंदा। आपणे मन्दिर आपे बह, आपे वेख वखाइंदा। आपणी करनी आपे करे आपणा भाणा आपे सहि, दूसर सिर भार ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरन किरन किरन विच आपणा आप धराइंदा। किरन किरन आया बाहर, किरतम आपणी धार वहाईआ। आपणे मस्तक हो उज्यार, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आपे करे खेल निरँकार, निरगुण दाता भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इक्क इक्क अद्धविचकार आप समाईआ। आदि अन्त खेल मध्ध, ख़ालक आप खिलाइंदा। आपे जाणे आपणी हद्द, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। नूर विचों नूर कढ्ढ, नूरी नूर धराइंदा। आप लडाए साचा लड, पिता पूत पोत वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी खेल कर, साची खेल आप खिलाइंदा। खेल खिलाए वड मेहरवान, आपणा रूप आप धराईआ। आपे देवणहारा दान, आपणी वस्त आप वरताईआ। आपे रवि कर कर भान, प्रकाश प्रकाश आप समाईआ। आपे सूरया आपे चन्न आपे देवे सति निशान, सति सतिवादी सच्चा शहिनशाहीआ। आपे गेड़ा गेड़े

दो जहान, आपणी लट्ठ आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल इक्क रघराईआ। साचा खेल खिलाइंदा, हरि सच्चा पातशाह। धरत धवल आप उपाइंदा, जल जल रूप रिहा समा। बिम्ब आपणी कल वरताइंदा, पारब्रह्म बेपरवाह। आपणी बिन्द आप वखाइंदा, सुत दुलारा आपे जा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी जोत लए चमका। आपणी जोत उज्यार कर, आपणी खेल खिलाइंदा। आपणी जोत धार धर, धरत धवल मेल मिलाइंदा। आपणा वेस निरँकार कर, आपणा रोम आप प्रगटाइंदा। कोटन कोटि रवि ससि सूरज चन्न सतार घाड़न घड़, आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे अंदर बैठा वड़, दिस किसे ना आइंदा। कोटन कोटि सितार, किरन किरन आप प्रगटाईआ। नूर नूर दए सहार, नूर नूर विच टिकाईआ। आप प्रगटाए एका वार, मात पित ना कोए जाईआ। आप वसाए इक्क दुआर, सच मकान इक्क सुहाईआ। आप लटकाए आपणे चरन सहार, चरन बन्धन एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी महिमा गणत बेअन्त आपे गाईआ। रवि ससि कर त्यारा, नैण मस्तक अंग लगाया। चरन धूढ़ खेल अपारा, धरत धवल वड्याआ। अमृत रस कर त्यारा, जल जल नीर समाया। पृथ्मी आकाश इक्क अखाड़ा, हरि साचे सच लगाया। आपे होए वेखणहारा, सचखण्ड बैठा सोभा पाया। एका हुक्म दए सच्ची सरकारा, भुल कोए ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन एका दए वखाया। एका बन्धन हरि हरि नाउँ, आपणा आपे पाइंदा। आदि जुगादि वसणा एका थाउँ, सो थान सुहावा जिस थान आप सुहाइंदा। आदि जुगादि जपणा एका नाउँ, नाउँ निरँकारा आप पढ़ाइंदा। आदि जुगादि एका पिता एका माउँ, आपणा घर आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका एक एका सो जणाइंदा। भेव जणाए हरि करतारा, आपणी दया कमाईआ। सेवक सेवा लाए अपर अपारा, साची सेवा आप समझाईआ। किरनी किरन करे उज्यारा, रवि ससि डगमगाईआ। धरनी धरत कर प्यारा, चरनां हेठ रखाईआ। एका शाह इक्क सिक्दारा, एका हुक्मी हुक्म फिराईआ। वेला वक्त ना कोए विचारा, थित वार ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे धन्दे आपे लाईआ। साचा शब्द हरि फ़रमान, रवि ससि सीस झुकाया। हउँ बाली बुध बाल अञ्याण, तेरा भेव कोए ना पाया। तेरा दर तेरा दरबान, दर दरवेश सेव कमाया। तेरा नूर मेरी किरन महान, किरनी किरन वण्ड वण्डाया। तेरी भूमका तेरा अस्थान, धरत धवल सीस झुकाया। तेरा अमृत तेरा माण, तेरा नीर तेरे विचों प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण सो वेला लए मिलाया।

कवण वेला मिलाए मेला, जल जल नीर कुरलाया। कवण वेला होए सज्जण सुहेला, धरनी खुलड़े केस दए दुहाया। कवण वेला आपणा नूर चाढ़े तेला, रवि ससि एका मंग मंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर बैठे झोली डाहया। देवणहारा इक्क दातारा, सिर आपणा हथ रखाइंदा। सेवक सेवा लाए एका वारा, एका गुण समझाइंदा। पुरख अबिनाशी करे खेल अपारा, आपणी रचना आप रचाइंदा। लक्ख चुरासी भाण्डा घड़े बण ठठयारा, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाइंदा। जुग चौकड़ी दए सहारा, शब्द संदेश आप सुणाइंदा। नौं नौं लाए मात अखाड़ा, चार चार नाच नचाइंदा। महाकाल काल कर पसारा, काल दयाल वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क सिखाइंदा। साची सिख्या लैणी सिख, हरि साचा आप समझाईआ। चारां पाए एका भिक्ख, चारे वेद आप अलाईआ। चारों लेखा देवे लिख, चार जुग वण्ड वंडाईआ। चार दसाए एका हिस, चारे खाणी कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह समझाइंदा, हरि साचा दीन दयाल। चारे चारों कुण्ट आप वखाइंदा, दो जहान सच्ची धर्मसाल। लोकमात आप बणाइंदा, आदि आदि बण दलाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख अकाल। पुरख अकाल जणाइंदा, अलख अगोचर आपणी धार। नौं नौं गेड़ा आप गढ़ाइंदा, चार चार विच संसार। अन्तिम आपणे हथ्थ रखाइंदा, रवि ससि करे प्यार। धरनी चरनां नाल मिलाइंदा, हरि धवल धौल हो उज्यार। कँवल अमृत रस नीर तेरा खिच्च वखाइंदा, लोकमात ना कोए आधार। आपणी वस्त आपणे विच टिकाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए वेखणहार। आपणा अन्त आपे वेखणा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। निरगुण निरवैर धारे भेखणा, जोती जोत कर रुशना। रूप रंग ना कोए रेखना, चक्कर चिहन ना कोए दरसा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा दए मुका। हरि लहिणा अन्त मुकावणा, निरगुण जोती जामा धार। धरनी तेरा भार उठावणा, कर किरपा आप निरँकार। नीर विष्नूं विच टिकावणा, नाभी भरे इक्क भण्डार। रवि ससि तेरी जोत खिचावणा, जोती खिच्चे एका वार। आपणा खेल आपे वेख वखावणा, ना कोई दूजा वेखणहार। नौं नौं लेखा आप मुकावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा शाहकार। शाहकार खेल खिलाइंदा, हरि अन्त बेअन्त बेपरवाह। अनुभव भेव कोए ना पाइंदा, अलख अलखना बैठा मुख छुपा। वेद कतेब मुख शरमाइंदा, जुग चौकड़ी होए ग्वाह। गुर पीर राह तकाइंदा, नेत्र नैण उठा। रवि ससि सीस झुकाइंदा, चरन कँवल ध्यान लगा। नीर चरनोदक मुख लगाइंदा, इक्क उछाल वखा। धरनी चरनां हेठ दबाइंदा, पुरख अबिनाशी हो सहा।

आपणा वेला आपणे हथ्थ रखाइंदा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग किसे ना दिता जणा। कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल, आपणा नाउँ धरा। आपणा नूर आप वखाइंदा, किरन किरन कर रुशना। रवि ससि तेरा माण गवाइंदा, गुरमुख साचे ल्ए जगा। गुरसिखां साचे धाम बहाइंदा, पिछला लेखा दए मुका। अगला मार्ग आपे लाइंदा, जीव जंत कोई जाणे ना। बेअन्त बेअन्त बेअन्त सर्ब गाइंदा, अन्तिम आपणे हथ्थ रक्खे शहिनशाह। साचा कन्त आपणी सेज हंढाइंदा, सच सिँघासण सोभा पा। लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाइंदा, लोआं पुरीआं एका नैण उठा। आपणी कीती आप मिटाइंदा, किसे कोलों लैण ना जाए सलाह। आपे घड़या आपे भन्न वखाइंदा, आपे ठोकर देवे ला। आपणा मन्दिर आपे ढाइंदा, आपे ल्ए फेर वसा। आपणी घाड़त आप घड़ाइंदा, आपे वेखणहारा थाउँ थाँ। रवि ससि तेरा पन्ध मुकाइंदा, नाता तोड़े जगत जीव धरती मां। नीर सीर ना किसे प्यांअदा, जल थल आपे रिहा समा। गुरमुख विरले आपणे विच मिलाइंदा, अग्नी लगे ना तत्ती वा। सचखण्ड दुआरे आप बहाइंदा, जिथे बैठा शहिनशाह। अगला जुग फेर वसाइंदा, पहलां ब्रह्मा विष्न शिव आपणे विच मिला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा लेखा आपे बैठा छुपा।

३०५

★ २० फग्गण २०१७ बिक्रमी हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुरा ★

रवि ससि धरत धवल मिटे निशान, निशाना कोए रहिण ना पाईआ। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड सर्ब कुरलान, नेत्र रोवण नीर वहाईआ। लक्ख चुरासी बाल नादान, बाली बुध मति गंवाईआ। चारों कुण्ट जगत शैतान, कलिजुग डौरू रिहा वाईआ। किसे ना दिसे सिदक ईमान, धर्म धीर जत ना कोए रखाईआ। किसे ना बख्शे कोए माण, जूठ झूठ प्रीत वखाईआ। किसे ना देवे कोए दान, सच भण्डारा ना कोए वरताईआ। घर घर दिसे माण अभिमाण, माया ममता मोह हल्काईआ। किसे ना सुणाए कोए गान, अन्तर आत्म नाद वजाईआ। किसे ना करे कोए पछाण, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। नव नव नौं दिसे वैरान, साचा खेड़ा ना कोए वसाईआ। किसे ना दिसे सति बबाण, शब्द बबाण ना कोए चढ़ाईआ। किसे ना निभे हाणी हाण, सगला संग ना कोए वखाईआ। वेला अन्त सर्ब पछताण, जो आया सो उठ उठ जाईआ। गुरमुख साचा नौजवान, ना मरे ना जाईआ। जिस जन सतिगुर मिल्या आण, जगत तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। चरन कँवल बख्शे इक्क महान, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका अक्खर नाउँ पढ़ाईआ। तीर्थ तट सर्ब सुक जाण, सरोवर कोए

ना रहे वड्याईआ। पूजा पाठ सर्ब मिट जाण, नाद संख ना कोए सुणाईआ। वेद पुराण सर्ब मुख छुपाण, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। चारे वरन तजण पुराण, प्राणी पुराण ना कोए पढ़ाईआ। आलमीन दिसे ना कोए निशान, उल्मा आलम ना कोए वखाईआ। मकतब दिसे ना कोए ईमान, मसला शरअ ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। मिटे निशाना अन्तिम कल, कल कलूआ आप मिटाइंदा। पुरख अबिनाशी हो प्रबल, आपणा बल धराइंदा। वेखणहारा जल थल, महीअल आपणी खेल खिलाइंदा। आकाश प्रकाश बैठा रल, नूर नूर विच समाइंदा। आपणा नगर वसाए अबचल, भेव कोए ना पाइंदा। गुरमुखां मेटे जगत सल, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। अमृत प्याए साचा जल, नीर जगत ना कोए रखाइंदा। दीपक जोती जाए बल, अज्ञान अन्धेर मुकाइंदा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जीवां जंतां छड्ड होया गुरसिखां वल, आपणा फ़र्ज पूरा आप कराइंदा। निहकर्मी करे अछल अछल, धर्मी आपणा धर्म धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख निशाना आप प्रगटाइंदा। गुरसिख निशान उठाया, हरि सतिगुर दीन दयाल। निरगुण आपणी सेव कमाया, लेखा जाणे शाह कंगाल। सचखण्ड निवासी चल के आया, आपे सुणे मुरीदां हाल। गोबिन्द सूरा नाल मिलाया, जग चली अवल्लड़ी चाल। औदां जांदा दिस ना आया, ना कोई मिल्या नाल दलाल। ख़ाली ठूठे रिहा भराया, गुरमुख वेखे साचे लाल। जुग जुग विछड़े रुट्ठे लए मनाया, लक्ख चुरासी विचों भाल। आपणी सेवा आप कमाया, शब्द अगम्मी फड़या हथ्थ रुमाल। कलिजुग मैल दए धवाया, अमृत आत्म इक्क उछाल। आपणा मार्ग दए वखाया, त्रैगुण नाता तोड़ जंजाल। आपणी गोद लए बहाया, गुरसिख बाल अञ्याण। आपणी कूट आपे लए फिराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे जीआ दान। जीआ दान जगत जुगत, हरि साचा आप जणाइंदा। लेखा जाणे भगती भुगत, भगवन आपणा खेल खिलाइंदा। हरिजन मिलाए साचे सुत, अबिनाशी अचुत रूप धराइंदा। ना कोई काया दिसे बुत, तत्व तत ना कोए वखाइंदा। निरवैर सुहाई आपणी रुत, फुल फुलवाड़ी आप महिकाइंदा। गुरसिखां अंदर आपे सुता आपे बहे उठ, उठत बैठत आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। हरिजन साचे खोल्ह जाग, जगत जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणे तन लाई आग, गुरसिखां अग्न बुझाईआ। आपणी फड़ाई गुरसिखां हथ्थ वाग, गुरसिख वाग आपणे सीस टिकाईआ। आप उपजाया गुरसिख तेरा वैराग, तेरे वैराग कुट्ठा फिरे सच्चा माहीआ। आपे धोवण आया तेरा दाग़, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। क्या कोई जाणे हरि का अनराग, अनडिठड़ा खेल खिलाईआ। आपणे विचों आपा काढ, गुरमुखां विच टिकाईआ। ग़रीब निमाणयां करे

लाड, दो जाहानां सच्चा शहिनशाहीआ। गुरसिख तेरा निशाना आदि जुगादि, सतिगुर पूरा आप झुलाईआ। राह तक्के तेरा ब्रह्माद, विष्न ब्रह्मा शिव राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे इक्क वड्याईआ। हरि वड्याई वड्डी, वड बलवाना आप दवाइंदा। बीतदी जाए चौधवीं सदी, मुला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर नीर सर्ब वहाइंदा। गुरमुखां गुर सतिगुर नाम डोरी एका बद्धी, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाइंदा। गुरसिख तेरी मार मारी जाए कोई ना दीसे दार गद्दी, गद्दीदारां ख़ाक विच रुलाइंदा। कलिजुग अन्तिम वहण वहाए झूठी नदी, नईया नाउ हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। गुरसिख एका आत्म जाम प्याआ मदी, मदि आपणा अमृत रस चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आप उठाइंदा। हरिजन तेरा निशाना सच्च, हरि साचा सच वखाइंदा। लोआं पुरीआं रिहा नच्च, नटूआ नाच आप कराइंदा। हरिजन मार्ग आपणा दस्स, साचे पौड़े आप चढ़ाइंदा। अग्गे बैठे पुरख समरथ, आउणा जाणा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। जागणहारा जागया, गुरसिख लए जगाए। दूर दुराडा फिरे भागया, दिवस रैण सेव कमाए। गुरसिखां सरन सरनाई आपे लागया, सरनगति इक्क जणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए उठाए। हरिजन सच्चा उठया, कलिजुग अन्तिम वार। सतिगुर पूरा तुठया, पारब्रह्म करतार। अमृत देवे साचा घुटया, निझर बरखे धार। गुरसिख कदे ना जाए लुट्टया, राए धर्म ना मारे मार। गुरमुख लक्ख चुरासी विचों आपे फुटया, कँवल कँवला पाड़। उज्जल होया मुख्या, प्रभ दरसन पाया धुर दरबार। जन्म जन्म दा संसा मुकया, नाता तुट्टा जगत संसार। दरस दिखाए जो बैठा लुकया, जिस लभ्भदे रहे गुर अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए भाल। भालणहारा आ गया, बेमुख बेपरवाह। आपणा रूप आप उल्टा गया, कलिजुग रूप उल्टा। आपणा माणस जन्म गुरसिखां लेखे ला गया, आपणी धूढ़ी ख़ाक उडा। आपणी जोती जोत जगा ल्या, जोती नूर कर रुशना। नूरो नूर वेस वटा ल्या, वेस अवल्ला इक्क ख़ुदा। ख़ालक दिस किसे ना आ रिहा, ख़लक्त रोवे मारे धाह। गुरसिखां इक्क पनाह वखा रिहा, चरन कँवल कँवल चरन मंगण सच दुआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां उत्तों होया आप फ़िदा। हो फ़िदा फ़ितरत गंवाई, आपणा फ़ैल ना कोए जणाईआ। घट घट अन्तर आपणी सदा लगाई, काया हुजरे इक्क बांग सुणाईआ। सच महिराबे डेरा लाई, आपणा मसल्ला रिहा वछाईआ। गुरसिख तेरा प्रेम वुजू लए करा, तेरे अग्गे आपणा सजदा सीस झुकाईआ। आपणी कन्नी आपे हथ्थ रिहा लगा, तेरा विछोड़ा फेर कदे ना पाईआ। बिस्मिल हो हो रिहा समा, बिस्मिल आपणा आप कराईआ।

इल लिला इलाही नूर आप प्रगटा, आलमीन कायनात वेखे सच्चा शहिनशाहीआ। कलमा नबी रसूल आप अख्वा, अमाम अमामां करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा सच दमामा, आपणी हथ्थीं आप वजाईआ। सच दमामां वज्जी नौबत, निरगुण आप वजाईआ। गुरसिखां मिलण आया सुण के सोहबत, विष्न ब्रह्मा शिव रहे जस गाईआ। सुणे बोल बोलत अनबोलत, अनबोलया समझ विच किसे ना आईआ। जगत विद्यार्थी जगत वजायण ढोलक, ढोर चम्म प्यार कमाईआ। रविदास चम्यार गुरसिखां दस्से काया अंदर गोलक, हरि नाम ख़ज़ाना बैठा दस्से विच छुपाईआ। आए दुआर देवे वस्त अमोलक, मुल्ल कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नू भगवान, भगवान भगवान भगतां सेव कमाईआ।

★ २० फग्गण २०१७ बिक्रमी वरखा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर ★

महाकाल आपणा नाउँ जणाया, सो पुरख निरँजण आप उपाइंदा। महाकाल आपणा हुक्म मनाया, हुक्मे अंदर खेल खिलाइंदा। महाकाल आपणी तेज़ धार चलाया, आर पार आप फिराइंदा। महाकाल आपणा हुलार इक्क कराया, दो जहानां आप फिराइंदा। महाकाल रूप निरँकार वटाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराइंदा। महाकाल हरि की धार, हरि हरि आप चलाईआ। महाकाल रहे आदि जुगादि जुग जुग पावे सार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। महाकाल होए सहार, दीनन रच्छया आप कराईआ। महाकाल वण्डे भार, देवे वण्ड सृष्ट सबाईआ। महाकाल मीत मुरार, हरिजन साचे ल्ए मिलाईआ। महाकाल सब तों बाहर, फंदन विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बल आप जणाईआ। महाकाल हरि का बल, ना कोई रोके रोक रुकाइंदा। महाकाल वसे धाम अटल, अटल पदवी इक्क जणाइंदा। महाकाल अछल अछल, वल छल छलधारी भेव ना आइंदा। महाकाल त्रैभवन देवे दल, एका वार खेल खिलाइंदा। महाकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। महाकाल सूरबीर बलवाना, साहिब सतिगुर आप जणाईआ। महाकाल नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। महाकाल आदि जुगादि मंगे मंग धुर फ़रमाना, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। महाकाल दर दरवेश दर दरबाना, अलख अलखना अलख जगाईआ। महाकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग निभाईआ। महाकाल हरि हरि का रंग, हरि हरि साचा आप बणाइंदा। महाकाल ब्रह्मण्ड वजाए मृदंग, डौरू डंका इक्क वखाइंदा। महाकाल सूरा सरबंग,

भय सीस ना कोई जणाइंदा। महाकाल लेखा जाणे अन्धेरा अन्ध, अन्ध अन्धेर उपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाकाल आप प्रगटाइंदा। महाकाल हरि प्रगटाए, हरि पुरख वडी वड्याईआ। आपणी इच्छया आप विच टिकाए, साची सिख्या आप समझाईआ। आपणा लेखा लिख्या अग्गे धराए, साची पट्टी आप पढ़ाईआ। हुक्मी हुक्म रिहा जणाए, हरि हाकम वड्डा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आप खिलाईआ। खेल अवल्ला इक्क इकल्ला, पुरख पुरखोतम आप कराइंदा। जोती धार शब्दी भल्ला, महाकाल हथ्थ फड़ाइंदा। नौं नौं पाए तर्थल्ला, चार चार मुख भवाइंदा। लेखा जाणे घड़ी घड़ी पल पला, वार थित ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाकाल दीन दयाल आप वसाए आपणी धर्मसाल, धुर दरबारे आप बहाइंदा। धुर दरबार सुहञ्जणा, सोभावन्त हरि करतार। करे खेल आदि निरँजणा, आदि जुगादी साची कार। लेखा जाणे दीनां नाथ दर्द दुःख भय भञ्जणा, देव दानव आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेव खुल्हाए महाकाल। महाकाल हरि भेव खुल्हाइंदा, बेअन्त बेपरवाह। आपणा रूप आप धराइंदा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रिहा जणा। नव नौं चार भेव कोई ना पाइंदा, सभ बैठे सीस झुका। गोबिन्द महाकाल ओट रखाइंदा, होए सहाई दो जहां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाकाल आपणा नाउँ लए प्रगटा।

३०६

★ २० फग्गण २०१७ बिक्रमी विरसा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर ★

महाकाल रूप हरि ख़ाल्क, ख़लकत आपणी वेख वखाईआ। महाकाल आदि जुगादि सलामत, जम्मण मरण विच ना आईआ। महाकाल करे सच अदालत, साचे तख्त सच्चा शहिनशाहीआ। महाकाल ज़ामन ना देवे वकालत, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। महाकाल आपे बणे आपणा सालस, साची सालसी आप कराईआ। महाकाल निरवैर निरगुण एका रूप वखाए ख़ालस, दूसर अवर ना कोए मिलाईआ। कलिजुग मेटे झूठी नालश, कूड़ी क्रिया आप खपाईआ। आपणे वक्त ना करे कदे आलस, निन्दरा विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना वेख वखाईआ। महाकाल साची धार, पारब्रह्म आप धराइंदा। महाकाल सच सिक्दार, तख्त निवासी डेरा लाइंदा। महाकाल सीस रक्ख दस्तार, सभ दे सीस कटाइंदा। महाकाल मारे मार, साचा खण्डा हथ्थ चमकाइंदा। महाकाल इक्क अखाड़, नव नौं अखाड़ा आप लगाइंदा। महाकाल उठाए अगम्मी धाड़, जुग जुग लेखा पूर कराइंदा। महाकाल होए उज्यार, जोती जल्वा नूर जगाइंदा।

महाकाल आपणा सभ तों पहला करे वार, दूसर हथ्थ ना कोई उठाइंदा। महाकाल करे कल ख्वार, ख़लक ख़ालक आप रुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। महाकाल शाह अस्वारा, अश्व आपणा आप दौड़ाईआ। महाकाल बण हल्कारा, निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। महाकाल वेखे सर्ब संसारा, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। महाकाल गुरमुख फिरे दुआर दुआरा, अन्तर आत्म करे जणाईआ। महाकाल एका बोले सति जैकारा, सो पुरख निरँजण आपे गाईआ। महाकाल हँ ब्रह्म करे पसारा, आपणी अंस आपणा बंस वखाईआ। महाकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। महाकाल सूरा सरबंग, हरि वड्डा वड अख्वाइंदा। महाकाल बण मलंग, नव नौं आपणा फेरा पाइंदा। महाकाल सृष्ट सबाई करे भंग, जो घड़या भन्न वखाइंदा। महाकाल मचाए अन्धेर अन्ध, सूरज चन्द नूर नूर विच छुपाइंदा। महाकाल लेखा जाणे जल बिम्ब, जल जल आपणे मुख पाइंदा। महाकाल लेखा जाणे धरत धवल वड मृगिंद, सूरबीर आपणा बल वखाइंदा। महाकाल गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, गोबिन्द एका ओट रखाइंदा। महाकाल आदि जुगादि सदा बख्शिंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, मेल मिलावा इक्क समझाइंदा। महाकाल शब्द ललकारा, दो जहानां आप लगाईआ। त्रै त्रै लेखा जाणे एका वारा, अगम्मी धुन सहिज सुखदाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन पुकारा, गल विच पल्लू एका पाईआ। तेरा भउ भय ना झल्ले कोई विच संसारा, निरभउ तेरी वड वड्याईआ। तेरी मूर्त सूरत मेल न्यारा, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। अजूनी रहत तेरा धाम न्यारा, लोकमात दिस किसे ना आईआ। पारब्रह्म तेरा रूप अगम्म अपारा, शाह अस्वारा आप दौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल सच्चा शहिनशाहीआ। महाकाल साचा घोड़ा, इक्क इकल्ला आप दौड़ाइंदा। उठ उठ भज्जे वक्त रहि गया थोड़ा, आपणा पन्ध आप मुकाइंदा। कलिजुग हारे बाज़ी जिउँ सार पाश मोहरा, शिकस्त ना कोए वखाइंदा। महाकाल आपणे हथ्थ उठाए एका डोरा, चौदां लोक एका वार बन्न् वखाइंदा। महाकाल करे वास अन्धघोरा, जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँघी कंदर, टिल्ले पर्बत समुंद सागर फोल फुलाइंदा। लक्ख चुरासी तेरे नाल वरते अन्तिम हो के कोरा, प्यार दुलार ना कोए वखाइंदा। गुरमुखां घर घर आपे बौहड़ा, आपणा घोड़ा आप दौड़ाइंदा। सस्से उप्पर लाया होड़ा, निरगुण खण्डा इक्क वखाइंदा। हरि का रूप गहर गवरा, टिप्पी बिन्दी आप समझाइंदा। माणस जन्म हरिजन विरले संवरा, जिस जन सरवर गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराइंदा। महाकाल हरि वेस अवल्ला, अक्खर अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। लेखा जाणे नूरी अल्ला, अल्ला अलाह

रूप वटाईआ। हथ्थ रखाए मतिहरा भल्ला, मलंग सूरा सरबंग खुलड़े केस फिरे वाहो दाहीआ। आपणा चोला आपे रंगा, नील बस्त्र बन बनवारी एका अल्फ़ी गल वखाईआ। चारों कुण्ट होका देवे वारो वारी, आपणी सदा ख़ुदा आप सुणाईआ। लाशरीक बेऐब परवरदिगारी, करे खेल बेपरवाहीआ। आप निभावण आया आपणी लग्गी यारी, यारी यार नाल हंढाईआ। चौदां सदीआं अल्ला राणी रही कुँवारी, साचा खौंत ना कोए वखाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी करे खेल अगम्म अपारी, रूप अनूप आप धराईआ। महाकाल बण बलकारी, आपणा खेल करे सच्चा शहिनशाहीआ। आपणा तन आपणे बस्त्र आपे रिहा शंगारी, आपे वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। अल्ला राणी कुँवारी कन्या, चौदां तबक नैण उठाईआ। चौदां लोक वेखे छप्पर छन्नया, साचा हाणी नज़र कोई ना आईआ। कलिजुग अन्तिम महाकाल एका मन्नया, आपणी दया आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। अल्ला राणी गल पल्लू पा, नेत्र नैणां नीर वहाइंदी। कवण पति रक्खे मेरी मेहरबां, एका सजदा सीस झुकाइंदी। तुध बिन कवण करे सच न्याँ, तेरा राह सद तकाइंदी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लाल मैहन्दी हथ्थां नाल रंगाइंदी। लाल मैहन्दी रंग चढ़ाया इक्क गुलाल, साचा सगन मनाईआ। पुरख अबिनाशी हो दयाल, किरपा कर सच्चे साँईंआ। मेरा जोबन नौजवान, लोकमात सके ना कोई हंढाईआ। चौदां सदीआं रही भाल, मिल्या यार ना साचा माहीआ। बेआब होई बेहाल, बेआब रही कुरलाईआ। ना कोई भुल ना सवाब, गुण अवगुण ना कोए जणाईआ। ना कोई माई ना कोई बाप, ना कोई देवे जगत सालाहीआ। इक्क सुणया वडा तेरा प्रताप, दर आयां भिच्छया पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। महाकाल हरि कर त्यार, साचा हुक्म जणाइंदा। छैल छबीला पावे सार, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। अल्ला राणी वरे नार मुटयार, जगत रंडेपा आप कटाइंदा। चार यार बणाए नाल कहार, मुहम्मद पल्लू पल्लू नाल फड़ाइंदा। हथ्थीं मैहन्दी वेखे आप निरँकार, लालन लाल फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाकाल खेल खिलाइंदा। महाकाल नर एका वर नारी सुघड़ सुवाणी इक्क बणाईआ। आबहयात प्याए ठंडा पाणी, जगत तृष्न प्यास बुझाईआ। मुख नकाब उठाए दरस दिखाए हाणीआं हाणी, नेत्र नैण नाल मिलाईआ। फिर कलमा अमाम सुणाए धुर दी बाणी, आयत शरायत इक्क पढ़ाईआ। होए निकाह दो जहानी, विछड़ कदे ना जाईआ। देवे पनाह हरि लासानी, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पिछले बख्शे सर्ब गुनाह चार यारी मुख शरमानी, चौधवीं चन्न ना कोए वड्याईआ। चौदां सदीआं जिस दी सुणदी आई कहाणी,

तीस बतीसा रसना जिहवा गाईआ। अन्तिम मिले शाह सुल्तानी, महाकाल रूप वटाईआ। अल्ला बणाए अल्ला हू राणी, हू हू हक हक एका नाअरा लाईआ। दिलदार बणे सच्चा दिलजानी, दिलबर आपणा भेव खुल्हाईआ। ईद बकरीद जो मंगदी रही कुरबानी, करबला कुरबला आपणे हथ्थ रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमामां सिर अमाम दो जहाना करे आपणा काम, दोज़ख बहश्त पीर पैग़बर इष्ट आपणा रूप जणाईआ। गुरसिखां वड्याई कलि अन्त विच सृष्ट, जिस जन दीर्घ रोग मिटाए, शीर्घ आपणा दरस दिखाईआ।

★ २० फग्गण २०१७ बिक्रमी गंडा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर ★

अल्ला राणी राह तकाए, कवण वेला घर मीआं आए। आपणी बीवी लए प्रनाए, जगत सदीवी पन्ध मुकाए। नैणां खीवी राह तकाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा पर्दा आप उठाए। अल्ला राणी चढ़या चाअ, हस्स हस्स ख़ुशी मनाइंदी। राह तके बेपरवाह, नेत्र नैण उठाइंदा। सख़ीआं घर घर रही सुणा, सच सनेहुड़ा आप पुचाइंदी। गीत सुहागी लैणा गा, अक्खर इक्क पढ़ाइंदी। मेरा होणा अन्त निकाह, साबत सूरत इक्क वखाइंदी। परवरदिगार साह लए सुधा, होर विचोला ना कोए बणाइंदी। साचा मेला दए मला, एका घर वड्यांअदी। आपणी हथ्थीं पकड़े बांह, एका सुखन सुणाइंदी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी ओट इक्क तकाइंदी। अल्ला राणी करे पुकार, साची सख़ीआं आख सुणाईआ। आओ सईओ गुंदो हार, कली कली तोड़ लिआईआ। घर आउणा पीआ प्रीतम कर प्यार, प्रेम वछाउणा रही वछाईआ। सेवा करे अपर अपार, आपणी सेवा आप समझाईआ। हउँ घोली हउँ घोली चरन कँवल जावां बलिहार, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। मीआं दरस देवे धुर दरबार, मैं निमाणी होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तेरी ओट रखाईआ। आओ सईओ दयो सलाह, रल मिल मंगल गाईए। मेरा मीआं घर जाए आ, कवण वेस कवण रूप कवण रंग रंग चढ़ाईए। कवण घर सुहेला सुहञ्जणा दए सुहा, कवण माटी पोच पुचाईए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंगां तेरी दुआं, तेरे अग्गे सीस झुकाईए। अल्ला राणी उठ उठ वेखे चारों कुण्ट नैण उठाईआ। कवण वेखे मेरे लेखे, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कवण रूप धारे भेसे, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। कवण संवार आए नर नरेशे, कवण अश्व लए दौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंगे सच्चा वर, तेरे चरन सच्ची सरनाईआ। मेरा माही साचा आउणा, उठ उठ राह तकाइंदी। सख़ीआं मिल

३१२

मिल मंगल गाउणा, सोहँ ढोला इक्क सुणाइंदी। आपणी हथ्थीं नेत्र कज्जल पाउणा, धार दो धार आप बणाइंदी। नीवीं हो हो आपे बहणा, चरनां हेठ आपणा सीस रखाइंदी। हउँ सेवक मन्नां तेरा कहिणा, भुल कदे ना जाइंदी। औखा होया विछोड़ा सहिणा, चौदां लोक आप कुरलाइंदी। तेरा प्रेम मेरा गहिणा, तेरा नेम मेरा अंग अंगीकार इक्क वखाइंदी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन अवर ना कोए मनाइंदी। अल्ला राणी नेत्र उठा, साची सख़ीआं नाल रलाईआ। परवरदिगार आउणा बेपरवाह, बेऐब नाम ख़ुदाईआ। मेरा पर्दा दए उठा, आपणा पर्दा आपे लाहीआ। साचे पीढ़े रंगले लए बहा, बाढी आपे घाड़त लए घड़ाईआ। बणे तरखान सच्चा शहिनशाह, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। महाकाल दए सलाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल एका थाँईंआ। महाकाल करे विचार, आपणी कल आपे धारया। कवण खेल करां विच संसार, चौदां लोक होए उज्यारया। कवण रूप वरां नार, नारी आपणा अंग बणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मता आप पका ल्या। साचा मता आप पकाइंदा, हरि हरि पुरख अकाल। महाकाल आप अख्वाइंदा, दीनां बंधप दीन दयाल। कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा, जोती जामा हो निहाल। आपणे सीस ताज टिकाइंदा, शाह पातशाह खेले खेल कंगाल। आपणा लेखा पहलों आप लिखाइंदा, जोती

३१३

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए बेमिसाल। बेमिसाल प्रभ होया, लेखा लिखण विच ना आईआ। आपणे जेहा अवर ना वेखे कोआ, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। आपणी जाणे आपे सोआ, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग अन्तिम लै के आए ढोआ, वस्त अमोलक हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेश इक्क सुणाईआ। सच संदेश सुणाइंदा, अकल कल हरी हरि धार। सम्मत सतारां वेख वखाइंदा, बीस बीसा कर प्यार। अल्ला राणी आप उठाइंदा, सोई रहे ना विच संसार। ग़फ्लत सभ दी आप गंवाइंदा, उल्फ़त आपणी दस्स निरँकार। आपणा खेल आप कराइंदा, ख़ालक ख़लक रूप निराकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा देवे एका वार। सच सनेहुड़ा देवणा, किरपा निध गुण निधान। चौदां तबक एका नाउँ सेवणा, एका शब्द इक्क जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपारा खेल महाकाला, भगवन आपणा खेल खिलाईआ। आपे वेखणहारा आपणी धर्मसाला, आपणे मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रूप आप धराईआ। आपणा रूप आपे धर धर, हरि साचा खेल खिलाइंदा। आपणी करनी आपे कर कर, करता पुरख आप वेख वखाइंदा। आपणे पौड़े आपे चढ़ चढ़, आपणा बंक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

३१४

आपणी जोत धर, वार थित थित वार आपणे हथ्थ रखाइंदा। वार थित सतारां हाढ़, परवरदिगार आप जणाइंदा। हरि जू बणे साचा लाड़, सीस जगदीस सेहरा इक्क लगाइंदा। करे खेल अपर अपार, लोक परलोक वेख वखाइंदा। टप्पदा जाए जंगल जूह उजाड़ पहाड, समुंद सागर पार कराइंदा। अल्ला राणी करे प्यार, आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच संदेश इक्क सुणाइंदा। सच संदेश हरि सुणाया, शब्दी शब्द गुफ्तार। आपणा हुक्म आप जणाया, आपे होए देवणहार। तेरा मन्दिर दए सुहाया, दिन थोड़े रहि गए चार। दर घर आए लए प्रनाया, छैल छबीला एकँकार। तेरी रांगली मैहन्दी वेखे अपर अपार। अंदर बाहर खोज खुजाया, तेरे नैण तरकश वेखे तेज कटार। दो जहानां तीर चलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सगन लए मनाया। अल्ला राणी सुण संदेश, पहली चेत्र ख़ुशी मनावनी। साचे साहिब करया वेस, मस्तक आए धूढ़ी लावनी। तेरा मेला रहे हमेश, एका मंगां तेरी ज़ामनी। बिरहों वैरागन खुल्हड़े केस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी पूरी करनी भावनी। खुल्हड़े केस नेत्र नीर, नैणां छहबर लाईआ। चुप्प करायन छोटे वीर, ईसा मूसा संग रलाईआ। मुहम्मद बन्न्हे ना कोई धीर, अहिमद होए ना कोई सहाईआ। नाता तुट्टा दस्तगीर, दस्त बरदार होया आप ख़ुदाईआ। जगत विछोड़े पाड़े चीर, लीर लीर आप लमकाईआ। एका मिले सच्चा पीर, बेनज़ीर जिस दी शहिनशाहीआ। मेरी बदले आण तकदीर, तदबीर आपणी लए बणाईआ। मेरी आपणी हथ्थीं लिखे फेर तकसीर, आपणी तसबी मेरे गल पाईआ। आपणी चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, राह विच ना कोई अटकाईआ। मेरा तुट्टे जगत ज़ंजीर, तोड़नहारा इक्क अख्वाईआ। जिस नूं गौंदे मनौंदे रहे पीर फ़कीर, सो मेरा सच्चा माहीआ। कवण वेला आए घत वहीर, मैं बैठी राह तकाईआ। मेरी बदल ना जाए दलील, छैल छबील एका वसे सच्चा शहिनशाहीआ। अन्तिम करां तेरे अग्गे अपील, मेरी देवे ना कोई ग्वाहीआ। बिन तेरे दिसे ना कोई वकील, जो बरी साफ़ दए कराईआ। तूं बनवारी बस्त्र पहन नील, गोबिन्द मत्त गया समझाईआ। तूं ख़ालक वेख ख़लील, ख़ालक तेरा रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वार आउणा घर, मैं निमाणी बिरहों कुट्ठी बैठी राह तकाईआ। राह तक्कां तेरा माहीआ, दिवस रैण प्रभात। घर आ मैंडे साँईआं, दे आपणा दरस सुगात। मेरी चौदां सदीआं दी धो शाहीआ, आपणी हथ्थीं फड़ कलम दवात। मैं तेरे मगर दयाँ दुहाईआ, तूं बैठा रहिउँ इक्क इकांत। मैं गलीआं हूंझ हूंझ साफ़ कराईआ, अन्तिम देणी आ नजात। मैं तेरे अग्गे औंसीआं पाईआं, मेरा छुट्ट ना जाए तेरा साथ। मैं गल तेरे विच बाहींआं अड़ाईआ, मैनू लगाउणा आपणे घाट। मैं तेरे चरनां दयाँ दुहाईआ, तेरा दिसे साचा हाट। इक्को

वस्त मंगण आईआ, साचा लाहा लवां खाट। अन्त तेरी तेरे रंग समाईआ, दूसर अवर ना कोई चाट। तेरा पलँघ रंगीला मेरी सेज सुहाईआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैं निमाणी तक्कां तेरी वाट। वाट तकेंदड़ी थक्की नढ्ढी, बाली बुध अञ्याण। कवण औगुण मैं निमाणी छड्डी, मेरा सुक्कया दीन इमान। कवण विछोड़ा घरों कढ्ढी, बिरहों मारया निराला बाण। लभ्भणी फिरदी रही चौदां सदी, तेरा मिल्या ना सच निशान। फिरदी रही तेरे हुक्म बद्धी, तूं है अभुल मेहरवान। मैं करूं गुज़ारा तेरे घर खा खा अद्धी, तेरा मनदी रहूं फ़रमान। मैं होई दुहागण बुढ्ढी, कबुध डूंमणी फिरां विच सुंञ मसाण। अन्तिम वास्ता तेरे चरनां दा आपणे घर आपे सद्दीं, तेरे ओतों होवां कुरबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवीं धुर फ़रमान। धुर फरमान सुणाइंदा, पुरख अकाल अगम्म। सोई सुवाणी आप उठाइंदा, इक्क जणाए साचा कम्म। चौदां तबकां तेरी सेवा लाइंदा, किसे कलबूत अंदर रहिण ना देणा दम। पुरख अबिनाशी फेर मेल मिलाइंदा, तेरा बेड़ा देवे बन्नृ। आपणे घोड़े आप चढ़ाइंदा, लेखा मुकाए चौदवीं चन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, इक्क संदेस सुणाए कन्न। सुनणा कन्न कर ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। पीर फ़कीरां देणा इक्क ज्ञान, शाह पातशाह आप सुणाइंदा। सो पुरख निरँजण नौजवान, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। हँ ब्रह्म इक्क निशान, लोकमात वेख वखाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, दोहां विचोला आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि का भेव कोई ना पाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, नारी कन्त सर्ब प्रनाइंदा।

सखीओ मेरा दूल्हा आउणा, इक्क इकल्ला परवरदिगार। मैं दुलहण बण बण मुख शरमौणा, नेत्र नैण ना सकां उठाल। जिस ने मेरा पर्दा लाउहणा, मेरी वेखे सच नुहार। आपणा दरस आप वखाउणा, नूरी जल्वा निराकार। मैं निमाणी गल लगाउणा, बख्शे सच प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। खेल अपारा करने आए, कादर करता बेपरवाह। मेरा भउ निर्भय डरना लाहे, एका देवे सच सलाह। आपणा घर दए वखाए, घर सच्चा एका थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए मेहरवां। मेहरबान मेरी सलाम अलैकम, सलाम करे प्रनाम। मेरा तेरा एका दाम, दामनगीर दो जहां। मेरा तेरा एका काम, कामनी कामन हिरस गई मिटा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा थाँ। साचा थान मंगे मारे बोली, रुस्स रुस्स आपणी करवट बदलाईआ।

मैं अंञाणी भोली भाली, तेरी समझ मेरी समझ विच ना आईआ। तेरी वेखी रतड़ी डोली, तेरे कहार रहे उठाईआ। मेरा भार रहे तोली, कंधे नाल कंधा मिलाईआ। मेरे नाल मेरी इच्छया बणे गोली, दोए जोड़ वास्ता रही पाईआ। जे पिच्छे रहि गई खेडूं होली, घर घर विच करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे दर देणी वड्याईआ। तेरी इच्छया जावे छड्ड, तेरे नाल रहिण ना पाया। तेरे अंदरों देवे कढ्ढ, करे आप सफ़ाया। आपणी विचों लए आपे रक्ख, करे खेल आप ख़ुदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी नथ्थ सुहाग दए घड़ाया। नथ्थ सुहाग तेरी घाड़न घड़त, सति पुरख निरँजण आप घड़ाईआ। आपणे ताज जड़े जड़त, तेरी इच्छया पूर कराईआ। तेरा नेत्र सोहँ अक्खर एका पढ़त, सोलां शृंगार दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी नथ्थ दए समझाईआ। तेरी नथ्थ शब्द डोर, हरि साचा आप घड़ाइंदा। कलिजुग अन्तिम पकड़े ठग्ग चोर, एका बन्धन पाइंदा। चार यारी तेरे अग्गे देवे तोर, तेरी हथ्थीं आप मिटाइंदा। वेखणहारा अन्धघोर, सूरत शब्दी आप बणाइंदा। आपे जाणे आपणा ज़ोर, जोरु ज़र आप प्रनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप समझाइंदा। तेरी नथ्थ बलाक, हरि हरि आप समझाईआ। तेरी उडदी वेखे ख़ाक, चौदां लोक पए दुहाईआ । शाह नवाब अश्व घोड़े चढ़या राक, दस्तगीर सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह मारे पहलो इक्क पलाक, सीस आपणे ताज टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भाणा आप समझाईआ। तेरी नथ्थ वेखे मोती, मनक मनका वेख वखाइंदा। सदी चौदवीं कढ्ढे वासना खोटी, वास्तक आपणा रूप जणाइंदा। पीर पैगम्बर फड़ फड़ लाहे, जो चढ़ चढ़ बैठे चोटी, आपणे चरना हेठ दबाइंदा। सभदा भन्ने हुक्का लोटी, हुक्म हाकम आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे आप समाइंदा। तेरे नक्क नथ्थ पाए सुहाग, सोभावन्त वडी वड्याईआ। पहलों धोवे तेरा दाग़, आपणी हथ्थीं साफ़ कराईआ। फेर उपजाए इक्क वैराग, वैरागण हो हो दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरा कन्त दए समझाईआ। तेरा कन्त इक्क ख़ुदावंद, ख़ुदी ख़ुद आप मिटाइंदा। तेरा रूप वेखे नूर नूराना चन्द, सीतल सीतल धार वहाइंदा। तेरे दुआर आए मुकाए पन्ध, पान्धी आपणा पन्ध ना कोए रखाइंदा। तेरा ख़ुशी करे बन्द बन्द, आप आपणे अंग लगाइंदा। इक्क जणाए साचा परमानंद, प्रम पुरख खेल खिलाइंदा। निउँ निउँ सुनण साचा छन्द, सोहँ शब्द आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। अल्ला राणी पाए वास्ता, वास्तक तेरी इक्क सरनाईआ। क्यों चले आहिस्ता आहिस्ता, तेरी रफतार दिस किसे ना आईआ। मैं तक्कां तेरी

आमदा, आमद विच ख़ुशी मनाईआ। तेरी ख़ुशी खेल दो जहान दा, दो जहानां तेरी सच्ची शहिनशाहीआ। आपणा मीआं आपणी बीवी आप पछाणदा, ख़ावंद इक्क वडी वड्याईआ। साचा मन्दिर आप सुहांवदा, पति परमेश्वर साचा माहीआ। आपणी खेल आपे जाणदा, कोई लिखे ना कलम शाहीआ। महाकाल खेल श्री भगवान दा, दयाल आपणा रूप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम गुरमुख गुरसिख आपे भाल दा, निरगुण निरवैर सेव कमाईआ। लेखा जाणे भगत बेहाल दा, बेवा रहिण ना देवे सच्चा माहीआ। आपणा मार्ग इक्क वखाल दा, महाकाल आपणा बल रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे पत डाल दा, फुल पंखड़ीआं आपे फोल फोलाईआ।

जिस घर मेरे माही आउणा, सो घर सोभावन्त। जिस सख़ी मेरा दुःख मिटाउणा, सो साहिब सच्चा भगवन्त। जिस दासी बण के सेव कमाउणा, रसना नाम मणीआ मंत। जिस जम की फ़ाँसी फंद कटाउणा, सो पूरन भगवन्त। जिस आप आपणा मेल मिलाउणा, सो सुणाए सोहँ छंत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त बणाउणी मेरी बणत। जो मेरी बणत बणाइंदा, मैं उस दी दासी दास। जो मेरा संग निभाइंदा, मै उस दे वसां पास। जो निमाणी गल लगाइंदा, पूरी करे आस। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होणा सहाई अन्त विच प्रभास। प्रभास सहेला तेरी ओट, तुध बिन अवर ना कोई जणाईआ। मैं विछड़ी तेरे नाल तेरी जोत, बिन तुध मेरा होर ना कोई सहाईआ। ना मेरा वरन ना मेरी गोत, मैं तेरी तूं मेरा, मैं तेरे चरन सरन रहां सद सरनाईआ। तेरा कलमा तेरी ओट, मैं बैठी आस तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम देणा ज्ञान, बोहध बोहथ हथ्थ किसे ना आईआ। मैं निमाणी भुल्ली, अभुल मेरे सुल्ताना। तुध बाझों मात रुल्ली, मेरे सच्या साहिब कान्हा। तेरे चरन लग फली फुली, बिन तेरे होई अन्त वैराना। भाग लगाउणा मेरी कुल्ली, मैं तेरा राह तकाना। तेरी वस्त इक्क अनमुल्ली, मेरा भरया रहे ख़ज़ाना। मैं भुल्ली तूं कदी ना भुल्लीं, तूं शमअ मैं तेरा परवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मंगे मंग बाल अञ्याणा। तूं दाता गहर गम्भीर, मैं अवगुण भरी निमाणी। तूं बख़्शीं ठंडा सीर, मैं तिहाई मंगां पाणी। तूं कढु बिरहों पीड़, हउँ तेरे चोज वडानी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देणा साचा वर, आत्म अन्तर आपणी सच्ची बाणी। साची बाणी शब्द अपारा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरिजन मेला धुर दरबारा, दर दरवाज़ा आप सुहाइंदा। आदि जुगादी खेल न्यारा, भेव कोई ना पाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा लिख्त विच ना आइंदा।

आपे वसे सभ तों बाहरा, घट घट आपणा रूप धराइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लोकमात खेल खिलाइंदा। भगत वछल बण गिरधारा, भगतन भगती मेल मिलाइंदा। अछल अछल कर संसारा, लक्ख चुरासी जीव भुलाइंदा। राती रुत्ती थिती जाणे आपणी वारा, दिवस रात बरख ना वण्ड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त श्री भगवन्त साचे शहिनशाह दए सहारा, सतिगुर आपणी खेल खिलाइंदा। साचे शहिनशाह सति सहारा, हरि साचा आप धराईआ। एका शब्द इक्क आधारा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। एका वणज इक्क वपारा, एका हट्ट वखाईआ। एका मंग एका मंगणहारा, एका रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरमुख साचे वेख वखाईआ। गुरमुख साचा लाल गुलाला, गुर गुर आप वेख वखाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाला, ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम वखाइंदा। हरिजन साचे हरि हरि बन्ने गाना, साचा सगन आप मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे धन्दे लाइंदा। गुरमुख धन्दे जाए लग्ग, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ कग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। जगत तृष्ना बुझाए अग्ग, अमृत मेघ आप बरसाईआ। करे खेल सूरा सर्बग, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। लेखा जाणे उप्पर शाह रग, अंदर मन्दिर खोज खुजाईआ। लक्ख चुरासी विचों कढ, हीरे लाल माणक मोती निरगुण जोती डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आपणी अक्ख खुलाईआ। गुरमुख खुल्ली अक्ख, हरि नेत्र आप खुलाया। लक्ख चुरासी विचों कीता वक्ख, दरसी आपणा दरस कराया। एका देवे साची वथ, नाम निधाना झोली पाया। सिर रक्ख हथ्थ समरथ, भेद अभेद दए जणाया। काया खेड़ा वखाए भठ, पंज तत्त अन्त रहिण ना पाया। ना कोई चतराई मन बुध मति, मति मती ना कोई समझाया। अन्तिम नाता तुट्टे रती रत, रती रत कम्म किसे ना आया। गुरमुख विरले नाता बन्ने चरन नत, आप आपणा मेल मिलाया। साचा मार्ग आपे दस्स, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम आप जपाया। हरि हरि आपणा नाम जपाइंदा, गुरमुख सज्जण दए अधार। मनमुख मूढ़े दर दुरकाइंदा, एका धक्का देवे मार। गुरसिख आपणी गोद सहाइंदा, गुर पूरा नर अवतार। मनमुखां मुख भवाइंदा, मस्तक टिक्का धूढ़ी छार। आप आपणा वेस वटाइंदा, निहकलंक नरायण नर अवतार। मुछ दाढ़ी ना कोई वखाइंदा, मूंड मुंडाए ना विच संसार। निरगुण जोती जोत जगाइंदा, जोती जाता आप करतार। साचा किला कोट वसाइंदा, कंचन गढ़ कर अपार। उप्पर आपणा आसण लाइंदा, सच सिँघासण खेल अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लाए पार। हरिजन बेड़ा चुक्या कंध, सतिगुर

पूरा भार उठाईआ। जन्म जन्म दा मिटे पन्ध, पान्धी बणया साचा माहीआ। काया कर्म करे खण्ड खण्ड, नाम खण्डा इक्क उठाईआ। नाता तोड़ दुहागण रंड, कन्त सुहाग इक्क वखाईआ। आदि अन्त परमानंद, परम पुरख बूझ बुझाईआ। मिल सज्जण सखीआं गाया सुहागी छन्द, सोहँ शब्द वज्जी वधाईआ। लोक पकलोक रहे मंग, अगे आपणी झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी आपणे अंदर नौ सौ चुरानवे चौकड़ी रक्खया बन्द, कलिजुग अन्तिम बाहर कढ्ढाईआ। जो सुता रहया दे कर कंड, आपणा मुखड़ा दए वखाईआ। मनमुख जीव भागां मंद, जिस रिहा दर दुरकाईआ। गुरसिख गुरमुख गुर गाए शब्द बत्ती दन्द, बन्द बन्द खुशी मनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सद सद बख्शिंद बख्शश बख्शीश आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरसिख तेरी कोए ना करे रीस, विष्न ब्रह्मा शिव तेरा रहे जस गाईआ।

★ २० फग्गण २०१७ बिक्रमी आसा सिँघ प्यारा सिँघ दे गृह बाबू पुरा ★

निधान ठाकर गुण स्वामी, भगवन्त बेपरवाह बेअन्त अख्वाइंदा। निरवैर पुरख अकाल सदा निहकामी, निहकर्मी कर्म कराइंदा। आदि अन्त हरि घट घट अन्तरजामी, अन्तर आपणा भेव खुल्हाइंदा। जुगा जुगन्तर शब्द अगम्मी बोले बाणी, रागी आपणा राग अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। शब्द अगम्मी बोध अगाध, अलख अलखना आपे गाईआ। आपणे अंदरों आपे काढ, आपणी धारा आप प्रगटाईआ। आप वसाए ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपे वेखण आईआ। जुग जुग खेल खिलाइंदा, खेलणहारा एकँकार। आपणी कल आप धराइंदा, निरगुण सरगुण लै अवतार। जुग जुग आपणी वण्ड वंडाइंदा, आपे होए वेखणहार। सतिजुग आपणे रंग रंगाइंदा, रंग रंगीला खेल अपार। बावण आपणा भेख वटाइंदा, आपे मंगे बल दुआर। भगत भगवन्त आप तराइंदा, नर सिँघ खेल करे करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा सच्चखण्ड सचे दरबार। सचखण्ड दुआर सुहाइंदा, महिमा गणत गणी ना जा। रूप अनूप आप वटाइंदा, निरगुण सरगुण नाउँ धरा। सतिजुग अन्तिम पन्ध मुकाइंदा, त्रेता लए रूप वटा। त्रैगुण आपणा खेल खिलाइंदा, त्रै काल दरसी बन्धन पा। रूप अनूप आपणा आप वखाइंदा, पंज तत्त काया चोला लए हंढा। एका दूआ मेल मिलाइंदा, दूआ एका गंढ पवा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सचा शहिनशाह। त्रेता धार हरि करतार, आपणी आप चलाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, सरगुण निरगुण वेस वटाइंदा। साचा मार्ग लाए आप अपार, भेव कोए ना

पाइंदा। एका सुरती वरे एका वार, एका नारी कन्त हंढाइंदा। जनक सपुत्री कर प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलाइंदा। जनक सपुत्री नाता जोड़, रघपति आपणा खेल खिलाईआ। आपे लग्गी देवे तोड़, तोड़णहारा आप हो जाईआ। आपे जगन्नाथ चरन कँवलां दए विछोड़, जगदीसर भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी खेल खिलाईआ। आपे तोड़े आपणा नाता, हरि हरि आपे बन्धन पाइंदा। आपे वेखे खेल तमाशा, आपे नटूआ नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराइंदा। वेस कराया एका दूआ, दूआ एका भेव ना आइंदा। लेखा जाणे त्रिया त्रैआ, तिन्नां लोकां खोज खोजाइंदा। आपणे जेहा आपे होया, आपणा सेवक आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दसरथ सुत आप अख्वाइंदा। आपे दसरथ सुत जगत जग बेटा, आपे खेवट खेटा नाउँ धराईआ। आपे आपणा तन आपणे सिर लपेटा, आपणा पड़दा आपे पाईआ। आपे होए घट घट लेटा, रूप रंग ना कोए जणाईआ। आपे होए अलखणा लेखा, लिख लिख लेखा आपणा पूर कराईआ। आपे मस्तक होए मेखा, गुण आपणे लए वखाईआ। आपे सुत ब्रह्मा करे भेसा, सन्त कुमार करे जणाईआ। आपे रावण दए आदेसा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आपे रावण विद्या दाता, अक्खर अक्खर आप पढ़ाइंदा। आप जणाए आपणी गाथा, आपणा भेव खुल्ह्आइंदा। आपे हो रघपत रघनाथा, जगदीश आप सुहाइंदा। आपे हो कमलापाता, कँवल नैण आप मटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपे रावण कर त्यार, आपणा बल आप धराईआ। आपे देवणहार हँकार, हउमे हंगता नाल रलाईआ। आपे सैनापति करे शंगार, आपे बख्शे साची शाहीआ। आपे रण भूमी सुत्ता पैर पसार, चिल्ला तीर कमान आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणी खेल खिलाईआ। आपे गढ़ हँकारी तोड़दा, तोड़नहारा एका एक। आपे लग्गी प्रीत आपणे नाल जोड़दा, निरगुण निरगुण हरि हरि वेख। आपे मनमुखता शौह दरयाए रोड़्दा, कर कर अवल्ला भेस। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन लिखणहारा लेख। जुग जुग लेख लिखाया, ग़रीब निमाणया पावे सार। त्रेता रूप आप हंढाया, भगवन मात लोक संसार। ग़रीब निमाणे गले लगाया, जगत भीलणी लए उधार। चरन कँवल चरन छुहाया, अमृत बख्शे ठंडा ठार। सती अहल्लया लेख चुकाया, पत्थर पाहन दए आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग वेस करे निरँकार, जुग जुग वेस वटाइंदा, जुगा जुगन्तर साची कार। सतिजुग त्रेता आपणी गोद बहाइंदा,

द्वापर लोक मात करे उज्यार। रूप अनूप आप वटाइंदा, मुकंद मनोहर लखमी नरायण बाल बाला हो त्यार। मोर मुक्ट सीस टिकाइंदा, मधुर नैण मधुर करे सची गुफ्तार। एका बंसरी सच वजाइंदा, आपे होए वजावणहार। साचे मंडल रास रचाइंदा, गोपी कान्हा करे संगार। साची सख़ीआं खेल वखाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण ग्वाला फिरे विच संसार। ग्वाला बणया गोपी काहन, घर घर बंसरी नाम वजाईआ। आत्म देवे इक्क ज्ञान, करे सच पढ़ाईआ। द्रोपद सुत लज रक्खे आण, द्रोपद लजया आप रखाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माण, बिदर सुदामा कोल बहाईआ। अर्जण बख्शे इक्क ध्यान, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। अठारां अध्याए गीता वखाण, इक्क इक्क नाल करे पढ़ाईआ। रथ रथवाही बणया विच जहान, साची सेवा आप कमाईआ। द्वापर मेट अन्त निशान, यादव बंस गया खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा भेव चुकाईआ। जुग जुग भेव जणावनहारा, एका रंग समाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, इलाही नूर आप प्रगटाइंदा। एका अल्फ़ी तन शंगारा, हथ्थ मुसल्ला आप रखाइंदा। गल तसबी पाए एका माला, मणका मणका नाल मिलाइंदा। एका सिफ़रा आठा कर प्यारा, एका तन्द बंधाइंदा। अठ्ठां तत्तां तत्त विचारा, सिफ़रा बल ना कोए रखाइंदा। इक्क इकल्ला परवरदिगारा, आपणी अल्फ़ आप प्रगटाइंदा। एका अल्फ़ दए सहारा, नुकता होर ना कोए लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा भेव खुल्ाइंदा। कलिजुग भेव अवल्लड़ा, हरि साचा सच कराए। करे खेल अगम्म अगम्मड़ा, अगम्मड़ा रूप वटाए। निरगुण सरगुण फड़ाए पलड़ा, साचा पल्लू इक्क फड़ाए। सच संदेश एका घलड़ा, साचा कलमा आप सुणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहे। साचा कलमा हरि कलाम, आपणी आप जणाईआ। आप बणाए जगत अमाम, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ईसा मूसा भेजे आप गुलाम, साची सेवा इक्क समझाईआ। आपणे हथ्थ रक्खे लगाम, चारों कुण्ट आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। ईसा मूसा खेल खिलाया, करे खेल अलाही नूर। मुकामे हक नाअरा लाया, इक्क वजाई साची तूर। वेला वक्त रिहा समझाया, वसणहारा नेड़े दूर। साचा हुजरा आप सुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे जल्वा कोहतूर। कोहतूर भेव ना आइंदा, नूर नूराना नूर ख़ुदा। मूसा ढह ढह सीस झुकाइंदा, तूं दाता बेपरवाह। तेरा अन्त कोई ना पाइंदा, तूं सिफ्ती सिफ्त सलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दए सुणा। साचा हुक्म हरि सुणाया, मूसा ऐली आप उठा। हुण दा सुणया भुल ना जाया, अभुल रिहा बता। लोकमात तेरी कुल वधाया, कुलवन्त बणे ख़ुदा। ख़ालक ख़लक रूप

वटाया, करे खेल शहिनशाह। आपणी अज़मत तेरे अंग लगाया, तेरी ग़फ्लत दए गवा। आपणा नाउँ कलमा रिहा पढ़ाया, सच हदीस इक्क सुणा। लाशरीक इक्क ख़ुदाया, सद मंगदा रहा पनाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे साचा वर, धुर फ़रमाना आप जणा। एका मंग मंगनी अन्त, हरि साचा सच जणाइंदा। कोहतूर बणाई जिस तेरी बणत, माटी पाथर वेख वखाइंदा। मेरा रूप जीव जंत, ईश जीव भरम चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे साचा वर, अन्त कन्त आप समझाइंदा। वेला अन्त अन्तिम आउणा, हरि साचा सच समझाईआ। तेरा नूर आपणे विच टिकाउणा, नूर नूर विच समाईआ। तेरी आसा मनसा पूर कराउणा, पंज तत्त चोला वेख वखाईआ। बिस्मिल होए खेल खिलाउणा, खेलणहारा इक्क ख़ुदाईआ। नेत्र नैण इक्क उठाउणा, तेरी मेटे जगत जुदाईआ। अन्तिम कल पन्ध मुकाउणा, लोकमात ना रहे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका गुण आप समझाईआ। सुणया हरि सच ज्ञाना, मूसा सीस झुकाइंदा। मेरी रबाब सतार तेरा तराना, तेरा नाउँ बोला गाइंदा। आपणा आपे देवे आप ब्याना, आपणी वस्त आपणे अग्गे आप टिकाइंदा। कवण रूप पहरया बाणा, कवण वेला वक्त सुहाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवाना, आपणा भेव जणाइंदा। अमाम अमामा सिर शाह सुल्ताना, आपणा रूप आप धराइंदा। मौली तन्द बन्ने गाना, साचा सगन मनाइंदा। हथ्थी मैहन्दी इक्क निशाना, लाल रंग इक्क चढ़ाइंदा। अमाम मैहन्दी नौजवाना, आपणा रूप आप वखाइंदा। सृष्ट सबाई वेखे जगत ईमाना, इबनउलवक्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पिसर पिदर दिस किसे ना आइंदा। पिसर पिदर ना दिसे बरादर, बेअफ़तम आपणी खेल खिलाईआ। प्रगट होवे कुदरत विच कादर, कादर कुदरत खेल खिलाईआ। एका अक्खर गाए आपणा कादर, हज़ारा दरूद करे पढ़ाईआ। बसरी इस्म गाए माजरा, अञ्जील कुरान भेव ना आईआ। आपे होए सिदक सबूरी सादरा, साबत इक्क ईमान वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत शैतान दए मिटाईआ। जगत शैताना होए अबलीस, हदीस आप पढ़ाइंदा। पुरख अबिनाशी करे खेल तीस बतीस, गुणवन्ता गुण समझाइंदा। अन्तिम कल सभ दे ख़ाली करे ख़ीस, वस्त हथ्थ ना कोए रखाइंदा। एका सिफ़रा आठा जाए बीत, एका नाया मेल मिलाइंदा। इक्क नौं खेल जगदीस, नौं इक्क पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म सुणाइंदा। इक्क अगे दूआ धर, एका इक्क खपाईआ। नाए अग्गे सिफ़रा बणाए आपणा घर, दूआ सिफ़रा मेल मिलाईआ। दूआ सिफ़रा इक्क दूजे दा दामन फड़, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सिफ़रा रूप निरगुण कर, दिस किसे ना आईआ। दो जहानां वेखे खड़, परवरदिगार बेपरवाहीआ।

अठ्ठ तत्त जायण झड़, फल कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एक बीस दए वड्याईआ। बीस बीस कर प्यारा, हरि साची खेल खिलाइंदा। प्रगट होए विच संसारा, नूरो नूर डगमगाइंदा। इक्क सति बोल जैकारा, शब्द संदेश आप सुणाइंदा। इक्क अठ्ठ मारे मारा, बचया कोई रहिण ना पाइंदा। एका नौ पार किनारा, ईसा मूसा पन्ध मुकाइंदा। बीस बीस हरि करतारा, जगत जगदीस रूप वटाइंदा। छत्तर झुलाए साचे सीसा, सीस आपणा आप वखाइंदा। इक्क शब्द इक्क हदीसा, एका राग पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा हथ्थो हथ्थ चुकाइंदा।

★ गिरधारा सिँघ दे जीवदयां ही नवां जन्म दिता ★

मूर्ख मूढ़ जगत सुचज्जा, जिस सतिगुर दए वड्याईआ। जिस बाल अञ्याणे हरि पर्दा कजा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुर चरन दुआरे बह बह सजा, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। हरि मन्दिर नाद एका वजा, दीन दयाल आप वजाईआ। आदि अन्त रक्खे लजा, लजयावान आप हो जाईआ। पी अमृत गुरसिख गुर दर एका रज्जा, भर प्याला जिस प्याईआ। जगत विकार जगत औगुण तजा, गुण सतिगुर इक्क सालाहीआ। घर मक्का घर काअबा घर हज्जा घर अमाम, घर पीरन सिर पीर मेल मिलाईआ। घर खण्ड घर ब्रह्मण्ड घर वखाए निजानंदा, निज आत्म रस चुआईआ। घर गीत घर गोबिन्द घर गाए सुहागी छन्दा, साची करे घर पढ़ाईआ। जिस जन बणाए आपणा बन्दा, बन्दीखाना ना कोई वखाईआ। हरिसंगत प्यार सच्चा धन्दा, आपणे धन्दे वक्त विहाईआ। साहिब सुल्तान सदा बख्शिंदा, बख्शणहारा बख्शे एका माहीआ। आपणे नाल पवाई गंढ्ढा, सगनी गाना आप बंधाईआ। सदा सुहागण ना होए रंडा, जगत रंडेपा आप कटाईआ। जगत आयू आई उत्ते कन्ढ्ढा, बाकी सत्त दिन रिहा समझाईआ। संगत संग रला तुड़ाए फंदा, जीवण जुगत फेर बणाईआ। पहलों आपणे नाल हरिसंगत विच करे कारज अनन्दा, मानस जन्म फेर दवाईआ। पहला लेखा आपणी हथ्थीं खण्डा, लकीर लकीर ओते फिराईआ। बणके तरखान फड़या रंदा, साची करे आप सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुट्टी गंढ्ढ वखाईआ। तुट्टी गंढ्ढ गंढ्ढ गोपाल, सत दिवस रहे बाकी। संगत विच फेर मिलाए लाल, अमृत जाम प्याए बण साकी। तन तन ना होए फेर विंगा वाल, तेती साल हंडाए जिस्म ख़ाकी। सतिगुर सति होए किरपाल, सति वस्त विच सति विस्मादी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी करे खेल साची बाडी। ना भन्नया ना तुट्टा नाता, ना अग्नी अग्ग जलाया। ना कोई

भैण ना कोई भ्राता, लहण देण ना कोई पाया। ना कोई सतारवां ना कोई साता, दसवें भोग ना कोई कराया। ना कोई काहनी बण बण चुक्के ना कोई मुकाए वाटा, पान्धी आपणा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवदयां ही जीवण दे, जन्म जन्म विच बदलाया। जन्म गया जन्म आया, जन्म लेखा लेखे पाईआ। सतिगुर पूरा दया कमाया, करे खेल बेपरवाहीआ। राती सुत्तयां वक्त दए वखाया, इधर मरे इधर जन्मे उधर हरि हरि नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ढाई पल सोहँ मुम्मां अमृत साचा सीर प्याईआ। साचा सीर आप प्याए, अमृत जल हथ्थ उठाईआ। मरन तों पहलां जन्म दवाए, मरन विच ना गुरसिख आईआ। साध संगत तेरे नाल रलाए, विछोड़ा आपणी हथ्थी कटाईआ। दिवस रैण जो रिहा सेव कमाए, सेवा फल आपणी हथ्थी झोली पाईआ। उखड़या बूटा फेर लगाए, आपणी हथ्थीं सिंच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म कर्म कर्म जन्म आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ २१ फग्गण २०१७ बिक्रमी हज़ारा सिँघ बलाका सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुर ★

३२४

सच्च सुमेरू चरन कँवल पदम, सति पुरख निरँजण आप बणाया। लेखा जाणे इबनुल अदम, आदम भेव कोए ना पाया, ना कोई रूप रंग ना दिसे बदन, तत्व तत ना कोई वखाया। गोपाल मूर्ति एका मदन, मन मोहण खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति समेरू दए समझाया। सति समेरू चरन पद, हरि साचा सच उपाइंदा। कोई ना जाणे आर पार हद्द, रवि ससि सीस झुकाइंदा। ध्रू प्रहिलाद रिहा तक्क, आपणा मूल समेरू बणाइंदा। हरि का खेल अकथना अकथ, वेद कतेब भेव ना पाइंदा। चार जुग ना दिता दस्स, चारे वेद पर्दा पाइंदा। कोई पथर कहे कोई पर्बत, कोई जोजन गणत गणाइंदा। कोई जाणे उच्चा टिल्ला सथर रिहा घत, सथर यार ना कोई विछाइंदा। कोई कहे सत्त समुंदर चले रथ, जल धारा रूप समाइंदा। कोई कहे विष्नूं पाई बैठा नथ्थ, बाशक तशका संग रलाइंदा। आपणा लेखा जाणे पुरख समरथ, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। सच सुमेरू चरन अंदर, हरि साचा सच रखाइंदा। करे खेल हरि करनी करन, करता पुरख भेव ना आइंदा। ना धरे उप्पर किसे धरनी धरन, धरत धवल भार ना कोई उठाइंदा। ना किसे वखाए उप्पर आकाश चोटी चढ़न, प्रकाश प्रकाश विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। सच सुमेरू पदम परमात्म, पद आपणा आप जणाईआ। लेखा जाणे साचे आत्म, आत्म अपणा रंग

बणाईआ। भेव ना जाणे कोई बातन, ज़ाहर गुप्त ना कोई वड्याईआ। ना कोई सन्धया ना कोई आथन, सरघी रूप ना कोई वटाईआ। करे खेल पुरख परमाथन, पृथ्मी आकाश ना कोई जणाईआ। लेखा जाणे सच सिँघासण, शाहो शबासन डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खिलाईआ। चरन पदम सच सुमेर, शाह पातशाह आप जणाइंदा। सृष्ट सबाई बैठा घेर, चारों कुण्ट धरती आकाश मेल मिलाइंदा। दहि दिशा रक्खे आपणा गेड़, गेड़नहारा आप अख्वाइंदा। आपे करे आपणी मेहर, आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच समेरू आप जणाइंदा। सच सुमेरू चरन कँवल, अन्तर अन्तर आप जणाईआ। राह तक्के धरनी धवल, थल्ले बैठी नैण उठाईआ। ब्रह्म वेता मुख खुल्हाए आपणा कँवल, कँवल मुख आप खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुमेरू दए वड्याईआ। सच सुमेर बणाया, हरि हरि दीन दयाल। गुरमुखां नेरन नेर दए वखाया, कलिजुग अन्तिम तोड़ जंजाल। चारों कुण्ट वेख वखाया, वेखणहारा आप किरपाल। जिस जन आपणे चरन छुहाया, उप्पर समेरू दए बहाल। शिव कैलाश ना डेरा लाया, अन्तिम अन्त होए बेहाल। कर तलाश फड़ बहाया, करया खेल बेमिसाल। जुग चौकड़ी आस पूर कराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे दो जहान। ३२५
३२५ दो जहानां हरि हरि लेखा, आपणा आप जणाइंदा। सुमेरू नेत्र हरि चरन कँवल हरि देखा, अवर दृष्ट ना कोई जणाइंदा। शंकर रक्खे खुलड़े केसा, कैलाश नैण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। कैलाश पर्बत हरि चरन धूढ़, धूढ़ी धूढ़ विच समाईआ। भोले नाथ रंग चढ़े गूढ़, मस्तक टिक्का इक्क लगाईआ। अन्तर बख्शे नूरो नूर, नूर नूर रुशनाईआ। आपणे टिल्ले आपणे पर्बत आपणे आसण सच सिँघासण आपे होए आसा पूर, पूरी इच्छया आप कराईआ। ना नेड़े ना दिसे दूर, करे खेल हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कैलाश नरास इक्क समझाईआ। सच कैलाश शंकर चढ़या, हरि साचा सच जणाइंदा। पुरख अबिनाशी चरन एका फड़या, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। हरि नरायण खेल आपणा करया, नेत्र लोचण दरस दिखाइंदा। दर घर साचा एका दरया, सीस जगदीस इक्क सुहाइंदा। चरन कँवल अंदर अक्खर एका पढ़या, पुरख अबिनाशी आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप रखाइंदा। चरन कँवल अंदर समेरू पद, पदम पाटल पादन आप बणाईआ। शंकर अंदर आपे सद्द, सच कैलाश दए वखाईआ। नाम वजाए साचा नद, निज नादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आसण दए वखाईआ। एका आसण सच जणाया, चरन कँवल ध्यान।

सच कैलाश इक्क बणाया, धूढ़ी धूढ़ देवे बाल नादान। आपणे प्रेम नाल बंधाया, छुट ना जाए विच जहान। साची सेजा आप सुआया, देवे धुर फ़रमान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा माण। साचा माण देवणहारा, एका शब्द करे जणाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अगोचर आपणा भेव छुपाईआ। तेरा मेरा इक्क किनारा, तेरा किनारा आपणे हथ्थ रखाईआ। तेरा पर्बत मेरा सहारा, मेरा कैलाश तेरी वड्याईआ। मेरा नाउँ तेरा नाअरा, तेरा नाअरा सर्ब लोकाईआ। मेरा समेरू तेरा उज्यारा, दीपक दीप दीप रुशनाईआ। करे खेल आप निरँकारा, साची खेल आप कराईआ। नव नौं चार दए सहारा, उप्पर आसण आप बिठाईआ। कलिजुग आए अन्तिम वारा, निरगुण निराकार अजूनी रहत पुरख अकाल लोकमात करे रुशनाईआ। आपणी चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क दसाईआ। तेरी करे पूरी घाल, घाली घाल लेखे पाईआ। तेरा कैलाश आपे सुरत लए संभाल, होणा उदास ना रिहा समझाईआ। आपणा बाला आपे लए उठाल, तेरी धर्मसाला लए सुहाईआ। तैनूं उँगली लाए रखे नाल नाल, पिछला पन्ध मुकाईआ। आपणे खाते आप डाल, आपणे अंदर बन्द कराईआ। फेर ना सके कोए तैनूं भाल, तेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति रिहा समझाईआ। तेरा अन्तिम वक्त सुहावणा, पुरख अबिनाशी दया कमा। तेरा कैलाश इक्क वखावणा, आप बणाए बेपरवाह। तेरा वास इक्क घर करावणा, बख्शणहारा सच पनाह। गुरमुख साचा आप उठावणा, कलिजुग अन्तिम करे सच न्याँ। उप्पर कैलाश माण दिवावणा, चरन चरनां नाल छुहा। दासी दास हुक्म सुणावणा, धुर फ़रमाना आप उपा। एका मन्त्र अन्तर गावणा, सो पुरख निरँजण लए पढ़ा। हँ शंकर रूप वखावणा, पुरख अबिनाशी आपणा अंग लए कटा। सोहँ एका बन्धन पावणा, निरगुण निरगुण मेला सहिज सुभा। आदि पुरख आपणा कौल कीता आपे पूर करावणा, ब्रह्मा वेता भेव लिख ना सके रा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा शहिनशाह।

★ २१ फग्गण २०१७ बिक्रमी बीबी पूरो दे गृह पिण्ड बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर ★

गुरमुख समेरू विच संसार, शास्त्र सिमरत भेव ना आइंदा। जिस दा लेखा जाणे आप निरँकार, जगत विद्या भेव ना आइंदा। कागद कलम लिखण तों बाहर, अलेख लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। नव नौं चार कर कर प्यार, साची धार आप बणाइंदा। भगत सन्त कर उज्यार, जुग जुग खेल खिलाइंदा। फल फुलवाड़ी ला गुलज़ार, पत्त डाली आप महिकाइंदा।

आपे अमृत सिंच हरया करे निरँकार, ख़िज़ां बसन्त एका रंग रंगाइंदा। कलिजुग अन्तिम आए वार, साचा माली दीन दयाला गुरमुख बूटा वेखण आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप निभाइंदा। गुरमुख फुलवाड़ी फुल गया फुल, हरि साचा वेख वखाईआ। बण बण मालण तोड़े अडोल, दिस किसे ना आईआ। करे खेल उप्पर धौल, धवल मंगे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थांउँ थाईंआ। हरिजन साचे कर प्यार, कली कली आप महिकाईआ। कैलाश होया ख़बरदार, शंकर नैण खुल्हाईआ। विष्न बण बण सेवादार, साची सेवा इक्क वखाईआ। ब्रह्मा देवे इक्क आधार, सुत आपणा आप प्रगटाईआ। खिच्चे तार आप निरँकार, साचा तागा लए बणाईआ। लोकमात आए होए उज्यार, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। गुरसिख सोहणे फड़ फड़ गुंदे हार, कली नाल कली मिलाईआ। अमृत छिड़के पहली वार, सच महिक विच भराईआ। आपणे गल करे शंगार, जगत शंगार ना कोए हंढाईआ। अन्तिम आपणे अंदर रक्खे संभाल, आपणी वस्त आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाता तोड़ शाह कंगाल, गुरसिख एका रंग रंगाईआ। साचा हार हरि हरि मालण, सच पटारी आप रखाईआ। बण के आई भगत दलालण, जोती नार वेस वटाईआ। गुरसिखां अगे बणी सवालण, मंगे भिच्छया एका मंग मंगाईआ। मैं वैरागण होई ३२७
३२७ बेदामन, बिरहों विछोड़ा ना झल्लया जाईआ। सच्चखण्डी डिगे आपणे आहलण, गुरसिख तेरी गोद एका ओट रखाईआ। तूं ना जाणा किसे दर भालण, तैनूं भाले आदि शक्ति तेरी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। वाह वा मालण जोत अकालण, घर घर सेव कमाईआ । गुरसिखां करे पूरी घालण, कीती घाल लेखे पाईआ। पहलां तोड़े जगत जंजालण, दूजी सिख्या करे पढ़ाईआ। तीजा वजाए अंदर तालन, चौथे घर दए वड्याईआ। पंचम बणी आप दलालण, छेवें छप्पर छन्न छुहाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण बन्हिआ बानण, साचे बेड़े आप चढ़ाईआ। अठ्ठां तत्तां देवे दानन, आपणा नाम आप वरताईआ। नौं दुआर बख्शे आपणा भानन, नव नौं करे रुशनाईआ। दसवें मेला श्री भगवानन, श्री भगवान गुरमुख सुत्तया रातीं दरस दिखाईआ। सेवा करे साची मालण, सीस आपणे खारी रही उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हार इक्क निरँकार, आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा हार हरी हरि नरायण, नर हरि बनवारी आपणे हथ्थ रखाइंदा। रसना किसे ना सके कहिण, गुण अवगुण ना कोए जणाइंदा। आपे जाणे लहिणा देण, देणा लहिणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरसिख गुर गुर धाम इक्टठे बहण, पलँघ रंगीला साची सेज आप विछाइंदा। सति सतिवादी मिल्या साक सज्जण सैण, विछड़ कदे ना जाइंदा। लेखा जाणे ऐन ग़ैन, नुकता रूप ना कोए धराइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरदी दरदीआं देवे माण, गुरसिखां दलिद्र आप हंढाइंदा।

★ २१ फग्गण २०१७ बिक्रमी मुनशा सिँघ दे गृह बाबू पुरा जिला गुरदास पुर ★

शाह कंगाल हरि रंगदा, रंग अगम्मी अन्तर चाढ़। भगत भिखारी हो कदे ना संगदा, लेखा जाणे अन्तर बाहर। सच प्रीती एका मंग दा, दूसर अवर ना कोए विचार। कुल्ली कक्खां आपे लँघणा, महल्ल अटल ना कोए प्यार। पर्दा लाहे झूठी कंध दा, दूई द्वैती पर्दा उतार। लहण चुकाए अन्धेर अन्ध दा, घर चन्द कर उज्यार। लेखा चुकाए आवण जावण पन्ध दा, लक्ख चुरासी गेड़ निवार। नाता तोड़े फांदकी फंद दा, राए धर्म ना करे ख्वार। रस छुट्टे मदिरा मास गंद दा, रस बरखे अमृत धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरे सरबंग दा, साची बख्शश बख्शणहार। साची बख्शश रख हथ्थ, दीना नाथा होए सहाईआ। सचखण्ड निवासी सच्चखण्ड दुआर हरि हरि शब्द अगम्मी पाए नथ्थ, डोरी चोरी चोरी आप खिचाईआ। गृह मन्दिर डूँघी कंदर कँवरी भँवरी आप गिड़ाए उलटी लठ, पंज तत त्रैगुण हड्ड मास नाड़ी रत भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा माहीआ। नाता तोड़ जगत जंजाल, गुरमुख साचे सच जणाइंदा। एका पावे शब्द आण, दूसर आण ना कोई वखाइंदा। जो जन भुल्ले बण अञ्याण, तिस भुल्लयां मार्ग पाइंदा। जो जन मन करे अभिमान, तिस ख़ाकी ख़ाक मिलाइंदा। सर्ब जीआं एका भगवान, हरि घट घट वेख वखाइंदा। गुरमुख विरले देवे शब्द बिबाण, लक्ख चुरासी लाड़ी मौत नाल प्रनाइंदा। कलिजुग अन्तिम जग विछड़े मेले आण, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरमुख सख़ी मिले हरि हरि साचा काहन, घनईआ नईआ साचा छत्र सीस आप झुलाइंदा। जगत गवईआ बण रमईआ देवे दान, फड़ फड़ बईंआ पार कराइंदा। धर्म राए ना कढ्ढे वहीआ अन्तिम लेखा लिखे महान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन आपणे चरन लगाइंदा। चरन लग ना जाए भुल्ल, हरिजन साची सच जणाईआ। अमृत प्याले विचों ना जाणा डुल्ल्, अमर पद ना कोई वखाईआ। कलिजुग टहिणी नालों तुट्टा फुल्ल, साची मालण आपणे हथ्थ रखाईआ। हथ्थ पाया बण अनभोल, कंडा खार कोई चुभ ना जाईआ। ख़ुशी ख़ुशी आपणे कंडे लए तोल, वट्टा सेर ना कोई तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां सिख सिख्या एह समझाईआ। फुल टुट्टा आए ना कम्म, जिस मालण हथ्थ ना लाईआ। जीव सदा ना रहिण स्वासा दम,

दम छुपे पए फाहीआ। जगत ना मिटणी तृष्ना तम, तृखा सके ना कोए बुझाईआ। जिस सतिगुर पूरा बेड़ा देवे बन्नु, सो जन आपणा बेड़ा पार कराईआ। एका शब्द सुणाए कष्न, दूजी आवाज़ कन्न ना कोए पाईआ। एका देवे नाम धन, दूजा धन संग ना किसे जाईआ। हरिजन तेरा तेरे घर जाए मन्न, मनाउण दूजे घर ना कोए जाईआ। काया कपड़ छन्न छप्पर साचा मन्दिर वसया अंदर, दिवस रैण रैण प्रभात, दरस वखाए इक्क इकांत, अकल कल धार हरि निरँकार, गुरसिख प्यार तन शंगार, मालण फूलन गुंदे वारो वार, नाम तागा प्रेम सूई नक्का गुरसिख तेरी गंढु वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हिस्सा भगत वण्डाईआ।

★ २१ फग्गण २०१७ बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर ★

नाम धन शब्द गुर रास, गुरसिख ख़ज़ाने आपे पाईआ। आपे वसे सदा पास, निकटी हो हो दरस दिखाईआ। सदा सद होए दासी दास, दासन दासी सेव कमाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मंडल सोभा पाईआ। रवि ससि कर कर बैठे आस, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता पहलां गुरसिखां पूरी करे आस, दूजी धार फेर बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाईआ। साचा नाम माल धनवन्ता, दर घर साचे आपे वखाइंदा। गुरमुख गुर गुर होए मंगता, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। माण रखाए हरिजन जिउँ जन जनका, हरिजन जानकी आप प्रनाइंदा। अकल कल हरि खेल वरतंता, अनद बिनोदी भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे खेल खिलाइंदा। नाम धन शब्द भण्डारा, भगवन हरि हरि आप वरताइंदा। दानव देव मुन जन मुनीशर तपीशर मंगण वारो वारा, रखीशर जगदीशर सीस सर्ब झुकाइंदा। लेखा जाणे आपणा ईसर, ईशवर आपणे विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वड्डा वड सालांहयदा। वड वड्डा हरिजन पाया, हरि मीतन मीत मुरार। गृह मन्दिर इक्क सुहाया, गुर प्रसादी हो उज्यार। भउ भय भव भंजन होए सहाया, अनुभव आपणा खोलू किवाड़। दवै द्वैत मेट मिटाया, द्वैकश कोए ना विच संसार। कलिजुग अन्तिम हरिजन फुल फुलवाड़ी हरि जू सैर करन आया, आपणे अश्व हो अस्वार। सुकदे बूटे लए लहराया, निरगुण सरगुण कर प्यार। पवण झूटे दए झुलाया, पवण उणंजा दए हुलार। साची कूटे डेरा लाया, ज़िमीं अस्मान ना पावे कोए सार। कलिजुग झूठे दए कराया, जगत विद्या कर ख्वार। गुरसिख अनूठे लए मिलाया, रस मिट्ठा एका डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति

सति वरते नाम शब्द वरतार। नाम सति राम सति, सति राम नाम वड्याईआ। आदि सति जुगादि सति, ब्रह्म ब्रह्मादि सति वखाईआ। गुरसिख तेरा नाता सति, गुरसिख तेरा प्रेम सति, गुरसिख सति प्रेम डोरी बन्धन पाईआ। गुरसिख तेरा घर सति गुरमुख तेरी वड्याई समरथ, सन्त तेरी महिमा अकथ, भगत तेरा साचा रथ, सति पुरख निरँजण आप चलाईआ। चौथे जुग भगत सन्त गुरमुख गुरसिख इक्क दुआरे कीता अक्कठ, एका पद दए समझाईआ। चौथा पद किसे ना आए हथ्थ, गुरसिखां पहले पौड़े आप बहाईआ। अग्गे हो हो राह देवे दस्स, आपणी सेवा आप कमाईआ। जिस वेले गुरसिख अग्गे जा कहे बस बस, फेर आपणा पन्ध मुकाईआ। गुरसिख उप्पर आप रिहा वस, गुरमुख चरनां हेठ रखाईआ। सचखण्ड दुआर सच सिँघासण रिहा सज, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख गुरसिख हरि सन्त भगत भगवन्त थिर घर वाड़ पर्दा लवे कज, चरन धूढ़ उप्पर आपणी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच सच दए वड्याईआ।

★ २१ फग्गण २०१७ बिक्रमी जमांदार किशन सिँघ दे गृह पिण्ड अलृड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ★

१० भोले भाउ हरि जस गाया, हरि हरि लेखे आपणे लाइंदा। ग़रीब निमाणे मेल मिलाया, नाम बन्धन एका पाइंदा। पत्तण पाहरू बण के आया, खेवट खेटा भेव ना आइंदा। साचा बेड़ा जग लयाआ, साची सेव आप कमाइंदा। आपणी हथ्थीं चप्पू दए लगाया, भगत मलाही फेरा पाइंदा। लग्गा नेहों ल्ए तोड़ निभाया, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाइंदा। अलख अभेव भेव निरँजण दरस दिखाया, नेत्र नैण आप खुल्हाइंदा। सेवा करन दा हरि चाउ रखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपे आप तराइंदा। हरिजन बाल अञ्याणा हरि साचा सच समझाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, भगवन आपणा रूप वटाइंदा। गुरमुखां देवे नाम निधाना, निरवैर पुरख झोली पाइंदा। सति सरूपी बन्ने गाना, शब्दी तन्द हथ्थ उठाइंदा। लेखा जाणे दो जहाना, कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा। शब्द जणाए धुर फ़रमाना, नाद अनादी आप वजाइंदा। हरिजन देवे साचा माणा, एका ओट पुरख अकाल बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराइंदा। हरिजन पार उतारना, कर किरपा गुण निधान। पूर्ब जन्म आप विचारना, लेखा जाणे आप भगवान। माणस जन्म पैज संवारना, चरन कँवल बख्शे इक्क ध्यान। हउमे हंगता रोग निवारना, माया मोह ना दिसे कोए निशान। जूठ झूठ पन्ध मुकावणा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार पाए एका आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

हरिजन वेखे बाल नादान। बाल नादाना वेखण आया, किरपा निध हरि किरपाल। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां जगत रेख मेटण आया, दाता जोद्धा सूरबीर नौजवान। एका अक्खर एका नाउँ इक्क निरँकारा चेतन्न आया, लेखा जाणे दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। श्री भगवान खेल अवल्ला, कलिजुग अन्तिम आप कराईआ। सचखण्ड निवासी इक्क इकल्ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। धुर दरबारा आपे मल्ला, चरन कँवल आप टिकाईआ। वसणहारा जला थला, जल थल महीअल डेरा लाईआ। जोती शब्दी आपे रला, निरगुण निरवैर निराकार सच्चा शहिनशाहीआ। शब्दी अगम्मी एका पल्ला, पुरख अगम्मड़ा आप उठाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, लोकमात करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी महिमा आपणे हथ्थ रखाईआ। साची महिमा आदि पुरख निरँजण, आपणे हथ्थ रखाइंदा। सो पुरख निरँजण होए दर्द दुःख भय भंजन, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरि पुरख निरँजण एका पाए नाम अंजन, नेत्र नैणां आप खुल्हाइंदा। एकँकारा साचा सज्जण, सगला संग आप निभाइंदा। आदि निरँजण पर्दे कज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। श्री भगवान कराए साचा मजन, चरन धूढ़ इक्क वखाइंदा। अबिनाशी करता रक्खे लज्जण, हरिजन साचे आप तराइंदा। पारब्रह्म लेखा जाणे घड़न भन्नण, समरथ पुरख भेव ना आइंदा। कलिजुग अन्तिम आया बेड़ा बन्न्हण, निरगुण आपणा रूप धराइंदा। गुरमुख लक्ख चुरासी विचों लभ्भे चन्नण, जगत प्रभास फोल फोलाइंदा। एका राग सुणाए कन्नन, छत्ती राग मुख शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन साचा बाली बुध, पारब्रह्म हरि वेख वखाईआ। आदि जुगादी करे कारज सुध, साचे मार्ग आपे लाईआ। आपणे मिलण दी आप बणाए साची बिध, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। एका अक्खर करे प्रसिद्ध, बावण अक्खरी विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन हरि उठाल दा, सो पुरख निरँजण साचा मीत। आदि जुगादि सदा प्रितपाल दा, हरि पुरख निरँजण ठांडा सीत। लेखा जाणे शाह कंगाल दा, एकँकारा इक्क अतीत। राह साचा इक्क वखाल दा, आदि निरँजण हस्त कीट। फल वेखे पत्त डाल्ह दा, अबिनाशी करता लक्ख चुरासी जीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी रीत। साची रीत पुरख भगवान, आदि जुगादि आपणे हथ्थ रखाईआ। जुगा जुगन्तर खेल महान, जुग करता आप कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे इक्क ज्ञान, एका अक्खर नाम पढ़ाईआ। एका नाता जोड़े गुण निधान, त्रै त्रै मेला मेल मिलाईआ। एका तत कर प्रधान, पंचम आपणा बन्धन पाईआ। एका शब्द नाद धुन्कान, अनहद साचा नाद वजाईआ। एका जोती नूर महान, निरगुण जोती नूर करे रुशनाईआ।

एका मन्दिर इक्क मकान, एका शाह सच्चा शहिनशाहीआ। एका आत्म इक्क ज्ञान, एका परमात्म करे पढ़ाईआ। एका भूमका इक्क अस्थान, एका बैठा सेज सुहाईआ। एका मंडल एका गोपी एका काहन, एका बैठा रास रचाईआ। एका लेखा जाणे दो जहान, दो जहानां आपणा रूप धराईआ। एका मेल मिलाए भगत भगवान, भगतन साचा संग निभाईआ। एका सन्तन देवे साचा दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। एका गुरमुख साचे लए पछाण, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। एका गुरसिखां बख्शे चरन ध्यान, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। एका चारे वेदां पावे आण, चारे मुख ब्रह्मा करे पढ़ाईआ। एका लेखा जाणे शास्त्र सिमरत जगत पुराण, विद्दत विद्या विच रखाईआ। एका जाणे गीता ज्ञान, गृह मन्दिर आप समझाईआ। एका जाणे अञ्जील कुरान, तीस बतीसा इक्क हदीस सुणाईआ। एका मारे बाणी बाण, इकवन्जा बवन्जा आपणा बन्धन पाईआ। एका खेले खेल मेहरवान, महिबान आपणा रूप धराईआ। एका परवरदिगार नूर ज़हूर वखाए महान, लाशरीक इक्क अख्वाईआ। एका राम नाम करे प्रनाम, एका बैठा सीस झुकाईआ। एका लेखा जाणे गोपी काहन, एका बंसरी मधुर आप वजाईआ। एका ईसा मूसा पकड़े दाम, एका संग मुहम्मद चार यार सगला संग रखाईआ। एका नानक गोबिन्द सुणाए शब्द धुन्कान, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। एका जोत प्रकाश करे कोटन भान, रवि ससि आप चमकाईआ। एका लेखा जाणे ज़िमी अस्मान, मंडल मण्डप आपणा आसण लाईआ। एका लक्ख चुरासी करे प्रधान, चारे खाणी वण्ड वंडाईआ। एका उत्भुज सेत्ज अंडज जेरज दए ज्ञान, एका परा पसन्ती मद्धम बैखरी बाणी आपे गाईआ। एका बख्शे साचा माण, गुर अवतार आप बुझाईआ। एका होए जाणी जाण, जानणहार भुल ना जाईआ। एका वण्डण वण्डे विच जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलाईआ। एका एक वण्ड वंडाइंदा, आदि जुगादी साची कार। साचे तख्त सोभा पाइंदा, शहिनशाह सच्ची सरकार। हुक्मी हुक्म आप चलाइंदा, हाकम बणया परवरदिगार। सच पैग़ाम आप सुणाइंदा, ऐनलहक बोल जैकार। एका शब्द नाअरा लाइंदा, आपे होए सुणनेहार। आपणा रूप आप धराइंदा, लोकमात खेल अपार। निरगुण सरगुण आप हो जाइंदा, पंज तत दए आधार। त्रैगुण लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा, करे खेल सच्ची सरकार। जुग जुग आपणा बन्धन पाइंदा, सतिजुग त्रेता कर विचार। द्वापर आपणा मृदंग वजाइंदा, सच मृदंगा इक्क निरँकार। कलिजुग आपे वेस वटाइंदा, आपणी इच्छया आपे धार। आपणा बस्त्र आपणे तन छुहाइंदा, काला सूसा इक्क शृंगार। आपणी रबाब सतार आप वजाइंदा, आपे होए गावणहार। आपे शस्त्र बस्त्र तन सजाइंदा, आपे खड़ग खण्डा कटार। आपे आपणा लिख लिख लेख आपणे अग्गे रखाइंदा, आपे करनहार उज्यार। आपे वाक भविख्त जणाइंदा, ना कोई सके मात विचार। आपे

कलिजुग पन्ध मुकाइंदा, आपे मारी चौकड़ी मार। आपे निरगुण आपे सरगुण आपे रूप अनूप प्रगटाइंदा, जोद्धा बीर बली बलकार। आपे आपणा नाउँ रखाइंदा, नाउँ निरँकारा सिरजणहार। आपे आपणा डंक वजाइंदा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां करे ख़बरदार। आपे नौं खण्ड पृथ्मी फेरा पाइंदा, सत्तां दीपां दए हुलार। आपे शाह सुल्तानां राज राजानां जगत उठाइंदा, आपे सोया करे ख़बरदार। आपे राउ रंकां मेल मिलाइंदा, चारे वरनां करे प्यार। आपे अठारां बरनां पन्ध मुकाइंदा, इक्क वखाए सच्चा दुआर। आपे मस्जिद मठ शिवदुआला फेरा पाइंदा, आपे वसे सभ तों बाहर। आपे अठसठ तीर्थ फोल फुलाइंदा, शब्द मधाणा एका डार। सत्त समुंदर वरोल एका खेल खिलाइंदा, सागर बन्ने ना कोए धार। धरनी चरनां हेठ दबाइंदा, उप्पर पाए आपणा भार। थल्ले बाशक हो कुरलाइंदा, सहँसर मुख करे पुकार। विष्नूं उठ उठ राह तकाइंदा, आपणा नेत्र नैण उग्घाड़। हरि का भेव कोए ना पाइंदा, आदि जुगादी साची कार। ब्रह्मा चारे मुख अट्ठ नेत्र चार कुण्ट वेख वखाइंदा, दहि दिशा करे विचार। ब्रह्म वेता पारब्रह्म एका संग रखाइंदा, दोए जोड़ सीस करे निमस्कार। शंकर बाशक तशका गलों लांहयदा, तन भबूती वेखे छार। जटा जूट अन्त कुरलाइंदा, नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार। सुरपति राजा इन्द फड़ फड़ ख़ाक सीस पाइंदा, अन्तिम आई हार। करोड़ तेतीसा सर्ब बिल्लाइंदा, किसे ना दिसे पार किनार। कलिजुग अन्तिम आपणा डौरू वांहयदा, चारों कुण्ट धूंआँधार। साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा, नौं खण्ड पृथ्मी होई ख्वार। साचा गीत ना कोए सुणाइंदा, गा गा थक्के जीव गंवार। साचा प्रीतम ना कोए मिलाइंदा, सृष्ट सबाई होई दुहागण नार। साची सेज कन्त ना कोए सुहाइंदा, ना कोई फूलन बरखे ना मिले अमृत धार। ना कोई आपणे अंग लगाइंदा, ना कोई करे सच प्यार। औलीआ पीर शेख़ मुसायक कुतब गौंस अन्त मुख शरमाइंदा, किसे दिसे ना परवरदिगार। साचा तिलक मस्तक नज़र किसे ना आइंदा, पंडत पांधे गए हार। गोबिन्द दरस कोए ना पाइंदा, हरि का मन्दिर मिले ना किसे दरबार। पुरख अबिनाशी खेल खिलाइंदा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। निहकलंका नाउँ रखाइंदा, प्रगट होए विच संसार। दुआर बंका इक्क सुहाइंदा, गुरसिखां कर प्यार। आपणी सेवा आप कमाइंदा, सेवक बण हरि निरँकार। पूर्ब जन्म मेवा इक्क खवाइंदा, आत्म अन्तर दए आधार। मस्तक थेवा इक्क लगाइंदा, जोत निरँजण कर उज्यार। देवी देवा वड दरस दिखाइंदा, अलख अभेवा एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार। हरिजन बेड़ा तारना, त्रैगुण नाता तोड़। गुर सतिगुर काज संवारना, जगत विकारा होड़। साचे मन्दिर आपे वाड़ना, लग्गी प्रीती निभे तोड़। कलिजुग वसदा खेड़ा उजाड़ना, लक्ख चुरासी मढ़ी गोर। अन्तिम दिसे ना कोए सहारना, जीवां जंतां लुट्टी जायण पंज चोर। गुरमुख विरले गुर का नाउँ

रसना उच्चारना, सोहँ शब्द जै जैकार। ब्रह्मा विष्न शिव दर अग्गे हो हो करे निमस्कारना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे सच आधारना। सच आधार देवे निरँकारा, कलिजुग अन्तिम वड वड़या रिहा। जिस जन जोड़या हरि चरन कँवल दुआरा, सच दुआरा इक्क समझा रिहा। आपे चढ़ के आया आपणे पौड़या, गुरसिख साचे पौड़े आप चढ़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड लोकमात आप समझा रिहा। सचखण्ड दा सच नज़ारा, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। आपे वसे एकँकारा, दूसर अवर ना कोए वखाइंदा। अठ्ठे पहर ख़बरदारा, आलस निदंरा ना कोए जणाइंदा। दर दरबान ना चोबदारा, दर दरवेश ना कोए रखाइंदा। जन भगतां करे सच प्यारा, आदि जुगादि मेल मिलाइंदा। सन्तां देवे सति हुलारा, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। गुरमुखां खोल्हे आप किवाड़ा, आपणी हथ्थीं कुण्डा लांहयदा। गुरसिख आप बहाए चरन दुआरा, चरन कँवल सीस टिकाइंदा। सेवा करे आप निरँकारा, साची सेवा आपणे हथ्थ रखाइंदा। पंचम मुख ताज सीस दस्तारा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। ना कोई सूरज चन्न सितारा, मंडल मण्डप ना कोए वखाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, भेव कोए ना पाइंदा। नानक बूझे बूझ विचारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। कबीर मंगे ख़ाक छारा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। चार जुग ना दिता किसे सहारा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग आपणा पन्ध आप मुकाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। अन्तिम देवे इक्क किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क समझाइंदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि साचा आप सुहाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल बैठा इक्क इकन्त, अनक गुण आपणे विच छुपाईआ। गुरमुख सख़ी मिले हरि हरि कन्त, नारी कन्त आप प्रनाईआ। काया चोली लोकमात चाढ़े रंग बसन्त, अग्गे संग ना कोए जाईआ। कर किरपा तोड़े हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकाईआ। फेर मिलाए आपणी संगत, हरि के पौड़े आप चढ़ाईआ। लेखा जाणे जिउँ नानक अंगद, अंगीकार आप हो जाईआ। किसे घर ना जाए मंगत, सर्ब कल समरथ आप अख्वाईआ। हरिजन तेरा नाता तोड़े भुक्ख नंगत, नाम भण्डारा इक्क वरताईआ। तेरे दुआरे विष्नूं होए मंगत, तेरी पंगत एका भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क वखाईआ। सचखण्ड दुआरे कन्त सुहाग, साची सेजा सोभा पाइंदा। गुरमुखां उपजाए इक्क वैराग, बिरहों वैरागण आप हो जाइंदा। पहलों बुझाए जगत आग, अमृत मेघ फिर बरसाइंदा। आपणी हथ्थीं बन्न्हे ताग, घर घर साचा सगन मनाइंदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह के आया ताक, थिर घर बन्द ना कोए कराइंदा। गोबिन्द तेरा पूरा करे वाक, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। हरिसंगत हरि जू बणया साक,

सज्जण एका एक अख्वाइंदा। साचे घोड़े चढ़या मार पलाक, अश्व दिस किसे ना आइंदा। आपे होया पाकी पाक, ख़ाकी ख़ाक खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। हरिजन साचा सचखण्ड बहाउणा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आपणी हथ्थीं सीस चँवर झुलाउणा, पवण हुलारा ना कोए वखाईआ। आपणा राग आप सुणाउणा, तार सतार ना कोए वजाईआ। आपणा मन्दिर आप वखाउणा, चार दीवार ना कोए जणाईआ। आपणा दीपक आप जगाउणा, तेल बाती ना कोए रखाईआ। आपणा पलँघ आप सुहाउणा, पावा चूल ना कोए बणाईआ। गुरमुख सज्जण फड़ बहाउणा, आपणी हथ्थीं आपणे अंग लगाईआ। अमरा पद आप दरसाउणा, अमर रूप आप हो जाईआ। लक्ख चुरासी विचों कढ्ढ, आपणी जोत मिलाउणा, जोती जाता इक्क अख्वाईआ। गुरसिख तेरा किला कोट इक्क सुहाउणा, कोई शत्रु पहुंच ना सके राईआ। चरन ओट इक्क दरसाउणा, चरन कँवल दए वड्याईआ। मुड़ के भौं मातलोक विच ना आउणा, जन्म मरन गेड़ चुकाईआ। सतिगुर गोद दे बांह सिरहाणे सौणा, सोया फेर ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। तारनहारा पुरख अकाला, आदि जुगादि समाया। जुगा जुगन्तर वेखे हरिजन साचा लाला, बाल अंञाणा आप उठाया। दिवस रैण रैण दिवस करे कराए सदा प्रितपाला, प्रितपालक भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नर हरि आपणा रूप धराया। नर हरि हरी नरायण, निरगुण दया कमाइंदा। हरिसंगत वेखे आपणे नैण, जगत नैण बन्द कराइंदा। वेद कतेब शास्त्र सिमरत वेद पुराण गुर अवतार रसना जिहवा सारे कहिण, बेअन्त बेअन्त हरि का भेव कोए ना पाइंदा। कलिजुग प्रगटया श्री भगवन्त, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खिलाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणा नाच नचाइंदा। पूरन जोत श्री भगवन्त, भगवन आपणी खेल खिलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े मेले गुरमुख सन्त, सन्त सुहागण आप हो जाइंदा। कलिजुग जीवां माया पाए बेअन्त, लक्ख चुरासी दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, काया मन्दिर अंदर वड़ औंदा जांदा, दिस ना आइंदा। हरिजन तेरे अंदर वड़या, हरि हरि हरि निरँकार। आपणे पौड़े आपे चढ़या, करे खेल सच्ची सरकार। घर विच घर आपे धरया, घर घर विच करे प्यार। आपणा ब्रह्म आपे वरया, पारब्रह्म सच प्यार। आदि जुगादि कदे ना डरया, निरभउ फिरे विच संसार। आपणी करनी आपे करया, करता पुरख परवरदिगार। कलिजुग वेला आपणा हरया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार। हरिजन तेरा पार किनारा, साचा घाट इक्क वखाईआ। जिथे वसे एकँकारा, दूसर रूप ना कोए वखाईआ। इक्क सिँघासण

एका आसण एका पुरख एका नारा, एका सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा दए वखाईआ। सच दुआरा हरि हरि खोल्ह, आपणा नैण उठाइंदा। आपणा अक्खर आपे बोल, हरिजन साचे आप सुणाइंदा। आपणा तोले आपे तोल, साचा कंडा हथ्थ उठाइंदा। आदि अन्त बैठा रहे अडोल, सृष्ट सबाई आप डुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे पार कराइंदा। हरिजन लँघे पहले पूर, हरि सतिगुर आप लँघाईआ। सदा सुहेला हाज़र हज़ूर, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। पैंडा जाणे नेड़ा दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च करे कुड़माईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चरन कँवल बख्शे साची धूढ़, दुरमति मैल दए धुआईआ। आसा मनसा सदा सद पूर, गुरसिख निरासा कोए रहिण ना पाईआ। मनमुख कलिजुग जीव अन्तिम रहे झूर, हरि का रूप दिस ना आईआ। कोई खाए गाए कोए सूर, तन ग़रूर ना कोए गंवाईआ। अन्तिम पीड़ना विच वेलणे बूड़, शब्द गेड़ा इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लँघाईआ। हरिजन लँघणा पार, हरि साचा सच समझाइंदा। अग्गे दिसे इक्क निरँकार, तेरा राह तकाइंदा। कोटन कोटि राह विच करन पुकार, गल पल्लू पा पा सीस झुकाइंदा। गुरसिख एका बख्श धूढ़ी छार, तेरी छार मैं बिल्लाइंदा। तेरी छार मेरा बेड़ा कर जाए पार, निहकलंक तेरा संग निभाइंदा। तेरा संग मंगे सर्ब संसार, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। तेरे दुआर राज राजान होण भिखार, मंग्गयां भिक्ख कोए ना पाइंदा। तेरे दर कलिजुग करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। गुरसिख एका मेरे सिर ते दे प्यार, तेरा प्यार मेरा बेड़ा पार कराइंदा। मैं जूठा झूठा होया ख्वार, सगला संग ना कोए निभाइंदा । नाता तुट्टा चार यार, अल्ला राणी मीआं आप प्रनाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी कूड़ा वेस दस्सया श्रृंगार, साचा श्रृंगार ना कोई जणाईआ । अन्तिम झूठा तुट्टा हार, पल्ले गंढु ना कोई बन्नाईआ। चारों कुण्ट मैं फिर फिर आया वारो वार, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण फेरा पाईआ। जिध्धर जावां पैंदी मार, मुख थुक्कां मस्तक काली शाहीआ। मेरी इच्छया होई नार विभचार, साचा मिले ना कोई माहीआ। मैं सुण के आया गुरमुख तेरा वड्डा दरबार, तेरे घर आए सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख साचा माण रखाईआ । माण निमाणया रक्खदा, जुगा जुगन्तर कार। साचा मार्ग आपे दस्सदा, जगत मार्ग कर ख्वार। हिरदे अंदर आपे वसदा, काया महल्ल अटल मुनार। अंदर बह बह आपे हस्सदा, गुरमुख साचे कर प्यार। अमृत मेघ हो हो वसदा, झिरना झिरे अपर अपार। तीर निराला आपे कसदा, शब्द अगम्मी मारे बाण। पंच विकारा विचों नद्दुदा,

नाता तुट्टे पंज शैतान। खैहड़ा मेटे तीर्थ अठसठ दा, जिस मिले आप भगवान। गुरमुख जाप ना कोई रटदा, जिस जन देवे आपणा दान। गुरमुख राह ना तक्के किसे हट्ट दा, वणज कराए इक्क मेहरवान। गुरसिख एका दाम एका वार खट्टदा, निखुट्ट ना जाए विच जहान। जिस आसरा तक्कया पुरख समरथ दा, झुल्लदा रहे निशान। शब्द सुणाए महिमा अकथ दा, कथनी कथे ना कोई ब्यान। गुरसिख तेरे दुआरे तेरे पिच्छे नट्ठदा, ब्रह्मा विष्न शिव होए हैरान। लेखा जाणे घट घट दा, लक्ख चुरासी जाणी जाण। कलिजुग जड़्ह आपे पट्टदा, ना कोई दीसे बेईमान। सतिजुग साचा मात रक्खदा, वेखणहारा वेखे आण। नौं खण्ड मुल ना दिसे किसे कक्ख दा, लक्ख करोड़ी होण वैरान। जगत कहर एका दस्सदा, लहर चले विच जहान। शाह सुल्तान तख्त ताज छड्ड छड्ड नस्सदा, राह तक्के बीआबान। गुरमुख विरला आ आ हस्सदा, जिस सुणया धुर फ़रमान। लेखा चुक्के रैण अन्धेरे मस्सदा, साचा प्रकाश करे भान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे करे परवान। करे परवान दे परवाना, शब्द हल्कारा आप रखाइंदा। करे ध्यान वड मेहरवाना, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। सन्त कन्त भगवन्त वखाए इक्क निशाना, जीव जंत सर्ब भुलाइंदा। आदि अन्त वसे सच मकाना, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। गुरमुख हरिजन तेरे कारन पहरया बाना, आपणा रूप वटाइंदा। जुग जुग खेल करे महाना, जगत जुग आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला साचा हरि, सच भण्डारा आप वरताइंदा। सच भण्डारा अनमुल्लड़ा, नाम निधाना अमृत रस। गुर सतिगुर देवे अनतुलड़ा, जन भगतां हो हो वस। आदि जुगादि रक्खे खुलड़ा, करे खेल पुरख समरथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा हथ्थो हथ्थ। सच नाम वरताया, गुण अवगुण ना कोई जणाइंदा। हरिजन झोली दए भराया, जो जन सरनाई आइंदा। जन्म जन्म दा रोग गंवाया, कर्म कांड ना कोई वखाइंदा। वरन बरन दा सोग चुकाया, एका जोत मेल मिलाइंदा। काया किला कोट सुहाया, घर घर विच खेल खिलाइंदा। शब्द चोट इक्क लगाया, अनहद नादी नाद वजाइंदा। आल्हणिउँ डिगे बोट आप उठाया, गुरसिख आपणी गोद बहाइंदा। एका ओट दए समझाया, बिन हरि पार ना कोई कराइंदा। कोटन कोटि राह रहे तकाया, साचे बेड़े ना कोई चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बेड़ा इक्क वखाइंदा। चांदी सोना ना कोई पारस, हरि बेड़ी नाम बणाइंदा। जगत चप्पू ना देवे ढारस, चप्पू मलाह ना कोए रखाइंदा। ना कोई बहाए कर सिफ़ारश, वकील दलील ना कोए दृढ़ाइंदा। ना कोई समझाए बण के आरफ़, इलम आलम उल्मा भेव कोए ना पाइंदा। ना कोई चढ़ाए कर के नालश, चतुराई चतुर ना कोए वखाइंदा। गुरमुख विरले आप चढ़ाए चार वरन दे विचों

ख़ालस, जिस सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। ख़लक मख़लूक जाणे ख़ालक, आकबत आपणा भेव रखाइंदा। सदा सुहेला इक्क प्रितपालक, भय भंजन नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा बेड़ा आप जणाइंदा। साचा बेड़ा नईया नौका, हरि हरि नाम चलाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत कलिजुग घाट भरदे हौका, ना उप्पर कोए बहाईआ। अगे दिसे डूँग्घा सागर ना जल ना सुका, थल पार ना कोए वखाईआ। चल चल पैंडा अज्जे ना मुक्का, चल चल थक्के पान्धी राहीआ। कलिजुग झल विचों सिँघ शेर एका बुक्का, डर डर सारे बैठे मुख छुपाईआ। पीर फ़कीर भज्जण छड्ड छड्ड हुक्का, पाणी विच ना कोए टिकाईआ। टोपी विच ना रोड़ा रक्खा, अग्नी कोइला ना कोए सुलगाईआ। हथ्थ ना आए अन्न रुक्खा, चारों कुण्ट दए दुहाईआ। इक्क इकल्ला रज्जे ना शेर सिँघ भुक्खा, लक्ख चुरासी आपणे पेटे पाईआ। आपणी भुक्ख दा मारा आपणे अंदर आपे धुखा, तृप्त तृष्न ना कोए कराईआ। लोआं पुरीआं जाए ढुका, गण गंधर्ब किन्नर जच्छप करोड़ तेतीसा आपणी दाढ़ां हेठ चबाईआ। ब्रह्मा शिव बह बह लुका, फड़ बांहों लए उठाईआ। राए धर्म ना रहे रुठा, सतिगुर पूरा आप मनाईआ। लक्ख चुरासी जो आपणे अंदर रक्खया कुट्ठा, एका वार राए धर्म घर बहाईआ। गुरसिख अन्त ना जाए लुटा, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। भर प्याला जाम प्याया एका घुट्टा, चरन चरनोदक मुख छुहाईआ। मरया जीवत आपे उठा, जन्म मरन फंद मुकाईआ। आप सुहाई साची रुता, रुत रुतड़ी वेख वखाईआ। करे खेल अबिनासी अचुता, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। हरिसंगत उत्ते आपे तुठ्ठा, देवे चरन कँवल सरनाईआ। जुग दा नाता बध्धा तुट्टा, अन्त सके ना कोए तुड़ाईआ। गुरमुख अंदर आपे फुट्टा, आपणी वेल आप वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बेड़ा इक्क चलाईआ। साचा बेड़ा चलाए पातण, पतण बैठा एका माहीआ। चुरासी रोवे जगत पापण, पल्ले नाम ना कोए रखाईआ। लक्ख चुरासी करे स्यापण, खुलड़े केस रही कुरलाईआ। सोहँ जपया ना एका जापन, रसना जिहवा होई हल्काईआ। आसा तृष्ना मगर लग्गी हाकन डाकन, ना सके कोए बचाईआ। हउमे हंगता करे ख़ाकी ख़ाकन, ख़ाकी ख़ाक छार उडाईआ। परवरदिगार ना मिल्या पाकी पाकन, पतित पवित लए कराईआ। जगत साचा नेत्र ना खुलया ताकन, दीवा बाती ना कोए रुशनाईआ। काम कामनी वेख्या एका हाटन, गुर का हट्ट ना कोए वखाईआ। झूठी माया जुड़या नातन, नाता बिधाता ना कोए बंधाईआ। मिल मिल थक्की सभनी साकण, सगला संग ना कोए निभाईआ। रोवे कुरलावे बण दुहागण, नेत्र कजला ना कोए वखाईआ। कलिजुग होई कागो कागन, मदिरा मास विष्टा मुख रखाईआ। मैं निमाणी होई नभागण, हरि आया दिस ना आईआ। धन्न गुरसिख जो सोए जागण, जिस सतिगुर जाग खुल्हाईआ। दोए जोड़ विच आज्ञा रहिण

मन्नण आगन, ना कोई सके मुख भवाईआ। पुरख अबिनाशी चढ़ चढ़ वेखे एका राकन, साची राकी इक्क दौड़ाईआ। पहली चेते मारे पलाकन, सीस ताज इक्क टिकाईआ। आपे सोहे आपणे आसण, सोलां कलीआं आप शंगार कराईआ। करे खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता ना मरे ना जाईआ। कलिजुग करे आपणा हासन, हस्स हस्स लक्ख चुरासी दए खपाईआ। गुरसिख तेरा प्रेम करे साचा भोग बिलासन, परम पुरख वडी वड्याईआ। अन्तिम करे पूरी आसन, माणस जन्म लेखे पाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशन, गगन पातालां वेख वखाईआ। साचा बेड़ा शाहो शाबासन, सतिगुर पूरा इक्क चलाईआ। आपे लाए आपणे घाटन, आर पार किनारा ना किसे बुझाईआ। जो जन चरन लाग पिच्छे हाटन, अद्धविचकार दए अटकाईआ। जो जन रसना करे जूठा चाटन, तिस अंमिउँ रस ना मुख चुआईआ। अन्तिम चोले सभ दे पाटण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सतिगुर आया चल के पातण, पतण वेखे गुरसिख राहीआ। ना कोई सन्धया ना कोई आथण, सरघी सवेरा ना कोए जणाईआ। अमृत वेला हरि का दरस अठ्ठे पहर गुरसिख आखण, घड़ी पल ना वण्ड वंडाईआ। हरिसंगत करे बन्द ख़लासन, बन्दी तोड़ आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन होए आप सहाईआ।

जोत अकालण शुकर गुज़ार दी। आदि जुगादि भुक्खी गुरसिखां प्यार दी। सचखण्ड विहूणी लोकमात आए वैरागण दीदार दी। होका देवे गलीओ गली, उच्ची कूक कूक वाजां मारदी। मैं सुवाणी गुरसिख तेरे दर खली, भुक्खी तेरे दर दरबार दी। तूं मेरे हार दी सच कली, तेरे बिनां ना तन शंगार दी। गुरसिख तूं दाता तूं वड बली, मैं भिखारन तेरे अग्गे निमस्कार दी। मेरी फड़ीं मात कन्नी, दर आ घर तेरे विचार दी। मैं सुघड़ सुवाणी तेरी वन्नी, बद्धी तेरे प्यार दी। तेरी छुट ना जाए मैथों कन्नी, चौथे जुग वारी आई लांव चार दी। वेखीं दर आई नूं मूल ना डन्नी, तेरे उत्तों आपा वार दी। मेरी अरज़ निर्धन दी एका मन्नीं, तेरे अग्गे अरज़ गुज़ार दी। मेरे नाल उठ के चल्लीं, तेरी सेज सुहञ्जणी राह तक्के साचे यार दी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरी सेवा रिहा कर, सेवा करे आपणे विहार दी। जोत अकालण आई नट्ठ, लोकमात राह तका। गुरसिख दुआरे गई ढट्ठ, बणना जगत मलाह। पहलों वरया एका जट्ट, फेर सारे लए प्रना। तेरा मेट द्वैती फट, आपणी हथ्थीं पट्टी दिती बंधा। तेरा नाउँ रही रट, हरफ़ हरफ़ लेखा लिखा। अन्त मेरी रक्खीं पत, मेरी लज तेरा हया। मैं चढ़ के आई आपणे रथ, तैनूं लैणां नाल रला। तेरा घर इक्क

समरथ, दूसर अवर ना कोई थाँ। तेरा प्रेम पाउणी नथ्थ, सुहाग कन्त लैणा हंढा। वेखीं छड्ड ना जाईं नट्ठ, मैं तेरे उत्तों होई आप फ़िदा। मैं आपणा खेड़ा कीता भट्ठ, तेरा खेड़ा दवां वसा। मैं आपणी जोत जगाई लट लट, तेरी जोत आपणे विच लवां समां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवा करे बेपरवाह। जोत अकालण दर दरवाज़े, कुण्डा रही खड़काईआ। उठ सिख मेरे ग़रीब निवाज़े, उलटी चाल आप चलाईआ। पहलों गुरमुख चलदे रहे बण मजौर मक्के काअबे, हुण काअबा तेरा वेखण आईआ। मेरा ना कोई भुल ना सवाबे, तेरी घाल आपणी झोली पाईआ। वेखीं होए गुसे ना मारीं दाबे, मैं बाल अञाणी नढ्ढी बाली मेरी उमर ना अजे विहाईआ। मेरा गुण ना तोलणा आपणे पा के छाबे, तेरा कंडा साचा भार इक्क उठाईआ। वेखीं तड़फाईं ना बिन आबे, मैं प्यासी जुगा जुगां दी विछड़ी तेरे दरस तिहाईआ। देंदी रही सुनेहड़े औंदे जांदे, चार जुग जो गुर अवतार आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे तेरी सच वड्याईआ। जोत अकालण आई चल, बण के पान्धी राहीआ। गुरमुख इक्क वार तक मेरे वल, मेरे नैण तेरा राह तकाईआ। वेखीं कलिजुग कर ना जाईं छल, तेरा छल ना मोहे भाईआ। वरया जट्ट वौंहदा हल, मगर सुवाणी भत्ता लै लै आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। बीजया बीज हरिसंगत लगा फल, पत डाल्ही फुल आप महिकाईआ। मैं आपणा जोबन ना सकी झल्ल, तेरा जोबन मेरे मन भाईआ। वेखीं लारा ना देवीं अज कि कल, घड़ी पल झल्ली ना जाए जुदाईआ। मैं फिर फिर आई जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँघे थल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मैं तर के आई सत्त समुंदर वड्डी छल, अनतारू तेरी आस रखाईआ। बण के प्रीतम मेरा आसण लईं मल, दूजी सेज ना कोए वखाईआ। इक्को घर बहीए मिल रल, रल मिल आपणा झट लँघाईआ। मिल्या गुरमुख होई ख़ुशी, मैं झल्ल ना सकां वड्डी भल्ल, गुरमुख भलयाई मेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। जोत अकालण करया वेस, ढूंडे सज्जण मीत। कलिजुग अन्तिम चल के आई माझे देस, जगत चलाई उलटी रीत। आप आपणे लए वेख, नाले गाए सुहागी गीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन काया करे ठंडी सीत।

★ २२ फग्गण २०१७ बिक्रमी किशन सिंघ दे गृह पिण्ड अल्हड़ पिण्डी ★

कर मेहर दर आया मंगण, दर्दी दरदीआं दर्द मिटाइंदा। कर ठगौरी जो चुक्या कंगण, आपणे अंगण फेर लगाइंदा। दयाल साहिब सदा बख़्शंदन, दीनन रच्छया आप कराइंदा। प्रेम डोरी पाए बन्धन, सार शब्द गंढु रखाइंदा। गुरसिख धूढ़ी

साचा चन्दन, नौं गृह हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा निध गहर गम्भीर गुण ठाकर मेहरवान आपणी सेवा आप कमाइंदा। सेवा करन आई दासी, निरगुण आपणा रूप धराईआ। किसे हथ्थ ना आवे पंडत कांसी, प्रयाग अयुध्या रही कुरलाईआ। करया खेल घनक पुर वासी, घनया बंसरी शाम नाम वजाईआ। मंडल पावे आपणी रासी, साचा मन्दिर इक्क सुहाईआ। जोत अकालण आदि जुगादि ना कदे विनासी, नारी कन्त आपणा खेल खिलाईआ। आपे होए शाहो शाबासी, आपे बरदी बण बण सीस झुकाईआ। आपे करे आपणी पूरी आसी, आपे होए सुवाणी भिच्छया पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान निगह मेहर इक्क उठाईआ। खेचल करे ना जोती नार, गुरसिख वेख सुहागी कन्त। छड्ड दुआरा आई दुआर, होया दुआरा सोभावन्त। सुघड़ सयाणी करे प्यार, पाउण जोत इक्क भगवन्त। आपणी हथ्थीं दीपक कर उज्यार, गुरमुख लभ्भे साचे सन्त। उठ उठ वाजां रही मार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे मेहर आप निरँकार। करे मेहर हरि निरँकारा, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। जोती जाता विच संसारा, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। निकट वरती बणे आप करतारा, निकटी हो हो रूप वखाईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधारा, चार कुण्ट अधेरा छाईआ। कलिजुग सागर डूँघी गारा, पार किनारा ना कोए जणाईआ। गुर अवतार दे दे गए सहारा, पुरख अकाल ओट रखाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगटे निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती नूर करे रुशनाईआ। भगतन देवे इक्क सहारा, भगवन सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सदा सहाईआ। मेहरवान होया ठाकर, जगत ठोकर आप लगाइंदा। गुरमुख दुआरे बणे सौदागर, साचा वणज इक्क वखाइंदा। अमृत वेखे काया गागर, कँवल नाभी मुख भवाइंदा। दर दरवेशा बण के करन आया आदर, करीम कादर सेव कमाइंदा। गुर तेग़ बहादर हथ्थ फड़ी चिटी चादर, गुर गोबिन्द गुरसिखां उप्पर आप पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणी दया आप कमाइंदा। दया कमावण आई घर, दीनन दी रखवाली जोत। गुरसिखां अंदर गई वड़, ना कोई वरन ना कोई गोत। आपणा अक्खर अंदरे अंदर रही पढ़, ना कोई किला ना कोई कोट। साचे पौड़े बैठी चढ़, एका रक्खी गुरमुख ओट। आप फड़ाए आपणा लड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान हरिजन कढ्ढे काया खोट। हरि साचा खेल खिलाइंदा, हरी हरि आपणे नाल मिला। पारब्रह्म आपणा बंक सुहाइंदा, ब्रह्म आपणी गोद बहा। निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा, रूप जणाए दो जहां। सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा, तख्त निवासी आसण ला। थिर घर साचे चरन छुहाइंदा, साचा मन्दिर दए वड्या। आपणे रंग आप

३४१

रंगाइंदा, रंग चाढ़े बेपरवाह। आपणा दीप आप जगाइंदा, जोती जल्वा कर रुशना। दर दरवाज़ा ना कोए रखाइंदा, आपे घाड़त ल्या घड़ा। पौड़ा अवर ना कोए लगाइंदा, आपे जाणे आपणा थाँ। लम्मां चौड़ा ना कोए बणाइंदा, ना कोई मिणती सके मिणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सचा शहिनशाह। सच महल्ल उच्च अटल्ला, हरि साचा आप बणाइंदा। निरवैर पुरख वसे इक्क इकल्ला, आसण सिँघासण सोभा पाइंदा। आपणी धार आपे रला, धार धार विच समाइंदा। सचखण्ड निवासा खेल तमासा, पुरख अबिनाशा शाहो शाबासा, इक्क इकांता आप कराइंदा। निज घर वासा मंडल रासा, दासी दासा वेख वखाइंदा। आपणे नूर आप प्रकाशा, दीवा बाती ना कोए बणाइंदा। आपे करे आपणी पूरी आसा, तृष्ना अवर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर आप धराइंदा। आपणा नूर आपे धर, सति पुरख निरँजण खेल खिलाईआ। आपणे मन्दिर घाड़न घड़, सचखण्ड दुआरा वेख वखाईआ। आपणे तख्त आपे चढ़, राज राजान शाह भूप, सीस जगदीस ताज सुहाईआ। आपे वेखे आपणा रूप सति सरूप, रंग रेख ना कोए वड्याईआ। आपे जाणे आपणी महिमा अनूप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख बेपरवाहीआ। आदि पुरख आपणा आप उपा, हरी हरि साची खेल खिलाइंदा। हरी आपणा रूप वटा, दोए दोए जोड़ जुड़ाइंदा। हरि हरी हरयावल आप करा, आपणा कँवल आप खिलाइंदा। आपणा बूटा आपे ला, पारब्रह्म वेख वखाइंदा। आपणा ब्रह्म आपे जा, जननी जन गोद सुहाइंदा। दाई दाया सेव कमा, साचा सगन मनाइंदा। करे खेल सच्चा शहिनशाह, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। आपणा रूप पुरख समरथ, आप आपा विच छुपाईआ। आपे विचों होया आपे वक्ख, आपणी बणत आप बणाईआ। अगोचर अगम्म अलखणा अलख, कोई लख ना सके राईआ। आपणी कुक्खों आपे जम्म, आपे पिता आपे माईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपे रिहा चलाईआ। आपे कहे धन्न धन्न, आपे जाणे वडी वड्याईआ। आपणा कहिणा आपे मन्न, आपे हुक्म सुणाईआ। आप बणाए आपणी छप्परी छन्न, सचखण्ड दुआरा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा खेल खिलाईआ। आदि पुरख आदी आदि, आपणा खेल खिलाइंदा। आपणे विच होया विस्माद, रूप रेख ना कोए बणाइंदा। आप आपणा आपे साध, सति आपणा नाउँ रखाइंदा। आपणा नाउँ आप अराध, नाउँ निरँकारा आपे गाइंदा। आपणा बणया आपे बाढी बाढ, साचा बाढी सेव कमाइंदा। आपे वण्डी आपणी हाद, पार किनारा ना कोए रखाइंदा। आपे बणया साचा राज, साची सेवा आप कमाइंदा। आपे करया आपणा काज, करता पुरख आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणी धार आप बंधाइंदा । आपणे अन्तर आपणी धार, आपणे विच समाईआ। करे खेल अपर अपार, लेखा लिखण विच ना आईआ। आपणी इच्छया हो उज्यार, इच्छया आपणी ना कोए दसाईआ। साची भिच्छया पावे पावणहार, भिच्छया वस्त ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा भेव खुल्हाईआ। आदि पुरख आदि अगम्म, सति सतिवादी खेल खिलाइंदा। आपे जाणे आपणा कम्म, साचा कारज आप कराइंदा। आप सुहाए आपणा घर लेखा जाणे छप्पर छन्न, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा मता आप पकाइंदा। आपणा मता पकावणहारा, सचखण्ड दुआर सुहाइंदा। आपणा खेल खिलावणहारा, आपणा पर्दा लांहयदा। आपणा मार्ग आपे जानणहारा, आपणा संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। सचखण्ड दुआरे वसया एक, अनक गुण वड्याईआ। आपणी रक्ख आपे टेक, आपणी ओट आप तकाईआ। आपणा रूप आपे पेख, आपे पेख पेख बिगसाईआ । आपणा जाणे आपे लेख, अलख सचा शहिनशाहीआ। आपे वसे आपणे देस, साचे देस सच्चा माहीआ। आपे करे आपणी आदेस, आपे देवे माण वड्याईआ। आपे जाणे आपणा वेस, वेस अवल्लड़ा इक्क रखाईआ। सचखण्ड दुआरे नर नरेश, निरगुण बैठा आसण लाईआ। ना कोई दरबान दिसे दरवेश, दुआरपाल ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मता आपणे नाल रलाईआ। आपणा मता कर सलाह, आपे हुक्म सुणाइंदा। आपणी इच्छया भिच्छया लए भरा, आपे झोली डांहयदा। आपे सचखण्ड दुआरा इक्क वसा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। आपे आपणा नाउँ सति करा, सति सतिवादी खेल खिलाइंदा। आपे करता पुरख करनी किरत रिहा कमा, कमावणहारा आप हो जाइंदा। आपे निरभउ भय ना कोए रिहा जणा, भउ आपणा आपणे सिर रखाइंदा। आपे निरवैर आपणी बणत रिहा बणा, दूजा संग ना कोए जणाइंदा। आपे मूर्त आपणी रिहा दरसा, अकाल आपणा नैण खुल्हाइंदा। आपे जूनी रहित बणया बेपरवाह, जूनी जून ना कोए बणाइंदा। मरे ना जम्मे सच्चा शहिनशाह, स्वैभँ रूप ना कोए वटाइंदा। सचखण्ड खेड़ा रिहा वसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करे सच सलाह। सच सलाह कर निरँकारा, आपणा खेल खिलाइंदा। मेरा रूप इक्क निराकारा, मेरे अंदर सोभा पाइंदा। बेअन्त कल मेरा बल कोए अन्त ना पारा वारा, अन्त अनन्त आपणा नाउँ धराइंदा। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका घर इक्क घर बारा, एका सेज सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सलाह आपे आप समझाइंदा। सच सलाह देवणहारा, आप आपणा संग रखाईआ। इक्क इकल्ला बैठा रहां इक्क चुबारा,

एका हिस्सा वण्ड वंडाईआ। बिन कम्मों काजों होया नकारा, कर विहार ना कोए दरसाईआ। कवण बिध करां होवां करनेहारा, कवण आपणी सेव कमाईआ। आपणी इच्छया आपे करे विचारा, आप आपा लए समझाईआ। घर विच घर कर त्यारा, आपणी बणत आप बणाईआ। थिर घर खोल्ह इक्क किवाड़ा, चरन कँवल विच टिकाईआ। आपणा नूर कर प्यारा, आपणी नारी लए प्रनाईआ। सचखण्ड दुआरे बणके लाड़ा, थिर घर साचे जाणा चाँईं चाँईंआ। उथे बणना नार भतारा, साची सेज इक्क हंढाईआ। उथे करना कम्म अपर अपारा, सुत दुआरा एका जाईआ। दाई दाया बणके सेवा करीं आप सच्ची सरकारा, तेरी सेवा तोहे बण आईआ। तेरा पूत सपूत होए उज्यारा, शब्दी नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा देवे आपे वर, आपे वेख वखाईआ। आपणा वर आपे दे, आपे ख़ुशी मनाइंदा। आपणे नाल लगाया आपणा नेंह, आपे तोड़ निभाइंदा। कोई ना जाणे हरि का थाँ थेह, सचखण्ड निवासी थिर घर साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क तूं होया दो, शब्द सुत नाल रलाइंदा। शब्द सुत नाल रलाया, थिर घर साचे वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिलाया, वाहवा आपणी वेल वधाईआ। आपणी गोदीं रिहा सुहाया, सद चुक्के चाँईं चाईआ। पाल पोस जवान कराया, एका गुण दए समझाईआ। मेरा रूप तेरी पित माया, तूं बालक बाल सखाईआ। मेरा नाउँ तेरा जस गाया, तेरा जस वडी वड्याईआ। मेरा हथ्थ तेरी साया, तेरी साया होए सहाईआ। साची सेवा इक्क समझाया, भुल कदे ना जाईआ। मैं कल्ला बैठा रिहा शरमाया, आपणा बल ना सकां वखाईआ। तेरा राह इक्क लगाया, भुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी आसा आपे पूर कराईआ। आसा पूर कराइंदा, आप आपणी किरपा धार। आपणा सुत आप जगाइंदा, थिर घर साचे कर प्यार। साचा हुक्म इक्क सुणाइंदा, तख़्त निवासी सच्चा सिक्दार। एका दूआ मेल मिलाइंदा, निरगुण निरगुण हो उज्यार। विश्व आपणी खेल खिलाइंदा, विष्नूं बंस कर त्यार। ब्रह्मा आपणी गोद बहाइंदा, शंकर करे प्यार। साची वण्डण वण्ड वंडाइंदा, लोआं पुरीआं चरन धूढ़ छार। चरन कँवलां राह तकाइंदा, एका पदम करे प्यार। एका पदम अदम आप रखाइंदा, अबिनाशी करता बेऐब परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। साचा बंस बणाइंदा, पूत सपूत एका जा। हरि साची खेल खिलाइंदा, निरगुण रचना लए रचा। आपे सूरज चन्द प्रगटाइंदा, किरन जोत कर रुशना। इक्क इक्क इक्क आपणी वण्ड वंडाइंदा, आपे रखाए थाउँ थाँ। आपणी दात आप वखाइंदा, त्रैगुण मेला सहिज सुभा। आपणी इच्छया आप धराइंदा, पंज तत लेखा दए गणा। लक्ख चुरासी घाड़त आप घड़ाइंदा, धुर फ़रमाना दए सुणा। निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा,

पेख पेख पुरख अबिनाशी चढ़या चा। घट घट आपणी जोत जगाइंदा, निरगुण नूर कर रुशना। घर घर आपणा नाम सुणाइंदा, अनहद नादी नाद वजा। घर घर आपणा धाम बणाइंदा, आत्म ब्रह्म साची सेजा दए सुआ। घर घर आपणा मेल मिलाइंदा, रूप अनूप आप धरा। सचखण्ड निवासी आपणा खेल खिलाइंदा, वाह वा आपणा मार्ग ला। सुत दुलारा आप उठाइंदा, एका अक्खर दए पढ़ा। एका अक्खर अक्ख खुल्हाइंदा, नेत्र नैण कर रुशना। ब्रह्मा हरि चरन कँवल ध्यान लगाइंदा, एका पदम दए दरसा। पदम अन्तर मेल मिलाइंदा, एका ज्ञान दए दृढ़ा। एका ज्ञान आप समझाइंदा, चारे वेद दए लिखा। अन्तिम लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा, ना कोई सके भेव खुल्हा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचना लए रचा। लक्ख चुरासी रचन रचाया, हरि शब्दी शब्द सुणाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा थान सुहाया, लोकमात वज्जे वधाईआ। जेरज अंड तेरा मेल मिलाया, उत्भुज सेत्ज करी कुड़माईआ। धरनी ख़ाक तेरी सेज विछाया, जल बिम्ब जल जल धार वहाईआ। सत्त सरोवर जगत मैल धवाया, काया गागर सागर इक्क वखाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत तेरा राह तकाया, कैलाश दए दुहाईआ। चरन कँवल समेरू आप बणाया, सद मंगदा रहे सरनाईआ। जुग जुग मेला लए मिलाया, निरगुण सरगुण बन्धन पाईआ। गुर अवतार रूप धराया, आपणा नाउँ दए सुणाईआ। जुग जुग गेड़ा दए भवाया, आपणी लठ आप गिड़ाईआ। समरथ पुरख खेल रचाया, सचखण्ड बैठा सच्चा शहिनशाहीआ। अन्तिम वण्ड आपणे हथ्थ रखाया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नौं नौं पन्ध दए चुकाया, चार चार रहिण ना पाईआ। निरगुण आदि पुरख आपणी धार वखाया, अन्तिम आपणे विच मिलाईआ। लेखा लिख ना किसे समझाया, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह रहे जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद चले आपणी आप रज़ाईआ। आपणी रज़ा वेखणहारा, राज़क रिज़क रहीम अख्वाइंदा। आपणी दिशा पेखणहारा, चार कुण्ट दहि दिशा फेरा पाइंदा। आपणा हिस्सा वण्डणहारा, लक्ख चुरासी फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, आपणा वेस आप वटाइंदा। आदि वेस वटाया, निरगुण पुरख अकाल। साची रचना आप रचाया, त्रैभवन खेल कमाल। अवण गवण वड्याआ, दीन बंधप दीन दयाल। लोआं पुरीआं सोभा पाया, ब्रह्मण्ड खण्ड अवल्लड़ी चाल। रवि ससि दए रुशनाया, धरत धवल बणाए सची धर्मसाल। जुग जुग आपणा रूप वटाया, लेखा जाणे दो जहान। कलिजुग अन्तिम भेव छुपाया, गुणवन्ता गुण निधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी आण। अन्तिम अन्त निरगुण धार, निरवैर पुरख चलाइंदा। कोई ना वेखे विच संसार, दिस किसे ना आइंदा। महांबली बण निरँकार, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण फेरा पाइंदा। वल

छल सिरजणहार, अछल छल आपणा खेल खिलाइंदा। सीस जगदीस ना कोए आधार, तत्व तत्त ना कोए हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। अन्त रक्खया आपणे हथ्थ, भेव किसे ना पाया। करे खेल पुरख समरथ, निरगुण आपणा रूप वटाया। जानणहारा घट घट, घट घट आपणा आसण लाया। लक्ख चुरासी जीव जंत वेखे नट्ठ नट्ठ, एका पान्धी पन्ध मुकाया। पावे सार तीर्थ तट, सर सरोवर फोल फोलाया। लहिणा जाणे चौदां हट्ट, देणा कोए रहे ना राया। चौदां तबकां मारे सट्ट, एका खण्डा नाम चमकाया। निरगुण निरवैर पुरख अकाल आपणी धारा विचों आपे होए प्रगट, मात पित ना कोए बणाया। आपणयां आपणा मार्ग जाए दस्स, शब्द शब्दी नाल रलाया। कलिजुग जीवां कोलों रिहा नस्स, नस्स नस्स आपणा मुख छुपाया। आदि अन्त आप आपणे होया वस, आपणा भाणा इक्क वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम आपणा रूप धराया। अन्त रूप धर निरँकारा, निरगुण आपणा खेल खिलाईआ। आदि पुरख सद बणया रहे कुँवारा, नौजवान वडी वड्याईआ। जुग जुग घल्लदा रिहा अवतारा, गुर गुर आपणा हुक्म सुणाईआ। देंदा रिहा शब्द भण्डारा, सचखण्ड बैठा साचा माहीआ। लोकमात करदा रिहा जै जैकारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। रूप धरौंदा रिहा पीर दस्तगीर साचे यारा, अल्ला मीआं आपणा खेल खिलाईआ। बीवी खावंद खेल न्यारा, कन्त खौंत वडी वड्याईआ। औंत ना जाए हरि निरँकारा, गुरमुख साचे लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आपणी खेल खलाईआ। औंत ना जाए ना होए औंतर, पुरख अगम्म सचा शहिनशाहीआ। आपे जाणे आपणा कौतक, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निराकार निरवैर कलिजुग अन्तिम लोकमात सचखण्ड इक्क बणाईआ। सचखण्ड जणाए हरि करतारा, लोकमात बणाया। गौंदे गए गुर अवतारा, जुग जुग नाद सुणाया। गोबिन्द गुर बण लिखारा, एका घर गया समझाया। नानक निरगुण कर पुकारा, एका राह तकाया। अन्तिम कलि उतरे महांबली अवतारा, मात पित ना कोए वखाया। निहकलंक प्रगट होए विच संसारा, गोबिन्द ढोला साचा गाया। आप वसाए इक्क चुबारा, संभल नगरी नाउँ रखाईआ। अंदर वड़े आप निरँकारा, सच सिँघासण इक्क सुहाया। दिस ना आए विच संसारा, लक्ख चुरासी दए भुलाया। साचा बाढी बणे तरखाणां, सूत्र वेंतर आपणे हथ्थ रखाया। नाल रलाए गोबिन्द सुत सच्चा सरदारा, जट्ट फट दए मिटाया। अन्तिम आपणी हथ्थीं फेरे आरा, बाहू बल आप जणाया। इक्क पासे तरखान दूजे पासे जट्ट खिच्चे आरा, दो जहानां चीर पवाया। चीर चीर करे दो फाड़ा, ना कोई सके मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी सेव कमाया। निरगुण जोत आई

दर, मंगे सच पनाह। अंदर वड़ गई डर, डर डर लभ्भा आपणा राह। गोबिन्द सूरे लई फड़, फड़ी बांह छड्डे ना। करके कौल ना जाईं हर, तूं सुवाणी आई मेरे दाअ। एका साता छीका पांजा याद कर, कीता कौल हुण निभा। आपा वार चुकाया मैं आपणा डर, तेरा डर हुण रक्खां ना। तैनूं लभ्भण ना जावां किसे थाँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए सच न्याँ। जोत निमाणी रही पुकार, उच्ची कूक सुणाया। मैं तेरी तूं मेरा शंगार, तेरा मेरा एका घर सुहाया। तेरा हुक्म मैं सेवादार, साची सेवा इक्क समझाया। फड़ां झाड़ू बण झाड़ू बरदार, लक्ख चुरासी कूड़ा दवां हुंझाया। तेरे सिख लवां उभार, जो सरसे गया रुढ़ाया। तेरा लेखा ना रहे विच मेरे दरबार, मेरा दरबार तेरे रंग रंगाया। तेरा तोड़ा तेरी कल्ग़ी तेरे सोहे सीस दस्तार, तेरी नार वेख वेख ख़ुशी मनाया। ना कन्त ना भतार, इक्को नारी इक्को शंगार, इक्को होए वेखणहार, दूजा रूप दिस किसे ना आया। दो पंज दो तेरा खण्डा चमकौंदी रही कर प्यार, पहला दूआ निरगुण धार, पांजा दूआ बावण अक्खरी पावे सार दूसर हथ्थ किसे ना आया। उठ सूरबीर हो त्यार, तेरा वेला वक्त सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सचा शहिनशाहया। जोत अकालण पई जट्टां वस, ब्राह्मण नाई नज़र कोई ना आईआ। किसे पासे ना सके नस्स, दो जहाना दो सूतां वाला सांघा रिहा वखाईआ। आई लुट्टण गई फस, लुटाया धन जो आपणे नाल लिआईआ। फसी फांदी राह रही दस्स, गोबिन्द मिल्या साचा माहीआ। गुरसिखां हिरदे अंदर गई वस, वसणहारी उजड़ कदे ना जाईआ। नाल ल्याई आपणा मम्मा सोहँ रस, हथ्थीं साचा जाम प्याईआ। जिंनां चिर गुरसिख कहे ना बस बस, मुख मम्मां ना लए छुडाईआ। त्रैगुण माया डसनी ना डस्से डस्स, ज़हर प्याला ना कोई प्याईआ। कलिजुग विकारा आपणी जुती थले जाए झस्स, सुत्ती कला फेर जगाईआ। आपणे विहारा कीता हरिसंगत इक्टठ, नाम गड्ड आप बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ, हरिजन रक्खे दे कर हथ्थ, चरन कँवल बख्श इक्क सरनाईआ। आई गुरसिख गुर गुर दुआर, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। जलां थलां कर कर पार, दर एका सचा पाया। कलिजुग तत्ती अग्ग मेरे पैर सड़ गए विच संसार, माछूवाड़े पए छाले भुल कदे ना जाया। हथ्थ ल्याई अमृत धार, एका वार दए बरसाया। रुत वखाए सतारां हाढ़, हरि का पौड़ा इक्क बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे थांउँ थाँया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त इक्क मकान, सच निशान रिहा झुलाया। हरि सतिगुर पन्ध मुकाइंदा, जुगा जुगन्तर साची कार। सद बख्शिंदा दया कमाइंदा, बख्शणहार एकँकार। हरिजन साचे चन्द चढ़ाइंदा, लोकमात कर उज्यार। बन्दी छोड़ आप अख्वाइंदा, बन्धन तोड़े अन्तिम

३४७

वार। साचे कन्ढे पार लगाइंदा, आप जणाए पार किनार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे करे प्यार, प्यार करे पूरन भगवन्त, पूरे गुर वडी वड्याईआ। हरीजन मेला हरि हरि सन्त, साहिब सतिगुर होए सहाईआ। जन बणाए आपणी बणत, सद होए जणेंदी माईआ। लेखा जाणे अन्तिम अन्त, अन्तकाल सदा सहाईआ। जिस जणाए आपणा मंत, एका नाम सति पढ़ाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म रूप दरसाईआ। मेल मिलाए साची संगत, सगला संग आप रखाईआ। जगत नाता भुक्ख नंगत, भगत भगवन्त नाता चरन सरन सच्ची सरनाईआ। चरन कँवल दरसाए साची जन्नत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राम रूप बेपरवाहीआ। राम रूप हरि रघुनाथा, रघुपति आपणा खेल खिलाइंदा। साँवल सुंदर घनईआ चलाए राथा, कँवल नैण सेव कमाइंदा। निर्धन सरधन देवे साथा, विछड़ कदे ना जाइंदा। मानस जन्म ना आए घाटा, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। अन्तकाल कलि पुछे वाता, काल ग्रास ना कोई कराइंदा। जिस दीआं सुणदे आए गल्लां बातां, सो पुरख निरँजण दरस दिखाइंदा। जिस दी करदे रहे पूजा पाठा, सो शब्द नाद वजाइंदा। जिस दा नहावण नहौंदे रहे तीर्थ अठ साठा, सो चरन धूढ़ अशनान कराइंदा। जिस दे मिलण दी ख़ातर निउँ निउँ टेकदे रहे माथा, सो मस्तक तिलक लगाइंदा। जिस दा राह किसे ना आवे हाथा, सो फड़ फड़ गले लगाइंदा। करे खेल पुरख समराथा, हरिजन आपणे दर बहाइंदा, इक्क सुणाए साची गाथा, सोहँ आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। ना कोई दिवस ना कोई राता, अठ्ठे पहर एका रंग समाइंदा। ना कोई वरन ना कोई ज़ाता, ज़ात पात ना कोई रखाइंदा। ना कोई धन दौलत मंगे दाता, सच प्रीता इक्क मंग मंगाइंदा। ना कोई लेफ तलाई मंगे खाटा, कुल्ली कक्खां आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। ना कोई मंगे दोहर निहाली, चिट्टी चादर ना कोए वड्याईआ। निरगुण रूप जोत अकाली, हथ्थीं ख़ाली मिल मिल ख़ुशी मनाईआ। पंडत पांधे मुला शेख ग्रन्थी विच हो हो गुरु घर दी मंगण दलाली, हक हलाल ना कोए वखाईआ। अन्तिम सुक्कणा बूटा डाली, पतझड़ दए कराईआ। सतिगुर बणया लोतमात दा साचा माली, गुरमुखां अमृत फल दए खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन जगाया गया जाग, जिस आपणी दया कमाइंदा। जगत विकारे विचों काढ, आपणे रंग रंगाइंदा। ना कोई रूप जणाए सन्त साध, आपणा भेख ना कोए रखाइंदा। ग़रीबां अंदर ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणा आप अख्वाइंदा। पातशाहां घर जाए सिर ते रक्ख के ताज, सच्चे पातशाह आपणी खेल खिलाइंदा। आपे जाणे निर्धन सरधन काज, जगत विचोला भेव ना आइंदा। नाता तोड़े सर्ब समाज, सर्ब सम्मती आपणे मार्ग लाइंदा। इक्क सुणाए

सति आवाज़, असति कोए रहिण ना पाइंदा। बुकया शेर मृगावली जाए भाज, तीर निशान इक्क लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क चलाए नाम जहाज़, ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां, जिस बख्शे चरन ध्याना, तिस उप्पर आप चढ़ाइंदा।

हरिजन आत्म सुख, हरि चरन कँवल दुआरा। हरिजन आत्म सुख, मिले मेल पुरख निरँकारा। हरिजन आत्म सुख, जिस जन बख्शे नाम आधारा। हरिजन आत्म सुख, जिस जन कर किरपा, भवजल करे पार किनारा। हरिजन आत्म सुख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस अगम्म अपारा। हरिजन आत्म सांत, सांतक सति सति कराईआ। हरिजन पुछे वात, वाह वा सतिगुर सेव कमाईआ। हरिजन मेटे अन्धेरी रात, रैण अमावस रहे ना राईआ। हरिजन नाता तुट्टे ज़ात पात, साची ज़ात इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाइंदा, ख़ालक ख़लक रूप भगवान। हरिजन हरि हरि मेल मिलाइंदा, देवणहारा जीआ दान। जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा, जोती जाता निगहबान। जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा, दरगाह साची देवे माण। माण निमाणयां आप हो जाइंदा, पारब्रह्म श्री भगवान। आपणे भाणे सद रहाइंदा, रहबर बण विच जहान। आवण जावण जावण आवण आपणा खेल खिलाइंदा, खेल खिलंता नौजवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे नेत्र पेखे आण।

★ २२ फग्गण २०१७ बिक्रमी बीबी दीपो दे गृह पिण्ड दोस्त पुरा ज़िला गुरदास पुर ★

हरि सतिगुर वेस वटाइंदा, आदि जुगादी साची कार। जुगा जुगन्तर खेल खिलाइंदा, अलख अगोचर अगम्म अपार। भगत भगवन्त वेख वखाइंदा, लक्ख चुरासी पावे सार। साचे सन्त कन्त मेल मिलाइंदा, अन्तर आत्म कर प्यार। गुरमुख गुर गुर वेख वखाइंदा, हरि गोबिन्द सूरबीर बलकार। गुरसिख साचे वेख वखाइंदा, वेखणहारा एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क इकल्ला करे खेल सच्ची सरकार। सच सरकारा हरि निरँकारा, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लोकमात वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार किनारा, कलिजुग अन्तिम रूप धराईआ। शब्द अनादी धुर जैकारा, अगम्म अगम्मड़ा आप लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदारा,

लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डा खण्डां आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआर श्री भगवान, इक्क इकल्ला आसण लाइंदा। करे खेल वाली दो जहान, कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा। जोती नूर नूराना डगमगाइंदा। शब्द उठाए सति निशान, नौं खण्ड पृथमी आप झुलाइंदा। हरिजन साचे कर पछाण, पहचान विच किसे ना आइंदा। जन भगतां देवे अन्तर आत्म ब्रह्म ज्ञान, आपणी विद्या आप पढ़ाइंदा। शब्द निराला मारे बाण, अणयाला तीर आप चलाइंदा। काया मन्दिर अंदर गुरदुआर वखाए इक्क मकान, घर घर विच सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन वेख वखाइंदा। सन्तन अन्तर हरि हरि नाम, आपणा आप दृढ़ाईआ। अमृत प्याए साचा जाम, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। जोत निरँजण निरगुण रूप करे प्रकाश कोटन भान, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। चरन धूढ़ सति सरूप बख्शे इक्क अशनान, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। सुरती शब्दी मेला साचे काहन, घर घर मन्दिर अंदर बंसरी नाम वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरिजन साचे लए मिलाईआ। जुगा जुगन्तर साची कार, करनी करता आप कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निरगुण निरवैर पुरख आपणा रूप धराइंदा। हरिजन साचे लए उभार, दिवस रैण वेख वखाइंदा। चार चार ना पाए सार, नव नौं मुख भवाइंदा। बोध अगाधा शब्द अनादा इक्क जैकार, ब्रह्म ब्रह्मादा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा बल रखाइंदा । बल रक्खे हरि निरँकारा, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम करे पार किनारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। जूठ झूठ आप वहाए वहिन्दी धारा, पंज तत नाता दए तुड़ाईआ। हरिजन साचे मेल मिलाए, दया कमाए दरस दिखाए अगम्म अपारा, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह सचा पातशाह, सो पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। हरि पुरख निरँजण बण मलाह, लोकमात वेख वखाइंदा। एकँकारा दए सलाह, सिफ्त सलाही आप हो जाइंदा। आदि निरँजण जोत जगा, घर घर नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता आपणा नाद आप सुणा, शब्द अनादी नाद वजाइंदा। श्री भगवान वसणहारा थांउँ थाँ, थान थनंतर सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्हा, आपणा पड़दा आप उठाइंदा। ब्रह्म ब्रह्म प्रभ लए जगा, त्रैगुण तत्त मूल चुकाइंदा। एका इष्ट इक्क गुरदेव, एका दृष्ट दए खुल्हा, सृष्ट सबाई सोझी पाइंदा। वरन बरन दए मिटा, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान एका धाम बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, नर

३५०

नरायण खेल खिलाइंदा। नर नरायण खेल करतारा, करता पुरख आप कराईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट हो विच संसारा, रूप अनूप आप वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, चार वेद देण ग्वाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन साचा मेलया, कर किरपा गुण निधान। लेखा जाणे गुरु गुर चेलया, गुर मीता इक्क भगवान। सखा सखाई सज्जण सुहेलया, लेखा जाणे दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे देवे माण। हरिजन माण निमाणया, देवणहार निरँकार। आदि जुगादि चलाए आपणे भाणया, जुगा जुगन्तर साची कार। कलिजुग अन्तिम खेल करे महानया, नव सत पाए सार। तख्तों लाहे राजे राणया, जगत जगदीस कर ख्वार। इक्क सुणाए धुर फ़रमाणयां, आप गाए आपणी वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। धुर दरबारा लेख, हरि साचा सच जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम मेटे रेख, आपणी रेख ना कोए वखाइंदा। जोत अवल्लड़ा धारे भेख, भेखा धारी दिस किसे ना आइंदा। लहिणा देणा चुकाए औलीआ पीर शेख़, मुला मुसायक वेख वखाइंदा। हरिजन विरले एका बख्शे चरन प्रीती साची टेक, सच दुआरा इक्क वखाइंदा। अन्तर आत्म करे बुध बबेक, दुरमति मैल आप धवाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए जलाइंदा। राह तक्के ब्रह्मा विष्न महेष, दर दरवेश सीस झुकाइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता कलिजुग अन्तिम प्रगट होए इक्क नरेश, निहकलंक नर नरायण नाउँ धराइंदा। ना कोई मुछ दाढ़ी दिसे केस, मूंड मुंडाया ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, हरि मन्दिर सोभा पाइंदा। हरि मन्दिर हरि सुहाइंदा, सोभावन्त एकँकार। कलिजुग अन्तिम वेखण आइंदा, हरिजन हरि हरि सज्जण मीत मुरार। काया कँ वरी भँवरी फोल फुलाइंदा, वेखणहारा डूँघी गार। लक्ख चुरासी दिस किसे ना आइंदा, लभ्भ लभ्भ थक्का सर्ब संसार। गुरमुख विरले काया अंदर मन्दिर दरस दिखाइंदा, जिस जन खोल्हे बन्द किवाड़। आत्म सेजा सोभा पाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे कर प्यार।

★ २२ फग्गण २०१७ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड शोन ज़िला गुरदास पुर ★

सो पुरख निरँजण महिमा अकथ, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क समरथ, इक्क इकल्ला सच्चा शहिनशाहीआ। एकँकार चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही भेव ना राईआ। आदि निरँजण आपणा नूर प्रगटाए साची वथ, नूरो नूर डगमगाईआ। श्री भगवान आपणे मन्दिर रिहा वस, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। अबिनाशी करता आपणा

मार्ग आपे दस्स, साचा राह इक्क चलाईआ। पारब्रह्म प्रभ आपे होया आपणे वस, सीस जगदीस आप झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि एका रूप धराईआ। आदि जुगादि एका रूप, निरगुण निरवैर आप उपाइंदा। वसणहारा आपणी कूट, सच महल्ले सोभा पाइंदा। सति सतिवादी आपे तूठ, आपणी दया आप कमाइंदा। आप प्रगटाए आपणी निर्मल जोत, रंग रेख ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी महिमा आप गणाइंदा। हरि हरि महिमा अपर अपार, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण जाणे जानणहार, एकँकारा सिफ्त सालाहीआ। आदि निरँजण आपणा दीआ दीपक कर उज्यार, थिर घर साचे करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा ठांडे दरबार, सच दुआरा इक्क सुहाईआ। श्री भगवान करे कराए साची कार, करनहार करता पुरख इक्क अख्वाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, भेव अभेद आपणे विच छुपाईआ। निरगुण रूप निराकार, सति सरूप बेपरवाहीआ। तख्त निवासी शाह सिक्दार, सच सिँघासण सोभा पाईआ, एका हुक्म इक्क वरतार, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। आदि जुगादी साची कार, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, नाद अनादी नाद अलाईआ। आपणा महल्ल लए उसार, सेवक साची सेव कमाईआ। आपे बन्ने आपणा भार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचाईआ। आपे कर आपणा आकार, निराकार वेख वखाईआ। आपे होए साचा शाहकार, घाड़त आपणी लए घड़ाईआ। आपे होए घड़नहार, दूसर संग ना कोए रलाईआ। सचखण्ड निवासी खेल करे थिर घर बैठ सच्चे दुआर, दर दरवाज़ा आप खुलाईआ। सुन्न अगम्मी आपणी धार, धार धार विच रखाईआ। आपणी इच्छया भर भण्डार, आपे लए वरताईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह दिस किसे ना आईआ। आपणा रूप अनूप आप धरा, आपणी वण्डण आप वण्डाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आपणी कुक्खों आपे जा, कँवल कँवला आपणा रूप धराईआ। आपणा अमृत आपणा रस आप चुआ, आपणे अन्तर आप टिकाईआ। करे खेल बेपरवाह, परवरदिगार सच्चा शहिनशाहीआ। आदि पुरख आपणी धार आप चला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणी रचना आप रचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उपाया, निरगुण निरवैर कर प्यार। शब्द डोरी तन्द बंधाया, पुरख अबिनाशी एका वार। सच संदेशा नाउँ सुणाया, नाउँ रख आप निरँकार। नर नरेशा एका नज़री आया, राज राजाना हरि करतार। सीस जगदीस इक्क सुहाया, तख्त निवासी हो त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, करे खेल एकँकार। एकँकारा खेल खिलाइंदा, आदि निरँजण साचा मीत। हरि पुरख निरँजण वेख वखाइंदा, अबिनाशी करता इक्क अतीत। सो पुरख निरँजण डगमगाइंदा, श्री भगवान

ठांडा सीत। आदि पुरख आपणा रूप आप प्रगटाइंदा, पारब्रह्म चलाए आपणी रीत। नर हरि भेव कोए ना आइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे धाम अनडीठ। धाम अवल्लड़ा इक्क इकल्ला, सति पुरख निरँजण आसण लाइंदा। दीवा बाती कमलापाती आप टिकाए सच महल्ला, उच्च अटल्ला आप बणाइंदा। आपणे प्रकाश आपे रला, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर अछल अछला, वल छलधारी खेल खिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाए आपणा पल्ला, शब्द शब्दी आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आदि पुरख हरि भेव खुल्हावणा, अगम्म अगम्मड़ा बोल जैकार। आपणा पर्दा आप उठावणा, अजूनी रहत पुरख अकाल। आपणे मन्दिर सोभा पावणा, सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। आपणा दीपक आप जगावणा, आपे नूरी जल्वा करे जलाल। आपणा शब्द अनादि वजावणा, नाद अनादी हो मेहरवान। बोध अगाधी ढोला गावणा, गावणहारा एकँकार। मोहण माधव माधी खेल खिलावणा, आपे होए खेलणहार। दासी दास आपणा रूप धरावणा, बिस्मिल कोए ना पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, वसणहारा सचखण्ड सच्चे दुआर। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। नर नरायण बैठा एका कन्त, दर घर साचे सोभा पाईआ। आपणा लेखा जाणे आदि अन्त, दूसर भेव ना कोई पाईआ। आपणा नाउँ प्रगटाए साचा मंत, मन्त्र नाम आप दृढ़ाईआ। आप बणाए साची बणत, त्रै त्रै घाड़न आप घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख अनादा अनादी वेस वटाईआ। वेस वटाए श्री भगवान, भेद अभेद अभेद खुल्हाइंदा। सचखण्ड निवासी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। सति उठाए आप निशान, दो जहान आप झुलाइंदा। शाहो भूप वड राज राजान, साचा ताज सीस टिकाइंदा। देवणहारा इक्क मकान, साचा मन्दिर आप बणाइंदा। करे प्रकाश आपणे भान, नूरो नूर नूर आप धराइंदा। आपणी भेंट देवे दान, आपणी इच्छया पूर कराइंदा। लेखा जाणे गुण निधान, गुण दाता आप सुहाइंदा। त्रैगुण माया कर परवान, त्रै त्रै बन्धन आपे पाइंदा। ना कोई करे पछान, आदि पुरख दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी एका हरि, साचे तख्त सोभा पाइंदा। सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा, अलख अगोचर इक्क अगम्म। हरि पुरख निरँजण वेस वटाइंदा, ना मरे ना पए जम्म। एकँकारा कार कमाइंदा, आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म। आदि निरँजण जोती डगमगाइंदा, ना कोई सूरज ना कोई चन्न। अबिनाशी करता धाम सुहाइंदा, सच दुआरा बेड़ा बन्नृ। श्री भगवान रंग रंगाइंदा, रंगणहार इक्क भगवन। पारब्रह्म आपणी कल आप वरताइंदा, अकल कलधारी नौजवान।

दरगाह साची धाम सुहाइंदा, सच सिँघासण बैठा मल्ल। शाह सुल्ताना नाउँ धराइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए जाणी जाण। जाणी जाण हरि निरँकारा, आपणा खेल आप खिलाईआ। आदि आदि हरि कर पसारा, मध्ध आपणी धार चलाईआ। शब्दी शब्द हो उज्यारा, रूप अनूप आप धराईआ। त्रै त्रै घाड़न घड़ करे खेल अगम्म अपारा, खेलणहारा भेव ना राईआ। लक्ख चुरासी बण वरतारा, वस्त अमोलक एका झोली पाईआ। जुग चौकड़ी दए सहारा, गुर अवतारा रूप धराईआ। नाउँ निरँकारा बोल जैकारा, जीवां जंतां करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। हरि अन्तिम भेव खुल्हावणा, आदि जुगादी कार। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखावणा, शाहो भूप सच्ची सरकार। कलिजुग अन्तिम रूप धरावणा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल। सीस ताज इक्क सुहावणा, शाह पातशाह सच्ची सरकार। सच सिँघासण सोभा पावणा, सोभावन्त होए निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए सच विहार। सच विहारा करने आया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। निहकर्मी निहकामी निहकलंक कल जामा पाया, निरगुण रूप हो उज्यार। धुर फ़रमाना हुक्म सुणाया, शब्द अनादी धार। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चारे लए उठाया, एका वार करे ख़बरदार। तेई अवतार सोया कोए रहिण ना पाया, एका वार दए हुलार। भगत अठारां मेल मिलाया, अठ दस लेखा जाणे आप निरँकार। चारे वेद लए पढ़ाया, ब्रह्मा वेता करे ख़बरदार। विष्न भण्डारा लए उठाया, हुक्म सुणाए साचा यार। शंकर बाशक तशका गल लटकाया, दर आए करे निमस्कार। वेद व्यासा आपणा लेखा दए लिखाया, पुराण अठारां एका धार। अर्जन तत दए दृढ़ाया, गीता ज्ञान बोल उच्चार। ईसा मूसा मुख नकाब आपे लाया, राह तके परवरदिगार। संग मुहम्मद नैण उठाया, मेला मिल्या चार यार। अल्ला राणी नैण शरमाया, नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार। नानक धुर फ़रमाना इक्क सुणाया, गोबिन्द फ़तह बोल जैकार। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आदि जुगादी वेख वखाया, निरगुण सरगुण पावे सार। बैकुण्ठ निवासी किसे दिस ना आया, थिर घर बैठा हो उज्यार। कलिजुग अन्तिम करे रुशनाया, दीवा बाती इक्क प्यार। कागद कलम कोए भेव ना पाया, लेखा लिखे ना विच संसार। चारे बाणी दए दुहाया, छत्ती राग करन विचार। हरि का रूप किसे दिस ना आया, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाही एका कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका लाए सच्चा दरबार। सच दरबार लगावणा, कल कल्की लए अवतार। सतिजुग आपणे चरन बहावणा, त्रेता करे प्यार। द्वापर वेख वखावणा, बण बण मीत मुरार। कलिजुग रंग रंगावणा, रंग रंगीला इक्क करतार। छैल छबीला वेस धरावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप निरँकार। सच

दरबार जाए लग्ग, सचखण्ड निवासी आप लगाईआ। उप्पर बहे सूरा सर्बग्ग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। नौं सत्त दीपक जोती जाए जग, ब्रह्मण्ड खण्ड करे रुशनाईआ। धरत धवल आकाश प्रकाश एका लो जाए लग, रवि ससि मुख शरमाईआ। दो जहान होए प्रगट, परम पुरख वडी वड्याईआ। लेखा वेखे चौदां लोक चौदां हट्ट, चौदां तबकां फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी अंदर आपणा सत्थर घत, फोल फोलाए सर्ब लोकाईआ। त्रैगुण माया पावे नथ्थ, पंचम तत नट्ठ ना जाईआ। नाम मधाणे विरोले तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र नैणां नीर वहाईआ। वसणहारा घट घट, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह हरि निरँकारा, दूसर अवर ना कोए जणाइंदा। आपणा हुक्म वरते सच वरतारा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। हुक्मे अंदर रक्खे ब्रह्मण्ड खण्ड रवि ससि सतारा, मंडल मण्डप आपणे हुक्मे अंदर फिराइंदा। एका एक देवणहार वण्ड, करे कराए खण्ड खण्ड, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता आपणा नाउँ धराइंदा। कलिजुग दरबारा सच सुहञ्जणा, हरि साचा आप लगाईआ। करे खेल पुरख निरँजणा, नर नरायण वडी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर आपे पर्दा कज्जणा, कलिजुग वेखे थाउँ थाँईंआ। धरत धवल आकाश ब्रह्मा विष्न शिव उठ उठ भज्जणा, धीरज धीर ना कोई धराईआ। पंज तत त्रैगुण जो घड़या सो भज्जणा, भन्नणहारा फेरा पाईआ। किसे ना मिले साचा मजना, धूढ़ी अशनान ना कोई वखाईआ। वेले अन्त पर्दा किसे ना कज्जणा, जूठी झूठी लग्गी शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाइंदा, बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार। हक हकीकत वेख वखाइंदा, लाशरीक सांझा यार। आपणी तौफ़ीक आप धराइंदा, जोद्धा सूरबीर बलकार। जगत तारीक आप मिटाइंदा, जल्वा नूर कर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। हरि हरि भेव खुल्हावणा, कलिजुग अन्तिम वार। सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा ग्वाह बणावणा, करे खेल अगम्म अपार। चार वेदां संग रलावणा, वेद व्यासा बणे विचोला विच संसार। भरम भुलेखा सर्ब कढावणा, पुरख अबिनाशी हो त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। सच सरकार सच्चा शाह, साचा तख्त आप सुहाइंदा। कलिजुग अन्तिम बणे मलाह, दो जहानां बेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलिजुग रोवे उठ उठ मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। चार कुण्ट कोए सज्जण दिसे ना, सगला संग ना कोए वखाइंदा। चार यारी कर जाए ना, पीर दस्तगीर पल्लू ना कोए फड़ाइंदा। वेले अन्त ना देवे कोए पनाह, सिर हथ्थ ना कोए धराइंदा।

३५५

लक्ख चुरासी तेरा बख्शे ना कोई गुनाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार आप सुहाइंदा। सच दरबार सुहावणा हरि हरि पुरख अकाल। आदि आपणा कीता कौल निभावणा, अन्त भुल ना जाए वाली दो जहान। भगत भगवन्त वेख वखावणा, साचे सन्त कर पहचान। गुरमुख गुर गुर मेल मिलावणा, गुरसिख देवे जीआ दान। आत्म दीप जोत इक्क जगावणा, ब्रह्म पारब्रह्म करे प्रधान। साचा मन्दिर इक्क वखावणा, पंज तत काया जगत निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोद्धा सूर बली बलवान। सूरबीर हरि बलवाना, परम पुरख वडी वड्याईआ। धराए रूप मर्द मरदाना, मर्दन करे सर्ब लोकाईआ। शब्द गाए इक्क तराना, तार सतार ना कोए वखाईआ। सच सुणाए धुर फ़रमाना, भुल कोए ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम तख्तों लाहे राजा राणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। करे खेल वाली दो जहानां, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता इक्क अख्वाईआ। जुग करता हरि करनेयोग, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। हरिजन देवे दरस अमोघ, गुरमुख विरले मात उठाइंदा। कट्टणहारा हउमे रोग, माया ममता मोह चुकाइंदा। एका देवे साचा जोग, निश अक्खर वक्खर नाम पढ़ाइंदा। निर्मल जगाए साची जोत, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम कूड़ कुड़यारा पार कराइंदा, कूड़ कुड़यारा उतरे पार, कलिजुग अन्त रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी मारे मार, नाम खण्डा इक्क वखाईआ। चारों कुण्ट करे ख्वार, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण फेरा पाईआ। ना कोई दिसे मीत मुरार, सगला संग ना कोए वखाईआ। घर घर रोवे जीव नार विभचार, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। घर मन्दिर ना दिसे कोए प्यार, झूठी कंदर रहिण ना पाईआ। मन बन्दर दहि दिश फिरे उजाड़, मति मतवाली दए दुहाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना उतरे पार, बेड़ा बन्ने ना कोए लाईआ। राह तक्कण उत्ते पत्तण चार यार, कवण वेला मिले सच्चा मलाहीआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, निरगुण दाता आप कराईआ। इक्क इकांता फिरे विच संसार, दिस किसे ना आईआ। ज़ातां पातां वसया बाहर, वरन बरन ना कोए वड्याईआ। साचा रथ कर त्यार, पुरख समरथ आप लिआईआ। जिस जन सुणाए आपणी गाथ, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूर्ब जन्मां वेख वखाईआ। मेटणहारा उच्चे टिल्ले नौं नौं नाथ, नौं नौं दर आपणे लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता आपणी कल आप धराईआ। आपणी कल आपे रख, हरि सच्चा खेल खिलाइंदा। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण एका रूप हो प्रतक्ख, दूजी धार ना कोए जणाइंदा। सृष्ट

सबाई नालों होया वक्ख, मन्दिर मस्जिद मठ गुरदुआर बन्द ना कोए कराइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, भगत भगवन्त आप जगाइंदा। हरि जू हिरदे अंदर वस, हरिजन हरि के पौड़े आप चढ़ाइंदा। गुरमुखां अंदर करे प्रकाश कोटन रवि ससि, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा । गुरसिखां मिल आप वखाए आपणा रस, रसना जिहवा रस ना कोए महिकाइंदा। कलिजुग अन्तिम लक्ख चुरासी चरनां हेठां देवे झस्स, झूठी चक्की पीसण पीस पिसाइंदा। एथे ओथे दो जहानां रिहा नस्स, औंदा जांदा दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी कार आप कराइंदा। हरि कार करावण आया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। गुर अवतार गए सलाहया, जुग जुग वारो वार। ब्रह्मा विष्न शिव नैण रिहा उठाया, राह तक्के मीत मुरार। गुरमुख लोकमात कुरलाया, चारों कुण्ट धूंआँधार। साचा चन्द ना कोए चढ़ाया, घर घर होया विभचार। गुर का शब्द ना कोए गाया, मिल्या मेल ना हरि निरँकार। मन पंखी किसे ना बन्ह वखाया, कोटन कोटि फिर दे जंगल जूह उजाड़ पहाड। आपणा भेव ना किसे खुल्हाया, अलख अभेव ना पाई सार। साचा इष्ट ना कोए मनाया, नज़र ना आया एकँकार। कलम शाही प्यार रखाया, कागद कोई ना दए आधार। बिन सतिगुर पूरे साचा राह ना कोए वखाया, कोटन कोटि पढ़ पढ़ थके वेद चार। कलिजुग अन्तिम कूके दए दुहाया, चारों कूट आई हार। मुला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर ना कोए सहाया, ना कोए होए दस्त बरदार। तन चीर ना कोए पहनाया, शाह फ़कीर ना देवे कोए आधार। पंडत पांधा मथ्थे तिलक ना कोए लगाया, त्रिशूल देवे ना कोए मार। अठसठ अशनान ना कोए कराया, दुरमति मैल ना देवे कोए उतार। मन्दिर मस्जिद फेरा पाया, अग्गे दिसे ना हरि निरँकार। कामी क्रोधी बैठे आसण लाया, नाता जुड़या नाल संसार। उच्चे कोठे छत्त पवाया, अंदर दिसे ना सच भण्डार। दीवा बाती घर घर रहे जगाया, निरगुण जोत ना कोए उज्यार। रसना पढ़ पढ़ रहे सुणाया, अनहद शब्द ना कोए धुन्कार। कलिजुग चारों कुण्ट फिर फिर आया, सचा मिल्या ना कोए दरबार । प्रभ अगे बैठा सीस झुकाया, नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार। मैं तेरा सुत बाल अञ्याणा की जाणा तेरी सार, तूं बेअन्त बेपरवाहीआ। तूं शाह पातशाह सचा निरँकार, एका तेरी ओट तकाया। तूं जुग जुग देंदा आया प्यार, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणी गोद बहाया। मेरी वार किउँ लुकया विच संसार, बैठा मुख छुपाया। मैं भुल्ला तूं ना भुल्ल करतार, मैं भुल्ल बख्शावण आया। तेरे बाझों रुला कर हँकार, चार लक्ख बत्ती हज़ार आपणा लेखा गया रुढ़ाया। किसे घर मेरा कोई ना पए मुल्ला, कौडी कौडी ना हट्ट विकाया। मेरा अमृत अठसठ तीर्थ विचों डुल्ला, सर सरोवर ना कोए सुहाया। मेरा बूटा सिम्मल हुला, साचा फल ना कोए लगाया। बिन तेरे कंडे झूठे तोल तुला, अन्त भार ना कोए जणाया ।

३५८

मैं परदेसी दर आया भुल्ला, एका बख्श सची सरनाया। मैं प्रगटया तेरी साची कुला, मेरी लाज लै रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेस इक्क सुणाया। हरि सच संदेस सुणाइंदा, कलिजुग अन्तिम कर ध्यान। पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा, आदि जुगादि मेहरवान। दर आयां भुल बख्शाइंदा, जो जन चरनी डिगे आण। फड़ बाहों गले लगाइंदा, जो देवे सच ब्यान। सच अदालत आप कमाइंदा, तख्त निवासी राज राजान। लोकमात फेरा पाइंदा, एका सुणना धुर फ़रमान। निहकलंक आपणा एका नाउँ रखाइंदा, अन्तिम आए विच मैदान। गुर अवतार कोल बहाइंदा, लेखा पुछे जाणी जाण। भगत भगवन्त चरन रखाइंदा, करे खेल दीन दयाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आयां देवे माण। माण निमाणयां देवणा, धुर दी साची कार। जो करना सो होवणा, सो वरते विच संसार। कलिजुग तेरे संग रल के लक्ख चुरासी रोवणा, किसे ना दिसे कोए सहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दस्से सच विहार। हरि सच संदेस सुणाइंदा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। कलिजुग तेरी डोर आपणे हथ्थ रखाइंदा, देवणहारा अन्त पनाह। तेरे चँवर हथ्थ वखाइंदा, तेरे नाल करे सलाह। अन्ध घोर वेख वखाइंदा, जो बैठे मुख छुपा। शब्द घोड़ा इक्क दौड़ाइंदा, नौ खण्ड फेरा लए पा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे दर लए बहा। कलिजुग दर सदिआ, कर किरपा हरि भगवान। आपणा रूप आपणे विचों कढुया, आपणे उत्ते होया आप मेहरवान। सतिजुग त्रेता द्वापर लडौंदा आया लड्डुया, कलिजुग देवे इक्क ज्ञान। उठ बाल नादाने नढुया, सुण धुर सचा फ़रमान। तेरा कर्म तेरे नाल बध्धया, निहकर्मी कर पछाण। तूं भार आपणा आपणे उत्ते लद्दया, जोती जोत सरूप हार, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे दो जहान। कलिजुग कूक कुरलाया, कुकर्मी नीचो नीच। मैं दर तेरे शरमाया, बख्शश कर साचे मीत। दो कन्नी हथ रिहा लगाया, मैं भुलाया हस्त कीट। आपणा डंका इक्क वजाया, झूठी चलाई मात रीत। कलिजुग जीवां आप भुलाया, करया नाच मन्दिर मसीत। साचा सबक ना किसे सिखाया, अलिफ़ नज़र ना आए इक्क अतीत। ऊड़ा ओंकारा ना कोए दरसाया, त्रैगुण होया ना कोए पतित पुनीत। कलिजुग सन्त साध विच फँसाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेले अन्त ना देणी पीठ। हरि आपणी करवट बदलाइंदा, मुख़ातब करे कलू कलि काल। तेरा पन्ध आप मकाइंदा, पुरख अबिनाशी दीन दयाल। गोबिन्द लेखा पूर कराइंदा, अन्त चले अवल्लड़ी चाल। जोती जामा भेख वटाइंदा, शब्द सरूपी बणे दलाल। तेरी वाटी पन्ध मुकाइंदा, तेरी पूरी करे घाल। चार यारी तेरे नाल रलाइंदा, चार कुण्ट वज्जे ना झूठा ताल। शतरी ब्रह्मण शूद्र वैश एका रूप वखाइंदा, आपे होए हरि कृपाल। तेरा कूड़ा हूंझ वखाइंदा,

छापा अड़या कोए ना रहि जाए नाल। जो घड़या भन्न वखाइंदा, तेरी तेरे निभे नाल। लक्ख चुरासी तेरी झोली पाइंदा, विचों गुरमुख लभ्भे आपणे लाल। जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा, तिस नेड़ ना आवे काल। जगत तृष्ना हरस मिटाइंदा, अमृत आत्म दए प्याल। अर्श फर्श एका रंग रंगाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल दीन दयाल। दीन दयाला खेल खिलाइंदा, ख़ालक ख़लक वेख वखा। निरगुण आपणा रूप धराइंदा, हरिजन साचे लए मिला। अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा, सो पुरख निरँजण रिहा सुणा। हँ ब्रह्म वेख वखाइंदा, आत्म ब्रह्म पर्दा दए उठा। एका दूआ भउ चुकाइंदा, तीजा नेत्र दए खुल्ला। चौथे पद आप बहाइंदा, पंचम मेला लए मिला। छेवें छप्पर छन्न छुहाइंदा, सति पुरख निरँजण सति सतिवादी सच्चा शहिनशाह। अठ्ठवें अठ्ठां तत्तां पाक कराइंदा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना दिसे कोई थाँ। नावें नौं दुआरे वेख वखाइंदा, नौं खण्ड पृथ्मी फेरा पा। दसवें साची जोत आप जगाइंदा, बजर कपाटी कुण्डा तुड़ा। साची सेज आप सुहाइंदा, सति सतिवादी आसण ला। शब्द अनादी राग अल्लाइंदा, अनहद ढोला गा। गुरमुख साचे मेल मिलाइंदा, मालक बणया आप ख़ुदा। कलिजुग जीवां ख़ाक मिलाइंदा, अन्तिम ख़ाकी ख़ाक दए उडा। कलिजुग तेरा कूड़ कुड़यारा वेख वखाइंदा, आपणा नेत्र नैण उठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपे दए जणा। हरि साचा भेव जणाइंदा, कर किरपा गुण निधान। निरगुण आपणा रूप वटाइंदा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। सम्मत सतारां वेख वखाइंदा, वीह सौ बिक्रमी दए ज्ञान। सीस ताज इक्क टिकाइंदा, लेखा जाणे राज राजान। चण्ड प्रचण्ड चण्ड चमकाइंदा, शब्द निराला मारे बाण। नौं खण्ड खण्ड खण्ड कराइंदा, करे खेल श्री भगवान। कलिजुग तेरी वण्ड वंडाइंदा, ना कोई दीसे जीव शैतान। सृष्ट सबाई दुहागण रंड राए धर्म घर बहाइंदा, घर वखाए मन्दिर मकान। झूठी कल्लर कंध ढांहयदा, अन्त रहे ना विच जहान। गुरमुखां साचा छन्द सुणाइंदा, सोहँ शब्द इक्क मेहरवान। परमानंद आप समाइंदा, निजानंद देवे दान। आपणी कंड ना कदे वखाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल जगत महान। खेल महान कराइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। पहली चेत थित वार वेख वखाइंदा, घड़ी पल पावे सार। जन भगतन हित इक्क जणाइंदा, नित नवित साची कार। सृष्ट सबाई खेल रण भूमी रूप वटाइंदा, पुरख अबिनाशी हो त्यार। सम्मत चौदां आपणा लिख्या लेखा पूर कराइंदा, पूरा कराए करनेहार। रिवालसर चरन छुहाइंदा, गोबिन्द मेला इक्क दरबार। बाई सद कोस वण्ड वंडाइंदा, ना कोई सके होश संभाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेमिसाल। बेमिसाल हरि खेल करावणा, वेद

कतेब भेव ना राया। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकावणा, विष्न ब्रह्मा शिव रहिण ना पाया। गुरमुख विरला आप बचावणा, जिस बख्शे सच सरनाया। नव सत्त एका डंक वजावणा, सोया कोए रहिण ना पाया। वीह सद अठारां बिक्रमी इक्क इक्क नाल मेल मिलावणा, अठ्ठां तत्तां पन्ध चुकाया। बत्ती दन्द नौं खण्ड पृथ्मी सभ ने गावणा, एका अक्खर रिहा पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल थाउँ थाँया। थाउँ थाईं खेल करतारा, हरि आपणा आप कराईआ। गुरमुख विरला करे वणजारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। एका नाम दए भण्डारा, अतोट अतुट रखाईआ। सिफ्ती सिफ्त सालाही वसे बाहरा, सिफ्त विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि हरिजन साचे आप उठाईआ। हरिजन साचे आप उठालदा, जुगा जुगन्तर साची कार। साचा मार्ग इक्क वखाल दा, आत्म अन्तर कर प्यार। करे खेल गुण निधान दा, गुणवन्ता एकँकार। सर्ब जीआं घट आपे जाणदा, गृह मन्दिर पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग गुरमुख साचे लए उभार। गुरमुख वड्याई धन्न, हरि सतिगुर सच्चा पाया। गुरसिख वड्याई धन्न, जिस हरि हरि नाउँ ध्याया। गुरमुख वड्याई धन्न, जिस माया ममता मोह चुकाया। गुरसिख वड्याई धन्न, जिस हउमे हंगता गढ़ तुड़ाया। गुरमुख वड्याई धन्न, जिस हरिसंगत मिल हरि जस गाया। दोहां बेड़ा देवे बन्न्, पुरख अकाल होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जगत नईया वेख वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म बेअन्त कन्त सन्त भगवन्त, गुरमुख गुरसिख सज्जण लए मिलाया।

३६०

★ २३ फग्गण २०१७ बिक्रमी पिण्ड शोन ज़िला गुरदास पुर ★

सतिगुर सच्चा हरि निरँकारा, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। गुर गुर रूप धरे विच संसारा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। शब्दी शब्द सच जैकारा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। भगत भगवन्त दए सहारा, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। सन्त कन्त बहाए इक्क दुआरा, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख देवे सच हुलारा, पवण पवणां पार कराईआ। गुरसिख वखाए इक्क दुआरा, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। जुगो जुगन्तर हो उज्यारा, भेव अभेद आप खुलाईआ। साचा मार्ग धर संसारा, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा सच्चा शहिनशाह, आदि पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। गुर गुर रूप बण मलाह, साचा बेड़ा

आप चलाइंदा, शब्दी शब्द दए सलाह, नाउँ निरँकारा आप धराइंदा। भगत भगवन्त लए उठा, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। साचे सन्तन लए जगा, सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा। गुरमुख गोद लए बहा, सिर हथ्थ समरथ टिकाइंदा। गुरसिख साचे लए समझा, एका अक्खर नाम पढ़ाइंदा। साची सिख्या इक्क जणा, साख्यात दरस दिखाइंदा। जगत विकारा दए मिटा, माया ममता मोह चुकाइंदा। एका मन्दिर दए वखा, घर घर विच आप उपाइंदा। दीवा बाती आप टिका, नूरो नूर डगमगाइंदा। शब्द अनादी नाद सुणा, धुन आत्मक आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। सति पुरख सतिगुर पूरा श्री भगवान, आदि जुगादि समाया। गुर गुर रूप धरे जहान, निरगुण निरवैर पुरख बेपरवाहया। भगतां देवे भगती दान, एका मार्ग दए सुहाया। सन्तन राग सुणाए कान, राग अनादी आप अलाया। गुरमुख साचे देवे माण, माण निमाणयां होए सहाया। गुरसिख साचे देवे दान, जीआ दान झोली पाया। नौं खण्ड पृथ्मी हो प्रधान, एका डंका नाम वजाया। लक्ख चुरासी वेखे मार ध्यान, घट घट आपणा खेल खिलाया। लेखा जाणे शाह सुल्तान, राउ रंकां वेख वखाया। खाणी बाणी देवे दान, आपणी इच्छया आप प्रगटाया। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, हरि हरि साचा खेल खिलाया। सतिगुर साचा पुरख अबिनाश, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। गुर गुर वेखे खेल तमाश, निरगुण सरगुण सहिज सुभाईआ। भगत भगवन्त वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। सन्त कन्त होए दास, जुगा जुगन्तर सेव कमाईआ। गुरमुखां मिल मिल पाए रास, गोपी काहन आप नचाईआ। गुरसिख नाता तोड़े दस दस मास, मात गर्भ फंद कटाईआ। लेखा जाणे पवण स्वास, रसना जिहवा आप समाईआ। लहिणा देण चुकाए पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल एका हरि, आदि अन्त ना किसे जणाईआ। सतिगुर सच्चा साहिब सुल्ताना, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। गुर गुर रूप हो प्रधाना, लोकमात खेल खिलाइंदा। शब्द अगम्मी तीर कमाना, साचे चिल्ले आप चढ़ाइंदा। भगतां बन्ने साचा गाना, साचा सगन आप मनाइंदा। सन्तन देवे इक्क निशाना, चरन कँवल समझाइंदा। गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञाना, आत्म ब्रह्म भेव मिटाइंदा। गुरसिख आपे होए जाणी जाणा, जानणहार भुल कदे ना जाइंदा। लेखा जाणे दो जहाना, दोए दोए आपणी धार वखाइंदा। जुगा जुगन्तर वेस अनेक करे भगवाना, भगवन आपणा खेल खिलाइंदा। नित नवित पहरे बाणा, रूप अनूप आप धराइंदा। जोती जाता वड मेहरवाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेस आप वटाइंदा। सतिगुर साचा दीन दयाला, दर्द दुःख भय भंजन इक्क अख्वाइंदा। गुर गुर रूप हो

उजाला, सृष्ट सबाई खेल खिलाइंदा। शब्द अनादी बण दलाला, सच वणजारा वणज कराइंदा। भगतन देवे इक्क भण्डारा, वस्त अमोलक नाम वरताइंदा। सन्तन खोल्हे बन्द किवाड़ा, आत्म ताकी आप लांहयदा। गुरमुखां करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। गुरसिखां प्याए अमृत आत्म ठंडी ठारा, निझर झिरना आप झिराइंदा। आवे जावे वारो वारा, जुग जुग वेस वटाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। लक्ख चुरासी वसणहारा बाहरा, घट घट अपणी जोत आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, हरी हरि आपणा रूप धराइंदा। सतिगुर सचा निरगुण जोत, निरवैर पुरख वडी वड्याईआ। गुर गुर रूप किसे ना वसे किले कोट, चार दीवार ना बन्द कराईआ। शब्द नगारे लाए चोट, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाईआ। जन भगतां बख्शे एका ओट, सरनगत सची सरनाईआ। सन्तन देवे नाम अतोट, निखुट कदे ना जाईआ। गुरमुख उठाए आल्हणिउँ डिगे बोट, आपणी गोदी आप सुहाईआ। गुरमुखां खोल्हे बन्द सोत, पूत सपूता शब्दी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता नाउँ धराईआ। सतिगुर सचा गहर गम्भीर, भेव किसे ना पाया। गुर गुर रूप लेखा जाणे अन्त अख़ीर, आप आपणा रूप वटाया। शब्द शब्दी सच ज़ंजीर, लक्ख चुरासी बन्धन पाया। भगतन चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, कबीर जुलाहा दए दुहाया। सन्तन प्याए अमृत नीर, नीर निराला इक्क वखाया। गुरमुखा मारे अपणा तीर, बजर कपाटी पार कराया। गुरमुखां कढ्ढे हउमें पीड़, माया ममता मोह चुकाया। आदि अन्त कट्टणहारा भीड़, करे खेल सच्चा शहिनशाहया। जुग जुग बन्नणहारा बीड़, जगत बेड़ा आप चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, लेखा जाणे जगत तमाशा, सचखण्ड बैठा वेख वखाया। सतिगुर पूरा वसया सचखण्ड, निरगुण निरवैर पुरख अकालया। गुर गुर रूप धरे विच ब्रह्मण्ड, जोत जोत जोत उजालया। शब्दी शब्द प्रचण्ड, नाम खण्डा इक्क उठा ल्या। भगतन पाई आपणी वण्ड, एका हिस्सा नाम रखा ल्या। सन्तन ढाई दूई द्वैती कंध, माया पर्दा आप उठा ल्या। गुरमुखां वखाए साचा चन्द, जोत निरँजण डगमगा ल्या। गुरसिख जणाए परमानंद, निजानंद रस चखा ल्या। जुग जुग बोले आपणा सुहागी छन्द, गीत गोबिन्द आपे गा ल्या। आपे जाणे आपणा पन्ध, लिख्या लेख ना किसे लिखा ल्या। साहिब सतिगुर सदा बख्शंद, दीनन दीनां नाथां दया कमा रिहा। हँकारीआं वढ्ढणहारा कंड, गढ़ हँकारी आपे ढा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जगत बसन्तर आप बुझा ल्या। सतिगुर पूरा खेल खिलाइंदा, परम पुरख करतार। गुर गुर रूप आप धराइंदा, जुग चौकड़ी कर विचार। शब्द विचोला नाल मिलाइंदा, आदि जुगादी

साची कार। भगतन मार्ग इक्क लगाइंदा, कलिजुग अवल्लड़ी चले चाल। सन्तन साचे धन्दे लाइंदा, हिरदे राम नाम उरधार। गुरमुख आपणे बन्दे आप बणाइंदा, लक्ख चुरासी विचों बाहर निकाल। गुरसिख सोए आप उठाइंदा, बाली बुध बाल अंञाण। आपणे ढोए साची वस्त झोली पाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, लेखा जाणे शाह कंगाल। सतिगुर पूरा शाह कंगाला, नीचो नीच आप अख्वाईआ। गुर गुर रूप करे प्रितपाला, जुग जुग साची सेव कमाईआ। एका मन्त्र दृढ़ाए नाम सुख़ाला, नमो देव वास्तक आपणा रूप वटाईआ। भगतन तोड़े जगत जंजाला, जाग्रत जोत कर रुशनाईआ। सन्तन पहनाए आपणे नाम माला, मन का मणका आप भवाईआ। गुरमुखां वखाए सच्ची धर्मसाला, घर घर विच दए वड्याईआ। गुरसिख फल लगाए आपणे डाल्ह, पत्त डाल्ही आप महिकाईआ। निरगुण सरगुण बण रखवाला, आदि जुगादि वेखे थाउँ थाँईंआ। लेखा जाणे काल महाकाला, काल महाकाल आपणा रूप वखाईआ। जुग जुग करे खेल निराला, निरवैर सच्चा शहिनशाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर अन्तिम कढुया आप दवाला, दूसर संग ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। सतिगुर सचा राज राजाना, तख्त ताज इक्क सुहाइंदा। गुर गुर रूप विच जहाना, नव नव आपणा खेल खिलाइंदा। शब्दी शब्द धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी आप अल्हाइंदा। भगत भगवन्त इक्क मकाना, हरि मन्दिर आप सुहाइंदा। सन्तन सति वखाए इक्क निशाना, सच सुच्च दृढ़ाइंदा। गुरमुखां वखाए इक्क ध्याना, इष्ट देव इक्क मनाइंदा। गुरसिख साचे कर परवाना, पारजात बणाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो मेहरवाना, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। गुर अवतार लै के औंदे रहे धुर परवाना, सतिगुर पूरा झोली पाइंदा। जीव जंत उठौंदे रहे बाल अंञाणा, साची सेवा सच कराइंदा। सति सन्तोखी बन्न्ह बन्न्ह गाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप जणाइंदा। सतिगुर पूरा साख्यात, हरि सच्चा शाह सुल्तानया। गुर गुर रूप ना कोई ज़ात ना कोई पात, दीन मज़्हब ना कोए रखानया। शब्द अगम्मी एका गाथ, आपे जाणे श्री भगवानया। भगत भगवन्त देवे साथ, सगला साथ आप रखानया। सन्तन मस्तक लहिणा देवे माथ, लेखा जाणे दो जहानया। गुरमुख चढ़ाए आपणे राथ, रथ रथवाही खेल महानया। गुरसिख इक्क जपाए पूजा पाठ, एका अक्खर वक्खर आप पढ़ानया। आप लगाए आपणे घाट, सच किनारा इक्क जणानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेल करे श्री भगवानया। सतिगुर पूरा इक्क प्रतक्ख, आदि जुगादि समाया। गुर गुर रूप लोकमात ल्ए रक्ख, पंज तत चोला आप हंढाया। शब्दी शब्द मार्ग एका दस्स, भगत सन्त ल्ए जगाया। गुरमुख गुरसिख करे वस, एका आपणा बन्धन पाया। कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत कर

प्रकाश, निहकलंका नाउँ रखाया। सम्बल नगर करया वास, साढे तिन्न हथ्थ बंक सुहाया, गुर गोबिन्द सूरा वसे पास, विछड़ कदे ना जाया। मात गर्भ ना आए दस दस मास, जूनी जून ना कोए भवाया। रसना जिहवा ना पवण स्वास, सुरती शब्द ना कोए मिलाया। आदि जुगादि ना होए उदास, आप आपणे रंग समाया। लेखा जाणे खेल तमाश, दो जहानां फेरा पाया। जन भगतां अन्तर होया वास, घर घर विच बैठा आसण लाया। एका मंडल पाए रास, गोपी काहन आप नचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा आपणा नाउँ धराया। सतिगुर पूरा इक्क इकल्ला, अकल कला अख्वाईआ। गुर गुर रूप वसे जगत महल्ला, जगत जुग दए वड्याईआ। सच संदेश नर नरेश एका घल्ला, शब्द करे शनवाईआ। भगत भगवन्त फड़ाए पल्ला, छुट्ट कदे ना जाईआ। सन्तन अन्तर आपे रला, जोती जोत मेल मिलाईआ। गुरमुख पंच विकार ना मारे हल्ला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए गंवाईआ। गुरसिख चरन कँवल वखाए निहचल धाम अटल्ला, लोकमात दए वड्याईआ। कलिजुग जीव भुलाए कर कर वल छला, चार कुण्ट दहि दिशा दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटाईआ। सतिगुर सच्चा नाउँ प्रगटाइंदा, जुगा जुगन्तर साची कार। गुर गुर हो मात सुणाइंदा, निरगुण सरगुण लै अवतार। शब्दी नाम आप जणाइंदा, रसना जिहवा इक्क जैकार। भगत भगवन्त आप पढ़ाइंदा, पाठशाला कोए ना करे विचार। साचे सन्त भेव खुलाइंदा, अंदर मन्दिर खोल्ह किवाड़। गुरमुखां एका पट्टी आप वखाइंदा। कलम शाही ना पावे सार। गुरसिख रत्ती रत्त रत्त रंगाइंदा, प्रेम रत्त कर त्यार। कलिजुग अन्तिम सत्थर इक्क विछाइंदा, नौं खण्ड करे ख्वार। शाह सुल्तान अथ्थर अन्त वहाइंदा, नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर करे साची कार। सतिगुर पूरा कार कराइंदा, करनहार करतारा। गुर गुर आपणा वेस वटाइंदा, शब्द अनादी बोल जैकारा। भगतन लेखा बह समझाइंदा, सन्तन करे प्यारा। गुरमुखां भरम भुलेखा आप चुकाइंदा, गुरसिखां बख्शे सति भण्डारा। कलिजुग जीव भेव कोए ना पाइंदा, हरि का रूप अगम्म अपारा। वेद कतेब लिख लिख जस गाइंदा, जस गाए ब्रह्मा चारे मुख खोल्ह किवाड़ा। गुर अवतार सदा सालांहयदा, बेअन्त हरि निरँकारा। भगत भगवन्त सन्त कन्त ध्यान लगाइंदा, मंगण भिक्ख चरन दुआरा। गुरमुख गुरसिख राह तकाइंदा, जुगा जुगन्तर वारो वारा। गोबिन्द लेखा इक्क समझाइंदा, लेखा लिख्या अगम्म अपारा। पुरख अकाल इक्क मनाइंदा, दूजा अवर ना कोए सहारा। अन्तिम वेला ओट जणाइंदा, लक्ख चुरासी दए सहारा। जुग जुग हरि हरि आपणा खेल खिलाइंदा, कलिजुग अन्तिम खेल करे न्यारा। सरगुण आपणा मुख छुपाइंदा, निरगुण रूप होए उज्यारा। जोती जामा भेख वटाइंदा,

नाउँ रखाए निहकलंक नरायण नर अवतारा। साचा शब्द डंक वजाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव लोआं पुरीआं करे ख़बरदारा। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा, खण्डा फड़े हथ्थ दो धारा। अश्व घोड़ा आप दौड़ाइंदा, नीला नीली धारों करे बाहरा। हरि का भेव कोए ना पाइंदा, सतिगुर साचा आदि जुगादि इक्क अवतारा। गुर गुर रूप सेव कमाइंदा, दोए जोड़ करे निमस्कारा। साचा सुत इक्क उपजाइंदा, शब्दी शब्द कर प्यारा। भगत सन्त गुरमुख गुरसिख एका धाम बहाइंदा, चौथा जुग करे पार किनारा। कालख टिक्का मेट मिटाइंदा, निर्मल दीपक कर उज्यारा। फिका बोल रहिण ना पाइंदा, रस मिट्ठा इक्क जणाए एकँकारा। चारे वरनां एका रंग रंगाइंदा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका ओट कमाए हरि चरन, सरन सच्चा दरबारा। ऊँच नीच ना कोए वखाइंदा, ज़ात पात ना कोए किनारा। आत्म ब्रह्म सर्ब दृढ़ाइंदा, पारब्रह्म भेव न्यारा। सो आपणा रूप रखाइंदा, हँ रूप सर्ब संसारा। सोहँ एका शब्द सुणाइंदा, निरगुण निरगुण करे प्यारा। सरगुण पंज तत चोला उप्पर कप्पड़ पाइंदा, रक्त बूंद हड्ड मास नाड़ी लाया गारा। अंदर आपणा बंक सुहाइंदा, घर घर विच कर त्यारा। जगत नेत्र दिस किसे ना आइंदा, लक्ख चुरासी होई ख्वारा। गुरमुख विरले बूझ बुझाइंदा, जिस जन खोल्हे बन्द किवाड़ा। डूँघी भँवर ना कोए रखाइंदा, सुखमन टेढी बंक निउँ निउँ करे निमस्कारा। ईड़ा पिंगल मुख शरमाइंदा, नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारा। पंचम मूरछागति बणाइंदा, शब्द मार खण्डा दो धारा। अमृत सोमां आप फुटाइंदा, कँवल करे मूध निरँकारा। आपणा नाद आप वजाइंदा, अनहद शब्द सच्ची धुन्कारा। आपणा मंगल आपे गाइंदा, पंचम सख़ीआं नाल वारो वारा। गुरसिख तेरा रूप आप वटाइंदा, कागों हँस बणे उडारा, तेरी सुरती आपणे लेखे लाइंदा, साचा शब्द कन्त भतारा। साची जोड़ी जोड़ जुड़ाइंदा, जोड़नहारा खेल न्यारा। आपणी हथ्थीं आपणे आसण आप बहाइंदा, आत्म सेजा कर प्यारा। साची सेज सोभा पाइंदा, कन्त कन्तूल मीत मुरारा। आपणी सख़ी आपणे अंग लगाइंदा, नाता तोड़ जगत संसारा। जगत माया मोह भरम भुलाइंदा, हरि का भेव ना पाए कोए जीव गंवारा। कलिजुग जीव जंत साध सन्त सर्ब कुरलाइंदा, उच्चा दिसे ना महल्ल मुनारा। नौं दुआरे फिर फिर थक्के अगला पन्ध ना कोए मुकाइंदा, ना कोई देवे सच सहारा। रसना पढ़ पढ़ जगत ज्ञान सुणाइंदे, अन्तर ज्ञान ना होया उज्यारा। बह बह आसण चरनी सीस लवाइंदे, आपणा सीस ना झुकया परवरदिगारा। उठ उठ अठसठ तीर्थ फेरा पाइंदे, तन लंगोट ख़ाक पाई छारा। अन्तर मैल ना आप धवाइंदे, चिकड़ भरी होई दुहागण नारा। घर घर जा जीवां जंतां अनन्द कारज आप कराइंदे, आपणा कन्त किसे ना मिल्या हरि निरँकारा। जो झूठा विआह वखाइंदे, चौथी लांव प्रभ अबिनाशी मिल्या ना इक्क निरँकारा। नानक कीता कौल ना पूर कराइंदे, गोबिन्द मारे अन्तिम मारा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आदि पुरख एका हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई वेख वखाइंदा।

★ २३ फग्गण २०१७ बिक्रमी सुंदर सिँघ दे गृह पिण्ड रोसे ज़िला गुरदास पुर ★

सो पुरख निरँजण खेल महाना, हरि सतिगुर आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण लेखा जाणे दो जहाना, आदि जुगादी वेख वखाइंदा। एकँकारा जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, मर्द मरदाना आपणा नाउँ धराइंदा। आदि निरँजण नूर महाना, जोती जोत डगमगाइंदा। श्री भगवान वसणहारा सच मकाना, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। अबिनाशी करता देवणहारा धुर फ़रमाना, सच संदेश आप सुणाइंदा। पारब्रह्म आपे बण बण गोपी कान्हा नारी कन्त सेज हंढाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल शाहो भूप बण राज राजाना, तख्त निवासी साचा तख्त इक्क सुहाइंदा। दर दरवेश ना कोए दरबाना, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणा खेल आप खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, अनुभव आपणी खेल खिलाइंदा। अनुभव खेल हरि निरँकारा, आपणा आप कराईआ। थिर घर साचे हो उज्यारा, अंदर मन्दिर आप सुहाईआ। करे खेल अपर अपारा, अपर अपरम्पर बेपरवाहीआ। हुक्मी हुक्म सति वरतारा, सति सतिवादी आप वरताईआ। जुगा जुगन्तर हो न्यारा, रूप अनूप आप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हथ्थ वड्याई पुरख समरथ, आदि जुगादि रखाइंदा। जुगा जुगन्तर महिमा अकथ, नाउँ निरँकारा नाम प्रगटाइंदा। लक्ख चुरासी चलाए रथ, रथ रथवाही दिस ना आइंदा। भगतन मार्ग साचा दस्स, साचे राहे आपे पाइंदा। सन्तन हिरदे अंदर वस, हरि का रूप आप दरसाइंदा। गुरमुखां देवे अमृत रस, निझर धारा आप झिराइंदा। गुरसिखां पूरी करे आस, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। गुर गुर रूप शाहो शाबास, शाह सुल्ताना आप कराइंदा। सेवक सेवा करे बण बण दासी दास, दासी दास आप अख्वाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मंडल फोल फुलाइंदा। आदि जुगादि ना जाए विनास, अजूनी रहत जून अजून ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, निरगुण सरगुण खेल कर, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। निरगुण दाता हरि भगवान, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। गुर गुर रूप विच जहान, शब्द शब्दी आप प्रगटाईआ। पंज तत कर प्रधान, लोकमात दए वड्याईआ। आपणा अक्खर निश कर परवान, सच ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। लेखा जाणे काया मन्दिर मकान, घर घर विच डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी करे आप कल्याण,

कुदरत कादर वेख वखाईआ। सति झुलाए इक्क निशान, सति सतिवादी सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग एका बन्धन पाईआ। जुग जुग बन्धन पाए एक, एकँकारा खेल खिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बख्शे चरन टेक, चरन टेक इक्क समझाइंदा। त्रैगुण माया भिख्या पाए कर कर भेख, पंचम साचा संग निभाइंदा। चारे वेद गाए अलख अलेख, चारे मुख मुख सालांहयदा। आपे बणया रहे अभेद, दिस किसे ना आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर निरगुण सरगुण हो हो आपे वेख, आपणी किरत कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस श्री भगवाना, हरि आपणा आप धराइंदा। सतिजुग खेले खेल महाना, एका आठा आठा एका आपणी कल धराइंदा। त्रेता तेरा रंग महाना, त्रैगुण अतीता आप चढ़ाइंदा। साचा तीर इक्क निशाना, हो मेहरवाना आप उठाइंदा। तोड़नहारा मान अभमाना, माण निमाणयां मेल मिलाइंदा। दोए दोए लेखा दो जहाना, दोए दोए लोचण खेल खिलाइंदा। रथ रथवाही बण निधाना महासारथी रथ चलाइंदा। एका अक्खर इक्क ज्ञाना, एका आठा जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस धराइंदा। वेस वटाए इक्क इकल्ला, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। निरगुण रूप नूरी नूर अल्ला, इलाही नूर आप दरसाईआ। वसणहारा सच महल्ला, आपणी किरन किरन विचों लए प्रगटाईआ। सच संदेश एका घल्ला, मिहबान बीदो बेऐब परवरदिगार इक्क ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। निरगुण सरगुण साचा मेला, हरि साचा आप कराइंदा। आदि जुगादी सज्जण सुहेला, दर घर साचे सोभा पाइंदा। जुग जुग जाणे आपणा वेला, वार थित ना कोए रखाइंदा। कलिजुग पारब्रह्म अचरज खेल आपे खेला, निरगुण आपणा नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, अगम्म अगम्मड़ी कार कराइंदा। अगम्म अगम्मड़ा अलख निरँजण, अलख अलखना लख्या ना जाईआ। आदि जुगादि दर्द दुःख भय भंजन, दीनन दीनां नाथां होए सहाईआ। एका कराए साचा मजना, चरन सरन सरन चरन बख्शे सच्ची सरनाईआ। इक्क चढ़ाए सच जहाज़न, नाम निधाना मात धराईआ। निरगुण निरगुण रच रच काजन, सरगुण खेल खेले सच्चा माहीआ। नानक निरगुण सरगुण खेल ग़रीब निवाज़न, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। गोबिन्द चढ़े साचे ताजन, अश्व आपणा आप दौड़ाईआ। पुरख अकाल मारे वाजन, सुत दुलारा साचा माहीआ। आदि जुगादि साजे साजण, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करदा आया काजन, कलिजुग अन्तिम वेखे थाउँ थाँईंआ। पंच विकारा करे नाचन, चार कुण्ट नौं खण्ड पृथ्मी घर घर नाच वखाईआ। वेखणहार पुरख

समराथन, सचखण्ड बैठा आपणा नेत्र नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, जुग करता जग आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा सच महल्ला, हरि साचा सच सुहाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेस करे अवल्ला, निरगुण निरगुण रूप धराइंदा। पावे सार जलां थलां, जल थल महीअल जंगल जूह उजाड़ पहाड उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाइंदा। सच संदेश नर नरेश ब्रह्मा विष्न शिव महेष गणेश एका घल्ला, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज चारे खाणी एका दीप बल्ला, नूरो नूर डगमगाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुर अवतारां फड़ौंदा रिहा पल्ला, नाम पल्लू हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटंदड़ा, पुरख अबिनाशी इक्क अगम्म। दर घर साचे सोभा पंदड़ा, करे कराए आपणा कम्म। सम्बल नगर धाम सुहंदड़ा, साढे तिन्न हथ्थ बेड़ा बन्न्। आपणा हुक्म आप सुणंदड़ा, संदेश सुणाए सूरज चन्न। नौं खण्ड पृथमी वेख वखंदड़ा, सत्तां दीपां देवे डन्न। लक्ख चुरासी जूठा झूठा भेख मिटंदड़ा, जो घड़या सो देवे भन्न। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकंदड़ा, हउँ सेवक बाल अंञाणे तेरे जन। तूं साहिब सदा बख्शंदड़ा, रसना गायण धन्न धन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल श्री भगवन। हरि भगवन रूप धराइंदा, निरगुण नूर नूर उज्यार। जोती जाता वेस वटाइंदा, कलि कल्की हो उज्यार। रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा, पंज तत ना कोए आकार। त्रैगुण बन्धन ना कोए पाइंदा, किसे वसे ना चार दीवार। छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा, करे खेल अपर अपार। आपणी रचना आप रचाइंदा, आपे होए वेखणहार। गोबिन्द बंक इक्क सुहाइंदा, नाता तोड़ नौं दुआर। घर घर विच आसण लाइंदा, दाता जोद्धा सूरबीर बलकार। नाम खण्डा हथ्थ चमकाइंदा, ना कोई घड़े लोहार तरखाण। ब्रह्मण्डां आप वखाइंदा, एका वार मार ध्यान। कलिजुग अन्तिम कन्ढा हरिजन साचे आप जगाइंदा, देवे धुर फ़रमान। इक्क सुणाए सुहागी छन्दा, ब्रह्म पारब्रह्म करे पहचान। गुरसिख वखाए आत्म परमानंदा, निजानंद मेल महान। मुख शरमाए सूरज चन्दा, हरि जोत जगे महान। आत्म सेजा आप सुहंदा, सेज सुहञ्जणी कर परवान। मनमुख ना लेखा जाणे भागां मंदा, कवण दर वसे भगवान। नेत्र नैण कलिजुग अन्धा, लोचण तीजे ना सके पछाण। जगत दुहागण होया रंडा, कन्त कन्तूहल मिल्या ना हाणी हाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल आप महान। खेल महान कराइंदा, ख़ालक ख़लक बेऐब परवरदिगार। नव नौं आप उठाइंदा, सृष्ट सबाई सांझा यार। चार चार पन्ध मुकाइंदा, चार यारी जाए हार। कूड़ कुड़यारा खण्ड खण्ड कराइंदा, नाता तोड़े काम क्रोध

लोभ मोह हँकार। माया ममता पन्ध मुकाइंदा, आसा तृष्ना करे ख्वार। गुरसिख साचा छन्द सुणाइंदा, सतिगुर पूरा कर प्यार। ख़ुशी बन्द बन्द कराइंदा, नाता तोड़ गढ़ हँकार। करवट आपणी आप बदलाइंदा, अन्तर आत्म दए आधार। साची सेजा सोभा पाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार। अगम्म अगम्मड़ा खेल कराइंदा, कलिजुग अन्त सुहाए बंक। निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा, सरगुण बणाए साची बणत। निहकलंका नाउँ रखाइंदा, डंका वजाए आदि अन्त। हरिजन जनका आप उठाइंदा, इक्क जणाए मणीआ मंत। मनका मणका आप भवाइंदा, शब्द अगम्मी लाए तनक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेल मिलाए साचे सन्त। सन्त मिलावा कन्त सुहाग, नारी नर नरायण प्रनाईआ। लेखा जाणे वैराग अनुराग, द्वैष द्वैत ना कोए वड्याईआ। लक्ख चुरासी विचों लए काढ, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। किरपा निध गहर गुण सागर आप लडाए आपणा लाड, हरिजन बाल अञ्याणे गोद बहाईआ। निरगुण सरगुण शब्द जणाए बोध अगाध, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। कलिजुग अन्त अन्त भगवन्त सुणे फ़रयाद, साचा सालस निरगुण रूप ख़ालस आपणा नाउँ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। हरिजन हरि हरि वेखदा, जुगा जुगन्तर कार। लेखा जाणे पूर्ब जन्म भेख दा, माणस माणस लए उधार। करे खेल नर नरेश दा, ग़रीब निमाणयां पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख सज्जण लए उभार। गुरसिख गुर गुर जगाया, गुर शब्दी कर प्यार। साचे मार्ग आपे लाया, नाता तोड़ जगत संसार। साचा नाम शब्द जणाया, राग छतीस ना पावण सार। नाद अनादी आप वजाया, धुन आत्मक सच्ची धुन्कार। गुरसिख गुर गुर मेल मिलाया, सतिगुर एक मिलावणहार। दीवा बाती कर रुशनाया, कमलापाती करे प्यार। बण बण साकी जाम प्याया, भर प्याला अमृत निझर धार। लहिणा देणा बाकी दए चुकाया, लेखा रहे ना विच संसार। अन्तिम जोती जोत लए मिलाया, जिस जन बख़्शे चरन प्यार। नाम सोटी हत्थ फड़ाया, राए धर्म ना करे ख्वार। चित्रगुप्त ना लेख वखाया, लाड़ी मौत ना करे शंगार। काल दुआर ना बन्धन पाया, दूर दुराडा रोवे ज़ारो ज़ार। महाकाल होए सहाया, सतिगुर पूरा मीत मुरार। माणस जन्म लेखे लए लगाया, आपे होए लेखा लिखणहार। सुन्न अगम्मी पार कराया, लेखा जाणे धूंआँधार। थिर घर साचा आप खुल्हाया, आपे होए अंदर बाहर। आपणा पौड़ा आप वखाया, आपे होए गुप्त ज़ाहर। गुरमुख साचे आप चढ़ाया, थिर घर दवारिउँ कढ्ढे बाहर। सचखण्ड आप बहाया, जिथे वसे आप निरँकार। सूरज चन्न ना कोए चढ़ाया, पवण पवणां ना कोए हुलार। मंडल मण्डप ना कोए वखाया, ना कोई दीसे होर सतार। निरगुण जोत डगमगाया, इक्क इकल्ला

३७० ३७०

एकँकार। आपणा किला कोट सुहाया, ना कोई दीसे चार दीवार। सच सिँघासण सोभा पाया, पुरख अबिनाशी मीत मुरार। मिल सखीआं मंगल गाया, वाह वा होए मंगलाचार। गुर सतिगुर धाम सुहाया, गुरमुख सोहे सोभावन्ती नार। जिस हरि हरि कन्त हंढाया, मिल्या पुरख इक्क भतार। दरगाह साची माण दिवाया, आप आपणा कर प्यार। जोती जोत विच समाया, रूप रंग रेख ना कोए विचार। अलख अलेख अलख आपणी इक्क सुणाया, हो प्रतक्ख आप करतार। आदि निरँजण आपणा आसण सिँघासण सचखण्ड दुआरे उप्पर लाया, शाहो भूप बण सिक्दार। सीस ताज इक्क टिकाया, जगत जगदीश होया ख़बरदार। जुग जुग बेड़ा रिहा चलाया, लोकमात पावे सार। कलिजुग अन्तिम वेखण आया, दिस ना आए मीत मुरार। जूठा झूठा ठूठा भन्न दए वखाया, सच सुच्च करे वरतार। राज राजानां शाह सुल्तानां दए मिटाया, चार कुण्ट मारे मार। चौदां तबकां वेख वखाया, चौदां लोक करे ख्वार। त्रैभवण धनी अवण गवण आपणा वेख वखाया, नव सत जीव जंत पुकार सुणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, वड दाता गुण गुणी। गुणवन्ता गुण दातार, अवगुण कोए रहिण ना पाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। जुग जुग जन भगतां करे सच प्यार, जो रसना जिहवा रहे गाईआ। सन्त साजन लए उभार, जूठी झूठी मेटे लग्गी छाईआ। गुरमुखां देवे इक्क भण्डार, अतुट नाम वरताईआ। गुरसिख साचे बख्शे चरन कँवल दुआर, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। कलिजुग अन्तिम साची धार, चार वरन समझाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्क वखाए बंक दुआर, दूजा घर ना कोए वखाईआ। एका अक्खर कराए जै जैकार, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। हँ ब्रह्म एका नार, सृष्ट सबाई रूप वटाईआ। पुरख अबिनाशी कन्त भतार, एका कन्त अख्वाईआ। सोहँ शब्द सति वरतार, सतिजुग साचा राह वखाईआ। बीस बीसा होए उज्यार, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। नव नव गायण वारो वार, वाह वा वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी जुग जुग आपणा नाउँ चलाईआ।

★ २३ फग्गण २०१७ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला ★

अल्ला राणी रोवे नेत्र नीर, सीस सजदा जगदीस झुकाईआ। मेरी बदल तकदीर, तदबीर तेरे हथ्थ सच्चे माहीआ। मेरी कट्ट ज़ंजीर बख्श अकसीर, दर दुआर देवे दुहाईआ। तूं मीआं वड पीरन पीर, हउँ हकीर नैण शरमाईआ। घर रहिण ना देंदे ईसा मूसा मुहम्मद मेरे छोटे वीर, फड़ फड़ बाहर रहे कढ्ढाईआ। एका दर दरगाह तेरी डिठा अख़ीर, दूसर ओट

ना कोए तकाईआ। मैं नंगी पैरी आई घत वहीर, जूहां जंगल उजाड़ पहाड डूँग्घी कंदर पार कराईआ। तेरा नूर मेरी तस्वीर, तसबीह तेरा नाम फिराईआ। मेरे लथ्थे कलिजुग चीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। आई निमाणी जगत बेगम, बे ग़म तेरा दर विचारया। मेरा चन्द तेरा नूर एकम, एकम चन्द लोकमात किसे दिस ना आ रिहा। मेरी मन्न सलाम अलैकम, अल्ला राणी निमाणी नेत्र रो रो करे गिरया ज़ारया। तेरा धाम एका बैतुल, मुक्द्दस तेरा रूप विचारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेले अन्त देवीं ना दर दुरकारया। आई दर बण निमाणी, खुल्ह़े केस रही वखाईआ। चौदां तबक कोई ना देवे ठंडा पाणी, आबे हयात ना कोए प्याईआ। होई वैरागण तेरी राणी, तेरा विछोड़ा सहि ना सके राईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत दर दर घर घर फिर के वेख्या कोए ना लभ्भे साचा हाणी, झूठी रैण मात विहाईआ। तेरे जेहा ना कोए लासानी, लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नूर दे दरसाईआ। मंगे मंग साचा नूर, गल पल्लू एका पा। दर दरवेश बणी चौदां लोकां हूर, कोई ना दस्से तेरा राह। मैं लभ्भ लभ्भ थक्की नेड़े दूर, अध विच छड के गया मुहम्मद मलाह। अन्त मेरी आसा पूर, पिछले बख़्श गुनाह। अग्गे रहवां सदा हज़ूर, निउँ निउँ सीस झुका। मेरा काअबा तपे वांग तन्दूर, अमृत मेघ इक्क बरसा। तेरी सूली चढ़ां बण मनसूर, आपणी फाँसी आपणा कलमा मेरे गल विच पा। मैं आखा मन्नां तेरा ज़रूर, भुल कदी ना जां। मेरा टुटा अन्त ग़रूर, दिसे कोई ना थाँ। मेरीआं हड्डीआं होईआं चूर चूर, मेरीआं दोवें भज्जीआं बांह। मेरा किसे ना दिसे साचा नूर, सारे बैठे मुख छुपा। ऐ मीआं मैं मंगां तेरी धूढ़, मेरे उत्ते रहिमत कर ख़ुदा। मैं सुणया लोकमात आया ज़रूर, ईसा मूसा बणे ग्वाह। मेरा चूड़ा भन्ने कूड़ो कूड़, साचा कन्त सुहागी आ। मेरी आसा मनसा करे पूर, मेरी हथ्थीं मैहन्दी लाल मैनूं चढ़या चा। चढ़ के आवे साचे घोड़, मेरा सच्चा शहिनशाह सच्चा पातशाह। अमाम अमामां सिर मैनूं पई लोड़, वेले अन्त तेरे उत्तों होई फ़िदा। मेरी टुट्टी प्रीत फेर जोड़, तेरा विछोड़ा सहि ना सकां ना होवां कदे जुदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैं निमाणी थक्की मांदी आपणी हथ्थीं फड़ के आपणा अमृत जाम प्या। आई दर छड्डया घर, घर मिले परवरदिगार। लोकमात विच रही डर, चारों कुण्ट आई हार। मेरा हथ्थ ना आया मैनूं वर, जगत दुहागण फिरी नार। चार यार फड़ फड़ बंधौदे रहे आपणा लड़, अन्त कोई ना निभयाा नाल। कलिजुग अन्तिम रहे झड़, किसे पत्त ना दिसे डाल्ह। मैं तेरा लड़ बैठी फड़, बणी मात कंगाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा जल्वा आप वखाल। तेरा जल्वा मंगां वसाल, अवर सेज ना कोए सुहाईआ। तेरा नूर इक्क जलाल,

जाग्रत जोत कर रुशनाईआ। चार जुग मैं थक्की भाल भाल, कलिजुग चौदां सदीआं देंदी रही दुहाईआ। घर घर पुछदी रही काल महाकाल, कवण धाम बैठा मेरा सच्चा माहीआ। एका सुणी तेरी कलाम, मुकामे हक वसया आप अमाम, अमाम अमामां सिर रक्खे वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम दए संदेश इक्क पैग़ाम, पीर पैग़म्बर बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा तेरा छुट्टे ना लड़, दो जहान तेरी सेव कमाईआ। तेरी सेव करन दी ख़ातर, आपणा घर तजाया। जिंनां चिर बण के बैठी रही चातर, साचा ख़ावंद दिस ना आया। मैं लिख लिख सुनेहड़े घल्ले पात्र, इज़राईल जबराईल मेकाईल असराफील राह विच बैठे अड़, धुर धाम कोई पहुंच ना सके राईआ। तेरा जमाल मेरा बातन, एका एका वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा दे चुकाया। साचा मीआं हक सुणाए, हकीकत इक्क जणाईआ। उठ वेख चार कुण्ट तेरे साथी आए, तेरा राह तकाईआ। मुख नकाब पर्दा लाहे, दे जवाब भुल्ले फिरदे पान्धी राहीआ। दे दे लारा किसे ना जणाया, पुन सवाब आब हयात ना कोए प्याईआ। अन्त सुणे कवण फ़रयाद, फ़ाके मरे तेरी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म रिहा सुणाईआ। एका हुक्म शब्द जणाए, कलमी कलमा आप जणाइंदा। तेरा खेड़ा तेरी हथ्थीं ढाहे, तेरी सेव लगाइंदा। तेरे चुल्ले अग्ग ना कोए रखाए, तेरी कुंनी तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। तेरे सिर चुन्नी ना कोए टिकाए, तेरी चोटी मुन्नी मातलोक सीस ना कोए गुंदाइंदा। पहलां पीर फ़कीर चुणी सईयद मुला शेख़ बचया कोए रहिण ना पाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। उठ जा मन्न ला कहिणा, ख़ुदा ख़ुद आप सुणाइंदा। आपणी उम्मत वेखला आपणे नैणां, वेला अन्त इक्क समझाइंदा। आपणे बस्त्र पा ला गहिणा तन शंगार इक्क कराइंदा। लोकमात थिर नहीं रहिणा, चौदां सदीआं पन्ध मुकाइंदा। मक्के काअबे डाह पीड़ा बैठ नहीं रहिणा, नैणां कज्जल ना कोए पवाइंदा। अन्तिम भाणा पैणा सहिणा, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। उठ वेख चार यारी, नेत्र नैण हरि जणाईआ। चार जुग कुँवार कन्या बणी रही कुँवारी, कोरापन जगत विच वखाईआ। सृष्ट सबाई करन ख्वारी, कलिजुग अन्तिम लोकमात फेरा पाईआ। जीव जंत करे विभचारी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार तन शंगार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साबत सूरत हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। साबत सूरत ना कोए ईमान, आमल कोए दिस ना आइंदा। मैं मीआं मेरी सिफ्त करे कुरान, हदीस हदीस आप पढ़ाइंदा। तूं बाली बाल अञ्याण, तेरा नैण जगत शरमाइंदा। पुरख अबिनाशी आदि जुगादि नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा हुक्म आपे पूर कराइंदा। इक्क समझाए दया कमाए आदि जुगादी कार, जुग जुग गुर अवतार घलाए, पीर पैग़म्बर कर त्यार। राम कृष्न सेवा लाए करे खेल अगम्म आपर। ईसा मूसा चरनां हेठ रखाए, धरनी दब्बे आपणे भार। जगत मुहम्मद आप जगाए, आप जणाए आपणी गुफ्तार। अर्श फर्श दे विच फिराए, करे खेल सच्ची सरकार। राती सुत्तयां दरस दिखाए, ग़ाफ़ल विच दए दीदार। साख्यात नज़र ना आए, करे खेल अपर अपार। कलमा आपणा आप पढ़ाए, नबी बणे परवरदिगार। आपणी तसबी आपणी तकवी आपणा तकवा इक्क रखाए, तालब तुलबा कर त्यार। काया अंदर मकतब इक्क खुल्हाए, आपे होए लिखणहार। पहला हरफ़ अल्फ़ दिखाए, इल लिला इलाही नूर एकँकार। दूजा हरफ़ बे बणाए, करे खेल सच्ची सरकार। बेवा रूप दए समझाए, लोकमात भेव न्यार। आपणी इच्छया तेरे विच टिकाए, तेरी इच्छया अल्ला राणी बणे नार। पे प्रेम प्रीतम इक्क रखाए, करे खेल सच्ची सरकार। तेरा तख्त तेरे विच टिकाए, पर्दा रक्खे सांझा यार। टे टाल मटोल तेरा वक्त लँघाए, वेला वक्त आपणे हथ्थ रक्खे सच्ची सरकार। से साबत ईमान एका आपणा इष्ट वखाए दूजा इष्ट ना विच संसार। जीम जोत इक्क जगाए, चे चरन कँवल दसे धाम न्यार। हे हरक्त आपणी ना किसे जणाए, ख़े ख़ामोश बैठा रहे धाम न्यार। दाल दर इक्क रखाए, डाल्ह ढोला गाए आपणी वार। ज़ाल ज़रा ज़रा तेरे विच टिकाए, सुण मुहम्मद इक्क कर विचार। रे रंग इक्क वखाए, ड़ाड़ मिटे विच संसार। तेरी काया ज़े ज़ून इक्क वखाए, जे यश जाणे आपणा आप सच्ची सरकार। सीन सोया जागत एका रंग जणाए, शीन शख्स शख्सीअत आपणी आपे धार। सुआद सोहबत ना किसे सुणाए, ज़ुआद ज़मानत देवे इक्क इकल्ला परवरदिगार। तोए तरफ़ ना कोए वण्डाए, चारों कुण्ट ख़बरदार। ज़ोए ज़ुलम ना कदे कमाए, सर्ब जीआं दा सांझा यार। ऐन अक्ख इक्क रखाए, आलम उल्मा आलमीन वेखणहार। ग़ैन ग़फ्लत विच कदे ना आए, ग़ाफ़ल करे सर्ब संसार। फ़े फ़िकर ना रखे कोए करतार, फ़ाज़ल आपणा नाउँ रखाईआ। काअफ़ कर्मां करे विचार, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। काफ़ कुदरत कादर वेखणहार, इबनउलवक्त सईद उलसलाम रहबर रहीम बेपरवाहीआ। गाफ़ गोर पावणहारा सार, कँवरी भँवरी फोल फुलाईआ। हे हक ना मारे जिस बख्शे चरन प्यार, वड वड्डा शहिनशाहीआ। हमज़ा हिवज़ करे आपणी दीद शुनीद गुफ्तार, तार सतार आप हिलाईआ। ये रक्खे याद सुणे फ़रयार देवे दाद, एक हरफ़ आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नून नून गुना, निरगुण सरगुण मुहम्मद महिव मैख़ाना महबूब इक्क समझाईआ।

सुघड़ सुच्चजी वड्डी दानी, हथ्थ अनपढ़ां दे आ गई। पिछली आपणी की सुणावे कहाणी, अगली सुणौन दी सिर

भा पई। चार जुग जो बण के बहिन्दी रही राणी, अज बण सुवाणी दर सेव कमा रही। जो वेंहदी रही चार खाणी, अज्ज अमृत भर पाणी गुरसिखां मुख प्या रही। जेहड़ी कहिन्दी रही मैं गुण निधानी, अज बण नादान जट्टां कोलों आपणी भुल बख़्शा रही। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप रचा रही। जो चार जुग गुर पीर पढ़ौंदी आई, आपणा सनेहुड़ा सच सुणा रही। जो परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणी धार गौंदी आई, जीवां जंतां हरि आप सुणा रही। अज फस के घर जटां नेत्र नैण नीर वहौंदी, बौहड़ी बौहड़ी कर कुरला रही। मैं वास्ता पावां भुल के फेर ना औंदी, इक्क वेर छड दे लड़, मैं फड़या लड़ छुडा रही। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खिला रही। हाए हाए करे निरगुण जोत नेत्र रो, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। चार जुग दा सांभ दे रख्या धन मेरा जट्टां ल्या खोह, ख़ाली झोली रही वखाईआ। मैं मारी शर्म दी आपणे हंजूआं नाल आपणा मुख लवां धो, पाणी मंगण दूजे घर कदी ना जाईआ। होई वैरागण खुलड़े केस जट्टां घर कक्खां उत्ते रही सौं, पलँघ रंगीला नज़र कोए ना आईआ। नौं खण्ड पृथ्मी दो जहान वेख्या भौं भौं, मेरा होवे ना कोए सहाईआ। मैनूं खाण नूं देंदे कणक छोले ते जौं, सुक्की रोटी हथ्थ फड़ाईआ। नाले कराउण कम्म कढ्ढण आपणा गौं, फिर चौंतरिउँ थल्ले देण बहाईआ। मेरा ना कोई पिता ना कोई
३७४ माउँ, किस अग्गे जा के रोवां दयाँ दुहाईआ। गुरसिख उठ फड़ मेरी बांहो, तेरे पिच्छे मन्ने मेरा माहीआ। जोती जोत ३७४
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी जोत आपणी सेवा आप लगाईआ। जोत अकालण वरया जट्ट, नाता तोड़ संसार। जेहड़ा लक्ख चुरासी आपणे अंदर लए घत्त, मारे फेर ना अजे डकार। मैं निमाणी कोझी कमली की देवां मत्त, मेरी मति समझे ना जट्ट गंवार। जे अग्गों बोलां सिर प्राणी देवे घत्त, उठ ना सकां दूजी वार। जे उठण लग्गां उत्तों मारे लत्त, सुट्टे मूंह दे भार। जे मूंह चुक्कण लग्गां, उत्ते रक्खे चरन कँवल सहार। मेरा दुःख सारा लथ्था, जिस वेले मिली चरन धूढ़ी एका छार। होई वड भागण मिल्या पुरख समरथा, इक्क इकल्ला एकँकार। मिल मिल मैं ख़ुशी ख़ुशी नस्सां, करां सच प्यार। मैं ना जाणा अंदर कोई होर लुका, फड़ कुहाढ़ा बैठा तरखाण। उस ने घड़या डण्डा सोहणा हथ्था, मुट्ठी लाई अपर अपार। मैं नैण खोल्ह के वेखण लग्गी मैनूं नज़री आया एका भथ्था, अग्गे बैठा गोबिन्द सूरा इक्क बलकार। नी सख़ीओ मैं की कुझ दस्सां, जो कुछ वेख्या सच सच्चे दरबार। नाले रोवां नाले हस्सां, नाले साहिब नाल करां प्यार। अंदर बाहर मैं उहदे वसां, जिस ने करया खेल न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी जोत आपे खेल करे निरँकार। छड्ड जट्टा मैं गई भुल्ल, अभुल्ल तेरे दर आईआ। मैं तेरी सदावां तेरी रक्खां लाज विच कुल्ल,

कुलवन्त तेरी वड्याईआ। तेरी कली तेरे दुआर ना जाए रुल, महिकदी महिकदी रही मुस्काईआ। मेरा सुंदर सुडौल सरीर उज्जल मुख बिन तेरे फल ना जाए हुल, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। करता कीमत पा मेरा मुल्ल, मै अनमुल्ल देंदी फिरां दुहाईआ। बिन तेरे कंडे कोई ना तोले मेरा तोल, मेरा भार ना कोए उठाईआ। मैं हौली हौली रही बोल, मेरा घुण्ड मेरा पर्दा आपणी हथ्थीं दे चुकाईआ। फिर सदा वसां तेरे कोल, तेरी हो हो सेव कमाईआ। तूं बैठा रहे सद अडोल, अडोल तेरी शहिनशाहीआ। मैं आप आपणा तेरे उत्तों देवां घोल, हउँ घोली घोल घुमाईआ। मेरी बिरहों अग्ग एका वार देवीं फोल, कोई चिणग विच रहिण ना पाईआ। मैं तेरा नाम वजावण आई ढोल, सुण जट्टा जांदिआ राहीआ। आपणी गंढु हुण लैणी खोलू, साचा सगन लै मनाईआ। उच्ची कूक सुणावां बोल बोल, तूं मेरा मैं तेरी, मैं तेरी तूं मेरा, मैं तूं सोहँ शब्द इक्क सुणाईआ। तेरी अल्फ़ी मेरा चोल, मेरी अंगी क्यों करे मखौल, मैनूं लोकी हस्सण देण ताअने, सृष्ट सबाई बोल कबोल सुणाईआ। तूं मेरा शाह पातशाह श्री भगवानया, मोहे तेरी भगती एका भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जोती जाता पुरख बिधाता आपणा रंग आपे वेख वखाईआ। आ सख़ी उठ वेख रंग, हरि साचे सच चढ़ाया। मैं मंगी एको मंग, अट्ठे पहर तेरी सरनाया। लहिंदिउँ अल्ला राणी आई लँघ, निउँ
३७५ निउँ सीस झुकाया। किथे बैठा मेरा मलंग, हथ्थ मतिहरा रिहा उठाया। मैं फिरदी आई विच वरभण्ड, दहि दिशा वेख ३७५
वखाया। जोत अकालण अग्गों गाए साचा छन्द, एका ढोला रही सुणाया। आपणे आसण बैठा रंगीले पलँघ, साची सेज सुहाया। सज्जे ख़ब्बे दोवें लग्गीए अंग, भला मन्न जाए साडा पीर जिस सानूं धक्का लाया। इक्क वार जे मुख दिखलावे मिले परमानंद, दुःख सुख विच दए बदलाया। मेरी तेरी जोबन जवानी ना जाए हंढ, वेला गया हथ्थ ना आया। उठ सख़ी चलीए गुरसिखां हथ्थ भेजीए गंढु, सच सुनेहड़ा इक्क सुणाया। जिस वसाया पुरी अनन्द, की साडा खेड़ा देवे ढाहया। जिस छुडाया जगत गंद, की साडा माण ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी जोत निरगुण निरगुण निरगुण लए प्रनाया। निरगुण जोत आए सिखां दुआर, गल विच पल्ला पा। अल्ला राणी करे पुकार, गुरसिख मुरीद लए उठा। साडा मिलाउणा विछड़या यार, देणी सच सलाह। लग्गे भाग घर मेरे आए परवरदिगार, मैं वेखां चाउ चाउ। गुरसिख तेरी ओट तेरी आस, तेरे घर सद वसे बेपरवाह। मैं होवां ना अन्त निरास, अग्गे झोली रही डाह। कलिजुग नालों मेरी करनी बन्द ख़लास, लक्ख चुरासी मेरे गलों लथ्थे फाह। मैं आपणे घर जा के करां वास, आपणे प्रीतम विच समा। हरि अपरम्पर आपणी जोत करे प्रकाश, आपणी बणत लए बणा। जुग जुग करदा रिहा खेल तमाश, जुग चौकड़ी

आप बणाए आपे लवे ढाह। आप कदे ना होवे नास, साचे तख्त बैठा रहे शहिनशाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख जगत विचोला बणाए मलाह।

★ २३ फग्गण २०१७ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह पिण्ड बल पुरीआ ★

सो पुरख निरँजण धाम सुहाइंदा, सोभावन्त गुण निधान। हरि पुरख निरँजण आसण लाइंदा, इक्क इकल्ला वड मेहरवान। एकँकारा नाउँ प्रगटाइंदा, जोद्धा सूरबीर बलवान। आदि निरँजण रूप धराइंदा, जोती नूर नूर महान। अबिनाशी करता खेल खिलाइंदा, खेलणहारा गुण निधान। श्री भगवान भेव चुकाइंदा, करे खेल बेपहचान। पारब्रह्म आपणी कल आप वरताइंदा, आपणे उप्पर हो मेहरवान। आपणा बंक आप सुहाइंदा, साचा मन्दिर इक्क मकान। उच्च अटल नाउँ रखाइंदा, सचखण्ड सच्चा अस्थान। सच सिँघासण आप सुहाइंदा, शाहो भूप बण सुल्तान। तख्त ताज आप हंढाइंदा, आदि जुगादी खेल महान। शब्द अनादी नाद वजाइंदा, धुरदरगाही धुर फ़रमान। ब्रह्म ब्रह्मादी आप सुणाइंदा, लेखा जाणे दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्यांअदा। मुकामे हक हक जनाब, हकीकत आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी देवणहारा आपे दाद, लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। लेखा जाणे आपा आप, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। नूर उज्यारा ना कोए आफ़ताब, जल्वा होर ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह सच्चा पातशाह, सो पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। हरि पुरख निरँजण बण मलाह, साचा बेड़ा आप उठाइंदा। एकँकारा दए सलाह, आदि निरँजण संग निभाइंदा। अबिनाशी करता पकड़े बांह, श्री भगवान वेख वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ करे सच न्याँ, साचा अदल आप कमाइंदा। सचखण्ड सुहाए साचा थाँ, थान थनंतर आप बणाइंदा। थिर घर दुआरा आप खुल्हा, आप आपणा चरन टिकाइंदा। आपणी इच्छया लए प्रगटा, शब्द अनादी सुत जाइंदा। सच संदेश दए सुणा, धुर फ़रमाना आपणे हथ्थ रखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचा, सूरज चन्न आप चमकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव धरा, त्रै त्रै लेखा झोली पाइंदा। पंचम मेला आप मिला, पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा। साचा हुक्म दए सुणा, अभुल्ल आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, एका वेस वटाइंदा। वेस वटाए नूरी अल्ला, अल्ला हू आपणा नाउँ धराइंदा। वसणहारा सच महल्ला, उच्च महिराबे डेरा लाइंदा। बैठा रहे इक्क इकल्ला, अकल कल आपणी खेल खिलाइंदा। आपे फड़े आपणा पल्ला, दूसर लड़ ना कोए बन्नाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा राम, इक्क इकल्ला आसण लाइंदा। आदि जुगादि करे साचा काम, करनी करता पुरख आप कराइंदा। आपणा वेखे आपे सच नज़ाम, हुक्म हासल आप चलाइंदा। आप जाणे आपणी आण, आपणे भाणे सद समाइंदा। देवणहारा धुर फरमान, सच संदेसा आप अल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खिलाइंदा। साचे मन्दिर सच घनईया, सचखण्ड निवासी आसण लाईआ। मात पित ना भैणां भईया, दूसर संग ना कोए वखाईआ। साक सैण ना सज्जण सईया, बन्धन बंध ना कोए भुआईआ। ना कोई नौका ना कोई नईया, वञ्झ मुहाणा ना कोए वखाईआ। आपणे सागर आप तरईया, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड वसे निरँकार, निरगुण राम रूप धराईआ। नूर इलाही हो उज्यार, साचे धाम सोभा पाईआ। साचा काहन खेल करे अपार, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। तख्त निवासी हो त्यार, एका तख्त लए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दूसर संग ना कोए रखाईआ। दूसर संग ना कोए रक्खदा, करता पुरख हरि निरँकार। निरगुण हो हो घर रहे विच वसदा, सोहे दर सच्चा दरबार। निरवैर हो हो आपणा मार्ग आपे दस्सदा, पुरख अकाला मीत मुरार। अजूनी रहत हो हो नस्सदा, जन्म मरन तों वसया बाहर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कार। साची कार कराइंदा, करता पुरख अगम्म अथाह। निरगुण वेस अनेक वटाइंदा, करे खेल सच्चा शहिनशाह। रूप अनूप आप दरसाइंदा, रेख भेख ना सके कोए जणा। आपणा लेख आप लिखाइंदा, कोई ना लिखे कलम शाह। कातब कोए ना संग वखाइंदा, इक्क इकल्ला करे सच न्याँ। आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा, नाउँ निरँकारा लए धरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपे वेखे आ। हरि साचा खेल खिलाया, ख़ालक ख़लक कर त्यार। ख़लक आपणा नूर धराया, आपे बणया सच मलाह। अर्श आपणी वण्ड वण्डाया, कुरस कुरा करे बेपनाह। फर्श आपणा चरन छुहाया, ख़ाका ख़ाक रिहा समा। आपणा आदरश इक्क रखाया, पुरख अबिनाशी घट घट वासी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा मार्ग राह। साचा मार्ग लाइंदा, आदि जुगादि कार। आपणी रचना आप रचाइंदा, आपे होए वेखणहार। निरगुण सरगुण रूप आप वटाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव देवे तार। साची वस्त आप वरताइंदा, त्रै त्रै साचा भर भण्डार। साचे घर सोभा पाइंदा, ब्रह्मण्ड खण्ड कर त्यार। लोआं पुरीआं आसण लाइंदा, आप आपणी किरपा धार। आपणी इच्छया लक्ख चुरासी घाड़त जगत घड़ाइंदा, घाड़न घड़े अपर अपार। घट घट अंदर

जोत जगाइंदा, दीप उजाला हो उज्यार। घट घट आपणा नाद वजाइंदा, शब्द अनाद सची धुन्कार। घर घर विच आपणा मंगल आपे गाइंदा, आपे होए गावणहार। घट घट आपणा महल्ल आप सुहाइंदा, घर विच घर कर त्यार। आपणी वण्ड आप वंडाइंदा, पारब्रह्म ब्रह्म वण्डे एका वार। ईश जीव आप हो जाइंदा, जगदीश सची सरकार। लोकमात राह चलाइंदा, निरगुण सरगुण कर प्यार। सरगुण इक्क तत्त दृढ़ाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार। लक्ख चुरासी घाड़न घड़या, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। निरगुण हो हो अंदर वड़या, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। डुँग्घी भँवरी साचे पौड़े चढ़या, औदां जांदा दिस ना आईआ। आपणा खेल आपे करया, पंज तत्त दए वड्याईआ। निरगुण सरगुण रूप आपे धरया, शब्द शब्दी डंक वजाईआ। गुर गुर नाउँ आपे करया, करे खेल वेखे आप शाह पातशाह सचा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वण्डण आप समझाईआ। सरगुण हरि हरि कर त्यार, साची वण्ड वंडाइंदा। पहला लेखा करे विचार, ब्रह्मा सुत समझाइंदा। शब्द जणाई वेद चार, भेव अभेद खुल्हाइंदा। चारे बाणी दए सहार, चारे खाणी आप प्रगटाइंदा। चारे जुग बन्न्ह धार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्ड वंडाइंदा। जुग जुग आवे वारो वार, एका गुण समझाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। रूप धराए गुर अवतार, पंज तत्त साचा मेल मिलाइंदा। भगतन देवे भगती भण्डार, भगत भगवन्त वेख वखाइंदा। सन्त बणाए सुत दुलार, सति सतिवादी गोद बहाइंदा। गुरमुख सज्जण लए उभार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। गुरसिख साचे इक्क वखाए सच दुआर, चरन कँवल कँवल चरन एका दर वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करे खेल अपार, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेश नर नरेश जुग जुग आपणा आप सुणाइंदा। जगत संदेश सुणावणहारा, शब्द अगम्म जैकार। गुर अवतार भेजणहारा, करे खेल सची सरकार। नाम निधान वरतावणहारा, वरताए सच भण्डार। लक्ख चुरासी वेखणहारा, घट घट करे पसार। समरथ पुरख घड़न भन्नणहारा, आपे जाणे आपणी कार। सचखण्ड वसे सच दुआरा, तख्त निवासी हो उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे जुग चार। जुग चार एका गेड़ा, एका चौकड़ नाउँ रखाईआ। नौं दुआरा वेखे वेहड़ा, सृष्ट सबाई पड़दा पाईआ। नौ खण्ड वसाए खेड़ा, धरत धवल दए वड्याईआ। चार जुग चलाए बेड़ा, एका चप्पू नाम लगाईआ। अन्तिम करे हक नबेड़ा, भुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख बेपरवाहीआ। जुग जुग गेड़ा आप दवाइंदा, देवणहार आप निरँकार। गुर अवतार आप घलाइंदा, करे कराए साची कार। साची वस्त झोली पाइंदा, नाम निधाना दए भण्डार। कोई

ब्रह्मा सुत अख्वाइंदा, कोई बराह करे विचार। कोई हाव गरीव राह तकाइंदा, कोई ज्ञगे पुरष अगे पिच्छे वेखे आपणी वार। कोई नरायण रूप वटाइंदा, निरगुण सरगुण खेल अपार। कोई दत्ता त्रै कहाइंदा, दिवस रैण करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वरते सच वरतार। कोई कपिल मुन अख्वाइंदा, माता सुत करे प्यार। कोई रिखव देव जणाइंदा, एका राह तक्के साचा यार। कोई पृथू सेवा लाइंदा, कोई मत्स देवे सच विहार। कोई कच्छप गोद बहाइंदा, जल धारा कर प्यार। कोई धनंतर साची सेवा लाइंदा, मन्त्र फुरे इक्क निराकार। कोई हँसा रूप वटाइंदा, माणक मोती चुगे विच संसार। सर्बग्ग पुरख भेव ना आइंदा, पुरख अबिनाशी करे खेल न्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा सचखण्ड सचे दरबार। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि साचा आप सुहाइंदा। आदि जुगादी एका कन्त, लक्ख चुरासी आप प्रनाइंदा। हरिजन वेखे साचे सन्त, लोकमात आप जगाइंदा। नाम जणाई मणीआ मंत, एका मन्त्र आप समझाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, आदि अन्त आपणे विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म चलाइंदा। जुग जुग खेल करे करतारा, बावन आपणा हुक्म जणाईआ। नर सिँघ धरे रूप निरँकारा, साची सेवा इक्क वखाईआ। हरी हरि आपण नालों हो न्यारा, आपणा सीस आपे रिहा झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हुक्मे सदा रिहा भवाईआ। हुक्मे अंदर परसराम, ब्राह्मण ब्रह्म सेव जणाईआ। हुक्मे अंदर आया राम, रावण दहि सिर गया घाईआ। हुक्मे अंदर कृष्न काहन, त्रैलोकी नाथ त्रैलोकी नंदन, सख़ीआं मंगल रास रचाईआ। हुक्मे अंदर ईसा मूसा लै के आए पैग़ाम, सच संदेश इक्क सुणाईआ। हुक्मे अंदर मुहम्मद जणाई इक्क कलाम, कलमा अमाम आप पढ़ाईआ। हुक्मे अंदर करे खेल कायनात, परवरदिगार सचा शहिनशाहीआ। हुक्मे अंदर रक्खे सभ दी निजात, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। हुक्मे अंदर रक्खे सभ दी वफ़ात, वफ़ादार आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। हुक्मे अंदर निरगुण धार, नानक चोला मात हंढाईआ। हुक्मे अंदर नाम सति उज्यार, नाम सति करे पढ़ाईआ। हुक्मे अंदर सुत दुलार, पुरख अकाल एका गोद सुहाईआ। हुक्मे अंदर चण्ड प्रचण्ड तिक्खी धार, हुक्मे अंदर ब्रह्मण्ड रिहा भवाईआ। हुक्मे अंदर पुरी अनन्द ल्या उसार, हुक्मे अंदर छड्ड के गया साचा माहीआ। हुक्मे अंदर मंगे साचा यार, आपणीआं भुजां आप उठाईआ। हुक्मे अंदर आपा वार, एका फतिह गया सुणाईआ। हुक्मे अंदर कूके करे पुकार, सृष्ट सबाई एह समझाईआ। चार जुग नौ सौ चुरनावे चौकड़ी जो घलदा रिहा गुर अवतार, पुरख अकाल सचा शहिनशाहीआ। करे खेल अपर अपार, भेव कोए ना पाईआ। सचखण्ड वसणहारा

३७६

हरि निरँकार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलकार, बल आपणा आपणे विच रखाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान देण ग्वाहीआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, दीन मज़्ब ना कोए वखाईआ। आलम उल्मा पावे सार, वेखणहारा इक्क हो जाईआ। अन्तिम प्रगट होवे नर निरँकार, निरवैर पुरख अजूनी रहत आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। निहकलंका नाउँ रक्खे विच संसार, शब्द डंका इक्क वजाईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, गोबिन्द गढ़ इक्क बणाईआ। उप्पर चढ़ बहे हरि निरँकार, दिस किसे ना आईआ। आपणा शब्द बोले आप जैकार, पिछली कीती पढ़न कदे ना जाईआ। आपणी रीती बदले विच संसार, रीत अतीत इक्क समझाईआ। हस्त कीट वेखणहार, ऊँच नीच भुल्ल ना जाईआ। जगत बागीची वेखे खिड़ी गुलज़ार, लक्ख चुरासी ब्रह्म बूटा जो ल्या मात लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर दरवेश निउँ निउँ ख़ाली वखाउण आपणा ठूठा, साची वस्त नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, जुग चौकड़ी आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी खेल खिलाइंदा, निरगुण दाता बेपरवाह। कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा, जोती जामा भेख वटा। गुर गुर गोबिन्द मेल मिलाइंदा, पुरख अकाल एका थाँ। मात पिता ना कोए बणाइंदा, आपणी गोद लए सुहा। साचे घोड़े आप चढ़ाइंदा, आपणे अश्व तंग कसा। चारे रासां हथ्थ फड़ाइंदा, चारे कुण्टां रिहा दौड़ा। ईसा मूसा उठ उठ राह तकाइंदा, चारों कुण्ट नैण उठा। मुहम्मद उठ उठ वेख वखाइंदा, उच्चे टिले पर्बत आसण ला। उच्ची कूक कूक सुणाइंदा, कूक सुणे आप ख़ुदा। ख़ालक वेखे वेखणहारा वेखण आइंदा, आप आपणा फेरा पा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा आपणे हथ्थ रखा। लेखा आपणे हथ्थ रक्खदा, इक्क इकल्ला एकँकार। धरे रूप आप प्रतक्ख दा, प्रगट होए विच संसार। लक्ख चुरासी नाम मधाणे मथदा, समुंद सागर कर विचार। लोआं पुरीआं आपे नथदा, शब्द डोरी एका डार। लेखा जाणे चौदां लोक हट्ट दा, चौदां तबकां मारे मार। विष्न ब्रह्मा शिव हरि हरि नाउँ रटदा, नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार अग्गे हो हो नट्ठदा, पुरख अबिनाशी होया ख़बरदार। लग्गा तीर निराला घाओ फट्ट दा, करे कराए आर पार। मुला शेख़ कुतब गौंस सिर पैरां ते सुट्टदा, अन्तिम आई हार। मस्जिद बह बह जो रिहा लुट्टदा, तेरा वुज़ू बांग उच्चार। तेरा कर्ज़ा दिते बिना ना छुट्टदा, छडा ना सकण चार यार। जिस उत्ते साहिब तूं रुठदा, एका धक्का देवें मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपारा खेल खिलाइंदा, सूरबीर वड बलवान। चार कुण्ट वेख वखाइंदा, जीव जंत बाल नादान। गुरमुख साचे आप जगाइंदा, जिस जन होए आप मेहरवान। साचे

मार्ग आपे पाइंदा, एका देवे जीआ दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल श्री भगवान। श्री भगवान खेल खिलावणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। तेरा लेखा पन्ध मुकावणा, नाता तुट्टे चार लक्ख बत्ती हज़ार। तेरा कूड़ कुड़यारा तेरी झोली पावणा, चुकया ना जाए अन्तिम भार। तेरा जूठा झूठा साक सज्जण सैण तेरे नाल रलावणा, नौं खण्ड पृथ्मी कर विचार। तेरा ठूठा भन्न वखावणा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मारे शब्दी मार। शब्द निराला तीर लग्गणा, पुरख अकाल आप लगाए। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां एका वार वेखे सूरा सरबंगना, छिन भंगर आपणा खेल खिलाए। लेखा जाणे कल कि अज्ज ना, रुतड़ी रुत रही विहाए। प्रगट होए सच्चा सज्जणा, साजन मीत इक्क रघुराय। गुरमुख विरले कराए सच्चा मजना, दुरमति मैल धवाए। लोकमात सभ ने तजणा, तरवर पंखी कोए रहिण ना पाए। काल घर घर आ आ नच्चणा, एका डौरु डंक वजाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाए। कलिजुग भाण्डा जाणा टुट्ट, हरि साचा आप तुड़ाईआ। लक्ख चुरासी नाता जाणा छुट्ट, जो बैठा गंढु पवाईआ। दिन दिहाढ़े पए लुट्ट, ना सके कोए बचाईआ। जीव जहाना भाग गए निखुट, श्री भगवान दए सज़ाईआ। कूड़ कूड़यारी जड़ देवे पुट, लोकमात रहिण ना पाईआ। सूरबीर साहिब सतिगुर एका गया उठ, निरभउँ आपणा भय जणाईआ। पंज तत ना दिसे बुत्त, त्रैगुण रूप ना कोए धराईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चित वित ठगौरी कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग मेटे काली छाहीआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा मुकणा, मुक्के रैण अन्धेरी रात। सिँघ शेर एका बुक्कणा, नाता तोड़े ज़ात पात। कलिजुग वेला अन्तिम ढुकणा, ना कोई देवे किसे साथ। राज राजानां ना मिले लुकणा, चारों कुण्ट दिसे घाट। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, आप वरताए पुरख समरथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द जणाए इक्क अकथ। शब्द जणाई अकथना अकथ, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। गुरमुख विरले देवे वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। लेखा जाणे तत्त अठ्ठ, नौं दर खोजे थाउँ थाँईंआ। इक्क जगाए निर्मल जोत, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जिस जन बख्शे आपणी ओट, पुरख अकाल होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल शाह पातशाहीआ। शाह पातशाह शाह शाहाना, शहिनशाह आप अख्वाइंदा। करे खेल दो जहाना, निरगुण निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधाना, आप आपणा वेस धराइंदा। तख्तों लाहे राजा राणा, शाह सुल्तान कोए रहिण ना पाइंदा। सीस जगदीस ताज इक्क सुहाना, साचा छत्र सीस झुलाइंदा। इक्क

अठ्ठ मेल मिलाना, बीस अठारां रंग रंगाइंदा। पहली चेत्र दिवस सुहाना, थित वार आपणी आप बणाइंदा। बण के जाए साचा कान्हा, आपणी बंसरी नाम वजाइंदा। हथ्थीं बन्ने मौली तन्द गाना, लक्ख चुरासी बन्धन पाइंदा। चण्ड प्रचण्ड इक्क चमकाना, चण्डी चण्ड आप वखाइंदा। चुरासी कलीआं पहरे बाना, लक्ख चुरासी मूल मुकाइंदा। दे के आए धुर फ़रमाना, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। लेखा जाणे हिन्दू मुस्लिमाना, सिख ईसाई बचया कोए रहिण ना पाइंदा। कलिजुग जीव उठ अंञाणा, हरि साचा आप जगाइंदा। सिर ते वरतण वाला भाणा, भावी कोए ना मेट मिटाइंदा। ना कोई राजा ना कोई राणा, रईयत रंक ना कोए बणाइंदा। ना कोई पीणा ना कोई खाणा, तृष्ना भुक्ख ना कोए मिटाइंदा। ना कोई नाद ना कोई गाना, ना कोई स्वांग वखाइंदा। एका शब्द धुर फ़रमाना, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज पार कराइंदा। आपणे हथ्थ रक्खे आउणा जाणा, आवण जावण आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा नाउँ धराइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरभउ जगत वखाए जुग डर, जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुर सतिगुर दया कमाइंदा, गुरसिख गुर गुर कर प्यार। इक्क अठ्ठ वेख वखाइंदा, दो जहाना साचा यार। त्रै त्रै लेखा आप मुकाइंदा, त्रैकाल दरसी कल विचार। अर्श फर्श वेख वखाइंदा, वेखणहारा एकँकार। साची बरसी आप मनाइंदा, लेखा जाणे बरस मास। आपणा तरस आप कमाइंदा, गुरसिख पूरी करे आस। जगत तृष्ना हरस मिटाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म अन्तर कर कर वास। देवे दरस दीन दयाला, दयानिध वडी वड्याईआ। शब्दी शब्द बचन सुखाला, एका नाम करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे बाली बुध बाला, सुघड़ सयाणा होए सहाईआ। अमृत प्याए नाम प्याला, अमिउँ रस झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख देवे इक्क वड्याईआ। हरि सतिगुर सुहाए साचा वेला, वेला वक्त ना कोए जणाईआ। अंदर गुरु बाहर चेला, भेव कोए ना पाईआ। अचरज खेल आपणा खेला, हरि वड्डा वड वड्याईआ। बाहरों दिसे ठग्ग चोर अंदर सज्जण सुहेला, साचा संग निभाईआ। बाहरों दिसे इक्क इकेला, अंदर मिल्या साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। बाहर दिसे पंज तत, अंदर बैठा कमलापति, साची सेज हंढाईआ। बाहर दिसे हड्ड मास नाड़ी रत, अंदर निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। बाहर दिसे नक्क मूंह कन्न हथ्थ, अंदर रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। बाहर दिसे गंवार जट्ट, अंदर बैठा शहिनशाह सच्चा पातशाहीआ। बाहर दिसे काया मट, अंदर सचखण्ड सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज आपणा खेल खिलाईआ। बाहरों दिसे सज्जण साक,

अंदर पाकी पाक समाइंदा। बाहरों दिसे तन ख़ाक, अंदर आत्म धार वहाइंदा। बाहरों दिसे जगत नेत्र रिहा झाक, अंदर आपणा नेत्र आप खुल्हाइंदा। बाहरों दिसे कमला रमला कटदा फिरे वाट, अंदर बैठा गुरसिखां पन्ध मुकाइंदा। बाहरों दिसे बण के बैठा सिक्खी ज़ात, अंदर ज़ात पात ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप मिलाइंदा।

★ २४ फग्गण २०१७ बिक्रमी बूआ सिंघ दे घर पिण्ड पुरीआं ★

विष्नूं भगवान जोत निरँकारा, निरवैर अनुभव प्रकाश कराइंदा। अजूनी रहत अलख अगोचर अगम्म अपारा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड निवासी दर घर साचे सोभा पाइंदा। इक्क इकल्ला हो उज्यारा, थिर घर साचा आप खुल्हाइंदा। दो जहानां पावे सारा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए सहारा, चरन कँवल ध्यान जणाइंदा। करोड़ तेतीसा नाम जैकारा, एका नाउँ सच समझाइंदा। गण गंधर्ब करन पुकारा, किन्नर यच्छप नाल रलाइंदा। निरगुण सरगुण खेल न्यारा, निर्धन सरधन वेख वखाइंदा। लक्ख चुरासी बण वरतारा, आपणी वस्त आप वरताइंदा। घर घर मन्दिर खोल्ह किवाड़ा, गृह गृह वेख वखाइंदा। जोती जाता खेल न्यारा, जाग्रत जोत डगमगाइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, घट मन्दिर नाद वजाइंदा। अमृत आत्म ठंडा ठारा, रस आपणा आप चुआइंदा। ख़ालक ख़लक खेल न्यारा, मख़लूक बणत बणाइंदा। सिदक सादक साची धारा, साबत आपणा रूप दरसाइंदा। एका नूर परवरदिगारा, ज़हूर आपणा आप जणाइंदा। वसणहारा नेड़े दूर करे खेल अगम्म अपारा, अलख अलखणा लेख ना कोए जणाइंदा। जुगा जुगन्तर करे कराए साची कारा, करता पुरख आपणा नाउँ धराइंदा। भगवन मेला भगत दुआरा, अवर दर ना कोए वड्यांअदा। सन्तन दर बणे भिखारा, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। गुरमुख बणाए मीत मुरारा, गुरसिख आपणे अंग लगाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाना, नाउँ निरँकारा झोली पाइंदा। धरनी धर गुर अवतारा, धवल आपणा चरन छुहाइंदा। पवण पवणी पवण हुलारा, अवण गवण आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेखे साचा घर, लोकमात फेरा पाइंदा। साचा घर साचा मन्दिर, सति पुरख निरँजण वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी चढ़ चढ़ वेखे अंदर, निरगुण सरगुण अंदर फेरा पाईआ। लेखा जाणे डूँघी कंदर, अभुल भुल कदे ना जाईआ। पावे सार मन मन बन्दर, दहि दिशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी

धार चलाईआ। जुग जुग धार चलाइंदा, करता पुरख करनेहार। भगत भगवन्त वेख वखाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कर कर प्यार। आपणी भगती इक्क दृढ़ाइंदा, चरन कँवल कँवल चरन इक्क आधार। साची शक्ती विच रखाइंदा, साख्यात दरस दिखाए आप निरँकार। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाइंदा, खेले खेल परवरदिगार। मुख नकाब आप टिकाइंदा, पर्दा पाए सर्ब संसार। आब हयात आपणे विच छुपाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। आपणा खेल खिलावण आया, हरि साचा सच वड्याईआ। आपणा नूर आप धराया, जल्वा नूर आपे डगमगाईआ। हरि का नूर कोई ताब सहि ना सके राया, मूसा उप्पर कोहतूर दए वखाईआ। एका झलक पलक ख़लक विच समाया, बेपरवाह ख़लक ख़दाईआ। आशक बण बण रिहा राह तकाया, माशूक बण के आया सच्चा माहीआ। आपणा कुफ़ल ना सका खुल्हाया, बन्द ताक इक्क जणाईआ। उल्फ़त कर कर जिस नूं गाया, शफ़कत आपणी दए वड्याईआ। सिफ्त सालाही विच कदे ना आया, पीर पैग़म्बर रहे ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूर ज़हूर इक्क प्रगटाईआ। नूर ज़हूर प्रगटाइंदा, बिस्मिल रूप ख़ुदा। आपणा जल्वा आप वखाइंदा, आपणा नूर कर रुशना। आपे कोहतूर सुहाइंदा, कोहतूर आपणा रूप वटा। कोह ऊँचो ऊँच आप हो जाइंदा, तूर नाद शब्द वजा। काया मन्दिर अंदर साचा पर्बत आप रखाइंदा, जगत नेत्र दिसे किसे ना। जिस वेले मूसे उप्पर दया कमाइंदा, आपणा पर्दा विचों उठा। आपणा जल्वा आप वखाइंदा, मूरच्छा कीता मूरच्छागति ख़ुदा। मूसा होश ना कोए रखाइंदा, मदहोश होया चरनां हेठां मंगे पनाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाह। जल्वा नूर तक्क ना सकया, हरि साचा सच वखाए। अंदर बह बह पुरख अबिनाश लेखा चुकाए हथ्थो हथ्थया, बाकी लेखा रहे ना राय। एका सबक सुणाए साची संथिआ, कलम कातब आप रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाए। मूसा तक्क जल्वा नूर, आपणा आप भुलाईआ। तूं दाता जोद्धा सूरबीर, हउँ बाल अञ्याणा तेरा भेव ना पाईआ। तूं बदल मेरी तकदीर, तकबीर तेरी वडी वड्याईआ। कर किरपा बख़्श साचा सीर, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। मेरी काया बदल्लया चीर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान कर किरपा दया कमाईआ। मैं बरदा तेरा फ़कीर, तूं शाह मैं हकीर, निउँ निउँ बैठा सीस झुकाईआ। तेरा प्रेम मेरा ज़ंजीर, तेरा नेम मेरा अन्त अखीर, सिर रक्ख हथ्थ सच्चे साँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। हरि आपणा नेम दस्सदा, मूसा अलैसलाम उठा। मैं हर घट अंदर वसदा, ख़ालक ख़लक रूप धरा। जिस आपणा मार्ग दस्सदा, तिस आपणा मेला लवां मिला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका गुण दए समझा। साचा गुण समझाइंदा, हरि साचा बेपरवाह। मेरा जल्वा वेख सुध ना कोए रखाइंदा, बेसुध हो मंगे चरन पनाह। अग्गे कदम ना कोए उठाइंदा, अदम दिसे ना कोए राह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मूसा रिहा समझा। मूसा उठ कर ध्यान, पुरख अबिनाशी चरन ठोकर एका लाईआ। किउँ सुत्ता विच बीआबान, जंगल जूह उजाड़ पहाड उच्चे टिले पर्बत देण दुहाईआ। तेरा मीआं तेरी करे पछाण, तेरा नूर जहूर आपणा नूर प्रगटाईआ। एका देवे धूढ़ी ख़ाक दान, ख़ाकी ख़ाक दए रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म रिहा सुणाईआ। सुण हुक्म मन्नणा कहिणा, हरि साचे सच जणाया। तूं मंगया दरस आपणे नैणां, मैं वखाया दरस तूं वेख ना सकया राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाया। सुण मूसा कर विचार, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरा मेल करां विच संसार, तेरा संग रखाइंदा। कलिजुग नाम करां उज्यार, काला सूसा तन सुहाइंदा। इक्क हदीसा बोल जैकार, शरअ शरीअत इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाइंदा। चले राह लोकमात, हरि साचा सच समझाईआ। अन्तिम देवे आप नजात, रहबर बणे सचा शहिनशाहीआ। लोकमात बख्शे इक्क ख़ताब, मुख़ातब हो के रिहा सुणाईआ। लेखा जाणे हक जनाब, हक बहक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। मूसा सुण हरि संदेसा, चरन कँवल निमस्कारया। कवण रूप धरें वेसा, मेरे मीत बेऐब परवरदिगारया। कवण धाम वसें देसा, कवण बंक सुहा रिहा। कवण करें लोकमात पेशा, कवण घाड़त घड़त बणा रिहा। कवण बल धारें बण नर नरेशा, चार कुण्ट होए उज्यारया। कवण रूप कराएँ सजदा नाल आदेसा, कवण बोलें इक्क जैकारया। कवण वेला कवण वक्त मैं दरस तेरा वेखां, मेरा आउणा जाए संवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क देणा सच सहारया। हरि साचा सच सुणाइंदा, ख़ुदावंद करीम। दूजी वार आपणा जल्वा ना फेर वखाइंदा, आपणी देवे इक्क ताज़ीम। अज़ीम आलीशान मकान इक्क बणाइंदा, सेवा कर आप प्रबीन। साचे हुजरे सोभा पाइंदा, सच महिराब इक्क वखाए रक्खणा सच यकीन। साचा काअबा आप सुहाइंदा, आपणी बदले ना कदे दलील। आपणा राह वक्खरा आप चलाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल ख़लल ख़लील, अन्तिम खेल करावणा, पुरख अबिनाशी रिहा समझा। आपणा नूर फेर प्रगटावणा, आपणी दया आप कमा। गुरसिखां अंदर सीतल धार हो हो समावणा, हौली हौली लए उठा। मूसा तेरा सबक याद करावणा, मेरा जल्वा एका वार कोई तक्क सके ना। हौली हौली पड़दा आप उठावणा, हरिजन साचे मेल मिला। आपणी खेल आप खिलावणा,

खेले खेल बेऐब ख़ुदा। मेरा रूप पुरख अबिनाशी गुरसिख इक्क इक्क बणावणा, जिस अंदर जाए समा। तूं इक्क इकल्ला तेरा संग ना किसे निभावणा, चारों कूंट अन्धेरा जाए छा। गुरमुख साचे आप उठावणा, पुरख अबिनाशी पकड़े बांह। आपणा किला कोट बणावणा, जिस मन्दिर बैठे आ। साचा तख्त आप सुहावणा, आपे होए सचा शहिनशाह। नूरो नूर डगमगावणा, नूर नुराना इक्क अख्वा। गुरसिख काया कोहतूर आप बणावणा, जिस उप्पर हथ्थ दए रखा। आपणा चरन नाल छुहावणा, माटी पाथर आपणे लेखे लए ला। अचरज खेल आप वरतावणा, लेखा लिख ना सके कोए रा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए वड्या। गुरमुख वडिआउणा अन्त कलि, हरि साचा सच समझाइंदा। सच सिँघासण बहे मल, नेत्र नैण ना कोए वेख वखाइंदा। तेरी सुणे फेर गल, पहलों गुरसिखां तेरे नाल मिलाइंदा। आपणा करे वल छल, अछल छलधारी भेव ना आइंदा। तेरा सिँघासण जाए हल, मेरा सिँघासण सोभा पाइंदा। सम्बल नगर बैठां डेरा मल, दूसर अवर ना घर वखाइंदा। नंगीं पैरीं आउणा चल, एका हुक्म जणाइंदा। मेरयां सिखां विच जाईं रल, फेर पिछली गल पुछ पुछाइंदा। पहलों मंगीं धरत जल, तेरी लग्गी अग्ग बुझाइंदा। फिर कर के मिन्नत लै जाईं विच थल, मक्का मदीना वेख वखाइंदा। फेर वखाईं आपणा बूटा वल, जो मातलोक लगाइंदा। पुरख अबिनाशी वेखण आए फल, मिट्ठा कौड़ा रस आपणे हथ्थ रखाइंदा। तेरे सिर ते चुकाए तेरी खारी चौदां लोक चौदां तबक डल, तेरी उम्मत विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। मूसा सुण हरि जणाया, प्रभ अन्त लए उठाए। आपणा सनेहुड़ा दए घलाया, भुल्ल कदे ना जाए। एका आठा वेख वखाया, दूआ सिफ़रा अंक आप बणाए। मक्तूल कातिल होए ख़ुदाया, मुदई मुदा अलैह भेस वटाए। सकूल किसे ना पढ़न जाया, आलम उल्मा आप अख्वाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाए। अन्त सनेहुड़ा घल्लणा, ख़ालक कर प्यार। जोती नूर नूर मिलणा, मिल नूर कर प्यार। तेरा साहिब तेरी बदले अन्त दलील ना, दिलबर बण बण करे प्यार। तेरे नाल रक्खे कोई वकील ना, जेहड़ा करे गुफ़त गुफ्तार। फेर होणी कोई अपील ना, हुक्म सुणाए परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि निरँकार। इक्क दलील लैणी रक्ख, दिलदानी दिल जानी आप समझाईआ। मेरा हुक्म वस्त संभाल लैणी रक्ख, भुल कदे ना जाईआ। निरगुण हो मार्ग जाए दस्स, निरगुण वडी वड्याईआ। लोकमात रक्खणी आस, प्यास इक्क विच टिकाईआ। अन्त करे बन्द ख़लास, तेरी इच्छया आपणे विच टिकाईआ। गुरमुख निभावण तेरा साथ, मिल के बहणा भईआं भाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ हथ्थ वडी वड्याईआ। तसबी मणका मौत

उल मलक जणाए इक्क सौ अठ्ठ, गेड़ा एका एक समझाईआ। एका रूप अलखना अलख, सिफ़र अंक ना रिहा दस्स, अठ्ठ तत्त वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त लेखा सभ दा आपणे हथ्थ रखाईआ। सरगुण अंदर बैठा लुक, औदा जांदा देर ना लाईआ। सभ दी विथिआ आपणे धाम बैठा रिहा बुझ, वाह वा वड्डा राम वड्डी वड्याईआ। क्या कोई रक्खे भेव गुझ, गुर पीर अवतार साध सन्त मंगदे रहे वारो वार, अगे आपणी झोली डाहीआ। वेले अन्त किसे रहिण ना देवे आपणी सुध, जो घड़या भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई बणाए एका घर, चरना हेठ रिहा दबाईआ। दूर नेड़े किथे जाणा, अठ्ठे पहर पान्धी पन्ध मुकाइंदा। किसे ना दस्से आउणा जाणा, कवण कूटे हरि जी फेरा पाइंदा। राह विच ना अटकाए कोई राजा राणा, शाह पातशाह अग्गे हथ्थ ना कोई उठाइंदा। गुरसिखां अगे बणे निमाणा, आप आपणा भेंट चढ़ाइंदा। होए दरवेश मंगे माणा, हो निमाणा आपणी इच्छया प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां आपणा खेल खिलाइंदा। नव नौ चार अठ दस उठ उठ धाए, निरगुण वडी वड्याईआ। साढे तिन्न करोड़ वार लक्ख चुरासी अंदर इक्क पलक अंदर फेरा पाईआ। जिस जन कोलों आपणा मुख लए भवा, मातलोक रहिण ना पाईआ। गूढ़ी नीद दए सवा, सोया फेर ना कोए उठाईआ। ब्रह्म बैठा अंदर अठ्ठे पहर मंगे दुआ, एका ओट अकाल रखाईआ। मिलदा रहे सचा शहिनशाह, मिलणहारा आपणा पन्ध मुकाईआ। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण पैरीं चल के ना सके पन्ध मुका, नदीआं नाले टिले पर्बत उजाड़ पहाड राजे राणे झूठा बन्धन बैठे पाईआ। आपणे लेख लिख लिख सभ नूं झूठा रिहा करा, ठूठा सभ दा भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विहार विच होया जिज्ञासू, भगत विहार आपणे हथ्थ रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आपणे अगे दूजा कोई रहिण ना देवे आगू, एका आपणा हुक्म चलाईआ। सतिजुग आदि कोई रसना कहे ना मैं बणया साधू, बिन सतिगुर दूजा अवर ना कोए चतराईआ। बिन हरिजन कोई रहिण ना देवे वाधू, जो बैठे धरती उप्पर भार रखाईआ। कलिजुग अन्तिम चार कुण्ट जो बण बण बैठे नाढू, कलिजुग नया विच बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, वेखणहारा थांउँ थाँईआ।

★ २६ फग्गण २०१७ बिक्रमी रतन सिँघ दे गृह करोल बाग़ नवीं दिल्ली ★

लक्खण करौच पुष्कर धारा, जम्बु निरगुण जोत रुशनाईआ। सान सलमल होए उज्यारा, कुशा नूर ज़हूर दरसाईआ।

अलख अगम्म अगम्मड़ा बेऐब परवरदिगारा, निराकार सचा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि खेल करे अपर अपारा, अनन्द बिनोदी बेपरवाह नूर इलाहीआ। वसणहारा धाम न्यारा, मुकामे हक एका घर आलमीन नाउँ ख़ुदाईआ। आफ़ताबा हो उज्यारा, सच महिराबे पावे सारा, मुख नकाब पड़दानशीं रहिमान बेपरवाहीआ। उल्फ़त उरफ़ ग़फ्लत ग़ुरबा काअबा कुदरत कलाम सदा एका नाउँ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सचा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह हरि निरँकारा, सर्ब गुणवन्त बेऐब परवरदिगारा, राम रहिमान दीन दयाल कागद कलम ना लिखणहारा, वेद कतेब शास्त्र सिमरत ना पावे सारा, गुर अवतारा निउँ निउँ करन निमस्कारा, जो करता इक्क रघुराईआ। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारा, कमलापाती साचे धाम वसे एकँकारा, अनुभव प्रकाश पुरख अबिनाश स्वच्छ सरूपी बिन रंग रूपी, परम पुरख परमात्म आपणा आप कराईआ। धाम न्यारा खेल अपारा, शब्द अगम्मी इक्क जैकारा, साबत ईमान हरि अमाम, आलम उल्मा भेव ना राईआ। जाग्रत जोत कर पसारा, किला कोट वसे बाहरा, साची चोट इक्क नगारा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरीआं लोआं गगन पातालां ज़िमीं अस्माना वरभण्डी आप सुणाईआ। हक बहक खेल न्यारा, लाशरीक करे कराए करनेहारा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल श्री भगवान अबिनाशी करता वसणहारा ठांडे दरबारा, दर दरवाज़ा ग़रीबनिवाज़ा एका एक जणाईआ। हक हकीकत वेखे वेखणहारा, भगत भगवन्त कर प्यारा, साध सन्त बख्शे चरन प्यारा, चरन कँवल उप्पर धवल धरनी धरत दए वड्याईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, लेखा जाणे धुर दरबारा, विष्न ब्रह्मा शिव बण भिखारा, दोए जोड़ जगत जगदीस बैठे सीस झुकाईआ। त्रै त्रै रोवे ज़ारो ज़ारा, पंज तत्त हाहाकारा नव नव धूंआँधारा, सत्त सत्त कूड़ पसारा, अठ्ठ रत रती तत ना कोए जणाईआ। जूठ झूठ जगत विहारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, आसा तृष्ना नार विभचारा, पीआ प्रीतम ना कोए सहारा, आत्म परमात्म मिले मेल ना इक्क दुआरा, चार कुण्ट दहि दिशा माया ममता मोह हल्काईआ। राज राजान होए ख्वारा, सच विधान ना कोए विचारा, निर्धन रोवण ज़ारो ज़ारा, धरत धवल ना झल्ले भारा, सृष्ट सबाई जगत लोकाई नज़र ना आए नूर इलाही, जल्वा जलाल बेमिसाल राम नाम इक्क निशकाम, निहकेवल निहचल धाम ना कोए वड्याईआ। नगर खेड़ा ना कोए ग्राम, साचे मन्दिर ना कोए विसराम, गुरु दर ना कोए नाम, जगत मस्जिद ना कोए कलाम, तीर्थ तट ना कोए नहान, भगत भगवन्त ना कोए निशान, साध सन्त ना कोए दान, गुरमुख गुर गुर ना कोए पछाण, गुरसिख गुर चरन ना कोए ध्यान, कलिजुग कूड़ होया बलवान, चारों कुण्ट वेखे मार ध्यान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बचया कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी खेल महान, जुगा जुगन्तर करे श्री भगवान, सतिजुग त्रेता द्वापर निरगुण सरगुण होए प्रधान,

हथ्थ उठाए चिला तीर कमान, सेवा करे विच जहान, लेखा जाणे जगत कृपाल, खण्डा खड़ग ख़ालक ख़लक इक्क वखाईआ। कलिजुग अन्तिम हो मेहरवान, आपणी तल्ब तालब जाणे मेहबान, मिहबान बीदो निरवैर पुरख इक्क निशान, बिस्मिल रूप सति सरूप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जाता पुरख बिधाता मेटणहार अन्धेरी राता, जगत जोग आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग अन्त खेल अवल्ला, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। वास्तक रूप वासदेव नमो सति सति समाए जलां थलां, जल थल महीअल डूँघी कंदर उजाड़ पहाड उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाइंदा। अस्तिक नास्तिक वास्तक वास्तव संदेश एका घल्ला, ज्ञान बोध जोधन जोध अनन्द मंगल निराकार, शब्द अनाद ब्रह्माद, पारब्रह्म आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल एका हरि, नर नरायण आपणा नाउँ धराइंदा। नाउँ नरायण हरि निरँकारा, निराकार वडी वड्याईआ। आपणी उल्फ़त आपे जाणे जानणहारा, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहीआ। अल्ला मीआं अल्ला हू अना हू नूर उज्यारा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। सिदक सादक सबर सन्तोख वेख वखाए वेखणहारा, दीन दर्द दुःख भय भंजन नाथ अनाथां होए सहाई सभनी थाँईंआ। प्रगट हो विच संसारा, करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह सचा शहिनशाहीआ। साचे तख्त सोभावन्त श्री भगवन्त राज राजाना शाह सुल्ताना बण सिक्दारा, साख्यात आपणी खेल खिलाईआ। दो जहाना करे विचारा, चौदां तबकां दए हुलारा चौदां लोक वेख वखाईआ। चौदां विद्या मारे मारा, चौदां हट्टां कर कर पार किनारा, आर पार हरि निरँकार आपणा पतण आपे वेख वखाईआ। लेखा जाणे गुर अवतारा, पंज तत्त दए सहारा, निरगुण शब्दी निराकारा, आत्म अन्तर वसे बाहरा, अंदर बाहर आपणा खेल खिलाईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण निरवैर पुरख अकाल, सचखण्ड हरि चौवीआं अवतारा, चार कुण्ट दए हुलारा, दहि दिशा फेरा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कारा, करोड़ तेतीसा दर दरवेश बण भिखारा, गणपति गणेश राह तके मीत मुरारा, आदि शक्ति वेला वक्त ना कोए जाणे कवण कूट सोभावन्त सुहाए नर निरँकारा, निरगुण नूर नूर कर रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणा मार्ग पन्थ विचारा, वेद शास्त्र सिमरत ग्रन्थ ना कोई पावे सारा, चार बाणी चार खाणी चार कुण्ट चार वेदा भेव अभेव अछल अछल वल छल धारी, आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, नर हरि आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणे हथ्थ वड्याई रखाइंदा, जुगा जुगन्तर कार। कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा, जोती जामा हो उज्यार। सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा, थिर घर खोल्हे आप किवाड़। सुंन अगम्मी पड़दा लांहयदा, आप आपणी किरपा धार। शब्द अनादी नाद सुणाइंदा, धुनी धुन कर प्यार। विष्न विश्व आप जगाइंदा,

ब्रह्मा नेत्र नैण उग्घाड़। शंकर एका हुक्म सुणाइंदा, कंठ माला वेख शंगार। रूप अनूप आप धराइंदा, शाहो भूप बण सिक्दार, लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा, घाड़त घड़या बण ठठयार। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा, नव नौ चार उतरे पार। नईया घनईया वेख वखाइंदा, साचा सया मीत मुरार। आपणा लेखा आपणी वहीआ उप्पर आप लिखाइंदा, आपे होए लिखणहार। कलम दवात ना कोए जणाइंदा, ना कोई मंगे अवर सहार। जगत विद्या ना मेल मिलाइंदा, करे खेल ओंकार। एकँकार आपणा बन्धन पाइंदा, साचा बन्धन नाम आधार। जगत जुगत ना कोए तुड़ाइंदा, तुट्ट जाए ना विच संसार। परमानंद इक्क समझाइंदा, निजानंद निज गुफ्तार। दीद शुनीद आप कराइंदा, आपे खोल्ल्रणहारा बन्द किवाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाइंदा, वड दाता जोद्धा सूरबीर बलवान। निरगुण आपणा रूप धराइंदा, पंज तत्त ना दिसे कोए निशान। हुक्मी हुक्म शब्द सुणाइंदा, शब्द जणाई धुर फ़रमान। शाह सुल्तान आप उठाइंदा, बख्शश करे चरन ध्यान। कर किरपा नेत्र नैण खुल्ल्हाइंदा, अन्तर बख्शे ब्रह्म ज्ञान। काया खेत्र वेख वखाइंदा, कोरो क्षेत्र ना कोए निशान। धर्म अधर्म कौरो पांडो आप लड़ाइंदा, रथ रथवाही काया बणत बण श्री भगवान। महांसारथी सेव कमाइंदा, आदि जुगादी नौजवान। नौं खण्ड पृथ्मी चारों कुण्ट भवाइंदा, लेखा जाणे ज़िमीं अस्मान। एका अलिफ़ आपणा रूप दरसाइंदा, ज़ेर ज़बर चुक्के काण। आपणा ज़ाबता आपणे विच टिकाइंदा, ज़ालम ज़ुलम वेखे आण। कातब लेख ना कोए लिखाइंदा, कुतब गौंस होए हैरान। आपणा हरफ़ मुर्शद मुरीद विरले आप पढ़ाइंदा, जिस जन उप्पर होए मेहरवान। आपणी ईद एका वार मनाइंदा, लक्ख चुरासी कर कुरबान। आपणा सजदा आपणे अग्गे सीस झुकाइंदा, आपे आपणा जाणे सच ईमान। शरअ शरीअत विच कदे ना आइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल दो जहान। दो जहानां हरि हरि वाली, आपणा खेल खिलाइंदा। लक्ख चुरासी बूटा वेखे लग्गा माली, नव नौ आपणा फेरा पाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां धन माल ख़ज़ाना दिसे ख़ाली, साचा नाम भण्डार हत्थ ना कोए रखाइंदा। माया ममता हउमे हंगता मंगदे रहे दलाली, दिलबर दीदार दरस नेत्र नैण ना कोए वखाइंदा। गुरमुख विरला जो हरि हरि नाउँ घाल रिहा घाली, घाली घाल वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, शाह पातशाह शहिनशाह रूप अनूप आप धराइंदा। शाह पातशाह हरि करतार, शहिनशाह इक्क अख्वाइंदा। सति सरूपी बन्न्हे धार, सांतक सति सति वरताइंदा। वरनां बरनां ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका दस्से चरन दुआर, हरि चरन कँवल साचा मन्दिर इक्क समझाइंदा।

क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका नाम जणाए आत्म अन्तर करे विचार, जगत बसन्तर आप बुझाइंदा। एका मन्त्र साचा नाअरा, एका राम मेल मिलाइंदा। एका घनईया खड़ा दुआरा, एका बंसरी नाम वजाइंदा। एका सखीआं मंगलचारा, एका गोपी काहन नचाइंदा। एका लखमी नरायण मुकंद मनोहर धरनी धरत धवल दए सहारा, एका नैण मुक्ट सीस टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल एका हरि, हरिजन साचे वेख वखाइंदा।

★ ३० फग्गण २०१७ बिक्रमी शब्द सिंघासण दिल्ली ★

शाह पातशाह हरि साचा राजा, शहिनशाह वडी वड्याईआ। तख्त निवासी शाहो भूप जगदीस सुहाए एका ताजा, अगम्म अथाह बेपरवाह, पारब्रह्म नूर इलाहीआ। ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं रचया काजा, अनुभव प्रकाश निरगुण निरवैर धार मूर्त अकाल अजूनी रहत आप चलाईआ। शब्द अगम्मी धुर फ़रमाना अनहद अनादी वाजा, आदि जुगादी जुगा जुगन्तर त्रैभवण धनी आप सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव निवाजा, लक्ख चुरासी देवे दाजा, त्रैगुण मीता इक्क अतीता पंचम रूप अनूप वटाईआ। लोकमात रच रच काजा, आवे जावे ग़रीब निवाज़ा, निर्धन सरधन सरगुण निरगुण खेल खिलाईआ। रूप अनूप भेव अभेदा, इक्क इकल्ला अछल अछेदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाहो भूप वडी वड्याईआ। शाहो भूप हरि राज राजाना, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधाना, लोकमात वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवाना, साची सेवा सच जणाइंदा। सति सरूपी शब्दी दाना, वस्त अमोलक इक्क वरताइंदा। लेखा जाणे दो जहाना, दीन दुनी आपणे हत्थ रखाइंदा। सति सतिवादी सति तराना, साचा मंगल आपे गाइंदा। सचखण्ड वसे इक्क मकाना, थिर घर साचा बंक सुहाइंदा। एका हुक्म धुर फ़रमाना, जुगा जुगन्तर राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराइंदा। शाह पातशाह हरि साचा भूप, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। एकँकारा ना कोई रंग ना कोई रूप, निराकार बेपरवाहीआ। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा डगमगाईआ। आपे तागा आपे सूत, आपे बणत रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शहिनशाह इक्क अख्वाईआ। शहिनशाह इक्क इकल्ला, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। सच सिंघासण एका मल्ला, पुरख अबिनाशन सोभा पाइंदा। आपे फड़े आपणा पल्ला, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। पावे सार जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँघी कंदर आपणा बल धराइंदा। आपणी जोत आपे बला, प्रकाश प्रकाश आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा।

साचा खेल खिलावणहारा, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण वसणहारा धाम न्यारा, साचे धाम सोभा पाईआ। एकँकारा आपे जाणे आपणी धारा, धार धार विच प्रगटाईआ। आदि निरँजण हो उज्यारा, नूरो नूर डगमगाईआ। अबिनाशी करता मीत मुरारा, सगला संग इक्क वखाईआ। श्री भगवान करे कराए साची कारा, करता पुरख भेव ना राईआ। पारब्रह्म वेस अवल्लड़ा अगम्म अगम्मड़ा करे कराए करनेहारा, आपणी किरत आपणे हथ्थ रखाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, अनुभव देवे आपणी धारा, किरन किरन किरन विच समाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, बोध अगाधी इक्क ललकारा, एका हुक्म सुणाईआ। जुगा जुगन्तर हो उज्यारा, निरगुण सरगुण करे प्यारा, ब्रह्म पारब्रह्म दए आधारा, जोती जोत धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शाह सुल्ताना खेल खिलाइंदा, ख़ालक ख़लक रूप भगवान। जुगा जुगन्तर वेस वटाइंदा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा, घट घट अंदर हो प्रधान। मन मति बुध आपणा बन्धन पाइंदा, लेखा जाणे पंज शैतान। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश एका रंग रंगाइंदा, त्रैगुण पाए साची आण। नौं दुआरे खोज खुजाइंदा, अंदर बाहर रूप महान। सच संदेश नर नरेश आपणा आप सुणाइंदा, इक्क इकल्ला हो मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल राज राजान। राज राजाना हरि निरँकारा, निरगुण निरवैर आप अख्वाईआ। बैकुण्ठ निवासी करे खेल अपर अपारा, चतुर्भुज वड वड्याईआ। आदि शक्ति नूरो नूर उज्यारा, रूप अनूप आप धराईआ। पति परमेश्वर परम पुरख पारब्रह्म आप सुहाए आपणा बंक दुआर, दर दरवाज़ा सति खुल्हाईआ। आपणी इच्छया पाए भिच्छया दर दरवेश बण भिखारा, आपणी सदा आप लगाईआ। आपे कूके उच्ची बोल जैकारा, हकीकत नाअरा आप सुणाईआ। आपणा नाउँ करे उज्यारा, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, लोकमात वेस वटाईआ। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलाईआ। निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा, जुगा जुगन्तर कार। गुर अवतार रूप धराइंदा, शब्द अनाद सुणाए सच्ची धुन्कार। जगत क्रिया किरत वेख वखाइंदा, कर्म निहकर्मी पावे सार। धर्म अधर्मी पर्दा लांहयदा, आप आपणी किरपा धार। भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा, साचे सन्त करे प्यार। गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा, गुरसिख साचे लए उभार। अमृत आत्म जाम प्यांअदा, निझर झिरना ठंडा ठार। बजर कपाटी कुण्डा लांहयदा, दूई द्वैती पर्दा आप उतार। अनहद नादी नाद सुणाइंदा, शब्द अगम्मी इक्क गुफ्तार। निरगुण जोती जोत जगाइंदा, काया मन्दिर हो उज्यार। घर घर विच वेख वखाइंदा, आत्म ब्रह्म पाए सार। साची सेजा आप वड्यांअदा, जिस सिर हथ्थ धरे निरँकार। ईश जीव भेव चुकाइंदा, हरि जगदीस

सच्ची सरकार। एका मन्दिर रंग रंगाइंदा, निरगुण दीवा बाती कर उज्यार। साचा मीता नज़री आइंदा, सच सुहाए बंक दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण लए उधार। सरगुण अंदर निरगुण धार रक्ख, जुग जुग खेल खिलाया। पंज तत काया हो प्रतक्ख, शब्दी शब्द नाद वजाया। शब्द गुर शब्द वसे वख, दिस किसे ना आया। करे खेल पुरख समरथ, महिमा अकथ आप गणाया। काया चोला चलाए रथ, विचोला अनुभव खेल खिलाया। वसणहारा घट घट, रूप अनूप आप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण दए मात वड्याआ। सरगुण चोला काया तत, पंच माण रखाइंदा। लेखा जाणे हड्ड मास नाड़ी रत, आप आपणा भेव चुकाइंदा। आपणी धारा इक्क समरथ, पुरख अबिनाशी आप चलाइंदा। जिस जन देवे आपणी वथ, सो तन सोभा पाइंदा। मेल मिलावा कमलापति, कमलापति पुरख अबिनाशी आपणा नाउँ धराइंदा। जिस तन अंदर आपणी वस्त देवे घत, सो तन लोकमात वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण आपणे धन्दे लाइंदा। निरगुण जोती निरगुण धार, सुरत शब्द कुड़माईआ। लेखा जाणे हरि निरँकार, जुग जुग वेस वटाईआ। नाउँ धराए गुर अवतार, गुर गुर भेव ना राईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, वेखणहार जगत लोकाईआ। गुरमुख सज्जण लए उभार, भगतन दए वड्याईआ। सन्तन मेला धुर दरबार, घर घर विच लए मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा लेखा हरि निरँकारा, आपणे हथ्थ रखाइंदा। ब्रह्मा वेता ना पाए सारा, चारे वेदां चारे मुख अलाइंदा। पुराण अठारां करे पुकारा, हरि हरि नाम ध्यांअदा। शास्त्र सिमरत करे निमस्कारा, निउँ निउँ सीस जगदीस झुकाइंदा। एका अक्षर निरगुण निराकारा, आपणा आप उपजाइंदा। लिखण पढ़ण तों वसे बाहरा, कलम शाही ना मेल मिलाइंदा। कागद देवे ना कोए भारा, सरगुण रूप ना कोए धराइंदा। गुर गुर देवे कर प्यारा, गुर मूर्त अकाल आप जणाइंदा। कलिजुग खेल अपर अपारा, तत्व तत तत रखाइंदा। शब्दी नाद बोल जैकारा, ब्रह्म ब्रह्मादि आप सुणाइंदा। जोती जोत जोत उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। ख़ालक ख़लक वेखणहारा परवरदिगारा, मुकामे हक सोभा पाइंदा। ऐनलहक इक्क जैकारा, तौफ़ीक ख़ुदाए इक्क समझाइंदा। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका आसण इक्क सिँघासण सोभा पाइंदा। एका गुर इक्क अवतारा, जुग जुग आपणा खेल खिलाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाह पातशाह आपणा हुक्म आप चलाइंदा। जुग जुग हुक्म चलाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग धार। ब्रह्मा विष्न शिव निउँ निउँ सीस झुकाइंदा, दर दरवेश करन पुकार। गुर अवतार झोली डांहयदा,

एका मंगण मंग भिखार। भगत भगवन्त राह तकाइंदा, नेत्र लोचण नैण दरस दीदार। सन्त सतिगुर चरन कँवल वेख वखाइंदा, एका मंगे चरन प्यार। गुरमुख एका ओट तकाइंदा, नाता तोड़ सर्ब संसार। गुरसिख आसा तृष्ना प्रभ दरस अन्तर आत्म इक्क जणाइंदा, दूजा अवर ना कोए आधार। नौं चार चार खेल खिलाइंदा, जुग चौकड़ी साची कार। नौं खण्ड पृथ्मी वेख वखाइंदा, चार दीवार जगत होए विवहार। चार कुण्ट चार जुग चार वरन सर्ब शरमाइंदा, मिले मेल ना प्रीतम यार। काल दयाल आपणी खेल खिलाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर करे खेल सच्ची सरकार। जुग जुग खेल खिलाया, सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढा। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुका। पुरख अबिनाशी निरगुण आपणा वेस वटाया, जोती जामा मात धरा। शब्द अगम्मी नाद सुणाया, लोआं पुरीआं एका तराना रिहा गा। सोया कोई रहिण ना पाया, लक्ख चुरासी नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां लए जगा। शाह सुल्ताना लए हिलाया, आप आपणा हलफ उठा। आपणा बीड़ा आपणे हथ्थ चमकाया , दूसर दिसे ना कोई शहिनशाह। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाया, ख़ालक ख़लक देवणहार पनाह। आप आपणा हुक्म सुणाया, तख्त निवासी एका वार लोकमात दए वरता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, लेखा जाणे अर्श फर्श धरत धवल धरनी आपणे चरना हेठ दबा। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाइंदा, हरि सूरबीर बलवान। निरगुण शब्द तीर चलाइंदा, लेखा जाणे दो जहान। चिला कमान ना कोई उठाइंदा, करे खेल नौजवान। सच सिँघासण सोभा पाइंदा, सति सतिवादी श्री भगवान। जगत नेत्र दिस ना आइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करे खेल महान। कलिजुग अन्तिम खेल महाना, निरगुण निरवैर आप कराईआ। एका शब्द धुर फरमाना, हरि का नाउँ दए सुणाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी एका गाणा, एका रईयत दए जणाईआ। एका हरि एका गाना, एका करे पढ़ाईआ। एका गुर एका पहरे बाणा, एका भाणा लए मनाईआ। एका भगत भगवन्त सुहाए दर दरबाना, दर दरवेश लए वड्याईआ। एका घट घट होए जाणी जाणा, भुल रहे ना राईआ। एका पुरख इक्क सुल्ताना, एका सतिगुर सेव कमाईआ। एका ब्रह्म एका ब्रह्म ज्ञाना, एका पारब्रह्म मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। कलिजुग अन्तिम पर्दा चुक्कया, निरगुण नूर कर उज्यार। इक्क सत्त जो रिहा लुकया, इक्क अठ्ठ करे ख्वार। सिँघ शेर शेर हो हो बुकया, एका भबक मारे विच संसार। नौं खण्ड पृथ्मी जीव जंत जाए लुट्टया, नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार। गुरमुख विरले उप्पर सतिगुर साहिब सच्चा आपे तुठया, आत्म अन्तर करे प्यार। अमृत जाम प्याए घुट्टया, अग्नी तत दए निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा पर्दा

रिहा उतार। पर्दा उठाया जगत सिँघासण, शहिनशाह वडी वड्याईआ। सृष्ट सबाई साधां सन्ता डोले आसण, जो बैठे ख़ाक विछाईआ। किसे ना सुरती फड़े सुआसण, सुरती शब्द ना कोई मिलाईआ। जो जन होए दासी दासन, तिस घाल थाए पाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग कलिजुग कूड़ कुड़यारा कर बैठा रिहा आसण, आत्म आस प्यास बुझाईआ। एका नूर करे प्रकाशन, प्रम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा पर्दा आप उठाईआ।

★ १ चेत २०१८ बिक्रमी दिल्ली शब्द सिँघासण पर ★

सो पुरख निरँजण हरि बलवाना, आदि अन्त सच्चा शहिनशाहीआ। हरि पुरख निरँजण नौजवाना, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। एकँकारा वसणहारा सचखण्ड सच्चे मकाना, दर घर साचे सोभा पाईआ। आदि निरँजण जोती नूर नूर महाना, निरवैर निराकार अजूनी रहत डगमगाईआ। अबिनाशी करता लेखा जाणे दो जहाना, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। श्री भगवान सति सरूपी आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आप झुलाए सच निशाना, सति सतिवादी हथ्थ उठाईआ। पारब्रह्म आपणे गृह हो प्रधाना, लेखा जाणे जाणी जाणा, जानणहार इक्क अख्वाईआ। आपणी इच्छया देवे दाना, साची भिच्छया मर्द मरदाना, बेऐब नाउँ ख़ुदाईआ। एका नाद धुर तराना, शब्द अगम्मी हरि फ़रमाना, तुरीआ तूरत आप वजाईआ। थिर घर सुहाए हो मेहरवाना, तख़्त निवासी शाह शाहाना, शाहो भूप राज राजाना, सच सिँघासण आसण लाईआ। दर दरवेश गुण निधाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आपणी धारा आप चलाईआ। आदि पुरख साची धारा, हरि हरि आप चलाइंदा। नूर उजाला हो उज्यारा, नूर नूराना डगमगाइंदा। साचे तख़्त बण सिक्दारा, धुर फ़रमाना हुक्म अलाइंदा। साचा साज कर त्यारा, निरगुण आपणी बणत बणाइंदा। घाड़न घड़त घड़े अपर अपारा, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। हरि का रूप ना किसे विचारा, बेअन्त बेअन्त सर्ब गाइंदा। आपे वसे सभ तों बाहरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका नर, नर नरायण आपणा नाउँ धराइंदा। नर नरायण नर निरँकारा आपे रक्ख, आपणे नाउँ दए वड्याईआ। निरगुण रूप निरगुण हो प्रतक्ख, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण दाता पुरख समरथ, अकल कल बेपरवाहीआ। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही दिस ना आईआ। आपणी महिमा गाए अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। इक्क इकल्ला सच महल्ला, आप सुहाइंदा। जोती शब्दी आपे रला, शब्द अनादी नाद सुणाइंदा। आपे फड़े आपणा पल्ला,

सगला संग आप निभाइंदा। आपणा आसण आपे मल्ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। आपणा संदेश आपे घल्ला, नर नरेश हुक्म अल्ल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपणा भण्डारा आपे भर, आपे वेख वखाइंदा। सचखण्ड हरि निरँकारा, निरगुण आपणी वस्त आप वरताईआ। लेखा जाणे अंदर बाहरा गुप्त ज़ाहरा, रूप अनूप सच्चा शहिनशाहीआ। साचे मन्दिर साचे गृह साचे घर होए मंगलचारा, गीत गोबिन्द आपे गाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नारा, आपणी बणत आप बणाईआ। लेखा जाणे कन्त भतारा, सेज सुहञ्जणी आप हंढाईआ। इक्क इकल्ला सुत दुलारा, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। एका करे सच विहारा, सति सतिवादी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा सुत शब्द उठाया, कर किरपा गुण निधान। धुर फ़रमाना इक्क सुणाया, कर किरपा हो मेहरबान। तेरी सेवा इक्क लगाया, साची सेवा इक्क पछाण। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां तेरी रचन रचाया, मेरा हुक्म तेरा फ़रमान। तेरा बन्धन एका पाया, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ान। विश्व आपणा नाउँ रखाया, वास्तक खेल करे भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए जाणी जाण। शब्द दुलार निमस्कारया, दोए जोड़ जगदीस। हउँ बालक बाल याणया, तूं शाह पातशाह शहिनशाह तेरा हुक्म तेरी हदीस। तेरा दर मोहे परवानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा आपणा वर, मैं पीसण रिहा पीस। हरि साचा हुक्म सुणाइंदा, पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार। तेरी सेवा सच लगाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार। त्रैगुण तेरी चरनां धूढ़ बणाइंदा, पंज तत वेखे तेरी छार। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रवि ससि तेरी किरन किरन प्रगटाइंदा, इक्क इक्क इक्क नाल कर प्यार। आपणी खेल आप खिलाइंदा, खेल करे अपर अपार। चेला गुर रूप वटाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। सज्जण सुहेला वेख वखाइंदा, भुल ना जाए दूजी वार। लक्ख चुरासी तेरी झोली पाइंदा, घाड़न घड़ अपर अपार। जुग चौकड़ी वण्ड वंडाइंदा, नौं नौं रक्खया धुर दरबार। चार चार पन्ध समझाइंदा, पुरख अबिनाशी बेऐब परवरदिगार। गुर पीर अवतार तेरा रंग रंगाइंदा, मेरा नाउँ तेरी सतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप सुणाए आपणी सच्ची गुफ्तार। सच संदेश सुणाया, पारब्रह्म करतार। शब्दी सुत उठाया, घर साचे कर प्यार। साचा मार्ग इक्क जणाया, आप वखाए एकँकार। कागद कलम ना लेख लिखाया, लेखा जाणे ना कोए संसार। नौं नौं एका भगत दृढ़ाया, चार चार दए आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए साची कार। साचा सुण हरि फ़रमाना, शब्दी सुत सीस झुकाइंदा। तूं शाह पातशाह साचा राणा, सीस जगदीस चरन कँवल

टिकाइंदा। नव नौं चार मनाया तेरा भाणा, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला कवण वक्त कवण वार कवण थित कवण सच्ची साची रुत्त, लोकमात वेख वखाइंदा। वेला वक्त हरि जणा, सुत करे दोए जोड़ निमस्कारया। पुरख अबिनाशी भेव खुल्ला, हउँ बालक बाल नादानया। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरी सेवा लवां कमा, विष्न ब्रह्मा शिव कर परवानया। त्रैगुण बन्धन एका पा, पंज तत खेलां खेल जहानया। गुर पीर अवतार आपणे रंग रंगा, तेरा देवां धुर फ़रमानया। सच संदेश इक्क सुणा, साहिब सच सुल्तानया। कवण वेला कवण वक्त आपणा मेला ल्ए मिला, नाता तुट्टे जीव जहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा दानया। कर किरपा हरि समझाइंदा, गुणवन्ता गुण निधान। शब्द सुत तेरा मेल मिलाइंदा, नव नौं चार कर परवान। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाइंदा, खेले खेल श्री भगवान। जुग चौकड़ी मेट मिटाइंदा, लेखा जाणे आप निगहबान। गुर अवतार तेरा मेरा नाउँ गाइंदा, मेरा नाउँ सच निसान। कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा, प्रगट होए आप भगवान। निरगुण जोती जोत जगाइंदा, रूप रंग रेख ना सके कोए पछाण। तेरा नाउँ शब्द डंक वजाइंदा, आप सुणाए दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम मेला करे आण। अन्तिम मेल करावणा, हरि करता करनेहार। नव नव चार पन्ध मुकावणा, लेखा जाणे धुर दरबार। सचखण्ड लोकमात सुहावणा, निरगुण जोत कर उज्यार। साचा मन्दिर आप बणावणा, आपे होए घड़नहार। दीपक जोती आप जगावणा, शब्द अनाद वज्जे धुन्कार। तेरा रूप आप दरसावणा, प्रगट हो विच संसार। कूड़ी क्रिया मेल मिलावणा, चारों कुण्ट करे उज्यार। विष्न ब्रह्मा शिव आपणे विच मिलावणा, आपे जाणे आपणी धार। त्रैगुण त्रै त्रै लोकां खाते पावणा, चौदां हट्ट वेखे वणज वपार। पंज तत मूल चुकावणा, रती रत करे ख्वार। पारब्रह्म ब्रह्म आपणा वेख वखावणा, वेखे विगसे करे विचार। एका धारा एका नाअरा नाउँ निरँकारा आप समझावणा, करे खेल अगम्म अपार। सो पुरख निरँजण आपणा दर वखावणा, हँ ब्रह्म ल्ए उभार। एका मन्दिर सोभा पावणा, एका सोहे बंक दुआर। एका किला कोट बणावणा, एका खड़ग खण्डा कटार। एका शाह पातशाह अख्वावणा, एका हुक्म सच्ची सरकार। एका भाणा आप वरतावणा, ना कोई मेटे मेटणहार। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावणा, कूड़ी क्रिया दए निवार। तेरा रूप आपणे विच समावणा, आप आपणा कर प्यार। आपणा डंका फेर वजावणा, लोकमात करे ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी जाणे साची कार। आदि जुगादी खेल खिलाइंदा, जुग करता बेपरवाह। जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा, वेस अवल्लड़ा इक्क धरा। निरगुण सरगुण संग निभाइंदा, सरगुण देवे शब्द सलाह। बोध अगाधा

आपे गाइंदा, भेव अभेदा भेव खुल्ला। ब्रह्मा वेता आप उठाइंदा, चारे वेदां लए पढ़ा। पुराण अठारां एका धार जणाइंदा, वेद विद्दत मूल चुका। शास्त्र सिमरत आपणे अंग लगाइंदा, अंगीकार करनेहारा दए पनाह। रूप अनूप आप धराइंदा, प्रगट होए विच जहां। खाणी बाणी खेल खिलाइंदा, बिस्मिल रूप अनूप ख़ुदा। आपणा ढोला आप सुणाइंदा, आपणा कलमा आपे लए पढ़ा। आपणा मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा, सच संदेश इक्क जणा। गुर अवतार सेवा लाइंदा, जुग जुग पकड़नहारा बांह। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराइंदा, कलिजुग अन्तिम वेखे आ। गुर गुर निउँ निउँ सीस झुकाइंदा, दर दरवेश तक्के राह। शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह साचे तख्त आसण लाइंदा, एकँकारा अगम्म अथाह। अलख अलखना भेव कोए ना पाइंदा, अगम्म अगम्मड़ा आपणे मार्ग आपे रिहा चला। निरगुण निरगुण जोती जामा वेस वटाइंदा, उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड दिसे किसे ना। कोटन कोटि जीव जंत साध सन्त राह तकाइंदा, निज घर बैठे ताड़ी ला। सति सतिवादी मेल ना कोए मिलाइंदा, आत्म अन्तर मेला मेल ना लए मिला। साची बणतर आप बणाइंदा, कलिजुग अन्तिम निहकलंकी जामा पा। शब्द खण्डा इक्क चमकाइंदा, इक्क अठ्ठ करनहार फ़नाह। अठ्ठां तत्तां पर्दा लांहयदा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध दए गवा। साची सुध आप जणाइंदा, जिस सिर आपणा हथ्थ दए टिका। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म आपणे रंग रंगाइंदा, रंग मजीठी इक्क चढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम फेरा पा। अन्तिम फेरा हरि जगदीस, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। एका ताज रक्खे सीस, तख्त निवासी सच्चा शहिनशाहीआ। लेखा चुक्के बीस बीस, राग छतीस देण दुहाईआ। नाता तुट्टे कुरान हदीस, वेद पुराण नेत्र नैणां नीर वहाईआ। लक्ख चुरासी पीसण रिहा पीस, कलिजुग कूड़ी चक्की मात चलाईआ। राज राजानां शाह सुल्ताना करे ख़ाली ख़ीस, त्रैगुण अग्नी तत जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खण्डा नाम उठाईआ। साचा खण्डा हरि का नाउँ, दूसर अवर ना कोई जणाइंदा। लक्ख चुरासी सृष्ट सबाई नौं नौं वेखे थाईं थाउँ, सति सति आपे फेरा पाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता करे सच न्याउँ, लेखा कोई रहिण ना पाइंदा। हरिभगत उठाए फड़ फड़ बाहों, शब्द संदेश इक्क सुणाइंदा। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, जिस जन सोहँ हँसा मोती चोग चुगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एकँकारा एका रंग रंगाइंदा। एका रथ हरि रथीआ, दोए दोए रक्खे धार। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो रिहा लुकया, प्रगट होया विच संसार। शाह सुल्तान श्री भगवाना एका तुठया, जगत राजानां करे ख़बरदार। जूठा झूठा बूटा जाणा पुट्टया, थिर रहे ना विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ खिच्चे

सच कटार। सच कटारा चण्डी चमके, दामनगीर आप चमकाईआ। लक्ख चुरासी जाए डन्न के, बचया कोई रहिण ना पाईआ। आपणा बल आपणा जोध आपे कर के, आपणी करे सच्ची शहिनशाहीआ। दूजे नाल ना बहे रल के, निरगुण इक्क इकल्ला वडी वड्याईआ। शाह पातशाह जाए छल के, अछल अछल आपणा आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई रिहा भुलाईआ। सृष्ट सबाई रिहा भुला, अभुल्ल भुल्ल विच कदे ना आया। गुरमुख सज्जण ल्ए मिला, मेल मिलावा आप कराया। वीह सौ अठारां बिक्रमी पहली चेत्र दिवस सुहा, दीन दुनी आपणे हथ्थ रखाया। राष्ट्रपति दए जगा, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाया। रसना गाउणा मिले बेपरवाह, स्वच्छ सरूपी रूप वटाया। अन्त दिसे ना कोई थाँ, ना कोई होए मात सहाया। चरन कँवल ध्यान इक्क लगा, दूसर ओट ना कोई जणाया। वीह सौ वीह बिक्रमी पंदरां कत्तक आपणा तख्त ताज ल्ए सुहा, शाह पातशाह आसण सिँघासण डेरा लाया। नाम खण्डा जाए हथ्थ फड़ा, भुल रहे ना राया। चार जुग जिस पाई वण्डा कलिजुग अन्तिम आया बण मलाह, दो जहानां बेड़ा रिहा चलाया। भारत खण्ड पहलां देवे इक्क सलाह, सृष्ट सबाई फेर हिलाया। राती सुत्तयां शब्दी जेवड़ा गल विच ल्ए पा, सगला साथी ना कोई छुडाया। सोहँ गाउणा हरि का नाँ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राह चलाया। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका मार्ग दए पा, इष्ट देव इक्क वखाया। राम कृष्न आपणा रूप ल्ए वटा, नानक गोबिन्द जोत जगाया। ईसा मूसा लड़ ल्ए फड़ा, संग मुहम्मद चार यार आपणी उँगली लाया। सभ दा सांझा पीर दस्तगीर बणे आप ख़ुदा, पारब्रह्म बेपरवाहया। निरगुण नूर जोती रिहा डगमगा, जल्वा जलाल आप वखाया। आपणे मन्दिर आपे सोभा रिहा पा, सति सतिवादी सच सिँघासण दए वड्याआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी खेल महान, जुग करता आपणी कार कराया।

★ सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै ★

१ चेत २०१८ बिक्रमी पंजां प्यारयां अते लिखारी नाल लै के नंगी तलवार राष्ट्रपती डाकटर राजिंदर प्रसाद नूं दिती, जिस उत्ते शब्द लिख्या है। जो संसार विच सतिजुग दी धार प्रसिद्ध करेगी। अते सर्ब जीव आत्म दी शांती दा सच्चा राज जोग करन दी निशानी निरगुण सरूप निहकलंक वलों मातलोक विच प्रगट कीती गई है। जिस दी आण सर्ब संसार नूं २०२० बिक्रमी नूं मन्नणी पवेगी।

३६६

पंजा प्यारयां दे नाम इस तरां हन : -

श्री बिशन सिँघ जी गुड़गाउँ, श्री इन्दर सिँघ जी नवीं दिल्ली
श्री प्रीतम सिँघ जी जेठूवाल अमृतसर, श्री डा० पाल सिँघ जी भलाई पुर
श्री गुरमुख सिँघ जी भलाई पुर, श्री दर्शन सिँघ जी लिखारी ललीआं जलन्धर
श्री नाज़र सिँघ जी नाथेवाल, अते श्री डा० रूप लाल बत्तरा कौंसलर दिल्ली

जोत शब्द अधार, पूरन सिँघ, पंज मुख ताज अते चुरासी कलीआं वाला चोला पा के अते नंगी तलवार हथ्थ विच लै के गए सन जी। पंजां प्यारयां दे पीले बस्त्र पहने होए सन, लिखारी दर्शन सिँघ काले कपड़िआं दे लिबास विच नकाब पहन के गए सन जी। नाजर सिँघ नौ ग्रन्थ जो लिखे जा चुक्के सन उहनां नूं लै के नाल गए सन जी। डाकटर रूप लाल बत्तरा प्रेम बन्धन विच गया सी जी।

जो बचन राष्ट्रपती नाल उस जगा राष्ट्रपती हाउस विच होए, नीचे लिखे गए हन जी :

४००

१० भगत भगवन्त एका धार, आदि जुगादि रखाइंदा। जुग जुग लोकमात लए अवतार, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर करया सच विहार, रामा कृष्ना रूप वटाइंदा। ग़रीब निमाणे लाए पार, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। हँकारीआं तोड़े गढ़ हँकार, दुष्ट हँकारी आप खपाइंदा। खड़ग खण्डा फड़ कटार, तीर कमाना हथ्थ उठाइंदा। रथ रथवाही बणे गिरवर गिरधार, महांसारथी रथ चलाइंदा। एका राम नाम घट उज्यार, जीवां जंतां आप समझाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, निरगुण निरवैर आप कराइंदा। जोती जामा अलख अगम्म अपार, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। सृष्ट सबाई वेखे विभचार, नौं खण्ड पृथ्मी कूड़ कुड़यार चार कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। सत्त दीप हाहाकार, जीव जंत धीरज धीर ना कोए धराइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी पावणहारा सार, गृह गृह अंदर मन्दिर वेख वखाइंदा। एका शब्द सच जैकारा, सति सतिवादी आप लगाइंदा। दो हज़ार बिक्रमी हो त्यारा, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। वीह सौ तेरां बिक्रमी शब्द अगम्मी इक्क हुलारा, राज राजानां शाह सुल्तानां आप लगाइंदा। राष्ट्रपति राजिंदर साद भगत भगवन्त एका घर सुहाए बंक दुआरा, पंचम भेंट खेवट खेटा आप चढ़ाइंदा। सत रंग निशाना सत्तां दीपां वखाए एका घर बारा, पंचम पंच मुख सालाइंदा। पंचम राज जोग ताज आदि जुगादी साची कारा, ब्रह्मण्डां खण्डां खेल खिलाइंदा। चरन कँवल जोड़ा जगत

विहारा, राम राज इक्क वखाइंदा। नाम खण्डा डण्डा भारा, मनमुख जीवां आप लगाइंदा। एका शब्द सोहँ लिख्या लेख अपर अपारा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा सांझा यारा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका रंग रंगाइंदा। लिख लिख लेख भेजे भेजणहारा, वेद कतेब भेव ना आइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव पावे सारा, निरगुण आपणा पर्दा लांहयदा। वीह सौ अठारां बिक्रमी पहली चेत्र दिवस विचारा, सच कटारा हथ्थ उठाइंदा। भारत खण्ड सच्ची सरकारा, नव खण्ड आप वड्यांअदा। वीह सौ वीह बिक्रमी पंदरां कत्तक करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह शहिनशाह शाह पातशाह आपणा हुक्म सुणाइंदा। ज़ात पात ऊँच नींच राउ रंक राज राजान सोहण इक्क दुआरा, वरन बरन मेट मिटाइंदा। तख्त निवासी एका तख्त सुहाए हरि निरँकारा, सीस जगदीस ताज टिकाइंदा। एका शब्द एका नाम एका इष्ट गुरदेव वखाए सर्ब संसारा, वास्तक आपणा रूप धराइंदा। कूड़ कुड़यारा जूठ झूठ हउमे हंगता माया ममता मोह तुट्टे दिस ना आए किसे विभचारा, सच विहारा इक्क कराइंदा। राष्ट्रपति पति पति भगवन्त सहारा, भगत भबीखन राम रामा मेल मिलाइंदा। नाम खण्डा सच कटारा, उप्पर सोहँ लिख्या लेख अपारा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। पंदरां कत्तक वीह सद बीस सच दिहाढ़ा, नर निरँकारा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे दर, भगत भगवन्त पल्लू फड़, लोकमात ना कोए छुडाइंदा। राष्ट्रपत राजिंदर प्रसाद, भगत भगवन्त मेल मिलाईआ। आत्म अन्तर मिली साची दाद, अठ्ठे पहर हरि गुण गाईआ। जगत मेटणी अन्धेरी रात, सच सुच्च कर रुशनाईआ। सोहँ शब्द सुणाउणी साची गाथ, बवन्जा देशां हुक्म सुणाईआ। प्रगट होए कमलापात, कमल नैण नैण मटकाईआ। सृष्ट सबाई वेखे मार झात, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हाथ, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। वेले अन्त पुच्छे वात, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा दए समझाईआ। अस्सू तिन्न सच दिहाढ़ा, हरि साचा सच जणाइंदा। अद्धी रात वक्त विचारा, रूप अनूप दरस दिखाइंदा। एकम एक आया चल दुआरा, चाल निराली आप रखाइंदा। धन्न वड्याई हरिभगत जो रसना जिहवा गाए एकँकारा, ओम रूप सति सरूप नज़री आइंदा। अंदर लुकया डूँघी ग़ारा, दिस किसे ना आइंदा। निरगुण निरगुण निरगुण हो उज्यारा, सरगुण सरगुण सरगुण आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर वेस धर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्ला, हरि साचा सच कराइंदा। साढे तिन्न हथ्थ वेखे इक्क महल्ला, सम्बल नगरी डेरा लाइंदा। वेद व्यास फड़ाया पल्ला, पुराण अठारां हरि जस गाइंदा। चार वेद संदेश घल्ला,

ब्रह्मा वेता आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर आपणी धार चलाइंदा। राष्ट्रपति भगत भगवान, एका तत जणाइंदा। सति धर्म दा सच निशान, भारत खण्ड हथ्थ वखाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी मन्ने आण, श्री भगवान आप मनाइंदा। हथ्थ फड़ाए जगत कृपाल, भगत नाम उप्पर लेख वखाइंदा। त्रेता जुग दिता दान, कलिजुग अन्तिम आपणी झोली पाइंदा। करे खेल वाली दो जहान, खेलणहारा दिस ना आइंदा। पहली चेत्र दिवस महान, वीह सौ अठारां बिक्रमी नाल रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा दान, काया पंज तत्त वखाए झूठ म्यान, नाम कृपाल आपणे हथ्थ रखाइंदा। हरि भगतां दया कमाइंदा, सिर हथ्थ रक्ख निरँकार। आत्म अन्तर जोत जगाइंदा, निरगुण रूप अपर अपार। कोटन कोटि जन्म दे पाप गवाइंदा, जिस बख्शे चरन प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे नाम आधार। साची असीस हरि जगदीस, जन भगतां आप रखाइंदा। लक्ख चुरासी पीसण रिहा पीस, साचा राह ना कोए वखाइंदा। हरिजन हरिभगत हरि दर गायण इक्क हदीस, हरि हरि नाम रसना इक्क सुणाइंदा। लहिणा देणा चुक्के बीस बीस, भगत भगवन्त आपणे गल लगाइंदा। तेरे हथ्थ झुलाए छत्र साचे सीस, साचा सीस जगदीस भगतां अग्गे आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राष्ट्रपत मिले हरि, काया मन्दिर अंदर डूँघी कंदर मेल मिलाइंदा। सच सहारा हरि हरि नाम, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। पूरन भगवन्त पूरन करे काम, पूरी इच्छया पूर कराईआ। साचे सन्त सदा करे प्रनाम, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। सतारां साल बणया रिहा अञ्याण, साल अठारवें वज्जे वधाईआ। राष्ट्रपति मिले भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची असीस आत्म आस आसा पूर कराईआ।

★ १ चेत्र २०१८ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह करोलबाग़ दिल्ली ★

आदि पुरख सर्ब गुणवन्त, आदि जुगादि खेल खिलाइंदा। सो पुरख निरँजण महिमा अगणत, भेव अभेद छुपाइंदा। हरि पुरख निरँजण नारी कन्त, रूप अनूप आप धराइंदा। एकँकारा एका धाम सोभावन्त, सचखण्ड दुआरे आसण लाइंदा। आदि निरँजण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बल धराइंदा। श्री भगवान वड बलकारा, बल आपणा आप रखाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा ठांडे दरबारा, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। पारब्रह्म आपे जाणे आपणी कारा, करता पुरख आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल आप वरताइंदा। कल

४०२

वरतंता हरि निरँकारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे हो उज्यारा, निरगुण नूर डगमगाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी साचे आसण सोभा पाईआ। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाना, साचा राणा आप जणाईआ। दर दरवेश बण दर दरबाना, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह सीस जगदीस आपणे अग्गे आप झुकाईआ। आदि अन्त आपे जाणे आपणा भाणा, भाणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अकल कल आपणा नाउँ धराईआ। अकल कल हरि हरि धार, हरि साचा आप रखाइंदा। निरगुण निरगुण हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। आदि जुगादी एका कार, करता पुरख आप कराइंदा। ना कोई दूसर मीत मुरार, सगला संग ना कोए जणाइंदा। वसणहारा धाम न्यार, धाम अनडिठ आपणा रूप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी महिमा आप गणाइंदा। साची महिमा हरि जणाए, लेखा लेख ना कोए लिखाईआ। निर्मल जोती आप जगाए, आप आपणा ल्ए प्रगटाईआ। मात पित ना कोए बणाए, भैण भाई साक सज्जण सैण ना कोए वड्याईआ। साचे मन्दिर आसण लाए, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। रवि ससि सूरज चन्न ना कोए चढ़ाए, मंडल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए प्रगटाए, त्रैगुण माया बन्धन ना कोए वखाईआ। पंज तत घाड़न ना कोए घड़ाए, लक्ख चुरासी ना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सच महल्ले सोभा पाईआ। सच महल्ला एकँकारा, हरि हरि साचा आप जणाइंदा। आपे जाणे आपणी धारा, धार धार विच प्रगटाइंदा। लेखा जाणे अगम्म अथाह, बेपरवाह आपणी खेल आप खिलाइंदा। खेवट खेटा बण मलाह, करे खेल सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा भेव खोल्हणहारा, आपणी दया आप कमाईआ। आपणे मन्दिर कर पसारा, निज घर बैठा आसण लाईआ। रूप रंग ते वसे बाहरा, रेख भेख ना कोए जणाईआ। तख्त निवासी निरगुण धारा, सच सिँघासण एका जोत करे रुशनाईआ। आपणी इच्छया साची भिच्छया भर भण्डारा, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। आपे लेखा देवणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी कल आप वरताईआ। आपणी कल आप वरतंता, गुण अवगुण ना कोए जणाइंदा। करे खेल श्री भगवन्ता, रूप अनूप आप वटाइंदा। आपे नारी आपे कन्ता, आपे साची सेज हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणी किरपा आप कर, हरि पर्दा आप उठाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आदि पुरख दीन

दयाल, बेअन्त बेअन्त बेअन्त जो अख्वाइंदा। आपे घाले आपणी घाल, आपणा अन्त आपणे विच टिकाइंदा। पुरख अबिनाशी शाह सुल्तान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए जाणी जाण। जानणहार पुरख समरथ, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। सचखण्ड दुआरे रिहा वस, थिर घर साचे चरन छुहाइंदा। थिर घर मार्ग आपणा दस्स, आप आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरता आदि जुगादी इक्क निरँकार, साचे दर आप सुणाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, हरि साचा आपणा आप सुणाइंदा। आपे होए शाह पातशाह राज राजाना, सीस जगदीस एका सोभा पाइंदा। आपे राग आप तराना, नाद अनादी आप वजाइंदा। आपे परम पुरख होए मेहरबाना, दीनन आपणी दया आप कमाइंदा। आपे साचे मन्दिर उच्च महल्ल वसे इक्क मकाना, अस्थिल दुआरा आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर घाड़न घड़, अंदर वड़ मुख छुपाइंदा। सचखण्ड दुआर घाड़न घड़या, बाढी कोए ना बणत बणाईआ। निरगुण पुरख अकाल नरायण नरया, नूरो नूर डगमगाईआ। आपणा खेल आपे करया, खेलणहारा आप हो जाईआ। एका निरगुण नूर उज्यार आपणे अंदर धरया, दीवा बाती ना कोए टिकाईआ। आपणा नाद शब्द धुन आप सुणाए आपे सुणनहारा हरि हरि अनुभव प्रकाश कराइंदा, अगम्म अगम्मड़ी कार। गुर गुर रूप मात धराइंदा, शब्दी शब्द कर उज्यार। भगत भगवन्त वेख वखाइंदा, आदि जुगादी साची कार। सन्त सुहेले मेल मिलाइंदा, नाता तोड़ सर्ब संसार। गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा, दिवस रैण करे प्यार। गुरसिख साचा संग निभाइंदा, विछड़ ना जाए मीत मुरार। जो जन आसा तृष्ना मन रखाइंदा, मंगे मंग चरन धूढ़ साची ख़ाक छार। नर निरँकारा खेल अपार रूप अनूप आप धराइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे घट घट करे आप विचार। हरि सतिगुर सच्चा शहिनशाह, आदि जुगादि समाया। गुर गुर शब्दी बण मलाह, खेवट खेटा वेस वटाया। भगत भगवन्त ल्ए उठा, आप आपणी दया कमाया। सन्तन अन्तर आत्म दए समझा, बोध ज्ञान इक्क समझाया। गुरमुख काया गुर लेखा देवे पा, सिर आपणा हथ्थ रखाया। गुरसिखां जपाए एका नाँ, नाउँ निरँकारा मूल वखाया। सदा सुहेला रक्खे सिर ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब जन्म वेख वखाया। पूर्ब जन्म जाणदा, हरि सच्चा सतिगुर मीत। करे खेल श्री भगवान दा, आदि जुगादी साची रीत। आत्म अन्तर ब्रह्म पारब्रह्म एका रंग माणदा, लेखा जाणे हस्त कीट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल इक्क अतीत। खेल अतीत युंजान योगी, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। भगतां अंदर भगती भोगी, साचा भोग इक्क वखाईआ। जगत बिरहों

विछोड़ा कट्टे रोग रोगी, माया ममता मोह चुकाईआ। एका नाता बिधाता बंधाए धुर संजोगी, सच संजोग इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लेखा लेखे पाईआ। पूर्ब लेख मुकावणा, गुर गोबिन्द कर प्यार। काया नगर इक्क बसावणा, काया दीवा बाती जोती कर उज्यार। पंचम तत मेट मिटावणा, रती रत रत निकाल। ब्रह्म मति इक्क वखावणा, लेखा चुक्के शाह कंगाल। समरथ पुरख दरस दिखावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा जीआ दान। जीआ दान जीवण जुगत, जाग्रत जोत करे रुशनाईआ। हरिजन उठाए साचे भगत, भगवन हथ्थ वड्याईआ। आप सुहाए आपणा वक्त, वार थित ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर दए पढ़ाईआ। एका अक्खर निशअखर गुण, गुणवन्ता आप जणाइंदा। छत्ती राग ना रिहा सुण, नाद धुंन इक्क वजाइंदा। लक्ख चुरासी छाण पुण, गुरमुख आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अमोलक इक्क वरताइंदा। वस्त अमोलक हरि हरि थार, थिर घर साचे आप वरताईआ। जुगा जुगन्तर साची कार, करता पुरख मात कराईआ। नित नवित हो उज्यार, भगतन मीत वेस वटाईआ। अबिनाशी अचुत मीत मुरार, सगला संग आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस सच्चा शहिनशाहीआ। आत्म दरस आत्म दरसी आत्म रंग, आत्म अन्तर आप चढ़ाइंदा। आत्म सेजा आत्म पलँघ, आत्म रसीआ आप हंढाइंदा। आत्म नाद आत्म मृदंग, आत्म ताल तलवाड़ा आप वजाइंदा। आत्म अन्तर एका मंग, परमात्म आत्म एका मेल मिलाइंदा। बख्शणहारा परमानंद, निजानंद विच समाइंदा। मुख शरमाए सूरज चन्द, निरगुण जोत डगमगाइंदा। दूई द्वैती मिटाए कंध, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। बिन रसना जिहवा आप सुणाए आपणा छन्द, बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। अठ्ठे पहर इक्क अनन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। वस्त अमोलक साची दात, गुर सतिगुर आप वरताईआ। गुरमुख करे उत्तम ज़ात, ज़ात अज़ाती मेट मिटाईआ। चरन कँवल बंधाए साचा नात, दर घर साचे मिले वड्याईआ। इक्क सुणाए अगम्मी गाथ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। लहिणा देणा चुक्के पूजा पाठ, जिस मिले सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए जणाईआ। भेव खुलाए हरि निरँकार, काया मन्दिर अंदर वेख वखाइंदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, पंज तत मन मति बुध पर्दा आप उठाइंदा। नौं दर वेखे वारो वार, वेखणहारा मुख छुपाइंदा। सुखमन नाड़ी टेढी बंक टेढी गार, डूँघी कंदर सोभा पाइंदा। ईड़ा पिंगल दए सहार, आप आपणी दया कमाइंदा। अमृत आत्म बख्शे ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। निरगुण दीआ बाती कर उज्यार।

अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, अनहद ताल आप वजाइंदा। बजर कपाटी लाए पाड़, दूई द्वैती मेट मिटाइंदा, आत्म सेजा कर शंगार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। सुरती शब्दी इक्क प्यार, दर घर साचे मेल मिलाइंदा। नारी कन्त सोहे इक्क दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाए एका दुआर, मिल्या मेल विछड़ ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्म दुआरी भेव चुकाइंदा। दस्म दुआरी पर्दा खोल्ह, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणा नाअरा आपे बोल, आपे दए समझाईआ। आपणे कंडे आपे तोल, आपणे लेखे लए लगाईआ। आपे बैठा रहे अडोल, गुरमुख अडोल अडुल आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे मेला लए मिलाईआ। दस्म दुआरी पर्दा लाह, आपणी दया कमाइंदा। गुरमुख सज्जण नाल मिला, सुन्न अगम्म फेरा पाइंदा। सुन्न अगम्मी डेरा ढाह, आपणा चरन उठाइंदा। थिर घर साचा लए खुल्हा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। थिर घर दवारिउँ आप आपणा पर्दा उठा, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। सचखण्ड दुआर वेखे सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आपणी कल आप धराइंदा। तख्त निवासी उप्पर बैठ, आपणा बंक दए सुहा, बंक दुआरी भेव ना आइंदा। गुरमुख सज्जण मीत मुरार, सन्त कन्त भगवन्त चरन कँवल लए बहा, चरन चरनोदक मुख चुआइंदा। जोती जोत लए मिला, जोती जाता पुरख बिधाता, आपणे रंग रंगाइंदा। बैठा रहे इक्क इकांता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। सचखण्ड दुआरे वसे ठाकर, लोकमात वेख वखाईआ। लोकमात पंज तत काया चोटी वेखे ठाकर, ठग्ग ठगौरी आपे पाईआ। निरगुण रूप अगम्म अथाह निरवैर पुरख हरि हरि ठाकर, दर घर साचे सोभा पाईआ। त्रैगुण बध्धा माया लध्धा जीव जंत ठाकर, ठाकर एका राह तकाईआ। साहिब सच्चा ठाकर, जुग जुग वेस वटाईआ। गुरसिख निमाणा मन्ने भाणा जगत ठाकर, नेत्र नैण उठाईआ। शाह पातशाह साचा राणा हरि सौदागर, लोकमात मार झात एका वणज कराईआ। पंज तत काया चोला रती रत वेखे रत्नागर, ठाकर आपणा पर्दा लाहीआ। जिस जन कर्म करे उजागर, आप आपणा मेल मिलाईआ। चरन कँवल कँवल चरन एका देवे आदर, जन्म जन्म दी तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। मेल मिलावा करता कादर, करीम रहीम सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सो ठाकर होए बहादर, जिस ठाकर मिल्या सच्चा शहिनशाहीआ। मन मनूआ अंदर रहे ना नाज़र, हँकार गढ़ आप तुड़ाईआ। सिदक सबूरी देवे सच्ची सादर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ठाकर जगत रिहा ठुकराईआ। जगत ठाकर लग्गे ठोकर, हरि हरि साचा आप लगाइंदा। बिन हरि नामे दिसे चौखर, माणस जन्म मुल्ल कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत वैद

साची हिकमत, काया मन्दिर आप समझाइंदा। साची हिकमत एका मन्त्र, हरि साचा सच जणाइंदा। सोहँ नाम एका नसतर, रती रत वेख वखाइंदा। काया चोली रंगे बस्त्र, रंग मजीठी आप चढ़ाइंदा। माणस जन्म बणाए बणतर, काग हँस रूप वटाइंदा। लेखा जाणे जुगा जुगन्तर, पूर्ब जन्मां फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ठाकर हरि अख्वाइंदा। हरि ठाकर अबिनास, आदि जुगादि समाया। जन ठाकर हरि का दास, निउँ निउँ बैठा सीस झुकाया। साचा ठाकर सतिगुर वसे पास, विछड़ कदे ना जाया। जगत ठाकर क्यों होए उदास, सतिगुर माया पर्दा दए चुकाया। निज ठाकर निज रक्खे वास, निर्धन साचा मेल मिलाया। जगत ठाकर रसना जिहवा हलाए पवण स्वास, हरि ठाकर रसना जिहवा ना कोए हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनहारा बन्द ख़लास, सो ठाकर हरिजन भाया। वाह वा ठाकर ठाकर मेला, जगत ठोकर ना कोए लगाईआ। आपे गुरु आपे गुर चेला, गोबिन्द गुर गया समझाईआ। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, घर साचे मिले साचा माहीआ। दरस दिखाए इक्क इकेला, कलिजुग विछोड़ा पन्ध कटाईआ। अचरज खेल आपणा खेला, वेद कतेब भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नाम दए वड्याईआ। नाम वड्याई ठाकर गुणवन्त, गुण ठाकर हरि जणाइंदा। जन ठाकर मिले हरि भगवन्त, सो ठाकर सोभा पाइंदा। जन ठाकर रसना जिहवा मणीआ मंत, सो ठाकर हरि गुण गाइंदा। जिस ठाकर मिल्या एका कन्त, सो ठाकर सोभावन्त नार कहाइंदा। जिस ठाकर चोली चढ़या रंग बसन्त, सो ठाकर मिल मिल मंगल गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका शब्द नाम दृढ़ाइंदा। ठाकर देवे इक्क ज्ञाना, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। शब्द नाद धुन तराना, गृह मन्दिर आप सुणाईआ। मन वैरागी होया निमाणा, पंज शैतान रहिण ना पाईआ। आसा तृष्ना पन्ध चुकाणा, माया ममता मोह दए मिटाईआ। एका राग सुणाए गाना, आप आपणी करे शनवाईआ। शब्द संदेश धुर फ़रमाना, नर नरेश करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत बन्धन वेख वखाईआ। जगत बन्धन वेख वखाइंदा, किरपा निध गुण निधान। हरिजन साचे मेल मिलाइंदा, आत्म अन्तर कर परवान। पंज आब पन्ध मुकाइंदा, पंचम मेट झूठ दुकान। चौदां हट्ट फोल फोलाइंदा, अंदर मन्दिर मार ध्यान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दरस देवे दान। एका जोत प्रगटे ठाकर घट, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। करे प्रकाश लट लट, रूप अनूप रंग वखाइंदा। दूई द्वैत मेटे फट्ट, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ तट, अठसठ काया मन्दिर अंदर धार वहाइंदा। रसना जिहवा जो रही रट, बिन रसना जिहवा आपणा नाम जपाइंदा। पार कराए चौदां

लोक चौदां तबक चौदां हट्ट, पुरख समरथ आपणी दया कमाइंदा। आपणी वस्त गुरमुख अंदर देवे घत्त, गुरसिख ख़ज़ाना आप भराइंदा। पंजां चोरां पाए नथ्थ, आपणे पैरां हेठ दबाइंदा। साध संगत होया इक्टठ, शुभ दिहाढ़ा इक्क वड्यांअदा। पहली चेत मेल मिलाया बीस बिक्रमी इक्क अठ्ठ, अठारां गुरसिख चरनां हेठ दबाइंदा। काया मन्दिर अंदर गेड़े उलटी लत्त, गेड़ आपणे हथ्थ रखाइंदा। हँकारी बुरज जाए ढह्व, मन का मणका आप भवाइंदा। तन पहनाए साचा पट, आपणी हथ्थीं सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत जोत नाल प्रगटाइंदा। एका जोत करे उजाला, हरि सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम करे खेल निराला, निरगुण निरवैर सच्चा शहिनशाहीआ। लेखा जाणे शाह कंगाला, शाह कंगाल एका रंग रंगाईआ। गुरमुख गुर गुर दीपक दीआ आपे बाला, तेल बाती ना कोए वखाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, त्रैगुण अतीता आपणा खेल आप कराईआ। घर विच घर वखाए सच्ची धर्मसाला, गृह अंदर मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोत करे रुशनाईआ। एका जोत निरगुण धार, निरगुण नूर आप धराइंदा। गुरसिखां देवे कर प्यार, सतिगुर साची सेव कमाइंदा। औखी घाटी चढ़े एका वार, साचा पौड़ा आप लगाइंदा। नेत्र नैण खोल्ह करे उज्यार, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। चौथे पद कर प्यार, गुरमुख साचे धाम सुहाइंदा। पंचम मेला मीत मुरार, पीआ प्रीतम आपणा संग रखाइंदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोए आधार, हरिजन दर घर साचे सोभा पाइंदा। सत्तवें सति सतिवादी सति पुरख निरँजण मीत मुरार, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी जोत आप प्रगटाइंदा। जोती जाता खेल अवल्ला, जाग्रत जोत करे रुशनाईआ। जिस जन फड़ाए आपणा पल्ला, पारब्रह्म होए सहाईआ। घट घट अंदर वसया इक्क इकल्ला, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपे जोती नूर धर, नूर नुराना डगमगाईआ। नूर नुराना डगमगा, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। शाह रग उप्पर बैठा डेरा ला, सच सिँघासण आसण सोभा पाइंदा। कमलापति बणे आप मलाह, हरिजन साचे पार कराइंदा। पहली चेत्र देवे सच सलाह, सोहँ शब्द इक्क समझाइंदा। फड़ फड़ आपणे बेड़े लए चढ़ा, सतिगुर पूरा सेव कमाइंदा। जगत झेड़े दए मुका, जिस जन आपणे झेड़े पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत नूर नूर जोत जोत जोत विच रखाइंदा।

जगत तृष्ना भुक्ख मिटे प्यास, जिस जन सतिगुर दया कमाइंदा। एका नाम देवे साची रास, अतोट अतुट वरताइंदा।

लेखा चुक्के दस दस मास, मात गर्भ फंद कटाइंदा। घर मन्दिर वखाए साची रास, गोपी काहन आप नचाइंदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ विच प्रभास, नित नवित सेव कमाइंदा। सदा सुहेला जिस जन वसे पास, सो जन आस ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुण इक्क समझाइंदा। मिटे प्यास गुर सतिगुर चरन, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। अन्तर आत्म खोल्हे हरन फरन, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। भय चुक्के मरन डरन, भउ सीस ना होर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। हरि का नाम वस्त अमोल, गुरमुख वण्ड वंडाईआ। जो जन रक्खे आपणे कोल, जगत तृष्ना भुक्ख नेड़ ना आईआ। सदा सदा सुहेला रक्खे अडोल, अडुल बेपरवाहीआ। आपणा करे कीता पूरा कौल, कीता कौल भुल ना जाईआ। हरिजन हिरदे अंदर जाए मौल, सति सरूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत तृष्ना दए गंवाईआ। जगत तृष्ना होए दूर, आसा आसा विच समाइंदा। दरस दिखाए हाज़र हज़ूर, हरिजन हरि हरि वेख वखाइंदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, माया ममता मोह मिटाइंदा। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, दुरमति मैल आप गवाइंदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। हरिजन हरि हरि आसा मनसा पूर, जो जन एका ओट रखाइंदा। एका ओट रक्खणी आस, हरि सतिगुर दए वड्याईआ। एका नाम करे तृप्तास, त्रै त्रै लेखा मूल चुकाईआ। निज घर आत्म करे वास, निजानंद रस चखाईआ। निरगुण सरगुण होए दासी दास, सेवक साची सेव कमाईआ। गुरसिख होए ना कदे निरास, जिस सतिगुर मिल्या सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत तृष्ना दए गंवाईआ। जगत तृष्ना जाए छुट्ट, सतिगुर पूरा आप गवाइंदा। आसा तृष्ना विचों कढ्ढे कुट्ट, शब्द खण्डा हथ्थ चमकाइंदा। अमृत जाम प्याए घुट्ट, सांतक सति सति वरताइंदा। जिस जन उप्पर जाए तुट्ठ, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत तृष्ना पन्ध मुकाइंदा। जगत तृष्ना मुक्के पन्ध, गुर चरन सच्ची सरनाईआ। रसना तजाउणा मदिरा मास गंद, अमृत आत्म जाम मुख लगाईआ। दूई द्वैती ढाए भरमां कंध, माया पर्दा दए चुकाईआ। शब्द सुणाए सुहागी छन्द, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। माया ममता करे खण्ड खण्ड, आसा तृष्ना दए जलाईआ। गुरसिख सुहागण नार ना होए रंड, जिस मिल्या एका माहीआ। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, बन्दी छोड़ दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत तृष्ना दए गंवाईआ। जगत तृष्ना मिटे भुक्ख, भुख्यां भुक्ख गवाइंदा। इक्क उपजाए साचा सुख, घर घर विच मेल मिलाइंदा। मात गर्भ ना होए उलटा रुख, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। सफल कराए मात कुक्ख, जो जन

चरनी सीस झुकाइंदा। उज्जल होए जगत मुख, मुख मुखड़ा आप सालांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत भुक्ख आप गंवाइंदा। सतिगुर चरन हरि का दुआर, हरी हरि आप जणाइंदा। सतिगुर चरन सति प्यार, सति सतिवादी सति समझाइंदा। सतिगुर चरन नाता तोड़े जगत संसार, जगत जुगत इक्क वखाइंदा। सतिगुर चरन माणस जन्म पैज दए संवार, माणस मानुख लेखे लाइंदा। सतिगुर चरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर वखाइंदा। सतिगुर चरन साचा घर, सति पुरख निरँजण आप बणाइंदा। गुरसिख चुक्के झूठा डर, भय भयानक ना कोए वखाइंदा। आत्म नुहाए साचे सर, निर्मल नीर आप वहाइंदा। सुरत सुवाणी ल्ए फड़, शब्द शब्दी मेल मिलाइंदा। पौड़े पौड़े जाए चढ़, औंदा जांदा दिस ना आइंदा। हरिजन जिस तेरा घाड़न ल्या घड़, सो तेरी सेव कमाइंदा। आपणी करनी आपे रिहा कर, करता पुरख खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क रखाए चरन ओट, माया ममता कढ्ढे खोट, हउमे हंगता आप गंवाइंदा। चरन कँवल साचा नाता, गुर सतिगुर आप बंधाईआ। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी राता, साचा चन्द करे रुशनाईआ। इक्क सुणाए साची गाथा, अन्तर मन्त्र करे पढ़ाईआ। मेल मिलाए कमलापाता, कामल आपणी दया कमाईआ। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अग्गे रक्खे नेड़े वाटा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। चित्रगुप्त ना खोल्हे खाता, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। लाड़ी मौत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि चरन दए वड्याईआ। हरिजन नाता जोड़, जोड़ी जोड़ मेल मिलाइंदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, निरगुण सरगुण घोड़ा आप दौड़ाइंदा। मिठ्ठा रस करे रीठा कौड़, मुख अमृत जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। रक्खे रक्खणहार, दया कमाइंदा। जीव जंत ना करे विचार, खेल खिलाइंदा। जुग जुग वेस अनेक निरँकार, लोकमात फेरा पाइंदा। एका गुर इक्क अवतार, एका हुक्मी हुक्म फिराइंदा। लक्ख चुरासी पावणहारा सार, घट घट आपणा रूप धराइंदा। गुरमुख साजण करे प्यार, आप आपणे वेख वखाइंदा। जगत बिगड़ी ल्ए संवार, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। काया गगरी निरगुण जोत करे उज्यार, नूर ज़हूर आप दरसाइंदा। सच समग्री कर त्यार, आपणी हथ्थीं हवन कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग बिगरी आप बणाइंदा। जग बिगरी जग जाणया, जानणहार गोपाल। भेव ना पाए कोए सुघड़ सयाणया, पुरख अबिनाशी खेल न्यार। जिस जन बख्शे चरन ध्यानया, आप आपणी किरपा धार। सो जन होए परवानया, मिले मेल हरि मीत मुरार। लेखा जाणे दो जहानया, खेले खेल विच संसार। गुरमुख गुरसिख दर आए करे परवानया, जन्म कर्म पूर्ब आप विचार। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म जगत जग बिगरी, संग भगतन लए उधार। भगतन रूप साध संगत, हरि सतिगुर आप वड्यांअदा। अंदरे अंदर चढ़ी रंगत, रंगणहारा एका रंग रंगाइंदा। जगत तृष्ना मिटी भुक्ख नंगत, भुखिआं नंगयां आपणे गले लगाइंदा। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत दूजे दर ना जाए मंगत, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। पहलां तोड़े गढ़ हउमे हंगत, दूजा दर फेर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत आप वड्यांअदा। साध संगत भगतन रूप, भगवन आपणी दया कमाईआ। करे उज्यार चार कूट, नव खण्ड इक्क रुशनाईआ। नाता तोड़े जूठ झूठ, सच सुच्च दए वड्याईआ। आप उपजाए पूत सपूत, सदा सुहेला पिता माईआ। हरि का नाउँ धागा सूत, हरिजन साचे नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त एका धाम बैठे आसण लाईआ। भगतन धाम भगवन दास, दासी दास सेव कमाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणा वेस वटाइंदा। आदि जुगादि ना जाए विनास, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तिम आप हंढाइंदा। हरिजन हिरदे अंदर कर कर वास, हरि का रूप आप दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन हरि हरि जन एका घर बहाइंदा।

४११

★ २ चेत्र २०१८ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह शकूर बस्ती दिल्ली ★

इक इकल्ला एकँकार, अकल कल धार चलाइंदा। कादर कुदरत करे प्यार, दो जहानां वेख वखाइंदा। त्रै त्रै लोआं हो उज्यार, त्रै त्रै आपणा बन्धन पाइंदा। चौथे सुहाए बंक दुआर, बंक दुआरी सोभा पाइंदा। पंचम मेला मीत मुरार, पंचम पंच रंग रंगाइंदा। छेवें शास्त्र सिमरत करे ख्वार, एका आपणा नाउँ वड्यांअदा। सत्तवें सति सतिवादी साची कार, करता पुरख आप कमाइंदा। अठ्ठां तत्तां वेखणहारा वारो वार, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। नव खण्ड पृथमी जाणे नौं दुआर, नव नव आपणा पर्दा लांहयदा। दहि दिश एका नाम नाम करे जैकार, जगत जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण निरगुण निरगुण मेला मीत मुरार, निरगुण चेला निरगुण गुर रूप धराइंदा। निरगुण मन्दिर निरगुण घर बार, निरगुण आसण सिँघासण सोभा पाइंदा। निरगुण राजा निरगुण सिक्दार, निरगुण शाहो भूप अख्वाइंदा। निरगुण हुक्म निरगुण वरतार, निरगुण धुर फ़रमाना आप अल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धारा आप प्रगटाइंदा। साची धारा हरि गोबिन्द, गोबिन्द गढ़ सुहाईआ। हरिजन जणाए बणाए आपणी बिन्द, पिता पूत वडी वड्याईआ। नाम सरोवर धार वहाए सागर सिन्ध, गहर गम्भीर सच्चा शहिनशाहीआ। लेख चुकाए सुरपति इन्द, शंकर ब्रह्मा पन्ध मुकाईआ। दीनां नाथ गुणी

गहिन्द, गुण अवगुण आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग हरि हरि राह, हरि का पौड़ा आप बणाइंदा। सति सरूपी शब्द मलाह, गुर सतिगुर नाउँ धराइंदा। नव नव खेड़ा दए वसा, झूठा झेड़ा आप मुकाइंदा। बन्न्ह बन्न्ह बेड़ा दए चला, एका चप्पू नाम रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप धराइंदा। आपणा नाउँ रक्ख आप, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणा नाउँ बणाए साचा जाप, जीव जपत जपत सुख पाईआ। आपणा नाउँ कराए वड प्रताप, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। आपणे नाउँ गंवाए जगत संताप, संसा रोग रहे ना राईआ। आपणे नाउँ मिटाए कोटन पाप, पतित पापी लए तराईआ। आपणे नाउँ मिटाए अन्धेरी रात, सति सतिवादी चन्द चढ़ाईआ। आपणे नाउँ खुल्हाए हाट, लक्ख चुरासी एका वणज वखाईआ। आपणा नाउँ बणाए तीर्थ ताट, सर सरोवर मजन इक्क नुहाईआ। आपणा नाउँ सुणाए आपणी गाथ, अन्तर मन्त्र इक्क पढ़ाईआ। आपणा नाउँ भेव खुल्हाए त्रिलोकी नाथ, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। आपणा नाउँ चलाए एका राथ, हरिजन साचे लए चढ़ाईआ। आपणा नाउँ बणाए पूजा पाठ, एका ढोला साचा गाईआ। आपणा नाउँ जणाए तीर्थ तप जत सति हाठ, सति सन्तोख रूप धराईआ। आपणा नाउँ रखाए उत्तम ज़ात, वरन बरन ना वण्ड वंडाईआ। आपणा नाउँ बणाए पिता मात, हरिजन साचे गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा नाउँ बणाए गुरदेव, इष्ट रूप आप अख्वाईआ। आपणा नाउँ प्रगटाए अलख अभेव, अलख अलखना सच्चा शहिनशाहीआ। आपणा नाउँ लगाए सेव, सृष्ट सबाई वेखे थाउँ थाँईंआ। आपणा नाउँ धराए रसना जिहव, जीव जंत हरि जस गाईआ। आपणा नाउँ वखाए अमृत फल साचा मेव, मिठ्ठा रस इक्क प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप चलाईआ। आपणा नाउँ करे प्रतक्ख, पारब्रह्म भेव ना आइंदा। आपणा नाउँ करे वक्ख, रूप अनूप आप धराइंदा। आपणा नाउँ गुरमुखां अंदर देवे रक्ख, साचे मन्दिर आप टिकाइंदा। आपणा नाउँ आपे दस्स, साचे मार्ग आपे पाइंदा। आपणा नाउँ वखाए अमृत रस, निझर झिरना आप झिराइंदा। आपणा नाउँ देवे हस्स हस्स, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा इक्क वखाइंदा। आपणा नाउँ करे बलवान, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। आपणा नाउँ झुलाए निशान, दो जहानां आप हिलाईआ। आपणा नाउँ बणाए सच विधान, साचा मंडल इक्क समझाईआ। आपणा नाउँ जणाए इक्क ज्ञान, गृह मन्त्री आपणा नाउँ रखाईआ। आपणा नाउँ आपे देवे हरि जू आण, बिन हरि अवर ना कोए समझाईआ। आपणा नाउँ रक्खे आण, नव नौं डंक वजाईआ। आपणा नाउँ धुर फ़रमान, धुर दी बाणी

रूप वटाईआ। आपणा नाउँ आप करे प्रधान, लोकमात वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग वेख वखाईआ। आपणा नाउँ करे प्रसिद्ध, अबिनाशी करता एकंकारया। आपणा नाउँ आप प्रगटाए आपणी कर कर बिध, रूप रंग रेख ना कोए वखा रिहा। आपणा नाउँ दासी दास कराए नौं निध, अठारां सिद्ध मुख शरमा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ आप प्रगटा ल्या। आपणा नाउँ करे उज्यारा, हरि साचा सच वड्याईआ। आपणे नाउँ करे पसारा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा रंग रंगाईआ। आपणा नाउँ बोले जैकारा, जै जैकार आप सुणाईआ। आपणा नाउँ बणाए सच्चा हथिआरा, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाईआ। आपणा नाउँ आपणे हथ्थ रखाए निरँकारा, सच कटारा मेल मिलाईआ। राज जोग जोग राज एका धारा, चरन कँवलां नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राह आप प्रगटाईआ।

★ २ चेत २०१८ बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह प्रताप नगर नवीं दिल्ली ★

सो पुरख निरँजण हरि करतारा, आदि जुगादि समाइंदा। सो पुरख निरँजण परवरदिगारा, नूरो नूर डगमगाइंदा। सो पुरख निरँजण राम अपारा, आप आपणा बल रखाइंदा। सो पुरख निरँजण सांझा यारा, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। सो पुरख निरँजण वसे धाम न्यारा, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। सो पुरख निरँजण खोल्हे बन्द किवाड़ा, थिर दुआरा आप खुल्हाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, दरगाह साची आसण लाइंदा। राज राजाना एकँकारा, अकल कल आपणा वेस वटाइंदा। सो पुरख निरँजण दर दरवेश बण दरबाना, अलख निरँजण आपणा सीस आप झुकाइंदा। सो पुरख निरँजण वरतणहारा धुर फ़रमाना, हुक्मी हुक्म हुक्म सुणाइंदा। आपे जाणे आपणी धारा, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। निरगुण निरवैर निराकारा, अकाल मूर्त अजूनी रहत भेव कोए ना पाइंदा। सो पुरख निरँजण आप आपणा करे प्यारा लेखा जाणे नारी कन्त भतारा, साची सेज आप सुहाइंदा। सो पुरख निरँजण आप उपाए सुत दुलारा, शब्द शब्दी नाउँ उपजाइंदा। सो पुरख निरँजण देवणहारा वस्त थारा, आपणी वस्त आप प्रगटाइंदा। सो पुरख निरँजण आपणा रूप आपा विचों कर न्यारा, आप आपणा रंग रंगाइंदा। सो पुरख निरँजण विष्न विश्व दए आधारा, वास्तक आप वखाइंदा। सो पुरख निरँजण आपणी इच्छया भर भण्डारा, आपणा अमृत आप सुहाइंदा। सो पुरख निरँजण आपणे मन्दिर करे खेल न्यारा, नेत्र नैण दिस किसे ना आइंदा। सो पुरख निरँजण आपणी फुल फुलवाड़ी वेखे गुल गुलज़ारा, पत्त डाल्ही आप महिकाइंदा। सो पुरख निरँजण आपणी पैज आप संवारा, आपणा

पर्दा आप चुकाइंदा। सो पुरख निरँजण पारब्रह्म ब्रह्म दए आधारा, कँवल कँवला आप खुल्हाइंदा। सो पुरख निरँजण जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आप आपणा खेल वखाइंदा। सो पुरख निरँजण साची धार, सति सतिवादी आप चलाईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबार, दर दुआरा इक्क उपाईआ। सो पुरख निरँजण निरगुण दीवा बाती वखाए सच सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची आप टिकाईआ। सो पुरख निरँजण आदि जुगादी दीन दियाल, दीनन नाथ वडी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण आपणी करे आप प्रितपाल, प्रितपालक सच्चा शहिनशाहीआ। सो पुरख निरँजण आपणी घाल आपे घाल, आपे वेखे थाउँ थाँईआ। सो पुरख निरँजण निरगुण रूप शब्द दलाल, सच साची सेव कमाईआ। सो पुरख निरँजण विष्नूं बणाए आपणा लाल, आप आपणी गोद सुहाईआ। सो पुरख निरँजण ब्रह्मा वेता रलाए नाल, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण सुन्न अगम्म सुरत संभाल, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। सो पुरख निरँजण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शंकर दए वड्याईआ। सो पुरख निरँजण त्रै त्रै अतीता, त्रैभवन धनी अखवाइंदा। सो पुरख निरँजण ठांडा सीता, दर घर साचे सोभा पाइंदा। सो पुरख निरँजण एका मीता, एकँकारा संग रखाइंदा। सो पुरख निरँजण बैठा रहे आप अतीता, महल्ल अटल आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव आपणे अग्गे धर, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। सो पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आप अखवाइंदा। सो पुरख निरँजण बण मलाह, निरगुण आपणा बेड़ा आप चलाइंदा। सो पुरख निरँजण अलख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह आपणी खेल खिलाइंदा। सो पुरख निरँजण आपे पिता आपे मां, सुत दुलारा आपणी गोद सुहाइंदा। सो पुरख निरँजण आपणी रचना आप रचा, हरि हरि आपे वेख वखाइंदा। सो पुरख निरँजण आपणा मंगल आपे गा, नाद निरँकारा आप प्रगटाइंदा। सो पुरख निरँजण आपे वसे साचे थाँ, थान थनंतर आप सुहाइंदा। सो पुरख निरँजण आपणा अञ्जण आपे पा, प्रकाश प्रकाश विच रखाइंदा। सो पुरख निरँजण आपणा सज्जण आप अखवा, आप आपणा मेल मिलाइंदा। सो पुरख निरँजण आपणा बन्धन आपे पा, बन्दी छोड़ आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणी कल आपणे हथ्थ रखाइंदा। सो पुरख निरँजण श्री भगवन्त, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, आदि अन्त आपणे विच छुपाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बणाए बणत, घड़न भन्नणहारा पुरख समरथ भेव कोए ना पाइंदा। इक्क जणाए शब्द मंत, नाम निधाना झोली पाइंदा। भेव चुकाए नारी कन्त, कन्त कन्तूल सेज सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म हरि संदेश, नर नरेश

शब्द सुणाइंदा। नर नरेश हरि निरँकारा, निरगुण आपणा बल वखाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, साचे तख्त सोभा पाईआ। त्रै त्रै मेला एका वारा, एका घर वज्जे वधाईआ। एका नाद एका शब्द एका धुन्कारा, एका रिहा सुणाईआ। एका इष्ट एका देव एका जोत नूर उज्यारा, एका सीस जगदीश सोभा पाईआ। एका चरन कँवल करे निमस्कारा, एका मस्तक धूढ़ टिक्का लाईआ। एका वसे सभ तों बाहरा, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। एका ब्रह्मा विष्न शिव करे प्यारा, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण आप समझाईआ। सो पुरख निरँजण निरगुण आपणा गुण जणाइंदा, लेखा लेख ना कोए वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आप उपाइंदा, आप आपणी दया कमाईआ। आपणा रंग आप रंगाइंदा, उतर कदे ना जाईआ। आपणे दर आप बहाइंदा, दर दरवेश सेव कमाईआ। धुर फ़रमाना इक्क जणाइंदा, भुल कोए ना जाईआ। पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा, साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। सचखण्ड दुआर सोभा पाइंदा, थिर घर दुआरा चरन कँवल सुहाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपारा, वसणहारा धाम न्यारा, महल्ल अटल उच्च मुनार निर्मल दीआ बाती कमलापाती जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव एका घर वखाईआ। साचा घर हरि वखाइंदा, कर किरपा गुण निधान। विष्नूं नेत्र आपणे बन्द कराइंदा, आत्म नेत्र मार ध्यान। ब्रह्मा चारों कुण्ट वखाइंदा, पुरख अबिनाशी हो मेहरबान। दहि दिशा आप भवाइंदा, ना कोई ज़िमीं ना अस्मान। मंडल मण्डप ना कोए रखाइंदा, सूरज चन्न ना कोए निशान। पुरख अबिनाशी खेल खिलाइंदा, इक्क इकल्ला बैठा सच मकान। दीवा बाती ना कोए टिकाइंदा, जोती जोत नूर महान। आपणा बल आप रखाइंदा, दाता जोद्धा सूरबीर बलवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव उठाए बाल नादान। बाल नादान उठाया, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। विष्नूं आपणे अंग लगाया, अंगीकार करे पकड़े बांह। ब्रह्मा एका भेव खुल्हाया, निश अक्खर दए पढ़ा। आपणा मन्त्र नाम दृढ़ाया, एका तत्व तत समझा। तार सतार आप हिलाया, अलख अगोचर बेपरवाह। नाद अनादी नाद वजाया, धुन आत्मक नाद अला। आपणा पर्दा आप चुकाया, सिर आपणा हथ्थ टिका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच सलाह। साची वस्त हरि हरि नाम, हरि आपणा आप जणाइंदा। करता पुरख पूरा करे आपणा काम, करनी किरत आप कमाइंदा। चरन कँवल चरनामित प्याए साचा जाम, अमिउँ रस एका मुख चुआइंदा। नाम डोरी पाए आण, पल्लू कोए ना फेर छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। हरि हरि भेव चुकाया, कर किरपा हरि मेहरबान। अक्खर वक्खर शब्द पढ़ाया,

शब्दी शब्द ज्ञान। ब्रह्मा वेता सेवा लाया, सेवक सेवा करे महान। चारे वेदां चारे मुख सालाहया, एका गाए गान। विष्न निउँ निउँ सीस झुकाया, प्रभ वेखणहारा दो जहान। दोहां विचोला भेव ना राया, करे खेल श्री भगवान। तीजा नैण आप उठाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त बैठ होया निगहबान। निगहबान दीन दयाल हरि ठाकर, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणाया दर सौदागर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। निहकर्मी कर्म कीआ उजागर, कर्म कांड ना कोए वखाईआ। आपणे अंदर देवे आदर, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। सति प्रीती देवे चादर, एका पर्दा हथ्थ रखाईआ। करे खेल हरि करता कादर, बेपरवाह नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। विष्न ब्रह्मा आप जगा, निशअखर आप जणाइंदा। भोला नाथ लए उठा, शंकर शंकर मेल मिलाइंदा। अन्तर मन्त्र बूझ बुझा, जगत जुगत संग रखाइंदा। चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का ला, त्रिलोकी त्रिशूल रूप धराइंदा। एका ख़ाकी ख़ाक रहे रमा, ख़लकत ख़ाक रूप जणाइंदा। बाशक तशका गल लटका, कंठ माला आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां मेला एका दर, आप फड़ाए साचा लड़, साचे पौड़े वेखे चढ़, वेखणहारा दिस ना आइंदा। तिन्नां अंदर वड़या आप, निरगुण आपणी दया कमाईआ। सो पुरख निरँजण जपाए जाप, हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। आपणा वखाए सति प्रताप, आदि जुगादि ना मरे ना जाईआ। जुगा जुगन्तर पुछे वात, सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। चरन कँवल बंधाए एका नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। आपे रक्खे आपणे घाट, सच किनारा इक्क दरसाईआ। आपे दूर दुराडा पन्ध मुकाए वाट, नेरन नेर आपणा दर समझाईआ। आपे सच सुहञ्जणी सोहे खाट, सच सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां वखाए एका घर, एका मन्दिर दए वड्याईआ। एका मन्दिर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बणाए बणत, घड़न घाड़नहार आपणी सेव कमाइंदा। आपणी चाढ़े एका रंगत, नाम रंगीला रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आपणे हथ्थ वरताइंदा। साची वस्त हरि निरँकारा, इक्क इकल्ला इक्क समझाईआ। तिन्नां विचोला सिरजणहारा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण निरगुण भरे भण्डारा, अतोट अतुट वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर दरवेश बणे भिखारा, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। दाता करता देवे देवणहारा, दीनन नाथ अनाथां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त वस्त अमोलक ब्रह्मा विष्न शिव पाई साची गोलक, रूप रंग ना रेख कोए वखाईआ। वस्त अमोलक हरि अनमुल्ल, आपणा

नाउँ समझाईआ। आदि जुगादि ना सके तुल, कीमत कोए ना होर वखाईआ। जुगा जुगन्तर रहे अडोल, डुल कदे ना जाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे अंदर तेरा रूप हो हो गया मौल, मौला आपणी खेल खिलाईआ। आपणी इच्छया भरया कँवल, अमृत आपणा रस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। आपणा पर्दा आप उठाइंदा, पारब्रह्म श्री भगवान। रूप अनूप आप दरसाइंदा, जोती जाता हो मेहरबान। आपणा दर आप वखाइंदा, दर दरबारा खोल्ह खोल्ह श्री भगवान। एकँकारा नजरी आइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म हरि सुणाइंदा, एका अक्खर बोल। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी सेव लगाइंदा, शब्द अगम्मी कंडे तोल। आपणा घाड़न आप घड़ाइंदा, नाम बणाए विच विचोल। आपणा भण्डार विष्न तेरे हत्थ रखाइंदा, साचा करे कौल। ब्रह्मा तेरी वण्ड वंडाइंदा, लक्ख चुरासी जाणा मौल। शंकर तेरा हत्थ आप उठाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल उप्पर धौल। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ना, हरि साचे सच जणाया। त्रैगुण त्रै त्रै पल्ला फड़ना, रजो तमो सतो अंग लगाया। साची भिच्छया एका वरना, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क सुणाया। साची सेवा लक्ख चुरासी घाड़न, घाड़न घड़त आप घड़ाईआ। पुरख अबिनाशी करे ताड़न, आलस निन्दरा ना कोए वखाईआ। आपे जाणे आपणा कारन, हरि करता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दए समझाईआ। सुणया हुक्म हरि फ़रमाना, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाइंदा। तूं शाह पातशाह साचा राणा, हउँ दरवेश सेव कमाइंदा। आदि जुगादि सिर मन्ने तेरा भाणा, तेरा भाणा मोहे सुखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हउँ बाल याणा मंग मंगाइंदा। बाल याणा बाली बुध, विष्नूं मंग मंगाइंदा। कवण धार करे कारज सुद्ध, कवण रूप रंग रेख मिलाइंदा। कवण वेला बख्शे आपणी सुध, कवण धाम संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा दर मोहे साचा घर इक्क सुहाइंदा। ब्रह्मा उठ उठ नेत्र रोए, चार कुण्ट नैण उठाईआ। तेरा तेरी सेवा विच कदे ना सोए, आलस निन्दरा ना कोए वखाईआ। कवण वेला कवण वक्त ब्रह्म पारब्रह्म तेरे जेहा होए, तेरा तेरे विच समाईआ। कवण वस्त कवण दात कवण घर देवे ढोए, कवण दर मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त झोली पाईआ। शंकर करे गिरयाज़ारी, ख़ुलड़े केस रिहा वखाईआ। करां खेल अपर अपारी, लोकमात वज्जे वधाईआ। विष्नूं तेरा बणया भण्डारी, ब्रह्मा सृष्ट करे उज्यारी, लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाईआ। अन्तिम करां सर्ब ख्वारी, लुकया रहे ना कोए नर नारी, नर नरायण तेरी ओट तकाईआ।

४१७

कवण वेला कवण वक्त दरस दिखाए आपणी वारी, आस प्यास मेरी बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट तेरी तकाईआ। पुरख अबिनाशी हरि समझाइंदा, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी सेव लगाइंदा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रहिणा ख़बरदार। जुग जुग गेड़ा आप दवाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लए उधार। लक्ख चुरासी तेरी झोली पाइंदा, चारे खाणी कर त्यार। जेरज अंडज सेत्ज उत्भुज आपणे रंग रंगाइंदा, रंगणहारा एकँकार। चारे वेदां संग निभाइंदा, चारे बाणी लए उधार। चार वरनां राह वखाइंदा, चार यारी कर शंगार। चौकड़ी जुग आप हंढाइंदा, गुर अवतार हो उज्यार। भगत भगवन्त वेख वखाइंदा, निरगुण सरगुण वेख विचार। शब्दी नाद आप वजाइंदा, सन्त साजण लए उभार। गुरमुख गुर गुर मेल मिलाइंदा, शब्दी सुरती इक्क आधार। गुरसिख साची गोद सुहाइंदा, जुगा जुगन्तर साची कार। मूर्ख मूढ़ झूठे धन्दे लाइंदा, नाता जोड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकार। माया ममता गढ़ बणाइंदा, मन मनूआ कर सिक्दार। मति मतवाली दहि दिशा आप फिराइंदा, बुध बिबेक जाए हार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां समझाए एका वार। लक्ख चुरासी गेड़ गिड़ाया, चार जुग खेल खिलाईआ। वेस अनेक आप धराया, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। वेद शास्त्र सिमरत पुराण आपे गाया, गीता ज्ञान आप सुणाईआ। अञ्जील कुरान दए सालाहया, तीस बतीसा वड वड्याईआ। खाणी बाणी नाल रलाया, शब्द अगम्मी धार चलाईआ। जुग चौकड़ी वेख वखाया, ब्रह्मा विष्न शिव नाल रलाईआ। विष्नूं पल्ला लए फड़ाया, हरि भगवन बेपरवाहीआ। पारब्रह्म ब्रह्म लए समझाया, नव खण्ड पृथ्मी वेख वखाईआ। शंकर गढ़ हँकारी दए तुड़ाया, जो घड़या भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण आप दरसाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगावणा, हरि साचा सच जणाइंदा। लक्ख चुरासी तेरा खेल खिलावणा, ख़ालक ख़लक मेल मिलाइंदा। निरगुण सरगुण हो हो गावणा, ढोला सोहला आप जणाइंदा। अमृत कँवला आप भरावणा, नाभी झिरना इक्क वखाइंदा। लक्ख चुरासी फुल फुलवाड़ी मात फुल एका खिलावना, रुत बसन्ती आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव सुण कर ध्यान, हरि साचे सच जणाया। जुग चौकड़ी मिटे निशान, थिर कोए रहिण ना पाया। गुर अवतार पीर मंगण एका दान, पुरख अबिनाशी नाम वस्त झोली पाया। अन्त मिटदा जाए सभ निशान, पंज तत्त चोला कोए दिस ना आया। ईश जीव जगदीस पारब्रह्म करे खेल बेपरवाहया। जुगा जुगन्तर खेल महान, सतिजुग त्रेता पन्ध मुकाया। द्वापर अन्तिम आई हाण, कलिजुग आपणा रूप वटाया। चारों कुण्ट उठया जोद्धा सूरबीर बलवान, काला सूसा तन छुहाया। नाल मिलाया

पंज शैतान, दहि दिशा वेख वखाया। साबत रहिण ना देवे किसे ईमान, जगत विद्या रही कुरलाया। चौदां विद्या होई हैरान, चौदां तबकां पर्दा आप हिलाया। चौदां लोकां जाणे खेल श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर फ़रमान। जुग चौकड़ी पार किनार, नव नौं आप कराईआ। सत सत ना कोए सहारा, सति सतिवादी वेख वखाईआ। बोध अगाधी शब्द जैकारा, ब्रह्म ब्रह्मादी नाद वजाईआ। वेखे विगसे करे विचारा, वेखणहारा इक्क ख़ुदाईआ। मुकामे हक वसे सांझा यारा, परवरदिगार नूर इलाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव हरि का खेल अपर अपारा, अन्त भेव ना कोए जणाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त गायण गुर अवतारा, भगवन्त भगत सन्त बैठे ध्यान लगाईआ। वसणहारा सचखण्ड धाम महल्ल अटल उच्च मुनारा, सो पुरख निरँजण इक्क अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सारा, रवि ससि आपणी किरन जोत चमकाईआ। सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीस गण गंधर्ब दए हुलारा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। लोकमात वेखे वेखणहारा, नूर नूराना डगमगाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख्वारा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, निर्धन सरधन वेखे थाउँ थाँईंआ। शतरी ब्रह्मण शूद्र वैश देवे इक्क सहारा, दर घर साचा इक्क समझाईआ। पुरख अकाल एका इष्ट एकँकारा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण आप समझाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आवणा, हरि साचा सच समझाइंदा। विष्नूं तेरा मेल मिलावणा, लोकमात वेख वखाइंदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म प्रगटावणा, पारब्रह्म आपणा पर्दा चुकाइंदा। शंकर तेरा त्रशूल तेरे हथ्थों सुटावणा, अन्तिम तेरा पन्ध मुकाइंदा। नव खण्ड पृथ्मी फेरा पावणा, सत्तां दीपां चरनां हेठ दबाइंदा। ख़ालक ख़लक वेख वखावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संदेश आप सुणावणा। सच संदेश जणाया, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा पन्ध दए मुकाया, नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग बणे रहे मलाह। लेखा लेखे लए लगाया, लेखा लिखणहारा सच्चा शहिनशाह। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, जोती जामा भेख वटा। रूप रंग रेख नज़र किसे ना आया, पंज तत घाड़न ना ल्या कोए घड़ा। ब्रह्म पारब्रह्म आपणी गोद बहाया, सिर आपणा हथ्थ टिका। विष्नूं तेरा संग निभाया, कीता कौल पूरा दए करा। शंकर तेरा पन्ध मुकाया, अन्तिम संसा दए गंवा। तिन्नां विचोला बण के आया, आदि जुगादी सच्चा शहिनशाह। सीस जगदीस ताज सुहाया, तख्त निवासी इक्क अख्वा। कलिजुग कूड़ कुड़यारा डेरा ढाया, चार कुण्ट सृष्ट सबाई रोवे मारे धाह। अठसठ तीर्थ ना कोए सुहाया, जमना गंगा सुरस्ती गोदावरी कर कर बैठी ना। गुर दर मन्दिर मस्जिद अग्न तपाया, सांतक सति ना सके कोए वरता।

साधां सन्तां कन्त भगवन्त ना किसे हंढाया, नार दुहागण खुल्ले केस रही वखा। हरि मन्दिर अंदर डेरा किसे ना लाया, सतिगुर बणे ना किसे मलाह। माया ममता मोह वधाया, आसा तृष्ना घर घर बैठी पीहड़ा डाह। मनमुख जीवां काया सालू इक्क रंगाया, काला रंग चढ़ाया नाल मिलाई स्वाह। साचा चन्द नज़र ना आया, नौं खण्ड पृथ्मी अन्धेरा गया छा। राज राजान रहे कुरलाया, उच्ची आपणी बांह उठा। अञ्जील कुरान दए दुहाया, पीर दस्तगीर पल्ला सके ना कोए फड़ा। काया निजात ना कोए दिवाया, मुख नकाब ना सके कोए उठा। आब हयात भर प्याला ना किसे प्याया, संग मुहम्मद चार यार बैठे नैण शरमा। अल्ला राणी नेत्र नैण ना कोए उठाया, उच्ची कूक कूक एका तक्के तेरा राह। कलिजुग जीवां झूठी क्रिया मोहे जलाया, सदी चौधवीं लग्गी तत्ती भाह। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा लेखा दए मुकाया, जिस तेरी बणत लई बणा। लोकमात वेख वखाया, वेखणहारा इक्क ख़ुदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपे जाणे आपणा मन्त्र, नमो देव वास्तक रूप बणे बेपरवाह। विष्न ब्रह्मा शिव रक्खणी आस, हरि एका अक्खर दृढ़ाया। कलिजुग अन्त बुझाए प्यास, पीआ प्रीतम दया कमाया। निरगुण जोत करे प्रकाश, परम पुरख वड वड्याआ। घट मन्दिर पाए रास, गोपी काहन आप नचाया। लक्ख चुरासी वेखे वेखणहारा पवण स्वास, अंदर मन्दिर खोज खुजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप रघुराया। हरि साचा खेल खिलाइंदा, निरगुण निरगुण जामा धार। गुरमुख साचे आप उठाइंदा, लक्ख चुरासी कर विचार। सुरती शब्द मेल मिलाइंदा, मेल मिलाए नारी कन्त भतार। आत्म सेजा आप सुहाइंदा, सच सुवाणी कर प्यार। अमृत आत्म ठंडा पाणी आप प्यांअदा, किरपा कर पहली वार। आपणी अकथ कहाणी आप सुणाइंदा, अनहद शब्द सच्ची धुन्कार। हरि का नाउँ छत्ती राग भेव ना पाइंदा, उच्ची कूक कूक करन पुकार। वेद पुराण सर्ब जस गाइंदा, चार जुग जै जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आपणे हथ्थ रक्खे निरँकार। आपणा नाउँ आपणे हथ्थ रक्ख, जुग जुग आपणे नाम करे वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम रसना जिहवा पढ़ पढ़ हरि का नाम रहे दस्स, हरि नाम ना कोए मिलाईआ। जगत मन्दिर बह बह रहे हस्स, काया मन्दिर सोभा कोए ना पाईआ। तीर्थ तट्टां पैंडा मुकौंदे रहे नस्स नस्स, घर अमृत जाम ना कोए प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जणाए आपणा जस, सो जन मिले वड्याईआ। हरि जस भगतां आप समझाइंदा, जुगा जुगन्तर कार। सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा, पुरख अगम्मा एकँकार। कोटन कोटि जन्म दे पाप गवाइंदा, पूर्ब कर्मां लए विचार। माणस मानुख आपणे लेखे लाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस बख्शे चरन प्यार।

चरन प्यार मस्तक धूढ़, गुरमुख विरले टिक्का लाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, आप आपणी बूझ बुझाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च दए वड्याईआ। गुरमुख सज्जण दाता सूर, सूरबीर आप अख्वाईआ। जिस जन बख्शे आपणा नूर, जोत निरँजण डगमगाईआ। अन्तिम कलिजुग गुरसिखां घर घर वखाए कोहतूर, गुरसिख मूसा रूप वटाईआ। प्रगट होया हाज़र हज़ूर, हरि की पौड़ी दए चढ़ाईआ। आपणा लहिणा देणा मुकाए ज़रूर, ज़ेर ज़बर ना कोए रूप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप उठाईआ। हरिजन आप उठाया, कर किरपा गुण निधान। अन्तर आत्म दरस दिखाया, दर दुआर कर परवान। जगत तृष्ना भुक्ख मिटाया, इक्क वखाया सच निशान। कान्हा कृष्ना आपणा रूप जणाया, राम रूप श्री भगवान। नानक गोबिन्द खेल खिलाया, ईसा मूसा चतुर सुजान। संग मुहम्मद नूर धराया, चार यारी हो मेहरवान। आलमीन इक्क ख़ुदाया, ख़ालक खेले खेल महान। राम नाम इक्क समझाया, आत्म परमात्म सच ज्ञान। मन्त्र नाम सति दृढ़ाया, एका मन्त्र वेख वखान। वाह वा गुरु फ़तह गजाया, गुर बिन कोए ना उतरे पार विच जहान। कलिजुग अन्तिम पारब्रह्म पति परमेश्वर गुरसिखां पूर्ब लहिणा दए चुकाया, निरगुण सरगुण वेखे आण। पूजा पाठ ना कोए कराया, एका बख्शे चरन ध्यान। राए धर्म नेड़ ना आया, चित्रगुप्त होए हैरान। लाड़ी मौत ना लए प्रनाया, जिस सिर हथ्थ धरे भगवान। निहकर्मी आपणा कर्म कमाया, गुरसिखां देवे जीआ दान। आपणी सुरती आपणे शब्द मिलाया, सुरती शब्दी एका घर मकान। साचे मन्दिर आप वसाया, आत्म सेजा मार ध्यान। गुरमुख सत सरोवर आप नुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम कर पछाण। कलिजुग अन्त पछाण, जुग जुग विछड़े मीत। विष्न ब्रह्मा शिव हरि खेले खेल दो जहान, एका गावण सुहागी गीत। नौं खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी वेला आया हाण, ना कोई साक सज्जण सैण दिसे मीत। अन्धेरा होया साचे भान, प्रकाश दिसे ना कोए अनडीठ। कूड़ कुड़यारे चारों कुण्ट आपणा रंग वखाण, जीवां जंता वेखे नीत। पुरख अबिनाशी घट घट वासी अन्तिम कलिजुग करे खेल महाकाल, काल कल होए अधीन। वेला अन्त जंत पछताण, ब्रह्म तड़फे बिन पारब्रह्म जिउँ जल मीन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, लेखा चुकाए ब्रह्मा विष्न तीनों तीन।

बन्दे सारे रब्ब दे, कोई ना कहे मेरा। दो जहान करे कम्म झब दे, मेटे जगत झेड़ा। फौजी फौजीआं नाल फबदे, पुरख अबिनाशी करे खुल्ल्हा वेहड़ा। लेखा जाणे आर पार हद्द दे, नौं खण्ड पृथ्मी वेखे एका खेड़ा। इक्क दूजे नूं पए सद्ददे,

वेले अन्त बन्ने कौण बेड़ा। अन्तिम आपणा घर आपे छड्डदे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौं खण्ड पृथ्मी लाए इक्क उखेड़ा। कांगो कांग चढ़े हढ़, चार कुण्ट दुहाईआ। वीह सौ चौदां बिक्रमी पंदरां कत्तक बाई सौ कोस वेख्या एका गढ़, रिवाल्सर लेख लिखाईआ। आपणी वारी आपे जाण झड़, एका शमअ अग्न जलाईआ। इक्क दूजे दा फड़न लड़, पल्लू गंढु ना कोए वखाईआ। जिस घाड़न ल्या घड़, सो भाण्डा भन्न वखाईआ। फौजी फौजीआं नाल सदा लड़न, दूजी अवर ना कोए सिखलाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई ख़ाकी ख़ाक वखाईआ। इक्क दूजे अग्गे जाण अड़, मेल मिलाप ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा कर, लिख्या लेखा पूरा दए कराईआ।

★ ३ चेत २०१८ बिक्रमी चन्दा सिँघ दे गृह प्रताप नगर ★

हुक्मे अंदर खेल निरँकार, आदि जुगादि कराया। हुक्मे अंदर आपे आप होए सिरजणहार, आप आपणा हुक्म मनाया। हुक्मे अंदर खण्ड ब्रह्मण्ड कर त्यार, लोआं पुरीआं बणत बणाया। हुक्मे अंदर रवि ससि उज्यार, हुक्मे अंदर मंडल मंडप दए सुहाया। हुक्मे अंदर जोती शब्दी धार, हुक्मे अंदर निरवैर निराकार पुरख अगम्म आपणी खेल खिलाया। हुक्मे अंदर शाह भूप बण सिक्दार, तख्त निवासी सच सिँघासण सोभा पाया। हुक्मे अंदर राउ रंक बण भिखार, दर दरवेश अलख जगाया। हुक्मे अंदर जोद्धा सूरबीर दातार, दो जहानां वेस धराया। हुक्मे अंदर सति सतिवादी करे कराए साची कार, करता पुरख सेव कमाया। हुक्मे अंदर गुप्त ज़ाहर अंदर बाहर, आपणा पर्दा आप रखाया। हुक्मे अंदर विष्न ब्रह्मा शिव लए उभार, बंस सरबंसा रूप वटाया। हुक्मे अंदर आपणी इच्छया त्रैगुण नार, त्रैगुण अतीता आप रखाया। हुक्मे अंदर तत्तव तत कर पसार, हुक्मे अंदर पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वण्ड वण्डाया। हुक्मे अंदर धरत धवल आकाश, हुक्मे अंदर प्रकाश प्रकाश आप वखाया। हुक्मे अंदर लक्ख चुरासी दए सहार, हुक्मे अंदर घट घट जोत जगाया। हुक्मे अंदर नाद अनाद सुणाए धुर फ़रमान, शब्द बोध अगाधी आप अलाया। हुक्मे अंदर रहे विस्माद, विस्मादी आपणा रूप छुपाया। हुक्मे अंदर आपणा करे लाड, निरगुण सरगुण वेख वखाया। हुक्मे अंदर लेखा जाणे आदि जुगादि, जुग जुग आपणी कल वरताया। हुक्मे अंदर अलख अगोचर अगम्म अपार, निरगुण सरगुण दए आधार, सरगुण निरगुण आपणा रूप दरसाया। हुक्मे अंदर गुर अवतार, हुक्मे अंदर जुग जुग बन्धन पाया। हुक्मे अंदर भगत भगवन्त पावे सार, हुक्मे अंदर सन्त साजण लए मिलाया। हुक्मे अंदर गुरमुख

गुर गुर एका बख्शे सच प्यार, सच सुच्च नाता जोड़ जुड़ाया। हुक्मे अंदर जंगल जूह उजाड़ पहाड, हुक्मे अंदर उच्चे टिल्ले पर्बत रिहा सुहाया। हुक्मे अंदर समुंद सागर वहाए धार, हुक्मे अंदर जल थल महीअल आपणा रूप समाया। हुक्मे अंदर शाह पातशाह बणे सिक्दार, हुक्मे अंदर ख़ाकी ख़ाक ख़ाक वखाया। हुक्मे अंदर शास्त्र सिमरत वेद सुणाए साची धार, हुक्मे अंदर आपणा भेव आप जणाया। हुक्मे अंदर करे शंगार, हुक्मे अंदर पर्दा इक्क रखाया। हुक्मे अंदर काम क्रोध लोभ मोह हँकार कर त्यार, हुक्मे अंदर अप तेज वाए पृथ्मी आकाश संग निभाया। हुक्मे अंदर मन मति बुध दए आधार, हुक्मे अंदर आपणी जोती आपणी अंस आपणा रूप वटाया। हुक्मे अंदर नाम खण्डा चण्ड प्रचण्ड कटार, ब्रह्मण्ड खण्ड आप चमकाया। हुक्मे अंदर तीर तरकश कमान, चिला भथ्था आप रखाया। हुक्मे अंदर चार कुण्ट दहि दिशा फिरे बीआबान, हुक्मे अंदर आसण सिँघासण रिहा सुहाया। हुक्मे अंदर बणया रहे बाल अञ्याण, हुक्मे अंदर नौजवान आपणा बल रखाया। हुक्मे अंदर आप झुलाए आपणा सच निशान। सति सतिवादी हथ्थ रखाया। हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी मन्नदा रिहा आण, आप आपणा सीस झुकाया। हुक्मे अंदर देंदा रिहा दान, हुक्मे अंदर झोली रिहा भराया। हुक्मे अंदर हुंदा रिहा कुरबान, हुक्मे अंदर सीस जगदीस भेंट वखाया। हुक्मे अंदर तीर्थ तट जगत अशनान, हुक्मे अंदर दुरमति मैल धवाया। हुक्मे अंदर चौदां हट्ट मकान, हुक्मे अंदर चौदां लोक चौदां तबक बैठे राह तकाया। हुक्मे अंदर हुक्म फ़रमान, फ़रमान हुक्म वेख वखाया। सभ तों बाहर इक्क भगवान, आदि अन्त सच्चा शहिनशाहया। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए धारा रूप धराया। निरगुण सरगुण खेल महान, सरगुण निरगुण एका घर बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताया। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, हुक्मी हुक्म आप चलाइंदा। शाहो भूप बण साचा राणा, दो जहानां वेख वखाइंदा। जुगा जुगन्तर वरते भाणा, कलिजुग वेला वक्त सुहाइंदा। निरगुण पहरे निरगुण बाणा, निरगुण आपणा बल रखाइंदा। सरगुण क्रिया कर ना बणे अञ्याणा, जोबन जगत ना कोए हंढाइंदा। आदि अन्त एका रूप समाना, सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। आपे जाणे आपणा आवण जाणा, आवण जावण आपणी धार बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। आदि पुरख आदि शब्द जणाया, हुक्मी हुक्म वरतार। निरगुण सरगुण वेख वखाया, जुगा जुगन्तर कार। जुग चौकड़ी वेस वटाया, गुर शब्द रूप अवतार। कलिजुग अन्तिम भेव खुल्हाया, निरगुण जोत कर उज्यार। आपणा पर्दा दए उठाया, पुरख अबिनाशी मीत मुरार। बेअन्त बेअन्त बेअन्त चार जुग जस रहे गाया, अन्त आपणा दस्से आप करतार। सभ नूं रक्खदा रिहा हेठ छाया, समरथ पुरख सच्ची सरकार। घल्लदा रिहा बण के दाई दाया, सेवक

सेवा करे अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वरते सच वरतार। आपणा हुक्म जणाइंदा, धुर फ़रमान अगम्म। आपणी सेवा आप लगाइंदा, आप वखाए आपणा कम्म। लोकमात वेस वटाइंदा, ना मरे ना पए जम्म। मात कुक्ख ना डेरा लाइंदा, पवण स्वास ना लए दम। जीव जहान ना नाउँ रखाइंदा, हरख सोग ना ख़ुशी ग़म। एका आपणा डंक वजाइंदा, पंज तत्त नगारा वेखे काया चम। एका आपणा नूर उपजाइंदा, नाता तोड़े सूरज चन्न। एका आपणा ज़हूर वखाइंदा, शाह तूर बेड़ा बन्नृ। शाह ग़फ़ूर आप अख्वाइंदा, तम्बुर रबाब वजाए तन। हाज़र हज़ूर वेस वटाइंदा, आपणा हुक्म आपे मन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवन। हुक्म मन्नया हरि निरँकार, वेला वक्त आप सुहाईआ। हुक्मे अंदर हो त्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। हुक्मे अंदर सच सनेहुड़ा देंदा रिहा साचा यार, मित्र प्यारा बण बण माहीआ। गोबिन्द कूक कूक गया पुकार, कलिजुग अन्तिम आवे सच्चा शहिनशाहीआ। निहकलंक आपणा डंक करे उज्यार, मेरा बंक दए सुहाईआ। मैं छोटा बाला करे प्यार, पिता पूत इक्क वड्याईआ। आपणा सोहला गाए एकँकार, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। हौला करे सृष्ट भार, दृष्ट वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि,
४२४ आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा सच संदेश, गुर गुर शब्दी गया समझाईआ। आपणा भाणा हरि समझाया, गुर गोबिन्द ४२४
कर त्यार। हुक्मे अंदर वेस वटाया, कलि कल्की लए अवतार। वेद कतेब भेव किसे ना आया, पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार। आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाया, अन्त कन्त हरि निरँकार। आपणा हुक्म आप वरताया, शाह पातशाह बण सच्ची सरकार। आपणा ताज सीस टिकाया, तख्त निवासी एकँकार। ओंकार वेख वखाया, सृष्ट सबाई पावे सार। सन्त सुहेले लए मिलाया, गुरमुख साचे कर प्यार। गुरसिख एका हुक्म दृढ़ाया, सोहँ शब्द भगत जैकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत जोत जोत जोत चमत्कार।

★ ३ चेत २०१८ बिक्रमी हरिचरन सिँघ दर्शन सिँघ दे गृह धीर पुर दिल्ली ★

सो पुरख निरँजण शाह पातशाह राज राजाना, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ा धाम सुहाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहत जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर खेले खेल दो जहानां, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणी धार चलाइंदा। नाउँ निरँकारा शब्द तराना आप उपाए श्री भगवाना, सचखण्ड निवासी थिर घर दुआरे आपणा मंगल गाइंदा। सति सरूपी सति सतिवादी इक्क निशाना दरगाह साची आप झुलाना,

रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणी धार आप बंधाइंदा। सो पुरख निरँजण हरि मेहरवाना, आदि जुगादि समाया। हरि पुरख निरंजण खेल महाना, निरगुण निरवैर आप कराया। एकँकारा वसणहारा सचखण्ड मकाना, छप्पर छन्न ना कोए छुहाया। आदि निरँजण जोती नूर डगमगाना, नूरो नूर नूर समाया। अबिनाशी करता शाहो भूप वड सुल्ताना, सच सिँघासण सोभा पाया। श्री भगवान दर दरवेश बण दरबाना, अलख निरँजण आपणी अलख जगाया। पारब्रह्म देवणहारा साचा दाना, वस्त अमोलक आपणी झोली आप वखाया। एका नाउँ कर प्रधाना, आप आपणा लए प्रगटाया। एका शब्द एका नाद एका धुन्काना, एका राग लए अलाया। एका हुक्म धुर फ़रमाना, धुर दरबारी आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाया। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नड़हार समरथ आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे पुरख आपे नार, आपणी सेज आप हंढाईआ। आपे करता पुरख करनेहार, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। आपे जाणे साची धार, धार धार विच प्रगटाईआ। थिर घर साचे पावे सार, शब्द रूप अनूप वखाईआ। आपणी इच्छया बण वरतार, साची भिच्छया इक्क रखाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर, निरगुण मेला निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। निरगुण चेला सोहे बंक दुआर, दर दरवाज़ा आप खुलाईआ। बेऐब ख़ुदा परवरदिगार, नूर नुराना डगमगाईआ। मुकामे हक सांझा यार, उच्च मुनारा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अनुभव आपणी खेल खिलाईआ। अनुभव खेल खिलाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। महल्ल अटल अचल सोभा पाइंदा, सचखण्ड सच्चे दुआर। निरगुण आपणा रूप आप धराइंदा, आप आपणी किरपा धार। विष्न ब्रह्मा शिव एका रंग रंगाइंदा, एका अंदर मन्दिर कर प्यार। एका नाम बन्धन पाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, करे खेल सच्चे दरबार। त्रैगुण त्रै त्रै धार, हरि साचा आप चलाईआ। आपे वसया सभ तों बाहर, भेव कोए ना पाईआ। एका नाद शब्द धुन्कार, रागी राग आप अलाईआ। एका जोत निराकार, निरवैर डगमगाईआ। वेखे विगसे करे विचार, वेखणहारा इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाईआ। एका गुण शब्दी बन्धन, हरि साचा सच जणाइंदा। एका डोरी एका तन्दन, एका गंढु पवाइंदा। एका शब्द एका छन्दन, गीत गोबिन्द इक्क अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणी रचना आप रचाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव घाड़न घड़, हरि साचा खेल खिलाइंदा। अंदर अन्तर

४२५

अंदर आप वड़, भेव अभेद चुकाइंदा। निराकार निराकार निराकार आप फड़ाए आपणा लड़, दर घर साचे मेला आप मिलाइंदा। आपणी विद्या आपे पढ़, निष्अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द तत्त ज्ञान, देवणहारा गुण निधान, सति पुरख नौजवान, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। साचा मन्त्र नमो सति, पारब्रह्म आप जणाईआ। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणी वत, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। श्री भगवान सर्ब कला समरथ, जुगा जुगन्तर खेल खिलाईआ। आदि निरँजण एका देवे आपणी वथ, जोत निरँजण वण्ड वंडाईआ। एकँकार महिमा गाए अकथना अकथ, रसना जिहवा ना कोए हिलाईआ। हरि पुरख निरँजण वसणहारा घट घट, आपणा नूर आपणे विच टिकाईआ। सो पुरख निरँजण दर घर साचे सोहे सीस जगदीस ताज रख, तख्त निवासी शाहो शाबासी अबिनाशी करता बेपरवाह आपणी खेल आप खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव बहाए दर, सच संदेश इक्क सुणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव उपा, हरि साचा दया कमाइंदा। एका हुक्म दए सुणा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। साची सेवा आप लगा, सेवक सेवा इक्क रखाइंदा। आपणा अंक आप जणा, आपणा बंक आप वखाइंदा। आपणा दर आप वखा, विष्न विश्व दर बहाइंदा। वास्तक आपणा भेव खुल्हा, ब्रह्मा नाद धुंन वजाइंदा। ब्रह्मा वेता आप अल्हा, आप आपणा राग सुणाइंदा। चारे वेदां मार्ग पा, साचा राह आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेश देवे हरि, आदि पुरख आपणा हुक्म आप जणाइंदा। हुक्म जणाए धुर फ़रमाना, ब्रह्मा विष्न शिव भुल ना जाईआ। पारब्रह्म पति परमेश्वर एका राणा, आदि जुगादि साचे तख्त सोभा पाईआ। जुग जुग मन्नणा पए भाणा, सद भाणे विच रखाईआ। एका देवे वस्त दाना, दाता दानी झोली पाईआ। त्रैगुण माया बन्न्हे गाना, वस्त अमोलक आप रखाईआ। पंज तत तत निशाना, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणा अंक वखाईआ। लक्ख चुरासी कर प्रधाना, एका राग अल्हाईआ। विष्नूं वेखे थाउँ थाना, थान थनंतर वेखणहार हो जाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म इक्क पछाना, पारब्रह्म वण्ड वंडाईआ। शंकर सुणया इक्क फ़रमाना, जो घड़या भन्न वखाईआ। तिन्नां विचोला हरि भगवाना, दूसर कोए भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेश नर नरेश एकँकारा हरि करतारा, आपणा आप सुणाईआ। सच संदेश सुणाइंदा, किरपा निध गुण निधान। त्रैगुण अतीता त्रै त्रै आप जणाइंदा, लेखा जाणे दो जहान। जुग चौकड़ी सेव वखाइंदा, लक्ख चुरासी देवे दान। नव नव आपणा रूप वखाइंदा, दहि दिशा कर प्रधान। पृथ्मी आकाश खेल खिलाइंदा, गगन मंडल इक्क निशान। लोआं पुरीआं वण्ड वंडाइंदा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। चारे खाणी झोली पाइंदा, अंडज जेरज सेत्ज उत्भुज देवणहार इक्क

भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे वड मेहरवान। लक्ख चुरासी वस्त अमोलक, हरि झोली आप भराइंदा। तिन्नां वखाए एका गोलक, गृह मन्दिर आप सुहाइंदा। धाम अवल्लड़ा इक्क अडोलत, आदि जुगादि ना कोए डुलाइंदा। आपणा नाउँ सुणाए अनबोलत, बोलणहारा दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क वखाइंदा। साची सेवा चाकर ख़ाक, ब्रह्मा विष्न शिव समझाया। पुरख अबिनाशी खोल्ह्या ताक, त्रै त्रै आपणा मूल चुकाया। बिन लिखण पढ़ण आपणा सुणाया भविख्त वाक, लिखण पढ़न विच कदे ना आया। जुग चौकड़ी बीत रहे सुहञ्जणा साक, गेड़ा आपणा आप गिड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाया। लक्ख चुरासी खेल खिलाउणा, विष्न ब्रह्मा शिव दए वड्याईआ। पुरख अबिनाशी वेख वखाउणा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण अंदर डेरा लाईआ। ईश जीव जगदीश आपणा रंग रंगाउणा, ब्रह्म पारब्रह्म आपणा रूप वटाईआ। घर विच घर आप सुहाउणा, दीपक जोत कर रुशनाईआ। घर विच नाद शब्द वजाउणा, धुन आत्मक इक्क शनवाईआ। घर विच अमृत जाम पिआउणा, निझर झिरना इक्क झिराईआ। घर विच टेढी बंक वखाउणा, डूँघी भँवरी अन्धेरा छाईआ। घर विच पंचम मंगल गाउणा, वाह वा वजदी रहे वधाईआ। घर विच काम क्रोध लोभ मोह हँकार छुपाउणा, माया ममता नाल रलाईआ। घर विच हउमे हंगता गढ़ बणाउणा, आसा तृष्ना दए वड्याईआ। जुगा जुगन्तर वेस वटाउणा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप वखाईआ। शब्दी गुर आप प्रगटाउणा, आप आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव रिहा समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जाणा जाग, हरि साचा आप जगाइंदा। आदि पुरख रचया तेरा काज, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। शब्द अगम्मी दिती दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा, ना कोई दिवस ना कोई रात, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाइंदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, इष्ट देव ना कोए मनाइंदा। इक्क इकल्ला पुरख समराथ, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप समझाइंदा। साचा हुक्म सुणना हरि जणाए, जानणहार इक्क अख्वाईआ। लक्ख चुरासी झोली पाए, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। जुग चौकड़ी वण्ड वण्डाए, चारे खाणी नाल उठाईआ। चारे बाणी बोध कराए, चार वरन इक्क सरनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्ड वण्डाए, आप आपणा बन्धन पाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा इक्क रखाए, चार कुण्ट दहि दिशा आप भवाईआ। गुर अवतार भेस वटाए, नर हरि हरी नरायण निरगुण आपणा रूप वटाईआ। भगत भगवन्त आप पढ़ाए, आपणा अक्खर आप समझाईआ। सन्त कन्त आप मिलाए, दर घर मेला सहिज सुभाईआ। गुरमुख

गुर गुर लेखे लाए, जुगा जुगन्तर सेव कमाईआ। गुरसिख एका दर वखाए, हरि चरन सरन सच्ची सरनाईआ। नव नौं चार वेखणहारा थाउँ थाँए, नौं खण्ड पृथ्मी आपणा पर्दा लाहीआ। नौं दर वेख वखाए, चार कुण्ट कर रुशनाईआ। जुगा जुगन्तर आपणी धारा आपणे विच छुपाए, दिस किसे ना आईआ। गुर अवतार रसना जिहवा रहे सुणाए, हरि हरि रसना जिहवा ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। नौं नौं चार झुलणा इक्क निशान, लोकमात आप झुलाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल करे महान, जोती जामा भेख वटाइंदा। शब्द खण्डा तेज़ कृपाल, ब्रह्मण्डां आप चमकाइंदा। पाए वण्डां दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाइंदा। सूरा सरबंगा नौजवान, सति मृदंगा हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त कन्त भगवन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, नव नौं चार रहिण ना पाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सर्ब कुरलाउणा, जीव जंत साध सन्त देण दुहाईआ। अग्नी तत्त ना किसे बुझाउणा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। वरनां बरनां भेड़ भड़ाउणा, चार अठारां संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच संदेश इक्क सुणाईआ। सच संदेश हरि सुणाइंदा, पारब्रह्म बेअन्त।
४२८ ब्रह्मा विष्न शिव तेरा पन्ध वखाइंदा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग चार अनन्त। निरगुण अन्तिम आपणा वेस वटाइंदा, पूरन ४२८
जोत धर भगवन्त । गुर अवतार आपणे खाते पाइंदा, लेखा जाणे कलिजुग सन्त। आपणी गाथा आप सुणाइंदा, आप बणाए आपणा मंत। पिछला लेखा लेख मुकाइंदा, नाता तुट्टे जीव जंत। जाग्रत जोत इक्क जगाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आदि अन्त। आदि अन्त खेल खिलंदड़ा, ख़ालक ख़लक रूप भगवान। कलिजुग अन्तिम वेस वटंदड़ा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। नाम खण्डा इक्क चमकंदड़ा, लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकंदड़ा, चरन धूढ़ी ख़ाक मंगे दान। कलिजुग कूड़ा नेत्र रो रो नीर वहंदड़ा, चार कुण्ट होए हैरान। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलंदड़ा, ना कोई दीसे राज राजान। साधां सन्तां पर्दा आप उठंदड़ा, अंदर लुकया निगहबान। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी सर्ब जस गौंदड़ा, गा गा थक्का जीव जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल श्री भगवान। कलिजुग वेला अन्तिम सुहाउणा, विष्न ब्रह्मा शिव जणाया। निहकलंका जामा पाउणा, रूप रंग रेख ना कोए वखाया। लक्ख चुरासी भेव चुकाउणा, दूई द्वैती पर्दा दए उठाया। आपणा नाउँ आप धराउणा, सो पुरख निरँजण बेपरवाहया। हँ ब्रह्म अंग लगाउणा, निरगुण निरगुण वेख वखाया। चार

वरन नौं खण्ड पृथमी सत्तां दीपां एका ढोला साचा गाउणा, दूसर अवर ना वण्ड वण्डाया। आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि नरायण आपणा बल वखाया। जगत दलिद्र जाए लथ्थ, संसा रोग रहे ना राईआ। किरपा करे पुरख समरथ, दीनन दीनां अनाथां होए सहाईआ। पिछला पूरा करे घाट, अग्गे वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत सोग दए गंवाईआ। मिले धन जगत ख़ज़ीना, नाम नामा आप वरताइंदा। त्रैगुण माया होए अधीना, त्रै त्रै आपणा रंग वखाइंदा। एका हरि रसना जिहवा चीना, तृष्ना भुक्ख सर्ब मिटाइंदा। काया चोली चढ़े रंग भीन्ना, उतर कदे ना जाइंदा। आत्म शांत करे ठांडा सीना, मकरूज कर्ज़ा ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मेल मिलाए जिउँ जल मीनां, मीनां जल आपणा रूप वखाइंदा। धीरज धीर सति सन्तोख देवे दात, सति सतिवादी आप समझाईआ। दु:ख दलिद्र काया अंदर सगल विसूरे जायण लाथ, संसा रोग रहे ना राईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाउणा गाथ, पंचम पंच पंच पढ़ाईआ। मिले नाम एका हाट, वणज वणजारा दए कराईआ। साचा सुख वखाए साथ, तन मन आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच धरवास इक्क समझाईआ।

४२६

★ ३ चेत २०१८ बिक्रमी रेशम सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी ★

हरि का नाउँ साचा खण्डा, सो पुरख निरँजण आप उपाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां पाए वण्डां, जुगा जुगन्तर वेस वटाइंदा। लेखा जाणे जेरज अंडां, उत्भुज सेत्ज भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, हरि पुरख निरँजण आप उपाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड बैठ सच्चे दरबार, तख्त निवासी आपणी दया कमाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, राज राजान आपणा बल धराईआ। करे करावे साची कार, करता पुरख निरगुण निरवैर आपणी कल आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। नाम खण्डा तेज़ प्रचण्ड, हरि साचा सच जणाइंदा। नव सत वण्डणहार वण्ड, गृह गृह आपणा भेव चुकाइंदा। लेखा जाणे बन्दी बन्द, बन्दी छोड़ वेख वखाइंदा। लेख अवल्ला सुहागी छन्द, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाइंदा। हँ ब्रह्म जाणे आत्म अनन्द, परमानंद खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खण्डा नाउँ आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा खण्डा कर त्यार, सति सतिवादी दया कमाईआ। कलिजुग करे खेल अपर अपार,

अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह रूप अनूप आप वटाईआ। दो जहानां बण शाह पातशाह, सच सिक्दारा हुक्म सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए जगा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। करोड़ तेतीसा इक्क संदेश दए सुणा, सुरपति राजा इन्द नाल रलाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर आपणी रचन रचाईआ। लक्ख चुरासी घट घट वासी पुरख अबिनाशी वेखणहारा हँस काँ, काग हँस कवण रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खण्डा हरि निरँकारा, एका एक उपाइंदा। आपे रक्खे तिक्खीआं धारां, दो जहानां वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे खेल अपर अपारा, आप अपरम्पर आपणी बणत बणाइंदा। चतुर्भुज रूप अनूप आपे होए गुप्त ज़ाहरा, अनुभव आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खड़ग हथ्थ उठाइंदा। एका खड़ग साची धात, त्रैगुण अतीता आप उठाइंदा। कलिजुग मेटे अन्धेरी रात, रैण अन्धेरी आप मिटाइंदा। ग़रीब निमाणयां पुछे वात, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी चार वरन अठारां बरन इक्क सुणाए साची गाथ, अन्तर मन्त्र आप पढ़ाइंदा। लेखा जाणे त्रैलोकी नाथ, चौदां लोकां फोल फोलाइंदा। चौदां तबकां देवे साथ, नूर इलाही डगमगाइंदा। कलमा अमाम पाकी पाक, पीर दस्तगीर शाह हकीर वेख वखाइंदा। मुकामे हक खोल्हे ताक, ऐनलहक इक्क आवाज़ हक हकीकत आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हुजरे बह बह रिहा झाक, सच महिराबे आसण लाइंदा। सच महिराब हरि हरि आसण, पुरख अबिनाशण आप लगाईआ। सचखण्ड दुआरे पाए रासण, गोपी काहन आप नचाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणी पूरी करे आसन, आप आपणा बल प्रगटाईआ। आपणा नाउँ रखाए पुरख अबिनाशन, ना मरे ना जाईआ। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकासण, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। हरि का नाउँ तिक्खी धार, त्रै त्रै मीता आप उपाइंदा। विष्नूं देवे इक्क हुलार, विश्व वास्तक आपणा खेल खिलाइंदा। ब्रह्मा वेता पारब्रह्म ब्रह्म करे पुकार, हँ ब्रह्म खेल खिलाइंदा। शंकर नेत्र नैण चारों कुण्ट वेखे वारो वार, हथ्थ त्रिशूल इक्क वखाइंदा। पुरख अबिनाशी करे ख़बरदार, आलस निन्दरा सर्ब मिटाइंदा। इक्क जुणाए धुर फ़रमान, शब्द संदेश सुणाइंदा। विष्नूं तेरा सति भण्डार, सति सतिवादी वेख वखाइंदा। ब्रह्मा तेरा लक्ख चुरासी ब्रह्म पसार, ईश जीव जगदीश आत्म परमात्म आपणा भेव चुकाइंदा। शंकर तेरा कर विचार, जो घड़या सो भन्न्हे आपणी वार, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। तिन्नां विचोला हरि निरँकार, सच सिंघासण सोहे सचा निरँकार आप मनाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, ब्रह्मा चार वेद मुख सालांहयदा। पुराण शास्त्र सिमरत वसे बाहर, हरि का

रूप दिस किसे ना आइंदा। आदि पुरख इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला उच्चे टिले पर्बत पावे सार, समुंद सागर फोल फोलाइंदा। कायनात होए उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ हरि समझाइंदा। हरि का नाम सति कटारा, सति सतिवादी आप उपाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार किनारा, गुर अवतार रूप धराईआ। नौं नौं चार वेखे वारो वारा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग भेव अभेव छुपाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल करे न्यारा, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। धरनी धरत धवल रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणा नीर वहाईआ। भगत भगवन्त मंगण मंग बण भिखारा, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। सन्त कन्त दर दरवेश बणे दुआरा, निउँ निऊं बैठे सीस झुकाईआ। गुरमुख वेखे मीत मुरारा, मित्र प्यारा कवण अख्वाईआ। गुरसिख चरन धूढ़ मंगे ख़ाक छारा, चरन कँवल ध्यान रखाईआ। मनमुख बणाया गढ़ हँकारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दिवस रैण करे लड़ाईआ। आसा तृष्ना लाए नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। माया ममता करे ख्वारा, चारों कुण्ट दहि दिशा रिहा भवाईआ। कलिजुग अन्तिम कूके आपणी वारा, आप आपणा बल धराईआ। नाल रलाया मुहम्मदी यारां, ईसा मूसा दए ग्वाहीआ। अल्ला राणी इक्क अखाड़ा, आपणा नाम दए वखाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपे वेखे वेखणहारा, दरगाह साची साचे धाम बैठा आसण लाईआ। करे कराए आपणी कारा, जुगा जुगन्तर साची धारा लोकमात आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ साचा तत्त समझाईआ। हरि का नाउँ साचा तत्त, तत्व तत इक्क समझाइंदा। हरि का नाउँ साचा रथ, रथ रथवाही आप चलाइंदा। हरि का नाउँ आदि जुगादि सदा समरथ, समरथ पुरख आप प्रगटाइंदा। हरि का नाउँ लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, सुरती शब्दी आपणे हथ्थ रखाइंदा। हरि का नाउँ राज राजानां शाह सुल्तानां दर दर घर घर सत्थर देवे घत्त, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। हरि का नाउँ नाता तोड़े तत्त अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकास मन मति बुध बन्धन कोए ना पाइंदा। हरि का नाउँ महिमा जणाए अकथना अकथ, लिखण पढ़न विच कदे ना आइंदा। हरि का नाउँ एका मार्ग दए दस्स, ऊँच नीच राउ रंक एका धन्दे लाइंदा। हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा नाउँ आप वड्यांअदा। साचा नाउँ तेज़ कृपाल, किरपन आपणी आप बणाईआ। आदि जुगादि देवे ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म वड्डा शहिनशाहीआ। आत्म अन्तर वखाए सच निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाईआ। लेखा जाणे दो जहान, अवण गवण त्रैभवन आपणा पर्दा आप चुकाईआ। जुग जुग देवणहारा हुक्मी हुक्म हुक्म फ़रमान, सच संदेश इक्क सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए जोद्धा सूरबीर नौजवान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खण्डा

४३१

रिहा उठाईआ। साचा खण्डा हथ्थ उठा, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। धरत धवल दए हला, आपणा भाणा आप जणाइंदा। नव नव फेरा आपे पा, सत सत पन्ध मुकाइंदा। नौं नौं गेड़ा दए दिवा, चार कुण्ट आप फिराइंदा। दहि दिशा पन्ध दए मुका, साचा हिस्सा आप वंडाइंदा। शाह सुल्तानां ख़ाक मिला, ख़ाकी ख़ाक आप उडाइंदा। एका नौबत दए वजा, नाम मृदंग हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खण्डा हथ्थ चमकाइंदा। साचा खण्डा चमके चमकाए दामनगीर, दीन दयाल वडी वड्याईआ। लेखा जाणे शाह हकीर, वेखणहारा पीर दस्तगीर बेपरवाहीआ। करे खेल बेनज़ीर, अज़ीम नज़ीम निरगुण आपणी धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम अन्त वखाउणा, हरि साचा सच दृढ़ाइंदा। नव नौं लेखा आप जणाउणा, भेव अभेद खुल्हाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाउणा, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। वेद अथर्बण ऐड़ा अक्ख खुलाउणा, दूसर नैण ना कोए जणाइंदा। अल्ला राणी मुख नकाब पर्दा लाउहणा, आप आपणा हथ्थ वखाइंदा। संग मुहम्मद चार यार कलमा नबी इक्क दृढ़ाउणा, अमाम अमामा भेव मुकाइंदा। सच सनेहुड़ा घल दर दुआर आप बहाउणा, धुर दरबारा इक्क सुहाइंदा। चौदां लोक चौदां तबक एका वार कुण्डा लाउहणा, ज़िमीं अस्मानां चरनां हेठ रखाइंदा। एका नूर एका जल्वा आप दरसाउणा, आलमीन आपणा रूप धराइंदा। सति यकीन इक्क रखाउणा, या मुबीन आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खण्डा हथ्थ उठाइंदा। हथ्थ खण्डा लै हरि उठया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। अबिनाशी करता एका तुठया, निरगुण रूप अगम्म अपार। नौं सौ चुरानमे चौकड़ी जुग रिहा लुकया, अन्तिम अन्त कन्त होए उज्यार। लक्ख चुरासी विच शेर एका बुक्कया, चारों कुण्ट दए हुलार। हरि का भाणा कदे ना रुक्या, ना कोई होए रोकणहार। कलिजुग बूटा अन्तिम सुक्या, लक्ख चुरासी होए ख्वार। विष्नूं तेरा दाणा मुक्या, ख़ाली दिसे अन्त भण्डार। ब्रह्म तेरा ब्रह्म तेरे नालों रुड्ढ्या, पारब्रह्म ना करे प्यार। शंकर तीर निराला छुट्टया, सृष्ट सबाई मारे मार। जगत सिक्दार जाए लुट्टया, जोरु ज़र जाए हार। अन्तिम जूठ झूठ मूंह विच पए थुक्या, हरि का नाउँ रसना जिहवा ना कोए उज्यार। पत्त डाल्ही नालों टुट्टया, अन्त खिड़े ना फेर गुलज़ार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नव नव वेखे वेखणहार। नव नौ खण्डा नाम चलाया, चार कुण्ट जैकारा। पुरख अबिनाशी आपणा वार आप कराया, आपे होए वेखणहारा। शाह सुल्तान भेव ना आया, राज राजान ना पावे सारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, बीस अठ्ठ दए हुलारा। बीस इक्क अठ्ठ, इक्क अठ्ठ खेल खिलाइंदा। बीस इक्क अठ्ठ, अठ्ठ इक्क मेल मिलाइंदा।

बीस इक्क अठ्ठ, अठ्ठ इक्क तेल चढ़ाइंदा। बीस इक्क अठ्ठ, अठ्ठ इक्क सज्जन सुहेल मुख छुपाइंदा। बीस इक्क अठ्ठ, अठ्ठ इक्क जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौं खण्ड पृथ्मी वेख वखाइंदा। बीस इक्क अठ्ठ, शब्दी शब्द शब्द जैकारा। बीस इक्क अठ्ठ, अठ्ठ इक्क रोवे ज़ारो ज़ारा। बीस इक्क अठ्ठ, अठ्ठ इक्क चार कुण्ट उठ उठ वेखे, साचा दिसे ना कोए किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा करे सच विहारा। वीह सौ अठारां बिक्रमी सच विहारा, हरि साचा सच कराइंदा। वेखणहारा पावे सारा, भेव अभेद आप जणाइंदा। नव नौं वेखे छहबर धारा, करोड़ छिआनवे सेव लगाइंदा। सेवक सेवा जाणे अपर अपारा, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। लक्ख चुरासी सुती पैर पसारा, ग़फ़लत नींद ना कोए खुल्लाइंदा। हरि का नाम ना करे कोए प्यारा, रसना जिहवा ना कोए गाइंदा। सृष्ट सबाई दुहागण नारा, कन्त सुहाग ना कोए हंढाइंदा। जोबन जवानी रहे दिवस चारा, अन्तिम संग ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। वीह सौ अठारां बिक्रमी भेव जणाउणा, जन साचे लए समझाईआ। आत्म अन्तर निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहत दरस दिखाउणा, दीद शुनीद आप कराईआ। शब्द नाद अनादी अनहद धुंन उपजाउणा, छत्ती राग मुख शरमाईआ। अमृत आत्म सति प्याला निझर झिरना आप झिराउणा, अमिउँ रस एका मुख सुहाईआ। अन्ध अन्धेरा आप गंवांउणा, जोती दीपक जोत जगाउणा, नूर नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आठा दए समझाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, एका खण्डा नाम चमकाइंदा। दो जहानां पावे सार, तीजे लोचण वेख वखाइंदा। चौथे पद बहे सच्चे घर बार, पंचम मेला मेल मिलाइंदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोए आधार, सत्तवें सति सतिवादी आपणा बंक आप उपाइंदा। अठवें अठ्ठां तत्तां वसे बाहर, अठ्ठ तत आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा। अन्तिम वेस वटाए अवल्ला, दिस किसे ना आईआ। लेखा जाणे राणी अल्ला, मीआं महबूब साचा माहीआ। आप फड़ाए आपणा पल्ला, हज़ारा दरूद करे पढ़ाईआ। आपणा रूप वखाए इक्क बिस्मिला, बिस्मिल करे सर्ब ख़ुदाईआ। आपणा नूर उपजाए इक्क इललिल्ला, इलाही नूर सच्चा शहिनशाहीआ। चौदां सदीआं कट्टया छिला, मख़लूक ख़लक ख़ालक विच समाईआ। अन्त सिँघासण सभ दा हिला, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाउणा, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। अमाम अमामां रूप वटाउणा, आलमीन भेव ना आइंदा। महिबान बीदो नाउँ धराउणा, बी ख़ैर या अल्ला एह समझाइंदा। चौदां चौदां पन्ध मुकाउणा, आप आपणा मार्ग आपे वेख

वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस अठारां राह तकाइंदा। बीस अठारां चढ़या चा, सम्मत सम्मती खेल खिलाया। पारब्रह्म पति परमेश्वर लोकमात बणया इक्क मलाह, नव नौं बेड़ा लए चलाया। मनमुख जीव लक्ख चुरासी दए भुला, साचा राह ना कोए वखाया। हरिभगत भगवन्त लए उठा, नेत्र ज्ञान इक्क वखाया। आपणी बूझ दए बुझा, समरथ पुरख बेपरवाहया। एका दूजा भउ चुका, निर्भय आपणा दरस कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत अठारां खेल खिलाया। सम्मत अठारां चढ़े रंग, हरि साचा आप चढ़ाईआ। शाह सुल्तानां करे नंगी कंड, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। चार कुण्ट नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप आपणी वण्डे आपे वण्ड, साची सीमा लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस अठ अठारां वेख वखाईआ। वीह सौ अठारां वण्ड वण्डा, खड़ग खण्डा चमकाया। दो दो मेला सहिज सुभा, गुर चेला भेव ना राया। आपणा खेल आप खिला, ख़ालक ख़लक रिहा तरसाया। आपणा तीर तरकश आप उठा, आपे चिल्ले रिहा चढ़ाया। अर्श फर्श कुर्श वेखे थाउँ थाँ, ज़िमीं अस्मानां फेरा पाया। गुरमुख विरले लए जगा, जिस जन आपणी दया कमाया। स्वच्छ सरूपी प्रगट होए सच्चा शहिनशाह, साख्यात नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, साचा मार्ग दए वखाया। महारज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, धार संसार संसार धार धरनी धरत धवल आपणे हथ्थ रखाया।

४३४

★ ४ चेत २०१८ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे गृह नानक पुरा ज़िला करनाल ★

सो पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्त, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। आदि जुगादि महिमा अगणत, अलख अगोचर अगम्म अथाह भेव कोए ना पाइंदा। सचखण्ड दुआरा एकँकारा थिर घर साचा रिहा सुहा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहत आसण लाइंदा। शब्द अगम्मी नाद वजा, धुर फ़रमाना सच्चा शहिनशाह, नाउँ निरँकारा आप सुणाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव उपा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचा, रवि ससि प्रकाश धराइंदा। त्रै त्रै मेला सहिज सुभा, पंचम खेल रिहा खिला, लक्ख चुरासी बन्धन पाइंदा। ईश जीव जोत जगा, पारब्रह्म ब्रह्म वण्ड वण्डा, जोत निरँजण डगमगाइंदा। अनहद शब्द राग अल्ला, पंचम बह बह मंगल गा, बंक दुआरा आप सुहाइंदा। आपणा भेव आप खुल्ला, विश्व सेवा इक्क जणा, ब्रह्मा वेता लए पढ़ा, चारे वेदां आप अलाइंदा। निरगुण निराकार वण्ड वण्डा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नाउँ रखा, चारे खाणी लए उपजा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणे रंग रंगाइंदा। चारे बाणी भेव खुल्ला, चारे वरनां दए समझा, चारे

कूटां फेरा पा, दहि दिशा वेख वखाइंदा। दो जहानां हो रुशना, चौदां लोकां दीप जगा, नूर नुराना नूर धराइंदा। शाहो भूप बण शहिनशाह, हुक्मी हुक्म लए वरता, आपणे भाणे सद रहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, साची धारा आप चलाइंदा। सो पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्ता, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्ता, आदि अन्त आपणा बन्धन पाइंदा। धुर दरबारा हरि निरँकारा, लेखा जाणे पूरन भगवन्त, पारब्रह्म बेअन्त आपणा खेल खिलाइंदा। लक्ख चुरासी वेखणहारा जीव जंत, जाग्रत जोत डगमगाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जुगा जुगन्त, वेस अवल्ला इक्क इकल्ला धरत धवल आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, जुग जुग आपणा खेल खिलाइंदा। सो पुरख निरँजण अगम्म अथाह, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। हरि पुरख निरँजण बण मलाह, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। एकँकारा सिफ्त सलाह, सिफ्त सलाही वड रघुराईआ। आदि निरँजण जोती नूर जोत रुशना, दीवा बाती ना कोई वखाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा साचे थाँ, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। श्री भगवान आप उठाए आपणा सति निशान, दो जहानां आप झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे मार ध्यान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां आपणा खेल खिलाईआ। ब्रह्म ब्रह्म कर प्रधान, लक्ख चुरासी देवे दान, घट घट आपणा नूर धराईआ। एका शब्द गुण निधान, तत्व तत कर प्रधान, लोकमात राह वखाईआ। नाउँ निरँकारा गुण निधान, नाद वजाए दो जहान, जगत जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, सचखण्ड निवासी खेल खिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव भर भण्डारा, त्रैगुण मीता इक्क अतीता साची सेवा लाइंदा। लक्ख चुरासी हो उज्यारा, घट घट अंदर दीपक दीआ आप जगाइंदा। शब्द अनाद अनहद सच्ची धुन्कारा, अगम्म अगम्मड़ा आप सुणाइंदा। जुगा जुगन्तर साची कारा, करता पुरख आप कराइंदा। गुर अवतार लै अवतारा, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। भगतन देवे नाम भण्डारा, साची वस्त आप वरताइंदा। लेखा जाणे अंदर बाहरा, गुप्त ज़ाहरा खेल खिलाइंदा। बख्शणहारा चरन प्यारा, चरन चरनोदक मस्तक टिक्का धूढ़ी धूढ़ लगाइंदा। माया ममता मोह तोड़ संसारा, हउमे हंगता रोग गंवाइंदा। एका देवे दरस दीदारा, इष्ट देव एका नज़री आइंदा। एका खोले बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। एका मेटे अग्नी तत्त वा ना लग्गे तती हाढ़ा, सांतक सति सति आप कराइंदा। एका प्रकाश कराए बहत्तर नाड़ा, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। इक्क वखाए धर्म अखाड़ा, गृह मन्दिर अंदर गोपी काहन आप नचाइंदा। एका होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाडा, डूँघी कंदर उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर वेख वखाइंदा। हरिभगत बणाए हरि जू

साचा लाड़ा, सीस जगदीस आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जुगा जुगन्तर पावे सारा, नित नवित कर कर हित, आपणा रूप धराइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा अठारां भार बनास्पत मुख शरमाइंदा। सत समुंदर मस रोवे ज़ारो ज़ारा, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। कातब बणे ना कोए लिखारा, ब्रह्मा विष्न शिव गुर अवतार, जुग जुग सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका हरि, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। अबिनाशी करता हरि भगवान, जुग जुग आपणा वेस धराइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधान, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। लक्ख चुरासी कर पहचान, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञान, जगत बसन्तर आप बुझाइंदा। माया ममता मोह चुकाए काण, घर घर विच आप रखाइंदा। घर ठाकर हो मेहरवान, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। घर भगत भगवन्त मेला एका दर करे परवान, घर रंग बसन्त रंगाइंदा। फुल फुलवाड़ी वेखे आण, घर गीत गोबिन्द सुणाइंदा। गावणहार इक्क भगवान, जुग जुग आपणी रीत चलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर लेखा जाणे दो जहान, कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, बावन अक्खर आपणे विच रखाइंदा। पैंतीस अक्खर जगत निशान, एका साता आपणे अंक लगाइंदा। इक्क इकल्ला खेल महान, नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा। सतारां साल देंदा रिहा ब्यान, सतारां अक्खर निष्अक्खर रूप वटाइंदा। ना कोई अंकड़ा वेखे विच जहान, वेद कतेब शास्त्र सिमरत भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। निरगुण निरवैर इक्क इकल्ला, अकल कल आपणी आप प्रगटाइंदा। लक्ख चुरासी आप भुलाए कर कर वल छला, अछल छलधारी भेव ना आइंदा। लेखा जाणे अठसठ तीर्थ जल थला, जल थल महीअल आपणी धार वहाइंदा। जोती शब्दी आपे रला, पवण पवणा आप समाइंदा। जुगा जुगन्तर सच संदेश नर नरेश शब्द तराना एका घल्ला, नाम सतार आप वजाइंदा। जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, दूसर ओट ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। हरिजन मिलावा आत्म अन्तर, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। जिस जन जणाए आपणा मन्त्र, सो पुरख निरँजण होए सहाईआ। हँ ब्रह्म बुझाए बसन्तर, त्रैगुण अग्न रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्तर, जुग करता सच्चा शहिनशाहीआ। कलिजुग अन्त बणाए बणतर, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ इक्क अख्वाईआ। लहिणा देणा चुकाए गगन गगनंतर, गगन पातालां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह सच्चा पातशाह, पारब्रह्म प्रभ आप अख्वाइंदा। दो जहानां बण मलाह, जुग जुग बेड़ा आप चलाइंदा। भगत

भगवन्त लए उठा, आलस निन्दरा मात गंवाइंदा। एका अक्खर आप पढ़ा, जगत विद्या पन्ध मुकाइंदा। साचे पौड़े लए चढ़ा, चौथे पद आप बहाइंदा। तीजा लोचण दए खुल्हा, नेत्र नैणा दरस दिखाइंदा। दूई द्वैती दए मिटा, एका रंग रंगाइंदा। इक्क इकल्ला होए सहा, स्वच्छ सरूपी नज़री आइंदा। पंचम मेला लए मिला, पंचम नाद धुंन सुणाइंदा। छेवें छप्पर छन्न डेरा ढाह, सति दुआरे आप बहाइंदा। अठ्ठवें अठ्ठां तत्तां लहिणा देणा दए चुका, लेखा होर ना कोए वखाइंदा। नौं दुआरे पन्ध मुका, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाइंदा। दस्म दुआरी कुण्डा लाह, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाइंदा। दीवा बाती आप जगा, कमलापाती सोभा पाइंदा। अमृत झिरना आप झिरा, निझर रस आप वखाइंदा। साची सेजा आसण ला, सिँघासण रूप वटाइंदा। भगत भगवन्त लए मिला, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। साचा घोड़ा दए वखा, नाम अश्व इक्क रखाइंदा। नेत्र नैणां किसे दिसे ना, दोए दोए लोचण जीव जंत राह तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन रक्खे सद ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। हरिजन ठाकर हरि हरि मीता, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जुग जुग चलाए आपणी रीता, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। काया मन्दिर वखाए ठाकर देहुरा मन्दिर मसीता, गुरदुआर चार कुण्ट एका नज़री आईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान, शाह पातशाह रक्खे थाउँ थाँईंआ।

४३७

जन भगतां बणाए धाम अनडीठा, अनडिठ रूप वटाईआ। काया चोली चाढ़े रंग मजीठा, उतर कदे ना जाईआ। हरिजन हरि हरि मेला जिउँ रामा सीता, सुरत सुवाणी शब्द रंग समाईआ। करे खेल पतित पुनीता, पतित पापी लए तराईआ। मिठ्ठा करे कौड़ा रीठा, जिस जन अमृत जाम प्याईआ। कलिजुग अन्त तपे अंगीठा, चारों कुण्ट रिहा जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तिम अग्नी अंग्यार, पंज तत रिहा जलाया। ना कोई दीसे मीत मुरार, सगला संग ना कोई रखाया। सृष्ट सबाई होई नार विभचार, हरि हरि कन्त ना कोई हंढाया। नौं सत धूंआँधार रवि ससि मुख शरमाया। तीर्थ तट रोवण ज़ारो ज़ार, उच्ची कूकन देण दुहाया। मन्दिर मस्जिद मठ ना कोई प्यार, साचा संग ना कोई निभाया। लक्ख चुरासी नाड़ बहत्तर उब्बले रत, अमृत मेघ ना कोई बरसाया। रसना जिहवा पढ़ पढ़ जीव जंत गए थक्क, सतिगुर सति सरूप नज़र किसे ना आया। कलिजुग कूड़ कुड़यारा सोया ढक, जूठ झूठ डंका रिहा वजाया। सच सुच ना दिसे कोई फुलवाड़ी पत्त, पत्त डाल्ही ना कोई महिकाया। दुरमति मैल ना देवे कोई कट्ट, हउमे रोग ना कोई मिटाया। हरिभगत हरिजन विरला बैठा सथर घत्त, पुरख अबिनाशी एका ओट रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ प्रगटाया।

नाउँ प्रगटाए हरि निरँकारा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। चौथे जुग कर पसारा, चार चार दए जणाईआ। चार चार दए हुलारा, चार चार वेख वखाईआ। नौं नौं इक्क अखाड़ा, नौं नौं वेखे थाउँ थाँईंआ। सत सत हाहाकारा, सत सत रिहा कुरलाईआ। गुरमुख विरले देवे हरि हरि मति, गुरमति इक्क समझाईआ। साचा मार्ग हरि जू दस्स, साचे पौड़े दए चढ़ाईआ। अमृत आत्म देवे निझर रस, नाभी कँवली आप भराईआ। जोत निरँजण कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। आत्म सेजा करे हास बिलास, भस्मड़ आपणा भोगी भोग वखाईआ। हरिभगत ना होए कदे उदास, जिस मिल्या सच्चा माहीआ। दिवस रैण वसे पास, सदा सुहेला विछड़ कदे ना जाईआ। जन्म जन्म दी बुझाए प्यास, जिस जन आपणा रस वखाईआ। मानस जन्म होए रास, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। राए धर्म ना पाए फास, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। जिस जन गाया रसन स्वास, सोहँ हरि हरि आपणा रंग रंगाईआ। लेखा चुक्के पृथ्मी आकाश, आकाश अकाशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन हरि जगाया, कर किरपा गुण निधान। त्रैगुण माया पर्दा लाहया, आत्म अन्तर इक्क ज्ञान। माया ममता मोह चुकाया, नाता तोड़ पंज शैतान। साचा मन्त्र इक्क दृढ़ाया, सो पुरख निरँजण हो मेहरवान। हँ ब्रह्म भेव मिटाया, ईश जीव कर कल्याण। जगत जगदीस दरस दिखाया, गृह मन्दिर कर परवान। साचा ताज सीस टिकाया, लेखा जाणे दो जहान। बीस बीस वेख वखाया, राह तके ज़िमीं अस्मान। सच हदीस इक्क सुणाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे जीआ दान। जीआ दान वस्त अमोल, जीवण दाता इक्क वरताईआ। शब्द अगम्मी कंडे तोल, तोलणहारा आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सुरती शब्दी जाए मौल, मौला आपणी खेल खिलाईआ। देवे वड्याई उप्पर धौल, हरिजन साचे आप उठाईआ। आपणा कीता पूरा करे कौल, गोबिन्द गुर सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अन्त आपणा पर्दा आप चुकाईआ। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, कलि कल्की लै अवतार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, निहकलंका जामा धार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, लोकमात वखाए सचखण्ड दुआर। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, थिर घर जोती जोत करे उज्यार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, सुन अगम्म होए ख़बरदार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, भगत भगवन्त लए उभार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, दस्म दुआरी खेल न्यार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, आत्म सेजा मेला नारी कन्त भतार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, घर घर विच नाद सुणाए अनहद सच्ची धुन्कार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, घर अमृत बख्शे ठंडी ठार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, लेखा जाणे ईड़ा पिंगल सुखमन टेढी बंक कराए पार।

पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, नौं दुआरे वेखे वारो वार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, पंच दुष्ट काम क्रोध लोभ मोह हँकार कर ख्वार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, गुरमुख साचे कर प्यार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, कलिजुग कूड़ी क्रिया दए निवार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, जूठ झूठ करे पार किनार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, राज राजानां शाह सुल्तानां दर दर करे भिखार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, सम्मत सम्मती मारे मार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, नाम खण्डा फड़ तेज़ कटार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, चण्ड प्रचण्ड विच ब्रह्मण्ड एका वार दए हुलार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, नव खण्ड सृष्ट सबाई खण्ड खण्ड करे संसार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सति स्वामी जगत निहकामी निरगुण निरवैर हो त्यार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, लक्ख चुरासी पूर्ब जन्म लेखा आपणे लेखे डार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, ब्रह्मा विष्न शिव करे आर पार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, सति सतिवादी साची बन्ह्रे धार। पर्दा चुकाउणा अन्त कलि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा हरि, हरिजन मेले इक्क दुआर। इक्क दुआर सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाए। आदि पुरख आदि निरँजणा, आदि अनादी वेख वखाए। दीना नाथ दर्द दुःख भय भंजना, दीनन दीन होए सहाए। जन भगतां नेत्र पाए नाम अंजना, अज्ञान अन्धेर मिटाए। घर मेला साचे सज्जणा, घर गीत गोबिन्द अलाए। लक्ख चुरासी जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोए रहिण ना पाए। कलिजुग काल नगारा सिर ते वज्जणा, लुकया कोए रहे ना राय। तख्त ताज शाह सुल्तानां तजणा, तख्त निवासी हुक्म सुणाए। मनमुख पर्दा किसे ना कज्जणा, गुर सतिगुर ना कोए सहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाए। हरिजन वेख वखाण दा, इक्क इकल्ला हरि मेहरवान। जुग जुग लेखा जाणे दो जहान दा, लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान। लक्ख चुरासी खेल श्री भगवान दा, घट घट वसे गुण निधान। कलिजुग कूड़ कुड़यारा ख़ाक छाणदा, पंज शैतानां बे ईमान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे बाल अंञाण। हरिजन बाल अंञाणा, गुर सतिगुर वेख वखाईआ। जिस जन बख्शे चरन ध्याना, चार वरन मिले वड्याईआ। इक्क वखाए पद निरबाणा, परम पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। सति सतिवादी साचा राणा, राजन राज इक्क कमाईआ। कलिजुग वरते आपणा भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुरमुख विरला चतुर सुघड़ सुजाना, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। एका गाए अगम्मी गाना, सोहँ शब्द हरि पढ़ाईआ। एथे ओथे देवे माणा, दोए दोए लेखा आप मुकाईआ। आवण जावण चुक्के काणा, मात गर्भ ना अग्न तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। तारनहारा एका गुर, आदि जुगादि समाया। जिस मस्तक लेखा लिख्या धुर, तिस जन

हरि हरि लए मिलाया। सति प्रीती जाए जुड़, ना कोई सके तोड़ तुड़ाया। अन्तिम अन्त गुर सतिगुर जाए बौहड़, गुरमुख साचे वेख वखाया। जन्म जन्म दी बुझाए औड़, जगत तृष्ना भुक्ख गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन जीवण जीवत जीवत मुक्त वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर शब्द अनाद प्रगटाए मन्त्र, साचे सन्त आप सुणाया।

★ ५ चेत २०१८ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह ठीकरी छन्नां ज़िला करनाल ★

सर्बकल हरि समरथ, इक्क इकल्ला भेव ना आइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर शब्द अगम्मी चलाए रथ, निरवैर पुरख सेव कमाइंदा। आप प्रगटाए दया कमाए आपणी वथ, सच समग्री आपणे हथ्थ रखाइंदा। सचखण्ड दुआरा एकँकारा सच महल्ले रिहा वस, सच सिँघासण आसण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। सचखण्ड दुआरा हरि कर पसारा, दर घर साचा आप सुहाईआ। पुरख अकाल हो उज्यारा, अनुभव आपणा प्रकाश धराईआ। अलख अगोचर खेल न्यारा, जोती नूर डगमगाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराईआ। हुक्मी हुक्म शब्द वरतारा, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, पुरख अबिनाशा आप कराईआ। पुरख अबिनाशी खेल निराली, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आप कराइंदा। लेखा जाणे दो जहान दो जहानां वाली, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। जुगा जुगन्तर चाल निराली, दिस किसे ना आइंदा। दीन दुनी एका वाली, दर्द दु:ख भय भंजन आपणी कार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सो पुरख निरँजण बैठा एका कन्त, हरि पुरख निरँजण नारी नर नरायण रूप वटाईआ। एकँकारा महिमा अगणत, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। आदि निरँजण जोबनवन्त, नूर नुराना बेपरवाहीआ। अबिनाशी करता लेखा जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणा बन्धन पाईआ। श्री भगवान आप प्रगटाए आपणा मंत, नाउँ निरँकारा आप रखाईआ। पारब्रह्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआर सुहञ्जणा, हरि साचा आप सुहाइंदा। दीपक जोत प्रकाश करे आदि निरँजणा, नूर नुराना डगमगाइंदा। निरगुण निरगुण बणे साचा सज्जणा, सगला संग वखाइंदा। ना घड़या ना भज्जणा, घड़न भन्नणहार आपणी कल वरताइंदा। थिर घर निवासी आपे

जाणे आपणा साचा मजना, सर सरोवर एका सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वड्यांअदा। सचखण्ड दुआरा साची धार, पुरख अकाल आप चलाईआ। ना कोई दिसे चार दीवार, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। सूरज चन्न ना कोए उज्यार, मंडल मण्डप ना कोए सुहाईआ। गगन पाताल ना कोए आधार, लोआं पुरीआं ना बन्धन पाईआ। करे खेल अपर अपार, इक्क इकल्ला सच्चा शहिनशाहीआ। आपणी इच्छया आप विचार, आपणा बल आप धराईआ। मात पित ना कोए प्यार, पूत सपूत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, आसण सिँघासण आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआरे आपे वड़या, निरगुण रूप पुरख अगम्म। घाड़त घड़न ना किसे घड़या, माता कुक्ख ना प्या जम्म। आपणे पौड़े आपे चढ़या, पारब्रह्म प्रभ आपणा बेड़ा बन्न्। आपणा अखशर आपे पढ़या, आपे रिहा मन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड निवासी इक्क भगवन। श्री भगवान सचखण्ड दुआर सुहाइंदा, सोभावन्त एकँकार। तख्त निवासी तख्त उपाइंदा, आप आपणी किरपा धार। पावा चूल ना कोए रखाइंदा, ना कोई बाढी करे विचार। नेत्र लोचण नैण दिस किसे ना आइंदा, अनडिठ खेल करे करतार। कागद कलम भेव ना पाइंदा, लिख लिख कोए ना पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा खोल्हे इक्क किवाड़। सचखण्ड दुआरा खोल्हया, सति पुरख निरँजण सति सतिवाद। आदि जुगादि रहे अडोलया, निरगुण रूप हो विस्माद। आपणा नाउँ निरँकार आपे बोलया, आप जणाए बोध अगाध। आपणे कंडे आपे तोलया, आप आपा विचों काढ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी इक्क वजाए साचा नाद। साचा नाद सचखण्ड निवासी, एका एक उपाईआ। आपणे मंडल आपे पावे रासी, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। निरगुण जोत जोत प्रकाशी, अनुभव आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संदेश नर नरेश आप सुणाईआ। सच संदेश हरि निरँकारा, आपणा आप उपाइंदा। आपणा नाउँ कर उज्यारा, आपे वेख वखाइंदा। सचखण्ड खण्ड सच एका कारा, थिर घर आपणा रूप धराइंदा। शब्द अनादी सति जैकारा, सति ब्रह्मादी आप बणाइंदा। एका देवे साची दादी, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर दुआरा आपणा आप जणाइंदा। थिर घर दुआरा कर त्यार, घर घर विच लए प्रगटाईआ। सचखण्ड सोहे हरि निरँकार, थिर घर साचा शब्द बहाईआ। पिता पूत एका धार, निराकार आप चलाईआ। लिखण पढ़न तों वसया बाहर, लेखा लेख ना कोए वखाईआ। आपणी करनी करे करनहार, करता पुरख आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी इच्छया बण वरतार,

साची भिच्छया इक्क दरसाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रै त्रै मेला एका थाईंआ। एका बन्धन हरि निरँकार, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। अन्तर आत्म इक्क धुन्कार, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। धुर फ़रमाना बोल जैकार, साचा राणा आप समझाईआ। भुल ना जाणा बण गंवार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव ना भुल्लणा, हरि साचा सच जणाइंदा। एका कंडे तुलणा, हरि हरि आपणा कंडा इक्क वखाइंदा। चरन प्रीती घोल घुलना, घोली घोल एह समझाइंदा। आदि अन्त पाए मुलना, अमुल आपणी खेल खिलाइंदा। त्रै त्रैगुण त्रै त्रै वेस लक्ख चुरासी फलना फुलना, फुल फुलवाड़ी पत्त डाल्ह आप महिकाइंदा। लोकमात पंज तत निशान झुलणा, साची सेवा इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी एका हरि, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। धुर फ़रमाना हरि जणाया, लेखा लिख्त विच ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उठाया, दे मति रिहा समझाईआ। लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाया, त्रैगुण माया बन्धन पाईआ। पंज तत्त लए उपाया, तत्व तत इक्क रखाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल खिलाया, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। सरगुण मेला सहिज सुभाया, आत्म जोती ब्रह्म टिकाईआ। काया मन्दिर अंदर ढूँघी कंदर डेरा लाया, घर घर विच सोभा पाईआ। शब्द अनादि धुंन आप वजाया, अनहद साची सेव वखाईआ।
४४२ नौं दुआरे खोज खुजाया, जगत तृष्ना विच फिराईआ। आसा मनसा मेल मिलाया, पंचम एका रंग वखाईआ। साचा ढोला आपणा सोहला आपणे हथ्थ रखाया, दूसर देवे ना कोए वड्याईआ। नाम विचोला विच बहाया, उप्पर आपणा पर्दा पाईआ। काया चोला वेख वखाया, हड्ड मास नाड़ी रत बूंद रक्त दए वड्याईआ। पर्दा ओहला ना सके कोए चुकाया, अन्ध अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी घाड़न घड़, निरगुण अंदर बैठा वड़, सरगुण आपणे कारे लाईआ। निरगुण सरगुण बन्न्हे धार, पंज तत काया खेल खिलाइंदा। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर, तार सतार आप हिलाइंदा। ब्रह्मा देवे शब्द आधार, एका नाद सुणाइंदा। आपणा अक्खर वेद चार, वेद चार एका अखर गुण गाइंदा। एका अक्खर सति भण्डार, सति भण्डार विष्नूं झोली पाइंदा। एका अक्खर दए सँघार, शंकर एका अक्खर मुल्ल रखाइंदा। पुरख अबिनाशी हो त्यार, साचा मार्ग आप लगाइंदा। लक्ख चुरासी विच संसार, ईश जीव मेल मिलाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म नार भतार, कन्त सुहागी खेल खिलाइंदा। वण्डण वण्ड वण्डाए आप करतार, साचा हिस्सा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर विचार, जुग चौकड़ी बन्धन पाइंदा। निरगुण सरगुण होए उज्यार, गुर अवतार खेल खिलाइंदा। शब्द नाम कर पुकार, आपणा रूप आप दरसाइंदा। भगत भगवन्त लए उभार, सन्त साजण मेल मिलाइंदा। गुरमुखां खोल्ह बन्द

किवाड़, दूई द्वैती मेट मिटाइंदा। गुरसिखां बख्शे चरन प्यार, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी एका हरि, अकल कल आपणी खेल खिलाइंदा। अकल कल हरि धार, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंढाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गायण आपणी वार, गीता ज्ञान आप समझाईआ। अञ्जील कुरान करन पुकार, तीस बतीसा दए दुहाईआ। खाणी बाणी इक्क विचार, बोध अगाध भेव खुल्हाईआ। धुर दी बाणी बाण मारे न्यार, तीर निराला आप चलाईआ। गुर सतिगुर पावे साची सार, दूसर अवर ना कोए चतराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, जुग करता आपणा बन्धन आपे पाईआ। साचा बन्धन हरि निरँकार, जुग चौकड़ी आप रखाइंदा। प्रगट हो विच संसार, लोकमात वेख वखाइंदा। भगत भगवन्त, जाए पैज संवार, दुष्ट हँकारी मेट मिटाइंदा। ग़रीब निमाणयां लए उभार, माया ममता मोह चुकाइंदा। हउमें हंगता गढ़ तोड़ हँकार, साची संगता मेल मिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, जोती जामा भेख वटाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी वेखे धूंआँधार, सत्तां दीपां चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई होई विभचार, घर घर काम क्रोध लोभ मोह हँकार डेरा लाइंदा। आत्म अन्तर ना करे कोए विचार, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोए मिलाइंदा। जोती जोत
४४३ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाइंदा। सचखण्ड दुआर सुहावणा, ४४३
हरि साचा सच सुहाईआ। जुग जुग आपणा वेस वटावणा, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। कलिजुग अन्तिम भेव खुल्हावणा, जोती जोत कर रुशनाईआ। किला कोट ना कोए वखावणा, साढे तिन्न हथ्थ एका मन्दिर आप वड्याईआ। खड़ग खण्डा हथ्थ ना कोए चमकावणा, नाम खण्डा इक्क रखाईआ। ब्रह्मण्डां वण्ड वण्डावणा, जेरज अंडां वेखे थाउँ थाँईआ। भेख पखण्डा आप गंवांवणा, जगत विकारा मेटे झूठी छाहीआ। साचा छन्द इक्क सुणावणा, पुरख अकाल दीन दयाल जै जैकार करे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, रूप अनूप आप धराईआ। रूप अनूपा शाहो भूपा, सो पुरख निरँजण आप धराइंदा। वसणहारा चारे कूंटां, दहि दिशा फेरी पाइंदा। जन भगतां उप्पर आपे तुठ्ठा, दे दरस आत्म अन्तर तृखा बुझाइंदा। अमृत आत्म देवे घुट्टा, निझर झिरना आप झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लोकमात वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेखण आया, निरगुण निरवैर पुरख अकाल। चारे वरनां लए उठाया, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कर प्यार। नौं खण्ड पृथ्मी मेल मिलाया, सत्तां दीपां एका धार। ऊँच नीच कोई रहिण ना पाया, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान बहाए इक्क दरबार। एका हुक्म

धुर फ़रमाना आप सुणाया, सो पुरख निरँजण होया ख़बरदार। हँ ब्रह्म लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त लए उठाया, सोया रहे ना कोए विच संसार। नाद ब्रह्मादि आप वजाया, शब्दी शब्द एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर करे कराए साची कार। कलिजुग कार कमाइंदा, ख़ालक ख़लक रूप भगवान। मुकामे हक वेख वखाइंदा, लक्ख चुरासी जीव शैतान। ऐनलहक नाअरा लाइंदा, तौफ़ीक ख़ुदाए इक्क मिहबान। लाशरीक खेल खिलाइंदा, लेखा जाणे दो जहान। राम नाम आप प्रगटाइंदा, घट घट होया जाणी जाण। जोती जामा भेख वटाइंदा, शाहो भूप वड सुल्तान। कोटन कोटी जीव तराइंदा, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पंचम मेटे झूठ दुकान। पंचम नाता तोड़ना, पंच विकारा रहिण ना पाईआ। पंचम शब्द शब्दी संग जोड़ना, सुरत शब्द मेल मिलाईआ। करे प्रकाश अन्ध घोरना, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। कूड़ी क्रिया पाए शोरना, सच सुच्च आप प्रगटाईआ। कलिजुग आपणी हथ्थीं लोकमात विचों तोरना, वेला अन्त दए मुकाईआ। सतिजुग साचा हरिजन साचे बौहड़ना, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्ख वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण धार निरँकार विच संसार, जोती शब्दी शब्द जोत जोत जोत रुशनाईआ।

४४४

★ ५ चेत २०१८ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह कौमी फ़ारम ज़िला करनाल ★

सचखण्ड दुआरा सोहे घर, निरगुण निरवैर पुरख अकाल आप सुहाइंदा। थिर घर निवासी निराकार अंदर बैठा वड़, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर वेस धर, धरनी धरत धवल लोकमात वेख वखाइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख खेल खिलाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर सच सुहञ्जणा, हरि साचा सच सुहाए। जोत जगाए आदि निरँजणा, दीवा बाती ना कोए रखाए। जुगा जुगन्तर दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर वेख वखाए। हरिजन वेखे साचे सज्जणा, नित नवित खेल खिलाए। भगत भगवन्त नेत्र नाम पाए कज्जला, अज्ञान अन्धेर मिटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थान थनंतर इक्क सुहाए। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। लेखा जाणे लक्ख चुरासी जीव जंत, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणी बणत बणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जणाए एका मंत,

नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाईआ। त्रैगुण अतीता बणे कन्त, शाहो भूप सच्चा शहिनशाहीआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग करता भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क वड्याईआ। दर घर साचा हरि वड्यांअदा, आदि जुगादी साची कार। सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा, निरगुण नूर नूर उज्यार। थिर घर आपणा बंक सुहाइंदा, पुरख अकाल खोल्ह किवाड़। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा आसण लाइंदा, गगन पातालां पावे सार। लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा, जुगा जुगन्तर लै अवतार। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराइंदा, धुर दरगाही बेऐब परवरदिगार। वेद कतेब शास्त्र सिमरत आपणी कारे लाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। सचंखड दुआरे शाह पातशाह, शहिनशाह आसण लाईआ। सति सरूपी शाहो भूपी बण मलाह, जुग जुग आपणा बेड़ा आप चलाईआ। निरगुण सरगुण खेल खिला, मेल मिलावा सहिज सुभा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। शब्द अनादी नाद वजा, धुर दी बाणी बाण लगा, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त ल्ए उठा, आत्म अन्तर बूझ बुझा, दूई द्वैती पर्दा दए चुकाईआ। सन्त कन्त ल्ए मिला, अमृत आत्म जाम प्या, निझर झिरना दए झिराईआ। गुरमुख गुर गुर वेखे थांउँ थाँ, दो जहानां फेरा पा, नव सत फेरा पाईआ। गुरमुख गुरसिख लेखा जाणे पिता मां, हरिजन उठाए पकड़ बांह, आलस निन्दरा दए मिटाईआ। इक्क जपाए आपणा नाँ, होए सहाई सभना थाँ, जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँघी कंदर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, लोकमात वेस धराईआ। लोकमात वेस अवल्ला, सो पुरख निरँजन आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी इक्क इकल्ला, आदि अन्त मध्ध आपणी खेल खिलाइंदा। जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, नाम पल्लू हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा हरि सुहाइंदा, सचखण्ड निवासी एकँकार। भगत भगवन्त वेख वखाइंदा, सन्त साजण मीत मुरार। गुरमुख गुर गुर रंग रंगाइंदा, शब्दी शब्द कर प्यार। गुरसिख एका नाम दृढ़ाइंदा, अन्तर आत्म कर उज्यार। रसना जेहवा आप हिलाइंदा, परा पसन्ती पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, खेलणहारा दिस ना आइंदा। जुग जुग खेल अवल्लड़ा, करता पुरख करे करतार। वसणहारा साचे धाम सच महल्लड़ा, सचखण्ड दुआरा वेखे ठांडा दरबार। जोती शब्दी नूर नुराना आपे बलड़ा, आदि जुगादी कर उज्यार। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन महल्ल अटल उच्च मुनार आपे मल्लड़ा, आप आपणी किरपा धार। लोकमात जन भगत दुआर कृपानिध गहर गुण ठाकर नित नवित खल्हड़ा, सिर हथ्थ रक्ख समरथ करतार। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। धुर दरबारी पारब्रह्म, परम पुरख वड्याईआ। जुग करता जाणे आपणा कम्म, नेह कर्मी कर्म कमाईआ। भगत भगवन्त वेखे साचे जन, हरि प्रकाश प्रकाश विच टिकाईआ। शब्दी डोर बन्ने मन, मन वासना रहिण ना पाईआ। एका राग सुणाए कन्न, छत्ती राग रहे जस गाईआ। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। लेखा जाणे काया छप्पर छन्न, साडे तिन्न हथ्थ वण्ड वंडाईआ। नाम वस्त देवे धन्न, ठग्ग चोर यार लुट कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा इक्क वखाईआ। दर दुआरा एकँकारा, पुरख अबिनाशी आप जणाइंदा। भगतां अंदर खोल्ह किवाड़ा, घर घर विच आप प्रगटाइंदा। जोत निरँजण कर उज्यारा, दिवस रैण डगमगाइंदा। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, निझर झिरना आप झिराइंदा। अनहद शब्द सुणाए सच्ची धुन्कारा, रसना जेहवा ना आप हिलाइंदा। घर मन्दिर वखाए गुरु दुआरा, घर गोबिन्द मेल मिलाइंदा। घर कमलापाती मीत मुरारा, घर साचा साकी देवे नाम अधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक्क वड्यांअदा। साचा घर काया मन्दिर, सो पुरख निरँजण आप बणाइंदा। लेखा जाणे डूंघी कंदर, अन्ध अन्धेर फोल फुलाइंदा। तोड़नहारा बजर कपाटी जंदर, शब्द खण्डा इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप जणाइंदा। साचा मन्दिर गुरमुख काया बंक, बंक दुआरी वेख वखाईआ। नाता तोड़े राउ रंक, ऊँच नीच ना कोई वड्याईआ। नाम जणाए मणीआ मंत, मन मणका आप भवाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। काया चोली चाढ़े रंग रंगत, रंग रंगीला साचा माहीआ। लेखा जाणे आदि अन्त, अन्त आदि आपणे हथ्थ रखाईआ। धन्न वड्याई साचे सन्त, जो जन आपणा बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्दिर दए सुहाईआ। साचा मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ, घर घर विच आप उपाया। अंदर वड़ पुरख समरथ, आत्म सेजा आसण लाया। नाम अगम्मी देवे वथ्थ, लिखण पढ़न विच ना आया। शब्द अनादी मारे सट्ट, नाद अनादी नाद वजाया। चौदां लोक वखाए हट्ट, घर वणजारा वणज कराया। लेखा चुक्के तीर्थ अठसठ, अमृत सरोवर ताल वहाया। दूई द्वैती मेटे फट्ट, माया ममता मोह चुकाया। घर विच घर कर प्रगट, गृह मन्दिर दए सुहाया। जोत जगाए लट लट, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच लए दृढ़ाया। घर विच घर घर महल्ला, घर घर विच सोभा पाइंदा। घर विच मेला इक्क इकल्ला, घर घर विच वेख वखाइंदा। घर विच फड़ाए साजण पल्ला, घर घर विच सोभा पाइंदा। घर विच जोती शब्दी रला, घर घर विच आपणी अलख जगाइंदा। लक्ख चुरासी भुलाए कर कर

४४६

वल छला, गुरमुख साचे मेल मिलाइंदा। वसणहारा जलां थलां, जल थल महीअल आपणा डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर वेस हरि, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण हरि हरि धार, हरि बिन अवर ना कोए जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। नव नौ चार गया हार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। धरनी धवल रोवे ज़ारो ज़ार, लक्ख चुरासी सर्ब कुरलाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव राह तक्कण परवरदिगार, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाइंदा। जोती जामा भेख अपारा, एकँकारा आप कराईआ। जोत सरूपी वसणहारा सचखण्ड दुआरा, थिर घर साचे शब्द धुन शनवाईआ। सुन्न अगम्मी पार किनारा, सुन्न समाध वेख वखाईआ। लोकमात हो उज्यारा, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। साचा मन्दिर सुहाए सच दुआरा, बंक दुआरी बेपरवाहीआ। साढे तिन्न हथ्थ वेखे इक्क मुनारा, उच्च अटल्ला दए वड्याईआ। निरगुण सरगुण अंदर कर पसारा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी धार आप वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा घर इक्क वखाईआ। साचा घर सच सिँघासण, सतिगुर पूरा आसण लाइंदा। पारब्रह्म पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता खेल खिलाइंदा। गृह गृह मन्दिर अंदर पावे रासण, मंडल मण्डप आप सुहाइंदा। भगत भगवन्त दासी दासन, जुग जुग सेव कमाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकासन, नव नौं चार पड़दा लांहयदा। गुरमुखां करे पूरी आसन, आत्म अन्तर मेल मिलाइंदा। निज गृह कर कर वासण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक्क वसाइंदा। साचा घर वसंदड़ा, सो पुरख निरँजण मीत मुरार। जुग जुग हरिजन वेख वखंदड़ा, करे कराए साची कार। सीस जगदीस हथ्थ रखंदड़ा, नाता तोड़ सर्ब संसार। स्वच्छ सरूपी रूप वखंदड़ा, जोती जोत नूर उज्यार। थान धनंतर सोभावन्त आप सुहंदड़ा, आप आपणी किरपा धार। जुग जुग विछड़े मेल मिलंदड़ा, कलिजुग पावणहारा सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बंक दुआर। बंक दुआर सुहाया, कर किरपा गुण निधान। धरनी धरत धवल दए वड्याआ, कर किरपा हरि मेहरवान। चरन सरन सरन चरन एका राह वखाया, मेल मिलावा दो जहान। माणस जन्म लेखे लाया, गुरमुख साचा कर परवान। लक्ख चुरासी फंद कटाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप पछाण। दर घर साचा जाणया, हरि गोबिन्द मीत मुरार। आदि जुगादि चले चलाए आपणे भाणया, जुगा जुगन्तर साची कार। तख्तो लाहे राजे राणयां, ग़रीबनिमाणयां जाए तार। जिस जन बख्शे चरन ध्यानया, देवे दरस अगम्म अपार। निज आत्म परमात्म देवे ब्रह्म ज्ञानया, ब्रह्म पारब्रह्म आधार। ईश जीव होए परवानया, घर मेला

कन्त भतार। शब्द अगम्मी गाए गानया, इक्क इकल्ला बोल जैकार। गुरमुख गुरसिख गृह दर करे परवानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, निरगुण निरवैर आप कराईआ। जुग जन्म दे विछड़े मेले मीत मुरारा, कोटन कोटि जन्म दा लेखा रिहा मुकाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, समुंद सागर नेत्र नीर वहाए सार ना पाए कोए शाहीआ। गुरमुख गुरसिख तेरा सति दुआरा, सति सतिवादी वेखे थांउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, जन भगतां बुझाए लग्गी बसन्तर, नाम जणाए एका मन्त्र, त्रैगुण अग्नी रहे ना राईआ। त्रैगुण नाता देवे तोड़, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। शब्द अगम्मी चाड़्हे घोड़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराइंदा। चरन प्रीती लग्गी निभाए तोड़, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाइंदा। गुरमुख गुरसिख नाता तुट्टे मढ़ी गोर, ख़ाकी ख़ाक ना मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, घर सुहञ्जणा हरि सुहाइंदा। हरि घर पाया एकँकार, गुरमुख वज्जी वधाईआ। नाता तुट्टा सर्ब संसार, सतिगुर पूरा नज़री आईआ। माणस जन्म ना जाए हार, मात गर्भ फेर ना आईआ। लक्ख चुरासी होए ख्वार, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। सचखण्ड निवासी कर प्यार, सचखण्ड दुआरे लए मिलाईआ। जोत प्रकासी विच संसार, अबिनाशी करता कर रुशनाईआ। ग़रीब निमाणे पावे सार, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। पूर्ब जन्मां रिहा विचार, जन्म कर्म आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दर जिस घर चरन छुहाए दया कमाए दीनन दए सहार, दीनां नाथ वडी वड्याईआ। पारब्रह्म पति परमेश्वर भगत भगवन्त एका धार, सन्त सतिगुर लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन वेखे साचा घर, घर मेला सहिज सुभाईआ।

४४८ ४४८

★ ५ चेत २०१८ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह कौमी फ़ारम ज़िला करनाल ★

गुरसिख रूप सच निशान, गुर गोबिन्द आप झुलाइंदा। आप प्रगटाए दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप वखाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमान, शब्द अनादी नाद सुणाइंदा। गुरसिख गुर गुर मेल मिलाए आण, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। धन्न गुरसिख जिस आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, नेत्र लोचण नैण खुल्हाइंदा। सो गुरसिख चतुर सुघड़ सुजान, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। अमृत सरोवर सच नहान, सर अमृत सो वड्यांअदा। कोटन कोटि गुर पुरख अबिनाश राह तकाण, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। आदि जुगादी इक्क भगवान, जुग जुग आपणा खेल वखाइंदा। लक्ख चुरासी देवणहारा जीआ दान,

जीवन जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। नव खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखणहारा मार ध्यान, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती नूर नूर महान, आदि निरँजण वड मेहरवान, सो पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। हरि पुरख निरँजण साचा काहन, एकँकारा वड बलवान, आदि जुगादि वेस वटाइंदा। श्री भगवान देवणहारा धुर फ़रमान, अबिनाशी करता नौजवान, पारब्रह्म रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। लोकमात होए प्रधान, हरिजन साचे लए पछाण, ब्रह्म पारब्रह्म देवणहारा माण, ईश जीव मेल मिलाइंदा। गुरसिख वखाए सच निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका हरि, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। गुरसिख निशाना सचखण्ड, सो पुरख निरँजण आप वखाइंदा। वेखणहारा कोटन कोटि ब्रह्मण्ड, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। थिर घर वासी पाए वण्ड, आप आपणी वण्ड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस वटाइंदा, पारब्रह्म करतार। सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंडाइंदा, पुरख अगम्मा हो त्यार। ब्रह्मा विष्न शिव सेव लगाइंदा, रवि ससि दए आधार। मंडल मण्डप आप उपजाइंदा, प्रकाश प्रकाश कर प्यार। धरत धवल आप सुहाइंदा, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

४४६ लेखा जाणे सची सरकार। सच्ची सरकार शाह पातशाह, सो पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। तख्त निवासी देवणहारा सच सलाह, धुर फ़रमाना इक्क जणाइंदा। जुगा जुगन्तर बण मलाह, शब्दी गुर रूप वटाइंदा। निरगुण सरगुण खेल खिला, पंज तत चोला आप हंढाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादि नाद वजा, धुन अगम्मी आप सुणाइंदा। बोध अगाधा भेव खुल्ला, आपणा पर्दा लांहयदा। ब्रह्मा वेता आप उठा, चारे वेद समझाइंदा। चारे जुग झोली पा, चारे खाणी रंग रंगाइंदा। चारे बाणी दए समझा, चार वरनां संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना इक्क वखाइंदा। सच निशाना हरि भगवन्त, आदि जुगादि रखाइंदा। लक्ख चुरासी वेखे जीव जंत, जाग्रत जोत आप जगाइंदा। हरिजन उठाए साचा सन्त, सति सतिवादी मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना हरि भगवाना, दो जहानां आप रखाइंदा। सच निशान उठाइंदा, आदि जुगादी कार। भगत भगवन्त वेख वखाइंदा, सन्त साजण लए उभार। गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा, गुरसिख साचे कर प्यार। एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा, निष्अक्खर वक्खर कर त्यार। गुर गुर आपणा रूप वटाइंदा, ब्रह्म पारब्रह्म पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। गुर अवतारा खेल अपारा, पुरख इकल्ला आप कराईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, सचखण्ड निवासी हो त्यारा, निरगुण सरगुण धार आप चलाईआ। जीवां जंतां दए सहारा, एका नाम वणज वपारा, लक्ख चुरासी आप कराईआ। करे खेल ४४६

करनेहारा, करता पुरख वडी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर लेखा जाणे तेई अवतारा, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। अठ्ठ दस्स खेल न्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बन्धन आपणे हथ्थ रखाईआ। एका बन्धन हरि भगवान, आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग जुग झुलाए मात निशान, सति सतिवादी आप उठाइंदा। लेखा जाणे सीता राम, कान्हा कृष्ना वेख वखाइंदा। ईसा मूसा सच पैग़ाम, कलमा अमाम आप सुणाइंदा। मुकामे हक हक पछाण, देवणहारा एका दान, साची वस्त झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे सोभा पाइंदा। सच निशाना परवरदिगार, बेऐब आपणे हथ्थ रखाईआ। हक हकीकत कर विचार, ख़लक ख़ालक वेख वखाईआ। एका कलमा कर उज्यार, कायनात आप पढ़ाईआ। मुर्शद मुरीद दए दीदार, जल्वा बातन बेपरवाहीआ। आदि जुगादी सांझा यार, नूरो नूर नूर इलाहीआ। ना कोई कातब लिखे लिखार, मकतब विद्या ना कोए पढ़ाईआ। दरगाह साची वसे धाम न्यार, चौदां तबक भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना एका एक रखाईआ। सच निशाना नाम सति, निरगुण नानक हथ्थ फड़ाया। पारब्रह्म ब्रह्म देवे मति, आत्म तत्त इक्क जणाया। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत, सांतक सति सति वरताया। साचा मार्ग एका दस्स, वरन बरन मेट मिटाया। ऊँच नीच एका दर रहे हस्स, दर दरवाज़ा इक्क खुलाया। गुरसिखां हिरदे अंदर वस, आपणा निशान आप वखाया। जूठ झूठ मेट रैण अन्धेरी मस, साचा चन्द आप चढ़ाया। चार कुण्ट पैंडा मुकाए नस्स नस्स, दिवस रैण सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना इक्क दृढ़ाया। सच निशाना हरि का नाउँ, हरि सतिगुर आप समझाइंदा। होए सहाई सभनी थाउँ, दो जहानां वेख वखाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस उडाइंदा। एथे उथे देवे ठंडी छाउँ, जिस जन सिर छत्र आप झुलाइंदा। लेखा जाणे पिता माउँ, गुरसिख बाल अञ्याणे गोद बिठाइंदा। जुग जुग करे सच न्याउँ, साचा सालस आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना आप समझाइंदा। सच निशाना सतिगुर धार, लोकमात वज्जे वधाईआ। सति निशाना गुर चरन प्यार, गुर गुर मीता गुर गुर मेला सहिज सुभाईआ। सच निशाना ठांडे दरबार, सचखण्ड निवासी आप झुलाईआ। सच निशाना एकँकार, आप आपणे हथ्थ वखाईआ। उप्पर लेख लिख्या निराकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशान इक्क प्रगटाईआ। सच निशान प्रगटाया, कर किरपा गुण निधान। आपणा मन्त्र नाम जणाया, हरिजन साचे कर पहचान। लिखण पढ़न विच ना आया, ना कोई जाणे जीव जहान। रूप रंग रेख ना कोए वखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान।

श्री भगवान खेल खिलाया, आदि जुगादी कार। एका जोती जोत जगाया, दस दस मेला कन्त भतार। पुरख अबिनाशी वेस वटाया, निरगुण सरगुण पावे सार। चेला सुत नाउँ धराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। हरि करता खेल खिलाइंदा, आदि जुगादी पुरख अगम्म। सुत दुलारा आप उपाइंदा, देवे नाम वड्याई धन्न। सच निशाना हथ्थ फड़ाइंदा, आप प्रगटाया गुजरी चन्न। दो जहानां वेख वखाइंदा, लक्ख चुरासी बेड़ा देवे बन्नू। पुरख अकाल इक्क मनाइंदा, एका राग सुणाए कन्न। फ़तहि डंका इक्क वजाइंदा, जो घड़या देवे भन्न। सृष्ट सबाई राह चलाइंदा, चार वरनां देवे माण। ऊँचां नीचां राउ रंकां एका धाम बहाइंदा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे दो जहान। सच निशाना गोबिन्द धार, पुरख अकाल आप उपाईआ। जोती नूर कर उज्यार, नूर नुराना दए समझाईआ। असुते प्रकाश एकँकार, लालन लाल वड वड्याईआ। कंचन धार सचखण्ड दुआर, सूहा थिर घर बैठा आसण लाईआ। चिटी धार पसर पसार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। पीला बस्त्र लोकमात तन करे शंगार, गोबिन्द सूरा हो उज्यार, खड़ग खण्डा इक्क चमकाईआ। नीला बस्त्र पहने आपणी वार, उच्ची कूक करे पुकार, खुलड़े केस सीस रिहा वखाईआ। काला सूसा कलिजुग रंग देवे पाड़, चारों कुण्ट अगम्मी धाड़, शब्द खण्डा इक्क चमकाईआ। सति निशाना करे त्यार, श्री भगवान पावे सार, धुर फ़रमाना इक्क जणाईआ। राह तक्के मीत मुरार, सत्थर सुता पैर पसार, सूलां सेज आप हंढाईआ। सच सनेहुड़ा देवे कर प्यार, तेरा मेरा इक्क आधार, दो जहानां भुल ना जाईआ। पुरख अबिनाशी होया ख़बरदार, गोबिन्द मिल्या साचा यार, पिता पूत गल लगाईआ। तेरा कर्ज़ा दए उतार, एका ढईया चुक्के भार, तेरी नईया लाए पार, खेवट खेटा बणे आप शहिनशाहीआ। तेरा नाउँ करे उज्यार, तेरा शब्द डंक जैकार, चार वरन चार कुण्ट दए सुणाईआ। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, सम्बल नगरी वसे धाम न्यार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सच निशाना हथ्थ फड़े सच्ची सरकार, राज राजानां मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सच निशान उठावना, गुरमुख रूप अपार। साडे तिन्न हथ्थ आप झुलावना, पुरख अबिनाशी हो त्यार। ब्रह्मा विष्न शिव पन्ध मुकावना, जुग चौकड़ी कर ख्वार। क्रोड़ तेतीसा रहिण ना पावणा, सुरपति मारे डाहडी मार। जोती जामा भेख वटावना, लेखा जाणे गुर अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एकँकार। एकँकार खेल अपारा, भेव कोई ना पाइंदा। सो पुरख निरँजण हो त्यारा लोकमात वेस वटाइंदा। हरि पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबारा, आदि निरँजण जोत जगाइंदा। श्री भगवान बोल जैकारा, अबिनाशी

करता नाअरा लाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म दए हलारा, ब्रह्म वेता मुख शरमाइंदा। विष्नूं रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। शंकर खुलड़े केस तन बिभूत एका मंगे चरन धूढ़ ख़ाक सारा, हथ्थ त्रिशूल सुटाइंदा। कलिजुग अन्तिम राह तक्के निहकलंक नरायण नर अवतारा, नर नरायण आपणा रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप खिलाइंदा। साची खेल खिलावना, हरि सतिगुर दीन दयाल। गुरमुख निशाना इक्क झुलावना, हरिजन वेखे साचे लाल। मात वड्याई आपणे हथ्थ रखावना, शब्द गुर बण दलाल। काया मन्दिर अंदर मेल मिलावना, घर घर विच वखाए सच्ची धर्मसाल। अनहद डंका आप वजावणा, नाता तोड़ पंज शैतान। पंचम सख़ीआं मिल मिल मंगल गावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए सच निशान। सच निशान बणाया, निरगुण आपणी किरपा धार। आदि जुगादी आपणे हथ्थ रखाया, जुगा जुगन्तर साची कार। गुर अवतार सेवा लाया, जुग चौकड़ी खेल न्यार। नौं नौं चार पन्ध मुकाया, प्रगट होए आप करतार। एका कौल लए निभाया, भुल ना जाए भुल्लणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सतिगुर पावे सार। सन्त अन्त अनन्त, भगवन्त रहे जस गाईआ। सर्ब जीआं दा एका कन्त, आदि पुरख वडी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर देवे आपणा नाउँ मंत, सति मन्त्र करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच भूमका आप सुहाईआ। सच भूमका सोहे अस्थान, धरनी धरत धवल वड्यांअदा। जिस दर चरन कँवल धरे भगवान, सो दर सोभा पाइंदा। जिस जन देवे नाम निधान, सो जन अन्ध अन्धेर गवाइंदा। जिस जन अमृत आत्म देवे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाइंदा। जिस जन देवे धुन अनादी एका गान, आत्मक सुन आप खुल्हाइंदा। जिस जन आपणी कराए आप पहचान, सो जन मंगण किते ना जाइंदा। जिस जन आपणे दर करे परवान, सो जन दो जहानां सोभा पाइंदा। जिस जन वखाए सच निशान, सो जन ओट ना कोई तकाइंदा। गुरमुख गुरसिख चतुर सुजान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाइंदा। रंग रंगाए हरि रंगीला, रंग रतड़ा बेपरवाहीआ। पुरख अगम्म अबिनाशी बीठला, प्रेम भाओ भगती आपणे हथ्थ टिकाईआ। जुग जुग चलाए रीतला, सृष्ट सबाई वेखे थांउँ थाँईंआ। वखाए धाम इक्क अनडीठड़ा, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भूमिका दए वड्याईआ। साची भूमिका सर अमृत, योजन चार चार वड्याईआ। आप सुहाए आपणी धरत, धरनी दोए दोए बैठी सीस झुकाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, अमिउँ रस आपणा आप चुआईआ। जन भगतां मेटे जन्म जन्म दी हरस, निरगुण सरगुण दरस दिखाईआ। लेखा जाणे अर्श फर्श, काया कुरा फोल फुलाईआ। जिस जन

४५२

उप्पर करे तरस, आपणा निशाना दए वखाईआ। साध सन्त कल रहे तड़प, प्रभ दरसन नेत्र नैण उठाईआ। त्रैगुण माया बुझे ना तृष्ना अंदरे अंदर कर गए हड़प, सांतक सति ना कोए वरताईआ। गुरु गुर बण बण बैठे ना कोई लिख्त ना कोई पढ़त, सच संदेश ना कोए सुणाईआ। जीवां जंतां कोलों लैंदे रहे आड़्हत, जूठे झूठे वट्टे तोल तुलाईआ। अन्तिम वेखे जिस घड़या घाड़त, घड़न भन्नणहार इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धरनी आप सुहाईआ। धरनी मौली मौलया जग, हरि सतिगुर चरन छुहाया। जुग जुग दी लग्गी बुझी अग्ग, निरगुण नेत्र दरसन पाया। होई सेज सुहञ्जणी प्रभ धरया पग, घर मन्दिर एका नज़री आया। गुरमुख लक्ख चुरासी विचों कढ्ढ, आप आपणा मेल मिलाया। सच निशाना आपणी हत्थीं गड्ड, गुरमुख साची भेंट चढ़ाया। शाह सुल्तानां अन्तिम सुटे डूँघी खड्ड, ना सके कोए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना आप उपाया। सच निशाना गुरसिख भेंट, जगत जगदीस दए वड्याईआ। सत्तां दीपां बणे खेवट खेट, जगत मलाही सेव कमाईआ। लेखा जाणे मात पित बेट, पिता पूत करे रुशनाईआ। गोबिन्द सूरा साचा हेत, हाज़र हज़ूरा वेख वखाईआ। वेखणहारा नेतन नेत, नित नवित आपणा रूप प्रगटाईआ। कलिजुग अन्तिम जोत प्रगटाए दया कमाए वीह सौ अठारां बिक्रमी पहली चेत, चेतन्न चेत दए कराईआ। नौं खण्ड पृथमी वेखे खेत, सति सतिवादी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशान इक्क दरसाईआ। सच निशान बणाया, सति सतिवादी साची धार। सृष्ट सबाई दए वखाया, इक्क इकल्ला हो उज्यार। राज राजानां शाह सुल्तानां एका हुक्म दए सुणाया, साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार। सीस जगदीस ताज सुहाया, सो पुरख निरँजण खेल अपार। हँ ब्रह्म लए उठाया, शब्द हलूणा एका मार। सोया कोए रहिण ना पाया, साध सन्त करे बेदार। मुला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर लए जगाया, उच्ची कूक करे पुकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना आप संभाल। सच निशाना गुर गोबिन्द रंग, गुरसिख रती रत रंगाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। नव नौं वजाए मृदंग, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाईआ। हत्थ फड़ चण्ड प्रचण्ड, नाम कटार इक्क चमकाईआ। लक्ख चुरासी करे रंड, देवे दंड बेपरवाहीआ। दूई द्वैती झूठी ढाहे कंध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धरती करे जोत रुशनाईआ। साची धरती झुलणा निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। गुरमुख तेरा खेल महान, भेव कोए ना पाइंदा। आपणी भेंटा लै लै बाल अंञाण, आपणी हत्थीं सेव कमाइंदा। चवी हत्थ कर परवान, ज़िमीं अस्मान आप हिलाइंदा। करे खेल वड मेहरवान, महिबान बीदो आप खिलाइंदा। आलम उल्मा ना करे

कोई पहचान, वेद कतेब ना कोई समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी खेल खिलाइंदा। सति सतिवादी खेल अवल्ला, आलमगीर आप कराईआ। लेखा जाणे राणी अल्ला, मीआं आपणा रूप वटाईआ। भेव खुल्हाए साढे तिन्न हथ्थ सीआं, बिस्मिल आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क निशान दए वखाईआ। इक्क निशाना चार वरन पुरख अकाल आप जणाइंदा। इक्क निशाना खोल्हे हरन फरन, नेत्र ज्ञान आप खुल्हाइंदा। इक्क निशाना चुकाए मरन डरन, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। इक्क निशाना तरनी तरन, दो जहानां पार कराइंदा। इक्क निशाना जरनी जरन, साचा भाणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम सच निशाना आप बणाइंदा। कलिजुग अन्तिम मिटे निशाना, निशान निशाना दए मिटाईआ। कलिजुग अन्तिम मिटे पंज शैताना, जगत शैताना रहिण ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम नाता तुट्टे जीव जहाना, जीव जहाना पन्ध मुकाईआ। कलिजुग अन्तिम झूठ विकार होए वैराना, वैहिन्दी धार आप वहाईआ। कलिजुग अन्तिम तख्तों लाहे राजा राणा, शाह सुल्ताना ख़ाक मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम शब्द अगम्मी गाए धुर फ़रमाना, चार वरनां करे पढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए जोद्धा सूरबीर बलवाना, मर्द मरदाना आपणा नाउँ धराईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंका पहरे बाणा, मात पित ना कोई बणाईआ। कलिजुग अन्तिम एका डंका वजाए श्री भगवाना, सृष्ट सबाई रिहा उठाईआ। कलिजुग अन्तिम एका बन्न्हे सच्चा गाना, गुरमुख विरला सगन मनाईआ। कलिजुग अन्तिम हरिजन वखाए पद निरबाणा, निर्भय आपणी दया कमाईआ। कलिजुग अन्तिम एका तख्त सुहाए शाह सुल्ताना, शाह पातशाह आसण लाईआ। कलिजुग अन्तिम एका देवे धुर फ़रमाना, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलिजुग अन्तिम लेखा जाणे गोपी कान्हा, मंडल मण्डप आपणी खेल खिलाईआ। लेखा जाणे सीता रामा, राम सीता सुरत शब्द वज्जे वधाईआ। कलिजुग हँकारी तोड़े अभिमाणा, अभिमाण रावण रहिण ना पाईआ। शब्द खण्डा खिच्च म्याना, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाईआ। रसना चिल्ला तीर कमाना, इक्क निशाना आपे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना इक्क वखाईआ। सच निशान वेखणा, गुर सतिगुर आप वखाए। कलिजुग मिटदी जाए रेखना, आप आपणा रूप वटाए। शब्द अगम्मी झुल्ले देस परदेसना, पुरख अबिनाशी आप झुलाए। जूठा झूठा रहिणा वेस ना, कूड़ कुड़यारा दए खपाए। पूजा चुक्के गणपति गणेशना, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए मनाए। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार चले कोई पेश ना, अल्ला राणी नेत्र नैण नीर वहाए। पीर दस्तगीर खड़े दरवेशना, गल काली कफ़नी पाए। आदि शक्ति खुले केशना, आप आपणा हाल सुणाए। चतुर्भुज रूप किसे ना वेखना, रूप अनूपा बैठा मुख छुपाए। प्रगट

होए दस दस्मेशना, शब्द शब्दी डंका इक्क वजाए। पुरख अकाल गुरमुख विरले वेखना, जिस जन आपणा पड़दा लए उठाए। हरि का रूप मुच्छ दाढ़ी ना केसना, ना कोई मूंड मुंडाए। जोती जामा धारे भेखना, निहकलंका नाउँ रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी आदि जुगादी इक्क निशाना हथ्थ उठाए। मात पित जगत नाता, रक्त बूंद खेल खिलाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को दाता, लक्ख चुरासी आपणी गोद सुहाइंदा। वेखणहारा इक्क इकांता, नव नव आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साची वस्त झोली पाइंदा। पिता पूत जगत प्यार, दिवस रैण रहे दुखदाईआ। कवण वेला वक्त घर आए दुलार, आत्मक सांतक सति कराईआ। पंज महीने दिवस चार, जगत विछोड़ा रिहा समझाईआ। अन्तिम मेला करे आप करतार, विछड़िआं लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त जगत झोली पाईआ।

हरिसंगत वड्याई धन्न, हरि सतिगुर दरसन पाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, हरिजन बह बह मंगल गाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, काया मन्दिर अंदर डूँघी कंदर आत्म अन्तर इक्क ध्यान लगाया। हरिसंगत वड्याई धन्न, जगत बुझे लग्गी बसन्तर, अग्नी तत्त रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत होए सहाया। हरिसंगत सतिगुर रूप, सति पुरख निरँजण बणत बणाईआ। हरिसंगत सति सरूप, सति सतिवादी विच समाईआ। हरिसंगत नाता तुट्टे जूठ झूठ, सच सुच्च मिले वड्याईआ। हरिसंगत उप्पर जाए तुठ्ठ, नाम अतुट झोली पाईआ। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। आवण जावण लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, जो जन आए नेत्र लोचण दरसन पाईआ। निर्मल मिलाए जोती जोत, अन्त जोती जोत मिलाईआ। सचखण्ड दुआरा वखाए किला कोट, जिस दुआरे हरिसंगत आसण लाईआ। कलिजुग अन्तिम आप उठाए आहलणिउँ डिगे बोट, कर किरपा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेखे थाउँ थाँईआ। हरिसंगत तेरा सच मनारा, पुरख अबिनाशी आप बणाया। गुर गोबिन्द तेरा मीत मुरारा, विछड़ कदे ना जाया। नानक निरगुण दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाया। पुरख अकाल बण वणजारा, साचा हट्ट इक्क खुल्हाया। ब्रह्म पारब्रह्म करे प्यारा, दर घर साचे मेला गुरु गुर चेला एका रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दर आए लेखे लाया। हरिसंगत तेरा सहिज गुण, गुणवन्ता वेख वखाइंदा। तेरी पुकार तेरा लए सुण, सुणनहार आप अख्वाइंदा। लक्ख चुरासी विचों चुण, गुरमुख विरले अंग लगाइंदा। हरि का भेव

जाणे कौण, वेद कतेब सर्ब जस गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत साचा माण रखाइंदा। हरिसंगत तेरा अन्त सुहाउणा, जमदूत नेड़ ना आईआ। राए धर्म मुख शरमौणा, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ सीस झुकाउणा, जिस मार्ग गुरसिख जाईआ। थिर घर साचे सोभा पाउणा, जिस मिल्या गुर गोबिन्द साचा माहीआ। नानक गोद आप सवाउणा, सोया पूत ना कोए उठाईआ। जन्म जन्म दा गेड़ चुकाउणा, मात गर्भ दस दस मास ना अग्न तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे सति वड्याईआ। हरिसंगत वेखे सच निशान, गुर सतिगुर दया कमा। लेखे लाए बिरध बाल जवान, जो जन सरनाई गए आ। अन्तिम देवे शब्द बबाण, आप आपणी सेव कमा। अन्त कन्त भगवन्त साध संगत होए सहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे धाम दए बहा। साचा धाम सुहाया, हरि सतिगुर सज्जण शाह। हरिसंगत मेल मिलाया, निरगुण सरगुण बण मलाह। चेला गुर एका रंग रंगाया, गुर चेला पकड़े बांह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे एका वर, निथाव्याँ बख्शे साचा थाँ। हँकार विकार जाए विनास, जिस जन सतिगुर दया कमाईआ। निर्मल जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। हिरदे रक्ख रक्ख आपणा वास, आसा तृष्ना दए बुझाईआ। रसन जपाए आपणा नाम स्वास, स्वास स्वासां विच समाईआ। पूरी करे गुरसिख आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत हँकार दए मिटाईआ। जगत हँकार तुट्टे गढ़, शब्द खण्डा आप वखाइंदा। अंदरे अंदर ल्ए फड़, फड़णहारा दिस ना आइंदा। गुरसिख तेरी काया पौड़े जाए चढ़, आप आपणा बल धराइंदा। दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। करे प्रकाश बहत्तर नड़, सांतक सति आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत हँकार आप गंवाइंदा। जगत हँकार जाए तुट्ट, माण अभिमाण रहिण ना पाईआ। गुरसिख सुहाए तेरी रुत्त, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, अग्नी तत्त दए मिटाईआ। करे प्यार जन साचे सुत, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विकार दए खपाईआ। जगत हँकार विकार विनासे, दूई द्वैती मेट मिटाइंदा। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड विच प्रभासे, डूँघी कंदर फोल फुलाइंदा। गुरसिख माणस जन्म ना जाए विच हासे, अमोलक हीरा रतन फेर हथ्थ ना आइंदा। लक्ख चुरासी गल लटके फासे, बिन सतिगुर पूरे ना कोए कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम रक्खे तेरे काया कासे, तेरा हँकार आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अणडिठ आपणी खेल खिलाइंदा।

नित नवित देवे दरस दीदार, पर्दा ओहला आप चुकाइंदा। लेखा जाणे अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर, भेव अभेद आप खुलाइंदा। गुरसिखां करे सद प्यार, सतिगुर पूरा सो अख्वाइंदा। रातीं सुत्तयां लए उठाल, आलस निन्दरा आप मिटाइंदा। दर दरवेश बण कंगाल, गुरसिख दुआरे इक्क प्रीती मंगण आइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, सुरत सुवाणी वेख वखाइंदा। गुरसिख तेरे नेड़ ना आए काल महाकाल, दीन दयाल आपणा बन्धन पाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, शब्द तन्द इक्क वखाइंदा। काया मन्दिर अंदर बणाए सच्ची धर्मसाल, घर घर विच मेल मिलाइंदा। गुरसिखां गुर सतिगुर अंदर वड़ वड़ पुच्छे हाल, औदां जांदा दिस ना आइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला करे प्रितपाल, प्रितपालक आपणी सेव कमाइंदा। गुरसिखां पिच्छे गोबिन्द घालण गया घाल, बंस सरबंस सर्ब मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख आपणे रंग रंगाइंदा। गुरमुख दरस दीदार एका मंगदा, गुर देवणहार दातार। गुरु ग़रीब निवाज़ ग़रीबां घर औदां कदे ना संगदा, शाह सुल्तानां करे ख्वार। आप आपणा लेखा जाणे भुक्ख नंग दा, भुक्ख्यां नंग्गयां बेड़ा लाए पार। करे खेल सूरे सरबंग दा, सो सतिगुर मीत मुरार। गुरसिख तेरे नौं दुआर नवें आपे लँघणा, सुखमन टेढी बंक करे पार। ईड़ा पिंगल ना अग्गे खंघदा, जिस किरपा करे आप निरँकार। अमृत मेघ बरसे झिरना झिरे आस उमंग दा, निझर वेखे ठंडा ठार। नाद वज्जे अनहद शब्द मृदंग दा, ना कोई तार ना सतार। आत्म सेजा बह बह गुरसिख तेरा रंग माणे तेरे पलँघ दा, तेरा तेरा करे दीदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे परमानंद दा, निजानंद इक्क विहार। गुरसिख तेरी दरस ओट, सतिगुर पूरा पूर कराईआ। विचों कढ्ढे वासना खोट, काया कपट रहिण ना पाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा दरस, जगत तृष्ना मेटे हरस, हवस होर ना कोए वखाईआ।

★ ६ चेत २०१८ बिक्रमी निरँजण सिँघ दे गृह लुधियाणा ★

पारब्रह्म अबिनाशी करता बेअन्त बेपरवाह, आदि अन्त जुगा जुगन्त जाग्रत जोत जोत रुशनाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह, वेखणहारा दो जहां, ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं जेरज अंडां वेख वखाईआ। सचखण्ड निवासी इक्क जपाए आपणा नाउँ, वसणहारा सभनी थाँ, जल थल महीअल जंगल जूह उजाड़ पहाड उच्चे टिल्ले पर्बत डूँग्घी कंदर आसण लाईआ। जुगा जुगन्तर वेस वटा, निरगुण सरगुण मेले सहिज सुभा, आत्म अन्तर बूझ बुझा, घर घर विच मेल मिलाईआ। भगत

४५७

भगवन्त लेखा दए चुका, निर्मल जोती दीप टिका, शब्द अनादी धुन वजा, अनहद एका राग सुणाईआ। अन्ध अन्धेरा दए गवा, अमृत आत्म जाम प्या, सति सरूपी रिहा समा, विस्मादी विस्माद आपणा खेल खिलाईआ। सन्त साजण लए उठा, शब्द अगम्मी नाद वजा, ब्रह्म ब्रह्मादि खोज खुजा, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। गुरमुख रंग लए रंगा, रंगणहार इक्क शहिनशाह, तख्त निवासी साचे तख्त बैठा आसण ला, निरवैर पुरख अकाल शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख वेखे नैण खुल्हा, आप आपणी दईया कमा, दिवस रैण एका खेल खिला, आठ पहर इक्क रंग रंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा ला, गुर अवतार रूप धरा, भगत भगवन्त साध सन्त लेखा आपणे हथ्थ रखा, गुरमुख गुरसिख बेड़ा लए बन्न्हा, जुग करता खेवट खेट साचा माहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर ल्या हंढा, वेद पुराण शास्त्र सिमरत हरि जस गा, गीता ज्ञान इक्क वखा, अञ्जील कुराना पर्दा लाह, तीस बतीसा आप समझाईआ। खाणी बाणी मार्ग पा, नव खण्ड पृथ्मी वेखे थाउँ थाँ, सत्तां दीपां वण्ड वण्डा, चार कुण्ट दहि दिशा फेरा पाईआ। चौदां लोक रूप धरा, चौदां तबकां नूर रुशना, ज़िमीं अस्माना वेखणहारा आदि जुगादि करे सच न्याँ, जुगा जुगन्तर आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अगम्म अगम्मड़ा अलख अगोचर अलख अलखना आपणी खेल खिलाईआ। साची खेल खिलावणहारा, इक्क इकल्ला एकँकारा, दो जहानां पावे सारा, त्रैभवन वडी वड्याईआ। गुर अवतार हो उज्यारा, नाम शब्द बोल जैकारा, लक्ख चुरासी दए सहारा, जीवां जंतां आप समझाईआ। नाम सति सति भण्डारा, आप वरताए वरतावणहारा, ऊँचां नीचां राउ रंकां करे इक्क प्यारा, शाह हकीरां एका रंग रंगाईआ। एका दिसे धाम न्यारा, जोती नूर हरि निरँकारा, वेद कतेबां वसे बाहरा, भेव अभेदा आपणा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, रूप अनूप शाहो भूप, सति सरूप सति सतिवादी आपणा आप प्रगटाईआ। सति सरूप हरि समाया, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। थिर घर बैठा चरन टिकाया, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। सच सिँघासण सोभा पाया, पुरख अबिनाशी सच्चा शहिनशाहीआ। धुर फ़रमाना हुक्म जणाया, हुक्मी हुक्म खेल खिलाईआ। शब्द दरबान दर आप रखाया, पूत सपूता आपे जाईआ। आपणा नूर कर रुशनाया, सच ज़हूर इक्क प्रगटाईआ। बेऐब परवरदिगार नाउँ ख़ुदाया, इलाही नूर इक्क धराईआ। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्लड़ा आप कराया, इक्क इकल्लड़ा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर वेस धर, निरगुण सरगुण खेल कर, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण खेल करतारा, करता पुरख आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबारा, हरि पुरख निरँजण आप आपणी कल रखाइंदा। एकँकारा कर

४५८

पसारा, आदि निरँजण जोत उज्यारा, श्री भगवान सांझा यारा, अबिनाशी करता पावे सारा, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम हरि भगवान, आपणी रचना आप रचाईआ। जोती जामा खेल महान, लिखण पढ़न विच ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। ब्रह्म वेता बाल नादान, रो रो नेत्र नैणां नीर वहाईआ। विष्नूं मंगे एका दान, पुरख अबिनाशी अग्गे झोली डाहीआ। शंकर तुट्टे अन्तिम माण, पुरख अबिनाशी आपणी खेल खिलाईआ। प्रगट होवे जोद्धा सूर बली बलवान, नाम खण्डा तेज़ प्रचण्डा, ब्रह्मण्डां खण्डां आप चमकाईआ। सति उठाए इक्क निशान, लेखा जाणे दो जहान, दीन दुनी आपणी खेल खिलाईआ। ख़ालक ख़लक वेखे आण, एका नाअरा धुर फ़रमान, हक हकीकत ला शरीक्त एका कलमा आप पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा बल आप धराईआ। आपणा बल आपे धर, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख खेल खिलाईआ। राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान लए फड़, बचया कोए रहिण ना पाईआ। किला कोट तोड़ हँकारी गढ़, हउमे हंगता दए मिटाईआ। हरिजन जन हरि हरि आप फड़ाए आपणा लड़, एका पल्लू नाम वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा काया मन्दिर अंदर डूँघी कंदर महल्ल अटल उच्च मुनार आप वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द गुर गुर शब्द निरगुण धार निरगुण प्यार निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ।

★ ६ चेत २०१८ बिक्रमी निरँजण सिँघ दे गृह लुधियाणा ★

निरगुण निराकारा खेल अपारा, निरवैर पुरख आप खिलाइंदा। अनुभव प्रकाश हो उज्यारा, करे खेल अगम्म अपारा, आप आपणी कल धराइंदा। जोती नूर नूर उज्यारा, शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, धुर दरगाही आप सुणाइंदा। सचखण्ड सुहाए इक्क दुआरा, थिर घर खोल्ले आप किवाड़ा, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन आसण लाइंदा। लेखा जाणे सुन अगम्मी धूंआँधारा, वसणहारा उच्च महल्ल अटल मुनारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। शब्दी शब्द कर पसारा, मंडल मण्डप दए सहारा, रवि ससि सूरज चन्न कर रुशनाईआ। धरत धवल इक्क अखाड़ा, वेखे वखाए वेखणहारा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, इक्क इकल्ला वेख वखाइंदा। इक्क

इकल्ला श्री भगवान वेखणहारा सच निशान, आदि जुगादी दो जहान, दोए दोए रूप आप धराइंदा। निरगुण सरगुण हो मेहरवान, देवणहारा साचा दान, वस्त अमोलक नाम अनमुल्ल झोली पाइंदा। शब्द जणाए धुर फरमान, बोध अगाधी एका गाण, भेव अभेव आप खुलाइंदा। सति उठाए इक्क निशान, लेखा जाणे जीव जहान, लक्ख चुरासी जीव जंत घट घट अन्तर आप आपणा रूप धराइंदा। एका मन्त्र नाम शब्द धुन्कान, एका होए जाणी जाण, जानणहारा भेव ना आइंदा। जुगा जुगन्तर खेल महान, निरगुण सरगुण हो प्रधान, लोकमात आप खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आदि अन्त श्री भगवन्त, आपणा वेस आप वटाइंदा। आदि वेस निराकार, असुते प्रकाश कराईआ। सो पुरख निरँजण अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी धार चलाईआ। हरि पुरख निरँजण निराकार, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। एकँकारा कर पसार, आप आपणा बल धराईआ। आदि निरँजण हो उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। श्री भगवान वसणहारा ठांडे दरबार, श्री भगवान सच सिँघासण आसण सोभा पाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत सदा सद रहे ख़बरदार, आलस निन्दरा विच कदे ना आईआ। लक्ख चुरासी कर पसार, विष्न ब्रह्मा शिव दए आधार, त्रैगुण मीता इक्क अतीता, त्रै त्रै बन्धन एका पाईआ। लेखा जाणे हस्त कीटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, साची धारा आपणे हथ्थ रखाईआ। साची धार हरि समरथ, आदि जुगादि रखाइंदा। जुग करता चलाए जुग जुग रथ, जगत जीव सेव कमाइंदा। शब्द जणाई महिमा अकथ, बोध अगाध आप दृढ़ाइंदा। जन भगतां देवे एका वथ, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। साचा मार्ग हरि हरि दस्स, साचा राह आप वखाइंदा। हिरदे अंदर हरी हरि वस, आप आपणा मेल मिलाइंदा। निरगुण जोत जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। मेल मिलावा शाहो साबास, शाह पातशाह आपणे रंग रंगाइंदा। लेखा चुक्के पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलाइंदा। जुग जुग खेल हरि निरँकारा, आदि जुगादि कराइंदा। कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा, जोती जामा भेख वटाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलारा, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। एका हुक्म नाम जैकारा, शब्द धुन्कारा आप अलाइंदा। वसणहारा धुर दरबारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम आपणा रूप वटाइंदा। रूप वटाए पारब्रह्म, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। करता पुरख करे कराए आपणा कम्म, कुदरत कादर वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी बेड़ा रिहा बन्न्, घड़न भन्नणहार सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख विरले उठाए साचे जन, जाग्रत जोत कर रुशनाईआ। एका राग सुणाए कन्न, अनहद शब्द सच्ची शनवाईआ। पंचम पंच देवे डन्न, सतिगुर

पूरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग अन्तिम लेख निरँकारा, आपणे हथ्थ रखाइंदा। लक्ख चुरासी कर पसारा, घड़े भन्ने भन्नणहारा, घड़न भन्नणहार आपणी धार चलाइंदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग लेखा जाणे आर पार किनारा, मँझधारा आपणी खेल खिलाइंदा। लहिणा देणा चुकाए ज़िमीं अस्मानां दो जहानां लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर विचारा, गगन गगनंतर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। आपणा बन्धन हरि हरि पा, विष्न ब्रह्मा शिव रिहा जणाईआ। करोड़ तेतीसा आप उठा, एका हुक्म दए वरताईआ। लोकमात फेरा पा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। नाम डंका इक्क वजा, चारों कुण्ट दए हिलाईआ। राउ रंक भेव ना रा, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। दुआर बंका दए सुहा, गुरमुख विरले मेल मिलाईआ। एका अंका एका अक्खर दए पढ़ा, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। हँ ब्रह्म मेल मिलाए साचे थाँ, काया मन्दिर अंदर ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। हरिजन बणाए फड़ फड़ हँस काँ, सोहँ हँसा मोती चोग चुगाईआ। कलिजुग अन्तिम करे सच न्याँ, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। चार कुण्ट रिहा कुरला, वरन बरन मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। रवि ससि मुख रहे शरमा, साचा चन्द ना सके कोए चढ़ा, जूठ झूठ जगत अन्धेरा छाईआ। अठारां पुराण ना सके कोए पढ़ा, चौदां विद्या दस्से ना कोए राह, चौदां लोक बैठे मुख छुपाईआ। साचा कलमा ना सके कोए पढ़ा, आलमीन ना दिसे ख़ुदा, आलम उल्मा साचा राह ना कोए वखाईआ। सच सदा ना सके कोए लगा, हक महिराब ना वेखे कोए थाँ, साचे हुजरे डेरा कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, रूप अनूप शाहो भूप, निरगुण निराकार आप धराईआ। निरगुण रूप हरि करतारा, जोती जामा भेख वटाइंदा। सम्मत सम्मती हो उज्यारा, लोकमात खेल खिलाइंदा। शाह सुल्तानां दए हुलारा, राज राजानां आप उठाइंदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाइंदा। ब्रह्मण्डां मारे वारो वारा, जेरज अंडां वेख वखाइंदा। जन भगतां सद बख़्शंदा विच संसारा, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। लक्ख चुरासी तोड़े फंदा जम का फास कट्टणहारा, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन साचा एका एक, हरि एका एक जणाईआ। हरिजन साची शब्द टेक, हरि शब्द नाद धुंन शनवाईआ। हरिजन साचे बुध बबेक, माया ममता हउमे हंगता रोग गंवाईआ। हरिजन साचे धुर मस्तक लेख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। हरिजन मेला कर कर अवल्लड़ा वेस, नर नरेश फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ।

हरिजन तेरा सच मुनारा, साडे तिन्न हथ्थ बंक सुहाइंदा। गुर सतिगुर साचा मीत मुरारा, गृह मन्दिर खोज खुजाइंदा। निरगुण धारा कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। शब्द अनादि सच्ची धुन्कारा, अनहद ताल तलवाड़ा आप वजाइंदा। अमृत सरोवर ठंडा ठारा, निझर झिरना भर प्याला जाम प्यांअदा। बन्द ताकी खोले किवाड़ा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, नूरो नूर डगमगाइंदा। नाता तुट्टे पंचम धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। साची सखीआं वखाए मंगलचारा, घर गीत गोबिन्द अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे दर, दर दरवाज़ा इक्क खुलाइंदा। दर दरवाज़ा हरिजन खोल, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। अंदरे अंदर शब्द अगम्मी आपे बोल, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। आत्म सेजा वसे कोल, ब्रह्म पारब्रह्म मेला एका थाँईंआ। करनेहारा उलटा कँवल, अमृत नाभी मुख चुआईआ। देवे वड्याई उप्पर धवल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन सच्चा भगत वणजारा, नाम भण्डारा इक्क वखाइंदा। आदि जुगादी देवणहारा, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। देवणहारा बण वरतारा, दाता दानी आपणा नाउँ धराइंदा। भगत भगवन्त सुहाए इक्क दुआरा, दर दुआरे सोभा पाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, हरिजन हरि हरि भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, गुरमुख गुरसिख एका दर बहाइंदा। साचा दर धुर दरबारा, धुर दरगाही आप जणाइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड खोल किवाड़ा, रूप अनूप आप दरसाइंदा। मेल मिलाए ठांडे दरबारा, अग्नी तत्त ना कोई जणाइंदा। हरिजन नाता तोड़ संसारा, पुरख बिधाता आपणा मेल मिलाइंदा। एका नाम इक्क जैकार, एका शब्द इक्क धुन्कारा, आत्मक धुंन आप सुणाइंदा। एका मन्दिर इक्क घर बारा, एका सतिगुर साजन मीत मुरारा, दूसर अवर ना संग रलाइंदा। एका कन्त इक्क भतारा, एका सेजा सुत्ते पैर पसारा, अंगीकार इक्क अख्वाइंदा। एका ब्रह्म नूर उज्यारा, एका पारब्रह्म प्रभ पाए सारा, एका आत्म परमात्म आपणे रंग रंगाइंदा। एका ईश जीव दए हुलारा, एका जगत जगदीस वेखणहारा, एका छत्र झुलाए सीस वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड निवासी दरगाह साची सोभा पाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा, करे खेल अपर अपारा, सृष्ट सबाई वेख वखाइंदा। कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, लेखा जाणे मीत मुरारा, चार यारां नबी रसूलां भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि आपणा खेल खिलाइंदा। कलिजुग तेरा अन्त किनारा, चार कुण्ट वजे वधाईआ। पुरख अबिनाशी भेव न्यारा, भेव अभेद ना सके कोई जणाईआ। ब्रह्मा लिख लिख थक्का वेद चारा,

पुराण अठारां वेद ब्यासा गया गाईआ। शास्त्र सिमरत उच्ची कूकन मारन नाअरा, वाह वाह तेरी वडी वड्याईआ। अञ्जील कुरान करन निमस्कारा, दोए दोए जोड़ सीस झुकाईआ। गुर अवतार आवण वारो वारा, जुग जुग आपणा मार्ग लाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग सद तेरा बणया रिहा अखाड़ा, सरगुण सरगुण करे लड़ाईआ। हरि का खण्डा ना किसे विचारा, तीर कमान साचा चिल्ला नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाइंदा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। निहकलंक जामा पाइंदा, जोद्धा सूरबीर बली बलकार। गोबिन्द मेल मिलाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। चेला आपणे दर बहाइंदा, साचे सुत दए आधार। शब्दी डंका इक्क वजाइंदा, दो जहानां आपणी वार। आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा, आपे बोले सति जैकार। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा, नव नौं चार जाए हार। लेखा कोए रहिण ना पाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका खण्डा फड़ कटार। साचा खण्डा शब्द कटारा, पुरख अबिनाशी हथ्थ उठाईआ। निरगुण लेख निरगुण भेख निरगुण लिखारा, निरगुण सेवा सेव कमाईआ। तिक्खीआं रक्खे दोवें धारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रूप एका रंग समाईआ। एका हुक्मी हुक्म करे वरतारा, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। नव नौं वेखे इक्क अखाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाईआ। चण्ड प्रचण्ड साचा खण्डा, खण्डन नीका आप उपाइंदा। लहिणा देण चुकाए कोटन कोटि ब्रह्मण्डा, ब्रह्म ब्रह्मादि वेख वखाइंदा। नाता तोड़े जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज मूल चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खण्डा नाम कटार, सतिगुर पूरा वेखे वेखणहार, जीव जंत ना पावे सार, भेव अभेद छुपाइंदा। साचा खण्डा नाम मुट्ठ, त्रैभवण धनी आप लगाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल आपणी हथ्थीं चुक्क, नव नौं रिहा समझाईआ। शाह सुल्ताना वड मेहरवाना श्री भगवाना गया तुट्ठ, आपणी दया आप कमाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा पंच विकारा हउमे धाड़ा कढ्ढे कुट्ट, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। चारे वरनां ल्ए लुट्ट, सभ दा भाग जाए निखुट्ट, अन्तिम जड़ देवे पुट्ट, सिम्मल रुक्ख सर्ब वखाईआ। गुरमुख विरला रक्खे ओट, जिस जन लगाए शब्द चोट, सोई सुरती आप जगाईआ। भाग लगाए काया किले कोट, दरस दिखाए निर्मल जोत, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा पन्ध दए मुकाईआ। कलिजुग तेरा पन्ध मुकाउणा, चौथा जुग रहिण ना पाईआ। नाम खण्डा इक्क उठाउणा, चारों कुण्ट फिरे दुहाईआ। आत्म परमात्म वेख वखाउणा, सोहँ अखर जगत वक्खर इक्क पढ़ाईआ। पिछला लेखा लेख मुकाउणा, अगला लेखा आपणे हथ्थ

रखाईआ। हरि हरि भाणा आप वरताउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां एका धाम बहाउणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ज़ात पात कोए रहिण ना पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सभ ने गाउणा, नौं खण्ड पृथमी एका नाअरा लाईआ। पुरख अकाल नूरी जल्वा जलाल दरस वखाउणा, राम राम रूप वटाईआ। एका बंसरी नाम वजाउणा, साचे मंडल रास रचाउणा, एका मुक्ट सीस टिकाउणा, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आपणी खेल खिलाईआ। एका कलमा अमाम पढ़ाउणा, सच ईमान इक्क वखाउणा, ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार एका धाम बहाउणा, अल्ला राणी लड़ फड़ाउणा, वेले अन्त लए प्रनाईआ। आपणा इस्म आप पढ़ाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह खेल खिलाइंदा, हुक्मी हुक्म सति वरतार। जो घड़या सो भन्न वखाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव करन पुकार। वेला अन्त आप समझाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग झोली पाइंदा, पूर्ब लहिणा दए उतार। आपणा खेल आप खिलाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए करनेहार। करनहार कादर करता, करीम रहीम वडी वड्याईआ। आपणा दर आपणा घर आपे वड़दा, मुकामे हक हक डेरा लाईआ। आपणा पल्लू आपे फड़दा, दामनगीर इक्क ख़ुदाईआ। चौदां तबक आपे चढ़दा, हकीर फकीर शाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, तेरा लेखा दए मुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग झुलाए सच निशान, नव नौं बणाए इक्क विधान, नाम धारा आप चलाईआ।

★ १ विसाख २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

हरि ठाकर जग ठुकराइंदा, सम्मत अठारां ठोकर ला। शब्द अगम्मी खेल खिलाइंदा, ख़ालक ख़लक रूप ख़ुदा। निरगुण नूर डगमगाइंदा, जोती जोत कर रुशना। नौं नौं वेख वखाइंदा, आदि पुरख प्रभ पर्दा लाह। सो पुरख निरँजण रंग चढ़ाइंदा, साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाह। हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा, दो जहानां धुर फ़रमा। चारों कुण्ट वेख वखाइंदा, वेखणहारा बेपरवाह। निरगुण निरवैर पुरख अकाल आपणा नाउँ धराइंदा, अलख अगोचर अगम्म अथाह। सचखण्ड दुआर आपणा आसण लाइंदा, थिर घर चरन हेठ दबा। सुन्न अगम्मी फेरा पाइंदा, रूप अनूप आप वटा। आपणे मन्दिर आपणा खेल खिलाइंदा, करे खेल इक्क इकल्ला सच महल्ला आप वसा। नारी कन्त आप प्रनाइंदा, कन्त कन्तूल वसे एका थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा राह। हरि ठाकर खेल खिलाइंदा, खेलणहारा पुरख अगम्म। नौं नौं

चार वेस वटाइंदा,। आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म। दोए दोए आपणा रूप धराइंदा, आपणा बेड़ा आपे बन्न्। आपणा हुक्म आप सुणाइंदा, आपे लए मन्न। आपणी वण्डण आप वंडाइंदा, लेखा जाणे सूरज चन्न। ब्रह्मण्ड खण्ड आपणे रंग रंगाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जननी आपे जन। हरि ठाकर जगत ठुकराया, ठोकर मारे दो जहां। निरगुण निरवैर आपणा रूप वटाया, रूप अनूप दिसे किसे ना। आपणा लेखा दए समझाया, लेखा जाणे जीव ना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाह। शहिनशाह हरि खेल खिलाइंदा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। सृष्ट सबाई वेख वखाइंदा, नौं सत्त तेरी धार। पारब्रह्म प्रभ रूप वटाइंदा, ब्रह्म लेखा लए उग्घाड़। आपणा लेखा पूर कराइंदा, लेखा जाणे सतारां हाढ़। सम्मत चौदां राह तकाइंदा, बीस बिक्रमी कर प्यार। पंदरां पंदरां वेख वखाइंदा, कत्तक कर्मां लए उभार। रिवाल्सर चरन टिकाइंदा, गोबिन्द सूरा वड बलकार। शब्द शब्द मेल मिलाइंदा, शेर शेर इक्क निरँकार। उच्चे टिल्ले पर्बत निरगुण जोत जोत जगाइंदा, जोती खिच्चे सर्ब संसार। उच्चे कोट कोट आसण लाइंदा, कोट ढाहे गढ़ हँकार। नाम चोट नगारे इक्क लगाइंदा, सृष्ट सबाई करे ख़बरदार। दो दो मेला मेल मिलाइंदा, दूआ दूए नाल करे प्यार। दूई द्वैती सर्ब गंवाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। सच सरकार ठाकर हरि स्वामी, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। आदि जुगादि एका अन्तरजामी, कोटन कोटि रूप वटाईआ। जुगा जुगन्तर शब्द अगम्मी सुणौंदा आया बाणी, बाण निरबाण आप चलाईआ। गुर अवतारां दस्सदा रिहा आपणी कहाणी, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आपे बणया रिहा सच्चा शाह सुल्तानी, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क अठ्ठ लए मिलाईआ। इक्क अठ्ठ हरि मेल मिलाउणा, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। अठ्ठां तत्तां रंग रंगाउणा, रंग मजीठी इक्क चढ़ाइंदा। बण ललारी सेव कमाउणा, सेवक नर हरि दिस ना आइंदा। गोबिन्द सूरा नाम धराउणा, चेला गुर रूप धराइंदा। आपणे मन्दिर आप सुहाउणा, पलँघ रंगीली सेज सुहाइंदा। साचा चिल्ला हथ्थ फड़ाउणा, तीर तीरां आप उठाइंदा। उच्चा टिल्ला आप वसाउणा, टिल्ले पर्बत फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाइंदा। हरि ठाकर स्वामी गहर गम्भीर, गोबिन्द भेव कोए ना पाइंदा। लेखा जाणे अठसठ नीर, नीर नीरां फोल फुलाइंदा। लक्ख चुरासी वेखे बस्त्र चीर, चीर चीरां पर्दा लांहयदा। चौदां तबकां वेखे पीर फकीर, दस्तगीर खेल खिलाइंदा। चौदां लोक वेखे शाह फ़कीर, हक हकीकत आप जणाइंदा। कलिजुग तेरी बदले आप तकदीर, तदबीर आप बणाइंदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गुर अवतार मार मार घलदा रिहा ज़ंजीर, लोकमात बन्धन

पाइंदा। आपे बणया रिहा उच्च दा पीरन पीर, पीर पीरां आप अख्वाइंदा। चार जुग घतदे रहे वहीर, हुक्म हाकम आप सुणाइंदा। आपणा वेला आपणे हथ्थ रक्खया अख़ीर, आदि अन्त दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि ठाकर खेल खिलाइंदा। हरि ठाकर जग ठकरावन आया, पारब्रह्म बेअन्त। चार जुग दे गुर पीर लए उठाया, नाल रलाए भगत सन्त। सचखण्ड दुआरे विचों बाहर लए कढाया, आप जणाए आपणी बणत। लक्ख चुरासी लड़ लए फड़ाया, लेखा जणाए जीव जंत उच्चे टिल्ले बह बह आपणा आसण दए वखाया, पूरन जोत श्री भगवन्त। सभ दा कन्त हरि हरि जू वेखण आया, आपणी महिमा जाणे अगणत। रिवाल्सर गुर गोबिन्द एका राह वखाया, हिरदे गाया बह बह पुरख अबिनाशी लए मिलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आदि अन्त। हरि ठाकर लेखा जाणदा, आदिन अन्ता एकँकार। जुग जुग लेखा आप पछाणदा, लेखा जाणे वेद चार। विष्न ब्रह्मा शिव राह तक्के चरन ध्यान दा, नेत्र नैण कर विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपारा खेल खिलावना, नव नौं चार पन्ध मुका। तेई अवतार आप उठावना, दस गुर नाल रला। अठारां भगतां डंक वजावणा, लक्ख चुरासी लए समझा। भगत भगवन्त मेल मिलावना, जोती जोत कर रुशना। नव नौं किला कोट आप बणावणा, शब्द अगम्मी फेरा पा। एका डंका नाम सुणावणा, डंका फड़या बेपरवाह। सच धाम चरन छुहावना, चरन कँवल इक्क टिका। ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं एका राह वखावणा, साचा मार्ग एका ला। रवि ससि रूप वटावणा, रूप अनूप लए वखा, विष्नूं आपणा पन्ध मुकावणा, अन्तिम मंगे दर पनाह। ब्रह्मे वेला वक्त चुकावणा, थिर कोए दीसे ना। शंकर शहिंसा रोग मुकावणा, पुरख अबिनाशी हो सहा। सुरपति राजा इन्द डेरा ढाहवणा, ढह ढह ढेरी दए मिला। क्रोड़ तेतीसा आपणे विच मिलावणा, मानस जन्म लए प्रगटा। किन्नर जच्छप नाच ना किसे नचावना, गण गंधर्ब दए ना कोई सलाह। लोकमात खेल खिलावना, नौं खण्ड पृथ्मी जोती जोत कर रुशना। निरगुण सरगुण मेल मिलावना, निरगुण सरगुण वेखे थाउँ थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए सच न्याँ। सच न्याउँ करनेहारा, एका एक अख्वाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो न्यारा, पंज तत ना कोए रखाइंदा। गुरुआं पीरां देंदा रिहा सहारा, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जो गौंदे आए वारां, गीत गोबिन्द आप सुणाइंदा। आपे सभ तों वसे बाहरा, हर घट आपणा आसण लाइंदा। करे खेल गुप्त ज़ाहरा, अंदर बाहर खेल खिलाइंदा। पुरख अगम्मड़ा नारी नारा, नर नरायण रूप वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम फड़ के आया तिक्खा आरा, दो जहानां चीर पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा

खेल आप खिलाइंदा। दो जहानां पाउणा चीर, चीरनहारा इक्क अख्वाईआ। चोटी चढ़ के बैठा अख़ीर, उच्चे टिले पर्बत साचा माहीआ। एका वार घत दए वहीर, धीरज धीर ना कोई धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कौल आप लए निभाईआ। पिछला कौल निभावण आया, सम्मत वीह सौ चौदां नाल रला। आपणा लेखा दए समझाया, लेखा जाणे बेपरवाह। भरम भुलेखा दए कढाया, भाण्डा भरम भउ भना। आपणा वेस लए वटाया, शहिनशाह सच्चा पातशाह। सम्मत अठारां दए दुहाया, उच्ची कूक कूक सुणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए सदा सहा। सम्मत अठारां खेल खिलावना, पुरख अबिनाशी किरपा धार। रिवाल्सर जोत जगावना, जोती जोत हो उज्यार। हाढ़ सतारां रंग रंगावना, पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपे हो ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत करे प्यार। हरिसंगत शब्द मिलाइंदा, शब्दी संगत धार। शब्द गुर आप अख्वाइंदा, शब्द रूप नर अवतार। शब्द गोबिन्द वेख वखाइंदा, शब्द चेला सुत करे प्यार। शब्द पिता पूत वखाइंदा, एका मन्दिर इक्क घर बार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप निरँकार। हरि निरँकार खेल खिलावना, सम्मत अठारां वेख विचार। हाढ़ सतारां दिवस सुहावना, सृष्ट सबाई जाए हार। गुरमुख आपणी गोद बहावना, राती रुती दए आधार। दोए दो मेला मेल मिलावना, बाई सद खेल अपार। सौ सौ आपणा संग रखावणा, इक्क इक्क सदी जावे हार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। हरि करतार खेल खिलावणा, दस्से साची धार। दस दस वेला आप सुहावना, पुरख अबिनाशी हो त्यार। संगत सारी संग रखावना, आत्म अन्तर कर प्यार। सुरती सुरत शब्द मिलावना, शब्द सुरत दए अधार। आपणी गोद आप उठावणा, आपे करे सच प्यार। गोबिन्द आपणे अंग लगावना, अंगीकार करे करतार। रिवाल्सर सर सुहावना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आपणी वार। खेल खिलंदड़ा हरि निरँकार, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। गुरमुख गुरसिख करे प्यार, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। तख्त निवासी शाह सिक्दार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला वक्त आपणे हथ्थ रखाईआ। वेला वक्त सुहावणा, हाढ़ सतारां हरि करतार। हरिसंगत संग मिलावना, जाए दर सच्चे दरबार। पूर्ब लेखा लेख मुकावणा, लेखा रहे ना दूजी वार। शब्दी शब्द शब्द प्रगटावना, जोती जोत जोत उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। रिवाल्सर हरि शब्दी धारा, जोती जोत खेल खिलवाणा। निरगुण मेला निरगुण चेला निरगुण घर निरगुण घर बारा, निरगुण वेख वखावना। निरगुण रंग सच्ची सरकारा, निरगुण अंग लगावना।

रिवाल्सर जाए शब्दी रूप दाता, दात आपणी नाल रखौदा ए। जोती जोत सुणाए साची गाथा, गीत गोबिन्द आप अलौंदा ए। गुरसिखां नाल बंधाया एका नाता, ना कोई तोड़े ना तोड़ तुड़ौदा ए। पहलों मिटाए आपणी ज़ाता, ज़ात पाता फेर मिटौदा ए। हाढ़ सतारां सुहाए सुहञ्जणी राता, रातीं रुतड़ी आपणे हथ्थ रखौदा ए। हरिसंगत बणया पिता माता, पिता पूत गुरसिख गले लगौदा ए। पूर्ब जन्म दा पूरा करे घाटा, गोबिन्द आपणा रूप वटौदा ए। निरगुण निरवैर देवे नाल साथा, सगला संग निभौंदा ए। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हाथा, अगला लेखा ना कोई वखौंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणौंदा ए। हरि आपणा भेव जणाइंदा, कर किरपा गुण निधान। हरिसंगत वेख वखाइंदा, हरि घट वेखे मार ध्यान। पैंरी चल पन्ध ना कोई मुकाइंदा, उच्चे टिले पर्बत बीआबान। बंस सरबंस नाल ना कोई रखाइंदा, नाता जुड़या जीव जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल वड मेहरवान। मेहरवान हरि सतिगुर पूरा, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। आपणा बचन करे कदे ना कूड़ा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। जिस जन बख्शे चरन धूढ़ा, धूढ़ी मस्तक टिक्का लए लगाईआ। काया चोली चाड़्हे रंग गूढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, दे मति रिहा समझाईआ। शब्द अनादी सुणाए साची तूरा, तुरीआ राग आप अल्हाईआ। जोती नूर बख्शे साचा नूरा, अज्ञान अन्धेर रहिण ना पाईआ। दाता दानी सरबंग सूरा, सूरबीर सचा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत लए तराईआ। हरिसंगत शब्द तराइंदा, त्रैगुण माया अतीत। त्रै त्रै लेखा आप चुकाइंदा, लेखा जाणे साहिब अनडीठ। गोबिन्द आपणा रूप वटाइंदा, वेखणहारा हस्त कीट। उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाइंदा, करे खेल इक्क अतीत। गुरमुख साचे नाल रलाइंदा, सम्मत सम्मती जाए बीत। कीता कौल आप निभाइंदा, आदि जुगादी साची रीत। रोवां नैणा राह तकाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी रीत। साची रीत पुरख अगम्म, आपणी आप चलाईआ। ना मरे ना पए जम्म, मरन जन्म विच कदे ना आईआ। हरख सोग ना कोई ख़ुशी ग़म, गफ्लत नींद ना कोई वखाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, जगत बेड़ा रिहा चलाईआ। सद वसे बिन छप्परी छन्न, मन्दिर महल्ल ना कोई दरसाईआ। गुरमुख साचे वेखे जन, जन जननी बणया माईआ। एका राग सुणाए कन्न, नाद अनादी धुन वजाईआ। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पड़दा दए उठाईआ। हरि पड़दा आप उठाइंदा, कर किरपा गुण निधान। सम्मत अठारां राह जणाइंदा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। हाढ़ सतारां थित वखाइंदा, लोकमात मात महान। हरिसंगत घर घर सुत्तयां आपणे रंग रंगाइंदा, देवणहारा जीआ दान।

४६८

सुरत शब्द बन्धन पाइंदा, बन्दीख़ाना काया वेख मकान। वड्याई आपणे हथ्थ रखाइंदा, पुरख अबिनाशी वाली दो जहान। एका वार अन्तिम जोत रिवाल्सर जगाइंदा, शब्दी लाए सच्ची धुन्कार। गुरमुख गुरमुख नौ खण्ड पृथ्मी आपणे चरन बहाइंदा, किरपा करे श्री भगवान। तिन्न हज़ार लिख्या लेखा सम्मत चौदां पूर कराइंदा, गुण गुणा कर परवान। सहँसर मुख शेष लेखे लाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव करे परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। श्री भगवान खेल खिलाइंदा, भगत भगवन्त साची धार। हाढ़ सतारां आप जणाइंदा, वेला वक्त रिहा विचार। दो तिन्न पंज मेल मिलाइंदा, नौ नौ होए खबरदार। निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव लए उभार। पंचम नाद शब्द धुन वजाइंदा, नौ दुआरे वसे बाहर। गोबिन्द आपणा रंग रंगाइंदा, करे खेल सच्ची सरकार। सुन्न मुन आप जणाइंदा, नेत्र नैण नैण मुँधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इक्क नाल करे प्यार। इक्क मेला इक्क तोड़दा, इक्क जगत जुग चार। इक्क सतारां खेल हाढ़ दा, इक्क अठारां पावे सार। इक्क लेखा परवरदिगार दा, इक्क लेखा करे बेऐब सांझा यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो तिन्न पंज नौ दए अधार। दो तिन्न पंज नौ करना बन्द, बन्दीखाना आप समझाईआ। नेत्र खोल्हे ना गाए बत्ती दन्द, अंदर मन्दिर ना कोई मिलाईआ। अन्तिम अन्तिम गाउणा सुहागी सोहँ छन्द सो पुरख निरँजण दए वड्याईआ। पूर्ब जन्म दा मिटे पन्ध, अगला लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रिवाल्सर दए वड्याईआ। दो तिन्न पंज नौ हरि खेल खिलावणा, सर सर आप सुहाया। नौ पंज अन्त मिलावना, धरत धवल धरनी दए वड्याआ। त्रै त्रै लेखा पार करावणा, त्रै त्रै पड़दा आप चुकाया। दोए दोए वेसा आप वटावना, निरगुण सरगुण नाउँ धराया। निरगुण सरगुण रिवाल्सर डेरा लावना, सरगुण सनमुख बह बह दरस दखाया। संगत सबाई चुप करावना, मुख मुख ना कोई हिलाया। मानस जन्म सुफल कुक्ख करावना, जगत दुःख रोग मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिवस दिहाढ़ा दए वड्याआ। दिवस दिहाढ़ा वडा वड, हरि सतिगुर आप वड्याईआ। गुरसिखां अंदरों आपणी सुरती आपे कढ्ढ, रिवाल्सर दए सुहाईआ। जिस जिस चरन छुहाया पिच्छे ना देवे छड्ड, हरि भुल्ले ना पान्धी राहीआ। सचखण्ड दुआरे होए बैठा अड्ड, लक्ख चुरासी आपणी वण्डन पाईआ। हरिजन लडाए साचे लड, गोबिन्द साची गोद सुहाईआ। नाता तुट्टे अन्धेरी खड, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग कर विचार, हरिजन आप तरावना। नौ सौ चुरनावे चौकड़ी जुग कर विचार, खाणी बाणी सर्ब कुरलावना। उच्ची कूके करे पुकार, गुरमुख

गुरमुख मुख धरावना। गुर गुर गाए आपणी वार, नाद वेद भेव ना पावना। नादां वेदां वसया बाहर, अछल अछल खेल खिलावना। खेले खेल आप करतार, पुरख अबिनाशी हरि आपणा नाम धरावना। हरख सोग ते वसया बाहर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वर देवे सच्ची सरकार। साचा वर हरि हरि दीना, कलिजुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। गुर अवतार मन्नदे आए भाणा, सम्मत अठारां हाढ़ सतारां लोकमात लए प्रगटाईआ। गुरमुखां गुरसिखां हरि चरन दुआरे बहणा, गुर अवतार सेव कमाईआ। पुरख अबिनाशी वेखण आया आपणे नैणा, कीता कौल भुल्ल कदे ना जाईआ। सीता राम धाम अकट्ठे हो हो बहणा, राधा कृष्न ख़ुशी मनाईआ। ईसा मूसा वेखे आपणे नैण नैणां, अल्ला राणी पड़दा दए उठाईआ। नानक गोबिन्द भाणा सहिणा, सीस जगदीस रहे झुकाईआ। भगत सन्त पाया सच सुच दा एका गहिणा, तन बस्त्र ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। हरिसंगत तेरा बणाए भाई भैणां, चार वरन वरन दए वड्याईआ। लाड़ी मौत ना खाए डैणा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दे विछड़े लए उठाईआ। चार जुग दे चार वरन, चार वेद मेल मिलाइंदा। चारों कुण्ट पाणी भरन, सच सुराही हथ्थ वखाइंदा। पुरख अबिनाशी करनी करन, करता पुरख खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दिशा आप वंडाइंदा। साची दिशा वण्डे वण्ड, हरि पुरख पुरख मेहरबाना। लेखा जाणे हरि ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड सच निशाना। भेव खुल्हाए जेरज अंड, अंडज जेरज हो प्रधाना। पंज तत्त सोवे ना दे के कोई कंड, मारे शब्द तीर निशाना। हथ्थ वखाए चण्ड प्रचण्ड, जोद्धा सूरबीर बलवाना। आपणा घर वखाए पूरी अनन्द, गुरमुख तेरी काया सच मकाना। तेरे मन्दिर चढ़ाए साचा चन्द, सतिगुर पूरा हो मेहरबाना । तेरे मन्दिर गाए आपणा छन्द, बन्दी बन्द ना कोई वखाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवाना। श्री भगवान दया कमाइंदा, नौ नौ चार पन्ध मुका। गुर गुर साची सेवा लाइंदा, सेवक सेवा इक्क समझा। अवतरी अवतार हरि अख्वाइंदा, करे खेल बेपरवाह। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग खाणी बाणी आप वड्यांअदा, गुरमुख साचे सच सलाह। कोटन कोटि मानस जन्म सलांहयदा, मानस मानस रूप वटा। नौ नौ जन्म आपणे हुक्म भवाइंदा, हुक्मी हुक्म सच वरता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार चार लेखा रिहा समझा। चार चार दर साचा लेखा, हरि साचा सच जणाईआ। जगत जुगत करदा आया आदेसा, आदेस आदेस बेपरवाहीआ। भगत भगवान वटौंदा आया वेसा, वेस अनेक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हथ्थ वड्याई हरि करतार, करता पुरख खेल खिलाईआ। चार जुग गुरमुख नाउँ रक्ख ना होया कोई उज्यार,

भगत सन्त नाउँ धराईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरि हरि आपणी दया दए कमाईआ। पंचम गुरमुख करे त्यार, आपणा पड़दा आप उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी गाए साची वार, चार वरन ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। पंचम गुरमुख आप उपजावना, गुरसिख गुरसिख आप समझा। दो तिन्न पंज नौ रवाल सर चरन टिकावना, चरन कँवल कँवल चरन आप सुहा। शब्दी शब्द शब्द डंक वजावना, जोती जोत जोत रुशना। संगत संग संग रखावना, सगला संग आप समझा। ढाई सकिंट आवण जावण दो जहान पन्ध रखावना, ढईआ आपणा बन्धन पा। गोबिन्द सूरा इक्क मनावना, साचा शहिनशाह इक्क रघुरा। कलिजुग नईआ जिस आप चलावना, एका चप्पू नाम उठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सचा हरि, गुरमुख साचे लए प्रगटा। चार जुग ना बणे कोई गुरमुख, सतिजुग त्रेता द्वापर रिहा जस गाईआ। भगत भगवन्त अंदर रिहा सिखां सिख, सिक्खी सिख्या इक्क समझाईआ। सन्त साजण लेखा देवे लिख, लिखणहारा साचा माहीआ। बण बण भिखारी मंगदे रहे भिख, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। जिस जन मिटाए तृष्ना तृख, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जग आपणे धन्दे आपे दए लगाईआ। चार जुग जुग धन्दे ला, आपणा नाउँ धराइंदा। गुर अवतार दए घला, हुक्मी हुक्म सुणाइंदा। आपणा पड़दा आपणे उप्पर पा, निरगुण रूप ना कोई वखाइंदा। सरगुण देवे सरगुण पनाह, सरगुण इष्ट देव जणाइंदा। सरगुण अगे सरगुण कदे ना करे नाह, सरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। सरगुण मेला सरगुण चेला सरगुण गुरु फड़ाए बांह, सरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। निरगुण दो तिन्न तेरा रूप लए वटा, हेरा फेरा आप कराइंदा। गुर गुर बन्धन रिहा पा, एका जोती नूर दरसाइंदा। सरगुण नाल सरगुण दए प्रना, सरगुण नारी सरगुण कन्त हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण जन जन करया विहारा, सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराया। कलिजुग करी आपणी कारा, मध्ध आपणा खेल खिलाया। कोई पंज तत्त पूजे मुहम्मद यारा, कोई ईसा मूसा नाउँ सलाहया। कोई नानक पंज तत्त पुतला करे विचारा, कोई गोबिन्द गढ़ सुहाया। गोबिन्द सूरा उच्ची कूके करे पुकारा, एका गुण गया समझाया। एका गुरु इक्क अवतारा, पुरख अकाला सच्ची सरनाया। बिन निरगुण कोई ना करे सच प्यारा, सरगुण झूठा नाता जगत वखाया। चार जुग जो देंदा रिहा लारा, आपणा नाम सनेहुड़ा संदेश मात घलाया। पुरख अबिनाशी बैठा बण कुँवारा, साचा सगन ना कोई मनाया। कलिजुग वेखे अन्तिम वारा, निरगुण धार आप चलाया। महाबली उतरे विच संसारा, जोती जामा वेस वटाया। नाउँ रक्खे निहकलंक नरायण नर अवतारा, मात पित ना कोई जाया।

चार जुग दे विछड़े मेले आपणे यारा, यारी यारां नाल लए निभाया। गोबिन्द कर सच प्यारा, सत्थर हंढाया एका वारा, दूजी वार ना सथर हंढाया। पुरख अबिनाशी दिता जोत सहारा, शब्दी बणाया एका लाड़ा, सीस जगदीस ताज टिकाया। हरिसंगत वखाए सच अखाड़ा, आप लगाए सतारां हाढ़ा, गुर गुर दस नाल रलाया। नानक आए पहली वारा, छत्र झुले सच दरबारा, गोबिन्द खोल्हे आप किवाड़ा, हरि जू आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहया। गुरसिखां देवे आपे पहरा, आपणा जन्म आपे हारा, हरिसंगत तेरे उत्ते वारा, तेरा रूप कीआ न्यारा, रूप अनूप आप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा खेल रिहा कराया। चार जुग दा रक्खया ओहला, कलिजुग अन्तिम दए चुकाईआ। जिस दा गौदे रहे ढोला, गुर अवतार मुख सालाहीआ। जिस दा सुणौंदे रहे बोला, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। जिस दा पौंदे रहे काया चोला, चोली चोला जगत बदलाईआ। जिस दा पौंदे रहे रौला, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जिस दा वेखदे रहे डोला, आपणी सेव कमाईआ। जिस दा नाउँ रखौंदे रहे मौला, मौला आपणा रूप वटाईआ। जिस दा अमृत धरदे रहे काया कँवला, कँवल काया लए पलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा गाउँदे रहे गीत, सो पुरख निरँजण कलिजुग अन्तिम आया। जिस बणाई मन्दिर मसीत, गुरु दुआरा आप सुहाया। जिस चलाई खाणी बाणी रीत, पतित पुनीत वेस वटाया। जेहड़ा वसे हरि हरि चीत, सो चीत आपणा ठग्गण आपे आया। जेहड़ा खेल करे हस्त कीट, कीट कीटां अंदर बैठा मुख छुपाया। जेहड़ा वसया धाम अनडीठ, सचखण्ड बैठा आसण लाया। जेहड़ा सीस सुहाए पीतम्बर पीत, सो सुअम्बर रिहा रचाया। गुरसिख तेरा वेखे धाम अतीत, त्रैगुण अतीता तेरी ओट रक्ख के आया। तेरे सदके आपणा आप लए जीत, बिन सिख दूसर रूप नज़र कोए ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे लए प्रगटाया। चार जुग गुरमुख गाया, गुरमुख नज़र दिसे ना कोए। सन्त भगत रहे सालाहया, एकँकारा एको होए। गुर अवतारा रूप धराया, धर धर रूप देवे ढोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणे जेहा आपे होए। आपणे जेहा आपे हो के आया, निरगुण निरवैर पुरख अकाल। आपणा ताणा आपे तणके आया, शब्दी शब्द सच्चा जंजाल। आपणे गुरमुख आपे जण के आया, पारब्रह्म प्रभ दीन दयाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सर रिवाल। सर रवाल सर्ब गुणवन्त, निरगुण खेल खिलावना। गुरमुखां बणाए साची बणत, बणत बनवारी आपणे हथ्थ रखावना। गृह सखी गृह मन्दिर गृह मेला नारी कन्त, कन्त सुहाग रूप वटावना। गृह मन्दिर गृह मंत, गृह शब्द धुन नाद वजावना। गृह पूरन जोत श्री भगवन्त, घर साचा आप सुहावना, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखावना। अलिफ़ आदि खेल खिलाया, ये जुगत ना कोई जणाइंदा। हरि का भेव किसे ना पाया, जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा। अलिफ़ ये मेल मिलाया, आप आपणा बन्धन पाइंदा। रे रहीम रहिमान रंग दए रंगाया, रंग रंगीला इक्क चढ़ाइंदा। नून नुकता ना कोई वखाया, निरगुण दिस किसे ना आइंदा। शाह शुहाना वेख वखाया, ईरान आपणा भेव चुकाइंदा। अलिफ़ आदि ये अन्त, हरि आपणी खेल खिलाइंदा। राम रहीम सर्ब गुणवन्त, रहिमत आपणे हथ्थ रखाइंदा। नून न्यामत जगत भस्मंत, थिर कोई रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच ईरान आप समझाइंदा। आदि अन्त अल्फ ये शाह ईरान, हरि अख्वाइंदा। लेखा जाणे मजीद कुरान, तुलबा तालब आप पढ़ाइंदा। मस्जिद मसीत वेखे दो जहान, तसबी तत्करा आप समझाइंदा। महिबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इक्क महिबान, मेहरबान वेख वखाइंदा। आपे जाणे आपणी आण, शरअ ईमान आप बणाइंदा। कायनात वेखे मार ध्यान, फ़तह फ़ातया आप पढ़ाइंदा। ज़ाबत ज़बत करे बेईमान, ज़ेर ज़बर खेल खिलाइंदा। कातब लिखे लेख महान, कुतब गौंस ना कोई रखाइंदा। आपे शाह आपे ईरान, आपे मेटे ज़िमीं अस्मान, लेखा जाणे दो जहान, चौदां तबक वेखे मार ध्यान, निगहबान महिबान आपणा नैण आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सम्मत अठारां खेल न्यार, इराक ईराना पावे सार, बीआबान जगत सहरा शाह पातशाह आप कराइंदा।

१०

वीह सौ अठारां बिक्रमी गुरसिख विसाखी, हरि सतिगुर आप मनाईआ। जिस बूटा लाया करन आया राखी, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जो लक्ख चुरासी देंदा रिहा फाँसी, गुरसिखां फाँसी रिहा कटाईआ। जो जुग जुग करदा आया हासी, रूप अनूप धराईआ। कलिजुग अन्तिम करया खेल घनकपुर वासी, अनक कल आपणी खेल खिलाईआ। दर घर साचे पावे रासी, मंडल मण्डप आप सुहाईआ। करे कराए पूरी आसी, आस निरास ना कोई वखाईआ। जिस दी पूजा करदे रहे पंडत पांधे बह बह काशी, सो गुरसिखां सेव रिहा कमाईआ। निरगुण जोत जोत प्रकाशी, परम पुरख बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर ना कदे विनासी, ना मरे ना जाईआ। हरिजन कर के जाए तेरी बन्द ख़ुलासी, बन्दी छोड़ आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण बण साकी साचा अमृत जाम प्याईआ। गुरसिख विसाखी चढ़या चाअ, दस अठ्ठ मेल मिलाया। गोबिन्द मिल्या इक्क मलाह, जिस बेड़ा मात चलाया। आपणी देवे सच सलाह, दूसर अक्खर ना कोई पढ़ाया। इक्क जपाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाया। फड़ हँस बणाए काँ, जो जन सरनाई

आया। दो जहानां पकड़े बांह, मँझधार ना कोई रुढ़ाया। एथे उथे पिता मां, सीस जगदीस हथ्थ रखाया। गुरसिखां सेवा रिहा कमा, गुर गुर आपणी धार वखाया। बण निमाणा अगों करे ना नांह, खेवट खेटा आपणा बेड़ा आप चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहया। गुरसिख विसाखी लगा रंग, रंग रंगीला आप रंगाया। सतारां सौ छपंजा बिक्रमी मंगी मंग, बीस अठारां दए चढ़ाया। नीले वाला माही कसे तंग, सोलां कलीआं आसण पाया। हथ्थ फड़ नाम मृदंग, सच नगारा दए वजाया। लोआं पुरीआं आया लँघ, ब्रह्मण्ड खण्ड चरनां हेठ दबाया। सृष्ट सबाई वण्डे वण्ड, वण्डणहारा इक्क अख्वाया। नौं खण्ड पृथ्मी करे खण्ड खण्ड, एका खण्डा नाम चमकाया। लेखा जाणे चण्ड प्रचण्ड, ब्रह्मण्ड आप दरसाया। भेख पखण्डा देवे दंड, जगत रंडेपा दए कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाया। गुरमुख विसाखी वेखे नैण, नेत्र लोचण आप उठाईआ। कवण रूप धारे नर नरायण, लोकमात वज्जी वधाईआ। गुर अवतार सारे कहिण, शास्त्र सिमरत देण ग्वाहीआ। निहकलंक प्रगट होए सृष्ट सबाई साक सज्जण सैण, नव नौं वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए समझाईआ। गुरमुख विसाखी सच विहारा, गुर सतिगुर आप जणाइंदा। दूआ सिफ़रा एका आठा गुण अवगुण ना कोई विचारा, गुण निधान दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण दए सहारा, सारिंग धर भगवान बीठलो सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। भगत भगवन्त साचा सन्त वखाए इक्क दुआरा, दर मन्दिर आप खुल्हाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, आपणा नाअरा आप सुणाइंदा। कादर कर्म करीम करे प्यारा, काली कफ़नी वेख वखाइंदा। चारों कुण्ट धूंआँधारा, दहि दिशा अन्धेरा छाइंदा। साकत निन्दक दुष्ट दुराचार रोवण ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोई धराइंदा। वरना बरना लग्गा अखाड़ा, ज़ात पात नाच नचाइंदा। कर्म कुकर्म मंगन वाड़ा, गुण अवगुण भेव ना कोए खुल्हाइंदा। आए रुत्त सुहञ्जणी सतारां हाढ़ा, गुरमुख साचे आप तराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेल आप मिलाइंदा। गुरसिख विसाखी मिल्या मेला, मेलणहार आप करतार। लेखा जाणे गुरु गुर चेला, गुर चेला आप निरँकार। आदि जुगादी सज्जण सुहेला, विछड़ ना जाए विच संसार। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, थित वार ना कोई विचार। वसणहारा सद नवेला, गुरमुख साजण करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चे दरबार। गुरसिख विसाखी सच दरबारा, हरि सतिगुर सच्चा पाया। नाता तुट्टा सर्ब संसारा, माया ममता मोह चुकाया। पूर्ब लहिणा जिस विचारा, सो गोबिन्द मीत बणाया। अगला लेखा जिस ने पाड़ा, लिख्या लेख रहे ना राया। करे विहार सतारां हाढ़ा, ब्रह्म आपणा रूप धराया। नौं

खण्ड पृथ्मी लगे इक्क अखाड़ा, सृष्ट सबाई वेखे आप ख़ुदाया। आपे बणे आपणा लाड़ा, मीआं नूरी नूर सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाया। गुरसिख उठ हरि सतिगुर लए राख, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण कोई ना देवे साथ, वेले अन्त संग ना कोई जाईआ। अन्तिम वण्ड वण्डाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, शाह पातशाह रहे कुरलाईआ। पहली विसाख सुणी साची गाथ, सो पुरख निरँजण रिहा पढ़ाईआ। चौदां लोक ख़ाली होणे हाट, चौदां तबक ना कोई वड्याईआ। अठसठ तीर्थ ना रहिणा कोई ताट, सर सरोवर ना कोई नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलावना, आप आपणी किरपा धार। जो घड़या सो भन्न वखावना, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। गुरमुख विरले मेल मिलावना, मेल मिलावा धुर दरबार। दर दरवेश आप रखावणा, दर्दी दर्द करे प्यार। आपणा फ़र्ज आप निभावना, ग़र्ज रक्खे ना कोई निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच्ची सरकार।

★ २६ विसाख २०१८ बिक्रमी अनन्द कारज काका गुरचरण सिँघ बीबी हरबंस कौर अते सगन काका सरजीत सिँघ नाल बीबी सतिवन्त कौर जेठूवाल दरबार विच ★

सो पुरख निरँजण सच्चा पातशाह, आदि जुगादि खेल खिलाइंदा। निरगुण निरवैर बण मलाह, अजूनी रहत वेख वखाइंदा। अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहा, अलख अलखना आसन लाइंदा। तख्त निवासी शाहो शाबासी भूपत भूप चलाए राह, अकल कल आपणी धार बंधाइंदा। अनुभव प्रकाश आप करा, नूर नुराना डगमगाइंदा। हरि पुरख निरँजण नाउँ धरा, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। एकँकारा हो रुशना, रंग रंग विच समाइंदा। आदि निरँजण डगमगा, आपणा खेल आप खिलाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा आपणे थाँ, थान थनंतर आप बणाइंदा। श्री भगवान आपे पिता आपे मां, आप आपणा मेल मिलाइंदा। पारब्रह्म आपणा नाउँ धरा, आप आपणा संग निभाइंदा। सुते प्रकाश आप करा, भेद अभेदा आप खुल्हाइंदा। आपणी इच्छया आप प्रगटा, आप आपणी रचन रचाइंदा। सचखण्ड दुआरा लए बणा, चार दीवार ना कोए रखाइंदा। सच सिँघासण लए सजा, पावा चूल ना कोए वड्यांअदा। जोती जोत डगमगा, आप आपणा आसण लाइंदा। धुर फ़रमाना हुक्म सुणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी बणया हरि, आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल आपे धर,

हरि हरि साचा खेल खिलाइंदा। आपे नारी आपे नर, नर नरायण वेस वटाइंदा। आपणे मन्दिर आपे वड़, आपे आसण लाइंदा। आपणे दर दरवेश आपे खड़, आपे अलख जगाइंदा। आपणा घाड़ण आपे घड़, घड़ण भन्नणहार आपणा नाउँ धराइंदा। आपणा पल्लू आपे फड़, आपणा बन्धन पाइंदा। निरगुण नरायण निरगुण लए वर, निरगुण कन्त सुहाग आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता उत्तम रक्खे आपणी ज़ाता, ज़ात ज़ात विच समाइंदा। ज़ात अज़ाती इक्क अकाल, अकल कल हरि वड्याईआ। आदि पुरख हो दयाल, दीन आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल, सच दुआरे सोभा पाईआ। थिर घर थिर चरन कँवल कँवल चरन रक्खे आप करे अवल्लड़ी चाल, चरन चरन सरन सरन इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण मेला हरि करतार, करता पुरख आप कराइंदा। निरगुण नारी कन्त भतार, निरगुण साची सेज हंढाइंदा। निरगुण रूप अगम्मी कर त्यार, अलख अगोचर अगम्म अथाह, बेपरवाह आपणी खेल खिलाइंदा। शब्दी शब्द इक्क जणा, साचा मार्ग आपे लाइंदा। धुर फ़रमाना इक्क सुणा, धुर दी बाणी बाण जणाइंदा। आपणा बंस आपणी अंस आप सुहा, आपे वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए प्रगटा, रक्त बूंद ना मेल मिलाइंदा। त्रैगुण तत्त तत्त मिला, पंचम पंचम लेख लिखाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़ण ल्या घड़ा, जुग चौकड़ी वण्ड वंडाइंदा। रवि ससि सूरज चन्न कर रुशना, मंडल मण्डप आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खिलाइंदा। साचा खेल हरि करनेहारा, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। पंचम तत्त बणाया धर्म दुआरा, सच सुच्च करे रुशनाईआ। आत्म ब्रह्म इक्क आधारा, पारब्रह्म वज्जे वधाईआ। घर मंगल घर गीत घर मंगलाचारा, घर आपणा नाद सुणाईआ। घर कन्त घर नार घर मिले भतारा, घर सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। घर भोग बिलास करे प्यारा, पीआ प्रीतम वडी वड्याईआ। घर मन्दिर सोहे सच चुबारा, दर दरवाज़ा ना कोए वखाईआ। ग़रीब निवाज़ा परवरदिगारा, आपे आप खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता करता पुरख करनेहार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणे हथ्थ रक्ख वड्याई, नारी पुरख खेल खिलाया। जगत जुग जोड़ जुड़ाई, जोड़णहारा दिस ना आया। विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाई, साची सिख्या इक्क समझाया। पंज तत्त काया वज्जे वधाई, त्रै त्रै मंगल इक्क सुणाया। रवि ससि कर रुशनाई, दीपक जोत नूर रुशनाया। नाद शब्द धुन शनवाई, गृह मन्दिर ताल वजाया। शब्द कन्त उठे बेपरवाही, छैल छबीला ना मरे ना जाया। सुरती नारी लए प्रनाई, आप आपणा बन्धन पाया। नार सुहागण ख़ुशी

मनाई, लोड़ींदड़ा वर पाया। एका मन्दिर होए रुशनाई, दीवा बाती ना कोए जगाया। मात पित ना कोई भैण भाई, सगला संग ना कोई जणाया। ना कोई धी ना कोई जवाई, सीस जगदीश ना कोए गुंदाया। ना कोई रंगण रंग रंगाई, ना कोई सगन मनाया। घर विच मिल्या साचा माही, घर घर विच होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणी धार आप चलाया। आदि पुरख धार चलाइंदा, पारब्रह्म हो त्यार। हँ आपणा रूप वटाइंदा, लक्ख चुरासी कर पसार। सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा, हरि पुरख निरँजण बैठ ठंडे दरबार। एका मंगल गाइंदा, आदि निरँजण होए उज्यार। श्री भगवान सगन मनाइंदा, अबिनाशी करता साचा यार। पारब्रह्म ब्रह्म रूप वटाइंदा, ब्रह्म रूप कर पसार। सतिजुग आपणी धार बंधाइंदा, निरगुण सरगुण लै अवतार। जुग चौकड़ी खेल खिलाइंदा, आप आपणी किरपा धार। गुर पीर अवतार साध सन्त सेवा लाइंदा, जुग करता करे ख़बरदार। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराइंदा, कलिजुग जाणे आपणी धार। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड वंडाइंदा, राउ रंक ऊँच नीच दए आधार। चारे वेद मंगल गाइंदा, पुराण अठारां पैज संवार। शास्त्र सिमरत संग रलाइंदा, जगत विद्या दए आधार। चौदां कूट फोल फुलाइंदा, त्रैभवन साची कार। दो जहानां रंग रंगाइंदा, ब्रह्मण्डां खण्डां एका पुरख वेखे नार। कन्त सुहागी साचा संग निभाइंदा, आदि जुगादि एकँकार। नव नौ आपणा मेल मिलाइंदा, चार नौ ते वसया बाहर। चारे खाणी सर्ब जस गाइंदा, चार बाणी करे पुकार। गुर अवतार ध्यान लगाइंदा, दोए जोड़ करे निमस्कार। जग जोड़ी जोड़ जुड़ाइंदा, निरगुण सरगुण कर प्यार। निरगुण सरगुण बन्धन पाइंदा, एका नारी कन्त भतार। दोहां विचोला आप अख्वाइंदा, राम राम राम पसार। आपणा काज आप रचाइंदा। दूसर कोए ना जाणे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी करे सच विहार। जुग चौकड़ी विहार करदा आया, इक्क इकल्ला बेपरवाह। सरगुण सरगुण लड़ फड़दा आया, निरगुण सरगुण बण मलाह। अक्खर वक्खर आपणा पढ़दा आया, बोध अगाधा सच्चा शहिनशाह। सच रंगीले पलँघ सच सेजा आपणी चढ़दा आया, भगत भगवन्त लए मना। साचे सन्तां आपणा खेल करदा आया, घर घर वेख एका थाँ। जगत जुग बाकी हरदा आया, हुक्मी हुक्म आप वरता। आपणी घाड़ण घड़दा आया, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करदा आया, भेद अभेदा आप छुपा । तेई अवतार हुक्मी बरदा घल्लदा आया, दस गुर नाल रला। साध सन्त जग डरदा आया, पुरख अबिनाशी पुछे बैठा बेपरवाह। कलिजुग अन्तिम आपणे घोड़े चढ़ के आया, निरगुण दाता इक्क ख़ुदा, आपणा बिस्मिल रूप वटाया, अलाही नूर जल्वा दए वखा। कादर कुदरत वेखण आया, ख़ालक ख़लक वेखे आपणे थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाह। हरि सच्चा शाह अख्वाइंदा, आदि जुगादी एकँकार। कोटन राज राजाना आपणे हुक्म फिराइंदा, लोकमात दए आधार। लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा, अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर। आपणा भेव ना किसे जणाइंदा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहिण सर्ब संसार। कलिजुग अन्तिम आपणा रूप वटाइंदा, पूरन जोत हरि करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां बदले धार। दो जहानां धार बदलाइंदा, हरि दो जहानां वाली। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाइंदा, निरगुण जोत जोत अकाली। आदि शक्ति बन्धन पाइंदा, शब्दी शब्द दए दलाली। आपणा चन्दन आपणा टिक्का आपे लाइंदा, आपणे दर बणे आप सवाली। आपणा फंदन आप कटाइंदा, आपे तोड़े आपणा माया जंजाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल मात निराली। खेल निराली करने आया, हरि करता पुरख अगम्म। निरभउ निरवैर आपणा नाउँ धर के आया, ना मरे ना पए जम्म। आपणे अश्व आपणे घोड़े चढ़ के आया, शाह अस्वार सूरबीर आपणा बेड़ा बन्नृ। आपणी इच्छया आपणी आसा आपणे हथ्थ फड़ के आया, जुग चौकड़ी देवे आण। आप आपणी विद्या आपणा अक्खर आपणे अंदरों आप पढ़ के आया, ना कोई सुणे सुणाए राग कान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेअन्त। बेअन्त खेल खिलाइंदा, सच्चा शहिनशाह। कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा, जुग चौकड़ीआं बण मलाह। नव नौ तेरा पन्ध मुकाइंदा, नौ नौ लेखा दए मुका। चार वरन एका सरन लगाइंदा, चार वेद आप बुझा। चार बाणी बाण लगाइंदा, तीर निराला हथ्थ रखा। चारे खाणी एका खाण रखाइंदा, नाम अनमुल्लड़ा जाम हथ्थ पिला। दो जहानां शाह पातशाह आपणा नाउँ धराइंदा, लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाँ। कलिजुग तेरा रंग रंगाइंदा, कूड़ी क्रिया वेखे वेखणहार आपणा रूप वटा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रिहा रखा। आपणा लेखा आपणे रक्ख हथ्थ, हरि वड्डा वड्डी करे वड्याईआ। जुग जुग चलाउँदा आया रथ, रथ रथवाही सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतारां पाई शब्दी नथ्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। सन्तन महिमा दसदा रिहा अकथ, सचखण्ड दुआरे वेखे सच्चा माहीआ। दिवस रैण जिहवा रहे रट, रट रट चरन सरन कँवल ध्यान लगाईआ। शब्द नगारा मारदा आया सट्ट, ताल तलवाड़ा आप वजाईआ। वसदा आया घट घट, आपणा भेव ना किसे खुलाईआ। किसे वखाया तीर्थ तट, किसे शिवदुआले बन्द कराईआ। किसे वखाए स्वांग नटूआ नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। किसे वखाए उच्चे टिल्ले पर्बत, किसे कैलाश रिहा भरमाईआ। किसे कोहतूर वखाए जोत प्रकाश, किसे डूँगघी गार रिहा समझाईआ। किसे जणाए चौदां लोक चौदां तबक चौदां हट्ट, किसे जगत दए वड्याईआ। किसे काया काया काया करे प्रगट, किसे घर घर विच दए वखाईआ।

किसे रती लेखे लाए रत, रती रत दए सुकाईआ। किसे देवे बुध मति, किसे ज्ञान ध्यान विच फसाईआ। किसे देवे धीरज सति, ब्रह्म मति किसे वखाईआ। ब्रह्मे देवे इक्क उतप्त, अट्ठे पहर नेत्र रोवे नीर वहाईआ। विष्नूं वास्ता रिहा घत्त, पारब्रह्म सच्ची तेरी सरनाईआ। शंकर छड्डुया आपणा हठ, खुल्ड़े केस ख़ाकी ख़ाक रिहा रमाईआ। दो जहानां श्री भगवाना तेरा खेल वेख्या अकथ, तेरी महिमा कथी ना जाईआ। पार्बती वेखी तेरी रत, मेरी रत विच समाईआ। तेरा रूप बावा आदम ना कोई तत्त, तेरी इच्छया मेरी सेवा सर्ब लोकाईआ। तूं सर्ब जीआं दा कमलापति, कँवल नैण तेरी वड्याईआ। तूं आपणे घर आपणे मन्दिर आपणे गृह आपणा सत्थर बैठा घत, तेरा भेव कोई ना पाईआ। जुग चौकड़ीआं बैठे कोटन कोटि तूं बदली ना अजे करवट, तेरी करवट नज़र किसे ना आईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, करे खेल बेपरवाहीआ। आपणा रूप धरया आप पुरख समरथ, सीस ताज जगदीश टिकाईआ। आदि शक्ति लाल वेखे आपणी रक्त, लाल गुलाला बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पुच्छदा आया वात, काया सिंच क्यारी हरी कराईआ। कोई कहे राम जाया दसरथ, कोई नंद यशोधा दए वड्याईआ। जिस उपजाया आपणा तत्त, तिस भुल्ली सर्ब लोकाईआ। वीह अवतार सतिजुग त्रेता चलाउँदे आए रथ, द्वापर वेद व्यास करे लिखाईआ। कान्हा कृष्ना आपणा रूप वटाए घट घट, मुकंद मनोहर लखमी नरायण बंसरी नाम इक्क जणाईआ। अन्तिम सारे लोकमात आपणा सत्थर गए घत्त, थिर कोए रहिण ना पाईआ। पंज तत्त चोला दिसे ना रत, रूप रंग ना कोए वड्याईआ। ना कोई सीता रखाए जति, ना कोई राधा दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस मिल्या हरि कमलापति, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सो सुहागण घर साचे बैठी घर आपणा कन्त हंढाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर एका कन्त हंढाया, लक्ख चुरासी कर पसार। विष्न ब्रह्मा शिव नाल सेवा करदा आया, जिस मिल्या हरि करतार। लेखा लेखे विच रिहा लिखाया, लेखा लिखण तों रक्खया बाहर। कागद कलम शाही ना कोए लिखाया, निहकर्मी कर्मां लए विचार। बरनां वरनां विच ना कदे फँसाया, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड वण्डे ना कदे विच संसार। घट घट दीन दयाला आपणी जोत करे रुशनाया, अगम्म अगम्मड़ा घर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा वेखे जगत विहार। कलिजुग विहारा हरि निरँकारा, जगत जुग चलाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, लोकमात खेल खिलाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, वेद पुराण शास्त्र सिमरत देण ग्वाहीआ। हरि का रूप ना किसे विचारा, रंग रेख ना कोए वखाईआ। आपणे भेद आपणे हथ्थ रक्खे परवरदिगारा, बेऐब सच्चा शहिनशाहीआ। मुकामे हक हो त्यारा, हक हकीकत लए प्रगटाईआ। एका नूर एका जल्वा एका इस्म कर त्यारा, आज़म आपणी खेल खिलाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग करता नाउँ वड्याईआ। मुकामे हक हक ख़ुदा, जल्वा नूर नूर अलाहीआ। आपणा मन्दिर आप प्रगटा, आपणे मन्दिर करे रुशनाईआ। आपणा सजदा आप करा, आपे बैठा सीस झुकाईआ। आपणा कलमा आप सुणा, आपे जाणे कलाम आपणी बणत आप बणा, लोकमात दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। आपणा जल्वा नूर उपाया, नूर नुराना बेपरवाह। आलम आलमीन उल्मा वेख वखाया, हज़रत हज़ूर सच्चा शहिनशाह। सच ग़फूर फेरा पाया, आपणी ग़फ्लत दए मिटा। आपणा इस्म आपणे विच्चों दए कढाया, वरआज़म आपणा नाँ धरा। ख़ालक आपणा खेल खिलाया, मख़लूक हो रुशना। ना कोई पिता जगत बणाया, नूर नूर नाल दए मिला। एका कन्या कन्न सुणाया, एका आयत दए समझा। उल्फ़त विच कदे ना आया, अर्श फर्श वेखे कुरा आप सच्चा शहिनशाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नूर दए दरसाया। एका नूर इक्क इस्लाम, एका आपणी जीव वड्याईआ। एका रवि ससि एका चन्न करे महान, एका ब्रह्म इक्क ज्ञान, एका नूर नूर महान, नूरी जल्वा शाह अज़मान, शाह पातशाह सच्ची वड्याईआ। एका तूरत तुरीआ तूर नाद वजाए हरि तहिरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका कलमा दए सुणाईआ। एका हुक्म हरि जणाया, ख़ुदी ख़ुदावंद आप गंवाईआ। कलमा कलाम आप बणाया, कायनात दए सुणाईआ। एका अरफ़ एका आरफ़ बैठा आसण लाया, एका करे सच शनवाईआ। एका तुआरफ दए कराया, तालब तुलबा करे पढ़ाईआ। सच हकीकत दए समझाया, आप आपणा पर्दा लए उठाईआ। ईसा आपणा नूर दरसाया, नूर नूर विच मिलाईआ। इक्क नौ हरि बन्धन पाया, इक्क नौ दए ग्वाहीआ। अठ्ठ तत्त दा पन्ध मुकाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध दए समझाईआ। सति सतिवादी हो रुशनाया, एका हक दए वड्याईआ। छे घर फोल फुलाया, फोलणहार इक्क अख्वाईआ। पंचम मेला दए मिलाया, पारब्रह्म सच्चा शहिनशाहीआ। चौदां चौदां वेख वखाया, इक्क मुहम्मद करे शनवाईआ। आपणा चरन अद्धविचकार रखाया, ज़मीन अस्मान ना कोए वड्याईआ। आफ़ताब इक्क चढ़ाया, काया हुज़रा मग़रब इक्क वखाईआ। काया काअबा मेल मिलाया, कुदरत कादर एका घर वसाईआ। एका रूप लए वटाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दए समझाईआ। एका नूर दरसाया कुदरत कादर, करीम हक दवाया। आपणा जल्वा कराया सादर, सिदक साचा इक्क निभाया। एका इलम पढ़ाया दावर, दवर दए वखाया। आपे मीत पित आपे मादर, पिसर पिदर आप समझाया। आपे शाह आपे नाज़र, आपे दए समझाया। आपे हज़ूर रिहा हाज़र, हज़रत आपणा रूप वटाया । आपे मुहम्मद देवे साचा आडर, आपे गॉड आप ख़ुदाया। आपे हो के बैठा

आपणी बाडर, अग्गे कोए जाण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा जल्वा दए समझाया। हरि आपणा जल्वा आप समझाइंदा, करे खेल आप करतार। ईसा आपणा नूर दरसाइंदा, नुरानी नूर उज्यार। मुहम्मद आपणे चरन कँवल बहाइंदा, ठोकर मारे एका वार। बजर कपाटी आप तुड़ाइंदा, देवे सच हुलार। आपणे मन्दिर आप चढ़ाइंदा, साचा हुज़रा वखाए काया काअबा इक्क दुआरा। हज़रत अग्गे नज़री आइंदा, बैठा परवरदिगार। आपणा चोला किरन किरन विच समाइंदा, आपे चन्दं आप सतारा। आपे हरया रंग भराइंदा, अफ़क उल्फ़त अकीकत अफीअत आलमीन वेखे विच संसार। महिबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला ख़ुदाए परवरदिगार। चौदां लोक कोई ना सके रोक, अली लाए दूजा नाअरा। इक्क ख़ुदावंद रक्खी तेरी ओट, तेरा रूप चढ़ाया मेरी इच्छया तेरा सतारा। तेरा कलमा वसे मेरे बन्द बन्द, तूं नबी मीत मुरारा। कौण वेला कौण सिफ्त ऊँच सुहाणी सुहागी छन्द, प्रगट हो सच्चे परवरदिगारा। पुरख अबिनाशी सदा बख़्शंद, आपे बख़्शे चरन धूढ़ी ख़ाक शारा। चौदां सदीआं तेरा सुणाउणा जगत छन्द, अल्ला हो हो ऐनलहक नाअरा। अन्तिम वण्डे साची वण्ड, वण्डणहारा इक्क करतारा। करे खेल विच वरभण्ड, प्रगट होवे सिर अमाम अमामा सच्चा शाह सिक्दारा। अहिमद वेखे जगत नार दुहागन रंड, तेरी उम्मत लाल मैहन्दी रंग रंगे ना कोए अपर अपारा। मुला शेख़ मुसायक पीर अन्त देवण तैनूं कंड, तेरा रहे ना कोई सहारा। तेरा पैग़म्बर तेरा सुअम्बर उच्चे विच वरभण्ड, तेरी ख़ाहिश अल्ला राणी साची खेल करे आप करतारा। आपे पाए बहश्ती वण्ड, आपे हज़रत जाणे आपणी धारा। आपे धरती ख़ाक अंदर आपणा दिता वण्ड, आपे पावे हरि सारा। आपे जगत विहार चलाए सूरा सरबंग, सृष्टी करे खेल न्यारा। इक्क बीवी इक्क ख़ावंद, इक्क दूजे दी मंगण मंग, करे आप आप विहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका ख़ावंद सच्चा साचा यारा। चौदां सदीआं खेल खिलाउणा, मुहम्मद हरि जणाया। तेरा कलमा तेरा रूप मात धराउणा, तेरा तेरे विच टिकाया। तेरा जल्वा तेरा रंग रंगाउणा, तेरा तेरी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए वखाया। मुहम्मद रक्खणा याद, हरि साचा सच जणाइंदा। चौदां सदीआं दिती दाद, देवणहारा भुल ना जाइंदा। तेरा रूप वेखे विच संसार, वसणहारा हरि ब्रह्माद, ब्रह्म आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा बन्धन इक्क समझाइंदा। तेरा बन्धन कलमा कलाम, कामल आपणा आप जणाईआ। तेरी शरीअत तेरा ईमान, तेरे रंग रंगाईआ। तेरा घर तेरा मकान, तेरे दर वड्याईआ। मेरा हुक्म पैग़ाम, तेरा पैग़ाम सर्ब लोकाईआ। तेरी शरअ वेखे आप जहान, जगत लगाम दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार

लए बदलाईआ। चार जुग दी साची धार, चार जुग प्रनाया। ब्रह्म ब्रह्मा बण लिखार, वेद वेदांता इक्क समझाया। आपे वसणहारा कोल, आपे बैठा मुख छुपाया। आपे चारों कुण्ट रिहा फिरत आपे जाणे बोल, एका सोहला दरसाया। आपे वजाए सच्चा ढोल, आदि जुगादी शब्द डंका नाद वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग करता जगत सुअम्बर आपणे हत्थ रखाया। जगत सुअम्बर नानक दुआर, निरगुण सरगुण आप प्रनाया। जगत नारी सद्दी सच दरबार, जगत पल्लू फेर फड़ाया। पहला हुक्म दिता मन्त्र सतिनाम वण्डाया। दूजी कुदरत करया पसार, कुदरत मेरा रूप वखाया। तीजे शब्द होए जैकार, वरन बरन चार कुण्ट इक्क अलाया। चौथे आत्मा परमात्मा करना सच विहार, जगत विछोड़ा फंद कटाया। सोहँ जपणा एका रसन श्री भगवान, दूसर पार ना कोए कराया। नानक दोए जोड़ करे निमस्कार, पुरख अबिनाशी तेरा सच सच्चा दरबार, दीवा बाती ना कोए उज्यार, सूरज चन्न ना कोए पसार, जंगल जूह ना कोए उजाड़या। ना कोई दिसे डूँघी ग़ार, ना कोई पुरख ना कोई नार, ना कोई सखीआं मंगल गाया। अग्गे बैठा इक्क निरँकार, छैल छबीला परवरदिगार, पंज तत्त ना कोए विहार, मुच्छ दाढ़ी ना कोए अधार, हत्थ पैर ना रक्खे विच संसार, नेत्र नैण ना लए उग्घाड़, जोती जोत डगमगाया। एका दिता धुर फ़रमान, नानक सुणना कर ध्यान, पूरन देणा ब्रह्म ज्ञान, लक्ख चुरासी कर वखान, सर्ब जीआं दा एका जाणी जाण, दूसर अवर ना कोए जणाया। आत्म अन्तिम करे कल्याण, कोटन कोटि रवि ससि काया मन्दिर देवे जोती भान, घर नारी घर कन्त घर सज्जण सुहेला विवाहण, घर साची सेज लए सुहाया। घर राग घर धुन्कान, घर गीत गोबिन्द अलाया। एका हुक्म कर परवान, लक्ख चुरासी दए समझाया। नाता जुड़े विच जहान, पुरख अबिनाशी मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना लै के आया। धुर फ़रमाना सुणे संदेश, नानक निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। हरि हरि जोती हरि हरि प्रवेश, हरि हरि हरि हरि मेल मिलाइंदा। कृपानिध हरि सपुत्री रिहा वेख, हरि साचा साह सुधाइंदा। हरि नारी करे बुध बबेक, साचा डंका नाम लगाइंदा। हरि दूल्हा हरि कन्त करे हेत श्री भगवन्त आपणी ख़ुशी आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची क्रिया आप जणाइंदा। साची क्रिया कर्म जग करदा, करता पुरख आप कराईआ। सृष्ट सबाई वेखे हिरदा, हर घट आपणा आसण लाईआ। कलिजुग आपणी विद्या आप पढ़दा, चारों कुण्ट जगत पढ़ाईआ। त्रैगुण अग्नी अंदर जीव जंत सभ सड़दा, अग्नी तत्त ना कोए बुझाईआ। झूठा लड़ नारी कन्त कन्त नारी दा फड़दा, अन्त कोए संग ना जाईआ। इक्क भगत भगवन्त साचा वरदा, घर वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

४८२

कर, एका देवे सच वड्याईआ । सच संदेशा हरि सुणाया, सुणया नानक निरगुण धार। लोकमात विच लै के आया, सरगुण हो उज्यार। सृष्ट सबाई दए जणाया, वरन बरन ना कोए प्यार। एका पंचम पंचम दए वखाया, आत्म अन्तर अधार। बेटी कन्त ना कोए तराया, झूठा नाता जगत संसार। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चारों जुग चारे लावां दए समझाया, ब्रह्म पारब्रह्म करदा आया प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक सुणाई सच गुफ्तार। सच गुफ्तार सुणाइंदा, नानक सतिगुर मीत मुरार। सृष्ट सबाई आप उठाइंदा, शब्दी शब्द करे ख़बरदार। चौथा घर वेख वखाइंदा, घर मिले मीत मुरार। सो नारी कन्त सुहाइंदा, कन्त सुहागन वेखे विच संसार। चौथी लांव आप दवाइंदा, चौथे जुग बेड़ा कर जाए पार। अन्तिम ओट इक्क वखाइंदा, उच्ची कूक गया पुकार। निहकलंक पुरख अकाला दीन दयाला जग जगत सच्ची कार कमाइंदा, सचखण्ड तख्त बैठा सच्चा सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोती एका रूप एका नूर दस अवतार। गोबिन्द रूप सुत दुलारा, निरगुण निरगुण आप उपाया। पंज तत्त देवे इक्क आधारा, घट घट विच आप टिकाया। पुरख अकाल बण बण लाड़ा, साची लाड़ी लए प्रनाया। मिल्या मेल इक्क दुआरा, दूसर विछड़ कदे ना जाया। अठ्ठे पहर इक्क अखाड़ा, वाह वाह मंगल एका गाया। एका शब्द इक्क सतार, एका नाद वजाया। एका गावे एका सुनणेहार, एका एक सांग रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द रीत गया समझाया। गुर गोबिन्द रीत जगत चलाई, जीव जंत ना कोए जणाइंदा। चारे सुत आप प्रनाई, लाड़ी मात ना होर कोए वखाईआ। एका कन्त अंग लगाई, अंगीकार मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द नानक रीत आपणे विच बन्द गया कराईआ। गोबिन्द लेखा अज्ज खुल्हाउणा, वीह सौ अठारां बिक्रमी छब्बी विसाख दिन विचार। पुरख अबिनाशी आपणा पर्दा लाउहणा, चार जुग जो आपणे उप्पर रक्खया डार। साचा मार्ग इक्क समझाउणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि करतार। गोबिन्द मीता धुर फ़रमाना, लोकमात लोक लाज ना कोए रखाईआ। आपणी हथ्थीं आपणा बंस कर कुरबाना, आपणे घर ख़ुशी मनाईआ। अजीत जुझार ना लभ्भया कोए हाणी हाणा, जगत मेल ना कोए वखाईआ। फ़तह जुझार ना दिता कोए जगत नगारा, दृष्ट इष्ट इक्क समझाईआ। चार जुग दा गाउँदा आए गोबिन्द तेरा गाउणा, चार वरन रहे कुरलाईआ। अठारां बरन चोला होया पुराणा, अन्त तन रहिण ना पाईआ। गोबिन्द मन्ने आपणी आणा, सीस आपणा अग्गे झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए खुल्हाईआ। गोबिन्द करया ना जगत विवाह, आपणा सुत ना कोए प्रनाया। नानक लेखा गया लिखा, चौथी

४८३

लांव चौथे पद प्रभ अबिनाशी दए मिलाया । गुरमुख विरला मंगे आपणी हद्द, साचा कन्त लए हंढाया। पीता अमृत जाम मदि, एका रंग समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल करन दी ख़ातर, गोबिन्द भाणे विच रखाईआ। कलिजुग जीव ना जाणे कोए चातर, पढ़ पढ़ भुल्ली सर्ब लोकाईआ। लिख लिख थक्के चिठीआं पात्र, जगत बन्धन रहे पाईआ। लेखा जाणे ना कोए जमाल बातन, अन्तरगति ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा दए मुकाईआ। कलिजुग अन्तिम लहण चुकाइंदा, जगत जगत दी धार। निरगुण आपणा रूप प्रगटाइंदा, जोती जोत जोत कर उज्यार। पहलां गुरमुख आपणे मेल मिलाइंदा, चौथा घर वखाए सच्चा दरबार। सुरत सुवाणी आप प्रनाइंदा, शब्द हाणी कर त्यार। धुर दी बाणी फेर सुणाइंदा, ढोला गाए आपणी वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत करे सच विहार। चौथड़ी लांम पूरन कर, पहलों हरि जी आपणा मेल मिलाया। कागों हँस चुकया डर, हँस सरोवर आण नुहाया। आपणी सरन लगाया फड़, जगत विछोड़ा पन्ध कटाया। मानस जन्म लेखे लग्गा धड़, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाया। सतिजुग त्रेता द्वापर मिल्या वर, कलिजुग अन्तिम पूर दए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त दए वखाया। पहलां आपणा मेल मिलाया, मिल्या मेल हरि करतार। दूजे नाता फिर जुड़ाया, जगत जुग कर विचार। तीजे बन्धन एका पाया, आत्म परमात्म दए अधार। चौथा घर लए वसाया, घर मेला मीत मुरार। जगत बन्धन इक्क समझाया, नारी कन्त कन्त नारी इक्क विचार। जिस जन महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान गाया, जन्मे मरे ना विच संसार। पंज जैकारे दए लगाया, साचे दर होए परवान। जगत नाता जगत विच रखाया, जगत नाता वेखे आप भगवान। झूठा हट्ट ना कोए बणाया, झूठी चले ना कोए दुकान। नानक निरगुण कन्त इक्क हंढाया, भरमे भुल्ले जीव अणजाण। चौथी लांव कह कह काज रचाया, किसे हथ्थ ना आया निगहबान। पढ़न सुणन वाला कोए ना पार लगाया, परे बैठा आप मेहरबान। सतिजुग धारा दए बंधाया, साची सिख्या विच जहान। धुर दा लिख्या पहलों दए मिटाया, साची संगत कर परवान। जिस दा साह आप सुधाया, सो साहिब करे सदा कल्याण। कर्म जन्म धर्म रहिण ना पाया, धर्मी धर्म वखाए इक्क निशान। जगत जोड़ी जोड़ जुड़ाया, जुड़या जोड़ा एका एक नौजवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग देवे धुर फ़रमान। सतिजुग फ़रमान सुणाइंदा, साची रीत पतित पुनीत। जो जन जगत काज रचाइंदा, करे खेल अवल्लड़ी रीत। सोहँ महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, काया नाता तोड़े शिवदुआला मठ गुरदुआरा मन्दिर मसीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग रंगाए

हस्त कीट। ऊँचां नीचां एका दाता, घट घट अन्तर आप समाया। ब्रह्म रक्खी उत्तम ज़ाता, पारब्रह्म मेल मिलाया। सोहँ शब्द साची गाथा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दए पढ़ाया। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथा, चौदां तबकां फोल फुलाया। सच तख्त निवासी देवे साचा साथा, सगला संग निभाया। सतिजुग तेरी एका पूजा एका पाठा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। अठसठ तीर्थ ना कट्टे वाटा, जमना सुरस्ती गंगा गोदावरी कोए ना नहावण जाया। मक्का काअबा कोए ना मारे हाकां, उच्ची कूक ना कोए सुणाया। पंडत पांधा कोए ना देवे साथा, जगत टल्ल ना कोए खड़काया। चौथी लांम पढ़ पढ़ कोई ना पावे घाटा, गुर का मन्त्र नाम भुलाया। कलिजुग तेरे अन्तिम पुरख अबिनाशी घट घट वासी इक्क वछाया सत्थर साथा, साचे सत्थर दए सुहाया। एका ओट पुरख अकाल हरि समराथा, दूसर इष्ट ना कोए मनाया। घर घर बैठिआं पूरा करे घाटा, जिस जन चरन ध्यान लगाया। काया अमृत देवे साचा बाटा, निझर झिरना आप झिराया। एका नूर जोत ललाटा, घर घर विच कर रुशनाया। पूर्ब लहिणा मस्तक माथा, बुध बिबेक रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत एका रंग रंगाया। हरिसंगत करना सच विहार, हरि सतिगुर साचा आप जणाईआ। बिन सोहँ शब्द काज रचन ना विच जहान, लावां फेरे ना कोए दवाईआ। दीन ईमाना जगत इस्लामा मज़्बां मज़लूमा करे ख्वार, ज़ालम ज़ुलम ना कोए कराईआ। सतिजुग साची बन्ने धार, कुँवार कन्या एका कन्त आपणे अंग लगाईआ। दुहागण दिसे ना कोए विभचार, वेसवा रूप ना कोए धराईआ। चारों कुण्ट चार वरन एका दिसे हरि निरँकार, शूद्र वैश ना कोए दुरकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनन्द अनन्द अनन्द कारज साध संगत तेरी रसना विच कराईआ। साध संगत तेरी रसना काज, हरि हरि नाम ध्याए। सतिगुर पूरा रक्खे लाज, आदि जुगादि ना मरे ना जाए। मुस्लमीन तेरा मक्का काअबा तेरे अंदर सच महिराब, साचे हुज़रे बैठा नाअरा रिहा लगाए। पंडत पांधे सुण आवाज़, अट्ठे पहर वज्जे नाद, नाद अनादी रिहा सुणाए। ग्रन्थी पन्थी आपणे विच्चों आया काढ, आपणे गोबिन्द कर लाड, जगत गोबिन्द ना कोए हंढाया। सर्ब जीआं दा इक्क परमात्मा इक्क ख़ुदा एका गॉड एका दिउ एका रंग एका मेवा एका इस्म एका आज़म एका अज़ीम एक निशान, एका वाली दो जहान, एका नाम धुर फ़रमान, एका शब्द सच्चा निशान, एका नूर नूर नुरान, एका मस्जिद इक्क मकान, एका मन्दिर एका शमादान, एका रूप श्री भगवान, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी पंदरां कत्तक नौ खण्ड पृथमी देवे आप फ़रमान, मक्के काअबे सर्ब भुल जाण, मन्दिर मस्जिद सर्ब छड्डु जाण, गुरदुआर ना सके कोए पछाण, हरि घट नज़री आवे आप भगवान, इष्ट वखाए दो जहान, जोती नूर नूर रुशनाईआ। नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी तेरी करन

आया कल्याण, बणया विष्नूं आपे देवणहारा हुक्म फ़रमान, आपे ब्रह्मा आपे शंकर चरनां हेठां दब्बे आण, आपे करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द राज ना देवे आण, आपे चरनां हेठां देवे लताड़ लोआं पुरीआं पृथ्मी आकाश खण्डां पए मार, आपे भगत भगवन्त सन्त कन्त जीव जंत एका रंग रंगान, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेश नर नरेश सृष्ट सबाई दए समझाईआ। सृष्ट सबाई उठावणा, शब्द खण्डा फड़ कटार। राज राजाना चरन निवावणा, एका हुक्म सच्ची सरकार। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सर्ब मुकावणा, हिन्दू मुस्लिम सिख ना कोए विचार। चार कुण्ट सजदा इक्क करावणा, दहि दिशा इक्क जैकार। राम कृष्न ईसा मूसा मुहम्मद आपणा रूप प्रगटावणा, नानक गोबिन्द आपे होवे ज़ाहर दस गुर करे सच प्यार। चार जुग दे विछड़े भगत आपणे गले लगावणा, करे खेल सच्ची सरकार। डुबदे पाथर आप तरावणा, जिस जन बख्शे चरन धूढ़ी सच्ची छार। पूर्ब लहिणा झोली पावणा, पिछला लेखा दए आधार। दसरथ बेटा आपणे नाल मिलावणा, कुशल्लया तेरा रूप अपार। तेरी कश कशा दिशा वेख वखावणा, कथा जाणे सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। सच खेल करने आया, कलिजुग अन्तिम जामा पा। पिछला लेखा मेटण आया, अगला दए समझा। खेवट खेटा बण के आया, पुरख अबिनाशी इक्क मलाह। गुरसिख बेटी बेटा आपणे दर लए बहाया, नाता बिधाता दए जुड़ा। साध संगत साचा हुक्म दए सुणाया, ग़रीब निमाणे आपणे गले लगा। एका काज एका वार दए वखाया, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप वटा।

★ २६ विसाख २०१८ बिक्रमी हज़ूर साहिब नूं शब्द भेजया ★

सचखण्ड निवासी लोकमात आया, निहकलंक जामा धार। गोबिन्द सूरा नाल मिलाया, जोद्धा सूर बली बलकार। नंदेड़ निवासी किसे नज़र ना आया, कलिजुग सुत्ते पैर पसार। सच संदेश रिहा सुणाया, होणा ख़बरदार। इक्क नरेश फेरा पाया, नौ खण्ड पृथ्मी मारे मार। पन्थ ख़ालसा भुल रहे ना राया, करया खेल आप करतार। करता पुरख करनी करने आया, निहकलंका जामा पा। अमृतसर सर रिहा समझाया, शब्द ठोकर इक्क लगा। सभ दा माण दए गंवाया, अभिमाण सके ना कोए जणा। राज राजाना दए वखाया, एका खण्डा नाम चमका। पहली चेत्र राष्ट्रपत समझा के आया, अन्तिम तख्तों देवे लाह। वीह सौ वीह बिक्रमी पंदरां कत्तक आपणा चरन लए टिकाया, दिल्ली दुआरे फेरा पा। नौ खण्ड पृथ्मी आपणयां चरनां हेठां लए दबाया, भरम भुल्ले कोई ना। एका वार संदेशा रिहा सुणाया, सृष्ट सबाई दयो सुणा। गोबिन्द सूरा गोबिन्द

रूप निरगुण धार हो लोकमात आया, सम्बल नगरी बैठा डेरा ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दए वखा। सृष्ट सबाई देणा संदेशा, निहकलंक जोत जगाईआ। माण गंवाए विष्न ब्रह्मा शिव महेषा, करोड़ तेतीसा रहिण ना पाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल वटाया वेसा, दीन दयाल लोकमात करे सच्ची शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। निहकलंक सूरबीर बलवाना, सो पुरख निरँजण मात आया। हरि पुरख निरँजण नौजवाना, आदि जुगादि वेस वटाया। एकँकारा खेल महाना, जीव जंत भेव ना राया। आदि निरँजण नूर महाना, जोत नूर नूर रुशनाया। श्री भगवान देवे धुर फ़रमाना, सचखण्ड निवासी भुल ना जाया। अबिनाशी करता हो मेहरबाना, लोकमात वेख वखाया। पारब्रह्म ब्रह्म बन्न्हे गाना, आत्म परमात्म लए प्रनाया। जगत ज्ञानी बण बैठे निधाना, हरि का भेव किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका दए वजाया। एका डंका नाम वजाया, हज़ूर साहिब रहिणा ख़बरदार। जगत शंका दए कढाया, पुरख अबिनाशी हो त्यार। आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाया, मध्ध खेले खेल सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूजी वेर आपणा दस्से सारा हाल। दूजी वेर पुछणा हाल, हाल हाल विच समझाईआ। त्रैकाल दरसी दस्से सभ नूं काल, कौण वेले काल खाईआ। जिस दी घालणा रहे घाल, सो गोबिन्द आया सच्चा माहीआ। जिस दी दो सौ पैंसठ साल करदे रहे भाल, सो बैठा सीस ताज टिकाईआ। जगत अवल्लड़ी चली चाल, आपणा खण्डा हथ्थ चमकाईआ। किसे पत्त ना रहिण देवे डाल्ह, सिंमल रुक्ख सर्ब वखाईआ। जिस दा नाँ रक्खया महाकाल, सो महाकाल हो जाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे दीन दयाल, दीनां उत्ते रच्छया रिहा कमाईआ। जिस नूं कहिन्दे करदा सर्ब प्रितपाल, सृष्ट सबाई वेखे आप लोकाईआ। जिस नूं कहिन्दे शाहों करे कंगाल, कंगाल शाह दए बणाईआ। गुरसिख लक्ख चुरासी विचों लए भाल, आप आपणी दया कमाईआ। आपणे चरन बठाए आपणे लाल, लाल आपणे भेंट कराईआ। साध संगत होण ना देणा विंगा वाल, सेवा करे बण बण जगत सच्चा माहीआ। पन्थ ख़ालसा माझा दले तेरी दाल, कलिजुग चक्की आप चलाईआ। शाह पातशाह होण बेहाल, धीरज धीर ना कोए धराईआ। चारों कुण्ट सिँघ शेर तेरी होवे भाल, कलिजुग झल्ल विच सिँघ शेर नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चखण्ड नंदेड़ आपणा संदेश रिहा पुचाईआ।

इन्दर सिँघ आसण इक्क लध्धा, दूसर ओट ना कोई रखाइंदा। अठ्ठे पहर प्रेम दे विच बध्धा, हिरदे हरी हरि ध्यांअदा। आपे धुरदरगाही ने दिता मात सद्दा, शब्द संदेश इक्क पुचाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच्चों कढ्ढा, प्रेम प्यार दा बन्धन पाइंदा। मात पित भैण भाई साक सज्जण सैण छड्डा, ओट इक्क अकाल रखाइंदा। बिरध जन्म नूं बणाया फेर नढ्ढा, जन्म जन्म दे विच बदलाइंदा। आपे विष्न ब्रह्मा शिव लँघ के गए पार हद्दा, सचखण्ड विच चरन टिकाइंदा। धर्म निशाना हथ्थ विच इक्क गड्डा, पुरख अकाल हथ्थ फड़ाइंदा। अठ्ठे पहर लडाए सच्ची गोद लड्डा, लाड लाडला इक्क समझाइंदा। अमृत जाम प्याया इक्क मदा, दूसर रस ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब जन्म दा भेव खुल्हाइंदा। आपे पूर्ब जन्म दा लेख लिखाउणा, लिख्या लेखे विच ना आईआ। आपणी इच्छया आपणे संग रखाउणा, इच्छया रूप ना कोए जणाईआ। आपणी भिच्छया आपणी झोली पाउणा, आपे भिच्छया करे सबाईआ। आपणी दछिआ आप बंधावना, दूसर ना कोई रखाईआ। आपणे चरनां आप बंधावना, आपणी हथ्थीं बन्धन पाईआ। आपणी सेवा आप कमावना, बांदी बण के आया सच्चा माहीआ। फड़ के चोटी अख़ीर इक्क चढ़ावना, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। हकीरां शाह दए बणाया, शहिनशाह सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इन्दर इन्दर रूप समाईआ। इन्दर सिँघ सिँघ साचा पाया, पारब्रह्म बेअन्त। आपणे अंग नाल अंग मिलाया, चढ़े रंग बसन्त। साची सेजा रिहा सुहाया, महिमा जाणे ना कोई अगणत। साची नारी सेव कमाया, पुरख अबिनाशी वरया एका कन्त। श्री भगवान पल्लू हथ्थ फड़ाया, दिस ना आए जीव जंत। उच्चे मन्दिर लए बहाया, एका जाणे अन्तिम अन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इन्दर सिँघ पाया इक्क भगवन्त। जिस मिल्या भगवन्त, तिस लेखा क्या कोई जणाइंदा। जिस पाया हरि कन्त, तिस सगन कवण मनाइंदा। काया चोली चढ़ना रंग बसन्त, तिस ललारी कवण रंगाइंदा। जिस नाम मिल्या मणीआ मंत, तिस अठोतरी माला हथ्थ कवण फड़ाइंदा। जिस दा नाता जुड़या आदि अन्त, तिस पंडत पांधा कवण पढ़ाइंदा। जिस बणाई मानस जन्म बणत, सो आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ इन्दर मेल मिलाइंदा।

४८८

हरिसंगत तेरा सच अखाड़ा, लोकमात वड्याईआ। निरगुण जोत अकालण करे खेल अपारा, रूप अनूप धराईआ। लभ्भण आई साचा लाड़ा, नौ खण्ड पृथ्मी वेस वटाईआ। सत्त दीप फिर फिर वेख्या घर बारा, जून अजूनी फोल फुलाईआ। चारों कुण्ट दे दे लारा, जूठ झूठ रहे गुण गाईआ। माया ममता प्या पुआड़ा, हउँमे हंगता रही सताईआ। झगड़ा लग्गा

नारी नारा, नारी खौंत ना कोई रसाईआ। गुरमुख वेखे सच विहारा, अन्तर आत्म ताड़ी लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जोत अकालण बण के दासन, लोकमात उठ धाईआ। करया खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी वडी वड्याईआ। निरगुण नूर हरि हरि प्रकाशन, पारब्रह्म खेल खिलाईआ। संग निभाया घनक पुर वासन, घर साचे वज्जी वधाईआ। मेरी करनी पूरी आसन, मैं कट्टां सदा जुदाईआ। ना अमावस ना पूरनमासन, वदी सुदी ना कोई रखाईआ। नौ नौ ना कोई उदासन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। जोत अकालण पाया फेरा, लोकमात कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। सिँघ शेर मिल्या इक्क दलेरा, दिलबर आपणे नाल बंधाया। कुदरत कादर दिता गेड़ा, गेड़ा आपणे हत्थ रखाया। आपणा वेखे खुल्ल्हा वेहड़ा, चारों कुण्ट नैण उठाया। बिन गुरसिख मेरा कोई ना बन्न्हे बेड़ा, जगत दुहागण दए दुहाया। बिन गुरसिख काया मैनूं दिसे ना कोई खेड़ा, जिस घर जावां डेरा लाया। सिँघ इन्दर मिल्या एका एक वेरा, जिस आपणा आप वार वखाया। नाता तुट्टा मेरा तेरा, तेरा मेरा रिहा ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलाया। गुरसिख लम्भया कन्त सुहाग, हरि सखीआं मंगल गाया। जोत अकालण तेरा पूरा होया वैराग, घर गुरमुख सच्चा पाया। जन्म जन्म दा धोया दाग़, निर्मल अमृत नीर वहाया। हँस बणया मात काग, कागों हँस उडाया। घर दीपक जोती जगे चराग़, नारी कन्त रही सेज सुहाया। पुरख अबिनाशी पकड़ी वाग, साचा घोड़ा लए मंगाया। आपणी झोली डाह के मंगे लाग, दर बण दरवेश मंगण आया। इक्को दूल्हा लम्भया साक, जोत अकालण कुँवारी वन्नी लए गल लाया। लग्गा होवण पाकी पाक, परवरदिगार मेरे सिर हत्थ टिकाया। तूं चढ़ना मार पलाक, नीले वाला तेरी सेव कमाया। तेरी चरन धूढ़ चौदां लोक वेखे ख़ाक, नेत्र नैण आप उठाया। तेरी दुरमति मैल दिती काट, आप आपणे अंग लगाया। दोहां मुक्की एका घर वाट, सचखण्ड आसण इक्क सुहाया। दूसर वार ना आउणा विच आण बाट, मात गर्भ ना फेरा पाया। काया चोला जाणा पाट, अन्तिम जोती मेल मिलाया। गुरसिख किसे ना विके हाट, जिस आपणे गल आप लगाया। मिले वड्याई विच मात, कबीर जुलाहा दए समझाया। मीतड़ा लम्भया कमलापात, सचखण्ड बैठा आसण लाया। कलिजुग रैण अन्धेरी रात, गुरसिख आपणी गोद बहाया। ना कोई ज़ात ना कोई पात, जोती जाता जग अख्वाया। जिस दी गाउँदे आए गाथ, आपणी गाथा रिहा सुणाया। वेखो लहिणा देणा हत्थो हाथ, अग्गों लेखा ना कोए रखाया। गुरसिख तेरा प्यार मारे ठाठ, अठसठ नीर रही वहाया। तेरे अंदर मेरी नजात, बिन तेरे मेरा नाउँ ना कोए सालाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख दूल्हा इक्क सजाया। गुरमुख

दूल्हा गया सज, सति पुरख निरँजण आप सजाया। मानस जन्म प्रभू ल्या कज, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। सख़ीआं मंगल गाए गीत नाद अनादी गया वज्ज, छत्ती राग भेव ना आया। गृह मन्दिर बैठा रिहा गज्ज, उच्ची कूक कूक सुणाया। जगत दुआरा झूठा तज, सच दुआरा एका पाया। चरन चरनोदक पीता रज्ज, जगत तृष्ना आप मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दूल्हा लए सजाया। साचा दूल्हा चढ़े ख़ारे, सतिगुर पूरा आप चढ़ाईआ। जोती वरे नार मुटयारे, साचा जोबन इक्क हंढाईआ। मिल्या मेल सच दुआरे, दर दरबार वज्जी वधाईआ। जो जन जगत रहे कुँवारे, भगत भगवन्त लए प्रनाईआ। वेखो रचया काज दिन दिहाढ़े, सुत्ती सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लाड़ा लए उठाईआ। गुरमुख लाड़ा उठया, गुर सतिगुर आप उठाया। मेहरबान हो हो तुठया, दीन दयाल दया कमाया। आपणी गोदी आपे चुकया, लाल अनमुल्लड़ा आपे जाया। पुरख अबिनाशी उठाए सुत्तया, सुत्ता मात रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा सगन आप मनाया। सगन मनाए चाढ़े घोड़ी, हरि साचा दया कमाइंदा। हौली हौली जाए तोरी, आपणी चाल चलाइंदा। आपे फड़ के वाग बणया मोहरी, आपे खेल खिलाइंदा। आपे करे जग तों चोरी, दिस किसे ना आइंदा। आपणी रक्खी प्रेम लाल डोरी, साची मौली तन्द गुंदाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा सगन मनाइंदा। आपे बण बण भैण गुंदे वाग, आपे रोवे करे वैराग दए दुहाईआ। आपे सख़ीआं मार वाज, आओ सखी वेखो चाँईं चाँईंआ। जोत अकालण फड़दी वाग, नौ खण्ड पृथ्मी दहि दिशा रही फिराईआ। मेरे दूल्हे जेहा दूजा दिसे ना कोई विच जहान साक, मेरी नज़र किसे वल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दूल्हा लए वड्याईआ। वाह वाह दूल्हा आप बणाया, वेखणहारा हरि करतार। साचा सेहरा आप गुंदाया, फूलण बण के मालण हार। आपणी हथ्थीं आप पहनाया, इक्क दूजे नाल करन प्यार। साची सेजा दए सुहाया, मिल्या कन्त भतार। एका रंग दए चढ़ाया, रंग मजीठी एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। साचा दूल्हा नौजवान, गुरमुख वडी वड्याईआ। धन्न सुभाग मैं निमाणी करी परवान, चल के दुआरे आईआ। मेरा वखाया लोकमात निशान, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मैं बैठी रही रकान, लभ्भण किसे घर ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक बली बलवान, धुर फ़रमाना इक्क सुणाईआ। सिँघ इन्दर लभ्भया हाणी हाण, बिरध बाल जवान रूप ना कोए समझाईआ। लोकमात करनी सच पछाण, सच नुहार दए दरसाईआ। उहदे अंदर ब्रह्म ज्ञान, बाहर चमढ़ी तन लगाईआ। उहदे बाहर जगत दुकान, अंदर बैठा बेपरवाहीआ।

कोई मन्दिर कोई मस्जिद रक्खदा माण, सिँघ इन्दर उप्पर पुरख अकाल एका ओट तकाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सन्त करे परवान, गुरमुख तेरी ख़ुशी आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा संग सदा निभाईआ।

★ पहली जेठ २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार ★

सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा, हरि जोत नूर उज्यार। हरि पुरख निरँजण वेस वटाइंदा, अलख अगोचर अगम्म अपार। एकँकारा रूप धराइंदा, अजूनी रहत बेऐब परवरदिगार। आदि निरँजण डगमगाइंदा, नूरी जल्वा सांझा यार। अबिनाशी करता रंग रंगाइंदा, रूप रंग ना रक्खे कोई करतार। श्री भगवान संग निभाइंदा, सगला साथी धुर दरबार। पारब्रह्म आपणा कर्म आप कमाइंदा, निहकर्मी कर्म विचार। निरवैर आपणी कल धराइंदा, अकल कल हो त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्ची सरकार। सच सरकार सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। साचे तख्त बैठ अगम्म अथाह, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। धुर फ़रमाना हुक्म जणा, सच संदेशा आप अलाईआ। नर नरेश बण मेहरवां, मेहरवान दया कमाईआ। तख्त निवासी तख्त दए सुहा, साचे तख्त आसण लाईआ। निरगुण निरगुण वेखे साचा थाँ, दर आपणा आप सुहाईआ। आपणा नूर आप प्रगटा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आपणे मन्दिर सोभा पा, साचे धाम दए वड्याईआ । सचखण्ड दुआरा नाउँ धरा, सचखण्ड निवासी आपणा बन्धन पाईआ। चारों कुण्ट आपणा आप आपणे रंग रंगा, आपे वेखे सच्चा माहीआ। आपणी करनी आप करा, करे खेल नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया लए प्रगटाईआ। सचखण्ड निवासी सतिजुग सुल्ताना, गहर गम्भीर अख्वाया। सति सरूप नौजवाना, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराया। आदि जुगादि नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाया। जोद्धा सूर मर्द मर्द मरदाना, बीर बीर आप हो जाया। नाम खण्डा चण्ड प्रचण्ड सति सरूप तीर कमाना, सति सतिवादी आप रखाया। निरगुण निराकार निरवैर रखाए इक्क निशाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा निशाना दए समझाया। सच निशाना निराकार, साचे तख्त आप लगाईआ। जोती नूर हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। करे खेल सच्चा शाहकार, आपणा घाड़त आप घड़ाईआ। बाढी बणे निराधार, दूसर संग ना कोए रखाईआ। एका मन्दिर छप्पर छन्न लए उसार, दहि दिशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच लए प्रगटाईआ। घर विच घर उजाला,

सचखण्ड आप सुहाया। सचखण्ड अंदर जोत सरूपी दीप माला, नूर थिर घर आप टिकाईआ। नूरी ललाट खेल निराला, पुरख अबिनाशी आप वखाया। दोहां विचोला बण अकाला, अकल कल आपणा बन्धन पाया। वसणहारा आपणी धर्म सच्ची धर्मसाला, धुर दी धार आप बंधाया। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, आदि अन्त भेव ना किसे जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप सुहाया। साचा मन्दिर घर कर त्यार, गृह आपणा रंग रंगाईआ। आपणे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सचखण्ड दुआरा रिहा सुहाईआ। चरन कँवल लगाए थिर दरबार, धूढ़ी धूढ़ धूढ़ वखाईआ। चरन कँवल आपणा वेखे आपणी वार, नेत्र नैण नैण खुलाईआ। नैण नैण वेखणहार, निरगुण निरगुण इक्क सुहाईआ। कवण कवण साची विचार, प्यार प्यार नाल बंधाईआ। प्यार करे सच विहार, थिर दरबार दए वड्याईआ। थिर दरबार बैठ निराकार, आपणी कार आप कराईआ। आपणी इच्छया कर शृंगार, साचा रूप आप वटाईआ। तख्त निवासी हो त्यार, आपणा बल आप प्रगटाईआ। आपणी भुजां लए पसार, मर्द मरदाना सूरबीर वडी वड्याईआ। आपणा तेज लए उभार, नूर नूर नूर रुशनाईआ। आपणे सीस रक्खे आपणी सच दस्तार, एका ताज नाम रखाईआ। एका काज रचे आप करतार, सचखण्ड बणत आप बणाईआ। आपे बणे भरता आपे पुरख समरथ होए निराकार, आप आपणा रंग रंगाईआ। आपे थिर घर आपणा नूर बणाए जोत नार मुटयार, जोबनवन्त जोबन इक्क समझाईआ। साचा मेला करे करनेहार, आपणा बन्धन आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सगन लए मनाईआ। साचा सगन हरि हरि कन्त, सचखण्ड दुआरे आप मनाइंदा। थिर घर चढ़े रूप बसन्त, पुरख अबिनाशी आप चढ़ाइंदा। सचखण्ड दुआरे होवे साची मंत, श्री भगवान आप जणाइंदा। थिर घर वेखे एका नारी रंगे एका रंगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग आप रंगाइंदा। नारी कन्त नरायण , सचखण्ड दुआरा इक्क वड्याआ। थिर घर उपजे इक्क वैराग, वाह वाह पुरख अबिनाशी पाया। जोती जाता जगाए चिराग़, नूर ज़हूर आप कराया। आपे सोया आपे रिहा जाग, वेखणहार आप हो जाया। आपे सुणे आपे गाए आपणा राग, आपे नादी नाद वजाया। आपे लेखा जाणे अन्त आदि, आदि आपणा खेल रचाया। आपे देवे आपणी दाद, साची वस्त झोली पाया। आपणे विच्चों आया काढ, धार धार विच्चों लए प्रगटाया। नारी कन्त उपजे इक्क वैराग, सति वैराग इक्क समझाया । सुत दुलारा हरि निरँकारा आप आपणा आपे लाध, पूत सपूता लए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा घर वसाया। निरगुण वसाया घर महल्ला, पुरख अबिनाशी वडी वड्याईआ। लेखा जाणे इक्क इकल्ला, दूसर अवर ना संग रलाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, आपणी करे सच कुड़माईआ।

४६३

आपणे दर फड़ाया आपे पल्ला, आपे होए सहाईआ। आपणे अन्तर आपे रला, जोती जोत आप अख्वाईआ। सच संदेश एका घल्ला, एका शब्दी शब्द उठाईआ। दीपक जोत एका बला, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आदि आपणे अन्त नाल मिलाईआ। आदि पुरख हरि खेल खिलाया, जोती शब्दी धार। वंसी विष्नूं रूप धराया, ब्रह्मा कँवल दए अधार। शंकर संग आप रखाया, लेखा जाणे सुन्न अगम्मी धूंआँधार। तिन्नां बन्धन एका पाया, हुक्मी हुक्म नाम वरतार। त्रैगुण माया रंग चढ़ाया, करे खेल सच्ची सरकार। आपणा मार्ग दए वखाया, नेत्र नैण खोल्ह किवाड़। साचा नेत्र दए समझाया, पंज तत्त दए उखाड़। साचा बन्धन दए पाया, हड्ड मास नाड़ी रक्त बूंद नाड़। मन मति बुध दए टिकाया, करे खेल अपार। आपणी अंस आपणा बंस आपे ल्ए वखाया, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। साची खेल खिलावणहारा, एका रंग समाया। त्रै त्रै मीता वसणहारा ठांडे दरबारा, सचखण्ड साचे आसण लाया। थिर घर खोल्ह आप किवाड़ा, आपणा बंक वड्याआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए आधारा, एका हुक्म सुणाया। लक्ख चुरासी कर प्यारा, नारी नारा रूप धराया। त्रैगुण माया भर भण्डारा, पंचम जोड़ जुड़ाया। पंज पंज मेला एका वारा, एका घर वसाया। घाड़त घड़े बण ठठयारा, घाड़ण घड़नहार दिस ना आया। एका शब्द एका नाअरा, इक्क जैकारा दए सुणाया। एका तत्व एका तत्त इक्क आधारा, ब्रह्म मति इक्क रखाया। एका कमलापति करे सर्ब प्यारा, सृष्ट सबाई नारी रूप वटाया। जुग चौकड़ी लगाए मात अखाड़ा, नटूआ आपणा नाच नचाया। चारे जुगां खोल्ह किवाड़ा, चारे वेदां बोल जैकारा, ब्रह्मा वेता आप पढ़ाया। चारे बाणी दए हुलारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आपणे हथ्थ रखाया। चार जुग दी साची धार, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। वण्डे वण्ड वण्डणहार, साची वण्डण इक्क समझाईआ। सति पुरख लोआं पुरीआं महल्ल उसार, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज बणत बणाईआ। रवि ससि कर चमकार, मंडल मण्डप दए वड्याईआ। धरत धवल दए आधार, जल बिम्ब रूप समाईआ। लक्ख चुरासी कर पसार, आत्म जोत नूर रुशनाईआ। गृह गृह अंदर नाद धुन्कार, शब्दी राग अल्हाईआ। घर घर अमृत कर त्यार, नाभी कँवल आप टिकाईआ। घर घर वेखे बंक दुआर, टेढी बंक सुहाईआ। घर घर वेखे अन्ध अन्धयार, डूँग्घी भँवरी भेव कोए ना पाईआ। घर घर अंदर निरगुण जोत उज्यार, जोत निरँजण सेवा लाईआ। घर घर अंदर करे पसार, पारब्रह्म प्रभ वण्ड वंडाईआ। घर घर अंदर ईश जीव खेल न्यार, जगत जगदीश रिहा खिलाईआ। घर घर सेजा कर त्यार, साची सेज रिहा सुहाईआ। घर घर नारी कन्त भतार, घर घर सुरती शब्द हंढाईआ। घर घर अकाल मूर्ति नूर हो त्यार,

नूरत तूरत इक्क दरसाईआ। घर घर मन्दिर सोहे दरबार, घर मिले साचा माहीआ। घर करे सच्चा श्रृंगार, गणत सुणत आप पढ़ाईआ। घर घर मिले मिलणेहार, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी घाड़ण घड़, घट घट अंदर बैठा वड़, आपणे पौड़े आपे चढ़, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। साचा मन्दिर सुहाया, कर किरपा गुण निधान। आपणा आसण आपे लाया, साचे तख्त श्री भगवान। आपणा हुक्म आप सुणाया, शब्द अगम्मी धुर फ़रमान। बोध अगाध आप अख्वाया, लेखा जाणे दो जहान। कागद कलम ना कोए रखाया, लेखा जाणे ना कोए निशान। रूप अनूप आप धराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता आपे होया मेहरवान। मेहरवान होया हरि ठाकर, आपणी दया आप कमाइंदा। काया अंदर वसया साचे सागर, सिन्ध आपणा रूप धराइंदा। लेखा जाणे पंज तत्त गागर, त्रैगुण पर्दा आप हंढाइंदा। लक्ख चुरासी करे उजागर, आपणे धन्दे लाइंदा। करे खेल करता कादर, कुदरत आपणी बणत बणाइंदा। आपणा अक्खर रक्खे दादर, दारूद ना किसे जणाइंदा। आत्म ब्रह्म पिसर मादर, आप आपणी गोद सुहाइंदा। सिदक सबूरी जाए साबर, सति सन्तोख खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग जुग आपणा बन्धन पाइंदा। जुग बन्धन हरि पाए गंढु, आपणी बणत बणाईआ। आपणा नाउँ आपे वण्ड, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। बिन मेरे नाउँ सृष्ट सबाई दुहागण होए रंड, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। लक्ख चुरासी तुट्टी कोए ना देवे गंढु, जन्म जन्म विच भवाईआ । जुग जुग देवणहारा दंड, इक्क इकल्ला सच्चा शहिनशाहीआ। कदे ना सोए दे कर कंड, जो चरन ध्यान लगाईआ। पावे सार जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज भुल ना जाईआ। वसणहारा विच ब्रह्मण्ड, लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबाईआ। जुग जुग मेटे भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया दए गवाईआ। सदा जणाए आपणा परमानंद, परम पुरख वडी वड्याईआ। लोकमात अवतार गुर लै के आउण सुहागी छन्द, धुर दी पल्ले गंढु बंधाईआ। साध सन्त ख़ुशी करन बन्द बन्द, मेरा नाउँ रसना गाईआ। मेरा नाउँ सूरज चन्न, कोह करोड़ी रहे ध्याईआ। मात गर्भ जो आए सो भरदा मेरा दंड, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए समझाईआ। हरि हरि खेल खिलाया, निरगुण सरगुण धार। लक्ख चुरासी रचन रचाया, करया खेल अपर अपार। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्ड वण्डाया, करे खेल सच्ची सरकार। गुर अवतार वेस वटाया, शब्दी शब्द कर जैकार। भगत भगवन्त लए मनाया, आप आपणी किरपा धार। सन्त साजण लए मिलाया, साची सिख्या दए विचार। गुरमुख गुर गुर लए जगाया, मुख सलाहे एका वार। सिख साजण लए मिलाया, डुबदे पाथर लाए पार। हँकारीआं गढ़

तुड़ाया, गढ़ तोड़े तोड़णहार। ग़रीब निमाणयां गले लगाया, जुगा जुगन्तर साची कार। निरगुण कन्त लोकमात हंढाया, आपे आया आपणी वार। वार दो मेल मिलाया, दो दो दो दो हो उज्यार। कलिजुग अन्तिम रूप धराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। हरि करतारा खेल खिलाइंदा, ख़ालक ख़लक रूप भगवान। आपणा सतारा आप चमकाइंदा, नाता तोड़ ज़िमीं अस्मान। आपणा जैकारा आप चलाइंदा, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। आपणी धारा आप चलाइंदा, जुग चौकड़ी मेटे आप निशान। गुर अवतारां मेल मिलाइंदा, पीर पैग़म्बरां वेखे आपे आण। मुला मुसायक सेख़ आप जगाइंदा, लेखा जाणे कुरा कुरान। कुतब गौंस आप रखाइंदा, चारों कुण्ट वेखे मार ध्यान। नौ खण्ड पृथ्मी बंक फोल फुलाइंदा, लेखा जाणे शरअ ईमान। चार यारी संग मुहम्मद एका कलमा आप पढ़ाइंदा, एका हुक्म धुर फ़रमान। एका तूरत नाम वजाइंदा, लेखा जाणे दो जहान। सुहबत जगत सर्ब मुकाइंदा, नाता तुट्टे बेईमान। उल्फ़त विच कदे ना आइंदा, तीस बतीसा गाए गायण। ग़फ्लत सभ दी आप मिटाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। भगवान खेल खिलाया, पुरख अबिनाशी अगम्म अपार। जोती जामा भेख वटाया, निरगुण निरवैर हो त्यार। कोटन कोटी जुग चौकड़ी आपणे चरनां हेठ दबाया, करे खेल सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा दस्से आप अहिवाल। सच हवाला दस्सणा, निरगुण सरगुण धार। सरगुण अंदर वसणा, निरगुण नूर उज्यार। निरगुण हो हो हस्सणा, सरगुण ख़बरदार। कलिजुग वेखे रैण अन्धेरी मस्सणा, चारों कुण्ट कुण्ट अन्धयार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। साची खेल सति सति धारा, हरि सतिगुर आप चलाईआ। सति सति करे खेल न्यारा, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। सति सति वसे सभ तों बाहरा, सति सति प्रगट आसण लाईआ। सति सति होए गुप्त ज़ाहरा, सति सति अंदर बाहर समाईआ। सति सति पुरख सति सति नारा, सति सति साची सेज हंढाईआ। सति सति घर सति सति दरबारा, सति सति करे सच्चा शहिनशाहीआ। सति सति घाड़त घड़े सच्चा ठठयारा, सति सति घड़या भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग साता आपणे नाल मिलाईआ। कलिजुग साता होया सिफ़रा, सिफ़रा मूल ना कोए चुकाया। सिफ़रे नाल बंधाया आपणा नाता, नाता साता जोड़ जुड़ाया। दोहां विचोला बण पुरख बिधाता, आपणा खेल खिलाया। निरगुण करे सरगुण पूरा घाटा, सरगुण घाटा निरगुण कोलों मंगण आया। चारों कुण्ट दिसे ख़ाली बाटा, नाम भण्डारा ना कोए वरताया। चौदां लोक फोले हाटा, चौदां तबक रिहा कुरलाया। नौ खण्ड पृथ्मी चीथड़ पाटा, तन श्रृंगार ना कोए कराया। लक्ख चुरासी रसना दस्से ना साची

गाथा, गा गा रसना हरि ना किसे पाया। जगत दलिद्र किसे ना लाथा, जीव जंत रहे कुरलाया। धरनी रोवे खुल्ला झाटा, सीस मेंढी ना कोए गुंदाया। ब्रह्म रोवे तेरी आत्म ब्रह्म खाटा, पारब्रह्म मिलण किसे ना आया। चार जुग वेंहदी रही अठसठ ताटा, सुरत सुवाणी रो रो नीर रही वहाया। जिस नूं गुरु अवतार कहिन्दे गए पिता माता, सो पुरख हथ्थ किसे ना आया। जिस दीआं गाउँदे रहे गाथा, गा गा राग ना कदे सुणाया। जिस दीआं जगाउँदे रहे लाटां, जोती नूर ना कोए जणाया। जिस दीआं तीर्थ तट्टां कट्टदे रहे वाटां, दुरमति मैल ना कोए धवाया। जिस दे पिच्छे कट्टीआं जाग जाग के रातां, राती सुत्तयां घर ना फेरा पाया। जिस दे पिच्छे बणी रही जगत नार कमज़ाता, सो कन्त ना गोद सुहाया। कलिजुग तेरे अन्त श्री भगवन्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण जोत गुरसिख सन्त रंग पछाता, जिस अग्गे आपणा सीस भेंट चढ़ाया। सिँघ शेर हो शेर नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग दा पूरा करन आया घाटा, किसे घर ना मंगण जाया। आपणे हथ्थ रखाया अमृत बाटा, गुरमुखां दए जाम प्याया। रातीं सुत्तयां जा जा पुछे वातां, आप आपणा पन्ध मुकाया। चार जुग लुकया रिहा विच ज़ातां पातां, अन्तिम पर्दा पाड़ वखाया। चार जुग विकदा रिहा विच हाटां, आपणा अक्खर नाम लिखाया। कलिजुग अन्तिम करे खेल पुरख समराथा, साची नईआ दए चलाया। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, ना कोई तीर्थ ना कोई ताटा, ना कोई वणजारा ना कोई हाटा, ना कोई दर दर मंगण जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका नाउँ दए जणाया। एका नाउँ हरि चार जुग रंग, सो पुरख निरँजण आप चढ़ाईआ। खण्ड ब्रह्मण्ड वजाए आप मृदंग, विष्न ब्रह्मा शिव रहे जस गाईआ। गुरसिखां अंदर आप लँघ, आपणा नाम दए टिकाईआ। आपे सोए आत्म सेज पलँघ, गुरसिख खोजण बण ना जाईआ। आपे कट्टदा रहे भुक्ख नंग, गुरमुख तृष्ना भुक्ख बुझाईआ। आपणा मानस जन्म करया भंग, गुरसिख मानस जन्म लए तराईआ। आपे बण के छलया जल तरंग, गुरसिख जल कँवल लए महिकाईआ। आपे बण के भज्जा काची वंग, गुरसिख कंगण आपणे हथ्थ लटकाईआ। आपे खेल करया विच वरभण्ड, पारब्रह्म प्रभ रूप वटाईआ। गुरसिख तेरी आत्म रहे ना रंड, जो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाईआ। लक्ख चुरासी कट्टे फंद, जो इक्क वार नेत्र दर्शन पाईआ। राए धर्म ना देवे दंड, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाईआ। लाड़ी मौत ना मंगे मंग, वटना बन्दी ना कोए वखाईआ। जिस जन गाया बत्ती दन्द, सतिगुर पूरा होए सहाईआ। सोहँ शब्द सुहागी छन्द, गुरसिख ना मरे ना जाईआ। तेरी पूजा करन सूरज चन्द, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ।

४६७

आपणे रक्ख वड्याई हथ्थ, हरि करते खेल खिलाया। लक्ख चुरासी नालों कर के अड्ड, आपणा मेल मिलाया। कलिजुग साथ देणे छड्ड, बिन सतिगुर पूरे ना कोए सहाया। जगत भोग बलास रस दिसे हड्ड, अमृत रस ना कोए चखाया। दूई द्वैती हउमे हंगता विच्चों देणी कढ्ढ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आया। जगत तृष्ना देणी बद्ध, बधक फांदकी रिहा ध्यान लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अन्त आपणा गेड़ा लए दसाया। घर विच घर आप वसाउणा, गुरमुख तेरा बंक दुआर। सरगुण अंदर निरगुण डेरा लाउणा, जोती जोत नूर उज्यार। शब्द अनाद धुन साचा गाउणा, अठ्ठे पहर सच्ची धुन्कार। पंचम सखीआं गीत अलाउणा, वाह वा मंगलाचार। घर गोबिन्द मीत मुरारा पाउणा, अंदर बैठा सांझा यार। बजर कपाटी पर्दा लाउहणा, दूई द्वैती देवे पाड़। आत्म सेजा आप सुहाउणा, पलँघ रंगीला घड़े आप सच्ची सरकार। बाढी हो हो सेव कमाउणा, सिँघ शेर हो त्यार। एका वार फड़ लटकाउणा, उखड़ जाए ना दूजी वार। लक्ख चुरासी विच्चों गुरसिख सुक्का काठ फड़ के लाउहणा, रंदा मारे एका वार। आपणे विच जोड़ जुड़ाउणा, चूल चूल नाल करे प्यार। साचा सूत्र नाम लगाउणा, तिक्खी रक्खी धार। आपणे प्रेम प्यार दे नाल रलाउणा, आपे खिच्चे विच्चों धार। आपणी आसा उत्ते विछाउणा पाउणा, किरपा करे श्री भगवान। हथ्थ फेरके टोह वखाउणा, गुरमुख अंग दुक्खे ना बाल अञ्याण। अन्त आपणी हथ्थीं चुक्क विच बहाउणा, उत्ते देणा सच रुमाल। नानक गाया पूर कराउणा, प्रेम पटोला देवे शाह कंगाल। गुरसिख तेरी पंज तत्त दमा कट्टणहार आप अख्वाउणा, आदि जुगादि करे सदा प्रितपाल। आपणे मोढे कंध आपे चुकण आउणा, आपणे दर दुआरे देवे माण। वेले अन्त जे गुरसिख लुकण लग्गे लुकण ना देणा, लक्ख चुरासी विच्चों लैणा भाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे चरन बख्शे तेरा माण। गुरसिख तेरा माण सचखण्ड, सचखण्ड निवासी आप कराइंदा। नाता तोड़ भेख पखण्ड, साचा रंग आप रंगाइंदा। आपणा नूर तेरा चन्द, तेरा चन्द लोकमात चमकाइंदा। तेरी क्रिया कूड़ आपणी झोली पाए गंद, आपणा अमृत तेरे मुख चुआइंदा। तेरे जन्म जन्म दा दुक्खड़ा कट्टे बन्द बन्द, सुहागी छन्द तेरे अन्तर आत्म आप जणाइंदा। तेरी जन्म जन्म दी आत्मा सुहागण करे रंड, जगत रंडेपा पन्ध मुकाइंदा। चार जुग गुर अवतार गुरसिखां देंदे रहे नाम गंढ, सच सुनेहड़ा आप घलाइंदा। कलिजुग अन्तिम आपणे नाल करे कारज अनन्द, अनन्द अनन्द अनन्द अनन्द विच समाइंदा। ऐथे ओथे मुक्या पन्ध, जिस जन मिल्या साहिब गुरु बख्शंद, पिछला लेखा आपणे हथ्थीं आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख निशान आप झुलाइंदा।

४६७

★ ७ जेठ २०१८ बिक्रमी चेला सिँघ दे घर जम्मू ★

शाह पातशाह हरि निरँकारा, आदि जुगादि हरि समाइंदा। इक्क इकल्ला खेल न्यारा, अनुभव प्रकाश कराइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाहो भूप एका खेल खिलाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। तख्त निवासी निरगुण निरवैर सभ तों वसे आप न्यारा, भेव अभेदा भेव छुपाइंदा। एका मन्दिर एका गृह इक्क दुआरा, इक्क इकल्ला सोभा पाइंदा। एका शब्द नाद धुन जैकारा, एका राग अनादि सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, अगम्म अगम्मड़ा खेल खिलाइंदा। अगम्म अगम्मड़ा हरि सुल्ताना, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए आपणा रंग रंगाईआ। तख्त निवासी श्री भगवाना, शाहो भूप सच्चा शहिनशाहीआ। जुगा जुगन्तर खेल महाना, खेलणहार इक्क अख्वाईआ। जोती नूर नूर नुराना, नूरो नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, अकल कल आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। शाहो भूप हरि निरँकार, साचे तख्त सोभा पाइंदा। निरगुण जोत निरगुण धार, निरगुण निरगुण आप प्रगटाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण बाहर, निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहर, निरगुण नूर नूर दरसाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण घर बाहर, निरगुण महल्ल अटल उच्च मनार, निरगुण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, भेव एका एक आप खुल्हाइंदा। इक्क इकल्ला हरि निरँकारा, आदि जुगादि समाया। सच्चखण्ड सुहाए सच दुआरा, सोभावन्त आसण लाया , रूप रंग रेख वसे बाहरा, अलख रूप रंग ना कोए रंगाया। धरत धवल ना कोए सहारा, खण्डां ब्रह्मण्डां लोआं पुरीआं प्रकाश ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, इक्क इकल्ला एका रंग रंगाया। एका रंग हरि करतारा, आदि पुरख आपणा आप रंगाईआ। सो पुरख निरँजण हो उज्यारा, हरि पुरख निरँजण करे खेल बेपरवाहीआ। एकँकारा कर पसारा, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। श्री भगवान अबिनाशी करता वसणहारा ठांडे दरबारा, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, पारब्रह्म पति परमेश्वर आपणी कल आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, रूप अनूप महिमा अकथ कथी ना जाईआ। रूप अनूप शाहो भूपा, सो पुरख निरँजण नाउँ धराइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सति सरूपा, आदि निरँजण आपणी खेल खिलाइंदा। वसणहारा चारे कूटा, एकँकारा हरि निरँकारा दहि दिशा आपणी धार बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणी कल आप प्रगटाइंदा। सो पुरख निरँजण हरि निरँकारा, आदि जुगादि

समाइंदा। सचखण्ड निवासी हो उज्यारा, निरवैर रूप प्रगटाइंदा। अजूनी रहत अगम्म अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी खेल खिलाइंदा। आपणा दर दरवेश सुहाए आप दुआरा, दर दरबान सेव कमाइंदा। आपणा हुक्म कर वरतारा, शाहो भूप बण सिक्दारा, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता आपणा नाउँ धराइंदा। जुग करता हरि नाउँ रक्ख, आपणी खेल खिलाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे हो प्रतक्ख, नूर नूर नूर प्रगटाईआ। आपे जाणे आपणा पक्ख, थित वार ना कोए वखाईआ। सर्ब कल आपे समरथ, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। आपणा नाउँ आपे रक्ख, नाउँ निरँकारा आप धराईआ। आपे होए कमलापति, नर नरायण बेपरवाहीआ। आपे नार सुहागण महिमा जाणे अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। आपणी इच्छया हरि निरँकारा, हरि हरि आप प्रगटाइंदा। आपणे अंदर कर प्यारा, निरगुण सरगुण आपणा मेल मिलाइंदा। आपे नारी कन्त भतारा, हरि हरि आपे सेज हंढाइंदा। आपे शब्द नाद धुन्कारा, आपे नादी नाद वजाइंदा। आपे होए सुनणेहारा, गावत आपणा गीत अलाइंदा। आपे जाणे भेव न्यारा, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। साचे मन्दिर थिर दरबारा, गृह आपणी खोज खुजाइंदा। अबिनाशी अचुत हो त्यारा, साची रुत्त आप सुहाइंदा।
४६६ ४६६
आप उपजाए आपणा सुत सुत दुलारा, आप आपणा बन्धन पाइंदा। आपे देवे सुत हुलारा, देवणहारा दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुत आप प्रगटाइंदा। साचा सुत शब्दी धार, हरि रूप आप प्रगटाईआ। जोती जाता बण बण नार, नार सुहागण सोभा पाईआ। कन्त कन्तूला मंगलाचार, घर मंगल वज्जे वधाईआ। सचखण्ड निवासी खेल अपार, ख़ालक आपणा आप कराईआ। मात पित बण सुत दुलार, पूत सपूता आपे जाईआ। धुर फ़रमाना बोल जैकार, हुक्मी हुक्म इक्क वरताईआ। तेरा मेरा इक्क आधार, तेरा रूप मेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सुत दए समझाईआ। सुत दुलारा शब्दी हरि हरि, आपणा आप प्रगटाइंदा। आपणे अंदर आपे धर धर, आप आपणा मेल मिलाइंदा। आपणी घाड़ण आपे घड़ घड़, हरि आपे वेख वखाइंदा। आपणा लड़ आपे फड़ फड़, एका बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग आप निभाइंदा। साचा संग निभावणहारा, एका रंग समाया। एका हुक्म इक्क वरतारा, धुर फ़रमाना आप जणाया। एका शब्द इक्क जैकारा, सचखण्ड सोभा पाया। घर विच घर कर पसारा, थिर घर आपणी बणत बणाया। जोती नूर नूर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाया। सच सिँघासण कर त्यारा, पुरख अबिनाशी आसण लाया। चरन कँवल दए सहारा, थिर घर आपणा चरन टिकाया। शब्दी शब्द कर पसारा,

रूप अनूपा आप वटाया। करे खेल करनेहारा आदि जुगादि भेव किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप लगाया। साचा मार्ग शब्दी सुत, हरि साचा सच जणाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म भेव कोए ना पाइंदा। आपे जाणे आपणी रुत्त, थित वार ना कोए वखाइंदा। हरि का रूप पंज तत्त ना दिसे बुत, तत्व तत ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत आप उठाइंदा। शब्दी सुत हरि उठाया, कर किरपा गुण निधान। एका हुक्म दए जणाया, आप आपणा श्री भगवान। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचाया, देवणहारा देवे दान। किरनी किरन लए प्रगटाया, एका किरन दए महान। इक्क इक्क इक्क एका बन्धन पाया, बन्धन पाए हो मेहरवान। जोती नूर नूर दरसाया, जोती जाता खेल महान। किला कोट इक्क वखाया, सचखण्ड दुआरा सच मकान। निरगुण निर्मल जोत जगाया, उच्च महल्ल अटल करे खेल गुण निधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा देवे एका दान। साचा दान देवे दाता, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण बण गयाता, शब्दी सुत आप समझाईआ। एकँकारा पिता माता, आदि निरँजण होए सहाईआ। अबिनाशी करता सुणाए गाथा, श्री भगवान करे पढ़ाईआ। पारब्रह्म आदि जुगादि सर्ब कल समराथा, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। शब्द सुत इक्क पछाता, एका तत्त दए जणाईआ। जोती शब्दी साचा नाता, निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप मिलाईआ । जोती शब्दी हरि हरि मेला, सो पुरख निरँजण आप मिलाया। एका घर वसे गुरु गुर चेला, चेला रूप धराया। हरि पुरख निरँजण सज्जण सुहेला, एकँकारा विछड़ ना जाया। आदि निरँजण वसे सदा नवेला, अबिनाशी करता घट घट आपणा रूप धराया। श्री भगवान आपे जाणे आपणा वक्त वेला, पारब्रह्म प्रभ वेखे थाउँ थाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाया। शब्दी खेल खिलाइंदा, पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार। हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा, करे कराए सच विहार। आपणी इच्छया आपणे विच धराइंदा, आप आपा करे प्यार। आपणा नाउँ आप रखाइंदा, आपे विष्नूं हो आकार। आपे विष्न रंग रंगाइंदा, वास्तक खेल करे करतार। अनुभव आपणी धार बंधाइंदा, जोती नूर नूर उज्यार। साकार निराकार एका कल वरताइंदा, कल वेखे वेखणहार। आपणा जोबन आप सुहाइंदा, कँवल नैण नैण मूंधार। आपणे अन्तर आपणा भण्डारा आप भराइंदा, आपे होए वेखणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। सच सरकार हरि सुल्ताना, हरि हरि जू खेल खिलाया। सचखण्ड दुआरे मर्द मरदाना, मरदन आपणा आप वखाया। लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए आपणा रूप वटाया। निरगुण निरगुण

बध्धा गाना, सरगुण साचा संग निभाया। शब्दी शब्दी शब्द तराना, रागी राग सुणाया। मन्दिर मन्दिर सोहे मकाना, थिर घर एका नूर जगाया। सो पुरख निरँजण हो मेहरबाना, हरि पुरख निरँजण लए उठाया। एकँकारा देवे माणा, आदि निरँजण आपणा संग आप निभाया। श्री भगवान जाणी जाणा, अबिनाशी करता भेव खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग वखाया। पारब्रह्म प्रभ रंग नवेला, आपणा आप प्रगटाईआ। करे खेल इक्क अकेला, दूसर संग ना कोए वखाईआ। घर विच मीत घर विच सज्जण सुहेला, घर घर विच खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न आपणी कल वरताईआ। विष्न रूप विष्न भगवाना, विष्नूं आपणी खेल खिलाइंदा। आपे होए जाणी जाणा, जानणहार आप अख्वाइंदा। आपणा अन्तर आपे वेख मकाना, वस्त अमोलक आप प्रगटाइंदा। आपे जाणे आपणा पीणा खाणा, आपणा रस आप धराइंदा। आपे अमृत कर प्रधाना, निझर झिरना इक्क झिराइंदा। आपे कँवली कँवल वखाना, कँवल मुख आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया विच भराइंदा। विष्नूं इच्छया फुल कँवल, पत्त डाल्ही आप महिकाईआ। आपणे अंदर आपे मवल, आपणी रुत्त सुहाईआ। आपे निरगुण होया बवल, पूरा भेव कोए ना पाईआ। आपे नूर इलाही अव्वल, एका नूर नूर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। आपे कँवल फुल्ल अमृत रस, रस रसीआ खेल खिलाइंदा। आपे विष्नूं अंदर वस, आपणा रूप वटाइंदा। आपे बाहर आया नस्स, शाहो भूप आपणा रूप वटाइंदा। आपे करे आपणा पक्ख, प्रकाश प्रकाश प्रकाश प्रकाश विच टिकाइंदा। आपे जाणे आपणा जस, आपणी जिहवा आप हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप बंधाइंदा। विष्नूं अंदर एका धार, हरि साचा सच प्रगटाईआ। तख्त निवासी हो त्यार, साचे तख्त बैठा सच्चा शहिनशाहीआ। चारे दिशा पावे सार, चतुर्भुज रूप वटाईआ। आपणा हिस्सा एकँकार, एका कल वखाईआ। एका सीस जगदीश सुहाए सच्ची सरकार, एका मुख मुख सालाहीआ। एका मुख लेखा जाणे चार, चार चार नाल मिलाईआ। एका विष्नूं बन्न्हे धार, एका निउँ निउँ सीस झुकाईआ। एका अमृत दए फुहार, अम्मीउँ रस एका रिहा बरसाईआ। एका पारब्रह्म आपणा करे सच पसार, आपणी वण्डण वण्ड वंडाईआ। एका कँवल कँवल कर उज्यार, कँवल नैण होए सहाईआ। रूप अनूप शाह आधार, आप आपणा लए धराईआ। आपे ब्रह्म कर पसार, आपे लेखा रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूर नूर लए धराईआ। नूरी रंग विष्न वास्तक, पारब्रह्म प्रभ आप रंगाया। पारब्रह्म ब्रह्म एका मास्तक, मस्तक लेखा लेख चुकाया। निरगुण जोत नूर प्रकाशतक, प्रकाश प्रकाश

विच प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म वेता नाउँ धराया। ब्रह्म वेता पारब्रह्म मुख, विष्नूं जनणी जन जणाईआ। जोती नूर साचा सुख, शब्दी राम नाम पढ़ाईआ। चार कुण्ट एका मुख, चार दिशा वण्ड वंडाईआ। निरगुण अंदर निरगुण लुक, सरगुण रूप लए धराईआ। मात पिता हरि बण बण पुत, पूत सपूता गले लगाईआ। अमृत आत्म देवे घुट, रसक रसक झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा लए प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा हरि प्रगटा, आपणा दरस वखाया। निरगुण बण सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह साचे तख्त आसण लाया। चरन कँवल दस्से इक्क पनाह, सीस जगदीश हथ्थ रखाया। आपणा जणाए एका नाँ, नाउँ निरँकार आप अख्वाया। आदि जुगादि पकड़े बांह, विछड़ कदे ना जाया। निरगुण पिता निरगुण मां, दाई दाया सेव कमाया। निरगुण सदा सुहेला सिर रक्खे ठंडी छाँ, भुल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाया। एका गुण हरि समझाइंदा, विष्नूं कर ध्यान। तेरा संग आप निभाइंदा, सगला संग श्री भगवान। आपणा मृदंग तेरे हथ्थ फड़ाइंदा, मेरा मृदंग दो जहान। तेरा चन्द आप चढ़ाइंदा, तेरा नूर नूर महान। तेरी कुक्ख आप सुहाइंदा, कुक्ख सुलक्खणी वेखे आण। निझर झिरना झिरे महान। पत्त डाल्ही आप महिकाइंदा, फुल फुलवाड़ी वेखे आण। तेरे अंदर बूटा लाइंदा, पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान। ब्रह्म तेरा अंग वखाइंदा, इक्क अंगड़ा चतुर सुजान। साचे मन्दिर आप बहाइंदा, सोभावन्त इक्क मकान। साचा दरस आप वखाइंदा, दरसी दरस देवे आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका पाए साची आण। साची आण आदि अन्त, विष्न हरि जणाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणी धार चलाईआ। मेरा नाउँ तेरा मणीआ मंत, एका नाउँ दए वड्याईआ। तेरी महिमा होए अगणत, लेखा लेख ना लिख्या जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दए समझाईआ। एका हुक्म समझाइंदा, हरि दाता बेपरवाह। विष्नूं तेरा रूप धराइंदा, ब्रह्मा वेता आपे जा। आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा, निष्अक्खर दए पढ़ा। आपणा ध्यान आप लगाइंदा, ज्ञान गोझ दए वखा। एका नेत्र एका नैण एका अक्ख हरि प्रतक्ख आप खुल्हाइंदा, आपणा लेखा दए वखा। चारे कुण्ट चारे मुख आप सालांहयदा, आपणा पर्दा आप उठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग दए रंगा। विष्नूं रंग हरि रंगाउणा, भुल रहे ना राईआ। सति भण्डारा तेरे अंदर टिकाउँणा, वस्त अमोलक झोली पाईआ। गुण औगुण ना कोए जणाउणा, गुणवन्ता इक्क अख्वाईआ। जुगा जुगन्त सेव कमाउणा, सेवक सेवा सच समझाईआ। धुर फ़रमाना हुक्म जणाउणा, अभुल दए वड्याईआ। ब्रह्मा वेता नाल रलाउणा, निरगुण सरगुण करे कुड़माईआ। सुन्न अगम्मी खेल

खिलाउणा, धूंआँधार इक्क रखाईआ। शंकर साचा बन्धन पाउणा, भोला नाथ आप जगाईआ। तिन्नां एका रंग रंगाउणा, एका दर दए वड्याईआ। सच भण्डारी इक्क बणाउणा, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। इक्क संसारी आप रखाउणा, लक्ख चुरासी घाड़त लए घड़ाईआ। इक्क दी बान आप लगाउणा, बाण निरबाणा आप वखाईआ। जो घड़या सो भन्न वखाउणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जुग चौकड़ी आप सुहाउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। किरन विच्चों किरन कढाउणा, किरन किरन करे रुशनाईआ। रवि ससि आप चमकाउणा, मंडल मण्डप सोभा पाईआ। आपणी बणत आप दरसाउणा, त्रैगुण आपणा रूप वटाईआ। सांतक विष्नूं झोली पाउणा, राजस ब्रह्मा गोद बहाईआ। तामस शंकर चरन दबाउणा, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक उडाईआ। पंजां तत्तां रंग वखाउणा, आप आपणी किरपा कर एका लए धराईआ। पंज पंज हरि मेल मिलाउणा, भुल रहे ना राईआ। निरगुण सरगुण खेल खिलाउणा, निराकार साकार रूप हो जाईआ। तत्त संग नित रखाउणा, तत्व तत सोभा पाईआ। आपणा रंग ना किसे वखाउणा, निरगुण आपणी वण्ड वंडाईआ। मन मति बुध विच टिकाउणा, साची घाड़त लए घड़ाईआ। हड्ड मास नाड़ी रत पुरख समरथ जोड़ जुड़ाउणा, बूंद रक्त वेखे थाउँ थाँईंआ। कमलापति आसण लाउणा, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। नौ दर खोज खुजाउणा, नौ नौ आपणा खेल खिलाईआ। घर विच घर आप प्रगटाउणा, सचखण्ड थिर घर रिहा समझाईआ। आपणा मार्ग आपे लाउणा, टेढी बंक आप उपाईआ। सुखमन सागर आप बणाउणा, ईड़ा पिंगला दर बहाईआ। घर सरोवर इक्क उपजाउणा, विष्नूं अमृत जल भराईआ। कँवल नाभी आप टिकाउणा, ब्रह्मा सेव कमाईआ। आपणा राग आप अलाउणा, शब्द अगम्मी नाद वजाईआ। अनहद ताल आप वजाउणा, घर घर विच करे शनवाईआ। अकाल मूर्त आपणा भेव आप खुल्हाउणा, साची सूरत निरगुण नूर दए समझाईआ। पंज तत्त विकारा कूड़ो कूड़त मोह चुकाउणा, आसा तृष्ना वेखे थाउँ थाँईंआ। बंक दुआरी बंक सुहाउणा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाउणा, आत्म सेजा दए वड्याईआ। सुरती ब्रह्म मेल मिलाउणा, आत्म ब्रह्म रंग चढ़ाउणा, ईश जीव संग निभाउणा, जगत जगदीश खेल खिलाईआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ आपणा दीपक आप टिकाउणा, अंदर वड़ के आसण लाउणा, नूरो नूर नूर समझाईआ। जल बिम्ब प्रभ मेल मिलाउणा, जल थल महीअल आपणा रंग वखाईआ। धरत धवल आप प्रगटाउणा, धरन धवल दए वड्याईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँघी कंदर वेख वखाउणा, समुंद सागर जल जल धार आप बहाईआ। काया गागर गढ़ बणाउणा, लक्ख चुरासी रचन रचाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारे मुख ब्रह्मा वेता एका दए समझाईआ। चारे मुख हरि समझाइंदा, शब्द अगम्मी अगम्मड़ा बोल। चारे खाणी वण्ड वंडाइंदा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज रक्खे तेरे कोल।

चारे बाणी पर्दा लांहयदा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी वजाए ढोल। चारे जुग रंग रंगाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरे अंदर जाए मौल। चारे वरन आप बहाइंदा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पूरा करे कौल। पंज तत्त चोला आप हंढाइंदा, निरगुण सरगुण प्रगट होवे उप्पर धौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी शक्ती आपणे अंदर जाए मौल। आपणे अंदर मौला रूप, हरि साचा आप कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणाए सति सरूप, सति सतिवादी सतोगुण वखाईआ। एका तागा एका सूत, ताणा पेटा एका पाईआ। एका माई एका पूत, एका पिता रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उठ नेत्र खोल्ह, हरि साचे सच जणाया। शब्द अनादी वज्जया ढोल, पारब्रह्म प्रभ आप अल्हाया। सच वस्त जो रक्खी कोल, तिन्नां झोली दए भराया। लक्ख चुरासी जाणा मौल, घड़ घड़ भाण्डा दए वखाया। आदि जुगादि रहे अडोल, जुग जुग आपणा वेस वटाया। नव नौ चार कीता पूरा कौल, नव नौ चार चौकड़ी जुग लेखणा दए सुहाया। अन्त औध जाए पुग, थिर कोए रहिण ना पाया। वेखणहारा लोक परलोक, चौदां लोकां कुण्डा लए खुल्हाया। त्रैलोक सुनावणहारा सच सलोक, त्रैभवन धनी आपणा रूप लए प्रगटाया। विष्न ब्रह्मा शिव रक्खणी ओट, हरि साचा रिहा सुहाया। नव नौ चार चौकड़ी जुग लक्ख चुरासी आल्हणिउँ डिग्गे बोट, ना सके कोए उठाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर औलीए मुला शेख़ मुसायक आवण कोटी कोट, तत्त ज्ञान दए समझाया। आदि पुरख अबिनाशी करता अजूनी रहत निर्मल जोत, पुरख अकाल इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेले अन्त होए सहाया। विष्न ब्रह्मा शिव सुण पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाया। तूं शाह पातशाह एकँकार, सच तेरा दरबार, हउँ दरवेश दर बैठे सीस झुकाया। लक्ख चुरासी तेरा होए पसार, विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, जुग चौकड़ी सेव कमाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आए वारो वार, गुर अवतार प्रगट होए विच संसार, जुग चौकड़ी बन्धन पाया। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाना शब्द जणाया। रवि ससि चोबदार, मंडल मण्डप करन पुकार, गगन गगनंतर वेखण नैण उग्घाड़, चारों कुण्ट ध्यान लगाया। कवण रूप करें प्यार, प्रगट होवें विच संसार, निरगुण सरगुण बन्न्हे धार, सरगुण निरगुण लएँ मिलाया। तेरा रूप अगम्म अपार, तेरा लेखा लिख ना सके कोए विच संसार, लिखण पढ़ण विच कदे ना आया। तेरी महिमा गायन वारो वार, ब्रह्मा वेता चारे वेद रिहा विचार, चार जुग बन्धन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाया। हरि साचे सच जणाया, त्रै त्रै कर प्यार। नव नौ चार चौकड़ी जुग रहिण ना पाया, जुग बीते वारो वार। कोटन कोटि गुर अवतार सेव कमाया, लेखा जाणण धुर दरबार। कलिजुग अन्तिम

अन्त होए सहाया, निरगुण निरगुण लै अवतार। निहकलंका रूप धराया, दिस ना आए हरि करतार। जोती जोत डगमगाया, शब्दी शब्द शब्द जैकार। दो जहानां वेख वखाया, ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सार। शास्त्र सिमरत वेद पुराण खोज खुजाया, दस अठ्ठ अठारां पाए सार। खाणी बाणी भेव चुकाया, लेखा जाणे अञ्जील कुरान। बावन आपणा संग निभाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए जाणी जाण। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, नव नौ चार चौकड़ी जुग रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी जामा पाउणा, मात पित ना कोए बणाईआ। भैण भाई ना कोए अख्वाउणा, साक सज्जण सैण ना कोए अख्वाईआ। दस मास मात गर्भ ना डेरा लाउणा, अग्नी तत्त ना कोए जणाईआ। निरगुण रूप निरगुण आप प्रगटाउणा, निरगुण नूर निरगुण रुशनाईआ। निरगुण डंका शब्द वजाउणा, विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाईआ। सच संदेशा इक्क घलाउणा, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लेखा दए चुकाईआ। पूर्ब लेखा चुकावणा, हरि हरि किरपा कर गुण निधान। नव नौ चार पार करावणा, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। सति सतिवादी साचा मार्ग लावणा, नौ खण्ड पृथ्मी हो प्रधान। सत्तां दीपां सति दृढ़ावणा, सति सतिवादी इक्क ज्ञान। चारों कुण्ट वेख वखावणा, चारे वेदां पावे आण। चारे वरन आप समझावणा, एका देवे नाम निधान। चारे खाणी बाणी आपे गावणा, चौथे पद बैठ नौजवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव मेले आण। विष्न ब्रह्मा शिव हरि मेल मिलाउणा, कलिजुग अन्तिम आप समझाईआ। आपणा पर्दा आप उठाउणा, जोती जोत करे रुशनाईआ। तख्त निवासी साचा ताज सीस टिकाउणा, पंचम मुख सच्चा पातशाहीआ। जुग जुग दा कर्म मिटाउणा, जन्म जन्म विच बदलाईआ। सहिंसा रोग दुःख सभ दा लाउहणा, सुक्ख सागर इक्क वखाईआ। लोक परलोक एका रूप धराउणा, चौदां तबक देण ग्वाहीआ। आदि पुरख आपणा रंग रंगाउणा, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। सतिजुग साचा मार्ग इक्क धराउणा, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम बहाउणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए अख्वाईआ। एका नाम सभ ने गाउणा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका इष्ट सर्ब मनाउणा, इष्ट देव आत्म परमात्म पारब्रह्म प्रभ नज़री आईआ। कलिजुग तेरा मातम आप कराउणा, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शहिनशाह शाह पातशाह हरि निरँकारा इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादी एका राजा, हरि साचा भूप अख्वाइंदा। जुगा जुगन्तर रच रच काजा, लोकमात वेख वखाइंदा। शब्द अगम्मी निरभउ निर्भय चढ़या ताजा, अश्व घोड़ा आप दौड़ाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फिरे भाजा, दहि दिशा वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत

धरे देस माझा, सम्बल नगर रुत्त सुहाइंदा। वेद व्यास चलाया जहाज़ा, जीव जंत आप समझाइंदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा आपणी रक्खे आपे लाजा, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। मुकंद मनोहर लखमी नरायण मोहण माधव माधा, मोहण आपणा रूप वटाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर धरत धवल सुणे फ़रयादा, भगत भगवन्त वेख वखाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख लाधा, हरिजन साचा मेल मिलाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोए पंडत पांधा, कोटन कोटि तिलक ललाट मस्तक त्रिसूल जगत सुहाइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता आदि अन्त श्री भगवन्त आपे जाणे आपणी वाटा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल करे बाज़ीगर नाटा, स्वांगी आपणा स्वांग रचाइंदा। हरि का नाउँ कलिजुग विक्या हाटो हाटा, हिरदे हरि ना कोए वसाइंदा। झूठा चीथड़ अन्तिम पाटा, तन बस्त्र नाम ना कोए पहनाइंदा। फिर फिर थक्के तीर्थ ताटा, आत्म अन्तर सर सरोवर ना कोए नुहाइंदा। कर कर थक्के पूजा पाठा, बजर कपाटी ना कोए तोड़ तुड़ाइंदा। मना मना थक्के जोत ललाटा, आत्म जोत निरँजण ना कोए जगाइंदा। गुर दर मन्दिर मस्जिद पा पा थक्के झातां, आत्म ताक ना कोए खुल्हाइंदा। मिल मिल थक्के सज्जण साकां, सगला संग ना कोए निभाइंदा। पी पी थक्के अमृत बाटा, अमृत जाम हथ्थ ना कोए फड़ाइंदा। जिस जन मिले पुरख समराथा, दूसर दर ना मंगण आइंदा। घर मेला त्रिलोकी नाथा, घर राम रूप धराइंदा। घर ईसा मूसा संग मुहम्मद देवे साथा, घर सगला संग वखाइंदा। घर नानक गोबिन्द मेटे अन्धेरी राता, ज्ञान नूर इक्क प्रगटाइंदा। घर शब्दी मिले दाता, दिवस रैण शब्द नाद धुन वजाइंदा। घर मिले कमलापाता, सुरती नारी आप प्रनाइंदा। घर सतिगुर पुच्छे वाता, दिवस रैण सेव कमाइंदा। कलिजुग कूड़ कुड़यारा सोया आपणी खाटा, लोकमात ना कोए उठाइंदा। वरनां बरनां प्या घाटा, साचा तोल ना कोए तुलाइंदा। एका तोला हरि रघुनाथा, आदि अन्त अख्वाइंदा। जन भगतां पुछे सदा वाता, भुल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, धुर भाणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। धुर भाणा हथ्थ भगवान, दूसर अवर ना कोए चतुराईआ। लक्ख चुरासी बाल अञ्याण, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। माया रुले राज राजान, शाह सुल्तान ना कोए वड्याईआ। काया ख़ाली दिसे मकान, हरि का नाउँ नज़र ना आईआ। वेले अन्त सर्ब पछताण, जिस मिल्या ना सच्चा माहीआ। भाई भैण सर्ब छड्ड जाण, सगला संग ना कोए रखाईआ। उच्ची कूक कूक कुरलाण, राए धर्म दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेखा मंगे आण, बैठा नैण उठाईआ। लाड़ी मौत करे परवान, वेले अन्त लए प्रनाईआ। जिस भुलया हरि भगवान, वेले अन्त ना कोए छुडाईआ। हरिजन विरला चतुर सुजान, रसना जिहवा रिहा गाईआ। सो पुरख निरँजण हो प्रधान, हँ ब्रह्म लए प्रनाईआ ।

सोहँ शब्द एका गान, एका कान दए सुणाईआ। विष्नूं देवे हरि हरि दान, जीआ दान झोली पाईआ। लक्ख चुरासी सख़ीआं मिले एका काहन, गोपी सुरत लए प्रनाईआ। पीआ प्रीतम मेला सीआ राम, साढे तिन्न हथ्थ सीआं करे कुड़माईआ। घर पैग़म्बर करे कलाम, आलमीन वेखे सर्ब लोकाईआ। घर सजदा करे सलाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जबराईल दए पैग़ाम, असराईल रिहा समझाईआ। हज़ारा दरूद इबनउलवक्त मिले इनाम, एका रूह लए बख्शाईआ। चौदां सदीआं बण ग़ुलाम, चौदां तबक दए समझाईआ। इक्क मुहम्मद पकड़े दाम, अल्ला राणी लए प्रनाईआ। ईसा मूसा वेखे शाम, बस्त्र नील तन छुहाईआ। जुग करता करे आपणा काम, बेनज़ीर सच्चा शहिनशाहीआ। जूठ झूठ लाए इल्ज़ाम, तकदीर तदबीर तकसीर दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए अज़ीमउलशान, शहिनशाह आप अख्वाईआ। शहिनशाह शाही नूर नुराना, नूरो नूर अख्वाइंदा। मुकामे हक वसे सच मकाना, हक हकीकत वेख वखाइंदा। लाशरीक देवे इक्क परवाना, उम्मत उम्मती आप फड़ाइंदा। अमाम अमामां बन्ने गाना, मौली तन्द इक्क रखाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, लोकमात वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी सच तराना, नाम सति आप पढ़ाइंदा। ब्रह्म मत्त कर प्रधाना, आत्म तत्त इक्क वखाइंदा। नानक गोबिन्द इक्क निशाना, एका तीर चलाइंदा। एका मर्द इक्क मरदाना, एका माया मोह मिटाइंदा।
५०७ एका मन्दिर इक्क मकाना, एका सम्बल नगर सुहाइंदा। एका पुरख अकाल श्री भगवाना, दूसर इष्ट ना कोए जणाइंदा। ५०७
एका जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। एका कलिजुग मेटे झूठ निशाना, एका सतिजुग साचा मार्ग लाइंदा। एका ख़ाक मिलाए राज राजाना, एका शाह सुल्तानां आप जगाइंदा। एका देवे धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। एका नौ खण्ड पृथमी हो प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। एका लक्ख चुरासी आपणे हथ्थ रक्खे कमाना, चारों कुण्ट आप भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल खिलावणा, चार कुण्ट जैकार। नव नव भेड़ भड़ावणा, चार चार मारे मार। शब्द खण्डा इक्क चमकावणा, दो जहानां लए हुलार। लोहार तरख़ाण ना किसे घड़ावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल सच्ची सरकार। सच्ची सरकार सच दुआरा, सो पुरख निरँजण आप उपाया। आदि जुगादि कर पसारा, जुग जुग वेख वखाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कर पार किनारा, कलिजुग अन्तिम होए सहाया। नाता तोड़े नार विभचारा, सच विहारा दए वखाया। बीस बीसा हरि जगदीशा हो त्यारा, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणी रीता दए बताया। हर घट अंदर वसे चीता, मन्दिर वखाए इक्क अनडीठा, चार दीवार ना कोए बणाया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ खण्ड पृथमी घट घट अन्तर लक्ख चुरासी एका वासा, एका जोत इक्क प्रकाशा, एका धीर इक्क धरवासा, एका दर दए वखाया।

सो पुरख निरँजण लिख्या लेख, हँ ब्रह्म वज्जे वधाईआ। सोहँ रूप आत्म परमात्म लैणा पेख, आदि जुगादि बणत बणाईआ। महाराज जाणे ना कोई रूप रेख, शेर सिँघ लोकमात वज्जी वधाईआ। विष्नूं देणा सद आदेश, जिस दा दिता पीणा खाईआ। भगवन जोत सदा प्रवेश, लक्ख चुरासी रिहा समाईआ। जुगा जुगन्तर सच नरेश, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोए मूंड मुंडाईआ। जगत कृपाल लैणी भेंट, आत्म परमात्म भेंट कराईआ। पुरख अबिनाशी बणया खेवट खेट, लक्ख चुरासी बेड़ा रिहा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै उप्पर लेख लिखाईआ। लिख्या लेख उप्पर कृपाल, कृपानिध आप लिखाया। चार जुग जिस दा धरदे रहे ध्यान, ध्यान विच कदे ना आया। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दा दस्सदे रहे ज्ञान, ज्ञानी ज्ञान ना कोए समझाया। गुर अवतार जिस दा रक्खदे रहे माण, सो पुरख निरँजण खेल खिलाया। निरगुण सरगुण घर बण के आया महिमान, औंदा जांदा दिस ना आया। राष्ट्रपत उठ नादान, पारब्रह्म रिहा समझाया। नौ खण्ड पृथमी कोई ना दीसे राज राजान, शाह पातशाह ख़ाक मिलाया। प्रगट होवे एका जोद्धा सूरबीर बली बलवान, दो जहानां छत्र सीस झुलाया। ब्रह्मण्ड खण्ड ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ तेतीस मन्नण आण, लक्ख चुरासी सीस झुकाया। सो पुरख निरँजण सच्चा प्रधान, सच प्रधानगी लए कमाया। जिस दा नाम धुर फ़रमान, सृष्ट सबाई लए समझाया। ऊँच नीच राउ रंक सर्ब मिट जाण, एका ब्रह्म सर्ब जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर उप्पर धर, जगत अक्खर वेख वखाया। जगत कृपाल नाम खण्डा, राष्ट्रपत हथ्थ फड़ाया। करे खेल विच ब्रह्मण्डा, जेरज अंडां फोल फुलाया। तोड़णहारा वड घमंडा, माण अभिमाण दए मिटाया। जूठ झूठ वढ्ढे कंडां, माया ममता मोह दए खपाया। जगत मेटे नार दुहागण रंडा, जगत रंडेपा दए चुकाया। इक्क कृपाल सृष्ट सबाई देवे ज्ञान, उप्पर लिख्या सोहँ छन्दा, बन्दी बन्दा बन्द दए कटाया। कलिजुग जीव ना जाणे अन्धा, नेत्र ज्ञान ना कोए खुलाया। जगत विकार फसया झूठा धन्दा, धर्मी धर्म ना कोए वखाया। गुरमुख विरला गुर का बन्दा, गुर गुरमुख मेल मिलाया। नव नौ चढ़या चन्द नौ चन्दा, चन्द चांदनी मुख शरमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप समझाया।

५०८

★ ८ जेठ २०१८ बिक्रमी बीबी अमरो देवी दे गृह जम्मू ★

सति प्रकाश सति सतिवादा, सति सतिवादी सति जणाईआ। लेखा जाणे बोध अगाधा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। रूप अनूप ब्रह्म ब्रह्मादा, पारब्रह्म प्रभ आप वटाईआ। संग निभाए सन्तन साधा, भगत भगवन्त मेल मिलाईआ। वस्त अमोलक देवे दादा, नाम अनमुल्लड़ा झोली पाईआ। वेस वटाए आदि जुगादा, जुगा जुगन्तर खेल खिलाईआ। शब्द वजाए अनहद नादा, अनहत आपणी तार हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। शब्द अनाद सहिज धुन्कारा, गृह मन्दिर हरि वजाइंदा। भगत वछल मीत मुरारा, भगवन भगती वेख वखाइंदा। निर्धन सरधन पावे सारा, सारंगधर भगवान बीठलो आपणी खेल खिलाइंदा। अनद बिनोदी हो त्यारा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। सगल समग्री कर पसारा, सच भण्डारा हरि करतारा, निराकारा आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। सच भण्डारा नाम अमोलक, पुरख अबिनाशी आप वरताईआ। त्रैगुण अतीता इक्क रखाए साची गोलक, घर मन्दिर आप टिकाईआ। शब्द जणाई अन अनबोलत, रसना जिहवा ना कोए हिलाईआ। आदि जुगादि रहे अडोलत, अडोल अडुल इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उठाया। हरिजन साचा उठया, हरि सतिगुर आप उठाए। निरवैर पुरख एका तुठ्ठया, पारब्रह्म सच्ची सरनाए। निझर आत्म देवे साचा घुटया, अंमिउँ रस आपणा आप प्याए। हउँमे हंगता माया ममता कढ्ढे वासना खोटया, दूई द्वैती रहिण ना पाए। पकड़ उठाए बहाए साची चोटीआ, दो जहानां पन्ध मुकाए। पुरख अकाल इक्क वखाए साची ओटया, दूसर ओट ना कोए जणाए। सच सुहञ्जणा बणाए किला कोटया, कोटन कोटी गढ़ तुड़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाए। हरिजन साचा जागया, जाग्रत जोत हरि जगाए। जन्म जन्म दा धोवे दाग़िआ, दुरमति मैल धवाए। आत्म जोत दीप जगे चिरागया, बिमल रूप दरसाए। फड़ फड़ हँस बणाए कागया, सोहँ हँसा चोग चुगाए। मेल मिलाए माधव माध्या, आत्म परमात्म एका रंग रंगाए। नाम सुणाए बोध अगाध्या, शब्द अनादी नाद वजाए। हरिजन लक्ख चुरासी विच्चों काढिआ, बख्शे चरन सरन सच्ची सरनाए। लेखा जाणे आदि जुगादिआ, जुगा जुगन्तर रूप धराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाए। हरिजन मेल मिलन्नया, पुरख पुरखोतम कर प्यार। देवे नाम सच्चा सच धन्नया, धन्न ख़ज़ीना एकँकार। लोकमात ना जाए डन्नया, राए धर्म ना करे ख्वार। सति सतिवाद चढ़ाए चन्नया, सूरज चन्न होए शर्मसार। गुरमुख बेड़ा आपे बन्नया, गुर सतिगुर चुक्के भार। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन सच उभारीअन, कर किरपा गुण निधान। जुग करता जुग जुग पैज संवारीअन, करे कराए सच प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लाए पार। पार किनारा डूँघा सागर, कलिजुग धार आप वखाईआ। हरिजन वेखे काया गागर, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। करे कराए निर्मल कर्म उजागर, निहकर्मी कर्म कमाईआ। सन्त सुहेले देवे आदर, सेवक सेवा आप कमाईआ। एका राग सुणाए दादर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। दो जहानां कर कर आदर, हरिभगत दए वड्याईआ। लेखा जाणे सिदक सबूरी सादर, सति सन्तोख इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे सच समाईआ। हरिजन हरि समाया, निरगुण सरगुण रूप अगम्म। घट अन्तर डेरा लाया, ना मरे ना पए जम्म। सुरती शब्दी मेल मिलाया, आप आपणा बेड़ा बन्न्ह। साचे मन्दिर सोभा पाया, ना कोई सूरज ना कोई चन्न। जोत प्रकाश इक्क धराया, शब्दी नाद वजाए धुन। रागी नादी आप अख्वाया, आपे जाणे आपणा गुण। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाया, लक्ख चुरासी छाण पुण। हरिजन साचे लए उठाया, जीव जहानां आपे चुण। आप आपणा मेल मिलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि पुकार सुण। सुणे पुकार दीन हरि दीनन, दीना नाथ वडी वड्याईआ। हरिजन हरि हरि होए अधीनन, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। जगत विछोड़ा जिउँ जल मीनन, जल मीन सदा तृप्ताईआ। काया चोली चाढ़े रंग भीन्नन, रंग रतड़ा साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा संग निभाईआ। सगला संग हरि रघुनाथा, हरिजन हरि हरि आप निभाइंदा। लेखा जाणे मस्तक माथा, पूर्ब लहिणा वेख वखाइंदा। नाम चढ़ाए साचे राथा, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, जिस जन आपणा दरस दखाइंदा। आवण जावण चुक्के वाटा, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। सखा सखाई बणे पिता माता, गुरसिख आपणी गोद सुहाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी राता, अन्ध अज्ञान गवाइंदा। उत्तम करे हरिजन ज़ाता, ज़ात अज़ाती वेख वखाइंदा। दरस दखाए इक्क इकांता, निरगुण जोत डगमगाइंदा। एका नाउँ एका गाथा, एका अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन साचे वेखणहारा, जगत जगदीशर आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। साकत निन्दक दुष्ट लेखा जाणे दुराचारा, अभुल भुल कदे ना जाईआ। गुरमुख गुरसिख आत्म अन्तर करे पुकारा, दिवस रैण सदा बिल्लाईआ। हरिजन हरि का लेखा कागद कलम ना लिखणहारा, बनास्पत देवे सच ग्वाहीआ। सत्त समुंदर रोवे ज़ारो ज़ारा, मस आपणा रूप वटाईआ। हरिजन मेला धुर दरबारा, धुर दी बाणी आप पढ़ाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा,

५१०

अकल कल आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। हरिजन वेखे थान थनंतर, नव नव फेरा पाया। वेस वटाए गगन गगनंतर घट घट आपणा नूर धराया। शब्द अगम्मी एका मन्त्र, लक्ख चुरासी आप पढ़ाया। सति सतिवाद बणाए बणतर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हाया। गुरमुख भेव खुल्हाइंदा, ख़ालक ख़लक रूप मेहरवान। देवी देव आप अख्वाइंदा, इष्ट देव श्री भगवान। अलख निरँजण सेव कमाइंदा। अलख अगोचर हो मेहरवान। नाम अंजन आपणे हथ्थ रखाइंदा, देवणहारा दो जहान। दर्द दुःख भय भंजन आपणा खेल खिलाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे सच्चा माण। भय भंजन भव सागर तरया, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। गुरमुख गुरसिख भय भयानक विच ना डरया, निरभउ भय आप चुकाईआ। इक्क नुहाए साचे सरया, सर सरोवर इक्क वखाईआ। हरिजन हरि हरि आप आपणे जेहा करया, दुरमति मैल धवाईआ। नारी पुरख एका वरया, एका घर वज्जी वधाईआ। नाम पल्लू साचा फड़या, छुट्ट कदे ना जाईआ। साचे पौड़े आपे चढ़या, चौथे दर मिले वड्याईआ। पंचम मेला साचे घरया, छेवें छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सत्तवें सति सतिवादी नर नरया, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। अठ्ठां तत्तां विच ना अड़या, नौ दुआर ना फेरा पाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़या, घड़े वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वखाए आपणा घर, बंक दुआरी बंक खुल्हाईआ। गुरसिखां भार चुक्या पीठ, गुरसिखां आप समझाईआ। करे खेल साहिब अनडीठ, अनडिठड़ी रीत चलाईआ। जिस बख्शे हिरदे अंदर प्रीत, अतीत वेखे थाउँ थाँईंआ। हरिजन मीता ठंडा सीत, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। गुरसिख गुरमुख बदल ना जाए तेरी नीत, तेरा दुखड़ा गुर सतिगुर आपणी पीठ उठाईआ। तेरी काया करे पतित पुनीत, आपणी काया धार वहाईआ। अचरज चलाई मात रीत, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। एका रंग समाया हस्त कीट, ऊँच नीच होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम नश्तर इक्क वखाईआ। नाम नसतर गुरसिख हथ्थ, गुर गुर आप फड़ाइंदा। आपणे विच्चों कढ्ढे गुरमुख प्यार रत, रती रत ना कोए जणाइंदा। बीज बीजया आपणे वत, फुल फुलवाड़ी आप महिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल कमलापति, कँवल मुख गुरमुख आप उलटाइंदा। गुरसिख चीरे चार धार, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। करे खेल गुप्त ज़ाहर, अंदर बाहर रंग समाईआ। हरिजन हिरदा हरि विचार, हिरदा हरि आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी पीठ आपे रिहा कटाईआ। आपणी पीठ देवे कट्ट, गुरमुख

सेव लगाया, अंदर वखाया आपणा हट्ट, हट्ट हटवाणा बैठा डेरा लाया। करे खेल पुरख समरथ, दरदी दरदीआं दर्द वण्डाया। आपणा आप देवे कट्ट, गुरसिख दुखड़ा नेड़ कदे ना आया। आपणा प्रेम गुरसिख मेटे फट्ट, सच जराह रूप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे विच रखाया।

★ ८ जेठ २०१८ बिक्रमी तेजभान दे गृह शेखसर जम्मू ★

आदि जुगादी एका हरि, सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। सचखण्ड दुआरा एका घर, हरि पुरख निरँजण आसण लाइंदा। एकँकारा एका वर, इक्क इकल्ला रूप धराइंदा। आदि निरँजण नूर नुराना हरि मेहरवाना निरभउ चुकाए आपणा डर, भय भउ ना कोए रखाइंदा। अबिनाशी करता निरगुण निरवैर आपणा घाड़न आपे घड़, आपणी बणत आप बणाइंदा। श्री भगवान लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण वेस वटाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणे मन्दिर आपे वड़, सच दुआरे सोभा पाइंदा। प्रकाश अंदर प्रकाश कर, रूप अनूप आप वटाइंदा। शाहो भूप सिक्दार बण, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। आदि जुगादी एका हरि, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। आपणी करनी आपे कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहया। आपणे मन्दिर आपे वड़, आप आपणा मेल मिलाईआ। आपणा नूर आपे धर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख बेपरवाहीआ। आदि पुरख हरि हरि, हरि हरी हरि आपणी खेल खिलाइंदा। लेखा जाणे आपणे दर दर, दर दरवेश फेरा पाइंदा। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आपे चढ़ चढ़, शाहो भूप राज राजान शाह सुल्तान आप अख्वाइंदा। आपणा वेस आपे कर कर, रूप अनूप आप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, हरि आपणा रंग रंगाइंदा। आदि जुगादी हरि रंग राता, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। इक्क इकल्ला पुरख बिधाता बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। ना कोई पिता ना कोई माता, सगला संग ना कोए रखाईआ। ना कोई वरन ना कोई ज़ाता, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, ना कोई करे हरि पढ़ाईआ। आदि जुगादि करे खेल इक्क समराथा, समरथ भेव कोए ना पाईआ। लेखा जाणे आदि जुगादा, आदि जुगादि आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। सो पुरख निरँजण भेव खुलाउणा, हरि साचा खेल खिलाइंदा। अजूनी रहत वेस वटाउणा, वेस अनेक आप कराइंदा। सचखण्ड दुआरे सोभा पाउणा, थिर

घर आपणा चरन टिकाइंदा। सति सतिवादी सति कराउणा, साचा मार्ग आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, दूसर अवर ना कोए जणाइंदा। दूसर अवर ना कोए धार, इक्क इकल्ला एकंकारया। सचखण्ड दुआरे हो उज्यार, निरगुण जोत करे उज्यारया। तख्त निवासी बण शाह सिक्दार, शाह पातशाह नाउँ धरा रिहा। हुक्मी हुक्म सच वरतार, धुर फ़रमाना आप अला ल्या। आपणा नाउँ रक्ख निरँकार, निरभउ आपणी खेल खिला ल्या। आपे कन्त सुहागी बण बण नार, सेज सुहञ्जणी आप हंढा ल्या। आपे पूत सपूता जाए दुलार, दाई दाया रूप धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी रचना आप रचा ल्या। सचखण्ड दुआरे घाड़न घड़, सो पुरख निरँजण खेल खिलाया। निरगुण अंदर निरगुण वड़, निरगुण मेल मिलाया। निरगुण पल्लू निरगुण फड़, निरगुण संग रखाया। निरगुण दुआर निरगुण दर, दर दरवेश निरगुण सीस झुकाया। निरगुण शाहो भूप बण राज राजान, शाह पातशाह सीस आपणा ताज टिकाया। निरगुण जोत श्री भगवान, भगवन आपणी खेल खिलाया। निरगुण जोद्धा सूरबीर बलवान, बल आपणा आप प्रगटाया। निरगुण लेखा जाणे दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणे हथ्थ रखाया। आदि पुरख आदि आपणे हथ्थ रक्ख, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। सचखण्ड दुआरे हो प्रतक्ख, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह अकथना अकथ, महिमा कथ कथी ना जाईआ। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही दिस ना आईआ। आपणे अन्तर आप प्रगटाए आपणी वथ, नाम अमोलक आप धराईआ। आपे गाए आपणा जस, थिर घर साचे वज्जे वधाईआ। ना कोई रवि ना कोई सस, मंडल मण्डप ना कोए वखाईआ। कोह करोड़ी रिहा ना नस्स, पान्धी पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणे घर दए वड्याईआ। हरि घर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाया। पुरख अबिनाशी एका कन्त, कन्त कन्तूहला सोभा पाया। एका रंग वखाए बसन्त, रंग रंगीला आप रंगाया। त्रैगुण अतीता बणाए बणत, घाड़त घाड़ण लए घड़ाया। ठांडा सीता इक्क इकन्त, सच सिँघासण आसण लाया। आपणा नाउँ मणीआ मंत, नाम निधाना आपे गाया। आपे जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणा खेल खिलाया। आपणा खेल करे बेअन्त, बेपरवाह हरि रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप लगाया। आपणा मार्ग हरि हरि ला, निरगुण सरगुण वेस वटाया। आपणी कुक्खड़ी सोभा पा, आपणा दुःख आप मिटाया। आपणा मुख उज्जल आप करा, आपे विश्व धार बंधाया। आपणा अमृत आप चुआ, आपे कँवल नाभ खल्हाया। फुल फुलवाड़ी आपे ला, ब्रह्म वेता सुत उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आपणा गुण दए वखाया। हरि गुणवन्ता गुण निधान, आपणी महिमा आप जणाईआ। साचे तख्त बैठ श्री भगवान, शाह सुल्तान वडी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा देवे इक्क ज्ञान, निश्अक्खर करे पढ़ाईआ। मेरा हुक्म सच्चा फ़रमान, धुर फ़रमाना आप अल्हाईआ। चरन कँवल कँवल चरन बख्शे इक्क ध्यान, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, लक्ख चुरासी बन्धन पाईआ। मेल मिलाए रवि ससि सूरज चन्न भान, तेज तेज विच चमकाईआ। एका नाद शब्द धुन्कान, हरि निरँकारा आप सुणाईआ। कोटन रूप कर प्रधान, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। पंचम वेखे हरि हरि आण, पंचम वज्जदी रहे वधाईआ। घाड़त घड़े श्री भगवान, विष्न ब्रह्मा सेव लगाईआ। शंकर बाला वेखे नादान, एका तत्त दए समझाईआ। एका हुक्म एका गान, एका घर दए वड्याईआ। एका पीण एका खाण, एका तृष्ना तृप्त कराईआ। लक्ख चुरासी तेरा पकवान, भस्मड़ रूप ना कोए वटाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवे दान, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी दुकान, त्रै त्रै लोक दए वखाईआ। चौदां हट्ट कर कल्याण, आपणा पर्दा दए चुकाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बणाए मकान, पवण पवणां विच समाईआ। मन मति बुध दए ज्ञान, तत्व तत इक्क दरसाईआ। नव नौ चार खेल महान, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। लेखा जाणे धरत धवल ज़िमीं अस्मान, समुंद सागर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका गुण दए वखाईआ। आदि पुरख हरि शब्द जणाया, धुर दी बाणी बाण अल्हा। आपणा भेव आप खुल्हाया, निरगुण निरगुण लए समझा। नव नौ चार सेव कमाया, जुग चौकड़ी वेस वटा। चारों कुण्ट वण्ड वण्डाया, चारे लेखा रिहा गणा। चारे वेद रहे जस गाया, चार वरनां राग अल्हा। चारे बाणी भेव खुल्हाया, चारे जुग एका रंग रंगा। नौ नौ गेड़ा दए दवाया, नव खण्ड चरनां हेठ दबा। गुर अवतार सेव कमाया, पंज तत्त काया चोला जगत हंढा। भगत भगवन्त लए उठाया, निर्मल जोती जोत टिका। सन्त साजण लए मिलाया, सति सतिवादी दरस दिखा। गुरमुख गुर गुर गोद बहाया, गुर गुर ज्ञान इक्क दृढ़ा। गुरसिख साचा संग निभाया, साची सिख्या इक्क दरसा। लक्ख चुरासी फोल फुलाया, घट घट आपणा आसण ला। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बन्धन दए तुड़ाया, तोड़नहारा बेपरवाह। कोटन रूप अनूप वटाया, करे खेल सच्चा शहिनशाह। शाह कंगाल आप अख्वाया, निर्धन सरधन वेस वटा। सृष्ट सबाई मूल चुकाया, लेखा आपणी गणत गणा। अबिनाशी करता भुल कदे ना जाया, अभुल इक्क बेपरवाह। नव नौ आपणे कंडे तोल तुलाया, नाम कंडा हथ्थ उठा। ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाया, लोआं पुरीआं फेरा पा। जेरज अंडां वेख वखाया, उत्भुज सेत्ज पर्दा दए चुका। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाया, गेड़ा गेड़े विच रखा। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, गुर अवतार

देण सलाह। पुरख अबिनाशी निरगुण निरवैर जोती जामा वेस वटाया, दो जहानां बणे मलाह। पूर्ब जन्मां वेख वखाया, पूर्ब लहिणा वेखे थाउँ थाँ। थान थनंतर आपणे रंग रंगाया, जगत बसन्तर दए बुझा। एका मन्त्र नाम दृढ़ाया, एका अक्खर दए पढ़ा। सो पुरख निरँजण मेल मिलाया, हँ ब्रह्म मेल मिला। आत्म अन्तर लेख चुकाया, निज आत्म खोज खुजा। साची सेजा सोभा पाया, जगत दुआरा पन्ध मुका। अनहद नादी नाद वजाया, धुन आत्मक दए सुणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा दए वखा। हरि भाणा बलवान, विष्नूं ब्रह्मा शिव हरि जणाईआ। जुग चौकड़ी झुल्ले मात निशान, लोक परलोक वज्जे वधाईआ। करे खेल दो जहान, दोए दोए रूप आप प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण गुण निधान, गुण अवगुण आपणे विच रखाईआ। नाम जणाए धुर फ़रमान, सच संदेशा आप अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेस अनेका आप धराईआ। वेस अनेका इक्क इकल्ला, आदि जुगादि धराइंदा। वसणहारा सचखण्ड दुआरा सच महल्ला , सचखण्ड निवासी आपणा रंग रंगाइंदा। जोती नूर नूरी अल्ला, इलाही नूर आप अख्वाइंदा। आपणा नूर कर बिस्मिला, बिस्मिल आपणी धार चलाए इललिला, आलमीन वेख वखाइंदा। एका कलमा एका चिला, इक्क अमाम हथ्थ उठाइंदा। चौदां लोक वेखे टिल्ला, चौदां तबकां फेरा पाइंदा। लेखा जाणे बस्त्र नीला, नीली धार पार जणाइंदा।
५१५ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रंग आप वखाइंदा। आपणे रंग हरि रंग राता, रंग रंगीला साचा ५१५
माहीआ। लेखा जाणे दिवस राता, दाई दाया सेव कमाईआ। परम पुरख बण पुरख बिधाता, पुरख पुरखोतम खेल खिलाईआ। जुग चौकड़ी सुणौंदा आया आपणी गाथा, गुर अवतार सेवा लाईआ। भगतां बणया पिता माता, साचे सन्तां गोद बहाईआ। गुरमुखां देवे नाम दाता, गुरसिख ख़ाली कोए रहिण ना पाईआ। नाता तोड़े ज़ातां पातां, वरन गोत ना कोए वड्याईआ। मन मति कढ्ढे नार कमज़ाता, कन्त सुहाग दए वखाईआ। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, सति पुरख निरँजण हथ्थ वड्याईआ। अमृत आत्म देवे बाटा, निझर झिरना आप झिराईआ। चरन कँवल वखाए साचा हाटा, चौदां लोक सीस झुकाईआ। आत्म सेज सुहाए साची खाटा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। हरिजन हरि हरि जोड़े नाता, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त आपणी खेल खिलाईआ। आदि अन्त हरि खेल खिलाउणा, भेव कोए ना पाइंदा। विष्नूं उठ उठ राह तकाउणा, ब्रह्मा नेत्र नैण उठाइंदा। शंकर हथ्थ त्रिसूल सूटाउणा, बाशक तशका वेख वखाइंदा। करोड़ तेतीसा मंगल गाउणा, सुरपति राजा इन्द नाल रलाइंदा। पुरख अबिनाशी रूप धराउणा, गण गंधर्ब सर्ब जस गाइंदा। किन्नर यच्छप नाच नचाउणा, दर घर साचा इक्क सुहाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जोती नूर इक्क चमकाउणा, रवि

ससि सीस झुकाइंदा। शब्द अनादी एका गाउणा, चारे वेद मुख सालांहयदा। प्राणी प्राण मेल मिलाउणा, पुराण अठारां रंग रंगाइंदा। एका मन्त्र ज्ञान दृढ़ाउणा, अठारां अध्याए गीता वेख वखाइंदा। एका सुरती राम मिलाउणा, जनक सपुत्री भेव चुकाइंदा। एका बंसरी नाम वजाउणा, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आपणी खेल खिलाइंदा। गोपी नाथ दिस ना आउणा, त्रिलोकी नंदन त्रैगुण आपणा नाच नचाइंदा। कलमा हक आप पढ़ाउणा, मुकामे हक खोज खुजाइंदा। शरअ शरीअत इक्क समझाउणा, लाशरीक रूप धराइंदा। ख़लक ख़ुदाई आप उठाउणा, मख़लूक शकूक इक्क जणाइंदा। एका मन्त्र सति कराउणा, नाम सति आप वखाइंदा। एका गुर गुर मेल मिलाउणा, वाह वा गुर गुर आप उपाइंदा। निरगुण सरगुण वेस धराउणा, सरगुण निरगुण विच छुपाइंदा। निरगुण सरगुण फेर प्रगटाउणा, सरगुण निरगुण बन्धन पाइंदा। शब्द अनादी नाद वजाउणा, नौ खण्ड पृथ्मी आप सुणाइंदा। सत्तां दीपां राह वखाउणा, भेव अभेद आप जणाइंदा। निरगुण निरगुण घर घर अंदर फेरा पाउणा, काया बंक फोल फुलाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख साचा आप उठाउणा, आप आपणा मेल मिलाइंदा। सचखण्ड दुआरे फड़ बहाउणा, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। राए धर्म दा लेख चुकाउणा, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाइंदा। लाड़ी मौत ना अन्त प्रनाउणा, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। फड़ फड़ कागों हँस बणाउणा, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। विष्नूं बंसा इक्क बणाउणा, श्री भगवान सेव कमाइंदा। दो जहानां एका नाउँ गाउणा, लक्ख चुरासी आप पढ़ाइंदा। सच संदेशा देवे उणंजा पवणा, पवण स्वासी वेख वखाइंदा। हरि का भाणा जाणे कवणा, हरि का भेव ना कोए जणाइंदा। जन भगतां कट्टे अवणा गवणा, अवण गवण ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त आपणा बन्धन पाइंदा। आदि अन्त हरि हरि बन्धन, लक्ख चुरासी बंध बंधाईआ। हरिजन मस्तक लाए नाम चन्दन, तिलक ललाटी वेख वखाईआ। एका देवे परमानंदन, निजानंद सहिज सुखदाईआ। नाम जणाए सुहागी छन्दन, गीत गोबिन्द इक्क अलाईआ। मनमुख जीव भागां मंदन, मन का भरम ना कोए चुकाईआ। सतिगुर पूरा सदा बख्शंदन, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। लक्ख चुरासी तोड़े फंदन, जो जन रहे शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, साचे सन्त लए मिलाईआ। साचे सन्तन हरि हरि मेला, जुग करता आप कराईआ। जुगा जुगन्तर गुरु गुर चेला, गुर चेला रूप वटाईआ। सदा सहाई सज्जण सुहेला, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, थित वार ना कोए वखाईआ। वसणहारा धाम नवेला, कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अचरज खेल आपे खेला, ख़ालक वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेला, नूर ज़हूर सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप

५१७

हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। हरिजन हरि हरि जाणदा, जुगा जुगन्तर कार। भगत वछल खेल श्री भगवान दा, खेले खेल अगम्म अपार। लेखा जाणे गुण निधान दा, गुण निधान सच्ची सरकार। गुरमुख विरला हरि रंग माणदा, जिस जन बख्शे चरन प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे कराए साची कार। साची कार करदा आया, जुगा जुगन्तर बेपरवाह। भगत भगवन्त वरदा आया, थिर घर साचे करे सालाह। सन्त सुहेले फड़दा आया, नाम बन्धन एका पा। लक्ख चुरासी विच्चों कढदा आया, शब्द सरूपी बण मलाह। आपणे अंदर आपे धरदा आया, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए उठा। हरिजन हरि हरि आप उठाउणा, दिवस रैण प्रभात। आत्म दीआ जोत जगाउणा, दरस दिखाए इक्क इकांत। साढे तिन्न हथ्थ सीआ तेरा वक्त चुकाउणा, पुरख अबिनाशी बणया पित मात। सतिजुग नीहां मात लगाउणा, सति सतिवादी देवे दात। साचा बीआ बीज बिजाउणा, फुल्ल फुलवाड़ी वेखे डाल पात। अमृत फल इक्क लगाउणा, चार वरन बणाए एका ज़ात। एका दूजा भेव मिटाउणा, कलिजुग मिटे अन्धेरी रात। घट घट अन्तर हरि हरि नज़री आउणा, रसना जिहवा गाए साची गाथ। मन का मणका आप भवाउणा, मन मन ही अंदर मारे झात। जन जन का रूप आप वटाउणा, जन जननी वेखे खात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे सच नजात। देवे नजात सतिगुर पूरा, सूत्रधारी वड वड्याईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। जिस जन चरन बख्शे मस्तक साची धूढ़ा, जोत ललाट करे रुशनाईआ। घट अंदर नूरो नूरा, अज्ञान अन्धेर दए गंवाईआ। दर मेला सूरबीर सूरन सूरा, जोद्धा सूरबीर आप अख्वाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हाज़र हज़ूरा, ना मरे ना जाईआ। समरथ पुरख सर्ब कला भरपूरा, अकल कल हरि वड्याईआ। गुरमुखां वसे नेड़न दूरा, दूर नेड़ ना कोए जणाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेज भान तेरा तेज नूरा, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दूआ दूआ एका, एका रंग रंगाईआ। दूआ एका एक रंग, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। निरगुण सेजा आत्म पलँघ, सरगुण साची रिहा हंढाया। हरि का नाउँ नाम मृदंग, गृह मन्दिर आप वजाया, जगत दुआरा मुक्या पन्ध, घर घर परमेश्वर पाया। काया सीतल ख़ुशी बन्द बन्द, बन्दी छोड़ दया कमाया। आदि अन्त नंगी होए ना कंड, गुर सतिगुर होए सहाया। नाता तुट्टा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज मोह चुकाया। चरनां हेठ दबाया आप ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाया। गाउणा गीत सुहागी छन्द, आत्म परमात्म लए प्रनाया। लेखा चुक्के बत्ती दन्द, तीस बतीसा खोज खुजाया।

जगत जुगत जोग जुगा जुगन्तर गया हंढ, थिर कोए रहिण ना पाया। गुरमुख गुरसिख गुर सतिगुर मिल्या सदा बख्शंद, बख्शिश आपणी दए कराया। दिवस रैण परमानंद, चिंता सोग रोग दुःख नेड़ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म वेता आपणे रंग रंगाया।

★ ६ जेठ २०१८ बिक्रमी शिव सिंघ दे गृह शेख़सर जम्मू ★

माणस जन्म लेखा चुक्के मानव, हरिजन हरि हरि दया कमाइंदा। हरिजन मेले रूप धर धर बावन, बल आपणा आप वखाइंदा। दो जहानां बणे जामन, धुरदरगाही सेव कमाइंदा। निरगुण सरगुण फड़ाए दामन, एका पल्लू आप वखाइंदा। कलिजुग कूड़ कुड़यारा मेटे रावण, राम रामा खेल खिलाइंदा। अमृत मेघ बरसे सावण, निझर झिरना आप झिराइंदा। लेखा चुक्के आवण जावण, आवण जावण पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म लेखे लाइंदा। माणस जन्म चुक्के लेखा, गुर सतिगुर आप चुकाईआ। हरिजन हरि हरि आपणे नेत्र पेखा, जगत नैण ना कोए वड्याईआ। सेवक सेवा जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, दर दरवेशा फेरा पाईआ। वेस अनेक करया वेसा, अनक कल बेपरवाहीआ। हरिजन हरि हरि सदा सद आदेसा, निव निव आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म लेखे लाईआ। माणस जन्म लेखे गया लग्ग, हरि सज्जण आप लगाया। मिल्या मेल सूरे सर्बग, दर घर साचे सोभा पाया। त्रैकाल दरसी त्रैगुण मेटे अग्ग, अग्नी तत्त ना कोए जलाया। हँस सरोवर नुहाए कग, कबुध डूमणी मेट मिटाया। जाम प्याए अमृत मदि, नाम प्याला हथ्थ उठाया। जगत विकारा देवे बद्द, बधक आपणे गले लगाया। सज्जण सुहेले हरि हरि सद्द, सच संदेशा नाम सुणाया। जगत जंजाल विच्चों कढ्ढ, आप आपणा बन्धन पाया। नाता तुट्टा अन्धेरी खड्ड, डूँग्घा सागर वहिण ना कोए वहाया। निरवैर जणाई विष्नूं यद, बंस सरबंसा आप बणाया। जगत वासना पार किनारा हद्द, हरि मन्दिर हरिजन हरि हरि मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म दए समझाया। माणस जन्म नव नव धार, निरगुण सरगुण आप चलाईआ। इक्क इक्क खेल करे सरकार, दोए दोए रूप अनूप वटाईआ। तीजा लोयण खोल्ह किवाड़, चौथे पद करे रसाईआ। पंचम मेला पुरख नार, नारी कन्त आप हो जाईआ। छेवें छप्पर छन्न तों वसया बाहर, महल्ल अटल बैठा आसण लाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण सांझा यार, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। अठ्ठां तत्तां दए आधार, आप आपणी दया कमाईआ। नौ दर लेखा जाणे सर्ब संसार, नव नौ लेखा

आपणे हथ्थ रखाईआ। दहि दिशा करे विचार, दहि सिर रावण मार हँकार, आत्म ब्रह्म दए आधार, निरगुण जोती जोत मिलाईआ। काया कंचन कोट गढ़ वेखे वेखणहार, डूँग्घी कंदर जगत भँवरी सागर तरे तरनेहार, आर पार आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुख सज्जण ल्ए उभार, जोती जाता हरि निरँकार, जीवण जुगत भगत भुगत आपणे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस लेखा दए चुकाईआ। माणस लेखा आप चुकाउणा, हरिजन साचा मेल मिलाया। जन्म मरन दा रोग मिटाउणा, चिंता सोग ना कोए वखाया। सोहँ साचा जाप जपाउणा, पारब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म एका रंग रंगाया। दुरमति मैल धो निर्मल आप कराउणा, अमृत जल सिंच हरया आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म वेख वखाया। माणस जन्म लक्ख चुरासी धारा, चार खाणी वण्ड वंडाईआ। नव नौ जन्म विच संसारा, अजन्मा रूप वटाईआ। गुण अवगुण करे ना कोए विचारा, संसा रोग ना कोए मुकाईआ। लेखा लिख्त जाणे ना जीव गंवारा, लिखणहारा दिस ना आईआ। वाक भविख्त ना करे कोए विचारा, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना उतरे पारा, कूड़ी क्रिया कलिजुग बन्धन इक्क वखाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क दातारा, सो पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाहीआ। कलिजुग प्रगटे अन्तिम वारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। दूसर तक्के ना कोए सहारा, सीस जगदीश ना किसे झुकाईआ। करे खेल सभ तों न्यारा, निरवैर रूप वटाईआ। एका हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, हुक्मे अंदर रक्खे सर्ब लोकाईआ। एका खण्डा नाम तेज़ कटारा, ब्रह्मण्डां आप चमकाईआ। हरिजन साचे करे प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, माणस लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। माणस मानुख उत्तम ज़ात, लक्ख चुरासी आप जणाइंदा। आदि अन्त पुच्छे वात, सन्त सतिगुर वेख वखाइंदा। जिस जन जणाए आपणी गाथ, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। इक्क दुआरा वखाए साचा हाट, वणज वणजारा एका नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, माणस जन्म आपणे लेखे धर, धरनी धरत धवल आप सुहाइंदा। माणस जन्म धरनी दात, धवल वडी वड्याईआ। पूत सपूता बख्शे कमलापात, कँवल नैण नैण मटकाईआ। उत्तम रक्खे आपणी ज़ात, जोती जाता इक्क शहिनशाहीआ। सन्त कन्त भगवन्त पुछे वात, आदि अन्त विसर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे बेपरवाहीआ। हरिजन वेख माणस जन्म, पूर्ब लेखा आप मुकाईआ। नव नौ वेखे क्रिया कर्म, कर्म कांड आप समझाईआ। सति सन्तोख एका धर्म, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। बिन हरि अवर ना कोए बरन, जगत बरन ना कोए लड़ाईआ। जिस जन बख्शे साची सरन, गृह मन्दिर इक्क वखाईआ। नाता तुट्टे जन्म मरन, मरन जन्म विच ना आईआ। किरपा करे करनी

करन, करनी करता किरत कमाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सच दुआरे वड़न, सचखण्ड दुआरा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म पन्ध मुकाईआ। माणस जन्म मुके पन्ध, पान्धी पन्ध ना कोए वखाइंदा। रसना गाउणा एका छन्द, छन्द सुहागी आप जणाइंदा। रसन तजाउणा जगत विकारा गंद, माया ममता मोह मिटाइंदा। इक्क जणाए परमानंद, निज आत्म वेख वखाइंदा। माणस जन्म ख़ुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाइंदा। घर निरगुण नूर चढ़ाए चन्द, जोती नूर नूर चमकाइंदा। हरिजन हरि हरि सदा बख़्शंद, कर बख़्शिश पार कराइंदा। माणस जन्म ना होए भंग, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन देवे जीआ दान, आत्म परमात्म आपणा बन्धन पाइंदा।

हेरा फेरा चुक्या वक्त, हरि सतिगुर आप चुकाईआ। नाता तोड़े नालों जगत, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरसिख बणाए साचे भगत, भगती सेवा आप कमाईआ। लेखे लाए बूंद रक्त, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। दासी दास आदि शक्ति, दर दर घर घर फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए समझाईआ। हेरा फेरा चुकया, चुकावणहार करतार। गुरमुख साचा वेला ढुक्कया, हरिजन मेले आपणी वार। सिँघ शेर शेर हो के बुकया, नवखण्ड मार भबकार। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जो रिहा लुकया, अन्तिम प्रगट होया विच संसार। आवण जावण हेरा फेरा पैंडा मुक्या, हरि जू हरि हरि पावे सार। मात गर्भ ना होए उलटा रुख्या, जिस जन देवे दरस दीदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उधार। हेरा फेरा चुक्या वेला, वेला वक्त आप जणाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता सज्जण सुहेला, सति सतिवादी साची दया कमाईआ। एका रंग रंगाए गुरु गुर चेला, गुर चेला रूप धराईआ। सचखण्ड निवासी वसणहारा धाम नवेला, हरिजन साचे धाम बहाईआ। आवण जावण धर्म राए दी कट्टे जेला, बख़्शे चरन शरन सच्ची सरनाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेला, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हेरा फेरा जगत मुकाया, हरि सज्जण दया कमाइंदा। हरिजन साचा आप जगाया, आप आपणा रंग रंगाइंदा। आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाया, निज आत्म खोज खुजाइंदा। बातन जमाल आप दरसाया, नूरो नूर नूर दरसाइंदा। शब्द अगम्मी बन्धन पाया, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। मस्तक टिक्का चन्दन नाम लगाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाइंदा। हेरा फेरा गया मुक, सो पुरख निरँजण आप मुकाईआ। गुरमुख

गुर गुर आपणी गोदी चुक, दरगाह साची दए बहाईआ। निरगुण निरवैर रिहा तुड्ठ, अतोट अतुट्ट वडी वड्याईआ। हरिजन बणाए साचे सुत, अबिनाशी अचुत सेव कमाईआ। जगत सुहञ्जणी होई रुत्त, पत डाली फुल्ल महिकाईआ। लेखा जाणे काया पंज तत्त बुत्त, त्रैगुण वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। हेरा फेरा मुक्कया पन्ध, पान्धी आपणा पन्ध मुकाइंदा। हरिजन हरि हरि सदा बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाइंदा। एथे ओथे दो जहान नंगी होण ना देवे कंड, सीस जगदीश हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे जीउ पिण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खुजाइंदा। अमृत धारा बख्शे सागर सिन्ध, निझर झिरना आप झिराइंदा। गुरसिख बणाए साची बिन्द, सुत अनादी नाउँ धराइंदा। राह तक्के करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाइंदा। दाता दानी गृह मन्दिर गुणी गहिन्द, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग फंदन आप कटाइंदा। हेरा फेरा जगत राह, जाग्रत जोत जोत रुशनाईआ। साहिब सतिगुर सच सुल्ताना बण मलाह, भव सागर पार कराईआ। शब्दी शब्द सुत सलाह, निःअक्खर नाम पढ़ाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला सीस जगदीश देवे ठंडी छाँ, समरथ आपणी दया कमाईआ। जन भगतां बणे पिता मां, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस उडाईआ। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची धाम सुहाईआ। करे कराए सच न्याँ, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। डुब्बदे पाथर लए तरा, जिस पाहन चरन छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हेरा फेरा दए चुकाईआ। हेरा फेरा करे ना कादर, कुदरत आपणी खेल खिलाईआ। आदि जुगादी एका साबर, सिदक सबूरी सच समझाईआ। एकँकारा पिदर मादर, रूप अनूप आप दरसाईआ। आपणा नाउँ सुणाए दादर, दरूद इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए समझाईआ। हेरा फेरी जगत अखाड़ा, हरि साचा आप लगाइंदा। नव खण्ड पृथमी अग्नी जोत लगाए बहत्तर नाड़ा, तत्व तत आप प्रगटाइंदा। चार कुण्ट हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। जूठ झूठ वेख पसारा, करे खेल हरि करनेहारा, आपणी कल आप वरताइंदा। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ारा, उच्ची कूके करे पुकारा, चारों कुण्ट नैण उठाइंदा। ना कोई दीसे मीत मुरारा, नाता तुट्टा संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी नैण शरमाइंदा। ईसा मूसा राह तक्के परवरदिगारा, ख़लक ख़ुदाई सांझे यारा, करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। नौबत वजाए आपणी वारा, सुहबत वेखे विच संसारा, उल्फ़त जगत ना कोए वड्याईआ। चारों कुण्ट धूंआँधारा, सच सुच्च ना कोए उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर वेखे सर्ब

लोकाईआ। हेरा फेरा जगत लोकाया, लुक लुक हरि हरि खेल खिलाइंदा। आपणा पर्दा आप छुपाया, नेत्र लोचण नैण, दिस किसे ना आइंदा। कलिजुग कूड़ कुड़यारा कूड़े धन्दे लाया, सच सुच्च ना कोए जणाइंदा। आत्म अन्धे साचा मार्ग ना किसे वखाया, ख़ाकी बन्दे ख़ाक मिलाइंदा। चन्द नौ चन्द ना किसे चढ़ाया, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। सद बख्शंद फेरा पाया, भेव अभेद आप छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हेरा फेरा जगत जणाइंदा। हेरा फेरा जगत जुग कार, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। हँकारीआं देवे गढ़ हँकार, आशा तृष्ना नाल मिलाईआ। माया ममता करे श्रृंगार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार तन बस्त्र इक्क पहनाईआ। जूठ झूठ कज्जल धार, लक्ख चुरासी करे विचार, नव नौ आपणा रंग रंगाईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवार, घट घट अंदर होए विभचार, सति सरूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हेरा फेरा वेखे सर्ब लोकाईआ। हेरा फेरा जगत नाता, त्रैगुण बन्धन पाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर बैठा रहे इक्क इकांता, अकल कल आपणी खेल खिलाइंदा। रूप वटाए बहुबिध भांता, रंग रेख ना कोए वखाइंदा। शब्द अगम्मी गाए गाथा, गावणहारा दिस ना आइंदा। लक्ख चुरासी चलाए राथा, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। जीव जंत लहिणा देणा जाणे मस्तक माथा, पूर्ब जन्म फोल फुलाइंदा। जिस जन जणाए आपणी पूजा पाठा, इष्ट देव आप अख्वाइंदा। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ ताटा, सर सरोवर आप नुहाइंदा। भाग लगाए काया माटा, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। निरगुण जोत जगाए ललाटा, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। आत्म सुहाए साची खाटा, सो पुरख निरँजण आसण लाइंदा। जन्म जन्म दी चुक्के वाटा, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। हेरा फेरा ना आए घाटा, साचे घाट आप चढ़ाइंदा। लहिणा देणा चुकाए हाथो हाथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप वखाइंदा। आपणा मार्ग लाए सिध्ध, सिद्ध साधक सेव लगाईआ। आपे जाणे आपणी बिध, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। चरन दासी नव नव निध, दस अठ्ठ बैठी सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वड्याईआ। अठ्ठ दस दासी दास, सेवक सेवा सच जणाइंदा। नव नौ रक्खे चरन दास, चरन चरनां हेठ दबाइंदा। आत्म जोत ब्रह्म प्रकाश, पारब्रह्म समझाइंदा। निज घर आत्म निज निज वास, निज नेत्र वेख वखाइंदा। पर्दा चुक्के पृथ्मी आकाश, गगन मंडल सोभा पाइंदा। रवि ससि रक्खण आस, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा खेल खिलाइंदा। साचा खेल सतिगुर घर, गुर गुरमुख आप कराईआ। निरभउ चुकाए भय डर, जगत भयानक रूप ना कोए वटाईआ। अमृत सर नुहाए आत्मक सर,

सरोवर साचा इक्क वखाईआ। आदि जुगादि ना होवे बन्द दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। कागों हँस देवे कर, दुरमति मैल धवाईआ। सुरती मिले शब्दी वर, शब्द सुरत होए कुड़माईआ। दोहां विचोला आपे बण, निरगुण सरगुण वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हेरा फेरी दए मिटाईआ। हेरा फेरा मुकावण ख़ातर, निरगुण निरगुण रूप धराया। कलिजुग जीव जो बैठे बण बण चातर, माया ममता मोह भुलाया। गुरमुखां देवे घर घर आदर, रातीं सुत्तयां लए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप कमाया। हेरा फेरा करे गोबिन्द, आपणा बन्धन आपे पाईआ। जगत रखाए अठ्ठे पहर विच चिन्द, गुरमुख आपणा रंग वखाईआ। मनमुख लगाए आपणी निन्द, गुरसिख गावण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हेरा फेरी आपणी बणत बणाईआ। हेरा फेरा हरि का कम्म, बिन हेरा फेरी हरि कम्म किसे ना आइंदा। किसे देवे पवण स्वास दम, किसे दे दे दम बाहर कढाइंदा। करे खेल हड्ड मास नाड़ी चम्म, पंज तत्त काया जोड़ जुड़ाइंदा। लेखा जाणे ख़ुशी ग़म, हरख सोग बन्धन पाइंदा। आपे घड़े आपे लए भन्न, घड़ण भन्नणहार आप अख्वाइंदा। आपे देवणहारा डन्न, राए धर्म सेव लगाइंदा। आपे गुरसिख उपजाए साचे जन, जन जननी सेव कमाइंदा। आपे राग सुणाए कन्न, नाद अनादी नाद वजाइंदा। आपे मन का मणका फेरे मन, मन मनूआ आप बंधाइंदा। आपे जोत निरँजण चाढ़े चन्न, प्रकाश प्रकाश समाइंदा। आपे होए आत्म अन्न्ह, अन्ध अन्धेर आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाइंदा । हेरा फेरा जगत जलाया, अग्नी तत्त लगाईआ। हेरा फेरा भगत तराया, लक्ख चुरासी विच्चों लए उठाईआ। हेरा फेरा जुग उलटाया, जुग करता सच्चा शहिनशाहीआ। हेरा फेरा गुरमुख आपणे रंग रंगाया, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। हेरा फेरा मनमुख जीव लक्ख चुरासी गेड़ा पाया, जून अजूनी खेल खिलाईआ। हेरा फेरा सन्त साजण लए तराया, आप आपणा दरस दिखाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दोहां विचोला बण के आया, लोकमात वेख वखाईआ। सो पुरख निरँजण ढोला एका गाया, साचा बोला बोल अल्हाईआ। मनमुखां सुण सुण रौला पाया, गुरमुख विरला ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराईआ। हरिजन साचा उतरे पार, सतिगुर पूरा पार कराइंदा। माणस जन्म देवे पैज संवार, माणस आपणे लेखे लाइंदा। वरन बरन तों करे बाहर, आत्म ब्रह्म इक्क दृढ़ाइंदा। निरगुण कर्म करे विचार, निहकर्मी आप अख्वाइंदा। साचा धर्म विच संसार, गुर चरन ध्यान जणाइंदा। एका अक्खर ओंकार, निरँकार आप पढ़ाइंदा । सो पुरख निरँजण जीव आधार, हँ जीव रूप वटाइंदा। ईश जीव खेल न्यार, जगदीश वेख वखाइंदा। सोहँ

रूप सति प्यार, आतष्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हेरा फेरा आप कराइंदा। कर कर हेर फेर गुरमुख जोड़ जुड़ाया, पुरख अबिनाशी बण मलाह। शब्द अगम्मी घोड़ चढ़ाया, सति सतिवादी घोड़ा रिहा दौड़ा। नव नौ आपणा फेरा पाया, ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबा। साचा मार्ग इक्क वखाया, दो जहानां पर्दा लाह। मनमुख दिस किसे ना आया, कोटन कोटि बैठे राह तका। कोटन कोटि रहे जस गाया, रसना जिहवा सेव कमा। कोटन कोटि बैठे सीस झुकाया, दर दरवेश गल विच पल्लू पा। कोटन कोटि नेत्र नैण रहे शरमाया, निवण सो अक्खर एका गीत गया समा। कोटन कोटि पत्थर पूज बैठे तिलक लगाया, प्रभ मिल्या ना बेपरवाह। कलिजुग अन्तिम दया कमाया, प्रगट होए सच्चा शहिनशाह। औंदा जांदा दिस ना आया, आपणा मार्ग किसे ना दए जणा। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़िआं कलिजुग लए मिलाया, पूर्ब लेखा पन्ध मुका। वरन बरन ना कोए रखाया, ज़ात पात नाता दए तुड़ा। हरिजन साचे लए जगाया, जाग्रत जोत इक्क वखा। कागद कलम भेव ना राया, चारे वेद रहे जस गा। पुरख अबिनाशी होए सहाया। सति सरूप अनूप रूप धरा। हरिजन साचा मेल मिलाया, पंज तत्त काया खेड़ा दए वसा। अन्तर आपणा डेरा लाया, सेज सुहञ्जणी सोभा पा। अमृत मेघ इक्क वरसाया, कँवल नाभी फुल्ल खिला। अनहद नादी नाद वजाया, ताल तलवाड़ा आप उठा। बोध अगाधी शब्द सुणाया, लेखा लिख सके कोए ना। ब्रह्म पारब्रह्म मिलाया, एका मन्दिर दए बहा। सीस जगदीश हथ्थ रखाया, हथ्थ चुक्के कदे ना। नाम हदीस इक्क पढ़ाया, नाउँ निरँकारा आप जणा। बीस बीसा पन्ध मुकाया, हेरा फेरा देवे डेरा ढाह। सन्झ सवेरा इक्क कराया, सूरज चन्न कर रुशना। चार वरनां बेड़ा दए बन्नाया, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बणाए भैण भ्रा। नौ खण्ड पृथ्मी खेड़ा दए वसाया, सत्तां दीपां पकड़े बांह। एका मन्त्र दए सुणाया, सोहँ ढोला आपे गा। जगत विचोला वेस वटाया, चारों कुण्ट फेरी पा। पर्दा ओहला दए उठाया, नज़री आए आपे राम ख़ुदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाह। बेपरवाह खेल खिलाउणा, हेरा फेरा जगत मुकाईआ। नव नौ चार एका रंग रंगाउणा, रूप रंग रेख इक्क बणाईआ। साचा नाम मृदंग वजाउणा, घट घट सुणे सर्ब लोकाईआ। अश्व घोड़े तंग कसाउणा, सोलां कलीआं आसण पाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड आप दुड़ाउणा, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। जेरज अंड आप उठाउणा, उत्भुज सेत्ज दए हिलाईआ। भुक्ख नंग जगत मिटाउणा, दुखियां दुःख रहे ना राईआ। आत्म सुख इक्क उपजाउणा, घर वज्जदी रहे वधाईआ। सोहँ शब्द सभ ने गाउणा, भुल रहे ना राईआ। सीस जगदीश सर्ब झुकाउणा, साचा सजदा साचे माहीआ। कलमा अमाम आप पढ़ाउणा, नबी रसूल देण ग्वाहीआ। कुतब गौंस शेख मुला मुसइक पीर सरनी लाउणा,

सरनगत इक्क वखाईआ। बुरज हँकारी सभ दा ढाउणा, माण अभिमाण दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान हेरा फेरा खेले खेल, जगत अवल्लड़ी चाल चलाईआ।

★ १० जेठ २०१८ बिक्रमी फ़रंगी राम दे गृह तूतां वाली जम्मू ★

हरि ठाकर सतिगुर दीन दयाल, दीनन दया आप कमाइंदा। लेखा जाणे जगत जंजाल, त्रैभवन धनी वेख वखाइंदा। नाता तोड़े काल महाकाल, धर्मसाल इक्क सुहाइंदा। लक्ख चुरासी कर कर भाल, हरिजन हरि हरि वेख वखाइंदा। हरि भगत उठाए साचे लाल, लाल अनमुल्लड़ा आप उपाइंदा। चरन प्रीती साची नीती दसे घाल, घाली घाल लेखे लाइंदा। एथे ओथे होए हल्ल सवाल, पट्टी अवर ना कोए पढ़ाइंदा। दीपक जोती एका बाल, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। शब्द सरूपी देवे सति दोशाल, नाम पर्दा हथ्थ उठाइंदा। फल लगाए काया डाल्ह, पत्त डाल्ही आप महिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीनन आपणे रंग रंगाइंदा। दीन दयाल सर्ब गुणवन्ता, हरि स्वामी वडी वड्याईआ। हरिजन वेखे साजण सन्तां, सतिगुर साहिब सच्चा बेपरवाहीआ। नाम जणाए मणीआ मंता, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर महिमा अकथ अगणत अगणता, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जिस जन बणाए साची बणता, जुग जुग बेड़ा बन्न्ह तराईआ। आत्म अन्तर गढ़्ह तोड़े हउमे हंगता, माया ममता मोह चुकाईआ। मेल मिलावा साची संगता, सतिगुर बख्शे सच सरनाईआ। लेखा जाणे नानक अंगदा, अंगीकार आप अख्वाईआ। गुरमुख दूसर दर ना कोए मंगदा, मंगण दर ना कोए जाईआ। नाता तुट्टे भुक्ख नंग दा, तृष्ना तृप्त आप कराईआ। करे खेल सूरे सरबंग दा, सूरबीर सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख विरले नाल मन्नदा, लक्ख चुरासी भरमे रिहा भुलाईआ। जो घड़या सो भन्नदा, भन्नणहारा दिस ना आईआ। जीव जंत आपे डन्नदा, साध सन्त ल्ए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल ठाकर स्वामी हरि करता आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। दीन दयाल श्री भगवाना, घर साचे सोभा पाइंदा। भगत वछल नौजवाना, आदि जुगादि वेख वखाइंदा। शब्द अनादी सति तराना, धुर दी बाणी आप अल्हाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा, नाम निधाना हरि फ़रमाना हरिजन साचे आप सुणाइंदा। एका राग इक्क तराना, एका नाद धुन वजाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका बंक सुहाइंदा। गुरमुखां होए आप मेहरवाना, मेहरवान दया कमाइंदा। आत्म देवे जीआ दाना, जीवण दाता आप अख्वाइंदा। सुरती मिले गोपी कान्हा, शब्दी मेला मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, दीन दयाल ठाकर आपणा नाउँ धराइंदा। दीन दयाल हरि हरि ठाकर, जगत ठगौरी कोए ना पाईआ। एका नाम रती रत्नागर, रती रत वेख वखाईआ। नव नौ वेखे जगत सागर, भँवरी भँवर रिहा समाईआ। गुरमुख विरले करे कर्म उजागर, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। नाम वणजारा कराए वणज सच सौदागर, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीन दयाल दया कमाईआ। दीन दयाल श्री भगवन्त, सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। हरिजन मेला हरि हरि कन्त, कन्त सुहागी वेख वखाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणे रंग रंगाइंदा। दीनन रंगे हरि हरि रंग, रंग अनडिठड़ा आप चढ़ाईआ। घट घट उपजाए नाम तरंग, तुरीआ राग नाद सुणाईआ। निज आत्म उपजाए परमानंद, निजानंद सहिज सुखदाईआ। सो पुरख निरँजण अलाए एका छन्द, हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। आवण जावण चुक्के पन्ध, लक्ख चुरासी गेड़ कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणे अंग लगाईआ। दीनन दीन लगाए अंग, दीना नाथ वडी वड्याईआ। करे खेल सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। नव नौ वजाए मृदंग, गृह गृह रिहा सुणाईआ। हरिजन मन्दिर आपे लँघ, खेवट खेटा खाट वेखे बेपरवाहीआ। नाता तुट्टे बत्ती दन्द, रसना जिहवा ना कोए वड्याईआ। निरगुण निरवैर चढ़ाए चन्द, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। बन्दीतोड़ तोड़े बन्द, बन्दीख़ाना रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल दीनन आपणी गोद बहाईआ। दीनन दया कमाइंदा, हरि सज्जण मीत मुरार। कलिजुग विछड़े मेल मिलाइंदा, जुग करता कर प्यार। भाण्डा भरम भउ भनाइंदा, गढ़ तोड़ जगत हँकार। साचा मन्दिर इक्क वखाइंदा, नाता तोड़ सर्ब संसार। किला कोट इक्क सुहाइंदा, छप्पर छन्न दए आधार। निरगुण जोत जोत जगाइंदा, जोती जाता परवरदिगार। माणक मोती गुरमुख आप उठाइंदा, सुरती सोई लए उठाल। अकाल मूर्त नज़री आइंदा, दीना बंधप दीन दयाल। सच महूरत इक्क समझाइंदा, थित वार करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए भाल। हरिजन साचा भालया, भरम भुलेखा कढ्ढ। देवे नाम इक्क सुखालया, जगत तृष्ना देवे वढ्ढ। त्रैगुण माया तोड़ जंजालया, नाम निशाना देवे गड्ड। दिवस रैण करे प्रितपालया, होए सहाई अन्धेरी खड्ड। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिवस रैण लडाए लड। दिवस रैण वेख प्रभात, घड़ी पल खेल खिलाईआ। गुरमुख तेरी उत्तम ज़ात, जोती जाता आप बणाईआ। साचा मेला हरि रघुनाथ, रघुवंस आप मिलाईआ। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथ, त्रै त्रै संसा दए मुकाईआ। एका मन्दिर एका पूजा

५२६

५२७

पाठ, इष्ट गुर देव इक्क समझाईआ। एका तीर्थ सरोवर ताट, तट किनारा इक्क वड्याईआ। एका आदि जुगादि चले साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। एका लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, बिधना लेखा वेखे थाउँ थाँईआ। इक्क चढ़ाए साचे राथ, रथ रथवाही सेव कमाईआ। एका लेखा जाणे तत्त आठ, नौ दर एका खोज खुजाईआ। एका माणस जन्म पूरा करे घाट, साचा तोला तोल तुलाईआ। एका नेड़े रक्खे वाट, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। एका पुछे अन्तिम वात, साक सज्जण सैण ना कोए सहाईआ। एका मेटे अन्धेरी रात, सन्झ सवेर एका रंग वखाईआ। एका मेला कमलापात, नारी कन्त लए प्रनाईआ। एका वर सति सुहाग, सुहागी रुत्त आप समझाईआ। एका हँस बणाए काग, सर सरोवर आप नुहाईआ। एका जन्म जन्म दा धोवे दाग़, दुरमति मैल दए धवाईआ। इक्क उपजाए वैराग अनराग, आपणी तार सतार हिलाईआ। गुरमुख तेरे वड वड भाग, तेरी वड्याई हरि जस गाईआ। तेरा नाम जगत चिराग़, तेरी जोत नूर रुशनाईआ। तेरा नाउँ आदि जुगादि, वेद शास्त्र सिमरत रहे जस गाईआ। तेरा मेल मोहण माधव माध, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आपणे गले लगाईआ। तेरा रूप सन्तन साध, तेरा घर भगत सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल सर्ब गुणवन्ता, लेखा जाणे आदि अन्ता, हरिजन साचे लए मिलाईआ। मेल मिलावा हरि हरि सज्जण, धुर मस्तक वेख वखाया। दो जहानां वाली आया पर्दे कज्जण, निरगुण निरगुण रूप धराया। एथे ओथे साचा सज्जण, सगला संग वखाया। चरन धूढ़ कराए मजन, साचा मजन इक्क समझाया। कलिजुग जीव त्रैगुण माया दझण, अग्नी अग्ग इक्क लगाया। जो घड़या सो अन्तिम भज्जण, थिर कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल होए सहाया। दीन दयाल सदा सहायक, सिफ्ती सिफ्त वडी वड्याईआ। सर्ब जीआं दा एका नायक, नायका वेखे सृष्ट लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज रीत बिन गुरदुआर मन्दिर मसीत मात चलाईआ।

★ १० जेठ २०१८ बिक्रमी सरदार सिँघ मेहर सिँघ किरपा राम दे गृह शेख़सर जम्मू ★

गुरमुख तस्वीर हरि हरि तसबी, मुत्तअसब जगत दए मुकाईआ। पाए नाम ज़ंजीर लेखा चुक्के फ़ारसी अरबी, एका अक्खर नाम वड्याईआ। अमृत आत्म बख्शे नीर नाता तुट्टे गर्मी सर्दी, सांतक सति सति वरताईआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, सुरत सुवाणी होए बरदी, एका बन्धन गुर गुर पाईआ। हउमे हंगता कढ्ढे पीड़, जगत वैरागण फिरे डरदी, नाम खण्डा

इक्क वखाईआ। हरिजन हरि हरि देवे धीर, बूझ बुझाए आपणे घर दी, घर घर विच मेल मिलाईआ। देवे बदल तकदीर, तदबीर कला रक्खे सदा चढ़दी, तकसीर आप मिटाईआ। जगत मौत बण दुहागण लक्ख चुरासी नाल जो रही लड़दी, हरिजन तेरे चरनां हेठ दबाईआ। वेखो खेल पुरख अकाल एका नर दी, सृष्ट सबाई वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुस्सविर बणे साचा माहीआ। बणे मुस्सविर तख्त निवासी, शाह पातशाह रूप वटाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाशी, पुरख पुरखोतम वेख वखाइंदा। नूर नुराना घनक पुर वासी, घन आपणा रूप धराइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग बणया रिहा बनवासी, अन्तिम आपणा रूप प्रगटाइंदा। दो जहानां वेखे खेल तमाशी, आपणा खेल खिलाइंदा। हरिजन हरि हरि पूरी करे आसी, आस निरास आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराइंदा। आपे मुस्सविर दए धरवासा, तस्वीर तस्वीर विच बणाईआ। काया बंक कर प्रकाशा, गढ़ मन्दिर खोज खुजाईआ। निज आत्म निज घर कर कर वासा, निज नेत्र दए खुल्हाईआ। लेखा चुक्के पवण स्वासा, पवण पवणा मेल मिलाईआ। भगत भगवन्त बणया रहे दासी दासा, जन हरि तेरी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। खिच्चे तस्वीर बण मुस्सविर, तालब तल्ब आप रखाइंदा। करे खेल गहर गुण गवर, गुण निधान वेख वखाइंदा। दूसर कोए ना जाणे अवर, भेव अभेद ना कोए खुल्हाइंदा। लहिणा चुक्के काया कवर, डूँग्घी भँवरी फोल फुलाइंदा। माणस जन्म जाए सवर, जिस जन अन्तर मेल मिलाइंदा। अठ्ठे पहर बणया रहे भँवर, गुरमुख फुल्ल आप महिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाइंदा। गुरमुख आपणे अंदर वाड़, अंदर बाहर आप हो जाईआ। करे खेल अपर अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गाउँदे रहे गुर अवतार, रसना जिहवा मात हिलाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त रहे पुकार, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाईआ। सचखण्ड वसे इक्क निरँकार, दर दरबारे सोभा पाईआ। तख्त निवासी हरि सिक्दार, धुर फ़रमाना हुक्म जणाईआ। थिर घर वेखे आप किवाड़, बन्द दुआरा आप खुल्हाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नार, नर नरायण वडी वड्याईआ। महल्ल अटल उच्च मनार, शाह पातशाह बैठा आसण लाईआ। ना कोई दीसे चोबदार, जगदीश सीस ना कोए झुकाईआ। निरगुण निरगुण हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। सरगुण करे आपणी कार, दोए दोए आपणा खेल खिलाईआ। जुग जुग इष्ट धरे विच संसार, जीव दृष्ट आप समझाईआ। बणे वशिष्ट रामा उधार, राम राम आप अख्वाईआ। करे काम डूँग्घी गार, निहकर्मी कर्म वड्याईआ। बणे शाम मीत मुरार, घनईया बंसरी इक्क उठाईआ। नईया चलाए विच संसार, साचा सईया साचा माहीआ।

बहियां पकड़े गिरवर गिरधार, आप आपणे अंग लगाईआ। आदि शक्ति मइया वेखे एका वार, एका रूप अनूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधाईआ। निरगुण सरगुण इष्ट देव, देव आत्मा आप अख्वाइंदा। सर्ब गुणवन्ता जाणे साची सेव, सेवक सेवा नाम प्रगटाइंदा। हँ ब्रह्म लगाए सेव, सोइम आपणी कल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। रूप अनूपा सरगुण धार, पंज तत्त दए वड्याईआ। गुर गुर हरि हरि लै अवतार, हरि हरि गुर गुर रूप वखाईआ। पीर पैग़म्बर हो उज्यार, नबी रसूल वेख वखाईआ। कलमा कलाम कर उज्यार, उच्ची कूक कूक अलाईआ। साचे मन्दिर खोल्ह किवाड़, एका हुजरा दए वखाईआ। नौबत वज्जे सांझे यार, साख्यात आप वजाईआ। सोहबत जाणे सर्ब संसार, लेखा लिखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा इष्ट गुर वड्याईआ। इष्ट गुर सर्ब गुण दाता, सरगुण रूप धराइंदा। गुर गुर वेखे एको ज़ाता, एका ब्रह्म सर्ब वखाइंदा। एका नाम नरायण नाता, बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। एका गृह एका खाटा, एका मन्दिर सोभा पाइंदा। एका नाम अनादी अनहद वाजा, अन्तर आत्म आप वजाइंदा। एका बोध इक्क अगाधा, एका शब्द राग सुणाइंदा। एका सदा सद विस्मादा, बिस्मिल आपणा रूप वखाइंदा। एका खेले खेल आदि जुगादा, जुग जुग आपणी धार चलाइंदा। गुरमुख विरला लक्ख चुरासी विच्चों काढा, जिस जन आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा खेल खिलाइंदा। गुर गुर खेल जगत जुग, जाग्रत जोत जोत रुशनाईआ। कलिजुग औध रही पुग, नव नौ लेखा रिहा मुकाईआ। ना कोई हरख ना कोई सोग, चिंता दुःख ना कोए जणाईआ। लेखा जाणे चौदां लोक, परलोक वेखे थाउँ थाँईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुणाए इक्क सलोक, भुल रहे ना राईआ। लक्ख चुरासी देवे झोक, आपणी बणत आप बणाईआ। अन्त नव खण्ड मिटाए किला कोट, कोटी कोट गढ़ तुड़ाईआ। तन नगारे लाए एका चोट, गुरमुख विरला मात उठाईआ। जोती शब्दी पारब्रह्म ब्रह्म ओत पोत, पूत सपूता एका जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरमुख आप उपाईआ। ओत पोत गुरमुख नाता, गुर गुर मेल मिलाया, नव नौ चार तोड़या जगत नाता, जुग जुग आपणा खेल खिलाया। दर दर घर घर देवे साथा, सगला संग निभाया। चौकड़ी जुग पुछदा आया वाता, वेस अनेका रूप वटाया। चार चार जणौंदा आया आपणी गाथा, आप आपणा नाउँ धराया। कलिजुग अन्तिम करे खेल पुरख समराथा, समरथ पुरख सच्चा शहिनशाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वड्याआ। हरिजन साचे तेरी सच तस्वीर, हरि साचे विच समाईआ। किसे हथ्थ ना आए पीर फ़कीर, पीर पैग़म्बर

बैठे राह तकाईआ। कबीर कुरलाया गंगा सुटया मार ज़ंजीर, तेरा अख़ीर तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा चरन चरनोदक साचा नीर, हउँ जल मीन रही तड़फाईआ। मैं बिरहों वैरागण मरां विछोड़े तेरी पीड़, तेरा विछोड़ा सहि ना सकां राईआ। एका मार आपणी सच ज़ंजीर, जगत ज़ंजीर दे तुड़ाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी किरपा करे वड पीरन पीर, दस्तगीर होए सहाईआ। आपणी आप बदली तकबीर, तदबीर दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्लाईआ। सच तस्वीर रविदास चमरेटा, एका इष्ट रखाइंदा। वेखणहारा गंगा तट थेटा, हथ्थ कसीरा इक्क जणाइंदा। लेखा जाणे मां पिओ बेटा, पिता पूत खेल खिलाइंदा। ठग्गां चोरां देवे नेंता, घर आयां माण रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। आया ठग्ग तारया ब्राह्मण, ब्रह्म आपणा रूप दरसाईआ। रविदास चमारा बणया ज़ामन, ज़ामनी आपणी इक्क वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ पकड़े दामन, दोहां विचोला एका माहीआ। कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी शामन, नौ नौ जन्म लेखे लाईआ। आपणा चरन कँवल वखाए सच्चा घर ग्रामन, घर एका दए वड्याईआ। अमृत मेघ बरसे सावण, अग्नी तत्त रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप मुकाईआ। ठग्ग ब्राह्मण रल्लया चोर, चोर ठग्गां संग रलाया। रविदास तक्कया अन्ध घोर, जीवां जंतां भेव ना राया। पुरख अबिनाशी चढ़या घोड़, दो जहानां वेख वखाया। भगतन लग्गी दर्शन औढ़, दे दर्शन तृख्रा बुझाया। ठग्गां राम नाम लागा कौड़, जगत तृष्ना मोह वधाया। दोहां विचोला बण बण ठग्ग ठगौरी रिहा होड़, चरन धूढ़ी कोटन कोटि कंगण रूप वटाया। कलिजुग अन्तिम जाए बौहड़, एका हुक्म दए सुणाया। मेरा भेव ब्राह्मण गौड़, पूत सपूता शब्दी जाया। मेरा नाउँ ना जाणे कोई अवर, अवरा लेख ना कोए लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया। आपणा आप वेखणहारा, भगतन देवे जगत वड्याईआ। बण मुस्सविर खिच्चे तस्वीर विच संसारा, सृष्ट इष्ट दए बदलाईआ। गुरमुख गुर गुर हो उज्यारा, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। राह तक्के परवरदिगारा, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण मंज़ल कवण मकसूद कौण सोहे दुआरा, कवण पान्धी पन्ध मुकाईआ। कवण गाए बंसरी असम हज़ारा, दरूद नूर नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरी तस्वीर, आपणा बन्धन पाए ज़ंजीर, डोर आपणे हथ्थ रखाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, करे खेल बेनज़ीर, निगह दिस किसे ना आईआ।

५३०

★ १० जेठ २०१८ बिक्रमी शाहनी दे घर शेख़सर जम्मू ★

दीनन हरि दयाल, दयानिध दया कमाइंदा। शाह कंगाल करे प्रितपाल, प्रितपालक सेव कमाइंदा। हरिजन वेखे हरि हरि लाल, अनमुल्लड़े रत्न आप उपाइंदा। काया कुल्ली सुरत संभाल, गुणवन्त गुण वखाइंदा। जगत तोड़ जगत जंजाल, जीवण जुगत आप समझाइंदा। देवे नाम सच्चा धन माल, सति ख़ज़ीना आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दर घर घर खेल खिलाइंदा। ग़रीब निमाणयां बण बण चाकर, सेवक सेवा सेव कमाईआ। भगत वछल हरि हरि ठाकर, हरिजन साचे आप ठकराईआ। किरपा करे करीम कादर, कुदरत कादर वेख वखाईआ। हरिजन हरि हरि अमृत सिन्ध बख्शे सागर, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। भाग लगाए काया गागर, कंचन आपणा रूप दरसाईआ। आदि निरँजण फड़ फड़ देवे आदर, दर साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। निर्धन मिल्या गिरवर गिरधार, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। चार कुण्ट जै जैकार, धुन नाद शब्द शनवाईआ। वेखे विगसे पावे सार, इक्क इकल्ला फेरा पाईआ। जगत जलंदा ल्ए तार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सद बख्शिंदा एकँकार, अभुल भुल कदे ना जाईआ। लेखा जाणे नर नार, नर नरायण बेपरवाहीआ। ग़रीब निमाणे तन श्रृंगार, माणक मोती आप बणाईआ। घट जोती नूर होए उज्यार, बिमल जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरी हरि हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। हरी हरि हरि निरँकारा, विष्नूं वंसी खेल खिलाइंदा। सति सतिवादी हो उज्यारा, ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाइंदा। आत्म ब्रह्म खोल्ह किवाड़ा, पारब्रह्म पर्दा लांहयदा। साचा मन्दिर इक्क दुआरा, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। एका सज्जण मीत मुरारा, हरि हरि आपणा भेव खुल्हाइंदा। निर्धन सरधन दए आधारा, निमाण निमाणयां माण रखाइंदा। एथे ओथे बण सहारा, दो जहानां पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरी हरि आपणा मेल मिलाइंदा। हरी हरि हरि गोबिन्द, गोबिन्द आपणा खेल खिलाईआ। जन्म मरन दी मेटे चिन्द, चिंता चिखा रहे ना राईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर दया कमाईआ। लेखा जाणे जीउ पिण्ड, बिरध बाल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोबन नाम चढ़ाईआ। हरि जोबन नाउँ अनमुल्लड़ा, रंग राता आप चढ़ाईआ। गुरमुखां वखाए दुआरा खुल्हड़ा, दर दर आप खुल्हाईआ। पार कराए दया कमाए जो जन दर आए भुलड़ा, सीस जगदीश लेखे लाईआ। त्रैगुण तत्त ना माया रुलड़ा, अग्नी हवण ना कोए जलाईआ। मानस बूटा कदे ना हुलड़ा, पत्त डाल्ही फुल्ल महिकाईआ। हरिजन हरी दुआरे फलया फुलड़ा, अमृत फल इक्क लगाईआ। देवे वड्याई साची कुलड़ा, जिस

५३१

दर बैठी एका पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिरध बाल रूप धराईआ। बिरध अवस्था नाता तोड़, बाली बुध रखाइंदा। जन्म जन्म विच रक्खे मोड़, जन्म अमोलक इक्क समझाइंदा। लक्ख चुरासी देवे होड़, जम की फाँसी फंद कटाइंदा। आपणे अग्गे आपे तोर, आपणा बन्धन हरि हरि पाइंदा । मानस जन्म फड़े हथ्थ डोर, डोरी आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा चुक्के तोर मोर, मोर तोर ना कोए जणाइंदा। बाली बुध पाए शोर, नेत्र नीर इक्क वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत जोत जगाइंदा। जोती जोत जाग्रत धार, जगत जुगत नाता तुट्टे, नाता बन्ने विच संसार, नाता बिधाता वेख वखाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआर, एका रूप दरस निरँकार, एका कूट दिशा चार विचार, चार चार मुख सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निर्धन मिल्या एका दर, ठाकर स्वामी लए फड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जीव लोक लोक जीव आपणा खेल खिलाईआ।

★ १० जेठ २०१८ बिक्रमी गूहड़ा राम दे घर शेख़सर जम्मू ★

भिन्नी रैनड़ीए तेरी ठंडी पौण, गुरमुखां रही जगाईआ। हरि का रूप जाणे कौण, बिन गुरमुख नज़र किसे ना आईआ।
५३२ मनमुख गूढ़ी नींदे सौण, सोइआं मात ना कोए उठाईआ। लाड़ी मौत भन्ने धौण, धरनी धरत दए टिकाईआ। गुरमुख गुर गुर हरि हरि रसना जिहवा गौण, हिरदे राम नाम वसाईआ। दूर दुराडे चल मनाउण, नेत्र लोचण दर्शन पाईआ। सचखण्ड निवासी लोकमात अख्वौण, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। कलिजुग मेट मिटाए झूठा रौण, राम रामा होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण दए वड्याईआ। भिन्नड़ी रैण चढ़या चाअ, हरिसंगत दर्शन पाया। पुरख अबिनाशी मिल्या इक्क मलाह, लोकमात मेल मिलाया। आपणा नाउँ देवे सच सलाह, साचा सोहला आपे गाया। विछोड़ा कटे दो जहां, दो जहानां वेख वखाया। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, आप आपणी सेवा लाया। निर्धन सरधन बणे पिता मां, हरिजन सच्चे गोद उठाया। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची धाम उपाया। सचखण्ड दुआरे करे सच न्याँ, सच सिँघासण आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण दए वड्याआ। भिन्नड़ी रैण उठ उठ जाग, हरि सतिगुर आप जगाइंदा। कलिजुग अन्तिम लग्गा भाग, लोकमात खेल खिलाइंदा। तेरा अन्धेरा दीपक जोत जगे चराग़, तेल बाती ना कोए रखाइंदा। दुरमति तेरा धोवे दाग़, आप आपणे रंग रंगाइंदा। तेरा मेला हरिजन कन्त सुहाग, सुहागी सुत आप सुहाइंदा। लेखा जाणे जुगादि आदि, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। तिन्न सौ सठ्ठ विच्चों आपे

काढ, आपणा लेखा आप समझाइंदा। तेरे मन्दिर वज्जे नाद, तेरा राग आप अलाइंदा। तेरा प्रीतम माधव माध, मोहण आपणा रूप धराइंदा। तेरा मेला सन्तन साध, हरिसंगत वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम सुणे तेरी फ़रयाद, तेरा रोणा आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण आप वड्यांअदा। भिन्नड़ी रैण उठ उठ नेत्र खोलृ, हरि साचा सच दृढ़ाईआ। तेरे घर वज्जे ढोल, हरिजन साचे वेख वखाईआ। तेरा तेरे मन्दिर रिहा बोल, तेरा तेरी करे शनवाईआ। तेरा चुक्के पर्दा ओहल, साचा रूप दए दरसाईआ। तेरे रंग जाए मौल, मौला आपणा रूप वटाईआ। तेरा अमृत भरे कँवल, साचा सर आप सुहाईआ। तेरी वड्याई उप्पर धवल, धरनी धरत वेख वखाईआ। तेरा भेव ना जाणे कोए पंडत पांधा रौल, गृह फड़ ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी वण्ड इक्क रखाईआ। भिन्नड़ी रैण तेरी वण्डे वण्ड, सो पुरख निरँजण वण्डण आया। तेरा माण रक्खे विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड तेरी धार जणाया। तेरा नाता छुट्टा दुहागण रंड, सुहागी कन्त इक्क मनाया। तेरा मोह तुट्टा झूठ पखण्ड, माया तन रहे ना राया। तेरा विछोड़ा चुक्का पन्ध, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। तेरे घर सुहागी छन्द, हरिजन साचे बह बह गाया। तेरा अन्धेरा गुरमुखां परमानंद, सूरज चन्न रिहा सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण आप सालाहया। भिन्नड़ी रैण करे पुकार, नेत्र नैण नीर वहाईआ। खुलृड़े केस रोवे ज़ारो ज़ार, जगदीश अग्गे सीस झुकाईआ। तूं साहिब सतिगुर सुण पुकार, मैं कुचज्जी कमली कार किसे ना आईआ। मेरा नाता जुड़या संग चोर यार, राती सुत्तयां लुट्ट लुट्ट झूठा तन बंधाईआ। कलिजुग सन्त सुत्ते पैर पसार, कलिजुग माया बेअन्त पाईआ। तूं राखा हो सिरजणहार, मेरी पति ना कोए रखाईआ। मेरा वसदा घर दिता उजाड़, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। कलिजुग अग्नी दिता साड़, रती रत रहिण ना पाईआ। करी किरपा कीता दरस दीदार, मैं बैरागण राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी अग्नी अग्ग बुझाईआ । हरि सतिगुर दया कमाइंदा, शब्द संदेशा इक्क सुणा। तेरा दर्द दुःख मिटाइंदा, दरदी दर्द लए वण्डा। लोकमात कलिजुग अन्तिम गुरमुख साचे आप जगाइंदा, एका नाम दए पढ़ा। जूठ झूठ मेट मिटाइंदा, माया ममता करे स्वाह। वरना बरना आप खपाइंदा, ऊँचां नीचां भेव चुका। राउ रंकां आपणा धाम वखाइंदा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह। धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा, ब्रह्म पारब्रह्म वेखे एका थाँ। आपणा पर्दा आप उठाइंदा, जोती नूर करे रुशना। हरिजन साचे वेख वखाइंदा, एका पल्लू नाम फड़ा। वरनां बरनां एका रंग रंगाइंदा। हरिसंगत बणाए भैण भ्रा। तेरा फेर मेल मिलाइंदा, कलिजुग नाता दए जुड़ा। संगत तेरे संग रखाइंदा, तेरा दुःख दए गवा। तेरा दुःख हरिसंगत

चरना हेठ दबाइंदा, सिर आपणा हथ्थ टिका। भिन्नड़ी रैण मेल मिलाइंदा, गुरसिखां मेला सहिज सुभा। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाइंदा, चार जुग दे मेले विछड़े मेले भैण भ्रा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण दए समझा। भिन्नड़ी रैण सुणया बोला, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। कवण दुआरे बैठा तोला, तेरे हथ्थ वडी वड्याईआ। मैं सुणन आई तेरा ढोला, सच संदेश सुण साचे माहीआ। मेरा चुक्के पर्दा ओहला, दूई द्वैत रहिण ना पाईआ। किशना सुखला पख आपे फोला, अन्ध अन्धेर वेख वखाईआ। ठग्ग चोर पावण रौला, गुरमुख बैठे ध्यान लगाईआ। सच वस्त हरि तेरे कोला, दूसर अवर नज़र ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण एका मंग मंगाईआ। मंगे मंग भिन्नड़ी रैण, दोए जोड़ चरन निमस्कार। पुरख अबिनाशी मन्न मेरा कहिण, तेरे चरन जावां बलिहार। हरिसंगत लेखा मेरा चुक्के लैण देण, लैणा देणा रहे ना विच संसार। तेरे गुरमुख लाड़ी मौत ना खाए डाइण, लए जन्म ना दूजी वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणा वर सच्ची सरकार। भिन्नड़ी रैण हरि देवे वर, हरिसंगत माण रखाईआ। हरिजन चुक्के मौत डर, काल ग्रास ना कोए खाईआ। सदा सुहेला खुल्ह्‌ा रक्खे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। हरिजन साचे लए फड़, नारी पुरष एका रंग रंगाईआ। अद्धविचकार ना जाए कोई रुड़्ह, जो जन रसना जिहवा सोहँ गाईआ। सच भण्डारा देवे भर, जो जन चरन सीस झुकाईआ। आपणी करनी जाए कर, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आदि जुगाद ना जाए मर, जग करता बेपरवाहीआ। दरस वखाए अग्गे खड़्ह, गुरमुखां वेख वखाईआ। जिस जन फड़ाया आपणा लड़, आदि अन्त छुट्ट कदे ना जाईआ। भिन्नड़ी रैण तेरा घाड़न घड़, तेरा रूप अनूप वटाईआ। तेरे अन्तर आपणा मन्त्र किरपा कर, तेरी बसन्तर दए बुझाईआ । तेरी दुरमति मैल धोवे आपणे सर, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। तेरा वसदा रहे सदा जन घर, घर सज्जण मेल मिलाईआ। उठ उदम आहर कर, हरिसंगत आई चाँईं चाँईंआ। निव निव सीस जगदीश हरिसंगत प्रेम कर, प्रेम रुतड़ी एका रंग वखाईआ। निरभउ चुकाए तेरा डर, भय भयानक होए सहाईआ। झक्खड़ झांजा झुल्ले विच संसार, कलिजुग झूठे बिरछ बिरख दए उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण इक्क मनाईआ। भिन्नड़ी रैण मन्नया मन, हरि हरि दर्शन पाया। गुरमुख वेख्या चढ़या चन्न, घर साचे होया रुशनाया। लोक परलोक कहिन्दी फिरे धन्न धन्न, धन्न धन्न हरि हरि शुकर मनाया। चार जुग जो देंदा आया डन्न, अज्ज सिखी गुरमुख साचे मेल मिलाया। चार वरन जो राग सुणौंदा आया कन्न, अज्ज संदेशा रिहा सुणाया। लक्ख चुरासी जो घड़ घड़ रिहा भन्न, अज्ज भज्जे ठीकर आप आपणी हथ्थीं जोड़ जुड़ाया। जुग जुग जो बेड़ा रिहा बन्न्ह, अज्ज बेड़ा नाम रिहा

५३५

वखाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग ठग्ग चोर राती सुत्तयां मेरे घर लाउँदे रहे सन्न्। जूठा झूठा खेल रचाया। कलिजुग अन्तिम पारब्रह्म अबिनाशी करता सुण बेनन्ती गया मन्न, निरगुण आपणा रूप धराया। गुरसिखां अंदर चाढ़े साचा चन्न, अन्धेरा लोकमात रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण वेख वखाया। भिन्नड़ी रैण नेत्र पेख, हरि हरि ख़ुशी मनाईआ। तूं साहिब सतिगुर लिखणहारा लेख, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। जोती जामा धरया भेख, तेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। मुच्छ दाढ़ी ना तेरे केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। जे कोई आखे गुरु दशमेश, भुल रहे ना राईआ। जे कोई वेखे करया खेल विष्न महेष, शंकर आपणा रूप वटाईआ। जे कोई वेखे रामा कृष्ना करे आदेश, सीता सुरती लए प्रनाईआ। जे कोई कहे ईसा मूसा सत समुंदर मन्नया नर नरेश, दर दरवेश आपणी अलख जगाईआ। लक्ख चुरासी सुत्ती निरगुण रिहा वेख, आपणा नैण इक्क उठाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन सज्जण आपणे बस्त्र लए लपेट, सच दोशाला हथ्थ उठाईआ। मैं बण निमाणी हथ्थ रक्खां गुरसिखां पैरां हेठ, मेरी तकदीर दए बदलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी धुप्प लग्गे जेठ, गुरमुख अमृत मेघ बरसाईआ। कलिजुग अन्तिम करन आया हेत, रूप अनूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी रुतड़ी दए सुहाईआ। साची रुतड़ी रुत्त बसन्त, भिन्नड़ी रैण वज्जे वधाईआ। नारी नर मिल्या हरि हरि कन्त, कन्त कन्तूहल ख़ुशी मनाईआ। भेव ना पाए जीव जंत, खाणी चार रही कुरलाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, इक्क इकल्ला सच्चा शहिनशाहीआ। जिस बणाई मेरी बणत, सूरज चन्न रिहा भुआईआ। घड़ी पल गिणती करे अगणत, लेखा आपणा ना किसे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रैण भिन्नड़ी आप वखाईआ। भिन्नी रैनड़ीए तेरा रंग अनूपा, त्रैगुण मूल चुकाया। भिन्नी रैनड़ीए तेरा सति सरूपा, सति सतिवादी वेखण आया। भिन्नी रैनड़ीए तेरा तत्त अंगीठा, अग्नी तत्त दए बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पवण पवणां वेख वखाया। भिन्नी रैनड़ीए तेरी पवणा धार, अन्न पाणी समाईआ। मंगण मंग तेरा खेल अपार, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी वण्ड वंडाईआ। लक्ख चुरासी तेरा आधार, जीव जंत रहे जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मूल दए वखाईआ। तेरा मूल सदा अनडिठ, आलस नाम रखाईआ। नींदर अंदर करे हित, विछड़े लए मिलाईआ। तेरा रूप ना सके कोई वेख, नेत्र खोल्ह सर्ब लोकाईआ। जिस जन किरपा करे सदा हमेश, सो जन तेरे रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण इक्क वड्याईआ। भिन्नड़ी रैण आलस निन्दरा, जगत विहार चलाया। गोपी काहन खेले खेल जिउँ बण बिन्दरा, रूप अनूप धराया। आसण सिँघासण सोहे करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्दरा,

इन्दर इन्दरासन वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण तेरा रंग, गुरमुखां दए जणाया। कलिजुग आलस निन्दरा रूप, जीव जंत सवाईआ। गुरमुख वेखे चारे कूट, कवण दुआरे हरि हरि फेरा पाईआ। अठ्ठे पहर मंगे मंग मेरा नाता तुट्टे जूठ झूठ, सच सुच्च होए कुड़माईआ। मैं साहिब सतिगुर दा बणां सच्चा पूत, कपूत आखे ना कोए लोकाईआ। मेरा ताणा पेटा एका सूत, पारब्रह्म प्रभ मेरी ब्रह्म बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आलस दए समझाईआ। एका आलस झूठी माया, ममता मोह रखाईआ। सृष्ट सबाई पाई छाया, ना कोई सके सीस उठाईआ। गुरमुख विरला आप जगाया, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। ठग्ग चोर लए तराया, चोरां ठग्गां आपणे लेखे लाईआ। आपणा कौल दए समझाया, कीता कौल भुल ना जाईआ। एका बचन आप समझाया, आलस निन्दरा दए वखाईआ। भिन्नड़ी रैण मेल मिलाया, मिल्या मेल साचे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नींदरा तेरा रूप गुरमुख साचे दए वखाईआ। नींदर साचा रूप, गुर गुरमुख दर्शन पाया। सिंघ तारा त्रै जन्म बणया रिहा अवधूत, ख़ाकी ख़ाक तन रमाया। त्रै जन्म फिरदा रिहा चारे कूट, हरि का मन्दिर नज़र ना आया। सत्तवें जामे तत्त बध्धा आपणे सूत, एका गंढी गंढ पवाया। अठवें जामें सुणया जो गया रूठ, मस्तक टिक्का धूढ़ी लाया। नौवें जन्म बणाया पूत सपूत, पूर्ब लहिणा आप चुकाया। आलस निन्दरा विच दे आपणा सबूत, राती सुत्तयां लए मिलाया। नींदर तेरा साचा रूप, आपणा प्रेम दए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण आपणे अंग लगाया। लग्गी अंग आसा पूर, हरिसंगत जोड़ जुड़ाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी मिल्या हाज़र हज़ूर, दूर नेड़ा पन्ध मुकाया। जगत हँकार ना तुट्टा ग़रूर, माण अभिमान आप चुकाया। गुरमुख तेरा दर्शन कर मेरी आत्म चढ़या सति सरूर, भिन्नड़ी रैण शुकर मनाया। चार जुग तेरे विछोड़े कीता चूर चूर, बलहीण बल ना कोए धराया। मेरा नाता तुट्टा कूड़ो कूड़, हरिसंगत तेरा दर्शन पाया। मैं चतुर सुघड़ सुवाणी बण मूढ़, मेरे मन का भउ मिटाया। मैं बण सवालण मंगां धूढ़, चरन धूढ़ वस्त अमोलक इक्क वरताया। तेरा हीला मेरी चोली रंगण गूढ़, साची कफ़नी वेख वखाया। मैं मिल के जाणा ज़रूर, घर तेरे सज्जण आया। कलिजुग दूर दुराडा रिहा घूर, नेत्र नैण उठाया। चौदां सदीआं बन्नू के रक्खया पा पा जूड़, अन्तिम संगल दए कटाया। चार कुण्ट तेरा जल्वा तक्कां नूरो नूर, मेरा अन्धेरा रहे ना राया। तूं सर्ब कला भरपूर, लोकमात मातलोक विच आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वसाउणा मेरा घर, एका मंग मंगाया। मंगे वर सज्जण मीत, गुरमुख मेल मिलाईआ। सतिजुग चलाउणी साची रीत, वाह वा तेरी वडी वड्याईआ। मिल संगत गावां तेरे गीत,

तेरा नाम इक्क अल्लाईआ। तेरी चरन निभे प्रीत, सच प्रीती इक्क वखाईआ। तेरा रूप हस्त कीट, घट घट तूं ही नज़री आईआ। मैं जूठा झूठा पीसण ल्या पीस, कलिजुग चक्की ना जाए चलाईआ। देणा दरस साहिब अनडीठ, मैं नढ्ढी बैठी राह तकाईआ। सदा सुहेले वसणा चीत, चित वित ठगौरी कोए ना पाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरी रक्खी उडीक, कोटन कोटि काल बताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दए वखाईआ। साचा मार्ग देणा दस्स, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। घट घट अंदर आपे वस, आपणा भेव खुल्लाइंदा। तेरा अन्धेरा मेटे रैण मस, सतिजुग साचा चन्न चढ़ाइंदा। हरिजन मेले नस्स नस्स, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। करे प्रकाश कोटन रवि ससि, नूरन नूरन नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण करे वस, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राम रामा रसीआ रस, रस एका नाम चखाइंदा।

★ ११ जेठ २०१८ बिक्रमी राम चन्द दे गृह पिण्ड देवा जम्मू ★

५३७ राम प्रगटिओ राम मेला, चन्द चकोर प्रीत निभाईआ। राम गुरु राम चेला, राम इष्ट देव मनाईआ। राम साहिब राम सज्जण सुहेला, राम राम नाम पढ़ाईआ। राम मेला इक्क इकेला, राम रामा होए सहाईआ। राम वसे सर्ब नवेला, राम हरि घट आसण लाईआ। राम जाणे आपणा वेला, राम थित वार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाईआ। राम सज्जण राम मीत, राम राम अधारया। राम गाए राम गीत, राम मेला विच संसारया। राम करे पतित पुनीत, पतित पापी राम अधारया। राम होए ठंडा सीत, राम अगणत तत निवारया। राम वसे हस्त कीट, राम राम रूप उज्यारया। राम करे खेल अनडीठ, राम राम वेख वखा रिहा। राम सृष्ट सबाई रिहा जीत, हरिजन साचे राम उपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिला ल्या। राम गोबिन्द नाम रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। राम सूरा राम सरबंग, राम राम निउँ निउँ सीस झुकाईआ। राम शब्द राम मृदंग, राम रामा रिहा वजाईआ। राम रामा देवे परमानंद, आत्म राम वेख वखाईआ। राम गाए सुहागी छन्द, वाह वा राम वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाईआ। राम रंग राम रूप राम रेख, राम राम विच समाईआ। राम रामा धर धर भेख, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। राम लिखणहारा लेख, हरि रामा दए बुझाईआ। आदि जुगादी सदा आदेश, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। त्रै त्रै लेखा जाणे ब्रह्मा विष्न महेष, महेषवर आपणी खेल खिलाईआ। ५३७

रसना जिहवा गाए शेष, सहँसर मुख हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप वखाईआ। आपे राम बल बल बावन, बलधारी आप अख्वाइंदा। आपे दुष्ट हँकारी मारे रावन, लंका गढ़ आप तुड़ाइंदा। आपे भगत वछल होए ज़ामन, भगवन भगत दया कमाइंदा। आपे मेटणहारा अन्धेरी शामन, साचा चन्द आप चढ़ाइंदा। जुगा जुगन्तर पकड़े दामन, दामनगीर खेल खिलाइंदा। लेखा जाणे काया नगर ग्रामन, काया खेड़ा फोल फुलाइंदा। लहिणा चुक्के शूद्र वैश क्षत्री ब्रह्मण, ब्रह्म आपणा रूप दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप निभाइंदा। साचा संग रमईआ राम, राम राम राम निभाईआ। पूरन करे हरि हरि काम, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। हरिजन प्याए अमृत जाम, निझर झिरना आप झिराईआ। जगत अन्धेरा मेटे शाम, साचा नूर कर रुशनाईआ। शब्द अगम्मी मारे बाण, चिल्ला तीर कमान उठाईआ। लेखा जाणे चतुर सुघड़ सुजान, अभुल भुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। राम उपाया राम राज, राम राम वज्जी वधाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चल आया बण , कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण देवे दाज, नाम भण्डारा इक्क वरताईआ। नाता तोड़े जगत लाज, लोक लाज रहिण ना पाईआ। जगत मुलम्मा लाहे पाज, कंचन रूप आप वटाईआ। किरपा करे ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। सच चढ़ाए इक्क जहाज़, नाम नईआ राम रखाईआ। शब्द अगम्मी मारे अवाज़, सोई सुरत मात उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर दए वड्याईआ। एका घर वसया राम, राम रूप अख्वाइंदा। हड्ड मास नाड़ी ना दिसे चाम, हड्ड मास नाड़ी रत मेल मिलाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर किसे ना लए आण, लक्ख चुरासी हुक्म सुणाइंदा। शब्द अनाद धुर फ़रमान, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। जन भगतां देवे साचा माण, माण निमाणयां आप हो आइंदा। नौ खण्ड पृथमी विच्चों लए पछाण, जिस जन आपणा बन्धन पाइंदा। कोटन कोटि रसना जिहवा गाण, राम नज़र किसे ना आइंदा। लक्ख चुरासी बैठी बण अन्जाण, बुध बिबेक ना कोए कराइंदा। माया ममता मोह होई बलवान, दर दर घर घर डंक वजाइंदा। नाता जुड़या पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार सर्ब हल्काइंदा। जूठ झूठ बेईमान, साचा धर्म ना कोए धराइंदा। आसा तृष्ना भरी ना खाण, मति मोह ना कोए छुडाइंदा। पढ़ पढ़ विद्या थक्के वेद पुराण, आत्म ब्रह्म ना कोए दृढ़ाइंदा। हवण धूप करे जहान, सच समग्री हथ्थ ना कोए रखाइंदा। राम राम करन प्रनाम, राम सीस जगदीश ना वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राम सर्ब समाइंदा। एका राम सर्ब समाया, दसरथ बेटा राम अख्वाईआ। एका राम घट घट आसण लाया, एका बैठा मुख

छुपाईआ। एका हरिजन लए जगाया, जुगा जुगन्तर वेख वखाईआ। एका आपणा नाउँ दए दृढ़ाया, एका नाम करे पढ़ाईआ। एका मन्दिर दए वखाया, उच्च अटल मनार सुहाईआ। एका जोती जोत दए जगाया, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। एका किला कोट दए बणाया, चार दीवार ना कोए रखाईआ। एका शब्द नगारे चोट दए लगाया, लक्ख चुरासी सोई लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राम राम समझाईआ। एका राम राम जी दास, दासी दास सेव कमाइंदा। एका हरिजन वसे पास, आदि जुगादि विछड़ ना जाइंदा। एका देवे पवण स्वास, पवण पवण खेल खिलाइंदा। एका लेखा जाणे दस दस मास, मात गर्भ वेख वखाइंदा। एका देवे सास ग्रास, एका आलस निन्दरा मोह चुकाइंदा। एका काया मंडल पावे रास, गोपी काहन आप नचाइंदा। एका निर्मल जोत करे प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। एका लेखा जाणे पृथमी आकाश, गगन गगनंतर सोभा पाइंदा। एका विष्न ब्रह्मा शिव करे दासी दास, सेवक सेवा सच समझाइंदा। एका आदि जुगादि ना जाए विनास, जुग जुग आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राम रामा वेख वखाइंदा। राम चन्द वेख्या राम रामा कथ कथी ना जाईआ। हरिजन लिखणहारा लेख, लेखा लेखे रिहा वखाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, सो राम सर्ब गोसाँईंआ। तिस अग्गे चले ना कोई किसे पेश, लक्ख चुरासी घड़े भन्ने घड़ण भन्नणहार आप अख्वाईआ। जन भगतां देवे सच संदेश, एका राम नाम वड्याईआ। दाता दानी वड मृगेश, नर नरेश सच्चा शहिनशाहीआ। टिल्ले पर्बत रिहा वेख, डूँग्घी कंदर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। राम पाया राम रघुनाथ, रघपति आपणी दया कमाइंदा। दीनां बंधप दीनां साथ, दीनण आपणा संग निभाइंदा। सगल वसूरे जायण लाथ, जिस जन आपणा दरस वखाइंदा। एका राम एका पूजा पाठ, इष्ट देव इक्क हो जाइंदा। एका तीर्थ एका ताट, सर सरोवर इक्क नुहाइंदा। इक्क दुआरा एका हाट, एका मन्दिर सोभा पाइंदा। एका भूशन एका खाट, एका बस्त्र आप सुहाइंदा। एका पान्धी एका वाट, एका पन्ध आप मुकाइंदा। ना कोई वरन ना कोई ज़ात, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। सर्ब जीआं दा कमलापात, कँवल नैण रूप धराइंदा। हरिजन मेला हरि हरि माई बाप, पिता पूत आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आप सुहाइंदा। राम पाया राम रघुवंस, भेव कोए ना जाणया। लेखा जाणे कोटन कोटि जन्म सहँस, सहँसर रूप श्री भगवानया। आपे जाणे आपणा बंस, सरबंस कर प्रधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर करे परवानया। दर परवान करे राम, राम चन्द वड्याईआ। कँवल चरन चरन कँवल बख्शे इक्क ध्यान, बन्दी बन्द बन्द बन्धन दए तुड़ाईआ।

आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, गीत सुहागी छन्द सुणाईआ। चतुर सुघड़ बणाए बाल अञ्याण, जिस जन आपणी दया कमाईआ। नाता तुट्टे जीव जहान, हरिसंगत मेल मिलाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, रसना रस ना कोए वखाईआ। साचे मन्दिर हो प्रधान, काया बंक दए वड्याईआ। राम नाम सुणाए एका कान, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका वस्त देवे दान, अतोट अतुट रखाईआ। एका राज राज राजान, राम राजा इक्क हो जाईआ। एका शाह इक्क सुल्तान, शाह पातशाह इक्क अख्वाईआ। एका तख्त बहे हो मेहरबान, दीनन आपणी दया कमाईआ। एका सच झुलाए निशान, सति सतिवादी धार बंधाईआ। एका लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणा रूप वटाईआ। एका भगत भगवन्त करे परवान, भगतन भगती लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका चिल्ला दए वखाईआ। राम चिल्ला नाम कमान, तीर तुफ़ंग उठाइंदा। राम सूरा नाम बलवान, जोद्धा आपणा मृदंग वजाइंदा। राम भगवन नाम दान, भगतन झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा। हरि मन्दिर हरि सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाए राम। आदि जुगादी दर्द दुःख भय भंजना, जन भगतां पूर कराए काम। नेत्र नाम नरायण पाए अंजना, जगत अन्धेरी मेटे शाम। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजना, हरिजन पकड़े आपणा दाम। दो जहान रक्खे लज्जना, चरन कँवल कँवल चरन देवे माण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा चन्द करे प्रधान। साचा चन्द सीतल धार, किरन किरन टपकाईआ। लोकमात दए आधार, नूर नूर विच समाईआ। अठ्ठे पहर इक्क गुलज़ार, दिवस रैण ना कोए जणाईआ। रसना गाए एका राम, राम अक्खर लए पढ़ाईआ। एका राम इक्क अवतार, इक्क दरबार दए समझाईआ। एका खेड़ा कर त्यार, एका मन्दिर दए बहाईआ। एका बेड़ा लावे पार, भव सागर होए सहाईआ। एका राह तक्के साचे यार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। एका उठ उठ वेखे वारो वार, वेखणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राम राम रहे शरनाईआ। राम राजा राम सरनागति, राम राम निमस्कारया। राम रक्खे हरिजन पत, राम राम लए अधारया। राम धीरज राम जति, राम सति सन्तोख सुणा रिहा। राम पूजा राम पाठ, राम रसना जिहवा करे पुकारया। राम सरोवर राम ठाठ, तट किनारा राम अख्वा रिहा। राम पिता राम मात, पूत सपूता राम जा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राम राम मेल मिला ल्या। राम अंदर राम वड़या, रंग आपणा आप रंगाईआ। राम पौड़े राम चढ़या, राम राम वेख वखाईआ। राम दूआ राम त्रीया, राम राम करे पढ़ाईआ। राम रूप राम घड़या, वेखणहार राम हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राम दए वड्याईआ।

राम सेवक राम सेवादार, राम सेवा राम कमाईआ । राम रंग सर्ब संसार, रंग रंगीला राम अख्वाईआ। राम हरिजन साचे करे प्यार, हरिजन साचा राम समाईआ। जगत कबीला अपर अपार, गुरमुख हरि हरि हरिजन आप उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आपणे लेखे पाईआ। राम सेवा राम कर कर, चन्द चकोर मस्तानया। राम वेखे राम घर घर, दूर दुराडा पन्ध मुकानया। राम चुकाए राम डर डर, निरभउ भय ना कोए वखानया। राम लेखा चुकाए राम राम, राम राम करे परवानया। राम अग्नी राम सड़ सड़, राम लेखा जाणे दो जहानयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवानया। राम सेवा राम दुआर, राम राम रही जस गाईआ। राम शाह राम भिखार, राम मंगे देवणहार राम अख्वाईआ। राम भिखक राम दरवेश राम शाह सुल्तान, शाह पातशाह राम अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डार इक्क वखाईआ। राम भण्डार राम वरतारा, राम आपणी मंग मंगाईआ। राम वस्त हरि एका थारा, दूसर वस्त ना कोई रखाईआ। राम राम दए कर प्यारा, पीआ प्रीतम इक्क जणाईआ। राम कन्त राम नारा, राम राम लए प्रनाईआ। राम सेजा राम सुत्ता पैर पसारा, राम भतारा ख़ुशी मनाईआ। राम रूप राम शृंगारा, राम नेत्र नैण रिहा मटकाईआ। राम नूर राम उज्यारा, राम जोत जोत रुशनाईआ। राम दूल्हा राम दूल्हण राम विचोला बण संसारा, राम राम करे कुड़माईआ। राम अमृत बख्शे ठंडा ठारा, अमृत धारा राम चुआईआ। सौहरे पेईए राम प्यारा, लेखा जाणे वारो वारा, आवण जावण आपणा खेल खिलाईआ। चन्द चकोर दए सहारा, आलस निन्दरा कर ख्वारा, नैण नैण लए मिलाईआ। जिस जन खोल्ह बन्द किवाड़ा, अठ्ठे पहर शब्द अगम्मी वज्जे ताड़ा, अनहद नाद नाद वजाईआ। मन्दिर सोहे बंक दुआरा, होए प्रकाश डूँग्घी गारा, साचा चन्द चन्द चढ़ाईआ। चेतन्न मिले रूप निरँकारा, बातन सुणे आप पुकारा, अन्तर मन्दिर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राम एका चन्द, इक्क चकोर रूप धराईआ। राम चन्द मात चकोर, नेत्र नैण उठाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणा नेत्र आपे खोल्ह, वेखणहारा वेखण आया। त्रेता द्वापर रिहा अनभोल, कलिजुग भेव चुकाया। कलिजुग कन्ढी बैठा अडोल, अडोल लए मिलाया। साचे कंडे तोले तोल, एका वट्टा नाम रखाया। जगत पत्थरां विच्चों लए फोल, माणक मोती हीरा लाल अनमुल्लड़ा आपणे हथ्थ रखाया। सदा सुहेला रक्खे कोल, आप आपणे रंग रंगाया। राम अंदर राम गया मौल, फुल्ल फुलवाड़ी आप महिकाया। राम वजाउणा राम ढोल, राम रामा घर में पाया। जिस दे गाउँदे रहे बोल, सो बोल सुनावण आपणी सेव कमाईआ। आंढ गुआंढ ना रहे अनभोल, पुरख अबिनाशी वेस वटाया। कर किरपा पर्दा जाए खोल्ह, जिस जन नेत्र दर्शन पाया। हरि

नाम वस्त अमोल, राम राम रिहा वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन देवे आपणा दान, आप आपणा रंग रंगाया।

★ ११ जेठ २०१८ बिक्रमी मलूका राम दे घर पिण्ड देवा जम्मू ★

एका ओट राखो हरि, हरि बिन अवर ना कोए तराइंदा। निरभउ चुकाए जगत डर, भय भयानक ना कोए वखाइंदा। सच्चा वखाए एका घर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। हरिजन बणाए साचे सर, अमृत सरोवर ताल भराइंदा। कर किरपा जन विरले फड़, नाम डोरी बन्धन पाइंदा। डूँग्घी भँवरी आपे वड़, काया कवरी फोल फुलाइंदा। लेखा जाणे चोटी जड़, मध्ध आपणा रंग रंगाइंदा। सरन सरनाई सरनगत जो जन जाए पड़, परम पुरख वेख वखाइंदा। लेखा चुक्के नारी नर, नर नरायण लेख मिटाइंदा। ना जन्मे ना जाए मर, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची ओट इक्क समझाइंदा। एका ओट अलख अपार, लेखा लेख ना लिख्या जाईआ। डुबदे पाहिन लाए पार, पर्बत चोटी आप तराईआ। देवे नाम गुण निधान, गुण अन्तर कहिण ना जाईआ। लेखा जाणे बिरध बाल नौजवान, हर घट आपणा खेल खिलाईआ। हरिजन विरला चतुर सुजान, जिस जन दर घर बूझ बुझाईआ। आत्म जोती नूर महान, दीआ दीपक आप टिकाईआ। शब्दी शब्द धुर फ़रमान, सच संदेशा सति सुणाईआ। एका ओट श्री भगवान, दूसर दर ना मंगण जाईआ। किला कोट विच जहान, गुर चरन वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर दए वखाईआ। एका ओट नाम सहारा, सहिँसा रोग रहिण ना पाईआ। एका राम दए आधारा, एका घर दए वसाईआ। इक्क वखाए पार किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। एका खोल्हे बन्द किवाड़ा, दूई द्वैती पर्दा दए उठाईआ। एका मेटे अग्नी तत्त हाढ़ा, सीतल सांतक धार चुआईआ। एका जोत प्रकाश करे बहत्तर नाड़ा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। एका सखीआं गाए मंगलाचारा, गीत गोबिन्द इक्क अलाईआ। एका मन्दिर सुहाए सच दुआरा, सोभावन्त सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीस जगदीश हथ्थ रखाईआ। एका ओट श्री भगवान, भगवन एका रंग रंगाइंदा। आदि जुगादि सदा मेहरवान, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। लेखा जाणे गोपी काहन, काहन आप नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे खेल खिलाइंदा। एका ओट पुरख समरथ, दूसर दर ना मंगण जाईआ। काया चोली चलाए रथ, रथ रथवाही सेव कमाईआ। नाम अनमुल्ल देवे वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ।

आपणी महिंमा सुणाए अकथ, रसना जिहवा कथ ना सके राईआ। लेखा जाणे रामा दसरथ, दहिसर रावन आपे घाईआ। नाता तोड़े तत्त अठ्ठ, नौ दर वेखे थाउँ थाँईंआ। एका रूप बणाए सति, सति सतिवादी एका रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट हरि चरन सरन, सरन चरन इक्क जणाईआ। एका ओट पुरख अकाल, अकल कल आपणी खेल खिलाइंदा। दीनां बंधप दीन दयाल, दीनां अनाथां दया कमाइंदा। काया मन्दिर वखाए सच्ची धर्मसाल, घर ठाकर मेल मिलाइंदा। जगत नाता तोड़ जंजाल, जाग्रत जोत नूर जगाइंदा। हरिजन वेखे आपणे लाल, पूत सपूता गले लगाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों भाल, माणक मोती आप उठाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, ऊँच नीच एका रंग समाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, दिलबर दलील गुरमुख आप बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे मरीदां हाल, हाल मुरीदां आप सुणाइंदा। एका ओट पुरख अबिनाशा, अबिनाशी पुरख खेल खिलाइंदा। एका घर मंडल रासा, एका रूप अनूप धराइंदा । एका हरि इक्क भरवासा, धीरज धीर इक्क धराइंदा। एका चरन कँवल दए दिलासा, एका हुक्मी हुक्म सुणाइंदा। लेखे लाए पवण स्वासा, पवण पवणी आप सुहाइंदा। जन भगतां पूरी करे आसा, जो जन हरि हरि ओट रखाइंदा। नाता तोड़े दहि दिश मासा, मात गर्भ फंद कटाइंदा। निज आत्म निज घर निज गृह कर कर वासा, तीजे नेत्र आप खुल्हाइंदा। भगत वछल पूरी करे आसा, जगत रास सर्ब गंवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ओट एका दर वखाइंदा। एका दर इक्क दरबारा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। एका नाम इक्क जैकारा, एका ढोला रिहा सुणाईआ। एका वणज इक्क वपारा, एका हट्ट रिहा खुल्हाईआ। एका वस्त इक्क भण्डारा, एका राम रिहा वरताईआ। एका मंगे मंगणहारा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। देवे वस्त वस्त हरि थारा, त्रैगुण अतीता साचा माहीआ। एका ओट इक्क सहारा, एका एक होए सहाईआ। कलिजुग अन्तिम करे पार किनारा, नईआ नाम आप चढ़ाईआ। सोहँ शब्द हरि जैकारा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे सच पढ़ाईआ।

★ ११ जेठ २०१८ बिक्रमी सरदार सिँघ दे घर पिण्ड सरदारी जम्मू ★

पुरख अगम्म खेल खिलाउणा, खेले खेल बेपरवाहीआ। अलख अगोचर रूप वटाउणा, अलख अलखणा नाम धराईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाउणा, सचखण्ड निवासी सोभा पाईआ। निर्मल जोती जोत जगाउणा, नूरो नूर नूर धराईआ।

तख्त निवासी साचा तख्त सुहाउणा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। राज राजान आप अख्वाउणा, भूपत भूप वडी वड्याईआ। सीस जगदीश ताज सुहाउणा, राज जोग समझाईआ। दर दरबान इक्क अख्वाउणा, शब्दी शब्द रूप धराईआ। धुर फ़रमाना हुक्म सुनाउणा, हुक्मी हुक्म आप वरताईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाउणा, गगन मंडल लए उपाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव धराउणा, त्रै त्रै एका गुण समझाईआ। एका मन्दिर आप बहाउणा, एका घर वज्जे वधाईआ। एका राग नाद सुणाउणा, एका धुन करे सनवाईआ। एका मार्ग हरि वखाउणा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण भेव खुल्हाउणा, भेव अभेद रहिण ना पाईआ। एकँकारा पर्दा लाहउणा, आप आपणा रूप वटाईआ। आदि निरँजण डगमगाउणा, जल्वा नूर नूर इलाहीआ। श्री भगवान धाम सुहाउणा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। अबिनाशी करता खेल खिलाउणा, खेले खेल हरि घट थाँईंआ। पारब्रह्म प्रभ डंक वजाउणा, आपणा नाउँ आप प्रगटाईआ। आपणी धारा आप रखाउणा, विष्नूं आपणी कल रखाईआ। आपणा अमृत आप उपजाउणा, नाभी कँवल आप समाईआ। आपणा ब्रह्म आप रखाउणा, ब्रह्म वेता एका जाईआ। आपणा राग आप अलाउणा, चारे वेदां करे पढ़ाईआ। आपणा संग आप निभाउणा, त्रै त्रै एका बन्धन पाईआ। सुन्न अगम्मी वेख वखाउणा, धूंआँधार करे रुशनाईआ। साची बिन्द आप उपजाउणा, शंकर मेला सहिज सुभाईआ। सो पुरख निरँजण ढोला एका गाउणा, हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। निरगुण निरवैर तोला इक्क अख्वाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप वखाईआ। साचा मार्ग हरि निरँकारा, निरगुण सरगुण आप लगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यारा, त्रै त्रै एका बन्धन पाइंदा। एका वस्त दए हरि थारा, त्रैगुण आपणा रंग रंगाइंदा। एका हुक्म सच वरतारा, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ अपारा, नौ नौ आपणा रंग रंगाइंदा। पंज तत्त मेले आपणी वारा, आप आपणी किरपा कर खेल खिलाइंदा। मन मति बुध दए सहारा, घर घर विच आप उपाइंदा। नौ दर खोल्हे आप किवाड़ा, डूँग्घी भँवरी भेव चुकाइंदा। लेखा जाणे डूँग्घी गारा, टेढी बंक खेल खिलाइंदा। घर मन्दिर सुहाए इक्क दुआरा, चार दीवार ना कोए बणाइंदा। एका नाम शब्द धुन्कारा, अनहद साचा ताल वजाइंदा। अमृत सरोवर ठंडा ठारा, घर साचे आप टिकाइंदा। जोत निरँजण नूर उज्यारा, घर दीपक आप जगाइंदा। आपे जाणे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी आप खुल्हाइंदा। आत्म ब्रह्म कर पसारा, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाइंदा। ईश जीव बन्न्हे धारा, जगदीश संग निभाइंदा। दस्म दुआरी हो त्यारा, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। लेखा जाणे धूंआँधारा, सुन्न समाध आप खुल्हाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अपारा, लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, जुगा जुगन्तर लाए साची कारा, करता

पुरख कार समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे धन्दे आपे लाइंदा। लक्ख चुरासी कर पसार, हरि घाड़न घड़त घड़ाईआ। त्रैगुण माया दए आधार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। चारे खाणी पावे सार, अंडज जेरज वण्ड वंडाईआ। उत्भुज सेत्ज होया ख़बरदार, आप आपणा मूल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाईआ। लक्ख चुरासी बन्धन पाया, दिस किसे ना आइंदा। जन्म मरन खेल रचाया, आवण जावण वेख वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ रूप धराया, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। कागद कलम भेव ना राया, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। दो जहानां वेस वटाया, वेस अनेका आप कराइंदा। त्रिलोकी नंदन इक्क वखाया, लोक परलोक आप सुहाइंदा। चौदां लोकां हट्ट जणाया, त्रैभवन रंग रंगाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी किला कोट वसाया, सत्तां दीपां डेरा लाइंदा। ज़िमीं अस्मानां भेव चुकाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। लक्ख चुरासी खेल खिलाया, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। पुरख अबिनाशी वेख वखाया, सचखण्ड दुआरे बैठा आसण लाईआ। आपणी वण्ड रिहा वण्डाया, त्रैगुण त्रै त्रै रिहा समझाईआ। नव नौ चार खेड़ा दए वसाया। लोकमात वज्जे वधाईआ। जुग चौकड़ी वेख वखाया, वेखणहारा सच्चा शहिनशाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग एका डोर बंधाया। नाम डोरी हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी खेल खिलाया, खेलणहार करतार। निरगुण सरगुण रूप धराया, जुग जुग लए मात अवतार। भगत भगवन्त वेख वखाया, सन्त साजण लए उभार। गुरमुख गुर गुर गोद बहाया, गुरसिख साचे लाए पार। हरिजन हरि हरि मन्दिर दए वखाया, काया मन्दिर खोल्ह किवाड़। घर घर अमृत दए प्याया, नाभी कँवली कर फलहार। घर घर दीपक जोती दए जगाया, जोत निरँजण कर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार। विष्न ब्रह्मा शिव हरि जणाइंदा, शब्द अनाद अगम्मी बोल। लक्ख चुरासी तेरा नाम रखाइंदा, जगत जग वजाए ढोल। जुग चौकड़ी वण्ड वंडाइंदा, तोलणहारा तोले साचा तोल। गुर अवतार सेवा लाइंदा, आदि जुगादि भण्डारा खोल्ह। एका नाम आप वरताइंदा, अतोट अतुट रक्खे अतोल। जन भगतां झोली पाइंदा, निज आत्म अंदर बोल। जुग जुग गेड़ा आपणे हत्थ रखाइंदा, सचखण्ड बैठा रहे अडोल। कोटन कोटी जीव उपाइंदा, लक्ख चुरासी आपे फोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा कौल। आपणा कौल कर करतार, एका मीत आप अख्वाईआ। नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी कर पसार, लोकमात वेख वखाईआ। जुग जुग लहिणा देणा चुकाए गुर अवतार, दे तत्त ज्ञान समझाईआ। एका बख्शे चरन ध्यान, जो लोकमात विच आईआ।

अठ्ठे पहर मंगे दान, सीस जगदीश रिहा झुकाईआ। आपे बणया रहे साचा काहन, दर घर साचे बैठा सच्चा शहिनशाहीआ। देवणहारा देवे धुर फ़रमान, धुर दी बाणी आप अल्लाईआ। जुग जुग वेखे काया हट्ट दुकान, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। लेखा जाणे सीआ राम, राम रूप आप रघुराईआ। रूप धराए घनईआ काहन, कान्हा बंसरी नाम वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा बन्धन पाईआ। जुग जुग गेड़ा हरि समरथ, आपणा खेल खिलाया। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, चारों कुण्ट आप भवाया। वसणहारा घट घट, हर घट आपणा रूप धराया। करे खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग रचाया। जुग चौकड़ी मेटे फट्ट, गुर अवतार रूप धराया। आप खुल्हाए नाम हट्ट, सच वणजारा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता, आपणा भेव दए खुल्हाया। आदि पुरख हरि भेव अवल्ला, सो पुरख निरँजण दए समझाईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, एकँकारा रंग समाईआ। आपणे दीपक आपे बल्ला, आदि निरँजण कर रुशनाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा जला थला, श्री भगवान हर घट रिहा समाईआ। पारब्रह्म सच सिँघासण मल्ला, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। शब्द सरूपी फड़या भल्ला, लोआं पुरीआं रिहा डराईआ। नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी करदा रिहा वल छला, अछल छल आपणी खेल खिलाईआ। गुर अवतारां फड़ाउदा रिहा पल्ला, एका पल्लू नाम वड्याईआ। आपे वसे निहचल धाम अटल्ला, उच्च महल्ल सोभा पाईआ। सच संदेश जुगा जुगन्तर घल्ला, जुग जुग आपणा हुक्म सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम आवे इक्क इकल्ला, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेश रिहा सुणाईआ। सच संदेश हरि हरि भेज, आपणा भेव खुल्हाइंदा। निहकलंका निरगुण तेज, निरवैर रूप वटाइंदा। आत्म ब्रह्म माणे सेज, दूजा बस्त्र ना वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भेव आप चुकाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पर्दा रक्ख, त्रैगुण माया रूप वटाईआ। जुग जुग पंज तत्त चोला साड़दा रिहा विच कक्ख, अग्नी अग्ग भेंट चढ़ाईआ। कदी बणे बेटा राम दसरथ, कदी नंद जसोधा दए वड्याईआ। कदी तृप्ता रक्खे पत, कदी गुजरी मिले वधाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए आप समरथ, ना कोई पिता ना कोई माईआ। आपणा मार्ग दो जहानां जाए दस्स, भुल रहे ना राईआ। सतिजुग बणाए एका मढ्ढ, साचा मन्दिर दए वखाईआ। नाता तुट्टे अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती गुरमुख काया विच बहाईआ। जोत जगाए लट लट, लाटां वाली घर मनाईआ। जिस दे अग्गे टेकदे रहे मथ, सो मथ्था टेकण गुरमुखां दुआरे आईआ। जिस दी करदे रहे पूजा पाठ, सो गुरमुखां नाम रिहा ध्याईआ। जिस दी बहन्दे रहे साया हेठ, सो साया मंगे सच्चा शहिनशाहीआ। सुहाए रुतड़ी

महीना जेठ, भिन्नड़ी रैण नाल रलाईआ। हरिसंगत हरि जी नेत्र लैणा पेख, घर मिल्या साचा माहीआ। शाह पातशाह नर नरेश, सीस जगदीश ताज सुहाईआ। दर खड़े ब्रह्मा विष्न महेष, दोए दोए बैठे सीस झुकाईआ। गुरमुख तेरे दर करे आदेश, तेरे घर मिले वड्याईआ। तेरी महिंमा गाए सहँसर मुख शेष, दोए सहँसर जिहवा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। भेव खुल्हाए हरि निरँकारा, निरगुण रूप धराया। कागद कलम ना लिखणहारा, चारे वेद रिहा समझाया। पुराण अठारां करे पुकारा, ऊँची कूक कूक अल्हाया। गीता ज्ञान बोल जैकारा, एका भगत भगवन्त समझाया। अञ्जील कुरान मारन नाअरा, तीस बतीस हदीस पढ़ाया। खाणी बाणी करे निमस्कारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाया। उच्च अगम्म अथाह बेपरवाह परवरदिगारा, मुकामे हक डेरा लाया। सचखण्ड वसे एकँकारा, निरगुण नूर कर रुशनाया। जुग चौकड़ी घलदा रिहा अवतारा, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाया। कलिजुग अन्तिम आए सच्ची सरकारा, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराया। ऊँचां नीचां करे प्यारा, राउ रंकां गले लगाया। जूठ झूठ मेटे विच संसारा, सच सुच्च दए वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक आपणा पर्दा दए उठाया, हरि पर्दा मात चुकाउणा, चुक्के अन्धेरी रात। सतिजुग साचा चन्द चढ़ाउणा, अट्ठे पहर रहे प्रभात, दूई द्वैती मेट मिटाउणा, माया ममता तोड़े नात। शरअ शरीअत इक्क वखाउणा, एका शब्द देवे दात। एका राम नज़री आउणा, एका गाए साची गाथ। एका मन्त्र सच दृढ़ाउणा, इक्क उतारे साचे घाट। एका मन्दिर हरि सुहाउणा, निरगुण जोत जगे ललाट। चार वरन एका रंग रंगाउणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मिले मेल हरि कमलापात। एका बस्त्र सच सुहाउणा, एका उत्तम रक्खे ज़ात, मात पित इक्क बनावणा, एका रूप भैण भ्रात। एका सिख्या सिख समझावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आर पार घाट। आर पार हरि खेल न्यारा, दो जहानां वेख वखाईआ। हरिजन साचे कर प्यारा, दर घर साचे लए मिलाईआ। राती सुत्तयां पावे सारा, गुरमुख सोए आप उठाईआ। दुरमति मैल धोए हरि करतारा, अमृत सिंच हरा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन तेरा लहिणा चार जुग, जुग चौकड़ी हरि चुकाइंदा। लक्ख चुरासी बैठा लुक, दिस किसे ना आइंदा। गुरसिखां मेटे तृष्ना भुक्ख, काया तृप्त आप कराइंदा। सफल कराए मात कुक्ख, दस दस मास फंद कटाइंदा। नाता तुट्टे उलटा रुक्ख, लक्ख चुरासी बन्धन कोए ना पाइंदा। उज्जल करे मात मुख, जिस जन आपणा नाम दृढ़ाइंदा। हरया बूटा ना जाए सुक्क, गुर सतिगुर मात लगाइंदा। गुरमुख सज्जण सुहेले उठ, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। शाह

पातशाह ग़रीब निमाणयां उत्ते गया तुठ्ठ, जगत ग़रीबी आप हंढाइंदा। अमृत जाम प्याए घुट्ट, सच प्याला हथ्थ उठाइंदा। आप सुहाए साची रुत्त, सुहञ्जणी रुत्त आप वखाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। हरिजन रंग चढ़या मजीठ, गुर सतिगुर आप चढ़ाईआ। काया करे पतित पुनीत, पतित पापी लए तराईआ। इक्क सुणाए सुहागी गीत, सोहँ शब्द सच पढ़ाईआ। कलिजुग मिटे सतिजुग चले साची रीत, सति सतिवादी आप चलाईआ। नाता तुट्टे देहुरा मन्दिर गुरदुआर मसीत, घर घर वजदी रहे वधाईआ। अमृत मिले ठांडा सीत, अग्नी तत्त ना कोए लगाईआ। एका रूप नज़री आए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए अख्वाईआ। हरि चरन वखाए सच प्रीत, पीआ प्रीतम लए मिलाईआ। सदी बीसवीं रही बीत, बीस बीसा वेख वखाईआ। गुरमुख गुरसिख करे अतीत, त्रै भवन दया कमाईआ। मिट्ठा करे कौड़ा रीठ, वख अमृत रूप बणाईआ। मानस जन्म जन जाए जीत, हरिजन रहे सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन उठ उठ जाग, हरि सतिगुर आप जगाइंदा। आत्म अन्तर इक्क वैराग, बिंहों निराला तीर लगाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर तेरी भुल ना जाए याद, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। मानस जन्म सुण फ़रयाद, अजूनी रहत तेरी जून कटाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणे गले लगाइंदा। दरगाह साची देवे दाद, दर दुआरा इक्क खुल्हाइंदा। तेरे रूप रहे विस्माद, बिस्मिल आपणा रूप रखाइंदा। तेरा नाम वजाए नाद, तुरीआ राग आप सुणाइंदा। तेरा मेला मोहन माधव माध, मोहन आपणी खेल खिलाइंदा। तेरा लेखा आदि जुगादि, जुगा जुगन्तर आप चुकाइंदा। तेरा लेखा आपणे हथ्थ रक्खे हिसाब, चित्रगुप्त ना वेख वखाइंदा। तेरा दाता इक्क नवाब, शाह पातशाह नाउँ धराइंदा। तेरी एका माता एका बाप, आदि जुगादि गोद बहाइंदा। तेरा वधदा रहे प्रताप, अंस बंस आप सुहाइंदा। कलिजुग नाता बुढ्ढे कात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप रलाइंदा। हरिजन रल्लया हरि हरि जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। गुरसिख ना कोई वरन ना कोई गोत, आत्म ब्रह्म सर्ब दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत हरि मन्दिर लए मिलाईआ। हरि मन्दिर दुआरा सचखण्ड, हरि चरन कँवल दरसाया। लेख चुकाए विच वरभण्ड, वरभण्डी फोल फुलाया। नाता तोड़ तोड़ ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड मूल चुकाया। इक्क जणाए परमानंद, परम पुरख मेल मिलाया। जिस जन गाया बत्ती दन्द तीस बतीसा दए सुहाया। लक्ख चुरासी मेटे पन्ध, जन्म मरन दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जुग जन्म जन विछड़े, कर किरपा लए मिलाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग लुकया रिहा करतार, निरगुण रूप ना मात धराईआ। कलिजुग अन्तिम करया खेल अपार, जन भगतां दए वड्याईआ। तेज भान खेडण गया शिकार, सिँघ शेर कलिजुग जूह विच्चों ल्या भजाईआ। अगों मिल्या चेला सिँघ सरदार, सरदारी बैठा आसण लाईआ। दोहां घेरया अद्ध विचकार, आंढ गुआंढणां रिहा सुणाईआ। भज्ज ना जाए जो ठग्गदा रिहा संसार, आया घेरे पाउणी फाहीआ। चारों कुण्ट उठे सिख बलकार, आपणा बल आप धराईआ। उच्ची कूक कूक करन पुकार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी जै, तेरा बन्धन पाईआ। हौसला धरया नारी नर, बिरध बाल जवान नाल रलाईआ। प्रेम फड़ी हथ्थ कटार, तिक्खा चिल्ला तीर निराला हथ्थ उठाईआ। मार के आए पहली छाल, उच्चे टिल्ले पर्बत ढाईआ। पुरख अबिनाशी होया बेहाल, चारों कुण्ट राह खेड़ा नज़र किते ना आईआ। कौण बणे मेरा दलाल, गुरमुखां कोलों लए छुडाईआ। वाज मारी आप महाकाल, उठ तेरी वारी मात आईआ। महाकाल नेत्र रोवे, घाल ना सके तेरी घाल, तेरा संग ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी मैं वेंहदा रिहा तेरी अवल्लड़ी चाल, निरगुण सरगुण रूप धर धर, जीवां जंतां भरमे रिहा भुलाईआ। अज्ज तेरी ना माटी ना दिसे खालना गगन मस्तक कूटां दिसे थाल, चोटी जड़ नज़र कोए ना आईआ। तेरा रूप नज़र आए तेरे गुरसिख बाल, तेरे दुआरे बैठे घेरा पाईआ। ऐथे पहुंच ना सके काल महाकाल, दो जहान पई दुहाईआ। इहनां ग़रीब निमाणयां ल्या तेरा धन माल, तेरा ख़ज़ाना होर हथ्थ किसे ना आईआ। चारों कुण्ट वसण शाह कंगाल, नाम वस्त हट्ट ना कोए विकाईआ। गुरमुखां पाया तेरे चौगिर्द जंजाल, जाल एका रिहा विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत शिकारी वेखे सच्चा माहीआ। जगत शिकारी खेडिआ शिकार, मन का सहिँसा भउ गंवाया। वार कीता पहली वार, कीता वार ख़ाली रहे ना राया। अद्धविचकार फड़या निरँकार, अग्गा पिच्छा दिस किसे ना आया। गुरसिख खिच्चन वारो वार, आपणा आपणा ज़ोर लगाया। भज्ज ना सके गिरवर गिरधार, चारों कुण्ट गृह मन्दिर बन्द रखाया। अन्तिम आपणी मन्ने हार, गुरसिखां अग्गे सीस झुकाया। गुरमुख तेरा नाउँ होए उज्यार, जिस सतिगुर सच्चा पाया। कोटन कोटि भाण्डे घड़दा रिहा बण घुमिआर, तेरा ठठयार तेरी सेव कमाया। तूं साहिब सच्चा मीत मुरार, तेरा परिवार मेरा रूप वटाया। हरिसंगत तेरा लगदा रहे दरबार, गुर सतिगुर आपणे घेरे विच रखाया। वाह वा शिकारी खेलया शिकार, शिकरा बाज़ चिड़ीआं आपणे पंजे विच फसाया। उलटी खेल करी करतार, गुरसिख आपणा सीस ताज टिकाया। आपे निउँ निउँ करे निमस्कार, गुरसिख तेरी वड वड्याआ। तेरा दर ठांडा दरबार, सचखण्ड बैठा रूप

वटाया। लेखे लग्गा पुरख नार, जो जन सरनाई आया। मन की वासना मन विच देवे मार, मन मन ही आप लपटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपणा बन्धन गुरमुख तेरी प्रेम डोरी नाल बंधाया।

चरन धूढ़ गुरमुख पवित, पुनीत दए वड्याईआ। जुग जुग मंगे सतिगुर कर कर हित्त, लक्ख चुरासी विच्चों गुरसिख आप रखाईआ। रूप धराए नित नवित, धू्र प्रहिलाद दए वड्याईआ। तारा सिँघ हरि खेल अनडिठ, अनडिठड़ी खेल खिलाईआ। हरिजन चुक्के उप्पर आपणी पिट्ठ, गुरसिख तेरा भार ख़ुशीआं नाल उठाईआ। मानस जन्म लैणा जित, जग जीवन दाता जुगती रिहा बताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धूढ़ी ख़ाक सज्जण आप बरसाईआ। धूढ़ी ख़ाक उडे धूढ़, धुरदरगाह आप सुहाइंदा। गुरसिख धूढ़ करे अन्धेरा दूर, नूर नूर चमकाइंदा। नूर अन्तर हरि हज़ूर, हरि आपणा रूप वटाइंदा। आसा मनसा कर कर पूर, पूरी आसा आपणी आप वखाइंदा। ना नेड़े ना वसे दूर, गुरमुख तेरे अंदर डेरा लाइंदा। कलिजुग अन्तिम मिल के जाए ज़रूर, आपणा मेला आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका धूढ़ नूर दरसाइंदा।

★ १२ जेठ २०१८ बिक्रमी प्रेम चन्द दे घर पिण्ड सरदारी जम्मू ★

मानस जन्म सति प्रेम, परम पुरख सरनाईआ। सति पुरख निरँजण जाणे एका साचा नेम, नित नवित वेख वखाईआ। लेखा जाणे कुण्ट हेम, पर्बत आपणे रंग रंगाईआ। सेवा जाणे बानर बेन, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जुग जुग चुकाए लहण देण, लहिणा देणा आप मुकाया। जन भगतां सदा सद दर्शन देवे नैण, नैण अणयाला आप खुल्हाईआ। एका नाउँ सुणाए साचा कहिण, साचा नाउँ सिफ्त सालाहीआ। एका मेला हरिसंगत बहण, बिन हरिजन अवर ना कोए भाईआ। एका मन्दिर वसे रहिण, हरि मन्दिर दए वड्याईआ। एका बस्त्र पाए गहिण, भूशन नाम आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग समाईआ। एका प्रेम हरि गुरदेवा, लोकमात वेख वखाईआ। आदि चुगादि जुगा जुगन्तर अलख अभेवा, अलख अलखणा वेस वटाईआ। भगतन बख्शे भगती सेवा, सेवा रूप नजर किसे ना आईआ। लेखा जाणे आत्मा देवा, देव अतमा वेख वखाईआ। फल खवाए अमृत मेवा, अंमिउँ रस आपणा रस चुआईआ। टिक्का लाए मस्तक थेवा, कौस्तक मणीआं माण गंवाईआ। नाम जणाए रसना जिहवा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाता इक्क समझाईआ। साचा नाता प्रेम हरि, चरन चरन कँवल वड्याईआ। चुक्के रोग मरन डरन, चिंता सोग ना कोए रखाईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, निज नेत्र कर रुशनाईआ। सतिगुर साहिब तरनी तरन, तारनहार इक्क हो जाईआ। किरपा करे हरि करनी करन, करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। हरि प्रेम सच संजोग, जुगा जुगन्तर आप जणाइंदा। हरि प्रेम आत्म रस भोग, भोगी भोग आप भुगाइंदा। हरि प्रेम मुक्के वियोग, सहिंसा रोग जगत चुकाइंदा। हरि प्रेम सुणे सच सलोक, राम नामा आप पढ़ाइंदा। हरि प्रेम लेखा चुक्के चौदां लोक, लोक परलोक पार कराइंदा। हरि प्रेम नाता तुट्टे झूठ किला कोट, सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा। हरि प्रेम जगे निर्मल जोत, जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दर आप सुहाइंदा। हरि प्रेम सच प्यार, पीआ प्रीतम आप जणाईआ। हरि प्रेम भगत भण्डार, भगवन भगती झोली पाईआ। हरि प्रेम तन शृंगार, सोलां इच्छया रंग रंगाईआ। हरि प्रेम ठांडा दरबार, दर घर साचे सोभा पाईआ। हरि प्रेम मंगलाचार, मिल मिल सखीआं मंगल गाईआ। हरि प्रेम नाता तुट्टे सर्ब संसार, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। हरि प्रेम हरिजन हरि करे निमस्कार, निवण सु अक्खर इक्क समझाईआ। हरि प्रेम लेखा जाणे आर पार किनार, मँझधार रहिण ना पाईआ। हरि प्रेम मेले साचे यार, सत्थर यारड़ा इक्क हंढाईआ। हरि प्रेम लेखा चुकाए पुरख नार, नर नरायण दए वड्याईआ। हरि प्रेम मानस जन्म जाए पैज संवार, मानव आपणे लेखे पाईआ। हरि प्रेम कागद कलम ना लिखणहार, सत्त समुंदर मस बनास्पत रो रो दए दुहाईआ। हरि प्रेम सभ तों वसे बाहर, बिन गुरमुख नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप दए दरसाईआ। हरि प्रेम आत्म रंग, रंग रंगीला आप जणाइंदा। हरि प्रेम सुहाए सच पलँघ, पावा चूल ना कोए बणाइंदा। हरि प्रेम वजाए नाम मृदंग, तार सतार ना कोए हिलाइंदा। हरि प्रेम पंज विकारा करे खण्ड खण्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। हरि प्रेम साचे मन्दिर पाए वण्ड, घर घर विच वेख वखाइंदा। हरि प्रेम उपजाए परमानंद, निजानंद आप समाइंदा। हरि प्रेम ख़ुशी कराए बन्द बन्द, हरख सोग ना कोए रखाइंदा। हरि प्रेम ढाए झूठी कंध, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। हरि पेम चढ़ाए साचा चन्द, अन्ध अन्धेरा मात गवाइंदा। हरि प्रेम मिले हरि बख़्शंद, बख़्शणहारा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा। हरि प्रेम मिले हरि नामा, जन्म जन्म दी मैल गंवाईआ। हरि प्रेम पूरन होए कामा, काम कामनी रहिण ना पाईआ। हरि प्रेम वज्जे दमामा, अनडिठ ताल वजाईआ। हरि प्रेम प्रकाश होए कोटन भाना, जोत नूर

नूर रुशनाईआ। हरि प्रेम मिले साचा कान्हा, गोपी सुरती लए प्रनाईआ। हरि प्रेम घर आए रामा, सीता सतिवन्ती लए उठाईआ। हरि प्रेम होए अन्तरजामा, अन्तर पर्दा दए खुल्ाईआ। हरि प्रेम वसे नगर ग्रामा, साचा खेड़ा मिले वड्याईआ। हरि प्रेम हरिजन मिले साचा माणा, माण निमाणयां आप दवाईआ। हरि प्रेम मन्ने भाणा, सो भाणे विच समाईआ। हरि प्रेम देवे शब्द बबाना, हरिजन साचे लए चढ़ाईआ। हरि प्रेम चुकाए आवण जाणा, आवण जावण रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर रिहा पढ़ाईआ। हरि का प्रेम एका अक्खर, लिखण पढ़न विच ना आया। हरि का प्रेम वखाए सत्थर, साचा सत्थर इक्क रखाया। हरि का प्रेम बजर कपाटी तोड़े पत्थर, प्रेम निशाना इक्क लगाया। हरि का प्रेम नेत्र नीर वरोले अथ्थर, जोती लम्बू एका लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्रेम रूप वटाया। पारब्रह्म प्रेम पुरख पुरख दाता सर्ब गुणवन्त, सच सुच्च करे जणाईआ। अलख अगोचर आदि जुगाद बेअन्त, श्री भगवन्त वडी वड्याईआ। नर नरायण साचे धाम सोभावन्त, महल्ल अटल उच्च मनार करे रुशनाईआ। गुरमुख सुहागण नार भतार मिले हरि हरि कन्त, कन्त सुहाग इक्क समझाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, आदि जुगादि उतर ना जाईआ। रसना जिहवा मणीआ मंत, धन जोबन नाम झोली पाईआ। गीत गोबिन्द सुहागी छंत, सौहरे पेईए सदा जस गाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, ख़िमा ग़रीबी इक्क दरसाईआ। लक्ख चुरासी विचों कढ्ढे जीव जंत, जीव आत्मा मेल मिलाईआ। आपणा लेखा मेटे तुरंत, दूजा लेखा ना कोए वखाईआ। गुरसिख गुरमुख गुर गुर उपजाए साचे सन्त, जिस आपणा दरस वखाईआ। लोक परलोक बणाए बणत, साचा घाड़न घड़त घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरु गुर चेल चेला गुर गुर चेला एका रंग समाईआ।

५५२

★ १२ जेठ २०१८ बिक्रमी राम लाल दे घर सरदारी जम्मू ★

हरि प्रेम भण्डारा एका खुल्ा, ख़ालक ख़लक आप वरताईआ। आदि जुगादि रक्खे खुल्ा, दर दरबारा आप सुहाईआ। जुगा जुगन्तर ना लाए कोए मुल्ला, कीमत करता ना कोए चुकाईआ। देवे वड्याई जो दर आए भुल्ला, अभुल सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख बूटा लोकमात फलया फुल्ला, पत्त डाली आप महिकाईआ। मनमुख जीव अन्तिम हुल्ला, सिंमल रुख रिहा वखाईआ। हरिजन भाग लगाए साची कुल्ला, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। मनमुख अन्त कराए ना कोई सुलाह, गुर सतिगुर ना मेल मिलाईआ। त्रैगुण माया भीतर रुला, चारे कन्नीआं चिकड़ रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

एका रतन नाम वखाईआ। हरि प्रेम नाम रतन अमोलक, अमुल अमुल जणाइंदा। हरिजन रक्खे काया गोलक, दूसर दर ना कोए सुहाइंदा। गुरमुख वेखे सदा अडोलत, अडोल अडुल दया कमाइंदा। नाम जणाए अन अनबोलत, अनबोलत खेल खिलाइंदा। बीस बीसा एका दिती मोहलत, अग्गे लेखा ना कोए वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। एका मोहलत दए तारीक, जगत तारीख आप जणाईआ। प्रगट होए लाशरीक, शरीक्त मेटे ख़लक ख़ुदाईआ। आपणी रक्खे इक्क तौफ़ीक, ख़ुदी ख़ुदाए दए मिटाईआ। मुर्शद मरीद बणे रफ़ीक, उल्फ़त आपणी दए वड्याईआ। नाता तोड़े झूठ फ़रीक, फ़िरका कोए नज़र ना आईआ। आपणी मारे सति लीक, सत्तां दीपां लकीर दए गंवाईआ। नौ नौ चलाए साची रीत, पतित पुनीत बेपरवाहीआ। आपणी जणाए सच प्रीत, प्रेम नेम इक्क सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रूप अनूप धराईआ। हरि हरि प्रेम सदा वडभाग, वडभागी भाग लगाइंदा। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, जो जन हरि हरि प्रेम कमाइंदा। अन्तर उपजे इक्क वैराग, वैरागी वैराग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म इक्क समझाइंदा। सच प्रेम हरि हरि, धर्मी धर्म रखाइंदा। निहकर्मी कर्म आपणा कर कर, कुकर्मी कर्म मिटाइंदा। रूप जणाए एका नर नर, नर नरायण वेख वखाइंदा। सन्त सुहेले साचे फड़ फड़, आपणा बन्धन पाइंदा। डूँग्घी भँवरी आपे वड़ वड़, काया कंदर फोल फुलाइंदा। टेढी बंक आपे चढ़ चढ़, आपणा पन्ध आप मुकाइंदा। जोती नूर एका धर धर, गृह मन्दिर आप सुहाइंदा। सुरती नारी आपे वर वर, शब्दी कन्त मनाइंदा। मंगलाचार आपे कर कर, आपणा राग सुणाइंदा। अमृत सरोवर ठर ठर, आपणी अग्नी आप बुझाइंदा। आपणा प्रेम आपे कर कर, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा आप वड्यांअदा। प्रेम पुरख प्रेम नारी, परम पुरख दए वड्याईआ। प्रेम मेटे जगत विभचारी, विभचार रहिण ना पाईआ। प्रेम देवे सति आधारी, नाम आधार इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वड्याईआ। साचे घर प्रेम आपणा उतपंना, हरि हरि आप कराईआ। हरिजन जगाए जिउँ जट धन्ना, भोले भा हरि गोबिन्द मिलाईआ। दर्शन देवे विच छप्पर छन्ना, महल्ल अटल ना कोए वड्याईआ। सच सुनेहड़ा एका घल्ला, सोए जन आप उठाईआ। लभ्भणा फिरे जंगल जूह उजाड़ झल्ला, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रिहा इकल्ला, सच्चखण्ड दुआरे निरगुण जोत कर रुशनाईआ। कलिजुग अन्तिम करया खेल अवल्ला, अव्वल अल्ला नूर वेख वखाईआ। नूरी नूर फड़ाए पल्ला, नूर नूर नाल मिलाईआ। जल्वा जलाल अछल अछला, सच महल्ला करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

५५३

आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। प्रेम प्यारा प्रेम नाथ, अनाथ अनाथां दया कमाइंदा। सखा सुहेला देवे साथ, सगला संग आप निभाइंदा। लेखा जाणे रघुपत रघुनाथ, रघुपती रूप वटाइंदा। जोती जाता त्रिलोकी नाथ, त्रै त्रै आपणा वेस धराइंदा। गहर गम्भीर अकथना काथ, कथ कथ आपणी कथा सुणाइंदा। निरगुण सरगुण चढ़या राथ, जगत रथ आप चलाइंदा। जुग जुग लेखा लिखदा रिहा माथ, मस्तक लहिणा भेव छुपाइंदा। बन्धन पाउँदा रिहा तत्त आठ, अठ्ठ तत्त खेल खिलाइंदा। नाता जोड़दा रिहा हड्ड मास, नाड़ी रत रक्त बूंद मेल मिलाइंदा। खेल खेलदा रिहा ज़ात पात, वरन बरन बन्धन पाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो इकांत, निरगुण आपणा रूप हरि वटाइंदा। आपे बैठा रहे शांत, सृष्ट सबाई अग्न जलाइंदा। जन भगतां देवे दात, प्रेम प्यार झोली पाइंदा। लक्ख चुरासी करे घात, घाओ आपणा आप लगाइंदा। नव नौ चार मेटे अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेरा आप गंवाइंदा। धर्म राए दा पूरा करे खात, खाता अन्तिम आप भराइंदा। गुरमुखां पुच्छे वात, सोए लोकमात जगाइंदा। नाता तोड़ ज़ात पात, जोती जाता रंग रंगाइंदा। इक्क वखाए पिता मात, एका पूत गोद उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। हरिजन मेला प्रेम बन्धन, बन्दी छोड़ आप लगाईआ। गुरमुख महिकाए जिउँ बण चन्दन, चन्दन वास आप हो जाईआ। घर घर देवे परमानंदन, परम पुरख मिलाईआ। दोए जोड़ करे जन बन्दन, डण्डौत आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका करे प्रेम सख़ावत, साची भिच्छया झोली पाईआ। साची भिच्छया प्रेम सख़ावत, सख़ी सरवर झोली पाइंदा। चार कुण्ट देवे एका दावत, एका हुक्मी हुक्म सुणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी कर बग़ावत, बग़ली शाह सुल्तानां हथ्थ रखाइंदा। लेखा चुकाए निन्दक साकत, दुष्ट दुराचार रहिण ना पाइंदा। रहिण ना पाए कोई नास्तिक अस्तिक आपणा रूप वटाइंदा। नेत्र रोवे विष्नूं सेजा बाशक, सागों पांग ना सोभा पाइंदा। तेरा रूप एका वास्तक, विश्व तेरी धार जणाइंदा। एका नूर करे प्रकाशत, एका शब्द नाद वजाइंदा। एका प्रेम रक्खे साबत, दूजा नेम ना कोए जणाइंदा। एका बणे हरि हरि कातब, आपणा लेखा आप लिखाइंदा। जामा पाया कलिजुग पलटन बाबत, बँवरा रूप आप धराइंदा। दो जहानां जाणे आकबत, आलम इलमा पर्दा ना कोए उठाइंदा। करे खेल हक जनाबत, जनाब आप आपणे हथ्थ रखाइंदा। किसे हथ्थ ना आए विच किताबत, लिख लिख लेख ना कोई समझाइंदा। जन भगतां करे अन्त स्वागत, फूलणहार गल पहनाइंदा। आपणे घर ना मंगे कोई लागत, लग्गी प्रीत तोड़ निभाइंदा। हरिजन तेरी करे सदा सदाकत, सिदक सबूरी तेरे संग रखाइंदा। तेरे हुजरे बह बह करे इबादत, इबनउलवक्त आपणा खेल खिलाइंदा। एका करे वाइज़ वाहद दो जहान

वकालत, वकील दलील ना कोए जणाईआ। वरन बरन ऊँच नीच रहिण ना देवे विच मिलावट, दूसर इष्ट ना कोए रखाईआ। एका मन्दिर करे सजावट, हरिजन तेरे बंक सोभा पाईआ। जगत बाढी ना बणाए कोए बणावट, हरि मन्दिर एका एक सुहाईआ। अठ्ठे पहर गायण गाए गावत, गावणहारा आलस निन्दरा विच ना आईआ। निरगुण सरगुण बणया महावत, चिउँटी हस्त एका रिहा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रेम पत्तण दए बणाईआ। प्रेम पत्तण गुरसिख किनारा, गुर गुर बेड़ा आप चलाईआ। आया वेखण एकँकारा, अकल कल आपणा रूप धराईआ। नौ नौ वेखे वेखणहारा, सृष्ट सबाई फोल फुलाईआ। लक्ख चुरासी जूठ झूठ बध्धा भारा, लोकमात रहे कुरलाईआ। कोए ना दिसे मीत मुरारा, सगला संग ना कोए निभाईआ। नाता छुटा नारी नारा, नारी कन्त दए दुहाईआ। चार कुण्ट ना दिसे कोए सहारा, चार यारी रही शरमाईआ। नेत्र नैण ना कोए उज्यारा, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। धीआं पूत झूठा प्यारा, अन्तिम संग ना कोए निभाईआ। खुलड़े केस रोवे ज़ारो ज़ारा, सीस मेंढी ना कोए गुंदाईआ। हाए हाए करन पुकारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। चारों कुण्ट समुंदर खारा, कलिजुग घाटी पार ना कोए वखाईआ। चिकड़ भरीआं खुबण विच गारा, सारंग सार ना कोए जणाईआ। मानस जन्म आई हारा, हार जित ना रूप वटाईआ। पुरख अबिनाशी लाया इक्क अखाड़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा नचाईआ। गुरमुख विरला कीआ प्यारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। मेल मिलाया सतारां हाढ़ा, वदी सुदी ना कोए रखाईआ। आपणा ख़ून कीआ गाढ़ा, गुरमुखां जड़ लगाईआ। सेवा करे करनेहारा, बाढी आपणा रूप वटाईआ। तिक्खा फड़या एका आरा, दो धारा चीर पवाईआ। सूत्र लाए एका वारा, काली तन्दन तन्द हिलाईआ। दो जहानां करे ख्वारा, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक उडाईआ। आपे मल्ले आपणा पार किनारा, पत्तन बैठा साचा माहीआ। चप्पू नाम लाए सहारा, वञ्झ मुहाना रिहा वखाईआ। खेवट खेटा बण संसारा, साचा बेड़ा आप चलाईआ। भगत जनां हरि मां पिओ बेटा आदि जुगादि करे विहारा, जगत बिउहारी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका पत्तण रिहा वखाईआ। एका पत्तण लग्गा डेरा, कन्ढा नज़र विच ना आईआ। प्रगट होया सिँघ शेर दलेरा, दो जहान वज्जे वधाईआ। आप वसाए आपणा खेड़ा, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। कलिजुग देवे लक्ख चुरासी गेड़ा, राए धर्म दर वखाईआ। गुरमुख विरले चाउ घनेरा, जिस भरवासा रिहा वखाईआ। नाता तुट्टा मेरा तेरा, मैं तूं ना कोए समझाईआ। तूं ठाकर हउँ सेवक तेरा, चाकर चाकरी इक्क समझाईआ। तूं पातन बैठा करे मेहरा, मेहरवान सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत नईआ पार लँघाईआ। जगत नईआ देवे नौका, गुण अवगुण ना

कोए जणाइंदा। प्रभ मिलण दा अन्तिम मौका, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। चार वरन मार्ग दस्सया सौखा, जोग अभ्यास ना कोए कराइंदा। निरगुण निरवैर ना देवे धोखा, आपणा मेल आप मिलाइंदा। ना कोई पढ़े जगत पोथा, सन्धया धूप ना कोई धुखाइंदा। जल धार ना मारे कोई गोता, अमृत धार आप वहाइंदा। मल ख़ाक ना बणे कोई गधा खोता, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लाइंदा। तन कटाए ना कोई पोटा पोटा, मन का माण आप मिटाइंदा। सत्तवें अठ्ठवें जगाए ना कोई जोता, आत्म जोत डगमगाइंदा। पीर फ़कीर ना देवे कोई रोटा, पकवान आपणे पेटे पाइंदा। धन मंगे ना हरि दर कोई गहिणा गोटा, नाम धन इक्क वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी किसे घर ना रहिण देवे हुक्का लोटा, अग्नी कोइला ना कोए धुखाइंदा। दीर्घ रोग ना रक्खे वासना अंदर खोटा, सच सुच्च इक्क समझाइंदा। गुरमुख कोए ना रहे सोता, सतिगुर पूरा आप जगाइंदा। शब्द अगम्मी फड़या सोटा, लक्ख चुरासी आप समझाइंदा। शब्दी पूत शब्दी पोता, ओत पोत आप बणाइंदा। आपणे जेहा आपे होता, दूसर अवर ना कोए वखाइंदा। बिन हरि प्रेम ख़ाली दिसे लूठा, पंज तत्त कम्म किसे ना आइंदा। बिन सतिगुर पूरे मानस जन्म थोथा, आई थुड़ पूर ना कोए कराइंदा। पुरख अबिनाशी किसे ना दिसे मन्दिर मस्जिद कोठा, जन भगतां अंदर डेरा लाइंदा। गुरसिख बन जाए ना बन्नृ लंगोटा, अग्नी धूणी ना कोए तपाइंदा। जांदे पुत्तर वेख ना कोए रोवण रोता, रोवण धोवण मूल चुकाइंदा। पंडत ब्रह्मण कोए ना देवे निउता, जगत झेड़ा ना कोए मिटाइंदा। लेखा जाणे कोटन कोटिा, कोटन कोटि आपणी खेल खिलाइंदा। गुरसिखां देवे निर्मल जोता, जोती जाता मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, प्रेम पत्तण इक्क वखाइंदा। प्रेम पत्तण बैठा माही, माहीगीर खेल खिलाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे शाही, दुरमति मैल धवाइंदा। लक्ख चुरासी कट्ट जंजाला मेटे फाही, फांदी फंद ना कोए पवाइंदा। आउँदे जांदे वेखे राही, कलिजुग गेड़ा आप गढ़ाइंदा। गुरमुखां मिले चाँईं चाँईं, जुग जुग वेस धराइंदा। ग़रीब निमाणयां पकड़े बाहीं, आपणे गले लगाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाईं, दरगाह साची धाम बहाइंदा। सीस जगदीश रक्खे ठंडी छाँईं, महीना जेठ ना अग्न तपाइंदा। करे प्रेम जीवां ग्वाला बण बण गाईं, बन बिन्दरा वेख वखाइंदा। गोबिन्द मेला सहिज सुभाई, गुर गुर साजण मेल मिलाइंदा। हथ्थीं पुट्टया बूटा काही, जूठ झूठ जड़ उखड़ाइंदा। मेल मिलाया झीवर छींबे नाई, कलिजुग अन्तिम पूर कराइंदा। करन आया सच न्याँईं, शाह पातशाह रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका पत्तण एका घाट, एका पुरख पुरख समराथ, एका देवणहारा दात, एका वस्त रिहा वरताईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं पित मात, आए सरन आपणे कंठ लए लगाईआ।

लाए घाट साचे पत्तण, पाणी पाणी फोल फुलाईआ। त्रैकाल दरसी आया रक्खण, त्रै त्रै नाता दए तुड़ाईआ। गुरमुख विरोले साचा मक्खण, लक्ख चुरासी छाछ रिहा वखाईआ। लेखा जाणे उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण, दहि दिशा वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी भाण्डे दिसे सक्खण, सच वस्त ना कोए टिकाईआ। करे खेल दीप लक्खण, कुशा करोच रूप धराईआ। सलमल सान परदे ढकण, जम्बु देस करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका घर रिहा समझाईआ। एका पत्तण हरि हरि घाट, जगत घाटी आप चढ़ाइंदा। हरिजन रक्खे आपणे साथ, सगला साथी संग वखाइंदा। जन जनणी करे दासी दास, पुत्तर मात वेख वखाइंदा। लहिणा चुकाए पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां उप्पर खेल खिलाइंदा। हरिजन करे दासी दास, दास इक्क रखाइंदा। आपणे मन्दिर कर प्रकाश, पार किनारा इक्क समझाइंदा। बिन गुरमुख करे ना कोए निवास, दूसर राह ना कोए जणाइंदा। कोटन कोटि रक्खी बैठे आस, कवण वेला पुरख अबिनाशी रूप मात धराइंदा। कोटन कोटि गायन रसन स्वास, स्वास स्वासां विच समाइंदा। कोटन कोटि मल मल धूढ़ी ख़ाक, तन ख़ाकी ख़ाक वखाइंदा। कोटन कोटि उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ चढ़ रहे झाक, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। कोटन कोटि घर छड छड गए सज्जण साक, जंगल जूह उजाड़ पहाड डेरा लाइंदा। कोटन कोटि बैठे उप्पर तीर्थ ताट, सिल पूजस वक्त लँघाइंदा। कोटन कोटि खोल्ही बैठे हाट, जगत वणजारा जगत वणज वेख वखाइंदा। कोटन कोटि बस्त्र भूशन पा पा सुत्ते खाट, पलँघ रंगीला सच वखाइंदा। कोटन कोटि बण बण बैठे नाथ, कन्न पाटे नाद वजाइंदा। कोटन कोटि पढ़ पढ़ थक्के गाथ, गीता ज्ञान जगत दृढ़ाइंदा। कोटन कोटि मस्तक ला ला बैठे जगत ललाट, त्रिसूल रूप कोट वटाइंदा। कोटन कोटि चन्दन लायन मस्तक माथ, आपणा निम रूप ना कोए वकाइंदा। कोटन कोटि फसे विच ज़ात पात, हरि का रूप नज़र किसे ना आइंदा। कोटन कोटि देंदे फिरन नजात, आपणा पल्लू ना कोए छुडाइंदा। कोटन कोटि बण बण बैठे पित मात, साचा पूत ना कोए बणाइंदा। कोटन कोटि सुत्ते अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। कोटन कोटि कर कर थक्के वाट, दो जहानां पन्ध ना कोए मुकाइंदा। कोटन कोटि देवण दान हथ्थो हाथ, आत्म दान ना कोए कराइंदा। कोटन कोटि सीस झुकाउण त्रिलोकी नाथ, नाथ त्रिलोकी दरस कोए ना पाइंदा। कोटन कोटि सीस झुकाउण राम रघुनाथ, रघुपति रगबंस मेल ना कोए मिलाइंदा। कोटन कोटि कर कर बैठे आपणा घात, सूली मन्सूर हथ्थ ना कोए उठाइंदा। कोटन कोटि चढ़ चढ़ गए बरात, साचा लाड़ा नज़र किसे ना आइंदा। कोटन कोटी साक सज्जण बणाया नात, नाता बिधाता ना कोए जुड़ाइंदा। कोटन कोटी इक्क दूजे दी पुछण वात, आपणा वेला हथ्थ किसे ना आइंदा। कोटन कोटी राह तक्कण कमलापात, कँवल नैण

५५७

मुख ना किसे दिखलाइंदा। जिस जन किरपा करे आप देवे दरस दात, दे दरस तृखा मिटाइंदा। अठ्ठे पहर करे प्रभात, सन्धया रूप ना कोए समझाइंदा। पार किनारा रक्खे घाट, जिस जन आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेल आपणे दर, बंक दुआरी बंक सुहाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जिस जन फड़ाए आपणा लड़, फड़ाया पल्लू ना फिर छुडाइंदा।

पार किनारा होया जग, हरिभगत मिली वड्याईआ। मिल्या मेल उप्पर शाह रग, हरि सतिगुर दया कमाईआ। भर प्याला जाम प्याया नाम मदि, सति सरूर इक्क वखाईआ। हँस बणाया बगला बग, जग झेड़ा रहिण न पाईआ। शब्द बंधाया एका तग, साचा सगण मनाईआ। बंक दुआरा खुल्हाया अद्धविचकार भेव चुकाया। अग्गे सुणाए शब्द अनहद, नाद अनाद वजाईआ। जगत वासना विच्चों कढ्ढ, आपणे दर बहाईआ। नाता तुट्टा अन्धेरी खड्ड, साचे घर वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी ल्या सद्द, सदड़े तत्त पवण रिहा समझाईआ। आप बणाणी आपणी यद, हरिजन साचे आप धराईआ। गुरमुख भार ल्या लद्द, सीस जगदीश उठाईआ। लेखा चुक्के नाड़ी हड्ड, रक्त बूंद वेख वखाईआ। लोकमात लक्ख चुरासी विच्चों करे अड्ड, आपणे संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे होए सहाईआ। हरिजन सुहाया हरि रंग, रंग रंगीला एका माहीआ। निज घर उपजाया परमानंद, प्रीतम प्रेम प्रेम वखाईआ। नाता तुट्टा मदिरा मास गंद, घर साचे वज्जे वधाईआ। नाम धन पाया एका छन्द, सुण सुण तन मन हरा कराईआ। ख़ुशी होए बन्द बन्द, बन्दना दोए जोड़ समझाईआ। जगत पान्धी मुक्के पन्ध, आवण जावण रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सदा बख्शंद, पतित पावण पतित पुनीत लए कराईआ।

सच दुआर मिटया दुक्ख, दरदी दर्द आप गवाइंदा। जगत तृष्ना चुक्की भुक्ख, तृष्ना तृप्त आप वखाइंदा। हरिजन लेखे लग्गा साचा सति, सत अपराध सर्ब मिटाइंदा। किरपा कर अबिनाशी अचुत, चेतन्न आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरी हरि साचा खेल खिलाइंदा। हरी हरि हरि पाया, गुर सतिगुर गहर गम्भीर। मन मणका भउ चुकाया, तन मन होया ठांडा अमृत मिल्या साचा सीर। हउमे मती रोग गंवाया, दूई द्वैती कट्ट ज़ंजीर। हिजर जिगर फ़िराक वखाया, पुरख अबिनाशी बेनीज़र। हज़रत हाज़र दया कमाया, हज़ूर पीरन पीर। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, दाता दानी गुणी गहीर। गुणी गहीरा राम रम्मईआ, रूप अनूप खेल खिलाइंदा। सर्ब जीआं दा साचा सईआ, सगला संग रखाइंदा। त्रैभवण धनी चलाए एका नईआ, नईआ नाम आप रखाइंदा। चार वरन बहाए फड़ फड़ बहीआ, साचा बेड़ा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साची सेव कमाइंदा। साचा बेड़ा श्री भगवान, भगतन आप चलाईआ। निर्धन निरगुण कर परवान, माण निमाणयां होए सहाईआ। एका मन्दिर वखाए सच मकान, बंक दुआरा खोल्ह वखाईआ। एका घर होए मेहरवान, मेहरवान बेपरवाहीआ। एका बख्शे चरन ध्यान, ध्यान चरन इक्क लगाईआ। एका राग सुणाए कान, सोहँ सो शब्द पढ़ाईआ। अनडिठ रूप श्री भगवान, अनडिठड़ी कार कमाईआ। गुरमुख साचे लए पछाण, जगत जलंदे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि होए सहाईआ। सदा सहाई हरि हरि, गुरमुख गेड़ा आप चुकाइंदा। दर दरवेश बणे दर दर, दर दर आपणा वेस वटाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले फड़ फड़, एका फंदन आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन वेखे आपणे नैण, लोचण नैण आप खुल्हाईआ। चौथे पद इक्टठे बहण, हरि मेला सहिज सुभाईआ। छेवें बण छप्पर छन्न वसे सारे कहिण, सति सतिवादी बैठा आसण लाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण सरगुण चुकाए लहण देण, हरिजन लेखा लेखे पाईआ। लाड़ी मौत ना खाए डाइन, डंका काल ना कोए वजाईआ। गुरसिखां गुर सतिगुर अन्तिम आए लैण, आप आपणा दरस वखाईआ। हरिजन शब्द बबाणे उठ उठ बहिण, सतिगुर पूरा आप उठाईआ। रसना जिहवा गुण एका कहिण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा चरन सच्ची सरनाईआ।

हरि सरन मिटे रोग, चिंता सोग ना कोए जणाईआ। हरि चरन मिले जोग, साचा जोग नाम वड्याईआ। हरि चरन मेटे लोक परलोक, लोक परलोक होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरी जन हरिजन लए उपाईआ। हरि चरन साची दरगाह, दरगाह साची आप जणाइंदा। हरि चरन निथाव्याँ देवे थाँ, थान थनंतर आप सुहाइंदा। हरि चरन सदा सदा रक्खे ठंडी छाँ, अग्नी तत्त ना कोए वखाइंदा। हरि चरन लेखा चुकाए दो जहां, दो जहानां वाली आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि वेख वखाइंदा। हरि चरन सच बबाना, जन भगत दए समझाईआ। हरि चरन बिना जी ना सके कोई राजा राणा, लोकमात मिले ना किसे वड्याईआ।

हरि चरन बिन गुरसिख ना किसे पछाणा, आपणी बूझ ना किसे बुझाईआ। हरि चरन पाउणा पद निरबाणा, निरबाण पद इक्क वखाईआ। हरि चरन मिले विष्नूं भगवाना, विश्व पुराण आपणा रूप धराईआ। हरि चरन करे सदा कल्याणा, काल ग्रास ना अन्त खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन रक्खे आपणे भाणा, लक्ख चुरासी निन्दक निन्दया मुख वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दर करे परवाना, राए धर्म ना कोए वखाईआ।

पीरे घर आया पीर, जगत पीड़ दए मिटाईआ। नंदू तेरा कट्ट ज़ंजीर, अनन्द दए वखाईआ। तेरा छप्पर छन्न सुहाए बेनज़ीर, आपणी नज़र आप रखाईआ। तेरी बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणे हत्थ रखाईआ। तेरी मेटे पिछली तकसीर, लिख्या लेखा दए गंवाईआ। तेरे घर आया मुर्शद तेरी टुट्टी गंढे ज़ंजीर, कुण्डी कुण्डी नाल मिलाईआ। तेरे दर तेरे बिरछ वहावण नीर, रो रो देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुलारी दुल्हा रिहा मुकाईआ। तेरे घर लुकया पीर, मुला रूप वटाया। नाम उहदा शमस फ़कीर, जिस कुला ख़ाक रलाया। हीजड़ा बण के फिरदा रिहा अंदर बाहर चोटी चढ़ वेखे अख़ीर, चारों कुण्ट नैण उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लेखा दए समझाया। पहले साल आया पीर, पीर पीर पीर अग्गे सीस निवाइंदा। दूजी वार होया दिलगीर, असलामा अलैकम अलैकम सलाम आप सुणाइंदा। तीजी वार कट्टे भीड़, भीड़ा राह ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप जणाइंदा। उठ मुल्ला हो जा दूर, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। ग़रीब निमाणे कीते चूरो चूर, रंग रंग जगत निभाइंदा। अज देवण आया आपणी चरन धूढ़, पिछला दुःख सर्ब मिटाइंदा। काया चोली चाड़्ह के जाए रंग गूढ़, दूजी वार उतर कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। ग़रीब निमाणयां देवे सुख, दुःख दर्द रहिण ना पाईआ। मूंह दे भार डिग्गे पैण उठ, नाम सहारा इक्क रखाईआ। जिस दा घर ठग्गां चोरां ल्या लुट्ट, उजड़या खेड़ा दए वसाईआ। लगाए भाग पोतरा पुत्त, पूत सपूत होए सहाईआ। तेरी वेखे आण रुत्त, हरिसंगत संग रखाईआ। सेवा करे अबिनाशी अचुत, तेरा प्रशाद गुरसिखां दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पीरां दए समझाईआ। पीर पीरां समझावण आया, पीरां पीरी होई दूर। तेरा पन्ध मुकावण आया, तोड़े नाता जगत ग़रूर। तेरा फंद तुड़ावण आया, वड दाता सूरन सूर। तेरी झूठी कंध ढाहवण आया, तेरा आपणी हत्थीं कट्टे जूड़। भागां मंदे फिर उठावण आया, भाग लिखे आपणे हत्थ हज़ूर।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छप्पर छन्न रक्ख के जाए आपणा नूर। छप्पर छन्न सोहया बंक, बंक दुआरी आप सुहाया। ग़रीब निमाणा लाया कंठ, आप आपणी गोद बहाया। तेरा दुआरा धाम बैकुण्ठ, बेकुंठ निवासी वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सनद आपणी हथ्थीं दए लिखाया। लिख संनद करे तस्दीक, साची मोहर नाम लगाईआ। लासानी मिल्या लाशरीक, हक हकूक जणाईआ। सदा वसे तेरे नज़दीक, नाना रूप आप प्रगटाईआ। भुल ना जाणा जगत प्रीत, सच प्रीती इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, बिरध बाल आपणे रंग वखाईआ।

हरि सतिगुर एका लध्धा, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फुलाईआ। तन मन जिस आपणे चरन बध्धा, तिस साहिब वडी वड्याईआ। पार कराण झूठी हद्दा, घर आपणा बूझ बुझाईआ। झूठी माया विच्चों कढ्ढा, एका मार्ग दए वखाईआ। लोकमात मार झात घर घर देवण आया सद्दा, सेवक साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक आपणी कल धराईआ। हरि सतिगुर पाया सर्ब गुणवन्त, निरगुण दाता बेपरवाह। जिस जन बणाई बणत, सो देवे सच सलाह। सुहाग हंढाउणा एका कन्त, पुरख अबिनाशी वेख वखा। रसना गाउणा एका छंत, सोहँ शब्द रिहा पढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन होए आप सहा। सदा सहाई श्री भगवाना, हर घट आपणा खेल खिलाइंदा। भगत वछल गुण निधाना, जुगा जुगन्तर वेस वटाइंदा। हरिजन हरि हरि हरी दुआर कर परवाना, आप आपणा मेल मिलाइंदा। आवण जावण पतित पावण चुकाए काना, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपणा बाणा आप धराइंदा।

सतिगुर साची देणी भिख, गुरसिख निर्धन मंग मंगाईआ। आपणी हथ्थीं लेखा देणा लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। सुत्तयां तारदा औंदा गुरसिख, गुरमुखां देवें माण वड्याईआ। मैं निमाणी अंदर भरी विस, वख अमृत दए बणाईआ। तेरा दरस पाया जिस, सो काग हँस रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्श सच्ची सरनाईआ। गुरसिख मांगे एका वस्त, अतोट अतुट हरि वरताईआ। देवणहार दस्त बदस्त, दस्तबरदार करे सर्ब लोकाईआ। नाम ख़ुमारी देवे मस्त, अलमस्त सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनण दाता इक्क अख्वाईआ। दीनण देवे नाम सुनेहड़ा, सख़ा सिखां आप वरताइंदा। चरन चरनोदक इक्क आधारा, सांतक

सीतल सति सति कराइंदा। हरिसंगत मिल्या एका वारा, मंगत मंग पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण निमाणयां आप हो आइंदा।

हरि भगतन जुग जुग तारदा, तारनहारा इक्क भगवान। फड़ फड़ बाहों पार उतारदा, लेखा जाणे दो जहान। निरगुण सरगुण पैज संवारदा, जुगा जुगन्तर हो मेहरवान। गढ़ तोड़ झूठ हँकार दा, सच सुच्च देवे इक्क निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द जणाए धुर फ़रमान। जुग जुग भगतन उपाया, परम पुरख बेपरवाह। निरगुण जोत कर रुशनाया, सति सरूप दए वखा। आपणा पर्दा आप उठाया, आपणा भेव दए चुका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, हरि करता आप कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जन भगतां फड़ाउँदा आया पलड़ा, निरवैर आपणा खेल खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम सच सिँघासण पुरख अबिनाशी एका मलड़ा, सोभावन्त सोभा पाइंदा। सच संदेश नर नरेश सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म एका घलड़ा, सोहँ शब्द नाउँ धराइंदा। लक्ख चुरासी करे अछल अछलड़ा, वल छलधारी आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जाता पुरख बिधाता, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता पारब्रह्म, पतिपरमेश्वर वडी वड्याईआ। लेखा जाणे अलख अगोचर अगम्म, बेपरवाह भेव ना राईआ। हरिजन चढ़ाए साचे चन्न, लोकमात कर रुशनाईआ। आदि अन्त बेड़ा देवे बन्न्ह, बन्न्हणहार सहिज सुखदाईआ। जनणी वेखे साचा जन, दाई दाया रूप धराईआ। आप बहाए त्रैगुण अग्न, अग्नी तत्त आप मिटाईआ। जोती जोत वखाए मघन, महव आपणे रंग समाईआ। हरि सरनाई जो जन लग्गण, लागत लागत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए समझाईआ। हरि समझाया आत्म राम, अन्तरगत जणाइंदा। लेखा जाणे एका शाम, घट बंसरी नाम वजाइंदा। पीर पैग़म्बर सच कलाम, हरि अमाम आप सुणाइंदा। नानक जणाया सतिनाम, नाम सति आप पढ़ाइंदा। गोबिन्द खेड़ा वसया ग्राम, बंक दुआरा आप सुहाइंदा। कलिजुग मेटे अन्धेरी शाम, शाह पातशाह वेस वटाइंदा। जन भगतां देवे एका जाम, अमृत आत्म आप प्यांअदा। अन्तिम पूरा कर के जाए काम, काम कामन सर्ब गवाइंदा। नव नौ चार एका करे पीण खाण, एका रसना रस वखाइंदा। मानस मानुक्ख एका पहनण तन हंडान, एका बस्त्र आप सजाइंदा। एका मंगल मिल मिल सारे गाण, एका विद्या आप पढ़ाइंदा। एका मिले साचा काहन, एका कँवल नैण मटकाइंदा। एका सुरत संभाले आण, मूर्त अकाल खेल खिलाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि श्री भगवान, हरिजन हरि दर देवे माण, अभिमान रूप ना कोए धराइंदा।

अमृत भरया नाम भण्डारा, भर भर प्याला जाम प्याईआ। निरगुण सरगुण बणया आप वरतारा, चार वरन रिहा वरताईआ। एका रंग रंगे सर्ब संसारा, कसुम्बड़ा रंग दए मिटाईआ। एका दर खोल्हे दुआरा, दर दरबार इक्क वखाईआ। एका रूप नज़री आए हरि निरँकारा, निरँकार बेपरवाहीआ। एका शब्द नाद जैकारा, कलमा नबी इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा आप वखाईआ। सच भण्डार वड भण्डारी, आदि अन्त वरताइंदा। जुगा जुगन्तर बण संसारी, संसार खेल खिलाइंदा। निरगुण सरगुण बणया रिहा ब्योहारी, आपणा विहार आप चलाइंदा। कुदरत करता करे कारी, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। ख़ालक ख़लक कर पनिहारी, मख़लूक सेव लगाइंदा। हरिजन हरि हरि देवे नाम सच्ची सिक्दारी, साचे तख़्त बहाइंदा। मेल मिलाए एका वारी, एकँकारा अंग लगाइंदा। सतिगुर चरन जन सद बलिहारी, बलिहारी गुर चरन दर्शन पाइंदा। हउँ घोली हउँ जावां वारी, वार आपणा आप वखाइंदा। जन भगतां पैज रिहा संवारी, जुग जुग पैज रखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं इक्क आधारी, भण्डारी आपणा भण्डारा आप वरताइंदा।

५६३

★ १२ जेठ २०१८ बिक्रमी कथा सिँघ जीवन सिँघ दे घर पिण्ड मोयल जम्मू ★

सो पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्त, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण महिमा अगणत, अलख अलखणा लिख्या ना जाईआ। एकँकारा सोभावन्त, दर घर साचे सोभा पाईआ। आदि निरँजण नूर नुराना साचा कन्त, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता बणाए आपणी बणत, साचा घाड़न लए घड़ाईआ। श्री भगवान आपे गाए आपणा मंत, निष्अक्खर आप प्रगटाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर लेखा जाणे आदि अन्त, अन्त आदि खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप आप प्रगटाईआ। निरगण रूप हरि निरँकारा, अजूनी रहत आप धराइंदा। आपणी इच्छया भर भण्डारा, साची भिच्छया पूर कराइंदा। आपणा खोल्हे आप दुआरा, सचखण्ड साचा नाउँ धराइंदा। निर्मल दीआ कर उज्यारा, नूर नूराना डगमगाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, साचे तख़्त सोभा पाइंदा। हुक्मी हुक्म कर वरतारा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। शब्द अनादी सुत दुलारा, पूत सपूता एका जाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। आपणा रूप आपे धर, हरि हरि आपे वेख वखाईआ। आपे पुरख नारी नर, नर नरायण वडी वड्याईआ। आपे वसे आपणे घर, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। आपे घाड़ण लए घड़, घर घर विच लए प्रगटाईआ। लेखा जाणे थिर दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा जोत प्रकाशा थिर घर वेखे पुरख अबिनाशा, आपणा शब्द आपणा रूप धराईआ। हरि का रूप सदा अबिनाश, आदि अन्त खेल खिलाइंदा। थिर घर साचे कर प्रकाश, नूरो नूर नूर प्रगटाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण कर कर वास, निरगुण आपणी कल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा थिर दरबारा, एकँकार आप सुहाईआ। शब्दी शब्द सुत दुलारा, पूत सपूता इक्क उठाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमाना, धुरदरगाही आप जणाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां भेव खुल्हाए एका वारा, रवि ससि नूर चमकाईआ। जोती जाता हो उज्यारा, निरगुण सरगुण मेटे धाड़ा, विष्न ब्रह्मा शिव कर पसारा, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। एका हुक्म इक्क वरतारा, एका करता करनेहारा, एका कुदरत वेखे अगम्म अपारा, कादर आपणी खेल खिलाईआ। एका वस्त नाम सच सतारा, एका वण्डे सच भण्डारा, एका देवणहार संसारा, वड संसारी इक्क अख्वाईआ। एका जल थल महीअल पावे सारा, एका गगन मंडल होए उज्यारा, एका ज़िमीं अस्मान लाए अखाड़ा, नटूआ आपणा स्वांग वरताईआ। एका लक्ख चुरासी घाड़ण घड़े बण ठठयारा, एका पंज तत्त मेला करे एका दुआरा, एका मन मति बुध दए सहारा, एका जूनी जून उपाईआ। एका वण्डण वण्ड वण्डे गिरधारा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड रूप करे पसारा, ईश जीव रूप धराईआ। एका ब्रह्म होए आधारा, पारब्रह्म करे खेल आपणी वारा, नूर ज़हूर आप धराईआ। एका शब्द नाद धुन्कारा, एका गावे गावणहारा, सचखण्ड बैठा साचा माहीआ। थिर घर खोल्हे बन्द किवाड़ा, पवण पवणी दए सहारा, घट घट आपणा रूप धराईआ। लेखा जाणे लिखणहारा, विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, दर सेवक सेवा सच समझाईआ। आदि पुरख हो उज्यारा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां कर पसारा, त्रैभवण आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता बेपरवाह, आपणी कार आप कमाईआ। लक्ख चुरासी दुकान क्रिया, किरतम आपणी खेल खिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आपे फड़या, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। घट घट अंदर आपे वड़या, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता नाउँ रखाए नरायण नरया, नर हरि आपणा बल जणाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पुरख अबिनाशी आपणा अक्खर आपे पढ़या, ब्रह्मा वेता आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका

हरि, सचखण्ड दुआरा खोल्ह दर, दरवाज़ा आप सुहाइंदा। दर दरवाज़ा हरि हरि खोल्ह, लक्ख चुरासी दए जणाईआ। घट घट अंदर आपे बोल, आपणी बूझ बुझाईआ। एका कंडा तोले तोल, तोलणहारा सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगदि रहे अडोल, थिर घर आपणा आसण लाईआ। एका वस्त रक्खे कोल, जीवां जंतां आप वरताईआ। भाग लगाए उप्पर धरनी धरत धवल, धवला आपणा भार उठाईआ। लक्ख चुरासी बख्शे अमृत आत्म कँवल, नाभी कँवल आप टिपकाईआ। ब्रह्म रूप हो हो रिहा मवल, पारब्रह्म पत्त डाली आपणा आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी घाड़ण घड़, विष्न ब्रह्मा शिव एका तत्त जणाईआ। एका तत्त हरि ज्ञान, हरि हरि आपणा आप जणाइंदा। एका रूप श्री भगवान, रूप रंग आप वखाइंदा। एका मन्दिर सच मकान, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। एका वेखे मार ध्यान, दो जहानां वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुणन साचे कान, पुरख अबिनाशी राग अल्हाइंदा। लक्ख चुरासी कर प्रधान, लोकमात नाच नचाइंदा। जुगा जुगन्तर खेल करे महान, जुग चौकड़ी वण्ड वंडाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग देवे दान, जीआ दान झोली पाइंदा। करे खेल हरि महान, भेव अभेदा आप छुपाइंदा। नौ सौ चरानवे चौकड़ी जुग देवे धुर फ़रमान, गुर अवतार मात प्रगटाइंदा। भगत भगवन्त मिलाए आण, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। सन्त साजण लए पछाण, दूई द्वैती पर्दा लाइंदा। गुरमुखां बख्शे चरन ध्यान, चरन चरनोदक मुख चुआइंदा। गुरसिख नेत्र लोचण दर्शन पेखे आण, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस वटाया, अलख अगोचर अगम्म अपार। गुर गुर आपणा नाउँ धराया, शब्दी नाम बोल जैकार। जीवां जंतां मार्ग लाया, एका मार्ग एकँकार। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप समझाया, आत्म ब्रह्म कर उज्यार। पारब्रह्म हर घट वेख वखाया, डूँघी कँवरी पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। जुग जुग खेल खिलाया, सतिजुग त्रेता द्वापर उतरे पार। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, इक्क इकल्ला एकँकार। जोती जामा रूप धराया निहकलंक सच्ची सरकार। कोटन कोटी जीव वेख वखाया, आप आपणी किरपा धार। गुरमुख साचे लए जगाया, आलस निन्दरा जगत निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे चरन प्यार। चरन प्यार जगत जुग जीउण, जुग दाता आप समझाईआ। गुरमुख नाम निधान प्याउण, अंमिउँ रस आपणा आप चखाईआ। बलिहारी बलिहार गुर थिउण, थान थनंतर दए वड्याईआ। साचा बीज काया बिउण, पत्त डाली आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए समझाईआ। हरिजन हरि हरि आप जणाया, जाग्रत जोत

५६५

जगा। काया मन्दिर वेख वखाया, नौ दर खोज खुजा। माया ममता मोह मिटाया, हउमे हंगता गढ़ तुड़ा। दर दर मंगता लेखे पाया, एका वस्त दए वरता। साची संगत मेल मिलाया, सगला संग आप रखा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म ब्रह्म दए दृढ़ा। आत्म ब्रह्म काया मन्दिर, हरि साचा सच जणाईआ। मिटे अन्धेरा डूँघी कंदर, अज्ञान अन्धेर गंवाईआ। बजर कपाटी तोड़े जंदर, दूई द्वैती पर्दा दए उठाईआ। मनूआ मन बन्ने बन्दर, दहि दिश ना उठ उठ धाईआ। करे प्रकाश अन्धेरे खण्डर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वड्याईआ। हरिजन अंदर जोत प्रकाश, नूरो नूर नूर धराइंदा। मेल मिलावा पुरख अबिनाश, पुरख अबिनाशी मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे सर्ब गुणतास, गुणवन्ता गुण वखाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, जिस जन आपणे रंग रंगाइंदा। आवण जावण करे बन्द खलास, जम की फाँसी फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। जम की फाँसी तोड़े फंद, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। नाम डोरी देवे बन्न, बन्नणहार बेपरवाहीआ। एका राग सुणाए कन्न, शब्दी नाद वजाईआ। भरम भुलेखा कढ्ढे जन, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। करे प्रकाश काया तन, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, साखीआत रूप वटाईआ। दिस ना

आए जीव अन्न, नेत्र दिब ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाईआ। जाग्रत जोत जगाए जगदीशर, ईश जीव उठाया। लेखा जाणे भगत तपीशर, तपो बन ना कोए तपाया। मेल मिलाया हरि रखीशर, रेख लिखी दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाया। साचा मन्त्र नाम जन एक, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। आदि जुगादि करे बुध बबेक, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। जूठ झूठ ना करे भेख, सच सुच्च वज्जे वधाईआ। निज घर बैठा रिहा वेख, निज आत्म ताड़ी लाईआ। आदि जुगादि रहे हमेश, सतिगुर पूरा सो अख्वाईआ। मुछ दाढ़ी ना रक्खे केस, सीस जगदीश ना मूंड मुंडाईआ। आत्म ब्रह्म दए आदेश, पारब्रह्म सच्ची जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरीजन हरि हरि लए समझाईआ। हरी हरि हरि हरि पेखणा, पेखत दीन दयाल। निज आत्म अंदर वेखणा, काया बैठा सच्ची धर्मसाल। देवे नाम शब्द संदेशणा, अनहद वजाए ताल। जोती जोत हो प्रवेशणा, जल्वा नूर दए जमाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन साचे लए भाल। जुग जुग हरिजन भालदा, निरगुण सरगुण वेख विचार। लेखा जाणे शाह कंगाल दा, ऊँच नीच दए आधार। चारे वरनां सुरत संभालदा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र

वैश करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण निरगुण लए अवतार। निरगुण गुर निरगुण अवतारा, शाह पातशाह निरगुण अख्वाईआ। निरगुण शाह निरगुण सिक्दारा, निरगुण शहिनशाह वडी वड्याईआ। निरगुण भगत सति भण्डारा, निरगुण सन्त साजण लए मिलाईआ। निरगुण गुरमुख करे उज्यारा, निरगुण गुरसिख लए तराईआ। निरगुण लेखा जाणे आपणी वारा, थित वार ना कोए वखाईआ। निरगुण भेव ना पाए वेद चारा, पुराण अठारां रहे जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव वड देवी देव, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भगत भगवन्त दए जणाईआ। भगत भगवन्त सदा अभेद, भेव ना कोए रखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण लिख लिख थक्के लेख, लेखा लेख ना पूर कराईआ। कलिजुग अन्तिम नर हरि नरायण हरिजन साचे लए वेख, रूप अनूप आप धराईआ। मेल मिलावा दस दस्मेश, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर हरिजन साचा संग निभाईआ।

बारिश होए ना मिटे प्यास, करोड़ छिआनवें रिहा कुरलाईआ। मेघ मेघला दासी दास, बैठे सीस झुकाईआ। राह तक्के पृथ्मी आकाश, नेत्र नैण उठाईआ। जिस जन अंदर सतिगुर पूरा करे वास, तिस तृष्ना जगत रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेघ दए समझाईआ। साचा मेघ अमृत धार, गुर सतिगुर आप बरसाइंदा। जिस जन किरपा करे अपार, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाइंदा। मिन्ट सकिंट ना करे विचार, घंटे पहर ना कोए रखाइंदा। छिन्न भंगर जाए तार, जिस आपणा दरस वखाइंदा। अज्ज मींह वरसे जे मूसला धार, घंटे दो घंटे अंदर बाहर पिण्ड विच्चों आप कढाइंदा। सुक्की धरती रोवे फेर ज़ारो ज़ार, जगत तपश ना कोए बुझाइंदा। उत्ते हेठे कूड़े कुड़यार, साचा धर्म ना कोए कमाइंदा। नारी नर होया विभचार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार सर्ब सताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत तृष्ना तृष्ना विच भराइंदा। लग्गी अग्ग काया तन, मेघ मींह ना सके बुझाईआ। सतिगुर पूरा जिस दरस देवे उप्पर शाह रग, तिस तृष्ना तृप्त कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेघ मेघ आप बरसाईआ। मेघ वरसाए मेघ नाथ, मेघन रूप वटाया। लख लख घल्ले जगत पात, आपणा लिख्या ना कोए वखाया। काया अंदर अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाया। पट्टी पढ़ी ना किसे जमात, हरफ़ अलिफ़ नज़र ना आया। नुकता नून ना मिली सौगात, हमज़ा हवस ना कोए मिटाया। जो जन अंदर वेखे मार झात, हरि मन्दिर सतिगुर एका मेघ

रिहा बरसाया। कलिजुग अग्नी बुझे आग, दूजी तपश ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोइल एका रंग रंगाइंदा। मोइल होए सांतक सति, जो जन आए सरनाईआ। जिस मेल मिलाए कमलापति, तिस अन्तर मेघ बरसाईआ। तिस उब्बले बहत्तर नाड़ ना रत, रती रत ना कोए सुकाईआ। चारों कुण्ट वेखे काली घट, जगत अन्धेरा छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घनघोर बादल रिहा वखाईआ। घनघोर बादल पाए शोर, अनहद सेवा नाल कमाईआ। गुरमुख आत्म नाचे मोर, पंखी पंखड़ीआं आप रखाईआ। पवण ठंडी पाए ज़ोर, उनन्जा पवण आप हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेघ गुरसिख काया अंदर आप बरसाईआ। अमृत मेघ बरसे सांतक सति, बूंदा बांदी आप लगाईआ। जिस जन देवे धीरज जत, सो जन साचा बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अग्नी कलिजुग रिहा जलाईआ। कलिजुग आपणा तपे अंग्यार, त्रैगुण तपाया। पंज तत्त बणा भठयाल, जोती लम्बू एका लाया। नव नौ चार होया बेहाल, राज राजान रिहा कुरलाया। जिस जन उप्पर होए आप मेहरवान, तिस जन साचा मेघ दए बरसाया। जल मीन करे परवान, मीन जल होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत मेघ देवे बरस, गुरसिखां हिरदे अंदर वस, जगत तपश रहिण ना पाया।

५६८

★ १२ जेठ २०१८ बिक्रमी देवा सिंघ दे घर पिण्ड धंगाली जम्मू ★

दस अठ्ठ हरि हरि धार, लोकमात हरि चलाइंदा। अठ्ठ दस कर प्यार, दस अठ्ठ खेल खिलाइंदा। दस अठ्ठ अगम्म अपार, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। अठ्ठ दस इक्क जैकार, दर घर साचे आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आप सुहाइंदा। अठ्ठ दस खेल अवल्ला, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। एकँकारा इक्क इकल्ला, दूजी कुदरत वेख वखाईआ। सच सिँघासण एका मल्ला, चौथे पद दए वड्याईआ। हरि शब्द संदेश एका घल्ला, छेवें छे घर फोले फोल फुलाईआ। सत्तवें जोती शब्दी आपे रला, नूर नुराना डगमगाईआ। अठ्ठां तत्तां फड़ाया पल्ला, मन मति बुध आपणा बन्धन पाईआ। नौ दुआर मचाए हल्ला, नौ खण्ड पृथमी वेख वखाईआ। दसवें फड़ाए आपणा पल्ला, दस्म दुआरी कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस अठ्ठ वेख वखाईआ। दस्म दुआरी हरि निरँकारा, एका रंग समाइंदा। नौ नौ करे ख्वारा, आदि जुगादि वेस वटाइंदा। अठ्ठां तत्तां दए सहारा, आप आपणा रंग रंगाइंदा। सति सतिवादी वसणहारा सचखण्ड सच दरबारा, छेवें छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। पंचम नाद शब्द धुन्कारा, चार कुण्ट

आप सुणाइंदा। तिन्नां लोकां हो उज्यारा, दो जहानां खेल खिलाइंदा। इक्क इकल्ला करनेहारा, करता पुरख आपणा नाउँ धराइंदा। दोए रूप प्रगट हो विच संसारा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। त्रैगुण माया रंग वेखे आप निरँकारा, लक्ख चुरासी भेव चुकाइंदा। चार वरनां करे ख़बरदारा, पंचम मेला आप मिलाइंदा। अठवें शास्त्र सिमरत वसे बाहरा, सति सन्तोख सति सतिवादी आपणा ज्ञान दृढ़ाइंदा। अठ्ठां तत्तां वेख किनारा, नौ निध आपणा मूल चुकाइंदा। दस्म दुआरी सच अखाड़ा, हरि निरँकारा आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अठ्ठ दस आपणा भेव चुकाइंदा । दस अठ्ठ हरि मेल मेलणा, मेलणहार आप अख्वाइंदा। दस दुआरे भरे सूरज चन्ना, अठ्ठ तत्त ना कोए उपाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पुरख अबिनाशी घट घट वासी एकँकारा हरि निरँकारा दो जहानां फिरे नसया, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस अठ्ठ आपणा रंग रंगाइंदा। दस्म दुआरी हरि हरि रंग, सो पुरख निरँजण आप रंगाया। गुरमुख मेल सूरा सरबंग, दर साचे लए बहाया। नादी नाद वजाए मृदंग, तार सतार हिलाया। जोती नूर चढ़ाए चन्द, चन्द चांदनी आपणे विच छुपाया। गीत सुणाए सुहागी छन्द, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाया। हँ ब्रह्म वखाए परमानंद, अनन्द अनन्द आपणा रूप आप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्म दुआरी वेख वखाया। दस्म दुआरी गुरसिख मन्दिर, हरि सतिगुर वेख वखाईआ। अठ्ठ तत्त वसया डूँघी कंदर, आप आपणा पर्दा पाईआ। कोटन कोटि लभ्भणे फिरदे गोरख मछन्दर, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। अज्ञान अन्धेर ना तोड़े कोए जंदर, बजर कपाट ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। दस्म दुआरी नाता जोड़, हरिजन हरि हरि मेल मिलाइंदा। धुरदरगाही लोकमात आया दौड़, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। दो जहानां लाया एका पौड़, एका डण्डा हथ्थ रखाइंदा। लक्ख चुरासी वेखे रीठा मिट्ठा कौड़, जीव जंत वेख वखाइंदा। गुरमुख विरले गुर गुर रूप जाए बौहड़, रूप अनूप आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म पर्दा आप उठाइंदा। आत्म पर्दा गुरसिख जाए उठ, हरि सतिगुर आप उठाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रिहा तुठ्ठ, भिन्नड़ी रैण नाल मिलाईआ। पंज तत्त लेखे लाए काया बुत, मन मति बुध दए समझाईआ। सदा बसन्ती रक्खे रुत्त, चेतन्न चेत रूप जगाईआ। हरिजन बणाए साचे सुत्त, आपे बणे पिता माईआ। अमृत आत्म रस देवे घुट्ट, भर प्याला जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन दस्म दुआरी दए बहाईआ। हरिजन तेरा दस्म दुआरा, सो पुरख निरँजण आप खुल्लाइंदा । तेरे अंदर बाहर आवे वारो वारा, आउँदा जांदा दिस ना आइंदा। हरिजन रहे ना मात कुँवारा,

गुर सतिगुर आप प्रनाइंदा। घर वखाए उच्च मनारा, अटल महल्ल सुहाइंदा। तख्त बैठ एकँकारा, एका रंग जणाइंदा। जगत मेटे धूंआँधारा, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। निर्मल दीआ कर उज्यारा, जोती जोत डगमगाइंदा। अनहद शब्द सच्ची धुन्कारा, घर मंगल आप सुणाइंदा। जिस जन रातीं सुत्तयां देवे दरस दीदारा, दस्म दुआरा मेल मिलाइंदा। टेढी बंक ना फसे हरि करतारा, ईड़ा पिंगल अद्धविचकार ना कोए रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे निमस्कारा, करोड़ तेतीसा सीस झुकाइंदा। गुरसिख तेरा ठांडा दरबारा, गुर सतिगुर आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्म दुआरी खेल खिलाइंदा। दस्म दुआरी साचा रूप, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। होए प्रकाश चारे कूट, दहि दिशा वज्जे वधाईआ। नाता तुट्टे जूठ झूठ, सच सुच्च करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्म दुआरी दर खुल्हाईआ। दस्म दुआरी खुल्हिआ दर, गुर सतिगुर सज्जण पाया। पुरख अबिनाशी मिल्या वर, ब्रह्म पारब्रह्म लए प्रनाया। नारी नरायण फड़ाए लड़, एका पल्लू हथ्थ रखाया। साचे मन्दिर जाए चढ़, सच सिँघासण सोभा पाया। आपणी किरपा देवे कर, गुरमुख सज्जण नाल मिलाया। अमृत नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत लेखा दए चुकाया। जगत लेखा अठसठ नीर, तीर्थ अठाठ वेख वखाईआ। बारां प्रविशटे घत वहीर, नौ नौ आया फेरा पाईआ। जिहड़ी गंगा कट्टदी रही ज़ंजीर, आपणे चरनां नाल मिलाईआ। जिहड़ी जमना देंदी रही सीर, आपणे पेटे रिहा रखाईआ। जिहड़ी गोदावरी कट्टदी रही भीड़, आपणा बन्धन पाईआ। जिहड़ी सुरस्ती त्रबैणी रही चीर, आपणी नैणी वेख लए प्रनाईआ। चारों कुण्ट घत्त वहीर, हरि वेखे थाउँ थाँईंआ। उच्चे टिल्ले पर्बत खिच्चे नीर, कैलाश पर्बत दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठसठ लेखा दए मुकाईआ। अठसठ लेखा मुक्या, तीर्थ तट ना कोए वड्याईआ। सिँघ शेर एका बुक्कया, जंगल जूह उजाड़ पहाड पई दुहाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम ढुक्कया, लक्ख चुरासी नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सच सुच्च बैठा लुकया, जूठ झूठ होई रुशनाईआ। माया ममता भार सभ ने चुकया, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। साचा अमृत थाँ थाँ सुक्कया, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ । कलिजुग अन्तिम पारब्रह्म परमेश्वर एका उठया, बलधारी बल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप वटाईआ । अठसठ तीर्थ करया बन्द, बन्दीख़ाना हरि जणाइंदा। जो जन रसना सोहँ गाए छन्द, परमानंद आप जणाइंदा। ख़ुशी करे बन्द बन्द, साचा संग आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सरोवर इक्क वखाइंदा। सच सरोवर साचा माण, हरि सतिगुर आप दवाईआ । जिस दुआरे चरन टिकाए आण, सो दुआरा

लए प्रगटाईआ। अठसठ साल गुण ना जणाए गुण निधान, गुणवन्ता गुण छुपाईआ। अठानवें साल होए प्रधान, अमृत सोमा दए फुटाईआ। चार वरन करन अशनान, चल चल आवण वाहो दाहीआ। जो एका चुल करे पाण, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। साख्यात रूप नज़र आए भगवान, साचे तख्त साचा माहीआ। जो इष्ट देव मन्नदे रहे कृष्ना काहन, तिस कृष्ना रूप वखाईआ। जो सीस झुकाउँदे रहे रम्मईआ राम, तिस राम रूप दरसाईआ। जो नानक गोबिन्द करदे रहे प्रनाम, तिस नानक गोबिन्द रूप दए वखाईआ। जो ईसा मूसा सुणदे रहे कलाम, तिस मुर्शद मुरीद आपणा रूप जणाईआ। जो देंदे रहे सद पैग़ाम, पैग़म्बर आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा दए वड्याईआ। सच दुआरा सोहे भूमी, हरि भूमिका आप सुहाइंदा। चल के आउँण एशीअन रोमी, यूरीपीअन सीस झुकाइंदा। निउँ निउँ निमस्कार करे चीनी, नेत्र नैण सर्ब मीटाइंदा। पुरख अबिनाशी आपणी वण्ड आपे कीनी, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। जो सजदा करदे रहे मक्का मदीनी, साचा काअबा इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप वड्यांअदा। सच दुआरा सुहाए तट, हरि गोबिन्द घाट बणाईआ। निरगुण निरवैर हो प्रगट, प्रगट अपणी खेल खिलाईआ। अमृत सरोवर देवे झट, सर अमृत आप भराईआ। चार वरनां मेटे द्वैती फट, तीजा लोयण दए खुल्हाईआ। ऊँचां नीचां वखाए एका हट्ट, राउ रंक वणज कराईआ। चारों कुण्ट बह बह सोहँ शब्द रसना लैण रट, मन का मणका आप भुआईआ। पुरख अबिनाशी रूप वखाए आपणा घट घट, घट बैठा डेरा लाईआ। करे खेल सदा समरथ, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। आप बणाए तीर्थ तट, रूप अनूप आप दरसाईआ। दर दुआर किसे ना तुट्टे धीरज जत, नारी नर ना कोए तकाईआ। नारी वेखे एका कमलापति, दुहागन रूप ना कोए धराईआ। आत्म धीरज साचा सति, सतिवादी दए वखाईआ। काम क्रोध ना उब्बले रत, माया ममता ना होए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर दए वड्याईआ। साचे दर हरि हरि मन्दिर आप उपा, चार कुण्ट जणाईआ। सो पुरख निरँजण दया कमा, आपणा रूप आप धराईआ। हरि पुरख निरँजण वेस वटा, आपणी कल आप वखाईआ। एकँकारा बल रखा, सूरबीर नाउँ जणाईआ। आदि निरँजण जोत जगा, नूर नुराना डगमगाईआ। अबिनाशी करता सेज सुहा, आपणा जोबन रिहा हंढाईआ। श्री भगवान आपणी पकड़े आपे बांह, सगला संग आप निभाईआ। पारब्रह्म आपे जाणे आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप अख्वाईआ। अगम्म अगम्मड़ा वसे साचे थाँ, सचखण्ड दुआरा बणत बणाईआ। थिर घर घाड़न लए घड़ा, घर घर विच लए प्रगटाईआ। साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाह, आपणी इच्छया आप वखाईआ। आपणी इच्छया विष्नूं झोली देवे पा, रूप अनूप आप अख्वाईआ। विष्नूं

५७१

बैठा सीस झुका, दोए जोड़ रिहा सरनाईआ। तूं दाता बेपरवाह, हउँ दरवेश भिखक भिखारी एका मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाईआ। विष्नूं मंगे एका मंग, हरि अग्गे सीस झुकाया। तूं साहिब सूरा सरबंग, तेरा दर मोहे भाया। एका बख्श आपणा अनन्द, अनन्द अनन्द अनन्द विच रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर सच्चा शहिनशाहया। मेरा अनन्द साची धार, चरन कँवल सच्ची वखाईआ। विच्चों फुट्टे सच प्यार, अमृत रूप इक्क रखाईआ। तेरे अंदर धरे निरँकार, तेरा भण्डार दए भराईआ। साचा कँवल कर त्यार, आपणी हथ्थीं बन्द रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अमोलक इक्क जणाईआ। वस्त अमोलक अमृत रस, सो पुरख निरँजण आप जणाया। विष्नूं झोली पाया हस्स हस्स, निउँ निउँ सीस जगदीश झुकाया। मेरी पूरी होई आस, तृष्ना होर ना कोए वखाया। हउँ सेवक बणया दास, तेरी साची सेव कमाया। तेरा नूर मेरा प्रकाश, मेरी जोत तेरा तेज सवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रस दए चखाया। अमृत रस हरि हरि चक्खणा, विष्नूं धार हरि वहाईआ। तेरा भण्डार ना होए सखणा, पारब्रह्म आप रखाईआ। तेरे अंदर विरोले मक्खणा, अमृत रिड़के सच्चा शहिनशाहीआ। कँवल रूप होए परदक्खणा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म वेता लए उपाईआ। ब्रह्म वेता उपाया, कँवल कँवला कर उज्यार। विष्नूं वेख हरि जस गाया, तेरी महिमा अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप निरँकार। ब्रह्मा उतपत पारब्रह्म कर कर, सुत सुत साचा वेख वखाईआ। एका देवे साचा वर, वर दाता इक्क अख्वाईआ। इक्क खुल्हाए हरि हरि दर, दरवाज़ा आप जणाईआ। बणत बणाई घाड़ण घड़ घड़, मात पित ना कोए वखाईआ। आपणी डोरी बध्धा फड़ फड़, एका बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दए दरसाईआ। आपणा रंग हरि दरसाया, निरगुण जोत नूर उज्यारा। ब्रह्मे उठ उठ दर्शन पाया, पाया पुरख अगम्म अपारा। विष्नूं वेख वेख ख़ुशी मनाया, घर मिल्या मीत मुरारा। सच भण्डार हरि वरताया, अमृत ठंडा ठारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबारा। ब्रह्मे लग्गी ब्रह्म प्यास, चार कुण्ट वेख वखाईआ। कोई वस्त ना दिसे पास, नेत्र नैण नज़र कोए ना आईआ। ना कोई पृथमी ना आकाश, गगन मंडल ना कोए वखाईआ। ना कोई मंडल ना कोई रास, गोपी काहन ना कोए नचाईआ। इक्क इकल्ला होया निरास, आसा आसा विच प्रगटाईआ। पुरख अबिनाशी मेरी पूरी कर आस, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। मैं सेवक तेरा दास, बाली बुध रखाईआ। तेरा नूर मेरा प्रकाश, मेरी जोत तेरे विच समाईआ।

५७२

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका वर, तेरी प्यास दए बुझाईआ। तेरी प्यास हरि बुझाए, चरन चरन नाल रगड़ाईआ। अमृत विच्चों धार वहाए, तेरे सीस टिकाईआ। तेरे सीस मुख खुल्हाए, मुख मुखड़ा दए वड्याईआ। बूंद बूंदी आप टपकाए, झिरना झिरना आप वहाईआ। रसक रसक तेरे अंदर जाए, तेरी प्यास दए मिटाईआ। साची वस्त इक्क वखाए, अमृत अंमिउँ रस आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा अमृत आप बणाईआ। साचा अमृत चरन रगड़, आपणे विच्चों आप प्रगटाया। आपे मुख लगाया गरुड़, लोकमात पुचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा एका जल वखाया। विष्नूं ब्रह्मा पी अमृत रस, हरि निउँ निउँ निमस्कारया। दासी दास होए वस, चरन कँवल जायण बलिहारया। पारब्रह्म साडी पूरी कीती आस, तृष्ना रोग भुक्ख निवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कौण सोहे तेरा दर, जिस घर अमृत आप बणा ल्या। अमृत बणाया आपणे घर, विष्न ब्रह्मा तेरी झोली पाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी देवे एका वर, लोकमात करे कुड़माईआ। तीर्थ तट बणाए सर, गुर अवतार सेव लगाईआ। जल धार वहाए उप्पर थल, जल थल महीअल आप समाईआ। भगत भगवन्त लए फड़, साचे सन्तां सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत आपणी वण्ड वंडाईआ। अमृत वण्ड विच ब्रह्मण्ड, जेरज अंड आप धराइंदा। वेख वखाए नौ खण्ड, दीप सत्त मेल मिलाइंदा। जुग चौकड़ी एका देवे आपणी गंढ, लोकमात ना कोए खुल्हाइंदा। बिन हरि भगत ना पावे किसे ठंड, लक्ख चुरासी अग्न जलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अमृत लोकमात समाइंदा। चार जुग अमृत तीर्थ तट, जगत किनारे आप भुआईआ। क्षत्री ब्रह्मण वेचण हट्ट, हट्ट जीवां जंतां ठगौरी पाईआ। गल जनेऊ पा पा गट, कन्नां नाल लटकाईआ। ग्रन्थी पन्थी पैसे लैण वट, सरोवर बैठे आसण लाईआ। माया ममता रहे चट्ट, वख अमृत रूप बणाईआ। दूई द्वैती लग्गा फट्ट, धीरज धीर ना कोए धराईआ। धीआं भैणां लथ्थे पत्त, जगत सरोवर दए दुहाईआ। नक्कों सुहाग लथ्थी नथ्थ, गंगा गोदावरी रो रो नीर वहाईआ। कलिजुग जीवां लाही मेरी पत, नारी पुरष नंगे रहे तारीआं लाईआ। मेरे हथ्थ चूड़ा दिसे ना पुरख समरथ, रविदास चमारा एका वार गया लुट्ट, दूसर वार परत मुड़ ना आईआ। मैं आपणा दम बैठी घुट्ट, उच्ची साह ना लैंदी मेरे नैणां शर्म शरमाईआ। कलिजुग जीव मेरा जोबन गए लुट्ट, खुली मेंढी चारों कुण्ट दयाँ दुहाईआ। मेरे कन्त सुहागी पुरख अकाल एका वार उठ, मैं बैठी राह तकाईआ। मेरी वढ्ढी गई नक्क गुत्त, कालिख टिक्का मुख लग्गी झूठी शाहीआ। लग्गे करन उप्पर अद्ध तेरे सुत जो बैठे सन्त रूप वटाईआ। दिन दिहाढ़े पई लुट्ट, लुट्टी जाए जगत लोकाईआ। तीर्थ

तट्टां भाग गया निखुट्ट, तेरा भाग ना कोए कढ्ढाईआ। तूं चढ़ के बैठा केहड़ी चोट, तेरी चोटी मोहे नज़र ना आईआ। मैं वास्ता पा पा थक्की अग्गे शंकर जो बन्न्ह बन्न्ह बैठा लंगोट, हथ्थ त्रिसूल उठाईआ। मैं विष्नूं अग्गे दस्सया आपणा ओत पोत, आपणी गंढु आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दर एका मंग मंगाईआ। एका मंग अमृत धार, नव नौ चार झोली डाहीआ। किरपा कर अगम्म अपार, दर दुआर तेरे चल आईआ। मैं सुणया तूं सुणदा सच पुकार, अभुल भुल कदे ना जाईआ। तेरा भाणा वरते विच संसार, भाणे विच सर्ब लोकाईआ। तूं लेख लिखाया वेद चार, ब्रह्मा कर पढ़ाईआ। पुराण अठारां दिता आधार, वेद व्यासा इक्क समझाईआ। गोबिन्द रखाया इक्क बलकार, पूत सपूता जाईआ। लिख्या लेख अपर अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लक्ख चुरासी होए ख्वार, कलिजुग अन्त अन्धेरा छाईआ। माता पुत्तर करे प्यार, विभचार रूप वटाईआ। गुरसिख गुर ना करे प्यार, बैठण मुख भवाईआ। सन्त मिले ना कन्त भतार, साची सेज ना कोए सुहाईआ। भगत मिलणा भगवन्त यार, सत्थर यार ना कोए हंढाईआ। गुरमुख सोहे ना कोए गुर दरबार, घर घर धूंणीआँ रहे ताईआ। गुरसिख गुर चरन ना मंगे धूढ़ छार, माया ममता मोह हल्काईआ। पुरख अबिनाशी पावे सार, आदि अन्त वडी वड्याईआ। आपणी इच्छया आपणा बल आपे धार, अछल अछल खेल खिलाईआ। महांबली उतरे आपणी वार, नानक रसना जिहवा गया गाईआ। निहकलंक प्रगट होवे विच संसार, नूर नूर आप धराईआ। शब्द डंका वज्जे कराए ख़बरदार, दो जहानां आप जगाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया मारे मार, नौ खण्ड पृथमी फेरा पाईआ। गंगा गोदावरी सुरस्ती जमना विहाए एका वार, हरिजन साचे नाल मिलाईआ। त्रबैणी चरन छुहाए एकँकार, रविदास चमारा सेव कमाईआ। गोदावरी बख्शे चरन छार, गोबिन्द आपणा चरन टिकाईआ। अठसठ नीर आपणे खिच्च ल्याए सच दुआर, सति कोए रहिण ना पाईआ। अमृत भर हरि भण्डार, चारों कुण्ट आपणा राह वखाईआ। गुरसिख वेखे विछड़े यार, चार जुग दा पूर्ब लहिणा आप चुकाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना करे विचार, ऊँचां नीचां राउ रंकां एका घर वखाईआ। साचा अमृत कर त्यार, आपणी हथ्थीं आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आउण चल भिखार, निउँ निउँ हरि हरि अग्गे सीस झुकाईआ। एका बूंद बख्श ठंडी ठार, चार जुग दी अग्न बुझाईआ। अग्गों बोले हरि निरँकार, दे मति रिहा समझाईआ। पहलां रक्खया गुरसिखां दा वार, अपणी हथ्थीं दए प्याईआ। फिर ब्रह्मा विष्न शिव तेरी आत्म दए सहार, आपणे चरन कँवल समझाईआ। आदि पुरख अन्त आपणा खेल करे करतार, भगवन आपणी दया कमाईआ। जिस अमृत रस मिल्या एका वार, जन्म मरन रहिण ना पाईआ। नाता तुट्टे सर्ब संसार, सतिगुर मिल्या सच्चा माहीआ। गुरमुख उच्ची कूक कूक करे पुकार, कलिजुग

जीवां दए समझाईआ। अन्तिम आया बख्शणहार, बख्शश आपणे हथ्थ रखाईआ। बाल अञ्याणे जाए तार, गुरसिख आपणी गोद उठाईआ। राखे पति रक्खणहार, प्रेम पटोला इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा अमृत आप प्रगटाईआ। अमृत आत्म हरिजन दीआ, देवणहार गोपाल। नाता तुट्टे साढे तिन्न हथ्थ सीआ, जन्म मरन ना होए ज़वाल। नाम निधाना जिस जन पीआ, पुरख अबिनाशी करे प्रितपाल। गुरसिखां प्याए कर कर आपणा हीआ, गुरमुख साचे लोकमात विच्चों भाल। निर्मल करे जीआ, नाता तोड़ जगत जंजाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख आप आपणे जिहा कीआ, पूरन जोत जोत जगाई बेमिसाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिखां बणया मात दलाल। बणया दलाल करया मेला, विछड़िआं मेल मिलाईआ। एका रंग रंगाए गुरु गुर चेला, चेला गुर रंग वटाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म मिल्या सज्जण सुहेला, वाह वाह घर वजदी रहे वधाईआ। करे खेल इक्क अकेला, अकल कल आपणा रूप वटाईआ । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन सुहाए तेरा वेला, आपणा वेला वक्त ना कोए रखाईआ।

★ १३ जेठ २०१८ बिक्रमी फग्गा सिँघ दे गृह धिंगाली जम्मू ★

जीव जगत जिंोबन जवानी, लोकमात हंढाईआ। वरन बरन राउ रंक दिसे फ़ानी, अन्त कोए रहिण ना पाईआ। थिर ना रहे राजा राणी, रईयत रंग ना कोए वखाईआ। जुग जुग चलदी रहे कहाणी, चार कुण्ट वड्याईआ। गुरमुख विरले मिले नाम निशानी, हरि सतिगुर आप दवाईआ। शब्द जणाए साची बाणी, एका अक्खर कर पढ़ाईआ। भेव ना पाए कोई विदवानी, विद्या विद्त सार ना राईआ। भगत वछल गुण निधानी, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। हरिजन बख्शे चरन ध्यानी, कँवल चरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। जीव जगत जोबन रंग, लोकमात हंढाइंदा। जगत सेजा वेख पलँघ, झूठे बस्त्र आसण लाइंदा। तम्बुर सतार वजाए मृदंग, प्रीत गीत गाइंदा। भैणां भईआ गाए छन्द, साक सज्जण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। जगत जोबन जीव जंत, लोकमात हंढाईआ। नाता जुड़या नारी कन्त, कन्त नार ख़ुशी मनाईआ। जगत वासना बणाउँदे रहे बणत, छप्पर छन्न छुहाईआ। आपणा वेला ना कोई जाणाए अन्त, अन्त कौण होए सहाईआ। मिल मिल सखीआं गाउँदे रहे छन्द, जीवण ढोला कोए ना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप रखाईआ।

जगत जोबन मस्त अलमस्त, लक्ख चुरासी खेल खिलाइंदा। रूप रंग कीट हस्त, जून अजूनी आप वखाइंदा। भूशन तन पहनाए सुहाए बसत, जगत शृंगार कराइंदा। खाणा पीणा पहनण देवे रस्त, जगत धरवास धराइंदा। साजण मीत मिलाए दस्त, एका दूजा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत खेल आप खिलाइंदा। जगत जोबन जोरू ज़र, चार कुण्ट वड्याईआ। घर घर ख़ुशीआं रहे कर, जगत वासना संग मिलाईआ। एका भुलया अबिनाशी हरि, जिस जन बणत बणाईआ। निरभउ चुक्कया भय डर, भयानक आपणा मुख छुपाईआ। जीव जगत आपणी करनी रहे कर, साची किरत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत बन्धन एका पाईआ। जगत बन्धन जगत कुटम्ब, कूड़ कुड़यारा खेल खिलाया। नाता बिधाता पाए बन्द, बन्दी बन्द ना कोए तुड़ाया। हस्स हस्स मेला बत्ती दन्द, नेत्र नैणां दर्शन पाया। कोए ना गाए सुहागी छन्द, हिरदे हरि ना कोए वसाया। कोई उपजे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज कोए धराया। पारब्रह्म प्रभ वण्डी वण्ड, लक्ख चुरासी खेल खिलाया, मानस जन्म हो बख्शिंद, आपणा भेव चुकाया। धर धर नूर निरगुण चन्द, साचा चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वखाया। जगत जोबन चन्द चकोर, एका रंग समाईआ। झूठा नाता बद्धी डोर, माया ममता संग रखाईआ। करे वास अन्ध घोर, प्रकाश ना कोए धराईआ। अंदर रक्खे पंज चोर, दिवस रैण लुट्ट लुट्ट रहे खाईआ। कोई ना सके मात होड़, आपणा बल ना कोए वखाईआ। जगत वासना रक्खी लोड़, जगत जुगत करन कुड़माईआ। बिन स्वांग वजायण ढोल, चार कुण्ट शनवाईआ। आपणा मन्दिर ना सके कोए फोल, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। कौण वस्त जन मिली अनतोल, तेरे हट्ट रखाईआ। कौण कंडे तोले तोल, धड़ी सेर ना वट्टा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवण जगत दए वड्याईआ। जीवण जगत जोबन मलाह, लोकमात बेड़ा रिहा चलाईआ। रूप रंग दए सालाह, काम कामना खेल खिलाईआ। मापिआं ख़ुशी ख़ुशी रख्या एका नाँ, नाँ लै लै रहे जस गाईआ। कोई नरायण कोई राम कहे मां, कोई कृष्न अवाज़ लगाईआ। कोई नानक सद्दा देवे थाँ थाँ, कोई गोबिन्द रिहा सुणाईआ। बिन गोबिन्द ख़ाली दिसण सारे थाँ, झूठी ख़ाक नज़री आईआ। पंज तत्त दिसे निशां, हड्ड मास नाड़ी रत जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत तन वेख वखाईआ। जगत जीव जोबन आस, जुग जुग इक्क रखाइंदा। आपणा नूर कर प्रकाश, चारों कुण्ट चमकाइंदा। शाह पातशाह बण बण ग़रीब निमाणयां करे दासी दास, दास रूप ना आप वटाइंदा। ग़रीब निमाणा बण बण बणया रहे निरास, आसा पूर ना कोए कराइंदा। लेखा गिण गिण थक्के पवण स्वास, लेखा लेख

ना कोए रखाइंदा। नेत्र उठ उठ तक्के पृथ्मी आकाश, गगन मंडल वेख वखाइंदा। सूरज चन्न वेख प्रकाश, आपणा जगत काज रचाइंदा। रैण अन्धेरी अमावस मास, सोया वक्त गवाइंदा। अठ्ठे पहर रहे प्रभास, जूह उजाड़ जंगल फेरा पाइंदा। डूँघी कंदर सोच हौका भरे एका काश, हाए हाए सर्ब कुरलाइंदा। नाता जुड़या मास मास, मास मास खेल खिलाइंदा। पिता पुत कहे शाबाश, जोरू ज़र जो घर लिआइंदा। लुट्टे धन जो हाथो हाथ, तिस जगत वड्यांअदा। कोई ना जाणे पैंडा घाट, घाटा नज़र किसे ना आइंदा। कोई ना जाणे विकणा अन्तिम हाट, साचा शाह लेखा ना कदे मुकाइंदा। होए ग़ाफ़ल सुत्ता खाट, जगत विछाउणा आप वछाइंदा। मूर्ख मुग्ध भुल्ला लक्ख चुरासी फिरना आण बाट, मुड़ मुड़ गेड़ा गर्भवास वखाइंदा। फसया रिहा ज़ात पात, आपणी ज़ात सफात ना कोए कराइंदा। वेंहदा रिहा आफ़ताब, मशरक मग़रब रूप वटाइंदा। ना कोई जाणे पुन्न सवाब, सुहबत जगत सर्ब सालांहयदा। एका वेखे माई बाप, जन्म जन्म जो मात दवाइंदा। कोई ना जाणे आपणा घाट, पार किनारा ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जोबन जगत वास जुग जुग आप धराइंदा। जगत जोबन चढ़या चाअ, निव निव ख़ुशी मनाईआ। आपणीआं भुजां लए उठा, आपणा बल आप वखाईआ। नज़र ना आए बेपरवाह, जिस जन बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जुग गेड़ा आप चलाईआ। जगत जुग गेड़ा गेड़, लक्ख चुरासी कोलू चक्की चक्क भुआईआ। लेखा जाणे नगर खेड़, जुगा जुगन्तर बेपरवाहीआ। आप उपाए आपे दए नबेड़, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। एका वार जड़ दए उखेड़, बूटा कोए नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उलटा बिरछ दए समझाईआ। उलटा बिरछ मानस ज़ात, पुरख अबिनाशी आप समझाइंदा। दस दस मास रक्खया वास, गर्भ जूनी आप भवाइंदा। अठ्ठे पहर देवे धरवास, आप आपणी दया कमाइंदा। घट अंदर वखाए पृथ्मी आकाश, नूर नुराना नूर जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कर्म आप कमाइंदा। आपणा कर्म कमावणहारा, जड़ चोटी ना कोए जणाइंदा। फल लगाए अद्धविचकारा, मात गर्भ आप टिकाइंदा। लेखा जाणे अंदर बाहरा, गुप्त ज़ाहरा वेख वखाइंदा। पंज तत्त काया कर उज्यारा, तन माटी खेल खिलाइंदा। जोबन जवानी विच संसारा, बाल जवाना रूप वटाइंदा। तत्व तत भर भण्डारा, आसा तृष्ना संग रखाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, तन बस्त्र आप सजाइंदा। लक्ख चुरासी कर प्यारा, जगत वासना मेल मिलाइंदा। मरे मर जम्मे वारो वारा, जन्म मरन वेख वखाइंदा। ईश जीव जीव ईश ना देवे कोई सहारा, जगदीश मुख छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप वखाइंदा। लक्ख चुरासी चले धार,

जुग जुग गेड़ा आप दवाईआ। आप उपाए आपे लए सँघार, मारनहारा दिस ना आईआ। रोग सोग चिंता दुःख अनिक प्रकार रक्खे बुखार, दुःख दर्द पीड़ नाल रलाईआ। तन मास हाडी रत सुक्के विच संसार, अग्नी तत्त तत्त जलाईआ। नेत्रहीण करे खिच्चे जोत आप करतार, जोती जोत ना कोई रुशनाईआ। शाह सुल्ताना कर ख्वार, अन्तिम बिस्त्र मरग दए वखाईआ। चारों कुण्ट रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। प्राण पावे ना कोई सार, वेख पुराणी सुत्ता सेज हंढाईआ। वेले अन्तिम कढ्ढ़ण बाहर, यार संग ना कोए निभाईआ। साक सज्जण भैण भाई धीआं पुत्तर धक्का देवण मार, अद्धविचकार मुखड़ा देण भवाईआ। दूजी वार ना आए फेरा मार, जिन भूत प्रेत रहे कुरलाईआ। अन्तिम लेखा कटे विच संसार, पंज तत्त काया नज़र ना आईआ। रूह निमाणी करे गिरयाज़ार, वेले अन्त ना कोए छुडाईआ। इक्क घर छड्डुया दूजे घर दिता वाड़, बन्धन बैठा एका पाईआ। कदे पुरख कदे नार, कदे वेसवा रूप धराईआ। कदे हीजड़ा बणे विच संसार, लानत दो जहान वखाईआ। कदे पंछी पंखी बण बण मारे उडार, कदे जल धारा डेरा लाईआ। कदे दुष्टां अंदर कर पसार, आपणी जून रिहा वखाईआ। पुरख अबिनाशी खेल न्यार, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी अचरज रीत चलाईआ। अचरज रीत हरि निरँकार, जुग जुग आप चलाइंदा। भगत भगवन्त लए उभार, साचे सन्त मेल मिलाइंदा। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरसिखां बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर लै अवतार, आप आपणा मार्ग लाइंदा। क्रिया कर्म दस्स संसार, राम नाम इक्क सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे धन्दे आप लगाइंदा। साचा धन्दा जुग जुग कार, जन भगतां आप जणाईआ। अठ्ठे पहर इक्क ध्यान, एका गुर समझाईआ। एका देवे धुर फ़रमान, शब्द शब्दी आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त भगत भगवन्त आपणी सेवा लाईआ। जुग जुग आपणी सेवा ला, आपणा नाम जपाइंदा। वेले अन्त होए सहा, लोकमात आप तराइंदा। साचे बेड़े लए चढ़ा, एका बेड़ा नाम रखाइंदा। खेवट खेटा बण मलाह, दो जहानां आप वखाइंदा। गुरमुख विरले लए तरा, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों बाहर कढा, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार बंधाइंदा। कलिजुग अन्तिम बन्न्हे धार, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। गुरमुखां करे सच प्यार, हरिजन साचे लए मिलाईआ। आपे लभ्भे आपणी वार, दूर दुराडा फेरा पाईआ। देवे दरस दर दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। एका नाम कराए जैकार, सोहँ शब्द आप सुणाईआ। आत्म परमात्म मेला मेले आप करतार, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ।

जगत जोबन कर ख्वार, आपणा जोबन लए हंढाईआ। बिरध बाल जवाना जाए तार, जगत बड़ेपा पन्ध मुकाईआ। अन्तिम देवे दरस आप निरँकार, घर घर हरिजन फेरा पाईआ। करया तरस सिरजणहार, दीनण दीन होए सहाईआ। गुरमुख साचे लए संभाल, वेले अन्त गोद बहाईआ। होण देवे ना विंगा वाल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। आपणा फल वेखे आपणे डाल, अमृत फल आप लगाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, धर्मसाल इक्क वखाईआ। साचे मन्दिर दीन दयाल, सच सिँघासण सोभा पाईआ। हरिजन मेले आपणे लाल, लाल अनमुल्लड़े आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाईआ। आपणे लाल आप उठाए, नित नित सेव कमाइंदा। दरस दीदारी दरस वखाए, दरस दरस आप कराइंदा। संसारी हिरस सर्ब मिटाए, अर्श फर्श पन्ध मुकाइंदा। अमृत मेघ बरस अग्नी तत्त बुझाए, सांतक सति सति वरताइंदा। ब्रह्म मति इक्क वखाए, साचा मार्ग आप जणाइंदा। गुरसिख गुर गुर कमलापति एका रंग समाए, जोती जोत जोत मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे धाम बहाइंदा। हरिजन देवे साचा धाम, बैकुण्ठ निवासी दया कमाइंदा। मेल मिलावा जिउँ सीता राम, सुरती सीता राम मिलाइंदा। जोड़ जुड़ाए कृष्ना काहन, घनईआ आपणे रंग रंगाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, पूजा पाठ इक्क कराइंदा। आवण जावण मेटे जीव जहान, जीव ईश विच समाइंदा। अमृत बख्शे पीण खाण, अन्तर जाम प्यांअदा। हरिजन मिले श्री भगवान, भगवन आपणा मेल मिलाइंदा। जगत कटुम्ब ना रोवे देवे कोए मुकाण, पुरख अबिनाशी आपणा खेल खिलाइंदा। जिस उपजाया तिस करया परवान, पिता पूत आपणे गले लगाइंदा। जूठे झूठे साक सज्जण सैण लोकमात रहि जाण, सगला संग ना कोए निभाइंदा। बिन सतिगुर पूरे कोए ना चढ़ाए सच बबान, धुर धाम ना कोए पुचाइंदा। गुरसिख वेले अन्त ख़ुशी सर्ब मनाण, घर कन्त सुहागी आइंदा। होए धन्न भाग छुटया जहान, घर साचा नज़री आइंदा। ना कोई सूरज चन्द तेज करे रवि ससि भान, जोती नूर डगमगाइंदा। तृष्ना मुक्की पीण खाण, अमृत फल इक्क खवाइंदा। अठ्ठे पहर एका गाण, एका नाद धुन वजाइंदा। चारों कुण्ट नज़र आए श्री भगवान, जोती जोत डगमगाइंदा। गुरसिख गुर गुर मिल्या आण, गुर सतिगुर मेल मिलाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीवण जुगत भुगत भगत भगवन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा।

सतिगुर पूरा दया करे, दयावान अख्वाईआ। दुःख दलिद्र जगत हरे, हरि चरन मिली वड्याईआ। ख़ाली भण्डारे आप भरे, देंदयां तोट ना आईआ। कक्खों लक्ख आप करे, करता कीमत आपे पाईआ। खोटे खरे करे आपणे दरे, नाम

टकसाल लए टणकाईआ। जीवण मुक्त देवे वरे, वर मुक्ती दासी रूप वखाईआ। आपणी हथ्थीं पल्लू फड़े, दामनगीर बेपरवाहीआ। देवण देण आया घरे, घर दे के जाए साचा माहीआ। निरभउ चुकाए जगत डरे, डर भय कोए रहिण ना पाईआ। सुक्के काष्ट करे हरे, हरयावल आपणा रंग रंगाईआ। गुरसिख गुरचरन लाग ना मात फिरे, फांदकी फंद दए तुड़ाईआ। कलिजुग बाज़ी लाई सिर धड़े, धड़ चारों कुण्ट बैठा राह तकाईआ। गुरमुख विरला बल धरे, गुर सतिगुर ओट तकाईआ। सतिगुर पूरा कलिजुग कूड़ा आप फड़े, गुरसिखां चरनां हेठ रखाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरसिख रक्खदा आया आपणे धड़े, लक्ख चुरासी जीव जंत लड़ाईआ। आप सुखी वसदा रहे आपणे घरे, गुरमुखां साचा सुख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत दलिद्र दए गंवाईआ। जगत दलिद्र होए दूर, दुखी दर्द रहिण ना पाईआ। सतिगुर पूरा कढ्ढे घूर, नाम डरावा इक्क रखाईआ। जूठ झूठ रोवे कूड़, कूड़ कुड़यारा दए दुहाईआ। सच सुच्च मिली जिस मस्तक लाई धूढ़, मैनूं बाहर दिता कढ्ढाईआ। मैं करदा रिहा गरूर, आपणा बल आपणे विच टिकाईआ। घर घर मचौंदा रिहा फ़तूर, फ़तवा आपणा एका लाईआ। जगत विकारा सच सरूर, जीवां जंतां रिहा समझाईआ। मैं जाणयां हरि बैठा दूर, नेड़े नज़र किसे ना आईआ। कलिजुग अन्तिम गुरसिखां फड़या आप हज़ूर, हज़ूर हाज़र छुप कदे ना जाईआ। जन भगतां घर सेवा करे बण मजदूर, मुजरत मंगण फेर कदे ना आईआ। गुरसिख तेरा मंगे एका प्रेम जोती नूर, तेरे नूर वेखे सर्ब लोकाईआ। तेरा दरस रक्खे सदा सरूर, अठ्ठे पहर एका रंग रंगाईआ। गुरमुख तेरा भण्डारा सदा भरपूर, हरि सतिगुर आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दाता दानी इक्क वरताईआ।

५८०

★ १३ जेठ २०१८ बिक्रमी इन्दर सिँघ दे घर पिण्ड धगाली जम्मू ★

हरि सुहाए छप्परी छन्न, करोड़ छिआनवे सेव लगाईआ। करोड़ तेतीसा कहे धन्न धन्न, वाह वा तेरी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे मन्न, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गण गंधर्ब सुनण राग ला ला कन्न, इक्क ध्यान लगाईआ। पुरख अबिनाशी लोकमात प्रगटाया एका जन, हरिजन साचा नाउँ धराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी करे धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर ठग्गां चोरां देंदा आया डन्न, गुरमुख साचे लए तराईआ। ग़रीब निमाणयां बेड़ा बन्न्, जुगा जुगन्तर आप चलाईआ। मनमुख हरि का नाउँ सुण ना सके कन्न, हरि सतिगुर अपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। साचा खेल हरि निरँकारा, कोह करोड़ी वेख वखाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह बेऐब परवरदिगारा, दो जहाना वेख वखाइंदा। शाहो भूप सुल्तान राज राजान श्री भगवान बण सिक्दारा, सच नाम निशान हथ्थ रखाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां देवे इक्क हुलारा, शब्द हलूणा एका लाइंदा। लक्ख चुरासी हो उज्यारा, घट घट अंदर कर पसारा, अंदर मन्दिर वेख वखाइंदा। लेखा जाणे डूँग्घी गारा, पवण मसानी धूंआँधारा, सुन्न समाध आप समाइंदा। गगन मंडल इक्क अखाड़ा, नाच नचाए रवि ससि सतारा, साची सेवा आप समझाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर विष्नूं देवे इक्क भण्डारा, हरिजन बणे जगत लिखारा, शंकर करे अन्त सँघारा, साचा हुक्म आप जणाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपारा, आदि आदि आवे जावे वारो वारा, नारी कन्त बण भतारा, सेज सुहञ्जणी आप हंढाईआ। पूत सपूता कर प्यारा, चारे कूटां पावे सारा, दहि दिशा वेख वखाईआ। राती रुत्ती जाणे थित वारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा कर किरपा करे बेपरवाहीआ। बेपरवाह किरपा कर, करोड़ छिआनवें आप समझाइंदा। इन्दर इन्द्रासण आपे चढ़, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड डोरी आपणे हथ्थ फड़, आदि जुगादि भुआइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल समरथ आपणा घाड़न घड़, साचा बाढी आपणा नाउँ आप धराइंदा। दर दरवाज़ा दर दरवेश खोल्ह दर, दर घर साचे सोभा पाइंदा। नर नरेश बणे नरायण नर, नर हरि बनवारी आपणा रूप धराइंदा। जाग्रत जोत जोत उजाला एका कर, दीन दयाला हरि गोपाला नूर नूर आपणा आप प्रगटाइंदा । आपणा अंस बंस बणाए काल महाकाला, साचा मन्दिर इक्क सुहाना, सचखण्ड दुआरे आसण लाइंदा। रूप अनूप श्री भगवाना, देवे प्रकाश कोटन भाना, आदि जुगादी खेल महाना, जुगा जुगन्तर खेल खिलाइंदा। निरगुण सरगुण गोपी कान्हा, करे खेल मर्द मरदाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, छप्पर छन्न आप वड्यांअदा। छप्पर छन्न लग्गे भाग, हरि छप्पर छन्न नाम खाण हँस बणाए फड़ फड़ काग, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। जोती जगाए इक्क चिराग, तेल बाती ना कोए टिकाईआ। अठ्ठे पहर दए वैराग, आत्म धुन इक्क वजाईआ। खोल्ह वखाए सुन्न समाध, सुन अगम्मी डेरा ढाईआ। डूँग्घी भँवरी आपे काढ, सच महल्ले लए बहाईआ। लेखा जाणे आदि जुगादि, जुगा जुगन्तर भुल ना जाईआ। जोती जाता हो विस्माद, बिस्मिल आपणा खेल खिलाईआ। भगतन देवे एका दाद, वस्त अमोलक झोली पाईआ। अन्तिम सुण सुण ग़रीब निमाणयां हरि फ़रयाद, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरमुख गुरसिख आपे लाध, आप आपणा बन्धन पाईआ। मेट मिटाए वाद विवाद, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। शब्द सुणाए बोध

अगाध, अगाध बोध आप अख्वाईआ। रूप धराए मोहण माधव माध, मोहणी रूप नज़र ना आईआ। तुरीआ राग वजाए नाद, सोवत जागत खेल खिलाईआ। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। हरिजन सन्त सुहेले लक्ख चुरासी विच्चों काढ, चरन दुआरे आप बहाईआ। बाल अंञाणे लडावे लाड, माता पिता रूप धराईआ। गुरमुख नारी मेले कन्त सुहाग, कन्त कन्तूहल सच्चा शहिनशाहीआ। करोड़ तेतीसा करन याद, सुरपति राजा इन्द नाल रलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगण मांग, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी रूप वटाया स्वांगी आपणा स्वांग, लेखा अलख ना लख्या जाईआ। सो पुरख निरँजण आप चढ़ाई आपणी कांग, हँ ब्रह्म लए रुढ़ाईआ। चार जुग सतिजुग त्रेता द्वापर गुरमुखां रक्खी तांघ, कलिजुग अन्तिम पूर कराईआ। धन्न वड्याई वड वड भाग, गुरमुख सोया गया जाग, सतिगुर पूरा आप जगाईआ। माया ममता डस्से ना नाग, हउमे हंगता ना रोग सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए फड़, मनमुखां रिहा दुरकाईआ। करोड़ छिआनवें कर पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाइंदा। तेरी छप्पर हरि निरँकार, गुरमुख विरला पाइंदा। मैं कंगाल, तेरा मंगां दरस दीदार, कोटन कोटि काल बीते तेरा दरस नज़र ना आइंदा। कर तरस दीन दयाल, मैं होया अन्त बेहाल, मेरा दर्द ना कोए वंडाइंदा। जगत अवल्लड़ी चली चाल, वसें सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, लोकमात नज़र किसे ना आइंदा। गुरमुख विरले लए भाल, शब्द सरूपी बण दलाल, जगत वणजारा नाउँ धराइंदा। हरि हरि फुलवाड़ी लाए पत डाल्ह, अमृत फल वेखे आण, गुरमुख साचे आप उपाइंदा। गुरसिखां पिच्छे घालण रिहा घाल, नूरी जल्वा नूर जलाल, जाग्रत जोत रूप वटाइंदा। हरिजन तेरा हल करे सवाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पट्टी पढ़ाए साची धर्मसाल, पांधा नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, गुरमुख मेले आपणे घर, मनमुख कोए रहिण ना पाइंदा। करोड़ छिआनवे उठ उठ वेख, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। रूप रंग ना दिसे रेख, लोकमात वज्जी वधाईआ। गुरसिख सज्जण रिहा पेख, पेखत पेखत आपणी तृखा बुझाईआ। नाल रखाए ब्रह्मा विष्न महेष, पिच्छे चलण वाहो दाहीआ। चित्रगुप्त निउँ निउँ लिखे मेटदा जाए लेख, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। मंगे मंग दर दस्मेश, पुरख अकाल हो सहाईआ। मैं आपणा आप कीता तेरे पेश, तेरा रूप सर्ब लोकाईआ। बिन तेरे नाउँ चिड़ीआं चुगया खेत, ख़ाली सृष्ट रिहा वखाईआ। रुत्त बसन्त ना दिसे महीना चेत, फुल्ल फुलवाड़ी ना कोए महिकाईआ। किरपा कर हरि नेत्र नेत, नित नवित तेरी वड्याईआ। मैं बेड़ा चलाया तूं बण खेवट खेट, वेला अन्त दए दुहाईआ। तूं पिता हउँ तेरा बेट, पिता पूत इक्क सरनाईआ। ग़रीब

५८२

निमाणयां आपणी हथ्थीं लिखदे लेख, लेखा लिख्या हथ्थ किसे ना आईआ। फड़ पल्ला लै जा आपणे देस, तेरा देस मोहे भाईआ। तूं वसदा रहीं सदा हमेश, आदि जुगादि तेरी वडी वड्याईआ। तेरी पुकार करे केशव केश, उच्ची कूक कूके दए दुहाईआ। तूं शाह पातशाह सच सुल्ताना नर नरेश, आदि जुगादि सच्ची तेरी पातशाहीआ। मैं आपणयां गुरसिखां तेरे दुआरे लवां वेख, मेरी सेवा तेरे लेखे लग्गे, मैं लक्ख लक्ख शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दए सुणाईआ। एका हुक्म हरि सुणाया, गोबिन्द मीत जगा। तेरा देणा भुल ना जाया, दिता सुनेहड़ा सत्थर सूलां हेठ विछा। अन्तिम पूरा दए कराया, कलिजुग अन्तिम फेरा पा। गुरसिख लुकया रहे ना राया, जो सरसे दिता रुढ़ा। अन्तिम कन्ढे दए लगाया, आपणे बेड़े आप चढ़ा। साचे खण्डे पाहुल छकाया, अमृत खण्डा विच फिरा। नाम खण्डा इक्क रखाया, लोहार तरखाण सके ना कोए घड़ा। दो जहानां नज़र किसे ना आया, कोटन कोटि जीव रहे नैण उठा। तेरा अन्तिम वेला दए सुहाया, सिर तेरे हथ्थ टिका। आपणा रूप तेरे विच टिकाया, तेरा रूप आपणा लए वटा। कलिजुग जीवां भरम भुलेखा पाया, पंज तत्त चोला हरि जू दिसे ना। एका सोहला आपणा रिहा गाया, साचा ढोला रिहा जणा। गुरमुख विरले ओहला पर्दा दए चुकाया, जिस जन आपणा मेल लए मिला। साचा तोला बण के आया, साचा कण्डा हथ्थ रखा। गुरमुख साचे आपणे कण्डे लए तुलाया, एका वट्टा नाम रखा, मनमुख मूढ़े दए रुढ़ाया, कलिजुग अन्तिम धक्का ला। वेले अन्त ना सके कोए बचाया, राए धर्म दए सज़ा। करोड़ छिआनवे गुरसिख तेरे चरनां राह तकाया। तेरे अन्तर आत्मा मंगे ठंडा साह। तेरे पवण स्वास हरि जू रिहा समाया, मेरी बन्द खलास दए करा। कलिजुग जीव कर कर हास वक्त चुकाया, अन्तिम पैणा एका फाह। साक सज्जण ना सके कोए बचाया, मात पित ना होए सहा। नारी कन्त ना संग रखाया, पुत्तर धीआं रोवण मारन धा। लाड़ी मौत लए प्रनाया, लाल मैहन्दी हथ्थ रंगा। सूहा वेस लए कराया, नेत्र कजला पा। आपणी मेंढी लए गुंदाया, तेरी नार खुलड़ी गुत्त दए रखा। घर घर सयापा देवे पाया, ना कोई सके धीर धरा। लक्ख चुरासी जून भवाया, जुग जुग गेड़ा गेड़ रखा। जिस जन हरि हरि रसना गाया, पुरख अबिनाशी होए सहा। कलिजुग अन्तिम दया कमाया, सोहँ मन्त्र इक्क पढ़ा। जन्त्र तन्त्र कोई नेड़ ना आया, जगत बसन्तर रूप दए वटा। साची बणतर आप बणाया, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगा। गगन गगनंतर पार कराया, गगन मंडल दए ठुकरा। साचे मन्दिर दए बहाया, निरगुण जोत कर रुशना। सूरज चन्द ना कोए चढ़ाया, करे खेल बेपरवाह। पुरख अबिनाशी सच सिँघासण डेरा लाया, साचे तख्त बहे सच्चा शहिनशाह। हरिजन साचे लए मिलाया, आपणे चरन देवे सच पनाह। दामनगीर दामन लए फड़ाया,

दामन दामन नाल बंधा। धुर दा ज़ामन कलिजुग अन्तिम वेखण आया, निहकलंका नाउँ रखा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छप्पर छन्न रिहा सुहा। छप्पर छन्न सोभावन्त, सोभनीक कराईआ। हरि सख़ीआं मेला हरि जू कन्त, हरि मंगल एका गाईआ। चार कुण्ट रुत्त बसन्त, गुरसिख पंखड़ीआं आप महिकाईआ। हरि सूरा गूंजे आदि अन्त, हरिजन तेरी महिक साचा रस चख चख तृप्त कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत माली बण बण आईआ। जगत माली बणे बन मालण, जोत अकालण दया कमाईआ। सिर ते खारी चली भालण, जंगल जूह उजाड़ पहाड फेरा पाईआ। घर घर वजाउँदी फिरे आपणा तालण, बिन गुरसिख सुणन कोए ना पाईआ। मनमुख जीव कढ्ढण गालण, चुगली निन्दया मुख वखाईआ। धन्न वड्याई गुरमुख जो घाल घालण, घाल घाली लेखे पाईआ। कलिजुग अन्तिम बण सवालण, एका मंग मंगण आईआ। मैं अंञाणी बाल अंञानण, लोकमात बिन गुरसिख मेरी पति ना कोए रखाईआ। नौ खण्ड पृथमी हड्डीआं होया बालण, मेरी जोती लम्बू लाईआ। मैं तेरी करां सदा प्रितपालण, प्रितपालक रूप वटाईआ। तेरी सुगंध मैं भरां खारी फुल्ल मालण, धुर दरबारे आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन सच्चे एका माण, महल्ल मन्दिर वखाए इक्क मकान, एका बैठा आसण लाईआ।

५८४

आउँदा जांदा जगत ना दिसे, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गुरमुखां वण्डाए आपणे हिस्से, सतिगुर पूरा वण्ड वंडाईआ। साची सिख्या जो जन सिखे, सिक्खी सिख्या विच रखाईआ। आपणा लेखा आपणी हथ्थीं लिखे, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै लगाए एथे ओथे, प्रगट हो हो दरस वखाईआ। पंज तत्त काया चोली पता ना लग्गे लुकया केहड़ी विथे, दिन रात बण मनुक्ख जगत विहारा गाए किस्से, आपणा भेव आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत बैठा मुख छुपाईआ। जगत दिसे ना हरि निरँकारा, रूप रंग ना कोए जणाईआ। गुरमुखां करे सच प्यारा, आपा धर आपणी ख़ाक ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। हड्ड मास नाड़ी रत ना रक्खया गारा, तत्व तत ना कोए वड्याईआ। जगत वेंहदयां सड़ गया विच संसारा, अग्नी भेंट आपणा आप कराईआ। आपणा रूप धर निराकारा, निरगुण अचरज खेल रचाईआ। करया कौल पूरा करे आप आपणी वारा, कीता कौल भुल ना जाईआ। गोबिन्द कीता इक्क प्यारा, प्यारा प्यार विछड़ ना जाईआ। फेर बोलया आपणा सच जैकारा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान नाउँ रखाईआ। अंदर वड़ होया ज़ाहरा, आप आपणी कल धराईआ। लोकमात बणाया सचखण्ड दुआरा, साचे तख्त सोभा पाईआ। करया कम्म जगत विहारा, बण तरखाण साचा सूत्र मात लगाईआ। गंवार जट्ट हथ्थ फड़ाया कुहाढ़ा, तिख़ी धार आप रखाईआ। चीर चीर कीआ दो फाड़ा, अद्धविचकारा आपणा आप छुपाईआ। नारी अंदर लुकया साचा लाड़ा, साची प्रीत इक्क वखाईआ। आवे जावे दिन दिहाढ़ा, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। गुरसिख उच्ची कूक करे पुकारा, सच जैकारा एका वारा लाईआ। महांबली उतरे अवतारा, सन्मुख आपणा दरस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाईआ। करया कौल करना पूरा, आपणा तन तजाया। प्रगट होए हाज़र हज़ूरा, बेड़ा बन्न वखाया। गुरसिख पकड़े नेड़े दूरा, पूर्ब जन्म वेख वखाया। सो सतिगुर साहिब सच्चा पूरा, जो विछड़े लए मिलाया। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग वखाया। गुरसिख इक्क करना चरन ध्यान, कर्म कांड रहिण ना पाईआ। नाता तुट्टे पंज शैतान, माया ममता ना होए हल्काईआ। मंगण जाणा ना किसे दुकान, दूसर हट्ट ना कोए वखाईआ। पूजा करे ना मढ़ी मसान, देवी देव ना कोए रखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना करन ज्ञान, एका अक्खर रिहा सुणाईआ। तेरे दुआर सेवा करे पवण पाणी बण मसान, ज़मीन अस्मान तेरी धूढ़ ख़ाक रमाईआ। तेरा सोहला मेरा गाण, रसना जिहवा एका रस वखाईआ। तेरा मन्दिर मेरा मकान, तेरा कूड़ा हूंझ वखाईआ। तेरे कुकर्म आपणी झोली पाए आण, एका वार करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां देवे साचा वर, चरन ध्यान इक्क समझाईआ। चरन ध्यान रक्खणी आस, जगत आसा सर्ब मिटाईआ। जन्म जन्म दी मेटे प्यास, अमृत आत्म रस चखाईआ। गुरसिख तेरे अंदर करे वास, गुरसिख लभ्भण किते ना जाईआ। तेरी काया जंगल जूह उजाड़ पहाड जो दिसे प्रभास, साची रुत्त दए सुहाईआ। तेरा कटे जम का फाँस, जम का दूत नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दया कमाईआ।

मन पंखी की मारे उडार, दहि दिश उठ उठ मूल ना धाईआ। डण्डा घड़या बण तरखाण, पिच्छे जट्ट हथ्थ फड़ाईआ। मारन लग्गा ना पुच्छे वार, आंढ गुआंढ रिहा डराईआ। पंज तत्त लागे रोवण ज़ारो ज़ार, साडी वारी नेड़े आईआ। पता नहीं किस तरां करे ख्वार, ना किसे दी मन्ने ना कोई सुणे, आपणा बल आप रखाईआ। हाए हाए हाए करे पुकार, मैं भुल्ला विच संसार, तूं बख्श बख्शणहार, मैं तेरे गुरसिखां दी चरन धूढ़ छार, ख़ाकी ख़ाक मस्तक टिक्का लाईआ। लक्ख

चुरासी अंदर वड़ वड़ करदा रिहा हँकार, साधां सन्तां मारदा रिहा मार, आपणी वासना विच फसाईआ। मेरा रूप निराकार, तेरी जोत मेरा श्रृंगार, तेरी अंस मैं अख्वाईआ। तेरा बंस गुरसिख साचा परवार, मैं इक्क इकल्ला मन्न के बैठा हार, मेरी पेश कोई ना जाईआ। तूं बख्श हरि बख्शणहार, ढह ढह मंगे मंग भिखार, निउँ निउँ चरन कँवल करे निमस्कार, मन मनूआ सीस झुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन आपणे दर करे परवान, मन मति बुध रहिण देवे ना कोए चतुराईआ।

★ १४ जेठ २०१८ सन्त राम दे घर पिण्ड बाणीआं जम्मू ★

जुग जुग राह तक्के धरत, धरनी आपणे नैण उठाईआ। कवण वेला पारब्रह्म प्रभ आए परत, मेरे उप्पर चरन टिकाईआ। मेरा मेटे सोग हरख, चिंता दुःख दए गंवाईआ। लक्ख चुरासी करे परख, हरिजन साचे लए जगाईआ। लेखा जाणे अर्श फर्श, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते करे तरस, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, मेरा अग्न तत्त गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग होए आण सहाईआ। जुग जुग धरनी तक्के राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण सो वेला किरपा करे बेपरवाह, लोकमात लए अंगड़ाईआ। मेरा दर्द दुःख दए मिटा, दुखियां जीवां होए सहाईआ। साचा सुख दए उपजा, आपणा चरन कँवल टिकाईआ। उज्जल मुख दए करा, कालख टिक्का लाहे मुख लग्गी छाहीआ। सफ़ल कुक्ख मेरी लए करा, हरिजन साचे लए उठाईआ। अमृत जाम दए प्या, मेरी तृष्ना रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि होए सहाईआ। धरनी धवल करे पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, जुग जुग तेरा राह तकाया। मैं तक्कां वारो वार, आदि जुगादि विसर ना जाया। तेरे चरनां सच प्यार, तेरा विछोड़ा ना मोहे सखाया। गल पल्ला रही डार, दोए जोड़ सीस झुकाया। कर किरपा आप करतार, तुध बिन अवर ना कोए तराया। मैं डूँग्घी भँवरी डुब्बी ग़ार, चारों कुण्ट कलिजुग चिकड़ नज़री आया। कोए ना दरदी दर्द वण्डे विच संसार, लक्ख चुरासी जीव जंत बैठे मुख भवाया। निरगुण जोत कर उज्यार, हरिजन साचे लए उभार, मेरा दुक्खड़ा दए मिटाया। पुरख अबिनाशी हो त्यार, किरपा करी आप निरँकार, निरगुण निरगुण वेस वटाया। सन्त सुहेले कर त्यार, जुगा जुगां दे मेले विछड़े यार, आप आपणा बन्धन पाया। एका देवे नाम आधार, काया मन्दिर सति जैकार, साचा ढोला इक्क सुणाया। आत्म परमात्म कर प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, हौला करे धरनी भार, धरत धवल तेरी सुण पुकार, हरि साचा दया कमाईआ। निरगुण निरगुण लै अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सरगुण मीता हो त्यार, ठांडा सीता खेल खिलाईआ। इक्क अतीता बख्शणहार, बख्शशि बख्शे साचा माहीआ। लक्ख चुरासी कर विचार, हरिजन साचे लए मिलाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, लोआं पुरीआं खोज खुजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गायण आपणी वार, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द रिहा सालाहीआ। गण गंधर्ब जै जैकार, किन्नर यच्छप नाच नचाईआ। प्रगट होया हरि निरँकार, रवि ससि सीस झुकाईआ। बरख़ा लायन गुर अवतार, चार जुग दा रंग वखाईआ। भगतन फड़ फड़ फूलणहार, दर दर आइन सीस झुकाईआ। सन्तन संग अमृत ठंडा ठार, इक्क प्याला रहे वखाईआ। गुरमुखां मिले सांझा यार, वरन गोत ना कोए बणाईआ। गुरसिख साचे लए उभार, दे मति आप समझाईआ। धरनी तेरा धवल अधार, धवल करे कुड़माईआ। चरन छुहाए एका वार, इक्क इकल्ला सच्चा माहीआ। छप्पर छन्न सोहे बंक दुआर, बंक दुआरी दए वड्याईआ। हरि भगतां करे सदा प्यार, जुग जुग आपणा वेस धराईआ। लक्ख चुरासी विच्चों लए उभार, माणक मोती आप उठाईआ। वासना खोटी करे ख्वार, कूड़ी क्रिया दए गंवाईआ। एका ब्रह्म दए विचार, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। हरिजन मेला हरि हरि विच संसार, दूसर संग ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण माण वड्याईआ। धरनी तेरा साचा माण, हरि चरन कँवल छुहाया। आदि जुगादि मेला श्री भगवान, निरगुण सरगुण संग निभाया। तेरे उप्पर झुलाए सच निशान, सति सतिवादी आप उठाया। लक्ख चुरासी जीव मेटे बेईमान, नाता शैतान दए तुड़ाया। भगत भगवन्त वेखे आण, आप आपणा रूप वटाया। तेरी बेनन्ती कर परवान, बावण आपणा खेल खिलाया। सच सुगंधी हरि मेहरवान, गुरसिख आत्मा वासना दए भराया। बन्दीख़ाना तोड़े बन्दी विच जहान, बन्धन कोए रहिण ना पाया। साचा छन्दन गाउणा एका गाण, सोहँ शब्द नाम वखाया। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, ध्यान ध्यान विच रखाया। लेखा जाणे श्री भगवान, नाना आपणा रूप वटाया। सो पुरख निरँजण चतुर सुजान, हरि पुरख निरँजण चतुर्भुज आप अख्वाया। एकँकारा बली बलवान, आदि निरँजण जोत नूर सवाया। श्री भगवान खेले खेल महान, अबिनाशी करता भेव किसे ना पाया। पारब्रह्म प्रभ नौजवान, ना मरे ना जाया। आदि शक्ति कर प्रधान, साचे मन्दिर दए वड्याआ। सचखण्ड दुआरा इक्क मकान, सति सतिवादी आसण लाया। शाहो भूप बण राज राजान, शाह सुल्तान आपणा खेल खिलाईआ। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमान, धुर फ़रमाना आप सुणाया। शब्दी शब्द कर परवान, सुत दुलारा एका जाया। माता पिता बण मेहरवान, दाई दाया आप हो जाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे मार ध्यान, अंस बंस सरबंस आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता साची वस्त अमोलक एका गोलक आप भराया। शब्द जणाए हरि अनबोलत, रसना जिहवा ना कोए हिलाया। नाद अनादी सति भण्डारा खोलत, संसारी आपणा कर्म कमाया। आदि जगादि रहे अडोलत, अडोल अडुल आपणा खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रचना आप रचाया। साची रचना हरि हरि रच, लक्ख चुरासी खेल रचाया। निरगुण अंदर वड़या सच्च, रूप अनूप आप धराया। काया माटी भाग लगाए कच्च, कंचन आपणा गढ़ सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी कारन कर, जल जल आपणा रूप वटाया। जल बिम्ब हरि खेल न्यारा, आपणी दया आप कमाईआ। आपे धरनी कर पसारा, धवल रूप वटाईआ। आपे धवल चुक्के भारा, त्रै त्रै लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, तेरा बणाए मात घर, लक्ख चुरासी उप्पर धर, तेरा बंक सुहाईआ। लक्ख चुरासी तेरे अंदर, हरि हरि आप टिकाइंदा। नौ खण्ड बणे तेरा मन्दिर, नौ दुआरे वेख वखाइंदा। लेखा जाणे हरिजन कंदर, भगतन भेव अभेदा आप छुपाइंदा। आपे करे अन्तिम खण्डर, आपणा खेड़ा आपे ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, लक्ख चुरासी अंदर धर, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। धरनी धरत धवल देवे दात, नव नौ वण्ड आप वण्डाईआ। तेरा मेला कमलापात, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। जुगा जुगन्तर पुछे वात, भुल कदे ना जाईआ। तेरी पट्टी इक्क जमात, एका अक्खर दए समझाईआ। बिन चरन कँवल होर ना मारनी किते झात, नेत्र नैण किसे पासे ना उठाईआ। तेरा बणे कन्त सुहाग, आपणी सच बरात बणाईआ। तेरी सुहञ्जणी होए रात, भिन्नड़ी रैण मेल मिलाईआ। तेरा सगन मनाए आपणी गाथ, नाउँ निरँकारा आप जणाईआ। तेरा मस्तक टिक्का बिन्दी लाए माथ, जोत ललाट आप धराईआ। तेरा वखाए एका साथ, सगला संग दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धरनी देवे धवल वड्याईआ। धरनी देवे इक्क धरवास, एका हुक्म सुणाया। तेरे अंदर लक्ख चुरासी कर प्रकाश, आपणा खेल खिलाया। जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँग्घी कंदर पावे रास, सिन्ध सागर वेख वखाया। तेरे उप्पर रक्खे इक्क आकाश, आपणा पर्दा आप रखाया। उप्पर वसे शाहो शाबास, दिस किसे ना आया। विष्न ब्रह्मा शिव कर कर दास, आपणा गुण दए जणाया। सचखण्ड दुआरा इक्क प्रकाश, पारब्रह्म प्रभ आप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना हुक्म जणाया। धुर फ़रमाना सच संदेश, हरि साचा सच सुणाईआ। तेरे अंदर अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज करे प्रवेश, चारे खाणी आप उपाईआ। तेरे उप्पर देवे सच संदेश, परा बसन्ती मद्धम बैखरी बाणी आपे गाईआ। तेरे उप्पर

करे वेस, वेस अनेक रूप वटाईआ। तेरे उप्पर तख्त निवासी बण बण बहे नर नरेश, तख्त ताज आप सुहाईआ। तेरे दर फिरे कर कर भेख, दर दरवेशा रूप वटाईआ। तेरे मन्दिर लक्ख चुरासी लुकया वेख, लुक लुक आपणा मुख छुपाईआ। तेरे मन्दिर आपे वसे वेखणहारा दहि दिस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा गुण दए जणाईआ। सुणया गुण हरि भगवन्त, धरनी दोए दोए जोड़ करे निमस्कार। तूं साहिब सच्चा कन्त, मैं औगुण भरी तेरी नार। मेरी चोली चाढ़ रंग बसन्त, दुरमति मैल दे उतार। मेरी तोड़ हउमे हंगत, निवण सो अक्खर कर विचार। मैं आपणी गोदी रक्खां जीव जंत, चुक्कां सभ दा भार। तेरी करदी रहिवां मन्नत, नेत्र नैण नैण उठाल। कर किरपा भेजीं आपणे सन्त, मेरे नाल करन प्यार। मेरा लेखा रक्खीं आपणे हथ्थ अन्त, दूसर हथ्थ ना दईं वखाल। मैं महिंमा गावां तेरी अगणत, तूं दाता बेमिसाल। मैनूं सुनाउणा इक्क छंत, मेरा तोड़े सदा जंजाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होई दीनन दीन दयाल। दीन दयाल कृपानिध, कर किरपा ठाकर मेरया। मेरा कारज करना सिद्ध, मैं वसां तुध बिन घुप्प अन्धेरया। आपणे मिलण दी आप बणाउणी बिध, तेरा पैंडा मैं ना जाणा दूर नेड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा कर मिहरया। मेहरवान हरि दया कमा, आपणी बूझ बुझाईआ। तेरे सिर हथ्थ दए टिका, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। तेरी लज्जया रक्खे शर्म हया, जुग जुग वेस वटाईआ। जीव जंत भुल्ले मार्ग दए पा, जो तेरी पति रहे गंवाईआ। दुष्ट दुराचार दए खपा, देवे दंड सच्चा शहिनशाहीआ। तेरा रंडेपा दए कटा, कन्त सुहागी मेल मिलाईआ। जुग जुग तेरा जनेपा देवे पा, हरिजन साचे तेरी गोद वखाईआ। तेरा सच रूप दए वटा, करे सेवा बेपरवाहीआ। तेरा पक्ख करे ख़ुदा, ख़ालक वेखे थाउँ थाँईंआ। आदि जुगादि ना होए जुदा, सख़ा सुहेला संग निभाईआ। चरनां उप्पर होणा तूं इक्क फ़िदा, फितरत तेरी इक्क वखाईआ। चरन कँवल तेरे उप्पर दए टिका, तेरा जन्म अजन्म लए बदलाईआ। कदम कदम वेखे तेरा थाँ, जिस घर गुरमुख साचे लए प्रगटाईआ। गुरमुखां बणे तूं साची मां, आपणी गोद अमृत साचा सीर प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर देवे वर, तेरा लेखा दए मुकाईआ। जुग जुग लेख लिखाउँदा आया, निरगुण सरगुण जामा धार। दुष्ट हँकारी खपाउँदा आया, नाम खण्डा फड़ कटार। रावन गढ़ तुड़ाउँदा आया, रामा रूप हो उज्यार। कंस हँकारी खपाउँदा आया, कान्हा कृष्ना मीत मुरार। दीनां दर्द वण्डाउँदा आया, नानक गोबिन्द खेल सच्ची सरकार। कलिजुग अन्तिम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाउणा, ख़ालक ख़लक हरि वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई तेरा हौला भार कराउणा,

धरती देवे माण वड्याईआ। धरत आपणा चरन टिकाउणा, पुरख अबिनाशी रूप वटाईआ। पहलां गुरसिख मात जगाउणा, आपणे आउण दी बिध दए समझाईआ। जिस दुआरे गुरसिख वसाउणा, तिस दुआरे फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी नज़र ना आउणा, अचरज खेल बणाईआ। हरिजन हरि हरि मेल मिलाउणा, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। धरती तेरे रंग तेरा रूप रंगाउणा, तेरी दुरमति दए गंवाईआ। सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म एका छन्द सुणाउणा, सोहँ शब्द ढोला गाईआ। पिछला पैंडा पन्ध मुकाउणा, अग्गे मार्ग देवे लाईआ। साचा सुख इक्क वखाउणा, दुःख दर्द दए गंवाईआ। सतिजुग साचा माण रखाउणा, औगुण मेटे सर्ब लोकाईआ। हरिजन साचे मेल मिलाउणा, भगत भगवन्त वेखे थाउँ थाँईंआ। तेरी गोद आप बहाउणा, साची गोद दए सुहाईआ। सोहँ शब्द सभ ने गाउणा, पारब्रह्म ब्रह्म वेखे चाँई चाँईंआ। चार कुण्ट हरि हरि नज़री आउणा, दूसर इष्ट ना कोए धराईआ। पंख पखेरू पंछी उड उड सीस झुकाउणा, मछ कच्छ रहिण सरनाईआ। दहि दिशा लक्ख चुरासी जीव जंत राह तकाउणा, कौण सु वेला मिले साचा माहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निहकर्मी साचा कर्म कमाउणा, एका वार सभ दा पर्दा दए उठाईआ। जिस पेखे तिस नज़री आउणा, नज़री नज़र निहाल आप कराईआ। धरनी तेरा लेखा आपणे हथ्थ रखाउणा, धवल तेरी माण वड्याईआ। धवल तेरा मूल चुकाउणा, अमल गुण अमल वेखे बेपरवाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सभ ने गाउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ गगन पाताल अर्श फर्श ज़िमीं अस्मान वज्जे इक्क वधाईआ।

★ १४ जेठ २०१८ बिक्रमी अनन्त राम दे घर पिण्ड बाणीआं जम्मू ★

जिस लेखा तिस पाए सार, मन मनसा पूर कराइंदा। जिस संसा तिस दए निवार, जो जन आस रखाइंदा। कर किरपा जन लाए पार, कृपानिध दया कमाइंदा। आत्म अन्तर दए विचार, आत्म ब्रह्म बुझाइंदा। हउमे हंगता तोड़ हँकार, जूठ झूठ मोह चुकाइंदा। हरिजन हरि हरि इक्क प्यार, सच प्रीती इक्क वखाइंदा। जुगा जुगन्तर साची कार, गुरदेव इष्ट आपणा रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अनरंग आपणी खेल खिलाइंदा। अनरंग हरि पुरख बिधाता, भेव अभेव ना कोए जणाईआ। बैठा रहे इक्क इकांता, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। जन भगतां मेले आपणा नाता, रूप अनूप धराईआ। सच जणाए साची गाथा, घट मन्दिर करे पढ़ाईआ। होए सहाई रघुपत रघुनाथा, रघुबंस वडी वड्याईआ। मेल मिलावा रामा पूत सपूता दसराथा, दहिसर रावन मन हँकार रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप

५६०

हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस लेखा दए वखाईआ। जिस लेखा तिस मेलया, कर किरपा गुण निधान। एका दर वखाए गुरु गुर चेलया, गुर चेला रूप श्री भगवान। पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण सरगुण सज्जण सुहेलया, जीआ आत्म देवे जीआ दान। राए धर्म दी कटे जेलया, चित्रगुप्त लेखा मंगे ना आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि लए पछाण। जिस लेखा तिस मुक्या पन्ध, लक्ख चुरासी पन्ध ना कोए रखाईआ। हरिजन तजया मदिरा मास गंद, मधर नैण दरस वखाईआ। आत्म उपजाए परमानंद, निज आत्म करे रसाईआ। दूई द्वैती ढाए कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। गीत सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना मातलोक रहिण ना पाईआ। करे प्रकाश अन्धेरे अन्ध, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। जगत विहारा करे खण्ड खण्ड, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। राए धर्म ना देवे दंड, लेखा लेख दए मुकाईआ। पुरख अबिनाशी सदा बख़्शंद, हरिजन हरि हरि लए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर अग्नी तत्त होए सहाईआ। जिस लेखा तिस पाया माण, हरि सज्जण मेल मिलाया। शब्द अगम्मी सुणया फ़रमान, सति सति आप सुणाया। तीर अनियाला वज्जा बाण, गुर शब्दी बाण चलाया। सथ्थ लथ्थे पंज शैतान, हिंसा रूप ना कोए वटाया। अमृत सोमा फुट्टे विच काया मकान, निझर झिरना दए झिराया। सति सन्तोख देवे पीण खाण, धीरज धीर इक्क धराया। हरख सोग मिटे जहान, जिस जन सतिगुर पूरा गाया। अन्तिम मोख मुक्त चरन चुम्मे आण, हरिजन तेरे दर सीस झुकाया। तेरा नाता जुड़या इक्क भगवान, दूसर ओट ना कोए तकाया। अन्तिम वेले मेले आण, शब्द बबाने लए चढ़ाया। सचखण्ड वसाए सच मकान, थिर घर आसण इक्क रखाया। आवण जावण चुक्के कान, मात गर्भ दस दस मास ना फेर तपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस लेखा तिस आप चुकाया।

बिन मरन जन्म बदलाए, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। पिछला लेखा दए मुकाए, अगला लेखा आप बणाईआ। आपणी हथ्थीं कलम फिराए ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। निहकर्मी सच कर्म कमाए, कर्म काण्ड दए खपाईआ। वरन बरन इक्क रखाए, ब्रह्म पारब्रह्म सरनाईआ। साचा जन्म फिर दवाए, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। सुरती शब्दी लए मिलाए, शब्द सुरत होए कुड़माईआ। अकाल मूर्त नज़री आए, निरगुण आपणा दरस वखाईआ। नाद तूरत इक्क वजाए, रागी राग आप सुणाईआ। पूर्ब मनसा दए चुकाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। मानस

जन्म दए बदला, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। हिरदे अंदर हरि वसा, जूठा झूठा मोह चुकाइंदा। साचे मार्ग देवे ला, सतो गुण इक्क समझाइंदा। कलिजुग अग्नी तत्त दए मिटा, साचा सुत इक्क रखाइंदा। ब्रह्म मति झोली पा, मन मति गवाइंदा। एका घर दए वखा, थिर दरबारा आप सुहाइंदा। हरिजन हरि हरि लए मिला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म विच मिटाइंदा। जन्म मेटया दुक्ख, भाण्डा भरम भउ भन्नाया। घर उपजे साचा सुख, गुर सतिगुर सज्जण पाया। मात गर्भ ना होवे उलटा रुख, आवण जावण रहे ना राया। सुफल होए जननी कुक्ख, जिस जन हरि हरि अंग लगाया। मानस देही लेखे लाए मानुख, मन मणका दए भवाया। अमृत जाम प्याए घुट, सर सरोवर इक्क नुहाया। आवण जावण जाए छुट, जम का भउ चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मानस मानस लए तराया। मानस पाया हरि, हरि मेला मेल मिलाईआ। घर विच वेखे आपणा घर, घर घर विच वज्जे वधाईआ। निरभउ चुकाए झूठा डर, भय आपणा इक्क समझाईआ। गुरमुख जीवत जाए मर, नाता जगत मोह तुड़ाईआ। हरि चरन सरनाई जाए पड़, जन्म जन्म लए बदलाईआ। हरिसंगत बहे एका वार रल, काग हँस रूप हो जाईआ। सच सिँघासण लए मल्ल, आसण पुरख अबिनाशण सोभा पाईआ। दीपक जोत जाए जल, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। भाग लगाए काया माटी खल्ल, पंज तत्त वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूई द्वैती मेटे सल, एका रंग रंगाईआ। मिटे सल चुक्के बन्धन, पाया हरि निरँकारा। उपजे घर परमानंदन, सोहे बंक दुआरा। आत्म महिकाए वांग चन्दन, सच सुगंधी विच संसारा। साहिब दयाल सदा बख्शंदन, हरि बख्शश करे बख्शणहारा। पहला जन्म करे खण्डण, दूजा जन्म गुरु दुआरा। गुर मात गुर पित गुर सदा सदा तोड़े फंदन, कर किरपा पार उतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मानस जन्म हरिजन आप संवारा। सच सुल्तान सच्ची सरकार, सति पुरख निरँजण आप बणाइंदा। साचे तख्त बैठ निरँकार, साचा अदल आप कमाइंदा। जुगा जुगन्तर हो उज्यार, लक्ख चुरासी मूल चुकाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, निरगुण आपणा आप कराइंदा। तख्त निवासी बण सिक्दार, लोकमात फेरा पाइंदा। चार जुग दी वेखे कार, गुर अवतार जो मात घलाइंदा। भुल ना जाए अभुल सिरजणहार, आपणा लेखा आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव जणाया, पुरख अबिनाशी बेपरवाह । सचखण्ड निवासी हुक्म सुणाया, धुर फ़रमाना आप उपा। आपणा मार्ग आपे लाया, आपे दए सलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल खिला। निरगुण चलाया आपणा मिशन, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। हुक्म नाल बणाए

५६२

रामा कृष्न, जुग जुग वेस वटाईआ। लेखा जाणे ब्रह्मा महेष विष्न, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ला इक्क जणाईआ। साचा ला श्री भगवान, एका एक बणाया। लक्ख चुरासी मेरा नाँ, नाउँ निरँकारा आप सुणाया। पुरीआं लोआं होए सहा, जल थल महीअल फेरा पाया। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे थाँ थाँ, गगन गगनंतर फोल फुलाया। आदि जुगादि करे सच न्याँ, साचे तख्त आप सुहाया। ठग्ग चोर कोई छड्डे ना, जो बैठे मुख भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप लगाया। साचा मार्ग हरि अदालत, हरि वड्डा आप कराईआ। जुग जुग करे सच वकालत, भगवन भगती रूप तराईआ। एका नाम दए ज़मानत, ज़िमनी होर ना कोए लिखाईआ। निरगुण सरगुण करे सफ़ारश, दूसर मंगे ना कोए ग्वाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड बैठा वेख वखाईआ। सचखण्ड वखाए धर्म राज, लोकमात वज्जे वधाईआ। निरगुण रच रच आपणा काज, लक्ख चुरासी खेल खिलाईआ। बण हल्कारा गुर अवतारा मारदा रिहा वाज, हरिजन सचे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म चलाईआ। जुग जुग हुक्म चलाए हुक्मरान, हाकम आपणा नाउँ धराइंदा। फड़ फड़ मेटे पंज शैतान, बेईमान कोई रहिण ना पाइंदा। इक्क जणाए सच नज़ाम, अमाम अमामा आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग साचा खेल खिलाइंदा। सतिजुग साचा सच विहारा, शाह पातशाह आप कराईआ। निरगुण निरवैर बण सिक्दारा, साचा हुक्म चलाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर पनिहारा, साची सेव समझाईआ। लोकमात कढ्ढे आप वगारा, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। साचा खेल करनेहारा, एका रूप धराइंदा। राम रम्मईआ हो त्यारा, रावण गढ़ तुड़ाइंदा। झूठा छड्डया तख्त संसारा, साचा तख्त आपणे अंदर आसण लाइंदा। एका प्रेम कीआ प्यारा, हनुमंत नाउँ धराइंदा। एका चरन कँवल कीआ प्यारा, लकशमन आपणा माण दवाइंदा। एका सीता दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका भरत बणाए वणजारा, राज जोग आप समझाइंदा। एका खेले खेल जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, जीव जंत रईयत आपणी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार बंधाइंदा। साची धार बन्ह्णहारा साचा कमिशन आप बणाईआ। आपे बणे साचा शिशन, जज होर ना कोए बणाईआ। रूप वखाए कान्हा कृष्न, दोए दोए लेखा आप मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रूप धराईआ। जुग जुग रूप अवल्लड़ा, हरि साचा सच धराइंदा। करे खेल इक्क अनमुल्लड़ा, अकल कल आप अख्वाइंदा। शब्दी जोती पवणी आपे रलड़ा, पाणी पवण आप समाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेस अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। लोकमात बणाए सचखण्ड दुआरा, निरगुण आपणी जोत जगाईआ। हुक्मी हुक्म करे वरतारा, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ल्याए चरन दुआरा, दर दरबान लए बहाईआ। चित्रगुप्त उठाए लिखारा, लक्ख चुरासी लिख्या नाल लिआईआ। राए धर्म वखाए आपणी धारा, जो रख्या ला बणाईआ। जम जमदूत आयन वारो वारा, आपणा जबूड़ा हथ्थ उठाईआ। पुरख अबिनाशी एका दस्से धाम न्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा शहिनशाहीआ। साचा हुक्म हरि फ़रमान, आपणा आप सुणाइंदा। कट्ठे होणा सच मकान, सच मकाना इक्क बणाइंदा। सम्बल नगरी सति निशान, पुरख अबिनाशी डेरा लाइंदा। सेवा करे गोबिन्द जवान, गोबिन्द आपणा बल रखाइंदा। रामा कृष्न होए प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। चार जुग दा वेखे निशान, निशाना आपणे हथ्थ रखाइंदा। मेल मिलाए गोपी काहन, सीता राम विछड़ ना जाइंदा। ईसा मूसा सच्चे दर दरबान, दर दरवेश आप सदाइंदा। मुहम्मद पकड़े चार यारी करे परवान, यार यारी संग मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अदालत आप सुहाइंदा। सच अदालत बणाए सोभावन्त, सचखण्ड निवास वज्जी वधाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, कलिजुग अन्तिम बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी वेखे जीव जंत, भुल कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप जणाईआ। आपणा हुक्म जणाए हरि हरि, कलिजुग अन्तिम वारी आईआ। जगत वकारी आपे फड़ फड़, एका भउ रखाईआ। जुग जुग गुर अवतार मनमुख मुकौंदे रहे लड़ लड़, तीर कमान तलवार हथ्थ उठाईआ। कलिजुग अन्तिम शाह पातशाह साचे तख्त बैठा चढ़, एका हुक्म दए सुणाईआ। हुक्मे अग्गे कोए ना सके अड़, गुर अवतार सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना दए समझाईआ। धुर फ़रमाना सुणाए सच निशान, हरि साचा आप प्रगटाईआ। लेखा जाणे दो जहान, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। वेख वखाए आदि शक्ति भगवान, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। अष्टभुज वेखे मार ध्यान, सिँघ शेर शेर वडी वड्याईआ। चार जुग जो दस्सदा आया कहाण, आपणा नाउँ मात प्रगटाईआ। अन्तिम करे पुण छाण, लेखा लेखा लए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पहला मुकदमा दीवानी लए चलाईआ। जगत मुकद्दमा चले दीवानी, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। राज राजानां आई हानी, साचा पातशाह ना कोए अख्वाइंदा। मायाधारी पहलों देण कुरबानी, ग़रीबनिमाणे गले लगाइंदा। उच्चे मन्दिर मेटे निशानी, कुल्ली कक्खां आप प्रगटाइंदा। लक्ख चुरासी वेखे जवानी, जोबन मात ना कोए हंढाइंदा। दर बद्धे देवे ठंडा

कोए ना पाणी, हथ्थ सीर ना कोए फड़ाइंदा। जो झूठी रसना पढ़दे रहे बाणी, अन्तिम बाण निराला लाइंदा। किसे सेज ना मिले राजे राणी, शाह सुल्ताना ख़ाक मिलाइंदा। कोई दलील ना देवे जगत विद्वानी, जगत विद्या ना कोए रखाइंदा। बण विचोला ना मारे भानी, दूसर अंग ना कोए लगाइंदा। लेखा वेखा चार खाणी, धर्म राए नाल रलाइंदा। चित्रगुप्त सभ दा होया जान जाणी, इक्क इक्क लेखा आप सुणाइंदा। कलिजुग जीवां नाता बद्धा मात पित भैण भाई नाना नानी, निरगुण नाम ना कोए धराइंदा। माया राणी घर घर होई प्रधानी, माया ममता मोह नाच नचाइंदा। तेरा देणा ना सके कोए पछाणी, मकरूज कर्ज ना कोए लांहयदा। कलिजुग अन्तिम वेखे आप श्री भगवानी जोती जामा भेख वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। दीवानी दावा होणा दायर, हाढ़ सतारां हरि समझाईआ। बचया रहे ना कोई नगर खेड़ा पिण्ड शहर, शाह पातशाह वेखे थाउँ थाँईंआ। नौ खण्ड पृथ्मी चले एका मोहर, एका हुक्म दए सुणाईआ। लुकया रहे ना कोई अमीर तमीर, हुक्मरान साचा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत मकुद्दम आपणे दर बुलाईआ। जगत मुकद्दम आयण दर, हरि साचा सच बुलाइंदा। लिखी डायरी जो घर घर, आपणा हिसाब वखाइंदा। आपणी कीती लैण भर, तेरा इन्साफ़ मोहि भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अदालत आप लगाइंदा। सच अदालत करे सुल्ताना, मजिस्टरेट आप अख्वाईआ। एका वार देवे धुर फ़रमाना, आपणी हथ्थीं भराय हरि तल्बाना, तल्ब सारे लए कराईआ। दस बीस तीस ना करे किसे जुर्माना, जुरम आपणा आपणे हथ्थ रखाईआ। ना कोई सफ़ारश आए चल मकाना, दर दुआरा नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतारां आपणे दर आपे सद्दे अग्गे कढ्ढ वखाए परवाना, साचा नाउँ किसे कोए नज़र ना आईआ। लक्ख चुरासी गौंदी रही गाना, जगत ताल रूप वटाईआ। किसे मिल्या ना श्री भगवाना, जो अन्त लए छुडाईआ। कलिजुग जीव बध्धा दो जहानां, दोए दोए लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अदालत रिहा कराईआ। साची अदालत करे हमेश, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम फौजदारी चल्लया केस, नौ खण्ड पृथ्मी पई लड़ाईआ। सालस बणे गुर दस्मेश, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। मुजरम बणाए मुसायक मुल्ला शेख़, पीर दस्तगीर नाल रलाईआ। अल्ला राणी रहे वेख, मस्जिद अंदर बैठी मुख छुपाईआ। चार यार बणन दरवेश, एका हुक्म सुणाईआ। हाढ़ सतारां फड़ के करनी पेस, पुरख अबिनाशी एका पेसी रिहा वखाईआ। अद्धी रात हाढ़ सतारा चल के आए निरगुण नानक मोढे धर के खूंडी खेस, रूप अनूप वटाईआ। अल्ला राणी तेरी अदालत मैं लई वेख, आपणी हथ्थीं चक्की चलाईआ। ग़रीब निमाणयां हथ्थां पैरां पाए छेक,

तेरयां शेखां दिती सज़ाईआ। बाल अञ्याणे झूजे खेत, आपणा आप गए कटाईआ। छोटे बाले नीआं हेठां वेख, तेरी रती रत तरस ना आईआ। तूं बण दुहागण गुरमुखां खा खा भरया आपणा पेट, हरिजन साचे चरखड़ीआं उत्ते भवाईआ। किसे पवाई सीस तत्ती रेत, किसे देगां विच उबलाईआ। तेरे चार यार तेरा खेल रहे वेख, नाल मुहम्मद दए ग्वाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सच अदालत आपणी आप रखाईआ। सच अदालत करे जज्ज, साची जज्जी गुरसिख तेरे अंदर बणाईआ। तेरा मक्का काअबा वेख्या हुंदा हज्ज, शरअ शरीअत फोल फोलाईआ। तेरा पर्दा सके ना कोए कज, होई दुहागण देवे मात दुहाईआ। तेरा उच्चा हुजरा जाणा भज्ज, तेरी मेहराब नज़र कोए ना आईआ। हुण वेला जे कोई सद्दणा ते लै सद्द, सदी चौधवीं रही विहाईआ। चौदां सदीआं जो दब्बदी रही धरती विच हड्ड, तेरीआं हड्डीआं दए सुकाईआ। माणस घतदी रही डूँघी खड्ड, आपणा हुक्म चलाईआ। अज्ज बांधी बद्धी हो जाईं अड्ड, तेरा संग ना कोए निभाईआ। चार यार तैनूं जायण छड्ड, आपणी हथ्थीं बन्धन पाईआ। पीर पैग़म्बरां शाह सुल्तानां जो द्वैत प्याई मदि, एका वार बाहर दए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह सोहे तख्त, तख्त सुहाना आप बणाईआ। गोबिन्द जाणे एका वक्त, जिस हरि हरि आप बुझाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों हरिजन कढ्ढे साचे भगत, भारत खण्ड वज्जी वधाईआ। नौ नौ तेरा लेखा चुक्के बूंद रक्त, रक्त नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दए सुणाईआ। साचा हुक्म सुणाया दस दस्मेश, हरि शब्दी शब्द अलाइंदा। कलिजुग अन्तिम लक्ख चुरासी लेखा एका वार करना पेश, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी एका नेत्र लए पेख, वरका वरका ना कोए उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव हाढ़ सतारां दए खुल्हाईआ।

५९६ ५९६

★ १४ जेठ २०१८ बिक्रमी धंगाली करतार सिंघ दे घर जम्मू ★

काया गठड़ी कंडा थोहर, नज़र किसे ना आइंदा। रैण अन्धेरी चुभे घोर, वेख कोए ना पाइंदा। नाल रलाए पंज चोर, चोरी चोर सद कमाइंदा। जीव कुरलाए पाए शोर, दुःख दर्द ना कोए मिटाइंदा। बिन सतिगुर पूरे सार ना पाए कोई होर, नशतर नाम ना कोए लगाइंदा। अन्तिम चले जगत कोढ़, रोगी रोग विच फसाइंदा। जिस जन सतिगुर पूरा जाए बौहड़, काया कंडा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, डूँघी भँवरी फोल फोलाइंदा।

कलिजुग कंडा तिक्खी धार, जीवां जंतां रिहा तड़फाईआ। कदे आर कदे पार, अद्धविचकार नज़र किसे ना आईआ। मनमुख रोवण ज़ारो ज़ार, दिवस रैण चैन ना पाईआ। ना कोई खिच्चे कढ्ढे बाहर, हथ्थ किसे ना आईआ। चारों कुण्ट फिरन दुख्यार, अठसठ बैठे फेरा पाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरदुआर कर पुकार, आपणा दुःख रहे सुणाईआ। डूँघी नश्तर कोई ना देवे मार, जराम दिस कोए ना आईआ। हाए हाए करे सर्ब संसार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया गठड़ी हँकारी सूल इक्क लगाईआ। हँकारी सूल तिक्खा मुख, मनमुखां रही जलाईआ। अठ्ठे पहर धूंआँ रिहा धुख, दरदी दर्द ना कोए मिटाईआ। चारे कुण्ट वेखण उठ उठ, कौण होए आण सहाईआ। खाणा पीणा गया छुट्ट, चिंता सोग वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। काया गठड़ी वेखणहारा, एका रंग समाइंदा। जुगा जुगन्तर हो उज्यारा, लोकमात वेस वटाइंदा। भगतन मेला विच संसारा, जंगल जूह उजाड़ पहाडा फोल फोलाइंदा। नाम देवे इक्क सहारा, साचा बस्त्र तन छुहाइंदा। कंडा चुभे ना विच संसारा, जगत दुःख ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराइंदा। कढ्ढे कंडा वखाए कन्ढा, कन्ढी आपणा डेरा लाईआ। त्रैभवण धनी वण्डाए वण्डा, त्रै त्रै देसा वेख वखाईआ। खोज खोजाए ब्रह्म ब्रह्मण्डा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। भेव चुकाए जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा कन्ढा दए वखाईआ। साचा कन्ढा हरि किनारा, कन्ढी पत्तण आपणा लाइंदा। पुरख अगम्मड़ा हो उज्यारा, अगम्मड़ी धार चलाइंदा। लक्ख चुरासी पावे सारा, जीवां जंतां वेख वखाइंदा। हरिजन विरला कर प्यारा, आप आपणा मेल मिलाइंदा। दीनां अनाथां दए सहारा, दीनन आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच किनारा आप सुहाइंदा। सच किनारा अन्तिम घाट, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। कन्ढी बैठा कट्टे वाट, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। काया गठड़ी वेखे आण बाट, डूँघी भँवरी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। काया गठड़ी गंढु खोल्ह, आपणा पर्दा दए चुकाईआ। सूला सत्थर वखाए कोल, यारड़ा सच्चा माहीआ। उप्पर सुत्ता रहे अडोल, कंडा कोए चुभण ना पाईआ। एका नाम सुणाए बोल, अनबोलत शब्द अल्हाईआ। कंडे संग जाए मौल, पत्त डाल्ही फुल महिकाईआ। गुरमुख साचे रक्खे अडोल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। कंडा फुल्ल एका घर, हरि हरि आप उपाइंदा। फुल तोड़े मालण बण, आपणी खारी आप टिकाइंदा। हार परोए फुल्ल कहे धन्न, साचे हट्ट आप वकाइंदा। छैल छबीला हरिजन

५९७

पाए गल चढ़े चन्न, जोबन नूर नाल मिलाइंदा। कंडा किसे ना आवे कम्म, हथ्थो हथ्थ ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मलाइंदा। कंडा बणन मनमुख जीव, सतिगुर पूरा हथ्थ ना लाईआ। गुरमुखां उत्तों रिहा थेव, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। आपणी हथ्थीं वेचिआ मेव, फल पाकी ल्ए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि महिकाईआ। साचा फुल हरिजन मीत, घर पंखड़ीआं आप खुल्हाईआ। हो हो भँवरा गाए गीत, वासना सुगंध विच मिलाईआ। गुरसिख फुल्ल बैठा रहे अतीत, घर आपणे सोभा पाईआ। गुर सतिगुर निभावण आए आपणी प्रीत, कलिजुग काला भौरा दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन फुल ल्ए महिकाईआ। कलिजुग कंडा लग्गा टाहणी, पत्त डाल्ही मुख छुपाया। कोए ना मिल्या साचा हाणी, साचा संग ना कोए रखाया। ना जोबन ना कोए जवानी, साचे दर ना कोए बहाया। कोई हथ्थ ना लाए राजा राणी, दूर दुराडा दए दुरकाया। उप्पर छिड़के ना कोई पाणी, सीतल धार ना कोए वहाया। कलिजुग अन्तिम रोवे करे पछोतानी, नेत्र नैणां नीर वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मनमुखां दए आप सज़ाया। मनमुख कंडा मनमुख रिहा चुभ, कलिजुग आपणी खेल खिलाईआ। अंदरे अंदर रिहा खुभ, रो रो हाल सुणाईआ। मेरी कोई ना लवे सुध, ना होए कोए सहाईआ। मेरी मारी गई बुध, एका भुलया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आपे पाईआ। कलिजुग कंडा तिक्खी धार, जीवां जंतां रिहा सताईआ। राह खेड़े जांदयां मारे मार, राती सुत्तयां दए जगाईआ। कोई ना सके सुरत संभाल, मन मति बैठी पर्दा पाईआ। फल फुलवाड़ी ना दिसे डाल, कंडा ख़ार सीस उठाईआ। काया गठड़ी ना सके कोए संभाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मनमुखां दए सज़ाईआ। गुरमुख साचा अनमुल्लड़ा फुल्ल, पुरख अबिनाशी आपणे हथ्थ रखाईआ। बण बण मालन पावे मुल्ल, अमुल वडी वड्याईआ। साचे कंडे तोले तोल, तोला बणे सच्चा शहिनशाहीआ। आपणे हथ्थ रखाए अडोल, डोल कदे ना जाईआ। सदा सदा सद रक्खे कोल, आप आपणा रंग चढ़ाईआ। वासना अंदर सुगंधी जाए मौल, सुगंध वासना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंदर धरया साचा कँवल, अमृत मेघ आप बरसाईआ। अमृत मेघ बरसे बरखा, मेघ मेघला खेल खिलाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरखा, चिंता दुःख ना कोए जणाइंदा। एका देवे दरसी दरसा, दे दरस दर्द मिटाइंदा। संसारी मेटे हिरस हिरसा, हवस होर ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा फुल्ल महिकाइंदा। हरिजन साचा फुल्ल माणक मोती, घर साचे आप टिकाईआ। जगदी रहे निर्मल

जोती, जोत नूर रुशनाईआ। मिले मेल इक्क इकलोती, इक्क इकल्ला होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे अंग लगाईआ। हरिजन फुल्ल फूलणहार, इक्क इक्क मेल मिलाया। हरि मन्दिर करे सच शंगार, दर साचे भेंट चढ़ाया। वासना सुगंध आए एका वार, वासना वासना विच समाया। मुके पन्ध सर्ब संसार, दर घर साचे आसण लाया। ना कोई पत्त ना कोई डाल्, ना कोई कंडा साथ रखाया। पुरख अबिनाशी हो दयाल, आपणी खारी आपे पाया। सचखण्ड दुआर रक्खे संभाल, काया गठड़ी परे सुटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले आपणे घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाल लालां विच रखाया।

★ १४ जेठ २०१८ बिक्रमी कर्म सिँघ दे घर धंगाली जम्मू ★

गुरसिख सच्चा शाह सवारा, शब्द घोड़े तंग कसाईआ। चरन रकाबे देवे आपणी वारा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी खेल न्यारा, ख़ालक ख़लक विच कराईआ। हरिजन फिरे विच संसारा, चार कुण्ट भुआईआ। लोआं पुरीआं बोल जैकारा, घट घट रिहा सुणाईआ। करोड़ तेतीसा दए हुलारा, सुरपति राजा इन्द उठाईआ। छोटा बाला हो त्यारा, दर आया वाहो दाहीआ। पुरख अबिनाशी कर शंगारा, साचे अश्व दिता चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सवारी इक्क अख्वाईआ। गुरसिख अस्वार होए सवार, अश्व आपणा आप दौड़ाईआ। पवण उनन्जा ना पावे सार, कोह करोड़ी लेखा लिख ना सके राईआ। साहिब सुल्तान दए सहार, शाह पातशाह दया कमाईआ। शंकर छप्पर छन्न लए उठाल, सोया अन्त रहिण ना पाईआ। गुरसिख बाला आया बण जवान, सूरबीर नाउँ धराईआ। नाल ल्याया सत रंग निशान, सति सति पुरख निरँजण बणत बणाईआ। सृष्ट सबाई दए ज्ञान, एका गुण समझाईआ। प्रगट होया श्री भगवान, गुरमुखां दए वड्याईआ। नव नौ चार चुकाए काण, आपणी कीती आप उलटाईआ। आपणा बणाए फेर विधान, साची बणत आप बणाईआ। सच सिँघासण बह देवे फ़रमान, धुर फ़रमान आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे साचे घोड़े लए चढ़ाईआ। गुरमुख घोड़े गया चढ़, सति पुरख निरँजण आप चढ़ाया। पुरी ब्रह्म गया वड़, पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाया। ब्रह्मा वेखे उठ उठ खड़, कौण दुआरे मेरे आया। मैं लक्ख चुरासी घाड़न रिहा घड़, मेरा घाड़न कौण भन्न वखाया। मैं विद्या आपणी गया पढ़, वेद शास्त्र रूप धराया। कौण मेरा कीता देवे हरि, हार जित कौण दए वखाया। मैं निरभउ हो के चुकाया डर, आपणे घर आसण लाया। मैं अनभोल ल्या फड़, पुरख अबिनाशी

तेरा भेव किसे ना पाया। तेरा गुरसिख तेरा अक्खर आया पढ़, मेरा अक्खर दिता मिटाया। मैं सरन सरनाई डिगा दड़, वाह वा तेरा शुकर मनाया। मेरी आपणे घर लाउणी जड़, लक्ख चुरासी देणी जड़ उखड़ाया। मेरा नूर आपणे अंदर लैणा धर, लक्ख चुरासी नूर अग्नी तत्त जलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे घोड़े आप बहाया। गुरसिख चढ़ चढ़ घोड़े चढ़या चा, वाग आपणे हथ्थ उठाईआ। पुरख अबिनाशी दए सलाह, साचा राह दए वखाईआ। इन्दर शंकर फड़ फड़ बांह, आपणी गोद बहाईआ। ब्रह्मे एका अक्खर दए सुणा, अन्त आखर करे पढ़ाईआ। हुक्म मिल्या धुर दरगाह, वेला सभ दा रिहा चुकाईआ। सचखण्ड निवासी लोकमात प्रगट होया सच्चा शहिनशाह, दो जहानां शहिनशाही दए बदलाईआ। आपणे हुक्मरान आपणे हुक्म दए बहा, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। आदि जुगादि करदा आया सच न्यॉं हरि का भेव कोए ना पाईआ। गुरसिख बहाए साचे थाँ, थाँन थनंतर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणे घोड़े आप चढ़ाईआ। गुरसिख चढ़या घोड़ कस पलाणा, शब्द पलाक इक्क लगाइंदा। मिटौदा जाए राजा राणा, शाह सुल्ताना खाक मिलाइंदा। गाउँदा जाए एका गाणा, विष्नूं भगवान आप पढ़ाइंदा। दरगाह साची मिल्या सच टिकाणा, राह विच ना कोए अटकाइंदा। सति सरूपी सच बबाणा, साचा घोड़ा रूप वटाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवाना, आप आपणा दर सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे अश्व जिस चढ़ाइंदा। अश्व घोड़ा साचा राकी, सो पुरख निरँजण आप बणाया। गुरमुखां वखाए खोल्ह आत्म ताकी, आपणा पर्दा आप उठाया। किसे दिस ना आवे जीव ख़ाकी, दोए दोए लोचण दरस किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां साचा राह रिहा वखाया। साचा राकी हरि का नाउँ, हरिजन साचे आप चढ़ाईआ। फिर फिर वेखे नगर खेड़े ग्राउँ, टिल्ले पर्बत फोल फोलाईआ। गुरसिख फड़ फड़ चढ़ाए बाहों, मनमुख नेड़ कोए ना आईआ। अग्गे पिच्छे फिरे सिर रक्खे ठंडी छाउँ, ठग्ग चोर यार लुट कोए ना जाईआ। करे प्यार जिउँ बालक माउँ, पिता पूत होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घोड़ा इक्क रखाईआ। साचा घोड़ा चार पौड़, चार युगां आप लगाइंदा। जुगा जुगन्तर रिहा दौड़, आपणा पन्ध आप मुकाइंदा। अन्तिम भन्ने रीठा कौड़, कलिजुग जीव वेख वखाइंदा। गुरसिख घर जाए बौहड़, आप आपणा सीस झुकाइंदा। हरिजन उठाए आपणी मौर, आपणी पीठ भार रखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे कर कर ग़ौर, कोई गैर मेरे संग रहिण ना पाइंदा। ब्रह्मण्डां कर के आया सैर, लोकमात वेख वखाइंदा। चार कुण्ट वरते कहर, सांतक सति ना कोए कराइंदा। कलिजुग पापां वगे हड़ गहर, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। पिता पुत्तर प्या वैर,

६००

भाई भाई ना मेल मिलाइंदा। भैण भ्रावां देवे ज़हिर, माया ममता खेल खिलाइंदा। नारी कन्त भुलाए कर कर हेर फेर, सच सुच्च ना कोए जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होया सिँघ शेर दलेर, लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा। आपणा घोड़ा फड़ ल्याया घेर, गुरसिखां हथ्थ फड़ाइंदा। चढ़ना छेती ना लाउणी देर, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। चारों कुण्ट होणा हनेर, राह खेड़ा ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख अस्वार आप कराइंदा। गुरसिख अस्वार उठ कमरकस, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। सतिगुर मार्ग रिहा दस्स, साचा मार्ग इक्क समझाईआ। किसे ना रहिणा किसे दे वस, सगला संग ना कोए रखाईआ। गुरसिख गुर गुर मिले हस्स हस्स, बाकी रोवे सर्ब लुकाईआ। हुण कहिन्दे मूर्ख मूरखां नाल गए फस, मूर्ख बणया बेपरवाहीआ। मूरखां कोलों दूर दुराडा गया नस्स, मूर्ख आपणा रूप छुपाईआ। जिस जन हिरदे अंदर गया वस, साची सूरत दए वखाईआ। अन्तिम पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। गुरसिखां देवे आप शाबाश, जो घोड़यां उप्पर बैठे आसण लाईआ। लेखा चुक्के पृथमी आकाश, आकाश आकाशां पार कराईआ। जिथे रक्खे आपणा वास, गुरमुख रक्खे चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बण बण दासी दास करे बन्द खलास, ख़लासा आपणा ना किसे समझाईआ।

★ १४ जेठ २०१८ बिक्रमी मेला राम दे घर धंगाली जम्मू ★

तारा सिँघ दा घोड़ा हिनके मंगे दाणा, शोर रिहा मचाईआ। पहलों खावां राजा राणा, शाह सुल्तानां दयाँ खपाईआ। फेर ढावां उच्च मकाना, उच्चा टिल्ला कोए रहिण ना पाईआ। फिर मिटावां झूठा गाणा, धीआं भैणां जो नाच रहे कराईआ। फिर मिटावां पीणा खाणा, मदिरा मास जो जन रसन रहे लगाईआ। फेर वरता आपणा भाणा, होणी नार पुरख अबिनाशी अग्गे सीस झुकाईआ। तूं शाह पातशाह सच्चा सुल्ताना, तेरे चलां हुक्म रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क रखाईआ। साची सेवा मेरी रक्ख, गुरसिख अश्व मंग मंगाइंदा। गुरमुख आपणे लोकमात कर प्रतक्ख, मैं घर घर वेख वखाइंदा। मेरा आसण रहे ना सख, गुरसिख साचे आप चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंग मंगाइंदा। एका मंग मंगे घोड़ा, हरि हरि अग्गे सीस झुकाईआ। गुरसिख मिले मेल मेरा जोड़ा, लोकमात वज्जे वधाईआ। मैं चाँईं चाँईं आवां दौड़ा, तेरा चरन राह तकाईआ। वेखीं दर करीं ना सौड़ा, भुल कदे ना जाईआ। मैं अक्खीं वेख के चल्लया तेरे सस्से उप्पर होड़ा, सस्सा तेरा किला निरगुण सरगुण विच बहाईआ। हँ

ब्रह्म लगाया पौड़ा, पहला पौड़ा दवां टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आस पूर कराईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल, दयावान दया कमाइंदा। उठ जा वेख मेरे गुरसिख लाल, लोकमात राह दसाइंदा। जुग जुग बैठे बण कंगाल, झूठा धन ना कोए रखाइंदा। मैं सौदा करां बण दलाल, रसीद आपणे हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दर समझाइंदा। अश्व घोड़ा करे निमस्कार पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। आपणे प्रेम मैनूं शंगार, दे सच्चा एका दान। मैं जावां विच संसार, गुरमुख वेखां नौजवान। सिँघ तारा रिहा पुकार, अठ्ठे पहर वेखे मार ध्यान। मैं फड़ करां अस्वार, आपणे उप्पर चुक्का भार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुरसिख बख्शणा शाह अस्वार। हरि घोड़ा नौजवान अग्गे आए खड़, सोलां कलीआं आसण पाईआ। सिँघ तारा बिरध अवस्था वेख ना जाए डर, आपणा मुख लए भवाईआ। मैं निउँ निउँ निउँ अग्गे करां आपणा धड़, चरन धूढ़ मस्तक टिक्का लाईआ। मेरा कोई ना फरके फर, सील सन्तोख इक्क जणाईआ। तूं कर किरपा दिता धर, मैं आवां वाहो दाहीआ। तेरा पुचावां तेरे घर, तेरा तेरी सेव कमाईआ। होए सुभाग मिले हरि दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घोड़े उप्पर आप चढ़ाईआ। मारे पौड़ खोपरी लथ्थे, दूई द्वैती दए मिटाईआ। करे प्रकाश जगत रथे, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। मेल मिलाए जिउँ जट धन्ने, भोले भाउ होए सहाईआ। सतिगुर पूरा एका मन्ने, रुस्सी रहे सर्ब लोकाईआ। भाग लगावे छप्पर छन्ने, नाम छप्पर छन्न आप छुहाईआ। बण बाढी दूसर नाल कदे ना मन्ने, दूजा घर ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए दबाईआ। पहला पौड़ मस्तक उत्ते दए रक्ख, उप्पर आपणा भार रखाईआ। घर विच्चों घर कर प्रतक्ख, घर आपणा दए वखाईआ। साची वस्त फड़ाए हथ्थ, नाम अमोलक बेपरवाहीआ। महिमा सुणाए अकथना अकथ, रसना जिहवा ना कोए हिलाईआ। आपणा मार्ग जाए दस्स, भरम भुलेखा सर्ब कढ्ढाईआ। साचा नूर कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। आत्म सेजा कर भोग बिलास, गुरमुख गुर गुर नारी कन्त रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलाईआ। साचा पौड़ रक्खे चोटी, दयावान दया कमाइंदा। जगत कढ्ढे वासना खोटी, वाह वा आपणा रंग रंगाइंदा। गुरसिख ना खाए मास बोटी, मदिरा पाण ना कोए प्यांअदा। कर किरपा प्रगटाए निर्मल जोती, जोत जोत जगाइंदा। गुरसिख आत्म रहे ना सोती, सोई सुवाणी आप उठाइंदा। फड़के आया एका सोटी, सोहँ डण्डा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुरसिख घर घर वेख वखाइंदा।

बाली बुध ब्रह्म विचार, हरि सरन सच्ची सरनाईआ। पुरख अबिनाशी पाए सार, बाल अवस्था दए वड्याईआ। घट नूर होए उज्यार, सूझ बूझ आप जणाईआ। कलिजुग माया पोह ना सके विच संसार, जगत ध्रोह ना कोए कमाईआ। एका मोह बख्शे संगत प्यार, मात पित वखाए सर्ब भैण भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छोटी बाली गोद बहाईआ। छोटी बाली बाल अञ्याण, तन मन चाउ घनेरा। घर मिले मेरा श्री भगवान, दर आए पाए फेरा। मेरा माणस जन्म करे परवान, चुक्के जम का झेड़ा। ब्रह्म देवे जीआ दान, पारब्रह्म कर कर आपणी मेहरां। चरन धूढ़ी कराए सच्चा अशनान, दरस वखाए नेरन नेरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन चुकाए मेरा तेरा। बाल अञ्याणी सुघड़ सुचज्जी, तन मन वैराग्या। चाँईं चाँईं फिरे भज्जी, मेरा घर होए सुभागया। मेरीआं पकड़े दोए बांही, बिन मात पित रक्खे लाजया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस ग़रीब नवाजया। बाल अञ्याणी उत्तम ज़ात, मिली माण वड्याईआ। पुरख अबिनाशी दे के जाए नाम दात, सौहरे पेईए सदा संग रखाईआ। आवे जावे पुछे वात, नित नवित फेरा पाईआ। बणया रहे पिता मात, बाल अञ्याणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को गल्ल लग्गी चंगी, जेहड़ी आखे पातशाह मेरे घर फेरा पाईआ।

६०३

★ १४ जेठ २०१८ बिक्रमी लछमण सिँघ दे घर धंगाली जम्मू ★

आदि अन्त हरि का रंग, सो पुरख निरँजण आप रखाइंदा। जुगा जुगन्तर नाम मृदंग, हरि पुरख निरँजण आप वजाइंदा। दो जहानां सच पलँघ, एकँकारा आप हंढाइंदा। मेट मिटाए अन्धेरा अन्ध, आदि निरँजण जोत जगाइंदा। अबिनाशी करता गाए सुहागी छन्द, आपणा नाउँ आप धराइंदा। श्री भगवाना करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, घर साचे सोभा पाइंदा। पारब्रह्म आपे जाणे आपणा अनन्द, सति सरूप आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप रखाइंदा। सो पुरख निरँजण साची धार, सचखण्ड दुआर बणाईआ। थिर घर आपणा कर पसार, चरन कँवल टिकाईआ। सुन्न अगम्मी खोल्ह किवाड़, धूंआँधार वखाईआ। आपणी इच्छया कर विचार, साची भिच्छया जोत रुशनाईआ। दीवा बाती इक्क उज्यार, कमलापाती लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खिलाईआ।
, सो पुरख निरँजण नाउँ धराइंदा। आप प्रगटाए आपणी जाती, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। ना कोई दिवस ना कोई

राती, थित वार ना वण्ड वंडाइंदा। ना सन्धया ना करे प्रभाती, वेला वक्त ना कोए जणाइंदा। ना पिता ना कोए माती, दाई दाया ना कोए अख्वाइंदा। ना कोई मन्दिर ना कोई हाटी, वणज वणजारा ना कोए जणाइंदा। ना कोई तीर्थ ना कोई ताटी, सरोवर सर ना कोए भराइंदा। इक्क इकल्ला खेले खेल कमलापाती, पुरख अबिनाशी आपणा घर सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बंक आप बणाइंदा। साचा बंक हरि दुआरा, चार दीवार ना कोए रखाईआ। छप्पर छन्न ना कोए सहारा, महल्ल अटल उच्च दए वड्याईआ। दीवा बाती ना कोए उज्यारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सूरज चन्न ना कोए सितारा, किरन किरन ना कोए प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए अखाड़ा, लक्ख चुरासी नाच ना कोए नचाईआ। साध सन्त ना गुर अवतारा, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। पूजा पाठ ना कोए जैकारा, नाद धुंन ना कोए वजाईआ। मन्दिर मस्जिद ना कोई गुरदुआरा, ठाकर शिवदुआला मठ ना कोए बणाईआ। त्रैगुण माया ना कोए पसारा, पंज तत्त मेला ना कोए मिलाईआ। ना कोई नारी कन्त भतारा, सेज सुहञ्जणी ना कोए सुहाईआ। पूत सपूता ना सुत दुलारा, माता कुक्ख ना कोए वड्याईआ। शाह पातशाह ना कोए सिक्दारा, रईयत सीस ना कोए झुकाईआ। धरत धवल ना कोए पसारा, जल बिम्ब ना कोए वड्याईआ। समुंद सागर ना मिठ्ठा खारा, उजाड़ पहाड ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची बणत बणाईआ। सचखण्ड दुआरा सच बणा, हरि आपणी सेव कमाइंदा। आप आपणा विच टिका, निरगुण नूर धराइंदा। इक्क इकल्ला कर रुशना, दर घर साचे सोभा पाइंदा। सच महल्ला लए वसा, आपणा प्रकाश आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा हरि सुहाइंदा, निरगुण जोत जगा। आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा, बेअन्त बेपरवाह। अगम्म अगम्मड़ी खेल खिलाइंदा, अलख अलखना अलख जगा। आपणी रचना आप रचाइंदा, सच सिँघासण लए सजा। साची घाड़त आप घड़ाइंदा, बाढी बणे हरि मेहरवां। लम्मा चौड़ा भेव कोए ना पाइंदा, दिस ना आए किसे निशां। आपणे मन्दिर आपे डांहयदा, आपे आसण लए विछा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा दए वड्या। सच सिँघासण हरि वछाया, आपणी सेज आप सुहाईआ। आपे वेख वेख ख़ुशी मनाया, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। मेरा सानी दूजा कोए नज़र ना आया, इक्क इकल्ला बैठा खेल खिलाईआ। आपणा मता आप पकाया, आपे दए सलाहीआ। आपणा वड्डा नाउँ वड्याआ, वड्याई आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा बल लए धराया, बल धारी बेपरवाहीआ। आपणा घर लए वसाया, सचखण्ड दुआर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ।

आपणी इच्छया बणया राजा, शाह पातशाह नाउँ धराइंदा। आपणी इच्छया साजन साजा, दिस किसे ना आइंदा। आपणी इच्छया रचया काजा, आप आपणा खेल खिलाइंदा। आपणी इच्छया आपणी रक्खे लाजा, हरि आपणी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप वटाइंदा। आपणी इच्छया हरि बल धार, सचखण्ड दुआर सुहाईआ। शहिनशाह बण सच्ची सरकार, आपणी घाड़त ल्ए घड़ाईआ। निरगुण सीस निरगुण जगदीस निरगुण कर विचार, निरगुण वेखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप समझाईआ। आपणी इच्छया दस्से शाह, पातशाह आपणा भेव खुल्हाइंदा। बिन हुक्म ना चले कोई राह, मार्ग कोए नज़र ना आइंदा। बण पातशाह झल्ले ना कोई दबा, सीस ना कोई झुकाइंदा। बण शहिनशाह देवे ना कोए सज़ा, हुक्मरान ना कोए अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आप आप समझाइंदा। बण पातशाह करां मैं राज, पुरख अकाल आपणा मता पकाईआ। आपणा घाड़त घड़ घड़ सिर रक्खां साचा ताज, शहिनशाह फेर अख्वाईआ। पातशाह बण रक्खां लाज, लज्जया मेरी मोहे भाईआ। धुर फ़रमाना मारां वाज, आपणा हुक्म सुणाईआ। सच सिँघासण बणे साचो साच, छैल छबीला आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे आपणा वर, बिन ताज पातशाह कोए नज़र ना आईआ। कवण रूप घाड़त घड़े निरँकारा, सीस ताज बणाईआ। आपणी इच्छया करे विचारा, आप आपणा फोल फोलाईआ। मेरा खेल होए अपर अपारा, अपरम्पर हथ्थ वड्याईआ। मैं सभ तों उप्पर वसां धाम न्यारा, उच्ची मेरी शहिनशाहीआ। थल्ले रक्खे सचखण्ड दुआरा, जिस दुआरे आसण लवां लगाईआ। दूजा खोल्हां फेर किवाड़ा, थिर घर साचा नाउँ धराईआ। तीजे पावां आपे सारा, सुन्न अगम्म वेख वखाईआ। चौथे घर हो उज्यारा, अन्ध अन्धेर दवां गंवाईआ। चारे मुख मेरा सहारा, आपणा रंग लवां बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ताज ल्ए घड़ाईआ। साचा ताज उत्तम धार, उच्च महल्ल अटल सुहाया। चारे मुख चार दीवार, पुरख अबिनाशी घाड़त ल्ए घड़ाया। सीस रक्ख सच्ची सरकार, आपणा हुक्म दए सुणाया। आपणे अंदरों आपे कढ्ढे आपणी शब्दी धार, पहला मुख आप सलाहया। दूजी बण मात पित कुक्ख कर त्यार, विष्नूं विश्व आपे जाया। तीजे दर पावे सार, ब्रह्मा वेता फुल्ल खलाया। चौथे घर खोल्ह किवाड़, भोला नाथ आप उठाया। चारे मुख पावे सार, निरगुण निरगुण वेस वटाया। पंचम मुख सच्ची सरकार, आपणा रूप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ताज ल्ए घड़ाया। साचा ताज घाड़न घड़, चार मुख दए वड्याईआ। पंचम अंदर बैठा वड़, पुरख अबिनाशी सेज वछाईआ। विष्नूं देवे एका वर, सच भण्डार आप भराईआ। ब्रह्मा खोल्हे आपे

दर, चारे वेद करे पढ़ाईआ। चारे मुख चारों कुण्ट कर, हरि हरि जस रिहा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम ताज दए वड्याईआ। चार मुख चार जुग, हरि साचे खेल खिलाया। चारे वेद करे सुध, चारे बाणी आप पढ़ाया। चारे वरन भेव खुल्हाए गुझ, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पर्दा दए उठाया। चार यारी ल्ए लुट्ट, चारों कुण्ट फेरा पाया। एका ताज रक्खे मुख, जुग चौकड़ी हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर सोभा पाया। साचे मंदर हरि जगदीस, तख्त ताज आप सुहाईआ। एका हुक्म इक्क हदीस, लक्ख चुरासी करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे राग छतीस, तीस बतीस वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी पीसण रिहा पीस, माया ममता चक्की आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे ताज दए वड्याईआ। साचा ताज निरगुण रंग, हरि साचा आप रंगाइंदा। साचे तख्त बैठे सूरा सरबंग, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। नाम वजाए इक्क मृदंग, लोआं पुरीआं आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव मंगण मंग, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। कौण वेला निरगुण जोत लोकमात चढ़ाए आपणा चन्द, चन्द चांदनी मुख शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाइंदा। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका गुण समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर ध्यान, हरि साचा रिहा जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बीत जाण, निरगुण सरगुण नाच नचाईआ। लोकमात गुर अवतार कर प्रधान, नाम प्रधानगी हथ्थ फड़ाईआ। बण बण आवण हुक्मरान, मेरा संदेसा देण सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम जीव जंत सर्ब भुल जाण, गुर का शब्द ना कोए कमाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी अन्तिम होए आप मेहरवान, लोकमात ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव हरि जणाए, भुल रहे ना राईआ। कलिजुग अन्तिम निरगुण जोती जोत जगाए, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। निहकलंका जामा पाए, गुर अवतार देण ग्वाहीआ। सचखण्ड दुआरा लोकमात बणाए, घर साचा आप सुहाईआ। आपणा रूप दए दरसाए, आदि आदि जो ल्या बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। आदि पुरख आदि रूप धराया, पंचम मुख ताज सुहाइंदा। अन्तिम निरगुण बण के आया, लोकमात वेस वटाइंदा। आपणी समग्री नाल लै के आया, सच भण्डारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा घाड़न घड़ के आया, जगत सुन्यार ना कोए घड़ाइंदा। पंचम मुख आपणे हथ्थ फड़ के आया, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त आपणा खेल खिलाइंदा। अन्तिम खेल हरि कराउणा, सीस जगदीस ताज टिकाईआ। जो घड़या सो भन्न वखाउणा, हुक्मी हुक्म करे जणाईआ। झूठी रईयत बन्न्ह वखाउणा,

एका बन्धन पाईआ। कलिजुग फास गल लटकाउणा, ना सके कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाह पातशाह आप हो जाईआ। शाह पातशाह बणे हरि राजा, हाकम हुक्म आप सुणाइंदा। दो जहानां रचया काजा, चौदां लोकां वेख वखाइंदा। चौदां तबकां खोल्हे पाजा, त्रैभवण पर्दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा। साचा मन्दिर हरि निरँकारा, अचरज आप बणाईआ। आदि बणाया सचखण्ड दुआरा, नज़र किसे ना आईआ। अन्तिम करे पंज तत्त पसारा, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। गोबिन्द बणया मात लिखारा, लक्ख चुरासी गया समझाईआ। नानक उच्ची बोल जैकारा, एका गुण गया वखाईआ। वेद व्यासा कर पुकारा, उच्ची उच्ची अल्हाईआ। महांबली उतरे आपणी वारा, मात पित ना कोए जाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, आपणा नाअरा दए सुणाईआ। पुरख अकाल वसे धाम न्यारा, सम्बल आपणा आसण लाईआ। सम्बल नगर गोबिन्द मीत मुरारा, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। मात पित पूत जिस वारा, आपणी सेव सच कमाईआ। लहू मिझ बणाया इट्टां गारा, जगत महल्ल दए वखाईआ। अन्तिम तज सर्ब परवारा, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। एका फतिह बोल जैकारा, सृष्ट सबाई गया समझाईआ। कलिजुग आवे अन्तिम दुलारा, निहकलंक करे रुशनाईआ। पिता पूत सोहे इक्क दुआरा, घर वज्जदी रहे वधाईआ। सीस जगदीस कल्गी तोड़ा सोहे सीस सच्ची सरकारा, जोती जोड़ा शब्द मिलाईआ। दो जहान करे निमस्कारा, गुर अवतार सीस झुकाईआ। भगत भगवन्त दर बणन भिखारा, सन्तन आपणी झोली रहे वखाईआ। गुरमुख मंगण चरन धूढ़ी छारा, मस्तक टिक्का इक्क रमाईआ। गुरमुख गुरसिख मंगण दरस दीदारा, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ारा, उठ उठ दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल न्यारा, शाह पातशाह आप हो जाईआ। गुरसिख वेखे बाल अञ्याणा, कवण कूटे बैठा आसण लाईआ। जुगा जुगन्तर जो मन्नदा रिहा भाणा, दुःख सुख रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, गुरमुख गुर गुर लए मिलाईआ। गुरमुख मिल्या गुर, गुर गोबिन्द खेल खिलाया। लेखा लिख लिख दस्से धुर, धुर मस्तक वेख वखाया। चरन प्रीती गई जुड़, पुरख अबिनाशी जोड़ जुड़ाया। निरगुण चढ़ के आया आपणे घोड़, साचा अश्व रिहा दौड़ाया। जन्म जन्म दी बुझाए औड़, अमृत मेघ आप बरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। तारनहारा हरि गोबिन्द, गोबिन्द महिमा कथी ना जाईआ। जुगा जुगन्तर मेटे चिन्द, चिंता रोग ना कोए सताईआ। लेखा जाणे गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर सच्चा शहिनशाहीआ। गुरसिख बणाए आपणी बिन्द, नादी सुत नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा

जाणे थाउँ थाँईंआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तख्त निवासी शाहो साबाशी पुरख अबिनाशी घट घट वासी हरिजन पूरी करे आसी, आसा तृष्ना जन्म जन्म दी पूर कराईआ।

★ १५ जेठ २०१८ बिक्रमी बीबी गुरदई दे घर धंगाली जम्मू ★

सचखण्ड दुआरा हरि हरि ख़ालक, घर साचा सच सुहाइंदा। नूरी नूर बण बण पालक, प्रितपालक वेख वखाइंदा। मुर्शद मुरीद वेखे बालक, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। निरगुण सरगुण बण बण सालस, लोकमात सति कमाइंदा। पीर पैग़म्बर लाए आलस, सच सुअम्बर आप रचाइंदा। जगत मिटाए झूठी नालश, नाअरा हक इक्क लगाइंदा। जीव बणाए जन ख़ालस, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा वेख वखाइंदा। ख़ालक ख़लक रूप भगवान, मखलूक आपणी बणत बणाईआ। शाह पातशाह रहीम रहिमान, रहिमत आपणी सेव कमाईआ। साबर सिदक सबर ईमान, सोभत हरि हरि वड वड्याईआ। कुदरत कादर करता वेख निशान, जगत निशाना आप झुलाईआ। शब्द अगम्मी धुर पैग़ाम, अलाही कलाम आप सुणाईआ। आबे हयात मदि प्याला जाम, काया काअबा आप प्याईआ। नगर खेड़ा वेख ग्राम, गिरहा आपणी फोल फोलाईआ। पंज तत्त काया वेखे नजाम, नजमो नसक आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह हरि तौफीक, ख़ालक आपणा बल रखाइंदा। मुर्शद मुरीद बण रफ़ीक, सगला संग निभाइंदा। आदि जुगादि लाशरीक, वाहवा आपणा नाउँ धराइंदा। पीर पैग़म्बर रक्ख उडीक, नेत्र नैण सर्ब तरसाइंदा। आपणा अक्खर लिखे बारीक, लिखण पढ़न विच ना आइंदा। आप चलाए आपणी रीत, कुरा काया फोल फोलाइंदा। कादर कुदरत दस्स हदीस, कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाइंदा। महिबान बीदो रंग अपारा, अलाही नूर आप रंगाइंदा। बी ख़ैर या अल्ला एका नाअरा, नूर अलाही आप लगाइंदा। हक मुकामे हो उज्यारा, साची नौबत नाम वजाइंदा। ग़फ्लत लाहे सर्ब संसारा, उल्फ़त आपणी आप जणाइंदा। साचा हुजरा कर त्यारा, साचा सजदा आप कराइंदा। सच महिराबे कर पसारा, सच मसल्ले हेठ विछाइंदा। नूरी अल्ला खेल न्यारा, निरगुण धारा आप चलाइंदा। बिस्मिल रूप कर पसारा, इस्म आपणा आप दृढ़ाइंदा। आज़म हो शाह सिक्दारा, शख्शीयत अवर ना कोए जणाइंदा। तअज़ीम अज़ीम कर उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। भेव चुकाए परवरदिगार, ख़ाकी ख़ाक ना कोए वखाइंदा।

अल्ला हू हू बोल जैकार, नाअरा हक हक लगाइंदा। शाह नवाब बण सिक्दार, रूप अनूप खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाइंदा। रंग रंगीला शाह नवाब, शहिनशाह वडी वड्याईआ। साचे तख्त बैठ जनाब, ज़ोर ज़बर आप वखाईआ। सीस नवायण कोटन कोटि माहताब, आफ़ताब नैण ना कोए उठाईआ। निरगुण वजाए निरगुण रबाब, सति सितार आप हिलाईआ। आपणा बणे आप अहिबाब, संगम साचा मेल मिलाईआ। आपे गाए सदाए बांग, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। आपे वरते आपणा स्वांग, स्वांगी आपणा रूप वटाईआ। आपे रक्खे मिलण दी साची तांघ, जुग जुग आपणा नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अलाही नूर आप धराईआ। अलाही नूर बिस्मिल धार, सो पुरख निरँजण आप धराइंदा। इल लिल्ला रूप सच्ची सरकार, इष्ट देव आप प्रगटाइंदा। ऐनलहक बोल जैकार, हक हकीकत वेख वखाइंदा। मंगे दरस इक्क दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। बकरीद ना दस्से कोए विहार, छुरी हथ्थ ना कोए फड़ाइंदा। पीर पैग़म्बर कर उज्यार, लोकमात हुक्म जणाइंदा। जीवां जंतां दए अधार, साबत ईमान इक्क वखाइंदा। शरअ शरीअत हक प्यार, निरगुण निरगुण आप वखाइंदा। ला हक खेले खेल अगम्म अपार, रूप अनूप धराइंदा। जुग जुग हुक्म देवे हुक्मरान, हाकम हुक्म आप सुणाइंदा। लोकमात कर प्रधान, चौदां तबक वण्ड वंडाइंदा। चौदां सदीआं दस्से निशान, धरत धवल आप झुलाइंदा। एका हुक्म धुर फ़रमान, तीस बतीस आप सुणाइंदा। कलमा कलाम हदीस कुरान, शरअ शरायत आप वखाइंदा। अन्तिम लेखा मंगे आण, इक्क मुहम्मद हरि समझाइंदा। चार यारी बणे नादान, जगत निधाना वेख वखाइंदा। निरगुण आए विच जहान, सरगुण सभ दा पर्दा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, ख़ुद ख़ुदावंद आप अख्वाइंदा। ख़ुदावंद ख़ालक मख़लूक रंग, रंग रंगीला साचा माहीआ। मुकामे हक इक्क पलँघ, आलमीन आप टिकाईआ। उप्पर बैठ सूरा सरबंग, एका अलिफ़ करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूर नूर नूर नूर अलाहीआ। नूर अलाही जल्वा जलाल, जाग्रत जोत आप जगाइंदा। आपणा उपजाए आप ख्याल, आपणा मता आप पकाइंदा। कौण खेल हक हलाल, हक हकीकत वेख वखाइंदा। कवण पाया माया जाल, कवण बन्धन रूप वटाइंदा। कौण पुट्ठी लुहाए खाल, शमश तबरेज़ कौण अख्वाइंदा। कवण मनसूर सूली चढ़े हो बेहाल, फ़तवा शरीअत कवण लगाइंदा। कवण तक्के नूरी इक्क जलाल, भय अवर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुर्शद मुरीद मेल मिलाइंदा। मुर्शद मुरीद मेला सच दरगाह, दरगाह साची आप जणाईआ। ख़ालक देवे सद पनाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कर किरपा बख्शे सर्ब गुनाह, जो

सजदा सीस झुकाईआ। पंचम रंग दए रंगा, पंचम वेला दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बन्धन आपे पाईआ। एका बन्धन जगत नमाज़, नमाज़ी आपणा खेल खिलाइंदा। वुज़ू कराए सुणाए बांग, वाहद आपणा राग अलाइंदा। स्वांगी वरते आपणा स्वांग, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म हरि समरथ, दीन अलाही आप जणाइंदा। कन्नां उप्पर रखाए हथ्थ, तोबा तोबा सर्ब समझाइंदा। फिर सीस झुकाए नीवां करे मथ्थ, जगत गुनाह सर्ब बख्शाइंदा। डौलयां उप्पर रक्खे हथ्थ, माण अभिमान ना कोए जणाइंदा। गोडयां उप्पर जाए ढट्ठ, कीती भुल बख्शाइंदा। धरती ख़ाक रक्खे नक्क, लोकलाज सर्ब गवाइंदा। हउँ बन्दा तेरा पाकी पाक, ख़ाकी ख़ाक डेरा ढांहयदा। बण साचा सज्जण साक, तेरा नाता मोहि भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच शरीअत इक्क जणाइंदा। सच शरीअत सच निमाज़, निवन सो अक्खर आप जणाईआ। मिले मेल ग़रीब नवाज़, ग़रीब निमाणी गले लगाईआ। कूड़ कुड़यारा धोवे दाग़, माटी लोटा दए ग्वाहीआ। विच रखाया एका आब, जूठी झूठी मैल मिटाईआ। नेत्र मेट अन्तर मंगे आबेहयात, नाभ कँवल ध्यान लगाईआ। सुन्न समाध सुणाए बांग, हुजरे बह बह साचा माहीआ। दिवस रैण रहे याद, भुल कदे ना जाईआ। सोवत जागत सुण फ़रयाद, आलस निन्दरा होए सहाईआ। एका देवे साची दाद, सच कलाम बेपरवाहीआ। जगत जहाना छुट्टे साक, साकत कोए नज़र ना आईआ। मुर्शद होए पाकी पाक, मुरीद दीद ईद चन्द रुशनाईआ। जमाल बातनी मारे झाक, जल्वा नूर नूर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीरन पीर आप हो जाईआ। पीरन पीरा बेपरवाह, बेऐब नाम ख़ुदाया। मुर्शद वेखे थाउँ थाँ, मक्का काअबा काया कुदरत वेख वखाया। जिस जन जणाए आपणा नाँ, घर घर मेला ल्ए मिलाया। वरन बरन कोई जाणे ना, मुस्लिम हिन्दू सिख ईसाई एका घर बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि जुगादि सदा मेहरबान, महिबान आपणा रूप धराया। दरगाह साची झुलाए सच निशान लोकमात करे आप न्याँ, जुग चौकड़ी वेख वखाया। कोई रहिण ना देवे जो खाए सूर गां, एका खण्डा नाम चमकाया। सर्ब जीआं दा पिता हरि हरि मां, लक्ख चुरासी जीव जंत पूत सपूत आप उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, ख़ालक ख़लक करे सफ़ाया।

राम नाम सच फुलवाड़ी, लोकमात उपाईआ। हरिजन रक्खी इक्क क्यारी, लक्ख चुरासी पतझड़ रिहा वखाईआ।

मिले मेल जोत निरँकारी, जोती जोत मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फल फुल्ल वेख वखाईआ। फल फुल्ल लग्गे डाल्ह, पत डाल्ही आप सुहाइंदा। सच बाग़ीचा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, घर साचे आप लगाइंदा। अमृत रस दए प्याल, रस रसीआ मुख चुआइंदा। सुणे मुरीदां आपे हाल, हाल मुरीदां आपे गाइंदा। करे खेल महाकाल, डौरू मृदंग नाम वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन फुलवाड़ी आप महिकाइंदा। जन फुलवाड़ी रही महिक, कली कली आप महिकाईआ। कंडयां अंदर रही टहिक, रूप रंग रही वखाईआ। लक्ख चुरासी रही सहिक, सिर दिसे ना कोए सहाईआ। पुरख अबिनाशी साचा नायक, नर नरायण आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंखड़ीआं वेखे थाउँ थाँईंआ। पंखड़ीआं लाई बहार, रुत्त रुत्तड़ी मात सुहाईआ। गुरमुख विरला विरला दिसे विच संसार, लक्ख चुरासी जीव जंत कोटन कोटि रूप धराईआ। बिन सतिगुर उतरे ना कोए पार, मँझधार बेड़ा रिहा रुढ़ाईआ। रसना खा खा थक्की मुर्दार, मुर्दा सभ नूं दए कराईआ। जेहवा लक लक होए हल्कार, हल्क सभ दा दए सुकाईआ। जूठ झूठ उच्ची कूक कूक करे पुकार, जूठे झूठे भाण्डे भन्न वखाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार रिहा ललकार, कामी क्रोधी कुष्टी कोए रहिण ना पाईआ। अचरज खेल कीआ करतार, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। जिस मस्तक तिस ल्या भाल, भाग आपणी वण्ड वंडाईआ। जग जीवण दाता चुकाए भय काल, भउ अवर ना कोए वखाईआ। एका नाम देवे सच्चा धन माल, साचे मन्दिर आप टिकाईआ। सोहँ शब्द शाह करे कंगाल, कंगालों शाह आप बणाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत चरन प्रीती निभे नाल, जो जन चरन ध्यान लगाईआ। आप उठाए आपणे बाल अञ्याण, बिरध बाल जवान एका रूप वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, दर आया घर देवे माण, घर घर विच होए सहाईआ।

६११

★ १५ जेठ २०१८ बिक्रमी जगत सिँघ बेला सिँघ दे घर धंगाली जम्मू ★

अगम्म अथाह हरि इक्क इकेला, अकल कल आपणी खेल खिलाइंदा। आदि जुगादि जाणे आपणा वेला, थित वार ना कोई लिखाइंदा। वसणहारा धाम नवेला, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम धरत धवल वेखे जंगल जूह बेला, डूँग्घी कंदर फोल फोलाइंदा। रूप वटाए गुरु गुर चेला, शेर सिँघ रूप वटाइंदा। आप कर कर आपणा मेला, दर घर साचे मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कलिजुग झल्ल वेख

वखाइंदा। कलिजुग झल्ल मारे भबक, सिँघ शेर रूप वटाईआ। चौदां लोक रहे तभक, थरथराहट विच सर्ब लोकाईआ। चार वरन भुलया सबक, संथा सच ना कोए पढ़ाईआ। साबत दिसे विरला भगत, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। ख़ाली ठूठा दिसे जगत, सच सुच्च ना कोई रखाईआ। अग्नी अग्ग बूंद रक्त, तत्व तत जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जंगल जूह उजाड़ फेरा पाईआ। जंगल जूह फिरे शेर सिँघ, दो जहानां फेरा पाईआ। शाहो भूप बण मृगिंद, पारब्रह्म प्रभ डंक वजाईआ। चार जुग हेरी फेरी करदा आया नारद फड़या बोदी सुणे किंग, दहि दिश ना उठ उठ धाईआ। लेखा चुकावण आया सप्त सरिंग, बेअन्त बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी जीव जंत जिस दी करदा निंद, सो निन्दक दए मुकाईआ। सति सागर सरोवर जल खिच्चे सिन्ध, ख़ाली भाण्डे दए कराईआ। तख़्तों लाहे सुरपति राजा इन्द, शंकर नाउँ ना कोई वड्याईआ। मेरी मेटे अन्तिम चिंत, चितमन आप रिहा कराईआ। खड़ग खण्डा फड़ गोबिन्द, एका नाम रिहा चमकाईआ। लक्ख चुरासी अद्धविचकार अड़ी रहिण ना देवे किसे जिंद, अग्गे हो ना कोई छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग जंगल वेख वखाईआ। कलिजुग जंगल उच्चे टिल्ले पर्बत, चोटी खाई आप वखाईआ। लक्ख चुरासी भरी ग़ुरबत, ग़फलत सभ दे उप्पर छाईआ। कोई ना जाणे हाल इबरत, दीन दुनी ना कोई जणाईआ। अन्तिम वेखे सभ दी फ़ितरत, फ़ातया एका वार पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग जूह फोल फोलाईआ। कलिजुग जूह वड़या शेर, जम्बुक कोए रहिण ना पाईआ। पंखी पंछी ल्याए घेर, एका गरज नाम लगाईआ। चार पाए गुंग मुख होवण ढेर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मानस मानुख देवे गेड़, गेड़ा आपणा आप चलाईआ। शाह सुल्तानां देवे भेड़, पिच्छे होए आप भजाईआ। सभ दा लेखा दए नबेड़, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। एका खाते लक्ख चुरासी सुट्टे भेड़, मैं मैं वाज ना कोए लगाईआ। हीजड़िआं बणाए एका हेड़, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। कलिजुग ताणा दए उधेड़, तन्दी तन्द आप तुड़ाईआ। ज़िमीं अस्माना शौह दरया एका वार देवे रेड़, आप आपणा बल रखाईआ। आपणा खेल करे आपणी वेर, वेरवा पहले दए जणाईआ। भरम भुलेखा ना रक्खे कोए दलेर, भय जगत ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पीर पैग़बर साध सन्त कलिजुग जोती खिच्ची एका वेर, लै नलेर फिरया वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जंगल बेला आपे ढूंडे ढूंडनहारा इक्क अख्वाईआ। जंगल बेला आपे फोले, डूँघी कंदर फेरा पाईआ। उच्ची कूक आपणी गरज आपे बोले, छत्ती राग तर्ज समझ ना राईआ। तुरदा फिरदा दिसे ओहले, नज़र किसे ना आईआ। चारों कुण्ट नौ खण्ड पृथ्मी जीव जंत पायण रौले, कलिजुग वेला नेड़े रिहा आईआ। पुरख अबिनाशी भार करे हौले, जूठा

झूठा भार मिटाईआ। कर के गया आपणे कौले, कीता कौल पूर कराईआ। गुर गोबिन्द फरकन डौले, आपणा बल लए धराईआ। सिँघ शेर शेर सिँघ वसे एका चोले, चोला आपणा लए बदलाईआ। गोबिन्द गाए साचे ढोले, एका ढोला साचा माहीआ। गुरु चेला इक्क दूजे दे बणन विचोले, विचोला गुर आप हो जाईआ। गुर गुरसिख इक्क दूजे दे बणन तोले, साचा कंडा इक्क उठाईआ। गुरु गुरसिख इक्क दूजे दे वसण ओहले, कदी गुरु कदी सिख रूप वटाईआ। पंज तत्त काया वेख जीव जंत सभ रसना कहिण पूरन बोले, पूरन मन्दिर पूरन लुकया बेपरवाहीआ। आपणी धरती आपे मौले, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ शेर जंगल बेले फिरे चाँईं चाँईंआ। चाँईं चाँईं हरि वेखे ढक, सिँघ शेर रूप वटाया। उच्चे टिल्ले मन्दिर मस्जिद गुरदुआरा रिहा तक्क, कौण दुआर सोभा पाया। विभचार थाँ थाँ रिहा नस्स, नारी पुरष ना कोए हंढाया। काम क्रोध रिहा हस्स, माया ममता नाच नचाया। साचा मार्ग ना रिहा कोई दस्स, मकतब करे ना कोए पढ़ाया। पुरख अबिनाशी दूर दुराडा आया नस्स, लोकमात वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जंगल बेला फोल फोलाया। आया नस्स पुरख समरथ, कलिजुग अन्तिम कर कर धाईआ। मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले दिसण सक्ख, हरि का नाम नज़र ना आईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल आप उठाई आपणी अक्ख, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। निगह पाई कुल्ली कक्ख, हरिजन बैठे ध्यान लगाईआ। जगत जहानों होए वक्ख, सृष्ट सबाई तज लोकाईआ। माया वलों ख़ाली हथ्थ, अंदर भण्डार नाम रखाईआ। प्रभ मिलण दा रक्खया हठ, ताहने मेहणे देवे जगत लोकाईआ। उस नूं की दस्सणा जो वसे घट घट, अंदरे अंदर ध्याईआ। साडी लज्ज पति लए रक्ख, चोटी मुंने सर्ब लोकाईआ। साडा आए कमलापति, कोझी कमली लए गल लाईआ। लक्ख चुरासी वढ्ढे नक्क गुत्त, दर दर दए फिराईआ। घर घर करे ख़ाली ठुठ, मंगया भिक्ख कोए ना पाईआ। अपराधी गुनाहगार तेरे सुत, कर किरपा लए तराईआ। तेरे चरन सुहञ्जणी रुत्त, बसन्त इक्क वखाईआ। तूं साहिब सुल्तान साचे तुठ्ठ, तेरी रहिमत साडी शरनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जंगल बेला वेखे थाउँ थाँईंआ। जंगल बेला डूँग्घी गार, राह खेड़ा नज़र ना आइंदा। चारों कुण्ट हाहाकार, हरि का नाम ना कोए ध्यांअदा। रंग रलीआं जोबन माणे संसार, तन शंगार सर्ब सुहाइंदा। जूठा झूठा नैणां कज्जल करे प्यार, माया ममता मोह सीस गुंदाइंदा। उच्चे टिल्ले मन्दिर कर पसार, काम कामनी सेज हंढाइंदा। हरि का मन्दिर ना पावे कोई सार, नेत्र नैण दरस ना कोए पाइंदा। जिस जन किरपा करे आप निरँकार, दुबिधा मैल आप धवाइंदा। निरगुण बण जगत ललार, नाम ललारी खेल खिलाइंदा। हरिजन

रंगे एका वार, रंग चलूल आप चढ़ाइंदा। उतर ना जाए दूजी वार, साची भट्ठी आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ शेर शेर रूप वटाइंदा। सिँघ शेर मार गरज, गगन मंडल हिलाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी दी पूरी करन आया ग़रज, आपणा खेल आप खिलाईआ। निरभउ निरवैर निराकार आवे जावे कोए ना सके वरज, दूसर हुक्म ना कोए सुणाईआ। आपणे घर आपणा पूरा करे फ़रज, फाजल बण सच्चा शहिनशाहीआ। कलिजुग वेले अन्त किसे दी सुणे ना कोई अर्ज़, अर्ज़ी लेख ना कोए लिखाईआ। आपणा पहले कीता हर्ज, तन माटी अग्नी भेंट चढ़ाईआ। करया खेल फेर असचरज, अचरज लील्हा आप रचाईआ। बिन हड्ड मास नाड़ी रत्त आपणे नाम गाई तर्ज़, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जैकार लगाईआ। गोबिन्द लौहण आया कर्ज़, लहिणा आपणा भुल ना जाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल वासा कदे ना करे जेरज मात गर्भ, दस दस मास ना फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। एका गरज रही गूंज, दो जहान आप गूंजाईआ। आपणा आप आपे गया जूझ, तन रूप ना कोए वखाईआ। आपणी काया क्रिया कूड़ा हूंझ, धरती धवल ख़ाक उडाईआ। आपणा बस्त्र साफ़ करया पूंझ पूंझ, निरगुण आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप वटाईआ। आपणा बस्त्र करया साफ़, साचा पलँघ दए सुहाईआ। पुरख अबिनाशी करे इन्साफ़, मुन्सिफ़ आपणा आप हो जाईआ। आदि जुगादि ना होए गुस्ताख़, गुस्ताख़ी सभ दी दए मिटाईआ। करया कौल जो पहली विसाख, सतारां सौ छपंजा बिक्रमी दए समझाईआ। तेरी फुलवाड़ी लए राख, पत डाल्ही मात महिकाईआ। आपणा रूप वटाए साख्यात, पुरख अकाल सच्चा शहिनशाहीआ। तेरा बणे पिता मात, आपणी गोद लए बहाईआ। चार वरन तोड़े ज़ात पात, ऊँच नीच रहिण ना पाईआ। मन मति दिसे ना नार कमज़ात, जगत दुहागण दए दुहाईआ। गोबिन्द तेरा बस्त्र सुहाए खाट, तेरी काया सेज हंढाईआ। उप्पर चढ़े पुरख समराथ, समरथ आपणा आसण लाईआ। आपणी महिमा गाए अकथ, कथनी कथ ना सके कोए राईआ। तेरा भूपत देवे दरस, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। जिस खेड़ा कीता भट्ठ, सत्थर आप उठाईआ। तिस अंदर वड़या नट्ठ, दिस किसे ना आईआ। लोक परलोक गाए जस, हरि सतिगुर सच्चा माहीआ। अन्तिम पूरी करे आस, सगला संग निभाईआ। सिँघ शेर सुत्ता रहे ना विच प्रभास, लोकमात लए अंगड़ाईआ। सिँघ बणे पुरख अबिनाश, एका आपणा बल धराईआ। लेखा वेखे पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जंगल जूह गया वड़, उच्चे टिल्ले वेख वखाईआ। जंगल जूह कर कर पार, डूँग्घा सागर वेख वखाईआ। डूँग्घा सागर जल जल धार,

समुंद खाई रूप बणाईआ। खाई वेखे आप निरँकार, धरनी धरत फोल फोलाईआ। धरनी हित कर प्यार, नित नवित रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, डूँग्घी भँवरी वेख वखाईआ। डूँग्घी भँवर सागर सिन्ध, समुंद सागर आप वरोलया। पुरख अबिनाशी गुणी गहिन्द, मछ कछ अंदर वड़ वड़ बोलया। लेखा जाणे चुरासी लक्ख, ना कोई रक्खे पर्दा उहलया। जल जीव जल करे भक्ख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सिँघ शेर एका बोलया। एका सिँघ मारे ललकारा, ललकरा आपणी आप सुणाईआ। जल जल रोवे डूँग्घी गारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तेरे चरन कँवल इक्क सहारा, तेरा चरन कँवल मेरी बूंद टपकाईआ। बिन तुध दिसे ना कोए किनारा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मैं लुकया रिहा विच संसारा, मेरी सार किसे ना पाईआ। कोई तारू लग्गा ना पार किनारा, अनतारू वेखी सर्ब लोकाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा इक्क सहारा, हउँ निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्श सच्ची सरनाईआ। सिँघ शेर तेरी हौगज, दिवस रैण रही डराईआ। मैं लुक लुक वेखी डूँग्घी कंदर, डूँग्घी गार चैन ज़रा ना आईआ। मेरे अंदर कोटन कोटि जीव पोगंद, आपणा सीस रहे लुकाईआ। मेरी छाती चढ़ चढ़ आपणी लौहण नींदर, दुःख सुक्ख विच बदलाईआ। मैं जाणया तूं आउणा शीघ्र, वेखीं लक्ख चुरासी जंत उपाईआ। मैनूं रोग दीर्घ, तेरा विछोड़ा सहि ना सका राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्श चरन सच्ची सरनाईआ। सिँघ शेर तेरा रूप, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। मेरा वसेरा चारे कूट, तेरी सेव कमाईआ। तूं किरपा कर दिता अमृत घुट्ट, सागर सागरां विच समाईआ। तेरी किरपा उप्पर जावां उठ, मेघ मेघला रूप वटाईआ। तेरी पवण मेरी धार देवे सुट्ट, धरनी धरत धवल टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कारा, नेत्र नीर वहाया। मैं सुणया तूं होया ज़ाहरा, जिस गुप्त भेव रखाया। ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं ज़िमीं अस्मानां डूँग्घी गारा, सिन्ध सागरां करना पार किनारा, बचया कोए रहिण ना पाया। सिँघ शेर हो दलेर आया विच संसारा, साची कारा लए कमाया। गुरमुख विरला भगत करे प्यारा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाया। साचीआं सख़ीआं बाहर कढ्ढे चिकड़ खुबीआं गारा, कलिजुग दुरमति मैल धवाया। नर नरायण मेले कन्त भतारा, सुरत सुवाणी लए प्रनाया। अनहद वाजा वज्जे ताल वजाए अगम्म अपारा, ताल तलवाड़ा ना कोए रखाया। एथे ओथे करे शंगारा, रूप अनूप आप धराया। घाड़त घड़े बण सुन्यारा, साचा जेवर नाम रखाया। बस्त्र भूशन सजाए एका वारा, पुरख अबिनाशी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम होए सहाया। मैं सुणया तूं गहर गम्भीर,

समुंद सागर रिहा कुरलाईआ। बिन तुध कोई ना देवे धीर, मेरी सार किसे ना आईआ। रसना गाउँदे रहे पीर फ़कीर, मुल्ला शेख़ मुसायक मेरे मणके तसबी रहे गल लटकाईआ। मेरे मोती मायाधारी मारन ज़ंजीर, ना सके कोए तुड़ाईआ। हीरे लाल पंने जवाहर मेरा सीर, शाह पातशाह पी पी आपणा रस रसाईआ। करोड़ छिआनवे मंगे मेरा नीर, अठ्ठ पहर ध्यान लगाईआ। नदी नाले दूर दुराडे जो पैंडा आवण चीर, आपणे अंदर लवां बहाईआ। मैं सभ दी मेटां पीड़, मेरी पीड़ ना कोए मिटाईआ। मैं सुणया कलिजुग अन्त आया अख़ीर, प्रगट होया सच्चा शहिनशाहीआ। गोबिन्द चिट्टे उत्ते खिच्ची काली लकीर, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। दे मस्तक धूढ़ बदले मेरी तकसीर, पुरख अबिनाशी हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण रिहा समझाईआ। एका गुण हरि समझाए, सिन्ध सागर आप उठाइंदा। मैं आपणी वस्त गुरसिखां पाई थाएँ, आपणे हथ्थ ना कुछ रखाइंदा। उठ जा लग्ग गुरसिखां पाए, तेरा सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। सुणया हुक्म धुर फ़रमाना, सरोवर निउँ निउँ करे निमस्कारया। पुरख अबिनाशी दस्स सच टिकाणा, जिस घर तेरा गुरमुख बैठा इक्क प्यारया। मैं केहड़े रस्ते जाणा, राह खेड़ा ना अजे विचारया। मैं घर केहड़े मार्ग आणा, राह दस्स एकंकारया। राह विच फड़े ना राजा राणा, दुष्ट हँकारी कर सँघारया। मैं होया माण निमाणा, तेरे चरन जावां पनिहारया। सदा सद मन्नां तेरा भाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप जणा रिहा। एका घर सच टिकाणा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। इक्क इकल्ला बहे श्री भगवाना, साचे तख्त सोभा पाईआ। लेखा जाणे दो जहानां, दो जहानां वाली आप अख्वाईआ। गुरसिख इक्टठे करे इक्क मकाना, सम्बल नगरी साचा खेड़ा वखाईआ। हाढ़ सतारां चल के आउणा दस्से सच टिकाणा, भुल कदे ना जाईआ। सच दरबारा इक्क लगाउणा, चार जुग दी वेखे पिछली शाहीआ। जो गुर अवतार सर्ब बुलाउणा, पीर पैग़म्बर कोए रहिण ना पाईआ। भगत भगवन्त दर रखाणा, सन्त साजन होए सहाईआ। गुरसिख देवे चरन टिकाणा, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ शेर शेर सिँघ रूप वटाईआ।

जन्म कर्म पूर्ब गुरदेव, लहिणा लेख वेख वखाइंदा। पंखी पंछी जिस बण बण कीती सेव, तिस लेखा मूल चुकाइंदा। जिस अमृत नाउँ रसया जिहव, तिस आपणे हथ्थ रखाइंदा। त्रै त्रै नौ लेख अभेव, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, पूर्ब मूल चुकाइंदा। त्रै त्रै जन्म पंखी पंख, पंखेरू रूप वटाईआ। त्रै त्रै जन्म पंछी बण, नित उठ दर्शन वेखे गुर गुर साचे माहीआ। नौ नौ वार राग सुणया कन्न, गुरमुख गीत अलाईआ। अनबोलत वजाए आण मन, रसना गुण कहिण ना जाईआ। मानस जन्म मिले कहां धन्न धन्न, धन्न धन्न तेरी वड्याईआ। नेत्र नैण वेखां सति सरूपी चन्न, चन्द चांदनी सोभा पाईआ। साहिब सतिगुर जाए मन्न, सुण पुकार मेरी काया दए पलटाईआ। राय हरि हरि राय हो कर ध्यान, पंखी भाख्या बूझ बुझाईआ। पंछी तेरा होवे पार किनार, आत्म तृसन बुझाईआ। नौ जन्म होर मिलणे विच संसार, बन बन फेरा पाईआ। मानस बणी अन्तिम वार, इक्क निशानी दए समझाईआ। तेरी रसना तोतली मुख विच पाए घुंमघार, तोता तू ही तू ही अलाईआ। फेर मिले सर्ब जीआं दा सांझा यार, लक्ख चुरासी जो रिहा खेल खिलाईआ। तेरा लाहे अन्त उधार, तेरी आसा पूर कराईआ। मेरी आसा करे प्यार, आसा शब्दी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब जन्म कर्म कर्म जन्म पूर्ब आपणा लहिणा आप चुकाईआ।

तुरक पठाणी गुर गुर वेस, वेस अनेक कराइंदा। लेखा जाणे दस दस्मेश, दहि दिशा फोल फोलाईआ। जिस लेखा लिख्या धुर मस्तक रेख, मेल मिलावा अन्त कराइंदा। अज्ज खुल्हड़े केस, रूप अनूप धराइंदा। नेत्र नैण कमाया एका वार वेख, दरदी दर्द दर्द वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। नेत्र विगसे नैणां नीर, आत्म आह जणाईआ। तूं साहिब मेरा उच्चा पीर, पीर पीरां तेरी वड्याईआ। नेत्र पेख्या शाह बणया फ़कीर, पातशाह जिस सच्ची शहिनशाहीआ। दोए जोड़ मेरी कट्ट ज़ंजीर, तेरी ज़ंजीर मेरे तन मन रही भाईआ। कर किरपा दिता बचन अख़ीर, कलिजुग अन्तिम मिले सच्चा माहीआ। लक्ख चुरासी तेरी कट्टे पीड़, आपणी फाँसी गल विच पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे रिहा पाईआ।

हरि का नाउँ हरि का रंग, हरिजन हरि हरि आप चढ़ाईआ। हरि का शब्द हरि मृदंग, हर घट घट आप वजाईआ। हरि का मन्दिर हरि पलँघ, हरि बैठा आसण लाईआ। हरि भिखारी हरि दरवेश रिहा मंग, अलख अलखना आपणी अलख जगाईआ। हरि दाता हरि सूरा सरबंग, देवणहार हरि अख्वाईआ। सर्ब जीआं जग पूरी करे मंग, जो जन ध्यान लगाईआ।

दूर दुराडा चुक्के पन्ध, पान्धी पन्ध ना कोए वखाईआ। जिस जन सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। आप रखाए परमानंद, महाराज शेर विष्नूं भगवान वडी वड्याईआ।

जगत कामना पूरी आस, कर किरपा पूर कराईआ। बख्शश बख्शे चरन निवास, सच दुआरा इक्क समझाईआ। जगत जंजाला करे बन्द खलास, बन्धन कोए रहिण ना पाईआ। हरिजन रक्खे आपणे दास, दासी दास आप समझाईआ। घट मन्दिर कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। गुर सतिगुर सदा पास, विछड़ कदे ना जाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन जीवण देवे जीआ दान, वस्त अमोलक आप वरताईआ।

जगत रोवे जगत प्यार, नैणां नीर वहाईआ। गुरसिख रोवे बिन गुर दीदार, जगत विछोड़ा सहि ना सके राईआ। जगत रोवे वेख मुर्दार, जगत कुटम्ब रूप वटाईआ। गुरसिख रोवे गुरसिख विछड़न यार, जन विछोड़ा मूल ना भाईआ। सतिगुर किरपा देवे तार, दिवस रैण विछड़े ना विच संसार, आदि अन्त करे प्यार, छुप कदे ना जाईआ। अंदर वड़ के बैठा सच मनार, सिँघासण आसण आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन एका रोणा रिहा समझाईआ। जगत रोण तों डरे जग, दुःख दर्द सोग रखाईआ। गुरमुख रोवे घर मिले हरि, बिन गुर दर ना सोभा पाईआ। सतिगुर पूरा किरपा देवे कर, दिवस रैण वजाए सितार, दातार आपणी दया कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ देवा सफल करे सेवा, अमृत फल खवाए मेवा, धाम निहचल निहकेवा एका एक वखाईआ। मन वैराग तन भया अनन्द, तन का भओ गंवाया। गृह चढ़या नूरी चन्द, चढ़या चन्द छुप ना जाया। किशना सुखला ना कोए वण्ड, एका रंग रंगाया। सदा सुहेला देवे परमानंद, पारखू आपणी कसवट्टी आप लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप वसाए आपणे घर, घर मेला सहिज सभाया।

★ १५ जेठ २०१८ बिक्रमी ज्ञान चन्द दे गृह पिण्ड खैरवाला जम्मू ★

सो पुरख निरँजण अगम्म अपारा, आदि जुगादि खेल खिलाइंदा। निरगुण जोत नूर कर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। सचखण्ड सुहाए सच दुआरा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। थिर घर खोल्ह आप किवाड़ा, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। सुन्न

अगम्मी धूंआँधार, रूप अनूप ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आप बंधाइंदा। सो पुरख निरँजण बन्ने धार, महिमा गणत गणी ना जाईआ। हरि पुरख निरँजण हो उज्यार, एकँकारा रूप वटाईआ। जोत निरँजण कर पसार, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता आप आपणा कर पसार, अनुभव आपणा रूप धराईआ। श्री भगवाना आपे पाए आपणी सार, प्रितपालक बेपरवाहीआ। पारब्रह्म प्रभ अकाल कल पसार, आप आपणा वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआरा कर त्यार, आपणी घाड़त लए घड़ाईआ। छप्पर छन्न ना कोए पसार, चार दीवार ना कोए बणाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, नूर नूर विच समाईआ। आपणी इच्छया भर भण्डार, साची वस्त लए प्रगटाईआ। सच सिँघासण कर त्यार, पावा चूल ना कोए रखाईआ। पुरख अबिनाशी आप रखाए ठांडे दरबार, धुर दरबारा आप सुहाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, शहिनशाह आपणा नाउँ रखाईआ। हुक्मी हुक्म कर वरतार, धुर फ़रमाना आप प्रगटाईआ। निरगुण निरगुण बण जोत सेवादार, दर दरवेश सेव कमाईआ । एका मन्दिर एका घर इक्क महल्ल अटल उच्च मुनार, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी खेल आप खिलाईआ। खेल अगम्मड़ा हरि निरँकारा, निरगुण आपणा आप कराइंदा। अजूनी रहत हो उज्यारा, अनुभव प्रकाश आप धराइंदा। साचे मन्दिर कर पसारा, सोभावन्त आप सुहाइंदा। श्री भगवन्त खेल न्यारा, दिस किसे ना आइंदा। तख्त निवासी साचे तख्त बहे सच्ची सरकारा, शाह पातशाह आपणा रूप वटाइंदा। सीस जगदीस ताज अपारा, पंचम मुख रुख़ बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, रूप अनूप आप धराईआ। वेस वटाए नारी कन्त, नर नरायण खेल खिलाईआ। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख ना कोए वखाईआ। आदि बणाए आपणी बणत, मात पित ना कोए वखाईआ। आप जणाए आपणा मंत, निष्अक्खर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्मड़ा रूप धराईआ। अगम्म अगम्मड़ा रूप निरँकारा, निरगुण आपणा आप धराइंदा। निरगुण नारी कन्त भतारा, निरगुण साची सेज हंढाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण बाहरा, निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहरा, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। निरगुण पूत सपूता सुत दुलारा, विष्न ब्रह्मा शिव आप उपाइंदा। निरगुण शब्द नाद धुन्कारा, नाद अनादी नाद सुणाइंदा। निरगुण लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां लाए सच अखाड़ा, आप आपणा खेल खिलाइंदा। निरगुण त्रै त्रै मेला अपर अपारा, पंचम जोड़ा जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्मड़ा रूप वटाइंदा। रूप अगम्मड़ा खेल संसार, हरि साचा बणत बणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर

६१६

त्यार, एका गुण दए समझाईआ। त्रैगुण माया दे भण्डार, पंचम वस्त झोली पाईआ। आपणी किरपा कर आकार, मन मति बुध नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी घाड़न घड़, एका तत्त दए समझाईआ। एका तत्त शब्द ज्ञान, विष्न ब्रह्मा शिव हरि जणाइंदा। एका हरि श्री भगवान, दूसर अवर ना कोए रखाइंदा। एका मन्दिर सच मकान, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। एका हुक्म धुर फ़रमान, सच संदेसा आप अलाइंदा। एका राजा राज राजान, शाह पातशाह इक्क अख्वाइंदा। एका बैठे तख्त तख्त निवासी हो मेहरवान, साचा ताज सीस टिकाइंदा। एका लक्ख चुरासी बणे काहन, रूप अनूप आप धराइंदा। एका रूप होए राम, राम नाम आपणा खेल खिलाइंदा। एका अमृत देवे जाम, निझर झिरना आप झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, लक्ख चुरासी रूप धराइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़या, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। पुरख अबिनाशी अंदर वड़या, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। घर विच घर आपे धरया, वेखे दिसे ना किसे लोकाईआ। जोती जाता उप्पर चढ़या, आउँदा जांदा दिस ना आईआ। निरवैर पुरख आपणी विद्या आपे पढ़या, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणी खेल खिलाईआ। आदि आदि हरि खेल अपारा, त्रै त्रै मेला मेल मिलाइंदा। विष्नूं देवे इक्क भण्डारा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म पसारा, लक्ख चुरासी जीव वखाइंदा। शंकर तेरा अन्त किनारा, जो घड़या भन्न वखाइंदा। तिन्नां विचोला हरि निरँकारा, थिर घर साचे सोभा पाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, हाकम आपणा हुक्म सुणाइंदा। राती रुत्ती सुहंती वारा, घड़ी पल ना कोए रखाइंदा। सूरज चन्न ना कोई सितारा, मंडल मण्डप ना कोए वड्यांअदा। ज़िमीं अस्मान ना कोए पसारा, जंगल जूह ना कोए सुहाइंदा। सिन्ध सागर ना कोए किनारा, जल बिम्ब ना कोए रखाइंदा। आदि पुरख इक्क इकल्ला सच महल्ला बैठ निरँकारा, एका हुक्मी हुक्म वरताइंदा। जोती नूर नूर उज्यारा, दूसर रूप ना कोए रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आकारा, आप सुणाए साची धारा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा बाण आपणे हथ्थ रखाइंदा। त्रै त्रै मेला एका रंग, सो पुरख निरँजण आप रंगाईआ। पारब्रह्म सूरा सरबंग, श्री भगवान सच्चा शहिनशाहीआ। अबिनाशी करता वजाए मृदंग, एका ढोला रिहा सुणाईआ। आदि निरँजण चाढ़े चन्द, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। एकँकारा वसे संग, विछड़ कदे ना जाईआ। हरि पुरख निरँजण पूरी करे मंग, भण्डारा अतोट अतुट वरताईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा सचखण्ड, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। पुरीआ लोआं देवे इक्क अनन्द, अनन्द मंगल इक्क वखाईआ। इक्क सुणाए साचा छन्द, हँ ब्रह्म करे कुड़माईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी कर पसारा, आपे वेखे वेखणहारा, दूसर संग ना कोए रलाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, सो पुरख निरँजण सच जणाइंदा। आपणी घाड़त घड़े अपार, घड़नहारा दिस ना आइंदा। वण्डण वण्ड वण्डे निरँकार, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी बन्धन पाइंदा। चारे खाणी बोल बोल जैकार, धुर दी बाणी आप सुणाइंदा। परा पसन्ती एका धार, मद्धम बैखरी भेव खुल्हाइंदा। रागी नादी वजाए सतार, अनहद आपणा ताल रखाइंदा। बोध अगाधी एका कार, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। ब्रह्मा वेता निउँ निउँ करे निमस्कार, दर आए सीस झुकाइंदा। तूं दाता बेऐब परवरदिगार, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। बण भिखारी मंगां बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डांहयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। आपणा नेत्र दए उग्घाड़, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। लेख जणाए वेद चार, चारे वेदां वण्ड वंडाइंदा। लोकमात कर प्यार, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। चारे जुग होण उज्यार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा बन्धन पाइंदा। चार वरन होए प्रधान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश तेरी गोद सुहाइंदा। लेखा जाणे श्री भगवान, दूसर हथ्थ ना कोए रखाइंदा। निरगुण सरगुण करे खेल महान, जोती जोत जोत जगाइंदा। शब्द अनादी लै फ़रमान, वेस अनेका आप वटाइंदा। नित नवित खेले खेल श्री भगवान, खेलणहारा आप अख्वाइंदा। भगतां देवे भगती दान, साची सिख्या आप समझाइंदा। सन्तां देवे नाम निधान, नाम अमोला झोली पाइंदा। गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञान, आपणा भेव खुल्हाइंदा। गुरसिखां देवे चरन धूढ़ अशनान, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाइंदा। आपणा नाउँ कर प्रधान, लोकमात आप उपाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वखाए सच निशान, धर्म निशाना इक्क झुलाइंदा। सत्तां दीपां पाए आण, सति सतिवादी खेल खिलाइंदा। छत्ती राग गाए गाण, नारद सुरस्ती सुत सेवा लाइंदा। आपे बणया रहे बेपहिचाण, दिस किसे ना आइंदा। जिस जन किरपा करे हो मेहरवान, तिस आपणा पर्दा लांहयदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, भण्डार अतोट अतुट वरताइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग झुलदा रहे निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। सेवा लाए गुर अवतार, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। सतिजुग बन्न्हे साची धार, दस अठ्ठ वेस वटाइंदा। त्रेता तेरा पार किनार, त्रैगुण अतीता आप कराइंदा। राम सीता खेल न्यार, रूप अनूप आप वटाइंदा। लंका तोड़ गढ़ हँकार, जूठा झूठा खेल मिटाइंदा। रावन दहिसर कर सँघार, शाह भबीखन आप उठाइंदा। एका बख्शे चरन धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का आप लगाइंदा। ग़रीब निमाणे लए उभार, कुल्ली कक्खां फेरा पाइंदा। जगत निताणे लए तार, आप आपणे गले लगाइंदा। भोग लगाए सच्ची सरकार, जूठे सुच्चे रूप वटाइंदा। करे खेल विच संसार, अछल अछल आपणा रूप धराइंदा।

रूप अनूपा हरि निरँकार, जुग जुग आपणा नाउँ वटाइंदा। लेखा जाणे दोए दोए धार, क्षत्री ब्रह्मण रंग रंगाइंदा। दोए दोए वेखे एका कार, करता करनी आप कमाइंदा। वेद व्यासा कर उज्यार, कुँवारी कन्या भाग लगाइंदा। एका हुक्म देवे सरकार, शाह पातशाह भेव चुकाइंदा। दस अठ खोल्ह किवाड़, इक्क ध्यान लगाइंदा। पुराण अठारां कर विचार, लक्ख चार हज़ार सतारां सलोक गणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म सुणाइंदा। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म दए दरसाईआ। तेरा रूप विच जहान, लक्ख चुरासी दए प्रगटाईआ। तेरा मन्दिर पंज मकान, त्रैगुण तरंगा दए झुलाईआ। एका देवे धुर फ़रमान, सच संदेसा आप जणाईआ। सर्ब जीआं दा एका राम, पुरख अबिनाशी इक्क अख्वाईआ। एका नगर खेड़ा ग्राम, एका मन्दिर दए वड्याईआ। एका रवि ससि भान, एका किरन नूर रुशनाईआ। फिर एका देवणहारा जीआ दान, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। एका प्रगट होवे साचा काहन, एका बंसरी नाम वजाईआ। एका ग्वाला बणे घनईआ शाम, एका बन बन फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार वखाईआ। जुग जुग धार हरि निरँकारा, विष्न भेव खुल्हाइंदा। विश्व रूप सर्ब संसारा, तेरी गोद बहाइंदा। तेरा रिज़क जगत भण्डारा, लक्ख चुरासी झोली पाइंदा। घर घर वेता कर प्यारा, साची सेवा आप समझाइंदा। जुग जुग आवे वारो वारा, लोकमात वेस वटाइंदा। लक्ख चुरासी पावे सारा, घट घट अंदर फोल फोलाइंदा। लेखा जाणा पुरख नारा, पुरख पुरखोतम आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खिलाइंदा। साचा खेल शंकर धार, हरि हरि आप जणाईआ। कान्हा कृष्ना हो त्यार, विष्न ब्रह्मा शिव वेख वखाईआ। तिन्नां संदेसा एका वार, एका घर पुचाईआ। सृष्ट सबाई होई विभचार, हरि का नाम ना कोए ध्याईआ। घर घर होया गढ़ हँकार, हउमे हंगता ज़ोर वधाईआ। शाह सुल्तान ग़रीब निमाणयां मारन मार, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। पंचम रोवण ज़ारो ज़ार, मुक्ट बैण तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। बिदर सुदामा करे पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। धरनी दए ना कोए अधार, हौला भार ना कोए कराईआ। कर किरपा एका वार, तेरे हथ्थ सर्ब वड्याईआ। सोलां इच्छया तेरी कार, सोलां कल तेरी रुशनाईआ। चौदां लोक तेरा अधार, त्रैभवण धनी तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुष्ट हँकारी दए खपाईआ। दुष्ट हँकारी मुक्या पन्ध, सो पुरख निरँजण आप मुकाया। करया खेल सूरे सरबंग, रूप अनूप आप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जग करता खेल खिलाया। जग करता खेल खिलाइंदा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम रूप वटाइंदा, लोकमात जन्म दवाईआ। जूठ झूठ नाल लिआइंदा,

माया ममता कर कुड़माईआ। एका मंगण मंग मंगाइंदा, ढह प्या हरि शरनाईआ। मेरा लेखा वेद व्यास लिखाइंदा, चार लक्ख बत्ती हज़ार साल गणाईआ। मैं दुःख ना मात उठाइंदा, तेरा विछोड़ा झल्लया ना जाईआ। मैं एका सुख रखाइंदा, नेत्र नैणां तेरा दरसन पाईआ। मैं उठ उठ राह तकाइंदा, किरपा करे मेरा माहीआ। मैं ढोला तेरा गाइंदा, भुल कदे ना जाईआ। तेरा रूप विचोला विच रखाइंदा, मेरा फंद दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। पुरख अबिनाशी दिसे विचोला, कलिजुग आप जणाया। तेरा संग निभाए बण के मौला, मौला रूप वटाया। प्रगट होए उप्पर धौला, धरनी धवल दए सुहाया। ईसा मूसा पाए चोला, आप आपणा रंग रंगाया। तेरे अन्धेरे विच्चों कढ्ढे मुहम्मद कर कर ओहला, आपणा पर्दा दए उठाया। पुरख अकाल बणे तोला, साचा कण्डा इक्क वखाया। एका बोले साचा बोला, नाअरा हक आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग साचे दए समझाया। कलिजुग सेज हरि सुहाया, भुल रहे ना राईआ। तेरा विचोला आप बणाया, मुहम्मद संग संग निभाईआ। कलिजुग ढोला दए सुहाया, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा भार लए वण्डाईआ। तेरा करे हौला भार, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। ऐनलहक बोल जैकार, मुकामे हक दए सुणाईआ। जल्वा नूर कर उज्यार, नूर अलाही आप अख्वाईआ। कोहतूर सुणे पुकार, आपणा भेव आप चुकाईआ। आपे करे सच गुफ्तार, गुफ़तम आपणा रूप धराईआ। मुहम्मद खोल्हे आप किवाड़, अहिमद करे आप रसाईआ। एका इच्छया बणाए नार, नार सुहागण कर कुड़माईआ। अल्ला राणी कर मुटयार, संग मुहम्मद दए प्रनाईआ। दोहां मेला कर विच संसार, उम्मत उम्मती वेस वटाईआ। नबी रसूलां करे ख़बरदार, मुल्लां शेख़ मुसायक लए जगाईआ। देवे हुक्म सच्ची सरकार, चौदां चौदां कुण्डा लाहीआ। चौदां तबक खेल न्यार, चौदां सदीआं वण्ड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा पन्ध दए मुकाईआ। कलिजुग तेरा पन्ध मुकाउणा, लक्ख चार रहिण ना पाईआ। वरनां बरनां भेड़ भड़ाउणा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए हल्काईआ। आसा तृष्ना नाच नचाउणा, हउमे हंगता करे ख्वारीआ। उच्चां नीचां राज राजानां शाह सुल्तानां झगड़ा पाउणा, सच सलाह ना कोए वखाईआ। हिन्दू मुस्लिम फड़ फड़ाउणा, ख़ालक ख़लक वेखे बेपरवाहीआ। कलमा अमाम आप सुणाउणा, कलाम अलाही कर रुशनाईआ। मक्का काअबा फेरा पाउणा, दो दो आबा जोड़ जुड़ाईआ। कुदरत कादर खेल खिलाउणा, मख़लूक आपणे धन्दे लाईआ। सच ईमान ना किसे जणाउणा, इलम आलम ना कोए पढ़ाईआ। तुलबा तालब सर्ब वखाउणा, तालीम ताज़ीम ना कोए जणाईआ। दूई द्वैती घर वसाउणा, सांतक सति ना कोए कराईआ। निरगुण सरगुण रूप वटाउणा,

लोकमात कर रुशनाईआ। पंज तत्त चोला आप हंढाउणा, नानक नाम धराईआ। साचा मन्त्र नाम दृढ़ाउणा, नाम सति करे पढ़ाईआ। सोहँ ढोला आ आ गाउणा, मिल्या बेपरवाहीआ। हिन्दू मुस्लिम एका रंग रंगाउणा, एका अलिफ़ नूर दरसाईआ। घट घट अंदर मक्का काअबा नज़री आउणा, साचा हुज़रा दए जणाईआ। बांग सदा इक्क सुणाउणा, घर मन्दिर नाद वजाईआ। भरम भुलेखा दूर कढाउणा, शाह पातशाह ना चले कोए चतुराईआ। चारे कुण्टां फेरा पाउणा, चारे वरन करे जणाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क मनाउणा, सीस जगदीस झुकाईआ। अन्तिम ढोला इक्क सुणाउणा, सृष्ट सबाई आपे गाईआ। कलजुग वेला अन्तिम आउणा, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। निहकलंका जामा पाउणा, मात पित ना कोए भैण भाईआ। साचे मन्दिर चरन टिकाउणा, हरि का मन्दिर नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख साचे मेल मिलाउणा, हरि भगतां दए वड्याईआ। चार वरनां एका रंग रंगाउणा, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। आत्म ब्रह्म सर्ब दृढ़ाउणा, ईश जीव मेल मिलाईआ। निहकर्मी आपणा कर्म कमाउणा, कर्म कांड दए गंवाईआ। साचा धर्म इक्क रखाउणा, नौ खण्ड पृथ्मी कर रुशनाईआ। आपणा ढोला आपे गाउणा, ना पिछली कोई पढ़ाईआ। सभ दा दाता आप अख्वाउणा, घर घर देवे रिज़क सबाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उठाउणा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। एका लेखा दर वखाउणा, लेखा लेख दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख हरि खेल कर, आपणी कुदरत वेख वखाईआ। कुदरत वेखे हरि हरि कादर, करीम आपणा नाम धराइंदा। राग सुणाए एका दादर, हज़ारा दरूद पढ़ाइंदा। जंतां जीवां वेखे मादर, लक्ख चुरासी फोल फोलाइंदा। आप उठाए सुत तेग़ बहादर, गुजरी कुक्ख आप सुहाइंदा। दरगाह देवे साचा आदर, पुरख अकाल ख़ुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाइंदा। कलिजुग खेल हरि अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, जुग जुग वेस वटाइंदा। सच संदेस गुर अवतारां घल्ला, लोकमात अल्हाइंदा। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, एका बन्धन नाम पाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, महल्ल अटल आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका हरि, आपणा रूप धराइंदा। आदि जुगादि हरि हरि नरायण, निरगुण आपणा खेल खिलाईआ। दो जहान वेखे आपणे नैण, नेत्र लोचन आप खुल्हाईआ। जन भगतां चुकाए लैण देण, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी बणत आप बणाईआ। आदि पुरख हरि खेल खिलाया, खेलणहार दिस ना आइंदा। जोद्धा सूरा इक्क जगाया, सूरबीर नाउँ धराइंदा। जोती नूर डगमगाया, दीवा बाती ना कोई रखाइंदा। एका अक्खर पढ़के आया, लक्ख चुरासी आप पढ़ाइंदा।

६२४

साचे पौड़े चढ़के आया, जीवा जंतां आप चढ़ाइंदा। मात पिता एका मन्न के आया, पुरख अकाल पिता मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंग आप रंगाइंदा। हरि रंग गोबिन्द प्यार, गोबिन्द नगरी आप चढ़ाईआ। गोबिन्द मेला एकँकार, ओंकार वेख वखाईआ। सच स्नेहुड़ा मित्र प्यार, सत्थर सूलां रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। सच संदेसा इक्क सुणाया, गोबिन्द आपणा राग अल्हाईआ। तेरा लेखा रहे ना राया, बंस सरबंसा भेंट चढ़ाईआ। मैं नेत्र पेख तेरा दर्शन पाया, तेरे दर वज्जे वधाईआ। चारे जुग तेरी गोद बहाया, चारे सुत लए प्रगटाईआ। तेरा नाम ओड़ण पर्दा इक्क रखाया, दो जहान उतर ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला कवण वक्त कवण घर वज्जे वधाईआ। हरि संदेसा सच जणाइंदा, पुरख अगम्मड़ा आपे बोल। कलिजुग वेला अन्त वखाइंदा, एका ढईआ तोले तोल। तेरा नगर आप सुहाइंदा, सद वसे तेरे कोल। साढे तिन्न हथ्थ तेरी बणत बणाइंदा, सम्बल दुआरे जाए मौल। जगत अडम्बर वेख वखाइंदा, अन्त कीता पूरा करे कौल। लक्ख चुरासी सुअम्बर आप रचाइंदा, लग्गे अखाड़ा उप्पर धौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल इक्क अनमोल। खेल अनमोला हरि कराउणा, कलिजुग अन्तिम दए समझाईआ। गोबिन्द तेरा रूप वटाउणा, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। तेरा नाम मृदंग वजाउणा, सुणे सर्ब लोकाईआ। रामा कृष्ना संग निभाउणा, विछड़ कदे ना जाईआ। ईसा मूसा दर मंगाउणा, संग मुहम्मद चार यार लेखा कोए रहिण ना पाईआ। तेई अवतारां हुक्म सुणाउणा, हुक्मी हुक्म करे जणाईआ। एका जोती दस दस रूप दसाउणा, पंज तत्त काया चोला जगत हंढाईआ। अन्तिम आपणा मेल मिलाउणा, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। सचखण्ड दुआरा लोकमात प्रगटाउणा, सम्बल वज्जे सच वधाईआ। पुरख अबिनाशी आसण लाउणा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सीस जगदीस ताज टिकाउणा, पंचम मुख कर रुशनाईआ। इक्क हदीस जगत पढ़ाउणा, शरअ शरीअत इक्क समझाईआ। वेद शास्त्र सिमरत पुराण अठारां आपणी झोली पाउणा, गीता ज्ञान दए दृढ़ाईआ। अञ्जील कुरान वेख वखाउणा, बीस तीस पर्दा दए उठाईआ। खाणी बाणी भेव चुकाउणा, चार कुण्ट फेरा पाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, राज राजान रहिण कोई ना पाईआ। चार वरनां एका रंग रंगाउणा, बरन अठारां दए गंवाईआ। एका अक्खर राम पढ़ाउणा, एका फ़तह वाहिगुरु आप गजाईआ। एका मन्त्र नाम सति आप दृढ़ाउणा, एका आदि शक्ति जै जैकार रिहा वखाईआ। एका अष्टभुज रूप वटाउणा, अनूप आप धराईआ। एका बिस्मिल आपणा आप कराउणा, बिस्मिल वेखे सर्ब लोकाईआ। एका किला कोट सुहाउणा, नौ खण्ड पृथ्मी दए वड्याईआ। एका डंका नाम

वजाउणा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दए उठाईआ। सूरज चन्न एका गाउणा, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पन्ध मुकाउणा, गेड़ा गेड़े विच भवाईआ। कलिजुग ठूठा भन्न वखाउणा, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। गुरसिख विरला आप जगाउणा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। निरगुण सरगुण दरस वखाउणा, सरगुण निरगुण रूप वटाईआ। माया ममता मोह चुकाउणा, दूई द्वैती दए खपाईआ। काया चोली रंग चढ़ाउणा, उतर कदे ना जाईआ। नौ दुआरे पार कराउणा, सुखमन टेढी बंक अद्धविचकार ना कोए रखाईआ। ईड़ा पिंगल फड़ दबाउणा, पंजे विकार सके ना सिर उठाईआ। अमृत जाम इक्क प्याउणा, निझर झिरना दए झिराईआ। बजर कपटी तोड़ तुड़ाउणा, दस्म दुआर दए खुल्हाईआ। आत्म सेजा भाग लगाउणा, अनहद राग सुणाईआ। सुरती शब्दी मेल मिलाउणा, नार कन्त रूप वटाईआ। सेज सुहञ्जणी आसण लाउणा, एका रंग वखाईआ। मिल मिल आपणा दु:ख वण्डाउणा, जगत दुखड़ा दए गंवाईआ। आपणा सुख आप दरसाउणा, घर घर विच दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाउणा, पारब्रह्म तेरी सच्ची सरनाईआ। गुरमुख तेरा संग निभाउणा, हरिजन विछड़ कदे ना जाईआ। लक्ख चुरासी डन्न लगाउणा, डन्नी जाए सर्ब लोकाईआ। चित्रगुप्त हिसाब वखाउणा, लिख लिख लेखा अग्गे दए धराईआ। राए धर्म फड़ फड़ बंध बंधाउणा, एका बन्धन देवे पाईआ। लाड़ी मौत हुक्म सुणाउणा, लक्ख चुरासी ल्ए प्रनाईआ। कलिजुग तेरा संग निभाउणा, कीता कौल भुल ना जाईआ। चौदां तबकां फोल फोलाउणा, ज़िमीं अस्मानां फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम आदि पुरख अबिनाशी करता आपणी खेल खिलाईआ। आपणा खेल करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। दो जहानां पावे सारा, रूप अनूप आप धराईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेखा ना कोए समझाईआ। चार जुग नित नवित आउँदे रहे गुर अवतारा, सच संदेसा लोकमात सुणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करया खेल अपर अपारा, वेद कतेब भेव ना आईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहे सर्ब संसारा, बेअन्त सच्ची शहिनशाहीआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे विच संसारा, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। सन्त सुहेले गुर गुर चेले मेले इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा आपणा आप खुल्हाईआ। एका नाम करे जैकारा, चारे वरनां दए सहारा, आत्म ब्रह्म सुणे पुकारा, ईश जीव मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर शाह पातशाह बेपरवाह, अगम्म अथाह अलख अगोचर अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन हरि हरि हरी दुआर हरिभगत दए वड्याईआ।

६२७

★ १६ जेठ २०१८ बिक्रमी प्रेमो देवी दे घर पिण्ड ख़ैरवाला जम्मू ★

जन्म कर्म ना कोए बन्धन, बन्दीखाना ना कोए रखाइंदा। जिस जन मस्तक लाए चन्दन, निम्म वासना मेट मिटाइंदा। नाम निधान टिकाए परमानंदन, निज घर साचे सोभा पाइंदा। साहिब ठाकर दीन दयाल भय भंजन, भवसागर पार कराइंदा। नेत्र ज्ञान देवे अंजन, अन्ध अन्धेर चुकाइंदा। सतिगुर मिले साचा सज्जण, हरी हरि आपणा दर सुहाइंदा। जुगा जुगन्तर पर्दा कज्जण, पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रंग रंगाइंदा। दीनां नाथ श्री भगवन्त, भगवन आपणा खेल खिलाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्त, आदि आपणा मूल धराइंदा। जिस जन बणाई तेरी बणत, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आप सुणाए सुहागी छंत, छन्द सुहागी इक्क जणाइंदा। गढ़ टुट्टे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म सर्ब दरसाइंदा। मेल मिलावा साची संगत, संग सगला इक्क रखाइंदा। लेखा चुक्के भुक्ख नंगत, धुर दा लेखा आप समझाइंदा। गुरचरन दुआरा साचा जन्नत, सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। हरिजन सदा रहे मंगत, एका भिच्छया मंग मंगाइंदा। नर हरि नरायण काया चोली चाढ़े रंगत, रंग मजीठी इक्क रंगाइंदा। मानस जन्म ना होए भंगत, जन्म जन्मां लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन मेले आपणे घर, सो जन विछड़ कदे ना जाइंदा।

खाणा पीणा जिस दा ओढण, भूशन बस्त्र दए वड्याईआ। जीव गुण ना जाणे मातलोकन, अवगुण रहे खेल खिलाईआ। जिस जन किरपा करे सुणाए सच सलोकन, सोलां शंगार दए वखाईआ। लेखा चुकाए कोट कोटन, जो जन दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। एका दर वखाए कर सम्बोधन, सोभावन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माटी ख़ाकी वेख वखाईआ। तन माटी ख़ाकी बस्त्र अंग, हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ाईआ। साहिब सुल्तान सूरा सरबंग, त्रैगुण मेला पंचम चेला, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। जोत अकाली खेल निराली शब्द नाद धुन वजाए सज्जण सुहेला, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। घट भीतर कराए आपणा मेला, दरस वखाए इक्क इकेला, अकल कल आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन बस्त्र वेख वखाईआ। तन बस्त्र सच्चा नाम दोशाला, आदि अन्त उतर ना जाईआ। हरि सज्जण देवे दीन दयाला, कर किरपा आप उपाईआ। एका रंग रंगाए शाह कंगाला, रूप अनूप इक्क दरसाईआ। नाम निहकर्मी कामी पाए माला, निहकर्मी कर्म कमाईआ। जीवण जगत तोड़ जंजाला, जीवण जुगत आप समझाईआ।

सच दुआरा सच्ची धर्मसाला, घर हरि मन्दिर दए वखाईआ। दीपक प्रकाश इक्क उजाला, बाती तेल ना कोए पाईआ। अठ्ठे पहर खेल निराला, जिस जन मिल्या साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बस्त्र भूशन सार तन पहनाए आप निरँकार, दुरमति मैल ना लग्गे राईआ। दुरमति मैल ना लग्गे तन, पतित पुनीत आप कराइंदा। बुध बिबेक निर्मल मन, मन वासना आप खपाइंदा। निर्धन देवे नाम धन, सच भण्डार आप वरताइंदा। अन्ध अन्धेर चढ़ाए चन्न, सति प्रकाश कराइंदा। जो जन सतिगुर कहिणा जाए मन्न, जन्म मरन विच ना आइंदा। रसना कहे धन्न धन्न, धुर लेखा मस्तक भाग वण्ड वंडाइंदा। हरि दाता दानी बेड़ा देवे बन्न, डुबदा बेड़ा आप तराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राग सुणाए कन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म ईश जीव जीव ईश जगदीस साचा मेल मिलाइंदा।

कूड़ा करकट कर कर साफ़, घर मन्दिर आप सुहाया। हरिजन रक्खे एका आस, नेत्र नैण उठाया। प्रभ मेटे मेरी लग्गी प्यास, अमृत जाम प्याया। अवगुण मेरे करे मुआफ़, मानस जन्म अमोलक पाया। बण मानस जो रिहा गुस्ताख़, भुल हरि का नाउँ भुलाया। कर किरपा कल मेरी राख, राए धर्म ना दए सज़ाया। दरस वखाए रूप साख, साख्यात आपणा रूप वटाया। लहिणा देण चुकाए मस्तक माथ, लेखा मस्तक आप मुकाया। राम नाम चढ़ाए साचे राथ, रथ रथवाही कान्हा कृष्ना रूप धराया। लेखा आपणा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चमारा लेखा लिख्त आप लिखाया। गुरसिख किसे ना विके हाट, करता कीमत आपे पाया। आपे पार लगाए आपणे ताट, अद्धविचकार ना कोए रुढ़ाया। एथे ओथे देवे साथ, सगला संग आप रखाया। होए सहाई त्रिलोकी नाथ, त्रैलोकी नंदन रूप धराया। मेल मिलावा राम रामा पूत सपूता दसराथ, मन रावन दए खपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन कूड़ी क्रिया देवे हर, कूड़ कुड़यारा रहिण ना पाया। कूड़ी क्रिया जाए छुट, नाता जगत मोह चुकाया। सच सुच्च सोमां पए फुट्ट, घट मन्दिर नीर वहाया। जाम प्याए एका घुट्ट, अमृत सीर मुख चुआया। मानस भाग ना जाए निखुट, अमोला जन्म ना बिरथा जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन बख्शे एका ओट, जगत वासना कढ्ढे खोट, तन नगारे लगाए चोट, अनाद अनादी शब्द ब्रह्मादी ब्रह्म मेला मेल मिलाइंदा।

पतित पुनीत करे हरि ठाकर, ठोकर नाम इक्क लगाइंदा। अमृत सरोवर सिन्ध सागर, सिन्ध आपणा नाउँ जणाइंदा। लेखा जाणे काया गागर, गागर आपणा जल भराइंदा। काया चोली चाढ़े रंग रती रत्नागर, रंग अनमोला आप रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुरमति मैल जिस धवाइंदा। दुरमति मैल उतारे आप, आपणा रंग वखाईआ। जिस जन बणे माई बाप, तिस साची गोद सुहाईआ। त्रैगुण माया ना चढ़े ताप, अग्न तत्त ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा रंग रंगाईआ। रंग रंगाए ठाकर गुरदेवा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जिस जन बख्शे आपणी सेवा, सेवक रूप वखाईआ। अमृत फल खवावे मेवा, काया जामे विच टिकाईआ। लेखा जाणे अलख अभेवा, जीव जंत भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि वेख वखाईआ। वेखे नैण नंद बलिहारी, अनद बनोद खेल खिलाइंदा। कँवल नैण मुक्ट मुरारी, मधुर बैण आप हो जाइंदा। साक सैण बण संसारी, सगला संग वखाइंदा। जिस जन किरपा आपणी धारी, धारन मातलोक बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तारे वारो वारी, वेला वक्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जीआं जंतां करदा आया दारी, दुःख सुख विच बदलाइंदा।

६२६

★ १६ जेठ २०१८ बिक्रमी दौलत सिँघ दे घर नवां चक्क जम्मू ★

आदि जुगादि खेल ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म प्रभ रचन रचाइंदा। रवि ससि नूर नुराना चन्द, निरगुण निरवैर आप उपाइंदा। धाम अवल्ला सचखण्ड, खण्ड निवासी आप सुहाइंदा। सति सरूपा इक्क पलँघ, पुरख अकाला आप रखाइंदा। उप्पर बैठ सूरा सरबंग, शाह पातशाह हुक्म सुणाइंदा। नाम वजाए इक्क मृदंग, राग अनादी नाद सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। सचखण्ड निवासी खेल अपारा, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण कर पसारा, मंडल मण्डप लए उपाईआ। एकँकारा बन्ने धारा, सूरज चन्न आप चमकाईआ। आदि निरँजण जोत उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। थिर घर साचा खोल्ह किवाड़ा, श्री भगवान रिहा सुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, रूप अनूप आप धराईआ। सेवक सेवा जणाए विष्न ब्रह्मा शिव सच्ची सरकारा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। घाड़न घड़े अगम्म अपारा, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। निरगुण सरगुण बन्ने धारा, त्रै त्रै मेला सहिज सुभाईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, धुर दी बाण आप चलाईआ। शाह पातशाह बण साचा राणा, शहिनशाह करे सच्ची शहिनशाहीआ। वण्डे वण्ड

दो जहानां, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म हरि निरँकारा, लक्ख चुरासी आप जणाइंदा। त्रै त्रै मेला विच संसारा, पंचम आपणा बन्धन पाइंदा। अजूनी रहत हो उज्यारा, अनुभव आपणा रूप धराइंदा। एका तूरत नाद जैकारा, तुरीआ राग आप सुणाइंदा। भगत भगवन्त लेखा जाणे विच संसारा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आप वखाइंदा। बन्धन पाए हरि करतार, एका डोर नाम रखाईआ। वण्डन वण्ड वण्डे संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग रूप वटाईआ। जुगा जुगन्तर हो उज्यार, लोकमात वेस वटाईआ। सन्त सुहेले लए उभार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। एका बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मस्तक छार धूढ़ी इक्क रमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, लेखा जाणे गुर अवतार, गुरमुख नाद वेद समझाईआ। कलिजुग अन्तिम हो उज्यार, करे खेल सच्ची सरकार, शाह पातशाह आपणा रूप वटाईआ। प्रगट होवे विच संसार, दिस ना आए निराकार, नौ खण्ड पृथमी लक्ख चुरासी जीव जंत भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, आप बणाए आपणी बणतर, लोकमात बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ आप बरसाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपारा, निरगुण निरगुण आप उपाईआ। सति पुरख निरँजण लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। एका डंका नाद धुन्कारा, लोआं पुरीआं ब्रह्मंडां खण्डां जेरज अंडां आप सुणाईआ। लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसारा, कलिजुग गूढ़ी नींद सवाईआ। चारों कुण्ट होया विभचारा, जूठ झूठ वज्जी वधाईआ। गुर का शब्द ना किसे विचारा, मन का मणका ना कोए भवाईआ। नज़र ना आए किसे सच दरबारा, जगत दुआरे रहे फेरीआं पाईआ। काया मेटे ना अन्ध अन्धयारा, जोत निरँजण ना कोए जगाईआ। अनहद शब्द ना सुणे कोए धुन्कारा, घर सखीआं मिल मिल मंगल कोए ना गाईआ। किसे ना मिल्या मीत मुरारा, दर आए ना सच्चा माहीआ। नेत्र रोवे सर्ब संसारा, कलजुग रैण अन्धेरी छाईआ। चारों कुण्ट दिसे विकारा, धूंआँधार सर्ब लोकाईआ। गुरमुख विरला पावे सारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। बजर कपाटी खोल्ह किवाड़ा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आत्म सेजा कर प्यारा, सुरती शब्दी लए मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वेखणहारा, हरिजन हरि हरि वेखे थाउँ थाँईंआ। साकत निन्दक दुष्ट दुराचारा, कलिजुग माया अग्न जलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, उच्ची कूक कूक दए दुहाईआ। किसे दिसे ना हरि निरँकारा, मुल्ला शेख़ मुसायक पीर पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी देण दुहाईआ। आपे वसया सभ तों बाहरा, करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह जन भगतां बणे आप मलाह, शब्दी शब्द देवे सच सलाह, एका मन्त्र नाम पढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम

पकड़े बांह, सदा सुहेला सिर रक्खे ठंडी छाँ, गुरसिख साचे गोद बहाए जिउँ बालक मां, अग्नी तत्त लग्गण ना पाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सोहँ मणीआं माणक मोती चोग दए चुगा, सच सरोवर आप नुहाईआ। हिरदा सोध अगाध बोध दए समझा, निरगुण सरगुण हो सहा, सारंगधर भगवान बीठलो रंग रंगीला साचा माही बेपरवाहीआ। गुरमुख सज्जण लए मिलाई, जन्म जन्म दी धोवे शाही, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता जुग जुग हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन मेला आत्म अन्तर, गुर सतिगुर आप मिलाइंदा। शब्द अनादी एका मन्त्र, बिन रसना जिहवा आप पढ़ाइंदा। सोभावन्त होए थान थनंतर, दर साचा आप सुहाइंदा। काया मन्दिर अंदर वेखे गगन गगनंतर, रवि ससि आप चमकाइंदा। आप बणाए आपणी बणतर, हरिजन साचा घाड़न आप घड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे अंदर वड़, साची चोटी बैठा चढ़, शब्द सिँघासण पुरख अबिनाशन आत्म सेजा आपणा आसण लाइंदा। आत्म सेजा सच पलँघ, पुरख अबिनाशी आप वखाइंदा। घर विच घर वजाए मृदंग, अनहद नाद आप वजाइंदा। प्रगट हो सूरा सरबंग, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। हरिजन मेला गुर गुर चेला आवण जावण चुक्के पन्ध,
६३१ लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। जो जन गाए सोहँ रसना सुहागी छन्द, अट्ठे पहर परमानंद, मदिरा मास तजे गंद, कूड़ी ६३१
क्रिया मेट मिटाइंदा। दूई द्वैती ढाए कंध, त्रैगुण तोड़े लग्गा जंद, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। पंच विकारा करे खण्ड खण्ड, करे प्रकाश अन्धेरा अन्ध, जोती जाता पुरख बिधाता मेटणहारा अन्धेरी राता, नूरो नूर डगमगाइंदा। नाम अमुला देवे दाता, सति सरूप सुणाए गाथा, लहिणा देण चुकाए हथ्थो हाथा, जगत उधार ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब कल आपे समराथा, समरथ पुरख आपणा नाउँ धराइंदा। सगल वसूरा हरिजन लाथा, जो जन दर्शन पाइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, घाटा फेर ना कोए वखाइंदा। अन्तिम पूरी करे आसा, आसा मनसा विच बदलाइंदा। चरन कँवल बख्शे धरवासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आपणे मन्दिर आप बहाइंदा।

★ १६ जेठ २०१८ बिक्रमी पूरन चन्द शंकर दास प्रेमी देवी मलक कैम्प जम्मू ★

निरगुण रूप निराकारा, निरवैर हरि अख्वाइंदा। निरगुण जोत नूर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। निरगुण वसे धाम न्यारा, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, शहिनशाह आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। निरगुण खेल

करे अगम्म अपारा, सरगुण आपणी धार चलाइंदा। सरगुण रूप गुर अवतारा, पंज तत्त चोला आप हंढाइंदा। धुर दरबार सच्ची सरकारा, धुर दी कार आप कमाइंदा। सच संदेसा हरि निरँकारा, गुर गुर बाण बाण लगाइंदा। नाद अनादी नाद जैकारा, अगम्म अगम्मड़ा आप प्रगटाइंदा। जुगा जुगन्तर सच सहारा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। साचा सन्त भगत भगवन्त, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। मेल मिलावा नारी कन्त, नर नरायण ख़ुशी मनाईआ। निरगुण दुआर आए विच जीव जंत, भगतन देवे माण वड्याईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हरि का रूप सर्ब दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणी खेल खिलाईआ। मध्ध खेल श्री भगवाना, जुगा जुगन्तर आप खिलाइंदा। साचे सन्तां देवे नाम निधाना, नाम अनमोला झोली पाइंदा। आत्म अन्तर सच तराना, तार सतार आप हिलाइंदा। एका राग एका गाना, गीत सुहागी इक्क सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दरबारे कर परवाना, आप आपणा बन्धन पाइंदा। साचा बन्धन गुरमुख सतिगुर जोड़, धुर संजोगी आप बंधाईआ। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, वागां आपणे हथ्थ रखाईआ। अगम्म अगम्मड़ा जाए बौहड़, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दो जहानां लाए एका पौड़, साचा डण्डा हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिट्ठा करे रीठा कौड़, अमृत फल खवाईआ। अमृत फल गुरसिख चख, आत्म हरि रंग जाणया। आपणा आप कीता वक्ख, चले हरि सद भाणया। नाता तुट्टा किशना सुखला पख, जोत नूर जगे महानया। कीमत चक्की करोड़ी कख, अलखना अलख देवे माणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जूठ झूठ लथ्था सत्थर सथ, साचा सत्थर यार हंढान्याँ। साचा सत्थर पुरख अकाल, निरगुण आपणा आप जणाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, दया निध गहर गुण सागर शाह पातशाह वडी वड्याईआ। दो जहानां बण दलाल, लोक परलोक वेख वखाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, साचे मन्दिर आप बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। सरगुण रूप सर्ब इष्ट, पंज तत्त काया खेल खिलाइंदा। गुर गुर रूप खोल्हणहारा दृष्ट, दीर्घ रोग आप गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलावा जिउँ रामा वशिष्ट, विश्व आपणे रंग रंगाइंदा। साचा रंग हरि भगवान, भगतन आप चढ़ाईआ। देवणहारा ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। सचखण्ड वखाए सच निशान, साचे मन्दिर आप झुलाईआ। लोआं पुरीआं पावे आण, ब्रह्मण्ड खण्ड एका हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी हो प्रधान, हरि भगत लए जगाईआ। आप जगाए निरगुण दाता, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। साचे सन्तां मेटे अन्धेरी

राता, अन्ध अन्धेर ना कोए रखाइंदा। नाम अनामी सुणाए साची गाथा, साचा मन्त्र आप पढ़ाइंदा। एका घर वखाए पूजा पाठा, सच समग्री इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सरोवर तीर्थ ताटा, साचा मजन आप कराइंदा। साचा मजन गुरमुख गुरदेव, गुर गुर आप कराईआ। अगम्म अथाह अलख अभेव, अलख अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। एका बख्शे साची सेव, साचा मार्ग दए जणाईआ। आत्म ब्रह्म आत्म मेव, आत्म फल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा चुकाए भेव, पर्दा कोए रहिण ना पाईआ। पर्दा गुरसिख जाए लथ, हरि हरि साचा आप चुकाईआ। इक्क इकल्ला देवे वथ, वस्त अमोलक आप वरताईआ। वसणहारा घट घट, घट घट अन्तर रूप दरसाईआ। जोत जगाए लट लट, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म वखाए साची खाट, साची सेजा सोभा पाईआ। साची सेजा हरि नरायण, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। रसना कोए ना सके कहिण, जो जन दर्शन पाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर बणे साक सज्जण सैण, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप चुकाए लहिण देण, पूर्ब लेखा वेख वखाइंदा। पूर्ब लेखा गुर गुर मीत, जुगा जुगन्तर वेख वखाइंदा। वसणहारा धुर दरबारे ठांडे सीत, सीतल धारा आप रखाइंदा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, सतिगुर पूरा सो अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत अवल्लड़ी चलाए रीत, पतित पुनीत आप कराइंदा। पतित पुनीत करे भगत भगवन्त, जन्म जन्म दी मैल धवाईआ। आपणी महिमा जणाए अगणत, वेद कतेब भेव ना पाईआ। आपणा दृढ़ाए आपे मंत, मन्त्र राम नाम दरसाईआ। लेखा जाणे साचे सन्त, सहिसा दए चुकाईआ। सहिसा रोग रहे ना अन्त, मिले कन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चढ़े रंग इक्क बसन्त, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। फुल फुलवाड़ी गुरमुख रंग, हरि सतिगुर आप रंगाइंदा। दो जहानां वेखे लँघ, लोकमात फेरा पाइंदा। साहिब सुल्तान सूरा सरबंग, ब्रह्म वेता खेल खिलाइंदा। दूई द्वैती ढाए कंध, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, गुरसिख दए वड्याईआ। हरिजन चाढ़े साचा चन्न, लोकमात करे रुशनाईआ। जनणी जणे एका जन, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। हरि का राग सुणे कन्न, दूसर अवर ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राए धर्म ना देवे डन्न, वेले अन्त ना कोए सज़ाईआ। जोती जाता श्री भगवान, थिर घर साचे सोभा पाइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधान, गुर सतिगुर रूप वटाइंदा। भगतन देवे इक्क ज्ञान, आपणी बूझ बुझाइंदा। सन्तन देवे नाम दान, नाम नामा आप अख्वाइंदा। गुरमुखां वखाए सच निशान, धर्म निशाना इक्क

रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख बणाए चतुर सुघड़ सुजान, मूर्ख मूढ़े आपणे धन्दे लाइंदा। मूर्ख मूढ़ा जन्म सुहाउणा, गुरसिख गुर गुर दए वड्याईआ। गुरमुख हरि हरि आप पछाणा, लक्ख चुरासी फोल फोलाईआ। सन्तन देवे ब्रह्म ज्ञाना, आत्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। भगतन मेल श्री भगवाना, भगवन होए सदा सहाईआ। गुर सतिगुर वसे इक्क मकाना, थिर घर वजदी रहे वधाईआ। सो पुरख निरँजण हो प्रधाना, निरगुण निराकार आपणी खेल खिलाईआ। गुर गुर देवे मात परवाना, जुग जुग आपणा हुक्म सुणाईआ। भगतन गायण साचा गाणा, रसना जिहवा हरि जस गाईआ। सन्तन करे प्रकाश कोटन भाना, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। गुरमुखां अमृत आत्म देवे पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां चुक्के आवण जावण काना, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। लक्ख चुरासी कट्टे फंद, गुरसिखां दया कमाइंदा। गुरमुख गाए बत्ती दन्द, साची सेवा आप लगाइंदा। सन्त सुहेले चढ़े चन्द, चन्न चांदनी आप चमकाइंदा। भगतन देवे परमानंद, परम पुरख दया कमाइंदा। गुर गुर रूप सदा बख्शंद, सरगुण निरगुण खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रहे सदा अखण्ड, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। सचखण्ड निवासी एका हरि, गुर गुर आपणा रूप वटाईआ। भगत सुहेले लए फड़, सोए सन्त आप जगाईआ। गुरमुखां अंदर जाए वड़, गुरसिख लए उठाईआ। उठे गुरसिख जाए जाग, जिस जन नेत्र नैण खुल्हाइंदा। गुरमुखां पकड़े आपे वाग, चारों कुण्ट फेरा पाइंदा। सन्तन धोवे दुरमति दाग़, निर्मल रूप आप वखाइंदा। भगतन मेला कन्त सुहाग, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। गुर गुर देवे शब्द वैराग, वैरागी शब्द आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अबिनाशा निरगुण नूर प्रकाशा सचखण्ड लगाए भाग, थिर घर आपणा आसण लाइंदा। थिर घर आसण हरि मेहरवान, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। गुर सतिगुर दाता नौजवान, लोकमात वेस वटाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों रखाए एका कान, भगत भगवन्त दए वड्याईआ। सन्तन सति सरूपी दान, सांतक सति सति वरताईआ। गुरमुखां पाए एका आण, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां बख्शे चरन ध्यान, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। सच सरनाई गुरचरन, गुरसिखां सिख समझाइंदा। गुरमुख खुल्हे हरन फरन, लोचण नैण आप खुल्हाइंदा। सन्त साजन साची तरनी तरन, भव सागर पार कराइंदा। भगत भगवन्त लड़ एका फड़न, छुट्ट कदे ना जाइंदा। गुर सतिगुर चुकाए मरन डरन, लक्ख चुरासी भेव ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण अंदर सारे वड़न, निरँकार निराकार जिस जन आपणा मेल मिलाइंदा। जिस जन मेल करे करतारा,

तिस जन दए वड्याईआ। सरगुण रूप विच संसारा, जुगा जुगन्तर खेल खिलाईआ। भगत सन्त वखाए इक्क दुआरा, गुरमुख साचे नाल रलाईआ। गुरसिख खिच्चे वारो वारा, अभुल भुल कदे ना जाईआ। एका देवे नाम आधारा, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे निरगुण पुरख अकाल, आपे गुर गुर रूप दयाल, आपे भगत वछल किरपाल ,आपे सन्तां रिहा सुरत संभाल, आपे गुरमुख वेखे बाल अञ्याण, आपे गुरसिखां देवे माण, लोकमात वेख वखाईआ। लोकमात वेखणहारा, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। सरगुण खेल करे अगम्म अपारा, पंज तत्त काया चोला आप हंढाइंदा। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता, किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीता, गुरु दुआर ना आसण लाइंदा। हर घट अंदर वड़या, आपणे पौड़े आपे चढ़या, आपणी विद्या आपे पढ़या, सृष्ट सबाई आप पढ़ाइंदा। दर दर घर घर दर्शन देवे नर नर हरया, जिस जन उप्पर किरपा करया, कर किरपा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता निराकार, गुर गुर लै मात अवतार, भगतन पावे साची सार, सन्तन देवे नाम अधार, गुरमुख मेले कर प्यार, गुरसिख आपणी गोद बहाइंदा। गुरसिख गोदी लए चुक्क, गुरमुख आपणे कंध उठाईआ। हरि सन्तन बूटा जाए ना सुक्क, साचा माली मात लगाईआ। भगत निशाना ना जाए उक, शब्द निराला तीर चलाईआ। गुर सतिगुर मात जाए तुट्ठ, भण्डार अतोट अतुट्ट वरताईआ। निरगुण रूप अबिनाशी अचुत, सचखण्ड वसे सच्चा शहिनशाहीआ। जुग जुग सुहाए आपणी रुत्त, सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका एक अख्वाईआ। एका निरगुण एका सरगुण, एका सर्ब समाया। एका निर्धन एका सरधन, एका नूर जोत जगाया। एका मर्द एका मरदन, मर्द मरदाना इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण सरगुण आपणा रूप वटाया। निरगुण पीता सरगुण जामा, सरगुण आपणा तत्त चलाईआ। सरगुण जोत एका रामा, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। निरगुण करे आपणा कामा, सरगुण आपे धन्दे लाईआ। सरगुण रूप जगत पछाना, निरगुण नज़र किसे ना आईआ। पंज तत्त अंदर लुकया साचा कान्हा, लक्ख चुरासी गोपी काहन नचाईआ। चारों कुण्ट होए प्रधाना, दहि दिशा फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण, आपणा रंग रंगाईआ। सरगुण तजया आपणा रंग, निरगुण रूप वटाया। निरगुण वसया सरगुण आत्म सेज पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाया। सरगुण अंदर वज्जे मृदंग, निरगुण निरवैर रिहा वजाया। गीत अगम्मी गाए छन्द, सो पुरख निरँजण आप अलाया। हँ ब्रह्म जणाए परमानंद, निज आत्म आप सुणाया। जोती जोत सरूप

६३५

हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण सोहँ रूप वटाया। सो पुरख निरँजण निरगुण निराकार, हँ ब्रह्म जीव अख्वाईआ। लक्ख चुरासी खेल न्यार, चारे खाणी आप बणाईआ। चारे जुग कर विचार, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, निरगुण वेखे थाउँ थाँईंआ। गुर गुर सुणे आप पुकार, सच दरबारे सोभा पाईआ। भगत सन्त पुच्छे वारो वार, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। गुरमुख सुणायण आपणा हाल, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुरसिख घालन रहे घाल, घाली घाल वेख वखाईआ । पुरख अबिनाशी एका वेखे बैठ सच्ची धर्मसाल, धर्मसाल इक्क बणाईआ। कलिजुग अन्तिम आपणा हल्ल करे सवाल, बाकी कोए रहे ना राईआ। फड़ के ल्याए काल महाकाल, चरन दुआरे ल्ए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका थित दए जणाईआ। एका थित सतारां हाढ़, काल महाकाल हुक्म सुणाइंदा। लोकमात लग्गणा सच अखाड़, पुरख अबिनाशी आप लगाइंदा । लक्ख चुरासी वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड, डूँग्घी कंदर फोल फोलाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरा रूप दिता शंगार, आपणी हथ्थी बन्धन पाइंदा। लक्ख चुरासी तेरा आहार, तेरे अंदर सर्ब टिकाइंदा। महाकाल रूप करतार, दीन दयाल आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप मिलाइंदा। साचे वार आउणा चल, निहचल धाम दए जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जाणा नाल रल, सगला संग रखाईआ। तेई अवतार इक्क दूजे दा फड़न लड़, आवण वाहो दाहीआ। गुर गुर दस स्नेहुड़ा दिता घल्ल, सच संदेस सुणाईआ। भगत सन्त राह तक्कण अज्ज कि कल, कवण सुहेला मिले साचा माहीआ। गुरमुख वक्त लँघायण कर कर वल छल, कलिजुग अछल अछल खेल खिलाईआ । गुरसिख मनमुखां नाल कर ना सके गल्ल, सच सुच्च किसे दर नज़र ना आईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर शब्द खण्डां फड़या एका भल, नव नौ चार रिहा डराईआ। ईसा मूसा जाए हुल, संग मुहम्मद चार यार देण दुहाईआ। दरोही ख़ुदा नबी रसूल जिस वरती आपणी कल, अकल कल आप अख्वाईआ। सिँघ शेर वड़या आपणी झल, नौ खण्ड पृथमी दए उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण ल्याए फड़, जो सरगुण निरगुण रूप गए वटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे कर, करनी करता आप अख्वाईआ।

★ १६ जेठ २०१८ बिक्रमी भाग सिँघ दे घर मलक कैम्प जम्मू ★

सिमरो सिमर सिमर सुख पावो, हरि नाम वडी वड्याईआ। मन का भरम सर्ब गवावो, मन मनसा रहे ना राईआ।

गुरचरन सदा ध्यावो, मिले माण वड्याईआ। आत्म अन्तर आपणा पर्दा लाहवो, दूई द्वैत रहिण ना पाईआ। हँस बणो जीओ काउँ, काग हँस रूप वखाईआ। एका वेखो पिता माउँ, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सदा सुहेला सिर रक्खे ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वेले अन्त पकड़े बाहों, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सिमरन दए समझाईआ। एका सिमरन हरि का नाम, हरि नामा रंग रंगाइंदा। लेखे लग्गे काया माटी चाम, पंज तत्त चोला वेख वखाइंदा। भाग लगाए नगर खेड़ा ग्राम, तेरे तन बन्धन आप कटाइंदा। डूँग्घी कंदर मेटे अन्धेरी शाम, निरगुण साचा चन्द चढ़ाइंदा। सिमरत सिमरत सिमरत मेला राम, राम रम्मईआ नज़री आइंदा। आसा मनसा पूरे करे काम, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाइंदा। करे प्रकाश कोटन भाण, जोत निरँजण डगमगाइंदा। इक्क वखाए सच अस्थान, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। पुरख अगम्मा बैठ श्री भगवान, सच सिँघासण आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सिमरन इक्क समझाइंदा। साचा सिमरन बुध बिबेक, तन मन एका रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया ना लग्गे सेक, ममता मोह रहे ना राईआ। सतिगुर चरन एका टेक, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। लेखा जाणे लिख्या लेख, लेख अलेख दए समझाईआ। आपे मेटणहारा रेख, भेव अभेदा आप खुलाईआ। निज नेत्र निज आत्म निज घर सज्जण लैणा वेख, हरि सिमरन वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तत्त दए समझाईआ। सिमर सिमर मिटे कलेश, कलकाती रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हमेश, भुल कदे ना जाईआ। सेव लगाए विष्न ब्रह्मा महेष, शंकर आपणी धार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिमरत नाम वडी वड्याईआ। सिमरत नाम हरि जगदीस, जगदीसर जन समझाइंदा। मेल मिलावा जीव ईश, ब्रह्म पारब्रह्म वखाइंदा। नाता तुट्टे राग छतीस, दन्द बतीस ना कोए गाइंदा। एका कलमा इक्क हदीस, एका एक शरायत पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सिमरन आप रखाइंदा। साचा सिमरन जिहवा रस, रस रसीआ आप वखाइंदा। जिस जन हिरदे जाए वस, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। तीर निराला मारे कस, शब्द अणयाला आप चलाइंदा। रैण अन्धेरी मेटे मस, नूरी चन्द आप चमकाइंदा। दरस वखाए नठ नठ, जिस जन आपणा सिमरन बन्धन पाइंदा। नज़री आए घट घट, चार खाणी आपणी जोत जगाइंदा। लेखे लाए रती रत, जो जन हरि हरि चरन ध्यान रखाइंदा। एका देवे ब्रह्म मति, पारब्रह्म ब्रह्म आप पढ़ाइंदा। मेल मिलावा कमलापति, कँवल नैण साचे रंग आप सुहाइंदा। सिमरत सिमरत सिमरत सगल वसूरे जायण लथ, सहिँसा रोग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सिमरन

आप बणाइंदा। साचा सिमरन गुर की धार, गुर बिन सिमरन करन कोए ना जाईआ। साचा सिमरन गुर चरन प्यार, गुर इष्ट देव दए वड्याईआ। साचा सिमरन हरिजन हरि हरि करे प्यार, आदि जुगादि मिले वड्याईआ। साचा सिमरन नाता तोड़े पंच विकार, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। साचा सिमरन माया ममता तोड़े जगत जंजाल, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। साचा सिमरन गुरमुख पाए विरला लाल, जिस जन आपणी दया कमाईआ। लक्ख चुरासी होई बेहाल, हरि का सिमरन हथ्थ किसे ना आईआ। नेत्र रोवण शाह कंगाल, राज राजान देण दुहाईआ। फल ना दिसे किसे डाल्ह, पत्त डाल्ही ना कोए महिकाईआ। जूठी झूठी घालन रहे घाल, साची घाल ना कोए वखाईआ। सभ दे सिर ते कूके काल, वेले अन्त ना कोए सहाईआ। नाता जुड़या झूठा धन माल, माया ममता मोह रखाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना करे प्रितपाल, साचा सिमरन ना दए बणाईआ। सिमरत सिमरत सिमरत होए निहाल, जिस जन आपणा दरस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए समझाईआ। सिमरो सिमर सिमर सुख पाओ। तिन्न कलेश मन माहे मिटाओ, हउमे सहिंसा रोग चुकाओ। घर प्रीतम एका पाओ। दूजे दर ना मंगण जाओ। निरवैर पुरख निराकार आदि जुगादि अजूनी रहत दर्द दुःख भंजन सीस जगदीस इक्क झुकाओ। राम नाम जिहवा रसना रस पुरख अबिनाशी देवे हस्स हस्स, हरि का मन्दिर इक्क ध्याओ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा दर, दर घर साचा इक्क जणाओ। साचा अमृत हरि हरि बाण, सिमरत नाम ध्यालीआ। एथे ओथे चुक्के काण, दो जहान होए सहाईआ। एका देवे सति बबाण, हरिजन साचे लए चढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखे मार ध्यान, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। करे खेल श्री भगवान, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। गुणवन्ता देवे गुण निधान, एका नाम वस्त अमोलक आप वरताईआ। जुगा जुगन्तर सन्त सुहेले लए पछान, भगष्तन वेखे थाउँ थाँईआ। गुरमुख मेला चतुर सुजान, चात्रिक तृखा दए बुझाईआ। गुरसिखां चुकाए जम की काण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एका सरन हरि भगवान, दूसर अवर ना कोए चतुराईआ। लक्ख चुरासी रसना जिहवा सारे गाण, गा गा थक्की सर्ब लोकाईआ। बिन सतिगुर पूरे ना देवे कोए ब्रह्म ज्ञान, आत्म ताक ना कोए खुल्हाईआ। निर्मल जोत ना जगे महान, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। सुण सुण राग थक्के कान, अनहद नाद ना कोए वजाईआ। हरि का सिमरन ना सके कोए पछान, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। जिस जन उप्पर होए आप मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सिमरन झोली पाईआ। साचा सिमरन झोली रक्ख, हरिजन झोली आप भराइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे राह चलाइंदा। आपे निरगुण हो प्रतक्ख, सरगुण मेल मिलाइंदा। लक्ख

चुरासी नालों करे वक्ख, जिस जन आपणा नाम जपाइंदा। आदि अन्त लए रक्ख, सगला संग निभाइंदा। जन भगतां करदा आया पक्ख, एका नाम वण्ड वंडाइंदा। अन्तिम लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, आवण जावण फंद कटाइंदा। शब्द जणाए महिमा अकथ, कथनी कथ ना कोए वखाइंदा। जिस जन चढ़ाए नाम रथ, पार किनारा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र आप दृड़ाइंदा। साचा मन्त्र नमो गुरदेव सति, वस्त रूप ना कोए वटाईआ। एका मन्दिर एका अंदर एका वार देवे घत, अतोट अतुट आप रखाईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत, सांतक सति आप कराईआ। सति सन्तोख देवे धीरज जत, काम क्रोध ना होए हल्काईआ। चरन कँवल बंधाए आपणे नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। बीज बीजे साचे वत, अमृत फल आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम रिहा समझाईआ। एका नाम डूँघा सागर, जीव जंत भेव कोए ना पाइंदा। पंज तत्त रक्खया काया गागर, साचे मन्दिर आप टिकाइंदा। गुरमुख विरला बणे सौदागर, जिस जन आपणा वणज कराइंदा। करे खेल करता करीम कादर, कुदरत आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सिमरन इक्क रखाइंदा। साचा सिमरन आदि जुगादि, हरि सतिगुर वण्ड वंडाईआ। भगतन देवे साची दाद, ध्रू प्रहिलाद रहे जस गाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे नाद, तुरीआ नाद आप सुणाईआ। आपणी धुंन आपणे विच्चों काढ, ब्रह्मादि दए सुणाईआ। लेखा जाणे बोध अगाध, चार वेद भेव ना आईआ। पुराण अठारां रहे विस्माद, हरि का लेख ना लिख्या जाईआ। शास्त्र सिमरत करन फ़रियाद, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। गीता ज्ञान अठारां अध्याए करे याद, एका अर्जन हरी हरि आप समझाईआ। सिमरत वेखे वाद विवाद, सिमरन एका तत्त जणाईआ। ईसा मूसा लाहे नकाब, पर्दा कोए रहिण ना पाईआ। करे खेल हक जनाब, मुकामे हक रूप धराईआ। परवरदिगार देवे दाद, नूर अलाही नूर चमकाईआ। संग मुहम्मद करे लाड, चार यारी मेल मिलाईआ। एका नाम ख़ुदाई वखाए वाहद, साचा सिमरन दए जणाईआ। कलमा कलाम सच अमाम सुणाए याद, याद सिमर आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सिमरन आपणा आपणे हथ्थ रखाईआ। एका सिमरन सति नाम, नानक निरगुण पाया। इक्क प्याला पीता जाम, मधुर रस आप वखाया। इक्क सुणया सच पैग़ाम, लक्ख चुरासी आप सुणाया। एका वेख्या हरि ग्राम, सचखण्ड दुआरा सोभा पाया। लोकमात हो प्रधान, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाया। सर्ब जीआं दा इक्क भगवान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप समझाया। आत्म ब्रह्म इक्क ज्ञान, दूजी विद्या ना कोए पढ़ाया। एका जोती नूर महान, गोबिन्द मेला सहिज सुभाया। पंचम मीता

सच निशान, सच निशाना हथ्थ उठाया। ऊँचां नीचां राउ रंकां वेखे मार ध्यान, अमृत आत्म जाम प्याया। एका सिमरन पुरख अकाल, आप बणाए दीन दयाल, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सिमरन आपणे हथ्थ रखाया। सिमरन सिमरन सिमर सिमर सुख पाईए, एका नाम अनमोल। बिन रसना जिहवा गाईए, निश्अक्खर अंदर बोल। जीव जगत ना कदे सुणाईए, हरि का नाम सदा अडोल। गुर दर गुर घर सदा सद मिल मिल गाईए, काया अंदर जाए मौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे उप्पर धवल। सिमर सिमर सुख पावना, सहिज सुख गुर मीत। हरिजन साचा वेख वखावणा, हरि हरि बैठा इक्क अतीत। काया मन्दिर बंक सुहावणा, होए पतित पुनीत। नर हरि नरायण एका गावणा, सद वसे धाम अनडीठ। बिन गुर नेत्र दिस किसे ना आवना, आदि जुगादी चली रीत। सतिगुर पूरे पर्दा लाहवणा, घर मन्दिर वखाए सच मसीत। शब्द अनादी नाद वजावना, अनहद गाए आपणा गीत। सुरती शब्दी मेल मिलावना, इक्क जणाए सच प्रीत। काया बंक आप सुहावना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिमरत देवे नाम अनडीठ। सिमर सिमर सुख पावो जन, धन्न धन्न जनेंदी माईआ। हरि का सिमरन बेड़ा देवे बन्न्ह, शौह दरयाए ना कोए रुढ़ाईआ। हरि सिमरन राए धर्म ना देवे डन्न, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाईआ। हरि सिमरन अग्नी तत्त ना जले तन, त्रैगुण लेखा रहे ना राईआ। हरि सिमरन भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, भय भयानक होए सहाईआ। हरि सिमरन करे प्रकाश अन्धेरे अन्ध, जोती नूर रुशनाईआ। हरि सिमरन ढाए दूई द्वैती झूठी कंध, सृष्ट सबाई एका रूप वखाईआ। हरि सिमरन उपजाए परमानंद, निजानंद वज्जे वधाईआ। हरि सिमरन रसना तजे झूठा गंद, बिन हरि नामे फल ना कोए खाईआ। हरि सिमरन सदा पुनीत जन, पतित पापी लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिमरत एका कूट वखाईआ। एका कूट एका दिशा, एका घर सुहाइंदा। एका हरि पाए हिस्सा, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। जगत तृष्ना मेटे तृखा, आसा मनसा पूर कराइंदा। जिस जन सिमरन पाए लेखा, दूसर दर ना मंगण जाइंदा। गुरमुख विरला सिखे साची सिखा, लक्ख चुरासी जीव सर्ब कुरलाइंदा। हरि का सिमरन डाहडा तिक्खा, तिक्खी धार बणाइंदा। ना कोई वेखे वड्डा निक्का, बिरध बाल ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप उठाइंदा। गुरमुख उठ सिमरो नाम, सिमरन वेला आईआ। काया माटी किसे ना काम, झूठी काया पूज पुजाईआ। मदिरा पी पी थक्का जाम, अमृत रस ना कोए चखाईआ। भोगी भोग भोगया काम, कामन तृसन ना कोए गंवाईआ। घर मिल्या ना घनईया शाम, बंसरी नाम ना किसे वजाईआ। सुरती सीता ना पाया राम, बण

बण बैठी दए दुहाईआ। मन हँकारी रावण बणया विच जवान, आपणा बल रिहा वखाईआ। बिन हरि के सिमरन दूसर अवर ना कोए बाण, जो लंका गढ़ दए तुड़ाईआ। आपणी सुवाणी आपे लए पछाण, समुंद सागर खाई पार कराईआ। जिस जन देवे आपणा नाम, सिमरन साचा दए समझाईआ। बिन सतिगुर पूरे जीवण किसे ना काम, लक्ख चुरासी गेड़े विच रखाईआ। कलिजुग भुल्ले जीव नादान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होणा अन्त वैरान, जो दीसे दिस ना आईआ। उच्च महल्ले बैठे चढ़ मकान, एका भुल्लया राम साचा माहीआ। वेसवा रूप पीण खाण, जगत विभचार रहे हंढाईआ। मात पुत्तर करे ध्यान, भैण भईआ रही तकाईआ। एका भुल्लया श्री भगवान, साचा मार्ग नज़र ना आईआ। जिस जन सिमरन देवे दान, सिमरत आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप समझाईआ। सिमरो नाम सगल कलेश जाए लथ, हरि सतिगुर आप मिटाईआ। एका पूजा एका पाठ, एका मन्त्र दए दृढ़ाईआ। इक्क किनारा तीर्थ ताट, एका घाट दए वखाईआ। इक्क सुणाए साची गाथ, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। हँ ब्रह्म चढ़ाए आपणे राथ, रथ रथवाही सेव कमाईआ। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथ, चौदां लोक खोज खोजाईआ। मात धराए तत्त आठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध मेल मिलाईआ। लहिणा देणा चुक्के ज़ात पात, जो जन रसना राम वसाईआ। साचा राम ग़रीब निमाणयां देवे साथ, बेर भीलणी आपणे मुख पाईआ। मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण निताण निताणयां देवे साथ, बिदर सुदामा गले लगाईआ। पंचम लहिणा चुक्या माथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस सिमरया तिस आपणा मेल मिलाईआ। सिमरो राम हरी हरि नरायण, हरिजन हरि हरि आप जणाइंदा। दरसन पेखो आपणे नैण, लोचण तीजा आप खुल्हाइंदा। चौथे घर मिल मिल बहण, चौथा पद आप समझाइंदा। पंचम चुक्के लहण देण, हिसाब किताब ना कोए रखाइंदा। छेवें मिले साक सज्जण सैण, हरि सगला संग रखाइंदा। सत्तवें सति सतिवादी आए लैण, जो जन हरि हरि नाम ध्यांअदा। सन्त सतिगुर धाम इक्टठे बहण, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर आप चढ़ाइंदा। साचा मन्दिर उच्च अटल्ला, राम रामा वण्ड वंडाईआ। आदि जुगादी बैठा इक्क इकल्ला, सच सिँघासण आसण लाईआ। शब्द संदेस जन भगतां आपे घल्ला, आपणा नाउँ दए प्रगटाईआ। पंज तत्त काया चोले रला, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छला, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। गुरमुखां सच सिँघसण मल्ला, आत्म सेजा सोभा पाईआ। दीपक जोती एका बला, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। दर दरवेश आपे खला, दर दरबान रूप वटाईआ। जिस जन फड़ाया आपणा नाम पल्ला, दो जहान विछड़

६४१

कदे ना जाईआ। कलिजुग जीव अन्तिम होया झल्ला, विसरया एका हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, एका वर नाम रखाईआ। राम नाम पाया वर घर, घर घर विच वज्जी वधाईआ। सिमरत सिमरत सिमरत चुकया डर, डर भय ना कोए रखाईआ। मेल मिलाया पुरख नर, नर नरायण दया कमाईआ। बन्द किवाड़ा खोल्या दर, घर मन्दिर बूझ बुझाईआ। आपणे पौड़े जाणा चढ़, साचा डण्डा हथ्थ फड़ाईआ। अद्धविचकार ना जाए अड़, जो हरि हरि नाम ध्याईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा काया बंक डूँघी भँवरी लए फड़, आप आपणा मेल मिलाईआ। नाता तोड़े सीस धड़, जगदीस दया कमाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म जाए रल, जोती जाता एका रंग समाईआ। एका सिमरन आए कम्म, दूसर वस्त संग कोए ना जाईआ। कलिजुग जीव वेला अन्तिम मन्न, सोयां रैण रही विहाईआ। नाता तुट्टे अन्तिम छप्परी छन्न, जगत मन्दिर ना कोए सहाईआ। जूठा झूठा दिसे धन धन, नार सुहागण कन्त ना कोए हंढाईआ। गुर का शब्द सुण लै कन्न, एका राग रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग बेड़ा आप चलाईआ। जुग जुग बेड़ा आप चलाइंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर धार। कलिजुग अन्तिम रूप वटाइंदा, निहकलंका नूर उज्यार। शब्द डंका इक्क वजाइंदा, सृष्ट सबाई करे ख़बरदार। राउ रंकां आप जगाइंदा, शाह सुल्ताना दए हुलार। सोया कोए रहिण ना पाइंदा, निरगुण सरगुण लै अवतार। काल महाकाल आपणे नाल रखाइंदा, हुक्मी हुक्म करे वरतार। विष्न ब्रह्मा शिव आप जगाइंदा, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द दए आधार। लोकमात वेख वखाइंदा, डूँघा सागर भँवरी खार। लक्ख चुरासी खेल खिलाइंदा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज कर्मी कर्म लए विचार। कागद कलम ना लेख लिखाइंदा, समुंदर मस बनास्पत करे ना कोए कार। चौदां भार ना वण्ड वंडाइंदा, चौदां तबकां मारे मार। एका खण्डा नाम हथ्थ उठाइंदा, तिक्खी रक्खे धार। ब्रह्मण्डां आप चमकाइंदा, दो जहानां हो उज्यार। गगन पातालां वेख वखाइंदा, पृथ्मी आकाश वेखे अखाड़। गुरमुख विरले आप तराइंदा, जिस जन देवे नाम आधार। सिमर सिमर सिमर विरला सुख पाइंदा, जिस हिरदे वसे आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी वेस हरि, हरिजन साचे लए फड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, आपणा अक्खर आपे पढ़, आपणी विद्या आप जणाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी करनी आपे कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण सचखण्ड निवासी सच सिँघासण बैठा चढ़, पुरख अबिनाशी आपणा रूप धराइंदा।

★ १७ जेठ २०१८ बिक्रमी साहिब सिँघ रसाल सिँघ दे गृह मनावर जम्मू ★

सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। जुगा जुगन्तर खेल अपार, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। गुर गुर लै मात अवतार, लक्ख चुरासी जीवां जंतां एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। पंज तत्त काया चोला कर पसार, सिँघ शेर नाउँ रखाईआ। अन्तिम नाता तोड़ सर्ब संसार, जोती जोत जोत मिलाईआ। सचखण्ड निवासी साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण आसण सोभा पाईआ। इक्क इकल्ला अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह बेअन्त ठाकर स्वामी निहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता एकँकारा हरि निरँकारा, आपणा मन्दिर आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। करे खेल श्री भगवाना, रूप अनूप वटाइंदा। सिँघ शेर पंज तत्त मकाना, कलिजुग अन्तिम मेट मिटाइंदा। निरगुण घर निरगुण हो प्रधाना, निरगुण आपणे रंग समाइंदा। पारब्रह्म पुरख सुल्ताना, शाह पातशाह आपणा खेल खिलाइंदा। लेखा जाणे दो जहाना, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पातालां ज़िमीं अस्मानां उत्भुज सेत्ज वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाइंदा। वेस वटाए हरि करतारा, रूप अनूप वटाईआ। शेर सिँघ हरि का नाउँ वड बलकारा, सिँघ शेर हरि आप अख्वाईआ। रूप रंग रेख ना दिसे विच संसारा, तत्व तत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराईआ। शाह पातशाह हरि साचा शेर, सिँघ आपणा रूप धराइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लक्ख चुरासी रिहा घेर, साचा घेरा एका पाइंदा। गुर गोबिन्द रूप हरि शब्द दलेर, शब्द गोबिन्द रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाइंदा। हरि का शब्द गोबिन्द धार, गोबिन्द शब्द आप बणाईआ। नानक निरगुण पाए सार, निरवैर पुरख इक्क सालाहीआ। अजूनी रहत कर प्यार, अनुभव प्रकाश धराईआ। एका जोती नौ नौ दुआर, नौ नौ लेखा दए चुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी हो उज्यार, एका डंका शब्द वजाईआ। एका सुत करे विचार, नाम सति वेख वखाईआ। दस दस रूप आप करतार, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला भगत भगवन्त पाए सार, दुष्ट दमन दए वड्याईआ। हेम कुण्ट निराकार साकार लए उठाल, बाल अञ्याणा आप समझाईआ। पूत सपूता बण दलाल, गुजरी वखाए एका लाल, तेग़ बहादर दए वड्याईआ। आत्म अन्तर जोत मसाल, बेमिसाल आप जगाईआ। पिता बणया आप कृपाल, तत्तव गुण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त काया अंदर वड़, आपणा रूप आप प्रगटाईआ। पंज तत्त काया चोला

गुर गोबिन्द, सो पुरख निरँजण आप हंढाइंदा। हरि पुरख निरँजण मेटे सगली चिन्द, एकँकारा खेल खिलाइंदा। आदि निरँजण जोत जगाए साचा चन्द, गुजरी चन्द आप वड्यांअदा। अबिनाशी करता आप बणाए आपणी बिन्द, श्री भगवान गोद उठाइंदा। पारब्रह्म सदा बख्शंद, आपणी बख्शश आप कराइंदा। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर पंज तत्त काया वेख शरीर, अंदर मन्दिर आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द मेला मेल मिलाइंदा। गोबिन्द मेला हरि निरंकारा, एका दूजा भउ चुकाईआ। पिता पूत इक्क आधारा, पूत सपूता गोद उठाईआ। एका जाम एका नाम एका अमृत ठंडा ठारा, भर प्याला आप प्याईआ। एका दर इक्क दरबारा, इक्क घर बारा रिहा वखाईआ । साचे तख्त बहे सच्ची सरकारा, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, एका वार दए सुणाईआ। तेरा मेरा संग न्यारा, लक्ख चुरासी वेख ना सके कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर चेला रूप धराईआ। चेला गुर खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। गोबिन्द मेला इक्क इकल्ला, दिस किसे ना आइंदा। सरगुण अंदर निरगुण फड़या पल्ला, निरगुण सरगुण आपणे रंग समाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, गोबिन्द खेड़ा आप सुहाइंदा। सच संदेस एका घल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। रंग रंगाए हरि करतारा, एका रंग मजीठ चढ़ाईआ। उतर ना जाए विच संसारा, अनडीठ रीत चलाईआ। ठांडा सीत सति दरबारा, सचखण्ड दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द गुर लिख्या धुर, धुर लेखा आप जणाईआ। धुर धुर लेख श्री भगवाना, गुर गोबिन्द आप जणाइंदा। खेले खेल विच जहाना, दो जहानी खेल खिलाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ऊँच नीच राउ रंक राज राजान, शाह सुल्तान कर परवाना, एका एक दर वखाइंदा। अमृत आत्म पीणा खाणा, सच्चा खण्डा नाम फराना, एका रसीआ रस वखाइंदा। अंदर मन्दिर अनहद गाणा, धुर दा नादी नाद वजाणा, ब्रह्म नाद आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द एका गुण समझाइंदा। एका गुण गुर गोबिन्द, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। लेखा जाणे सृष्ट हिन्द, हिन्द सृष्ट रूप धराईआ। गुरमुख बणाए आपणी बिन्द, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि खेल खिलाया, गोबिन्द डंका इक्क वजाइंदा। फतिह जैकारा इक्क लगाया, वाहवा गुरु आप सुणाइंदा। पुरख अकाल इक्क समझाया, सृष्ट सबाई बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर खेल आप खिलाइंदा। गुर गुर खेल खिलाया, पुरी अनन्द वज्जी वधाईआ। अन्तिम लेखा दए चुकाया, सरसा

पार कराईआ। गढ़ी चमकौर डेरा लाया, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। सूलां सत्थर दए सवाया, सच संदेसा इक्क जणाईआ। यारड़ा सत्थर मात हंढाया, तेरे दर वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमाया, आदि जुगादि होए सहाईआ। पूत सपूत गोद बहाया, एका रंग रिहा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर दए पढ़ाईआ। एका अक्खर श्री भगवन्त, गुर गोबिन्द आप जणाइंदा। तेरा नाउँ साचा मंत, लक्ख चुरासी आप समझाइंदा। तेरा रूप तेरा कन्त, तेरी सेज हंढाइंदा। तेरा चोला इक्क बसन्त, पारब्रह्म आप रखाइंदा। कलिजुग तेरा वेखे अन्त, रूप अनूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेस इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा हरि सुणाया, गुर गोबिन्द दए वड्याईआ। तेरी सूलां सत्थर आपणे लेखे लाया, लिख्या लेखा भुल कदे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, तेरा नाउँ करे रुशनाईआ। तेरे नगर डेरा लाया, सम्बल वज्जे वधाईआ। तेरा रूप शब्दी लए बणाया, दूजी वार जम्मे ना कोए माईआ। पुरख अकाल तेरे सिर हथ्थ टिकाया, समरथ दए ग्वाहीआ। सतिगुर पूरा मात गर्भ विच कदे ना आया, जन्म मरन खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए जणाईआ। गुर गोबिन्द सुण संदेस, हरि हरि सीस झुकाया। तूं दाता दानी नर नरेश, आदि अन्त तेरी वड्याआ। कोटन कोटि तेरे दर खड़े विष्न ब्रह्मा महेष, बैठे सीस झुकाया। तेरी महिमा गाए सहँसर मुख शेष, दो सहँसर जिहवा हिलाया। सति पुरख निरँजण तेरे दर सदा आदेस, तेरा अन्त किसे ना पाया। कवण तेरा वेला कवण रंग मैं लवां वेख, कवण थान दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला लए मिलाया। पुरख अबिनाश सुणाइंदा, गुर गोबिन्द कर ध्यान। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर इक्क बणाइंदा, तेरा नाम झुलाए सच निशान। शब्दी तेरा डंक वजाइंदा, शब्द रूप नौजवान। आपणा नाम तेरा खण्डा मात चमकाइंदा, ना कोई घड़े लोहार तरखान। पुरख अकाल तेरा संग निभाइंदा, सिँघ शेर बुक्के विच जंगल जूह बीआबान। लक्ख चुरासी आप डराइंदा, मेट मिटाए राज राजान। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा, गोबिन्द सूरा बणे इक्क हुक्मरान। गोबिन्द रूप नज़र किसे ना आइंदा, गुरमुख विरला करे पहचान। रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा, कलिजुग अन्तिम लक्ख चुरासी होई हैरान। लिखण पढ़न विच ना आइंदा, चारे वेद पुराण अठारां शास्त्र सिमरत अञ्जील कुराना दिसे ना कोए निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द सूरा एका शब्द उठाए बली बलवान। हरि शब्द सूरबीर सुल्ताना, गोबिन्द रूप वटाईआ। गोबिन्द महांबली नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। एका चिल्ला फड़े तीर कमाना, तिक्खी मुखी धार रखाईआ। मारे मार दो जहाना, विष्न ब्रह्मा शिव पए दुहाईआ। करोड़ तेतीस सर्ब कुरलाना,

सुरपति राजा इन्द नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कलिजुग अन्त करे वैराना, निरगुण जोत हरि रुशनाईआ। निहकलंक रक्खे नाउँ श्री भगवाना, भगवन आपणा भेव चुकाईआ। गोबिन्द मर्द मर्द मरदाना, सच मरदानगी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द सूरा मेला हरि, दूजा अवर ना कोए वखाईआ। दूजा अवर ना कोई दोआ, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। गोबिन्द गोबिन्द जेहा होया, गोबिन्द गोबिन्द विच समाइंदा। ना जन्मे ना कदे मोया, जन्म मरन विच ना आइंदा। आलस निन्दरा विच कदे ना सोया, सो गुर गोबिन्द नाउँ धराइंदा। कलिजुग अन्तिम लै के आया ढोआ, लक्ख चुरासी आप उठाइंदा। नानक बीज एका बोया, चार वरनां मेल मिलाइंदा। दुरमति मैल सभ दी धोया, जो जन रसना जिहवा गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द गोबिन्द आप मिलाइंदा। गोबिन्द आया लोकमात जग, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। पटने वाला वसे उप्पर शाह रग, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। अठ्ठ पहर जोत रही जग, अन्ध अन्धेर चुकाईआ। कलिजुग जीव बणे कग्ग, हरि का नाम आत्म रस ना कोए खाईआ। त्रैगुण अग्नी रहे मघ, पंज तत्त काया होई हल्काईआ। गुर गोबिन्द कोलों हो के बैठे अड्ड, घर मिले ना साचा माहीआ। गुर गोबिन्द गुरसिखां सदा सदा लडाए लाड, आप आपणी गोद बहाईआ। पटने वाला जिस जन रक्खया याद, तिस मेले सहिज सुभाईआ। आदि जुगादि गुर शब्द सुणे फ़रयाद, शब्दी गुर पंज तत्त काया चोला जगत मात हंढाईआ। गुर का नाउँ अगम्मी नाद, गोबिन्द तार सतार ना कोए हिलाईआ। गोबिन्द वसे सदा ब्रह्मादि, घट घट आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पटने वाला दए समझाईआ। पटने वाला कल्गीधर, कल कल्की अवतार अख्वाइंदा। पुरख अबिनाशी ल्या वर, घर साचा मेल मिलाइंदा। रूप ना कोए नारी नर, नर नरायण जोत धराइंदा। सच महल्ले बैठा चढ़, तख्त निवासी साचे तख्त आसण लाइंदा। शेर रूप हो ना जाए डर, सिँघ आपणी भबक वखाइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख खेल खिलाइंदा। गुर गोबिन्द वसे घर घर, काया खेड़ा आसण लाइंदा। जो जन जींवदयां ही जाए मर, तिस गुर आपणा बन्धन पाइंदा। बजर कपाटी खोल्ह किवाड़, आपणा मन्दिर आप वखाइंदा। रातीं सुत्तयां दरस दिखाए अग्गे खड़, आलस निन्दरा आप मिटाइंदा। कल्गी तोड़ा सीस जगदीस साचे धर, नीला नीली धारों पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द आपणा रूप रखाइंदा। गोबिन्द रंग रंग गुर गोबिन्द, गोबिन्द गोबिन्द मेल मिलाईआ। गोबिन्द दाता गुणी गहिन्द, गोबिन्द गहर गम्भीर समाईआ। गोबिन्द मेटे सगली चिन्द, गोबिन्द एका रंग रंगाईआ। गोबिन्द कराए आपणी निन्द, निन्दक निन्दया मुख सालाहीआ। जिस जन होए आप बख्शंद, अमृत धारा सागर

६४६

सिन्ध आप चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। पटने वाला शाह सुल्ताना, एका गुर अख्वाइंदा। लक्ख चुरासी वेखे मार ध्याना, बचया कोए रहिण ना पाइंदा । सचखण्ड झुलाए धर्म निशाना, अधर्म रूप ना कोए बणाइंदा। सच संदेसा धुर फ़रमाना, आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा। हरिजन साचे सुणाए साचा गाना, नाद अनादी नाद वजाइंदा। अनहद शब्द खेल महाना, अनहत आपणा भेव चुकाइंदा। आत्म सेजा कर परवाना, साचा बंक सुहाइंदा। सरगुण अंदर निरगुण हो प्रधाना, गोबिन्द आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पटने वाला साचा माही, घट घट अंदर बैठा सेज विछाई, गुरमुख विरले नज़री आई, दूसर दिस किसे ना आइंदा। ना दीसे ना देख्या, देखणहारा गोपाल। गुर गोबिन्द तेरी कोई क्या करे परीख्या, तेरा खेल बेमिसाल। गुरसिखां कोलों मंगी भिख्या, पंज प्यारे बणाए दलाल। एका रंग रंगाया हस्त कीटया, इक्क वखाई सच्ची धर्मसाल। अमृत जाम प्याएँ अनडीठया, प्रेम पतासा देवें डाल। होए सरूर एका वार पीतिआं, आत्म अंदर वखाए साचा लाल। कलिजुग अन्तिम तेरी अचरज रीतया, शब्दी रूप गुर गोबिन्द मिले वड्याई गुजरी लाल। दर ठांडे वसें सीतया, सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। पतित पापी करें पुनीतया, जिस जन देवें दरस दिखाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द वसे एका घर, आपणी घालन साची घाल।

खिमां ग़रीबी ठाकर घर, हरि ठाकर सच समझाइंदा। निवण सो अक्खर वेस कर, हरि कन्त मेल मिलाइंदा। आवण जावण चुक्के डर, निरभउ भय अवर ना कोए रखाइंदा। गुरमुख नारी एका वारी ल्ए वर, कन्त सुहाग आपणा रंग रंगाइंदा। काया चोली रंग जाए चढ़, शब्द ललारी आप रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खिमां ग़रीबी आपणे रूप समाइंदा। खिमां ग़रीबी हरि का भाउ, हरि भगतन झोली पाइंदा। एका मार्ग दस्से सच्चा राहो, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। सदा सुहेला बणे पिता माउँ, गुरसिख बाल अञ्याणे गोद बहाइंदा। इक्क इकेला सिर देवे ठंडी छाउँ, गोबिन्द सूरा सेव कमाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करे सच न्याउँ, सच अदालत आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खिमां ग़रीबी वेख वखाइंदा। खिमां ग़रीबी डूँघा सागर, हाथ किसे ना आईआ। जिस जन निर्मल कर्म करे उजागर, तिस जन खिमां ग़रीबी दए समझाईआ। अमृत जाम प्याए काया गागर, निझर झिरना आप झिराईआ। करे मेहर हरि करता कादर, करीम रहीम सच्ची सरनाईआ।

खिमां ग़रीबी हंडाई गुर तेग़ बहादर, सीस जगदीस भेंट चढ़ाईआ। सिदक सबूरी रक्खया साबर, दर घर साचे सोभा पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर देवे आदर, जिस जन खिमां ग़रीबी इक्क हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, याचक एका दान झोली पाईआ। खिमां ग़रीबी गुर चरन देव, देव इष्ट आत्मा मेल मिलाइंदा। अलख अगोचर अभेद अभेव, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। अमृत रस देवे मेव, फल अमृत आप खवाइंदा। गुरसिख खिमां ग़रीबी हरि सतिगुर सेव, बिन सतिगुर पार ना कोए कराइंदा। बिन हरि नामे किसे ना कम्म रसना जेहव, रसना रस कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आत्म वर, खिमां ग़रीबी इक्क सिखाइंदा। खिमां ग़रीबी सिख्या सिख, गुरमुख लए वड्याईआ। जन्म जन्म दी मिटे तृख, तृष्ना तृप्त आप कराईआ। किसे हथ्थ ना आवे मुन रिख, जपी तपी हठी सती रहे कुरलाईआ। किसे नेत्र जगत ना आवे दिस, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। चार जुग गुरमुखां वण्डाया हिस्स, साचा हिस्सा इक्क रखाईआ। सो साहिब सतिगुर देवे तिस, जिस धुर मस्तक लेख लिखाईआ। आपणा नाम पढ़ाए अक्खर निश, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। सति सरूपी आए दिस, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। हरिजन लेखा आपे लिख, पूर्ब लेखा लेखे लाईआ। सृष्ट सबाई जाणो मिथ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सतिगुर पूरा देवे कदे ना पिठ, जो जन रहे सरनाईआ। दो जहानां बणे खेवट खेट, भव सागर लए तराईआ। शब्द दोशाले लए लपेट, प्रेम पटोला उप्पर पाईआ। गुरसिख तेरा चिड़ीआं चुगण ना काया खेत, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। गुर सतिगुर पूरा गोबिन्द गुरसिखां संग करे हेत, नित नवित भुल ना जाईआ। गुरसिख होए चेतन्न चेत, चेतन्न चित खिमां ग़रीबी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग दए रंगाईआ। खिमां ग़रीबी गुर गुर चरन, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाया। नेत्र खोल्हे हरन फरन, धुर दा लेखा दए चुकाया। नाता तुट्टे जन्म मरन, लक्ख चुरासी फंद कटाया। किरपा करे हरि करनी करन, करता पुरख दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाया। खिमां ग़रीबी गुर गुर मेला, गुर सतिगुर दए वड्याईआ। चाकर चाकरी चाकर लेखे लाए गुर गुर चेला, चेला गुर रूप वटाईआ। सतिगुर साजन सज्जण सुहेला, मीत मुरारा इक्क अख्वाईआ। सदा सदा सद वसे नवेला, अनडिठड़ा धाम आप सुहाईआ। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, थित वार ना कोई वखाईआ। कलिजुग अन्तिम पारब्रह्म प्रभ आपे खेला, गोबिन्द शब्द रूप वटाईआ। जन भगतां लक्ख चुरासी कट्टे धर्म राए दी जेला, सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे दए बहाईआ। निवण सु अक्खर खिमां ग़रीबी सिखण एका वेला, दूजी सतर पढ़न किते ना जाईआ। पुरख निरँजण शेर सिँघ हो हो बुक्के विच

कलिजुग जंगल जूह उजाड़ बेला, गोबिन्द खण्डा तीर कमान हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग आपे रिहा वखाईआ। धन्न कमाई भगत जन, जिन हरि हरि सज्जण पाया। धन्न कमाई सन्त जन, जिस सतिगुर मेल मिलाया। धन्न कमाई भगत जन, जिन मन का भउ चुकाया। धन्न कमाई भगत जन, जिन सहिंसा रोग मिटाया। दो जहानां विचोला आपे बण, पुरख अबिनाशी खेल खिलाया। गोबिन्द बेड़ा देवे बन्न, मँझधार पार कराया। साचे घर बहाए ना कोई छप्पर छन्न, सूरज चन्द ना कोई चढ़ाया। सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा आप आपणे गुरमुख साचे लड़ लए बन्न, पल्लू एका नाम फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां कहे धन्न वड्याई, जिस मिल्या हरि रघुराई, जगत विसरी दात पराई, पुरख परखोतम एका पाया। वाक भविख्त सच संदेसा, लहिणा देणा दए चुकाईआ। लहिणा देणा चुकाए ब्रह्मा विष्न महेषा, सुरपति राजा इन्द रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी चुक्के लेखा, सत्त दीप देण दुहाईआ। लक्ख चुरासी चले ना कोई पेशा, शाह सुल्तान ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

१०

★ १७ जेठ २०१८ बिक्रमी फ़रंगी राम दे घर पिण्ड झण्डे जम्मू ★

निरगुण जुग जुग रूप वटाइंदा, सरगुण आपणा वेस करा। लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा, जीव जंत हर घट थाँ। एका दूजा अक्खर पढ़ाइंदा, राम नाम दृढ़ा। पंज तत्त काया चोला भाग लगाइंदा, जोत निरँजण डगमगा। अनहद शब्द नाद वजाइंदा, डूँघी भँवरी खेल खिला। साचा सागर आप भराइंदा, अमृत कँवल फुल धरा। गुरमुख विरले मात जगाइंदा, भगतन आपणी बूझ बुझा। नर हरि नरायण मेल मिलाइंदा, मेल मिलावा एका थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाह। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, हरि साचा आप वटाईआ। जन भगतां फड़ाए पलड़ा, राम नाम पल्ले गंड बंधाईआ। सच संदेस एका घलड़ा, जुगा जुगन्तर नाद सुणाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म आपे रलड़ा, ईश जीव रूप वटाईआ। सच सिँघासण एका मलड़ा, आत्म सेजा आप सुहाईआ। पंज तत्त वसाए काया महल्लड़ा, घर घर विच बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस कराईआ। जुग जुग खेल हरि भगतन मीता, एका भगती भगत दृढ़ाइंदा। हरि का नाम वखाए ठंडा सीता, घर मन्दिर आप टिकाइंदा। पतित पापी करे पुनीता, रसना जिहवा जो जन गाइंदा। एका रंग वखाए हस्त कीटा, ऊँच नीच ना कोई वखाइंदा। अमृत रस देवे मीठा,

अमिउँ रस प्याला आप प्यांअदा। सदा सुहेला वसे चीता, विछड़ कदे ना जाइंदा। एका अक्खर माण रखाए अठारां अध्याए गीता, एका भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। जुगा जुगन्तर आप चलाए आपणी रीता, वेस अनेक आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अलख अगम्म आपणी खेल खिलाइंदा। अलख अगम्म हरि हरि धार, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। हरि पुरख निरँजण हो उज्यार, निराकार आपणा खेल खिलाईआ। एकँकारा वसे धाम न्यार, जोती जाता पुरख बिधाता एका नूर करे रुशनाईआ। श्री भगवान खोल्ह किवाड़, साचे मन्दिर बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण आसण लाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा ठांडे दरबार, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर ना मरे ना जाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, ब्रह्म वेता करे त्यार, लक्ख चुरासी लेखा आप लिखाईआ। विष्नूं खेवट खेटा हो उज्यार, शंकर आत्म बन्न्हे धार, सभ दा बेड़ा आप उठाईआ। सतिजुग त्रेता हो उज्यार, द्वापर जाणे आपणी कार, कुदरत करता वेख वखाईआ। राम नाम कर पसार, जीवां जंतां दए आधार, साचे भगतां मेल मिलाईआ। हउमे हंगता गढ़ तोड़ हँकार, दुष्ट हँकारी देवे मार, निवण सु अक्खर इक्क समझाईआ। माया ममता मोह चुक्के संसार, दुःख दलिद्र दए निवार, हरख सोग चिंता कोई रहिण ना पाईआ। काग रले हँसा डार, जिस जन राम नाम कीआ प्यार, घर सोहे बंक दुआर, सीता सुरती राम लए बंधाईआ। एका मेला एका वार, नारी कन्त कन्त भतार, साची सेजा सुत्ता पैर पसार, घर मिल्या साचा माहीआ। दुक्खड़ा दस्से रोवे ज़ारो ज़ार, मुखड़ा हस्से कर दरस निरँकार, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ईश जीव जगत जगदीशर आपणा बन्धन पाईआ। जुग जुग खेल हरि निरँकारा, लोकमात आप कराइंदा। एका नाम नाम जैकारा, त्रैभवन धनी आप लगाइंदा। चौदां लोकां दए सहारा, आप आपणा रंग रंगाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, वेद कतेब सर्ब जस गाइंदा। निरगुण वसे सभ तों बाहरा, निराकार आपणा नाउँ धराइंदा। सज्जण सुहेला विच संसारा, साख्यात जाग्रत जोत आप जगाइंदा। आपणा नाउँ धर गुर अवतारा, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। पावे सार डूँघी गारा, सुखमन टेढी बंक वेख वखाइंदा। अमृत सरोवर ठांडा ठारा, निज घर रक्खे वस्त हरि निरँकारा, हरिजन विरले मात प्यांअदा। आत्म ब्रह्म ब्रह्म विचारा, पारब्रह्म प्रभ दए सहारा, एका मेला एका रंग, एका सेजा इक्क पलँघ, एका मन्दिर आप सुहाइंदा। दीवा बाती कर उज्यारा, आपे वेखे वेखणहारा, नेत्र लोचण नैण ना कोई खुल्हाइंदा। भगतन वखाए इक्क दुआरा, महल्ल अटल उच्च मुनारा, छप्पर छन्न ना कोई छुहाइंदा। सचखण्ड निवासी वसे सचखण्ड दुआरा, रूप रंग रेख तों वसे बाहरा, जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकार, आदि जुगादी कर पसार, लक्ख चुरासी वेखणहार, विष्न ब्रह्मा शिव पावे सार, त्रैगुण अतीता ठंडा सीता पंचम नाता पुरख बिधाता लोकमात जोड़ जुड़ाइंदा। जुग जुग वेस श्री भगवान, लोकमात धराइंदा। सतिजुग साचा कर परवान, वार अठारां रूप वटाइंदा। त्रेता रूप बली बलवान, दोए दोए रंग आप रंगाइंदा। द्वापर लेखा विच जहान, पुरख अबिनाशी आप लिखाइंदा। दूआ एका धर ध्यान, वेद व्यासा दए ज्ञान, कृष्ना कान्हा रथ चलाइंदा। भगत भगवन्त करे परवान, बाल अञ्याणे वेखे बाल, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। अन्तिम सभ नूं खाए काल, महाकाल आपणा खेल खिलाइंदा। रथ रथवाही बणे विच बीआबान, महांसारथी एका रथ चलाइंदा। जुग जुग खेल श्री भगवान, चौदां हट्टां वेखे आप मकान, घर घर मन्दिर फोल फोलाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो मेहरवान, आपणा खेल खिलाइंदा। ईसा मूसा कर प्रधान, काला सूसा तन पहनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मन्त्र राम नाम दृढ़ाइंदा। एका मन्त्र मुकामे हक, हरि साचा आप जणाईआ। लाशरीक परवरदिगार उच्च महल्ले बैठा रिहा तक्क, आपणा मार्ग आप लगाईआ। सर्ब कला हरि जू समरथ, महिमा अकथना अकथ आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम मात धराईआ। एका नाम हक जैकारा, जंत आपणी वेख वखाइंदा। लाशरीक परवरदिगारा, नूर इलाही जल्वा नूर आप रखाइंदा। ख़ालक ख़लक पावे सारा, मख़लूक एका रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर मात धराइंदा। एका अक्खर अलिफ़ आलमीन, उल्फ़त आपणी आप जणाईआ। एका दए तालीम ताज़ीम, तालब तालबा आप पढ़ाईआ। आपणी शान रक्खे अज़ीम, आज़म आपणा नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। कलिजुग राणी अल्ला, बिस्मिल आपणा रूप धराइंदा। वसणहारा इक्क इकल्ला, वेस अनेक आप वटाइंदा। नूर इलाही सच संदेस एका घल्ला, कलमा अमाम आप पढ़ाइंदा। संग मुहम्मद चार यार फड़ाए पल्ला, एका डोरी हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राम एका नाम एका देवे सच पैग़ाम सच संदेसा आप सुणाइंदा। इक्क पैग़ाम इक्क हदीस, एका हरि पढ़ाईआ। एका राग तीस बतीस, रसना जिहवा इक्क सुणाईआ। एका लेखा जाणे बीस इकीस, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। एका नाम हरि का सति, सति सतिवादी आप रखाइंदा। एका देवे ब्रह्म मति, साची मति आप जणाइंदा। एका बीज बीजे साचे वत, काया क्यारी सिंच हरी कराइंदा। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत, अमृत मेघ आप बरसाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक्क दूजे कोल रहे वस, एका

बन्धन आपणा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्त्र नाम दृढ़ा, आपणा पर्दा दए उठा, सच समग्री झोली पा, साचा हवन इक्क वखाइंदा। साचा हवन आत्म जोत, जोती जोत लट लट जगाईआ। दूई द्वैती कढ्ढे खोट, सच सुगंधी दए पाईआ। राम नाम पाए अतोट, तोट रहे ना राईआ। आपे वेखे चढ़के चोट, उच्ची चोटी बैठा आसण लाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोई रखाईआ। ना कोई किला ना कोई कोट, जन भगतां अंदर डेरा लाईआ। इक्क नगारा वजाए चोट, शब्द अगम्मी हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम बुझाईआ। एका नाम सच्चा सुधाखर, हरि साचा आप उपाइंदा। नाता तोड़े काया पाथर, झूठी हाटी वेख वखाइंदा। नेत्र नीर वरोले आथर, नैणां नीर आप दरसाइंदा। लेखा जाणे डूँघा सागर, काया गागर फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा नाउँ समझाइंदा। एका नाउँ नानक धार, निरगुण मात चलाईआ। चार वरनां करे इक्क प्यार, ऊँच नीच ना कोई वखाईआ। एका घर वसे रामा कृष्ना हो उज्यार, दूसर दर ना कोई वड्याईआ। एका मूसा ईसा बन्ने बेड़ा विच संसार, एका मुहम्मद रिहा उठाईआ। साकत निन्दक दुष्ट दुराचार करे ख्वार, हरिजन साचे लए तराईआ। एका जोती दस अवतार, गोबिन्द एका ढोला गाईआ। पुरख अकाल सद करे प्रितपाल, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रूप अनूपा शाहो भूपा सति सरूपा आप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया खेल अगम्म अपार, बोध ज्ञान इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, साचे नाउँ दए वड्याईआ। साचा नाउँ हरि निरँकारा, एका एक रखाइंदा। जुग जुग लोकमात कर पसारा, नाद अनादी नाद वजाइंदा। कलिजुग वेखे खेल न्यारा, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार वरन अठारां बरन ज़ात पात सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। कलिजुग अन्तिम काली धार, चार कुण्ट अन्धेरी छाईआ। कोई कहे राम अवतार, कोई कृष्ना रहे मनाईआ। कोई अष्टभुज करे निमस्कार, कोई विष्नूं सीस झुकाईआ। कोई ब्रह्मा रिहा पुकार, कोई शंकर भेंट चढ़ाईआ। कोई चतुर्भुज बोल जैकार, कोई आदि शक्ति मनाईआ। कोई भैरों करे प्यार, कोई गौरजां राह तकाईआ। कोई कहे ईसा मूसा पैग़म्बर ख़ुदाई यार, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। कोई कहे संग मुहम्मद चार यार, सभ दा बेड़ा पार कराईआ। कोई कहे नानक अवतार, सतिनाम मन्त्र रिहा दृढ़ाईआ। कोई कहे गोबिन्द सूरबीर बलकार, जोद्धा बली मात अख्वाईआ। गुर का शब्द ना सके कोई विचार, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। काया गढ़ हउमे रोग ना सके निवार, माया ममता ना मोह चुकाईआ। मन रावण ना सके मार, मिले राम ना बेपरवाहीआ।

राधा सुरती करे ना सच प्यार, स्वामी कृष्न नज़र ना आईआ। आदि शक्ति ना जोत उज्यार, अष्टभुज भवानी बैठी मुख भवाईआ। विष्नूं देवे ना कोई भण्डार, शंकर रिहा त्रिसूल सुटाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म ना लए अधार, चारे वेद गए भुलाईआ। बावन मंगे ना बल दुआर, बल रूप ना कोई वटाईआ। ध्रू प्रहिलाद दिसे ना कोई विच संसार, नर सिँघ आवे वाहो दाहीआ। कलमा कलाम ना करे कोई विचार, चार कुण्ट अन्धेरा छाईआ। नाता तुट्टा मुहम्मद यार, अहिमद मेल ना कोई वखाईआ। नानक करे ना कोई प्यार, चार वरन एका नज़र किसे ना आईआ। दूई द्वैती तन विकार, साचा रूप ना कोई दरसाईआ। गोबिन्द करे ना कोई अधार, मनमुख बैठे मुख भवाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग दिसे ना किसे विच संसार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क दातार, आदि पुरख अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। प्रगट हो विच संसार, निहकर्मी कर्म कमाईआ। निरगुण जोत करे उज्यार, जोती जामा भेस वटाईआ। चार वरनां दए आधार, एका अक्खर कर पढ़ाईआ। सोहँ शब्द सच जैकार, आत्म परमात्म दए मिलाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना कोई विचार, एका रंग रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। एका नाम हरि पसारा, राम राम जणाइंदा। एका कृष्न रूप अवतारा, सोलां कल धराइंदा। एका ऐनलहक नाअरा, मुकामे हक सुणाइंदा। एका नाम सति अखाड़ा, लोकमात जणाइंदा। एका फ़तह डंक जैकारा, जो जन काया तन पंज शैतान मिटाइंदा। एका पुरख अगम्म अपारा, हरी हरि नरायण आपणा नाउँ धराइंदा। एका विष्नूं दए भण्डारा, सृष्ट सबाई रिज़क पुचाइंदा। एका ब्रह्म ब्रह्म पसारा, ब्रह्म लेखा आप रखाइंदा। एका शंकर करे शंगारा, जो घड़या भन्न वखाइंदा। एका नाम राम सहारा, वेले अन्तिम संग रखाइंदा। बिन हरि नामे कोए ना उतरे पारा, कलिजुग धारा सर्ब रुढ़ाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्क दरबारा, सचखण्ड दुआरा आप वखाइंदा। सोहँ शब्द सति सतिवादी नाअरा, सतिजुग धार आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता, जुग जुग आपणा रूप वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम रूप धर, निहकलंक नाउँ रखाईआ। सन्त सुहेले लए फड़, हरि भगत दए वड्याईआ। गुरमुखां अंदर आपे वड़, आप आपणा पर्दा दए चुकाईआ। गुरसिख नहाए साचे सर, सर अमृत सरोवर आप नुहाईआ। दूई द्वैती चुक्के डर, शरअ शरीअत इक्क जणाईआ। पुरख अबिनाशी सरन सरनाई जाणा पड़, सरनगत इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीव जंत साध सन्त, भगत भगवन्त आदि अन्त एका रंग रखाईआ। एका रंग हरि चलूल, चार वरन चढ़ाइंदा। हरिजन हरि हरि ना जाए भूल, अभुल आप समझाइंदा। मानस जन्म लक्ख चुरासी मूल, वेला

गया हथ्थ ना आइंदा। हरिजन विरला हरि नाम पंघूड़ा लए झूल, पुरख अबिनाशी आप झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत मेल मिलाइंदा। जोती जोत मेल मिलंना, मिले मेल गिरवर गिरधारया। दुःख दर्द दा डेरा भन्ना, जिस मिल्या राम अवतारया। सुणया राग संदेसा कन्ना, गीता ज्ञान गोझ विचारया। हरिजन विरला मात मन्ना, लक्ख चुरासी तपे वांग अंग्यारया। राए धर्म अन्त देवे डन्ना, जीव जंत जो फिरे मात हंकारया। हरि बिन बेड़ा किसे ना बन्न्हा, हरिभगत कूक कूक पुकारया। भोले भाओ मिले जिउँ जट्ट धन्ना, सिल पूजस प्रगट होए हरि निरंकारया। कलिजुग जीव ना जाणे अन्न्हा, नेत्र नैण ना किसे खुल्ल्हा ल्या। कामी क्रोधी फिरे भन्ना, माया ममता मोह विचारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरनां देवे इक्क सहारया। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका मति समझाईआ। चार वरनां इक्क ध्यान, एका दर वखाईआ। चार वरनां इक्क भगवान, हर घट बैठा आसण लाईआ। चार वरनां देवे ब्रह्म पछान, आत्म ब्रह्म आप वखाईआ। चार वरनां करे परवान, जो जन रहे सरनाईआ। चार वरनां इक्क दान, राम नाम इक्क वरताईआ। चार वरन एका काहन, लक्ख चुरासी गोपी आप नचाईआ। चार वरन इक्क मकान, हरि मन्दिर दए वखाईआ। हरि मन्दिर गुरमुख विरला सके पछाण, जिस जन आत्म बूझ बुझाईआ। इट्टां गारा ना बणाए कोई दुकान, गुरमुख तेरे अंदर डेरा लाईआ। तेरा मेल होए मेहरवान, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। आवण जावण चुक्के कान, जम का भय ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरन देवे एका सरन नेत्र लोचण नैण खोल्हे हरन फरन, आत्म दरसी आपणा दरस दिखाईआ। आत्म दरसी देवे दरस, हरिजन हउमें रोग निवार, खोटे खरे लए परख, लोकमात वेख विच संसार, हरि भगतां उप्पर करे तरस, मनमुख देवे अग्न साड़। ना सोग ना कोई हरख, हरख सोग तों वसया बाहर। लेखा जाणे अर्श फर्श, काया कुरा करे विचार। जिस जन बणाई तेरी घड़त, घड़े भन्ने हरि भन्नणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन हरि उभारदा, चार वरन जग मीत। एका दर वखाए सच्ची सरकार दा, शाह पातशाह बैठा पतित पुनीत। गुण अवगुण ना कोई विचारदा, जिस जन देवे नाम अनडीठ। कोझे कमले पार उतारदा, आदि जुगादी साची रीत। लेखा जाणे दो जहान दा, विष्नूं भगवान बैठा अतीत। सोहँ शब्द इक्क वखाण दा, लक्ख चुरासी परखे नीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वसे तेरे घर, सच महल्ले बैठा चढ़, किसे हथ्थ ना आए गुर दर मन्दिर मसीत।

★ १७ जेठ २०१८ बिक्रमी साँईं दास दे घर पिण्ड झण्डे तहसील अखनूर ज़िला जम्मू ★

चरन धूढ़ गुर सतिगुर मजन, जन्म जन्म मैल गंवाईआ। अग्नी अग्ग छुडाए साचा सज्जण, सीतल सति सांत कराईआ। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर आप तराईआ। नेत्र नाम नरायण पाए अंजन, जगत अन्धेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शश करे सच्ची सरनाईआ। सरन सरनाई हरि सरनागत, सरन चरन आप बहाइंदा। लेखा चुकाए जगत मनमति, गुरमति एका राह वखाइंदा। सति सन्तोख धीरज जत, हठ तप आप कराइंदा। चरन कँवल बंधाए नत, जग विछड़े जोड़ जुड़ाइंदा। मार्ग परमार्थ एका दस्स, सोहँ मन्त्र सच समझाइंदा। लोकमात चलाया रथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। हरिजन साजन कर इक्टठ, बेड़ा आपणा आप बणाइंदा। एका चप्पू एका वार देवे घत, डूँग्घे सागर आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल इक्क दरसाइंदा। चरन कँवल गुर ठांडा दरबारा, अमृत मेघ धार बरसाईआ। जगत विकार ना तपे अंग्यारा, कूड़ी क्रिया ना कोई वखाईआ। ममता मोह ना कोई विकारा, जूठ झूठ ना कोए वड्याईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका ठाकर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि चरन दए समझाईआ। हरि ठाकर ब्रह्म ब्राह्मण, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। सति सरूपी बण बण ज़ामन, सगला संग आप निभाइंदा। नाम निधान फड़ाए दामन, दामनगीर खेल खिलाइंदा। लेखा जाणे दो जहानन, दोए दोए लेखा आप मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल आप मिलाइंदा। चरन कँवल गुर साची धूढ़, धुर मस्तक मिले वड्याईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, बुध बिबेक आप कराईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च इक्क वखाईआ। जोती जाता बख्शे नूर, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। होए प्रकाश जिउँ कोहतूर, जल्वा आपणा आप वखाईआ। हरिजन हरि हरि सदा हज़ूर, विछड़ कदे ना जाईआ। जन्म जन्म आसा मनसा पूर, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। वसणहारा नेड़े दूर, निज घर बैठा सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि चरन हरिजन मेल मिलाईआ। हरि चरन मेला गुर गुर रंग, गुरमती गुर मिलाइंदा। आत्म सेज रंगीला पलँघ, शब्द सिँघासण सोभा पाइंदा। अनहद नाद अगम्मी मृदंग, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, जोत उजाला आप रखाइंदा। जगत सुणाए सुहागी छन्द, बिन रसना जिहवा गाइंदा। हरिजन आप उपजाए परमानंद, अनन्द आपणा आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि चरन कँवल हरिजन देवे बन्न्, एका आपणा बन्धन पाइंदा। बन्धन बंध पाए नाम डोर, साचा वट आप चढ़ाईआ। अंदर वड़ वड़ वेखे पंज चोर, चोरी चोर खेल खिलाईआ।

वेख वखाए अन्ध घोर, घुप्प अन्धेरा फेरा पाईआ। शब्द रखाए साचा घोड़, घर घर आपे रिहा दौड़ाईआ। मनमति ना पाए शोर, हिंसा हिस्सा ना कोई वण्डाईआ। जिस जन आपणे संग लए तोर, तिस आपणे रंग रंगाईआ। चरन कँवल प्रीती साची जोड़, जीवण जुगत दए जणाईआ। सोहँ शब्द चुकाए तोर मोर, सोहँ रूप सर्ब सृष्ट लोकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच जैकारा एका बोल, गुरमुख गुरसिख हरिभगत हरिजन तेरा होए अन्त सहाईआ।

गुरमुख गुर सदा अधीन, निर्धन रूप रखाइंदा। गुरमुख गुर मेल जिउँ जल मीन, मीन आपणी गत बणाइंदा। गुरमुख गुर सदा वसण लोक पार तीन, त्रै त्रै लेखा आप चमकाइंदा। गुरमुख गुर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंग रंगाए एका वखाए साचा दीन, दीन दुनी वेख वखाइंदा। गुरमुख गुर हरि हरि धार, हरि साचा आप पढ़ाईआ। जगत जुगत जग कर विचार, साचा जोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। गृह मन्दिर कर पसार, घट आसण दए सुहाईआ। दीवा बाती कर उज्यार, कमलापाती वेख वखाईआ। साचा साकी भर प्याल, नाम प्याला दए पिलाईआ। खोल्हे ताक बन्द किवाड़, आपणा पर्दा आप उठाईआ। दरस दिखाए एका वार, एका दृष्ट दए खल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुर गुर रूप समाईआ। गुरसिख गुर रूप समाया, गुर गुर रूप आप वटाईआ। गुरसिख गुर साचा पाया, गुर साचा सिख उपजाईआ। गुरसिख मस्तक लेख लिखाया, गुर गुर लेखा रिहा मुकाईआ। गुरसिख दर्शन नेत्र पेख दर्शन पाया, गुर गुर दरस रिहा वखाईआ। गुरसिख विचोला इक्क बणाया, गुर सतिगुर ना मरे ना जाईआ। जिस ने ढोला साचा गाया, हँ ब्रह्म वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म होए सुहाया, सगली चिंत मिटाईआ। करे खेल बण बण दाई दाया, नज़र किसे ना आईआ। हरिजन साचे लए मिलाया, गुरसिख गुर गुर आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेल मिलाए एका घर, घर मन्दिर इक्क वड्याईआ। घर मन्दिर गुर चरन दुआरा, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। बिन गुर उतरे ना कोई पारा, गुर सगला संग निभाइंदा। जुगा जुगन्तर हो उज्यारा, लोकमात खेल खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम करे पार किनारा, आपणा घाट आपणा पत्तण आप बणाइंदा। सन्त सुहेले फड़ फड़ मेले दर दुआरा, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर बारा, चरन कँवल दए सहारा, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा इक्क दातारा, दर्द दुखियां आप वंडाइंदा।

★ १७ जेठ २०१८ धर्म चन्द दे घर पिण्ड बालेवाल जम्मू ★

सो पुरख निरँजण सदा मेहरवान, आदि अन्त खेल खिलाइंदा। हरि पुरख निरँजण रूप महान, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। एकँकारा वसणहारा सच मकान, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। आदि निरँजण नूर नुरान, जोत उजाला आप कराइंदा। श्री भगवान लेखा जाणे दो जहान, अबिनाशी करता वेख वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ सच निशान, सच दुआरे आप झुलाइंदा। थिर घर साचे हो प्रधान, आप आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा वेस वटाइंदा। आदि पुरख वड हरि दाना, आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड दुआरे हो प्रधाना, साचे तख्त सोभा पाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमाना, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खिलाईआ। जोत शब्द हरि हरि धार, निरगुण खेल खिलाया। अलख अगोचर अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ा वेस वटाया। सच सिँघासण पुरख नार, सेज सुहञ्जणी आप हंढाया। पूत सपूता दए अधार, निष्अक्खर रूप वटाया। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रै त्रै मेला इक्क मिलाया। त्रैगुण देवे वस्त भण्डार, पंज तत्त झोली आप भराया। लक्ख चुरासी कर पसार, घट घट आसण लाया। घर विच घर खेल न्यार, साचा मन्दिर आप उपाया। निरगुण बाती कर उज्यार, कमला पाती आप टिकाया। सर सरोवर भर भण्डार, कँवल नाभी जल रखाया। धुंन अनाद सच्ची धुन्कार, अनहद नाद अलाया। डूँग्घी भँवरी खेल अपार, सुखमन टेढी बंक बणाया। ईड़ा पिंगल पहरेदार, दर दुआरे आप सुहाया। करे खेल अपर अपार, घर घर मेला भेव ना राया। पंच विकारा भर भण्डार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काया। आसा तृष्ना दए अधार, माया ममता मोह नाल मिलाया। हउमें हंगता गढ़ बण हँकार, पंज तत्त खेड़ा आप सुहाया। निरगुण सरगुण करे विचार, निरगुण आपणा मुख छुपाया। आत्म ब्रह्म हो उज्यार, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाया। ईश जीव खेल न्यार, जगदीस आप खिलाया। आपणी इच्छया सुरती दए भण्डार वस्त अमोलक झोली पाया। लक्ख चुरासी खेल न्यार, निरगुण सरगुण आप खिलाया। एका हुक्म सच्ची सरकार, धुर फ़रमाना शब्द सुणाया। लिखण पढ़न तों वसे बाहर, लेखा लेख ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नाउँ लए प्रगटाया। एका नाउँ हरि प्रगटा, नाउँ निरँकारा आप अख्वाइंदा। आपणा बेड़ा आप चला, खेवट खेटा आप हो जाइंदा। आपणा मार्ग आपे ला, हरि हरि आपे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुर आप समझाइंदा। एका गुर हरि शब्द धार, दूसर गुर ना कोई वड्याईआ। आदि जुगादि जुग जुग लोकमात हो उज्यार, वेस अनेका रूप वटाईआ। पंज तत्त करे प्यार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश

खेल खिलाईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म लेखा एका घर बार, गुर चेला रूप धराईआ। एका नाद शब्द धुन्कार, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। लक्ख चुरासी जीवां जंतां करे ख़बरदार, सोई सुरती सर्ब उठाईआ। भगत भगवन्त लए अधार, साचे सन्त मेल मिलाईआ। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। गुरसिख अमृत आत्म प्याए ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी वण्ड वंडाईआ। जुग जुग वण्ड पुरख समरथ, लोकमात आप वंडाइंदा। लक्ख चुरासी चलाए रथ, घट घट आपणा आसण लाइंदा। सति सरूपी पाई नथ, चारों कुण्ट आप भवाइंदा। शब्द अगम्मी एका दस्स, एका राह वखाइंदा। हिरदे अंदर आपे वस, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। तीर निराला मारे कस, तिक्खी मुक्खी आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा नाउँ आप धराइंदा। साचा नाउँ हरि निरँकारा, सतिजुग त्रेता आप उपजाईआ। रामा कृष्ना हो उज्यारा, दुष्ट हँकारी दए खपाईआ। एका इष्ट दृष्ट विच संसारा, जीवां जंतां दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। भेव अवल्ला इक्क इकल्ला, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाइंदा। कलिजुग वेखे जगत महल्ला, लोकमात वेस वटाइंदा। नाउँ रखाए नूरी अल्ला, अलाही नूर आप हो जाइंदा। मुकामे हक परवरदिगार सच महल्ला एका मल्ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। शब्द संदेश अलाही कलाम सच अमाम एका घल्ला, कायनात आप सुणाइंदा। पीर पैग़म्बर मुल्ला शेख़ मुसायक पीर फड़ाए पल्ला, वाहिद आपणा रूप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मुर्शद रूप वटाइंदा। एका मुर्शद बिस्मिल धार, रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। मुकामे हक बैठा सांझा यार, शरअ शरीअत इक्क जणाईआ। सच तौफ़ीक परवरदिगार, महिबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला वड्याईआ। चौदां तबकां हो उज्यार, इक्क संदेस नर नरेश दर मुहम्मद दए पुचाईआ। जबराईल मेकाईल असराफ़ील अज़राईल बण हँकार, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। एका नाद शब्द धुन्कार, एका मुर्शद विच संसार, मुरीद एका रूप दरसाईआ। एका जोती जोत उज्यार, वरन गोत ते वसे बाहर, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। नानक पंज तत्त आकार, शब्द जणाए सच्ची धुन्कार, नाम सति करे पढ़ाईआ। ब्रह्म मति सर्ब संसार, हर घट दिसे ओंकार, एकँकारा आपणा रूप दरसाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता भेव अभेदा इक्क इकांता, एका मन्दिर सोभा पाईआ। चार वरनां एका नाता, क्षत्री ब्रह्मामण शूद्र वैश राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका घर वखाईआ। मनमति जगत नार दुहागण कमज़ाता, चारों कुण्ट कूके दए दुहाईआ। एका नाम एका गाथा, एका शब्द दए समझाईआ। एका पूजा एका पाठा, एका इष्ट दए वखाईआ। एका राम निभाए

सगला साथा, विछड़ कदे ना जाईआ। एका कृष्ना चलाए राथा, रथ रथवाही सेव कमाईआ। एका ईसा मूसा सजदा निउँ निउँ करे माथा, सीस जगदीस इक्क झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, एका गुर दए वड्याईआ। एका गुर हरि समझाइंदा, निरगुण नानक मेल मिला। शब्दी डंक मात वजाइंदा, जीवां जंतां देवे सच सलाह। हरि का नाम जो जन ध्यांअदा, पुरख अबिनाशी वेले अन्त होए सहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोत दस दस जामे रूप लए वटा। एका जोत जोत जगा, जोती जाता खेल खिलाइंदा। गोबिन्द पूत सपूता आप उठा, पुरख अकाल दया कमाइंदा। धुर फ़रमाना हुक्म जणा, साची सेवा सच लगाइंदा। एका अमृत दए प्या, सच प्याला हथ्थ रखाइंदा। दीन दयाला सिर हथ्थ टिका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराइंदा। सुत दुलारा गोबिन्द जाया, पुरख अकाल दया कमाईआ। एका हुक्म धुर सुणाया, जीवां जंतां सेव कमाईआ। जीवां जंतां एका अंक मिलाया, दूई द्वैती ना कोई रखाईआ। झीवर छींबे फड़ के एका धाम बहाया, ज़ात पात ना कोई रखाईआ। एका अमृत दए प्याया, अंमिउँ रस अमृत आत्म आप चुआईआ। एका गुर दए समझाया, पुरख अकाल सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द सेवा मात लगाईआ। गोबिन्द सेवा हरि निरँकारा, लोकमात लगाइंदा। साचा पन्थ कर त्यारा, चार वरनां एका घर बहाइंदा। दूत दुष्ट कर सँघारा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। मुस्लिम हिन्दू ना कोए विचारा, आप आपणा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, साचा पन्थ आप बणाइंदा। साचा पन्थ उत्तम ज़ात, चार वरन बणाया। पुरख अकाल निभाए साथ, गोबिन्द मेला सहिज सुभाया। एका अक्खर एका गाथ, एका विद्या लए पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द वखाया एका घर, साचा मन्दिर आप खुल्हाया। साचा मन्दिर हरि हरि खोल्ह, एका गुरु दए वड्याईआ। एका गुर सदा अतोल, किसे तोल ना तोलया जाईआ। एका गुर आदि जुगादि रिहा बोल, जुगा जुगन्तर आपणा हुक्म सुणाईआ। एका गुर आदि जुगादि रहे अडोल, ना मरे ना जाईआ। एका गुरु वसे सभ दे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। एका गुरु हर घट रिहा मौल, रूप रेख ना कोई वखाईआ। एका गुरु पूरा करे आपणा कीता कौल, जन भगतां होए सहाईआ। एका गुरु लेखा जाणे धरनी धरत धौल, ज़िमीं अस्मानां वेख वखाईआ। एका गुरु देवे साची पाहुल, पुरख अकाल आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुरु दए समझाईआ। साचा गुरु शब्द गुरदेव, दूसर अवर ना कोई वड्याईआ। हरिजन साचा रसना रस खाए साचा मेव, अमृत रस आप चखाईआ। पतित पवित होए जेहव,

गुण अवगुण ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाला दीन दयाला एका पन्थ आप प्रगटाईआ। साचा पन्थ होया प्रकाश, चारे वरन मेल मिलाया। गोबिन्द बणया दासी दास, पंचां अग्गे सीस झुकाया। पुरख अकाल माई बाप, सदा सुहेला सीस हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ग्रन्थ दए समझाया । साचा ग्रन्थ गुरु पुरख अकाला, निष्अक्खर आपणा नाउँ जणाईआ। छत्ती राग गल विच पाए बैठे हरि हरि माला, दिवस रैण रहे जस गाईआ। चौदां सौ तीह अंक गाए गुण हरि गोपाला, नानक अंगद अमरदास रामदास गया जस गाईआ। अर्जन दस्सया राह सुखाला, आप आपणी बूझ बुझाईआ। एका गुरु वसे सच्ची धर्मसाला, काया मन्दिर डेरा लाईआ। पढ़ पढ़ तोड़ना जगत जंजाला, जाग्रत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, एका गुरु अख्वाईआ। साचा गुरु किसे दर ना होए बन्द, दूसर ओट ना कोई रखाईआ। गुरु ग्रन्थ पारब्रह्म अबिनाशी करते दे गाए छन्द, गुर गुर सेवा आप कमाईआ। नानक गाया बत्ती दन्द, तेग़ बहादर अन्त मन्नी सरनाईआ। गोबिन्द पुरख अकाल दा चढ़या चन्द, माता गुजरी मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त शब्द ज्ञान, गुरु ग्रन्थ जगत गुर महान, जो पढ़ पढ़ विचारे तिस मार्ग देवे लाईआ। गोबिन्द लेखा किते ना लिख्या, दोहरा कलिजुग जीव बणाईआ। सतिगुर पूरा किसे दुआरे लैण ना जाए सिख्या, लिख्या लेख ना पढ़े विच लोकाईआ। गोबिन्द गुरु गुर एका वेख्या, ना मरे ना जाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोई केसया, ना कोई मूंड मुंडाईआ। आदि जुगादि रहे हमेश्या, जिस दा गुर अवतार गए जस गाईआ। सीस झुकायन ब्रह्मा विष्न महेश्या, दर दर बैठे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुर दए वड्याईआ। "सभ सिखन को हुक्म है, गुरु मानिओ ग्रन्थ"।

गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस आत्म जोत उज्यार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस आत्म ब्रह्म विचार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस घर अंदर अनहद शब्द वज्जे धुन्कार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस अमृत मिले भण्डार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस नाता तुट्टे काम क्रोध लोभ मोह हँकार। गुरसिख सच्चा जाणीए, नाता तोड़े सर्ब संसार। सतिगुर सच्चा सो वखानीए, गुरसिखां करे प्यार। गुरसिख सच्चा जाणीए, जिस मिल्या हरि भगवान। गुरमुख साचा जाणीए, जिस मिटे माण अभिमान। गुरसिख सच्चा जाणीए, एका राग सुणे अनादी कान। सतिगुर सच्चा जाणीए, लक्ख चुरासी विच्चों लए पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नौजवान। गुरसिख सच्चा जाणीए, गुर गोबिन्द चाढ़े

रंग। गुरसिख सच्चा जाणीए, आत्म सेजा विछाए पलँघ। गुरसिख सच्चा जाणीए, घर सुणे नाद मृदंग। गुरसिख सच्चा जाणीए, आपणे मन्दिर आपे जाए लँघ। गुरसिख सच्चा जाणीए, दूई द्वैती ढावे कंध। गरमुख सच्चा जाणीए, एका गाए सुहागी छन्द। गुरसिख सच्चा जाणीए, सदा गाए परमानंद। सतिगुर पूरा जाणीए, आदि जुगादि होए बख्शंद। पुरख अकाल इक्क वखानीए, हरिजन मेटे तेरी चिन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल गुणी गहिन्द।

"गुरु ग्रन्थ जी मानिउँ, प्रगट गुरां दी देह" :

देह उपजे पंज तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मेल मिलाया। देह अंदर रक्खे बुध मन मति, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलाया । गुरु ग्रन्थ अंदर एका धीरज सन्तोख जति सति, जूठ झुठ नज़र ना आया। हरि का शब्द महिमा अकथ, लिख लिख लेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुरु शब्द इक्क जणाया। शब्द गुरु गुर बदले चोला, पंज तत्त काया आप हंढाईआ। मनमुख जीवां कोलों करे ओहला, गुरसिखां सख्यात नज़री आईआ। साहिब सतिगुर आदि जुगादि सुणाए आपणा ढोला, ढोलक छैणा ना कोई वजाईआ। निरगुण सरगुण बण बण तोला, नाम कंडे लए तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन सिख दए बणाईआ। सो सिख जो सिख्या करे परवान, नानक निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। चार वरन वेखे कर ध्यान, अंदर बैठा सच्चा माहीआ। अठ्ठे पहर रहे निगहबान, दिवस रैण सेव कमाईआ। नाता तुट्टे हिन्दू सिख मुस्लिमान, आत्म ब्रह्म घट घट नज़री आईआ। तिस गोबिन्द सूरा मिले आण, गुरु ग्रन्थ दए ग्वाहीआ। गुर का शब्द जिस ल्या पहचान, खोजन बण खण्ड ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ।

"जां का हिरदा सुद्ध है, खोज शब्द में ले" :

बिन सतिगुर पूरे हिरदा ना होए सुद्ध, लक्ख चुरासी होए हल्काईआ। मन वासना दहि दिशा रही कुद्द, मन पंछी फड़के हथ्थ ना कोई वखाईआ। मति मतवाली आपणा आप बैठी लुट्ट, कलिजुग ठग्ग चोर यार गए लुटाईआ। बुध निमाणी ना सके उठ, कूड़ी क्रिया रही दबाईआ । पढ़ पढ़ थक्के आलणिउँ डिगे बोट, साचे घर ना कोई बहाईआ। जो जन सतिगुर पूरे दी रक्खे एका ओट, अठ्ठे पहर ध्यान लगाईआ। घर मन्दिर वजाए शब्द नगारे चोट, अनहद नादी नाद सुणाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए समझाईआ। शब्दे अंदर हरि हरि खोज, गुर शब्दी मेल मिलाया। बिन सतिगुर माणे ना साची मौज, सतिगुर रस ना किसे खाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हिरदा सन्तन दए समझाया। हरि सन्तन हिरदा उप्पर नौ दुआर, नेत्र नैण आप खुल्हाईआ। खोजत खोजत पावे सार, जिस जन आपणी दया कमाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, जगत वासना ना कोई मिटाईआ। अंदर वड़ ना दर्शन पाया, घर मिल्या ना मीत मुरार, गोबिन्द बैठा मुख छुपाईआ। गुरु ग्रन्थ गुर कहे पुकार, निवण सु अक्खर साची जुगत चाकरी इक्क वखाईआ। एका कन्त सर्ब भतार, लक्ख चुरासी नारी रूप वखाईआ । गुरु ग्रन्थ गुर ठांडा दरबार, चार वरनां एका नैण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भय भउ गुर गुर एका रूप जणाईआ ।

६६२ गुर पीर सदा जग मंगदा, गुरसिखां कोलों सच प्यार। औदां जांदा कदे ना संगदा, जुग जुग लए मात अवतार। हरिजन काया मन्दिर आपे लँघणा, दूई द्वैती पर्दा पाड़, करे खेल सूरे सरबंग दा, शाह पातशाह सची सरकार। बिन सिखां गुरु किसे ना कम्म दा, धृग जीवन संसार। माया ममता खेल भेख पखण्ड दा, ठग्ग चोर रहे पुकार। गुर सतिगुर शाह रग उप्पर वसदा, गुरमुख मेले दस्म दुआर। नाता तोड़े भुक्ख नंग दा, एका बख्शे नाम भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्त लोकमात आए बध्धा, नित नवित गुरमुखां कोलों मंगे भिख्या धूढ़ी छार। जगत सागर औझड़ राह, किनारा किसे नज़र ना आईआ। एका भुल्लया बेपरवाह, सृष्ट सबाई आप भुलाईआ। नव नौ नौ दए हिला, चार चार दए उठाईआ। एका सिफ़रा आप अख्वा, हासल बाकी ना कोई बचाईआ। जग खेड़ा जगत देवे ढाह, एका ढाह लगाईआ। गुरसिखां देवे सच सलाह, मार्ग साचा इक्क जणाईआ। कलिजुग अन्तिम बणे मलाह, सागर डूँग्घर लए तराईआ। चप्पू लाए आपणे नाँ, सोहँ नाउँ वडी वड्याईआ। पावे सार थल अस्गाह, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। निथाव्याँ देवे साचा थाँ, दरगाह साची धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग सागर पार कराईआ। डूँग्घां सागर भँवर समुंद, सृष्ट सबाई घुंमण घेर रखाईआ। बचया रहे ना सुरपति इन्द, शंकर पल्लू ना सके छुडाईआ। ब्रह्म मेटे आपणी चिन्द, चिंता जगत दए मिटाईआ। प्रगट होया गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, रूप अनूप आप धराईआ। हरिजन उपजाए साची बिन्द, जग आपणा संग रखाईआ। विष्टा कीट लगाए निन्द, जून अजूनी आप भवाईआ। हरिजन हरि सदा बख्शंद, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन कीती पार लँघाईआ। बिन कीती जन उतरे पार, कर्म कांड ना कोई

वखाईआ। पूजा पाठ ना कोई विचार, ज्ञान ध्यान ना कोई दृढ़ाईआ। अठसठ तीर्थ ना कोई अशनान, सरोवर सर ना कोई रखाईआ। खाणी बाणी ना सुणाए कोई कान, रसना जिहवा ना कोई पढ़ाईआ। एका बख्शे चरन ध्यान, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, आत्म ब्रह्म आप समझाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जैकार कोटन कोटि कोट जन्म दे देवे पाप गंवाईआ।

★ १८ जेठ २०१८ बिक्रमी गुरदित सिँघ दे घर जम्मू ★

जै जैकार मिटे संताप, सातक सति सति कराईआ। जन्म जन्म दा लथ्थे पाप, दुरमति मैल धुआईआ। त्रैगुण माया ना चढ़े ताप, अग्नी अग्ग ना कोई जलाईआ। माया डसनी डस्से ना सांप, मोह ममता ना कोई रखाईआ। जिस जन बुझाए आपणा आप, दर घर साचे मेल मिलाईआ। नज़री आए माई बाप, पुरख अकाल सच्चा शहिनशाहीआ। चरन कँवल बंधाए नात, नाता अवर ना कोई रखाईआ। एका नाम जणाए गाथ, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हाथ, मानस जन्म लेखे लाईआ। सर्ब कल आपे समराथ, किसे दर ना मंगण जाईआ। होए सहाई अनाथां नाथ, नाथ अनाथां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन चढ़ाए आपणे राथ, चढ़या रथ फिर उतर कदे ना जाईआ। जै जैकार जै गुरदेव, जैजैवन्ती सीस झुकाईआ। जै जैकार अलख अभेद, विष्न ब्रह्मा शिव रहे जस गाईआ। जै जैकार सदा निहकेव, निहचल धाम बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार इक्क समझाईआ। जै जैकार एका पुरख, दूसर अवर ना कोई जणाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, सो पुरख निरँजण हरख सोग विच कदे ना आइंदा। हरिजन हरिभगत सदा सुहेला लए परख, नाम कसवट्टी इक्क लगाइंदा। मनमुखां उत्ते कदे ना करे तरस, जो जन हरि नाम भुलाइंदा। गुरमुखां देवे सदा दरस, नित नवित फेरा पाइंदा। अमृत देवे बरस, अग्नी तत्त बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, घर मन्दिर गृह ग़रीब निवाज़ा बन्द दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। संसा रोग मिटे संसार, सुख सागर इक्क वखाईआ। हरिजन हरि करे प्यार, काया गागर भाग लगाईआ। दु:ख दलिद्र जगत दए नवार, सिन्ध सागर पार तराईआ। छल छिद्र ना मारे मार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाईआ। छल छिद्र ना करे ख्वारी, किरपा करे आप निरँकारा। ग़रीब निमाणयां पावे सारी, नेत्र वेखे वेखणहारा। जगत जंजाल कट्ट बीमारी, एका बख्शे चरन प्यारा।

नाम चढ़ाए राम ख़ुमारी, राम नाम इक्क उरधारा। माणस जन्म ना जाए हारी, जो जन आयण चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हकीम एका करे कायादारी, दर्द दु:ख दलिद्दर जगत अन्त मिटाइंदा।

★ १८ जेठ २०१८ बिक्रमी सरदार सिँघ दे गृह छम्ब जम्मू ★

माणस जन्म जगत अनमोला, लक्ख चुरासी दए कटाईआ। जुगत जगत जग बदल्लया चोला, पंचम तत्त वज्जे वधाईआ। आत्म ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म वसे कर कर ओहला, दिस किसे ना आईआ। शब्द अगम्मी नाद अनाद वजाए ढोला, गृह मन्दिर आप सुणाईआ। नाम निधाना बोले बोला, सच जैकारा इक्क लगाईआ। जिस जन पर्दा हरि जू खोल्ला, तिस मन्दिर दए वखाईआ। नव नौ जगत वासना प्या रौला, आसा तृष्ना ना कोए बुझाईआ। निरगुण सरगुण अंदर मौला, मौला आपणा रूप धराईआ। अमृत भरे नाभी कँवला, निझर झिरना आप झिराईआ। नूर वखाए अव्वल अल्ला, इलाही नूर आप हो जाईआ। कलमा कलाम फड़ाए पल्ला, एका नाम दए वड्याईआ। हरिजन हिरदे अंदर हरि हरि आपे रला, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत पावे सार इक्क इकल्ला, अलख अगोचर बेपरवाह अगम्म अथाह आपणी बणत बणाईआ। वसणहार सचखण्ड दुआर सच महल्ला, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। सच सिँघासण एका मल्ला, सोभावन्त आप सुहाईआ। धाम रखाए उच्च अटल्ला, अस्थिल आपणी दया कमाईआ। सच संदेस जुगा जुगन्तर घल्ला, निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल, अजूनी रहत आपणा नाउँ प्रगटाईआ। जीव जगत भुलाए कर कर वल छला, अछल अछल खेल खिलाईआ। गुरमुख विरले मिटे दूई द्वैती सला, बण सालस होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि लए मिलाईआ। हरिजन मेला काया गढ़, गुर सतिगुर आप मिलाइंदा। डूँघी भँवरी जाए वड़, पंज तत्त काया वेख वखाइंदा। साचे मन्दिर जाए चढ़, आपणा मार्ग आप सुहाइंदा। सुरत सुवाणी लए फड़, शब्द हाणी मेल मिलाइंदा। अमृत नुहाए साचे सर, दुरमति मैल धवाइंदा। आप वखाए आपणा घर, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, पंच विकारा ना कोए डराइंदा। त्रैगुण अग्नी जाए सड़, माया ममता मोह मिटाइंदा। मेल मिलाए नरायण नर, नर नारी एका रंग रंगाइंदा। घर विच घर मिले हरि, हरि जू हरि मन्दिर सोभा पाइंदा। आत्म सेजा बैठा किरपा कर, कृपानिध ठाकर गहर गम्भीर गुणी गुणवन्त गुण अवगुण ना कोए जणाइंदा। हरिजन मेले साचे सन्त, सति सतिवादी आप अख्वाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, रंग मजीठी आप वखाइंदा। जन बणाए साची बणत, जन जननी लेखे पाइंदा। मेल मिलावा

अन्तिम अन्त, जोती जोत आप समाइंदा। सर्ब जीआं दा हरि हरि कन्त, लक्ख चुरासी आप प्रनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर वेखे खड़, हरिजन हरि हरि बंक सुहाइंदा। काया मन्दिर अनहद धुन, धुन अनादी आप रखाइंदा। सर्ब जीआं पुकार रिहा सुण, सुन्न अगम्म आप समाइंदा। हरिजन साचे लए चुण, जन्म कर्म वेख वखाइंदा। लेखा जाणे रिख मुन, जोगी जपी तपी जती सती हठी भेव ना कोए छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर साचा घर, हरि मन्दिर आप बणाइंदा। हरि मन्दिर हरि सोभावन्त, घर घर विच वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म मिल्या पूरन भगवन्त, पूरन गुर वडी वड्याईआ। लक्ख चुरासी नाता तुट्टा जीव जंत, जाग्रत जोत इक्क जगाईआ। गढ़ तुट्टा हउमे हंगत, आसा तृष्ना ना कोए वखाईआ। साहिब सुल्तान बणाई बणत, बसन बनवारी दया कमाईआ। भगतन मेला श्री भगवन्त, भगवन होए आप सहाईआ। एका नाद एका शब्द एका मंत, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। काया मन्दिर आप सुणाए सहागी छंत, लिखण पढ़न विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मन्दिर आपे वड़, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा पुरख अगम्मा आप खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा जाए खुल्ह, जिस जन सतिगुर दया कमाइंदा। देवे नाम शब्द अनमुल्ल, करता कीमत कोए ना लाइंदा। चरन प्रीती हरिजन जाए घुल, घोली घोल वेख वखाइंदा। भाग लगाए साची कुल, गुरमुख साचे आप रखाइंदा। नाम कंडे तोले तोल, तोलणहारा इक्क हो जाइंदा। हरिजन हरिभगत आप बणाए साचे फुल, फुल फुलवाड़ी मात महिकाइंदा। आदि जुगादि सदा अभुल, भुल्ले जीव मार्ग लाइंदा। हरि का भगत ना जाए रुल, हरि सतिगुर आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर वेखे दर, दर मन्दिर आप सुहाइंदा। दर मन्दिर सच निशाना, सो पुरख निरँजण आप वखाईआ। घर मन्दिर बैठा श्री भगवाना, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाईआ। इक्क जणाए धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। नाद अनादी सच तराना, तुरीआ राग आप सुणाईआ। जाग्रत रूप खेले खेल महाना, आलस निन्दरा विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचा दर, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। घर मन्दिर ढोल वज्जे मृदंग, सतिगुर पूरा आप वजाईआ। आत्म अन्तर उपजाए परमानंद, निजानंद आप समाईआ। जोत निरँजण चाढ़े चन्द, सूरज चन्न ना कोए रुशनाईआ। एका गाए सुहागी छन्द, गीत गोबिन्द आप अलाईआ। साहिब दयाल ठाकर स्वामी सदा बख्शंद, बख्शणहार इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे दर, दर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा, दीवा बाती ना कोए रखाईआ। दीवा बाती ना कोए तेल, चार दीवार ना कोए जणाइंदा। निरगुण

करे अगम्मड़ा खेल, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। शब्दी सुरती सुरती शब्दी आपे मेल, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण सरगुण सज्जण सुहेल, सरगुण निरगुण संग निभाइंदा। लेखा जाणे गुरु गुर चेल, चेला गुर आप हो आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए वर, आपणा बन्धन एका पाइंदा।

★ १८ जेठ २०१८ बिक्रमी गुरदित सिँघ संसार सिँघ दे गृह छम्ब जम्मू ★

कलिजुग जीव उठ उठ जाग, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। वरनां बरनां लग्गी आग, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। सन्त साध बणे काग, हँस रूप ना कोए वटाइंदा। साचे मन्दिर दिसे ना कोए चिराग़, दीवा बाती तेल रखाइंदा। शब्द नाद ना वज्जे सच्चा नाद, ढोलक छैणा सर्ब खड़काइंदा। नाम देवे ना कोई दाद, पढ़ पढ़ सर्ब जीव सुणाइंदा। आत्म वेखे ना कोए ब्रह्म ब्रह्माद, नेत्र नैण जगत वेख वखाइंदा। आपणा जाणे ना कोए स्वाद, रसना रस सर्ब चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग जीव आप जगाइंदा। कलिजुग जीव उठ उठण वेला, वेला वक्त गया हथ्थ ना आईआ। जूठा झूठा साक सज्जण भाई भैण मेला, सगला संग ना कोए निभाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकेला, आदि जुगादि दया कमाईआ। लक्ख चुरासी धर्म राए दी कट्टे जेला, वेले अन्त ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग जीव उठ जाग, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। तेरे तन दुरमति मैल लग्गा दाग़, लोकमात ना कोए धवाइंदा। तेरा नाता छुटा कन्त सुहाग, दुहागण रूप मात वटाइंदा। तेरे अंदर त्रैगुण आग, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। माया डस्सणी डस्से नाग, तृष्ना जगत ना कोए मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेस इक्क सुणाइंदा। कलिजुग जीव उठ नेत्र खोल्ह, नेत्र नैण इक्क जणाईआ। पंच विकारा प्या घोल, त्रैगुण करे लड़ाईआ। जूठ झूठ वजाए ढोल, माया ममता मोह नाल रलाईआ। सच वस्त ना किसे कोल, शाह पातशाह ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। अन्तिम लुट्टे जाण सर्ब अनभोल, आपणा भेव ना हरि किसे जणाईआ। कोई दस्स ना सके पंडत पांधा रौल, हरि का हिसाब ना कोए लगाईआ। मनमुखता करे जगत मख़ौल, गुरमुख विरला कोए सालाहीआ। हौला करे भार धरत धौल, धरनी दया आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत आप बणाईआ। कलिजुग जीव उठ आत्म अन्ध, नेत्र नैण नैण उज्यारया। चार वरन ना मुक्कया अजे पन्ध, अठारां बरन होया हंकारया। हउमे हंगता चुक्की पंड, सीस जगदीस ना किसे निमस्कारया। दूई द्वैत ना ढट्ठी कंध, कंचन गढ़

ना किसे संवारया। पंच विकार ना होया खण्ड, साचा धर्म ना कोए जैकारया। चारों कुण्ट पायण वण्ड, एका रूप नज़र किसे ना आ रिहा। आत्म ब्रह्म ना चढ़े कोए चन्द, चन्द चांद ना कोए वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग जीव आप समझा रिहा। कलिजुग जीव खोलू नेत्र, ग़फ़लत नींद दए मिटाईआ। तेरा चुगया जाणा काया खेत्र, ना सके कोए बचाईआ। राष्ट्रपत उठाया महीना चेत्र, दे मति आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेस इक्क जणाईआ। सच संदेसा हरि भगवाना, शब्दी शब्द सुणाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल महाना, निरगुण निरवैर आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे हो प्रधाना, सो पुरख निरँजण रूप वटाइंदा। हरि पुरख निरँजण बण मर्द मरदाना, एकँकारा आपणा बल धराइंदा। आदि निरँजण पावे सार दो जहानां, अबिनाशी करता लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाइंदा। श्री भगवान झुलाए सच निशाना, सति निशाना इक्क जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। लक्ख चुरासी दए परवाना, आत्म ब्रह्म सर्ब जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुणाए एका गाणा, हुक्मी हुक्म आप अलूाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्याना, सत्तां दीपां फेरी पाइंदा। काल महाकाल उठाए नौजवाना, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। राए धर्म बख्शे चरन ध्याना, चरन कँवल इक्क वखाइंदा। चित्रगुप्त होए निमाणा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी करे खेल श्री भगवाना, लोकमात वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जिस तोड़या माणा, माण अभिमान सर्ब गवाइंदा। शब्द अगम्मी फड़े तीर कमाना, चिल्ला आपणे हथ्थ उठाइंदा। चण्ड प्रचण्ड ब्रह्मण्ड आप चमकाना, तिक्खी धार आप बणाइंदा। तख्तों लाहे राजा राणा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। वेद कतेब शास्त्र सिमरत आपे वेखे मार ध्याना, भेव अभेद आपणा पर्दा आप उठाइंदा। अञ्जील कुराना खेले खेल महाना, तीस बतीसा कराए इक्क हदीसा, हज़रत आपणा रूप वटाइंदा। खाणी बाणी लए ब्याना, पुरख अबिनाशी शाह सुल्ताना, साचे तख्त बैठ राज राजाना, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराइंदा। कलिजुग अन्तिम प्रगटे जोद्धा सूर बली बलवाना, एका डंका नाम वजाना, लोआं पुरीआं आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच तख्त निवासी शाहो शाबाशी पुरख अबिनाशी, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, शब्द अगम्मी आप जणाईआ। करे खेल श्री भगवाना, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्याना, लक्ख चुरासी फोल फोलाईआ । चार कुण्ट करे वैराना, उप्पर आपणा नाउँ कराईआ। जूठा झूठा मेट निशाना, सच सुच्च लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अगम्मा अगम्मड़ी खेल खिलाईआ। अगम्म अगम्मड़ा खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप

कराइंदा। लेखा जाणे राणी अल्ला, इलाही नूर आप हो आइंदा। सच संदेस संग मुहम्मद चार यार एका घल्ला, चौदां तबकां हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नबी रसूलां आप उठाइंदा। हरि का नाम सति वस्त अमोलक, जीव जंत जगत वड्याईआ। राम नाम वसाउणा काया गोलक, घर मन्दिर आप टिकाईआ। दर सुणना नाद अनहद ढोलक, दूसर साज ना कोए वड्याईआ। गुर शब्द सुणाए अनबोलत, रसना जिहवा ना कोए हलाईआ। गुरसिख विरला रहे अडोलत, लक्ख चुरासी रिहा डुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। एका नाम हरि का रंग, रंग रंगीला आप जणाइंदा। एका राम सदा संग, विछड़ कदे ना जाइंदा। एका नाम दए अनन्द, अनन्द आत्म आप वखाइंदा। एका राम कट्टे फंद, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। एका नाम चाढ़े चन्द, सूरज चन्द ना कोए चमकाइंदा। एका राम सदा बख्शंद, बख्शश आपणे हथ्थ रखाइंदा। एका नाम मिटाए जूठ झूठ गंद, अमृत आत्म रस चखाइंदा। एका राम जाए तुठ्ठ, जन्म मरन मरन जम्मण गेड़ कटाइंदा। कलिजुग अन्तिम पारब्रह्म अबिनाशी करते पाई नाम लुट्ट, कलिजुग जीव लुट्टण कोए ना आइंदा। जगत तृष्ना माया ममता भाग गए निखुट्ट, पूरा भाग ना कोए वण्ड वंडाइंदा। राम नालों नाता गया तुट्ट, सीता सुरती राम नाल ना कोए प्रनाइंदा। सचखण्ड दुआरा गया छुट्ट, लक्ख चुरासी गेड़ा गेड़ वखाइंदा। अन्तिम अन्त निरगुण सरगुण कहे उठ, उठ उठ आपणा राह वखाइंदा। करया खेल पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, चित वित ठगौरी ना कोए रखाइंदा। आप सुहाए साची रुत्त, फुल फुलवाड़ी आप जणाइंदा। हरिजन बणाए साचे सुत, पूत सपूता गले लगाइंदा। बिन हरि नामे ख़ाली दिसे काया बुत्त, साचा मन्दिर ना कोए सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। राम नाम एका जन मंतर, मन मति बुध दए वड्याईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट बैठा सेज हंढाईआ। वेस वटाए जुगा जुगन्तर, जुग जुग वेस आप कराईआ। हरि भगत बणाए साची बणतर, भगत भगवन्त लए मिलाईआ। लेखा जाणे गगन गगनंतर, काया गगन मंडल फोल फोलाईआ। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता प्रभ साचा आप बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप प्रगटाईआ। नाम प्रगटाए रामा, राम राम रूप वटाइंदा। करे खेल दो जहानां, दो जहानां वेख वखाइंदा। सति धर्म दा इक्क निशाना, शाह सुल्ताना आप उठाइंदा। क्षत्री ब्रह्मामण शूद्र वैश आप बहाए इक्क मकाना, ऊँच नीच ना कोए जणाइंदा। एका राग इक्क तराना, एका इष्ट देव गुर वखाइंदा। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, एका धुर दीबाण लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर,

लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त, श्री भगवन्त एका वार उठाइंदा। एका वार हुक्म सरकार, सतिगुर सच्चा आप जणाईआ। सो पुरख निरँजण निराकार, निरवैर खेल खिलाईआ। अजूनी रहत कर पसार, जून अजूनी वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसार, नेत्र नैण ना कोए खुल्लाईआ। हरि कन्त ना करे कोए प्यार, जगत दुहागण रैण विहाईआ। साचा धर्म ना सके कोए विचार, जगत अधर्म वण्ड वंडाईआ। जो जन हरि की पाए सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग दए रंगाईआ। संसार सिँघ छुटया संसार, हरि संसारी सतिगुर पाया। निहकर्मी कर्म करे विचार, जन्म कर्म आपणे लेखे पाया। एका नेत्र दए उग्घाड़, जगत लोचण बन्द रखाया। इक्क वखाए मन्दिर दुआर, हरि मन्दिर आप उपाया। एका जोत करे उज्यार, जोत निरँजण करे रुशनाया। एका नाद शब्द धुन्कार, अनहद नाद दए सुणाया। एका अमृत ठंडा ठार, घर अमृत दए प्याया। एका मेला धुर दरबार, गुर चेला वेख वखाया। पाया पुरख अगम्मड़ा यार, लेखा कोए रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन संसार सागर उतरया पार, सतिगुर पूरा आप लँघाईआ। साचा बेड़ा कर त्यार, निरगुण दाता लए चढ़ाईआ। शौह दरयाए ना रक्खे अद्धविचकार, डूँग्घी भँवर ना कोए भवाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, हरिजन तेरी वड वड्याईआ। सत्त समुंदर मस रोवे ज़ारो ज़ार, भगत कबीरा दए ग्वाहीआ। बनास्पत ना बणे लिखार, लिख लिख लेख ना कोए समझाईआ। गुरसिख तेरी महिमा अपर अपार, तेरा रंग तेरा रेख तेरा लेख तेरा सतिगुर आप वटाईआ। तेरा नेत्र तेरा नैण तेरा तैनूं लए वेख, तेरे मन्दिर आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए माण वड्याईआ। संसार सागर विच खोल्ले जाग, वैराग इक्क उपजाया। सोया जन गया जाग, गुर सतिगुर आप जगाया। चरन धूढ़ कराया मजन माघ, दुरमति मैल धवाया। फड़ के हँस बणाया काग, सोहँ हँसा माणक, मोती चोग चुगाया। आदि अन्त रक्खे लाज, जिउँ बिदर सुदामा होए सहाया। हथ्थ आपणे रक्खे वाग, दो जहानां लए उठाया। मेट मिटावे वाद विवाद, मन का मणका लए भवाया। घर घर मेला कन्त सुहाग, साचे मन्दिर आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा आपणे रंग रंगाया। संसार चढ़ाए संसारी रंग, सागर सिन्ध पार कराईआ। आवण जावण लक्ख चुरासी जम की फाँसी तुट्टा फंद, फांदी होर ना कोए वखाईआ। इक्क उपजाया आपणा अनन्द, अनन्द मंगल आप सुणाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला कदे ना देवे कंड, करवट आपणी रिहा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे विच समाईआ। हरिजन अंदर हरि समाया, निरगुण सरगुण रूप धरा। साचे आसण डेरा लाया, सच सिँघासण सेज विछा।

ब्रह्म पारब्रह्म मिलाया, मेला करे सहिज सुभा। चेला गुर एका धाम बहाया, चेला गुर आप अख्वा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए फड़, आपणा बन्धन एका पा। बन्धन पाए हरि निरँकारा, लोकलाज मात तजाईआ। आंढ गवांढ कहे भुल्लया फिरे संसारा, संसारी देवे जगत वड्याईआ। एका बख्शे नाम अतुट भण्डारा, अतोट अतुट आप वरताईआ। गुरसिखां घर बणे वणजारा, दर दरवेश फेरी पाईआ। सच प्रीती मंगे बण भिखारा, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। दरस दिखाए राम अवतारा, राम रामा रूप वटाईआ। मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण कान्हा कृष्ना हो उज्यारा, घर बंसरी नाम वजाईआ। एका मधुर धुन सुणे सुणनेहारा, कँवल नैण नैण मटकाईआ। साँवल सुंदर रूप अपारा, मुक्ट बैण आप टिकाईआ। राती सुत्तया दए दीदारा, बाहों पकड़ आप उठाईआ। घर मिल्या हरि निरँकारा, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। जिउँ भाग लगाए बिदर सुदामा जाए दुआरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन वेखण आपणी अक्ख, गुर सतिगुर अक्ख खुल्हाईआ। अठ्ठे पहर रहे प्रतक्ख, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। जिस जन आपणा मार्ग देवे दस्स, नाता जगत दए तुड़ाईआ। साक सज्जण रहे हस्स, हस्स हस्स आपणा वक्त गंवाईआ। हरिजन हरि हरि इक्क दूजे दे होए वस, एका घर वसण दिस किसे ना आईआ। कलिजुग जीव रैण अन्धेरी मस, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। काया खेड़ा होए भठ्ठ, त्रैगुण अग्नी तत्त जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराईआ। हरिजन उतरे पार किनारा, तरनी बैतरनी आप तराईआ। राए धर्म करे निमस्कारा, गुरमुख तेरे चरनां सीस झुकाईआ। चित्तर गुप्त ना बणे लिखारा, दोए जोड़ रहे शरमाईआ। काल ना आए चल दुआरा, लाड़ी मौत ना करे कुड़माईआ। महाकाल होए रखवारा, सदा सुहेला बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरे धाम दए वड्याईआ। गुरसिख धाम सच महल्ला, सचखण्ड दुआरा इक्क समझाईआ। पुरख अबिनाशी बैठा इक्क इकल्ला, सच सिँघासण आसण लाईआ। जिस जन फड़ाए लोकमात शब्दी पल्ला, एका नाम गंढु दवाईआ। अन्तिम बिठाए निहचल धाम अटल्ला, उच्च अगम्म आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दुआरा दए चमकाईआ। हरि का दुआरा सचखण्ड, सचखण्ड निवासी खेल खिलाइंदा। थिर घर वण्डी आपणी वण्ड, आपणे चरन टिकाइंदा। चरन दुआरा रक्खे उप्पर ब्रह्मण्ड, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड चरनां हेठ दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दर बहाइंदा। दर साचा ठांडा दरबारा, दर घर वज्जे वधाईआ। नाता तुटया जगत संसारा, संसार सागर पार कराईआ। घर मन्दिर होए उज्यारा, गृह जोत नूर रुशनाईआ। हरि मन्दिर हरि पसारा, घट भीतर रिहा

समाईआ। आत्म ब्रह्म पावे सारा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सेज सुहञ्जणी सुत्ता पैर पसारा, अगम्म अथाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस ने कीआ आदि पसारा, अन्त आपे वेखण आईआ। नौ सौ चुरानवें जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग औंदे रहे वारो वारा, जुग जुग आपणा गेड़ चलाईआ। हुक्म अंदर हुक्म सुणावण गुर पीर अवतारा, लोकमात पंज तत्त काया चोला जगत हंढाईआ। हरि का नाम वजावण सच नगारा, जीवां जंतां आप सुणाईआ। ब्रह्मा लिख लिख थक्का वेद चारा, वेद व्यासा अठारां पुराण रिहा समझाईआ। गीता ज्ञान सच भण्डारा, कान्हा कृष्ना एका अरजण तत्त जणाईआ। अञ्जील कुराना भेव न्यारा, एका मसला आप पढ़ाईआ। नानक निरगुण बोल जैकारा, पुरख अकाल रिहा वड्याईआ। हरि का नाउँ सति भण्डारा, चार वरन रिहा समझाईआ। गोबिन्द बण बण लिखारा, अन्तिम लेखा गया समझाईआ। पुरख अकाल सांझा यारा, वरन गोत ना कोए रखाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक आए बली बलकारा, जोती जामा भेख वटाईआ। सम्बल नगर वसे धाम न्यारा, किसे मन्दिर मस्जिद गुरदुआर ना डेरा लाईआ। गुरमुखां करे सच प्यारा, पूर्ब लहिणा वेख वखाईआ। देवे दरस दीद दीदारा, दीद ईद आप मनाईआ। कुदरत कादर वेखणहारा, मुर्शद मुरीद लए उठाईआ। राम भगत हरि राम प्यारा, राम रामा लए जगाईआ। पुरख अबिनाश खेल तमाश जुगा जुगन्तर करे कराए करनेहारा, करता पुरख आप अख्वाईआ। जिस जन नाता तोड़े सर्ब संसारा, तिस जन आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, काया मन्दिर पौड़े एका चढ़, नाम बन्धन साचा पाईआ। नाम बन्धन पाया हरि, हरि हरिजन बंध वखाया। जगत जुगत चुकाया डर, भगत भगवन्त मेल मिलाया। अमृत नुहाए साचे सर, काया गागर ताल भराया। गुरमुख आदि जुगादि ना जन्मे ना जाए मर, जिस जन आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि खेल महान, जुगा जुगन्तर हो प्रधान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग वखाया।

★ १८ जेठ २०१८ बिक्रमी सरदार चन्द दे गृह छम्ब जम्मू ★

हरि नाउँ सच वैराग, तन मन हरया आप कराइंदा। सोवत जीव जाए जाग, जाग्रत मति इक्क रखाइंदा। होए वड्याई वड वड भाग, वड भागी भेव चुकाइंदा। हँस बणे कबुध काग, डूमणी सुध आप कराइंदा। रसना तजे जगत स्वाद, राम नाम साचा रस इक्क वखाइंदा। सति भण्डार देवे दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। डूँग्घी भँवरी आपे काढ, साचे

सागर पार कराइंदा। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, निर्मल बिमल सर्ब वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट आपणा रंग रंगाइंदा। हर घट अंदर हरि हरि वासा, आत्म ब्रह्म जोत जगाईआ। जिस जन बख्शे चरन भरवासा, तिस अमृत फल खवाईआ। अमृत फल हरि का नाउँ शाहो शाबाशा, लोकमात हथ्थ किसे ना आईआ। काया ख़ाली दिसे कासा, जल अमृत ना कोए भराईआ। हरिजन हरिभगत ना होए कदे निरासा, जिस जन एका ओट तकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निज आत्म करे वासा, सुरत शब्द मेल मिलाईआ। दिवस रैण पाए रासा, गोपी काहन आप नचाईआ। पूरी करे आसा, जो जन रहे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, खेलणहारा दिस ना आईआ। तन मन रंग अवल्लड़ा, रंगणहार करतार। हरिजन हरी हरि आप फड़ाए एका पलड़ा, नाम नामा दए उज्यार। जग जीवण दाता देवे राह सुखल्लड़ा, हरि चरन सरन सच्चा प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत दलिद्र दए निवार। जगत दलिद्र दुःख भरम भउ नासे, रोग सोग रहिण ना पाईआ। जो जन चरन कँवल रक्खे सच धरवासे, धरनी धवल दए वड्याईआ। जोती जाता जोत करे प्रकाशे, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। जन्म मरन करे बन्द ख़लासे, लक्ख चुरासी गेड़ मुकाईआ। गुरसिख जीवे गुर भरवासे, गुर सतिगुर होए सहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निज आत्म निज घर रक्खे वासे, काया बस्त्र चोला तन हंढाईआ।

गाउणा गुण गहर गम्भीर, सांतक सति वरताईआ। निर्मल बुद्धि शांत सरीर, मन वासना दए मिटाईआ। अंमित निझर बरखे सीर, साचा नीर मुख चुआईआ। जगत दुखड़ा मिटे पीड़, आत्म सुख इक्क वखाईआ। एका रंग वखाए हस्त कीट, ऊँच नीच भेव मिटाईआ। लोकमात बन्न्हे बीड़, जिस मिल्या हरि रघुराईआ। कट्टे रोग दीर्घ दीर, धीरज आपणी दए बंधाईआ। लक्ख चुरासी ना रहे ज़ंजीर, जम फास दए मिटाईआ। फड़ फड़ चोटी चाढ़े अख़ीर, जिस जन देवे नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन सरधन वेख वखाईआ। हरि का नाउँ हरि रंग रास, रसना जेहवा गुण ना कोए वखाइंदा। जिस देवे तिस बुझे प्यास, तन मन सिंच हरा कराइंदा। लेखा लिख लिख गया वेद व्यास, व्याख्या रूप ना कोए वटाइंदा। परम पुरख निरगुण जोत प्रकाश, अबिनाशी करता आपणा खेल कराइंदा। जिस घर जिस गृह मन्दिर पावे रास, तिस मंडल आप सुहाइंदा। सदा सुहेला वसे पास, आपणा संग रखाइंदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड विच प्रभास, समुंद सागर डूँघी कंदर वेख वखाइंदा। जन भगतां करे बन्द खलास, बन्दी तोड़ बन्द कटाइंदा। लहिणा

देण चुकाए दस दस मास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। रंग वखाऐ हरि निरँकारा, रूप अनूप आप दरसाईआ। हउमे हंगता तोड़ गढ़ हँकारा, हँ ब्रह्म नज़री आईआ। सोइम रूप सच्ची सरकारा, सो पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाहीआ। सोहँ शब्द आदि जुगादि निरगुण सरगुण नाअरा, विष्न ब्रह्मा शिव रहे जस गाईआ। चार वेद करन पुकारा, आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म बंस सरबंस वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द अधारा एका नाम झोली पाईआ। मिले मीत हरि राम प्यारा, रमईया आपणा खेल खिलाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा लिखे ना कोए शाहीआ। जन भगतां हरि करे प्यारा, जुग जुग आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुदरत कादर करता आपणा रंग वखाईआ।

सति पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण सद मेहरवाना, हरि पुरख निरँजण खेल बेपरवाहीआ । एकँकारा नौजवाना, आदि निरँजण सगला संग निभाईआ। अबिनाशी करता मर्द मरदाना, श्री भगवान निरगुण आपणा रूप वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल महाना, दिस किसे ना आईआ। साचा मन्दिर इक्क सुहाना, सचखण्ड दए वड्याईआ। चार दीवार ना कोए रखाना, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। दीवा बाती ना कोए टिकाना, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। करे खेल होए निगहबाना, आप आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप सुहाईआ। साचा मन्दिर सचखण्ड दुआरा, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण अलख अगोचर अगम्म अपारा, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। एकँकारा कर पसारा, आपणी धारा आप चलाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यारा, जोत उजाला आप कराइंदा। श्री भगवान वसणहारा ठांडे दरबारा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। अबिनाशी करता आपे करे आपणी कारा, करता पुरख आपणी खेल आप खिलाइंदा। पारब्रह्म निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहत करे खेल न्यारा, अनुभव प्रकाश धराइंदा। सचखण्ड दुआरा कर पसारा, आपणी बणत आप बणाइंदा। निरगुण इच्छया निरगुण भिच्छया निरगुण देवे भण्डारा, निरगुण झोली अग्गे डांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणी खेल आप खिलाइंदा। आपणी इच्छया सच भण्डारा, सो पुरख निरँजण आप उपाईआ। हरि पुरख निरँजण बण वरतारा, एकँकारा झोली रिहा भराईआ। आदि निरँजण पावे सारा, अबिनाशी करता वेख वखाईआ। श्री भगवान दए सहारा, पारब्रह्म प्रभ ख़ुशी मनाईआ। सच सुहाए सचखण्ड सोभावन्त महल्ल अटल उच्च मनारा, निरगुण आपणा रूप रखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप दरसाईआ। आपणी इच्छया हरि निरँकार, आप आपा विच प्रगटाइंदा। निरगुण निरगुण कर विचार, साची बणत आप बणाइंदा। निरगुण बाढी बण तरखाण, साचा घाड़त आप घड़ाइंदा। सच सिँघासण कर त्यार, पावा चूल ना कोए रखाइंदा। आपे होए वेखणहार, वेखणहारा दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण सोभावन्त, आप सुहाए श्री भगवन्त, सचखण्ड दुआरे आप रखाइंदा। सच सिँघासण हरि सुहञ्जणा, दर घर साचे आप सुहाईआ। करे खेल आदि निरँजणा, आदि पुरख वडी वड्याईआ। निर्भय होए भय भञ्जणा, भउ अवर ना कोए जणाईआ। आपे बणे आपणा साचा सज्जणा, सगला संग आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण दए वड्याईआ। सच सिँघासण कर त्यार, हरि साचा वेख वखाइंदा। कवण रूप करां अपर अपार, रूप अनूप कवण वटाइंदा। कवण भूप बणां शाह सिक्दार, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। आपे हुक्म धुर फ़रमाना, हरि साचा आप जणाईआ। आपे भूप आपे राणा, आपे करे साची शाहीआ। आपे दर आप दरबाना, दरवेश आपणा नाउँ धराईआ। साचा तख्त आप सुहाना, तख्त निवासी डेरा लाईआ। सचखण्ड दुआरा सच मकाना, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। ना कोई राग ना कोई गाणा, तार सतार ना कोए हिलाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवाना, सच महल्ला आप वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आप सुहाईआ। सच सिँघासण सचखण्ड दुआरा, हरि साचा आप सुहाइंदा। उप्पर बैठ हरि निरँकारा, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। आपणी इच्छया सच भण्डारा, आपणे हथ्थ रखाइंदा। ना कोई दूसर मीत मुरारा, सगला संग ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत आप बणाइंदा। साची बणत हरि भगवान, शाह पातशाह आप बणाईआ। सो पुरख निरँजण हो प्रधान, आपणा मुख लए खुल्हाईआ। हरि पुरख निरँजण गाए गान, निरँकारा सुण सुण ख़ुशी मनाईआ। आदि निरँजण करे परवान, अबिनाशी करता लेखे पाईआ। पंचम रूप नौजवान, पंचम धार लए प्रगटाईआ। पंचम मुख इक्क निशान, निरगुण आपणा आप उपाईआ। सीस रक्ख श्री भगवान, जगदीस ख़ुशी मनाईआ। तख्त निवासी राज राजान, इक्क इकल्ला आप अख्वाईआ। पंचम मुख कर प्रधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया रचना रूप वखाईआ। पंचम मुख कर प्रधाना, हरि पंचम खेल खिलाया। इक्क इकल्ला नौजवाना, निरगुण आपणा रूप धराया। एका नाद इक्क तराना, शब्द अनादी एका गाया। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका घर वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग

आप रंगाया। आपणा रंग आपे रंग, सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। हरि पुरख निरँजण सुहाए सच पलँघ, सति सुहञ्जणी सेज हंढाइंदा। एकँकारा वजाए मृदंग, सच मृदंगा हथ्थ उठाइंदा। आदि निरँजण सूरा सरबंग, सूरबीर भेव ना आइंदा। श्री भगवान सदा बख्शंद, आपणी बख्शश आपणे हथ्थ रखाइंदा। अबिनाशी करता गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर खेल खिलाइंदा। पारब्रह्म आप उपाए आपणी बिन्द, नारी कन्त आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी चरना आप उपाइंदा। नारी कन्त बण भतार, सचखण्ड दुआर सोभा पाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी खेल आप कराइंदा। निरगुण पुरख निरगुण नार, निरगुण निरगुण सेज हंढाइंदा। निरगुण इच्छया भिच्छया भर भण्डार, साची वस्त हथ्थ रखाइंदा। निरगुण घर विच घर करे त्यार, सचखण्ड अंदर थिर घर दुआरा आप प्रगटाइंदा। दाई दाया आपणा बणे आप निरँकार, आपणी सेवा आप कमाइंदा। आपणे अंदरों जोती सुत कढ्ढे बाहर, शब्दी नाउँ धराइंदा। थिर घर साचे कर पसार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बंस आप सुहाइंदा। सुत दुलारा हरि निरँकारा, आपणा आप उपाईआ। थिर घर देवे आप हुलारा, चार कुण्ट आप जणाईआ। पिता पूत कर प्यारा, एका गुण दए समझाईआ। तेरा रंग अपर अपारा, दिस किसे ना आईआ। तेरा मृदंग वज्जे नगारा, सचखण्ड निवासी आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याईआ। एका शब्द शब्द हरि सार, हरि साचे आप उपाया। एका पुरख पुरख हरि नार, एका कन्त सुहाग हंढाया। एका मन्दिर इक्क दुआर, एका बैठा आसण लाया। एका हुक्म इक्क वरतार, एका रिहा सीस झुकाया। एका शाह पातशाह सच्ची सरकार, एका दर दरबान सेव कमाया। एका निउँ निउँ करे सदा निमस्कार, एका वेखे सहिज सुभाया। आदि पुरख हरि हो त्यार, सचखण्ड आपणा रूप धराया। सचखण्ड निवासी खोल्ह किवाड़, थिर घर घाड़त लए घड़ाया। थिर घर अंदर शब्द दुलारा वाड़, आपणा हुक्म दए सुणाया। तेरा मेरा इक्क विहार, एका राह जणाया। भुल ना जाणा बण गंवार, बाली बुध ना कोए रखाया। तेरे सिर हथ्थ रक्खे आप निरँकार, सीस जगदीस होए सहाया। तेरा रथ चले अपार, रथ रथवाही आप चलाया। तेरी महिमा अकथ गाए अगम्म अपार, आपणा लेखा दए समझाया। देवे वस्त इक्क हरि थार, अतोट अतुट रखाया। तेरा अन्तर मेरा प्यार, मेरा मन्त्र तेरा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे चढ़, थिर घर वेखे हरि जू खड़, शब्दी सुत आप समझाया। शब्द सुत हरि समझा, आपणा भेव चुकाइंदा। निरगुण गुरु निरगुण चेला निरगुण बणे मलाह, निरगुण बेड़ा आप चलाइंदा। निरगुण सिफ्त निरगुण सालाह, निरगुण वेखे हर घट थाँ, अपणा पर्दा आप उठाइंदा। निरगुण

पिता निरगुण मां, निरगुण रखाए साचा नाँ, नाउँ निरँकारा आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, थिर घर वासा पुरख अबिनाशा, सुत दुलारा कर कर वासा, साची सेवा इक्क वखाइंदा। साची सेवा हरि निरँकार, सुत दुलारे आप जणाईआ। तेरा करां अगम्म पसार, आपणे हथ्थ रक्खां वड्याईआ। तेरा रूप धरां संसार, रूप अनूप आप धराईआ। आपणे अंदरों कढ्ढां बाहर, आपे बणां पिता माईआ। आपे विष्न होए उज्यार, निराकार साकार रूप अख्वाईआ। आपे अमृत चरन कँवल देवे ठंडी ठार, आपणा झिरना आप झिराईआ । आपे फुल खिड़े गुलज़ार, कँवल फुल आप महिकाईआ। आपे पारब्रह्म आपणी वण्ड वण्डे आपणी वार, वण्डणहारा आप हो जाईआ। आपे विष्नूं नाभी देवे पाड़, मुख आपणा बाहर कढ्ढाईआ। आपे पंखड़ीआं वेखे खिड़े गुलज़ार, पत्त डाल्ही आप महिकाईआ। आपे पारब्रह्म ब्रह्म लए उभार, ब्रह्म वेता नाउँ धराईआ। आपे करे खेल खेलणहार, सुन अगम्म धूंआँधार आप रखाईआ। आपे शंकर पावे सार, आप आपणा हुक्म जणाईआ। शब्द सुत तेरा इक्क आधार, शाह पातशाह आप जणाईआ। तेरा हुक्म धुर फ़रमान, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। करे कराए करता पुरख सुजान, कुदरत रूप आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जाता पुरख बिधाता, बैठा रहे इक्क इकांता, आदि पुरख अबिनाशी करता आपणा बन्धन आपे पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हरि उपजा, शब्दी शब्द बन्धन पाइंदा। एका रूप दए दरसा, रूप अनूप आप जणाइंदा। एका नैण दए खुल्हा, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। एका मन्दिर दए वखा, थिर घर आपणा रंग रंगाइंदा। इक्क महल्ला दए जणा, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। इक्क सिंघासण दए सुहा, शाह पातशाह आसण लाइंदा। एका सीस दए जणा, पंचम मुख ताज सुहाइंदा। एका हुक्म दए वरता, आपणा भाणा वड वड्यांअदा। तिन्नां विचोला बण बेपरवाह, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। आप आपणा नाउँ जणा, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। साची सेवा सच रखा, सति सतिवादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका धारा आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव साची धार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। शब्द मेला अपर अपार, मेल मिलावा एका थाँ कराईआ। निरगुण निरगुण करे प्यार, सरगुण सरगुण बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, वसणहारा साचे घर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा, सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा आपणा आप खुल्हाईआ। सचखण्ड दुआरा हरि हरि खोल्ह, सच सिंघासण आसण लाइंदा। आपणा मन्त्र आपे बोल, ब्रह्मा विष्न शिव पढ़ाइंदा। एका अक्खर रक्खे कोल, निष्अक्खर रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग हरि हरि दस्स, विष्न करे पढ़ाईआ।

ब्रह्मे ब्रह्म होया वस, पारब्रह्म समझाईआ। शंकर मेला हस्स हस्स, घर वजदी रहे वधाईआ। तिन्नां बन्ने एका डोरी कस, शब्द डोर हरि बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अदि पुरख अबिनाशी आदि रचना आप रचाईआ। विष्नूं तेरी साची कार, हरि साचा सच समझाइंदा। एका अतुट्ट दए भण्डार, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म पसार, पारब्रह्म प्रभ हुक्म सुणाइंदा। शंकर तेरा खेल न्यार, जो घड़या भन्न वखाइंदा। तिन्नां विचोला सिरजणहार साची सेव समझाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, हुक्म हाकम आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप अलाइंदा। धुर फ़रमान श्री भगवन्त, आपणा आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणाई बणत, मात पित ना कोए अख्वाईआ। आपणी महिमा गणाए अगणत, अलख अलखणा लेख ना लिख्या जाईआ। इक्क सुणाए साचा मंत, लिखण पढ़न विच ना आईआ। लक्ख चुरासी बणाउणी बणत, त्रैगुण आपणी वण्ड वंडाईआ। पंज तत्त मिलावा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाईआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ना, हरि साचा सच समझाइंदा। इक्क दूजे दा लड़ फड़ना, सगला संग इक्क वखाइंदा। त्रैगुण माया जड़त जड़ना, पंचम मेला मेल मिलाइंदा। पुरख अबिनाश अचरज खेल आपे करना, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी वण्ड वंडाइंदा। घट घट अंदर आपे वड़ना, जोती जाता एका जोत डगमगाइंदा। शब्द अनादि एका धरना, घट घट मन्दिर ताल वजाइंदा। अमृत सरोवर एका तरना, कँवल नाभ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच संदेश आप सुणाइंदा। सच संदेसा सुण कन्न, सो पुरख निरँजण आप जणाया। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण धन्न धन्न, दर बैठे सीस झुकाया। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ना तेरा जननी जन, धन्न धन्न जणेंदी माया। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साडा बेड़ा देणा बन्न, दूसर दर ना कोई सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, दोए दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तूं साहिब दाता बेऐब परवरदिगार, तेरा रूप अनूप नज़र किसे ना आईआ। तूं वसणहारा सचखण्ड ठांडे दरबार, दर घर साचे दए वधाईआ। हउँ भिखक मंगदे बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। तेरा हुक्म वरते विच संसार, लक्ख चुरासी घाड़त लए घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला कवण वक्त लोकमात आपणी वेखे सर्ब लोकाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका तत्त जणाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ा, त्रैगुण बन्धन पाइंदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मेल मिला, काया बंक सुहाइंदा। चारे खाणी वण्ड वण्डा, चारे बाणी आप प्रगटाइंदा। चारे जुग खेल खिला, चारे वरन रंग रंगाइंदा।

चार वेद दए पढ़ा, ब्रह्मा वेता आप समझाइंदा। चारे कूटां फेरा पा, आपणा हुक्म सुणाइंदा। जुग चौकड़ी वेस वटा, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। धुर संदेसा दए सुणा, गुर अवतार सेव लगाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग खेल खिला, ख़ालक आपणे रंग रंगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दर ध्या, हरि साचा पर्दा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपणा भेव खुल्हावणहारा, एका शब्द करे जणाईआ। जुग जुग आवां वारो वारा, लोकमात करां रुशनाईआ। नौ नौ वेखां विच संसारा, कोटन कोटि रूप धराईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग अन्तिम करे पार किनारा, थिर कोई रहिण ना पाईआ। विष्नूं तेरी पावे सारा, विष्न आपणा खेल खिलाईआ। ब्रह्मा तैनूं दए सहारा, तेरा ब्रह्म रूप वेख वखाईआ। शंकर तेरा वेखे अखाड़ा, नौ खण्ड पृथ्मी वण्ड वंडाईआ। निरगुण नूर जोत करे उज्यारा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, मध्ध आपणी खेल खिलाईआ। मध्ध खेल हरि करतार, जुग चौकड़ी आप खिलाइंदा। जुगा जुगन्तर पावे सार, दो जहानां वेख वखाइंदा। चोदां लोक हट्ट खोल्ह किवाड़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा हुक्म वरताइंदा। गगन पाताला दए अधार, ज़िमीं अस्माना फोल फोलाइंदा। सेवा लाए रवि ससि सूरज चन्द सतार, कोह करोड़ी चलत अन्त कोई ना पाइंदा। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड, डूँघी कंदर आसण लाइंदा। समुंद सागर वरोले आपणी वार, रतन अमोलक बाहर कढाइंदा। साची गोलक कर त्यार, धरनी धरत धवल आप टिकाइंदा। नाम अमोलक विच संसार, जुग जुग आपणा आप वरताइंदा। आदि जुगादि रहे अडोलत, लक्ख चुरासी आप डुलाइंदा। जन भगतां मेल मिलाए हरि अनबोलत, रसना जिहवा ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा देवे एका वर, शिव आपणे अंग लगाइंदा। नव नौ चार उतरे पार, हरि साचा सच सुहाइंदा। सो पुरख निरँजण हो त्यार, हरि पुरख निरँजण नाल मिलाइंदा। एकँकारा खेल अपार, आदि निरँजण डगमगाइंदा। अबिनाशी करता ख़बरदार, श्री भगवान डगमगाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो त्यार, ब्रह्म ब्रह्म हर घट वेख वखाइंदा। विष्नूं तेरे वेखे भण्डार, लक्ख चुरासी फोल फोलाइंदा। शंकर तेरी वेखे तिक्खी धार, त्रिसूल हथ्थ फड़ाइंदा। बाशक तशका तेरा शंगार, तेरे कंठ पहनाइंदा। जटा जूट तेरी विचार, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। चारों कुण्ट पावे सार, दहि दिशा फेरा पाइंदा। आपणा कीता कौल भुल ना जाए हरि निरँकार, शब्दी आपणा रूप वटाइंदा। जोती जाता आपे वेखे खेल तमाशा, पृथ्मी आकाशा आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि अन्त हरि आपणे रक्खया हथ्थ, वेद कतेब भेव ना राईआ। जुग

चौकड़ी चलाया रथ, रथवाही सेव कमाईआ। नाम अमोलक दे दे वथ, गुर अवतार सेव कमाईआ। मार्ग ला ला अठसठ, तीर्थ तट दए वड्याईआ। बणा बणा मन्दिर मस्जिद गुरदुआरा मठ्ठ, शिवदुआला जगत समझाईआ। भगतां देवे एका मति, ब्रह्म मति आप समझाईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। एका बख्शे धीरज जत, सति सन्तोख झोली पाईआ। चरन कँवल बंधाए साचा नत, जगत नाता तोड़ तुड़ाईआ। जोत जगाए लट लट, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। अमृत वखाए काया मट, सच प्याला हथ्थ रखाईआ। शब्द अगम्मी मारे सट्ट, बजर कपाटी दए तुड़ाईआ। सुणाए राग एका अनहद, तार सतार ना कोए हिलाईआ। नाम प्याला प्याए मदि, नशा उतर कदे ना जाईआ। सन्त सुहेले घर विच सद्द, आप आपणा मेल मिलाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ, साचे मन्दिर लए बहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लडाए लड, आप आपणी दया कमाईआ। आप सुहाए आपणी यद्द, विष्नूं वंसी आप अख्वाईआ। दो जहानां जाणे हद्द, आर पार किनारा आपे रिहा बणाईआ। आपे वसे सचखण्ड, आपे लोकमात फेरा पाईआ। आपे वेखे लक्ख चुरासी नार दुहागण जीव रंड, आपे गुरमुख लए मिलाईआ। आपे देवणहारा दंड, जुग जुग आपणा हुक्म सुणाईआ। आपे मेटे भेख पखण्ड, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। आपे लेखा जाणे सर्ब ब्रह्मण्ड, लोआं पुरीआं फोल फोलाईआ। आपे पर्दा लाहे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आपणी रचन रचाईआ। आपे सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट ना लए बदलाईआ। आपे करे खण्ड खण्ड, जो घड़या सो भन्न वखाईआ। आपे लेखा जाणे सूरज चन्द, किरन किरन रुशनाईआ। आपे चौदां चौदां बेड़ा बन्न्ह, आपे सोलां सोलां बन्धन पाईआ। आपे होए कल्लर कंध, आपे शौह दरयाए दए रुढ़ाईआ। आप सुणाए सुहागी छन्द, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। अन्त मुकाए लोकमात पन्ध, जुग चौकड़ी आपणे विच खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचे हरि, आपणा भेव आप जणाईआ। भेव जणाया श्री भगवान, शब्द अनादी बोल। नव नौ चार खेल महान, करे कराए बैठ अडोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लक्ख चुरासी तोले आपणे तोल। साचा तोल तोलणहारा, एका हुक्म सुणाइंदा। कलिजुग अन्तिम आए विच संसारा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा। लेखा लिखे अपर अपारा, वेद व्यासा आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल न्यारा, कलिजुग आपणा रंग रंगाइंदा। हक हकीकत बोल जैकारा, लाशरीक खेल खिलाइंदा। नानक निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका नाम बणे वरतारा, चार वरनां आप वरताइंदा। अन्तिम बोले एका नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। महांबली हरि करतारा, दूसर अवर ना कोए रखाइंदा। आपे उतरे आपणी वारा, मात पित ना कोए जाइंदा।

एका जोती दस अवतारा, गुर गोबिन्द रंग चढ़ाइंदा। पुरख अकाल सुत दुलारा, सिँघ रूप आप वटाइंदा। चार वरनां करे प्यारा, अमृत जाम प्यांअदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाइंदा। पंचम मीता पंचम आधारा, पंचम मोह मिटाइंदा। सच भण्डारा अमृत ठंडा ठारा, अंमिउँ रस आपणा मुख चुआइंदा। अन्तिम बोल तोल अडोल कहे सर्ब संसारा, भेव अभेव आप मिटाइंदा। पुरख अबिनाशी आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लोकमात मार झात लक्ख चुरासी पावे सारा, भुल कदे ना जाइंदा। कलिजुग अन्तिम आए किनारा, लक्ख चार बत्ती हज़ार ना उतरे पारा, मँझधार आप रुढ़ाइंदा। जीवां जंतां कर विभचारा, नार कन्त ना करे प्यारा, मात पित सेव ना कोए कमाइंदा। चारों कुण्ट गढ़ हँकारा, जूठ झूठ लगाए नाअरा, सच सुच्च नज़र कोए ना आइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अन्तिम प्रगट होवे महांबली निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जोत जोत जगाइंदा। सम्बल नगर वसे धाम न्यारा, महल्ल अटल सुहाए इक्क चुबारा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, लोआं पुरीआं करे ख़बरदारा, चौदां तबकां दए हुलारा, ज़िमीं अस्माना वेखे पाड़ा, गगन पातालां आप उठाइंदा। शाह सुल्तानां मारे मारा, चारे वरनां करे ख्वारा, अठारां बरनां हाहाकारा, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। एका मन्त्र जै जैकारा, आत्म परमात्म मेल मिलाए विच संसारा, साचा मन्दिर कर प्यारा, काया बंक आप सुहाइंदा। एका गुर इक्क अवतारा, आवे जावे वारो वारा, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता अन्त आपणा खेल खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाउणा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। निरवैर आपणा नाउँ धराउणा, मूर्त अकाल सर्ब दए दरसाईआ। अनुभव प्रकाश आप कराउणा, अनुभव हरिजन दए खुलाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका घर बहाउणा, ज़ात पात ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। घट घट अंदर दीप जोत जगाउणा, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। फड़ फड़ काग हँस बणाउणा, सोहँ हँसा चोग चुगाईआ। एका जोग सच समझाउणा, संगम तीर्थ इक्क वखाईआ। सभ दा रोग हउमें दुःख मिटाउणा, माया ममता मोह दए मिटाईआ। शब्द सलोक इक्क सुणाउणा, ब्रह्म पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। चौदां लोक रंग लगाउणा, त्रैभवण वज्जे वधाईआ। अवण गवण फंद मिटाउणा, जम फास रहिण ना पाईआ। सर्ब गुण तास नज़री आउणा, गुणवन्ता इक्क शहिनशाहीआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, सति धर्म इक्क दृढ़ाईआ। कलिजुग अग्नी अग्ग बुझाउणा, तत्व तत आप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त श्री भगवन्त आपणा भेव दए खुलाईआ।

★ १६ जेठ २०१८ बिक्रमी धन्नो देवी दे गृह छम्ब जम्मू ★

ज्ञान नेत्र नाम अञ्जण, गुर सतिगुर सज्जण पाइंदा। चरन धूढ़ सरोवर मजन, गृह मन्दिर आप कराइंदा। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर परदे कज्जण, हरि का नाउँ पर्दा इक्क रखाइंदा। जगत विकार जो जन तजण, त्रैगुण अतीता मेल मिलाइंदा। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, हउमे गढ़ आप तुड़ाइंदा। जगत तृष्ना गुरमुख ना दझण, अमृत मेघ आप बरसाइंदा। इक्क चढ़ाए सच जहाज़न, एका बेड़ा हथ्थ रखाइंदा। हरिजन मेले हरि ग़रीब निवाज़ण, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। अश्व घोड़ा देवे ताजण, शब्दी आपणा नाउँ दौड़ाइंदा। लोकमात जुगा जुगन्तर रच रच काजण, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। शाहो भूप बण वड वड राजन, शाह सुल्तानां आप खपाइंदा। एका मृदंग वजाए साचा नादन, ब्रह्मण्ड खण्ड आप सुणाइंदा। लेखा जाणे अन्त आदिन, आदि अन्त आपणी खेल खिलाइंदा। रचना रच रच ब्रह्म ब्रह्मादन, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाइंदा। शब्द जणाई बोध अगाधन, बोध अगाधा भेव चुकाइंदा। थिर घर निवासी सचखण्ड सुहाए इक्क सिँघासण, सोभावन्त सोभा पाइंदा। निरगुण जोत जोत प्रकाशन, नूरो नूर डगमगाइंदा। हुक्मी हुक्म शाहो शाबाशन, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशन, पृथ्मी आकाश खेल खिलाइंदा। जन भगतां पूरी करे आसण, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। निज आत्म कर कर वासन, वासदेव आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर सुहाए सोभावन्त, सो सुहञ्जणा रूप वटाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेअन्त, बेअन्त आपणी कल धराईआ। हरिजन वेखे साचे सन्त, सति सतिवादी वेख वखाईआ। एका नाम दृढ़ाए मणीआ मंत, मन का भउ सर्ब चुकाईआ। देवे वड्याई विच जीव जंत, जंत जीव कर रुशनाईआ। नाम वासना दए सुधंत, सुगंध आपणी महिक वखाईआ। तत्त विचोला बणाए बणत, चोला काया आप हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खिलाईआ। काया चोला पंज तत्त, निरगुण सरगुण आप उपाइंदा। बीज बीजे साचे वत, पत्त डाल्ही आप महिकाइंदा। फुल फुलवाड़ी लाए हड्ड मास नाड़ी रत, लाल गुलाला रंग चढ़ाइंदा। आपे वेखे पुरख समरथ, नेत्र नैण आप खुल्हाइंदा। आपणी चरना आपे रच, आपणा बंक आप सुहाइंदा। आपे अंदर वड़े सच्च, सुच्च आपणी धार बंधाइंदा। भाग लगाए काया कच्च, कंचन आपणा गढ़ बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराइंदा। काया मन्दिर वेस अवल्ला, वाहवा सतिगुर आप बणाईआ। घर विच घर धाम अटल्ला, उच्च मुनारा दए वड्याईआ। आत्म सेजा आसण मल्ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती नूर आपे रला,

६८२

नूर नुराना डगमगाईआ। सच संदेस एका घल्ला, अनहद नाद नाद वजाईआ। ब्रह्म फड़ाए आपे पल्ला, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाना, ब्रह्म आपणे रंग रंगाइंदा। साचा खेल करे श्री भगवाना, भगवन आपणा रूप धराइंदा। सति रखाए इक्क निशाना, नाम निशाना हथ्थ उठाइंदा। लोकमात हो प्रधाना, डंका डौरू आप वजाइंदा। गुरमुख साचा वेखे चतुर सुजाना, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। एका बख्शे पद निरबाना, निर्भय आपणा मेल मिलाइंदा। सति सतिवादी बन्ने गाना, जुग जुग साचा सगन मनाइंदा। नारी नर नरायण कन्त करे इक्क परवाना, धुर फ़रमाना शब्द सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला आपे कर, वाह वा गुर गुर वेख वखाइंदा। गुर पेखत गुर भए निहाल, गुर सेवक सेव कमाईआ। गुर साहिब गुर दीन दयाल, गुर देवी देव अख्वाईआ। गुर काल गुर महाकाल, गुर लक्ख चुरासी दए मुकाईआ। गुर मन्दिर गुर धर्मसाल, गुर पूजा पाठ वखाईआ। गुर शाह गुर कंगाल, गुर शाह पातशाह रूप धराईआ। गुर ठग्ग गुर दलाल, गुर ठग्गी दलाली आप कमाईआ। गुर अग्ग गुर दीपक जोती देवे बाल, गुर अग्नी तत्त बुझाईआ। गुर अमृत गुर विख आपणा रूप दए वखाल, गुरसिख गुर निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गुर तृष्ना गुर भुक्ख, गुर दर दर घर घर फेरी पाईआ। गुर शब्द गुर लेखा लिख, लिख्या लेखा दए मिटाईआ। गुरमुख विरला गुर गुर लए पेख, जिस जन आपणा नैण दरसाईआ। जीव जगत जन जाणे भेख, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गुरसिख गुर मन्दिर बैठे एका धाम सुहाईआ।

★ १६ जेठ २०१८ बिक्रमी ईश्वर सिंघ दे गृह पिण्ड दड़ जम्मू ★

शाहां सिर शाह, सो पुरख निरँजण हरि अख्वाइंदा। दो जहानां बण मलाह, हरि पुरख निरँजण सेव कमाइंदा। नाम निधाना आप उपा, एकँकारा नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। आदि निरँजण नूर धरा, जोती जाता पुरख बिधाता नूरो नूर नूर प्रगटाइंदा। अबिनाशी करता देवणहारा सच सलाह, साचा मार्ग इक्क जणाइंदा। श्री भगवान वेखणहारा थाउँ थाँ, अभुल भुल कोए ना जाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बेअन्त बेपरवाह, अगम्म अथाह निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहत आपणा रंग आप रंगाइंदा। सचखण्ड दुआरा सच महल्ला इक्क सुहा, निहचल धाम अटल्ला बैठा आसण ला, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। थिर घर साचे चरन टिका, हरि मन्दिर हरि हरि दए सुहा, निरगुण निराकार निरवैर अनुभव प्रकाश कराइंदा। राज राजाना

शाह पातशाह, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, राज राजाना नाउँ धराइंदा। राज राजाना हरि निरँकारा, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। साचे तख्त बहे सच्ची सरकारा, दो जहानां मार्ग लाईआ। शब्द अनाद धुर फ़रमाना, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। एका राग इक्क तराना, तार सितार इक्क हिलाईआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका बंक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। शाह पातशाह श्री भगवान, दर घर साचे सोभा पाइंदा। सति सरूपी सति निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। आपणा खेल करे महान, खेलणहारा दिस ना आइंदा। पूत सपूता कर परवान, एका हुक्म सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रधान, त्रैगुण मेला पंचम चेला साचा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह आपणा खेल खिलाइंदा। शाह पातशाह श्री भगवन्त, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग करता कुदरत कादर आपणा खेल खिलाइंदा। आपणी महिमा आपे जणाए बेअन्त, बेअन्त आपणा नाउँ रखाइंदा। साचा धाम इक्क सुहंत, सचखण्ड दुआरे आसण लाइंदा। वेस वटाए जुगा जुगन्त, निरगुण सरगुण रूप धराइंदा। लक्ख चुरासी बणाए बणत, घाड़न घड़त आप घड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह शाह सुल्ताना, हरि जू हरि हरि मर्द मरदाना, सच मरदानगी आप कमाइंदा। मर्द मरदाना पुरख अबिनाश, वड दाता बेपरवाहीआ। साचे मन्दिर साचे मंडल पावे रास, रूप अनूप आप वटाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर ना जाए विनास, आपणी कल आप धराईआ। हर घट अंदर रक्खे वास, लक्ख चुरासी रिहा समाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मंडल मण्डप आपणा रंग वखाईआ। करे वसेरा जंगल जूह उजाड़ प्रभास, समुंद सागर डूँघी कंदर गहर गम्भीर गुणवन्ता आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह, एकँकारा आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। एका नाउँ कर प्रधान, लोकमात डंक वजाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे ज्ञान, ज्ञान नेत्र आप खुल्हाइंदा। लेखा लिख लिख घल्ले परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। आत्म ब्रह्म ब्रह्म निशान, पारब्रह्म प्रभ वण्ड वंडाइंदा। सर्ब जीआं एका हुक्मरान, लक्ख चुरासी रईयत आपे प्रगटाइंदा। आत्म जीआ देवे दान, दाता दानी एका वस्त अमोलक झोली पाइंदा। एका नूर जोती जोत करे प्रकाश कोटन भान, काया कंचन गढ़ सुहाइंदा। आत्म राम साचा काहन, साचे मन्दिर वसे मकान, आत्म सेजा निरगुण पलँघ आपणा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राज राजाना शाह सुल्ताना आदि जुगादी नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा।

६८३

बिरध बाल ना हरि का रूप, एका रंग समाईआ। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी ताणा तणया एका ताणा पेटा सूत, एका पाण लए चढ़ाईआ। फुल फुलवाड़ी एका वक्त आप सुहाए साची रुत्त, कँवल कँवला आप खिलाईआ। लेखा जाणे पंज तत्त बुत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणी वण्ड वंडाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, हुक्मी हुक्म आप फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, सिर शाहां शाह आप हो जाईआ। शाह शाहाना हरि गोबिन्द, सूरबीर खेल खिलाइंदा। हरख सोग ना कोई चिन्द, चिंता चिखा ना कोए रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव उपजाए आपणी बिन्द, लक्ख चुरासी आपणा बन्धन पाइंदा। आसा तृष्ना पूरी करे सुरपति राजा इन्द, करोड़ तेतीसा खेल खिलाइंदा। गहर गम्भीर गुणी गहीर सागर सिन्ध, पुरख अबिनाशी आपणा डूँघर हाथ ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म सच संदेस नर नरेश रिहा घल, जुग जुग मात आप सुणाइंदा। जुग जुग मात हरि का नाउँ, लोकमात वज्जे वधाईआ। देवे संदेसा एका थाउँ, थान थनंतर इक्क सुहाईआ। लक्ख चुरासी बणे पिता माउँ, बाल अञ्याणे गोद उठाईआ। हरिजन हरिभगत भगवन फड़े आपे बाहों, लेखा अलेख वेख वखाईआ। सिर रक्खे सदा ठंडी छाउँ, समरथ पुरख वड वड्याईआ। अमृत जाम प्याए निझर झिरना रस हँस बणाए काउँ, कागों हँस आप उडाईआ। निथांविआं देवे साचा थाउँ, दरगाह साची धाम सुहाईआ। जुगा जुगन्तर निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण लोकमात करे सच न्याउँ, गुर अवतार आपणा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त बैठा सच्चा शहिनशाहीआ। साचा तख्त सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। जुगा जुगन्तर करे खेल दर्द दुःख भय भञ्जणा, दीनां नाथां दर्द दुःख आप वंडाइंदा। सन्त सुहेला वेखे सज्जणा, सतिगुर साजन मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म एका हाकम, हरि फ़रमाना इक्क रखाइंदा। इक्क फ़रमाना धुर दी धार, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करदा आया सच विहार, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, खेल अवल्ला इक्क इकल्ला करे कराए बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह शाहाना रूप वटाईआ। शाह शाहाना रूप धर, हरि साचा खेल खिलाइंदा। नाउँ रखाए नरायण नर, नर हरि नरायण आप हो आइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख हुक्म वरताइंदा। साचे मन्दिर रिहा चढ़, उच्चा टिल्ला आप सुहाइंदा। छप्पर छन्न ना कोए दिसे चार दीवार, बाढी बणत ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्ला, निहकलंका नाउँ रखाईआ। कलिजुग सतिजुग फड़ाए आपणा

पल्ला, कलिजुग सतिजुग रूप वटाईआ। सच संदेस एका घल्ला, गोबिन्द हाल मुरीदां रिहा सुणाईआ। सूलां सत्थर जगत सिँघासण एका मल्ला, एका घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दो जहान करे सच्ची शहिनशाहीआ । कलिजुग अन्तिम सच्चा शाह, शाह सुतलाना हुक्म जणाइंदा। चारों कुण्ट अन्धेरा गया छा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। चारे वरन रहे कुरला, बरन अठारां धीर ना कोए धराइंदा। गुर का शब्द ना सके कोए कमा, आत्म अन्तर ना कोए वसाइंदा। गोबिन्द सूरा किसे मिले ना, नेत्र लोचण नैण ना कोए खुल्हाइंदा। नानक पल्ला ना ल्ए फड़ा, नाम सति सति घर ना कोए वखाइंदा। कलिजुग डूँघी भँवरी लक्ख चुरासी गोता रही ला, इष्ट देव ना कोए रखाइंदा। निरगुण जोत ना सके कोए जगा, आत्म पर्दा ना कोए उठाइंदा। काया सरोवर सके ना कोए नहा, अठसठ नीर सर्ब कुरलाइंदा। काया मन्दिर दर दरवाज़ा ना सके कोए खुल्हा, गुरदुआरा नज़र किसे ना आइंदा। पढ़ पढ़ थक्के भुल्लया बेपरवाह, पढ़ाउण वाला दिस किसे ना आइंदा। माया ममता मोह बन्धन बैठे पा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर आसण लाइंदा। परमानंदन बैठे गंवा, जगत मदि जगत विकार जगत संग निभाइंदा। पुरख अबिनाशी वेखणहारा थाउँ थाँ, नव खण्ड सत दीप फोल फोलाइंदा। नाता तुट्टा पुत्तर मां, पिता पूत ना वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अबिनाशी एका हरि, कलिजुग अन्तिम धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। कलिजुग अन्तिम अन्ध अन्धयारा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, लेखा लिख लिख गया समझाईआ। नानक सतिगुर बोल जैकारा, पुरख अकाल एका राह तकाईआ। महांबली उतरे विच संसारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गोबिन्द कूके करे पुकारा, पुरख अकाल अग्गे सीस झुकाईआ। पिता पूत इक्क प्यारा, एका मन्दिर बह बह करन सालाहीआ। कलिजुग दिसे धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिभगत हरिजन साचे सन्त रोवण ज़ारो ज़ारा, अठ्ठे पहर ध्यान लगाईआ। मूर्ख मूढ़े कलिजुग धन्दे लग्गे जीव गंवारा, भोग बलास रंग रलीआं रहे मनाईआ। किसे ना दिसे पार किनारा, डूँघे सागर डुब्बा संसारा, शौह दरया बेड़ा रिहा चलाईआ। पुरख अबिनाशी पावे सारा, निरगुण निरगुण हो उज्यारा, गोबिन्द मीता नाल प्यारा, लोकमात करे रुशनाईआ। जोती जामा शाह सिक्दारा, सम्बल नगर धाम न्यारा, सच सिँघासण सोहे सोभावन्त इक्क इकल्ला एकँकारा, नज़र किसे ना आईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड रखाए आपणी वारा, लुहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मारे मारा, लक्ख चुरासी करे ख्वारा, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। एका हुक्म वरते वरतारा, हरि का नाउँ शाही लशकर सभ तों भारा, ना मरे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम दर दुआरा, अष्टभुज

करे निमस्कारा, सिँघ सिँघासण आसण लाईआ। चक्कर सुदर्शन एका चक्कर लगाए सर्ब संसारा, हरि का तेज नज़र किसे ना आईआ। वाह वा गुर सतिगुर करे खेल अपारा, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। गुरमुख विरले बख्शे एका दर दुआरा, दर दरवाज़ा काया बंक खुल्हाईआ। दिवस रैण रैण दिवस अठ्ठे पहर घड़ी पल नज़री आए नर निरँकारा, निरगुण जोत जोत जोत रुशनाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आपणे गले लगाईआ। शाह पातशाह सच्ची सरकारा, शहिनशाह एकँकारा इक्क इकल्ला जुगा जुगन्तर राज कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त अन्त आदि आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ।

★ १६ जेठ २०१८ बिक्रमी लभ्भू राम दे गृह पिण्ड जौड़ीआं जम्मू ★

हरि सतिगुर सदा मेहरवान, कर्म धर्म ना कोए जणाइंदा। हरि सतिगुर सदा मेहरवान, जीआ दान झोली पाइंदा। हरि सतिगुर सदा मेहरवान, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। हरि सतिगुर सदा मेहरवान, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। हरि सतिगुर सदा मेहरवान, काया चोली रंग बसन्ती इक्क चढ़ाइंदा। हरि सतिगुर सदा मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर आप वखाइंदा। गुरसिख सदा दीनन दीन, दोए जोड़ करे निमस्कारया। गुरसिख सदा जिउँ जल मीन, जल मीन गुर गुर रूप समा रिहा। गुरसिख सदा गुर अधीन, दोए दोए जोड़ करे निमस्कारया। गुरसिख सदा ठांडा करे सीन, नेत्र लोचण दर्शन पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणे रंग रंगा रिहा। हरि सतिगुर साचा सर्ब गुणवन्त, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। हरिजन उठाए साचा सन्त, सति सुमत्त आप बुझाईआ। आप जणाए आपणी मित गत, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। वस्त अमोलक साचे खाते देवे घत, काया बंक दए वड्याईआ। अंमिउँ रस निझर आत्म दए झट्ट, अमृत मेघ बरसाईआ। लेखे लाए रती रत, अग्नी तत्त दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर होए सहाईआ। गुरसिख सदा करे अरदास, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। गुर सतिगुर वसणा सदा पास, तेरा विछोड़ा सहि ना सकां राईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दे गंवाईआ। निज घर आत्म कर कर वास, घर साचे दे वड्याईआ। तेरा नाउँ सर्ब गुण तास, मेरी आसा मनसा पूर कराईआ। लोकमात ना होए निरास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। सतिगुर पूरा श्री भगवाना, आदि जुगादि अख्वाइंदा। एका देवे नाम निधाना, वस्त अनमुल्लड़ी झोली पाइंदा। गायन गायत्री नाद तराना, धुन अनादी

६८६

मन्त्र आप सुणाइंदा। पूजा पाठ सच अशनाना, इष्ट देव आप रखाइंदा। साचा मन्दिर सच मकाना, घट भीतर आप वखाइंदा। जोती नूर नूर महाना, साचे मन्दिर आप जगाइंदा। पवण हवन इक्क कराना, सच सुगंधी विच समाइंदा। सर्ब जीआं हरि बीना दाना, दाना बीना आप अख्वाइंदा। हरिजन करे दर परवाना, दर घर साचे आप मिलाइंदा। रूप अनूप सईया कान्हा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर दया कमाइंदा। गुरसिख गुर गुर रक्खे आस, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। कवण सो वेला बुझे प्यास, नेत्र लोचण दर्शन पाईआ। होए सहाई विच प्रभास, काया खेड़ा दए वसाईआ। पार कराए पृथ्मी आकाश, गगन मंडल चरनां हेठ दबाईआ। आप आपणा करे दासी दास, दूसर सेव ना कोए जणाईआ। एका बख्शे चरन निवास, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। मन वासना ना होए उदास, चिंता सोग रहे ना राईआ। अट्ठे पहर इक्क स्वास, गुर गुर मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। काया मन्दिर साची रास, गोपी काहन आप नचाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणे नेत्र पेखे आप, निज नेत्र दए खुल्हाईआ। त्रैगुण माया ना चढ़े ताप, काया रोग ना कोए जणाईआ। भाग लगाए साची खाट, आत्म सेजा दए सुहाईआ। लहिणा देण चुकाए आन बाट, मात गर्भ फेर ना आईआ। गुरसिख विकाए आपणे हाट, करता कीमत आपे पाईआ। आप उतारे साचे घाट, सच किनारा इक्क वखाईआ। सदा सुहेला सद वसे पास, दिवस रैण आपणा रंग रंगाईआ। दरस दिखाए बहु बिध भांत, रूप अनूप आप वटाईआ। बैठा रहे इक्क इकांत, सचखण्ड दुआरे आसण लाईआ। बन्द किवाड़ा खोल्हे ताक, जिस जन आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुर गुर मेल मिलाईआ। सतिगुर पूरा शाहो शाबाशा, शाह सुल्तान हरि अख्वाइंदा। जुग जुग वेखे मात तमाशा, लक्ख चुरासी खेल खिलाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा नूर करे प्रकाशा, नूर नूर विच प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बंधाए आपणे लड़, गुर सतिगुर एका बन्धन नाम पाइंदा। गुरसिख बन्धन नाम ज़ंजीर, नेत्र दिस किसे ना आईआ। मन पंखी फड़ फड़ बन्न्हे चोटी चाढ़े अख़ीर, पंखी उड ना दहि दिश धाईआ। लेखा जाणे शाह हकीर, शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। रूप धराए बेनज़ीर, रंग रेख ना कोए वखाईआ। कलम शाही खिच्चे लकीर, जगत मुसव्वर आपणी तस्वीर दए वखाईआ। लिख लिख लेखा घल्लया गुर अवतार पीर, पीर पैग़म्बर आप सुणाईआ। जन भगतां कोल आए घत वहीर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर हरि सतिगुर दया कमाईआ। गुरसिख रक्खी एका टेक, प्रभ मिलण का चाउ। करे कराए बुध बिबेक, ग़रीब निमाणे पकड़े बांहों। जगत माया ना लाए सेक, वेखे थांईं थाउँ। पूर्ब जन्मां

६८७

वेखे लेख, करे कराए सच न्याउँ। चार वरनां वखाए एका देस, साचा नगर खेड़ा काया ग्राउँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मेले आपणे घर, घर मेला बेपरवाहो। हरि सतिगुर दीन दयाल दयानिध ठाकर, दीनन आपणे अंग लगाइंदा। कादर करीम करता कादर, कुदरत आपणे संग रखाइंदा। लेखा जाणे पिदर मादर, पिसर बरादर आपणा रूप वटाइंदा। गुरमुख विरला जगत बहादर, जो जन लोकलाज तजाइंदा। एका नाम वणज बणे करे सच सौदागर, सच वणजारा हट्ट खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर वेख वखाइंदा। गुरसिख गुर गुर एका ओट, हरि मती आप समझाइंदा। तन नगारे लग्गे चोट, अनहद नादी नाद वजाइंदा। जगत वासना कढ्ढे खोट, सच सुच्च मेल मिलाइंदा। आप उठाए आल्हणिउँ डिगे बोट, सच दुआरे आप सुहाइंदा। मेल मिलावा निर्मल जोत, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुर गुर वेखे एका घर, दर घर साचा आप वड्यांअदा। हरि सतिगुर सच्चा दीना नाथ, दो जहान खेल खिलाईआ। भगत भगवन्त वसे साथ, सगला संग रखाईआ। रूप अनूप त्रिलोकी नाथ, चौदां भवन रिहा जगाईआ। आत्म परमात्म साची गाथ, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। सगल विसूरे जायण लाथ, जो जन हरि हरि नेत्र लोचण दर्शन पाईआ। इक्क चढ़ाए साचे राथ, महांसारथी साची सेव कमाईआ। लहिणा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, हथकड़ी राए धर्म ना दए लगाईआ। चित्रगुप्त ना पाए नथ्थ, लेखा अग्गे ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले आपणे घर, घर साचा इक्क रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आत्म जीआ देवे दान, जीवन जुगत जगत जग भगत भगवन्त अन्त अपणे हथ्थ रखाईआ।

गुर सज्जण गुर मीत, गुरदेव दीन दयाला। गुर ठांडा गुर सीत, गुर सदा सदा रखवाला। गुर गुरदेव वसे सदा चीत, गुर दस्से धाम निराला। गुर पतित करे पुनीत, गुर तन पहनाए आत्म अन्तर सोहँ सच्ची माला। गुर चलाए जुग जुग रीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दस्से राह सुखाला। गुर प्रेम गुर प्यार, पीआ प्रीतम गुर अख्वाईआ। गुर पुरख गुर नार, गुर नर नरायण वडी वड्याईआ । गुर मन्दिर गुर दरबार, गुर दर घर सोभा पाईआ। गुर शब्द तूर मंगलाचार, गुर गीत गोबिन्द सुणाईआ। गुर गुरसिख अंदर आपणी वस्त देवे डार, नाम निधान झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मुख गुर गुरमुखां रिहा सालाहीआ ।

★ १६ जेठ २०१८ बिक्रमी मंगत राम दे गृह जम्मू ★

गुर दाता गहर गम्भीर, वड्डी वड वड्याईआ। गुर काया ठांडा करे सरीर, अमृत जाम प्याईआ। गुर हउमे कढ्ढे पीड़, रोग सोग चिंत मिटाईआ। गुर अमृत बख्शे सीर, निझर झिरना आप झिराईआ। गुर चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे दर, दरवाज़ा बन्द खुल्हाईआ। गुर बन्द किवाड़ा खोल्हे ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। गुर काया मन्दिर अंदर वखाए साचा हाट, नाम ख़ज़ाना आप भराइंदा। गुर अनहद शब्द वजाए नाद, ताल तलवाड़ा आप सुणाइंदा। गुर मेट मिटाए वाद विवाद, वख अमृत आप बणाइंदा। गुर लक्ख चुरासी विच्चों लए काढ, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर ब्रह्म गुर ब्रह्माद गुर आदि गुर जुगादि, गुरदेव नमो निमस्कार, गुर गुर गुरमुख एका रंग समाइंदा।

गुर दाता गुर दानी, गुर देवणहार दीन। गुर परम पुरख सुल्तानी, गुर गुरमुख अंदर लीन। गुर विद्दत विद्या विदवानी, गुर अक्खर अक्खर रिहा चीन। गुर गुरमुखां वखाए इक्क निशानी, नाता तोड़ तत्त तीन। गुर गुरसिखां बख्श चरन ध्यानी, चरन कँवल गुरसिख लिव लीन । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे सागर आपे जल आपे गुरसिख होए मीन।

गुर सज्जण गुर साक सैणा, भैण भाई बंधप गुर अख्वाइंदा। गुर दरस गुरमुख पेखे नैणां, गुर गुर ही विच समाइंदा। गुर का शब्द गुर का कहिणा, गुरसिख विरला झोली पाइंदा। गुर चुकाए लहिणा देणा, गुर पिछला मूल हथ्थ फड़ाइंदा। गुर तन पहनाए साचा गहिणा, नाम भूशन इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया कंचन कोट आप वड्यांअदा। गुर मेटे जगत अंदेस, अंदेसा कोए रहे ना राईआ। गुर सदा सहाई रहे हमेश, हरिजन साचे पैज रखाईआ। गुर वेखणहारा रिहा वेख, वेखे विगसे दए ग्वाहीआ। गुर मेटणहारा रेख, गुर अगला लेखा दए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घाट वखाए, घाटा कोए रहिण ना पाईआ।

★ १६ जेठ २०१८ बिक्रमी हरनाम सिँघ दे गृह चढ़दा ग्राम जम्मू ★

सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। तख्त निवासी हरि भगवाना, अनुभव आपणी खेल खिलाइंदा। जोती नूर नूर महाना, जल्वा नूर डगमगाइंदा। लेखा जाणे दो जहाना, रूप अनूप आप धराइंदा। नाम जणाए धुर फ़रमाना, शब्द अगम्मी नाद वजाइंदा। मुकामे हक इक्क टिकाणा, परवरदिगार डेरा लाइंदा। लाशरीक सच निशाना, वाहद आपणा नाउँ रखाइंदा। राम रूप हो प्रधाना, साचा हुक्म आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा वेस आप धराइंदा। आदि पुरख इक्क इकल्ला, दरगाह साची सोभा पाईआ। वसणहारा धाम उच्च अटल महल्ला, सच महल्ला आप उपाईआ। आपे जल्वा नूर इलाही घल्ला, आल्मीन आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। करे खेल बेपरवाह, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। सच महल्ला दए वसा, नूर नुराना हक ख़ुदाईआ। एका हुक्म दए सुणा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। इक्क सदा दए लगा, साबर आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे वसे साचा माहीआ। दर घर साचा हरि सुहाइंदा, इक्क इकल्ला आसण ला। जल्वा नूर आपणा आप डगमगाइंदा, नूर इलाही इक्क ख़ुदा। दूसर अवर ना संग रखाइंदा, ना कोई नाता जोड़ जुड़ा। जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा, निरगुण सरगुण रूप धरा। राम रहीम रहिमान आप अख्वाइंदा, उल्फ़त जाणे दो जहां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल एका हरि एका वसे साचे थाँ। साचा धाम सच टिकाणा, हरि साचा सच बणाईआ। जुगा जुगन्तर हो मेहरवाना, लोकमात वेस वटाईआ। पंज तत्त देवे इक्क ज्ञाना, एका राम नाम करे पढ़ाईआ। एका ब्रह्म करे प्रधाना, आत्म जोत जोत कर रुशनाईआ। एका राग इक्क तराना, एका नाद दए वजाईआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका घर दए वखाईआ। एका ठाकर अबिनाशी शाह सुल्ताना, साचे तख्त सोभा पाईआ। एका राम इक्क भगवाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस हरि वटंदड़ा, पारब्रह्म करतार। जुग चौकड़ी वेख वखंदड़ा, सतिजुग त्रेता हो उज्यार। लंका गढ़ आप तुड़ंदड़ा, रावण मारे दुष्ट हँकार। ग़रीब निमाणे गल लगंदड़ा, समरथ पुरख कर प्यार। कागद कलम भेव लखंदड़ा, लिख लिख थक्के वेद चार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, जुग जुग पावे साची सार। जुग जुग सार समालदा, निरगुण सरगुण हो उज्यार। सतिजुग त्रेता पार उतारदा, द्वापर खेल करे निरँकार। कान्हा कृष्ना करे खेल अगम्म अपार दा, सोलां कल हो उज्यार। सोलां शंगार सच्ची सरकार दा,

६६१

मुक्ट बैण मीत मुरार। होए सखाई सदा मित्र ग़रीब निमाणे तारदा, बिदर सुदामा दए आधार। पंजम मेला एका धुर दरबार दा, लेखा जाणे लिखणहार। भगत भगवन्त इक्क पछाणदा, एका देवे ब्रह्म ज्ञान। एका अक्खर गुण निधान दा, अठारां अध्याए गीता गुण दए वखाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, जुग जुग खेले खेल श्री भगवान। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराया, थिर कोए रहिण ना पाईआ। रामा कृष्ना रूप धराया, विष्न ब्रह्मा शिव मेल मिलाईआ। नारद मीता एका रंग रंगाया, एका रंगण दए चढ़ाईआ। वेद व्यासा भेव खुल्हाया, पुराण अठारां हरि जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। कलिजुग खेल हरि अवल्ला, निराकार आप कराइंदा। ईसा मूसा फड़ाए पल्ला, साचा दामन हथ्थ रखाइंदा। कलमा अमाम एका घल्ला, सच संदेस आप सुणाइंदा। आपणा रूप प्रगटाए नूर इलाही अल्ला, बिस्मिल आपणी खेल खिलाइंदा। हक हकीकत सच मुसल्ला, शरअ शरीअत आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रूप अनूप आप धराइंदा। इलाही नूर नूर अलाह परवदिगार, दर घर साचा आप सुहाइंदा। मुकामे हक खेल अपार, खेलणहारा दिस ना आइंदा। अल्ला हू अन्ना हू बोल जैकार, हू हू आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, वसणहारा ठांडे दरबार, सच दरबार आप सुहाइंदा। सच दरबारा ख़ालक ख़लक, एका एक वखाइंदा। लेखा जाणे आपणे फ़लक, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। ज़िमीं अस्माना बणाए बणत, आपणा घाड़न आप घड़ाइंदा। आपे जाणे आपणी उम्मत, नबी रसूल आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाइंदा। वेस अवल्ला सच महल्ला, शाह सुल्तान आप कराईआ। मुहम्मद नूर आपे रल्ला, नूरो नूर डगमगाईआ। सच संदेस एका घल्ला, जबराईल मेकाईल असराफील अज़राईल सेव कमाईआ। कलाम इलाही फड़ाया पल्ला, सच हदीस इक्क सुणाईआ। तीस बतीस आपे रल्ला, शरअ शरीअत दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि अहिबाब इक्क रबाब रिहा वजाईआ। इक्क रबाब इक्क सतार, निरगुण तार तार हिलाइंदा। अमाम अमामां हो उज्यार, नूर नूर नूर दरसाइंदा। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर आपे करे ख़बरदार, सच संदेसा आप सुणाइंदा। हक बहक पावे सार, हुक्म आपणा आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क मुहम्मद देवे वर, साचा मेला आप मिलाइंदा। सच मुहम्मद सच विहारा, ख़ुदावंद करीम आप कराईआ। चोदां तबक तेरा हुलारा, चौदस चौदां चन्द चढ़ाईआ। चौदां सद तेरा जैकारा, लोकमात मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा

जुगन्तर पीर पैग़म्बर सेवा लाईआ। पीर पैग़म्बर सेवादार, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। रहिमत करे आप रहिमान, राज़क रहीम नाउँ धराइंदा। कलमा कलाम कर त्यार, कातब आपणा लेख लिखाइंदा। कुदरत वेखे आपणी वार, वेस अवल्ला राणी अल्ला रूप अनूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, जुग जुग आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। जुग जुग नाउँ रखंदड़ा, बेऐब परवरदिगार। नानक जोती जोत जगंदड़ा, एका नाद सुणाए सच्ची धुन्कार। एका मन्त्र नाम रखंदड़ा, चार कुण्ट जै जैकार। हिन्दू मुस्लिम एका रंग रंगंदड़ा, ऊँच नीच ना कोए विचार। तट तीर्थ वेख वखंदड़ा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती पावे सार। मक्का मदीना चरन छुहंदड़ा, गल तसबी अपर अपार। नीला चोला आप रगंदड़ा, सेली टोपी कर विचार। उल्फ़त ख़ुदा ख़ुद आपणी आप रखंदड़ा, आपे होए रक्खणहार। बन्दा बन्दगी इक्क सखंदड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप निरँकार। निरँकार हरि खेल खिलाया, नानक निरगुण दया कमा। सति नाम मन्त्र इक्क जणाया, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दए सुणा। हिन्दू मुस्लिम एका रंग रंगाया, दूई द्वैत ना कोए जणा। हर घट अंदर हरि जू आसण लाया, कोई आखे राम कोई कहे ख़ुदा। निरगुण पुरख अकाल एका पाया, पंज तत्त नानक रिहा समझा। एका जोत दस दस रूप धराया, गोबिन्द लेखा दए लिखा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाह। गोबिन्द लेखा अपर अपारा, ऊँच नीच दए वड्याईआ। वेख वखाए संग मुहम्मद चार यारा, नबी रसूल नाल मिलाईआ। चौदां तबकां खोल्ह किवाड़ा, चौदां हट्ट दए जणाईआ। कलिजुग अन्तिम होवे अन्ध अन्धयारा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। नाता तुट्टे मीत मुरारा, साक सज्जण ना कोए अख्वाईआ। वरन बरन रोवण ज़ारो ज़ारा, उच्ची कूकण देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम कूक पुकार, चार कुण्ट कुरलाया। हिन्दू सिख ईसाई मुस्लिम रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराया। किसे नज़र ना आया सांझा यार, पाकी पाक इक्क ख़ुदाया। एका राम करे प्यार, हर घट बैठा आसण लाया। एका कृष्ना दए आधार, मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण सीस ताज जगदीस सुहाया। एका नानक करे प्यार, घट घट मन्त्र नाम दृढ़ाया। एका गोबिन्द बोले फ़तह जैकार, साचा डंका नाम वजाया। पुरख अकाल सृष्ट सबाई करे प्यार, ज़ात पात ना कोए रखाया। दीन मज़्हब वेखे इस्लाम, नूर इलाही सच कलाम कलमा आपणा आप जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलाया। जुग जुग खेल खिलाइंदा, इक्क इकल्ला बेपरवाह। हक हकीकत वेख वखाइंदा, लाशरीक इक्क ख़ुदा। शिरक्त विच कदे ना आइंदा, ग़फ्लत विच सके ना कोए भुल्ला। मुर्शद मुरीद आपणे रंग रंगाइंदा,

एका मारफत दए समझा। भगत भगवन्त आप उठाइंदा, राम रामा मेल मिला। कान्हा कृष्ना संग रखाइंदा, जगत विछोड़ा फंद कटा। नानक जोती जोत जगाइंदा, जाता आपणा रंग वखा। गोबिन्द डंका इक्क वजाइंदा, मूर्ख मुग्धां रिहा समझा। पुरख अकाल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सर्ब जीआं दा इक्को दाता, एका जल्वा नूर हरि ख़ुदा। एको दाता देवणहारा, घट घट जीआं रिज़क सबाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, गुर पीर अवतार आप अख्वाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पारा, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। लेखा जाणे संग मुहम्मद चार यारा, ईसा मूसा काला सूसा मुख नकाब तन वेखे बस्त्र शाहीआ। करे खेल हरि बेताब फड़ प्याला हयात आब, आबे हयात आपणे हथ्थ रखाईआ। काया वेखे मक्का काअब, साचा हुजरा आप सुहाईआ। उच्च महिराबे दए आवाज़, साची बांग आप सुणाईआ। इक्क सदा वजाए नाद, निउँ निउँ सजदा आप झुकाईआ। सच मुसल्ला मेटे वाद विवाद, धरत धवल आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चौदां चौदां फोल फोलाईआ। चौदां लोक चौदां तबक, चौदस चौदां फोल फोलाइंदा। चौदां सलोक चौदां सबक, चौदां विद्या आप पढ़ाइंदा। चौदां मोख चौदां हरख चौदां सोग, चौदां चिंता दुःख मिटाइंदा। चौदस चौदां देवे झोक, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। नाम ख़ुदाई किला कोट, चार दीवार ना कोए बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अन्तिम आपणा वेस धराइंदा। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्लड़ा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। करे खेल इक्क इकल्लड़ा, अकल कल वडी वड्याईआ। लक्ख चुरासी सच संदेस एका घलड़ा, भुल कोए ना जाईआ। जगत अन्धेर एका झुलड़ा, राज राजान शाह सुल्तान बैठे पति गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा नर नरेशा एका एक जणाईआ। धुर संदेसा अन्तिम कलि, कलकाती आप जणाइंदा। उच्चे मन्दिर ख़ाक जायण रल, ख़ाकी ख़ाक सर्ब वखाइंदा। बिन हरि नामे दिसे ना कोए फल, पत्त डाल्ही नज़र ना कोए वखाइंदा। जूठा झूठा बूटा जाणा हुल, सिम्मल फल ना कोए लगाइंदा। माया ममते तेरा कोए ना पैणा मुल्ल, राए धर्म डन्न लगाइंदा। पुरख अबिनाशी आप बणाई साची कुल, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल अन्तिम वेख वखाइंदा। कलिजुग वेला अन्तिम आया, हक मुहम्मद लए अंगड़ाईआ। चार यार लए बुलाया, एका मता पकाईआ। इलाही नूर अल्ला राणी ज़ोर वखाया, ज़ोरू ज़र लए प्रगटाईआ। जगत अडम्बर दए दुहाया, सच पैग़म्बर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। सच पैग़म्बर वेखण आया, ख़ालक ख़लक मख़लूकात। लक्ख चुरासी बन्धन तोड़न आया, वेले अन्तिम एका वार करे मुलाकात। मस्तक

टिक्का चन्दन लावण आया, नाता तोड़ ज़ात पात। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका रंग रंगाया, एका कलमा देवे अन्त नजात। ग़ुरबत सभ दी दए मिटाया, वेले अन्त करे वफ़ात। साची सुहबत दए सुणाया, सृष्ट सबाई इक्क जमात। एका राम सच ख़ुदाया, एका सच्ची ज़ात। एका तालब तुलबा लए पढ़ाया, एका कलम इक्क दवात। एका काग़ज़ लेख लिखाया, एका वेखणहारा मार झात। एका साबत सूरत लए प्रगटाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि कमलापात। एका सूरत सिफ्त सालाह, नज़र किसे ना आईआ। बेपरवाह बणया आप मलाह, कलिजुग बेड़ा आप चलाईआ। गढ़ हँकारी देवे ढाह, हउमे हंगता रोग मिटाईआ। एका विद्या दए पढ़ा, चार वरन भैणां भाईआ। साची संगत लए मिला, राउ रंक ना कोए वड्याईआ। ख़ालक ख़लक वेखे आप ख़ुदा, ख़ुदी तकब्बर मेट मिटाईआ। मुरीद मुर्शद ना होयण कदे जुदा, फ़ितरत एका रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम आपणा लेखा दए चुकाईआ। कलिजुग अन्तिम लेख चुकाउणा, धरती धवल दए वड्याईआ। वेद व्यासा लिख्या पूर कराउणा, लेखा लेख रहे ना राईआ। ईसा राह इक्क तकाउणा, सदी बीसवीं दए दुहाईआ। मुहम्मद नाअरा पूर कराउणा, ऐनलहक हक इक्क जणाईआ। चौदां तबकां पन्ध मुकाउणा, सदी चौधवीं नाल मिलाईआ। चार कुण्ट वेख वखाउणा, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण आपणा फेरा पाईआ। नव नौ खेल खिलाउणा, चार चार दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। लिख्या लेख वेद व्यास, कलिजुग अन्तिम आइंदा। निहकलंक करे जोत प्रकाश, जोती नूर डगमगाइंदा। एका ईसा लिख्या ख़ताब, मुख़ातिब होर ना कोए कराइंदा । एका मुहम्मद बुझाए प्यास, अमाम मैंहदी रूप धराइंदा। अहिमद होए आपे दास, आप आपणा पर्दा लांहयदा। आपे नानक लेखा जाणे शाहो शाबास, महांबली आपणा रूप वटाइंदा। आपे गोबिन्द जोत करे प्रकाश, जोती जाता मेल मिलाइंदा। आपे सम्बल नगरी रक्खे वास, सच सिँघासण आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण नूर नूर अलाह आपे बणे जगत मलाह, अन्तिम बेड़ा आप चलाइंदा। कलिजुग बेड़ा अन्त चलाउणा, चार वरन रिहा समझाईआ। मुर्शद मुरीद लेखे लाउणा, भगत भगवन्त लए मिलाईआ। साचे सन्तां दर बहाउणा, सचखण्ड दुआरा इक्क बणाईआ। गुरमुख साचे अंग लगाउणा, आप आपणी गोद उठाईआ। गुरसिख साचे चरन बहाउणा, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। मुल्लां शेख़ रंग चढ़ाउणा, काया तसबी मन का मणका आप भवाईआ। मुसायक आपणा खेल खिलाउणा, साचा चन्द कर रुशनाईआ। उम्मत एका आयत पढ़ाउणा, इक्क शरीअत दए वखाईआ। सभ दा पिता ख़ुदा बणाउणा, ईसा मूसा दए ग्वाहीआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कूड़ा कप्पड़ देवे लाहीआ। कूड़ा कप्पड़ देणा पाड़, जूठ झूठ रहिण ना पाया। कलिजुग अग्नी तपे ना हाढ़, हाढ़ सतारां दिवस सुहाया। चारों कुण्ट वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड, उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर फोल फोलाया। लक्ख चुरासी जीव जंत टोहे नाड़ नाड़, नाड़ बहत्तर फोल फोलाया। करे खेल परवरदिगार, पारब्रह्म बेपरवाहया। निन्दक दुष्ट मारे दुराचार, हँकारी गढ़ दए तुड़ाया। चार कुण्ट जीव जंत रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। हक ना करया किसे प्यार, सच पैग़म्बर दिस किसे ना आया। राम ना मिल्या राम दरबार, कृष्न काहन संग ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा रूप ल्ए धराया। आपणा रूप धराए सूरा सरबंग, राम रामा आप अख्वाईआ। आपणा वजाए सच मृदंग, दो जहानां आप उठाईआ। नौ खण्ड पृथमी वेखे बण मलंग, घर घर आपणा फेरा पाईआ। कवण साजन सुत्ता आपणी आत्म सेज पलँघ, कवण घर घर धक्के रिहा खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, अमाम अमामां आप अख्वाईआ। होए अमाम अमाम मैंहदी, महिमा गणत गणी ना जाईआ। करे खेल दिशा लहिंदी, आपणा हिस्सा आप वण्डाईआ। उम्मत नबी रसूल रसना कहिन्दी, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। सृष्ट सबाई इक्क दूजे दे नाल खहिन्दी, ना कोई पल्ला सके छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अञ्जील कुरान वेख वखाईआ। अञ्जील कुराना हरि मेहरवाना, भेव अभेद जणाइंदा। एका चौका वेख तराना, चौका एका मुख छुपाइंदा। एका मर्द इक्क मरदाना, मेहरवान इक्क अख्वाइंदा। एका तसबी एका गाणा, एका वाअज़ इक्क अलाइंदा। एका राम इक्क भगवाना, एका निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। एका नानक गोबिन्द दए परवाना, एका हुक्मी हुक्म सुणाइंदा। सभ दा दाता शाह सुल्ताना, पुरख अबिनाशी आप अख्वाइंदा। कलिजुग अन्तिम पहरया बाणा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। सोहँ शब्द साचा गाणा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग आप लगाउणा, लोकमात वज्जे वधाईआ। सम्मत सम्मती पन्ध मुकाउणा, वेला वक्त रिहा जणाईआ। शमस तबरेज़ बैठा ना किसे फेर तकाउणा, खलड़ी खल्ल ना कोए लुहाईआ। सिदक ईमान इक्क जणाउणा, जन्नत लोकमात दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा जल्वा दए वखाईआ। साचा जल्वा जल्वा जलाल, नूरो नूर आप दरसाइंदा। त्रैकाल दरसी त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। नज़री आए दीनां नाथ गोपाल, नाथ अनाथां दया कमाइंदा। नाता तोड़े काल महाकाल, लक्ख चुरासी

६९५

गेड़ कटाइंदा। हरिजन साचे लए भाल, पूर्ब कर्मां वेख वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण दलाल, सच दलाली मात कमाइंदा। वेखणहारा हक हलाल, हिकमत अवर ना कोए जणाइंदा। लहिणा चुकाए शाह कंगाल, शाह पातशाह आपणे भाणे सद रखाइंदा। एका वस्त देवे धन माल, नाम ख़ज़ाना आप लुटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खोल्हे एका दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा एका एक रखाइंदा। एका दर इक्क दरवाज़ा, एका बैठा आसण लाईआ। एका ग़रीब इक्क नवाज़ा, एका नवाज़श रिहा वखाईआ। एका एक जिस साजण साजा, एका ख़ालक इक्क ख़ुदाईआ। एका राजन एका राजा, एका शाह पातशाह आपणा नाउँ धराईआ। एका ब्रह्म सर्ब प्रकाशा, पारब्रह्म करे रुशनाईआ। एका चलाए सच जहाजा, जुग जुग बेड़ा आपणे हथ्थ टिकाईआ। कलिजुग अन्तिम रचया काजा, नौ खण्ड पृथ्मी वेखे सर्ब लोकाईआ। भाग लगाया देस माझा, महिखासुर वेखे आपणी थाँईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव निवाज़ा, भुल रहे ना राईआ। करोड़ तेतीसा देवे दाजा, सुरपति राजा इन्द नाल रलाईआ। करे खेल शाह नवाबा, चरन घोड़े दे रकाबा, एका दुलदुल रिहा दौड़ाईआ।

नज़र ना आए आफ़ताबा, चन्द चांदनी रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्त देवे कर, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। सतिजुग साचा मार्ग धरना, धरनी दए वड्याईआ। चार वरन रंग एका करना, एका रूप दरसाईआ। नेत्र खोल्हे हरना फरना, निज नेत्र दए खुल्हाईआ। एका अक्खर सभ ने पढ़ना, एका करे पढ़ाईआ। एका मन्दिर सभ ने वड़ना, एका मस्जिद दए वखाईआ। एका सजदा सभ ने करना, एका राम रहे मनाईआ। एका भउ सभ ने डरना, दूसर भय ना कोए जणाईआ। एका पौड़े सभ ने चढ़ना, साचा पौड़ा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप जणाईआ। साचा मार्ग लावणा, ख़ालक ख़लक रूप करतार। जूठा झूठा पन्ध मुकावणा, सच सुच्च कर उज्यार। माया ममता मोह चुकावणा, आत्म अन्तर दए अधार। मुर्शद मुरीद आप मिलावणा, गुर गुर मेला सिख विच संसार। साचा चेला आप तरावणा, जिस देवे नाम आधार। गया वेला हथ्थ किसे ना आवणा, राह तक्के संग मुहम्मद चार यार। अल्ला राणी नैण उठावणा, चारों कुण्ट वेखे सच नुहार। मीआं आपणा रूप धरावणा, बेऐब परवरदिगार। फिर अमामां अमाम आप अख्वावणा, जोती नूर नूर उज्यार। कलमा कलाम इक्क सखावणा, एका बोले हक जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग देवे धर, सृष्ट सबाई कर प्यार। सृष्ट सबाई सच प्यार, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। नाम मृदंग वजाए सतार, कूक पुकार आप सुणाइंदा। सूरज चन्द सतार करे प्रकाश, नूर नुराना डगमगाइंदा। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, कायनात वेख वखाइंदा। आप आपणे करे तलाश, बण खण्ड

फेरी पाइंदा । आपणे मन्दिर करे वास, साचा काअबा आप सुहाइंदा। आबे हयात बुझाए प्यास, अमृत जाम आप उठाइंदा। सर्ब जीआं सद वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। जो मिलण दी रक्खे आस, इष्ट देव देव इष्ट आप प्रगटाइंदा। रामा कृष्ना ईसा मूसा संग मुहम्मद खेले खेल तमाश, नानक गोबिन्द रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, हरि सज्जण मीत आपणा नाउँ धराइंदा।

★ २० जेठ २०१८ बिक्रमी पारो देवी दे गृह ★

अंदर बाहर घर गृह हड्ड मास नाड़ी काया पिंजर होए पवित, पतित उधारन दया कमाईआ। अमृत आत्म निझर रस किरपा निध ठाकर देवे सित, सिंच हरया बूटा आप कराईआ। रुत्त बसन्ती फुल फुलवाड़ी सोहे महीना चेत, पत्त डाली आप महिकाईआ। नाता तोड़ जिन भूत प्रेत, शब्द हेत इक्क जणाईआ। दु:ख सुख आपे वेख, दु:ख सुख विच बदलाईआ। सदा सदा सद रक्खे छाया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अग्नी अग्ग ना लग्गे जेठ, हाढ़ तपश ना कोए तपाईआ। लेखा चुकाए पिछली रेख, अगला लेख दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर मन्दिर गृह करे नाम रुशनाईआ।

६६७

★ २० जेठ २०१८ बिक्रमी कथ्था सिँघ दे गृह चढ़दा ग्राम जम्मू ★

सतिगुर किरपा, अन्ध विनासे। सतिगुर किरपा, जोत प्रकाशे। सतिगुर किरपा, भरम भउ नासे। सतिगुर किरपा, होए बन्द ख़ुलासे। सतिगुर किरपा, कट्टे जम की फासे। सतिगुर किरपा, गुर सतिगुर चरन कँवल करे निवासे। सतिगुर किरपा, दस दस मास मात गर्भ कदे ना फासे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल शाहो शाबासे। सतिगुर किरपा, भए अनन्द। सतिगुर किरपा, मुख सालाहण बत्ती दन्द। सतिगुर किरपा, रसन तजाए मदिरा मास गंद। सतिगुर किरपा, हरिजन गाए सुहागी छन्द। सतिगुर किरपा, ख़ुशी होए बन्द बन्द। सतिगुर किरपा, लेखा चुक्के जेरज अंड। सतिगुर किरपा, माणस जीवण जगत चुक्के पन्ध। सतिगुर किरपा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सदा सदा बख़्शंद। सतिगुर किरपा कृपानिध, हरिजन दया कमाइंदा। करता कारज करे सिद्ध, जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणे मिलण दी आपे बिध, जुगा जुगन्तर आप बणाइंदा। घर उपजाए नौ निध, अठारां सिद्धि दर फिराइंदा।

दाता दानी गुणी गहिन्द, वस्त अमोलक नाम अनमुल्ला झोली पाइंदा। हरिजन बणाए साची बिन्द, पूत सपूता वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा साचे मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग हरि निरँकारा, एका एक जणाईआ। सतिगुर चरन जगत सहारा, बिन सतिगुर पार ना कोए कराईआ। लक्ख चुरासी डूँघी मँझधारा, डूँघी भँवरी पार ना कोए कराईआ। कलिजुग तेरा अन्त किनारा, आपे वेखे वेखणहारा, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। जिस जन दए नाम आधारा, सोहँ शब्द सति जैकारा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। इक्क वखाए हरि मन्दिर सच्चा गुरदुआरा, काया मन्दिर अंदर कुण्डा लाहीआ। ठाकर स्वामी होए उज्यारा, पीर पैग़म्बर बेपरवाहीआ। जिस जन देवे आप सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा इक्क दातारा, देवणहार इक्क अख्वाईआ।

★ २० जेठ २०१८ बिक्रमी मंगा राम दे गृह ★

डूँग्घा सागर कलिजुग भँवर, कूड़ कुड़यारा घुम्मण घेर रिहा वखाईआ। माणस जन्म ना जाए संवर, बिन सतिगुर ना कोए सहाईआ। जगत नाता मढ़ी कबर, गोर घोर रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे आप जगाईआ। हरिजन जाग वक्त सुहेला, हरि सतिगुर मेल मिलाया। समरथ सुहाया साचा वेला, घर सुहञ्जणा सोभा पाया। करे खेल इक्क इकेला, कल धारी रूप वटाया। दु:ख दलिद्र कट्टे धर्म राए दी जेला, जीवण मुक्त आप वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बूंद रक्त रक्त बूंद लेखे लेखा लवे लगाया।

६९८

★ २० जेठ २०१८ बिक्रमी देवां देवी दे गृह ★

पल्लू फड़ फड़ाए दामन, दामनगीर हरि अख्वाइंदा। पल्लू फड़ बणे ज़ामन, दो जहानां ज़ामन आप हो जाइंदा। पल्लू फड़ वखाए ग्रामन, घर आपणा आप वखाइंदा। पल्लू फड़ मिटाए शामन, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। पल्लू फड़ मारे शब्द निशानन, तीर निशाना इक्क चलाइंदा। पल्लू फड़ मेटे जगत शैतानन, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। पल्लू फड़ाया फड़या पल्ला, पलक आपणी आप बदलाईआ। जोती दीप दीपक जोत आपे बला, घर आपणे आपणी कर रुशनाईआ। नाम संदेस सच सनेहुड़ा एका घल्ला, एका एक करे शनवाईआ। गुरसिखां अंदर आपे रला, रल मिल आपणा झट लँघाईआ। लोकमात ख़ुश ना होए रहि के कल्ला, पल्ला

पल्ले नाल बंधाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, अटल पदवी गुरमुखां रिहा दवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पावे सार जलां थलां, जल थल डूँगर किनारा घाट समुंद सागर वेख वखाईआ।

★ २० जेठ २०१८ बिक्रमी केसर सिँघ दे गृह पिण्ड झम्मां जम्मू ★

आदि पुरख हरि खेल अपारा, आपणा खेल खिलाइंदा। सचखण्ड थिर घर खोल्ह किवाड़ा, गगन मंडल आप उपाइंदा। रवि ससि कर प्रकाश सूरज चन्न सतारा, नूरो नूर नूर धराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर पसारा, जोती जोत जोत जगाइंदा। इच्छया भिच्छया देवे भण्डारा, साची वस्त आप वरताइंदा। त्रै पंज सति सहारा, साचा रंग चढ़ाइंदा। जल जल रूप बिम्ब बिम्ब धारा, बिमल आप वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। जल बिम्ब जल जल धार, जल जल रूप आप समाईआ। आकाश आकाश आकाश उज्यार, आकाश प्रकाश आप धराईआ। करे खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी चाल चलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण भिखार, बैठे सीस झुकाईआ। विष्न मंगे एका वार, झोली अग्गे डाहीआ। एका देणा सति वरतार, सति सतिवादी दया कमाईआ। ब्रह्मा करे गिरयाज़ार, पारब्रह्म तेरी सच्ची सरनाईआ। एका वस्त दे आधार, वस्त अमोलक हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। विष्नूं मंगे मंग सच भण्डारा, सति सतिवादी झोली पाइंदा। ब्रह्मा मंगे ब्रह्म पसारा, लक्ख चुरासी रंग रंगाइंदा। शंकर मंगे इक्क अखाड़ा, लेखा लेख सर्ब मुकाइंदा। पुरख अबिनाशी होया ख़बरदारा, दो जहानां वेख वखाइंदा। उप्पर जोत नूर उज्यारा, जल धारा चरनां हेठ वखाइंदा। अद्धविचकार ब्रह्मण्ड पसारा, लोआं पुरीआं गगन पाताल सूरज चन्न आप चढ़ाइंदा। विष्नूं भण्डार मिले कवण दुआरा, कवण वस्त रंग रंगाइंदा । ब्रह्मा लक्ख चुरासी देवे कवण सहारा, कवण सेज बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा। आपणी इच्छया हरि निरँकारा, आपे आप प्रगटाईआ। आपणी चरन धूढ़ लाहे छारा, जल उप्पर आप टिकाईआ। धवल धरत होई उज्यारा, आपणा रूप लए प्रगटाईआ। चारों कुण्ट करे पसारा, बण बण तारू तारीआं लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धरनी दए आप वड्याईआ। धरनी रक्खी उप्पर जल, पुरख अबिनाशी दया कमा। करया खेल सूरे प्रबल, आप आपणा रंग रमा। आपणा सुहाया निहचल धाम अटल, सचखण्ड निवासी सहिज सुभा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जल धरनी मेला दिता मिला। जल उप्पर धरनी पाया भार, जल कूके दए दुहाईआ।

पारब्रह्म मैं तेरी अंश तूं पिता मीत मुरार, मेरा होणा सदा सहाईआ। मेरा रस ठंडा ठार, तेरा प्रेम मेरी धार वहाईआ। तेरे चरन कँवल करां निमस्कार, तेरी धूढ़ी आपणे विच समाईआ। मेरा कर हौला भार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्श सच्ची सरनाईआ। हौला कर भार मेरा, जल जल आख सुणाया। सदा सदा मेरे मन चाउ घनेरा, तेरे चरनां दर्शन पाया। मेरा उजड़दा जाए खेड़ा, साचा घर ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दोए दोए बैठा मंग मंगाया। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका गुण समझाइंदा। ब्रह्मा झोली बैठा डाह, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। लक्ख चुरासी धरां केहड़े थाँ, कवण घर टिकाइंदा। मैं करनहारा सच न्याँ, सभ दी आसा पूर कराइंदा। तेरी फड़ाई एका बांह, सगला संग आप निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुण इक्क जणाइंदा। सुणया गुण श्री भगवान, जल जल दए दुहाईआ। तूं दाता वड मेहरवान, साचे सच तेरी वड्याईआ। मैं मन्नां तेरी आण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तूं दीआ मैनूं दान, मैं अग्गे झोली डाहीआ। लक्ख चुरासी तेरी होए प्रधान, बिन मेरे रहि सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त तेरी तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। तेरी वस्त मंगां निरँकार, तूं शाह सुल्तान अख्वाइंदा। मैं सदा सदा रिहा ठंडा ठार, मेरा तत्त ना कोए बदलाइंदा। धरनी धरत मेरे अंदर ना वाड़, मेरा घर ना सोभा पाइंदा। मेरे दुःख होया नाड़ नाड़, सुख कोए नज़र ना आइंदा। लक्ख चुरासी इस दे उत्ते लाए अखाड़, लोकमात नाच नचाइंदा। तेरा चले उप्पर विहार, लेखा लेख ना कोए लिखाइंदा। जुग चौकड़ी करनी कार, साचा बन्धन इक्क रखाइंदा। चार जुग वज्जे तेरी सतार, विष्न ब्रह्मा शिव वजाइंदा। चौथा जुग चौथी वार, चौथा हिस्सा एका एक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन तुध अवर कोए ना पार लँघाइंदा। किरपा कर गुण निधान, मैं आया चल दुआर। मेरी मिन्नत कर परवान, मैं रो रो करां पुकार। तेरा लेखा दो जहान, साहिब सच्ची सरकार। चौथा हिस्सा वण्ड धरनी दे इक्क मकान, तिन्न हिस्से दिसे मेरा परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरे उत्ते पर्दा ना कोए डार। धरनी पर्दा मेरे उत्ते ना रक्ख, मैं नित उठ तेरा दर्शन पाईआ। मैं आपणा आप करां वक्ख, आपणी वक्खरी धार चलाईआ। तूं करना मेरा पक्ख, होणा आण सहाईआ। मेरे अंदर भरना आपणा रस, प्रेम रस इक्क समझाईआ। मैं उड उड तेरे दुआरे आवां नस्स, तेरी सीतल धार आपणे सीस पवाईआ। तूं मिलणा अग्गों हस्स हस्स, मेरी आसा पूर कराईआ। मेरा दुआरा जाए ना खस, दर दरवाज़ा दे खुल्हाईआ। मैं कर के आया हठ, ख़ाली हथ्थ मुड़ ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका वस्त मेरी झोली पाईआ। पुरख अबिनाशी दीन दयाला, आपणी दया कमाइंदा। जल जल देवे राह सुखाला, मार्ग इक्क वखाइंदा। तेरा रूप रक्खां निराला, धरती विच ना कदे मिलाइंदा। तेरा तोड़ां आप जंजाला, जंजाल होर ना कोए पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। आपणा रंग रंगे करतार, एका गुण दए समझाईआ। तूं आउणा चल दुआर, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। तूं उठीं बन्नृ बन्नृ धार, तेरी धार दयाँ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वर देवे झोली पाईआ। साचा वर झोली पाया, घर आपणे ख़ुशी मनाइंदा। आपणा हिस्सा ल्या वण्डाया, लुट्ट कोए ना जाइंदा। आपणा ज़ोर रिहा धराया, आपणा बल प्रगटाइंदा। प्रभ मिलण दी आस रखाया, उप्पर नैण उठाइंदा। चार जुग दा गेड़ा वेख वखाया, जुग जुग बन्धन लांहयदा। पारब्रह्म तेरा राह मोहे इक्क भाया, दूसर मार्ग ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जल जल पाया हरि घर वर , धरनी आपणी लए अंगड़ाईआ। मैं क्यों सुत्ती पैर पसार, ख़ाली हथ्थ दए दुहाईआ। नज़र ना आए कोई कन्त भतार, नार दुहागण नैण शरमाईआ। जिस कीता मेरा पसार, सो माही नज़र किते ना आईआ। जिस धूढ़ी लाही छार, जल उप्पर दिता टिकाईआ। तिस वेखां नैण उठाल, नज़र आवे साचा माहीआ। कर किरपा मैनूं आपणे धाम दए बठाल, फेर सके ना कोए उठाईआ। मेरा विंगा ना होए वाल, खुल्ही मींढी ना वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी मेरी गोदी दए बहाल, मैं साची सेव कमाईआ। मैं लेखा जाणां शाह कंगाल, शाह पातशाह मेरे नाल मिलाईआ। मैं तण तण पावां आपणा जाल, त्रैगुण आपणे संग निभाईआ। मैं धूढ़ी बण बण उडां मार उछाल, पवण पवणां विच समाईआ। करां दरस दीन दयाल, साचे तख्त बैठा सच्चा शहिनशाहीआ। जा जा दस्सां आपणा हाल, सच संदेसा आप सुणाईआ। मेरी प्रीती निभ जाए मेरे माही नाल, विछोड़ा सहि ना सकां राईआ। नित नित घालां तेरी घाल, घालण एका वार दे समझाईआ। जुग जुग वेखां तेरी चाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर बैठी सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी सच जणाया, एका हुक्म सुणाइंदा। तेरा हिस्सा तेरी झोली पाया, एका चौका मूल चुकाइंदा। आपणे मिलण दी बिध वखाया, एका गुण रखाइंदा। तेरा तत्त आपणे तत्त नाल तपाया, तत्व तत आप जलाइंदा। तेरी रत अपणी रत रंग रंगाया, रंग रतड़ा आप अख्वाइंदा। तेरी गोद चार खाणी दए बहाया, लेखा लिख्त ना कोए जणाइंदा। तेरा जेठा पुत एका लए प्रगटाया, पर्बत आपणा रूप टिकाइंदा। तेरी कुक्खों बाहर कढाया, आपणा राह जणाइंदा। वध वध अग्गे कदम रखाया, दो जहानां पैंडा आप मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, धरनी दिता एका वर, एका गुण रखाइंदा। जल सुणया धरती मंगी मंग, प्रभ चरन मंगी सरनाईआ। पुरख अबिनाशी माणी सेज इक्क पलँघ, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। आपणा चाढ़या साचा रंग, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल बणाईआ। धरनी ख़ाक अंदर उतप्त करे पर्बत, उच्ची चोटी आप बणाईआ। आपणी बदले आपे करवट, दूसर, भेस ना किसे जणाईआ। आपणे विच्चों कर के आपा प्रगट, आपणी गोदी लए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उच्ची चोटी रिहा चढ़ाईआ। धरनी सुत सुत दुलारा, प्रभ मिलण दी आस रखाईआ। उच्चा टिल्ला पर्बत मुनारा, उठ उठ आपणा पन्ध मुकाईआ। कवण वेला मिले मेल हरि निरँकारा, घर साचे वज्जे वधाईआ। हरि का भेव ना किसे विचारा, पुरख अबिनाशी खेल खिलाईआ। जल जल धरे आपणा बल अपारा, बल आपणा आप रखाईआ। हिस्से तिन्न वण्ड आई मेरी मैं तेरे नालों वसां न्यारा, तेरे विच छुप कदे ना जाईआ। मैं तेरे पर्बत तन आपे पाड़ां, चीर चीर आपणा चीर पवाईआ। उच्ची चोटी चढ़ के तेरे विच्चों पुकारां, मैं पहलों मिलणा साचे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां मार्ग एका लाईआ। पर्बत कहे मैं उप्पर चढ़ना, आपणा बल आप रखाइंदा। जल कहे मैं तेरे नालों पहलां वड़ना, आपणा ज़ोर लगाइंदा। पुरख अबिनाशी दोहां विचोला बण के खेल आपणा करना, उप्पर दोहां आपणा पर्दा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धरनी अंदर जल जल धरनी विच रखाइंदा। जल धरनी ला ला ज़ोर, आपणा पन्ध रहे मुकाईआ। अग्गे दिसे अन्ध घोर, जगत समेरू दए दुहाईआ। कैलाश पर्बत आपणी छड्ड के बैठा डोर, गुड्डी होर ना कोए चढ़ाईआ। जल जल पा पा बैठा आपणा शोर, उच्चे टिल्ले आपणी धार वहाईआ। अन्तिम होए कमज़ोर, हरि का अन्त कोए ना पाईआ। दोवें निउँ निउँ मंगण नाता तुट्टा मोर तोर, बिन तुध कोए ना करे साडी रसाईआ। पुरख अबिनाशी चढ़के आया घोड़, आपणा चरन दए छुहाईआ। जल धारा धरती वल देवे रोहड़, उप्परों नीचे आप वहाईआ। पाथर पाहन नाल देवे तोर, इक्क दूजे दा मेल मिलाईआ। उच्ची पौंदे आवण शोर, लक्ख चुरासी जीव जंत समझाईआ। उत्ते दिसे अन्धेरा घोर, चोटी चढ़न कोए ना पाईआ। किसे ना चले कोई ज़ोर, ताकत बल ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां वाग आप भवाईआ। दोहां वागां आपे मोड़, लोकमात राह चलाइंदा। इक्क दूजे नाल जोड़या जोड़, बिरहों विछोड़ा आप कटाइंदा। इक्क दूजे दी सदा लोड़, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जल जल रूप आप समाइंदा। जल जल रूप नदीआं नाले, नीर नीर बरसाया। उच्चे टिल्ले पर्बत वेखे काले, एका बन्धन बंध बंधाया। आप चलाई अवल्लड़ी चाले,

भेव किसे ना आया। आदि जुगादि करे प्रितपाले, प्रितपालक नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां एका तत्त वखाया। दोहां वेख्या एका रंग, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। पर्बत पाणी मंगण मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। जुग चौकड़ी साडा बणया रहे संग, मिल मिल तेरा रहे जस गाईआ। कवण वेला होए बख़्शंद, फिर दर्शन देवें सच्चे माहीआ। साडा चलदयां चलदयां मुक्के ना पन्ध, कोटन कोटि काल वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दर दए समझाईआ। पाहन पत्थर करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। तुध बिन कोए ना पाए मेरी सार, मैं मूर्ख कम्म किसे ना आया। जे कोई मेरे उप्पर चले मैं ठोकर देवां मार, साचा संग ना कोए रखाया। जे कोई चुक्के मेरा भार, मूंह दे भार दयाँ सुटाया। जे कोई करे मेरा प्यार, ख़ाली हत्थ दयाँ वखाया। ना किछ अंदर ना किछ बाहर, ना कोई संग रखाया। एका बख़्श चरन प्रीती बख़्शणहार, तुध बिन अवर ना कोए सहाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, साचा वर एका झोली पाया। सुण काले पत्थर काले रंग, तेरा तेरे उप्पर दया कमाईआ। तेरे तन पहनाए एका वंग, नज़र किसे ना आईआ। तेरा रूप आपणे लाए अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे माण वड्याईआ। देवे वड्याई साचा हरि, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। पत्थर पाहन पूजण घर घर, ठाकर ठाकर रूप वटाइंदा। हत्थ मूंह नक्क तेरा लैण घड़, भुजां लिंग नाल रलाइंदा। माणस अग्गे लैण धर, सिल पूजस पूज पुजाइंदा। मस्तक टिक्का लाल देण धर, लाल लाला रंग चढ़ाइंदा। तूं कोलों मेरिउँ मंगया वर, तेरा माण माण रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात तेरा माण वड्यांअदा। पाथर पाहन करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। बिन तुध चरन ना मैनूं कोई होर माण, पूजा पाठ ना मोहे भाईआ। तेरा दरस मंगां श्री भगवान, दे दरस मैं किसे थाँ ना तृप्त कराईआ। मेरा ना कुछ पीण ना कुछ खाण, ना कोई रसना बोले ज़बान ना तेरा भेव सकां जणाईआ। तूं पर्दा पाया क्यों जहान, भरम भुलेखा वसया मात लोकाईआ। पत्थर कदे ना बणया काहन, पत्थर कदे ना बणया भगवान, भगवन तेरा रूप तोहे भाईआ। मैं मूर्ख मुग्ध अञ्याण, मेरा नक्क मूंह हत्थ घड़न तरखान, हत्थ विच तिक्खी तेसी उठाईआ। फिर चुक्क के चार दीवारी अंदर टिकाण, जिथे बहावण ओथे बैठा रहां, उठ उठ दिशा ना किसे जाईआ। ना कोई खावां पीआं पकवान, ना कोई नहावां नहान, जे कोई नुहावे आपणे उप्परों बाहर बाहर धार दयाँ वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैं पत्थर तुध बिन लथ्था सत्थर, मेरी सेज ना कोए सुहाईआ। मैं पाथर घड़या बुत्त, जग मन्दिर आप टिकाया। मैं राह तक्कां तेरा अबिनाशी अचुत, दूसर सकां की राह वखाया। मैं रक्खां तेरी

ओट, मेरी ओट कोई क्या रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। पुरख अबिनाशी दया कमा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चार जुग तेरा रूप धरा, लोकमात खेल खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेला जाए आ, तेरा पिछला पन्ध मुकाइंदा। निरगुण मेला निरगुण ल्ए करा, नज़र किसे ना आइंदा। जल उठया पुरख अबिनाशी पाहन पत्थर रिहा समझा, मैं भुल भुल्ल वक्त लँघाइंदा। दर आ के उच्ची मारी धाह, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। कवण सो वेला कवण वक्त मेरी पकड़े बांह, चार जुग मेरी रफतार ना कोए बदलाइंदा। पुरख अबिनाशी एका देणी सच सलाह, तेरी सीतल धार मेरा चन्न नज़री आइंदा। ठंडा चन्न आब नाल देणा मिला, मिल्या मेल विछड़ कदे ना जाइंदा। कर किरपा मेरा नाउँ देणा प्रगटा, लोकमात जीव जंत समझाइंदा। मैं तक्कां तेरा राह, नित उठ उठ ध्यान लगाइंदा। पाथर मेला सहिज सुभा, आपणे हेठां सत्थर विछाइंदा। उत्तों नड्डा जावां वाहो दाह, हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अग्गे तेरे वास्ता पाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, एका हुक्म सुणाया। ठांडे चन्न दयाँ दान, आब रूप वटाया। लोकमात करां प्रधान, तेरा नाउँ धराया। पाथर पाहन कर परवान, आपणे रंग रंगाया। जीव जंत सारे गान, तेरा नाउँ चन्न आब रखाया। तेरे कन्ढे आशक माशूक मौजां माण, रंग आपणा जाण वखाया। इक्क दूजे दा करन ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण दए समझाया। तेरा कन्ढा आशक माशूक, मारफत रूप वटाईआ। सोहणी मारे एका कूक, महीवाल दए दुहाईआ। बिरहों अग्नी रही फूक, सीतल धार ना कोए वगाईआ। इक्क दूजे दी करन उडीक, कवण वेला मिले साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका पर्दा दए उठाईआ। जगत माशूक इक्क दूजे दे चाकर, हरि का ध्यान ना कोए लगाइंदा। मंगी मंग जल पाहन पाथर, कवण बिध हरि पूर कराइंदा। चौथा जुग आए आख़र, वेला वक्त आप सुहाइंदा। तेरा माण रखाए जिउँ सुधा सर, शुद्धी आपणी आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वेला वक्त आप जणाइंदा। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, पारब्रह्म समझाईआ। पाथर पाहन आप तराउणा, जल बिम्ब दए वड्याईआ। चार जुग दे विछड़े हरि हरिजन साचे मेल मिलाउणा, मिल के आए साचा माहीआ। तेरे कन्ढे चरन टिकाउणा, कन्ढी वेखे बेपरवाहीआ । गुरमुख साचे तेरे संग रखाउणा, तेरी जगत प्यास बुझाईआ। गुरसिखां धूढ़ तेरे विच छुहाउणा, तेरा जुग युग दा पन्ध मुकाईआ। आप वेख वेख ख़ुशी मनाउणा, कीता कौल पूर कराईआ। दोहां ढोला एका गाउणा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जैकार कराईआ। तेरा नीर सत्त समुंदर विच समाउणा, समुंद

ਸਾਗਰ ਦਏ ਵਡ੍ਯਾਈਆ। ਆਪਣਾ ਨਾਮ ਤੇਰੀ ਧਾਰ ਵਿਚ ਲੁਕਾਉਣਾ,

सागर दए वड्याईआ। आपणा नाम तेरी धार विच लुकाउणा, गुरसिखां प्यार तेरे विच रखाईआ। बताली लक्ख जीव जंत जूनी अमृत रस मुख चवाउणा, आपणा खेल आप खिलाईआ। घट घट अंदर एका नूर नज़री आउणा, मछ कछ बैठण सीस झुकाईआ। पाताल पाताल पातालां सोहँ ढोला सभ ने गाउणा, जल जल अंदर पत्थर पाहन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका ओट तकाईआ। आदि अन्त श्री भगवान, आपणा लेख चुकाए आण, लेखा रहिण ना देवे राईआ।

★ २० जेठ २०१८ बिक्रमी बीबी बंती दे गृह ★

समुंद सागर वेखे सिन्ध, साची धार चलाईआ। जीव उपाए आपणी बिन्द, जंत दए वड्याईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। दयाल ठाकर सदा बख्शंद, बख्शणहार इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जल जल रूप आप समाईआ। जल जल धार हरि निरँकारा, डूँग्घे सागर आसण लाइंदा। करे कराए साची कारा, भेव कोए ना पाइंदा। जुगा जुगन्तर नाम जैकारा, सति सतिवादी आप कराइंदा। करे खेल अपर अपारा, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। कलिजुग अन्तिम कराया साचा वणज वपारा, गुरमुख धूढ़ी चरन धवाइंदा। मेल मिलाया विछड़े यारा, सगला संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीव जंत सर्ब तराइंदा। मिल्या मेल विछड़े मीत, जगत विछोड़ा हरि कटाया। मिल मिल गाया एका गीत, उप्पर पाहन आसण लाया। पारब्रह्म चलाई अचरज रीत, पंज तत्त जल धारा रूप वखाया। धार रुढ़ाई एका सीत, सीतल आपणा वेस वटाया। निरगुण हो हो वसया चीत, चेतन्न रूप दरसाया। सीस टिकाया पीतम्बर पीत, जगदीस होए सहाया। सत्त समुंदर देणी इक्क हदीस, सोहँ अजपा जाप कराया। प्रभ वेखण आए बीस बीस, भुल कोए ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज आपणा खेल खिलाया। अचरज खेल सर्ब गुणवन्त, जल जल धारा आप कराईआ। नाल रलाए गुरमुख साचे सन्त, दर घर साचे मेल मिलाईआ। किरपा करी श्री भगवन्त, साचे घाट दए वड्याईआ। आप जणाया आपणा मंत, करोड़ तेतीसा दरस रहे नैण बिघसाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुण गायन बेअन्त बेअन्त, वाह वा तेरी वडी वड्याईआ। जिस उधारे बताली लक्ख जीव जंत, अजूनी आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समुंद सागर रिहा समाईआ। समुंद सागर हरि समाया, निरगुण दाता बेपरवाह। डूँग्घे डूँग्घर आसण लाया, जाणे थल अस्गाह। साचा हुक्म रिहा सुणाया, भुल्ले कोए ना। एका अक्खर नाम दृढ़ाया, सो पुरख निरँजण रिहा जपा। हँ ब्रह्म सर्ब उपाया, आत्म जीव रूप वटा। कलिजुग

अन्तिम सभ दी जूनी दए पलटाया, आप आपणी बणत बणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, डेरा कन्ढे ला झना। कन्ढे डेरा लग्गा चनाब, चन्न आब होई रुशनाईआ। जिउँ पुत्त विछड़या मिल्या माई बाप, घर वज्जी सच वधाईआ। चार जुग दे लथ्थे ताप, जो मनमुख जीव दुरमति मैल विच धवाईआ। हरिसंगत मिल होया पाकी पाक, पतित रूप ना कोए रखाईआ। धन्न भाग मिल्या गुरसिख सज्जण साक, जिस लैण देण दी आस ना कोए रखाईआ। आए चल मेरे घाट, चरन धूढ़ी मेरी झोली पाईआ। मैं हो निमाणा विकां गुरसिख हाट, मेरी कीमत लोकमात ना कोए चुकाईआ। मेरा ख़ुशी अंदर जामा गया पाट, बिन जामे हरि का दर्शन पाईआ। मैं तक्क के वेख्या एका निर्मल जोत जगे मेरे कन्ढे घाट, मेरी डूँघी भँवर करे रुशनाईआ। मैं फड़न लग्गा कोई ना आई हाथ, चनाब रो रो नीर वहाईआ। कवण गुण मेरा दिता साथ, अवगुण भरया सदा गुनाहीआ। मेरे अंदर साधां सन्तां कीते पाप, कुँवार कन्या वेसवा रूप वटाईआ। मेरे अंदर वड़ वड़ झूठा जपया जाप, मन मति मैल ना कोए धवाईआ। मेरी सेजा सुंञी चार जुग रही खाट, बिन गुरसिख चरन ना कोए टिकाईआ। मैं दूर दुराडा मुकौदा आया वाट, तेरा पन्ध मेरे लेखे विच ना आईआ। कर किरपा मेरा दिता साथ, नाथ अनाथां होया सहाईआ। कर दरस मेरे सगल विसूरे गए लाथ, गुरसिख मिल्या जिउँ भाईआं भाईआ। मैं चढ़ के जाणा तेरे राथ, तेरा ढोला गाईआ। मैं सत्त समुंदर लै के जावां तेरा नाउँ साथ, जा के बह्वां जिउँ सौहरयां घर जवाईआ। किरपा करी आप रघुनाथ, मेरी रग रग ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, जन भगतां दए जगत वड्याईआ। सत्त समुंदर जा के बहणा, आपणा नैण उठाईआ। जा के पुच्छां की दस्सणा की कहिणा, सुणन कहिण दी गल्ल कोई कही ना जाईआ। जिस नूं आदि जुगादि कहिन्दे आए नर नरायणा, लोकमात आया फेरी पाईआ। सभ ने भाणा उस दा सहिणा, भुल कोए ना जाईआ। सागरां अंदर उस ने रहिणा, आप आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सत्त सागर उठ करन विचार, एह की हाल सुणाया। असीं सुत्ते पैर पसार, कवण सके सानूं उठाया। कोटन कोटि नदीआं नाले आपणे विच समाए साडा भरया ना अजे भण्डार, साडी तृष्ना ना कोए बुझाया। सचखण्ड वसे सदा निरँकार, सचखण्ड बैठा आसण लाया। चन्न आब कहे होणा ख़बरदार, मैं गुरसिखां मिल नेत्र नैण पेख के आया। जिस नूं कहिन्दे सांझा यार, निरगुण जोत करे रुशनाया। ठरदे समुंदर देवे साड़, एका आपणा नैण उठाया। मैं स्नेहुड़ा देण आया आउणा चल सच्चे दरबार, हाढ़ सतारां दिवस सुहाया। पुरख अबिनाशी दो जहानां लाउणा इक्क अखाड़, लुकया कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाया।

इक वार जे लाउँदों चुभ्भी, प्रभ दृष्ट दए खुल्हाईआ। लक्ख चुरासी दिसदी खुबी, चिक्कड़ गारे विच फसाईआ। चारों कुण्ट रोवे उच्ची कूक भुब्बीं, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। किसे दी शुद्ध दिसे ना बुद्धि, मलेछ सर्ब जणाईआ। काल कलंदर पावे लुड्डी, आपणा नाच नचाईआ। माया ममता चढ़ी गुड्डी, जूठ झूठ डोरी हथ्थ फड़ाईआ। नाता तुटया वदी सुदी, चन्न आब चन्न आपणा रूप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला कर ठग्गी, तारा सिँघ कोलों ल्या बचाईआ। एह ठग्गी दस्सी चम्यार रविदास, गंगा रक्ख लाज। मेरा कंगण तेरे पास, ना कोई मुलम्मा ते ना कोई पाज। ब्रह्मण गंगा एका मंगे मेरा पिछला लहिणा होए ख़लास, मेरी पूरी करनी आस। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रविदास कोलों धरवाया इक्क धरवास। रविदास कहे सुण मेरे मीत, धन्न तेरी वड्याईआ। राज राजानां घर तूं गाया मेरा गीत, मैं कंगले कवण वड्याईआ। मैं किसे ना जावां मन्दिर मसीत, गुरदुआर शिवदुआले मठ सीस ना किसे झुकाईआ। इक्को गावां गोबिन्द दे गीत, हरी ओम हरी ओम हरी ओम रिहा सुणाईआ। गंगा मेरी बदली रीत, आपणा कंगण तेरी झोली पाईआ। तेरी कंगण बदली नीत, माया मोह विच फसाईआ। तूं आया बण के कीट, ढह प्या सरनाईआ। माणस जन्म ल्या जीत, भगत भगवन्त दए मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम आउणा लोकमात ठीक, काया ठीकर वेख वखाईआ। बिक्रमी सम्मत दस्से सच तरीक, बीस अठारां दए ग्वाहीआ। रविदास ठग्ग वसण इक्क दूजे दे नज़दीक, पुरख अबिनाशी खेल खिलाईआ। तेरा तन गंगा नहा होया पुनीत, तेरी मति बुध सुध रही ना राईआ। अन्तिम तेरी नीत करनी ठीक, जगत जल तेरे तन लग्गण ना पाईआ। तेरे नाल तेरा लाशरीक, दूई द्वैत ना जिस रखाईआ। गुरमुख गुरसिख तेरे नाल रक्खण प्रीत, हस्स हस्स आपणा रंग वखाईआ। जल धार कर प्यार तेरे चरन अमृत पीवे ला के झीक, रविदास वेखे नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लेखा लेख मुकाया, अग्गे लेखा रहे ना राईआ। नौ नौ जन्म दा गेड़ चुकाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा नूर दए दरसाईआ। चरन धूढ़ तेरा मजन, तेरी दुरमति मैल गया धवाईआ। तेरे नाल वसे तेरा सज्जण, नहावण किस दुआरे जाईआ। गुरु गुर चेला एका धाम सज्जण, अंदर वड़ के वेख ना सके कोई, गोबिन्द मेला रिहा मिलाईआ। जिस दा पर्दा आप आया कज्जण, तिस मैल ना लागे राईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन धूढ़ी एका वार दिता साचा मजन, साचा सरोवर एका वार नुहाईआ।

★ २० जेठ २०१८ बिक्रमी शिव राम दे गृह अम्बा राय जम्मू ★

उच्चे टिल्ले राह तक्कण पर्बत, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। कर किरपा बदले आपणी करवट, निरगुण निरवैर लए अंगड़ाईआ। लोकमात मेटे झूठी गुरबत, सच सलाह दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होए आण सहाईआ। राह तक्कण टिल्ले पत्थर, नेत्र नैण उठाया। नेत्र नीर वरोलण अथ्थर, नैण नैण बिगसाया। कवण वेला हंढाए साडा सत्थर, साडे सीस चरन छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे लए लगाया। राह तक्कण टिल्ले डूँग्घर जगत पहाड, आसा आस रखाईआ। कवण वेला करे प्यार, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। चरन धूढ़ी देवे छार, सीस जगदीस मस्तक टिक्का लाईआ। पूर्ब लेखा दए नवार, निरविघन आपणी खेल खिलाईआ। अग्नी तत्त बुझाए हाढ़, जुगा जुगन्तर रही तपाईआ। एका बख्शे ठांडा दरबार, चरन कँवल सरनाईआ। उच्चे हो हो गए हार, हरि चरन छोह ना सके राईआ। किरपा करे आप निरँकार, दर आवे फेरा पाईआ। चुम्म चुंम चरन होईए बलिहार, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिल पाथर लए तराईआ। सिल पाथर वेखे इट्टां रोड़ा, कंकर कंकर चरन छुहाईआ। एका गुण समझाए वक्त रहि गया थोड़ा, सभ दा लेखा लए मुकाईआ। सस्से उप्पर रक्खया होड़ा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। जंगल जूहां फिरे दौड़ा, चाल निराली इक्क वखाईआ। वेले अन्तिम आपे बौहड़ा, होए सदा सहाईआ। जिउँ राम पाथर संग पाथर जोड़ा, राम नाम दए वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम आप चुकाए तोरा मोरा, एका चरन धूढ़ लगाए सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुणे पुकार जगत पाथर कमलापाती आपणा फेरा पाईआ। जगत पत्थर बणे ग्वाह, जीवां जंतां मात समझाइंदा। पारब्रह्म प्रभ इक्क मलाह, बेड़ा पार कराइंदा। माणस मानुख लए तरा, जो जन सरनाई आइंदा। घट घट अंदर बजर कपाटी पत्थर दिता टिका, बिन सतिगुर पर्दा कोए ना लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन पाथर वेखे सत्थर, साची सेज आप हंढाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा लेखा जाणे कठन, गुरमुखां लेखा आप मुकाइंदा।

★ २० जेठ २०१८ बिक्रमी ओम प्रकाश दे गृह जम्मू ★

पाथर पाहन तारनहारा, एकँकारा दया कमाइंदा। जल थल महीअल खेल न्यारा, अलख अगोचर आप कराइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाडा, डूँग्घी कंदर वेख वखाइंदा। समुंद सागर पावे सारा, भेव अभेदा भेव खुल्हाइंदा। ज़िमीं अस्मानां दए

सहारा, गगन मंडल खेल खिलाइंदा। जोत प्रकाश रवि ससि सितारा, रूप अनूप आप धराइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड हो उज्यारा, जोती जाता पुरख बिधाता आपणे रंग समाइंदा। थिर घर वासी थिर घर खोल्ह किवाड़ा, चरन कँवल आप टिकाइंदा। सचखण्ड सच मनारा हरि निरँकारा, ऊँच महल्ल अटल आप उपाइंदा। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारा, साचे मन्दिर आप टिकाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, दूसर अवर ना कोए संग रखाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अलखना आपणी अलख जगाइंदा। दर दरवेश बण भिखारा, दर घर आपणा आप सुहाइंदा। शाहो भूप बण वणजारा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। एका नाम सति वरतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघे सागर फोल फोलाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हो उज्यार, निरगुण निरवैर पुरख अकाल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी कल आप धराईआ। जगत जुग चले अवल्लड़ी चाल, वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, भेव अभेदा अछल अछेदा आपणे विच समाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, खेले खेल विच जहान, जाग्रत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, पारब्रह्म आपणी धार आप चलाईआ। साची धार हरि निरँकार, लोकमात आप चलाइंदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यार, हरि पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। एकँकारा वसणहारा ठांडे दरबार, आदि निरँजण अजूनी रहत जोती नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता इक्क इकल्ला मीत मुरार, आप आपणा संग निभाइंदा। श्री भगवान करे कराए आपणी कार, करता पुरख आपणी करनी आप कराइंदा। पारब्रह्म आपणी इच्छया आपे कर विचार, आपणी वण्ड वंडाइंदा। एका सुत इक्क दुलार, शब्द शब्दी नाउँ उपजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आप सुहाइंदा। शब्दी शब्द सच विहारा, हरि साचा आप कराईआ। निरगुण निरगुण कर प्यारा, निरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण मन्दिर निरगुण दुआरा, निरगुण बैठा आसण लाईआ। निरगुण जोत निरगुण अकारा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। निरगुण हुक्म निरगुण फ़रमाना, साचा गाणा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता सच्चा शहिनशाहीआ। धुर फ़रमाना सच संदेस, निरवैर पुरख आप सुणाइंदा। हुक्म जणाए विष्न ब्रह्म महेष, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। आपणे नेत्र आपे लए वेख, दूसर नैण ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। त्रै त्रै बन्धन एका रंग, त्रैगुण अतीता आप रखाईआ। साहिब सुल्तान सूरा सरबंग, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। इक्क वजाए नाम मृदंग, नाउँ निरँकारा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,

आपणा भेव आप जणाईआ। आपणा भेव हरि जणाइंदा, निष्अक्खर आखर बोल। साचा मार्ग इक्क रखाइंदा, आदि जुगादि अडोल। लोकमात वेस वटाइंदा, लक्ख चुरासी आपे मौल। हर घट आपणा डेरा लाइंदा, सदा सुहेला वसे कोल। नव नौ आपणा खेल खिलाइंदा, चार चार आपे बोल। साचा मृदंग ढोल वजाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप अनमोल। खेल अनमोला हरि करतारा, कुदरत कादर आप वखाईआ। वसणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाडा, पत्थर पाहन वेख वखाईआ। मेल मिलावा जल जल धारा, बिम्ब रूप अनूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया खेल न्यारा, खेलणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। पर्बत पत्थर रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जल जल करे इक्क पुकार, कूक कूक सुणाईआ। चारों कुण्ट धूंआंधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। समेरू वेख वेख आपणा बल गया हार, बल अवर ना कोए रखाईआ। करोड़ छिआनवे बरख बरख धार, आपणा आप रहे मिटाईआ। सांतक करे ना कोए संसार, कलिजुग अग्नी तत्त तपाईआ। हेम कुण्ड खड़ तेरा कीता दीदार, साचे पाथर आसण लाईआ। पर्बत तेरा सच प्यार, भुल कदे ना जाईआ। दोहां विचोला हरि निरँकार, वेखे थाउँ थाँईंआ। लहिणा देणा देवे कर्ज़ उतार, जुग जुग आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। पत्थर पाहन पर्बत उच्चा टिल्ला, हरि घाड़त घड़न घड़ाइंदा। इक्क इकल्ला कट्टे आपणा छिला, दर साचा आसण लाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एका मिला, सति सरूपी दरस दिखाइंदा। मेरा नाउँ तेरा कोट किला, साचा गढ़ समझाइंदा। आप जणाए साचा वेला, वक्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। तेरा रूप होए चेला, गुर आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उप्पर पाथर दया कमाइंदा। पाथर उप्पर दुष्ट दमन, आसण सिँघासण वछाईआ। पर्बत हरया होया चमन, पत डाल्ही रिहा महिकाईआ। सच सुगंधी मिल्या हवन, पवण पवण समाईआ। भेखा धारी मिल्या बावन, रूप अनूप कराईआ। आप फड़ाए आपणा दामन, आपणी गोद बहाईआ। तेरा तेरा बणे ज़ामन, साची ज़ामनी इक्क रखाईआ। तेरा रूप मेटे अन्धेरा शामन, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। तेरा नाम मेटे कामनी कामन, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। जिस पाहन को पूजण ब्राह्मण, सो पाहन तेरे चरन हेठ दबाईआ। करे खेल श्री भगवानन, आप आपणा पर्दा लाहीआ। तेरा झुलाए सच निशानन, दो जहान आप उठाईआ। तेरा करे प्रकाश कोटन भानन, रवि ससि सीस झुकाईआ। तेरा बेड़ा बन्न्हे बान्हण, एका गंढु रखाईआ। तेरा नगर खेड़ा वसे ग्रामन, साचा बंक दए सुहाईआ। तेरा रूप वटाए बाल अञ्याणन, बाल बाला आप वखाईआ। तेरी गुजरी तेरा करे पालण, नीर सीर प्याईआ।

लोकमात जाणा बण के साचा काहनन, चार वरन रहे सरनाईआ। तेरा रूप ना कोए पछानण, जगत विद्या भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वर रिहा समझाईआ। साचा वर सुण संदेस, निउँ निउँ निमस्कारया। तूं साहिब मेरी सदा आदेस, तेरे चरन जावां बलिहारया। कवण रूप धरां वेस, लोकमात हो उज्यारया। मेरा आपणी हथ्थीं लिख लेख, तेरा लेखा ना कोए मिटा रिहा। पुरख अबिनाशी खोल्या आपणा भेत, निरगुण सरगुण रूप वखा ल्या। तेरा रूप जणाए नाल रलाए मुच्छ दाढ़ी केस, खण्डा खड़ग नाम पहना ल्या। तेरा नाउँ धराए दस दस्मेश, दहि दिशा वेख वखा ल्या। तेरे सीस कल्गी तोड़ा टिकाए बणाए नर नरेश, साचा ताज इक्क वखा ल्या। तेरी ताबे कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न महेष, करोड़ तेतीसा सीस झुका ल्या। तेरे मन्दिर अंदर मेरा नूर प्रवेश, जोती जोत होए उजालया। मैं तेरा जोबन लवां वेख, जिउँ पिता पूत बाल अञ्याणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता धुर फ़रमानया। धुर फ़रमाना हरि जणाया, आपणी दया कमाइंदा। पाथर सुण सुण ख़ुशी मनाया, जिस उप्पर चरन टिकाइंदा। पकड़ चरन अग्गे झोली डाहया, होए निमाणा सीस झुकाइंदा। साल बहत्तर तेरा भार उठाया, मुक्खों सी ना कदे सुणाइंदा। तूं मेरे उत्ते बह बह हरि गुण गाया, हरि तेरे रंग समाइंदा। पुरख अबिनाशी तेरे दर तेरा बण के आया, तूं क्यों मेरा पल्ला छुडाइंदा।
मैं तेरा विछोड़ा सहि ना सका राया, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। होए निमाणा गल विच पल्ला पाया, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची मंग आप मंगाइंदा। देवे वर दुष्ट दमन, दामनगीर एका एक बणाईआ। मैं धर के रूप तेरे उत्ते करां हवन, पुरख अकाल तेरे नाल दयाँ मिलाईआ। नैणां देवी मेरा भेव जाणे कवण, कवण खेल मात वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म रिहा सुणाईआ। सुण हुक्म ना पत्थर मन्ने, मिल विछड़ना मोहे मूल ना भाईआ। मेरी रक्खणी लाज जिउँ जट्ट धन्ने, मेरा मेरा रूप वटाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत कलिजुग अन्तिम होयण अन्न्हे, भेव कोए ना पाईआ। मेरा साहिब मेरे उप्पर मन्ने, दीनन उत्ते दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दे वड्याईआ। एका गुण समझाइंदा, निरगुण सरगुण लै अवतार। गोबिन्द मेला मेल मिलाइंदा, मेलणहारा एकँकार। आपणा वेला वक्त आप सुहाइंदा, लक्ख चुरासी पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दस्से सच विहार। सच विहारा हरि निरँकारा, आपणा आप जणाईआ। लेखा जाणे गोबिन्द सुत सुत दुलारा, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। इक्क वजाए नाम नगारा, डंका फतिह इक्क सुणाईआ। चार वरनां करे प्यारा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका धाम बहाईआ। पंचम मीता हो उज्यारा, पंचम देवे नाम वड्याईआ। अमृत

आत्म ठंडा ठारा, भर प्याला जाम प्याईआ। खण्डा फेरे अपर अपारा, अजपा जाप विच समाईआ। मिट्ठा पाए गुरसिखां दए आधारा, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। पुरख अकाल बोल जैकारा, एका फतहि दए सुणाईआ। शस्त्र बस्त्र तन शंगारा, पंचम पंचम रंग रंगाईआ। पंचम नाता तोड़े काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, पंचम नाद शब्द धुंन करे शनवाईआ। पंचम खोले बन्द किवाड़ा, पंचम आत्म जोत नूर रुशनाईआ। पंचम सुणाए इक्क नगारा, अनहद आपणा राग अलाईआ। पंचम वखाए इक्क अखाड़ा, गोपी काहन आप नचाईआ। पंचम बोल सच जैकारा, एका रूप दए दरसाईआ। पंचम अग्गे मंगे मंग बण भिखारा, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। गुर चेला रूप धर संसारा, सुत दुलारा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखा रिहा जणाईआ। तेरा लेखा साचे पत्थर मीत, गुर सतिगुर आप चुकावणा। तेरी लग्गी सच प्रीत, लग्गी प्रीती तोड़ निभावणा। करे खेल आप अनडीठ, नेत्र नज़र किसे ना आवणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समावणा। आपणे रंग हरि समाए, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। गोबिन्द मेला इक्क बणाए, सिँघ रूप वटाईआ। सज्जण सुहेला संग निभाए, लोकमात वज्जे वधाईआ। आपणा वेला आपणे हथ्थ रखाए, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। उच्चे टिल्ले देवे ढाहे, पुरी अनन्द ना कोए वड्याईआ। सरसा लेखा आप मुकाए, गढ़ी चमकौर वेख वखाईआ। सगला संग सर्ब तजाए, बन्धन कोए रहिण ना पाईआ। हेम कुण्ट वाला वेला तेरे चेते दए कराए, चेतन्न तेरा रूप कराईआ। पुरख अकाल सुत दुलारा सूलां सत्थर हेठ विछाए, पाखर तेरा सरहाणा लए बणाईआ। आपणा तप तेरे तपदे हिरदे दए ठराए, आपणा ख़ून तेरीआं नीहां विच दबाईआ। फेर स्नेहुड़ा सच सुणाए, सुणनेहारा एका माहीआ। सथर तेरा रिहा हंढाए, जगत सेज ना कोए वड्याईआ। पुरख अबिनाशी होए सहाए, रूप अनूप आप वटाईआ। गोबिन्द गुर गुर गले लगाए, आप आपणी गोद बहाईआ। तेरा मेला सहिज सुभाए, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। तेरा आसण सिँघासण नवेला रिहा विछाए, साची बणत आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए वखाईआ। सुणाया हाल मित्र प्यारे, लिखण पढ़ण विच ना आया। किरपा करे आप निरँकारे, सुण सुण आपणे रंग वखाया। तेरा नूर होए उज्यारे, तेरी जोत करे रुशनाया। तेरा ख़ून डलकां मारे, नौ खण्ड पृथमी दए हिलाया। तेरा मन्दिर बणे इक्क नौ दुआरे, सम्बल नगरी नाउँ रखाया। विच वसे वसणहारे, वसणहारा आपणा मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाया। सच संदेस सुणाया करतार, एका शब्द नाद वजाईआ। गोबिन्द सूरा होया ख़बरदार, सिँघ आपणा बल धराईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। तेरा

करां अन्त दरस दीदार, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। तेरा रूप वेखां विच संसार, जोत जोत तेरी रुशनाईआ। तेरा मन्दिर धाम न्यार, इट्ट गारा ना कोए लगाईआ। छप्पर छन्न ना कोए सहार, चार दीवार ना कोए बणाईआ। करे खेल अपर अपार, महिमा गणत गणी ना जाईआ। तेरा रूप निहकलंक नरायण नर होए अवतार, ना कोई जन्मे पिता माईआ। मैं वसां तेरे सच सदा दरबार, विछड़ कदे ना जाईआ। तेरा संदेसा देवां सर्ब संसार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां विष्न ब्रह्मा शिव जगाईआ। सर्ब जीआं दा तूं सांझा यार, बेऐब नाउँ ख़ुदाईआ। ख़ालक ख़लक करे प्यार, मख़लूक तेरी सर्ब रुशनाईआ। तेरा कर दरस दीदार, दीद ईद चन्द होए रुशनाईआ। लक्ख चुरासी पावें सार, नव नौ आपणी बणत बणाईआ। चार चार करे विचार, चार जुग दा पन्ध मुकाईआ। चार वेद चार वरन चार खाणी चार बाणी एका करें सच विहार, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। लक्ख चुरासी देवें ब्रह्म विचार, आत्म विद्या तेरी पढ़ाईआ। तीर निशाना मारें एका वार, साचा चिल्ला नाम चढ़ाईआ। चण्ड प्रचण्ड फड़े तेज़ कटार, ब्रह्मण्ड दए हिलाईआ। वण्डे वण्ड अन्तिम वार, लक्ख चार लेखा मुक्के बत्ती हज़ार, पूरा सके ना कोए कराईआ। समुंद सागर पत्थर पाहन जो रोवण ज़ारो ज़ार, दे दरस अन्त तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लहिणा रिहा मुकाईआ। पूर्ब लहिणा मुकावण आया, निरगुण सरगुण लै अवतार। जोती जोत भेख वटाया, रूप अनूप अगम्म अपार। किला कोट ना कोए बणाया, किसे वसे मन्दिर ना गुरदुआर। सच सिँघासण सोभा पाया, सचखण्ड निवासी इक्क इकल्ला एकँकार। तख्त निवासी हुक्म सुणाया, आप आपणी किरपा धार। लोकमात वेख वखाया, लक्ख चुरासी जगत पसार। भगत भगवन्त लए उठाया, सन्त सुहेले कर प्यार। गुरमुखां आपणे अंग लगाया, गुरसिखां बख्शे चरन प्यार। गुरसिखां अंदर बजर कपाटी पाथर दए तुड़ाया, नाम खण्डा एका मार। उप्पर आपणा आसण लाया, आत्म सेजा कर त्यार। शब्द अनादी रिहा गाया, अट्ठे पहर इक्क गुफ़्तार। साचा इष्ट रिहा मनाया, जोती नूर नूर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग पाथर तोड़े मात हँकार। जगत पाथर तुट्टणा, गुरसिख विरले मिले वड्याईआ। सारे घर घर सुखदे सुखणा, मिले गोबिन्द सच्चा माहीआ। उज्जल होए ना किसे मुखणा, आत्म अन्तर आपणा आप वस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा पत्थर रिहा वखाईआ। पाथर लेखा जाणा मुक्क, हरि सतिगुर आप मुकाए। गुरसिखां अंदरों पर्दा चुक्क, जल्वा नूर आप दरसाए। प्रगट होए जो बैठा लुक्क, आप आपणी दया कमाए। हेम कुण्ट जो बैठा रिहा कर कर चुप्प, कलिजुग अन्तिम आपणा नाउँ शब्द डंक वजाए। नाल रखाए गोबिन्द सुत, सुत दुलारा विछड़ कदे ना जाए। करे खेल अबिनाशी अचुत,

७१३

पारब्रह्म बेपरवाहे। सच सुहञ्जणी सोहे रुत्त, पत्त डाली आप महिकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पाहन पाथर वेख वखाए। पाहन पाथर चुकया, काया बंक गढ़ दुआर। गोबिन्द सूरा एका उठया, शस्त्र बस्त्र पहन कटार। इक्क वखाए साचा किला कोटया, नाम सरूपी चार दीवार। जो जन रक्खे मेरी ओटया, देवां दरस खोल्ह किवाड़। कलिजुग जीव आहलणिउँ डिगे बोटया, ना सके कोए उठाल। आसा तृष्ना माया ममता भरी ना किसे पोटया, आसण ला ला बैठे धर्मसाल। गुरमुख विरले तन नगारे लग्गे चोटया, लेखा चुक्के शाह कंगाल। जिस जन अंदरों कढ्ढे खोटया, देवे नाम सच्चा धन माल। निर्मल नूर जगाए जोतया, जोती जाता पुरख अकाल। ना कोई वरन ना कोई गोतया, घट घट अंदर रिहा समाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। श्री भगवान खेल अवल्ला, कलिजुग अन्तिम आप कराईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन बैठ इकल्ला, धुर फ़रमाना शब्द जणाईआ। गुर गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा गुरमुखां फड़े आपे पल्ला, आपणा पल्ला गुरमुखां रिहा फड़ाईआ। जोती शब्दी शब्दी जोती धार आपे रल्ला, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छला, अछल छल धारी आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल दीनन होए आप सहाईआ। दीन दयाल दया निध ठाकर, पारब्रह्म बेअंतया। अमृत धार वहाए डूँग्घा सागर, गुरमुख विरला पीवे सन्त आ। निर्मल कर्म होए उजागर, मिले मेल श्री भगवंतया। साचे घर बणे सौदागर, नाम वणज इक्क रखंतया। लेखा जाणे करता कादर, जुग जुग वेस अनेक वटंतया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, देवे वड्याई गुर तेग़ बहादर, जिस आपणा ख़ून गुरमुख चोली चाढ़या रंग बसंतया। संसार चोली चढ़या रंग बसन्त, गुर सतिगुर आप चढ़ाईआ। होए सहाई कलिजुग अन्त, सुत दुलारा लए मिलाईआ। पल्ला फड़ाए श्री भगवन्त, छुट्ट कदे ना जाईआ। मिले वड्याई विच जीव जंत, अजूनी रहत होए सहाईआ। गुरसिख नार सुहागण मिले हरि हरि कन्त, घर वज्जे नाम वधाईआ। साची सेज सुहाए सोभावन्त, आसण सिँघासण डेरा लाईआ। कलिजुग लहिणा देण चुकाए अन्त, लेखा कोए रहे ना राईआ। लक्ख चुरासी एका देवे नाम मणीआ मंत, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण तोड़े गढ़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म दए दरसाईआ। सोहँ रूप साचा रंग जिउँ नानक चाढ़े अंगद, रंगया रंग उतर ना जाईआ। माणस जन्म ना होए भंगत, जो जन आत्म परमात्म विच समाईआ। धन्न वड्याई गुरमुखां बणाई साची संगत, हरि जस हरि मन्दिर काया अंदर बह बह रहे गाईआ। दूसर दर ना जाए मंगत, जिस जन सतिगुर मिल्या पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जन्म जन्म दी गंवाए

भुक्ख नंगत, कर्म कुकर्मां मैल ध्वाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पांधा पंडत, पढ़ पढ़ विद्या थक्की सर्ब लोकाईआ। हरि का रूप सदा अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोए कराईआ। नानक गोबिन्द वण्डी एका वण्डत, चार वरनां झोली पाईआ। नाम सति लोकमात लिख के दिती साची मन्नत, साचे सन्तां हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लेखा जाणे सर्ब घट अन्तर, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता पतित पुनीता गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत भगवन्त अन्त कन्त आपणा मेल मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल खिलाईआ।

★ २१ जेठ २०१८ बिक्रमी अंगरेज़ सिँघ दे गृह नवीं बस्ती जम्मू ★

सचखण्ड निवासी श्री भगवान, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर खेल महान, निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल आप कराइंदा। सति सतिवादी सति निशान, इक्क इकल्ला एकँकार, सच दुआरे आप झुलाइंदा। जोती नूर कर उज्यार, आप उपजाए ठांडे दरबार, थिर घर साचा आप सुहाइंदा। कमलापाती मीत मुरार, आपे वसे वसणहार, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। आपणी इच्छया भर भण्डार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराइंदा। करे खेल पुरख अबिनाशा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। साचे मंडल पावे रासा, अगम्म अथाह आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण जोत नूर प्रकाशा, नूर नुराना डगमगाईआ। आदि जुगादि आपणी पूरी करे आपे आसा, दाता दानी शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। थिर घर साचे कर निवासा, हरि मन्दिर दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। इक्क इकल्ला पुरख समरथ, दर घर साचे सोभा पाइंदा। जुगा जुगन्तर महिमा अकथ, नाम भण्डारा आप वरताइंदा। निरगुण सरगुण चलाए रथ, रथ रथवाही दिस ना आइंदा। शब्द अगम्मी जणाए गाथ, मन्त्र अन्तर आप पढ़ाइंदा। त्रैगुण मीता देवे साथ, त्रै त्रै एका रंग वखाइंदा। एका शब्द नाद धुन पूजा पाठ, एका मन्दिर हरि सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस हरि निरँकारा, निरगुण सरगुण करे रुशनाईआ। लोकमात हो उज्यारा, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। एका नाम शब्द जैकारा, चार कुण्ट दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता आपणी कुदरत वेख वखाईआ। कुदरत कादर वेखणहारा, बेऐब नाउँ धराइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बणे पनिहारा,

साची सेवा सेवक इक्क जणाइंदा। चार खाणी बण वरतारा, चारे बाणी झोली पाइंदा। चार जुग आपणी कारा, चारे वेद मुख सालांहयदा। चारों कुण्ट इक्क जैकारा, चार वरनां आप सुणाइंदा। चौथे घर चौथे पद आपे वसे वसणहारा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्त्र एका नाउँ, एका वसे हर घट थाउँ, इष्ट देव इक्क अख्वाइंदा। एका इष्ट देव आत्म, परम पुरख बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी खेल परम परमात्म, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। निरगुण जोत उत्तम जातम, जोती जाता वरन गोत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, निरगुण सरगुण धार। वसणहारा निहचल धाम अटल्लड़ा, लोकमात होए उज्यार। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखंदड़ा, करे खेल अगम्म अपार। जन भगतां फड़ाए नाम पलड़ा, दिस ना आए विच संसार। सन्तां अंदर आपे रलड़ा, जोती नूर कर प्यार। गुरमुखां सच संदेस एका घल्लड़ा, शब्द अनाद सच्ची धुन्कार। गुरसिखां दस्से राह सुखल्लड़ा, जुग जुग पावे सार। सच सिँघासण एका मलड़ा, सचखण्ड सच्चा दुआर। लक्ख चुरासी वेख वखंदड़ा, वेखणहारा एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपारा हरि हरि खेल, अनुभव प्रकाश कराइंदा। दीपक जोत जगाए बिन बाती तेल, साचे मन्दिर आप टिकाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरिजन साजण लए मेल, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। अचरज करे आपणा खेल, वेद कतेब शास्त्र सिमरत भेव कोए ना पाइंदा। गुर अवतार रसना गायण जिहव, जिहवा रस इक्क वखाइंदा। हुक्मे अंदर लाए सेव, साचा हुक्म धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अलख अभेव, अगम्म अथाह बेपरवाह दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साची कार, करे कराए करनेहार, करता पुरख आपणी कल धराइंदा। करता पुरख कल धर, सो पुरख निरँजण वेख वखाईआ। हरि पुरख निरँजण नरायण नर, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। एकँकारा सच सिँघासण बैठा चढ़, तख्त निवासी शाह पातशाह बेपरवाहीआ। आदि निरँजण आपणे मन्दिर आपे बैठा वड़, जोत उजाला नूर कराईआ। अबिनाशी करता आपणा घाड़न आपे घड़, मात पित ना कोए रखाईआ। श्री भगवान साचे मन्दिर आपणी विद्या आपे पढ़, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। पारब्रह्म आपणा फड़या आपे लड़, सगला संग आप रखाईआ। सचखण्ड निवासा खेल अबिनाशा थिर घर मन्दिर उच्च अटल्ला, वसणहारा इक्क इकल्ला, बेअन्त आपणी कल आप धराईआ। जुगा जुगन्तर खेल अवल्ला, सतिजुग त्रेता द्वापर फड़ाए आपणा पल्ला, जन भगतां वेख वखाईआ। राम नाम संदेस एका घल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर

अवर ना कोए चतुराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल अपारा, निरगुण सरगुण आप कराइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाडा, डूँघी कंदर समुंद सागर वेख वखाइंदा। शब्द अगम्मी नाद जैकारा, ब्रह्मादि आप सुणाइंदा। लोआं पुरीआं दए हुलारा, ब्रह्मण्ड खण्ड आप जगाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए सहारा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। एका खोल्ह बन्द किवाड़ा, साचा दर इक्क दरसाइंदा। एका मेला एका दर आप कराए करनेहारा, आपणा रंग आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता निहचल धाम इक्क सुहाइंदा। निहचल धाम उच्च अटल्ला, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, पारब्रह्म प्रभ चरन टिकाइंदा। शाह सुल्तान राज राजान सच संदेस एका घल्ला, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रंग रंगाइंदा। जुग जुग रंग हरि निरँकारा, निरगुण सरगुण आप रंगाईआ। सतिजुग साची बन्न्ह बन्न्ह धारा, सति सतिवादी वेख वखाईआ। एका आठा कर प्यारा, दोहां मेला सहिज सुभाईआ। दोए दोए साची करे कारा, त्रेता तेरा रूप वटाईआ। आपे जाणे अन्त किनारा, मध्ध आपणी खेल खिलाईआ। नर नरेश सच्ची सरकारा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। एका हुक्म इक्क वरतारा, वेखणहार इक्क हो जाईआ। सतिजुग त्रेता रिहा ना विच संसारा, अन्तिम पन्ध मुकाईआ। द्वापर दोए दोए कर पसारा, लोचण नैण ना कोए वड्याईआ। लेखा लिखे अगम्म अपारा, पुराण पुराणी एह समझाईआ। एका तत्त ज्ञान जैकारा, ब्रह्म मति इक्क समझाईआ। एका पुरख मीत मुरारा, एका भगवन वेस वटाईआ। एका रथ रथवाही बणे संसारा, समुंद सागर पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणे रंग समाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर रंगया रंग, दिस किसे ना आया। निरगुण सरगुण आत्म सेज माण पलँघ, हरिजन साचे आप उठाया। जन भगतां अंदर बह बह वजाए मृदंग, नाद अनादी नाद सुणाया। मेट मिटाए अन्धेरा अन्ध, निरगुण जोत कर रुशनाया। भरम भुलेखा दूई द्वैती ढाहे कंध, साचा चन्द इक्क चमकाया। आत्म उपजाए परमानंद, निजानंद आपणा रस चखाया। पंच विकारा करे खण्ड खण्ड, नाम शस्त्र हथ्थ फड़ाया। सुरत सुवाणी ना होए रंड, हरि जू हरि हरि कन्त मेल मिलाया। नाता तुट्टे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज बंध ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण मेला, लेखा जाणे गुरु गुर चेला, चेला गुर आप अख्वाया। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया आपणे घाट, जन भगतां मिले वड्याईआ। लक्ख चुरासी कोए ना निभया साथ, जो घड़या भन्न वखाईआ। करे खेल राम रामा त्रिलोकी नाथ, चौदां लोकां कुण्डा लाहीआ। गुरमुख विरले सुणाए आपणी साची गाथ, एका राम नाम

पढ़ाईआ। एका जोत करे प्रकाश, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। एका अमृत आत्म देवे दात, निझर झिरना कँवल मुख भराईआ। एका दरस दिखाए बैठा रहे इकांत, आदि जुगादि ना मरे ना जाईआ। चरन प्रीती देवे सच सुग़ात, जन भगतां एका वस्त झोली पाईआ। हरिजन सगल विसूरे जायण लाथ, हरि हरि नेत्र लोचण नैण नज़री आईआ। लहिणा देणा चुक्के पूजा पाठ, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। निर्मल जोत जगाए ललाट, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। लेखा जाणे तत्त आठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध वेखे थाउँ थाँईआ। रैण अन्धेरी मिटे रात, साचा चन्द करे रुशनाईआ। हरि भगतां वखाए अठ्ठे पहर प्रभात, प्रभाती वेला आपणा आप जणाईआ। हरिजन तेरी कोई ना दिसे ज़ात, तेरा आत्म ब्रह्म पारब्रह्म आपणी अंस बणाईआ। हरि ठाकर तेरा पिता मात, तूं बालक रूप वटाईआ। चरन कँवल बंधाया तेरा नात, सतिजुग त्रेता द्वापर पाया बन्धन, एका डोरी नाम रखाईआ। मस्तक टिक्का लाया चन्दन, निम वास रहिण ना पाईआ। घर दरस वखाए त्रिलोकी नंदन, लोचण नैण आप खुल्हाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्दन, हरि का ढोला आपे गाईआ। हरि का नाम ना होए खण्डन, खण्ड खण्ड करे सर्ब लोकाईआ। दए सहारा ब्रह्माद ब्रह्मण्डन, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप मिलाईआ। साचे भगतां मेलया मेला, घर साचे वज्जे वधाईआ। रंग रंगाए सज्जण सुहेला, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। आप जणाए आपणा वेला, थित वार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां देवे सच संदेस, सतिजुग त्रेता द्वापर इक्क आदेस, त्रैगुण भिन्न ना कोई रूप रेख ना दिसे चिन्ह, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। साचा खेल हरि खलाउणा, त्रै त्रै आपणा मूल चुकाइंदा। कलिजुग लोकमात रखाउणा, लक्ख चुरासी मेल मिलाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी किला कोट बणाउणा, जगत मन्दिर आप सुहाइंदा। माया ममता मोह हँकार भण्डार इक्क वरताउणा, एका भिच्छया झोली पाइंदा। जूठा झूठा डौरू हथ्थ फड़ाउणा, चारे कुण्टां डंक वजाइंदा। ईसा मूसा संग रलाउणा, संग मुहम्मद चार यार कलमा नबी आप पढ़ाइंदा। ऐनलहक नाअरा लाउणा, हू हू आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणे रंग समाइंदा। जुग जुग रंग हरि अवल्ला, निरगुण सरगुण दए चढ़ाईआ। लेखा जाणे राणी अल्ला, आलमगीर बेपरवाहीआ। धरत धवल वेखे मसल्ला, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। आप फड़ाए आपणा पल्ला, दामनगीर सच्चा शहिनशाहीआ। सच संदेस एका घल्ला, एका गुण दए समझाईआ। नूरो नूर सच सिँघासण बैठा मल्ला, मुकामे हक इक्क ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा आप सुणाईआ। सच संदेसा हरि पैग़ाम, एका कलमा आप जणाइंदा। एका कासद इक्क

ग़ुलाम, धुर फ़रमाना इक्क सुणाइंदा। एका मुर्शद इक्क अमाम, सिर अमामां आप हो जाइंदा। एका लेखा जाणे दो जहान, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। एका मुहम्मद देवे ज्ञान, नेत्र नैण आप वखाइंदा। चौदां तबकां हक निशान, हक हकीकत मेल मिलाइंदा। मेरा नाउँ आलमीन शरअ कुरान, काया कुरा खोज खोजाइंदा। साचा हुजरा सच मकान, एका काअबा नज़री आइंदा। तेरी वण्डे वण्ड हो मेहरवान, महिबान बीदो आपणा खेल खिलाइंदा। बी ख़ैर या अल्ला शाह सुल्तान, नवाब नवाबां सिर आप अख्वाइंदा। लोकमात तेरा रूप बणाए हुक्मरान, हुक्म हाकम आप सुणाइंदा। चौदां सद रहिणा प्रधान, जगत प्रधानगी हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रंग वखाइंदा। आपणा रंग हरि निरँकारा, आदि जुगादि वखाईआ। निरगुण सरगुण कर प्यारा, पंज तत्त काया चोला नानक वेखे साचा माहीआ। एका वस्त सति भण्डारा, नाम सति झोली पाईआ। पाया पुरख अगम्म अपारा, आदि जुगादि विछड़ ना जाईआ। निरगुण सरगुण दोवें धारा, सरगुण निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। चार कुण्ट बोल इक्क जैकारा, चार वरनां करे पढ़ाईआ। एका जोती दस अवतारा, गोबिन्द गीत सुहागी एका गाईआ। पुरख अकाल पिता प्यारा, हउँ बालक सेव कमाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, चार वरन एका रंग रंगाईआ। पंचम देवे साची धारा, अमृत आत्म मुख चुआईआ। पुरख अकाल वखाए सच दुआरा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। पिता पूत एका घर वसणेहारा, कलिजुग अन्तिम करे सालाहीआ। चारों कुण्ट अन्ध अन्धयारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। शाह सुल्तान राज राजान कोई ना जाणे धर्म दुआरा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। पारब्रह्म आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जीव जंत पावे सारा, साध सन्त पूरन भगवन्त भगतन लए तराईआ। नौ खण्ड पृथमी चार वरन नेत्र रोवण ज़ारो ज़ारा, उच्ची कूकण देण दुहाईआ। आत्म ब्रह्म ना किसे विचारा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पई लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां होए सहाईआ। जन भगतां होए सदा सहाए, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम वेख वखाए, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण जोती जामा पाए, सरुगण रूप नज़र ना आईआ। निहकलंका नाउँ रखाए, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शब्द डंका इक्क वजाए, विष्न ब्रह्मा शिव रिहा उठाईआ। करोड़ तेतीसा सीस झुकाए, सुरपति राजा इन्द रहे शरमाईआ। नौ खण्ड पृथमी वेखे वखाए, सत्तां दीपां फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी चारे खाणी फोल फोलाए, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज पर्दा आप चुकाईआ। हरिजन वेखे जो जन रसना जिहवा रहे ध्याए, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। जुग जुग विछड़े लए मिलाए, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आपणा रंग दए चढ़ाए, रंग मजीठी उतर ना जाईआ। एका शब्द नाद वजाए, धुंन आत्मक करे शनवाईआ। पंचम मिल

मिल मंगल गाए, काया बंक होए सहाईआ। अमृत सरोवर जाम प्याए, इक्क प्याला रिहा वखाईआ। आत्म सेजा डेरा लाए, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। सुरती शब्दी मेल मिलाए, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। दर घर साचे सोभा पाए, दस्म आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां लए तराईआ। कलिजुग अन्तिम गुरसिख तराय, दीन दयाल हरि ठाकर। आप आपणी बूझ बुझाए, किरपा करे गहर गम्भीर गुण सागर। त्रैगुण माया पर्दा लाहे, एका देवे नाम रती रत्नागर। दर घर साचे वणज कराए, गुरमुख बणाए इक्क सौदागर। वस्त अमोलक झोली पाए, आप टिकाए काया गागर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा आदर। हरिजन साचा आप उठाया, किरपा कर श्री भगवान। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाया, नाता तुट्टा जगत जहान। साचा मन्त्र इक्क पढ़ाया, सो पुरख निरँजण हो मेहरवान। हँ ब्रह्म हर घट नज़री आया, सोहँ धार दो जहान। चार वरन पुरख अबिनाशी इक्क समाया, घट घट अंदर जोत महान। वरन गोत ना कोए रखाया, सृष्ट सबाई दा एका काहन। लक्ख चुरासी लए प्रनाया, जो चरन कँवल धरे ध्यान। ऊँच नीच ना कोए वखाया, एका रंग रंगाए राज राजान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन साचे करे परवान। कलिजुग अन्तिम कर परवान, आपणा भेव खुल्हाईआ। सोहँ देवे शब्द ज्ञान, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। एका धुंन नाद सुणाए कान, काया मन्दिर अंदर आप वजाईआ। अमृत बख्शे पीण खाण, रसना रस ना कोए चखाईआ। भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ मकान, बंक दुआरी सोभा पाईआ। धर्म झुलाए इक्क निशान, जगत नेत्र दिस ना आईआ। गुरमुख विरला चतुर सुजान, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। दर घर साचे देवे माण, मिले माण वड्याईआ। इक्क वखाए पद निरबाण, निर्भय होए सहाईआ। जन भगतां चुकाए आवण जावण काण, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। एका देवे नाम बबाण, हरिजन साचे लए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतां पैज रखाईआ। जुग जुग रक्खे पैज, दया कमाइंदा। कलिजुग हरिजन मेले सहिज सहिज, चोरी चोरी मेल मिलाइंदा। शब्द संदेसा पहलों देवे भेज, काया सुरती सोई आप उठाइंदा। फेर वखाए जोती तेज, जोत निरँजण डगमगाइंदा। फेर मेटे पिछला लेख, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। हरिजन आपणे नेत्र आपे लए पेख, जगत लोचण बन्द वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। कलिजुग अन्तिम रंगया रंग, गुरसिखां काया आप रंगाईआ। अंदर वड़ सूरा सरबंग, निरगुण सरगुण लए जगाईआ। आत्म सेजा सुहाए पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाईआ। इक्क वजाए नाद मृदंग, अनहद साची सेवा लाईआ। आपे ढाए

७२०

झूठी कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। माया ममता मोह करे खण्ड खण्ड, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। सुखमन तेरा मेटे पन्ध, टेढी धार ना कोए अटकाईआ । ईड़ा पिंगल हस्स हस्स सुणाउण छन्द, गुरसिख मिल्या भाईआं भाईआ। पारब्रह्म सदा बख्शंद, ब्रह्म लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा रंग वखाईआ। कलिजुग रंग बेअन्त, भेव किसे ना आया। भरमे भुल्ले जीव जंत, धीरज जत ना कोए रखाया। माया रुल्ले साध सन्त, सति जोग ना कोए कमाया। गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए समाया। साचे दर ना बणया कोए मंगत, जूठी झूठी झोली भिच्छया रहे वखाया। रूप ना बणया साची संगत, ज़ात पात ना भेत मिटाया। आपणी आपणी करदे रहे मन्नत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सीस ना किसे झुकाया। कलिजुग लेखा लए अन्त, बचया कोए रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी दए सज़ाया। लक्ख चुरासी लाए डन्न, जो बैठे राम भुलाईआ। जो घड़या सो देवे भन्न, शंकर त्रिसूल रिहा वखाईआ। ढा ढा ढेरी करे हँकारी मन, मन वासना दए खपाईआ। गुरमुख चढ़ाए साचे चन्न, नूर नूर कर रुशनाईआ । जो भाणा रहे मन्न, लक्ख चुरासी विचों बैठे आपणा मुख छुपाईआ। रसना कहिण धन्न धन्न, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिस सज्जण लए मिलाईआ। सो सज्जण मिलणा गुर, जिस मस्तक लेख लिखाया। सतिगुर चढ़या साचे घोड़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फेरी पाया। निरगुण हो हो रिहा दौड़, औदां जांदा दिस ना आया। लक्ख चुरासी वेखे रीठा कौड़, अमृत फल फोल फोलाया। जन भगतां आपे जाए बौहड़, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। नाता तोड़े मढ़ी गोर, ख़ाकी ख़ाक ना कोए रमाया। आप आपणे संग लए तोर, एका पल्लू नाम फड़ाया। कलिजुग अन्धेरा पार कराए घोर, पंज चोर शोर ना कोए मचाया। नाम अगम्मी बद्धी डोर, दो जहान टुट्ट ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरि भगत लए मिलाया। हरि भगतन मेला हरि भगवन्त, हरी हरि आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जाता बणाए बणत, जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। हरिजन मेला नारी कन्त, कन्त सुहाग वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मेले आपणे घर, घर सुहञ्जणा आदि निरँजणा निरगुण सरगुण एका बंक वखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्तन देवे साचा दान, दाता दानी नाम वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाइंदा।

जिउँ जिउँ लेख तिउँ मुकदा, पूर्ब कर्म रहिण ना पाईआ। जिउँ जिउँ हुक्म तिवें तिव गुरसिख झुकदा, बिन हुक्म ना कोए झुकाईआ। जिउँ जिउँ वेला तिउँ तिउँ पैंडा मुकदा, पान्धी पन्ध आप मुकाईआ। जिउँ जिउँ निशाना तिउँ तिउँ तीर शब्द ना उकदा, आत्म निशान रिहा बणाईआ। जिस समें सतिगुर पूरा उठदा, गुरमुख साचे नाल मिलाईआ। ग़रीब निमाणयां उप्पर आपे तुठ्ठदा, खिमां ग़रीबी आप हंढाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सद्द सद्द तिन्नां कोलों पुछदा, गुरसिख गुरमुख हरिजन कवण कूटे डेरा लाईआ। पावे सार रूप धर माणस मनुख दा, नव नौ फोल फोलाईआ। माणस एका ज़ात बूटा उलटा रुक्ख दा, मात गर्भ उलटा वेख वखाईआ। दस्स मास धूंआँ धुखदा, अग्नी अग्ग अग्न कुण्ड तपाईआ। जिस कोलों साहिब सतिगुर रुसदा, जूनी जून दए भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग लहिणा आप मुकाईआ। जिस लहिणा तिस हरि जू देणा, लेखा लेख रहे ना राईआ। नेत्र दरस दिखाए आपणे नैणां, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। शब्द सुणाए साचा कहिणा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। नाम पहनाए तन साचा गहिणा, काया कंचन रूप वटाईआ। हरिसंगत विच मिल के बहणा, हरि जू हरि हरि होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा एका एक अख्वाईआ। एका एक देवण योग, पारब्रह्म हरि अख्वाइंदा। नाता तोड़ जगत वियोग, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। चरन कँवल कराए धुर संजोग, आप आपणे रंग रंगाइंदा। दरस दिखाए इक्क अमोघ, रूप अनूप आप वटाइंदा। सोहँ शब्द चुगाए साची चोग, हँसा काग रूप वटाइंदा। लेखा चुक्के तीन लोक, त्रैगुण बन्धन आप मुकाइंदा। इक्क वखाए साची ओट, दूसर सीस ना कोए झुकाइंदा। जगत वासना कढ्ढे खोट, आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाइंदा। निर्मल नूर जगाए जोत, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। बन्द किवाड़ा खुल्ल्हे सोत, दूई द्वैती पर्दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लहिणा झोली पाइंदा। हरिजन लहिणा झोली पा, हरि हरि साचा ख़ुशी मनाईआ। गुरमुख मिल्या सच्चा शाह, जिस दा दिता कर्ज़ा लाहीआ। नाल बणाए हरिसंगत ग्वाह, अभुल भुल कदे ना जाईआ। जगत विछड़े मेले आ, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। आप जपाए आपणा नाँ, गुरसिखां नाम आपे गाईआ। बण सुहेला पकड़े बांह, जिउँ सज्जण मीत गुसाँईआ। निथाव्याँ देवे चरन कँवल साचा थाँ, थान थनंतर इक्क सुहाईआ। गुरमुख बाल अञ्याणे गोद बिठाए जिउँ बालक मां, पिता पूत आप हो जाईआ। सदा सुहेला समरथ रक्खे ठंडी छाँ, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब कर्म पूर्ब जन्म लेखा लेखे लाईआ। लेखा लेखे लाए हरि निरँकारा,

हरिजन साचा मेल मिलाईआ। तुट्टा फंद अन्तिम वारा, फाँसी गल ना कोए लटकाईआ। लेखा मंगे ना कोए आए दुआरा, हिसाब किताब ना कोए जणाईआ। गुर सतिगुर पावे साची सारा, जिस काया चोला बणत बणाईआ। देवे दरस अगम्म अपारा, रूप अनूप आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे लए लगाईआ। लेखा लेखे जाए लग्ग, जिस जन हरि हरि आप लगाइंदा। दरस दिखाए सूरा सर्बग्ग, सुर नर मुन जन आपणे दर बहाइंदा। त्रैगुण अग्नी बुझे अग्ग, तत्व तत सर्ब मिटाइंदा। हँस बणाए फड़ फड़ कग्ग, काग हँस रूप वटाइंदा। माणक मोती हीरा बणे सुच्चा नग, जिस जन आपणे सीस टिकाइंदा। अन्त काल अद्धविचकार ना जाए छड्ड, पार किनारा आप वखाइंदा। लक्ख चुरासी नालों करे अड्ड, साचे मन्दिर आप बहाइंदा। इक्क सुणाए साचा नाद, नाम निधाना आपे गाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा आप मुकाइंदा। लहिणा मुक्के जगत जुग, जुग चार आरजा बीत बिताईआ। सन्त सुहेले गुरु गुरमुख गुर गुर चुग, चुण चुण आपणे संग मिलाईआ। जिउँ जिउँ औध रही पुग, घड़ी पल्ल लेखा वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन मेला एका घर, घर संगत रूप वटाया। पुरख अबिनाशी अंदर बैठा वड़, घट घट आपणा आसण लाया। इक्क दूजे दा फड़ाए लड़, साक सज्जण सैण भाई भैण मीत मुरारा गुरमुख इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा संग निभाया। साध संगत साचा संग, गुर सतिगुर संग निभाईआ। नेत्र पेख चढ़े रंग, मन मलंग उठ ना दहि दिश धाईआ। सुहाए सुहञ्जणी सेज पलँघ, आत्म अन्तर आप विछाईआ। उप्पर बैठ सूरा सरबंग, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन फड़ाए साचा लड़, हरिसंगत संग रखाईआ। हरिसंगत हरी दुआर, हरि की पौड़ी आप चढ़ाइंदा। अमृत जल वहाए धार, डूँघी धार आप रखाइंदा। शंकर वेख करे प्यार, वाहवा हरि हरि खेल खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो उज्यार, पतित पवित पतित पुनीता आपणा दर वखाइंदा। जगत निमाणे जाए तार, ठांडा सीता सति सन्तोख दया निध दीन दयाल ठाकर सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन हरिसंगत मेला, आप कराए सज्जण सुहेला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा बन्धन आपे पाइंदा।

★ २१ जेठ २०१८ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ जम्मू।★

सो पुरख निरँजण साहिब सुल्तान, निरगुण अनुभव रूप रखाइंदा। सचखण्ड वसे सच मकान, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। थिर घर जोत नूर महान, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपणी इच्छया नाम प्रधान, धुर फ़रमाना नाद अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आपणा खेल खिलाइंदा। आदि पुरख हरि खेल न्यारा, रूप अनूप आप धराइंदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यारा, हरि पुरख निरँजण भेव चुकाइंदा। एकँकारा वसणहारा उच्च अटल मुनारा, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। आदि निरँजण जोत नूर कर उज्यारा, दीवा बाती ना कोए रखाइंदा । अबिनाशी करता आपणा खोल् किवाड़ा, थिर घर साचा रंग रंगाइंदा। श्री भगवान नाद अनादी बोल जैकारा, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आप आपणा कर पसारा, निरगुण निराकार वेख वखाइंदा। सच सिँघासण साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाहो भूप आपणा हुक्म वरताइंदा। दर दरवेश बण भिखारा, अलख अगोचर आपणी अलख जगाइंदा। निउँ निउँ करे आप निमस्कारा, सीस जगदीस आप झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा हुक्म आप चलाइंदा। आदि पुरख पुरख अकाल, अकल कल वडी वड्याईआ। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाल, दूसर बंक ना कोए सुहाईआ। आपणा दीपक आपे बाल, साचे मन्दिर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा खेल खिलाईआ। आदि पुरख हरि खेल अवल्ला, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। सचखण्ड दुआरे वसे सच महल्ला, दर घर साचे सोभा पाइंदा। आपणे नूर आपे बल्ला, नूर नुराना डगमगाइंदा। सच संदेश आपे घल्ला, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण आपे चढ़, राज राजान आप अख्वाइंदा। शाहो भूप हरि राजन राजा, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। आपणा साजण आपे साजा, ना कोई पिता ना कोई माईआ। आप सुणाए आपणा वाजा, नाद धुंन आप उपाईआ। आपे रचया आपणा काजा, थिर घर साचे दए वधाईआ। आपे रक्खे आपणी लाजा, आप आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। आपणा भेव हरि चुकाइंदा, निरगुण रूप रूप अगम्म। आपणा खेल आप खिलाइंदा, आपणी इच्छया आपे प्या जम्म। आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा, आपे बेड़ा रिहा बन्न्। आपणी जोत आप जगाइंदा, ना कोई सूरज ना कोई चन्न। आपणा वेस आप वटाइंदा, ना कोई जननी जणे जन। आपणा बल आप धराइंदा, पुरख अगम्मा हो प्रबल। आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा, आपणे अंदर मार उछल्ल। आपणी वस्त आप वरताइंदा, सच संदेसा एका घल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आदि पुरख एका हरि आपणा खेल आप खिलाइंदा। आदि पुरख हरि खेल अपारा, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। सचखण्ड निवासी हो उज्यारा, सचखण्ड बैठा सेज सुहाईआ। आपे नारी बण बण कन्त भतारा, आपणा संग निभाईआ। आप उपाए सुत दुलारा, आपणी वण्ड वंडाईआ। आपे विष्न ब्रह्मा शिव कर उज्यारा, त्रै त्रै लेखा दए गणाईआ। आपे त्रैगुण माया बण वरतारा, आपे पंचम तत्त करे कुड़माईआ। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड कर पसारा, लोआं पुरीआं करे रुशनाईआ। आपे रवि ससि जोती नूर देवे साची धारा, मंडल मण्डप आप सुहाईआ। आपे जल थल महीअल लाए अखाड़ा, आप आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी झोली आप भराईआ। आपणी इच्छया झोली भर, हरि साचा खेल खिलाइंदा। आपणी गोदी शब्द धर, शब्द गोद विष्न बहाइंदा। विष्न अंदर अमृत धर, कँवल नाभ खिलाइंदा। कँवल अंदर ब्रह्म वड़, पारब्रह्म प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। हरि हरि आपणा खेल खिलाया, महिमा अकथ अकथ रखाइंदा। दाई दाया बण बण सेव कमाया, दिस किसे ना आइंदा। विष्न ब्रह्मा आपे जाया, साची गोद सुहाइंदा। एका अक्खर दए पढ़ाया, दूजा होर ना कोए वखाइंदा। कागद कलम ना रक्खे शाहया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणी रचना वेख वखाइंदा। एका विष्न विश्व धार, हरि आपणा नूर धराइंदा। जोती जाता पुरख बिधाता हो उज्यार, आप आपणा मेल मिलाइंदा। कमलापाता देवे साथा, सगला संग निभाइंदा। आप सुणाए आपणी गाथा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। इक्क रखाए साचा हाटा, चरन दुआर सोभा पाइंदा। निरगुण जोत नूर ललाटा, एका नूर डगमगाइंदा। साचे तख्त बैठा पुरख अबिनाशा, निरगुण आपणा नूर वखाइंदा। विष्नूं निउँ निउँ टेके माथा, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। साहिब सुल्तान सर्ब कल समराथा, आपणी कल आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणी रचना हरि निरँकारा, निरगुण निरवैर आप रचाईआ। साकार खेल अगम्म अपारा, भेव अभेद आप चुकाईआ। एका मन्दिर सच दुआरा, सच साचा दए वखाईआ। एका हुक्म इक्क वरतारा, एका गुण दए समझाईआ। एका वस्त इक्क भण्डारा, एका रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मार्ग रिहा वखाईआ। साचा मार्ग हरि जणाइंदा, विष्न ब्रह्मा कर त्यार। नूर नूर आप धराइंदा, निरगुण आपणा कर आधार। आपणा दरस आप वखाइंदा, स्वच्छ सरूपी हो उज्यार। आपणा लेख आप पढ़ाइंदा, लिख्या लेख अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे तत्त विचार। एका तत्त शब्द ज्ञाना, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाईआ। एका बन्ने साचा गाना, पुरख अबिनाशी सगन मनाईआ। एका राग इक्क

७२६

तराना, एका नाद रिहा वजाईआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका घर रिहा वखाईआ। एका साहिब इक्क सुल्ताना, शाहो भूप इक्क वड्याईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, एका एक रिहा मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा भेव चुकाईआ। आदि पुरख चुक्कया भेव, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आदि जुगादि रहे सदा निहकेव, निहचल धाम आसण लाइंदा। विष्न तेरी साची सेव, सेवक रूप आप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। विष्न तेरा साचा रंग, सो पुरख निरँजण आप रंगाईआ। तेरे अन्तर सच पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाईआ। तेरी कँवली इक्क तरंग, कँवल फुल्ल महिकाईआ। तेरे बाहर परमानंद, अनन्द अनन्द समाईआ। तेरा रूप निरगुण चन्द, साचा चन्द दए वखाईआ। तेरा मुख खोल्हे बन्द, बन्दीखाना दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए वखाईआ। एका गुण श्री भगवान, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरा रूप अनूप महान, पारब्रह्म आप प्रगटाइंदा। तेरा नाउँ सच निशान, इक्क इकल्ला आप उठाइंदा। वस्त अमोलक देवे दान, तेरी झोली आप भराइंदा। ब्रह्मा वेता कर परवान, तेरा संग मिलाइंदा। दोहां विचोला नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाइंदा। एका हुक्म करे फ़रमान, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। वेखणहारा सुन अगम्मी सुंञ मसाण, आप आपणा नैण खुल्हाइंदा। आपणी इच्छया प्रगट करे आप मेहरवान, आपणा अंग अंग नाल मिलाइंदा। शंकर लेखा इक्क वखाण, साचा बन्धन आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। हरि पर्दा आप चुकाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार। वस्त अमोलक आप वरताइंदा, त्रैगुण माया तत्त भण्डार। लक्ख चुरासी घाड़न इक्क घड़ाइंदा, भाण्डे घड़े आप ठठयार। साची भट्ठी आप तपाइंदा, अग्नी तत्त कर उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे साची कार। साची कार करता पुरख, विष्न ब्रह्मा शिव जणाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, लक्ख चुरासी लए प्रगटाईआ। एका दस्से आपणी परख, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। आप बहाए चरन धूढ़ी फर्श, अर्श आपणा रंग वखाईआ। आदि जुगादि ना करना तरस, त्रै त्रै वेखे थाउँ थाँईंआ। आप वखाए आपणा दरस, तिन्नां पूरी आस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाईआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ना, हरि साचा सच जणाइंदा। विष्नूं भण्डारा एका भरना, ब्रह्मा ब्रह्म रूप धराइंदा। शंकर अन्तिम खेल करना, जो घड़या भन्न वखाइंदा। सभ दे अंदर हरि जू वड़ना, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। आपणे पौड़े आपे चढ़ना, साचा मन्दिर इक्क सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी खेल खिलाइंदा। लक्ख चुरासी खेल खिलाउणा, पुरख अकाल

दए वड्याईआ। विष्नूं तेरा बंस बणाउणा, बंसावली आप हो जाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म धराउणा, पारब्रह्म करे रुशनाईआ। शंकर तेरा संग निभाउणा, विछड़ कदे ना जाईआ। साची सेवा इक्क समझाउणा, साचा मार्ग रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए वखाईआ। एका गुण हरि करतारा, त्रै त्रै आप जणाइंदा। लक्ख चुरासी ब्रह्म पसारा, पारब्रह्म प्रभ खेल खिलाइंदा। जोती जाता हो उज्यारा, घट घट नूर नूर डगमगाइंदा। आपणा हुक्म सुणाए सच्ची सरकारा, घट अनहद नाद वजाइंदा। आपणा सिँघासण लाए अपर अपारा, आत्म सेजा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव साची सेवा लाइंदा। साची सेवा कर परवान, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाया। तूं दाता दानी श्री भगवान, हउँ भिक्खक भिखारी दर ते आया। लक्ख चुरासी दिता दान, वस्त अमोलक झोली पाया। कवण रूप लोकमात होए प्रधान, कवण हिस्सा वण्ड वण्डाया। कवण वखाए सच निशान, सच निशाना कवण उठाया। कवण सुणाए साचा गान, कवण नाउँ नाउँ प्रगटाया। कवण इष्ट करे ध्यान, कवण निगहबान होए सहाया। कवण बख्शे साचा माण, कवण गले लए लगाया। कवण अन्तिम मेले आण, विछोड़ा दए कटाया। एका देणा सच फ़रमान, हउँ दर बैठे मंगण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच संदेसा आप सुणाया।

७२७

सच संदेसा श्री भगवाना, विष्न ब्रह्मा शिव आप सुणाईआ। सो पुरख निरँजण होए प्रधाना, नूर नूर रुशनाईआ। हँ ब्रह्म वेखे लक्ख चुरासी जीव जहाना, ब्रह्म आपणी वण्ड वंडाईआ। आपणा नाउँ वखाए सच निशाना, आदि जुगादि झुलाईआ। अमृत आत्म देवे पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। नाद अनादि सुणाए गाना, घट मन्दिर आप वजाईआ। घर घर प्रगट होवे साचा कान्हा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। आत्म ब्रह्म करे परवाना, आपणी गोद बहाईआ। चरन कँवल बख्शे इक्क ध्याना, हरि सरन सच्ची सरनाईआ। चार खाणी वण्ड वण्डाना, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज नाउँ रखाईआ। चारे बाणी सुणाए गाना, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। चारे जुग करे प्रधाना, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नाउँ रखाईआ। चारे वरन वखाए निशाना, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रूप वटाईआ। अठारां बरन देवे माणा, वरन अवरन आपे हो जाईआ। गुर गुर रूप पहने बाणा, जोती जोत कर रुशनाईआ। भगतां सुणाए सच तराना, लक्ख चुरासी विच्चों लए जगाईआ। सन्तां देवे नाम निधाना, वस्त अमोलक झोली पाईआ। गुरमुख वेखे मार ध्याना, आलस निन्दरा विच ना आईआ। गुरसिखां वखाए इक्क मकाना, हरि चरन सच्ची सरनाईआ। जुग जुग आवे जावे खेले खेल दो जहाना, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। आपणा देवे नाम परवाना, अवतार गुर संदेस सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा

७२७

शिव आप समझाईआ। तिन्नां सुणया हरि सुणाया, निउँ निउँ करन निमस्कारा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्ड वण्डाया, कवण रूप आए हरि निरँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दस्सणा खोल्ह किवाड़ा। खोल्ह किवाड़ हरि सुणाइंदा, धुर फ़रमाना बोल जैकार। सतिजुग सति सति वरताइंदा, ब्रह्म मति कर प्यार। रती रत रत रंगाइंदा, नाम रत तन शंगार। साचा रथ आप चलाइंदा, रथ रथवाही हो त्यार। निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा, वार अठारां लए अवतार। सिर बावन ताज टिकाइंदा, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप जणाए आपणी कार। सतिजुग अन्तिम पार कराउणा, त्रेता मात लए प्रगटाईआ। दोए दोए रूप जामा पाउणा, महिमा अनूप आपणी आप वखाईआ। गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ाउणा, आत्म दरसी लए मिलाईआ। साचा मार्ग इक्क रखाउणा, चार वरन वरन सरनाईआ। अन्तिम अन्त पन्ध मुकाउणा, थिर लेखा दए चुकाईआ। द्वापर दोए दोए जोग कमाउणा, लोकमात कर रुशनाईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ाउणा, एका भगत दए समझाईआ। दुष्ट हँकारी मेट मिटाउणा, हरि भगतन दए वड्याईआ। कलिजुग सत्थर कूड़ विछाउणा, चार कुण्ट वेख वखाईआ। बोध ज्ञाना मुख छुपाउणा, अगाध बोध ना कोए वखाईआ। काला सूसा रंग रंगाउणा, ईसा मूसा तन पहनाईआ। इक्क हदीसा आप पढ़ाउणा, संग मुहम्मद चार यार एका कलमा दए सुणाईआ। मुकामे हक डेरा लाउणा, हक हकीकत वेख वखाईआ। लाशरीक खेल खिलाउणा, परवरदिगार सच्ची शहिनशाहीआ। नबी रसूल मुल्लां शेख मुसायक आप पढ़ाउणा, इक्क हदीस दए जणाईआ। चौदां चौदां कुण्डा आपे लाउहणा, चौदां तबक करे रसाईआ। चौदां सदीआं झोली पाउणा, एका वण्ड वंडाईआ। नानक निरगुण जोत जगाउणा, पंज तत्त काया चोला करे रुशनाईआ। नाम सति इक्क दृढ़ाउणा, एका गुण वखाईआ। एका जोती जोत डगमगाउणा, गोबिन्द मेला साचे माहीआ। कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाउणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाउणा, हरि साचा सच जणाईआ। नौ नौ खेड़ा आप वसाउणा, नौ नव फेरा पाईआ। चार जुग दा भेख मिटाउणा, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गुर अवतार जुग जुग आपणी सेवा लाउणा, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। कोटन कोटि राम कृष्न प्रगटाउणा, सीस ताज टिकाईआ। कोटन कोटि रावण हँकारी मार मुकाउणा, एका चिल्ला तीर कमान उठाईआ। पुरख अबिनाशी वेख वखाउणा, साचे तख्त बैठा साचा माहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर कलिजुग नेत्र नज़र ना आउणा, धूंआँधार सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव एका तत्त समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। आदि पुरख प्रभ दिता दान, साची झोली आप भराइंदा। लक्ख चुरासी कर प्रधान, लोकमात नाच

नचाइंदा। शाहो भूप बण राज राजान, साचा अदल आप कमाइंदा। हथ्थ फड़ाए कमान, राए धर्म चित्रगुप्त लेखा सर्ब लिखाइंदा। लाड़ी मौत करे परवान, जीव जंत अन्त प्रनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आपणा वक्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। वेला वक्त सच्ची सरकार, तेरा तेरे हथ्थ वड्याईआ। हउँ मंगदे बण भिखार, दर दुआर दर दरवेश सीस झुकाईआ। तूं अन्तिम करना सच्चा प्यार, भुल कदे ना जाईआ। तेरा नाता अपर अपार, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। तेरी गाथा गाईए एकँकार, तेरा नाउँ जैकार लगाईआ। विष्नूं तेरा रूप अपार, सीस जगदीस रिहा समझाईआ। ब्रह्मा तेरी मेरी गुफ्तार, चार वेद करे पढ़ाईआ। शंकर तेरा मेला कन्त भतार, नारी निरगुण नूर आप प्रनाईआ। अन्तिम वेला करे कल्याण, कल काती वेखे थाउँ थाँईंआ। नव नौ चुक्के झूठ दुकान, माया ममता रहिण ना पाईआ। हउमें हंगता मिटे निशान, जूठ झूठ डंक ना कोए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला अन्त रिहा दरसाईआ। वेला अन्तिम कलिजुग आउणा, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। पुरख अबिनाशी रूप धराउणा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। पूर्ब लेखा पूर कराउणा, गुर अवतार गए समझाईआ। निहकलंक हरि आप अख्वाउणा, ना कोई पिता ना कोई माईआ। शब्द नगारा डंक वजाउणा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, राज राजान नज़र कोए ना आईआ। चार वरनां पन्ध मुकाउणा, एका रूप सर्ब दरसाईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ाउणा, सो पुरख निरँजण करे सच पढ़ाईआ। आत्म ब्रह्म नज़री आउणा, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। अठसठ तीर्थ पन्ध मुकाउणा, निझर झिरना दए झिराईआ। अमृत ताल आप भराउणा, कँवल नाभ खिलाईआ। साचा राग इक्क सुणाउणा, अनहद नाद वजाईआ। छत्ती राग मुख शर्माउणा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। बरन अठारां मेट मिटाउणा, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। कलमा अमाम इक्क पढ़ाउणा, आलमीन सर्ब लोकाईआ। राम रमईया नज़री आउणा, घट घट रामा आसण लाईआ। कान्हा कृष्ना वेख वखाउणा, काया मंडल रास रचाईआ। ईसा मूसा लड़ फड़ाउणा, मुकामे हक कर रसाईआ। मुहम्मद पन्ध आप मुकाउणा, चौदां सदीआं वेख वखाईआ। अमाम मैंहदी रूप धराउणा, शाह सुल्तान बेपरवाहीआ। नानक निरगुण नज़री आउणा, गोबिन्द जोत जोत रुशनाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार पुरख अकाल आप अख्वाउणा, विष्न ब्रह्मा शिव एका गुण दए समझाईआ। सति सति सांतक सति वरताउणा, असति दए मिटाईआ। हिंसा रोग ना किसे सताउणा, दूई द्वैत ना कोए रखाईआ। लक्ख चुरासी एका हरि का नाम चोग चुगाउणा, सोहँ हँसा माणक मोती आप रखाईआ। काया मन्दिर अंदर इक्क सुहाउणा, निरगुण दीवा बाती कर रुशनाईआ। पतिपरमेश्वर नज़री आउणा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ।

सुरत सुवाणी हाणी शब्द मिलाउणा, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। इक्क दूजे दे गल विच पल्ला पाउणा, गुरसिख गुर गुर एका रंग रंगाईआ। मुरीद मुर्शद बन्नू वखाउणा, एका डोरी हथ्थ फड़ाईआ। चन्द नौचन्दी आप चढ़ाउणा, चौदस रैण दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी एका ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। लक्ख चुरासी एका ब्रह्म, ईश जीव आप उपाइंदा। आपे देवे पवण स्वासी दम, पवण उणंजा खेल खिलाइंदा। आपे रूप वटाए पंज तत्त हड्ड मास नाड़ी चम्म, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश जोड़ जुड़ाइंदा। आप देवणहारा नाम धन्न, सच ख़ज़ाना आप वरताइंदा। आपे देवणहारा डन्न, नाम खण्डा हथ्थ उठाइंदा। आपे जो घड़या सो देवे भन्न, घड़न भन्नणहार भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा खेल आप खिलाइंदा। साचा खेल खेले ख़ालक, ख़लकत आपणी वेख वखाईआ। बिरध बाल ना दिसे रूप बालक, बाल जोबन वेख कोए ना पाईआ। निरगुण सरगुण बण के आया सालस, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। लक्ख चुरासी जीव करे ख़ालस, ज़ात पात मेट मिटाईआ। गुरसिखां मेटे झूठी निन्दरा आलस, जगत दलिद्र दए गंवाईआ। जन्म जन्म दी लाहे कालख, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। पतिपरमेश्वर बण के आया पारख, नाम कसवटी हथ्थ उठाईआ।

७३०
लोकमात हट्ट ना बणाया ना कोई देवे आढ़त, तोला नज़र कोए ना आईआ। चार दीवारी इट्टां पत्थर घाड़त, अंदर वसे ना साचा माहीआ। आत्म अन्तर पूजा पाठ वेखे घृत, साचा हवन आप दरसाईआ। लक्ख चुरासी लिख लिख लेख थक्की इबारत, लिख लिख लेखा ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता इक्क अख्वाईआ। निरगुण दाता जीव जंत, जोती जाता हरि अख्वाइंदा। पारब्रह्म पूरन भगवन्त, पतिपरमेश्वर खेल खिलाइंदा। मुकंद मनोहर लखमी नरायण आदि अन्त, रूप अनूप आप धराइंदा। हरिजन मेले साचे सन्त, सति सतिवादी वेख वखाइंदा। होए मिलावा जिउँ नार कन्त, साची सेजा सोभा पाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, साची सेवा आप कमाइंदा। आपणी महिमा जणाए अगणत, आपणी विद्या आप सिखाइंदा। आपे गुरु आपे अक्खर आपे मंत, आपे पढ़ पढ़ नाद वजाइंदा। कलिजुग अन्तिम चार वरन इक्क बणाए साची संगत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पन्ध मुकाइंदा। हरिजन साचा आत्म बोध साचा पंडत, जिस जन ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाइंदा। झूठी माया करे खण्डत, खण्डा नाम विच फिराइंदा। मुरीदां वखाए मुर्शद जन्नत, चरन दुआरा इक्क वड्यांअदा। गढ़ु तोड़े हउमें हंगत, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। हरिजन दूजे दर ना जाए मंगत, जिस जन पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, विष्न ब्रह्मा शिव एका घर वखाइंदा। एका घर दर दरवाज़ा, पुरख अबिनाशी आप खुल्हाईआ। ग़रीब निमाणयां पाए सार ग़रीब निवाज़ा, दीनन आपणी दया कमाईआ। एका नाम चलाए सच जहाज़ा, चार वरन लए चढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथमी फिरे भाजा, सत्तां दीपां फेरा पाईआ। फड़ फड़ बन्ने शाह नवाबा, राजन राज बचया कोए रहिण ना पाईआ। अश्व घोड़े चढ़या ताजा, नीला नीली धारों पार कराईआ। नाल रखाया अनहद वाजा, गुरमुखां अंदर रिहा वजाईआ। अन्तिम अन्त रक्खे लाजा, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। मनमुख जीवां खोल्हे पाजा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार जो बैठे मन लगाईआ। एका भुल्लया जिस जन साजण साजा, शाह पातशाह नजर ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, पारब्रह्म पुरख सुल्ताना, जन भगतां बन्ने साचा गाना, नाम निशानी हथ्थ उठाईआ। नाम निशानी बन्ने तन्द, सतिगुर पूरा दया कमाइंदा। गुरमुख चढ़ाए साचे चन्द, लोकमात आप चमकाइंदा। चार वरन सुणाया सुहागी छन्द, साचा मंगल आपे गाइंदा। गुरमुख विरला पाए परमानंद, मनमुख मदिरा मास मुख लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। कूड़ी क्रिया टुट्टे नाता, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। कलिजुग छुपे अन्धेरी राता, चार कुण्ट अन्धेरा दए मिटाईआ। भेव चुकाए ज़ातां पातां, एका ब्रह्म दए दरसाईआ। एका नाम सुणाए साची गाथा, घट घट अंदर करे पढ़ाईआ। एका मन्दिर एका पूजा पाठा, इष्ट देव इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा मात देवे धर, आपणी हथ्थीं बूटा लाईआ। कलिजुग पैंडा मुकणा, लेखा अन्तिम वार। सतिजुग साचा उठणा, पुरख अबिनाशी लए उठाल। दोहां भार आपे चुक्कणा, करे खेल सच्ची सरकार। शेर हो हो लोकमात झल्ल विच बुक्कणा, सिँघ मारे इक्क ललकार। विष्नूं तेरा अन्तिम लेखा मुकणा, मुकावणहार आप निरँकार। नव नौ चार जो सुक्खी सुक्खणा, अन्तिम भरे भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख सज्जण लाए पार।

७३१

७३१

★ २२ जेठ २०१८ बिक्रमी माई लछमी दे गृह पिण्ड सीड़ जम्मू ★

सुरत सुवाणी जगत वैरानी, पंज तत्त अन्तर रही कुरलाईआ। कवण देवे अमृत पाणी, ठंडा जल प्याईआ। कवण सुणाए अगम्मी बाणी, अनहद शब्द नाद वजाईआ। कवण सुणाए अकथ कहाणी, आपणी महिमा आप गणाईआ। कवण

वखाए पद निरबाणी, निर्भय रूप कराईआ। कवण बणाए साची राणी, घर साचा सगन मनाईआ। कवण मिलाए साचा हाणी, घर शब्दी बेपरवाहीआ। जगत विहूणी होई निमाणी, बल आपणा नज़र कोए ना आईआ। मन मति बुध होई नादानी, निरगुण रूप ना सके कोए दरसाईआ। अठसठ फिर फिर वेख्या पाणी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। वड़ वड़ वेख्या चार खाणी, आपणा आसण लाईआ। कोई ना दस्से सच निशानी, घर साचा ना कोए वखाईआ। मैं सुणया पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्क सच्चा सुल्तानी, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जगत निमाणी ल्ए तराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी आई हानी, मेरी सार कोए ना पाईआ। कोए ना मिल्या सच्चा जानी, दिलबर दर्द ना कोए वण्डाईआ। कर किरपा वड मेहरवानी, दर तेरे सीस झुकाईआ। कोझी कमली कर परवानी, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। तेरा नाउँ मेरे तन सोहे गानी, मन का मणका दए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विहूणी रही कुरलाईआ। सुरती रोवे धाहां मार, उच्ची कूक कूक पुकारया। मेरा वासा डूँघी गार, कोई दिसे ना पार किनारया। मेरा नाता जुड़या पंचम यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार फिरे बलकारया। आसा तृष्ना वेख्या जगत प्यार, माया ममता मोह बन्धन इक्क रखा ल्या। जूठा झूठा वेख वणजार, साचा हट्ट नज़र कोए ना आ रिहा। मैं फिर फिर थक्की सर्ब संसार, साचा संग ना कोए निभा रिहा। पल्ला छुडाया चार यार, मुहम्मद अपणा मुख भवा रिहा। अहिमद करे ना कोए गुफ्तार, दीद शुनीद ना कोए करा रिहा। कर रहिमत करे ना कोए प्यार, सुहबत कोए ना सच जणा रिहा। मैं आपणा आप गई हार, माण ताण ना कोए रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुध बिन अवर ना कोए तरा रिहा। सुरत सुवाणी नेत्र नैणां, नीर नीर वहाईआ। मैं मिल मिल थक्की साक सज्जण भाई भैणां, सगला संग ना कोए निभाईआ। मेरा चुकया लोकमात ना लहिणा देणा, हौला भार ना कोए कराईआ। मैं मन्नदी रही मन दा कहिणा, मन चारों कुण्ट भवाईआ। मैं माया ममता पाया गहिणा, कूड़ी नार वेस वटाईआ। जूठ झूठ कज्जल पाया नैणां, कलिजुग रही मटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्श सच्ची सरनाईआ। सुरत सुवाणी रो रो मारे कूक, कूक कूक दुहाईआ। त्रैगुण अग्नी रही फूक, सांतक सति ना कोए कराईआ। आवण जावण ना चुक्के चूक, गेड़ा गेड़ ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दे जणाईआ। सुरत सुवाणी आसा मंद, चार कुण्ट वेख वखाया। मैं दुहागण भागांमंद, मेरा रंग ना किसे रंगाया। डूँघी कंदर वड़ के बैठी ना कोई सूरज ना कोई चन्द, प्रकाश प्रकाश ना कोए धराया। पंज तत्त काया कोठड़ी करया बन्द, आपणा दर दरवाज़ा आपे बन्द रखाया। चारों कुण्ट मेरे कंध, माया ममता पर्दा पाया। मैं निमाणी होई नंग,

सीस पल्लू ना कोए रखाया। मेरा वासा करया विच गंद, जगत नेत्र दिस किसे ना आया। मैं मंगां मंग कवण सुणाए सुहागी छन्द, मेरा दुक्खड़ा दए मिटाया। मेरी टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार गोपाल कवण सिँघासण सोभा पाया। मेरा आवण जावण चुकाए पन्ध, साचा मार्ग दए वखाया। मेरा चुक्के अन्धेरा अन्ध, एका नूर करे रुशनाया। मैं सुणया सदा बख्शंद, सरन पढ़े दी लाज रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाया। सुरत सुवाणी कर पुकार, खुल्ह्ड़े केस रही वखाईआ। मैं निमाणी डिगी मूंह दे भार, कलिजुग सके ना कोए उठाईआ। उत्तों धक्का रहे मार, सगला संग ना कोए निभाईआ। मैं फिर फिर थक्की चार कुण्ट नौ खण्ड पृथ्मी विच संसार, पल्ला नाम ना कोए फड़ाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर पैग़म्बर दस्तगीर होए दस्त बरदार, दामनगीर ना कोए अख्वाईआ। पंडत पांधे थक्के मांदे अठसठ तीर्थ नीर कर विचार, साचा सीर ना कोए पिलाईआ। ग्रन्थी पन्थी गए हार नज़र ना आए सति करतार, नानक गोबिन्द मेल ना कोए मिलाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरदुआर नार वेसवा बणया संसार, विभचार रहे कमाईआ। नज़र ना आए किसे सच दरबार, जूठे झूठे माया लूठे अग्नी तत्त रहे तपाईआ। मक्का काअबा दो दो आबा फिर के आई मिले ना सांझा यार, जिस अग्गे दुक्खड़ा दयाँ सुणाईआ। विष्नूं ब्रह्मा शिव नेत्र तक्क तक्क होई धायल, कीती घाल पूरी ना कोए कराईआ। चौदां लोक वेख्या हट्ट कोई ना लभ्भे सच दलाल, सच दलाली ना कोए कराईआ। जा जा पुछिआ काल महाकाल, आपणा हाल सुणाईआ। अन्तिम होए सारे बेहाल, सीस सके ना कोए उठाईआ। राए धर्म अग्गे रक्खया इक्क सवाल, कवण फंद दए कटाईआ। चित्रगुप्त कोलों पुछिआ हाल, मेरा लेखा कवण मुकाईआ। कलिजुग अन्तिम सारे दस्सण बिन पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कोए ना सके तेरी सुरत संभाल, सुरती सुरत ना कोए उठाईआ। असीं ख़ाली हथ्थ होए कंगाल, हरि का नाम हथ्थ ना कोए वखाईआ। अन्तिम प्रगट होए इक्क अकाल, सभ दा माण दए गंवाईआ। कोई रहिण ना देवे अठसठ तीर्थ ताल, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणे चरनां विच दबाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत डूँगे सागर वेखे आप संभाल, जंगल जूह उजाड़ पहाड फेरा पाईआ। दया करे दीन दयाल, हरि ठाकर सच्चा शहिनशाहीआ। हरिजन वेखे साचे लाल, लाल अनमुल्लड़े आप बणाईआ। अंदरे अंदर करे संभाल, औदां जांदा दिस ना आईआ। घर दीपक जोत देवे बाल, तेरे मन्दिर करे रुशनाईआ। हाल मुरीदां सुणे बेहाल, गोबिन्द लेखा लेखे पाईआ। त्रैगुण अतीता तोड़े तेरा जंजाल, त्रैगुण माया फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुरती सुरत लए मिलाईआ। गुरमुख गुर गुर तेरी सुरत, हरि आपणे रंग रंगाइंदा। मेल मिलावा अकाल मूर्त, मूर्त अकाल आप अख्वाइंदा। घट नाद वजाए साची तूरत, तुरीआ राग सुणाइंदा। नज़र ना

आए जो दिसे दूरत, दूर नेड़ा पन्ध मुकाइंदा। आसा मनसा सद सद पूरत, आस नरास ना कोए कराइंदा। हज़रत सदा हाज़र हज़ूरत, हरि के पौड़े आप चढ़ाइंदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़त, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, सच सुच्च इक्क वखाइंदा। सुरत सुवाणी तेरी पूरी करे ज़रूरत, ज़र जोबन तेरा वेख वखाइंदा। तेरा प्रकाश वेखे आपणा नूरत, नूर नुराना आप चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वखाइंदा। सुरत सुवाणी तेरी सुण पुकार, हरि सतिगुर दया कमाईआ। गुरसिख काया अंदर वाड़, तेरा दुखड़ा दए मिटाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, लोअ दीप पाताल मंडल तेरी नज़री आईआ। तेरी अग्नी तपे ना हाढ़, हाढ़ सतारां तेरी अग्ग बुझाईआ। तेरा मिलाए सच्चा लाड़, एका दूल्हा दए वड्याईआ। तूं सुहागण बणना नार, हथ्थीं मैंहदी लाल रंगाईआ। बस्त्र देवे अपर अपार, साचा भूशन तन सुहाईआ। नेत्र नैण कजला पाए नाम अपार, दो जहानां आप मटकाईआ। नथ्थ सुहाग करे शंगार, नाम डोरी आप लटकाईआ। सीस गुंदे विच संसार, खुल्ल्ही गुत ना फेर वखाईआ। सख़ीआं सुणाए मंगलाचार, घर गीत गोबिन्द अलाईआ। एका दिवस दए विचार, हाढ़ सतारां साह सुधाईआ। गुरमुख सख़ीआं वरे एका वार, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। नाता तोड़े सर्ब संसार, साचा बन्धन एका पाईआ। घर मेला कन्त भतार, घर सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुरत सुवाणी मेले साचा हाणी, शब्दी शब्द करे कुड़माईआ। शब्दी सुरती हरि हरि मेला, हरिजन हरि जू हरि मन्दिर आप कराइंदा। एका घर वसे गुरु गुर चेला, गुर चेला आपणा खेल खिलाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सज्जण सुहेला, सतिगुर साचा संग निभाइंदा। आपे जाणे आपणा वेला, थित वार ना कोए रखाइंदा। करे खेल इक्क इकेला, अकल कल धारी भेव ना आइंदा। वसणहारा धाम नवेला, हर घट आपणी जोत जगाइंदा। कलिजुग अन्तिम जंगल जूह उजाड़ पहाड वेखे बेला, शेर सिँघ सिँघ शेर रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुरत सुवाणी आप बचाइंदा। सिँघ शेर मारे भबक, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। एका वार हिलाए चौदां तबक, चौदां लोक दए दुहाईआ। लक्ख चुरासी देवे एका सबक, एका संख्या दए पढ़ाईआ। पिछला लेखा करे ज़बत, ज़ाबर आपणा ज़ोर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए सदा सहाईआ। सुरत सुवाणी सुरत संभाले, चार कुण्ट उठ धाया। आपे कट्टे जगत जंजाले, जगत जंजाल रहे ना राया। गुरमुखां दस्से राह सुखाले, साचा मार्ग एका लाया। फड़ फड़ शाह बणाए कंगाले, कंगालों शाह आप कराया। हरिजन वसे तेरे नाले, सदा सुहेला संग निभाया। मनमुखां मुख होए काले, हरि का रूप नज़र किसे ना आया। पत्त ना दिसे किसे डाले, पत्तझड़ कलिजुग रिहा वखाया।

बिन हरि नामे पंज तत्त काया भाण्डे होए ख़ाले, वस्त अमोलक विच ना कोए टिकाया। कलिजुग अन्तिम चली अवल्लड़ी चाले, चाल निराली इक्क रखाया। वसणहारा वसे सच्ची धर्मसाले, धर्म दुआरा इक्क बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वखाया। सुरत सुवाणी वेखे वेस, हरि सतिगुर रूप धराया। जिस नूं मन्नदे रहे ब्रह्मा विष्न महेष, शंकर निउँ निउँ सीस झुकाया। जिस नूं करोड़ तेतीसा करे आदेस, सुरपति रिहा ध्यान लगाया। जिस नूं गुर अवतार कहिन्दे रहे रहे हमेश, ना मरे ना जाया। जिस दा दर्शन कर कर आपणा आप रहे पेख, पेखत पेखत पेखत नज़री आया। जिस नूं कहिन्दे मिल्या मेल गुर दस्मेश, पुरख अकाल वड वड्याआ। पुरख अकाल ना दाढ़ी ना मुच्छ केस, सीस जगदीस ना कोए मुंडाया। घट घट अन्तर आपे जाणे आपणा लेख, लिख लिख लेखा आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुरती सुरत लए जगाया। सुरती सुरत शब्द जगा, एका हुक्म सुणाईआ। जुग विछड़े जग लए मिला, जाग्रत जोत कर रुशनाईआ। कागों हँस लए बणा, हँस काग आप बणाईआ। सहँसा विच्चों गुरमुख विरला लए प्रगटा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। मूर्ख मूढ़े झूठे धन्दे देवे ला, निन्दक निन्दया मुख रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सुरती लए प्रनाईआ। गुरमुख सुरती हरि सतिगुर पाया, मिटया माण अभमान। मन का भय रहे ना राया, निरभउ घर विच करे आप परवान। पंजां कोलों डर डर जो वक्त लँघाया, कर किरपा नाता तोड़े पंज शैतान। गुर दर मन्दिर मस्जिद वड़ वड़ जो बैठी रही राह तकाया, कवण वेला मिले भगवान। पुरख अबिनाशी खेल रचाया, किरपा करी गुण निधान। मैं कोझी कमली जगत विहूणी आप उठाया, चरन धूढ़ी देवे दान। जन्म जन्म दी मैल गंवाया, आपणे दर करे परवान। जगत कुचज्जी गले लगाया, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। मैं आई भज्जी हरि दर्शन पाया, पाया पुरख पुरख सुल्तान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपे आण। हरिजन सुरती चुकया पन्ध, लक्ख चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। पुरख अकाल सुणाया एका छन्द, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। तेरी नंगी होण ना देवे कंड, उप्पर पर्दा आप रखाईआ। तेरा वासा कढ्ढे विच्चों ब्रह्मण्ड, आप आपणा मेल मिलाईआ। साचे घर वखाए परमानंद, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सुरती रंग समाईआ। गुरमुख सुरती मेल मिलंना, मिल्या श्री भगवान। आवण जावण बेड़ा भन्ना, पैंडा मुक्या दो जहान। करे वसेरा बिन छंपर छन्ना, ना कोई मन्दिर ना मकान। पैज रखाए जिउँ जट्ट धन्ना, परम पुरख हरि सुल्तान। साहिब सतिगुर एका मन्ना, गुरमुख सुरती करे परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि जू मेले आण। हरि मिल्या

वर पाया पारब्रह्म, परम पुरख सुल्ताना। हरख सोग ना कोए ग़म, चिंता रोग ना कोए वखाना। हड्ड मास नाड़ी तन पंज तत्त ना कोए कम्म, जोती जोत जोत समाना। नाद अनादी एका राग सुणे बिन कन्न, रसना जिहवा ना कोए रखाना। वेखे प्रकाश बिन सूरज चन्न, जोती जोत डगमगाना। गुरसिखां सतिगुर बेड़ा देवे बन्न्, सचखण्ड बहाए देवे शब्द बबाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख सुरती देवे दान, अकालमूर्ति हो मेहरवान, सचखण्ड वखाए इक्क निशान, आप आपणे विच मिलाना।

★ २२ जेठ २०१८ बिक्रमी पुंनू राम दे गृह चक्रोई जम्मू ★

मन इच्छया पूरन आस, आस आसा विच समाईआ। लेखा जाणे पवण स्वास, स्वास स्वास आप चलाईआ। निज घर आत्म कर कर वास, वास निवासा धाम सुहाईआ। भाग लगाए तन प्रभास, पत्त डाल्ही आप महिकाईआ। बन्दी छोड़ करे बन्द ख़लास, बन्धन बंध ना कोए रखाईआ। दे दरस बुझाए प्यास, तृष्ना तृखा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा भुल कदे ना जाईआ। अभुल साहिब गुर करतार, हरी हरि नर नरायण रूप अख्वाइंदा। जन्म कर्म पूर्ब रिहा विचार, वरन बरन ना कोए जणाइंदा। लहिणा देवे कर्ज उतार, मकरूज आपणा फ़र्ज निभाइंदा। जगत तृष्ना दए निवार, रोग सोग दु:ख मिटाइंदा। आत्म सुख इक्क प्यार, प्रेम प्याला जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जुगत रक्खे आपणे हथ्थ, समरथ आपणा खेल खिलाइंदा।

★ २२ जेठ २०१८ बिक्रमी माया देवी दे गृह सीड़ जम्मू ★

सुरती मिले हरि गोबिन्द, गोबिन्द मेला आप मिलाईआ। सर्ब दुखड़ा लथ्थे चिन्द, चिंता चिखा ना कोए तपाईआ। अमृत बख्शे सागर सिन्ध, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। मेल मिलाए गुणी गहिन्द, गहर गवर बेपरवाहीआ। आदि जुगादि सदा बख्शंद, बख्शणहार सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आपणे मेल मिलाईआ। मिल्या मेल हरि निरँकार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण विच समाया। किरपा करी पुरख अपार, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे रंग रंगाया। खेले खेल विच संसार, संसार सागर दए तराया। गुरसिख सदा जगत वलों गए हार, माणस जित सतिगुर हथ्थ रखाया। झूठ अडम्बर मोह विहार, माया सुअम्बर इक्क रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप

बहाए आपणे अम्बर, अमृत जाम इक्क प्याया। मिल्या मेल श्री भगवान, घर साचे मिली वड्याईआ। धर्म वखाए इक्क निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। झुलदा दिसे दो जहान, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। नव नौ लेखा जाणे साचा काहन, रूप अनूप आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला आप रखाईआ। मिल्या हरि भगवन्त, हरि सज्जण सच्चा पाया। होई सुहागण लध्धा कन्त, नढ्ढी लेखे लए लगाया। चाढ़या रंग इक्क बसन्त, चोली काया वेख वखाया। मेरी पूरी होई मन्नत, मेरा लेखा लेखे पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। मिल्या हरि सच्चा शहिनशाह, आदि जुगादि सच्ची शहिनशाहीआ। एका अक्खर दिता पढ़ा, दूजी विद्या ना कोए सिखाईआ। एका मार्ग दिता दिखा, आपणा पर्दा आप उठाईआ। एका घर दिता सुहा, बंक दुआर मिले वड्याईआ। एका वार झोली दिता पा, सदा सुहेला ना मरे ना जाईआ। आपणी हथ्थीं पकड़े मेरी बांह, ना सके कोए छुडाईआ। लै के जाए सचखण्ड दुआरे साचे थाँ, थान थनंतर आप सुहाईआ। नाता तुट्टे पिता मां, भैण भाई संग ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट नज़री आए इक्क मेहरबां, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। दर आया घर देवे माण, निमाणयां होए सहाईआ। धन्न वड्याई लक्ख चुरासी विचों कर पछाण, आप आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाईआ। मिल्या हरि सच्चा बनवारी, बन खण्ड मेरी सार समाल दा। चार जुग मैं रही कँवारी, साचा कन्त कोए ना मिल्या जो जल्वा नूरी नूर वखाल दा। आपणे दर करे प्यारी, लेखा चुकाए एका वार साचा वसल अहिबाब मीत मुरार दा। जंगल जूहां रही पुकारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल पुरख अकाल दा। मिल्या हरि पुरख अकाला, कालख टिक्का दए धुआईआ। एका पाए साची गल माला, आप आपणा घाड़त लए घड़ाईआ। साचा मार्ग दए सुखाला, आत्म परमात्म आपणे रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा तोड़या जगत जंजाला, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। पाया हरि छुट्टा जग, लक्ख लक्ख ख़ुशी मनाईआ। पारब्रह्म तेरे सेवां पग, तेरी सच्ची सरन सरनाईआ। लक्ख चुरासी अंदर तपी तन्दूर अग्ग, हड्डीआं बालण वेख वखाईआ। मेरे सज्जण बण बण मैनूं गए ठग्ग, घर विच ठगौरी पाईआ। मेरा धीरज सति सन्तोख दा तुट्टा तग, जत तत्त ना कोए वखाईआ। मैं तेरे अंग गई लग्ग, अंगीकार कर सच्चे माहीआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, निर्मल निर्मल निर्मल रूप रखाईआ। मैं निमाणी भागां मंद, मंगती दर दुआरे बैठी सीस झुकाईआ। तेरा रूप सदा सैभं, गुर प्रसाद तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे देणी थाईंआ। मिल्या हरि सच्चा दाता, दीनन नाथ दया कमाइंदा।

इक्क सुणाई साची गाथा, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। मेटी रैण अन्धेरी राता, प्रकाश प्रकाश आप वखाइंदा। चरन कँवल बंधाया नाता, साचा बन्धन पाइंदा। इक्क खुल्ाया आपणा हाटा, दूजे हट्ट ना कोए विकाइंदा। पाया पुरख पुरख समराथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे विच टिकाइंदा। आपणे अंदर आपे रक्ख, आपणा बंक आप सुहाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे रिहा चलाईआ। हिरदे अंदर आपे वस, हरि का नाम करे पढ़ाईआ। तीर निराला मारया कस, आर पार आप वखाईआ। गुरमुख पूरी करे आस, आसा मनसा पूर कराईआ। प्रगट हो पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता वेखे थाउँ थाईंआ। जन्म जन्म दी बुझाए प्यास, तृष्ना तृखा रहे ना राईआ। साची सख़ीआं साचा काहन मिल मिल पाए रास, मंडल मण्डप दए वड्याईआ। अन्तिम कर बन्द ख़लास, मन्दिर दए वखाईआ। गुरमुख तेरा रूप ब्रह्म प्रकाश, पारब्रह्म विच समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां उप्पर आपणा डेरा लाईआ।

★ २२ जेठ २०१८ बिक्रमी देवी सिँघ दे गृह मग्घोवाली जम्मू ★

निरगुण रूप श्री भगवान, सो पुरख निरँजण नाउँ धराइंदा। सरगुण रूप अनूप महान, गुर गुर आपणा खेल खिलाइंदा। साचा नाम कर प्रधान, भगतन झोली आप भराइंदा। सन्तन देवे ब्रह्म ज्ञान, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। गुरमुखां राग सुणाए कान, अनहद नादी नाद वजाइंदा। गुरसिख बणाए चतुर सुजान, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। वेखणहारा पंज तत्त काया मकान, गढ़ बंक आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। निरगुण रूप हरि पुरख निरँजण, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। सरगुण रूप दर्द दुःख भय भंजन, गुर गुर नाउँ प्रगटाईआ। जन भगतां नेत्र पाए नाम अंजन, साचे सन्तां करे सच रुशनाईआ। गुरमुख मेले साचे सज्जण, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। गुरसिखां कराए एका मज्जन, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डे भज्जण, भन्नणहार इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप वटाईआ। निरगुण रूप एकँकार, अकल कला अख्वाइंदा। सरगुण रूप विच संसार, गुर गुर शब्दी डंक वजाइंदा। भगतन साचा दए आधार, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। सन्तन खोल्हे बन्द किवाड़, आप आपणा मेल मिलाइंदा। गुरमुख साचे पौड़े देवे चाढ़, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। गुरसिख करे प्रकाश नाड़ नाड़, जोती जाता जोत जगाइंदा। लक्ख चुरासी पावे सार, भेव अभेद अभेव खल्ाइंदा। जुगा जुगन्तर साची कार, जुग करता आप कराइंदा। वसणहारा ठांडे दरबार, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

७३८

किरपा कर, रूप अनूप आप धराइंदा। निरगुण रूप निरँजण आदि, आदि पुरख बेपरवाहीआ। गुर गुर वेस करे विच ब्रह्माद, ब्रह्म नाद इक्क वजाईआ। भगतन देवे साची दाद, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सन्त सुहेले आपे लाध, आप आपणा मेल मिलाईआ। गुरमुखां मेटे वाद विवाद, माया ममता मोह चुकाईआ। गुरसिखां लक्ख चुरासी विच्चों लए काढ, दर घर साचा इक्क समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण रूप श्री भगवान, इक्क इकल्ला सोभा पाइंदा। गुर गुर रूप विच जहान, सरगुण आपणा वेस वटाइंदा। भगतन वसे काया मन्दिर सच मकान, आत्म सेजा आसण लाइंदा। सन्तन एका राग सुणाए कान, रसना जिहवा ना कोए हिलाइंदा। गुरमुखां वखाए पद निरबाण, साचे मन्दिर आप बहाइंदा। गुरसिख मिलाए एका काहन, आप आपणा रूप धराइंदा। लेखा जाणे दो जहान, दो जहानां वाली आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। करे प्रकाश कोटन भान, रवि ससि नूर धराइंदा। चौदां लोक हट्ट दुकान, वण्डणहारा वण्ड वंडाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव वेखे मार ध्यान, करोड़ तेतीसा भेव चुकाइंदा। सुरपति राजा इन्द कर परवान, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। त्रैगुण माया कर प्रधान, पंचम जोड़ जुड़ाइंदा। देवणहारा देवे दान, लक्ख चुरासी घाड़त आप घड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप रखाइंदा। निरगुण रूप पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता हरि अख्वाइंदा। गुर गुर वेखे खेल तमाश, सरगुण काया चोला आप हंढाइंदा। भगतन पूरी करे आस, स्वच्छ सरूपी रूप धराइंदा। सन्तन अंदर पावे रास, गोपी काहन आप नचाइंदा। गरमुखां देवे जोत प्रकाश, जोत निरँजण दीप जगाइंदा। गुरसिखां करे बन्द ख़लास, आपणा बन्धन आप पाइंदा। आदि जुगादि ना होए विनास, जन्म मरन ना कोए रखाइंदा। साचे तख्त बहे शाहो शाबाश, सच सिँघासण आसण लाइंदा। निर्मल जोत इक्क प्रकाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप निभाइंदा। निरगुण रूप पारब्रह्म, ना मरे ना जाईआ। गुर गुर रूप करे साचा कम्म, सरगुण तत्व तत समाईआ। भगतन बेड़ा देवे बन्न्ह, जुग जुग वेख वखाईआ। सन्तन देवे नाम धन, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। गुरमुखां राग सुणाए कन्न, तार सतार ना कोए हिलाईआ। गुरसिख चढ़ाए साचे चन्न, जोत नूर नूर सवाईआ। जुग जुग बेड़ा रिहा बन्न्ह, बेअन्त बेपरवाहीआ। वसणहारा बिन छप्परी छन्न, सचखण्ड दुआरे बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा वेस वटाईआ। निरगुण रूप पुरख अकाला, अकल कल वडी वड्याईआ। सरगुण रूप दीन दयाला, लोकमात करे रुशनाईआ। आपे जाणे आपणी अवल्लड़ी चाला, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण

सरगुण सरगुण निरगुण आपणा तत्त एका एक जणाईआ। निरगुण सरगुण विष्न धार, विश्व आप कराइंदा। निरगुण सरगुण ब्रह्म पसार, ब्रह्म वेता वण्ड वंडाइंदा। निरगुण सरगुण शंकर उज्यार, सहिंसा अवर ना कोए जणाइंदा। तिन्नां विचोला एकँकार, आप आपणा मेल मिलाइंदा। शब्द ढोला अपर अपार, सच संदेसा आप सुणाइंदा। बण बण तोला सच्चा तोले तोलणहार, एका कण्डा हथ्थ उठाइंदा। वस्त अमोलक देवे डार, त्रै त्रै एका रूप दरसाइंदा। साचा मेला विच संसार, मेलणहारा आप मिलाइंदा। त्रैगुण अतीता त्रैगुण वसे बाहर, दिस किसे ना आइंदा। लक्ख चुरासी पावे सार, घाड़न घड़त आप घड़ाइंदा। जुग जुग करे सच विहार, लोकमात वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप कराइंदा। निरगुण वेस करे करतारा, अचरज आपणी खेल खिलाईआ। सरगुण रूप कर पसारा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। लक्ख चुरासी बण ठठयारा, घड़े भाण्डे दए धराईआ। निरगुण सरगुण सच विहारा, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। जोती जाता जोत कर उज्यारा, आपणी वण्डण रिहा वखाईआ। घट घट अन्तर ब्रह्म पसारा, ईश जीव रूप धराईआ। जुग जुग पावण आए सारा, दे मति रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। निरगुण सरगुण खेल आपरा, हरि सतिगुर आप कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख्या वारो वारा, रूप अनूप आप वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम होए उज्यारा, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। शब्द डंका अगम्म अपारा, दो जहानां आप सुणाइंदा। जन भगतां करे ख़बरदारा, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। साचे सन्तां देवे इक्क हुलारा, शब्द हलूणा इक्क लगाइंदा। गुरमुखां मेटे पंचम धाड़ा, झूठा नाता तोड़ तुड़ाइंदा। गुरसिखां बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम निरगुण धार, पुरख अबिनाशी आप चलाईआ। सरगुण पावे साची सार, सारंगधर भगवान बीठलो साचा माहीआ। भगत भगवन्त लए उठाल, आप आपणे रंग रंगाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, राउ रंक ना कोए वड्याईआ। साचे सन्त दए जमाल, नूरी जल्वा आप वखाईआ। गुरमुखां सुरत रिहा संभाल, सुरती मेला सहिज सुभाईआ। गुरसिखां चले नाल नाल, कलिजुग कूड़ा पन्ध मुकाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेख वखाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, दीन दयाल मेल मिलाईआ। हरिजन वेखे साचे लाल, लाल अनमुल्लड़े आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, बेऐब नाम ख़ुदाया। सरगुण बणे जगत मलाह, जुग जुग वेस वटाया। भगतां देवे सच सलाह, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। सन्तन बेड़े लए चढ़ा, साचा बेड़ा आप चलाया। गुरमुख सज्जण

ल्ए मिला, आप आपणा मेल कराया। गुरसिख सोए ल्ए उठा, जागत सोवत एका रूप दरसाया। कलिजुग अन्धेरा दए मिटा, साचा नूर कर रुशनाया। गीत सुहागी दए सुणा, आत्म परमात्म वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण होए सहाया। निरगुण सरगुण सदा सुहेला, जुग जुग सेव कमाइंदा। सरगुण निरगुण एका मेला, एका दर बहाइंदा। निरगुण सरगुण गुरु गुर चेला, गुर चेला वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण कट्टे राए धर्म दी जेला, लक्ख चुरासी फंद मुकाइंदा। निरगुण सरगुण जाणे तेरा वक्त वेला, थित वार ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोए दोए धार आप वखाइंदा। दोए दोए धार हरि करतारा, जुग जुग मात चलाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, वेद कतेब रहे जस गाईआ। शास्त्र सिमरत करे पुकारा, पुराण अठारां भेव खुल्हाईआ। अठ दस वेखे इक्क किनारा, ज्ञान ध्यान इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। वेद पुराणां गाया जस, हरि सच्चा सच्ची वड्याईआ। गुर अवतार मिल मिल रहे हस्स, घर मिल्या साचा माहीआ। भगत भगवन्त दुआरे रहे नस्स, जुग जुग पन्ध मुकाईआ। सन्तां हिरदे रिहा वस, जीवां जंतां करन सुणाईआ। गुरमुखां हँकारी बुरज जाए ढट्ठ, हंगता गढ़ नज़र ना आईआ। गुरसिखां गेड़े उलटी लट्ठ, मन का मणका आप भवाईआ। नज़री आए घट घट, लक्ख चुरासी रिहा समाईआ। सर्ब जीआं दा कमलापति, कँवल नैण बेपरवाहीआ। जिस दी हड्ड मास नाड़ी ना कोई रत, तत्व तत ना कोए रखाईआ। सर्ब कला सदा समरथ, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, निहकलंका नाउँ धराईआ। पावे सार चौदां हट्ट, चौदां तबकां भेव खुल्हाईआ। करे खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा सांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। निरगुण सरगुण होए सहाया, दिस किसे ना आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराया, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। रूप अनूपा आप धराया, वेस अनेका आप वटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा लाया, साची सेवा इक्क जणाइंदा। चार जुग दा लेखा रिहा मंगाया, वेखणहार आप हो जाइंदा। साचा हुक्म इक्क सुणाया, धुर फ़रमाना आप अल्हाइंदा। दिवस दिहाढ़ा इक्क मनाया, हाढ़ सतारां दिवस सुहाइंदा। चार वेद जो विदित गाया, अवदित पर्दा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपे बण, आपणी चाल चलाइंदा। निरगुण सरगुण हरि हरि चाली, चलणहार आप अख्वाईआ। आपे होवे आदि शक्ति भवानी, चतुर्भुज आपणा नाउँ धराईआ। आपे सिँघ करे अस्वार इक्क वखाए सच निशानी, अष्टभुज रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण

सरगुण हरि हरि रंग, जुग जुग खेल खिलाइंदा। आप रामा बणे सरबंग, दुष्ट हँकारी मेट मिटाइंदा। आपे मुकंद मनोहर सुत सदाए नंदा नंद, अनन्द आप जणाइंदा। आपे जुग जुग मेटे पन्ध, गेड़ा गेड़ आप वखाइंदा। आपे कलमा अमाम बोले छन्द, नाअरा हक आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। आपे वसे धाम सति, सति पुरख निरँजण नाउँ धराइंदा। आपे लेखा जाणे पंज तत्त, नानक चोला आप हंढाइंदा। आपे देवे ब्रह्म मति, गुरमति आपणी खेल खिलाइंदा। आपे लेखे लाए गोबिन्द रत, बंस सरबंसा आप सुहाइंदा। आपे सरगुण निरगुण बंधाए नत्त, साचा नाता जोड़ जुड़ाइंदा। कलिजुग अन्तिम करे खेल पुरख समरथ, पिछला लेखा पूर कराइंदा। अगली महिमा जणाए अकथ, कथनी कथ ना कोए वखाइंदा। सतिजुग चलाए साचा रथ, धरनी धरत धवल वड्यांअदा। झूठा खेड़ा करे भट्ठ, कलिजुग लोकमात रहिण ना पाइंदा। लेखा मुक्के बत्ती हज़ार चार लक्ख, लिख लिख आपणा लेख वखाइंदा। कलिजुग जीवां मुल्ल ना पैणा कौडी कक्ख, कक्खों हट्ट आप विकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आप तराइंदा। निरगुण सरगुण तारनहारा, त्रैगुण अतीता बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, लोकमात वेस वटाईआ। भगत भगवन्त दए सहारा, ध्रू प्रहिलाद गले लगाईआ। जगत निमाणी पावे सारा, जूठे बेरां मुख रखाईआ। बिदर सुदामा लाया पार किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। ऐनलहक बोल जैकारा, मुरीद मुर्शद मिल्या साचे माहीआ। नानक निरगुण दए आधारा, अंगद अंगीकार कराईआ। गोबिन्द बणया सुत दुलारा, पुरख अकाल एका ओट रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करदा आया सच विहारा, कलिजुग अन्तिम आपणे हथ्थ रखाईआ। गा गा गए गुर अवतारा, जीवां जंतां मात समझाईआ। प्रगट होवे निहकलंक नरायण बली बलकारा, रूप रंग रेख ना कोई रखाईआ। चण्ड प्रचण्ड ना कोए सहारा, तीर कमान ना कोई उठाईआ। शाही फ़ौज ना लशकर भारा, सगला संग ना कोए जणाईआ। इक्क इकल्ला हो उज्यारा, नौ खण्ड पृथमी लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाँईंआ। पावे सार जंगल जूह उजाड़ पहाडा, उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर फोल फोलाईआ। उच्ची कूक बोले इक्क जैकारा, सो पुरख निरँजण आपणा नाउँ आप धराईआ। हँ ब्रह्म करे पार किनारा, पत्तण आया साचा माहीआ। हरिजन सज्जण लए उभारा, हरि के पौड़े आप चढ़ाईआ। अमृत आत्म बख्शे ठंडी ठारा, निझर झिरना आप झिराईआ। निरगुण जोत कर उज्यारा, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। मेट मिटाए धूंआँधारा, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। काया मन्दिर वखाए सच्चा गुरदुआरा, अंदर वसे सच्चा शहिनशाहीआ। एका राग सुणाए अनहद सच्ची धुन्कारा, धुंन आत्मक आप प्रगटाईआ। देवे दरस अगम्म अपारा, स्वच्छ सरूप आप वखाईआ।

७४३

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मेले थाउँ थाँईआ। थान थनंतर फोलया, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड। गुरमुख विरला आप टटोलया, ज़िमीं अस्मानां मुका पन्ध। अंदर वड़ वड़ आपे बोलया, आप सुणाया सुहागी छन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए परमानंद। परमानंद निज साची धार, अनन्द अनन्द समाईआ। हरिजन विरला पावे सार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसार, इष्ट देव नज़र किसे ना आईआ। काया गढ़ बणया काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना कूके दए दुहाईआ। सुरत सुआणी रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणा नीर वहाईआ। कवण मिलाए मेरा प्रीतम प्यारा, मेरा दुखड़ा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेस इक्क सुणाईआ। प्रीतम प्यारा पीआ प्रीतम, परम पुरख अख्वाया। तेरा रूप करे सीतल, सीतल धार मुख चुआया। तेरा कंचन रूप बणाए झूठा पीतल, नाम कसवटी एका लाया। मिले भगवान साचा बीठल, बीठलो भगवान नामे हरि जस गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाया। हरिजन विरला उठया, लोकमात लए अंगड़ाईआ। गुर सतिगुर साहिब साचा तुठया, राम नाम करे पढ़ाईआ। अमृत जाम देवे घुट्टया, जिउँ अरजण कृष्न होए सहाईआ। लोकमात ना जाए लुट्टया, काया रथ चलाए सच्चा रथवाहीआ। कलिजुग सोमां एका फुटया, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। गुरमुख विरले देवे घुट्टया, लक्ख चुरासी मरे तिहाईआ। आप सुहाए साची रुतया, रुत्त बसन्त आप महिकाईआ। हरिजन मेले जुग जुगा दा रुस्सया, जन्म अजन्म मेट मिटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर आ आ पुछिआ, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कवण कूटे तेरा गुरमुख लुकया, जो जस रिहा तेरा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे दए समझाईआ। गुरमुख साचा हरि समझाइंदा, आप आपणी दया कमा। चार वरन जो तजाइंदा, ज़ात पात रिहा मिटा। अठ्ठे पहर ध्यान लगाइंदा, माया ममता मोह चुका। हँसा रूप ना कोए जणाइंदा, हँस बण के बैठा काँ। विष्नूं वंस जो अख्वाइंदा, पुरख अबिनाशी पिता मां। हरिजन साचे सो उपजाइंदा, जिस देवे ब्रह्म ज्ञान। कलिजुग अन्तिम आपणे धन्दे लाइंदा, एका धन्दा आत्म राम पछाण। मूर्ख मूढ़े पापी गंदे दर दुरकाइंदा, लक्ख चुरासी वेखे जगत दुकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे खेल वड मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

७४३

★ २२ जेठ २०१८ बिक्रमी दौलत राम दे गृह कोटली राईआं जम्मू ★

पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, निरवैर आप कराइंदा। लक्ख चुरासी ब्रह्म पसारा, ईश जीव वेस वटाइंदा। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका घर हरि सुहाइंदा। एका नाद शब्द जैकारा, एका रागी राग सुणाइंदा। एका अमृत रस ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिराइंदा। एका सुत इक्क अखाड़ा, एका आपणा खेल खिलाइंदा। एका नूर इक्क उज्यारा, जोती जाता इक्क अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। एका मन्दिर श्री भगवान, लक्ख चुरासी अंदर आप बणाईआ। माणस मानुख कर प्रधान, आत्म राम दए जणाईआ। सति सरूपी सति निशान, घट अंदर दए वखाईआ। आत्म ब्रह्म हो प्रधान, साची सेजा सोभा पाईआ। एका गाए गोबिन्द गान, एका राम नाम पढ़ाईआ। एका वेखे खेल महान, वेखणहार आप हो जाईआ। एका देवे धुर फ़रमान, सच संदेसा आप सुणाईआ। एका बणे साचा काहन, लक्ख चुरासी गोपी इक्क हंढाईआ। एका मारे साचा बाण, तीर निराला इक्क चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला एकँकारा अचरज खेल आप खिलाईआ। एका दाता एका दान, आदि जुगादि हरि वरताइंदा। एका नूर गुण निधान, रूप अनूप इक्क दरसाइंदा । एका जोत श्री भगवान, घट घट अंदर आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। एका वरन एका गोत, एका ब्रह्म करे जणाईआ। एका नूर निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। एका किला एका कोट, काया बंक इक्क वखाईआ। इक्क नगारा एका चोट, एका शब्द ताल वजाईआ। एका कढ्ढणहारा खोट, माया ममता मोह मिटाईआ। एका देवणहार भण्डार अतोट, नाम वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला सच्चा शहिनशाहीआ। इक्क इकल्ला सच्चा शहिनशाह, सचखण्ड निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। धुर फ़रमाना इक्क जणा, लोकमात मार्ग लाइंदा। जन भगतां देवे सच सलाह, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। बजर कपाटी दए तुड़ा, अनुभव प्रकाश वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताइंदा। इक्क इकल्ला अकल कलधार, जुग जुग आपणी खेल खिलाइंदा। चार वरनां कर सच प्यार, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। ज़ात पात वसया बाहर, सो पुरख निरँजण आपणा नाउँ धराइंदा। कमलापात मीत मुरार, हर घट आपणा रंग रंगाइंदा। ठांडा मन्दिर इक्क दरबार, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। ग़रीब निवाज़ा ग़रीब निमाणयां पाए सार, जुगा जुगन्तर मेल मिलाइंदा। चरन कँवल दए आधार, चरन चरनोदक मुख चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला आपणे रंग रंगाइंदा। इक्क इकल्ला साचा रंग, हरिजन

साचे आप रंगाईआ। आत्म सेजा वेख पलँघ, निरगुण बैठा आसण लाईआ। शब्द नाद धुंन मृदंग, अनहद नादी नाद वजाईआ। पंज विकारा करे भंग, हउमे हंगता रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, हरिजन साचे लए मिलाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवन्त, आदि जुगादि दया कमाइंदा। हरिजन मेले नारी कन्त, नर नरायण वेख वखाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। नाम जणाए मणीआ मंत, मन का मणका आप भवाइंदा। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। हँ ब्रह्म हरि पसारा, लक्ख चुरासी रूप वटाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, निरगुण सरगुण वेस धराईआ। भगत भगवन्त दए सहारा, भगवन आपणी दया कमाईआ। सन्त बणाए सच दुलारा, पूत सपूता गले लगाईआ । गुरमुखां देवे नाम भण्डारा, नाम नामा झोली पाईआ। गुरसिखां बख्शे चरन कँवल दुआरा, सरन चरन सच्ची सरनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कर कर पार किनारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। शाह सुल्तान राज राजान नेत्र रोवण ज़ारो ज़ारा, लक्ख चुरासी धीर ना कोए धराईआ। चार वरन लग्गा अखाड़ा, बरन अठारां करे लड़ाईआ। मन मति मारे उच्चा नाअरा, कूक कूक रही सुणाईआ। बुध निमाणी कढ्ढे हाढ़ा, निउँ निउँ बैठी सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुदरत कादर वेख वखाईआ। कुदरत कादर हरि महल्ला, लोकमात आप वसाइंदा। मुकामे हक बैठ इकल्ला, चौदां लोक वेख वखाइंदा। सच संदेस कलमा अमाम आपे घल्ला, नर नरेश सर्ब पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला अकल कल आप अख्वाइंदा। इक्क इकल्ला अकल कल धारी, निरगुण निरवैर अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम करे खेल न्यारी, रूप अनूप वटाईआ। गुरमुखां करे साची कारी, दुबिधा मैल धवाईआ। इक्क वखाए महल्ल अटारी, साचे मन्दिर कर रुशनाईआ। हउमे देवे कट्ट बीमारी, चिंता दुःख ना लागे राईआ। चार वरनां वखाए इक्क सिक्दारी, शाह पातशाह इक्क बैठा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाईआ। एका बन्धन हरि करतारा, लक्ख चुरासी पाइंदा। लक्ख लक्ख गेड़ा विच संसारा, जून अजूनी आप भवाइंदा। गुरमुख मनमुख आप चलाए दोवें धारा, माणस मानुख खेल खिलाइंदा। आपे डोबे आपे होए तारनहारा, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन साचा उठे मीत, हरि सज्जण आप उठाईआ। एका गाए सुहागी गीत, गीत गोबिन्द इक्क अल्हाईआ। करे कराए पतित पुनीत, पतित पापी लए

तराईआ। हरि दरस दिखाए बिन मन्दिर गुरदुआर मसीत, काया अंदर कर रुशनाईआ। एका रंग वखाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। सदी चौधवी रही बीत, बीस बीसा दए ग्वाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वेख वखाईआ। इक्क इकल्ला वेखणहारा, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। जुगा जुगन्तर खेल न्यारा, जुग करता आप कराइंदा। कलिजुग अन्तिम पावे सारा, पूर्ब कर्मां वेख वखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए जणाइंदा। जिस जन किरपा करे आप निरँकारा, जन्म अजन्म ना कोए जणाइंदा। आपे मेले आपणे सच दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। दरस दिखाए गुप्त ज़ाहरा, अंदर बाहर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग वखाइंदा। हरि रंग राता गुरमुख गुर गुर, लोकमात मिले वड्याईआ। मिले मेल संजोगी धुर धुर, धुर मेला आप मिलाईआ। सुरती शब्दी बहे जुड़ जुड़, सुरत शब्द होए कुड़माईआ। पैंडा मुकाए ना कोए तुर तुर, गुरमुख पान्धी बणे ना कोए राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप कराईआ। आपणा मेला देवे कर, मेलणहार श्री भगवान। चेला गुर आपे बण, वखाए धर्म निशान। चार वरन जायण हर, हरिजन विरला होए परवान। निरभउ चुकाए झूठा डर, इक्क फड़ाए नाम निधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, इक्क इक्क गुरमुख करे परवान। इक्क परवाना इक्क फ़रमाना, एका हुक्मी हुक्म फिराइंदा। एका पुरख इक्क सुल्ताना, एका शाह वड मेहरवाना, एका राज जोग कमाइंदा। एका बन्न्हे साचा गाना, इक्क वजाए नाद तराना, एका सांतक सति कराइंदा। एका वेखे दो जहानां, जुग जुग लोकमात हो प्रधाना, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम जन भगतां देवे इक्क परवाना, उप्पर आपणा लेख लिखाइंदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना, विश्व आपणा रूप धराइंदा।

दस अठ्ठ अठारां, पुराण अठारां देण ग्वाहीआ। वेद व्यासा बण लिखारा, सृष्ट सबाई गया समझाईआ। लिख्या लेखा चार लक्ख हज़ार सतारां, सलोक सलोक आप उपाईआ। कलिजुग आयू लक्ख चार बत्ती हज़ारा, वेद शास्त्र रहे फ़रमाईआ। कर्म कुकर्म ना किसे विचारा, निहकर्मी आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस अठ्ठ आपणा खेल खिलाईआ। दस अठ्ठ अठारां शब्द ज्ञान, अर्जण गीता करे पढ़ाईआ। कान्हा कृष्ना हो मेहरवान, एका भगत दए वड्याईआ। आत्म अन्तर बख्शे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म नेता ब्रह्म वेता आपणा भेव खुल्हाईआ। चौदां लोक वखाए काया हट्ट मकान, आपणा पर्दा आप उठाईआ। करे कराए श्री भगवान, दूसर अवर ना कोए चतुराईआ। दस अठ्ठ वेखे

मैदान, अठारां दिवस करे लड़ाईआ। द्वापर तेरा मेटे निशान, निशाना आपणा इक्क वखाईआ। रथ रथवाही बणे आप भगवान, भगतन सेवा सच कमाईआ। वेद व्यासा लेखा करे परवान, धुर परवाना लोकमात सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। बीस बीसा गुण निधान, बीस बीस दए वड्याईआ। अठ दस होए नौजवान, साल अठारवें ख़ुशी मनाईआ। सम्मत बिक्रमी कर प्रधान, आपणी धार आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए चुकाईआ। बिक्रमी वीह सौ अठारां, हरि साचे खेल खिलाया। दिल्ली दरबार लगाया नाअरा, राष्ट्रपति आप जगाया। चार कुण्ट होए ख्वारा, धीरज धीर ना कोए धराया। पुरख अबिनाशी वरते आपणी कारा, हुक्मी हुक्म इक्क जणाया। शाह सुल्तानां मारे मारा, राज राजानां दए मिटाया। कलिजुग तोड़े गढ़ हँकारा, एका खण्डां नाम चमकाया। ब्रह्मण्डां पावे सारा, विष्न ब्रह्मा शिव आप उठाया। जेरज अंड दए हुलारा, उत्भुज सेत्ज फोल फोलाया। करोड़ छिआनवे एका वरते आप वरतारा, धुर दी धारा आप जणाया। अमृत मेघ बरसे ठंडा ठारा, नौ खण्ड आपणा रूप वखाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत अठारां दए हुलारा, सोया कोए रहिण ना पाया। सम्मत अठारां खेल अवल्ला, हरि साचा आप कराईआ। सम्मत उन्नी वेखे राणी अल्ला, सुत्ती राणी आप जगाईआ।

७४७

संग मुहम्मद चार यार जो फड़या पल्ला, फड़या पल्लू दए छुडाईआ। चारों कुण्ट एका हल्ला, एका नाअरा दए लगाईआ। उम्मत रसूल करे बिसमिल्ला, बिस्मिल आपणी धार वहाईआ। लेखा जाणे बूरा कक्का बिल्ला, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सदी चौधवीं पूरा करे छिला, अन्तिम लहिणा दए चुकाईआ। चौदां तबक एका वार हिला, मुहम्मद बैठा सीस झुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल विच उनीसा, राज राजाना ख़ाली ख़ीसा, माया राणी संग ना कोए रखाईआ। बीस बीसा खेल अपारा, हरि सतिगुर आप कराइंदा। चारे कुण्ट कर ख्वारा, धूंआँधार सर्ब वखाइंदा। एका निरगुण जोत कर उज्यारा, नौ खण्ड पृथमी नूर टिकाइंदा। चार वरनां एका करे सच प्यारा, साचा मार्ग आपे लाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कोई ना रहे विच संसारा, आत्म ब्रह्म सर्ब दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा हरि जगदीसा, शाह पातशाह हुक्म आपणा आप सुणाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। वीह सौ बीस बिक्रमी कोई ना रहे राजा राणा, सिर ताज ना कोए टिकाईआ। सभ नूं मन्नणा पए हरि का भाणा, हरि भाणा मेट ना सके कोए राईआ। कलिजुग जीव उठ नादाना, वेला अन्तिम आईआ। दिवस रैण रैण दिवस सिमरो श्री भगवाना, बिन भगवन पार ना कोए कराईआ। जूठ झूठ माया ममता आसा तृष्ना जगत मिटाना, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए

हल्काईआ। काया मन्दिर अंदर सुणना गाणा, सतिगुर पूरा अंदरे अंदर रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा हरि जगदीशा, चार वरन एका सरन, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान, एका बख्शे सच्ची शाहीआ। सर्ब जीआं एका भगवान, सृष्ट सबाई दए समझाईआ।

★ २२ जेठ २०१८ बिक्रमी प्रकाश चन्द दे गृह मग्घोवाली जम्मू ★

सो पुरख निरँजण आदि अन्त, निरगुण आपणा रूप रखाइंदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, दर घर साचे आसण लाइंदा। मेल मिलावा नारी कन्त, कन्त सुहाग आप हंढाइंदा। नाम निधाना साचा मंत, नर निरँकारा आप प्रगटाइंदा। आपणी महिमा जाणे अगणत, आपणा लेखा अलख आप गणाइंदा। अगम्म अगोचर हो बेअन्त, बेपरवाह खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निराकार आप अख्वाइंदा। निराकार हरि भगवाना, दर घर साचे सोभा पाइंदा। तख्त निवासी वड मेहरवाना, शाह पातशाह दया कमाइंदा। आपणी इच्छया कर परवाना, आपणी धारा आप बंधाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दाना, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। त्रै त्रै मेला श्री भगवाना, एका रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। त्रै त्रै मेला हरि भगवन्त, साचा जोड़ जुड़ाईआ। पंज तत्त बणाए आपे बणत, साचा घाड़न ल्ए घड़ाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी ल्ए उपाईआ। लक्ख चुरासी हरि हरि धार, विष्न ब्रह्मा शिव खेल खिलाइंदा। लोकमात कर उज्यार, घट घट आपणा आसण लाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे खेल अगम्म अपार, जोती जाता जगमगाइंदा। वेस अवल्ला एकँकार, अकल कल धारी आप कराइंदा। वण्डे वण्ड विच संसार, साची वण्डन आपे पाइंदा। चार चार चार हो उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप बंधाइंदा। चार चार हरि वण्डे वण्ड, वण्डणहार बेपरवाहीआ। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड खेल खिलाईआ। चारे वेद इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। चारे बाणी सुणाए छन्द, गीत गोबिन्द आप अलाईआ। चारे जुग करे खण्ड, साचा हिस्सा आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। चार जुग खेल निरँकारा, निरगुण सरगुण आप कराइंदा। गुर गुर रूप धर अवतारा, लोकमात वेख वखाइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, धुर नादी नाद वजाइंदा। चारों कुण्ट हो उज्यारा, रूप अनूप आप दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराइंदा।

जुग जुग वेस श्री भगवाना, लोकमात धराईआ। प्रगट हो हो वाली दो जहानां, त्रै त्रै आपणा खेल खिलाईआ। सोभावन्त करे मकाना, जिस घट आपणी जोत जगाईआ। नाम अनमुल्लड़ा देवे दाना, करता कीमत कोए ना लाईआ। सति सन्तोखी बन्ने गाना, धीरज जत आप धराईआ। राग अगम्मी सुणाए गाणा, तार सितार ना कोए हिलाईआ। हुक्मी हुक्म सुणाए धुर फ़रमाना, गुर अवतार सेव कमाईआ। साचे तख्त बैठ श्री भगवाना, सच सिँघासण आप सुहाईआ। शाहो भूप बण राज राजाना, सीस जगदीस ताज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाईआ। गुर अवतार हरि हरि वेस, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। आदि जुगादि रहे हमेश, जुगा जुगन्तर वेख वखाइंदा। शब्द जणाए सच संदेस, लक्ख चुरासी आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। जुग जुग बन्धन हरि निरँकारा, निरगुण सरगुण आपे पाईआ। सरगुण देवे नाम आधारा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। निरगुण वसे धाम न्यारा, सरगुण वेखे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा संग रखाईआ। गुर गुर संग पंज तत्त, तत्व तत आप जणाइंदा। हड्ड मास नाड़ी रंगे रत, रंग साचा आप चढ़ाइंदा। इक्क वखाए ब्रह्म मति, पारब्रह्म आप पढ़ाइंदा। मेल मिलाए कमलापति, कँवल नैण दरस दिखाइंदा। साचे मन्दिर वसे ना कोई दीवार ना कोई छत्त, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। साचे तख्त बहे समरथ, समरथ पुरख वेख वखाइंदा। आपणी महिमा जाणे अकथ, जुगा जुगन्तर आप सुणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाया रथ, भगत भगवन्त आप चढ़ाइंदा। साचे सन्तां निभाए साथ, सगला संग आप हो जाइंदा। गुरमुखां लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूर्ब जन्मां वेख वखाइंदा। गुरसिख उतारे साचे घाट, पार किनारा इक्क रखाइंदा। जुग चौकड़ी मेटदा आया वाट, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आपे वेख वखाइंदा। जुग जुग खेल करे अपारा, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। ब्रह्मा सुत दए आधारा, एका एका रंग वखाईआ। बराह देवे चरन प्यारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस कराईआ। जुग जुग वेस हरि निरँकार, यज्ञै पुरख रूप वटाइंदा। हाव ग़रीव दए आधार, नर नरायण खेल खिलाइंदा। कपल मुन हो उज्यार, दत्ता त्रै आप समझाइंदा। रिखप वखाए इक्क दुआर, पृथू साची सेव लगाइंदा। मत्तस रूप अगम्म अपार, कछप मन्दिरा पिठ उठाइंदा। धनंतर देवे इक्क आधार, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। हँसा रूप अपर अपार, सुत ब्रह्मा आप समझाइंदा। नर सिँघ खेल करे करतार, भगत प्रहिलाद आप उठाइंदा। गज डुबदा लाए पार, जगत बन्धन आप तुड़ाइंदा। हरी हरि हो उज्यार, आपणा भेव आप

चुकाइंदा। धू वखाए सच दुआर, नर हरि नरायण आपणा रूप प्रगटाइंदा। करे खेल वारो वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बल बावण आपणे रंग समाइंदा। जुग जुग खेल हरि करतारा, सतिजुग त्रेता धार वखाईआ। परस परम कर उज्यारा, राम रघुबंस होए सहाईआ। रघुपति वेखे खेल अपारा, रघू आपणा नाउँ वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोए दोए चन्दन चन्द चढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता उतरया पार, द्वापर आपणा खेल खिलाइंदा। वेद व्यासा दए आधार, कुँवारी कन्या भाग लगाइंदा। एका अक्खर लहिणा देणा चुकाए विच संसार, निश्अक्खर आप पढ़ाइंदा। ब्रह्मा वेता करे प्यार, चारे वेद मुख सालांहयदा। नारद मुन दए सहार, किंग नाद आप वजाइंदा। सुरस्ती वेखे वेखणहार, रागी राग आप अलाइंदा। मातलोक बस्ती कर उज्यार, निरगुण सरगुण आसण लाइंदा। एका आठा बन्ने भार, इक्क अठ भेव खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुराण अठारां आप जणाइंदा। इक्क अठ्ठ हरि खेल भगवान, श्री भगवान आप कराईआ। इक्क इकल्ला नौजवान, ना मरे ना जाईआ। इक्क इकल्ला देवे धुर फ़रमान, धुर दी बाणी आप पढ़ाईआ। इक्क इकल्ला वसे सच मकान, सच महल्ल सोभा पाईआ। इक्क इकल्ला राज राजान, शाह पातशाह इक्क अख्वाईआ। इक्क इकल्ला वाली दो जहान, दो जहानां वेख वखाईआ। इक्क इकल्ला साचा काहन, सीस जगदीस ताज टिकाईआ। अठ्ठां तत्तां करे परवान, अठ्ठ तत्त मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध वेखे थाउँ थाँईंआ। मन मति बुध जगत पसारा, विद्या विदित करे पढ़ाईआ। निरगुण वसे सभ तों बाहरा, दिस किसे ना आईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, लोकमात करे रुशनाईआ। आपणी इच्छया सोलां करे शंगारा, सोलां शंगार सोलां कला विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कँवल नैण नैण मटकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कीआ पार किनारा, दो दो मेला सहिज सुभाईआ। कलिजुग वेखे मात अखाड़ा, बोध बोध बोध दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रंग रंगाईआ। जुग जुग संग करे हरि करता, भेव कोए ना पाइंदा। जुगा जुगन्तर आदि अन्त कदे ना मरदा, मरन जन्म विच कदे ना आइंदा। निरभउ भय रक्खे कदे ना डरदा, भयानक आपणी खेल खिलाइंदा। लक्ख चुरासी एका वार वरदा, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। जो घड़या सो आपे भन्नदा, घड़न भन्नणहार आप अख्वाइंदा। आपणे मन्दिर आपे वड़दा, औंदा जांदा दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा भेव चुकाइंदा। जुग जुग भेव चुकाए नर हरि, नरायण वडी वड्याईआ। सरगुण अंदर जोत धर धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। आपणे पौड़े

आपे चढ़ चढ़, आपे वेखे सर्ब लोकाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़ पढ़, जीव जंत करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर ज़हूर आप दरसाईआ। नूर ज़हूर करता करीम, कुदरत कादर विच समाइंदा। एका अलिफ़ करे तक्सीम, दो जहानां वण्ड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलाइंदा। जुग जुग खेल जोती धार, जुगत जगत वड्याईआ। गुर गुर रूप विच संसार, पंज तत्त चोला आप हंढाईआ। इक्क इकल्ला होया ख़बरदार, दूजी कुदरत लए जगाईआ। तीजे खोल्ह नैण किवाड़, चौथे पद करे रसाईआ। पंचम मेटे अग्नी हाढ़, छेवें छप्पर छन्न ना कोए जणाईआ। सत्तवें सति सतिवादी बैठा निराकार, अठ्ठां तत्तां पन्ध मुकाईआ। नौवें पार करे जगत दुआर, दसवें आपणी जोत जगाईआ। एका जोत दस अवतार, हरि मन्दिर रूप गए वटाईआ। जगत वासना ना कोए प्यार, आसा तृष्ना ना कोए जणाईआ। जीवां जंतां दे दे नाम आधार, पुरख अकाल गए समझाईआ। रसना गाउणा कर प्यार, वेले अन्त होए सहाईआ। जुग चौकड़ी करे साची कार, जुग जुग गेड़ा आप भवाईआ। हुक्मे अंदर रक्खे गुर पीर अवतार, सच संदेसा शब्द सुणाईआ। कलिजुग सतिजुग अन्तिम मेला करे आप निरँकार, दूसर संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मृदंग आप वजाईआ। कलिजुग अन्तिम वज्जे मृदंग, गुर गुरु सर्ब सालांहयदा। प्रगट होए सूरा सरबंग, रूप रेख रंग ना कोए रखाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पातालां आपे आए लँघ, दो जहानां पार कराइंदा। आप सुहाए साची सेज इक्क पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। साचे घोड़े कसे तंग, सोलां कलीआं आसण लाइंदा। एका वार वेखे नौ खण्ड, सत्तां दीपां चरनां हेठ दबाइंदा। चौदां लोक सुणाए साचा छन्द, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द अनन्द मंगल आप सुणाइंदा। सति प्रकाश कराए सूरज चन्द, सूरज चन्द सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराइंदा। कलिजुग अन्तिम रूप अगम्म, सो पुरख निरँजण आप धराईआ। ना मरे ना पए जम्म, हरख सोग ना कोए रखाईआ। ना ख़ुशी ना कोए ग़म, चिंता रूप ना कोए वटाईआ। बुध मति ना कोए मन, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। हथ्थ मूंह ना नक्क कन्न, पैरीं चल ना पन्ध मुकाईआ। मात पित ना जननी जन, साक सज्जण सैण ना कोए भाईआ। माल ख़ज़ाना ना कोए धन्न, दौलत हथ्थ ना कोए रखाईआ। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, मन्दिर मठ ना कोए बणाईआ। ना कोई घड़े ना देवे भन्न, ना कोई सके डन्न लगाईआ। ना कोई करे खन्न खन्न, ना कोई वण्डन वण्ड वंडाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलिजुग अन्तिम निरगुण चढ़े साचा चन्न, जगत अन्धेरा दए मिटाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। कलिजुग पर्दा चुक्कणा, कलि कल्की लै अवतार। चारों कुण्ट सिँघ शेर हो हो बुक्कणा, पुरख अबिनाशी खेल अपार। शब्द अगम्मी हो हो उठणा, नव नौ करे जैकार। जूठा झूठा धन सभ दा लुट्टणा, रहिण ना पाए विच संसार। माया ममता बूटा सुक्कणा, जल सिंच ना करे कोए प्यार। काम क्रोध फड़ फड़ कुट्टणा, शब्द खण्डा एका मार। जन भगतां उप्पर आपे तुठ्ठणा, देवे दरस दरस दीदार। अमृत जाम प्याए घुटना, काया करे ठंडी ठार। लक्ख चुरासी फड़ फड़ कुसणा, एका मारे मारनहारा मार। राए धर्म सभ नूं पुच्छणा, क्यों भुलया हरि निरँकार। हरि का तीर निशाना कदे ना उकणा, गोबिन्द चिल्ले रिहा चाड़्ह। बीस अठारां एका चुक्कणा, दो जहानां मारे मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा नाउँ रक्खे निहकलंक नरायण नर अवतार। रक्खया नाउँ निहकलंक, नानक गोबिन्द गए जस गाईआ। वेद व्यासा वेखे अन्त, पारब्रह्म दए वखाईआ। ईसा मेले साचा कन्त, बैठा ओट तकाईआ। मुहम्मद चौदां सदीआं गणे गणत, लिख लिख लेखा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ करे रुशनाईआ। निहकलंक नाउँ सुल्ताना, सो पुरख निरँजण आप रखाइंदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, बावन आपणा रूप धराइंदा। रामा राम राम मरदाना, रावण गढ़् हँकार तुड़ाइंदा। कान्हा कृष्न कृष्न प्रधाना, रथ रथवाही रथ चलाइंदा। ईसा मूसा बध्धा गाना, साचा सगन मनाइंदा। हथ्थीं फड़े मुहम्मद गुलामा, एका बन्धन हरि हरि पाइंदा। अल्ला राणी तोड़े माणा, शब्द निशाना इक्क चलाइंदा। चारों कुण्ट वेखे मार ध्याना, दहि दिशा फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा खेल खिलाइंदा। निहकलंक पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणी धार चलाईआ। जोती जोत जोत प्रकाशा, प्रकाश प्रकाश रूप धराईआ। आदि जुगादि ना कदे विनासा, जुग जुग आपणी चाल चलाईआ। कलिजुग वेखे खेल तमाशा, लक्ख चुरासी नाच नचाईआ। गुरमुख विरला प्रभ मिलण दी रक्खे आसा, निज आत्म बैठा ध्यान लगाईआ। सतिगुर पूरा देवे सच भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। अमृत भरे काया कासा, सच प्याला हथ्थ फड़ाईआ। निज मन्दिर कर कर वासा, निज गृह दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन लए उठाईआ। जुग जुग हरिजन मिलंना, हरि मेले बेपरवाह। शौह दरयाए बेड़ा बन्न्हा, बेड़ा बन्न्हे बण मलाह। एका राग सुणाया कन्ना, राग अनादी धुंन वजा। एका जोत चढ़ाया चन्ना, जोत निरँजण कर रुशना। एका पुरख अबिनाशी मन्ना, गुरमुख सच्चे लए मना। मनमुख जीव आत्म अन्न्हा, हरि का भेव ना सके पा। राए धर्म दए डन्ना, देवे डन्न अन्त सज़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल बेपरवाह। बेपरवाह खेल खिलाउणा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। हरिजन हरि हरि मेल मिलाउणा, दर दर घर घर फेरा पाईआ। मनमुख जीवां गूढ़ी नींद सवाउणा, उप्पर पल्लू एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। तारन को एका गुरुदेव, सदा सदा निमस्कार। बिरथा जाए ना हरिजन सेव, लेखे लाए अगम्म अपार। अमृत फल देवे साचा मेव, रस अमोला विच संसार। किरपा करे अलख अभेव, निहकेव सच्ची सरकार। देवे वड्याई विच देवी देव, देव देवा आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे जाए तार। तारनहारा इक्क गोपाल, आदि जुगादि तराइंदा। हरिजन वेखे साचे लाल, बाल अञ्याणे गोद उठाइंदा। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, चरन दुआरे आप बहाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, पंचम नाता मोह मिटाइंदा। एका मार्ग दस्से सुखाल, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराइंदा। सतिजुग साचा मार्ग दस्स, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म तीर निराला मारे कस, सो मुखी तिक्खी आप कराईआ। हिरदे अंदर जाए वस, ना कोई सके बाहर कढ्ढाईआ। आपणा अमृत चुआए रस, रस रसीआ साचा माहीआ। पूरी करे हरिजन आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। जिस जन चरन कँवल कराए दास, रातीं सुत्तया दरस दिखाईआ। आत्म दीआ दीपक जोत कर प्रकाश, आपणा रूप दए समझाईआ। ऊठत बैठत सोवत जागत वसे पास, आलस निन्दरा ना कोए जणाईआ। एथे ओथे दो जहानां बणया रहे सालस, सच अदालत होए सहाईआ। चार वरन गरुसिख बणाए साचा ख़ालस, गोबिन्द गुर गया लिखाईआ। चलण ना देवे किसे दी नालश, शब्द खण्डा रिहा चमकाईआ। जन भगतां देवे साची ढारस, इक्क दुआरा आप वखाईआ। मनमुख तेरी देवे ना कोए ज़मानत, वेले अन्त ना कोए छुडाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी लोकमात लगाउणी इक्क अदालत, विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार दर बहाईआ। ना कोई लाअ ना वकालत, ना कोई दलील दए ग्वाहीआ। आदि जुगादि सदा सलामत, साचे तख्त बैठ करे सच्ची शहिनशाहीआ। कूड़ी रहिण ना देवे कोई अलामत, आलस वेखे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ। सच अदालत हरि निरँकारा, तख्त निवासी आप कराइंदा। लेखा जाणे वारो वारा, जुग जुग पन्ध मुकाइंदा। नव नौ चार उतरे पारा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग नेत्र नैणां रो रो नीर वहाइंदा। चार कुण्ट ना कोए सहारा, सगला संग ना कोए रखाइंदा। पंडत पांधा ना कोई पावे सारा, तीर्थ तट किनारा ना कोए जणाइंदा। मुल्लां शेख़ मुसायक सच ना सुणाए कोए नाअरा, हक हकीकत ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर,

जोती जामा मात धर, लक्ख चुरासी जीव जंत जल थल महीअल वेख वखाइंदा। गरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत दूई द्वैती मेटे सल, सल आपणा आप लगाइंदा। दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल, वेला वक्त ना कोए जणाइंदा। जिस जन अंदर गया रल, रल मिल आपणा झट लँघाइंदा। लक्ख चुरासी करया वल, वल छल धारी आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे दीपक आपे बल, गुरसिख तेरा दीआ दीपक आप जगाइंदा। गुरसिख दीपक जाए जग, जोती जाता आप जगाईआ। दरस दिखाए उप्पर शाह रग, शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आपणे मन्दिर टिकाए आपणा पग, नौ दुआरे पार कराईआ। मार ठोकर वजाए ताल अनहद, नाद अनादी आप सुणाईआ। आपणा राग आपणे विच्चों कढ्ढ, गरमुखां विच टिकाईआ। लक्ख चुरासी नालों कर कर अड्ड, आपणा रंग वखाईआ। अन्त काल ना जाए छड्ड, सन्त भगवन्त होए सहाईआ। पार कराए त्रैभवन हद्द, त्रैभवन धनी आपणी सेव कमाईआ। गुरमुख बणाए साची यद्द, विश्व वंस इक्क रखाईआ। चरन दुआरे आपणे सद्द, सचखण्ड दुआर दए वड्याईआ। बालक लडाए पिता लाड, पूत ख़ुशी मनाईआ। नाता तुट्टा ब्रह्म ब्रहमाद, मिली पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। गुरमुख तेरी हरि गाए सदा गाथ, गावणहारा गा गा आपणी ख़ुशी मनाईआ। बिन हरिभगत हरि दा कोई ना देवे साथ, जुग जुग इकल्ला बैठा गुरमुख वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, काया मन्दिर अंदर चढ़ आपणा बन्धन आपे पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। देवे दरस दीदार, दया कमाइंदा। डूँग्घे सागर लाए पार, भँवरी भँवर ना कोए रुढ़ाइंदा। चरन कँवल वखाए सच प्यार, माणस जन्म जन्म समझाइंदा। फड़ फड़ दुतर देवे तार, दुतर तरया आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप जणाइंदा। आपणा देवे हरि जी दरस, दरसी दरस आप कराइंदा। गुरसिख मेटे तेरी हरस, हवस होर ना कोए जणाइंदा। ग़रीब निमाणयां उप्पर करे तरस, जो जन ध्यान लगाइंदा। सतिगुर पूरा गुरसिख तेरी कदे ना करे परख, परीख्या विच कोए ना आइंदा। अग्गे रहिणा सदा नधड़क, निर्भय सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जगत तृष्ना जो रही भड़क, अग्नी अग्ग आप बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, आसा मनसा मनसाआसा आपे पूर कराइंदा।

★ २३ जेठ २०१८ बिक्रमी प्यारा सिँघ सेवा सिँघ दे गृह कलोए जम्मू ★

साजन घर साजन आए, सुहञ्जणी घड़ी सुहाईआ। राजन घर राजन आए, राजन राज मेल मिलाईआ। नवाबन

घर नवाबन आए, शाह नवाब सच्चा शहिनशाहीआ। ग़रीब निवाज़न घर ग़रीब निवाज़ा आए, रूप अनूप आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण संग रखाईआ। सज्जण घर सज्जण पाया, घर साची वज्जे वधाईआ। गृह मन्दिर बह बह मंगल गाया, गीत गोबिन्द अलाईआ। जगत संगल कट्ट वखाया, तुट्टी झूठी फाहीआ। जिउँ तन्दल छीन हरि जी आया, लेखा लेखे लेखा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण शहिनशाहीआ। सज्जण घर सज्जण रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। सज्जण कोलों सज्जण मंगे मंग, वस्त अमोलक इक्क जणाइंदा। सज्जण कोल सज्जण बहे चढ़ रंगीले पलँघ, सेज सुहञ्जणी इक्क सुहाइंदा। सज्जण घर वजाए सज्जण नाम मृदंग, सच तराना राग सुणाइंदा। सज्जण गाए सज्जण छन्द, साचा ढोला आप सुणाइंदा। सज्जण वेखे सज्जण नूर चन्द, चन्द चांदना आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण दया कमाइंदा। हरि सज्जण सच्चा पातशाह, पारब्रह्म करतार। जुग जुग बणे मात मलाह, हरिजन बेड़ा लाए पार। शब्द सरूपी इक्क सलाह, देवे नाम आधार। नेत्र दरसी दरस करा, काया करे ठंडी ठार। जगत हरस दए मिटा, चरन कँवल बख्शे इक्क आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सज्जण सज्जण करे प्यार। सज्जण मीत सज्जण मुरारा, सज्जण सगला संग निभाईआ। सज्जण जोद्धा बीर बली बलकारा, सज्जण बलहीण आप हो जाईआ। सज्जण शाहो भूप सिक्दारा, सज्जण रईयत नाम वटाईआ। सज्जण गुर पीर अवतारा, सज्जण गुरसिख संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सज्जण साजण लए मिलाईआ। सज्जण साजन पाया, सजया सच दरबार। घर राजन राज आया, शाह पातशाह सच्ची सरकार। आपणा काजन आप रचाया, आपे होए वेखणहार। आपणा जहाज़न आप चलाया, गुरमुख साचे लए चाढ़। चारों कुण्ट फेरा पाया, नव नौ फिरे बण भिखार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण खेल अपार। सज्जण चोर सज्जण ठग्ग, सज्जण रसना जेहवा गाईआ। सज्जण वसे उप्पर शाह रग, सज्जण बैठा मुख छुपाईआ। सज्जण करे खेल सूरा सर्बग्ग, सज्जण अन्ध अन्धेर बैठा आसण लाईआ। सज्जण हँस बणाए कग, साची नाम चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण वेख वखाईआ। सज्जण राजा सज्जण भूप, राज राजान आप अख्वाइंदा। सज्जण वसे चारे कूट, दहि दिशा आप समाइंदा। हरि सज्जण नाता तोड़े जूठ झूठ, सच सुच्च आप दृढ़ाइंदा। हरि सज्जण सज्जण उप्पर जाए तुट्ठ, आप आपणी दया कमाइंदा। हरि सज्जण सज्जण देवे नाम घुट, भर प्याला हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण मंग मंगाइंदा। सज्जण मंगे सज्जण

देवे, सज्जण सज्जण झोली आप भराईआ। सज्जण पुरख अलख अभेवे, साजन गुरमुख रूप वटाईआ। साजन गाए रसना जिहवे, सज्जण वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साजन सज्जण मेला मेले चाँईं चाँईंआ। सज्जण मेला चढ़या चा, हरि सज्जण ख़ुशी मनाइंदा। घर सज्जण सज्जण गया आ, कलिजुग अन्तिम फेरा पाइंदा। हरिजन साचे लए उठा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। हरिसंगत रक्खे नाल ग्वाह, दूजी शहादत ना कोए जणाइंदा। माणस जन्म जन्म दए बदला, जिस जन आपणे चरन लगाइंदा। कर्म कर्म दा रोग दए गवा, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। धर्म धर्म दा भरम दए मिटा, साचा धर्म इक्क वखाइंदा। चार वरन बणाए भैण भ्रा, ऊँच नीच ना कोए जणाइंदा। आत्म ब्रह्म सर्ब टिका, लक्ख चुरासी खेल खिलाइंदा। हर घट अंदर आसण ला, जोती नूर डगमगाइंदा। हरिजन मेला सहिज सुभा, घर साचे आप मिलाइंदा। इक्क इकेला पकड़े बांह, जगत विछोड़ा पन्ध कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण पार कराइंदा। हरि सज्जण बैठा पार पत्तण, सज्जण तेरा राह तकाईआ। आपे आए मार्ग दस्सण, आपे फड़ फड़ राहे पाईआ। आपे आए हिरदे वसण, हरि की पौड़ी आप चढ़ाईआ। आपे आए पंच विकारा मथन, नाम मधाणा नाल रलाईआ। आपे आए गुरसिखां नाउँ कथन, कथ कथ लोकमात लेखा दए बणाईआ। आपे आए हरिजन साचे रक्खण, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साजन मीत इक्क गोसाँईंआ। साजन मीत इक्क गोसाँईं, गहर गम्भीर समाया। हरि सज्जण वेखे थाउँ थाईं, थान थनंतर फोल फोलाया। एका सिख्या रिहा समझाई, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाया। कागों हँस रिहा बणाई, साची चोग नाम चुगाया। चल दुआरे आया चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा हरिसंगत रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सज्जण साचे खेल कराया। चाउ घनेरा संगत रूप, सच भरवासा आप जणाईआ। तेरा मेरा एका रूप, सोहँ साची करे पढ़ाईआ। सज्जण वसे चारे कूट, ख़ाली दिशा नज़र कोए ना आईआ। हरि सज्जण ताणा पेटा होए सूत, सूत्रधारी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साजन साजन लए तराईआ। साजन तारे किरपा कर, कर किरपा पार कराईआ। साजन मेले एका हरि, दर घर साचा सोभा पाईआ। साजन मिले चुक्के डर, भय अवर ना कोए रखाईआ। साजन आए एका नर, नर नरायण वडी वड्याईआ। साजन सच पलँघे बैठे चढ़, साजन साची सेज विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट सज्जण इक्क बहाईआ। घट सज्जण हरि मीत, एकँकारा नाउँ रखाइंदा। नाद अनाद सुणाए गीत, अनहद राग अलाइंदा। काया मन्दिर देहुरा गुरदुआर मसीत, साचा बंक आप जणाइंदा। सतिजुग चले साची रीत, पारब्रह्म प्रभ आप चलाइंदा। सुरत

शब्द करे पतित पुनीत, पतित पावन दया कमाइंदा। काया करे ठंडी सीत, सांतक सति सति वखाइंदा। दरस दिखाए इक्क अतीत, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण सज्जण संग रखाइंदा। सज्जण संग दो जहान, दो जहानां वेख वखाईआ। सज्जण मेला गोपी काहन, गोपी काहन रूप वटाईआ। सज्जण मेला वेख वखाए श्री भगवान, भगवन आपणा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साजन साजन लए रलाईआ। साजन रल्लया साजन संग, सगला संग तजाया। आत्म उपज्या परमानंद, हरख सोग मिटाया। नहावण नहाता आत्म गंग, सर सरोवर इक्क सुहाया। शब्द अगम्मी सुणया छन्द, सुण सुण आपणा आप भुलाया। निरगुण जोत चढ़या चन्द, सूरज चन्द मुख शरमाया। ख़ुशी होया बन्द बन्द, घर सज्जण सच्चा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सज्जण होए सहाया। सज्जण साचा पुरख समरथ, साँवल सुंदर रूप कराईआ। हरि सज्जण चलाए साचा रथ, जुग जुग वडी वड्याईआ। हरि सज्जण महिमा सदा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। हरि सज्जण साचा मार्ग रिहा दस्स, कलिजुग जीव भुल ना जाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा रैण मस, अन्धघोर रिहा वखाईआ। गुरमुख डरदे कहिण बस बस, कलिजुग विच रहिणा अवर होर ना भाईआ। कलिजुग कोलों डर के आए नस्स, तेरे चरन ओट तकाईआ। हरि सतिगुर सज्जण अग्गों मिल्या हस्स, फड़ बाहों गले लगाईआ। मैं प्यार तुहाडे विच गया फस, गुरसिख तेरा बन्धन तुट कदे ना जाईआ। मैं गाउँदा रहां सदा जस, हरिजन तेरी वड वड्याईआ। तेरा प्रेम पीवां एका रस, आपणा रस तेरे मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साजन साजन होए सहाईआ। सज्जण साहिब सर्ब गुणवन्त, पुरख अबिनाशी पाया। गढ़ तुट्टा हउमे हंगत, हँ ब्रह्म नज़री आया। घर मिल्या बोध अगाधा एका पंडत, ब्रह्म विद्या रिहा पढ़ाया। कलिजुग वस ना पाया किसे सन्त, जो झूठे धन्दे दए लगाया। धन्न सुभाग मिल्या हरि कन्त, हरि सज्जण मेल मिलाया। मेरी लग्गी प्रीती निभे अन्त, विछोड़ा कोए रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सज्जण सज्जण दए सलाहया। साजन देवे सच सलाह, गुरसिख सज्जण आप समझाईआ। बेड़ा लै के आया धुर मलाह, कलिजुग नईया विच टिकाईआ। हरिजन साचे लए चढ़ा, ना वेखे भैणां भाईआ। आपणा मार्ग दए लगा, साचा मार्ग इक्क रखाईआ। जन्म जन्म जन्म दए बदला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख देवे माण वड्याईआ। गुरसिख वड्याई सच जजमान, तेरी उच्ची कुल रखाईआ। बण निमाणा फिरे भगवान, दर दर भिख्या मंग मंगाईआ। प्रेम प्रीती देणा दान, साची वस्त इक्क जणाईआ। अट्ठे पहर गुरसिख तेरा रहे ध्यान, तेरा मुखड़ा छुप्प कदे

ना जाईआ। चारों कुण्ट जां वेखां हो मेहरवान, हरिजन साचा एका रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। हरि सज्जण साजन अन्त मिलणा, जगत विछोड़ा रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लोकमात हिलणा, पुरख अबिनाशा आप हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण हरि मीत, गुरमुख गुरसिख प्रीत आप निभाईआ।

★ २३ जेठ २०१८ बिक्रमी मंगल सिँघ दे गृह नवीं बस्ती जम्मू ★

बाशक सेजा एका आसण, देवे माण वड्याईआ। सांगोपांग विष्न सिँघासण, साची रचन रचाईआ। आप बणाए पुरख अबिनाशन, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुहञ्जणी सेज वड्याईआ। सुहञ्जणी सेज हरि सुहाए, चरन कँवल टिकाईआ। आत्म पर्दा दए उठाए, एका गुण वखाईआ। रसना जिहवा हरि गुण गाए, सहँसर मुख सालाहीआ। दोए सहँसर जिहवा हिलाए, आदि जुगादि सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मुख दोए जिहवा, जिहवा गुण आप जणाईआ। जिहवा गुण हरि निरँकारा, एका मुख रखाइंदा। एका मुख दो दो धारा, दो धारी आप चलाइंदा। एका रसना हरि निरँकारा, दूजी रसना विष्न पुकारा, वाह वा आपणा रंग रंगाइंदा। सांगोपांग दए हुलारा, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी चाल आप चलाइंदा। सांगोपांग सेजा बाशक, बाशक आपणा खेल खिलाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण उप्पर आशक, आशक माशूक आप हो जाईआ । ना कोई निन्दरा ना कोई आलस, अठ्ठे पहर नैण तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोए जिहवा गुण समझाईआ। दोए जेहवा हरि निरँकारा, बाशक मुख रखाइंदा। पहली जेहवा कर पसारा, आप आपणा गुण वखाइंदा। दूजी जेहवा दए भण्डारा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। निरगुण सरगुण निराकार साकार विश्व धारा, आप आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। रसना जेहवा एकँकार, इक्क इक्क कर ध्याईआ। दूजी बोले जै जैकार, विष्नूं तेरी वड वड्याईआ। सहँस गुण विचार, गुण अवगुण कहिण ना पाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त तेरा खेल करतार, लेखा लिख ना सके कोए राईआ। मेरे उप्पर चरन कँवल धर खोल्ह्या मेरा किवाड़, जैंह वेखां तू ही नज़री आईआ। मेरे उप्पर ला आसण पाया भार, विष्नूं आपणी दया कमाईआ। निरगुण सरगुण वसे रंग निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण आप

जणाईआ। विष्न गुण हरि जणा, भगवन दया कमाइंदा। बाशक रसना आपे गा, आपणा नाउँ वड्यांअदा। आपणा पर्दा दए चुका, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। कोटन कोटि आपणे नाउँ जणा, दिवस रैण रसना जेहवा आप चलाइंदा। गा गा थक्का अन्त ना सके पा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। तूं शहिनशाह सच्चा पातशाह, हउँ सेवक मंग मंगाइंदा। की मंगां कुछ जाणां ना, तेरा अन्त किसे ना आइंदा। मैं जपदा रहां सद तेरा नाँ, नाउँ निंरकारा आप सालांहयदा। कवण वेला मेरी पकड़ें बांह, मैं तेरी ओट रखाइंदा। कवण वेला मेरा देवें पन्ध मुका, मेरी घाल लेखे लाइंदा। कवण वेला आपणे चरनां लए बहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, एका शब्द जणाइंदा। निरगुण नज़र ना आए श्री भगवान, सरगुण विष्नूं वेख वखाइंदा। विष्नूं उप्पर आसण लाए आण, सांगोपांग सेज हंढाइंदा। सचखण्ड वसे हरि मेहरवान, आप आपणा घर सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा। भेव खुल्हाए हरि भगवान, बाशक एका गुण जणाईआ। विष्नूं दर कर परवान, तेरा रंग वखाईआ। तेरी जेहवा गाए गान, दो दो रंग वखाईआ। पहला नाउँ जाणे भगवान, दूजा विष्नूं वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। पहली जिहवा गाए सो, सो पुरख निरँजण हरि वड्यांअदा। आपणा बीज आपे बो, हरि आपे वेख वखाइंदा। आपणे जेहा आपे हो, आप आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण आपणी खेल खिलाइंदा। दूजी जिहवा गाए हँ, साकार दए वड्याईआ। विष्नूं विश्व पए जम्म, मात पित ना कोए जणाईआ। इक्क इकल्ला बेड़ा बन्नृ, साचा बेड़ा आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोए जेहवा दए मिलाईआ। दोए जिहवा एक मुख, इक्क दूजे नाल मेल मिलाइंदा। दोहां मेला एका कुक्ख, एका गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म सुणाइंदा। दोए जिहवा धुर फ़रमाना, हरि साचा सच जणाईआ। इक्क सुणावा साचा गाणा, भुल कदे ना जाईआ। सोहँ रूप विष्नूं भगवाना, बाशक हरि हरि आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। साची वस्त लै लै दात, बाशक बह बह ख़ुशी मनाइंदा। हरि हरि मिल्या कमलापात, घर साचे मेल मिलाइंदा। आप सुणाई आपणी गाथ, आपणा अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला बण बण सज्जण सुहेला, मेरा साथ निभाइंदा। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका गुण जणाईआ। लक्ख चुरासी जुग चौकड़ी खेल खिला, कोटन कोटि काल बिताईआ।

अन्तिम अन्त आपणा आप लए प्रगटा, निराकार साकार एका रंग वखाईआ। विष्नूं भगवान नाउँ धरा, जोती जाता खेल खिलाईआ। तेरी दोए दोए जेहवा लेखा दए जणा, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। तेरा मेला लए मिला, मेलणहार आप हो जाईआ। एका थित वण्ड वण्डा, वदी सुदी ना नाल रलाईआ। लेखा लेख कोई जाणे ना, लिख लिख लेख ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दए माण वड्याईआ। दोए सहँसर जिहवा लग्गे भाग, हरि साचा आप जणाइंदा। बिन तेल बाती जगे चिराग़, लोकमात डगमगाइंदा। विष्नूं भगवान जाए जाग, आप आपणा रूप वटाइंदा। तेरी वेखे सांगोपांग, सेज सुहञ्जणी आप उपाइंदा। लेखा जाणे काला नाग, कल कल आपणी आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा आसण आप सुहाइंदा। तेरी सेज सांगोपांग, हरि साचा आप सुहाईआ। आपणा कर कर आपे स्वांग, स्वांगी रचना आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेज दए सुहाईआ। साची सेज आप बणा, पंज तत्त काया अंदर आप टिकाइंदा । विष्नूं रूप आप प्रगटा, आपणा आसण उप्पर लाइंदा। भगवन जोती जोत जगा, दीपक दीआ डगमगाइंदा। साचे तख्त बैठे सच्चा शहिनशाह, तेरा आसण सिँघासण वेख वखाइंदा। जुग जुग दा तेरा गाया लेखे लए पा, दोए दोए जेहवा सेव कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम आपणा नाउँ लए प्रगटा, तेरा लेखा मूल चुकाइंदा। बिन रसना जेहवा लए गा, नज़र किसे ना आइंदा। सोहँ नाम आप जपा, आपणा मार्ग आप वखाइंदा। तेरा लेखा लेखे पा, तेरा पन्ध चुकाइंदा। एका थित रिहा समझा, भुल कोए ना जाइंदा। दूआ रूप आप बणा, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। सिफ़रा आपणा खेल खिला, दिस किसे ना आइंदा। एका इक्क इकल्ला सच्चा शहिनशाह, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। आठा अठ्ठां तत्तां लेखा दए चुका, लेखा लेख ना कोए जणाइंदा। बीस अठारां मेल मिला, आपणा कीता वेख वखाइंदा। एका साता मेले सहिज सुभा, इक्क इकल्ला सति सतिवादी आपणा रंग रंगाइंदा। जगत अग्नी तप्त दए बुझा, कलिजुग कूड़ कुड़यारा सर्ब जलाइंदा। वीह सौ अठारां बिक्रमी सतारां हाढ़ दए समझा, बाशक तेरा लेखा आपणे दर चुकाइंदा। तेरी सेज दए बदला, सम्बल नगरी आसण लाइंदा। सांगोपांग आप हंढा, साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर अंदर आप सुहाइंदा। आपणी नवीं रचना फेर लए रचा, आदि जुगादि रच रच वेखे वेख वेख आपे ढाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान करे विहार, सच सच घर साचा आप सुहाइंदा।

★ २३ जेठ २०१८ बिक्रमी चेला सिँघ दे गृह जम्मू ★

शाह पातशाह हरि सुल्ताना, तख्त निवासी तख्त सुहाइंदा। शाहो भूप बण राज राजाना, सच सिँघासण आसण लाइंदा। सचखण्ड सुहाए इक्क मकाना, दर घर साचा सोभा पाइंदा। थिर घर जोत जगाए नूर महाना, नूर नुराना डगमगाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, अनुभव आपणी धार चलाइंदा। सो पुरख निरँजण हो मेहरवाना, हरि पुरख निरँजण संग मिलाइंदा। एकँकारा वड बलवाना, आदि निरँजण खेल खिलाइंदा। श्री भगवाना नौजवाना, रूप अनूप आप धराइंदा। अबिनाशी करता आप आपणा बल रखाना, बल धारी भेव कोए ना पाइंदा। पारब्रह्म अलख अगोचर अगम्म अथाह रूप अनूप महाना, महिमा कथ ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादि धुर फ़रमाना, सच संदेसा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अजूनी रहत आपणी धारा आप चलाइंदा। अजूनी रहत पुरख अकाला, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। सचखण्ड वसे सच्ची धर्मसाला, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। निरगुण जोत जोत उजाला, नूरो नूर डगमगाईआ। करे खेल दीन दयाला, दयानिध बेपरवाहीआ। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, वेख ना सके कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव प्रकाश आपणा आप धराईआ। अनुभव प्रकाश हरि भगवाना, आपणा आप धराइंदा। दीवा बाती इक्क महाना, बिन तेल बाती आप जगाइंदा। साचा तख्त इक्क सुहाना, तख्त निवासी आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आदि आदि आपणा तख्त आपे सोभा पाइंदा। साचा तख्त राज राजाना, शाह पातशाह हरि आप सुहाईआ। शाहो भूप बण सुल्ताना, वड मेहरवाना आसण लाईआ। उच्च अगम्म अथाह महल्ल अटल उच्च महाना, अगम्म अगम्मड़ा आप उपाईआ। अलख अलखना इक्क तराना, आप आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर आप धराईआ। आपणा नूर आपे रक्ख, आप आपणा खेल खिलाइंदा। निरगुण निरगुण हो प्रतक्ख, जोती जोत डगमगाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार बन्नाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि सच सिँघासण इक्क सुहाइंदा। सच सिँघासण सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। आदि जुगादि महिमा अगणत, हरि पुरख निरँजण कथनी कथ ना सके राईआ। एकँकारा साचा सज्जण, जुगा जुगन्तर साचा संग निभाईआ। आदि निरँजण आपे होए सरोवर मजन, अमृत रूप आप सुहाईआ। श्री भगवान परदे कज्जण, एका पल्लू हत्थ उठाईआ। अबिनाशी करता रक्खणहारा लज्जण, लाजावन्त इक्क शहिनशाहीआ। पारब्रह्म आपणा खेल करे घड़न भन्नण, घड़न भन्नणहार आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, साचे तख्त आसण लाइंदा। साचा तख्त हरि सुहाया, आदि पुरख आसण लाईआ। निरवैर आपणा खेल खिलाया, मूर्त अकाल डगमगाईआ। साची तूरत नाद वजाया, आपणी इच्छया आप सुणाईआ। आसा पूरत आप अख्वाया, मनसा कोए रहिण ना पाईआ। आपे राउ आपे रंक, राज राजाना आपणा खेल खिलाया। आपे दुआर आपे बंक, आपे वजाए नाम डंक, साचा मृदंगा हथ्थ उठाया। आपे नारी आपे कन्त, आपे सेजा सोभावन्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे किले कोट अंदर वड़, आप आपणा वेस वटाया। वेस अवल्ला इक्क इकल्ला, आदि पुरख आप कराईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, महल्ल अटल दए वड्याईआ। आपणी जोती आपे रल्ला, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा रूप आप धराईआ। बैठा रहे इक्क इकांता, सर्ब जीआं दा एका दाता, दाता दानी आप अख्वाईआ। रूप धराए बहु बिध भांता, करे खेल पुरख समराथा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आप आपणा बंधे नाता, उत्तम रक्खे आपणी ज़ाता, ज़ात पात ना कोए वड्याईआ। आप सुणाए आपणी गाथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। निष्अक्खर हरि ना नाउँ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। आप वसाए साचा थाउँ, थान थनंतर दए वड्याईआ। करे खेल अगम्म अथाहो, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। आपे पिता आपे माउँ, आपे बालक रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणा वेस आपे रिहा वटाईआ। आदि वेस वटाया, निरगुण रूप अगम्म। अनुभव प्रकाश कराया, मात गर्भ ना प्या जम्म। जोती जोत नूर रुशनाया, करया खेल अलख अलखने एका कम्म। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बेड़ा आपे बन्न्। हरि बेड़ा बन्न् चलाइंदा, निरगुण निरगुण कर प्यार। निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा, निरगुण होए वेखणहार। निरगुण नारी कन्त रूप वटाइंदा, निरगुण माणे सेज भतार। निरगुण सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा, निरगुण जोत नूर उज्यार। निरगुण शब्दी धार वहाइंदा, नाद अनादी इक्क जैकार। निरगुण विष्न ब्रह्मा शिव उपजाइंदा, सुत दुलारे कर त्यार। निरगुण त्रैगुण माया वण्ड वंडाइंदा, आप आपणी किरपा धार। निरगुण पंज तत्त घाड़न आप घड़ाइंदा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश कर आकार। निरगुण सूरज चन्द चढ़ाइंदा, किरन किरन कर पसार। निरगुण मंडल मण्डप आप बणाइंदा, लोआं पुरीआं दए सहार। निरगुण करोड़ तेतीसा खेल खिलाइंदा, निरगुण सुरपति राजा इन्द करे ख़बरदार। निरगुण गण गंधर्ब नाच कराइंदा, किन्नर यच्छप लए उठाल। निरगुण राए धर्म सेव लगाइंदा, निरगुण चित्रगुप्त साचे लए बहाल। निरगुण लाड़ी मौत आप उठाइंदा, निरगुण मार्ग दस्से साचे काल। निरगुण महाकाल आपणे रंग रंगाइंदा, करे

खेल दीन दयाल। आदि आपणी रचना आप रचाइंदा, सचखण्ड बैठ सच्ची धर्मसाल। सच संदेसा सर्ब सुणाइंदा, भुल ना जाणा बण नादान। लोआं पुरीआं वण्ड वंडाइंदा, ब्रह्मण्डां खण्डां कर ध्यान। विष्न एका हुक्म सुणाइंदा, घर घर रिज़क पुचाउणा आण। ब्रह्मा ब्रह्म आप प्रगटाइंदा, लक्ख चुरासी देवे दान। शंकर हथ्थ त्रिसूल फड़ाइंदा, बणया रहे ना कोए मकान। जो घड़या भन्न वखाइंदा, मेटे जगत निशान। लक्ख चुरासी राह चलाइंदा, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। पंज तत्त काया जोड़ जुड़ाइंदा, हड्ड मास नाड़ी रत बूंद कर परवान। नौ दर दुआरे खोल्ह खुल्हाइंदा, जगत वासना देवे दान। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलाइंदा, माया ममता देवे माण। आसा तृष्ना बन्धन पाइंदा, हउमे हंगता इक्क निशान। मन मति बुध विच टिकाइंदा, जोती नूर नूर महान। घर घर विच खेल खिलाइंदा, खेलणहारा नौजवान। आपणा मन्दिर आप बणाइंदा, पारब्रह्म शाह सुल्तान। साचा मार्ग आप रखाइंदा, टेढी बंक खेल महान। ईड़ा पिंगल सेव कमाइंदा, अठ्ठे पहर वेखे आण। आपणा अमृत आपणे अंदर आप छुपाइंदा, कँवल नाभी खेल महान। नाद अनादी धुंन आप वजाइंदा, अनहद नादी राग सुणाए कान। आत्म सेजा आप विछाइंदा, साची सेजा सोए श्री भगवान। बजर कपाटी पर्दा अग्गे लाइंदा, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ान। आत्म ब्रह्म रूप प्रगटाइंदा, ईश जीव खेल महान। ब्रह्मा वेता इक्क पढ़ाइंदा, बोध अगाधा देवे दान। चारे मुख आप खुल्हाइंदा, चारे कूट वखाए निशान। चारे वेदां आप जणाइंदा, चारे बाणी गाए गान। चारे वरनां वण्ड वंडाइंदा, चारे जुग करे प्रधान। चारे कूट वेख वखाइंदा, चौथे पद बैठ श्री भगवान। साची वण्डण आपणे हथ्थ रखाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल श्री भगवान। साची वण्डण हरि हरि वण्डदा, लेखा लिख्त कोए ना जाणया। लेखा जाणे कोटन ब्रह्मण्ड दा, ब्रह्मण्ड नूर श्री भगवान। रूप वटाए जेरज अंड दा, उत्भुज सेत्ज देवे दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता वड मेहरवान। मेहरवान होया निरँकारा, आपणी दया आप कमाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यारा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। आत्म ब्रह्म इक्क भण्डारा, ईश जीव आप वरताईआ। काया मन्दिर कर त्यारा, घट घट बैठा आसण लाईआ। निरगुण जोती जोत उज्यारा, जोत निरँजण डगमगाईआ। अनहद नाद शब्द धुन्कारा, धुन अनादी नाद वजाईआ। शब्द सुणाए धुर फ़रमाना, बोध अगाध पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। चार जुग हरि खेल खिलाउणा, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख वखाउणा, पान्धी आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार नाउँ धराउणा, जोती जोत कर रुशनाईआ। नाम डंका इक्क वजाउणा, चार कुण्ट शनवाईआ। हउमे हंगता गढ़ तुड़ाउणा, माया ममता

मोह चुकाईआ। साचे सन्तां मेल मिलाउणा, सति दुआरा इक्क वखाईआ। धुर फ़रमाना इक्क सुणाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार सेवा लाईआ। गुर अवतार सेवा ला, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत दए समझा, राम नाम आप प्रगटाइंदा। एका डंका दए वजा, डंका डौरू आपणे हथ्थ रखाइंदा। राज राजाना दए उठा, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। राउ रंकां बूझ दए बुझा, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा। जुग जुग शंका दए मिटा, संसा रोग ना कोए रखाइंदा। एका अंक दए समझा, औंकड़ अवर ना कोए लगाइंदा। निश्अक्खर अक्खर दए पढ़ा, पट्टी लेख ना कोए कराइंदा। कागद कलम ना कोई शाह, रूप रंग ना कोए वखाइंदा। आपणी किरपा करे बेपरवाह, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। जोती नूर डगमगा, जोत उजाला आप कराइंदा। साचे तख्त बैठा सच्चा शहिनशाह, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। जुग जुग गुर अवतार बैठे सीस झुका, चरन कँवल ध्यान लगाइंदा। पुरख अबिनाशी सीस जगदीस देवे हथ्थ टिका, लोकमात आप वड्यांअदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुका, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी गेड़ा रिहा दिवा, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर आसण लाइंदा। साचे मन्दिर हरि जू चढ़या, सच सिँघासण सोभा पाईआ। उच्चे टिल्ले आपे खड़्या, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। आपणा अक्खर आपे पढ़या, आदि जुगादि लोकमात करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, जुग जुग आपणी धार बन्न्हाईआ। नव नौ चार चुक्के धार, जुग चौकड़ी रहिण ना पाईआ। चार जुग दा खेल न्यार, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। मुकामे हक हो उज्यार, परवरदिगार नूर इलाहीआ। हक हकीकत बोल जैकार, कलमा अमाम आप सुणाईआ। कायनात करे ख़बरदार, काया काअबा फोल फोलाईआ। दो दो आबा कर प्यार, आबे हयात दए प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल खिलाया, खेलणहार करतार। कलिजुग अन्तिम नूर धराया, जोती जोत जोत उज्यार। सभ दा लेखा वेख वखाया, वेखणहारा होया ख़बरदार। लिख लिख संदेसा रिहा सुणाया, दो जहानां करे बेदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी थित वार। थित वार हरि सच विहारा, कलिजुग अन्तिम करे जणाईआ। वीह सौ अठारां बिक्रमी सतारां हाढ़ा, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। दर बहाए तेई अवतारा, भगत अठारां संग मिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खिच्च ल्याए चरन दुआरा, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार करन पुकारा, अल्ला राणी नेत्र नैणां नीर वहाईआ। नानक गोबिन्द गुर दए हुलारा, सिँघ आपणा बल रखाईआ। एका

७६४

हुक्म धुर फ़रमाना, धुरदरगाही रिहा सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बन्ने राजा राणा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। अठसठ तीर्थ होए सुहाणा, तट किनारा वेख वखाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद मठ मुख खुल्लाना, खुल्लिआ कोए रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत आपणा वक्त आप सुहाना, आपणे हथ्थ रक्ख वड्याईआ। साचा तख्त इक्क लगाणा, तख्त निवासी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सच संदेसा हरि निरँकारा, शब्दी शब्द जणाईआ। समुंद सागर आयण वारो वारा, कलिजुग पैंडा अन्त मुकाईआ। धरनी धरत धवल धौल करे निमस्कारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। बाशक दो सहँसर जेहवा लाए नाअरा, चार कुण्ट सुणाईआ। बणे भिखारी रवि ससि सितारा, मंडल मण्डप ना कोए वड्याईआ। करे खेल अगम्म अपारा, बोध अगाध सच्चा शहिनशाहीआ। नाद वजाए एका वारा, लोआं पुरीआं आप सुणाईआ। ब्रह्म ब्रह्माद करे ख़बरदारा, घट घट आपणा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। थान थनंतर वेखणहारा, निरगुण रूप समाया। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निहकलंका नाउँ धराया। सम्बल नगरी धाम न्यारा, एकँकारा बैठा आसण लाया। गोबिन्द मिल्या मीत मुरारा, फ़तह डंका इक्क वजाया। चारों कुण्ट करे ख्वारा, दहि दिशा दए हिलाया। गुरमुख विरले पावे सारा, पूर्ब लहिणा आप चुकाया।

७६५

देणा देवे देवणहारा, कीता कौल भुल ना जाया। जो रुढ़ गए सरसे धारा, संसार सागर पार कराया। अर्श फर्श ते पार किनारा, दे दरस मेल मिलाया। करे तरस सिरजणहारा, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाया। घर मिल्या पुरख अपारा, मंगण दर ना दूजे जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच अदालत इक्क वखाया। सच अदालत एकँकार, लोकमात लगाईआ। ना कोई वकालत करे विच संसार, ला शरीअत दए मिटाईआ। ना कोई ज़मानत किसे देवे गुनाहगार, अवगुण सके ना कोए बख्शाईआ। पुरख अबिनाशी बन्ने ठग्ग चोर यार, राए धर्म हथ्थ फड़ाईआ। राज राजाना मारे मार, जो बैठे पति गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंगे नाम ग्वाहीआ। नाम ग्वाही मंगे शहादत, हरि सच्चा सच सुलातना। लेखे लग्गे इक्क इबादत, दूजा संग ना कोए रखाना। सगला संगी ना करे कोए रफाक्त, नाता तुट्टे विच जहाना। चारों कुण्ट नज़र आयण निन्दक दुष्ट साकत, मिले मेल ना श्री भगवाना। मन हँकारी चाढ़े राकट, एका भुलया राम रहीम सच्चा सुल्ताना। प्रभ भन्ने सभ दी आकड़, करे खेल खेल महाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक बली बलवाना। बलधारी बल बावण आया, बल वेखे सर्ब लोकाईआ। रघुवंस हरि रामा आया, जो रावण लंका गढ़ तुड़ाईआ। हरि कान्हा कृष्ना रूप धराया, कंस

केसां पकड़ गिराईआ। हरि ईसा मूसा वेख वखाया, काली कमली वेखे लग्गी शाहीआ। हरि नानक निरगुण खेल खिलाया, सरगुण नाम सति वज्जी वधाईआ। चारे वरनां गले लगाया, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। गोबिन्द डंका इक्क वजाया, वाहिगुरु फ़तह आप गजाईआ। कलिजुग वेला अन्त दए सुहाया, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। निहकलंक नाउँ रखाया, ना मरे ना जाईआ। गुरमुख साचे लए मिलाया, आप आपणा पर्दा लाहीआ। एका मन्त्र नाम पढ़ाया, चार वरनां तत्त ज्ञान दृढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण आप अख्वाया, हँ ब्रह्म सर्ब लोकाईआ। सोहँ निरगुण सरगुण धार चलाया, बिन सोहँ लक्ख चुरासी नज़र रूप ना आईआ। सोहँ विष्नूं भगवान आपणा अंक लगाया, चार जुग वज्जे वधाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत हरि पन्ध मुकाया, लक्ख चुरासी गेड़ कटाईआ। नाम राम अनादी छन्द सुणाया, शंकर बरन ना कोए जणाईआ। अनन्द अनन्द अनन्द मंगल आपे गाया, परमानंद वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन सज्जण गोद बहाईआ। हरिजन सज्जण गोदी बहणा, सति पुरख निरँजण आप बहाइंदा। एका दरस दिखाए नैणां, लोचण नेत्र आप खुल्हाइंदा। हरिसंगत विच मिल के रहिणा, ज़ात पात मेट मिटाइंदा। नाम निरंतर पाउणा गहिणा, पुरख अबिनाशी आप घड़ाइंदा। गुर चरन दुआरा चुक्के लहिणा देणा, पूर्ब लेख ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप तराइंदा। गुरमुख विरला तरे सिख, तारनहारा जिस तराईआ। धुर मस्तक लेखा दिता लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। सृष्ट सबाई दिसे मिथ, मिथ्या दिसे अन्त लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण लए जगाईआ। गुरमुख विरला जागया, जिस जगाए आप निरँकार। माणस जन्म वड वड भागया, घर मिल्या गोबिन्द मीत मुरार। हँस रूप वटाया कागया, काग रल्लया हँसां डार। दीपक जोत जगे चिराग़िआ, बिन तेल बाती होए उज्यार। मन उपजे इक्क वैरागया, मन मति जाए हार। सतिगुर मिले कन्त सुहागया, गुरसिख होए सुलखणी नार। दुरमति मैल धोवे दाग़िआ, काया करे ठंडी ठार। लक्ख चुरासी विच्चों काढिआ, जन्म मरन गेड़ निवार। पार कराए ब्रह्म ब्रह्मादिआ, इक्क बहाए चरन दुआर। लक्ख चुरासी विच्चों माणक मोती गुरसिख हीरा एका लाध्या, जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ करन निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख साचे देवे पार उतार। उतारे पार आपणे घाट, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। नाता तुट्टे चौदां लोक चौदां हाट, चौदां विद्या पन्ध मुकाईआ। सच सिँघासण देवे खाट, पुरख अबिनाशन सेज विछाईआ। गुरसिख तेरा नाता तोड़ आन बाट, बख्शे चरन सरन सच्ची

सरनाईआ। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, घर चन्द होए रुशनाईआ। मिले अगम्मी साची दात, सोहँ वस्त अमोलक झोली पाईआ। मेल मिलावा कमलापात, कँवल नैण होए सहाईआ। ना कोई ज़ात ना कोई पात, ना कोई वरन बरन वण्ड वंडाईआ। आपे बैठा आपणे घाट, गुरमुख साचे पार कराईआ। समरथ पुरख पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे नाम दान, तिस जन जन्म मरन मरन जन्म गेड़ कटाईआ। जन्म मरन हरि कट्टे फंद, फांदी फंदन कोए ना पाया। जिस जन गाया बत्ती दन्द, तिस सज्जण ल्ए मिलाया। जिस तजया रसना मदिरा मास गंद, तिस गोबिन्द होए सहाया। जिस वसाया पुरी अनन्द, गुरसिख तेरा काया खेड़ा दए वसाया। जिन तेरे पिच्छे नीहां हेठ दबाए चन्द, तेरा चन्द दए चमकाया। जिस नूं कहिन्दे गुजरी नंद, वेला गुज़रया आपणा वक्त रिहा सुहाया। पुरख अकाल नाल मिल मिल गाए आपणा छन्द, पूत सपूता ख़ुशी मनाया। हथ्थ फड़ चण्ड प्रचण्ड, नाम खण्डा रिहा चमकाया। नौ खण्ड पृथ्मी करनी खण्ड खण्ड, घर घर आपणा फेरा पाया, किसे कूटे रहिण ना देणा भेख पखण्ड, जूठा झूठा नाता तोड़ तुड़ाया। मैं कच्चे भन्नां अंड, जेहड़े बैठे पुरख अकाल भुलाया। माछूवाड़े पाई वण्ड, भुल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिखां अंदर जाए वड़, सुरत सुवाणी ल्ए फड़, आपणा प्रेम बन्धन आपे पाया। कलिजुग जीव काचे बिरख जायण झड़, पत्त डाली नज़र कोए ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल वेखे सच सिँघासण खड़, अबिनाशी आपणे आसण आप सुहाया। गुरसिख निरभउ कर चुकाया डर, भय अवर ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे विच मिलाया।

★ २४ जेठ २०१८ बिक्रमी रसीआ राम दे गृह बदीपुर जम्मू ★

हरिजन हरि हरि आत्म रस, प्रेम प्यार इक्क जणाइंदा। हिरदे अंदर वस वस, रूप अनूप आप वखाइंदा। तीर निराला मारे कस कस, तिक्खी मुखी नाम रखाइंदा। मार्ग आपणा दस्स दस्स, दे मति तत्त समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत रस इक्क चखाइंदा। अमृत रस सदा अनडीठा, दिस किसे ना आइंदा। गुरमुख विरला जाणे मीठा, जिस बिन रसना जेहवा चखाइंदा। करे कराए ठांडा सीता, अग्नी तत्त बुझाइंदा। घर मिलाए परम पुरख मीता, गुर सतिगुर रंग चढ़ाइंदा। माणस मानुख परखे नीता, नित नित वेस वटाइंदा। अक्खर पढ़ाए साची गीता, ज्ञान गोझ

आप खुल्हाइंदा। हँ रंगाए हस्त कीटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रस आत्म आप चखाइंदा। आत्म रस हरिजन चख, चेतन्न रूप हो जाईआ। लक्ख चुरासी नालों हो हो वक्ख, आपणा मन्दिर आप सुहाईआ। राह तक्के होए प्रभू प्रतक्ख, पीआ प्रीतम दरस दिखाईआ। जगत लज्जया ल्ए रक्ख, मन वासना दए मिटाईआ। मेरी खोल्हे आपणी अक्ख, जगत नेत्र माण गंवाईआ। भाग लगाए कुल्ली कक्ख, साचा बंक दए सुहाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, तृष्ना तृखा बुझाईआ। बण के काहन पाए रास, साची गोपी नाल मिलाईआ। भाग लगाए जंगल जूह प्रभास, पत्त डाल्ही आप महिकाईआ। जीवन्दयां करे बन्द ख़लास, मरयां फंद ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत जाम इक्क प्याईआ। अमृत जाम आत्म मदि, मधर नैण आप प्यांअदा। हरिजन हरि हरि आपे सद, घर घर वेख वखाइंदा। जगत कराए पार हद्द, जुगत जुग समझाइंदा। नाम सुणाए एका नद, साचा राग अल्हाइंदा। लेखा चुक्के ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्म मेला आप कराइंदा। होए सहाई आदि जुगादि, जुग जुग वेस वटाइंदा। रक्खे लाज सन्त साध, साजन मीत सेव कमाइंदा। जो जन हिरदे अन्तर रहे अराध, तिस जन एका रंग रंगाइंदा। जगत जंजाले विच्चों काढ, जम की फाँसी फंद कटाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, वख अमृत रूप बणाइंदा। दया करे मोहण माधव माध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत रस इक्क वखाइंदा। अमृत रस हरि निरँकारा, हरिजन साचे सच जणाईआ। आदि जुगादी देवणहारा, जुग जुग आप वरताईआ। अतोट अतुट रक्खे भण्डारा, दिस किसे ना आईआ। सति सन्तोखी ठंडा ठारा, अग्नी तत्त ना कोए तपाईआ। हरिजन देवे कर प्यारा, प्रेम प्याला जाम प्याईआ। अठ्ठे पहर रहे ख़ुमारा, नशा उतर कदे ना जाईआ। राह तक्के एका मीत मुरारा, नेत्र नैण नैण उठाईआ। मिल सज्जण सांझे यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रस दए वड्याईआ। एका रस वड वड्यांअदा, हरि वड्डा वड वड्याई। धू्र प्रहिलाद रिहा चखाइंदा, बल रसना मुख लगाई। अमरीक चरनोदक मुख लगाइंदा, मिल्या मेल हरि गोसाँई। जनक पी पी ख़ुशी मनाइंदा, अठ्ठे पहर वज्जे वधाई। हरी चन्द हरि हरि हरि जस गाइंदा, राज जोग इक्क रखाई। बिदर घर भोग लगाइंदा, करे खेल बेपरवाही। सुदामा तन्दल मुख रखाइंदा, भगवन निउँ निउँ सीस झुकाई। जै देव एका अक्खर आप पढ़ाइंदा, दे मति रिहा समझाई। नामा आपणे रंग रंगाइंदा, भोग लगाए बेपरवाही। रूप अनूप आप वटाइंदा, सैण तारे बण बण शाही। कबीरा आपणा खेल खिलाइंदा, बनारस थेटा बणे राही। रविदास चमारा सेव लगाइंदा, पाहन गंढे फड़ फड़ पाही। गनका पूतना खेल खिलाइंदा, अजामल लेखा लिखे नाहीं। बधक आपणे अंग लगाइंदा, तीर निशाना भुल्ले नाहीं। जुग जुग जिस

७६८

जन आपणा रस चखाइंदा, जगत तृष्ना दए मिटाई। कागों हँस आप उडाइंदा, माणक मोती चोग चुगाई। हउमे हंगता रोग गवाइंदा, दुरमति मैल धोवे लग्गी शाही। सच संजोग आप रखाइंदा, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाही। कलिजुग अन्तिम रूप वटाइंदा, हरिजन वेखे थाउँ थाँईं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत एका रिहा वखाई। अमृत रस सच प्याला, हरि जिस जन आप प्याईआ। कर किरपा देवे दीन दयाला, दीनन रच्छया आप कमाईआ। वरन बरन जग तोड़ जंजाला, जाग्रत जोत इक्क समझाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाला, आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। सर्ब जीआं करे प्रितपाला, वड दाता बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर खेल निराला, जुग करता आप कराईआ। कलिजुग अन्तिम दस्से राह सुखाला, सुख सागर दए समझाईआ। सोहँ पाए जग साची माला, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। लेखा चुक्के काल महाकाला, काल ग्रास ना अन्तिम खाईआ। फल लगाए साचे डाला, पत्त डाली आप महिकाईआ। अमृत रस निझर धार एका देवे सति प्याला, राम नाम जाम प्याईआ। हरिजन लेखे लग्गे घाला, जो जन जन की सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रस दए उपाईआ। रस उपाया आत्म धार, त्रैगुण भेव कोए ना पाइंदा। अन्तर आत्म कर प्यार, त्रैगुण अतीता आप प्यांअदा। अन्तर अंदर करे ठंडा ठार, त्रैगुण अग्नी तत्त बुझाइंदा। अंदर मन्दिर करे बहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा रस चखाइंदा। पी रस मिले राम, रस राम रूप वटाईआ। जगत नेहफल दिसे काम, हरि चरन दिसे सच्ची सरनाईआ। सति प्याला पीता जाम, जम का फास रहिण ना पाईआ। जिस जन हरि जू हरि हरि मिले आण, तिस भगत मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, रस राम आप चखाईआ। चक्ख रस होया सांत, जिस अमृत हरि हरि पाया। अन्तर अन्तर रहे इकांत, गृह मन्दिर आप सुहाया। एका रंग रंगाए दिवस रात, घड़ी पल ना कोए जणाया। रस राम सुणाए साची गाथ, अक्खर आपणा आप पढ़ाया। लेखा जाणे मस्तक माथ, पूर्ब लहिणा वेख वखाया जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि रस आप सालाहया। हरि रस सालाह सालाहवण योग, करोड़ तेतीसा कलिजुग रहे बिल्लाईआ। नाम निधान जिस जन पीता, विष्न ब्रह्मा शिव रहे जस गाईआ। मिल राम होया ठंडा सीता, जिउँ सीता राम मिल मिल ख़ुशी मनाईआ। धाम वखाए इक्क अनडीठा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। बैठा रहे इक्क अतीता, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। आदि जुगादि सदा सुहेला साजण मीता, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, साचा रस मुख चुआईआ। साचा रस मुखार बिन्द, बूंद बूंद आप टपकाइंदा। काया गागर बणाए सागर सिन्ध,

सरोवर साचा ताल भराइंदा। किरपा करे गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, गोबिन्द आपणे रंग रंगाइंदा। हरिजन मेटे सगली चिन्द, चिंता चिखा ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत मेघ आप बरसाइंदा। अमृत मेघ बरसे घनघोर, कृपानिध दया कमाईआ। सांतक सति कराए पंज चोर, तृष्ना तृप्त कराईआ। काया मन्दिर अंदर शब्द अनाद बोले एका मोर, माया ममता मोह चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। अमृत रस साचा रंग, हरिजन साचे आप चढ़ाइंदा। किरपा करे सूरा सरबंग, जुग जुग आपणी सेव कमाइंदा। काया अंदर वखाए सच अनन्द, अनन्द आपणा रूप वटाइंदा। सच प्रकाश चढ़ाए चन्द, झूठ अन्धेरा अन्ध गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन देवे एका रस, प्रेम वस्त झोली पाइंदा। प्रेम रस सर्ब सिरताज, ताजगीर सीस झुकाईआ। भगत भगवन्त देवे सच्चा राज, दरगाह साची धाम बहाईआ। बिन प्रेम ना होए कोई पूरा काज, भगत भगवन्त देण ग्वाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे एका वर, रसीआ राम राम रस काया अंदर रसिक रसिक झिरना रिहा झिराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन बख्शे चरन सरन सरन चरन सच्ची सरनाईआ।

७७०

★ पहली हाढ़ २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच दया होई ★

सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा, आदि जुगादी साची धार। हरि पुरख निरँजण वेस वटाइंदा, रूप रंग रेख ना कोए विचार। एकँकारा नाउँ धराइंदा, जोती जाता हो उज्यार। आदि निरँजण डगमगाइंदा, नूर नूराना बेऐब परवरदिगार। अबिनाशी करता खेल खिलाइंदा, अलख अगोचर अगम्म अपार। श्री भगवान साचे धाम सोभा पाइंदा, अजूनी रहत पुरख अकाल। पारब्रह्म प्रभ आपणे रंग समाइंदा, इक्क इकल्ला हो त्यार। आपणी रचना आप रचाइंदा, घाड़न घड़े अपर अपार। दूसर संग ना कोए रखाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल न्यार। आदि जुगादी खेल न्यारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। साचा मन्दिर कर त्यारा, निरगुण धारा जोत जगाइंदा। नाउँ रखाए अपर अपारा, सचखण्ड दुआर आप वड्यांअदा। सिँघासण पुरख अबिनाशन लगाए आप करतारा, करनी करता आप कमाइंदा। शाहो भूप हरि बण सिक्दारा, राज राजाना आप अख्वाइंदा। तख्त निवासी हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाना आप अल्ह़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, साची रचना आप रचाइंदा। आदि

जुगादी पुरख अगम्म, अगम्मड़ा खेल कराईआ। आपणी इच्छया आपे जम्म, आपणी बणत आप बणाईआ। ना कोई पवण स्वासी दम, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, चार दीवार ना कोए रखाईआ। ना कोई घड़े ना कोई देवे भन्न, घड़न भन्नणहार समरथ इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, मंडल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, एका मन्दिर दए वड्याईआ। साचा मन्दिर हरि निरँकारा, एका आप सुहाइंदा। सचखंड साचा खोल्ह किवाड़ा, गृह मंदर वेख वखाइंदा। निरगुण जोती निराकारा, निरवैर आप प्रगटाइंदा। अजूनी रहत कर पसारा, अनुभव प्रकाश आप कराइंदा। जोद्धा सूरबीर बली बण बलकारा, आपणा बल आप धराइंदा। ना कोई खड़ग खण्डा कटारा, चिल्ला तीर कमान ना कोए रखाइंदा। आपणी इच्छया कर वरतारा, साची भिच्छया आपणी झोली पाइंदा। सच सिँघासण कर त्यारा, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता, सच सिँघासण आसण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा हरि सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। करे खेल दर्द दुःख भय भञ्जणा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। आपणे गृह आप नहाए आपणा मजना, सर सरोवर आपणे आप दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणा भेव अभेद आपे रिहा खुल्हाईआ। भेव अभेद आप खुल्हाइंदा, इक्क इकल्ला हो उज्यार। सो पुरख निरँजण नाउँ धराइंदा, हरि पुरख निरँजण मीत मुरार। एकँकारा खेल खिलाइंदा, आदि निरँजण कर पसार। श्री भगवान वेख वखाइंदा, अबिनाशी करता पावे सार। पारब्रह्म वण्ड वंडाइंदा, आप आपणी किरपा धार। सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा, सचखण्ड वसे इक्क इकल्ला कर पसार। जोती जोत डगमगाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, आपणा रूप आप धराइंदा। सचखण्ड दुआरे आपे वड़या, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। साचे तख्त आप चढ़या, हरि पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाहीआ। आपणा घाड़न आपे घड़या, एकँकार आपणी कल आप वरताईआ। आपणा पल्लू आपे फड़या, आदि निरँजण बेपरवाहीआ। आपणा अक्खर आपे पढ़या, निष्अक्खर श्री भगवान करे पढ़ाईआ। आप सुहाए आपणा बंक दुआर साचा गड़्या, अबिनाशी करता सोभा पाईआ। पारब्रह्म प्रभ आपे वेखे आपणा दरया, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। ना पुरख नारी नर नरायण नर हरया, इक्क इकल्ला रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड अंदर आपे वड़, आपणा सिँघासण आप सुहाईआ। सच सिँघासण हरि निरँकारा, सचखण्ड दुआर आप सुहाइंदा। तख्त निवासी बण सिक्दारा, आपणी धारा आप चलाइंदा। एका हुक्म इक्क

वरतारा, एका एक सीस झुकाइंदा। एका दर दरबान करे निमस्कारा, एका निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, सच सिँघासण आप वड्यांअदा। सच सिँघासण सोभावन्त, सो पुरख निरँजण दए वड्याईआ। उप्पर बैठ श्री भगवन्त, अचरज खेल आप खिलाईआ। आपे नारी आपे कन्त, कन्त कन्तूहल सेज हंढाईआ। आपे मणीआ आपे मंत, आपे नाउँ निरँकारा लए प्रगटाईआ। आपे करे खेल बेअन्त, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, सचखण्ड दुआरे आप सुणाइंदा। शाहो भूप बण एका राणा, शाह पातशाह इक्क अख्वाइंदा। एका नाद इक्क तराना, एका राग अलाइंदा। एका नूर नूर महाना, नूर नुराना डगमगाइंदा। एका खेले खेल श्री भगवाना, आपणी कल आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण उप्पर चढ़, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म धुर दरबार, शाह पातशाह आप सुणाईआ। आपे दर दरवेश बण भिखार, जगदीश सीस आप झुकाईआ। आपे करनी करता करे विचार, लेखा लेख ना लिख्या जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी रचना आप रिहा रचाईआ। सो पुरख निरँजण रचन रचाइंदा, आदि पुरख अगम्म अथाह। नारी कन्त आप अख्वाइंदा, साचे मन्दिर सोभा पा। साचा मन्दिर आप वड्यांअदा, सचखण्ड दुआरा बणत बणा। दीपक जोत इक्क जगाइंदा, जोती नूर नूर रुशना। एका नाद नाद वजाइंदा, नाद अनादी बेपरवाह। आपणी इच्छया आप धराइंदा, आपे बणे सच मलाह। आपणा बेड़ा आप चलाइंदा, खेवट खेटा कर सलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नारी कन्त आप आपणा रूप रिहा हंढा। नारी कन्त हरि करतारा, नर नरायण वडी वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे खेल अपारा, अलख अलखना आप कराईआ। अगम्म अगम्मड़ा हो त्यारा, अगम्मड़ी धार आप प्रगटाईआ। बिन नाड़ी चमड़े कर उज्यारा, जोती जोत रुशनाईआ। मात पित ना कोए सहारा, रक्त बूंद ना मेल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी हो उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। हरि साचा भेव खुल्हाइंदा, अलख अगोचर अगम्म अपार। सचखण्ड दुआरे आसण लाइंदा, निरगुण नूर नूर उज्यार। जोती जाता डगमगाइंदा, इक्क इकल्ला बेऐब परवरदिगार। मुकामे हक हक सालांहयदा, शाह सुल्ताना मीत मुरार। आपणा मन्दिर आप वड्यांअदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। खेल अपारा हरि निरँकारा, घर घर विच आप कराईआ। सचखण्ड अंदर थिर घर खोल्हे बन्द किवाड़ा, आपणा चरन आप टिकाईआ। एका देवे वस्त हरि थारा, वस्त अमोलक आप वरताईआ। नारी कन्त कर पसारा, सुत दुलारा वेख

वखाईआ। शब्दी शब्द कर पसारा, जोती मात मात वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द सुत उपजाईआ। निरगुण माता निरगुण पिता, निरगुण शब्द उपाया। निरगुण दाता आदि जुगादी करे हिता, एका रंग समाया। निरगुण निरवैर निराकार वण्डाया हिस्सा, दूसर संग ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर सुत दुलारा इक्क बहाया। शब्द दुलारा वसे थिर घर, पुरख अबिनाशी आप वसाईआ। अबिनाशी करता सचखण्ड दुआरे बैठा चढ़, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। मेरा भाणा लैणा जर, तेरा तेरी करे वड्याईआ। चरन कँवल तेरे सीस धर, जगदीस होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याईआ। शब्द दुलारा उठया, थिर घर खोल्ह किवाड़। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एका तुठया, बख्शे चरन प्यार। चरन चरनोदक देवे घुटया, आदि जुगादि रक्खे ठंडा ठार। देवे नाम धन्न अतुटया, साचा नाम इक्क भण्डार। मेला करे साची जोत आ, जोत शब्द इक्क प्यार। ना कोई किला ना कोई कोट आ, वसां तेरे चरन सच्चे दरबार। तेरे नगारे लग्गे चोट आ, मैं होवां ख़बरदार। तेरा बंस बणावां ओत पोत आ, शाह पातशाह सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सुत दुलारा, बणे भिखार। सुत दुलारा बण भिखारी, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं शाह पातशाह जोत निरँकारी, निरगुण दाता इक्क अख्वाइंदा। मैं बाल नादाना आया चल दुआरी, आपणी झोली अग्गे डांहयदा। तूं साहिब सुल्तान वड दातारी, तेरा भण्डारा निखुट कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हउँ बाल नादाना, तूं श्री भगवाना, दे आपणा दाना, भिक्खक भिख्या मंग मंगाइंदा। सो पुरख निरजंण हो मेहरवान, सुत शब्दी दए वड्याईआ। मेरा रूप तेरा निशान, तेरा निशान इक्क उठाईआ। मेरा बंस तेरी सन्तान, साचा मार्ग इक्क धराईआ। तेरा मेला साचे काहन, घर साचे वज्जे वधाईआ। आदि जुगादि रक्खां तेरा माण, सीस तेरे हथ्थ टिकाईआ। एका देवां सच्चा दान, झोली तेरी पाईआ। तेरे अन्तर वड़ां आण, दिस किसे ना आईआ। मेरा रूप ना सके कोए पछाण, रेख रंग ना कोए जणाईआ। सद वसां बिन मकान, महिमा गणत गणी ना जाईआ। सुत दुलारा सति कर परवान, सति सति विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर बैठा साचा हरि, आपणा पर्दा आप उठाईआ। सुत दुलारा वर घर पा, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। पारब्रह्म तेरी सच सरना, सरनगत इक्क तकाइंदा। तूं ही पिता तूं ही मां, हउँ बालक नाउँ रखाइंदा। सदा सिर रक्खीं ठंडी छाँ, तेरी ओट इक्क तकाइंदा। जुग जुग पकड़ीं मेरी बांह, तुध बिन अवर ना कोए मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण आप समझाइंदा। एका

गुण हरि निरँकारा, शब्द सुत करे जणाईआ। शब्दी शब्द करां पसारा, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। मेरा खेल अपर अपारा, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर आपणा मता पकाईआ। थिर घर साचा मता पकाया, सुत दुलारा बाल उठाल। तेरी गोदी गोद सुहाया, किरपा करे आप कृपाल। तेरी जोती जोत मिलाया, दीपक दीआ आपे बाल। तेरे मन्दिर भाग लगाया, वेख वखाए सच्ची धर्मसाल। आपणा नूर आप टिकाया, जल्वा रखाए बेमिसाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर साचे लाल। लाल दुलारे साचे सुत्त, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। किरपा करे अबिनाशी अचुत, तेरा तेरी रक्खे वड्याईआ। तेरी वेखे सुहञ्जणी रुत्त, पत्त डाली आप महिकाईआ। तेरे अन्तर आपणा रूप अनरूप सति सरूप जगाए निर्मल जोत, जोत नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा खेल दए वखाईआ। शब्द सुत तेरा खेल खिलाउणा, आदि पुरख समझाया। निराकार साकार रूप वटाउणा, भेव अभेद खुल्हाया। विष्नूं आपणा रंग चढ़ाउणा, आपे पिता आपे माया। अमृत नाभी आप टिकाउणा, सर सरोवर इक्क धराया। नाभी कँवल फुल्ल खिलाउँणा, करे खेल बेपरवाहया। पारब्रह्म प्रभ वण्ड वण्डाउणा, आपणा हिस्सा आप कराया। ब्रह्म रूप आप रखाउणा, ब्रह्म वेता आपे जाया। थिर घर साचा आप सुहाउणा, जोती नूर कर रुशनाया। सुंन अगम्मी खेल खिलाउणा, धूंआँधार ना कोए रखाया। शंकर आपणा रंग रंगाउणा, अंगीकार होए ख़ुदाया। एका दरस कर कर तरस आप दरसाउणा, नेत्र नैण नैण दरसाया। तिन्नां तेरी झोली पाउणा, साची गोद बहाया। आपणा हुक्म आप सुणाउणा, धुर फ़रमाना शब्द घलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारा रिहा उठाया। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी झोली पा, प्रभ साचा खेल खिलाईआ। त्रैगुण माया लए उपा, इक्क इक्क नाल जोड़ जुड़ाईआ। विष्नूं बैठा सीस झुका, दोए जोड़ मंगे सरनाईआ। ब्रह्मा नेत्र नैणां रिहा राह तका, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। शंकर बैठा ध्यान लगा, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। तिन्नां विचोला बेपरवाह, दूसर भेव ना कोए जणाईआ। आपणा लेखा दए समझा, सुत दुलारे भुल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए वड्याईआ। एका गुण निराकार, साकार आप जणाइंदा। विष्नूं देवे विश्व भण्डार, वास्तक दाता आप अख्वाइंदा। ब्रह्मा वेता शंकर संसा आप निवार, एका रंग सूरा सरबंग आप जणाइंदा। एका शब्द जणाए मृदंग, तुरीआ राग नाद सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी रचना आप दरसाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आपे धर, हरि साचा खेल खिलाईआ। आपणी इच्छया आप कर, आपणी किरन जोत वण्ड वंडाईआ। एका किरन इक्क इक्क इक्क नाल लड़ फड़,

७७४

इक्क इक्क नाल गंढु पवाईआ। सूरज चन्न रवि ससि प्रकाश कर, मंडल मण्डप दए वड्याईआ। गगन गगनंतर खेल कर, जल बिम्ब रूप समाईआ। आपणी चरन धूढ़ जल उप्पर धर, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साचे सुत साचे शब्द तेरी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना रच करतार, आपणी खेल करे करतारा। एका शब्द इक्क भण्डार, एका होए हरि वरतारा। एका मन्दिर इक्क दुआर, एका वसे सचखण्ड सच्ची सरकारा। एका हुक्म इक्क वरतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए साची कारा। विष्न ब्रह्मा शिव दए वड्याई, पारब्रह्म बेपरवाहया। त्रैगुण वस्त झोली पाई, त्रै त्रै मेला सहिज सुभाया। एका तत्त दए जणाई, तत्व तत आप समझाया। एका शब्द करे पढ़ाई, निअक्खर करे पढ़ाया। ना कोई कलम ना कोई शाही, लेखा लिख ना कोए वखाया। आदि अन्त पारब्रह्म तेरी देवे ना कोए ग्वाही, भेव अभेदा आपणे विच रखाया। विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस झुकाई, चरन ध्यान लगाया। पारब्रह्म प्रभ रिहा समझाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वखाया। हरि साचा सच जणाइंदा, साचे साची कार। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी सेव लगाइंदा, हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार। विष्नूं तेरी झोली इक्क भराइंदा, देवे अतुट भण्डार। ब्रह्मा ब्रह्म रूप तेरा सर्ब दरसाइंदा, ब्रह्म जोती इक्क आकार। आपणी विद्या इक्क वखाइंदा, आपणे घर कर प्यार। आपणा रूप आप समझाइंदा, सो पुरख निरँजण हो उज्यार। हँ तेरा नाउँ वटाइंदा, पारब्रह्म ब्रह्म करे खेल अपार। सोहँ रचना आप रचाइंदा, गुणवन्ता आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चे दरबार। ब्रह्म जणाई पारब्रह्म, ब्रह्म वेता करे पढ़ाईआ। शब्दी शब्द सुत दुलारा प्या जम्म, ना कोई पिता ना कोई माईआ। आदि जुगादि करे आपणा कम्म, सच संदेस हरि सुणाईआ। नर नरेश बेड़ा देवे बन्न्ह, सचखण्ड बैठा सच्चा सच सलाहीआ। एका राग सुणना कन्न, बिन रसना जेहवा गाईआ। सदा कहिणा धन्न धन्न, पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। तू ही जननी तू ही जन, तेरी गोद सदा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका वर, एका गुण रिहा वखाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसारा, पारब्रह्म प्रभ आप जणाइंदा। लक्ख चुरासी खेल अपारा, लिख लिख लिखणहारा आप वखाइंदा। पंचम मेला एका धारा, पंचम पंचम जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा गुण आप वखाइंदा। लक्ख चुरासी खेल अवल्ला, हरि साचा सच कराईआ। वसणहारा धाम उच्च अटल महल्ला, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। सच सिँघासण एका मल्ला, सोभावन्त सोहे सच्चा शहिनशाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाया आपणा पल्ला, एका पल्लू नाम फड़ाईआ। सच संदेस

धुर फ़रमाना एका घल्ला, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा देवे एका वर, पारब्रह्म सच्चा पातशाहीआ। साचा वर हरि देवणहारा, एका रंग रंगाइंदा। ब्रह्मे देवे नाम हुलारा, नाम नामा झोली पाइंदा। आपे खोल्हे आपणा बन्द किवाड़ा, आपणा नूर आप दरसाइंदा। आपे जोती जाता हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपे शब्द नाद धुन्कारा, अनहद नादी नाद वजाइंदा। आपे सुणे सुणनेहारा, सुन्न समाध आप समाइंदा। ब्रह्मा वेखे नैण उग्घाड़ा, चारों कुण्ट नज़र कोए ना आइंदा। दहि दिशा ना कराए पसारा, सूरज चन्न ना कोए सितारा, ज़िमीं अस्मान जंगल जूह उजाड़ ना कोए पहाडा, समुंद सागर रूप ना कोए धराइंदा। कवण नाद वजाए मेरे मन्दिर हरी दुआरा, कवण राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। पारब्रह्म प्रभ दया कमा, भेव अभेद खुल्हाया। स्वच्छ सरूपी रूप धरा, आपणा नूर आप प्रगटाया। आपणा पर्दा देवे लाह, आप आपणे रंग रंगाया। आपणा अक्खर दए पढ़ा, साची विद्या इक्क जणाया। चारे मुखां रिहा सालाह, चारे कूटां वेख वखाया। चारे वेदां रिहा गा, गा आपणी सेव कमाया। अन्तिम बैठा सीस झुका, पारब्रह्म तेरी सच सच्ची सरनाया। आदि जुगादि बणना जगत मलाह, बिन तुध बेड़ा ना कोए चलाया। जुग जुग देंदे रहिणा सच सलाह, आपणा मन्त्र नाम पढ़ाया। मैं निमाणा भुल ना जा, बाली बुध सुध ना राया। तेरे अग्गे झोली बैठा डाह, एका वस्त दे वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका वर, साचा हुक्म सुणाया। ब्रह्मे सुण कर ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। मेरा नाउँ तेरा ज्ञान, तेरा ज्ञान जगत पढ़ाइंदा। चारे वेद वेद वखाण, विआख्या रूप ना कोए दरसाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी धार चलाइंदा। तेरी वण्डण वण्डे वण्ड विच जहान, साचा हिस्सा आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सुत शब्द तेरे नाल मिलाइंदा। सुत शब्द तेरा साचा संग, विष्न ब्रह्मा शिव सगला संग निभाईआ। एका नाम वजाउणा मृदंग, सच मृदंगा इक्क फड़ाईआ। आदि जुगादि तेरी पुरी आवां लँघ, पूरी पूरन आस कराईआ। चरन भिखार बण ना जावां संग, बिन हरि चरन ना होर कोए सरनाईआ। सचखण्ड दुआर बैठा सूरा सरबंग, चरन थिर घर रिहा टिकाईआ। ब्रह्मे मंगी तेरी पूरी करे मंग, लक्ख चुरासी तेरी झोली पाईआ। पंज तत्त देवे गंढु, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश नाल मिलाईआ। मन मति बुध चाढ़े रंग, निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, सूरबीर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाईआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ना, हरि साचा सच जणाइंदा। त्रैगुण मेला एका करना, रजो तमो सतो एका बन्धन पाइंदा। पंज

तत्त आपे वरना, साचा पल्लू आप बंधाइंदा। रक्त बूंद मेल करना, नारी कन्त तेरा संग निभाइंदा। धरनी उप्पर आपे धरना, धरत धवल वण्ड वंडाइंदा। जल बिम्ब आपे वड़ना, नज़र किसे ना आइंदा। आपणा भाणा आपे करना, सद भाणे विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वार एका हुक्म सुणाइंदा। एका हुक्म हरि जणाया, लक्ख चुरासी रचन रचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाया, भुल कदे ना जाईआ। रवि ससि तेरा संग निभाया, मंडल मण्डप करे छाया, धरनी धवल हेठ विछाईआ। जल जल आपणा रूप वखाया, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचाईआ। जेरज अंडां वण्ड वण्डाया, उत्भुज सेत्ज तेरी झोली पाईआ। चारे खाणी नाउँ धराया, चारे वेद देण ग्वाहीआ। आपणा नाउँ दए समझाया, आदि मेरी धार जोत निराकार नूरो नूर नूर गंवाईआ। मेरे अन्तर मेरी ग़फ्तार, मेरे मन्दिर मेरी सतार, मेरा राग इक्क अल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाया। मेरा राग मेरी सतार, दिस किसे ना आईआ। मेरा मन्दिर मेरा दुआर, बाढी बणत ना कोए बणाईआ। मेरा घर सच्चा घर बार, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। मेरी किरन किरन पसार, इक्क इक्क इक्क नाल वण्ड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा गुण दए समझाईआ। साचा गुण हरि निरँकारा, आपणा आप जणाइंदा। लक्ख चुरासी जगत विहारा, भगवन्त खेल खिलाइंदा। आपणा नाम कर उज्यारा, जोती धारा शब्द प्रगटाइंदा। शब्दी धार परा पसन्ती खेल न्यारा, दिस किसे ना आइंदा। मद्धम बैखरी गाए गाना, लक्ख चुरासी जीव जंत समझाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, चारे खाणी चारे बाणी वण्ड वंडाइंदा। चारे बाणी वण्डण वण्ड, हरि साचा खेल खिलाईआ। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड, आपणी रचना आप वखाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, खेवट खेटा नाउँ रखाईआ। करे खेल दो जहान, दो जहानां बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हिस्सा दए समझाईआ। साचा हिस्सा लोकमात, ब्रह्मा विष्न शिव जणाइंदा। चार जुग देवे दात, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग झोली पाइंदा। चार वरन बन्न्हे नात, अठारां बरन खेल खिलाइंदा। चारों कुण्ट वेखे मार झात, चार यारी रंग रंगाइंदा। चार वेद लिखे कलम दवात, जगत शाही रूप वटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव गायण गाथ, एका अक्खर नाम पढ़ाइंदा। आपणी पंज तत्त देवे दात, काया कंचन गढ़ सुहाइंदा। आत्म ब्रह्म उत्तम ज़ात, ईश जीव रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी अंदर वड़, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन ब्रह्म आपणा खेल खिलाइंदा। पंज तत्त हरि मात वडिआउणा, लोकमात वज्जे वधाईआ। लक्ख चुरासी रूप धराउणा, नौ दस ग्यारां बीस तीस चार करे कुड़माईआ। माणस मानुख आप जणाउणा, मानव आपणा रंग रंगाईआ।

नाद शब्द धुंन विच टिकाउणा, अनहद तार सितार हिलाईआ। आत्म सेजा पलँघ विछाउणा, आत्म ब्रह्म आसण लाईआ। नूर ज़हूर इक्क कराउणा, जोती जोत कर रुशनाईआ। बिन तेल बाती दीप टिकाउणा, आदि जुगादि साची सेव कमाईआ। बजर कपाटी पर्दा लाउणा, आप आपणा मुख छुपाईआ। घर विच घर खेल खिलाउणा, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलाउणा, आसा तृष्ना बन्धन पाईआ। हउमे हंगता गढ़ बणाउणा, माया ममता जोड़ जुड़ाईआ। एका वस्त अमोलक आपणे हथ्थ रखाउणा, गुरमुख विरले झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दी वारता दए समझाईआ। चार जुग दा लेखा निरगुण धार, लिख लिख लेख ना कोए वखाइंदा। चारे वेद करन पुकार, उच्ची कूक कूक सर्ब सुणाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव करन निमस्कार, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी देवे धुर फ़रमान, सच संदेसा इक्क जणाइंदा। चार जुग करे खेल महान, ब्रह्मा सुत आप प्रगटाइंदा। सनक सनंदन सनातन सन्त कुमार देवे माण, बराह रूप आप धराइंदा। यज्ञै पुरष कर परवान, हाव ग़रीव देवे निशान, नर नरायण खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पंज तत्त चोला आप वड्यांअदा। पंज तत्त चोला काया गढ़, बंक दुआरी आप सुहाईआ। निरगुण सरगुण अंदर वड़, जोती जोत जोत मिलाईआ। अवतार गुर आपणा खेल कर, लक्ख चुरासी करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कपल मुन दत्ता त्रै रिखप देव एका बूझ बुझाईआ। पृथू देवे एका मति, मत्तस आप समझाया। मिन्दिरा कच्छप उप्पर रक्ख, सत्त सरोवर फोल फोलाया। मोहणी रूप करे अलखना अलख, चौदां पर्दा आप उठाया। धनंतर धरनी विच्चों कढ्ढे रत, रती रत तोल तुलाया। हँसा देवे प्रेम मति, ब्रह्मा सुत आप समझाया। नर सिँघ आपे हो उतप्त, बल बावन आप तराया। नर नरायण हो प्रगट, धू्र प्रहिलाद गले लगाया। हरी हरि गज लए पति रक्ख, सतिजुग साचा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव रिहा समझाया। विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाउणा, हरि साचा सच जणाईआ। सतिजुग साचा पार कराउणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जो घड़्या सो भन्न वखाउणा, आपणी चले मात रज़ाईआ। त्रेता मात धराउणा, त्रैगुण अतीता वेखे मात शाहीआ। ब्रह्मण क्षत्री संग निभाउण, शूद्र वैश करे पढ़ाईआ। रघुपत रामा रघुबंस सुहाउणा, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां गले लगाउणा, हँकारीआं गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव रिहा समझाईआ। सुण शिव उठ बल धार, हरि साचा सच जणाइंदा। साची सेवा अपर अपार, जुग करता आप लगाइंदा। आदि जुगादी साची कार, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा।

अष्टभुज दए सहार, संख चक्कर गदा आप भवाइंदा। चतुर्भुज कर पसार, रूप अनूप आप वटाइंदा। करे कराए साची कार, सतिजुग त्रेता खेल कराइंदा। द्वापर लेखा अपर अपार, दोए दोए आपणा मूल मुकाइंदा। वेद व्यासा वेख विचार, एका रंग रंगाइंदा। एका अक्खर भर भण्डार, बारां अक्खरी संग निभाइंदा। ब्रह्मा नारद दए सहार, सुरस्ती छत्ती राग आप अल्लाइंदा। पुराण अठारां कर त्यार, लक्ख चार सतारां हज़ार सलोक गणाइंदा। अन्तिम लेखा लिखे अपार, भेव अभेद आप खुल्लाइंदा। कान्हा कृष्ना रूप अपार, नाम बंसरी नाम वजाइंदा। साची सख़ीआं मंगलाचार, अनन्द मंगल आपे गाइंदा। मंडल रास रची संसार, स्वांगी सांग नटूआं नट खेल खिलाइंदा। लक्ख चुरासी पावे सार, जीव जंत आत्म ब्रह्म फोल फोलाइंदा। भगत भगवन्त लए उधार, चरन चरनोदक मस्तक टिक्का धूढ़ी इक्क लगाइंदा। एका शब्द दए ज्ञान, गीता अठारां अध्याए जणाइंदा। द्वापर मेटे आप निशान, कलिजुग साचा मात लगाइंदा। एका बुध गुण निधान, बुध बिबेकी आप कराइंदा। ईसा मूसा दे फ़रमान, लोकमात आप प्रगटाइंदा। मुकामे हक गुण निधान, हक हकीकत नाअरा इक्क लगाइंदा। लाशरीक आपणा खेल खिलाइंदा। महिबान बीदो सच निशान, बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर डगमगाइंदा। चौदां तबक वेखे मार ध्यान, संग मुहम्मद इक्क निशान, ऐनलहक नाअरा आप सुणाइंदा। तालब तुलबा पढ़ाए इक्क ईमान, शरअ शरीअत इक्क कुरान, काया काअबा दो दो आबा साचा मक्का इक्क वखाइंदा। साचे हुज़रे हक नवाबा, इक्क इकल्ला बैठा वजाए रबाबा, तार सतार ना कोए हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, जुग जुग साची खेल खिलाइंदा। कलिजुग खेल खिलावणा, हरि साचा सच जणाइंदा। निरगुण जोती जोत जगावणा, जोती जोत रूप धराइंदा। निरगुण सरगुण मेल मिलावणा, सरगुण निरगुण रूप वटाइंदा। एका अक्खर नाम पढ़ावणा, सति नाम आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना हरि जणाइंदा। धुर फ़रमाना श्री भगवन्त, एका एक जणाईआ। नारी मिले साचा कन्त, साचा रंग आप रंगाईआ। पंज तत्त चोली चढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। सोहँ रूप श्री भगवन्त, ब्रह्म पारब्रह्म दए समझाईआ। नानक सतिगुर गाए मणीआ मंत, दिवस रैण विसर कदे ना जाईआ। लक्ख चुरासी पढ़ाए जीव जंत, नाम सति इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, एका जोती जोत करे रुशनाईआ। एका जोती जोत उजाला, जोती जाता आप कराइंदा। दीनां बंधप दीन दयाला, दीनां नाथां दर्द वंडाइंदा। आदि जुगादि सदा प्रितपाला, प्रितपालक सेव कमाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, लोकमात वेख वखाइंदा। एका जोत नूर नूर निराला, दस दस रूप आप धराइंदा। दसवें घर,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाइंदा। दसवां घर दहि दस्मेश, दहि दिशा वण्ड वंडाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सदा करन आदेश, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। सांगोपांग सेज सुहाए शेष, दोए सहँसर जेहवा आप हिलाईआ। आपे होए रिखी केश, गोवर्धन धार भेव ना राईआ। आपे सतिनाम दए आदेश, अजूनी रहत वडी वड्याईआ। आपे जुग जुग करे वेस, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लोकमात रिहा वण्डाईआ। आपे मुच्छ दाढ़ी जाणे केस, आपे बैठा मूंड मुंडाईआ। आपे शाह पातशाह बणे नरेश, साचे तख्त सोभा पाईआ। चार जुग जो देंदा रिहा संदेस, गुर अवतार सेवा लाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग युग औंदे रहे धर धर भेस, काया चोला तत्त बदलाईआ। सच सिंघासण पुरख अबिनाशन सचखण्ड दुआरे बैठ इक्क इकल्ला वेख, नेत्र नैण ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव दिता एका वर, जुग चौकड़ी दए समझाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार, हरि साची सेवा लाइंदा। भगतां देवे नाम भण्डार, साची भगती झोली पाइंदा। सन्तां देवे इक्क आधार, आत्म ब्रह्म तत्त सति समझाइंदा। गुरमुख साचे लए उभार, एका मन्त्र नाम पढ़ाइंदा। गुरसिखां बख्शे चरन धूढ़ी छार, दुरमति मैल आप धवाइंदा। चले चलाए अवल्लड़ी कार, भेव अभेद ना कोए रखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, ध्रू प्रहिलाद रसना जेहवा सर्ब गाइंदा। बल बावण हो त्यार, दुरबाशा माण गवाइंदा। अमरीक लाए पार, जनक आपणे रंग समाइंदा। हरी चन्द देवे ठार, सीतल सति सति कराइंदा। बिदर सुदामा दए आधार, आप आपणी गोद बहाइंदा। दरोपत लज्जया रक्खे विच संसार, जै देव मन्त्र नाम पढ़ाइंदा। बेणी सधना करे पार, सैण सेव आप कमाइंदा। अजामल पापी देवे दरस आप निरँकार, गनका आपणा नाम पढ़ाइंदा। पापण पूतना करे उधार, बधक आपणे गले लगाइंदा। कबीर जोलाहा उच्ची कूक कूक करे पुकार, बिन हरि कोए ना पार कराइंदा। सचखण्ड वसे मेरा निरँकार, जिस दा रंग मेरा ख़ाकी तन रंगाइंदा। मेरे अंदर करे गुफ्तार, एका राग सुणाइंदा। अठ्ठे पहर मिले सच्चा यार, सिदक सबूरी नाल हंढाइंदा। पाहना गंढे रविदास चमार, बनारस थेटा आपणा खेल खिलाइंदा। कंगण ठग्ग चोर देवे तार, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। भगत भगवन्त मेला विच संसार, दूसर दिस किसे ना आइंदा। करे खेल अगम्म अपार, पुरख अकाला दीन दयाला वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला जुग जुग जुगा जुगन्तर लोकमात बुझाए लग्गी बसन्तर, गुर गुर भेजे शब्द अवतार। साचा गुर हरि का शब्द, पंज तत्त चोले विच रखाइंदा। कोई कीमत ना चुकाए अरब खरब, नीलम नील ना कोए वखाइंदा। हरि का नाउँ समाए विच सर्ब, सर्ब व्यापी आप हो जाइंदा। ना कोई ज़ेर ना कोई ज़रब, ना कोई अक्खर रूप वटाइंदा। ना

कोई नुक्ता ना कोई हरफ़, ना कोई विद्या हरि पढ़ाइंदा। ना कोई सिम्मत ना कोई तरफ़, ना कोई कोट हिस्सा पाइंदा। जुग जुग जन भगतां उप्पर आपणा करे तरस, आपणा दरस आप कराइंदा। लेखा जाणे अर्श फर्श काया कुरा वेख वखाइंदा। कायनात मेटे हरस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मे शिव देवे एका वर, आपणा भेव आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव हरि हरि रंग, नव नौ चार मात चढ़ाईआ। चार वेद मंगी मंग, चार जुग चार वरन करन पढ़ाईआ। चारे बाणी वजाए मृदंग, चारे खाणी दए समझाईआ। चारों कुण्ट आपे लँघ, दहि दिशा फेरा पाईआ। भेव खुल्हाए पारब्रह्म, पुरी लोअ आकाश डेरा लाईआ। गगन गगनंतर आपे लँघ, सुन्न समाध पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी रचन रचा, जुग चार चौकड़ी खेल खिलावणा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा आप दिवा, गुर अवतार सेव लगावणा। आपणा मन्त्र नाम पढ़ा, जीवां जंतां झोली पावणा। कलिजुग अन्तिम करे खेल बेपरवाह, दिस किसे ना आवणा। आपणा रूप आप लए प्रगटा, आपणे भेव आप खुल्हावणा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, आपणा बंस लए बणा, वेद व्यासा लिख्या लेख आप समझावणा। सम्बल नगर डेरा लए लगा, गुर गोबिन्द मेला सहिज सुभा, साचा खेड़ा आप वसावणा। महाबली उतरे आ, ना कोई भैण ते ना भ्रा, मात पित ना गोद बहावणा। ना कोई विद्या सके पढ़ा, ना कोई ज्ञान सके दृढ़ा, मन मति बुध ना कोए रखावणा। आदि पुरख अबिनाशी करता आपणा खेल करे बेपरवाह, इष्ट होर ना कोए मनावणा। निहकलंका नाउँ रखा, लोकमात जोती जामा वेस वटावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव भुल ना जावणा। विष्न ब्रह्मा शिव दोए जोड़ कर निमस्कार, बैठे ध्यान लगाईआ। कर किरपा वड दातार, तूं दाता दानी बेपरवाहीआ। हउँ मांगें चरन धूढ़ तेरी छार, मस्तक टिक्का इक्क लगाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग लक्ख चुरासी वेख तेरा पसार, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। गुर पीर आउण अवतार, जगत संदेस तेरा सुणाईआ। भगत भगवन्त करन जै जैकार, सन्त अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। गुरमुख अमृत निझर झिरना रस पीवण ठंडा ठार, अमिउँ रस एका बूंद बरसाईआ। गुरसिख मंगे दरस दीदार, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। कवण वेला दरस देवें घर आण, साडी कट्टें अन्त जुदाईआ। तेरा करीए दरस दीदार, तेरी जोती जोत होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा लेखा लिख्या कोए ना जाईआ। तेरा लेख किसे ना लिखणा, चार जुग सके ना कोए जणा। तेरा रूप किसे ना दिसणा, तूं निरगुण दाता बेपरवाह। तेरा खेल सद रहे मिथना, करे कराए आप न्याँ। हउँ भिखारी मंगदे भिखणा, अग्गे तेरे झोली

डाह। तूं देंवे साची सिखणा, सिक्खी सिख्या भुल कदे ना जा। साडा लेखा आपणे विच लिखणा, लिख्या लेख ना सके कोए मिटा। तेरा रूप कवण वेले दिसणा, दर्शन करीए आ। चार जुग लक्ख चुरासी अंदर भरी विसना, काम क्रोध लोभ हँकार बैठा डेरा ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा हुक्म सुणा। हरि साचा हुक्म सुणाइंदा, शब्द अगम्मी बोल। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग सेव लगाइंदा, तख्त निवासी बैठ अडोल। लक्ख चुरासी खेल खिलाइंदा, आदि जुगादी तोले आपणा तोल। कलिजुग अन्तिम एका कंडा नाम रखाइंदा, सतिगुर नानक रक्खे कोल। तेरां तेरां धार चलाइंदा, तेरा तेरे अंदर जाए मौल। धरनी हौला भार कराइंदा, उप्पर बोले नाम सति बोल। एका ओट पुरख अकाल रखाइंदा, करे खेल काया चोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, हरि साचा रुप धराईआ। निहकलंक नाउँ रखाउणा, शब्द डंका इक्क उठाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां एका हुक्म सुणाउणा, भुल कोए ना जाईआ। गोबिन्द मेला मेल मिलाउणा, सिँघ आपणा बल धराईआ। सम्बल आसण सच सुहाउणा, सच सिँघासण दए वड्याईआ। लोकमात सचखण्ड बणाउणा, एका कृष्न गया समझाईआ। इक्क दिन इक्क साल रंग रंगाउणा, कलिजुग कूड़ी धोवे शाहीआ। अठारां दिवस द्वापर तेल चढ़ाउणा, साल अठारां कलिजुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी सच दरबार इक्क लगाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए वखाईआ। सच दरबार लगाउणा लोकमात, कलिजुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे मार झात, नौ खण्ड पृथ्मी सर्ब लोकाईआ। कलिजुग वेखे अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। चार वरन वेखे ज़ात पात, अठारां बरन पर्दा लाहीआ। अठसठ तीर्थ वेखे घाट, जमना गंगा सुरस्ती गोदावरी फेरा पाईआ। चार अठारां वेखे पूजा पाठ, इष्ट देव थाउँ थाँईंआ। मस्तक वेखे तिलक ललाट, त्रिसूल कवण रखाईआ। लक्ख चुरासी वेखे काया हाट, पंज तत्त चोला फोल फोलाईआ। पर्दा लाहे चौदां हाट, चौदां तबकां चरन छुहाईआ। आत्म सेजा वेखे खाट, कवण बैठा सेज सुहाईआ। करे खेल पुरख समराथ, सम्मत अठारां दए ग्वाहीआ। इक्क इकल्ला आपे चढ़े आपणे घाट, दूसर नज़र कोए ना आईआ। सति सतिवादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सत्त दए गणाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, दूजे शब्द धार बणाइंदा। तीजे निरगुण सरगुण कर आकार, चौथे पद मेल मिलाइंदा। पंचम नाद शब्द धुन्कार, घर घर विच आप सुणाइंदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोए पसार, सति सतिवादी सप्तम सचखण्ड दुआरे आसण लाइंदा। अठ्ठां तत्तां खेल न्यार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध मेल मिलाइंदा। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, लक्ख चुरासी रचना वेख वखाइंदा।

दस्म दुआरी ब्रह्म पसार, आत्म ब्रह्म आप धराइंदा। दस इक्क ग्यारा हो त्यार, इक्क इक्क नाल जोड़ जुड़ाइंदा। इक्क दो दूजी कुदरत कर प्यार, इक्क तिन्न त्रैगुण माया फंदन आप कटाइंदा। इक्क चार चौदां लोकां करे पार, इक्क पंज दस पंज लेख मूल चुकाइंदा। इक्क छे सोलां कर शंगार, सोलां इच्छया भरे भण्डार, सोलां कलां मात अवतार, आपणे हुक्मे आप घलाइंदा। इक्क सत्त सभ तों वसे बाहर, नानक अंगद अमरदास रामदास रसना जेहवा गाइंदा। अरजण लेखा लेख लिखार, शब्दी शब्द कर प्यार, लक्ख चुरासी एका रंग रंगाइंदा। हरिगोबिन्द मेला इक्क निरँकार, निरगुण सरगुण करे विचार, दोए खण्डे दोए धार, भेव कोए ना पाइंदा। हरिराय पाया हरि का दुआर, हरिकिशन बोले इक्क जैकार, गुर तेग़ बहादर आप आपणा मेल मिलाइंदा। नाता तोड़ नौ दुआर, नौ खण्ड पृथ्मी होया पार, नौ अठारां चरनां हेठ लताड़, सचखण्ड मिल्या हरि निरँकार, दूसर अवर ना कोए जणाइंदा। दसवें घर दस पसार, जोत जगी हरि दुलार, मन्दिर वसया इक्क घर बार, दीवा बाती ना कोए टिकाइंदा। एका पुरख पुरख अकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण आप समझाइंदा। एका जोती दस अवतारा, तिन्न पंज लेखा गए गणाईआ। सोलां कलां कृष्ना अवतारा, काहन आपणा रूप वटाईआ। सुरती करे सच प्यारा, नाम बंसरी इक्क सुणाईआ। एका राम इक्क अवतार एका दहि सिर दए आधारा, एका दसरथ सुत दुलारा, एका घट घट करे पसारा, एका रचना रिहा रचाईआ। कलिजुग अन्तिम भेव खोल्हे आप निरँकारा, पैंतीस अक्खरी दए समझाईआ। पैंती अक्खर गुरदेव, गुर तिन्न पंज जोड़ जुड़ाया। कर कर हरि हरि हरि साची सेव, नर हरि साचा पाया। पारब्रह्म प्रभ अलख अभेव, देवा देव आप अख्वाया। सदा वसे धाम अटल निहचल निहकेव, धाम अवल्ला आप अख्वाया। गुर बाणी शब्द मिलाया साचा हाणी, अमृत प्याए ठंडा पाणी, निझर झिरना आप झिराया। पैंतीस अक्खर बणी राणी, महिमा गाए अकथ कहाणी, कथनी कथ ना सके राया। इक्क सत्त खेल महानी, दस सत्त चढ़ी जवानी, ईशवर अक्खर बावन धार करे कुरबानी, बावन आपणा रूप आप छुपाया। बावन साल कलिजुग ख़ाक छाणी, लक्ख चुरासी वेख्या जीव प्राणी, रसना पढ़दे हरि की बाणी, अन्तर आत्म ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सत्त दए वड्याईआ। इक्क सत्त सतारां अक्खर बावन, निरगुण आपणे हथ्थ रखाइंदा। जिस ने फड़ के मारया रावण, तिस राम आपणे विच समाइंदा। जिस नूं गाउँदे कृष्ना काहनन, सो काहन आपणी गोद बहाइंदा। जिस नूं अल्ला मीआं कह कह देंदे ज़ामन, सो साची ज़ामनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। जिस नूं सतिगुर नानक गोबिन्द कहिन्दे मेटे अन्धेरी शामन, जगत अन्धेरा आप मुकाइंदा। इक्क सत्त करे परवानन, सच परवानगी आपणे हथ्थ रखाइंदा।

पारब्रह्म प्रभ गुण निधानन, शाह सुल्तान दया कमाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरुआं पीरां साधां सन्तां आपे होए जानन, जानणहार आप हो जाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल महानन, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। प्रगट होए श्री भगवानन, प्रगट आपणा रूप धराइंदा। शब्द मारे तीर निरालन, अणयाला तीर आप चलाइंदा। करे खेल जोत अकालण, अकाल पुरख वेख वखाइंदा। लोकमात आए बण बण मालण, लक्ख चुरासी बूटा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, विष्न ब्रह्मा सिव वखाए आपणा घर, बन्द किवाड़ा आप खुल्हाइंदा। सतारां अक्खर निरगुण धार, इक्क सत्त मेल मिलाया। वीह सौ बिक्रमी कर प्यार, निरगुण नूर जोत रुशनाया। कलिजुग वेखी अग्नी हाढ़, त्रैगुण माया तत्त जलाया। चारों कुण्ट तपे झूठ अंग्यार, अमृत मेघ ना कोए बरसाया। तीर्थ तट होए ख्वार, नारी नर नंगे रहे तारीआं लाया। गुर दर मन्दिर मस्जिद मठ हाहाकार, सति सन्तोख ना कोई जणाया। हरि का रूप नज़र ना आए जीव गंवार, माया ममता मोह वधाया। काया गोलक धरे ना कोए नाम आधार, झूठी गोलक रहे भराया। लक्ख चुरासी विसरया करतार, कुदरत कादर खेल खिलाया। अन्तिम पावे आपे सार, जिस जन ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा सिव दए समझाया। विष्न ब्रह्मा शिव समझाए, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरी सेवा लाए, जुग जुग लोकमात खेल खिलाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आए, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। वीह सौ अठारां बिक्रमी थित वार गणाए, हाढ़ सतारां साह सुधाईआ। साचा तख्त लोकमात बणाए, पुरख अबिनाशी आसण लाईआ। पंचम मुख ताज टिकाए, सत्त रंग निशाना दए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अदालत वकालत आपे आप कराईआ। करे अदालत सच्चा शहिनशाह, साचे तख्त आसण लाइंदा। तेई अवतारां लए बुला, शब्द स्नेहुड़ा इक्क घलाइंदा। जोती जोत विच्चों लए प्रगटा, नूर नुराना डगमगाइंदा। अठारां भगत विच बहा, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार अल्ला राणी पर्दा लए चुका, मुख नकाब ना कोए धराइंदा। नानक गोबिन्द एका जोती जोत करे रुशना, आप आपणा मेल मिलाइंदा। काल महाकाल लए उठा, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। राए धर्म दर दरवाज़िउँ बाहर लए खला, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। चित्रगुप्त लक्ख चुरासी लिख्या लेख आपणा भार लए उठा, लिख्या लेख सर्ब वखाइंदा। लाड़ी मौत सगन मना, लाल मैहन्दी हथ्थ रखाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाह, विष्न ब्रह्मा शिव चरनां हेठ रखाइंदा। इक्क फ़रमाना दए सुणा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण कवण धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग दा पिछला

लेखा आप मुकाइंदा। तेई अवतार दस्सण सलाह, जुग जुग जो रहे मात कराईआ। भगत भगवन्त बणाए ग्वाह, जो गए सिर आपणा भार उठाईआ। सन्तां पुच्छे एका राह, किस बिध मिले सच्चा माहीआ। अल्ला राणी गल विच पल्ला ल्ए पा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बिस्मिल तेरा रूप ख़ुदा, तेरे उत्तों होया ना कोए फ़िदा, फ़ितरत किसे नज़र ना आईआ। संग मुहम्मद चार यार नेत्र नैण ना सके कोए उठा, तीस बतीस शरअ हदीस आलमीन कवण पढ़ाईआ। नानक निरगुण पकड़े ना किसे दी बांह, जो चार वरन मेला गए भुलाईआ। गोबिन्द गोद ना सके उठा, जो क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड वंडाईआ। सर्ब जीआं दा दाता एका बेपरवाह, करे खेल थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम गुर अवतारां कोलों लेवे जीवां जंतां आप सफ़ाईआ। सच दरबार लगावणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। नव नौ चार दा पन्ध मुकावणा, पुरख अबिनाशी हो त्यार। विष्न ब्रह्मा शिव आपणी जोत मिलावणा, कर किरपा हरि करतार। करोड़ तेतीसा भेव चुकावणा, सुरपति राजा इन्द दए आधार। गुरमुख साचे आप उठावणा, साचे सन्तां करे प्यार। आप आपणे रंग रंगावणा, रंग चाढ़े अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार।

७८५ ना कोई दिवस ना कोई रात, घड़ी पल ना वण्ड वंडाईआ। निरगुण बैठा इक्क इकांत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। ७८५

ना कोई पूजा ना कोई पाठ, ना कोई रसना गाथ सुणाईआ। ना कोई तन नक्क मूंह दिसे हाथ, नेत्र नैण ना कोए रखाईआ। ना कोई मज़्हब ना कोई ज़ात, ना कोई चिन्ह दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दिन दए समझाईआ। निरगुण दिन आदि जुगादि, दिवस रूप ना कोए वटाया। खेले खेल ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म बेपरवाहया। जुगा जुगन्तर वजाए नाद, अनादी धुन सुणाया। जो जन रहे जाग, तिस जन अठ्ठे पहर दिन वखाया। शब्द जणाई बोध अगाध, बोध अगाधा भेव खुल्हाया। मेट मिटाए वाद विवाद, वख अमृत रूप बणाया। जिस जन मिल्या मोहण माधव माध, कोई मंग ना अवर मंगाया। ना कोई दिवस रैण प्रभात, वेला वक्त ना कोए जणाया। हरि सन्तां सदा रक्खे साथ, विछड़ कदे ना जाया। जिस जन चढ़ाए आपणे राथ, बण रथवाही सेव कमाया। सगल वसूरे जायण लाथ, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दिन दए समझाया। हरि का दिवस ना कोई सूरज ना कोई चन्न, ना कोई नूर करे रुशनाईआ। ना कोई राग ना कोई कन्न, ना कोई सुणे ना करे शनवाईआ। ना कोई आवे जावे बेड़ा देवे बन्न्ह, ना बणे कोए मलाहीआ। जिस दा भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, अठ्ठे पहर एका रंग लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दिवस दए समझाईआ। साचा दिवस साचा चानण, चन्द चांदनी

आप चमकाईआ। जिस जन आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञानन, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। चरन कँवल बख्शे इक्क ध्यानन, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। सो जन दिवस रात एका रंग मानण, चार दिन ना कोए वड्याईआ। चार दिन चार युग, चार कुण्ट कुरलाया। गुरमुख औध गई पुग, काया गोर मढ़ी ना कोए दबाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग सचखण्ड दुआर जो बैठा रिहा लुक, कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत फेरा पाया। जिस जन रखाए आपणी ओट, तिस जन दिवस रैण नज़र कोए ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दिवस आपणे विच समाया। साचा दिवस आत्म घर, आठ पहर रुशनाईआ। चार जुग दा दए वर, वर दाता एका वार झोली पाईआ। जिस जन चुकाए भउ भय डर, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़्, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। कर दर्शन मन वासना जाए मर, मन की चिन्दा रहे ना राईआ। जिध्धर पेखे नज़री आवे हरी हरि, हरि बिन अवर ना कोए दसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन मेले आपणे घर, आपणा दिन दए समझाईआ। आपणा दिवस हरि समझाए, गुरसिखां दया कमा। आपणा दीप गुरसिख अंदर जगाए, अज्ञान अन्धेर मिटा। अट्ठे पहर धुन नाद वजाए, अनहद तार हिला। अग्गे हो हो नजरी आए, रूप अनूप वखा। मन का मणका दए फिराए, सुरती सुरत शब्द मिला। अकाल मूर्त अकाल नज़री आए, दिवस रैण ना कोई परभा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण वण्ड निरगुण रिहा समा। आया अनन्द रसना उत्ते, अंदर रस रहिण ना पाईआ। कलिजुग जीव ग़ाफ़ल सुत्ते, सोया रैण विहाईआ। पारब्रह्म आया अबिनाशी अचुते, जिस वड्डी वड वड्याईआ। गुरमुख गुरसिख हरिभगत हरिजन विरला उठे, जिस सतिगुर पूरा आप उठाईआ। दयाल ठाकर स्वामी जिस जन उप्पर तुट्ठे, कलिजुग आलस निन्दरा दए मिटाईआ। गुर गोबिन्द सूरा अमृत जाम प्याए घुटे, काया बाटे विच टिकाईआ। आवण जावण लक्ख चुरासी छुट्टे, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। गुरसिख तेरा सूरज अट्ठे पहर सुहाए तेरी रुत्ते, दिवस रैण ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनन्द अनन्द अनन्द गुरमुख हिरदे विच समाईआ। अनन्द आया गुर पाया, घर साचे मिल्या मेल। मन सहिंसा भउ चुकाया, दीपक जगया बिन बाती तेल। सहिंसा रोग मिटाया, अचरज पारब्रह्म दा खेल। जिस विछड़े आण मिलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां सज्जण सुहेल। आलस निन्दरा लथ्था दुःख, सतिगुर पूरा आप मिटाईआ। जगत तृष्ना मिटी भुक्ख, गुर सतिगुर आप गंवाईआ। सफ़ल होए मात कुक्ख, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। दरस दिखाए जो बैठा लुक, हरि गोबिन्द सच्चा माहीआ। आपणे कोलों आपे पुछ, वेला वक्त दए समझाईआ। गढ़ी चमकौर

७८६

जो गया रुस्स, कलिजुग अन्तिम लए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आलस निन्दरा दए गंवाईआ। निन्दरा आलस होए दूर, गरुसिख नेड़ रहिण ना पाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूर, दिवस रैण दरस वखाईआ। जोती जल्वा आत्म कोहतूर, पंच विकार भस्म दए कराईआ। आसा मनसा करे पूर, पूरन पुरख वडी वड्याईआ। नाता तोड़े कूड़े कूड़, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। जिस जन मस्तक लाए चरन धूढ़, जन्म जन्म दी मैल धवाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, गुण अवगुण ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाईआ। आलस निन्दरा जाए लथ, गुर सतिगुर दया कमाइंदा। सदा सुहेला सिर रक्खे हथ्थ, दिवस रैण सेव कमाइंदा। शब्द डोरी पाए नथ्थ, वाग आपणे हथ्थ उठाइंदा। जगत विकारा तुट्टा हठ, मन का माण अभिमान मिटाइंदा। बहत्तर नाड़ ना उब्बले रत, अमृत जाम इक्क प्यांअदा। इक्क समझाई साची मति, चार वरन नानक गोबिन्द गोद बहाइंदा। सर्ब जीआं दा कमलापति, नरायण नैण ना कोए उठाइंदा । सतिगुर पूरा पहलों गुरसिखां चरनी आप जाए ढह्, फिर गुरसिखां आपणे चरन लगाइंदा। एका देवे ब्रह्म मति, मन मति जगत चुकाइंदा। धीरज सन्तोख देवे साचा सति, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत दलिद्र आप मुकाइंदा। जगत दलिद्र देवे होड़, दीनां नाथ दया कमाईआ। गुरसिख चाढ़े आपणे घोड़, साचा घोड़ा नाम वखाईआ। सचखण्ड विच्चों आया दौड़, लोकमात मिले चाँईं चाँईंआ। जन्म जन्म दी बुझाए लग्गी औड़, दे दरस तृप्त कराईआ। जगत तृष्ना देवे होड़, मन वासना ना कोए सताईआ। टुट्टी गंढ्ढे देवे जोड़, जुड़या जोड़ ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आलस निन्दरा दए समझाईआ। आलस निन्दरा गुरसिख रंग, सतिगुर पूरा आप चढ़ाइंदा। मनमुखां सदा छड्डे संग, कन्न निन्दया ना कोए सुणाइंदा। सोवत जागत प्रभ आत्म सेजा माणे पलँघ, गुरसिख आसण सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुपन सखोपत जाग्रत तुरीआ एका रंग वखाइंदा। तुरीआ नाद वज्जे हरि धुन, वजावणहारा दिस ना आईआ। गुरमुख पुकार रिहा हरि सुण, सुणनहारा मुख छुपाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों हरि सज्जण आपे चुण, सतिगुर पूरा मेल मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब जन्म दए वड्याईआ। पूर्ब जन्म जगत विछोड़ा हरि सतिगुर आप कराया। कलिजुग अन्तिम सस्से उप्पर लाया होड़ा, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। एका ढईया छुपया रिहा बण के कोरा, आपणा पर्दा ना सके उठाया। आया वक्त आया दौड़ा, आप आपणा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला आप मिलाया। मिल्या मेला सच दरबार, धुर दरबारी आप मिलाईआ। कल्गी तोड़ा वटांदरा होया दस्तार, दस्त बदस्ती

हथ्थ फड़ाईआ। आपणी खिच्च नाम कटार, तन गात्रे विच लटकाईआ। दो हथ्थां दा दे प्यार, सिँघ संगत इक्क समझाईआ। तेरा मेरा रिहा उधार, कीता कौल भुल ना जाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, अन्तिम आपणा मेल मिलाईआ। तेरा कर्ज़ा दए उतार, आपणा लहिणा आपणी झोली पाईआ। तेरी नींदर विच मिले तेरा निरँकार, जिस जगत नींद तेरी लाहीआ। जिस कढुया विच्चों हँकार, करे प्यार सच्चा शहिनशाहीआ। काला रंग दए उतार, काली मेटे छाहीआ। पहलों बदली आपणे नाल दस्तार, हुण दस्तार जगत नाल दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरी निन्दरा वेख वखाईआ। गुरसिख तेरी निन्दरा आलस, मंगे गुर चरन ध्याना। सतिगुर पूरा बणे सालस, देवे एका धुर फ़रमाना। कलिजुग अन्तिम चार वरन बणाउणा ख़ालसा ख़ालस, ऊँच नीच राउ रंक सर्ब मिट जाणा। किसे दी रहिण ना देवे कोए नालश, चरनां हेठ दबाए राजा राणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोद्धा सूरबीर बली बलवाना।

★ १६ हाढ़ २०१८ बिक्रमी दरबार विच दया होई जेठूवाल ★

कुदरत खेल वेखे हरि कादर, बेऐब ऐब ख़ुदाया। फ़कीर हकीर शाह बणया गदागर, दर दरवेश दर दर फेरी पाया। सिदक सबूरी रक्खे साबर, सादर करीम आपणा कर्म कमाया। कलमा अमाम जाणे दादर, हज़ारा दरूद आप पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्त बदस्त तेग़ वेख वखाया। दस्त बदस्त खेल अवल्ला, दहि दिशा आप कराईआ। आलमीन अल्ला हू अल्ला, हक मुसल्ला इक्क विछाईआ। नूर जलाल एका जल्वा, जोबन ज़हूर वडी वड्याईआ। कादर कुदरत वेखे बिसमिल्ला, बिस्मिल आपणा खेल वखाईआ। चौदां तबक कढुया चिल्ला, चक्कर चिहन ना कोए जणाईआ। लेखा जाणे कोहतूर सिला, सालब सलब बेपरवाहीआ। पीर पैग़म्बर महबूब आपे मिला, महिव आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ख़ालक वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। ख़ालक ख़लक खेल मख़लूक, मालक मौला खेल खिलाइंदा। नाबीना नादान वसे कलबूत, कलमा कलाम कुरा कुरान आप जणाइंदा। दर दरवेश फिरे आपणी कूट, बेदर दर्द वंडाइंदा। सच ईमान अमाम वखाए सबूत, साबत आपणा रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूर नुराना वेस वटाइंदा। नूर नुराना अज़ीम आज़म, बेऐब परवरदिगारया। देवे तालीम ताज़ीम कायनात एका बातन, आलम उल्मा खेल खिला रिहा। वेस वटाए बण बण मकतूल कातल, रूप अनूप आप धरा रिहा। लेखा जाणे धाम मुक्कदस बातल, बैतल आपणा खेल खिला रिहा। वेस वटाए आप रसातल, तलातल दिस किसे ना आ रिहा। जोती जोत

७८६

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दरवेश नाउँ रखा ल्या। दर दरवेश परवरदिगार, अलख अगम्म वडी वड्याईआ। कलमा कलाम कर त्यार, कुदरत कादर दए समझाईआ। अमाम अमामा देवे पैग़ाम, पीर पैग़म्बर कर पढ़ाईआ। इक्क संदेसा सच सलाम, अलैकम आपणा हुक्म जणाईआ। लेखा जाणे मूल बनाम, हरफ़ सतर ना कोए वड्याईआ। चौदां तबक वेख गुलाम, ग़फ्लत वेखे थाउँ थाँईंआ। काला सूसा जगत नज़ाम, सच तालीम ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दरवेश वेस वटाईआ। दर दरवेश परवरदिगारा, चौदां हट्ट फेरा पाइंदा। चौदां तबक कूक पुकारा, हू हू नाअरा सर्ब लगाइंदा। तू ही तूं ना दिसे मीत मुरारा, तेरा तसव्वर ना कोए जणाइंदा। तेरा हक ना दिसे कोए नाअरा, बांग सदा ना कोए सुणाइंदा। मक्का काअबा हुजरा दिसे ना कोए मनारा, महिराब रंग ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराइंदा। वेस धराए हक जानब जनाब, आपणा वेस वटाईआ। लेखा जाणे आबी आब, हयात आपणे रंग समाईआ। आपे कातब आपे होए मुखातब आपे दए जवाब, लाजवाब लाशरीक आप हो जाईआ। आपे शाह बण नवाब, शाह पातशाह नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। कराए खेल इलाही अल्ला, ऐनलहक वेख वखाइंदा। मुकामे हक हक उच्चा टिल्ला, दर दरवेश दर सुहाइंदा। आपणे नूर ज़हूर होया बिसमिल्ला, बिस्मिल आपणी धार बंधाइंदा। आपणी ज़ात आपे मिला दूसर रंग ना कोए वखाइंदा। आप सुहाए आपणा टिल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आप तुड़ाइंदा। बन्धन तोड़े बन्दी बन्द, बन्दगी आपणी विच समाईआ। लेखा जाणे नवचन्दी चन्द, चौदस आपणा हुक्म वरताईआ। आदि जुगादि मुकाए पन्ध, जुग जुग बण बण पान्धी राहीआ। गहर गम्भीर सुणाए छन्द, निरगुण सरगुण कर रुशनाईआ। आकबत उकब जणाए परमानंद, उल्फ़त आरफ ना कोए वखाईआ। दर दरवेश नर नरेश वेखे सेज पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता आप अख्वाईआ। जुग करता हरि करनेहारा, भेव अभेद रखाइंदा। जगत जुग हो उज्यारा, जाग्रत जोत डगमगाइंदा। त्रै त्रै लेखा पार किनारा, पंचम पंचम मोह तुड़ाइंदा। गुर अवतार लै सहारा, एकँकारा ओट तकाइंदा। भगत भगवन्त बोल जैकारा, एका नाअरा नाम सुणाइंदा। सन्त कन्त इक्क दुआरा, घर साचा आप वड्यांअदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार किनारा, कलिजुग आपणा वेख वखाइंदा। सच संदेस धुर दरबारा, नर नरेश आप जणाइंदा। काला सूसा कर त्यारा, माटी ख़ाकी पर्दा पाइंदा। अन्तर जल्वा नूर उज्यारा, प्रकाश प्रकाश विच टिकाइंदा। नाद धुन सच्ची धुन्कारा, बांग सदा आप सुणाइंदा। आपणा खोल्ह बन्द किवाड़ा,

नूरी जल्वा आप दरसाइंदा। आबे हयात ठंडी ठारा, अमृत मेघ बरसाइंदा। आपणा नूर कर पसारा, जोती जोत डगमगाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, आयत शरायत ना कोए रखाइंदा। लाशरीक हो त्यारा, आप आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संदेस आप सुणाइंदा। सच संदेसा हरि करतार, कृपानिध आप जणाईआ। पीर पीरां बण सिक्दार, शाह पातशाह बणे सच्चा शहिनशाहीआ। गुफ्तम करे सच्ची गुफ्तार, सतार अवर ना कोए हिलाईआ। अहिबाब रबाब वजाए आपणी वार, बेपरवाह वडी वड्याईआ। तालब तुलबा करे तल्बगार, तालीम ताज़ीम अज़ीम इक्क सुणाईआ। नफ़र नफ़रत करे सर्ब संसार, नफ़स हवस दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दर दए समझाईआ। एका दर हरि दरवेश, दीनां नाथ आप जणाइंदा। आदि जुगादि रहे हमेश, जुगा जुगन्तर आप सुहाइंदा। आपणा खेल आपे रिहा वेख, दूसर अवर ना संग रलाइंदा। नूरी नूर मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, मूंड मूंड ना रूप वटाइंदा। बेऐब वसे आपणे देस, आपणी वरेस ना किसे जणाइंदा। पीर पैग़म्बर ना कोई जाणे मुल्लां शेख़, शख्सीअत भेद ना कोए जणाइंदा। तसबी तकवा ना कोई सके वेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि वरतारा, निरगुण निरवैर आप वरताईआ। ख़ालक ख़लक दे सहारा, दीद ईद वण्ड वंडाईआ। चन्द भान सूरज मंडल वण्ड सतारा, नील बस्त्र रंग रंगाईआ। हरख सोग वसे बाहरा, चिंता दुःख ना कोए रखाईआ। लोक परलोक इक्क जैकारा, नाम मृदंगा मृदंग वजाईआ। कलिजुग खेल करे न्यारा, रूप अनूप आप वटाईआ। जगत रसूल बण वणजारा, एका हुक्म करे कबूल सीस जगदीस आप झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इस्म दए समझाईआ। एका इस्म हरि करतार, उस्तत निन्दा ना कोए वड्याईआ। काया जिस्म ना कोए विचार, तन माटी ख़ाक ना कोए वड्याईआ। जोत नूर अगम्मी धार, ज़हूर जल्वा हरि रुशनाईआ। शब्द नाद धुंन जैकार, एका हुक्म सच्ची शनवाईआ। सच पैग़म्बर करे ख़बरदार, सच कलमा इक्क जणाईआ। आयत शरायत रखाए परवरदिगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका करे कर्म पढ़ाईआ। सच पढ़ाई पीरन पीर, शाह पातशाह आप कराइंदा। तत्व तत दए धीर, तीर निराला आप लगाइंदा। जगत शरअ पा ज़ंजीर, आप आपणा हुक्म वरताइंदा। चौदां लोक चौदां तबक वखाए चोटी अख़ीर, अग्गे लेखा ना कोए समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कलमा आप पढ़ाइंदा। साचा कलमा आलमीन, एका बिस्मिल रूप वखाईआ। मेरा मेरी करे तौहीन, कल वेखे सर्ब लोकाईआ। कलमा अश्व ना कोई पाए ज़ीन, शाहसवार कोए नज़र ना आईआ। जगत झगड़ा मज़्हब दीन, इस्लाम अमाम ना कोए वखाईआ। शरअ शरीअत वस कीन,

वसल जुम्माल महबूब ना देवे कोए वखाईआ। अक्खर जाणे ना कोए सीन, त्रै मुख देण सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस धराईआ। वेस धराए हरि करतारा, भेव कोए ना पाइंदा। इक्क अमाम पैग़म्बर सहारा, रसूल नबी आप पढ़ाइंदा। कातब करता बण लिखारा, हक हकीकत आप जणाइंदा। सच ईमान विच संसारा, हुक्म हाकम आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। बन्धन पाए हरि करतार, जुगा जुगन्तर खेल खिलाईआ। काली अल्फ़ी तन शंगार, नील बस्त्र बन बनवारी रूप अनूप धराईआ। सच मुसल्ला परवरदिगार, धरनी धरत धवल दए हुलार, ख़ाकी ख़ाक आसण लाईआ। कलमा कलाम सच गुफ़्तार, डूँघी कंदर कर प्यार, दर दरवाज़ा बन्द खुल्हाईआ। मक्का काअबा खेल न्यार, दो दो आबा मीत मुरार, दर दरवेशा नर नरेशा सच सिँघासण पुरख अबिनाशन आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अलख अगोचर अगम्म अथाह, करे खेल बेपरवाह, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। बेपरवाह इलाही अल्ला, आप आपणा खेल खिलाइंदा। सच सिँघासण आपे मल्ला, उच्चे टिल्ले सोभा पाइंदा। आपणे नूर आपे रल्ला, जोती जोत डगमगाइंदा। आपणा संदेस आपे घल्ला, नर नरेश आप सुणाइंदा। आपणा फड़ाए आपे पल्ला, पीर पैग़म्बर आप उपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलिजुग खेल हरि करतारा, इक्क इकल्ला आप कराईआ। एका हुक्म इक्क वरतारा, एका बणत जणाईआ। एका अल्फ़ी इक्क शंगारा, एका बस्त्र तन छुहाईआ। एका कातब बणे लिखारा, ना कोई लिखे कलम शाहीआ। उच्ची कूक कूक करन पुकारा, एका नाअरा नाम लगाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, अभुल बेपरवाहीआ। ईसा मूसा कर त्यारा, तन शंगारा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अलिफ़ दए वड्याईआ। एका अल्फ़ी एका अल्फ़, हरि साचा आप जणाइंदा। पीर पैग़म्बर चुक्कण हल्फ़, सीस जगदीस आप निवाइंदा। लेखा जाणे आपणी तरफ़, कूट दिशा ना कोए जणाइंदा। वसणहारा अर्श फर्श, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप निभाइंदा। अर्श फर्श खेल ख़ुदावंद, वेखे ख़लक बेपरवाहीआ। आफ़ताब वेखे चन्द, कर तलूह करे रुशनाईआ। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाना अगम्मी छन्द, कलमा कलाम आप पढ़ाईआ। पीर पैग़म्बर गायण बत्ती दन्द, रसना जेहवा सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे विच रखाईआ। हरि हरि भेव अवल्लड़ा, आदि जुगादी कार। आपणा आसण सच सिँघासण आपे मलड़ा, साचे तख्त बहे सच्ची सरकार। सच संदेस एका घलड़ा, पीरन पीर कर ख़बरदार। आप फड़ाए आपणा पलड़ा, दया कमाए सांझा यार। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आप सुणाए सच्ची गुफ्तार। सच गुफ्तार सुणाए शुनीद, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। हक प्यार मेरी बकरीद, बईद सईद करे जणाईआ। ईसा मूसा कर ताईद, तसबी कलमे नाल रलाईआ। शरअ शरीअत हक रसीद, रासता बरासता रूप वटाईआ। मेरा कलमा करे शहीद, तीर तलवार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। धुर फ़रमान सच संदेसा शाह पातशाह आप सुणाइंदा। ईसा मूसा काला वेसा, वेस अनेक रखाइंदा। संग मुहम्मद चुक्के लेखा, चौदां तबक फोल फोलाइंदा। चौदस चौदां रक्खया साया हेठां, सीस आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा वेला श्री भगवान, आपणे हथ्थ रखाईआ। ईसा मूसा देवे धुर फ़रमान, पंज तत्त करे जणाईआ। अन्तर कढ्ढे पंज शैतान, पंज वक्त इक्क ईमान, पंज वक्त करे पढ़ाईआ। एका राग सुणाए कान, राग धुंन इक्क वजाईआ। मेरी सिफ्त तेरी कुरान, तेरा इशक मेरी वड्याईआ। तूं माशूक बण नादान, नेत्र नैण राह तकाईआ। मैं वेखां करां तेरी पछाण, भुल कदे ना जाईआ। मेरा वासा विच जहान, चौदां लोक मेरे चरन सेव कमाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुर अवतार, पीर पैग़म्बर मेरा नाउँ सदा सद गाण, एका अलिफ़ करां पढ़ाईआ। मेरा काअबा सच निशान, मैं वसां इक्क अमाम दूसर अवर ना कोए रखाईआ। मेरा हुक्म तेरा पैग़ाम, कलिजुग गावे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अञ्जील कुरान दए वड्याईआ। अञ्जील आज़म नूर दरसाया, एका हुक्म जणाइंदा। मुर्शद मुरीद फड़ उठाया, ठोकर कलमा नाम लगाइंदा। जल्वा जलाल नूर बेमिसाल आप वखाया, पर्दा आपणा आप चुकाइंदा। सजदा सीस जगदीस झुकाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा दर आप खुलाया। दर दरवाज़ा खोलया, खोले बन्द किवाड़। मुर्शद मुरीदां अंदर बोलया, किरपा कर अपर अपार। पंज तत्त काया चोला आपे फोलया, दूई द्वैती पर्दा पाड़। डूँघी कंदर गाए ढोलया, बेऐब परवरदिगार। मैं हर घट अंदर मौलया, मौला रूप मेरा संसार। मैं आपणे कंडे आपा तोलया, इक्क इकल्ला तोला बणया तोलणहार। लोकमात दसावां इक्क विचोलया, काया चोला कर त्यार। आपणा रक्खां पर्दा ओहलया, नेत्र नैण ना पावे कोए सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप जणाए आपणी कार। साची कार, ईसा मूसा ईश्र हरि जणाईआ। जगदीशर करे सच विहार, तपीशवर कोए रहिण ना पाईआ। दर दरवेश बणे भिखार, दरदीआं दर्द आप वण्डाईआ। चौदां लोकां चरनां हेठ लताड़, चौदां तबकां ठोकर दए लगाईआ। चारों कुण्ट वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड, पर्बत टिल्ले फोल फोलाईआ। कवण काअबे बैठा राह तके परवरदिगार, नेत्र नैण

नैण उठाईआ। कवण डूँग्घी कंदर लुकया विच अन्धयार, चौधवी चन्द ना कोए चढ़ाईआ। कवण अलिफ़ करे दरकार, कवण हल्फ़ीआ हल्फ़ उठाईआ। भुल ना जाणा विच संसार, साहिब सुल्तान रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग रिहा लगाईआ। सुण फ़रमान सीस झुकाया, नेत्र नैण शरमा। तूं साहिब मेरा ख़ुदाया, हउँ मंगां तेरी पनाह। तेरा सजदा इक्क रखाया, दोए दोए जोड़ करां सरना। तूं पर्दा मेरा उठाया, जल्वा आपणा नूर धरा। मैं अग्नी सड़दा ठंडा ठार कराया, आब हयात प्या। मेरा काया मकबरा जन्नत रूप वटाया, दरस तेरा नूरी एका पा। मैं गल विच पल्लू पाया, मेरे बख़्शीं सर्ब गुनाह। आदि जुगादि बख़्शंदड़ तेरा नाउँ सुणाया, तूं सभ दा सांझा पीर ख़ुदा। तेरी ख़लक तेरा नाउँ वड्याआ, मैं बण बण रैहबर तेरा ढोला दयाँ सुणा। तूं रहिमत कर मेरे ते सांईआ, तेरी रहिमत मेरी पकड़े बांह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर देणी ठंडी छाँ। मंगे मंग बण पैग़म्बर, सीस सीस झुकाईआ। पंज तत्त रचया मेरा सुअम्बर, मेरी आसा तेरी दासी दासा बण बण सेवक सेव कमाईआ। तेरे हुक्मे अंदर वेखां तेरा अडम्बर, वड साहिब तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा गुण समझाईआ। एका गुण हरि समझाउणा, ईसा मूसा मंग मंगाइंदा। कवण वेला अन्तिम आउणा, दर दरवेश मेल मिलाइंदा। कवण कूटे आसण लाउणा, कवण हुजरा सोभा पाइंदा। कवण नगारा चोट लगाउणा, कवण वेला वक्त वखाइंदा। कवण कलमा नबी रसूलां गाउणा, तेरा नाउँ सर्ब सालांहयदा। कवण वेला विछड़िआं मेल मिलाउणा, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। कवण वेला घर माही साचा पाउणा, मिल्या मेल ना कोए तुड़ाइंदा । एका अक्खर निश आपणा आप समझाउणा, हउँ अधीन प्रबीन मंग मंगाइंदा। कवण मकतब आपणा सबक पढ़ाउणा, कागद कलम ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ साची मंग मंगाइंदा। मंगे मंग बण पाख़ाक, ख़ाकी ख़ाक माण गवाइंदा । मेरी तृष्ना तेरा नात, तेरा नाता मेरी ज़ात, दूसर रूप ना कोए वखाइंदा। तुध बिन अवर ना दिसे कोए विच कायनात, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा । मेरी उम्मत तेरी दात, तेरी दात मोहे वरताइंदा। कवण वेला दए निजात, जगत बन्धन तोड़ तुड़ाइंदा। चौदां तबक रखाया हाट, बण वणजारा सेव कमाइंदा। चौदां सदीआं खट्टी खाट, नव नौ फेरा पाइंदा। चौधवीं चन्द ना दिसे अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाइंदा। कर किरपा करना पाकी पाक, तूं पतित पुनीत आप तराइंदा। हउँ मंगां तेरी खाट, तेरा विछोड़ा ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वेला अन्तिम दिस किसे ना आइंदा। पारब्रह्म प्रभ दया कमा, धीरज धीर दए सलाहीआ। आदि जुगादी बेपरवाह, जुग जुग आपणा वेस धराईआ।

कलिजुग अन्तिम बणे मलाह, नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। कागज़ कलम ना रक्खे कोई शाह, जगत विद्या ना कोए पढ़ाईआ। आपणा मार्ग आपे लए चला, दो जहानां फेरा पाईआ। पीर पैग़म्बर गुर अवतारां साधां सन्तां भगतां देवे इक्क सलाह, सलाहगीर आप हो जाईआ। सभ दा पर्दा दए उठा, मुख नकाब ना कोए रखाईआ। अमाम अमामां प्रगट होए आप ख़ुदा, ख़ुदी सभ दी दए गंवाईआ। एका थित वार दए जणा, भुल रहे ना राईआ। कलिजुग अन्तिम आवे हरि सच्चा शहिनशाह, निहकलंका नाउँ रखाईआ। बीस लेखा दए समझा, इक्क अठ्ठ दए वड्याईआ। दोआ दो जहानां बणे ग्वाह, सिफ़रा मूल ना कोए रखाईआ। एका आपणा नूर धरा, अठ तत्त करे कुड़माईआ। इक्क इकल्ला हरि ख़ुदा, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सत्त तबक चरनां हेठ दबा, सत्तां बख़्शे चरन धूढ़ मस्तक सच्ची शाहीआ। एका साता मेल मिला, दस सत्त दए वड्याईआ। पंजां तत्तां मूल चुका, ऊड़ा ऐड़ा ईड़ी सस्सा हाहा पंचम रंग आप रंगाईआ। हाहे अग्गे कन्ना ला, सरगुण रूप वखाईआ। सभ दी ड़ाड़ दए मिटा, जिउँ पैंतीस अग्गे ड़ाड़ा आपणा अंक ना कोए जणाईआ। ईसा मूसा अन्तिम लहिणा दए मुका, कादर करीम भुल कदे ना जाईआ। वेले अन्त चरन दुआर लए बुला, सच संदेस सुणाईआ। धुर फ़रमाना जो दिता सुणा तेरी सेव लगाईआ। अन्तिम घर घर वेखे जा, कवण करे तेरी पढ़ाईआ। तेरी राणी तेरे नाल करे कवण निकाह, कवण बैठी मुख भवाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर लोकमात बीस अठारां हाढ़ सतारां सच अदालत, लए लगा, ना मंगे कोई ग्वाहीआ। आपणे गल विच अल्फ़ी पा, सभ दी अल्फ़ी दए उठाईआ। दो हरफ़ी गल्ल दए मुका, दूसर करे ना कोए पढ़ाईआ। फ़ारसी अरबी जो लेखा दिता लगा, अर्शी आपणी रहिमत आप कमाईआ। आपणी बरदी आपणे चरनां विच लए बहा, अन्तिम मेटे झूठी शाहीआ। चार कुण्ट आपणा नाअरा दए सुणा, गुर अवतारां आदि जुगादि जो रिहा सुणाईआ। सोहँ रूप बेपरवाह, सो पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाहीआ। हँ रूप मख़लूक वेखे आपे ख़ुदा, ख़ालक ख़लक एका रंग वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भावी भरम दए वखाईआ। हरि लगाए सच अदालत, अदली अदल कमाईआ। अबिनाशी ठाकर करे वकालत, वकील दलील ना कोए रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणे सालस, दो जहानां सच्चा शहिनशाहीआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग ना आया विच आलस, सभ दा लेखा आपणी झोली रिहा वखाईआ। जुगा जुगां दी वेखे नालश, अभुल भुल कदे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम गोबिन्द लेखा गोबिन्द वेखे ख़ालस, ख़ालस आपणा रूप प्रगटाईआ । नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लक्ख चुरासी जीव जंत दुरमति मैल वेखे कालख, जगत टिक्का ना सके कोए धवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव इन्दर इन्द्रासण छड्ड सिँघासण नेत्र नैण छहबर करन बारश, करोड़ छिआनवें सीस झुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चार

जुग चार वेद चार वरन चार खाणी चार बाणी किसी दी मन्ने ना कोई सफ़ारश, जुग जुग लेखा सभ दा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी एका धुन नाद वजाईआ। चार जुग दा सति दरबारा, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। चार जुग दा वेख वरतारा, हरि पुरख निरँजण दया कमाईआ। चार जुग दा कर पसारा, एकँकारा वेस वटाईआ। चार जुग दा वेख अखाड़ा, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। चार जुग दी हाहाकारा, श्री भगवान करे शनवाईआ। चार जुग दा मेटे विभचारा, अबिनाशी करता होए सहाईआ। चार जुग दा लेखा जाणे गुर अवतारा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण करे खेल आप अपारा, लोकमात वज्जी वधाईआ। बीस बिक्रमी संन अठारां हाढ़ सतारां करे विहारा, बिउहारी आपणा विवहार वखाईआ। सच्चा हुक्म सच्चा वरतारा, सच्चा शहिनशाह साची खेल आप कराईआ। चार जुग बेअन्त बेअन्त बेअन्त जिस नूं कह कह गए पुकारा, सो आपणा भेव आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ।

७९५

★ १७ हाढ़ २०१८ बिक्रमी दरबार विच दया होई जेठूवाल ★

१० सो पुरख निरँजण अगम्म अपारा, आदि आदि बेपरवाहीआ। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, रूप अनूप आप धराईआ। एकँकारा कर पसारा, आप आपणा वेस वटाईआ। आदि निरँजण जोत जोती धारा, निराकार आप अख्वाईआ। अबिनाशी करता अलख अलखना बोल जैकारा, आपणा नाअरा आप लगाईआ। श्री भगवान ठांडा दरबारा, दर घर साचा आप सुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो त्यारा, आपणा रंग आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा प्रकाश आप प्रगटाईआ। सच प्रकाश हरि निरँकारा, निरगुण निराकार आप कराइंदा। आपणी उपाई आपे धारा, आप आपणा वेख वखाइंदा। आपणी इच्छया बण भण्डारा, सच वरतारा आप हो जाइंदा। साची वस्त वस्त हरि थारा, अनदृष्ट आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप रखाइंदा। आपे करे आपणी कल, अकल कल बेपरवाहीआ। आपणा धाम वखाए अटल्ल, अचल्ल वडी वड्याईआ। आपणा आसण आपे मल्ल, सच सिँघासण दए सालाहीआ। आपणे नूर आपे रल, जोती जोत जोत जगाईआ। आपणे दीपक आपे बल, आपे करे सच रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणी खेल खिलाईआ । आदि पुरख हरि खेल खिलाया, खेलणहार इक्क इकल्ला। रूप

रंग ना कोए जणाया, वसया सच महल्ला। मात पित ना कोए बणाया, आपणा फड़या आपे पल्ला। साचा मन्दिर इक्क सुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होया अछल अछला। अछल अछल खेल निरँकार, अचरज रचना आप रचाईआ। आपणी इच्छया भर भण्डार, वस्त अमोल आप वरताईआ। देवणहारा बण वरतार, दानी आपणा नाउँ रखाईआ। आपे बाढी बण करतार, आपणी रचना आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा घाड़न लए घड़ाईआ। आदि पुरख हरि घाड़न घड़त, घड़नहारा आप घड़ाइंदा। आपे जाणे आपणी जड़ष्त, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। आपणी कर आपे किरत, करता पुरख आप हो जाइंदा। आपणी करवट आपे परत, आप आपणा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा घर सुहाइंदा। आदि पुरख हरि एका घर, धुर दरबारा आप सुहाईआ। निरगुण निरवैर निराकार पुरख अकाल अंदर बैठा वड़, रूप रंग ना रेख कोए जणाईआ। आपणे पौड़े आपे चढ़, सच महल्ला दए वसाईआ। आपणे दुआर आपे खड़, आपे लेवणहार अंगड़ाईआ। आपणी करनी आपे कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप उपाईआ। हरि हरि मन्दिर एका खण्ड, सच सच बणाया। अकाल अकाल वण्डी वण्ड, वण्डणहार आप अख्वाया। विच रखाया आपणा अनन्द, अनन्द रूप आप हो जाया। चारों कुण्ट ना कोई कंध, जिस घर आपणा आप उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप वड़्याआ। साचा मन्दिर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण इक्क बणाईआ। सच दुआरे बैठा इक्क इकन्त, अकल कल आपणी खेल खिलाईआ। आपणी इच्छया आपे बणया मंगत, बण भिखारी झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर आप समझाईआ। सच दुआर कर त्यार, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। आपणे अंदर फिरे आपणी वार, चार दीवार ना कोए बणाइंदा। निरगुण जोती कर उज्यार, नूरो नूर डगमगाइंदा। अगम्म अगम्मड़ा कर पसार, अलख अलखना वेख वखाइंदा। ना कोई दूसर दिसे धार, धार धार विच समाइंदा। आपणा बल इक्क विचार, आपे वेख वखाइंदा। इक्क इकल्ला हो त्यार, सच महल्ला सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप वखाइंदा। इक्क इकल्ला इच्छया रक्ख, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। निरगुण होया घर प्रतक्ख, घर निरगुण वज्जे वधाईआ। आपे मेला आपे वक्ख, विछोड़ा बन्धन ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दात आप जणाईआ। आपणी दात हरि करतार, आपे बूझ बझाइंदा। रूप रंग तों वसा बाहर, रेख भेख ना कोए वटाइंदा। आपणा बल आपे रक्खे संभाल, दूसर ज़ोर ना कोए जणाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। आपणा बल आपे कर, आपणी दया कमाईआ। कवण दुआरा वसां घर, कवण दर मिले वड्याईआ। इक्क इकल्ला निरभउ होए भय ना रक्खां कोई डर, बेपरवाह रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म हरि निरँकारा, आपणा आप जणाइंदा। मेरा सोहे सच दुआरा, घर साचा आप बणाइंदा। इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला करे खेल अगम्म अपारा, अगम्म आपणी चाल चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। आपणा रंग रंगे भगवाना, आपणी दया आप कमाईआ। मेरा उपजे सच निशाना, मैं वेखां चाँईं चाँईंआ। मैं धरां रूप मर्द मरदाना, आप आपणा बल वखाईआ। मैं वसां सच मकाना, सचखण्ड होए रुशनाईआ। मैं होवां नौजवाना, जोबन आपणा आप हंढाईआ। मैं बणां सच सुल्ताना, शाह सुल्तान नाउँ रखाईआ। मैं पहरां आपणा बाणा, निरबाण मेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप जणाईआ। आपणा हुक्म धुर फ़रमाना, धुर दरबारी आप जणाइंदा। शाहो भूप बण हरि साचा राणा, शाह पातशाह नाउँ धराइंदा। मैं साचा तख्त सुहाना, तख्त निवासी आप अख्वाइंदा। मैं चलां आपणे भाणा, साचा भाणा आप मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। साचा मन्दिर सोभा सोहे, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हरि पुरख निरजंण आपणा नूर करे लोए, प्रकाश प्रकाश विच टिकाईआ। एकँकारा आपणे दर आपे लै आए ढोए, दर घर साचा सगन मनाईआ। आदि निरँजण आपणे जेहा आपे होए, आप आपणा रूप धराईआ। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणी सोए, हुक्म हाकम आप सुणाईआ। श्री भगवान आपणी सेजा आपे सोहे, साचे तख्त आपे आसण लाईआ। पारब्रह्म आप आपणा आपणे उत्ते मोहे, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाईआ। दर घर सच सुहाया, सो पुरख निरँजण मेहरवान। सचखण्ड आसण आप लगाया, पारब्रह्म प्रभ नौजवान। आपणी इच्छया आप प्रगटाया, आपे वेखे मार ध्यान। इक्क इकल्ला एका घर बैठा डेरा लाया, निरगुण रूप नौजवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे उप्पर होया आप मेहरवान। मेहरवान होया निरँकार, आपणी दया आप कमाईआ। सच सिँघासण कर त्यार, पुरख अबिनाशन आसण लाईआ। शाह पातशाह बण साचा दातार, राजन राज वड वड्याईआ। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाना, तख्त निवासी आप सुणाईआ। आदि जुगादि वरते भाणा, भाणा मेरा मेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तख्त इक्क बणाईआ। साचा तख्त तख्त निवासा, शाह पातशाह इक्क बणाइंदा। आप सुहाए पुरख अबिनाशा,

अबिनाशी करता डेरा लाइंदा। आदि जुगादि ना कदे विनासा, एका नूर नूर डगमगाइंदा। आपणे अन्तर कर कर वासा, आप आपणी खेल खिलाइंदा। आपणा देवे सच भरवासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। सचखण्ड दुआर खेल अपारा, धुर दरबारा आप कराईआ। आपणी इच्छया कर विचारा, साची भिच्छया पाए बण वरतारा, एका वण्डण वण्ड वंडाईआ। जोती जोत कर पसारा, जोती जोत दए हुलारा, नूरो नूर नूर धराईआ। आपे बण कन्त भतारा, नारी जोत जोत करी प्यारा, एका मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा रंग वखाईआ। आपे पुरख आपे नारी, जोती जाता खेल खिलाइंदा। करे खेल सचखण्ड दुआरी, खण्ड सच दुआर आप सुहाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारी, धुर दा भेव कोए ना पाइंदा। प्रगट हरि जोत निरँकारी, पुरख अकाल आप प्रनाइंदा। सौहरे पेईए आवे जावे आपणी वारी, दूसर पन्ध ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा रंग रंगाइंदा। आदि पुरख हरि रंगया रंग, रंग आपणा आप चढ़ाया। सचखण्ड सुहाए इक्क पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाया। नारी कन्त मंगे मंग, मंगण मंग इक्क वखाया। मेरे गृह आपे लँघ, त्रिया तरीमत वेख वखाया। तेरा मेरा पर्दा एका नंग, तूं दाता सच्चा शहिनशाहया। तूं साहिब सूरा सरबंग, हउँ सेवक सेव कमाया। मैं मंगां तेरा अनन्द, अनन्द तेरा रूप दरसाया। तूं बणना सदा बख्शंद, बख्शश तेरे हथ्थ वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती नार जोत प्रनाया। आपे कन्त भतार पुरख अकाला, आपणी खेल आप खिलाइंदा। नर नरायण दीन दयाला, दया निध रूप वटाइंदा। सचखण्ड दुआर चले अवल्लड़ी चाला भेव कोए ना पाइंदा। इक्क सुहाए सच्ची धर्मसाला, धर्म दुआर इक्क वड्यांअदा। आपणी करे आप प्रितपाला, प्रितपालक आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप वखाइंदा। नारी कन्त रूप वटाया, निरगुण निराकार। साची सेजा आप हंढाया, कर कर सच प्यार। जोती जोत मेल मिलाया, एका मन्दिर खोल्ह् किवाड़। एका गोदी दए सुहाया, किरपा कर आप करतार। साची जननी बण बण सेव कमाया, दाई दाया हो त्यार। पूत सपूता एका जाया, शब्दी शब्द सुत दुलार। बाल अञ्याणा आप उठाया, पुरख अबिनाशी सुरत संभाल। मूर्त अकाल रंग रंगाया, जोती जोत जोत बेमिसाल। आपणा तूरत नाद वजाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए साहिब दयाल। सुत दुलार उठाया, कर किरपा गुण निधान। साचे चरन आप बहाया, पूत सपूता बाल अञ्याण। धुर फ़रमाना आप जणाया, देवणहारा देवे धुर फ़रमान। हुक्म हाकम इक्क रखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होया जाणी जाण। जाणी

जाण हरि जाणया, जानणहार गोपाल। आपणा रंग आपे माणया, करे खेल आप कृपाल। आपे वरते आपणे भाणया, भाणा जाणे दीन दयाल। आप उपाए बाल अञ्याणया, बाल बाला सुत शब्दी शब्द एका लाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे चले आपणी चाल। चाल निराली रक्खदा, आदि पुरख बेपरवाह। सचखण्ड दुआरे आपे वसदा, साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाह। सीस ताज एका रक्खदा, आप आपणी जड़त जड़ा। करे खेल अलखना अलख दा, लेखा लिख सके कोई ना। करया वेस पुरख समरथ दा, पुरख समरथ सच्चा शहिनशाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सुत लए समझा। सुत समझाया कृपानिध, आपणा हुक्म सुणाया। आप जणाए आपणी बिध, आपणा भेव खुल्हाया। तेरा कारज करे सिध, सीस जगदीस हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप लगाया। सेवक सेवा लाए साजण, सुत मीत प्यार प्यार। देवे हुक्म भूप बण राजन, शाह पातशाह सच्ची सरकार। आपणी रचना आपे काजन, बणना दर दरवेश वणजार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे वस्त हरि थार। वस्त अमोलक साची दात, शब्दी सुत हरि झोली पाईआ। तेरी मेरी एका ज़ात, मेरा नाउँ तेरी वड्याईआ। मेरा ख़ज़ाना तेरा खात, तेरी वण्डण मेरे अंक समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए वखाईआ। शब्द सुत हरि गुण जणाया, आप आपणी किरपा धार। सो पुरख निरँजण हर घट आपणा आसण लाया, तेरा रचया आप मनार। आपणी इच्छया तेरा गुण वखाया, तेरा तत्त ना कोए आकार। साची सिख्या दए समझाया, भुल ना जाणा बण नादान। तेरी सेवा इक्क लगाया, देवां धुर फ़रमान। साचा तख्त दयाँ वखाया, झुल्ले सच निशान। पुरख अबिनाशी डेरा लाया, आदि जुगादी नौजवान। साचा छत्र सीस झुलाया, ना कोई दिसे दर दरबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे देवे माण। सुत दुलारे बख्शे माण, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। एका बख्शां चरन ध्यान, कँवल चरन वडी वड्याईआ। सचखण्ड आसण थिर घर चरन कँवल रक्खां आण, कँवल कँवल दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। हरि पर्दा सच चुकाइंदा, देवे धुर फ़रमाना। सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा, झुलावे सच निशाना। सीस एका ताज टिकाइंदा, शाहो भूप बण सुल्ताना। धुर फ़रमान इक्क रखाइंदा, शब्द अनादी नाद ताराना। तेरा रूप इक्क वखाइंदा, पुरख अकाल हो मेहरवाना। अजूनी रहत तेरी जून ना कोए बणाइंदा, एका बख्शे आपणा दाना। आपणा हुक्म तेरा नाउँ समझाइंदा, हिकमत करे वड महाना। तेरी साची सेवा इक्क लगाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हथ्थ रखाए इक्क निशाना। सच निशान वखाए

७६६

हथ्थ, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हरि पुरख निरँजण खेल समरथ, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। एकँकारा देवे वथ, वस्त अनमुल्लड़ी आप वरताईआ। आदि निरँजण मेला हस्स हस्स, घर वज्जदी रहे वधाईआ। अबिनाशी करता मिले नस्स नस्स, सुत दुलारे तेरे सीस आप आपणा हथ्थ टिकाईआ। अबिनाशी करता तेरे हो जाए वस, तेरे अंदर आपणा डेरा लाईआ। पारब्रह्म तेरा नूर करे प्रकाश, नूरो नूर नूर धराईआ। आदि जुगादि तेरी करे पूरी आस, निरासा रूप ना कोए वखाईआ। मैं वसां सदा तेरे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। मेरा रस तेरा भोग बलास, दूसर सेज ना कोए हंढाईआ। तेरी लिख लिख पूरी कर ना सके आस, तेरी आस मेरा दरस तृप्त कराईआ। कँवल चरन बख्शां इक्क निवास, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत शब्द दए वड्याईआ। सुत शब्द पाया वर, सो पुरख निरँजण आप जणाया। दोए जोड़ सरनाई गया पढ़, हउँ सेवक सेवा सच कमाया। निरभउ चुकाउणा आपणा डर, भय अवर ना कोए रखाया। मैं सद आवां जावां तेरे घर दर, दर दरवाज़ा तेरा बन्द ना कोए रखाया। तूं मात पिता हउँ बालक सुत अपराध बख्श सरन सरनाई तेरी गया पड़, बख्शणहार तेरी वड वड्याआ। तूं मेरा घाड़न ल्या घड़, साचे बाढी तेरा भेव कोए ना आया। तूं सचखण्ड दुआर सच सिँघासण बैठा चढ़, थिर घर आपणा चरन टिकाया। मैं तेरे चरनां हेठां बैठां वड़, घर सच्चा एका पाया। कर किरपा फड़ाया लड़, छुट्ट कदे ना जाया। मैं एका तेरा नाउँ लवां पढ़, साची विद्या दे समझाया। ना जन्मां ना जावां मर, तुध बिन अवर ना गोद सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हउँ बैठा सीस झुकाया। हउँ बाल अञ्याणा बाली बुध्ध, सुत दुलारा सीस झुकाईआ। मैं आदि जुगादि तेरी गोदी बवां कुद्द, तेरा सहारा इक्क तकाईआ। तूं मेहरवान हो जाएँ तुट्ठ, तेरी रहिमत मेरी वड्याईआ। तेरा प्रेम प्यार मिले अतुट, सच भण्डारा एका मंग मंगाईआ। मेरा नाता ना जाए छुट्ट, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। पुरख अकाल मैं बणया तेरा पुत्त, मेरा लेखा सके ना कोए लिखाईआ। आदि जुगादि तेरी सुहञ्जणी रुत्त, सचखण्ड वज्जदी रहे वधाईआ। मैनूं दरस दिखाउणा आपणे घरों आपे उठ, आपणा पैंडा पन्ध मुकाईआ। कर किरपा देणा एका अमृत घुट, आपणे चरनां धूढ़ मेरे मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। सुत दुलारा गल लगा, सो पुरख निरजंण दया कमाइंदा। सीस जगदीस हथ्थ टिका, सच हदीस इक्क पढ़ाइंदा। नाउँ निरँकारा लैणा गा, सच बलकारा तेरा रूप वखाइंदा। आपणी धारा आप फरा, पान्धी पन्ध ना कोए मुकाइंदा। सच अखाड़ा रिहा वखा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। सुत दुलारा आप सजा, साचा रंग आप चढ़ाइंदा। एकँकारा मृदंग आप वजा, साचा नाद आप अल्हाइंदा। आपणा छन्द

८०१

आप सुणा, दोहां पर्दा आप उठाइंदा। सोहँ रूप ल्या बणा, निरगुण निरगुण वण्ड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क दो दो इक्क आपणी खेल खिलाइंदा। सो पिता हँ पूत बणाया, पुरख अकाल खेल अपारा। हरि पुरख निरँजण दुलारा एका जाया, करया सचखण्ड पसारा। एकँकारा सगन मनाया, आदि निरँजण वेखे आपणी वारा। अबिनाशी करता दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। श्री भगवान बणाए वणजारा, वस्त अमोलक झोली पाया। पारब्रह्म सुणे पुकारा, अभुल भुल कदे ना जाया। आप उठाया सुत दुलारा, जन जननी लेख चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ आपणा रूप धराया। हँ सो शब्द धार, सो पुरख निरँजण अग्गे सीस झुकाईआ। आदि करया मेरा विहार, थिर घर साचा बणत बणाईआ। सचखण्ड तेरी धार, तेरे रंग समाईआ। कवण खेल करां करतार, साची सेवा दे समझाईआ। पुरख अबिनाशी करया ख़बरदार, एका गुण दए वखाईआ। मेरा हुक्म मेरा वरतार, सच फ़रमाना इक्क जणाईआ। मेरी इच्छया तेरा वरतार, सच भण्डार हथ्थ फड़ाईआ। तेरे अंदर करां खेल अपार, निरगुण निरगुण रूप धराईआ। तेरे अंदरों कढ्ढां आपा बाहर, तेरा तेरा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म एका वार दए समझाईआ। एका वार हुक्म सुणाउणा, साचे तख्त बैठ सुल्तान। आपणा पर्दा आपे लाउहणा, मेहरवान हो श्री भगवान। आपणा मार्ग आप वखाउणा, आपे देवे साचा दान। आपणा राग आपे गाउणा, आपे नाद वजाए सच्ची धुंनकान। आपणा राज आप कमाउणा, आपे देवे धुर फ़रमान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल निगहबान। निगहबान हरि खेल खिलाया, वड दाता गहर गम्भीर। सुत शब्द हरि आप समझाया, देवे साची धीर। आपणी रचना तेरे विच टिकाया, तेरा रूप बणाए बस्त्र चीर। तेरे विचों बाहर ल्ए कढाया, अमृत बख्शे साचा सीर। तेरी गोदी गोद इक्क वखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पाए इक्क ज़ंजीर। इक्क ज़ंजीर नाम डोर, शब्दी बन्धन हरि हरि पाइंदा। लेखा चुक्के तोर मोर, मोर तोर ना कोई रखाइंदा। सचखण्ड निवासी थिर घर दुआरा आपे खोल्हू, बन्द किवाड़ा पर्दा लांहयदा। शब्द अगम्म आपे बोल, शब्दी नाद अनाद सुणाइंदा। आपणे कंडे तोले तोल, तोलणहारा इक्क हो जाइंदा। तेरे रंग जाए मौल, आपणा रूप ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त तेरे विच टिकाइंदा। आपणी वस्त वण्डे वण्ड, तेरे विच टिकाईआ। किरपा करे सूरा सरबंग, सति दुआरे भुल्ल ना जाईआ। तेरी सेजा बणाए पलँघ, आसण सिँघासण इक्क विछाईआ। निरगुण निरवैर वजाए मृदंग, सारंग सारंगा ना कोई रखाईआ। अगम्म अगम्मड़ा गाए छन्द, लिखण पढ़न विच ना आईआ। डोरी डोर बंधाए तन्द, रूप

रंग रेख ना कोई जणाईआ। तेरे अंदर रखाए परमानंद, परमानंद तेरी बणत बणाईआ। साहिब दयाल होया बख़्शंद, बख़्शिश एका झोली पाईआ। विष्नूं आया तेरी वण्ड, विश्व आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए समझाईआ। साचे सुत खेल वखाउणा, हरि साचा साच समझाइंदा। सच दुआरा इक्क सुहाउणा, सचखण्ड आसण लाइंदा। थिर घर आपणा आप टिकाउणा, चरन कँवल आप जणाइंदा। विष्नूं अंदर आपणा जल टिकाउणा, अमृत जाम आप प्यांअदा। तेरा घर तेरा नूर कँवल कँवला नाम धराउणा, कँवल कँवला रूप हो आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वखाइंदा। अमृत जल कँवल नाभ, नाभी नाभ भराया। तेरा प्रेम तेरा आब, आब हयात रूप वटाया। मेरी सेवा तेरा लाभ, पुरख अबिनाशी होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी झोली दए भराया। तेरी झोली विष्न धार, ब्रह्म तेरी वण्ड वंडाईआ। तेरे अंदर करे गुफ़्तार, सच सतार आप हिलाईआ। तेरा खेल वेखे धूंआँधार, सुन्न अगम्म फोल फोलाईआ। तेरी बणाए शंकर अंस आप करतार, करता पुरख दए वड्याईआ। तिन्नां विचोला बणना एका वार, थित वार ना कोई रखाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, लेखा लिख ना कोई समझाईआ। पुरख अबिनाशी करे ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोए रखाईआ। साचे तख़्त बैठ सच्ची सरकार, धुर फ़रमाना इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द सेव कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जा, गोदी गोद सुहाया। पुरख अबिनाशी दया कमा, आप आपणा रंग रंगाया। एका जल्वा नूर डगमगा, जोती जाता बेपरवाह, आपणा महल्ला दए वसाया। आप आपणी रचन रचा, आपणा पर्दा दए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारा आप समझा। सुत दुलारा एका उठया, पुरख अबिनाशी दया कमाए। साहिब सुल्ताना सच्चा तुठया, आपणा नाद दए सुणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी एका हुक्म आप सुणाए। एका हुक्म इक्क निरँकारा, एका वार जणाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका बैठा आसण लाईआ। एका शाह इक्क सिक्दारा, शहिनशाह इक्क अख्वाईआ। एका हुक्म इक्क वरतारा, एका हुक्मी रिहा फिराईआ। एका नाम इक्क जैकारा, एका राग रिहा अलाईआ। एका गुर इक्क अवतारा, एका गुण दए समझाईआ। एका कन्त इक्क भतारा, एका नार सेज हंढाईआ। एका सुत इक्क दुलारा, पूत सपूत इक्क अख्वाईआ। एका विष्न करे पसारा, एका ब्रह्मा गोद बहाईआ। एका शंकर दए हुलारा, हुलारा देवणहार आप अख्वाईआ। एका करे सच प्यारा, ब्रह्मण्ड वण्ड वंडाईआ। एका नेत्र नैण उग्घाड़ा, किरन किरन रूप वटाईआ। एका इक्क नाल करे प्यारा, एका इक्क इक्क सोभा पाईआ। एका रवि ससि उज्यारा,

एका सूरज चन्द रुशनाईआ। एका मंडल मण्डप दए सहारा, एका गगन गगनंतर रूप धराईआ। एका इच्छया बण वरतारा, साची भिच्छया रिहा वरताईआ। एका हुक्म सच्ची सरकारा, शाह पातशाह आप सुणाईआ। भुल ना जाणा सुत दुलारा, सुत्तयां रैण ना कोई विहाईआ। तेरी सेवा लाए आप निरँकारा, साची सेवा दए समझाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी धारा, तेरा हिस्सा इक्क वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया तेरी भिच्छया विच समाईआ। आपणी इच्छया त्रैगुण धार, तेरी झोली पाइंदा। रजो तमो सतो कर उज्यार, साचा बन्धन आप बन्नाइंदा। पंचम करना इक्क प्यार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश भेव चुकाइंदा। विष्नूं करे सच प्यार, राज़क रहीम दया कमाइंदा। ब्रह्मा ब्रह्म करे उज्यार, पारब्रह्म साचा हुक्म सुणाइंदा। शंकर वेखे इक्क अखाड़, जो घड़या भन्न वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे तेरा घर वसाइंदा। सुत दुलारे तेरा वसे घर, सो पुरख निरँजण आप वसाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, त्रैगुण एका वण्ड वंडाईआ। पंज तत्त घाड़न देवे घड़, घड़न भन्नणहार आप अख्वाईआ। करे खेल नरायण नर, नर हरि आपणा रूप वटाईआ। तेरा भण्डार देवे भर, ख़ाली दर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण मेला पंज तत्त चेला, विष्न ब्रह्मा शिव सुहाए वेला, साचा हुक्म आप सुणाईआ । विष्न उपजा विश्व धार, पुरख अबिनाशी आप उपाया। ब्रह्मा करया ब्रह्म पसार, पारब्रह्म प्रभ घर वसाया। शंकर करे खेल न्यार, धूंआँधार वण्ड वण्डाया। तिन्नां विचोला बण निरँकार, आपणा बन्धन पाया। शब्द ढोला एका वार, साचा सोहला आप सुणाया। सो पुरख निरँजण मीत मुरार, हँ तेरी सेव कमाया। सोहँ रूप बणे सर्ब संसार, ब्रह्मा विष्न शिव भुल ना जाया। पुरख अबिनाशी वजाए सच्ची सच सतार, नाउँ निरँकारा आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वण्डण दए वण्डाया। साची वण्डण वण्डणहार, शब्दी सुत जणाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड कर पसार, गगन मंडल उपाइंदा। लेखा जाणे रवि ससि सतार, रूप अनूप आप वखाइंदा। आपणी आसा आपे देवे वर आपे बण वरतार, आपे हवन हवनी सेव कराइंदा। आपे सुगंधी करे अपर अपार, वासना गंदी ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द विचोला इक्क रखाइंदा। शब्द विचोला बण मलाह, त्रैगुण सेवा आप कमाईआ। पंज तत्त मीता दए सलाह, सालस आपणा नाउँ धराईआ। साबत सूरत लए बणा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। घाड़न घड़त लए घड़ा, घड़नहार दिस ना आईआ। साची मूर्त लए चिता, भेव कोए ना पाईआ। नार पुरख रूप वटा, नारी नर सेव कमाईआ। आपणा दरस आप करा, दरसी हिरस गंवाईआ। निरगुण बन्धन निरगुण फाह, निरगुण वेख वखाईआ। निरगुण कट्टणहारा फाह

८०४

आपणा ज़ोर बल दए वखा, जोबन आपणा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत दए सलाहीआ। शब्द सलाही साचा रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। त्रैगुण सेजा बणे पलँघ, पंज तत्त घाड़न घड़त घड़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव मंगण मंग, चरन दुआरे सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी देवे वस्त अगम्म, देवणहारा दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख आपणा खेल आप खिलाइंदा। विष्नूं खेल हरि करतार, ब्रह्मा धार जणाईआ। शंकर फिरे वारो वार, त्रै त्रै लेखा वेख वखाईआ। हथ्थ त्रिसूल खुलड़े केस भस्म भबूती ख़ाक छार, चरन धूढ़ मस्तक छाहीआ। ब्रह्मा ब्रह्म करे विचार, पारब्रह्म तेरा खेल न्यार, तेरा जल्वा नूर ज़हूर रूप रंग रेख नज़र कोई ना आईआ। विष्नूं लाए सच दरबार, दोए जोड़ करे निमस्कार, तेरा दर सच्चा दरबार, हउँ सेवक बैठा सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी करे प्यार, एका बख्शे चरन सहार, चरन कँवल वडी वड्याईआ। आदि रचना तेरा अखाड़, पुरख अबिनाशी बणया साचा लाड़, अश्व घोड़े चढ़या सच्चा शहिनशाहीआ। शाहो भूप बण साचा राणा, देवणहारा धुर फ़रमाना, आपणा भाणा रिहा मनाईआ। सचखण्ड निवासी एका तख्त सुहाना, सीस ताज इक्क टिकाना, दूसर दिसे ना कोए शाहीआ। पंचम मुख आप सलाहना, पंज तत्त करे परवाना, एका देवे निरगुण दाना, दाता दानी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण दए समझाईआ। गुण समझाए गुण निधान, गुणवन्ता गुण कहिण ना जाईआ। साचे सुत तेरे हथ्थ फड़ाए इक्क निशान, सति सतिवादी आप वखाईआ। पुरख अबिनाशी बणया साचा काहन, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। ब्रह्मण्ड वखाए तेरा मकान, जेरज अण्ड तेरी वण्ड वंडाईआ। उत्भुज सेत्ज तेरी खाण, पारब्रह्म एका एक दरसाईआ। मेरा नाउँ तेरा ज्ञान, मेरा ध्यान तेरी शहिनशाहीआ। मेरा हुक्म तेरा फ़रमान, तेरा फ़रमान ब्रह्मा हरि जस गाईआ। तेरा लेखा लिखे आप भगवान, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप जणाईआ। आपणा रूप जणाए नरायण, निरगुण दया कमा। तेरा खुल्हाए एका नैण, एका नूर दए दरसा। तूं मन्नणा साचा कहिण, कहिणा भुल कदे ना जा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा भण्डारा दए भरा। शब्द भण्डारी तेरा भरना भण्डार, हरि साचा दया कमाईआ। चार खाणी कर त्यार, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड तेरे रंग रंगाईआ। चार बाणी बोल जैकार, आपणी धार दए सुणाईआ। लक्ख चुरासी कर पसार, इक्क इक्क नाल दए बंधाईआ। निरगुण वण्ड करे अपार शब्द दो धार, एका एक दए वड्याईआ। मन मति बुध कर पसार, पंज तत्त बन्धन आपणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत तेरा बंस

दए बणाईआ। बंस बणाए तेरा बंस, सो पुरख निरँजण दया कमाया। विष्नूं विश्व बणाए अंस, आप आपणा वेस धराया। त्रैगुण तेरा सोहे सरबंस, पंज तत्त साचा मेल मिलाया। रूप धराए आप सहँस, सहँसर लेख ना कोए लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप लिखाया। साचा लेखा श्री भगवाना, आपणा आप जणाईआ। लक्ख चुरासी कर प्रधाना, तेरे रंग रंगाईआ। तेरा नाद वजाए तराना, साचा राग आप सुणाईआ। काया मन्दिर इक्क मकाना, एका गुण दए समझाईआ। नौ दुआरे खोल्ह दुकाना, जगत वासना दए भराईआ। सचखण्ड अंदर थिर घर खेल महाना, तख्त निवासी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप वखाईआ। आपणी धार पंज तत्त, तत्व तत आप बणाइंदा। निरगुण रूप ब्रह्म मति, ब्रह्म आपणा खेल खिलाइंदा। नाम निधाना बीजे आपणे वत, अमृत मेघ आप बरसाइंदा। आपणी दात धीरज जत, सति सन्तोख आप भराइंदा। आपणा मेल वखाए साचा हठ, साचा बन्धन इक्क बंधाइंदा। आपणा नूर वखाए लट लट, जोती नूर डगमगाइंदा। तेरा करे पूरा घाट, साची वस्त झोली पाइंदा। तेरी आपे वेखे वाट, तेरा उठ उठ राह तकाइंदा। तेरा स्वांग रचे नटूआ नाट, स्वांगी आपणा स्वांग वखाइंदा। तेरी सुहाए साची खाट, आसण सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। शब्द सुत खुल्हणा भेत, हरि साचा आप खुल्हाईआ। तेरा नाद चार वेद, ब्रह्म वेता आपे गाईआ। चार मुख अठ्ठे नेत्र नर नरायण लए पेख, निउँ निउँ सीस जगदीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार चार वण्ड वंडाईआ। चार चार वण्ड वण्डणहार, एका रंग समाया। चार वेद कर त्यार, चारे खाणी झोली पाया। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आप सुणाया। चारे दिशा हो उज्यार, साची कूट फोल फोलाया। चारे वरनां दए सहार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप आपणा खेल खिलाया । चारे जुग बण वरतार, साचा नाम दए वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे साचा हुक्म आप सुणाया। हुक्म सुणना धुर फ़रमाना, धुर फ़रमानी आप जणाइंदा। सचखण्ड निवासी थिर घर वखाए तेरा इक्क मकाना, महमान तेरा रूप जणाइंदा। सच बणाए इक्क मयख़ाना, चरन चरन आप सुहाइंदा। विष्नूं मंगे मंग महाना, अग्गे आपणी झोली डांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। विष्नूं मंगे वस्त अनडिठ, नज़र नैण कोए ना आईआ। मेरे अन्तर तेरी तृख, मेरी तृष्ना कवण बुझाईआ। पा साची एका भिक्ख, हउँ एका मंग मंगाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आप वण्डाए आपणा हिस, साची वस्त आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नैण नैण टपकाईआ। नैण

८०५

नैण हरि टपकाया, टपके साचा नूर। नूर नूर नज़री आया, शाह पातशाह साचा ज़हूर। ज़हूर ज़हूर आप प्रगटाया, नाद अनादी वजाए तूर। तूर तूर आप सुणाया, नज़री आया जो वसे दूर। विष्नूं निउँ निउँ सीस झुकाया, तूं सर्ब कला भरपूर। मेरी झोली दे भराया, मैं लैणी वस्त ज़हूर। तेरा विछोड़ा मोहे सताया, मेरा तुट्टा माण ग़रूर। मैं आपणा काया कोट किला बणाया, अंदर रक्ख आपणा नूर। तेरा नूर मेरा नूर करे रुशनाया, मेरी आसा मनसा पूर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाते सूर सूर। सूरबीर हरि दया कमाइंदा, आपणे नेत्र एका मार उछाल। प्रेम रस धार टपकाइंदा, विष्नूं दए जाम प्याल। विष्नूं अंदर ना आप टिकाइंदा, होया हाल बेहाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल बेमिसाल। विष्नूं अंदर अमृत रस, सो पुरख निरँजण आप भराया। विष्न करे बस बस, कतरा अंदर रहिण ना पाया। हरि पुरख निरँजण आपणा चरन सीस दिता झस्स, इक्क इक्क हिस्सा आप वण्डाया। एका हिस्सा आपणे चरनां हेठां दिता धस, जल बिम्ब बिम्ब रूप वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नेत्र नीर आपणी धार दए वहाया। हरि का नीर जल बिम्ब, सिन्ध सागर रूप वटाईआ। हरि की इच्छया सुरपति इन्द, इन्द्रासण सोभा पाईआ। हरि दाता गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। दीन दयाल सदा बख्शंद, ब्रह्मा सुत लए उठाईआ। आत्म परमात्म मेटे चिन्द, बाल ब्रह्म ब्रह्म रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रूप दए दरसाईआ। ब्रह्म सरूप पारब्रह्म जणाया, भेव अभेदा खोल्ह। आपणा नूर आप प्रगटाया, आपे वसणहारा आपणे कोल। आपणा पर्दा आप उठाया, आपणे मन्दिर आपे बोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तोले एका सच्चा तोल। तोले तोल बण बण तोला, तोलणहारा दया कमाईआ। सच भण्डार एका खोल्हा, पुरख अबिनाशी रिहा वरताईआ। चरन कँवल कँवल चरन ब्रह्म वेता ब्रह्म मौला, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। तेरा अमृत मेरा कँवला, विष्नूं तेरी वड वड्याईआ। हउँ तुध बिन होया बवला, सांतक सांत ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त इक्क वरताईआ। साची वस्त वस्त अमोलक, ब्रह्म वेता मंग मंगाइंदा। मेरी भरनी एका गोलक, ख़ाली फेर ना कोए कराइंदा। आपणा नाम वजाउणी साची ढोलक, तार सतार ना कोए रखाइंदा। मैं सुणया तूं सुणाएँ अनबोलत, लिखण पढ़न विच ना आइंदा। तूं आदि जुगादि सदा अडोलत, अडुल्ल आपणा नाम रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ सेवक मंग मंगाइंदा। देवे वर दातार, आप आपणी दया कमाइंदा। आपणा रंग रंगे करतार, कुदरत तेरी खेल खिलाइंदा। तेरी जोत कर उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा।

तेरा ब्रह्म करे पसार, पारब्रह्म वण्ड वंडाइंदा। तेरी जोती हो उज्यार, घट घट भाण्डे आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दाता आप हो जाइंदा। दाता देवे साचा दान, दानी आपणी दया कमाईआ। ब्रह्मे तेरा एका माण, निवण सो अक्खर रिहा समझाईआ। मेरा नाद तेरा गान, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। मेरी धूढ़ तेरा अशनान, तेरा अशनान शंकर धार वहाईआ। शंकर धार खेल महान, लोकमात लए प्रगटाईआ। एका जल होए महमान, महबख़ाना आप समझाईआ। जल बिम्ब करे परवान, आप आपणे विच समाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गाउणा गान, भुल कदे ना जाईआ। मेरा रूप ना कोए निशान, श्री भगवान कह कह आपणा वक्त लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, साची वस्त आप वरताईआ। ब्रह्मे पाया वर हरि घर, वस्त अमोलक आपणी गोद रखाइंदा। तूं भण्डार दिता भर, कवण धारा बण वरताइंदा। ना पुरख ना दिसे नारी नर, जोड़ जोड़ ना कोए जुड़ाइंदा। किसे बिध अंदर जावां वड़, आपणी बणत ना आप बणाइंदा। किरपा कर मेरे गुर, शब्द सुत तेरा संग समाइंदा। अनन्द कारज मेरा आपे कर, अनन्द मंगल तेरा एका गाइंदा। मेरी गोदी आपणा रूप धर, बाली बुध्ध बाल शरमाइंदा। पुरख अबिनाशी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। त्रैगुण देवे एका वस्त वर, साची वस्त आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंदर बाहर आपे खड़, आपणा नूर आप दरसाइंदा। नूर नुराना जोबनवन्त, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। नर नरायण बणया कन्त, ब्रह्म सेजा आप हंढाईआ। आपे आपणा चढ़या रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। आप बणाई आपणी बणत, भेव भेद अभेद खुल्हाईआ। आपणा खेल खिलाया आदि अन्त, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। ब्रह्मे तेरे नाम वेखे मेरा रूप जीव जंत, जाग्रत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंत दए समझाईआ। एका मंत त्रैगण अतीता, त्रै त्रै मेला आप मिलाइंदा। तख्त निवासी ठांडा सीता, सचखण्ड दुआर सोभा पाइंदा। आपे जाणे आपणा कीता, दूसर अवर ना कोए समझाइंदा। आप चलाई आपणी रीता, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाइंदा। धुरदरगाही बणया मीता, मित्र प्यारा आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप चलाइंदा। साचा मार्ग चले राह, रैहबर हरि हरि आप चलाईआ। निरगुण निरवैर बण मलाह, साचा बेड़ा आप उठाईआ। शब्दी सुत दए सलाह, विष्न ब्रह्मा शिव समझाईआ। त्रैगुण मेला मेल मिला पंज तत्त करे कुड़माईआ। मन मति बुध विच टिका, नौ दुआरे खोल्ह वखाईआ। घाड़त घड़न लए वटा, घर घर विच रूप वटाईआ। डूँघी कंदर पर्दा पा, आपणा मुख छुपाईआ। आपणा मार्ग आपे ला, आपे होए सहाईआ। ईड़ा पिंगल बहाए आपणे थाँ, सुखमन एका मुख भवाईआ। नाभी कँवल अमृत

आप भरा, विष्न ब्रह्मा दए वड्याईआ। नाद धुंन आप सुणा, शब्दी सुत आप मिलाईआ। बजर कपाटी पर्दा लाह, साचा घर वखाईआ। आत्म सेजा आप सुहा, ब्रह्म रूप वटाईआ। ब्रह्म मेला सहिज सुभा, पारब्रह्म बख्शे सच सरनाईआ। जोती जोत जोत जगा, जोती जाता करे रुशनाईआ। वासना खोटी दए कढा, पंज तत्त ना करे लड़ाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्का, आसा तृष्ना नेड़ ना आईआ। साचा मार्ग दए वखा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। सोहँ रूप आप धरा, लक्ख चुरासी लए बणा, घट घट अंदर डेरा ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत डगमगा, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। आदि निरँजण सच्चा शाह, पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वणज कराईआ। लक्ख चुरासी वणज वणजारा, साचा हट्ट खुल्हाइंदा। ब्रह्मा शिव विष्न दए सहारा, साचा हुक्म सुणाइंदा। करे कराए आपणी कारा, भेव कोए ना पाइंदा। साचे सुत तेरा दरबारा, लोकमात खुल्हाइंदा। चरन धूढ़ बख्शे इक्क सहारा, धरनी धौल जल बिम्ब आप टिकाइंदा। धौल रूप करे करतारा, दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हिस्सा आप वंडाइंदा। साचा हिस्सा धरनी वण्ड, धरत धवल वण्ड वंडाईआ। आपे करे खण्ड खण्ड, ब्रह्मण्ड बेपरवाहीआ। आप उपजाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आपणी चाल चलाईआ। आपे दो जहानां रक्खे कंध, आपे पर्दा रिहा लगाईआ। आपे विष्न ब्रह्मा शिव सुणाए छन्द, आपे चारे वेदां ढोला गाईआ। आपे होए सद बख्शंद, बख्शणहार इक्क अख्वाईआ। आपे सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्डे वण्ड, हिस्सा हसरत दए मिटाईआ। आपे करे खण्ड खण्ड, खण्डा आपणा नाउँ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे थाउँ थाँईंआ। थान थनंतर वेखणहार, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। सतिजुग बख्शे इक्क प्यार, चरन धूढ़ टिक्का लाइंदा। त्रेता द्वापर आए आपणी वार, द्वापर त्रेता रूप वटाइंदा। चरन कँवल दए सहार, चरन चरन ध्यान जणाइंदा। दोए दोए लेखा विच संसार, दो जहानां आप मुकाइंदा। कलिजुग करे खेल अपर अपार, चार चार बन्धन पाइंदा। चार वरन करे ख्वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारा आप समझाइंदा। शब्द दुलारा आप जगाया, कर किरपा हरि मेहरवान। सतिजुग साचा तेरी झोली पाया, देवे एका दान। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाया, त्रैगुण नाल होई प्रधान। पंज तत्त तेरा हथ्थ वटाया, मिल्या हाणी हाण। साचा नाम इक्क जपाया, सोहँ शब्द श्री भगवान। ब्रह्म लेखा आप लिखाया, आपे खोल्हे सच दुकान। साची वस्त विच टिकाया, आप वरताए दो जहान। लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाया, भुल ना जाणा बण नादान। सतिजुग साचा राह चलाया, मार्ग वेखे आप निगहबान। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे शब्दी दान। सतिजुग शब्द मिल्या मेला, सति सति नाम रखाया। पुरख अबिनाशी पाया सज्जण सुहेला, घर साचे वज्जे वधाया। लड़ छुट्टा इक्क अकेला, दोए दोए मंग आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे सुत आप उठाया। साचे सुत सुणया संदेसा, हरि साचे आप जणाया। विष्न ब्रह्मा शिव लिख्या लेखा, लिख्या लेख ना कोए मिटाया। चारे जुग करन आए आदेसा, निउँ निउँ सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म शब्द हथ्थ फड़ाया। शब्द हथ्थ दिती डोर, चारे जुग बन्धन पाईआ। दो जहानां वेखां तेरी तोर, आउणा जाणा सदा चाँईं चाँईंआ। तेरा चलदा वेखां घोड़, कवण कूट रिहा दौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त तेरे हथ्थ फड़ाईआ। शब्द हुक्म साचा पाया, होया वड बलवान। सतिजुग आपणे दर बहाया, देवे धुर फ़रमान। जीवां जंतां मार्ग इक्क चलाया, एका जपणा राम भगवान। साची वण्डण वण्ड वण्डाया, करना मेल विच जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार साचा माण। सतिजुग पल्लू गल विच पा, निउँ निउँ करे निमस्कार। एका देणी सच सलाह, लक्ख चुरासी इक्को जेहा ना दिसे प्यार। मैं इक्क इकल्ला की सकां समझा, प्रभ का भेव बेअन्त बेशुमार। मैं बाली बुध भेव ना जाणा रा, मेरे अन्तर आए ना कोए हँकार। तूं रहिमत मेरे उप्पर आप कमा, हउँ मंगां दर भिखार। आपणा बल मेरे नाल मिला, तेरे दर बणां दरबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए जाणी जाण। सतिजुग मंगे एका मंग, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। मैं इक्क इकल्ला किस तरां चढ़ावां रंग, मेरी पेश कोए ना जाईआ। लक्ख चुरासी नाल प्रभ का संग, घट घट अंदर बैठा आसण लाईआ। मोहे मंगी एका मंग, त्रैगुण वस्त हरि वरताईआ। सतो विष्नूं लाई अंग, रजो ब्रह्मा लए प्रनाईआ। तमो घर घर वजाए मृदंग, जांदे राही लए भुलाईआ। करया खेल सूरे सरबंग, आसा तृष्ना नाल रखाईआ। अंदर पर्दा रक्खया कंध, भेव अभेद छुपाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार बणाया मलंग, आपणा डौरू रहे वजाईआ। मैं लक्ख चुरासी किस बिध सुणावां तेरा छन्द, तेरी महिमा कवण मुख गाईआ। तेरा खेल तुध बिन चले ना विच वरभण्ड, भंडी करे सर्ब लोकाईआ। तूं आपणा करया खेल अखण्ड, मैं वेखां चाँईं चाँईंआ। मैं नार दुहागण तुध बिन होई रंड, मेरे कन्त घर आउणा चाँईं चाँईंआ। मैं सति सन्तोख दी सेज वछावां पलँघ, उप्पर तेरा नूर लवां टिकाईआ। फिर पा गलवकड़ी लग्गां अंग, आपणा दुखड़ा देवां सुणाईआ। तेरे नाल मिल के होवां ना भंग, सैभं तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचे शब्द तेरी ओट तकाईआ। शब्द सूरा बण

बलकारा, त्रै त्रै खेल खिलाइंदा। आपणा करां खेल अपारा, आपणा मेल मिलाइंदा। लोकमात जीव जंत करां पसारा, ब्रह्म जोत पारब्रह्म आपणा रंग रंगाइंदा। घर विच मन्दिर घर उज्यारा, सच नगारा इक्क वजाइंदा। तेरे अन्तर लवां अवतारा, लोकमात फेरा पाइंदा। अनक गुण मेरा नाउँ निरँकारा, अठ्ठां तत्तां खेल खिलाइंदा। अठ्ठ तत्त रूप धरां अठारां वारा, एका आठा जोड़ जुड़ाइंदा। आपणी धरनी कर पसारा, आपणा धौल वेख वखाइंदा। आपणे जल दए हुलारा, आपणा बिम्ब रूप वटाइंदा। आपणा गढ़ बणा मनारा, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा संग निभाइंदा। सतिजुग तेरा बणे संगी, सगला संग आप रखाईआ। आपणा नूर आपणी जोत ना करे नंगी, पंज तत्त विच छुपाईआ। करे खेल बहु बहु रंगी, रंग रंगीला साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए खिलाईआ। सतिजुग पुच्छे शब्द गुर, एका भेव खुलाउणा। कवण रूप जग आएँ तुर, कवण वेस वटाउणा। कवण चढ़ें साचे घुड़, कवण कूटे फेरा पाउणा। कवण निभाए लग्गी तोड़, कवण वेला वक्त सुहाउणा, कवण तुट्टी देवे जोड़, आपणा बन्धन एका पाउणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण आप वखाउणा। गुण जणाए दयावान, आपणी दया कमाईआ। वार अठारां धरे रूप श्री भगवान, तेरे हथ्थ नाल हथ्थ मिलाईआ। खेले खेल समरथ दो जहान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। ब्रह्मा सुत करे परवान, सनक आपणा संग रखाईआ। बराह रूप होए आप मेहरवान, यज्ञै पुरष आपणी धार चलाईआ। हाव ग़रीव इक्क निशान, नर नरायण खेल खिलाईआ। कपल मुन हो प्रधान, दत्ता त्रै दए वड्याआ। रिखव देव करे परवान, पृथू आपणा खेल खिलाईआ। मत्तस मारे आप ध्यान, जल बिम्ब दए वड्याईआ। कछप होए निगहबान, आपणा भार आप उठाईआ। औखध वेखे मार ध्यान, धनंतर फोल फोलाईआ। मोहणी रूप इक्क निशान, हँसा करे सच पढ़ाईआ। बावन खेल श्री भगवान, बलधारी आप कराईआ। नर सिँघ बणे सूर बलवान, भेव अभेद आप जणाईआ। हरी हरि हो मेहरवान, गज आपणी गोद बहाईआ। नर नरायण खेल महान, बाल बाला लए उपजाईआ। तेरा सीस आपणे चरन करे परवान, आपणा राज सचखण्ड निवासी आपणे हथ्थ रखाईआ। रहिण ना देवे तेरा फेर निशान, पारब्रह्म प्रभ मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाउणा, शब्दी शब्द नगार। त्रेता आपणे दर बहाउणा, करे सच प्यार। साचा हुक्म आप सुनाउणा, मन्नया जाए विच संसार। लोकमात वेस वटाउणा, प्रगट होए गुर अवतार। आपणा रंग आप जणाउणा, ब्रह्म पारब्रह्म पसार। परस राम खेल आप बणाउणा, आपे पारस परसे बण सुन्यार। सच कुठाली एका ताउणा, जोती जोत लाए इक्क अंग्यार। रूप

अनूप आप धराउणा, आपे होए राम अवतार। धुर फ़रमाना आप सुनाउणा, चार कुण्ट इक्क जैकार। दोए दोए खेल आप वखाउणा, पुरख अबिनाशी खेल अपार। तेरा लहिणा आपणे घर रखाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। त्रेता उतरे आपणे घाट, आपणा लेखा आप मुकाईआ। द्वापर आए आपणी वाट, साचे घाट आप बहाईआ। लेखा जाणे पुरख समराथ, शब्द शब्दी गुण वखाईआ। एका नाद साची गाथ, पंज तत्त करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेख लिखाए वेद व्यास, ब्यास आपणा रूप वटाईआ। वेद लेखा बेआस, बेआस रूप समाया। ब्रह्मा कर ब्रह्म प्रकाश, नारद रंग रंगाया। सुरस्ती होई दासी दास, निउँ निउँ सीस झुकाया। एका मंडल एका रास, एका नाच नचाया। एका गोपी एका काहन, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोए दोए लेखा आप बंधाया। दोए दोए लेखा बन्धन पा, निरगुण आपणा खेल आप खिलाइंदा। कान्हा कृष्ना रूप धरा, एका बंसरी नाम वजाइंदा। मकंद मनोहर लक्खमी नरायण नाम धरा, साची रास रचाइंदा। साची सख़ीआं मंगलाचार आप करा, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। अन्तिम लहिणा देणा मुक्या विच संसार, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। एका शब्द एका वार, अठ्ठ दस आपणी धार आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भेव आप खुल्हाइंदा। द्वापर उतरया पार, शब्द आपणा खेल खिलाइंदा। परवरदिगार अग्गे करे निमस्कार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। तेरा कलिजुग आए मेरे दुआर, मैं नेत्र नैणां दरस पाइंदा। ओहदे हथ्थ तत्त अंग्यार, चारों कुण्ट ख़ाक उडाइंदा। उच्ची कूक करे पुकार, आपणा ढोला आपे गाइंदा। मैं होया ख़बरदार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। कलिजुग हुक्म सच वरतारा, सो पुरख निरँजण आप वरताईआ। शब्दी शब्द शब्द हुलारा, शब्दी शब्द खेल खिलाईआ। कलिजुग मंगे मंग दुआरा, ढह ढह पए सरनाईआ। मैं रहिणा दिन थोड़े चारा, मेरी आरजा कोई ना सके मिटाईआ। मैं जोद्धा सूरबीर बलकारा, तिन्न जुग सुत्ता रिहा ना लई मात अंगड़ाईआ। अन्तिम आई मेरी वारा, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। तिन्न जुग जो बणदा रिहा विभचारा, मैं दयाँ रंग चढ़ाईआ। मेरे अंदर वड़या आप निरँकारा, हँकार मोह विकार मेरी झोली पाईआ। मेरी इच्छया कीआ शंगारा, सोला इच्छया पूर कराईआ। मेरा वज्जे झूठ नगारा, चारों कुण्टां दयाँ सुणाईआ। मैं बण के आया साचा लाड़ा, लक्ख चुरासी लवां प्रनाईआ। मैं लुट्टां दिन दिहाढ़ा, आपणा बल रखाईआ। तिन्न जुग कढदे गए साधां सन्तां अग्गे हाढ़ा, मैं साध सन्त फड़ फड़ अग्गे लवां लगाईआ। पंज तत्त बहत्तर नाड़ा होए ख़बरदारा, मैं एका हुक्म चलाईआ। मेरा पासा आवे ना हारा, शाह पातशाह सीस झुकाईआ। मेरे

हथ्थ इक्क नगारा, मैं दो जहानां दयाँ वजाईआ। मैं मल्लया धुर दरबारा, अन्तिम लेखा देणा समझाईआ। मैं मंगया वर बण भिखारा, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। वाह वाह कलिजुग मंगी मंग, सति सतिवादी झोली भराइंदा। तेरे हथ्थ मेरा मृदंग, तेरा नाद ना कोई वखाइंदा। लोआं पुरीआं खण्ड ब्रह्मण्ड पाउणी वण्ड, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। सभ दी नंगी करनी कंड, सीस ताज ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म हरि सुणाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, धुर धुरबारी आप सुणाइंदा। तिन्न जुग ना वरत्या भाणा, चौथे जुग खेल खिलाइंदा। गुर अवतारा देंदा रिहा धुर फ़रमाना, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। कलिजुग अन्तिम रक्खां तेरा माणा, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा पन्ध आप मुकाइंदा। तेरा पन्ध मुकणा छेती, सतिगुर पूरा आप मुकाईआ। तेरी वेखे लक्ख चुरासी खेती, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। तिन्न जुग बणदा रिहा भेती, आपणा रूप रूप विच छुपाईआ। साध सन्तां करदा रिहा हेती, नित नवित दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग उठया वड बलधार, दोए जोड़ करे निमस्कारा। तूं साहिब सच्चा दातार, हउँ बणया दर भिखारा। एका देणा वर अपार, तूं वर देवणहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बोध ज्ञान तेरा भण्डारा। बोध ज्ञान पहला घाट, कलिजुग चरन लग्गण ना पाईआ। मैं तक्कदा रिहा तेरी वाट, तेरा विछोड़ा सहि ना सकां राईआ। तूं वण्ड वण्ड खेल करदा रिहा चौदां हाट, चौदां लोक तेरी कुड़माईआ। तूं स्वांग रचदा रिहा बण बण नटूआ नाट, आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणा नूर मेरे नाल रलाईआ। तेरा नूर मेरा रंग, आपणी दया कमा। पंज तत्त नच्चणा बण मलंग, देणी सच सलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दे वरता। कलिजुग तेरा संग निभाउणा, शब्दी खेल खिलाईआ। पंज तत्त चोला आप हंढाउणा, रूप अनूप धराईआ। काला सूसा तन छुहाउणा, ईसा मूसा वेख वखाईआ। जगत नगारा इक्क वजाउणा, नाम निहाद दए वखाईआ। एका कलमा आप पढ़ाउणा, अक्खर आपणा आप दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ईसा मूसा तेरे नाल मिलाईआ। ईसा मूसा मात उपजाउणा, तेरा सगला संग निभाए। साचा कलमा आप सखाउणा, नबी रसूलां आप सिखाए। साचे मार्ग आपे पाउणा, आपणी वण्ड आपे पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी वण्ड आप वण्डाए। धुर दी वण्डे वण्ड करतार, ईसा मूसा खेल खिलाईआ। तेरा मेरा ना होए उधार, तेरा कर्ज़ा रहे ना

राईआ। करे खेल अपर अपार, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। इक्क मुहम्मद दए सहार, अहिमद आपणा नूर जणाईआ। इक्क सुणाए सच्ची गुफ्तार, चार कुण्ट फेरा पाईआ। चार जुग दए अधार, चार यारी नाउँ धराईआ। उच्ची कूक जाए पुकार, आलमीन दए सुणाईआ। मेहरवान मिहबान बीदो सांझा यार, ऐनलहक हक जणाईआ। हकीकत वेखे परवरदिगार, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। हक मुकामे खोल्ह किवाड़, सच सिँघासण दए सुहाईआ। आपे करे आपणी कार, अछल अछल्ल बेपरवाहीआ। कलिजुग तेरा पन्ध आप दए निवार, बण पान्धी सच्चा माहीआ। चार लक्ख बत्ती हज़ार, तेरी उमर आरजू करे पार, तेरा भार ना कोई उठाईआ। पुरख अबिनाशी खेल करे अपार, निरगुण निरगुण लए अवतार, निहकलंक जोत करे रुशनाईआ। एका मन्त्र सुणाए आपणी वार, सचखण्ड दुआरे मारे आवाज़ एका वार, दूसर दर ना कोई पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा रंग वखाईआ। नानक निरगुण नाम धरा, पंज तत्त खेल खिलावना। पुरख अकाल बेपरवाह, साचा मृदंग नाम वजावना। मन्त्र नाम सति दृढ़ा, सचखण्ड दुआरा आप सुहावना। आपे बख्शे चरन ध्याँ, नूरी जल्वा आप वखावना। नैनन नैण दरस दरसा, साची मंडल रास रचावना। गोपी काहन बण बेपरवाह, नानक अंगी कार आप करावना। आपणी गोद आप सुहा, आपे ख़ुशी मनावना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप वखावना। साचा मार्ग आप लगावना, आपणा पर्दा दए उठा। चौथे जुग तेरा संग निभावना, करे किरपा बेपरवाह। आपणी कन्नी नाल बंधावना, पल्लू आपणा नाम फड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाह। एका खेल सच्ची सरकार, जाग्रत जोत करे रुशनाईआ। नानक देवे इक्क सहार, प्रभ सच्चा बेपरवाहीआ। वज्जदी रहे सदा सतार, तार सतार ना कोई हिलाईआ। अठ्ठे पहर इक्क दुआर, साचा मन्दिर सोभा पाईआ। वाह वाह मिल्या कन्त भतार, बण बण नारी ख़ुशी मनाईआ। एका तक्कया नूर उज्यार, दूसर दर ना कोई दसाईआ। एकँकार बोल जैकार, नाम सति करे पढ़ाईआ। करता पुरख मीत मुरार, विछड़ कदे ना जाईआ। निरभउ वसे सभ तों बाहर, भय अवर ना कोई रखाईआ। निरवैर करे खेल अपार, आदि जुगादि वेस वटाईआ। अजूनी रहत कर पसार, मेरी जोत इक्क रुशनाईआ। सैभं ना होवे आपणी वार, नित आपणा रूप दरसाईआ। आपणी किरपा भरया मेरा भण्डार, गुर प्रसादि मिली सच्ची वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा वेस वटाईआ। नानक निरगुण हरि उपाया, किरपा करे आप भगवान। आपणी जोत आप जगाया, आप उठाया सच निशान। एका अक्खर नाम पढ़ाया, चार वरनां करे ज्ञान। भेव अभेद आप खुल्हाया, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। एका दूजा मेल मिलाया, अंगद अमरदास कर

परवान। चौथे घर चौथा गुर सद्द बहाया, पंचम पंचम गुर कर प्रधान। शब्द अनादी नाद सुणाया, अगम्म अगम्मड़ा धुर फ़रमान। गुर गुर बन्धन एका पाया, पुरख अबिनाशी दो जहान। नाम नाम हरि छहबर लाया, अमृत बरखे निगहबान। हरि हरि मेला मेल मिलाया, हरिगोबिन्द करे ध्यान। हरिराय रंग समाया, जोती जोत जोत मेहरवान। हरिकिशना गोद सुहाया, तेग़ बहादर दिता दान। सुत दुलारा एका जाया, गोबिन्द आप पछाण। नानक निरगुण उठ उठ पुरख अबिनाशी तेरा दर्शन पाया, तेरे विटहो सदा कुरबान। तूं मेरा रूप लोकमात प्रगटाया, तेरा झुलदा रहे निशान। सच निशाना इक्क दरसाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप मेहरवान। सच निशान झुलाया, नानक गोबिन्द धार। साचा मन्त्र नाम पढ़ाया, गोबिन्द फतिह जै जै जैकार। कलिजुग जीव भेव ना राया, अन्तिम भुल्ले सर्ब संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करे आप विचार। आदि उपाया आदि पुरख, आदि आदि वडी वड्याईआ। जुगादि करे ना कोई हरख, चिंता सोग ना कोई रखाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करदा आया परख, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जुग जुग करदा रिहा तरस, रहिमत आपणी आप कमाईआ। विष्न मिटी ना तेरी हरस, मित्र तेरा फेरा पाईआ। ब्रह्मा तेरा मुक्कया अजे ना बरख, तेरी चौकड़ी ना बीत बिताईआ। शंकर तेरी प्यास ना बुझी हवस, लक्ख चुरासी मात मुकाईआ। वेद पढ़ थक्के आपणी पढ़त, साचा ज्ञान ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ नौ चार जुग जुग गेड़ा आप भवाईआ। नौ नौ चार गेड़ दवाया, आप आपणा खेल आप करा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा आप लगाया, साचा हुक्म सुणा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्ड वण्डाया, लोकमात नाउँ रखा। चारे वरन भेख कराया, चारे बाणी आप पढ़ा। वार अठारां सतिजुग सेज हंढाया, अवतार आपणा रूप वटा। त्रेता द्वापर दोए दोए मेल वखाया, हँकारीआं दए सज़ा। शहिनशाह कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, ईसा मूसा कर नकाह। मुहम्मद आपणा भेद चुकाया, अल्ला राणी पल्ला आप फड़ा। नानक एका ढोला गाया, सृष्ट सबाई दए समझा। गोबिन्द ऊँचां नीचां आप मिटाया, कलिजुग जीव भुल्ले भरम भुलेखा सके ना कोई गवा। पुरख अबिनाशी अन्तिम वेस वटाया, करया खेल अगम्म अथाह। सतिजुग तेरे भगत आपणी गोद बहाया, गुर पीर सोए सन्त जगा। त्रैगुण मूल चुकाया, एका पल्लू हथ्थ फड़ा। इक्क अठारां बन्धन आप तुड़ाया, अठारां चरनां हेठ दबा। धुर फ़रमाना सर्ब सुणाया, वारो वार मात जगा। जिस ने भाणा मन्न वखाया, तिस दा होया आप सहा। जिस मुखड़ा मुख भवाया, तिस देवे अन्त सज़ा। जिस दुखड़ा आप मिटाया, तिस रोग ना सके सता। जिस आपणा सुख गंवाया, तिस सुख वखाए सच्चा शहिनशाह। कलिजुग अन्तिम

८१४

फेरा पाया, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। हरि का लिख लिख लेख ना किसे वखाया, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सर्ब रहे सुणा। लोकमात जुग जुग गुर अवतार जगत अदालत रहे कमाया, धुर फ़रमाना नाम सुणा। सन्त विचोले नाल मिलाया, जगत वकालत रहे कमा। उच्ची ढोले रिहा गाया, रसना जेहवा रौला पा। मांबदौलत शब्द ना किसे वखाया, बिन लिखण पढ़न गंवा। गुरसिखां अंदर टिकाया, आप आपणा पर्दा लाह। तिस दा हिसाब ना किसे वेख वखाया, आपणा डौरू डंक गए वजा। सनक सनंदन सनातन सन्त कुमार रूप वटाया, ओह बैठा सेज विछा। जिस बराह रूप वटाया, सो धरनी हेठां सीस टिका। जिस हाव गरीव रूप वटाया, ओह चारों कुण्ट घोड़ा रिहा दौड़ा। जिस यज्ञै पुरष रूप वखाया, पुरख अबिनाशी खेल करा। नर नरायण भेव ना राया, जोती जोत कर रुशना। कपल मुन जिस समझाया, माता आपणी ज्ञान दृढ़ा। दत्ता त्रै आप उठाया, एका अक्खर आप पढ़ा। रिखव देव आप समझाया, आपणा मार्ग दए वखा। पृथू सेवा लाया, पृथ्मी मथे एका हुक्म सुणा। मतस्य बल धराया, जोती जोत लए धरा। कच्छप एका भार उठाया, मन्दिरा पीठ टिका। धनंतर एका हिकमत दए जणाया, औखध वेखे दो जहान। मोहनी आपणा रूप धराया, भरम भुलेखा सभ नूं रिहा पा। हँस बण बण आपे गाया, आपणी चोग माणक मोती खा। नर सिँघ एका भगत प्रहिलाद तराया, दूजा सकया ना कोई गिरा। नर नरायण ध्रू बालक आप तराया, लक्ख चुरासी नज़र ना आए बेपरवाह। आपणा गज आप तराया, तन्दवा तन्द कटा। बल एका बावन गोद बहाया, पातालां विच दबा। पुरख अबिनाशी भेव किसे ना पाया, सारे गए सीस झुका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा भाणा रिहा वरता। जुग जुग भाणा वरताइंदा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। जोती जोत जगाइंदा, ब्रह्म ब्रह्मण लए उठा। आपणी घाल आप रखाइंदा, शब्द हुलारा इक्क रखा। क्षत्री आपणे रंग रंगाइंदा, परस राम मूल चुका। आपणा हुक्म आप वरताइंदा, जो घड़े आपणी हथ्थीं लए भना। आपणा रूप आप वटाइंदा, दसरथ आपणा पिता बणा। राम रामा खेल खिलाइंदा, दसरथ बेटा जगत रक्खे ना। प्रगट हर घट नज़र किसे ना आइंदा, वसे सभनी थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाह। इक्क धन मारयां, मरे ना मोह हँकार। जिस लक्ख चुरासी पैज संवारया, सो खेल करे अपार। जुग जुग खेल करे आप निरंकारया, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। धुर फ़रमाना इक्क सुणा रिहा, लोकमात कर विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धार। त्रेता पार उतारनहारा, द्वापर रूप वटाईआ। कँवारी कन्या कर शंगारा, अंदर धार नूर धराईआ। वेद व्यासा सुत दुलारा, गोदी गोद वड्याईआ। एका देवे सच भण्डारा, आपणी दृष्ट आप जणाईआ। नारद सुत कर प्यारा, ब्रह्मा मेला

सहिज सुभाईआ। चारे वेदां बण लिखारा, बारां अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भेव आप चुकाईआ। बारां अक्खर भेव न्यार, हरि हरि आपणा आप खुलाइंदा। पुराण पुराणी गाए वार, एका शब्द वार सुणाइंदा। भेव चुकावे ब्रह्मा ब्रह्म विष्न शिव दए सहार, भगवन्त आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। धुर फ़रमाना एका हरि, आदि जुगादि सुणाईआ। कान्हा कृष्ना रूप धर धर, आपणे बल दए वड्याईआ। चारों कुण्ट आपणा आप वेखे खड़ खड़, चौदां लोक रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। खेल अवल्ला हरि निरँकारा, आपणा आप कराइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां सोलां कला कर पसारा, साची धार चलाइंदा। आपे वसे सभ तों बाहरा, भेव कोई ना पाइंदा। जुगा जुगन्तर साची कारा, करता पुरख आप कराइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जुग घलदा रिहा अवतारा, हुक्मे अंदर आप घलाइंदा। त्रिलोकी नाथ त्रिलोकी दए सहारा, तिन्नां लोआं वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आपणे हत्थ रखाइंदा। साचा भेव अभेद अवल्ला, आपणे हत्थ रखाईआ। कलिजुग खेल करया इक्क इकल्ला, सच महल्ला दए वसाईआ। सच संदेस एका घल्ला, एका हुक्म नाम मंनाईआ। सच सिँघासण एका मल्ला, सच सच बे ग़म बेपरवाहीआ। आपणे नूर आपे रला, जोती जल्वा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, ईसा मूसा आप जणाइंदा। एका नूर दो जहाना, नूर नुराना डगमगाइंदा। सर्ब जीआं दा एका दाना, दूसर अवर ना कोई वखाइंदा। मन हँकार बिस्मिल कराना, साची बिस्मिल आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेस इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा देणा धुर फ़रमाना, मुहम्मद मुहम्मदी दए जणाया। चार जुग दा एका बाणा, एका एक कराया। एका रहिमत इक्क रहिमाना, एका बालम सच्चा ख़ुदाया। एका ताजीम एका गाणा, अज़ीमुलशान आप पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हुक्म आप चलाया। ईसा मूसा संग मुहम्मद, अञ्जील कुरानां करे पढ़ाईआ। लेखा चुक्या ना अन्त कन्त भगवन्त, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रूप आप वटाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद, अभुल आप भुलाया। नानक निरगुण चाढ़ी रंगत, निरवैर खेल खिलाया। गोबिन्द तेरा बणया मंगत, साची वस्त हरि वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाया। एका गुण हरि का नाउँ, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, जो जन रसना जेहवा गाईआ। चार वरन नानक

गोबिन्द मनाणा फड़ फड़ बाहों, सोया कोए रहिण ना पाईआ। करे प्यार जिउँ बालक माउँ, पिता पूत मेल मिलाईआ। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, चरन दुआरा साचा थाउँ इक्क समझाईआ। सदा देवे ठंडी छाउँ, बरन वरन ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाईआ। एका गुण आप समझाया, परम पुरख करतार। विष्नूं तेरा राह वखाया, जुग जुग बण सेवादार। ब्रह्मे तेरा पारब्रह्म रंग रंगाया, ब्रह्म ब्रह्म कर पसार। शंकर तेरा खेल वखाया, अन्तिम देणा सर्ब सँघार। कलिजुग निउँ निउँ सीस झुकाया, अन्तिम रोवे ज़ारो ज़ार। एका मंग दर तेरे मंग मंगाया, कर बख्शिश बख्शणहार। मैं अनपढ़ लेखा लिख ना कोई वखाया, लिख सका ना बण गंवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सर्ब प्यार। शंकर सिर हरि रक्खया हथ्थ, आपणी दया कमाईआ। चित्रगुप्त विच्चों कीता वक्ख, जिस हथ्थ लेखा दए फड़ाईआ। राए धर्म करे उतप्त, पत्त डाल्ही आप महिकाईआ। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, बचया कोई रहिण ना पाईआ । राए धर्म हरि सरनाई गया ढहु, पुरख अबिनाशी मेरा घर कोई नज़र ना आईआ । किरपा कर एका वर दे समरथ, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। पारब्रह्म साची वस्त झोली देवे घत्त, अठारां कुंड पर्दा रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी रक्खे माण वड्याईआ। अठारां कुण्ड झोली पाया, मेरे मन शात ना आईआ। शंकर मार मार होया तिहाया, मेरी तृष्ना कवण बुझाईआ । की तेरे दर ते मंगण आया, मेरी भुक्ख मिट ना जाईआ । मैं सुणया तूं बेपरवाहया, ख़ाली हथ्थ मुड़ कोए ना जाईआ । निउँ निउँ तेरे चरन धर सीस झुकाया, मेरे साहिब दे वड्याईआ। पुरख अबिनाशी एका वार सिर हथ्थ रखाया, साचा हुक्म दए सुणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरा घाटा ना पूर कराया, तेरी हरस हरस विच मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम तेरा बाटा दए भराया, दस कुण्ड नाल रलाईआ। अठाई कुण्डां लए भराया, गुर दस देण ग्वाहीआ। बचया कोई रहिण ना पाया, जिस भुलया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अदालत लए कराईआ। आदि सुणाया धुर फ़रमाना, विष्न ब्रह्मा शिव उठाईआ। त्रैगुण दिता इक्को दान पंज तत्त निशान, लक्ख चुरासी कर परवान। चार वेद करन ज्ञान, चारे खाणी मिले माण। चारे बाणी कर प्रधान, चारे जुग कर परवान। करे खेल श्री भगवान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग देंदा आया धुर फ़रमान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ दा पाली होया आप भगवान। चार जुग सिख्या देण दी खातर, अवतार गुर मात प्रगटाए। भगत भगवन्त बणाए चातर, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाए। अछल छल कर कर देंदा रिहा आदर, आपणा भेव ना किसे जणाए। कोई कह कह गया करीम कादर, कोई राम राम वड्याए। कोई कह कह गया पार कराए समुंद सागर,

कोई कह कह गया बेड़ा दए रुढ़ाए। कोई कह कह गया घर आयां देवे आदर, फड़ आपणे गले लगाए। कोई कह कह गया लँघण ना देवे आपणा बाडर, जो बैठे मुख भवाए। धुर फ़रमाना एका वार दिता आडर, भुल कोई ना जाए। आपणा हुक्म रक्खे सादर, सलाह फेर ना कोई कराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार मात घलाए। गुर अवतार घलाया मात, शब्द संदेसा दे। इक्क वखाए आपे आपणी करामात, कोई उड्डिआ बिन देह। किसे बणाई आपणी ज़ात, किसे आपणी उम्मत नाल करया नेंह। किसे करया मज़लूमा घात, किसे उडाई हँकारी खेह। हरि का रूप ना दिसाया किसे इक्क इकांत, जो बरसे अमृत मेंह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा सच संदेह। चार जुग धुर फ़रमाना, देंदा रिहा हरि संदेसा। तख्त निवासी बह बह साचा राणा, निरगुण सरगुण उप्पर वेसा। आपणा मनाउँदा रिहा आपे भाणा, फिरदा रिहा देस परदेसा। करया खेल बण निमाणा, लक्ख चुरासी तेरा भेख वेखा। रसना गाउँदे रहे हरि हरि गाणा, अंदरों चुकाए ना कोई लेखा। बाहरों कहिन्दे हरि जू तेरा माणा, अंदर पाया भरम भुलेखा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे खेले आपणी खेला। सतिजुग खेल खेल बनवारी, विष्न ब्रह्मा शिव आपणी गोद उठाईआ। आपे बणे वड संसारी, आपणा रंग वखाईआ। आपे बणे काम क्रोध हँकारी, आपे वेसवा सेज हंढाईआ। आपे भगत सन्त जोत जगाए निरँकारी, आपे नूर करे रुशनाईआ। आपे सरगुण पावे सारी, साचे सुत गले लगाईआ। आपे बन्ने साची यारी, सत्थर यारड़ा आप वछाईआ। आपे तोड़े गढ़ हँकारी, एका खण्डा नाम चमकाईआ। आपे सुत्तयां करे प्यारी, आप आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल इक्क निरँकारी। इक्क निरँकार खेल खिलाया, करे खेल बेपरवाह। गुर पीर अवतार लोकमात घलाया, आपणा भाणा आप समझा। साचा हुक्म आप जणाया, धुर फ़रमाना संदेसा देवे जणा। भगतां लए समझाया, एका ढोला गा। जिस ने गुर का हुक्म भुलाया, सो पार सके ना बेड़ा लँघा। पुरख अबिनाशी दए डुबाया, गुर पीर बणे ना कोई मलाह। जिस दा भाणा रहे जणाया, सो आया शहिनशाह। जिस दे अग्गे गुर अवतार बैठे सीस झुकाया, आदि अन्त आपणा लेख लिखा। भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाया, सोहँ आपणा नाम धरा। अन्तिम सोहँ बणके आया, ना मरे ना जा। राम राम नज़र किसे ना आया, सभ तों होया जुदा। आपणे मन्दिर डेरा लाया, आपे करदा रिहा रुशना। आपणा नूर आप वखाया, आप आपणी जोत जगा। आपणा लेखा लए कढाया, चार जुग जो आपणे विच रक्खे छुपा। रसना जेहवा जिस ने सरगुण गाया, सो लोकमात होया रुशना। अञ्जील कुरान दए ग्वाहया, परवरदिगार देवे सर्ब पनाह। जिस ने सजदा सीस इक्क झुकाया, सच मसल्ला हेठ विछा।

सच निमाज़ रिहा पढ़ाया, साचे हुज़रे दए बहा। काया काअबा इक्क खुल्हाया, जुग जुग लहिणा दए मुका। पूर्ब लेखा झोली पाया, तख्त निवासी सच्चा शहिनशाह। गुर अवतारां दए हिलाया, अपणा हुक्म आप सुणा। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाया, पुरीआं लोआं फेरा पा। करोड़ तेतीसा लए हिलाया, चौदां लोक दए जगा। आपणा खेल आप कराया, सरगुण निरगुण वेस वटा। जोती जोबन आप वखाया, तेई अवतार रहे ध्या। दोए जोड़ गल विच पल्लू पाया, सच संदेसा शब्द पुचा। पंज तत्त विचोला ल्या ना कोए बणा, आउँदा जादां दिस किसे ना आया। लक्ख चुरासी कलिजुग विच रिहा सुणा, जिस आपणा आप पहलों प्रगटाया। अन्तिम पूरा दए करा, लक्ख चुरासी तेरा घाड़न जिस आप घड़ाया। अन्तिम वेले सभ गुर अवतार तेरे ग्वाह लए बणा, अभुल भुल कदे ना जाया। विष्नूं ब्रह्मा शिव दए हिला, करोड़ तेतीसा दए दुहाया। अमृत मिले किसे ना थाँ, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। मुहम्मद चारे कुण्ट उच्ची कूक मारे धा, कूक कूक सुणाया। नानक निरगुण जोत जगा, निरगुण नानक वेख वखाया। पुरख अकाल बेपरवाह, जिस गोबिन्द सूरा सुत जाया। आपणे सीस ताज टिका, सच्चा मार्ग मात प्रगटाया। निहकलंक आपणा नाम धरा, सच अदालत लए कराया। चार जुग दे मंगे फेर ग्वाह, जगत सफाई ना कोए कराया। चारे कुण्ट नौ खण्ड पृथ्मी लए उठा, साचा हुक्म सुणाया। गुर अवतार पीर पैग़म्बर मुल्लां शेख़ मुसायक ख़ाली हथ्थ दए करा, सभ दा लहिणा आपणी झोली पाया। साचा खेल आप करा, साचे तख्त डेरा लाया। पुरख अबिनाशी सच्चा शहिनशाह, आदि आपणा सोहँ रूप बणाया। सुत दुलारा शब्दी जा, शब्द शब्द गुर रूप जणाया। गोबिन्द मेला नाल मिला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा दरबार रिहा सजाया। सच दरबार सजया, सजाए श्री भगवान। सचखण्ड निवासी आपे गज्जया, दो जहानां बण प्रधान। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जिस सभ दा पर्दा कज्जया, अन्तिम कलिजुग वेखे आण। किसे लाउण ना देवे अज पज्जया, घर घर वेखे जीव शैतान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे धुर फ़रमान। धुर फ़रमान सुणाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। हाढ़ सतारां दिवस वड्यांअदा, सम्मत अठारां कर प्यार। बीस बिक्रमी नाल रलाइंदा, जोती जाता हो उज्यार। सचखण्ड लोकमात बणाइंदा, सच चलाए अवल्लड़ी चाल। चार जुग लिख लिख लेखा ना कोई वखाइंदा, लेखा जाणे शाह कंगाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। लग्गया दरबारा लोकमात, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। दो जहानां वेखे मार झात, नेत्र नैण नैण उठाईआ। बैठा रिहा इक्क इकांत, हरि सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दी ना कोई ज़ात ना कोई पात, वरन गोत ना कोई रखाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप पुचाईआ। साचा हुक्म शब्दी धार, हरि साचा सच जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आए वारो वार, अन्तिम कलिजुग खेल खिलाइंदा। कलिजुग मंगे मंग भिखार, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। मेरा सभ दे पिच्छों आया वार, पहला वार अग्गे फेर रखाइंदा। मेरी सुण अन्त पुकार, दर साचे सीस झुकाइंदा। मैं दरस कीता गोबिन्द यार, माछूवाड़ा इक्क सुहाइंदा। जिस सत्थर विछाया सांझे यार, सत्थर यार जो हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाइंदा। हरि साचा दया कमाइंदा, देवे शब्दी सच संदेस। गोबिन्द तेरा पहलों घर सुहाइंदा, कलिजुग अन्तिम वेख। तेरा अमृत धरत पतित पवित आप कराइंदा, पिछली मेटे लिखी रेख। साची धरनी सोभा पाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नर नरेश। नर नरेश खेल खिलाया, कलिजुग अन्तिम वार। सच दरबारा मात लगाया, निहकलंक जामा धार। साचा कोट आप बणाया, ना कोई किला ना दीवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपार। खेल अगम्मी हरि निरँकारा, निरवैर पुरख कराईआ। गोबिन्द तेरा सच हुलारा, सति सतिवादी आप लगाईआ। चल के आउणा हरी दुआरा, हरी दुआर सोभा पाईआ। तेरा नाउँ शब्द हल्कारा, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। तेरा जोती नूर चमत्कारा, दो जहानां करे रुशनाईआ।

८२०
तेरा खण्डा खड़ग कटारा, चण्ड प्रचण्ड दए चमकाईआ। तेरा सम्बल धाम न्यारा, कलिजुग अन्त बणत बणाईआ। घर साचे तेरा सच पसारा, मिले मेल सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। गोबिन्द सुणया हरि स्नेहुड़ा, सति पुरख निरँजण आप सुणाया। जो रसना जेहवा चुकावे झेड़ा तेरा, लोकमात फेरा पाया। जिस वसाया मेरा खेड़ा, सो शब्द सरूप बेपरवाहया। सति मुकाओ झेड़ा, चार कुण्ट दहि दिशा दए वखाया। जिस देणा उलटा गेड़ा, नूरी साहिब आप बेपरवाहया। जिस खुल्ला करना वेहड़ा, सो आपणा मेल रिहा मिलाया। जिस चुकाया मेरा तेरा, तेरा मेरा कोई नज़र ना आया। जिस दो जहान पाया निखेड़ा, लोकमात होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द आपणे दुआरे धरया, गोबिन्द आपणा रंग वखाईआ। गोबिन्द आउँणा चल दुआर, सो पुरख आप समझाईआ। तेरा कर्ज़ा दयाँ उतार, आपणी झोली पाईआ। चारों कुण्ट भरया हँकार, गुरमुख रूप ना कोई वखाईआ। तेरे सोभे सीस दस्तार, कामी कामना ना भोग भुगाईआ। तेरा गल विच पाए सच्चा हार, रसना तेरा गुण ना कोई जणाईआ। तेरा शब्द दस्त बरदार, साची वस्त किसे हथ्थ ना आईआ। तेरा मति ना दिसे विच संसार, तेरी महिमा साढे तिन्न हथ्थ कथ कथ पन्ध गई मुकाईआ। तेरा नाम तत्तव किसे ना दिसे सहार, तेरा रूप ना कोई जणाईआ। तेरे

अमृत लग्गी रहे आग, ना सके कोई बुझाईआ। तेरा पन्थ रल्लया काग, हँस माणक मोती चोग ना कोई चुगाईआ। बिन तेरे कोई ना पकड़े वाग, सिर हथ्थ ना कोई टिकाईआ। नेत्र रोवे अयुध्या प्राग, कांशी पंडत दए दुहाईआ। नज़र ना आए कन्त सुहाग, जो आपणे गले लगाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगटया जिस उपजाया आपणा वैराग, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अमृत धरत धवल सिंच हरा कराईआ। गोबिन्द उठया बण बलकार, कल्गी तोड़ा सीस लगाईआ। मैं आउँणा विच दरबार, नीला नीली धारों पार कराईआ। बण शाहां दा शाह अस्वार, मेरी झल्ले ताब ना कोई लोकाईआ। मैं गुजरी जम्मया लाल, तेग़ बहादर आपणी गोद सुहाईआ। पुरख अकाल बणया बाप, एका बणी माईआ। मैं इक्को जपया जाप, दूजी करी ना कोई पढ़ाईआ। मेरा बस्त्र ना जाए पाट, मैं आपणी हथ्थीं सीता आपणी सेव कमाईआ। मैं आपा रक्खया आपणे खात, सद भाणा भाणा आप मनाईआ। मैं गुरसिखां दी धूढ़ी मस्तक लाई ख़ाक, बाल बाले आपणे नीहां हेठ दबाईआ। अज्ज तोड़ गए मेरा साक, सज्जण कोए नज़र ना आईआ। आपणा आप करन लग्गे घात, सीस बैठे दस्तार सजाईआ। अन्तिम कह के गया पुच्छां वात, भुल कोए ना जाईआ। कलिजुग आए अन्धेरी रात, प्रगट होवे सच्चा माहीआ। जिस दी ना कोई ज़ात ना कोई पात, बरन वरन ना कोई रखाईआ। सभ दा बणे सच्चा साथ, सगला संग आप हो जाईआ। आपणे लगाए आपणे घाट, कीता कौल भुल ना जाईआ। सम्मत सतारां पहली चेत्र खुल्हिआ हाट, वणज वणजारा आप खुल्हाईआ। सम्मत सतारां गया नट्ठ, वीह सौ अठारां बिक्रमी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द आपणा दर सुहाईआ। गोबिन्द चढ़या चा, जोती शब्दी ल्ए हुलार। पुरख अबिनाशी मिले बेपरवाह, जिस दा अन्त सहार। मेरा होवे जगत मलाह, करे बेड़ा पार किनार। देवे सच सलाह, सो साहिब परवरदिगार। मैं मार्ग भुल ना जां, मार्ग लाया अपर अपार। सच्चा घर ल्या उपजा, सचखण्ड सच्चा दरबार। इक्को पिता इक्को मां, एका बणया सुत दुलार। कलिजुग अन्तिम धरनी तेरी अग्नी दए बुझा, अमृत बख्शे ठंडी ठार। कलिजुग जीव मुखड़ा गए भवा, साचा करे ना कोई प्यार। चारों कुण्ट अन्धेरा गया छा, धूंआँधार सर्ब संसार। हरि मन्दिर बह बह धीआं भैणां रहे हंढा, झूठी सेज वणज वणजार। दिसे दर ना सच्चा शहिनशाह, लोकमात ल्या अवतार। लोकमात आपे बणे ग्वाह, करे खेल आप करतार। नानक मेला सहिज सुभा, सच सिंघासण करे प्यार। सतिनाम सर्ब गया समझा, चारों कुण्ट कर कर पुकार। अन्तिम गए भुला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। नानक सचखण्ड बोलया, शब्द अगम्मी बोल। मैं मोदीखाने तोल तोलया, ना मारया कोई रोल। जो करदा रिहा पर्दा ओहलया,

तिस उत्तों घोली घोल। कलिजुग अन्तिम लाहे चोलया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप वजाए आपणा ढोल। मैं मृदंगा नाम वजावना, नाम सति करतार। जीवां जंतां मात समझावना, उच्ची कूक कूक पुकार। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मेल मिलावना, एका दूजा भउ निवार। एका तेरा नाम पढ़ावना, सच मन्त्र जैकार। एका मन्दिर इक्क गुरदुआर वखावना, काया बंक खोल्ह किवाड़। एका चेला मेल मिलावना, घर मेला मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, चार कुण्ट कर पसार। मेरा नाम भुल्लया जग, नाम सति ना कोए पढ़ाईआ। मेरा दरस उप्पर शाह रग, कलिजुग जीव काया अंदर नज़र किसे ना आईआ। सच प्रीत ना गई लग्ग, काग रूप रहे वखाईआ। आपणी वण्ड बैठे हद्द, पार हद्द ना कोई कराईआ। मेरा नाम ना पीती मदि, जगत मदि रसना लाईआ। हरि का नाम निशाना ना ल्या गड्ड, आपणे नाम करन वड्याईआ। आपणा नाम ना ल्या बद्व, जीवां जंतां बद्ध बद्ध खाईआ। आपणा सज्जण ना ल्या सद्द, जगत स्नेहुड़े रहे घलाईआ। आपणा जन ना ल्या कढ्ढ, जीवां जंतां करन पढ़ाईआ। आपणा भार ना ल्या लद, दूजिआं भार रहे उठाईआ। गुर नानक कलिजुग तेरी मुकाए हद्द, सच सिँघासण सोभा पाईआ। चार वरन लए लभ्भ, जिस भुलया बेपरवाहीआ। आपणे दवारिउँ देवे कढ्ढ, एका धक्का लाईआ। मुड़के फेर कोई ना जावे छड्ड, लक्ख चुरासी विच भवाईआ। मात गर्भ बणाई नाड़ी हड्ड, रक्त बूंद मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोती दिस किसे ना आईआ। सच दरबार उच्ची कूक करन पुकार, चार वरन गए हरि भुलाया। भुल्लया हरि का नाम, सतिनाम ना किसे ध्याया। मिल्या ना साचा राम, प्रभ अबिनाशी ना किसे पाया। फिर फिर वेख्या नगर ग्राम, शिवदुआला मठ ना कोई वसाया। मन्दिर मस्जिद बैठे बण बण काहन, गुर का रूप नज़र किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चल के आए तेरे दुआर। पुरख अबिनाशी बोलया, निरगुण रूप अपार। पूरा करे कीता कौलया, भुल ना जाए हरि निरँकार। दो जहानां पर्दा फोलया, लोआं पुरीआं पाड़। तेरा अमृत सभ ने डोलया, भरया दिसे ना कोई ताल। तेरा जैकार किसे ना बोलया, झूठे करदे झूठ शंगार। गुरसिख कदे ना डोलया, जम्मे मरे ना विच संसार। साध सन्त पए डोलया, डोली चुक्के बण कहार। चार दिवारी बणाई खोलया, अंदर लुकण बण गंवार। जिस अंदर सतिगुर मौलया, तिस मारे ना खण्डा तलवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। गोबिन्द गुर दए ग्वाह, आपणी ग्वाही उप्पर किसे ना पाईआ। मैं पंज प्यारे गया सजा, मेरी मुक्की जगत वड्याईआ। मैं सचखण्ड बैठा डेरा ला, मेरा धाम मेलया मेल मेरा सच्चे माहीआ। जिस पकड़ी मेरी बांह, विछड़ कदे ना जाईआ। जद

८२२

आवे करन न्याँ, नाल उँगली लए फड़ाईआ। जे कोई पुछे मेरे कोलों सलाह, मैं देवां सच समझाईआ। तूं आदि जुगादि करी सच न्याँ, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गोबिन्द आख सुणाइंदा, चार कुण्ट जैकार। जो वरन बरन रखाइंदा, सो सिख ना मोहे दरकार। जो मेरा कीता उलटाइंदा, तिस पुछे ना कोई सच दरबार। जो मेरा अमृत सिंच रसना झूठ लगाइंदा, सो खाए जम की मार। जो मेरा बाणा तन पहनाइंदा, सो तक्के ना दूसर नार। जो मेरा केस सीस टिकाइंदा, सो जगदीस करे प्यार। जो मेरा सिख अख्वाइंदा, तिस एका रूप नज़र आए संसार। गोबिन्द हर घट अंदर डेरा लाइंदा, कोई घट ना दिसे जिस सुत्ता ना पैर पसार। जो मेरे कोलों मुख भुआइंदा, तिस अग्गे मन्ने ना हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग खेल करे अपार। नानक सतिगुर सुणाए ढोला, सोहँ सच जणाया। चार वरन दा प्या रौला, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। हरि का नाम करे भार हौला, हरि का नाम ना किसे ध्याया। अन्तिम वज्जे जम का पौला, जो बैठे मुख भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोती दस अवतार, एका हुक्मी हुक्म वरतार, इक्क दुआर दए समझाया। नानक सुणाए शब्द सच्च, साची करे पढ़ाईआ। काया माटी भाण्डा कच्च, थिर कोए रहिण ना पाईआ। मन वासना रही नच्च, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। गुर का शब्द जिस हिरदे ल्या वाच, तिस भुल्ली सर्ब लोकाईआ। त्रैगुण अग्नी बुझे आंच, तत्तव अग्ग ना कोई लगाईआ। वेले अन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे गुर लए मिलाईआ। गोबिन्द उठे मार ललकार, एका शब्द नाउँ जणाइंदा। अन्तिम बोलया नाम जैकार, सृष्ट आप सुणाइंदा। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, आपणा लेखा आप समझाइंदा। सोहे दर सच्चा दरबार, जिस दर हरि जू आसण लाइंदा। हरि मन्दिर आ करे प्यार, आपणा आप रूप वटाइंदा। एका बोले सच जैकार, चार वरनां आप सुणाइंदा। जूठ झूठ कढ्ढे बाहर, सति अमाम माया ममता मोह चुकाइंदा। मेरा खोल्हे सच दुआर, दर दरवाज़ा सोभा पाइंदा। लेखा जाणे आपणी वार, पूर्ब लहिणा वेख वखाइंदा। जो रोढ़े सरसे धार, सो सतिगुर आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। गोबिन्द देवे इक्क सलाह, हाढ़ सतारां जगत जणाईआ। ग़रीब निमाणयां बण मलाह, कलिजुग शोर मिटाईआ। पुरख अबिनाशी पकड़े मेरी बांह, साचा नाम सुणाईआ। मेरा कोई ना गाए परमेश्वर नाँ, पतिपरमेश्वर मेरा सच्चा माहीआ। कलिजुग अन्तिम आवे जावे फेरा पा, आपणी रचना लए रचाईआ। करे कराए सच न्याँ, जुग जुग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अदालत इक्क लगाईआ। सच अदालत सच वकील, हरि साचा

आप रखाइंदा। बिन गोबिन्द देवे ना कोई दलील, दिलबर नज़र कोए ना आइंदा। ना कोई हुजत ना कोई हील, हाजत कन्त वेख वखाइंदा। मैं बस्त्र पहरया नील, नील बस्त्र आपणा तन छुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप जणाइंदा। गोबिन्द देवे साचा मन्त्र, आत्म अन्तर इक्क पढ़ाईआ। त्रैगुण अग्नी बुझे बसन्तर, दर गुरु दए बुझाईआ। ना कोई होम ना कोई जंतर, ना कोई बत्ती रिहा लगाईआ। जिस जन बणाई तेरी बणतर, सो तेरा होए सहाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, हरि करता सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, नानक गोबिन्द संग निभाईआ। सच दरबार उच्च अगम्म, सो पुरख निरँजण आप बणाया। सच दरबार श्री भगवन, सच सिँघासण सोभा पाया। ना मरे ना पए जम्म, जोती नूर डगमगाया। एका राग सुणाए कन्न, ओम आपणी वण्ड वण्डाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क मुहम्मद लए बुलाया। आ मुहम्मद चल दुआर, धुर फ़रमाना शब्द जणाईआ। तेरी उम्मत करे विचार, अल्ला राणी दए दुहाईआ। तेरा रूप चार यार, चार कुण्ट रहे कुरलाईआ। तेरी सिख्या दिसे ना विच संसार, कलमा नबी ना कोई जणाईआ। सच हदीस ना गाए कोई वार, कुरान करे ना कोए शनवाईआ। तेरा सजदा ना कोई प्यार, तेरा संग ना कोए रखाईआ। तेरी शनीद पाए कोई ना सार, दीद ना कोई सलाहीआ। तेरा चन्न ना कोई उज्यार, चौधवीं चन्न ना कोई चढ़ाईआ। तेरा काअबा ना कोई दुआर, तेरा मक्का नज़र किसे ना आईआ। तेरा रोज़ा बांग ना कोई मुनार, तेरा रंग ना कोई वखाईआ। झूठा जूठा कन्नां उत्ते रक्ख हथ्थ जगत ठग्गीआं रहे मार, मुल्ला शेख़ मुसायक आपणा आप गंवाईआ। धरती उप्पर रक्ख गोडे हथ्थ रक्खण उप्पर मोढे, तीजी ढाक नाल मिलाईआ। अंदरे अंदर होए थोथे, तेरा जल्वा नूर जलाल ना कोए वखाईआ। तेरी नईया अंदर मारन गोते, बेड़ा पार ना कोए वखाईआ। चार यार तेरे नाउँ लैवण झूटे, आपणा बल ना कोई रखाईआ। कलिजुग अन्तिम होए खोटे, दरगाह साची कीमत कोए ना पाईआ। पए भुलेखे दर दरवेश तेरी तेरे मिले हूर बहश्ते, आपणी हूर ना कोई हंढाईआ। खा खा मास होए मोटे, अन्तिम आपणा मास देण कटाईआ। तेरे यार करावन तेरे टोटे, अन्तिम तेरी धूढ़ उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क मुहम्मद सच्चे दर दरबार लए बहाईआ। नौ गज़ रहिणा दूर, हरि सच्चा आप जणाइंदा। जो लभ्भणे रहे हूर, तिन्हां हज़ूर हुक्म सुणाइंदा। जल्वा वेख उप्पर कोहतूर, मूसा कूक कूक सुणाइंदा। जिस ने हुक्म दिता ज़रूर, सो बेड़ा बन्न्ह वखाइंदा। जिस चौदां विद्या भरया पूर, सो आपणा राह जणाइंदा। नेड़े दिसे हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा रूप वटाइंदा। मर्द मरदाना साहिब सच्चा ज़रूर, पीर आपणा नाउँ

बणाइंदा। तेरे संगी साथी रहे झूर, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे आप जणाइंदा। उठ मुहम्मद वेख दर, दर दरवेश दए वड्याईआ । तेरे मक्के काअबे आवे डर, चारों कुण्ट तेरी उम्मत रही कुरलाईआ। तेरा काअबा खण्डर गया बण, अंदर वसे ना तेरा माहीआ। तेरा भाग ना लग्गे छप्परी छन्न, उच्च महिराब वेखे आपणी नकाब मुख उठाईआ। तेरा चढ़या ना साचा चन्न, साचा नूर नज़र ना आईआ। तेरा बेड़ा देवे बन्नु, होवे अन्त मलाहीआ। तूं चौदां सदीआं गाया आपणा राग सुण कन्न, सच हदीस ना कोई मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे आप वखाईआ। आए मुहम्मद दर दरवेश, दूरो दूर सीस झुकाइंदा। तूं पेशवा हउँ होया पेश, तेरी अल्फी वेख वेख मैं शरमाइंदा। मैं भुल्लया रिहा चौदां देस, चौदां तबक वेख वखाइंदा। तूं साहिब वड नरेश, मुकामे हक तेरा अन्त कोई ना आइंदा। तेरा किसे ना पाया भेत, मुहम्मद आपणी भुल बख्शाइंदा। तेरी मूर्त मूछ दाढ़ी ना कोई केस, रंग नज़र किसे ना आइंदा। परवरदिगार कर आदेश, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। इक्क वार मेरा नूर आपणे नेत्र पेख, नीर नेत्र मोहे नज़र ना आइंदा। मेरा नबी होया अभेद, चारों कुण्ट नज़र ना आइंदा। मैं लभ्भ ना सकया तेरा भेस, तेरे विच वढ़ के आपणा आप छुपाइंदा। मेरा फेर लिख दे लेख, बेनज़ीर नज़र कोए ना आइंदा। मैं करन आया आदेश, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत मिलाए आप समझाइंदा। आ मिल सुण लै गल्ल, परवरदिगार आप समझाईआ। चौदां सदीआं करदा रिहा वल छल, जिस तेरी बणत बणाईआ। आप बैठा रिहा धाम अटल्ल, तैनूं चौदां लोकां विच भवाईआ। आपणा सनेहुड़ा रिहा घल्ल, तेरा स्नेहुड़ा सुणन कोए ना आईआ। चौदां तबक रिहा हल्ल, धीर सके ना कोई धराईआ। तेरी उम्मत ना दिसे फल, बूटा नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा सुणाईआ। साचा हुक्म हरि फ़रमान, सुण मुहम्मद नीर वहाईआ। मैं आया बण अञ्याण, दूर दुराडा तेरा राह तकाईआ। तेरा हुक्म तेरी कुरान, तेरा काअबा तूही नज़री आईआ। तेरा सिदक तेरा ईमान, तू ही नज़री आईआ। तेरा नाअरा मेरा गान, मेरा मकतब ना कोई खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, दर दुआरे बाहर समझाईआ। दर दवारिउँ हो जा बाहर, परवरदिगार आख सुणाइंदा। तेरा कलमा भुल्ला तेरा यार, साचा रंग ना कोई रंगाइंदा। हक हकीकत कोई ना करे प्यार, साचा राह ना कोई जणाइंदा। मुल्लां शेख़ मुसायक रहे पुकार, सांझा यार नज़र किसे ना आइंदा। नूरी नूर भुलया निरँकार, साचा प्रेम ना कोई कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुरदरगाही वेख वखाइंदा। मुहम्मद कहे मेरे ख़ुदा, अग्गे लेखा ना कोई

मुकाईआ। मेरे मेरे नालों होए जुदा, मेरा संग ना कोई निभाईआ। कलिजुग आपणी करनी आप भुला, भुल्लया मार्ग बेपरवाहीआ। तेरे घरों किसे ना आवे अज़ा, सच वस्त ना झोली पाईआ। बेहद तेरा दर ऐ ख़ुदा, हद्द छोड़ी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो चाहे सो लैणा कर, मेरा कीता कोए रहिण ना पाईआ। मैं की करां ना करने जोग, तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा मेला धुर संजोग, तेरा दर मोहे भाईआ। तेरी रक्खी एका ओट, नाता तुट्टा जगत लोकाईआ। मैं छड्डे चौदां लोक, उम्मत दए ग्वाहीआ। तेरा हक तेरे घर दए निबेड़, लेखा कोए ना रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार एकम हुक्म सुणाईआ।

. . . .

८२६

. . . .

(तकरीबन दो पंने)

तख्त निवासी तख्त बराजे, धुरदरगाही दाता। आदि जुगादी रचया काजे, खेले खेल ग़रीब निवाजा। शब्द अगम्मी मारे वाजे, आप आपणा साजण साजा। करे खेल देस माझे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे खेल तमाशे। खेल तमाशा हरि हरि खेल, अचरज बणत बणाईआ। निरगुण सरगुण कर कर मेल, धाम अवल्लड़ा दए वड्याईआ। लेखा जाणे गुर गुर चेल, चेला गुर बेपरवाहीआ। आदि जुगादि सज्जण सुहेल साहिब सुल्तान बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी वसया रिहा नवेल, धाम अवल्लड़े आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। धाम अवल्लड़ा सचखण्ड, सचखण्ड निवासी आप सुहाया। जुग चौकड़ी करदा आया वण्ड, साची वण्डण आपणे हथ्थ रखाया। लेखा जाणे सर्ब ब्रह्मण्ड, कोटन ब्रह्मण्ड रूप वटाया। जुग जुग देवणहारा दंड, शब्द संदेसा इक्क सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तख्त सच सजाया। साचा तख्त ग़रीब निवाज़ा, लोकमात सजाईआ। दो जहान चलाए जहाज़ा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जुगा जुगन्तर फिरे भाजा, दिवस रैण सेव कमाईआ।

भगत भगवन्त रक्खे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शाहो भूप बण नवाबा, शहिनशाह करे सच्ची शहिनशाहीआ। आपणे सीस रखाए ताजा, साचे तख्त सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। हरि हरि खेल खिलाइंदा, आप आपणी वार। लोकमात जोत जगाइंदा, जोती जाता हो उज्यार। शाह पातशाह आप अख्वाइंदा, भूपत भूप बण सिक्दार। सच सिँघासण आसण लाइंदा, निरगुण रूप निराकार। साचा हुक्म आप सुणाइंदा, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। साचा अदल आप कमाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी पाए आपे सार। हरि आपणी सार समाल दा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल। लेखा जाणे शाह कंगाल दा, लक्ख चुरासी करे भाल। लेखा वेखे त्रैगुण माया जगत जंजाल दा, चारों कुण्ट मार उछाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेसा देवे इक्क सवाल। शब्द संदेसा सच सवाल, सवाली आपणी आप जणाईआ। फड़ उठाए हरी हरि महाकाल, हुक्मी हुक्म वड वड्याईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। शब्दी शब्द बणे दलाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म वरतावण आया, निरगुण आपणा रूप वटा। नौ नौ चार पन्ध मुकावण आया, सूरबीर आप अख्वा। सच सिँघासण डेरा लाया, राज राजान बण पातशाह। सीस ताज इक्क टिकाया, पंचम मुख मुख सालाह। शब्दी सुत आप जगाया, इक्क हलूणा आपे ला। साचा मार्ग दए वखाया, अभुल कर सलाह। अतुल तोल तुलाया, तोला बणे बेपरवाह। साचा ढोला आप जणाया, सोहँ सोहला आपे गा। अनमोला हट्ट वखाया, कीमत सके ना कोए चुका। आपणा चोला आप बदलाया, चोली रंगण रंग चढ़ा। पर्दा ओहला आप चुकाया, जोत नूर कर रुशना। साची चोट आप लगाया, शब्द नाद धुन वजा। विष्न ब्रह्मा लए उठाया, शंकर आलस दए मिटा। करोड़ तेतीसा दए हिलाया, सुरपति राजा इन्द मिला। गण गंधर्ब करे हल्काया, किन्नर यच्छप मारे धाह। त्रैगुण एका ठोकर लाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण दए वखा। त्रैगुण माया ठोकर मारे, मारन हार आप अख्वाईआ। पंज तत्त वेखे जगत नगारे, लक्ख चुरासी ताल वजाईआ। भेव चुकाए गुर अवतारे, गुर अवतार सच्चा शहिनशाहीआ। भगत वखाए सच दुलारे, दर दरबार वडी वड्याईआ। करे खेल सच्ची सरकारे, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हल्कारा इक्क रखाईआ। सच हल्कारा शब्दी धार, धार धार समाईआ। चारों कुण्ट फिरे वारो वार, दहि दिशा फेरा पाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दए हुलार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। सुंन अगम्मी वेखे वाड़, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। थिर घर पावणहारा सार, गुर अवतार आप जगाईआ। सचखण्ड

निवासी होए ख़बरदार, सच स्नेहुड़ा इक्क घलाईआ। निरगुण लोकमात लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो वेंहदा रिहा पसार, सभ दा लेखा दए मुकाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। एका थित रिहा विचार, वदी सुदी ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा पुचाईआ। सच संदेसा हरि निरँकार, आपणा आप जणाया। विष्नूं आया चल दुआर, हरि हरि सीस झुकाया। हउँ सेवक तेरा सेवादार, तेरा भण्डारा रिहा वरताया। तूं देवणहार दातार, अतोल अतुट अतुट रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं फड़ आपणे कोल बहाया। विष्नूं फड़या हरि करतार, शब्दी बन्धन पाइंदा। तेरे हथ्थ दिता भण्डार, सृष्ट सबाई जगत वरताइंदा। कोटन कोटि खा खा सुत्ते पैर पसार, कोटन कोटि तेरा दिता हथ्थ ना आइंदा। कोटन कोटि रोवण करन पुकार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। कोटन कोटि मारन हँकारी डकार, जगत भण्डारा मुक कदे ना जाइंदा। एका भुलया हरि करतार, सांझा वक्त ना कोए सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्तिम लहिणा तेरा वेख वखाइंदा। विष्नूं रोवे करे पुकार, मेरी बाली बुध ना कोए वड्याईआ। तूं कर्म लिखे सर्ब संसार, तेरा लेखा मेट सके ना कोई राईआ। मैं जिस दर देवण जावां भण्डार, अग्गे झोली कोए ना डाहीआ। तेरा लेखा अगम्म अपार, सके भेव ना कोए खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैं आपणी करनी गया हर, मेरा लेखा दे मुकाईआ। हरि लेखा आप मुकावणा, सुण विष्नूं कर ध्यान। तेरा पिछला पन्ध मुकावणा, अग्गे देवे इक्क निशान। तेरा भण्डारा आपणे हथ्थ रखावणा, आपे होए दानी दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। विष्नूं भण्डारा लैणा खोह, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। तूं मेरे जीवां नाल करदा रिहा ध्रोह, कोई भुक्खा कोई नंगा कोई रो रो देवे दुहाईआ। कोई मेरे वैराग अंदर ना जावे सौं, सुत्तयां रैण ना कोए विहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, मैं सदा सद करां सच्चा मोह, लक्ख चुरासी एका रंग समाईआ। विष्नूं कहे मैं गया भुल, अभुल तेरा भेव ना राया। मैं पहलों तेरे कंडे ना गया तुल, तेरा तोला बण के आपणा माण वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बैठा सीस झुकाया। देवे वर हरि दातार, कृपानिध दया कमाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म करे प्यार, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। आपे सद्दे सच दरबार, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। तेरा नूर नूर उज्यार, तेरे ब्रह्म ब्रह्म वड्याईआ। तेरा हँ हँ पसार, तेरा रूप अनूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे खेल थाउँ थाँईंआ। थान थनंतर खेल अपारा, हरि साचा वेख वखाइंदा। ब्रह्मा

८२८

तेरा ब्रह्म प्यारा, लक्ख चुरासी घाड़त आप घड़ाइंदा। तेरे अंदर नाद नगारा, नाम निधाना आप वजाइंदा। उतप्त करे सर्ब संसारा, कमलापाती आप हो जाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा ब्रह्म ब्रह्म भेव कोए ना पाइंदा। ब्रह्म रूप तेरा ब्रह्म अपारा, पारब्रह्म हरि जणाइंदा। लक्ख चुरासी तेरी धारा, धार धार विच समाइंदा। एका रंग अपर अपारा, घट घट आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तेरी रचना वेख वखाइंदा। तेरी रचना रचया काज, लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाईआ। तेरा रूप रहे विस्माद, विस्मादी वेख वखाईआ। मेरा नाउँ बोध अगाध, तेरा नाद शुनीद वड्याईआ। एका एक रक्खणा याद, दूसर अवर ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी सेवा इक्क लगाईआ। तेरी सेवा हरि निरँकारा, साचा सच लगाइंदा। लक्ख चुरासी ब्रह्म पसारा, एका रूप बणाइंदा। घट घट अंदर रूप उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। घर घर अमृत ठंडा ठारा, नाभी कँवल आप लगाइंदा। घर घर अंदर नाद जैकारा, नाद अनादी नाद वजाइंदा। भुल ना जाणा बण गंवारा, पारब्रह्म प्रभ आप समझाइंदा। ब्रह्मा दोए जोड़ करे निमस्कारा, गल पल्लू एका पाइंदा। एका मंगां मंग बण भिखारा, अग्गे आपणी झोली डांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा देणा तेरा लहिणा, मेरा भाग साची वण्ड वंडाइंदा। साचा भाग देवे लहिणा, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। लक्ख चुरासी तेरा गहिणा, साची घाड़त लए घड़ाईआ। एका नैण एका नेत्र एका मन्दिर साचे बहणा, एका धाम दए सुहाईआ। एका अक्खर रसना कहिणा, सोहँ शब्द शब्द पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए वखाईआ। सोहँ रूप ब्रह्म धार, पारब्रह्म जणाइंदा। भुल ना जाणा विच संसार, अभुल वेख वखाइंदा। जुग जुग वेखे आपणी वार, जुग करता खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप जणाइंदा। ब्रह्मा ब्रह्म रूप उपा, आपणा मुख छुपाईआ। हरि का लेखा ना सके जणा, लक्ख चुरासी ना करे पढ़ाईआ। आपणा हुक्म ना सके वरता, आपे बणया रहे पनाहीआ। देवणहारा दे ना सके सच सलाह, साचा मार्ग रिहा भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लेखा दए चुकाईआ। लेखा हरि चुकावणा, जुग चौकड़ी कर विचार। शंकर तेरा पन्ध मुकावणा, करे खेल अगम्म अपार। तेरी त्रिसूल तेरे हथ्थ सुटावणा, खड़ग खण्डा मार कटार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपार खेल खिलाइंदा, आदि जुगादी साचा संग। एका नाम मृदंग वजाइंदा, पारब्रह्म सूरा सरबंग। एका गुर इष्ट वखाइंदा, एका सुहाए सच पलँघ। एका हुक्म आप वरताइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

८२६

कर, आपे जाणे आपणा रंग। आपणा रंग आप जणाइंदा, कर किरपा गुण निधान। जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा, लक्ख चुरासी खेल महान। पंज तत्त चोला जगत हंढाइंदा, काया मन्दिर इक्क मकान। अंदर वड़ वड़ आसण लाइंदा, सच सिँघासण श्री भगवान। पुरख अबिनाशी खेल खिलाइंदा, हरि वाली दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त आपणी करे आप पछाण। आदि खेल हरि खिलाया, अन्त वेख वखाईआ। कलिजुग कल दए वड्याआ, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सालस बण के आपे आया, हरि शाह सच्चा शहिनशाहीआ। साचा तख्त दए सुहाया, तख्त निवासी बेपरवाहीआ। सभ दी बन्द ख़ुलासी दए कराया, फाँसी अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कीती आप उलटाईआ। आपणी करनी आपे कर, लक्ख चुरासी खेल खिलाया। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाया लड़, गुर अवतार संग निभाया। भगतन अंदर आपणी विद्या पढ़, एका अक्खर मात प्रगटाया। लेखा जाण चोटी जड़, सीस धड़ ना कोए रखाया। ना जन्मे ना जाए मर, आवण जावण वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम आई वारा, हरि साचा खेल खिलाईआ। प्रगट होया हरि निरँकारा, निहकलंका नाउँ धराईआ। विष्नूं सद्दे आपणी वारा, दर दुआर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म लए वरताईआ। साचा हुक्म हरि वरताउणा, ब्रह्मे ब्रह्म जणाइंदा। चरन दुआरे आप बहाउणा, एका हुक्म सुणाइंदा। पिछला लेखा मूल चुकाउणा, अग्गे हिसाब ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी चाल आप चलाइंदा। चले चाल हरि निराली, लेखा लिख्त विच ना आईआ। प्रगट नूर जोत अकाली, अकाल वज्जे वधाईआ। शब्दी शब्द बणे दलाली, सच दलाली आप कमाईआ। जुग चौकड़ी घाल आपे घाली, घाली घाल लेखे पाईआ। जो बण बण मंगदे रहे सवाली, अन्तिम पूरा सवाल दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शंकर लए उठाईआ। शंकर उठ आ दुआर, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। तेरी आई अन्तिम वार, तेरा लहिणा मात मुकाइंदा। तेरे अंदरों आया चित्रगुप्त हो त्यार, तेरे नाल मिलाइंदा। तेरा सज्जण बणया राए धर्म मीत मुरार, तेरा पल्लू हथ्थ फड़ाइंदा। सच संदेसा देवे एकँकार, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त सोभा पाइंदा। सच तख्त बैठ सुल्ताना, सति सतिवाद वेस वटाईआ। इक्क संदेसा धुर फ़रमाना, बीस अठारां दए सुणाईआ। लोकमात प्रगट होया श्री भगवाना, भगवन आपणी जोत जगाईआ। निरगुण निरवैर पहरया बाणा, अजूनी रहत वडी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा पिछला मिटे निशाना, अगला निशान आपणे हथ्थ रखाईआ। करोड़ तेतीसा लए परवाना, दस्त बदस्त

आप फड़ाईआ। सुरपति इन्द बण नादाना, बैठा वक्त गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका वेला वक्त वखाईआ। एका वेला वक्त विचार, हरि साचा खेल खिलाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग नज़र ना आया विच संसार, गुर अवतार सेवा लाइंदा। भगतां दे दे भगती भण्डार, भगवन लोकमात घलाइंदा। जोत नुराना नूर उज्यार, आदि शक्ति वण्ड वंडाइंदा। चतुर्भुज कर पसार, आपणा बल आप रखाइंदा। महाकाल खेल न्यार, दीन दयाल आप कराइंदा। काल रूप वरते विच संसार, दहि दिशा फेरा पाइंदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, भेव अभेद रखाइंदा। लेखा जाणे गुर अवतार, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि उपाया आदि ब्रह्म, ब्रह्म नूर सर्ब जणाइंदा। लक्ख चुरासी इक्क ब्रह्म, पारब्रह्म इक्क बणाईआ। विष्नूं मंगया एका कर्म, निहकर्मी झोली पाईआ। ब्रह्मे मंगया एका धर्म, पारब्रह्म दए वड्याईआ। शंकर मंगया एका मरन, जो घड़या भन्न वखाईआ। तिन्नां विचोला तरनी तरन, तारनहार इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। तिन्नां विचोला एका दाता, सो पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। जुग जुग सुणाए आपणी गाथा, गुर अवतार सेव कमाइंदा। जुग जुग मेटे अन्धेरी राता, साचा नाम मात प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब नूर इक्क दरसाइंदा। गुर अवतार सेव लगा, साचा हुक्म सुणाईआ। हर घट अंदर रिहा समा, इक्क दाता सच्चा शहिनशाहीआ। रूप रंग रेख ना सके कोई वखा, जिस जन हरि आपणी गत जणाईआ। सर्ब जीआं दा पिता मां, लक्ख चुरासी बाल अञ्याणे आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए वखाईआ । गुर अवतार आए जग, पुरख अकाल गए समझाईआ। जगत जीव होए अल्पग, पुरख अकाल ना कोए ध्याईआ। कोई कहे विष्नूं मेरे सीस बद्धी पग्ग, कोई कहे मेरा ब्रह्मा रक्खे माण वड्याईआ। कोई कहे शंकर गुरु निभाए साथ, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। कोई कहे मेरा रघुनाथ, दसरथ बेटा मिले वड्याईआ। कोई कहे मेरा घनईया वसे मेरे पास, मेरे अंगी अंग समाईआ। कोई कहे मेरा ईसा मूसा साचा सच ख़ुदा उत्तम ज़ात, दूसर जात ना कोए वखाईआ। कोई कहे मेरा मुहम्मद बंध्या नात, दाता बिधाता ना कोए जणाईआ। नानक सुणाई हरि हरि गाथ, सृष्टी नानक ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। नानक बण ग़रीब निमाणा, पुरख अकाल मनाइंदा। सर्ब जीआं दा एका राणा, लक्ख चुरासी आप समझाइंदा। सद वसे आपणे भाणा, आपणे भाणे सर्ब वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खिलाइंदा। नानक जपाया नाम सति, मेरे नाम ना कोए वड्याईआ।

८३२

मेरा चोला पंज तत्त, थिर रहिण ना पाईआ। मेरे अंदर वसे पुरख समरथ, जो सेवे सो फल पाईआ। अंगद लहिणा गया दस्स, जो चरनां हेठ रखाईआ। अमरदास होया वस, नथावें दए वड्याईआ। राम दास मिलाया हस्स हस्स, दास राम होया रघुराईआ। अरजण तीर निराला मारया कस, शब्द बाण इक्क लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए वड्याईआ। अरजण शब्द जणाया गुर, गुर शब्दी शब्द समझाइंदा। पुरख अकाला लेखा जाणे धुर, दीन दयाला आप वखाइंदा। निरगुण सरगुण जोड़ जुड़, त्रैगुण पंज तत्त मेल मिलाइंदा। पैंती अक्खर चाढ़े घोड़, लोकमात घोड़ा इक्क दौड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म शब्दी धार, गुर अरजण हरि जणाईआ। नानक लेखा विच संसार, अंगद दए ग्वाहीआ। अमरदास कर प्यार, काया मन्दिर खोज खोजाईआ। राम दास पाया सच दरबार, गृह मन्दिर वज्जी वधाईआ। अरजण सुणया नाद धुन्कार, साचा शब्द शब्द शनवाईआ। घर मिल्या मीत मुरार, लभ्भण किसे कोट ना जाईआ। दरसन पा अगम्म अपार, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। ढोला गाए साची वार, वाह वा तेरी वड वड्याईआ। तूं सर्ब जीआं दा सांझा यार, तेरी ज़ात पात नज़र कोई ना आईआ। तेरा लेखा लिखां विच संसार, तेरे भगतां तेरी वड्याईआ। तेई अठारां दस उज्यार, इकवन्जा बवन्जा भेव छुपाईआ। पंज इक्क ख़बरदार, दूई कुदरत वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। साचा भेव जणाया, कर किरपा गुण निधान। गुर गुर अरजण सेव कमाया, हरि देवे धुर फ़रमान। सन्त भगत भगवन्त एका घर बहाया, एका वेखे दर दर आण। लक्ख चुरासी जीव जंत समझाया, देवे धुर फ़रमान। जिस पुरख अकाल मनाया, तिस रहे ना कोए माण। गुर का शब्द गुर रूप वटाया, लोकमात प्रधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए सच निशान। सच निशाना शब्दी धार, कागद कलम लिखे शाहीआ। जो जन करे सति प्यार, वरन बरन ना कोए वड्याईआ। जो जन भुल्ले विच संसार, तिस देवे आप सज़ाईआ। पढ़ पढ़ जो गए विसार, तिस मिले ना साचा माहीआ। अन्तिम अन्त करे ख्वार, राए धर्म दए सज़ाईआ। ना उह पुरख ना उह नार, हेजड़ा रूप लए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाईआ। साचा हुक्म हरि निरँकार, शब्दी शब्द जणाइंदा। लेखा जाणे दस गुर दर सच्चे दरबार, जोती जाता डगमगाइंदा। अन्तिम अन्त इक्क जैकार, साचा नाअरा आप सुणाइंदा। शब्द सुत सुत दुलार, रीत अतीत आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणी करनी रक्खे हथ्थ, जुग जुग भेव अवल्ला। पारब्रह्म पुरख समरथ, आदि जुगादी इक्क

इकल्ला। साची वस्त चार जुग देवे घत, आप फड़ाए आपणा पल्ला। नाता बंधाए तत्त अठ्ठ, नौ दर वेखे कर कर हल्ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे वल छला। वल छल धारी खेल खिलाया, पारब्रह्म करतार। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, जोती जामा लै अवतार। सच सिँघासण इक्क सुहाया, पुरख अबिनाशन ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मी हुक्म करे वरतार। हुक्म वरताया एका वार, जुग जुग गेड़ा आप चलाईआ। जुग जुग गेड़ा दए निवार, देवे हुक्म सच्चा शहिनशाहीआ। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, साची हिकमत आपणे हथ्थ रखाईआ।

सो पुरख निरँजण सच विहारा, शाह पातशाह आप कराईआ। विष्नूं तेरी पावे सारा, ब्रह्मे तेरा पन्ध मुकाईआ। शंकर तेरा पार किनारा, करोड़ तेतीसा रहे ना आपणे थाँईआ। लक्ख चुरासी दए हुलारा, नव खण्ड करे जुदाईआ। दीप सत्त लग्गे अखाड़ा, पुरख अबिनाशी आप लगाईआ। त्रैगुण मेटे तेरा पसारा, पंज तत्त तेरा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहारा लए कराईआ। सच विहार आप कराउणा, किरपा निध निधान। नव नव चार बेड़ा पार कराउणा, मिटे जगत निशान। गुर अवतार संग रखाउणा, देवे धुर फ़रमान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। श्री भगवान खेल खिलाया, कलिजुग अन्तिम वार। सच संदेसा इक्क सुणाया, चार जुग दे विछड़े यार। पुरख अकाल सर्ब भुलाया, एका गाए ना कोए वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। हरि करता खेल खिलाईआ, कलिजुग तेरा अन्तिम अन्ध। वरन बरन लए उठाईआ, मेटणहारा अगला पन्ध। साचा हुक्म इक्क सुणाईआ। सो पुरख निरँजण सुहागी छन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा बन्द। तख्त तजया तख्त सजाया, तख्त निवासी खेल अपार। जोती जोत भेख वटाया, रूप रंग ना कोए विचार। सच संदेश इक्क सुणाया, शब्द नाद धुन्कार। नर नरेश बण के आया, आदि जुगादी एकँकार। ब्रह्मा विष्न शिव लए बुलाया, साचा हुक्म वरते वरतार। त्रैगुण बन्धन इक्क बंधाया, अठ तत्त मारे मार। चार जुग भेव चुकाया, चार वरन करे ख्वार। चारे खाणी पर्दा उठाया, चारे बाणी पावे सार। चारों कुण्ट फोल फोलाया, लेखा जाणे आपणी धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल अपर अपार। तख्त तजाया तख्त चढ़या भज्ज, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। आपणा आप गंवाया आपणे मन्दिर बैठा सज, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि जो आपा

८३३

आपणे परदे अंदर रक्खया कज, कलिजुग अन्तिम लए प्रगटाईआ। जो गुर अवतारां रक्खदा आया लज, आप आपणी दया कमाईआ। जो पीर पैग़म्बरां करौंदा आया हज्ज, आपणा नूर धराईआ। जो लक्ख चुरासी चलाउँदा आया जहाज़, आपणा बेड़ा दए वखाईआ। जो निरगुण सरगुण रचदा आया काज, साचा काज आप रचाईआ। जो सचखण्ड दुआरे बह बह मारदा रिहा वाज, लोकमात करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तख्त इक्क वड्याईआ। छड्डया तख्त होया निमाणा, निर्धन आपणा वेस वटाइंदा। आपे वसे आपणे अंदर भाणा, आपणा भाणा सर्ब जणाइंदा। विष्नूं चुक्के तेरा पीणा खाणा, ब्रह्मा तेरा नूर नूर छुपाइंदा। शंकर तेरा त्रिसूल कम्म किसे ना आणा, वेला अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। पंचम मन्ने साचा भाणा, लक्ख चुरासी हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तख्त आप जणाइंदा। साचा तख्त छड्ड सिंघासण, आसण आपणा आप सुहाईआ। करे खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। ब्रह्मण्डां खण्डां वेख आसण, लोआं पुरीआं नाच नचाईआ। पावे सार पृथ्मी अकाशण, आकाश आकाशां खोज खोजाईआ। गुर गुर वेखे दासी दासन, सेवक सेवा कवण रखाईआ। भगतन पूरी करे आसण, जो बैठे आस तकाईआ। लक्ख चुरासी करे बन्द ख़ुलासन, बन्दी आपणी बन्धन तोड़ वखाईआ। जिस रसना लाया मदिरा मासण, ना सके कोए बचाईआ। तेई अवतार करन हासन, जो बैठे सीस झुकाईआ। खेले खेल पुरख अबिनाशन, पारब्रह्म नूर रुशनाईआ। जो पर त्रिया करदे रहे भोग बिलासन, तिन्हां देवे अन्त सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक्क लगाईआ। सच दरबारा लगया, लोकमात प्रधान। करे खेल सूरा सर्बग्गया, पुरख अबिनाशी नौजवान। सिंघ शेर हो हो बुकया, लुकया रहे ना विच जहान। कलिजुग वेला अन्तिम ढुक्कया, एका देवे धुर फ़रमान। लक्ख चुरासी ब्रह्मा बूटा सुक्कया, विष्नूं देवे ना पीण खाण। शंकर तेरा दुआरा जाए लुटया, तेरी करे ना कोए पछाण। गुर अवतारां नाता छुट्टया, लेखा चुकाए श्री भगवान। पुरख अकाल एका तुठ्ठया, एका देवे साचा दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नौजवान। नौजवान हरि निरँकारा, बाल बिरध ना रूप वटाईआ। करे खेल विच संसारा, लोकमात वज्जे वधाईआ। लेखा चुक्के चार यारा, ईसा मूसा संग मुहम्मद ना कोए निभाईआ। उम्मत उम्मती करे ख्वारा, ना होए कोए सहाईआ। दामनगीर पकड़े दामन ना विच संसारा, आलमगीर हुक्म सुणाईआ। ज़ालम ज़ुलम करे पार किनारा, मेटे जगत झूठी शाहीआ। इक्क सुणाए साचा नाअरा, हक हकीकत आप समझाईआ। मुकामे हक खोल्ह किवाड़ा, सच अमाम आसण लाईआ। रुत्त वखाए सतारां हाढ़ा, सभ दा लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा सोभा

पाईआ। सच दरबार सुहञ्जणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। करे खेल पुरख निरँजणा, आदि जुगादी एकँकार। जो घड़या सो भज्जणा, थिर रहे ना विच संसार। तीर्थ तट ना कोए मजना, अठसठ मारे मार। बिन हरि चरन किसे ना सजणा, ना कोई मन्दिर गुरदुआर। चार कुण्ट ना किसे बचणा, पीर फ़कीर ना करे कोई जैकार। त्रैगुण अग्नी सभ ने मच्चणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। उठ विष्नूं दे ब्यान, हरि साचा हुक्म सुणाईआ। विष्नूं मंगे चरन ध्यान, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हउँ सेवक तेरा बाल नादान, बाली बुध तूं बख्श बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंग मंगाईआ। एका मंग मंगां दुआर, चार जुग तेरी सेव कमाया। चार जुग इक्क इक्क दिन कर प्यार, चार दिन मेरी झोली पाया। फिर आवां तेरे दरबार, आपणा लहिणा दयाँ मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दे चार दिन मेरी वण्ड वण्डाया। उठ ब्रह्म कर ध्यान, पारब्रह्म समझाइंदा। तेरा दाता गुण निधान, तेरा वेस वेख वखाइंदा। एका रूप ब्रह्म पछाण, हँ नज़र किसे ना आइंदा। तेरा लोकमात नाउँ करे प्रधान, अन्तिम लेखा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। ब्रह्मा रोवे करे पुकार, नेत्र नैणां छहबर लाईआ। तूं दाता मेरा मैं तेरा भिखार, तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। एका वर देणा कलिजुग अन्तिम वार, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरी सेव कमाईआ। चार वेद कर कर मैं थक्का पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जीव जंत ना पायण तेरी सार, तेरा लेख ना लिख्या जाईआ। चार दिन चौंह जुगा दी इक्क इक्क वण्ड देणी विच संसार, मेरी ख़ाली झोली दे भराईआ। फिर आवां तेरे दरबार, आपणी भुल बख्शाईआ। तेरा कर्ज़ा दयाँ उतार, आपणा हौला भार कराईआ। तेरी जोती जोत रलां निरँकार, आपणी जोत ना कोए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दे चार दिन मेरी वण्ड वंडाईआ। उठ शंकर फड़ त्रिसूल, कलिजुग वेला अन्तिम आइंदा। पारब्रह्म चुकाए तेरा मूल, तेरी झोली आप भराइंदा। तेरी ख़ाक वेखे धूल, धूढ़ आपणे चरन छुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा पर्दा आप उठाइंदा। शंकर सुणया हरि हरि नाअरा, उठ उठ लए अंगड़ाईआ । कवण कूटे बोले जैकारा, निरगुण आपणा नाउँ प्रगटाईआ। मेरी सुणे अन्त पुकारा, मेरी कट्टे आप जुदाईआ। मैं अट्ठे पहर रहां ख़बरदारा, आलस निन्दरा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा इक्क लगाईआ। मेरी सेवा लाई अपार, पुरख अबिनाशी खेल खिलाया। जो उपज्या सो दिता सँघार, बचया कोए रहिण ना पाया। कर्म कुकर्म ना सकां विचार, भेव अभेद ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा

वर, हउँ बैठा सीस झुकाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग, चार चार वण्ड वंडाईआ। करदा आया तेरी कार, किरत तेरी सेव कमाईआ। अभुल तूं इक्क निरँकार, हउँ भोला नाथ भुल भुल आपणी भुल बख्शाईआ। एका वस्त मेरी झोली डार, चार जुग दर तेरे मंग मंगाईआ। इक्क जुग दा इक्क दिन आपणे घर विच्चों निकाल, तेरे घर तोट ना राईआ। मैं आपणी लवां सुरत संभाल, आपणा लेखा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चार दिवस मेरी वड्याईआ। त्रैगुण सदी देवे सद्दा, साचा हुक्म सुणाया। लक्ख चुरासी तेरे नाल बध्धा, ना सके कोए तुड़ाया। आपणा रूप तेरे अंदर रखा, दिस किसे ना आया। चारों कुण्ट दिसे सखा, ख़ाली भण्डार ना कोए भराया। साचा नूर ना दिसे किसे मथ्था, ललाटी ललाट ना कोए रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप सुणाया। त्रैगुण रोवे मारे धाह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। इक्की जेठ सुधाया मेरा साह, मेरी स्वाह तेरे चरनां लग्गी छाहीआ। किरपा कर बेपरवाह, एका रही मंग मंगाईआ। दर तेरे गई आ, खुल्हड़े केस दयाँ दुहाईआ। मेरी पेश ना चले रा, तेरा हुक्म टिकण किते ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे एका मंग मंगाईआ। एका मंगां मंग बण भिखारन, सतो रजो तमो सीस झुकाया। तेरे दर बणी वणजारन, साचा वणज इक्क कराया। मेरा तुट्टा माण हँकारन, शंका अन्त रहे ना राया। तूं आया पैज संवारन, मोहे निमाणी गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, एका वस्त झोली पाया। साची वस्त देणी पा, झोली ख़ाली रही वखाईआ। चार जुग दे चार दिन मेरी वण्ड लैणी वण्डा, हिस्सा दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। मेरा रंडेपा देणा हंडा, कन्त सुहाग सच्चे शहिनशाहीआ। मैं तेरे दर ते आ आ, आपणा सीस देवां झुका, जगदीस तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दे चार दिन, मेरी गोद सुहाईआ। चार दिन त्रै त्रै धार, त्रै त्रै मेला मेल मिलाईआ। तिन्नां विचोला आप निरँकार, दूजा हुक्म ना कोए सुणाईआ। वण्डे वण्ड अगम्म अपार, देवणहारा आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। चारे खाणी उच्ची कूके, कूक कूक सुणाईआ। बिन तेरे मेरा तन सभ फूके, अग्नी तत्त जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे दयाँ दुहाईआ। चारे खाणी दए दुहाया, नेत्र नैण नीर वहाइंदी। चार जुग तेरी रचन रचाया, होए निमाणी सेव कमाइंदी। लक्ख चुरासी बणत बणाया, तेरा घर वसाइंदी। तेरा आसण विच टिकाया, आपणा पर्दा पाइंदी। तेरा मुख आपणे अंदर छुपाया, लक्ख चुरासी आपे नज़री आइंदी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा साचा वर, हउँ दुहागण मंग मंगाइंदी। मैं दुहागण बण वैरागण, दर तेरे ते आईआ। चार जुग मैं बणी रही तेरी लागण, घर घर सेव कमाईआ। बिन तेरे मेरा नेत्र कोए ना खोल्हे ना कोई जगाए आपणे जागण, सुत्तयां मेरी रैण विहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैं आई बण सवालण, मेरा हल्ल सवाल कराईआ। मेरा करना हल्ल सवाल, चारे खाणी सीस झुकाया। मेरा होणा अन्त ज़वाल, निशान जगत रहिण ना पाया। तेरे दुआरे मेरी गली ना दाल, तूं शहिनशाह बेपरवाहया। मैं तेरी सेवा कर कर आपणी घाली घाल, तूं मेरी कीमत कोए ना पाया। मैं अञ्याणी बाली बाल, की सकां तैनूं समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर अग्गे बैठी सीस झुकाया। दर अग्गे सीस झुकाइंदी, निरगुण हो निमाणी। दोए जोड़ वास्ता पाइंदी, चार जुग दी साची राणी। गुर अवतार आप प्रगटाइंदी, सेवा करे बण बण हाणीआं हाणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दा देणा वर, हउँ मंगां मंग बण सुघड़ स्याणी। चार जुग दा वर, घर देणा इक्क इक्क दिन वण्ड वंडाईआ। चार दिवस भण्डार देणा भर, पारब्रह्म तेरी वडी वड्याईआ। मैं आपणा लेखा तेरे अग्गे देवां धर, दर तेरे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार दिवस देणा वर, चार चार नाल मेल मिलाईआ। चार चार मेल मिलाया, पुरख अबिनाशी खेल खिलाइंदा। तेई अवतार दर बहाया, एका हुक्म समझाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखो नैण उठाया, चारों कुण्ट पर्दा लांहयदा। जिस ने पुरख अकाल इक्क ध्याया, सो हरिजन मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। उठो जागो वेखो नैण, चार कुण्ट लोकाईआ। जिस दा बणाया नाता साक सज्जण सैण, नाता वेखो भैणां भाईआ। पुरख अकाल कवण रसना कहिण, कवण तेई अवतार रहे ध्याईआ। अन्त चुकावे कवण लहण देण, वेला अन्तिम अन्त वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप जणाईआ। तेई अवतार आए दर, दोए जोड़ करन निमस्कारा। तूं भण्डारा दिता भर, लोकमात कर उज्यारा। सच संदेसा दिता वर, मेरे साहिब सच्ची सरकारा। उच्ची कूक सुणाया घर घर, तेरा बोल जैकारा। जगत जीव गए हर, भुलया हरि करतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा खेल अपर अपारा। पुरख अकाल जणाइंदा, अन्तिम कलिजुग धार। तेई अवतार सेवा लाइंदा, जुग चौकड़ी कर प्यार। साचा हुक्म इक्क वखाइंदा, धुर फ़रमाना धुर दी कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण कराए दरस दीदार। नेत्र नैण दरस कराया, लक्ख चुरासी पर्दा लाह। पुरख अकाल किस मनाया, उठ उठ पकड़ो आपे बांह। सारे रहे सीस फिराया, नीवें नैण कर कर करन नांह। तेरा जैकारा

किसे ना लाया, पंज तत्त इष्ट रहे सर्ब मना। हउँ एका मंग मंगाया, साची वस्त झोली पा। चार जुग दा लेखा वेख वखाया, आपणा पात्र फोल फोला। इक्क इक्क दिन वण्ड वंडाया, इक्क इक्क जुग मेल वखा। तेई अवतार वार चलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे इक्क सच्ची सलाह। सच सलाह नर निंरकार, शब्दी शब्द जणाईआ। लेखा जाणे भगत अठार, दर दुआर बहाईआ। दरस दिखाया इक्क अपार, तेरा मेरा मोह चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां ज़ात पात ना कोए जणाईआ। ज़ात पात ते वसया बाहर, हरि भगतां आप सुणाइंदा। आपे गुप्त आपे ज़ाहर, आपे अंदर आपे बाहर, आपे साची खेल खिलाइंदा। आपे पुरख आपे नार, आपे बणे कन्त भतार, आपे सख़ीआं मंगल गाइंदा। आपे शाहो भूप सिक्दार, आपे राउ रंक होए ख्वार, आपे दर दरवेश दर दर फेरी पाइंदा। आपे हुक्मी हुक्म वरते वरतार, लेखा जाणे धुर दरबार, सचखण्ड दुआरे खेल अपार, सचखण्ड निवासी आप कराइंदा। भगत भगवन्त लए उभार, जिस जन बख्शें आपणा प्यार, दीआ बाती कमलापाती जोती जाता डगमगाइंदा। एका शब्द नाद धुन्कार, काया मन्दिर वजाए सतार, अनहद नादी नाद वजाइंदा। आत्म ब्रह्म ब्रह्म पसार, साची सेजा सच भतार, दूजा कन्त ना कोए हंढाइंदा। भगत भगवन्त चार जुग दिता इक्क विचार, भुल्लया फेर क्यों संसार, हरि भगती भगत ना कोए कमाइंदा। साचे भगत रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहा करन गिरयाज़ार, नेत्र नैण सर्ब शरमाइंदा। असीं आए तेरे दुआर, कलिजुग जीव ख़ाली भाण्डे चारों कुण्ट दिसे विभचार, साचा जोड़ ना कोए जुड़ाइंदा। हउँ बणे दर भिखार, वस्त पाउणी एका वार, सेवक सेव मंग मंगाइंदा। चार जुग दे चार दिन साडा हिस्सा रक्खणा विच संसार, जगत सांझ ना कोए रखाइंदा। आपणा कीता आपणे विच्चों लए निकाल, तेरा मिले राह सुखाल, साचा मार्ग इक्क समझाइंदा। पुरख अबिनाशी बण दलाल, तेरा रूप नज़र ना आए काल महाकाल, करे हल्ल सवाल, सच सवाली हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत अठारां चार चार दिवस साची वण्ड वंडाईआ। साची वण्ड हरि करतार, आपणी आप वंडायदा। एका जोती दस अवतार, साचे तख्त सुहाइंदा। एका हुक्म सच्ची सरकार, एका भाणा आप मंनाइंदा। एका ब्रह्म इक्क पसार, एका पारब्रह्म वेख वखाइंदा। एका धाम अटल उच्च मुनार, एका धाम सोभा पाइंदा। एका सुणे सदा पुकार, सुणनहार इक्क अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर गुर साचे मेल मिलाइंदा। दस गुरु एका जोत, एका घर बहाईआ। ना कोई किला ना कोई कोट, चार दीवार ना कोए जणाईआ। ना कोई हरख ना कोई सोग, चिंता दुःख ना कोए रखाईआ। ना कोई तामस ना कोई सोग,

ना कोई हिरसी हिरस जणाईआ। ना कोई शब्द ना कोई नाद , पुरख अकाल एका दरसन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम लए मिलाईआ। भगत मिलाया अन्त दुआर, अन्तिम अन्त खेल खिलाया। पुरख अबिनाशी बोल जैकार, नाअरा ढोला इक्क सुणाया। चार वरन दा साचा प्यार, निरगुण सरगुण नानक आप जणाया। गोबिन्द बोल इक्क जैकार, एका डंका गया सुणाया। जगत भुल्ले ना जीव कोए गंवार, एका पुरख अकाल मनाया। सर्ब जीआं दा सांझा यार, आदि जुगादि वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा रूप आप दरसाया। रूप दरसाए अगम्म अथाह, इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। गोबिन्द सूरा बण मलाह, जीवां जंतां रिहा समझाईआ। कलिजुग अन्तिम देवे सच सलाह, साख्यात रूप वटाईआ। अग्गों करे ना कोई नांह, हां हां विच मिलाईआ। चार वरन बणाया जिस भैण भ्रा, सो वेखणहारा वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका जोत वेख वखाईआ। एका जोत दस दस गाथा, गृह मन्दिर आप जणाइंदा। करे खेल पुरख समराथा, समरथ आपणी चाल चलाइंदा। सगल विसूरा हरिजन लाथा, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। एका पूजा एका पाठा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। एका वणज एका हाटा, एका वस्त एका नानक नाम वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच सिँघासण बहे पुरख अकाला दीन दयाल साचा मन्दिर सोभा पाइंदा। दस गुरु देण सलाह, सलाही सच सच जणाईआ। हरि का नाउँ गए सर्ब भुला, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। चार जुग खेल रिहा खला, करे खेल बेपरवाहीआ। चौथे अक्खर चार जोड़ जुड़ा, चार जुग दए वड्याईआ। वाह वा गुरु मंत लए बणा, वाहिगुरु अक्खर इक्क पढ़ाईआ। चार जुग दा दिन इक्क इक्क नाल मिला, दस दस गुर नाल मेल मिलाईआ। करे खेल सच्चा शहिनशाह, शहिनशाह हथ्थ वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा देणा वर, एका गोबिन्द मंग मंगाईआ। चार दिवस मंगे मंग, दस दस खेल खिलावणा। लक्ख चुरासी वेखे रंग, कसुंभा रंग किस चढ़ावणा। नौ नौ वेखे मृदंग, नाम मृदंग किस वजावणा। चार चार वेखे लँघ, पार किनारा आप करावणा। अन्त मुकाए आपणा पन्ध, तेरे दुआरे सोभा पावणा। लक्ख चुरासी पाए फंद, जिस तेरा नाम भुलावणा। जिस ना गाया बत्ती दन्द, गुर गोबिन्द होए ना किसे ज़ामना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार चार दिवस इक्क इक्क जुग नाल फड़ाया लड़, साचा लड़ आप बंधावणा। साचा लड़ दिता बन्न्ह, एका बन्धन पाया। मूसा वेखे कोहतूर चढ़या चन्न, जल्वा नूर हरि ख़ुदाया। ईसा आपणी उम्मत आपे प्या जम्म, पिता पूत पूत वड्याआ। मुहम्मद वसेरा बिन छप्परी छन्न, साचा

हरि दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर आप बुलाया। साचे दर सद्दे दरवेश, दर दरबार आप बणाईआ। इक्क सुणाया हरि संदेस, सच संदेसा आप सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम करया वेस, चारों कुण्ट घर घर धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। मुहम्मद बोले मारे नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाया। तेरा दर ना दिसे सच दरबारा, अद्धविचकारे बैठा राह तकाया। चौदां सदीआं चौदां लोक मेरा किनारा, अन्तिम बैठा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा जल्वा दूजी वार नज़र ना आया। दूजी वार मंगां मंग, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। चौथे जुग बणया मलंग, तेरी अल्फ़ी गल विच पाईआ। चारों कुण्ट फिरया नंग, उच्ची कूकां देवां दुहाईआ। मेरा सुंञा दिसे पलँघ, मेरी सेज ना कोए हंढाईआ। चार यारी होई नंग, पर्दा हथ्थ ना कोए वखाईआ। चार जुग दे चार दिवस मंगां मंग, मेरी अन्तिम झोली पाईआ। फिर दर तेरे आवां तूं बख्शी मेरे साहिब बख्शंद, भुल अभुल ल्ए बख्शाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दया आप कमाईआ। सुण मुहम्मद रक्खणा याद, हरि साचा सच जणाइंदा। चौदां चौदां सुण फ़रयाद, चौदां चौदां वेख वखाइंदा। चार जुग दा एका नाद, आपणा नाउँ वजाइंदा। तेरी वेखे डूँघी खाड, डूँघी कंदर फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दे चार दिवस तेरे अंग समाइंदा। ईसा करे पुकार, अज़मत आपणी ना कोए जणाईआ। चारों कुण्ट गाए तेरी वार, साचा ढोला एका गाईआ। फ़र्ज़ंद बण करे प्यार, अनन्द अनन्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दए वरताईआ। एका हुक्म धुर फ़रमाना, ईसा इस्म आज़म आप सुणाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका हुजरा सोभा पाइंदा। एका तख्त एका राणा, भूपत भूप इक्क वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा वेला वेख वखाइंदा। ईसा तेरा साचा वेला, वक्त आप जणाईआ। नूरी कीता मेला मेला, मेल मिलाए साचा माहीआ। आपणी खेल आपे खेला, आप चलाए हुक्म रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, तेरी उम्मत दए वड्याईआ। तेरी उम्मत तेरी धार, तेरे संग निभाइंदा। तेरी अज़मत कर प्यार, तेरी ख़िदमत आप कमाइंदा। तेरी सुहबत विच संसार, हरि साचा आप उपाइंदा। एका हुक्म करे वरतार, हुक्म हाकम आप जणाइंदा। सर्ब जीआं दा परवरदिगार, हर घट अंदर नूर धराइंदा। जल्वा नूर कर उज्यार, जोती जोत डगमगाइंदा। एका करना सर्ब प्यार, दूसर वण्ड ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग जग लगा, ईसा एका आस गया रखाईआ। चार वरन एका रंग समा, एका

८४०

रंग समाईआ। एका नूर होए ख़ुदा, एका कुदरत विच समाईआ। मेरा मेरे नालों ना होए जुदा, गल पल्लू रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म वरताईआ। एका हुक्म वरतावणहार, हरि साचा आप जणाइंदा। कलिजुग आउणा विच संसार, जोती जामा भेख वटाइंदा। निरगुण सरगुण रूप अपार, निरगुण सरगुण विच छुपाइंदा। तेरा लेखा लए विचार, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। एका ईसा करे पुकार, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। चार जुग दे दिवस चार, तेरे कोलों मंग मंगाइंदा। हाढ़ सतारां ना आए हार, ख़ुशीआं नाल ख़ुशी विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बंक आप बणाइंदा। हाढ़ सतारां मंगी मंग, मांगत दर दरवेश बणाया। मूसे चढ़या साचा रंग, कोहतूर आप रंगाया। पुरख अबिनाशी वसे संग, आप आपणा संग निभाया। इक्क वखाए हरि तुरंग, साचा तुरंग आप दौड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाया। साचा खेल हरि खलाए, खेलणाहारा दिस ना आईआ। मूसा ममता मोह चुकाए, एका आपणा बन्धन पाईआ। एका जल्वा नूर वखाए, नूर इलाही सच्चा शहिनशाहीआ। एका कलमा आप पढ़ाए, कलमा अमाम इक्क जणाईआ। साची सलाम इक्क कराए, सलाम अलैकम वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दए सुणाईआ। सुणना हुक्म धुर फ़रमान, हरि साचा सच जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, लोकमात वेख वखाइंदा। चार कुण्ट तेरा निशान, तेरे रंग रंगाइंदा। अन्तिम पेखणा मार ध्यान, कवण हुक्म दर पुचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा। कलिजुग वेला अन्तिम आया, हरि साचा खेल खिलाईआ। आपे मूसा दर बहाया, तन तन पिण्डा रिहा सुहाईआ। आपे गोद लए बहाया, अन्तिम मेल सहिज सुभाईआ। तेरी उम्मत पहलों तेरे अग्गे लाया, ईसा तेरा संग रखाईआ। मुहम्मद तेरी बांह फड़ाया, अल्ला राणी नाल प्रनाईआ। चार यार दा पन्ध मुकाया, चौथे जुग वज्जे वधाईआ। फेर आपणा दरस दए कराया, फड़ फड़ मेले तेरीआं बाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता साचा वर, सच संदेसा रिहा समझाईआ। ईसा मूसा सुण संदेसा, मुहम्मद नाल मिलाया। काला सूसा कर कर वेसा, लोकमात फेरा पाया। चार जुग जो बणया रिहा नर नरेशा, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि बेपरवाहया। मुहम्मद करे विचार, ईसा इक्क समझाईआ। मूसा बन्न्हे धार, देवे सच सलाहीआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, एका एक एक ख़ुदाईआ। धाम अवल्ले वसे परवरदिगार, सो अल्ला मीआं नाउँ धराईआ। वण्ड वण्डी विच संसार, जगत पर्दा एका पाईआ। अन्तिम मारन आया मार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा

भेव आप चुकाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद कर विचार, एका मेल मिलाया। चार जुग दे दिवस चार, चार चार वेख वखाया। चार यारी दिती हार, चार कुण्ट डेरा ढाहया। चौथे जुग मिले सांझा यार, चौंह वरनां वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म रिहा सुणाया। साचा हुक्म सुणाइंदा, साचे तख्त बैठ सुल्तान। सच अदालत आप कमाइंदा, देवे धुर फ़रमान। आपणा कोर्ट आप सुहाइंदा, सुप्रीम कोरट वाली दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए निगहबान। निगहबान होए करतारा, साचा हुक्म जणाईआ। चार जुग दी वण्ड विच संसारा, चार दिहाढ़ा कीमत पाईआ। चार दिवस देवे वारो वारा, विष्न ब्रह्मा शिव झोली आप भराईआ। त्रैगुण बणे आप वरतारा, चारे खाणी मेल मिलाईआ। तेई अवतार दए सहारा, चार चार बन्धन पाईआ। अठारां भगत ना कोए उधारा, वस्त अमोलक आप वरताईआ। दस गुर ना कोए वणजारा, मेला चार चार मिलाईआ। ईसा मूसा आए ना पासा हारा, संग मुहम्मद मंगे इक्क सफ़ाईआ। कुदरत वेखे कादर वेखणहारा, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। सत्तां दीपां दीप उज्यारा, एका नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार जुग दा मूल वखाईआ। चार जुग दा मूल वखाउणा, हरि साचा खेल खिलाइंदा। चार दिवस दा पर्दा लाहउणा, चार जुग वण्ड वंडाइंदा। चार वरन दा भेव मिटाउणा, एका सरन रखाइंदा। चार बाणी दा गाउण गाउणा, एका ढोला आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। तेई दस अठारां कर इक्टठे, एका घर वखाईआ। लहिणा देण चुकाए हथ्थो हथ्थे, जगत उधार ना कोए वखाईआ। लेखा लिखे अलखना अलक्खे, वेद पुराण भेव ना आईआ। सभ दे भाण्डे करे सक्खे, आपणा भण्डारा आपणे विच टिकाईआ। सभ दे माण अन्तिम लथ्थे, अभिमान ना कोए रखाईआ। शब्द डोरी सारे नथ्थे, एका तन्द खिचाईआ। आपणी महिमा आपे कथ्थे, आपे आपणा गुण जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अदालत एका एक वखाईआ। सच अदालत हरि निरँकारा, लोकमात कराइंदा। पंज इक्क बणे भिखारा, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा । चार वरन होया हत्यारा, आपणी हत्या सर्ब कराइंदा। मिल्या आम ना किसे मुख़तारा, ख़ुद मुखत्यार सर्ब हो जाइंदा। चारों कुण्ट वरनां बरनां नाअरा, पुरख अकाल ना कोए गाइंदा। कोई कागद कलम शाही करे प्यारा, कोई इट्टां पत्थर सीस झुकाइंदा। कोई जल पाणी कढ्ढे गारा, कोई ख़ाकी ख़ाक सीस पवाइंदा। कोई वड़ वड़ बैठा डूँघी गारा, उच्चे टिल्ले कोई फेरा पाइंदा। कोई पढ़ पढ़ करे विचारा, पढ़ पढ़ पुस्तक वक्त लँघाइंदा। कोई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे विचारा, आत्म ब्रह्म ना कोए समझाइंदा।

कलिजुग भुल्लया सर्ब संसारा, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। कोई हिन्दू मुस्लिम सिख कहे पुकारा, साची सिख्या सिख ग्रहण ना कोए वखाइंदा। कोई नानक गोबिन्द करे प्यारा, नानक गोबिन्द नज़र किसे ना आइंदा। कोई शिवदुआला मठ करे पुकारा, कोई मूर्ति कृष्न ध्यान लगाइंदा। कोई राम सीता लाए नाअरा, सीता राम रूप ना कोए वटाइंदा। कोई ऐनलहक बोले जैकारा, सूली सूल ना कोए वखाइंदा। कोई मुहम्मद मंगे प्यारा, मुरीद मुर्शद रूप ना कोए वटाइंदा। कोई कोहतूर मंगे नज़ारा, आपणा अन्धेरा ना कोए चुकाइंदा। कोई ईसा ल्ए सहारा, ईशवर नज़र किसे ना आइंदा। कोई चार वेदां करे विचारा, कोई पुराण अठारां रसना गाइंदा। कोई अठारां अध्याए गीता करे विचारा, अञ्जील कुरान कोए गाइंदा। कोई बाईबल करे विचारा, हरि का भेव ना कोए पाइंदा। कोई खाणी बाणी ल्ए सहारा, आपणा इष्ट देव बणाइंदा। गोबिन्द अन्तिम गया बोल जैकारा, पुरख अकाल सर्ब समझाइंदा। कलिजुग आए अन्तिम वारा, निहकलंका रूप वटाइंदा। पिछला लेखा सभ दा दए पाड़ा, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। चार जुग जो कढ्ढे आपे हाढ़ा, गुर अवतार आपणा नाउँ धराइंदा। ज़िमीं अस्मानां मेटे पाड़ा, आपणा चरन चरन नाल मिलाइंदा। दो जहानां वेखे अखाड़ा, लोआं पुरीआं नाच नचाइंदा। तख्त निवासी साचा लाड़ा, लोकमात फेरा पाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी चबाए आपणी दाढ़ा, बस्त्र शस्त्र ना कोए उठाइंदा। लेखा जाणे बहत्तर नाड़ा, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी आपणी गणत गणाइंदा। चार जुग चार वरन नौ खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी जिस नूं आपणी शब्द करदा रिहा वाड़ा, गुर अवतार सेवा लाइंदा। कलिजुग अन्तिम करे खेल अपारा, प्रगट हो हरि निरँकारा, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। इक्क सुणाए सच जैकारा, आदि पुरख हो उज्यारा, सोहँ रूप अपर अपारा, हँ ब्रह्म वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आप खिलाइंदा। दस अठारां तेई कर इक्टठ, त्रै त्रै बन्धन पाया। पंचम मेला कमलापति, इक्क इक्क इक्क नाल जोड़ जुड़ाया। चार दिवस मंगी मंग, आपणी रती रत रंगाया। हाढ़ सतारां रक्खणी पत, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाया। तेरा सत्थर बैठे घत, तेरी सेज विछाया। साडी करनी पूरी आस, बेआस कोए रहिण ना पाया। असीं डरदे करीए त्रास त्रास, बैठे सीस झुकाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तूं सचखण्ड विच रक्खया वास, लोकमात ना फेरा पाया। तेरा नाउँ लक्ख चुरासी करे हास बलास, रसना जिहवा गुण वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर साडे हथ्थ टिकाया। तेई दस हो इक्टठे, अठारां जोड़ जुड़ाईआ। इक्क दूजे दे वेखण मथ्थे, कवण लेख रिहा लिखाईआ। कवण वसे काया कुल्ली कक्खे, कवण बैठा आसण डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दए सुणाईआ। सारे करो इक्टठ, हरि

साचा आप जणाइंदा। ना कोई मन्दिर मस्जिद दिसे मट्ठ, शिवदुआला कम्म किसे ना आइंदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, ना कोई मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। ना कोई तीर्थ ना कोई घाट, ना कोई जगत अशनान कराइंदा। ना कोई वणज वणजारा विके किसे हाट, साचा हट्ट इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभनां देवे इक्को वर, एका रंग रंगाइंदा। अठारां दस हो इक्टठे, तेई मता पकाईआ। जिस ने लेखे धुर धुर लिखे, जुग जुग हुक्म सुणाईआ। जिस कोलों मंगदे रहे भिखे, सो साहिब सच्चा इक्को दिसे, जिस दी वडी वड्याईआ। लोकमात पाए असीं हिस्से, कोई राम कोई कृष्न अख्वाईआ। निरगुण नूर हर घट अंदर एको दिसे, एका आपणा गुण धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पंज इक्क देवे एका वर, आपणी बणत तेरे रंग रंगाईआ। पंज इक्क करन विचार, दर घर साचे आईआ। वेला अन्त आपणा आप लउ संवार, वेला गया हथ्थ ना आईआ। इकावन विच्चों चुणो सरदार, जिस आपणी हथ्थ डोर फड़ाई पुरख अकाल सभ दा लेखा दए मुकाईआ। असीं फिरदे आए वारो वार, चार जुग दी देवण मात ग्वाहीआ। मिली इक्क सच्ची सरकार, जिस दा लेखा सके ना कोए मिटाईआ। आदि अन्त ना जाए हार, पासा हार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणी खेल खिलाईआ। तेई दस वेखे मार ध्यान, कवण मिले सच दुआर। कवण देवे धुर फ़रमान, बोले सच जैकार। सभनां कीता इक्क परवान, नानक निरगुण गुर हमार। आवे जावे धुर दरबार, जुगा जुगन्तर साची कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे साची धार। लक्ख चुरासी गई हार, उतरी किसे ना पार किनारा। चारों कुण्ट होया विभचार, भुल्लया हरि करतारा। वेद पुराण करन पुकार, गीता ज्ञान ना कोए सहारा। खाणी बाणी होई परवान, कलिजुग जीव हरि का रूप ना किसे विचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार जुग दी पावे सारा। चार जुग दी सार समाले, सति पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरा वक्त संभाले, वेला वक्त आपणे हथ्थ रखाईआ। प्रगट होया पुरख अकाले, बेपरवाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। नानक निरगुण कर परवान, तेई दस मता पकाया। एका हुक्म देवे फ़रमान, धुरदरगाही लै के आया। सभ ने करना अन्त परवान, भुल कोए ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेस आप धराया। नानक निरगुण अग्गे लग्ग, आपणा राह चलाईआ। मिल्या मेल सूरे सर्बग्ग, शहिनशाह वडी वड्याईआ। तेरी वेखी साची हद्द, पार किनारा पार कराईआ। तेई अवतार अद्धविचकार आपणा भार बैठे रक्ख, राह तक्कण तेरा माहीआ।

त्रिलोकी विच्चों बाहर कढु, आपणा पैंडा दे मुकाईआ। लक्ख चुरासी दे छड्ड, छड्ड छड्ड बन्दी बन्द पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चार जुग दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। चार जुग दा लेख अपारा, निरगुण नानक आप समझाइंदा। साचा साचे तख्त बहे सच्ची सरकारा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। बणया जज्ज एकँकारा, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। निम्मी निम्मी वेखे धारा, जुग चौकड़ी फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। चार जुग दा लम्मां केस, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर ल्या वेख, दलील अवर ना कोए दृढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम मंगी पेशी पेश, पेशतर साचा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच संदेस सुणाईआ। चार जुग दा दीवानी झगड़ा, कलिजुग अन्तिम मुक्कण ना पाईआ। चार वरन नूं लग्गे रगड़ा, ना कोई लए बचाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होवे ग़दरा, अन्ध अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक निरगुण दए समझाईआ। नानक निरगुण हरि जणाए, झूठा नाता तोड़। तेरा केस ना दायर हरि कराए, तेरा मेरा जुड़या जोड़। दूर दुराडा वक्त ना कोए मुकाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाए। दीवानी केस देणा छड्ड, लोकमात पुरख अबिनाशी आपणे हथ्थ लए वड्याईआ। चार जुग दी पार करावण आया हद्द, ज़ोर ज़बर आप धराईआ। उच्ची कूक वजाए नद्द, सभ नूं रिहा सुणाईआ। आपे शिशन आपे जज्ज, आपे कोरट रिहा लगाईआ। आपे मुलज़म लए सद्द, आपे मज़लूम लए बुलाईआ। आपे मक्तूल कातल बणे शाह नवाब, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक आपणे रंग समाईआ। नानक इस दा छड्डे खहिड़ा, दीवानी केस मुक्कण ना आईआ। पुरख अबिनाशी देवण आया गेड़ा, थित वार ना कोए रखाईआ। हथ्थो हथ्थी नबेड़े नबेड़ा, फड़ फड़ देवे आप सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बिध दए बताईआ। एका बिध हरि जणाए, साचा देवे धुर फ़रमाना। सतिगुर साचा मेल मिलाए, तख्त निवासी बैठे सच्चा राणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे आपणा भाणा। साचा भाणा मना मन, मन इच्छया ना कोए रखाईआ। आपे जणया जननी जन, जन जणेंदी पिता माईआ। आपे दिता साचा धन, नाम धन झोली पाईआ। आपे बेड़ा दिता बन्ह, बण मलाह सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेई दस आप समझाईआ। तेई दस आप समझावंदा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। साचा झगड़ा आप मुकावंदा, हुक्म हाकम आप वरता। गोबिन्द सूरा इक्क उठावंदा, हथ्थ खण्डा दए चमका। फौजदारी केस बणा दो जहान वेख वखावंदा, सृष्ट

सबाई वेखे थाउँ थाँ। नेत्र नैण सर्ब शरमावंदा, कोई सके ना नैण उठा। बिन गोबिन्द पुरख अकाल ना कोए मनावंदा, अन्त सर्ब रहे पछता। पुरख अबिनाशी एका खण्डा एका हथ्थ फड़ावंदा, आपे देवे सच पनाह। चारों कुण्ट आप दौड़ावंदा, दहि दिशा दए भवा। नौ खण्ड पृथ्मी आप हिलावंदा, सत्तां दीपां ठोकर ला। लक्ख चुरासी तेरा खेत बणावंदा, तेरा सत्थर दए वछा। चिड़ीआं तेरी चोग चुगावंदा, तेरा बाज़ नाम उडा। आपणा डंका आप वजावंदा, तेरा डंका शब्द सुणा। राउ रंकां आप समझावंदा, वेला अंतम गया आ। शाह पातशाह किसे ना कोए बचावंदा, पुरख अबिनाशी करे सर्ब सफ़ा। उच्चे टिल्ले फड़ फड़ ढावंदा, चोटी पर्बत ना सके कोए बचा। डूँघे समुंदर फेरा पावंदा, सति सति देवे सुणा। धरनी आपणा भार वेख वखावंदा, करे खेल बेपरवाह। तेई अवतार सीस झुकावंदा, दोए जोड़ मंगण इक्क पनाह। नानक सचा एका गुण गावंदा, सभ नूं रिहा सुणा। गोबिन्द साचा हुक्म जणावंदा, पुरख अकाल पिता मां। जिस दा दिता पीणा खावणा, विष्नूं तिस लए सलाह। ब्रह्मा जिस दा मन्ने भाणा, शंकर चरन धूढ़ रिहा रमा, सो प्रगट होया वाली दो जहां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अदालत आप लगाए आप वखाए सच मकां। सच मकान होया वासा, पुरख अबिनाशी आसण लाया। भगत भगवन्त दए भरवासा, भगत अठारां दर मिलाया। इक्क अठ्ठ दए दलासा, एका गुण जणाया। काया वेखे तेरा कासा, साचा बाटा फोल फोलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुण लए जणाया। भगत अठारां करो सलाह, पुरख अबिनाशी दर बहाईआ। कवण वेला रिहा चला, चप्पू नाम लगाईआ। कवण देंदा रिहा सलाह, धू्र प्रहिलाद तराईआ। कवण बल गोद सुहा, कवण अमरीक होए सहाईआ। कवण जनक लए तरा, हरी चन्द वज्जे वधाईआ। कवण बिदर सुदामा लए तरा, कवण जैदेव करे पढ़ाईआ। कवण सैण रिहा सेवा कमा, कवण रविदास चमार ढोए ढोर वेख वखाईआ। कवण भगत भगवन्त लए मिला, कवण बधक होए सहाईआ। कवण गनका लए तरा, कवण पूतना दए तराईआ। कवण बेणी लए उठा, आप आपणा आप जणाईआ। कवण धन्ना लए मना, रुस्सा जट्ट रिहा सीस झुकाईआ। कवण मोई गाँ लए जवा, नामे छप्परी कवण छुहाईआ। कवण कबीर जोलाहा लए उठा, जिस आपणी कुंनी भेंट चढ़ाईआ। उठ्ठो करो अन्त सलाह, वेला अन्तिम आईआ। आपणा नाउँ इक्क ग्वाह, जो लेख दए जणाईआ। लक्ख चुरासी जीवां देवे समझा, बिन हरि अन्त ना कोए सहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दस्सो राह, साचा मार्ग इक्क लगाईआ। पुरख अकाल सभ ने लैणा मना, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। सृष्ट सबाई होए फना, मलकुलमौत फेरा पाईआ। बिन हरि बख्शे ना कोए गुनाह, ज़मानत देण कोए ना पाईआ। अमानत रक्खी ना किसे थाँ, वेले अन्त ना कोए सहाईआ। शहादत

देवे ना बण कोई ग्वाह, मौक्या कोई संभाल ना सके राईआ। सभ ने झूठा जाणा मुख छुपा, पुरख अबिनाशी धक्का लाईआ। माया राणी मारे धाह, उच्चे धौलर ख़ाली रिहा वखाईआ। राजे राणयां कोए ना बन्नया साह, सगला संग ना कोए रखाईआ। नारी कन्त जाए विहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां आप समझाईआ। उट्ठे भगत दर भगवान, आपणा मता पकाया। बनारस थेटा कर परवान, इक्क जोलाहा नाल उठाया। तूं बणना खेवट खेटा जगत जहान, बेड़ा मात मात चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस मेला मेल मिलाया। कबीर जोलाहा तण के ताणा, तन्दी तन्द तन्द बंधाईआ। सिर ते मन्नदा रिहा भाणा, जल जल आपणा रोड़ रुढ़ाईआ। अंदर गाउँदा रिहा गाणा, अठ्ठे पहर वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल तेरा माणा, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। तेरा दिता पीणा खाणा, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे सच टिकाणा, साचे खण्ड मिली वड्याईआ। सच मकान सचखण्ड, हरि भगतन आप जणाया। पुरख अबिनाशी वण्डी वण्ड, साचा हिस्सा आप रखाया। भगत भगवन्त ना करे रंड, नारी कन्त आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां आपणा मेल मिलाया। गोबिन्द सूरा वड बलवान, एका हुक्म जणाईआ। चार यारी बड़ी शैतान, चौथे जुग वेस वटाईआ। लक्ख चुरासी भुल्ली बण नादान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। शरअ शरीअत ना दिसे ईमान, साबत कोए नज़र ना आईआ। लेखा जाणया ना सच कुरान, काया कुरा ना खोज खुजाईआ। बिरहों मारया ना बाण, तीर निराला ना कोए लगाईआ। मुहम्मद तेरी चुक्के आण, तेरा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। मुहम्मद उठया उठ बल धार, आपणा सीस आप झुकाईआ। गोबिन्द देणा इक्क सहार, तेरा मेला मिल्या साचे माहीआ। मेरा नाता तुट्टा चार यार, मेरा संग ना कोए रखाईआ। चौदां सदीआं आई हार, ना देवे कोए ग्वाहीआ। चारों कुण्ट पैंदी मार, मेरी उम्मत रही कुरलाईआ। मैं मंगे दिवस चार, चार दिहाढ़े आपणा गुण अवगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द देवे माण वड्याईआ। मुहम्मद देवे इक्क दलील, आपणा हाल आप सुणाया। गोबिन्द मेरी कर अपील, मेरे उत्ते रहिमत करे मेरा ख़ुदाया। मेरा होर ना कोई वकील, वकालत करन कोए ना आया। मेरा साहिब ख़लल ख़लील, ख़ालक वेखे थाउँ थाया। मैं चौदां सदीआं होया ज़लील, मेरा ज़ुलम ना कोए मेट मिटाया। ना कोई थाणा ना कोई तहसील, ना कोए कोरट नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, एका मंग मंगाया। गोबिन्द सूरा मेहरवान, एका पिता आप मनाईआ। पुरख अकाल देणा दान,

तेरी वस्त मोहे भाईआ। तेरा नाउँ सच्चा निशान, लोकमात इक्क झुलाईआ। मुहम्मद मंगे तेरी आण, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। तूं मेरी अरज़ कर परवान, अर्ज़ी तेरे अग्गे पाईआ। आपणी हथ्थीं लिख फ़रमान, तेरा फ़रमान लिख्या ना कोए मिटाईआ। तूं वाली दो जहान, कुदरत तेरा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लेखा दए समझाईआ। पुरख अबिनाशी मन्नया कहिणा, हरि गोबिन्द आप जणाया। लोकमात मुहम्मद थिर ना रहिणा, जो घड़या भन्न वखाया। चार चार भाणा सहिणा, चारे चार झोली पाया। चार वेखे नैणा, चार चार वण्ड वण्डाया। चार चार पावे गहिणा, चार चार तन शंगार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द देवे साचा वर, साचा हुक्म आप सुणाया। साचा हुक्म हरि निरँकार, हरि सतिगुर आप जणाईआ। एका जोती दस अवतार, नानक गोबिन्द धार बंधाईआ। कलिजुग वण्ड वण्डे संसार, साची वण्ड इक्क समझाईआ। चार वरन दा सच प्यार, चार जुग वज्जे वधाईआ। चार दिवस करे प्यार, नानक अंगद मेल मिलाईआ। अंगद अमर दए आधार, अमर रामदास समझाईआ। रामदास करे विचार, अरजण शब्द नाद सुणाईआ। अरजण शब्द होए उज्यार, गुर रूप मात प्रगटाईआ। नाता तोड़ पंज विकार, तत्व तत इक्क रखाईआ। जोती जोत करे उज्यार, हरि गोबिन्द जोत रुशनाईआ। गोबिन्द मेला कन्त भतार, हरिराय वेखे चाँईं चाँईंआ। मिल्या मेल मीत मुरार, कृष्ना उठ उठ गले लगाईआ। बहादर रक्खी तेग़ धार, तेग़ धार आप चमकाईआ। गोबिन्द करया सच प्यार, सुत दुलारा एका जाईआ। चार जुग दा इक्क आधार, चार दिवस इक्क इक्क वण्ड वंडाईआ। मुहम्मद करया ख़बरदार, दे मति आप समझाईआ। हाढ़ सतारां रहिणा होश्यार, भुल कदे ना जाईआ। तेरी उम्मत जाए हार, तेरा उल्मा करे ना कोए पढ़ाईआ। तेरा शेख़ होए ख्वार, शेख़ी कोए रहिण ना पाईआ। गोबिन्द बणया मीत मुरार, सच संदेसा दए सुणाईआ। तेरे अक्खर आपणे विच रखाए दिवस चार, गुर गुर वण्ड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द तेरी अपील आपणे खाते लए चढ़ाईआ। गोबिन्द अपील होई मन्ज़ूर, हरि साचा सच जणाइंदा। निरगुण बख्शे आप कसूर, पंज तत्त वेख वखाइंदा। छेवें घर वसे ज़रूर, आपणा आपे आसण लाइंदा। मुहम्मद पाउणा ना फेर फ़तूर, फ़तवा तेरा आपणे हथ्थ रखाइंदा। तेरा तोड़े आप ग़रूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दो सौ छपंजा दिन तेरी अन्त तारीख़ रखाइंदा। दो सौ छपंजा दिन करनी गिणती, हरि साचा आप जणाईआ। हाढ़ सतारां करे मिणती, मिण मिण लेखा दए समझाईआ। ना कोई फ़ुट्ट ना कोई इंची, ना कोई गज़ रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द तेरी अपील, मुहम्मद तेरी दलील, निरगुण बण आप वकील, इक्क तरीक

दए रखाईआ। इक्क तरीक देवे पा, हरि साचा सच समझाइंदा। दो सौ छपंजा दिन तेरी अन्तिम वण्ड वण्डा, तेरा लेख मुकाइंदा। चारों तरफ़ वज्जे धाह, तेरा नैण सर्ब कुरलाइंदा। तेरा मक्का काअबा देवे ढाह, उच्चा हुजरा ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। दो पंज छे रिहा वेला, वक्त वक्त नाल मिलाईआ। अचरज खेल आपे खेला, ख़ालक ख़लक रूप धराईआ। आपे बणया सज्जण सुहेला, गुर चेला रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुहमंद तेरी करे फेर सफ़ाईआ। मुहम्मद तैनूं अग्गे लाउणा, गोबिन्द वेखे आपणा राह। पहलों तेरी उम्मत मुकाउणा, लक्ख चुरासी पाए फेर फाह। सम्मत अठारां दिवस सुहाउणा, हाढ़ सतारां गणत गणा। एका सिफ़रा नाइआं आपणी झोली पाउणा, पहली चेत आप दृढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क मुहम्मद नूं दिती वण्ड वंडा। सम्मत अठारां इक्क सौ नौ दिन, पुरख अबिनाशी खेल बणाया। आप लँघाए गिण गिण, वेला वक्त ना किसे जणाया। सभ दे कोलों सभ दा लेखा लए छिन, छीनणहार आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत अठारां दो सौ छपंजा तेरा दिहाढ़ा, मुहम्मद तेरी वण्ड वण्डाया। दो सौ छपंजा दिन वण्डी वण्ड, हाढ़ सतारां पिछला अंक जणाईआ। सम्मत उन्नी पहली चेत्र होए रंड, नार दुहागण मुख ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट करे खण्ड खण्ड, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो सौ छपंजा दिन आप गिणाईआ। विष्नूं मंगे दिन चार, चार जुग दी धारा। ब्रह्मे मंगे दिन चार, चार जुग पसारा। शंकर मंगे चार दिन, चार जुग दी धारा। त्रैगुण मंगे चार दिन, तिन्नां चौका खेल अपारा। चारे खाणी चार दिन, चार जुग दा चार चार वरतारा। तेई अवतार मंगण चार दिन, चार जुग दे चार वारो वारा। अठारां भगत मंगण चार दिन, चार वरन दा चार चार पसारा। दस गुर मंगण चार दिन, चार अक्खर वाहिगुरु शब्द जैकारा। चार जुग दे चार दिन, ईसा मंगे निउँ निउँ करे निमस्कारा। चार जुग दे चार दिन, मूसा मंगे दर दरवेश निउँ निउँ करे दोए जोड़ निमस्कारा। चार जुग दे चार दिन, मुहम्मद लँघाए गिण गिण, कलिजुग आए अन्तिम वारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दो सौ छपंजा दिन गिणती गिणी विच संसारा। चार दिन विष्नूं तेरा लेख मुकाउणा, चार दिन ब्रह्मा तेरी वण्ड रहिण ना पाईआ। चार दिन शंकर तेरा पन्ध मुकाउणा, चार दिन तेरा रंग रंगाईआ। चार दिन चारे खाणी तेरा पन्ध मुकाउणा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। चार दिन तेई अवतारां झोली पाउणा, ख़ाली झोली आप भराईआ। चार दिन अठारां भगत निभाउणा, साचा संग आप रखाईआ। चार दिन दस गुर एका रूप

८४६

चढ़ाउणा, वाह वा गुरु फ़तहि गजाईआ। चार जुग चार दिन ईसा मूसा तेरा पन्ध मुकाउणा, मुहम्मद तेरा पैंडा रहे ना राईआ। उन्नी उनीसा काला सूसा पाड़ वखाउणा, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। चीना रूसा आप उठाउणा, तेरे मक्के करे सफ़ाईआ। लहिंदी दिशा वेख वखाउणा, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सौ उन्नी बिक्रमी पहली चेत्र तेरा केस ख़ारज आप कराउणा, गोबिन्द दफ्तर दाख़ल दए कराईआ। मुड़ के बाहर ना किसे कढाउणा, हथ्थ रसीद ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पहली चेत्र वीह सौ उन्नी गुर अवतार, भगत अठारां त्रैगुण माया चार खाणी ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारी पिछला मूल चुकाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, इक्क झुलाए सच निशान, अगम्मी दुआरे देवे धुर फ़रमान, आपणा हुक्म आप पुचाईआ।

जिस वखाई नंगी कृपाल, सो लेखा जाणे दो जहान, मारे जीव फड़ शैतान, लोकमात रहिण ना पाईआ। लक्ख चुरासी बणे काहन, साची सख़ीआं करे परवान, एका शब्द देवे दान, सति नाम करे पढ़ाईआ। गोबिन्द वसे तेरा मकान, पुरख अबिनाशी झुलाए निशान, सम्बल नगरी आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वड़े जगत घमसान, आपे वेखे जगत शमशान, आपे भूमी ख़ाक उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दूआ पांजा छीका तेरा लेखा दए मुकाईआ। लेखा मुकाउणा हरि निरँकार, अगला लेखा फेर प्रगटाए। गुरमुख साचे लए उभार, जिस जन आपणा दरस दिखाए। एका देवे नाम आधार, आत्म अन्तर आप वसाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहली चेत्र बीस उनीस सभ दी ख़ाक दए उडाए। लक्ख चुरासी ख़ाक उडाए, गुरमुखां दए माण वड्याईआ। आपणी दस्तार गुरमुखां सीस रखाए, देवे माण वडी वड्याईआ। गुर अवतारां नाल मिलाए, गुरसिख गुर गुर विच समाईआ। काल महाकाल नेड़ ना आए, लाड़ी मौत ना लए प्रनाईआ। आपणी हाढ़ी फल आपे आप वढाए, आपणे खेत आपे लए बचाईआ। चारों कुण्ट उजाड़ा पाए, अगम्मी धाड़ आप उठाईआ। हाढ़ा कर ना कोए बचाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। आपणा भेव हरि जणाया, पुरख अगम्म अथाह। सच दरबार आप लगाया, सतिगुर सच्चे शहिनशाह। गोबिन्द विचोला इक्क बणाया, एका मार्ग आप जणा। दो पंज छे छे पंज दो दो पंज छे दए सलाहया, अन्तिम खेड़ा दए ढाहया एका धक्का

ला। जाग्रत जोत इक्क जगाया, घर घर नूर डगमगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूजा लेखा उन्नी रात वजे नौ दए समझा।

★ १६ हाढ़ सम्मत २०१८ बिक्रमी दरबार विच ★

हरि दा परवाना पुज्जया, गुर गोबिन्द दिता फड़ा। हरि लेखा जाणे गुज्झया, एका हुक्म दए सुणा। लहिणा देणा चुक्के एका दूजया, कुदरत वेखे आप ख़ुदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाह। फड़ परवाना धुरदरगाह, गुर गोबिन्द आप पुचाईआ। तूं दाता साहिब सिफ्ती सालाह, सच्ची सिफ्त तेरी वड्याईआ। तेरा बरदा तेरा दरवेश तेरा तक्के राह, नेत्र नैण उठाईआ। तेरी उम्मत करे नकाह, लोकमात वेख वखाईआ। आपणी सुन्नत आप करा, सूरत साची गया वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा हुक्म सुणाईआ। फड़ परवाना वेखदा, वेखणहारा परवरदिगार। लेखा जाणे दस दस्मेश दा, दहि दिशा करे विचार। आपे धारे आपणा भेख खेल अवल्लड़ा आपे खेलदा, खेलणहारा एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे सुणे सच पुकार। सच पुकार लिखी रसूल, रसूल अल्ला इलाही नूर ध्यांअदा। मेरा परवाना कर कबूल, दर तेरे धूढ़ी ख़ाक रमाइंदा। मैं ना जाणां तेरा असूल, तेरा भेव कोए ना आइंदा। तूं अभुल मैं गया भूल, भुल्ले मार्ग तूं ही पाइंदा। मेरा तेरा इक्क असूल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फड़ परवाना वेख वखाइंदा। फड़े परवाना देवे पाड़, नेत्र नैण ना हरि टिकाईआ। मुहम्मद तेरा तुट्टा प्यार, तेरा संग ना कोए निभाईआ। तेरी इच्छया लए उभार, अल्ला राणी मेल मिलाईआ। मीआं बणे परवरदिगार, रईयत वेखे थाउँ थाँईंआ। थर थर कम्बे सर्ब संसार, धरनी धरत धवल दए दुहाईआ। उम्मत रोवे ज़ारो ज़ार, कूक कूक सुणाईआ। ख़ालक करे खेल अपार, मख़लूक फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नुकता दए जणाईआ। एका नुकता हरि निगह, निगहबान वेख वखाइंदा। एका घर सच्ची दरगाह, दरगाह साची सोभा पाइंदा। एका मिरज़ा एका बेगम लए प्रना, बे ग़म आपणा बन्धन पाइंदा। एका हुजरे लए बहा, सच महिराब आप सुहाइंदा। एका नौबत लए वजा, साचा डंका इक्क रखाइंदा। एका आपणी सुहबत जाणे आपे ख़ुदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप जणाइंदा। मुहम्मद लेखा अलिफ़ धार, अल्फ़ी नज़र कोए ना आईआ। किसे याद ना रक्खया हरि निरँकार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। करे खेल अपर अपार, अपर अपारा भेव

चुकाईआ। दरगाहि साची हो न्यार, धाम अवल्लड़ा कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। फड़ परवाना पाड़या, पाड़नहारा एकँकार। लेखा जाणे दिन सतारां हाढ़या, हाढ़ सतारां करे विचार। बहत्तर नाड़ी आपे साड़या, अग्नी लाए तत्त अंग्यार। भज्जा फिरे जंगल जूह उजाड़ पहाड़या, उच्ची कूके करे पुकार। मेरयां यारां मैनूं मारया, चार यारी गई हार। मैं उच्चा लाया नाअरया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल अगम्म अपार। अगम्म अपार लेखा जाणे, लेखा लिख्त विच ना आईआ। मुहम्मद तेरा मतल्ब पछाणे, मैख़ाना फोल फोलाईआ। तेरा आब वेखे गुण निधाने, बेआब फेरा पाईआ। तेरा महिताब वेखे भाने, नूर नूर कवण रुशनाईआ। तेरी फ़रयाद सुणे दो जहाने, फ़रयाद होर ना कोए वखाईआ। तेरी हद्द चौदां हट्ट मकाने, चौदां तबकां वण्ड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा परवाना हरि भगवाना टोटे चार चार कराईआ। करे परवाना टुकड़े चार, चार यारी बन्द तुड़ाया। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण वेखे एका वार, चारे कुण्टां एका वार वखाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग करे पार, कल काती नाउँ धराया। चारे वरनां करे ख्वार, चारे खाणी फोल फोलाया। चारे बाणी मारे मार, चारे यार दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क सुणाया। चारे टुक्कड़े वण्डे वण्ड, वण्डणहार आप निरँकारा। मुहम्मद परवाना करया खण्ड खण्ड, खण्डा फड़ तेज़ कटारा। प्रगट होया सूरा सरबंग, निरगुण रूप अपर अपारा। अश्व घोड़े कसे तंग, बणया शहिनशाह सच्चा अस्वारा। दो जहान वजाए मृदंग, चौदां तबक दए हुलारा। ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघ, त्रैभवन धनी पावे सारा। लक्ख चुरासी वेखे बन्द बन्द, आपे खोल्ह बन्द किवाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारे जुगा करे खेल न्यारा। चारे टुकड़े चार धार, चार चार धार विच समाईआ। चौथा जुग कर ख्वार, कलिजुग मेटे कूड़ी छाहीआ। चारों कुण्ट मारे मार, बचया कोए रहिण ना पाईआ। उम्मत रोवे ज़ारो ज़ार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। अल्ला राणी खुल्हड़े केस आए दुआर, आपणी हथ्थीं मैहन्दी लाल रंगाईआ। अमाम अमामां तेरा करां प्यार, तेरी सूरत तेरा सति ईमान, मेरी शरअ करे कुड़माईआ। मेरी शरअ होई दुकान, नाल मिले पंज शैतान, मेरा नाता तुट्टा जगत जहान, कुरान हदीस ना कोए रखाईआ। मेरा काअबा होया वैरान, मिले मेल ना हाणी हाण, मैं निमाणी बाल अञ्याण, आपणी सुध ना जाणा राईआ। तूं मीआं चतुर सुजान, एका देणा साचा दान, बख्शीं चरन कँवल ध्यान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। मैं बाली बुध नौजवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। अल्ला राणी मंगे वर, नेत्र नैण उठाया। पुरख अबिनाशी किरपा कर, मेरा पर्दा

दे चुकाया। चौदां सदीआं लभ्भणी रही घर घर, तेरा जल्वा नज़र ना आया। उच्च महल्ले वेखां खड़, चारों कुण्ट फोल फोलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मुहम्मद आशा रही कुरलाया। मुहम्मद आसा करे पुकार, खुल्ह्ड़े केस रही कुरलाईआ। मैनूं भुलया मेरा यार, यारी यार ना तोड़ निभाईआ। रहिमत दिसी ना सच दरबार, रहीम सेव ना कोए कमाईआ। ग़फ्लत आई विच संसार, उल्फ़त संग ना कोए निभाईआ। मेरी अल्फ़ी काला तन शंगार, तेरा रंग ना कोए चढ़ाईआ। दो हरफ़ी करनी गल्ल एका वार, यक्कतरफ़ी डिगरी दए कराईआ। मैं तरसी तेरे दरस दीदार, तेरी दीद मेरी ईद एका चन्द नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे रही कुरलाईआ। वर देवे हक जनाब, बेऐब परवरदिगारा। तेरे मुख तों लाहे नकाब, पर्दानशीं होए परवरदिगारा। चरन घोड़े दए रकाब, अश्व चढ़े शाहसवारा। दो जहानां वेखे हयात आब, आबे हयात दए हुलारा। तेरा मेला करे नवाब, शाह नवाब सच्ची सरकारा। तेरा अक्खर वेखे सुणे फ़रयाद, खोल्हे बन्द किवाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप निरँकारा। हरि निरँकार खेल खिलावणा, भुल रहे ना राईआ। अल्ला राणी पर्दा लाहवणा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। मीआं बीवी संग निभावणा, एका सेज करे रुशनाईआ। धुर फ़रमाना इक्क समझावणा, भुल कदे ना जाईआ। मुहम्मद लेखा पार करावणा, चार यारी दए मिटाईआ। उम्मत उम्मती डेरा ढाहवणा, सच सलाम दए वड्याईआ। इक्क कलाम हरि पढ़ावणा, कायनात वेखे थाउँ थाँईंआ। आलम उल्मा आप अख्वावणा, आलमीन करे सच्ची शहिनशाहीआ। भुल सवाब ना कोए रखावणा, एका रंग रंगाईआ। तेरा काअबा आपणे चरनां हेठ दबावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा भेव दए मिटाईआ। अल्ला राणी बण निमाणी, आई दर दरबार। ख़ुदावंद लभ्भे एका हाणी, मिले मेल साचा यार। चौदां तबक किसे हथ्थ ना आए ठंडा पाणी, चारों कुण्ट तपे अंग्यार। मैं लेखा तेरा भुलया गुण निधानी, तेरा अक्खर अलिफ़ ना सकी विचार। निरगुण सरगुण खेल दो जहानी, तूं दाता बेऐब परवरदिगार। तेरा कलमा तीर निशानी, बिरहों मारे मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा आप संभाल। मैं लेखा घलया तेरे दर, दर वड्डा वड वड्याईआ। तूं साहिब सुल्तान साचा नर, आदि जुगादि तेरी शहिनशाहीआ। तूं ग़रीब निमाणयां पल्लू लएँ फड़, जो आयण सीस झुकाईआ। जो दर तेरे ते जाए मर, मर जीवत लएँ जिवाईआ। मैं लोकमात आई हर, आपणी पति गंवाईआ। मैनूं मिल्या ना कोए नर, जो मेरा जोबन लए हंढाईआ। मेरी उम्मत मेरे कोलों रही डर, मेरा संग ना कोए रखाईआ। मैं तेरा कलमा बैठी पढ़, मेरा कलमा भुल्ली लोकाईआ। मैं वास्ता पावां घर घर, उच्ची कूक

कूक सुणाईआ। मेरा माहीआ आया लोकमात जोत धर, जिस दी वज्जदी रहे वधाईआ। जिस ने घाड़न दिता घड़, सो अन्तिम भन्न वखाईआ। मैं मुल्ला शेख़ मुसायक दस्तगीर तेरे दुआरे ल्यावां फड़ फड़, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ निमाणी बैठी सीस झुकाईआ। होए निमाणी मंगे मंग, दोए जोड़ करे निमस्कारा। पुरख अबिनाशी करना संग, सगला संग तेरा प्यारा। मैं तेरा दुआरा आई लँघ, बणी सच भिखारा। मेरी झूठी ढाहीं कंध, एका नूर करीं उज्यारा। मेरा मुकाईं अगला पन्ध, पिच्छे रहे ना कोए किनारा। मैनूं सुणाईं आपणा छन्द, अनहद नाद सच्ची धुन्कारा। मेरा ख़ुशी कराउणा बन्द बन्द, मेरे सच्चे परवरदिगारा। मैं पल्ले बन्न्हां गंढ, तेरा पल्लू सिरजणहारा। मैं दुहागण फिरां नंग, चारों कुण्ट तेरा मारां नाअरा। बिन तेरे होई रंड, ना कोई मिले मीत मुरारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, पुरख अबिनाशी हो त्यारा। दर घर देवे सच्ची वथ्थ, अल्ला राणी आप समझाईआ। तेरी चौदां सदीआं सुणदा रिहा गाथ, बण बण सच्चा माहीआ। पीर पैग़म्बर औलीआ शेख़ पढ़ौदी रही बात, पढ़ पढ़ तेरा किसे ना निभाया साथा, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। चारों कुण्ट ना मुक्कीं वाटा, आपणा पन्ध ना ल्या मुकाईआ। आबे हयात दिसे ना किसे बाटा, ख़ाली कन्नी रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा सजदा ना दिसे किसे काअबा, तेरा सीस ना कोए झुकाईआ। तेरा काअबा नज़र ना आए, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। तेरा राजा ना कोए वखाए, बैठा मुख भवाया। तेरा नवाबा ना फेरा पाए, दूर दुराडा डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साचा हुक्म आप सुणाया। अल्ला मीआं इलाही नूर, आलमगीर दया कमाइंदा। तूं वैरागण विछड़ी हूर, हज़रत आपणी दया कमाइंदा। तेरा वेखे भरया पूर, चारों कुण्ट फोल फोलाइंदा। तेरा धन्न वेखे कूड़, कूड़ी गंढु इक्क बनाइंदा। तेरी उम्मत होई मूढ़, मेरा नाम ना कोए जणाइंदा। तेरीआं हड्डीआं होईआं चूर चूर, तुट्टी हड्डी ना कोए बंधाइंदा। तेरा जल्वा होया नूर नूर, नूर नुराना चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। तेरा मुहम्मद नौ गज़ बैठा रिहा झूर, अग्गे आउण कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप सुणाइंदा। अल्ला राणी मन्न लै कहिणा, हरि साचा आप सुणाईआ। सदी चौदां अन्त ना रहिणा, देवे ख़ाक उडाईआ। गोबिन्द दरस करे नैणां, लोकमात आया फेरा पाईआ। पा गलवकड़ी पाए झोली लहिणा, गल पल्लू एका पाईआ। तेरा भाणा सहिणा पैणा, तेरे भाणे सर्ब लोकाईआ। मेरा चुक्क लहिणा देणा, देणा अवर रहे ना राईआ। वड्डे वीर छोटीआं भैणां, कर कर ख़ुशीआं पौंदे गहिणा, कन्त सुहाग लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

मति रिहा समझाईआ। सुणी मति सुणाई हरि, सुमत्त इक्क वड्यांअदा। चल चल आउण दुआरे दर, दर साचा इक्क सुहाइंदा। दूर दुराडी रही खड़, नेत्र नैण शरमाइंदा। जिस दे सुत मैं धरनी अंदर दिते दब्ब, तिस अग्गे मेरा मुख ना सोभा पाइंदा। मैं भुल्ली मेरे उत्ते जे किरपा देवे कर, गुण अवगुण ना कोए रखाइंदा। मैं सुणया सभ दा सांझा यार, हरख सोग ना कोए रखाइंदा। जो सरन सरनाई जाए पढ़, पतित पापी पार कराइंदा। जो गुरदुआर दा लड़ लए फड़, फड़या पल्लू ना फेर छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खिलाइंदा। दर दुआर आण खलोती, मुहम्मद ख़्वाहश अल्ला राणी। दूर बैठी रही चुप चुपीती, नेत्र नैण नीर वहाए ठंडा पाणी। कलिजुग वेखे अन्तिम रीती, नव खण्ड पृथ्मी औध बीती, लक्ख चुरासी होई बेप्राणी। ना कोई मन्दिर ना मसीती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल गुण निधानी। गुण निधान खेल खिलाइंदा, बेऐब परवरदिगार। मुकामे हक बैठा वेख वखाइंदा, हक हकीकत कर विचार। साचा सालस आप अख्वाइंदा, करे खेल अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए मेला मेलणहार। मेल मिलाए दर दरवाजे, दीनां नाथ दया कमाईआ। फड़ फड़ साजण आपे साजे, साजणहार नज़र ना आईआ। चौधवीं सदी रचया काजे, करनी करता शहिनशाह वडी वड्याईआ। अश्व घोड़े चढ़या ताजे, दुलदुल दो जहानां लोकमात जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक्क लगाईआ। सच दरबारा हरि लगाया, जगत अदालत रिहा कमा। गोबिन्द सूरा नाल मिलाया, पुरख अबिनाशी होए सहा। साचा ताज सीस टिकाया, निरगुण खेल करे सच्चा शहिनशाह। निरगुण आसा निरगुण तृष्ना निरगुण मुहम्मद निरगुण निरगुण आपणे दर लए बुला, आप आपणा हुक्म सुणाया। निरगुण गोबिन्द हाज़र हज़ूरा, तुरिया राग दए सुणा। निरगुण जोत नूरो नूरा, निरगुण निरवैर आसा मनसा पूरा साचा नाता लए जुड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाह। आई दर बण निमाणी, गल पलड़ू एका पाईआ। मैं सुणी तेरी अकथ कहाणी, तेरी महिमा कथन ना जाईआ। तूं जुग जुग दे तिहायां देवें आपणा ठंडा अमृत पाणी, लग्गी प्यास देवें बुझाईआ। मैं सुणया तूं सुणाएँ आपणी बाणी, बाण निराला तीर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचे दर दर विछड़े आप मिलाईआ। गोबिन्द सूरा उठया, छैल छबीला नौजवान। दीनां नाथ आपे तुट्ठया, दर घर साचे हो प्रधान। मुहम्मद तेरा रंग मेरा प्रेम कुठया, मेरा प्रेम करे तेरा ज़वाल। किसे दिसे ना पाणी हुक्कया, चारों कुण्ट होए बेहाल। तेरा साहिब तेरे नालों रुस्सया, तेरा जल्वा ना दिसे जलाल। तेरा लेखा कलिजुग अन्तिम जिस ने पुच्छया, दर घर बैठ सच्ची धर्मसाल। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेमिसाल। मुहम्मद उठ करे पुकार, गुर गोबिन्द इक्क सुणाईआ। मेरा लहिणा ना मूल चितार, मेरी उम्मत मेरे कहिणे विच रही ना राईआ। मैं सभ नूं दस्सया सभ दा इक्को सांझा यार, एका नूर सर्ब ख़ुदाईआ। मेरे मुर्शद मेरे नाल करया प्यार, मेरे मुरीद मेरा राह गए भुलाईआ। तेरे नाल जो करया जगत विहार, मेरी उम्मत मस्तक लाई काली शाहीआ। तेरे निक्के बाले जो नीहां दिते उसार, मेरी जड़ रहे उखड़ाईआ। जो लँघे तलवार दी धार, मेरा सीस धड़ रहे कटाईआ। मेरा नाता तुट्टा सांझे यार, ना देवे कोए मिलाईआ। मैं फिर फिर थक्कया जंगल जूह उजाड़ पहाड, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। अग्नी तपे लग्गी हाढ़, सांत सति ना कोए कराईआ। धुर फ़रमाना दिता मेरे परवरदिगार, पाक सदा इक्क सुणाईआ। जा के मिल गोबिन्द यार, तेरे उत्ते रहिमत दए कमाईआ। तेरा परवाना पाड़ के टुकड़े करया चार, दूजी वार ना कोए जुड़ाईआ। गोबिन्द वारे सुत दुलार, तेरा लेखा रहे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भरम भुलेखा दए कढ्ढाईआ। गोबिन्द साचा दस्सया, आपणा भेव खुल्हा। चारों कुण्ट रैण अन्धेरी रुस्सया, मेरा चन्द चौधवीं गया मुख छुपा। तुध बिन साचा मार्ग किसे ना दस्सया, कलमा हरि इक्क पढ़ा। हउँ दर तेरे ते ढट्ठया, मंगी अन्त पनाह। मेरा लेखा गया फट्टया, इक्क वारी लै बचा। चौदां सदीआं लाहा कुझ ना खट्टया, आपणा मूल बैठा गंवा। मेरयां यारां मेरा घर पुट्टया, मंगी सच्ची ना सच दुआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाया तेरा घर, तेरे दर तों होवां फ़िदा। मिटे फ़ितरत, फ़रेब मेरा रहिण ना पाईआ। मेरी अन्त मिटा दे हसरत, हज़रत आया दर सीस झुकाईआ। तूं तुट्टा मेलें विछड़त, विछड़े लएँ मिलाईआ। मैं चोटी चढ़ के सिखर, अन्तिम डिगा मूंह दे भार, ना सके कोई उठाईआ। मैं कर कर थक्का फ़िकर, मेरा सहिंसा ना कोए चुकाईआ। मेरे ख़ुदा मेरा विछोड़ा मैनूं लगाया हिजर, मेरी हवस ना कोए मिटाईआ। मैं फड़ फड़ उठाया ख़्वाज़ा ख़िज़र, जल जल फेरा पाईआ। मैनूं कोई ना आया नज़र, जो दस्तगीर आपणा दस्त दए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मेला रिहा मिलाईआ। मैं सुणया तूं करदा मेला, मेला मेलणहार। मैं सुणया तूं रूप रखाए गुर चेला, चेला गुर रूप अपर अपार। मैं सुणया तूं सज्जण सुहेला, ऊँचां नीचां करे प्यार। मैं सुणया तूं वसें इक्क इकेला, तेरा दर ठांडा दरबार। मैं सुणया तूं जाणें आपणा वेला, दूजा वक्त ना सके कोए विचार। मैं सुणया तूं आपणा अचरज खेल खेला, लेखा लिख ना सके कोए अञ्जील कुरान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, मेरा साबत रक्ख ईमान। साबत रक्ख ईमान ईमाना, इबनुलवक्त आप जणाईआ। मैं पढ़ पढ़ थक्का हदीस कुराना, कुरान हदीस सच सुणाईआ।

चारों कुण्ट ना दिसे कोए निशाना, निगहबान ना कोए अख्वाईआ। ना कोई मर्द ना कोई मरदाना, बेवा वेखे सर्ब लोकाईआ। ना कोई दरदी दर करे परवाना, दहि दिशा ना कोए सहाईआ। मेरी बरदी नार रकाना, अल्ला राणी फिर फिर तेरा राह तकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। गोबिन्द सूरा हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा । आपणा तरकश खिच्च कमान, साचा चिल्ला हथ्थ उठाइंदा। मेरा साहिब श्री भगवान, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। जिस दा झुलदा रहे निशान, आदि जुगादि ना कोए मिटाइंदा। जिस दी मन्नदे रहे आण, सो साहिब हुक्म सुणाइंदा। तेरा परवाना करे परवान, गोबिन्द तेरा संग निभाइंदा। तेरे चार टुकड़े वेखे आण, चारों कुण्ट फोल फोलाइंदा। तेरा इक्क बणाए कब्रिस्तान, तेरी उम्मत एका वार दबाइंदा। उप्पर रक्खे आपणा ईमान, आलमगीर आप हो जाइंदा। फेर उठ ना सके कोई शैतान, शरअ संगल ना कोए लटकाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी देवे इक्क ज्ञान, लक्ख चुरासी आप समझाइंदा। गोबिन्द सूरा करे परवान, सच परवाना वेख वखाइंदा। दो सौ छपंजवां दिन तेरा लेखा विच जहान, अन्त कुरबानी कुरबान कुरबान कुरबान आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खिलाइंदा। मेरी कुरबानी लए कुरबान, करबला वेखे बेपरवाहीआ। आपणी कुदरत करे पछाण, मेरा मीआं सच्चा शहिनशाहीआ। मेरी ग़ुरबत मेटे निशान, ग़फ्लत ग़ाफ़िल दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाउणा, कलिजुग अन्तिम वार। नव नव चार चौकड़ी पन्ध चुकाउणा, पुरख अबिनाशी हो त्यार। विष्नूं एका मेल मिलाउणा, ब्रह्मे करे पार। शंकर तेरा तख्त उलटाउणा, आप आपणा दए हुलार। करोड़ तेतीसा पन्ध मुकाउणा, सुरपति राजा इन्द कर ख्वार। तेई अवतारां वक्त चुकाउणा, करे खेल अपर अपार। भगत अठारां गोद बहाउणा, एका वारी सुरत संभाल। गुर गुर दस जोत जगाउणा, जोती जोत जोत उज्यार। ईसा आसा पूर कराउणा, प्रभ साचा हो त्यार। मूसा तेरा नूर डगमगाउणा, जल्वा वखाए आप करतार। मुहम्मद तेरा मोह तुड़ाउणा, नाता तुट्टे चार यार। चार वेद तेरा मोह चुकाउणा, कोई पढ़े ना करे विचार। पुराण अठारां लेख चुकाउणा, वेद व्यास ना कोए लिखार। गीता ज्ञान ज्ञान विच जणाउणा, लिखण पढ़न ना कोए आधार। अञ्जील कुराना पार कराउणा, तीस बतीस ना कोए जैकार। खाणी बाणी लेखे लाउणा, लेखा जाणे आप करतार। चार वरनां डेरा ढाउणा, बरन अठारां मारे मार। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मेट मिटाउणा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना कोए विचार। ज़ात पात कोए रहिण ना पाउणा, दीन मज़्ब ना कोए आधार। निउँ निउँ सजदा ना किसे कराउणा, पंज वक्त ना निमाज़ गुज़ार। राधा कृष्न ना किसे ध्याउणा, चतुर्भुज ना कोए प्यार। आदि

८५७

शक्ति ना कोए मनाउणा, मठ शिवदुआला ना कोए आधार। मस्जिद गुरदुआर ना कोई नज़री आउणा, चारों कुण्ट वेखे करे खेल आप सिरजणहार। लक्ख चुरासी एका रंग रंगाउणा, एका ब्रह्म दए आधार। जूठा झूठा भाण्डा भन्न वखाउणा, सच सुच्च करे प्यार। कूड़ी क्रिया मेट मिटाउणा, नाता तोड़ सर्ब संसार। माया ममता फंद कटाउणा, त्रैगुण तोड़े आप जंजाल। साचा हुक्म आप सुणाउणा, पारब्रह्म प्रभ पुरख अकाल। सभ दा इष्ट इक्क अख्वाउणा, दूजा इष्ट ना कोए जहान। जन भगतां दृष्टी आप वखाउणा, जल्वा नूर नूर जुम्माल। चारों कुण्ट नज़री आउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेमिसाल। बेमिसाल खेल खिलावणा, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण आपणा नूर डगमगावणा, एकँकार वज्जे वधाईआ। आदि निरँजण साचे दर सोभा पावणा, अबिनाशी करता वेख वखाईआ। श्री भगवान मंगल गावणा, पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। ब्रह्म लेखा आपणे हथ्थ रखावणा, नौ नौ वेखे थाउँ थाँईआ। पुरीआं लोआं फेरा पावणा, रवि ससि किरन जोत रुशनाईआ। मंडल मण्डप डेरा ढावणा, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। निरगुण जोती जोत जगावणा, दीवा बाती ना कोए रखाईआ। निहकलंका जामा पावणा, गुर गोबिन्द मेल मिलाईआ। सम्बल नगरी धाम सुहावणा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। साचा ढोला एका गावणा, चारों कुण्ट करे शनवाईआ। आपणा लेखा फेर प्रगटावणा, पिछला लेखा दए मुकाईआ। दस दस्मेशा वेख वखावणा, दहि दिशा फोल फोलाईआ। नर नरेशा नाउँ धरावणा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। शाह सुल्तानां तख्तों लाहवणा, भुल रहे ना राईआ। वाली हिन्द आप जगावणा, सोया पूत आप उठाईआ। फड़ फड़ बाहों पार करावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी कराया पार किनारा, पारब्रह्म बेअन्त। कलिजुग अन्तिम आए हारा, चार कुण्ट कोई ना दिसे साचा सन्त। लक्ख चुरासी होई विभचारा, हरि हरि हंढाए ना कोए कन्त। दीपक जोत ना कोए उज्यारा, ना कोई मणीआ ना कोई मंत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप बेअन्त। बेअन्त हरि बेपरवाह, आपणा खेल खिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे थाउँ थाँ, सत्तां दीपां फेरा पाईआ। वरन बरन रहे कुरला, ज़ात पात पई लड़ाईआ। किसे ना दिसे साचा थाँ, थान थनंतर ना कोए सुहाईआ। अठसठ तारीआं रहे ला, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। जमना सुरस्ती बैठे फेरा पा, पान्धी पन्ध ना कोए मुकाईआ। मन्दिर मस्जिद रहे बणा, हरि मन्दिर नज़र किसे ना आईआ। पढ़ पढ़ पुस्तक वेला रहे गंवा, आत्म परमात्म मेल ना कोई मिलाईआ। आपणा मन्दिर ना सके खुल्ला, दूसर घर करन जणाईआ। आपणा पती ना सके मना, दूसरयां दा विवाह रहे कराईआ। पढ़ पढ़ चौथी लांव रहे

सुणा, अबिनाशी करता हथ्थ किसे ना आईआ। जिस मिले ना बेपरवाह, तिस नकाह पूरा ना कोए चढ़ाईआ। ज़िमीं अस्मान मिले ना थाँ, दोज़ख़ां विच भवाईआ। गुर पीर कोई ना बणे ग्वाह, पीर दस्तगीर ना देवे कोए वड्याईआ। जिस भुलया इक्क ख़ुदा, ख़ालक वेखे सर्ब लोकाईआ। इक्क इकल्ला होया जुदा, लक्ख चुरासी कम्म किसे ना आईआ। कलिजुग अन्तिम नाद रिहा वजा, दो जहानां रिहा उठाईआ। आपणा साजण आपे साज आपणा खेल रिहा खला, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम फेरा पा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। चार जुग दा लहिणा दए मुका, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मूल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, पुरख बिधाता हर रंग राता, निश्अक्खर करे पढ़ाईआ। निश्अक्खर हरि हरि पढ़या, आदि जुगादी साची कार। सचखण्ड दुआरे आपे चढ़या, शाह पातशाह सच्ची सरकार। थिर घर आपे वड़या, करे खेल अगम्म अपार। लक्ख चुरासी घाड़न घड़या, घट घट जोत करे उज्यार। गुर अवतारां शब्द देवे वरया, शब्द स्नेहुड़ा साची कार। भगत भगवन्त वसाए आपणे दरया, करे सच विहार। आपे पुरख आपे नारी नरया, नर नरायण सच्ची सरकार। अग्नी हवन कदे ना सड़या, मरे ना जम्मे विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा दए उतार। कलिजुग लहिणा जाए मुक, सो पुरख निरजंण आप मुकाईआ। अन्तिम वेला गया ढुक, चारों कुण्ट पई दुहाईआ। सिँघ शेर रिहा बुक्क, एका नाअरा लाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कोई ना सके लुक, राज राजानां शाह सुल्तानां देवे ख़ाक मिलाईआ। अन्तिम सभ दे मूंह विच पए थुक्क, जो बैठे हरि भुलाईआ। धर्म राए गोदी लए चुक्क, अठाई कुण्डां वण्ड वंडाईआ। किसे मां ना लभ्भे आपणा पुत्त, नारी कन्त ना कोए हंढाईआ। कलिजुग जीवां बूटा रिहा सुक्क, गोबिन्द गुर अमृत जाम ना किसे प्याईआ।

★ पहली सावण २०१८ बिक्रमी दरबार विच दया होई जेठूवाल ★

सति पुरख निरँजण नौजवान, आदि अन्त सोभा पाइंदा। सति सरूपी सति निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। शाहो भूप बण राज राजान, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। नाद अनादी धुर फ़रमान, बोध अगाधी आप अलाइंदा। खेलणहारा खेले खेल महान, भेव अभेद आप रखाइंदा। जोती जोत नूर दो जहान, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आप खिलाइंदा। साचा खेल हरि निरँकारा, आदि जुगादि कराईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शहिनशाह आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, सचखण्ड

वज्जे वधाईआ। थिर घर खोल्हे इक्क किवाड़ा, अगम्म अगम्मड़ा अलख अलखना आपणा आसण लाईआ। एका हुक्म इक्क वरतारा, हुक्मी हुक्म इक्क फिराईआ। एका नाद एका शब्द धुन्कारा, इक्क जैकारा सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेस नर नरेश, एका एक आप प्रगटाईआ। सच संदेसा श्री भगवान, दर घर साचे आप सुणाइंदा। तख्त निवासी हो मेहरवान, आप आपणी दया कमाइंदा। एका दाता दो जहान, दोए दोए आपणा रूप धराइंदा। जुगा जुगन्तर खेल महान, जुग करता आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त साची कार आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण साची कारा, करनी करता आप कमाईआ। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, आपणा बल आप धराईआ। एकँकार कर पसारा, आपणी महिमा आप जणाईआ। आदि निरँजण जोती धारा, नूरो नूर डगमगाईआ। अबिनाशी करता वसे धाम न्यारा, निहचल धाम वड वड्याईआ। श्री भगवान सांझा यारा, साख्यात खेल खिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, आपणा घाड़न आप घड़ाईआ। आपणी इच्छया कर विचारा, साची भिच्छया लए उपाईआ। बाढी बण हरि तरखाणा, साची सेवा सेव कमाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड बणाए सच दुआरा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। एका जोत नूर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ । एका तख्त कर प्यारा, तख्त निवासी आप सुहाईआ। इक्क सिँघासण दए सहारा, पुरख अबिनाशन आसण लाईआ। एका ताज सीस दस्तारा, ताजन ताज वड वड्याईआ। एका राग धुंन जैकारा, अगम्म अगम्मड़ा आप सुणाईआ। आपणा कर सति पसारा, निरगुण निरवैर वेख वखाईआ। अकाल मूर्त कर पसारा, अजूनी रहत वेस धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आपणा पर्दा आप उठाए, सो पुरख निरँजण हरि निरँकारा। सचखण्ड निवासी दर घर साचे सोभा पाए, शाहो भूप बण सिक्दारा। हुक्मी हुक्म इक्क वरताए, बेपरवाह बेऐब परवरदिगारा। आपणा मन्दिर आप सुहाए, आपे होए वेखणहारा। दूसर ना कोई संग रलाए, ना कोई दिसे मीत मुरारा। आपणी करनी आप कराए, हरि करता करनेहारा। जोती बाती डगमगाए, कँवल कँवल नैण मुँधारा। साची ताकी आप खुल्हाए, खोल्हे बन्द किवाड़ा। घर विच घर लए प्रगटाए, करे खेल अपर अपारा। थिर घर आपणा रूप वखाए चरन कँवल कँवल सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपे जाणे आपणी कारा। आदि जुगादी कार कमाइंदा, करता पुरख अगम्म। जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा, अलख अलखणा हरि अगम्म। शब्द शब्दी रूप प्रगटाइंदा, जोती जाता जोती जन। करनी करता आप कराइंदा, आप आपणा बेड़ा बन्न्ह। सचखण्ड साचा आप सुहाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे अंदर आपे जाए मन्न।

हरि जगदीसा खेल अपारा, निरगुण निरवैर आप कराईआ। जोती जोत हो उज्यारा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। नादी नाद नाद जैकारा, बोध अगाध शब्द पढ़ाईआ। दो जहानां पावे सारा, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां खोल्ह किवाड़ा, त्रैभवन वेस वटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। एका हुक्म हरि वरतारा, धुर दरबारा रिहा सुणाईआ। करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणे हथ्थ वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उठाया, पुरख अबिनाशी दया कमा। त्रैगुण मेला मेल मिलाया, पंज तत्त झोली पा। तेई अवतार लए बुलाया, शब्द संदेसा इक्क सुणा। भगत अठारां लए उठाया, नाम हलूणा एका ला। दस दस मेला आप कराया, आप आपणा पर्दा चुका। एका रूप सर्ब दरसाया, निरगुण जोत जोत रुशना। निहकलंका बण के आया, शब्दी डंका इक्क वजा। मात पित भैण भाई ना कोए रखाया, साक सज्जण सैण गया तजा। आपणी अग्नी आपे सड़ के आया, सरगुण रूप वटा। सिँघ शेर शेर बण के आया, शहिनशाह सच्चा पातशाह। लक्ख चुरासी वेख वखाया, जीव जंत कोई भुल्ले ना। हर घट अंदर डेरा लाया, लक्ख चुरासी दिसे ना। धुर फ़रमाना रिहा सुणाया, शब्द अगम्म ढोला गा। राज राजानां रिहा मिटाया, तख्त निवासी तख्तों देवे लाह। सीस ताज ना कोए टिकाया, चारों कुण्ट वेखे थाउँ थाँ। नव सत आपणा हुक्म फिराया, नव नौ गेड़ा आप भवा। एका खण्डा नाम चमकाया, दो जहानां कर रुशना। सुत दुलारा मेल मिलाया, गोबिन्द मेला सहिज सुभा। गुर चेला एका रंग वखाया, रूप रंग आपणा आप गवा। साचे अश्व तंग कसाया, सोलां कलीआं आसण पा। सोलां इच्छया पूर कराया, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। धुर दा लेखा लेख वखाया, वेखणहारा बण मलाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अथाह। अगम्म अथाह पुरख अकाला, अकल कल वडी वड्याईआ। सचखण्ड बणाए सच्ची धर्मसाला, सम्बल आपणा आसण लाईआ। आपणे हथ्थ रक्खे काल महाकाला, हुक्मी हुक्म दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेलण आया, खेल अगम्मड़ी कार। जुग चौकड़ी पार करावण आया, नव नौ लेखा दए उतार। विष्न ब्रह्मा शिव आपणे संग मिलाया, करोड़ तेतीसा दए आधार। गुर अवतारां लए उठाया, शब्द अगम्मी कर गुफ्तार। निहकर्मी आपणा कर्म कमाया, आदि जुगादी एकँकार। धुर दी वादी बाण रखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त बैठ सच्चे दरबार। सच दरबार सुहञ्जणा, सोभावन्त निरँकार। जगे जोत आदि निरँजणा, सचखण्ड निवासी करे उज्यार। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजना, दीन दुनी पावे सार। सिँघ रूप हो हो गज्जणा, शेर शेर मारे भबकार। राज

राजानां उठ उठ भज्जणा, चारों कुण्ट होए ख्वार। लक्ख चुरासी पर्दा किसे ना कज्जणा, नव नौ रोवे ज़ारो ज़ार। गुरमुख विरले बह बह सच दुआरे सजणा, जिस मिल्या आप करतार। दो जहानां पर्दा कज्जणा, बण सतिगुर मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए सच विहार। सच विहारा श्री भगवान, आपणा आप कराईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरा वेख निशान, लोकमात फेरा पाईआ। दो जहानां करे ध्यान, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। लेखा हरि भगवन्त, श्री भगवान आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी करे अन्त, आपणा खेल आप खिलाइंदा। जुग जुग चलाए साचा मंत, सतिजुग त्रेता द्वापर रूप वटाइंदा। कलिजुग महिमा जणाए अगणत, चार वेद भेव ना आइंदा। चारे बाणी चारे खाणी होई भस्मंत, चारों कुण्ट सर्ब कुरलाइंदा। चार वरन मिले ना हरि हरि कन्त, अठारां बरन नेत्र रो रो नीर वहाइंदा। काया चोली चढ़े ना रंग बसन्त, गोबिन्द दरस ना किसे वखाइंदा। रसना जिहवा ना मणीआ मंत, मन का मणका ना कोए भवाइंदा। गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ रूप ना कोए समझाइंदा। मिल्या मेल ना साची संगत, दीन मज़्ब वण्ड वंडाइंदा। पाए सार ना नानक अंगद, अंगीकार ना कोए वखाइंदा। माणस जन्म होया भंगत, कलिजुग जीव सर्ब कुरलाइंदा। मन्दिर मस्जिद मठ होए मंगत, शिवदुआला धीर ना कोए धराइंदा। साध सन्त होए नंगत, धीरज जत सति टुट्टा जत, सति सन्तोख ना कोए बणाइंदा। गुर अवतार ना कोए मन्नत, निर्भय भय ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप वटाइंदा। रूप वटाए ओंकारा, एकँकार आपणी खेल खिलाईआ। विष्नूं देवे इक्क हुलारा, विश्व सोया रहिण ना पाईआ। तेरा दिसे ना सच भण्डारा, साची वस्त ना कोए वरताईआ। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म ना होए उज्यारा, जगत अन्धेरा रिहा छाईआ। शंकर तेरी त्रिसूल करे ना सच विहारा, भय जंत ना कोए जणाईआ। चित्रगुप्त तेरा लेख ना मारे मारा, राए धर्म तेरी नजर ना कोए सज़ाईआ। त्रैगुण माया तेरा सति ना दिसे कोए पसारा, रजो रंग ना कोए वखाईआ । तमो रूप होया नारी नारा, धीरज धीर ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार ना कोए सहारा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। भगत भगवन्त ना कोए जैकारा, भगवन मिले ना साचा माहीआ। चारों कुण्ट अन्ध अन्धयारा, नौ खण्ड पृथ्मी अन्धेरा छाईआ। चार वरन लग्गा अखाड़ा, दीन मज़्ब पई लड़ाईआ। साचा घर ना किसे विचारा, मिले मेल ना साचे माहीआ। उच्ची कूक कूक जगत जीव पुकारा, सच आवाज़ ना कोए सुणाईआ। कोई विष्न ब्रह्मा शिव मंगे भण्डारा, कोई आदि शक्ति मनाईआ। कोई चतुर्भुज लए सहारा, कोई शंकर सीस निवाईआ। कोई राम करे निमस्कारा, कोई कान्हा कृष्न दए वड्याईआ। कोई ईसा मूसा करे प्यारा, कोई संग मुहम्मद

रिहा निभाईआ। कोई नानक निरगुण करे विचारा, कोई गोबिन्द रिहा मनाईआ। हरि का रूप ना किसे विचारा, पुरख अकाल ना नज़री आईआ। चौथे जुग आई हारा, बेड़ा बन्नू ना कोए तराईआ। पुरख अबिनाशी हो त्यारा, लोकमात वेस वटाईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, एका गुण गया समझाईआ। गोबिन्द सूरा बण वरतारा, एका वस्त गया वरताईआ। नानक सरगुण नानक निरगुण कर पुकारा, एका आवाज़ सुणाईआ। कलिजुग आवे अन्तिम वारा, पारब्रह्म प्रभ होए सहाईआ। निहकलंक लए अवतारा, आपणा बल आप धराईआ। सम्बल नगर वसे धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ सेज हंढाईआ। गोबिन्द करे मेल अपारा, सुत दुलारा गले लगाईआ। पुरख अकाला बोल जैकारा, ब्रह्म पारब्रह्म समझाईआ। मुकामे हक सांझा यारा, एका नाअरा दए लगाईआ। चौदां तबकां वेखे इक्क अखाड़ा, चौदां लोक दए उठाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वसे बाहरा, रजो तमो सतो ना अंग लगाईआ। एका जोत नूर उज्यारा, नूर नुराना सच्चा शहिनशाहीआ। एका हुक्म सच्चा वरतारा, एका नाद अनाद सुणाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका आसण सोभा पाईआ। एका गुर इक्क अवतारा, एका आपणा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नव नौ चार पार कराईआ। नव नौ चार उतरे पार, हरि लेखा लेख मुकाइंदा। निरगुण निरवैर प्रगट होवे चवीआं अवतार, तेईआं आपणा हुक्म सुणाइंदा। मातलोक बणाए सचखण्ड सच्चा दुआर, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। चार जुग दी पुछे विसथार, कीता कौल भुल ना जाइंदा। निरगुण जोत सर्ब पसार, पंज तत्त काया चोला सर्ब हंढाइंदा। घर घर अमृत ठंडा ठार, घर घर झिरना आप झिराइंदा। घर घर वेखे अन्ध अन्धयार, घर घर जोत प्रकाश कराइंदा। घर घर सच्चा कन्त भतार, घर घर मेली मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी करनी आप कराइंदा। आपणी करनी करने आया, करता पुरख करतारा। निहकर्मी निहकर्म कमाया, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण हो उज्यारा। आपणा लेखा आप मुकाया, लेखा वेखे फेर संसारा। गुर अवतार दर बहाया, पुच्छे वारो वारा। मेरा नाउँ सर्ब भुलाया, लोकमात कर पसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपारा। तेरा भुल्लया नाउँ, तेरी वड्याईआ। तूं वसे सभनी थाउँ, तेरी चतुराईआ। तूं करे सच न्याउँ, आदि जुगादि बेपरवाहीआ। तूं भुल्ले फड़ फड़ पाएँ राहों, हउँ बैठे सीस झुकाईआ। तूं मात पिता आदि जुगादि सिर देणी ठंडी छाउँ, समरथ तेरी वड्याईआ। तेरा हँस बणया काउँ, काग तेरी चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ बैठे सीस झुकाईआ। गुर अवतार सीस झुका, नेत्र नैण नीर वहाया। तूं दाता बेपरवाह, आदि जुगादि सच्चा शहिनशाहया। तेरी सेवा लोकमात आए

कमा, जो सुणया सो सुणाया। उच्ची कूक कूक तेरा नाउँ आए गा, तेरा मार्ग इक्क रखाया। तूं आपणा पर्दा दिता पा लक्ख चुरासी जीव भुलाया। तेरे अग्गे ज़ोर चले ना रा, सूरबीर तूं वड वड्याआ। जो हुक्म सो दे सज़ा, अभुल हउँ भुल भुल तेरा शुकर मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त बणना मलाह, तेरा बेड़ा तेरे अग्गे टिकाया। भगत अठारां कर पुकार, उच्ची कूक रहे सुणाईआ। आदि अन्त तूं करया साडे नाल प्यार, कलिजुग अन्त क्यों गया भुलाईआ। तूं सभ दा सांझा यार, तेरी ज़ात नज़र ना आईआ। तूं दो जहानां पावें सार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। तेरा दरस अगम्म अपार, तेरा जल्वा नूर इलाहीआ। तूं सिफ्त सालाहों वसें बाहर, तेरा गुण कोए कह ना सके राईआ। असां चुणया इक्क सरदार, तूं मन्न साडी अरज़ोईआ। कबीर जोलाहा तेरा तेरे नाल करे प्यार, ताणा पेटा तेरा रूप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम हो उज्यार, दर तेरे सीस झुकाईआ। तूं सज्जण मैंडा यार, हउँ तेरा राह तकाईआ। तेरा कन्ढा दिसे पार किनार, एका बेड़ा हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर बैठे सीस झुकाईआ। सुण कबीर हरि सुणाया, पुरख अगम्मा एका बोल। तेरा बस्त्र चीर मैं आपणा तन सजाया, तेरा नाम तोलया आपणे तोल। आपणा नीर तेरा सीर एका रंग रंगाया, साची वस्त अमोलक दिती इक्क अनमोल। तेरा ज़ंजीर कट्ट वखाया, गंगा निमाणी वजाए ढोल। तेरा पर्दा खोल्ह आपणा दरस दिखाया, चुक्या ओहला ओहल। तूं कलिजुग जीवां बह समझाया, कोए ना आया तेरे कोल। जिस नूं कहें राम मैं पाया, सो करन तैनूं मख़ौल। तेरा कीता कौल मैं पूरा करन आया, करां भार हौला धरती धौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, हरिजन साचे रहिणा अडोल। भगत सीस झुकाइंदा, दोए जोड़ निमस्कार। पिता पूत गले लगाइंदा, ना देवे दर दुरकार। चारों कुण्ट तू ही तू नज़री आइंदा, तुध बिन अवर ना कोए आधार। तेरा रंग मोहे भाइंदा, रंग दिसे ना विच संसार। तेरा संग सर्ब रखाइंदा, कर किरपा परवरदिगार। हउँ एका मंग मंगाइंदा, कलिजुग बख्श अन्तिम वार। भुक्खा नंगा तेरे दर सोभा पाइंदा, तेरा नाम इक्क आधार। तेरा शब्द मृदंग वजाइंदा, वाह वा बख्शी साची कार। तेरा विछोड़ा मोहे ना भाइंदा, मैं आया तेरे दरबार। सिँघ शेर तेरी ओट सर्ब तकाइंदा, तूं शाहां दा सरदार। चौदां लोक तेरे अग्गे सीस झुकाइंदा, ब्रह्मा विष्नूं शिव करन निमस्कार। गुर अवतार तेरा राह तकाइंदा, तेरा खेल अगम्म अपार। भेव कोए ना पाइंदा, तेरा खेल अपर अपार। तेरा रूप बिन तेरे भगतां नज़र किसे ना आइंदा, लक्ख चुरासी होया अन्ध अन्धयार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बणे चरन भिखार। पुरख अबिनाशी दया कमा,

दीनन आपणा राह जणाइंदा। मैं कलिजुग अन्तिम आया वेस वटा, निरगुण आपणा नाउँ रखाइंदा। सचखण्ड दुआरा आपणा आप सुहा, साचे तख्त सोभा पाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी नौ वार नौ नौ चार चौकड़ी वेखे थाउँ थाँ, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। भगत भगवन्त करे सच न्याँ, सालस होर ना कोए वखाइंदा। अदल अदालत एका रिहा कमा, मुनसफ़ होर ना कोए वड्यांअदा। करे खेल आप ख़ुदा, ख़ालक ख़लक फोल फोलाइंदा। आलम उल्मा सर्ब भुला, आलमीन डंक वजाइंदा। कागद कलम ना लिखे शाह, हरि का लेखा लिख्त विच ना आइंदा। कलिजुग अन्तिम करे सच न्याँ, लहिणा देणा सर्ब मुकाइंदा। ईसा मूसा मंगे पनाह, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। चार यार आपणा मन्नण आप गुनाह, उम्मत उम्मती खेल खिलाइंदा। मुहम्मद रो रो धाहां मार उच्ची कूक रिहा सुणा, मेरा संग ना कोए रखाइंदा। चारों कुण्ट वेख्या जंगल जूह उजाड़ प्रभास टिल्ले पर्बत कोए ना पकड़े मेरी बांह, परवरदिगार ना मेल मिलाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल सच सिँघासण आसण बैठा ला, जोती जल्वा नूर डगमगाइंदा। गोबिन्द नाल करे इक्क सलाह, सलाहगीर आप हो जाइंदा। लक्ख चुरासी भुल्ली राह, भाण्डा भरम ना कोए भनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतारा, कुदरत आपणी वण्ड वंडाईआ। लोकमात लगाए सच दरबारा, दर दरबारी आप हो जाईआ। करे खेल आप निरँकारा, निरगुण रूप ना कोए वखाईआ। हुक्मी हुक्म अगम्म वरतारा, अलख अलखना चाल चलाईआ। चार वेद ना पावण सारा, पुराण अठारां ना कोए ग्वाहीआ। गीता ज्ञान ना कोए आधारा, अञ्जील कुरान ना कोए वड्याईआ। खाणी बाणी करे पुकारा, हरि का भेव अभेद ना कोई पाईआ। पारब्रह्म तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त कह कह गए गुर अवतारा, रसना जेहवा हरि गुण गाईआ। कलिजुग अन्तिम हो उज्यारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। चार जुग दा लाहे उधारा, मकरूज कर्जा कोए रहिण ना पाईआ। मख़लूक लेखा मुकाए आप ख़ुदाई सुहबत जाणे विच संसारा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दोआ दोए धार, निरगुण सरगुण खेल अपार, तिन्नां लोकां वसे बाहर, चौथे पद होए उज्यार, पंचम शब्द कर उज्यार, छेवें घर करे खेल अपार, सत्तवें सति पुरख निरँजण एकँकार, अठ्ठां तत्तां दए आधार, नौ दुआरे वसे बाहर, दसवें आपणा मेल मिलाईआ। लेखा जाणे गुर अवतार, साध सन्त पावे सार, भगत भगवन्त मीत मुरार, ईसा मूसा संग मुहम्मद अल्ला राणी आपणे दर बहाईआ। राम कृष्न बणाए भिखार, कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, देवत सुर ना पाए सार, निरगुण सरगुण वसे सभ तों बाहर, रूप रंग रेख ना कोई रखाईआ। हरि जोद्धा सूरबीर बलकार, प्रगट हो विच संसार, सिँघ शेर शेर रिहा ललकार, लोकमात

आपणा बल धराईआ। निरगुण खेल करे अपार, नानक नूर करे आप रुशनाईआ। गोबिन्द सूरा आया बाहर, नौ खण्ड पृथ्मी लए उभार, साचा खण्डा एका खड़ग रिहा चमकाईआ। गुर पीर अवतार करन निमस्कार, साचे दर आए दरबार, पुरख अबिनाशी किरपा धार, तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। चार जुग तेरा लेखा विच संसार, जुग जुग सेवक सेव कमाईआ। हउँ भिखक बणे भिखार, भिच्छया पाउणी एका वार, खुल्हड़े केस रहे पुकार, दर दरवेश कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुण अवगुण आपणे हथ्थ रखाईआ। गुण अवगुण हथ्थ समरथ, सर्ब कल अख्वाइंदा। सतिजुग तेरा वेख्या रथ, त्रेता तेरी चाल चलाइंदा। द्वापर तेरा रूप कर प्रगट, आपणी कल आप वरताइंदा। कलिजुग वेस नटूआ नट, नौ खण्ड पृथ्मी नाच नचाइंदा। दूई द्वैती लग्गा फट्ट, माया ममता मोह वधाइंदा। साचा दिसे ना कोए हट्ट, साचा मन्दिर ना कोए सुहाइंदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद हरि के नाम उत्तों पैसे रहे वट्ट, करता दमढ़ी दमढ़ी हट्ट विकाइंदा। मनमुख आपणा कीता आपे रहे कट्ट, चारों कुण्ट जूठ झूठ मुख भराइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता निरगुण आपणी बदले आप करवट, सृष्ट सबाई आप बदलाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वखाए एका सथ्थ, सत्थर सूलां आपणी याद कराइंदा। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ, हथ्थो हथ्थ लहिणा आप मुकाइंदा। किसे ना मार्ग सके कोए दस्स, जगत मार्ग आप गवाइंदा। जन भगतां अंदर आपे वस, आपणा रूप आप दरसाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी मस, दीपक साचा आप जगाइंदा। शब्दी तीर निराला मारे कस, बजर कपाटी आप तुड़ाइंदा। निरगुण सरगुण मेला हस्स हस्स, हरिजन साचे आप कराइंदा। गुरमुखां होया आपे वस, आपणी भेंटा अग्नी भेंट कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग आप लगाइंदा। आपणी अग्नी आपे सड़, पंज तत्त काया चोला आप तजाया। सिँघ शेर मार दड़, लोकमात आपणा मुख गया भवाया। सचखण्ड दुआरे आपे चढ़, निरगुण निराकार सच सिँघासण सोभा पाया। गोबिन्द गुर ल्या फड़, कीता कौल पूर कराया। सम्बल नगर अंदर बैठा वड़, औंदा जांदा दिस ना आया। आपणी करनी रिहा कर, करता पुरख रूप धराया। गुर अवतारां देंदा रिहा वर, वर दाता आप हो जाया। इक्क वखाउँदा रिहा सर, सर सरोवर आप नुहाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर विष्न ब्रह्मा शिव लक्ख चुरासी घाड़न घड़, घड़न भन्नणहार आपणा वेस वटाया। ना कोई चोटी ना कोई जड़, रूप रंग ना कोए रखाया। मंगण जाए ना किसे दर, किसे अग्गे झोली कदे ना डाहया। सभ दा दाता आपे बण, निरगुण आपणा नाउँ रखाया। आपे जननी आपे जन, पूत सपूत आपे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण आपणी धार चलाया। धार चलाए अगम्म अथाह, अगम्मड़ी खेल खिलाईआ। दो सौ छपंजा दिन देंदा देवणहार सलाह, अट्ठे पहर रिहा समझाईआ। जुग जुग दा लेखा अग्गे रिहा टिका, सतिजुग त्रेता द्वापर जो कलिजुग गुर अवतार गए सेव कमाईआ। फड़ फड़ बाहों रिहा वखा, उँगली उँगल नाल मिलाईआ। मेरा नाउँ इक्क निरँकार मैं वसां हर घट थाँ, वण्डण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। आदि जुगादी मैं पिता मां, दाई दाया आप अख्वाईआ। लक्ख चुरासी आपणी झोली बैठा पा, एका गोद सुहाईआ। एका मम्मा सीर रिहा प्या, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। एका सिख्या रिहा समझा, साची सिख्या भुल कदे ना जाईआ। मेरा लेखा ना सके कोए मिटा, ब्रह्मा लिख लिख थक्का अन्तिम बैठा सीस झुकाईआ। दर आए मंगे पनाह, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। मेरे चार वेद होए स्वाह, कलिजुग अग्नी तत्त जलाईआ। बिन तुध करे ना कोए न्याँ, मेरा ब्रह्म ना कोए वड्याईआ। बिन तेरे हँस बणया काँ, चारों कुण्ट काग वांग कुरलाईआ। तेरा मिल्या ना साचा नाँ, जूठ झूठ विष्टा मुख रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी चार जुग दी मेट लग्गी शाहीआ। सो पुरख निरँजण सुणाइंदा, सुण ब्रह्म कर ध्यान। तूं मेरी अंस अख्वाइंदा, मैं तेरी करां कल्याण। तूं मेरा बंस बणाइंदा, लोकमात जगत निशान। मैं तेरा सहिंसा अन्त चुकाइंदा, प्रगट हो विच जहान। कलिजुग कूड़ा कंस मिटाइंदा, रावण दिसे ना बेईमान। तेरा संग इक्क निभाइंदा, अन्तिम पाए सभ नूं आण। एका छन्द एका ढोला आपे गाइंदा, सोहँ शब्द कर परवान। हँ ब्रह्म पारब्रह्म समाइंदा, आदि जुगादी एका मन्दिर इक्क मकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे सच्चा दान। ब्रह्मे तेरे चार जुग दे चार दिन, हरि साचा आपणी झोली पाईआ। विष्नूं तेरे चार जुग दे चार दिन गिण गिण, वेला वक्त रिहा लँघाईआ। शंकर तेरे चार जुग दे चार दिन, अन्तिम बैठे डेरा ढाहीआ। त्रैगुण दे चार जुग दे चार दिन, सभ दा लेखा रिहा मुकाईआ। लहिणा देणा चुकाए गिण गिण, भुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहली सावण त्रैगुण तेरा पकड़े दामन, लक्ख चुरासी नालों तेरा दामन दए छुडाईआ। लक्ख चुरासी नालों छुटणा दामन, सो पुरख निरँजण आप छुडाइंदा। तेरी पूरी करे इच्छया कामन, कामी कोए नेड़ ना आइंदा। आदि जुगादी बणे ज़ामन, साची ज़ामनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। तेरा लहिणा देणा चुकाए आमृणो सामृण, पर्दा ओहला सर्ब चुकाइंदा। तूं किसे दर ना जाणा भालण, पारब्रह्म अबिनाशी करता लोकमात आपणा आसण लाइंदा। प्रगट होणी जोत अकालण, अकल कल आपणी खेल खिलाइंदा। दर आए बणीं सवालण, तेरा सवाल हल आप कराइंदा। दूजा मिले ना कोए दलालण, जगत दलाल ना कोए रखाइंदा। जोती

८६८

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, त्रैगुण आपणा आप जणाइंदा। त्रैगुण उठी शर्मसार, नेत्र नैण रही शरमाईआ। मैं पापण आदि जुगादि बणी अवगुणहार, तेरे जीवां जंतां रही भुलाईआ। होई सुहागण नार ना विच संसार, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रंडेपा कट्ट कट्ट आईआ। मेरा जोबन मेरी जवानी मैं होई मुटयार, चारों कुण्ट लई अंगड़ाईआ। मैं साधां सन्तां मार के आई मार, आपणा एका नैण मटकाईआ। मैं कर कर वेख्या हार शंगार, जोबन लोकमात आपणा इक्क वखाईआ। शाह सुल्तानां सुट्ट के आई मूंह दे भार, कोई सके ना सीस उठाईआ। पुरख अबिनाशी तेरे हुक्म बद्धी आई तेरे दरबार, रोंदी रो रो दयाँ दुहाईआ। मेरे नालों मेरा चुक्या पंच विकार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मेरे संग रंग रलीआं रहे मनाईआ। की करां तेरे दरबार, कोई राह नज़र ना आईआ। चारों कुण्ट जिध्धर वेखां तेरा नज़र आए सुत दुलार, गोबिन्द सूरा सच्चा शहिनशाहीआ। खिच्च के खड़ा नाम कटार, दो धार मुख वखाईआ। जे करां निमस्कार करे प्यार, अग्गे तेरा चरन कँवल दए वखाईआ। जे नेत्र नैण लवां उठाल, अग्गों मार करे बेहाल, मेरी सुध रिहा भुलाईआ। मैं निमाणी दर तेरे ते बणी कंगाल, कर किरपा मेरे सच्चे शहिनशाहीआ। आदि पाया तूं जंजाल, अन्त कट्ट मेरी फाहीआ। मेरे अंदर लुकया काल, तुध बिन सके ना कोए बाहर कढ्ढाईआ। तूं धर रूप महाकाल, पारब्रह्म सच्चा बेपरवाहीआ। मेरे सिर ते देणी इक्क दुशाल, खुल्ही मीढीं खुल्हड़े केस जगत दुहागण बण वैरागण तेरा ढोला रही गाईआ। मेरे भाग जागण तेरी चरन धूढ़ मिले माधन, चार जुग दी धोवां शाहीआ। तूं बण साचा साजण दर आई ग़रीब निवाज़ण, तेरी इक्को ओट रखाईआ। मैं नाता तोड़या पृथ्मी आकाश, गगन मंडल फेरा कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवाना, एका हुक्म जणाइंदा। दर दरबार सुणना धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। मेरा राग इक्क तराना, त्रैगुण तेरा फंद कटाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, भगवन आपणा रूप वखाइंदा। तेरे हथ्थ फड़ावां साचा गाना, प्रेम रंग नाल रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। सच संदेसा सुण रकान, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। तूं वेखणा मार ध्यान, तेरा नैण देवां खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी जगत निशान, लक्ख चुरासी सेज वछाईआ। गुरमुख विरला चतुर सुजान, जो मेरा राह रिहा तकाईआ। तूं जाणा बण के दर दरबान, दर दर आपणी अलख जगाईआ। मैं लै के आई धुर फ़रमान, सच संदेसा देणा सुणाईआ। लोकमात प्रगट होया निहकलंक बली बलवान, आदि जुगादि जिस दी सच्ची शहिनशाहीआ। जो जन दर्शन करे आण, तिस दा लेखा रहे ना राईआ। मेरा सिख तेरी करे कल्याण, बिन

गुरमुख तेरा फंद ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क संदेसा रिहा सुणाईआ। सुणया संदेसा आत्म अन्तर, घर घर विच ख़ुशी मनाईआ। पारब्रह्म बणाई बणतर, गुरमुखां राह वखाईआ। मैं घर घर सुणावां तेरा मन्त्र, सोहँ सो शब्द पढ़ाईआ। मैं पाड़ वखावां गगन गगनंतर, तूं सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे सिखां लवां उठाईआ। त्रैगुण सेवा लाई निरँकार, लोकमात हुक्म जणाइंदा। रातीं सुत्तयां करे प्यार, सोए गुरमुख मेल मिलाइंदा। मैं आई दुहागण विच संसार, गुरसिख तुध बिन सुहागी कन्त ना कोए मिलाइंदा। मेरा दाग़ ना धोवे कोई कर विचार, दुरमति मैल ना कोए मिटाइंदा। मैं आपा आप तुध उत्तों देवां वार, तेरे चरनां हेठ आपणा सीस भेंट कराइंदी। तूं कर दरस सच्चे दरबार, कलिजुग आया हरि निरँकार, निहकलंका जामा धार, जोती जोत जोत दरसाइंदी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, त्रैगुण मेला एका घर, घर सुहञ्जणा हरि निरँजणा दर घर साचा आप जणाइंदी। दर सुहञ्जणा सोभावन्त, गुरसिख मेल मिलाया। पुरख अबिनाशी मिले कन्त, जगत विछोड़ा दए कटाया। मेरा लेखा लग्गे अन्त, श्री भगवन्त होए सहाया। मैं भरम भुलाया जीव जंत, जगत जंजाल इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, त्रैगुण तेरा लेखा दए चुकाया। त्रैगुण लेखा चुकणा, त्रिलोकी मिटे धार। चौथे जुग पैंडा मुक्कणा, कलिजुग आए अन्तिम वार। अठसठ तीर्थ नीर सुक्कणा, सर सरोवर ना कोए आधार। सिँघ शेर एका बुक्कणा, मारे भबक अपर अपार। चौदां तबक ना भाणा रुकणा, सदी चौधवीं करे ख्वार। संग मुहम्मद ना मिले लुकणा, वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड। कलिजुग तेरा खेड़ा लुट्टणा, ना कोई दीसे चोर यार। आपणी हथ्थीं बूटा पुटणा, देवे जड़्ह उखाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल सच्ची सरकार । सच सरकार साची खेल, ख़ालक ख़लक विच खलाईआ। मुरीद मुर्शद कर कर मेल, मार्फ़त लेखा रिहा समझाईआ। करे रुशनाई बिन बाती तेल, नूर नूर नाल डगमगाईआ। अचरज करया पारब्रह्म प्रभ खेल, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार जुग दा मिटे लेखा, वेस वटाए दर दरवेशा, मेल मिलाए दस दस्मेशा, दर घर आपणा आप सुहाईआ। दर सुहावा सुहावी रुत्त, सो पुरख निरँजण सोभा पाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन्न रूप आप हो जाइंदा। पंज तत्त ना रहे काया बुत्त, काया कप्पड़ ना कोए हंढाइंदा। आपणा खेड़ा आपे लुट्ट, लक्ख चुरासी खेड़ा फेर मिटाइंदा। निरगुण सरगुण अंदर बैठा लुक, दिस किसे ना आइंदा। शब्द बघेला रिहा

बुक्क, सिँघ शेर रूप वटाइंदा। जन भगतां उप्पर आपे तुट्ठ, चार जुग दे विछड़े मेल मिलाइंदा। अमृत जाम प्याए घुट्ट, जन्म जन्म दा रोग गवाइंदा। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, जो जन सरनाई आइंदा। लेखे लाए साचे सुत्त, बण जननी सेव कमाइंदा। करे प्यार जिउँ मां पुत्त, बालक आपणी गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत अठारां वेख वखाइंदा। सम्मत अठारां साल अठारां, साल अठारवें वज्जी वधाईआ। यार मिल्या नाल सच्चा यारा, साची यारी लोकमात निभाईआ। इक्क सत्त छे पंज जो कीआ उधारा, कलिजुग अन्तिम दए मुकाईआ। सूलां सत्थर जो कीआ प्यारा, साची सेज दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो सौ छपंजां दिन दो पंज छे लँघाए गिण गिण, गोबिन्द आपणे संग रखाईआ। गोबिन्द उँगली गया लग्ग, पुरख अकाल लगाया। जिस उपजाया तिस ल्या सद्द, दर घर साचे मेल मिलाया। हरि का जाम प्याया मदि, नशा उतर कदे ना जाया। लोकमात बणाए साची यद, चार वरन दए वखाया। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश लोकमात विच्चों देवे कढ्ढ, एका ब्रह्मा नज़री आया। आपणा चरन वखाए हद्द, दूसर दुआर ना कोए वखाया। चार जुग गुर अवतार आपणा भार गए लद्द, वेले आपणा डौरू वाहया। अन्तिम आया पुरख समरथ, जिस दा भेव किसे ना पाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पा के बैठा नथ, ब्रह्मा विष्न शिव रिहा भवाया। जिस दा खेड़ा जाए ना ढट्ठ, सो साचा खेड़ा रिहा बणाया। जिस दा होए वेहड़ा भट्ठ, सो बैठा सेज विछाया। जिस दी महिमा सदा अकथ, सो आपणा रंग वखाया। जिस दा गोबिन्द बैठा सथर घत्त, अज्ज रिहा मेल मिलाया। जिस लेखे लाई रत, आप आपणी गोद बहाया। जिस नूं कहिन्दे कमलापति, सिँघ शेर रूप वटाया। जिस ने सभ दी मारी मति, जगत ज्ञान रिहा गंवाया। जिस ने मेटणा तीर्थ अठसठ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणे चरनां हेठ दबाया। जिस ने मन्दिर मस्जिद शिवदुआला वहीर देणा घत्त, चारों कुण्ट दए हिलाया। जिस शाह सुल्तानां राज राजानां लहिणा देणा चुकाउणा हथ्थो हथ्थ, सीस आपणे ताज टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सभ दा दाता इक्क अख्वाया। सभ दा दाता इक्क दातार, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। अन्तिम आया चवीआं अवतार, जिस दा गीत गए गाईआ। ना पुरख ना दिसे नार, रूप रंग रेख ना कोए धराईआ। ना किसे हथ्थ आए मन्दिर गुरदुआर, शिवदुआले बैठा ना आसण लाईआ। ना वेद कतेब उस दी पाए सार, चारे खाणी रसना जेहवा कूक कूक सुणाईआ। चारे बाणी करे पुकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी धुन अनादि ब्रह्म ब्रह्मादि सुणाईआ। सन्त भगवन्त तेरा मंगण दर दरबार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। तूं जुग जुग सुणदा आया सर्ब पुकार, तेरी महिमा गणी ना जाईआ। कलिजुग खेल कीता करतार,

८७०

आपणी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुख विरले लए उभार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। अमृत दिता ठंडा ठार, निझर झिरना इक्क झिराईआ। जोती जोत दीपक कीआ उज्यार, तेल बाती ना कोए रखाईआ। आपणा ढोला गाया आपणी वार, पिछली करे ना कोए पढ़ाईआ। जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लगाए नाअर, जन्म मरन विच ना आईआ। नानक दर बैठा कूक कूक रिहा पुकार, निरँकार इक्क सालाहीआ। आदि जुगादि जुग जुग सभ दा रूप इक्क निरँकार, दूसर अवर ना वण्ड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता आपणी रक्खे उत्तम ज़ाता, ज़ात अज़ात ना कोए जणाईआ। जुग जुग आप आपणा जाणे छन्दन, हरि जू हरि हरि आप सुणाइंदा। कलिजुग जन भगतां संग लाए आपणे अंगन, अंगीकार आप हो जाइंदा। अठ्ठे पहर दिवस रैण बख्शे परमानंदन, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी गुणवन्ता सदा बख्शंदन, कर बख्शश दीनां नाथ आपणे गले लगाइंदा। जन्म जन्म दा तोड़े फंदन, लक्ख चुरासी फंद मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। उठया गुर गोबिन्द, हरि सतिगुर आप उठाया। गुरसिखां मेटे सगली चिन्द, चिंता चिखा रहे ना राया। पुरख अकाल बणाई आपणी बिन्द, बिन्द गुरमुख रूप धराया। आत्म जाम प्याए सागर सिन्ध, अमृत प्याला इक्क उठाया। देवे दानी दात गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन तरया हरि दुआर, अवर दुआर ना कोए वड्याईआ। हरिजन करया हरि प्यार, हरि बिन अवर ना कोए सहाईआ। हरिजन मिल्या कन्त भतार, बिन हरि कन्त साची सेज ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा लेखा दए समझाईआ। हरि लेखा सच समझावणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। नौ खण्ड पृथ्मी एका ढोला गावणा, सोहँ शब्द सच्चा जैकार। तीजी अस्सू लेख लिखावणा, राष्ट्रपति करना ख़बरदार। बवन्जा देशां हुक्म जणावणा, आई तेरी वार। पुरख अबिनाशी आपणा खण्डा फेर चमकावणा, वखाउणी हथ्थ खिच्च कटार। वेला गया हथ्थ ना आवणा, नेत्र रोणा ज़ारो ज़ार। समरथ आपणा रूप धरावणा, चारों कुण्ट होए उज्यार। दो सौ छपंजा दिन चार जुग गुर अवतारां भगतां झोली पावणा, पहली चेत्र सभ दा कर्ज़ा दए उतार। फेर करे जो मन भावणा, ना अग्गों करे कोए इनकार। सोहँ ढोला लोआं पुरीआं उठ उठ गावणा, ब्रह्मा विष्न शिव आलस निन्दरा ना करे विचार। अल्ला राणी मुख शरमावणा, गल पल्लू नेत्र नीर आए चल दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। अस्सू तिन्न

८७१

लेख लिखाउणा, आपणा भेव दए जणाईआ। जेहड़ा खण्डा राष्ट्रपति तेरे अंदर लुकाउणा, सो बाहर लए कढ्ढाईआ। आया वेला पर्दा किसे ना पाउणा, लुकया रहे ना बेपरवाहीआ। कलिजुग झल्ल विच सिंघ शेर एका वार रौला पाउणा, जम्बक सारे दए दौड़ाईआ। सारे सुट्ट के बहण धौणां, जो बैठे ताज टिकाईआ। देवे संदेस उणंजा पवणां, पवण पवणां विच समाईआ। फिरे दरोही अवण गवणा, लाशरीक एका नौबत दए वजाईआ। किसे सुध ना रहे करन दी हवना, कलिजुग एका अग्न हवन जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दे चार दिन, दिन बदिन वारो वार गुरुआं पीरां लेखा रिहा मुकाईआ। चार चार दिन पुछे पुछ, पुछणहार गोपाला। कोई दस्से कुछ कोई दस्से कुछ, कोई शाह कोई कंगाला। कोई डरदे मारे पिच्छे बैठे लुक, साचा दिसे ना कोए धन माला। कोई दोए जोड़ बैठे झुक, तूं शाह हउँ कंगाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल इक्क निराला। खेल नराला पुरख अकाला, सचखण्ड दुआरे सचखण्ड निवासी आप कराईआ। वारो वारी कढ्ढे दीवाला, डिगरी आपणे हथ्थ रखाईआ। अछल अछल होया महाकाला, आदि जुगादि ना छलया जाईआ। जो जुग जुग आपणा नाउँ मंगदे रहे हाला, अन्तिम खेती कोए नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ दा लेखा रिहा वखाईआ। लिख लिख वेख आपणा लेखा, इक्क दूजे नाल करन सलाह। मैं जाणया मेरे जेहा दूसर किसे ना करया वेसा, मैं आया वड्डा बण मलाह। मैं जाणया मेरे जेहा ना कमाया किसे पेशा, मैं मददगार बणया आप ख़ुदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल साचे हरि, सभ नूं दिता भुल्ला। जो भुलया सो भुलया, अभुल अग्गे ना कोए ज़ोर। जो रुलया सो रुलया, तिस अवर ना कोए ठौर। जो तुलया सो तुलया, तिस हरि हरि गया बौहड़। जो चरन प्रीती घोल घुलया, तिस फड़ चढ़ावे घोड़। आदि जुगादि रहे अडुलया, दो जहानां ला के वेखे एका पौड़। आपणी रुत्तड़ी आपे फलया आपे फुलया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रक्खे हथ्थ आपणी डोर। हथ्थ डोर तन्दी तन्द, नाम तन्दन इक्क रखाइंदा। जिस जन गाया बत्ती दन्द, नाउँ नाउँ हरि सालांहयदा। तिस चढ़ाया साचा चन्द, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। अन्तिम देवे परमानंद, जोती जोत मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर लेखा आप समझाइंदा। हरि लेखा अपार, हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर लेखा निरँकार, लोकमात दए वड्याईआ। भगत लेखा संसार, सतिगुर साची बूझ बुझाईआ। सन्त लेखा जीव आधार, जीवण जुगत वड वड्याईआ। गुरमुख लेखा ब्रह्म विचार, गुर मत्ती इक्क समझाईआ। गुरसिख लेखा गुर चरन दुआर, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। सर्ब जीआं दा इक्क निरँकार, इक्क इकल्ला सच्चा शहिनशाहीआ।

कलिजुग अन्तिम हो त्यार, जोती जामा भेख वटाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, सिँघ सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतार सद्दे दर, धुर फ़रमाना शब्द जणाईआ। धुर फ़रमाना साचा राणा, हरि हरि आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम वरते भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। तख्तों लाहे राजा राणा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। राम कृष्न वाहिगुरु अल्ला नाम सति एका गाए सच्चा गाना, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। लक्ख चुरासी बीना दाना, घर घर रिज़क आप पुचाइंदा। विष्नूं देवे श्री भगवाना, ब्रह्मा आपणी अंस सुहाइंदा। शंकर करे दर परवाना, संसा रोग मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, जुगादि आपणी खेल खिलाइंदा। जुगादि आपणी खेल खिलाइंदा, सतिगुर पूरा चतुर सुजान। सृष्ट सबाई वेख वखाइंदा, लक्ख चुरासी मार ध्यान। अञ्जील कुरानां फोल फुलाइंदा, लेखा जाणे दीन ईमान। खाणी बाणी वेस वटाइंदा, शब्द जणाए धुर फ़रमान। पुराण शास्त्र खोज खुजाइंदा, सिमरत पाए आपणी आण। वेद कतेबा आप सुणाइंदा, देवे धुर फ़रमान। गुर अवतार आप घलाइंदा, होए जाणी जाण। जुग जुग लेखा आप मुकाइंदा, लेखा दर करे परवान। सतिजुग आपणी झोली पाइंदा, त्रेता मिटे मात निशान। द्वापर अन्त ना कोए वखाइंदा, कलिजुग होया जगत प्रधान। लक्ख चुरासी नाच नचाइंदा, नाल रलाया पंज शैतान। साचा हुक्म ना कोए मनाइंदा, भरमे भुल्ला जीव नादान। बिन हरि बेड़ा पार ना कोए कराइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होया जाणी जाण। जानणहारा जाणदा, जुगा जुगां दी कार। वेद व्यासा लेख वखाणदा, ईसा तेरी सुणे पुकार। मुहम्मद तेरा मेला दो जहान दा, चौदां तबकां करे विचार। गोबिन्द सूरा इक्क ललकारदा, साचा खण्डा नाम हुलार। नानक सति नाम पुकारदा, चार वरनां करे प्यार। कृष्न लेखा एका धुर दरबार दा, साची सख़ीआं मंगलाचार। राम रूप निरगुण धार दा, दसरथ बेटा दए आधार। आदि शक्ति खेल सच्ची सरकार दा, जोती जोत नूर उज्यार। चतुर्भुज रूप बलकार दा, करे खेल अगम्म अपार। विष्न आपणा आप उठालदा, विश्व होए आप निरँकार। विष्नूं ब्रह्मा आपे पाल दा, कँवल नाभी बण दलाल। लक्ख चुरासी ब्रह्म पत डाल्ह दा, फुल फुलवाड़ी वेखे गुलज़ार। शंकर मन्ने हुक्म सरकार दा, ना भुल्ले विच संसार। जो घड़या भन्न वखालदा, रहिण ना देवे कोए गुर अवतार। महाराज शेर सिँघ आपणा कीता आपे जाणदा, दूसर अग्गे ना करे पुकार। आपणी हथ्थीं करया खेल अग्ग मसाण दा, आपे रल्लया धूंआँधार। मात पित भैण भ्रा ना कोई जाणदा, कवण रूप करया निरँकार। रंग माणया हाणीआं हाण दा, पंज तत्त कर प्यार। आपणी ख़ाक रिहा छाणदा, ख़ाक उडाए सर्ब संसार। सिँघ मनी इक्क

प्यार दा, जिस मिल्या हाणी हाण। सिँघ पाल नाता सीस दस्तार दा, नाता तोड़ जगत जंजाल। पुत्त मिलाया नाल अकाल दा, गोबिन्द करया इक्क प्यार। आपणा वसल आप सखाल दा, साची सेजा कर त्यार। आपणीआं हड्डीआं कलिजुग अग्नी विच बालदा, करे खेल अपर अपार। सतिगुर पूरा गुरसिखां आपे भालदा, सिँघ शेर गुरसिखां करी आप विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरगुण लै अवतार। सरगुण सड़या होया स्वाह, घनक पुरी पई दुहाईआ। कोई कहे मेरा गया भ्रा, कोई कहे सज्जण गया पल्ला छुडाईआ। कोई कहे कौण पुत्त गोद लए बहा, पिता कवण रूप वटाईआ। कोई कहे मेरा नाता तुट्टा मेरी फड़दा रिहा बांह, बांहवां बाज़ूआं नाल मिलाईआ। जगत शरीका भुल्ला आपणे थाँ, जगत शरीक्त होई जुदाईआ। शेर सिँघ चढ़या एका चा, शेर रूप गया वटाईआ। गुरसिखां अंदर लभ्भी आपणी थाँ, आप आपणा आसण लाईआ। उच्ची कूक दिता सुणा, आपणा नाम आप जणाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मैं वसां हर घट थाँ, आदि जुगादि बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल साचे हरि, आपणी खेल आप खिलाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, हरि अचरज खेल रचाया। गोबिन्द करया इक्क प्यार, साचा मेला मेल मिलाया। वसया धाम आप न्यार, निरवैर आसण लाया। त्रैगुण चोला दिता पाड़, पंज तत्त नाता गया तुड़ाया। वा ना लग्गी तत्ती हाढ़, अग्नी अग्ग ना कोए रखाया। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, जोती जोत लए जगाया। गोबिन्द उठाया साचा लाड़, घर मेला मेल मिलाया। शब्दी करया इक्क शंगार, वाह वा सगन मनाया। जोती बण बण करे प्यार, आपणे अंग लगाया। वासना खोटी ना कोए विचार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काया। एका चोटी चढ़ के बैठा सच्ची सरकार, साचे मन्दिर आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे लए जगाया। आपणा आसण साचा डेरा, गुरसिख तेरा अन्तर धाम बणाईआ। मेल मिलाया एका वेरा, दूजी वेर विछड़ ना जाईआ। तेरी काया पाया आपणा घेरा, कलिजुग जंगल रूप दरसाईआ। अंदर लुकया सिँघ दलेरा, शेर आपणा बल छुपाईआ। प्रगट होवे एका वेरा, सभ दा वेरवा दए वखाईआ। दूर दुराडा आए नेरा, नेरन नेर आप हो जाईआ। कलिजुग मुकाए अन्तिम झेड़ा, आप आपणा बल रखाईआ। धरत मात दा खुल्ला वेहड़ा, नौ खण्ड पृथ्मी दए कराईआ। हरिजन तराए कर कर मेहरा, मिहवरान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। करे खेल सच्चा शहिनशाह, शहिनशाही इक्क रखाइंदा। जुग जुग बण मात मलाह, लक्ख चुरासी बेड़ा आप चलाइंदा। गुर अवतारां दए सलाह, साचा मार्ग नाम समझाइंदा। अठ्ठे पहर दरस वखा, दीद ईद इक्क कराइंदा। निरगुण चन्द इक्क

चढ़ा, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। बख्शिश करे आप मेहरवां, मेहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला आपणा रूप वटाइंदा। सुलाहकुल इक्क ख़ुदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सभ दी सुलाह आप कराइंदा। सभ दी सुलाह अन्त कराए, वरन बरन रहिण ना पाईआ। मुल्लां शेख़ पीर मुसायक मिटाए, दस्तगीर ना कोए वड्याईआ। ग्रन्थी पन्थी ना कोए अख्वाए, पुरख अकाल इक्क ध्याईआ। पंडत पांधा दए खपाए, तिलक ललाट ना कोए लगाईआ। अठसठ तीर्थ ना कोए नहाए, सर सरोवर दए मुकाईआ। पूजा पाठ इक्क कराए, एका करे पढ़ाईआ। कलिजुग जीवां ख़ाली ठूठा हथ्थ वखाए, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गुरमुख रुड्डा लए मिलाए, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन्म जन्म दा गुस्सा दए गंवाए, आपणी ख़िमां ग़रीबी इक्क वरताईआ। पुच्छां दे दे आपणे गुरसिख घर मंगाए, गुरसिख लभ्भण किते ना जाईआ। चारे कुण्टां फोल फोलाए, दहि दिशा वेख वखाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कुण्डा लाहे, गगन पातालां खोज खोजाईआ। नौ दुआरे पार कराए, जगत वासना दए मिटाईआ। टेढी बंक आप लँघाए, गुरमुख सुरती राहे पाईआ। आपणा राग शब्द सुणाए, गुरसिख सुवाणी मगर लगाईआ। हाणी हो हो नज़री आए, आपणा जोबन आप जणाईआ। अमृत आत्म ठंडा पाणी आप प्याए, एका प्याला सच सुहाईआ। साची बाणी आप सुणाए, घर अनहद ताल वजाईआ। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाए, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। साची खाट सेज विछाए, आत्म आसण इक्क रखाईआ। निरगुण हो हो डेरा लाए, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जीव आत्म लए मिलाए, ईश जीव सच्चा शहिनशाहीआ। आदि लग्गी प्रीत अन्त तोड़ निभाए, लक्ख चुरासी गेड़ आपणा पूर कराईआ। उजड़या खेड़ा फेर वसाए, जिस गुरसिख आपणी बूझ बुझाईआ। पंचम झेड़ा दए मिटाए, आसा तृष्ना ना होए हल्काईआ। माया ममता दए चुकाए, चिंता चिखा ना कोए रखाईआ। मदिरा मास जो जन तजाए, तिस सुत्तयां लए जगाईआ। महाराज शेर सिँघ नज़री आए, शेर आपणा रूप वटाईआ। गोबिन्द सूरा नाल रलाए, जिस अंदर लुकया बेपरवाहीआ। गुरमुख तेरा काया कूड़ा हूंझ वखाए, नाम बहारी एका लाईआ। चरन धूढ़ तेरे मस्तक टिक्का लाए, तेरी धोवे मस्तक शाहीआ। कलिजुग नाता कूड़ मिटाए, सच सुच्च वण्ड वंडाईआ। तेरे अंदर तेरी जोत तेरा नूर करे रुशनाए, नूर नूर नाल मिलाईआ। तेरी हूर तेरी सुरत तेरे शब्द मिलाए, दूजे दर ना लभ्भण जाईआ। आसा पूर इक्क अख्वाए, जो गुरुआं पीरां आस पूर कराईआ। हाज़र हज़ूर बैठा डेरा लाए, जिस दी दो जहान सच्ची शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नू भगवान, सर्ब जीआं दा इक्को दाता, दूसर ओट ना कोए वखाईआ। ना कोई ओट ना कोई आसा, मार्ग अवर

ना कोए जणाइंदा। चार वरन दए भरवासा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश गले लगाइंदा। चरन कँवल उप्पर धवल देवे भरवासा, करे खेल पुरख अबिनाशा, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। निज घर निज आत्म निज दर कर कर वासा, आत्म परमात्म वेख वखाइंदा। काया काअबा वेखे कासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए फड़, हरि के पौड़े आप चढ़ाइंदा। हरिजन चढ़ना हरि हरि पौड़, पुरख अबिनाशी मात लगाईआ। जिस नूं कहिन्दे ब्रह्मण गौड़, सो पारब्रह्म खेल खिलाईआ। जिस नूं कहिन्दे आउणा दौड़, नीले वाला साचा माहीआ। जिस नूं कहिन्दे मिट्ठे करे रीठे कौड़, सो रिहा जाम प्याईआ। जिस नूं कहिन्दे जन्म जन्म दी मिटाए औड़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। कलिजुग अन्तिम गुरसिखां गया बौहड़, मनमुख गूढ़ी नींद सुआईआ। करया खेल अवर का और, बिध आपणी अवर बणाईआ। कलिजुग विद्या कर कर थक्की गौर, गोर विच वड़या दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विश्व आपणी खेल खिलाईआ।

सतिगुर पूरा सद मेहरवान, जुग जुग दया कमाइंदा। भगत भगवन्त मेले आण, सन्त साजन वेख वखाइंदा। गुरमुख गुर गुर लए पछाण, गुरसिख आपणे रंग रंगाइंदा। एका नाम देवे ज्ञान, साचा तत्त आप समझाइंदा। दूजा बख्शे चरन ध्यान, चरन कँवल इक्क दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप मनाइंदा। गुरसिख साची सिख्या लैणी सिख, साख्यात हरि समझाईआ। दर दुआर जो मंगे भिक्ख, भिखक भिच्छया झोली पाईआ। जन्म कर्म प्रभ देवे लिख, पिछला लेखा दए मुकाईआ। जगत द्वैती लाहे विख, अमृत आत्म जाम प्याईआ। हउमे ममता तोड़े तृष्ना तृख, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए समझाईआ। गुरसिख साचे चतुर सुजान, हरि साचा सच जणाइंदा। जो जन मंगता चाहे दान, दाता दानी आप वखाइंदा। चरन कँवल करना इक्क ध्यान, नेत्र दूसर पुरष ना कोए तकाइंदा। घर अंदर मन मन्ने आपणी आण, मन मार्ग ना कोए जणाइंदा। एका वार एका गुर करे परवान, एका गुरसिख मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क वखाइंदा। चरन ध्यान नेत्र दरस, बिन हरि चरन ना कोए दरसाईआ। प्रभ मिलण दी रक्खो हरस, हवस होर ना कोए वड्याईआ। सतिगुर पूरा करे तरस, दीनन आपणी दया कमाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, अग्नी तत्त रहिण ना पाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, जो जन हरि हरि नाउँ मंग मंगाईआ। हरि सज्जण हरिजन तेरी आपे करे

परख, परीख्या विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंग एका वार एका गुर पूर कराईआ। गुरसिख वेखे चरन कँवल, कँवल चरन चित लाया। सतिगुर आसा पूरी करे उप्पर धवल, धरनी धरत धवल मेल मिलाया। आत्म अन्तर जाए मवल, मौला आपणी खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त झोली पाया। एका वस्त दात अमोलक, गुर गुरसिखां झोली पाईआ। गुरसिख काया साची गोलक, गुर पूरा विच टिकाईआ। सुख दुःख विच रहे अडोलत, दुःख सुख विच गुर मनाईआ। गुर हुक्म सुणाए इक्क अनबोलत, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला होए सहाईआ। मन बांछत हरि आसा पूर, इछा पूरी आप कराइंदा। पहलां तोड़े माण ग़रूर, दूजे शर्म हया ना कोए वखाइंदा। तीजे मंगे चरन धूढ़, चौथे नाता कूड़ो कूड़ तुड़ाइंदा। पंचम दरस करना ज़रूर, हिरस हवस सर्ब गवाइंदा। छेवें लैणा जोती नूर, सत्तवें सति सतिवादी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मनसा आसा आसा मनसा मन मन ही पूर कराइंदा। दिवस रैण हउँ जणाइंदा, आठ पहर प्रभात। गुरमुख विरला झोली अग्गे डांहयदा, जिस मन्नया एका इक्क इकांत। जो जन मन का घोड़ा सर्ब दुडायदा, दहि दिशा फिरे बौह भांत। तिस सतिगुर पूरा नज़र ना आइंदा, अंदर खुल्ह्ला दिसे ना बन्द ताक। साकी बण ना जाम प्यांअदा, पन्ध दुरेडा ना मुक्के वाट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन पुछे सदा वात। हउँ सुणाने सुहागी गीत, गोबिन्द नाम इलाहीआ। सुण सज्जण सन्त मीत, तेरे दर वज्जे वधाईआ। तूं छड्ड पुराणी रीत, हुण नवीं रुत्तड़ी सोभा पाईआ। घर आया इक्क अतीत, जिस दा नाउँ वडी वड्याईआ। जिस एका रंग रंगाया हस्त कीट, ऊँच नीच रहिण कोए ना पाईआ। जो देवे नाम अनडीठ, जगत नेत्र दिस ना आईआ। जो सुत्ता दे कर पीठ, आपणी ल्ए आप अगंड़ाईआ। कलिजुग सदी रही बीत, शैताना होया सच्चा माहीआ। ना पतित ना पुनीत, पतित पापी रिहा तराईआ। जिस ने गाया उस दा गीत, जिस दा ढोला गोबिन्द रिहा गंवाईआ। ना मन्दिर गुरदुआरा ना कोए मसीत, इक्क इकल्ला बैठा सच्चा शहिनशाहीआ। सतिजुग चलाई साची रीत, कलिजुग लेखा रिहा मुकाईआ। जिस दे सीस सोहे पीतम्बर पीत, सो पीआ बेपरवाहीआ। जो चार जुग दी परखणहारा नीत, तिस अग्गे क्या कोई सके छुपाईआ। आपणा जन्म लैणा जीत, गुरमुख तेरी वड्ड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां हभ किछ रिहा समझाईआ। हब्ब किछ जाणे जानणहारा, जीवण जुगत जग हथ्थ। करे खेल अगम्म अपारा, त्रैभवण धनी पुरख समरथ। जन भगतां करे सच प्यारा, देवे नाम अमोलक वथ, आदि अन्त अतुट भण्डारा, सदा रक्खे आपणे हथ्थ। कलिजुग

अन्तिम गुरमुखां करे प्यारा, हरि निरँकारा रातीं सुत्तयां अंदर देवे घत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरे अंदर वड़, तेरी गंवाए जगत मत। जगत मति नाता छुट्टे, जिस जन सतिगुर दया कमाईआ। झूठी धाड़ अंदरों लुट्टे, आपणा ख़ज़ाना बैठा छुपाईआ। पंच विकारा फड़ फड़ कुट्टे, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। जो गुरसिख सतिगुर पूरे उत्ते डोरी सुट्टे, सतिगुर पूरा डोर आपणे हथ्थ रखाईआ। फड़ फड़ चढ़ाए साची चोटी, कबीर जोलाहा दए ग्वाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा मिलाईआ। जो जन मंगे साचा दर, दर दर फेर ना कोए भवाइंदा। जो जन मंगे साचा वर, बिन हरि कन्त ना कोए अख्वाइंदा। जो जन मंगे चुक्के डर, बिन निरभउ भय ना कोए गवाइंदा। जो जन मंगे मिले हरि, बिन हरि जू दरस ना कोए वखाइंदा। जो जन मंगे अमृत सर, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे बन्धन पाइंदा। जो जन मन्ने इक्क भगवान, मनसा आसा पूर कराईआ। जो जन बणे जगत सवान, घर घर फेरा पाईआ। जो जन मंगे चरन ध्यान, चरन प्रीती दए वड्याईआ। जो जन मंगे आत्म दान, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जो जन मंगे नाद धुन्कान, धुंन आत्मक दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, तिस जगत भटकणा दए मिटाईआ। दर दर ना फिरे बण दरवेश, जिस जन दरदी दर्द वंडाइंदा। तिस साहिब करो आदेस, जो लिख्या लेख गवाइंदा। तिस सतिगुर नेत्र पेख, जिस पेखत नैण शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस आपणा बन्धन पाइंदा। आत्मक प्यार सतिगुर दान, दूसर वस्त ना कोए वखाईआ। सतिगुर अंदरे अंदर मिले आण, अठ्ठे पहर होए सहाईआ। गुरसिख काया मन्दिर वेखे सच मकान, आसण सिँघासण इक्क विछाईआ। आपणी किरपा देवे दान, दूसर वण्ड ना कोए जणाईआ। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, हरिजन साचे लए मिलाईआ। दर दर ना फिरे बण सवान, जिस जन आपणा नाम डोरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चोरी चोरी गुरसिखां रिहा मिलाईआ।

★ २ सावण २०१८ बिक्रमी अमरीक सिँघ दे गृह रूपोवाली ज़िला अमृतसर ★

सो साहिब पुरख सुल्ताना, आदि जुगादि खेल खिलाइंदा। हरि पुरख रूप महाना, निरगुण निरवैर नज़र ना आइंदा। एकँकारा नौजवाना, बिरध बाल ना रूप धराइंदा। आदि निरँजण नूर महाना, जोती जोत डगमगाइंदा। श्री भगवान शाह

सुल्ताना, भूपत भूप आप अख्वाइंदा। अबिनाशी करता मर्द मरदाना, भेव अभेद आप छुपाइंदा। पारब्रह्म वसणहारा सच मकाना, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। अगम्म अगम्मड़ा अलख अलखना जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। आदि पुरख हरि खेल अपारा, आदि आदि आप कराइंदा। आपणी इच्छया हो उज्यारा, निरगुण आपणा नूर धराइंदा। आपणी भिच्छया भर भण्डारा, साची वस्त आप वरताइंदा। आपे वेखे वेखणहारा, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा रूप आप धराइंदा। आपणा रूप आपे धर धर, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। आपणा खेल आपे कर कर, हरि पुरख निरँजण सोभा पाईआ। आपणे दर आपे खड़ खड़, एकँकारा वेख वखाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़ घड़, आदि निरँजण सोभा पाईआ। आपणा पल्लू आपे फड़ फड़, अबिनाशी करता ख़ुशी मनाईआ। आपे पुरख नारी कर कर, श्री भगवान सच्चा शहिनशाहीआ। आपणा आप आपे वर वर, पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि आपणा नूर करे रुशनाईआ। सो पुरख निरँजण नूर उजाला, नूर नुराना डगमगाइंदा। हरि पुरख निरँजण खेल निराला, नर हरि नरायण आप कराइंदा। एकँकार आप उपाए आपणा सच निशाना, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। आदि निरँजण दीपक दीप जगाए महाना, दीआ बाती ना कोए रखाइंदा। श्री भगवान बीना दाना, दाना बीना आपणा नाउँ उपजाइंदा। अबिनाशी करता वड मेहरवाना, मेहरवान आपणा रूप वटाइंदा। पारब्रह्म आपणा आप कर परवाना, आप आपणा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया पाए भिच्छया, साचा घर आप सुहाइंदा। साचा घर सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण आपणा पाए आपे अञणा, अज्ञान अन्धेर ना कोए वखाईआ। एकँकारा आपे करे आपणा मजना, सर सरोवर आपे नहाईआ। आदि निरँजण आपणे दर दुआर आपे बह बह सजणा, मीत मुरारा बण बेपरवाहीआ। अबिनाशी करता ना घड़या ना भज्जणा, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। श्री भगवान आदि आदि पर्दा आपे कज्जणा, सीस जगदीस आपणा हथ्थ रखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणे मन्दिर आपे बह बह सजणा, सच दुआरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आदि पुरख हरि खेल अपारा, अलख अगोचर आप कराइंदा। अगम्म अगम्मड़ा हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। निरगुण निरवैर निराकारा, मूर्त अकाल अजूनी रहत दिस किसे ना आइंदा। आपणी इच्छया भर भण्डारा, साची भिच्छया वेख वखाइंदा। करे खेल करनेहारा, करता पुरख आपणी करनी

आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। ना कोई संग ना कोई साथा, आदि पुरख वडी वड्याईआ। इक्क इकल्ला हरि समराथा, समरथ बेपरवाहीआ। आपे होए आपणा राखा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत जोत जगा, जोती जाता वेख वखाइंदा। निरगुण आपणा रूप धरा, आप आपणा मता पकाइंदा। कवण दुआर वसां कवण थाँ, कवण घर सोभा पाइंदा। कवण पिता कवण मां, कवण बाल रूप वटाइंदा। कवण देवे ठंडी छाँ, कवण साची गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे आपणा वर, वर दाता आप हो जाइंदा। आपे देवे वर दातार, सो पुरख निंरजण वडी वड्याईआ। आपणी इच्छया कर विचार, आपणा लेखा आप गणाईआ। सच महल्ला करां त्यार, इक्क इकल्ला सेव कमाईआ। ना कोई बाढी होर करे प्यार, सगला संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आप खिलाईआ। खेले खेल पूरी आसा, आसा पूर आप हो जाइंदा। निरगुण नूर कर प्रकाशा, जोती जोत डगमगाइंदा। आपणा कर आप भरवासा, आपणा बल आप धराइंदा। आपणे अंदर कर के आपणा वासा, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। आपे रंग रंगे करतार, रंगणहार आप हो जाईआ। आपे नार आप भतार, आपे कन्त सेज सुहाईआ। आपे करे सच प्यार, आप आपणा गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण मेला निरगुण धार, निरगुण निरगुण विच समाइंदा। निरगुण पुरख निरगुण नार, निरगुण साचा कन्त हंढाइंदा। निरगुण निरगुण सेजा कर त्यार, निरगुण निरगुण आसण लाइंदा। करया खेल अगम्म अपार, आदि पुरख आपणी खेल खिलाइंदा। ना मरे ना पए जम्म, जोती जोत वेस वटाइंदा। आपे करे आपणा कम्म, करता पुरख नाउँ धराइंदा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, हरि जू आपे वेख वखाइंदा। आपे जननी आपे जन, जन जणेंदी माउँ आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण अंदर निरगुण वड़, साचा मेल मिलाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण वड़या, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। आपणा पल्लू आपे फड़या, आपणा दर आपे वेख वखाईआ। आपणा कारज आपे करया, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। आपे वसे आपणे घरया, आपणा घर इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नारी कन्त आपे बण निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। नारी कन्त बण भतारा, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। आपे जाणे आपणी धारा, धार धार विच मिलाइंदा। ना कोई जाणे

अवर पसारा, पसर पसारी आप अख्वाइंदा। छप्पर छन्न ना कोए सहारा, बन्धन बंध ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दाता बण भिखारी, भिखक भिख्या झोली पाइंदा। आपे दाता हरि निरँकार, निराकार रूप वटाईआ। आपे भिखारी बणे दुआर, दर दरवेश मंग मंगाईआ। आपे शाह आपे सिक्दार, राज राजान आप हो जाईआ। आपे हुक्म आप वरतार, आप संदेसा रिहा सुणाईआ। आपे होए सुणनेहार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण देवे निरगुण वर, निरगुण वस्त अमोलक झोली पाईआ। निरगुण वस्त इक्क अनमोल, भेव अभेद ना कोए रखाइंदा। सो पुरख निरँजण तोले आपणे तोल, हरि पुरख निरँजण तोल तुलाइंदा। एकँकारा रक्खे कोल, आदि निरँजण हथ्थ रखाइंदा। अबिनाशी करता बैठ अडोल, श्री भगवान झोली पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ जाए मौल, आपणी ख़ुशी आप मनाइंदा। निरगुण निरगुण नाल करे कौल, कीता कौल भुल ना जाइंदा। आपणे अंदर आपे मौल, जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी रचना आप रचाइंदा। आपणी रचन रचावणहारा, दयानिध दया कमाईआ। आपणी वस्त वस्त हरि थारा, हरि साचा आप वरताईआ। लेवणहारा होए निंरकारा, निराकारा सेव कमाईआ। पहलों बणावां सच दरबारा, दर दरवाज़ा ना कोए वखाईआ। ना कोई इट्ट ना कोई गारा, ना कोई बाढी नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा मन्दिर लए उपाईआ। आपणा मन्दिर हरि उपाउणा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड दुआरा नाउँ धराउणा, चार दीवार ना कोए वखाईआ। निरगुण दीवा इक्क जगाउणा, तेल बाती ना कोए पाईआ। साचा माही घर वसाउणा, दूसर अवर ना चरन टिकाईआ। अठ्ठे पहर रंग रंगाउणा, दिवस रैण ना कोए वड्याईआ। नारी कन्त आप अख्वाउणा, वाह वा वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दुआरा लए उपाईआ। सचखण्ड दुआर उपाइंदा, कर किरपा गुण निधान। निरगुण आपणा आसण लाइंदा, जोद्धा सूर बली बलवान। सच सिँघासण इक्क विछाइंदा, कर किरपा आप भगवान। पावा चूल ना कोए जणाइंदा, ना कोई घाड़त घड़े तरखान। साची सेजा आप हंढाइंदा, आपे मर्द आप मरदान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा आप उपाइंदा। सचखण्ड दुआरा वंडी वण्ड, आदि पुरख दया कमाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। निराकार चढ़ाए रंग, रंग रंगीला उतर कदे ना जाईआ। चार दीवार ना दिसे कंध, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा घाड़न घड़, आपणा आसण लए सुहाईआ।

सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप बणाया। हरि पुरख निरँजण बण बण कन्त, एकँकारा सेज हंढाया। जोत निरँजण आदि निरँजण चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाया। अबिनाशी करता महिमा अगणत, भेव अभेद रिहा रखाया। श्री भगवान आपे जाणे लेखा आपणा आदि अन्त, आदि अन्त रूप रेख ना कोए वखाया। पारब्रह्म आपे मन्ने आपणी मन्नत, सीस जगदीस आपणा सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, सच सिँघासण सोभा पाया। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा, आपणा आप सुहाईआ। सति सिँघासण कर त्यारा, सति सतिवादी चरन टिकाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, राज राजान वड वड्याईआ। आपणा हुक्म कर वरतारा, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। घाड़न घड़े अपर अपारा, घड़ घड़ वेखे थाउँ थाँईंआ। आपणा खोल्हे फेर किवाड़ा, किरपा कर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। आपणा खोल्ह किवाड़, दया कमाइंदा। सचखण्ड वसे साचा लाड़, दिस किसे ना आइंदा। थिर घर वेखे पावे सार, चरन कँवल आप टिकाइंदा। जोती जोत करे प्यार, जोती जोत जोत हंढाइंदा। दाई दाया बण निरँकार, साची सेवा आप कमाइंदा। आपे अंदर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर रूप वटाइंदा। आपे सुत आपे दुलार, मात पित आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे बैठा चढ़, थिर घर आपणा चरन धर, चरन कँवल आप सुहाइंदा। थिर घर थिर दुआरा, हरि चरन कँवल टिकाईआ। सचखण्ड वसे आप निरँकारा, रूप अनूप बेपरवाहीआ। आपे विचोला बण सच्ची सरकारा, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। आपे जननी जन जणे सुत दुलारा, हरि शब्दी नाउँ धराईआ । शब्दी शब्द करे प्यारा, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बंस आप सुहाईआ। निरगुण बणा निरगुण पूत, शब्दी शब्द उपाया। निरगुण वसे आपणी कूट, साची दिशा वेख वखाया। निरगुण तागा निरगुण सूत, निरगुण आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारा इक्क प्रगटाया। सुत दुलारा जाया, जननी जन बण निरँकार। थिर घर साचे आप बहाया, कर किरपा ओंकार। तेरी सेव इक्क लगाया, होणा ख़बरदार। पुरख अबिनाशी हुक्म सुणाया, आदि पुरख एका वार । तेरा लहिणा तेरी झोली पाया, देवणहार आप निरँकार। भाणा सहिणा हुक्म मनाया, हुक्मी हुक्म वरते वरतार।

तेरे अंदर भरे भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दिता वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। सुत शब्द उठ बलवान, सो पुरख निरँजण आप उठाईआ। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवान, वस्त अमोलक आपणी आप आप वरताईआ। एकँकारा देवे दान, आपणा रंग रंग चढ़ाईआ। आदि निरँजण नूर महान, जोती शब्द शब्द

कुड़माईआ। अबिनाशी करता वेखे मार ध्यान, आदि जुगादि संग निभाईआ। श्री भगवान तेरा रक्खे माण, दो जहानां वेख वखाईआ। पारब्रह्म हो प्रधान, सच प्रधानगी दए जणाईआ। तूं बणना साचा काहन, सीस तेरे ताज टिकाईआ। तेरा झुले सच निशान, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। तेरा पिता श्री भगवान, तेरी जननी नज़र किसे ना आईआ। तेरा चिल्ला तीर कमान, मेरा नाउँ वड्याईआ। तेरा पीण खाण, मेरी आसा आस तकाईआ। तेरा बल वड बलवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। शब्द सुत चढ़या चा, उठ उठ ख़ुशी मनाइंदा। अबिनाशी करता मिल्या इक्क मलाह, साचा पल्लू हथ्थ फड़ाइंदा। आदि देवे इक्क सलाह, साचा मार्ग इक्क जणाइंदा। मेरा रूप तेरा नाँ, तेरा नाउँ मेरा रूप अख्वाइंदा। सदा सुहेला बण बण पकड़ां बांह, सगला संग रखाइंदा। तेरे हथ्थ देवां न्याँ, जो करनी किरत कमाइंदा। आपणा लहिणा देणा दयाँ समझा, तेरा पर्दा आप उठाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी झोली देवां पा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साख्यात रूप धराइंदा। शब्द सुत सुण संदेस, दर आपणे ख़ुशी मनाइंदा। तूं साहिब सतिगुर नर नरेश, तेरा कीता भुल ना जाइंदा। हउँ सेवक बण करां आदेश, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। आदि जुगादि मैं तेरा दर्शन लवां पेख, तुध बिन अवर ना कोए मोहे सुखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण बिध तेरा कारज करां सिद्ध हुक्मी हुक्म हुक्म मनाइंदा। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका गुण जणाईआ। शब्द सुत तेरी धार बंधा, तेरा तेरे नाँ वड्याईआ। आपणा नूर लवां प्रगटा, जल्वा नूर नूर दरसाईआ। आपणा नाउँ लवां रखा, विष्न आपणी खेल खिलाईआ। विश्व रूप हो रिहा समा, विशा आपणा ना किसे जणाईआ। तेरा संग लवां निभा, विछड़ कदे ना जाईआ। साचा मार्ग लवां लगा, दे मति एका तत्त दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वण्ड रिहा वंडाईआ। विष्न उपावां विश्व धार, आपणा खेल खिलावणा। शब्द सुत तेरा सच प्यार, तेरे नाल प्रनावणा। आपणे चरन कँवल बख़्शां धूढ़ ख़ाक छार, चरन चरन उप्पर टिकावणा। विच्चों कढ्ढां अमृत धार, अंमिउँ रस आप चुआवणा। विष्नूं अंदर धरां भण्डार, साची सेवा आप कमावणा। अंदर खिड़े सच्ची गुलज़ार, पारब्रह्म प्रभ वण्ड वण्डावणा। ब्रह्म उतप्त होए अगम्म अपार, कँवल कँवला सोभा पावणा। रुत्ती रुत्त वेख बहार, अबिनाशी अचुत ख़ुशी मनावणा। साचे सुत मेरे दुलार, तेरा मार्ग आपे लावणा। थिर घर वसाए दया कमाए तेरा वेखे सच दरबार, सचखण्ड आपणा आसण लावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं अंदर आपा धर, कँवल नाभी आपे भर, कँवल कँवला आप खिलावणा। कँवल खलाए कमलापाती, कँवल नैण वडी वड्याईआ। प्याए जाम बण

बण साकी, सच प्याला हथ्थ रखाईआ। विष्न खोल्ले आपे ताकी, नाभी कँवल वड वड्याईआ। लेखा जाणे आपणा बाकी, देणा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख एका हरि, विष्न ब्रह्मा लए उपजाईआ। विष्न ब्रह्मा आपे जा, जननी जन आप अख्वाइंदा। जोती जोत बण बण मां, जोती जाता आपणे रंग रंगाइंदा। दाई दाया बेपरवाह, परवरदिगार खेल खिलाइंदा। थिर घर दुआरा पार करा, सुन्न अगम्म वेख वखाइंदा। धूंआँधार रंग रंगा, आप आपणी कल वरताइंदा। एका रूप लए वटा, शंकर आपणे गल लगाइंदा। सोभावन्त बेपरवाह, भोला नाथ आप समझाइंदा। तिन्नां मेला सहिज सुभा, एका गुण वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव मेल मिला, आसा मनसा पूर कराइंदा। एका विद्या दए पढ़ा, निष्अक्खर आप जणाइंदा। सो आपणा नाउँ धरा, हँ रूप विष्न ब्रह्मा शिव बणाइंदा। सोहँ आपणी धार चला, शब्दी तेरा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाना साचा राणा, पुरख अकाला दीन दयाला हरि गोपाला, आपणा आप जणाइंदा। धुर फ़रमाना सच संदेसा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ करन आदेसा, बैठे सीस झुकाईआ। साहिब सुल्तान शाह तूं नर नरेशा, बेपरवाह तेरी सच्ची शहिनशाहीआ। कवण दुआर तेरा नेत्र पेखां, कवण घर ख़ुशी मनाईआ। कवण दुआर लिखें लेखा, साचा मार्ग दएँ जणाईआ। कवण रूप धारें भेसा, निराकार साकार रूप हो जाईआ। कवण रूप जोती जोत प्रवेशा, नारी कन्त कवण वड्याईआ। कवण रूप खेड खेडा, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तिन्ने मंगदे तेरा दर, दर बैठे सीस झुकाईआ। दर दरवेश बण भिखारी, ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकाइंदा। तूं दाता निराकार निरँकारी, निरँकार तेरा भेव कोए ना आइंदा। एका वस्त बख्श अपारी, अपर अपार वेख वखाइंदा। लेखा तेरा लिखे ना कोए लिखारी, लिख लिख लेख ना कोए जणाइंदा। एका देणा दरस आधारी, दरस तेरा एका मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, एका वार सर्ब समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुण कर ध्यान, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। सच संदेसा धुर फ़रमान, शब्दी शब्द नाउँ वड्याईआ। आदि जुगादी मन्नणी आण, भुल कदे ना जाईआ। जुग जुग खेलां खेल महान, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। तिन्नां देवां एका दान, अतोट अतुट रखाईआ। विष्नूं तेरा विश्व पकवान, पारब्रह्म वेख वखाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म निशान, लक्ख चुरासी घाड़त लए घड़ाईआ। शंकर तेरा तीर निशान, अन्तिम लेखा दए चुकाईआ। तिन्नां विचोला हरि भगवान, जुग जुग वेखे थाउँ थाँईंआ। एका देवे वस्त महान, त्रैगुण माया झोली पाईआ। पंज तत्त करे प्रधान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश

खेल खिलाईआ। निरगुण सरगुण वखाए निशान, मन मति बुध वड वड्याईआ। लेखा जाणे चतुर सुजान, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, आदि पुरख आपणी दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुणना कन्न ला, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। एका ढोला लैणा गा, विष्नूं आपणा मेल मिलाइंदा। ब्रह्मे राग दए सुणा, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। चारे वेदां लए लिखा, आपणा लेखा बन्द कराइंदा। चारे युगां वण्ड वण्डा, चारे खाणी वेस वटाइंदा। चारे बाणी आप उपा, चारे कुण्ट आप सुणाइंदा। चार वरन लए तरा, चार जुग बन्धन पाइंदा। चारों कुण्ट फेरा पा, चार यारी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका वर, साचा नाम आप समझाइंदा। साचा नाम हरि निरँकारा, आपणा आप जणाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसारा, पारब्रह्म वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी दए आधारा, घड़ भाण्डे लए बणाईआ। अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज कर त्यारा, त्रैगुण मेला सहिज सुभाईआ। वेखे विगसे करे विचारा, वेखणहारा दिस ना आईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्चे दरबारा, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, बोध अगाधी करे पढ़ाईआ। थिर घर वेखे खोल्ह किवाड़ा, दर दरवाज़ा ना कोए रखाईआ। सुन्न अगम्मी धूंआँधारा, आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे दिता एका वर, लक्ख चुरासी झोली पाईआ। ब्रह्मा मंगे मंग, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं साहिब सूरा सरबंग, तेरा भेव कोए ना आइंदा। एका जोत धार आपणी बख्शिश कर बख्शंद, जगत अन्धेरा ना मोहे भाइंदा। तेरा नूर सूरज चन्द, रवि ससि जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मुकाउणा अन्तिम पन्ध, जुगो जुग गेड़ा कवण भवाइंदा। जुग जुग गेड़ा हरि निरँकार, आपणा आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार, साचे सेवक सेव लगाईआ। रवि ससि कर त्यार, किरन किरन किरन रुशनाईआ। मंडल मण्डप लए उभार, गगन गगनंतर सोभा पाईआ। जल जल रूप आप करतार, बिम्ब आपणी धार वखाईआ। धूढ़ी बख्शे एका छार, धवल दए वड्याईआ। लक्ख चुरासी भर भण्डार, लोकमात दए टिकाईआ। निरगुण सरगुण हो उज्यार, पंज तत्त खेड़ा आप वसाईआ। ब्रह्मे होणा ख़बरदार, तेरा लेखा दए वखाईआ। नौ खण्ड वण्डे विच संसार, नौ दुआरे फोल फोलाईआ। चार चार करे विहार, चार चार बन्धन पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग उतरे पार, जुग जुग गेड़ा आप भवाईआ। कोटन कोटि भेजे गुर अवतार, साध सन्त लोकमात कर रुशनाईआ। भगत भगवन्त वेखे आण, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुखां देवे साचा दान, नाम निधाना झोली पाईआ। गुरसिख करे दर परवान, जो बैठे राह तकाईआ। सभ दा दाता इक्क भगवान, इक्क इकल्ला हर घट वेखे थाउँ थाँईंआ। ब्रह्मे तेरी

अन्त करे कल्याण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सभ दा मेटे आप निशान, आदि आदि जुगादि जुगादि आपणी खेल खिलाईआ। इक्क सुणावे धुर फ़रमान, सच संदेसा आप समझाईआ। लोकमात बणाउणा इक्क मकान, आत्म परमात्म एका घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लेखा दए मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी साची सेव, हरि साचा सच लगाइंदा। लेखा जाणे करोड़ तेतीसा देवी देव, सुरपति राजा इन्द मेल मिलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ अलख अभेव, अलख अलखना आपणे रंग आप समाइंदा। ना कोई रसना ना कोई जेहव, बत्ती दन्द ना कोए हलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव तेरा अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा अन्त कराउणा, हरि साचा सच जणाईआ। नौ सो चुरानवे चौकड़ी जुग लोकमात वेख वखाउणा, गेड़ा गेड़े विच भवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वण्ड वण्डाउणा, कलिजुग खेल करे बेपरवाहीआ। अवतार गुर तेरी सेव लगाउणा, लक्ख चुरासी तेरा संग निभाईआ। धुर फ़रमाना आप सुणाउणा, सच संदेसा इक्क वखाईआ। जुगा जुगन्तर वण्ड वण्डाउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे थाउँ थाँईंआ। जेरज अंड तेरा पन्ध मुकाउणा, उत्भुज सेत्ज रहिण ना पाईआ। लोकमात तेरा खेड़ा ढाउणा, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। विष्न सुण हरि जणाया, आदि जुगादी कार। जो घड़या सो भन्न वखाया, थिर रहे ना विच संसार। चार जुग चौकड़ी इक्क बणाया, चार वेद करे प्यार। चारे वरन रहे जस गाया, चारों कुण्ट कुण्ट जैकार। चारे वरन अठारां बरन रूप धराया, नाल रलाया विभचार। पुराण अठारां आपे गाया, वेद व्यासा दे आधार। वेद कतेब भेव ना राया, शास्त्र सिमरत करन पुकार। गीता ज्ञान दए दुहाया, हरि हरि अन्त ना पारावार। अञ्जील कुरान मुख शरमाया, नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार। खाणी बाणी पल्लू पाया, दोए दोए जोड़ करे निमस्कार। तेई अवतारां सीस झुकाया, बैठे दर दरबार। गुर दस ख़ुशी मनाया, एका बोल शब्द जैकार। भगत भगवन्त मंगल गाया, अठ दस अठारां होए पार। विष्नूं तेरा संगल तेरे हथ्थ फड़ाया, चारों कुण्ट होणा ख़बरदार। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म रूप प्रभ मंगण आया, ब्रह्म वेखे वेखणहार। जगत अन्धेरा झूठा छाया, साचा चन्द ना कोए उज्यार। गुर का रूप किसे नज़र ना आया, नेत्र खुल्ल्हे ना कोए किवाड़। रसना जेहवा रहे गाया, उच्ची कूक कूक पुकार। मुल्लां शेख मुसायक पीर देण दुहाया, मिल्या मेल ना परवरदिगार। पंडत पांधे किसे हथ्थ ना आया। राम राम सच्चा करतार। ग्रन्थी पन्थी राह भुलाया, गोबिन्द मिल्या ना मीत मुरार। मन्त्र नाम सच ना किसे दृढ़ाया, काम क्रोध लोभ मोह मिल्या हँकार। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा वेला अन्तिम आया, धरनी रोवे करे पुकार। खुल्ह्ड़े केस गल विच पाया, प्रभ

दी बणी आण भिखार। गुर दस्मेश क्यों मुख भवाया, मैनूं दिसे ना कोए सहार। गुरमुख कोई नज़र ना आया, घर घर होया विभचार। तूं लिख लिख लेखा गया समझाया, जीवां जंतां कर प्यार। कलिजुग वेले अन्तिम होए सहाया, निहकलंक नरायण नर अवतार। मात पित ना किसे जाया, महांबली उतरे आपणी वार। नानक निरगुण रिहा ध्याया, निरवैर पुरख अकाल। वेद व्यासा सीस झुकाया, दोए जोड़ मंगे दान। मूसा उच्ची कूक कूक अल्लाया, देवे आप फ़रमान। ईसा तेरा लेखा आपणे अग्गे टिकाया, तूं देणा साचा दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, कीता कौल भुल ना जाया। आदि जुगादि कदे ना भुल्लया, अभुल बेपरवाह। आदि जुगादि कदे ना डुलया, अडुल इक्क ख़ुदा। लक्ख चुरासी आपे मौलया, मौला आपणा नाम धरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा विष्न शिव तेरा लेखा दए चुका। तिन्नां लेखा अन्त चुकाउणा, कलिजुग वारी अन्तिम आईआ। तिन्नां लेखा आप मुकाउणा, भरम भुलेखा दए कढ्ढाईआ। काल महाकाल दर मंगाउणा, एका हुक्म सुणाईआ। तेई अवतारां भेव खुल्लाउणा, चार जुग वेख वखाईआ। भगत अठारां पर्दा लाउहणा, भगवन दए वड वड्याईआ। गुर गुर दस्स जोत जगाउणा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। गोबिन्द लेखा पूर कराउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सम्बल नगरी धाम सुहाउणा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। पुरख अबिनाशी आसण लाउणा, निहकलंका नाउँ धराईआ। शब्द डंका इक्क वजाउणा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रिहा उठाईआ। धुर फ़रमाना हुक्म सुणाउणा, कलिजुग मेटे कूड़ी शाहीआ। राज राजानां तख़्तों लाउहणा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। चार वरन एका घर बहाउणा, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पन्ध मुकाउणा, वरन बरन ना कोए पढ़ाईआ। राम रहीम एका रंग रंगाउणा, नानक गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। ईसा मूसा बन्धन पाउणा, लेखा जाणे संग मुहम्मद चार यार चार यारी नूर इलाहीआ। सचखण्ड दुआरा सोभा पाउणा, थिर घर वजदी रहे वधाईआ। मुकामे हक डेरा लाउणा, बेपरवाह बेऐब परवरदिगार आपणा नूर धराईआ। एका कलमा अमाम पढ़ाउणा, कायनात करे शनवाईआ। एका आबहयात पिआउणा, सच प्याला हथ्थ उठाईआ। शरअ शरीअत इक्क रखाउणा, लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। रामा कृष्ना नज़री आउणा, आदि शक्ति जोत जगाईआ। चतुर्भुज रूप धराउणा, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। फ़तहि डंका इक्क वजाउणा, एका ढोला रिहा सुणाईआ। राउ रंकां एका धाम बहाउणा, झूठी मेटे जगत शाहीआ। फड़ फड़ काग हँस बणाउणा, सोहँ हँसा चोग चुगाईआ। दूई द्वैती रोग मिटाउणा, अमृत जाम इक्क प्याईआ। हरख सोग सर्ब गंवाउणा, चिंता दुःख ना कोए रखाईआ। चौदां लोक एका नाम ध्याउणा, त्रैभवन वज्जे वधाईआ। चौदां तबकां निउँ निउँ सीस झुकाउणा, दीन

इस्लाम इक्क समझाईआ। सभ ने सजदा इक्क दुआर कराउणा, पुरख अकाल इष्ट देव हो जाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नाल रलाउणा, पल्लू नाल पल्लू बंधाईआ। जम का फास काल का त्रास मेट मिटाउणा, महाकाल होए सहाईआ। गुरमुखां पूरी आस कराउणा, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। निज घर आत्म वास धराउणा, निज नेत्र दए खुल्हाईआ। एका मन्दिर सोभा पाउणा, दूजी शब्द वज्जे शनवाईआ। तीजे नेत्र दरस दिखाउणा, चौथे पद करे रसाईआ। पंचम घर आप बहाउणा, छेवें छप्पर छन्न ना कोए वड्याईआ। सत्तवें सति सतिवादी आपणे रंग रंगाउणा, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाईआ। अठ्ठां तत्तां पन्ध मुकाउणा, नौ दर डेरा ढाहीआ। बजर कपाटी खोल्ह खुलाउणा, शब्द खण्डा इक्क चमकाईआ। पंच विकारा सत्थर ढाउणा, आसा तृष्ना रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, विष्न ब्रह्मा शिव तेरा लेखा दए वखाईआ। तेरा लेख वखावण आया, निहकलंका जामा धार। लक्ख चुरासी ल्ए समझाया, आत्म अन्तर वजाए इक्क सतार। काया मन्दिर डेरा लाया, हरि मन्दिर वेखे आप निरँकार। डूँघी कंदर किसे दिस ना आया, जीव जंत सुत्ते पैर पसार। अंदरे अंदर खेल कराया, करे कराए सच गुफ्तार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग कर्ज़ा दए उतार। जुग जुग कर्ज़ा लाहे मकरूज़, लहिणा देण जगत चुकाइंदा। आदि जुगादि रक्खे आपणी सूझ, जीव जंत सूझ ना कोए वखाइंदा। जुगा जुगन्त खुल्हाए भेव गूझ, भेव अभेदा आप दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। वेस वटाए जुगा जुगन्तर, जुग करता बेपरवाहीआ। गुर अवतारां देवे मन्त्र, एका नाम शब्द वड्याईआ। लेखा जाणे गगन गगनंतर, गगन पातालां फोल फुलाईआ। लक्ख चुरासी बुझाए बसन्तर, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, परवरदिगार नाउँ अख्वाइंदा। देवणहारा सच सलाह, जुग जुग वेस वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम फेरा पा, रूप अनूप धराइंदा। कागद कलम कोई लिखे ना, सत्त समुंदर नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। बनास्पत मारे धाह, अठारां भार ना वण्ड वंडाइंदा। ब्रह्मा मंगे अन्त पनाह, तेरा अन्त कोए ना पाइंदा। विष्नूं ढह प्या सरना, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। शंकर मंगे बख्श मेरे गुनाह, अवगुण आपणा तेरे अग्गे फोल वखाइंदा। तेई अवतार आपणा पल्लू अग्गे रहे डाह, चार जुग दे चार दिन साडी झोली पा, ईसा मूसा मुहम्मद सजदा सीस झुकाइंदा। कलमा एका पढ़ ख़ुदा, नबी रसूल तूं समझाइंदा। अमाम अमामां देवें पनाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल सच्चा शहिनशाह। शहिनशाह हरि वड

सुल्ताना आदि जुगादि वडी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर खेल महाना, जुग करता आप कराईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधाना, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सति सरूपी सति निशाना, सति सतिवादी हथ्थ उठाईआ। लेखा जाणे गोपी कान्हा, मंडल रास वेख वखाईआ। देवण आया धुर फ़रमाना, शब्द संदेसा आपे गाईआ। लक्ख चुरासी होई नादाना, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। साचा दिसे ना मन्दिर मकाना, हरि मन्दिर सीस ना कोए झुकाईआ। अमृत मिल्या ना पीणा खाणा, अठसठ बैठे फेरीआं पाईआ। अनहद सुणया ना साचा गाना, झूठे ताल रहे वजाईआ। घर मिल्या ना हरि भगवाना, मन्दिर टल्ल रहे खड़काईआ। जिस दा दिता पीणा खाणा, सो भुलया बेपरवाहीआ। कलिजुग तेरा अन्तिम मेटे झूठ निशाना, कूड़ी क्रिया दए गंवाईआ। सतिजुग सति करे प्रधाना, सति सतिवादी मार्ग लाईआ। एका शब्द चढ़ाए बबाणा, लोआं पुरीआं पार कराईआ। एका राग एका गाणा, छत्ती राग मुख शरमाईआ। एका कलमा कलाम इलाही कर प्रधाना, कामल आपणा नाउँ दए जणाईआ। सोहँ शब्द लक्ख चुरासी देवे दाना, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। हरिजन मेला हरि गोबिन्द, हरि सज्जण मेल मिलाया। गुर सतिगुर मेटे सगली चिन्द, निरभउ भय ना कोए जणाया। गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, गुणवन्ता होए सहाया। अमृत जाम प्याए सागर सिन्ध, सति प्याला हथ्थ रखाया। गुरमुख बणाए आपणी बिन्द, सुत अनादी एका जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए उठाया। हरिजन उठाए आप प्रभ, दीनन दीनां दया कमा। उलटा करे कँवल नभ, अमृत झिरना दए झिरा। पंच विकारा देवे दब्ब, शब्द अगम्मी भार टिका। लहिणा देणा मुकाए झब्ब, लक्ख चुरासी फंद कटा। अंदरे अंदर मुकाए पन्ध, दस्म दुआरी दए चढ़ा। शब्द अनाद सुणाए सुहागी छन्द, पंचम सखीआं नाल रला। आत्म जणाए परमानंद, परमात्म मेला सहिज सुभा। निरगुण जोत चढ़ाए चन्द, निरगुण जोत कर रुशना। हथ्थ फड़ाए नाम चण्ड प्रचण्ड, साचा खण्डा इक्क चमका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिखां अंदर आपणा नूर आप दरसा। गुरसिखां अंदर आपे वड़, गुर पूरा दया कमाईआ। डूँग्घी भँवरी पार कर, सुखमन तेरा पन्ध मुकाईआ। पंच विकारा जाए झड़, जिस दुआरे सतिगुर जाईआ। अमृत प्याला प्याए भर, निझर आपणी दया कमाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। आत्म सेजा बहे चढ़, सच सिँघासण दए वड्याईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, सतिगुर पूरा सो अख्वाईआ। आपणी विद्या गया पढ़, लक्ख चुरासी करे पढ़ाईआ। अग्नी हवन ना जाए सड़, ना मरे ना जाईआ।

ना उह पुरख ना उह नार, नर नरायण आपणा नाउँ धराईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, वरन बरन ना कोए रखाईआ। जो जन करे सच प्यार, तिस दर आवे देवे दरस बेपरवाहीआ। गुरसिख तेरी महिमा अपर अपार, कागद कलम ना लिखे शाहीआ। तेरा दरस मंगे ब्रह्मा विष्न शिव बण भिखार, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाईआ। जिस सतिगुर पूरा मिल्या विच संसार, लहिणा देणा गया मुकाईआ। अन्तिम वेखे आपणा घर बार, थिर घर साचे मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, लक्ख चुरासी लए फड़, गुर अवतारां कोलों मंगे इक्क ग्वाहीआ। गुर अवतार बणो ग्वाह, हरि साचा सच जणाइंदा। चार वरन पए औझड़ राह, साचा राह दिस किसे ना आइंदा। एका नूर नूर ख़ुदा, एका रूप राम रिहा अख्वा, एका गोबिन्द पिता पुरख अकाल मनाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी जीव जंत क्यों वण्डी बैठे पा, वण्ड वण्ड हिस्सा आपणे हथ्थ ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचे अश्व आपे चढ़, नव नौ फेरा आपे पाइंदा। नव नौ शाह सवारा, शाह सुल्ताना फेरा पाईआ। नीला नीली धारों आया पारा, औंदा जांदा दिस ना आईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड रिहा चमकाईआ। दो जहानां पावे वण्डां वंडणहारा, त्रिलोकी आपणे चरनां हेठ दबाईआ। चौदां लोकां दए हुलारा, चौदां तबकां मारे मारा, लेखा चुक्के संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, बैठा रहे इक्क इकांता, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, शाहो शाबासा राज राजाना शाह सुल्ताना एका एक आपणा हुक्म सुणाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमान, धुर दरबारी आप जणाइंदा। तख्त निवासी साचे तख्त बैठ भगवान, अदल अदालत आप कमाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग बणया रिहा निगहबान, गुर अवतार सेवा लाइंदा। कलिजुग अन्तिम करे पहचान, मिहबान बीदो आपणा खेल खिलाइंदा। रूप रंग ना कोए निशान, जोती जाता हो प्रधान, परम पुरख आपणा हुक्म आप अलाइंदा। काल रहित नौजवान, साहिब सच्चा जाणी जाण, बेपहचान बैवा रूप आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। चारों कुण्ट शब्दी फेरा, हरि सतिगुर आप भवाईआ। चारों कुण्ट अगम्मी घेरा, निरगुण रिहा रखाईआ। चारों कुण्ट वेखे झेड़ा, भरमे भुल्ली लोकाईआ। चारों कुण्ट उजड़े खेड़ा, हरि साचा दए उखड़ाईआ। चारों कुण्ट खुल्ला वेहड़ा, धरत मात ख़ुशी मनाईआ। चारों कुण्ट कोए ना दिसे सञ्झ सवेरा, अन्ध अन्धेरा एका छाईआ। चारों कुण्ट एका गेड़ा, चौथे जुग आप दवाईआ। वक्त लँघाया

कर कर हेरा फेरा, सम्मत सम्मती वेख वखाईआ। सिँघ शेर हरि बैठा रिहा कर के जेरा, आप आपणा मुख छुपाईआ। अन्तिम करे हक नबेड़ा, ख़ालक वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, लहिणा देणा देणा लहिणा विष्न ब्रह्मा शिव तेरी झोली पाईआ। लहिणा देणा झोली पाउणा, वेला अन्तिम आया। नेत्र नैणां सर्ब वखाउणा, पुरख अबिनाशी वेस वटाया। जिस ना मन्नया गुर का कहिणा, तिस देवे फड़ सज़ाया। लाड़ी मौत खाए डैणा, चारों कुण्ट रिहा कुरलाया। गुरमुख विरले सतिगुर दुआरे एका बहणा, जिस हरि जस रसना गाया। हरिजन दरसन पेखे नैणा, नैनण नैन नैन मिलाया। सन्त साजन मन पाए गहिणा, तन चोला नाम हंढाया। भगत भगवन्त भाणा सहिणा, कलिजुग वेला अन्तिम आया। शाह सुल्तान कोए ना रहिणा, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा लेखे पाया। लेखा लेखे पाए भगवान, सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराईआ। कलिजुग तेरा मेटे झूठ निशान, दीन दुनी वेखे सर्ब लोकाईआ। तेरा झूठ होया प्रधान, तेरा जूठ रिहा हल्काईआ। चार वरन तेरी मन्नी बैठे आण, हरि भुल्लया बेपरवाहीआ। नार विभचार होई रकान, कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। मदिरा मास पीण खाण, अमृत रस ना कोए चुआईआ। रसना जेहवा सारे गाण, हिरदे राम ना कोए वसाईआ। बाहरों करदे तेरा ध्यान, अंदरों रसाँई कोए नज़र ना आईआ। जीवां जंतां देण ज्ञान, आपणी मति सर्ब भुलाईआ। पढ़ पढ़ रसना करन वख्याण, तेरी व्याख्या तेरे विच्चों नज़र किसे ना आईआ। बण बण सन्त करन कल्याण, आपणा फंद ना कोए कटाईआ। घर घर वखांउदे फिरन शब्द बबाण, हरि का शब्द नज़र किसे ना आईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलिजुग अन्तिम सभ दी करे इक्क पछाण, निहकलंका जामा पाईआ। तीर अगम्मी मारे बाण, झूठा डेरा देवे ढाहीआ। दो सौ छपंजा दिन इक्क दूजे दी मन्नणी आण, वेला गया हथ्थ ना आईआ। फिर पारब्रह्म पुरख अबिनाशा आपणे हथ्थ लए कमान, लक्ख चुरासी तेरा दिसे ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी धार चलाईआ। निरगुण धार शब्द अपारा, सरगुण गुर गुर रूप जणाइंदा। गुर गुर मेल हरि करतारा, दर घर साचा आप सुहाइंदा। गुर गुर नाम नाम वणजारा, साचे हट्ट आप विकाइंदा। गुर गुर गुरमुख दए आधारा, दर दर साची सेव कमाइंदा। गुर गुरसिखां करे प्यारा, गुरसिख गोदी आप उठाइंदा। कलिजुग आई अन्तिम वारा, काल डौरू आपणा हथ्थ उठाइंदा। चारों कुण्ट वज्जे नगारा, निगहबान आप सुणाइंदा। हरिजन होए ख़बरदारा, लक्ख चुरासी त्रैगुण माया आलस निन्दरा पर्दा इक्क वखाइंदा। कादर कुदरत वेखे वेखणहारा, ख़ालक ख़लक भेव मिटाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरी हरि आपणा रूप धराइंदा। हरी हरि हरि निरँकारा, हरी ओम सति तत्त जणाईआ। यनम सुंदरी बाला, सोइम रूप बेपरवाहीआ। नाम अगम्मी एका माला, मन मन ही आप बणाईआ। करे खेल पुरख अकाला, अकाल आपणी दया कमाईआ। कलिजुग अन्तिम मार्ग दस्से इक्क सुखाला, चार वरनां दए समझाईआ। काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाला, घर घर विच सोभा पाईआ। अठ्ठे पहर रहे उजाला, अन्ध अन्धेर ना कोए वखाईआ। शब्द नाद वज्जे धुन्काना, धुनी नाद आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, आपणी बूझ दए बुझाईआ। जिस बुझाए सो बुझिआ, कलिजुग तेरा अन्धेरा अन्ध। गुरसिख लेखा चुक्के एका दूज्जया, तीजे लोयण मुक्के पन्ध। चौथा घर एका सुझिआ, पंचम गाए सुहागी छन्द। सतिगुर चरन जो जन लुझिआ, इक्क वखाए परमानंद। नाभ कँवल करे मूध्या, दीन दयाल साहिब बख्शंद। गुरमुख विरला मात उठया, जिस त्रैगुण तोड़या फंद। सतिगुर प्याए अमृत जाम घुट्टया, दिवस रैण अनन्द। माणस जन्म ना जाए लुट्टया, काम क्रोध लोभ मोह हँकार पंजे चोर करे खण्ड। गुरसिख आप मनाया रुस्सया, शब्द सुणाया सुहागी छन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन चढ़ाए साचा चन्द। हरिजन चन्द करे प्रकाश, सतिगुर साचे वज्जे वधाईआ। लक्ख चुरासी जाए विनास, गुरमुख साचे करे रुशनाईआ। देवे वड्याई पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां पार कराईआ। सतिगुर पूरा वसे सदा पास, एथे ओथे होए सहाईआ। गुरसिख होए ना कदे निरास, आसा पूरन आप कराईआ। वेले अन्त करे बन्द ख़लास, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त ना पुछे वात, लाड़ी मौत ना लए प्रनाईआ। वेले अन्तिम पुछे आप, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जन भगतां बणे माई बाप, पिता पूत सेव कमाईआ। जगत जलंदा लए राख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दरस दिखाए साख्यात, स्वच्छ सरूप रूप वटाईआ। हरिजन बणाए पारजात, आप आपणा मेल मिलाईआ। चरन कँवल बंधाए नात, चरन कँवल बख्शे सच सरनाईआ। ना कोई दिवस ना कोई रात, गुरसिख एका रंग समाईआ। सतिगुर पूरा जन्म जन्म दा पूरा करे घाट, जो जन आए सरनाईआ। मस्तक जोत जगाए ललाट, लाटां वाली ना कोए मनाईआ। गुरसिख तेरा लहिणा देणा चुक्के तीर्थ ताट, गंगा जमना गोदावरी सुरस्ती तेरे चरनां हेठ वगाईआ। तेरा लेखा चुक्या पूजा पाठ, एका पुरख अकाल मनाईआ। तूं विक्या साचे हाट, तेरी करता कीमत पाईआ। तूं उतरें आपणे घाट, दूजा पत्तण कोए रहिण ना पाईआ। तेरी नेड़े आई वाट, कलिजुग बैठा पन्ध मुकाईआ। लक्ख चुरासी चोला जाणा पाट, जो घड़या भन्न वखाईआ । किसे कोल ना दिसे नाम दात, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। मन मति रोवे नार कमज़ात, गोबिन्द सूरा

८६२

रिहा डराईआ। भरमे भुल्ले ज़ात पात, नानक तेरी रीती नज़र ना आईआ। कलिजुग जीव पैणे डूँग्घे खात, खाता धर्म राए पुटाईआ। वीह सौ उन्नी बिक्रमी पहली चेत्र वेखणा मार झात, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। गुरमुख विरला रक्खे आपणी ज़ात, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुर पीर अवतारां कोलों मंगे अन्त ग्वाहीआ। बण ग्वाह होणा ज़ामन, हरि साचा सच जणाइंदा। गुर अवतार पकड़ो दामन, जो तेरा मात अख्वाइंदा। रैण अन्धेरी होई शामन, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। साध सन्तां वरया कामनी कामन, काम क्रोध सर्ब हल्काइंदा। वसया खेड़ा ना कोए ग्रामन, काया बंक ना कोए वड्यांअदा। पकड़े बांह ना कोए ब्राह्मण, क्षत्री बल ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। बण के ज़ामन फड़ाओ पल्ला, हरि साचा सच जणाईआ। पुरख अकाल एका वार कराए हल्ला, हल्ला शब्दी नाम हिलाईआ। नाम कटारा फड़े भल्ला, लुहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। करन देवे ना वल छला, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। चढ़ के बैठा नेहचल धाम अटल्ला, सच सिँघासण आसण लाईआ। आदि खेल कराया इक्क इकल्ला, अन्त आपे वेखण आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका मंगे सच सफ़ाईआ। सच सफ़ाई देणी गुर अवतार, हरि साचा सच जणाइंदा। आपणे फड़ फड़ कढ्ढणे बाहर, एका वार हुक्म फ़रमाइंदा। चार जुग जो करया विहार, जुग करता वेख वखाइंदा। जन्म जन्म दा कर्ज़ा दए उतार, पूर्ब जन्मां वेख वखाइंदा। हर्ज करे ना सच्ची सरकार, हक हकीकत आप सालांहयदा। सच रफ़ाक्त वेखे सांझा यार, आप आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच संदेसा नर नरेशा, निरगुण निराकार आपणा आप सुणाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेअन्त होए आप प्रधान, दो जहान प्रधानगी आपणे हथ्थ रखाइंदा।

★ ३ सावण २०१८ बिक्रमी गुरदित सिँघ दे गृह राम दीवाली ज़िला अमृतसर ★

सो पुरख निरँजण ठांडा दरबारा, हरि पुरख निरँजण आप उपाइंदा। एकँकारा कर पसारा, आदि निरँजण निराकारा, जोती जोत डगमगाइंदा । अबिनाशी करता अगम्म अपारा, अलख अलखणा श्री भगवान सच निशान आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, अजूनी रहत कर पसारा, पुरख अकाल आपणा रूप आप धराइंदा। सचखण्ड खोल्ह सच किवाड़ा, तख्त निवासी वसे साचा लाड़ा, परम पुरख सोभा पाइंदा। थिर घर जाणे आपणी धारा, करे खेल आप करतारा, करता पुरख

८६३

आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर सोभा पाइंदा। सचखण्ड दुआरा साचा मन्दिर, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण वसे अंदर, निराकार सच्चा शहिनशाहीआ। एकँकारा सर्ब गुण अन्तर, आदि निरँजण आप उपाए आपणी बसन्तर, जोत अग्न अग्न रुशनाईआ। श्री भगवान बणाए बणतर, अबिनाशी करता सेव कमाईआ। पारब्रह्म बेअन्त बेअन्त साचे धाम सोभावन्त, अगम्म अथाह आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर आपे वड़, सच दुआरा दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण नारी कन्त, निरगुण आपणा मेल मिलाइंदा। एकँकारा आदि अन्त, आदि जुगादी वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड साचा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआर सुहञ्जणा, सोभावन्त करे निरँकार। जोत जगाए आदि निरँजणा, दीवा बाती ना कोए पसार। करे खेल दर्द दुःख भय भंजना, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, आपणा करे आप विचार। सच विचारा हरि निरँकारा, निरगुण आपणा आप कराईआ। आपणी इच्छया भर भण्डारा, दर साचे आप वरताईआ। साचा सुत आप उभारा, शब्दी शब्द वड वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यारा, त्रैगुण अतीता त्रै त्रै बन्धन पाईआ। पंज तत्त बोल जैकारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। सरगुण लाए इक्क अखाड़ा, ताल तलवाड़ा आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रूप अनूप आप धराईआ। रूप अनूप शाहो भूपा, भूपत आपणी खेल खिलाइंदा। वसणहारा चारो कूटां, दहि दिशा आपणा आसण लाइंदा। खेल कराए सदा अन रंग रूपा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे चढ़, साचा घाड़न आप घड़ाइंदा। घाड़त घड़े पुरख बिधाता, आपणी बणत हरि आप बणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बध्धा नाता, साचा जोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। आपे बणे पिता माता, दाई दाया सेव कमाईआ। आप सुणाए आपणी गाथा, अगम्म अगम्मड़ी करे पढ़ाईआ। सर्ब कल हरि समराथा, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। एका देवे अमोलक दाता, दानी आपणा नाम वरताईआ। बैठा रहे इक्क इकांता, आदि पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण वेस अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। सच सिँघासण इक्को मल्ला, थिर घर साचा वड वड्यांअदा। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाया पल्ला, शब्दी डोर हथ्थ रखाइंदा। एका दोआ मेटा सल्ला, एका घर वखाइंदा। जोती नूर आपे रल्ला, जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, भेव अभेदा अछल अछेदा आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा आपे चुक्क, आपणा भेव खुल्हाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उज्जल करे मुख, दे मति ज्ञान दृढ़ाईआ। आसा तृष्ना मेटे भुक्ख, एका दरसी दरस वखाईआ। हरि का बूटा ना जाए सुक्क, अमृत सिंच हरा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। फुल फुलवाड़ी लाया बाग, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। जोती दीपक जगे चिराग़, अन्ध अन्धेर ना कोए वखाइंदा। सचखण्ड निवासी गया जाग, थिर घर आपणा चरन टिकाइंदा। शब्दी सुत देवे इक्क वैराग, वैरागी आपणा वैराग वखाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव पकड़े वाग, डोरी आपणे हथ्थ रखाइंदा। लक्ख चुरासी बणाए साक, सज्जण आपणा मेल मिलाइंदा। त्रैगुण मेल मिलाए प्रभ आप, पंज तत्त साचा खेल खिलाइंदा। रूप धराए नटूआ नाट, नाटक आपणा वेख वखाइंदा। आपे जाणे आपणा घाट, सच दुआरे सोभा पाइंदा। इक्क सुणाई साची गाथ, विष्नूं विश्व आप कराइंदा। ब्रह्मा मेला कमलापात, पारब्रह्म ब्रह्म वेख वखाइंदा। पूरा करे एका घाट, साची वस्त झोली पाइंदा। एका अक्खर निष्अक्खर पाठ, लिखण पढ़न विच ना आइंदा। साहिब सुल्तान पुछे वात, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आदि अन्त खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, हरि पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। एकँकारा वसणहारा ठांडे दरबारा, लोकमात मार झात दो जहानां आपणा रूप धराइंदा। आदि निरँजण कर पसारा, जोत निरँजण दए हुलारा, लक्ख चुरासी डगमगाइंदा। श्री भगवान साची कारा, ऊँचां नीचां राउ रंकां पावे सारा, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। श्री भगवान मीत मुरारा इक्क सुणाए शब्द जैकारा, नाद अनादी नाद सुणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म करे आधारा, एका मन्त्र गुरु दुआरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना संग रखाइंदा। दूसर अवर ना कोए संग, सति पुरख निरँजण आपणी खेल खिलाईआ। नव नौ चार पैंडा गया लँघ, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। प्रगट होए सूरा सरबंग, शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। नाम वजाए इक्क मृदंग, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां लए उठाईआ। दो जहानां वेखे लँघ, आवण जावण खेल खिलाईआ। गुर पीर अवतार धुर दरबारे लए सद्द, शब्द संदेसा इक्क सुणाईआ। वरन बरन बद्धी हद्द, जगत मार्ग वेख वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल क्यों लोकमात विच्चों दिता कढ्ढ, जिस तुहाड्ढी बणत बणाईआ। जुग चौकड़ी लडाउदा रिहा लड, जिउँ बालक माता गोद सखाईआ। कलिजुग अन्तिम लक्ख चुरासी पुरख अबिनाशी नालों होई अड्ड, पल्लू नाल पल्लू ना कोए बंधाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा जगत निशाना दिता गड्ड, जूठ झूठ वज्जी वधाईआ। अनहद शब्द घट मन्दिर बैठ सुणया ना किसे नद, अनहद नाद ना कोए वजाईआ। झूठी पी पी बैठे मदि, हरि का नाम

सरूर ना कोए रखाईआ। चार वरन ना बणी साची यद, पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। कोए कृष्न कोए राम नाल गया बज्झ, कोई ईसा मूसा सजदा रहे कराईआ। कोई मुहम्मद कोल रिहा सज, चार यारी वड वड्याईआ। कोई मक्के काअबे करे हज्ज, काया मन्दिर अंदर ना कोए फोल फोलाईआ। कोई नानक निरगुण रिहा सद्द, कोई गोबिन्द रिहा ध्याईआ। चार कुण्ट वरन बरन आपणा इष्ट कर कर बैठे पज, साचा दर ना कोए वखाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरदुआर जगत कामना रही नच्च, सच सुच्च ना कोए वड्याईआ। काची माटी होई कच्च, कंचन रूप ना कोए वटाईआ। पुरख अकाल ना मिल्या किसे सच, सच सुच्च नजर किते ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार जुग दी एका चौकड़, नौ नौ चार वेखे थाउँ थाँईंआ। नौ नौ चार चौकड़ी तेरा अन्तिम पन्ध, सो पुरख अबिनाशी आप मुकाइंदा। घर घर वेख्या सुणया छन्द, हरि का छन्द ना कोए गाइंदा। निरगुण निरवैर ना चढ़या चन्द, जोती जोत ना कोए जगाइंदा। घट पाया ना परमानंद, निजानंद ना कोए रखाइंदा। मदिरा मास रसना लाया गंद, आत्म अन्तर अमृत झिरना ना कोए झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी क्रिया वेख वखाइंदा। कलिजुग क्रिया कूड़ पसारा, कूड़ा डंका रिहा वजाईआ। चारों कुण्ट हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। नार कन्त ना कोए प्यारा, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। भैणां भइया दिसे विभचारा, ममता मोह फिरे हल्काईआ। हउमे हंगता बोल जैकारा, काया मन्दिर गढ़ बणाईआ। साचा दिसे ना इक्क दुआरा, गुरदुआरा, नज़र किसे ना आईआ। मन दहि सिर फिरे हँकारा, मनमती राह चलाईआ। गुरमति होया पार किनारा, गुर गुर बूझ ना कोए बुझाईआ। रंग रलीआं माणे सर्ब संसारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रिहा हंढाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि जुगादि जुगा जुगन्त वेखे विगसे करे विचारा, वेखणहारा इक्क अख्वाईआ। वेद व्यासा करे प्यारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मूसा करे निमस्कारा, सजदा सीस झुकाईआ। ईसा दोए जोड़ बणे भिखारा, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। हो मेहरवान परवरदिगारा, इक्क मुहम्मद मंग मंगाईआ। नानक बोले उतरे महांबली अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गोबिन्द दिता सर्ब सहारा, फतिह डंका इक्क वजाईआ। सम्बल नगरी धाम उज्यारा, पुरख अबिनाशी डेरा लाईआ। प्रगट होए विच संसारा, जोती जामा भेख वटाईआ। शब्द खण्डा फड़े तेज़ कटारा, दो जहानां आप चलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे पार किनारा, करोड़ तेतीसा दए मिटाईआ। सुरपति राजा इन्द करे ख्वारा, सभ दा लेखा दए मुकाईआ। लक्ख चुरासी आर पारा, चारे खाणी चारे बाणी आपणी झोली पाईआ। चार वेद रोवण ज़ारो ज़ारा, पुराण अठारां धीर ना कोए धराईआ। शास्त्र सिमरत आए हारा,

जुग चौकड़ी वेला रिहा विहाईआ। गीता ज्ञान ना कोए पसारा, दस अठ्ठ डेरा देवे ढाहीआ। अञ्जील कुरानां कढ्ढे बाहरा, एका कलमा सुणाए कलाम इलाहीआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, करे खेल अपर अपारा, मुकामे हक हो उज्यारा, जल्वा नूर इक्क दरसाईआ। एका बोल सति जैकारा, नाम नाम दए आधारा, एका डंका वज्जे विच संसारा, फतिह आपणे हथ्थ रखाईआ। एका गुर इक्क अवतारा, एका देवणहारा भण्डारा, जुग जुग वरते वरतावे विच संसारा, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, लोकमात मार झात लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाँईंआ। लक्ख चुरासी जगत सिँघासण, सिँघ आसण भेव ना राया। करे खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता वेस वटाया। लेखा जाणे पृथ्मी आकासण, गगन पातालां फोल फोलाया। मंडल मण्डप वेखे रासण, पुरीआं लोआं पर्दा लाहया। लेखा जाणे चौदां लोक भोग बलासण, भेव अभेद दए खुल्हाया। चौदां तबक लेखा जाणे शाहो शाबासन, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताया। कलिजुग अन्त सर्ब विनासन, थिर कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, एका डौरू डंका नाम वजाया। डौरू डंका हरि का नाउँ, आदि जुगादि हरी हरि आप वजाइंदा। करे खेल अगम्म अथाहो, अलख अगोचर आपणी कार कमाइंदा। जुग जुग कराए सच न्याउँ, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत वेखे काउँ, घट घट लेखा आपणा आप वखाइंदा। गुरमुख विरले आप उठाए फड़ फड़ बाहों, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला सिर रक्खे ठंडी छाउँ, सतिगुर पूरा आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। चार वरनां बणे पिता माउँ, ऊँच नीच ना वण्ड वंडाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। कादर कुदरत वेखणहारा, रूप अनूप धराईआ। प्रगट होए महांबली अवतारा, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। लोकमात बणाए सचखण्ड दुआरा, सच सिँघासण आसण सोभा पाईआ। शब्द लगाए एका नाअरा, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। तीजा नैण खोल्ह किवाड़ा, हरिजन साचे लए जगाईआ। चौथे पद कर पसारा, गुरमुख मेले सहिज सुभाईआ। पंचम नाद शब्द धुन्कारा, धुंन अनादी आप सुणाईआ। अमृत आत्म देवे ठंडी ठारा, अठसठ गुरसिख फेरा कोए ना पाईआ। घर विच घर वखाए सच्चा गुरदुआरा, सतिगुर बैठा जोत जगाईआ। साची सखीआं मंगलचारा, अनन्द मंगल एका गाईआ। गुरसिखां करे सद प्यारा, आप आपणे दर बहाईआ। नारी कन्त हो उज्यारा, रंग बसन्त इक्क चढ़ाईआ। एका मणीआ मंत दए

सहारा, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। साचा सन्त हरि करे प्यारा, बेअन्त वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी माया झूठी छाया, गुरसिखां उत्तों दए उडाईआ। गुरसिख तेरा वड्डा घर, सो पुरख निरँजण आप बणाया। निरभउ चुकाए तेरा डर, भय होर ना कोए रखाया। तेरे आत्म खुल्हाए साचा सर, निझर झिरना दए झिराया। तेरा दीपक तेरे अंदर जाए बल, जोती जोत होए रुशनाया। इक्क वखाए निहचल धाम अटल्ल, सतिगुर सच्चा आसण लाया। लक्ख चुरासी भुलाए कर कर वल छल, बेअन्त खेल खिलाया। हरिजन मेले ना लाए घड़ी पल, नेतन नेत आपणा दरस कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम फल, अमृत मेवा मुख चुआया। अमृत मेवा साचा रस, गुर गुर गुरमुखां आप चखाईआ। हिरदे अंदर जाए वस, हरि दाता बेपरवाहीआ। करे प्रकाश कोटन रवि ससि, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। अमृत जाम प्याए हस्स हस्स, सच प्याला हत्थ उठाईआ। तीर अणियाला मारे कस, शब्द निराला बाण चलाईआ। पंच विकारा जाए ढठ्ठ, हउमें गढ़ दए तुड़ाईआ। मन मनूआ फेरे उलटी लठ, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। धीरज वखाए साचा जत, सति सन्तोख पल्ले गंढु बंधाईआ। कलिजुग अग्नी विच्चों लए रक्ख, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। निरगुण रूप कर प्रतक्ख, साख्यात सरगुण लए समझाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले लक्ख चुरासी नालों करे वक्ख, आप आपणा बन्धन पाईआ। सति सतिवादी एका पाई नत्थ, नाम डोरी हत्थ उठाईआ। इक्क दृढ़ाया पूजा पाठ, एका करे सच पढ़ाईआ। लेखा चुक्के तीर्थ ताट, घर सरोवर दए वखाईआ। गुरसिख विके ना किसे हाट, करता कीमत आपे पाईआ। कलिजुग खेल बाज़ीगर नाट, कलिजुग अन्तिम सफ़ा रिहा विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। कलिजुग कूड़ी सफ़ा मलेछ, चार वरन दरसाया। करे खेल दस्स दस्मेश, दहि दिशा फेरा पाया। पकड़ उठाए विष्न ब्रह्म महेष, सोया कोए रहे ना राया। लेखा जाणे रिखी केश, गोवर्धन आपणी धार बंधाया। दो जहानां नर नरेश, पुरख अकाल इक्क मनाया। आदि जुगादी रिहा वेख, सचखण्ड साचे सोभा पाया। कलिजुग अन्तिम घर घर होया भेख, कोटन कोटि गुर गुर बैठे रूप वटाया। आपणा जाणे ना कोई लेख, जीवां लेखा रहे मिटाया। आपणा सतिगुर आपणे नेत्र ना ल्या पेख, आप सतिगुर बण बण सीस छत्र रहे झुलाया। अन्तिम पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सभ दी चोटी मुन्ने जूठयां झूठयां रहिण ना देवे भेख, मुच्छ दाढ़ी केस ना लेखे लाया। जिस टेक रखाई दस दस्मेश, दर दुआरे होए सहाया। फड़ फड़ बाहों पिछली मेटे रेख, अगला लेखा दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरन आपणा कीता

गया हर, वेले अन्त दए सज़ाया। आपणा कीता आपे हर, चार वरन पछताईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रहे डर, सांतक सति ना कोए रखाईआ। इक्क दूजे दा साड़न घर, आपणा घर सके ना कोए बचाईआ। वण्डण वण्डां वण्ड वण्ड आपणी हद्द ते रहे खड़, पार किनारा नज़र किसे ना आईआ। मुस्लिम हिन्दू सिख ईसाई दीन मज़्ब विच बैठे अड़, दीनां नाथ दिसे ना सच्चा माहीआ। चार वरन दी उखड़े जड़, चौथा जुग नाल रलाईआ। आपणा आपणा कलमा सारे रहे पढ़, सच हदीस ना कोए रखाईआ। माण अभिमान होया नारी नर, नर नरायण ना कोए ध्याईआ। कोई मन्दिर कोई मस्जिद कोई गुरदुआरे बैठा वड़, कोई शिवदुआले मठ रिहा सीस झुकाईआ। हरि का नाम ना पल्लू ल्या फड़, सिल पूजस वक्त लँघाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती वड़ वड़ रहे ठर, अग्नी तत्त ना कोए गंवाईआ। लोकां सुणांउदे हरी ओम हरी हरि, अंदर पंज शैताना बैठा डेरा लाईआ। गुर गोबिन्द सूरा चार वरन उच्ची कूक एका वार गया दस्स, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। अन्तिम पंज तत्त खेड़ा सभ दा होया भङ्ग, गुर पीर अवतार कोए रहिण ना पाईआ। इक्क इकल्ला पुरख समरथ, दो जहानां जिस दी सच्ची शहिनशाहीआ। जुग जुग चलाए रथ, रथ रथवाही वेस वटाईआ। आपणी महिमा सुणाए अकथ, गुर अवतार सेवा लाईआ। साचा मार्ग आदि जुगादि दस्स, जुग जुग बूझ बुझाईआ। भगत भगवन्त भगतां होए वस, दूसर दर ना कदे आईआ। जो प्रभ मिलण दी रक्खे आस, वेले अन्त पूर कराईआ। हरि सन्त ना होए कदे विनास, अबिनाशी आपणा मेल मिलाईआ। गुरमुख तेरा नाउँ करे प्रकाश, लोकमात वजदी रहे वधाईआ। गुरसिख तेरी करे बन्द ख़लास, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चरन कँवल रखाए निवास, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। लहिणा देणा चुक्के पृथमी आकाश, विष्न ब्रह्मा शिव गुरसिख तेरा उठ उठ दरसन पाईआ। तेरा नाता तुट्टे जंगल जूह उजाड़ प्रभास, समुंद सागर तेरे चरनां धूढ़ मस्तक टिक्का लाए धोवे आपणी शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण हो के निरगुण आया, निरवैर पुरख अकाल। अजूनी रहत वेस वटाया, दीना बंधप दीन दयाल। मूर्त अकाल खेल खिलाया, नूरी जल्वा इक्क जलाल। नूरो नूर डगमगाया, करे खेल बेमिसाल। तूरत नाद इक्क वजाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे घाले आपणी घाल। घाले घाल बेपरवाह, पंज तत्त चोला ना कोए रखाईआ। जोत सरूपी बण मलाह, शब्दी बेड़ा नाल उठाईआ। लक्ख चुरासी वेखे थाउँ थाँ, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड एका नेत्र वेख वखाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर भगत भगवन्त पकड़नहारा बांह, सन्त कन्त लए मिलाईआ। गुरमुख सज्जण लए उठा, गुर गुर मेला सहिज सुभाईआ।

गुरसिख साचे लए जगा, जाग्रत जोत कर रुशनाईआ। आपणी बाणी दए समझा, तुरीआ राग इक्क अलाईआ। मद्धम बैखरी आपे गा, परा पसन्ती आपे रिहा सुणाईआ। आपणे मन्दिर डेरा ला, साचा मन्दिर आप उपाईआ। झूठा जंदर दए तुड़ा, बजर कपाटी रहे ना राईआ। साची हाटी दए खुल्हा, वणज वणजारा बण के साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले लए फड़, निरगुण सरगुण अंदर वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, सच महल्ले जाए चढ़, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन आत्म सेजा आपणा आसण लाईआ। आत्म सेजा पारब्रह्म, ब्रह्म मेला सहिज सुभाया। निरगुण निरवैर जाणे आपणा कम्म, करनी करता आप कमाया। हरख सोग ना ख़ुशी ग़म, चिंता रोग ना कोए रखाया। पवण स्वास ना कोए दम, रसना जेहवा ना कोए हिलाया। इष्ट गुरदेव ना कोए रिहा मन्न, सीस जगदीस ना कोए झुकाया। ना कोई जननी दिसे जन, जन जणेंदी ना कोए माया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करया खेल साचे हरि, हरिजन आपणा बन्धन पाया। बन्धन पाए नाम डोर, पुरख अकाल दया कमाईआ। गुरसिखां बन्न्हे पंज चोर, आप आपणी सेव कमाईआ। शाह सवारा चढ़ के आया साचे घोड़, सोलां कलीआं आसण पाईआ। आदि जुगादि निभाए लग्गी तोड़, अद्धविचकार ना तोड़ तुड़ाईआ। सस्से उप्पर लाया होड़, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। हँ ब्रह्म जाए बौहड़, पारब्रह्म होए सहाईआ। जन्म जन्म दी बुझाए प्यास जो लग्गी औड़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। वेखे फल रीठा कौड़, रस रसना वेख वखाईआ।

★ ३ सावण २०१८ बिक्रमी टहिल सिँघ दे गृह रूपो वाली ★

चार वरन एका ओट, हरि सतिगुर सच सरनाईआ। चार वरन एका जोत, निर्मल निरवैर आप जगाईआ। चार वरन एका किला एका कोट, पारब्रह्म प्रभ आप बणाईआ। चार वरन एका गोत, ब्रह्म रूप सर्ब दरसाईआ। चार वरन एका सोत, नौ दुआरे बणत बणाईआ। चार वरन एका ओट, रसना जेहवा एका गुण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वरन चार करे कुड़माईआ। चार वरन एका गुर, सो पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। चार वरन एका सुर, घर अनादी नाद सुणाइंदा। चार वरन एका जोड़, जोती शब्दी मेल मिलाइंदा। चार वरन एका घोड़, हरि का नाउँ हरि वखाइंदा। चार वरन एका लोड़, ब्रह्म रूप नज़री आइंदा। चार वरन एका पौड़, हरी दुआर आप चढ़ाइंदा। चार वरन एका जाए बौहड़, अन्तर आत्म जो लिव लाइंदा। चार वरन चौथे जुग दर तों देवे होड़, एका बन्धन पाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी नर निरँकारा जाए बौहड़, रूप अनूप आप वटाइंदा। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठा कौड़, पत्त डाल्ही फोल

९००

फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन संग निभाइंदा। चार वरन एका संग, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। चार वरन इक्क मृदंग, नाम निधाना आप सुणाईआ। चार वरन एका रंग, रंग रंगे साचा माहीआ। चार वरन एका चन्द, एका सूर्या करे रुशनाईआ। चार वरन एका अनन्द, घर घर विच रिहा दरसाईआ। चार वरन एका गंढु, गुर सतिगुर आप पवाईआ। चार वरन देवे ठंड, अग्नी तत्त बुझाईआ। चार वरन रंडेपा कट्टे रंड, कन्त सुहाग दए मिलाईआ। चार वरन मेटे अन्धेरा अन्ध, ज्ञान प्रकाश इक्क वखाईआ। चार वरन मेटे पन्ध, कलिजुग कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। चार वरन सुणाए एका छन्द, सोहँ ढोला आपे गाईआ। चार वरन उपजाए परमानंद, पीआ प्रीतम सच्चा माहीआ। चार वरन लेखा जाणे बत्ती दन्द, रसना जेहवा सेव लगाईआ। चार वरन टुट्टी देवे गंढु, चौथा जुग पार वखाईआ। चार वरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम बन्धन पाईआ। चार वरन एका बन्धन, पुरख बिधाता आपे पाइंदा। चार वरनां एका तन्दन, नाम डोरी हथ्थ रखाइंदा। चार वरनां तोड़े फंदन, माया ममता मोह मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार वरनां मेल मिलाइंदा । चार वरन हरि हरि मेला, आत्म परमात्म होए सहाईआ। चार वरन गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द रूप धराईआ। चार वरन हरि सज्जण सुहेला, ऊँचां नीचां वेख वखाईआ। चार वरन हरि चाढ़े तेला, निरगुण सरगुण सगन मनाईआ। चार वरन बणे सज्जण सुहेला, सतिगुर पूरा हरि निरँकारा समरथ पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन एका रंग रंगाईआ। चार वरन रंगे रंग, रंगण नाम इक्क रखाइंदा। चार वरन ख़ुशी करे बन्द बन्द, बन्दी तोड़ दया कमाइंदा। चार वरन चौथे जुग करे खण्ड खण्ड, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। चार वरन लेखा चुक्के जेरज अण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे दर बहाइंदा। चार वरन एका दर, दर दरवाज़ा हरि खुल्हाईआ। चार वरन एका हरि, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। चार वरन भण्डारा देवे भर, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। चार वरन दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। चार वरन एका विद्या लैण पढ़, एका अक्खर करे शनवाईआ। चार वरन एका अग्नी जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। चार वरन एका चोटी जायण चढ़, साचा पौड़ा नाम वखाईआ। चार वरन मेले नर हरि, नर नरायण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रूप दए दरसाईआ। चार वरन एका ज़ात, जात अज़ाती मेट मिटाइंदा। चार वरन एका साथ, सगला संग आप रखाइंदा। चार वरन एका गाथ, बोध अगाधा नाम पढ़ाइंदा। चार वरन एका दात, पुरख अबिनाशी झोली पाइंदा। चार वरन एका पिता एका मात, पुरख अकाल

आप अख्वाइंदा। चार वरन एका नात, ब्रह्म पाब्रह्म जोड़ जुड़ाइंदा। चार वरन एका घाट, सच किनारा आप दरसाइंदा। चार वरन एका जोत जगे ललाट, नूर नुराना डगमगाइंदा। चर वरन एका हाट, सतिगुर पूरा आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। चार वरन इक्क सुगंध, दूसर इष्ट ना कोए वड्याईआ। चार वरन इक्क पलँघ, आत्म सेजा इक्क हंढाईआ। चार वरन एका छन्द, सोहँ ढोला रिहा सुणाईआ। चार वरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे मार्ग रिहा लगाईआ। चार वरन साचा राह, रैहबर हरि हरि आप अख्वाइंदा। चार वरन बण मलाह, हरि जू बेड़ा आप चलाइंदा। चार वरन देवे सच सलाह, ज़ात पात मेट मिटाइंदा। चार वरन जपणा एका नाँ, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। चार वरन मंगणा एका थाँ, थान थनंतर सोभा पाइंदा। चार वरनां देवे ठंडी छाँ, समरथ हथ्थ सीस टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चार वरनां जोड़ जुड़ाइंदा। चार वरनां जोड़े जोड़ा, जगत जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण सरगुण शब्द अगम्मी फेरे घोड़ा, चारों कुण्ट रिहा दौड़ाईआ। अन्तिम अन्त वक्त रहि गया थोड़ा, दीन दुनी दए खपाईआ। आपणा लेखा आपणे हथ्थ रक्खया कोरा, ना कोई लिखे कलम शाहीआ। चार जुग वेखे कर कर ग़ौरा, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरनां होए सहाईआ। चार वरन चार युग, एका बन्धन पाया। अन्तिम औध गई पुग, सभ दा लेखा दए चुकाया। ज़ात पात मेटे चुग चुग, दहि दिशा फोल फोलाया। गुर अवतार ना बैठे कोई लुक, मात पाताल आकाश सचखण्ड निवासी आपणा पर्दा दए उठाया। सिँघ शेर रिहा बुक्क, एका गरज रिहा सुणाया। आपणी वार आपे उठ, आप आपणा रूप धराया। किरपा निधान ठाकर गया तुट्ठ, जननी जन ना किसे जाया। आपणी लक्ख चुरासी आपे लए लुट्ट, ब्रह्मा विष्न शिव बैठे सीस झुकाया। जिस लगाई जड़्ह सो देवे पुट्ट, बूटा हथ्थ किसे ना आया। शब्द निराला तीर रिहा छुट्ट, दो जहानां दए हिलाया। जिस रक्खी इक्क अकाल ओट, तिस सज्जण लए मिलाया। ना कोई बचाए किला कोट, कल्लर कंध सर्ब वखाया। लक्ख चुरासी भरी ना ममता पोट, आसा तृष्णा ना पन्ध मुकाया। चारों कुण्ट वेखे वासना खोट, हिरदे हरि ना किसे धराया। घर घर दीवा बाती जगाउँदे जोत, घर जोती नूर ना कोए रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार वरन फोल फोलाया। चार वरन जगत झेड़ा, कलिजुग रूप वटाईआ। साचा वसे ना कोए खेड़ा, नगर नाम ना वज्जे वधाईआ। पंचम पंचम भेड़ भेड़ा, दिवस रैण लड़ाईआ। डूँघी कंदर होया अन्धेरा, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। जगत विकार पाया घेरा,

चारों कुण्ट रिहा दुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरन लेखा रिहा मुकाईआ। चार वरन पाए डण्ड, कूक कूक पुकार। बिन हरि नामे होई रण्ड, सुरत सुवाणी नार विभचार। दर दर वेखे भेख पखण्ड, इष्ट दिसे ना गुर अवतार। नंगी होई सभ दी कण्ड, पर्दा सके ना कोए डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। खेल अपारा हरि निरँकारा, कलिजुग अन्तिम आप कराईआ। चार वरन होया गंवारा, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। जूठ झूठ बोल जैकारा, माया ममता बल वधाईआ। एका भुलया धुर दरबारा, धुर दी बाणी ना बाण लगाईआ। कागद कलम करे पुकारा, नेत्र रोवे बण बण शाहीआ। चार जुग जो बणया रिहा लिखारा, शब्द संदेसा इक्क सुणाईआ। लिख्या लेख ना किसे विचारा, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। नानक गोबिन्द बोल जैकारा, लक्ख चुरासी गया समझाईआ। सर्ब जीआं दा एका यारा, करे खेल ख़लक ख़ुदाईआ। ऐहमद मुहम्मद एका नाअरा, एका जल्वा नूर दरसाईआ। ईसा मूसा इक्क सहारा, एका ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्क पैग़म्बर, दो जहानां वेखे अडम्बर, लक्ख चुरासी रच सुअम्बर, साचा सगन आप कराईआ। रचया सुअम्बर रक्खे साह, दिवस दिवस नाल मिलाईआ। करे खेल बेपरवाह, लोकमात जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज रीत आप जणाईआ। अचरज रीत करन दी ख़ातर, निरगुण आपणा रूप वटाया। सरगुण बणाया मात चातर, शब्द संदेसा इक्क घलाया। मुहम्मद लिख लिख घल्लया पात्र, चौदां लोक सबक पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाया। सच संदेसा एका राग, निरगुण आपणा आप जणाईआ। अन्तर अन्तर इक्क वैराग, वैरागी रूप वटाईआ। साचा मन्त्र गुर शब्द सुहाग, पारब्रह्म प्रभ भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार वरन बुझाए अग्ग, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। चार वरन खोल्ह़े अक्ख, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। चार वरन हो प्रतक्ख, आपणा दरस दिखाइंदा। चार वरन लए रक्ख, जो जन सरनाई आइंदा। चार वरन पर्दा लए ढक, ढाकण को पत आपणी बणत बणाइंदा। चार वरन लए कढ्ढ, लक्ख चुरासी अग्नी भट्ठ तपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप तराइंदा। तारनहारा इक्क दयाला, दीनन आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। लोकमात वखाए सच्ची धर्मसाला, हरि मन्दिर जोत रुशनाईआ। शब्द सुणाए अनादी ताला, ताल तलवाड़ा आप वजाईआ। लहिणा देणा चुक्के काल महाकाला, महाकाल आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन एका गुण वखाईआ। चार वरन

एका गुण, हरि साचा सच जणाइंदा। सर्ब जीआं पुकार रिहा सुण, थिर घर साचे सोभा पाइंदा। हरि का भेव जाणे कवण, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सर्ब गाइंदा। देवे स्नेहुड़ा उणंजा पवण, पवण स्वास आप चलाइंदा। चार जुग भौंदा रिहा अवण गवण, नौ खण्ड नौ दुआर आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी रीती आप बदलाइंदा। आपणी रीती आप बदलाए, भेव किसे ना आया। सरगुण निरगुण रूप धराए, निरगुण सरगुण खेल खिलाया। जोती जाता डगमगाए, नूरो नूर होए रुशनाया। साची सोटी शब्द हथ्थ उठाए, लक्ख चुरासी रिहा डराया। कोटन कोटी जीव दए खपाए, जो बैठे राम भुलाया। गुरमुख साची चोटी चढ़ाए, आप आपणा पल्लू नाम फड़ाया। वासना खोटी दए कढाए, एका हिरदे हरि वसाया। जोती जोत जोत मिलाए, जोती जाता दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन वखाए एका घर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। दर दरवाज़ा खोल्हया, कर किरपा गुण निधान। ग़रीब निवाज़ा आपे बोलया, सतिगुर पूरा नौजवान। अश्व ताजा घोड़ा इक्क अडोलया, फिरे दो जहान। आपणा बदले आपे चोलया, आपे रक्खे आपणी लाजा करे खेल श्री भगवान। शब्द अगम्मी वजाए वाजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे धुर फ़रमान। धुर फ़रमान अगम्मी रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। गुरसिखां अंदर आपे लँघ, तार सतार आप हिलाईआ। किंगरे किंगरे वज्जे मृदंग, साची किंग आप रखाईआ। करे खेल गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन रखाए एका दर, दर घर साचा आप उपाईआ। दर घर उपाया पारब्रह्म, कर किरपा अपर अपार। गुरसिख सतिगुर घर पए जम्म, नाता तोड़ सर्ब संसार। निहकर्मी कराए आपणा कम्म, एका बख्शे चरन प्यार। लेखे लाए हड्ड मास नाड़ी चम्म, बहत्तर नाड़ वजाए सतार। माणस जन्म बेड़ा देवे बन्न्ह, जिस देवे दरस दीदार। लहिणा देणा चुक्के छप्परी छन्न, इक्क वखाए सचखण्ड सच्चा दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरनां करे प्यार। चार वरन करे प्यारा, ऊँच नीच ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। हँकारीआं तोड़े गढ़ हँकारा, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। निमाणयां देवे आप सहारा, निथाव्याँ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। ज़ोरू ज़र कर ख्वारा, चारों कुण्ट ख़ाक उडाइंदा। जिस जन करया नाम प्यारा, तिस आपणा मेल मिलाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव करे निमस्कारा, दोए जोड़ जोड़ सीस झुकाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर सर्ब कुरलाइंदा। मुकामे हक तेरा धाम न्यारा, तूं इक्क इकल्ला वसें परवरदिगारा, हक तेरा रूप जणाइंदा। तेरी ख़ुदाई तेरा सहारा, तेरी ख़लक्त तेरा किनारा,

मख़लूक तेरा राह तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निर्भय भय आपणा सर्ब वखाइंदा। निर्भय भय वखाए अचानक, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। वेद कतेब ना होए जाणत, भेद अभेद सके ना कोए खुल्हाईआ। गुर अवतार ना करे पछाणत, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह पल्लू गए छुडाईआ। चार जुग जो दिती अमानत, चार वरन जगत वरताईआ। अन्तिम किसे ना देवे करन ख़यानत, लेखा मंगे थाउँ थाँईंआ। मुहम्मद तेरी देवे ना कोए ज़मानत, ना सके कोए छुडाईआ। तेरा इस्लाम ना रिहा सलामत, सलाम अलैकम चौधवीं सदी रही बुलाईआ। तेरा कलमा ना बणी कलामत, कायनात ना कोए पढ़ाईआ। जेहड़ा लुकया रिहा बेपछाणत, अन्तिम आपणा नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रूप अनूप आप धराईआ। रूप अनूप धरया निहकाम, निरगुण भेव किसे ना आया। मुहम्मद भेज्जया कर गुलाम, साची सेवा इक्क समझाया। अद्धविचकार सुणाया पैग़ाम, सच संदेसा इक्क पढ़ाया। मेरा इष्ट तेरा अमाम, अमाम अमामां सिर आप ख़ुदाया। तेरा सजदा मेरा सलाम, सलामालैकम इक्क रखाया। तूं सुणना कर ध्यान, ख़ुदावंद तेरा रिहा समझाया। अन्तिम बणना पए नादान, बाली बुध हरि दए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची रचना आप रचाया। साची रचना रचे निरँकारा, रच रच वेख वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार किनारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। विष्नूं ब्रह्मा शिव दए हुलारा, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द नाल रलाइंदा। लेखा जाणे सूरज चन्द सतारा, मंडल मण्डप फोल फोलाइंदा। ज़िमीं अस्मानां वेखे अखाड़ा, धरत धवल डौरू डंका इक्क वजाइंदा। लक्ख चुरासी हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। चारों कुण्ट खेल अपारा, अपरम्पर आपणा आप कराइंदा। पिछला लेखा करे पार किनारा, चार जुग दी रीती आप मुकाइंदा। अग्गे वखाए सच दरबारा, सच सिंघासण सोभा पाइंदा। साचा नाम बोल जैकारा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। सोहँ अक्खर दोहरी धारा, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। नानक गाया एका वारा, पुरख अबिनाशी मेल मिलाइंदा। जाग्रत जोत जगे संसारा, जुगती हथ्थ ना किसे रखाइंदा। जिस जन घड़या तेरा भाण्डा बण ठठयारा, काया माटी पोच पुचाइंदा। सो भन्ने भन्नणहारा, घड़न भन्नणहार आप हो जाइंदा। उठ जीव बण वणजारा, हरि साचा हट्ट खुल्हाइंदा। दूसर दिसे ना कोए दुकानदारा, बाणीआ रूप ना कोए वखाइंदा। जो जन मंगे मंग एका वारा, दूजी वार दूजे दर ना मंगण जाइंदा। नाम सति भरे भण्डारा, अतोट अतुट आप वरताइंदा। गुरमुख देवे गुर सहारा, गुर गोदी शब्द बहाइंदा। सेवक सेवा कराए सेवादारा, साची सेवा इक्क समझाइंदा। टहलीआ टहल करे विच संसारा, जुग जुग वेस वटाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत भगवन्त मेले आपणी वारा,

आप आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, गुरमुख विरले लए फड़, बिरध बाल जवान रूप ना कोए दसाइंदा। बिरध बाल ना कोए जवान, जिस जन आपणी दया कमाईआ। मात गर्भ देवे ज्ञान, सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। त्रैगुण माया चुक्के काण, पंज तत्त ना कोए लड़ाईआ। जिस वखाए धर्म निशान, सति सतिवादी इक्क उठाईआ। सो गुरसिख होए परवान, जिस गुरमति मिली वड्याईआ। सो बाली बुध बुध अज्याण, चतुर सुजाना दए समझाईआ। पूर्ब जन्म दा लेखा चुक्कया आण, कलिजुग अन्तिम होए सहाईआ। रसना गाया इक्क भगवान, सो पुरख निरँजण नज़री आईआ। हँ ब्रह्म पाया माण, पारब्रह्म प्रभ ख़ुशी मनाईआ। दोहां विचोला बणया आण, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप धराईआ। गुरसिख साचे कर परवान, शब्द परवाना हथ्थ फड़ाईआ। धर्म राए दी चुक्के काण, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाईआ। लाड़ी मौत ना वेखे मार ध्यान, गुरसिख तेरा दरस कदे ना पाईआ। जिस मिल्या आप मेहरवान, तिस भुल्ली सर्ब लोकाईआ। माता पिता फेर पछताण, वेला गया हथ्थ ना आईआ। पूत सपूता चढ़े सच बबाण, सतिगुर पूरा आप चढ़ाईआ। एथे ओथे होए निगहबान, दो जहानां सदा सहाईआ। सचखण्ड देवे इक्क मकान, दरगाह साची नाम रखाईआ। अट्ठे पहर दरस महान, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। लेखा चुक्के आवण जाण, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख साचे आप तराईआ। गुरसिख सच्चा तारया, कर किरपा गुण निधान। जो आया चल दवारया, आत्म देवे साचा दान। माणस जन्म पैज संवारया, नाता तोड़ जगत जहान। कागद कलम करे गिरयाज़ारया, लेखा लिखे ना कोई नादान। जिस मिल्या आप निरंकारया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बणाए चतुर सुजान। चतुर सुजान हरिजन सूरा, सूरबीर दए वड्याईआ। आत्म अन्तर बख्शे नूरा, कोहतूर मुख शरमाईआ। मूसा एका वार तक्कया ज़ाहर ज़हूरा, गुरमुखां नित नित दरस दिखाईआ। काया चोली रंगण चाढ़े गूढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जिस आपणा पर्दा दए उठाईआ। गुरसिख तेरे मगर चौदां लोकां फिरन हूरां, तेरा नैण नैण विच ना सके मिलाईआ। तेरे सिर हथ्थ रखाए सतिगुर पूरा, नौ अठारां डेरा ढाहीआ। जिस नूं कहिन्दे पैंडा दूरा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सो आसा मनसा करे पूरा, मन मनसा विच समाईआ। माणस जन्म ना रहे अधूरा, जिस जन आपणे गले लगाईआ। जन्म जन्म दा हूंझे कूड़ा, दुरमति मैल दए धवाईआ। जिस मस्तक लाए चरन धूढ़ा, चरन चरनोदक मुख प्याईआ। गुरसिख तेरा पीआ प्रीतम मेले सतिगुर पूरा, पूरा सतिगुर इक्क अख्वाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर ना मरे ना जाईआ।

★ ५ सावण २०१८ बिक्रमी गज्जण सिंघ दे गृह रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ★

सतिगुर सच्चा हरि दलेर, आदि जुगादि दया कमाइंदा। पुरख अगम्मा कर कर मेहर, दीनन आपणे रंग रंगाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत शब्द अनादी रिहा घेर, नव नौ आपणा फेरा पाइंदा। हरिजन तारे ना लाए देर, नित नवित वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलाइंदा। वड दलेर श्री भगवाना, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण वसणहारा साचे धाम मकाना, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। एकँकारा जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, निरभउ आपणा नाम धराईआ। आदि निरँजण जोती नूर डगमगाना, नूर नुराना सच्चा शहिनशाहीआ। अबिनाशी करता शाह सुल्ताना, शाहो भूप वड वड्याईआ। श्री भगवान आदि जुगादी नौजवाना, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधाना, वेस अनेक वटाईआ। शब्दी शब्द सच तराना, नाद अनादी आपणा आप उपाईआ। थिर घर खोले इक्क दुकाना, दर दरवाजे सोभा पाईआ। आप सुणाए आपणा गाणा, तार सतार ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। हरि दलेर वड बेअन्त, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सो पुरख निरँजण साचे धाम सोभावन्त, हरि पुरख निरँजण सच सिँघासण आपणा आसण लाईआ। एकँकारा खेल अपारा नारी कन्त, नर नरायण वडी वड्याईआ। आदि निरँजण महिमा अगणत, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। अबिनाशी करता आप उपाए आपणा मंत, निष्अक्खर नाउँ धराईआ। श्री भगवान लेखा जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणी खेल खिलाईआ। पारब्रह्म लेखा जाणे लक्ख चुरासी जीव जंत, जोती जाता पुरख बिधाता जाग्रत जोत जोत रुशनाईआ। बैठा रहे इक्क इकांता, अकल कल आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि आपणा बल आप उपजाईआ। बल धार श्री भगवाना, आपणी खेल आप खिलाइंदा। साचे तख्त बैठ राज राजाना, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। बोध अगाधी नाम तराना, धुर फ़रमाना आप अलाइंदा। लेखा जाणे दो जहाना, रूप अनूप आप वटाइंदा। निरगुण निरवैर साचा कान्हा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। साचा काहन हरि निरँकारा, आदि जुगादि समाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। जोत नूर नूर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। शब्द नाद नाद धुन्कारा, नादी नाद आप वजाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर खेल खिलाइंदा। करनी किरत करे करतारा, करता पुरख आपणा खेल आप कराइंदा। साचे धाम हो उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा दर सुहञ्जणा, सोभावन्त आप

सुहाईआ। प्रगट हो आदि निरँजणा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, आपणा दर्द आप वण्डाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणा करे आपे मजना, सर सरोवर आप सुहाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणा पर्दा आपे कज्जणा, साची सेवा आपणे हथ्थ रखाईआ। पुरख अकाल ना घड़या ना भज्जणा, ना मरे ना जाईआ। सच नगारा सचखण्ड दुआरा एका वज्जणा, ताल तलवाड़ा ना कोए रखाईआ। थिर घर वासी थिर दरबारे बह बह सजणा, सच दुआरा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि खेल खिलाइंदा, सो पुरख निरँजण वड मेहरवान। आदि जुगादि वेस वटाइंदा, हरि पुरख निरजंण नौजवान। रूप अनूप आप धराइंदा, एकँकारा जोद्धा सूरबीर बली बलवान। शाहो भूप आप अख्वाइंदा, आदि निरँजण राज राजान। साचे तख्त सोभा पाइंदा, अबिनाशी करता वड दाता दानी करे दान। हुक्मी हुक्म आप फिराइंदा, पारब्रह्म पुरख सुल्तान। आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा, थिर घर बैठ सच्चे मकान। सच भण्डारा आप वरताइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। सच भण्डार हरि निरँकारा, निरगुण निरगुण आप वरताईआ। सचखण्ड वसे वसणहारा, थिर घर आपणा चरन टिकाईआ। एका दूजा भेव न्यारा, निरभउ आपणी खेल खिलाईआ। अजूनी रहत पुरख अकाला दीन दयाला, अपरम्पर आपणी रीत चलाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, राज राजान आपणा आसण आप वड्याईआ। दर दरवेश बण भिखारा, सीस जगदीस आप झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचे घर, सचखण्ड दुआर वडी वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। आदि जुगादी इक्क इकल्ला सो पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटला, उच्च अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी कल आप वरताइंदा। आपणी जोत आपे बला, दीपक अवर ना कोए जणाइंदा। आपणा संदेस आपे घल्ला, शब्दी शब्द हुक्म सुणाइंदा। शब्दी जोती आपे रल्ला, आप आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सच घर दुआरे आसण लाईआ। सचखण्ड दुआरा खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। आदि आदि हो उज्यारा, जुगादि आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जाता खेल न्यारा, जाग्रत जोत आप जगाइंदा। शब्दी शब्द शब्द कर उज्यारा, सुत अनादी नाउँ धराइंदा। एका वस्त देवे हरि थारा, अतोट अतुट आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

६०८

खेल साचा हरि, साचे मन्दिर जोत जगाइंदा। साचा मन्दिर पुरख अकाला, एका एक बणाईआ। सचखण्ड दुआर सच्ची धर्मसाला, चार दीवार ना कोए वखाईआ। जोती नूर नूर उजाला, दीवा बाती ना कोए टिकाईआ। करे खेल आप निराला, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा हुक्म धुर फ़रमाना साचा राणा आप सुणाईआ। साचा राणा एका सुत उठाए वड बलवान, शब्दी शब्दी नाउँ धराइंदा। आदि जुगादी वेखे आण, वेखणहारा दिस ना आइंदा। हुक्मी हुक्म पाए आण, हुक्मी हुक्म आप फिराइंदा। एका दाता देवे दान, दानी आपणी दया कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रधान, त्रै त्रै मेला आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा हरि हरि खोल्ह, शब्द सुत दए वड्याईआ। सच तराना आपे बोल, तुरया राग आप सुणाईआ। एका वस्त रक्खे कोल, देवणहार आप हो जाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, अडुल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वड दलेर हरि हो जाईआ। हरि दलेर वड शाह सुल्ताना, सो पुरख निरँजण नाउँ धराइंदा। शब्द सुत कर प्रधाना, निरगुण निरगुण खेल खिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दाना, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। त्रै त्रै बध्धा एका गाना, तन्दी तन्द ना कोए वखाइंदा। एका राग धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी आप सुणाइंदा। साचा मन्दिर सच मकाना, सच निशाना इक्क रखाइंदा। एका मर्द इक्क मरदाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी खेल आप खिलाइंदा। एका मर्द इक्क मरदाना, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका आसण रिहा सुहाईआ। एका राग इक्क तराना, एका शब्द नाद वजाईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, एका एक रिहा सुणाईआ। एका दानी एका दाना, देवणहार इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अमोलक आप वरताईआ। वस्त अमोलक हरि हरि धार, हरि साचा आप वरताइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करया ख़बरदार, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। शब्दी शब्द इक्क आधार, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण निरगुण करे प्यार, निरगुण निरवैर आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत जोत उज्यार, नूरो नूर नूर धराइंदा। ना कोई दीसे अवर विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। आपणा हुक्म हरि निरँकारा, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। आदि पुरख हो उज्यारा, आपणी रचना आप रचाईआ। साचा सुत सुत दुलारा, एका शब्द शब्द उठाईआ। सचखण्ड दुआर लगाया इक्क अखाड़ा, थिर घर साचे नाच नचाईआ। आपे वेखे वेखणहारा, दूसर कोए नज़र ना आईआ। करे खेल

अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। ना पुरख ना दिसे नारा, नर नरायण आपणा नाउँ धराईआ। विष्न शिव दए हुलारा, शब्द हुलारा इक्क लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा रूप वटाईआ। आपणा रूप धर न्यार, आपणी कल वरताईआ। साचे मन्दिर हो त्यार, सोभावन्त रिहा सुहाईआ। थिर घर आपणा खोल्ह किवाड़, चरन कँवल लए टिकाईआ। सुत दुलारा लए बहाल, मस्तक टिक्का चरन धूढ़ लावे सिर रक्खे हथ्थ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका तत्त तत्त ज्ञान जणाईआ।

आपणी रक्खे उत्तम ज़ातया, विष्न ब्रह्मा शिव रिहा जगाए। करे खेल अबिनाशी अचुतया, अनुभव आपणा रूप वटाए। आलस निन्दरा विच कदे ना सुत्तया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग आप दसाए। साचा मार्ग साचा राह, हरि साचा सच जणाईआ। थिर घर साचे बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलाईआ। आप फड़ाए आपणी बांह, पल्लू पल्लू नाल बंधाईआ। कलिजुग जपाए आपणा नाउँ, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। आपे पिता आपे माउँ, आपे बाल लए उपजाईआ। आपे रक्खे ठंडी छाउँ, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपे करे सच न्याउँ, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका गुण दए वखाईआ। एका गुण गुण निधाना, गुणवन्ता आप जणाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका घर सोभा पाइंदा। एका वखाए सच निशाना, सचखण्ड निवासा दर घर साचे आप झुलाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव मन्नणी आणा, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन देवे माणा, ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता, त्रै त्रै हुक्म आप सुणाइंदा। त्रै त्रै हुक्म हुक्मी धार, गेड़ा गेड़े विच जणाईआ। करे खेल हरि निरँकार, लेखा लेख दए वखाईआ। विष्न तेरा विश्व आधार, वास्तक मेला सहिज सुभाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म आधार, पारब्रह्म आपणी अंस लए उपजाईआ। शंकर तेरा शस्त्र न्यार, शाह सुल्ताना हथ्थ फड़ाईआ। तिन्नां विचोला बण करतार, आपणी कुदरत दए समझाईआ। साचा ढोला गाया एका वार, दूजी वार ना करे पढ़ाईआ। लिखण पढ़न तों वसे बाहर, कागद कलम ना लिखे कोए शाहीआ। पुरख अबिनाशी सचखण्ड बैठ सच्चे दरबार, आपणा हुक्म दए सुणाईआ। आदि जुगादी हो त्यार, आपणे हथ्थ रक्खी आपणी शहिनशाहीआ। सूरज चन्न ना कोए उज्यार, मंडल मण्डप ना कोए रखाईआ। गगन मंडल ना कोए सहार, धरत धवल ना कोए वखाईआ। जल जल बिम्ब ना दिसे किनार, महीअल खेल

ना कोए खलाईआ। चौदां लोक ना कोए अखाड़, चौदां तबक ना कोए वड्याईआ। पंज तत्त ना कोए आकार, त्रैगुण नाच ना कोए नचाईआ। करे खेल आप निरँकार, आदि पुरख बेपरवाहीआ। सचखण्ड वसे सच्चे दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। थिर घर साचे कर पसार, सच पसारा ल्ए धराईआ। शब्दी शब्द शब्द उज्यार, ब्रह्मा विष्न शिव करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका तत्त तत्त ज्ञाना, एका शब्द शब्द निशाना, एका रूप श्री भगवाना, रेख रंग ना कोए जणाईआ। सुण विष्न उठ कर ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। मेरा नाउँ तेरा दान, तेरा दान सर्ब वरताइंदा। उठ ब्रह्मे ब्रह्म कर परवान, पारब्रह्म आपणी वण्ड वंडायदा। एका राग सुणाए कान, नादी आपणा नाद वजाइंदा। उठ शिव मंग चरन ध्यान, चरन चरनोदक तेरे तन धूढ़ी टिक्का आप लगाइंदा। एका देवे धुर फ़रमान, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरगुण आपणा रूप धराइंदा। साचा खेल करे करतारा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर पसारा, आपे वेखे चाँईं चाँईआ। निरगुण निरगुण दए आधारा, निरगुण निरगुण होए सहाईआ। सरगुण रूप हरि कर पसारा, जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। सो पुरख निरँजण निरगुण धार, आदि पुरख समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा पसार, सरगुण आपणा बन्धन पाइंदा। आपणा नाउँ रक्खे निरँकार, नाउँ निरँकारा वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण करे प्यार, प्रेम प्यार आप कमाइंदा। सोहँ आपणी करे कार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दोए दोए लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव आप पढ़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव निष्अक्खर पढ़ना, हरि साचा सच जणाइंदा। सच दुआरे सदा सद वड़ना, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। ना जीणा ना कदे मरना, जीवण मरन पारब्रह्म प्रभ आपणे हथ्थ वखाइंदा। साची तरनी आपे तरना, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। निरभउ होए कदे ना डरना, भय आपणा इक्क वखाइंदा। मेरा भाणा सदा सिर जरना, दूसर अवर ना कोए जणाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ना, घड़ भाण्डे आप समझाइंदा। त्रैगुण नाता तेरा वरना, त्रै त्रै मेला आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त अमोलक झोली पाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव सुण संदेसा, दोए जोड़ चरन निमस्कारया। पारब्रह्म तोहे सदा आदेसा, हउँ बलि बलि बलिहारया। तेरा दरस एका वार वेखा, भुल ना जाणा अगम्म अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ आए दर भिखारया। दर दुआर बण भिखारी, विष्न ब्रह्मा शिव मंग मंगाईआ। कर किरपा

एका वारी, तोट रहे ना राईआ। तेरे दर वेखीए तेरी सच्ची सिक्दारी, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। तेरी किरपा लक्ख चुरासी कर कर उसारी, घड़ घड़ भाण्डे लए बणाईआ। तू ही पुरख तू ही नारी, तेरी कुदरत तेरी गोद बहाईआ। हउँ सेवक तेरे सेवादारी, साची सेव दर तेरे कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला होए सहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगी मंग, निरगुण अग्गे झोली डाह। तूं साहिब सुल्तान सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह। तेरी सेजा वेखी इक्क पलँघ, सचखण्ड दुआरे बैठा डाह। अठ्ठे पहर वज्जे मृदंग, शब्द अनादी रिहा गा। कोई ना सके अग्गे लँघ, असीं दर ते बैठे सीस झुका। तेरा दरस परमानंद, परम पुरख बेपरवाह। साडी नंगी ना होवे कंड, सिर रक्खणा हथ्थ टिक्का। इक्क सुणाउणा सुहागी छन्द, आदि जुगादि लईए गा। पुरख अबिनाशी सदा बख्शंद, दीनन दया दए कमा। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव लए पढ़ा। विष्न ब्रह्मा शिव हरि पढ़ाए, आदि पुरख वडी वड्याईआ। निरगुण सरगुण ढोला एका गाए, आप आपणा आप अलाईआ। आपणा चोला आप बदलाए, निराकार साकार रूप हो जाईआ। आपणा पर्दा ओहला आप उठाए, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। साचा तोला तोल इक्क तुलाए, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। धुर दा गोला सेव कमाए, सेवादार बणे साचा माहीआ। शब्द विचोला इक्क रखाए, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव बैठे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, दीनन आपणी गोद बहाइंदा। समरथ पुरख साची सिख्या इक्क समझा, साख्यात रूप वटाइंदा। हरख सोग सर्ब मिटा, एका जोग नाम सिखाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचा, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज वस्त अमोलक झोली पाइंदा। त्रैगुण मेला सहिज सुभा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश जोड़ जुड़ा, पंज दस्स रंग रंगाइंदा। रवि ससि कर रुशना, जोती किरन दए टिका, किरन किरन आप प्रगटाइंदा। मंडल मण्डप पलक वखा, ख़ालक ख़लक लए उपा, ख़लक आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी रचना आप समझाइंदा। आपणी रचना हरि समझाए, विष्न भुल कदे ना जाईआ। ब्रह्मा तेरी गोद सुहाए, ब्रह्म पूत सपूता जाईआ। शंकर तेरी सेव लगाए, जो घड़या भन्न वखाईआ। तिन्नां विचोला आप हो जाए, आदि जुगादि सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण सरगुण खेल खिलाए, सरगुण निरगुण वेख वखाईआ। आदि आदि ढोला सर्ब गाए, एका एक करे पढ़ाईआ। सोहँ रूप पाए थाएँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाए। सोहँ ढोला साचा गाउणा, आदि पुरख समझाया। विष्न ब्रह्मा शिव एका रंग रंगाउणा, रंग उतर कदे ना जाया। लक्ख

चुरासी सेव कमाउणा, पंज तत्त वेखे थाउँ थाया। जेरज अंडज उत्भुज सेत्ज बन्धन पाउणा, बन्दी बन्द आप रखाया। चारे खाणी नाद वजाउणा, चारे बाणी बाण लगाया। परा पसन्ती रूप वटाउणा, मद्धम बैखरी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी रचना दए समझाया। सोहँ ढोला रसना गा, एका तत्त जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव समझा, समझ समझ विच टिकाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़त लैणा घड़ा, घड़न भन्नणहार आपणा हुक्म वरताइंदा। घट घट अंदर आपणा आसण देणा ला, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। एका वस्त मंगणी आ, वस्त अमोलक इक्क समझाइंदा। आदि निरँजण निरगुण जोत निरँजण झोली देवे पा, घर घर विच आप रखाइंदा। आपणा नाद दए सुणा, घट घट नाद आप वजाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव भुल ना जा, अभुल गुण इक्क वखाइंदा। सोहँ ढोला एका गा, आदि जुगादि आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि आदि आपणा मार्ग आपे पाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव सुणया ला ला कन्न, दर दरवेश सीस झुकाया। तूं साहिब बेड़ा देणा बन्ह, सिर समरथ हथ्थ रखाया। आदि जुगादि कहीए धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याआ। तूं वसें बिन छप्पर छन्न, तेरा मन्दिर किसे ना पाया। तूं जननी तूं साचा जन, जन जणेंदी तूं ही माया। तूं घड़े तूं लएँ भन्न, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ अख्वाया। तूं आदि जुगादि देवें डन्न, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। हउँ तुध बिन होए अन्ह, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाया। तेरा प्रकाश साचा चन्न, अनुभव तेरा रूप समाया। हउँ तेरा कहिणा लईए मन्न, भुल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर समरथ हथ्थ रखाया। हउँ मंगण आए दर दरवेश, किरपा निध गुण निधाना। इक्क वेर नेत्र फेर हरि जू वेख, हउँ तेरे बाल नादाना। साडी आपणी हथ्थीं लिख रेख, ना मेटे कोए निशाना। आदि जुगादि तेरा दरसन लईए पेख, मेरे शाह पातशाह श्री भगवाना। तूं रक्खीं साया हेठ, तेरा झुलदा रहे निशाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बख्शिश करीं साचा दाना। हरि दाता दानी दान वण्डदा, गुणवन्ता बेपरवाह। लेखा जाणे आदि अन्त दा, बेअन्त आपणी खेल खिला। लेखा जाणे नारी कन्त दा, नर नरायण हरि रूप वटा। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हा। हरि हरि भेव खुल्हाइंदा, अगम्म अगम्मड़ा बोल। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी सेव लगाइंदा, आदि जुगादि रहे अडोल। हुक्मी हुक्म सर्ब फिराइंदा, तोलणहारा साचा तोल। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा इक्क वखाइंदा, ना रहिणा मात अनभोल। चार जुग दा बन्धन पाइंदा, जगत भण्डारा देवे खोल्ह। लक्ख चुरासी आप वरताइंदा, साची वस्त रक्खे कोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, हर घट अंदर जाए मौल। हर घट अंदर वसणा, निरगुण सरगुण मेल मिला। पंज तत्त अंदर बह बह हस्सणा, जोती जोत कर रुशना। शब्द निराला तीर कसणा, बाण अगम्मा दए लगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझा। हरि लेखा अपर अपार, पारब्रह्म जणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग आवे वारो वार, लोकमात वज्जे वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी रिहा उठाईआ। त्रैगुण बन्धन पाए संसार, पंज तत्त मेला दए मिलाईआ। निरगुण सरगुण कर पसार, चारे खाणी वेख वखाईआ। चारे बाणी दए भण्डार, चार जुग करे कुड़माईआ। चारों कुण्ट बोल जैकार, दहि दिशा दए सुणाईआ। निरगुण सरगुण दए आधार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। करे खेल ब्रह्मण्ड खण्ड, वरभण्ड हो त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग वण्डण वण्ड, हरि साचा सच जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करे खण्ड खण्ड, खण्डा आपणे हथ्थ चमकाइंदा। कलिजुग औध जाए हंढ, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी वेखे आपणा धन्द, साचे धन्दे तोहे लाइंदा। जुगा जुगन्तर सुणाए एका छन्द, नाम नामा आप प्रगटाइंदा। आपे वसे ओहले अन्धेरी कंध, पर्दा मात ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी युग, नव नौ चार हुक्म वरताइंदा। नव नौ चार वरतणा भाणा, जुग जुग हरि हरि खेल खिलाईआ। करे खेल श्री भगवाना, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। लोकमात होए प्रधाना, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। गुर अवतार दए परवाना, धुर संदेसा शब्द सुणाईआ। साचे सन्तां बन्ने गाना, हरि नामे सगन मनाईआ। भगतां देवे एका दाना, आत्म परमात्म झोली पाईआ। गुरमुखां वखाए इक्क निशाना, सचखण्ड दुआर रिहा झुलाईआ। गुरसिखां बख्शे चरन ध्याना, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। शब्द सुणाए साचा गाणा, बोध अगाध पढ़ाईआ। जुग जुग करे खेल महाना, जुग करता सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव साची सेव लगाईआ। जुग चौकड़ी खेल कराउणा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। चारों कुण्ट वेख वखाउणा, दहि दिशा रूप धराइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पातालां फेरा पाउणा, रूप रंग ना कोए वखाइंदा। पृथ्मी आकाश डंक वजाउणा, शाहो शाबाशी आपणा हुक्म आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण अंदर वास रखाउणा, वास निवासा आप हो जाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँघी कंदर पर्बत आसण लाउणा, समुंद सागर सोभा पाइंदा। गुर अवतार नाउँ धराउणा, सति सरूप अनूप समझाइंदा। भगत भगवन्त मेल मिलाउणा, सन्त कन्त गोद बहाउणा, गुरमुख आपणे दर सुहाइंदा। गुरसिख साचे सच दृढ़ाउणा, नेत्र नैण इक्क खुलाउणा, शब्द अनादी इक्क वजाउणा,

अनहद आपणा राग सुणाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पार कराउणा, चार जुग तेई अवतार सेवा लाउणा, अठारां भगत जोत जगाउणा, दस गुर संग रखाउणा, ईसा मूसा बन्धन पाउणा, चार यार संग मुहम्मद अल्ला राणी खेल खिलाईआ। धुर फ़रमाना इक्क पढ़ाउणा, राम नाम आपे गाउणा, मोर मुक्ट सीस टिकाउणा, हू हू नाअरा आपे लाउणा, सजदा सीस आप झुकाउणा, नाम सति आपे गाउणा, वाहिगुरु फ़तहि आप गजाईआ। चारे खाणी पर्दा लाउहणा, चारे बाणी भेव चुकाउणा, चारे वेदां पन्ध मुकाउणा, अठारां पुराण भेव खुलाउणा, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाउणा, अञ्जील कुरान पन्ध मुकाउणा, शब्द बबाण इक्क उठाउणा, दो जहान आप फिराउणा, नव नौ चार लेख मुकाउणा, विष्न ब्रह्मा शिव समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ चार उतरे पार, चार वरन होए ख्वार, जगत विद्या ना कोए आधार, तीर्थ तट ना कोए किनार, अठसठ ना वणज वपार, चौदां हट्ट ना कोए आधार, त्रैलोक ना कोए अखाड़, लोआं पुरीआं डेरा ढाहीआ। चारों कुण्ट होए अन्धयार, सच सुच्च ना कोए प्यार, पिता पूत ना कोए आधार, भाई भैण साक सज्जण सैण ना कोए यार, नाता तुट्टे थाउँ थाँईंआ। हरि का मन्दिर ना कोए विचार, दीवा बाती ना कोए पसार, कमलापाती मिले ना मीत मुरार, भरमे भुल्ले नारी नार, नर नरायण नज़र ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी करे विचार, सचखण्ड बैठा साचा माहीआ। जुग चौकड़ी पावे सार, गुर अवतारां लए उठाल, भगत भगवन्त सुरत संभाल, सुरत शब्द वेखे वेखणहारा, मेला मेल ना कोए कराईआ। गावत गाए सर्ब संसारा, उच्ची कूक कूक करे पुकारा, नाता जोड़े ना कोए गिरवर गिरधारा, गहर गम्भीर सर्ब गुण ठाकर नज़र किसे ना आईआ। चार कुण्ट होए विभचारा, मात पूत बणे कन्त भतारा, घर घर अंदर काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, धीरज जत सति सन्तोख ब्रह्म मति ना कोए रखाईआ। गुर अवतार ना देवे कोए सहारा, जूठ झूठ लग्गे अखाड़ा, नाच नचाए पंचम धाड़ा, माया ममता फिरे वाहो दाहीआ। गुरमुख रोवे ज़ारो ज़ारा, धरनी धौल करे पुकारा, कलिजुग आए अन्तिम वारा, नव नौ चार ना देवे कोए सहारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। लिख्या लेख आप करतारा, वेद व्यासा वेख विचारा, मूसा बोले कूक जैकारा, ईसा मंगे बण भिखारा, मगर आवे वाहो दाहीआ। मुहम्मद सजदा करे निमस्कारा, बेऐब ख़ुदाई परवरदिगारा, मुकामे हक वसे सांझा यारा, लाशरीक सच्चा शहिनशाहीआ। नानक देवे सति सहारा, ऊँच ऊँच अगम्म अपारा, महांबली उतरे अवतारा, मात पित ना कोए बणाईआ। गोबिन्द गुर बण लिखारा, एका अक्खर बन्ने धारा, प्रगट होवे हरि निरँकारा, आपे वसे धाम न्यारा, सम्बल नगर दए वड्याईआ। निहकलंक हो उज्यारा, शब्द डंक वजाए अपर अपारा, राउ रंक करे ख़बरदारा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग

करे पार किनारा, राज राजानां मारे मारा, शाह सुल्तान कोए रहिण ना पाईआ। गऊ ग़रीबां दए सहारा, प्रगट होए आपणी वारा, ना पुरख ना दिसे नारा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल अजूनी रहत जोती जोत करे रुशनाईआ। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, दो जहानां पावे सारा, ब्रह्मण्डां वेखे इक्क अखाड़ा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फोलाईआ। सतिजुग साचा धरे आप करतारा, एका शब्द इक्क जैकारा, एका मन्दिर एका गुरदुआरा, एका मस्जिद एका काअबा एका कलमा करे पढ़ाईआ। एका शाह इक्क नवाबा, एका तन वजाए रबाबा, एका मेल मिलाए सच्चे अहिबाबा, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला नूरो नूर ख़ुदाईआ। एका वेखे चौदां हाटा, करे खेल पुरख समराथा, चौदां तबकां जाणे गाथा, आलमीन करे खेल बेपरवाहीआ। लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथा, रविदास चमारा रक्खे साथा, कबीरा गाए आपणी गाथा, नानक निरगुण सगल वसूरा लाथा, गोबिन्द हाज़र हज़ूरा ज़ाहर पुरख अकाला इक्क मनाईआ। आपे होए जोती जाता, करे खेल पुरख बिधाता, मेटे रैण अन्धेरी राता, ना कोए ज़ात ना कोई पाता, ना कोई वरन ना कोई बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए अख्वाईआ। एका हरि बन्ने नाता, मन मति गंवाए नार कमज़ाता, उत्तम रक्खे सभ दी ज़ाता, एका शब्द पिता माता, गुरु गुर इक्क अख्वाईआ। एका राम एका कृष्न एका देवी देव पूजा पाठा, एका सरोवर मारे ठाठा, अमृत आत्म साचा जाम प्याईआ। एका पूरा करे घाटा, करे खेल बाज़ीगर नाटा, चौदां लोक फिरे नाठा, त्रैभवन धनी महिमा गणत ना गणी, लेखा लिख्त विच ना आईआ। लेखा जाणे त्रैलोकी नाथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, पुरख अकाला लेखा जाणे जोत उजाला, आदि शक्ति आदि भवानी नूर ज़हूर आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। ब्रह्मा विष्न शिव उठ उठ जाग, हरि साचा सच जणाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग लग्गा रिहा इक्क वैराग, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। अन्तिम मिले कन्त सुहाग, गीत सुहागी इक्क सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरवैर पुरख आपणा खेल खिलाइंदा। निरवैर पुरख पुरख अकाला, निरगुण निरवैर आपणा खेल खिलाईआ। दीनां बंधप दीन दयाला, दीनां नाथा गले लगाईआ। लेखा जाणे काल महाकाला, महाकाल होए सहाईआ। लोकमात बणाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, साढे तिन्न हथ्थ सच सिँघासण घाड़त लए घड़ाईआ। नाम अगम्मी शब्दी माला, मन का मणका दए भवाईआ। तोड़नहारा जगत जंजाला, त्रैगुण फंद दए कटाईआ। एका दस्से राह सुखाला, चार वरन करे पढ़ाईआ। पारब्रह्म करे सर्ब प्रितपाला, प्रितपालक इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सद चले

नाल नाला, जो जन अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। घट घट अंदर जिस दीपक बाला, आपणी सेजा सुत्ता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव तेरा वेला दए वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कलि आए अन्त, अन्त कोए रहिण ना पाया। धरे जोत श्री भगवन्त, निरगुण जोत जोत रुशनाया। लक्ख चुरासी साचा कन्त, ना मरे ना जाया। महिमा जणाए गण अगणत, चार वेद भेव ना राया। गुर अवतार गाए मंत, मन्त्र नाम इक्क दृढ़ाया। लेखा जाणे भगत सन्त, गुरमुख गुरसिख लए उठाया। चार कुण्ट वेखे गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म वेस वटाया। जीव जंत भुक्ख नंगत, हरि का नाम झोली किसे ना पाया। मिल्या मेल ना साची संगत, वरन बरन पई लड़ाया। अंगीकार ना करया अंगद, अंक एका नज़र किसे ना आया। हरि का नाम भोजन छक्या ना साची पंगत, रसना पढ़ पढ़ वाद वधाया। दर दरवेश ना बणया मंगत, मन का मोह ना कोए चुकाया। गुरसिख पढ़ावे क्या कोई पंडत, पंडत पांधा पढ़न पाठशाला कदे ना जाया। जिस मिल्या हरि अखण्डत, अखण्ड रूप दए दरसाया। ब्रह्मे विष्न शिव तेरी वेखे जंत, लक्ख चुरासी फोल फोलाया। कलिजुग वेला अन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दए वरताया। एका हुक्म वरते भगवान, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। पुरख अबिनाशी आए विच मैदान, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। कलिजुग मेटे झूठ दुकान, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। तख्तों लाहे राज राजान, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई देवे इक्क ज्ञान, आत्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नज़री आए इक्क भगवान, दृष्ट इष्ट दए वखाईआ। सर्ब जीआं दा साचा काहन, लक्ख चुरासी गोद बहाईआ। अमृत आत्म देवे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। एका राग सुणाए कान, सोलां विद्या मुख शरमाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाए आण, वाहवा हरि वड्डा वड वड्याईआ। आदि जुगादि ना मन्ने किसे दी आण, आपणा हुक्म आप वरताईआ। गुरमुख गुरसिख सज्जण सुहेले आप पछाण, लोकमात होए सहाईआ। दर दर घर घर दर्शन देवे आण, दीन दुनी छड्डे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जगत दृष्टी दए भवाईआ। जगत दृष्टी कलिजुग चम्म, चार कुण्ट अन्धेरा छाया। सतिगुर पूरा बेड़ा देवे बन्नृ, लोकमात वेख वखाया। मनमुखता देवे डन्न, एका खण्डा हथ्थ उठाया। कूड़ कुड़यारा देवे भन्न, एका ठोकर नाम लगाया। आत्म ब्रह्म ना जाणे कोए ब्रह्मण, ब्रह्म वेता दिस किसे ना आया। पाहन पत्थर कदे ना बणे ज़ामन, दामनगीर दामन हथ्थ ना किसे वखाया। पंज तत्त अन्तर कामनी कामन, लोभ मोह हँकार खेल खिलाया। चारों कुण्ट अन्धेरा शामन, शमअ दीप ना कोए जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर

घर वेखे मन हँकारी रावण, राम रूप किसे नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव तेरा अन्तिम लेखा दए मुकाया। लेखा तेरा मुक्कणा, दो जहानां धार। वेला अन्तिम ढुकणा, ना कोई पावे सार। पुरख अगम्मा एका बुक्कणा, दो जहानां करे ख़बरदार। कलिजुग अन्तिम झूठ दुआरा लुट्टणा, कूड़ कुड़यारा मारे मार। लक्ख चुरासी भाग निखुटणा, जिस विसिरया करतार। गुरमुखां उप्पर हरि जू तुट्ठणा, देवे दरस दीदार। अन्तिम रक्खे एका मुठणा, मुट्ठी लक्ख चुरासी विच्चों लए निकाल। जिस रक्खी एका ओटना शब्द चोट लगाए साचा ताल। माया ममता कढ्ढे खोटना, साचा मार्ग दए वखाल। देवे नाम भण्डार अतोटणा, निखुट जाए ना विच संसार। अन्त मिलाए जोती जोतना, जोती शब्दी कर पिआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल साचा हरि, लक्ख चुरासी घट घट वासी वेखे पत डाल्ह। अठ्ठ बोतलां अठ्ठ तत्त कढ्ढुया अर्क, गुर सतिगुर दया कमाईआ। नौ जन्म दा निकलया फ़र्क, फ़रमाबरदार होए सहाईआ। जन्म जन्म दा उलटया वर्क, वरका वरका दए उलटाईआ। नावें जन्म लगाई तर्क, गुरमुख सोया आप उठाईआ। पाया हरि ना कोए सोग ना कोए हरख, हरि के पौड़े दए चढ़ाईआ। आपणी पूर्ब जन्म दी पूरी करे शर्त, शरअ शरीअत भुल कदे ना जाईआ। अठ्ठ तत्त जोड़ जुड़े ना फेर परत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध मेला फेर ना मात मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठ जन्म दी पूर्ब आस तृष्ना मेट मिटाईआ। तृष्ना मिटे शरअ आब, आब शरअ रूप वखाईआ। उलटी करे कँवली नाभ, नाभी कँवल मुख भवाईआ। जन्म जन्म दे मेटे पाप, दुरमति धोती शाहीआ। दया करी हरि आपणी आप, जगत वसीला ना कोए वखाईआ। लेखा चुकाए जिउँ पूत माई बाप, पिता पूत एका गोद सुहाईआ। नौ जन्म दी मिटी अन्धेरी रात, नावें जन्म वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे दए लगाईआ। लेखा चुक्या मिल्या लहिणा, गुर सतिगुर दया कमाइंदा। अठ्ठ जन्म दा कीता वेख्या आपणे नैणां, मदि प्याला जो मुख लगाइंदा। नावें जन्म हरि का भाणा सहिणा, आत्म रस इक्क वखाइंदा। तन बस्त्र पाए एका गहिणा, सोलां इच्छया सोलां शंगार, साहिब सतिगुर करे प्यार, गुरमुख गुरमुख गुरमुख वेख वखाइंदा। कागद कलम रोवे ज़ारो ज़ार, सत्त समुंदर मस कूक कूक करे पुकार, अठारां भार बनास्पत ना करे कोए विचार, गुरसिख तेरा लेखा लिखण ना आईआ। ब्रह्मा विष्न शिव तेरा मंगे दीदार, करोड़ तेतीसा करे निमस्कार, जिस जन मिले आप निरँकार, लोक परलोक दो जहान एथे ओथे वज्जे सदा वधाईआ। जुग जुग हरिजन तेरा नाम निशान, पसू पंखी पंछी सारे गाण होए वड्याईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड बीआबान, मछ कछ

समुंद सागर डूँघी खाई बैठे ध्यान लगाईआ। जिस मिल्या हरि चुक्या डर, वसया घर नारी नर, हरि भगवन्त सन्त होए ना कदे जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा लहिणा झोली पाईआ। लहिणा मुक्कया चुकया लेखा, लेखा लेखे हरि लगाईआ। आत्म अन्तर कढुया भरम भुलेखा, भरमी भरम गढ़ तुड़ाईआ। आपणा पूर्ब आपे वेखा, किरती किरत कर्म जो करी कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे आपणा वर, जुग विछड़े जगत लए मिलाईआ। जग विछोड़ा दिता कट्ट, जाग्रत जोत करी रुशनाईआ। पिछला लहिणा पाया भट्ट, अगला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। गंगा राम लाहा ल्या खट्ट, रविदास चमार लेखा रिहा मुकाईआ। पिछला कौल वेख गंगा तट, तट किनारा रिहा समझाईआ। जन्म जन्म वटाया वार अठ्ठ, अठ्ठ तत्त करी कुड़माईआ । पिछला लेखा पहले दिता दस्स, भुल रहे ना राईआ। गुरसिख जिंनां चिर ना कहे बस बस, पुरख अबिनाशी आपणा लेखा दए वखाईआ। चोला बदल्लया हस्स हस्स, गुरसिख मिलाए नस्स नस्स, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। हिरदे अंदर रिहा वस, तीर निराला मारे कस, चिल्ला कमान आपणे हथ्थ वखाईआ। अन्तर जोत करे प्रकाश कोटन रवि ससि, मिटे रैण अन्धेरी मस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लगाए आपणे लड़, एका पल्लू नाम फड़ाईआ। नाम पल्ला हथ्थ फड़ाया। निरगुण सरगुण कर प्यार। कलिजुग जीवां दिस ना आया, नव खण्ड पृथ्मी ना करे कोए विचार। शब्दी शब्द बन्धन पाया, सुरत सुवाणी मिले हाणी इक्क इकल्ला आपणी वार। अमृत आत्म ठंडा पाणी दए प्याया, अठसठ तीर्थ कर ख्वार। घर विच घर दीपक जोत दए जगाया, मेटे धूंआँधार। अनहद शब्द दए सुणाया, छत्ती राग ना कोए विचार। साचे मन्दिर दए बहाया। हरि मन्दिर कर त्यार। आत्म सेजा मेल मिलाया, मेल मिलावा कन्त भतार। मिल मिल सख़ीआं मंगल गाया, गीत सुहागी एकँकार। त्रैगुण तेरा संगल गुर आप तुड़ाया, नाता तुट्टा पंच विकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लाए पार। पार किनारा डूँघा सागर, कलिजुग तरन कोए ना जाईआ। गुरमुख विरले कर्म करे उजागर, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। एका वणज कराए नाम सौदागर, हट्ट वणजारा इक्क खुल्हाईआ। भाग लगाए काया गागर, रतन अमोलक इक्क प्रगटाईआ। रतन अमोलक हरि का नाउँ रती रत्नागर, रती रत दए सुकाईआ। निर्मल कर्म होया उजागर, जो जन आए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख गुर सतिगुर लए तराईआ।

६१६

★ ६ सावण २०१८ बिक्रमी प्रीतम सिँघ साधू सिँघ दे गृह फगवाड़ा ज़िला जलन्धर ★

शाहो भूप हरि सुल्ताना, सति सतिवादी नाउँ धराइंदा। आदि जुगादि खेल महाना, आदि पुरख आप कराइंदा। जोती नूर नूर महाना, नूर नुराना डगमगाइंदा। वसणहारा सचखण्ड दुआर सच मकाना, दर घर साचे सोभा पाइंदा। रूप अनूप करे प्रधाना, निरगुण निरवैर पुरख अकाल वेस अवेस आप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आप कराइंदा। शाहो भूप खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, हरि पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। सच सिँघासण एका मल्ला, एकँकारा नाउँ धराईआ। आपणे दीपक आपे बल्ला, अदि निरँजण नूर रुशनाईआ। आपणा फड़े आपे पल्ला, अबिनाशी करता भेव ना राईआ। आपणी जोत आपे रल्ला, श्री भगवान शाह सुल्तान वड वड्याईआ। पारब्रह्म आपणा संदेस आपे घल्ला, नाद तराना आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आप खिलाईआ। आदि पुरख वड मेहरवाना, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। तख्त निवासी हो प्रधाना, सच सिँघासण आप सुहाइंदा। सति सरूपी सति निशाना, दर घर साचे आप झुलाइंदा। जोद्धा मर्द मर्द मरदाना, आप आपणा बल रखाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म फ़रमाना, धुर फ़रमाना आप अलाइंदा। दर दरवेशा दर दरबाना, दर दर आपणा सीस झुकाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, दूसर अवर ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड निवासा खेल तमाशा, निरगुण निरवैर आप कराइंदा। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। महल्ल अटल उच्च मनारा, सच दुआरा रिहा सुहाईआ। जोती जाता हो उज्यारा, जाग्रत जोत करे रुशनाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। रूप अनूप अगम्मी धारा, धार धार विच प्रगटाईआ। करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआर सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, आदि आपणा रूप वटाइंदा। आपणी महिमा जाणे बेअन्त, बेअन्त आपणा वेस कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणा खेल खिलाइंदा। श्री भगवान शाह सुल्ताना, शाहो भूप वडी वड्याईआ। सच सिँघासण इक्क सुहाना, पावा चूल ना कोए रखाईआ। आपणी इच्छया वेख वखाना, साची भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआर दर दरवाज़ा, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाइंदा। आदि पुरख शाहो भूप वड राज राजाना,

शाह सुल्ताना वेस वटाइंदा। हरि पुरख निरँजण आपे रच रच आपणा काजा, आपे सगन मनाइंदा। एकँकार आप वजाए आपणा वाजा, तार सतार ना कोए हिलाइंदा। आदि निरँजण जोत जोत प्रकाशा, दीवा बाती ना कोए रखाइंदा। श्री भगवान आपणा वेखे आप तमाशा, आपणी रास आप रचाइंदा। अबिनाशी करता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख एका वर, आप आपणा रंग वखाइंदा। आदि पुरख रूप रंग ते वसे बाहरा, रूप रंग लए प्रगटाईआ। आपणी इच्छया आपे वरतारा, आपे भिच्छया झोली पाईआ। आपे दर दरवेश बण भिखारा, वेस अनेका आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, भेव अभेद अछल अछेद आपणा आप खुल्हाईआ। आदि पुरख हरि भेव खुल्हाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। आपणी करनी आप समझाइंदा, पुरख अगम्मा हो त्यार। निरगुण जोत जोत प्रगटाइंदा, जोती जाता ख़बरदार। साचा मन्दिर आप सुहाइंदा, सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़। दूसर संग ना कोए रलाइंदा, इक्क इकल्ला परवरदिगार। मुकामे हक आप वड्यांअदा, नूर नुराना हो उज्यार। साचा तख्त आप सुहाइंदा, तख्त निवासी खेल अपार। धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा, हुक्मी हुक्म करे वरतार। पुरख नार आप अख्वाइंदा, लेखा जाणे नारी कन्त भतार। साची सेज आप हंढाइंदा, निरगुण निरगुण कर प्यार। थिर घर आपणा दर खुल्हाइंदा, घर घर विच कर त्यार। चरन कँवल आप टिकाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। घर विच घर कर त्यार, सचखण्ड दए वड्याईआ। थिर घर खोल्हे आप किवाड़, आपणी दया आप कमाईआ। लेखा जाणे कन्त भतार, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। आपणी इच्छया पाए भिच्छया अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। आपणा रूप आप धरा, जननी जन बण मलाह, आपणा मार्ग आपे पा, आपे वेख वखाईआ। सुत दुलारा इक्क उठा, एका गुण दए जणा, शब्दी शब्द वडी वड्याईआ। लेखा जाणे सहिज सुभा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। भेव अभेदा हरि हरि खोल्ह, आपणा भेव आप जणाइंदा। थिर घर अंदर आपे मौल, रूप अनूप आप वटाइंदा। आपे करे आपणा कौल, कीता कौल भुल ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड अंदर थिर घर धर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। थिर घर खोल्हे दर दरवाज़ा, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण वड राजन राजा, राजन राज आप अख्वाईआ। एकँकारा साजण साजा, घाड़त घाड़न लए घड़ाईआ। आदि निरँजण रक्खे लाजा, एका जोत नूर रुशनाईआ। श्री भगवान फिरे भाजा, रूप अनूप धराईआ। अबिनाशी करता रच रच काजा, आपणी रचना आप रचाईआ। पारब्रह्म प्रभ

देवे दाजा, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, थिर घर बैठा आपे वड़, रूप रेख ना कोए जणाईआ। थिर घर साचे आपे वड़या, आप आपणा आसण लाइंदा। आपणे पौड़े आपे चढ़या, सच महल्ले सोभा पाइंदा। आपणा घाड़न आपे घड़या, घाड़न घाड़त वेख वखाइंदा। आपणा पल्लू आपे फड़या, आप आपणा संग निभाइंदा। आपणी जोत आपे रल्लया, जोती जोत मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, थिर घर साचे अंदर वड़, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। आपणा बन्धन थिर घर, हरि साचा सच पाईआ। आपे पुरख नारी नर, नर नरायण नाउँ धराईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख वेख वखाईआ। आपे वरे आपणा वर, वरनी वर आप हो जाईआ। आपणा मेला आपे कर, आप आपणा सगन मनाईआ। आपणा आपे अंदर धर, आपे करे खेल बेपरवाहीआ। जननी जन आपे बण, धन्न धन्न जणेंदी बणे माईआ। दाई दाया सेव कर, साची सेवा आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा लेखा दए समझाईआ। लेख अवल्ला हरि करतारा, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। आपणी इच्छया भर भण्डारा, सच वरतारा आप हो जाइंदा। आपे सेजा आपे जाए सुत दुलारा, शब्दी शब्द गोद उठाइंदा। थिर घर वसाए सच मनारा, आप आपणा रंग रंगाइंदा। निरगुण निरगुण दए आधारा, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। निरगुण जोत करे प्यारा, निरगुण आपणा मेल मिलाइंदा। निरगुण मंगे बण भिखारा, निरगुण झोली अग्गे डांहयदा। निरगुण बणे सच वरतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे खेल कर आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। सुत दुलारा कर प्रधाना, इक्क प्रधानगी दए जणाईआ। एका रक्खणा चरन ध्याना, चरन कँवल समझाईआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, सचखण्ड वेख वखाईआ। एका राज इक्क राजाना, शाह सुल्तान इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारा लए उठाईआ। सुत दुलारे उठ उठ, हरि साचा आप जगाइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता गया तुट्ठ, आपणी दया आप कमाइंदा। देवे भण्डार इक्क अतुट आदि जुगादि तेरी झोली पाइंदा। तेरी सुहाए आप रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी वेख वखाइंदा। करे खेल पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। आपणे अंदरों आपे फुट, तेरा रूप प्रगटाइंदा। आपणी धारा बख्शे जोत, निरगुण जोत जोत जगाइंदा। एका रक्खणी मेरी ओट, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। तेरा घर बणाया किला कोट, थिर घर तेरा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख देवे वर, एका गुण आप समझाइंदा। शब्द सुत उठ बलकार, हरि साचा सच जणाईआ।

थिर घर वेख चार दीवार, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। इक्क इकल्ला वसे निराकार, निरँकार बेपरवाहीआ। ना कोई दूजा मददगार, सगला संग ना कोए जणाईआ। ना कोई मृदंग ना सतार, संदेस नरेश ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, एका शब्द लए उठाईआ। शब्द सुत सूर बलवाना, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवाना, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। एकँकारा बख्शे चरन ध्याना, चरन चरनोदक मुख चुआइंदा। आदि निरँजण देवे जोत नूर महाना, जोती शब्दी मेल मिलाइंदा। अबिनाशी करता बन्ने गाना, निरगुण साचा सगन आप मनाइंदा। श्री भगवान देवे धुर फ़रमाना, सच संदेसा आप अलाइंदा। पारब्रह्म करे प्रधाना, सच प्रधानगी इक्क समझाइंदा। मेरा नाउँ तेरा परवाना, सच परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। तेरा लेखा दो जहानां, दोए दोए रूप आप समझाइंदा। तेरा मन्दिर सच मकाना, सच सिँघासण इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। आपणा पर्दा चुक्या, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। सुत दुलारा आपणी गोद लै आपे बुकया, नाम जैकारा एका बोल। मेरा बूटा कदे ना सुक्कया, आदि जुगादि रहे सद मौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे तोले आपणा तोल। सुत दुलारा शब्दी धार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हउँ बालक तेरा सेवादार, सेवक सेवा सच कमाईआ। आदि जुगादि दोए जोड़ करां निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तूं विसर ना जाईं मेरे करतार, तेरा विछोड़ा सहि ना सकां राईआ। कर किरपा आपणी वार, हउँ एका मंग मंगाईआ। चरन भिख्या देणी साची छार, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे वजदी रहे वधाईआ। किरपा निध हरि गुण निधाना, आपणी दया आप कमाइंदा। सचखण्ड निवासी देवे धुर फ़रमाना, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। मेरा नाउँ तेरा निशाना, दो जहानां आप झुलाइंदा। तेरी इच्छया करे परवाना, साची भिच्छया झोली पाइंदा। निरगुण सरगुण खेल करे महाना, तेरा बंस सरबंस वखाइंदा। तेरी गोदी खेले खेल जहाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताइंदा। साची वस्त हरि वरतारा, शब्दी शब्द झोली भराईआ। तेरा रूप अनूप धरे विच संसारा, महांसारथी बण सच्चा शहिनशाहीआ। तेरा खेल करे अपर अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणा मेल मिलाईआ। निरगुण सरगुण बन्ने धारा, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी गोद बहाईआ। त्रैगुण देवे इक्क सहारा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां बख्शे तेरा चरन सहारा, गगन मंडल तेरा नूर करे रुशनाईआ। रवि ससि करे उज्यारा, तेरी किरन किरन प्रगटाईआ। जल बिम्ब दए सहारा, तेरा

नीर नीर वहाईआ। धरनी धरत लाए अखाड़ा, आकाश प्रकाश दए प्रगटाईआ। लक्ख चुरासी खेल न्यारा, घड़ भाण्डे दए बणाईआ। निरगुण जोत नूर कर उज्यारा, नूरो नूर करे रुशनाईआ। शब्द अनाद वजाए सतारा, धुन अनादी आप सुणाईआ। करे खेल आप करतारा, करता पुरख वड वड्याईआ। रच रच वेखे वेखणहारा, आपणी रचना आप रचाईआ। शब्द सुत रहिणा ख़बरदारा, कीता कौल भुल ना जाईआ। दो जहान लग्गे अखाड़ा, लोआं पुरीआं नाच नचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लगाए सेवादारा, साची सेवा इक्क समझाईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, घट घट आपणी जोत करे रुशनाईआ। निरगुण सरगुण दए आधारा, सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल अपारा, एका बन्धन नाम रखाईआ। वेस वटाए गुर अवतारा, जगत ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। भगत भगवन्त हो उज्यारा, लक्ख चुरासी करे पढ़ाईआ। सन्त कन्त मेला नार भतारा, सच सुहाग दए वखाईआ। गुरमुखां देवे इक्क आधारा, नाम निधाना झोली पाईआ। गुरसिखां वखाए इक्क दुआरा, एका घर सोभा पाईआ। जुग जुग वेखे खेल तेरा विच संसारा, अभुल बेपरवाहीआ। चार जुग लगाए अखाड़ा, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। एका शब्द दए आधारा, ब्रह्मा वेता कर पढ़ाईआ। एका लेखा बणे लिखारा, चारे वेदां दए लिखाईआ। चारे वरन कर उज्यारा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड वंडाईआ। नौ खण्ड खेल न्यारा, सत्त दीप जोत रुशनाईआ। चारे खाणी कर पसारा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंडज आपणा बन्धन आपे पाईआ। चारे बाणी बोल जैकारा, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। चारे यार करे प्यारा, कलमा आपणा आप सुणाईआ। जुग चौकड़ी वेखे वेखणहारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। थिर घर तेरा वसदा रहे चुबारा, पुरख अबिनाशी एका गुण समझाईआ । तूं सुत मेरा सुत दुलारा, जुग जुग तेरे नाउँ करां वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख दिता वर, आप आपणा हुक्म जणाईआ। सुणया धुर फ़रमाना, शब्दी सुत सीस झुकाइंदा। तूं साहिब सच्चा सुल्ताना, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। तेरा नाउँ श्री भगवाना, मैं भुल कदे ना जाइंदा। तेरा वेखां खेल दो जहानां, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाइंदा। त्रैगुण बन्नां एका गाना, पंज तत्त आपणा वेस वखाइंदा। लक्ख चुरासी कर निशाना, लोकमात नाच नचाइंदा। गुर अवतारां देवां दाना, तेरा नाउँ झोली पाइंदा। तेरा राग सुणावां सच तराना, नाद अनादी आप अलाइंदा। जुग चौकड़ी वेखां खेल हो प्रधाना, लोकमात वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वक्त कवण वेला कवण घर मेल मिलाइंदा। सुत दुलारा मंगे मंग, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, तेरे हथ्थ वडी वड्याईआ। जुग चौकड़ी पार जायण लँघ, गुर अवतार आपणा ढोला मात गाईआ। तेरी सुहञ्जणी सेज पलँघ, नेत्र नैण नैण उठाईआ। तूं

देणा परमानंद, निजानंद तेरी रसाईआ। तूं सुणाउणा सुहागी छन्द, तेरा नाउँ लोकमात करे रुशनाईआ। तूं टुट्टी लैणी गंढु, गंढुणहार इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वेला अन्त दे समझाईआ। वेला अन्त हरि समझा, हउँ सीस सीस झुकाईआ। जुग चौकड़ी तेरी सेवा लवां कमा, पीसण पीस सेव कमाईआ। लक्ख चुरासी तेरा खेल खिला, ख़ालक वेखां ख़लक ख़ुदाईआ। जूनी जून अजून भुआ, जुग जुग गेड़ा दयाँ भुआईआ। वसदा खेड़ा दयाँ ढाह, उजड़या खेड़ा फेर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वेला अन्त अन्त जणाईआ। वेला अन्त हरि जणाइंदा, आदि पुरख बेपरवाह। लेखा लिख्त विच ना आइंदा, लिख लिख सके ना कोए समझा। ब्रह्मा निउँ निउँ सीस झुकाइंदा, विष्नूं लए ना उच्ची साह। शंकर धूढ़ी ख़ाक मंग मंगाइंदा, नेत्र नैणां नीर वहा। चार वेद भेव ना आइंदा, गुर अवतार बेअन्त बेअन्त गए गा। हरि का लेखा लिख ना कोए वखाइंदा, जो आया मंगे पनाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे दए समझा। सुत दुलारे जाणा जाग, सचखण्ड निवासी आप जगाईआ। थिर घर तेरे लग्गा भाग, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। एका दीपक जगया चिराग़, आदि जुगादि ना कोए बुझाईआ। दो जहान तेरा सज्जण साक, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा बन्धन पाईआ। लक्ख चुरासी रक्खे तेरी ताक, त्रैगुण वेखे थाउँ थाँईंआ। तेरे नाल करे आपणा भविख्त वाक, लेखा लिख ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा लेखा दए वखाईआ। आपणा लेखा हरि जणाइंदा, सो पुरख निरँजण हो मेहरवान। नव नौ चार खेल खिलाइंदा, लेखा जाणे श्री भगवान। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा, गुणवन्ता गुण निधान। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढाइंदा, आपे वेखे मार ध्यान। गुर अवतार सेव लगाइंदा, देवे धुर फ़रमान। भगत भगवन्त आप मिलाइंदा, लोकमात लज्जया रक्खे आण। सन्त कन्त आप उठाइंदा, आप आपणे लए पछाण। गुरमुख गुर गुर रंग समाइंदा, गुर सतिगुर वेखे मार ध्यान। गुरमुख साचे दर बहाइंदा, इक्क वखाए सति मकान। जुग चौकड़ी अन्तिम पन्ध मुकाइंदा, ना रहे कोए विच जहान। जो घड़या भन्न वखाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द सुत देवे वर, लक्ख चुरासी जाए हर, वेला अन्त इक्क जणाइंदा। नव नौ चार पार कराउणा, कलिजुग अन्त अन्त समझाईआ। पुरख अबिनाशी वेस वटाउणा, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। तेरा नाउँ डंक वजाउणा, शब्दी शब्द सुणाईआ। चार जुग दा लेखा लेख वखाउणा, अभुल भुल कदे ना जाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर मंगाउणा, आप आपणा हुक्म सुणाईआ। तेई अवतारां पर्दा लाउहणा, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। ईसा

मूसा संग मुहम्मद पिछला कीता वेख वखाउणा, वेखणहार आप हो जाईआ। गुर गुर धार भेव चुकाउणा, दस दस आपणा दए मुकाईआ। चार वरन ख़बरदार कराउणा, बरन अठारां दए हिलाईआ। दीन मज़्ह्ब भेव चुकाउणा, ज़ात पात फोल फोलाईआ। सभ दा लेखा सभ दे अग्गे रखाउणा, कूड़ी क्रिया सर्ब लोकाईआ। मन मति माण ना किसे गवाउणा, अञ्जील कुरान शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार ना नज़री आउणा, नेत्र नैण किसे ना दरसण पाउणा, कलिजुग अन्धेरा एका छाउणा, चारों कुण्ट साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। साध सन्त हरि ना किसे मनाउणा, भगत भगवन्त ना गोद बहाउणा, जोती जोत ना जोत जगाउणा, किला कोट ना झूठा ढाउणा, मन का मणका ना कोए भुआईआ। रसना बोल बोल जीव जंत जंत समझाउणा, हरि बेअन्त किसे ना गाउणा, जिस हथ्थ वडी वड्याईआ। सुत शब्द तेरा लेखा अन्तिम तेरी झोली पाउणा, तेरा कर्ज़ा रहिण ना देवे राईआ। लक्ख चुरासी जो घड़या सो भन्न वखाउणा, शब्द खण्डा इक्क उठाईआ। आपणा हुक्म आप वरताउणा, हुक्मी हुक्म खेल खिलाईआ। लक्ख चुरासी नैण शरमाउणा, भुलया बेपरवाहीआ। अग्गे हो ना किसे बचाउणा, गुर अवतार ना देवे कोए ग्वाहीआ। सम्मत अठारां पन्ध मुकाउणा, एका नाया मेल मिलाईआ। इक्क इकल्ला हो के वेस वटाउणा, नौ खण्ड पृथमी नौ दर खोजे थाउँ थाँईंआ। नौ दर मन्दिर आपे ढाउणा, इक्क इकल्ला ढाह रिहा लगाईआ। इक्क महल्ला इक्क वसाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, अन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। वेला अन्त अन्त हरि आउणा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। चार जुग गुर अवतारां गाउणा, शब्द संदेस इक्क सुणाइंदा। वेद व्यास लेख लिखाउणा, ईसा बोले मूसा कहे जिस मेरे मगरों आउणा, सभ दा लहिणा मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। आपणा भेव हरि समझाया, महिमा कथ कथी ना जाईआ। नानक निरगुण निरवैर पुरख अकाल मनाया, अजूनी रहत एका एक वड्याईआ। उच्ची कूक कूक समझाया, लक्ख चुरासी गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अछल अछल आप हो जाईआ। अछल अछल हरि निरँकारा, जुग जुग आपणा खेल खिलाइंदा। आपे महांबली होए अवतारा, जोती जोत डगमगाइंदा। आपे लेखा जाणे सुत दुलारा, गोबिन्द हुलारा इक्क लगाइंदा। सम्बल वसे धाम न्यारा, साचा मन्दिर इक्क वखाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, लोआं पुरीआं आप जगाइंदा। शब्द खण्डा फड़ दो धारा, दो जहानां मेट मिटाइंदा। नौ खण्ड पृथमी वेखे अखाड़ा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। चारों कुण्ट लहिणा देणा चुकाए जंगल जूह उजाड़ पहाडा, समुंद सागर फोल फोलाइंदा। आपणा नाउँ रखाए निहकलंक नरायण नर अवतारा, मात पित ना गोद सुहाइंदा।

੬੨੬

भाई भैण ना कोए प्यारा, साक सज्जण ना कोए बणाइंदा। जन भगतां करे सच प्यारा, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। आत्म अन्तर खोल्हे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी पर्दा आप तुड़ाइंदा। त्रैगुण अग्नी लग्गे ना तत्ती हाढ़ा, सांतक सति सति वरताइंदा। अमृत बख्शे ठंडी ठारा, निझर झिरना आप झिराइंदा। शब्द सुणाए सच्ची धुन्कारा, रसना जेहवा ना कोए हिलाइंदा। आपे वसे धाम न्यारा, गुरमुख साचे धाम सुहाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, नाद अनादी इक्क सुणाइंदा। सो पुरख निरँजण खेल करया विच संसारा, हँ ब्रह्म नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त श्री भगवन्त, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा लेखा आपणे हथ्थ, सो पुरख निरजंण आप रखाईआ। जुग जुग चलाए रथ, जुग गेड़ा आप भुआईआ। सति सरूपी एका वथ्थ, एकँकारा आप वरताईआ। शब्द जणाए महिमा अकथ, बोध अगाध पढ़ाईआ। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, नाम डोरी नाल बंधाईआ। जिस चाहे तिस लए रक्ख, लक्ख चुरासी अग्नी मठ तपाईआ। जुग चौकड़ी देवे मथ, सभ दा लेखा रिहा मुकाईआ। कलिजुग अन्तिम लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, रविदास चमारा दए ग्वाहीआ। कबीर जुलाहा कहे काया खेड़ा दिसे भट्ठ, बिन हरि नाम ना कोए वड्याईआ। हरि चरन दुआरा तीर्थ तट, सर सरोवर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा दए चुकाईआ। लहिणा चुकणा जगत जग, करे खेल बेपरवाहया। जुग जुग औध रही पुग, पान्धी आपणा पन्ध मुकाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जो रिहा लुक, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। सिँघ शेर हो हो रिहा बुक्क, एका गरज रिहा सुणाया। लक्ख चुरासी एका वार लए चुक्क, आपणी तृष्ना लए बुझाया। गुर अवतारां रिहा पुच्छ, सच स्नेहुड़ा इक्क घलाया। जो कोई बाकी रही कुछ, आपणा लेखा दयो वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। शब्द संदेसा दिता घल्ल, हरि साचा सच जणाईआ। ईसा मूसा करे ना कोए वल छल, मुहम्मद पर्दा ना कोए रखाईआ। चौदां तबक वेखे लग्गा फल, पत्त डाल्ही फोल फुलाईआ। बिस्मिल रूप होए कवण गया रल, नूर नूर विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ दा लहिणा रिहा चुकाईआ। सभ दा लहिणा चुक्कणा, हरि साचा आप चुकाए। कलिजुग अन्तिम पैंडा मुक्कणा, पन्ध कोई रहिण ना पाए। पुरख अकाल एका बुक्कणा, दो जहानां दए सुणाए। जूठा झूठा बूटा सुक्कणा, सभ दी जड़्ह दए उखड़ाए। जूठ झूठ हरि हरि लुट्टणा, माया ममता दए मिटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम लेखा आपणे लेखे पाए। लेखा पाए आपणे लेखे, लेखा लिखणहार गोपाल। सृष्ट सबाई रही भरम भुलेखे,

निरगुण दिसे ना दीन दयाल। मुच्छ दाढ़ी ना रक्खे केसे, जोती नूर जल्वा जलाल। तिस साहिब को सदा आदेसे, जो करे सर्ब प्रितपाल। आदि जुगादि आपणे नेत्र पेखे, निरगुण निरवैर पुरख अकाल। दीन मज़्ब अन्तिम मेटे भुलेखे, ज़ात पात ना कोए निशान। मेल मिलावा दस दस्मेशे, एका देवे नाम दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे हरि कलाम। हरि कलाम इलाही कलमा, कायनात आप सुणाइंदा। आलम इलम ना जाणे उल्मा, तुलबा तालब ना कोए वखाइंदा। उम्मत उम्मती होई मुजरमा, साचा जुरम इक्क लगाइंदा। मुहम्मद फुरे ना कोई फुरना, सदी चौधवीं वक्त वखाइंदा। नेत्र रो रो अग्गे तुरना, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। भरया बेड़ा अन्तिम रुढ़ना, पार किनार ना कोए जणाइंदा। आपणा कीता आपे भरना, वेले अन्त ना कोए छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द सुत तेरा पूरा करे वर, आदि अन्त अन्त आदि आपणा भेव आपणे विच रखाइंदा। आपणा भेव आपणे अंदर रक्ख, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण नूर नूर हो प्रतक्ख, निरवैर कल चलाईआ। चार वरन अठारां बरन एका मार्ग दस्स, ज़ात पात दए मिटाईआ। हिरदे अंदर हरि हरि वस, हरिजन साचे लए जगाईआ। मेटे रैण अन्धेरी मस, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। अठ्ठे पहर रहे प्रभात, वेला वक्त ना वण्ड वंडाईआ। अमृत आत्म देवे दात, निझर झिरना आप झिराईआ। चरन कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। दरस दिखाए साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। ग़रीब निमाणयां पुच्छे वात, देवे नजात सच्चा शहिनशाहीआ। सतिजुग सुणाए साची गाथ, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। हँ ब्रह्म पुछे वात, आत्म दरसी दृष्ट इष्ट इक्क जणाईआ। उत्तम रक्खे हरिजन ज़ात, ज़ात अज़ाती मेट मिटाईआ। करया वेस कमलापात, कँवल नैण नैण बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका हरि, आपे वेखे आपणी मार झात, आपणा पर्दा आप उठाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण खेल कर, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण आपणा वेस वटाईआ।

★ ७ सावण २०१८ बिक्रमी गुरमीत सिँघ दे गृह हरदो फराला ज़िला जलन्धर ★

शहिनशाह हरि शाह सुल्ताना, पुरख अकाल अकाल अख्वाइंदा। शाहो भूप वड राज राजाना, निरगुण निरवैर रूप धराइंदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, अजूनी रहत खेल खिलाइंदा। जोत नूर नूर महाना, अनुभव प्रकाश कराइंदा। दर

दरवेश दर दरबाना, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा वेस आप कराइंदा। आदि पुरख वेस अवल्ला, निराकार आप कराईआ। आपे वसे धाम अटल्ला, उच्च महल्ला सोभा पाईआ। आपणे प्रकाश आपे बला, नूर ज़हूर आप धराईआ। आपणी जोत आपे रल्ला, जोती जोत जोत मिलाईआ। आपणा घर आपे मल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। निरगुण निरवैर हो उज्यारा, हरि पुरख निरँजण नाउँ प्रगटाइंदा। साचा मन्दिर खोल्ह दुआरा, एकँकारा सोभा पाइंदा। आदि निरँजण कर पसारा, जोती नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता पावे सारा, रूप अनूप आप वखाइंदा। श्री भगवान वसणहारा ठांडे दरबारा, निरगुण आपणा रंग आप रंगाइंदा। पारब्रह्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा आप सुहाइंदा। सच दुआर श्री भगवान, आदि पुरख आप सुहाईआ। जोती जाता नौजवान, नूर नुराना सच्चा शहिनशाहीआ। आपणी इच्छया कर प्रधान, साची भिच्छया लए उपाईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमान, हुक्म हाकम लए सुणाईआ। तख्त निवासी नौजवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आपणा घाड़न लए घड़ाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़ घड़, सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। आपणा वेस आपे कर कर, हरि पुरख निरँजण रूप धराइंदा। आपणा पल्ला आपे फड़ फड़, एकँकारा बन्धन पाइंदा। आपणे अंदर आपे वड़ वड़, आदि निरँजण जोत जगाइंदा। आपणा अक्खर आपे पढ़ पढ़, आपणा नाउँ आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म शाह सुल्ताना, निरगुण निरगुण आप जणाईआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, इक्क दुआर दए सुहाईआ। एका मर्द इक्क मरदाना, महांबली इक्क अख्वाईआ। एका गुण गुणवन्ता गुण निधाना, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी महिमा आप जणाईआ। आपणी महिमा आप जणाए, लेखा लिख्त विच ना आईआ। सो पुरख निरँजण दया कमाए, हरि पुरख निरँजण एकँकारा संग निभाए, आदि निरँजण विछड़ ना जाईआ। श्री भगवान वेख वखाए, अबिनाशी करता ख़ुशी मनाईआ। पारब्रह्म करे खेल बेपरवाहे, बेपरवाह आपणी बणत बणाईआ। आपणी रचना आपे रच वखाए, रचणहार आप हो जाईआ। करनी करता किरत कमाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर साचा आप सुहाए। साचा खेल खेल करतारा, अलख अलखणा आप कराइंदा। अगम्म अगम्मड़ा हो उज्यारा, धाम अगम्मड़ा आप सुहाइंदा। रूप अनूप बेऐब परवरदिगारा, नूर

नुराना डगमगाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची सोभा पाइंदा। इक्क इकल्ला खेल न्यारा, निरगुण आपणा आप कराइंदा। आपणी वस्त रक्खे हरि थारा, दर घर साचे आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा सगन आप मनाइंदा। साचा सगन हरि निरँकार, निरगुण निरगुण आप मनाईआ। आपणी इच्छया कर विचार, आपणा लेखा दए समझाईआ। एका वस्त लए उभार, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। ना कोई वेखे वेखणहार, नज़र नैण ना कोए तकाईआ। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर दाता बेपरवाहीआ। आदि पुरख आपणी आप बणे सरकार, शाह पातशाह आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म श्री भगवान, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। तख्त निवासी नौजवान, निरगुण आपणा बल धराइंदा। आपणे मन्दिर हो प्रधान, आप आपणा वेख वखाइंदा। राज राजन बण सुल्तान, शाहो भूप रूप वटाइंदा। कवण वस्त होए निशान, सच निशाना कवण जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप समझाइंदा। आपणी इच्छया आपे रक्ख, भेव अभेद खुल्हाइंदा। आपे करे आपणा पक्ख, आपणा संग आप निभाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे वेख वखाइंदा। आपे खेल करे पुरख समरथ, समरथ आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। आदि जुगादि महिमा अकथ, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, आपणा मता आप पकाइंदा। साचा मता पुरख अबिनाश, आपणा आप पकाईआ। आदि जुगादि ना होवां विनास, अबिनाशी करता नाउँ धराईआ। एका वस्त रक्खां पास, दूसर होर ना कोए चतराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त लए समझाईआ। आपणी वस्त हरि करतारा, आप आपणा आप समझाइंदा। एका गुण गुण उज्यारा, गुण निधान आप प्रगटाइंदा। करे खेल साचे दरबारा, दर दरबारे सोभा पाइंदा। राज राजान होए सिक्दारा, शाहो भूप हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा घाड़त आप घड़ाइंदा। साचा घाड़त हरि हरि घड़, आपणा घाड़न दए समझाईआ। सो पुरख निरँजण हरि पुरख निरँजण इक्क दूजे दा फड़ फड़ लड़, लड़ लड़ नाल बंधाईआ। एकँकारा आदि निरँजण एका घर बैठे वड़, दूसर रंग ना कोए वखाईआ। अबिनाशी करता श्री भगवान इक्क दूजे नाल गए जुड़, जोड़ी जोड़ जोड़ जुड़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे खड़, अलख अलखना बेपरवाहीआ। निरगुण निरगुण मेला कर, निरगुण निरगुण ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची घाड़त इक्क समझाईआ। साची घाड़त राजन राज, आपणी आप जणाइंदा। तख्त निवासी साजन साज, साचा

साज आप सजाइंदा। आप आपणी रक्खी लाज, लाजावन्त आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे आपणा वर, सच वस्त आप वरताइंदा। सच वस्त हरि जगदीस आपणी आप वरताईआ। कोई ना करे दूजा रीस, अवर दिसे ना कोए चतुराईआ। एका छत्र झुल्ले साचे सीस, पारब्रह्म प्रभ बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आप समझाईआ। आदि पुरख हरि भेव अपारा, निरगुण आपणा आप समझाइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआर हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। सच सिँघासण अपर अपारा, आपे वेखे वेखणहारा, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, जोद्धा सूरबीर होया ख़बरदारा, आपणा बल आप धराइंदा। राज राजाना बण सिक्दारा, करे खेल हरि आपणी वारा, वार थित ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची बणत आप बणाइंदा। साची बणत हरि हरि ताज, पंचम पंचम पंच मिलाईआ। आदि पुरख आपणा रचया काज, निरगुण आपणी धार वखाईआ। निरगुण निरगुण करे साचा राज, राज जोगीशर आप हो जाईआ। निरगुण निरगुण मारे आवाज़, निरगुण निरगुण शब्दी शब्द प्रगटाईआ। निरगुण विष्न ब्रह्मा शिव देवे दाज, निरगुण निरगुण झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाहीआ। साचा तख्त सचखण्ड दुआर, सोभावन्त आप सुहाइंदा। पुरख निरँजण हो त्यार, निरगुण आपणा रूप प्रगटाइंदा। हरि पुरख निरँजण बल धार, बल आपणा वेख वखाइंदा। एकँकारा कर पसार, आपणी महिमा गणत आप गणाइंदा। आदि निरँजण हो उज्यार, जोती जोत डगमगाइंदा। श्री भगवान करे प्यार, आपणा मेला आप मिलाइंदा। अबिनाशी करता करे खेल पुरख नार, नारी कन्त वेस वटाइंदा। पारब्रह्म बणे सांझा यार, दर घर साचे सोभा पाइंदा। राज भूप बण सिक्दार, साचा हुक्म आप वरताइंदा। घाड़त घड़ अपर अपार, ना कोई संग रक्खे सुन्यार, जगत हथिआर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरन किरन कर त्यार, जोती जोत जोत पसार, इक्क इकल्ला एकँकार, रूप रंग रेख ते वसे बाहर, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। रूप रंग रेख करतार, आपणा आप जणाईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सीस रक्ख ताज सोहे दस्तार, दस्तगीर आपणा दामन आप फड़ाईआ। आपे पहने पहनणहार, आपणा चीर बस्त्र अवर ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घाड़न साचा घड़, साचे ताज दए वड्याईआ।

६३१

ना कोई वेला ना कोई वक्त, थित वार ना कोए रखाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता सोग ना कोए जणाइंदा। हरि का भेव ना सके कोई परख, आदि जुगादि आपणी खेल आप खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ताज सीस धर, सचखण्ड दुआरा कर पसारा, करे खेल एकँकारा, आपणी कल आप जणाइंदा। आपणी कल आपे धर, अकल कल आप समझाईआ। आपणी इच्छया देवे वर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। साचे तख्त बैठा चढ़, आसण सिँघासण सोभा पाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, अजूनी रहत बेपरवाहीआ। आपणी करनी रिहा कर, करता पुरख वड वड्याईआ। आपणा घाड़न आपे घड़, आपे पिता आपे माईआ। आपे जननी बणे जन, आपे होए दाया दाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्नृ, आपे रिहा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे वड़, साचा आसण आप सुहाईआ। साचा आसण सोभावन्त, सच सिँघासण आप सुहाइंदा। पुरख अबिनाशी एका कन्त, निरगुण निरवैर सोभा पाइंदा। आपणी महिमा गणाए अगणत, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। आप उपाए आपणा मंत, नाउँ निंरकारा आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त आपे चढ़, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाना शाहो भूप, आपणा आप जणाईआ। मेरा खेल सति सरूप, सति सति मेरी वड्याईआ। मेरा नूर निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। मेरा मन्दिर किला कोट, सचखण्ड वडी वड्याईआ। मेरा इष्ट मेरी ओट, मेरा मेरा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, आपणा खेल आप खिलाईआ। साचा खेल हरि निरँकारा, सचखण्ड दुआरे आप कराइंदा। आपे हुक्म आप वरतारा, आपे हुक्मी हुक्म सुणाइंदा। आपे भूप आप सिक्दारा, राज राजान आप हो जाइंदा। आपे दर दरवेश बणे भिखारा, आपे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। आपे सेवक सेवादारा, साची सेवा आप कमाइंदा। आपे वसे सभ तों बाहरा, दिस किसे ना आइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मंदर आपे चढ़, साची धारा आप चलाइंदा। साची धार खेल करतार, करता पुरख आप कराईआ। आदि पुरख हो ख़बरदार, सच संदेसा लए सुणाईआ। नौ नौ चार कर उज्यार, नाउँ निरँकारा गुण सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीस ताज एका रक्ख, करे खेल पुरख समरथ, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। सचखण्ड वधाई खेल अपारा, हरि निरँकारा आप कराइंदा। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, धुर दी बाणा आप सुणाइंदा। आपणा आपे वरते भाणा, आपणा भाणा आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आपणी इच्छया आप वखाइंदा। आपणी इच्छया आपणे अग्गे रक्ख, हरि आपे वेख वखाईआ। निरगुण मेला निरगुण कर

प्रतक्ख, निरगुण पिता निरगुण पूत निरगुण बणे साची माईआ। निरगुण खेल अलखना अलख, निरगुण अगम्म अगोचर आपणा नाउँ धराईआ। निरगुण निरगुण नालों होए वक्ख, निरगुण निरगुण विच रिहा समाईआ। निरगुण रक्खे आपणा पक्ख, आप आपणी वण्ड वंडाईआ। निरगुण मार्ग निरगुण दस्स, निरगुण रिहा समझाईआ। निरगुण पूरी करे आस, निरगुण आस निरास ना कोए जणाईआ। निरगुण जोत करे प्रकाश, निरगुण जोती जोत समाईआ। निरगुण दासी निरगुण दास, निरगुण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आप चुकाईआ। भेव जणाए पुरख अकाला, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। दीना बंधप दीन दयाला, दीनन आपणा रंग रंगाइंदा। आपणा मार्ग वेख सुखाला, आपणा पन्थ आप चलाइंदा। आप उपजाए आपणा लाला, सुत दुलारा नाउँ धराइंदा। नाल रलाए हरि काल महाकाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा, साची धर्मसाला आप बणाइंदा। आदि पुरख हरि सच भण्डारा, आपणा आप वरताया। इक्क उपजाए सुत दुलारा, शब्दी नाउँ धराया। थिर घर साचे कर प्यारा, आप आपणी गोद रखाया। दरस दिखाए अगम्म अपारा, नूरो नूर डगमगाया। एका हुक्म इक्क सरकारा, एका वार रिहा जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर आप दरसाया। सुत दुलारा हरि हरि वेख, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। हउँ बाल निधाना की जाणा तेरा वेस, तूं बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। तेरे दुआरे करां आदेस, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। आदि जुगादि तेरा दरस मैं लवां वेख, अभुल भुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला कवण वक्त होएँ आप सहाईआ। साचा बन्धन हरि हरि पाए, आपणा भेव आप जणाइंदा। पंचम मुख ताज सीस टिकाए, आप आपणी दया कमाइंदा। शब्दी तेरा डंक वजाए, विष्न ब्रह्मा शिव जगाइंदा। एका राग दए सुणाए, लिखण पढ़न विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मुख सोहे ताज, करे खेल हरि महाराज, दो जहानां रच रच काज, आप आपणी खेल कराइंदा। वर दाता हरि भण्डारी, दूसर अवर ना कोए जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर भिखारी, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। त्रैगुण मेला एका वारी, त्रैगुण अतीता आप कराइंदा। पंज तत्त सरगुण खेल अपर अपारी, ख़ालक ख़लक आप कराइंदा। करे खेल अपर अपारी, अपरम्पर आपणी धार चलाइंदा। शब्दी शब्द शब्द पसारी, ना पुरख ना दिसे नारी, नर नरायण रूप वटाइंदा। करे खेल आपणी वारी, आदि पुरख आपणा खेल आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीस ताज एका धर, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। सुणया संदेसा शब्द दुलार, प्रभ अग्गे

सीस झुकाया। हउँ निमाणा सेवादार, सद तेरी सेव कमाया। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यार, तेरा बन्धन एका पाया। लक्ख चुरासी कर पसार, तेरा नटूआ नाच नचाया। घर घर तेरा रूप प्रगट करां विच संसार, निरगुण जोत जोत रुशनाया। मन मति बुध दयाँ आधार, साची वण्डण वण्ड वण्डाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला आपणे संग लएँ मिलाया। सुण सुत सुत दुलार, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। लक्ख चुरासी तेरा वरतार, तेरा तेरी बणत बणाइंदा। निरगुण सरगुण वण्डी वण्ड संसार, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। लक्ख चुरासी भाण्डे घड़े बण ठठयार, पंज तत्त मेला मेल मिलाइंदा। जुग चौकड़ी करे विचार, चौकड़ एका बन्धन पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग करे ख़बरदार, जोधे सूरबीर आपे उठाइंदा। एका तेरा नाउँ दए हुलार, शब्दी शब्द शब्द प्रगटाइंदा। ब्रह्मा वेता पावे सार, चारे वेदां आप लिखाइंदा। चारे खाणी कर पसार, उत्भुज सेत्ज जेरज अंडज तेरी झोली पाइंदा। चारे बाणी दए आधार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। चारे वरन मारे मार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, जुग चौकड़ी तेरी सेवा इक्क समझाइंदा। जुग चौकड़ी खेल करतारा, हरि साचा सच जणाईआ। लोकमात कर पसारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग वरते आप वरतारा, जुग जुग गेड़ा आप भुआईआ। सेवा लाए गुर अवतारा, तेरा संग रखाईआ। भगतां देवे इक्क सहारा, सन्तां करे सच पढ़ाईआ। गुरसिखां देवे इक्क आधारा, गुरसिख साचे लए मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आवे वारो वारा, नव नौ चार रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आपणा नाउँ सच निशाना, प्रगट हो श्री भगवाना, लोकमात लए झुलाईआ। साचा नाउँ श्री भगवान, लोकमात आप धराईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, हरि जस कस हरि आपणा आप सुणाईआ। एका मन्त्र गीता ज्ञान, ध्यान ध्यान विच प्रगटाईआ। एका काया कुरा कुरान, काअबा कलमा दए सुणाईआ। एका शरअ इक्क ईमान, एका शरीअत दए वड्याईआ। लेखा जाणे अञ्जील कुरान, बाईबल भुल कदे ना जाईआ। खाणी बाणी मारे बाण, बाण निराला तीर चलाईआ। गुर अवतार कर पछाण, हरि सतिगुर बूझ बुझाईआ। सुत दुलारे हो मेहरवान, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। जुग चौकड़ी आपणे खाते कर परवान, अन्तिम लेखा दए मुकाईआ। कलिजुग प्रगट होवे श्री भगवान, अन्त अन्त आपणा रूप धराईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत ना सके ना कोए पछाण, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। एका वस्से साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर मकान, बाढी घड़त ना होर घड़ाईआ। लेखा चुकाए ज़िमीं अस्मान, गगन मंडल फोल फोलाईआ। लहिणा देणा चुक्के दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां,

बाकी कोए रहिण ना पाईआ। गुरुआं पीरां अवतारां साधां सन्तां लोकमात जो पाईआं वण्डां, अन्तिम सभ दा लेखा दए मुकाईआ। एका फड़ नाम खण्डा, ब्रह्मण्डां खण्डां दोहरी धार आप रखाईआ। वेख वखाए पृथ्मी आकाश नव नव खण्डां, पावे सार जेरज अंडां, उत्भुज सेत्ज भुल रहे ना राईआ। लहिणा देण चुकाए विष्न ब्रह्मा शिव, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त अन्त आदि आपणा बल आप धराईआ। सुत दुलारे अन्तिम आउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। नव नौ बेड़ा पार कराउणा, चार चार पन्ध मुकाइंदा। आपणा रूप आप प्रगटाउणा, नूरो नूर नूर दरसाइंदा। तेरा डंका मात वजाउणा, चारों कुण्ट आप सुणाइंदा। राउ रंकां आप उठाउणा, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। सभ दा लेखा पूर कराउणा, लिख लिख लेखा सर्ब वखाइंदा। राए धर्म हुक्म जणाउणा, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। चित्रगुप्त फड़ उठाउणा, शब्द हलूणा इक्क लगाइंदा। चारे कुण्ट चौथे जुग चार यारी चार वरन काग वांग कुरलाउणा, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। सति सन्तोख ना किसे गहिणा पाउणा, जूठ झूठ सर्ब हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सुत दुलारे मेल मिलाए तेरा तेरे दर, तेरा दुआरा आप प्रगटाइंदा। तेरा दुआरा अन्त प्रगटाउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। शब्द गुर इक्क बणाउणा, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। पंज तत्त मन्दिर आपे ढाउणा, काया बंक ना कोए सुहाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दो जहानां फेरा पाउणा, आवण जावण पतित पावन आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, वर एका एक समझाइंदा। साचा वर हरि दातार, एका गुण जणाईआ। कलिजुग आए अन्तिम वार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। प्रगट होए विच संसार, निहकलंका नाउँ धराईआ। राह तक्के मुहम्मद यार, अल्ला राणी नैण उठाईआ। नानक गोबिन्द करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। प्रगट होवे सर्ब जीआं दा सांझा यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा बल आप धराईआ। सज्जण सुहेला एकँकार, इक्क इकल्ला वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण जामा धार, जोती जामा भेस वटाइंदा। लहिणा देणा देवे कर्ज उतार, देणा अवर ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द सुत लए फड़, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। शब्द सुत फड़या करतार, दो जहानां बन्धन पाया। एका हुक्म सच्ची सरकार, एका वार सुणाया। गुर अवतार करने ख़बरदार, चार जुग जो गए सेव कमाया। सभ दा लेखा लिखदा रिहा वारो वार, भुल कदे ना जाया। वेखे विगसे करे विचार, वेखणहारा हरि जू आया। मार्ग पन्थ जो करे प्यार, साचा धन्दा दए समझाया। कूक कूक करी

पुकार, इक्क इकल्ला एकँकार, लक्ख चुरासी गए समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तिम मेला सहिज सुभाया। अन्तिम मेला मेल मिलाउणा, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। आदि सुत तेरा लहिणा तेरी झोली पाउणा, अन्त आपणी ख़ुशी मनाईआ। जो घड़या सो भन्न वखाउणा, भन्नणहार वडी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा वक्त चुकाउणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल करे गोबिन्द, गोबिन्द रूप धराया। शब्दी शब्द मेटे चिन्द, चिंता अवर ना कोए रखाया। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लहिणा देवे वर, पूर्ब लेखा झोली पाया। पूर्ब लेखा झोली पा, कलिजुग अन्त कराइंदा। गोबिन्द सूरा बण मलाह, साचा बेड़ा इक्क वखाइंदा। मुहम्मद मंगे अन्त पनाह, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी बख्श गुनाह, परवरदिगार तेरा सजदा मोहे भाइंदा। मेरा नाता तुट्टा चार यार, सगला संग ना कोए निभाइंदा। मेरी आशा होई विभचार, तृष्ना जगत ना कोए गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देणा वर, मेरा बन्धन मात कटाइंदा। शब्द सुत तेरा तोड़े बन्धन, बन्दीखाना रहिण ना पाईआ। तूं साहिब दातार सदा बख्शंदन, बख्शिश तेरी रहिमत रहीम रहिमान सच्चे साँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी क्यामत मेरी नयामत हउँ बैठा झोली डाहीआ। झोली रक्खी अग्गे खोल्ह, परवरदिगार सीस झुकाइंदा। आपणा कलमा आपे बोल, नबी रसूल आप सुणाइंदा। चौधवीं सदी कीता कौल, चौदां तबकां तोल तुलाइंदा। तेरा मृदंगा वज्जे ढोल, अनभोल नज़र कोए ना आइंदा। तेरी रहिमत दिसे ना कोल, तेरी ज़हिमत सर्ब उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्श आपणा दर, दर दरवाज़ा मंग मंगाइंदा। दर दरवाज़ा मंगे मंग, मुकामे हक तेरी वड्याईआ। चार कुण्ट मैं होया नंग, पाटे चीथड़ रिहा वखाईआ। मेरी इच्छया होई रंड, नार दुहागण दए दुहाईआ। अन्तिम होई नंगी कंड, सगला संग ना कोए निभाईआ। तेरा कलमा मैं आपणे अंदर ना रक्खया बन्द, कलमा कलाम ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देणा एका वर, मेरा पल्लू लए बंधाईआ। पल्लू नाल बन्न्हे पल्लू, एका पलड़ा रिहा वखाईआ। मेरा चीर लथ्था सालू, अल्ला राणी नैण शरमाईआ। तेरा जल्वा नूर वसालू, वसल तेरा हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम देणा एका वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। देवे हुक्म परवरदिगार, सच तराना आप जणाइंदा। ख़लक ख़ुदाई गई हार, मख़लूक मेल ना कोए मिलाइंदा। आलम उल्मा होए गंवार, कातब

लेख ना कोए जणाइंदा। उम्मती उम्मत मारे मार, आमदीद वक्त चुकाइंदा। कायनात ना पावे कोई सार, सच निजात ना कोए रखाइंदा। लहिणा देणा चुक्के हथ्थो हाथ, समरथ पुरख आप मुकाइंदा। सदी चौधवीं आया घाट, जगत किनारा फोल फोलाइंदा। गुर अवतारां चार जुग निभाया साथ, अन्तिम संग ना कोए रखाइंदा। हरि हरि महिमा गाए गाथ, रसना कह कह सर्ब जणाइंदा। कोई कहे त्रिलोकी नाथ, कोई कहे दसरथ बेटा राम रघुनाथ, कोई मंडल रास रचाइंदा। कोई कहे पूत सपूता ख़ुदावंद मेरी ज़ात, सच सफात ना कोए जणाइंदा। कोई कहे मिहबान बीदो एका मिल्या आब हयात, हयात आब मुख रखाइंदा। कोई कहे पर्दा चुक्कया मुख नकाब, नूरो नूर डगमगाइंदा। कोई कहे प्रगट होया साख्यात, साबत सूरत इक्क जणाइंदा। कोई कहे नानक निरगुण देवे दात, नाम सति मन्त्र दृढ़ाइंदा। कोई कहे गोबिन्द पुच्छे वात, गोबिन्द पुरख अकाल इक्क मनाइंदा। सर्ब जीआं दा कमलापात, पुरख अबिनाशी आप हो जाइंदा। आदि आदि जिस बध्धा नात, शब्दी डोर बन्धन पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बणाई ज़ात, अज़ाती आपणा खेल खिलाइंदा। अन्तिम कलिजुग पुच्छे वात, इक्क इकल्ला वेख वखाइंदा। मन मति ना वेखे कोए कमज़ात, जूठ झूठ पन्ध मुकाइंदा। सभ दा बेड़ा लाए आपणे आपणे घाट, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरवैर आपणा खेल कर, शब्दी शब्द आप प्रगटाइंदा । शब्द सूरबीर बलवाना, हरि साचा सच प्रगटाइंदा। शब्द राज शब्द राजाना, शाहो भूप भूप अख्वाइंदा। शब्द तीर शब्द निशाना, शब्द शब्दी पार कराइंदा। शब्द शब्द वरते आपणा भाणा, शब्द शब्दी आप मनाइंदा। निरगुण निरगुण पहरया बाणा, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा । सरगुण सरगुण सरगुण हो प्रधाना, सरगुण आपणा बन्धन पाइंदा। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द मेला दो जहानां, गुर चेला रूप वटाइंदा। सम्बल नगरी सच मकाना, एका वसे श्री भगवाना, आसण सिँघासण सोभा पाइंदा। एका राग इक्क तराना, एका गाए अगम्मी गाना, पिछला लेखा ना कोए वखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल साचे घर, घर साचा इक्क वड्यांअदा। घर वड्डा वड्डी वड्याई, हरि साचा आप वड्यांअदा। निरगुण निरगुण वज्जे वधाई, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। निरगुण मेला सहिज सुभाई, निरगुण सगला संग रखाइंदा। निरगुण आवे जावे चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा आप प्रगटाइंदा। वेद कतेब शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान रहे जस गाई, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालांहयदा। कलिजुग अन्तिम करे सच न्याईं, शाह सुल्तान रूप वटाइंदा। गुरमुख फड़ फड़ मेले जन्म जन्म दे विछड़े बाहीं, आप आपणा मेल मिलाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाँईं, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, अन्त आपणा वेख वखाइंदा। आदि शब्द अन्त शब्दी धार,

जोती जोत सेव कमाईआ। मध्ध लक्ख चुरासी कर पसार, गुर अवतार दे वड्याईआ। नाउँ नाम कर उज्यार, नामा नाम करे पढ़ाईआ। चौदां विद्या भर भण्डार, चौदां लोक काया बंक सुहाईआ। कलिजुग अन्तिम करे ख़बरदार, सुरती शब्द शब्द उठाईआ। डंका वज्जे अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ा रिहा वजाईआ। नव नौ उतरे पार, लक्ख चुरासी रिहा खपाईआ। शब्द उपजाया शब्दी ढाहया, शब्दी शब्द वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका बन्धन आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ २२ सावण २०१८ बिक्रमी भगवान सिँघ दे गृह सैदपुर ★

सो पुरख निरँजण अगम्म अपारा, आदि जुगादी खेल खिलाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, आप आपणा वेस धराइंदा। एकँकारा कर पसारा, आप आपणा खेल खिलाइंदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता कर पसारा, सच दरबारा आप सुहाइंदा। श्री भगवान बण सिक्दारा, साचा हुक्म आप चलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ दे सहारा, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। सति सतिवादी साची कारा, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड खोल्ह दुआरा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, घर घर विच आप प्रगटाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, राजन राज नाउँ धराइंदा। तख्त निवासी बेऐब परवरदिगारा, मुकामे हक हक सहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आप जणाइंदा। सो पुरख निरँजण भेव अवल्ला, अलख अगोचर अगम्म अथाह, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। वसणहारा सच महल्ला, पुरख अकाला दीन दयाला, निरगुण जोत जोत अकाला, आपणी कल आप धराईआ। एकँकारा आपे जाणे आपणा राह सुखाला, मार्ग पन्ध ना कोए रखाईआ। आदि निरँजण हो उजाला, नूर नुराना शाह सुल्ताना तख्त निवासी शाहो शाबासी रिहा डगमगाईआ। श्री भगवान आप उठाए आपणा सच निशान, सति सतिवादी आपणी धारा आप बंधाईआ। अबिनाशी करता नौजवान, बिरध बाल ना रूप वखाण, महांबली एका एक आपणी धार प्रगटाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल महान, करे कराए वड्ड मेहरवान, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड दुआर खोल्ह दुकान, एका वसे गुण निधान, गुणवन्ता हरि रघुराईआ। हुक्मी हुक्म जाणे धुर फ़रमान, आपणा हुक्म आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, आदि पुरख वडी वड्याईआ। आदि पुरख हरि निरँकारा, आपणा बल आप धराइंदा। सचखण्ड हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। अगम्म अगम्मड़ा करे अगम्मी कारा, करता पुरख नाउँ धराइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा हरि सुहञ्जणा, सोभावन्त आप सुहाईआ। सो पुरख निरँजण साचे दर आपे बह बह सजणा, महिमा गणत गणी ना जाईआ। आदि जुगादि ना घड़या ना भज्जणा, घड़न भन्नणहार पुरख समरथ आप अख्वाईआ। निरगुण निरवैर निराकार आपणा पर्दा आपे कज्जणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आदि आपणा भेव आप खुल्ह्हाईआ। आदि पुरख हरि भेव खुल्ह्हाया, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण नूर नूर उपाया, नूर नुराना डगमगाईआ। साचे तख्त आसण लाया, तख्त निवासी बैठा सच्चा शहिनशाहीआ। आपणी इच्छया आप प्रगटाया, इच्छया दिस किसे ना आईआ। साचा हिस्सा आप वण्डाया, वण्डणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, वसणहारा साचे घर, घर साचा दए समझाईआ। घर साचा हरि समझाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। सच सिँघासण सोभा पाइंदा, भूपत भूप सच्ची सरकार। हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा, आपे होए मंगणहार। दर दरवेश आप अख्वाइंदा, सेवक करे सेवादार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भरे आप भण्डार। सच भण्डारा हरि निरँकारा, आपणा आप भराईआ। आपे बणे वड दातारा, वड दाता बेपरवाहीआ। करे खेल अगम्म अपारा, अगम्मड़ी कार कमाईआ। साचा मन्दिर खोल्ह किवाड़ा, धुर दरबारा आप सुहाईआ। दरगाह साची धाम न्यारा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। सूरज चन्द ना कोए सितारा, मंडल मण्डप लोअ पुरी ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए वसाईआ। करे खेल आप करतारा, करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर आपे चढ़, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणे मन्दिर आपे चढ़या, आपणा बल धार। आपणी विद्या आपे पढ़या, करे खेल अपर अपार। आपणा पल्लू आपे फड़या, आपे होए सदा सहार। सचखण्ड दुआर घाड़न घड़्हया, घाड़न घड़त घड़े अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर साचा कर पसार। हरि साचा घर उपाइंदा, सो पुरख निरजंण हो उज्यार। हरि पुरख निरँजण वेख वखाइंदा, वेखणहार अगम्म अपार। एकँकारा ख़ुशी मनाइंदा, घर सोहे बंक दुआर। आदि निरँजण जोत जगाइंदा, जोती जोत जोत पसार। श्री भगवान वेख वखाइंदा, वेखणहारा ठांडा दरबार। अबिनाशी करता संग निभाइंदा, सगला संग सच्ची सरकार। पारब्रह्म मंग मंगाइंदा, दोए जोड़ जोड़ निमस्कार। आपणी भिच्छया आपे पाइंदा, आपे होए देवणहार। आपणी मंग आप मंगाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप करतार। साची भिख्या मंगे मंग, आपणी झोली आपणे अग्गे डाहीआ।

आपे बणे सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आपणे घर वजाए सच मृदंग, तार सतार ना कोए हिलाईआ। आपे बैठ सेज पलँघ, सच सिँघासण दए वड्याईआ। आपणा पाए आपे अनन्द, अनन्द अनन्द आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दाता बण दातार, आपे इच्छया भरे भण्डार, देवणहार आप हो जाईआ। आपे दाता आपे दानी, दीन दयाल दया कमाइंदा। आपे शाह आपे सुल्तानी, शाह पातशाह आपणा नाउँ रखाइंदा। आपे निरगुण जोत वखाए इक्क निशानी, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपे साचे तख्त होए निगहबानी, सदा सलामत आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दाता आपे दरवेश, आपे नर आप नरेश, नर नरायण खेल खिलाइंदा। बण भिखारी मंगे दान, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, हउँ भिक्खक सीस झुकाईआ। तेरा मेरा एका माण, एका घर बैठे आसण लाईआ। तेरा मेरा एका मन्दिर इक्क मकान, दूजा दर ना कोए वखाईआ। तेरा मेरा इक्क निशान, दूसर होर ना कोए जणाईआ। तेरा मंगे तेरा दान, तेरा तेरी वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देणा आपणा वर, आपणी मंग आप मंगाईआ। सो पुरख निरँजण बणे दाता, पारब्रह्म प्रभ मंग मंगाइंदा। हरि पुरख निरँजण गाए गाथा, श्री भगवान ख़ुशी रखाइंदा। एकँकारा बन्ने नाता, अबिनाशी करता जोड़ जुड़ाइंदा। आदि निरँजण कमलापाता, दीपक दीआ एका डगमगाइंदा। करे खेल पुरख समराथा, भेव अभेद आप खुल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची इच्छया पाए भिच्छया, एका वस्त आप वरताइंदा। साची भिच्छया हरि निरँकारा, एका एक वरताईआ। आपणा नाउँ कर प्यारा, नाउँ निरँकारा आप हो जाईआ। रूप रंग ते वसे बाहरा, दिस किसे ना आईआ। सचखण्ड दुआर कर त्यारा, सीस जगदीस हथ्थ टिकाईआ। थिर घर देवे इक्क सहारा, आप आपणी दया कमाईआ। तेरा रूप सुत दुलारा, पुरख अकाल पिता माईआ। दाई दाया बणे अगम्म अपारा, साची सेवा सेवक आप कमाईआ। एका हुक्म इक्क वरतारा, एका इक्क दए समझाईआ। मेरा नाउँ मेरा भण्डारा, निखुट कदे ना जाईआ। मेरा नाउँ मेरा वरतारा, मेरा मेरा रूप धराईआ। मेरा तेरा इक्क सहारा, तेरा मेरा एका दर बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा नाउँ आप प्रगटाईआ। आपणा नाउँ निरँकार रक्ख, सचखण्ड निवासी ख़ुशी मनाइंदा। थिर घर साचे हो प्रतक्ख, आप आपणा रंग रंगाइंदा। निरगुण नालों निरगुण होया वक्ख, निरगुण वण्डण वण्ड वंडाइंदा। निरगुण मार्ग निरगुण दस्स, निरगुण खेल खिलाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण वस, निरगुण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप समझाइंदा।

मेरा नाउँ अपर अपार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। मेरा नाउँ आदि जुगादि करे कराए साची कार, करनी करता आप समझाईआ। मेरा नाउँ वसे मेरे चरन दुआर, दूसर दुआर ना कोए वखाईआ। मेरा नाउँ सति भण्डार, सति सतिवादी आप वरताईआ। मेरा नाउँ सच शंगार, सच वेस दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नाम दए वड्याईआ। देवे वड्याई हरि आपणे नाँ, सचखण्ड साचा खेल खिलाइंदा। थिर घर दिता एका थाँ, चरन दुआरे आप बहाइंदा। आपणा हुक्म आप सुणा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। तेरी वण्ड दयाँ वंडा, वंडणहारा भेव ना पाइंदा। तेरी सेवा दयाँ लगा आपणी इच्छया नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप समझाइंदा। हरि नाउँ करे निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं दाता सच दातार, हउँ बाल अञ्याणा तेरा भेव ना पाईआ। तूं बख्शिश कीती अपर अपार, तेरी रहिमत मेरी वड्याईआ। तूं भरया अतुट भण्डार, निखुट कदे ना जाईआ। मैं बणां सेवादार, तेरा सिर सिर हुक्म मनाईआ। तूं बख्शया थिर घर मेरा दुआर, सचखण्ड तेरी शहिनशाहीआ। तेरा झुलदा रहे निशान, आदि जुगादि सच्चे माहीआ। मैं तेरा दर करां परवान, भुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आपणे हुक्म रखाईआ। हुक्मे अंदर नाउँ धर, हरि नाउँ नाम प्रगटाया। आप जणाई साची कार, साची सेव समझाया। तूं सुत मेरा सुत दुलार, हउँ मात पिता अख्वाया। तेरा वणज इक्क वपार, सच वणजारा दए वखाया। तेरी वस्त तेरा आधार, तेरा तेरे पल्लू पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपा तेरे विच टिकाया। नाउँ अंदर नाम प्यारा, नामे हरि हरि रंग रंगाया। नाउँ सुत नाउँ दुलारा, नाउँ पिता पूत समझाया। नाउँ भिखक नाउँ दुआरा, नाउँ नामा मंगण आया। करे खेल आप करतारा, आपणी करनी दए समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाया। भेव अभेदा हरि हरि खोल्ह, नाउँ नाउँ जणाईआ। आपणा निष्अक्खर आपे बोल, करे सच पढ़ाईआ। आपणे कंडे तोलया तोल, अतुल रूप वखाईआ। तेरे अंदर जावां मौल, तेरा माण तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप प्रगटाईआ। आपणा नाउँ आप प्रगटाया, प्रगटया हरि करतारा। निरगुण मेला निरगुण मेल मिलाया, निरगुण जोत निरगुण नूर उज्यारा। निरगुण आसण सिँघासण सोभा पाया, निरगुण हुक्म निरगुण सिक्दारा। निरगुण दर दरवेश मंगण आया, निरगुण भरे सच भण्डारा। निरगुण पूत सपूता आपे जाया, निरगुण निरगुण दए हुलारा। निरगुण अंदर निरगुण आपणा आप टिकाया, करे खेल गुप्त ज़ाहरा। रूप रंग ना कोए वखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारा। अपर अपारा खेल अवल्ला,

सो पुरख निरँजण आप कराईआ। सचखण्ड वसाया इक्क महल्ला, थिर घर दरबारा आप दए वड्याईआ। आपणी जोती आपे रल्ला, पुरख नार आप हो जाईआ। आपणा आसण आपे मल्ला, आपणा फड़या आपे पल्ला, आपे बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए वड्याईआ। शब्दी तेरा शब्द पसार, हरि हरि आप उपाया। करे खेल अगम्म अपार, भेव किसे ना आया। सचखण्ड निवासी हो त्यार, आपणा हुक्म आप जणाया। सुत दुलारा करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाया। तूं दाता बेऐब परवरदिगार, तेरा खेल मेरी समझ विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आपणा मंत दए समझाया। विष्नूं अंदर आत्म रस, रस रसीआ आप रखाईआ। आपणे अंदर आपे वस, आपणा बन्धन पाईआ। आपणे जंजाल आपे फस, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। विष्नूं अंदर अमृत धार, अंमिउँ रस आपणा खेल खिलाइंदा। पारब्रह्म सो पुरख निरँजण करे खेल अपार, अपर अपारा रूप वटाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, अबिनाशी करते दए सहार, एकँकारा वण्ड वंडाइंदा। आदि निरँजण होया ख़बरदार, श्री भगवान खोल्ह किवाड़, आपणी महिमा आपे वेख वखाइंदा। मेरा रूप रंग रेख ना कोए विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी वण्ड आप वंडाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वण्डे वण्ड, वण्डण वण्ड वंडाईआ। विष्नूं अंदर पाए ठंड, अमृत धार चलाईआ। करे खेल सुहागण रंड, वाह वा वेस अनेक वटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे माणे आपणी सेज पलँघ, नार भतार आप अख्वाईआ। साकार खेल करतारा, सचखण्ड निवासी आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यारा, एका दर बहाइंदा। एका दर बण भिखारा, दर दरवेश एका रूप वटाइंदा। विष्नूं मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डांहयदा। ब्रह्मा बैठा संग, साचा संग हरि जणाइंदा। विष्नूं चढ़या ना एका चन्द, चन्द चन्द ना कोए रुशनाइंदा। विष्नूं करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। शंकर चरन धूढ़ी मंगे छार, अग्गे आपणी झोली डांहयदा। एका हुक्म सुणाए सच्ची सरकार, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। मेरा मेरा नाउँ मेरा दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा नाम आप दृढ़ाइंदा। हरि विष्नूं नाम जणाया, मेरा नाउँ मेरी धार। ब्रह्मे नाउँ आप उपाया, मेरा नाउँ मेरा प्यार। शंकर नाउँ आप दरसाया, मेरा नाउँ मेरी चरन धूढ़ी छार। एका वार दए वरताया, अतोट अतुट भरे भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे ख़बरदार। विष्नूं उठ हरि आप उठाया, आपणा भेव दए जणाईआ। ब्रह्मा उप्पर तुट्ठ पारब्रह्म आपणी अंस दृढ़ाया, एका एक रंग वखाईआ। शंकर जणाए

एका ओट, दूसर ओट ना कोए रखाईआ। मेरा नाउँ भरे तुहाढ्ढी पोट, सच भण्डार इक्क वरताईआ। मेरा रूप निर्मल जोत, जोत जोत रुशनाईआ। मेरा दुआरा साचा कोट, आदि जुगादि सदा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप दरसाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुणया ध्यान ला कन्न, हरि सज्जण सच समझाया। एका वार गए मन्न, निउँ निउँ सीस झुकाया। तूं दाता तेरी वड्याई धन्न, हउँ बाल बाली बुध तेरा भेव ना आया। तूं घड़ें तूं लएँ भन्न, घड़न भन्नणहार तूं बेपरवाहया। हउँ मंगया एका दान, आपणा नाउँ झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाउँ दए वरताया। साचा नाउँ सच भण्डार, हरि साचा सच वरताइंदा। थिर घर खेल अपर अपार, थिर दरबारी आप कराइंदा। मेरा नाउँ आदि जुगादि होए उज्यार, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। तेरी सेवा लाए सच्ची सरकार, साचा हुक्म आप जणाइंदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, विष्न ब्रह्मा शिव एका गुण वड्यांअदा। तेरे नाल देवां प्यार, त्रैगुण मेला मेल मिलाइंदा। तेरा खेड़ा करां उज्यार, पंज तत्त घाड़न आप घड़ाइंदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश तेरा आधार, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका हुक्म आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव ल्या सुण, इक्क ध्यान लगाया। प्रभ अबिनाशी कवण जाणे तेरे गुण, तेरा लेखा लेख विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वर दाता बेपरवाहया। वर देणा साचा दान, हउँ मंगण मंग मंगाईआ। तेरे छोटे बाल नादान, बैठे सीस झुकाईआ। तूं मीता साहिब बलवान, तेरे हथ्थ वडी वड्याईआ। लक्ख चुरासी करीं परवान, तेरी वस्त आपणी झोली पाईआ। तूं दिता साचा दान, दानी तेरे दर तेरी वस्त टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वर मंगण आए बण बण राहीआ। आए बण पान्धी राही, दर तेरा एका भाया। तूं शाह पातशाह सच्चा शहिनशाही, शाह सुल्तान आप अख्वाया। तेरे दर वजदी रहे वधाई, सचखण्ड सोभा पाया। हउँ मांगों इक्क सरनाई, सरनगत हो सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वर मंगण एका आया। एका वर देवे दातारा, वस्त अमोलक आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा पसारा, लक्ख चुरासी ल्ए उपाईआ। घाड़न घड़े बण ठठयारा, बाढी होर ना कोए जणाईआ। वंडे वण्ड हरि निरँकारा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। पंज तत्त लगाए अखाड़ा, त्रैगुण माया बन्धन पाईआ। नौ दुआर वेखे वारो वारा, डूँग्घी भँवरी वेस वटाईआ। आपणा नूर कर उज्यारा, जोती जोत जोत जगाईआ । आपणा नाउँ सच्ची धुन्कारा, नाद अनादी आप सुणाईआ। आपणा मन्दिर कर त्यारा, घर घर विच ल्ए बणाईआ। आपणा कर खेल न्यारा, पंज तत्त

६४३

करे हल्काईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार कर पसारा, आसा तृष्ना नाल मिलाईआ। हउमें हंगता गढ़ कर उज्यारा, जूठ झूठ करे कुड़माईआ। बजर कपाटी लाए ताला, ना सके कोए खुल्हाईआ। सुखमन नाड़ी टेडी गारा, डूँघी भँवरी वेस वटाईआ। करे खेल हरि गोपाला, भेव कोए ना पाईआ। तेरा ब्रह्मा ब्रह्म आत्म सेजा हो निराला, आपणा आप दए दरसाईआ। आप जगाए जोत उजाला, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, एका मंत दए जणाईआ। एका मन्त्र हरि जणाया, आप आपणा नाउँ प्रगटा। पंज तत्त घाड़न आप घड़ाया, त्रैगुण मेला मेल मिला। साचा हिस्सा आप रखाया, आपणी दया आप कमा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हा। भेव खुल्हाए हरि निरँकारा, विष्न ब्रह्मे शिव समझाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डारा, पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ाईआ। लक्ख चुरासी होए उज्यारा, वण्डण वण्ड वण्ड कराईआ। उत्भुज सेत्ज जेरज अंडज लग्गे अखाड़ा, नव नौ वेख वखाईआ। विष्नूं देवे इक्क भण्डारा, सच भण्डार आप वरताईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसारा, शंकर तेरा अन्त नगारा, चार कुण्ट दए वजाईआ। आपणा रूप धरे करतारा, महाकाल आप हो जाईआ। दोहां करे फेर पसारा, भेव अभेदा आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे माया आपे छाया आपणा पर्दा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा नाउँ कर पसारा, चार कुण्ट वेख वखाईआ। सचखण्ड निवासी खेल अपारा, दिस किसे ना आईआ। शब्दी शब्द शब्द नगारा, आपणा आप सुणाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर पसारा, आपणी बणत आप बणाईआ। लक्ख चुरासी होए उतप्त, हरि साचे सच जणाईआ। त्रैकाल दरसी आप सुहाए आपणी रुत्त, त्रै त्रै लेखा दए समझाईआ। बंस बणाया शब्दी सुत्त, सरबंस विष्न ब्रह्मा शिव जणाईआ। आपणी सेजा आपे बैठा उठ, लक्ख चुरासी सेज हंढाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चित वित ठगौरी कोए ना पाईआ। वसणहारा काया बुत्त, घट घट अंदर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव सच समझाईआ। हरि समझाए दया कमा, दीनन आपणी दया कमाइंदा। ब्रह्मा तेरे अंदर आपणा नाद वजा, तेरा नाद प्रगटाइंदा। आपणी इच्छया दए समझा, तेरी भिच्छया आप वरताइंदा। चारे वेद आपे गा, चारे बाणी आप समझाइंदा। परा पसन्ती तेरे अंदर देवे थाँ, मद्धम बैखरी बाहर कढाइंदा। चारे खाणी वण्ड वण्डा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंडज आप उपाइंदा। चारे जुग सेवा ला, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नाउँ धराइंदा। चारे वरन रंग रंगा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप उपाइंदा। चारे कुण्ट खेल खिला, चारे जुग एका चौकड़ बन्धन पाइंदा। नौ नौ दर हुक्म सुणा, नौ खण्ड तेरे दर टिका, सति सतिवादी सोभा पा, सति सति साचा नाद सुणाइंदा। बोध अगाधी

शब्द जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप वरताइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कन्न ला, हरि साचा सच जणाइंदा। मेरा नाउँ लोकमात होए रुशना, आदि जुगादि आप प्रगटाइंदा। लक्ख चुरासी वेख वखा, घट घट सेज हंढाइंदा। आपणे मिलण दा आपे रक्खां चा, मेल मिलावा आपणे हथ्थ वखाइंदा। ब्रह्म रूप लक्ख चुरासी विच दिता समा, उप्पर आपणा पर्दा पाइंदा। जगत मार्ग जगत ला, जगत माया विच समाइंदा। आपणा नाउँ रक्खां छुपा, आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा। आपणे मिलण दी बिध देवां समझा, ब्रह्मे तेरा भेव चुकाइंदा। आपणा रूप लवां प्रगटा, निरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप समझाइंदा। सरगुण अंदर हो प्रतक्ख, आपणा भेव ब्रह्म खुल्हाईआ। आपणी जोत आपे रक्ख, आपणे घर करां रुशनाईआ। आपणा पर्दा बैठा ढक, आपे पर्दा दयाँ उठाईआ। आपणी वस्त आपणे अंदरों कढ्ढ, लक्ख चुरासी दयाँ वरताईआ। सरगुण हो के निरगुण धार हड्ड मास नाड़ी अंदर जावां वस, रक्त बूंद ना खेल खिलाईआ। आपणा नाउँ करां प्रगट, जुग जुग आपणा रूप वटाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख विरले मार्ग दस्स, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत करां प्रकाश कोटन रवि ससि, सूरज चन्द मुख शरमाईआ। दरसन देवां हस्स हस्स, मेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। गुरमुखां मार्ग आपणा दस्स, आपणा गुण दयाँ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव रिहा समझाईआ। विष्न करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। कवण रूप आए विच संसार, मेरे शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहया। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, हउँ एका मंग मंगाया। कवण घर दएँ दीदार, दरसी आपणा दरस दिखाया। शंकर मंगे धूढ़ छार, चरन मस्तक टिक्का लाया। तुध बिन अवर ना कोए सहार, हउँ बाल अञ्याणे भुल कदे ना जाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणा हुक्म रिहा समझाया। मैं जुग जुग लोकमात होवां प्रधान, आपणा नाउँ नाउँ प्रगटाया। भगत भगवन्त सच निशान, लोकमात दए झुलाया। सन्तां देवे एका दान, सति सतिवादी झोली पाया। गुरमुखां आत्म ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म वेता सीस झुकाया। गुरसिखां चरन धूढ़ कराए अशनान, दुरमति मैल दए धवाया। एका राग सुणाए कान, धुन अनादी नाद वजाया। एका अमृत आत्म देवां पीण खाण, तृष्ना भुक्ख रहे ना राया। जुग जुग खेलां खेल महान, आपणी खेल आप वखाया। चारे वेद होए हैरान, मेरा भेव किसे ना पाया। ब्रह्मा मंगे एका दान, अग्गे आपणी झोली डाहया। विष्नूं मन्ने एका आण, भुल कदे ना जाया। शंकर करया दर परवान, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लाया। चारे जुग करे खेल श्री भगवान, आपणा खेल आप खिलाया। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं खेल खेले आप मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सूरज चन्न चन्न सूरज आपणी

सेवा लाया। ब्रह्मे किहा तेरा नाउँ सति, तेरे हथ्थ वडी वड्याईआ। कौण जाणे तेरी गति मित, मित गत कहिण कोए ना जाईआ। तेरी जोत तेरा सेवक तेरे मन्दिर जगाए लट लट, तेरा नूर तेरी रुशनाईआ। तूं सभ दे कोल वसणा कमलापति, घर घर तेरा सगन मनाईआ। घर घर तेरा पूजा पाठ, घर घर तेरा होए जस, जस वेद पुराण रहे गाईआ। तेरा नाता जुड़या अठ्ठ तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरा रंग वखाईआ। तेरा रूप रंग ना दिसे रत, हड्ड मास नाड़ी ना कोए दरसाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, समरथ पुरख तेरी वड वड्याईआ। धन्न वड्याई मार्ग दिता दस्स, जुग जुग तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा हरि, आपणा नाउँ दए समझाईआ। मेरे नाउँ वड्याई, हरि साचा सच जणाइंदा। लोकमात वज्जे वधाई, जो जन रसना जेहवा गाइंदा। आदि अन्त होए सहाई, जो आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। तत्ती वाओ ना लागे राई, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। सदा सुहेला सिर रक्खे ठंडी छाईं, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आदि जुगादि करे सच न्याईं, सच अदालत आप कमाइंदा। हरि भगत उठाए फड़ फड़ बाहीं, लक्ख चुरासी विच्चों आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप उपाइंदा। मेरा नाउँ रक्खे लाज, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्ड वंडाईआ। जुगा जुगन्तर शब्द अगम्मी मारां वाज, तार सतार ना कोए हिलाईआ। ग़रीब निमाणयां होवां ग़रीब निवाज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां बेड़ा चले जहाज़, दो जहानां पार कराईआ। राए धर्म ना मारे आवाज़, लाड़ी मौत ना कोए प्रनाईआ। राए धर्म ना मारे वाज, चित्रगुप्त ना कोए हिसाब वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ दए समझाईआ। मेरा नाउँ भगत जन लैणा, जिस आपणा आप बुझाया। धू्र प्रहिलाद मन्नया मेरा कहिणा, इक्को ओट गए तकाया। तन बस्त्र पाया गहिणा, एका राम नाम हंढाया। दर्शन पाया नेत्र नैणां, नैण नैण नैण बिगसाया। मेरा नाउँ मेरा भाणा सहिणा, सद भाणे आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ दए समझाया। आदि मेरा नाउँ सो सो धार, हरि साचा सच जणाईआ। मेरा नाउँ होया उज्यार, हँ हं रूप वटाईआ। हँ विष्न हँ ब्रह्मा हँ शिव हँ लक्ख चुरासी लए उपाईआ। चार चौकड़ी जुग आवे वारो वार, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। निरगुण सरगुण कर पसार, अवतार गुर लए प्रगटाईआ। तेई अवतारां देवे धार, धार धार नाम समाईआ। सन्त भगत कर प्यार, भगवन्त खेल खिलाईआ। गुरमुख नाद नाद जैकार, अनादी नाद सुणाईआ। गुरसिख चरन चरन प्यार, चरन कँवल कँवल बिगसाईआ। धरनी धरन दए सहार, धवल धवल मात वड्याईआ। कँवल कँवल कँवल फुल बहार, अमृत झिरना आप झिराईआ। जोती जोत जोत

उज्यार, जोती नूर नूर रुशनाईआ। गुरु गुरु गुरु गुर अवतार, गुर मन्त्र दए समझाईआ। आदि शक्ति शक्ति पसार, चतुर्भुज खेल खिलाईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार, हरि पुरख निरँजण लए मिलाईआ। एकँकार करे कार, आदि निरँजण जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता वसे सचखण्ड ठांडे दरबार, श्री भगवान ख़ुशी मनाईआ। पारब्रह्म थिर घर बैठ सच्चे दुआर, विष्न ब्रह्मा शिव लए घड़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, लक्ख चुरासी लए उपाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग हो उज्यार, गुर अवतार सेव कमाईआ। कोई कहे सन्त कुमार, बराह रूप कोए दरसाईआ। हाव ग़रीव हो उज्यार, नर नरायण रूप अपार, कपल मुन रूप धराईआ। धनंतर हो त्यार, पृथू पाए आपणी सार, मत्तस जल जल हो उज्यार, कच्छप करे खेल करतार, मोहणी रूप आपे धार, हँसा रूप अपर अपार, सुत ब्रह्मा दए समझाईआ। नर सिँघ खेल करे करतार, प्रहिलाद लए तराईआ। हरी हरि आपणी कल धार, गज देवे आप सहार, तन्दूआ तन्द कटाईआ। घर घर आपणा नाउँ करे उज्यार, जुग जुग आपणे नाउँ दए वड्याईआ। परसराम दिता आपे तार, राम रामा रूप वटाईआ। ग़रीब निमाणयां लए उठाल, कोझी कमली भीलणी गले लगाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, ब्रह्मा नारद आपणा मेल मेल मिलाईआ। बारां अक्षर कर विचार, पुराण अठारां गाए वारो वार, लक्ख चार हज़ार सतारां सलोक गंवाईआ। नंद यशोधा दए आधार, साची सख़ीआं मंगलाचार, राधा कृष्न ख़ुशी मनाईआ। दुष्ट हँकारी आपे मार, बिपर सुदामा गले लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर नाउँ प्रधान, लोकमात चलाईआ। कलिजुग देवे आपे दान, ख़ाली झोली आप भराईआ। जूठ झूठ मेरी खोल्ह दुकान, लक्ख चुरासी झोली पाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार मेरी शान, मेरा जोबन वेख मेरे माहीआ। मैं चार जुग दा अन्त बणया मिहमान, तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग एका मंग मंगाईआ। लक्ख चुरासी तेरा चुक्के डर, मेरा डंका वज्जे चारों कुण्ट पए दुहाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद बणे वेसवा घर, अठसठ तीर्थ तेरा लड़ ना सके कोई फड़, इट्टां मन्दिर पूज पूज आपणा आप देण गंवाईआ। मैं घर घर बणावां हँकारी गढ़, तेरी भिच्छया आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी कृपानिध, दीन दयाल दयाला। सभ दे करे कारज सिद्ध, परम पुरख कृपाला। कलिजुग तेरे हथ्थ रखाई तेरी बिध, तेरे हथ्थ फड़ाई तेरी माला। पंच विकार करे युध, घर घर मंगे हाला। अन्तिम रहिण ना देवे किसे दी सुध, सुरती सुरत होए बेहाला। मार छाल चढ़े कुद्द, सभ दा कढ्ढे दीवाला। मेरे नाउँ ना सके कोई ओड, गल पा पा बैठण अठोतरी माला। अंदर वड़े द्वैती फुट्ट, कामी कपटी मुखड़ा काला। मेरे नाउँ रहे ना किसे सुध, कलिजुग तेरा वरते जगत जंजाला।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दस्सया राह सुखाला। दस्सया सुखाला राह, हरि साचे सच जणाया। कलिजुग तेरे नाल रलावां इक्क मलाह, आपणा हुक्म सुणाया। मुकामे हक हक मिले पनाह, पनाहगीर आप अख्वाया। तेरा मुकाम वेख फ़नाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाया। आपणी दया कमाइंदा, कृपानिध गहर गुण सागर। कलिजुग तेरा संग निभाइंदा, तेरा कर्म करे उजागर। ईसा मूसा जोत जगाइंदा, संग मुहम्मद नाम देवे रती रत्नागर। चार यारी बन्धन पाइंदा, एका कलमा करे सौदागर। एका हू हू नाअरा लाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप बहादर। ईसा मूसा तेरा संग, संग मुहम्मद चार यार मृदंग वजाईआ। चारों कुण्ट तेरी वस्त भेख पखण्ड, जूठ झूठ नाल मिलाईआ। कोए ना मंगे एका मंग, आलमीन नूर नुराना वेखे ना कोए ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका हुक्म दए वरताईआ। कलिजुग सुणया हरि फ़रमाना, होया दर हैराना। झल्लया ना जाए तेरा भाणा, मेरे शहिनशाह सुल्ताना। चार कुण्ट झूठ मकाना, कूड़ी क्रिया घर घर इक्क वखाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा दुआरे वर, आपणा घर ना मोहे भुलाना। पुरख अबिनाशी दया कमा, आपणी दया कमाइंदा। आपणा दर ना दए भुला, गुर गुर सेव कमाइंदा। नानक निरगुण सरगुण वेस वटा, जोती जाता जोत डगमगाइंदा। पुरख अकाला मेल मिला, दीन दयाला रंग वखाइंदा। साची माला गल विच पा, नाम सुखाला इक्क समझाइंदा। नाम सति दए वरता, आपणी वस्त आप वरताइंदा। चार वरनां झोली पा, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका रंग वखाइंदा। भरमीआं भरम गढ़ दए तुड़ा, आत्म दरसी आत्म दरस कराइंदा। पंचम नाद शब्द धुंन वजा, अनादी नाद अलाइंदा। साची सखीआं मंगल गा, गीत गोबिन्द आपे गाइंदा। आपणी सेजा सोभा पा, आपणा परम पुरख मनाइंदा। आपणा प्रीतम अंग लगा, आपणी सेज वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा संग निभाइंदा। तेरा संग निभाए संगा, सगला संग निभाईआ। एका नाम वजाए मृदंगा, मृदंग हत्थ उठाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लँघा, आपणा पन्ध आप मुकाईआ। उच्ची कूक कूक लक्ख चुरासी सुणाए अन्तिम कन्ढा, जीव जंत जंत उठाईआ। बिन हरि नामे कोए पार ना लँघा, बिन सतिगुर हरि का नाउँ हत्थ किसे ना आईआ। पंज तत्त काया माटी पुतला गंदा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार बैठे आसण लाईआ। जो जन गाए गुर का छन्दा, गुर मेले सहिज सुभाईआ। बन्द ख़लासी करे बन्दी बन्दा, बन्दीखाना दए तुड़ाईआ। जोत निरँजण चाढ़े चन्दा, घर जोत करे रुशनाईआ। दीन दयाल ठाकर साहिब स्वामी सदा बख्शंदा, भुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

६४८

किरपा कर, एका नाम वस्त अमोलक आप वरताए, काया गोलक हरिजन भण्डारा आप भराईआ। नानक जणाया हरि हरि नाम, सति नाम वड्याआ। पूरन करे हरिजन काम, आसा तृष्ना दए मिटाया। अमृत आत्म प्याए जाम, मदि होर ना कोए वखाया। घर घर विच मिलाए राम, जगत विछोड़ा दए कटाया। सुरत सुवाणी दए पैग़ाम, सच संदेसा इक्क अल्लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लक्ख चुरासी रिहा समझाया। लक्ख चुरासी उठणा जाग, हरि का नाउँ जगाइंदा। कबीर जुलाहे सुणाई आवाज़, सच महिराबे दरसन पाइंदा। हँस बणाए काग, जो जन सरनाई आइंदा। दीपक जगाए चिराग़, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। जगत नाता तोड़े साक, आपणा बन्धन पाइंदा। बन्द ताकी खोल्ले ताक, घर घर विच आप वखाइंदा। सतिगुर पूरा आप चढ़ाए आपणे घाट, राह विच ना कोए अटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग देवे आपणा नाम वर, लोकमात आप चलाइंदा। जुग जुग नाम जपाया, हरि भगतन मार्ग ला। नानक निरगुण सरगुण समझाया, पुरख अकाल दया कमा। अन्तिम कलिजुग भेव चुकाया, अगम्म अगम्मा पर्दा लाह। विष्न ब्रह्मा शिव दर बहाया, नानक निरगुण करे सलाह। चार जुग सेव कमाया, लक्ख चुरासी बण मलाह। एका जोत नूर रुशनाया, घट घट रिहा डगमगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ दए जणा। नानक नाम जणाया, पुरख अबिनाशी दीना नाथ। आपणा नूर आप दरसाया, आप आपणा रक्खया साथ। सो पुरख निरँजण आप वड्याआ, हँ सुणाए आपणी गाथ। सोहँ नानक झोली पाया, नाम सति मस्तक माथ। जोत निरँजण डगमगाया, रारं रूप आप अनाथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा घाट। निरगुण सरगुण बोल जैकारा, नानक पंज तत्त समझाईआ। जुग जुग औंदे रहे गुर अवतारा, हरि हरि नाउँ गाईआ। चार जुग दा पार किनारा, चौथा जुग दए ग्वाहीआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी उतरे पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कोटन कोटि राम कृष्न अवतारा, नानक निरगुण रहे जस गाईआ। दर दरवेश बण भिखारा, कबीर जुलाहा सीस झुकाईआ। एका जोती होए सहारा, दस दस नूर नूर रुशनाईआ। आदि उपाया आपणा सुत दुलारा, आपणा शब्द प्रगटाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग करे खेल न्यारा, अन्तिम कलिजुग आपणा सुत गोबिन्द वेस वटाईआ। गोबिन्द पंज तत्त काया चोली अन्त चढ़े कलिजुग खारा, झूठी क्रिया दए मिटाईआ। प्रगट होवे फेर संसारा, निरगुण निरगुण कर रुशनाईआ। नाउँ धराए महांबली अवतारा, निहकलंका बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी गुर अवतारां जो देंदा रिहा सहारा, साधां सन्तां सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। कलिजुग अन्तिम करे खेल न्यारा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे लग्गा अखाड़ा, सत्तां दीपां लए

जणाईआ। सुरत सुवाणी होई नार विभचारा, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। जोग अभ्यास कर कर थक्के अंदर वड़ डूँग्घी गारा, मन का मणका ना कोए भुआईआ। पुरख अकाल वेखणहारा, निरगुण दाता सच्चा शहिनशाहीआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, कूड़ी मेटे झूठी शाहीआ। सच सुच्च करे पसारा, साची सिख्या दए समझाईआ। एका नाउँ हरि निरँकारा दूसर नाउँ ना कोए वखाईआ। एका हट्ट इक्क वणजारा, एका बैठा आसण लाईआ। एका दर इक्क दुआरा, देवणहार बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम आत्म ब्रह्म भुल्ला सर्ब संसारा, ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाईआ। घर घर मन्दिर गुरदर ठाकर दुआरा, अठसठ बैठे आपणा घाट बणाईआ। कोई कहे मैं अगम्म घर दा बणया लाड़ा, कोई अलख अलख अलख आप अख्वाईआ। कोई कहे मैं सचखण्ड बणया बण सच निरँकारा, निरगुण मेरा रूप अख्वाईआ। कोई कहे मैं थिर घर खोल्ह्या आप किवाड़ा, मेरी महिमा वेद पुराण रहे जस गाईआ। कोई कहे विश्न ब्रह्मा शिव मेरे चरन आधारा, मैं सभ दा सच्चा माहीआ। कोई कहे मैं कलिजुग दा सच्चा अवतारा, मेरे हथ्थ धुर दरगाह दी सच्ची शाहीआ। कोई कहे मैं सुरती दा शाह सिक्दारा, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। कोई कहे मेरे घर अमृत भण्डारा, सरोवर साचे दयाँ नुहाईआ। पुरख अबिनाशी हो उज्यारा, कलिजुग अन्तिम खेल खिलाईआ। साधां सन्तां दिता हुलारा, भुल कोए ना जाईआ। आओ सन्तो लग्गा अखाड़ा, प्रभ साचा मात लगाईआ। वेखणहारा डूँग्घी गारा, घर घर विच फोल वखाईआ। पहला दूजा तीजा चौथा वेखे बणया मुनारा, पंचम वेखे खेल बेपरवाहीआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोए सहारा, सत्तवें सति सतिवादी आपणा सांग वरताईआ। अट्ठां तत्तां ना कोए पसारा, नौ दुआर ना खोजे खोज खुजाईआ। दस्म दुआरी खेल न्यारी, निरगुण दीआ निरगुण बाती, कमलापाती बैठा आप जगाईआ। बणया साकी खोल्हे ताकी चुकाए बाकी, लहिणा कोए रहिण ना पाईआ। मातलोक रहिण ना देवे कोए आकी, जे कोई कहे मैं सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। सुरत सुवाणी चढ़ ना सके आपणी हाटी, काया माटी ख़ाक ख़ाक विच मिलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलिजुग अन्तिम जिस जन लाए आपणी छाती, नाम भण्डारा एका वार झोली पाईआ। मेटे रैण अन्धेरी राती, साचा चन्द करे रुशनाईआ। साचे सन्तां साचे भगतां मेल मिलावा कमलापाती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आदि जुगादि वरताईआ। कलिजुग अन्तिम नाम वरताउणा, चार वरन हरि धार। आत्म ब्रह्म सर्ब दरसाउणा, ज़ात पात ना कोए विचार। ऊँच नीच तेरा पर्दा लाउहणा, राउ रंक इक्क दुआर। घट घट अंदर दीपक जोत जगाउणा, मुक्के अन्ध अन्धयार। अनहद नादी शब्द सुणाउणा, छत्ती राग ना पावण सार। फड़ फड़ कागी हँस बणाउणा, काग उठाए हँसां डार। माणक मोती नाम चुगाउणा, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। साची चोटी आप

चढ़ाउणा, किरपा करे श्री भगवान। वासना खोटी दर कढाउणा, नाता तोड़े पंज शैतान। एका ओट हरि दरसाउणा, आदि अन्त होए निगहबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि का नाउँ हरिजन करन परवान। हरिजन करे नाम परवान, मनमुख नेड़ कदे ना आईआ। हरिजन सुणे जस भगवान, मनमुख गूढ़ी नीद सवाईआ। हरिजन मंगे एका दान, पुरख अबिनाशी घट घट वासी तेरा नाउँ मेरी वड्याईआ। मनमुख मंगे नाता पंज शैतान, जूठ झूठ वज्जे वधाईआ। दोहां खेल विच जहान, दो जहानां वाली आप खिलाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, परम पुरख आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, चारों कुण्ट दए समझाईआ। सो पुरख निरँजण नौजवान, हँ ब्रह्म ल्ए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका नाम दए वड्याईआ। हरि का नाउँ सूरबीर, बली बलवान अख्वाइंदा। हरि का नाउँ निराला तीर, गुरमुख विरले घाओ लगाइंदा। हरि का नाउँ बजर कपाटी देवे चीर, पर्दा दूई द्वैत उठाइंदा। हरि का नाउँ कढ्ढे पीड़, बिरहों पीड़ ना कोए जणाइंदा। हरि का नाउँ चोटी चाढ़े अख़ीर, जगत मन्ज़ल पन्ध मुकाइंदा। हरि का नाउँ बदले तकदीर, तदबीर आपणी इक्क समझाइंदा। हरि का नाउँ कट्टे ज़ंजीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नाम जगत चलाइंदा। एका नाम चलाउणा जग, सतिगुर साचा दया कमाईआ। गुरसिखां रखाए उप्पर शाह रग, नौ दुआरे पार कराईआ। डूँग्घी भँवरी टेढी बंक देवे कढ्ढ, होए आप सहाईआ। आत्म सेजा लडाए लड, जिउँ बालक माता माईआ। आपणे घर आपे ल्ए सद्द, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। जो जन गाए सोहँ सुहागी छन्द, तिस आत्म परमात्म एका रंग वखाईआ। अठ्ठे पहर रखाए परमानंद, निजानंद दए वड्याईआ। मनमुख जीव भागांमंद, बैठे मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्त दुआरे वखाए एका अनन्द, अनन्द मंगल एका गाईआ। सन्त दुआरा सच अनन्दा, अनन्द मंगल हरि गाया। सन्त दुआरे साचा चन्दा, सति पुरख निरँजण आप चढ़ाया। सन्त दुआरा उच्च नव खण्डा, कोटन ब्रह्मण्ड चरनां हेठ दबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस सन्त आपणा नाम जणाया। सन्त जणाए जाणे जन, जानणहार गोपाला। सन्त साजण सतिगुर गए बण, एका पाई नाम सच्ची माला। एका नूर एका चन्न, एका जोत जोत उजाला। एका राग एका कन्न, एका दुआर सच्ची धर्मसाला। एका बेड़ा देवे बन्न, तोड़णहार जगत जंजाला। जिस जन देवे नाम धन, सो होए ना मात कंगाला। हरि जन तेरा वसेरा बिन छप्परी छन्न, पुरख अबिनाशी तेरा रखवाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि सदा प्रितपाला। प्रितपाल करे सदा प्रितपालक, आदि जुगादि वड्याईआ। खलकत वेखे

हरि हरि ख़ालक, ख़ालक मख़लूक खेल खिलाईआ। जन भगतां बणया साचा सालस, सच सालसी आप कमाईआ। नाता तोड़े निन्दरा आलस, साचा नाम झोली पाईआ। एका नाम वखाए ख़ालस, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, एका नाम रिहा जपाईआ। अमृत बरखा गुरसिख अंदर, मनमुख अग्नी अग्ग जलाईआ। अमृत बरखा गुरसिख मन्दिर, मनमुख धूंआँधार रखाईआ। अमृत बरखा गुरसिख तेरी डूँग्घी कंदर, मनमुख बैठे मुख छुपाईआ। अमृत बरखा तोड़े जंदर, त्रै धातू ताला रहिण ना पाईआ। अमृत बरखा फुल फुलवाड़ी महिकाए काया खण्डर, पत्त पत्त डाली तन महिकाईआ। अमृत बरखा मूरछा करे मन बन्दर, उठ उठ ना दहि दिश धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत बरखा दए समझाईआ। अमृत बरखा आत्म रस, गुरमुख विरला पाइंदा। सतिगुर पूरा देवे हस्स हस्स, आपणा भण्डारा आप वरताइंदा। आपणी हथ्थीं कर किरपा गुरसिख तेरे अंदर देवे रक्ख, फेर बाहर ना कोए कढाइंदा। आपणे परदे देवे ढक, जगत पर्दा ना कोए पाइंदा। अमृत बरस आप होए वस, आपणा रस आप चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत बरखा आपे लाइंदा। अमृत बरखा निझर धार, झिरना आप झिराईआ। कँवली कँवल पए फुहार, बूंदी बूंद बूंद टपकाईआ। सुरती मौले खिड़े गुलज़ार, बसन्ती रुत्त आप बणाईआ। भौरा गूंजे आप निरँकार, कली कली वेख महिकाईआ। गुरसिख तेरी अमृत बहार, तेरी काया अंदर सोभा पाईआ। लक्ख चुरासी नित नवित छिआनवे करोड़ मेघला बरसे आपणी धार, सांत किसे हथ्थ ना आईआ। गुरसिख चातरक एका बूंद स्वांती मंगे एका वार, पी पी पी पीआ आपणा लए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन अमृत मेघ बरसाईआ। अमृत मेघ ठंडा पाणी, गुर सतिगुर आप बरसाइंदा। सुरती मिलाए शब्द हाणी, दोहां विचोला आप हो जाइंदा। आप सुणाए आपणी अकथ कहाणी, जगत किताब ना कोए पढ़ाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, जीव जंत जस गाउण शाह सुल्तानी, हरि का नाउँ शहिनशाह आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अमृत भण्डारा एका भर, अमृत मेघ आप बरसाइंदा। गुर सतिगुर सच्चा एक है, आदि जुगादि समाए। जुग जुग जन भगतां देवे टेक है, रूप अनूप वटाए। त्रैगुण माया ना लाए सेक है, जिस जन आपणी बूझ बुझाए। धुर दा मस्तक लिखे लेख है, पूर्ब लेखा दए चुकाए। सद वसे काया देस है, हर घर आपणा आसण लाए। तख़्त निवासी नर नरेश है, नर नरायण सच्चा शहिनशाहे। तिस अग्गे चले ना कोई पेश है, मन ममता दए खपाए। तिस सतिगुर सदा आदेस है, जो मन का भउ मिटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा इक्क समझाए। सतिगुर

सच्चा दीन दयाला, आदि जुगादि समाया। जुगा जुगन्तर करे प्रितपाला, हरिजन साचे लए तराया। दो जहान बणे रखवाला, एथे ओथे होए सहाया। नेड़ ना आए काल महाकाला, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाया । तन अन्तर आपणा नाउँ पाए साची माला, मन का मणका आप भुआया। त्रैगुण तोड़े जगत जंजाला, जाग्रत जोत करे रुशनाया। घर विच घर वखाए सच्ची धर्मसाला, घर मन्दिर आप सुहाया। घर दीप करे उजाला, निरगुण जोत नूर रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्क अख्वाया। सतिगुर सच्चा सदा समरथ, महिमा कथ कथी ना जाईआ। गुरसिखां देवे नाम वथ्थ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। अंदरे अंदर मार्ग दस्स, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। आपणा तीर निराला मारे बाण कस, पंच विकारा ढह ढेरी होए ना कोए सके सीस उठाईआ। निरगुण सुरती शब्दी मेल कराए हस्स हस्स, वाह वा वजदी रहे वधाईआ। पूरी करे सदा आस, निरास ना कोए जणाईआ । गुरसिख कदे ना होए निरास, जिस सतिगुर मिल्या सच्चा माहीआ। पार कराए पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां चरनां हेठ दबाईआ। एका आपणी जोत निर्मल निर्मल करे प्रकाश, दीपक दीपक नाल जगाईआ। निज घर अंदर कर कर वास, आपणा पर्दा दए उठाईआ। आपे वसे पवण स्वास, स्वास स्वासां डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक्क समझाईआ।
९५३
सतिगुर सच्चा श्री भगवान, आपणी खेल खिलाइंदा। गुर सतिगुर रूप हो प्रधान, लोकमात वेस वटाइंदा। गुरसिखां देवे नाम दान, दाता दानी झोली पाइंदा। एका राग सुणाए कान, अनहद नादी नाद वजाइंदा। अठ्ठे पहर रहे धुन्कान, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। सुरत सुआणी सुण सुण होए हैरान, सुरती सुरत सुरत गवाइंदा। सतिगुर सदा सदा सद जाणी जाण, किसे कोलों पढ़न कदे ना जाइंदा। आपणी सिख्या देवे धुर फ़रमान, गुरसिखां आप पढ़ाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन बख्शे इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान विच टिकाइंदा। आपणा नाउँ देवे शब्द बबाण, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला आपणा नूर आप प्रगटाइंदा। काया काअबा वेखे आप मेहरवान, दो दो आबा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा एका वर, आपणा नाउँ जणाइंदा। देवे नाउँ सतिगुर देव, गुर सतिगुर दया कमाईआ। मेहरवान होए अलख अभेव, अगम्म अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। गुर की महिमा की रसना गाए जेहव, लक्ख लक्ख जेहवा कोटन कोटि रूप धर धर हरि का जस कथ ना सके राईआ। जिस जन बख्शे आपणी सेव, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। आपणा प्रेम बख्शे अमृत मेव, गुरसिख रस चख चख बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर आदि जुगादि सदा सदा सदा सहाईआ। सतिगुर की वण्ड कोए ना वण्डे, वण्डण विच कदे ना आया। सतिगुर वसे कोटन

कोटि ब्रह्मण्डे, ब्रह्मण्ड आपणा खेल खिलाया। सतिगुर पावे सार जेरज अंडे, उत्भुज सेत्ज आपणा रूप प्रगटाया। सतिगुर शब्द तिक्खी धार खण्डे, खण्डा धार मुख शरमाया। सतिगुर सिँघ गुरमुख विरली नारी हंढे, लक्ख चुरासी बैठी मुख छुपाया। सतिगुर पूरा गुरसिख तेरी टुट्टी गंढे, टुट्टी गंढुणहार दया कमाया। मन वासना मन इच्छया जगत विचार पाए डण्डे, गुरमति गुरसिख गुर का बचन ना कोए उलटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर जिस जन वखाए साचा घर, तिस जन गुस्सा कदे ना आया। आपे सन्त आपे साध, सगल सृष्ट आप उपाइंदा। आपे शब्द बोध अगाध, आपे नाद अनादि सुणाइंदा। आपे वाद आपे विवाद, आपे विस रूप हो जाइंदा। आपे भगत आप भगवान, भगती नाम आप दृढ़ाइंदा। आपे होए पंज शैतान, घर घर खेल खिलाइंदा। आपे पंच शब्द धुन्कार, नादी नाद वजाइंदा। आपे पंज तत्त जूठा झूठा होए निशान, नौ खण्ड सत्त दीप लक्ख चुरासी घट घट अंदर डौरू वाइंदा। आपे होए बेपछाण, दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणी कल कुलवन्ता अकल कल धारी आपणे विच रखाइंदा। सतिगुर पूरा सिमरो एक, दूसर अवर ना कोए चतुराईआ। चरन कँवल जन राखो टेक, गुर पूरे बूझ बुझाईआ। त्रैगुण माया ना लग्गे सेक, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण

९५४

दए वखाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाला, आदि जुगादि समाया। गुरमुखां करे सदा प्रितपाला, जिस जन आपणी दया कमाया। चरन कँवल वखाए सच्ची धर्मसाला, दर घर साचा दए समझाया। नेड़ ना आए काल महाकाला, पुरख अबिनाशी होए सहाया। एका देवे नाम सच्चा धन माला, सच ख़ज़ीना आप भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भेव दए खुलाया। सतिगुर पूरा एका दाता, दयानिध अख्वाईआ। हरिजन मेटे अन्धेरी राता, अज्ञान अन्धेर दए गंवाईआ। मेल मिलाए कमलापाता, कँवल नैण सच्चा शहिनशाहीआ। नाता तोड़े ज़ाता पाता, वरन बरन दए मिटाईआ। एथे ओथे निभाए सगला साथा, विछड़ कदे ना जाईआ। एका मन्त्र जणाए पूजा पाठा, पढ़ पढ़ रसना वाद ना कोए वधाईआ। एका वखाए तीर्थ ताटा, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा मेले मेल सच्चा शहिनशाहीआ। गुरसिख उठणा जाग, हरि साचा सच जगाइंदा। गुर का शब्द तेरा वैराग, तेरी सुरती बन्धन पाइंदा। तेरी आसा तृष्ना वेखे उडदी वांग काग, फड़ फड़ हँस रूप वटाइंदा। तेरा दीपक जोत जगे चिराग़, सतिगुर पूरा आप जगाइंदा। हँ ब्रह्म बणाए तेरा साक, सगला संग आप निभाइंदा। दरस दिखाए इक्क इकांत, इक्क इकल्ला वेस वटाइंदा। अमृत प्याए बूंद स्वांत, निझर झिरना आप झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

सतिगुर पूरा वसे एका घर, घर साचा आप वड्यांअदा। गुरसिख आसा मनसा पूर, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। सतिगुर साचा हाज़र हज़ूर, हरि के पौड़े दए चढ़ाईआ। आत्म देवे साचा नूर, नूर नुराना सच्चा शहिनशाहीआ। हउमे हंगता तोड़े गढ़ ग़रूर, साची संगता लए मिलाईआ। काया तपे ना वांग तन्दूर, सति सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खेल रिहा खलाईआ। हरि हरि खेल खिलाइंदा, आदि जुगादी कार। निरगुण रूप आप अख्वाइंदा, रूप रंग रेख ते वसया बाहर। सरगुण आपणी धार चलाइंदा, गुर गुर लोकमात हो उज्यार। शब्दी शब्द नाद वजाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। ब्रह्म ब्रह्मादि खोज खोजाइंदा, लक्ख चुरासी पावे सार। भगत भगवन्त आप उठाइंदा, देवे नाम आधार। साचे सन्तां मेल मिलाइंदा, खोल्ह बन्द किवाड़। गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा, लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहर। गुरसिख साचा राह वखाइंदा, साची सिख्या कर विचार। एका मन्त्र शब्द नाम दृढ़ाइंदा, इष्ट देव गुर करतार। जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा, सो जन उधरे पार। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा, आसा तृष्ना करे ख्वार। साचे मन्दिर आप बहाइंदा, सतिगुर पूरा करे प्यार। लाड़ी मौत दर दुरकाइंदा, राए धर्म ना मारे मार। चित्रगुप्त ना लेख वखाइंदा, गुरसिख तेरी महिमा अपर अपार। तेरा सतिगुर तेरी सेव कमाइंदा, अठ्ठे पहर ख़बरदार। जो जन गुर तों मुख भवाइंदा, मर मर जम्मे आवे वारो वार। सुरती शब्द ना कोए मिलाइंदा, नार दुहागण फिरे विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, बिन सतिगुर पूरे कोए ना उतरे पार। सतिगुर पूरे लग्गो चरन, चरन कँवल वडी वड्याईआ। नेत्र खोल्ह हरन फरन, नैण नैण नैण दरसाईआ। नाता तोड़े मरन डरन, मरन डरन विच ना आईआ। किरपा करे करनी करन, करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मार्ग रिहा वखाईआ। एका मार्ग पुरख समरथ, आदि जुगादि रखाइंदा। जुग जुग चलाए भगतां रथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। सन्तां देवे एका मति, आपणी मति आप जणाइंदा। गुरमुखां बन्न्हे साचा नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। गुरसिखां सुणाए साची गाथ, आपणा मन्त्र आप अल्हाइंदा। लहिणा देणा चुक्के पूजा पाठ, जिस जन उप्पर सतिगुर पूरा दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोई सुरती आप जगाइंदा। सोई सुरती जाए उठ, सतिगुर पूरा आप जगाईआ। हो मेहरवान जाए तुठ्ठ, दीनन दीन दयाला आपणी दया कमाईआ। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, बूंद स्वांती आप चुआईआ। आप जगाए निर्मल जोत, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। झूठा ढाए किला कोट, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे एका

६५५

वर, साचा मार्ग एका लाईआ। साचा मार्ग आदि जुगादि, हरि सन्तां सति जणाइंदा। भगतन देवे एका दाद, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। गुरमुखां सुणाए एका नाद, धुन अनादी नाद वजाइंदा। गुरसिख गुर गुर आपे लाध, गुर पूरा मेल मिलाइंदा। जुगा जुगन्तर सुण फ़रयाद, लोकमात फेरा पाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों लए काढ, आप आपणी गोद बहाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, दुःख रूप ना कोए दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मार्ग आपे लाइंदा। एका मार्ग हरि हरि दस्स, दहि दिशा वेख वखाईआ। हरिजन हिरदे वस, हरि हरि आपणा रूप दरसाईआ। अमृत प्याए एका रस, रसक रसक एका रस चुआईआ। निरगुण नूर करे प्रकाश, प्रकाश प्रकाश विच टिकाईआ। गुरसिख पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। वेले अन्त करे बन्द ख़ुलास, सगला संग रखाईआ। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन मंडल चरनां हेठ दबाईआ। गुरसिख रक्खे आपणे पास, दूसर डोर ना किसे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाईआ। एका गुण गुरु गुरदेवा, गुर मन्त्र नाम जणाइंदा। हरि का नाउँ सतिगुर सेवा, अजपा जाप आप जपाइंदा। अन्तर आत्म अगम्मी मेवा, निज आत्म आप चखाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अलख अभेवा, अगम्म अगम्मड़ा खेल खिलाइंदा। गुर की महिमा कथ ना सके रसना जेहवा, कोटन कोटि जीव बिल्लाइंदा। जिस जन कौस्तक मणीआ मस्तक लाए आपणा थेवा, जोत ललाटी डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क दरसाइंदा। साचा मार्ग हरि का दरस, गुर दरसी दरस कराईआ। जगत चिंता मिटे हरस, रोग सोग ना कोए वखाईआ। नाता तोटे अर्श फर्श, मिले मेल सच्चे शहिनशाहीआ। अमृत मेघ देवे बरस, त्रैकाल दरसी त्रै त्रै नाता तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाईआ। आपणा बन्धन पाया पंज तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल खिलाया। नाता जोड़्या हड्ड मास रक्त, बूंद रत नाड़ बहत्तर जोड़ जुड़ाया। मन मति बुध अंदर रक्ख, कमलापति वेख वखाया। नौ नौ वेखे आपणे सथ्थ, सत्थर आपणा रिहा छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, बिन सतिगुर साचा मार्ग ना कोए जणाया। सतिगुर पूरा होए मेहरवान, दीनन आपणी दया कमाईआ। पहलां बख्शे चरन ध्यान, दूजे आपणा नाम दृढ़ाईआ। तीजे नेत्र लोचण खोल्ह आण, तीजे नैण करे रुशनाईआ। चौथे चौथे पद मिलावे आण, घर घर विच वज्जे वधाईआ। पंचवें शब्द नाद धुन्कान, गृह मन्दिर आप सुणाईआ। छेवें छे घर करे परवान, परम पुरख वडी वड्याईआ। सत्तवें सति सतिवादी सति पुरख निरँजण आपे होए जाणी जाण, जानणहार इक्क अख्वाईआ। अठ्ठां तत्तां देवे ज्ञान, मन मति बुध एका वार समझाईआ। नौ दुआरे

झूठा ढाए मकान, सुरती आपणे प्रेम खिचाईआ। एका नाद नाद धुन्कान, घर बैठा रिहा वजाईआ। सुखमन वेखे नौजवान, डूँग्घी भँवरी फेरा पाईआ। ईड़ा पिंगल होए हैरान, सतिगुर पूरा आवे वाहो दाहीआ। गुरमुख साचे कर पछाण, आपणा पल्लू नाम फड़ाईआ। अमृत आत्म प्याए आण, सच प्याला हथ्थ उठाईआ। रागी राग सुणाए सच्ची धुन्कान, अनहद नादी नाद वजाईआ। पंचम सखीआं इक्क ध्यान, एका रूप दरसाईआ। आत्म सेजा कर परवान, सच सिँघासण सोभा पाईआ। रवि ससि मुख शरमान, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। सुरती शब्द मेला मेल मेले भगवान, नारी कन्त जोड़ जुड़ाईआ। एका सेज वखाए आण, हरि सच्चा सच्चा माहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी दीप सत्त दिसे झूठ मकान, घर विच घर साचा मन्दिर सतिगुर पूरा दए वखाईआ। एका जोती जोत जगे महान, दीपक दीआ तेल बाती ना कोई रखाईआ। ना कोई पंडत करे ज्ञान, ना कोई ग्रन्थी करे पढ़ाईआ। ना कोई मुल्लां शेख़ मुसायक पीर सुणाए कुरान, हदीस हदीस ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई वेद शास्त्र सिमरत गायण गाण, राग नाद ना कोए वजाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर स्वामी एका सुरती सुरत करे परवान, आपे देवे आपणा दान, दाता दानी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेले आपणे घर, आदि जुगादी साचा हरि, साचे मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग हरि हरि लाउणा, आदि जुगादी कार। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाउणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग उतरे पार। पूर्ब लहिणा सभ दी झोली पाउणा, लेखा चुकाए गुर अवतार। भगत भगवन्त भेव खुल्ह़ाउणा, कबीर जुलाहा करे पुकार। साचे सन्तां सति दरसाउणा, दर ठांडा दरबार। गुरमुख गुर गुर आप जगाउणा, नाद शब्द वजाए सच्ची धुन्कार। गुरसिख गुर गुर वेख वखाउणा, गुर मूर्त अकाल। चार वरनां एका रूप प्रगटाउणा, अठारां बरन वजाए ना कोए ताल। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका दर बहाउणा, लेखा चुक्के शाह कंगाल। पुरख अकाल इक्क अख्वाउणा, लक्ख चुरासी दीन दयाल। एका मन्त्र नाम नाम दृढ़ाउणा, जीव जंत करे प्रितपाल। दो जहानां दलाल आप अख्वाउणा, लोआं पुरीआं सुरत संभाल। ब्रह्मा विष्न शिव उठाउणा, सुरपति राजा इन्द मिलाए नाल। गण गंधर्ब किन्नर जच्छप नेत्र नैण सर्ब खुलाउणा, करे खेल आप कृपाल। महाकाल हुक्म सुणाउणा, हुक्मी हुक्म वरते वरतणहारा नौजवान। काल दुआर इक्क वखाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपे चले आपणी चाल। चाल अवल्लड़ी चलणहारा, आदि जुगादि वेस वटाइंदा। जुगा जुगन्तर गुर अवतारा, लोकमात सेव लगाइंदा। एका देवे नाम भण्डारा, सति सतिवादी सति वरताइंदा। भगतां देवे भगती आधारा, सन्तां साचा संग निभाइंदा। जुग जुग कूकण उच्ची बोल जैकारा, साचा नाअरा आप सुणाइंदा। एका मन्दिर वसे ठाकर ठाकर दुआरा,

हरि ठाकर अबिनाशी आपणा खेल खिलाइंदा। एका वस्त इक्क भण्डारा, जुगा जुगन्तर आप वरताइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, निरगुण निरगुण आप कराइंदा। चार जुग दा पार किनारा, कलिजुग अन्तिम अन्त आप कराइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, सत्त समुंद सागर बनास्पत कलम शाही मुख भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग आप जणाइंदा। साचा मार्ग जाणा लग्ग, सतिगुर पूरा आप लगाईआ। करे खेल सूरा सर्बग्ग, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। लक्ख चुरासी वेखे जीव कग, बुद्धि काग वांग कुरलाईआ। गुरमुख विरला बैठा उप्पर शाह रग, जो सतिगुर पूरे आस तकाईआ। निरगुण जोत दीपक जाए जग, हरि साचा आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग आपणे हथ्थ रखाईआ। सच्चा मार्ग हथ्थ करतार, कृपानिध आप रखाइंदा। बिन करनी फड़ फड़ देवे तार, जिस आपणे गले लगाइंदा। कर्म कुकर्म ना करे विचार, निहकर्मी आप हो आइंदा। जिस जन बख्शे चरन प्यार, पूजा पाठ ना कोए कराइंदा। अठ्ठे पहर देवे दरस दीदार, घट अंदर जोती जोत डगमगाइंदा। दिवस रैण रहे शब्द धुन्कार, अनहद नादी नाद वजाइंदा। जिस जन वखाए आपणा सच्चा घर बार, दूसर दर मंगण ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप लगाइंदा। साचा मार्ग आप लगाया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। निरगुण निरवैर जामा पाया, जोती जोत जोत उज्यार। पुरख अकाल वेस वटाया, अजूनी रहत होया ख़बरदार। लक्ख चुरासी फोल फोलाया, हरिजन मेले जुगा जुगां दे विछड़े यार। सन्त भगत भगवन्त वेखे थाउँ थाइआं आपे होए वेखणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल सच्ची सरकार। सच सरकार शाह सुल्ताना, आपणी दया कमाइंदा। चार वरन देवे इक्क ज्ञाना, एका वार समझाइंदा। एका ब्रह्म सर्ब पछाना, पारब्रह्म वेख वखाइंदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, नौजवान आपणा रूप धराइंदा। एका खण्डा तीर कमाना, चण्ड प्रचण्ड हथ्थ उठाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए आपणा बन्धन पाइंदा। आपे मर्द आप मरदाना, सच मरदानगी आप कमाइंदा। एका देवे धुर फ़रमाना, लक्ख चुरासी आप समझाइंदा। कलिजुग वेला अन्त अन्त मिटे निशाना, कूड़ कूड़ सर्ब मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग लाए गोपाल, गोबिन्द आपणी धार चलाईआ। चार वरनां राह दस्से सुखाल, सुख आत्म दए उपजाईआ। काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल, चार दीवार मठ ना कोए तपाईआ। अंदर बैठा शाह कंगाल, निरगुण सरगुण अंदर मुख छुपाईआ। अठ्ठे पहर करे प्रितपाल, दिवस रैण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा

मार्ग आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग मार्ग जग लाइंदा, जगत जुग हरि कार। सन्तन सति समझाइंदा, सति सतिवादी हो उज्यार। कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा, जोती जाता हरि निरँकार। कमलापाता आप अख्वाइंदा, लक्ख चुरासी वरे नार भतार। पिछला साका आप मिटाइंदा, अग्गे जाणे आपणी गुफ्तार। हक हकीकत आपणे विच छुपाइंदा, लाशरीक परवरदिगार। कायनात वेख वखाइंदा, मुकामे हक वसे सांझा यार। उल्फ़त विच कदे ना आइंदा, ग़फ्लत वेखे वेखणहार। कलमा कलाम आप पढ़ाइंदा, नबी रसूलां दए विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दए वखाल। साचा मार्ग चार वेद, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पुराण अठारां ना सकण वेख, लिख लिख थक्की कलम शाहीआ। शास्त्र सिमरत ना जानण रेख, रूप रंग ना कोए जणाईआ। अठारां अध्याए गीता कहे अलख अलखना लेख, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। अञ्जील कुरान दर दर वेख्या भेख, भेख अवल्लड़ा, सच्चा शहिनशाहीआ। खाणी बाणी गाए हरि का देस, महिमा कथ कथ सुणाईआ। किसे ना चले अग्गे पेश, अद्धविचकारे बैठे सभ आसण लाईआ। नानक कबीरा कर आदेस, घर पाया साचा माहीआ। जुग जुग करया अवल्लड़ा वेस, जोती जामा भेख वटाईआ। तूं साहिब दाता दातार नर नरेश, तेरी सच्ची शहिनशाहीआ। हउँ दर ठांडा ल्या वेख, अग्नी पोह ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग इक्क जणाईआ। मार्ग हरि जणाइंदा, कर किरपा गुण निधान। नानक निरगुण सरगुण आप समझाइंदा, देवे तत्त ज्ञान। एका वस्त झोली पाइंदा, पारब्रह्म ब्रह्म करे पछाण। आपणा नाउँ आप दृढ़ाइंदा, नाउँ रक्ख श्री भगवान। सति सति आप वरताइंदा, सति सतिवादी हो मेहरवान। नाम नामा नाम चलाइंदा, नाम नामे खोल्ह दुकान। चौदां हट्टां वेख वखाइंदा, चौदां लोकां इक्क ध्यान। चौदां तबकां फोल फोलाइंदा, लेखा जाण ज़िमीं अस्मान। एका कलमा कलाम पढ़ाइंदा, आलमीन होया मेहरवान। मिहबान बीदो आपणा खेल खिलाइंदा, इलाही नूर शाह सुल्तान। नानक हुक्मी हुक्म जणाइंदा, देवे धुर फ़रमान। मन्त्र सति नाम दृढ़ाइंदा, चार वरनां इक्क ज्ञान। जो जन गुर का शब्द भुलाइंदा, हरि सतिगुर वेखे आण। कलिजुग चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। जुग जुग खेल श्री भगवान, आपणा आप कराईआ। सन्तन देवे नाम निशान, लोकमात झुलाईआ। आत्म दरसी आत्म ब्रह्म ज्ञान, आत्म विद्या करे पढ़ाईआ। पूजा पाठ इक्क वखाण, एका हवन दए समझाईआ। एका मूर्त साची सूरत दरस देवे आण, अजूनी रहत बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपणा पन्थ वखाईआ। साचा मार्ग हरि का पन्थ, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। गुरमुखां अंदर अट्ठे पहर वज्जे हरि का संख, सुरती सोई आप

उठाइंदा। सतिगुर पूरे दी क्या कोई करे परख, परीख्या विच कदे ना आइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। गुरमुखां उप्पर करे तरस, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस धर, सच मलाह बेपरवाह साचा बेड़ा आप चलाइंदा। कलिजुग बेड़ा अन्त चलाउणा, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। खेवट खेटा हो हो सेव कमाउणा, सेवादार बेपरवाहीआ। गुरमुख बेटा आप उठाउणा, आलस निन्दरा दए गंवाईआ। एका मन्त्र नाम समझाउणा, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हँ ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाउणा, आत्म परमात्म मेला चाँईं चाँईंआ। ईश जीव रंग रंगाउणा, जगदीस वडी वड्याईआ। सच हदीस इक्क पढ़ाउणा, गाए सर्ब लोकाईआ। नौ खण्ड पृथमी एका मन्त्र एका नाम दृढ़ाउणा, इष्ट देव इक्क हो जाईआ। घर घर आपणा नाद सुणाउणा, नाद अनादी आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। साचा मार्ग जाए आ, हरि साचा आप लगाइंदा। चार वरन वखाए एका थाँ, थान थनंतर सोभा पाइंदा। चार वरन मन्त्र जपाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। आपे बणे पिता मां, बाल अञ्याणे गोद उठाइंदा। सदा सुहेला सद देवे ठंडी छाँ, समरथ पुरख सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अग्गे मार्ग आपे लाइंदा। अग्गे मार्ग आपा रक्ख, आपणी खेल खिलाया। निरगुण नूर हो प्रतक्ख, सरगुण वेख वखाया। गुरसिख वरोले जगत छाछ विच्चों लक्ख, नाम मधाणा एका पाया। आपणे भाण्डे अंदर रक्खे ढक, आपणा पर्दा हथ्थ उठाया। कलिजुग जूठ झूठ कूकर कोई ना सके लक, काम क्रोध लोभ मोह हँकार सूकर नेड़ कोए ना आया। सुरत सुआणी करे वक्ख, डूँग्घी कंदर फेरा पाया। अपणा मार्ग आपे दस्स, आपणा पल्लू दए फड़ाया। शब्दी मेला हस्स हस्स, घर साचे मेल मिलाया। गुर सतिगुर गुरसिख इक्क दूजे दे होण वस, पल्ला सके ना कोए छुडाया। गुरसिख कोलों सतिगुर कदे ना जाए नट्ठ, जो गुरसिख गुर गुर दरस तिहाया। सतिगुर कोलों गुरसिख कदे ना होए वक्ख, जिस प्रेम बन्धन पाया। शब्द डोरी साची नथ्थ, आपणी हथ्थीं देवे गंढु, गंढु देवणहारा दिस किसे ना आया। गुरमुख चढ़ाए आपणे रथ, बण रथवाही सेव कमाया। गुरसिख तेरे सगल विसूरे जायण लथ, सतिगुर पूरा दरस दिखाया। जिंनां चिर गुरसिख कहे ना बस बस, गुर पूरा आपणा रूप ना सके पलटाया। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड पार कर गुरसिख तेरे दुआरे आए नस्स, ब्रह्मा विष्न शिव अद्धविचकार बैठे राह तकाया। तेरा मेला हस्स हस्स, तेरी सुरती तेरी आत्म तेरा परमात्म लए प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग देवे दर, हरि का नाउँ हरि सन्त भगवन्त मेल मिलाया।

पंज तत्त काया रोग, दुःख दुःख सताईआ। कर्म कर्मां मिल्या भोग, भोगी भोग भुगाईआ। स्त्री पुरष होया संजोग, जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। जो जन सतिगुर पूरे रक्खे ओट, तिस जन जगत दुःख रहे ना राईआ। हरि का नाउँ चुगे चोग, अमृत रस मुख पाईआ। रसना गाए इक्क सलोक सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै, अग्नी तत्त दए मिटाईआ। मन दुबिधा होए दूर, मन वासना दए खपाईआ। मन वासना दिसे कूड़, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। मन अंदर वखाए साचा नूर, मन जोत नूर रुशनाईआ। मन करे आसा पूर, मन मनसा दए उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन साचे धन्दे लाईआ। मन धन्दा शब्द गुरदेव, हरि साचा सच जणाइंदा। मन अन्धा लग्गे सेव, साची सेवा आप कराइंदा। मन वासना गंदा खाए साचा मेव, अमृत रस आप चखाइंदा। मन अन्धा भुलया अलख अभेव, अलख अभेव आपणा पर्दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन का मणका आप भवाइंदा। मन का मणका देवे फेर, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। अठ्ठे पहर जो छेड़ां रिहा छेड़, एका बन्धन पाईआ। आपे देवे आपणा गेड़, उलटा गेड़ा मुख भवाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ के जो बैठा थल्ले देवे रेढ़, मन हँकार विकार दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन ममता दए चुकाईआ। मन ममता वासना जग, जूठ झूठ प्रनाया। दिवस रैण लग्गी अग्ग, तत्व तत ना कोए समझाया। चारों कुण्ट रिहा भज्ज, दहि दिशा फेरा पाया। घर वड़ ना कीता आपणा हज्ज, काअबा नज़र कोए ना आया। ना कोई शर्म हया ना दिसे लज्ज, बेलज्जा हो हो उठ धाया। बिन सतिगुर पूरे पर्दा देवे ना कोए कज्ज, नाम दुशाला उप्पर पाया। बण राजा घर बैठा सज, आपणा हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन दुबिधा दए गंवाया। मन दुबिधा जाए नट्ठ, अंदर राम नाम वसाईआ। मन दुबिधा तुट्टे हठ, गुर शब्द खण्डा इक्क चमकाईआ। मन दुबिधा जाए ढट्ठ, सतिगुर पूरा धक्का लाईआ। मन रोवे आपणे इन्दरयां दा करे इक्टठ, चारों कुण्ट वेखे नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कवण गुरु जिस लाया फट्ट, मेरा दुःख मेरे कोलों झल्लया ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन दुबिधा दए धवाईआ। मन दरुबधा देवे धो, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। अमृत आत्म साचा चो, निर्मल नीर प्यांअदा। दरस दिखाए अग्गे हो, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। नाता तोड़े जूठा मोह, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन मन दी दुबिधा मैल धवाइंदा। मन दुबिधा जाए धुप, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। दरस दिखाए जो अंदर बैठा छुप, आप आपणा रूप वटाईआ। सदा बैठा रहे चुप, सुन्न समाध समाईआ। मन बुक्कदा रहे अन्धेरे घुप्प, आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा दर, तिस मन दुबिधा रहे ना राईआ। मन दुबिधा रहे ना राया, घर काया कंचन गढ़ अपार। बुद्धि बुध बिबेक वखाया, मति मतवाली दए आधार। साचे धन्दे आपे लाया, सुरत सुआणी ल्ए उठाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, एथे ओथे ओथे एथे रिहा सुरत संभाल।

★ २३ सावण २०१८ बिक्रमी गिरधारा सिंघ दे गृह बलोवाली ★

सो पुरख निरँजण साची कार, निरगुण निरवैर आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण बेऐब परवरदिगार, साची धारा आप चलाइंदा। एकँकारा अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणा खेल खिलाइंदा। आदि निरँजण रूप रंग रेख ते वसे बाहर, जोती जाता जोती नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता आप आपणा कर पसार, आपणा बल आप धराइंदा। श्री भगवान जोद्धा सूरबीर बली बलकार, आपणा खेल आप खिलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर पसार, आपणा घाड़न घड़त आप घड़ाइंदा। आपणी इच्छया वेख विचार, भिच्छया आपणी झोली पाइंदा। करे खेल करनेहार, करता पुरख आपणी सेवा आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। सो पुरख निरँजण भेव न्यारा, इक्क इकल्ला आप खुल्हाईआ। हरि पुरख निरँजण शाह पातशाह बण सच्ची सरकारा, शाह सुल्ताना साचा हुक्म जणाईआ। एकँकारा हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, हुक्म हाकम आप हो जाईआ। आदि निरँजण आपे पावे आपणी सारा, आपणा पर्दा आप उठाईआ। अबिनाशी करता करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर आपणा रंग रंगाईआ। श्री भगवान आप उपाए आपणा सच निशान, सच निशाना आपणा रूप वटाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, करे खेल वड मेहरवान, साची रचना आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निराकार आपणी कल आप धराईआ। सो पुरख निरँजण आपणी कल धार, अकल कला खेल खिलाईआ। हरि पुरख निरँजण बणे सेवादार, साची सेवा आप कमाईआ। एकँकारा चुक्के आपणा भार, हरि जगदीस वड वड्याईआ। आदि निरँजण आपणा दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती डगमगाईआ। अबिनाशी करता वेखे विगसे वेखणहार, रूप अनूप आप धराईआ। श्री भगवान देवे दान गुण निधान, आपणी झोली आप भराईआ। पारब्रह्म प्रभ कर परवान, दर दरवेश बणे दरबान, अलख अलखना आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी महिमा आपणे विच टिकाईआ। सो पुरख निरँजण अलखना अलख, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो प्रतक्ख, रूप अनूप आप वटाइंदा। एकँकारा करे खेल पुरख समरथ, समरथ

आपणी धार चलाइंदा। आदि निरँजण आपणा नूर आपे रक्ख, नूर नुराना वेख वखाइंदा। श्री भगवान आपणी करनी आपे दस्स, साची करनी किरत कमाइंदा। अबिनाशी करता आप आपणा करे वस, दूसर अवर ना कोए जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आपनड़ा आपे कर कर वस, आपणा हुक्म आप मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। सो पुरख निरँजण हुक्मी धार, आपणी आप प्रगटाईआ। एकँकारा करया ख़बरदार, हरि पुरख निरँजण इक्क जणाईआ। अबिनाशी करता लए उठाल, आदि निरँजण जोत नूर रुशनाईआ। पारब्रह्म प्रभ करे खेल दीन दयाल, श्री भगवान सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। आपणी इच्छया आपे धर, हरि साचा खेल खिलाइंदा। सो पुरख निरँजण एका नर, हरि पुरख निरँजण नारी रूप अख्वाइंदा। एकँकारा सेजा चढ़, आदि निरँजण संग निभाइंदा। अबिनाशी करता घाड़न घड़, श्री भगवान वेख वखाइंदा। पारब्रह्म आपणी किरपा आपे कर, कृपानिध भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणी इच्छया आपे पूर कराइंदा। आपणी इच्छया करे पूर, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण शाह पातशाह हाज़र हज़ूर, हरि हरि आपणा खेल खिलाईआ। एकँकारा भेव चुकाए आदि निरँजण जोती नूर, नूर नूर विच धराईआ। अबिनाशी करता आपे वेखे आपा नेड़े दूर, श्री भगवान दूसर पन्ध ना कोए जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ एका हुक्म मन्ने ज़रूर, निउँ निउँ एका सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया दए समझाईआ। आपणी इच्छया हरि समझाइंदा, आप आपणी किरपा धार। आपणी सेवा आप लगाइंदा, पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार। आपणा हुक्म आप वरताइंदा, शाह पातशाह बण सच्ची सरकार। साचा घाड़न आप घड़ाइंदा, बाढी बण हरि निरँकार। आपणी रचना आप रचाइंदा, आपे रच रच वेखणहार। आपणा मन्दिर आप उपाइंदा, नाउँ रखाए सचखण्ड दुआर। छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा, ना कोई दीसे चार दीवार। दीवा बाती ना कोए जगाइंदा, अठ्ठे पहर नूर उज्यार। दर दरवाज़ा ना कोए वखाइंदा, ना कोई जाणे बन्द किवाड़। दिशा वण्ड ना कोए वंडाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। सचखण्ड दुआरा घाड़न घड़, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। निरगुण निरवैर अंदर वड़, हरि पुरख निरँजण आपणा आसण लाईआ। अजूनी रहत आपणे पौड़े आपे चढ़, एकँकारा एका थान सुहाईआ। निरगुण जोत प्रकाश कर, आदि निरँजण डगमगाईआ। अबिनाशी करता आपणा वास धर, वास निवासा आप अख्वाईआ। श्री भगवान आपणी रास कर, साची रचना आप रचाईआ। पारब्रह्म प्रभ दासी दास कर, सेवक सेवा इक्क

वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा लए उपाईआ। सचखण्ड दुआर उपन्नया, उपाए पुरख अकाल। ना कोई सूरज चन्नया, करे खेल दीन दयाल। ना घड़या ना भन्नया, आप उपाई आपणी सच्ची धर्मसाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि गोपाल। सचखण्ड दुआरा खोल्या, कर किरपा गुण निधान। निरगुण अंदर वड़ वड़ बोलया, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। आपणा पर्दा आपे खोल्या, करे खेल श्री भगवान। आपणा बणे आप विचोलया, लेखा जाणे धुर दीबाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि महान। हरि का खेल आदि महाना, आदि आदी आप कराईआ। रूप रंग ना कोए वखाना, बेअन्त वडी वड्याईआ। साचा मन्दिर इक्क सुहाना, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। एका रूप धर श्री भगवाना, रूप अनूप आप उपाईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, एका गुण जणाईआ। एका भूप बण राजाना, शाह पातशाह इक्क अख्वाईआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, सोभावन्त इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआर हरि वड्यांअदा, आप आपणी जोत धरा। आपणी दया आप कमाइंदा, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह। आपणी बणत आप बणाइंदा, आपे बणे सच मलाह। आपणा बेड़ा आप चलाइंदा, आप आपणे कंध उठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर दए सुहा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। आपे नारी आपे कन्त, हरि पुरख निरँजण सेज हंढाईआ। एकँकारा आपे चाढ़े आपणा रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। आदि निरँजण महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। श्री भगवान आपे जाणे आपणी बणत, अबिनाशी करता घाड़न लए घड़ाईआ। पारब्रह्म लेखा जाणे आदि अन्त, अन्त आदि आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा दए सुहाईआ। सचखण्ड दुआर सुहाइंदा, सो पुरख निरँजण वड मेहरवान। हरि पुरख निरँजण वेख वखाइंदा, किरपा निध गुण निधान। एकँकारा भेव चुकाइंदा, जोद्धा सूरबीर बलवान। आदि निरँजण वेस वटाइंदा, एका नूर नूर महान। अबिनाशी करता सोभा पाइंदा, दर मन्दिर इक्क मकान। श्री भगवान सच निशान वखाइंदा, इक्क निशाना नौजवान। पारब्रह्म प्रभ सेव कमाइंदा, वेखणहारा मार ध्यान। आपणी दिशा आप फोलाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा सुल्तान। शाह पातशाह हरि सुल्ताना, सचखण्ड आपणा आसण लाईआ। आपे हुक्म आप फ़रमाना, आपे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपे भूपत भूप राज राजाना, आपे रईयत वेस वटाईआ। आपे दर दरवेश बणे दरबाना, आपे आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे

आपे वड़, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल हरि करतार, सचखण्ड दुआर कराइंदा। आपणी इच्छया आप विचार, आपणा मेल आप मिलाइंदा। आपे पुरख आपे नार, आपे साची सेज हंढाइंदा। आपे जाणे आपणा मंगलाचार, गीत गोबिन्द आप अल्ह़ाइंदा। आपे जननी जन बणे अगम्म अपार, दाई दाया आपणा रूप वटाइंदा। आपे सगन मनाए आपणी वार, सगला संग आप निभाइंदा। सौहरे पेईए आपे फिरे हो ख़बरदार, आपणा भेव आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे बैठा चढ़, उच्च महल्ला इक्क अटल्ला, आपणा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा उच्च महल्ला, हरि साचा सच सुहाईआ। वसणहारा इक्क इकल्ला, घर साचे सोभा पाईआ। आप फड़ाए आपणा पल्ला, आपणी नारी आप प्रनाईआ। आपणा आसण आपे मल्ला, आपणा सिँघासण दए सुहाईआ। आपणी जोती आपे रल्ला, जोती जोत करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे वड़, आपणा बन्धन आपे पाईआ। निरगुण नार निरगुण भतार, निरगुण कन्त कन्तूहल अख्वाइंदा। निरगुण करता पुरख करतार, निरगुण करनी किरत कमाइंदा। निरगुण मन्दिर निरगुण दुआर, निरगुण वसे वसणहार, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। निरगुण दीवा बाती कर उज्यार, निरगुण कमलापाती वेखे ठांडा दरबार, सचखण्ड दुआरा आप वड्यांअदा। निरगुण खोल्ह़े ताकी बन्द किवाड़, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे चढ़, आपणा खेल आप खिलाइंदा। साचा खेल करे गोबिन्द, बेऐब परवरदिगारा। वड दाता गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर अगम्म अपारा। आपे जाणे आपणी बिन्द, आपे करे सच पसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सचखण्ड सच्चे दरबारा। सचखण्ड दरबारा सोहया, सोभावन्त श्री भगवान। आपणे जेहा आपे होया, दूसर अवर ना कोए निशान। आपणा बीज आपे बोया, आपे होए हरि प्रधान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल वड मेहरवान। वड मेहरवान खेल खिलाया, आपणी गति मित आप जणाइंदा। आपणा मेला आप मिलाया, नारी कन्त आप अख्वाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण धराया, निरगुण वेखे निरगुण विचारे, निरगुण दिस किसे ना आइंदा। करे खेल अगम्म अपार, पारब्रह्म सच्ची सरकार, शाह पातशाह आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचा हरि, आपणा मेला आप कराइंदा। मेल मिलावा आपे कर, सचखण्ड ख़ुशी मनाईआ। निरगुण अंदर निरगुण वड़, निरगुण निरगुण रूप वटाईआ। निरगुण पल्लू निरगुण फड़, निरगुण वेख वखाईआ। निरगुण अग्गे निरगुण धर, निरगुण निरगुण दए वड्याईआ। करता पुरख आपणी करनी कर, आपणी किरत दए समझाईआ। सचखण्ड दुआरे मिल्या वर, नारी कन्त आप रघुराईआ। आपणी इच्छया

भण्डारा भर, आपणी गोदी लए सुहाईआ। जननी जन आपे बण, धन्न धन्न जणेंदी होए माईआ। दाई दाया सेव कर, साची सेव आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे एका हरि, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। आपणी इच्छया पुरख नारा, नर नरायण आप प्रगटाइंदा। सचखण्ड दुआरे कर विहारा, भस्मड़ आपणा भोग आप भुगाइंदा। अंदर बाहर हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपणी वस्त जाणे हरि थारा, सच वस्त आप जणाइंदा। आपणा धाम कर त्यारा, सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा। सचखण्ड वसे निरँकार, आपणा आसण लाईआ। आपणा सुत जणे दुलार, पूत सपूता लए उपाईआ। दूजा घर करे त्यार, घर घर विच लए बणाईआ। नाउँ रखाए थिर दरबार, थिर घर साचा आप समझाईआ। बाल अञ्याणा दए बहाल, सुत शब्द दए वड्याईआ। आपे जाणे लेखा शाह कंगाल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। निरगुण निरवैर आपणा दरस दिखाल, सांत सांत सति सति वरताईआ। सदा सुहेला करे प्रितपाल, प्रितपालक बेपरवाहीआ। थिर घर बणाए सच्ची धर्मसाल, साचे मन्दिर दए बिठाईआ। आपणा चरन कँवल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर घर विच आप प्रगटाईआ। सच सिँघासण आसण ला, सचखण्ड दुआर सुहाइंदा। थिर घर किवाड़ा दए खुल्हा, आपणी दया कमाइंदा। चरन कँवल दए टिका, चरन सरन इक्क रखाइंदा। सुत दुलारे दए समझा, एका वार एका गुण वखाइंदा। तेरा मेरा एका ना, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। आदि जुगादि पकड़ां तेरी बांह, सद तेरा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर देवे साचा वर, सुत शब्द आप समझाइंदा। सुत शब्द बाल निधाना, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं शाह पातशाह सच्चा सुल्ताना, बेअन्त तेरी वड्याईआ। हउँ दरवेश दर निमाणा, मंगां इक्क सरनाईआ। आदि जुगादि सद रक्खीं आपणे अंदर भाणा, तेरे भाणे वड वड्याईआ। चरन कँवल देणा माणा, तेरी सरन मेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा होणा सदा सहाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, बाली बुध समझाइंदा। तेरा घाड़न ल्या घड़ा, घाड़त आपणे हथ्थ वखाइंदा। तेरा रूप ल्या धरा, आपणा रूप प्रगटाइंदा। तेरा मन्दिर दिता वसा, आपणी सेव कमाइंदा। थिर घर साचे दिता बहा, अडोल अडुल जणाइंदा। एका हुक्म रिहा सुणा, सच संदेसा झोली पाइंदा। एका पिता एका मां, एका बाल गोद बहाइंदा। एका रक्खे आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे देवे वर, साचे सुत आप प्रगटाइंदा। शब्द प्रगटाया हरि हरि धार, जननी जन खेल खिलाया।

नूरो नूर कर उज्यार, नूर नुराना दीप टिकाया। वेखे वेखे वेखणहार, वेखणहारा दिस ना आया। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मी करे प्यार, प्यार आपणा आप वधाया। आदि जुगादि पावे सार, भुल कदे ना जाया। बाले बाले होणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी एह समझाया। तेरा वरते सच वरतार, तेरी महिमा आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे दिता एका वर, एका बाला सेवा लाया। साची सेवा हरि जणा, एका हुक्म सुणाइंदा। थिर घर देवे साचा थाँ, थान थनंतर आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआर दए वखा, एका नैण खुल्लाइंदा। एका मन्दिर दए वखा, एका आसण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द दिता वर, साची सेवा आप रखाइंदा। साची सेवा हरि निरंकारा, आपणी आप जणाईआ। थिर घर वसदा रहे दुआरा, पुरख अबिनाशी आप वसाईआ। तेरा चले सच वरतारा, बंस सरबंस वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा आधारा, लक्ख चुरासी तेरी रचन रचाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड कर पसारा, लोआं पुरीआं तेरा बन्धन पाईआ। तेरा नूर रवि ससि सतारा, किरन किरन किरन नाल मिलाईआ। दो जहान तेरा अखाड़ा, पारब्रह्म प्रभ आप लगाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ा सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, थिर घर साचे आप बहाईआ। शब्द सुणया हरि फ़रमान, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। हउँ बालक बाली बाल अञ्याण, दर एका मंग मंगाया। तेरी सेवा करां दो जहान, लोआं पुरीआं तेरा चक्कर चलाया। लक्ख चुरासी देवां दान, विष्न ब्रह्मा शिव झोली भराया। खेलां खेल खेल महान, नूरो नूर नूर प्रगटाया। तूं भुल ना जाणा गुण निधान, हउँ भुल अभुल तेरे अग्गे झोली डाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची मंग मंगाया। मंगी मंग सुत दुलार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। किरपा करे आप निरँकार, एका गुण दए समझाईआ। तेरा मेरा मेला रहे विच संसार, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। लक्ख चुरासी जोत उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। तेरा हुक्म शब्द धुन्कार, नाद अनादी दए वजाईआ। कोटन कोटि रूप अनूप कर त्यार, साचा घाड़न लए घड़ाईआ। घाड़त घड़े बण ठठयार, आपणी सेवा आप कमाईआ। जुग चौकड़ी करे पार, लेखा सभ दा दए मुकाईआ। साचे सुत रहिणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी तेरा होए सहाईआ। वेले अन्त करे प्यार, आप आपणी गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर बैठा रिहा समझाईआ। सुत दुलारा सीस झुका, दोए जोड़ करे निमस्कार। पुरख अबिनाशी तूं बेपरवाह, वड दाता बेऐब परवरदिगार। मैं मन्नां तेरी सच सलाह, भुल ना जावां विच संसार। कवण वेला बणें मलाह, मेरा बेड़ा देवें तार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मंगे मंग

बण भिखार। कवण वेला आएँ मात, शब्दी जोत हरि मिलाईआ। कवण वेला देवें दात, कँवल नैण मेरे माहीआ। कवण वेला विछोड़ा कट्टें अन्धेरी रात, आप आपणा बन्धन पाईआ। कवण वेला बन्नें नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। कवण वेला दरस दिखाएँ पुरख समराथ, सचखण्ड निवासी आपणा रूप वटाईआ। कवण वेला मेरी पूरी करें आस, आस निरास ना कोए जणाईआ। कवण वेला करें प्रकाश, दो जहान होए रुशनाईआ। सोहे वेला जद वसें पास, आपणा संग आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाईआ। सो पुरख निरँजण समझाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। हरि पुरख निरँजण भेव चुकाइंदा, आदि निरँजण हो उज्यार। अबिनाशी करता पर्दा लांहयदा, श्री भगवान बैठ ठांडे दरबार। पारब्रह्म प्रभ वेख वखाइंदा, आदि जुगादी वेखणहार। सचखण्ड आपणी खेल खिलाइंदा, तख्त निवासी साचे तख्त बैठ सच्चा शाह कार। थिर घर तेरा रंग रंगाइंदा, साचे शब्द सुत दुलार। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग तेरी सेव लगाइंदा, जुग जुग खेल करे निरँकार। लोकमात वेख वखाइंदा, पुरख बिधाता हो त्यार। तेरी रती रत आप सुहाइंदा, लक्ख चुरासी खिड़े गुलज़ार। पत्त डाल्ही फोल फोलाइंदा, लेखा जाणे आपणी वार। गुर अवतार तेरा रूप वटाइंदा, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्ड वंडाइंदा, नव नौ चार खेल न्यार। अन्तिम कोए रहिण ना पाइंदा, जो घड़या सो देवे भन्न, करे खेल सच्चा ठठयार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए आधार। साचे सुत कर ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पन्ध मुकाए आण, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। मातलोक बणाए सचखण्ड सच्चा मकान, आपणा घाड़न आप घड़ाईआ। घर विच घर देवे दान, थिर दरबारा तेरा आसण सुहाईआ। दिस ना आए विच जहान, नेत्र वेख ना सके कोए राईआ। साचे मन्दिर वसे भगवान, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। आपणा झुलाए सच निशान, सति सतिवादी आप उठाईआ। तेरी इच्छया पूरी करे आण, मेला मेले सहिज सुभाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सर्ब कुरलान, नेत्र रो रो देण दुहाईआ। गुर अवतार मंगण दान, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। तेरा मन्दिर सोहे मकान, दर दरवाज़ा सोभा पाईआ। तेरे सिर हथ्थ रक्खे भगवान, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। तेरा रूप बणाए सच्चा काहन, लक्ख चुरासी गोपी लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर देवे एका वर, शब्दी शब्द सुत समझाईआ। शब्द सुत सुण साचे लाल, हरि साचा सच जणाइंदा। कोटन कोटि बीतण काल, काल ग्रास सभ नूं खाइंदा। करे खेल रूप महाकाल, महाकाल आपणी धार चलाइंदा। तेरा कदे ना आए ज़वाल, तेरा रैहबर हरि अख्वाइंदा। दो जहानां रिहा सुरत संभाल, जुग जुग सेव कमाइंदा। तेरे माणक मोती तेरे विच्चों लए उछाल,

भगत भगवन्त आप उठाइंदा। तेरा ख़जाना देवे सच्चा धन माल, साचे सन्तां झोली नाम भराइंदा। तेरा फुल फुलवाड़ी वेखे पत्त डाल्, गुरमुख बूटे आप लगाइंदा। गुरसिख साचे आपे भाल, शब्दी तेरा मेल मिलाइंदा। तेरा घर सच्ची धर्मसाल, धुरदरगाही आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, वर दाता झोली पाइंदा। वर दीआ दीनां नाथ, दीनन दया कमाईआ। नव नौ चार पूजा पाठ, तेरा तेरी करे पढ़ाईआ। तेरा खेल त्रिलोकी नाथ, रूप अनूप आप समझाईआ। चौदां लोक तेरा घाट, घट घट वासी आप बणाईआ। आपे जाणे तेरी वाट, तेरा पन्ध ना कोए मुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी अञ्जील कुरान तेरी महिमा गाए गाथ, तेरा भेव कोए ना पाईआ। तेरा पिता पुरख समराथ, समरथ पुरख तेरी माईआ। तेरी पूरी करे आस, मेटे अन्त जुदाईआ। आपणे चरन दए धरवास, चरन दुआरा इक्क वखाईआ। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन मंडल पन्ध मुकाईआ। तेरे मन्दिर पावे रास, गोपी काहन आप नचाईआ। तेरा नूर करे प्रकाश, एका नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा समझाईआ। सुत दुलारे नव नौ चार अन्त कराउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। लोकमात वेस वटाउणा, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। सचखण्ड दुआर आप बणाउणा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाइंदा। घर विच घर आप टिकाउणा, थिर घर तेरा मन्दिर सुहाइंदा। आपणा पल्लू आप फड़ाउणा, साचा पल्लू अग्गे डांहयदा। आपणा हुक्म आप सुणाउणा, तेरा नाद वजाइंदा। ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं आप उठाउणा, तेरा हुक्म वरताइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव हलाउणा, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। लक्ख चुरासी पर्दा लाउहणा, माया पर्दा ना कोए रखाइंदा। ढोल मृदंगा इक्क वजाउणा, सच सरंगा हथ्थ उठाइंदा। नव खण्डां फेरा पाउणा, जेरज अंडां फोल फुलाइंदा। धरनी धरत धवल डेरा ढाउणा, ज़िमीं अस्मानां पार कराइंदा। रवि ससि मुख शरमाउणा, जोती जोत ना कोए जगाइंदा। अन्तिम लेखा आप मुकाउणा, लिख लिख लेखा सर्ब वखाइंदा। लक्ख चुरासी नाता तोड़ तुड़ाउणा, बन्धन अवर ना कोए पाइंदा। राए धर्म पन्ध मुकाउणा, चित्रगुप्त चरनां हेठ रखाइंदा। लाड़ी मौत नैण शरमाउणा, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। सुत दुलारे तेरा हुक्म वरताउणा, दो जहानां डंक वजाइंदा। आपणा कीता आपे ढाउणा, आपणी करनी आपणा खेल खिलाइंदा। तेरा मेला फेर मिलाउणा, मेल मिलावा आप समझाइंदा। सचखण्ड दुआरा थिर दरबारा जोत प्रकाश इक्क कराउणा, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निरगुण देवे निरगुण वर, निरगुण दाता निरगुण भिखारी, निरगुण राजा निरगुण सिक्दारी, निरगुण अग्गे निरगुण सीस झुकाइंदा। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी एका एकंकारया, जुगादि जुग जग आपणा खेल खिलाइंदा।

★ २४ सावण २०१८ बिक्रमी बंता सिँघ दे गृह पंज गराई ★

आदि अन्त हरि हरि वेला, हरि आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा जाणे गुर गुर चेला, गुर चेला रूप धराइंदा। जुगा जुगन्तर सज्जण सुहेला, शाह पातशाह संग निभाइंदा। वसणहारा धाम नवेला, धाम अगम्मड़ा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा वेला आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा वेला हथ्थ करतार, आपे आप रखाईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार, शाह सुल्ताना वेख वखाईआ। हरि पुरख निरँजण करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर बेअन्त वड वड्याईआ। एकँकारा आपे जाणे आपणी धार, जुगा जुगन्त वेस वटाईआ। आदि निरँजण निरगुण जोत नूर उज्यार, नूर नूराना डगमगाईआ। अबिनाशी करता करता पुरख करनेहार, आपणी करनी आप कमाईआ। श्री भगवान लेखा जाणे दो जहान, गुण निधान भेव अभेद आपणे विच छुपाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, आप झुलाए आपणा सच निशान, सति सतिवादी सति दुआरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणी खेल खिलाईआ। आदि अन्त खेल अवल्ला, पारब्रह्म प्रभ आप कराइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा धाम उच्च अटल्ला, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला आपणा नूर नूर नूर डगमगाइंदा। श्री भगवान हरि मेहरवान, आपे होए सच अमाम, अमाम अमामा शाह सुल्ताना मुकामे हक सोभा पाइंदा। आदि निरँजण जोत नूर महाना, सच महिराबे इक्क निशाना, बेऐब परवरदिगार आपणा खेल खिलाइंदा। एकँकारा करे खेल न्यारा, खेलणहारा दिस ना आइंदा। हरि पुरख निरँजण आपे जाणे आपणा सति पसारा, ना कोए दूसर मीत मुरारा, दूसर संग ना कोए रखाइंदा। सो पुरख निरँजण शाह पातशाह शहिनशाह सच्चा सिक्दारा, भूपत भूप राज राजान हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, हुक्म हाकम आप अख्वाइंदा। आदि अन्त खेल न्यारा, करे कराए करनेहारा, करनी आपणी किरत कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आदि अन्त श्री भगवन्त, लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणी धार चलाइंदा। आदि अन्त श्री भगवान, आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड दुआरे हो प्रधान, सचखण्ड निवासी सोभा पाईआ। शब्द अगम्मी इक्क निशान, वड मेहरवान आप झुलाईआ। दाता दानी देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताईआ। गुण निधाना बण दरबाना दर दरवेश मंगे आण, नर नरेश आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणा पर्दा आपणे विच छुपाईआ। आदि अन्त श्री भगवन्त, भेव अभेद छुपाइंदा। जुग जुग महिमा गणत अगणत, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। निरगुण निरगुण बणाए बणत, निरगुण निरगुण वेस वटाइंदा। निरगुण नारी निरगुण कन्त, निरगुण साची सेज सुहाइंदा। निरगुण

नाद शब्द निरगुण मंत, निरगुण आदि निरगुण अन्त, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणी धारा आप चलाइंदा। निरगुण धार हरि निरँकार, आदि जुगादि चलाईआ। आपणी इच्छया भर भण्डार, आपे हरि वरताईआ। आपे दाता बण भिखार, दर दरवेश अलख जगाईआ। आपे हुक्मी हुक्म वरते वरतार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आपे वेखे विगसे करे विचार, वेखणहारा दिस ना आईआ। पारब्रह्म बेअन्त बेअन्त बेअन्त करे कराए आपणी कार, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आदि अन्त आपणा भेव आप खुल्हाईआ। निरगुण निरगुण हो उज्यारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। घर विच घर कर त्यारा, आप बहाया सुत दुलारा, शब्दी नाउँ रखाईआ। आदि अन्त एका हरि, आपणी धार आप चलाईआ। आदि अन्त आदि निरँजण, आदि आदि अख्वाईआ। आपे होए साचा सज्जण, सगला संग आप निभाईआ। आपे धूढ़ आपे मजन, आपे सरोवर सर सुहाईआ। आपे होए पर्दा कज्जण, पति आपणी आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे घड़े आपे भज्जण, घड़न भन्नणहार भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त इक्क शहिनशाहीआ। आदि अन्त इक्क शहिनशाह सुल्ताना, हरि साचा सच अख्वाइंदा। साचे तख्त बहे श्री भगवाना, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। एका हुक्म धुर फ़रमाना, धुर दरबारी आप सुणाइंदा। सति सतिवादी इक्क निशाना, सति दुआरे आप झुलाइंदा। दर दरवेश बण दरबाना, पारब्रह्म आपणा रूप वटाइंदा। बण भिखारी मंगे दाना, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। लेखा जाणे मर्द मरदाना, आप आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त एका हरि, आपणी कल आप धराइंदा। आदि अन्त हरि कल, आपणी आप धराईआ। जुगा जुगन्तर वल छल, जुग करता आप कराईआ। आपणी जोती आपे बल, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, उच्च महल्ले डेरा लाईआ। अमृत सरोवर रक्खे जल, आपणी धारा आप उपाईआ। आपे जाणे आपणा फल, गुण अवगुण ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त श्री भगवन्त, लेखा जाणे नारी कन्त, कागद कलम ना लिखणहारा, पढ़ पढ़ कोए ना सके सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणा भेव आप खुल्हाया। सो पुरख निरँजण मिल्या वर, हरि पुरख निरँजण लए प्रनाईआ। एकँकारा पल्लू फड़, आदि निरँजण वेख वखाईआ। अबिनाशी करता सेजे चढ़, श्री भगवान सेज हंढाईआ। पारब्रह्म दाई दाया आपे बण, जन जननी वेख वखाईआ। सुत दुलारा आपे जण, शब्दी नाउँ धराईआ। सचखण्ड दुआरे आपे वड़, आपणा पर्दा दए उठाईआ। सच सिँघासण बैठा नर,

राज राजान इक्क अख्वाईआ। थिर घर दुआरे चरन धर, चरन चरनोदक दए वड्याईआ। सुत दुलारे देवे वर, वर दाता आप हो जाईआ। तेरी लाई आपे जड़, माली बणया बेपरवाहीआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, अजूनी रहत मूर्त अकाल, पुरख अकाला दीन दयाला स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। आदि जुगादि जुग तेरा लग्गे फल, तेरा बूटा इक्क लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपणा पर्दा आप उठाईआ। हरि पर्दा आप उठाइंदा, निष्अक्खर आपे बोल। सुत शब्दी आप सुणाइंदा, अगम्म अगम्मड़ा तोले तोल। आदि आपणी धार उपाइंदा, अन्त वसे तेरे कोल। मदि आपणी खेल खिलाइंदा, लक्ख चुरासी जाए मौल। जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा, कीता करे पूरा कौल। जुग जुग आपणा नाम मृदंग ढोल वजाइंदा, इक्क सुणाए साचा बोल। सच सितार आपणे हथ्थ रखाइंदा, पुरख अबिनाशी बैठ अडोल। ब्रह्मण्ड खण्ड एका नाच नचाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका तोले साचा तोल। साचा तोला हरि जू हरि हरि, आदि पुरख आपणा नाउँ धराईआ। सुत दुलारे दिता वर वर, शब्दी शब्द शब्द वड्याईआ। तेरा भण्डारा वेखे भर भर, अतोट अतुट रखाईआ। आदि जुगादी खेल कर कर, जुग जुग आपणा बन्धन पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ फड़, तेरी साची सेव लगाईआ। त्रैगुण माया आपे धर धर, पंचम नाता जोड़ जुड़ाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डे घड़ घड़, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। सरगुण अंदर आपे वड़ वड़, आपणा आसण लए बणाईआ। मन मति बुध देवे वर वर, निरगुण आपणी वण्ड वंडाईआ। सच महल्ले आपे चढ़ चढ़, घर घर विच सोभा पाईआ। अमृत सरोवर आपणा आपे भर भर, घर घर विच ताल लगाईआ। आपणा नाद आपे फड़ फड़, गृह मन्दिर अंदर आप वजाईआ। आपणी वण्डा आपे कर कर, पारब्रह्म आपणा रूप वटाईआ। ईश जीव खेल कर कर, जगदीस रूप धराईआ। डूँघी भँवरी आपे खड़ खड़, टेढी बंक पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे दिता वर, शब्दी शब्द शब्द वड्याईआ। शब्द वड्याआ पारब्रह्म, आपणी किरपा धार। ना मरे ना पए जम्म, खेले खेल विच संसार। निहकर्मी करे आपणा कम्म, कागद कलम ना लिखणहार। ना कोई तत्त ना कोई तन, ना कोई करे शंगार। ना कोई बुद्धी ना कोई मन, ना कोई मति दए आधार। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, ना कोई मन्दिर गुरदुआर। ना कोई जननी ना कोई जन, ना कोई देवणहार सहार। ना कोई माल ना कोई धन, ना कोई वणज ना वपार। ना कोई राग ना कोई कन्न, ना कोई होए सुणनेहार। करे खेल श्री भगवन, आप आपणी किरपा धार। विष्न ब्रह्मा शिव बेड़ा देवे बन्न, आपे आपणे सागर लेवे तार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, आदि पुरख एका एका वार। एका वार दीआ वर, आदि पुरख वड्याईआ। शब्द भण्डारा दिता भर, अतोट अतुट रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बैठे रहे डर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पारब्रह्म फड़या लड़, छुट्ट कदे ना जाईआ। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता लक्ख चुरासी घाड़न रिहा घड़, घड़नहार इक्क अख्वाईआ। घट घट अंदर बैठा वड़, औंदा जांदा दिस ना आईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, जुगा जुगन्त करे पढ़ाईआ। हड्ड मास ना दिसे नाड़ी नड़, तत्व तत ना कोए रखाईआ। निरगुण रूप सरगुण कर, आपणी खेल कराईआ। सुत दुलारे मिल्या वर, शाह पातशाह हरि साचा आपे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, अन्त आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आदि उपाया शब्द धार, हरि आपणा खेल उपाया। आपे खेल सचखण्ड दुआर, आपणा आसण लाया। आप झुलाए सच निशान, सति सतिवादी हथ्थ उठाया। आपे थिर घर खोल्हे इक्क मकान, महिमा गणत गणी ना जाया। सुत दुलारे देवे दान, बाल नादाना विच बहाया। आपणी किरपा कर हो मेहरवान, मेहरवान मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा बन्धन आपे पाया। आपणा बन्धन पाए बंध, हरि वड्डा वड वड्याईआ। निरगुण बद्धा एका तन्द, तुट्ट कदे ना जाईआ। नाउँ सुणाया सुहागी छन्द, नाउँ निरँकारा आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर वसे साचा माहीआ। सुण सुत दुलारा करे पुकारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। तूं साहिब सच्चा सिरजणहारा, हउँ बाल अञ्याणा तेरे चरन ध्यान लगाया। निज घर सुणया तेरा गाणा, राग अनादी इक्क अल्हाया। सद वसां तेरे भाणा, तेरा भाणा मोहे भाया। शाह पातशाह तूं सच्चा राणा, हउँ रईयत रूप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ भुल कदे ना जाया। हउँ अभुल तेरी किरपा रंग, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। चरन धूढ़ दर मंगां मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। तेरी डोर मेरा पतंग, आदि जुगादि उडाईआ। तेरी सेज मेरा पलँघ, तेरी मेहर मेरी शहिनशाहीआ। तेरा नूर मेरा चन्द, मेरा चन्द तेरी रुशनाईआ। तेरा भाग मेरी मंग, मेरी मंग तेरा जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि अन्त मिले तेरी सरनाईआ। सुत दुलारा मंगदा, थिर घर होए निमाणा। प्रभ दर मूल ना संगदा, सिर मन्ने हरि जू भाणा। कोटन कोटि जुग काल लँघणा, थिर कोए ना रहे राजा राणा। एका दुआरा वसे तेरा सूरे सरबंग दा, सचखण्ड सच्चा टिकाणा। बिन तेरे दरस होर वस्त ना कोए मंगदा, सीस झुकाए बण निमाणा। लक्ख चुरासी खेल जेरज अंड दा, उत्भुज सेत्ज तेरा भेव छुपाना। मैं झल्लां ना विछोड़ा नार दुहागण रंड दा, कन्त सुहाग इक्क हंढाना। जोती जोत सरूप

६७३

९७४

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वेला आपणे हथ्थ रखाना। हरि देवे वस्त अपार, आपणी दया कमाईआ। सुत दुलारे रहिणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। शब्दी तेरा खेल अपर अपार, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी रचन रचाईआ। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड तेरा आधार, चारे खाणी तेरा जस गाईआ। चारे बाणी तेरा जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाईआ। चारे जुग तेरा विहार, चारे वेद ब्रह्मा मुख सालाहीआ। चारे वरन तेरा शंगार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नाल रलाईआ। जुग चौकड़ी रूप वटाए अपर अपार, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग आवे वारो वार, चार जुग चौकड़ एका बन्धन पाईआ। तेरी सेवा लाए गुर अवतार, जुग जुग आपणा नाम जपाईआ। भगतां देवे इक्क आधार, सन्तन साचा सति जणाईआ। गुरमुखां खोल्ह बन्द किवाड़, आत्म ब्रह्म ब्रह्म समझाईआ। गुरसिखां वखाए इक्क दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। शब्द सुणाए नाद जैकार, अगम्मी धुन अल्हाईआ। सरगुण खेल करे करतार, निरगुण सरगुण उठ उठ धाईआ। जगत विचोला करे सच विहार, चोला आपणा ल्ए बदलाईआ। ढोला गाए आपणी वार, वार थित ना कोए वखाईआ। तेरे मन्दिर दए सहार, थित घर साचे माण वड्याईआ। तेरे बंस पैज संवार, सरबंस होए सहाईआ। तेरा खोल्ह हट्ट बाज़ार, चौदां लोक ल्ए वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आए वारो वार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। नव नौ चार पन्ध विचार, गुण अवगुण आप समझाईआ। कलिजुग आए अन्तिम वार, करे खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत कर उज्यार, निरगुण आपणा नूर करे रुशनाईआ। पूर्ब लेखा सभ दा ल्ए विचार, अभुल भुल कदे ना जाईआ। विष्नूं विश्व ल्ए उठाल, शब्द हुलारा इक्क लगाईआ। ब्रह्मा उठ उठ सुरत संभाल, प्रभ साचा हुक्म सुणाईआ। शंकर बणे ना कोए दलाल, भाणा वरते बेपरवाहीआ। सुरपति राजा इन्द होए कंगाल, करोड़ तेतीसा मुख भवाईआ। लोकमात करे खेल आप निरँकार, निरगुण निरवैर आपणा घर सुहाईआ। सचखण्ड खोल्हे आप दुआर, थिर घर तेरा धाम बणाईआ। तेरा नाद वजाए सच्चा जैकार, चारों कुण्ट दए सुणाईआ। दहि दिशा दए हुलार, आलस निन्दरा सभ दी दए मुकाईआ। त्रैगुण माया तोड़े जगत जंजाल, हुक्मी हुक्म आप वरताईआ। पंजां तत्तां हल्ल करे सवाल, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खोज खुजाईआ। मन मति बुध करे ज़वाल, मन वासना मेट मिटाईआ। चारों कुण्ट वेखे धूंआँधार, जूठ झूठ फोल फोलाईआ। नाता तोड़े काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। लोकमात बणाए सचखण्ड सच्चा दुआर, जोती जाता बेपरवाहीआ। साचे तख्त बहे सच्ची सरकार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सत्त रंग निशान झुलाए एका वार, दो जहानां दए वखाईआ। उठे जोद्धा सूरबीर बलकार, बलधारी बेपरवाहीआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाईआ। वरभण्डी मारे मार, ब्रह्मण्डी

खोज खुजाईआ। आदि पुरख आपे जाणे आपणी आदी कार, मध्ध आपणा खेल खिलाईआ। शब्दी शब्द वरते वरतार, लिखण पढ़न विच ना आईआ। एका हुक्म देवे सच्ची सरकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। दर सद्दे तेई अवतार, एका हुक्म जणाईआ। गुर दस भगत अठारां कर प्यार, एका वार गोद बहाईआ। सभ दा पर्दा दए उतार, कलिजुग वेखे बेपरवाहीआ। वेद व्यासा कर पुकार, उच्ची कूके आपणी धार, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। साचे सुत कर ध्याना, हरि साचा सच जणाईआ। शब्दी शब्द मेरा परवाना, शब्दी शब्द तार हिलाईआ। शब्दी शब्द मेरा गाना, शब्दी शब्द सगन मनाईआ। शब्दी शब्द मेरा मकाना, शब्दी शब्द जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणा पर्दा आप उठाईआ। अन्तिम पर्दा आपणा लाउहणा, आदि पुरख समझाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाउणा, भेव किसे ना आया। गुर अवतारां बेअन्त बेअन्त बेअन्त हरि हरि गाउणा, दोए जोड़ जोड़ सीस झुकाया। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाया। जुग चौकड़ी भाण्डा भन्न वखाउणा, घड़न भन्नणहार आप अख्वाया। अन्तिम रंगे आपणा रंग, शब्दी शब्द उपाइंदा। साचे तख्त बैठ सूरा सरबंग, साचा हुक्म सुणाइंदा। करे खेल विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड वेख वखाइंदा। गोबिन्द मंगे एका मंग, प्रभ अग्गे झोली डांहयदा। निरगुण सरगुण करे जंग, दिस किसे ना आइंदा। आपे तीर आपे कमंद, आपे चिल्ला हथ्थ उठाइंदा। सुत दुलारे अन्तिम जागणा, हरि साचा सच जगाईआ। तेरे अन्तर आवे इक्क वैरागना, प्रभ अबिनाशी इक्क वैराग उपजाईआ। तेरा मिले कन्त सुहागणा, तेरे घर वज्जे वधाईआ। लक्ख चुरासी वेखे त्रैगुण लग्गी आगणा, घट घट अग्नी तत्त जलाईआ। किसे घर ना दिसे चिराग़ना, निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। कलिजुग जीव होया कागणा, कागी काग कुरलाईआ। हरि चरन धूढ़ मिले ना मजण माघना, अठसठ तीर्थ फेरा पाईआ। दुरमति मैल ना धोवे कोई दाग़ना, चार कुण्ट चार वरन अठारां बरन मुख शरमाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों किसे ना काढणा, गुर सतिगुर बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे देवे वर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। अन्तिम धार चले अकाला, दूसर कोए रहिण ना पाईआ। प्रगट होया दीन दयाला, सभ दा पर्दा रिहा चुकाईआ। जन भगतां दस्से राह सुखाला, आत्म अन्तर करे पढ़ाईआ। घर विच घर वखाए सच्ची धर्मसाला, काया मन्दिर वेख वखाईआ। तन पाए अगम्मी माला, अजपा जाप कराईआ। राए धर्म ना मंगे हाला, जिस जन आपणी सरन लगाईआ। जीआ दान देवे दातारा, आपणी दया कमाईआ। एका नाम सति भण्डारा, चार वरन वरताईआ। एका मन्दिर गुरदुआरा, हरि चरन सच्ची सरनाईआ। एका अमृत ठंडा ठारा, आत्म सरोवर दए वखाईआ।

एका सज्जण मीत मुरारा, हरि सतिगुर दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप उपाईआ। साचा मार्ग हरि करतारा, आदि जुगादि लगाइंदा। जुग जुग चलाए आपणी धारा, भेव कोए ना पाइंदा। कलिजुग उतरे पार किनारा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। सतिजुग लाए विच संसारा, धरत धवल गोद सुहाइंदा। एका देवे सच आधारा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। एका ब्रह्म करे पसारा, हँ ब्रह्म सर्ब दृढ़ाइंदा। एका कर्म करे करतारा, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। एका वरन बणे संसारा, चार वरन पन्ध मुकाइंदा। आदि अन्त भाणा समरथ, हरि आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी महिमा गाए अकथना अकथ, कथनी कथ ना कोए वखाइंदा। निरगुण सरगुण चलाए रथ, रथ रथवाही वेस वटाइंदा। गुर अवतारां देवे वथ, नाम वस्त आप वरताइंदा। सति सन्तोखी धीरज जत, ब्रह्म मति आप दृढ़ाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत, सांतक सति सति कराइंदा। चरन कँवल बंधाए नत्त, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। नाम बीजे साचे वत, काया खेत्र हल चलाइंदा। फुल फुलवाड़ी वेखे पत्त, पत्त डाल्ही आप महिकाइंदा। फुल तोड़े कमलापति, बण मालण सेव कमाइंदा। दो जहानां जुगा जुगन्तर रिहा नस्स, पान्धी आपणा पन्ध मुकाइंदा। गुरमुख विरले हिरदे अंदर जाए वस, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। कोटन कोटि करे प्रकाश रवि ससि, किरन किरन जोत जगाइंदा। अमृत आत्म प्याए रस, निझर झिरना आप झिराइंदा। सति सतिवादी मार्ग दस्स, साचे मार्ग आपे लाइंदा। जुगा जुगां दी पूरी करे आस, जन्म जन्म दी प्यास मिटाइंदा। लेखे लाए पवण स्वास, स्वास स्वासां आप समाइंदा। हरिजन होए ना कदे निरास, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन मंडल चरनां हेठ दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। हरिजन जगाया कृपानिध, किरपा करी आप कृपाल। आपणे मिलण दी आप बणाई बिध, प्रगट हो दीन दयाल। पूर्ब जन्म दा कारज कीता सिद्ध, माणस जन्म होए रखवाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे ल्ए संभाल। हरिजन सदा संभालदा, संभालणहारा एको एक। नाता तोड़े शाह कंगाल दा, हरिजन साचे बख्शे चरन टेक। साचा मन्दिर आप विखाल दा, त्रैगुण माया ना लाए सेक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप होए लिखणहारा लेख। एका हरि इक्क दातारा, आदि जुगादि समाया। एका गुर इक्क अवतारा, एका जुग जुग वेस वटाया। एका गुरमुख गुरु प्यारा, एका गुरसिख दए आधारा, घर घर विच दए जणाया। बजर कपाटी लाए पाड़ा, आत्म ताकी पर्दा लाहया। एका जोत करे उज्यारा, नूरो नूर नूर दरसाया। एका आत्म सेजा करे प्यारा, सुरती शब्द मेल मिलाया। एका नाउँ एका मंत दए सहारा, एका आपणी गोद बहाया। एका शब्द इक्क

जैकारा, एका एका वार सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त एका हरि, हरि जू हरि मन्दिर बैठा आसण लाया। हरि मन्दिर हरि वसया, पारब्रह्म करतार। आपणा करे आप प्रकाशया, दूसर अवर ना कोए उज्यार। आपे जाणे आपणा भोग बलासया, आपे पुरख पुरखोतम आपे नार। आपे सेवक सेवा करे दासी दासया, आपे शाह भूप सिक्दार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, करे खेल अगम्म अपार। अगम्म अपार खेल खिलंदड़ा, अलख अगोचर बेपरवाह। सचखण्ड धाम सुहंदड़ा, निर्मल जोत नूर रुशना। साचा तख्त आप विछंदड़ा, सच सिँघासण सोभा पा। पंचम मुख ताज सीस टिकंदड़ा, हरि सच्चा शहिनशाह। सति सतिवादी सच निशान झुलंदड़ा, सच निशाना इक्क वखा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खेड़ा आप वसंदड़ा, अन्तिम आपे देवे ढाह। रवि ससि जोती जोत जगंदड़ा, किरन किरन किरन प्रगटा। विष्न ब्रह्मा शिव वंस वखंदड़ा, अन्तिम जोती जोत लए मिला। लक्ख चुरासी घाड़त घड़न आप घड़ंदड़ा, घड़या ठीकर दए भन्ना। ज़िमीं असमान खेल रचन्दड़ा, आपणी खेल आपणे विच लए समा। जल जल धार आप वहंदड़ा, सत्त सागर डेरा देवे ढाह। उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँग्घी कंदर वेख वखंदड़ा, वेखणहारा थाउँ थाँ। जुग जुग गुर अवतार सेव लगंदड़ा, सभ दी सेवा आपणी झोली लए पा। आपणा भेव ना किसे खुलंदड़ा, बेअन्त गए सर्ब सुणा। कलिजुग अन्तिम वेस वटंदड़ा, निरगुण जोती जामा आप हंढा। गोबिन्द आसा पूर करंदड़ा, माछूवाड़ा रुत्त सुहा। सत्थर यार आप हढंदड़ा, साचा सत्थर दए वखा। पुरख अकाल चार वरन इक्क वसंदड़ा, दूसर ओट ना कोए रखा। सुत दुलार हरि का शब्द उच्ची कूक कूक सुणंदड़ा, कलिजुग अन्तिम लक्ख चुरासी भुल्ली तेरे अग्गे वास्ता पा। माया ममता झूठी रुली, वेले अन्त ना कोए सहा। किसे संग ना जाए लक्खां कुली, ख़ाली हथ्थीं जांदे दिसण शहिनशाह। हरि का नाम वस्त अनमुल्ली, प्रभ देवण आया आप बेपरवाह। आदि जुगादि किसे तोल ना तुली, नानक तेरां धार गया गा। जो रो रो निमाणी दर ते आए भुल्ली, कर दया लए बख्शा। एथे फली अग्गे फुली, जिस आपणी गोद ल्या बहा। गुरमुख आदि जुगादि कदे ना भुल्ली, पुरख अकाल सर्ब जीआं दा पिता मां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरन बणाए भैण भ्रा। चार वरन भैणां भईया, हरि सतिगुर आप बणाईआ। सतिजुग चलाए साची नईया, संसार सागर वेख वखाईआ। सर्ब जीआं दा एका सईया, एका काहन नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन लए तराईआ। चार वरन हरि का रंग, घट घट आसण लाया। घर घर विछाई सेज पलँघ, पुरख अबिनाशी वेस वटाया। मनमुख जीव भागां मंद, घर घर विच

६७७

लभ्भण कोए ना धाया। आपणे ख़ज़ानिउँ आपे होया नंग, चारों कुण्ट नैणां नीर वहाया। जो जन सतिगुर सरनाई जाए लग, किरपा करे बेपरवाहया। घर दीपक जोती जाए जग, अज्ञान अन्धेर चुकाया। हँस बणाए कग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाया। दरस दिखाए उप्पर शाह रग, नौ दुआरे पन्ध मुकाया। सुरत सुआणी डूँग्घी भँवरी कढ्ढ, शब्द हाणी मेल मिलाया। आत्म सेज लडाए लड्ड, अनहद साचा ताल सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन दुआरे आपणे सद, घर मन्दिर इक्क वखाया। घर मन्दिर मूर्त अकाल, नूर नूर दरसाईआ। घर मन्दिर दीन दयाल, अठ्ठे पहर होए सहाईआ। घर मन्दिर मिले प्रितपाल, दिवस रैण सेव रिहा कमाईआ। घर मन्दिर मिले सच्चा धन माल, नाम धन झोली पाईआ। घर मन्दिर तुट्टे जगत जंजाल, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। घर मन्दिर वज्जे साचा ताल, ताल तलवाड़ा ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरनां एका दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। चार वरनां दर दरवाज़ा, दर दरवेश आप खुल्हाइंदा। सो पुरख निरँजण ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे आप उठाइंदा। हरि पुरख निरँजण रक्खे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एकँकारा फिरे भाजा, लोकमात वेख वखाइंदा। आदि निरँजण बण बण राजा, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। अबिनाशी करता मारे वाजां, नाद अनादी आप उपाइंदा। श्री भगवान साजण साजा, साची बणत बणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ रचया काजा, आपणा काज आप रचाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करे कल माझा, मंझ आपणी धार चलाइंदा। शब्द अगम्मी अश्व ताजा, शाह सुल्ताना आप दौड़ाइंदा। भूपत भूप बण नवाबा, नौबत आपणे नाम वजाइंदा। शब्दी शब्द बोध अगाधा, बोध अगाधी आप सुणाइंदा। गुरमुख गुर गुर आपे लाधा, गुर सतिगुर संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप मिलाइंदा। गुरमुख मेल मिलाया, हरि सज्जण मीत मुरार। जन्म जन्म दा मूल चुकाया, पूर्ब लहिणा कर्ज़ उतार। अग्गे आपणा मार्ग आप वखाया, निरगुण सरगुण साची धार। सो पुरख निरँजण वेख वखाया, हँ ब्रह्म कर प्यार। सोहँ मन्त्र नाम दृढ़ाया, आप आपणी किरपा धार। लक्ख चुरासी गेड़ चुकाया, मर जम्मे ना विच संसार। जम की फाँसी आप तुड़ाया, राए धर्म दर दुरकार। निज घर वासी मेल मिलाया, घर मन्दिर मंगलाचार। साची घाटी आप चढ़ाया, फड़ बाहों करया पार। पूजा पाठ ना कोए वखाया, दरस देवे एका वार। जिस जन हरि हरि दरसन पाया, तीर्थ तट ना जाए किनार। जन्म जन्म दी हिरस मिटाया, आसा तृष्ना भुक्ख निवार। अर्श फर्श कुर्श एका रंग रंगाया, रंग वेखे रंगणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचा पार उतार। गुरमुख उतरे आपणे घाट, गुर सतिगुर पार कराईआ। लहिणा देणा चुक्के सीआं

साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चमारा दए ग्वाहीआ। कसीरा चुक्कया तुट्टा नात, नाता बिधाता फेर जुड़ाईआ। जिस जणाए आपणी गाथ, दूसर दर पढ़न कदे ना जाईआ। गुरसिख तेरी इक्को जमात, एका अलिफ़ तेरी लिखाईआ। तेरी महिमा गाए कायनात, चौदां विद्या तेरी सेव कमाईआ। चौदां लोक तेरा मंगण आबे हयात, चौदां तबक तेरी सरनाईआ। तेरा रूप पारजात, तेरी पंखड़ी हथ्थ किसे ना आईआ। तेरी वासना मंगे विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ मारन झात, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। कवण दुआरे बैठा हरि जू कमलापात, गुरसिख आपणे चरन बहाईआ। ना कोई ज़ात ना कोई पात, दीन मज़्ब ना कोए रखाईआ। सर्ब जीआं देवे एको दात, दाता दानी आप वरताईआ। कलिजुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। मंगे मंग धरत मात, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। मेरा भरना डूँग्घा खात, ख़ाली हथ्थ रही वखाईआ। मेरे विच रहिण ना देणी मन मति नार कमज़ात, कुलक्खणी डूमणी दर ना फेरा पाईआ। मैं तेरे गुरसिखां दी मंगां इक्को जमात, जेहड़े तेरा सोहँ अक्खर करन पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गायण गाथ, करोड़ तेतीसा जस गाईआ। तेई अवतार देण साथ, नानक गोबिन्द दए ग्वाहीआ। ईसा मूसा भुल्ला ज़ात, ज़ात रब्ब दी नजर किसे ना आईआ। मुहम्मद मंगे एका वार निउँ निउँ करे निमस्कार मेरे नबी मार झात, तेरी रहिमत रहिमान मेरी होए जुदाईआ। अल्ला राणी अग्गे रक्खे आपणा खात, तूं साहिब पुरख समराथ, मेरा अन्त ना तोड़ीं साथ, मैं तेरी दासी बण बण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी इक्को ओट तकाईआ।

हरि समझाए तेई अवतार, एका हुक्म सुणाइंदा। हरि जणाए गुरु गुर निरँकार, साचे सन्तां आप जगाइंदा। भगतां दए हुलार, भगती इक्क दृढ़ाइंदा। हरि गुरमुखां वखाए दुआर, इक्क दुआर खुल्हाइंदा। गुरसिखां करे प्यार, एका गुण जणाइंदा। हरि ईसा मूसा करे ख़बरदार, हुक्मी हुक्म फ़रमाइंदा। हरि मुहम्मद करया बेदार, आलस निन्दरा सर्ब गवाइंदा। हरि अल्ला राणी दए हुलार करे बेदार, ग़फ़लत सभ दी आप मिटाइंदा। सभ नूं सद्दा दिता एका वार, भुल कोए ना जाइंदा। करया खेल बेऐब परवरदिगार, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। एका नाम बोल जैकार, सच संदेसा आप सुणाइंदा। वक्त वखाया सतारां हाढ़, सभ नूं आपणे दर बुलाइंदा। सभ दा लेखा वेखे वारो वार, चौथे जुग आपणा कर्म कमाइंदा। नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, साडी सुणे ना हरि पुकार, रो रो सर्ब सुणाइंदा। नानक अग्गे करन पुकार, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। गोबिन्द उठे जोद्धा सूरबीर बलकार, मुहम्मद तेरा दुखड़ा दए निवार, दरदी तेरा दर्द वंडाइंदा। बणे विचोला विच संसार,

उम्मती उम्मत मेल मिलाइंदा । चार जुग दे दिन चार चार, हरि सभ दी झोली पाइंदा। अन्तिम आउणा सभ ने गुरसिखां दे चल दुआर, गुरसिख तेरा दुआरा ब्रह्मण्ड खण्ड दा सच मनारा, जिथे वसे आप निरँकारा, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त बंता सिँघ कीआ प्यारा, बेअन्त आपणे विच मिलाइंदा।

★ २५ सावण २०१८ बिक्रमी करतार कौर दे गृह पंज गराईं ★

६८०
तारनहार पुरख समरथ, साहिब सतिगुर दीन दयाला। जुगत जग देवे साची वथ, मन्त्र आपणा नाउँ सुखाला। साचा मार्ग आपे दस्स, गृह मन्दिर वखाई सच्ची धर्मसाला। निरगुण जोत कर प्रकाश, करे खेल अकाल अकाला। जन भगतां दासी दास, लेखा जाणे शाह कंगाला। निज आत्म रक्खे वास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम सच्चा धन माला। नाम धन हरि वरतारा, हरिजन आप वरताईआ। जुगा जुगन्तर सच भण्डारा, सति सतिवादी आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण सरगुण देवे वारो वारा, सरगुण निरगुण झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। नीले रक्खया पहला पौड़, सरसे चरन टिकाईआ। सुरस्ती सुत्ती हुलारे पौण, पवण पाणी सार ना राईआ। मीन उठी आया कौण, आपणी लै अंगड़ाईआ। उच्ची करी आपणी धौण, तक्कया साचा माहीआ । अंदरे अंदर गाए गौण, गीत गोबिन्द अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट लेखा रिहा चुकाईआ। मीन पाया दरस दीदार, नेत्र नैण बिगसाईआ। जल जल रूप करे पुकार, नैणां नीर वहाईआ। धन्न भाग मेरे आया दुआर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। मैं निमाणी देणा तार, तूं मेरा गीर माहीआ। तेरा जाल मेरा प्यार, तेरा प्रेम सच्ची फाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। मीन पाया दरस गोबिन्द, चिंता चिखा सर्ब मिटाईआ। घर मिल्या गुणी गहिन्द, गहर गवर वड्याईआ। भाग लगाया साचे सागर सिन्ध, बूंद बूंद टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच रखाईआ। पाया दरस नेत्र नैण, घर वज्जी वधाईआ। रसना बोल ना सके कहिण, अन्तर अन्तर रही ध्याईआ। मैं आई तेरे कोलों लैण, आपणा लहिणा रही समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप छुपाईआ। साचा लहिणा सच जणाए, निउँ निउँ सीस झुकाया । जल जल रूप समाए, किनारा कोई नज़र ना आया। कोटन कोटि जन्म वटाए, जन्म अजन्म गेड़ फिराया। बिन तेरे दरस सांत ना आए, सति सति ना कोए वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी ६८०

किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ मांगों सच सरनाया। सच सरनाई मंगे दान, दोए दोए जोड़ निमस्कार। सतिगुर पूरे हो मेहरवान कर किरपा एका वार। मैं भुल्ली बाल अञ्याण, गुण अवगुण ना कोए विचार। आपणा देणा इक्क फ़रमान, मैं आवां दर तेरे दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे श्री भगवान। गुर गोबिन्द कर ध्यान, दृष्ट दृष्ट वखाईआ। तेरा रक्खां अन्तिम माण, तेरा माण तेरी वड्याईआ। एका अक्खर देवां दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। मछ कछ सर्ब पछताण, हरि का रूप दिस किसे ना आईआ। अठ्ठे पहर रहे ग़लतान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी दुरगंध आप बणाए, साची सौगंध, निम चन्दन वास महिकाईआ। सुण मीन हरि सुणाए, गोबिन्द मीत मुरारा। तेरा लहिणा दए चुकाए, करे सच इकरारा। नौ नौ जन्म गेड़ा गेड़ वखाए, समाए जल जल धारा। आपणा मुखड़ा जाए छुपाए, करे खेल अगम्म अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दस्से सच विहारा। सच विहार जणाइंदा, गोबिन्द सूरबीर। सच दरबार लोकमात ना हुण लगाइंदा, आया अन्त अख़ीर। घर बार आप तजाइंदा, होया हाल फ़कीर। चारों कुण्ट उठ उठ धाइंदा, करे खेल बेनज़ीर। आपे सत्थर यार हंढाइंदा, आपे वेखे सच तस्वीर। आपणी तदबीर आपणी तकबीर आपणे मालक हथ्थ रखाइंदा, आपणा तोड़न आया ज़ंजीर। समरथ तेरी धार बंधाइंदा, आसा पूरी करे मीन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, भुल ना जाए लोक तीन। मीन मीआं रक्ख आस, सच पैग़म्बर दए जणाईआ। जगत अडम्बर खेल तमाश, लक्ख चुरासी गेड़ भवाईआ। आवे जावे पुरख अबिनाश, जुग जुग वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा लहिणा आप मुकाउणा, गुर गोबिन्द हरि सुणाए। कलिजुग अन्तिम वेस वटाउणा, निरगुण सरगुण खेल खिलाए। जगत विछोड़ा पन्ध मुकाउणा, जूनी जून ना कोए भवाए। आप आपणे रंग रंगाउणा, रंग मजीठी इक्क चढ़ाए। साचा नाम मृदंग वजाउणा, नादी नाद सुणाए। आत्म सेज पलँघ सुहाउणा, साची सेजा सोभा पाए। आपणा दरस आप वखाउणा, स्वच्छ सरूपी रूप धराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, माणस मानुख रूप वटाए। जीव मीन करे पुकार, नेत्र नैण नीर वहाईआ। जो सुणया सो मन्नया कहिण, अभुल तेरा कीता भुल ना जाईआ। मैं सद वसां जल जल धार वहण, बिन जल मेरा जीवण लोकमात ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरन सरन मिले सरनाईआ। सतिगुर पूरा हो दयाल, आपणा हुक्म सुणाइंदा। वेले अन्त सुरत लए संभाल, माणस माणस लेखे लाइंदा। करे कराए सदा प्रितपाल, प्रितपालक

९८१

वेख वखाइंदा। तेरा तोड़ जगत जंजाल, बन्दी बन्द ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा जल तेरे रंग समाइंदा। तेरा जल वरसे धार, हरि धारन धार चलाईआ। तेरा लहिणा देणा देवे कर्ज़ उतार, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। अमृत बरखे आपणी वार, आप आपणी छहबर लाईआ। तेरी काया करे ठंडी ठार, अग्नी तत्त ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा तेरा संग निभाईआ। तेरा नीर तेरा रस, तेरे मुख चुआइंदा। तेरे दुआरे आए नस्स, हरि तेरी सेव कमाइंदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, हरि के पौड़े आप चढ़ाइंदा। अमृत आत्म देवे बरस, चिंता सोग सर्ब मिटाइंदा। माणस जन्म करे तरस, कर तरस पार कराइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, हरख सोग ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लहिणा झोली पाइंदा। पूर्ब लहिणा आप चुकाउणा, सच सच दृढ़ाईआ। अन्तिम लेखा पन्ध मुकाउणा, लक्ख चुरासी ना कोए भवाईआ। अमृत धार इक्क वहाउणा, छहिबर धार लगाईआ। सरसा रंग फेर चढ़ाउणा, चरन कँवल बख्शे सच सरनाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका घर नज़री आउणा, वाह वा वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाया, गति मित आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा लहिणा आप चुकाया, कर किरपा मेल मिलाइंदा। जगत विछोड़ा पन्ध मुकाया, आप आपणा दरस दिखाइंदा। सरसा रूप लोकमात बणाया, करोड़ छिआनवे सेवा लाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा बन्धन आपे पाया, लोकमात ना कोए तुड़ाइंदा।

★ २५ सावण २०१८ बिक्रमी महिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड दइया ★

गुरसिख मीन जगत बिल्लाए, दिवस रैण राह तकाईआ। कवण वेला हरि अमृत मेघ बरसाए, सांतक सति सति वरताईआ। कवण वेला विछोड़ा पन्ध मिलाए, आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि होए सहाईआ। गुरसिख नीर मछली पाणी, पवण पाणी खेल खिलाइंदा। लेखा जाणे दो जहानी, दो जहानां वेख वखाइंदा। घट घट सुणाए आपणी अकथ कहाणी, कथा कथ आप जणाइंदा। नाम निधाना अगम्मी बाणी, बाण निराला आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखाइंदा। गुरमुख सच्चा आत्म आस, एका एक रखाइंदा। प्रभ मिल बुझे प्यास, तृष्ना तृप्त कराइंदा। लहिणा देणा चुक्के पृथ्मी आकाश, अवण गवण फंद कटाइंदा। सर्ब सुख दाता दीना बन्धन वसे पास, बंधप आपणे रंग रंगाइंदा। लक्ख चुरासी करे बन्द ख़लास, जम की फाँसी आप तुड़ाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जल मीन आप धराइंदा। जल मीन हरि जू डेरा, हरि हरि वेख वखाईआ। नव नौ चार अगम्म घेरा, शब्दी डोर बंधाईआ। लक्ख चुरासी आप भुलाए कर कर हेरा फेरा, पर्दा मात ना कोए उठाईआ। गुरमुख विरले चाउ घनेरा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। काया नगर वसे खेड़ा, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। मिले मेल प्रभ नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अमृत रस चुआईआ। अमृत रस आत्म धार, निझर झिरना आप झिराइंदा। गुरसिख गुर गुर कर प्यार, गुर गोबिन्द मेल मिलाइंदा। गोबिन्द मीता एकँकार, अकल कल खेल खिलाइंदा। अलख अगम्म अगोचर हो त्यार, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। दो जहानां पावे सार, ब्रह्मण्डां खण्डां फोल फुलाइंदा। हरिजन हरि हरि लए उभार, पतित पावन दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन मेला हरि अमृत नीर, निरवैर आप मिलाईआ। बिरहों कढ्ढे हउमें पीड़, ममता मोह चुकाईआ। दूई द्वैती देवे चीर, एका तीर नाम चलाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, कीट कीटां आप समाईआ। देवे नाम शब्द अनडीठ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। काया करे ठंडी सीत, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। इक्क सुणाए सुहागी गीत, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला हरि हरि कर, गुर सतिगुर आप कराईआ। जन्म जन्म दा चुक्के डर, भय भउ ना कोए वखाईआ। दरस दिखाए एका वर, एकँकारा शहिनशाह सच्चा पातशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण आप तराईआ। हरि सज्जण साचा मीतड़ा, गुर सतिगुर आप उपाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग मजीठड़ा, उतर कदे ना जाइंदा। करे कराए पतित पुनीतड़ा, पतित पापी पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अमृत आप बरसाइंदा। अमृत बरसे ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराईआ। किरपा करे किरपन कर प्यार, कृपानिध सहिज सुखदाईआ। सागर वरोले एका वार, नाम मधाणा हथ्थ उठाईआ। तोला तोले सर्ब संसार, लक्ख चुरासी तोल तुलाईआ। बोला बोले एकँकार, एका ढोला आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। साचा बोल शब्द जैकारा, जै जैकार आप कराइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। जिस जन बख्शे चरन प्यारा, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाइंदा। माणस जन्म पार उतारा, जून अजून ना कोए भवाइंदा। इक्क वखाए दर ठांडा दरबारा, दर घर साचा आप उपाइंदा। लेखा जाणे परवरदिगारा, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाइंदा। साचा मन्दिर गुरदुआरा, हरि ठाकर आप जणाइंदा। दीवा बाती कर उज्यारा, निरगुण नूर जोत डगमगाइंदा।

अमृत सरोवर ठंडा ठारा, पुरख अबिनाशी आप उपाइंदा। जन भगतां देवे कर प्यारा, गुरमुख विरले मुख चुआइंदा। लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसारा, कूड़ी निन्दरा ना कोए लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। हरिजन जगाए किरपा कर, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। साहिब सुल्तान देवे वर, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। हरिजन तेरा घाड़न घड़, तेरी रचना आप रचाईआ। गृह मन्दिर तेरे बैठा वड़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सुरती सुरत लए फड़, शब्दी शब्द डोर उठाईआ। आप बन्ह्आए आपणे लड़, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, निवण सु अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे रंग रंगाईआ। गुरमुख रंग रंग चलूल, चार वरन आप रंगाईआ। हरि साहिब साहिब कन्तूहल, सतिगुर सच्चा शहिनशाहीआ। जुगा जुगन्तर चुकाए मूल, लहिणा कोए रहिण ना पाईआ। आदि जुगादि ना जाए भूल, अभुल वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। हरिजन थाउँ थाँईं खोज्जया, आप आपणी किरपा धार। आपणी सोचन आपे सोचिआ, सोचे सोच ना करे कोए विचार। आपणी आसा आपणी इच्छया आपे लोचिआ, आपे पूरन पूर करे करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उधार। हरिजन उधारे दीन दयाला, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एका मार्ग दए सुखाला, सुख सागर रूप समाईआ। आत्म परमात्म पाए साची माला, मन का मणका आप भवाईआ। लक्ख चुरासी तोड़ जंजाला, जाग्रत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मीन एका नीर दए वखाईआ। एका नीर हरि का नाउँ, हरि हरिजन आप जणाइंदा। आदि जुगादी पिता माउँ, गुरमुख बाले गोद सुहाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, दरगाहि साची धाम बहाइंदा। पकड़ उठाए फड़ फड़ बांहों, दिवस रैण सेव कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम करे सच न्याउँ, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, काग रूप हँस वटाइंदा। सदा सुहेला सिर देवे ठंडी छाउँ, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। भाग लगाए नगर खेड़ा ग्राउँ, पंज तत्त चोला आप हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नीर आप चुआइंदा। साचा नीर तत्त वरोल, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। प्रेम प्याला आपे घोल, गुरमती गुरमुख आप प्याईआ। आदि जुगादी रहे अडोल, अडुल वड वड्याईआ। भगतन मीता वसे कोल, सगला संग निभाईआ। बन्द किवाड़ा ताकी खोल्ह, घर घर विच करे रुशनाईआ। अनहद मृदंग वजाए ढोल, नादी नाद आप सुणाईआ। हौली हौली आपे बोल, आपणा राग आप अल्हाईआ। उलटा करे नाभ कँवल, अमृत झिरना दए झिराईआ। सति सतिवादी देवे साची पाहुल, नाम खण्डा विच फिराईआ। देवे

वड्याई उप्पर धौल, धरनी धरत धवल सीस झुकाईआ। हर घट अंदर जाए मौल, मौला आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख एका नीर प्याईआ। एका नीर हरिजन पीआ, गुर सतिगुर आप प्यांअदा। लहिणा देणा चुक्के साढे तिन्न हथ्थ सीआं, जन्म मरन फंद कटाइंदा। आत्म बीजे साचा बीआ, अमृत फल लगाइंदा। प्रभ मिलण दा साचा हीआ, वेला वक्त इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे नीर सीर आप प्यांअदा। नीर सीर सच प्याला, पुरख अबिनाशी आप उठाईआ। गुरमुखां देवे गुर गोपाला, गोबिन्द साची सेव कमाईआ। हरिजन वेखे साचे लाला, बाल अञ्याणे आप उठाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाला, जगत विचोला सच्चा शहिनशाहीआ। अठ्ठ पहर रहे रखवाला, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाता तोड़ काल महाकाला, त्रैगुण आपणा बन्धन पाईआ। गुरमुख वखाए सच्ची धर्मसाला, घर घर विच करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मीन नीर नीर मीन एका रंग वखाईआ। आपे मछली आपे नीर, हरि साचा खेल खिलाईआ। आपे कट्टे हउमें ज़ंजीर, लक्ख चुरासी आप भवाईआ। आपे चोटी चाढ़े अख़ीर, आपे चरनां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला मेल मिलाईआ। नीर मीन साचा मेला, सुरती शब्द मिलाया। एका घर वसे गुरु गुर चेला, गुर चेला वेख वखाया। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, दर घर साचे सोभा पाया। वसणहारा इक्क इकेला, निरगुण सरगुण रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे दर बहाया। साचा दर नीर मीन, साहिब सुल्तान इक्क जणाईआ। लेखा चुक्के लोक तीन, त्रैगुण माया पोह ना सके राईआ। काया चोली चाढ़े रंग एका भीन्न, रुत्त बसन्ती आप वड्याईआ। ठांडा करे हरि जू सीन, सांतक सति सति वरताईआ। रसना जेहवा जो जन रहे चीन, चेतन्न आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला एका दर मछली नीर रूप समाईआ। मीन नीर हरि का रंग, निरगुण निरगुण खेल खिलाया। सरगुण सेज सच पलँघ, सति सतिवादी आप हंढाया। निरवैर वजाए इक्क मृदंग, नाम मृदंगा हथ्थ उठाया। डूँग्घे सागर आपे लँघ, आपणा पन्ध आप मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जल मीन वखाए एका थाया। जल मीन एका थाँ, हरि चरन दुआर वडी वड्याईआ। पतिपरमेश्वर पिता मां, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। जिस जन जपाए आपणा नाँ, तिस मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा फंद कटाईआ। जगत विछोड़ा कट्टे फंद, गुर सतिगुर दया कमाइंदा। गुरमुख चढ़ाए साचा चन्द, आफ़ताब मुख शरमाइंदा। दिवस रैण परमानंद, निजानंद खेल खिलाइंदा। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना

आप तुड़ाइंदा। जो जन गाए सुहागी छन्द, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढ, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लेखे लाए बत्ती दन्द, रसना जेहवा मूल चुकाइंदा। पंच विकारा करे खण्ड खण्ड, खण्डा नाम इक्क खड़काइंदा। लेखा मुक्के नार दुहागण जगत रंड, साचा कन्त इक्क मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जल मीन मिले वर, एका नीर सीर प्यांअदा। जल मीन एका धीर, इक्क इक्क नाल मिलाईआ। एका बस्त्र एका चीर, एका तन सजाईआ। एका घर वखाए अन्त अख़ीर, दूजे दर ना मंगण जाईआ। एका मिले वड पीरन पीर, पीर पैग़म्बर जिस रक्खे आपणी सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख गुरमख गुर गुर आपणा बन्धन पाईआ।

भगत वछल श्री भगवान, जुग जुग वेस कराइंदा। अछल अछल दो जहान, भेव अभेद छुपाइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधान, शब्द अनादी डंक वजाइंदा। हरिजन साचे कर परवान, आत्म बोध ज्ञान दृढ़ाइंदा। नाद अनादी धुर फ़रमान, ब्रह्मादी शब्द सुणाइंदा। सचखण्ड दुआर वखाए इक्क मकान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। दाता दानी गुण निधान, गुणवन्ता खेल खिलाइंदा। गुरमुखां उप्पर होए मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप चढ़ाइंदा। भगत वछल श्री भगवन्त, आदि जुगादि समाया। हरिजन वेखे साचे सन्त, लक्ख चुरासी फोल फोलाया। एका नाम दवाए मणीआ मंत, निष्अक्खर आप पढ़ाया। नाता जोड़े नारी कन्त, नर नरायण सेज सुहाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाया। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकाया। नाता तोड़े भुक्ख नंगत, नाम निधाना झोली पाया। हरिजन मेला जिउँ नानक अंगद, अंगीकार आप कराया। मेल मिलावा साची संगत, सतिगुर सच्चा मेल मिलाया। लक्ख चुरासी भुल्ली जंत, जीव जंत हरि का भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाया। भगत वछल एकँकारा, अकल कला अख्वाईआ। जुग जुग लोकमात लै अवतारा, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। चारे खाणी चारे बाणी पावे सारा, वरन बरन ना कोए लड़ाईआ। सति सतिवादी बोल जैकारा, जीवां जंतां दए समझाईआ। निरगुण जोती बाती कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। शब्द नाद सुणाए सच्ची धुन्कारा, घट अनहद नाद वजाईआ। अमृत आत्म देवे ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिराईआ। काया मन्दिर अंदर वखाए गुरदुआरा, घर घर विच लए प्रगटाईआ। बजर कपाटी खोल्ह ताला, आत्म ताकी आप उठाईआ। दरस दिखाए अगम्म अपारा, निरगुण निरवैर

सच्चा शहिनशाहीआ। मूर्त अकाल हो उज्यारा, अजूनी रहत डगमगाईआ। आत्म ब्रह्म करे प्यारा, पारब्रह्म होए सहाईआ। ईश जीव इक्क दुआरा, जगत जगदीस मेल मिलाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, हरि का भेव ना कोए पाईआ। गुरमुख विरला उतरे पारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया खेल न्यारा, रूप अनूप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। भगत वछल श्री भगवाना, एका रंग समाया। सति झुलाए इक्क निशाना, सति सतिवादी हथ्थ उठाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां देवे इक्क ज्ञाना, ब्रह्म ज्ञानी आपणा खेल खिलाया। शब्द अगम्मी मारे तीर निशाना, लक्ख चुरासी पार कराया। भगत भगवन्त इक्क पहचाना, आप आपणी बूझ बुझाया। सन्तन वखाए सच मकाना, घट मन्दिर खोल्ह वखाया। गुरमुखां देवे नाम निधाना, निज आत्म आप टिकाया। गुरसिख बणाए चतुर सुजाना, मूर्ख मूढ़े आपणे धन्दे लाया। सति सन्तोखी बन्न्हे गाना, धीरज जत आप धराया। पंच विकारा मेटे बेईमाना, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाया। एका देवे धुर फ़रमाना, शब्द अगम्मी आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। भगत वछल आदि निरँजण, आदि जुगादि समाइंदा। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराइंदा। जन भगतां नेत्र पाए नाम अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। दो जहानां साचा सज्जण, लोकमात वेख वखाइंदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजण, दुरमति मैल धवाइंदा। जुगा जुगन्तर परदे कज्जण, हरि साची सेव कमाइंदा। गुरमुखां रक्खे आपे लज्जण, लाजवन्त आप हो आइंदा। जो घड़े सो अन्तिम भज्जण, भन्नणहारा खेल खिलाइंदा। कूड़ नगारे चारों कुण्ट वज्जण, कलिजुग डौरू हथ्थ उठाइंदा। ना कोई मीत ना कोई सज्जण, सगला संग ना कोए निभाइंदा। मदि प्याले पी पी रज्जण, अमृत रस रसना चक्ख ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। भगत वछल पारब्रह्म, बेअन्त वडी वड्याईआ। जुग जुग जाणे आपणा कर्म, निहकर्मी कर्म कमाईआ। ना कोई गोत ना कोई वरन, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि ना रक्खे किसे दी सरन, सरनगत आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका भगत दए वड्याईआ। भगत वछल श्री भगवाना, भगवन आपणी खेल खिलाइंदा। जन भगतां देवे ब्रह्म ज्ञाना, आत्म दरसी दृष्ट वखाइंदा। एका राग एका गाणा, धुन आत्मक आप उपजाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, घर घर विच आप वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। भगत वछल हरि सतिगुर मीता, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। जुगा जुगन्तर ठांडा सीता, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ।

६८७

एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। जगत जुग चलाए आपणी रीता, आपणी करनी आप कमाईआ। पतित पापी करे पुनीता, पतित पापी लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल आप अख्वाईआ। भगत वछल एका एक, एका रंग समाइंदा। जन भगतां रखाए एका टेक, दूसर ओट ना कोए जणाइंदा। कंचन काया करे बुध बिबेक, मन ममता मोह चुकाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी अग्ग ना कोए जलाइंदा। हरिजन हरि जू आपे वेख, आप आपणा मेल मिलाइंदा। आपे मेटणहारा रेख, लिख्या लेख आप प्रगटाइंदा। जुग जुग करे अवल्लड़ा वेस, वेस अनेका आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन एका दर वखाइंदा। एका दर गोबिन्द घाट, हरि भगतन आप जणाईआ। जुग चौकड़ी मुक्के वाट, थिर कोए ना रहिण ना पाईआ। कलिजुग खेले खेल नटूआ नाट, स्वांगी आपणा सांग वरताईआ। कोई ना सोए आत्म खाट, सुंञी दिसे सर्ब लोकाईआ। चौदां लोक मिले नाम ना किसे हाट, वणज वणजारा ना कोए अख्वाईआ। जूठा झूठा रस रहे चाट, सच सुच्च ना कोए वरताईआ। हउमे हंगता अन्धेरी रात, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रिहा नाच नचाईआ। चार वरन लड़ाई ज़ात पात, आत्म ब्रह्म ना कोए दरसाईआ। सर्ब जीआं दा कमलापात, पुरख अकाल इक्क अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम गुरमुखां पुछे आपे वात, निरगुण जोती जाता भेख वटाईआ। छाछ विरोले आपे मक्खण माख, नाम मधाना एका पाईआ। भगत भगवन्त लए राख, अग्नी तत्त पोह ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल होए सहाईआ। भगत वछल हरि गोबिन्द, गोबिन्द खेल खिलाइंदा। गुरमुखां मेटे सगली चिन्द, चिंता चिखा रोग गवाइंदा। नाम निधाना देवे गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर आप वरताइंदा। अमृत आत्म देवे सागर सिन्ध, प्याला जाम प्यांअदा। तख्तों लाहे सुरपति राजा इन्द, विष्न ब्रह्मा शिव पन्ध मुकाइंदा। हरिजन चढ़ाए साचा चन्द, दो जहानां आप चमकाइंदा । एका देवे परमानंद, अनन्द अनन्द आप समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल एका हरि, भगत भगवन्त वेख वखाइंदा। भगत भगवन्त गुरमुख धार, गुर गुर रूप समाईआ। गुरसिख साचे कर त्यार, लोकमात दए वड्याईआ। भाण्डे काचे वस्त हरि थार, वस्त अमोलक एका पाईआ। किरपा करे आप निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। साकत निन्दक दुष्ट दुराचार करे ख्वार, चारों कुण्ट होए हल्काईआ। नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। गुरमुख विरला हरि का नाउँ रिहा उच्चार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। डुबदे सागर लाए पार, साची नईया नाम चढ़ाईआ। लक्ख चुरासी वहे वहिन्दी धार, कलिजुग बेड़ा रिहा डुबाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना उतरे पार, मँझधार पई दुहाईआ। भगत

भगवन्त भगतन लए तार, तारनहार इक्क अख्वाईआ। जुग जुग आए विच संसार, वेस अनेक वटाईआ। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, जोती जामा वेस वखाईआ। निहकलंका नाउँ निरँकार, शब्द डंका इक्क वजाईआ। शाह सुल्ताना करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा गया खुल्ह, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाया। देवे वस्त नाम अनमुल्ल, तोला तोल ना कोए तुलाया। चरन प्रीती जो जाए घुल्ल, हरि घोली घोल घुमाया। गुरमुख फुलवाड़ी वेखे फुल, पत डाल्ही आप महिकाया। लोकमात ना जाए रुल, जिस अमृत जाम प्याया। भगवन्त भगत उपजाए आपणी कुल, कुलवन्ता खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण आपे फड़, काया मन्दिर अंदर चढ़, आपणा बन्धन आपे पाया।

★ २५ सावण २०१८ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला ★

जिस उप्पर साहिब जाए मन्न, तिस देवे नाम वड्याईआ। एका देवे नाम धन्न, अतोट अतुट रखाईआ। एका नाद सुणाए कन्न, धुन अनादी नाद सुणाईआ। इक्क चढ़ाए साचा चन्न, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। एका देवे बेड़ा बन्न्ह, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। गढ़ हँकारी देवे भन्न, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। भाग लगाए साचे तन, माटी ख़ाक करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाईआ। दया कमाए दीन दयाला, आदि जुगादि खेल खिलाइंदा। करे खेल जगत निराला, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। तन पहनाए साची माला, मन मनका आप भुआइंदा। फल लगाए काया डाला, पत डाल्ही आप महिकाइंदा। त्रैगुण तोड़े जगत जंजाला, अग्नी तत्त बुझाइंदा। आपे मार्ग दस्से सुखाला, साचे मार्ग आपे लाइंदा। एका नाद वजाए ताला, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। मन्ने हरि होए मेहरवान, देवे नाम वस्त वड्याईआ। सति सतिवादी वखाए सच निशान, दर घर साचे आप झुलाईआ। काया मन्दिर वखाए इक्क मकान, घर घर विच दए वड्याईआ। आत्म ब्रह्म करे प्रधान, रूप अनूप आप धराईआ। मन मनूआ मेटे पंच शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। आसा तृष्ना हउमे हंगता ना रक्खे कोए दुकान, जूठ झूठ दए गंवाईआ। भुक्खा नंगता करे परवान, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दर दए जणाईआ। जिस मन्नया भगवन्त, तिस नाता मोह तुड़ाया। मिले वड्याई विच्चों जंत, पुरख अबिनाशी होए सहाया। करे मिलावा नार कन्त, कन्त

६८६

कन्तूहल सेज हंढाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाया। मन मनता तोड़े हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाया। इक्क जपाए आपणा मंत, निष्अक्खर रूप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस आपणे अंग लगाया। हरि मन्ने वड्ड मेहरवाना, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हरि पुरख निरँजण करे सद परवाना, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। एकँकारा देवे दाना, दाता दानी आप अख्वाईआ। आदि निरँजण नूर महाना, नूरो नूर डगमगाया। अबिनाशी करता खेल महाना, खेलणहारा आप हो जाईआ। श्री भगवान वखाए सच मकाना, सच महल्ला आप जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ गुण निधाना, गुण अवगुण ना कोए वखाईआ। जिस जन करे आप परवाना, आप आपणी गोद बहाईआ। शरीक्त करे कोई क्या विच जहाना, जिस मिल्या हरि गोसाँईंआ। आत्म मारे तीर निशाना, ब्रह्म बाण हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया माटी भाग लगाईआ। काया माटी काची वंग, गुर सतिगुर रंग चढ़ाइंदा। आत्म रक्खे सेज पलँघ, निरगुण सरगुण आप हंढाइंदा। शब्द अगम्मी वजाए मृदंग, नाद अनादी नाद सुणाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, घर घर विच जोत जगाइंदा। मानस जन्म ना होए भंग, जिस जन आपणा मेल मिलाइंदा। नंगी होए ना कंड, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। मन ममता करे रंड, मन मति नार दुहागण दर दुरकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन मेले आपणे दर आपणी दया आप कमाइंदा। एका मन्ने पुरख निरँजण, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। नेत्र पाए नाम अञ्जण, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। घर घर विच दिसे साचा सज्जण, घर घर विच वज्जे वधाईआ। अमृत सरोवर कराए मज्जन, दुरमति मैल धुआईआ। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, मन वाशना दए खपाईआ। काया करे साची कंचन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणे रंग रंगाईआ। एका पिता पुरख अकाला, अकल कला वड्याईआ। घर विच घर वखाए सच्ची धर्मसाला, चार दीवार ना कोए बणाईआ। निरगुण जोत दीप उजाला, आदि अन्त रुशनाईआ। अनहद वज्जे साचा ताला, सुन्न समाध खुल्हाईआ। सुरती सुरत करे बेहाला, मूर्त अकाल वडी वड्याईआ। मन मनूआ अन्त होए बेहाला, ढह ढह आपणा सीस झुकाईआ। दहि दिशा ना मारे कोई छाला, चार कुण्ट ना उठ उठ धाईआ। जिस जन मिल्या गुर गोपाला, तिस आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत शिरक्त दए मिटाईआ। जगत शरीक्त नाता तोड़े, गुर सतिगुर वड वड्याईआ। मन विकारा पंचम होड़े, शब्द डण्डा हथ्थ रखाईआ। सुरती चाढ़े आपणे घोड़े, साचा घोड़ा इक्क दौड़ाईआ। मन्दिर अंदर लाए पौड़े, डूँगघी कंदर वेख वखाईआ। पन्ध मुकाए लम्मा चौड़े, दूर नेड़ा ना कोए जणाईआ। रस वेखे मिट्ठे कौड़े, लक्ख चुरासी

फोल फोलाईआ। जिस जन प्रभ मिलण दी लग्गी औड़े, दे दरस तृप्त कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा देवे कट्ट, इक्क वखाए साचा हट्ट, निरगुण जोत नूर कर प्रगट, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जगत विछोड़ा मुक्के पन्ध, शरीक्त कोए नज़र ना आईआ। दूई द्वैती ढाए कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। घर विच वखाए साचा चन्द, घर घर करे रुशनाईआ। मन पंछी पाए एका फंध, नाम डोरी हथ्थ उठाईआ। सर्ब कल आपे समरथ, सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। जगत वासना पाए नथ्थ, तृष्ना तृखा ना रहे राईआ। महिमा सुणाए अकथना अकथ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। शब्द अगम्मी मार्ग दस्स, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। चौदां विद्या चरनां हेठां झस्स, लोकमात ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, सो जन दूसर दर ना लभ्भण जाईआ। जगत शरीक्त मिटे अन्धेरा, गुर सतिगुर दया कमाइंदा। एका रंग वखाए सन्झ सवेरा, सूरज चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। दरस दिखाए नेरन नेरा, नेत्र लोचण आप खुल्हाइंदा। नाता तुट्टे मेरा तेरा, तेरा मेरा एका घर बहाइंदा। आवण जावण चुक्के गेड़ा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। पंच पंचायन ना करे झेड़ा, पंचम शब्द नाद वजाइंदा। खुल्ल्हा करे आत्म वेहड़ा, आत्म ब्रह्म धराइंदा। ईश जीव करे निबेड़ा, जगदीस खेल खिलाइंदा। हरि का भेव जाणे केहड़ा, लक्ख चुरासी भरम भुआइंदा। आप उपाए दया कमाए आपे जो घड़या भन्न वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची खेल आप कराइंदा। करे खेल खेल करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। अगम्म अगम्मड़ा हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। करे खेल अपर अपारा, साचे तख्त सोभा पाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, हुक्म हाकम आप सुणाईआ। थिर घर साचा खोल्ह किवाड़ा, आपणा बन्धन पाईआ। आपे पुरख आपे नारा, जननी जन आप अख्वाईआ। एका सुत जणे दुलारा, शब्दी नाउँ धराईआ। एका वस्त दए भण्डारा, एका घर सच्चा घर बारा, थिर घर साचे दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा रूप आपणे विच टिकाईआ। आपणा रूप आपणे अंदर, हरि आपे आप टिकाइंदा। लेखा जाणे साचे मन्दिर, गृह मन्दिर आप सुहाइंदा। मन पंखी उठ उठ धाए ना बन्दर, जिस जन आपणा बन्धन पाइंदा। लेखा जाणे डूँघी कंदर, काया बंक फोल फुलाइंदा। तोड़नहारा आपणा जंदर, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका घर वसाइंदा। उहनां नाल शरीक्त करे कौण, जिस हरि हरि मार्ग लाया। सेवा करे उणंजा पौण, सीस चँवर इक्क झुलाया। ब्रह्मा विष्न शिव सारे गौण, जिन्हां हरि हरि दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, आपणा पर्दा दए उठाया। पर्दा उठाए देवे चुक्क, आपणी दया कमाईआ। दरस दिखाए जो बैठा लुक, आपणी बूझ बुझाईआ। गुरमुख करे उज्जल मुख, लोकमात वड्याईआ। सुफ़ल करे मात कुक्ख, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। मन मनूआ जड़ देवे पुट्ट, मूंह दे भार सुटाईआ। जगत वासना कढ्ढे कुट्ट, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, तृष्ना तृप्त कराईआ। निर्मल जगाए साची जोत, नूर नूर रुशनाईआ। घर घर विच वसाए साचा कोट, किला कोट आप बणाईआ। शब्द नगारे वज्जे चोट, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जगत शरीक्त दए मिटाईआ। जगत शरीक्त लाशरीक, हरि साचा आप गुआइंदा। जिस जन मेटे अन्धेरा तारीक, चन्द चांदना आप वखाइंदा। बेऐब वसे सदा नज़ीक, ऐब सभ दे आप गुआइंदा। लेखा जाणे हक हकीकत हकीक, हरि हक आपणी धार बंधाइंदा। जो जन रक्खे इक्क उडीक, तिस आसा पूर कराइंदा। हरिजन लाए सच प्रीत, गुरमुख विरला पार लँघाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी शरीक्त आप गुआइंदा। जगत शरीक्त दए गुआ, जिस जन साची बूझ बुझाईआ। अमृत जाम दए प्या, निझर झिरना आप झिराईआ। सोई सुरती लए जगा, शब्द नाद सुणाईआ। आपणा पल्लू लए फड़ा, टेढी बंक होए सहाईआ। सुखमन तेरा पन्ध मुका, ईड़ा पिंगल चरनां हेठ रखाईआ।
६६२ सच सरोवर दए नुहा, सर सरोवर इक्क वखाईआ। हँस रूप दए वटा, कागों काग हँस बणाईआ। कोटन दीपक जोत ६६२
जगा, एका नूर दए रुशनाईआ। एका अनहद नाद सुणा, धुन आत्मक करे शनवाईआ। साचे मार्ग देवे पा, आपणा हुक्म वरताईआ। बन्द ताकी दए खुल्हा, साचा साकी बण बण माहीआ। मन आकी दिसे ना किसे थाँ, बैठा आपणा मुख भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस सिर हथ्थ रक्खे निरँकार, तिस शरीक्त मात गुआइंदा। एका वस्त दए आधार, दूजी वस्त सर्ब गुआइंदा। एका मस्त करे ख़ुमार, जगत मस्ती मेट मिटाइंदा। एका बस्त्र तन शृंगार, जगत शृंगार मुख भुआइंदा। एका रंग चाढ़े चाढ़णहार, जगत रंग ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार। हरिजन पार उतारया, कर किरपा गुण निधान। जन्म जन्म दा गेड़ निवारया, पूर्ब लेखा वेखे मार ध्यान। एका बख़्शे चरन दुआरया, नाता तोड़े पंज शैतान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। खेल अपारा एका रंग, रंग रंगीला आप जणाईआ। जो जन मंगे आत्म मंग, आत्म दृष्टी एका दृष्ट दए वखाईआ। जो जन मंगे साचा संग, सगला संग निभाईआ। जो जन मंगे शब्द डोर चढ़े पतंग, सुरत शब्द नाल जुड़ाईआ। जो जन आत्म तीर्थ मंगे साची गंग, जमना सुरस्ती गंगा गोदावरी घर घर

विच दए वहाईआ। जो जन मंगे दरस सूरा सरबंग, स्वच्छ सरूपी देवे दरस दिखाईआ। जो जन मंगे आत्म परमानंद, अनन्द अनन्द दए समझाईआ। जो जन मंगे निरगुण जोत चढ़े चन्द, जोती जोत करे रुशनाईआ। जो जन मंगे पंच विकारा होए खण्ड खण्ड, साचा खण्डा नाम फड़ाईआ। जो जन मंगे नाता तुट्टे नार दुहागण रंड, घर घर विच कन्त मिलाईआ। जो जन मंगे टुट्टी देवे गंढु, गंढु गंढु नाल पुआईआ। जो जन मंगे एका देवे सुहागी छन्द, जिस सुण सुण मन बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा इक्क वखाईआ। जगत शरीक्त सतिगुर विछोड़ा, लक्ख चुरासी रही कुरलाईआ। घर घर अंदर प्रभ मिलण दी लग्गी औड़ा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। चढ़ चढ़ थक्के उच्चे टिल्ले जगत पौड़ा, हरि के पौड़े ना कोए चढ़ाईआ। गा गा थक्के वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी तेरा दोहरा, तेरी दोहरी धार नज़र ना कोए कराईआ। मार मार थक्के पंज चोरा, घर विच मुक्की ना किसे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत शरीक्त रिहा समझाईआ। जगत शरीक्त सतिगुर भुल्ला, माया ममता मोह जंजाला। कामी क्रोधी जूठा झूठा रुला, फल ना लग्गा काया डाला। सिम्मल रुक्ख फलया फुला, अन्त होए बेहाला। एथे ओथे कोए ना मुल्ला, ना कोई शाह ना कंगाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा हरि, हरिजन देवे राह सुखाला। हरि मन्ने वड मेहरवान, माया ममता मोह तजाईआ। एका देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाईआ। इक्क वखाए सच निशान, सच निशाना आप उठाईआ। इक्क वखाए मन्दिर मकान, जिस डिठिआं सभ दुःख मिट जाईआ। एका मारे तीर बाण, मन धायल दए कराईआ। मति मतवाली होए हैरान, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। बुद्धी पाए आपणी आण, आपणा कीता आपणे विच छुपाईआ। हरि सतिगुर सच्चा वड बलवान, सभ दा लेखा दए मुकाईआ। बिन सतिगुर पूरे सर्ब पछताण, मन का भरम ना कोए चुकाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव जहान, जिहवा काग वांग कुरलाईआ। आत्म अन्तर ना कोए ध्यान, अंमिउँ रस ना कोए चखाईआ। जगत शरीक्त वेख दुकान, चौदां तबक देण दुहाईआ। नाता तुट्टा ज़िमीं अस्मान, आफ्ताब मुख छुपाईआ। कलमा कलमी ना कोए ईमान, आलम उल्मा ना कोए पढ़ाईआ। मुकामे हक ना कोए मिहबान, नेत्र नैण ना दर्शन पाईआ। कलिजुग रचना पीवण खाण, पीर पैग़म्बर औलीए मुल्लां शेख़ मुसायक साचा नायक ना कोए मनाईआ। पंडत पांधे पढ़ पढ़ पुराण, चारे वरनां देण ज्ञान, चार वेद करन पढ़ान, निष्अक्खर करे ना कोए पढ़ाईआ। खाणी बाणी होई बलवान, चारों कुण्ट भुल्ले नादान, दिस ना आए किसे भगवान, जूठ झूठ वणज रहे कराईआ। सतिगुर पूरा होए मेहरवान घर घर विच मेले आण, नाता तोड़े पंज शैतान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, जगत विछोड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। करे शरीक्त मन बलवाना, दिवस रैण खेल न्यारे। जीव जंत भुलाए बण अञ्याणा, बुध बिबेक ना कोए कराए। ख़ाक रुलाए राजा राणा, शाह सुल्ताना मुख भुआए। साधां सन्तां देवे आपणा परवाना, कामी काम लोभ मोह हल्काए। चारों कुण्ट करे वैराना, दहि दिशा उठ उठ धाए। सद वसे साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर मकाना, आपणा मुख ना किसे वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत शरीक दए जणाए। जगत शरीक मन बलवान, आपणी वाशना नाच नचाईआ। आपणा राग सुणाए कान, लक्ख चुरासी लए उठाईआ। जगत तृष्ना मेरी दुकान, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। माया ममता पीण खाण, साचा रंग रंगाईआ। जाणा भुल गुण निधान, गुण निधान मेरे दर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत शरीक्त रिहा कराईआ। मन शरीक्त जगत अखाड़ा, घट घट अंदर लाया। लाई अग्ग बहत्तर नाड़ा, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी नाल जलाया। मति मतवाली की करे विचारा, विचार विच कदे ना आया। बुध निमाणी आपणा बल हारा, बैठी सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन का खेल आप खिलाया। मन वजाए डौरू डंक, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। फड़ फड़ उठाए राउ रंक, सोया कोए रहिण ना पाईआ। भरम भुलाए भरमी जंत, भरम भुलेखा इक्क रखाईआ। मेरा गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म रही शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत शरीक्त आप वधाईआ। जगत शरीक्त गई वध, कलिजुग खेल खिलाया। मन प्याई हँकारी मदि, एका नशा चढ़ाया। आपणीआं इन्द्रिआं आपणे दुआरे सद्द, आपणा भोग वखाया। आपणा भार आपे लद, आपे रिहा उठाया। आपणे मन्दिर आपे गज्ज, आपणा नाअरा लाया। आपणे तख्त आपे साज, शाह पातशाह आप अख्वाया। आप गवाई आपणी लज, लज अवर ना कोए धराया। अपणा नाच आपे रिहा नच्च, लक्ख चुरासी नाल मिलाया। करे खेल काया माटी भाण्डे कच्च, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पर्दा पाया। रजो तमो सतो हो ना सके वक्ख, एका बन्धन आप रखाया। आपे जाणे किशना सुखला पक्ख, आपणा खेल आप कराया। आपणे दुआरे हो प्रतक्ख, आपणा रूप धराया। जगत ज्ञान ना सके डक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत शरीक्त करे मन, ना कोई रूप कोई चिन्ह, नेत्र दिस किसे ना आया। करे शरीक्त अंदर वड़, हरि साचा खेल खिलाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, रूप रंग ना कोए वखाईआ। जगत बलवान ना सके कोई फड़, वड बलवाना ख़ाक मिलाईआ। हथ्थ ना पाए कोई विद्या पढ़, कोटन कोटि विद्या पढ़ पढ़ बैठे वाद वधाईआ। अग्नी हवन ना जाए सड़, जोती अंस आप हो जाईआ। ना कोई चोटी ना कोई जड़, पुरख अबिनाशी अचरज खेल खिलाईआ। ना पुरख

ना नारी नर, घर घर आपणी धार चलाईआ। बिन सतिगुर पूरे ना जाए मर, मरया जीवत ना फेर कराईआ। जीवत मरन ना चुक्के डर, निरभउ रूप ना कोए समाईआ। जिस घाड़ण तेरा ल्या घड़, घड़नहारा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन शरीक्त मन तेरी झोली पाईआ। मन शरीक्त पा लै झोली, गुर सतिगुर आप सुणाइंदा। तेरी वासना तेरी गोली, तेरे दर बहाइंदा। तेरी वेखे झूठी होली, आपणा हुक्म सुणाइंदा। मेरे मन्दिर वड़ के फेर ना बोलीं, गुर पूरा हुक्म जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन जगत शरीक्त मेट मिटाइंदा। मन्ने हरि सर्ब गुणवन्ता, शरीक्त जगत रहिण ना पाईआ। गुरमुख बणाए साचे सन्ता, सति सतिवादी रंग चढ़ाईआ। महिमा जाणे अगणत अगणता, लेखा लिखण विच ना आईआ। खेले खेल लक्ख चुरासी जीव जंता, जाग्रत जोत कर रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे मंगता, जुग जुग झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गई शरीक्त मिल्या मेल, पाया पुरख अपारा। दीपक जगया बिन बाती तेल, मन्दिर होया उज्यारा। सतिगुर मिल्या सज्जण सुहेल, हउमे रोग निवारा। दरस दिखाए इक्क इकेल, खोल्हे बन्द किवाड़ा। मन वासना कढ्ढ धकेल, मूंह दे भार सुट्टे पंचम धाड़ा। गुरमुख तेरा खुल्ह्हा करे वेहड़, सतिगुर पूरा होए पहरेदारा। तेरा झेड़ा दए निबेड़, दरस दिखाए एका वारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस देवे चरन प्यारा। चरन प्यारा देवे दाद, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। एका वार वखाए ब्रह्म ब्रह्मादि, ब्रह्मा विष्न शिव नाल रलाईआ। एका एक सुणाए साचा नाद, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एका रिहा वजाईआ। एका बाणी सुणाए बोध अगाध, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। एका घर लडाए लाड, आप आपणी गोद बहाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों काढ, राए धर्म फंद कटाईआ। मेल मिलाए मोहन माधव माध, मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि सुणे फ़रयाद, साचे तख्त सच्चा शहिनशाहीआ। साचे तख्त बह सुल्ताना, हरि साचा खेल खिलाइंदा। जगत शरीक्त जगत बद्धा गाना, लोकमात मेल मिलाइंदा। गुरमुख विरला चतुर सुजाना, लक्ख चुरासी विच्चों आप उठाइंदा। आत्म अन्तर देवे इक्क ज्ञाना, एका आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। मन का मणका तोड़ अभिमाना, निवण सु अक्खर आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, मन संसा रोग गवाइंदा। मन संसा होवे दूर, भय भउ ना कोए जणाईआ। दरस दिखाए हाज़र हज़ूर, हज़रत नूर इक्को पाईआ। आसा मनसा करे पूर, मनसा मनसा माहें समाईआ। नाता तोड़े झूठ ग़रूर, वांग कफूर दए उडाईआ। मन मनूआ ना पाए फ़तूर, एका फ़तवा दए लगाईआ। मन्नणा पए हुक्म ज़रूर,

ना सके कोए उलटाईआ। शब्द अगम्मी पाए जूड़, ना सके कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन आपणे खात रखाईआ। मन रक्खे हरि हरि खात, खाता आपणे हथ्थ रखाइंदा। मन जणाई आपणी ज़ात, ज़ात आपणे विच मिलाइंदा। मन रक्खी अन्धेरी रात, अन्धेरा घुप्प आप गुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन का गढ़ आप तुड़ाइंदा। मन का गढ़ देवे तोड़, तोड़नहारा इक्क अख्वाईआ। सुरती तुट्टी लवे जोड़, शब्दी मेल मिलाईआ। आप चढ़ाए आपणे घोड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। दो जहानां आदि जुगादि जाए बौहड़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस वखाए आपणे घर, सोभावन्त तिस देवे सच्ची वड्याईआ। सोभावन्त होए नार सुहागण, जिस आपणा रंग वखाइंदा। सचखण्ड दुआर, मिले वड्याई वड वड भागण, वड भागी खेल खिलाइंदा। इक्क उपजाए आपणा वैरागण, विरागी आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा देवे हर, शरीक्त मूल ना कोए रखाइंदा। शरीक्त तेरा चुक्के मूल, शिरकत अवर ना कोए वधाईआ। करे खेल कन्त कन्तूहल, हरि करता बेपरवाहीआ। हरि भगतां देवे सच असूल, साचे मार्ग आपे लाईआ। आपे बरखे साचे फूल, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

६६६
कर, करे खेल साचा हरि, मन का मन्दिर देवे ढाहीआ। मन का मन्दिर जाए ढट्ठ, सतिगुर पूरा धक्का लाइंदा। इन्द्रिआं रोवण कर इक्टठ, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। करे खेल हरि समरथ, समरथ आपणी कल वरताइंदा। जन भगतां पति लए रक्ख, पतवंता सेव कमाइंदा। जुगा जुगन्तर हो प्रगट, हरिजन साचे आप तराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणा बन्धन पाइंदा। जिस जन मन्ने हरि गुरदेव, तिस महिमा कथी ना जाईआ। मिले मेल अलख अभेव, अगम्म अगोचर दए वड्याईआ। अमृत रस देवे साचा मेव, अमृत आपणा फल खुआईआ। क्या गुण जाणे रसना जिहव, हरि का गुण कोए कहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि साचा हरि, हरि भगतां लए मिलाईआ। हरि भगत मिलावा साचे घर, सो पुरख निरँजण मेल मिलाइंदा। हरि पुरख निरँजण चुकाए डर, भय भयानक ना कोए जणाइंदा। एकँकार बाहों फड़, आप आपणे अंग लगाइंदा। आदि निरँजण जोत धर, दीवा बाती डगमगाइंदा। अबिनाशी करता निष्अक्खर पढ़, आपणा राग सुणाइंदा। श्री भगवान साचे मन्दिर चढ़, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ मंगे वर, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। करता पुरख किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दात आप जणाइंदा। साची दात देवे वण्ड, पारब्रह्म

प्रभ झोली पाईआ। मेरा नाउँ विच वरभण्ड, आदि जुगादि होए सहाईआ। मेरा खेल पंज तत्त, तत्व तत वेस वटाईआ। मेरा भेव बुध मन मति, मति मन बुध भेव ना पाईआ। मेरा खेल मन हठ, जगत वासना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण दए जणाईआ। गुण जणाए हरि करतारा, आपणी दया कमाइंदा। मेरा मन मेरा दुआरा, मेरा घर वसाइंदा। मेरा सुत मेरा दुलारा, मेरा राह चलाइंदा। मेरा वणज मेरा वापारा, लक्ख चुरासी आप कराइंदा। अन्तिम मन्ने मेरा भाणा, सद भाणे मन समाइंदा। जिस वेले सुणे धुर फ़रमाना, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। चरन डिगे हो निमाणा, बल अवर ना कोए जणाइंदा। हउँ मस्कीन टुट्टा माणा, अभिमान ना कोए वखाइंदा। तेरा गुरसिख चतुर सुघड़ सयाणा, जो तेरा नाम ध्यांअदा। मैं मंगां बण दर दरबाना, दर दरवेश अलख जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर अंदर आपणी खेल खिलाइंदा। मन्दिर अंदर मन उडारी, हरि साचे सच जणाईआ। अग्गे खेल करे जोत निरँकारी, निरगुण आपणी धार चलाईआ। गुरसिखां करे सद प्यारी, गुरमुख आपणी बूझ बुझाईआ। निरगुण सरगुण पावे सारी, सरगुण निरगुण सेव कमाईआ। आवे जावे वारो वारी, जुग जुग वेस वटाईआ। आदि शक्ति हो उज्यारी, चतुर्भुज रूप धराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे खेल न्यारी, आप आपणी खेल खिलाईआ। रामा कृष्ना लए अवतारी, सरगुण आपणा ज़ोर जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर लेखा जाणे वारो वारी, आप आपणा बन्धन पाईआ। भगत भगवन्त लाए उडारी, एका घर वखाईआ। सन्तां देवे नाम ख़ुमारी, मदि प्याला जाम प्याईआ। गुरमुख वेखे डूँग्घी गारी, दूई द्वैती पर्दा दए उठाईआ। गुरसिख चरन कँवल करे पनिहारी, साची सेव जणाईआ। मन की वासना मन अंदर जाए मारी, मन वासना ना कोए वधाईआ। अग्गे सतिगुर पूरा दिसे जोद्धा बलकारी, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। जिस चढ़ना आपणे महल्ल अटारी, आए चल सरनाईआ। हउमे कढ्ढे विच्चों बीमारी, दूई रोग रहिण ना पाईआ। निरगुण सरगुण जोड़े यारी, यारी यारां नाल निभाईआ। हरिजन तेरी सुरत ना रहे कुँवारी, सतिगुर पूरा लए प्रनाईआ। चार कुण्ट ना होए ख्वारी, बिन हरि हरि कोए ना पार कराईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवारी, मन का भरम ना कोए मिटाईआ। माणस जन्म जूए रहे हारी, हार जित हथ्थ किसे ना आईआ। जूठी झूठी चुक्की सीस खारी, होका देवे गलीओ गली उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मन पंछी लाए आपणी उडारी, उड उड दहि दिशा फेरी पाईआ। अन्तिम खाए मौत लाड़ी, पंज तत्त काया कम्म किसे ना आईआ। क्या पुरख क्या नारी, बिन सतिगुर पूरे आपणा मन्दिर वेख ना सके कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए साचा घर, सो जन संसा रोग मुकाईआ। संसा रोग चुकावणा, गुरमुखां कर प्यार। घर

मन्दिर इक्क वखावणा, महल्ल अटल उच्च मुनार। निरगुण दीप जगमगावणा, तेल बाती ना कोए आधार। शब्द अनादी एका गावना, ना कोई तार बंधाए सतार। सच सिँघासण इक्क सुहावणा, उप्पर बैठ एकँकार। जगत विछोड़ा पन्ध मुकावणा, नाता तोड़ सर्ब संसार। आपणा बन्धन आपे पावणा, आप आपणी कर विचार। डूँग्घी भँवरी पार करावणा, गुरमुख साचे लाए पार। जो आया उठ जावणा, थिर रहे ना विच संसार। जिस कलिजुग अन्तिम निहकलंक नरायण तेरा दरसन पावणा, लक्ख चुरासी ना होए ख्वार। मन मनूआ निउँ निउँ सीस झुकावणा, नेत्र नैण होए शर्मसार। जगत शरीक्त पन्ध मुकावणा, जिस पिता गुर करतार। हक हकीकत इक्क वखावणा, लाशरीक परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम आधार। नाम आधारा अमृत रस, जिस जन आप प्याईआ। हिरदे अंदर जाए वस, आसण सिँघासण दए वड्याईआ। करे प्रकाश कोटन रवि ससि, नूर नुराना डगमगाईआ। जन भगतां करे पूरी आस, जुग जुग बेपरवाहीआ। सदा सुहेला होए दास, दासी दास सेव कमाईआ। साचे मंडल पाए रास, गोपी काहन आप नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बुझाए तेरी प्यास, सांतक सति सति वरताईआ। सांतक सीतल होए सति, सतिगुर सच्चा पाया। नाड़ी नाड़ ना उब्बले रत, रती रत दए सुकाया। एका देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाया। धीरज सन्तोख साचा जत, सतिगुर गुर सच्ची सरनाया। मन का बुरज जाए ढट्ठ, हउमे गढ़ रहिण ना पाया। नाता तुट्टे तीर्थ अठसठ, घर सरोवर दए नुहाया। जोत जगाए लट लट, अन्ध अन्धेर दए मिटाया। दूई द्वैती मेटे फट्ट, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। चार वरन वखाए एका हट्ट, पुरख अबिनाशी आप खुल्हाया। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश देवे एका मति, तत्त ज्ञान जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन मेले आपणे दर दर दरवाज़ा दए खुल्हाया। दर दरवाज़ा देवे खोल्ह, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। अंदरे अंदर आपे बोल, आपणे मन्दिर दए सुणाईआ। साचे कंडे तोले तोल, अतोल अतुल आप अख्वाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों हरिजन साचे लए वरोल, नाम मधाणा, एका पाईआ। जीव जंत ख़ाली दिसण, बिन हरि नामे ढोल, कलिजुग डंका रिहा वजाईआ। मन वासना प्या घोल, घर घर पई लड़ाईआ। गुरमुख विरला बैठा अडोल, जिस सतिगुर बूझ बुझाईआ। उलटा करया नाभ कौल, बूंद स्वांती मुख चुआईआ। शब्दी शब्द गया मौल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। लेखा जाणे नूर इलाही अव्वल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत शरीक्त रिहा गंवाईआ। करे शरीक्त क्या कोई जग, जिस मिले बेअन्त बेअन्ता। वसणहारा उप्पर शाह रग, नौ दर झूठा खेल खिलंता। गुरमुख बणाए साचे नग, हीरा मोती पंन्ना आप जड़ंता। आप बणाए सिर दा ताजा, पारब्रह्म श्री भगवन्ता। दो

६६८

जहानां रचया काजा, रच रच काज खेल खिलंता। करे खेल देस माझा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले साची संगता। साची संगत मिले गुरसिख, मन रो रो दए दुहाईआ। कवण दुआरे मिले मेरी भिख, झूठी भिच्छया ना कोए वरताईआ। मेरा सुफ्ना होया मिथ्थ, मेरा दीसे ना कोए सहाईआ। मेरा झगड़ा ना ल्या नजिठ, मैं बैठा मुख शरमाईआ। गुरसिख होया सतिगुर साया हेठ, मेरी भुल्ली सर्ब चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन ममता दए मिटाईआ। मन ममता तोड़े नाता कूड़, कूड़ी क्रिया आप गवाइंदा। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, जोत ललाटी डगमगाइंदा। आसा मनसा करे पूर, पूरी आसा आप कराइंदा। सर्ब कल सदा भरपूर, नाम भण्डारा आप भराइंदा। सदा सदा सद हाज़र हज़ूर, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे आप मनाइंदा। हरिजन मन्ने हरि मनाए, जीव ना कोए वड्याईआ। पूर्ब जन्मां वेख वखाए, जन्म अजन्म फोल फोलाईआ। निहकर्मी आपणा कर्म कमाए, कर्म कांड दए चुकाईआ। साची सरन इक्क रखाए, सरन सरनाई बेपरवाहीआ। मरनी मरन डरन चुकाए, जन्म मरन दए छुडाईआ। हरन फरन नैण खुल्हाए, नेत्र नैण कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराईआ। पार उतारे हरि करतारा, हरिजन साचे दया कमाईआ। कलिजुग वेख अन्त किनारा, नईया नाम रिहा चलाईआ। डुब्बदा जाए सर्ब संसारा, पाहन पाथर रूप वटाईआ। मनमुख रोवण ज़ारो ज़ारा, मन वासना होए हल्काईआ। गुरसिख मंगण बण भिखारा, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। तेरा नाम सच्चा भण्डारा, आदि जुगादि सच्चे शहिनशाहीआ। ग़रीब निमाणयां लावे पारा, सच किनारा इक्क दरसाईआ। हँकारीआं तोड़े गढ़ हँकारा, माण अभिमान दए मिटाईआ। गुरमुखां वखाए तेरा दुआरा, तेरी बूझ बुझाईआ। तूं बख्शिश कर बख्शणहारा, बख्शिश तेरे हथ्थ समाईआ। तेरा मन्दिर सोहे सच दुआरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा घर, मेरी तृष्ना तृप्त कराईआ। तृष्ना तृप्त होए दूर, मिले मेल रघुराया। रघुपत दिसे हाज़र हज़ूर, रूप अनूप धराया। चरन कँवल बख्शे धूढ़, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाया। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, एका मन्त्र नाम जणाया। देणी वस्त नाम भरपूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर आसा तृष्ना दए मिटाया। आसा तृष्ना मिटे तृख, सांतक सति सति वरताइंदा। नाम निधाना पाए भिख, सच वस्त वरताइंदा। लेखा लेख देवे लिख, लिख्या लेख मिटाइंदा। हर घट अंदर आए दिस, जिस जन तीजा लोयण खुल्हाइंदा। चौथे पद मिटे वख, अमृत रस वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन बंधाए आपणे लड़, मन के पौड़े जाए चढ़, साचे घर जाए वड़,

जिस घर मन ना फेरा पाइंदा। तिन्नां लोकां शब्दी भार, अनडिठ रूप दबाईआ। वाह वा खेल करे करतार, करनहार भेव छुपाईआ। वंडे वंड आप निरँकार, साचा हिस्सा रिहा वण्डाईआ। चौदां तबकां दे हुलार, चारे कूटां दए जगाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, बेपरवाह सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आपे वेख वखाईआ। त्रिलोकी उप्पर एका भार, निरगुण नाउँ रखाइंदा। कोए ना सके सीस उठाल, राम कृष्न सीस झुकाइंदा। आदि जुगादि ना निभयाा कोई नाल, सगला संग ना कोए रखाइंदा। पंज तत्त काया खाए काल, काल ग्रास सर्ब वखाइंदा। इक्क इकल्ला पुरख अकाल, जुग करनी वेख वखाइंदा। सचखण्ड बैठ सच्ची धर्मसाल, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। त्रिलोकी देवे हरि हरि दब्ब, त्रिलोकी नाथ नाल रलाईआ। उच्चे हो हो जो बैठे फब, सभ दा लेखा दए मुकाईआ। लेखा जाणे अड्डी चोटी पट, मूंह दे भार सर्ब सुटाईआ। आपणी आपणी वण्डण पा के बैठे हद्द, सभ दा बन्नां दए मिटाईआ। कोई कहे मेरी विष्नूं यद्द, कोए ब्रह्मा रूप धराईआ। कोई लडाए शंकर लड, कोए आदि शक्ति मनाईआ। कोई चतुर्भुज दुआरे बहे सज, कोए सूरज चन्न सीस झुकाईआ। कोई काया मन्दिर करे हज्ज, कोए इट्टां पत्थर सीस झुकाईआ। कोए शिवदुआले मठ रिहा नच्च, कोए मन्दिर मस्जिद फेरा पाईआ। कोए फिर फिर थक्का तीर्थ तट, कोई बह बह आसण लाईआ। कोए पीर पैग़म्बर सुणाए आपणी सद, बांग इलाही कूक सुणाईआ। कोए आब हयात प्याए मदि, साची मदि हथ्थ उठाईआ। आपणी आपणी वार गए लद, थिर कोए रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाशा आपणा करे खेल तमाशा, कलिजुग अन्तिम सभ नूं आपणे अंदरों लए कढ्ढ एका हुक्म एका वार सुणाईआ। सच निशाना देवे गड्ड, उच्च महल्ले आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भार दए समझाईआ। त्रिलोकी नाथ उठ कर ध्यान, हरि साचा सच जणाइंदा। मेरा मसला इक्क पहचान, तेरा लेखा वेले अन्त कम्म किसे ना आइंदा। नाता तुट्टा ज्ञान ध्यान, ज्ञानी ज्ञान ना कोए दृढ़ाइंदा। ना कोई गोपी ना कोई काहन, बंसरी नाम ना कोए वजाइंदा। चारों कुण्ट सुंञ मसाण, दीपक दीआ ना कोए जगाइंदा। ना कोई पवण ना मसाण, साचा हवन ना कोए वखाइंदा। ना कोए चिल्ला तीर कमान, सूरबीर ना नाल रलाइंदा। एका मारे आपणा बाण, तीर निराला हथ्थ उठाइंदा। अन्तिम लेखा चुकाए आण, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। साचे तख्त बैठ श्री भगवान, साचा खेल आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रिलोकी आपणे हेठ दबाइंदा। त्रिलोकी दब्बी हरि के भाओ, भय आपणा आप जणाईआ। करे कराए सच न्याउँ, सालस अवर ना कोए रखाईआ। जुग जुग विछड़े पकड़ उठाए बाहों,

सभ दा लेखा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि सच सुल्ताना, तख्त निवासी तख्त सोभा पाइंदा। अदली अदल करे भगवाना, आदल आपणा नाउँ धराइंदा। बदली करे दो जहानां, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाइंदा। रंग वखाए शब्द सिँघासण, हरि आसण सोभा पाईआ। करे खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी रूप वटाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशण, आकाश आकाशां विच समाईआ। वरभण्डी पावे रासन, मंडल रास रास रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख हिस्सा ल्या वण्ड, सृष्ट सिँघासण दए डुलाईआ। वन्डया हिस्सा टुट्टी हीं, वंडण वंड पाईआ। चार जुग दी लग्गी उखड़े नींह, बिन कही कुहाढ़े रिहा उखड़ाईआ। लक्ख चुरासी गंदा होया बी, फल कोए नज़र ना आईआ। मुरीद मुर्शद बण गए बकरी शींह, भय भउ ना कोए रखाईआ। ना कोई जाणे भैण धी, लोक लाज सर्ब हल्काईआ। ना कोई जाणे आपणा जी, जीवण मुक्त हथ्थ किसे ना आईआ। घर घर पीड़ हड्डी लग्गी रीह, दिवस रैण रही तड़फाईआ। गुर अवतार करन की, पिच्छे बैठा साचा माहीआ। जुग जुग करदे रहे जी जी, हां विच हां मिलाईआ।
१००१ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। टुट्टी ही, जगत टुट्टे गंढु, गंढु फेर ना कोए पुआईआ। सभ दी आत्म होई रंड, बिन गुरमुख आत्म किसे ना मात प्रनाईआ। चारों कुण्ट पए डण्ड, वरन बरन दए दुहाईआ। घर घर वेखे भेख पखण्ड, माया ममता नाच नचाईआ। गुर पीरां वंडाई जगत वण्ड, बिन पुरख अकाल लेखा सके ना कोए मुकाईआ। अन्तिम सभ नूं देवे दंड, बचया कोए रहिण ना पाईआ। पंज तत्त काया लै के आए जेरज अंड, बिन जेरज अंड जन्म मात ना कोए वखाईआ। शरअ शरीअत पा पा वण्ड, आपणा बन्धन गए पाईआ। कोई कहे चौदां तबक मेरा चन्द, मेरा नूर रुशनाईआ। अग्गे मीआं साहिब सुल्तान बख्शंद, जिस दी बीवी ना किसे प्रनाईआ। ना कोई सतार ना कोई तन्द, सतार वजदी नज़र किसे ना आईआ। जुग जुग पीर पैग़म्बर मंगदे रहे मंग, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। परवरदिगार वजाउँदा रिहा मृदंग, सच संदेसा इक्क अल्लाईआ। अडोल अडोल अडोल बैठा रहे आपणे आप पलँघ, आप आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्लाईआ। टुट्टी हीं चौदां तबक, पावा चूल ना कोए वखाईआ। मुरीद मुर्शद जो दे दे गए सबक, सभ दी सिख्या दए भुलाईआ। संग मुहम्मद चार यार रहे तबक, धीरज धीर ना कोए धराईआ। ख़ुदावंद करीम लोकमात आए परत, साचा लेखा दए चुकाईआ। असीं ला ला बैठे झूठी सुरत, आपणा दाउ राह तकाईआ। बेमुरीद बेवक्त प्या कड़क, एका कड़का रिहा सुणाईआ।

चौदां तबक लुके साडा दिल रिहा धड़क, धीरज धीर ना कोए वखाईआ। कोई दुआरा ना दिसे जिस ओहले जाईए अटक, घट घट वेखे सच्चा माहीआ। साडी बाकी कढ्ढे रिड़क, रिड़कणा आपणे हथ्थ रखाईआ। जे दर आईए तां अग्गों देवे झिड़क, जा के वेखो भुल्ली उम्मत सर्ब लोकाईआ। असां मंगी मंग कढ्ढ देईए तेरा फ़र्क, दूई द्वैत विच्चों गंवाईआ। आपणे नाम लगाउणी साची सरक, मेरा कलमा तेरी कलाम तेरा जल्वा मेरा अल्हाम, तूं साहिब मेरा अमाम, हउँ दीनन तेरा दीन अख्वाईआ। मैं सुणया तेरा सच पैग़ाम, तूं ही कृष्ना तूं ही राम, तूं ही नानक गोबिन्द देवें जाम, तूं ही मेरी उल्फ़त मात बणाईआ। बिन तेरे होई अन्धेरी शाम, चौधवीं चन्न ना कोए चढ़ाईआ। तेरे दुआरे आया तेरा गुलाम, गुरबत कोए रहिण ना पाईआ। मेरी मन्न इक्क सलाम, अलैकम तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत सिँघासण आपे रिहा तुड़ाईआ। टुट्टी हीं ब्यार दी, बेऐब आप तुड़ाईआ। खेल परवरदिगार दी, अलिफ़ ये ना कोए वड्याईआ। उम्मत उम्मती अन्तिम हारदी, ऐन ग़ैन ना कोए सफ़ाईआ। त्रिलोकी रो रो धाहां मारदी, कान्हा होए ना कोए सहाईआ। लक्ख चुरासी दर दर दर पुकारदी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। गुरमुख विरले आत्म परमात्म इक्क पुकारदी, एका ओट तकाईआ। यारी निभे अजीत सिँघ यार दी, गोबिन्द मुग़लां नाल निभाईआ। रक्खे याद तिक्खी धार खण्डे धार दी, ख़ंजर आपणे तन छुहाईआ। वगे धार ख़ून प्यार दी, लाल लाल रंग चढ़ाईआ। रंग मैहन्दी तन शृंगारदी, जग जोबन इक्क वखाईआ। आई वारी नर निरँकार दी, लेखा लेखे दए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा लेखे लाईआ। हीं टुट्टी बेरी दी, परवरदिगार आप तुड़ाईआ। वेखो त्रिलोकी किवें घेरी दी, शब्द डोरी हथ्थ उठाईआ। लग्गी जड़्ह किवें उखेड़ी दी, उखेड़नहारा दिस ना आईआ। धरत धवल किवें रेड़्ही दी, मूंह दे भार सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वण्डण आप वण्डाईआ। हीं टुट्टी चील दी, चेला गुर खेल खिलाइंदा। एह खेल छैल छबील दी, गुर गोबिन्द वेस वटाइंदा। गुंजाइश रहिण ना देवे किसे ठाणे तहसील दी, तहकीक आपणी सच कराइंदा। आस रहे ना किसे वकील दी, मुदा मुदाअलैह आप हो आइंदा। औध पुगदी जाए अपील दी, वेला अन्त इक्क समझाइंदा। आस रक्खे ना किसे दलील दी, साध सन्त सर्ब भुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कराइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी धारा आप चलाइंदा। दो पावे दो जहान, अद्धविचकारों दए तुड़ाईआ। करे खेल हो मेहरवान, दयावान आपणी दया कमाईआ। ना कोई तीर ना कोई कमान, खण्डां कटार ना कोए चमकाईआ। सभ दा मेटे आप निशान, सफ़ा सभ दी आप उठाईआ। अभुल करे सच न्याँ भुल कदे ना जाईआ। गुर अवतार लभ्भण

थाँ, लोकमात साचा धाम नज़र किसे ना आईआ। इक्क दूजे दा गाउँदे नाँ, पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां वेखे थाउँ थाँईंआ। पावे अंदर लाई चूल, चोला हरि जू आप बदलाया। सभ दा चुकाए लहिणा देणा मूल, मौला हो हो खेल कराया। जुग चौकड़ी ना जाए भूल, याद याद विच समझाया। आपणा सदा रक्खे कायम असूल, असलीयत सके ना कोए मिटाया। इक्क गोबिन्द करया कबूल, जिस पुरख अकाल मनाया। सो भंगूढ़ा रिहा झूल, सति पुरख निरँजण आप झुलाया। ना कोए कायदा ना कोई रूल, बेकायदगी करे आप ख़ुदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां वेखे थाउँ थाँया। चूल वड़ी पावे अंदर, जगत तरखाण आप ठुकाईआ। लुकया रहिण ना देवे कोई डूँघी कंदर, समुंद सागर फोले उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। सभ दे तोड़े लग्गे जंदर, उच्चे मन्दिर देवे ढाहीआ। मूंह दे भार सुट्टे गोरख मछन्दर, माण अभिमान ना कोए जणाईआ। त्रिलोकी बणाए एका खण्डर, खण्डा नाम हथ्थ चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप कमाईआ।

★ २६ सावण २०१८ बिक्रमी काशी राम दे गृह पिण्ड सनईया ★

१००३

सो पुरख निरँजण सच दरबार, सचखण्ड दुआर लगाईआ। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। एकँकार हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाना इक्क जणाईआ। आदि निरँजण साचा नूर कर उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। अबिनाशी करता खोल्ह किवाड़, साचा मन्दिर दए समझाईआ। श्री भगवान खेल करे अपार, अपरम्पर आपणी धार चलाईआ। पारब्रह्म प्रभ होया ख़बरदार, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। आपणी इच्छया आपे धार आपणी आसा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ । सच दरबार ठांडे घर, हरि साचा आप लगाइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख वेख वखाइंदा। निरभउ भय ना रखाए कोए डर, भयानक आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सचखण्ड दुआरा हरि करतारा, साचा हुक्म आप वरताईआ। जुग चौकड़ी करे पार किनारा, जुग जुग लेखा आप मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दो जहानां वेखे अखाड़ा, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता, निरगुण सरगुण नाच कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर बैठा वड़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरा सच महल्ला, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, अलख अगोचर अगम्म

अथाह बेपरवाह, बेपरवाह आपणा नाउँ धराइंदा। एकँकारा बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। आदि निरँजण देवे सच सलाह, लेखा लिखण पढ़न विच ना आइंदा। अबिनाशी करता आपणा संग दए निभा, सगला संग आप हो जाइंदा। श्री भगवान आप वखाए सच निशां, दो जहानां आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ करे सच न्यॉं, तख्त निवासी साचा हुक्म आप सुणाइंदा । घर खोल्हे इक्क मकान, मुकामे हक डेरा लाइंदा। दामनगीर हो बेपरवाह, बेपनाह आप हो जाइंदा। आप धराए आपणा नॉं, नाउँ निरँकारा आप अख्वाइंदा। करे खेल सच्चा शहिनशाह, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जुग चौकड़ी पन्ध मुका, आप आपणा खेल कराइंदा। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव सेवा ला, साची सेवा इक्क समझाइंदा। त्रैगुण माया देवे डेरा ढाह, घड़ण भन्नणहार आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचा हरि, साची इच्छया आप प्रगटाइंदा। साची इच्छया सचखण्ड, हरि साचा सच प्रगटाईआ। लेखा जाणे कोटन कोटि ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे थाउँ थॉंईंआ। लहिणा देणा चुकाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर हरि निरँकार आपणी करे सच सलाहीआ। सच सलाह करे निरँकारा, दूसर अवर ना कोए रखाइंदा। जुग चौकड़ी उतरे पार किनारा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा। जुगा जुगन्तर

१००४ गुर अवतार बणाए सेवादारा, साची सेवा इक्क समझाइंदा। एका वस्त देवे भण्डारा, नाम वस्त अमोलक झोली पाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए वखाइंदा। हरि का भेद आदि जुगादि न्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा सचखण्ड दुआरा, साचा दर आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण बैठा एका कन्त, कन्त कन्तूहल वडी वड्याईआ । एकँकारा बणाए बणत, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आदि निरँजण साचा धाम सुहंत, घर साचे वज्जे वधाईआ। अबिनाशी करता लेखा जाणे आदि अन्त, श्री भगवान पर्दा दए उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ होए मंगत, दर दरवेश आपणी झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। दर घर साचा हरि सुहञ्जणा, हरि साचा आप सुहाइंदा। जोत जगाए आदि निरँजणा, नूर नुराना डगमगाइंदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, दर घर साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे बैठा चढ़ सच सिँघासण आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरे हरि जू चढ़या, आप आपणा रंग वखाईआ। आपणे मन्दिर आपे वड़या, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़या, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। १००४

आपणा निष्अक्खर आपे पढ़या, ना करे कोए पढ़ाईआ। आदि जुगादि कदे न मरया, मात गर्भ कदे ना आईआ। आपणी करनी आपे करया, करता पुरख नाउँ धराईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर खेल करया, वेस अनेक वटाईआ। गुर अवतार भण्डारा भरया, देवे नाम सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे दर, दर दरबारा सोभा पाईआ। नाद अनादी एका बोल, अगम्म अगम्मड़ी धार चलाईआ। साची वस्त रक्खे अनतोल, तोलणहारा साचा माहीआ। आदि जुगादि रहे अडोल, जुग जुग वेखे आपणी शहिनशाहीआ। आपणा पूरा करे कीता कौल, कीता कौल भुल ना जाईआ। लहिणा देणा चुकाए धरनी धरत धवल धौल, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआर इक्क दरबार लगाईआ। सच दरबार लगाया, सो पुरख निरँजण हो मेहरवान। सीस आपणे छत्र झुलाया, पुरख अबिनाशी नौजवान। दर दरबान ना कोए रखाया, करे खेल इक्क इकल्ला श्री भगवान। आपणा हुक्म आप जणाया, दो जहानां देवे धुर फ़रमान। सतिजुग त्रेता द्वापर पार लँघाया, कलिजुग अन्तिम करे खेल महान। निरगुण जोती जामा भेस वटाया, जोद्धा सूरबीर बली बलवान। नाम खण्डा हथ्थ चमकाया, ब्रह्मण्ड खण्ड मार ध्यान। विष्न ब्रह्मा शिव दए हिलाया, सुरपति इन्द होए हैरान। लक्ख चुरासी धीर ना कोए धराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल महान। खेल महान कराइंदा, हरि सतिगुर शहिनशाह। आपणा रूप वटाइंदा, निरगुण जोती जोत जगा। शब्दी शब्द नाद वजाइंदा, नाद अनादी आप सुणा। बोध अगाधी भेव खुल्हाइंदा, आपणा पर्दा आप उठा। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाइंदा, साचा हरि बेपरवाह। आदि जुगादी वेस वटाइंदा, निरगुण सरगुण रूप वटा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा रिहा वसा। सचखण्ड दुआरा वसया, हरि वसे एकँकार। करे खेल खेल तमासया, आप आपे आपणी वार। आपे मंडल आपे रासया, आपे गोपी काहन नचार। आपे आपणी पूरी करे आसया, आपे भरे सति भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। सच सरकार सच्चा शहिनशाह, आदि जुगादि समाया। जुग जुग लेखा दए मुका, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। गुर अवतार सेवा ला, साचा हुक्म जणाया। जुग चौकड़ी गेड़ भवा, अन्तिम गेड़ा दए भवाया। जोती जोत लए मिला, जोती जाता आपणा नाउँ धराया। कलिजुग खेल करे बेपरवाह, बेऐब परवरदिगार आपणा रूप वटाया। पीर पैग़म्बर औलीए शेख़ वेखे थाउँ थाँ, चारों कुण्ट फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। दर दरवाज़ा गया खुल्ह, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाईआ। हरि पुरख निरँजण देवे वस्त नाम अनमुल्ल, अतोट

अतुट्ट वरताईआ। भाग लगाए जगत कुल, कुलवन्ता बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी रही रुल, हरि का रूप नज़र किसे ना आईआ। वरन बरन गए भुल्ल, साची सरन ना कोए तकाईआ। अमृत आत्म गया डुल्ल्, गोबिन्द भुलया साचा माहीआ। पाणी प्या काया चुल्, निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचा हरि, साचा हुक्म आप जणाईआ। हुक्म जणाए धुर फ़रमाना, आदि जुगादी कार। करे खेल श्री भगवाना, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। प्रगट होवे निहकलंक बली बलवाना, निरगुण जोत नूर उज्यार। आपे वरते आपणा भाणा, लेखा जाणे सर्ब संसार। तख्तों लाहे राजा राणा, नौ खण्ड पृथ्मी करे ख्वार। सत्तां दीपां तोड़े माणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपारा खेल खिलाउणा, सचखण्ड मता पकाईआ। कलिजुग झूठा बुरज ढाउणा, वेला अन्त दए समझाईआ। गुर अवतारां दर बहाउणा, एका हुक्म सुणाईआ। सभ दा लेखा वेख वखाउणा, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सच्चा शहिनशाह निरँकार, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। तख्त निवासी बण सिक्दार, साचे तख्त सोभा पाइंदा। नव नौ चार करे ख्वार, चार कुण्ट वेख वखाइंदा। सृष्ट सबाई जाए हार, हार जित ना कोए जणाइंदा। लेखा जाणे तेई अवतार, गुर गुर दस वेख वखाइंदा। गोबिन्द मीता सांझा यार, खण्डा एका नाम चमकाइंदा। वरन बरन मारे मार, तेज़ धार आप रखाइंदा। दर वखाए पुरख अकाल, दूजा इष्ट ना कोए जणाइंदा। आपणा करे हल्ल सवाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अपणा बन्धन आपे पाइंदा। पाया बन्धन हरि गोबिन्द, गोबिन्द भेव अभेद खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मेटे चिन्द, चिंता चिखा दए गंवाईआ। चार कुण्ट ना करे कोई निन्द, पुरख अकाल सर्ब मनाईआ। घट घट देवे अमृत आत्म सागर सिन्ध, निझर झिरना आप झिराईआ। मेहरवान होए गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे एका मता पकाईआ। सचखण्ड दुआरे मता पकाया, पुरख अबिनाशी आपणा मेला आप मिलाईआ। लक्ख चुरासी वेख वखाया, घट घट आपणा फेरा पाईआ। चौथे जुग चौथे वरन वण्ड वंडाया, चारे खाणी चारे बाणी चारे वेद देण ग्वाहीआ। गुर शब्द हाणी किसे नज़र ना आया, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। अठसठ तीर्थ पाणी वरोल वखाया, सच अशनान ना कोए कराईआ। रसना पढ़ पढ़ वाद वधाया, अनहद ताल ना कोए वजाईआ। तेल बाती दीपक रहे जगाया, घर जोत निरँजण ना कोए रुशनाईआ। साचा साथी कोई नज़र ना आया, बिन सतिगुर पूरे संग ना कोए निभाईआ। झूठी हाटी जगत विकाया, गुर का हट्ट ना कोए वखाईआ। पुरख अबिनाशी सर्ब

१००६

भुलाया, आपणा आपणा इष्ट रहे मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे हरि जू खड़, आपणा पर्दा आप उठाईआ। कलिजुग अन्तिम आपणे कंडे आपे तोले, लक्ख चुरासी तोल तुलाईआ। सभ दा लेखा झूठा पर्दा आपे खोल्हे, आपे खोल्ह खुल्हाईआ। साची वस्त किसे ना कोले, अन्तिम बैठे मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह बणया तोला, नाम कंडा हथ्थ उठाइंदा। सृष्ट सबाई रक्खे ओहला, गुरमुख विरले दरस दिखाइंदा। आपे बदले आपणा चोला, पंज तत्त ना कोए जणाइंदा। धरनी करे भार हौला, लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। कलिजुग पैंडा रिहा मुक्क, हरि पुरख निरँजण रिहा मुकाईआ। गोबिन्द लेखा गया लिख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नौ खण्ड पृथमी नेत्र नैणां पेख, आप आपणे रंग आप समाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, हरख सोग ना कोए जणाईआ। घर घर निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा देवे दरस, जोती जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तिम आपणा वेस वटाईआ। अन्तिम वेस वेस अपारा, अनक कलधारी आप कराइंदा। लोकमात मात हो उज्यारा, लोकमात वेख वखाइंदा। चौदां लोक लोक अखाड़ा, सच अखाड़ा आप लगाइंदा। चौदां तबक तबक किनारा, अन्त किनारा आप जणाइंदा। लेखा चुक्के रवि ससि सतारा, सूरज चन्न मुख शरमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे पार किनारा, नेत्र नीर सर्ब वहाइंदा। सुरपति राजा इन्द होए ख्वारा, करोड़ तेतीस ना संग निभाइंदा। नौ खण्ड पृथमी देवे एका नाम आधारा, नव नौ आपणी धार चलाइंदा। एका नाद शब्द धुन्कारा, घट घट अंदर आप वजाइंदा। एका अमृत ठंडी ठारा, घर सरोवर आप वखाइंदा। एका सतिगुर मीत मुरारा, घट घट आसण लाइंदा। एका ब्रह्म करे पसारा, एका ईश जीव नगारा, ताल तलवाड़ा आप वजाइंदा। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका गुरु वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लोकमात वेस वटाइंदा। लोकमात साचा हरि, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। सम्बल नगर बैठा वड़, दिस किसे ना आईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, ब्रह्मण्ड ब्रह्मांड करे पढ़ाईआ। ना पुरख ना नारी नर, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। आपणी करनी रिहा कर, करनी करता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड साचे दए वड्याईआ। सचखण्ड निवासी सच नरेश, निरगुण निरवैर पुरख अकाल अख्वाईआ। आदि जुगादि सदा आदेस, निहचल धाम अटल

१००७

बैठा आसण लाईआ। जुगा जुगन्तर करे वेस, वेस अनेका रूप वटाईआ। सेवा लाए विष्न ब्रह्म महेष, शंकर आपणी गत जणाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, मूढ़ मुंडाए ना सच्चा माहीआ। आपणे नूर आप प्रवेश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर वसे साचा माहीआ। साचे घर वसे परवरदिगार, बेऐब नाम ख़ुदाया। मुकामे हक कर त्यार, आसण सिँघासण इक्क सुहाया। नूर नुराना जल्वा अपार, नूरो नूर डगमगाया। मिहबान बीदो सांझा यार, सगला संग आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख़्त आप वड्याआ। साचे तख़्त बहे निरँकारा, अजूनी रहत वडी वड्याईआ। दो जहानां पावे सारा, दो जहानां वाली इक्क ख़ुदाईआ। लक्ख चुरासी दए अधारा, ख़ालक ख़लक मख़लूक आपणी धार बंधाईआ। घट घट अंदर नाद वजाए नाम जैकारा, आपणी सद बांग सुणाईआ। गृह गृह अंदर निरगुण नूर जोत कर उज्यारा, घर घर जोती जोत दीपक दीप करे रुशनाईआ। दर दर सख़ीआं गाए मंगलचारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा वेस वटाईआ। वेस वटाए हरि करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। लेखा जाणे गुर अवतार, ईसा मूसा करे सबक पढ़ाईआ। कलमी कलमा कर त्यार, आलमीन जणाईआ। एका नबी रसूल होया ख़बरदार, जल्वा नूर जलाल वखाईआ। एका तालीम दए संसार, अज़ीमुलशान आपणी शान वधाईआ। अलिफ ये कर प्यार, साबत सूरत रब्ब दी दए वखाईआ। सच हदीस बोल जैकार, नग़मा नाअरा दए सुणाईआ। मुर्शद मुरीद बणे निरँकार, हक हक करे पढ़ाईआ। सच महिराबे हो त्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वखाईआ। रंग वखाए एका अल्ला, इलाही नूर प्रगटाया। आपणा आप करे बिसमिल्ला, बिस्मिल आपणी धार चलाया। नाल रलाए इललिल्ला, लिखण पढ़न विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा बन्धन पाया। आपणा बन्धन कलमी कलाम, कलमा नबी आप पढ़ाईआ। आपे दीन आप इस्लाम, इस्म आज़म आप जणाईआ। आपे नूर आपे बातन आपे दए जलाल, आपे बैठा मुख छुपाईआ। आपे हक आप हलाल, आपे हकीकत बेमिसाल, बेऐब आप हो जाईआ। आपे बणे जगत दलाल, वणज वणजारा इक्क कराईआ। आपे वसे काया माटी खाल, आपे काया काअबा करे वड्याईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाल, दो दो आबा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे पुन्न आप सवाबा, आप वजाए सच रबाबा, आप मिलाए इक्क अहिबाबा, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लेखा आपे रिहा मुकाईआ। जुग जुग लेखा पीर दस्तगीर, हरि साचा आप वखाइंदा। लोकमात

१००८

घल्ले मार ज़ंजीर, नाम ज़ंजीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। अन्तिम मेला करे अख़ीर, आपणी करनी आप कराइंदा। पंज तत्त तुट्टे बस्त्र चीर, चीरा सीस जगदीस आप बंधाइंदा। सदी चौधवीं घत्ते वहीर, धीरज धीर ना कोए कराइंदा। संग मुहम्मद चार यार कोए ना देवे किसे नीर, आब हयात ना कोए प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सभ दा लेखा आप मुकाइंदा। लेखा मुक्के संग मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी मुख शरमाईआ। मकतब पढ़े ना कोए करे विचार, आलम इलम ना कोए जणाईआ। मुख़ातब हो ख़ताब देवे ना विच कोए संसार, शरअ शरीअत दए मिटाईआ। एका कलमा जणाए आप निरँकार, हरफ़ बहरफ़ करे पढ़ाईआ। वरन बरन करे ख्वार, वण्डण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बणे इक्क सिक्दार, एका मार्ग दए लगाईआ। चार वरन सोहण इक्क दरबार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना कोए अख्वाईआ। एका नाम बोलण जैकार, पुरख अकाल सर्ब ध्याईआ। काया मन्दिर अंदर वखाए सच्चा गुरदुआर, हरि मन्दिर बैठा साचा माहीआ। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारे दिशा पावे सार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। ठाकर मिले ठाकर दुआर, ठोकर ठाकर नाम लगाईआ। मीआं करे अल्ला प्यार, अल्ला मीआं एका घर वज्जे वधाईआ। गुरमुख गुर गुर बणे नार कन्त भतार, नार कन्त एका सेजा सोभा पाईआ। गोपी काहन करे मंगलाचार, सचे मंडल रास रचाईआ। करे खेल आप करतार, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। दीन मज़्ह़ब कर ख्वार, एका ब्रह्म दए वखाईआ। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द नज़री आए विच संसार, जगत नेत्र दए खुल्ह़ाईआ। कलिजुग जड़्ह़ उखड़े अन्तिम वार, छोटे बाले रहे उखड़ाईआ। सतिजुग महल्ला वसे आपणी वार, सतिगुर पूरा आप वसाईआ। कल्ग़ी तोड़ा सोहे सीस दस्तार, प्रगट होवे सच्चा शहिनशाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी बोले इक्क जैकार, फ़तहि डंका दए वजाईआ। राज राजान शाह सुल्तान आयण चल दुआर, बैठण सीस झुकाईआ। कुदरत कादर करे प्यार, बख्शिश बख्शे ना दीसे कोए गुनाहीआ। गुरमुखां देवे इक्क आधार, अमृत आत्म जाम प्याईआ। गुरसिखां करे सच प्यार, दिवस रैण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका हरि, जुग जुग वेस आपे कर, जग जुग जगत बन्धन देवे कटाईआ।

१००६

१००६

★ २६ सावण २०१८ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह पिण्ड बल ★

आदि पुरख एकँकारा, अकल कला अख्वाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच्चे दुआरा, थिर घर साचे सोभा पाइंदा। निरगुण जोत नूर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, साचे तख्त सोभा पाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा,

अलख अगोचर आपणी धार चलाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा खेल आप खिलाइंदा। सो पुरख निरजंण हरि मेहरवाना, एका रंग समाइंदा। हरि पुरख निरँजण मर्द मरदाना, बलधारी वेस वटाइंदा। एकँकारा शाह सुल्ताना, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। आदि निरँजण नूर नुराना, जोती नूर डगमगाइंदा। श्री भगवान वसणहारा सच मकाना, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। श्री भगवान इक्क रखाए सति निशाना, दरगाह साची आप झुलाइंदा। पारब्रह्म दर कर परवाना, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा। करे खेल खेल महाना, खेलणहारा आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराइंदा। आपणा रूप आपे धर, निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। आपे पुरख नारी नर, नर नरायण वडी वड्याईआ। निरगुण अंदर निरगुण वड़, निरगुण निरगुण लए प्रगटाईआ। निरगुण मात निरगुण पिता आपे बण, निरगुण पूत सपूता एका जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अगम्म, अगम्मड़ी कार कराइंदा। आपे जाणे आपणा कम्म, करता पुरख आपणी कार कमाइंदा। सुत दुलारा एका जम्म, शब्दी नाउँ धराइंदा। दाई दाया बेड़ा बन्नू, साची सेव कमाइंदा। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, साचा मन्दिर आप बणाइंदा। ना कोई राग ना कोई कन्न, तार सतार ना कोए हिलाइंदा। करे खेल श्री भगवन, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा आप उठा, आपणी दया कमाईआ। निरगुण निरगुण लए प्रगटा, निरगुण पिता निरगुण माईआ। निरगुण बाल दुलारा गोद सुहा, सच सुहञ्जणी गोद बहाईआ। एका हुक्म दए सुणा, धुर फ़रमाना, आप जणाईआ। साची वण्डण वण्ड वण्डा, घर घर विच लए प्रगटाईआ। थिर घर साचा लए बणा, सुत दुलारे इक्क वखाईआ। निरगुण जोती आप जगा, कमलापाती वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी रचना सुत दुलार, हरि साचे आप उपाया। आपे रक्ख नाउँ निंरकार, आपणा नाउँ आप प्रगटाया। आपे हुक्मी वरते वरतार, सच संदेसा इक्क सुणाया। साचे तख्त बैठ निरँकार, शाह पातशाह आपणी खेल खिलाया। छोटा बाला कर त्यार, साची सेवा आप लगाया। निरगुण अंदर निरगुण दए आधार, निरगुण मेला सहिज सुभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्लाया। निरगुण अंदर निरगुण वड़, हरि साची खेल खिलाईआ। सचखण्ड दुआरे बैठा चढ़, दिस किसे ना आईआ। आपणा घाड़न आपे घड़, साची घाड़त लए घड़ाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़, आपे करे पढ़ाईआ। आदि जुगादी एका हरि, आदि पुरख नाउँ रखाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। सुत दुलारा थिर घर साचे

धर, सचखण्ड वेखे सच्चा माहीआ। एका देवे साचा वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाईआ। एका गुण श्री भगवान, शब्दी सुत आप जणाइंदा। एका बख्शे चरन ध्यान, चरन दुआरा इक्क वखाइंदा। एका नाम एका ज्ञान, एका आपणा नाउँ मन्त्र सच दृढ़ाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, सच सिँघासण इक्क वखाइंदा। एका हुक्म इक्क फ़रमान, साचे धन्दे आपे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना हुक्म जणाइंदा। धुर फ़रमाना साचा भूप, हरि साचा सच जणाईआ। निरगुण निरवैर आपे जाणे आपणा रूप, अजूनी रहत वडी वड्याईआ। आपे तागा आपे सूत, ताणा पेटा आप हो जाईआ। आपे वसे आपणी कूट, दूजी दिशा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क लगाईआ। साची सेवा हरि निरँकार, सुत शब्दी आप जणाइंदा। थिर घर वसदा रहे तेरा दरबार, पुरख अबिनाशी आप वसाइंदा। आदि जुगादि रहे उज्यार, निरगुण जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। हुक्म वरते हरि भगवाना, एका इक्क जणाईआ। शब्दी तेरा सच निशाना, सति पुरख निरँजण आप झुलाईआ। तेरा बंस बणे महाना, सरबंस तेरी वड्याईआ। निरगुण करे निरगुण परवाना, निरगुण लेखा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे घर दए वड्याईआ। तेरे घर मिले वड्याई, हरि साचा सच जणाइंदा। करे खेल बेपरवाही, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। तेरी गोद रिहा सुहाई, विष्नूं तेरी झोली पाइंदा। विश्व आपणी धार रखाई, आप आपणी कल धराइंदा। आपणी इच्छया आप प्रगटाई, इच्छया आपणे विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताइंदा। साची इच्छया हरि भण्डार, आपणी आप आप वरताईआ। आपणा प्रेम ठंडा ठार, साचा अमृत नाउँ रखाईआ। विष्नूं अंदर रक्ख निराकार, निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। भाण्डा भरे अपर अपार, कँवल कँवला नाउँ धराईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, पारब्रह्म प्रभ आपणी वण्ड वंडाईआ। ब्रह्म उतपत करे आप करतार, आपणी कल आप धराईआ। आपे पंखड़ीआं होए गुलज़ार, पत्त डाल्ही आप महिकाईआ। आपे वसे धूंआँधार सुन्न अगम्म खेल खिलाईआ। आपे शंकर करे प्यार, संसा रोग सर्ब मिटाईआ। तिन्नां विचोला एका करतार, शाह पातशाह दया कमाईआ। देवे स्नेहुड़ा सच्ची सरकार, सच संदेसा दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा शिव लए उपाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उपा, हरि साचा खेल खिलाइंदा। एका अक्खर दए पढ़ा, निष्अक्खर नाउँ धराइंदा। साची सिख्या दए समझा, अभुल आपणा नाउँ जणाइंदा। एका हुक्म दए वरता, धुर

ਫ਼रमाना आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव हरि सुणाए, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। दर दुआर इक्क वखाए, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। ग़रीब निवाज़ा सोभा पाए, सच सिँघासण आसण लाईआ। शब्द अगम्मी वाजा आप वजाए, तार सतार ना कोए हलाईआ। रच रच काजा वेख वखाए, करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए जणाईआ। एका गुण हरि भगवन्त, विष्न ब्रह्मा शिव जणाइंदा। मेरा खेल आदि अन्त, भेव कोए ना पाइंदा। मेरी महिमा सदा बेअन्त, बेअन्त आपणे रंग समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त आप वरताइंदा। साची वस्त हरि करतारा, एका एक भराईआ। विष्नूं तेरा विश्व भण्डारा, पुरख अबिनाशी आप भराईआ। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म पसारा, पारब्रह्म वण्ड वंडाईआ। शंकर तेरा इक्क नगारा, अन्त दए वजाईआ। करे खेल सच्ची सरकारा, शाह पातशाह सच्ची शहिनशाहीआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़े अपर अपारा, घड़ घड़ वेखे थाउँ थाँईंआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां देवे आप सहारा, रवि ससि कर रुशनाईआ। आदि जुगादि वेखे विगसे वेखणहारा, नेत्र नैण ना कोए वखाईआ। कुदरत कादर करे प्यारा, बेऐब नाउँ ख़ुदाईआ। मुकामे हक खोल्ह किवाड़ा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा वेखे सति वरतारा, लोकमात वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त दए वखाईआ। एका तत्त शब्द ज्ञान, निरगुण साचा सच जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, हउँ सेवक सेव कमाइंदा। हउँ बाली बुध अञ्याण, तूं बेअन्त बेपरवाह, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। एका देणी सच सलाह, कवण धार मात चलाइंदा। लक्ख चुरासी बणे कवण मलाह, खेवट खेटा कवण अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ मंग मंगाइंदा। मंगण मंग बण भिखारी, त्रै त्रै बैठे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धारी, दया निध दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वखाए इक्क सिक्दारी, सिक्दारा इक्क समझाईआ। लक्ख चुरासी पावे सारी, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त दए वखाईआ। एका वस्त त्रैगुण धार, हरि साचा सच जणाइंदा। तिन्नां देवे एका वार, इक्क इक्क झोली पाइंदा। दूजा बख्शे चरन प्यार, साची सिख्या सिख समझाइंदा। तीजा बख्शे आपणा दीदार, नेत्र लोचण नैण खुल्हाइंदा। चौथे चौथे पद करे ख़बरदार, चौथे घर खेल खिलाइंदा। पंचम मेला करे आप निरँकार, पंज तत्त तत्त प्रगटाइंदा। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दए सहार, सगला संग निभाइंदा। भाण्डे घड़े बण ठठयार, हरि हरि साची सेव कमाइंदा। निरगुण सरगुण कर आकार, लक्ख चुरासी खेल खिलाइंदा।

लोकमात खिड़ी गुलज़ार, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। धरनी धरत धवल दए सहार, जल बिम्ब फोल फुलाइंदा। एका हुक्म आपणी वार, शब्द अनादी नाद सुणाइंदा। घर विच घर कर त्यार, घट घट आसण लाइंदा। निरगुण बाती कर त्यार, जोती जाता जोत जगाइंदा। आत्म ब्रह्म कर पसार, काया बंक सुहाइंदा। ईश जीव दए आधार, जगत जगदीस खेल खिलाइंदा। पवण स्वासी कर त्यार, पवण पवणां विच रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा भर भण्डार, सच दुआरा आप सुहाइंदा। आदि जुगादि रहिणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी आप समझाइंदा। वण्डां वण्ड अपर अपार, बोध अगाध शब्द जणाइंदा। एका अक्खर दए धुन्कार, चारे वेदां राग अलाइंदा। चारे वेद करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। चारे बाणी दए पैज संवार, आप आपणा रंग रंगाइंदा। चारों कुण्ट जै जैकार, जै जैकार आप कराइंदा। चारे वरन कर पसार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वेख वखाइंदा। चारे जुग घाड़न घड़े अपर अपार, घड़नेहारा दिस ना आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर त्यार, कलिजुग मेल मिलाइंदा। बणे विचोला आप निरँकार, दूसर अवर ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी वण्डण आप वंडाइंदा। वण्डे वण्ड वण्डण जोग, हरि साचा वण्ड वंडाईआ। निरगुण सरगुण होया संजोग, घर साचे वज्जी वधाईआ। निरगुण सरगुण भोगे भोग, आत्म सेजा सेज हंढाईआ। निरगुण सरगुण सुणाए सलोक, नाद अनादी बाण अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। आपणा हुक्म धुर फ़रमाना, हरि साचा सच जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव मन्नणा भाणा, हरि भाणे सद रहाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, जुग बन्धन आपे पाइंदा। चार जुग दा एका गाणा, एका चौकड़ नाम रखाइंदा। नव नौ चौकड़ खेल महाना, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाइंदा। नौ दर खोले जगत दुकाना, जगत वासना विच रखाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काना, आसा तृष्ना नाल मिलाइंदा। जूठ झूठ कर प्रधाना, माया ममता डंक वजाइंदा। जुग जुग खेले खेल महाना, खेलणहारा दिस ना आइंदा। निरगुण सरगुण होए प्रधाना, पंज तत्त चोला आप हंढाइंदा। लक्ख चुरासी सुणाए धुर फ़रमाना, आप आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा। लक्ख चुरासी वेखण आए, अचरज खेल बणाईआ। निरगुण सरगुण जामा पाए, जोत नूर रुशनाईआ। गुर अवतार नाउँ धराए, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिजुग साचा आप हंढाए, आपणा वेस वटाईआ। त्रेता लेखा दए मुकाए, अन्त कोए रहिण ना पाईआ। द्वापर आपणा राग सुणाए, बंसरी नाम वजाईआ। कलिजुग अन्तिम फोल फोलाए, काला सूसा वेखे लग्गी शाहीआ। चार कुण्ट मृदंग वजाए, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सूरा सरबंग खेल खिलाए, बेपरवाह वडी वड्याईआ।

मुकामे हक सोभा पाए, हक हकीकत वेख वखाईआ। लाशरीक इक्क ख़ुदाए, शिरक्त वेखे सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग एका चौकड़ गेड़ा आप भवाईआ। चार जुग दा एका गेड़ा, जुग जुग आप भवाइंदा। करे कराए खुल्ल्हा वेहड़ा, धरत मात वेख वखाइंदा। वसणहारा दूर नेड़ा, भेव अभेद छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, एका वार समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुण कर ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग खेल महान, गुर सतिगुर आप कराईआ। चौदां लोक खोल्ह दुकान, वेखे थाउँ थाँईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर हो प्रधान, आपणा डंक वजाईआ। कलिजुग करे खेल महान, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दा लेखा चुक्कणा, एका वार चुकाईआ। चार जुग दा मुक्कया लेख, हरि हरि आप चुकाइंदा। आदि जुगादी रिहा वेख, दिस किसे ना आइंदा। करे खेल नर नरेश, नर नरायण रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी आया अन्त, जुग चौकड़ पार कराईआ। करे खेल श्री भगवन्त, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। जुग जुग देवे मणीआ मंत, एका नाम दृढ़ाईआ। हरिजन उठाए साचे सन्त, भगतन आपणी बूझ बुझाईआ। गुरमुखां तोड़े गढ़ हउमे हंगत, आत्म ब्रह्म इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए जणाईआ। हरि लेखा लेख जणाइंदा, आदि जुगादी कार। सतिजुग त्रेता पार कराइंदा, द्वापर करे खेल न्यार। वेद व्यासा आप उठाइंदा, देवे धुर फ़रमान। पुराण अठारां भेव चुकाइंदा, लिखे लेख महान। चार लक्ख सतारां हज़ार सलोक गणाइंदा, नारद मुन कर परवान। ब्रह्मा सद कोल बहाइंदा, बारां अक्षर कर परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। वेद व्यास हरि जणाया, शब्दी नाद वजाईआ। ब्रह्मण गौड़ नाउँ रखाया, ना कोई जन्मे पिता माईआ। वरन गोत विच किसे ना आया, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना वण्ड वंडाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाया, सच सिँघासण दए समझाईआ। औंदा जांदा किसे दिस ना आया, वेख ना सके कोए लोकाईआ। निहकलंक सो अख्वाया, जिस रंग रूप रेख ना आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेद आप दृढ़ाईआ। वेद व्यास लेख लिखारा, लिख लिख लेख समझाइंदा। निहकलंक इक्क अवतारा, कलिजुग अन्तिम खेल खिलाइंदा। सृष्ट सबाई पावे सारा, दो जहानां वेख वखाइंदा। चार जुग दा करे अन्त किनारा, पार किनारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, बनास्पत मुख शरमाइंदा। सत्त समुंद्र रोवे ज़ारो ज़ारा, सरगुण रूप ना कोए धराइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वण्डण आप वंडाइंदा। साची वण्डण वंडी चार युग, वेद व्यासा लेख लिखाईआ। अन्तिम औध सभ दी जाए पुग, थिर कोए रहिण ना पाईआ। तरताली लक्ख वीह हज़ार, चार जुग वेखे झुक झुक, अभुल भुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। मिल्या वर धुर दरबार, लोकमात लए अंगड़ाईआ। मिली आयू चार लक्ख बत्ती हज़ार, घर घर बैठा ख़ुशी मनाईआ। चारों कुण्ट बोल जैकार, आपणा ज़ोर दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप छुपाईआ। चार लक्ख हज़ार बत्ती, चढ़या माण ग़रूर। घर घर रुत्त उपाए तत्ती, दर दर रक्खे जूठा झूठा कूड़। नाता तोड़े जती सती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हाज़र हज़ूर। कूड़ कुड़यारी चली धार, लोकमात वज्जी वधाईआ। लक्ख चुरासी होई बेज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। दहि दिशा करे पुकार, उठ उठ राह तक्के साचे माहीआ। किरपा कर हरि करतार, दोए बैठी सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग पन्ध रिहा मुकाईआ। कलिजुग पन्ध हरि मुकाए, आपणी दया कमाईआ। ईसा मूसा लए प्रगटाए, एका हुक्म सुणाईआ। काला सूसा तन छुहाए, चारों

कुण्ट अन्धेरा छाईआ। कलमा कलाम आप पढ़ाए, आलमीन वेखे सर्ब लोकाईआ। ज़िमीं अस्मान फेरा पाए, चौदां तबकां रूप वटाईआ। एका ईसा दए समझाए, आपणा नूर नूर रुशनाईआ। ईसा उच्ची कूक कूक सुणाए, चारों कुण्ट दए दुहाईआ। मेरे पिच्छे मेरा ख़ुदा आए, आप आपणा बल धराईआ। ख़ालक मख़लूक कोई भुल ना जाए, बेख़बर रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप वरताईआ। कलिजुग तेरा साचा संग, हरि साचा सच जणाइंदा। मुहम्मद हथ्थ फड़ाया मृदंग, आपणी रचना आप रचाइंदा। चौदां तबकां वेखे लँघ, चौदस चन्द आप चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी मुकाए औध, तेरा पन्ध आप मुकाइंदा। कलिजुग तेरा पन्ध मुकाउणा, हरि साचा सच जणाईआ। साचा मार्ग इक्क वखाउणा, चार वरन सरनाईआ। निरगुण सरगुण रूप धराउणा, जोती जोत कर रुशनाईआ। पंज तत्त चोला आप हंढाउणा, काया गढ़ बणाईआ। नानक नानक नाम धराउणा, निरगुण खेल करे बेपरवाहीआ। आपणे दर आप मंगाउणा, आपणी सिख्या करे पढ़ाईआ। स्वच्छ सरूपी रूप दरसाउणा, जोती जोत डगमगाईआ। सचखण्ड दुआरे आप बहाउणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। नाम सति झोली पाउणा, वस्त अमोलक इक्क वखाईआ। चार वरनां मार्ग लाउणा, ऊँचां नीचां मेल मिलाईआ। राउ रंकां एका धाम बहाउणा, ज़ात पात ना कोए वड्याईआ। लक्ख चुरासी एका

हुक्म सुणाउणा, एका मिले सच्चा माहीआ। काया मन्दिर अंदर घर विच घर इक्क दृढ़ाउणा, बन्द ताकी आप खुल्हाईआ। भर प्याला साचा जाम पिआउणा, साकी बणे साचा माहीआ। चार कुण्ट उठ उठ धाउणा, आप आपणा फेरा पाईआ। कलिजुग जीवां बह समझाउणा, हिन्दू मुस्लिम भाई भाईआ। बेमुख जीवां मुख भवाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण एका हुक्म जणाईआ। नानक समझाए पंज तत्त, चार कुण्ट उठ धाईआ। पुरख अबिनाशी कमलापति, लक्ख चुरासी नारी रूप वखाईआ। घर घर बैठा सत्थर घत, आपणी सेज विछाईआ। आपणा मार्ग रिहा दस्स, उठो चलो पान्धी बण के राहीआ। कलिजुग जीव दर तों जायण नट्ठ, बैठे मुख भवाईआ। नानक निरगुण करे पुकार अग्गे पुरख समरथ, वाह वा तेरी वडी वड्याईआ। जुग जुग चलाए रथ, रथ रथवाही सेव कमाईआ। मैं तेरा नाउँ दस्स दस्स गया थक्क, दूई द्वैत ना कोए मिटाईआ। चारों कुण्ट वेख्या झूठा हट्ट, साची वस्त ना कोए वरताईआ। किरपा कर पुरख समरथ, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। हरि लेखा सच जणाइंदा, सतिगुर नानक कर प्यार। नानक तेरा कीता आपणी झोली पाइंदा, लेखा जाणे दो जहान। आपणा हुक्म आप सुणाइंदा, शब्द अगम्मी धुर फ़रमान। कलिजुग अन्तिम आपणा रूप वटाइंदा, प्रगट होए श्री भगवान। तेरी तेरां तोल धार पूर कराइंदा, तोला बणे शाह सुल्तान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल महान। नानक सुणया सच संदेसा, घर घर विच ख़ुशी मनाईआ। तिस साहिब को सदा आदेसा, जो घाड़त रिहा घड़ाईआ। जुग जुग कराए आपणा वेसा, वेस अनेक वटाईआ। सेवा लाए विष्न ब्रह्मा महेषा, साची सेव समझाईआ। कलिजुग अन्तिम लए लेखा, सभ दा लेखा दए मुकाईआ। सृष्ट सबाई कढ्ढे भरम भुलेखा, भरम गढ़ दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप जणाईआ। नानक सतिगुर कहे पुकार, जीव जंत समझाया। महांबली उतरे आपणी वार, निहकलंक नाउँ रखाया। डंका वज्जे अगम्म अपार, दो जहानां लए जगाया। आपे जाणे आपणी धार, पिछली कीती लए उलटाया। धुर दी बाणी बोले जैकार, साचा नाअरा इक्क सुणाया। सर्ब जीआं दा सांझा यार, परवरदिगार इक्क ख़ुदाया। भुल ना जाणा जीव गंवार, लिख्या लेख ना कोए मिटाया। एका जोती दस अवतार, गुर गोबिन्द गया सालाहया। सत्थर सूलां सेज प्यार, एका यारड़े राह तकाया। दोए जोड़ बणे भिखार, पुरख अकाल अग्गे सीस झुकाया। तेरा कर्जा दिता उतार, तेरा तेरी झोली पाया। सेवा कर सुत दुलार, घर तेरा वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वर साचा इक्क वखाया। देवे वर श्री भगवाना, एका एक जणाईआ। गोबिन्द तेरा सच निशाना,

लोकमात झुलाईआ। नाद वजाए दो जहानां, तेरे नाउँ वड्याईआ। प्रगट होए मर्द मरदाना, निहकलंका नाउँ रखाईआ। तेरा मन्दिर वेखे इक्क मकाना, सम्बल नाउँ धराईआ। साढे तिन्न हथ्थ रक्खे पैमाना, वध्ध घट्ट कदे ना जाईआ। जोती नूर जगे महाना, दिवस रैण रुशनाईआ। शब्दी शब्द खेल महाना, डंका नाम वजाईआ। पूत सपूता हो प्रधाना, ब्रह्मण गौड़ा वेस वटाईआ। ब्रह्म ब्रह्म कर सन्ताना, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाईआ। साचा खण्डा इक्क चमकाना, चण्ड प्रचण्ड प्रगटाईआ। बहत्तर नाड़ मारे इक्क निशाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गोबिन्द मंग मंगाइंदा, प्रभ अग्गे सीस झुका। तेरा लिख्या ना कोए मिटाइंदा, तूं दाता बेपरवाह। कलिजुग डौरू डंक वजाइंदा, चारों कुण्ट फेरा पा। जूठ झूठ नाल रलाइंदा, हउमें हंगता गढ़ बणा। चार लक्ख बत्ती हज़ार मेरा पन्ध ना कोए मुकाइंदा, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे मुख छुपा। लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा, उच्ची कूक कूक रिहा गा। जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा, दर मंगे इक्क पनाह। राए धर्म अन्त डराइंदा, साचा दिसे ना कोए थाँ। चित्रगुप्त हिसाब वखाइंदा, लिख्या लेखा भुल्ले ना। लाड़ी मौत नाल प्रनाइंदा, जून अजूनी दए भुआ। बिन तेरे फंद ना कोए कटाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होणा सदा मेहरवां। मेहरवान दया कमाइंदा, हरि हरि पुरख अकाल। गोबिन्द तेरे हथ्थ फड़ाइंदा, कलिजुग कूड़ा काल। तेरे हुक्मे वण्ड वंडाइंदा, चार लक्ख आए ज़वाल। बत्ती दन्द हरि का नाउँ कोए ना गाइंदा, हज़ार बत्ती ना निभे नाल। तेरे पंजां प्यारयां आप वड्यांअदा, जिन्नां बठाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। हज़ारी सभ दा नाउँ रखाइंदा, इक्क इक्क करे आप प्रितपाल। कलिजुग पंज हज़ार आयू आपणी अन्त हंढाइंदा, दूसर कोए ना निभे नाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल महान। गुर गोबिन्द सुणया हरि का संदेसा, घर घर विच ख़ुशी मनाईआ। कवण खेल करें नर नरेशा, मेरे साहिब सच्चे माहीआ। आपणे नेत्र नैण मैं पेखां, पिता पूत संग रखाईआ। कवण रूप वटाएँ भेखा, कवण घर करें रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दे समझाईआ। गुण समझाए हरि भगवन्त, गोबिन्द सुत उठाए। रूप धराए नारी कन्त, नर नरायण वेस वटाए। आप जणाए आपणा मंत, मन्त्र साचा आप दृढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ दए समझाए। आपणा नाउँ रक्खां निरँकार, निहकलंक रूप वटाईआ। जोती जोत जोत उज्यार, नूर नूर नूर दरसाईआ। शब्दी शब्द शब्द मेरी धार, डंका शब्द शब्द वजाईआ। शब्द खण्डा शब्द कटार, शब्द शमशीर लए उठाईआ। शब्द मारे साची मार, चार कुण्ट दुहाईआ। टिल्ले पर्बत करे ख्वार, जंगल जूह उजाड़ पहाड फोल फोलाईआ। डूँगे सागर वेखे गार, रूप अनूप धराईआ। कलिजुग लहिणा कर्ज

दए उतार, मकरूज नज़र कोए ना आईआ। ख़ालक ख़लक पावे सार, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाईआ। कलिजुग प्रगटे हरि निरँकारा, निरगुण नाउँ धराईआ। सम्बल नगरी धाम न्यारा, घर साचा आप सुहाईआ। हरि मन्दिर वसे वसणेहारा, हरि हरि आपणा नाउँ प्रगटाईआ। करे खेल अपर अपारा, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। दो जहानां मारे मारा, चौदां तबक सफ़ा उठाईआ। चौदां विद्या करे ख्वारा, चौदां लोक ना कोए पढ़ाईआ। चार जुग भेजणहारा गुर अवतारा, निरगुण आपणा नाउँ धराईआ। निहकलंक आवे विच संसारा, जोती जाता भेख वटाईआ। सर्ब जीआं दा इक्क दातारा, घट घट रिहा समाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर वेखे विगसे करे विचारा, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक आपणा नाउँ रखाईआ। निहकलंक नाउँ रक्ख, हरि साचा खेल खिलाइंदा। सति सरूपी हो प्रतक्ख, परम पुरख आपणा रूप वटाइंदा। साचा मार्ग एका दस्स, नौ खण्ड पृथ्मी मार्ग लाइंदा। सत्तां दीपां आपे दस्स, सति सतिवादी राह जणाइंदा। नाता तोड़े अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती मुख शरमाइंदा। वेख वखाए मन्दिर मस्जिद मठ, शिवदुआले फेरा पाइंदा। वसणहारा घट घट, हरि जू आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण आपणा नाउँ धराइंदा। निरगुण नाउँ हरि निरँकारा, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। आदि जुगादी इक्क अवतारा, एका गुर समझाईआ। एका मन्दिर गुरदुआरा, एका धाम बहाईआ। एका शब्द नाम नगारा, एका ताल वजाईआ। एका हुक्म वरते वरतारा, हुक्मी हुक्म आप भवाईआ। लक्ख चुरासी पार किनारा, झूठे भाण्डे दए भनाईआ। गुरमुखां करे आप प्यारा, गुरसिख साचे लए जगाईआ। निरगुण दीआ कर उज्यारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। अनहद नाद सच्ची धुन्कारा, धुंन आत्मक आप सुणाईआ। अमृत प्याए ठंडी ठारा, निझर झिरना आप झिराईआ। चौथे जुग करे पार किनारा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लग्गे इक्क अखाड़ा, मन मति बुध नाच नचाईआ। मगर लगाए पंचम धाड़ा, जूठा झूठा डौरू हथ्थ फड़ाईआ। बचया रहे ना कोए पुरख नारा, जो बैठे हरि भुलाईआ। महांबली उतरे अवतारा, नानक निरगुण गया समझाईआ। पुरख अकाल खड़ग खण्डा करे त्यारा, ब्रह्मण्डां आप वखाईआ। गोबिन्द उठे साचा लाड़ा, कल्गी तोड़ा सीस टिकाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी करे खेल न्यारा, पंदरां कत्तक रुत्त सुहाईआ। धाम सुहाए दिल्ली दरबारा, सच सिँघासण चरन टिकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी देवे इक्क आधारा, राज राजाना हुक्म सुणाईआ। चारों कुण्ट वरते इक्क वरतारा, एका रूप जीव जंत हरि भगवन्त नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर पुरख अकाल,

अजूनी रहत बेमिसाल, निहकलंक आपणा नाउँ धराईआ। निहकलंक शब्द गुणवन्ता, शब्दी धार चलाइंदा। भेव ना पाए ब्रह्मा युकता, चार वेद मुख शरमाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्ता, जुग जुग खेल खिलाइंदा। मेल मिलाए साचे सन्तां, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। माण कराए साचे भगतां, भगत भगवान वेख वखाइंदा। गुरमुखां तोड़े गढ़ हउमे हंगता, आप आपणा नाम जणाइंदा। गुरसिख काया चोली रंगदा, नाम मजीठी आप रंगाइंदा। करे खेल सूरे सरबंग दा, गुर गोबिन्द लेख लिखाइंदा। लेखा जाणे पुरी अनन्द दा, पुरी अनन्द वेख वखाइंदा। लहिणा चुक्के सूरज चन्द दा, ब्रह्मा विष्न शिव मुख छुपाइंदा। जन भगतां दात साची वण्डदा, लेखा जाणे दो जहान दा, आदि जुगादि आपणे नाल आपे हंढदा, करे खेल श्री भगवान दा। नाता तोड़े मन मति दुहागण नार रंड दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा दान। दानी दाता हरि दातारा, निरगुण निहकलंक अख्वाईआ। शब्दी देवे नाम भण्डारा, अतोट अतुट वरताईआ। सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म हो त्यारा, पारब्रह्म आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आप चलाए आपणी धारा, धार धार विच समाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गोबिन्द सूरा वड बलकारा, एका खण्डा नाम चमकाईआ। तिक्खीआं रक्खे दोवें धारा, मनमुखां करे ख्वारा, एका खण्डा नाम चमकाईआ। पंडत पांधा ना कोए पावे सारा, जगत विद्या भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गौड़ ब्रह्मण वसे सभ तों न्यारा, ब्रह्मण गौड़ भेव किसे ना आईआ। किसे कुल विच ना जन्मे हरि निरँकारा, सर्ब जीआं दा इक्क दातारा, सो निहकलंक अख्वाईआ। आदि जुगादि करे पसारा, जुग जुग वेखे वेखणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग औध मुकाईआ। कलिजुग जीव भाणा मन्नो सति, हरि साचा सच दृढ़ाइंदा। सतिगुर पूरा देवे मति, मति मति विच टिकाइंदा। बहत्तर नाड़ ना उब्बले रत, रती रत वेख वखाइंदा। जिस जन मिले कमलापात, आसा तृष्ना सर्ब मिटाइंदा। जगत खेड़ा दिसे भट्ठ, आपणा खेड़ा आप वखाइंदा। निरगुण नूर लट लट, जोती जोत जगाइंदा। गुरसिख तेरे चरनां हेठां कलिजुग बैठा सत्थर घत, सीस सीस ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग जीवां आप जणाइंदा। ब्रह्म मति सतिगुर धार, हरि साचा सच जणाईआ। पंचम देवे शब्द नाद धुन्कार, आपणी करे सच शनवाईआ। अठ्ठे पहर रहे ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोए रखाईआ। मन मति बुध ना कोई विचार, जिस जन सतिगुर शब्द सुणाईआ। हउमे संसा रोग दए निवार, एका गुण वखाईआ। नाता तुट्टे झूठा संसार, साचा सज्जण नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग जीवां देवे मति, तत्त ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। साची मति शब्द गुर ज्ञाना, आत्म ब्रह्म

१०२०

दृढ़ाइंदा । अठ्ठे पहर इक्क ध्याना, दिवस रैण ना कोए वखाइंदा । राग अनाद सुणाए तराना, सारंग सारंगी ना कोए वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आपे फड़, गुरमति इक्क जणाइंदा। गुर मति गुर का रंग, गुर सतिगुर आप चढ़ाईआ। गुरमुख आत्म वेख सेज पलँघ, पावा चूल ना कोए रखाईआ। उप्पर बैठा सूरा सरबंग, तेरा राह तकाईआ। अठ्ठे पहर देवे अनन्द, परमानंद रिहा समाईआ। लहिणा देणा चुक्के सूरज चन्द, एका नूर करे रुशनाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, मति बुध समझ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत तृष्ना दए मिटाईआ। जगत तृष्ना जाए छुट्ट, मन वासना आप गंवाईआ। हउमे जड़् कढ्ढे पुट्ट, काया अंदर रहिण ना पाईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, सांतक सति सति सति कराईआ। गुरसिख मिले गुर गोबिन्द पए तुट्ठ, सतिगुर गोबिन्द आपणी गोद बहाईआ। अबिनाशी करता सुहाए साची रुत्त, रुत्त बसन्त आप महिकाईआ। कलिजुग आवे जाए उठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। ब्रह्मण गौड़ा पूत सपूता जाया सुत्त, शब्दी नाउँ धराईआ। उच्चे टिल्ले चढ़या चोट, पर्बत आपणे आसण लाईआ। सम्बल नगर बणया कोट, गोबिन्द गढ़् सुहाईआ। निरगुण जगे निर्मल जोत, दीवा बाती ना कोए रखाईआ। शब्द नगारे वज्जे चोट, अनादी नाद वजाईआ। लक्ख चुरासी तेरा कढ्ढे खोट, सोया कोए रहिण ना पाईआ। मनमुख जीव आल्ह़णिउँ डिगे बोट, कलिजुग अन्त ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हर घट वसे हर घट बैठा आसण लाईआ।

नव नौ चार हरि हरि गेड़ा, नर हरि नरायण भुआईआ। नव नौ चार चुक्के झेड़ा, श्री भगवान आप चुकाईआ। नव नौ चार खुल्ल्हा होए वेहड़ा, अबिनाशी करता आप कराईआ। नव नौ चार नाता तुट्टे तेरा मेरा, तेरा मेरा रहिण ना पाईआ। नव नौ चार एका पाए अगम्मी घेरा, शब्दी शब्द बेपरवाहीआ। नव नौ चार लहिणा देणा चुक्के सन्झ सवेरा, दिवस रैण ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणी खेल खिलाईआ। नव नौ उतरे पार, चार चार पन्ध मुकाया। चारे मुख रोवण ज़ारो ज़ार, ब्रह्मा धीर ना कोए धराया। चारे वेद करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाया। चारे खाणी गई हार, हरि का भेव किसे ना आया। चारे बाणी सत्थर वेख्या सच्चा यार, यारड़ा सत्थर अन्त ना सके हंढाया। चार कुण्ट धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणी खेल खिलाया। नव नौ चार उतरे घाट, पार किनारा आप कराईआ। करे खेल

पुरख समरथ, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, हरि पुरख निरँजण साची सेव कमाईआ। एकँकारा हरि निरँकारा करे खेल अगम्म अपारा, एका वस्त जन भगतां देवे हथ्थो हथ्थ, आप आपणी आप वरताईआ। लक्ख चुरासी देवे मथ, नाम मधाणा एका पाईआ। लेखा जाणे तीर्थ अठसठ, घट घट बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ लेखा आपणी झोली पाईआ। नव नौ चार मुक्के पन्ध, सो पुरख निरँजण आप मुकाइंदा। जुग चौकड़ी छुट्टे बन्द, बन्दी तोड़ आप तुड़ाइंदा। नव नौ सुणाए एका छन्द, चार चार आप समझाइंदा। आपे जाणे आपणा अनन्द, परमानंद खेल खिलाइंदा। आदि जुगादि सदा बख्शंद, बख्शिश आपणी आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ चार आप जगाइंदा। नव जगाए नौ दुआर, नौबत नाम वजाईआ। दो जहानां करे ख़बरदार, ब्रह्मण्ड खण्ड हिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलार, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा नाल रलाईआ। निरगुण सरगुण खेल करे अपार, लोकमात वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी करे बेदार, ग़फ्लत सभ दी दए मिटाईआ। एका नाद बोल जैकार, शब्द अगम्मी दए सुणाईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबार, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव आपणा भेव चुकाईआ। नौ दुआर पार किनारा, निरगुण निरँकार आप कराईआ। इक्क वखाए सच्चा घर बारा, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। अठ्ठ पहर नूर उज्यारा, जोती जोत डगमगाईआ। आदि जुगादि एका धुन्कारा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। खेल कराए धाम न्यारा, धाम अवल्लड़ा आप उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव आपणा बन्धन पाईआ। नव बन्धन पाए एक, एका एकंकारया। त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंज तत्त करे ख्वारया। बुद्धि करे आप बिबेक, देवे नाम आधारया। चरन कँवल रखाए साची टेक, रूप अनूप आप धरा रिहा। पूर्ब कर्मां आपे वेख, लहिणा लहिणा झोली पा रिहा। लेखा जाणे पीर पैग़म्बर औलीआ शेख़, मुल्लां मुसायक आप उठा रिहा। परखणहारा पंडत पांधे रेख, जोत ललाट फोल फुला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ दुआर आपणा खेल खिला रिहा। नौ दुआर खेल ग़रीब निवाज़ा, हरि आपणा आप कराईआ। शाहो भूप बण राजन राजा, लक्ख चुरासी रचया काजा, आसा आसा विच समाईआ। मन मनूआ फिरे भाजा, दहि दिश उठ उठ धाईआ। आपे वेखे खेल खेल जगत तमाशा, बैठी लोकाई मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव गेड़ा आप भवाईआ। नव गेड़ा जगत सागर, नौ दर आप खुल्हाया। जगत वासना देवे आदर, आसा तृष्ना मेल मिलाया। करे खेल करीम हरि कादर, कुदरत करता वेख वखाया। आपे बणया साचा साबर, सबर सबूरी आप हंढाया।

१०२२

लेखा जाणे पिसर पिदर मादर, बेपरवाह रूप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव आपणा रंग रंगाया। नव रंग निरँकार, आपणा आप रंगाईआ। नव खण्ड पृथ्मी कर त्यार, धरत धवल दए वड्याईआ। ब्रह्मे वस्त अमोल भण्डार, एका वार वरताईआ। त्रैगुण देवे देवणहार, देवणहार आप अख्वाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, धरत मात दी गोद बहाईआ। घर विच घर कर त्यार, आपणा रूप आप वटाईआ। जोती जोत जोत उज्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अंदर वड़ बैठ सरकार, साचा तख्त सुहाईआ। पारब्रह्म करे खेल अपर अपार, आपणी वण्डण वण्ड वंडाईआ। ईश जीव दए आधार, जगदीश आपणी बणत बणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वसया खेड़ा, हरि साचा आप वसाइंदा। लक्ख चुरासी बध्धा बेड़ा, आप आपणे कंध उठाइंदा। आपे दूर आपे नेड़ा, सच सिँघासण आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ मन्दिर आप उपाइंदा। नव नौ मन्दिर आपे खोल्ह, आपणा आसण लाईआ। निरगुण सरगुण अंदर बोल, नाद अनादी आप सुणाईआ। साचे तोल आपे तोल, एका तोला आप हो जाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, डुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ पर्दा दए चुकाईआ। नौ नौ पर्दा देवे चुक्क, हरि साचा खेल खिलाइंदा। घर घर बैठा आपे लुक, दिस किसे ना आइंदा। आपणी वार आपे जाए उठ, ब्रह्म पारब्रह्म प्रगटाइंदा। पंचम उप्पर आपे तुट्ठ, आपणा पर्दा लांहयदा। अमृत आत्म जाम प्याए घुट्ट, सांतक सति सति कराइंदा। नव नौ सुहाए साची रुत्त, रुत्त बसन्त आप उपाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ नौ आपणा खेल खिलाइंदा। नौ नौ खेल हरि गोबिन्द, सो पुरख निरँजण आप खिलाईआ। हरख सोग ना कोए चिन्द, ख़ुशी ग़म ना कोए वड्याईआ। करे खेल गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर नाउँ धराईआ। भेव ना पाए सुरपति इन्द, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ नौ आपणा वेस वटाईआ। नव नौ वेस वटाया, निरगुण सरगुण धार। नौ खण्ड पृथ्मी डेरा लाया, लक्ख चुरासी कर त्यार। निज घर वासी वेख वखाया, आप आपणी किरपा धार। मंडल रास आप पवाया, गोपी काहन बणे नचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव लेखा दए समझाया, नव लेखा पंज तत्त काया गढ़ नौ दुआर खुल्हाईआ। किरपा कर साचा हरि, आपणी वण्डण आप वण्डाईआ। मन मति बुध अंदर धर, एका तत्त जणाईआ। आपणा मार्ग आपे बण, बैठा मुख छुपाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, चोटी जड़ ना कोए रखाईआ। आपणी करनी रिहा कर, करता पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, नव नौ आपणा संग निभाईआ। नव नौ निभाए आपणा संग, भेव किसे ना आया। घर घर वजाए नाम मृदंग, साचा मृदंगा हथ्थ उठाया। आपणी गली आपणी कूट आपे जाए लँघ, औंदा जांदा दिस ना आया। आप सुहाए आपणी सेज पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाया। आपे जाणे आपणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच आप समाया। आपे गाए आपणा सुहागी छन्द, लिखण पढ़न विच ना आया। आप चढ़ाए आपणा साचा चन्द, सूरज चन्द मुख शरमाया। करे खेल सूरा सरबंग, आपणा खेल आप खिलाया। आपे शब्दी डोर पतंग, आपे शब्दी बन्द रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ दर खेड़ा आप सुहाया। नौ दर खेड़ा सोभावन्त, हरि साचा आप सुहाईआ। पंज तत्त चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। एका नाम मणीआ मंत, मन मणका दए भवाईआ। गुरमुख उठाए विरला सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी माया पाए बेअन्त, कोए उठ ना सके राईआ। गढ़ बणाए हउमे हंगत, अंदर वाड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। हरिजन मेले हरि हरिसंगत, साचा संग आप रखाईआ। गुरमुख गुर गुर रंग रंगाए रंगत, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। दर दुआरे जो आए मंगत, नौ दुआर लेखा दए चुकाईआ। माणस जन्म ना होए भंगत, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ दर खेड़ा आपे देवे ढाहीआ। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, दहि दिशा आप भवाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, गुर अवतार सेवा लाइंदा। तीर निराला मारे कस, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। त्रैगुण माया डस्सणी ना सके डस्स, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। दरस दिखाए हस्स हस्स, आपणी दया आप कमाइंदा। पूरी करे गुरमुखां आस, जुग जुग आपणी दया कमाइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। नौ दुआरे करे बन्द ख़ुलास, दसवां दर आप सुहाइंदा। साचे तख्त बैठ पुरख अबिनाश, आत्म सेजा सोभा पाइंदा। ना पृथ्मी ना कोए आकाश, गगन मंडल ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ दुआरे आपणा राह चुकाइंदा। नौ दुआर मुके पन्ध, गुर सतिगुर आप मुकाईआ। आप जणाए सुहागी छन्द, सो पुरख निरजंण सच पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म वखाए इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द मंगल गाईआ। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ दर लेखा दए चुकाईआ। नौ दर तेरा लेख चुकाउणा, गुर सतिगुर दया कमाइंदा। गुरमुख साचे आप उठाउणा, आपणी बूझ बुझाइंदा। जन्म जन्म दा रोग गंवाउणा, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। फड़ फड़ आपणी गोद बहाउणा, राए धर्म नेड़ ना आइंदा। दो जहानां चन्द चढ़ाउणा, साचा चन्द आप चमकाइंदा। जुग जुग टुट्टी गंढु वखाउणा, गंढुणहार सेव कमाइंदा। नार कन्त श्री भगवन्त आप अख्वाउणा, कन्त

सुहागी आप मिलाइंदा। घर घर मंगल सखीआं गाउणा, पंचम सखीआं आप उठाइंदा। दर दुआर आप खुल्हाउणा, आत्म ताकी बन्द खुल्हाइंदा। आत्म सेजा फड़ बहाउणा, गुरमुख साचे नाल मिलाइंदा। अनहद साचा राग सुणाउणा, दूसर गीत ना कोए अल्हाइंदा। छत्ती रागां मुख शरमाउणा, पुरख अबिनाशी खेल खिलाइंदा। एका दीपक जोत जगाउणा, तेल बाती ना कोए टिकाइंदा। नारी कन्त एका रंग रंगाउणा, साची सेजा सोभा पाइंदा। नौ दर तेरा झूठा डेरा ढाउणा, माया ममता मोह चुकाइंदा। दस्म दुआरे गुरमुख साचा आप बहाउणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत जोत मिलाउणा, जोती जाता आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ दर नाता जाए तुट, नौ खण्ड पृथ्मी जाए छुट्ट, लक्ख चुरासी गेड़ रहिण ना पाईआ। गुरमुख मिले गुर गुर जोत, गुर सतिगुर आप मिलाईआ। काया बंक वखाए किला कोट, गृह मन्दिर भेव चुकाईआ। बन्द किवाड़ा खोल्हे सोत, सुरती शब्द शब्द मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाईआ। हरिजन हरि जगाइंदा, जुगा जुगन्तर कार। निरगुण सरगुण दरस दिखाइंदा, स्वच्छ सरूपी हो त्यार। आपणा पर्दा आप उठाइंदा, देवे दरस अगम्म अपार। त्रैगुण सड़दा अग्ग बचाइंदा, अमृत जाम प्याए ठंडा ठार। पंज तत्त लड़दा आप छुडाइंदा, नाता तोड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकार। जग डुबदा आप तराइंदा, नाम नईया देवे चाढ़। हरिजन साचे आप उठाइंदा, आप आपणी किरपा धार। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखाइंदा, कलिजुग आई अन्तिम वार। निरगुण जोती जामा भेख वटाइंदा, निहकलंक नरायण नर अवतार। गोबिन्द सूरा नाल रलाइंदा, शब्द घोड़ा कर त्यार। साचे अश्व आप चढ़ाइंदा, लोआं पुरीआं करे पार। आत्म ब्रह्म आप दृढ़ाइंदा, दूजा तत्त ना करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ लेखा दए उतार। नव नौ लेखा उतरे पार, उतारनहार आप हो जाईआ। सचखण्ड वखाए इक्क दुआर, लोकमात खुल्हाईआ। प्रगट होवे हरि करतार, निरगुण रूप वटाईआ। लेखा जाणे तेई अवतार, भुल कदे ना जाईआ। दस दस गुर पावे सार, एका सच्चा माहीआ। भगत भगवन्त लए उठाल, आपणा रंग रंगाईआ। सन्तां करे आपे भाल, गुरमुखां चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरसिखां सुरत रिहा संभाल, लक्ख चुरासी विच्चों नाल मिलाईआ। लेखा तोड़े शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, गुर गुर वेस वटाईआ। दो जहानां वज्जे ताल, निरगुण सरगुण आप वजाईआ। लक्ख चुरासी होई बेहाल, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। नज़र ना आए पुरख अकाल, बैठे वण्डण पाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पाया जाल, उम्मत उम्मती नाल रलाईआ। किसे दिस ना आए सच्ची धर्मसाल, हरि मन्दिर फेरा कोए ना पाईआ। किसे फल ना दिसे डाल, जीव जंत सिम्मल रुक्ख

रहे लहराईआ। सभ दे सिर ते कूके काल, काल नगारा रिहा वजाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी चले अवल्लड़ी चाल, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। रूप वखाए एका नर, नर नरायण आप हो जाइंदा। हरिजन साचे लए फड़, आपणी गोद आप बहाइंदा। आपणी विद्या आपे पढ़, गुरमुखां आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे दर आपे खड़, आपणा दरस दिखाइंदा। साचे दर खड़ भगवन्त, आपणा दरस दिखाईआ। करे खेल गुण गुणवन्त, अवगुण नज़र कोए ना आईआ। नाम जणाए दो जहानां मंत, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। लक्ख चुरासी एका कन्त, एका वार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ आपणी झोली पाईआ। नव नौ आपणी झोली पा, आपणा शुकर मनाइंदा। आदि जो रचना लई रचा, अन्तिम आपे ढांहयदा। विष्न ब्रह्मा शिव मंगण पनाह, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। गुर अवतार बणन ग्वाह, लक्ख चुरासी पार ना कोए कराइंदा। राए धर्म पाए अन्तिम फाह, लाड़ी मौत नाल प्रनाइंदा। उम्मत उम्मती होणा जगत नकाह, सम्मत उन्नी आप समझाइंदा। अल्ला राणी रही मुख शरमा, नेत्र मुहम्मद ना कोए उठाइंदा। चार यार ना देण सलाह,
१०२५ सलाहगीर ना कोए संग निभाइंदा। पीर पैग़म्बर कर कर बैठे नांह, अग्गे राह ना कोए पाइंदा। सिर देवे ना कोए ठंडी १०२५
छाँ, सलामत दर ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग आपणा खेल खिलाइंदा। नौ नौ तेरा अन्त किनारा, हरि अन्तिम वार जणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग उतरे पार किनारा, जुग जुग गेड़े विच भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, उल्फ़त विच कदे ना आईआ। उल्फ्त विच ना आए आलमीन, आप आपणी दया कमाइंदा। लेखा जाणे लोक तीन, चौदां लोक नाच नचाइंदा। चौदां तबकां तड़फाए जिउँ जल बिन मीन, जल मीन आपणी खेल खिलाइंदा। मुहम्मद नेत्र वेखे सीन, पुरख अबिनाशी आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा आप मुकाइंदा। चार वेद ब्रह्मे आई हार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। चारे बाणी करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। हरि का मन्दिर अपर अपार, दिस किसे ना आईआ। लक्ख चुरासी इट्टां पत्थरां अग्गे करे पुकार, निरगुण इष्ट ना कोए मनाईआ। ग्रन्थी पन्थी होए बेहाल, गोबिन्द नज़र किसे ना आईआ। चार यारी तेरा सज्जण सुहेला, इक्क इकल्ला माहीआ। मुहम्मद मंगया अन्तिम वेला, एका मंग मंगाईआ। चौदां तबक होए वेहला, सदी चौधवीं नाल रलाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, अमाम अमामा रूप वटाईआ। जोती जोत

१०२६

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार चार आप सालाहीआ। चार सालाहे सलाहवण योग, युगती आपणे हथ्थ रखाईआ। चार यारी भोगया भोग, चार कुण्ट वड्याईआ। चौथे जुग लग्गा रोग, हउमे रोग वधाईआ। पाकी पाक ना मिल्या धुर संजोग, पतित पुनीत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथे दर वेख वखाईआ। चौथे दर वेखणहारा, आपणा नैण खुल्हाईआ। नव नौ नौ नव पावे सारा, आप आपणा रूप वटाईआ। सतिजुग मुहम्मद बैठे इक्क किनारा, एका राह तकाईआ। कवण देवे अन्त सहारा, बणे खेवट सच्चा माहीआ। अञ्जील कुरान करे पुकारा, तीस बतीसा दए दुहाईआ। इक्क इकल्ला परवरदिगारा, ख़ालक ख़लक रिहा समाईआ। मुकामे हक वसे सांझा यारा, बेऐब रूप धराईआ। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला अल्हाए सच जैकारा, जै जैकार आप कराईआ। नौबत वजाए इक्क नगारा, सच महिराबे आसण लाईआ। आपे उतरे आपणी वारा, रूप अनूप आप रखाईआ । अलिफ़ ये तेरा पार किनारा, आरफ़ लेखा लिख ना सके कोए राईआ। आलम उल्मा करे ख्वारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार चार लहिणा झोली पाईआ। चार चार लहिणा पाउणा झोली, हरि साचा सच जणाइंदा। चारों कुण्ट मुहम्मद तृष्ना वेखे गोली, उम्मती उम्मत नाल रलाइंदा। पाटा चीथड़ लीरां चोली, सीस पर्दा ना कोए टिकाइंदा। दर दर फिरे हौली हौली, अगला पन्ध ना कोए मुकाइंदा। हथ्थ रखाई मैहन्दी मौली, मींढी सुहाग ना कोए गुंदाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार चार वेख वखाइंदा। मैंहदी मौली फड़या तन्द, अल्ला राणी उठ उठ धाईआ। चार यारी बन्न्हे कोए ना तन्द, गाना सगन ना कोए मनाईआ। चार कुण्ट होया अन्ध, चौधवीं चन्द ना कोए चढ़ाईआ। चौदां तबक दिसण खण्ड खण्ड, साबत सूरत नज़र कोए ना आईआ। मुहम्मद नाल मंगे मंग, आपणी इच्छया लए प्रगटाईआ। तेरी लोकाई सुत्ती दे कर कंड, ना सके कोए नैण उठाईआ। मैं फिर के वेख्या विच वरभण्ड, भंडी पई सर्ब लोकाईआ। मस्जिद काअबे दिसया ना ख़ुदावंद, नूर ज़हूर नज़र किते ना आईआ। घर घर वेख्या विष्टा गंद, झूठी सेज रहे हंढाईआ। कोई ना वसदा दिसे खेड़ा पिण्ड, नगर गराँ शहर सुञ्ञ मसाण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार यारी दए हिलाईआ। मुहम्मद उठ लै अंगड़ाई, अल्ला राणी आप जणाया। चौदां तबक ना कोए शनवाई, नग़मा नाम ना कोए अल्हाया। तेरी उम्मत तेरा राह रही भुलाई, भुल्लया राह ना कोए वखाया। मैं आपणा भुल्ली सच्चा माही, मीआं मेरा नज़र किते ना आया। चार यारां नाल लै के दयाँ दुहाई, दुहाई पीर दस्तगीर रहे कराया। तेरी ग़ुलामी मारया ज़ंजीर, बैठी बन्धन पाया। तेरी प्रीत निभे ना अन्त अख़ीर, चौदां सदीआं पन्ध मुकाया। मैं मिलणा सच्चे पीर, जो

आदि जुगादि समाया। जेहड़ा देवे दात शाह फ़कीर, हकीर हकीरां गले लगाया। मेरी बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी दए बदलाया। उहदे हथ्थ मेरी अकसीर, अकसीर आपणी झोली पाया। मैं नेत्र वहाउँदी नीर, गल पल्लू इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाया। अल्ला राणी रोवे नीर वहा, छहिबर आपणे नैणां लाईआ। मुहम्मद तेरे कोलों पल्लां लवां छुडा, चार यारी दवां तजाईआ। अन्तिम मिलां सच मलाह, दो जहानां सच्चे माहीआ। मेरा विछोड़ा दए कटा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपणी मेहर मेहर मेहर मेरी चोली दए रंगा, सालू लाल रंग कराईआ। आपणी किरपा किरपा किरपा आपणी डोली लए बहा, चार यार तेरे कहार बणाईआ। हौली हौली लए चला, आपणे मार्ग पाईआ। आपणे मन्दिर लए बहा, साचा मन्दिर सुहाईआ। चार जुग दी कुँवारी कन्या नाल करे नकाह, मेरा रंडेपा दए चुकाईआ। मैं उठ उठ गावां करां सिफ्त सालाह, बेऐब मेरा माहीआ। साचा झुलदा रहे निशां, सच निशाना इक्क झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे अंग लए लगाईआ। आप लगाए आपणे अंग, अंगीकार अख्वाइंदा। चौथे जुग तेरा झूठ मृदंग, कूड़ी क्रिया वेख वखाइंदा। नव नौ चार करे भंग, जो घड़्या भन्न वखाइंदा। सच सिँघासण सुहाए इक्क पलँघ, पावा चूल ना कोए रखाइंदा। नौबत नाम वज्जे मृदंग, सच नगारा आप सुणाइंदा। नौ
१०२७ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग वेला गया लँघ, कलिजुग अन्तिम सर्ब जणाइंदा। ना कोई राग रागनी ना कोई तन्द, तन्दी राग १०२७
ना कोए अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नव नौ चार पार कराइंदा। नव नौ चार तेरा लेखा बाकी, हरि पुरख निरँजण आप चुकाईआ। लेखा जाणे जीव ख़ाकी, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। गुर अवतार रहे ना कोए आकी, पीर पैग़म्बर बैठे सीस झुकाईआ। सचखण्ड दुआरे खोले ताकी, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड एका वार वेख वखाईआ। शब्द अगम्मी चढ़या राकी, नर निरँकारा सोलां कलीआं आसण पाईआ। सति सतिवादी मार पलाकी, दो जहानां वेख वखाईआ। लोकमात आए गुरमुखां जाम प्याए बण बण साकी, नाम प्याला हथ्थ रखाईआ। निरगुण रक्खी चाल बांकी, सरगुण नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा रिहा मुकाईआ। लहिणा मुकाउणा हरि निरँकार, जुग जुग आप मुकाइंदा। देणा देवे सर्ब संसार, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। गुर गोबिन्द बणया इक्क लिखार, नानक रसना जेहवा गाइंदा। निहकलंक आवे महांबली अवतार, निरगुण सरगुण आपणा रूप वटाइंदा। सम्बल वसे धाम न्यार, हरि मन्दिर सोभा पाइंदा। शब्द अगम्मी करे गुफ्तार, दीद शनीद खेल खिलाइंदा। जोद्धा सूरबीर बली बलकार, बल आपणा आप जणाइंदा। शाह सुल्तानां करे

ख्वार, राज राजानां खाक मिलाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी दए इक्क आधार, नौ दुआरे इक्क ज्ञान दृढ़ाइंदा। चार वरनां करे प्यार, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। एका बोले नाम जैकार, सच जैकारा आप सुणाइंदा। हँ ब्रह्म ल्ए उठाल, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। सतिजुग चले आपणी चाल, पिछला लेखा बन्द कराइंदा। एका पूजा रहे अकाल, मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला सीस ना कोए झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात जोत धर, नव नौ चार आपणे विच छुपाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणवन्त गुण निधान, शब्द सुत जोत निशान, जोती जाता पुरख बिधाता, परम पुरख आपणी खेल खिलाइंदा।

★ २७ सावण २०१८ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे गृह कादराबाद ★

सति अंदर सति धार, सति पुरख निरँजण आप रखाइंदा। ब्रह्म अंदर ब्रह्म प्यार, पारब्रह्म छुपाइंदा। रत अंदर रत अपार, रती रत आप टिकाइंदा। मति अंदर मति अपार, गुरमति आप जणाइंदा। घर विच घर खोल्ह किवाड़, घर घर विच मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप रंगाइंदा। सति अंदर सति रंग,
१०२८ सति सतिवादी आप रखाइंदा। ब्रह्म अंदर ब्रह्म तत्त, पारब्रह्म प्रगटाइंदा। घर विच घर घर पलँघ, घर साची सेज सुहाइंदा। १०२८
घर वस्त घर मंगे मंग, घर झोली अग्गे डांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच आप सुहाइंदा। घर दात घर दातारा, देवणहार हरि अख्वाईआ। घर नाम घर भण्डारा, घर घर विच रिहा वरताईआ। घर मन्दिर घर गुरदुआरा, घर बैठा बेपरवाहीआ। घर नूर घर जोत उज्यारा, घर घर विच करे रुशनाईआ। घर नाद घर शब्द धुन्कारा, घर रागी राग सुणाईआ। घर अमृत घर ठंडा ठारा, घर बूंद स्वांत चुआईआ। घर पुरख घर नारा, नार कन्त घर घर वेस वटाईआ। घर साजन घर मीत मुरारा, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर विच घर आप सुहाईआ। सति अंदर सति रक्ख, सति सतिवन्ता खेल खिलाइंदा। घर विच घर कर प्रतक्ख, घर घर जोत जगाइंदा। घर घर करे आपा वख, आप आपणा मुख छुपाइंदा। घर घर बोले इक्क अलख, अलखना अलख आप सुणाइंदा। घर अंदर घर रिहा दस्स, घाड़त घड़त ना कोए जणाइंदा। पुरख अबिनाशी रिहा वस, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। हरिजन मार्ग देवे दस्स, आदि जुगादि बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर में सोभा पाइंदा। सति अंदर सति सतिवाद, हरि साचा सच जणाईआ। घर विच घर घर ब्रह्माद, ब्रह्मादी

आप वखाईआ। घर विच सज्जण साचा लाध, घर घर विच ख़ुशी मनाईआ। घर रक्खे साची याद, घर विसर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक्क समझाईआ। साचा घर गुरु चरन दुआरा, गुर साचा सच जणाइंदा। आदि जुगादी खेल न्यारा, जुग जुग वेस वटाइंदा। घर घर बैठे हो न्यारा, निरगुण आपणा दर सुहाइंदा। सच सिँघासण अपर अपारा, सचखण्ड दुआरे आप टिकाइंदा। थिर घर चरन कँवल दए सहारा, आप आपणा चरन टिकाइंदा। गुरमुख सज्जण कर प्यारा, आप आपणे रंग रंगाइंदा। मस्तक धूढ़ ख़ाक देवे छारा, दुरमति मैल धवाइंदा। पाकी पाक परवरदिगारा, पतित पुनीत पार कराइंदा। साची रीत विच संसारा, जुग जुग आप चलाइंदा। हरिजन मेले आपणी वारा, आप आपणा बन्धन पाइंदा। घर विच खोल्ह़े बन्द किवाड़ा, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। घर दीवा बाती कर उज्यारा, घर कमलापाती खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप मिलाइंदा। गुरमुख साचे घर घर मेला, गुर सतिगुर आप कराईआ। लेखा जाणे गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द भेख वटाईआ। जगत जुग सज्जण सुहेला, जुग जुग होए सहाईआ। आदि जुगादी इक्क इकेला, ब्रह्मादी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच होए सहाईआ। सति अंदर सति रिहा छुप, सो पुरख निरँजण आप छुपाया। घर घर

१०२६ दिसे अन्धेरा घुप्प, चन्द चांदनी ना कोए चमकाया। घर विच घर बैठा लुक, पर्दा सके ना कोए उठाया। नज़र ना आए चारे कुण्ट, दहि दिशा वेख वखाया। गुरमुख विरले तेरे मन्दिर बहे उठ, आप आपणा पर्दा लाहया। साहिब सुल्तान जाए तुड्ठ, गुर सतिगुर रूप वटाया। अमृत जाम प्याए घुट्ट, सच प्याला हथ्थ उठाया। सच फुलवाड़ी जाए फुट्ट, पत्त डाल्ह़ी आप महिकाया। गुरसिख सुहाए तेरी रुत, रुत रुतड़ी वेख वखाया। करे खेल अबिनाशी अचुत, अचरज आपणी रीत चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच दीप जगाया। घर दीपक प्रकाश, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। घर पुरख अबिनाश, एका रंग चढ़ाईआ। घर सज्जण मिले साक, नाता बन्धन तोड़ तुड़ाईआ। घर गुरमुख लेवे राख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। घर देवे साचा साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर वेखे थाउँ थाँईंआ। घर वेखे थान थनंतर, दर दर घर घर खेल खिलाइंदा। घर बुझाए लग्गी बसन्तर, अग्नी अग्ग तत्त मिटाइंदा। घर जणाए साचा मन्त्र, सो पुरख निरँजण आप पढ़ाइंदा। घर वखाए गगन गगनंतर, गगन मंडल सोभा पाइंदा। घर हँ ब्रह्म बणाए बणतर, आत्म ब्रह्म आप उपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति अंदर सति धराइंदा। सति अंदर सति प्रकाश, हरि साचा सच कराईआ। आदि अन्त ना होए विनास, अबिनाशी खेल १०२६

खिलाईआ। लक्ख चुरासी कर कर वास, घर घर जोत जगाईआ। दर दर पावे मंडल रास, साची सखीआं नाच नचाईआ। गुरमुखां करे पूरी आस, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। नाता तोड़े दस दस मास, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। सेवा करे दासी दास, माणस जन्म सेव कमाईआ। बन्दीख़ाना तोड़ करे बन्द ख़ुलास, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन रहे हरि हरि गाईआ। जन्म जन्म दी बुझाए प्यास, तृष्ना तृखा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच वज्जे वधाईआ। घर वज्जे नाद धुन, हरि साचा सच वजाइंदा। गुरसिख विरला लए सुण, सृष्ट सबाई गूढ़ी नींद सवाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी विच्चों चुण, हरिजन आपणे मेल मिलाइंदा। आपे जाणे गुण अवगुण, लेखा लेख ना कोए वखाइंदा। सृष्ट सबाई छाण पुण, हरिजन साचे बाहर कढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच खेल खिलाइंदा। घर नाम मधाणा वरोले छाछ, गुर सतिगुर गेड़ा आप दिवाईआ। घर गुरमुख गुरसिख मक्खण लए राख, आप आपणी झोली पाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, गति मित ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट घट अंदर कर कर वास, घर घर लेखा रिहा मुकाईआ। घर लेखा मुके मुके हक, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। घर लहिणा चुक्के गुरमुख राह रिहा तक्क, नेत्र नैण नैण उठाईआ। घर सिँघ शेर एका बुक्के, जम्बक कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर भय भउ सर्ब चुकाईआ। घर चुक्के भै, भउ कोए नज़र ना आया। जिस दर सतिगुर सच्चा बहे, सो दर सोभा पाया। जगत विकारा होए खय, खण्डा नाम चमकाया। गुरसिख गुर एका रहे, दूसर अवर ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे मेल मिलाया। घर मेला गुर करतार, सति पुरख निरँजण आप कराईआ। लक्ख चुरासी अंदर गुरसिख धार, सतिगुर पूरे आप वहाईआ। कोटन विच्चों कर प्यार, गुरमुख हीरा इक्क उठाईआ। लाल अनमुल्लड़ा आप संभाल, आपणे ख़ज़ाने लवे पाईआ। ना शाह ना कोए कंगाल, भगतां आपणी खेल खिलाईआ। निर्धन सरधन बण दलाल, निर्धन आपणी झोली पाईआ। आदि जुगादि बणे प्रितपाल, प्रितपालक सेव कमाईआ। गुरसिख सज्जण साची घालन रहे घाल, सोहँ ढोला साचा गाईआ। पुरख अबिनाशी चले नाल नाल, दिवस रैण संग निभाईआ। कलिजुग कूड़ ना खाए काल, कालख टिक्का दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख गुर गुर रूप वखाईआ।

★ २७ सावण २०१८ बिक्रमी बख्शीश सिँघ दे गृह कादराबाद ★

हरि बख्शे सच प्यार, सतिगुर सच्ची सरनाईआ। सोहँ शब्द सच जैकार, सचखण्ड दुआर वज्जे वधाईआ। महाराज शेर सिँघ निरगुण सरगुण धार, लोकमात खेल खिलाईआ। विष्नूं दाता भर भण्डार, वड भण्डारी लए मिलाईआ। भगवन खेल करे अपार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। दो जहानां जै जैकार, एका नाअरा नाउँ सुणाईआ। ब्रह्मा गाए आपणी वार, चारे मुख मुख सालाहीआ। शंकर कंठ करे विचार, कंठ कंठ समाईआ। सुरपति मंगे धूढ़ी छार, सीस जगदीस झुकाईआ। करोड़ तेतीसा बण भिखार, ख़ाली झोली रिहा वखाईआ। त्रैगुण रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पंज तत्त हाहाकार, सति सन्तोख ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्यार इक्क समझाईआ। सच प्यार देवे दात, निरगुण दाता बेपरवाह। सोहँ शब्द सच करामात, दो जहानां बणे मलाह। महाराज शेर सिँघ मेटे अन्धेरी रात, साचा चन्द दए चढ़ा। विष्नूं देवे साची दात, आपणा भण्डारा आप वरता। भगवान सुणाए साची गाथ, शब्द अगम्मी आपे गा। जै जैकार करे रघुनाथ, आप आपणा नाअरा ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाँ। सच प्यार हरि निरंकारा, एका एक जणाईआ। आदि जुगादी बोल जैकारा, दो जहान सुणाईआ। सचखण्ड साचे खेल न्यारा, थिर घर वज्जे वधाईआ। लोकमात कर पसारा, घट घट रिहा वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका लाईआ। साचा मार्ग नाम सति, जै जैकार कराया। घर घर देवे एका मति, एका हरि हरि नाद सुणाया। बीज बीजे साचे वत, बण करसाणा हल चलाया। फुल फुलवाड़ी लाए वेखे डाल्ही पत्त, साची पंखड़ीआं आप प्रगटाया। करे खेल पुरख समरथ, आपणा प्यार आप उपाया। शब्दी सुत दुलारा जोड़े नत्त, विष्न ब्रह्मा शिव बन्धन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क प्यार आपणे हथ्थ रखाया। सच प्यार बन्न्हे डोर, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। आदि जुगादी चढ़े घोड़, निरगुण घोड़ा आप दौड़ाईआ। लोआं पुरीआं जाए बौहड़, गगन पातालां फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी बुझाए औड़, एका मेघ बरसाईआ। वेखे परखे मिठ्ठा कौड़, कौड़ा रीठा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सच प्यार पाया बंध, हरि साचा खेल खिलाइंदा। प्रेम अंदर सूरज चन्द, मंडल मण्डप रास रचाइंदा। प्रेम ढोला गायण छन्द, गुर अवतार सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार आप कमाइंदा। सच प्यार करे करतारा, विष्न ब्रह्मा शिव उपाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डारा, पंचम नाता जोड़ जुड़ाईआ। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ ठठयारा, घड़ घड़ भाण्डे दए धराईआ।

वस्त रक्खे इक्क हरि थारा, आपणा प्यार बन्धन पाईआ। प्रेम जोत कर उज्यारा, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। प्यार शब्द सच्ची धुन्कारा, शब्द अनादी नाद वजाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करे प्यारा, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। वण्डे वण्ड विच संसारा, साचा हिस्सा आप रखाईआ। नाउँ धराए गुर अवतारा, रूप अनूप आप अख्वाईआ। जीवां जंतां दए सहारा, सच प्यारा बन्धन पाईआ। उच्ची कूक बोल जैकारा, जुग जुग आपणे नाउँ दए वड्याईआ। सतिजुग करया सच विहारा, सति सतिवादी खेल खिलाईआ। प्रगट होया वार अठारां, बल बावण दए वड्याईआ। ध्रू प्रहिलाद पार किनारा, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। नर नरायण खेल न्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्यार आपे पाईआ। आपणा प्यार गुर अवतार, आपणी धार चलाइंदा। वरते वरतावे सच वरतार, जुग जुग खेल खिलाइंदा। सतिजुग त्रेता कर त्यार, द्वापर जन्म दिवाइंदा। कलिजुग सतिगुर लए उठाल, साची सेवा इक्क समझाइंदा। जुग चौकड़ी चले नाल नाल, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग खेल खिलाइंदा। अन्तिम सभ नूं खाए काल, काल प्यार नाल बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेद आप चुकाइंदा। सतिजुग साचे जन्म दवा, लोकमात धराया। जननी जन बणे बेपरवाह, आप आपणी कुक्ख सुहाया। धरत मात दी गोदी दए बहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। एका हुक्म दए जणा, सच सुच्च वरताया। भगत भगवन्त मेल मिला, साचे सन्तां संग निभाया। एका वस्त झोली पा, मस्तक टिका धूढ़ी लाया। वरन गोत ना कोए रखा, एका घर वसाया। साचे पौड़े दए बहा, चौथा पद आप जणाया। ब्रह्मण रीता आपे आ, ब्रह्म वेखे थाउँ थाया। एका देवे सच सलाह, सच सालाही दया कमाया। सतिजुग खेड़ा दए वसा, लक्ख चुरासी मेल मिलाया। अंडज जेरज रूप वटा, उत्भुज सेत्ज आपणी धार रखाया। नारी नर वेस करा, जोड़ी जोड़ा जोड़ जुड़ाया। घट घट ब्रह्म वासना दए भरा, जगत वासना नाल बंधाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रला, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाया। माणस मानुख खेल खिला, मानव धन्दे लाया। निहकर्मी आपणा कर्म कमा, आपणा पर्दा आपे पाया। घर विच बैठा मुख छुपा, दिस किसे ना आया। जिस जन दया दए कमा, तिस नेत्र नैण खुल्हाया। आपणा प्रेम लए निभा, एका बन्धन पाया। सुरती शब्दी मेल मिला, प्रेम डोरी इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणी धार चलाया। सतिजुग साचा मात ला, हरि साची दया कमाइंदा। ओअं सोहँ खेल खिला, सोइम रूप आप प्रगटाइंदा। नाउँ निरँकारा आप अख्वा, आपणे नाउँ सालांहयदा। धरनी धरत धवल दए टिका, जल बिम्ब आप समा, नीर सीर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा धन्दा आप कमाइंदा।

हरि निरँकार साचा धन्दा, आपणा आप जणाईआ। लक्ख चुरासी वेखे जीव जंत बन्दी बन्दा, बन्दीखाना इक्क खुल्हाईआ। आदि जुगादि बण बख्शंदा, साची धार लए प्रगटाईआ। करे खेल गुणी गहिन्दा, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार दए जणाईआ। गुरसिख सच प्यार, गुर सतिगुर मेल मिलाया। मनमुख सच प्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काया। गुरमुख सच प्यार, गुर चरन ओट तकाया। मनमुख सच प्यार, हउमे हंगता रोग वधाया। सन्तन सच प्यार, सति सतिवादी एका गुण गाया। मनमुख सच प्यार, झूठे धन्दे मन चित लाया। भगतन सच प्यार, भगवन भगती इक्क दृढ़ाया। मनमुखां सच प्यार, माया ममता मोह वधाया। दोहां विचोला बण निरँकार, लोकमात खेल खिलाया। गुरमुख गुरसिख देवे सच प्यार, आपणा मन्त्र नाम दृढ़ाया। मनमुख देवे सच प्यार, ठग्ग चोर यार बणाया। गुरसिख देवे सच प्यार, आत्म धुन नाद वजाया। मनमुख देवे सच प्यार, रातीं सौं सौं वक्त लँघाया। साचे सन्तां देवे सच प्यार, आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाया। मनमुखां देवे सच प्यार, नौ दर वासना विच फिराया। भगतां देवे सच प्यार, भगवन आपणा नूर दरसाया। मनमुखां देवे सच प्यार, कूड़ कुड़यारा झोली पाया। दोहां विचोला बण निरँकार, लोकमात खेल खिलाया। सच प्यार गुरसिख दात, आत्म ब्रह्म जणाईआ। सच प्यार मनमुख ज़ात, चार वरन लड़ाईआ। सच प्यार गुरसिख नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सच प्यार मनमुख घाट, वहिंदे वहण रिहा वहाईआ। सच प्यार सन्तन ज़ात, ज़ात अज़ाती दए खपाईआ। सच प्यार मनमुखां खात, डूँग्घे सागर दए रुढ़ाईआ। सच प्यार भगतन पुच्छे वात, आदि जुगादि होए सहाईआ। सच प्यार मनमुखां देवे मात, राए धर्म हथ्थ फड़ाईआ। दोहां विचोला पुरख अबिनाश, लोकमात खेल खिलाईआ। सच प्यार विष्नूं मंग, आपणा सीस झुकाया। सच प्यार ब्रह्मे रंग, रंग मजीठी इक्क चढ़ाया। सच प्यार शंकर कट्टे भुक्ख नंग, हथ्थ त्रिसूल रिहा सुटाया। सच प्यार सूरज चन्द, एका किरन करे रुशनाया। सच प्यार वण्ड ब्रह्मण्ड, शब्दी शब्द नाद सुणाया। सच प्यार जेरज अंड, निरगुण जोती जोत जगाया। सच प्यार सुहागी छन्द, गुर सतिगुर आप सुणाया। सच प्यार किसे दर ना होवे बन्द, किला कोट अंदर रक्ख ना कोए टिकाया। सच प्यार सदा बख्शंद, आप आपणे हथ्थ रखाया। जो जन रसना जेहवा गाए बत्ती दन्द, तिस जन हरि हरि लए मिलाया। सच प्यार आत्म अन्तर अनन्द, निज घर आपणा आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार आपणा बन्धन पाया। बन्धन बंध प्यार, ब्रह्मा सुत भराईआ। प्यार प्यार आधार, बराह रूप वटाईआ। प्यार प्यार सुधार, यज्ञै पुरष खेल खिलाईआ। प्यार प्यार विचार, हाव ग़रीव दए वड्याईआ। प्यार प्यार शंगार, नर नरायण रूप धराईआ। प्यार प्यार जैकार, कपल

१०३३

मुन संग रखाईआ। प्यार प्यार पैज संवार, दत्ता त्रै जोत रुशनाईआ। प्यार प्यार करे ख़बरदार, रिखप देव उठाईआ। प्यार प्यार मेले साचा यार, पृथू देवे माण वड्याईआ। प्यार प्यार अंदर धार, मत्तस आपणे रंग रंगाईआ। प्यार करे आपणी वार, कछप आपणा नूर रुशनाईआ। प्यार खेल करे करतार, धनंतर एका गुण जणाईआ। प्यार हँसा उडे उडार, हँसा खेल खिलाईआ। प्यार बल मंगे दुआर, बावण भेख वटाईआ। प्यार बाला लाए पार, प्रहिलाद नर सिँघ रूप वटाईआ। प्यार एका जाणे आपणी सार, ध्रू आपणी गोद बहाईआ। प्यार गज दए आधार, तन्दूआ तन्द कटाईआ। प्यार करे खेल करतार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्यार आपणे हथ्थ रखाईआ। करे प्यार प्यारा परस, राम राम वड्यांअदा। प्यार मेटे हिरस हवस, होर ना कोए रखाइंदा। प्यार मेघ देवे बरस, अमृत धार चलाइंदा। प्यार मिटाए सोग हरख, रामा एका रंग रंगाइंदा । प्यार प्यारे करे परख, शाह भबीखण भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि इक्क प्यार, आपणे संग रखाइंदा। करया प्यार वेद व्यास, चरन ओट तकाईआ। पूरी करे हरि हरि आस, ज्ञान बोध पढ़ाईआ। पुराण अठारां रसन स्वास, जेहवा नाल

१०३४ मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्यार इक्क वखाईआ। करे प्यार गोपी नाथ, सख़ीआं १०३४

मंडल रास रचाइंदा। करे खेल खेल तमाश, एका बंसरी नाम वजाइंदा। सदा सुहेला वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। आपे होए दासी दास, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। बिदर खा अलूणा साग, साचा प्यार आप प्रगटाइंदा। बिपर सुदामे तन्दल लाभ, मुख आपणे आप चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्यार आप प्रगटाइंदा। प्यार प्रगटे गोपी काहन, साचा खेल खिलाईआ। प्यार देवे अरजण ज्ञान, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। प्यार देवे साचा माण, साची सिख्या इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणे प्यार बन्ने गुर अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर नाल रलाईआ। प्यार पाया बन्धन, कलिजुग आया। मस्तक लाए टिक्का चन्दन, निम वासना विच समाया। बोध ज्ञान आत्म होया पंडत, बोध बोधा रूप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्यार आप रखाया। प्यार रखाए निरगुण धारी, आपणी खेल खिलाईआ। करे खेल अगम्म अपारी, प्यार प्यार विच प्रगटाईआ। लक्ख चुरासी पावे सारी, अभुल भुल कदे ना जाईआ। कलिजुग नाता तोड़े ख्वारी, दूर दुराडा नेड़े पन्ध लिआईआ। ईसा मूसा निभे यारी, मुहमंद संग रलाईआ। एका प्यार कलमा कर जैकारी, हू हू नाअरा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, प्यार तन्द इक्क रखाईआ। अपर अपारा प्यार तन्द, निरगुण

निरगुण विच समाया। आपणा खेल कर बख्शंद, बख्शिश आपणी आप वरताया। आपणे नूर चढ़ चढ़ चन्द, सच उजाला दए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार आप प्रगटाया। सच प्यार नानक गुर, हरि सतिगुर आप प्रगटाईआ। मेल मिलाया आपे धुर, धुर बैठा सच्चा माहीआ। निरगुण सरगुण जुड़ी सुर, तार सतार ना कोए वखाईआ। एका मन्त्र रिहा फुर, नाम सति पढ़ाईआ। प्यार अंदर प्रीतम गया जुड़, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्यार प्यार नाल बंधाईआ। प्यार नाल बध्धा नाता, नाता परम पुरख बंधाया। नानक गुर इक्को जाता, पुरख अकाल मनाया। आदि जुगादी पिता माता, साची गोद सुहाया। साची देवे ऐको दाता, वस्त अमोलक झोली पाया। आपणा नाउँ सुणाए साची गाथा, साची सिख्या इक्क समझाया। एथे ओथे होए राखा, अठ्ठे पहर सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क प्यार धुर दरबार, नानक लोकमात लै के आया। सच प्यार नानक निरगुण, सरगुण झोली पाईआ। ग़रीब निमाणयां पुकार सुण सुण, एका वार वरताईआ। अंगद अमर आपे चुण चुण, राम दासे गंढु पवाईआ। अरजण हरि हरि आपे बौहड़, शब्द नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
१०३५ सच प्यार दए वड्याईआ। सच प्यार नाउँ बाण, चारे बाणी मुख सालाहया। प्रीतम प्यारा ल्या पछाण, घर साचे मेल मिलाया। १०३५
हाणी मिल्या साचा हाण, घर साचे वज्जे वधाया। ना जीव ना कोए प्राण, प्राणी मुक्त ना कोए कराया। एका शक्ति श्री भगवान, गुर गुर गुर रूप वटाया। एका रक्त करे परवान, बूंद बूंदी मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार दए समझाया। सच प्यार गुर शब्दी धार, नानक अरजण हरि हरि गाईआ। दोहां विचोला बण करतार, बोध अगाधा शब्द सुणाईआ। भगत भगवन्त करे खेल न्यार, आप आपणा रूप वटाईआ। चार जुग दे विछड़े यार, एका घर बहाईआ। पांजा एका वेखे एका वार, इकावन आपणी धार चलाईआ। पांजा दोआ आपे पाए आपणी सार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खिलाईआ। सति सतिवादी हो त्यार, पंचम देवे सच्ची शाहीआ। पंचम नाद शब्द धुन्कार, नाद अनादी आप सुणाईआ। सत्तवें घर सति सति आवे जावे वारो वार, पांजा साता सति सति मेला सहिज सुभाईआ। एका पैंतीस कर त्यार, पंज तीस करे कुड़माईआ। दस बीस खेल करतार, कागद कलम ना लिखे शाहीआ। एका गुरु कर त्यार, गुर शब्द दए वड्याईआ। गुर चरन सच प्यार, चार वरन दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच प्यार गोबिन्द धार, हरि खण्डा नाल मिलाईआ। सच प्यार साचा खण्डा, हरि गोबिन्द मेल मिलाया। लेखा जाणे विच ब्रह्मण्डां, ब्रह्मण्ड खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

१०३६

प्यार प्यार नाल प्रगटाया। हरिगोबिन्द तेरा प्यार, तेरी धार समाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलकार, एका डंका रिहा वजाईआ। करे खेल अपर अपार, नाता बिधाता प्यार जोड़ जुड़ाईआ। हरि राए दए आधार, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। छोटे बाले कर प्यार, हरिकृष्न लए उठाईआ। हरिकृष्ना कूक गया पुकार, तेग़ बहादर मिले साचा माहीआ। करे सच प्यार डुबदे लए तार, आप आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार आदि जुगादि सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लक्ख चुरासी विच वरताईआ। सच प्यार हरि वरताया, आप आपणी वार। गोबिन्द सुत एका जाया, बण सुलक्खणी नार। गुजरी कुक्ख दए वड्याआ, ना कोई जाणे जीव संसार। भोगी आपणा भोग कराया, भस्मड़ होए ना अगम्म अपार। धुर संजोगी मेल मिलाया, मेला करे आपणी धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्यार वण्डे विच संसार। सच प्यार वण्डण आया, गुर सतिगुर रूप धार। पंज प्यारे लए उठाया, करे खेल अपार। आपणा अमृत मुख चुआया, आप आपा विच्चों निकाल। संसा रोग सर्ब मिटाया, निमाणयां बणया साचा यार। ऊँचां नीचां गले लगाया, करया सच प्यार। आप निउँ निउँ सीस झुकाया, बणया दर भिखार। आपणी झोली अग्गे डाहया, करे इक्क पुकार। गुरसिख तेरा उच्चा घर बणाया, पुरख अबिनाशी सेवादार। तेरीआं नींहां हेठ आपणा आप दयाँ दबाया, आपा तेरे उत्तों वार। तेरा मन्दिर दयाँ सुहाया, लोकमात होए उज्यार। हरि का प्यार तेरे अंदर दयाँ टिकाया, दूसर रक्खां ना किसे दुआर। जुग जुग दा लहिणा दयाँ मुकाया, कलिजुग आवे अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे सच विहार। आदि प्यार दिता भगवान, आपणी दात वरताईआ। जुग चौकड़ी करया खेल महान, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम होए प्रधान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गोबिन्द सूरा होए नाल बलवान, आपणा बल धराईआ। सृष्ट सबाई खोल्हे इक्क दुकान, झूठ दुकान दए मिटाईआ। चार वरनां वेखे मार ध्यान, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्यार दए समझाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, गुर सतिगुर सच जणाइंदा। पुरख अबिनाशी फेरा पाउणा, लोकमात वेख वखाइंदा। लक्ख चुरासी मेल मिलाउणा, एका बन्धन पाइंदा। सच प्यार इक्क वखाउणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका दर बहाइंदा। दूई द्वैती पड़दा लाउहणा, माया ममता मोह मिटाइंदा। साचा मार्ग इक्क वखाउणा, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। घट घट अंदर आत्म ब्रह्म नज़री आउणा, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। पुरख अकाल सभ ने गाउणा, गोबिन्द सूरा आप सुणाइंदा। मस्जिद मन्दिर मठ शिवदुआला कोई रहिण ना पाउणा, कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाइंदा। सच निशाना इक्क झुलाउणा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। नौ खण्ड पृथमी एका राज

जोग कराउणा, जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। धुर फ़रमाना हुक्म सुणाउणा, हुक्मी हुक्म आप अलाइंदा। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। गुरसिख साचे आप प्रगटाउणा, धरत मात दी गोद बहाइंदा। धरनी तेरा हौला भार कराउणा, बेमुख नज़र कोए ना आइंदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका इष्ट वखाउणा, दूजा दर ना कोए बणाइंदा। शब्द प्यार आप दिवाउणा, शब्दी शब्द मेल मिलाइंदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान घर घर नाद वजाउणा, रागी आपणा राग अलाइंदा। रसना जेहवा सभ ने गाउणा, बत्ती दन्द सर्ब हिलाइंदा। उणंजा पवण आप समाउणा, पवण स्वास खेल खिलाइंदा। अठारां भार बनास्पत बन्धन पाउणा, बन्दी बन्द आप कराइंदा। रवि ससि राग अलाउणा, मंडल मण्डप नाच नचाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव एका नाउँ ध्याउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। अन्तिम लेखा सभ दा मुकाउणा, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। ब्रह्मा आपणे विच मिलाउणा, जोती जोत जोत मिलाइंदा। शंकर तेरा डेरा ढाउणा, जो घड़्या भन्न वखाइंदा। इन्दर फड़ के तख्तों लाउहणा, तख्त निवासी खेल खिलाइंदा। साचा मार्ग हरि जू लाउणा, गुरमुख साचे आप उठाइंदा। ब्रह्मा वेता माण दवाउणा, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। छोटे बाले तिलक लगाउणा, भोला नाथ सुआइंदा। सत्त दीप तिन्न लोक इक्क निशान झुलाउणा, सुरपति इन्द ढेरी ढाइंदा। मनजीता मनजीत जवाउणा, जोबन आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा हरि, सच प्रीत आप निभाइंदा। लग्गी प्रीत निभाए तोड़, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग अन्त ना जाए छोड़, आपणी गोद बहाईआ। शब्द अगम्मी चढ़ाए घोड़, थिर घर साचे दए पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्रेम आप निभाईआ। आपणा प्रेम निभाए साथ, सगला संग रखाइंदा। गुरमुखां बुझाए लग्गी प्यास, हरिजन प्यासा नज़र कोए ना आइंदा। दिवस रैण करे हास बलास, सुख शान्ती सति वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दर सुहाइंदा। हरिजन साचे सोहे दर, दर दरवेश अलख जगाईआ। ब्रह्म मति मिल्या वर, वर एका झोली पाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों ल्या फड़, गुरमुख तेरी वड वड्याईआ। आप बंधाया आपणे लड़, पल्लू गंढु पवाईआ। सौहरे पेईए विहार कर, बण विचोला खेल कराईआ। सच दुआरे आपे खड़, आपणा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा प्यार दए समझाईआ। गुरसिख नार कर प्यार, गुर सतिगुर खेल खिलाइंदा। प्रेम मैहन्दी कर त्यार, साचे हथ्थ रंगाइंदा। सूहा वेस खेल अपार, तन ख़ाकी आप वखाइंदा। नथ्थ सुहाग कर त्यार, कंचन रूप वटाइंदा। मींढी गुंदे एका वार, साचा सीस गुंदाइंदा। वटणा मिले विच संसार, प्रेम रस आप रखाइंदा। साची सख़ीआं मंगलाचार, घर गीत गोबिन्द अलाइंदा।

१०३७

साची डोली कर त्यार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चारे जुग कहार बणाइंदा। मारे बोल ना कोए अन्तिम वार, गुरसिख विछोड़ा पन्ध कटाइंदा। जोबन वेखे नार मुटयार, नेत्र नैणां कजला नाम पाइंदा। बिन्दी लाए अपर अपार, जोत ललाटी डगमगाइंदा। सुरखी वेखे सिरजणहार, राम राम राम जणाइंदा। राह तक्के परवरदिगार, एका आस वखाइंदा। दूल्हा बणे आप निरँकार, घर आपणे सोभा पाइंदा। सोलां इच्छया कर शंगार, साचा अश्व आप मंगाइंदा। साचे घोड़े हो अस्वार, सोलां कलीआं आसण पाइंदा। सचखण्ड दवारिउँ आए बाहर, थिर घर शब्दी नाल मिलाइंदा। शब्दी रूप चढ़े अपार, आपणा सत्त आप सुहाइंदा। आपणा चीरा बन्न्ह दस्तार, सीस साचा ताज टिकाइंदा। साची खड़ग कर त्यार, आपणा खण्डा नाम लटकाइंदा। छैल छबीला हो त्यार, आपणा राह तकाइंदा। लोआं पुरीआं चरनां हेठ लताड़, लोकमात फेरा पाइंदा। दिस ना आए विच संसार, लक्ख चुरासी भेव कोए ना पाइंदा। हौली हौली आवे सांझा यार, आपणा पैंडा पन्ध मुकाइंदा। सोहरे घर वेखे एका बार, काया मन्दिर अंदर बन्द कराइंदा। त्रै धातू लग्गा ताल, ना कोई तोड़ तुड़ाइंदा। करे खेल साहिब दयाल, आपणी ठोकर एका लाइंदा। आपे खोल्हे आपणी धर्मसाल, गुरदुआरा आप उपाइंदा। घर विच घर करे खेल निराल, निराली चाल आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बल धराइंदा। साचे घर आया दूल्हा, घर साचे वज्जी वधाईआ। आपे पाए हार साचे फूला, फुल आपणा नाउँ उपाईआ। आपे गाए आपणा सोहला, आपणा राग सुणाईआ। आपे बणया भाला भोला, भोली सूरत आपणा रूप धराईआ। आप चुकाए आपणा ओहला, पर्दा दए उठाईआ। पंच शब्द पायण रौला, अनहद धुंन सुणाईआ। उलटा करे नाभ कौला, अमृत दए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे सगन मनाईआ। अमृत झिरे ठंडा पाणी, हरि साचा आप झिराइंदा। आपे नैण बण बण राणी, आपणा छन्ना आप भराइंदा। आपे बोल आपणी बाणी, आपणा हुक्म सुणाइंदा। आपे वेख सुघड़ स्याणी, सच सुआणी कोल बहाइंदा। आपे होया जाण जाणी, जानणहारा आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे ख़ुशी मनाइंदा। घर साचे चौथे पद बैठा चढ़, आपणी दया कमाईआ। आपणी लांव आपे रिहा पढ़, पहला दूजा तीजा घर तजाईआ। चौथे पुरख अबिनाशी फड़या लड़, छुट्ट कदे ना जाईआ। मेरा कन्त सुहागी ना जन्मे ना जाए मर, गुरमुख नारी ख़ुशी मनाईआ। जगत जंजाला मिटया डर, निरभउ तक्की इक्क सरनाईआ। मैं होई सुभागण आया घर, दूर दुराडा चल के माहीआ। कमली कोझी लाई लड़, अवगुण गुण ना कोए वखाईआ। चरन कँवल सेवक सेवा लवां कर, साची सेवा मोहे बण आईआ। मेरा ख़ाली भण्डारा देवे भर, आपणी दया कमाईआ। सोहे वेला मेरी सेजा जाए चढ़, कन्त भतार सच्चा शहिनशाहीआ।

१०३८

आपणा प्रेम मेरे अंदर देवे धर, मेरे घर होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार जुग दा सच प्यार, गुरसिखां नाल मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस मेलया सो अन्त विछड़ ना जाईआ।

★ २८ सावण २०१८ बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह सरींह पुर ज़िला हुशियारपुर ★

घर आए वखाए घर, घर घर विच दया कमाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भयानक अवर ना कोए रखाईआ। बन्द ताकी खोल्ह किवाड़, दूई पर्दा दए उठाईआ। त्रैगुण अग्नी बुझे हाढ़, तत्व तत ना कोए रखाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। घर विच घर दए वखाल, सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। चले चलाए नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। तोड़नहार जगत जंजाल, जाग्रत जोत लए जगाईआ। लेखा जाणे काल महाकाल, दीन दयाल सच्चा शहिनशाहीआ। सुरत सुआणी ना होए बेहाल, गुर शब्दी होए सहाईआ। गृह मन्दिर वखाए अमृत ताल, निझर झिरना आप झिराईआ। घर वखाए सच्ची धर्मसाल, घर मन्दिर सोभा पाईआ। घर घर विच दीपक देवे बाल, तेल बाती ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला सहिज सुभाईआ। घर मेला हरि भगवान, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण देवे दान, एकँकारा वेख वखाइंदा। आदि निरँजण जोत महान, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता हो मेहरवान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। श्री भगवान घर विच वखाए सच निशान, घर घर आपणा खेल खिलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा। गुरसिख साचा कर परवान, जुग जुग आपणा भेव खुल्हाइंदा। आत्म दरसी देवे आत्म दान, आत्म अन्तर निज झोली आप भराइंदा। शब्द अनादी इक्क धुन्कान, नाद अनादी नाद वजाइंदा। बोध अगाधी शब्द ज्ञान, ज्ञान मंत इक्क दृढ़ाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखान, आत्म ब्रह्म आप वखाइंदा। साची सेजा कर परवान, सच सिँघासण आसण लाइंदा। आप बणाए सच मकान, घर घर विच आप उपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच वेख वखाइंदा। घर घर वेख श्री भगवन्त, आपणा खेल खिलाईआ। घर मेला नारी कन्त, घर साची सेज सुहाईआ। घर महिमा गाए अगणत, लेखा कर ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच वेख वखाईआ। घर विच घर सच महल्ला, सतिगुर पूरा आप जणाइंदा। वसणहारा इक्क इकल्ला, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, ब्रह्म धार चलाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, सच मनारा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच आप सुहाइंदा।

घर घर हरि सुहञ्जणा, सोभावन्त आप सुहाईआ। दीप जगाए जोत निरँजणा, आदि निरँजण सच्चा शहिनशाहीआ। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजना, भय अवर ना कोए जणाईआ। अमृत सरोवर एका मजना, सच अशनान कराईआ। ना घड़या ना भज्जणा, सो घर साचा आप बणाईआ। नौ दुआरे गुरसिख तजणा, जगत नाता दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच वजाए सच रबाबा, तार सितार ना कोए वखाईआ। घर विच घर खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। जोती नूर इलाही, अल्ला नूर नुराना डगमगाइंदा। आपणा रूप कर बिसमिल्ला, बिस्मिल आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच जोत जगाइंदा। घर घर विच निरगुण धार, निरगुण निरवैर आप चलाईआ। अजूनी रहत हो त्यार, रूप अनूप आप वटाईआ। करता पुरख करे कार, करनहार इक्क अख्वाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा आपे होया ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोए रखाईआ। साचा मन्दिर कर त्यार, आपे वेख वखाईआ। बाढी बणाए ना कोए विच संसार, इट्ट गारा ना कोए लगाईआ। सूरज चन्न ना करे कोए उज्यार, रवि ससि बैठण मुख शरमाईआ। गुर का मन्दिर अपर अपार, सतिगुर साचा आप बणाईआ। गुरमुख विरले

१०४० दए वखाल, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। दिवस रैण वज्जे ताल, अनहद आपणा ताल वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, १०४०

आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वड्याईआ। साचा घर सोभनीक, हरि साचा आप सुहाइंदा। ना कोई दूसर वसे शरीक, लाशरीक खेल खिलाइंदा। आपणे हथ्थ रक्खी तौफ़ीक, आपणी रहिमत आप कमाइंदा। आपणा मार्ग इक्क बारीक, प्रेम आप रखाइंदा। मिहबान बीदो वसे नज़दीक, बी ख़ैर या अल्ला आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। घर मन्दिर खोल्हे ताकी, गुर सतिगुर दया कमाईआ। गुरसिखां चुकाए लहिणा देणा बाकी, पूर्ब जन्मां वेख वखाईआ। आप चढ़ाए औखी घाटी, साचे मार्ग आपे लाईआ। जिस किरपा करे तिस बजर कपाटी पाटी, पर्दा रहे ना राईआ। घर घर विच वखाए साची हाटी, चौदां लोक बैठे सीस निवाईआ। घर तीर्थ घर ताटी, घर सरोवर दए नुहाईआ। घर दीवा घर बाती, घर घर करे रुशनाईआ। घर मेला कमलापाती, कन्त सुहाग बैठा आसण लाईआ। घर प्यावे बण बण साकी, सच प्याला हथ्थ उठाईआ। घर बह बह पुच्छे वाती, सतिगुर पूरा भुल कदे ना जाईआ। घर हवन करे आरती, मंडल रासी रास रचाईआ। गुर का भेव ना पाए चौदां विद्या उर्दू फ़ारसी, हिन्दी पंजाबी नीर नैणां रो रो दए वहाईआ। सतिगुर पूरा आपे चढ़े आपणी साची घाटी, आत्म सिँघासण सोभा पाईआ। आपे जाणे आपणी वाटी, लक्ख चुरासी पन्ध मुकाईआ। गुरसिख तेरी ना कोई गोत ना कोई ज़ाती, तेरा रूप अनूप ब्रह्म ब्रह्म

प्रगटाईआ। आदि जुगादी साचा साथी, सो पुरख निरँजण इक्क अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर गुर अवतार गाउण गाथी, रसना जेहवा जेहवा सर्ब सुणाईआ। सर्ब जीआं दा एका दाती, मुकामे हक बैठा नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच करे रुशनाईआ। घर घर होए चानण, घर घर खेल खिलाइंदा। घर घर रूप धारे क्षत्री शूद्र वैश ब्रह्मण, रूप अनूप आप वटाइंदा। घर घर होए कामनी कामन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाच नचाइंदा। घर घर आसा तृष्ना पकड़े दामन, माया ममता नाल रलाइंदा। घर घर रक्खे अन्धेरी शामन, अन्ध अन्धेर आप वखाइंदा। जुग जुग गुरमुख विरले होवे ज़ामन, आपणा पल्लू नाम फड़ाइंदा। एका देवे सच्चा नामन, नाम अमोलक झोली पाइंदा। मिटे रैण अन्धेरी शामन, जोती नूर इक्क जगाइंदा। दरस दिखाए आम्हणो साम्हण, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। इक्क दूजे नूं गुरु गुरसिख पछानण, गुर आपणा मेल मिलाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोए निदानन, रिद्ध सिद्ध हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच रास रचाइंदा। घर विच मंडल घर विच रास, घर गोपी काहन नचाईआ। घर विच जोत कर प्रकाश, घर शब्द नाद धुन सुणाईआ। घर सख़ीआं वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाईआ। घर घर पूरी करे आस, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। कट्टणहारा जम की फाँस, नाम फाँसी गल विच पाईआ। गुरसिख होए ना कदे उदास, जिस सतिगुर मिल्या सच्चा माहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्त करे बन्द ख़ुलास, बन्दी छोड़ आप हो जाईआ। घर वेखे खेल तमाश, आप आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादि ना होए विनास, सो सतिगुर सच्चा नाउँ धराईआ। घर घर विच बुझाए प्यास, गुरसिख तृष्ना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर इक्क सालाहीआ। घर मन्दिर हरि सालांहयदा, जुगा जुगन्तर कार। भगत भगवन्त आप उठाइंदा, आप आपणा कर विचार, सन्त साजन मेल मिलाइंदा, सति सतिवादी मीत मुरार। गुरमुख गुर गुर गोद बहाइंदा, एका देवे नाम आधार। गुरसिख एका रंग रंगाइंदा, उतर ना जाए दूजी वार। सुरती शब्द डोर मिलाइंदा, घर मन्दिर पावे सार। जगत विछोड़ा आप कटाइंदा, नाता तुट्टे दुहागुण नार। कन्त कन्तूहल ख़ुशी मनाइंदा, सोहे बंक दुआर। गुरसिख आपणे अंक लगाइंदा, अंगीकार करे निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर वेखे सच दुआर। घर घर दुआरा खोल्हदा, गुर सतिगुर सज्जण मीत। गुरसिखां नाल सदा बोलदा, आप सुणाए आपणा गीत। शब्द कंडे आपे तोलदा, आदि जुगादी साची रीत। भेव खुल्हाए सदा अडोल दा, एका परखणहारा नीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर विच घर वखाए अग्गे खड़, साचा मन्दिर गुरदुआर मसीत। घर मन्दिर घर मसीत, घर गुरदुआर वखाईआ।

घर ठांडा घर सीत, घर सांतक सति वरताईआ। घर पतित घर पुनीत, घर पापी रिहा तराईआ। घर देवे नाम अनडीठ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। सो सतिगुर सज्जण मीत, लक्ख चुरासी विच्चों लए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच नाद वजाईआ। घर घर वज्जे नाद तूर, तुरीआ राग अलाइंदा। सर्ब कला भरपूर, सतिगुर सज्जण खेल खिलाइंदा। आसा मनसा करे पूर, मनसा मनसा विच समाइंदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च इक्क दृढ़ाइंदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस जन आपणा नाम जपाइंदा। हउमें हंगता तोड़े गढ़ ग़रूर, निवण सु अक्खर आप समझाइंदा। घर विच देवे सति सरूर, घर घर विच खेल खिलाइंदा। पंज तत्त काया ना बणे तन्दूर, जिस सिर हथ्थ टिकाइंदा। मनूआ मार करे मनूर, जोती अग्नी हेठां डांहयदा। जन्म जन्म दे मुआफ़ करे कसूर, जो जन चरनी सीस झुकाइंदा। अठ्ठे पहर हाज़र हज़ूर, हरि आपणा मेल मिलाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे चूरो चूर, नाम खण्डा इक्क चलाइंदा। जिस जन बख्शे साची धूढ़, जोत ललाटी डगमगाइंदा। घर विच घर वखाए ज़रूर, कीता कौल भुल ना जाइंदा। आपणा देवे साचा नूर, नूर नुराना आप अख्वाइंदा। मूसा जल्वा तक्के उत्ते कोहतूर, गुरमुखां घर घर आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर आप बणाइंदा। घर मन्दिर बणया सच टिकाणा, घर घर विच वज्जी वधाईआ। किसे हथ्थ ना आए राजा राणा, लक्ख चुरासी रही बिल्लाईआ। बिन सतिगुर पन्ध ना किसे मुकाणा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। रसना जेहवा गा गा थक्के गाना, गावणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरले देवे उठाई, जिस जन आपणे रंग रंगाईआ। घर विच घर साचा रंग, सतिगुर गोबिन्द आप चढ़ाइंदा। आत्म सेजा बैठ पलँघ, घर साची ख़ुशी मनाइंदा। इक्क वजाए नाद मृदंग, नाद अनादी आप सुणाइंदा। नाता तोड़ दुहागण रंड, गुरमुख सुरती शब्द प्रनाइंदा। एका वस्त अमोलक वण्ड, काया गोलक आप भराइंदा। अठ्ठे पहर परमानंद, निजानंद आप रखाइंदा। जगत विकारा झूठा गंद, रसना रस तजाइंदा। घर विच घर वखाए साचा चन्द, नूर नुराना आप उपाइंदा। नाता तोड़े जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वक्त चुकाइंदा। साहिब दयाल सदा बख्शंद, सतिगुर पूरा दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच आप जगाइंदा। घर जागे जागणहारा, जाग्रत जोत जोत रुशनाईआ। घर भागे भागणहारा, भगवन आपणी खेल खिलाईआ। घर रागी राग गाए गावणहारा, राग अनादी आप सुणाईआ। घर बाणी बोले बोलणहारा, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। घर बैठा सुणे सुणनेहारा, सुन्न समाध आप लगाईआ। कागद कलम लिख लिख हारा, भेव ना पाए सच्चे माहीआ। मस रोवे ज़ारो ज़ारा, सत्त समुंदर देण दुहाईआ।

बनास्पत कूके करे पुकारा, अठारां भार सार ना आईआ। हरि का खेल अगम्म न्यारा, अलख अगोचर आपणे हथ्थ रखाईआ। जुगा जुगन्तर हो उज्यारा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। दूर दुराडा चल के आए भगत दुआरा, आप आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त साचे सन्त, गुरमुख मेले नारी कन्त, गुरसिख चाढ़े साची रंगत, रंग रंगीला आप अख्वाईआ। रंग रंगीला साहिब सुल्तान, दर घर साचे सोभा पाइंदा। सति सतिवादी सति निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाइंदा। अगम्म अगम्मड़ा वसे मकान, अगम्मड़ी आपणी खेल खिलाइंदा। अलख अलखना बोल जैकार, घर आपणी अलख जगाइंदा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। थिर घर साचा खोल्ह किवाड़, आपणा चरन टिकाइंदा। शब्दी सुत कर प्यार, सीस जगदीस हथ्थ रखाइंदा। करे खेल अपर अपार, सुन्न अगम्म भेव चुकाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दए आधार, गगन मंडल वेख वखाइंदा। ज़िमीं अस्मानां दए सहार, लोक परलोक खेल खिलाइंदा। चौदां तबकां खोल्ह किवाड़, चौदां लोक डंक वजाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करया ख़बरदार, सुरपति राजा इन्द नाल मिलाइंदा। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंज तत्त नाच नचाइंदा। पंज पंज खेल करे करतार, दस दस आपणा बन्धन पाइंदा। काया माटी कर त्यार, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। जगत वासना नौ दुआर, दर दरवाज़े आप वसाइंदा। आपणा घर अपर अपार, अपरम्पर आप रखाइंदा। टेढी बंक खेल न्यार, दिस किसे ना आइंदा। दोए दो पहरेदार, अठ्ठे पहर हुक्म जणाइंदा। ना कोई जाणे आर पार, अद्धविचकार सर्ब अटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर आपणा आप समझाइंदा। घर समझाए आप निरँकारा, आपणी दया कमाईआ। पंज तत्त करया तन श्रृंगारा, त्रै त्रै मेला मेल मिलाईआ। निरगुण वण्ड करी अपारा, मन मति बुध वरताईआ। करे खेल जगत न्यारा, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। आपणी इच्छया आपे भर भण्डारा, आपे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच आपणी धार चलाईआ। घर बणाया गया बण, सो पुरख निरँजण आप बणाया। ना कोई जननी ना कोई जन, जन जणेंदी ना कोए माया। ना कोई घड़े ना सके भन्न, घड़न भन्नणहार आप अख्वाया। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, दीवा बाती ना कोए टिकाया। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, चार दीवार ना कोए रखाया। ना कोई बुद्धी ना कोई मन, मति रंग ना कोए वखाया। ना कोई हथ्थ मूंह नक्क कन्न, नेत्र नैण ना कोए मटकाया। ना कोई देवणहारा दिसे डन्न, भय भउ ना कोए जणाया। ना कोई पाणी ना कोई अन्न, ना कोई खावणहार आपणा पट वखाया। करे खेल श्री भगवन, आपणे मन्दिर आसण लाया। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर आप सुहाया। घर मन्दिर गृह सुहाया, घर वेख विचार। मन बन्दर आप बंधाया, दहि दिशा ना करे विचार। डूँग्घी कंदर आप सुटाया, उठ सके ना दूजी वार। जग झंजट आप मुकाया, गुरमुख साचे कर प्यार, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया, ब्रह्म पारब्रह्म दए आधार। जोग अभ्यास ना कोए कराया, सुरती शब्द करे प्यार। जन्म जन्म दी प्यास मिटाया, देवे दरस गुर करतार। तृष्ना हरस दए गंवाया, हउमें हंगता रोग निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच दए सच विचार। घर सच्चा सच दरबारा, सतिगुर पूरा आप वखाइंदा। घर सज्जण मीत मुरारा, गुर अवतारां वेख वखाइंदा। घर मन्दिर ठाकर दुआरा, घर इष्ट देव प्रगटाइंदा। घर शब्द नाद धुन्कारा, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। घर राज जोग सिक्दारा, शाहो भूप आप समझाइंदा। घर पंचम सख़ीआं लग्गा अखाड़ा, नटूआ नाट आप कराइंदा। घर त्रैगुण अग्नी बुझे तत्ती हाढ़ा, घर पंचम मोह चुकाइंदा। घर घर विच करे सच प्यारा, आप आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख लहिणा झोली पाइंदा। गुरसिख लहिणा झोली पाउणा, घर घर विच वज्जे वधाईआ। आत्म सेजा आप बहाउणा, डूँग्घी भँवरी पार कराईआ। अंदर बाहर आपणा संग निभाउणा, गुप्त ज़ाहर होए सहाईआ। अमृत जाम इक्क प्याउणा, प्रेम प्याला हत्थ उठाईआ। गढ़ हँकारी बुरज ढाउणा, एका धक्का लाईआ। अनन्द अनन्द अनन्द इक्क दरसाउणा, अनन्द अनन्द अनन्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरे घर भाग लगाईआ। गुरसिख घर लग्गे भाग, हरि सतिगुर आप लगाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़, निर्मल नीर सीर पिलाईआ। अग्नी बुझे लग्गी आग, सांतक सति वरताईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काग, कागों हँस रलाईआ। शब्द अगम्मी मार वाज, सुत्तयां ल्ए उठाईआ। घर घर विच रचया काज, घर घर साह रिहा सुधाईआ। घर घर आवे जावे भाज, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। घर विच साजण रिहा साज, हरि सज्जण शहिनशाहीआ। गुरसिख तेरी रक्खे लाज, तेरी पत्त हत्थ ना किसे फड़ाईआ। झूठ मुलम्मे लाहे पाज, कंचन सवरन दए बणाईआ। घर विच घर मिले गुरु महाराज, जिस दा रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। आदि जुगादि करे सच्चा राज, दो जहानां करे सच्ची शहिनशाहीआ। बणया रहे ग़रीब निवाज़, ग़रीबां आपणे गले लगाईआ। वस्त अमोलक देवे दात, नाम भण्डार वरताईआ। मन मति रहे ना नार कमज़ात, गुरमति साची इक्क समझाईआ। तेरा सतिगुर तेरी ख़ातर गुरमुख बणाए इक्क बरात, दूल्हा बणे सच्चा माहीआ। लोकमात होई सुहञ्जणी रात, भिन्नड़ी रैण ख़ुशी मनाईआ। धन्न भाग मिले कमलापात, जन्म जन्म दा विछोड़ा दए कटाईआ। घर आए शाहो शाबास, नीले वाला साचा माहीआ। गुरमुख नार सुहागण रक्खे पास, आप

१०४४

आपणे अंक लगाईआ। सुआणी होएँ क्यों अन्त उदास, जगत उदासी दए मिटाईआ। आपणा रूप धरे तेरे पवण स्वास, तेरा पवण स्वास आपणे विच समाईआ। तेरे घर विच पए साची रास, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड रहे रास रचाईआ। राह तक्के पृथ्मी आकाश, गुरसिख तेरे दुआरे नैण उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर कर बैठे आस, कवण वेला गुरमुख पूरा दरस दिखाईआ। जिस घर सतिगुर वसे पास, सो सतिगुर साचा घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। घर वसया घर पाया, हरि सज्जण साहिब सुल्तान। गुरमुख आपणा पन्ध मुकाया, मिल्या गुर सूरबीर बलवान। आपा सतिगुर झोली पाया, तुट्टा माण अभिमान। सतिगुर पूरा होए सहाया, जिस दिता जीआ दान। लक्ख चुरासी लए तराया, राए धर्म ना पुछे आण। चित्रगुप्त ना हिसाब वखाया, लाड़ी मौत ना करे पहचान। काल ग्रास ना कोए खाया, सतिगुर सज्जण मिले आण। महाकाल होए सहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। भगवान वसाया घर विच घर, घर मन्दिर बंक वड्याईआ। भगवान सुहाया घर विच घर, घर जोत जोत रुशनाईआ। भगवान वड्याआ घर विच घर, घर नादी नाद वजाईआ। भगवान उपाया घर विच घर, घर घर विच आप सुहाईआ। भगवान मिलाया किरपा कर, लोकमात दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे भेव खुल्हाईआ। गुरमुख साचे भेव खुलाउणा, हरि सज्जण सच जणाइंदा। चार जुग दा पन्ध मुकाउणा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गेड़ा आप दिवाइंदा। दो जहानां वेख वखाउणा, वेस अनेक वटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव जोत मिलाउणा, जोती जाता आप हो जाइंदा। लक्ख चुरासी भाण्डा भन्न वखाउणा, जो घड़या आप भनाइंदा। त्रैगुण डेरा अन्तिम ढाउणा, पंज तत्त खेड़ा ना कोए वखाइंदा। गुरमुख विरला आप उठाउणा, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। शब्दी गुर आप मिलाउणा, गुर शब्दी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, गुरमुख साचे आप तराइंदा। गुरसिख तारे सतिगुर सवरन, सवरन रूप वटाईआ। भगतन खोल्हे हरन फरन, तीजे लोयण करे रुशनाईआ। नाता जोड़े साचे चरन, हरि चरन सच्ची सरनाईआ। भय चुक्के मरन डरन, जम्मण मरन विच ना आईआ। किरपा करे करनी करन, करता पुरख खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला सहिज सुभाईआ। घर पाया भगवान, तन होए शांत सरीरा। मिले सच्चा दान, नाम निधान देवे गहर गम्भीरा। झुल्ले सच निशान, सीस बंधाए साचा चीरा। एथे ओथे देवे माण, लक्ख चुरासी कट्ट ज़ंजीरा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे पीरन पीरा। आत्म अन्तर एका मन्दिर, बिन मात्र आप जणाईआ। भेव चुकाए गगन

१०४५

गगनंतर, गृह मंडल दए वखाईआ। लग्गी बुझाए जगत बसन्तर, विश्व आपणी धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, घर घर विच वज्जे सच वधाईआ। नाम निधाना गुरु गुरदेव, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। पारब्रह्म प्रभ अलख अभेव, अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा संग आप निभाइंदा। अमृत आत्म देवे साचा मेव, अमृत रस मुख चुआइंदा। आदि जुगादि सदा निहकेव, निहचल आपणा धाम वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे घर बहाइंदा। गुरमुख घर वखाइंदा, इक्क इकल्ला एकँकार। चरन दुआर आप समझाइंदा, सतिगुर चरन अपर अपार। घर बंक आप सुहाइंदा, आप आपणी किरपा धार। हरिजन साचे सचखण्ड दुआर आप बहाइंदा, उच्चे टिल्ले पर्बत आपे चाड़्। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। धुर दरबारा गुरसिख घर, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। जिस सतिगुर सच्चा लए वर, घर सच्चे होए कुड़माईआ । नाता जोड़े नारी नर, नर नरैण सच्चा शहिनशाहीआ। आपणी किरपा लए फड़, मेहरवान मेहरवान आपणी मेहर कराईआ। आपणे पौड़े जाए चढ़, औंदा जांदा दिस ना आईआ। आपणा सुहाए साचा गढ़, किला कोट ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
१०४६ आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए समझाईआ। गुरसिख समझाए हरि करतार, गुर गुर रूप वटाईआ। नाम कुठाली १०४६
कर त्यार, पंज तत्त काया सवरन विच टिकाईआ। फुंकारा मारे एका वार, पवण उणंजा सेवा लाईआ। प्रेम सुहागा देवे डार, करे खेल बेपरवाहीआ। कूड़ मुलम्मा दए उतार, नाम ठोकर एका लाईआ। निहकर्मी कर्म लए विचार। पूर्ब कर्मां फोल फुलाईआ। सच सवरन कर त्यार, नाम कंडे लवे पाईआ। नाम कंडे दए हुलार, तोला रती ना कोए रखाईआ। दोहां पासा वेख करे विचार, विचार विचार विच प्रगटाईआ। गुरमुख तुले आपणे भार, जगत भार ना तोल तुलाईआ। सच सवरन कर त्यार, सतिगुर आपणी हट्टी लए टिकाईआ। चार वरनां कराए वणज वपार, एका हुक्म सुणाईआ। जिस आउणा हथ्थ सच्चे सुन्यार, पहलों आपणा तन कुठाली विच रखाईआ। सिर ते वज्जे हथ्थौड़ा मार, अहिरन थल्ले रही खेल खिलाईआ। करे खेल गुर करतार, जगत कुठाली फोल फोलाईआ। गुरमुख सवरन कर प्यार, आपणी सेवा आपे लाईआ। साचा कंगण करे शंगार, आप आपणे तन छुहाईआ। मंगण मंग मंगे आप करतार, लोकमात फेरा पाईआ। शब्द विचोला वेखणहार, आवे जावे वेखे थाउँ थाँईंआ। जिस दुआरे गुरसिख करे प्यार, सो दुआरा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचा लेखे लाईआ। भगवन्त भगत सद रक्खे चा, आदि जुगादि खेल खिलाइंदा। आत्म अन्तर बणे मलाह, साचे बेड़े आप चढ़ाइंदा। सिफ्ती सिफ्त दए सलाह, सलाहगीर आप हो जाइंदा। निष्अक्खर पढ़ाए एका नाँ,

नाम निधाना झोली पाइंदा। पकड़ उठाए फड़ फड़ बांह, आपणी दया कमाइंदा। हँस काग दए बणा, जिस जन सोहँ हँसा चोग चुगाइंदा। बणे सहेला पिता मां, हरिजन साचे गोद बहाइंदा। निथाव्याँ देवे आपणा थाँ, थान थनंतर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप वखाइंदा। सदा चाअ भगत भगवन्त, जुग जुग खेल खिलाईआ। हरिजन मेले साचे सन्त, सति सतिवादी दया कमाईआ। एका नाम जणाए मणीआ मंत, मन का मणका आप भवाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, ममता मोह दए चुकाईआ। मेल मिलावा साची संगत, हरिसंगत विच समाईआ। चरन कँवल वखाए साचा जन्नत, मुकामे हक इक्क ख़ुदाईआ। जिस जन बणाए साची बणत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड वड्डा बेपरवाहीआ। भगत भगवन्त चाउ घनेरा, हरिजन हरि रखाइंदा। नाता तोड़े तेरा मेरा, मेरा तेरा भेव चुकाइंदा। एका रंग वखाए सन्झ सवेरा, सूरज चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। आपे ढाए भरमां ढेरा, जो जन दुआरे आइंदा। तन वसाए साचा खेड़ा, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। दूर दुराडा दिसे नेरा, नूरो नूर नूर चमकाइंदा। कलिजुग अन्तिम पाया फेरा, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्क इकल्ला होया दलेरा, भय भउ ना कोए रखाइंदा। लक्ख चुरासी वेखणहारा खुल्ह्ला वेहड़ा, घट घट आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रंगण आप रंगाइंदा। रक्खे चा भगत भगवान, आदि जुगादि भुल ना जाईआ। घर आए चल मेहरवान, मेहरवान दया कमाईआ। घर भाग लगाए सच मकान, घर घर विच सोभा पाईआ। घर जोती जोत जगाए श्री भगवान, जोती नूर नूर रुशनाईआ। घर नाद शब्द धुन्कान, अनहद साचा नाद वजाईआ। घर अमृत देवे पीण खाण, अठसठ तीर्थ पन्ध मुकाईआ। घर वखाए सच निशान, शब्द अगम्मी आप झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, हरिजन वेखे थाउँ थाँईआ। रक्खे चाउ पारब्रह्म, हरिजन साचा मेल मलन्नया। जुगा जुगन्तर साचा कम्म, करे कराए दो जहन्नया। साचे सन्तन बेड़ा देवे बन्न्ह, साची सेवक सेव कमन्नया। एका राग सुणाए कन्न, छत्ती राग मुख शर्मन्नया। पंच विकारा देवे डन्न, झूठा भाण्डा भरम भउ भन्नया। भाग लगाए काया तन, करे प्रकाश बिन सूरज चन्नया। जूठ झूठ ठग्ग चोर यार कोए ना लाए संन्ह, देवे नाम सच्चा धन्न धन्नया। दिस ना आए नेत्र अन्न्ह, गुरमुख विरला मात मन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, करे खेल श्री भगवानया। रक्खे चाउ पारब्रह्म बेअन्त, जुग जुग सेव कमाईआ। हरिजन मेला नारी कन्त, नर नरायण सेज हंढाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। देवे वड्याई विच जीव जंत, जाग्रत जोत

कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि शाह सुल्ताना, तख्त निवासी तख्त सुहाइंदा। सचखण्ड वसे सच मकाना, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप धराइंदा। सो पुरख निरँजण हो प्रधाना, हरि पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। एकँकारा लेखा जाणे दो जहानां, आदि निरँजण जोत उजाला डगमगाइंदा। अबिनाशी करता गुण निधाना, गुण अवगुण ना कोए रखाइंदा। श्री भगवान सच निशाना, दरगाह साची आप झुलाइंदा। पारब्रह्म हरि खेल महाना, आप अपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग आप निभाइंदा। रक्खे चा निभाए संग, सगला संग निभाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आए पार लँघ, औंदा जांदा दिस ना आईआ। निरगुण सरगुण अंदर वजाए मृदंग, सच सतार आप हलाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, वड वड्डा बेपरवाहीआ। जो जन मंगे आत्म मंग, जगत तृष्ना दए मिटाईआ। साची सेज सुहाए पलँघ, घर घर विच आप सुहाईआ। आपणे मन्दिर आपे लँघ, हरिजन साचे लए उठाईआ। सुरत सुआणी ना होए नंग, मिले राम सच्चा माहीआ। अठ्ठे पहर परमानंद, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, गीत गोबिन्द अल्लाईआ। चल्ल के आए साचा राही, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। सवरन कट्टी जम दी फाही, सगले साथी दए तराईआ। जन्म जन्म दी मेटे शाही, दुरमति मैल दए धवाईआ। घर मिले पंडत बण गोसाँई, तिलक ललाटी जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खिलाईआ। सदा मिलण दा रक्खे चाउ, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। जुग जुग करे सच न्याउँ, सच अदालत आप कमाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाउँ, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप जगाइंदा। पुर सरींह लग्गा भाग, हरि सतिगुर आप लगाईआ। गुरमुख दीपक जगे चिराग़, बिन बाती तेल जगाईआ। त्रैगुण बुझे आग, अग्नी तत्त ना कोए रखाईआ। आत्म अन्तर उपजाए इक्क वैराग, वैरागी आपणा राग सुणाईआ। सोई सुरती जाए जाग, गुर शब्दी आप उठाईआ। डूँघी भँवरी लेवे काढ, एका पल्लू नाम फड़ाईआ। चरन धूढ़ कराए मजन माघ, सच सरोवर आप नुहाईआ। आप मिलाए कन्त सुहाग, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। जो जन सरनाई जाए लाग, काग हँस रूप वटाईआ। मेल मिलाए मोहण माधव माध, मुकंद मनोहर लखमी नरायण चतुर्भुज आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि हरिजन मिलण दी सदा आस रखाईआ। रक्खे चा आदि निरँजण, जुग जुग वेस वटाइंदा। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराइंदा। नेत्र पाए नाम अंजन, अज्ञान अन्धेर

चुकाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों बणे साचा सज्जण, सगला संग निभाइंदा। जो जन चरन धूढ़ करे साचा मजन, तिस आपणा दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा कर्म कराइंदा। दसूहा वेख्या साची जूह, निरगुण आपणी खेल खिलाया। आपे मेले आपणी विछड़ी रूह, काया काअबा आपणा बुत्त बणाया। कलिजुग वेखे नदी नूह, लक्ख चुरासी रिहा डुबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाया। वेखे रूह रूह निमाणी, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। आबे हयात देवे ठंडा पाणी, आप आपणी सेव कमाइंदा। सुरत मिलावा शब्द हाणी, सुरती शब्दी एका रंग रंगाइंदा। आवण जावण चुक्के काणी, राए धर्म नेड़ ना आइंदा। जिस जन सुणाए आपणी बाणी, दूजे दर पढ़न कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे फेरा पाइंदा। दसूहे अंदर आत्म ज़ात, आत्म अन्तर वेख वखाईआ। जिस जन बख्शी साची दात, सो जन बैठा आपणे अंदर छुपाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना पुछे वात, चार कुण्ट जगत हल्काईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। कलिजुग पुट्टया डूँग्घा खात, किनारा नज़र कोए ना आईआ। जिस जन हरि सतिगुर खोल्ले बन्द ताक, तिस आपणी बूझ बुझाईआ।
१०४६ नज़र आए पुरख समरथ, स्वच्छ सरूपी रूप दरसाईआ। सगल विसूरे जायण लथ, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। १०४६
नाम चढ़ाए साचे रथ, महांसारथी साचा रथ चलाईआ। लहिणा देणा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, रविदास चमारा दए ग्वाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत दसूहा वेख वखाईआ। जगत दसूहा इट्टां गारा, जगत बाढी बणत बणाइंदा। निरगुण वसे सदा न्यारा, आप आपणी कल धराइंदा। सरगुण करे सदा प्यारा, जुग जुग वेख वखाइंदा। दोहां मेला इक्क दुआरा, घर साचा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दसूहा इक्क समझाइंदा। सच दसूहा काया घर, घर घर विच आप जणाईआ। नज़र ना आए कोई नारी नर, नर नरायण एका बैठा आसण लाईआ। जिस जन देवे साचा वर, तिस जन लए वखाईआ। सवरन सरींह पुर तों ल्या फड़, नाम डोरी तन्द बंधाईआ। सतिगुर पूरा अंदर गया वड़, निरगुण निराकार आपणी कल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, राह तक्के साचा माहीआ। माही तक्के सच्चा राह, जुग जुग वेख वखाइंदा। जन भगत मिलण दा चाअ, भगवान आस तकाइंदा। बिन भगत ना जाणे कोए मेरा नाँ, लक्ख चुरासी गूढ़ी नींद सवाइंदा। बिन भगत ना देवे मैनूं कोई थाँ, मनमुख दर दवारिउँ दुरकाइंदा। बिन भगत मेरी कोई ना पकड़े बांह, लोकमात मेरा संग ना कोए निभाइंदा। बिन भगत मेरा करे ना कोई सच न्याँ, उच्ची कूक कूक ना कोए सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जन भगत तेरे मिलण दा चाउ आप रखाइंदा। रक्खे चाउ निरगुण रूप, सरगुण तेरी वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेख्या चारे कूट, सत्त दीप फेरा पाईआ। जगत नगारा वज्जे जूठ झूठ, माया ममता नाच नचाईआ। कलिजुग सुहाए आपणी रुत्त, सच फुलवाड़ी, नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख विरला दिसे सुत्त, जो हरि हरि रिहा ध्याईआ। सभ दी पंज तत्त काया दिसे बुत्त, हरि का नाउँ घर किसे नज़र ना आईआ। पंच विकारा भरया कुट्ट कुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। जिस जन उप्पर सतिगुर पूरा जाए तुट्ठ, तिस आपणा नाम बुझाईआ। अमृत आत्म प्याए एका घुट्ट, निझर झिरना दए झिराईआ। जगत नाता जाए तुट्ट, एका मंगे सरन सरनाईआ। जीवत मरे मर जीवे पए उठ, जीवण मरन फंद कटाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चित वित ठगौरी कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे वेखणहारा आप आपणी सेव कमाईआ। दसूहा सरींह पुर एका घाट, हरि साचा खेल खिलाइंदा। जिस जन आई नेड़े वाट, तिस आपणा मेल मिलाइंदा। नाम निधाना देवे साची दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। बजर कपाटी जाए पाट, साची घाटी आप चढ़ाइंदा। चौदां लोक वखाए एका हाट, एका घर सोभा पाइंदा।
१०५० साचे मंडल रचाए रास, गोपी काहन खेल खिलाइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, राम रमईया डगमगाइंदा। मन मनूआ १०५०
कवण करे विनास, गढ़ हँकारी आप तुड़ाइंदा। सदा सुहेला वसे पास, आपणा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराइंदा। तारनहारा हरि हरि एक, इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। जिस जन बख्शे साची टेक, इष्ट देव इक्क दरसाईआ। करे कराए बुध बिबेक, पतित पुनीत साची रीत आप चलाईआ। मस्तक वेखे लिख्या लेख, पूर्ब लहिणा फोल फोलाईआ। हरि का रूप ना मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लक्ख चुरासी घट घट अन्तर रिहा वेख, सच सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरी प्यास बुझाईआ। बुझे प्यास होए तृप्त, तृष्ना जगत मिटाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे बिपत, बिपता अवर ना कोए पाइंदा। जिस जन देवे साची सिखत, सिख्या सिख इक्क समझाइंदा। लिख्या लेख ना मेटे लिख्त, लिख लिख लेख लेख गवाइंदा। आपणे हथ्थ रखाए आपणा भविख्त, जुग जुग गेड़ा आप दिवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आस निरास ना कोए वखाइंदा। दस्त आया दस्तगीर, दामन आपणा आप पकड़ाईआ। आपे चोटी चढ़ के वेखे अख़ीर, साचे मन्दिर आसण लाईआ। आपे कट्टे फड़ ज़ंजीर, शरअ शरीअत रहे ना राईआ। घर दरस दिखाए पीरन पीर, जिस पीर फ़कीर रहे सीस झुकाईआ। आपणी हथ्थीं बदले तकदीर, तदबीर तस्वीर साची दए

वखाईआ। एका रंग रंगाए शाह हकीर, बेनज़ीर सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस रहिमत रहिमान कमाईआ। रहिमत रहिमान हरि करीमा, कादर कुदरत खेल खिलाइंदा। जिस जन पाक पवित कराए सीना, तिस हो हो सहिमत आपणा मेल मिलाइंदा। घर विच लाल वखाए सच नगीना, निगहबान पर्दा लांहयदा। मेल मिलाए जिउँ जल मीना, अग्नी तत्त थल बुझाइंदा। लेख चुक्के लोक तीनां, त्रै त्रै लोकां पन्ध मुकाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग भीन्ना, उतर कदे ना जाइंदा। अठ्ठे पहर दिवस रात दरस दिखाए मक्का मदीना, सच महिराबे एका बांग इक्क सदा एका हुजरा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस दामन आप फड़ाइंदा। तूं मैं इक्को हद्द, हदूद जगत ना कोए रखाईआ। जिस जन प्याए आपणी मदि, इक्क ख़ुमार चढ़ाईआ। अपणा भार उहदे उत्ते देवे लद्द, उहदा भार आपणे सीस उठाईआ। मैं तूं विच्चों कढ्ढ, एका रंग रंगाईआ। मैं तूं देवे वढ्ढ, नाम खण्डा विच फिराईआ। मैं तूं इक्को यद्द, ब्रह्म पारब्रह्म अख्वाईआ। मेरा शब्द तेरा नद, तेरी धुन मेरी शनवाईआ। तेरा मेरा मेला विचकार अद्ध, अद्धविचकारों पार फेर कराईआ। लक्ख चुरासी विच्चों लए कढ्ढ, जिस जन आपणी दया कमाईआ। अठ्ठे पहर करे लाड,
१०५१ आप आपणी गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन मेले आपणे घर, तूं मैं मैं तूं १०५१
हां हूं ना कोए रखाईआ। थाएँ तुट्टे नाता, गुर सतिगुर आप तुड़ाइंदा। हरिजन तेरी उत्तम ज़ाता, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। तेरा मेल पुरख समराथा, समरथ पुरख तेरा रंग रंगाइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, साची वस्त झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नज़रे कर्म आपणी आप जणाइंदा। नज़रे कर्म देवे कर कर, हक हकीकत दए जणाईआ। लुतफ़ लतीफ़ आवे दर, लज्जत बैठे मुख शरमाईआ। बेहरफ़ हरफ़ एका पढ़, अलिफ़ आलम दए समझाईआ। जिस जन अंदर जाए वड़, नुकता ग़ैन दए मिटाईआ। ऐन रूप आपे धर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा दामन दए फड़ाईआ। देवणहारा वड भण्डारी, आदि जुगादि समाइंदा। विष्नूं झोली भर भर गया हारी, अन्त कोए ना पाइंदा। ब्रह्मा मति कर कर प्यारी, लक्ख चुरासी खेल खिलाइंदा। शंकर मिली इक्क कटारी, जो घड़या भन्न वखाइंदा। देवणहारा शहिनशाह सच्चा सिक्दारी, अतोट अतुट आप रखाइंदा। गुरसिख आदि जुगादि जुगा जुगन्तर मंगण वारो वारी, दर आयां झोली सर्ब भराइंदा। ख़ाली मुड़ के जाए ना पहली वारी, आत्म अन्तर जो सच ध्यान लगाइंदा। जिस तन जन होवे हउमे बीमारी, तिस आयां दर दुरकाइंदा। अचरज खेल करे न्यारी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी धार वखाइंदा। हरिभगत तेरी भरे पटारी, भगत भगवन्त एका वस्त विच रखाइंदा । माणस जन्म

ना आए हारी, हरि के पौड़े आप चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नज़रे कर्म देवे कर, नज़र नज़र विच मिलाइंदा। नज़र विच मिलाए नज़र, बेनज़ीर दया कमाईआ। जिस जन करे आपणा फ़ज़ल, रहिमत रहिमान दया कमाईआ। नग़मा सुणाए साची ग़ज़ल, ग़फ़लत दए सर्ब मिटाईआ। हरिजन हरिभगत मुरीद मुर्शद तेरी वेखे मंज़ल, महिदूद आपणी हद्द पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस लेखा दए समझाईआ। सर्ब जीआं दा एको दाता, एका घट घट आप समाइंदा। एका देवे नाम गाथा, जुग जुग आप पढ़ाइंदा। दो जहानां देवे साथा, विछड़ कदे ना जाइंदा। घर विच घर वखाए साचा हाटा, साचा वणज कराइंदा। एका पूजा एका पाठा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। चार वरन इक्क रघुनाथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। नज़र आए होए नज़दीक, निज आत्म दया कमाईआ। दरस दिखाए लाशरीक, ला शरअ जिस दी वड्याईआ। अन्तर अन्धेरा मेटे तारीक, प्रकाश प्रकाश दए कराईआ। जिस दी ईसा मूसा मुहम्मद रक्खदे रहे उडीक, सो पैग़म्बर गया आईआ। उम्मत उम्मती परखे नीत, कलमा आपणा कसवटी एका लाईआ। कायनात देवे इक्क तरीक, एका फतवा सादर दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। उर्दू फ़ारसी जाणे उल्मा आलम, आलमीन वडी वड्याईआ। कातब कुतब ना पकड़े कालम, कायनात करे पढ़ाईआ। बिन खण्डे तलवार मेटे ज़ालम, हुक्म हाकम करे सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परवरदिगार बेपरवाहीआ। मस्जिद अंदर आवे महबूब, सुणे फ़रयाद सच्चा गोसाँईंआ। ना कोई तन ना कलबूत, आपणी कला आप वरताईआ। बिन शरअ शरीअत देवे आपणा सबूत, साची सूरत आप उठाईआ। बिन नूर मुहम्मद आवा गया ऊत, उम्मत उम्मती नज़र कोए ना पाईआ। जिस तागा डोर बध्धा सूत, ताणां पेटा वेखे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपे वेख वखाईआ। वज्जे टल्ल सुणे राम, राम रामा रूप वटाइंदा। करे खेल घनईया शाम, जगत अन्धेर घोर विच नज़र किसे ना आइंदा। जिस काया मन्दिर अंदर मारे आपणा बाण, बजर कपाटी कुण्डा लांहयदा। सो दरसण करे आण, दूसर नज़र कोए ना पाइंदा। पंडत पांधे होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। ग़रीब निमाणे करे परवान, जिस जन आपणी सेवा लाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों लए पछाण, साचे मन्दिर मेल मिलाइंदा। काया मन्दिर कर परवान, नाम घंटा आप खड़काइंदा। टल्ली झल्ली सुणे ना कोए कान, हथ्थ नाल ना कोए फड़ाइंदा। अठ्ठे पहर रहे धुन्कान, साचे मन्दिर वसे सदा भगवान, आपणे आसण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणी पछाण,

सो जन आ दरसन पाइंदा। आरज़ू हसरत रहे ना बाकी, हैसीअत आपणी जिस जणाइंदा । लहिणा देणा चुकाए बन्दा ख़ाकी, उल्फत आपणी आप दृढ़ाइंदा। भर प्याला जाम प्याए साकी, सच सुराही आप उठाइंदा। मन मनूआ अग्गे रहे ना आकी, आकबत आपणी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरी सबर सबूरी आप हंढाइंदा।

★ २६ सावण २०१८ बिक्रमी शंकर सिंघ दे गृह शरीं पुर जिला हुशियार पुर ★

मुखत्यार होया मुखत्यार, सौदा मुफ़त नाम विकाईआ। मुर्दार वेखे मुर्दार, मुर्दा ज़िंदा दए कराईआ। मिकदार वेखे मिकदार, सच पैमाना हथ्थ उठाईआ। शहिनशाह बण सच्ची सरकार, शाह पातशाह आपणा खेल खिलाईआ। लोकमात लाए सच दरबार, दर दरबारा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता बेपरवाहीआ। शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह, आदि पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। अगम्म अगम्मड़े वसे थाँ, धाम अवल्लड़ा आप सुहाइंदा। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, हरि पुरख निरँजण राह चलाइंदा। एकँकारा देवे सच सलाह, सिफ्त सलाही आप समझाइंदा। आदि निरँजण नूर धरा, अन्ध अन्धेर मेट मिटाइंदा। अबिनाशी करता लए मिला, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। श्री भगवान

१०५३ होए सहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म दए जणा, आत्म साचा रंग रंगाइंदा। साचे मन्दिर दए बहा, सच १०५३

दुआरा आप सुहाइंदा। एका जोत दए जगा, जोती जाता डगमगाइंदा। काया किला कोट दए वसा, घर घर विच सोभा पाइंदा। राग अगम्मी दए अल्हा, तार सतार ना कोए हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाइंदा। सो पुरख निरँजण साचा रंग, घर साचे आप जणाईआ। आत्म सेजा बैठ पलँघ, आपणी ख़ुशी मनाईआ। नाम सुणाए सच मृदंग, मृदंगा इक्क वजाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, सूरबीर वड्ड वड्याईआ। इक्क उपजाए परमानंद, परम पुरख बेपरवाहीआ। दरस दिखाए जो सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट लए बदलाईआ। चरनां हेठ वखाए कोटन कोटि ब्रह्मण्ड, बेअन्त आपणी धार आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। सो पुरख निरँजण राज राजाना, दर घर साचे सोभा पाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो मेहरवाना, आदि जुगादी वेस वटाइंदा। एकँकारा खेल महाना, खेलणहारा दिस ना आइंदा। आदि निरँजण लेखा जाणे दो जहानां, जोती जाता जोती डगमगाइंदा। श्री भगवान वसणहारा सच मकाना, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। श्री भगवान गुण निधाना, गुण आपणा आपणे विच छुपाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधाना, आपणी रचना आप रचाइंदा। बंक दुआरा इक्क सुहाना, जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। सचखण्ड मकान श्री भगवन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। करे खेल नारी कन्त, नर नरायण आपणी सेज हंढाईआ। आपे आदि आपे अन्त, मध्ध आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ला दए वसाईआ। सच महल्ला सच दुआरा, हरि साचा सच वसाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतारा, आपणा हुक्म आप वरताईआ। आपे पुरख आपे नारा, नर नरायण वडी वड्याईआ। आप उपजाए सुत दुलारा, शब्दी नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सुत दुलारा देवे दात, जन जननी आप अख्वाइंदा। पुरख अबिनाशी पिता मात, आपणी गोद सुहाइंदा। निरगुण बद्धा निरगुण नात, निरगुण जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण देवे साची दात, निरगुण झोली पाइंदा। निरगुण सेजा निरगुण खाट, निरगुण आसण लाइंदा। निरगुण पुच्छे निरगुण वात, निरगुण सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाइंदा। घर साचा आप सुहाया, कर किरपा गुण निधान। बण दाई दाया सेव कमाया, करे सेव श्री भगवान। आदि जुगादि सुत शब्दी नाउँ धराया, प्रगट करे हो मेहरवान। आपणी इच्छया आप प्रगटाया, आपे होया दयावान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल गुण निधान। गुण निधान खेल खिलाइंदा, किरपा निध गहर गुण ठाकर। आपणी रचना आप रचाइंदा, आपे जाणे आपणा नाउँ रती रत्नागर। आपणे मन्दिर आप वसाइंदा, आपे बणे सच सौदागर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि आपणा आप करे उजागर। आपणा नाउँ आपे रक्ख, आपणी खेल खिलाईआ। सचखण्ड दुआरे हो प्रतक्ख, घर साचे वज्जी वधाईआ। आप आपा कीता वक्ख, निरगुण निरगुण वण्ड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत एका जाईआ। शब्द सुत सच दुलारा, हरि हरि आप उपाया। करे खेल अपर अपारा, लेखा लिख्त विच ना आया। कागद कलम ना लिखणहारा, रसना जिहवा ना कोए सालाहया। करे खेल एकँकारा, आप आपणी धार चलाया। आपणी इच्छया भर भण्डारा, आपे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर विच घर लए प्रगटाया। सचखण्ड अंदर साचा घर, थिर घर आप खुल्हाइंदा। निरगुण आपे बैठा वड़, आपणा आसण लाइंदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, तत्व तत ना कोए जणाइंदा। ना जन्मे ना जाए मर, जन्म मरन विच ना आइंदा। आप सुहाए बंक दुआर, बंक दुआरी वेस वटाइंदा। सुत दुलारे देवे वर, साची वस्त अमोलक झोली पाइंदा। आदि जुगादी खेल कर, साची खेल आप खिलाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे बैठा चढ़, एका हुक्म सुणाइंदा। निरगुण भूप बण बण राणा, करे सच्ची शहिनशाहीआ। दर दरवेश बणे दरबाना, दर आपणे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सुत दुलारे देवे वर, सो पुरख निरँजण दया कमाया। इक्क भण्डारा देवे भर, अतोट अतुट रखाया। निरभउ चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोए धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाया। सच संदेश श्री भगवान हरि शब्दी शब्द सुणाईआ। निरगुण निरगुण कर परवान, निरगुण मेला मेल मिलाईआ। निरगुण वेखे सच निशान, निरगुण हथ्थ फड़ाईआ। निरगुण उप्पर निरगुण होए मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाईआ। निरगुण आपणा बन्धन पा, आपणा हुक्म जणाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाह, साचा अदल कमाइंदा। सुत दुलारा सेवा ला, एका राह वखाइंदा। आपणी रचना लए रचा, रच रच आपे वेख वखाइंदा। आपणी गोदी लए सुहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। आपणा मार्ग आपे लाउणा, आपणी दया कमाईआ। आपणा मेल आप मिलाउणा, मेल मिलावा आप कराईआ। आपणी सेज आप हंढाउणा, आप आपणे रंग समाईआ। आपणा बीज आप बजाउणा, फुल फुलवाड़ी आप जणाईआ। आपणे अंदर आप रखाउणा, आपे वेख वखाईआ। आपणी धार आप प्रगटाउणा, नूर नूर डगमगाईआ। आपे मात पिता अख्वाउणा, आपे होए जणेंदी माईआ। आपणा रूप आप धराउणा, रूप अनूप आप हो जाईआ। आपे विश्व वेस वटाउणा, विष्नूं आपणा अंक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक्क जणाईआ। आपे विष्नूं विश्व धार, हरि साचा खेल खिलाइंदा। आपे जोत निराकार, निरगुण रूप वटाइंदा। आपे वसे सच दुआर, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। आपे हुक्म आप वरतार, आपे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। आपे भरे सच भण्डार, साची वस्त आप वरताइंदा। चरन चरन नाल करे प्यार, चरन चरनोदक आप प्रगटाइंदा। विष्नूं देवे इक्क सहार, आत्म अन्तर आप धराइंदा। नाभी कँवल कर पसार, अमृत रस भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्दी बन्धन पाइंदा। अमृत रस खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप उपाईआ। साचे मन्दिर कर पसारा, आपणी बणत बणाईआ। ना कोई वेखे वेखणहारा, नेत्र नैण दिस किसे ना आईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। आपे वस्त बणे हरि थारा, आपे दए वरताईआ। साचा शब्द सच पसारा, हरि साचा सच कराईआ। आपे विष्न ब्रह्म दए आधारा, आपणा रंग रंगाईआ। आपे साजण मीत मुरारा, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे विष्न ब्रह्मा पाए पन्ध, अचरज खेल खिलाइंदा। आपे सुन्न अगम्मी वसे धुंद, धुँदूकार आप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। खेले खेल खेलणहारा आपणी दया कमाईआ। करे कार करता पुरख करनेहारा, आपणी करनी आप कराईआ। आपे शंकर दए हुलारा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। एका हुक्म इक्क वरतारा, एका रिहा समझाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका रिहा उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे दिता वर, विष्न ब्रह्मा शिव आपणी गोद सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हरि जा, आपणा बंस सुहाया। एका हुक्म दए वरता, एका राग अल़ाया। एका मन्दिर दए वखा, एका घर वड्याआ। एका रूप लए प्रगटा, एका नज़री आया। एका इष्ट लए मना, एका सीस झुकाया। एका दृष्ट दए खुल्हा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण वेस वटाया। निरगुण वेस वेस अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। आपणी खेल करे इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोए रलाईआ। सचखण्ड वसाए आप महल्ला, थिर घर साचे सोभा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाया पल्ला, एका पल्लू हथ्थ रखाईआ। सच संदेस एका घल्ला, नाउँ निरँकारा करे पढ़ाईआ। जोती शब्दी आपे रल्ला, शब्द शब्दी धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज आपणी खेल खिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, हरि साचा खेल खिलाइंदा। शाह पातशाह बण सच्ची सरकार, सीस आपणे ताज टिकाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। निरगुण निरगुण सुणाए ग़फ्तार, रसना जेहवा ना कोए हिलाइंदा। साचे मन्दिर करे सच प्यार, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। वेखे विगसे करे विचार, आपे वेखे नज़र ना आइंदा। ना कोई सूरज चन्न उज्यार, मंडल मण्डप ना कोए वखाइंदा। ना कोई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघी कंदर सागर ना कोए रखाइंदा। लक्ख चुरासी ना कोए अखाड़, घड़ भाण्डे ना कोए वखाइंदा। ना कोई गुरु ना अवतार, साध सन्त नज़र कोए ना आइंदा। एका शब्द कर त्यार, नाद अनादी आप प्रगटाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवे इक्क सहार, आप आपणी ओट जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग हरि करतारा, आपणा आप लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे सहारा, सति सतिवादी करे सति पढ़ाईआ। एका मन्दिर इक्क दुआरा, एका घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा एका वार सुणाईआ। नर नरेश श्री भगवान, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। आपे होए साचा काहन, साचे दर सोभा पाइंदा। आपे देवे धुर फ़रमान, धुर दी बाणी आप अल़ाइंदा। आपे होए जाणी जाण, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। आपे बख्शे साचा

१०५६

माण, सीस जगदीस हथ्थ रखाइंदा। साची सेवा कर परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। मुख़तया मुखत्यार बणे आप मेहरवान, मुफ्त आपणी वस्त वंडाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाइंदा। दया करे दीन दयाला, आपणी दया कमाईआ। आपणा मार्ग इक्क सुखाला, तिन्नां दए जणाईआ। मेरा रूप सदा निराला, नूर मेरा सर्ब समाईआ। साचा मन्दिर सच्ची धर्मसाला, घर साचा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दए वरताईआ। एका हुक्म करे वरतारा, हरि साचा सच जणाइंदा। विष्नूं तेरा सति भण्डारा, सति सतिवादी आप भराइंदा। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म पसारा, पारब्रह्म आप कराइंदा। शंकर तेरा अन्त नगारा, निरगुण सरगुण आप वजाइंदा। करे खेल विच संसारा, लोकमात रचन रचाइंदा। लक्ख चुरासी लग्गे अखाड़ा, त्रैगुण वस्त आप वरताइंदा। पंज तत्त दए प्यारा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मेल मिलाइंदा। निरगुण सरगुण करे विचारा, सरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। मन मति बुध दए सहारा, जोती आपणी वण्ड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। विष्न सुणया हरि फ़रमान, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, हउँ सेवक सेव कमाया। तूं दाता गुण निधान, हउँ मंगण दर ते आया। एका देणा साचा दान, अतोट अतुट रखाया। आदि जुगादि ना आवे हाण, सदा सद तेरी ओट तकाया। मेरा तेरा इक्क मकान, विछड़ कदे ना जाया। तूं मेरा मैं तेरी करां पछाण, तेरा मेरा एका अंक दूजा अंक ना कोए बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अभुल भुल कदे ना जाया। देवे वर श्री भगवाना, आपणी दया कमाईआ। तेरा झुलाए सच निशाना, दो जहान वज्जे वधाईआ। आदि जुगादि तेरा रंग रंगे हो मेहरवाना, रंग रंगीला साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाईआ। एका गुण समझाइंदा, पारब्रह्म बेअन्त। विष्नूं आपणे अंग लगाइंदा, आप बणाई साची बणत। तेरी साची सेव जणाइंदा, जुग जुग सेवा लाए आदि अन्त। विछड़ कदे ना जाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवन्त। श्री भगवान सच जणाया, आपणा पर्दा खोल्ह। निरगुण सरगुण तेरा रूप रखाया, अगम्म अगम्मड़ा तोले तोल। लक्ख चुरासी लए उपाया, तेरा भण्डार रक्खे अडोल। जुगा जुगन्तर लए वरताया, सच वस्त रक्खे तेरे कोल। तैनूं मुखत्यार इक्क बणाया, विष्नूं कीता हरि हरि कौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जोत आपे शब्द आपे रिहा आपणे अंदर मौल। बण मुखत्यार ख़ुशी मनाए, हरि साचे हुक्म जणाया। जो मिल्या घर लए टिकाए, आपणे हथ्थ रखाया। मेरा तेरा मेला सहिज सुभाए,

घर साचे वज्जे वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म जणाया। विष्नूं करे पुकार, एका वार जणाईआ। तूं साहिब सच्चा दातार, तेरी मेरी इक्क सरनाईआ। आदि जुगादि तूं इक्क रहें मुखत्यार, तुध बिन मुखत्यारी, हथ्थ किसे ना आईआ। तूं मेरा कीता आकार, निराकार तेरी वड्याईआ। मैं तेरे अग्गे झोली बैठा पसार, मेरी झोली दे भराईआ। कवण वेला कवण वक्त करें प्यार, आप आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दे समझाईआ। आपणा गुण हरि समझाया, विष्न दए आधार। आम मुख़तार तैनूं बणाया, दिता हुक्म सच्ची सरकार। नौ सौ चुरानवे जुग तेरी सेवा लाया, जुग चौकड़ी बीते वारो वार। अन्तिम अन्त लए मिलाया, निरगुण निरगुण हो उज्यार। तेरा पन्ध दए मुकाया, पान्धी बण बण सिरजणहार। तेरा लेखा वेख वखाया। आपे खोल्हे आपणा सच किवाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दस्से सच विहार। आम मुख़तार बणाया हरि, हरि अवाम दए सलाहीआ। सर्ब जीआं दा एका यार, यार यारी रिहा निभाईआ। दो जहानां पावे सार, बेअन्त बेपरवाहीआ। भुल ना जाए बण गंवार, अभुल नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न देवे सच सलाहीआ। सच सलाह देवे निरँकारा, आपणी खेल खिलाया। तेरा मेरा इक्क प्यारा, सच विहारा दए समझाया। लक्ख चुरासी दे भण्डारा, सच भण्डारी हथ्थ फड़ाया। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग उतरे पारा, कलिजुग अन्तिम रंग वखाया। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख सके ना कोए शाहया। आपणे खेल आपणे हथ्थ रक्खे करतारा, करनी किरत आप कमाया। विष्नूं सुणे सुणनेहारा, हरि साचे शब्द जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला दए समझाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाउणा, हरि साचा सच जणाईआ। निरगुण निरगुण जामा पाउणा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। चार जुग चौकड़ी वेख वखाउणा, जुग चौकड़ी पर्दा लाहीआ। आपणा डंका इक्क वजाउणा, तेरी मेरी धार चलाईआ। सो पुरख निरँजण आप अख्वाउणा, हँ ब्रह्म तेरी वेखे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए चुकाईआ। आपणा पर्दा लए उठा, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। आपणा रूप लए प्रगटा, निरवैर आपणी खेल खिलाइंदा। अजूनी रहत होए सहा, जून अजूनी खेल कराइंदा। मूर्त अकाल डगमगा, जोत उजाला आप प्रगटाइंदा। वसणहारा हर घट थाँ, थान थनंतर सोभा पाइंदा। आपणा कीता कौल लए निभा, कीता कौल भुल ना जाइंदा। जगत विद्या विच लेखा सके ना कोए गणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं आपणी धार चलाइंदा। नव नौ चार मिली मुखत्यारी, नव नौ चार सेव कमाईआ। नव नौ चार बण भण्डारी, नव नौ चार दए वरताईआ। नव

नौ चार करे सच्ची यारी, नव नौ चार सच यारड़ा वेख वखाईआ। नव नौ चार मिली सिक्दारी, शाह पातशाह हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मुखत्यारी आप समझाईआ। सच मुखतार ब्रह्म ब्रह्मादि, हरि ब्रह्मा पारब्रह्म उपाया। इक्क सुणाया साचा नाद, अनादी नाद वजाया। भेव खुल्हाया बोध अगाध, बोध अगाधा हुक्म वरताया। धुर फ़रमाना आपे काढ, साचा लेख जणाया। लेखा जाणे चार वेद, वेद वेदांता मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप जणाया। आत्म ब्रह्म ब्रह्म पसारा, पारब्रह्म वड्याईआ। ईश जीव कर उज्यारा, जगदीस ख़ुशी मनाईआ। निरगुण त्रैगुण माया तत्त विचारा, रजो तमो सतो नाल मिलाईआ। पंचम पंच होए उज्यारा, दस दस आपणा रंग वटाईआ। करे खेल आप करतारा, कादर कुदरत रूप वटाईआ। अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज कर पसारा, चारे खाणी वणज वखाईआ। एका नाम सच्चा जैकारा, चारे बाणी लए प्रगटाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाए आपणी वारा, वार आपणी आप सुणाईआ। चारे जुग दए सहारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बन्धन पाईआ। चार वरन करे उज्यारा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नाल रलाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म पसारा, लक्ख चुरासी दए मिलाईआ। घर मन्दिर कर त्यारा, घर घर विच लए छुपाईआ। डूँघी कंदर खेल न्यारा, निरगुण सरगुण आप खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच्चा वर, ब्रह्मे तेरी ब्रह्म वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बणाया मीत मुरार, आपणा मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म बणया साचा यार, सगला संग निभाईआ। करे खेल सच्ची सरकार, साख्यात जोती जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे सोभा पाईआ। दर घर साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म बणया नारी कन्त, हरि साची सेज हंढाइंदा। आपे मणीआ आपे मंत, आपे आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। आप उपाए आपणे जंत, आपे वेख वखाइंदा। आपे साध आपे सन्त, आपे सतिगुर रूप वटाइंदा। आपे भुक्खा आपे नंगत, आपे शाह पातशाह आपणा हुक्म अल्हाइंदा। आपे दर दरवेश बणे मंगत, आपे साची वस्त झोली पाइंदा। आपे चाढ़े साची रंगत, आपे रंग वांग काफ़ूर उडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे एका वर, सच भण्डारा आप वरताइंदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म भण्डारा, साचा सच वरताईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, घाड़त घड़त घड़ाईआ। घर घर नाद वज्जे धुन्कारा, अनहद शब्द सुणाईआ। घर घर सखीआं मंगलचारा, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। घर घर मिले ठाकर प्यारा, ठोकर नाम लगाईआ। घर घर चतुर्भुज दए सहारा, रूप अनूप वटाईआ। घर घर आदि शक्ति हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म

तेरा दर सुहाईआ। ब्रह्मे सोहे तेरा बंक, हरि साचा आप सुहाइंदा। एका रंग रंगाए राउ रंक, ऊँच नीच ना कोए वखाइंदा। जिस जन फेरे मन का मणक, मन का मणका आप भवाइंदा। जोती शब्दी लाए तनक, एका घर वखाइंदा। अट्ठ पहर वज्जे डंक, डंका आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म आपणी धार चलाइंदा। ब्रह्म धार हरि गोबिन्द, पुरख अबिनाशी खेल खिलाईआ। आपे सागर आपे सिन्ध, आपे नीर वहाईआ। आपे रक्त आपे बूंद, आपे मेल मिलाईआ। आपे भुल्ला आपे लए ढूंड, वेखे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची कल आप वरताईआ। साची कल करे वरभण्ड, सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। ब्रह्मे दिता एका मंत, मन्त्र आपणा नाम दृढ़ाइंदा। आपे आदि आपे अन्त, मध्ध आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म सुणाए भगवान, एका वार जणाया। ब्रह्म मुख़तार बणाए सच निशान, सच निशाना आप झुलाया। लक्ख चुरासी अन्तर इक्क प्यार, प्रेमी प्यार आप जणाया। नेम निभे विच संसार, ना कोए तोड़े तोड़ तुड़ाया। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाया। ब्रह्मे बणना सेवादार, साचा हुक्म सुणाया। करे खेल आप करतार, करनी करता किरत कमाया। लक्ख चुरासी करे उज्यार, निरगुण जोत दीप जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा खेड़ा दए वसाया। तेरा खेड़ा जाए वस, नव नौ वज्जे वधाईआ। चार चार मेला हस्स हस्स, चार चार होए कुड़माईआ। नव नौ देवे एका रस, चार चार ख़ुशी मनाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे राह वखाईआ। तेरे मन्दिर जाए वस, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। तेरी करे पूरी आस, आसा आसा विच समाईआ। आदि जुगादि इक्क प्रकाश, जुग करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मुखत्यारी दए वड्याईआ। मिली मुखत्यारी लक्ख चुरासी, पारब्रह्म ब्रह्म समझाया। तेरा मंडल तेरी रासी, तेरा नाच नचाया। तेरी पृथ्मी तेरा आकाशी, पृथ्मी आकाश तेरा वेस वटाया। तेरा दास तेरी दासी, तेरे दर सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वणज दए वखाया। मिल्या मुखत्यार दिता परवाना, परवानगी सच जणाईआ। मेरा हुक्म सच्चा फ़रमाना, भुल कदे ना जाईआ। मेरा खेल दो जहानां, किला कोट ना कोए वड्याईआ। तेरा मन्दिर वेखां सच मकाना, लक्ख चुरासी अंदर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा चुकाईआ। सुणया फ़रमान होया निमाणा, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। तूं शाह पातशाह सच्चा सुल्ताना, हउँ दर दरबान सेव कमाया। लक्ख चुरासी तेरा माणा, मेरा मैं रहे ना राया। एका दरसणा आपणा आवण जाणा, कवण वेला वक्त सुहाया। कवण घर

करां पछाणा, आप आपणा पर्दा लाहया। सद मन्नां तेरा भाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वेला अन्त दए जणाया। वेला अन्त दस्से भगवान, पारब्रह्म दया कमाईआ। ब्रह्मे सुण सच फ़रमान, हरि साचा सच जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरी फुल फुलवाड़ी फुल्ले विच जहान, नौ खण्ड पृथमी पत डाल्ही आप महिकाईआ। अन्तिम वेखे हरि जू आण, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। तेरा लहिणा करे परवान, देणा कोए रहिण ना पाईआ। मुखत्यारी वेखे जगत जहान, यारी यारां नाल निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म रिहा जणाईआ। साचा हुक्म शंकर धार, हरि साचा आप उपाइंदा। भोले नाथ कर प्यार, अभुल आपणा रंग वखाइंदा। जटा जूट दए आधार, जोग आपणा हरि जणाइंदा। तन भिबूत देवे छार, आपणी चरन धूढ़ी टिक्का लाइंदा। हथ्थ त्रिसूल इक्क आपार, विष्न ब्रह्मा शिव मेल मिलाइंदा। तिन्नां मेला इक्क दुआर, साचा डण्डा हथ्थ फड़ाइंदा। लक्ख चुरासी दा बणाया मुखत्यार, आपणा सौदा मुफ्त वरताइंदा। मैं बणौदा रिहा बण ठठयार, लक्ख चुरासी घाड़न मात घड़ाइंदा। तूं भन्नणा आपणी वार, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। तेरा मेला धुर दरबार, तेरी कीती ना कोए उलटाइंदा। तेरा मेरा इक्क आधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सगला संग आप रखाइंदा। भोला नाथ मारे कूक, सचखण्ड
१०६१ दुआरे आप सुणाईआ। जो उपजे सो देवां फूक, बचया कोए रहिण ना पाईआ। मेरे अग्गे ना चुक्के कोई चूक, चुक्क १०६१
चुक्क खाते दयाँ सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला मिले तेरी सरनाईआ। सच सरनाई हरि जणाइंदा, निध्अक्खर आपे बोल। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरा खेल खिलाइंदा, तोले साचा तोल। जुग जुग वेस वटाइंदा, पूरा करे कौल। गुर अवतार रंग रंगाइंदा, माण दिवाए उप्पर धरत धौल। साचा हुक्म आप सुणाइंदा, आदि जुगादि रहे अडोल। भगत भगवन्त आप जगाइंदा, आपणी करनी आपे मौल। साचे सन्त संग निभाइंदा, देवे वस्त नाम अनमोल। गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा, वसे सदा कोल। गुरसिखां एका घर वखाइंदा, निरगुण सरगुण करे चोल्ह। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा, लक्ख चुरासी वेखे घोल। कलिजुग वेला अन्त जणाइंदा, पुरख अबिनाशी पर्दा खोल्ह। निरगुण आपणा रूप वटाइंदा, ना कोई जाणे कला सोल्ह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आपे रिहा मौल। बणया मुखत्यार मिल्या हथ्थ, हकीकत वेखे सर्ब लोकाईआ। लाशरीक रिहा तक्क, बेऐब इक्क ख़ुदाईआ। नव नौ चार पन्ध रिहा मुक्क, वेला आपणा वकिंत लँघाईआ। लक्ख चुरासी फल रिहा पक्क, चारों कुण्ट कलिजुग आपणी लाली रिहा चढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव राह रहे तक्क, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण वेला होए प्रगट,

निरगुण निरवैर सच्चा माहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा मेटे फट्ट, दूई आपणी दए मिटाईआ। इक्क वखाए साचा हट्ट, दर दुआर दए वड्याईआ। मेल मिलाए नट्ठ नट्ठ, आपणा पन्ध मुकाईआ। सरन सरनाई जाईए ढट्ठ, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरसन देणा अन्तिम वार, एका मंग मंगाईआ। जगत मुखत्यारी चार दिन, चार जुग सेव कमाया। वक्त लँघाया गिण गिण, कोटी कोट काल बिताया। पैंडा मुक्या ना मिण मिण, कदमी कदम चलाया। तेरा वेख्या ना साचा चिन्ह, लक्ख चुरासी जूठ झूठ नाल भराया। दरस वखाउणा प्रगट हो के छिन्न, छिन्न भंगर तेरी माया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा वेला अन्तिम आया। तेरी मुखत्यारी तेरे अग्गे देईए सुट्ट, तेरे हुक्म सदा रज़ाईआ। तेरा अमृत पीए घुट, तूं अमर तेरी वड्याईआ। तेरी वेखीए साची रुत्त, लोकमात होए रुशनाईआ। निरगुण आए अबिनाशी अचुत, सरगुण धीर दए धराईआ। एका वार पएँ तुट्ट, बेअन्त बेपरवाहीआ। आप मिलाउणे आपणे सुत्त, जो जुग जुग विछड़े रहे ध्याईआ। भाग लगाउणा, काया बुत्त, पंज तत्त कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाउणा साचे घर, दर घर साचे ख़ुशी मनाईआ। मुख़तारनामा दिता पाड़, वेला अन्तिम आया। दिवस सुहाया सतारां हाढ़, सभ दा लेखा रिहा चुकाया। लहिणा देणा मंगे गुर अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जो आए सेव कमाया। भगतां वेखे भगत आधार, कबीर जुलाहा दर मंगाया। ईसा मूसा खोल्हे किवाड़, मुख नकाबी पर्दा लाहया। करनी वेखे मुहम्मद यार, चार यारी लए उठाया। नानक गोबिन्द कर विचार, एका मन्त्र रहे सुणाया। चार जुग चार वरन चौथे जुग चार कुण्ट करन पुकार, हाहाकार कर सर्ब कुरलाया। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराया। कोई ना बणे सच्चा मुखत्यार, बैठे मुख भवाया। जिस दा कलमा पढ़दे रहे कर पुकार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाया। सो प्रगट होया परवरदिगार, जिस दा काअबा नज़र किसे ना आया। मुखत्यारी देवे सच्चे यार, जिस जन आपणा हुक्म सुणाया। मम्मा खक्खा ना कोए विचार, तत्ता त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाया। यइया रारा खेल करे आप करतार, नाम अमोला झोली पाया। रारा रंग रंगे अपार, उतर कदे ना जाया। विष्न ब्रह्मा शिव दए वखाल, घर बैठे आसण लाया। फेर उप्पर लए उठाल, प्रभ आपणी उँगली लाया। थिर घर वखाए सच्ची धर्मसाल, निरगुण जोत नूर रुशनाया। आपणा दीपक आपे बैठा बाल, ना कोई दूजा संग वखाया। जिस नाउँ रक्खे मुखत्यार, तिस काल नेड़ ना आया। जम डण्ड ना मारे मार, राए धर्म ना दए सज़ाया। चित्रगुप्त लेखा ना दए वखाल, लाड़ी मौत ना लए प्रनाया। हरिभगत ना होए बेहाल, जिस जन आपणी दया कमाया। हो मुखत्यार करे हल्ल सवाल, दो जहानां सवाल

१०६२

अग्गे अड़ ना सके कोए राया। आपणे हथ्थ रक्खे काल महाकाल, दयाल काल आपणा खेल खिलाया। तिस जन ना होए ज़वाल, जो जन सरनाई आया। ज़ेर ज़बर वखाए बण दलाल, नुकता नून दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, दूजा दर ना मंगण जाया। आया वक्त अख़ीर दा सुण लैणा, साचा सच ही सच जणाइंदा ए। चार जुग दा मुक्कणा अन्त लहिणा, लहणेदार बण झोली पाइंदा ए। कलिजुग ना मात दे विच रहिणा, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा ए। लक्ख चार बत्ती हज़ार डूँघे खात पैणा, पूरी औध ना कोई कराइंदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव चुकाइंदा ए। कलिजुग आई अन्तिम वार, हरि साचा खेल खिलाइंदा। वेद व्यासा बण लिखार, लेखा लेख लिखाइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत पाए सार, दिस किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी करे ख्वार, जुग जुग गेड़ा आप दिवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धार आप चलाइंदा। आपणी धार चले निरँकार, आदि पुरख वडी वड्याईआ। जुग जुग लए मात अवतार, वेस अनेका रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग हो त्यार, तेई धारा रिहा चलाईआ। लेखा जाणे दस गुर अवतार,
१०६३ भगत भगवन्त सन्त आपणा संग निभाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार, काला सूसा तन शंगार, एका अल्फ़ी रिहा १०६३
वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका नर, नर नरायण वडी वड्याईआ। खेल करन आया करतारा, वीह सौ बिक्रमी जोत जगाईआ। वीह सौ इक्क होया त्यारा, वीह सौ दो वज्जी वधाईआ। वीह सौ तिन्न लाया अखाड़ा, वीह सौ चार मिले वड्याईआ। बीस पंज करे आपणी कारा, बीस छे छहबर नाम लगाईआ। वीह सत्त बोल जैकारा, बीस अठ्ठ अठ्ठां तत्तां दए उठाईआ। बीस नौ भेव चुकाए नौ दुआरा, बीस दस साची करनी मात कमाईआ। छोटा बाला कर त्यारा, आपणी रचना दए समझाईआ। इन्द इन्दरासण पार किनारा, सुरपति इन्द रहिण ना पाईआ। करे खेल अपर अपारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। साढे तिन्न हथ्थ बणाए इक्क मनारा, लक्ख चुरासी जीवां जंतां दए समझाईआ। करे खेल हरि सिरजणहारा, इक्क इक्क नाल मेल मिलाईआ। निरगुण सरगुण लग्गा अखाड़ा, वीह सौ यारां वज्जी वधाईआ। करे खेल हरि सिरजणहारा, आप आपणा पर्दा दए उठाईआ। जगत जगदीसा दए हुलारा, साचे पौड़े दए चढ़ाईआ। शंकर तेरा ढहे मुनारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। एथे आए सुत दुलारा, जिस मिले मात वड्याईआ। नौ दुआरे खोलू किवाड़ा, सच दरबार दए जणाईआ। एका दोआ कर पसारा, आप आपणी खेल खिलाईआ। सत्त रंग निशाना चाढ़े विच संसारा, सति सतिवादी साचा संग निभाईआ। लखण पुष्कर दीप होए उज्यारा, करोच आपणा खेल खिलाईआ। जम्बु बोले इक्क

ललकारा, सलमल आपणी धार बणाईआ। सान दीप करे ख्वारा, कुशा आपणा डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त रंग निशाना दए झुलाईआ। वीह सौ तेरां होया ख़बरदार, आपणा बल रखाइंदा। साधां सन्तां दए हुलार, शाह सुल्तानां आप उठाइंदा। राष्ट्रपत खोल्हे जा किवाड़, सति सतिवादी फेरा पाइंदा। पंचम मुख ताज कर त्यार, साची बणत आप बणाइंदा। सन्त रंग निशाना दए वखाल, सति सतिवादी आप रंगाइंदा। पंज पंज कर त्यार, पंचम पंचम तन सुहाइंदा। शब्द डण्डा अपर अपार, एका हथ्थ वखाइंदा। पैर जोड़ा सच्ची सरकार, राम राम नज़री आइंदा। कलिजुग अन्तिम करे ख्वार, लेखा सभ दा आप मुकाइंदा। लहिणा चुक्के चार लक्ख बत्ती हज़ार, लक्ख लक्ख गेड़ा आपणे विच समाइंदा। कर्म कुकर्मां मारे मार, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। दस पंज रिहा पुकार, पंज पंज कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। सम्मत चौदां चढ़या चाअ, वीह सौ बिक्रमी नाल रलाईआ। गुरमुखां वेखे थाँ थाँ, एका बन्धन पाईआ। एका इक्की गंढु दवा, ना कोई खोल्हु खुल्हाईआ। साची सिक्खी मात बणा, ऊँच नीच भेव चुकाईआ। ज़ात पात दए खपा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए अख्वाईआ। आत्म ब्रह्म दए जणा, एका करे पढ़ाईआ। चौदां लोक डेरा देवे ढाह, चौदां तबक करे सफ़ाईआ। मुहम्मद मंगे अन्त पनाह, दोए जोड़ प्या सरनाईआ। ईसा मूसा कहे तूं ख़ुदा, बेऐब तेरी ख़ुदाईआ। कलमा कलाम इक्क पढ़ा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। अमाम अमामां सिर सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह तूं अख्वाईआ। तूं बख्शें सद गुनाह, रहिमत तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साल चौधवें खेल खिलाईआ। साल पंदरवां गया चढ़, हरि साचा खेल खिलाइंदा। वीह सौ बिक्रमी बध्धा लड़, आपणा खेल खिलाइंदा। तीर्थ तट्टां अंदर गया वड़, जमना सुरस्ती गंगा आपणे नाल प्रनाइंदा। दरस दिखाए अग्गे खड़्ह, आपणा खेल खिलाइंदा। गोदावरी सरन गई पड़, सीस जगदीस वेख वखाइंदा। आपणी करनी आपे कर, कुदरत खेल खिलाइंदा। अठसठ तीर्थ वेखे वारो वार, रामेशवर चरन टिकाइंदा। शाह भबीखण चुक्के डर, एका हुक्म सुणाइंदा। राम रामा मिल्या घर, आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत पंदरां अंदर वड़, डूँग्घी कंदर फोल फुलाइंदा। डूँग्घी कंदर वेखे सागर, उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखाईआ। आपणा नाम करे उजागर, चार कुण्ट सुणाईआ। एका वणज कराए हरि सौदागर, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत पंदरां ख़ुशी मनाईआ। वीह सौ सोलां सम्मत आया, लोकमात वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिलाया, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। निहकलंक नाउँ धराया, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। साचे

टिल्ले आसण लाया, बजर कपाटी उप्पर बैठा सच्चा माहीआ। पारब्रह्म ब्रह्मण गौड़ नाम धराया, ब्रह्म सुत आपणा मेल मिलाईआ। हरि का भेव किसे ना पाया, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहार दए कराईआ। सच विहारा सच भण्डारा, हरि साचा सच वरताइंदा। चार वरनां कर प्यारा, एका घर बहाइंदा। राउ रंकां करे ख्वारा, जो जन हरि हरि हरि भुलाइंदा। खण्डा फड़ तेज़ कटारा, दो जहानां आप चमकाइंदा। लोआं पुरीआं करे ख्वारा, ब्रह्मण्डां खण्डां आप उठाइंदा। करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धाम आप वड्यांअदा। साची धारा मस्तूआना, हरि मस्तक लेख लिखाया। फड़ के ल्याए नौ सौ नड़िनवें राजा राणा, शब्द डोरी बन्धन पाया। साचा मार्ग इक्क वखाणा, नौ खण्ड पृथ्मी दए समझाया। सत्तां दीपां देवे इक्क फ़रमाना, एका राग अल्राया। लक्ख चुरासी रक्खे आपणे भाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। सम्मत सतारां आया, हरि खेले बेपरवाह। सीस आपणे ताज टिकाया, पंचम मुख रूप बणा। सोहँ अक्खर विच लिखाया, हँ ब्रह्म मेल मिला। निरगुण सरगुण धार चलाया, महाराज शेर सिँघ बण मलाह। विष्नूं वेखे सहिज सुभाया, भगवन खेल रिहा करा। जै जैकारा इक्क लगाया, हिन्दू मुस्लिम सिख आप सुणा। राज राजानां दए खपाया, शाह सुल्तानां तख्तों देवे लाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाह। सम्मत सतारां सति सतिवाद, आपणा हुक्म जणाईआ। बीस बिक्रमी रक्खणी याद, हरि लेखा रिहा मुकाईआ। कलिजुग मुक्कणी अन्त मनयाद, ना सके कोए बचाईआ। किसे ना देवे कोई दाद, सभ बैठण मुख भवाईआ। मात पित ना कोए लाड, बालक गोद ना कोए सुहाईआ। ना कोई सन्त ना कोई साध, सिदक सबूरी ना कोए रखाईआ। करे खेल इक्क इकल्ला मोहण माधव माध, मोहणी आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। शाह पातशाह सच्चा हरि राजा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। लोकमात रचया काजा, आपणा साह सुधाइंदा। आपणे घर वजाए आपणा वाजा, आपणा राग सुणाइंदा। दो जहानां फिरे भाजा, औंदा जांदा दिस ना आइंदा। भूपत भूप बण नवाबा, शाह नवाबा रूप वटाइंदा। चरन घोड़े दे रकाबा, सच सिँघासण आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीस जगदीस ताज सुहाइंदा। सीस जगदीस रक्ख ताज, आपणा हुक्म जणाईआ। शब्द अगम्मी इक्क आवाज़, शाह पातशाह सुणाईआ। कलिजुग झूठा मेटे राज, दुःख रईयत ना कोए उठाईआ। पंजे वक्त जो पढ़दे रहे निमाज़, निमाज़ी बणया ना कोए राहीआ। मक्का मदीना करदे रहे हज्ज, काया हज्ज ना कोए कराईआ। महिराबे

१०६५

सुणदे रहे बांग, घर सदा ना कोए लगाईआ। उम्मत उम्मती लैंदे रहे ख़वाब, साचा मिल्या ना सच्चा माहीआ। अन्तिम लेखा पुच्छे आप, अभुल भुल कदे ना जाईआ। किसे ना पल्ले कोई सवाब, सच धन ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट पल्लू भरया पाप, अल्ला राणी मुख शरमाईआ। सदी चौधवीं रही कांप, धीरज धीर ना कोए धराईआ। चौदां तबकां पर्दा सके ना कोई ढाक, परवरदिगार पर्दा आप उठाईआ। जिस नूं ईसा कहिन्दा रिहा बाप, सो आया सच्चा शहिनशाहीआ। बीस बिक्रमी मेटे सर्ब संताप, सतया सभ दी दए खिचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस सत्तरां आपणा हुक्म जणाईआ। वीह सौ अठारां आया विच संसार, पहली चेत्र रुत्त सुहाया। शाह भबीखण ल्या उठाल, राष्ट्रपत हुक्म जणाया। प्रगट होया दीन दयाल, निरगुण आपणा रूप वटाया। लहिणा देणा मुकाए शाह कंगाल, शाह पातशाह वेख वखाया। अन्तिम कलिजुग खाए काल, कलिजुग वेला अन्तिम आया। नौ खण्ड पृथ्मी होए बेहाल, ना कोई सके धीर धराया। ना कोई करे किसे प्रितपाल, सियासत विरास्त आपणी बैठी धन लुटाया। किसे पत्त ना रहिणा डाल, ख़िज़ां रुत्त आप बणाया। ना कोई सके सुरत संभाल, शाह सुल्तान ख़ाक मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप जणाया। धुर फ़रमाना आया दस्स, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। किसे दा चलणा ना कोए वस, प्रधान मन्त्री बैठण मुख

१०६६

शरमाईआ। कलिजुग पैंडा मुक्कया नस्स नस्स, अन्तिम रैण अन्धेरी छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा खलाईआ। खेल कराए पुरख समरथा, समरथ हथ्थ वड्याईआ। वीह सौ अठारां बिक्रमी हाढ़ सतारां गुरु अवतार कर इक्टठा, पूर्ब लेखा पुच्छ पुछाईआ। ईसा मूसा तिन्न कर्म पिच्छे ढट्ठा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। दस कर्म मुहम्मद हटा, आपणी भुल रिहा बख्शाईआ। अल्ला राणी ताप चढ़या मट्ठा, हड्ड पैर रहे तुड़ाईआ। परवरदिगार आया नट्ठा, नूर नुराना नूर इलाहीआ। आदि जुगादि हट्टा कट्टा, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। जिस जन मारे आपणी सट्टा, सो सके ना सीस उठाईआ। मेरे सिर पाए मेरी ख़ाक मिट्टा, मेरी मींढी मात रुलाईआ। मेरे हथ्थ ना दिसे मौली अट्टा, सच तन्द कवण बंधाईआ। मेरे ख़ाली होए चौदां हट्टा, चौदां तबक पई लड़ाईआ। इलाही नूर एका फटा, फुट्ट मेरी दए मिटाईआ। मेरा वसदा घर जाए लुट्टा, लुट आपणी रिहा मचाईआ। तीर निराला एका छुट्टा, ना कोई सके मात अटकाईआ। लक्ख चुरासी टंगे फड़ के पुट्ठा, पुट्ठी खल्ल दए लुहाईआ। जिस ने खादा रसना कुट्ठा, तिस कुठ कुठ दए मुकाईआ। मुर्शद मुरीद विरले उप्पर तुट्ठा, मरदन मर्द दए कराईआ। सम्मत अठारां सुहाई रुत्ता, रुत्त रुत्तड़ी वेख वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो रिहा सुत्ता, कलिजुग अन्तिम लए अंगड़ाईआ। जिस दी करदे रहे पूजा पाठा,

सो प्रगट होया सच्चा शहिनशाहीआ। जिस बणाया तीर्थ ताटा, गंगा गोदावरी धार वहाईआ। जिस बणाई दिवस राता, सूरज चन्द कर रुशनाईआ। जिस नूं कहिन्दे आदि शक्ति साची माता, सो भवानी रूप वटाईआ। जिस दी पढ़ पढ़ सुणाउँदे रहे गाथा, सो आपणी गाथा रिहा सुणाईआ। जिस नूं कहिन्दे त्रिलोकी नाथा, कोटन कोटि त्रिलोकी नाथ आपणे संग रखाईआ। जिस नूं कहिन्दे राम बेटा दसराथा, सो राम घट घट रिहा समाईआ। जिस नूं ईसा मूसा सजदा कर कर टेकदे रहे माथा, सो सही सलामत फेरा पाईआ। जिस कोलों मुहम्मद मंगदा रिहा दाता, देवणहारा आया आप ख़ुदाईआ। जिस दी नानक गोबिन्द जणौंदे रहे ज़ाता, अजूनी रहत वडी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम आया पुरख समराथा, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। कलिजुग आया आपणे घाटा, जगत किनारा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आप आपणा खेल वखाईआ। साचा खेल हरि वखाउणा, सम्मत वीह सौ उन्नी राह तकाइंदा। चार जुग दी जगत अपील पन्ध मुकाउणा, दलील अवर ना कोए रखाइंदा। दीद शुनीद इक्क कराउणा, लाशरीक पर्दा लांहयदा। गोबिन्द ढोला एका गाउणा, एका बचन जणाइंदा। मुहम्मद फ़तवा फेर लाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप वरताइंदा। आपणा भाणा हरि वरताए, वीह सौ उन्नी बिक्रमी दए दुहाईआ। अठ्ठां तत्तां ख़ाक मिलाए, अठ्ठ गृह दए वड्याईआ। अठ्ठां ग्रहयां अड्ड अड्ड झोली पाए, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध नाल रलाईआ। आपणा विकास आप कराए, आपणी धार आप वहाईआ । आपणा राकट आप चढ़ाए, दिस किसे ना आईआ। नाम ऐटम इक्क बणाए, जगत ऐटम दए खपाईआ। हाइड्रोजन आपणा हुक्म सुणाए, आपणी हाईट किसे नज़र ना पाईआ। आपणी फ़ाईट आप कराए, बिन तीर तलवार जंग मचाईआ। कलिजुग झूठा खेड़ा देवे ढाहे, एका वार जड़ उखड़ाईआ। ईसा मूसा पन्ध मुकाए, कलमा नबी ना कोए पढ़ाईआ। वीह सौ बीस बिक्रमी राह तकाए, पंदरां कत्तक नाल रलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर घट घट अंदर नज़री आए, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। निहकलंक आप अख्वाए, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे उन्नी सौ बाहठ, लक्ख चुरासी उतारे आपणे घाट, गुरमुख विरला लए बचाईआ। गुरमुख विरला जाए बच, जिस हरि हरि नाम ध्याया। अग्गे मार्ग लाए सच्च, सति सतिवादी साचा राह वखाया। नौ खण्ड पृथ्मी आपे रच, आपणी रचना दए समझाया। हर घट हिरदे जाए वस, हरि आपणा रूप धराया। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी मस, सतिजुग साचा मार्ग लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन एका घर वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, निरगुण निरगुण निरगुण धार चलाया।

★ २६ सावण २०१८ बिक्रमी वतन सिँघ दे गृह पिण्ड सरीं पुर ज़िला हुशियारपुर ★

सच्च दरबार लगाया मात, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। एका बख्शे नाम दात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। नाता तोड़े ज़ात पात, मज़्हब दीन ना कोए वड्याईआ। सति वखाए एका घाट, सच किनारा दए जणाईआ। जूठी झूठी मेटे अन्धेरी रात, सच सुच्च करे रुशनाईआ। पुरख अकाल बंधाए नात, जगत नाता तोड़ तुड़ाईआ। सो पुरख निरँजण सुणाए साची गाथ, हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ ताट, घर सरोवर आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारे सोभा पाईआ। सच दरबार लग्गा मात, हरि निरगुण आप लगाया। आपे खेले खेल तमाश, रूप अनूप धराया। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर फोल फोलाया। आदि जुगादि ना होए विनास, जुग जुग वेस कराया। भेव चुकाए रवि ससि, जोत नूर नूर रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाया। सच दरबार लाए भगवान, एका भगतन दे वड्याईआ। जीवण जुगत देवे दान, जगत जुग दया कमाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमान, धुरदरगाही आप सुणाईआ। चार वरन इक्क ध्यान, इक्क ज्ञान दृढ़ाईआ। चार वरन इक्क निशान, चारों कुण्ट वखाईआ। चार वरन इक्क मकान, एका मन्दिर दए सुहाईआ। चार वरन इक्क भगवान, चार जुग वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे सोभा पाईआ। सच दरबारा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। करे खेल बेअन्त बेअन्त, बेपरवाह वेस वटाइंदा। लक्ख चुरासी माया पाए बेअन्त, हरिजन साचा आप जगाइंदा। मेल मिलाए साजन सन्त, सति सतिवादी आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारे आप सुहाइंदा। सच दरबार सुहाया, हरि साचा सच कमाइंदा। गुरमुख विरला आप उठाया, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। आप आपणे रंग रंगाया, रंग रंगीला आप हो जाइंदा। साचा नाम मृदंग वजाया, आप आपणा नाद सुणाइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु वखाया, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे सोभा पाइंदा। सच दरबारा गया लग्ग, हरि साचा आप लगाइंदा। बिन दीपक गया जग, जाग्रत जोत जगत वखाइंदा। गुरमुखां बुझाए लग्गी अग्ग, अमृत मेघ बरसाइंदा। दरस दिखाए उप्पर शाह रग, हरिभगत आपणा रूप वटाइंदा। जो जन सरनाई गया लग्ग, तिस संसा रोग चुकाइंदा। सति सतिवादी बन्ने तग, साचा सगन मनाइंदा। माणक मोती हीरा नग, गुरमुख आपणे ताज सुहाइंदा। लक्ख चुरासी नालों कीता अड्ड, आपणी वण्डण आप वंडाइंदा। एका नाम प्याए मदि, मस्त प्याला हथ्थ रखाइंदा। आपणे घर विच आपे सद्द, आपे रंग रंगाइंदा। जगत किनारा पार हद्द, एका

१०६८

वार टपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार आप सजाइंदा। सच दरबार गया सज, सो पुरख निरँजण आप सजाया। सच सिँघासण निरगुण चढ़या भज्ज, पारब्रह्म सच्चा शहिनशाहया। नाम नगारा गया वज्ज, दो जहानां लए उठाया। कूड़ कुड़यारा रिहा तज, कल आपणा पल्लू रिहा छुडाया। जो घड़या सो रिहा भज्ज, वेला अन्तिम आया। कोए ना सके पर्दा कज्ज, सिर हथ्थ ना कोए टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज आपणी खेल खिलाया। सच दरबार सहिज सुभाए, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। वार थित ना कोए रखाए, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। रुतड़ी रुत आप सुहाए, रुत बसन्ती सोभा पाईआ। सच सुच्च आप वरताए, साची सिख्या झोली पाईआ। काया माटी भाण्डे कच्च भाग लगाए, कंचन काया गढ़ वखाईआ। त्रैगुण आंच दए बुझाए, अमृत मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार दए वड्याईआ। सच दरबार सुहञ्जणा, हरि पुरख निरँजण आप सुहाया। दीपक जगे जोत निरँजणा, नूर नुराना डगमगाया। लेखा जाणे साचा सज्जणा, हरिजन साचे वेख वखाया। ना घड़या ना भज्जणा, जन्म मरन विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार दए वखाया। सच दरबार गया खुल्ह, हरि साचा आप खुल्हाइंदा। देवे वस्त नाम अनमुल्ल, कीमत करता ना कोए लगाइंदा। जो जन दुआरे आए भुल्ल, आप आपणे रंग रंगाइंदा। पत्त डाल्ही वेखे फुलवाड़ी फुल, कली कली आप महिकाइंदा। गुरमुख माया अंदर ना जाए रुल, माया ममता मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप वड्यांअदा। सच दुआर वड्डी वड्याई, वड वड्डा आप कराइंदा। गुरमुख गुर होए कुड़माई, गुर सतिगुर खेल खिलाइंदा। गृह मन्दिर वज्जे वधाई, घर ख़ुशीआं मंगल गाइंदा। चल के आए साचा राही, पान्धी आपणा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर आप सुहाइंदा। पान्धी कर के आए पन्ध, दूर दुराडा फेरा पाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, चार वरन करे पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण ख़ुशी करे बन्द बन्द, हँ ब्रह्म वेख वखाईआ। सोहँ देवे परमानंद, निज आत्म करे रसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त इक्क वरताईआ। सोहँ वस्त नाम भण्डार, हरि चार वरन वरताइंदा। सतिजुग खुल्ल्हे सच दुआर, सति सतिवादी आप खुल्हाइंदा। एका रंग रंगाए पुरख नार, नारी पुरख एका धाम बहाइंदा। एका वणज कराए वपार, साचा हट्ट आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे आपे खड़, आपणा दरस दिखाइंदा। सच दुआरे खेल करतार, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। कुदरत कादर करे प्यार, बेऐब सच्चा शहिनशाहीआ। एका शब्द नाम जैकार, धुर दी बाणी बाण सुणाईआ।

१०६६

वरनां बरनां करे ख़बरदार, अठारां बरन दए सज़ाईआ। प्रगट हो नर निरँकार, निरगुण रूप लए वटाईआ। शक्ती खिच्चे सर्ब संसार, आप आपणी दया कमाईआ। भगतन जाणे इक्क भण्डार, सच भण्डारा आप भराईआ। जिस जन बख़्शे चरन प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भगती भगवन्त झोली पाईआ। साची भगती गुर चरन दास, दासी दास सेव कमाइंदा। साहिब सच्चा वसे पास, आपणा मेला मेल मिलाइंदा। करे कराए बन्द ख़लास, बन्दी बन्द आप तुड़ाइंदा। नाता तोड़े दस दस मास, मात गर्भ ना कोए फराइंदा। पूरी करे हरि जू आस, हरि मन्दिर आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा आप सुहाइंदा। दर दरबार सुहञ्जणा, सोभावन्त करतार। गुरमुख गुर गुर मिले एका घर सज्जणा, घर सज्जण मीत मुरार। पी अमृत हरिजन रज्जणा, होए ठंडा ठार। भाण्डा भरम भउ भज्जणा, दूई द्वैती दए निवार। चार वरनां एका घर वसणा, सच दुआरा हरि निरँकारा दए उसार। ऊँचां नीचां हरि हरि हस्सणा, राउ रंक ना कोए विचार। एका शब्द गाए रसना, उच्ची कूक कूक पुकार। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी मसणा, सतिजुग साचा होए उज्यार। लक्ख चुरासी एका मार्ग दस्सणा, जाए पैज संवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सच दरबार। सच दरबार धुर दरगाह, लोकमात वड्याईआ। करे खेल सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा रूप वटाईआ। इक्क जणाए आपणा नाँ, सोहँ करे पढ़ाईआ। सोहँ रूप निरगुण धार चला, सरगुण लए प्रनाईआ। सरगुण मेला सहिज सुभा, निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। दो जहानां विचोला बण मलाह, आपणी खेल खिलाईआ। सति सतिवादी पल्लू दए फड़ा, एका पल्लू नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार वज्जे वधाईआ। सच दरबार वज्जे वधाई, सतिगुर साचा आप वजाइंदा। चार जुग दे भुल्ले राही, फड़ फड़ राहे पाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे शाही, दुरमति मैल धवाइंदा। ग़रीब निमाणयां पकड़े बाहीं, आपणे गले लगाइंदा। एका अक्खर रिहा पढ़ाई, साची विद्या आप प्रगटाइंदा। हँ ब्रह्म रिहा प्रगटाई, आपणी दया कमाइंदा। पारब्रह्म देवे सरनाई, सरनगत आप हो आइंदा। दो जहानां मेला एका थाँईं, घर साचे मेल मिलाइंदा। गुरमुख गुर गुर मिलण चाँईं चाँईं, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। जिउँ धन्ने जट्ट मिल्या गोसाँईं, सो वेला आपणा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा इक्क जणाइंदा। सच दरबार जणाए जन, जन जननी लेखे लाईआ। एका राग अलाए कन्न, कानी तीर निशान बणाईआ। इक्क रबाब वजाए तन, तार सितार हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक्क वखाईआ। इक्क दरबारा एकँकारा, आदि जुगादि रखाइंदा। जुगा जुगन्तर खेल न्यारा, जुग करता

आप कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार किनारा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जामा भेख वटाइंदा। सच सिँघासण कर त्यारा, पुरख अबिनाशी आसण लाइंदा। सम्बल नगरी धाम न्यारा, आपणा बंक वड्यांअदा। एका खण्डा खड़्ग फड़ होए उज्यारा, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाइंदा। उच्ची कूक करे पुकारा, दो जहानां आप सुणाइंदा। रूह बुत्त दा पार किनारा, अबिनाशी अचुत आप कराइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी लग्गे अखाड़ा, सत्तां दीपां आप उठाइंदा। मगर लगाए अगम्मी धाड़ा, शब्दी शब्द हुक्म सुणाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, लेखा लेख ना कोए मिटाइंदा। चारों कुण्ट कराए हाहाकारा, वरन बरन सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मनारा आप वखाइंदा। सच मुनारा सच महल्ला, हरि साचा सच जणाईआ। बैठा रहे इक्क इकल्ला, आदि पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। लक्ख चुरासी भुलाए कर कर वल छला, अछल अछल आप हो जाईआ। आपे धारे आपणा बला, बल धारी आप अख्वाईआ। आपणी शक्ती आपे रल्ला, जोती जाता वेस वटाईआ। आपणा फड़या आपे भल्ला, आपणे हथ्थ उठाईआ। आपे करे आपणा हल्ला, आपणी वार चढ़ाईआ। लक्ख चुरासी कर बिस्मिल एका नाअरा लाए बिसमिल्ला, बिस्मिल आपणी खेल खिलाईआ। एका तीर एका चिल्ला, इक्क कमान ल्ए उठाईआ। नाता तोड़े कक्का बूरा बिल्ला, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण बैठा चढ़, तख्त निवासी आसण लाईआ। साचे तख्त बैठ सुल्तान, सच दरबारा आप सुहाइंदा। एका हुक्म इक्क हुक्मरान, धुर फ़रमाना इक्क जणाइंदा। एका वेखे दो जहान, दो जहान आपणयां चरनां हेठ दबाइंदा। एका लेखा जाणे श्री भगवान, लेखा आपणा आप लिखाइंदा। प्रगट हो गुण निधान, गुणवन्ता भेव चुकाइंदा। कलिजुग अन्तिम दिसे झूठ मकान, झूठा गढ़ आप तुड़ाइंदा। गुरमुख विरले देवे माण, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, उत्तम ज़ाती आप समझाइंदा। काया कुरा वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण इक्क उठाइंदा। नाता तोड़े बेईमान पंज शैतान, मूंह दे भार सुटाइंदा। एका राग सुणाए कान, राग रागी आप अलाइंदा। दर दुआरे देवे माण, जिस जन आपणे चरन बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा आप बणाइंदा। सच दरबारा बणया जग, जगत जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। करे खेल बिन सूरज चन्न, चन्द चांदनी ना कोए चमकाईआ। करे प्रकाश आत्म अन्न, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। डुब्बदयां बेड़ा देवे बन्न, सिल पाथर दए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ।

★ ३० सावण २०१८ बिक्रमी धन्ना सिँघ दे गृह कुलीआं ज़िला हुशियारपुर ★

सो पुरख निरँजण सदा मेहरवान, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जुगा जुगन्तर खेल महान, जुग करता आप कराईआ। निरगुण सरगुण हो प्रधान, निरवैर कल धराईआ। भगत भगवन्त लए पछाण, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। एका देवे वस्त महान, नाम अमोलक झोली पाईआ। अठ्ठे पहर चरन ध्यान, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। सच सुणाए धुर फ़रमान, धुर दी बाणी बाण अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाईआ। सो पुरख निरँजण साजन मीता, एका रंग समाइंदा। आदि जुगादि चलाए आपणी रीता, जुग जुग वेस वटाइंदा। जन भगतां देवे नाम अनडीठा, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँच नीच ना कोए वखाइंदा। काया मन्दिर अंदर वखाए गुरदुआर सच मसीता, घर घर विच जोत प्रगटाइंदा। करे खेल पतित पुनीता, पतित पापी आप तराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। सो पुरख निरँजण पूरन भगवन्त, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। करे खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणा रूप धराईआ। हरिजन मेले साचे सन्त, सति सतिवादी दया कमाईआ। एका मन्त्र दृढ़ाए मणीआ मंत, मन्त्र नाम सति पढ़ाईआ। गढ़ तोड़े हउमें हंगत, जूठ झूठ दए गंवाईआ। नाता तोड़े भुक्ख नंगत, नाम धन झोली पाईआ। काया चोली चाढ़े रंगत, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सो पुरख निरँजण दीन दयाला, हरिजन साचे आप तराईआ। जुग जुग करे सदा प्रितपाला, सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम करे खेल निराला, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। गुरमुखां करे सदा प्रितपाला, प्रितपालक आपणी सेव कमाईआ। त्रैगुण जगत जंजाला, जगत जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। घर वखाए सच्ची धर्मसाला, घर घर विच सोभा पाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। सो पुरख निरँजण श्री भगवान, आपणी खेल खिलाइंदा। जिस जन देवे भगती दान, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, इष्ट देव इक्क हो आइंदा। एका शब्द नाद धुन्कान, अनहद साचा ताल वजाइंदा। एका अमृत पीण खाण, निझर झिरना आप झिराइंदा। साचे तख्त बैठ सुल्तान, तख्त निवासी वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंक नाउँ रखाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां फोल फुलाइंदा। हरिजन वेखे चतुर सुजान, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। ग़रीब निमाणे कर परवान, आप आपणी गोद सुहाइंदा। दरस दिखाए श्री भगवान, दरसी दरस आप कराइंदा। आवण

१०७२

जावण चुक्के काण, जम का फास आप कटाइंदा। लेखा जाणे श्री भगवान, लेखा आपणा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, एका नाम वस्त वरताइंदा। एका नाम सति भण्डारा, सो पुरख निरँजण आप वरताईआ। हरिजन विरला पावे सारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसारा, कलिजुग गूढ़ी नींद सुआईआ। किसे दिस ना आए परवरदिगारा, जल्वा नूर ना कोए रुशनाईआ। ना कोई करे राम प्यारा, राम रामा ना कोए सहाईआ। ना कोई कृष्ना दए आधारा, मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण गुण अवगुण ना कोए जणाईआ। जिस जन बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मस्तक टिक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। हरिजन तेरा धाम सुहञ्जणा, सोभावन्त करे करतार। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, दुरमति मैल दए उतार। दीनां नाथ दर्द वंडाए दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर करे पार। नेत्र पाए नाम अंजना, अज्ञान अन्धेर दए निवार। घर बणे साचा सज्जणा, दर आए मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप सुहाए बंक दुआर। बंक दुआरा कुल्ली कक्ख, हरि सतिगुर दए वड्याईआ। निरगुण सरगुण हो प्रतक्ख, जोती जाता खेल खिलाईआ। आपणा मार्ग साचा दस्स, साचे पौड़े रिहा चढ़ाईआ। तन पहनाए साचा पट, एका बस्त्र नाम वखाईआ। जोत जगाए लट लट, नूर उजाला आप कराईआ। इक्क वखाए साचा हट्ट, चौदां लोक बैठे सीस झुकाईआ। गुरसिख मेला गुर समरथ, गुर सतिगुर होए सहाईआ। देवे वस्त हथ्थो हथ्थ, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। आपणी महिमा सुणाए अकथ, वेद कतेब भेव ना राईआ। मेल मिलाए नठ नठ, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। वसणहारा घट घट, हरिजन साचे लए मिलाईआ। नाता तोड़े तीर्थ अठसठ, सर सरोवर गुरमुख तेरे आत्म दए नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग हरिजन लए तराईआ। कुल्ली कक्ख हरि हरि वासा, जन भगतां आप वखाइंदा। अट्ठे पहर नूर प्रकाशा, जोती जोत डगमगाइंदा। शब्दी शब्द दए दिलासा, धीरज धीर आप धराइंदा। हरिजन होए ना कदे निरासा, निर्धन सरधन आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। कुल्ली कक्ख लग्गा भाग, कुदरत कादर वेख वखाईआ। गृह मन्दिर जगे चिराग़, जोती नूर नूर रुशनाईआ। जगत तृष्ना बुझे आग, अग्नी तत्त ना कोए वखाईआ। मन उपजे इक्क वैराग, मन मनसा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला हरि दुआर, हरि सच्चा सच कराइंदा। नाता तोड़ सर्ब संसार, एका आपणा बन्धन पाइंदा। दिवस रैण करे गुफ्तार, दीद शुनीद खेल खिलाइंदा। आदि जुगादि करे प्यार, जुग

जुग भगतां संग निभाइंदा। ग़रीब निमाणे दए आधार, ग़ुरबत सभ दी आप मिटाइंदा। शाह सुल्ताना करे ख्वार, राज राजानां संग मिलाइंदा। आपे कूके आपणी वार, नौ खण्ड पृथ्मी आप सुणाइंदा। सत्तां दीपां आई हार, बेड़ा बन्ह् ना कोए चलाइंदा। चार जुग रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। तेई अवतार करन पुकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाइंदा। सुणे पुकार हरि नरायण, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। गुर अवतार जो जो कहिण, सुण सुण आपणे पेटे पाईआ। अन्तिम लेखा आया लैण, लोकमात वज्जी वधाईआ। साचा नाता वेखे साक सज्जण सैण, सगला संग कवण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा रूप आप धराईआ। ना कोई संग ना कोई साथ, सगला संगी ना कोए अख्वाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, मन्त्र नाम ना कोए अलाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, सरोवर सर ना कोए जणाईआ। ना कोई मन्दिर ना कोए हाट, ना कोई घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। निहकलंका जामा पाया, रूप अनूप अपार । जुग जुग विछड़े लए मिलाया, गुरमुख साचे लए उधार। फड़ फड़ बाहों आप उठाया, आलस निन्दरा दए निवार। एका मन्त्र नाम दृढ़ाया, सोहँ शब्द सच्चा जैकार।
१०७४ आत्म परमात्म मेल मिलाया, ईश जीव इक्क दुआर। बजर कपाटी पर्दा आप तुड़ाया, दूई द्वैती पर्दा दए उतार। घर साचा इक्क वखाया, घर वसे एकँकार। हउमे संसा रोग कटाया, दुःख लग्गे ना दूजी वार। जिस जन आपणा दरस कराया, तिस तृष्ना दए निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन्दिर सोहे बंक दुआर। बंक दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। घर आया सज्जण कन्त, नार सुहागण वेख वखाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। देवे वड्याई विच जीव जंत, जीवण मुक्त आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराईआ। हरिजन साचा तारनहारा, एका पुरख अख्वाइंदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, जुग जुग वेस वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो त्यारा, निरगुण धार वखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, चार वेद मुख शरमाइंदा। प्रभ का भेव अगम्म अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह आपणी खेल आप खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। हरिजन मेला साचे घर, घर घर विच वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या दर, दर एका नज़री आईआ। एका दूजा चुक्का डर, तीजे नैण होए रुशनाईआ। चौथे पद दरस दिखाए आपे खड़, पंचम नाद शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा आपणे रंग रंगाईआ।

हरिजन रंग रंगे मजीठ, नाम नामा आप चढ़ाइंदा। देवे वस्त इक्क अनडीठ, साची झोली आप भराइंदा। अठ्ठे पहर वसे चीत, चित वित ठगौरी ना कोए रखाइंदा। माणस जन्म गुरमुख विरला जाए जीत, जन्म मरन फंद कटाइंदा। काया होए ठंडी सीत, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। कलिजुग अन्त अचरज चली रीत, पुरख अबिनाशी आप चलाइंदा। साचा देहुरा मन्दिर मसीत, काया बंक आप बणाइंदा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। ज़ात पात ना कोए विचार, आत्म ब्रह्म सर्ब जणाईआ। ऊँच नीच भेव निवार, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बहाए इक्क दुआर, एका करे सच पढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, बेऐब परवरदिगार रूप वटाईआ। हरि हर घट करे पसार, राम रामा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। थान थनंतर सोहया, सोभावन्त करे निरँकार। गुर गुरसिखां जेहा आपे होया, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण चले आपणी धार। गुरसिख बीज साचा बोया, प्रगट होए विच संसार। सति सतिवादी लै के आए ढोआ, साची वस्त अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले सच दुआर। सच दुआरे हरिजन मेलया, मेलणहारा इक्क इकन्त। एका घर वसे गुरु गुर चेलया, गुर चेला महिमा अगणत। हरि सज्जण सदा सुहेलया, सदा सुहेला श्री भगवन्त। करे खेल इक्क इकेलया, इक्क इकेला आदि अन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे पूरन सन्त। पूरन सन्त गुरमुख, गुर गुर आप वड्याईआ। जगत तृष्ना मिटे दुक्ख, दुःख दर्द ना कोए वखाईआ। आत्म तृष्ना मिटे भुक्ख, धीरज धीर धीर धराईआ। सुफ़ल कराए मात कुक्ख, जन जननी लेखे लाईआ। मात गर्भ ना होवे उलटा रुक्ख, लक्ख चुरासी दए कटाईआ। आवण जावण पैंडा जाए मुक, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जिस जन आपणी गोदी लए चुक्क, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। गुरसिख बूटा ना जाए सुक्क, सिंच अमृत हरा कराईआ। दरस दिखाए जो बैठा लुक, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जन भगतां उप्पर आपे तुठ्ठ, नाम अतुट आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन उठया आपणे रंग, सतिगुर पूरा आप उठाईआ। आत्म सेज सुहाए पलँघ, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। नाम वजाए इक्क मृदंग, राग अनादी नाद अल्हाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, सुरती शब्द शब्द मिलाईआ। आपणे मन्दिर आपे लँघ, आप आपणा वेख वखाईआ। गुरसिख मुकाए तेरा पन्ध, पान्धी बणे सच्चा माहीआ। घर सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ शब्द सच्ची पढ़ाईआ। अठ्ठे पहर परमानंद, निज आत्म करे रसाईआ। निरगुण जोत चढ़ाए साचा चन्द, जोत निरँजण कर रुशनाईआ।

१०७५

१०७६ भरमां ढाए झूठी कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए चुकाईआ। हरिजन लेखा चुक्कणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। आवण जावण पैंडा मुक्कणा, लक्ख चुरासी दए निवार। पुरख अबिनाशी निर्भय हो के एका बुक्कणा, सिँघ रूप हो संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पैज संवार। पैज संवारे आण प्रभ, आपणी दया कमाईआ। कुल्ली कक्खां विच्चों ल्या लभ्भ, हीरा माणक मोती अनमुल्लड़ा लाल आपणे हथ्थ उठाईआ। अमृत जाम प्याए झब्ब, सच प्याला हथ्थ उठाईआ। पंच विकारा देवे दब्ब, उप्पर आपणा भार रखाईआ। उलटा करे कँवल नभ, झिरना झिरे बेपरवाहीआ। सतिगुरु दुआरे बहे फब, घर मन्दिर दए वखाईआ। जगत जहानों होया अड्ड, मिली सरन सच्ची सरनाईआ। जूठी झूठी टप्पी हद्द, पार किनारा नज़री आईआ। नाम प्याला पीती मदि, अठ्ठे पहर ख़ुमार रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख एका रंग रंगाईआ। गुरमुख मिले एका रंग, नाम धन हरि झोली पाइंदा। पंच विकारा करे जंग, साचा खण्डा नाम चमकाइंदा। अश्व घोड़े कसे तंग, शब्दी घोड़ा आप रखाइंदा। हरिजन तेरे दुआरे आए लँघ, आउँदा जांदा दिस ना आइंदा। लक्ख चुरासी सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट ना मात बदलाइंदा। कोटन कोटि बैठे रहे मंग, उच्चे टिल्ले पर्बत ध्यान लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन मेले आपणे दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। दर दरवाज़ा देवे खोल्ह, बन्द ताकी आप खुल्हाईआ। अंदरे सुत्ता पए बोल, सुरती शब्दी नाद सुणाईआ। दरस दिखाए इक्क अडोल, अडुल वडी वड्याईआ। आपणा करे कीता पूरा कौल, कीता कौल भुल ना जाईआ। माण रखाए उप्पर धौल, धरनी धरत दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेले दर, दर साचे सोभा पाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा जीआ दान, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। दया करे दया निध ठाकर, ठोकर आत्म नाम लगाईआ। देवे नाम रती रत्नागर, रती रत दए सुकाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, जो जन आए सरनाईआ। वणज कराए सच सौदागर, नाम वणजारा इक्क अख्वाईआ। भाग लगाए काया गागर, घर अमृत ताल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन देवे इक्क वड्याईआ। दया करे गहर गम्भीरा, गुणवन्ता गुण जणाइंदा। अमृत आत्म देवे ठंडा नीरा, भर प्याला आप प्यांअदा। तन अग्नी सांतक सति करे सरीरा, अग्नी तत्त ना कोए जलाइंदा। हउमे हंगता कढ्ढे पीड़ा, माया ममता मेट मिटाइंदा। लक्ख चुरासी कट्टे ज़ंजीरा, जन्म मरन फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १०७६

कर, चोटी चाढ़े फड़ अख़ीरा, चढ़या चोटी उतर कोए ना आइंदा। दया करे दीन दयाला, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां करे सदा प्रितपाला, जुग जुग सेव कमाईआ। अठ्ठे पहर रहे रखवाला, आलस निन्दरा विच ना आईआ। लेखा जाणे काल महाकाला, महाकाल आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दया नाम वस्त आप वरताईआ। दया करे दया निध, जुग जुग दया कमाइंदा। जन भगतां कारज करे सिद्ध, साचे मार्ग आपे लाइंदा। आपे जाणे आपणी बिध, आप आपणा मेल मिलाइंदा। नाता तोड़े नौ निध, अठारां सिद्ध मुख शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। दया कर देवे नाम, नाम नामा झोली पाईआ। पूरन करे काम, पूरी इच्छया आप वखाईआ। भाग लग्गे खेड़े ग्राम, काया बस्ती सोभा पाईआ। नज़री आए एक राम, रमईया आपणा रूप वटाईआ। शब्दी देवे सच पैग़ाम, सच स्नेहुड़ा रिहा सुणाईआ। जो जन दरस मंगे आण, तिस दरस दए दिखाईआ। जो जन हिरस मेटे जहान, तिस हवस दए गंवाईआ। जो जन चरन सरन करे परवान, तिस आपणा माण वखाईआ। करे खेल श्री भगवान, दयावान वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दया दया विच समाईआ। दया दया दया दीनन, निरगुण निरगुण निरगुण आप उपाइंदा। रंग वखाए एका भीन्नन, बिन रंग रूपी आप चढ़ाइंदा। हरिजन मेला जिउँ जल मीनन, सुरती शब्द मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन मिलाए आपणे घर, तिस आपणा दरस कराइंदा।

१०७७ १०७७

★ ३० सावण २०१८ बिक्रमी ख्याल सिँघ पिण्ड रूपो वाल ज़िला हुशियारपुर ★

नव नौ चार खेल अपारा, आदि जुगादी आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यारा, हरि पुरख निरँजण वेस धराइंदा। एकँकारा कर पसारा, आदि निरँजण डगमगाइंदा। अबिनाशी करता खोल्ह किवाड़ा, श्री भगवान सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर वरतारा, आपणा खेल आप कराइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। भूपत भूप बण शाह सिक्दारा, धुर फ़रमाना हुक्म जणाइंदा। आपणी इच्छया सति भण्डारा, सति सतिवादी आप वरताइंदा। अगम्म अगम्मड़ा करे अगम्मड़ी कारा, अलख अगोचर खेल खिलाइंदा। आप उपाए थिर घर सच्चा दरबारा, चरन कँवल आप टिकाइंदा। आप उपाए सुत दुलारा, पूत सपूता आप उठाइंदा। आपे खेल करे न्यारा, करनी करता आप कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, सच हुलारा इक्क लगाइंदा। त्रैगुण माया भर भण्डारा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। पंज तत्त कर आकारा,

निराकारा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खिलाइंदा। आपणी खेल खेले भगवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड दुआरे बैठ सच्चे मकान, तख्त निवासी सोभा पाईआ। आपे देवे धुर फ़रमान, हुक्मी हुक्म आप चलाईआ। आपे आपणा नाउँ करे प्रधान, नाउँ निरँकारा आप रखाईआ। आपे विष्न ब्रह्मा शिव देवे ज्ञान, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख बेपरवाहीआ। दो जहान खेल खिलाया, पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार। निरगुण जोत नूर रुशनाया, जोती जाता हो उज्यार। साचा दीपक आप टिकाया, आप आपणी किरपा धार। साचा मन्दिर आप सुहाया, ना कोई दीसे चार दीवार। पुरख अबिनाशी आसण लाया, सचखण्ड सच्ची सरकार। थिर घर आपणा चरन टिकाया, करे खेल अपर अपार। आपणी रचना आप रचाया, विष्न ब्रह्मा शिव बणाए सेवादार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करे करता करनेहार। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा ला, हरि साचा सच जणाइंदा। वस्त अमोलक झोली पा, त्रै त्रै पन्ध रखाइंदा। एका धन्दे देवे ला, साचा धन्दा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाना हरि करतार, आपणा आप जणाईआ। विष्न देवे इक्क भण्डार, ब्रह्मे ब्रह्म रूप वखाईआ। शंकर देवे इक्क प्यार, सीस जगदीस हथ्थ टिकाईआ। तिन्नां विचोला बण सिरजणहार, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण बन्ने धार, सरगुण निरगुण रूप वटाईआ। अंडज जेरज कर पसार, उत्भुज सेत्ज आपणा रंग रंगाईआ। धरत धवल दए सहार, जल बिम्ब दए टिकाईआ। रवि ससि कर त्यार, किरन किरन किरन चमकाईआ। मंडल मण्डप वेख अखाड़, आप आपणी रास रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। करे खेल हरि निरँकारा, सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, दो जहानां वेस वटाइंदा। एकँकारा कर पसारा, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाइंदा। आदि निरँजण जोत उज्यारा, जोत निरँजण घट घट आप टिकाइंदा। अबिनाशी करता इक्क वखाए ठांडा दरबारा, श्री भगवान बोल जैकारा, घर अनहद नाद वजाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। वंडे वण्ड अपर अपारा, वण्ड आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। आपणा बन्धन पाए हरि करतार, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। ब्रह्मे देवे इक्क आधार, आत्म ब्रह्म वडी वड्याईआ। ईश जीव करे प्यार, जगदीस सेव कमाईआ। एका नाद सुणाए सच्ची धुन्कार, धुन आत्मक आप सुणाईआ। एका राग गाए आपणी वार, रागी

आपणा राग अलाईआ। ब्रह्मा लेखा जाणे वेद चार, चार चार मुख सालाहीआ। चार कुण्ट होए जैकार, चार जुग वण्ड वंडाईआ। चार वरन दए आधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची धार आप चलाईआ। चार जुग हरि खेल खिलाया, अचरज बणत बणाइंदा। लक्ख चुरासी वेस वटाया, घट घट आसण लाइंदा। अंडज जेरज रंग रंगाया, उत्भुज सेत्ज वेख वखाइंदा। चारे बाणी आपे गाया, आपणा राग आप सुणाइंदा। चारे वरन वेख वखाया, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश भेव चुकाइंदा। जुग जुग गेड़ा आप दिवाया, गेड़ा आपणा आप भवाइंदा। गुर अवतार सेवा लाया, साची सेवा इक्क समझाइंदा। साचा नाम झोली पाया, जुग जुग मात वरताइंदा। रूप अनूप आप धराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आप खिलाइंदा। रूप अनूपा आपे कर, आपणी खेल खिलाईआ। सतिजुग सति सतिवादी दिता वर, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। बोध अगाधी अक्खर पढ़, सो पुरख निरजंण करे पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म आपे फड़, सोहँ धार चलाईआ। लेखा जाणे नरायण नर, नर नारी दए समझाईआ। घट घट अंदर आपे वड़, जोती जोत करे रुशनाईआ। आत्म सेजा बैठा चढ़, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, नूरो नूर डगमगाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। सतिजुग साचा मात धर, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। साचा खेल करनेयोग, हरि साचा कर्म कमाइंदा। निरगुण सरगुण बणे संजोग, सच संजोगी मेल मिलाइंदा। काया वेखे किला कोट, पंज तत्त मन्दिर आप सुहाइंदा। तन नगारे वज्जे चोट, शब्द अनादी नाद वजाइंदा। इक्क वखाए आपणी ओट, पुरख अकाल भेव चुकाइंदा। ब्रह्म मिलाए पारब्रह्म जोत, जोती जाता आप हो जाइंदा। ना कोई वरन ना कोई गोत, बरन रंग ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आप उठाइंदा। आपणा भेव देवे चुक्क, आपणा पर्दा आप उठाईआ। ब्रह्म अंदर पारब्रह्म बैठा लुक्क, रूप अनूप आप दरसाईआ । गुर रूप हो हो पए बुक्क, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता खेल खिलाईआ। जुग करता खेल खिलाइंदा, करनहार करतार। सतिजुग त्रेता मात लगाइंदा, जुग जुग वेस करे निरँकार। आपणा रूप आप धराइंदा, निरगुण सरगुण कर प्यार। भगत भगवन्त वेख वखाइंदा, जगत भँवरी डूँघी गार। साचे सन्त मेल मिलाइंदा, आपे खोल्ह बन्द किवाड़। गुरमुख साचे आप जगाइंदा, देवे नाम आधार। गुरसिख साचे मार्ग लाइंदा, चरन कँवल बख्शे इक्क प्यार। सतिजुग त्रेता पार कराइंदा, द्वापर खेल करे करतार। आपणी

रचना आपे वेख वखाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धार। सतिजुग त्रेता उतरया घाट, रूप अनूप आप वटाईआ। आपे जाणे आपणी वाट, आपणा पन्ध मुकाईआ। करे खेल पुरख समराथ, समरथ हथ्थ वड्याईआ। द्वापर पाई आपणी नथ्थ, चारों कुण्ट रिहा भवाईआ। गुर अवतार रहे नच्च, हुक्मे हुक्म रिहा भवाईआ। सभ दा भाण्डा भन्ने माटी काया कच्च, थिर कोए नज़र ना आईआ। एका नाम आपणा रक्खे सच्च, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग करता सच्चा शहिनशाहीआ। द्वापर उतरे पार किनारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। कलिजुग आवे आपणी वारा, आपणा बल वखाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। जूठ झूठ करे वपारा, वणज वपार इक्क रखाईआ। काम क्रोध करे प्यारा, लोभ मोह हँकार हल्काईआ। ईसा मूसा कर शंगारा, संग मुहम्मद चार यार लए हंढाईआ। नानक निरगुण बोल सति जैकारा, सति सतिवादी दए सुणाईआ। महांबली उतरे अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। चार वरनां पावे सारा, ऊँच नीच मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रूप वटाईआ। जुग जुग रूप वटाइंदा, किरपा निध हरि करतार। गोबिन्द सूरा राह तकाइंदा, नेत्र नैण नैण उग्घाड़। पुरख अबिनाश वेस वटाइंदा, सम्बल आए धाम न्यार। शब्द खण्डा हथ्थ चमकाइंदा, दो जहानां मारे मार। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा, कलिजुग वेखे अन्तिम वार। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा, राज राजानां करे ख्वार। नौ खण्ड पृथ्मी फोल फुलाइंदा, सत्तां दीपां पर्दा दए उतार। एका आपणा हुक्म वरताइंदा, तख्त बैठ सच्ची सरकार। चौथे जुग दा लहिणा आप मुकाइंदा, देणा रहे ना विच संसार। निहकलंका नाउँ रखाइंदा, निरगुण नूर जोती निराकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त एकँकार। एकँकार आदि अन्त, आपणा खेल खिलाईआ। गुर अवतार जुगा जुगन्त, जुग करता सेव लगाईआ। महिमा गणाए आपणी अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जो आया सो कहे बेअन्त, बेअन्त तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप रखाईआ। आपणा बल रक्खे बलवान, बलधारी आप अख्वाइंदा। आपणे हथ्थ रक्खे निशान, सति निशाना आप झुलाइंदा। आपणा वसाए सच मकान, सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा। लहिणा देवे धुर फ़रमान, लक्ख चुरासी आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव होए हैरान, नेत्र नीर सर्ब वहाइंदा। करोड़ तेतीसा सर्ब कुरलाण, राजा सुरपति इन्द उच्ची कूक कूक अलाइंदा। सुणया इक्क धुर फ़रमान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। चौदां हट्ट ख़ाली करे दुकान, चौदां लोक फोल फुलाइंदा। चौदां तबकां मारे आण, एका खण्डा नाम चमकाइंदा। लक्ख चुरासी नाता तुट्टे पीण खाण,

जीव जंत सर्ब पछताइंदा। गुरमुख विरला चतुर सुजान, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरसिख देवे नाम दान, आत्म अन्तर इक्क पढ़ाइंदा। साचे सन्त करे परवान, सति सतिवादी आपणे रंग रंगाइंदा। भगतां मिले आप भगवान, भगत दुआरे आपे आइंदा। करे खेल दो जहान, दो जहानां वाली वेस वटाइंदा। सर्ब जीआं दा एका काहन, एका बंसरी नाम वजाइंदा। कलिजुग चार कुण्ट होए हैरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, जुग जुग आपणा बन्धन पाइंदा। कलिजुग तेरा पाए बन्धन, लक्ख चुरासी आप बंधाईआ। कोई ना तोड़े तेरा तन्दन, गुर अवतार गए सेव कमाईआ। दोए जोड़ सर्ब करन बन्दन, पुरख अबिनाशी अग्गे सीस झुकाईआ। तूं साहिब सदा बख्शंदन, तेरे हथ्थ वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम लेखा देणा मुकाईआ। कलिजुग लेखा तेरे हथ्थ, नानक गोबिन्द आप जणाइंदा। वेद व्यासा रिहा कथ, रसना जेहवा गाइंदा। ईसा डाहे अग्गे दोवें हथ्थ, एका मंग मंगाइंदा। कलिजुग चले कूड़ा रथ, रथ रथवाही कोए नज़र ना आइंदा। लक्ख चुरासी खेड़ा होए भट्ठ, जगत भठयाला भेव ना पाइंदा। एका गेड़नी उलटी लट्ठ, कोहलू चक्की चक्क आप भवाइंदा। किसे ना दिसे धीरज जति, सति सन्तोख ना कोए रखाइंदा। कोई ना जाणे गुरमति, मनमति सर्ब कुरलाइंदा। कोई ना जाणे कमलापति, नार दुहागण जीव सर्ब अख्वाइंदा। कोई ना करे पूरी आस, आस निरास ना कोए जणाइंदा। चारों कुण्ट दिसे प्रभास, जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँग्घी कंदर टिल्ले पर्बत तेरा राह ना कोए तकाइंदा। लहिणा देणा चुक्या पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर मुख छुपाइंदा। रवि ससि ना कोए प्रकाश, नूरी चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। चौदां लोक होण विनास, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। चौदां तबकां करना बन्द खुलास, बन्दी तोड़ आपणा बन्द कटाइंदा। गुरमुख विरले रक्खे पास, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। प्रगट होए शाहो शाबाश, शाह सुल्ताना वेस वटाइंदा। निरगुण नूर जोत प्रकाश, दो जहानां डगमगाइंदा। कलिजुग करे खेल तमाश, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। निहकलंक नाउँ निरँकारा, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। शब्द नाद सच्ची धुन्कारा, नाद अनादी आप सुणाईआ। ब्रह्मण्ड ब्रह्मांड पावे सारा, ब्रह्मादि वज्जे वधाईआ। त्रैगुण करे पार किनारा, पंचम लेखा दए मुकाईआ। कूड़ी क्रिया देवे जड़ उखाड़ा, सच सुच्च मार्ग आपे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। नव नौ चार मुक्के पन्ध, सो पुरख निरँजण आप मुकाइंदा। सतिजुग चढ़े साचा चन्द, बीस बीसा राह तकाइंदा। एका मार्ग लाए नौ खण्ड, नौ नौ आपणी धार जणाइंदा। चार वरनां एका नाम वण्ड, चार कुण्ट सोभा पाइंदा।

नाता तोड़ भेख पखण्ड, सच जैकारा इक्क कराइंदा। ज़ात पात करे खंड खंड, ऊँच नीच ना कोए जणाइंदा। इक्क वखाए परमानंद, निजानंद आप चखाइंदा। लक्ख चुरासी एका छन्द, विष्न ब्रह्मा शिव पढ़ाइंदा। एका राग एका तन्द, तन्दी सतार इक्क वजाइंदा। एका होए सदा बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाइंदा। ना कोई खाए मदिरा मास गंद, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। लेखा जाणे बत्ती दन्द, रसना जेहवा आप समाइंदा। भेव चुकाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज मेल मिलाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, आपणा राह चलाइंदा। कलिजुग मुक्कया अन्तिम पन्ध, झूठा पान्धी कोए रहिण ना पाइंदा। सतिजुग पल्ले बन्नी गंढु, सच भण्डारा नाम लिआइंदा। जन भगतां देवे आपे वण्ड, घर घर सेव कमाइंदा। सुरत सुआणी ना होए रंड, कन्त सुहाग शब्द मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस आपे कर, जुग करता खेल खिलाइंदा। कलिजुग उतरे आपणे दुआर, जगत दुआरा दए मुकाईआ। अन्तिम रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ना कोई दिसे मददगार, बैठे मुख छुपाईआ। चार यार ना कोए प्यार, सिर पल्लू ना कोए धराईआ। ईसा मूसा ना कोए आधार, दस्तगीर ना कोए अख्वाईआ। अल्ला राणी होई शर्मसार, नेत्र नैण ना सके उठाईआ। प्रगट होया परवरदिगार, अमाम अमामां आप अख्वाईआ। चौदां तबकां मारे मार, मेरी उम्मत दए रुलाईआ। मेरा पासा आया हार, जित नज़र ना कोए आया। मेरा काअबा होया वैरान, हाजी हज्ज ना कोए कराईआ। मेरी लुट्टी जाए दुकान, नाल रलया अबलीस शैतान, पंज वक्त निमाज दए चुकाईआ। मेरा सजदा ना होया परवान, काया कुरा कुरान ना कोए पढ़ाईआ। निगहबान ना होया निगहबान, निगह मार करे रसाईआ। वेले अन्त सर्ब पछताण, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। करे खेल श्री भगवान, राम रामा रूप वटाईआ। एका जाणे जगत ज्ञान, अठारां अध्याए करे पढ़ाईआ। अठारां पुराण करे वखाण, वेद व्यासा सेव कमाईआ। चारे वेद अन्त कुरलाण, वेला गया हथ्थ ना आईआ। तेई अवतार करन ध्यान, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। नानक गोबिन्द हो प्रधान, एका हुक्म रिहा सुणाईआ। अन्तिम आया निहकलंक बली बलवान, सभ दा लेखा दए मुकाईआ। लुकया रहे ना कोए विच जहान, समुंद सागर फोल फोलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्यान, सत्त दीप आपणा रंग रंगाईआ। उत्तर पच्छिम पूर्ब दक्खण आपे होया जाणी जाण, दहि दिशा वण्ड वंडाईआ। रवि ससि सर्ब कुरलाण, नूर नूर ना कोए वड्याईआ। अन्तिम मिटणा सभ निशान, जिस घड़या भन्न वखाईआ। विष्नूं दर करे परवान, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। ब्रह्मा बोले मेरा तुट्टा माण, तेरी वेख वडी वड्याईआ। शंकर मंगे इक्क ध्यान, हथ्थ त्रिसूल सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नव नौ चार लेखा दए चुकाईआ। लेखा जाए चुक्क, हरि चुकाइंदा। जुग

चौकड़ी पन्ध जाए मुक्क, पुरख अबिनाशी आप मुकाइंदा। हरि का भाणा ना जाए रुक, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। पुरख अबिनाशी कलिजुग जूह विच रिहा बुक्क, शेर आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। तीर्थ तटां पाणी जाए सुक्क, अमृत सरोवर ना कोए वहाइंदा। चौथे जुग जड़ देवे पुट्ट, लोकमात ना कोए लगाइंदा। बिन गुरसिख अमृत देवे ना किसे घुट्ट, लक्ख चुरासी जीव कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि एका हरि, जुगा जुगन्तर आपणा वेस वटाइंदा। जुगा जुगन्तर वेस अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। वसणहारा जला थला, जल थल महीअल रिहा समाईआ। सच सदेस एका घल्ला, दो जहान रिहा सुणाईआ। आपणे दीप आपे बला, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। आपणा फड़ाए आपे पल्ला, एका पल्लू नाम बन्हाईआ। मनमुख भुलाए कर कर वल छला, अछल छल धारी खेल खिलाईआ। हरिजन जोती शब्दी आपे रला आत्म ब्रह्म पारब्रह्म करे कुड़माईआ। सच सिँघासण एका मल्ला, गुरमुख सच्चा सोभा पाईआ। पंच विकार ना करे हल्ला, देवे दर दुरकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। जिस जन वखाए दरस गुरदेव, एका इष्ट जणाईआ। प्रगट होए अलख अभेव, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। कथनी कथ ना सके रसना जिहव, कथनी कथ कथ ना कोए सुणाईआ। आदि जुगादि सदा निहकेव, निहचल आपणे धाम दए वड्याईआ। गुरमुखां देवे एका मेव, अमृत नाउँ मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन नाम वस्त अतोल, सतिगुर पूरा झोली पाइंदा। एथे ओथे रक्खे अडोल, दो जहानां दया कमाइंदा। घर घर विच सुणाए आपणा बोल, शब्द अनादी बोल बुलाइंदा। आपणे कंडे तोले तोल, साचा तोल आप तुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराइंदा। हरिजन साचे पार किनारा, अद्धविचकार ना कोए रुढ़ाईआ। अग्गे मिले मीत मुरारा, सतिगुर पूरा सच्चा शहिनशाहीआ। सति सतिवादी करे प्यारा, पीआ प्रीतम प्रेम इक्क वखाईआ। साचा सईया दए सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणा दए वखाईआ। घर वखाए हरि गोबिन्द, गुरमुख चिंता आप मिटाइंदा। करे खेल गुणी गहिन्द, गुण आपणा आप जणाइंदा। हरिजन बणाए साची बिन्द, सुत नादी नाउँ धराइंदा। तख्तों लाहे सुरपति राजा इन्द, गुरमुख साचे माण दिवाइंदा। शंकर तेरी मिटे चिन्द, तेरा अन्तिम पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वड्यांअदा। हरिजन तेरा सच टिकाणा, सतिगुर पूरा आप बणाईआ। शब्द सरूपी दे बबाणा, सच बबाणे लए चढ़ाईआ। किसे हथ्थ ना आए राजा राणा, कोटन कोटि बैठे राह तकाईआ। जिस जन मनाए आपणा भाणा, तिस भाणे

१०८३

विच रखाईआ। चरन कँवल बख्शे इक्क ध्याना, ध्यान ध्यान विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला साचे घर, सतिगुर पूरा आप कराइंदा। आदि जुगादी देवे वर, जुग जुग वेख वखाइंदा। नाम भण्डारा आपे भर, साची दात आप वरताइंदा। करनी करता आपे कर, कुदरत खेल खिलाइंदा। सन्त सुहेले आपे फड़, आपणे दर बहाइंदा। डूँघी कंदर उच्ची चोटी जाए चढ़, औंदा जांदा दिस ना आइंदा। आपणी विद्या आपे पढ़, गुरमुखां आप पढ़ाइंदा। ना जन्मे ना जाए मर, सतिगुर पूरा सो अख्वाइंदा। जुगा जुगन्तर खेल कर, कलिजुग अन्तिम पार कराइंदा। लक्ख चार बत्ती हजार टुट्टा गंढु, आपणे हुक्म आप तुड़ाइंदा। कलिजुग जीव आपणा कीता लैणा भर, कर्म कुकर्म ना कोए बचाइंदा। मां पुत्तर सेज पग रहे धर, धीरज जति ना कोए रखाइंदा। नारी नर भुल्लया नरायण नर, साचा कन्त ना कोए हंढाइंदा। जोती जोत सरूपी हरि आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। हरिजन मिल्या मेला, सो पुरख निरँजण आप मिलाईआ। एका घर वसे गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द खेल खिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, विछड़ कदे ना जाईआ। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, वेद पुराण भेव ना राईआ। करे खेल इक्क इकेला, अकल कल रूप वटाईआ। वसणहारा सद नवेला, गुरसिख तेरे मन्दिर रिहा सुहाईआ।

१०८४ आवण जावण कट्टे जेला, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख एका मंत जणाईआ। १०८४

एका मंत शब्द ज्ञाना, गुरमुख गुर आप जणाइंदा। एका नूर श्री भगवाना, जुग जुग रूप वटाइंदा। एका राम रमईया रामा, आपणी खेल खिलाइंदा। एका गोपी एका कान्हा, एका नाच नचाइंदा। एका ईसा मूसा दए पैग़ामा, सच संदेस सुणाइंदा। एका मुहम्मद पढ़ाए कलामा, इलाही कलाम इक्क जणाइंदा। इक्क वजाए सच दमामा, सच नौबत हथ्थ रखाइंदा। एका नानक देवे धुर फ़रमाना, सति नाम आप पढ़ाइंदा। एका गोबिन्द होए जाणी जाणा, जानणहार खेल खिलाइंदा। एका फ़तह डंक वजाणा, वाह वा गुर आप समझाइंदा। एका ओट हरि रखाणा, पुरख अकाल इक्क मनाइंदा। अन्तिम सभ दे सिर ते वरते भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। निहकलंक बली बलवाना पहरे आपणा बाणा, जोती जोत जोत जगाइंदा। सम्बल नगर इक्क टिकाणा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाइंदा। आपे वसे साचा राणा, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। साचा खण्डा इक्क चमकाना, नौ खण्डां मेट मिटाइंदा। लक्ख चुरासी देवे ब्रह्म ज्ञाना, एका नाम शब्द प्रगटाइंदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका दर बहाणा, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। शाह भूपत भूप इक्क अख्वाना, सीस जगदीस ताज टिकाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाणा, सति सतिवादी सति करे पढ़ाईआ। गुरमुख बूटा मात लगाणा,

फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। साचा बीज आप बिजाणा, अमृत फल दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख सज्जण आपे फड़, शब्द सरूपी बन्ने लड़, बध्धा लड़ छुट्ट कदे ना जाईआ।

★ पहली भाद्रों २०१८ बिक्रमी दरबार विच दया होई जेठूवाल ★

शाह पातशाह सच्चा सुल्ताना, सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। सचखण्ड बैठ सच्चे मकाना, सच सिंघासण सोभा पाइंदा। शब्द अनाद धुर फ़रमाना, अनादी नाद नाद सुणाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। आपे वरते आपणा भाणा, सद भाणे आप समाइंदा। हुक्मे अंदर राजा राणा, लक्ख चुरासी आप भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप वरताइंदा। हरि भाणा बलवान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। लेखा जाणे श्री भगवान, भगवन आपणी धार चलाईआ। जुगा जुगन्तर हो प्रधान, लोकमात वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भाणा आप प्रगटाईआ। आपणे भाणे आप समा, हरि आपणी खेल खिलाइंदा। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, बेअन्त आपणी धार चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह एका नाउँ प्रगटाइंदा। एकँकारा वेस वटा, रूप अनूप आप रखाइंदा। आदि निरँजण डगमगा, जोती जाता पुरख बिधाता आपणी कल आप रखाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा थाउँ थाँ, सच दुआरे सोभा पाइंदा। श्री भगवान आपे जाणे आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप धराइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण मलाह, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा कर्म कमाइंदा। साचा बेड़ा हरि चलाइंदा, निरगुण निरवैर पुरख अकाल। अजूनी रहत खेल खिलाइंदा, पारब्रह्म बेअन्त बेअन्त बेअन्त दीन दयाल। आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा, जुगा जुगन्तर खेल निराल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। आपे हुक्म आपे राणा, आपे रईयत वेस वटाईआ। आपे राज आप राजाना, शाहो भूप आप अख्वाईआ। आपे मन्दिर आप मकाना, आपे बैठा आसण लाईआ। आपे मर्द आप मरदाना, आपे नार कन्त हंढाईआ। आपे जोद्धा सुरबीर बलवाना, बलधारी आप अख्वाईआ। आपे गोपी आपे कान्हा, आपे मंडल रास रचाया। आपे नाद आपे गाणा, आपे धुन शनवाईआ। आपे जोती नूर नूर महाना, जोती जाता आप अख्वाईआ। आपे होए बेपछाणा, आपे कूड़ कुड़यारा रूप धराईआ। आपे पहरे आपणा बाणा, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। आपे रक्खे आपणा

माणा, आपे बैठा सीस झुकाईआ। आपे होए बाल अञ्याणा, बाली बुध आप धराईआ। आपे वरते आपणा भाणा, सद भाणे विच समाईआ। आपे सुघड़ आप सयाणा, आपे अभुल रूप वटाईआ। आपे जाणे आपणा आउणा जाणा, आपे पीणा आपे खाणा, तृष्ना भुक्ख आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। आपे शाह शहिनशाह सुल्ताना, आपे सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। आपे थिर घर वसे सच मकाना, सच सिँघासण आसण लाइंदा। आपे सुत दुलारा बण नादाना, पूत सपूता वेस वटाइंदा। आपे बख्शे चरन ध्याना, आपे सीस जगदीस हथ्थ रखाइंदा। आपे दर दरवेश बणे दरबाना, आपे आपणी अलख जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपे राउ आपे रंक, निर्धन सरधन आपे धार चलाईआ। आपे दुआरा आपे बंक, आपे बैठा सेज सुहाईआ। आपे शब्द आपे डंक, आपे रिहा वजाईआ। आपे रूप धराए बार अनक, आपे जुग जुग वेस वटाईआ। आपे लेखा जाणे भगत जनक, भगत भगवन्त भेव ना राईआ। आपे आदि आपे अन्त, मध्ध आपणी खेल खिलाईआ। आपे रवि ससि बणाए बणत, मंडल मण्डप आप उपाईआ। आपे साध आपे सन्त, आपे सतिगुर रूप वखाईआ। आपे जीव आपे जंत, आपे जाग्रत जोत करे रुशनाईआ। आपे हउमे आपे हंगत, आपे माया ममता मोह वधाईआ। आपे भुक्ख आपे नंगत, आपे सीस ताज टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाईआ। आपे धरती आपे पाणी, आपे खाकी खाक समाइंदा। आपे नाम आपे बाणी, आपे खाणी वेस वटाइंदा। आपे बिरध बाल जवान बणे हाणी, आपे सगला संग निभाइंदा। आपे अन्तर आत्म बणे ब्रह्म ज्ञानी, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। आपे निरगुण जोत देवे सच निशानी, साचे मन्दिर आप जगाइंदा। आपे तीर निराला मारे कानी, बिरहों आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप वटाइंदा। आपे अमृत आपे विष, आपणी कल आप धराईआ। आपे लेखक आपे लिख, आपणा लेख दए वखाईआ। आपे भिक्खक आपे भिक्ख, आपे वस्त रिहा वरताईआ। आपे आदि जुगादि आपे होए मिथ, मिथ्या रूप आप अख्वाईआ। आपे सिख्या आपणी लए सिख, साख्यात करे पढ़ाईआ। आपे नीच आपे ऊँच, ऊँच अगम्म अथाह आपणा नाउँ धराईआ। आपे हस्त आपे कीट, आपे घर घर बैठा आसण लाईआ। आपे वसे धाम अनडीठ, अनडिठड़ा धाम आप सुहाईआ। आपे जाणे आपणी रीत, साची रीत आप चलाईआ। आपे देहुरा मन्दिर मसीत, शिवदुआला मठ आप अख्वाईआ। आपे गाए आपणा गीत, आपणा नाउँ नाउँ सालाहीआ। आपे वसे हरिजन चीत, चेतन्न रूप आप हो जाईआ। आपे लाए सच प्रीत, पीआ प्रीतम आप निभाईआ। आपे ठांडा आपे सीत, आपे अग्नी तत्त जलाईआ। आपे भय आपे भीत,

आपे पीतम्बर सीस छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे हार आपे जीत, आपणा बन्धन आपे पाईआ। आपे पुरख आपे नार, जननी जन आप अख्वाइंदा। आपे दाई दाया करे प्यार, आदि जुगादि वेस वटाइंदा। आपे सुत दुलारा लए उभार, शब्दी शब्द आप उपाइंदा। आपे महल्ल लए उसार, थिर घर साचे आप वसाइंदा। आपे करे खेल करतार, आपणी करनी आप कमाइंदा। निरगुण निरगुण दए आधार, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। निरगुण मन्दिर निरगुण गुरदुआर, निरगुण निरगुण आसण लाइंदा। निरगुण नाम बोल जैकार, निरगुण नाअरा इक्क सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपे रूप आपे रंग, रेख रंग ना कोए जणाइंदा। आपे सेज आप पलँघ, आपे बैठा आसण लाईआ। आपे नाम आप मृदंग, आपे मृदंगा रिहा वजाईआ। आपे सूरबीर सूरा सरबंग, जोद्धा बीर आप अख्वाईआ। आपे सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट ना कदे बदलाईआ। आपे लोआं पुरीआं रिहा लँघ, ब्रह्मण्ड खण्ड चरनां हेठ दबाईआ। आपे वेखे लक्ख चुरासी रंड, आपे नार कन्त सुहाग वखाईआ। आपे टुट्टी देवे गंढु, तोड़नहार आप हो जाईआ। आपे जाणे आपणा भेख पखण्ड, अछल छल आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराईआ। आपे करनी आपे करता, आपे कुदरत खेल खिलाइंदा। आपे जुगत आपे जुगता, जाग्रत जोत आप जगाइंदा। आपे भोगी आपे भुगता, भस्मड़ आपणा रूप वटाइंदा। आपे मोखी आपे मुक्ता, आप आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप निभाइंदा। आपे ईश आपे जीव, आपे जीवण जुगत दए बणाईआ। आपे पीसण रिहा पीस, आपणी चक्की आप चलाईआ। आपे शरअ आप हदीस, आपे बन्धन रिहा पाईआ। आपे होए शहिनशाह जगदीश, आपे दर दरवेश फेरा पाईआ। आपे जाणे राग छतीस, आपे अनक कल अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। आपे हुक्म आपे भाणा, आपे साची खेल खिलाइंदा। आपे शाहो भूप बण साचा राणा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। आपे जुग जुग खेले खेल महाना, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाइंदा। आपे लक्ख चुरासी तणया ताणा, ताणा पेटा आपणा रंग रंगाइंदा। आपे घर घर बणाए इक्क मकाना, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। आपे नाद शब्द धुन्काना, अनहद नादी नाद वजाइंदा। आपे अमृत आत्म पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख आप गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी आपणे भाणे आप समाइंदा। भाणा वरते आदि आदि, आदि पुरख वडी वड्याईआ। आपणे विच्चों आप काढ, निरगुण निरगुण लए प्रगटाईआ। आपणी देवे आपे दाद, बण दाता सच्चा शहिनशाहीआ। आपे रक्खे आपणी याद, अभुल भुल कदे ना जाईआ। आपे सुणे

आपणी फ़रयाद, तख्त बैठ साचा माहीआ। आपे गाए नाद बोध अगाध, शब्द शब्दी धुन वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप समझाईआ। आपणे भाणे हरि निरँकार, आदि जुगादि समाया। आपणी रचना कर त्यार, विष्न ब्रह्मा शिव उपजाया। त्रैगुण माया भर भण्डार, रजो तमो सतो मेल मिलाया। पंज तत्त कर त्यार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाया। मन मति बुध कर प्यार, निरगुण निरगुण रंग रंगाया। घर विच घर खोल्ह किवाड़, आत्म सेजा इक्क सुहाया। पारब्रह्म ब्रह्म अंदर देवे वाड़, आपणा मुख छुपाया। उप्पर लाए बजर कपाट, ना कोए सके तोड़ तुड़ाया। मेल मिलाए पंचम धाड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काया। लेखा जाणे नाड़ नाड़, बहत्तर नाड़ वेस वटाया। तिन्न सौ सट्ठ हाडी बन्न्हे एका वार, आपणा बन्धन पाया। निरगुण जोत करे उज्यार, जोत निरँजण सेवा लाया। अनहद देवे सच्ची धुन्कार, अनहद नादी नाद वजाया। अमृत सिंचे सच प्यार, निझर झिरना आप झिराया। घर मेला कन्त भतार, गृह मन्दिर ख़ुशी मनाया। करे खेल आप करतार, रूप रंग रेख ना कोए जणाया। लक्ख चुरासी दए आधार, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज वण्ड वंडाया। आपणी इच्छया आपे धार, आप आपणा मता पकाया। आपे निउँ निउँ करे निमस्कार, आपणा सीस आप झुकाया। आपे देवे सच भण्डार, निरगुण निरगुण लए वरताया। विष्न ब्रह्मा शिव करन पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाया। लक्ख चुरासी तुध बिन पावे कवण सार, धरत धवल दे वड्याआ। जल बिम्ब रोवे आपणी वार, धीरज धीर ना कोए धराया। तेरी महिमा अपर अपार, तेरा अन्त किसे ना पाया। तूं सर्ब जीआं दातार, देवणहार इक्क अख्वाया। तेरा अतुट्ट भरया भण्डार, तोट रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निरगुण निरगुण अग्गे झोली डाहया। निरगुण दाता निरगुण भिखारी, निरगुण निरगुण मंग मंगाईआ। निरगुण आदि जोत पुरख निरँकारी, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण वसे सच महल्ल अटल मनारी, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। अलख अगम्म अथाह करे सच्ची सिक्दारी, आप आपणा हुक्म वरताईआ। आपे हुक्मे अंदर करे फ़रमांबरदारी, आपणा हुक्म आप मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण दए समझाईआ। निरगुण निरगुण घर जणाइंदा, आदि पुरख अबिनाश। लक्ख चुरासी आपणी खेल खिलाइंदा, वेखे खेल तमाश। अंडज जेतज उत्भुज सेत्ज रंग रंगाइंदा, घट घट अंदर रक्खे वास। दीआ बाती एका डगमगाइंदा, दिवस रैण रहे प्रकाश। ब्रह्म आत्म सर्ब वखाइंदा, ईश जीव दासी दास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा करे सच निवास। ब्रह्म पुकारे दीनन दया कर, आपणा सीस झुकाईआ। लक्ख चुरासी मल्लया दर, घर घर बैठा मुख छुपाईआ। तुध बिन ना कोए फड़ाए लड़, मेरे सज्जण सच्चे

माहीआ। एका देणा साचा वर, हउँ भिक्खक मंग मंगाईआ। कवण रूप मिले घर, घर घर विच मेल मिलाईआ। मेरी आसा तृष्ना दूर कर, एका ब्रह्म पए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। ब्रह्म तेरा निभे साथ, पारब्रह्म जणाइंदा। आप जणावां आपणी गाथ, आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। तेरा बणावां साचा राथ, लोकमात चलाइंदा। जुग जुग पुच्छां आपे वात, आपणा रूप वटाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म बन्ने नात, गुर गुर नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप वखाइंदा। जुग जुग आवां पारब्रह्म, आप आपणी किरपा धार। ना मरे ना पए जम्म, करे खेल पुरख करतार। तेरा बेड़ा देवे बन्नू, सिर आपणे चुक्के भार। एका राग सुणाए एका कन्न, उच्ची कूक कूक पुकार। तेरा रूप मेरा रूप जाए मन्न, सोहे बंक सच्चा दुआर। लोकमात साचा चढ़े चन्न, नाउँ धराए गुर अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। गुर अवतार रूप वटाउणा, ब्रह्म तेरा संग निभाईआ। आपणा हुक्म नाल मिलाउणा, भुल कोए ना जाईआ। साची वण्डण मात वण्डाउणा, चार जुग करे कुड़माईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर राह वखाउणा, कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाईआ। नौ नौ चार वेस वटाउणा, वेस अनेका आप हो जाईआ। धुर फ़रमाना राग सुणाउणा, करे सच पढ़ाईआ। बण बण लेखक लेख लिखाउणा, जगत विद्या माण वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार दए वड्याईआ। गुर अवतार धरनी धर, धरत धवल सुहाए। ब्रह्म पारब्रह्म रूप कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रूप धराए। निरभउ चुकाए भय डर, भयानक अवर ना कोए रखाए। आपणा कारज आपे कर, हरि आपे वेख वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे आपणा वर, गुर पीर आप हो जाए। गुर अवतार आवे मात, जुग जुग वेस वटाईआ। आदि पुरख अबिनाशी देवे साथ, सगला संग निभाईआ। चरन कँवल वखाए साचा घाट, साचे पौड़े लए चढ़ाईआ। नाउँ निरँकारा देवे दात, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। दूर दुराडी मेटे वाट, नेड़े पन्ध रखाईआ। मिले मेल कमलापात, गुर गुर नारी रूप वटाईआ। ना कोई ज़ात ना कोई पात, ब्रह्म पारब्रह्म वज्जे वधाईआ। ना कोई पिता ना कोई मात, जननी गोद ना कोए बहाईआ। ना कोई दिवस ना कोई रात, सूरज चन्न ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार आपणे हुक्म बणाईआ। गुर अवतार हुक्मी कार, हरि हरि आप कराइंदा। जुग जुग देवे मात सहार, एका राह चलाइंदा। नेत्र खोलू बन्द किवाड़, आपणा रंग रंगाइंदा। आपणे मन्दिर लवे वाड़, चरन दुआरा इक्क जणाइंदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड, डूँघी कंदर वेख वखाइंदा। आपे पुरख आपे नार, नर नरायण वेस वटाइंदा। लेखा जाणे गुर अवतार,

जुग जुग हुक्मे आप भवाइंदा। कोई कर ना सके इनकार, अठे पहर शाह पातशाह एका नज़री आइंदा। भाण्डा घड़या बण ठठयार, अन्तिम आपे भन्न वखाइंदा। निरगुण निरगुण बणे यार, सरगुण संग ना कोए निभाइंदा। गुर अवतार भेजे वारो वार, जो आवे सो उठ जाइंदा। उच्ची कूक कूक करन पुकार, जीव जंत सर्ब समझाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्क दातार, नज़र किसे ना आइंदा। नदरी नदर करे निहाल, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। आदि जुगादि करे प्रितपाल, जुग जुग सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। आपे काल आपे महाकाल, दीन दयाल आपणा नाउँ धराइंदा। आपे वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, थिर घर आपे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता आपणा नाउँ चलाइंदा। गुर अवतारां देवे नाउँ, आपणे नाउँ करे पढ़ाईआ। आपे फड़ उठाए बांहों, पंज तत्त लए जगाईआ। आपे पिता आपे माउँ, पुरख अकाल होए सहाईआ। आपे करे सच न्याउँ, साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार एका हुक्मे बन्धन पाईआ। गुर अवतार हुक्मे बन्धन, सो पुरख निरँजण आपे पाइंदा। हरि पुरख निरँजण लाए चन्दन, निरगुण नूर नूर डगमगाइंदा। एकँकार सदा बख्शंदन, बख्शिश आपणी झोली पाइंदा। आदि निरँजण परमानंदन, परम पुरख खेल खिलाइंदा। अबिनाशी करता सुणाए सुहागी छन्दन, गीत गोबिन्द आप अलाइंदा। श्री भगवान बेअन्त बेअन्त आपे होए मुकंद मुकंदन, पारब्रह्म प्रभ आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप जणाइंदा। चार जुग दा साचा भाणा, गुर अवतार जणाईआ। लोकमात भुल ना जाणा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। लक्ख चुरासी अंदर बण के रहिणा निमाणा, निवण सु अक्खर इक्क पढ़ाईआ। एका मेरा गाउणा गाणा, दूजी अवर ना कोए चतुराईआ। ना कोए राजा ना कोई राणा, शाह पातशाह ना कोए अख्वाईआ। जो आया सो उठ के जाणा, जो घड़या भन्न वखाईआ। गुर अवतारां देवे माणा, बख्शे चरन सच्ची सरनाईआ। आपणे हथ्थ रखाए आवण जाणा, आवण जावण आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणे कारे लाईआ। गुर अवतार कारे जायण लग्ग, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। एका ओट सूरे सरबंग, दूसर सीस ना किसे झुकाइंदा। देवे वड्याई विच जग, जाग्रत जोत डगमगाइंदा। त्रैगुण माया बुझे अग्ग, अग्नी तत्त ना कोए वखाइंदा। आप उपाए साचा नग, सच नगीना आप उठाइंदा। लोकमात दा कराए हज्ज, अन्तिम आपणा मेल मिलाइंदा। हुक्मे अंदर पर्दा देवे कज, पंज तत्त नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग खेल खिलाइंदा। चार जुग खेल अवल्ला, इक्क इकल्ला आप कराईआ। गुर गुर फड़ाए एका पल्ला, पल्लू एका नाम रखाईआ। जोती

शब्दी आपे रल्ला, निरगुण निरगुण धार चलाईआ। सच सिँघासण आपे मल्ला, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, उच्च महल्ला सोभा पाईआ। पावे सार जला थला, डूँघी कंदर फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी भाणा दए जणाईआ। भाणा जणाए एका गुर, गुर गुर वेस वटाया। लेखा जाणे लिख्या धुर, लिख्या लेख ना कोए छुपाया। हुक्मे अंदर देवत सुर, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस झुकाया। हुक्मे अंदर गुर अवतार बैठे जुड़, अन्तर इक्क ध्यान लगाया। जोती जोत सरप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग एका हुक्म एका वार सुणाया। चार जुग साची कार, तेई अवतार आप जणाइंदा। गुर गुर मेला विच संसार, दस दस बूझ बुझाइंदा। नाम शक्ती कर उज्यार, साची भगती आप प्रगटाइंदा। भगतां देवे दरस दीदार, स्वच्छ सरूप अनूप उपाइंदा। सन्तन दस्से राह सुखाल, साचा मार्ग आप लगाइंदा। काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल, जोती जोत डगमगाइंदा। गुरमुखां तोड़े जगत जंजाल, काल महाकाल नेड़ ना आइंदा। गुरसिखां वजाए साचा ताल, घर अनहद नाद सुणाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों भाल, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त सेवा लाइंदा। तेई अवतार सेवा ला, लोकमात राह वखाया। जुग जुग आए गए फेरा पा, आपणा हुक्म चलाया। पुरख अबिनाशी गए भुला, हरि का भेव किसे ना आया। जगत रचना विच समा, अचरज आपणा खेल खिलाया। कोई बणया पिता मां, कोई पुत्तर धीआं गोद बहाया। कोई राज तिलक बैठा लगा, लशकर फ़ौज कोई रखाया। कोई सख़ीआं मंगल रिहा गा, आप आपणा वेस वटाया। सतिजुग त्रेता द्वापर करया खेल बेपरवाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा आपणे हथ्थ रखाया। अवतार गुर शब्द जणा, लोकमात उठ धाईआ। एका मार्ग ना सके कोए वखा, चार वरन वण्ड वंडाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बन्धन पा, ऊँच नीच खेल खिलाईआ। आत्म ब्रह्म ना पर्दा सके कोए उठा, ईश जीव ना कोए मिलाईआ। आपणी आपणी हदीस गए सुणा, लिख लिख लोकमात टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग वेखे थाउँ थाँईंआ। जुग जुग वेखणहार गोपाला, एका रंग समाया। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, भेव किसे ना आया। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वसणहारा सच्ची धर्मसाला, गृह मन्दिर आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा दए वड्याआ। भाणे अंदर हरि हरि रक्ख, गुर अवतार पन्ध मुकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ना कीता किसे दा पक्ख, आपणा बल गए वखाईआ। अन्तिम निरगुण निरगुण हो प्रतक्ख, सरगुण सारे सद बहाईआ। चार जुग जो वस्त रक्खी ढक, अन्तिम एका वार लए फुलाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बूटा गया पक्क,

फल नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां उप्पर रक्खदे रहे आपणा हक, हकीकत बैठी मुख छुपाईआ। ज़ात पात जो पाया शक्क, पारब्रह्म भुलाईआ। दीनां मज़्हबां चुक्की अति, घर घर पई लड़ाईआ। काया भाण्डा मन कुत्ता बण के रिहा लक, पर्दा कोए ना सके पाईआ। बण सुआणी ना सके कोई ढक, लजपत लथ्थी सर्ब लोकाईआ। नथ्थ सुहाग ना किसे नक, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। करे खेल पुरख समरथ, चार जुग दे गुर अवतार लए उठाईआ। आओ वेखो आपणयां उत्ते रक्खो हथ्थ, जो पुरख अकाल रहे मनाईआ। जिन्हां पाई शरअ नथ, अन्त दए तुड़ाईआ। दो जहान चौदां लोक वेखो हट्ट, चौदां तबकां कुण्डा लाहीआ। साची वस्त ना कोई दसे सक्क, सभ बैठे मुख छुपाईआ। इक्क दूजे दी वेखण लथ्थी पत, नेत्र नैणां नाल ना कोए मिलाईआ। मेरी उम्मत भुल्ली मेरी मति, मेरा कलमा ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दा लेखा वेख वखाईआ। चार जुग दे सद्दे पीर, पीर पैग़म्बर हरि दर आया। चार जुग दा वेखे नीर, अठसठ फोल फोलाया। चार जुग दा वेखे चीर, बस्त्र तन पहनाया। चार जुग दी वेखे बीड़, वेद पुराण शास्त्र सिमरत लेख लिखाया। चार जुग दा वेखे ज़ंजीर, शरअ शरीअत बन्धन पाया। चार जुग दी चोटी वेखे अख़ीर, कवण उप्पर चढ़ के बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कीता कौल भुल कदे ना जाया। चार जुग दा कीता कौल, अन्तिम आप निभाईआ। तेरा भार ना झल्ले धौल, धरनी होए सहाईआ। तेरी फुलवाड़ी जाए मौल, पत्त डाल्ही आप महिकाईआ। तेरी रुत्त सुहाए ब्रह्मण गौड़, पूत सपूता आपे जाईआ। तेरे उत्ते करे आपणा ग़ौर, नेत्र नैण आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर लेखा लहणे पाईआ। गुर गुर लेखा हरि हरि भाणा, भउ भौ वेख वखाइंदा। जुग जुग दा भरम भुलेखा, आप मिटाए नर नरेशा, पुरख अकाल रूप वटाइंदा। दर बहाए ब्रह्मा विष्न महेषा, लहिणा देणा वेखे सांगों पांग बाशक सेजा, लुकया कोए रहे ना राया। सच संदेसा गुर अवतारां एका भेजा, एका हुक्म सुणाया। चार जुग दा चार मुख दा खाणा जाणे लेहजा फेजा, भक्ख भोज आप वखाया। चार जुग लक्ख चुरासी तेरी वेखे सेजा, कवण कन्त सुहाग हंढाया। पुरख अबिनाशी अगम्म अगम्मड़ा फड़या नेजा, तिक्खी धार जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आपे दए वरताया। हरि भाणा आप वरताइंदा, अगम्म अगम्मड़ी कार। जुग करता पन्ध मुकाइंदा, जुग चौकड़ी कर ख्वार। नव नौ लेखा रहिण ना पाइंदा, नव नौ लहिणा देणा कर्ज़ दए उतार। गुर अवतार सीस झुकाइंदा, दोए जोड़ करे निमस्कार। तेरी कुदरत तू ही वेख वखाइंदा, बेऐब परवरदिगार। हउँ सेवक सेव कमाइंदा, याचक बण धुर दरबार। तेरे हुक्मे वेख वखाइंदा, तेरा हुक्म सच्ची सरकार। जोती

१०६२

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा भाणा मन्नीए तेरे दरबार। जे कर भाणा सति मनाउणा, एका सुण अरज़ोईआ। साची वण्ड साडी झोली पाउणा, इक्क इक्क बैठे मंग मंगाईआ। दूजा साथी ना कोए रलाउणा, आपणा आपणा सभ दे सिर ते भार चुकाईआ। पुरख अबिनाशी अग्गों बोल सुणाया, एका शब्द अलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल खिलाया, कलिजुग अन्तिम वारी आईआ। नानक निरगुण सरगुण एका रंग वखाया, दूजी दिसे ना कोए शाहीआ। तेरा मन्त्र नाम सति दृढ़ाया, ख़िमां ग़रीबी चाकरी जगत हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। जे करना तूं सच इन्साफ़, गोबिन्द आख सुणाइंदा। मेरा अवगुण तेरा गुण करे मुआफ़, गुण अवगुण ना कोए रखाइंदा। तूं पिता हउँ बालक तेरे साथ, दूजा नज़र ना कोए आइंदा। तूं किनारा तूं ही घाट, तूं पत्तण माही डेरा लाइंदा। तूं ही इस्म मेरी ज़ात, तूं ही मेरा नूर चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंगां साचा वर, मेरा भार देणा मेरे घर, दूसर हथ्थ ना कोए फड़ाइंदा। पुरख अबिनाशी एका बोल, एका वार जणाईआ। गोबिन्द तोलया तेरा तोल, तोला बणया साचा माहीआ। तेरा छाबा रिहा अडोल, ना डोले ना डोल डुलाईआ। तूं आपणी वस्त अपणयां उत्तों दिती घोल, घोली घोल घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा होए सदा सहाईआ। हउँ घोली ना घोल घुमाया, तेरी सभ वड्याईआ। मैं बण बण गोली सेव कमाया, दर सच्चे तेरे माहीआ। तूं मेरी चोली दएँ रंगाया, नाम रतड़ा रंग चढ़ाईआ। तूं मेरी डोली इक्क हंढाया, साची डोली रिहा समझाईआ। मारे बोली बेपरवाहया, एका बोल लगाईआ। तेरे प्रेम खेली होली, तूं नज़र झात ना पाईआ। बिन तेरे मेरी फुलवाड़ी मात ना मौली, रुत्त बसन्त कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणी माण वड्याईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, एका हुक्म सुणाइंदा। गुर गोबिन्द देवे सच सलाह, साचा राह वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम बणना इक्क मलाह, लक्ख चुरासी बेड़ा आप बनाइंदा। तेरा मन्दिर दयाँ वसा, साचा गढ़ उपाइंदा। आपणा आसण लवां ला, साची सेज हंढाइंदा। निहकलंका नाउँ रखा, जोती जोत डगमगाइंदा। शब्द डंका दयाँ वजा, साचा डौरू इक्क वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पा, सत्तां दीपां आप उठाइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी दा लहिणा देणा दयाँ चुका, पूर्ब लेखा सर्ब मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप वखाइंदा। आपणा भाणा हरि जणाए, बिध आपणी आप जणाईआ। निरगुण निरगुण रूप वटाए, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। एका हुक्म रिहा सुणाए, हुक्म हाकम आप जणाईआ। चार जुग दा लेखा दए मुकाए, लेखा आपणी झोली पाईआ। साचा सालस इक्क वड्याए, एका माण

रखाईआ। निरगुण दलील इक्क दृढ़ाए, अपील सुणे साचा माहीआ। चार जुग दे चार चार दिन सभ दी झोली पाए, लिख लिख लेखा रिहा मुकाईआ। सम्मत उनीसा नेड़े आए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भाणे आप समाईआ। सम्मत उनीसा नेड़े आउणा, पान्धी पन्ध मुकाईआ। आपणा कीता आपे पाउणा, दूसर भार ना कोए उठाईआ। जिस ने किहा मुहम्मद गाउणा, तिस ज़हिमत दए वखाईआ। जिस ने किहा ईसा मूसा संग निभाउणा, तिस हिस्सा रिहा मुकाईआ। जिस ने किहा कृष्न ध्याउणा, तिस त्रिलोकी गेड़ा गेड़े विच भवाईआ। जिस ने किहा राम दसरथ बेटा इक्क ध्याउणा, तिस जूनी जून भवाईआ। जिस ने किहा राम रमइया एका पाउणा, सो लक्ख चुरासी पार कराईआ। जिस ने किहा नानक गोबिन्द गुरु ध्याउणा, तिस देवे फड़ सज़ाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल इक्क मनाउणा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। सम्मत उन्नी नेड़े आउणा, सभ नूं फड़ फड़ दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाणा आपणे हथ्थ रखाईआ।

★ ६ भाद्रों २०१८ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे नवित नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ★

१०६४

सो पुरख निरँजण हो त्यार, सति सतिवादी आपणी दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण ठांडे बैठ सच्चे दरबार, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। एकँकारा कर विचार, आप आपणी किरपा धार, निरगुण आपणी खेल खिलाइंदा। आदि निरँजण हो उज्यार, जोती जाता शाह सिक्दार, भूपत भूप आपणा रूप वटाइंदा। अबिनाशी करता मीत मुरार, निरवैर निराकार पावे सार, अजूनी रहत भेव चुकाइंदा। श्री भगवान हुक्मी हुक्म करे वरतार, करे कराए करनेहार, करता पुरख आपणी धार आप चलाइंदा। पारब्रह्म आदि जुगादि जाणे आपणा कम्म, ना मरे ना पए जम्म, रूप अनूप आपणा आप वटाइंदा। सचखण्ड खोल्ह किवाड़, खेले खेल पुरख अकाल, जोती जोत बेमिसाल, नूर नुराना डगमगाइंदा। थिर घर दीवा बाती कर उज्यार, कमलापाती कर शिंगार, साची सेजा कन्त भतार, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर, करनी करे करनेहार, महल्ल अटल उच्च मनार, सोभावन्त सोभा पाइंदा। जननी जन बण करतार, दाई दाया दए आधार, इक्क इकल्ला बेऐब परवरदिगार, आपणा रंग आप रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी एका हरि, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। साचा मन्दिर उच्च अटल्ला, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, निरगुण निरवैर बैठा आसण लाईआ। एकँकारा सच सिँघासण एका मल्ला, शाह पातशाह शहिनशाह करे सच्ची

शहिनशाहीआ। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बल्ला, नूर नुराना डगमगाईआ। अबिनाशी करता आपे फड़े आपणा पल्ला, दूसर संग ना कोए रखाईआ। श्री भगवान खेले खेल अछल अछला, भेव अभेद अभेव छुपाईआ। पारब्रह्म आपणे अन्तर आपे रल्ला, निरगुण निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। सच संदेस एका घल्ला, नर नरेश हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा रूप आप धराईआ। थिर घर साचे रूप धर, सचखण्ड सोभा पाइंदा। सचखण्ड दुआरे आपे चढ़, तख्त निवासी धुर फ़रमाना हुक्म जणाइंदा। थिर घर चुकाए भय डर, निरभउ आपणा हुक्म आप मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साचा संग आप निभाइंदा। साचा संग सगला साथ, सो पुरख निरँजण आप निभाईआ। हरि पुरख निरँजण आप चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही बेपरवाहीआ। एकँकारा गाए गाथ, आदि निरँजण ख़ुशी मनाईआ। श्री भगवान करे हास बिलास, अबिनाशी करता आपणा रंग आपे वेख वखाईआ। पारब्रह्म आपणे अंदर आपे कर कर वास, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दुआरे सचखण्ड निवासी पाए रास, आपणी रचना आप रचाईआ। थिर घर साचे जोत प्रकाश, नूर नुराना डगमगाईआ। आपे उपजाए आपणी आस, आस आसा विच धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा हुक्म

१०९५ आप वरताईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, शाह पातशाह १०९५

आपणी धार वखाइंदा। एकँकारा आपे रक्खे आपणा माणा, आप आपणी दया कमाइंदा। आदि निरँजण खेले खेल गुण निधाना, श्री भगवान वेस वटाइंदा। अबिनाशी करता जाणी जाणा, पारब्रह्म मेल मिलाइंदा। सचखण्ड दुआरा सच मकाना, सति पुरख निरँजण आसण लाइंदा। थिर घर देवे आपणा दाना, साची वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराइंदा। साचा वेस हरि निरँकार, निरगुण निरवैर आप धराईआ। लेखा जाणे पुरख नार, नर नरायण वडी वड्याईआ। निरगुण निरगुण कर प्यार, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। थिर घर साचा खोल्ह किवाड़, आप आपणा पर्दा लए उठाईआ। दाई दाया बण सेवक सेवादार, साची सेव कमाईआ। जननी जन बण निरँकार, गोदी गोद आप सुहाईआ। सुत दुलारा कर त्यार, शब्दी शब्द नाउँ वड्याईआ। देवे दरस अगम्म आपार, अलख अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। रूप रंग रेख ना कोए विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। सुत दुलारा जणया जन, जन जननी खेल खिलाइंदा। एका राग सुणाया कन्न, सो पुरख निरँजण आप अल्हाइंदा। छोटा बाला करे धन्न धन्न धन्न, निउँ निउँ सीस जगदीस झुकाइंदा। ना कोई रूप ना कोई तन, मन वेस ना कोए वटाइंदा।

ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, चार दीवार ना कोए बणाइंदा। ना कोए घड़े ना लए भन्न, भन्नणहार तेरे रंग समाइंदा। ना कोई डोबे ना बेड़ा देवे बन्न, खेवट खेटा ना कोए रखाइंदा। ना कोए सूरज ना कोए चन्न, प्रकाश प्रकाश ना कोए धराइंदा। तूं ही जननी तूं ही जन, हउँ तेरा सुत अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। सुत दुलारे छोटे बाल, हरि शब्दी शब्द सुणाईआ। आदि जुगादि करां तेरी प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। दो जहान बणां दलाल, साचा वणज इक्क वखाईआ। तेरा संग रखाए इक्क महाकाल, आपणी धार दए जणाईआ। जुगा जुगन्तर वज्जे तेरा ताल, पुरख अबिनाशी आप वजाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद बणे बेपरवाहीआ। तेरा खेड़ा सच्ची धर्मसाल, थिर घर साचा दए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणी बूझ बुझाईआ। साचा सुत सुण संदेस, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं साहिब सुल्तान सच नरेश, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। मैं मंगां दरस हमेश, आदि जुगादि नैण उठाइंदा। निरगुण तेरा अवल्लड़ा वेस, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आइंदा। तूं लिख्या मेरा लेख, तेरा लेखा लिख्या ना कोए मिटाइंदा। तेरे चरन सदा आदेस, आदि जुगादी सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ साची मंग मंगाइंदा।

१०६६ पुरख अबिनाशी दया कमा, एका गुण जणाईआ। सुत दुलारे सीस हथ्थ टिका, जगदीस दए वड्याईआ। तेरा खेड़ा दवां वसां, आप आपणी रचन रचाईआ। तेरा नूर करां रुशना, आपणी जोत जोत डगमगाईआ। तेरा प्रकाश दयाँ धरा, बण जन जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए उठाईआ। सुण बाल बाल नादान, सो पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। एका देवां सच्चा दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। तेरा रूप बणावां साचा काहन, तेरी आसा गोपी नाल रलाइंदा। करां खेल थिर घर तेरे मकान, सचखण्ड आपणा आसण लाइंदा। प्रेम प्याला देवां इक्क निधान, रस आपणा आप चुआइंदा। रंगण रंग चढ़े महान, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताइंदा। साची वस्त अमृत रस, चरन चरन नाल रगड़ाईआ। तेरे अन्तर देवे रक्ख, आपणी दया कमाईआ। निरगुण निरगुण करे प्रकाश, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाईआ। तेरी पूरी करे आस, आपणी आसा नाल मिलाईआ। तेरा वेखे खेल तमाश, वेखणहार सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त दए जणाईआ। एका तत्त श्री भगवान, शब्दी शब्द जणाइंदा। तेरा सोहे मन्दिर मकान, थिर घर साचा आप सुहाइंदा। किरपा करे हो मेहरवान, मेहरवान आपणा रंग रंगाइंदा। बाली बुध दिता माण, बाल अञ्याणा गोद सुहाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल कराइंदा। खेल कराए श्री भगवन्त, आपणी दया कमाईआ। शब्दी मेला नार कन्त, साची सेज हंढाईआ। चढ़या रंग इक्क बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। नाम जणाया आदि अन्त, अभुल बेपरवाहीआ। आप उपाए आपणी अंस, विश्व विष्नूं लए प्रगटाईआ। विष्न बणाए सच्चा सरबंस, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। विष्न अंदर अमृत धार, सो पुरख निरँजण आप वहाईआ। आपणी इच्छया कँवल उज्यार, कँवल कँवला लए खलाईआ। लेखा जाणे अंदर बाहर, गुप्त ज़ाहर बेपरवाहीआ। पारब्रह्म ब्रह्म हो त्यार, आपणी वण्ड वंडाईआ। निरगुण खेल करे निराकार, साकार रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा लए प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा खेल खिलाया, भेव कोए ना पाईआ। आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया, सद भाणे आप समाईआ। आपणी इच्छया लए धराया, साची भिच्छया आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन धूढ़ आपणी आप प्रगटाईआ। चरन धूढ़ी वेखे ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक समाइंदा। आदि जुगादि पाकी पाक, पतित पवित वेस वटाइंदा। शंकर बणया सच्चा साक, पिता पूत गोद सुहाइंदा। ना कोई दिवस ना कोई रात, वेला वक्त ना कोए जणाइंदा। तिन्नां देवे एका साथ, एका हुक्म सुणाइंदा। एका मन्त्र एका पाठ, एका अक्खर आप पढ़ाइंदा। एका पुरख पुरख समराथ, पुरख अकाल दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकाइंदा। शब्द उपजाया विष्न ब्रह्मा शिव धार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म सच्ची सरकार, शाह पातशाह आप सुणाईआ। तिन्नां विचोला बण निरँकार, एका गुण समझाईआ। साची सेवा लाए करे ख़बरदार, अभुल भुल कदे ना जाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। लक्ख चुरासी भरना भण्डार, वस्त वस्त विच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर ध्यान, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। हउँ बाली बुध बाल अञ्याण, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। एका वस्त देणा दान, लक्ख चुरासी घाड़न घड़त घड़ाइंदा। आपणे दर करीं परवान, तुध बिन दर ना कोए सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची वस्त एका वार मंग मंगाइंदा। साची वस्त हरि करतार, एका इक्क जणाईआ। तिन्नां भरे आप भण्डार, त्रै त्रै मेला सहिज सुभाईआ। त्रैगुण माया कर त्यार, आपणा रंग रंगाईआ। सतो तेरा सति वरतार, विश्व भण्डारे विच समाईआ। रजो तेरा राजस राज जोग संसार, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। तमो तेरा तत्त गुण निराधार, शंकर वेखे चाँईं चाँईआ। करे खेल हरि करतार, आपणी कल आप वरताईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण वस्त इक्क वरताईआ। त्रैगुण वस्त करे पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तेरे अंदरों उपजी तेरी धार, तेरा हुक्म सीस टिकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बध्धा इक्क प्यार, जगत नाता जोड़ जुड़ाईआ। किरपा कर सच्ची सरकार, खुलड़े केस देण दुहाईआ। कवण वेला साडी सुरत लएँ संभाल, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ख़ाली झोली रही वखाईआ। त्रैगुण ख़ाली झोली रक्ख, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। विष्न ब्रह्मा शिव सद मंगे मेरा पक्ख, मैं सगला संग निभाया। एका मार्ग देणा दस्स, कवण वेला होए सहाया। मैं रक्खां तेरी आस, मेरे शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहया। बिन तेरे होई बेआस, मेरी धीर ना कोए धराया। मैं करां खेल पृथ्मी आकाश, लक्ख चुरासी नाच नचाया। तुध बिन मेरी करे ना कोए बन्द ख़ुलास, मेरा बन्धन ना कोए तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं बैठी सीस झुकाया। सीस झुकया तेरे दरबार, तूं बेऐब परवरदिगारा। मैं सुणया सदा सुणें पुकार, आदि जुगादी तेरी कारा। विष्न ब्रह्मा शिव बणया मीत मुरार, नाता जुड़या विच संसारा। लक्ख चुरासी तेरा भण्डार, खेले खेल अपर अपारा। जुग जुग वरते तेरा वरतार, तूं वेखें वेखणहारा। मेरे नाल कर सच इकरार, मैं मंगां मंग दुआरा। कवण वेला मेरा कर्ज़ा दएँ उतार, पिच्छे रहे ना कोए उधारा। आपणे चरनां दएँ प्यार, चरन धूढ़ी साची छारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं मंगया एका दुआरा। एका वार मंगी मंग, आदि पुरख जणाईआ। त्रैगुण वज्जे तेरा मृदंग, त्रैलोक सुणे लोकाईआ। मैं वंडां साची वण्ड, आपणी खेल आप खिलाईआ। लोआं पुरीआं वेख ब्रह्मण्ड, कोटन कोटि रूप वटाईआ। प्रगट करां जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज नाल मिलाईआ। पंज तत्त काया करां सेज पलँघ, सच सिँघासण इक्क बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा दए वखाईआ। त्रैगुण सुण कर ध्याना, हरि साचा आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी होए मेहरवाना, एका शब्द नाद वजाइंदा। विष्नूं विश्व करे परवाना, ब्रह्मा ब्रह्म वेद सुणाइंदा। चारे जुग खेल महाना, चारे दर खोल्ह् खुल्हाइंदा। चारे वरन करे प्रधाना, चारों कुण्ट वण्ड वंडाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, दोए दोए आपणा रंग रंगाइंदा। निरगुण सरगुण दए परवाना, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। तार सतार इक्क वजाना, घट आपणा नाद अल्हाइंदा। लक्ख चुरासी हो प्रधाना, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। निरगुण जोत नूर महाना, दीपक दीआ आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा देवे तेरा वर, तेरी झोली आप भराइंदा। तेरा लहिणा आप चुकाउणा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग खेल खिलाउणा, जुग करता गेड़ गढ़ाईआ।

१०६८

लक्ख चुरासी नाच नचाउणा, तार सतार आप हिलाईआ। काल महाकाल आपणा हुक्म वरताउणा, हुक्मी हुक्म इक्क समझाईआ। राए धर्म आप उठाउणा, आप आपणे बंस दए वड्याईआ। चित्रगुप्त चेतन्न आप कराउणा, लेखा एका वार समझाईआ। जो घड़या सो भन्न वखाउणा, ठोकर आपणे हथ्थ रखाईआ। त्रैगुण तेरा जंजाला एका पाउणा, लक्ख चुरासी डोर बंधाईआ। गुर अवतार रूप वटाउणा, निरगुण सरगुण करे कुड़माईआ। भगत भगवन्त आप बणाउणा, जोती जोत कर रुशनाईआ। साचे सन्त संग निभाउणा, सति दुआरा इक्क वखाईआ। गुरमुख गोद आप बहाउणा, गुर गुर आपणा मेल मिलाईआ। गुरसिख पर्दा आपे लाउहणा, त्रैगुण तेरा मोह चुकाईआ। तेरे ख़ातर जामा पाउणा, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। लोकमात एका एक एक प्रगटाउणा, एका एक वेख वखाईआ। सति धर्म सन्तोख साचा बीज बिजाउणा, फुल फुलवाड़ी आप महिकाईआ। सतिजुग साचे माण दवाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा रिहा लिखाईआ। तेरा लेखा लिखे निरँकार, आपणा भेव आप जणाईआ। मातलोक बणाए सच्चा दुआर, भगत भगवन्त लए प्रगटाईआ। फेर करे सच प्यार, मेर तेर दए चुकाईआ। रंग रंगे एका वार, रंग रंगीला साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका भगत दए वड्याईआ। सतिजुग आए भगत बल, बलधारी आप उपजाए। आपणा करे वल छल, बावण आपणा रूप वटाए। तेरा सिँघासण जाए हल, धीरज धीर ना कोए धराए। तेरे नेत्र नैण नीर जाए चल, दो जहान ना कोए अटकाए। करे खेल आप प्रबल, पारब्रह्म बेपरवाहे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बल बावन खेल खिलाए। सतिजुग खेल बलि बलि बावन, बेअन्त आप खिलाइंदा। आदि जुगादि बणे तेरा ज़ामन, साची ज़ामनी आप निभाइंदा। तेरा लहिणा देणा चुकाए आमृणो सामृण, विच पर्दा ना कोए पाइंदा। लोकमात खेड़ा वसे ग्रामन, पुरख अबिनाशी आप वसाइंदा। आपे पकड़े तेरा दामन, दामनगीर आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा विचोला इक्क वखाइंदा। तेरा विचोला एका एक, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। बल रक्खे साची टेक, बावन भेखी भेख समाईआ। निर्मल अतीत होया बिबेक, त्रैगुण सेक ना लगे राईआ। पारब्रह्म प्रभ आपे खेडे आपणी खेड, बण दरवेश मंगण आईआ। लेखा जाणे नर नरेश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। साचा लेखा श्री भगवान, आपणे हथ्थ रखाइंदा। बल उपजाए इक्क बलवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। त्रैगुण मंगे जा के दान, एका वार झोली पाइंदा। बल देवे आपणा बलीदान, सीस चरनां हेठ टिकाइंदा। पारब्रह्म प्रभ होए मेहरवान, उप्पर आपणा चरन छुहाइंदा। तेरा मेरा इक्क निशान, एका घर वखाइंदा। मैं वसां उप्पर अस्मान, तूं ज़िमीं आपणी धार बणाइंदा। तेरी ज़मीर करां

परवान, तेरा ज़ंजीर कटाइंदा। एका देवां सच ज्ञान, ज्ञान ज्ञान विच रखाइंदा। अठ्ठे पहर इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान विच नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। आपणा पर्दा दिता चुक्क, बल आपणा दरस दिखाईआ। नज़र आया जो बैठा लुक, साख्यात रूप वटाईआ। ना हरया ना जाए सुक्क, आदि जुगादि एका रंग समाईआ। जिस दी रक्ख के बैठा ओट, सो मिल्या हरि रघुराईआ। जिस दी दात मंगां निर्मल जोत, निरगुण जोत दए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दरस आप कराईआ। पाया दरस दीन दयाल, बलि बलि बलि चरन जाइंदा। तूं साहिब सदा कृपाल, हउँ चरन सीस निवाइंदा। मेरा तुट्टा जगत जंजाल, जग नाता ना कोए रखाइंदा। तेरा मिल्या सच्चा धन माल, जगत ख़ज़ाना कम्म ना कोए वखाइंदा। धन्न भाग मेरी निभ गई नाल, मेरी लग्गी ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ साची मंग मंगाइंदा। देणी मंग करां असीस, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं आदि जुगादि सच्चा जगदीस, जगत जुगत तेरी वड्याईआ। तेरा हुक्म इक्क हदीस, हज़रत तेरी सच पढ़ाईआ। मैं तेरा पीसण ल्या पीस, घोली घोल सेव कमाईआ। मैं तेरी बख्शिश लोकमात ताज रख्या सीस, बिन तेरे दरस राज काज कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। पुरख अबिनाशी अग्गों बोल, एका हुक्म सुणाया। बल तोलया तेरा तोल, तोला बण के हरि जू आया। तेरा तत्त ल्या वरोल, नाम मधाणा एका पाया। प्रगट होया तेरे कोल, निरगुण सरगुण रूप धराया। तेरे नाल करे कौल, कीता कौल भुल ना जाया। मैं मंगी मंग धरत धौल, धरनी मेरे कम्म किसे ना राया। तूं रिहों इक्क अडोल, चरन कँवल सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी धरनी तेरी झोली दए वखाया। तूं धरनी दिता दान, आपा आप वारया। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, तेरा काज सुआरया। तेरे सिर हथ्थ धरे भगवान, बावन आया चल दुआरया। तेरा धरनी अंदर वखाए निशान, आपणी हथ्थीं आप झुला रिहा। इत्तल वित्तल होए कुरबान, सितल तेरा रंग वखा रिहा। तिन्न लोक रक्खे आण, आप आपणा हुक्म जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सितल लोक आप बहा रिहा। सितल लोक जाए बहणा, सो पुरख निरँजण आप जणाया। बल मन्नया एका कहिणा, निउँ निउँ सीस झुकाया। औखा होवे तुध बिन रहिणा, बिन नेत्र दरसन पाया। मैं तेरा भाणा सहिणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला कवण वक्त आपणा भगत लएँ मिलाया। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका हुक्म दए जणाईआ। सतिजुग ल्या आप प्रना, साचा मेला मेल मिलाईआ।

धरनी थल्ले दिता दबा, लोक पाताल मिले वड्याईआ। आकाश आकाशां उप्पर बैठा शहिनशाह, सचखण्ड आपणा आसण लाईआ। त्रैगुण तेरी वण्ड वंडा, तेरा लहिणा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचा हरि, दूसर भेव कोए ना पाईआ। बल रक्खणी आस, हरि साचा सच जणाइंदा। द्वापर त्रेता रहिणा उदास, साचा हुक्म सुणाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल करे पुरख अबिनाश, निरगुण निरगुण रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप जणाइंदा। तिन्न जुग रक्खणी ओट, हरि साचे सच जणाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे निरगुण जोत, निरवैर पुरख नाउँ धराईआ। लेखा जाणे लक्ख चुरासी काया किला कोट, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फोलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जाणे ओत पोत, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा लहिणा हथ्थ निरँकार, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। त्रैगुण तेरा जगत भण्डार, जगत जुगत आप वरताइंदा। कादर कुदरत वेख वेखणहार, वेख वेख आपणी ख़ुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। जुग चौकड़ी जाए बीत, कोटन काल काल बिताईआ। पुरख अबिनाशी रहे इक्क
११०१ अतीत, आदि जुगादि वेख वखाईआ। भगत भगवन्त रक्खे ठांडा सीत, सीतल धार आप वहाईआ। बल तेरी चलाए रीत, ११०१
कलिजुग अन्त ल्ए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला ल्ए मिलाईआ। बल तेरा मेल मिलाउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। सितल लोक चों बाहर कढाउणा, आपणा बन्धन आप तुड़ाइंदा । माणस मानुख फेर बणाउणा, मानव आपणी धार रखाइंदा। आपणा कीता कौल पूर कराउणा, कीता कौल भुल ना जाइंदा। तेरा धाम फेर सुहाउणा, धरनी धरत धवल वड्यांअदा। तेरे घर मठ तपाउणा, अग्नी जोत लम्बू लाइंदा। त्रैगुण माया विच टिकाउणा, साचा हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। करे खेल आप गोबिन्द, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। अन्तिम मेटे तेरी चिन्द, जुग चौकड़ी पार कराईआ। करे खेल गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। आप बणाए आपणी बिन्द, गुरमुख साचा नाउँ धराईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा आप मुकाईआ। त्रैगुण वेख कर ध्यान, आदि पुरख समझाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बीते विच जहान, अन्तिम वेला दए समझाया। प्रगट होए श्री भगवान, निरगुण जोती जामा पाया। दो जहान झुलाए निशान, आप आपणे हथ्थ टिकाया। लक्ख चुरासी बणे साचा काहन, एका वार दए उठाया। एका देवे धुर फ़रमान, जुग जुग एका दए सुणाया। चार वेद होण हैरान, ब्रह्मा बैठे मुख शरमाया। अठारां पुराण सर्ब

कुरलाण, वेला गया हथ्थ ना आया। शास्त्र सिमरत ना करन पछाण, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाया। गीता ज्ञान ना कोए विधान, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाया। अञ्जील कुरान होए बेईमान, साचा कलमा ना कोए पढ़ाया। आलम उल्मा ना कोए जहान, कातब कोए नज़र ना आया। साचे तख्त बह श्री भगवान, मुकामे हक डेरा लाया। ईसा मूसा देवे धुर फ़रमान, संग मुहम्मद नाल रलाया। एका कलमा शरअ शरीअत देवे आण, आलमीन आप पढ़ाया। प्रगट होए नौजवान, शाहसवार वेस वटाया। नानक गोबिन्द कर परवान, धुर फ़रमाना इक्क सुणाया। अन्तिम प्रगट होए निहकलंक बली बलवान, सभ दा लेखा दए मिटाया। जुग चौकड़ी गुर अवतार जिस दा गाउँदे रहे गाण, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाया। पीर पैग़म्बर औलीए शेख़ मुल्ला मुसायक जिस दी मन्नदे रहे आण, सो दस्तगीर आपणा वेस लए वटाया। जिस फ़रमाना दिता अञ्जील कुरान, जिस हुक्म सुणाया। अठारां पुराण जिस वेद चार दिता ब्रह्मे ब्रह्म ज्ञान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा वेस कराया। निरगुण अन्तिम वेस कराउणा, वेस अवल्लड़ा आप वटाईआ। जुग जुग दा लेखा पूर कराउणा, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार भाणा सर्ब मनाउणा, आपणे भाणे सर्ब रखाईआ। आपणा भेव ना किसे जणाउणा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह जाण गाईआ। आपणा खेल आप कराउणा,

११०२ ख़ालक ख़लक वेखे चाँईं चाँईंआ। कलिजुग अन्तिम वेस वटाउणा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। बल तेरा माण मात रखाउणा, ११०२

तेरी भूमी दान तेरे लेखे लाईआ। तेरा पक्कया पकवान फेर तेरी झोली पाउणा, त्रैगुण तेरी भट्ठी विच डाहीआ। तेरा बंक दुआर सुहाउणा, बंक दुआरी आवे वाहो दाहीआ। लक्ख चुरासी भरम भुलाउणा, गूढ़ी नींद सर्ब सुआईआ। पूर्ब लहिणा तेरा अन्त मुकाउणा, देणा कोए रहे ना राईआ। तेरा गहिणा तेरे तन शंगार कराउणा, वेखे वेखणहारा सच्चा माहीआ। तेरा प्रकाश डगमगाउणा, सूरज चन्द मुख शरमाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, तेरी धार फेर लए प्रगटाईआ। इक्की जेठ दिवस सुहाउणा, त्रैगुण तेरा पन्ध मुकाईआ। इक्की परवार बन्धन पाउणा, ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। तेरे मस्तक टिक्का चन्दन लाउणा, चरन धूढ़ी बख्शे साची शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण तेरा लहिणा दए चुकाईआ। त्रैगुण तेरी बद्धी धार, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। बल आया विच संसार, हरि भाणे सद समाईआ। गुरु दया भया लाल, गुर दयाल नाउँ धराईआ। नेड़ ना आए काल महाकाल, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। त्रैगुण तेरा तोड़ जंजाल, कलिजुग भट्ठी विच तपाईआ। तेई मग्घर सुरत संभाल, साध संगत गया समझाईआ। भट्ठी पुट्टी आप अकाल, कुदरत कादर भेव ना राईआ। चुर वेखे दीन दयाल, चोरी करके गया नज़र ना आईआ। आपणी हथ्थीं पंज प्यारे लयांदे

११०३

नाल, इक्क इक्क टप गया लगाईआ। पंजां देवे एका दात, दाता दानी आप समझाईआ। निरगुण नानक दिता साथ, दर आया चल के घर साचे सच्चा माहीआ। चौका छीका वेख विचार, दसवीं सत्तर खेल अपार, आपणा लेखा गया वखाईआ। चौका छीका दिता उलटा, छीका चौके पिच्छे लगा, आपणा पर्दा गया खुल्हाईआ। बावन रूप आप अख्वा, बल मेले सहिज सुभाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करा, कलिजुग अन्तिम वेखे आ, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। कलिजुग तेरा लहिणा लहणे देवे पा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप वरताईआ। आपणा भाणा हरि वरताउणा, भेव कोए ना पाइंदा। इक्की जेठ दिवस सुहाउणा, त्रैगुण तेरा मूल चुकाइंदा। तेई मग्घर रंग रंगाउणा, सम्मत सोलां वेख वखाइंदा। साचा हुक्म आप मनाउणा, सद भाणे आप रहाइंदा। कलिजुग तेरा खेड़ा ढाउणा, जो घड़या भन्न वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी कोई नज़र ना आउणा, जो हरि हरि नाम भुलाइंदा। निरगुण हो हो चार कुण्ट भाउणा, दहि दिशा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप बंधाइंदा। साची धारा बंधे हरि, तेई मग्घर हुक्म सुणाया। कलिजुग चरन डिगा दड़, नेत्र नैणां नीर वहाया। निर्भय आवे तेरे कोलों डर, मैं नेत्र नैण शरमाया। त्रैगुण मेरी गई हर, ना कोई सके भार वण्डाया। लक्ख चुरासी बैठी अड़, अग्गे राह ना कोए वखाया। तूं घाड़न ल्या आपे घड़, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाया। एका देणा साचा वर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैं मंगण दर दुआरे आया। किरपा कर श्री भगवान, अन्तिम मंग मंगाईआ। एका देणा सच्चा दान, जिस दितिआं तोट रहे ना राईआ। मेरी लुट्टी गई दुकान, वस्त कोए रहिण ना पाईआ। मैं होया अन्त हैरान, चार यारी बैठी मुख भवाईआ। माण टुट्टा गोपी काहन, गाण होर ना कोए जणाईआ। ईसा मूसा सर्ब कुरलान, संग मुहम्मद नैण शरमाईआ। अल्ला राणी नार रकान, मुख घूँगट बैठी पाईआ। अन्त करे ना कोए परवान, बेनकाही दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी अन्तिम आस पुचाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम आसा, सो पुरख निरँजण पूर कराइंदा। चौथे जुग दए धरवासा, धीरज धीर आप धराइंदा। वेखे खेल पृथ्मी आकासा, गगन गगनंतर फोल फुलाइंदा। जो उपजे सो अन्त विनासा, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। घर घर वखावां ख़ाली कासा, आपणी कल आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरमुख विरले अंदर करां वासा, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। नंन्हा निरगुण गोबिन्द होया दासा, पुरख अकाल इक्क ध्यांअदा। एका मंडल एका रासा, एका नगरी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग अन्त आप समझाइंदा। कलिजुग अन्त उठणा जाग, हरि साचा सच जणाइंदा। पुरख अबिनाशी लाउणा भाग, लोकमात

वेस वटाइंदा। गुरमुख जगाउणे सच चिराग़, विष्न ब्रह्मा शिव मिटाइंदा। इन्दर तोड़े अन्तिम ताग, तख्त ताज ना कोए सुहाइंदा। धू लै के जाए आपणा लाग, पिछली कीती झोली पाइंदा। चार जुग दा वेख वैराग, गोबिन्द सुत आप उपजाइंदा। चारे सुत धोवण दाग़, दुरमति मैल आप धवाइंदा। अन्तिम खेल करे आप महाराज, रूप अनूप आप वटाइंदा। तेरा रच आपणी हथ्थी काज, दो जहानां गंढु पवाइंदा। गुर अवतारां पए भाज, भगत भगवन्त दर बुलाइंदा। राज राजान सीस छड्डुण ताज, साचा तख्त ना कोए सुहाइंदा। कलिजुग नईया डोले जहाज़, चप्पू कोए ना नाम लगाइंदा। लक्ख चुरासी उग्घड़े पाज, मुलम्मा अन्त रहिण ना पाइंदा। चारों कुण्ट वेखे हाजी हाज, मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले फोल फुलाइंदा। लहिणा देणा वेखे तीर्थ ताट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणे चरनां हेठ दबाइंदा। एका खोल्हे सच्चा हाट, जिस दुआरे गुरसिख आप प्रगटाइंदा। करे खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी आपणा सांग वरताइंदा। कलिजुग तेरी मेटे अन्धेरी रात, साचा चन्द आप चढ़ाइंदा। आप बंधाए आपणा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। आपे होए पिता मात, गुरमुख साची गोद बहाइंदा। बल दिती साची दात, कलिजुग अन्तिम सिँघ गुरदयाल पूर कराइंदा। अन्तिम उतरया पूरे घाट, पार किनारा इक्क रखाइंदा। मलाह बणया पुरख समराथ, जिस दा बेड़ा ना कोए अटकाइंदा। जिस नूं गाउँदे रहे त्रिलोकी नाथ, सो

११०४ नाथ अनाथां वेस वटाइंदा। जिस दी वस्त आई ना किसे हाथ, सो आपणा भेव खुल्हाइंदा। जिस दा तिलक लगाउँदे रहे ११०४

मस्तक माथ, सो जोत ललाट आप जगाइंदा। खेले खेल दिवस रात, दाई दाया रूप वखाइंदा। गुरसिख अन्तिम मिल्या आपणी ज़ात, जगत ज़ाती आप तुड़ाइंदा। ना कोई सज्जण ना कोई साक, सर्ब जीआं गुरसिख एह समझाइंदा। पुरख अबिनाशी अन्तिम खोल्हया एका ताक, मनमुखां नज़र किसे ना आइंदा। दूर दुराडे साध सन्त रहे झाक, अंदर वड़ दरस कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा लहिणा तेरी झोली पाइंदा। कलिजुग तेरा लहिणा मंगे बलीदान, बल बावन हुक्म सुणाया। त्रेता मेटे राम रावण आण, रूप अनूप धराया। द्वापर खेल करे कंसा काहन, आप आपणा बल वखाया। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका जामा पाया। तेरा मेटे झूठ निशान, हुक्मी हुक्म आप सुणाया। इक्की जेठ दिवस महान, गुर गोबिन्द रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाया। गोबिन्द बन्धन गुरमुख रंग, गुर गुर गुर वड्याईआ। पूत सपूता मंगी मंग, पीत पीतम्बर दए वड्याईआ। साची सेजा वेख पलँघ, परम पुरख बैठा आसण लाईआ। अठ्ठे पहर नाद मृदंग, तुरीआ राग सुणाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, सूरबीर इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ।

हुक्मे अंदर सच वरतारा, वर्तमान वरताया। गोबिन्द मिल्या मीत मुरारा, गोबिन्द हरि हरि दर्शन पाया। हरि हरि आया चल दुआरा, दर घर साचे भाग लगाया। पूर्ब लहिणा जगत विचारा, नेत्र नैणां पर्दा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। साचा वर श्री भगवान, भगतन झोली पाईआ। लेखा जाणे जीव जहान, जुगत जगत खेल खिलाईआ। सुत दुलारा कर परवान, पूत सपूत होए सहाईआ। जोती जोत सरप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप वखाईआ। साचा लेखा गोबिन्द धार, हरि साचा सच जणाइंदा। डल्ले मिल्या झल्ला यार, झलक आपणी आप वखाइंदा। जींवदयां मरया विच संसार, आपणी मरनी जगत समझाइंदा। जिस मिल्या इक्क निरँकार, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। हड्डीआं बालण कर त्यार, कलिजुग तेरी भट्ठी आप तपाइंदा। हड्ड मास नाड़ी रत दिती डार, हवनी हवन आप वखाइंदा। बिरहों सड़ सड़ होया अंग्यार, बिरहों रूप नज़र किसे ना आइंदा। बाहरों दिसदा रिहा सिँघ गुरदयाल, अंदर कादर खेल खिलाइंदा। आपणी हथ्थीं कोहया आपणा लाल, कलिजुग तेरी क्रिया मेट मिटाइंदा। सतिजुग साची बणे धर्मसाल, जिस दर तेरी भट्ठी लोह तपाइंदा। साचे दर सोहण शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। गुरसिख तेरे नाउँ वड्याई, गुर सतिगुर सदा सालांहयदा। सचखण्ड तेरी वज्जदी रहे वधाई, दूसर ताल ना कोए वजाइंदा। पारब्रह्म करे कुड़माई, नाता होर ना कोए वखाइंदा। एका घर दए बहाई, दूजा दर ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादि मिले चाँईं चाँईं, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। भगत भगवन्त उठाए फड़ फड़ बांहीं, आप आपणे गले लगाइंदा। आपे करे साचा सगन, ना कोई सदे नायण नाई, झीवर छींबा ना कोए रलाइंदा। गोबिन्द एका मति गया समझाई, बिन सतिगुर पार ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा मार्ग आप लगाइंदा। जो जन रोवे जगत प्राणी, तिस दरगाह ठौर ना राईआ। मिले दर ना शाह सुल्तानी, जूनी जून भवाईआ। जन्म जन्म विच आए हानी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। एका वज्जदी रहे कानी, चिंता दुःख वखाईआ। किसे कम्म ना आए पढ़ी बाणी, जो अन्त नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सतिगुर पूरे नूं आवे हानी, जिस दा कीता पिछले रहे उलटाईआ। जिस दी वस्त तिस अन्त संभाली, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। आपे बूटा आपे माली, आपे एथे ओथे रिहा लगाईआ। घर घर वेखो हथ्थ सभ दे दिसण ख़ाली, साचा नाउँ हथ्थ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। गुरसिख जो अन्तर रोवे, तिस मिले ना मेल भगवाना। माणस जन्म जग विच खोवे, जन्म

११०५

जन्म होए हैराना। दुरमति मैल ना तन दी धोवे, पढ़े वेद पाठ पुराणा। अग्गे मिले ना कोई ढोए, राए धर्म मारे तीर निशाना। पारब्रह्म दी साची सोए, प्रभ देवे धुर फ़रमाना। गुरमुख अन्त सतिगुर जेहा होए, मिले जोत श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल दो जहानां। हरिसंगत सतिजुग सच विहारा, नौ खण्ड पृथ्मी आप जणाइंदा। चार वरन इक्क वरतारा, अठारां बरन आप वखाइंदा। वेले अन्त ना मारे कोई नाअरा, नेत्र नीर ना कोए वहाइंदा। मात पित भाई भैण साक सज्जण नार कन्त करे प्यारा, एका हुक्म जणाइंदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोल जैकारा, अगला पैंडा पन्ध मुकाइंदा। गल पाउ इक्क इक्क हारा, पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा। जिस घर होए एह विहारा, सो दर सोभा पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आ के करन निमस्कारा, गुर गोबिन्द ख़ुशी मनाइंदा। हड्डीआं बालण कर ससकारा, धूंआँधार अस्मान चढ़ाइंदा। मढ़ी मठ फोले ना विच संसारा, हड्डी हड्ड ना कोए गणाइंदा। किसे पार ना करे कोई जल धारा, बिन सतिगुर पूरे बेड़ा बन्ने ना कोए लगाइंदा। गुरसिखां दुआरे आए आप करतारा, आप आपणी गोद बहाइंदा। आदि जुगादि सच्चा शाह सवारा, साचा अश्व आप दौड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नारी नर आप समझाइंदा। नारी नर इक्क ज्ञान, बोध ज्ञान जणाईआ। अन्तिम लेखा हथ्थ भगवान, दूसर अवर ना कोए सहाईआ। गुरसिख तजे जो प्राण, घर मंगल वज्जे वधाईआ। जो दर आए रोए रो करे कुरलान, तिस दवारिउँ बाहर दए कढ्ढाईआ। भैण भाई साक सज्जण ना कोए जहान, वेले अन्त ना कोए छुडाईआ। गुरसिख तेरी कोई ना आए मुकाण, तेरा सत्थर ना कोए विछाईआ। तेरे गीत सारे गाण, जिस दुआरे गया तिस जाणा चाँईं चाँईंआ। कवण वेला मिले श्री भगवान, आपणा मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। आपणा मार्ग देणा रक्ख, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाइंदा। गुरसिख लक्ख चुरासी नालों करे वख, आप आपणा बन्धन पाइंदा। जुग जुग भगतां करदा आया पक्ख, मनमुखां दर दुरकाइंदा। गुरदयाल सिँघ तेरा कोए ना विछिआ सत्थर सथ, तेरी सेजा पारब्रह्म आप हंढाइंदा। सिँघ नाज़र रक्खे पत, पतिवन्ता दया कमाइंदा। उच्ची कूक देणा दस्स, गुरमुख सचखण्ड सोभा पाइंदा। हरि जू मिल्या हस्स हस्स, जगत दुःख जगत विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा घर आप वसाइंदा। वसया घर छुट्टा झेड़ा, हरि सज्जण दया कमाईआ। खुल्हिआ दर मुक्या गेड़ा, घर साचे वज्जी वधाईआ। मुक्या पैंडा बन्हिआ बेड़ा, सेवक साची सेव कमाईआ। नज़री आया नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कलिजुग जीव जानण उजड़या खेड़ा, गुरमुख कहिण वसया खेड़ा मिली वड्याईआ। मन मति

माया भेड़ भेड़ा, जीवण जुगत ना कोए जणाईआ। इक्क दूजे नूं कहिण मेरा मेरा, संग चले ना कोए भैण भाईआ। बिन सतिगुर पूरे करे ना कोए नबेड़ा, सारे बैठण मुख भआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि जू लए मिलाईआ। मेल मिलावा सचखण्ड, साची दरगाह आप सुहाईआ। पार कराए कोटन कोटि ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म वड वड्याईआ। नाता तोड़ जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज मूल मुकाईआ। चरनां हेठ दबाए सूरज चन्न, रवि ससि मुख शरमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन बन्दन बन्द, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। साहिब दयाल ठाकर सदा बख्शंद, हरिजन साचे लए तराईआ। आप जणाए आपणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरी वड वड्याईआ। हरिजन तेरा सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए रखाइंदा। हरिजन तेरा सच निशान, बाढी घाड़त ना कोए घड़ाइंदा। हरिजन तेरा सच ज्ञान, चौदां विद्या भेव ना आइंदा। हरिजन तेरा सच नाम, शाह सुल्तान मुख शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे दर, दर साचा सोभा पाइंदा। साचा दर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। मेल मिलावा नारी कन्त, नर नरायण संग रखाईआ। आदि जुगादि महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। गुर अवतार कह कह बेअन्त, आपणा पल्लू गए छुडाईआ। जिस बणाई आपणी बणत, सो आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ । आपे आदि आपे अन्त, मध्ध आपणी धार चलाईआ। आपे जीव आपे जंत, आपे विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। आपे दरवेश आपे मंगत, आपे शाह सुल्तान हुक्म सुणाईआ। आपे मेल मिलाया साची संगत, पंगत आपणा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ बूड़ रिहा समझाईआ। संगत साची जाणीए, जिस अन्तर हरि निवास। संगत साची जाणीए, जिस आत्म सच धरवास। संगत साची जाणीए, जिस प्रभ मिलण दी आस। संगत साची जाणीए, जिस देवे दरस पुरख अबिनाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे खेले खेल तमाश। संगत साची जाणीए, आत्म अन्तर रंग। संगत साची जाणीए, घर वेखे सेज पलँघ। संगत साची जाणीए, घर सुणे नाद मृदंग। संगत साची जाणीए, आपणा दुआरा आपे जाए लँघ। संगत साची जाणीए, अट्ठे पहर रहे परमानंद। संगत साची जाणीए, जिस सतिगुर सुणाए सुहागी छन्द। संगत साची जाणीए, जिस अन्त ना आए कंड। संगत साची जाणीए, जो वसे उप्पर ब्रह्मण्ड। संगत साची जाणीए, जित आत्म होए ना रंड। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद वसे संगत संग। संगत सदा ख़ुशी मनाए, दिवस रैण वड्याईआ। गीत गोबिन्द हरि गुण गाए, रसना जेहवा सेव कमाईआ। मन तन हरया जगत कराए, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। हरख सोग विच कदे ना आए, सो संगत सतिगुर भाईआ। संगत

११०७

सतिगुर आप बणाए, देवे माण माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची संगत सिख रूप रखाईआ। साची संगत सो प्रधान, जो मन्ने धुर फ़रमाना। पंगत बणे फेर विच जहान, पुरख अबिनाशी होए मेहरवाना। मरे आए ना कोए मुकाण, गाए गोबिन्द गाना। घर आई वेखे संगत जहान, की वरच्छया कलिजुग भाणा। गुरदयाल सिँघ तेरा रिध्धा पक्का सारे खाण, नाल मिल्या श्री भगवाना। पंगत बणी चतुर सुजान, मूर्ख मुग्ध नैण शरमाना। पिछली चले ना कोई दुकान, अग्गे खेल करे हो मेहरवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संगत पंगत पंगत संगत हरख सोग चिंता दुःख सर्ब मिटाना।

★ १३ भाद्रों २०१८ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह कोटली थान सिँघ ज़िला जलन्धर ★

हरि प्रकाश आदि जुगादि, जोती जोत डगमगाइंदा। हरि नाद आदि जुगादि, शब्द नादी नाद वजाइंदा। हरि नाम आदि जुगादि, नाउँ निरँकारा आप अख्वाइंदा। हरि काम आदि जुगादि, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नूर आप दरसाइंदा। आदि जुगादि नूर नुराना, सच महल्ला सोभा पाईआ। आदि जुगादि राग तराना, तुरीआ आपणा राग सुणाईआ। आदि जुगादि नाउँ श्री भगवाना, पारब्रह्म प्रभ आप प्रगटाईआ। आदि जुगादि खेले खेल महाना, खेलणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नूर आप धराईआ। हरि प्रकाश आदि जुगादि, हरि करता आप धराइंदा। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्मादि, लक्ख चुरासी जोत टिकाइंदा। भेव खुल्हाए गुरमुख विरले सन्त साध, मनमुख अन्ध अन्धेर वसाइंदा। लेखा जाणे मोहन माधव माध, भेव अभेद ना कोए पाइंदा। आप आपा विच्चों काढ, आप आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा प्रकाश आप रखाइंदा। सति प्रकाश हरि निरँकार, एका एक प्रगटाईआ। एका रूप सर्ब संसार, लक्ख चुरासी धार चलाईआ। एका जोत निराकार, घट घट अंदर रिहा समाईआ। एका नूर कर उज्यार, दीवा बाती डगमगाईआ। एका मन्दिर कर त्यार, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। अठ्ठे पहर खेल न्यार, दिवस रैण ना कोए वखाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नूर आप प्रगटाईआ। साचा नूर नूर उजाला, सो पुरख निरँजण आप उपाइंदा। हरि पुरख निरँजण दीन दयाला, गहर गम्भीर आपणी दया आप कमाइंदा। एकँकारा बण रखवाला, आदि जुगादि सेव कमाइंदा। आदि निरँजण खेल निराला, जोत निरँजण डगमगाइंदा। अबिनाशी करता आप जाणे आपणा राह

सुखाला, लक्ख चुरासी गेड़ा आप भवाइंदा। श्री भगवान जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, वेद कतेब भेव कोए ना पाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म करे सदा प्रितपाला, प्रितपालक आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत नूर प्रकाश, घट घट अंदर रक्खे वास, दीवा बाती ना कोए जगाइंदा। सच उजाला हरि गोपाला, एका एक रखाईआ। जुगा जुगन्तर खेल निराला, जुग करता वेस वटाईआ। आप जणाए आपणी साची धर्मसाला, जिस घर बैठा आसण लाईआ। इक्क लगाए बजर कपाटी ताला, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। लक्ख चुरासी होवे बेहाला, हरि का रूप नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निराकार निरवैर आपणी खेल खिलाईआ। निराकार निरवैर अकाल मूर्त, अनुभव आपणी खेल खिलाइंदा। शब्द नाद अनादी तूरत, इक्क इकल्ला सच महल्ला आप वजाइंदा। रूप रंग रेख ना कोई सूरत, चक्कर चिन्ह ना कोए जणाइंदा। ना कोई दिवस रैण दिसे महूरत, वार थित ना कोए जणाइंदा। आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद आसा मनसा पूरत, आसा आसा विच समाइंदा। जुगा जुगन्तर हाज़र हज़ूरत, हरि हरि आपणा वेस वटाइंदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, कूड़ी क्रिया वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा नूर आप प्रगटाइंदा। साचा नूर श्री भगवान, आपणा आप धराईआ। ज़ाहर ज़हूर नौजवान, बिरध बाल ना रूप वखाईआ। जुगा जुगन्तर सति सरूर, सति सतिवादी इक्क रखाईआ। सर्ब कला आपे भरपूर, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। वसणहारा नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा जल्वा आप वखाईआ। साचा जल्वा हरि प्रकाश, ब्रह्म पारब्रह्म जणाइंदा। निज घर आत्म कर कर वास, रूप अनूप आप वखाइंदा। जुगा जुगन्तर दासी दास, निरगुण सरगुण सेव कमाइंदा। लेखा जाणे अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, त्रै त्रै आपणा रंग रंगाइंदा। सर्ब गुणवन्ता वसे साथ, विछड़ कदे ना जाइंदा। तत्व तत चलाए राथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। नमो मन्त्र पूजा पाठ, सति सतिवादी आप दृढ़ाइंदा। सरोवर सर तीर्थ ताट, मजन अशनान आप कराइंदा। लेखा जाणे चौदां हाट, तबक तबकी पर्दा लांहयदा। जुग जुग वेखे आपणी वाट, जुग गेड़ा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे दिवस रात, सूरज चन्द आप चढ़ाइंदा। सच प्रकाश भए अनन्द, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। अठ्ठे पहर परमानंद, परम पुरख दए सालाहीआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्द, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। अज्ञान अन्धेरा ना दीसे अन्ध, दीवा बाती ना कोए जगाईआ। जिस जन सुणाए एका छन्द, एका राग अलाईआ। लक्ख चुरासी मुक्के पन्ध, जुग जुग गेड़ ना कोए वखाईआ। भेव खुल्हाए सचखण्ड, आपणा पर्दा आप उठाईआ। नाता तोड़े ब्रह्मांड ब्रह्मण्ड,

सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रकाश दए वड्याईआ। सच प्रकाश आत्म ज्ञान, आत्म दरसी आप जणाइंदा। जिस जन देवे नाम निधान, अन्तर मन्त्र आप पढ़ाइंदा। जिस जन राग सुणाए कान, अनहद नादी नाद वजाइंदा। जिस जन लोचण नैण देवे नूर महान, सो जन आपणा नैण खुल्हाइंदा। जिस जन देवे एका दान, दीपक बाती जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खिलाइंदा। साचा खेल पारब्रह्म, जुगा जुगन्तर आप कराईआ। ना मरे ना पए जम्म, वेस अनेका रूप वटाईआ। जन भगतां बेड़ा देवे बन्नृ, नित नवित होए सहाईआ। एका राग सुणाए कन्न, दूसर विद्या ना कोए पढ़ाईआ। इक्क वसेरा बिन छप्पर छन्न, महल्ल अटल ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम धन, अतोट अतुट आप वरताईआ। अतोट अतुट हरि भण्डार, हरिजन साचे आप वरताइंदा। आदि जुगादि ना आए हार, जुग जुग आपणा खेल खिलाइंदा। एथे ओथे दए सहार, समरथ पुरख संग निभाइंदा। माणस जन्म उतरे पार, पूर्ब लहिणा झोली पाइंदा। निहकर्मी कर्म करे विचार, कर्म कांड ना कोए रखाइंदा। एका शब्द नाम जैकार, घर मन्दिर आप सुणाइंदा। पंच विकारा कर ख्वार, माया ममता मोह मिटाइंदा। कूड़ी क्रिया मारे मार, सच सुच्च इक्क समझाइंदा। बिन हरि नामे कोए ना उतरे पार, लक्ख चुरासी भरम भुलाइंदा। मूर्ख मूढ़े भुल्ले जीव गंवार, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जिस घड़या सो भन्नणहार, घड़न भन्नण आपणी खेल खिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। लक्ख चुरासी पावे सार, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रकाश इक्क उपाइंदा। सच प्रकाश हरि उपाया, निरगुण जोत जोत जगा। सचखण्ड दुआरे आप वसाया, एका रूप रिहा डगमगा। जुग जुग वेस अनेक कराया, लक्ख चुरासी घाड़त लए घड़ा। घट घट दीपक आप टिकाया, ना कोई सके मात बुझा। कलिजुग जीवां भेव किसे ना पाया, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। गुरमुख घर अन्धेरा कदे ना छाया, अठ्ठे पहर होए रुशना। दीवा बाती ना कोए रखाया, निरगुण जोत रिहा टमटमा। काया खेड़ा आप वसाया, सूरज चन्द रहे शरमा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दीपक इक्क जगा। साचा दीपक जाए जग, सो पुरख निरँजण आप जगाईआ। करे प्रकाश उप्पर शाह रग, ना कोई वेखे वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई त्रैगुण लग्गी अग्ग, चार कुण्ट ना कोए बुझाईआ। घर सुणे ना कोए नद, सद सच स्नेहुड़ा कवण अल्हाईआ। काया पिण्ड ना कोई वेखे हद्द, सच लकीर तकदीर ना कोए खिचाईआ। आपणा मन ना सके कोई बध, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। हउमे रोग ना सके कोई कढ्ढ, दुखड़ा जगत

ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरले दए वड्याईआ। जगत उजाला जगत अन्धेरा, जगत जगत विच रखाया। गुरमुखां सदा सन्झ सवेरा, रैण अन्धेरा ना कोए छाया। वसदा रहे काया खेड़ा, पुरख अबिनाशी मन्दिर आप सुहाया। खुल्ह्आ कराए आप वेहड़ा, पंच विकारा दए गंवाया। दरस दिखाए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। आदि अन्त बन्ने बेड़ा, पुरख अकाल बेपरवाहया। लक्ख चुरासी देवे गेड़ा, अन्तिम आपणी लड़ गढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दीपक इक्क वखाया। साचा दीपक हरि का दीआ, सो पुरख निरँजण आप जगाईआ। सुरत शब्द बीवी मीआं, घर बैठे ख़ुशी मनाईआ। भाग लग्गा साढे तिन्न हथ्थ सीआं, नूर नुराना करे रुशनाईआ। निर्मल होए हरिजन जीआ, आत्म परमात्म वेख वखाईआ। पूर्ब जन्म बीज जो बीआ, माणस जन्म लेखे पाईआ। सति कर्म जो कलिजुग कीआ, निहकर्मी कर्म वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन एका रंग रंगाईआ। एका रंग रंगे करतार, दूसर रंग ना कोए वखाइंदा। नाता तोड़ अन्ध अन्धयार, साचा चन्द आप चढ़ाइंदा। अठ्ठे पहर करे गुफ्तार, रागी आपणा राग सुणाइंदा। साचे मन्दिर खेल न्यार, उच्च महल्ले सोभा पाइंदा। बन्द ताकी खोल्ह किवाड़, साची बाती आप टिकाइंदा। आपे वेखे वेखणहार, दूसर दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नूर आप दरसाइंदा। साचा नूर आत्म जोत, नूर नुराना आप जणाईआ। भाग लगाए काया कोट, घर साचे वज्जे वधाईआ। शब्द नगारे लग्गे चोट, नाद धुंन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। हरिजन थान सुहाइंदा, गृह मन्दिर होए पवित। सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा, निरगुण आवे जावे नित नवित। साचा मन्दिर इक्क वखाइंदा, सति सरूपी करे हित। दीपक दीआ इक्क जगाइंदा, पारब्रह्म प्रभ बण बण साचा मित। माणस ज़ात ना कोए बुझाइंदा, हरि जू हरि मन्दिर लेखा रिहा लिख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणा मेल मिलाइंदा। गुरमुख मेला सच दुआर, काया बंक सुहाया। जगत खेड़ा होए ख्वार, धीरज धीर ना कोए धराया। गुरमुख विरला उतरे पार, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। मेट मिटाए अन्ध अन्धयार, साचा नूर इक्क दरसाया। चरन कँवल वखाए सच दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्ह्आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप वखाया। साचा मन्दिर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण डेरा लाईआ। हरि पुरख निरँजण साचा कन्त, नर नरायण ख़ुशी मनाईआ। एकँकारा आदि अन्त, जुग जुग खेल खिलाईआ। आदि निरँजण महिमा अगणत, जोती जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता वेखे साचे सन्त, सन्त साजन लए मिलाईआ। श्री भगवान एका नाम जणाए मणीआ

मंत, साचा मन्त्र इक्क वखाईआ। पारब्रह्म लेखा जाणे लक्ख चुरासी जीव जंत, जो घड़याा भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन माण रखाइंदा, जुगा जुगन्तर कार। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराइंदा, कलिजुग आए अन्तिम वार। निरगुण आपणा रूप वटाइंदा, निहकलंका जामा धार। जाग्रत जोत डगमगाइंदा, दो जहान होए उज्यार। गुरमुख दीपक आप वखाइंदा, साचा दीआ आपे बाल। तेल बाती ना कोए पाइंदा, मार्ग दस्से इक्क सुखाल। जोती जोत मेल मिलाइंदा, नाता तोड़ काल महाकाल। साची चोटी आप चढ़ाइंदा, सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दीपक देवे बाल। बलया दीपक होया प्रकाशा, परम पुरख कराया। गृह मन्दिर अंदर साची रासा, गोपी काहन नचाया। निज आत्म निज घर कर कर वासा, निज नेत्र नैण खुल्हाया। निज पवण चलाए स्वासा, रसना जेहवा आप हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर वेख वखाया। गृह मन्दिर होए सुहञ्जणा, गुरमुख काया गढ़। जोत जगाए आदि निरँजणा, साचे मन्दिर आपे वड़। आदि जुगादि दर्द दुःख भय भंजना, जगत विकारा लवे फड़। एथे ओथे साचा सज्जणा, ना जन्मे ना जाए मर। जन भगतां रक्खे लज्जणा, बण दरवेश आवे दर। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, दुरमति मैल देवे हर। आदि अन्त पर्दा

११९२ कज्जना, खोल्हे बन्द किवाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरभउ चुकाए भय डर। गुरमुख अन्तर ११९२

आत्म लो, लोआं पुरीआं करे रुशनाईआ। गुरमुख आत्म दुरमति मैल धो, निर्मल नीर अमृत आत्म जाम प्याईआ। गुरमुख आत्म सुरती पारब्रह्म प्रभ जाणे सो, हँ ब्रह्म वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची जोत जोत रुशनाईआ। साची जोत इक्क गोबिन्द, हरिजन आप टिकाइंदा। हरख सोग ना कोए चिन्द, चिंता चिखा ना कोए वखाइंदा। एका ओट गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, दूसर आस ना कोए तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, सच दुआरा आप वखाइंदा। सच दुआरा हरि जू खोल्ह, हरिजन आप जणाईआ। शब्द अगम्मी एका बोल, नाम मृदंगा ढोल वजाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों वरोल, गुरमुख सज्जण बाहर कढ्ढाईआ। नाम कंडे देवे तोल, तोलणहारा हरि शहिनशाहीआ। देवे वस्त अन्त अनमोल, वस्त अमोलक झोली पाईआ। कलिजुग अन्धेरा चार कुण्ट जूठ झूठ वज्जया ढोल, जीवां जंतां रिहा सुणाईआ। सच वस्त ना दिसे किसे कोल, साचा मार्ग ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणे नाम रक्खे वड्याईआ। एका नाउँ हरि बलवान, दूसर कोए नज़र ना आया। कोटन कोटि बह बह गाण, जुग जुग रसना जेहवा हिलाया। वेले अन्त सर्ब पछताण, वेला गया हथ्थ ना आया।

पीर फ़कीर ना दिसे कोए निशान, जो घड़या भन्न वखाया। लक्ख चुरासी फ़नाह मकान, मलकउलमौत लए प्रनाया। जगत दुआरा झूठ दुकान, माया ममता हट्ट खुल्हाया। हवन धूप ना कोए मसाण, पवण सुगंध ना कोए रलाया। जगत अन्धेर ना कोए ज्ञान, दीवा बाती ना कोए जगाया। जिस दुआरे आए श्री भगवान, सो दर दूजा कोए रहिण ना पाया। बिन सतिगुर पूरे कोए ना करे कल्याण, वेले अन्त ना कोए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाया। आपणा खेल करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तर हो त्यारा, बेऐब रूप वटाईआ। मुकामे हक लगाए नाअरा, लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। दर बहाए गुर पीर अवतारा, मुल्लां शेख़ मुसायक बन्धन पाईआ। ज्ञान ध्यान ना कोए विचारा, पंडत पांधे रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। साचा खेल गुरमुख रंग, सो पुरख निरँजण आप रंगाइंदा। जिस दुआरे वजाए नाम मृदंग, दूसर साज ना कोए वखाइंदा। चारों कुण्ट अन्धेरा अन्ध, घर घर दीप ना कोए जगाइंदा। जगत दुःख ना मुक्के पन्ध, दुखियां दुःख ना कोए गंवाइंदा। जो जन सुणे सुहागी छन्द, तिस जन बेड़ा पार कराइंदा। काल दए दुआर ना डन्न, लाड़ी मौत दर दुरकाइंदा। पसू पंखी पंछी बेड़ा देवे बन्न्ह, डोरी आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस दुआरे जाए खढ़, दूसर नेड़ कोए ना आइंदा। दूसर कोई ना आवे नेड़े, जिस दर आपणा नाम जपाईआ। टूणे जादू जगत झूठे झेड़े, साचा राह ना कोए वखाईआ। बिन सतिगुर पूरे कवण बन्न्हे बेड़े, बेड़ा पार कवण लँघाईआ। मनमुख सुत्ते रहे अन्धेरे, साचा नूर नजर ना आईआ। मन वासना पाए घेरे, मन का मणका ना कोए भवाईआ। गुरमुख सिँघ मस्सा रुस्सया रैण गई अन्धेरे, चन्द एकम एका वार नज़री आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग लगाए काया खेड़े, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

★ १४ भाद्रों २०१८ बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह डल्ले वाल ज़िला जलन्धर ★

सो पुरख निरँजण सर्ब गुणवन्त, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। हरि पुरख निरँजण आदि अन्त, निरवैर धार चलाईआ। एकँकारा महिमा अगणत, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। आदि निरँजण दर घर साचे सोभावन्त, जोती नूर डगमगाईआ। अबिनाशी करता आप बणाए आपणी बणत, मात पित ना कोए रखाईआ। श्री भगवान नारी कन्त, साची सेज आप सुहाईआ। पारब्रह्म आपे जाणे आपणा मंत, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव

११९३

आपणे हथ्थ रखाईआ। हरि भेव अपारा, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, एकँकारा वेस वटाइंदा। आदि निरँजण निर्मल धारा, अबिनाशी करता संग रखाइंदा। श्री भगवान वसणहारा ठांडे दरबारा, सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। साचा मन्दिर खोल्ह किवाड़ा, दीआ बाती आप टिकाइंदा। पुरख अगम्म अगम्मड़ी कारा, अलख अगोचर आप कराइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। हुक्मी हुक्म कर वरतारा, धुर फ़रमाना हुक्म जणाइंदा। आपणी इच्छया सति भण्डारा, साची भिच्छया झोली पाइंदा। करनी करे करनेहारा, करता पुरख आपणी खेल खिलाइंदा। आपे नाद धुन जैकारा, शब्द अनादी नाद वजाइंदा। सुणे सुणाए सुणनेहारा, दर घर साचे आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव हरि हरि खोल्ह, आपणी दया आप कमाईआ। साचे मन्दिर आपे बोल, सचखण्ड दुआर सोभा पाईआ। निरगुण तोला तोले साचा तोल, तोलणहारा इक्क हो जाईआ। सच वस्त रक्खे कोल, आदि जुगादि आप वरताईआ। बैठा रहे सदा अडोल, डुल कदे ना जाईआ। निरगुण निरगुण अंदर रिहा मौल, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ।

१११४ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आप रचाईआ। साची रचना रचनेहारा, सो पुरख निरँजण १११४

खेल खिलाइंदा। हरि पुरख निरँजण कर पसारा, एकँकारा विच समाइंदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, जोती नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता लेखा जाणे धुर दरबारा, सच दुआरा आप सुहाइंदा। श्री भगवान खोल्ह किवाड़ा, साचा मन्दिर आप वड्यांअदा। पारब्रह्म लेखा जाणे पुरख नारा, नर नरायण वेस वटाइंदा। मेल मिलावा कन्त भतारा, साची सेज सुहाइंदा। सुत उपजाए इक्क दुलारा, शब्दी नाउँ धराइंदा। दाई दाया गिरवर गिरधारा, साची सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा आपे चुक्क, निरगुण आपणा नूर करे रुशनाईआ। आपे अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर बैठा लुक, आप आपणे रंग समाईआ। आपे शाह सुल्तान तख्त निवासी आपे सीस निवाए झुक, शाह पातशाह आप हो जाईआ। आपे आपणी इच्छया पए उठ, आदि अन्त ना कोए दसाईआ। आप उपाए आपणा सुत्त, पूत सपूता नाउँ धराईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, बेअन्त वड वड्याईआ। इक्क सुहाए साची रुत, रुत रुतड़ी आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए उठाईआ। हरि आपणा पर्दा आप उठाइंदा, कर किरपा गुण निधान। आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा, सचखण्ड सच्चा मकान। अगम्म अगम्मड़ी कार कराइंदा, अलख अगोचर श्री भगवान। दीआ बाती आप जगाइंदा, जोती नूर नूर महान। साचा राग आप अल्हाइंदा, शब्द अनाद अनादी धुर फ़रमान।

आपणा खेल आप खिलाइंदा, आपे वेखे आण। आपणी रचना आप रचाइंदा, आपे रच रच होए प्रधान। आपे साची सेव कमाइंदा, आपे देवणहारा दान। सचखण्ड दुआर आप वड्यांअदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल वड मेहरवान। वड मेहरवान हरि निरँकारा, एका रंग समाइंदा। सो पुरख निरँजण हो त्यारा, आपणा ताक आप खुल्हाइंदा। आप सुणाए आपणा वाक, राग रागी आप अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव खुल्हाइंदा। आपणा भेव श्री भगवान, आदि आदि खुल्हाईआ। जुगादि जुगादि हो प्रधान, आपणा बन्धन पाईआ। अन्त अन्त धुर फ़रमान, बेअन्त इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धार आप चलाईआ। साची धार पुरख अबिनाश, आदि जुगादि चलाइंदा। सचखण्ड दुआरे साची रास, सति सतिवादी आप रचाइंदा। आपणी इच्छया कर प्रकाश, नूर नुराना डगमगाइंदा। तख्त निवासी शाहो शाबाश, शाह सुल्तान नाउँ धराइंदा। आपे करे पूरी आस, आसा पूर आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। साचा रंग पुरख अकाल, आपणा आप रंगाईआ। सचखण्ड दुआरे हो दयाल, आपणी दया आप कमाईआ। आपे वेखे सुत दुलारा लाल, शब्दी शब्द गोद बहाईआ। आपणा नाउँ देवे सच्चा धन माल, नाउँ
१११५ निरँकारा झोली पाईआ। इक्क सुहाए सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। साची वस्त रक्ख संभाल, एका १११५
गुण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। साची वस्त हरि झोली पा, एका वार सुणाइंदा। शब्दी सुत ल्या उठा, साचे दर बहाइंदा। सीस हथ्थ आप टिका, समरथ वेख वखाइंदा। एका गाथा दए पढ़ा, बोध अगाध जणाइंदा। साचे रथ लए चढ़ा, आदि जुगादि चलाइंदा। आपणा लेखा आप लिखा, आपे पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाइंदा। दया करे दयावान, सो पुरख निरँजण हथ्थ वड्याईआ। सुत दुलारा बाल अञ्याण, हरि पुरख निरँजण होए सहाईआ। एकँकारा बख्शे माण, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। आदि निरँजण देवे नूर नुरान, नूर नुराना इक्क अख्वाईआ। अबिनाशी करता वखाए सच मकान, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। श्री भगवान झुलाए इक्क निशान, सति निशाना आप रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर परवान, दर बैठा सीस झुकाईआ। सुत दुलारे देवे इक्क पछाण, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। एका गोपी एका काहन, एका मंडल रास रचाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमान, सच संदेसा नाउँ जणाईआ। भुल ना जाणा बण नादान, अभुल दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे इक्क समझाईआ। सुत दुलारा बाल अञ्याणा, हरि अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं शाह

पातशाह सच्चा सुल्ताना, हउँ दरवेश मंग मंगाइंदा। तेरा सोहे सचखण्ड मकाना, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। तूं ही मर्द मर्द मरदाना, तेरा अन्त कोए ना आइंदा। तेरा हुक्म मेरा परवाना, हउँ साची सेव कमाइंदा। हउँ मंगां एका दाना, अग्गे आपणी झोली डांहयदा। कवण धाम करां बिसरामा, कवण घर सोभा पाइंदा। कवण जोत जगे महाना, दीपक दीआ कवण डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा घर, दर साची मंग मंगाइंदा। मंगी मंग दर दरबार, पुरख अबिनाशी पूर कराईआ। आपणी इच्छया खोलॣ किवाड़, थिर घर साचा लए प्रगटाईआ। सुत दुलारा देवे वाड़, साचे मन्दिर आप टिकाईआ। ना कोई दीसे चार दीवार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। अठ्ठे पहर रहे उज्यार, निरगुण जोत इक्क रुशनाईआ। पारब्रह्म करे गुफ्तार, तार सतार इक्क हिलाईआ। एका हुक्म इक्क वरतार, एका मार्ग दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, थिर घर साचा लए उपाईआ। थिर घर साचा सच महल्ला, सो पुरख निरँजण आप उपाया। शब्द वसाया इक्क इकल्ला, आदि जुगादि समाया। जोती जोत आपे रल्ला, नूर नुराना डगमगाया। एकँकार फड़ाए पल्ला, आदि निरँजण होए सहाया। श्री भगवान सुहाए निहचल धाम

१११६ अटल्ला, अबिनाशी करता वेख वखाया। पारब्रह्म प्रभ मेटे सल्ला, आप आपणा मेल मिलाया। सच संदेस एका घल्ला, धुर १११६

फ़रमाना आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द शब्दी वण्ड वंडाया। शब्द शब्दी वण्डी वण्ड, वण्डणहार इक्क अख्वाइंदा। दीन दयाल सदा बख्शंद, आपणी बख्शिश आप जणाइंदा। एका देवे सच्चा अनन्द, अनन्द अनन्द आप प्रगटाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जोत डगमगाइंदा। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, गीत गोबिन्द आप अलॣाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप जणाइंदा। साचा मार्ग हरि जणाए, एका हुक्म सुणाईआ। सुत अनादी सेवा लाए, साची सेवा इक्क समझाईआ। तेरी रचना वेख वखाए, रच रच वेखे बेपरवाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा अंग बणाए, लोआं पुरीआं तेरी किरन किरन रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी जोत जगाए, नूर नुराना डगमगाईआ। रवि ससि तेरा नैण खुलॣाए, पलक पलक नाल मिलाईआ। त्रैगुण तेरी धूढ़ बणाए, पंज पंचम करे कुड़माईआ। लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाए, घड़न भन्नणहार खेल खिलाईआ। निरगुण सरगुण वेस वटाए, वेस अनेका आप कराईआ। घट घट तेरा मन्दिर बणाए, घर घर विच आसण लाईआ। घर घर तेरा नाद वजाए, अनहद नादी नाद सुणाईआ। घर घर तेरा नूर रुशनाए, जोत निरँजण डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क समझाईआ। सुणया फ़रमान सुत दुलार, दोए जोड़ करे निमस्कारा। तूं साहिब सच्चा

परवरदिगार, बेऐब तेरा सहारा। लक्ख चुरासी तेरा वरतार, विष्न ब्रह्मा शिव तेरा भण्डारा। तेरा नाउँ सच धुन्कार, तेरा नूर जोत उज्यारा। तूं घाड़न घड़ें बण ठठयार, आदि जुगादी घड़न भन्नणहारा। हउँ सेवक करां फ़रयाद, दर तेरे बंक दुआरा। आपणे विच्चों दिता काढ, थिर घर वसाया मेरा किवाड़ा। कवण वेला करे याद, मैं आवां चल दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका करना सच इकरारा। सच इकरार लैणा कर, सुत शब्दी आप जणाइंदा। मेरा भण्डारा देणा भर, एका वार मंग मंगाइंदा। दूजा मंगां ना कोई दर, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। तेरा फड़या एका लड़, आदि जुगादि ना कोए छुडाइंदा। लक्ख चुरासी खेल कर, घट घट नाच नचाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे अग्गे धर, त्रैगुण वस्त आप वरताइंदा। पंचम मेला आपे कर, आपणी खेल खिलाइंदा। अन्तिम बाज़ी जायण हर, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं पल्लू तेरा लवां फड़, दिस किसे ना आइंदा। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका हुक्म सुणाईआ। श्री भगवान होए सहा, तेरा सहिसा दए चुकाईआ। जुग चौकड़ी खेल खिला, अन्तिम पन्ध मुकाईआ। नव नौ गेड़ा दए दवा, चार चार चार भवाईआ। अन्तिम झेड़ा दए मुका, जग खेड़ा वेख वखाईआ। तेरा लहिणा दए चुका, देणा कोए रहिण ना पाईआ। प्रगट होए आप मेहरवां, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण नूर करे रुशना, जोती जोत डगमगाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त जपौंदा रहे आपणा नाँ, आप आपणा नाउँ समझाईआ। अन्तिम लेखा दए मुका, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप समझाईआ। नव नौ चार पार कराउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल रूप वटाउणा, रंग रेख ना कोए वखाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पर्दा लाउहणा, जेरज अंडज उत्भुज सेत्ज मूल चुकाइंदा। रवि ससि मुख शरमाउणा, गगन गगनंतर नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव पन्ध मुकाउणा, जो घड़या भन्न वखाइंदा। त्रैकाल दरसी आपणा दरस फेर कराउणा, स्वच्छ सरूप रूप वटाइंदा। काल महाकाल आपणे विच छुपाउणा, हथ्थ किसे ना आइंदा। त्रैगुण जगत जंजाल आप तुड़ाउणा, दो जहानां बन्धन आप मुकाइंदा। सचखण्ड आसण आपणा लाउणा, थिर घर तेरा बंक वड्यांअदा। थिर घर बह बह ढोला गाउणा, साचा नाद सुणाइंदा। सोहँ रूप आप प्रगटाउणा, अन्तिम सोहँ आपणी झोली पाइंदा। सो पुरख निरँजण वेख वखाउणा, हँ ब्रह्म पन्ध मुकाइंदा। शब्दी सुत तेरा मेला मेल मिलाउणा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। ग़रीब निवाज़ा नज़री आउणा, आप आपणा दरस कराइंदा। कागद कलम किसे भेव ना पाउणा, लिख लिख लेख ना कोए वखाइंदा। नौ नौ चार गुर अवतार बेअन्त बेअन्त बेअन्त गाउणा,

बेअन्त आपणी खेल खिलाइंदा। निहकलंक आपणा नाउँ रखाउणा, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर कलंक ना कोए लगाइंदा। साचा डंक इक्क वजाउणा, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप उठाइंदा। शब्दी शब्द तेरा बंक सुहाउणा, बंक दुआरी साचे बंक सोभा पाइंदा। पुरख अकाल निराकार साकार आपणा भेव चुकाउणा, पर्दा अवर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणी करनी आप कमाइंदा।

★ १४ भाद्रों २०१८ बिक्रमी निरँजण सिँघ दे गृह लुधियाणा ★

शाह पातशाह हरि निरँकारा, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। निरगुण नूर नूर उज्यारा, जोत उजाला डगमगाइंदा। सो पुरख निरँजण आप जणाए आपणी धारा, धार धार विच रखाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो त्यारा, निरवैर आपणी खेल खिलाइंदा। एकँकारा कर पसारा, इक्क इकल्ला वेख वखाइंदा। आदि निरँजण जोती जोत जोत सहारा, जोती जाता वेस वटाइंदा। अबिनाशी करता अलख अगोचर अगम्म अपारा, अकल कल आपणी खेल खिलाइंदा। श्री भगवान वसणहारा ठांडे दरबारा, सच दरबारा सोभा पाइंदा। पारब्रह्म आप आपणा कर पसारा, आदि पुरख वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण खेल अवल्ला, आदि जुगादि कराईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। आपणे दीपक आपे बला, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि शाह पातशाह करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सच्चा शहिनशाह हरि करतारा, आदि जुगादि समाया। वसणहारा धाम न्यारा, आप आपणा खेल कराया। हुक्मी हुक्म कर वरतारा, धुर फ़रमाना आप सुणाया। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची धाम वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणी धार आपणे हथ्थ रखाया। आदि जुगादि खेल भगवान, निरगुण निरवैर आप कराईआ। आप झुलाए सच निशान, सति सतिवादी हथ्थ उठाईआ। शाहो भूप बण राजान, शाह सुल्तान आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जुगा जुगन्तर देवणहारा धुर फ़रमान, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, मध्ध आपणा बन्धन पाईआ। साचा बन्धन पुरख अबिनाश, एका एक रखाइंदा। खेले खेल सति तमाश, मंडल रास आप रचाइंदा। साचे मन्दिर कर कर वास, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। आपे करे आपणी पूरी आस, आसा आसा विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आदि पुरख हो उज्यारा, आपणी दया आप कमाईआ। सो पुरख निरँजण कर प्यारा, हरि पुरख निरँजण मेल मिलाईआ। एकँकारा करे खेल पुरख

नारा, नर नरायण वडी वड्याईआ। आदि निरँजण दीपक दीआ कर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा धाम न्यारा, निहचल धाम इक्क सुहाईआ। श्री भगवान झुलाए सच निशान सोभावन्त सोहे सच दरबारा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। पारब्रह्म प्रभ बण भिखारा, आपे मंगे आपणी वारा, दर दरवेश अलख अलखना आपणी झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। हरि का भेव आपणे हथ्थ, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, आदि जुगादी धार चलाइंदा। जुगा जुगन्तर चलाए रथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। आपणे नाउँ महिमा गाए अकथ, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे वेख वखाइंदा। आपणा सुणे आपे जस, आपे सोभा पाइंदा। आपणा नूर कर प्रकाश, आपे डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा गुण आपणे विच छुपाइंदा। साचा गुण गुणा गुणवन्त, अभेद अभेव आपणे विच छुपाईआ। लहिणा जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणा वेस वटाईआ। खेले खेल नार कन्त, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। सचखण्ड बणाए साची बणत, सच सिँघासण सोभा पाईआ। आपे करे आपणी मन्नत, आपे बैठा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दाता आपे भिखारी, आपे वस्त देवे अपारी, आप आपणी झोली सच भराइंदा। सो पुरख निरँजण साची दात, आदि आदि आप वरताइंदा। आप बंधाए आपणा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। आप सुणाए आपणी गाथ, बोध अगाधी आपे गाइंदा। आप निभाए आपणा साथ, सगला संग आप हो जाइंदा। आप चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड महल्ले बैठा चढ़, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। सच महल्ला उच्च अटारी, निरगुण आपणी आप बणाईआ। ना कोई दीसे चार दीवारी, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। निरगुण जोत कर उज्यारी, आदि जुगादि डगमगाईआ। साचा हुक्म सच्ची सरकारी, शाह पातशाह आप शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा लेखा हरि निरँकार, आपणे हथ्थ रखाइंदा। सचखण्ड निवासी सच बैठ दरबार, दर दरबारी हुक्म चलाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाना आप अल्हाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण धार, जोती जाता आप टिकाइंदा। आपे अंदर आपे बाहर, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। आपे मात पित बण करे प्यार, साचा सुत आप उपजाइंदा। आपे भिच्छया देवे सति भण्डार, नाउँ निरँकारा झोली पाइंदा। आप कराए सच वणजार, सच वस्त हथ्थ फड़ाइंदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपे देवे दरस

१११८

दीदार, स्वच्छ सरूपी रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण अंदर निरगुण वड़, निरगुण महल्ले निरगुण चढ़, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण धार, निरवैर पुरख आप टिकाइंदा। अजूनी रहत हो त्यार, मूर्त अकाल डगमगाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। जननी जन जणे सुत दुलार, शब्द शब्दी गोद बहाइंदा। दाई दाया बण एका वार, साची सेवा आप कमाइंदा। करता पुरख करनेहार, आपणी करनी किरत कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव हरि चुकाए, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपणी नारी आप हंढाए, कन्त कन्तूहल बेपरवाहीआ। आपणी गोद आप सुहाए, आपे बणे पिता माईआ। साचा मन्दिर डगमगाए, निरगुण नूर नूर उजाला, एका नूर करे रुशनाईआ। करे खेल हरि गोपाला, आपणी महिमा आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि जुगादि अवल्लड़ी चाला, चाल निराली आप प्रगटाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, सच सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे आपणा वर, आपणी बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे वर दाता भण्डार, साची वस्त आप वरताइंदा। आपे हुक्मी हुक्म वरते सरकार, शाह पातशाह खेल खिलाइंदा। निर्भय होए बोल जैकार, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। आपणी इच्छया करे प्यार, शब्द शब्दी मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे खड़, आपणा मता आप पकाइंदा। सचखण्ड दुआर हरि निरँकार, आपणा मता आप पकाईआ। इक्क इकल्ला की करे प्यार, दूसर नज़र कोए ना आईआ। कवण रूप होए उज्यार, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप समझाईआ। आपणा लेखा आप समझा, आपणी दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण रूप वटा, दोए दोए धार चलाइंदा। शब्दी शब्द सेवा ला, साची सेव कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव गोद बहा, त्रैगुण मेला मेल मिलाइंदा। पंज तत्त घाड़न लए घड़ा, आपणा बन्धन पाइंदा। निरगुण सरगुण रूप वटा, आपणी खेल खिलाइंदा। आपणा पर्दा आप चुका, विष्नूं मुख सालांहयदा। विष्नूं अन्तर जाम प्या, अमृत रस चुआइंदा। अमृत आत्म इक्क रखा, कँवल नाभ खुल्हाइंदा। नाभी कँवल कर प्रगटा, आपणा बन्धन पाइंदा। पारब्रह्म आपणी वण्ड वंडा, ब्रह्मा आपणा रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाइंदा। आपे धार विष्न विश्व रंग, आदि जुगादि समाया। आपे आत्म सेजा बैठा पलँघ, सच सिँघासण आसण लाया। आप वजाए नाम मृदंग, सति सतार आप हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाया। आपे विष्नूं विश्व धार, आपणी खेल आप कराइंदा। आपे अमृत रक्खे

फुहार, निझर धार आप चलाइंदा। आपे कँवल कँवला कर उज्यार, पत्त डाली आप महिकाइंदा। आपे नाभी कँवली आए बाहर, आप आपणा रंग रंगाइंदा। आपे पारब्रह्म ब्रह्म कर पसार, वेस अवेसा वेस वटाइंदा। दर दरवेशा खेल करतार, आप आपणी अलख जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। धुर फ़रमाना शाह सुल्ताना, हरि सच्चा सच जणाइंदा। तिन्नां देवे इक्क ज्ञाना, एका नाउँ पढ़ाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका घर वखाइंदा। एका शाह पातशाह श्री भगवाना, दो जहानां हुक्म चलाइंदा। एका देवे धुर परवाना, सच संदेसा इक्क वखाइंदा। सर्ब जीआं दा एका कान्हा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि निरँकार, आपणा आप चलाईआ। त्रैगुण वस्त भर भण्डार, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करया ख़बरदार, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। निष्अक्खर ना कोए लिखार, आपणी विद्या आप सिखाईआ। कागद कलम ना पावे सार, हरि का भेव हथ्थ किसे ना आईआ। ब्रह्मा बणे दर भिखार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। तूं बख्शिश बख्श बख्शणहार, तेरे हथ्थ वडी वड्याईआ। तेरी जोत निरगुण धार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। पारब्रह्म तेरा पसार, ब्रह्मा तेरी अंस अख्वाईआ। तेरा हुक्म सच वरतार, जिउँ भावे तिउँ चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ एका मंग मंगाईआ। साचा वर देणा सच्चे पातशाह, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाइंदा। कवण रूप बणें मलाह, साडा बेड़ा आप चलाइंदा। कवण शब्द देवें सलाह, साचा मार्ग लाइंदा। कवण मन्दिर दएँ वसा, कवण खेड़ा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना आसा पूर कोए कराइंदा। पुरख अबिनाशी हो दयाल, आपणी दया आप कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा रहे सदा प्रितपाल, प्रितपालक सेव कमाईआ। त्रैगुण डोर जगत जंजाल, जोती जाता हथ्थ फड़ाईआ। नाल रखाए काल महाकाल, आपणी कला आप वरताईआ। मातलोक वखाए जगत धर्मसाल, नव नव आपणा गेड़ दिवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त झोली पाईआ। साची वस्त हरि झोली पा, त्रै त्रै आप समझाया। लक्ख चुरासी घाड़न लैणा घड़ा, घड़न भन्नणहार वेख वखाया। अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज वण्ड वंडा, साचा हिस्सा आप रखाया । चारे खाणी लए प्रगटा, चारे बाणी विच समाया। चारे कुण्ट कर रुशना, चारे जुग वण्ड वंडाया। चारे वरनां रंग रंगा, चार यारी दए सालाहया। खेले खेल बेपरवाह, लोकमात वेस वटाया। लक्ख चुरासी नाच नचा, काया माटी भाग लगाया। साची हाटी इक्क सुहा, तन ख़ाकी वेख वखाया। निरगुण आपणी जोत टिका, जोत निरँजण कर रुशनाया। आत्म ब्रह्म मेल मिला, ईश जीव दए वड्याआ।

आत्म सेजा सोभा पा, सच सिँघासण दए सुहाया। शब्द अनादी नाद वजा, अनहद साचा राग अलाया। घर विच घर दए वसा, घर मंगल गीत गाया। घर विच अन्ध अन्धेरा दए वखा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाया। घर काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्का, आसा तृष्ना नाल रलाया । हउमें हंगता गढ़ बणा, जगत खेड़ा वेख वखाया। जुग जुग खेल करे बेपरवाह, रूप अनूप धराया। निरगुण सरगुण लए वेस वटा, भेव अभेदा भेव खुलाया। गुर अवतार नाउँ धरा, लक्ख चुरासी होए सहाया। आपणा मन्त्र नाउँ दृढ़ा, साचा मार्ग दए वखाया। भगत भगवन्त लए मिला, आप आपणे अंग लगाया। सन्तन देवे सच सलाह, साची विद्या इक्क पढ़ाया। गुरमुख गोद लए बहा, मुख अमृत जाम प्याया। गुरसिखां देवे साचा थाँ, चरन कँवल थान वखाया। मनमुखां देवे आदि जुगादि सज़ा, अभुल भुल कदे ना जाया। लक्ख चुरासी गेड़ा आप चला, आपणी लट्ठ आप गढ़ाया। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी सेव लगा, साचा हुक्म रिहा सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मातलोक खेल खिलाया। मातलोक तेरा खेल खिलाउणा, हउँ सेवक सेव कमाईआ। जुग जुग तेरा वेस वटाउणा, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकाउणा, कलिजुग अन्तिम राह तकाईआ। नव नौ चार वेख वखाउणा, साचे तख्त बैठ साचे माहीआ। गुर अवतार सेव लगाउणा, जुग जुग सेवा लाईआ। आपणा हुक्म इक्क वरताउणा, हुक्मे

१९२२ अंदर सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी जायण बीत, कोटन कोटि काल बिताईआ। पुरख अबिनाशी बैठा रहे इक्क अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। सचखण्ड वसे ठांडा सीत, अग्नी तत्त ना लग्गे राईआ। जुगा जुगन्तर सुणाए सुहागी गीत, गुर अवतारां करे पढ़ाईआ। आप चलाए आपणी रीत, नित नवित खेल खिलाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, घट घट आपणा आसण लाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा मीत, बेअन्त बेपरवाहीआ । जन भगतां बख्शे इक्क प्रीत, सच प्रीती आप निभाईआ। वसणहारा धाम अनडीठ, विष्न ब्रह्मा शिव रिहा समझाईआ। लक्ख चुरासी परखे नीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाईआ। आपणा बन्धन हरि जू पा, लक्ख चुरासी खेल खिलाइंदा। गुर अवतार सेव लगा, जुग चौकड़ी पार कराइंदा। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पन्ध मुका, नौ खण्ड पृथमी वेख वखाइंदा। नौ दुआरे पर्दा दए उठा, नव नौ आपणा रंग रंगाइंदा। चार चार डेरा देवे ढाह, झूठा खेड़ा आपे ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी पार कराउणा, पारब्रह्म हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलजुग तेरा लेखा आप मुकाउणा, आपे लिख लिख दए समझाईआ। सभ दा लेखा कढ्ढ वखाउणा, गुर अवतारां नाल रलाईआ। तेई अवतारां आप उठाउणा, कलिजुग

अन्तिम चौकड़ी दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी सच दरबार सचखण्ड दुआर आप लगाउणा, आपणे सीस ताज टिकाईआ। सच निशाना इक्क चढ़ाउणा, दो जहानां रिहा झुलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ख़बरदार कराउणा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। सुरपति राजा इन्द आप हलाउणा, करोड़ तेतीसा दए जगाईआ। किन्नर यच्छप आलस निन्दरा मगरों लाउहणा, एका हुक्मी हुक्म जणाईआ। लोकमात वेख वखाउणा, लक्ख चुरासी भुल ना जाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाउणा, जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँघी कंदर वेख वखाईआ। सत्त समुंदर आप हिलाउणा, सागर कोए ना मुख छुपाईआ। चौदां तबकां डेरा ढाउहणा, चौदां लोक वेख वखाईआ। तेई अवतारां एका हुक्म सुणाउणा, एका नाद धुंन वजाईआ। ईसा मूसा नाल रलाउणा, संग मुहम्मद पकड़े बाहींआ। चार यारी वेख वखाउणा, चौथे जुग पई दुहाईआ। चार वरन अन्त कराउणा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। गुर दस भेव चुकाउणा, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। भगत भगवन्त दर बहाउणा, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। नर नरेशा इक्क अख्वाउणा, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जिस आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआर वज्जे वधाईआ। सचखण्ड सच दरबारा, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। कलिजुग आई अन्तिम वारा, दो जहानां वेख वखाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खोल्ह किवाड़ा, दूई पर्दा आप चुकाइंदा। भेव चुकाए रवि ससि सितारा, मंडल मण्डप फेरा पाइंदा। पृथ्मी आकाश वेखे अखाड़ा, गगन गगनंतर नाच नचाइंदा। चारे वेद करन पुकारा, पुराण अठारां अन्त कुरलाइंदा। गीता ज्ञान ना किसे विचारा, ध्याए अठारां भेव ना आइंदा। अञ्जील कुरान मारे नाअरा, हक हकीकत ना कोए वखाइंदा। खाणी बाणी शब्द जैकारा, शब्द भेव कोए ना पाइंदा। सृष्ट सबाई नार विभचारा, हरि कन्त ना कोए हंढाइंदा। चार वरन होए ख्वारा, अठारां बरन ना धीर वखाइंदा। शास्त्र सिमरत आई हारा, साचा मार्ग ना कोए लगाइंदा। तीर्थ तट ना कोए किनारा, अठसठ नैणां नीर वहाइंदा। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती कुरलावे वारो वारा, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। चारों कुण्ट जूठ झूठ पसारा, गुरदर मन्दिर मस्जिद मठ साचा तत्त ना कोए जणाइंदा। दिस ना आए हरि निरँकारा, एकँकारा रूप ना कोए वखाइंदा। दीनां मज़्हबां लग्गा अखाड़ा, ममता मोह ना कोए चुकाइंदा। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ा, त्रैगुण घर घर लम्बू लाइंदा। गुर का शब्द ना करे कोए प्यारा, मन वासना नाच नचाइंदा। मति मतवाली नार कमज़ात करे आपणा कारा, कुदरत कादर ना खेल खिलाइंदा। मुकामे हक ना दिसे सांझा यारा, बेऐब रूप ना कोए वटाइंदा। ऐनलहक ना कोए नाअरा, शरअ शरीअत ना कोए रखाइंदा। मक्का काअबा ना कोए दुआरा, आब हयात ना कोए प्यांअदा। पारब्रह्म कलिजुग अन्तिम एका एक बणया सिक्दारा, शाह

पातशाह आप हो जाइंदा। गुर अवतारां सद्दे दर वारो वारा, चार जुग दिवस चार आप गणाइंदा। आपो आपणी कट्ट के गए वगारा, आदि अन्त हथ्थ ना किसे आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सचखण्ड दुआरे आपे खड़, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। नव नौ चार चौकड़ी करे पार, जुग करता बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी आई हार, ना कोई बेड़ा पार कराईआ। वेले अन्त होए ख्वार, गुर अवतार ना देवे कोए ग्वाहीआ। सम्मत सम्मती पैणी मार, ना सके कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा सच विहार, साचा खेल आप कराईआ। सम्मत सम्मती वेख वखाए, वेखणहारा एकँकार। कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाए, नाता तोड़ सर्ब संसार। जूठी झूठी माटी ख़ाक ख़ाक मिलाए, पाकी पाक श्री भगवान। सतिजुग साची ताकी आप खुल्हाए, आपे होए निगहबान। बण बण साकी जाम प्याए, अमृत रस दीन दयाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सचखण्ड सच्ची धर्मसाल। सचखण्ड तेरी वड्याई, लोकमात हरि वड्यांअदा। कलिजुग अन्त होए रुशनाई, नव नौ आप डगमगाइंदा। पूर्ब लेखा लहिणा रिहा चुकाई, लेखा लेख पूर कराइंदा। निरगुण आए चाँईं चाँईं, सरगुण साचा संग निभाइंदा। वेद व्यासा पकड़े बाहीं, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत सोभा पाइंदा। नानक निरगुण ओट तकाई, निहकलंका वेस वटाइंदा। गोबिन्द मेला सहिज सुभाई, सम्बल नगरी आसण लाइंदा। सच सिँघासण इक्क वड्याई, पुरख अबिनाशन आप कराइंदा। ना कोई बाढी घाड़त लए घड़ाई, घड़न भन्नणहार आपणी खेल आप खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अपणा रूप आप प्रगटाइंदा। आपणा रूप आपे रक्ख, निरगुण निरगुण वेख वखाया। आपणे मन्दिर हो प्रतक्ख, आपणा भेव चुकाया। आपणे भगतां करे पक्ख, जुग जुग करदा आया। लक्ख चुरासी विच्चों लए रक्ख, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जगत विकारा देवे मथ्थ, नाम मधाणा पाया। इक्क कराए पूजा पाठ, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाया। इक्क वखाए तीर्थ ताट, अमृत सरोवर आप नुहाया। इक्क जणाए साचा हाट, चौदां लोक मुख शरमाया। इक्क बंधाए साचा नात, दो जहान ना कोए तुड़ाया। इक्क सुणाए साची गाथ, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाया। इक्क चढ़ाए साचे राथ, लोआं पुरीआं पार वखाया। इक्क उतारे आपणे घाट, सच किनारा इक्क सुहाया। हरिजन तेरी पूरी होई वाट, माणस जन्म लेखे लाया। काया कप्पड़ जाए पाट, जोती जोत मेल मिलाया। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाया। लेखा जाणे आदि जुगादि, ब्रह्म ब्रह्माद आपणा नाद वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अन्त आपणा वेस वटाया। आदि

अन्त हरि का वेस, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। सुत दुलारा दस दस्मेश, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। तख्त निवासी नर नरेश, शाह पातशाह होए सहाईआ। आदि जुगादी रिहा वेख, आपणा नैण इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी धार चलाईआ। नर हरि हरी हर नरायण, आपणी खेल खिलाइंदा। रसना घर घर चार कुण्ट नौ खण्ड पृथ्मी सारे कहिण, नेत्र दरस कोए ना पाइंदा। जन भगतां आप चुकाए लैण देण, पूर्ब लहिणा आप मुकाइंदा। तन बस्त्र पाए नाम गहिण, साचा भूशन आप रखाइंदा। लाड़ी मौत ना खाए डैण, राए धर्म दर दुरकाइंदा। चित्रगुप्त ना आए लेखा लैण, कढ्ढ हिसाब ना कोए वखाइंदा। जिस दा सतिगुर पूरा साक सज्जण सैण, तिस बन्धन ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण आपणा हुक्म वरताइंदा । निरगुण हुक्म सच्ची सरकार, शहिनशाह आप वरताईआ। शाह सुल्तानां कर ख्वार, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। वरनां बरनां मारे मार, जातां पातां करे सफ़ाईआ। ऊँचां नीचां वखाए इक्क दुआर, पुरख अबिनाशी सच्चा माहीआ। एका शब्द नाम जैकार, एका ढोला दए सुणाईआ। एका इष्ट सर्ब संसार, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। एका दृष्ट खोल्हे खोल्हणहार, जिउँ रामा वशिष्ट रंग रंगाईआ। गुरमुख बेड़ा कर जाए पार, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। जन्म जन्म दा दुःख दए निवार, घर साचा सुख उपजाईआ। उज्जल मुख करे करतार, रसना जेहवा मुख सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कूड़ी सफ़ा दए उठाईआ। कलिजुग कूड़ा जाणा उठ, लोकमात रहिण ना पाईआ। दीन दयाल ठाकर गया तुठ्ठ, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। तत्त विकारा मन मति लोभ हँकार कढ्ढे कुट, चिंता चिखा ना कोए जलाईआ। त्रैगुण पाए एका लुट्ट, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। धरत मात दी गोद बहाए जेठा पुत्त, सतिजुग साचे दए वड्याईआ। बीस बीसा सुहाए साची रुत, रुतड़ी आप महिकाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन्न रूप सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले थाउँ थाँईंआ। थान थनंतर हरिजन मेला, हरि सज्जण आप कराइंदा। लेखा जाणे गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द वेख वखाइंदा। आदि जुगादि सज्जण सुहेला, जुग करता विछड़ ना जाइंदा। वसणहारा रंग नवेला, गुरमुख तेरा खेड़ा आप वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। साचा मन्दिर सोभनीक, सोभावन्त आप सुहाईआ। आदि जुगादि लाशरीक, शरअ शरीअत ना कोए वखाईआ। जन भगतां मेटे अन्धेरा तारीक, साचा नूर करे रुशनाईआ। एका धाम वखाए ठीक, काया ठीकर भन्न वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी

 ११२५

जुग तेरी अन्तिम देवे इक्क तरीक, गुर पीर अवतार ल्ए मंगाईआ। वेखणहारा सच प्रीत, जुग जुग लेखा रिहा लिखाईआ। हरिजन तेरी सदा उडीक, धरत धवल नैण उठाईआ। तुध बिन कोए ना करे ठंडा सीत, अमृत नाउँ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे ल्ए फड़, आपणे पल्लू गंढु दिवाईआ। गुरमुख सज्जण हरि हरि फड़या, आत्म ब्रह्म विचार। काया मन्दिर साचे चढ़या, खोल्ह बन्द किवाड़। आपणी विद्या आपे पढ़या, अनहद शब्द वजाए सच्ची धुन्कार। आपणे सरोवर आपे ठरया, निझर झिरना झिरे अपार। आपणी नारी आपे वरया, सुरती शब्द करे प्यार। आपणे घर आपे खड़या, आप सुहाए बंक दुआर। निर्मल दीआ आपे धरया, जोती नूर नूर उजिअर। आपणा पल्लू आपे फड़या, आपे चले नाल नाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरा वेखे घर, काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल। काया अंदर सच धर्मसाला, दर दरवाज़ा ना कोए रखाईआ। दीपक दीआ इक्क उजाला, तेल बाती ना कोए टिकाईआ। आपे वसे वसणहार पुरख अकाला, अकल कल रूप वटाईआ। सरगुण निरगुण बण दलाला, लोकमात मेल मिलाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, जाग्रत जोत करे रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर आपे जाणे आपणा राह सुखाला, साचा मार्ग आपे लाईआ। कलिजुग अन्तिम हो निराला, पंज तत्त काया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। निरगुण रूप हरि निरँकार, जोती जाता खेल खिलाइंदा। निहकलंक लै अवतार, मात पित ना कोए वखाइंदा। जननी जन ना कोए प्यार, पिता गोद ना कोए सुहाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, आप आपणा घाड़न घड़त घड़ाइंदा। सम्बल नगर हो उज्यार, साढे तिन्न हथ्थ बंक वड्यांअदा। साचा डंका नाम जैकार, उच्ची कूक आप अल्हाइंदा। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, हँ ब्रह्म आप उठाइंदा। सो पुरख निरँजण सर्ब जीआं दा सांझा यार, सोइम रूप आप धराइंदा। ओम ओम करे करनेहार, प्रकाश प्रकाश विच टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि शक्ति आदि भवानी करे खेल जोत नूरानी, चतुर्भुज वेस अनेका, करे खेल पारब्रह्म ब्रह्म वेसा, लेखा जाणे विष्न ब्रह्मा शिव गणेशा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे देवे वर, जगत डर ना कोए रखाईआ। हरि का नाउँ साचा घोड़ा, आदि जुगादि रखाइंदा। गुरमुख विरले मात बौहड़ा, दूसर दिस किसे ना आइंदा। जुग जुग मारे आपणा पौड़ा, लक्ख चुरासी ख़ाक रलाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां फिरे दौड़ा, चार कुण्ट दहि दिशा फेरा पाइंदा। वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, घट घट अंदर फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घोड़े आप चढ़ाइंदा। साचे घोड़े साचा आसण, हरि साचा आप सजाईआ। कसे तंग पुरख अबिनाशन, अबिनाशी

करता बेपरवाहीआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशन, आकाश आकाशां वेख वखाईआ। घट घट अंदर खेल तमाशन, खेल खिलारी आप खिलाईआ। जो उपजे सो अन्त विनाशन, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सर्ब गुण तासन, हरिजन साचे घोड़े लए चढ़ाईआ। साचे घोड़े सच पलाणा, सतिगुर साचा आपे पाईआ। गुरमुख चढ़े सुघड़ सुचज्जा राणा, शाह पातशाह किसे हथ्थ ना आईआ। चारों कुंट फिरे बेमुहाणा, डोरी हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। अठ्ठे पहर प्रेम प्रीती मंगे दाना, तृष्ना भुक्ख ना कोए रखाईआ। एका मन्ने साचा भाणा, सद चले हरि रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घोड़ा इक्क समझाईआ। साचा घोड़ा सच महल्ला, हरि साचा आप रखाइंदा। आदि जुगादी चढ़े इक्क इकल्ला, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाइंदा। नाम निधाना फड़े भल्ला, दो जहानां पार कराइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, सोलां कलीआं आसण सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घोड़ा आप सजाइंदा। साचे घोड़े पाए ज़ीन, ज़ीनत आपणे हथ्थ रखाईआ। करे खेल साहिब प्रबीन, बेअन्त वड वड्याईआ। फेरा पाए लोक तीन, चौदां लोक चरनां हेठ दबाईआ। आदि जुगादि ना होए ग़मगीन, ग़फ्लत होर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घोड़ा रिहा दौड़ाईआ। साचा घोड़ा एका
घर, हरि साचा आप दौड़ाइंदा। दूजे पौड़े जाए चढ़, दोए दोए लेखा आप मुकाइंदा। तीजे दर चुक्के डर, भय भउ ना कोए जणाइंदा। चौथे घर जाए वड़, गुरमुख साचे मेल मिलाइंदा। सो गुरमुख उप्पर जाए चढ़, जिस सतिगुर आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घोड़ा आप उपाइंदा। साचा घोड़ा शब्दी धार, पारब्रह्म उपजाया। सर्ब जीआं दा सांझा यार, घर घर वेख वखाया। एका ब्रह्म दए आधार, साचा धर्मी धर्म कमाया। ज़ात पात ना कोए विचार, दीन मज़्ब विच ना आया। चारे कूटां पावे सार, चारे रासां मुख भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथे जुग साचा घोड़ा इक्क उपजाया। साचा घोड़ा अश्व शाह सुल्तान, हरि साचे सच उपजाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे बीआबान, सुंञ मसाण फेरा पाईआ। घर घर अंदर युद्ध घमसान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। अठ्ठे पहर नाच शैतान, शरअ शरीअत दए दुहाईआ। हरि का घोड़ा इक्क बलवान, महांबली लए उपजाईआ। जिस जन सवारी बख्शे साचा दान, तिस चरन रकाब टिकाईआ। लेखा चुकाए दो जहान, दोहां लेखा आप मुकाईआ। उणंजा पवण नैण शरमान, हरि का घोड़ा नज़र ना आईआ। गुरमुख विरला चढ़े नौजवान, सूरबीर आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घोड़ा इक्क वखाईआ। साचा घोड़ा नेत्र पेख, गुरसिख नैण बिगसाया।

पारब्रह्म प्रभ रिहा वेख, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहया। किसे हथ्थ ना आए औलीए पीर शेख़, मुल्ला मुसायक कुतब ग़ौस रहे राह तकाया। नेत्र चुक्क चुक्क राज राजान रहे वेख, दरसन नैण किसे ना पाया। गोबिन्द सूरा दाता दानी दस दस्मेश, साचा घोड़ा इक्क सजाया। गुरमुखां अग्गे फड़ लगामों करे पेश, जो बैठा ओट तकाया। उप्पर चाढ़ लै जाए आपणे देस, दूजा घर ना कोए वखाया। साचा अश्व रहे हमेश, ना मरे ना जाया। तिस अग्गे ना चले किसे दी कोई पेश, सभ बैठे सीस झुकाया। नौ खण्ड पृथ्मी करे आदेश, लक्ख चुरासी नेत्र नैण शरमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घोड़ा आपणे हथ्थ रखाया। हरि घोड़ा नाम बलवाना, बल बावन आप रखाईआ। मारे सच्चा तीर निशाना, वार एका वार चलाईआ। लहिणा चुकाए दो जहानां, मूल कोए नज़र ना आईआ। लक्ख चुरासी बन्ने गाना मौली तन्द नाल उठाईआ। चार यारी करे ध्याना, मुहम्मद रिहा राह तकाईआ। अल्ला राणी नार रकाना, मींढी सीस रही गुंदाईआ। परवरदिगार आउणा नौजवाना, बेऐब फेरा पाईआ। मेरा काअबा करे परवाना, आपणा कुग दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा अश्व आप मंगाईआ। साचे अश्व अन्त त्यारी, हरि साचा आप कराइंदा। आपे चढ़े शाह सवारी, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। कलिजुग अन्तिम मुहम्मद ख़ाहश विआहे नार कुँवारी, अल्ला राणी आप प्रनाइंदा। मेल मिलावा हाणीआं हाणी, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौदां तबकां एका वार पन्ध मुकाइंदा। चौदां तबकां मुक्के पन्ध, साचा घोड़ा आप दौड़ाईआ। राह खैहड़ा ना वेखे कोई अन्ध, धूँएँधार चरन टिकाईआ। धक्का लाए सूरज चन्द, एका ठोकर दए वखाईआ। धरनी तेरी उलटी करे कंड, एका वार लए अंगड़ाईआ। नाता तोड़े आप ब्रह्मण्ड, जेरज अंड रंड वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पन्ध आप मुकाईआ। पन्ध मुकाए शाहसवारा, अश्व आप दौड़ाइंदा। मुर्शद मुरीद कर प्यारा, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। कायनात वेखे विगसे पावे सारा, उल्फ़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। रहिमत रहीम रहिमान आपे जाणे आपणा पार किनारा, शौह धारा आप मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, साचे घोड़े आप चढ़ाइंदा। जिस जन घोड़ चढ़न दा चाअ, साची सिख्या सिख समझाइंदा। एका पल्लू फड़े बेपरवाह, दूसर ओट ना कोए रखाइंदा। एका मन्त्र नाम ध्या, चरन ध्यान इक्क लगाइंदा। एका वेखे सच मलाह, खेवट खेटा बेड़ा इक्क चलाइंदा। एका पकड़नहारा बांह, सच सहारा इक्क वखाइंदा। एका मंगे सरन सरना, सरनगत इक्क हो जाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेखे थाँ, चार कुण्ट फोल फुलाइंदा। निहकलंक जामा पा, रूप अनूप आप धराइंदा। साचे घोड़े तंग कसा, आपणे नाल रलाइंदा। लोकमात

११२८

फेरा पा, सम्बल साची वण्ड वंडाइंदा। साचा कीला दिता गढ़ा, चोटी जड़ ना किसे वखाइंदा। आपणा घोड़ा नाल बन्ना, आपणी ख़ुशी मनाइंदा। वारो वार गुरसिखां घर घर लए जगा, लक्ख चुरासी गूढ़ी नींद सुआइंदा। जो जन हरिसंगत जाणे भैण भ्रा, तिस आपणा घोड़ा फेर वखाइंदा। जो गुरसिख गुरसिख मिलण दा रक्खे चा, साचा नाता जोड़ जुड़ाइंदा। तिस गुरसिख दी गुर सतिगुर सेवा लए आप कमा, सेवक सेवदार आप हो जाइंदा। फड़ फड़ बाहों उप्पर लए चढ़ा, सच सिँघासण आप बहाइंदा। सचखण्ड दुआर खुल्ला, आपणा मन्दिर आप वखाइंदा। जोती जोत मेल मिला, आवण जावण पन्ध मुकाइंदा। साचा धर्मी धर्म कमा, निहकर्मी कर्म वखाइंदा। गुरसिख मरे प्रभ मिलण दा चा, जगत खण्डा वार ना कोए कराइंदा। सतिगुर पूरा गुरसिख सीस आपणी झोली लए पा, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। प्रेम रत आपणा आप लए रंगा, रंग रंगीला वेख वखाइंदा। गुरमुख तेरा सीस जगदीस आपणे मन्दिर लए टिका, साचा मन्दिर सोभा पाइंदा। जिथे दूजा कोई जाए ना, कबीर जुलाहा कूक सुणाइंदा। सभ तों उप्पर वसे मेरा शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, साचा हुक्म सुणाइंदा। इक्क वार जो चढ़या घोड़ी, दूसर वार मात ना आईआ। इक्क वार जो बणया जोड़ी, सरगुण निरगुण विच समाईआ। इक्क वार जिन्न मेटी औड़ी, तृष्ना प्यास ना फेर लगाईआ। लक्ख चुरासी करदी बौहड़ी बौहड़ी, डोरी हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। गुरमुख विरला चढ़े सतिगुर घोड़ी, जीव जंत मौत घोड़ी रिहा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बिध अवरी ठौरी, ठोकर एका नाम लगाईआ।

★ १५ भाद्रों २०१८ बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह लुधियाणा ★

निरगुण रूप हरि निरँकारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। घट घट अंदर कर पसारा, लक्ख चुरासी सोभा पाईआ। दीआ बाती कर उज्यारा, गृह गृह जोत नूर रुशनाईआ। शब्द नाद सच्ची धुन्कारा, साचे मन्दिर आप वजाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, आदि पुरख वडी वड्याईआ। नव खण्ड पावे सारा, सति सति करे कुड़माईआ। सति सति तेरा पार किनारा, ब्रह्म मति दए प्रगटाईआ। एका तत्त गुण विचारा, अवगुण लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणा नाउँ प्रगटाईआ। हरि का नाउँ सूरबीर, आदि जुगादि समाया। सतिगुर पूरा शब्द निशाना फड़े तीर, दो जहानां आप चलाया। लोआं पुरीआं जाए चीर, ब्रह्मण्ड खण्ड पार वखाया। अठसठ वरोले आपे नीर, समुंद सागर डेरा ढाहया। लहिणा देणा चुकाए शाह हकीर, शाह पातशाह पर्दा लाहया। त्रैगुण कट्टे जगत ज़ंजीर, जोती जोत

११२८

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा नाउँ वड्याआ। हरि का नाउँ वड वड्याई, हरि वड्डा वड्ड वड्यांअदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाई, ब्रह्म नाद इक्क रखाइंदा। जगत जुगत करे कुड़माई, आपणा बन्धन पाइंदा। वेखणहारा थाउँ थाईं, गगन पातालां वेख वखाइंदा। निरगुण करे खेल चाँईं चाँईं, वेला वक्त आप सुहाइंदा। आदि अन्त करे सच न्याईं, साचे तख्त सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाउँ निरँकारा आप अख्वाइंदा। नाउँ निरँकार श्री भगवान, आपणा आप प्रगटाईआ। तख्त निवासी सच निशान, सच दुआरे आप झुलाईआ। भूपत भूप बण राजान, हुक्मी हुक्म आप वरताईआ। धुर फ़रमाना देवे जीआ दान, जीवण जुगत जगत जणाईआ। आदि जुगादि हो मेहरवान, निरवैर पुरख सेव कमाईआ। लक्ख चुरासी बण बण काहन, कोटन कोटि सख़ीआं लए प्रनाईआ। एका मन्दिर सच मकान, सच सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप धराईआ। आपणा नाउँ कर प्रधान, सच प्रधानगी इक्क वखाइंदा। जुग जुग खेले खेल महान, जुग करता वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी देवणहारा दान, दाता दानी झोली पाइंदा। गुर गुर मेला विच जहान, जाग्रत जोत डगमगाइंदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, ब्रह्म वेता आप सिखाइंदा। पारब्रह्म चतुर सुघड़ सुजान, मन मति बुध ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप धराइंदा। आपणा नाउँ आपे धर, धरनी धरत धवल वड्याईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख वेख वखाईआ। आपणे मन्दिर आपे चढ़, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, आपे करे सच पढ़ाईआ। आपणा फड़या आपे लड़, लक्ख चुरासी पल्लू रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ इक्क सालाहीआ। हरि का नाउँ सिफ्त सालाह, आदि जुगादि समाया। जुग जुग बणे मात मलाह, दो जहानां बेड़ा आप उठाया। लेखा जाणे थल अस्गाह, आकाश आकाशां फेरा पाया। आपणा मार्ग दए वखा, साचा पान्धी पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप प्रगटाया। आपणा नाउँ आप प्रगटा, आपे बूझ बुझाईआ। नाउँ निरँकारा आप रखा, नईया नौका नाम चलाईआ। निष्अक्खर आप पढ़ा, जगत विद्या करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आपे रिहा गाईआ। आपणा नाउँ गाए जस, जस वेद पुराण किसे ना गाया। आपणे मन्दिर आपे बहे हस्स, आपणी लील्ला आप रचाया। आपणे अन्तर आपे जाए वस, आप आपणा खेल खिलाया। आपे जाणे आपणा रस, रस रसीआ साचा रस आप चुआया। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे पन्थ लगाया। आदि जुगादि नस्स नस्स, जुग जुग पान्धी पन्ध चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ

आप उपाया। साचा नाउँ उपाए आप, आपणी गति मित आप जणाइंदा। आपे माई आपे बाप, पिता पूत आप अख्वाइंदा। आपा आपणे विच्चों काढ, आप आपणी गोद सुहाइंदा। आप लडाए साचा लाड, दर घर साचा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ रक्ख आदि, शब्द वजाए इक्क ब्रह्माद जुगादि आपणी खेल वखाइंदा। आपणा नाउँ रक्ख निरँकार, आपणी खेल खिलाईआ। आदि पुरख हो त्यार, त्रै त्रै मेला सहिज सुभाईआ। लक्ख चुरासी भर भण्डार, काया गोलक वेख वखाईआ। जाग्रत जोत नूर उज्यार, गृह मन्दिर दीवा बाती आप टिकाईआ। आत्म परमात्म पावे सार, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। ईश जीव दए आधार, जगदीश दया कमाईआ। जुगादि खेल करे करतार, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। निरगुण निरवैर लै अवतार, मूर्त अकाल डगमगाईआ। अजूनी रहत होया ख़बरदार, रूप रंग ना कोए वखाईआ। निरभउ भय ना रक्खे विच संसार, आपणा भय सर्ब जणाईआ। लहिणा देणा कर्ज़ दए उतार, लक्ख चुरासी हिसाब रिहा मुकाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, सत्त समुंदर रोवे मस बनास्पत रही कुरलाईआ। करे कराए करनेहार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। अमाम अमामां सिर सच्चा शाह सिक्दार, शाह नवाब वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आपे रिहा धराईआ। धरया नाउँ निहकलंक, निरवैर पुरख अख्वाया। जुगादि वजाए साचा
११३१ डंक, एका डंका नाम रखाया। लहिणा देणा चुकाए राउ रंक, राज राजान भुल कोए ना जाया। लक्ख चुरासी वेखे काया ११३१
बंक, घट घट आपणा खेल कराया। आवे जावे वार अनक, जुग करता वेस धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप समझाया। निहकलंका हरि का नाउँ, रूप रंग ना कोए रखाईआ। करे खेल अगम्म अथाहो, बेपरवाह वडी वड्याईआ। जुग चौकड़ी करे न्याउँ, सच अदालत आप कमाईआ। गुर अवतारां सिर रक्खे ठंडी छाउँ, समरथ आपणा हथ्थ टिकाईआ। लोकमात सेव लगाए फड़ फड़ बांहों, धुर फ़रमाना हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ इक्क वखाईआ। आपणा नाउँ निहकलंक निरँकार निरवैर रक्ख, निर्धन सरधन वेख वखाइंदा। साचे घर हो प्रतक्ख, सम्बल सोभा पाइंदा। पतिपरमेश्वर आपे रक्खे आपणी पत, पति पतिवन्ता वेस वटाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर किसे कोलों ना लए मति, साची सिख्या आप समझाइंदा। लक्ख चुरासी ब्रह्म पारब्रह्म बंधाए नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। हड्ड मास नाड़ी वेखे रत, रती रत खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आपे गाइंदा। आपणा नाउँ गाए ढोला, लिखण पढ़न विच ना आईआ। वेद शास्त्र सिमरत पुराण उच्ची कूकण करन बोला, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी तोल किसे ना तोला, अतोल अतुल तोलया ना जाईआ। गुर

अवतारां देवे चोला, पंज तत्त काया करे कुड़माईआ। लक्ख चुरासी कोलों रक्खे ओहला, घर घर विच मुख छुपाईआ। आपणी धरनी आपे मौला, आपणी रुत्त आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप लए प्रगटाईआ। आप प्रगटाए साचा नाउँ, आदि जुगादि भेव खुल्हाया। आप वसाए हर घट थाउँ, घट घट सोभा पाया। हरिजन पकड़े आपे बाहों, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाया। हरि का नउँ साचा रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। आत्म सेजा वेख पलँघ, परम पुरख प्रभ आसण लाईआ। गृह मन्दिर वज्जे मृदंग, निज आत्म ढोला गाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, घर साचा इक्क सुहाईआ। जूठी झूठी ढाए कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। एका नूर चढ़ाए चन्द, रवि ससि मुख शरमाईआ। दिवस रैण परमानंद, घड़ी पल ना वण्ड वंडाईआ। पंचम पंच करे खण्ड खण्ड, एका खण्डा नाम चमकाईआ। सुरत दुहागण ना होए रंड, कन्त सुहागी लए मिलाईआ। आपे पाए आपणा बन्दी बन्द, बन्धन एका हथ्थ रखाईआ। करवट लए बदले कंड, आपणा पर्दा दए चुकाईआ। लहिणा देणा चुकाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आपणी झोली पाईआ। पन्ध मुकाए कोटन कोटि ब्रह्मण्ड, दूर दुराडा नेरन नेर दरस दिखाईआ।
११३२ आदि जुगादि आपणा नाउँ सुणाए सुहागी छन्द, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। हँ ब्रह्म ना देवे दंड, एका डण्डावत रिहा ११३२
सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। रक्खया नाउँ पुरख समरथ, एका नाद शब्द जैकार। लिख लिख लेख ना सके कोई दस्स, जगत विद्या ना कोई विचार। आपे जाणे आपणी महिमा अकथ, कथनी कथ ना पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप निरँकार। निरँकार खेल खिलाइंदा, जुगा जुगन्तर कार। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराइंदा, कलिजुग अन्तिम आई वार। गुर अवतार मुख सालांहयदा, रसना जेहवा कर पुकार। निहकलंक वेस वटाइंदा, प्रगट होए अगम्म अपार। आपणी करनी आप कराइंदा, करे कराए करनेहार। दूसर ओट ना कोए रखाइंदा, शाह पातशाह सच्ची सरकार। चार जुग दी रीती वेख वखाइंदा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पावणहारा सार। विष्न ब्रह्मा शिव लेखा आप मुकाइंदा, लेखा लेखे विच डार। त्रैगुण तेरी अग्ग बुझाइंदा, अमृत बख्शे ठंडा ठार। पंज तत्त तेरा गढ़ तुड़ाइंदा, नाम खण्डा फड़ कटार। कलिजुग कूड़ा कूड़ कुड़यारा मोह चुकाइंदा, नाम सति कर जैकार। चार वरनां पन्ध मुकाइंदा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए आधार। अठारां बरन आप खपाइंदा, एका हुक्मी हुक्म वरतार। उच्चां नीचां एका रंग वखाइंदा, शाह सुल्तानां मारे मार। वेद शास्त्र सिमरत पुराण अञ्जील कुराना पन्ध मुकाइंदा, खाणी बाणी खेल न्यार। अठसठ तीर्थ डेरा ढाइंदा, गंगा गोदावरी जमन सुरस्ती होए

हैरान। दो जहानां वेख वखाइंदा, वेखणहार श्री भगवान। आपणा नाउँ आप धराइंदा, निहकलंक बली बलवान। सति सतिवादी साचा राह चलाइंदा, सति पुरख निरँजण झुलाए सच निशान। बोध अगाधी भेव खुल्हाइंदा, आपे होया हुक्मरान। हुक्मी हुक्म सर्ब भवाइंदा, रवि ससि मंडल मण्डप ज़िमीं अस्मान मन्नण आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अबिनाशी एका हरि, निरगुण रूप होए प्रधान। निरगुण रूप शाहो भूप, भूपत आपणे नाम दए वड्याईआ। लेखा जाणे चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाईआ। कलिजुग नाता तोड़े जूठ झूठ, सतिजुग सच सुच्च करे कुड़माईआ। दीन दयाल ठाकर अबिनाशी गया तुट्ठ, दीनन आपणी दया कमाईआ। जगत दुकान जाए लुट्ट, ठग्ग चोर यार हराम ख़ोर मुख भवाईआ। सुत दुलारा इक्क उपजाए सुत्त, सतिजुग साचा नाउँ धराईआ। आप सुहाए साची रुत, गुरमख साचे फुल फुलवाड़ी मात लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाउँ आप वड्याईआ। नाउँ निरँकार हरि गोबिन्द, गोबिन्द मेल मिलाया। पुरख अबिनाशी मेटे चिन्द, चिंता ग़म ना कोए रखाया। अमृत धारा सागर सिन्ध, गृह सरोवर नीर वहाया। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर बेपरवाहया। हरिजन उपजाए आपणी बिन्द, सुत नादी संग समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ एका डंका जगत वजाया।

११३३

सो पुरख निरँजण आदि अन्त, निर्धन सरधन धार चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण जुगा जुगन्त, जुग करता वेस वटाइंदा। एकँकारा महिमा अगणत, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। आदि निरँजण सोभावन्त, साचे मन्दिर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता लेखा जाणे साचे सन्त, सन्त सुहेले मेल मिलाइंदा। श्री भगवान वेख वखाए साचे भगत, भगत भगती पर्दा उठाइंदा। पारब्रह्म लेखा जाणे जीव जंत, आत्म ब्रह्म सर्ब समाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग सद समाइंदा। आदि जुगादि खेल अपारा, जुग करता वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लोकमात वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी पावे सारा, घट घट बैठा आसण लाईआ। भगत भगवन्त दए सहारा, आत्म पर्दा इक्क उठाईआ। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारा, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, गृह मन्दिर आप वजाईआ। अमृत सरोवर ठंडी ठारा, निझर झिरना आप झिराईआ। देवे दरस अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। हरिजन मेले आपणे दुआरा, सच दुआरा आप खुल्हाईआ। पंचम मेटे झूठी धाड़ा, पंचम नाद शब्द धुन शनवाईआ। पंचम करे जै जैकारा, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल श्री भगवान, जुग करता आप कराइंदा। भगतां देवे भगती दान, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। सन्तन वखाए सच निशान, दर घर साचे आप झुलाइंदा।

गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञान, आत्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। गुरसिख बणाए चतुर सुघड़ सुजान, बुध बिबेक आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। साची बूझ हरि करतार, गुरमुख विरले आप जणाईआ। जुगा जुगन्तर खेल अपार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जोती जोत जोत रुशनाईआ। भगतन वखाए सच दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। दिवस रैण एका धार, आठ पहर रंग रंगाईआ। डूँग्घी भँवरी पावे सार, काया कवरी फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला हरि दुआर, हरि मन्दिर आप सुहाइंदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, कर किरपा पर्दा लांहयदा। शब्दी शब्द करे सच प्यार, पीआ प्रीतम प्रेम कमाइंदा। सुरती सुरत दए आधार, सुरत सुआणी आप उठाइंदा। मेल मिलावा साचे राम, रमइया आपणा रूप वटाइंदा। साची नईया कर त्यार, संसार सागर आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि वेख वखाइंदा। हरिजन हरि साचा रंग, सति सतिवादी आप चढ़ाईआ। आत्म सेजा वेख पलँघ, पुरख पुरखोतम आसण लाईआ। दिवस रैण वज्जे मृदंग, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अठ्ठे पहर धार गंग, अमृत जल नीर वखाईआ। सच दुआरा आपे लँघ, स्वच्छ सरूप रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन एका तत्त बुझाईआ।

एका तत्त शब्द ज्ञान, गुर शब्दी शब्द जणाइंदा। काया मन्दिर सच मकान, सतिगुर पूरा सोभा पाइंदा। दीपक जोत जगे महान, बिन तेल बाती डगमगाइंदा। दिवस रैण देवे फ़रमान, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। हरिजन सच्चा जागया, जिस आत्म ब्रह्म विचार। माणस जन्म वड वड भागया, पाया परम पुरख करतार। घर दीपक जोत जगे चिराग़िआ, मेट मिटाए अन्ध अन्धयार। दुरमति मैल धोवे दाग़िआ, कूड़ी क्रिया दए निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन हरि उभारीअन, आप आपणी किरपा धार। देवे दरस अगम्म अपारीअन, कृपानिध गुण विचार। माणस जन्म पैज संवारीअन, आवण जावण उतरे पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे दरस दीदार। दरस दीदार नेत्र नैण, निज नेत्र आप खुल्हाईआ। रसना जेहवा ना सके कहिण, गुण अवगुण ना कोए वड्याईआ। हरिजन हरि धाम इक्टठे रहिण, सच दुआरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप चुकाए लहण देण, पूर्ब लेखा झोली पाईआ। पूर्ब लेखा पूर्ब लहिणा, कर्म धर्म मेल मिलाइंदा। सतिगुर दरस नेत्र नैणा, रूप अनूप आप जणाइंदा। सदा सद सच भाणा सहिणा, सद भाणा इक्क वखाइंदा। तन बस्त्र पाए एका गहिणा, हरि का नाउँ शंगार कराइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे वेख वखाइंदा। दर साचा सोभावन्त, घट मन्दिर वज्जे वधाईआ। प्रभ पाया पूरन भगवन्त, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। गढ़ तुट्टा हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकाईआ। हरिजन मेला साची संगत, संगत संग हरि समाईआ। जन्म जन्म जन्म बणाए बणत, जन्म मरन गेड़ मुकाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग करता वेख वखाईआ। सर्ब जीआं दा एका कन्त, लक्ख चुरासी नार रिहा हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला साचे राम, राम रमईआ मेल मिलाइंदा। अन्तर आत्म प्याए साचा जाम, नाम प्याला हथ्थ रखाइंदा। काया खेड़े वसे ग्राम, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। करे प्रकाश कोटन भान, जोत नूर डगमगाइंदा। एका राग सुणाए कान, अनहद नादी नाद वजाइंदा। सुरती शब्द करे परवान, शब्दी आपणा बन्धन पाइंदा। एका घर वसाए सीता राम, राम सीता आप हो जाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पूरन करे काम, करता आपणी करनी आप कराइंदा। हरिजन मेटे अन्धेरी शाम, साचा चन्द आप चढ़ाइंदा। जगत तृष्ना मिटे ताम, हरख सोग ना कोए वखाइंदा। जिस जन देवे आपणा नाम, नाउँ निरँकारा झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे देवे वर, राम नाम इक्क वरताइंदा। राम नाम वस्त अमोल, आदि जुगादि रखाईआ। त्रैगुण कंडे ना सके कोए तोल, चौदां
११३५ लोक देण दुहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड होए अनभोल, विष्न ब्रह्मा शिव भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी ११३५
किरपा कर, आपणे नाउँ रक्खे वड्याईआ। हरि का नाउँ अगम्म अपार, लिखण पढ़न विच ना आया। सतिगुर गुर पावे सार, आपणा पर्दा आप उठाया। भगतन देवे विच संसार, काया अंदर अंदर आप टिकाया। सन्तन वखाए खोल्ह किवाड़, बन्द ताकी पर्दा लाहया। गुरमुखां बणे आप वरतार, घर घर साची सेव कमाया। गुरसिखां देवे इक्क आधार, नेत्र लोचण नैण दरस कराया। हरिजन हरि जू हरि मन्दिर दए वखाल, घर घर विच होए सहाया। जुग करता जग करे प्रितपाल, जन आपणे अंग लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाउँ वजाए मृदंग, ब्रह्म बहमादि आप सुणाया।

★ १५ भाद्रों २०१८ बिक्रमी बाबू सिंघ दे गृह डेलों ज़िला लुधियाणा ★

आदि पुरख हरि समरथ, आदि जुगादि खेल खिलाइंदा। जुग जुग चलाए रथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। महिमा जणाए अकथना अकथ, अनाद अनादी नाद सुणाइंदा। दो जहानां देवे साची वथ्थ, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जगत जुग रक्खे पत्त, पतिवन्ता दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप कराइंदा।

आदि जुगादि खेल अवल्ला, जुग करता आप कराईआ। वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। सच संदेस एका घल्ला, जुगा जुगन्तर नाम सालाहीआ। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, आप आपणा बन्धन पाईआ। जोती शब्दी आपे रल्ला, निरवैर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आप खिलाईआ। आदि पुरख एकँकारा, अकल्ल कला अख्वाइंदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यारा, आप आपणी बणत बणाइंदा। हरि पुरख निरँजण कर पसारा, आप आपणा रंग रंगाइंदा। एकँकारा वेखणहारा, सच दुआरा सोभा पाइंदा। आदि निरँजण जोती धारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता शाह सिक्दारा, शहिनशाह आपणा नाउँ रखाइंदा। श्री भगवान हुक्मी हुक्म करे वरतारा, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। पारब्रह्म निउँ निउँ करे निमस्कारा, आप आपणा सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी करता पुरख, करनहार आप कराइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता दुःख ना कोए वखाइंदा। आपणी करे आपे परख, आप आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप चलाइंदा। साची धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। अलख अगम्म अगोचर हो त्यार, निरवैर खेल खिलाईआ। अनुभव प्रकाश अगम्म अपार, अजूनी रहत आप प्रगटाईआ। सच महल्ला कर त्यार, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। घाड़त घड़े बण ठठयार, थिर घर साचा लए प्रगटाईआ। करे खेल पुरख नार, कन्त भतार बेपरवाहीआ। आपणी वस्त दए आधार, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे सोभा पाईआ। दर घर साचा सोभावन्त, सो पुरख निरजंण आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण एका कन्त, नर नरायण खेल खिलाइंदा। एकँकार बणाए बणत, घड़नहार आप हो जाइंदा। आदि निरँजण महिमा अगणत, जोत उजाला डगमगाइंदा। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणा मंत, नाउँ निरँकार आप अख्वाइंदा। श्री भगवान साचा धाम सुहंत, सच सिँघासण आसण लाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बेअन्त, बेअन्त खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव आपे चुक्क, आपणा खेल खिलाईआ। निरगुण अंदर निरगुण बैठा लुक, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, बेअन्त वड वड्याईआ। आपे जाणे आपणी रुत, रुतड़ी रुत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाईआ। साचा रंग हरि करतार, आदि पुरख रंगाइंदा। आपणी इच्छया भर भण्डार, सच वस्त आप वरताइंदा। थिर घर साचे हो उज्यार, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। तख्त निवासी बण सिक्दार, शाहो भूप वेस वटाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतार,

११३६

धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। आपे होए सुणनहार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। आदि जुगादी ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वड्यांअदा। सचखण्ड दुआरा हरि वड़या, आपणी दया कमाईआ। साचा तख्त तख्त सुहा, तख्त निवासी आसण लाईआ। आपणी बणत लए बणा, निरगुण घाड़त घड़त घड़ाईआ। सो पुरख निरँजण जोत जगा, जोती जाता आप डगमगाईआ। एकँकारा मेल मिला, आदि निरँजण सोभा पाईआ। अबिनाशी करता रूप वटा, श्री भगवान दए वड्याईआ। पारब्रह्म बेअन्त आपणी करनी आप कमा, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। निरगुण शाहो भूप बण सुल्तान, दो जहानां वाली आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे बैठा चढ़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरे हरि जू चढ़या, निरगुण आपणा रूप रखाइंदा। आपणा घाड़ण आपे घड़या, वेस अनेक वटाइंदा। आपणा बल आपे धरया, बल धारी आप हो जाइंदा। आपे पुरख नारी नरया, नर नरायण वेस वटाइंदा। आपणा मेल आपे करया, नारी कन्त खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण सोभावन्त, करे खेल श्री भगवन्त, सचखण्ड दुआर आप वड्यांअदा। सचखण्ड दुआरे साचा भूप, निरगुण सोभा पाईआ। रेख रंग ना दिसे रूप, महिमा गणत अगणत गणाईआ। वसणहारा चारे कूट,
११३७ दहि दिशा पर्दा आपे लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप वधाईआ। शाह पातशाह ११३७
हरि बण राजान, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। आपणा बल आप रखान, आपणी करनी आप कमाइंदा। आपे बण के हुक्मरान, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। बण हुक्मरान शाह पातशाह, आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादि आपणे हथ्थ रखा, आपणा मता आप पकाईआ। आपे देवणहार बणे सलाह, सच सलाह इक्क समझाईआ। आपणा मार्ग आपे देवे ला, साचा मार्ग इक्क रखाईआ। आपणी बणत लए बणा, बेअन्त वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, हरि आपणा आप जणाइंदा। भूपत भूप बण बण राणा, सीस जगदीस ताज सुहाइंदा। खेले खेल खेल महाना, आप आपणी खेल कराइंदा। निरगुण निरगुण मेल मिलाना, निरगुण नारी कन्त रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। निरगुण कन्त निरगुण नारी, निरगुण साची सेज हंढाईआ। निरगुण अंदर निरगुण बाहरी, निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहरी रूप धराईआ। निरगुण दाई दाया सेवक सेवा करे अपारी, साची सेवा इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणे

हथ्थ रक्ख वड्याई, हरि साचा खेल खिलाइंदा। सेवा करे दाया दाई, आदि जुगादि वेख वखाइंदा। साचे घर वज्जे वधाई, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। निरगुण बणया पिता माई, सुत दुलारा बाल जाइंदा। शब्द शब्दी नाउँ रखाई, साचे मन्दिर आप टिकाइंदा। आपे वेखे चाँईं चाँईं, नेत्र नैण ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुत आप वड्यांअदा। सुत दुलारा आपे जन, जन जननी आप अख्वाइंदा। आपे बेड़ा देवे बन्न्, खेवट खेटा रूप वटाइंदा। आप वसाए बिन छप्परी छन्न, दर घर साचे आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारा इक्क वड्यांअदा। सुत दुलारा शब्दी धार, जोती जोत प्रगटाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यार, थिर घर साचे दए वड्याईआ। तेरा रूप अगम्म अपार, आदि जुगादि रखाईआ। तेरी सेवा लाए आप निरँकार, साची सेवा इक्क समझाईआ। अतोट अतुट भरे भण्डार, तोट ना आवे राईआ। निर्मल जोत दए आधार, जोती जाता होए सहाईआ। साचा कोट दए उसार, बंक दुआरा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे लाल दए समझाईआ। सुत दुलारा छोटा लाल, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं ठाकर साहिब दीन दयाल, हउँ दीनन मंग मंगाइंदा। तेरी प्रीती निभे नाल, सच प्रीती इक्क वखाइंदा। आदि जुगादि मेरा होए ना ज़वाल, तेरा सवाल आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ भिक्खक मंग मंगाइंदा। देवे मंग श्री भगवान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सचखण्ड दुआरे हो प्रधान, थिर घर देवे सच सलाहीआ। छोटा बाला बाल निधान, एका गुण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुण आप रखाईआ। साचा गुण हथ्थ करतार, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आप सुणाए एका वार, दूजी वार ना कोए पढ़ाईआ। आदि लगाया सच दरबार, मध्ध आपणी खेल खिलाईआ। तेरा करां वड पसार, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी गोद सुहाईआ। त्रैगुण देवां साची धार, जगत जंजाला रूप वटाईआ। पंचम जोड़ जोड़ां अपर अपार, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी रचन रचाईआ। रवि ससि कर उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। मंडल मण्डप वेख अखाड़, तेरी सोभा दए गणाईआ। गगन पातालां कर त्यार, ज़िमीं अस्मानां रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे हथ्थ दए वड्याईआ। सुणया संदेसा हरि का, सुत दुलारा सीस झुकाइंदा। तेरा नाउँ एका पढ़दा, दूजा राह ना कोए वखाइंदा। तूं साहिब मेरा घाड़न घड़दा, हउँ सेवक सेव कमाइंदा। आदि जुगादी तेरे दर दा बरदा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। ना जन्मे ना कदे मरदा, रूप अनूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ साची मंग मंगाइंदा।

देणा वर सच दातार, हउँ एका मंग मंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा सहार, त्रैगुण मेला मेल मिलाईआ। पंज तत्त तत्त आकार, घाड़न घाड़त लए घड़ाईआ। लक्ख चुरासी कर पसार, नव नव आपणा बन्धन पाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म दए आधार, ईश जीव खेल खिलाईआ। जाग्रत जोत कर उज्यार, जोत निरँजण डगमगाईआ। तेरा नाउँ शब्द धुन्कार, घट घट अनहद नाद सुणाईआ। वंडें वण्ड अपर अपार, तेरी वण्ड मोहे नज़र ना आईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा आधार, जेरज अंड खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बैठा झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, एका हुक्म सुणाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचा, मंडल मण्डप आप उपाइंदा। रवि ससि आप चमका, जोती जाता वेख वखाइंदा। लक्ख चुरासी रचन रचा, घट घट आपणा आसण लाइंदा। एका अक्खर दए प्रगटा, निश्अक्खर आप पढ़ाइंदा। रूप अनूप आप धरा, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। जुग चौकड़ी वण्ड वण्डा, चार चार बन्धन पाइंदा। चारे वेद आप समझा, ब्रह्म वेता भेव खुल्हाइंदा। चारे जुग आप उठा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग खेल खिलाइंदा। चारे बाणी आपे गा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे राग अलाइंदा। चारे वरनां रंग चढ़ा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वेस वटाइंदा। चार यारी डंक वजा, चारों कुण्ट फोल फुलाइंदा। नौ नौ गेड़ा आप दिवा, नौ दर आपे भेव छुपाइंदा। चौथे पद डेरा ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचना आपणे हथ्थ रखाइंदा। सुणया धुर फ़रमान, सुत शब्दी सीस झुकाया। हउँ बालक बाल नादान, तेरा अन्त कदे ना पाया। आदि जुगादी तेरा निशान, हउँ सेवक बण झुलाया। चार जुग होए प्रधान, चारे वेदां नाल मिलाया। चार कुण्ट होए हैरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वेला अन्त कवण खेल खिलाया। पुरख अबिनाशी किरपा कर, एका गुण समझाईआ। निरगुण सरगुण वेस कर, लोकमात वेख वखाईआ। जुग जुग बेड़ा पार कर, सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी चुक्के डर, भय अवर ना कोए रखाईआ। कलिजुग अन्तिम आए वार, तेई अवतार रहे सालाहीआ। अठारां भगत करन पुकार, उच्ची कूक कूक अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा दए समझाईआ। आदि जुगादी हरि हरि भाणा, आपणे हथ्थ रखाइंदा। कोई ना जाणे राजा राणा, दिस किसे ना आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराना, जो घड़या भन्न वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, पुरख अबिनाशी खेल कराइंदा। तेई अवतारां दर बहाउणा, एका हुक्म सुणाइंदा। भगत अठारां नाल रलाउणा, साचा मेला मेल

११३८

मिलाइंदा। गुर दस्स गोद बहाउणा, साची गोद आप सुहाइंदा। वेद व्यास लेख लिखाउणा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत सच सिंघासण सोभा पाइंदा। नानक निरगुण वेख वखाउणा, निराकार रूप वटाइंदा। गोबिन्द मीता राह तकाउणा, नेत्र नैण उठाइंदा। पुरख अबिनाशी एका आउणा, कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा। निहकलंका नाउँ रखाउणा, सम्बल नगरी धाम सुहाउणा, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर भेव ना कोए जणाइंदा। कलिजुग वेला अन्तिम धार, पुरख अबिनाशी वेस वटाईआ। निहकलंक लए अवतार, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, ब्रह्मण्ड खण्ड लए जगाईआ। लक्ख चुरासी दए हुलार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। सम्मत सम्मती मारे मार, चार कुण्ट दुहाईआ। किसे ना सुणे कोई पुकार, बैठे मुख भवाईआ। करे खेल अगम्म अपार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। मुकामे हक हो त्यार, सांझा यार रूप वटाईआ। ऐनलहक बोल जैकार, साचा नाअरा दए सुणाईआ। वेस वटाए बेऐब परवरदिगार, जल्वा नूर नूर इलाहीआ। चौदां तबक पावे सार, चौदां लोक खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाया, कलिजुग अन्तिम वार। नूरी अल्ला वेस वटाया, शाह अमाम अमामा वड सिक्दार। बिस्मिल आपणी धार चलाया, उम्मत उम्मती कर विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपारा खेल करतारा, आदि जुगादि कराइंदा। जगत जगदीस हो उज्यारा, बीस बीस रंग रंगाइंदा। चारों कुण्ट करे विचारा, नव खण्ड फोल फुलाइंदा। सत्तां दीपां पर्दा उतारा, मुख नकाब ना कोए रखाइंदा। मक्का काअबा वेखे वेखणहारा, आप आपणा फेरा पाइंदा। अठसठ तीर्थ वेखे किनारा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती वेख वखाइंदा। लेखा जाणे ज़िमीं अस्मानां, करे खेल श्री भगवाना, शब्दी नाद नाद तराना, शब्द अनादी आप अलाइंदा। चारों कुण्ट हो प्रधाना, आपे वरते आपणा भाणा, तख़्तों लाहे राजा राणा, नौ खण्ड पृथमी होए हैराना, धीरज ना कोए धराइंदा। साचा समां अन्त अन्त काल, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। सिर ते काल नगारा वज्जया काल, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। वरन बरन होए बेहाल, ना कोई सके सुरत संभाल, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। बिन हरि नामे शाह होए कंगाल, लुट्टी गई सर्ब लोकाईआ। जूठा झूठा वज्जया ताल, माया ममता नाच नचाईआ। फल ना दिसे किसे डाल, लक्ख चुरासी सिम्मल रुक्ख रिहा लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा दए समझाईआ। साचा समां भाणा बलवान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। करे खेल आप भगवान, दूसर अवर ना कोए वखाईआ। कागद कलम होए हैरान, हरि का भेव लिखे कोए

ना शाहीआ। सिमरत शास्त्र वेद पुराण सारे गाण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। अञ्जील कुरान नैण शरमान, प्रगट होया बेपरवाहीआ। सच्चा माही आपणा मसला हल्ल करे दो जहान, शरअ शरीअत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भाणा आप वरताईआ। साचा भाणा हरि वरताउणा, वीह सौ अठारां बिक्रमी लेख लिखाया। नौ खण्ड पृथमी आप हिलाउँणा, धीरज धीर ना कोए धराया। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, सीस ताज ना कोए टिकाया। वरनां बरनां डेरा ढाउणा, ऊँच नीच ना कोए बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए उठाया। वीह सौ अठारां बिक्रमी खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। लोकमात लगाया सच दरबारा, सचखण्ड रूप वटाईआ। दिवस सुहाया सतारां हाढ़ा, थित वार आप लिखाईआ। मेल मिलाया गुर अवतारा, भगत भगवन्त दए सालाहीआ। लेखा जाणे ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी नाल रलाईआ। चार जुग दी पुछे वारा, जुग चौकड़ी जो कर कर गए फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर पीर अवतार मुल्ला पैग़म्बर करन सलाह, दर घर साचे मता पकाया। कलिजुग अन्तिम कोए ना लभ्भे राह, साचा मार्ग ना कोए रखाया। बिन बेऐब ना करे कोई नकाह, अल्ला राणी दए दुहाया। बिन पारब्रह्म ना कोए मिले सच्चा शाह, शाह पातशाह ना कोए अख्वाया। सीस जगदीस हथ्थ ना देवे किसे टिका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग दए समझाया। वीह सौ उन्नी पहली चेत्र आउणा, लोकमात वज्जे वधाईआ। गुर गोबिन्द हुक्म इक्क सुणाउणा, सच अदालत सेव कमाईआ। ईसा मूसा पन्ध मुकाउणा, संग मुहम्मद मेटे शाहीआ। चौदां सदीआं डेरा ढाउहणा, चौदां तबकां पए दुहाईआ। एका हुक्म पुरख अकाल वरताउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। शाह सुल्तानां भेड़ भड़ाउणा, धरनी धरत धवल मंग मंगाईआ। लाड़ी मौत सगन मनाउणा, घर घर ख़ुशी मनाईआ। लाल मैहन्दी रंग चढ़ाउणा, आपणे हथ्थ रही वखाईआ। राए धर्म कुण्डा लाउहणा, अठाई कुण्डां खोल्ह् खुल्हाईआ। चित्रगुप्त हिसाब वखाउणा, लिख लिख लेखा रिहा सुणाईआ। कलिजुग जीवां मुख शरमाउणा, जो बैठे हरि भुलाईआ। वेले अन्त ना किसे बचाउणा, ना होए कोए सहाईआ। काल नगारा इक्क वजाउणा, घर घर डौरू रिहा खड़काईआ। मढ़ी गोर ना किसे दबाउणा, सुंञी दिसे सर्ब लोकाईआ। मां पुत्तर ना संग रखाउणा, पिता पूत ना कोए मिलाईआ। नारी कन्त ना किसे हंढाउणा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी वेखण आउणा, गोबिन्द मेला मेल मिलाईआ। नौ खण्ड पृथमी फेरा पाउणा, शब्द घोड़ा इक्क दौड़ाईआ। साचा खण्डा नाम चमकाउणा, तिक्खी धार वखाईआ। उन्नी उनीसा पार कराउणा, आलमगीर आप हो जाईआ। ज़ालम ज़ुलम

आप मिटाउणा, ज़ेर ज़बर ना कोए लगाईआ। बेख़बर हरि खेल खिलाउणा, आपणा हल्फ़ रिहा उठाईआ। एका अल्फ़ी तन रखाउणा, लक्ख चुरासी बन्धन पाईआ। बीस बीसा संन चढ़ाउणा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। धुर फ़रमाना इक्क सुणाउणा, सच संदेसा ढोला गाईआ। कोटन विच्चों गुरमुख विरला आप बचाउणा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा समां आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस बीजया लक्ख चुरासी खेत, सो अन्तिम वढ्ढण आया। थित वखाए महीना चेत, वीह सौ उन्नी बिक्रमी एह समझाया। प्रगट होवे नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। जन भगतां करे साचा हेत, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाया। मनमुखां माया ममता भरया ना पेट, आसा तृष्ना होई हल्काया। त्रैगुण अग्नी लग्गी महीना जेठ, सांतक सति ना कोए कराया। बिन सतिगुर पूरे कोए ना करे हेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। भाणा वरते हरि भगवान, कलिजुग कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। जूठ झूठ ना दिसे कोए निशान, हउमे हंगता ना कोए लड़ाईआ। पंचम मेटे आप शैतान, बेईमान ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट पुरख अबिनाशी एका गान, सीस जगदीस सर्ब झुकाईआ। पुरख अकाल पावे आण, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। सतिजुग झुलाए सच निशान, सति सतिवादी आप उठाईआ। जीवां जंतां देवे इक्क ज्ञान, आत्म ब्रह्म ब्रह्म पढ़ाईआ। चरन कँवल हरि ध्यान, दूसर इष्ट ना कोए रखाईआ। मुस्लिम हिन्दू सिख ईसाई वखाए इक्क मकान, साचा मन्दिर इक्क उपाईआ। अठ्ठे पहर वसे भगवान, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप वरताईआ। सच्चा समां वरते कहर, गहर गम्भीर वरताइंदा। कलिजुग तेरी सच्ची लहर, लहर लहरां विच मिलाइंदा। जूठ झूठ वख बणया ज़हिर, अमृत जाम ना कोए प्यांअदा। माया ममता अग्नी बणी दुपहर, सांतक सति ना कोए कराइंदा। जूठा झूठा खेड़ा ढहे नगर शहर, जगत गराँ ना कोए वखाइंदा। जिस जन उप्पर करे आपणी मेहर, सो जन आपणे संग मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप वरताइंदा। हरि भाणा बलवान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जुग जुग ढौदा आया निशान, गढ़ हँकार करे सफ़ाईआ। जन भगतां देंदा आया दान, साची भगती झोली पाईआ। सन्तां बख्शे एका माण, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। गुरमुखां देवे इक्क ज्ञान, निष्अक्खर कर पढ़ाईआ। गुरसिखां रखाए इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान विच लगाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी होए आप प्रधान, पंदरां कत्तक रुत्त सुहाईआ। राष्ट्रपत उठाया आप भगवान, दे मति समझाईआ। सतिजुग झुलणा इक्क निशान, सत्त रंग रूप वखाईआ। आप बणाए इक्क विधान, नव नौ देवे सच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, सच दुआरे सोभा पाईआ। बीस बीसा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी बणाए बणत, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। भेव खुल्हाए जीव जंत, जाग्रत जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग लेखा आप मुकाइंदा। कलिजुग लेखा जाणा चुक्क, बीस बीसा रिहा कुरलाईआ। लक्ख चुरासी बूटा जाणा सुक्क, बिन हरि नामे हरया सिंच ना कोए कराईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जो बैठा रिहा लुक, कलिजुग अन्तिम निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरवैर हो के रिहा बुक्क, कलिजुग जंगल विच सिँघ शेर एका भबक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा समां आप वरताईआ। समां वरते कलिजुग जग, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जीव जंत होए कग, हँस रूप ना कोए वखाइंदा। हउमे अग्नी रहे मघ, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धार आप चलाइंदा। चले धार धरनी धरत धवल, आकाश प्रकाश समाईआ। लक्ख चुरासी होई बवल, साचा रूप ना कोए वखाईआ। अमृत दिसे ना किसे कँवल, नाभी नाभ ना कोए उलटाईआ। नज़र ना आए साँवल सवल, मुकंद मनोहर लखमी नरायण बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां जगत गेड़ा जुग जुग आप गिड़ाईआ। जुग जुग
११४३ गेड़ा हथ्थ करतार, आदि जुगादि गढ़ाइंदा। कलिजुग अन्तिम करे ख्वार, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। नेत्र रोवे पुरख नार, नार कन्त सति ना कोए वरताइंदा। उन्नी बीस मारे मार, जगदीस हुक्म चलाइंदा। शाह सुल्तान बणन भिखार, दर मंगण भिक्ख ना पाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जो घड़या भन्न वखाइंदा। पुरख अकाल रक्खणी ओट, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। इष्ट रखाउणा निर्मल जोत, निरवैर इक्क ध्याईआ। शब्द बणाए किला कोट, हरिजन साचे लए वसाईआ। झूठी कढ़ुणी वासना खोट, माया ममता मोह चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साध संगत रिहा समझाईआ। साध संगत साचा मेला, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। एका रंग रंगाए गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द वेख वखाइंदा। चार वरन सज्जण सुहेला, ज़ात पात ना वण्ड वंडाइंदा। लक्ख चुरासी आपणे हथ्थ रक्खे वेला, वेला वक्त ना किसे जणाइंदा। अचरज खेल पारब्रह्म कलिजुग आपे खेला, रूप अनूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाइंदा। साची सिख्या श्री भगवान, एका एक जणाईआ। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, आत्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। दूई द्वैत मिटे निशान, माया मोह ना कोए रखाईआ। हउमे हंगता ना कोए अभिमान, निवण सु अक्खर इक्क पढ़ाईआ। अठ्ठे

पहर हरि ध्यान, सुरती शब्द मिलाईआ। नौ दुआरे झूठ दुकान, जूठा नाता तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा दए वखाईआ। साचा लेखा हरि भगवन्त, साध संगत जणावणा। एका मिलणा हरि जू कन्त, गुरमुख नारी रूप वटावणा। होए सहाई आदि अन्त, एथे ओथे गोद रखावणा। देवे वड्याई लक्ख चुरासी विच्चों जीव जंत, सिर आपणा हथ्थ टिकावणा। एका नाउँ मणीआ मंत, रसना जेहवा हरि हरि गावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त पकड़े दामना। आदि अन्त पकड़े दामन, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी शामन, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। नेड़ ना आए कामनी कामन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। आपे होए गुरसिख तेरा ज़ामन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क जणाईआ। साचा मार्ग हरि का पन्थ, गुर गुर रूप जणाया। सिख्या देवे गुरु ग्रन्थ, गुर अरजण मेल मिलाया। नानक नाद वजाया संख, नाद धुंन शनवाया। अंगद पाया घर भगवन्त, अमर मेला सहिज सुभाया। राम दास मिल्या सुहागी कन्त, घर साची सेज हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन सिमरो नाम एक, एके हथ्थ वड्याईआ। नानक गोबिन्द साची टेक, राम कृष्न समझाईआ। ईसा मूसा लिख्या लेख, मुहम्मद वेस वटाईआ। जुगा जुगन्तर रिहा वेख, साचे तख्त बैठा सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तत्त दए वखाईआ। ऐका तत्त शब्द ज्ञान, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। अठ्ठे पहर श्री भगवान, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। कलिजुग अन्तिम देवे माण, जो जन चरन ध्यान लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन एका रंग रंगाइंदा। चार वरन एका रंग, हरि साचा आप रंगाईआ। शब्द डोरी नाम पतंग, सुरती सुरत आप बंधाईआ। हथ्थ रखाए चण्ड प्रचण्ड, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। गुरसिख आत्म ना होए रंड, गुर शब्दी लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला होए बख्शंद, बख्शिश आपणी आप वरताईआ।

★ १६ भाद्रों २०१८ बिक्रमी नछत्र सिंघ दे गृह पिण्ड दोराहा ज़िला लुधियाणा ★

हरि का नाउँ साचा सुख, आदि जुगादि जणाइंदा। उज्जल करे हरिजन मुख, अन्तर आत्म जो ध्यांअदा। हउमे रोग मिटे दुक्ख, माया ममता मोह जलाइंदा। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। इक्क जगाए निर्मल जोत, जोत निरँजण डगमगाइंदा। तन नगारे लाए चोट, अनहद नादी नाद वजाइंदा। जूठ झूठ कढ्ढे खोट,

जिस जन आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म सुख इक्क वखाइंदा। आत्म सुख काया अंदर, घर घर विच मिले वड्याईआ। त्रैगुण माया तोड़े जंदर, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। मन पंखेरू बन्ने बन्दर, शब्द डोरी बन्धन पाईआ। करे प्रकाश डूँग्घी कंदर, दीवा बाती इक्क टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुख दए समझाईआ। साचा सुख काया गढ़, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। गुरमुख विरला वेखे अंदर वड़, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। माया अग्नी ना जाए सड़, तत्व तत ना कोए रखाइंदा। बन्द किवाड़ी खोले दर, दर दरबारा आप सुहाइंदा। दरस दिखाए नरायण नर, नर हरि आपणा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुख इक्क समझाइंदा। साचा सुख आत्म शांत, गुर चरन चरन चित लाया। चरन कँवल साचा नात, बन्धन बंधक एका पाया। जगत विकारा होए नास, आसा तृष्ना दए जलाया। घर विच घर करे प्रकाश, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा खेल खिलाया। देवे दरस पुरख अबिनाश, जोती जाता डगमगाया। गृह मन्दिर पावे रास, गोपी काहन नाच नचाया। हरिजन पूरी करे आस, तृष्ना भुक्ख ना कोए वखाया। साहिब दयाल सद वसे पास, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुख आपणे हथ्थ रखाया। साचा सुख पंज तत्त, घर घर विच आप प्रगटाईआ। बहत्तर नाड़ ना उब्बले रत, रती रत दए सुकाईआ। एका देवे ब्रह्म मति, जगत विद्या ना कोए पढ़ाईआ। शब्द चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही सेव कमाईआ। डूँग्घी कंदर महिमा सुणाए अकथ, नाद अनादी धुन वजाईआ। गुरमुख विरले मार्ग दस्स, साचे मार्ग आपे लाईआ। हिरदे अंदर हरि जू वस, हरि का नाम दए समझाईआ। अमृत झिरना झिराय साचा रस, निझर आपणी धार वहाईआ। जिस जन करे पूरी आस, निरासा जगत ना कोए वखाईआ। साचा सुख सतिगुर चरन पास, दूसर दर ना मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप रखाईआ। मन पंखी शब्द डोर, बन्दी बन्धन आपे पाइंदा। नाता तोड़े पंज चोर, ठग्ग कोए नज़र ना आइंदा। करे प्रकाश अन्ध घोर, ज्ञान ज्ञान विच रखाइंदा। मन मति देवे होड़, गुर मति इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बुद्धि आप जणाइंदा। साची बुद्धि होए बिबेक, गुर सतिगुर ओट तकाईआ। पारब्रह्म जन राखो टेक, निवण सु अक्खर इक्क समझाईआ। जगत माया ना लाए सेक, त्रैभवन धनी होए सहाईआ। घर विच घर लैणा वेख, गृह मन्दिर होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बुध बिबेकी आप कराईआ। बुध बिबेकी होए सिद्ध, सांतक सति सति वरताइंदा। आपे जाणे आपणी बिध, गुरमख साचे आप समझाइंदा। तीर निराला मारे जगत विकारा जाए विध, पार किनारा

आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। साचा मार्ग औखा घाट, दुराडा पन्ध रहिण ना पाईआ। जिस जन मिले पुरख समराथ, चिंता सोग रहे ना राईआ। आदि जुगादि निभाए सगला साथ, सगला संग आप हो जाईआ। हरिजन साचे आपे काढ, लक्ख चुरासी विच्चों लए तराईआ। आप लडाए साचा लाड, जिउँ बालक माता गोद सखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बुध बिबेक जाणे अन्तर, बिन रसना जेहवा जपाए मन्त्र, निष्अक्खर कर पढ़ाईआ। साचा मन्त्र आत्म जाप, रसना जिहवा ना कोए हिलाइंदा। त्रैगुण माया ना चढ़े ताप, संताप नेड़ कोए ना आइंदा। कोटन कोटि जन्म दे उतारे पाप, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। इक्क वखाए साचा हाट, चौदां लोक मुख शरमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कट्टदा आया वाट, कलिजुग अन्तिम वेस वटाइंदा। लक्ख चुरासी आत्म सेजा सुत्ता खाट, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, तिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। बुध बिबेक करे करतार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मति मतवाली ना होए ख्वार, एका तत्त जणाईआ। मन मनूआ ना कोए हँकार, हउमे गढ़ दए तुड़ाईआ। एका देवे नाम शब्द धुन्कार, अठ्ठे पहर नाद सुणवाईआ। निरगुण जोत नूर उज्यार, जोत निरँजण डगमगाईआ। नाता तुट्टे सर्ब संसार,
११४६ सतिगुर पूरा बन्धन पाईआ। अमृत आत्म देवे ठंडा ठार, निझर झिरना इक्क झिराईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। घर विच घर दए वखाल, आत्म ब्रह्म कर रुशनाईआ। पारब्रह्म प्रभ दीन दयाल, ईश जीव करे कुड़माईआ। सुरती शब्दी चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। नेड़ ना आए काल महाकाल, प्रितपाल सहिज सुखदाईआ। साचा सुख वखाए काया सच्ची धर्मसाल, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सूरज चन्न होयण शर्मसार, नेत्र नैण ना सके कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुख घर घर विच दए प्रगटाईआ। साचा सुख साचे घर, घर घर विच आप वखाइंदा। जिस जन देवे आपणा वर, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। दुःख रोग जायण हरि, संताप नेड़ कोए ना आइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोए वखाइंदा। मन मति बुध आपे फड़, आपणा बन्धन पाइंदा। गुरमुख विरला वेखे चढ़, साचे पौड़े जिस चढ़ाइंदा। कलिजुग जीव रहे सड़, अग्नी तत्त सर्ब लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पार किनारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरसिख अंदर गुर की रुची, रच रच आपणी खेल खिलाइंदा। हरिजन एका आत्म सुच्ची, लक्ख चुरासी पवित पुनीत ना कोए कराइंदा। हरिजन तेरी वासना उच्ची, दर घर साचा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप जणाइंदा। आत्मा सुच्ची

भुज करतार, सति सतिवादी आप बणाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, वेद कतेब भेव ना आईआ। हरिजन मिले हरि दुआर, हरि जू हरि के पौड़े आप चढ़ाईआ। गृह मन्दिर घट अंदर पावे सार, निज आत्म परमात्म मेला मेल मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दए आधार, ईश जीव कर प्यार, जगत जगदीश होए सहाईआ। रुची किसे दिस ना आए विच संसार, पुरख अकाल आपणी रुची जुग जुग गेड़ रिहा दुआईआ। जगत क्रिया जगत बन्धन, पंज तत्त नाता जोड़ जुड़ाईआ। जिस जन मस्तक लाए नाम चन्दन, जोत लिलाट करे रुशनाईआ। सृष्टी पाए झूठा बन्धन, बन्दी तोड़ बेपरवाहीआ। आत्म देवे परमानंदन, दिस किसे ना आईआ। अन्त होए आप बख्शंदन, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। लक्ख चुरासी तुट्टे फंदन, जम की फाँसी ना गल लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणी गोद बहाईआ । जगत दुःख जगत संताप, जगत जगत नाल मिलाइंदा। जन्म जन्म दे मेटे पाप, कर्म कर्म नाल हंढाइंदा। दरस दिखाए निज आत्म आप, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। गुरसिख तेरा दरगाह साची करे वड प्रताप, अन्त लोकमात वड्यांअदा। जीव जंत जपण तेरा जाप, कबीर जुलाहा उच्ची कूक सर्ब सुणाइंदा। रविदास चमारा वेखे एका बाप, पिता पूत गोद सुहाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए काया जगत दुक्ख, आत्म अन्तर वखाए साचा सुख, सुख दाता आप हो जाइंदा।

★ १६ भाद्रों २०१८ बिक्रमी हरी सिँघ दे गृह पिण्ड महिमा सिँघ वाला ज़िला लुधियाणा ★

हरिजन फुलवाड़ी रुत्त बसन्त, आदि जुगादि हरि लगाइंदा। वेख वखाए जुगा जुगन्त, जुग करता वेस वटाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, बेअन्त खेल खिलाइंदा। गुरमुख मेले साचे सन्त, दर दुआरे सोभा पाइंदा। नाम जणाए मणीआ मंत, मन का मणका आप भुआइंदा। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, माया ममता मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन साचा सोभावन्त, सो पुरख निरजंण वेख वखाइंदा। हरि पुरख निरँजण मीत मुरारा एका कन्त, कन्त कन्तूहल खेल खिलाइंदा। आप विरोले लक्ख चुरासी विच्चों जीव जंत, नाम मधाणा एका पाइंदा। मानस मानुख बणाए बणत, घाड़ण घड़न आप बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उपजाइंदा। हरिजन साचा साची धार, निरगुण सरगुण आप प्रगटाईआ। सरगुण निरगुण दए आधार, निरगुण बाती जोती डगमगाईआ। अमृत बख्शे ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिराईआ। गृह मन्दिर नाद धुन्कार, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। अन्ध अन्धेर दए निवार, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। डूँघी भँवरी पावे सार, काया बंक फोल

फुलाईआ। सर सरोवर दए नुहाल, अमृत मेघ आप बरसाईआ । भगत वछल सदा कृपाल, दीनन दीन होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ। हरिजन हरि जू आप उठाउणा, आप आपणी किरपा धार। पूर्ब लहिणा लेखे पाउणा, जन्मा जन्मा पावे सार। साचा नाम इक्क वरताउणा, नाम अनमोला अगम्म अपार। साचे मन्दिर आप टिकाउणा, बन्द किवाड़ी खोल्ह किवाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे जाए उभार। हरिजन साचा जाए उठ, सतिगुर पूरा आप उठाईआ। मेहरवान प्रभ जाए तुट्ठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, नीर सीर मुख चुआईआ। प्रकाश कराए निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आसा तृष्ना कढ्ढे खोट, माया ममता मोह मिटाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। पंज तत्त बणाए काया कोट, आत्म ब्रह्म विच टिकाईआ। तन नगारे लाए चोट, अनहद नादी नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उपाईआ। हरिजन साचा हरि का रूप, ममता मोह ना कोए रखाइंदा। नाता तोड़े जूठ झूठ, सच सुच्च मेल मिलाइंदा। करे प्रकाश चारे कूट, अन्ध अन्धेर गुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप प्रगटाइंदा। हरिजन साचा हरि हरि रंग, आदि जुगादि समाया। पारब्रह्म सूरा सरबंग, पुरख अबिनाशी खेल खिलाया। आत्म सेजा इक्क पलँघ, निरगुण सरगुण आप सुहाया। अगम्म अगम्मड़ा वजाए मृदंग, तार सितार ना कोए हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप उठाया। गुरसिख साचा हरी हरि जन, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर जुग जुग भाणा रिहा मन्न, सद भाणे विच समाइंदा। इक्क सुणाए राग कन्न, दूजी विद्या ना कोए पढ़ाइंदा। साचा देवे नाम धन, जगत ख़ज़ाना ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। नाम ख़ज़ाना सदा भरपूर, हरिजन साचे आप वरताईआ। आदि जुगादि हाज़र हज़ूर, विछड़ कदे ना जाईआ। वसणहारा नेड़े दूर, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कलिजुग कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। लक्ख चुरासी नौ खण्ड पृथ्मी मूर्ख मुग्ध होई मूढ़, चार वरनां पई लड़ाईआ। किते ना मिले साची धूढ़, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईआ। हरिजन तेरा थान थनंतर, थिर घर वासी वेख वखाइंदा। सृष्ट सबाई लग्गी बसन्तर, अग्नी तत्त सर्ब जलाइंदा। घर घर अंदर मन का मन्त्र, मन वासना सर्ब कुरलाइंदा। कोई ना बणाए साची बणतर, आत्म ब्रह्म ना कोए वखाइंदा। बोध ज्ञान ना जाणे कोई पंडत, जगत विद्या सभ पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा।

हरिजन साचा वेख वखाउणा, कलिजुग अन्तिम धार। पुरख अबिनाशी खेल कराउणा, निरगुण सरगुण लए अवतार। नाम डंका इक्क वजाउणा, चार वरनां करे ख़बरदार। ऊँच नीच राउ रंक एका रंग रंगाउणा, दूई द्वैती पर्दा देवे पाड़। एका मन्त्र नाम दृढ़ाउणा, सो पुरख निरँजण इक्क कराए सच जैकार। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका घर बहाउणा, साचा मन्दिर खोल्हे इक्क दुआर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे सुरत संभाल। चार वरन एका दर, पुरख अबिनाशी आप खुल्हाईआ। कलिजुग अन्तिम जाए हर सगला संग ना कोए निभाईआ। बरन अठारां आपणा कीता लैण भर, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जूठे झूठे जायण हर, पत्त डाल्ही नज़र कोए ना आईआ। माया ममता तुट्टे गढ़, हउमे हंगता होए सफ़ाईआ। प्रगट होए नरायण नर, निहकलंका नाउँ रखाईआ। भगतन मेले आपणे दर, दर दरवाज़ा इक्क वखाईआ। पूर्ब लहिणा देवे फड़ फड़, जन्म कर्म कर्म जन्म आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला सहिज सुभा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटा, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। आदि जुगादि बेपरवाह, बेअन्त वेख वखाइंदा। हरिजन साचे मेल मिला, जन जनणी लेखे लाइंदा। एका मार्ग देवे पा, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। एका अक्खर दए पढ़ा, सो अक्खर आप उपजाइंदा।
 ११४६
हँ ब्रह्म दए जणा, पारब्रह्म सेव कमाइंदा। निहकर्मी कर्म कमा, कर्म कांड मेट मिटाइंदा। वरन बरन डेरा ढाह, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मात बणाइंदा। हरिजन जाणे हरि का रूप, हरि हरि विच सद समाईआ। आदि जुगादी सति सरूप, सति सतिवादी वेख वखाईआ। एका तागा एका सूत, एका बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आत्म ब्रह्म इक्क दरसाईआ। आत्म ब्रह्म ब्रह्म उज्यारा, पारब्रह्म कराइंदा। घर घर अंदर सच दुआरा, धुर दरबारा आप वखाइंदा। टेढी बंक पार किनारा, साचा मार्ग आप जणाइंदा। जोत निरँजण कर उज्यारा, गृह गृह दीपक आप जगाइंदा। दिवस रैण नाद धुन्कारा, अनहद शब्द अल्हाइंदा। पंचम मिल मिल मंगलचारा, दर साचे सोभा पाइंदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना कोए विचारा, ईश जीव समझाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, वेद कतेब भेद ना आइंदा। शरअ शरीअत मारे मारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप वखाइंदा। हरि की धार डूँघा सागर, गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। जिस जन देवे नाम रती रत्नागर, रतन अमोलक काया गोलक झोली पाईआ। वणज कराए सच सौदागर, साची दात इक्क वखाईआ। भाग लगाए काया गागर, पंज तत्त कर रुशनाईआ। चार वरनां देवे आदर, हरिजन बख्शे सरन सरनाईआ। करे खेल

करीम कादर, कुदरत करता वेख वखाईआ। राग सुणाए एका दादर, दरूद करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे पिसर पिदर मादर, मेहरबान बीदो इक्क ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाईआ। चार वरन हरिजन टेक, एका इष्ट वखाइंदा। बुधी करे आप बिबेक, मन्त्र ज्ञान इक्क दृढ़ाइंदा। मन मति मेटे रेख, गुरमति आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप बणाइंदा। चार वरन पावे सार, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। चौथे जुग कर विचार, चार यारी फोल फोलाईआ। चार वेदां दए आधार, चार बाणी करे पढ़ाईआ। चारे खाणी हो उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज कर त्यार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता करे खेल बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाई आपणी रीता, वेस अनेक धराईआ। कलिजुग वेला अन्तिम बीता, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए आपणा घर, दर घर साचा इक्क समझाईआ। साचा घर साढे तिन्न हथ्थ, रविदास चमारा लेख लिखाइंदा। गुरमख विरले आवे हथ्थ, लक्ख चुरासी सर्ब कुरलाइंदा। जिस जन किरपा करे पुरख समरथ, सो जन बूझ बुझाइंदा। नज़री आए घट घट, घट अन्तर सोभा पाइंदा। भाग लगाए काया मट, कंचन गढ़ आप वखाइंदा। लेखा जाणे गंगा घाट, जगत कसीरा वेख वखाइंदा। आत्म
११५० परमात्म बध्धा नात, ज़ात पात ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम ११५०
वर, एका ब्रह्म ज्ञान समझाइंदा। एका ब्रह्म इक्क ज्ञाना, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका घर इक्क मकाना, एका बैठा आसण लाईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, एका रिहा सुणाईआ। एका दानी एका दाना, एका दात रिहा वरताईआ। एका रूप श्री भगवाना, आदि जुगादि समाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधाना, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सच सुच्च झुलाए इक्क निशाना, सचखण्ड निवासी आपणा बल धराईआ। कूड़ी क्रिया मेटे विच जहाना, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। चार वरनां बन्ने एक गाना, नाम बन्धन आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे तोड़े माण अभिमाना, चरन ध्याना इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए उठाईआ। आपणा पर्दा हरि उठाउणा, नव खण्ड पृथ्मी खेल खिलाइंदा। सत्तां दीपां वेख वखाउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव हलाउणा, सुरपति इन्द नाल रलाइंदा। जुग चौकड़ी वेख वखाउणा, नव नौ चार खेल खिलाइंदा। हरिजन साचे आप जगाउणा, शब्द हुलारा इक्क लगाइंदा। दर दुआरे मेल मिलाउणा, जगत विछोड़ा आप कटाइंदा। साचा सन्त आप बणाउणा, पुरख अबिनाशी सेव कमाइंदा। चार वरनां भैणां भइया सनबंध रखाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी धार

आप चलाइंदा। साची धार जगत धर्मसाल, धुर दरगाही आप चलाईआ। एका रंग रंगाए शाह कंगाल, राज राजान ना कोए वड्याईआ। सृष्ट सबाई रिहा सुरत संभाल, लक्ख चुरासी भुल कदे ना जाईआ। हरिजन देवे नाम सच्चा धन माल, अतोट अतुट रखाईआ। फल लगाए साचे डाल, पत्त डाली आप महिकाईआ। एथे ओथे करे संभाल, समरथ हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए तराईआ। तारनहार इक्क भगवान, आदि जुगादि समाइंदा। जिस जन देवे भगती दान, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। सुरत मिलाए शब्दी काहन, साची बंसरी नाम वजाइंदा। भाग लगाए तत्त मकान, पंचम गढ़ सुहाइंदा। दरस दिखाए दर घर आण, सति सरूपी रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन फड़ाए आपणा लड़, एका पल्लू गंढु दिवाइंदा। साचा पल्लू हरिजन फड़, आपणा बन्धन पाईआ। सरगुण अंदर निरगुण जाए वड़, सच सिँघासण आसण लाईआ। निष्अक्खर आपणा नाउँ पढ़, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। सोभावन्त सुहाए घर घर, घर विच वज्जे वधाईआ। हरिजन मेला आपे कर, जगत विछोड़ा फंद कटाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, सो सतिगुर सज्जण शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। कोटंत गगन गगन निवासा, गृह मन्दिर आप कराईआ। गृह दीप जोत प्रकाशा, भेव अभेद रखाईआ। निरवैर खेल तमाशा, निरगुण धार चलाईआ। अलख अगम्म अगोचर आपणी पाए रासा, मंडल रास रचाईआ। भेव ना जाणे पृथ्मी आकाशा, ब्रह्मा वेता नैण शरमाईआ। चारे वेद ना करे कोए ख़ुलासा, पुराण अठारां ना कोए ग्वाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी घटना आपे वेख वखाईआ । कटँक रूप श्री भगवान, निहकलंक खेल खिलाइंदा। कक्का कर ना सके कोए वखान, मति बुध भेव ना कोए पाइंदा। टैंका टल्ल वजाए सर्ब जहान, रसना जेहवा जीव हिलाइंदा। टिप्पी वेखो दो जहान, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल कक्का रूप वखाइंदा। कक्का कल हरि जू धार, कलवन्ता खेल खिलाइंदा। टहिक महिक रिहा संसार, दीप लोए डेरा लाइंदा। कुदरत कादर कर विचार, आप आपणे विच छुपाइंदा। आपे वसे सभ तों बाहर, भेव अभेद रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपे लिख आपणे हथ्थ रखाइंदा। जगत बुद्धी जगत विचार, जुग जुग करे पढ़ाईआ। जिस लिख्या सो पावे सार, निष्अक्खर नज़र ना आईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, आपणा खेल आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार हरि करतार आप चलाईआ।

★ १६ भाद्रों २०१८ बिक्रमी धन्ना सिँघ दे गृह ढै पई ज़िला लुधियाणा ★

सचखण्ड सच्चा दुआरा, सो पुरख निरँजण सोभा पाइंदा। थिर घर खोल्हे आप किवाड़ा, हरि पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। एकँकारा दए सहारा, आप आपणा बन्धन पाइंदा। आदि निरँजण कर उज्यारा, जोती जोत डगमगाइंदा। श्री भगवान वेखणहारा, दर घर साचा वेख वखाइंदा। अबिनाशी करता आपे जाणे आपणा सति भण्डारा, सति सतिवादी आप उपाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो त्यारा, आपणी खेल आप खिलाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अगम्मड़ी कारा, पुरख अगम्मड़ा आप कराइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, शहिनशाह आपणा नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। शाह पातशाह हरि करतार, आदि पुरख अख्वाईआ। निरगुण निरवैर हो त्यार, मूर्त अकाल डगमगाईआ। अजूनी रहत बेऐब परवरदिगार, मुकामे हक सोभा पाईआ। जल्वा नूर कर उज्यार, जोत उजाला वेस वटाईआ। साचे मन्दिर खेल न्यार, खेल अवल्लड़ा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा आप वड्याईआ। सचखण्ड साचा सच दुआर, सो पुरख निरँजण आप उपाइंदा। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, दर घर साचा आप सुहाइंदा। एकँकारा वेखे वेखणहार, आदि निरँजण मेल मिलाइंदा। अबिनाशी करता वसे ठांडे दरबार, श्री भगवान निशान झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ ख़बरदार, आदि जुगादी इक्क अख्वाइंदा। साचे तख्त बैठ हुक्मरान, धुर फ़रमाना आप अल्हाइंदा। शाहो भूप बण राजान, दर दरवेश वेस वटाइंदा। भिक्खक भिखारी बणे आप भगवान, निउँ निउँ सीस जगदीस सीस झुकाइंदा। करे खेल हरि महान, भेव अभेद आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर सोभा पाइंदा। सचखण्ड दुआर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण नारी कन्त, नर नरायण वेस वटाईआ। एकँकारा बणाए बणत, घाड़न घड़त लए घड़ाईआ। आदि निरँजण महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। अबिनाशी करता बेपरवाह बेअन्त, बेऐब नाम ख़ुदाईआ। श्री भगवान साचा धाम सुहंत, दरगाह साची वड वड्याईआ। पारब्रह्म आपणा लेखा जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआर सच महल्ला, हरि साचा सच सुहाइंदा। वसणहारा इक्क इकल्ला, आप आपणा आसण लाइंदा। आदि जुगादी खेल अवल्ला, शब्द जोत आपे रल्ला, जोती जाता डगमगाइंदा। निरगुण निरगुण फड़ाए पल्ला, निरगुण निरगुण संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा वेख वखाइंदा। सचखण्ड दुआरा साची धार, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। छप्पर छन्न ना

कोए सहार, चार दीवार ना कोए बणाईआ। दीवा बाती ना कोए उज्यार, आदि निरँजण डगमगाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नार, नर नरायण खेल खिलाईआ। ना कोई मन्दिर गुरदुआर, इक्क इकल्ला सोभा पाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। आपणी इच्छया भर भण्डार, आपे रिहा वरताईआ। आपे वेखे वेखणहार, दूसर संग ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे बैठा वड़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सच सिँघासण सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। आपे नारी आपे कन्त, कन्त कन्तूहल वेस वटाइंदा। आपे बणाए आपणी बणत, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। आपे आदि आपे अन्त, अन्त आदि आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा साचा घर, दर घर साचा आप खुल्हाइंदा। सचखण्ड दुआरा आपे खोल्ह, सो पुरख निरँजण वेख वखाईआ। एकँकारा निष्अक्खर आप बोल, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। आपे तोलणहारा तोल, तोला बणे साचा माहीआ। आदि जुगादि रहे अडोल, डुल कदे ना जाईआ। आपे वसे आपणे कोल, आपणा संग निभाईआ। आपे आपणे अंदर जाए मौल, आपणी रचना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
११५३ सचखण्ड दुआरे साचे चढ़, सच सिँघासण दए वड्याईआ। साचे तख्त बैठ सच्चा सुल्तान, हरि साचा खेल खिलाइंदा। ११५३
आदि पुरख हो मेहरवान, आपणी दया आप कमाइंदा। आपे देवे धुर फ़रमान, शब्द अनादी नाद वजाइंदा। हुक्मी हुक्म सुणाए सुणावणहार, सुणनहार आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचा हरि, साचा मता आप पकाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण धार, निरवैर आप रखाईआ। निरगुण रूप निराकार, निरगुण आपे वेख वखाईआ। निरगुण मन्दिर निरगुण दुआर, निरगुण बैठा आसण लाईआ। निरगुण भूप निरगुण सिक्दार, निरगुण रईयत रूप वटाईआ। निरगुण शाह निरगुण सिक्दार, निरगुण बैठा सीस झुकाईआ। निरगुण सीस ताज दस्तार, निरगुण चरन कँवल बिगसाईआ। निरगुण खेल करे अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। निरगुण वसे धाम न्यार, निहचल धाम आप उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा घाड़न लए घड़ाईआ। सचखण्ड साचा घाड़न घड़या, पुरख अबिनाशी सेव कमाइंदा। सति पुरख निरँजण अंदर वड़या, दिस किसे ना आइंदा। आपणे पौड़े आपे चढ़या, साचा पौड़ा आप लगाइंदा। आपे पुरख नारी नरया, वर दाता आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप वड्यांअदा। सचखण्ड दुआरा सोभनीक, सतिगुर पूरा आप सुहाईआ। ना कोई दीसे अवर शरीक, इक्क इकल्ला साचा माहीआ। ना कोई अन्धेरा तारीक, निरगुण जोत डगमगाईआ। ना आदि जुगादि

किसे दी रक्खे उडीक, आपणी इच्छया विच समाईआ। किसे कोलों ना मंगे भीख, वड दाता बेपरवाहीआ। आपणा लेखा आपे लिख, लिख लिख लेखा आप समझाईआ। आपे वण्डे आपणा हिस, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे वड़, आपणा खेल आप कराईआ। साचा सुत दुलारा जाया एका वार, शब्दी नाउँ धराइंदा। आप बिठाया पहली वार, दूजी वार ना कोए उठाइंदा। थिर घर सोहे बंक दुआर, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। पिता पूत करे प्यार, साची गोद सुहाइंदा। एका देवे वस्त अपार, नाउँ निरँकारा झोली पाइंदा। अगम्मा अगम्म कर त्यार, सुर ताल ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड अंदर थिर घर धर, आपणा खेल आप कराइंदा। सचखण्ड अंदर थिर घर वासा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। खेले खेल खेल तमाशा, खेलणहारा दिस ना आईआ। शब्द दुलारे कर कर वासा, साचा धाम वड्याईआ। आदि जुगादि पूरी करे आसा, सीस जगदीस हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सुत दुलारा बाल अञ्याणा, शब्दी शब्द उठाइंदा। आदि जुगादि मन्नणा भाणा, जुग जुग खेल खिलाइंदा। तेरा वसे इक्क मकाना, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। मेरा नाउँ तेरा गाणा, साची तार हिलाइंदा। मेरा नूर तेरा दरस महाना, दरसी दरस इक्क वखाइंदा। मेरा चरन तेरा पद निरबाना, साचा घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप उठाइंदा। सुत दुलारा हरि समझा, आपणी दया कमाईआ। थिर घर साचा दए वसा, साचे खेड़े भाग लगाईआ। जोती जोत कर रुशना, नूर नुराना डगमगाईआ। धुर फ़रमाना आप सुणा, नाद अनाद वजाईआ। आपणा पर्दा आप चुका, रूप अनूप दरसाईआ। सति निशाना इक्क चढ़ा, सति सतिवादी रिहा झुलाईआ। बोध अगाधी भेव खुल्हा, एका करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे बणत बणाईआ। थिर घर साचा बणत बणाई, पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा। आपणी घाड़न आप घड़ाई, बाढी अवर ना कोए लगाइंदा। जोत निरँजण आदि निरँजण वेखे चाँईं चाँईं, नूर नुराना रूप आप दिखाइंदा। सुत दुलारा पकड़ उठाए बाहीं, आप आपणी गोद बहाइंदा। एका गुण रिहा समझाई, अवगुण संग ना कोए मिलाइंदा। तेरी रचना वेखां थाउँ थाईं, थान थनंतर आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाना सच संदेसा, सो पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ नर नरेशा, नर नरायण हुक्म वरताइंदा। आदि जुगादी एको वेसा, जुग जुग वेस वटाइंदा। तेरी गोद बहाए विष्न ब्रह्मा शिव गणेशा,

साचा हुक्म आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि रचना आप रचाइंदा। आदि पुरख हरि रचन रचाए, आपणी खेल आप खिलाईआ। शब्दी सुत हरि सेवा लाए, जननी जन आप हो जाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव झोली पाए, साची गोद सुहाईआ। धुर फ़रमाना इक्क अल्लाए, नाउँ निरँकारा करे पढ़ाईआ। शब्दी डोरी बन्धन पाए, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। परमानंदन इक्क वखाए, आप आपणी बूझ बुझाईआ। सुहागी छन्दन इक्क सुणाए, सो पुरख निरँजण आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द खेल खिलाईआ। शब्दी खेल करे करतारा, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। शब्दी शब्द महल्ल उसारा, सच महल्ला सोभा पाइंदा। शब्दी शब्द गगन मंडल दए सहारा, ब्रह्मण्ड खण्ड आप उपाइंदा। शब्दी शब्द नूर रवि ससि कर उज्यारा, जोती जोत डगमगाइंदा। शब्दी शब्द पवण हुलारा, पवण पवणी आप समाइंदा। शब्दी शब्द त्रैगुण धारा, त्रैगुण अतीता आप प्रगटाइंदा। शब्दी शब्द पंचम अखाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश नाच नचाइंदा। शब्दी शब्द नाद धुन्कारा, सुत ब्रह्मा आप पढ़ाइंदा। शब्दी शब्द बण लिखारा, चारे वेदां भेव खुल्लाइंदा। शब्दी शब्द बण वणजारा, साचा वणज आप कराइंदा। शब्दी शब्द बोल जैकारा, चारे बाणी आप अल्लाइंदा। शब्दी शब्द फड़ फड़ आरा, चारे जुग वण्ड वंडाइंदा। शब्दी शब्द खाणी बाणी भरे भण्डारा,
११५५ चारे खाणी आप उपजाइंदा। शब्दी शब्द लक्ख चुरासी करे पसारा, लिख लिख चार मेल मिलाइंदा। शब्दी शब्दी पंच दए ११५५
सहारा, पंचम पंचम जोड़ जुड़ाइंदा। शब्दी शब्द नौ दुआर वेखे अखाड़ा, जगत तृष्ना नाच नचाइंदा। शब्दी शब्द कर पसारा, घर घर विच बंक सुहाइंदा। शब्दी शब्द अमृत ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिराइंदा। शब्दी शब्द साचा ताड़ा, अनहद ताली ताल वजाइंदा। शब्दी शब्द साचा अखाड़ा, पंचम सखीआं आप आप वखाइंदा। शब्दी शब्द जोत उज्यारा, जोत निरँजण डगमगाइंदा। शब्दी शब्द ब्रह्म पसारा, आत्म ब्रह्म वेख वखाइंदा। शब्दी शब्द ईश जीव हुलारा, जगदीश आप कराइंदा। शब्दी शब्द कर पसारा, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाइंदा। धरत धवल दए सहारा, जल बिम्ब आप टिकाइंदा। एका शब्द बणे सिक्दारा, सच सिक्दारी आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि वरताउणा, एका वार जणाईआ। शब्दी तेरा खेल खिलाउणा, हरि साची वण्ड वंडाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाउणा, लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ाईआ। जुग चौकड़ी वण्ड वण्डाउणा, रुत्त रुतड़ी आप सुहाईआ। नव नौ खेड़ा आप वसाउणा, सत्त सत्त होए शनवाईआ। नव नौ डेरा आपे ढाउहणा, जो घड़या भन्न वखाईआ। आपणा पर्दा आप उठाउणा, जुग जुग वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण नाउँ रखाउणा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। पारब्रह्म ब्रह्म

मेल मिलाउणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। शब्द अनादी एका गाउणा, तुरीआ राग सुणाईआ। जीव जंत आप पढ़ाउणा, आपणा नाउँ जगत प्रगटाईआ। समरथ पुरख हरि खेल खिलाउणा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत रिहा समझाईआ। साचा सुत करे ध्याना, प्रभ चरन सीस झुकाइंदा। शाह पातशाह सच सुल्ताना, हउँ दरवेश मंग मंगाइंदा। लक्ख चुरासी करां प्रधाना, त्रैगुण तेरा नाच नचाइंदा। पंचम बन्नां एका गाना, नौ खण्ड पृथ्मी खेल खिलाइंदा। नाउँ सुणावां सच तराना, जुग जुग तेरा नाउँ प्रगटाइंदा। लेखा जाणां दो जहानां, लोआं पुरीआं खेल खिलाइंदा। मंडल मण्डप हो प्रधाना, रवि ससि आप भवाइंदा। लेखा जाणां ज़िमीं अस्माना, समुंद सागर भेव चुकाइंदा। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाना, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधाना, गुर अवतार रूप धराइंदा। सतिजुग तेरा नाउँ दए ब्याना, त्रेता तेरी वण्ड वंडाइंदा। द्वापर मारे इक्क निशाना, तीर निराला बाण चलाइंदा। कलिजुग खेले खेल श्री भगवाना, भेव कोए ना पाइंदा। कोटन कोटि जुग बीते विच जहाना, कोटी कोट विष्न ब्रह्मा शिव रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त आपणी धार आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि अन्त हरि जू धार, आपणे हथ्थ रखाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। सेवा लाए गुर अवतार, धुर फ़रमाना शब्द जणाईआ। भगत भगवन्त करे प्यार, आप आपणे रंग रंगाईआ। साचे सन्तां दए हुलार, सति सतिवादी सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख साचे लए उभार, आत्म ब्रह्म करे पढ़ाईआ। गुरमुख वखाए धाम न्यार, दर दरवाज़ा बन्द खुल्हाईआ। अठ्ठे पहर जोत उज्यार, दिवस रैण ना कोए वखाईआ। सचखण्ड बैठ सच्चे दरबार, जुग जुग आपणा वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी करे पार, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी रहे ना विच संसार, जो आया उठ उठ जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे रिहा जणाईआ। सुत दुलारे वड बलवान, शब्दी तेरा रंग रंगाया। तेरा खेल दो जहान, पुरख अबिनाशी वेख वखाया। तेरा भेव ना पायण वेद पुराण, शास्त्र सिमरत रहे तेरा जस गाया। तेरा नाउँ गीता ज्ञान, पुराण अठारां रहे ध्याआ। तेरी महिमा करे अञ्जील कुरान, तीस बतीसा सेवा लाया। तेरा कलमा सच ईमान, अमाम अमामा सिर टिकाया। तेरा छत्र दो जहान, पुरख अबिनाशी आप झुलाया। मिहबान बीदो आदि जुगादि नौजवान, बी ख़ैर या अल्ला बिस्मिल आपणी खेल खिलाया। उच्चे मन्दिर बैठ मकान, हक मुकामे सोभा पाया। आपे देवे सच पैग़ाम, पीर पैग़म्बर रिहा समझाया। आपे होए वड अमाम, शाह अमामां नाउँ धराया। आलम उल्मा प्याए एका जाम, आब हयात हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाया। जुग चौकड़ी वेखणहारा, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। सचखण्ड वसे एकँकारा, आपणी धार चलाइंदा। लेखा जाणे गुर अवतारा, लोकमात वेख वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरे पारा, कलिजुग आपणा नाच नचाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी लग्गा अखाड़ा, माया ममता नाल रलाइंदा। ईसा मूसा बोल जैकारा, हक हकीकत एका नाअरा लाइंदा। संग मुहम्मद चार यारा, चारों कुण्ट डौरू वाइंदा। अल्ला राणी करे पुकारा, मीआं नैण ना कोए उठाइंदा। वाह वा तेरी कुदरत बेऐब परवरदिगारा, कादर तेरी खेल खिलाइंदा। आपे वसे सभ तों न्यारा, दिस किसे ना आइंदा। गुरुआं अवतारां दे सहारा, एका नाम जपाइंदा। उच्ची कूक कूक करन पुकारा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सर्ब जणाइंदा। आपणा खेल आपणे हथ्थ रक्खें तूं रक्खणहारा, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। आदि जुगादी वरते वरतारा, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, आपे वेखे खेल तमाशा, पृथ्मी आकाशा फोल फुलाइंदा। पृथ्मी आकाश खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। निरगुण निरवैर इक्क इकल्ला, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। पावे सार जला थला, जल थल महीअल वेख वखाईआ। पर्दा लाहे जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँग्घी डल्ला, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलाईआ। लक्ख चुरासी अंदर सच सिँघासण एका मल्ला, आत्म सेजा आसण लाईआ।
११५७ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी देवे साचा वर, एका तत्त जणाईआ। एका तत्त हरि का नाउँ, आदि ११५७
जुगादि रखाइंदा। आप रखाए साचे थाउँ, थान थनंतर सोभा पाइंदा। जुगा जुगन्तर करे सच न्याउँ, सच अदालत आप रखाइंदा। हरिजन साचे फड़ फड़ बाहों, आपणी गोद बहाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, साची चोग चुगाइंदा। आपे पिता आपे माउँ, लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी वण्ड वंडाइंदा। साची वण्डे हरि जू वण्ड, वण्डणहार अख्वाया। लेखा जाणे कोटन कोटि ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड अपणा खेल खिलाया। पर्दा लाहे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज भेव चुकाया। लक्ख चुरासी नार सुहागण वेखे रंड, हरि हरि कन्त ना कोए हंढाया। चारों कुण्ट भेख पखण्ड, जूठ झूठ होए हल्काया। कोए ना गाए सुहागी छन्द, रसना जेहवा ना कोए सालाहया। किसे घर ना दिसे साचा चन्द, जगत अन्धेरा छाया। गुरमुख विरला पाए परमानंद, जिस जन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी आपणी वण्ड आपणे हथ्थ रखाया। आपणी वण्ड वण्ड भगवान, आपणा खेल खिलाईआ। सतिजुग साचे हो प्रधान, सति सतिवादी रूप वटाईआ। त्रेता लेखा सीआ राम, राम रमईया रूप धराईआ। द्वापर लेखा कृष्ना काहन, मुकंद मनोहर लखमी नरायण वड वड्याईआ। कलिजुग अन्त

हो प्रधान, ईसा मूसा नाद वजाईआ। संग मुहम्मद चार यार मसला पढ़न कुरान, शरअ शरीअत इक्क वखाईआ। साचा मज़्ब दीन ईमान, इबनउलवक्त आप जणाईआ। निरगुण जोत हो प्रधान, नानक नईया नाम वखाईआ। सति नाम दे पैग़ाम, चार वरन करे पढ़ाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश देवे दान, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। काया मन्दिर सच मकान, घर वसे साचा माहीआ। अठ्ठे पहर नाद धुन्कान, आपणा राग रिहा सुणाईआ। जो जन अन्तर आत्म करे ध्यान, पतित पावन वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दए वड्याईआ। शब्द गुर नानक गोबिन्द, एका रंग समाइंदा। सर्ब जीआं जुग मेटे चिन्द, चिंता चिखा ना कोए जणाइंदा। दाता दानी गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, साचे सागर आप नुहाइंदा। लक्ख चुरासी ब्रह्म बिन्द, ज़ात पात मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप वड्यांअदा। साचा नाम वड्डा वड, हरि हरि आप उपाइंदा। आपणे अन्तर आपे कढ्ढ, लक्ख चुरासी विच रखाइंदा। जीव जंत लडाए लड, प्रेम प्यार इक्क सिखाइंदा। आप जणाए साची हद्द, पार किनारा आप वखाइंदा। साचा जाम प्याए मदि, अमृत रस चुआइंदा। नानक निरगुण हरिजन आपणे घर सद्द, नित सदड़े सति सुणाइंदा। गुरमुख बणाई साची यद, वरन बरन ना कोए वखाइंदा। जो आया सो जाए लद्द, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। जो घड़या सो जाए भज्ज, घड़न भन्नणहार आप भनाइंदा। कलिजुग जीव हरि मन्दिर बहणा सज, काया मन्दिर अंदर आप वखाइंदा। सतिगुर पूरा पर्दा लए कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। वेले अन्त लाउण ना देवे कोई पज्ज, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्दी शब्द धराइंदा। शब्द गुरदेव आत्म परमात्म, परम पुरख वड्याईआ। शब्द सुहाग शब्द मातम, शब्द खेले खेल हर घट थाँईंआ। शब्द बाहर शब्द बातन, शब्द नूर शब्द ज़हूर, शब्द शब्दी वेख वखाईआ। शब्द आसा शब्द मनसा शब्द करे पूर, शब्दी सेव कमाईआ। शब्द ख़ाली शब्द भरपूर, शब्द हाज़र शब्द हज़ूर, हज़रत शब्द रूप वटाईआ। शब्द नेड़े शब्द दूर, शब्द शब्दी साची धूढ़, गुरमुख विरला मस्तक लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम आप सालाहीआ। नाम सालाहे सालाहण योग, जुग करता आप सालांहयदा। नाम होए साचा रस भोग, नाम अमृत साची चोग, तृष्ना भुक्ख गंवाइंदा। नाम कट्टे हउमे रोग, माया ममता मोह जलाइंदा। नाम वखाए साचा जोग, जोग जोगीशर आप जणाइंदा। नाम वखाए साची ओट, नानक गोबिन्द इक्क समझाइंदा। नाम लगाए साची चोट, सच नगारा इक्क वजाइंदा। नाम कढ्ढे झूठा खोट, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। नाम मिलाए निर्मल जोत, जोती जोत समाइंदा। नाम नाता तोड़े वरन गोत, ज़ात पात मेट मिटाइंदा। हरि का नाम ना जपया जाए होंट, रसना

११५८

जेहवा ना कोए हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन एका दर, एका नाउँ रखाइंदा। हरि नाउँ जो जाए भुल्ल, अभुल दए सज़ाईआ। नानक तोले साचा तोल, तेरां तेरां गया समझाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, अडुल कदे ना जाईआ। लक्ख चुरासी ना रहिणा अनभोल, कलिजुग आपणा बल वखाईआ। दरगाह साची कर के आया कौल, संग मुहम्मद नाल मिलाईआ। नाता तोड़ां धरनी धरत धौल, सगला संग ना कोए वखाईआ। जूठ झूठ रूप जावां मौल, घर घर करां कुड़माईआ। बिन हरि नामे ख़ाली करां खोल, पंज तत्त हट्ट ना कोए विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक निरगुण गया समझाईआ। नानक निरगुण पंज तत्त, एका शब्द जणाया। घर विच मिले ब्रह्म मति, गुर सतिगुर रिहा पढ़ाया। बीज बीजे साचे वत, बण किरसाणा हल चलाया। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत, अमृत मेघ बरसाया। सति सन्तोख देवे धीरज जत, जगत तृष्ना मेट मिटाया। इक्क चढ़ाए साचे रथ, बण रथवाही सेव कमाया। जगत विकारा देवे मथ, नाम मधाणा एका पाया। शब्द सुणाए महिमा अकथ, अनहद ताल वजाया। निरगुण साचा मार्ग दस्स, सरगुण ल्ए मिलाया। जो जन वक्त लँघाए हस्स हस्स, पुरख अबिनाशी दए सज़ाया। कलिजुग अन्तिम लोकमात आए नस्स, निहकलंकी जामा पाया। चार जुग गुर अवतार पीर पैग़म्बर मुल्ला मुसायक औलीए शेख़ पीर पैग़म्बर, यारां यार वेख वखाया। अञ्जील कुरान करे वस, ना कोई सके सीस उठाया। प्रगट हो पुरख समरथ लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, दो जहानां वेखे नंठ नट्ठ, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाया। एका खण्डा नाम चण्ड प्रचण्ड, दो जहानां वण्डे वण्ड, नौ खण्ड पृथ्मी देवे दंड, लक्ख चुरासी मेटे भेख पखण्ड, ना कोए दीसे नार दुहागण रंड, जूठ झूठ दए खपाया। दूई द्वैती ढाहे कंध, इक्क सुणाए सुहागी छन्द, लेखा चुकाए सूरज चन्द, विष्न ब्रह्मा शिव बैठण सीस झुकाया। नेत्र रोवे सुरपति राजा इन्द, करे खेल गुणी गहिन्द, अन्तिम सभ दी मेटे चिन्द, आपणी चिंता ना कोए रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक दिता एका वर, कलिजुग अन्त रिहा समझाया। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाईआ। महांबली हो के आउणा, मात पित ना कोए जाईआ। धुर फ़रमाना इक्क सुणाउणा, दो जहानां आप अल्ाईआ। अमाम अमामां वेस वटाउणा, पीर पैग़म्बर वेखे शहिनशाहीआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाउणा, चौथे जुग डेरा ढाहीआ। राज राजाना ख़ाक मिलाउणा, शाह सुल्तान रहिण कोए ना पाईआ। ऊँच नीच पन्ध मुकाउणा, ज़ात पात करे सफ़ाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका धाम बहाउणा, जगत चमढ़ी ना वण्ड वंडाईआ। एका दृष्टी राम दरसाउणा, इष्ट देव इक्क अख्वाईआ। एका राम नज़री आउणा, भूशन बस्त्र आप पहनाईआ। एका कलमा

नबी पढ़ाउणा, कायनात करे पढ़ाईआ। मन्दिर मस्जिद काया काअबा इक्क वखाउणा, आब हयात दए प्याईआ। भुल सवाब ना कोए वखाउणा, सच अहिबाब, रबाब इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्दी शब्द करे शनवाईआ। शब्दी ढोला शब्दी गीत, हरि शब्दी शब्द सुणाइंदा। शब्द साजण शब्द मीत, शब्द अतीत मेल मिलाइंदा। शब्द पतित शब्द पुनीत, पतित पापी शब्द तराइंदा। शब्द नाम सदा अनडीठ, लिखण पढ़न विच ना आइंदा। शब्द चलाए जुग जुग रीत, साची रीती शब्द चलाइंदा। शब्द देहुरा शब्द मन्दिर शब्द मसीत, बिन हरि शब्दे किसे दर ना दिसे कोए प्रीत, ख़ाली दर सर्ब वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम लक्ख चुरासी तेरी परखे नीत, लिख लिख लेखा आपणे हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका शब्द शब्द भण्डारा, एका वरते वरतणहारा, नर निरँकारा आप वरताइंदा। शब्द भण्डारी हरि निरँकार, आदि जुगादि वरताईआ। नव नौ चार कर विहार, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। लेखा जाणे तेई अवतार, अभुल भुल कदे ना जाईआ। भगत भगवन्त कर के गए पुकार, दस अठ अठ समझाईआ। गुर गुर दे दे नाम धार, नाम नामा गए समझाईआ। गोबिन्द बोल फ़तह जैकार, एका डंका गया वजाईआ। कलिजुग अन्तिम आवे हार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मात पित ना कोए प्यार, पिता पूत ना कोए सहाईआ। नार कन्त ना कोए आधार, विभचार सर्ब कमाईआ। मन्दिर मस्जिद ना कोए गुरदुआर, गुर का शब्द ना कोए गाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरार, हित हित ना कोए रखाईआ। चारों कुण्ट ठग्ग चोर यार, आपणा बल रहे वखाईआ। दीन मज़्हब होण ख्वार, वरन बरन पए लड़ाईआ। दिस ना आए सांझा यार, परवरदिगार मुख छुपाईआ। वेख वखाए ना पुरख अकाल, अकाल अकाल ना कोए मनाईआ। सृष्ट सबाई होए बेहाल, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। रक्खया करे ना महाकाल, काल कूके नेत्र नैणां नीर वहाईआ। राए धर्म सुरत संभाल, आपणी आप लए अंगड़ाईआ। चित्रगुप्त लेखा दए वखाल, लिख लिख लेखा थाउँ थाँईंआ। लाड़ी मौत उप्पर दए लाल दुशाल, लाल मैंहिन्दी हथ्थ रखाईआ। मनमुख जीव कलिजुग अन्तिम लए भाल, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। कोई ना बणे किसे दलाल, वेले अन्त ना कोए छुडाईआ। किसे लेखे लग्गे ना खादा हलाल, हल्क हल्क रिहा कुरलाईआ। गोबिन्द सूरा दिसे ना किसे नाल, मनमुख बैठे मुख भवाईआ। जिस ने वारे आपणे लाल, लालन आपणा नाउँ रखाईआ। होए सहाई शाह कंगाल, कंगाल कंगालां गोद बहाईआ। कलिजुग जीव होए नादान, चार वरन बैठे भुलाईआ। अन्त कूक कूक दे के गया ब्यान, हल्फ़ीआ ब्यान आप लिखाईआ। प्रगट होए श्री भगवान,

निहकलंका नाउँ धराईआ। सम्बल नगर इक्क मकान, आ के वसे साचा माहीआ। वेद व्यासा तेरी आसा पूरी करे आण, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चा टिल्ला पर्बत आप सुहाईआ। मूसा तेरा रक्खे माण, तेरे पिच्छे आए तेरा पैग़म्बर नूरी जल्वा नूर धराईआ। मुहम्मद तेरी वेखे आण, करे कल्याण बेपरवाहीआ। चौदां तबक करे पहचान, आप पहचान विच ना आईआ। जोद्धा सूरबीर बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। साचे अश्व चढ़े नौजवान, दुलदुल आपणा आप दुड़ाईआ। चारों कुण्ट वेखे बेईमान, शैतान कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा निशाना दए मिटाईआ। कलिजुग तेरा निशान मिटाउणा, निहकलंक कल आ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, धरत मात दी गोद सुहा। एका मन्त्र नाम दृढ़ाउणा, निष्अक्खर जाप जपा। एका मन्दिर आप उपजाउणा, पारब्रह्म प्रभ वेस वटा। एका इष्ट सर्ब वखाउणा, आत्म परमात्म बन्धन पा। एका हुक्म आप वरताउणा, हुक्मी हुक्म दए जणा। ज़ात पात ना कोए रखाउणा, ऊँच नीच ना कोए वखा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा दए मुका। कलिजुग लेखा मुकणा, आई अन्तिम वार। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, मन्न मन्न गए गुर अवतार। पुरख अबिनाशी शेर रूप हो के बुक्कणा, सिँघ मारे इक्क भबकार। कलिजुग जम्बक अन्तिम लुकणा, नेत्र नैण होए शर्मसार। पुरख अबिनाशी मूंह

११६१ दे भार सुट्टणा, उप्पर पाए आपणा भार। दूजी वार फेर ना उठणा, तिन्न जुग दए सवाल। त्रैगुण तेरा घर लुट्टणा, शाह ११६१

सुल्तान होण कंगाल। जूठ झूठ तेरा बूटा पुट्टणा, लक्ख चुरासी विच्चों भाल। वरन बरन शौह दरयाए सुट्टणा, ज़ात पात सुरत ना सके संभाल। सतिजुग सुहाए साची रुत्तना, रुत्त बसन्त करे आप प्रितपाल। भाग लगाए पंज तत्त काया बुत्तना, गुरमुख साचे लए उठाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बैठ सच्ची धर्मसाल। सच्ची धर्मसाल सचखण्ड दुआरा, हरि साचा आप सुहाइंदा। कलिजुग अन्तिम करे पार किनारा, बीस अठारां वेख वखाइंदा। सम्मत उन्नी चढ़े विच संसारा, पहली चेत रुत्त जणाइंदा। चारों कुण्ट होए हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। नौ खण्ड लुट्टया जाए दिन दिहाढ़ा, राज राजान ना कोए बचाइंदा। ज़िमीं अस्मानां टुट्टे पाड़ा, लग्गी अग्ग ना कोए बुझाइंदा। कलिजुग रो रो कढ्ढे हाढ़ा, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। साधां सन्तां घर घर जा जा मारदा रिहा धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलाइंदा। पुरख अबिनाशी फड़ के बन्नूणा सतारां हाढ़ा, अंग अंग नाल बंधाइंदा। चारों कुण्ट पैण झाड़ां, साचा संगी नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा खेड़ा आपे ढांहयदा। कलिजुग खेड़ा जाणा ढठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाया। सम्मत उन्नी गिड़नी लठ्ठ, पुरख अबिनाशी रिहा गढ़ाया। लक्ख चुरासी पा

पा नथ्थ, चारों कुण्ट दए भवाया। साची वस्त ना किसे हथ्थ, ख़ाली हथ्थ रहे वखाया। किसे नज़र ना आए रामा सुत दसरथ, कृष्ना नंद ना मेल मिलाया। ईसा मूसा ना होया किसे वस, मुहम्मद रंग ना कोए चढ़ाया। नानक निरगुण हिरदे गया ना वस, गोबिन्द जाम अमृत रस ना किसे चखाया। मन वासना हो के सारे वस, आपणा आप रहे लुटाया। सम्मत बीस बीस खेड़ा होणा भट्ठ, भट्ठी अग्न आप तपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा मात धर, बीस इकीस इक्क हदीस दए पढ़ाया।

★ १७ भाद्रों २०१८ बिक्रमी नाज़र सिँघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ★

सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, आदि जुगादि समाइंदा। हरि पुरख निरँजण राज रजाना, शाहो भूप नाम धराइंदा। एकँकारा जोद्धा सूरबीर बलवाना, बल आपणा आप उपाइंदा। आदि निरँजण नूर नूर नुराना, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता रूप रंग रेख ना कोए रखाना, बेअन्त आपणी खेल खिलाइंदा। श्री भगवान झुलाए सच निशाना, सति सतिवादी आप उपाइंदा। पारब्रह्म प्रभ मर्द मरदाना, सच मरदानगी आप कमाइंदा। सचखण्ड वसे सच मकाना, दर घर साचा आप उपाइंदा। निरगुण निरगुण हो प्रधाना, आपणी कल आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आप अख्वाइंदा। आदि पुरख एका हरि, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। आपे वसे आपणे घर, घर साचा सोभा पाईआ। आपे पुरख नारी नर, नरायण आपणी खेल खिलाईआ। आपे वरनी वरन ल्ए वर, वर दाता आप हो जाईआ। आपणी करनी ल्ए कर, करता पुरख बेपरवाहीआ। आपणे मन्दिर बहे चढ़, साचा पौड़ा इक्क लगाईआ। आपणे दर वेखे खड़, सो दर साचा सोभा पाईआ। करे खेल अलख अगम्म अपार अपर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणा नाउँ धराईआ। आदि पुरख हरि बेपरवाह, सो पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। निरगुण निरवैर आपणा खेल खिला, मूर्त अकाल डगमगाइंदा। अजूनी रहत सच्चा शहिनशाह, साचे तख्त सोभा पाइंदा। आप आपणा बण मलाह, खेवट खेटा सेव कमाइंदा। दर दरबारा आप सुहा, सचखण्ड दुआर वड्यांअदा। जोती जोत डगमगा, नूर नूर प्रगटाइंदा। आपे वसे आपणे थाँ, थान थनंतर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आपणी कार आप कराइंदा। करे खेल अपर अपार, बेअन्त वडि वड्याईआ। साचा धाम कर त्यार, सचखण्ड सोभा पाईआ। हुक्मी हुक्म कर वरतार, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। भूपत भूप बण सिक्दार, शाह सुल्तान आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ।

दर दरवेश बण भिखार, सीस जगदीस आप झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप प्रगटाईआ। सचखण्ड दुआर आप उपा, आपणी महिमा आप जणाइंदा। आपणा कर खेल बेपरवाह, साची खेल आप खिलाइंदा। आपणा दीपक आप टिका, आपे वेख वखाइंदा। आपणा मन्दिर आप सुहा, आपे सोभा पाइंदा। आपणा रंग आप रंगा, रंग रंगीला आप हो जाइंदा। आपणी सेजा आप विछा, आपे आसण लाइंदा। आपणा रूप आप धरा, आपे वेख वखाइंदा। आपणा सगन आप मना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरे खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। आदि पुरख इक्क इकल्ला, सोभावन्त सोभा पाईआ। आप वसया सच महल्ला, उच्च अटल्ला दए वड्याईआ। आपणी जोत आपे बल्ला, नूर नूर विच प्रगटाईआ। आपणा फड़े आपे पल्ला, आप आपणा बन्धन पाईआ। आपणे अंदर आपे रल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। सचखण्ड साचा साचा दर, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। आपणी करनी आपे कर, आपणा खेल खिलाइंदा। आपे नारी आपे नर, नर नरायण वेस वटाइंदा। आपणा पल्लू आपे फड़, आपे गंढु पुआइंदा। आपणा मेला आपे कर, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणी सेजा आपे चढ़, आपणा अंग आप लगाइंदा। आपणे अंदर आपा धर, आपे खेल खिलाइंदा। आपे बण जननी जन, हरि दाई दाया रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे खड़, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, इक्क इकल्ला आप सुहाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, बेअन्त वड वड्याईआ। वेस वटाए नारी कन्त, कन्त कन्तूहल सेज सुहाईआ। आपे चाढ़े रंग बसन्त, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। आप बणाए आपणी बणत, घाड़न घड़णहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साचा घाड़न लए घड़ाईआ। साचा घाड़न निरगुण घड़या, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। आपणा पल्लू आपे फड़या, आपे वेख वखाईआ। आपणे मन्दिर आपे धरया, आपे रिहा टिकाईआ। आपणे जेहा आपे करया, दूसर संग ना कोए रलाईआ। ना जन्मे ना कदे मरया, बेअन्त आपणी खेल आप खिलाईआ। सच दुआरे आपे चढ़या, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा रिहा सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा साचा धाम, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाइंदा। निरगुण सेवा कर निष्काम, आपणी सेवा आप लगाइंदा। आपे होया जाणी जाण, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। बाडी लग्गे ना कोए लुहार तरखाण, घाड़त घड़त ना कोए वखाइंदा। निरगुण बणाए निरगुण मकान, निरगुण आपणा ध्यान लगाइंदा। निरगुण झुलाए सच निशान, सचखण्ड

दुआरे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप वड्यांअदा। सच दुआरा सचखण्ड, अखण्ड रचन रचाईआ। पुरख अबिनाशी वंडी आपणी वण्ड, आपणा हिस्सा आपे पाईआ। आदि रक्खया ना कोए संग, दूजा साथ ना कोए जणाईआ। आपे जाणे आपणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। करे खेल साहिब बख़्शंद, बख़्शिश आपणी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा आप सलाहीआ। सचखण्ड बणया सच मकाना, हरि साचा वेख वखाईआ। चारों कुण्ट नूर भगवाना, नूर नुराना डगमगाईआ। एका भूप इक्क राजाना, इक्क सिँघासण आसण लाईआ। एका राग इक्क तराना, एका नादी नाद वजाईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, एका रिहा सुणाईआ। एका दरवेश दर दरबाना, एका बैठा सीस झुकाईआ। एका खेले खेल महाना, आपणी खेल आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा हरि हरि पेख, आपणी ख़ुशी मनाइंदा। रूप रंग ना दिसे रेख, चार दीवार ना कोए चिणाइंदा। आप वसाया आपणा देस, देस साचे सोभा पाइंदा। तख़्त सुहाए नर नरेश, साचा तख़्त आप उपाइंदा। निरगुण करया निरगुण वेस, निरगुण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा अपर अपारा, हरि साचा सच उपाईआ। दीआ बाती
११६४ इक्क उज्यारा, निरगुण धारा लए प्रगटाईआ। रवि ससि ना कोए सितारा, सूरज चन्द ना कोए चढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ११६४
ना कोए पसारा, त्रैगुण धारा ना कोए वखाईआ। पंचम दिसे ना कोए अखाड़ा, धरत धवल ना कोए वड्याईआ। गुर पीर ना कोए अवतारा, पीर पैग़म्बर ना कोए रखाईआ। ना कोई पुरख ना कोई नारा, जीव जंत ना रचन रचाईआ। समुंद सागर ना डूँग्घी गारा, जंगल जूह उजाड़ पहाड ना रचन रचाईआ। पिता पूत ना कोए अधारा, मात गोद ना कोए सुहाईआ। शास्त्र सिमरत ना कोए प्यारा, वेद कतेब ना कोए पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत ना कोए हुलारा, ज्ञान ध्यान ना कोए समझाईआ। खाणी बाणी ना कोए पुकारा, कूक कूक ना कोए अल्ाईआ। करया खेल अपर अपारा, प्रभ आपणी रचन रचाईआ। सचखण्ड वसे एका एकँकारा, दूसर संग ना कोए रलाईआ। सच महल्ला कर प्यारा, उच्च अटल्ला आप वसाईआ। आपणा हुक्म कर वरतारा, आपे रिहा मनाईआ। आपणी इच्छया भर भण्डारा, आपे दए वरताईआ। निरगुण निरगुण कर उसारा, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। जोती अंदर जोती धारा, जोती जोत जोत समाईआ। जोती सुत सुत दुलारा, शब्दी शब्द प्रगटाईआ। शब्दी शब्द शब्द प्यारा, हरि सच्चा मेल मिलाईआ। करनी करे हरि करनेहारा, करता पुरख वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा घर वसाईआ। सचखण्ड दुआरा हरि वसाया, वसणहारा एक। आपणा

नूर आप धराया, आपे रक्खे आपणी टेक। आपणा राग आप अलाया, आपे सुणे सुणाए आपे लए पेख। आपणा राज आप बणाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा भेत। आपणा भेत भेव अभेदा, आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि पुरख एको एका, एका कल धराईआ। आपणे मन्दिर कर प्रवेशा, आपणा बन्धन पाईआ। आपणे तख्त बहे नरेशा, आपणा हुक्म सुणाईआ। आपणे दर करे आदेशा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। आपणा खेल आपे वेखा, वाह वाह आपणी ख़ुशी मनाईआ। आपणे हथ्थ रख्या आपणा लेखा, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे वड़, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। आपणी इच्छया आपे रक्ख, आपे खेल खिलाइंदा। सो पुरख निरँजण हो प्रतक्ख, निरगुण धार धार प्रगटाइंदा। एकँकारा हो हो वक्ख, आपणा राग वखाइंदा। आदि निरँजण अलखणा अलख, अलख अगोचर खेल कराइंदा। श्री भगवान आपणी पूरी करे आस, आसा आसा विच मिलाइंदा। श्री भगवान हो हो दास, आपणी सेव कमाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर प्रकाश, रूप अनूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचना आप वखाइंदा। साची रचना हरि निरँकार, आपणी आप कराईआ। सचखण्ड दुआरे

११६५ हो त्यार, आपणा मता आप पकाईआ। साची इच्छया बण वरतार, आपणा भण्डारा आपणी झोली पाईआ। लेखा जाणे पुरख नार, नारी कन्त सेज सुहाईआ। सुत दुलारा कर त्यार, शब्दी नाउँ प्रगटाईआ। शब्दी देवे इक्क सहार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा खोल्हां सच किवाड़, आपणी बणत बणाईआ। थिर घर दयाँ वाड़, सच दुआरे आप टिकाईआ। आदि जुगादि करां प्यार, भुल कदे ना जाईआ। तेरा दस्सां सच विहार, एका गुण जणाईआ। करां खेल अगम्म अपार, बेअन्त वेस वटाईआ। साचा हुक्म मन्नणा पए सच्चे दरबार, ना मोड़े मोड़ मुड़ाईआ। पुरख अबिनाशी ख़बरदार, तेरी निन्दरा रिहा गुआईआ। जुगा जुगन्तर खेल न्यार, जुग करता आप कराईआ। तेरा उसारां महल्ल मुनार, अटल दयाँ वड्याईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी धार, लोआं पुरीआं रचन रचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पावे सार, आप आपणी दया कमाईआ। त्रैगुण माया तत्त विचार, तेरे रंग रंगाईआ। लक्ख चुरासी तेरा प्यार, घड़ भाण्डे लए बणाईआ। निरगुण सरगुण कर त्यार, देवे सच सलाहीआ। पंचम मीता हो उज्यार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश गुणवन्ता मेल झोली पाईआ। निरगुण निरगुण करे प्यार, सरगुण सरगुण दए समझाईआ। रक्त बूंद खेल न्यार, जोती जाता हो उज्यार, मन मति बुध पावे सार, आत्म ब्रह्म निराकार, निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। ईश जीव हो उज्यार, आपणी ख़ुशी मनाईआ। साचे मन्दिर पावे सार, डूँग्घी कंदर फोल फुलाईआ। सुत दुलारे रहिणा ख़बरदार, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। घट घट अंदर होए उज्यार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। अमृत ११६५

आत्म ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिराईआ। जोती जोत करे उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। आपणी रचना कर त्यार, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। सुत दुलारे साची धार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे चरन करन निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। एका हुक्म मन्नणा पए एका वार, हरि साचा करे जणाईआ। निष्अक्खर कर त्यार, निरवैर रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सचखण्ड दुआरे साचे खड़, थिर घर रिहा सुहाईआ। थिर घर वसे सुत दुलारा, सचखण्ड वासी आप वसाइंदा। करे खेल अपर अपारा, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यारा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। एका वस्त सति भण्डारा, धुर दरबारी आप वरताइंदा। लक्ख चुरासी कर त्यारा, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी देवे साचा वर, साचा हुक्म सुणाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, आदि पुरख जणाईआ। शब्दी तेरा खेल महाना, पाताल आकाश तेरी वड्याईआ। तेरा मृदंग इक्क वजाना, आदि जुगादि सुणाईआ। तेरा घर इक्क वसाना, नव खण्ड पृथ्मी खेल खिलाईआ। तेरा रूप इक्क दरसाना, नूर नूर विच प्रगटाईआ। तेरा जाम इक्क प्याना, अमृत रस चुआईआ। तेरा घर इक्क वसाना, उजड़ कदे ना जाईआ। तेरी वण्ड आप वण्डाना, वण्ड वण्डे बेपरवाहीआ। तेरा लेखा आप समझाना,

११६६ ब्रह्म वेता ब्रह्मा सुत पढ़ाईआ। चार वेदां भेव खुल्लाना, चार चार मुख सालाहीआ। चारे बाणी आप जगाना, परा पसन्ती ११६६

मद्धम बैखरी आपणा पर्दा लाहीआ। चारे खाणी वण्ड वंडाना, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज बणत बणाईआ। चारे जुग हुक्म चलाना, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग कार कमाईआ। चारे वरन वेख वखाना, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बन्धन पाईआ। चारों कुण्ट हो प्रधाना, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। जुग जुग खेले खेल श्री भगवाना, शब्दी शब्द शब्द लक्ख चुरासी करे पढ़ाईआ। जुग जुग मार्ग एका लाणा, वेस अनेक धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे देवे वर, वरदाता आप हो जाईआ। आदि पुरख दिता वर, सो पुरख निरँजण खेल खिला। सुत दुलारे वसे घर, दो जहानां वेख वखा। लक्ख चुरासी अंदर जाणा वड़, घट घट आपणा नूर धरा। एका अक्खर जाणा पढ़, लक्ख चुरासी दे समझा। एका मन्दिर जाणा चढ़, साचे मन्दिर आसण ला। एका हुक्म देणा कर, हुक्मी हुक्म सच वरता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख रिहा समझा। आदि पुरख हरि आप समझाए, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। सुत दुलारा सेवा लाए, साची सेवा इक्क समझाईआ। जुग चौकड़ी वण्ड वण्डाए, कोटन कोटि काल बिताईआ। गुर अवतार लए प्रगटाए, लोकमात करे रुशनाईआ। भगत भगवन्त लए जगाए, आत्म ब्रह्म वेख वखाईआ। सन्त

कन्त हरि लए मिलाए, आप आपणे अंग लगाईआ। गुरमुख साचे लए उठाए, आलस निन्दरा दए गुआईआ। गुरसिख आपणी गोद बहाए, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग खेड़ा आप वसाए, आप आपणा हुक्म वरताईआ। वार अठारां जोत प्रगटाए, रूप अनूप आप वखाईआ। अन्तिम लेखा दए मुकाए, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज लीला आप रखाईआ। अचरज लीला हरि करतार, जुग जुग आप वरताइंदा। सतिजुग अन्तिम उतरया पार, लोकमात प्रगटाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अपरम्पर धार चलाइंदा। तोड़नहारा गढ़ हँकार, बाण निराला आप रखाइंदा। दोए दोए रूप अगम्म अपार, त्रैगुण अतीता आप कराइंदा। ठांडा सीता सच दरबार, थिर घर साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, सति पुरख निरँजण आप वरताईआ। आदि जुगादि आपे वरते आपणा भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। करे खेल कृष्ना कान्हा, एका बंसरी नाम वजाईआ। मंडल मण्डप रास रचाना, साची सखीआं वेख वखाईआ। एका देवे नाम निधाना, गुणवन्त गुण समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस अवल्ला, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, साचा पल्लू हथ्थ उठाइंदा। सच संदेस एका घल्ला, आपणा नाउँ जणाइंदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, पंज तत्त वेख वखाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, काया खेड़ा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। आपणा रंग श्री भगवान, आदि जुगादि रंगाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, साचा खेल खिलाइंदा। ईसा मूसा देवे दान, संग मुहम्मद चार यार वेख वखाइंदा। निरगुण देवे इक्क निशान, सच निशाना आप उठाइंदा। नानक पाए पद निरबान, नाम सति मन्त्र दृढ़ाइंदा। गोबिन्द जोद्धा सूरबीर बलवान, एका खण्डा नाम उठाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, दो जहानां वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलाइंदा। जुग चौकड़ी उतरे पार, कोटन कोटि काल बिताईआ। नव नौ वेखे वेखणहार, चार चार वज्जे वधाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग आणी हार, विष्न ब्रह्मा शिव रहे कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल अगम्म अपार, साचे तख्त बैठ साचा माहीआ। वेखे विगसे वेखणहार, निरगुण निराकार आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादी साची कार, करता पुरख आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग चौकड़ी आपणे लेखे लाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी उतरे आपणे घाट, घाटा कोए रहिण ना पाया। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाया। जुग जुग चलाए रथ, रथ रथवाही वेस वटाया। लक्ख चुरासी पाए नथ,

चारों कुण्ट रिहा भुआया। वेखणहारा मन्दिर मस्जिद मट्ठ, शिवदुआले फोल फोलाया। पावे सार तीर्थ अठसठ, तट किनारा डेरा ढाहया। दो जहानां नठ नठ, नठ नठ चौदां लोकां पन्ध मुकाया। चौदां तबकां गेड़े उलटी लट्ठ, गेड़ा आपणा आप दवाया। कलिजुग अन्तिम करे भट्ठ, एका अग्न बसन्तर लाया। करे खेल साचा हरि, आदि पुरख एका नर, नर नरायण वेस वटाया। आदि अन्त खेल करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। लेखा जाणे गुर अवतारा, बेअन्त बेपरवाहीआ। पूरा करे कौल इकरारा, भुल कदे ना जाईआ। निहकलंक महांबली उतरे अवतारा, मात पित ना कोए जाईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, एका एक गया समझाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा मीत मुरारा, उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाईआ। कलिजुग अन्तिम आवे विच संसारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ । गोबिन्द बोल सच जैकारा, एका डंका रिहा सुणाईआ। सृष्ट सबाई करे ख़बरदारा, ब्रह्मण्डां खण्डां दए हिलाईआ। वसे आपणे धाम न्यारा, महल्ल अटल दए वड्याईआ। सम्बल नूर कर उज्यारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाईआ। तिक्खीआं रक्खे दोवें धारां, दो जहानां वेख वखाईआ। शब्दी शब्द इक्क हल्कारा, लोआं पुरीआं आप दुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्ाईआ। आपणा भेव आप खुल्ाउणा, आदि पुरख पर्दा लाहीआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाउणा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग लहिणा झोली पाउणा, पूर्ब कर्मां दे सलाहीआ। लक्ख चार बत्ती हज़ार जगत आयू पन्ध मुकाउणा, बंधी बन्धन इक्क वखाईआ। हुक्मी हुक्म इक्क सुणाउणा, धुर फ़रमाना आप अल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दे वड्याईआ। शब्दी अंदर साची धार, आदि जुगादि चलाईआ। शब्द गुर शब्द अवतार, शब्द भगत भगवन्त लए मिलाईआ। शब्द सन्त शब्द करतार, शब्द नार कन्त अख्वाईआ। शब्द गुरमुख करे प्यार, गुरमुख नाद शब्द वजाईआ। शब्द गुरसिख लए उभार, गुरमुख शब्द रूप वटाईआ। शब्दी शब्द जैकार, गुर अवतार ढोला गाईआ। जुगो जुग शब्द भण्डार, सो पुरख निरँजण आप वरताईआ। शब्द खेल सच्ची सरकार, लक्ख चुरासी रूप वटाईआ। शब्द अंदर शब्द बाहर, गुप्त ज़ाहर खेल खिलाईआ। शब्द मन्दिर मस्जिद गुरदुआर, शब्द मन्दिर मस्जिद मठ डेरा लाईआ। शब्द नाद धुन जैकार, गीता ज्ञान शब्द अख्वाईआ। शब्द शास्त्र सिमरत पुराण, शब्दी शब्द शब्द प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। शब्द जोद्धा सूरबीर बली बलवान, शब्द दो जहान डेरा लाईआ। शब्द लोआं पुरीआं खेल महान, शब्द सूरज चन्द रिहा चमकाईआ। शब्द धरत धवल आकाश, शब्द गगन मंडल सोभा पाईआ। शब्द शब्दी वेखे रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। शब्द सीता राम करे प्रनाम, शब्द सति अस्थान सुहाईआ। ईसा मूसा

११६८

१९६८

दे पैग़ाम, मुकामे हक इक्क सलाहीआ। शब्द मुहम्मद प्याए जाम, आबे हयात हथ्थ उठाईआ। शब्द जाणे सति कलाम, कायनात करे पढ़ाईआ। शब्द अमामां सिर अमाम, अमाम शब्दी नाउँ धराईआ। शब्द खेल श्री भगवान, आदि जुगादि कराईआ। कलिजुग अन्तिम शब्दी शब्द हो प्रधान, लोकमात वेस वटाईआ। शब्द गुर सदा मेहरवान, दीनन आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि शब्द अन्त शब्दी धार वखाईआ। शब्दी धार अन्तिम कल, कलवन्ता आप रखाइंदा। लक्ख चुरासी रिहा छल, भेव कोई ना पाइंदा। वसणहारा जल थल, महीअल आपणा खेल खिलाइंदा। जोती शब्दी गया रल, दिस किसे ना आइंदा। करे खेल घड़ी घड़ी पल पल, थित वार ना कोए जणाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, साची नगरी आसण लाइंदा। सच संदेस एका घल, दो जहान समझाइंदा। लक्ख चुरासी वेखे लग्गा फल, ब्रह्मा बूटा वेख वखाइंदा। विष्नूं भण्डार वेखे भरया डल, अन्तिम पर्दा लांहयदा। शंकर लाहुंदा वेखे खल्ल, त्रिसूल हथ्थ चमकाइंदा। करे खेल अज्ज कि कल, भेव कोए ना पाइंदा। सच सिँघासण बैठा मल्ल, साचा तख़्त आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी खेल आप कराइंदा। शब्दी ठोकर शब्दी धार, शब्दी शब्द आप जणाईआ। शब्द खण्डा शब्द कटार, शब्दी शब्द रिहा चमकाईआ। शब्दी मारे शब्द मार, शब्द शब्द वेख वखाईआ। शब्द आर शब्द पार, शब्द मँझधार रिहा वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्दी खेल खिलाईआ। शब्दी राग शब्दी नाद, हरि शब्दी शब्द वजाइंदा। शब्द खेल विच ब्रह्मादि । शब्द आदि शब्द जुगादि, शब्द मध्ध आपणा रंग रंगाइंदा। शब्द सन्त शब्द साध, शब्द सति सन्तोख ज्ञान दृढ़ाइंदा। शब्द जुग जुग करे पसार, जुग जुग शब्दी मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द खण्डा आप चमकाइंदा। शब्द खण्डा चमके दामन, चण्ड प्रचण्डका आप चमकाईआ। कोई ना बणे किसे दा ज़ामन, अन्तिम पल्लू रहे छुडाईआ। लहिणा देणा चुक्के क्षत्री शूद्र वैश ब्रह्मण, वरन बरन ना कोए वखाईआ। नाता तोड़े कामनी कमान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। जूठ झूठ करे ख्वार, आप आपणा बल धराईआ। प्रगट होए श्री भगवान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गुरमुख विरले पकड़ाए आपणा दामन, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। एथे ओथे होए ज़ामन, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जिस जन पकड़े दामन, सदा होए सहाईआ। नगर खेड़ा वसाए ग्रामन, काया बंक सोभा पाईआ। इक्क दूजे नूं आपे जानण, गुर चेला रूप वटाईआ। सतिजुग बन्नॄण आया बानॄण, कलिजुग लेखा रिहा मुकाईआ। गुरमुखां करे चानण, एका चन्द लए चढ़ाईआ। कलिजुग जीव आलणिउँ डिगे बोट ना फेर कोई पाए आलण,

११६८

आपणा भार ना सके उठाईआ। पल्ले नाम ना दिसे कोई दामन, झूठी गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त शब्दी रंग वखाईआ। शब्दी रंग हरि निरँकार, एका एक चढ़ाइंदा। वेख वखाए सर्ब संसार, लक्ख चुरासी फोल फुलाइंदा। ब्रह्मण्डां मारे मार, लोआं पुरीआं वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। दो जहानां वज्जे ताल, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलिजुग लेखा जाणे धन माल, त्रैगुण माया मूल चुकाइंदा। कलिजुग जीव होयण बेहाल, रहिमत रहीम ना कोए कमाइंदा। काया मन्दिर अंदर ख़ाली दिसे धर्मसाल, हरि का नाम ना कोए वसाइंदा। अठसठ तीर्थ रहे भाल, अन्तर झिरना ना कोए झिराइंदा। ढोलक छैणा वजाउँदे ताल, अनहद नाद ना कोए अलाइंदा। हथ्थीं फड़ फड़ फेरन माल, मन का मणका ना कोए भुआइंदा। दूजे दी दूजा करे संभाल, आपणी सुरत शब्द ना कोए मिलाइंदा। इक्क दूजे नूं सुणाउण सतिगुर दा हाल, आपणा हाल सतिगुर अग्गे ना कोए सुणाइंदा। सतिगुर सूरा दीन दयाल, जुग जुग वेख वखाइंदा। जन भगतां करे प्रितपाल, प्रितपालक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप कराइंदा। अन्तिम खेल हरि कराउणा, किरती किरत कमाईआ। कलिजुग झूठा खेड़ा ढाउणा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। माया ममता मोह चुकाउणा, हँकार विकार दए गंवाईआ। संसा रोग सर्ब मिटाउणा, हिंसा रंग ना कोए चढ़ाईआ। सच संजोग आप कराउणा, वरन बरन ना कोए लड़ाईआ। आत्म जोग इक्क सिखाउणा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। काया मन्दिर इक्क वसाउणा, घर घर विच कर रुशनाईआ। बजर कपाटी पर्दा लाउहणा, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। हँस काग रूप वटाउणा, सच सरोवर दए नुहाईआ। अनहद नादी नाद वजाउणा, एका राग अलाईआ। पंचम सख़ीआं मंगल गाउणा, साचा राग आप अलाहीआ। सुरती शब्दी एका घर बहाउणा, मेल मिलाउणा साचे माहीआ। आत्म मन्दिर इक्क वखाउणा, काया सेजा दए दरसाईआ। सो पुरख निरँजण निराकार निरवैर अजूनी रहत एका नज़री आउणा, इष्ट देव सर्ब लोकाईआ। नमो सति मन्त्र दृढ़ाउणा, नमो नमो वज्जे सति वधाईआ। ब्रह्म मति इक्क समझाउणा, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। रती रत रंग रंगाउणा, रंगया रंग उतर ना जाईआ। हज़ारा दरूद इक्क सिखाउणा, बसरी इस्म करे पढ़ाईआ। पीर दस्तगीर गुणी गहीर आपणा हथ्थ आप मिलाउणा, सख़ी सुल्तान बेपरवाहीआ। मुकामे हक फेरा पाउणा, दरगाह साची धाम सुहाईआ। लाशरीक ख़ुदा बेऐब परवरदिगार आपणा बन्धन आपे पाउणा, जल्वा नूर नूर विच समाईआ। हँ ब्रह्म आपणे रंग रंगाउणा, सोहँ आपणी धार चलाईआ। निहकर्मी आपणा कर्म कमाउणा, कर्म कांड ना कोई रखाईआ। साचा खेड़ा आप वसाउणा, दर घर साचा आप सुहाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, सीस ताज ना कोई उठाईआ।

११७१

ऊँचां नीचां एका दर बहाउणा, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग लग्गणा जग, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। कलिजुग कूड़ उडाउणा कग्ग, जगत रहिण ना पाईआ। त्रैगुण अग्नी बुझणी अग्ग, सांतक सत वरताईआ। हरिजन मेले सूरा सर्बग, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दरस वखाए उप्पर शाह रग, नौ दुआरे पार कराईआ। जाम प्याए एका मदि, अमृत आत्म मुख चुआईआ। शब्द वजाए साचा नद, अनहद राग सुणाईआ। सुरत सुआणी आपणे घर सद्द, शब्द हाणी लए मिलाईआ। इक्क वखाए चौथा पद, नैण नेत्र करे रुशनाईआ। डूँग्घी कँवरी आपे कढ्ढ, सुखमन टेढी बंक पार कराईआ। पारब्रह्म ब्रह्म लडाए लड, ईश जीव गले लगाईआ। पार लँघाए झूठी हद्द, साचे घर आप बहाईआ। लक्ख चुरासी नालों करे अड्ड, गुरमुख विरले वड वड्याईआ। भाग लगाए साची यद्द, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा दए मुकाईआ। तेरा लेखा मक्कणा, आई अन्तिम वार। हरि का भाणा कदे ना रुकणा, ना कोई मेटे मेटणहार। पुरख अबिनाशी शेर एका बुक्कणा, सिँघ रूप मारे भबकार। तेरा अन्तिम भाग निखुटणा, चारे कुण्टां आई हार। तेरा वसदा घर लुट्टणा, ना सके कोए संभाल। तेरा झूठा बूटा पुट्टणा, देवे जड़ उखाड़। अन्तिम आपणे खाते सुट्टणा, तिन्न जुग लए सवाल। सतिजुग साचा मात उठणा, पुरख अबिनाशी लए उठाल। आप सुहाए साची रुत्तना, रुत रुतड़ी वेखे आण। करे खेल अबिनाशी अचुतना, चेतन्न रूप कर संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल करे आप निरँकार। कलिजुग अन्तिम खेल कराउणा, निरगुण आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द लेखा पूर कराउणा, मेल मिलावा साचे माहीआ। सम्बल नगरी धाम सुहाउणा, साचे बंक दे वड्याईआ। नाम मृदंगा इक्क वजाउणा, तार सितार ना कोए हिलाईआ। कोटन कोटि ब्रह्मण्डां आप जगाउणा, जेरज अंडां पर्दा लाहीआ। आपणा कन्ढा आपे पार कराउणा, अद्धविचकार ना कोए रखाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत कारज अनन्दा इक्क कराउणा, एका दिवस शाह सुल्तान । वीह सौ वीह बिक्रमी पंदरां कत्तक सभ दा लेखा आप मुकाउणा, बाकी लेखा ना कोए वखाईआ। साचे तख्त बैठ सुल्ताना साचा हुक्म आप सुणाउणा, दो जहानां करे शनवाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मार्ग एका लाउणा, सत्तां दीपां सति करे पढ़ाईआ। सत्त रंग निशाना इक्क झुलाउणा, सति सतिवादी आप उठाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई कोई नज़र ना आउणा, एका ब्रह्म सर्ब दरसाईआ। सोहँ ढोला सभ ने गाउणा, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। नानक विचोला नज़री आउणा, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। राम कृष्न रूप प्रगटाउणा, मुक्ट बैण वेस वटाईआ। ईसा मूसा काला सूसा तन छुहाउणा, एका अल्फ़ी

तन हंढाईआ। संग मुहम्मद आपणा कलमा आप पढ़ाउणा, शरायत आयत इक्क दृढ़ाईआ। मुख नकाबी पर्दा लाउहणा, बेआबी ख़ुशी मनाईआ। रमईआ राम हर घट नज़री आउँणा, साँवल सुंदर अपणा रूप वटाईआ। नानक निरगुण जोती दीप जगाउणा, गुर अंजन नेत्र पाईआ। गोबिन्द अमृत जाम प्याउणा, दूई द्वैत दे मिटाईआ। घट घट अंदर पुरख अकाल इक्क वखाउणा, निरगुण बैठा आसण लाईआ। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण साचा बन्धन पाउणा, ना कोए तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। जोत ललाटी साचा चन्दन लाउणा, झूठा तिलक ना कोए वखाईआ। नाम निधाना जञ्जू पाउणा, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। सति सन्तोखी सुन्नत कराउणा, साची शरअ इक्क बणाईआ। गुरसिख गुर गुर गोद बहाउणा, आप आपणी गोद सुहाईआ। चार वरनां एका रंग चढ़ाउणा, उतर कदे ना जाईआ। धर्म कर्म इक्क वखाउणा, एका घर दे वसाईआ। एका पिता एका मात बणाउणा, दाई दाया इक्क अख्वाईआ। निहकलंक आपणा खेल आप कराउणा, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। गुरमुख विरले बूझ बुझाउणा, कलिजुग अन्तिम सुत्ती सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण आपणा खेल रिहा कराईआ। खेल करे श्री भगवाना, भगतन भेत जणाइंदा। गुरमुख उपजाए सच निशाना, लोकमात झुलाइंदा। अन्तर आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना, जगत विद्या ना कोए पढ़ाइंदा। अठ्ठे पहर इक्क तराना, रसना

११७२ जिहवा ना कोए हिलाइंदा। दिवस रैण नज़री आए श्री भगवाना, काया मन्दिर अंदर आसण लाइंदा। दर दर लभ्भणा फिरे जहाना, हरि का रूप हथ्थ किसे ना आइंदा। मुख छुपा के बैठा कृष्ना कान्हा, बंसरी नाम ना किसे सुणाइंदा। राम रम्मईआ आवे ना विच ध्याना, सीता सुरती ना कोए हंढाइंदा। नानक देवे ना सति परवाना, नानक शब्द ना कोए गाइंदा। गोबिन्द मिले ना सूरबीर बलवाना, गुर का खण्डा ना कोए चमकाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल महाना, भेव कोए ना पाइंदा। प्रगट हो श्री भगवाना, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे मार ध्याना, सतिजुग त्रेता द्वापर फोल फुलाइंदा। जुग जुग विछड़े मेले विच जहाना, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाइंदा। आपे जाणे आपणा आवण जाणा, हरिजन आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप उठाइंदा। गुरमुख साचा जाए उठ, जिस उप्पर सतिगुर दया कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ जाए तुठ्ठ, आपणी बूझ बुझाईआ। अमृत जाम प्याए घुट, दुरमति मैल धुआईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। भाग लगाए काया कोट, साचा गढ़ दे वसाईआ। गुरमुख तेरा वरन ना कोई गोत, एका ब्रह्म सर्ब दरसाईआ। पुरख अकाल साची ओट, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा लहिणा तेरी झोली पाईआ। कलिजुग तेरा लहिणा तेरी झोली पा, तेरा मूल चुकाउणा। जीव

जंत जो दए भुला, झूठा मार्ग जगत मुकाउणा। माया ममता जो दए रुला, ममता मोह आप मिटाउणा। हउमे हंगत गढ़ विच दे वसा, झूठा गढ़ आप तुड़ाउणा। झूठी संगत विच दे रुला, ठग्ग चोर वेख वखाउणा। गुरमुख विरला मंगता बणे दर बेपरवाह, एका साची मंग मंगाउणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि पुरख साचे हरि अन्त आपणा बन्धन पावणा।

★ १८ भाद्रों २०१८ बिक्रमी पोलो सिँघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ★

निरगुण रूप हरि निरँकारा, नूरो नूर समाइंदा। शब्दी शब्द खेल न्यारा, गुर गुर वेस वटाइंदा। भगती भगत भगत सहारा, भगत भगवन्त खेल खिलाइंदा। सन्तन सति नाम उज्यारा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। गुरमुख खोल्हे बन्द किवाड़ा, सच दुआरा आप वखाइंदा। गुरसिखां देवे सच प्यारा, सच प्रीती आप निभाइंदा। मनमुखां देवे जगत विकारा, जूठा झूठा बन्धन पाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, आदि जुगादी वेख वखाइंदा। जुगा जुगन्तर हो त्यारा, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। लक्ख चुरासी पावे सारा, घट घट वेख वखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड दए आधारा, रवि ससि नूर चमकाइंदा। विष्न
११७३ ब्रह्मा शिव इक्क सहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। निरगुण रूप श्री ११७३
भगवान, आदि जुगादि समाइंदा। शब्द रूप हो प्रधान, गुर गुर वेख वखाइंदा। भगतन देवे ब्रह्म ज्ञान, आत्म दृष्टी दृष्ट खुल्हाइंदा। सन्तन राग सुणाए कान, अनहद नादी नाद वजाइंदा। गुरमुखां वखाए इक्क मकान, घर घर विच सोभा पाइंदा। गुरसिखां बख्शे इक्क ध्यान, चरन ध्यान इक्क लगाइंदा। मनमुख जीव सर्ब कुरलाण, झूठे धन्दे आपे लाइंदा। जुगा जुगन्तर लेखा जाणे दो जहान, जुग करता आप आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा बन्धन पाइंदा। आदि पुरख एका हरि, निरगुण रूप धराईआ। गुर गुर रूप मात धर, शब्दी शब्द डंक वजाईआ। भगतन मेला साचे घर, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। सन्त सुहागी नारी नर, नर नरायण सेज सुहाईआ। गुरमुख साजन लए फड़, नाम डोरी बन्धन पाईआ। गुरसिख मेले आपणे लड़, एका पल्लू गंढु दिवाईआ। मनमुख दर तों जायण डर, नेरन नेर ना कोए आईआ। करे खेल साचा हरि, हरि जू हरि हरि आपणी खेल खिलाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा नूर धर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। वेस अवल्लड़ा आपे कर, जुग जुग आपणा वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता मात धर, द्वापर रचना आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप चढ़ाईआ।

निरगुण रूप श्री भगवन्त, एका रंग समाइंदा। गुर गुर रूप आदि अन्त, जुग करता वेस वटाइंदा। भगतन नाम नामा मंत, साचा मन्त्र इक्क दृढ़ाइंदा। सन्तन सुहाए धाम सोभावन्त, घर साचा आप वखाइंदा। गुरमुख उभारे लक्ख चुरासी विच्चों जंत, जाग्रत जोत आप जगाइंदा। गुरसिख बणाए बणत, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। मनमुख वसाए हउमे गढ़ हंगत, माया ममता बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप चलाइंदा। निरगुण धार पुरख अगम्म, एका एक चलाईआ। गुर गुर रूप श्री भगवान, सच मेला सहिज सुभाईआ। भगतन देवे नाम धन, साचा वणज इक्क कराईआ। सन्तन बेड़ा देवे बन्न्, वंज मुहाणा इक्क वखाईआ। गुरमुख राग सुणाए कन्न, आत्म धुन आप उपजाईआ। गुरसिख वेखे साचा जन, जन जननी लेखे लाईआ। मनमुखां देवे हरि जू डन्न, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। हुक्मे अंदर सूरज चन्न, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड रिहा भवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म रहे मन्न, दर बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा बन्धन पाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल, अकल कला समाइंदा। आदि शक्ति खेल निराल, नूर नुराना डगमगाइंदा। चतुर्भुज हो भगवान, भगवन आपणी धार चलाइंदा। सचखण्ड वस सच्ची धर्मसाल, दर घर साचे सोभा पाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे ताल, तार सितार
११७४ ना कोए हिलाइंदा। थिर घर बैठ आप दयाल, दया निध नाउँ धराइंदा। आपणी इच्छया प्रगट कर महाकाल, महाकाल आपणी गोद बहाइंदा। आदि जुगादी चले नाल नाल, विछड़ कदे ना जाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुरत संभाल, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। त्रैगुण देवे सच्चा धन माल, सच ख़ज़ीना इक्क वरताइंदा। फल लगाए साचे डाल, पत्त डाली आप महिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। निरगुण निरवैर निराकार, अनुभव प्रकाश कराइंदा। गुर गुर लए मात अवतार, जोती जोत डगमगाइंदा। शब्दी शब्द नाद धुन्कार, लक्ख चुरासी आप सुणाइंदा। पंचम पंच कर प्यार, पंचम मेला सच दरबार, पंचम रागी राग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण साचा हरि, साचा वेस आप धराइंदा। निरगुण वेस आदि अवल्ला, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। गुर गुर फड़ाए साचा पल्ला, एका पल्लू नाम वखाईआ। भगतन वखाए निहचल धाम अटल्ला, उच्च महल्ला सोभा पाईआ। सन्तन सच संदेस एका घल्ला, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। गुरमुखां आत्म जोती आपे बला, नूर नुराना डगमगाईआ। गुरसिखां काया मन्दिर अंदर निरगुण सरगुण आपे रला, आपणा भेव आप छुपाईआ। मनमुखां कोए ना मेटे दूई द्वैती सल्ला, बिरहों अग्नी अग्ग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण ११७४

सरगुण निरगुण रूप अनूप आप वखाईआ। निरगुण रूप सति सरूप, सति सतिवादी हरि अख्वाइंदा। गुर गुर धार चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाइंदा। भगतन उप्पर आपे तुट्ठ, आप आपणी दया कमाइंदा। सन्तन देवे निर्मल जोत, नूर नुराना डगमगाइंदा। गुरमुखां प्याए अमृत घुट, आत्म रस आप चखाइंदा। गुरसिख बहाए साचे कोट, काया बंक सोभा पाइंदा। मनमुख आहलणिउँ डिगे बोट, दूजी वार ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, करे कराए एकँकार। सचखण्ड दुआरा एका मलड़ा, आसण सिँघासण सुहाए सच्ची सरकार। सति संदेस एका घलड़ा, धुर फ़रमाना नाम जैकार। आदि जुगादी होए अछल अछलड़ा, वल छल करे अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण लए अवतार। निरगुण नर नरायण, निराकार अख्वाया। रसना किसे ना सके कहिण, नेत्र नैण जगत दरस ना पाया। आदि जुगादी आप आपणा बण बण सज्जण सैण, सगला संग निभाया। निरगुण आप चुकाए लहण देण, सरगुण झोली आप भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराया। जुग जुग रूप आप करतार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। नव नौ चार खेल
१९७५ न्यार, इक्क इकल्ला वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, गुर अवतार गए सेव कमाईआ। भगत भगवन्त १९७५
बोल जैकार, एका नाम गए ध्याईआ। सन्त कूक कूक कर पुकार, एका मार्ग गए सुणाईआ। गुरमुख कर कर प्यार, पीआ प्रीतम इक्क मनाईआ। गुरसिख मंगण धूढ़ी छार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जुग जुग मनमुख सुत्ते रहिण पैर पसार, गूढ़ी नींद ना कोए खुल्ाईआ। कलिजुग आई अन्तिम वार, गोबिन्द लेखा गया समझाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। जोती जाता होए ख़बरदार, अनुभव प्रकाश कराईआ। महल्ल अटल उच्च मुनार, सोभावन्त आप सुहाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमान आप जणाईआ। दो जहानां दए हुलार, विष्न ब्रह्मा शिव लए अंगड़ाईआ। करोड़ तेतीसा लए उठाल, सुरपति राजा इन्द नाल मिलाईआ। रवि ससि कर त्यार, एका गुण समझाईआ। लक्ख चुरासी वेखे वेखणहार, अभुल भुल कदे ना जाईआ। तीर्थ तटां पावे सार, समुंद सागर भेव चुकाईआ। लेखा जाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखाईआ। जीव जंत जाणे जगत विभचार, भुल्लया कोए रहे ना राईआ। साधां सन्तां आई हार, हरि हरि हिरदे ना कोए वसाईआ। रसना गा गा गए हार, जिहवा काग वांग कुरलाईआ। आत्म ब्रह्म ना कोए विचार, पारब्रह्म ना कोए दरसाईआ। घर मिले ना कन्त भतार, जीवां जंतां कारज रहे कराईआ। आत्म रंडी रोवे ज़ारो ज़ार, कन्त सुहाग ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट अन्ध अन्धयार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। मन्दिर

मस्जिद मठ शिवदुआले करन पुकार, गुरदुआर उच्ची कूक कूक सुणाईआ। प्रगट हो प्रभ सांझे यार, तुध बिन दीसे ना कोए सहाईआ। वरन बरन मारन मार, झूठा खण्डा हथ्थ उठाईआ। तेरे नाउँ ना करे कोए प्यार, माया ममता मोह वधाईआ। घर घर त्रैगुण अग्नी तपे अंग्यार, बिन गोबिन्द अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। ठांडा दिसे ना कोए दरबार, सीतल धार ना कोए जणाईआ। सुरती राम ना करे प्यार, राधा कृष्न ना कोए मनाईआ। मनमति होई मात उज्यार, गुरमति बैठी मुख छुपाईआ। पंज विकारा बोल जैकार, आपणा बल रिहा वखाईआ। बुध बिबेकी गई हार, सीस सके ना मात उठाईआ। चारों कुण्ट चोर यार होए ख़बरदार, गुरमुख नेत्र रोवण वाहो दाहीआ। धरती करे दर पुकार, खुल्हड़े केस रही वखाईआ। मेरा पर्दा चुक्या चार यार, पल्लू सीस ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर साचे हरि, सरगुण बैठा मुख भुआईआ। सरगुण मात गया उठ, निरगुण नज़र किसे ना आया। चोर यार रहे लुट्ट, घर घर विच शोर मचाया। माता सेज वेखे सुत्त, भैणां भइया संग निभाया। कलिजुग सुहाई आपणी रुत्त, वाह वा मंगल आपणा गाया। सच सुच्च जड़ दिती पुट्ट, जूठ झूठ बूटा लाया। चार कुण्ट कोई ना सके उठ, सभ दे उत्ते रिहा भार पाया। साधां सन्तां अंदर आई फुट्ट, अमृत रस ना कोए चखाया। पंच विकारा रिहा कुट्ट, अट्ठे पहर दए सज़ाया। बध्धा मन ना सके छुट्ट, संगल सके ना कोए तुड़ाया। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण बुत्त, कलिजुग डौरू डंका वाया। सभ दी करनी जाए खुस, ख़ाली हथ्थ सर्ब वखाया। पुरख अबिनाशी करे गिछ पुछ, पुच्छणहारा आपे आया। जिस दुआरे वेखे सुच्च, तिस सज्जण लए मिलाया। जन्म जन्म दी वेखे रुची रुच, पूर्ब लहिणा फोल फोलाया। कलिजुग जीव सिम्मल रुक्ख मुच, चारों कुण्ट रहे लहराया। गुरमुख विरले साचे सुत्त, पुरख अबिनाशी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मेला सहिज सुभाया। निरगुण मेला सच दुआर, निराकार कराईआ। गुर गुर रूप शब्द भण्डार, नाम निधान आप वरताईआ। भगवन भगत कर प्यार, भावी भय भउ मिटाईआ। सन्तन देवे इक्क आधार, जगत तृष्ना दए खपाईआ। गुरमुख साचे मन्दिर वाड़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। गुरसिख बख़्शे इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान विच समाईआ। सो पुरख निरँजण देवणहारा ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म कर पछाण, सोहँ अक्खर इक्क जणाईआ। चार वरन इक्क निशान, अठारां बरन आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप आपे धर, सरगुण साजन लए मिलाईआ। निरगुण सरगुण साचा मेला, दर घर साचे आप कराइंदा। एका दर सोहे गुरु गुर चेला, गुर शब्दी वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण सज्जण सुहेला, सगला संग निभाइंदा। आपे जाणे

११७६

आपणा वेला, थित वार ना कोए रखाइंदा। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। जन भगतां कट्टे राए धर्म दी जेला, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। एथे ओथे सज्जण सुहेला, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला आपे कर, जुग जुग विछड़े मेल मिलाइंदा। जुग विछड़िआं मेले जग, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, सोहँ हँसा मोती चोग चुगाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़, माया ममता मोह चुकाईआ। अन्ध अन्धेरे जगाए चिराग़, निरगुण जोत दीप डगमगाईआ। त्रैगुण लग्गी बुझाए आग, निझर झिरना आप झिराईआ। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, सतिगुर साचा चन्द दरसाईआ। हरिजन पुछे तेरी वात, वेले अन्त होए सहाईआ। नाम धन ख़ज़ाना देवे दात, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। लेखा चुकाए चौदां हाट, चौदां लोक भेव खुल्हाईआ। जिस जन करे दासी दास, सिर समरथ हथ्थ रखाईआ। निज आत्म करे वास, निज घर मन्दिर दए सुहाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण मेले घर, घर वजदी रहे वधाईआ। घर मेला साचे मन्दिर, गृह आपणा खेल खिलाइंदा। लेखा जाणे डूँघी कंदर, घट भीतर फोल फुलाइंदा। आपे तोड़े लग्गा जंदर, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा। मन मनूआ ना दौड़े बन्दर, शब्द डोरी आप बंधाइंदा।

११७७ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। हरिजन मेला काया गढ़, सतिगुर पूरा ११७७

आप कराईआ। सुरत सुआणी शब्द वर, शब्दी सुरती मेल मिलाईआ। सुखमन टेढी पार कर, डूँघी भँवर होए सहाईआ। पंच विकारा जाए हर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अमृत आत्म जाम प्याला देवे अग्गे धर, आपणी सेव कमाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नड़, जोत निरँजण डगमगाईआ। अनहद वज्जे धड़ा धड़, दिवस रैण शनवाईआ। पंचम सख़ीआं लड़ फड़, आपणा मंगल गाईआ। गुरमुख जाए आपणे घर, घर आपणे सोभा पाईआ। सतिगुर सच्चा फड़े लड़, अग्गे बैठा साचा माहीआ। साची सेजा देवे धर, आपणी सेव कमाईआ। नाता जोड़े नारी नर, एका रंग रंगाईआ। पलँघ रंगीले आपे चढ़, आत्म बंक सुहाईआ। गुरमख सज्जण लए फड़, गोबिन्द मेला साचे माहीआ। कलिजुग अन्तिम जाए हर, बेड़ा शौह दरया डुबाईआ। प्रगट हो निहकलंक नरायण नर, आपणा गेड़ा आप दिवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल कर, निराकार आपणा आप रिहा छुपाईआ। सरगुण अंदर निरगुण वड़या, दिस किसे ना आइंदा। आपणे पोड़े आपे चढ़या, आपणा मार्ग लाइंदा। आपणी विद्या आपे पढ़या, जगत विद्या ना कोए रखाइंदा। आपणी तरनी आपे तरया, सृष्ट सबाई आप तराइंदा। निरभउ हो कदे ना डरया, भय आपणा सर्ब जणाइंदा। करे खेल कलिजुग तेरी अन्तिम वरया, जुग

चौकड़ी पार कराइंदा। लक्ख चुरासी जिस घाड़न घड़या, वेले अन्त भन्न वखाइंदा। गुरमुखां विरले कारज सरया, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। ना जन्मे ना कदे मरया, जन्म मरन फंद कटाइंदा। निरगुण सरगुण दुआरे आपे खड़्या, स्वच्छ सरूप रूप वटाइंदा। भगत भगवन्त पल्ला फड़या, दो जहान ना कोए छडाइंदा। सन्त कन्त एका वरया, सच सुहाग इक्क बणाइंदा। गुरमुख अक्खर एका पढ़या, दूजा अक्खर ना कोए जणाइंदा। गुरसिख सरन सरनाई एका हरया, दूजा इष्ट ना कोए मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता, हरिजन होए पिता माता चरन कँवल बंधाए नाता, उत्तम रक्खे ज़ात पाता, वरन बरन ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्क इकांता, कलिजुग मिटे अन्धेरी राता, सतिजुग सुणाए साची गाथा, बोध अगाध शब्द अल्ाइंदा। कलिजुग पिंजर गया सुक्क, हड्ड मास नाड़ी तन नज़र ना आईआ। आपणा खेल करदा रिहा लुक लुक, मुख पर्दा रिहा पाईआ। अन्तिम पैंडा गया मुक्क, पुरख अबिनाशी आप मुकाईआ। हरि का तीर निराला गया छुट्ट, ब्रह्मण्ड खण्ड करे शनवाईआ। जो जन साचे सिखां लए ओट, तिस साहिब लए बख्शाईआ। कलिजुग माया ममता जूठ झूठ खा खा भरी ना अजे पोट, भुक्खा रिहा कुरलाईआ। दूजा सतिजुग नाल गया उठ, कलिजुग अन्तिम तेरा वेखे चाँई चाँईआ। तेरी माया ममता नार दुहागण नागणी गुरसिखां ना सके डस्स, नेरन नेर रहिण ना पाईआ। हरिजन अंदर हरि जू रिहा वस, अठ्ठे पहर समाईआ। एका मार्ग रिहा दस्स, सोहँ डण्डा हत्थ फड़ाईआ। कलिजुग अन्तिम सीस लाउहणा झट्ट, गुरसिख तेरे हत्थ वड्याईआ। सम्मत अठारां लग्गा पहला फट्ट, उन्नी सम्मत देवे सीस कटाईआ । विच बैठा रहे पुरख समरथ, अडोल अडुल आपणा आसण आप सुहाईआ। ज़िमीं अस्मान गगन मंडल दीप लोअ पाताल खण्ड ब्रह्मण्ड धरत धवल समुंद सागर आदि अन्त जुगा जुगन्त जीव जंत पशू पंखी पंछी गायण हरि का जस, जस आपणा आप जणाईआ। नींदर विच जुम्माल दस, नींदर रूप रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख गुरसिख गुर गुर सेवा लाईआ।

१९७८

१९७८

★ १८ भाद्रों २०१८ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ★

आदि जुगादी इक्क भगवाना, एका रंग समाइंदा। आदि जुगादी इक्क मकाना, सचखण्ड दुआर सुहाइंदा। आदि जुगादी इक्क तराना, रागी राग अल्ाइंदा। आदि जुगादी इक्क निशाना, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। आदि जुगादी एका भाना, जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल आप कराइंदा। आदि

जुगादी इक्क भगवन्त, एका रंग समाईआ। आदि जुगादी एका कन्त, नर नरायण वडी वड्याईआ। आदि जुगादी बणाए बणत, घड़न भन्नणहार इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादी एका सन्त, सतिगुर साचा रूप धराईआ। आदि जुगादी एका मंत, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। आदि जुगादी महिमा अगणत, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। आदि जुगादी एका पुरख, एका दर सोभा पाइंदा। आदि जुगादी करे परख, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। आदि जुगादी एका एक करे तरस, आपणी मेहर आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादी एका मेघ बरस, अमृत झिरना इक्क झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सोभा आपे पाइंदा। आदि जुगादी सोभावन्त, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। आदि जुगादी एका कन्त, एका सेज हंढाईआ। आदि जुगादी गाए सुहागी छंत, साचा ढोला साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आदि पुरख वड वड्याई, आपणे हथ्थ रखाइंदा। मध्ध आपणी धार चलाई, भेव कोए ना पाइंदा। शब्द सुत कर कुड़माई, साचा बन्धन पाइंदा। गृह मन्दिर वज्जे इक्क वधाई, एका राग अल्लाइंदा। एका नूर कर रुशनाई, एका डगमगाइंदा। एका वेखे चाँईं चाँईं, नेत्र नैण ना कोए रखाइंदा। एका वसे हर घट थाँईं, थान थनंतर सोभा पाइंदा।
११७६ ११७६
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्लाइंदा। एका एक आदि आदि, अबिनाशी करता नाउँ रखाईआ। एका एक वसे ब्रह्माद, ब्रह्मांड रचन रचाईआ। एका एक वजाए नाद, तुरीआ राग आप सुणाईआ। एका एक गाए बोध अगाध, अगाध बोधा आपणा भेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। एका एक एका दर, घर साचा आप सुहाइंदा। एका पुरख एका नर, एका मेल मिलाइंदा। एका सेजा बैठा चढ़, भस्मड़ आपणा भोग कराइंदा। एका अक्खर बैठा पढ़, दूजा अक्खर ना कोए वखाइंदा। एका करनी रिहा कर, करता पुरख नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका एक, निरगुण निरगुण रिहा वेख, पेखत पेखत आपणा वेस वखाइंदा। निरगुण वेखे वेखण योग, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपे जाणे आपणा चोज, दूसर संग ना कोए मिलाईआ। सचखण्ड दुआरा साचा कोट, सच सिँघासण सोभा पाईआ। निर्मल दीआ जगे जोत, आदि जुगादि डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक एक रघुराईआ। एका जोत एका बाती, एका मन्दिर आप टिकाइंदा। एका पुरख कमलापाती, एका वेख वखाइंदा। एका दिवस एका राती, एका थित वार सुहाइंदा। एका ब्रह्म एका जाती, एका पारब्रह्म अख्वाइंदा। एका शब्द एका गाथी, एका मार्ग लाइंदा। एका

सेवक एका राथी, रथ रथवाही इक्क चलाइंदा। इक्क दुआरा एका हाटी, एका वस्त विकाइंदा। एका बणे साचा नाती, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। एका पूजा एका पाठी, एका हवन कराइंदा। एका बहि बहि पुछे वाती, जुग जुग वेस वटाइंदा। एका अमृत देवे बूंद स्वांती, ठंडा ठार प्यांअदा। एका खोल्हे बन्द ताकी, बजर कपाट तुड़ाइंदा। एका देवे भविख्त वाकी, गुर अवतारां समझाइंदा। एका साधां सन्तां चुकाए बाकी, लहिणा देणा झोली पाइंदा। एका बणे साचा साकी, भर प्याला जाम प्यांअदा। एका घोड़ा एका राकी, एका अश्व हरि दौड़ाइंदा। एका जाणे धरनी धरत धवल धरन ख़ाकी, एका आकाश प्रकाशा डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा वेस वखाइंदा। एका घर एका मन्दिर, एका बणत बणाईआ। इक्क दरवाज़ा इक्क जंदर, एका वार लगाईआ। एका वसे डूँघी कंदर, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणे रंग समाईआ। एका इच्छया एका भिच्छया, एका एक वरताइंदा। एका वण्डे साचे हिसया, साचा हिस्सा आपणे हथ्थ रखाइंदा। एका नूर नुराना रवि ससि वसया, चन्द चांदना आप चमकाइंदा। एका पुन्नया एका मस्सया, एका अन्ध अन्धेरा छाइंदा। एका घट घट अंदर वसया, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। एका लक्ख चुरासी जाणे मिथ्या, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। एका जुग जुग देवे साची सिख्या, गुर मन्त्र नाम गुर गुर आप पढ़ाइंदा। एका लाहे द्वैती विख्या, अमृत जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणे दर सुहाइंदा। एका दर इक्क दरवाज़ा, हरि एका वेख वखाईआ। एका ग़रीब इक्क ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। एका श्रेष्ट इक्क सृष्टी साजा, इष्ट देव इक्क अख्वाईआ। एका शाह इक्क नवाबा, शाह पातशाह इक्क हो जाईआ। एका राग एका वाजा, एका तार सितार हिलाईआ। एका दो जहान फिरे भाजा, वेस अनेक धराईआ। जुग जुग रचदा आया काजा, हुक्मी हुक्म खेल खिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर आप निवाजा, आपणी हथ्थीं कर कुड़माईआ। कलिजुग अन्तिम खेल करे बहु भांता, भेव अभेद ना कोए रखाईआ। भाग लगाए देस माझा, सम्बल कर रुशनाईआ। दो जहानां लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप चलाए जहाज़ा, दो जहानां बेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। निरवैर पुरख अगम्म अगोचर आपे चढ़या आपणे ताजा, चार कुण्ट दहि दिशा रिहा भुआईआ। लक्ख चुरासी वेखे काजा, नौ खण्ड पृथ्मी साह सुधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक बेपरवाहीआ। एका एक बेपरवाह, सो पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। सो पुरख निरँजण बण मलाह, हरि पुरख निरँजण सेव लगाइंदा। एकँकारा सिफ्त सलाह, आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। आदि निरँजण जोत जगा, घर मन्दिर इक्क रुशनाइंदा। श्री भगवान सिँघासण आसण ला, सीस जगदीस ताज सुहाइंदा। अबिनाशी

११८०

करता सोभावन्त सोभा रिहा पा, सोभनीक आप हो जाइंदा। पारब्रह्म प्रभ सीस झुका, निउँ निउँ नेत्र नीर वहाइंदा। इक्क इकल्ला वेस वटा, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। ब्रह्म आपणी वण्ड वण्डा, लक्ख चुरासी गंढु पुआइंदा। शब्दी नाद धुन सुणा, अनहद रागी राग अल्लाइंदा। जोत निरँजण दीप टिका, घर घर सोभा पाइंदा। त्रैगुण माया पर्दा पा, आपणा आप छुपाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रला, माया ममता विच फसाइंदा। जूठ झूठ लए परणा, जगत नाता जोड़ जुड़ाइंदा। हंगता गढ़ लए बणा, मनमुख डेरा आप लगाइंदा। भुक्खा नंगता गले लगा, जुग जुग आपणे रंग रंगाइंदा। भगत भगवन्त लए मिला, काया कँवरी फोल फुलाइंदा। सन्त साजन लए जगा, शब्दी नाद अल्लाइंदा। गुरमुख काया गोर विच्चों लए कढा, सच सिँघासण इक्क वखाइंदा। गुरसिख आपणे रंग रंगा, रंग मजीठी इक्क चढ़ाइंदा। दुष्ट हँकारी दए खपा, एका खण्डा नाम चलाइंदा। आदि अन्त करे सच न्याँ, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाह, इक्क इकल्ला हुक्म चलाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेखे आ, निरगुण निरवैर वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल कराइंदा। इक्क इकल्ला खेलण आया, आदि जुगादी कार। लोकमात हरि फेरा पाया, कल कल्की लए अवतार। नाम डंका इक्क वजाया, लक्ख चुरासी करे ख़बरदार। शाह सुल्तानां दए हिलाया, अन्तिम रोवन ज़ारो ज़ार। वरन बरन दए मिटाया, ऊँच नीच ना कोए धार। इक्क इकल्ला साचा मार्ग दए लगाया, कूड़ी क्रिया दए निवार। नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाया, सत्तां दीपां पर्दा दए उतार। नौ दुआरे खोज खुजाया, लेखा जाणे दस्म दुआर। हरिजन साचे लए मिलाया, आप आपणी किरपा धार। आप आपणा सिर हथ्थ टिकाया, समरथ पुरख अगम्म अपार। एका अक्खर रिहा पढ़ाया, सोहँ शब्द सच जैकार। आत्म परमात्म लए मिलाया, ईश जीव लए अधार। कर्म कांड ना कोए वखाया, निहकर्मी करे विचार। पूजा पाठ ना कोए कराया, जिस जन देवे दरस दीदार। सुरती शब्दी बन्धन पाया, बन्न्हे एका वार। घर मूर्त अकाल नज़री आया, इक्क इकल्ला एकँकार। साची सूरत दए वखाया, रूप रंग रेख ना कोए शुमार। गुरमुख मेला सहिज सुभाया, आप कराए काया मन्दिर गुरदुआर। दूजे दर हथ्थ ना आया, लक्ख चुरासी रही झख मार। इक्क इकल्ला वेख वखाया, वेखणहार बेऐब परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, करे खेल अपर अपार। अपर अपारा खेल अवल्ला, इक्क इकल्ला आप कराईआ। आपे जाणे नूरी अल्ला, बिस्मिल धार चलाईआ। कलमा अमाम फड़ाया पल्ला, अमाम अमामा बेपरवाहीआ। मुकामे हक एका मल्ला, लाशरीक बण ख़ुदाईआ। सच संदेस एका घल्ला, आयत शरायत करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ।

इक्क इकल्ला इक्क ख़ुदा, ख़ालक आपणी खेल खिलाइंदा। आदि जुगादि ना होए जुदा, जुग जुग वेस वटाइंदा। आपणी कुरबानी करके आया आप करे फ़िदा, फितरत होर ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, एका नूर नूर उपाइंदा। एका नूर नूर उजाला, नूर इलाही डगमगाइंदा। एका मार्ग दए सुखाला, इलाही कलमा आप पढ़ाइंदा। एका रूप वखाए तुआला, ख़ुदा आपणा नूर जणाइंदा। एका पाए साची माला, तसबी एका हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ख़लक विच समाइंदा। एका ख़लक एका ख़ालक, मख़लूक विच इक्क समाईआ। एका एक होए प्रितपालक, सदा सद सेव कमाईआ। आदि जुगादि ना आए विच आलस, निन्दरा नींद ना कोए वखाईआ। कलिजुग अन्तिम बणे सालस, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। हरिजन हरिभगत श्री भगवान मुर्शद मुरीद कढ्ढे ख़ालस, ख़ालक ख़लक वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन एका सरन ऊँच नीच राउ रंक एका टेक, शाह पातशाह एका रंग वखाईआ।

★ १८ भाद्रों २०१८ बिक्रमी पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ★

११८२

सतिगुर पूरा दीन दयाल, दयावान अख्वाइंदा। जुग जुग प्रगट हो विच जहान, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। शब्द सरूपी सति बबाण, ब्रह्मण्ड खण्ड आप उडाइंदा। नाम निधाना इक्क ज्ञान, मन्त्र अन्तर आप जपाइंदा। गुरमुख सज्जण सच पछाण, हरिजन आपणा मेल मिलाइंदा। पर्दा चुक्क काया मन्दिर मकान, गृह साचा घर वखाइंदा। एका देवे साचा दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मात वड्यांअदा। हरिजन वड्डा वड्डी वड्याई, सतिगुर पूरा आप वड्यांअदा। लेखा जाणे धुर दरगाही, दरगाह साची खेल खिलाइंदा। वेखणहारा थाउँ थाईं, घट घट अन्तर फोल फुलाइंदा। हरिजन मेले फड़ फड़ बाहीं, सेवक साची सेव कमाइंदा। निथाव्याँ देवे साचा थाँईं, निर्धन आपणी गोद बहाइंदा। सदा सद देवे ठंडीआं छाँईं, समरथ पुरख सिर हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा दया कमाइंदा। सतिगुर पूरा हरि हरि ठाकर, अबिनाशी बेपरवाहीआ। एका देवे नाम रती रत्नागर, रुत रुतड़ी आप सुहाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल ध्वाईआ। जिस जन वणज कराए बण सौदागर, एका हट्ट वखाईआ। दर दुआरे देवे आदर, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा होए सहाईआ। सतिगुर पूरा साहिब समरथ, साची कार कमाइंदा। निर्धन रक्खे दे कर हथ्थ,

दीनन आपणी गोद बहाइंदा। नाम जणाए महिमा अकथ, कथनी कथ ना कोए सुणाइंदा। शब्द चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, साचा पन्थ वखाइंदा। हिरदे अंदर हरि जू वस, हरि मन्दिर आप सुहाइंदा। पूरी करे हरिजन आस, निरासा कोए ना मात रखाइंदा। लेखा जाणे पवण स्वास, स्वास स्वासां मेल मिलाइंदा। एका रूप वखाए पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी धार जणाइंदा। अन्ध अन्धेरा मेटे रात, साचा चन्द आप चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा वेख वखाइंदा। सतिगुर सच्चा वेखणहारा, आदि जुगादि समाया। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, गुरमुख साचे लए मिलाया। कलिजुग अन्तिम पावे सारा, निहकलंका नाउँ रखाया। एका नाम शब्द जैकारा, सोहँ धारा आप प्रगटाया। लेखा जाणे अगम्म अपारा, वेद कतेब भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे होए सहाया । होए सहाई सदा सद, बेअन्त बेपरवाहया। हरिजन सज्जण आपे सद्द, आपणा दरस दिखाया। जगत दुआरा पार कराए हद्द, साचा मन्दिर आप समझाया। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ, जम की फाँसी दए तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाया। जम की फाँसी नाता तोड़, हरिजन साचे होए सहाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी जोड़, मेल मिलावा साचे थाँईंआ। करे प्रकाश अन्ध घोर, गृह मन्दिर कर रुशनाईआ। डेरा ढाए पंज चोर, पंचम सत्थर रिहा विछाईआ। शब्द सुणाए नाद घनघोर, पंचम राग अल़ाईआ। सुरती बन्ने शब्दी डोर, तन्द अवल्ला पाईआ। वेखे परखे रीठा मिट्ठा कौड़, जीव जंत फोल फोलाईआ। गुरमुख विरले लग्गी औड़, एका ओट अकाल रखाईआ। समरथ पुरख आए दौड़, देवे दरस बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे दर आप बहाईआ। सतिगुर पूरा खोल़ दर, दर दरवाज़ा आप तुड़ाइंदा। ग़रीब निमाणे आपे वर, आपणा बन्धन पाइंदा। जगत भय भउ चुकाए डर, भयानक रूप ना कोए वखाइंदा। इक्क नुहाए साचे सर, सच सरोवर इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराइंदा। सतिगुर पूरा पार किनारा, हरिजन आप वखाईआ। लहिणा देणा चुकाए मंजधारा, डूँग्घी गारा ना कोए रुढ़ाईआ। सति सतिवादी दए सहारा, साचा मार्ग इक्क लगाईआ। सोहँ बोले सच जैकारा, जाग्रत जोत होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आपे तराईआ। हरिजन सच्चा तारया, कर किरपा गुण निधान। जन्म जन्म दा रोग नवारया, एका बख्शे चरन ध्यान। इक्क सुहाए बंक दवारया, गृह मन्दिर सच मकान। अट्ठे पहर नाद धुन्कारया, शब्द अगम्मी वज्जे तान। एका नूर जोत उज्यारया, दीवा बाती जगे महान। एका करे सच प्यारया, पीआ प्रीतम मेहरवान। एका देवे सच आधारया,

सति सतिवादी सच निशान। एका ब्रह्म करे उज्यारया, पारब्रह्म हो प्रधान जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा दान। दाता दानी गहर गम्भीर, गुणवन्ता दया कमाईआ। हरिजन ठांडा करे सरीर, अग्नी तत्त ना कोए रखाईआ। अमृत बख्शे ठांडा नीर, साचा सीर मुख चुआईआ। आपे बदलणहारा तकदीर, सच तदबीर रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह सतिगुर मीत, सो पुरख निरँजण नाउँ धराया। आपे जाणे आपणी रीत, अवल्लड़ी चाल आप चलाया। साचा देहुरा मन्दिर मसीत, काया बंक रिहा वखाया। दिवस रैण गाए गीत, साचा ढोला आप सुणाया। अठ्ठे पहर वसे चीत, चित वित ठगौरी ना कोए रखाया। लेखा जाणे हस्त कीट, शाह पातशाह बेपरवाहया। लक्ख चुरासी परखे नीत, चारों कुण्ट वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे विच समाया। हरिजन समाए हरि की धार, सतिगुर आपणे विच मिलाईआ। हरिजन पाए हरि की सार, सतिगुर पूरा बूझ बुझाईआ। हरिजन जाणे हरि का प्यार, सतिगुर पूरा आप कराईआ। हरिजन जाणे हरि का दुआर, सतिगुर पूरा आप वखाईआ। हरिजन जाणे रंग करतार, सतिगुर पूरा आप चढ़ाईआ। हरिजन वसे ठांडे दरबार, सतिगुर पूरा आप खुलाईआ। हरिजन उतरे पार किनार, सतिगुर पूरा पार कराईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, एका नईया रिहा चलाईआ। किसे हथ्थ ना आवे विच संसार, डूँघी भँवर पई लोकाईआ। गुरमुख विरले कर त्यार, साचे बेड़े रिहा चढ़ाईआ। सेवा करे आप निरँकार, निरगुण दाता सेव कमाईआ। मेल मिलाए वारो वार, पत्तण बैठा साचा माहीआ। राह तक्के परवरदिगार, दूर दुराडा शहिनशाहीआ। गुरसिख मिले सच्चा यार, जिस मिलयां कोटन कोटि कोट ब्रह्मण्ड ख़ुशी मनाईआ। दर घर करां सच प्यार, सचखण्ड वसां चाँईं चाँईंआ। तख्त बैठ सच्चे दरबार, आपणा मुखड़ा दयाँ वखाईआ। गुरसिख निरगुण हो हो बोले इक्क जैकार, सोहँ तेरा रूप निरँकार, हँ ब्रह्म पारब्रह्म विच गया समाईआ। ना पुरख ना नार, जोती जोत जोत चमत्कार, पुरख अबिनाशी एका रंग वटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि अन्त जाणे धार, लेख लिख्त तों वसे बाहर, वाक भविख्त करे प्यार, आपणी भाख्या आपे पूर कराईआ।

★ १८ भाद्रों २०१८ बिक्रमी हरजीत सिँघ दे गृह पिण्ड लील ज़िला लुधियाणा ★

विष्णूं भगवान सच करामात, दो जहान वखाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, बेअन्त बेपरवाहीआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मंडल वेख वखाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पाए आपणी रास, निरगुण आपणा नाच नचाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रूप अनूप आप धराईआ। विष्नूं भगवान सच करामाता, आदि जुगादि वखाइंदा। जुगा जुगन्तर बन्ने नाता, वेस अनेक वटाइंदा। भगतां देवे साची दाता, नाम अमोलक झोली पाइंदा। काया मन्दिर अंदर सुणाए साची गाथा, निश्अक्खर आप पढ़ाइंदा। जुगा जुगन्तर चलाए राथा, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कराइंदा। सच करामात आदि अन्त, विष्नूं भगवान आप जणाईआ। गुरमुख विरला लेखा जाणे सन्त, मनमुख बूझ कोए ना पाईआ। आप भुलाए जीव जंत, लक्ख चुरासी पर्दा पाईआ। आपे आपणी नारी वेखे साचा कन्त, रूप अनूप आप वटाईआ। आपे चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। आपणी महिमा जणाए अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विश्व खेल आप खिलाईआ। आपे विष्न आप भगवाना, आपे खेल खिलाइंदा। आपे राज भूप राजाना, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। आपे वसणहारा सचखण्ड सच्चे मकाना, थिर घर आपणा आसण लाइंदा। आपे जुग जुग लोकमात होए प्रधाना, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणी करनी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करामात आदि जुगादि वखाइंदा।

११८५ सच करामात आदि जुगादि, सो पुरख निरँजण आप वखाईआ। हरि पुरख निरँजण बन्ने नात, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। ११८५

एकँकारा देवे दात, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। आदि निरँजण आप उपाए आपणी ज़ात, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। श्री भगवान देवे साथ, सगला संग निभाईआ। अबिनाशी करता आपे वेखे मार झात, आपणे मन्दिर सोभा पाईआ। पारब्रह्म पुरख समराथ, आपणी धार आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। सच करामात श्री भगवन्त, जुग करता आप वखाइंदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, हरि साचा आप सुहाइंदा। लेखा जाणे नारी कन्त, नर नरायण सेज हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप समझाइंदा। साचा खेल हरि करतारा, आपणा आप जणाईआ। सचखण्ड दुआरे हो उज्यारा, निरगुण आपणी बणत बणाईआ। निरगुण निरगुण कर पसारा, निरगुण वेखे चाँईं चाँईआ। निरगुण मन्दिर निरगुण दुआरा, निरगुण बैठा सेज सुहाईआ। निरगुण हुक्म निरगुण वरतारा, हुक्मी हुक्म आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करामात आपणे हथ्थ रखाईआ। सच करामात बेपरवाह, आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्नूं रूप आप वटा, बंस सरबंस आप सुहाईआ। आपणी जोत आप प्रगटा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आपणी इक्क समझाईआ। विष्नूं नार लच्छमी नरायण, आपणी आप प्रगटाईआ। नेत्र नैण ना सके कोई कहिण, कथनी कथ ना सके

राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे विष्नूं आपे लच्छमी लए मिलाईआ। आपे विष्न विश्व धार, आदि पुरख अख्वाइंदा। सचखण्ड वसे सच दुआर, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अगम्मड़ी करे कार, भेव कोए ना पाइंदा। आपणी इच्छया आपे धार, आपणी जोत आप प्रगटाइंदा। आप बणाए सुलक्खणी नार, रूप अनूप चढ़ाइंदा। आप करे सच शिंगार, भूशन लाल आप रंगाइंदा। आपणी गोद लए उठाल, आपणे संग रखाइंदा। आपे करे सदा प्रितपाल, प्रितपालक आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची लच्छमी आप मनाइंदा। आपे लच्छमी विष्नूं रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाईआ। आपे सेजा आप पलँघ, आपणी सेजा आप सुहाईआ। आपणे मन्दिर आपे जाए लँघ, आपे वेख वखाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, सो पुरख निरजंण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं भगवान आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। विष्नूं भगवाना नौजवाना, आदि जुगादि समाइंदा। इक्क झुलाए सच निशाना, सचखण्ड दुआरे आप चढ़ाइंदा। आपे मर्द आप मरदाना, सच मरदानगी आप कमाइंदा। आपे बन्ने आपणा सगनी गाना, साचा सगन आप मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी नारी आप प्रनाइंदा। आपणी नारी आप प्रना, आपणे संग रखाईआ। करे खेल सच्चा शहिनशाह, दूसर संग ना कोए वखाईआ। लेखा लिखण कोई जाणे ना, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आदि आपे दए समझाईआ। आदि पुरख इक्क इकल्ला, आपणी जोत जगाइंदा। निरगुण वेखे सच महल्ला, सच दुआर आप सुहाइंदा। आपणी जोत अपे बल्ला, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपणा फड़े आपे पल्ला, आपणा संग निभाइंदा। आपणा मेटे आपे सल्ला, एका रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप प्रगटाइंदा। सो पुरख निरँजण साची धारा, निरवैर आप प्रगटाइंदा। मूर्त अकाल हो उज्यारा, अजूनी रहत डगमगाइंदा। साचे मन्दिर कर पसारा, सचखण्ड दुआर सोभा पाइंदा। आपणी इच्छया भर भण्डारा, साची वस्त आप वरताइंदा। नारी कन्त खेल न्यारा, खेल अवल्ला आप कराइंदा। जननी जन हरि निरँकारा, आपणी गोद सुहाइंदा। आप उपाए सुत दुलारा, शब्दी नाउँ रखाइंदा। सोभावन्त सुहाए इक्क दुआरा, थिर घर साचा आप उपाइंदा। निरगुण विष्नूं हो उज्यारा, एका कल धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप वड्यांअदा। दर घर साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। विष्नूं वेखे लच्छमी नारी साचा कन्त, पुरख अबिनाशी आपणे नाल मिलाईआ। आप बणाए आपणी बणत, मात पित ना कोए रखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जननी जन आप हो जाईआ। आपे जननी जन हो त्यार, साचा सुत उपाइंदा। आपे विष्नूं करे प्यार, आपे लछमी नाल मिलाइंदा। आपे विचोला बणे सिरजणहार, साचा मेला आप कराइंदा। आपे सुत्ता पैर पसार, आसण सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणीआं भुजां आप वखाइंदा। आपणा बल आपे धार, आपे वेख वखाईआ। आपे करे साची कार, करनी करता आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं रूप आपे कर, साची नार लए प्रनाईआ। विष्नूं हरि हरि हरि रंगा, साचा रंग रंगाइंदा। आपे जाणे आपणी धार गंगा, अमृत धार आप वहाइंदा। आपे जाणे साचा संगा, सगला संग निभाइंदा। आपे जाणे आपणा अनन्दा, अनन्द अनन्द आप समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाइंदा। विष्नूं अंदर अमृत धार, विश्व आपणी धार रखाईआ। करे कराए सच प्यार, साचे तख्त बैठ सच्चा माहीआ। आपे दीआ कर उज्यार, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। आपे कँवल कर त्यार, आपे झिरना रिहा झिराईआ। आपे पारब्रह्म वण्डे वण्ड अपर अपार, साची वण्डण आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा आपणे रंग रंगाईआ। विष्नूं भगवान वेस वटाउणा, सच करामात दए वखाईआ। नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी पन्ध मुकाउणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। ब्रह्मा अन्तिम जोती मेल मिलाउणा, शंकर आपणी गोद बहाईआ। सुरपति राजा इन्द तख्तों लाउहणा, करोड़ तेतीसा दए दुहाईआ। रवि ससि किरन आपणे विच समाउणा, मंडल मण्डप दए दुहाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां सर्ब कुरलाउणा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। चौदां लोकां फड़ हलाउणा, चौदां तबक हुक्म वरताईआ। नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाउणा, सत्तां दीपां लए हिलाईआ। चार वेदां वेख वखाउणा, पुराण अठारां फोल फोलाईआ। शास्त्र सिमरत पन्ध मुकाउणा, गीता ज्ञान दए समझाईआ। अञ्जील कुराना मुख शरमाउणा, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। खाणी बाणी भेव चुकाउणा, एका शब्द समझाईआ। आदि पुरख वेख वखाउणा, वेखणहारा सच्चा शहिनशाहीआ। विष्नूं भगवान आपणा नाउँ धराउणा, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। तेई अवतारां दर बठाउणा, शाह पातशाह धुर फ़रमाना आप जणाईआ। अठारां भगत फड़ हलाउणा, हुक्मी हुक्म इक्क मनाईआ। दस गुर संग मिलाउणा, जोती जोत कर रुशनाईआ। त्रैगुण जंजाला तोड़ तुड़ाउणा, जाग्रत जोत कर रुशनाईआ। कूड़ कुड़यारा डूँग्घे सत्थर विछाउणा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार झूठे मठ सुटाउणा, अन्तिम वेखे थाउँ थाँईंआ। वरन बरन कोई रहिण ना पाउणा, चार वरन अठारां बरन देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, सच करामात दए वखाईआ। विष्नूं अन्तिम आया जग, करया खेल अपारा। दाता दानी बणया रिहा जो सर्बग्ग, जुग जुग रिहा वरतारा। आपे आपा कीता अड्ड, आपे वेखणहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं करे खेल न्यारा। विष्नूं खेल न्यार कराउणा, श्री भगवान हुक्म जणाईआ। दाणा पाणी सभ दा बन्द कराउणा, जगत वस्त ना कोए वरताईआ। कलिजुग गेड़ा फेर दवाउणा, उलटी लट्ठ भवाईआ। नौ खण्ड पृथमी सर्ब कुरलाउणा, जीव जंत देण दुहाईआ। राज राजानां तख्तों लाउहणा, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। अठसठ तीर्थ नीर मुकाउणा, अमृत जल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विश्व हुक्म रिहा सुणाईआ। विष्नूं मन्नणा हरि का भाणा, हरि भाणा आप जणाइंदा। कोई ना रहे राजा राणा, दर घर कोए ना सोभा पाइंदा। किसे ना मिले पीणा खाणा, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। गुरमुख विरला चतुर सुजाना, तेरा मेल मिलाइंदा। इक्क वखाउणा श्री भगवाना, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं तेरी करामात तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। विष्नूं तेरी करामात साची दात, हरि साचा सच जणाईआ। कलिजुग अन्तिम किसे ना पुछणी वात, ना होए कोए सहाईआ। एका वार आए अन्धेरी रात, चन्द चांदनी ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं बैठा दुआर, निउँ
११८८ निउँ करे निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। प्रभ अग्गे सीस गया झुक्क, विष्नूं आप झुकाया। तेरा भाणा ना जाए रुक, हउँ लक्ख लक्ख शुकर मनाया। कलिजुग वेला गया ढुक, गोबिन्द लेख लिखाया। धरत मात दी सफ़ल कराई कुक्ख, धरनी धरत धवल दया कमाया। त्रैगुण लग्गा मेटां दुक्ख, दुखड़ा अवर ना कोए जणाया। साची धारों मैं प्या फुट्ट, साची धार दयाँ वहाया। आपणा अन्न आपे लुट्ट, तेरे दर पुचाया। कलिजुग जीवां भाग गए निखुट्ट, हरि का रूप नज़र ना आया। आपणी जड़ आपे रहे पुट्ट, हिरदे काम क्रोध वसाया। ना कोई जाणे पाणी दुध्ध, झूठा रिड़कणा ऐवें पाया। विष्नूं लैण ना देणी किसे नूं सुध, मति मन बुध डेरा ढाहया। पुरख अकाल दा तूं जेठा पुत्त, आदि आदि उपाया। ब्रह्मा बणाया तेरा सुत्त, शंकर नाल रलाया। लच्छमी सीस गुंदा वखाए गुत, सच शंगार कराया। पार्बती आपणी वार आपे उठ, आपणा नेत्र नैण मटकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, आपणा वेस आप धराया। वेस धराए हरि अवल्ला, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। लेखा जाणे राणी अल्ला, बिस्मिल खेल खिलाईआ। मुकामे हक एका मल्ला, सच सिँघासण डेरा लाईआ। सच संदेस एका घल्ला, कलमा कलाम आप सुणाईआ। परवरदिगार फड़ाया पल्ला, बेऐब खेल खिलाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करदा रिहा वल छल्ला, अछल अछल वेस वटाईआ।

११८८

वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, कलिजुग अन्तिम रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप बणया झल्ला, सरगुण सृष्ट सबाई रिहा भुलाईआ। सृष्ट सबाई जाणा भुल्ल, अभुल आप भुलाइंदा। माया ममता गई रुल, ममता मोह ना कोए चुकाइंदा। भाग ना लग्गा साची कुल, हरि का रूप नज़र ना आइंदा। साचा जाम ना लाया बुल्ल, मदिरा मास पान कराइंदा। पंज तत्त बूटा बैठा फुल्ल, अन्तिम बिमल रुक्ख लहराइंदा। कलिजुग अन्धेरा जाणा झुल्ल, ना कोए मेट मिटाइंदा। बिन हरि नामे कोए ना पैणा मुल्ल, करता कीमत ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्नूं भगवान खेल खिलाइंदा। विष्नूं भगवान आया चल, निहचल आपणा खेल खिलाईआ। कलिजुग मेटे झूठी कल, कल आपणी आप वखाईआ। एका फड़या खण्डा भल, पारब्रह्म बेअन्त वड वड्याईआ। धरनी धरत धवल जाए हल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप कराईआ। आपणा वेस हरि गोबिन्द, आपणी वार कराइंदा। आपे मेटे सगली चिन्द, चिंता रोग गवाइंदा। करे खेल साजन हिन्द, हिन्दवायण वेख वखाइंदा। आपे सुख सागर डूँग्घा सिन्ध, आपे मुखी मुख सालांहयदा। गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भाणा आप वखाइंदा। साचा भाणा वेख वखाउणा, वेखणहार इक्क हो जाईआ। कलिजुग

११८६

कूड़ा पन्ध मुकाउणा, पान्धी पन्ध रिहा मुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्थर इक्क विछाउणा, ख़ाकी ख़ाक दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप चुकाईआ। हरि का भाणा गोबिन्द धार, गुर गोबिन्द दए सालाहीआ। सिँघ रूप सच्ची सरकार, शाह पातशाह नाउँ धराईआ। साचा खण्डा कर त्यार, ब्रह्मण्डां दए वखाईआ। दो जहानां करे ख्वार, बचया कोए रहिण ना पाईआ। कल कल्की लै अवतार, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। आपे वसे सम्बल नगर धाम न्यार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराईआ। साचा वेस हरि करतारा, कलिजुग अन्तिम आप कराइंदा। कुदरत कादर वेखणहारा, नूर इलाही डगमगाइंदा। विष्नूं भगवान हो उज्यारा, रूप अनूप धराइंदा। सो पुरख निरँजण पावे सारा, हँ ब्रह्म पर्दा लांहयदा। एका डंका वज्जे अपर अपारा, साची नौबत आप वजाइंदा। सचखण्ड बैठ सच दुआरा थिर घर आपणा पर्दा लांहयदा। प्रगट हो नरायण नर अवतारा, आपणा भेव आप जणाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, समुंद सागर मुख शरमाइंदा। बनास्पत रोवे ज़ारो ज़ारा, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। चौथे जुग लहिणा आप मुकाउणा, चार लक्ख बत्ती हज़ार नेत्र नैणां नीर वहाईआ। साडा बेड़ा जिस डुबाउणा, सो आया सच्चा माहीआ। कलिजुग अग्गे हो हो वास्ता पाउणा, दोए जोड़ पए सरनाईआ। एका मंग दर मंगाउणा, बख्श

मेरी मैनूं शाहीआ। चार यारी मृदंग वजाउणा, मुहम्मद नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ ढह प्या सरनाईआ। कलिजुग मंगे झोली डाह, वेला अन्तिम आया। मैं सुणया तूं बेपरवाह, निमाणयां होएँ सहाया। मैं आया तेरी लैण पनाह, मेरे साहिब हो सहाया। तेरा घर वेख्या सच्चा दरगाह, सच सिँघासण बैठा आसण लाया। मेरे नैण रहे शरमा, तेरे अग्गे ना सका उठाया। तूं पकड़ मेरी बांह, मेरा बेड़ा ना अन्त डुबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, छोटा पुत्त तेरे दर ते मंगण आया। तेरा छोटा पुत्त कलिजुग दुलारा, चौथे वण्डे आईआ। तेरा बणया रिहा फ़रमांबरदारा, तेरा हुक्म सीस टिकाईआ। चारों कुंट करया जूठ झूठ पसारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलाईआ। मनमति लगाया अखाड़ा, लक्ख चुरासी नाच नचाईआ। त्रैगुण अग्नी तपाई तत्ती हाढ़ा, घर घर रही जलाईआ। जो मार्ग तेरा दस्सदे गए गुर अवतारा, मैं सभ नूं दिता भुलाईआ। किसे नज़र ना आए गुरु गोबिन्द सिँघ सच्ची सरकारा, नेत्र दरसन कोए ना पाईआ। नानक निरगुण भुल्लया मीत मुरारा, जिस ज़ात पात ना कोए रखाईआ। राधा कृष्न ना कोए आधारा, बंसरी नाम ना कोए वजाईआ। सीता सुरत ना कोए प्यारा, सुआणी संग ना कोए रखाईआ। मुहम्मद खाहिश रोवे ज़ारो ज़ारा, अल्ला राणी नाउँ धराईआ। ईसा मूसा कूक कूक करे पुकारा, वेला अन्तिम इक्क समझाईआ। कलिजुग जोद्धा सूर बली बलकारा, आपणा बल दए वखाईआ। किसे नज़र ना आए मन्दिर मस्जिद गुरदुआरा, शिवदुआला मठ फेरा पाईआ। अठसठ तीर्थ वेखे जा किनारा, गंगा जमना सुरस्ती आपणा फेरा पाईआ। दहि दिशा होया विभचारा, सति सन्तोख ना कोए रखाईआ। उत्तों बोलण तेरा नाअरा, रसना जिहवा हिलाईआ। अन्तर करे ना कोए प्यारा, अजपा जाप ना कोए जपाईआ। कलिजुग तेरी सुणे कौण पुकारा, नौ खण्ड रही कुरलाईआ। धरनी दब्बी तेरे भारा, नेत्र नैण नीर रही वहाईआ। खुल्ह्ड़े केस रही पुकार, मींडी सीस ना कोए रखाईआ। मात पित करे ख्वार, भैण भईया सेज हंढाईआ। नारी कन्त ना करे प्यार, चार कुण्ट वेख वखाईआ। गुर का शब्द ना कोए अधार, हरि का नाम ना कोए ध्याईआ। आ आ गए तेई अवतार, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। अठारां भगत गए पुकार, कबीर जुलाहा दए सलाहीआ। नानक निरगुण कर प्यार, जीव जंत रिहा समझाईआ। गोबिन्द फ़तह बोल जैकार, साचा नाअरा एका लाईआ। कलिजुग आवे अन्तिम वार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, जोती जामा भेख वटाईआ। मेरा मेला करे विच संसार, आप आपणा संग निभाईआ। आपणा नाउँ फड़े खड़ग खण्डा कटार, तेज़ चण्ड प्रचण्ड चमकाईआ। चार वरन दए अधार, ऊँचां नीचां गले लगाईआ। एका अमृत कर त्यार, साचा जाम दए प्याईआ।

एका बोल सच जैकार, नानक निरगुण करे पढ़ाईआ। इष्ट मनाउणा पुरख अकाल, दूजा इष्ट ना कोए वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वखाए इक्को सच्ची धर्मसाल, साचा मन्दिर इक्क वखाईआ। बुध वीचारी की करे सवाल, आपणा भेव ना पाईआ। बिन हरिनामे होया कंगाल, गुर गोबिन्द दिस ना पाईआ। उठ के जाए ना बणे बेईमान, पारब्रह्म श्री भगवाना। पहलों मेटे जीव शैतान, फिर गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञाना। गुर गोबिन्द सूरा मिले आण, जोद्धा सूरबीर बली बलवाना। नीला नीली धारों करे पार, साचा खण्डा इक्क चमकाना। आदि जुगादि नौजवान, चल के आए विच जहाना। वीह सौ वीह बिक्रमी पंदरां कत्तक, वदी सुदी ना कोए निशान, दिल्ली तख्त बहे राज राजाना। एका देवे धुर फ़रमान, राउ रंक सर्ब सीस झुकाना। चारों कुण्ट जै जैकार होए विष्नूं भगवान, सभ छड्ड के भज्जण मैदाना। ना कोए दिसे बल राज राजान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा पूरा करे दर आयां करे परवाना। गुरसिख परवाना होए पूरा, अधूरा रहे ना राईआ। विष्नूं भगवान हथ्थीं पहने कदे ना चूड़ा, लछमी भूषण लाल रंग रंगाईआ। कलिजुग अन्तिम मेटे निशाना कूड़ा, सच सुच्च दए धराईआ। प्रगट होए गुरु गोबिन्द सिँघ सूरा, सूरबीर वेस वटाईआ। सदा सदा सद हाज़र हज़ूरा, ना मरे ना जाईआ। आपणा कौल करे पूरा, करके गया साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण निराकार कलिजुग अन्तिम हो उज्यार, साची धार दए चलाईआ।

११६१

★ १६ भाद्रों २०१८ बिक्रमी बीबी दयाल कौर दे गृह दया होई लील ज़िला लुधियाणा ★

निरगुण निरवैर सच्चा पातशाह, आदि जुगादि अख्वाइंदा। गुर गुर रूप बण मलाह, जुग जुग वेस वटाइंदा। भगतन देवे सच सलाह, साचे मार्ग लाइंदा। सन्तन नाम इक्क वरता, आत्म ब्रह्म दृढ़ाइंदा। गुरमुखां घर दए वखा, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। गुरसिख सज्जण मेल मिला, आपणा बन्धन पाइंदा। नाम निधाना इक्क जणा, अनुभव प्रकाश कराइंदा। शब्द तराना एका गा, आपणा राग सुणाइंदा। काया खेड़ा जोत जगा, नूर नुराना डगमगाइंदा। अमृत ताल इक्क सुहा, निझर झिरना आप झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराइंदा। शाह पातशाह हरि निरँकारा, निरवैर पुरख वडी वड्याईआ। आदि जुगादी इक्क अवतारा, जुग जुग वेस वटाईआ। पुरख अकाल हो उज्यारा, निराकारा खेल खिलाईआ। गुर गुर रूप कर पसारा, गुरदेव इष्ट नमो वेख वखाईआ। भगतन देवे सच भण्डारा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सन्तन वखाए इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। गुरमुखां पार कराए किनारा, डूँघी भँवर

ना कोए रुढ़ाईआ। गुरसिख बख्शे इक्क आधारा, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा बन्धन पाईआ। शाह पातशाह खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण मीत मुरारा, एकँकारा संग निभाइंदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, अबिनाशी करता वेख वखाइंदा। श्री भगवान दए हुलारा, पारब्रह्म सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कराइंदा। जुग जुग कार हरि करतार, आपणी आप कराईआ। निरगुण रूप निराकार, निरवैर खेल खिलाईआ। आपणी इच्छया भर भण्डार, वस्त अमोलक आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रैगुण मेला मेल मिलाईआ। एका शब्द नाद धुन्कार, गृह मन्दिर आप सुणाईआ। पंज तत्त कर आकार, सरगुण खेले खेल हर घट थाँईआ। लक्ख चुरासी हो उज्यार, घट घट जोत जगाईआ। आत्म ब्रह्म अपर अपार, आपणी वण्ड वंडाईआ। ईश जीव खेल न्यार, ख़ालक ख़लक रूप समाईआ। करता पुरख करनी करे साची कार, आप आपणा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाईआ। निरगुण रूप पुरख अकाला, एका घर सुहाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला,
११६२ सच सिँघासण सोभा पाइंदा। गुर गुर रूप हो दयाला, लोकमात वेस वटाइंदा। भाग लगाए पंज तत्त काया माटी खाला, ११६२
घर घर विच सोभा पाइंदा। भगतन दस्से राह सुखाला, एका भगती नाम दृढ़ाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, एका रंग रंगाइंदा। सन्तन नूर कर उजाला, नूर नुराना डगमगाइंदा। आत्म ब्रह्म पाए माला, मन का मणका आप भवाइंदा। गुरमुखां घाले साची घाला, साची घाल इक्क जणाइंदा। दिवस रैण वसे नाला, विछड़ कदे ना जाइंदा। गुरसिख देवे नाम सच्चा धन माला, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाला, शाह पातशाह सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जुगा जुगन्तर हो निराला, सरगुण धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। जुगा जुगन्तर साची कार, जुग करता आप कराईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण कर विचार, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबार, हँ ब्रह्म वेख वखाईआ। सोहँ शब्द सच जैकार, आदि पुरख आप लगाईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म एका धार, सोहँ शब्द सच कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस अवल्लड़ा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर फड़ाया आपणा पलड़ा, एका बन्धन पाइंदा। सच संदेश घलड़ा, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्लड़ा, ऊँच महल्ला डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता आपणी रक्खे

उत्तम जाता, जोती जाता खेल खिलाइंदा। जोती जाता हरि नरायण, निरगुण आपणी धार चलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण रसना गुण सारे कहिण, गुर अवतार गाईआ। भगत भगवन्त चरन ढहिण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सन्तन चुक्के लहण देण, पूर्ब पूर्ब वेख वखाईआ। गुरमुखां पाए एका गहिण, साचा भूशन बस्त्र नाम तन वखाईआ। गुरसिख गुर गुर धाम इक्टठे बहण, साचा दर इक्क समझाईआ। जुगा जुगन्तर लक्ख चुरासी मौत लाड़ी खाए डैण, वेले अन्त ना सके कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर पार कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम हरि निरँकारा, एका खेल खिलाइंदा। निरगुण सरगुण पावे सारा, लक्ख चुरासी फोल फुलाइंदा। पर्दा उठाए विष्न ब्रह्मा शिव इक्क वखाए सच दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। सच सिँघासण सोहे शाह पातशाह सच्ची सरकारा, शहिनशाह आपणा नाउँ धराइंदा। लेखा मंगे ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारा, एका हुक्म सुणाइंदा। कायनात करे ख़बरदारा, इक्क इकल्ला परवरदिगारा, मिहबान बीदो आपणा नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्ला, निरगुण निरवैर आप कराईआ। लेखा जाणे राणी अल्ला, इलाही नूर डगमगाईआ। सच सिँघासण एका मल्ला, मुकामे हक हक ख़ुदाईआ। सच संदेश एका घल्ला, अज़राईल जबराईल मेकाईल असराफ़ील सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। सच संदेसा ज़बराईल, चौदां तबक सुणाइंदा। उम्मती उम्मत वेख दलील, दहि दिशा फोल फुलाइंदा। चार कुण्ट ना दिसे कोई दलील, शरअ शरीअत मुख शरमाइंदा। वेले अन्त ना होए अपील, पुरख अबिनाशी खेल खिलाइंदा। बसन बनवारी बस्त्र पहन नील, नीली धार पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा बन्धन पाइंदा। जुग जुग बन्धन हरि गोपाल, आदि जुगादि पाईआ। आपणे हथ्थ रक्खे काल महाकाल, हुक्मी हुक्म आप भवाईआ। रूप धराए आपणा दयाल, दया निध बेपरवाहीआ। लेखा जाणे त्रैगुण जाल, त्रैगुण अतीता सच्चा माहीआ। नव नौ रिहा सुरत संभाल, चार चार सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा लेखा हथ्थ करतार, गुर अवतार सीस झुकाइंदा। तख़्त निवासी बैठ सच दरबार, कलिजुग अन्तिम हुक्म सुणाइंदा। दर दरवेश बण तेई अवतार, नेत्र नैण सर्ब निवाइंदा। भगत रोवण ज़ारो ज़ार, भगती मार्ग ना कोए रखाइंदा। ब्रह्मा कूक कूक करे पुकार, मेरा ब्रह्म नज़र ना आइंदा। शंकर सुट्ट बैठा कटार, त्रिसूल हथ्थ ना कोए वखाइंदा। विष्नूं बणे दर भिखार, ख़ाली भण्डार ना कोए भराइंदा। त्रैगुण माया आई हार, रजो तमो सतो

मुख शरमाइंदा। पंज तत्त जाए उजाड़, जगत खेड़ा आपे ढांहयदा। होया अन्धेरा बहत्तर नाड़, काया गढ़ ना कोए सुहाइंदा। लक्ख चुरासी ना कोए प्यार, ममता मोह ना कोए जणाइंदा। बंक सोहण गुर अवतार, दस दस मेला मेल मिलाइंदा। नानक गोबिन्द बोल जैकार, एका बोल सुणाइंदा। निहकलंक महांबली उतरे अवतार, कल कल्की खेल कराइंदा। जाग्रत जोत जगे संसार, नूर नुराना डगमगाइंदा। नाम खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्डां आप चमकाइंदा। लोआं पुरीआं मारे मार, नव नौ आपणा खेल खिलाइंदा। ब्रह्मे बेड़ा करे पार, शंकर आपणी गोद बहाइंदा। इन्द इन्दरासण दए आधार, वेला अन्त चुकाइंदा। त्रैगुण माया जाए हार, त्रैगुण आपणा पन्ध मुकाइंदा। करे खेल अपर अपार, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। ब्रह्मण्डां खण्डां खेल करे न्यार, निरगुण आपणा हुक्म वरताइंदा। धू आई अन्तिम वार, चौथे जुग पन्ध मुकाइंदा। बल बावन करया पार, सतिजुग नाल मिलाइंदा। सित्तल देस खेल न्यार, पाताल पातालां फोल फुलाइंदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लोकमात प्रगटाइंदा। माणस जन्म दे अपार, पंज तत्त खेल खिलाइंदा। अंदर कर जोत उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपणा लहिणा रक्खया बन्द किवाड़, दिस किसे ना आइंदा। आपणी थित आप विचार, आपे खेल खिलाइंदा। जुगा जुगन्तर कर प्यार, भगवन भगतन मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाइंदा। कलिजुग तेरा अन्तिम पन्ध, सो पुरख निरँजण आप मुकाईआ। सतिजुग चढ़ाए साचा चन्द, सीतल धार वखाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। जीव जंत गायण बत्ती दन्द, रसना जेहवा इक्क हलाईआ। अठ्ठे पहर वखाए परमानंद, निज आत्म कर रसाईआ। करवट बदला बदले कंड, जो बैठा मुख छुपाईआ। मनमुखता देवे दंड, गुरमुखां होए सहाईआ। लेखा जाणे नव खण्ड, नव नौ धार चलाईआ। लहिणा देण चुकाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फोलाईआ। करे प्रकाश विच ब्रह्मण्ड, वरभण्डी जोत जगाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढ, जिस जन आपणा मेल मिलाईआ। आत्म अन्तर पाए ठंड, अग्नी अग्ग बुझाईआ। गुरमुख सुरत सुहागण ना होए रंड, हरि कन्त कन्तूहल मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम दया कमाईआ। कलिजुग अन्तिम दया निध दीनन दीन दयाल ठाकर स्वामी खेल खिलाइंदा। जगत जुग चली अवल्लड़ी चाल, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचे मन्दिर बैठ सच्ची धर्मसाल, सच सिँघासण आसण लाइंदा। चरनां हेठ दबाए काल महाकाल, आप आपणी कल धराइंदा। एका रक्खे सच सवाल, चार जुग दा लहिणा पुछ पुछाइंदा। दर बैठे गुर अवतार, भगत भगवन्त सीस झुकाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद होए शर्मसार, अल्ला राणी मुख शरमाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, वेद कतेब शास्त्र सिमरत अञ्जील

कुरान खाणी बाणी भेव कोए ना पाइंदा। एका भगत होए परवान, जिस जन मिले हरि जू आण, शब्द बिठाए सच बबाण, आपणी सेवा आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। हरिजन सच्चा सिफ्त सलाह, जुग जुग वेद पुराण रहे जस गाईआ। जिस जन मिले हरि मलाह, बेड़ा पार कराईआ। साची दरगाह दए बहा, महल्ल अटल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग गुरमुख साचे लए उठाईआ। जुग जुग मेला गुरमुख रंग, हरि हरि आप चढ़ाइंदा। आत्म सेजा सच पलँघ, निरगुण आसण लाइंदा। शब्द अनहद सच्चा मृदंग, नादी नाद वजाइंदा। अमृत आत्म सरोवर गंग, अठसठ डेरा ढांहयदा। जोत निरँजण चाढ़े चन्द, रवि ससि मुख शरमाइंदा। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। आवण जावण लक्ख चुरासी चुक्के पन्ध, जम का दंड ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। गुरमुख तेरा अन्तर रस, सतिगुर आपणे हथ्थ रखाईआ। तेरा तेरे होए वस, तेरी महिमा आपे गाईआ। तेरा मेला हस्स हस्स, नेत्र रोवे सर्ब लोकाईआ। जुग जुग भगतां करे पूरी आस, नित नवित वेस वटाईआ। आपणा नूर कर प्रकाश, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। करणहारा बन्द ख़ुलास, बन्दी तोड़ आप अख्वाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, धरत धवल फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराईआ। तारनणहारा सतिगुर एक, पुरख अकाल अख्वाइंदा। गुर गुर धारे साची टेक, एका इष्ट मनाइंदा। जिस जन करे बुध बिबेक, आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत्त बुझाइंदा। गुरसिख घर आपणे काया मन्दिर सतिगुर बैठा लए वेख, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। साचे सतिगुर मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, ना कोई मूंड मुंडाइंदा। आदि जुगादि रहे हमेश, जन्म मरन विच ना आइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव कोटन कोटि खड़े दरवेश, दर दर बैठे सीस झुकाइंदा। तख्त निवासी इक्क नरेश, शाह सुल्तान नाउँ धराइंदा। तिस अग्गे ना चले किसे दी कोई पेश, जो आया उठ उठ जाइंदा। जुगा जुगन्तर रिहा वेख, वेखणहारा दिस ना आइंदा। रूप अनूपा दस दस्मेश, जोती जाता डगमगाइंदा। आपे वसे काया खेत, साचा हेत आप जणाइंदा। दरस दिखाए नेतन नेत, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। सदा सहेला रक्खे साया हेठ, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। गुरमुख सज्जण लए पेख, कलिजुग जीवां नज़र ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप मिलाइंदा। गुरमुख सच्चे मिल्या मेला, सतिगुर पूरा आप मिलाईआ। एका घर वसे गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द खेल खिलाईआ। एथे ओथे सज्जण सुहेला, विछड़ कदे ना जाईआ। राए धर्म दी कट्टे जेला,

११६५

लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। धाम वखाए इक्क नवेला, साहिब बैठा आसण लाईआ। ना कोई वक्त ना कोई वेला, थित वार ना कोए रखाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख सज्जण लए फड़ आपणा बन्धन पाईआ। गुरमुख सज्जण हरि जू फड़या, आपणी दया कमाइंदा। काया मन्दिर आपे वड़या, दिस किसे ना आइंदा। डूँघी भँवरी आपे चढ़या, आपणा पन्ध आप जणाइंदा। आपणी विद्या आपे पढ़या, निष्अक्खर आपे गाइंदा। अग्नी हवन कदे ना सड़या, मढ़ी गोर ना कोए दबाइंदा। आपणी करनी आपे करया, करनी करता आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे खेल खिलाइंदा। खेल खिलाए हरि गोबिन्द, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। जन्म जन्म दी मेटे चिन्द, अमृत आत्म जाम प्याईआ। दाता दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। अमृत देवे सागर सिन्ध, सच सरोवर आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचे तारनहारा, त्रैभवन धनी आप अख्वाइंदा। कलिजुग करे पार किनारा, सतिजुग साचा मार्ग लाइंदा। सतिजुग सति होए उज्यारा, बाली बुध इक्क वखाइंदा। एका मन्दिर नाम जैकारा, एका वार पढ़ाइंदा। एका मन्दिर गुरदुआरा, एका घर वखाइंदा। एका सतिगुर मीत मुरारा, दूजा इष्ट ना कोए मनाइंदा। एका शाह इक्क सिक्दारा, एका रईयत रूप वटाइंदा। एका हुक्म इक्क वरतारा, धुर फ़रमाना इक्क जणाइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, पुरख अकाल नाउँ धराइंदा। लेखा जाणे रामा कृष्न ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारा, नानक गोबिन्द धार जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे घर, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। घर मन्दिर काया बंक, बंक दुआरी आप सुहाईआ। लहिणा चुक्के राउ रंक, राउ रंक एका रंग रंगाईआ। जिस जन लाए शब्दी तनक, जोती जोत जोत रुशनाईआ। माण रखाए जिउँ जन जनक, जन जननी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन पर्दा दए उठाईआ। हरिजन पर्दा जाए उठ, सो पुरख निरँजण आप उठाइंदा। एकँकारा जाए तुट्ठ, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। दरस दिखाए जो बैठा लुक, स्वच्छ सरूप वटाइंदा। जन्म जन्म दी मेटे भुक्ख, तृष्ना अग्न बुझाइंदा। घर उपजाए एका सुख, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। मेल मिलावा नादी सुत, शब्दी वेख वखाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। गुरमुख सुहाए साची रुत, फुल फुलावड़ी आप महिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर आप सुहाइंदा। गृह मन्दिर काया तन, पंज तत्त जोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। आपे बन्न्हे हथ्थीं मन, मन पंछी उड ना दहि दिश

११६६

धाईआ। एका राग सुणाए कन्न, एका नाद वजाईआ। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। पंच विकारा देवे डन्न, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। जिस जन देवे नाम धन, घर ख़ज़ाना दए वखाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर सोभा पाईआ। घर मन्दिर होए सोभावन्त, गुरमुख ख़ुशी मनाइंदा। प्रभ पाया श्री भगवन्त, विछड़ कदे ना जाइंदा। जुड़या जोड़ा नारी कन्त, साची सेज सुहाइंदा। नाम जपाए आपणा मंत, नाउँ निरँकारा आप सालांहयदा। आपे रंगे साची रंगत, रंग रंगीला आप अख्वाइंदा। लेखा जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणी धार चलाइंदा। आपे होए साहिब बेअन्त, भेव अभेद छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन काया घर वसाइंदा। हरिजन काया खेड़ा जाए वस, सतिगुर पूरा आप वसाईआ। साचा मार्ग एका दस्स, एका राह चलाईआ। दरस दिखाए नस्स नस्स, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। जिंनां चिर गुरसिख कहे ना बस बस, आपणा रूप ना लए छुपाईआ। साचा मन्दिर ना कोई छप्पर छन्न ना दिसे छत्त, चार दीवार ना कोए बणाईआ। करे खेल कमलापति, कँवल नैण वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
हरिजन तेरा घर दए वसाईआ। हरिजन तेरा घर सच मनारा, आदि जुगादि सुहाइंदा। एका वसे एकँकारा, आपणा खेल खिलाइंदा। निर्मल दीआ कर उज्यारा, बिन बाती तेल डगमगाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, आपणे मन्दिर आप टिकाइंदा। गुरमुख करे सच प्यारा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। आपे खिच्चे चरन दुआरा, चरन कँवल आप दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरा घर प्रगटाइंदा। प्रगटया घर मिल्या हरि चुक्कया डर, भय भउ दु:ख भंजन आप मिटाईआ। नहाता सर मिल्या वर, लहिणा देणा चुक्या नारी नर, नर नरायण रूप दरसाईआ। जगत विकारा गया झड़, माया ममता गई हड़, सतिगुर पूरा दिखाए अग्गे खड़, रूप अनूप आप वटाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई काया ना कोई गढ़, गुरसिख अंदर बैठा वड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत जोत अकाला, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। गुरसिख तेरा काया मन्दिर सच्ची धर्मसाला, साचा खेड़ा आप वसाइंदा। अठ्ठे पहर करे प्रितपाला, प्रितपालक सेव कमाइंदा। तेरी जपे आपे माला, आपणी माला साचा नाउँ तेरे तन टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन देवे साचा वर, वर घर साचा इक्क वखाइंदा। वर घर साचा हरि हरि कन्त, कन्त कन्तूहल वडी वड्याईआ। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अठसठ तीर्थ होए मंगत, साची वस्त

११६७

ना कोई रखाईआ। रूप अनूप ना दिसे अखण्डत, लेखा चुकया जेरज अंडत, खाणी बाणी दए सभ दुहाईआ। तेई अवतार वेखण चल दरबार, पुरख अबिनाशी एका लाया विच संसार, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। गुरमुख विरला जिस जाणे प्रभ आत्म अन्तर, अन्तर आत्म इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिसन्त भगत भगवन्त मुर्शद मुरीद दीद ईद ज़ाहर बातन आपणा मेल मिलाईआ।

★ १६ भाद्रों २०१८ बिक्रमी नछत्तर सिँघ दे गृह पिण्ड बुरज हरी सिँघ वाला ★

हरि भाणा बलवान, आदि जुगादि वरताइंदा। जुग जुग खेले खेल महान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। निहचल वसे सच मकान, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। शब्द अगम्मी धुर फ़रमान, जुगा जुगन्तर आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रधान, साचे मार्ग लाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप उपाए सच निशान, सच निशाना आप झुलाइंदा। रवि ससि किरनी किरन कर परवान, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा भेव हरि निरँकार, आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण निरवैर हो उज्यार, दो जहानां खेल कराईआ। निरगुण सरगुण साची धार, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। हरि पुरख निरँजण खेल अपार, बेअन्त वड वड्याईआ। एकँकार पावे सार, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आदि निरँजण हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। पुरख अबिनाशी जुगा जुगन्तर साची कार, श्री भगवान हथ्थ वखाईआ। पारब्रह्म करे खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आप जणाईआ। आदि पुरख भेव अवल्ला, आपणे हथ्थ रखाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत आपे रल्ला, जोती जाता डगमगाइंदा। सच संदेस एका घल्ला, शब्दी नाद वजाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव फड़ाया पल्ला, नाम नामा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल हथ्थ करतार, आपणे हथ्थ रखाईआ। त्रै त्रै मीता हो उज्यार, त्रै त्रै लेखा दए समझाईआ। सति सतिवादी ठांडा दरबार, धुर दरबारा आप वखाईआ। आपणी इच्छया कर त्यार, आपे लए प्रगटाईआ। वण्डे वण्ड अगम्म अपार, वण्डणहारा इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ आपणी खेल कराईआ। साची वण्ड पुरख समरथ, आपणी आप वंडाइंदा। सो पुरख निरँजण महिमा अकथ, आपणा रूप आप धराइंदा। आप चलाए साचा रथ, रथ रथवाही सेव

११६८

कमाइंदा। आपणे मन्दिर हो प्रगट, आपणी धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल करे हरि, गृह आपणा आप सुहाइंदा। साचे गृह गृह गृह कार, गृहवन्ता आप कराईआ। सत्त दिवस सत्त गृह कर त्यार, सति सतिवादी मेल मिलाईआ। राहू केतू पुरख नार, एका रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा घाड़न आप घड़ाईआ। नौ गृह कर त्यार, आपणा खेल खिलाइंदा। विष्न ब्रह्मा करया ख़बरदार, एका हुक्म सुणाइंदा। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंचम जोड़ जुड़ाइंदा। रजो तमो सतो दे आधार, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश रंग रंगाइंदा। निरगुण सरगुण कर त्यार, पंज तत्त खेड़ा आप वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। पंज तत्त खेड़ा लक्ख चुरासी, पुरख अबिनाशी आप उपाईआ। आपे खेले खेल तमाशी, खेलणहार आप हो जाईआ। घट घट अंदर पावे रासी, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। सर्ब गुण भरपूर सर्ब गुण तासी, एकँकार नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठां तत्तां मेल मिलाईआ। अठ्ठ तत्त मेल मिलना, एका रंग रंगाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़त घड़ना, घड़ घड़ आपे वेख वखाइंदा। जोत निरँजण चाढ़े चन्ना,
११६६ नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठ तत्त आपणा खेल खिलाइंदा। अठ्ठ तत्त ११६६
खेल न्यारा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। घर विच घर कर त्यारा, घर बैठा आसण लाईआ। घर सूरज चन्न मंडल मण्डप बणाए सतारा, अनुभव प्रकाश कराईआ। घर शब्द नाद धुन्कारा, बोध अगाधी रिहा सुणाईआ। घर अमृत ठंडा ठारा, निझर झिरना रिहा झिराईआ। घर वेखे डूँग्घी गारा, काया कँवरी फोल फोलाईआ। घर पंचम लग्गा अखाड़ा, त्रै त्रै आपे नाच नचाईआ। करे खेल अपर अपारा, आदि जुगादि बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी भर भण्डारा, एका गुण जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अठ्ठ तत्त मेल मिलाईआ। अठ्ठ तत्त तत्व तत, हरि साचा मेल मिलाइंदा। हड्ड मास नाड़ी रत, काया पिंजर जोड़ जुड़ाइंदा। अंदर रक्खे ब्रह्म कमलापति, पारब्रह्म वण्ड वंडाइंदा। धीरज सन्तोख साचा जत, सति सतिवादी आप रखाइंदा। आपे जाणे आपणा नत्त, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची गाथा आप सुणाइंदा। साची गाथा नाद धुन, धुन आत्मक आप वजाईआ। आपे खोलणहारा सुन, सुन्न समाध भेव चुकाईआ। जुगा जुगन्तर भगत भगवन्त आपे चुण, आपणी बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी पुकार रिहा सुण, अभुल भुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी खेल कराईआ। जुग जुग खेल अवल्लड़ा, करे कराए हरि करतार। दो जहान फड़ाए पलड़ा, आप आपणी किरपा धार।

आपे जाणे आपणा राह सुखलड़ा, आपे मार्ग करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल विच संसार। साचा खेल हरि निरँकारा, लोकमात कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सेवा लाए गुर अवतारा, जुग जुग सेव कमाईआ। भगतन देवे नाम आधारा, एका गुण जणाईआ। सन्तन खोल्हे बन्द किवाड़ा, आत्म ब्रह्म प्रगटाईआ। गुरमुखां देवे इक्क हुलारा, एका रंग रंगाईआ। गुरसिख बख्शे चरन छारा, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। जुगा जुगन्तर मनमुख करे जीव ख्वारा, देवे आप सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण हरि हरि धार, आपणी आप रखाइंदा। जुगा जुगन्तर लै अवतार, लोकमात वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर वण्ड वंडाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया आपणे घाट, लोकमात रहिण ना पाईआ। गुर अवतार गा गा गए आपणी गाथ, वेद शास्त्र सिमरत नाल रलाईआ। चारों कुण्ट अन्त होए अन्धेरी रात, जगत अन्धेरा छाईआ। करे खेल पुरख समराथ, आपणा नूर आप धराईआ। ग़रीब निमाणयां पुछे वात, सख़ा सुहेला होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणे विच समाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलिजुग आपणा हुक्म सुणाया। नौ खण्ड पृथ्मी होणा प्रधान, सत्तां दीपां तेरा रंग चढ़ाया। चार कुण्ट झुलाउणा निशान, दहि दिशा वेख वखाया। तेरा बल ज़िमीं अस्मान, बलधारी आप अख्वाया। जूठ झूठ होए प्रधान, माया ममता नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठां तत्तां वेख वखाया। कलिजुग मन्न हरि फ़रमाना, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। तूं शाह पातशाह सच्चा राणा, हउँ बालक सेव कमाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखां मार ध्याना, लुकया कोए रहिण ना पाइंदा। लक्ख चुरासी बन्नां गाना, जूठा झूठा तन्द वखाइंदा। घर घर चढ़ावां इक्क निशाना, सच निशाना ना कोए उठाइंदा। आपणे मार्ग आपे पावां, तेरी ओट तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ साची मंग मंगाइंदा। मंगे मंग बण भिखार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। लक्ख चुरासी तेरा संसार, तेरी कुदरत वेख वखाईआ। हर घट रविआ तूं करतार, घट घट बैठा आसण लाईआ। गृह गृह वज्जे तेरा नाद धुन्कार, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। घर घर झिरना झिरे अपार, अमृत मेघ रिहा बरसाईआ। मैं जावां किस दुआर, मोहे साचा दर दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। पुरख अबिनाशी हो दयाल, आपणी दया कमाइंदा।

कलिजुग तेरी करां प्रितपाल, सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। तेरे नाल रखावां काल, तेरा संग निभाइंदा। आपणा मुख आपणे विच लवां संभाल, दिस किसे ना आइंदा। त्रैगुण माया पावां जाल, पंचम खेड खडाइंदा। लक्ख चुरासी होए बेहाल, मेरा रूप किसे नज़र ना आइंदा। जूठा झूठा वज्जे ताल, डौरू डंका तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठां तत्तां आपणा हुक्म चलाइंदा। अठ्ठ तत्त हुक्मी कार, करता पुरख आप कराईआ। कलिजुग तेरा मीत मुरार, तेरा संग निभाईआ। तेरा लहिणा देणा कर्ज़ा दए उतार, लहिणा देणा झोली पाईआ। तेरी आयू लक्ख चार बत्ती हज़ार, वेद व्यासा गया लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा गुण रिहा समझाईआ। कलिजुग रो रो पुकारया, प्रभ अग्गे मारे धाह। लक्ख चार बत्ती हज़ार ना जाए मैथों गुज़ारया, मैं कर कर बैठा नांह। चारों कुण्ट जीव तेरा पसारया, मैं फिर फिर वेख्या थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ चरनी डिगा आ। चरनी डिगा हो निमाणा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। एका देणा साचा दाना, ख़ाली झोली अग्गे डांहयदा। तूं शाह पातशाह साचा राणा, तेरा हुक्म मोहे भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा वर मेरा घर सुहाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवाना, आपणी दया कमाईआ। कलिजुग तेरा संग रखाना, रूप

१२०१ अनूप धराईआ। ईसा मूसा पहर बाणा, नूर नूर दरसाईआ। आप जणाए आपणा कलामा, कायनात रुशनाईआ। आप जणाए आपणा इस्लामा, इस्म आज़म आप हो जाईआ। आपे पहरे आपणा बाणा, रूप अनूप धराईआ। आपे मुहम्मद करे दर परवाना, काली कफ़नी तन वखाईआ। आपे चार यारी करे निशाना, चारों कुण्ट वण्ड वंडाईआ। आपे अठ्ठां तत्तां बन्न्हे गाना, मौली तन्द नाल रलाईआ। आप राग सुणाए काना, कलमा इलाही आप पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा सगला संग वखाईआ। तेरा सगला संग लोकमात, त्रैगुण आपणा आप निभाइंदा। आपे वेखे मार झात, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। पूरा करे भविख्त वाक, कीता कौल भुल ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म सुणाइंदा। एका हुक्म धुर फ़रमाना, हरि जू हरि हरि आप सुणाईआ। अठ्ठ तत्त वेख निशाना, जगत निशाना रूप वटाईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, एका रिहा सुणाईआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका रिहा सुहाईआ। एका राज इक्क राजाना, एका वेखे साची शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। धुर फ़रमाना सुणया कन्न, चुक्या भरम अंदेसा। कलिजुग दर गया मन्न, करे आप आदेसा। तूं दाता देवणहारा डन्न, मेरी कोई ना जाए पेशा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा १२०१

साचा वर, मैं तेरा दरस अन्त नेत्र नैण पेखां। अन्त तेरा दरसन पाउणा, एका आस रखाईआ। मुहम्मद अन्त पन्ध मुकाउणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कवण घर डेरा लाउणा, एका वार दे समझाईआ। कवण रूप मात वटाउणा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। कवण नाद ब्रह्माद सुणाउणा, वेद कतेब भेव ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी इच्छया पूर कराईआ। इच्छया पूर श्री भगवन्त, एका हुक्म सुणाइंदा। नानक निरगुण आए साचा कन्त, हरिजन नारी आप प्रनाइंदा। लक्ख चुरासी काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, जो जन सरनाई आइंदा। रसना जिहवा जणाए मणीआ मंत, नाम पटीआ इक्क पढ़ाइंदा। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, अठ्ठां तत्तां मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप सुणाइंदा। एका हुक्म आदि अन्त, हरि साचा आप जणाईआ। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस जन बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी माया पाए बेअन्त, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। भरमे भुल्ले जीव जंत, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि निरँकारा, आदि जुगादि समाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, साचा हुक्म चलाइंदा। नानक निरगुण अठ्ठां तत्तां करे पार किनारा, वरन गोत ना कोए रखाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दए सहारा, एका रंग चढ़ाइंदा। आपे खोल्ह्रे बन्द किवाड़ा, दूई द्वैती मेट मिटाइंदा। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, शब्द नाद सुणाइंदा। जो जन आए चल दुआरा, काल ग्रास ना अन्त कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी वण्ड आप वंडाइंदा। आपणी वण्ड वण्डे ब्रह्मण्ड, खोजत खोज आप हो जाईआ। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फोलाईआ। कलिजुग अन्तिम नार दुहागण सृष्ट सबाई होए रंड, हरि कन्त नज़र ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होए भेख पखण्ड, कलिजुग तेरी क्रिया नाच नचाईआ। रसना जिहवा लग्गे गंद, हरि का नाम ना कोए ध्याईआ। आत्म मिले ना परमानंद, मन मति जगत कसाईआ। कोए ना गाए सुहागी छन्द, जिहवा काग वांग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। सच संदेस श्री भगवान, आपणा आप सुणाया। नानक निरगुण कर परवान, जोती जोत डगमगाया। गोबिन्द सूरा सूरबीर बली बलवान, सुत दुलारा आपे जाया। आप उठाया सच निशान, सचखण्ड दुआर झुलाया। एका हुक्म देवे हुक्मरान, पुरख अकाल हुक्म जणाया। कलिजुग अन्तिम वेखणा मार ध्यान, चार कुण्ट अन्धेरा छाया। किसे मन्दिर ना दिसे ज्ञान, हरि का रूप नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाया। गोबिन्द सूरा वड बलकारा, लोकमात वेस वटाईआ। पुरख अकाल करया प्यारा, एका गोद सुहाईआ। एका

बख्शे सच कटारा, नाम गात्रे तन छुहाईआ। एका अमृत ठंडा ठारा, भर प्याला जाम प्याईआ। एका रूप अपर अपारा, पारब्रह्म दए वखाईआ। चार वरनां कर प्यारा, एका घर बहाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना रहे कोए न्यारा, दूई द्वैत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप जणाईआ। साचा हुक्म गोबिन्द गुर, आपणा आप सुणाइंदा। पंचम मीता पंचम बैठा जुड़, साचा संग निभाइंदा। आपे चढ़या आपणे घुड़, साचा अश्व आप दौड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे परखे रीठा मिट्ठा कौड़, कौड़ा रस आप चखाइंदा। कौड़ा रीठा होए मिट्ठा, गोबिन्द आपणी दया कमाईआ। जाम प्याए इक्क अनडीठा, नाम प्याला हथ्थ उठाईआ। चार वरन करे ठंडा सीता, अग्नी तत्त ना कोए रखाईआ। आपे होए पतित पुनीता, पतित पापी लए तराईआ। सर्ब जीआं दा बण बण मीता, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा भाणा हरि भगवान, आपणे हथ्थ रखाइंदा। गोबिन्द सूरा नौजवान, लोकमात हुक्म चलाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, पुरख अकाल इक्क वखाइंदा। एका मज़्ब एका दीन इक्क ईमान,

सच इस्लाम इक्क जणाइंदा। एका नाद एका शब्द एका धुन्कान, एका राग अल्ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
१२०३
किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि भगवन्त, आपणा आप जणाईआ। कलिजुग वेला आए अन्त, गुरु गोबिन्द इक्क समझाईआ। लक्ख चुरासी भुल्ले जीव जंत, वरन बरन पए लड़ाईआ। नाता तुट्टे नारी कन्त, विभचार सर्ब कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। हरि भेव समझाए दया कर, एका हुक्म सुणाया। पुरख अबिनाशी आए वेस धर, निरगुण रूप धराया। जुग चौकड़ी जाए हर, पान्धी पन्ध मुकाया। पंज तत्त वेखे आपे खड़, त्रैगुण पर्दा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताया। साचा हुक्म पुरख अबिनाशा, आपणा आप वरताईआ। नौ सौ चुरानवें जुग खेल तमाशा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। कलिजुग अन्त आए हार पासा, जित नज़र ना कोए टिकाईआ। साध सन्त जीव जंत करन भोग बिलासा, भरमी भरम भरम भुलाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाशा, पंज तत्त निरगुण सरगुण अंदर करे वासा, आपणी बणत बणाईआ। रजो तमो सतो होए दासी दासा, साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम आपणा खेल खिलाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, हरि जू हरि सुणाइंदा। निहकलंका जामा पाउणा, निरगुण जोती डगमगाइंदा। शब्द नाद इक्क वजाउणा, ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाइंदा। अठ्ठां तत्तां लहिणा देणा मूल चुकाउणा, मातलोक अठ्ठ तत्त वेख वखाइंदा।

१२०४

अठ्ठ गृह आप प्रगटाउणा, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। अठ्ठां तत्तां डेरा ढाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठां पर्दा आपे लांहयदा। अठ्ठां पर्दा जाए उठ, सो पुरख निरँजण आप उठाईआ। प्रगट हो अबिनाशी अचुत, वीह सौ बिक्रमी भाग लगाईआ। एका दूआ तीआ चौका पांजा छीका साता आठा नौ दस आपे वेखण झुक झुक, दस दुआरे जगत दए वड्याईआ। नौ दुआरे आपे लुट्ट, अठ्ठां करे हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बीस दस वज्जे वधाईआ। वीह दस खेल न्यारा, निरगुण आप कराइंदा। वीह सौ ग्यारां बिक्रमी हो उज्यारा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाइंदा। वीह सौ बारां करे खेल अपर अपारा, नौ दुआरे फोल फुलाइंदा। वीह सौ तेरां साधां सन्तां दए हुलारा, शाह सुल्ताना आप जगाइंदा। वीह सौ चौदां गुरमुखां लाए इक्क अखाड़ा, एका बन्धन पाइंदा। वीह सौ पंदरां तीर्थ तट्टां फोले जंगल जूह उजाड़ा, डूँघे कंदरां समुंद सागर वेख वखाइंदा। वीह सौ सोलां बदल्लया चोला, दीन दयाल पुरख अकाल जोती जामा वेस वटाइंदा। सम्मत सतारां खेल न्यारा, शाह पातशाह बणे निरँकारा, सीस आपणे ताज टिकाइंदा। वीह सौ अठारां होया ख़बरदारा, राष्ट्रपत दए हुलारा, एका हुक्म जणाइंदा। दूआ रूप निरगुण सरगुण धारा, सिफ़रा दिसे ना कोए पसारा, एका इक्क इकल्ला एकँकारा, आठा अठ्ठां तत्तां मारे मारा, अठ गृह आप प्रगटाइंदा। वीह सौ अठारां बिक्रमी होए पार किनारा, पुरख अबिनाशी खेल खिलाइंदा। सच लगाए इक्क दरबारा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। दर सद्दे तेई अवतारा, भगत अठारां नाल मिलाइंदा। हुक्म सुणाए ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारा, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। दस गुर सुहाए बंक दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। त्रैगुण रोवे ज़ारो ज़ारा, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। पंचम लुटया जाए दिन दिहाढ़ा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। पारब्रह्म पतपरमेश्वर नौ खण्ड पृथमी सत्तां दीपां ब्रह्मण्डां खण्डां लाए इक्क अखाड़ा, दो जहानां नाच नचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जगत गृह आप वखाइंदा। जगत गृह आए गृह, गृह नज़र किसे ना आया। लक्ख चुरासी गुरमुख विरला रहे, पुरख अबिनाशी दए खपाया। जो जन हरि का भाणा सहे, तिस आपणी गोद बहाया। हरि का भेव पंडत पांधा कोई ना कहे, सभ बैठे ध्यान लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आपणा गृह आप चलाया। साचा गृह पाए घेरा, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। पुरख अबिनाशी शहिनशाह वड दलेरा, शाह पातशाह इक्क अख्वाईआ। वेद व्यासा नानक गोबिन्द जिस दा गाउँदा रहे दोहरा सो वेला रिहा समझाईआ। सस्से उप्पर लग्गा होड़ा, निरगुण सरगुण आपे जोड़ा, हँ ब्रह्म भेव ना राईआ। अग्गे वेला रहि गया थोड़ा,

१२०५

वीह सौ उन्नी रिहा राह तकाईआ। जुड़या रहे ना जोड़ी जोड़ा, जोड़ी जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जिस जन सतिगुर पूरा मात बौहड़ा, तिस तत्ती वा ना लागे राईआ। कलिजुग शतरंज दा उलटा होण वाला मोहरा, शैह किशत ना कोए लगाईआ। मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआल गुरदुआरा ढहण वाला देहुरा, पुरख अकाल आपणी खेल खिलाईआ। नौ खण्ड पृथमी पए शोरा, चारों कुण्ट होए अन्ध घोरा, सच प्रकाश ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गृह आप चलाईआ। आपणा गृह गहर गम्भीर, अठ्ठ तत्त चलाइंदा। लक्ख चुरासी वेखे तन सरीर, तिनका तिनका फोल फुलाइंदा। लुकया रहे ना कोए पीर फ़कीर, मुल्लां शेख़ मुसायक औलिए आपे पर्दा लांहयदा। पावे सार अठसठ नीर, समुंद सागर डूँघी गार पर्दा उठाइंदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड उच्चे टिल्ले पर्बत चीर, आप आपणा राह चलाइंदा। कलिजुग आया अन्त अख़ीर, गल विच फांसी पए ज़ंजीर, ना कोए सहाई पीर फ़कीर, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। अठ्ठ गृह उठ उठ धावन, आपणी लै अंगड़ाईआ। कलिजुग हँकारी मारे रावण, गुरसिखां पकड़ना आपे दामन, जो हरि हरि रहे ध्याईआ। साहिब सतिगुर होए ज़ामन, गुरमुख जम नेड़ कोए ना आईआ। काया खेड़ा वसदा रहे ग्रामन, गृह वज्जदी रहे वधाईआ। हिसाब किताब लगावण ब्रह्मण, ब्रह्म विद्या जगत पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस उनीसा खेल खिलाईआ। उन्नी उनीसा चढ़े चा, एका नाया रंग रंगाइंदा। नौ दर डेरा देवे ढाह, एका दर वखाइंदा। इक्क इकल्ला बण मलाह, नौ खण्ड बेड़ा आप चलाइंदा। नौ खण्ड देवे सच सलाह, एका हुक्म वरताइंदा। एका नाम मात प्रगटा, नौ नौ आपणा पर्दा लांहयदा। करे खेल बेपरवाह, बेअन्त भेव कोए ना पाइंदा। कलिजुग नईया दए डुबा, पार किनारा ना कोए रखाइंदा। आपणे गृह आपे वेखे वेखणहारा साचे थाँ, जिस दुआरे आप टिकाइंदा। कलिजुग जीव भुल्लो ना, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। गुर गोबिन्द गुरमुख सज्जण वेखे आ, रूप अनूप धराइंदा। जिन्हां भुलया सच्चा शहिनशाह, तिस अन्त ना कोए बचाइंदा। माणस बुद्धि होई काँ, जीव काग वांग कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा डेरा आपे ढांहयदा। कलिजुग डेरा जाणा ढठ्ठ, उलटी गेड़नहारा गेड़े लठ्ठ, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। लक्ख चुरासी होए भठ्ठ, जोती अग्नी लम्बू लाईआ। नाता तुट्टे पंज तत्त, त्रै त्रै मेल ना कोए मिलाईआ। धरत मात बैठी घत सथ्थ, गुत खुलड़े केस रही वखाईआ। जिन्हां गंवाई मेरी पत, मेरी गोद बहण ना पाईआ। मैं घलया सुनेहड़ा कमलापति, मेरा माही चल के आवे वाहो दाहीआ। एका वार नचौड़े सभ

दी रत, रती रत दए सुकाईआ। धर्म राए दे खाते देवे घत, ना सके कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराईआ। धरत मात अन्त कुरला, नैणां नीर वहाया। पुरख अबिनाशी हो सहा, तेरी ओट रही तकाया। बिन तेरे पकड़े ना कोई मेरी बांह, गुर अवतार बैठे मुख छुपाया। जिस दुआरे जावां अग्गों करन नाह, मेरा भार ना कोए उठाया। जिस नूं कहिन्दे धरत मां, अज्ज नक्क गुत्त बैठी वढाया। मेरा करे ना कोई सच न्याँ, ठग्ग चोर यार मेरे उत्ते बैठे आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हौला भार देणा कर, मैं बैठी सीस झुकाया। झुकया सीस अग्गे जगदीस, दोए जोड़ करे निमस्कार। चार जुग चौकड़ी मैं पीसण ल्या पीस, बण बण सेवादार। जिन्हां दे छत्र झुलाया सीस, सो मेरी पति करन ख्वार। मैं सुणया तूं सदा करें बख्शीश, आदि जुगादि बख्शणहार। तेरी धूढ़ी लावां आपणे सीस, मस्तक छोहां साची छार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा दुखड़ा मात निवार। पुरख अबिनाशी शब्द जणाए, एका वार सुणाईआ। धरत धरन धौल तेरा हौला भार कराए, आपणी सेव लगाईआ। निरगुण हो के फेरा पाए, रूप रेख ना कोए वखाईआ। चार जुग दा लहिणा देणा दए चुकाए, बाकी नज़र कोए ना आईआ।
१२०६ मनमुख ख़ाकी जीव दए मिटाए, पंचम डेरा आपे ढाहीआ। गुरमुख साजण लए तराय, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। १२०६
लक्ख चुरासी विच्चों बाहर कढाए, एका डोरी बन्धन पाईआ। कागों हँस रूप वटाए, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। सतिजुग साचा पंचम मीता आप लगाए, सति सतिवादी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अन्तिम होए सहाईआ। अन्त सहाई तेरा होणा, गति मित आपणे हथ्थ रखाइंदा। लक्ख चुरासी नेत्र नैण रोणा, जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। बण मां प्यारी मुखड़ा किसे ना धोणा, फड़ गोद ना कोए बहाइंदा। आपणा कीता सभ ने पाउणा, हरि का नाम सर्ब भुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठ गृह सेवा लाउणा, अठ्ठां तत्तां भन्न वखाउणा, घड़न भन्नणहार समरथ, आपणी महिमा जाणे अकथ, भेव किसे ना आइंदा। भेव अभेदा कोए ना जाणे, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। फिर फिर भुल्ले राजे राणे, शाह सुल्तानां नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। सभ दे सिर ते कूके भाणा, गुरमुख विरला चतुर सुघड़ सयाणा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन होए आप सहाईआ। हरिजन तेरा सदा सहाई, पुरख अकाल अख्वाइंदा। जुग जुग देवे ठंडीआं छाईं, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चतुर्भुज मेले फड़ फड़ बाहीं, आपणीआं भुजां आप वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अठ्ठ गृह अठ्ठ तत्त आपे बन्न्हे आपणा नत्त, नाता

आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जुगत जाणे हरि, जगत विद्या माण गंवाइंदा। अठ्ठ गृह गुरसिख नछत्र, पंडत पांधा भेव ना पाईआ। लेखा जाणे नाड़ बहत्तर, ब्रह्मण्ड वज्जे वधाईआ। पर्दा चुक्के गगन गगनंतर, गृह मन्दिर होए रुशनाईआ। नाम जणाए एका मन्त्र, निष्अक्खर कर पढ़ाईआ। माणस जन्म बणाए बणतर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। औखद देवे वांग धनंतर, शब्द अगम्मी झोली पाईआ। खण्डा देवे एका शस्त्र, तिक्खी धार जणाईआ। पंज तत्त काया चोला रक्खया बस्त्र, सदा अंदर बैठा सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग्रह नछत्र आपणे संग निभाईआ। ग्रह नछत्र हुक्मी कार, हुक्मी आप चलाइंदा। गुरसिख नछत्र ना सके कोए विचार, चार वेद मुख शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप उठाइंदा। उठ गुरसिख नेत्र खोल्ह, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता वसे तेरे कोल, नित तेरा राह तकाईआ। अठ्ठे पहर वज्जे मृदंग ढोल, अनहद सेवा लाईआ। आपणी ताकी आपे खोल, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। आपणा तत्त आप वरोल, नाम मधाणा पाईआ। तेरा तेरे अंदर रिहा मौल, मौला रूप वखाईआ। तेरे अंदर अमृत कौल, कँवला मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरले आप मिलाईआ। गुरमुख मिल्या मेल, गुर सज्जण आप मिलाइंदा।

१२०७ काया अंदर सुरत सुआणी चढ़या तेल, साचा सगन मनाइंदा। पंचम सखीआं वेखे सहेल, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा आप मिलाइंदा। हरिजन मिल्या साचे घर, घर मन्दिर वज्जी वधाईआ। निर्भय चुकाया भय डर, भयानक रूप ना कोए दरसाईआ। सुरत सुआणी लए फड़, शब्दी डोर बंधाईआ। आत्म सेजा आपे चढ़, आपणा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण होए सहाईआ। सज्जण सुहेला इक्क इकांत, निरगुण आपणा रूप प्रगटाईआ। कलिजुग मेटे अन्धेरी रात, साचा चन्द चढ़ाया। ना कोई ज़ात ना कोई पात, इक्को ब्रह्म वखाया। एका मिले पुरख समराथ, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण होए सहाया। गुरमुख सज्जण सदा सहायक, पारब्रह्म हरि करतारा। सर्ब जीआं दा एका नायक, आदि जुगादि अवतारा। जुगा जुगन्तर सर्ब सुखदायक, आत्म ब्रह्म करे विचारा। पतित पुनीत पाकी पाक, बेऐब परवरदिगारा। आदि जुगादि लाशरीक, मुकामे हक वसे सांझा यारा। कलिजुग अन्तिम देवे इक्क तरीक, वीह सौ वीह बिक्रमी पंदरां कत्तक विच संसारा। एका कारज कर के जाए ठीक, सतिजुग वरते सति वरतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीस सुहाए पीतम्बर पीत, पिता पूत खेल न्यारा।

★ २० भाद्रों २०१८ बिक्रमी गुरमेल सिँघ दे गृह पिण्ड बुरज हरी सिँघ वाला ★

सो पुरख निरँजण साची धार, सति सतिवादी मात चलाइंदा। निरगुण सरगुण करे प्यार, आत्म पारब्रह्म मिलाइंदा। एका मन्दिर खोल्ह किवाड़, साचा दर आप सुहाइंदा। एका इष्ट गुर अवतार, रूप अनूप धराइंदा। एका नाद धुन जैकार, एका शब्द सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा आप चलाइंदा। साची धार हरि निरँकार, सतिजुग सति सति वरताईआ। वरन बरन ना कोए विचार, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। राउ रंक ना कोए राजान, शाह पातशाह ना कोए अख्वाईआ। दीन मज़्हब ना कोए इस्लाम, आत्म ब्रह्म सर्ब दरसाईआ। किसे ना पकड़े कोए दाम, एका ओट अकाल जणाईआ। रूप धराए रमइया राम, साँवल सुंदर खेल खिलाईआ। ईसा मूसा दे पैग़ाम, पैग़म्बर वेख वखाईआ। आप जणाए सच कलाम, कलमा नबी आप पढ़ाईआ। साचा ढोला इक्क कलाम, कादर कुदरत आप सुणाईआ। सो पुरख निरँजण हो प्रधान, हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। सोहँ शब्द विच जहान, एका वार प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सारे गान, अन्तर आत्म लिव लाईआ। लक्ख चुरासी वखाए निशान, सति सतिवन्ता आप झुलाईआ। जीव जंत पाए आण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे रंग समाईआ। सति सतिवादी साचा रंग, साची धार चलाइंदा। शब्द नाद इक्क मृदंग, जीव जंत सुणाइंदा। अमृत आत्म साची गंग, निझर झिरना इक्क वखाइंदा। अठ्ठे पहर परमानंद, काया मन्दिर सोभा पाइंदा। लेखा जाणे बत्ती दन्द, रसना जिहवा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। कलिजुग कूड़ा पन्ध मुकाउणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका धाम बहाउणा, एका राम नज़री आईआ। एका अक्खर आप पढ़ाउणा, एका घर वज्जे वधाईआ। कलिजुग साढे तिन्न हथ्थ सीआं वक्त चुकाउणा, रविदास चमारा दए ग्वाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप वसाईआ। साचा घर हरि वसाउणा, बेअन्त वड्ड वड्याईआ। दीपक जोत इक्क जगाउणा, हवन बाती ना कोए कराईआ। पवणी पवण सेवा लाउणा, पवण पवणां विच समाईआ। धुर फ़रमाना इक्क जणाउणा, लिखण पढ़न विच ना आईआ। सत सत आपणा फेरा पाउणा, ब्रह्म मति इक्क दरसाईआ। एका बीज एका वत्त एका फल लगाउणा, अमृत फल आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। सतिजुग मार्ग सच्चा राह, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। निरवैर निराकार बण मलाह, दो जहानां बेड़ा आप चलाइंदा। जन भगतां देवे सच सलाह, एका नाम जपाइंदा। वेले अन्त पकड़े

बांह, सगला संग निभाइंदा। सखा सखाई पिता मां, सीस जगदीस हथ्थ टिकाइंदा। हँस बणाए फड़ फड़ काँ, कांगों हँस उडाइंदा। ज़ात पात रिहा मिटा, ऊँच नीच ना कोए वखाइंदा। साचा मार्ग दए जणा, भेव अभेद खुल्हाइंदा। कोई ना खाए सूर गां, एका आत्म अनन्द जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा संग निभाइंदा। सतिजुग साचे चले संग, सगला संग आप निभाईआ। घर घर वजाए नाम मृदंग, सुरत सुआणी लए उठाईआ। काया चोली चाढ़े रंग, गुर शब्दी सेव कमाईआ। पावे सार जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज फोल फोलाईआ। लेखा जाणे हरि ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा बन्धन पाईआ। सतिजुग साचा हरि हरि बन्धन, गुरमुख विरले पाइंदा। जिस जन देवे आत्म अनन्दन, निज आत्म रस चखाइंदा। इक्क सुणाए सुहागी छन्दन, घर घर विच राग अल्हाइंदा। कलिजुग जीव भागां मंदन, हरि का रूप नज़र ना आइंदा। किसे ना लेखे खादा पीता बत्ती दन्दन, बिन हरि नामे ख़ाली सर्ब वखाइंदा। गुरमुख विरला मस्तक धूढ़ी लावे चन्दन, चन्द चांदना आप चमकाइंदा। जुग जुग होए आपे टुट्टी गंढ्ण, एका पल्लू गंढु पवाइंदा। त्रैगुण अतीता त्रैगुण करे खण्डन, एका खण्डा नाम चमकाइंदा। चारों कुण्ट चण्ड प्रचण्डन, ब्रह्मण्ड खेल खिलाइंदा। करे खेल आदि निरँजण, भेव कोए ना पाइंदा। ग़रीब निमाणयां दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराइंदा। नेत्र पाए नाम अंजन, आपणा दरस कराइंदा। एथे ओथे बणे सज्जण, साक सैण आप हो जाइंदा। चरन धूढ़ी साचा मजन, दुरमति मैल धवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा रूप वखाइंदा। कलिजुग तेरा रूप अनूप, सतिगुर पूरा आप प्रगटाईआ। सच सुच्च वरते चारे कूट, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सुहाए एका रुत्त, रुत्त बसन्ती आप महिकाईआ। गुरमुख बणाए साचे सुत्त, पिता पूत गोद बहाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन्न आपणी धार चलाईआ। आपणी वार आपे उठ, आपणा बल वखाईआ। गहर गम्भीर गया तुठ्ठ, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। चार वरन करे एका मुठ्ठ, आपणा बन्धन पाईआ। मनमुखता अन्तिम पए लुट्ट, मनमति दए दुहाईआ। सच दवारिउँ जो गए रुठ्ठ, अन्तिम लए मनाईआ। मूर्ख मुग्धां धर्म राए दर टंगे पुठ्ठ, देवे सख़त सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा मात धराईआ। सतिजुग साचा मात धर, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। एका देवे आपणा वर, साची वस्त झोली पाइंदा। दीन मज़्हब ना कोए डर, शरअ शरीअत ना कोए वखाइंदा। हर घट अंदर हरि जू रिहा वड़, रूप अनूप वखाइंदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त भाग लगाइंदा। गुरमुख विरला वेखे अग्गे खड़, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। किरपा करे नरायण नर, नर नारी

मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा शब्द जणाइंदा। साचा शब्द सोहँ सो, सो पुरख निरँजण धार चलाइंदा। लक्ख चुरासी देवे ढो, ढोआ ढोला लै के आइंदा। एका बीज देवे बो, एका रुत्त सुहाइंदा। एका अमृत देवे चो, हरया बूटा आप कराइंदा। एका तोड़े नाता मोह, माया ममता परे हटाइंदा। एका ब्रह्म पारब्रह्म जाए छोह, दूई पर्दा आप चुकाइंदा। गुरमुख जगत जीवण वलों होए निर्मोह, निरवैर आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल हरि करतार, नव नव चार कराईआ। काया कप्पड़ दए उतार, जोती जोत जोत मिलाईआ। मन्दिर सुहाए बंक दुआर, गृह साचे वज्जे वधाईआ। वाह वा सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाईआ। गुरमुख सोहे गुर चरन दुआर, गुर मेला सहिज सुभाईआ। एका नूर होए उज्यार, जोती जोत डगमगाईआ। शब्दी शब्द करे प्यार, एका नाम सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरले लए उधार, पूर्ब जन्मां वेख वखाईआ। पूर्ब जन्म साचा लहिणा, जन्म कर्म लेखे पाइंदा। जिस जन वखाए दरसन नैणां, जन्म मरन कटाइंदा। जिस तन पाए नाम गहिणा, स्वच्छ सुहागण रूप वखाइंदा। जिस जन जणाए भाणा सहिणा, तिस आपणा मेल मिलाइंदा। गुर गुर गुरमुख धाम इक्टठे बहिणा, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन बहाए एका दर, निरभउ चुकाए दूजा डर, नेत्र तीजा खोल्ह वखाए घर, चौथे घर वज्जे वधाईआ। पंचम मेला आपे कर, छेवें बिन छप्पर छन्न जाए वड़, सत्तवें सति सतिवादी ना कोई सीस ना कोई धड़, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। अठ्ठां तत्तां लए फड़, नौ दुआर खोल्ह गढ़, साची चोटी आपे चढ़, दस्म दुआरी कुण्डा लाहीआ। निरगुण जोती नूर कर, अनहद तूर वज्जे दर, पंच विकारा जाए सड़, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। गुरमुख मिले आपणे घर, पुरख अबिनाशी पल्लू फड़, साचे पौड़े जाए चढ़, आपणा पन्ध आप मुकाईआ। नज़री आए एका हरि , जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत आपणा मेल मिलाईआ।

★ २० भाद्रों २०१८ बिक्रमी बाबू सिँघ दे गृह दद्दा हूर ★

सो पुरख निरँजण साचा राणा, तख्त निवासी हुक्म जणाइंदा। जुग जुग मन्ने हरि हरि भाणा, हरि भाणे सर्ब समाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल महाना, निरगुण निरवैर आप कराइंदा। ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना, लक्ख चुरासी

१२११

फोल फुलाइंदा। चारों कुण्ट जूठ झूठ प्रधाना, कूड़ी क्रिया बन्धन पाइंदा। माया ममता दर दर खेल खिलाना, हउमे वेस वटाइंदा। नज़र ना आए किसे श्री भगवाना, लक्ख चुरासी नेत्र नैण बन्द वखाइंदा। भरमे भुल्ला राजा राणा, राम राज ना कोए कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म श्री भगवन्त, आदि जुगादि वरताईआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग करता वेस वटाईआ। सेवा लाए गुर अवतार साध सन्त, हुक्मी हुक्म इक्क सुणाईआ। आपणी महिमा जणाए अगणत, अकथना अकथ करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग खेल अवल्लड़ा, करनहार करतार। सच सिँघासण एका मलड़ा, सचखण्ड सच्चा दरबार। धुर संदेस एका घल्लड़ा, हुक्मी हुक्म करे वरतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाण आपणी कार। साची कार हरि कमाइंदा, जुगा जुगन्तर लै अवतार। निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा, मेल मिलावा अगम्म अपार। नाम नाद इक्क वजाइंदा, रागां नादां वसे बाहर। ब्रह्म ब्रह्माद खोज खुजाइंदा, आप आपणा खोल्ह किवाड़। बोध अगाध शब्द सुणाइंदा, अक्खर वक्खर कर त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग बन्ह्ने साची धार। साची धार श्री भगवान, आदि जुगादि बंधाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख निशान, अन्तिम दए मिटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गाए गान, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। गुर अवतार सेव करन महान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रूप धराईआ। सच संदेसा इक्क फ़रमान, जीवां जंतां आप समझाईआ। पुरख अकाल साचा हुक्मरान, साचे तख्त बैठा सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग करता खेल खिलाईआ। जुग करता हरि मलाह, लक्ख चुरासी बेड़ा आप चलाइंदा। जुग जुग लहिणा देणा दए मुका, लेखा लेख ना कोए रखाइंदा। धरनी धरत धवल गोद दए सुहा, पूत सपूता गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। हरि का खेल आदि जुगादि, भेव कोए ना पाइंदा। बेअन्त बेअन्त कह कह गए सन्त साध, गुर अवतार सर्ब सालांहयदा। जुग जुग लक्ख चुरासी सुणे फ़रयाद, हर घट आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त, हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। प्रगट हो श्री भगवन्त, निरगुण निरवैर जोती जामा पाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। लक्ख चुरासी माया पाए बेअन्त, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। नव नौ गढ़ बणया हउमें हंगत, माया ममता विच वसाईआ। बिन हरि नामे सृष्ट सबाई होई नंगत, तन पर्दा ना कोए रखाईआ। माणस जन्म दिसे भंगत, सगला संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तिम अन्त कल, कल काती वेख वखाइंदा। पुरख अबिनाशी आए चल, गोबिन्द मेला मेल मिलाइंदा। वसणहारा जल थल, महीअल आपणी खेल खिलाइंदा। जीव जंत भुलाए कर कर वल छल, अछल छलधारी आप हो जाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटल्ल, लोकमात वेस वटाइंदा। सच सिँघासण सम्बल नगर बैठा मल्ल, पुरख अबिनाशी आसण लाइंदा। इक्क सुनेहड़ा रिहा घल, चार वरनां आप जगाइंदा। नौ खण्ड पृथमी जाए हल, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। करे खेल सूरा प्रबल, पारब्रह्म आपणा हुक्म वरताइंदा। लक्ख चुरासी काया डाल्ह अमृत दिसे ना कोए फल, जूठा झूठा सिम्मल रुक्ख लोकमात लहराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम वेस धर, निहकलंका नाउँ रखाईआ। वेद व्यासा आपे फड़, आपणा भविख्त दए समझाईआ। उच्चे टिल्ले आपे चढ़, साचे पर्बत सोभा पाईआ। किला कोट तोड़ हँकारी गढ़, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। आत्म मेला पारब्रह्म कर, ब्रह्म वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाउणा, कलिजुग अन्तिम वार। कूड़ी क्रिया मेट मिटाउणा, जूठ झूठ करे ख्वार। माया ममता मोह चुकाउणा, हउमे हंगता गढ़ निवार। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाउणा, दूई द्वैती पर्दा देवे पाड़। आत्म ब्रह्म सर्ब दरसाउणा, ईश जीव कर प्यार। काया मन्दिर इक्क वखाउणा, घर बैठा मीत मुरार। अठ्ठे पहर अनहद शब्द नाद सुणाउणा, आप वजाए तार सतार। साची सखीआं मेल मिलाउणा, विछड़ ना जाए दूजी वार। कलिजुग कूड़ा कालख टिक्का मस्तक लाउहणा, गुरमुख साचे कर उज्यार। निरगुण बाती जोत जगाउणा, जोत निरँजण कर उज्यार। कमलापाती मेल मिलाउणा, पुरख अबिनाशी एकँकार। साचा साकी आप अख्वाउणा, अमृत जाम दए प्याल। बन्द किवाड़ा ताकी आप खुल्हाउणा, घर घर विच वखाए सच्ची धर्मसाल। मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला कलिजुग अन्तिम कोई रहिण ना पाउणा, तीर्थ तट अठसठ गए हार। पारब्रह्म पुरख पुरखोतम आपणा खेल आप खिलाउणा, आप आपणा बल धार। चार वरन अठारां बरन एका बन्धन पाउणा, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हो उज्यार। निहकलंक श्री भगवान, दूसर अवर ना कोए जणाइंदा। प्रगट होवे वाली दो जहान, जोती जाता डगमगाइंदा। शब्द सुणाए धुर फ़रमान, सोहँ अक्खर आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म देवे ज्ञान, दूजी विद्या ना कोए रखाइंदा। ज़ात पात ऊँच नीच एका रंग वखाए हो मेहरवान, आप आपणे रंग रंगाइंदा। सतिजुग देवे साचा दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। एका राज इक्क राजान, शाह पातशाह इक्क अख्वाइंदा।

एका विष्नूं देवे दान, एका ब्रह्मा ब्रह्म प्रगटाइंदा। एका शंकर करे कल्याण, एका खेल खिलाइंदा। एका रूप घट घट पछाण, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, एका आसण लाइंदा। एका शब्द इक्क ज्ञान, एका मन्त्र पढ़ाइंदा। एका सूरज एका भान, एका रव एका सस, इक्क प्रकाश कराइंदा। एका मेल मिलाए हस्स हस्स, जुग जुग वेस वटाइंदा। एका मार्ग देवे दस्स, गुर अवतारां मार्ग लाइंदा। कलिजुग अन्तिम कर प्रकाश, जोती जोत डगमगाइंदा। ग़रीब निमाणयां होए दास, जुग विछड़े मेल मिलाइंदा। सतिजुग देवे साचा साथ, सगला संग निभाइंदा। करे खेल पुरख समराथ, हरि का भेव कोए ना पाइंदा । लहिणा देणा चुकाए त्रिलोकी नाथ, नाथ अनाथां सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। निरवैर चलाए आपणी गाथ, दीन मज़्ह्ब ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। एका नाउँ हरि निरँकार, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। चार वरनां देवे कर प्यार, एका मन्त्र रिहा समझाईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबार, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। हरि पुरख निरँजण हो त्यार, रूप अनूप धराईआ। एकँकारा कर पसार, आप आपणा लए प्रगटाईआ। आदि निरँजण हो उज्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता सुहाए बंक दुआर, सच सिँघासण सोभा पाईआ। श्री भगवान शाह पातशाह सच्ची सरकार, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। पारब्रह्म निउँ निउँ करे निमस्कार, दर आपणे सीस झुकाईआ। ब्रह्म करे ख़बरदार, शब्द स्नेहुड़ा इक्क सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होए बेदार, नेत्र नैणां नींद खुल्हाईआ। कलिजुग अन्तिम कल कल्की लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शब्द डंका वज्जे अगम्म अपार, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दए जगाईआ। राउ रंकां करे इक्क प्यार, एका ज्ञान तत्त जणाईआ। कूड़ी क्रिया मारे मार, कलिजुग अन्तिम डेरा ढाहीआ। लेखा जाणे ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार, नूरी अल्ला बेपरवाहीआ। मुकामे हक हो त्यार, पावे सार परवरदिगार, बेपरवाह वडी वड्याईआ। हक हकीकत बोल जैकार, बिस्मिल रूप विच संसार, इस्म आज़म दए जणाईआ। नूरी जल्वा खेल अपार, कुदरत कादर करे प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग लहिणा आप चुकाईआ। जुग जुग लहिणा चुक्के पन्ध, कलिजुग अन्तिम वार। चार जुग गुर अवतार गा गा गए छन्द, उच्ची कूक कूक पुकार। आपणा लिख लिख गए लेखा बत्ती दन्द, रसना जिहवा लए आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम खेल करे करतार। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाउणा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाईआ। तेई अवतार दस गुर भगत अठारां लहिणा देणा आप चुकाउणा, बाकी कोए नज़र ना आईआ। चार वरन डेरा ढाउहणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए अख्वाईआ। साचा मार्ग इक्क लगाउणा,

चारों कुण्ट दए वखाईआ। एका इष्ट सर्ब मनाउणा, जगत दृष्ट दए खुल्हाईआ। घर घर राम नज़री आउणा, राम रामा रूप वटाईआ। चतुर्भुज भेव चुकाउणा, आदि शक्ति सगन मनाईआ। हो भवानी दरस दिखाउणा, इष्ट आपणा लए प्रगटाईआ। भगत भगवन्त रंग रंगाउणा, आपणा रंग चढ़ाईआ। सोहँ शब्द साचा मृदंग वजाउणा, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग कूड़ा पार कर, सतिजुग साचा मात धराईआ।

★ २० भाद्रों २०१८ बिक्रमी दरबारा सिँघ दे गृह पिण्ड कृपाल सिँघ वाला ★

सो पुरख निरजंण अगम्म अपारा, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण खेल न्यारा, निरगुण निरवैर आप कराईआ। एकँकार कर पसारा, रूप अनूप आप धराईआ। आदि निरँजण जोती जोत उज्यारा, दर घर साचे डगमगाईआ। अबिनाशी करता आप आपणा कर पसारा, बेपरवाह वेख वखाईआ। श्री भगवान आप सुहाए सच दुआरा, दर घर साचे सोभा पाईआ। पारब्रह्म आपे जाणे आपणी कारा, आपणा खेल आप कराईआ। आपणी इच्छया आपे बण वरतारा, आपे झोली लए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी धार आप चलाईआ।
१२१४ आदि पुरख साची धार, इक्क इकल्ला आप चलाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह भेव कोए ना पाइंदा। आपणी कर आप सलाह, आपे मता पकाइंदा। आपणा घाड़न आप घड़ा, आपे वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा रूप आप धराइंदा। आपणा रूप आपे रक्ख, आपणी महिमा आपणे विच छुपाईआ। आप आपा कर प्रतक्ख, करे खेल बेपरवाहीआ। आप आपणे होया वस, आपणा हुक्म आप मनाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपणी सेवा सच समझाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। आपणा हुक्म हरि निरँकार, एका एक वरताइंदा। आपणी इच्छया कर विचार, आपे पूर कराइंदा। आप बणाए सचखण्ड दुआर, आपणी सेवा आप कमाइंदा। छप्पर छन्न ना कोए सहार, चार दीवार ना कोए वखाइंदा। अगम्म अगम्मड़ा महल्ल उसार, निहचल धाम आप वड्यांअदा। निरगुण दीआ बाती कर त्यार, साचे मन्दिर आप टिकाइंदा। कमलापाती हो त्यार, आप आपणा घर सुहाइंदा। आपे वेखे वेखणहार, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। आप उपाया आपणा आदि आप बणाए बणत, घाड़न साचा

आप घड़ाईआ। निरगुण रूप श्री भगवन्त, नूर नुराना डगमगाईआ। आपणी महिमा जाणे बेअन्त, लेखा लिखण विच ना आईआ। करे खेल सर्ब गुणवन्त, गुणवन्त सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। सोभावन्त श्री भगवान, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप वखाइंदा। आपणा खेल करे महान, आपणी कल आप वरताइंदा। आपणी इच्छया कर प्रधान, आपे आप प्रगटाइंदा। आपणा हुक्म धुर फ़रमान, हरि जू आपे आप सुणाइंदा। शाहो भूप बण राजान, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराइंदा। सच सिँघासण बैठ सच्चा सुल्तान, सति सतिवादी सोभा पाइंदा। रूप रंग ना कोए निशान, रेख भेख ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा। साचा मन्दिर उच्च महल्ला, अगम्म अथाह प्रगटाईआ। पुरख अकाल वसे इकल्ला, आपणी कल धराईआ। आपे फड़े आपणा पल्ला, आपणा संग निभाईआ। आपणे अंदर आपे रल्ला, आप आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे अंदर वड़, आप आपणी रचन रचाईआ। सचखण्ड दुआरे हरि जू वड़या, तख्त निवासी सच सुल्तान। आपणे घोड़े आपे चढ़या, आपे होया निगहबान। आपणे दर आपे खड़या, निरगुण रूप श्री भगवान। जोती जोत सरूप

१२१५ हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड सुहाए सच मकान। सच मकाना सचखण्ड, हरि साचा सच सुहाईआ। आपे १२१५

जाणे आपणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। आप आपणा होए बख्शंद, बख्शिश आपणी झोली पाईआ। आपे दाता गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। आपे जाणे आपणी बिन्द, मात पित ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा वड्डा वड, सो पुरख निरँजण आप सालांहयदा। आपणे विच्चों आपे कढ्ढ, आपे वेख वखाइंदा। आपे जाणे साची हद्द, पार किनारा ना कोए जणाइंदा। सच निशाना बैठा गड्ड, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साची बणत बणाइंदा। सचखण्ड बणाई साची बणत, घाड़न घड़त आप घड़ाइंदा। लेख जणाया आदि अन्त, अन्त आदि आपणा आसण लाइंदा। रूप वटाए नारी कन्त, नर नरायण सोभा पाइंदा। आपे जाणे आपणा मंत, नाउँ निरँकारा आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा साचा घर, हरि साचा आप उपजाईआ। आपे पुरख नारी नर, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। आप आपा लए वर, आपे करे सच कुड़माईआ। आपे पल्लू लए फड़, आपणा बन्धन पाईआ। आपे सच सिँघासण जाए चढ़, साची सेजा आप सुहाईआ।

निरगुण अंदर निरगुण आपे जाए वड़, नूर नूर विच टिकाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़, आपे बणे जण जणेंदी माईआ। दाई दाया सेव कर, साची सेवा आप कमाईआ। करे खेल एका हरि, सचखण्ड वसे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी बणत आप बणाईआ। बणत बणाए आदि निरँजण, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आपणा पाए आपे अञ्जण, आप आपा वेख वखाईआ। आपणा करे आपे मजन, आपणे सरोवर आपे नुहाईआ। आपे होए घड़न भन्नण, घड़न भन्नणहार आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे बन्ने आपणा बन्नण, आपणा बेड़ा आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआर श्री भगवान, आपणा मन्दिर आप सुहाइंदा। आपे देवे धुर फ़रमान, आपे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। आपे शाह पातशाह बण राज राजान, दर दरबान आप अख्वाइंदा। आपे बणे हाकम हुक्मरान, सच संदेस आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा एका वार जणाइंदा। सच संदेस एका वार, निरगुण निरगुण आप जणाईआ। अजूनी रहत हो त्यार, अनुभव प्रकाश कराईआ। पुरख अकाल बण भतार, आपणा संग निभाईआ।
१२१६ जोती जोत नार मुटयार, नर नरायण आप प्रनाईआ। सच कोट कर त्यार, साचा बंक आप सुहाईआ। आपे दूल्हा बण १२१६
करे खेल अपार, कन्त कन्तूहल साचा माहीआ। सौहरे पेईए इक्क विहार, दर घर साचे आप कराईआ। आपे पुरख आपे नार, आपे आपणी सेज हंढाईआ। आपे अंदर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर धार चलाईआ। आपे करे सच प्यार, साचा मेला मेल मिलाईआ। आपे जाए सुत दुलार, हरि शब्दी नाउँ रखाईआ। शब्द सुत कर प्यार, चरन कँवल बख्शे सच सरनाईआ। एका नूर दए वखाल, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। साचा सुत जणया जननी जन, मात पित आप अख्वाइंदा। पंज तत्त ना दिसे तन, रक्त बूंद ना मेल मिलाइंदा। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, मंडल मण्डप ना कोए वखाइंदा। ना कोई पृथ्मी ना कोई जल, जंगल जूह उजाड़ ना डेरा लाइंदा। समुंद सागर ना कोए थल, डूँघी गार ना वेख वखाइंदा। करे खेल आप प्रबल, आपणी बिस्मिल आप मनाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ल, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द आप हो जाइंदा। आपे शब्दी सच निशाना, आप आपणा नाउँ धराईआ। आपे शब्दी कर परवाना, आप आपणे संग रखाईआ। आपे शब्दी भूप राजाना, भूपत भूप वेस वटाईआ। आपे शब्दी शब्द मरदाना, सच मरदानगी आप कमाईआ। आपे शब्दी जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप वखाईआ। आपे शब्दी बणे सुत बाल निधाना, निउँ निउँ आपणे अग्गे सीस

झुकाईआ। आपे मंगणहारा होए दाना, साची भिच्छया मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता आपणी धार शब्द चलाईआ। शब्दी धार हरि हरि रंग, निरगुण नज़र कोए ना आइंदा। निरगुण सेज निरगुण पलँघ, निरगुण साची सेजा सोभा पाइंदा। शब्दी नाद नाम मृदंग, सचखण्ड निवासी आप वजाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, आपणी कल आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द बन्धन पाइंदा। शब्दी बन्धन शब्दी मेल, आपे आप कराईआ। शब्द सज्जण शब्द सुहेल, शब्द वसे रंग नवेल, दिस किसे ना आईआ। अचरज पारब्रह्म प्रभ करया खेल, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारा आप उपाईआ। सुत दुलारा बाल, बाल एका आप उपाया। आदि जुगादी वसे नाल, एका गंढु रखाया। दर घर साचे वज्जे ताल, नादी नाद अल्हाया। पुरख अकाल करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुत इक्क समझाया। सुत दुलारा हरि समझाए, एका वार जणाईआ। तेरा मन्दिर दे उपाए, घर विच घर आप प्रगटाईआ। थिर घर साचा नाउँ रखाए, थिर दरबार दए वड्याईआ। उप्पर तेरा आसण लाए, सच सिँघासण सोभा पाईआ। पुरख अबिनाशी वेख वखाए, आदि जुगादि नैण उठाईआ। सर्ब गुण तासण तेरे अंक समाए, रंग
१२१७ आपणा आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द बणाए साचा घर, थिर घर आप उपाईआ। १२१७
थिर घर साचा कर उजाला, आप आपणी दया कमाइंदा। करे खेल पुरख अकाला, कल आपणी आप वरताइंदा। शब्दी शब्द बणाई सच्ची धर्मसाला, गृह बंक आप सुहाइंदा। आपणा मार्ग दस्स सुखाला, एका धन्दे लाइंदा। मेरा तेरा रूप निराला, पिता पूत खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे चढ़, थिर घर शब्दी शब्द बहाइंदा। थिर घर करया शब्दी वासा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। आपे वेखे खेल तमाशा, आदि जुगादि वसे पासा, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे सोभा पाईआ। थिर घर साचा नूर नुराना, नूर नूर डगमगाइंदा। एका राग इक्क तराना, एका नाद वजाइंदा। एका हुक्म श्री भगवाना, एका एक सुणाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे आप सुहाइंदा। थिर घर साचा शब्दी दाता, आपे आप सुहाईआ। आपे पिता आपे माता, आपे बाल सखाईआ। आपे रक्खे उत्तम ज़ाता, आपणी ज़ात प्रगटाईआ। आपे बन्ने आपणा नाता, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। आप सुणाए आपणी गाथा, निरगुण निरवैर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निश्अक्खर रिहा जणाईआ। निश्अक्खर हरि उपा, शब्दी

शब्द आप जणाइंदा। आपणा रूप अनूप प्रगटा, सति सरूप वखाइंदा। थिर घर साचे होए सहा, सदा सहायक सेव कमाइंदा। नाउँ निरँकारा लैणा गा, गीत गोबिन्द इक्क अलाइंदा। सति पुरख निरँजण देवे सति सलाह, सति सतिवादी पर्दा लांहयदा। तूं बणना इक्क मलाह, साचा बेड़ा तेरे कंध चुकाइंदा। सुत दुलारे अग्गों करीं कदे ना नांह, पुरख अबिनाशी एह समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे शब्द सुत आप समझाइंदा। सुत शब्द कर ध्यान, सुणया हरि संदेसा। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, शाह पातशाह नर नरेशा। हउँ मंगां एका दान, नित तेरा दर्शन पेखां। तूं साचा मेरा काहन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण रूप वखाए भेखा। पुरख अबिनाशी सच जणा, एका गुण जणाइंदा। निरगुण नूर कर रुशना, तेरे दर वखाइंदा। आपणी कल आप धरा, आपे वेख वखाइंदा। तेरे सिर हथ्थ टिका, साची वस्त झोली पाइंदा। तेरी रचना देवां रचा, एका हुक्म सुणाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां घाड़न लवां घड़ा, साची सेवा इक्क समझाइंदा। तेरी गोद दवां सुहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, शब्दी शब्द आप समझाइंदा। शब्दी हरि जी जाए तुठ्ठ, आपणी दया कमाईआ। आपणा अमृत देवे

१२१८ घुट, एका रस चखाईआ। पुरख अकाल एका ओट, एका वार समझाईआ। तेरा बंक सोहे कोट, थिर घर साचे वज्जे १२१८

वधाईआ। निरगुण देवे एका जोत, पारब्रह्म जगाईआ। एका वेखे ओत पोत, तेरा बंस सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। वस्त अमोलक हरि हरि नाउँ, एका एक झोली पाइंदा। करे कराए सच न्याउँ, सच अदालत आप कमाइंदा। थिर घर वसे तेरा थाउँ, थान थनंतर सोभा पाइंदा। इक्क जपाए साचा नाउँ सो पुरख निरजंण आप जपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे घर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा लेखा हथ्थ करतार, दूसर लिखण कोए ना पाईआ। सुत दुलारा कर त्यार, एका गुण समझाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कर उसार, लोआं पुरीआं बणत बणाईआ। विष्न उपजे तेरी धार, ब्रह्मा विष्न धार प्रगटाईआ। शंकर खेल करे करतार, आप आपणा रूप वखाईआ। तिन्नां विचोला सिरजणहार, एका राह वखाईआ। साचा ढोला एकँकार, एका करे पढ़ाईआ। बणे विचोला तेरे दुआर, साची सेवा आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, एका शब्द दए वड्याईआ। शब्द सुत वेख विचार, हरि साचा सच जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा पसार, तेरा रूप जणाइंदा। तेरा नूर करां उज्यार, किरन किरन वण्ड वंडाइंदा। किरन किरन देवां आधार, इक्क इक्क इक्क नाल बन्धन पाइंदा। त्रैगुण अतीता आपे जाणे आपणी कार, साची कार आप कराइंदा। रवि

ससि कर उज्यार, तेरी सेवा सच वखाइंदा। त्रैगुण माया भर भण्डार, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत तेरा खेल आप खिलाइंदा। शब्द सुत तेरा खेल खिलाउणा, बेअन्त वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा रंग रंगाउणा, रंग एका एक जणाईआ। लोआं पुरीआं तेरा डंक वजाउणा, गगन गगनंतर कर शनवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे दर बहाउणा, बैठण सीस झुकाईआ। तेरे हुक्म ओट रखाउणा, एका मंग मंगाईआ। त्रैगुण तेरी धार वटाउणा, रजो तमो सतो नाउँ रखाईआ। तिन्नां मेला मेल मिलाउणा, एका घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए वड्याईआ। साचे सुत सुण बलवान, हरि साचा सच जणाइंदा। पंच तत्त करां प्रधान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल खिलाइंदा। लक्ख चुरासी देवां दान, तेरी झोली आप भराइंदा। निरगुण सरगुण वखाए इक्क निशान, सच निशाना आप दुआइंदा। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणा रूप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। साचा भेव जाए चुक्क, सो पुरख निरँजण आप चुकाईआ। शब्द थिर घर ना बहिणा लुक, तेरा रूप दए प्रगटाईआ। दो जहानां पैणा बुक्क, एक भबक लगाईआ। लक्ख चुरासी भाग लगाउणा काया बुत्त, आपणा आसण लाईआ। त्रैगुण माया सुहाउणी रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महिकाईआ। मेल मिलाउणा

१२१६

अबिनाशी अचुत, आप आपणा बन्धन पाईआ। बंक दुआरा किला कोट, घर घर विच सोभा पाईआ। आदि जुगादि लगदी रहे चोट, तन नगारे आप वजाईआ। तेरा मेला निर्मल जोत, जोती जाता विछड़ कदे ना जाईआ। तेरा बंस ओत पोत, पिता पूत खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आप समझाईआ। साचा खेल हरि खिलाउणा, हरि करता आप जणाइंदा। घट घट अंदर डेरा लाउणा, तेरा नाद वजाइंदा। पंचम लेखा मोह चुकाउणा, पंचम पर्दा लांहयदा। पंचम रंग आप रंगाउणा, पंचम मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द साचे देवे वर, गृह बंक आप सुहाइंदा। आप सुहाए गृह बंक, घर घर वज्जे वधाईआ। तेरा खेल आदि अन्त, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। आपणी महिमा जणाए बेअन्त, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, शब्दी शब्द वड वड्याईआ। शब्द मन्नया हरि का कहिणा, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। दर तेरे तों आदि जुगादि लैणा लहिणा, आपणा हिस्सा आप वंडाया। घर तेरे दे अग्गे बहणा, एका मता पकाया। तेरा भाणा सदा सहिणा, भुल कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला दरस करां नैणां, नैण नैणां नाल मिलाया। पुरख अबिनाशी हो दयाल, आपणी दया कमाइंदा। नौ

खण्ड बणावां तेरी धर्मसाल, लक्ख चुरासी विच टिकाइंदा। एका नूर जल्वा जलाल, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपणा रूप धरया काल, तेरा दर सुहाइंदा। आप चलाई अवल्लड़ी चाल, भेव कोए ना पाइंदा। आपणी घाल आपे घाल, लक्ख चुरासी तेरा राह चलाइंदा। अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी करां प्रितपाल, आप आपणी सेव कमाइंदा। सरगुण निरगुण बण बण दलाल, लोकमात खेल खिलाइंदा। तेरा वजावां साचा ताल, रसना जिहवा आप सुणाइंदा। सदा सुणां मुरीदां हाल, मित्र प्यारा इक्क समझाइंदा। आदि जुगादि तेरा हल्ल करां सवाल, सिर तेरे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी देवे एका वर, एका घर वखाइंदा। साचा घर वखाए हरि, घर घर विच वज्जे वधाईआ। पंज तत्त सुहाए काया गढ़, तत्व तत वेख वखाईआ। नाता जोड़ बहत्तर नड़, रक्त बूंद दए वड्याईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मिल्या वर, वर दाता झोली पाईआ। जगत जज्ञासू घाड़ण घड़, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल आपे कर, आपणी वण्ड वंडाईआ। मन मति बुध निरगुण रूप आपणा कर, करता पुरख खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर दए वड्याईआ। घर मन्दिर डूँग्घी गार, अन्ध अन्धेरा छाईआ।
१२२० घर मन्दिर चोर यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रिहा वसाईआ। घर बैठी सुलक्खणी नार, मन मति डेरा लाईआ। घर १२२०
जूठ झूठ ममता मोह वधाया, करे खेल अपर अपार, आपे खोल्ह नौ किवाड़, जगत वासना मेल मिलाईआ। आपे नौ दर उतरे पार, आपणा मार्ग आप चलाईआ। आपे वेखे सुखमन टेढी गार, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। आपे ईड़ा पिंगल करे ख्वार, आप आपणा बल धराईआ। आपे अमृत बख्शे ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराईआ। आप कँवल कँवल उज्यार, आपणी कल आप वखाईआ। आपे नाद शब्द धुन्कार, अनहद साचा ताल वजाईआ। आपे पंचम मीत मुरार, मिल सख़ीआं मंगल गाईआ। आपे बजर कपाटी लाए पाड़, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आपे सेजा कर त्यार, आत्म ब्रह्म लए प्रगटाईआ। आपे सुरती दए अधार, शब्दी मेल मिलाईआ। आपे ईश जीव करे प्यार, जगदीस सच्चा शहिनशाहीआ। आपे सोए पैर पसार, पलँघ रंगीले सच्चा माहीआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, हरि साचा आप खिलाईआ। साचे सुत रहिणा ख़बरदार, आलस निन्दरा ना कोए रखाईआ। तेरा घर ना सके कोए उजाड़, तेरा खेड़ा दए वसाईआ। तेरा नाउँ रखाए तेज़ कटार, चण्ड प्रचण्ड तेरा रूप वटाईआ। तेरा नाउँ होए जैकार, लोकमात शनवाईआ। तेरा पंज तत्त बणे प्यार, पारब्रह्म ब्रह्म वखाईआ। तेरा रूप लए अवतार, काया चोला जगत हंढाईआ। सेवा करे सर्ब संसार, साची सेवा इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरा खेल खिलाईआ। सुण सुण हरि का भाउ, हरि शब्दी

सीस निवाइंदा। पारब्रह्म तेरे मिलण दा चाउ, मैं आदि जुगादि रखाइंदा। तूं ही पिता तूं ही माउँ, हउँ बालक नाउँ रखाइंदा। सदा सद मंगां तेरी ठंडी छाउँ, एका ओट तकाइंदा। धरत धवल वसावां नगर ग्राउँ, नौ खण्ड आपणा राह चलाइंदा। आदि जुगादि करां नयाउँ, गुर अवतार वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द खेल खिलाइंदा। शब्द सुत कहे पुकार, नेत्र नैण उठाईआ। तूं निरगुण दाता बेऐब परवरदिगार, तेरा जल्वा नूर इलाहीआ। आदि जुगादि सांझा यार, हर घट वसे नज़र किसे ना आईआ। जुग जुग खेल करे अपार, तेरी महिमा अकथ कथी ना जाईआ। गुर अवतार बण सेवादार, लोकमात सेव कमाईआ। ना कोई वेला वक्त सके विचार, थित वार ना कोए समझाईआ। कागद कलम ना पावे सार, ब्रह्मा चार मुख शरमाईआ। चार वेद करन पुकार, उच्ची कूक कूक दुहाईआ। तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तूं वसें धाम न्यार, सचखण्ड सोभा पाईआ। लोकमात कवण रूप करें उज्यार, निरगुण आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार दे समझाईआ। पुरख अबिनाशी सच जणाए, एका हुक्म सुणाया। जुग चौकड़ी वण्ड वंडाए, ब्रह्मण्ड खण्ड खेल खिलाया। सतिजुग त्रेता दुअपर कलिजुग सेवा लाए, एका हुक्म वरताया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी वेख वखाए, गेड़ा आप दुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा निरगुण रूप दए समझाया। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी उतरे पार, साचे सुत मिले वड्याईआ। मैं करां खेल अपार, निरगुण रूप वटाईआ। लक्ख चुरासी पावां सार, घट घट अंदर फोल फोलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखां अखाड़, सत्तां दीपां पर्दा लाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव दयाँ उठाल, सोया कोए रहिण ना पाईआ। अन्त बणां तेरा दलाल, सच वणजारा साचा वणज कराईआ। लेखा चुक्के शाह कंगाल, बाकी कोए नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणा वक्त रिहा समझाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग अन्तिम आउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। कलिजुग काला वेस वटाउणा, काली अल्फ़ी तन हंढाइंदा। कायनात फेरा पाउणा, रूप अनूप जणाइंदा। जूठ झूठ सज्जण साक आप बणाउणा, एका बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, वेला अन्तिम आप जणाइंदा। अन्तिम वेला खेल अगम्म, पुरख अगम्मड़ा आप कराईआ। आपणी इच्छया आपे पए जम्म, निरगुण जोत लोकमात करे रुशनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आपे जाणे आपणा कम्म, करता पुरख बेपरवाहीआ। जो घड़या सो देवे भन्न, घड़न भन्नण हार आपणी खेल खिलाईआ। लहिणा देणा चुक्के सूरज चन्न, किरन किरन विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे अन्तिम वर, अन्त अन्त होए सहाईआ। अन्त अन्त

सहाई होणा जग, जाग्रत जोत इक्क जगा। सृष्ट सबाई लग्गे अग्ग, एका अग्नी लम्बू दए वखा। करे खेल सूरा सर्बग्ग, आपणा भाणा आप वरता। लक्ख चुरासी बन्ने तग, एका सगन मना। राए धर्म दे लाए अग्गे बग्ग, एका धक्का ला। लोकमात विच्चों देवे कढ्ढ, जो बैठे नाम भुला। गुरमुख विरले देवे छड्ड, जो हरि हरि रहे ध्या। इक्क लडाए तेरा लड, तेरी गोद बहा। शब्दी तेरी बणाए साची यद्द, गुरमुख मात प्रगटा। कलिजुग पार किनारा हद्द, आपे दए करा। सतिजुग बाल अञ्याणा सद्द, धरत मात दी गोद दए टिक्का। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार रिहा समझा। कलिजुग वेला अन्तिम अन्त, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रहिण ना पाईआ। प्रगट होए श्री भगवन्त, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। करे खेल नारी कन्त, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। लक्ख चुरासी वेखे जीव जंत, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, मन मति करे सफ़ाईआ। इक्क जणाए साचा मंत, सो पुरख निरँजण कर रुशनाईआ। शब्द शब्द बणाए बणत, गुर शब्द होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण रिहा समझाईआ। सुत दुलारा कर पुकार, गल पल्लू एका पाइंदा। आदि जुगादी एकँकार, तेरी करनी भेव ना आइंदा। कवण वेस करें विच संसार, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। कवण घर होएँ उज्यार, कवण मन्दिर सोभा पाइंदा। कवण नाम बोल जैकार, कवण डंका मात सुणाइंदा। कवण वरन करें उज्यार, कवण सरन इक्क सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हउँ एका मंग मंगाइंदा। कवण राजा कवण भूप, कवण हुक्म सुणाईआ। कवण वसे चारे कूट, दहि दिशा कवण भवाईआ। कवण मेटे जूठ झूठ, कवण कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। कवण तागा कवण सूत, ताणा पेटा कवण पाईआ। कवण पिता कवण पूत, कवण घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मंगां साचा वर, वेला अन्त दे समझाईआ। कवण मन्दिर कवण गढ़, कवण घर आसण लाइंदा। कवण चोटी जाएँ चढ़, कवण बंक सोभा पाइंदा। कवण अक्खर लएँ पढ़, आपणा नाउँ दृढ़ाइंदा। कवण खण्डा लएँ फड़, दो जहान चमकाइंदा। कवण गुरमुख लएँ वर, जिस आपणा मेल मिलाइंदा। कवण अमृत नुहाएँ सर, दुरमति मैल धवाइंदा। कवण घाड़न लएँ घड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ झोली अग्गे डांहयदा। कवण राग कवण तराना, कवण नाद वजाईआ। कवण घर प्रगट होए श्री भगवाना, रूप अनूप धराईआ। कवण दर करें परवाना, चरन कँवल आप टिकाईआ। कवण खेल करें मर्द मरदाना, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर डगमगाईआ। कवण शाह पातशाह बणे राज राजाना, सीस आपणे ताज टिकाईआ। कवण मेटे कलिजुग कूड़ निशाना, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ । जोती

१२२२

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दे चुकाईआ। कवण जाणे वेद चार लेखा, पुराण अठारां कवण समझाईआ। कवण शास्त्र सिमरत कढ्ढे भुलेखा, भरम गढ़ तुड़ाईआ। कवण गीता ज्ञान जाणे रेखा, रेख रेख विच मिलाईआ। कवण अञ्जील कुरान दए संदेसा, तीस बतीस करे पढ़ाईआ। कवण खाणी बाणी होए प्रवेशा, निरगुण आपणा नूर धराईआ। कवण चार जुग दए अन्त संदेसा, पुरख अकाल इक्क वखाईआ। चार जुग कवण घर घर करें आपणा पेशा, सरगुण धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अन्त दे समझाईआ। कवण खेल करे करतार, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। कवण वेला विष्न ब्रह्मा शिव मारे मार, बचया कोए रहिण ना पाईआ। कवण वक्त सुरपति राजा इन्द तख्तों दएँ उतार, थिर रहिण ना पाईआ। कवण वेला लोकमात होएँ उज्यार, निरगुण रूप वटाईआ। कवण सुनेहड़ा दएँ संसार, एका वार सुणाईआ। शब्दी शब्द बणे भिखार, एका मंग मंगाईआ। तेरी कुदरत मेरे परवरदिगार, तेरी ख़लक ख़ालक तेरे विच समाईआ। तूं अमाम अमामा सिर वड सिक्दार, तेरी रहिमत रहीम रहिमान आदि जुगादि होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पल्लू देणा फड़ाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, अन्त अन्त जणाइंदा। नव नौ चार लेखा दए मुका, पूर्ब लहिणा आप मुकाइंदा। निरगुण जामा लए वटा, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर दए बणा, सम्बल नाउँ जणाइंदा। बजर कपाटी उप्पर डेरा ला, साचे पर्बत भाग वखाइंदा। शब्द अगम्मी नाद वजा, आपणा राग अल्लाइंदा। सच सिँघासण आसण ला, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। एका हुक्म दए वरता, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। शाह सुल्तानां ख़ाक मिला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, कलिजुग अन्तिम आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम होए दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। प्रगट होए हरि हाज़र हज़ूर, वड हज़रत सच्चा शहिनशाहीआ। कूड़ी क्रिया करे काफ़ूर, एका नूर करे रुशनाईआ। शब्दी आसा करे पूर, पूरी आस आप वखाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त श्री भगवन्त जो घर घर बैठे कर कसूर, लेखा लिख लिख रिहा जणाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणा बदले ना कदे असूल, आपणे भाणे सद समाईआ। गोबिन्द भाणा कर कबूल, आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। श्री भगवन्त अन्त चुकाए मूल, चौथा जुग चौथी धार पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला लए मिलाईआ। शब्द मेला अन्त कल, हरि साचे सच करावणा। एका मन्दिर बहणा रल, घर घर विच आप सुहावणा। एका दीपक जाए बल, अज्ञान अन्धेर मुकावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणा वेला आपणे हथ्थ रखावणा। आपणा वेला सो पुरख निरँजण, आदि जुगादि

आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग होए दर्द दुःख भय भंजन, दीनां अनाथां होए सहाईआ। जन भगतां नेत्र पाए नाम अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। साचे सन्तां बणे साचा सज्जण, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द एका जोत एका वरन एका गोत, एका किला एका कोट, एका घर सुहाईआ। एका घर हरि सुहाए, अदि पुरख अबिनाशा। सतिजुग साचा मात धराए, करे खेल तमाशा। चार वरन एका रंग रंगाए, देवे नाम दिलासा। एका अक्खर दए पढ़ाए, करे प्रकाश पृथ्मी आकाशा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल एका हरि, हरिजन पूरी करे आसा। हरिजन तेरी पूरी आस, गुर सतिगुर आप कराईआ। जन्म जन्म दी बुझे प्यास, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। निर्मल जोत करे प्रकाश, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। घर घर विच पावे रास, गोपी काहन नचाईआ। सदा सुहेला वसे पास, आपणी गोद बहाईआ। गुरसिख होए ना कदे निरास, जिस गोबिन्द मिल्या साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। हरिजन मेला हरि दुआर, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। काया माटी खोल्ह् किवाड़, साची हाटी वणज कराइंदा। अमृत नाम जाम प्याल, साचा साकी खेल कराइंदा। करे प्रकाश कोटन भान, रवि ससि ना कोए चढ़ाइंदा। आत्म ब्रह्म कराए पछाण, ईश जीव मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दया कमाइंदा। दया निध स्वामी ठाकर, एका ठोकर नाम लगाईआ। गुरमुख निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धुआईआ। जिस जन वणज कराए नाम सौदागर, साची वस्त झोली पाईआ। भाग लगाए काया गागर, निर्मल जोत नूर रुशनाईआ। एथे ओथे देवे आदर, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरमुख सच्चा जगत बहादर, गुर चरन सरन चरन जिस एका ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल करीम कादर कुदरत आपणे रंग वखाईआ। गुरसिख तेरा आत्म रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। तेरी सेजा वेख पलँघ, हरि जू आसण लाइंदा। अठ्ठे पहर नाद मृदंग, धुंन आत्मक आप वजाइंदा। निझर झिरना सरोवर गंग, कँवल कँवला आप उलटाइंदा। आप सुणाए आपणा सुहागी छन्द, छत्ती राग भेव ना पाइंदा। दिवस रैण परमानंद, निजानंद आप समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन मेले आपे फड़, आपणा बन्धन पाइंदा। कलिजुग अन्तिम बण कसाँई, छुरी आपणे हथ्थ उठाइंदा। हिन्दू मुस्लिम सिख मेटे ईसाई, दीन मज़्हब ना कोए रखाइंदा। गोबिन्द बूटा पुटया काही, मनमुखता जड़् उखड़ाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को साँईं, नानक नाम ध्यांअदा। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांहीं, जुग जुग पुरख अकाल वेस वटाइंदा। शाह सुल्तानां दए सज़ाई, गढ़् हँकार तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग

१२२४

आप जणाइंदा। जगत मरनी मरे जग, मरना हथ्थ किसे ना आया। भुक्ख नंग झूठा वरत, बिन हरि नामे मरन वरत कम्म किसे ना आया। मिले ढोई ना अर्श फर्श, गुरमति जो रहे भुलाया। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कर तरस, कलिजुग कसाई मगर सभ दे लाया। ग़रीब निमाणे फिरे नधड़क, पुरख अबिनाशी होए सहाया। दो सालां अठ्ठां महीन्यां अंदर सभ दा कढ्ढे फ़र्क, ऊँच नीच ना कोए वखाया। ज़ात पात करे ग़रक, धरनी धरत धवल हेठ दबाया। चार वरनां दस्से एका वरक, साचा वरकर हरि जू आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। ऊँचां नीचां नाता तोड़, जूठा झूठा बन्धन दए खपाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म नाल देवे जोड़, एका रंग वखाईआ। श्री भगवान ग़रीब निमाणयां दी सदा रक्खे लोड़, बिन ग़रीबां लोकमात वेस ना कदे वटाईआ। जगत हँकारीआं पाए मढ़ी गोर, लोकमात रहिण ना पाईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका मार्ग देवे तोर, साचा मार्ग आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड वड्डा नैशनलिस्ट निराकार निरगुण इक्क अख्वाईआ। ग़रीबां अन्तर उत्तम ज़ात, हरि जू आसण लाइंदा। करन फ़रयाद अठ्ठे पहर दिवस रैण प्रभात, नेत्र सर्ब उठाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निज आत्म बैठा सुणे गाथ, आपणी झोली आपे पाइंदा। कलिजुग होई अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। चार कुण्ट जीव जंत बण बण बैठे जमात, हरि का नाम जमां ना कोए कराइंदा। अन्तिम पैणा डूँग्घे खात, धर्म राए खाता इक्क वखाइंदा। ग़रीब निमाणयां मिले कमलापात, आपणी कफ़नी कम्बली काया चोली आप हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि सज्जण लए फड़, हरीजन आपणे मेल मिलाइंदा। संगत होए संतुष्ट चढ़े आत्म रंग, बिन हरि नामे शांत कदे ना आइंदा। गुरमुख मंगण एका मंग, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। दूई द्वैत भरमां ढाए कंध, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। जिस जन उपजे परमानंद, सो जन संतुष्ट मात अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दया कमाइंदा।

१२२५

★ २१ भाद्रों २०१८ बिक्रमी कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड गुड़े ज़िला लुधियाणा ★

सो पुरख निरँजण हरि मेहरवाना, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। हरि पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, साचे तख्त सोभा पाइंदा। एकँकारा रूप महाना, रूप अनूप आप धराइंदा। आदि निरँजण जोती जोत डगमगाना, जोत उजाला आप कराइंदा। अबिनाशी करता निरगुण खेल करे महाना, निरवैर आपणी धार चलाइंदा। श्री भगवान आप झुलाए सच निशाना, सति सतिवादी आप बणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधाना, आपणा बल आप धराइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेअन्त नौजवाना, एका

रंग समाइंदा। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, एका वार जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपणा रूप आप धराईआ। अजूनी रहत निराकार आपे जाणे आपणा खेल तमाशा, एका रास आप रचाईआ। आपणे नूर आपणी जोत आपणी धार आप प्रकाशा, अनुभव प्रकाश कराईआ। आप निभाए आपणा साथा, सगला संग आप हो जाईआ। आपे होए सर्ब कला समराथा, समरथ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आदि पुरख एका धार, आपणी आप प्रगटाइंदा। आपणा खेल कर करतार, आपणी करनी वेख वखाइंदा। आपणी इच्छया आप विचार, आपे हरि वरताइंदा। आपे दर दरवेश बण भिखार, आपणी झोली अग्गे डांहयदा। एका वस्त रक्खे संभाल, आप आपणे अंग लगाइंदा। करे खेल दीन दयाल, दयानिध जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी कल आप धराइंदा। सो पुरख निरँजण आदि, आदि आपणी धार चलाईआ। आप वजाए आपणी नाद, आपे रिहा सुणाईआ। आप आपणा आपे लाध, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। आपणे अंदर हो विस्माद, आप आपणा रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाईआ। वेस वटाए इक्क इकल्ला, आपणी खेल खिलाइंदा। आप फड़ाए आपणा पल्ला, आपणा संग निभाइंदा। वसणहारा निहचल धाम उच्च अटल्ला, धाम अवल्लड़ा आप रखाइंदा। सच सिँघासण एका मल्ला, शाहो भूप आसण लाइंदा। आपणी जोत आपे रल्ला, जोती जाता डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आप आपणा आप धराइंदा। आपणा आप आपे धर, आपे वेख वखाईआ । करे खेल साचा हरि, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ । आपणी इच्छया भण्डार भर, आपे लए प्रगटाईआ। आपे देवणहारा वर, आपे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर नूर नूर रुशनाईआ। निरगुण जोत जोत अकाला, अकल कला अख्वाइंदा। आपे प्रगट हो पुरख अकाला, आपणी धार चलाइंदा। आप उपाए आपणी धर्मसाला, सचखण्ड साचा आप बणाइंदा। दीपक जोत एका बाला, तेल बाती ना कोए रखाइंदा। आपे बणया शाह कंगाला, शाहो भूप आपणा नाउँ धराइंदा। सच सिँघासण इक्क सुहाना, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। आप जणाए धुर फ़रमाना, हुक्म हाकम आप अल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा रूप आप प्रगटाइंदा। आपणा रूप आपे रक्ख, आपे वेख वखाईआ। निरगुण निरगुण हो प्रतक्ख, निराकार खेल खिलाईआ। सर्ब कला आपे समरथ, अकल कल आप अख्वाईआ। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही सेव कमाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे

१२२६

वेख वखाईआ। आपणे अंदर आपे वस, घर साचा आप सुहाईआ। आप आपणा हो हो दास, सेवक सेवा सेव कमाईआ। आप आपणे वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। इक्क इकल्ला हरि निरँकारा, आपणी खेल खिलाइंदा। आदि पुरख हो उज्यारा, जोती जोत डगमगाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, सीस ताज इक्क टिकाइंदा। जगत जगदीस खेल न्यारा, नर नरेश आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे चढ़, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। खेल कराए नार कन्त, नर नरायण बेपरवाहीआ। आपे गाए आपणा नाउँ मंत, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड साचे दए वड्याईआ। सचखण्ड साचा सच सुहञ्जणा, सोभावन्त आप सुहाइंदा। दीपक जगाए इक्क निरँजणा, आदि निरँजण डगमगाइंदा। आदि आदि आप आपणा दर्द दुःख भय भंजना, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आपे करे आपणा मजना, आपणे सरोवर आपे नहाइंदा। आपे होए पर्दा कज्जणा, साचा पर्दा आपे पाइंदा। आपे घड़या

१२२७ आप भज्जणा, घड़न भन्नणहार खेल खिलाइंदा। आपे सचखण्ड दुआरे बह बह सजणा, दूसर नाल ना कोए रलाइंदा। जोती १२२७

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वसे साचे घर, दर दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड साचा दर दरवाज़ा, दर दरवेश आप सुहाईआ। आपे वसे ग़रीब निवाज़ा, इक्क इकल्ला आसण लाईआ। शाहो भूप राजन राजा, शहिनशाह आप अख्वाईआ । आपे जाणे आपणा काजा, करता पुरख रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर आप वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे साजन मीत, हरि साचा सोभा पाइंदा। आदि आदि रहे अतीत, अनन्त आपणी कल जणाइंदा। आपे जाणे आपणी रीत, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा राह आप वखाइंदा। आप चलाए आपणा राह, आपणी बणत बणाईआ। सचखण्ड निवासी बण मलाह, खेवट खेटा सेव कमाईआ। सिफ्ती सिफ्त दए सालाह, आपणा भेव चुकाईआ। एका घर लवां वसा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। निरगुण जोत दीप टिका, आदि जुगादि रुशनाईआ। सच सिँघासण इक्क सुहा, सोभावन्त डेरा लाईआ। हुक्मी हुक्म इक्क जणा, धुर फ़रमाना आप अलाईआ। नारी कन्त रूप वटा, श्री भगवन्त वेस वटाईआ। जोड़ी जोड़ सहिज सुभा, निरगुण निरगुण अंग लगाईआ। एका सेजा दए सुहा, आप आपणे रंग रंगाईआ। गुर गुर रूप आप अख्वा, आप आपणा सीस झुकाईआ। जननी जन बणे बेपरवाह, दाई दाया नाउँ रखा, आपणी सेव आप कमाईआ। सुत

१२२८

दुलारा लए जा, शब्दी नाउँ धराईआ। आपणी गोद लए सुहा, पारब्रह्म वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपणा रंग रंगाईआ। सचखण्ड दुआरा एका रंग, सो पुरख निरँजण आप रंगाइंदा। आपणी सेजा बैठ पलँघ, सच सिँघासण इक्क आप सुहाइंदा। आपे जाणे आपणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाइंदा। आप उपजाए आपणा सुत दुलारा साचा चन्द, शब्दी गोद बहाइंदा। आपे पाए आपणा बंध, एका डोर रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारा आपे जण, जन जननी वेस वटाइंदा। जननी जन हरि निरँकार, साचा सुत उपाईआ। दाई दाया अपर अपार, साची सेव कमाईआ। सुत दुलारे करे प्यार, शब्दी गोद सुहाईआ। सति सति भर भण्डार, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। साची गोलक कर त्यार, निरवैर पुरख टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे दिता वर, पुरख अकाल होए सहाईआ। होए सहाई पुरख अकाला, आपणी कल जणाइंदा। सुत दुलारे तेरी करां सदा प्रितपाला, नित नवित वेख वखाइंदा। तेरा धाम बणावां इक्क निराला, निरगुण आपणी इच्छया आप प्रगटाइंदा। थिर घर बणे सच्ची धर्मसाला, दर दरवाज़ा ना कोए रखाइंदा। करे खेल हरि गोपाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी शब्द बंक सुहाइंदा। शब्दी बंक बंक दुआरा, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण खोल्ह किवाड़ा, थिर घर साचा दए वखाईआ। एकँकार कर प्यारा, एका रंग रंगाईआ। आदि निरँजण कर उज्यारा, एका नूर डगमगाईआ। अबिनाशी करता दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। श्री भगवान आदि अन्त पावे सारा, सगला संग हो जाईआ। पारब्रह्म बणे वणजारा, तेरा साचा वणज कराईआ। वसणहारा सचखण्ड दुआरा, थिर घर वेखे चाँईं चाँईंआ। पिता पूत करे प्यारा, आप आपणी गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सुत दिता वर, दूसर नाल ना कोए रलाईआ। सुत दुलारा इक्क इकांत, एका घर उपाया। पुरख अबिनाशी कर कर शांत, आपणे रंग रंगाया। दरस दिखाए बौह बिध भांत, स्वच्छ सरूप वटाया। सचखण्ड दुआरे वेखे मार झात, थिर घर साचे सोभा पाया। आदि जुगादि पुछे वात, अभुल भुल कदे ना जाया। पिता पूत बध्धा नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। नाम जणाए साची गाथ, नाउँ निरँकारा आप सुणाया। निरगुण चलाए तेरा राथ, निरवैर सेव कमाया। आदि जुगादि सगल विसूरे जायण लाथ, नेत्र नैणां दरसन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी दिता एका वर, एका गुण समझाया। एका गुण हरि निरँकार, एका एक जणाईआ। करां खेल अगम्म अपार, भेव कोए ना आईआ। अलख अलखना बोल जैकार, एका अलख रिहा सुणाईआ। सचखण्ड होए जै जैकार, थिर घर साचे वज्जे वधाईआ।

करे खेल आप निरँकार, दूसर वेस ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत साचे लए जगाईआ। सुत उठया सुत जागया, हरि शब्दी शब्द बलवान। सुत होए वड वड भागया, घर मिले मेल भगवान। घर उपजे इक्क वैरागया, आदि जुगादि ध्यान। जिस तेरा साजण साजया, होए सदा मेहरवान। तेरा रचे आपे काजया, पारब्रह्म श्री भगवान। तेरा चलाए सच जहाज़या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे धुर फ़रमान। हरिजन आपणा भेव चुकाइंदा, शब्दी सुत सेव लगा। एका सेव वखाइंदा, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचा। लोआं पुरीआं तेरी गोद सुहाइंदा, आपणा नूर तेरे विच दयाँ धरा। नूर नूर नाल मिलाइंदा, प्रकाश प्रकाश दयाँ वखा। प्रकाश प्रकाश खेल खिलाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत आप जणाइंदा। सच जणाया हरि हरि, आपणी बूझ बुझाईआ। आपे देवे वर वर, वर दाता आप हो जाईआ। आपे पुरख नारी नर नर, नारी कन्त आप हंढाईआ। आपे सचखण्ड बैठा चढ़ चढ़, आपे थिर घर फेरा पाईआ। आपे सुत दुलारा फड़ फड़, शब्दी सेव समझाईआ। आपे घाड़न घड़ घड़, वेखणहारा आप हो जाईआ। आपे निरगुण अंदर निरगुण वड़ वड़, निरगुण निराकार रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी रचना आपे रिहा रचाईआ। आपणी रचना आपे रच, शब्दी सेव कमाइंदा।
१२२८ एका नाउँ धराए सच्च, सच सच दृढ़ाइंदा। आपणे अन्तर आपे रच, आपणा मेल मिलाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, साचा मार्ग आपे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी देवे साचा वर, साचा हुक्म आप जणाइंदा। १२२८
शब्द सुणाया शब्दी ढोला, हरि हरि आपे गाइंदा। निरगुण निरगुण बण विचोला, आपणा खेल खिलाइंदा। निरगुण निरगुण बण बण तोला, साचा तोल तुलाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण मौला, निरगुण वेख वखाइंदा। निरगुण पर्दा निरगुण ओहला, निरगुण प्रगट हो हो आइंदा। निरगुण निरगुण सद वसे कोला, एका घर सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी मेला आपणे घर, आपे आप कराइंदा। शब्द सुत उठ जवान, बाली बुध दे तजाईआ। एका हुक्म श्री भगवान, इक्क इकल्ला रिहा सुणाईआ। तेरा मन्दिर सच मकान, थिर घर वज्जदी रहे वधाईआ। तेरा नाउँ होए प्रधान, पुरख अकाल इक्क कराईआ। तेरा करां खेल महान, तेरा रूप अनूप धराईआ। आपे होवां बेपहचान, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, एका गुण रिहा जणाईआ। गुण जणाए गुणवन्त, गुणकारी आप सुणाइंदा। आपणा खेल खेले श्री भगवन्त, खेलणहार आप हो जाइंदा। आपे आदि आपे अन्त, आदि आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी तेरा साचा घर, थिर घर साचा आप वड्यांअदा।

थिर घर वसे सच दुआरा, सो पुरख निरँजण आप वसाईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, आपे नूर करे रुशनाईआ। आपे वेखे सच अखाड़ा, दर घर साचा वेख वखाईआ। आपे जाणे आपणा सति विहारा, निहकर्मी कर्म कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी देवे साचा वर, एका वस्त वरताईआ। शब्द सुत बाली बाला, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। तूं शाह पातशाह दीन दयाला, हउँ एका मंग मंगाइंदा। दर सोहे तेरा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, आदि जुगादि वेख वखाइंदा। एका देणा नूर उजाला, नित नवित मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा विछोड़ा मोहे ना भाइंदा। मंगे मंग बण भिखार, शब्दी शब्द प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं दाता इक्क दातार, देवणहार अख्वाईआ। आदि जुगादि मैं बणां सेवादार, तेरी साची सेव कमाईआ। तूं किरपा कर अपर अपार, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। एका वस्त सच भण्डार, एका गुण झोली पाईआ। निरगुण मंगां तेरा दरस दीदार, आप आपणा नैण उठाईआ। एका करना सच इकरार, कवण वेला लएँ मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा पर्दा रिहा उठाईआ। शब्द सुत सुण दुलारे, सो पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। करां खेल अगम्म अपारे, अगम्म अगम्मड़ी कार कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बणावां तेरे दुलारे, तेरी धार चलाइंदा। तेरी इच्छया त्रैगुण भण्डारे, त्रैगुण अतीता आप वरताइंदा। तेरी वड्याई वेद चारे, मुखी मुख सालांहयदा। तेरा नाउँ करां जैकारे, पंज तत्त काया बंक सुहाइंदा। तेरी बन्नां साची धारे, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। तेरा नूर करां उज्यारे, रवि ससि किरन किरन चमकाइंदा। तेरा वेखां सच अखाड़े, ब्रह्मण्ड खण्ड आप उपाइंदा। तेरा जाणे पार किनारे, जल जल आपणा रूप समाइंदा। धरत धवल दे सहारे, तेरा बन्धन पाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ बण ठठयारे, चारे खाणी वण्ड वंडाइंदा। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड कर पसारे, आपणा आसण लाइंदा। तेरा अक्खर बोल जैकारे, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी वारो वारे, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सति देवे वर, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। साचे शब्द कर ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां झुलावां इक्क निशान, दोए दोए आपणी धार वखाईआ। निरगुण सरगुण हो प्रधान, लक्ख चुरासी विच समाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त मकान, काया बंक दए वड्याईआ। नौ दुआरे खोल्ह दुकान, आसा आसा विच मिलाईआ। डूँघी कंदर वेखे मार ध्यान, नैण नैण नैण खुल्हाईआ। निरगुण जोत जोत महान, जोत निरँजण डगमगाईआ। अमृत सरोवर कर परवान, निझर झिरना इक्क झिराईआ। काया मन्दिर सच मकान, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

साचे सुत आप सुणाईआ। सुण सुत हरि साचा जणाए, भुल कदे ना जाइंदा। लक्ख चुरासी रचन रचाए, घट घट आसण लाइंदा। आपणा पर्दा आप चुकाए, दिस किसे ना आइंदा। तेरी इच्छया ल्ए प्रगटाए, तेरी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। हरि का भेव जाए खुल्ह, हरि साचा आप खुल्हाईआ। शब्दी कंडे जाणा तुल, एका कंडा रिहा वखाईआ। आदि जुगादि रहिणा अडोल, अडुल डुल कदे ना जाईआ। आपणे अंदर आपे जाणा मौल, निरगुण निरगुण खेल कराईआ। तेरे नाल करां कौल, कीता कौल भुल ना जाईआ। सरगुण बण बण आवां उप्पर धौल, धरन धरनी धरत दया कमाईआ। आपणा रक्खां पर्दा ओहल, पंज तत्त चोला आप हंढाईआ। तेरा नाउँ जैकारा बोल, एका गुण दयाँ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। साचा भेव हरि खुल्हाउणा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ । शब्दी तेरा संग निभाउणा, जुग जुग वेस वटाईआ। चार जुग गेड़ा इक्क रखाउणा, गेड़ा गेड़े विच भवाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाउणा, रंग रंगे साचा माहीआ। नाम मृदंग इक्क वजाउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड सुणाईआ। लोआं पुरीआं डंक वजाउणा, लोकमात वज्जे वधाईआ। भगत भगवन्त आप उठाउणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साचे सन्तां मेल मिलाउणा, आत्म परमात्म मेला सहिज सुभाईआ। गुरमुख पर्दा आप उठाउणा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। गुरसिख साची हाटी आप विकाउणा, गुर करता कीमत पाईआ। वेस अनेक आप धराउणा, धरनी धरत धवल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह हरि सुल्ताना, एका हुक्म जणाइंदा। जुग जुग बन्न्हां एका गाना, एका तन्द वखाइंदा। प्रगट हो हो विच जहाना, दो जहाना खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता देवां आपे दाना, साची दात आप वरताइंदा। द्वापर खेल करां महाना, आप आपणा बल जणाइंदा। कलिजुग देवां इक्क निशाना, कूड़ कुड़यार डंक वजाइंदा। ईसा मूसा कर प्रधाना, काला सूसा तन छुहाइंदा। कलमा अमाम इक्क तराना, एका राग सुणाइंदा। मुकामे हक खेल महाना, हक हकीकत वेख वखाइंदा। बेऐब परवरदिगार नौजवाना, नूरो नूर डगमगाइंदा। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला वसणहारा सच मकाना, दरगाह साची आप सुहाइंदा। तालब तुलबा वेखे दो जहानां, शरअ शरीअत आप जणाइंदा। कायनात वेखे मार ध्याना, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। मेहरवान मेहरवान मेहरवान श्री भगवाना, शब्दी शब्द ढोला गाइंदा। सच मुहम्मद दे पैग़ामा, इज़राईल मेकाईल जबराईल असराफ़ील सेवा लाइंदा। राणी अल्ला बाली बुध निदाना, नैण नैण खुल्हाइंदा। आपे बन्न्हे सगनी गाना, मौली तन्द बनाइंदा। करे खेल श्री भगवाना, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, शब्दी सुत आप समझाइंदा। लोकमात वसे खेड़ा, हरि जू आप वसाईआ। जुग जुग करे हक नबेड़ा, भुल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द रिहा जणाईआ । आप लगाए आपणा उखेड़ा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। आपे मेटे कलिजुग झेड़ा, आपणा हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी करनी आप कराइंदा। नाम नामा बोल जैकारा, अनादी दए समझाईआ। दुष्ट हँकारी मारे मारा, एका खण्डा नाम चमकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी करनी आप कराईआ। जुग जुग बेड़ा लोकमात, हरि सचा आप चलाइंदा । लक्ख चुरासी वेखे मार झात, घट घट आसण लाइंदा। कलिजुग सुणाए आपणी गाथ, आपणा नाद आप अल़ाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी आए घाट, हरि का घाटा पूरा ना कोए कराइंदा। अन्तिम गेड़ा आए लोकमात, नानक नाउँ धराइंदा। उत्तम रक्खे आपणी ज़ात, ज़ात ज़ात विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, शब्दी शब्द आप सुणाइंदा। शब्द बणाया आपणी धार, आपे वेख वखाईआ। करे खेल हरि करनेहार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। पंज तत्त करे प्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। एका हट्ट खोल्ह वणजार, आपणा वणज आप कराईआ। एका हुक्मी हुक्म वरते वरतार, हुक्म हाकम आप जणाईआ। एका नाम बोल जैकार, सति सति रिहा समझाईआ। एका तत्त ब्रह्म विचार, एका गुण समझाईआ। ब्रह्म मति राह सुखाल, साचा बीज गया बिजाईआ। शब्दी शब्द बण दलाल, गुरमुख साचे लए तराईआ। नेड़ ना आए काल महाकाल, दर दुआरे दए बहाईआ। दो जहानां वज्जे ताल, जिस जन आपणी दया कमाईआ। काया बंक वखाए सच्ची धर्मसाल, सच दुआरा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द दिता वर, एका वस्त रिहा वरताईआ। अन्तिम मेला हरि मिला, एका घर वसाईआ। गुर गुर चेला रूप वटा, लोकमात वेख वखाईआ। सज्जण सुहेला बण शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा रंग रंगाईआ। एका नाउँ दए प्रगटा, दो जहानां करे शनवाईआ। पिछला लहिणा दए चुका, बाकी कोए रहे ना राईआ। ब्रह्मा जोत लए मिला, विष्नूं लहिणा रिहा चुकाईआ। शंकर लेखा दए मुका, थिर कोए नज़र ना आईआ। सुरपति राजा तख्तों लाह, करोड़ तेतीसा नाउँ सुणाईआ। लक्ख चुरासी लए जगा, नेत्र नैण खुल्हाईआ। शाह सुल्तानां तख्तों लाह, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। ज़ात पात कर सफ़ा, वरन गोत ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अन्त आपणा रिहा दरसाईआ। अन्त दरसाए हरि जू हरि, आपणा भेव खुल्हाइंदा। जुग चौकड़ी जायण हर, गेड़ा गेड़ सर्ब मुकाइंदा। निरभउ वखाए सर्ब डर, भय आपणा आप जणाइंदा। अजूनी

१२३२

रहत पुरख अकाल खेल कर, आपणी कल वरताइंदा। धरनी धरत धवल आए चल, सच सिँघासण आसण लाइंदा। सम्बल नगर बहे मल्ल, गोबिन्द खेड़ा इक्क सुहाइंदा। लक्ख चुरासी वेखे फल, पत्त डाल्ही फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। अन्तिम अन्त हरि कार कमाए, कर्म कांड ना कोए जणाईआ। जुग जुग लहिणा दए मुकाए, जुग चौकड़ी पार मुकाईआ। अन्ध अन्धेरा दए मिटाए, साचा चन्द चढ़ाईआ। साचा मार्ग इक्क लगाए, सतिजुग साचे जन्म दवाईआ। धरत मात दी गोद बहाए, रुतड़ी रुत आप सुहाईआ। हउमे रोग दए मिटाए, सच संजोग आप कराईआ। चौदां लोक रहे कुरलाए, चौदां तबक दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आलमीन इक्क ख़ुदाईआ। चौदां तबक डेरा ढाह, एका चौका खेल खिलाइंदा। इक्क इकल्ला बेपरवाह, चौथा जुग पार कराइंदा। चारे खाणी दए खपा, चारे बाणी आपणे विच मिलाइंदा। इक्क इकल्ला शहिनशाह, एकँकारा हुक्म सुणाइंदा। चारे वेदां पन्ध मुका, चारे वरनां झोली पाइंदा। इक्क इकल्ला नाउँ धरा, आपणा नाउँ धराइंदा। एका चौका मेल मिला, आपणा पन्ध मुकाइंदा। चौदां चौदां सत्थर सत्थर दए विछा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाइंदा। चौदां चौदां खेल अपारा, हरि साचा आप कराईआ। चार चार दए हुलारा, एका धक्का लाईआ।
१२३३ चौदां चौदां पार किनारा, अद्धविचकार ना कोए रखाईआ। चार चार लग्गे अखाड़ा, इक्क इकल्ला आप लगाईआ। नव १२३३
नौ उठे धाड़ा, सत्त सत्त फेरा पाईआ। करे खेल जंगल जूह उजाड़ पहाडा, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलाईआ। पर्दा लाहे समुंद सागर डूँग्घी गारा, जल थल आपणा खेल खिलाईआ। प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतारा, वेद व्यासा गोद बहाईआ। पूत सपूता कर प्यारा, उच्चे टिल्ले पर्बत ब्रह्मण गौड़ा सोभा पाईआ। मुहम्मद मंगे इक्क सहारा, एका ओट तकाईआ। अन्तर तेरा सच दरबारा, वेखां चाँईं चाँईंआ। चौदां चौदां पार किनारा, नईया तेरे हथ्थ फड़ाईआ। साचा सईया बण विच संसारा, हरि हरि मेरे साचे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, अन्त मेला लए मिलाईआ। शब्दी तेरा मेल मिलावा, हरि साचा सच कराइंदा। अन्त मिलण दा रक्खणा दाअवा, एका हुक्म सुणाइंदा। तेरे दुआरे आवां जावां, जुग जुग वेस वटाइंदा। नाउँ निरँकार आपणा नाउँ रखावां, एका डंका शब्द वजाइंदा। निथाव्याँ देवां साची थाँवां, दरगाह धाम सुहाइंदा। ग़रीब निमाणयां पकड़ां बांहवां, आपणे गले लगाइंदा। राज राजानां ख़ाक मिलावां, धूढ़ी धूढ़ आप रलाइंदा। सम्बल नगरी डेरा लावां, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाइंदा। गोबिन्द आपणे घर बहावां, आपणी गोद सुहाइंदा। नाम खण्डा इक्क चमकावां, तिक्खी धार रखाइंदा। चण्ड प्रचण्ड मार मुकावां, ब्रह्मण्ड वेख वखाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आपे दस्स, आपे मेले हस्स हस्स, तेरे अंदर वस वस, । तेरे अंदर हरि जू वड़ना, निरगुण निरगुण रूप वटाईआ। तेरे पौड़े हरि जू चढ़ना, आउँदा जांदा दिस ना आईआ। तेरा अक्खर एका पढ़ना, लक्ख चुरासी करे पढ़ाईआ। मढ़ी गोर कदे ना वड़ना, अग्नी हवन ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी मेला सहिज सुभाईआ। सहिज सुभाओ होए सुभागा, हरि हरि मेल मिलावना। चौथे जुग धोवे दाग़ा, दुरमति मैल धुआवणा। शब्द सुणाए इक्क अनरागा, नाद साज ना कोए वजावणा। हँस बणाए फड़ फड़ कागा, सोहँ हँसा मोती चोग चुगावणा। अठ्ठ पहर वजाए अनहद वाजा, तार सितार ना कोए हिलावणा। दरस दिखाए ग़रीब निवाजा, आपणा रूप वटावणा। सीस पहनाए एका ताजा, एका हुक्म सुणावना। दो जहाना बण बण राजा, साची रईयत वेख वखावणा। कलिजुग अन्त भाग लगाउणा देस माझा, सम्बल नगर धाम आप सुहावणा। आपे रचे आपणा काजा, आपे साह सुधावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा खेल आप करावणा। कलिजुग अन्तिम आए कल, कलकाती वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण जाए छल, अछल अछल रूप वटाईआ। सच सिँघासण बहे मल्ल, एका आसण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निराकार साकार दए वड्याईआ। कलिजुग बेट डूँग्घा गारा, कल्लर कंध इक्क वखाईआ। चिकड़ भरया नर नारा, सच सुच्च ना कोए वखाईआ। पुरख अबिनाशी करे कारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणयां मारया नाअरा, तख्त पुरख अकाल हिलाईआ। धरनी रोवे ज़ारो ज़ारा, खुल्ह्ड़े केस रही वखाईआ। मां पुत्त ना करे कोई प्यारा, भैण भाई ना कोए वड्याईआ। चारों कुण्ट होया विभचारा, तेरा नाउँ नज़र ना आईआ। साध सन्त होया हैंसयारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहे हंढाईआ। कोई ना दिसे पार किनारा, साचे बेड़े ना कोए चढ़ाईआ। हल वाह वाह थक्के जट्ट गंवारा, अन्तिम हाला लैण वाली झूठी शाहीआ। ना कोई मीत ना मुरारा, साचा संग ना कोए निभाईआ। किरपा करे आप गिरधारा, गिरवर आपणा रूप वटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी पावे सारा, चारे कूटां फोल फुलाईआ। दहि दिशा ग़रीब निमाणयां दए सहारा, एका ओट पुरख अकाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होए सदा सहाईआ। कलिजुग बेट बालू रेत, आपणा बल रखाईआ। बिन हरि नामे उजड़या खेत, सच किरसाणा नज़र कोए ना आईआ। रुत्त बसन्त ना होए चेत, पत्त डाल्ही ना कोए महिकाईआ। हरि का जाणे ना कोई भेत, कवण रूप खेल रिहा कराईआ। सुणे पुकार नेतन नेत, दूर दुराडा नेड़े आईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर ग़रीब

१२३४

१२३५

निमाणयां नाल करे हेत, रावण गढ़ दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग बेट डूँग्घी गार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। दिवस रैण लुट्टण ठग्ग चोर यार, ना सके कोए बचाया। घर घर बैठे रोवण ज़ारो ज़ार, निर्धन हरि हरि ध्यान लगाया। कवण वेला मिले मीत मुरार, जुग जुग मिलदा आया। वेले अन्त पावे सार, डुब्बदा बेड़ा लए तराया। चप्पू लाए नाम अपार, साचा वञ्झ नज़र किसे ना आया। गुरमुख फड़ फड़ लए चाड़्ह, आप आपणी सेव कमाया। कलिजुग झूठी शाही मिटे धाड़, थिर कोए रहिण ना पाया। खेती खाए कंडयां वाड़, बेली कोए नज़र ना आया। सम्मत उन्नी लेखा मंगे सतारां हाढ़, आप आपणा हुक्म सुणाया। शाह सुल्तानां देवे झाड़, एका शब्दी डण्डा उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, साचा हुक्म आप वरताया। गुरसिख बेट काया मन्दिर, दिवस रैण गुलज़ार। पुरख अबिनाशी तोड़े जंदर, बजर कपाटी करे पार। मन पंछी ना भवे बन्दर, शब्द डोरी दवे डार। करे प्रकाश अन्धेरी कंदर, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बेट दए वखाल। बेट अंदर दभ्भ काही, काया अंदर हरि का नाउँ। बेट अंदर धुप्प छाईं, काया मन्दिर सदा छाउँ। बेट अंदर नाता भैण भाई, काया अंदर मिले बेपरवाहो। बेट अंदर प्यार चाची ताई, काया अंदर पुरख अबिनाशी बणे पिता माउँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, आप वसाए साचे थाउँ। बेट अंदर कणक दाल, काया अंदर राम रस। बेट अंदर जगत प्रीती निभे नाल, काया अंदर हरि जू होवे वस। बेट अंदर मिट्टी गारा धर्मसाल, काया अंदर निरगुण जोत होए प्रकाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन होवे आप कृपाल। देवे नाम सच्चा धन माल, आदि अन्त जुगा जुगन्त करे बन्द ख़लाश। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार, भूत प्रेतां करे शब्दी मार। नाम खण्डा तेज़ कटार, हाकण डाकण करे ख्वार। अंचणी कंचणी कला सोदरी रोवे ज़ारो ज़ार, कालखी कुलक्खणी सलमी पलमी करे गिरया ज़ार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात करे ख्वार। बीर अठारां देवे बन्न्ह। बवन्जा बवन्जा कहे धन्न धन्न। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर दोए फड़ण कन्न। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एका देवे डन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुरमुख कहिणा जाए मन्न।

★ २२ भाद्रों २०१८ बिक्रमी बख़तौर सिँघ दे गृह दया होई पिण्ड सिधवां ★

हरि का नाउँ सच भण्डार, सतिगुर पूरा सति सति वरताईआ। हरिजन साचे कर प्यार, आत्म झोली आप टिकाईआ।

निज घर साचे देवे वाड़, बन्द ताकी आप खुलाईआ। मेट मिटाए पंचम धाड़, माया ममता मोह चुकाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, अनहद नाद सुणाईआ। आत्म ब्रह्म कर प्यार, परम आत्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम हरिजन साची झोली पाईआ। साचा नाम साची दात, गुर सतिगुर आप वरताइंदा। गुरसिख मेट अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर गंवाइंदा। दरस दिखाए इक्क इकांत, रूप अनूप वटाइंदा। होए सहाई पिता मात, बाल अंञाणे गोद बहाइंदा। उत्तम रक्खे एका ज़ात, ब्रह्म पारब्रह्म दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप जणाइंदा। साचा नाम काया बंक, निरगुण सरगुण विच टिकाईआ। जिस जन मेटे संसा शंक, हउमें रोग दए चुकाईआ। आप दरसाए आपणा खेल बेअन्त, घर बैठा मंडल रास रचाईआ। सो गुरमुख सो सज्जण सन्त, जिस मिल्या साचा माहीआ। गृह मन्दिर साचा मेला नारी कन्त, सुरती शब्द शब्द कुड़माईआ। काया चोली चढ़े रंगत, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। हरिजन दूजे दर ना जाए मंगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप जणाईआ। साचा नाउँ हरि निरँकार, निरगुण सरगुण आप वरताइंदा। जुगा जुगन्तर लए अवतार, लोकमात खेल खिलाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों लए निकाल, गुरमुख आपणा मेल मिलाइंदा। नाता तोड़ शाह कंगाल, शाह पातशाह आपणे रंग रंगाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, नाम मन्त्र इक्क दृढ़ाइंदा। घर विच घर वजाए ताल, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप समझाइंदा। साचा नाम सो पुरख निरँजण धार, आदि जुगादि आप प्रगटाइंदा। हँ ब्रह्म पावे सार, पारब्रह्म वेख वखाइंदा। निहकर्मी कर्म लए विचार, कर्म कांड ना कोए जणाइंदा। धर्मी धर्म करे अपार, साचा धर्म इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन साचा नाउँ झोली पाइंदा। साचा नाउँ साचा वणज वापार, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। गुरमुख विरला मंगे बण भिखार, जिस जन आत्म बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसार, कलिजुग गूढ़ी नींद सवाईआ। नेत्र नैण ना सके कोई उग्घाड़, त्रैगुण माया पर्दा पाईआ। मगर लग्गी पंचम धाड़, चारों कुण्ट रही भुआईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना करे पार, वेले अन्त ना कोए सहाईआ। कलिजुग सागर डूँघी गार, झूठी नईया कम्म किसे ना आईआ। बिन हरि नामे कोई ना दिसे पार किनार, साचे घाट ना कोए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, आप चलाए आपणा मन्त्र, निष्अक्खर आप पढ़ाईआ। निष्अक्खर हरि का मन्त्र, लग मातर ना कोए रखाइंदा। आप उपाए जुगा जुगन्तर, जुग जुग मात धराइंदा। नव नौ बुझाए लग्गी बसन्तर, सांतक

सति कराइंदा। लेखा जाणे गगन गगनंतर, गगन मंडल फोल फुलाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट वेख वखाइंदा। गुरमुख विरले बणाए बणतर, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम दान, काया अंदर वखाए सच निशान, जोती जोत जगे महान, शब्द नाद सच्ची धुन्कान, राग अनादी नाद वजाइंदा। नाम धन्न सच ख़ज़ाना, पुरख अबिनाशी आप वरताईआ। आपे होए दाना बीना, बीना दाना भेव ना राईआ। जन भगतां करे ठांडा सीना, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। लहिणा देणा चुक्के लोक तीना, चौदां हट्ट ना कोए भुआईआ। गुरसिख मेला जिउँ जल मीना, आप आपणे अंग लगाईआ। एका रंग चढ़ाए भीन्ना, उतर कदे ना जाईआ। लेखा जाणे मरना जीणा, जीवन मुक्त आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन नाम वस्त अमोलक काया गोलक दए टिकाईआ। काया गोलक हरि का दुआर, हरि मन्दिर आप सुहाइंदा। अठ्ठे पहर रहे ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आइंदा। गुरमुख साचे कर प्यार, आप आपणा पर्दा लांहयदा। घर विच घर कर त्यार, साचा बंक सुहाइंदा।

१२३७ सुरती सुरत शब्द प्यार, शब्दी मेला मेल मिलाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म अधार, ईश जीव खेल खिलाइंदा। साची सेजा सोभावत सोहे कन्त भतार, नारी नर नरायण प्रनाइंदा। गुर गुर गुरसिख वसण इक्क दुआर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, वेद कतेब भेव ना आइंदा। गुरसिख तेरा धाम न्यार, सतिगुर पूरा आप बणाइंदा। महल्ल अटल उच्च मिनार, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। अठ्ठे पहर नूर उज्यार, जोत उजाला डगमगाइंदा। निरगुण खेल करे करतार, सरगुण आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, आपणा रूप आप उपाइंदा। रूप अनूपा शाहो भूप, निरगुण रूप आप जणाईआ। दरस दिखाए सति सरूप, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। नाता तोड़े जूठ झूठ, सच सुच्च इक्क दृढ़ाईआ। अमृत जाम प्याए एका घुट, निझर झिरना दए झिराईआ। आवण जावण लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, जिस जन आपणा हथ्थ टिकाईआ। देवे नाम भण्डार अतुट, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। आप टिकाए विच काया किला कोट, बन्द दरवाज़ा आप कराईआ। गुरमुख विरला करे खोज, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। प्रभ दर्शन को जो जन रहे लोच, देवे दरस वड्डा शहिनशाहीआ। चरन कँवल कँवल चरन रखाए एका ओट, धरत धवल दए वड्याईआ। ग़रीब निमाणे आलणिउँ डिगे वेखे बोट, आप आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम निधाना झोली पाईआ। नाम निधाना सदा अभुल्ल, अठारां भार ना वण्ड वंडाइंदा। देवे साहिब आप अनमुल्ल, अमुलड़ी दात आपणे हथ्थ रखाइंदा। भाग लगाए गुरसिख कुल, कुलवन्ता आप हो जाइंदा। हरिजन बूटा जाए १२३७

ना हुल्ल, अन्तिम फल इक्क लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, आपणा बन्धन पाइंदा। नाम बन्धन सोहँ डोर, हरिजन तन्द बंधाईआ। आपे बन्न्हे पंचम चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। करे प्रकाश काया गोर, डूंघी कंदर इक्क रुशनाईआ। जगत विकारा देवे होड़, सस्से उप्पर होड़ा इक्क लगाईआ। हँ ब्रह्म पए बौहड़, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। गुरसिख जन्म जन्म दी लग्गी औड़, दे दरस तृप्त कराईआ। दर घर साचे देवे ठौर, जगत ठगौरी कोए ना पाईआ। मिट्ठा फल करे रीठा कौड़, अमृत रस विच भराईआ। जिस जन सज्जण हरि जाए बौहड़, तिस गुण अवगुण ना कोए वखाईआ। काया मन्दिर अंदर लगाए आपणा पौड़, चौथे डण्डे आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम समझाईआ। जिस जन देवे नाम, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। पूरन करे जगत काम, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। भाग लगाए खेड़ा ग्राम, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। लेखे लग्गे हड्ड मास नाड़ी चाम, जो जन चरन कँवल मस्तक सीस झुकाइंदा। एका देवे सचा दाम, दामनगीर आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम धन, सच भण्डारा आप भराइंदा। सच भण्डारा हरि जू भर, हरिजन आपे वेख वखाईआ। गुरसिख आपणे जिहा कर, आपणे रंग रंगाईआ। आपे अंदर जाए वड़, दिस किसे ना आईआ। साचे पौड़े बहे चढ़, सच सिँघासण आसण लाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, सतिगुर पूरा खेल खिलाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, गुरमुख अन्तर करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे चोटी जड़्ह, मध्ध आपणी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। आपणा पर्दा देवे चुक्क, गुरसिख साची दया कमाइंदा । दरस दिखाए जो बैठा लुक, रूप अनूप धराइंदा। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, ममता मोह मिटाइंदा। इक्क जणाए साची ओट, एका इष्ट वखाइंदा। मेल मिलाए निर्मल जोत, जोती जोत मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप सालांहयदा। सच नाम सालाहण जोग, सो पुरख निरँजण आप सलाहीआ। हँ ब्रह्म होए संजोग, पारब्रह्म करे कुड़माईआ। नाता तुट्टे त्रै त्रै लोक, त्रै त्रै डेरा आपे ढाहीआ। इक्क नगारे वज्जे चोट, ताल तलवाड़ा ना कोए वखाईआ। जगत वासना कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। तृखा तृष्ना बुझाए सांत कराए काया पोट, नाम रस इक्क चुआईआ। गुरसिख ना कोई तेरा वरन ना कोई गोत, तेरा रूप ब्रह्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे तेरा घर, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। गृह मन्दिर सच दुआर, हरि सज्जण वेख वखाइंदा। गुरमुख सेजा कर त्यार, आप आपणा आसण लाइंदा। दिवस रैण इक्क उज्यार, कमलापाती डगमगाइंदा।

करे खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणी धार चलाइंदा। हरिजन हरि जू हरि मन्दिर कर प्यार, हरि के पौड़े आप चढ़ाइंदा। जिस जन देवे दरस दीदार, दीनन दया आप कमाइंदा। सोहे बंक सच्चा घर बार, जिस घर आपणा चरन टिकाइंदा। लोकमात खिड़ी रहे गुलज़ार, गुरसिख बूटा आप लगाइंदा। फले फुले विच संसार, पत्त डाल्ही आप महिकाइंदा। अठ्ठे पहर रहे नाम ख़ुमार, जगत ख़ुमारी आप गंवाइंदा। हरिजन आए ना पासा हार, हार जित सतिगुर आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरसिखां करे सच शृंगार, नाम बस्त्र तन पहनाइंदा। नेत्र कजला एका धार, नैण नैण विच मिलाइंदा। सुरती शब्द सोहे इक्क दुआर, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। साची सेजा मेला नार कन्त भतार, मिल सख़ीआं मंगल गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम भण्डार, तिस दाता आप अख्वाइंदा।

★ २२ भाद्रों २०१८ बिक्रमी माधा सिँघ, दयाल सिँघ दे गृह दया होई नवा रामू वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

सतिगुर दर गुरसिख डेरा, दर साचा आप सुहाइंदा। गुरसिख घर सतिगुर खेड़ा, साचा खेड़ा आप वसाइंदा। दोहां पैंडा नेरन नेरा, इक्क दूजा पन्ध मुकाइंदा। जुगा जुगन्तर चाउ घनेरा, आपे आस रखाइंदा। चौकड़ चौकड़ी देवे गेड़ा, पान्धी पन्ध मुकाइंदा। लहिणा देणा चुक्के मेरा, मेरा मेरा आपणे नाल मिलाइंदा। लेखा चुक्के सन्झ सवेरा, एका चन्द चढ़ाइंदा। लक्ख चुरासी कट्टे फेरा, फेरा फेरे विच दुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच दया कमाइंदा। सतिगुर गृह गुरसिख रहे, रंग रंगीला रंग आप चढ़ाईआ। गुरसिख मन्दिर सतिगुर बहे, वाह वाह वजदी रहे वधाईआ। इक्क सुहाए साचा थाँए, थान थनंतर दए वड्याईआ। इक्क जणाए साचा नांए, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। एका पकड़ उठाए बांहे, आपणी सेव कमाईआ। एका देवे ठंडी छाँए, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एका कट्टे जम्म की फाहे, फाँसी जम्म रहिण ना पाईआ। सतिगुर होए गुरसिख सहाए, भयानक आपणा रूप वटाईआ। गुरसिख आए गुरु प्रथाए, प्रिथम आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच सोभा पाईआ। सतिगुर घर गुरसिख वासा, दर दर आप सुहाइंदा। गुरसिख घर सतिगुर प्रकाशा, जोती जोत डगमगाइंदा। निरगुण सरगुण करे पूरी आसा, एका वस्त नाम वरताइंदा। सेवा करे बण बण दासा, दासी दास खेल खिलाइंदा। आदि जुगादि ना कदे विनासा, जुगा जुगन्तर वेस वटाइंदा। सतिगुर घर वेखे गुरसिख तमाशा, साचे मंडल रास रचाइंदा। गुरसिख घर सतिगुर वसे पासा, विछड़ कदे ना जाइंदा। गुरसिख गुर गुर करे बन्द ख़ुलासा, बन्दी तोड़ आप हो जाइंदा। गुरसिख गुर चरन करे निवासा,

दर साचा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप वसाइंदा। सतिगुर घर गुरसिख मन्दिर, साचे मन्दिर आप वड्याईआ। सतिगुर घर गुरसिख अंदर, सच सिँघासण आसण लाईआ। गुरसिख घर सतिगुर तोड़े जंदर, आपणा दर लए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख एका घर वसाईआ। सतिगुर घर गुरसिख मेला, मेल मिलावा आप कराईआ। गुरसिख घर वसे सज्जण सुहेला, सतिगुर सच्चा बेपरवाहीआ। राए धर्म दी कट्टे जेला, जम का दंड रहे ना राईआ। आपणे रंग रंगाए गुरु गुर चेला, गुर गुर चेला विच समाईआ। साहिब सुल्तान सज्जण सुहेला, शाह पातशाह होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख खेड़ा भाग लगाईआ। गुरमुख खेड़ा साचा कोट, हरि सज्जण वेख वखाइंदा। सतिगुर खेड़ा जगे निर्मल जोत, जोती जोत डगमगाइंदा। गुरसिख खेड़ा शब्द नगारे लगे चोट, अनादी नाद वजाइंदा। सतिगुर खेड़ा गुरमुख दुरमति मैल धोत, पतित पुनीत आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच खेल खिलाइंदा। सतिगुर खेड़ा गुरसिख हवन, हवनी हवन जणाइंदा। गुरसिख खेड़ा सतिगुर पवण, ठंडी ठार आप चलाइंदा। कट्टणहारा अवन गवन, आपणे रंग रंगाइंदा। मेल मिलाए जिउँ दुष्ट दमन, दामनगीर आप अख्वाइंदा। आपे होए साचा ज़ामन, साची ज़ामनी आप निभाइंदा। आप फड़ाया आपणा दामन, अन्तिम पल्लू आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुरसिख खेड़ा सच ग्रामन, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। सतिगुर दिसे आमृण सामृण, मुख पर्दा ना कोए रखाइंदा। ब्रह्म रूप ना कोए ब्रह्मण पारब्रह्म रूप जणाइंदा। सतिगुर गुरसिख इक्क दूजे नूं जानण, दूसर भेव कोए ना पाइंदा। एका प्रेम ब्रह्म ज्ञानन, साची विद्या इक्क पढ़ाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी शामन, साचा चन्द चढ़ाइंदा। जगत तृष्ना मिटे कामन, त्रैगुण अतीता सति सति कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे गुरसिख घर, सतिगुर मन्दिर आप वड्यांअदा। सतिगुर मन्दिर गुरसिख दरवाज़ा, एका एक खुल्हाईआ। गुरसिख अंदर वसे ग़रीब निवाज़ा, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। शब्द अगम्मी एका ताजा, साचा अश्व रिहा दुड़ाईआ। शाहो भूप बण राजन राजा, साची रईयत वेख वखाईआ। आपणा रच रच आपे काजा, आपे खुशी मनाईआ। आपे रक्खे साची लाजा, गुर सतिगुर होए सहाईआ। गुर गुर देवे साचा दाजा, साची वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी लाजा आप रखाईआ। सतिगुर गृह गुर रक्खे लाज, गुर आपणा खेल खिलाइंदा। गुरसिख गृह सतिगुर साजण साज, सतिगुर आपणा आसण लाइंदा। आप चलाए आपणा जहाज़, साचा बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। पाहरू पत्तण बण ग़रीब निवाज़, एका घाट डेरा लाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख विरले मारे वाज, जगत सोए आप

उठाइंदा। गुरसिख तेरा सीस मेरा ताज, सतिगुर ख़ुशी मनाइंदा। तेरा रंग मेरा राज, तेरा रूप मोहे भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचा घर आप समझाइंदा। सतिगुर घर सच निशान, गुरसिख गुर गुर जणाईआ। गुरसिख घर वसे श्री भगवान, आपणा डेरा लाईआ। लेखा जाणे दो जहान, अनुभव प्रकाश कराईआ। चार जुग होए हैरान, हरि का भेव कोए ना आईआ। प्रगट होए जोद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप धराईआ। गुरमुख वेखे चतुर सुघड़ सुजान, काया माटी फोल फुलाईआ। निष्अक्खर पाए दान, हँ ब्रह्म इक्क पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण इक्क कृपाल, काया गात्रे आप टिकाईआ। अमृत देवे पीण खाण, निझर झिरना रस झिराईआ। सतिगुर घर गुर गोबिन्द वेखे आण, आप आपणा रूप छुपाईआ। गुरसिख गुर करे परवान, आपणा बन्धन पाईआ। आप वसाए इक्क मकान, एका खेड़ा दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे दर सोभा पाईआ। गुरसिख दर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। गुरसिख दर मिले मेला नारी कन्त, नर नरायण मेल मिलाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। आपणी महिमा जणाए अगणत, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। सो सज्जण सो सच्चा सन्त, जिस आपणे दर बहाइंदा। दूजे दर ना जाए मंगत, साची भिच्छया झोली पाइंदा। नाता तोड़ जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाइंदा। लक्ख चुरासी करे खंडत, एका खण्डा नाम फिराइंदा। गुरसिख ज्ञान बोधी साचा पंडत, जिस जन सोहँ अक्खर जाप जपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच आसण लाइंदा। घर मेला जगदीस जगदीसर, साची दिशा वेख वखाईआ। गुरसिख वड्डा तपी तपीशर, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। गुरसिख वड्डा रिखी रिखीशर, रिख मुन रहे ध्याईआ। गुरसिख वड्डा सतिगुर मिल्या ईश्र, मिल सतिगुर ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा इक्क वड्याईआ। सतिगुर वड्डा घर वड्डी वड्याई, वड वड्डा खेल खिलाइंदा। गुरसिख वड्डा गुर पकड़े बाहीं, गुर गुर साचा संग निभाइंदा। दोहां मेला एका थाईं, साचा बंक आप उपाइंदा। इक्क दूजे नूं वेखण चाँईं चाँईं, नेत्र नैण नैण मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणी गोद धर, आपणे गले लगाइंदा। हरिजन गोदी आपे चुक्क, आपणे नाल मिलाईआ। आप जगाए निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। आपे कढ्ढे वासना खोट, दुरमति मैल धवाईआ। आप वखाए साचा कोट, काया मन्दिर गढ़ वड्याईआ। आप वखाए एका ओट, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणे संग बन्हाईआ। गुरसिख संग सतिगुर साथ, सगला संग निभाइंदा। गुरसिख मुसाफ़र सतिगुर राथ, फड़ बाहों आप चढ़ाइंदा। गुरसिख आरफ़ सतिगुर

गाथ, एका मन्त्र नाम पढ़ाइंदा। गुरसिख तेरी कोई ना करे सिफ़ारश, तेरे अग्गे विष्न ब्रह्म शिव सीस झुकाइंदा। तेरी तेरा सतिगुर बंधाए ढारस, तेरा डेरा कोए ना ढांहयदा। तेरे कोलों राए धर्म ना मंगे कोई आड़्त, लेखा चित्रगुप्त ना कोए जणाइंदा। तेरा लेखा लिखे सतिगुर आपणी इबारत, लिख लिख लेखा जगत समझाइंदा। तेरा रूप सच सुच्चा होए ठग्ग बनारस, ठग्गी ठग्गी लेखे पाइंदा। जन्म जन्म जन्म घड़या घाड़त, घड़ घड़ भन्न भन्न वेख वखाइंदा। तेरी तेरा गुरसिख सतिगुर आए करन वज़ारत, काया मज़ार इक्क सुहाइंदा। तेरे दुआर डौरू वजाए नारद, आपणा नाच इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मेला गुरसिख घर, सतिगुर सज्जण लड़ लए फड़, फड़या लड़ ना कोए छुडाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दुआरे आए चल, सो दुआरा लोकमात सोभा पाइंदा। ठग्ग बनारस बण भगवान, गंगा विच समाईआ। रविदास कसीरा कर परवान, आपणी ख़ुशी मनाईआ। आपणा कंगण दे गुण निधान, सुरती सुरत भवाईआ। पंडत पांधा होया बेईमान, ब्रह्म विद्या संग ना कोए रखाईआ। दंड दुआर दए राज राजान, जीव जीव रिहा कुरलाईआ। कवण वेला रविदास चमारा मिले आण, मेरी बन्दी दए कटाईआ। इक्क दूजे दा होए ज्ञान, कवण ठग्ग कवण ठग्गी रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ।

१२४२

★ २२ भाद्रों २०१८ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड नवां रामू वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

सो पुरख निरँजण सच सुल्तान, सति सतिवादी नाउँ धराइंदा। हरि पुरख निरँजण वड मेहरवान, दीन दयाल खेल खिलाइंदा। एकँकारा वड बलवान, बल धारी भेव ना आइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोत उजाला डगमगाइंदा। अबिनाशी करता खेल महान, निरवैर पुरख आप कराइंदा। श्री भगवान सच निशान, सच दुआरे आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ गुण निधान, भेव अभेव आप छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा संग आप निभाइंदा। साचा संग हरि निरँकार, आपणा आप निभाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपा लए प्रगटाईआ। आपे करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। आपे इच्छया आपे भिच्छया आपे बण वरतार, आपे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। आपणा खेल हरि करतारा, आदि पुरख अजूनी रहत हो उज्यारा, निरगुण निरवैर डगमगाइंदा। आप आपणा कर पसारा, हरि आपे वेख वखाइंदा। आपे दीप आप उज्यारा, जोती जाता आप हो जाइंदा। आपे करे साची कारा, करता पुरख साची कार कराइंदा। आपे सेवक सेवादारा, साची सेवा आपणे हथ्थ

रखाइंदा। आप बणाए सच मुनारा, सचखण्ड दुआरा आप बणाइंदा। आपे वसे वसणहारा, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप उपाइंदा। आपणा मन्दिर आप उपा, आपे वेख वखाईआ। आपणा दीपक आप जगा, आप करे रुशनाईआ। आपे बहे आसण ला, सच सिँघासण आप सुहाईआ। आपणा मता आप पका, आपे करे सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरा घाड़ण घड़या, पुरख अबिनाशी दया कमाइंदा। निरगुण अंदर निरगुण वड़या, दिस किसे ना आइंदा। आपणी करनी आपे करया, करता पुरख आप हो जाइंदा, शाहो भूप आपे बणया, राज राजान शाह पातशाह आपणा नाउँ धराइंदा। आपणा हुक्म आपे करया, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा आपे खोल्, आपे वेख वखाईआ। आपे वसे आपणे कोल, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण अंदर निरगुण मौल, आपणी धार चलाईआ। निरगुण अंदर निरगुण धार, निरवैर पुरख आप चलाइंदा। अजूनी रहत हो उज्यार, अनुभव प्रकाश कराइंदा। आप आपणा कर पसार, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा।
१२४३ आपे पुरख आपे नार, आपणी सेज आप हंढाइंदा। आपे जनणी जन बण निरँकार, आपणी गोद सुहाइंदा। आपे सुत दुलारा कर प्यार, शब्दी शब्द उपाइंदा। आपे गगन मंडल बन्ने साची धार, जल थल महीअल आप सुहाइंदा। आपे धरत धवल दए सहार, आपणी बणत आप बणाइंदा। आपे पंज तत्त जाणे आप अखाड़, पंचम रंग आप रंगाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, बेअन्त आपणा नाउँ धराइंदा। सचखण्ड साचे हो त्यार, थिर घर खोले आप किवाड़, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, रूप अनूप आपणा आप प्रगटाइंदा। निरगुण नूर आप प्रगटा, आपणी खेल खिलाइंदा। आपे होए बेपरवाह, भेव कोए ना पाइंदा। आपे बण सच मलाह, साचा बेड़ा आप चलाइंदा। आप उपा आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप धराइंदा। आप बण सच्चा शहिनशाह, सीस ताज आप टिकाइंदा। आपे हुक्मी हुक्म दए वखा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। आपे सुत दुलारा सेवा ला, शब्दी शब्द हुक्म सुणाइंदा। निरगुण सरगुण खेल खिला, लक्ख चुरासी घाड़ण आप घड़ाइंदा। शब्द अगम्मी आपे गा, भेव अभेद खुल्हाइंदा। चारे वेदां भेव चुका, आपणा रंग रंगाइंदा। साची धार एकँकार, निरगुण सरगुण आप चलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं कर त्यार, सूरज चन्न आप चमकाईआ। मंडल मण्डप हो उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, विष्न ब्रह्मा शिव झोली आप भराईआ। निरगुण सरगुण कर प्यार, निरगुण निरगुण आपणी वण्ड आप वण्डाईआ। नौ दुआरे खोल्

किवाड़, जगत तृष्ना आसा हउमे हंगता नाल मिलाईआ। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी दाता आपणे रंग राता, रंग रंगीला साचा माही भेव अभेद छुपाईआ। साची धारा पुरख अगम्म, आपणी आप चलाईआ। ना मरे ना पए जम्म, जम्मण मरन विच ना आईआ। आपे वंडे आपणी वण्ड, वण्डणहारा आप हो जाईआ। हर घट अंदर सुत्ता दे कर कंड, साची सेजा आसण लाईआ। आपे होए आत्म अनन्द, परमानंद आप हो जाईआ। आपे होए भरमां कंध, आपे करे खण्ड खण्ड, आपे आपणा बन्धन पाईआ। आपे लेखा जाणे रवि ससि सूरज चन्द, कोटन कोटि आपणा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा वेस आप वटाईआ। शब्दी शब्द खेल खिलाया, पारब्रह्म करतार। आदि पुरख किसे भेव ना आया, ना कोई पाए सार। आपणी वण्डण आप कराया, आपे होए वण्डणहार। विष्नूं वंसी इक्क बणाया, एका हुक्म धुर फ़रमान। ब्रह्मा ब्रह्म दए प्रगटाया, आत्म ब्रह्म सर्ब पहचान। शंकर त्रिसूल हथ्थ फड़ाया, मेटे सर्ब निशान। आदि अन्त आपणे हथ्थ रखाया, आपे वसे सचखण्ड सच्चे मकान। बंक दुआरी सोभा पाया, शाहो भूप राज राजान। आपणी इच्छया दए समझाया, लक्ख चुरासी खोल्ह दुकान। लोकमात नौ खण्ड पृथ्मी इक्क संदेसा दए सुणाया, हरि का नाउँ वड बलवान। जोती जोत

१२४४ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द शब्द प्रधान। शब्दी शब्द वड प्रधान, पुरख अबिनाशी इक्क बणाइंदा। दो जहान झुलाए इक्क निशान, सति सतिवादी आप उठाइंदा। लक्ख चुरासी देवे ब्रह्म ज्ञान, आत्म विद्या आप पढ़ाइंदा। घर विच घर खोल्ह दुकान, घर घर वस्त अमोलक आप वरताइंदा। घर राग घर तरान, घर गीत गोबिन्द अल्हाइंदा। घर मर्द घर मरदान, घर राज घर राजान, घर रईयत वेख वखाइंदा। १२४४

साची कार करता पुरख, आपणी आप कराईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता दुःख ना कोए रखाईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई भुक्ख, आलस निन्दरा ना कोए रखाईआ। ना कोई तन ना कोई मुख, रसना जिहवा ना कोए हिलाईआ। ना कोई माता ना कोई कुक्ख, ना कोई बाल गोद बहाईआ। ना कोई पिता ना कोई पुत्त, ना कोई धन्न जणेंदी माईआ। ना कोई किला ना कोई कोट, ना कोई मन्दिर रिहा सुहाईआ। आदि पुरख निर्मल जोत, जोती जोत डगमगाईआ। आपे जाणे आपणा ओत पोत, शब्दी शब्द सुत उठाईआ। आपे लाए साची चोट, धुर फ़रमाना इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। हरि हरि भेव खुलाइंदा, पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार। सुत शब्द आप समझाइंदा, आदि पुरख हो त्यार। रूप रंग ना कोए वखाइंदा, निरगुण जोत जोत उज्यार। साचे मन्दिर सोभा पाइंदा, साचा बंक कर त्यार। तेरा सगला संग

१२४५

निभाइंदा, वेस कर एकँकार। नूर नुराना डगमगाइंदा, जोती जाता हो उज्यार। श्री भगवान निशान झुलाइंदा, दो जहानां कर त्यार। पारब्रह्म तेरा संग निभाइंदा, रूप अनूप धरे अपार। तेरा सिँघासण आप सुहाइंदा, कर किरपा हरि निरँकार। पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा, आपे होए वेखणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, तेरी वण्डण वण्ड वंडाइंदा। तेरी रचना रच संसार, लक्ख चुरासी खेल खिलावणा। किरपा कर आप करतार, शब्द सुत समझावणा। निरगुण सरगुण हो उज्यार, तेरा रंग वखावणा। घर घर करां जैकार, अनहद नादी नाद वजावणा। ब्रह्म ब्रह्म कर पसार, पारब्रह्म वण्ड वण्डावणा। ईश ईश पावे सार, जीव जीव दए अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा खेल करे अपार। अपर अपारा खेल खिलाउणा, तेरी सेवा सच लगा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़त घड़ाउणा, चारे खाणी वण्ड वण्डा। उत्भुज सेत्ज जेरज अंडज बन्धन पाउणा, त्रैगुण आपणा रंग रंगा। तेरा नाउँ नाउँ प्रगटाउणा, चारे बाणी भेव खुल्हा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी तेरा नाउँ गाउणा, साची सेव सेव कमा। चार जुग तेरा खेल खिलाउणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नाउँ धरा। नौ खण्ड पृथ्मी भाग लगाउणा, सत्तां दीपां कर रुशना। आपणा गेड़ा आप दुआउणा, जुग जुग गेड़ा दए भुआ। जो घड़या सो भन्न वखाउणा, थिर कोई रहे ना। शब्दी शब्द तेरा मृदंग वजाउणा, आदि जुगादि दए सुणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दिता वर, एका वस्त झोली पा। साची वस्त साची दात, सो पुरख निरँजण झोली पाईआ। जुग जुग तेरा खेल तमाश, वेख वखाए बेपरवाहीआ। जुग जुग वेखे तेरी रास, लक्ख चुरासी नाच नचाईआ। जुग जुग तेरी पूरी करे आस, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। निरगुण तेरी बुझाए प्यास, अमृत मेघ बरसाईआ। जुग जुग करे बन्द ख़ुलास, आपणा बन्धन दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप जणाईआ। भेव अभेद सुण संदेशा, शब्दी सीस झुकाइंदा। तूं शाह पातशाह नर नरेशा, बेअन्त तेरा भेव ना आइंदा। कवण रूप धारें वेसा, लोकमात खेल खिलाइंदा। कवण दुआरा तेरा वेखां, जित दुआरे सोभा पाइंदा। कवण मन्दिर करें लेखा, जुग जुग पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि शब्दी मंग मंगाइंदा। शब्दी मंगे एका मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। कवण दुआरा आए लँघ, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। कवण नाद वजाए मृदंग, कवण नाम करे रुशनाईआ। कवण फड़े चण्ड प्रचण्ड, दूतां दुष्टां दए खपाईआ। कवण रूप खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बालक ढह प्या सरनाईआ। सुत अंञाणा बाली बुध, प्रभ अग्गे नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। थिर

घर बिन अवर ना दीसे कुझ, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। बिन किरपा मैनूं सके ना कुझ सुझ, मेहरवान मेरे शहिनशाहया। आपणा भेव खुल्हाउणा गुझ, एका मंग मंगाइंदा। तूं पिता हउँ तेरा पुत्त, पिता पूत एका रंग समाइंदा। तूं ठाकर हउँ तेरा सुत्त, तेरी ओट तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण घर सोभा पाइंदा। वार थित ना कोए वीचार, हरि साचा सच जणाईआ। करां खेल अपर अपार, आपणी कल आप वरताईआ। प्रगट होवां विच संसार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। एका नाम बोल जैकार, लक्ख चुरासी दयाँ सुणाईआ। दुष्ट हँकारी आपे मार, धरनी सत्थर दयाँ विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आपणा लेखा आप जणाईआ। साचा लेखा श्री भगवान, आपणा आप समझाईआ । नौ सौ चुरानवें चौकड़ी अन्त हो जाण, अन्तिम अन्त भेव खुल्हाईआ। इक्क इक्क जुग देवे दान, चार चार जुग वड्याईआ। चार जुग कर प्रधान, चार चार वण्ड वंडाईआ। चार वेद इक्क निशान, चार खाणी दए वरताईआ। चार बाणी कर प्रधान, जीव जंत दए समझाईआ। चार वरन पाए आन, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बन्धन पाईआ। चार यारी देवे दान, नूर इलाही बेपरवाहीआ। आपे जाणे सच कलाम, कलमा आप
१२४६ सुणाईआ। आपे देवे सच पैग़ाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ चार लेखा दए मुकाईआ। नव १२४६
नौ चार लेख मुकाउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। जुग चौकड़ी रहिण ना पाउणा, अन्तिम डेरा ढांहयदा। जुग चौकड़ी गुर अवतार सेव लगाउणा, साचा हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, कलिजुग अन्तिम आपणा भेव जणाइंदा। कलिजुग आए अन्तिम वार, नव नौ चार रहिण ना पाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अलखणा वड वड्याईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार, हरि पुरख निरँजण लए मिलाईआ। एकँकारा कर वीचार, आदि निरँजण दए सलाहीआ। श्री भगवान खोल्ह किवाड़, अबिनाशी करता लए उठाईआ। पारब्रह्म हो त्यार, सचखण्ड दुआरा आपणा वेख वखाईआ। थिर घर आपे पावे सार, सुत दुलारे वेख वखाईआ। आपणा पल्लू फड़ाए एका वार, छुट्ट कदे ना जाईआ। निरगुण निरगुण हो उज्यार, आपणी सेवा आपे लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, लोआं पुरीआं हुक्म सुणाईआ। इक्क लगाए सच दरबार, सच सिँघासण आसण लाईआ। दर सद्दे तेई अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जो गए सेव कमाईआ। भगत भगवन्त कर प्यार, एका वार दर बुलाईआ। पुरख अबिनाशी सच सुनेहड़ा देवे साची वार, गुर गुर दस आपणा संग वखाईआ। ईसा मूसा आलस निन्दरा दए उतार, काली कफ़नी तन वखाईआ। एका अल्फ़ी कर शृंगार, एका हुक्म वरताईआ। चौदां तबक कर हुशियार, इक्क मुहम्मद लए मनाईआ। पिच्छे रोवण चार यार, नेत्र नैणां

नीर वहाईआ। अल्ला राणी करे पुकार, खुल्ड़े केस रही वखाईआ। कवण वेला मिले परवरदिगार, मुकामे हक वसे सच्चा माहीआ। हथ्थीं मैहन्दी लाई लाल, साचा सगन रही मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा अन्त आप समझाईआ। शब्द सुत सुण कन्न ला, हरि साचा सच जणाइंदा। कलिजुग अन्तिम जावे आ, आपणा पन्ध मुकाइंदा। गुर पीर अवतार साध सन्त आपणे दर बहा, चार जुग दा लेखा पुच्छ पुछाइंदा। इक्क दूजे दा कोई ना बणे ग्वाह, कोई कहे राम नाम गया पढ़ा, कोई कहे कान्हा कृष्ना डंक वजाइंदा। कोई कहे कलमा अमाम वण्ड वण्डा, कोई ऐनलहक नाअरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अदालत दर घर साचे आप लगाइंदा। शब्द सुत तेरा मेल मिलाउणा, कलिजुग अन्तिम वार। चार जुग दा लहिणा तेरी झोली पाउणा, कुदरत कादर खेल न्यार। जूठा झूठा डेरा ढाउणा, हउमे हंगता तोड़ गढ़ हँकार। माया ममता मोह चुकाउणा, जगत तृष्ना कर ख्वार। भुक्खा नंगता गल लगाउणा, जिउँ नानक अंगद करे अंगीकार। साचे मार्ग आपे लाउणा, समरथ पुरख दीन दयाल। शब्द अकथ इक्क सुणाउणा, निरगुण सरगुण बण दलाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्त तेरी करे प्रितपाल, तेरी प्रितपाल करे अन्त काल, कलकाती मेट मिटाईआ। इक्क बणाए सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दुआरा
१२४७ सोभा पाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, पंचम नाता दए तुड़ाईआ। एका देवे नाम धन माल, साची वस्त आप वरताईआ। १२४७
एका रंग रंगाए शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, हाल मुरीदां आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणा मेला लए मिलाईआ। निहकलंक कल अन्तिम वार, रूप अनूप वटाइंदा। आप प्रगटया आपणी धार, धार विच्चों प्रगटाइंदा। आपे शब्द शब्द जैकार, शब्दी शब्द नाद वजाइंदा। आपे लक्ख चुरासी मारे मार, मारनहारा आप हो जाइंदा। आपे भगत भगवन्त लए उठाल, आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाइंदा। आपे सन्तन देवे सच्चा धन माल, नाम ख़ज़ाना आप लुटाइंदा। आपे गुरमुखां चले नाल नाल, काया मन्दिर अंदर आपणा पन्ध मुकाइंदा। आपे गुरसिखां दस्से राह सुखाल, सोहँ मन्त्र इक्क पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। रूप रंग ना कोए रेखा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। पुरख अबिनाशी धर धर वेसा, वेखे सर्ब लोकाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोई केसा, ना कोई मूंड मुंडाईआ। लहिणा देणा चुकाए दस दस्मेशा, कीता कौल भुल ना जाईआ। माण गंवाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, अन्तिम जोती जोत मिलाईआ। आपणा लिखे फेर लेखा, लिखणहार आप हो आईआ। भाग लगाए माझे देसा, सम्बल नगर डेरा लाईआ।

जुग जुग करे आपणा पेशा, सेवक बणे साचा माहीआ। जीव जंत साध सन्त श्री भगवन्त देवे इक्क संदेशा, एका हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणा डंका आप वजाईआ। निहकलंका वज्जे डंका, सो पुरख निरँजण आप वजाया। आप उठाए राउ रंका, शाह सुल्ताना आप हिलाया। आपे जाणे कलिजुग अन्ता, श्री भगवन्ता वेख वखाया। लक्ख चुरासी तुट्टे नाता नारी कन्ता, जगत रंडेपा रिहा कराया। राए धर्म फड़े वड महंता, जो बैठे आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम धार, करे खेल आप निरँकार, वीह सौ अठारां बिक्रमी हो उज्यार, एका एक जणाया। एका एक इक्क इकल्ला, अकल कला अख्वाईआ। कलिजुग मल्लया सच महल्ला, सम्बल डेरा लाईआ। गुरमुख विरले फड़ाया आपणा पल्ला, पूर्ब जन्मां लहिणा रिहा चुकाईआ। लक्ख चुरासी भुलाए कर कर वल छला, त्रैगुण माया पर्दा पाईआ। अन्तिम बोले एका हल्ला, आपणा हुक्म वरताईआ। आपे फुलया आपे फला, आपे जड़ दए उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल सच्चा माहीआ। साचे माही खेल खिलाउणा, लेखक लिख्त कर त्यार। साचा हुक्म इक्क सुणाउणा, किरपा कर परवरदिगार। इज़राईल जबराईल मेकाईल असराफ़ाईल नाल रलाउणा, भुल ना जाए परवरदिगार। जोती जोत सरूप हरि,
१२४८ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुगा जुगन्तर लै अवतार। जुग अन्तर हरि अवतारा, एकँकारा रूप वटाइंदा। १२४८
निरगुण निरवैर पुरख अकाल हो उज्यारा, अजूनी रहत खेल खिलाइंदा। साकत निन्दक दुष्ट वेखे दुराचारा, लक्ख चुरासी फोल फुलाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत पावे सारा, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाइंदा। वेखणहारा जगत विभचारा, डूँघी कंदर वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरले दए सहारा, जिस सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जिस सिर रक्खे हरि जू हथ्थ, जन्म मरन विच ना आईआ। शब्द जणाए इक्क अकथ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। आत्म जाम प्याए रस, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। पंच विकारा पाए नथ्थ, शब्दी डोर बंधाईआ। नाम निधान वजाए नद, अनहद राग सुणाईआ। नौ दुआरे पार हद्द, सुखमन टेढी बंक होए सहाईआ। जगत विकारा देवे कढ्ढ, ममता माण मोह चुकाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म पूरी करे आस, सुरती शब्द मेल मिलाईआ। करे खेल सर्ब गुणतास, गुणवन्ता भेव ना राईआ। गुरसिख होए कदे ना निरास, जिस मिल्या सतिगुर सच्चा माहीआ। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन मंडल गुरसिख चरनां हेठ दबाईआ। विष्न ब्रह्म शिव गुरसिख तेरे मिलण दी रक्ख के बैठे आस, अद्धविचकार राह तकाईआ। तेरा सतिगुर वसे तेरे पास, आप आपणी उँगली लाईआ।

अन्तिम करे सचखंड निवास, जोती जोत जोत मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण होए सहाईआ । गुरमुख सज्जण साचा सन्त, सतिगुर साचा आप उपाइंदा। काया चोली रंग बसन्त, एका वार चढ़ाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, निवण सु अक्खर इक्क पढ़ाइंदा। ख़िमा ग़रीबी बणाए बणत, साची चाकरी इक्क समझाइंदा। नारी मेले साचे कन्त, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस सुणाए आपणा छंत, दूजा राग ना कोए अलाइंदा। भगत मेला श्री भगवन्त, भगवन दया कमाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणी खेल वखाईआ। आपणी महिमा सुणाए अगणत, वेद कतेब भेद ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए मिलाईआ। गुरमुख सज्जण मेल मिलाउणा, कलिजुग अन्तिम वार। भगत भगवन्त दर बहाउणा, एका खोल्ह किवाड़। सन्त साजन गोद सुहाउणा, करे सच प्यार। गुरसिख आपणे रंग रंगाउणा, रंग चढ़ाए हरि निरँकार। मनमुख जीव मेट मिटाउणा, लक्ख चुरासी मारे मार । राए धर्म दे हथ्थ फड़ाउणा, किरपा करे आप करतार। अठाई कुण्डा लेख लिखाउणा, अठारां दस नाल उज्यार। जगत कंडे तोल तुलाउणा, साचे कंडे कोए ना दिसे भार। जोती जोत सरूप हरि,
१२४६ आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, तेरा बेड़ा करे पार। कलिजुग तेरा बेड़ा उतरे १२४६
तेरे घाट, सतिगुर पूरा आप चलाईआ। जीव जंत नेड़े वाट, बैठे पन्ध मुकाईआ। डूँग्घा सागर राह तक्के खात, कवण वेला हरि भराईआ। अठारां कुण्ड मार रहे झात, कवण वेला साडी इच्छया पूर कराईआ। दस कुण्ड कलिजुग मिली दात, जनक बैठा सीस झुकाईआ । बिन हरि कोए ना पुछे वात, डूँग्घी भँवरी रिहा भुआईआ। जिस जन मिल्या पुरख समराथ, तिस मिले मात वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सोहँ अक्खर साची दात, सतिजुग बख्शे इक्क सुगात, चार वरन एका नाउँ रिहा समझाईआ।

★ २३ भाद्रों २०१८ बिक्रमी उजागर सिँघ दे गृह नवां रामू वाला ज़िला फिरोज़पुर ★

गुरमुख आसा रही पुकार, एका ओट रखाईआ। कवण रूप धरें निरँकार, धरनी धरत धवल मिले वड्याईआ। कवण मन्दिर होए उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। कवण शब्द वज्जे धुन्कार, साचा नाद कवण सुणाईआ। कवण खोले बन्द किवाड़, बन्द ताकी पर्दा लाहीआ। कवण मेटे अग्नी तत्ती हाढ़, सांतक सति वरताईआ। कवण करे प्रकाश बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। कवण करे शब्दी वाड़, मानस जन्म होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका गुण दे समझाईआ। कवण वेला आएँ घर, हउँ नढ्ढी राह तकाईआ। कवण वेला मिले वर, मैं बाली लए प्रनाईआ। कवण वेला चुक्के डर, निरभउ होए सहाईआ। कवण वेला लएँ फड़, आपणी गोद बहाईआ। कवण वेला मन्दिर बहें चढ़, मेरे घर वज्जे वधाईआ। कवण वेला आपणा अक्खर लएँ पढ़, साचा नाउँ प्रगटाईआ। कवण वेला नुहाए साचे सर, दुरमति मैल धुआईआ। कवण वेला लेखे लाए सीस धड़, आपणा लेखा लए मुकाईआ। कवण वेला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला लए मिलाईआ। कवण वेला आएँ जग, हउँ तेरा राह तकाईआ। कवण रूप धरें सर्बग्ग, सूरबीर वडी वड्याईआ। हँस बणाएँ फड़ फड़ कग्ग, कागों हँस उडाईआ। मेरे मन्दिर बहें सज, सच सिँघासण सोभा पाईआ। मैं दर्शन करां रज्ज रज्ज, जन्म जन्म दी तृखा बुझाईआ। मेरा पर्दा लैणा कज्ज, कमली कोझी नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ना कोए आचार ना कोए चज्ज, जगत कुलक्खणी आपा आप रही भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तेरी ओट रखाईआ। कवण वेला वजाएँ डंक, सोई सुरती लए उठाईआ। कवण वेला सुहाएँ बंक, मैं निमाणी एका आस तकाईआ। कवण वेला लाएँ तनक, जोती जोत जोत मिलाईआ। कवण वेला गुरमुख बणाएँ जनक, जनक सपुत्तरी सीता सुरती लएँ प्रनाईआ। कवण वेला खेलें खेल वार अनक, अनक कल आपणा रूप धराईआ। कवण वेला आपणा नाम चुक्कें धनक्ख, मैं वेखां चाँईं चाँईंआ । कवण वेला आपणी पूरी करें अणख, अणखीले सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी इक्क प्यास बुझाईआ। कवण वेला होएँ प्रधान, सच प्रधानगी आपणे हथ्थ रखाइंदा। कवण वेला उठाएँ निशान, दो जहानां इक्क वखाइंदा। कवण वेला होएँ राज राजान, शाह पातशाह हुक्म चलाइंदा। कवण वेला वेखें मार ध्यान, ध्यान ध्यान विच मिलाइंदा। कवण वेला देवें इक्क ज्ञान, आपणी ग्याता आप कराइंदा। कवण वेला कर पछाण, जुग विछड़ी मेल मिलाइंदा। कवण वेला देवें माण, दर आपणे आप बहाइंदा। कवण वेला बणाएँ चतुर सुघड़ सुजान, मन मति दर दुरकाइंदा। कवण वेला बल देवें सूरबीर बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। कवण वेला फड़ें तीर कमान, साचा चिल्ला हथ्थ उठाइंदा। कवण वेला निरगुण रूप धरें भगवान, सरगुण तेरा दर्शन पाइंदा। कवण वेला मेरे साढे तिन्न हथ्थ वसें मकान, जिस दा दरवाज़ा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, एका राह तकाइंदा। गुरसिख सुआणी नढ्ढी बाली, बाली बुध रही कुरलाईआ। तूं शहिनशाह दो जहानां वाली, मैं ख़ाली झोली तेरे अग्गे डाहीआ। तूं करदा सच दलाली, दिलबर बण बण सच्चा माहीआ। तेरी जोत इक्क अकाली, अकल कला अख्वाईआ। मैं घाल तेरी घाली, तेरे चरनां सेव कमाईआ। तुध बिन चढ़े ना सच्ची लाली,

१२५१

लाल गुलाला रंग ना कोए वखाईआ। कलिजुग अन्त होई बेहाली, मेरी सार कोए ना पाईआ। फल दिसे ना मेरी डाल्ही, सिम्मल बूटा रिहा लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार आउणा घर, हउँ बैठी राह तकाईआ। राह तक्कां मीत मुरार, कवण वेला घर आए। मेरा दुक्खड़ा दए निवार, सिर आपणा हत्थ टिकाए। मेरा डुबदा बेड़ा लाए पार, एका चप्पू नाम लगाए। मैं दुहागण करे प्यार, सच सुहागण लए बणाए। बण वैरागण रोवां ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार आउणा दर, दर दरवाज़ा रही खुल्हाए। दर दरवाज़ा खोल्हया, अन्तर इक्क विचार। कवण वेला घर आए मेरा मौलया, आप आपणी किरपा धार। मैं अमृत भरया वेखां कौलया, घर मिले सच भण्डार। मिले वड्याई धरत धौलया, धरनी धरत दए आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आसा रही विचार। गुरसिख आसा एका ओट, आदि जुगादि रखाईआ। कवण वेला मेरा सुहाएँ कोट, साचे बंक दएँ वड्याईआ। कवण वेला लगाएँ चोट, तन नगारा मेरा वजाईआ। कवण वेला कढ्ढें खोट, मेरी दुरमति मैल धुआईआ। कवण वेला जगाएँ जोत, कवण घ्रित देवे पाईआ। कवण वेला आपणा नाम लगाएँ मेरे होंट, रस रस विच चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। मेरी आसा तेरा चाउ, तेरा चाउ मेरी वड्याईआ। तेरा मन्दिर मेरा थाउँ, तेरा थाउँ मेरा घर सोभा पाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पकड़े सद बांहों, आप आपणे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा देणा साचा वर, निरास कोए नज़र ना आईआ। गुरसिख नार जगत सुहागण, नेत्र नैण रही मटकाईआ। दर घर आए पुरख अबिनाशण, मैं वेखां चाँईं चाँईंआ। सुहाए बंक सर्ब गुण तासन, महल्ल अटल होए रुशनाईआ। मेरे दुक्खड़े सर्ब विनासन, दुःख सुख पकड़े मेरी बाहींआ। पूरी करे मेरी आसण, आसा आसा विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण वेला होएँ सहाईआ। कवण वेला बणें सहायक, सोभावन्त मेरे करतार। कवण वेला बणें नायक, मेरे परवरदिगार। कवण वेला इक्क सुणाएँ शरायत, शरअ शरीअत गेड़ निवार। कवण वेला पढ़ाएँ एका आयत, एका एक करें गुफ़्तार। कवण वेला वखाएँ इक्क जमात, अवल्ल अल्ला नूर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण वेला घर आएँ सज्जण यार। कवण वेला सज्जण मीत, थित वार कवण वखाईआ। मैं नित नित रक्खां तेरी उडीक, नेत्र नैणां राह तकाईआ। कद आवे लाशरीक, बेऐब परवरदिगार मेरा ख़ुदाईआ। जिस नूं आदि जुगादि इक्क तौफ़ीक, दूजा शरीक ना कोए वखाईआ। मैं सुणया लोकमात आया नज़दीक, आपणा पैंडा आप मुकाईआ। आपणा पता दस्स दे ठीक, कवण खेड़ा रिहा वसाईआ।

मैनूं देणीं इक्क तरीक, लोकमात ना मूल तरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे आउणा मेरे घर तेरे घर दा रस्ता बारीक, चढ़ चढ़ डिगे पान्धी राहीआ। कोटन कोटि पान्धी राही, दर दर तेरे आइंदा। अग्गे लग्गी दिसदी फाही, पार चरन ना कोए टिकाइंदा। जन्म जन्म दी लग्गी शाही, दुरमति मैल ना कोए धवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार आउणा घर, एका राह वखाइंदा। घर आवीं मैंडे साँईआं, मैं करां नित पुकार। मैं दोवें भुजां उठाईआं, चतुर्भुज कर प्यार। मैं साची सेज सुहाईआ, सूलां सत्थर सेज दए आधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाउणा सत्थर मैंडे यार। सत्थर मैंडा जगत मात, ख़ाकी ख़ाक समाईआ। तूं साहिब मेरा कमलापात, कँवल नैण मटकाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, तेरा नूर नज़र ना आईआ। मैं दुहागण नार कमज़ात, दर दर फिरदी वाहो दाहीआ। तुध बिन पुच्छे कोए ना वात, सिर हत्थ ना कोए टिकाईआ। नाता तुट्टा पिता मात, भैण भाई साक सज्जण सैण सगला संग ना कोए निभाईआ। मैं एका चढ़ना तेरे राथ, साची डोली इक्क सुहाईआ। चार जुग चार कहार बणाउणे निभाउण मेरा साथ, चलण वाहो दाहीआ। मेरा दूल्हा आए पुरख समराथ, रूप अनूप धराईआ।

१२५२ मैं मैहन्दी रंगे हाथ, सूहा वेस रही वटाईआ। मैं पढ़ पढ़ थक्की तेरी गाथ, तेरा कलमा नबी सलाहीआ। तूं मेरी मेटणी ज़ात, आपणी ज़ात विच मिलाईआ। सौहरे पेईए देणी दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। मेरे सुल्तान विछड़ ना जाए तेरा साथ, तेरी सरन मंगां सरनाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों काढ, आपणे घर देणा वसाईआ। नित नवित करां लाड, हित हित नाल मिलाईआ। अबिनाशी अचुत तेरा नाउँ सुणां बोध अगाध, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। जुग जुग वेखा तेरे सन्त साध, दर तेरे ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार आउणा घर मेरा दुक्खड़ा दे गंवाईआ। मेरा दुखड़ा देणा कट्ट, कट्टणहार स्वामी। तूं वसणहारा घट घट, निहकर्म वड्डा निहकामी। सर्ब कला आपे समरथ, आप सुणाए आपणी बाणी। मैं पल्लू तेरा फड़या हत्थ, रूप वटावां आदि शक्ति भवानी। मेरा सगल विसूरा गया लथ्थ, दर सुणी तेरी कहाणी। मेरी पूरी करनी आस, दर बैठी बण निमाणी। तेरा इक्क जोत प्रकाश, तेरी जोत सच्ची राणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वड दाते वड मेहरवानी। मेहरवान होणा मेहरवान, एका मंग मंगाईआ। आपणा प्रेम देणा दान, दूजी वस्त ना मोहे भाईआ। आदि जुगादि रहे तेरा ध्यान, तेरे चरन ओट इक्क रखाईआ। सद वसां तेरे मकान, साची कुल्ली भाग लगाईआ। नित नवित सुणा फ़रमान, धुर फ़रमाना जो रिहा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वार आउँणा घर गुरमुख सुरती नढ्ढी रकान बैठी

राह तकाईआ। गुरमुख सुरती तक्के राह, घर आए दामनगीर। सतिगुर बण बणे मलाह, मेरे कट्टे तन ज़ंजीर। एका देवे नाम सलाह, फड़ चोटी चाढ़े अख़ीर। आपणा पल्ला लए फड़ा, वड दाता पीरन पीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा धीर। देवे धीर हरि भरवासा सति सन्तोख ज्ञान दृढ़ाईआ। गुरसिख तेरी पूरी करे आसा, निरासा नज़र कोए ना आईआ। लक्ख चुरासी वेख खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक रिहा रुलाईआ। चारों कुण्ट भोग बिलासा, कूड़ी क्रिया जगत दुहाईआ। अन्तिम होणा सभ दा नासा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। शाह पातशाह राज राजानां ख़ाली दिसे कासा, मंग्गयां भिक्ख कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण होए सहाईआ। गुरमुख सच्चे सज्जण आउणा, निरगुण रूप धरा। साचा वेला वक्त सुहाउणा, पुरख अबिनाशी बेपरवाह। साचे अश्व तंग कसाउणा, सच सिँघासण सोभा पा। नव सत्त फेरा आप वखाउणा, रूप अनूप वटा। हरिजन साचे आप जगाउणा, एका ठोकर नाम लगा। जगत विछोड़ा पन्ध मुकाउणा, झूठा बन्धन दए तुड़ा। साचा वेला आप सुहाउणा, साची रुत्त दए वखा। कलिजुग अन्तिम एका साह सुधाउणा, ना कोई सके फेर बदला। पुरख अबिनाशी दूल्हा बण के आउणा, सीस जगदीस ताज टिका। साचे मन्दिर चरन टिकाउणा, आप आपणा कदम उठा। आपणा सगन आप मनाउणा, आपे वेखे आपणा थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, अन्तिम पकड़े तेरी बांह। पकड़े बांह पुरख करतार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलिजुग आई अन्तिम वार, दुःख दलिद्र दए गंवाईआ। सुख नाल सुख करे प्यार, घर घर विच सुख वखाईआ। कुक्ख नाल कुक्ख होए उज्यार, पिता पूत दए वड्याईआ। सिम्मल रुक्ख ना रहे विच संसार, जूठी झूठी जड़ उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन तेरा अन्तिम नाता, नर नरायण बंधाइंदा। मेल मिलावा कमलापाता, आपणा आप कराइंदा। आपे लाड़ा जाञी बण बराता, साची खेल खिलाइंदा। चौथे जुग आपे गाए आपणी गाथा, चौथी लांव पूर कराइंदा। जिस जन मिले पुरख अबिनाशा, सो जन सच विवाह जगत रचाइंदा। लक्ख चुरासी देवे फासा, झूठा धन्दा जो जगत वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, अन्तिम मेला आप कराइंदा। मेला अन्तिम करे भगवान, भगवन भगतन दया कमाईआ। बीस बीस कर परवान, आप आपणे दर बहाईआ। एका नज़री आए साचा काहन, गुरमुख सखीआं सोभा पाईआ। गीत गोबिन्द एका गाण, साचा मंगल आप अल्हाईआ। घर मिले राज रजान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए सच मकान, साचा मन्दिर आप वड्याईआ। साचा मन्दिर उच्चा टिल्ला,

१२५३

तख्त निवासी आप बणाइंदा। आदि जुगादी एका किला, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। ना कोई पत्थर ना कोई सिला, इट्ट गारा ना कोए लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरा घर आप बणाइंदा। गुरमुख तेरा घर अमुल्ला, अमुल अमुल बणाईआ। अन्तिम बणे तेरा तोला, तेरी धार आपणे हथ्थ रखाईआ। तेरा बदले आपे चोला, चोली आपणी तन पहनाईआ। आप वखाए साचा डोला, साची घाड़न आप घड़ाईआ। आप उठाए पर्दा ओहला, मुख घूँगट दए खुल्हाईआ। आप सुणाए आपणा बोला, सोहँ अक्खर सच पढ़ाईआ। पूरा करे कीता कौला, कीता कौल भुल ना जाईआ। ना कोई जाणे पंडत रौला, जगत विद्या भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादि हरिजन हरि हरि पूरी आस कराईआ। पूरी आस मनसा पूर, मन मन ही माहें कराइंदा। दरस दिखाए हाज़र हज़ूर, हिरस हवस सर्ब मिटाइंदा। नाता तोड़ कूड़ो कूड़, सच सुच्च घृत वखाइंदा। चतुर बणा मूर्ख मूढ़, साचे धन्दे आपे लाइंदा। काया चोली चाढ़ रंग गूढ़, रंग रतड़ी सेज सुहाइंदा। एका बख्श जोती नूर, घर दीआ दीपक आप जगाइंदा। एका नाद धुंन सच तूर, रागी राग अल्हाइंदा। आसा मनसा मनसा आसा गुरमुख गुर गुर पूर, जगत तृष्ना सर्ब मिटाइंदा। आवे नेड़े जो वसे दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। सर्ब कला भरपूर, सो स्वामी सतिगुर नाउँ रखाइंदा। गुरसिख विरले करे मन्ज़ूर, जिस आपणा परवाना नाम हथ्थ फड़ाइंदा। जन्म जन्म दे करे मुआफ़ कसूर, जो जन चरनी सीस झुकाइंदा। काया तपे ना जगत तन्दूर, अग्नी अग्ग आप बुझाइंदा। रोग सोग दुक्खड़ा चूर चूर, साचा अमृत जाम प्यांअदा। जिस दी आस रक्खी मुहम्मद विच बहशतां हूर, मुहम्मद हूर गुरसिखां दर फिराइंदा। मुहम्मद आसा साची हूर, मेल मिलाए नूर नाल नूर, नूर नुराना खेल खिलाइंदा। गुरसिख तेरा मेला करे ज़रूर, आपणी ज़रूरत पूरी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख बाली नढ्ढी लाए अंग, सिर हथ्थ रक्ख सूरा सरबंग, आपणे घर बहाइंदा। घर बहणा दरसन नैणा, मुखड़ा नूर नूर दरसाईआ। गुरसिख मन्नणा गुर का कहिणा, भुल कदे ना जाईआ। साध संगत विच मिल के बहणा, हरिसंगत हरि का रूप वखाईआ। गुर चरन प्रीती साचा गहिणा, जगत श्रृंगार ना कोए वड्याईआ। आदि अन्त भाणा सहिणा, हरि भाणे विच समाईआ। आपे देवे लहिणा देणा, पूर्ब लेखा झोली पाईआ। आदि अन्त भगत भगवन्त धाम इक्टठे रहिणा, एका सेजा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन सज्जण रहिणा त्यार, जगत त्यारी आप कराइंदा। आपे मेला करे मेलणहार, मिल मिल आपणे अंग लगाइंदा। घर घर दर दर पावे सार, गृह गृह वेख वखाइंदा। सुरती सुरत लए उठाल, जगत निमाणी आप जगाइंदा।

हाणी हाणी मेली गुर करतार, शब्दी शब्द बन्धन पाइंदा। मन्दिर वखाए इक्क दुआर, सच दुआरा आप वड्यांअदा। गुरसिख भुल ना जाए विच संसार, बिन सतिगुर पूरे पार ना कोए लगाइंदा। निहकलंक नरायण नर ल्ए अवतार, चार जुग दे विछड़े मेल मिलाइंदा । लक्ख चुरासी विच्चों ल्ए निकाल, निक्का वड्डा बिरध बाल ना वण्ड वंडाइंदा। आप आपणयां करे आप संभाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। सदा सदा सदा करे प्रितपाल, प्रितपालक वेख वखाइंदा। गुरसिख चले तेरे नाल नाल, चलणहारा दिस ना आइंदा। पावे सार शाह कंगाल, जगत कंगाली आपणी झोली पाइंदा। आप मुरीदां सुणे हाल, आपणा हाल मुरीदां आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे ल्ए वर, घर साचे आप बहाइंदा। गुरसिख वसणा हरी दुआर, हरि मन्दिर आप बणाया। झूठा नाता सर्ब संसार, हउमें रोग रिहा सताया। घर घर दिसे जगत विभचार, नार हरि कन्त ना कोए हंढाया। सुरती शब्द ना करे प्यार, रसना जिहवा काग रही कुरलाया। मन उपजे ना कोए वैराग, जगत तृष्ना मूल रखाया। जिस जन तेरा साजन ल्या साज, सो साहिब क्यों मनों भुलाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर रक्खे लाज, जन भगतां रखदा आया। कलिजुग अन्तिम मारी इक्क आवाज़, सोहँ ढोला गाया। हँ ब्रह्म पारब्रह्म निरगुण सरगुण रचया काज, नारी कन्त रूप वटाया। वडि भागण मिल्या कन्त सुहाग, कन्त कन्तूहला नज़री आया। जगत रसना मेटे सर्ब स्वाद, आत्म रस एका पाया। जिस सृष्ट सबाई उपाई आदि, अन्तिम आपे वेखण आया। जिस नूं गाउँदे ब्रह्म ब्रह्माद, सो पुरख निरँजण रूप धराया। जिस दी विष्न ब्रह्मा शिव करदे याद, बैठे सीस झुकाया। जिस अग्गे गुर अवतार करन फ़रयाद, सो माही आपणा खेल रिहा कराया। जिस दी बाणी बोध अगाध, जस वेद पुराण गाया। सो पुरख गुरसिखां करे सच्चा लाड, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आया। आपे माई आपे बाप, गुरसिख पिता पूत गोद सुहाया। गुरसिखां दी रक्खी आप याद, घर घर दर दर जा जा रिहा उठाया। भुल ना जाए पूर्ब जन्म दा कीता लाड, जन्म जन्म कर्म कर्म धर्म धर्म आपणे हथ्थ रखाया। कलिजुग अन्त गुरमुख सच्चा सन्त साध, जिस जन आपणे चरन लगाया। चार कुण्ट वेखे वाद विवाद, विष अमृत रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे एका दान, अन्तिम आसा पूर दए कराया।

★ २३ भाद्रों २०१८ बिक्रमी केहर सिँघ दे गृह रजीवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ★

जीवण देवे जीआ दान, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर मकान, सच सिँघासण आसण लाईआ। धर्म वखाए इक्क निशान, सच निशाना आप उठाईआ। नाम जणाए गुण निधान, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। दरदी दर दुआरे

१२५५

१२५६

देवे माण, दरदी दरदीआं दर्द वण्डाईआ। हरिजन सज्जण लए पछाण, बेपहचान दया कमाईआ। करे खेल श्री भगवान, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। जीआ दान आत्म दात, त्रैगुण अतीता आप वरताइंदा। चरन कँवल बंधाए नात, जन्म जन्म दा जोड़ जुड़ाइंदा। अन्तर अन्तर देवे साथ, दिस किसे ना आइंदा। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हाथ, पूर्ब लहिणा वेख वखाइंदा। नाम चढ़ाए साचे राथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। होए सहाई अनाथां नाथ, अनाथ अनाथी खेल खिलाइंदा। सर्ब कल आपे समराथ, साची वस्त आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जीआ दान जुगत जग, हरिजन इक्क दरसाईआ। त्रै त्रै बुझाए लग्गी अग्ग, पवण ठंडी नाम चलाईआ। करे प्रकाश सूरा सर्बग्ग, दीन दयाल दया कमाईआ। हरिजन करे लक्ख चुरासी विच्चों अड्ड, आपणी वण्डण आपे पाईआ। पारब्रह्म पार कराए आपणी हद्द, साचे बेड़े लए चढ़ाईआ। पावे सार ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सज्जण लेखा रिहा जणाईआ। जीआ दान जीवण जोत, जोती जाता इक्क वखाइंदा। काया मन्दिर साचा कोट, घर बंक इक्क सुहाइंदा। जिस जन कढ्ढे वाशना खोट, तिस आपणी बूझ बुझाइंदा। जिस लगाए शब्द चोट, तिस सुरती मात उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवण जुगत आप जणाइंदा। जीवण जुगत जगत गुरदेव, गुर गुर मीता आप सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ अलख अभेव, अलख अगोचर अगम्म अथाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर साची सेव कर जणाए निहकेव, निहचल बैठा आसण लाईआ। जिस जन देवे अमृत नाम साचा मेव, आत्म रस इक्क चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साची लाए सेवा जिहव, जिहवा गुण आप सुणाईआ। जीआ दान जीवण धार, गुरमुख विरला वेख वखाइंदा। जिस जन करे आप प्यार, तिस जन पर्दा मात उठाइंदा। निज नेत्र दरस वखाल, काया खेत्र सोभा पाइंदा। एका मार्ग दस्से सुखाल, मार्ग अनडिठड़ा आप लगाइंदा। गुरसिख गुरमुख आपे भाल, आपणा मेला आप कराइंदा। गोबिन्द गुर गुर बण दलाल, जगत दलाली इक्क वखाइंदा। काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल, गुरदुआरे सोभा पाइंदा। गुरमुखां चले नाल नाल, जुग पैंडा आप मुकाइंदा। आपणे चरनां हेठ रखाए काल महाकाल, हुक्मी हुक्म सर्ब फिराइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद मरीद रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। जीआ दान देवणहारा, इक्क इकल्ला पुरख अकाल। आदि जुगादि हो उज्यारा, करे खेल दीन दयाल। विष्न ब्रह्मा शिव मंगण बण भिखारा, जुग जुग करन दर इक्क सवाल। जोती

१२५६

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा सुरत संभाल। जीवण दात वस्त अणमुल, सति पुरख निरँजण झोली पाईआ। गुरमुख लोकमात ना जाए रुल, जिस जन आपणा मेल मिलाईआ। साचे कंडे जाए तुल, तोलणहारा आपे तोल तोलाईआ। भाग लगाए सुलक्खणी कुल, कुलवन्ता सच्चा माहीआ। गुरमुख फुल्ल फुलवाड़ी महिकाए फुल्ल, पत्त डाल़ी रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन जीवण जुगत दए समझाईआ।

★ २३ भाद्रों २०१८ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह मुंडी जमाल ज़िला फ़िरोज़पुर ★

सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, शहिनशाह इक्क अख्वाइंदा। हरि पुरख निरँजण मेहरवान, निरगुण निरवैर आपणी कल वरताइंदा। एकँकारा नौजवान, आदि जुगादि एका रंग समाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वडि बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। श्री भगवान सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। आप उपाए सच मकान, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाइंदा। सचखण्ड दुआरा सच महल्ला, सो पुरख निरँजण आप उपाईआ। हरि पुरख निरजंण इक्क इकल्ला, एकँकारा डेरा लाईआ। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बल्ला, अबिनाशी करता खेल खिलाईआ। श्री भगवान सच सिँघासण आपे मल्ला, पारब्रह्म आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा रिहा सुहाईआ। सचखण्ड दुआरा निहचल धाम, निरवैर पुरख आप सुहाइंदा। आपे जाणे आपणा काम, पुरख अकाल आपणी कार आप कराइंदा। आपे होए गुण निधान, गुणवन्ता आपणा भेव आप खुल़्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर आप वड्यांअदा। सचखण्ड दुआर सच मकाना, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। निरगुण नूर कर महाना, आदि जुगादि डगमगाईआ। साचे तख्त बैठ श्री भगवाना, सच सिँघासण सोभा पाईआ। एका हुक्म धुर फ़रमाना, आप आपणा लए सुणाईआ। आपे दर दरवेश बण दरबाना, आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे आपणा रंग रंगाईआ। सचखण्ड दुआर साचा रंग, हरि साचा आप रंगाइंदा। आपे बहे एका बंक, साची सेज सुहाइंदा। आप वजाए आपणा मृदंग, अनादी नाद वजाइंदा। आपे खेल करे सूरा सरबंग, आपणा बल आप प्रगटाइंदा। आपणे मन्दिर आप लँघ, आपणी खेल आप वखाइंदा। आपे भिक्खक

बण बण साची भिच्छया लए मंग, निरगुण अग्गे निरगुण झोली डांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क वड्यांअदा। आपे भिक्खक आप भिखारी, आपणा खेल आप खिलाईआ। आपे दाता बण वरतारी, साची वस्त अमोलक झोली पाईआ। आपे निरगुण जोत नूर नूर कर उज्यारी, नूर नुराना डगमगाईआ। आपे करे खेल अगम्म अपारी अलख अगोचर बेपरवाह साचा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर आपे वड़, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। एका वसे श्री भगवन्त, दूसर संग ना कोए रलाइंदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, बोध अगाधी आपे गाइंदा। आपे नाउँ आपे मंत, नाउँ निरँकारा आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, आपणा वेस आप वटाइंदा। वेस अवल्ला सचखण्ड, हरि साचा सच कराईआ। आपे करे आपणी वण्ड, निरगुण हिस्सा आपणा पाईआ। कोटन कोटि कर ब्रह्मण्ड, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डा खण्डां आपणा बन्धन पाईआ। आप उपाए सूरज चन्न, किरन किरन लए प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होए बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे त्रैगुण माया पाए बंध, आपे पंचम मेला सहिज सुभाईआ। आपे सुणाए सुहागी छन्द, निष्अक्खर आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणी खेल आप कराईआ। करे खेल पुरख समरथ, सचखण्ड दुआरे आसण लाइंदा। थिर घर महिमा गाए अकथ, शब्द अनादी नाद वजाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव चलाए रथ, रथ रथवाही वेख वखाइंदा। नाम अगम्मी पाए नथ्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखाइंदा। आत्म अन्तर मन्त्र एका दस्स, नाउँ निरँकारा आप पढ़ाइंदा। हिरदे अंदर आपे वस, रूप अनूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाइंदा। साची सेवा हरि निरँकार, एका वार जणाईआ। विष्नूं रहिणा ख़बरदार, भुल कदे ना जाईआ। ब्रह्मे नेत्र नैण उग्घाड़, चार कुण्ट रिहा वखाईआ। शंकर आलस निन्दरा दए उतार, एका एक मंत करे वड्याईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। लक्ख चुरासी जगत भण्डार, त्रै त्रै मेला सहिज सुभाईआ। पंचम तत्त बणे अखाड़, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश जोड़ जुड़ाईआ। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर बेपरवाहीआ। रूप धराए पुरख नार, नर नरायण वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव एका राह वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव एका राह, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण बण मलाह, साचा बेड़ा इक्क वखाइंदा। एकँकारा दए सलाह, साचे मार्ग आपे पाइंदा। आदि निरँजण जोत जगा, आपणा नूर आप प्रगटाइंदा। अबिनाशी करता फड़ फड़ बांह, आपणे नाल

१२५८

चलाइंदा। श्री भगवान वखाए सच निशां, सचखण्ड दुआरे आप झुलाइंदा। पारब्रह्म बणे पिता मां, बालक साचे गोद बहाइंदा। इक्क जणाए आपणा नाँ, दूजी विद्या ना कोए सिखाइंदा। चरन कँवल बहाए साचे थाँ, थान थनंतर आप वड्यांअदा। लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ा, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। निरगुण सरगुण रूप वटा, आपणा बन्धन पाइंदा। काया बंक दए वड़या, जोती जाता डगमगाइंदा । आत्म ब्रह्म वण्ड वण्डा, पारब्रह्म खेल खिलाइंदा। ईश जीव रूप धरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, आपणा गुण आप समझाइंदा। विष्नूं उठ कर ध्यान, हरि साचा सच जणाईआ। आदि पुरख हो मेहरवान, आपणी रचना दए वखाईआ। आप जणाए धुर फ़रमान, सच संदेसा दए सुणाईआ। एका अमृत पीण खाण, नाम भण्डारा दए भराईआ। आदि जुगादि वेखे विगसे श्री भगवान, वेखणहारा दिस ना आईआ। नव नौ खोल्ह दुकान, साचे मार्ग आपे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाईआ। उठ ब्रह्मे नेत्र खोल्ह, हरि साचा सच जणाइंदा। पारब्रह्म तेरे रूप जाए मौल, मौला आपणा खेल खिलाइंदा। आपणा अमृत भरे तेरे कौल, तेरी नाभी आप टिकाइंदा। भाग लगाए उप्पर धौल, लक्ख चुरासी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका तत्त जणाइंदा। उठ शंकर जाणा जाग, हरि साचा आप जगाईआ। आप लगाए आपणा भाग, आपे वेख वखाईआ। आपणी जोत जगाए चिराग़, घर मन्दिर कर रुशनाईआ। इक्क वखाए कन्त सुहाग, पारब्रह्म वड वड्याईआ। इक्क उपजाए सच वैराग, वैरागी रूप धराईआ। तेरे हत्थ फड़ाए नाद, काल नगारा इक्क वजाईआ। घड़ना भन्नणा आदि जुगादि, आपणी खेल दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, तिन्नां एका घर बहाईआ। तिन्नां बहाया एका घर, आदि पुरख करतार। आपणा देवे आपे वर, शाह पातशाह सच्ची सरकार। लक्ख चुरासी घाड़न घड़, निरगुण सरगुण पावे सार। घट घट अंदर जाए वड़, घर घर सोहे बंक दुआर। निरगुण जोती आपे धर, गृह गृह करे उज्यार। अमृत भराए साचा सर, निझर झिरना झिरे अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका हुक्म वरते वरतार। विष्न ब्रह्मा शिव सुण फ़रमाना, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तूं शाह पातशाह साचा राणा, हउँ सेवक सेव कमाईआ। एका गाउणा तेरा गाणा, तुध बिन अवर ना कोए जणाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर तूं वेखें मार ध्याना, विसर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला मेलें साचे माहीआ। कवण वेला आएँ घर, एका संग निभाईआ। विष्न चरनी गया पड़, सीस जगदीस झुकाईआ। ब्रह्मा अग्गे रोवे खड़्, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। शंकर

मूंह दे भार डिगा दड़, आपणा बल ना कोए प्रगटाईआ। बिन तुध दिसे ना कोए दर, दरदी दर्द ना कोए वण्डाईआ। लक्ख चुरासी तेरा खेल साचे नर, तूं धन्न जणेंदी माईआ। दाई दाया बण बण सेव कर, साची सेवा इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला होएँ सहाईआ। कवण वेला होएँ सहाई, हउँ एका मंग मंगाईआ। बाल अञ्याणयां पकड़ें बांहीं, नित तेरा राह तकाईआ। सिर देवें ठंडीआं छाईं, समरथ पुरख तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण दुआरे मिलें वड़, रूप अनूप आप वटाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, आदि आदि समझाइंदा। लक्ख चुरासी डेरा ला, घर घर सोभा पाइंदा। आपणा खेल दयाँ वखा, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। ब्रह्म नाल पारब्रह्म मिला, गुर गुर रूप वखाइंदा। शब्द अनादी एका गा, साचा ढोला आप सुणाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खोजा, आपणा पर्दा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। भेव जणाए हरि करतार, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। नित नवित आवां विच संसार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। गुर गुर रूप लै अवतार, अवतार गुर गुर रूप वखाईआ। भगत भगवन्त कर उज्यार, साचे सन्त लवां मिलाईआ। गुरमुखां देवां इक्क आधार, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। गुरसिखां करां सच प्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मनमुखां करां ख्वार, जुग जुग देवां मात सज़ाईआ। विष्नूं वेखां तेरा भण्डार, भुल कदे ना जाईआ। ब्रह्मा तेरा कर पसार, ब्रह्म वेता खेल खिलाईआ। शंकर तेरा वेखां हथियार, तेरे हथ्थ त्रिसूल फड़ाईआ। करां खेल आपणी वार, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। आपणा नाउँ बोल जैकार, चारे वेदां दयाँ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा जणाईआ। आपणा लेखा हरि जणाइंदा, आदि पुरख एकँकार। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा दर वेख वखाइंदा, लक्ख चुरासी खोल्ह किवाड़। घर घर हाटी फोल फुलाइंदा, कवण वस्त विच संसार। आपणी ताकी पर्दा लांहयदा, आपे होए वेखणहार। बाकी अन्त सर्ब मुकाइंदा, लहिणा दए आप निरँकार। साची खेल आप कराइंदा, जुग जुग लए मात अवतार। सतिजुग साची वण्ड वंडाइंदा, आपे आए अठारां वार। त्रेता आपणा बन्धन पाइंदा, दोए दोए खेल करे निरँकार। द्वापर साचा हुक्म जणाइंदा, एका दूआ कर उज्यार। कलिजुग अन्तिम रूप वटाइंदा, दोए दोए लेखा कर कर पार। साचा मार्ग आप चलाइंदा, नूर नुराना भेव न्यार। आपणा कलमा आप पढ़ाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। अपर अपारा खेल कराउणा, आपणी महिमा आप जणाईआ। सतिजुग संग विहार कराउणा, कलिजुग वेस वटाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद आपणा पल्लू आप फड़ाउणा, एका रंग वखाईआ।

एका जोती डगमगाउणा, दस दस मेला सहिज सुभाईआ। अलख अभेव अगम्म अथाह बेपरवाह बेअन्त आपणा नाउँ धराउणा, रसना जेहवा सके ना कोए गाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान साची सेवा लाउणा, एका हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, वर दाता आप अख्वाईआ। एका वर देवे दान, जीअ दाता आप हो जाइंदा। जुग जुग खेल करे भगवान, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। लक्ख चुरासी वेखे आण, घट घट अंदर फोल फुलाइंदा। गुरमुख विरले चतुर सुजान, आप आपणा मेल मिलाइंदा। अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञान, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। दिवस रैण इक्क धुन्कान, अनहद नादी शब्द वजाइंदा। निरगुण जोत जगे महान, जोत निरँजण डगमगाइंदा। आत्म सेजा कर परवान, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। जुग जुग खेल अवल्लड़ा, लोकमात कराईआ। आवे जावे इक्क इकल्लड़ा, नित नवित फेरा पाईआ। सच सिंघासण एका मल्लड़ा, सचखण्ड वसे साचा माहीआ। शब्द संदेसा एका घलड़ा, गुर गुर दए समझाईआ। जोती जोत आपे रलड़ा, नूर नुराना डगमगाईआ। जीव जंत फड़ाए पल्लड़ा, एका पल्लू गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१२६१ कर, विष्न ब्रह्मा शिव दए समझाईआ। विष्न सुणना बाल नादान, हरि साचा सच जणाइंदा। ब्रह्मे सुणना ला ला कान, १२६१

पुरख अबिनाशी हुक्म सुणाइंदा। शंकर देवे इक्क ज्ञान, तत्त ज्ञान इक्क दृढ़ाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग चले दुकान, लक्ख चुरासी हट्ट विकाइंदा। जुग जुग सेवा लाए श्री भगवान, गुर अवतार मात प्रगटाइंदा। नाम निधाना देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। हरिजन विरला करे पछाण, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा वरते हुक्म संसार, हुक्मी हुक्म सर्ब भुआईआ। रवि ससि रहे नच्च, मंडल मण्डप रिहा भुआईआ। लक्ख चुरासी भाण्डा कच्च, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल खिलाईआ। निरगुण जोत लट लट, घट घट आप टिकाईआ। कर खेल पुरख समरथ आपणी रास आप रचाईआ। आप सुणाए महिमा अकथ, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रिहा दस्स, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी रहे किसे ना वस, पुरख अबिनाशी आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग मेटे रैण अन्धेरी मस, साचा चन्द नाम चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त खेल कराईआ। आदि अन्त खेल करतारा, मध्ध आपणी धार चलाइंदा। मध्ध रूप गुर अवतारा, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। मध्ध नाउँ नाम जैकारा, नित नवित आप प्रगटाइंदा। मध्ध खेल मन्दिर ठाकर गुरदुआरा, मठ शिवदुआला सोभा पाइंदा। मध्ध लेखा तीर्थ तट किनारा, जगत सरोवर आप सुहाइंदा। मध्ध खेल भगत भगवन्त करे

न्यारा, आप आपणी दया कमाइंदा। मध्ध सन्त बणे दुलारा, सति पुरख निरँजण आपणी गोद सुहाइंदा। मध्ध गुरमुख पावे सारा, गुर गुर आपणी बूझ बुझाइंदा। मध्ध गुरसिख कर उज्यारा, लोकमात प्रगटाइंदा। मध्ध सेवा लाए सूरज चन्न रवि ससि सतारा, पृथ्मी आकाश मंडल मण्डप डगमगाइंदा। मध्ध वसे धाम न्यारा, निहचल धाम आप सुहाइंदा। मध्ध बोल नाम जैकारा, चारे वेदां आप सुणाइंदा। मध्ध दे इक्क आधारा, अठारां पुराण बणत बणाइंदा। मध्ध खोल्ह आप किवाड़ा, शास्त्र सिमरत हट्ट विकाइंदा। मध्ध दे नाम आधारा, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाइंदा। मध्ध हो परवरदिगारा, नूर नुराना आपणा नूर वखाइंदा। मध्ध तीस बतीसा बोल जैकारा, सच हदीसा इक्क पढ़ाइंदा। मध्ध कलमा कायनात कर प्यारा, नबी रसूलां आप जगाइंदा। मध्ध सति नाम सच्चा सहारा, निरगुण धारा आप प्रगटाइंदा। मध्ध वाहिगुरु फ़तहि बोल जैकारा, एका डंका अन्त वजाइंदा। आदि अन्त इक्क अवतारा, एका गुर समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लक्ख चुरासी पावे सारा, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। जुग जुग आपणा करे आप विहारा, आपणी सेवा आप कमाइंदा। आपे पुरख आपे नारा, आपे कन्त सुहाग हंढाइंदा। आपे लिख लिख लेखा लेख बणे सहारा, पर्दा आप चुकाइंदा। आपे कागद कलम वसे बाहरा, भेव कोए ना पाइंदा। आपे धाम सुहाए सचखण्ड दुआरा, आपे लोकमात आसण लाइंदा। जोती

१२६२ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त जुगा जुगन्त आपणा खेल खिलाइंदा। जुग करता खेल १२६२

खिलाइंदा, आदि जुगादी साची कार। विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाइंदा, एका गुण दए विचार। सतिजुग त्रेता द्वापर लोकमात फुल फुलवाड़ी आप लगाइंदा, आपे होए वेखणहार। पत्त डाल्ही फोल फुलाइंदा, जंगल जूह उजाड़ पहाड उच्चे टिल्ले पर्बत पावे सार। समुंद सागर वरोल वखाइंदा, नाम मध्धाणा एका डार। चौदां तबक आप हिलाइंदा, पुरख अबिनाशी परवरदिगार। चौदां हट्टां कुण्डा लांहयदा, पुरख अबिनाशा साची कार। तीर्थ तट्टां वेख वखाइंदा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे ज़ारो ज़ार। धीरज धीर ना कोए धराइंदा, कलिजुग अन्तिम आई हार। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर सर्ब कुरलाइंदा, कुतब गौंस ना करे विचार। पंडत पांधा थक्का मांदा आपणा भार ना कोए उठाइंदा, जगत पान्धी गया हार। गुर का शब्द ना कोए सीस टिकाइंदा, भरमे भुल्ला सर्ब संसार। चार वरन एका रूप ना कोए वखाइंदा, वरन बरन करन गिरयाज़ार। विष्न तेरा विश्व रूप नज़र किते ना आइंदा, साचा दिसे ना कोए भण्डार। ब्रह्मा ब्रह्म रूप ना कोए प्रगटाइंदा, अन्ध अन्धेर सर्ब संसार। शंकर सांगों सेज तेरे दर ना कोए वछाइंदा, गल बाशक तशका ना दिसे हार। तेरी त्रिसूल अन्त सुटाइंदा, करे खेल आप करतार। कलिजुग वेला अन्तिम आइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे कौल इकरार।

कौल इकरारा वेद व्यास, लिख लिख पुराण गया कराईआ। कलिजुग अन्तिम पूरी करे आस, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, निरवैर रूप धराईआ। पावे सार पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। करे खेल पुरख समराथ, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी चलाए साचा रथ, रथ रथवाही बण बण सेव कमाईआ। आपणी महिमा गणाए अकथ, सोहँ सो करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेद व्यासा लए मिलाईआ। पूरा करे कौल इकरारा, ईसा एका राह तकाइंदा। मेरे पिच्छे आए मेरा परवरदिगार, सिर मेरे हथ्थ टिकाइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, एका घर सोभा पाइंदा। बीस बीस करे प्यार, मेरी अल्फ़ी तन सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कीता कौल भुल ना जाइंदा। नानक निरगुण सच विचार, लोकमात गया जणाईआ। महांबली उतरे आपणी वार, ना कोई बणे पिता माईआ। निहकलंका रक्खे नाउँ विच संसार, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। डंका वज्जे अगम्म अपार, अलख अगोचर आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कौल आप निभाईआ। करया कौल गुर गोबिन्द, एका बन्धन पाया। प्रगट होए गुणी गहर गम्भीर विच हिन्द, रूप अनूप धराया। चार जुग दी मेटे चिन्द, सगला दुःख गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बल वखाया। प्रगट होए कल कल्की अवतार, कालख टिक्का दए मिटाईआ। आपे वसे धाम न्यार, सम्बल नगर डेरा लाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, साचा दीपक डगमगाईआ। आपणा नाद वजा सच्ची धुन्कार, शब्दी शब्द आप सुणाईआ। मेला करे विच दरबार, मेरा तेरा भेव मिटाईआ। चेला गुर सोहण इक्क दुआर, घर साचे वज्जे वधाईआ। कूड़ी क्रिया दए निवार, जूठ झूठ दए खपाईआ। वरन बरन करे ख्वार, साची सरन इक्क जणाईआ। एका नाम बोल जैकार, जीव जंत करे पढ़ाईआ। सच सुच्च वरते वरतार, सच समग्री इक्क वखाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्डां आप चमकाईआ। दूतां दुष्टां देवे मार, जगत गढ़ हँकार तुड़ाईआ। शाह सुल्तानां तख्तों दए उतार, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। दर दर मंगण भिख्या बण भिखार, भीख्या झोली कोए ना पाईआ। प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतार, रूप अनूप मात धराईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, हरि साचा आप अख्वाईआ। ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान सुहाए इक्क दरबार, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। सतिजुग साची बन्न्हे धार, धरत धवल दए वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तख्तों दए उतार, अन्तिम आपणी जोत मिलाईआ। सुरपति राजा इन्द कर ख्वार, एका बख्शे सरन सरनाईआ। गुरमुख सज्जण कर त्यार, सच धाम दए बहाईआ। अगला लेखा हरि निरँकार, आपणे हथ्थ रखाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी पिछला कर्ज़ा दए उतार, लहिणा किसे

नज़र ना आईआ। भाणा सहिणा सर्ब संसार, आपणा भाणा आप वरताईआ। राजा राणा रोवे ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। बेमुहाणा होए संसार, बिन सतिगुर पूरे पार ना कोए लगाईआ। पुरख अकाल करता पुरख करे आपणी कार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, रसना जिहवा ना सके कोए गाईआ। बेऐब परवरदिगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त जुग जुग गेड़ा आप चलाईआ। कलिजुग अन्तिम हरि जू गेड़ा, लोकमात दिवाइंदा। मनमति तेरा करे नबेड़ा, गुरमति आप प्रगटाइंदा। गुरमुख विरले वसे खेड़ा, लक्ख चुरासी खेड़ा ढांहयदा। हक हकीकत करे नबेड़ा, चारो कुण्ट फेरा पाइंदा। जगत विकारा मिटे झेड़ा, ममता मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त एका हरि, निरगुण निरगुण वेस वटाइंदा। निरगुण वेस कल, करता पुरख आप कराईआ। लक्ख चुरासी कर कर वल छल, जीव जंत रिहा भुलाईआ। गुरमुख विरले अन्तर आत्म जाए रल, रल मिल आपणा खेल खिलाईआ। इक्क वखाए निहचल धाम अटल्ल, सच महल्ला सोभा पाईआ। सति पुरख निरँजण बैठा आसण मल, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम लहिणा दए मुकाईआ।

★ २४ भाद्रों २०१८ बिक्रमी बाग़ीचा सिंघ दे गृह पिण्ड मुंडी जुमाल ज़िला फिरोज़पुर ★

गुर सतिगुर होए मेहरवान, अन्ध अन्धेरा पैंडा मुक्कया। हरि हरि देवे नाम दान, हरया करे बूटा सुक्कया। अन्तर आत्म इक्क ज्ञान, दरस दिखाए बैठा लुकया। जोत जगाए श्री भगवान, निरगुण निरवैर हो हो उठया। गुरमुख सज्जण मेले आण, करे खेल अबिनाशी अचुतया। एका राग सुणाए कान, हरिजन रहे मात ना सुत्तया। कर प्रकाश साचे भान, आपे सुहाए साची रुतया। परम पुरख वड मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाग लगाए काया बुतया। जगत अन्धेरा मिटे पन्ध, गुर सतिगुर दया कमाईआ। निष्अक्खर सुणाए आपणा छन्द, जग अक्खर करे पढ़ाईआ। गृह देवे परमानंद, निज आत्म ख़ुशी मनाईआ। जोत निरँजण चाढ़े चन्द, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। अठ्ठे पहर इक्क अनन्द, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। बन्दीख़ाना तोड़े बन्द, बन्द ख़ुलासी आप कराईआ। नाम जपाए बत्ती दन्द, रसना जिहवा नाल मिलाईआ। नाता तोड़े झूठा गंद, सच सुच्च करे कुड़माईआ। पंच विकारा करे खण्ड खण्ड, एका खण्डा नाम चमकाईआ। हरिजन होए सदा बख़्शंद, बख़्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, वड सागर बेपरवाहीआ।

१२६५

राह तक्कण विष्न ब्रह्मा शिव इन्द, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन पैंडा आप मुकाईआ। चुक्के अन्धेर होए प्रकाश, अनुभव प्रकाश वखाइंदा। जिस जन सतिगुर पूरा होए दासी दास, घर घर दर दर साची सेव कमाइंदा। पूरी करे आस, जुग विछड़े मेल मिलाइंदा। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन मंडल डेरा ढांहयदा। लेखे लाए रसन स्वास, पवण पवणां विच समाइंदा। करे कराए बन्द ख़ुलास, लक्ख चुरासी तन्द तुड़ाइंदा। सदा सुहेला वसे पास, सतिगुर पूरा विछड़ कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत पान्धी खेल खिलाइंदा। जगत अन्धेरा होए दूर, सतिगुर पूरा आप कराईआ। दरस दिखाए हाज़र हज़ूर, रूप अनूप आप वटाईआ। एका बख़्शे साचा नूर, निर्मल जोत जोत रुशनाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साची सिख्या इक्क समझाईआ। मस्तक लहिणा चुकाए चरन धूढ़, जोत ललाटी टिक्का लाईआ। काया चोली चढ़े रंग गूढ़, रंग मजीठी इक्क वखाईआ। शब्द अनादी वज्जे तूर, आत्म आप करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत अन्धेरा दए मिटाईआ। जगत अन्धेरा मिटे अन्ध, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाया। हरि का नाउँ गाए एका छन्द, गीत सुहागी इक्क सुणाया। जन्म जन्म दी टुट्टी ल्ए गंढ्ढ, गुर सतिगुर बन्धन पाया। माया ममता मोह विकारा करे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग आप चमकाया। आत्म रसीआ देवे इक्क अनन्द, निझर झिरना आप झिराया। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जाता डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन अन्धेरा रिहा चुकाया। चुक्के अन्धेरा होवे चानण, चन्द चांदनी मुख शरमाईआ। सतिगुर पूरा होए ज़ामन, जगत ज़ामनी आप निभाईआ। इक्क फड़ाए आपणा दामन, दामनगीर सच्चा शहिनशाहीआ। त्रैगुण कट्ट गलों ज़ंजीर, शरअ शरीअत दए मिटाईआ। दरस दिखाए वड पीरन पीर, शाह हकीर वेख वखाईआ। वसणहारा चोटी अख़ीर, जगत तारीकी दए मिटाईआ। गुरमुखां प्याए अमृत सीर, मुर्शद मुरीद मेल मिलाईआ। दूई द्वैती कढ्ढे पीड़, एका रंग दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन अन्धेरा दए मिटाईआ। मिटाए अन्धेरा सतिगुर मीत, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। जुग जुग चलाए साची रीत, आपणा मार्ग आपे लाईआ। वेखणहारा मन्दिर मस्जिद देहुरा गुरदुआर मसीत, अठसठ फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी लेखा जाणे हस्त कीट, गृह गृह बैठा आसण लाईआ। हरिजन विरला करे सच प्रीत, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गुरमुख विरले अमृत आत्म देवे ठंडा सीत, निझर झिरना आप झिराईआ। आपे पतित करे पुनीत, पतित पावन आप तराईआ। जिस जन सुणाए सुहागी गीत, सो पुरख निरँजण करे सच पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म रहे अतीत, त्रैगुण अतीता आप कराईआ। माणस जन्म जाए जग जीत, जिस जन

अन्धेर मिटाईआ। दरस दखाए जो सुत्ता दे कर पीठ, आपणी करवट ल्ए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन अन्धेरा दए गंवाईआ। हरिजन अन्धेरा दए गवा, इक्क इकल्ला एकंकारया। आपणा घर दए वखा, महल्ल अटल उच्च मुनारया। निरगुण दीपक रिहा जगा, अठ्ठे पहर उज्यारया। सच सिँघासण रिहा सुहा, पुरख अबिनाशी आसण ला रिहा। इक्क निशाना रिहा झुला, दो जहानां आप वखा रिहा। धुर फ़रमाना आप सुणा, लोकमात आप धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन अन्धेरा आप मिटा ल्या। मिटे अन्धेरा गुरसिख अन्ध, सतिगुर पूरा आप मिटाईआ। सुरत सुहागण होए रंड, जगत विछोड़ा दए मिटाईआ। भरमां ढाहे झूठी कंध, साचा खेड़ा दए वसाईआ। एका नाम इक्क अनन्द, एका मन्दिर दए वखाईआ। एका साहिब सदा बख्शंद, सतिगुर आपणा नाउँ धराईआ। एका खण्डा चण्ड प्रचण्ड, तन गात्रे इक्क हंढाईआ। एका वेखणहार ब्रह्मण्ड, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन अन्धेरा दए गंवाईआ। सतिगुर पूरा अन्धेर मिटाइंदा, दिवस रैण ना कोए विचार। साचा चन्न आप चढ़ाइंदा, आप आपणी किरपा धार। साचे मन्दिर सोभा पाइंदा, काया बंक खोल्ह किवाड़। साचे तख्त आसण लाइंदा, तख्त निवासी सच्चा शाहकार। आपणा हुक्म आप वरताइंदा, हुक्मी हुक्म कराए कार। हरिजन हरि जू मेल मिलाइंदा, जुगा जुगन्तर मेलणहार । कलिजुग अन्त खेल खिलाइंदा, निरगुण रूप लै अवतार। साचे सन्तां आप उठाइंदा, निरगुण सरगुण कर गुफ्तार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्ध अन्धेरे वसे बाहर। अन्ध अन्धेर वसया बाहर, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। रूप धराए गुप्त ज़ाहर, अनुभव करे रुशनाईआ। साचे भगतां करे प्यार, भगवन आपणी दया कमाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों ल्ए उभार, जीव जंत फोल फुलाईआ। काया ताकी खोल्ह किवाड़, बन्द दरवाज़ा दए तुड़ाईआ। जूठी झूठी मेटे पंचम धाड़, पंचम नाता दए तुड़ाईआ। अग्नी तत्त बुझाए हाढ़, सांतक सति सति कराईआ। आप सुहाए सच दरबार, गुरमुख विरले दए वखाईआ। सोभावन्त बण निरँकार, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। गुरमुख सज्जण करे प्यार, लोकमात रिहा कुरलाईआ। आ मिल मैंडे मीत मुरार, तुध बिन नेत्र नैणां नींद ना आईआ। होया विछोड़ा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणी वार उठ उठ जाईआ। तुध बिन देवे ना कोई सहार, फड़ फड़ बाहों ना गले लगाईआ। लक्ख चुरासी हो हो ख्वार, माणस जन्म मिल्या सच्चे माहीआ। एका देणा दरस दीदार, जल मीन रही तड़फाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, वेद कतेब रहे मुख शरमाईआ। शास्त्र सिमरत करन पुकार, उच्ची कूक कूक अल्हाईआ। अञ्जील कुरान रोवे ज़ारो ज़ार, तीस बतीसा दए

दुहाईआ। सो जन उधरे पार, जिस जन सतिगुर मिले सच्चा साँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। अन्ध अन्धेरा दीन दयाला, सतिगुर पूरा आप गवाइंदा। हरिजन मेटे रैण अन्धेरी काला, काली धार ना कोए रखाइंदा। एका दस्से राह सुखाला, सोहँ अक्खर जाप जपाइंदा। घट अन्तर पाई माला, मन का मणका आप भवाइंदा। आपे तोड़नहारा ताला, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। आपे घाले आपणी घाला, साची सेवा आप कमाइंदा। आपे चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली आप रखाइंदा। भाग लगाए काया सच्ची धर्मसाला, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत अन्धेरा मोह चुकाइंदा। जगत अन्धेरा मोह जाए तुट, नाता नाता ना कोए जुड़ाईआ। रैण अन्धेरी जाए उठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जूठा झूठा दर जाए रुठ, दर घर साचे बहण ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम पए लुट्ट, लुट्टी जाए सर्ब लोकाईआ। लाड़ी मौत गाने बन्ने गुट्ट, घर घर फेरा पाईआ। मनमुख जीव उठ, सुत्तयां दए जगाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना सुहाए साची रुत, रुतड़ी रुत ना कोए सुहाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण बुत, साची वस्त ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत अन्धेरा वेखे छाहीआ। जगत अन्धेरा झूठी शाही, शहिनशाह हरि वेख वखाइंदा। ग़रीब निमाणयां कोए
१२६७ ना पकड़े बाहीं, सीस हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। राज राजान ना करे सच न्याईं, जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। नाता तुट्टा पुत्तरां मांई, पिता पूत ना सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत अन्धेरा वेख वखाइंदा। वेखे अन्धेरा आदि निरँजण, आदि पुरख वडी वड्याईआ। कोई ना दिसे सच्चा सज्जण, सगला संग ना कोए निभाईआ। कोई ना पर्दा किसे कज्जण, नेत्र नैण सर्ब शरमाईआ। कोई ना करे साचा मजन, अठ सठ तीर्थ रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत अन्धेरा फोल फुलाईआ। जगत अन्धेरा झूठी धाड़, हरि पंचम गढ़ बणाया। आसा तृष्ना कर प्यार, ममता मोह वधाया। किसे नज़र ना आए गुरदुआर, गुर का मन्दिर दरस किसे ना पाया। किसे ना सुणी शब्द धुन्कार, अनहद नाद ना कोए वजाया। किसे अमृत ना मिल्या ठंडा ठार, निझर झिरना ना कोए झिराया। किसे ना खोल्ह्या बजर कपाट, साचा दर ना सोभा पाया। किसे ना मिल्या पुरख करतार, नर नरायण ना वेख वखाया। जगत दुहागण होई नार, कन्त सुहाग ना कोए हंढाया। घर घर दिसे विभचार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काया। चारों कुण्ट अन्ध अन्धयार, साचा रूप ना कोए दसाया। मित्र ध्रोही बण बण यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलिजुग अन्धेरा छाया। वेख वखाया कलिजुग अन्धेरा चार युग, चौथे जुग मेल मिलाया। अन्तिम १२६७

औध गई पुग, वेला नेड़े आया। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म सतिगुर पूरा लोकमात विच्चों कढ्ढे कुट्ट, एका खण्डा हथ्थ चमकाया। निहकलंक सूरबीर बलवान जाए उठ, जोद्धा आपणा बल आप धराया। आप सुहाए आपणी रुत्त, रुत्त बसन्ती आप महिकाया। गुरमुख बणाए साचे सुत, पिता पूत खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्धेरा वेखे थाउँ थाँया। थान थनंतर वेखणहारा, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, जोती जाता डगमगाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, निहचल धाम आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरे खोल्ह किवाड़ा, थिर घर आपणा आसण लाइंदा। पावे सार धूंआँधारा, सुन्न अगम्म वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए हुलारा, एका धक्का आप लगाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे आप अखाड़ा, ब्रह्मण्डां खण्डां नाच नचाइंदा। लक्ख चुरासी करे ख्वारा, घर घर आपणा ढोला गाइंदा। कलिजुग मेटे अन्ध अन्धयारा, कूड़ी क्रिया आप गवाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अगम्मड़ी धार चलाइंदा। नाम खण्डा तेज़ कटारा, त्रैगुण आपणा आप चमकाइंदा। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। ना कोई दिसे मीत मुरारा, सगला संग ना कोए वखाइंदा। चारों कुण्ट पए मारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत अन्धेरा पन्ध गवाइंदा। जगत अन्धेरा दुष्ट दमन, आपणे दामन नाल बंधाईआ। लेखा जाणे अवण गवण, ब्रह्मण्ड खेल खिलाईआ। शब्द सुनेहड़ा एका पवण, गोबिन्द देवे सच्चा माहीआ। पुरख अकाल सच्चा ज़ामन, आदि जुगादि पकड़े बांहींआ। मेट मिटाए कामनी कामन, आप आपणा बल वखाईआ। काया खेड़ा वसे ग्रामन, जिस गृह आपणा आसण लाईआ। हरि का भेव ना पाए कोए पंडत ब्रह्मण, मुल्लां शेख़ मुसायक पर्दा सके ना कोए उठाईआ। पीर दस्तगीर शाह हकीर पकड़े दामन, दामनगीर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग मेटे अन्धेरा छाहीआ। मेटे अन्धेरा श्री भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। कलिजुग कल्लू करे अन्त, अन्त काली धार दए मिटाईआ। गुरमुख प्रगटाए साचे सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। नाम जणाए मणीआ मंत, मन मनसा दए खपाईआ। मेल मिलाए नारी कन्त, सुरती शब्द कर कुड़माईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, साची संगत लए मिलाईआ। इक्क वखाए साचा जन्नत, हरि चरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच चानणा इक्क समझाईआ। सच्चा चानण सतिगुर चरन, जगत अन्धेर मिटाइंदा। नेत्र खोल्हे हरन फरन, लोचण नैण दरस दिखाइंदा। नाता तोड़े मरन डरन, जीवण मुक्त कराइंदा। किरपा करे हरि तरनी तरन, गुरमुख साचे आप तराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा चन्द इक्क चमकाइंदा। साचा चन्द तेज भान, प्रकाश प्रकाश आप प्रगटाईआ। जिस जन देवे नाम ज्ञान, आत्म

मैल दए धवाईआ। जिस जन दरसन देवे आण, तिस संसा रहे ना राईआ। भगत मिले श्री भगवान भगवन, आपणे रंग रंगाईआ। एका मन्दिर सच मकान, एका नूर नूर रुशनाईआ। अन्ध अन्धेर ना कोए निशान, पुरख अबिनाशी आपणा दीपक आप जगाईआ। गुरमुख विरला वेखे आण, जिस जन हरि जू बूझ बुझाईआ। जीव जंत बण नादान, कलिजुग बैठे मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत अन्धेरा वेखे थाउँ थाँईआ। जगत अन्धेरा नव नौ खण्ड, सत्त सत्त रिहा कुरलाईआ। जगत अन्धेरा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज नज़र ना आईआ। जगत अन्धेरा सूरज चन्द, किरन किरन रही शरमाईआ। जगत अन्धेरा जूठा गंढु, रसना जिहवा होई हल्काईआ। जगत अन्धेरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरले जगत अन्धेरा दए चुकाईआ। गुर सतिगुर दया कमाइंदा, गुरमुख नेत्र नैण खोल्ह। रूप अनूप आप जणाइंदा, शब्द अनाद अनादी बोल। आपणा मन्दिर आप वखाइंदा, बन्द किवाड़ा ताकी खोल्ह। सच सिँघासण आसण लाइंदा। आत्म सेजा वसे कोल। अमृत सरोवर इक्क नुहाइंदा, उलटा करे नाभ कउल। धरनी धरत धवल वड्यांअदा, माण रखाए उप्पर धौल। जिस जन आपणे चरन लगाइंदा, सुरती शब्दी जाए मौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साची पहुल। साची पहुल अमृत रस, अमृत धार आप वहाईआ। गुरमुख विरला पीवे हस्स हस्स, सच प्याला नज़री आईआ। सतिगुर अन्तर जाए वस, जोती जोत जोत मिलाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। निरगुण सरगुण कर प्रकाश, जगत अन्धेर गंवाईआ। लेखे लाए पवण स्वास, रसना जिहवा जो हरि गुण रही गाईआ। गुरसिखां गुर होए दास, जुग जुग सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण निरगुण निरगुण निराकार निराकार निराकार निरवैर रूप समाईआ।

★ २६ भाद्रों २०१८ बिक्रमी दर्शन सिँघ दे गृह मकान नं० ६७८६ शब्द सिँघासण दिल्ली ★

सतिगुर पूरा एकँकार, आदि जुगादि समाइंदा। आदि पुरख वसे सचखण्ड धाम न्यार, निरगुण नूर डगमगाइंदा। थिर घर खोल्ह आप किवाड़, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। शाहो भूप होए सिक्दार, तख्त निवासी तख्त सोभा पाइंदा। हुक्मी हुकम कर वरतार, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। आपणी इच्छया बण वरतार, साची भिच्छया झोली पाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा इक्क अखवाइंदा। सतिगुर पूरा आदि निरँजण, आदि पुरख वडी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर वेख वखाईआ।

जन भगतां पाए नेत्र नाम अञ्जण, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। एथे ओथे दो जहानां बणे साचा सज्जण, सगला संग आप निभाईआ। साचा चरन धूढ़ कराए मजन, दुरमति मैल ध्वाईआ। आपे होए परदे कज्जण, नाम दुशाला हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सच्चा बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा हरि पुरख, एका रंग समाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता रोग ना कोई रखाइंदा। आदि अन्त जुगा जुगन्त जन भगतां करे तरस, आप आपणा मेल मिलाइंदा। अमृत आत्म मेघ देवे बरस, निझर झिरना आप झिराइंदा। आप मिटाए कलिजुग हरस, लहिणा देणा चुकाए अर्श फर्श, काया कुरा फोल फलाइंदा। निरगुण निरगुण वखाए दरस, जोती जामा डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा एका रंग जणाइंदा। सतिगुर पूरा श्री भगवान, इक्क इकल्ला वडी वड्याईआ। साचे तख्त बैठ शाह सुल्तान, आपणी दया आप कमाईआ। जुग जुग खेल करे महान, जग करता बेपरवाहीआ। भगत भगवन्त मिले आण, आप आपणे प्रभ दए उठाईआ। काया बंक वेखे मार ध्यान, डूँघी कंदर फोल फुलाईआ। एका राग सुणाए कान, अनहद नादी नाद सुणाईआ। एका अमृत आत्म देवे पीण खाण, साची वस्त अमोलक आप वरताईआ। धर्म वखाए इक्क निशान, गृह मन्दिर आप झुलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा इक्क समझाईआ। सतिगुर पूरा पुरख अबिनाशी, एका घर सोभा पाइंदा। साचे मंडल पावे रासी, गोपी काहन खेल खिलाइंदा। आपे करे खेल तमाशी, आप आपणा वेस वटाइंदा। सेवा करे बण बण दास दासी, रूप अनूप शाहो भूप आप पगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा एका घर वसाइंदा। सतिगुर पूरा पारब्रह्म, एका एक अख्वाए। ना मरे ना पए जम्म, जन्म मरन विच कदे ना आए। जुग जुग करे साचा कम्म, निहकर्मी कर्म कमाए। लक्ख चुरासी बेड़ा देवे बन्ह, भार आपणे सिर उठाए। लेखा जाणे सूरज चन्न, जोती जोत डगमगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा एका एक अख्वाए। सतिगुर पूरा दीन दयाला, दया निध वडी वड्याईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, थिर घर आपणा चरन टिकाईआ। जोती नूर नूर उजाला, निरगुण निरवैर डगमगाईआ। अजूनी रहत खेल निराला, अनुभव प्रकाश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा आपणा पर्दा आप खुल्हाईआ। सतिगुर साचा पर्दा खोल्ह, भेव अभेद खुल्हाइंदा। सरगुण अंदर निरगुण बोल, शब्द अनादी नाद वजाइंदा। त्रैगुण तोले आपणे तोल, एका कंडा हथ्थ उठाइंदा। सदा सदा सद रहे अडोल, अडुल्ल आपणी धार चलाइंदा। हर घट अंदर रिहा मौल, सतिगुर पूरा आसण लाइंदा। जुगा जुगन्तर पूरा करे आपणा कौल, कीता कौल भुल ना जाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा एका हरि, रूप अनूप आप वटाइंदा। सतिगुर पूरा सदा समरथ, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही सेव कमाईआ। आपणी महिमा गाए अकथ, हरि भगतन करे सच पढ़ाईआ। जगत विकारा देवे मथ, आत्म ब्रह्म इक्क दरसाईआ। पंच विकारा पाए नथ्थ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। तीर निराला मारे कस, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। मन मनूआ होए वस, उठ उठ दहि दिश ना धाईआ। आत्म जणाए साचा रस, निझर झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा सच्चा शाह, एका घर समझाइंदा। जुगा जुगन्तर बण मलाह, लोकमात खेल खिलाइंदा। निरगुण सरगुण देवे इक्क सलाह, शब्दी ढोला आपे गाइंदा। आप प्रगटाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। वसणहारा ठांडे थाँ, थान थनंतर सोभा पाइंदा। आपे करे सच न्याँ, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा इक्क, दूजा अवर ना कोई अचवाइंदा। सतिगुर पूरा एका एक, इक्क महल्ला रिहा वसाईआ। आदि जुगादी एका संग रखाए करे बुध बिबेक, गुण अवगुण ना कोई जणाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, जिस सिर हथ्थ रक्खे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेख भेखी आपे लए वटाईआ। जुग जुग भेख अवल्लड़ा, करनहार करतार। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग , निरगुण सरगुण लए अवतार। जन भगतां फड़ाए आपणा पल्लड़ा, लक्ख चुरासी विचों कढ्ढे बाहर। साचा धाम इक्क सुहंदड़ा, काया मन्दिर खोलॖ किवाड़। आपणा आसण आप विछंदड़ा, निरगुण सरगुण खेल अपार। जोती जोत जोत जगंदड़ा, मेट मिटाए अन्ध अन्धयार। रूप अनूप आप वखंदड़ा, खेले खेल अपर अपार। सतिगुर पूरा आपणा राह आप चलंदड़ा, आपे जाणे आपणी कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सच्ची सरकार। सतिगुर सच्चा शाह सुल्तान, जिस हथ्थ वडी वड्याईआ। आपे जाणे आपणी आण, आपणा हुक्म आप वरताईआ। आपे करे आपणी सच पछाण, पहचान विच कदे ना आईआ। आपे देवे धुर फ़रमान, सच संदेशा इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा साचा हरि, गेड़ा गेड़े विच भुआईआ। सतिगुर पूरा हुक्म वरतार, हुक्मी हुक्म खेल खिलाइंदा। हुक्म अंदर विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, सेवक साची सेव लगाइंदा। हुक्मे अंदर त्रैगुण माया भर भण्डार, पंज तत्त जोड़ जुड़ाइंदा। मंडल मण्डप दए सहार, गगन मंडल सोभा पाइंदा। हुक्मे अंदर लक्ख चुरासी कर त्यार, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण करे खेल अपार, जोती जाता डगमगाइंदा। हुक्मे अंदर ब्रह्म

१२७१

पारब्रह्म करे प्यार, रूप अनूप आप धराइंदा। हुक्मे अंदर शब्द धुन्कार, बोध अगाधी आपे गाइंदा। हुक्मे अंदर वेद चार, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर चारे खाणी पावे सार, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज आप प्रगटाइंदा। हुक्मे अंदर चारे बाणी कर त्यार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। हुक्मे अंदर चारे वरन कर शंगार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रंग रंगाइंदा। हुक्मे अंदर चार जुग वेख अखाड़, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्ड वंडाइंदा। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण लए अवतार, जुग जुग वेस वटाइंदा। हुक्मे अंदर प्रगट हो विच संसार, आपणा राह चलाइंदा। हुक्मे अंदर भगत भगवन्त लए उभार, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। हुक्मे अंदर सन्त सति कर त्यार, दर घर साचे आप बहाइंदा। हुक्मे अंदर गुरमुखां खोल्ह बन्द किवाड़, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। हुक्मे अंदर गुरसिख बहाए सच दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी करे पार, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। हुक्मे अंदर त्रैगुण माया भर भण्डार, लक्ख चुरासी बन्धन पाइंदा। हुक्मे अंदर साची कार, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर कलिजुग वेखे अन्तिम वार, नेरन नेड़े नज़र आइंदा। लेखा जाणे शाह फ़कीर, हकीकत आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा इक्क हो आइंदा। सतिगुर पूरा हरि करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतार, लोकमात करे रुशनाईआ। नानक गोबिन्द एका धार, जोती जोत डगमगाईआ। शब्दी शब्द शब्द जैकार, अगम्म अगम्मड़ा वेख वखाईआ। चारों कुण्ट होया अन्ध अन्धयार, रैण अन्धेरी छाईआ। सृष्ट सबाई होए विभचार, सति सति ना कोई वड्याईआ। नाता तुट्टे पुरख नार, नार कन्त ना कोई अख्वाईआ। मात पित ना कोई प्यार, पिता पूत ना कोई वड्याईआ। जीव जंत होण ख्वार, धीरज धीर ना कोई धराईआ। सृष्ट सबाई हाहाकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कलिजुग वेखे वेखणहार, आपणा नेत्र नैण खुल्हाईआ। नाल रलाया मुहम्मदी यार, चार यारी मता पकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा दए वखाईआ। सतिगुर साचा इक्क इकल्ला, आदि जुगादि समाया। वसणहारा सच महल्ला, आपणा नाउँ धराया। पावे सार जला थला, डूँघी कंदर फोल फुलाया। जन भगतां फड़ाए आपणा पल्ला, एका पल्लू आप वखाया। इक्क वखाए साचा भल्ला, नाम निधाना आप उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपे वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम खेल अपार, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां पावे सार, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फोलाईआ। साध सन्त जीव जंत लए उभार, निरभउ भय ना कोई जणाईआ। साचा दिसे ना किसे गुरदुआरा, हरि का मन्दिर नज़र ना आईआ। पढ़ पढ़ कूक कूक करन पुकारा, रसना जिहवा जगत हिलाईआ। जूठ झूठ लगाया इक्क अखाड़ा,

माया ममता नाच नचाईआ। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ा, त्रैगुण तत्त रही जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग अग्नी अग्ग, चार कुण्ट रही जलाया। हँस होए कग्ग, काग हँस रूप वटाया। अन्तिम जोत ना गई जग, जगत जोत ना कोए जगाया। दरस ना पाया उप्पर शाह रग, रघुपत नज़र किसे ना आया। पी पी थक्के झूठी मदि, आत्म रस ना किसे प्याया। ढोलक छैणा वजा वजा थक्के साज, अनहद नाद ना किसे सुणाया। ब्रह्म ना कीती पार हद्द, ब्रह्म पारब्रह्म ना मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुरु दए समझाया। जगत गुर जगत नाता, आत्म ब्रह्म ना कोई जणाईआ। पढ़ पढ़ सुणावन जगत गाथा, साचा रंग ना कोई चढ़ाईआ। नाम ना देवे कोई दाता, रसना जिहवा होई हल्काईआ। काया मन्दिर ना मेटे कोई अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोई चढ़ाईआ। दर वखाए ना कोई कमलापाता, कँवल नैण नज़र ना आईआ। बन्द ना खोल्हे कोई ताका, बन्द किवाड़ ना दए तुड़ाईआ। वस्त सच ना वखाए कोई हाटा, चौदां हट्ट ना मोह चुकाईआ। कलिजुग खेल बाजीगर नाटा, स्वांगी आपणा स्वांग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा एका एक अख्वाईआ। चार कुण्ट

१२७३ गुर गुरदेव, इष्ट इष्ट आप अख्वाईआ। मानस देह करावन सेव, पारब्रह्म ना कोई वड्याईआ। रसना वासना गायण जिहव, १२७३

जपत जपत ना सुख पाईआ। अन्तर मिले ना आत्म मेव, अमृत फल ना कोई खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी सच्चा हरि, सतिगुर सच्चा रूप वटाईआ। एका रूप वटाए नर, नर नरायण वडी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे घर, घर नव नौं फेरा पाईआ। भेखी पखण्डी लए फड़, बिन हरि नामे गुरु कोई रहिण ना पाईआ। सो सतिगुर जो सच महल्ले बैठा चढ़, तख्त निवासी तख्त रिहा सुहाईआ। निष्अक्खर बाणी रिहा पढ़, पिछली करे ना कोई पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। झूठा गुरु जगत जुग नाता, जीव जीवां नाल बंधाइंदा। अन्तिम वेखे नार कमज़ाता, दुहागण रूप मात वटाईआ। प्रभ मिले ना सज्जण साका, देवे दरस ना हरि रघुराया। जिस आपणी पूरी होई ना आसा, दूसरा बेड़ा पार किवें कराया। सतिगुर पूरा एका देवे साचा भरवासा, दर दुआरा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे हरि, सतिगुरु इक्क वड्याआ। सतिगुर वड्डा आदि जुगादि, जुग जुग खेल कराइंदा। वेख वखाए ब्रह्म ब्रह्मादि, पारब्रह्म रूप वटाइंदा। गृह गृह घर घर मन्दिर अंदर वजाए नाद, नाद अनादी आप रखाइंदा। मेल मिलाए मोहण माधव माध, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रंग वखाइंदा। जन भगतां सुणे सदा फ़रयाद, दिवस रैण ध्यान लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, सतिगुर आपणा खेल खिलाइंदा। सतिगुर एका एक ओट, एका आस रखाईआ। गुरसिखां कढे झूठा खोट, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। नाम भण्डारा भरे पोट, अतुट भण्डार वरताईआ। काया गढ़ वेखे कोट, गढ़ बंक फोल फुलाईआ। निर्मल जगाए आपणी जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। नाम जपाए बिन रसना जिहव, अजपा जाप इक्क समझाईआ। अन्त नेड़ ना आए लाड़ी मौत, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। नार वरे हरि साचा खौंत, नरायण एका घर सोभा पाईआ। झूठे गुरु जाणे औंत, ओत पोत ना कोई बणाईआ। गुरमुख विरले जानण झूठे मोहित, कवण वेला सतिगुर पूरा लैण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा आपणा नाउँ लए प्रगटाईआ। प्रगट हो पुरख अकाला, सतिगुर आपणा भेव खलाईआ। जुग चले अवल्लड़ी चाला, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। लेखा जाणे काल महाकाला, महांबली वड वड्याईआ। दो जहान वजाए ताला, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आप सुणाईआ। चार वरनां दस्से राह सुखाला, ऊँच नीच ना कोई जणाईआ। अन्तर आत्म पाए साची माला, मनका मणका आप भुआईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, आपणे रंग दए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा एका हरि, हरिजन साचे लए मिलाईआ। सतिगुर पूरा वसे एका घर, घर सुहञ्जणा सोभा पाइंदा। आदि जुगादि निरभउ चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोई रखाइंदा। सन्त सुहेले लए फड़, गुर चेले मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे नारी नर, पर्दा आप चुकाइंदा। दरस दिखाए अगे खड़, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। गोबिन्द पल्लू लए फड़, नानक नाल मिलाइंदा। गुरसिख वेखे आपणे घर, घर घर विच सोभा पाइंदा। झूठे गुरुआं चुक्के डर, जिस सतिगुर सच्चा नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जूठ झूठ पखण्ड कलिजुग अन्तिम करे रंड, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। जूठ झूठ करे दूर, कलिजुग अन्तिम पन्ध मुकाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ क्रिया दए मिटाईआ। प्रगट होया हाज़र हज़ूर, हरि आपणा रूप धराईआ। निरगुण देवे साचा नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। आत्म धुन साची तूर, तुरीआ नाद आप वजाईआ। सतिगुर पूरा आसा मनसा पूर, मन मनसा दए खपाईआ। जगत विकारा करे चूरो चूर, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, जोत लिलाटी डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिगुर पूरा करे आप रुशनाईआ। सतिगुर पूरा करे चानन, चन्द चांदनी मुख शरमाइंदा। तीर निराला मारे बानण, अणयाला तीर चलाइंदा। एका राग सुणाए कान, राग नादि भेव ना आइंदा। गुरमुख गुरसिख दरस दिखाए आपणे आमृणो सामृण, नेत्र नैणां नाल मिलाइंदा। एथे उथे होए ज़ामन, आपणा पल्लू आप फड़ाइंदा। आपे कृष्ना आपे रामन, आपे नानक गोबिन्द

१२७४

खेल खिलाइंदा। आपे ईसा मूसा संग मुहम्मद दए पैग़ामन, कलमा कलाम आप जणाइंदा। आपे शतरी शूद्र वैश ब्रह्मण, जात पात ना कोई रखाइंदा, आपे करे अन्तिम ध्यानन, ध्यान ध्यान विच मिलाइंदा। आपे होए घट घट जानन, अन्तरजामी नाउँ धराइंदा। आपे मेटे कलिजुग रैण अन्धेरी शामन, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर आपणी खेल खिलाइंदा। सतिगुर खेल करे अपार, आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण निरगुण लए अवतारा, जोती जोत दए रुशनाईआ। सम्बल नगर धाम न्यारा, सतिगुर साचा आसण लाईआ। नाम खण्डा तेज कटारा, चण्ड प्रचण्ड रिहा चमकाईआ। लेखा जाणे दो जहान, दो जहानां वाली वेस वटाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, समुंद सागर मस रोवे नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह गए सर्ब पुकार, सतिगुर भेव कोई ना पाईआ। आदि अन्त आपे जाणे आपणी धार, जुग जुग धारा धार विच वखाईआ। निहकलंक नरायण नर अवतार, कलिजुग अन्तिम वार, सतिगुर सच्चा इक्क हो जाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना करे प्यार, एका घर दए वखाईआ। लेखा जाणे मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला गुरदुआर, तीर्थ तट फोल फुलाईआ। चौदां हट्टां पावे सार, चौदां तबकां खोलू किवाड़, भेव अभेद आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए साचा घर, सतिगुर बैठा आसण लाईआ।
 घर विच घर घर विच आसण, सतिगुर सोभा पाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाशन, दर दर आपणा रूप वटाइंदा। जो जन प्रभ साचे दी रक्खे आसण, तिस जन आपणा मेल मिलाइंदा। निज घर आत्म कर कर वासण, आपणी आसा विच मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए साचा घर, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। साचा मन्दिर उच्च अटारी, अटल महल्ल बणाया। एका वसे जोत निरँकारी, पुरख अकाल खेल खिलाया। कलिजुग आई अन्तिम वारी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। भेख पखण्डा होई सिक्दारी, जूठा झूठा डौरू डंका रिहा वजाया। प्रगट होए नर निरँकारी, निहकलंक नाउँ रखाया। कलिजुग अन्तिम हथ्थ फड़े शब्द कटारी, लुहार तरखान ना कोई घड़ाया। नौं खण्ड पृथ्मी मारे एका वारी, सभ दा करे सफ़ाया। सदा सदा सच्चे सतिगुर सदा बलिहारी, जिस एह खेल खिलाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक्क इकल्ला एकँकारी, सतिगुर गुर सतिगुर वेस वटाया। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत फड़ फड़ जाए तारी, तारनहार दया कमाया। आपणे घर जाए वाड़ी, राह विच ना कोई अटकाया। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कारी, रसना जिहवा रहे जस गाया। मनमुख झूठे दर रहे झख मारी, गुर मति बिन सच्चे सतिगुर दूसर अवर ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखाए एका घर, घर सच्चा आप वड्याआ। ....

. . . .

१२७६

★ १ अस्सू २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

कलप जुग बीते चार, चार चार पई दुहाईआ। चारों कुण्ट अन्ध अन्धयार, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। वरन बरन होए ख्वार, जन्म कर्म पई लड़ाईआ। लक्ख चुरासी जम्मे वारो वार, जुग जुग गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। कब पुरख कब नार, कब कन्त सेज सुहाईआ। कब सुत कर प्यार, कब मेला बाल सखाईआ। कब साक सज्जण सैण यार, कब शत्रु रूप वटाईआ। कब उत्भुज सेत्ज जेरज अंडज फिरे वारो वार, लिख्या लेख ना कोए जणाईआ। मरे मर जम्मे आवे जावे विच संसार, जूनी जून जून भवाईआ। लक्ख चुरासी जगत गुलज़ार, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। जुगा जुगन्तर साची कार, वाह वा आपणी आप कराईआ। आपे बैठ धाम न्यार, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। थिर घर खोल्ह आप किवाड़, आपणा नूर दए दरसाईआ। सुंन अगम्मी हो उज्यार, रूप अनूप जणाईआ। निरगुण निरवैर निराकार, निर्धन सरधन खेल खिलाईआ। जुग चौकड़ी पावे सार, नव नौं आपणी धार चलाईआ। कलिजुग अन्तिम आई वार, करे खेल बेपरवाहीआ। जोती जाता हो त्यार, पुरख बिधाता वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कोटन जुग वेख वखाईआ। कलप जुग बीते चार, चारों कुण्ट खेल खिलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बेऐब परवरदिगार, नूर नुराना डगमगाइंदा।

जिस नूं सजदा करदे रहे गुर अवतार, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। जिस दर भगत बणदे रहे भिखार, ख़ाली झोली सर्ब भराइंदा। जिस नूं नानक मन्नया कन्त भतार, सो पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। जिस नूं गोबिन्द कहे मैं उपाया सुत दुलार, पुरख अकाल खेल खिलाइंदा। जिस नूं ईसा कहे मेरा परवरदिगार, मुकामे हक डेरा लाइंदा। जिस नूं मूसा कहे मेरा सजदा मन्ने सच दरबार, सो सीस जगदीस वेख वखाइंदा। जिस नूं मुहम्मद मन्ने सच्चा यार, सो यार वेस वटाइंदा। जिस ने खेल करया जुग चार, जुग चौकड़ी राह चलाइंदा। जिस ने विष्न ब्रह्मा शिव बणाए सेवादार, साची सेवा इक्क समझाइंदा। जिस ने तीर्थ तट उपजाए किनार, जलधार खेल खिलाइंदा। जिस ने ब्रह्म पंज तत्त अंदर कर प्यार, आपणा बन्धन पाइंदा। जिस ने निरगुण जोत कर उज्यार, जोत निरँजण दीपक इक्क जगाइंदा। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। जुग विछड़े जग मेले मेलणहार, मेल मिलावा आपणा आप कराइंदा। लक्ख चुरासी करे पार, जन्म मरन फंद कटाइंदा। राए धर्म ना करे ख्वार, चित्रगुप्त हिसाब ना कोए वखाइंदा। लाड़ी मौत ना करे प्यार, मात गर्भ ना फेर वसाइंदा। नाता तोड़ सर्ब संसार, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। काया मन्दिर खोल्ह किवाड़, दस्म दुआरी कुण्डा लांहयदा। निर्मल दीआ कर उज्यार, दीपक जोत डगमगाइंदा। अमृत आत्म बख़्शे ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। पंच विकारे करे ख्वार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। आसा तृष्ना देवे मार, हउमे हंगता रोग मिटाइंदा। दुःख भुक्ख ना कोए उधार, साचा सुख इक्क प्रगटाइंदा। जिस जन किरपा करे आप निरँकार, सो जन दूजे दर ना मंगण जाइंदा। फड़ फड़ बाहों लाए पार, जिस जन बेड़े आप चढ़ाइंदा। मँझधार ना रुढ़े अन्तिम वार, शौह दरया ना कोए सुटाइंदा। माणस जन्म ना आए हार, हरि के मन्दिर आप बहाइंदा। दरस दिखाए अगम्म अपार, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। सन्यास वैराग जोग जुगत कर ख्वार, दरस अमोघ आप कराइंदा। हरिजन भोग भोगे एका वार, दूजी सेज ना कोए सुहाइंदा। जिस सेजे चढ़े आप निरँकार, तिस कामनी गले लगाइंदा। पीआ प्रीतम कर प्यार, सच सिँघासण आप बहाइंदा। नेत्र नैणां कर दीदार, नैण नैण विच मिलाइंदा। गलवकड़ी पाए एका वार, दो जहान ना कोए छुडाइंदा। एका सेजा सोयण पैर पसार, बंक दुआर इक्क वखाइंदा। रूप बणाए पुरख नार, पुरख पुरखोतम खेल खिलाइंदा। भुल्ला भटका जो आए चल दुआर, डुबदा पाथर आप तराइंदा। सोहँ शब्द जो बोले रसना जिहवा जैकार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गले लगाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, लेखा लिख ना कोए वखाइंदा। रातीं सुत्तयां दए दीदार, गुरसिख सोए आप जगाइंदा। आपे बणे सेवादार, साची सेवा

हरि कमाइंदा। निरलज हो के फिरे विच संसार, लोक लाज आपणी झोली पाइंदा। जन भगतां पर्दा कज सिर देवे इक्क प्यार, प्यार प्यार नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, आत्म अन्तर जगत बुझाए लग्गी बसन्तर, आत्म मेघ इक्क बरसाइंदा। आत्म अन्तर आए सांत, जन्म जन्म दा संसा दए गंवाईआ। दरस दिखाए इक्क इकांत, इक्क इकल्ला सच्चा माहीआ। जिस जन देवे नाम दात, तन ख़ज़ाना दए भराईआ। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, शाह कंगाल ना कोए वड्याईआ। खोलणहारा बन्द ताक, जगत किवाड़ा दए तुड़ाईआ। पूरन करे पूरी आस, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। घर सख़ीआं वखाए साची रास, गोपी काहन रूप वटाईआ। नाता तुट्टे दस दस मास, दूजी वार मात कुक्ख ना कोए उठाईआ। गर्भ वास ना होए प्रभास, नाता बणे ना भैण भाईआ। पिता पूत ना कोए साथ, सज्जण साक ना कोए बणाईआ। सगल विसूरे जायण लाथ, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। लहिणा देणा चुक्के साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, हथ्थों मंगण वाली खपरी दए सुटाईआ। काया खपरी साचा ठूठा, हरि साचा आप बणाइंदा। पाए ना भिच्छया जिस कोलों रूठा, लक्ख चुरासी ख़ाली हथ्थ फिराइंदा। जिस जन उप्पर आप तुट्ठा, अनमंगी दात हथ्थ फड़ाइंदा। इक्क दूजे उत्ते क्या कोई करे गुस्सा, कर्म धर्म जन्म जुग जुग पारब्रह्म प्रभ आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपे देवणहारा भर भर मुट्ठां, आपे आपणा मुख भुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, तिस सज्जण मेल मिलाइंदा। तेरे अन्तर होए प्रकाश, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। तेरी पूरी होवे आस, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। तेरे मन का भउ होए नास, भय भगवान इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा हट्ट दए खुल्हाईआ। तेरा हट खुल्हे कपाट, सोहँ सो गाया। दरस दिखाए सुत्तयां रात, जो लम्भयां नज़र ना आया। जिस पिच्छे जंगल जूह उजाड़ पहाड करदे फिरदे आत्म घात, भुक्खे रहि रहि वक्त लँघाया। दर आवे खोल्हे ताक, आपणा कुण्डा आपे लाहया। तेरा अमृत तेरे विचों काढ, तेरे मुख दए चुआया। वेख सरूप करे लाड, आपणी गोद ल्ए बहाया। पहली अस्सू रक्खणा याद, भुल कदे ना जाया। जिस कोल साध संगत विच करी फ़रयाद, सो फ़रयादी फ़रयाद सुणन आया। जिस दी चार कुण्ट नौं खण्ड पृथ्मी ब्रह्मण्ड रवि ससि सूरज चन्न गुर अवतार पीर पैग़म्बर मुला शेख़ मुसायक औलिए पा ना सके हाद, हदूद अरबा तेरी काया मन्दिर अंदर दए वखाया। तेरी सिंगी तेरा वज्जे नाद, तेरा नाथ आप वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, दरस दरस दरस विचों प्रगटाया। निरगुण दरस सरगुण अंदर, आपणा आप जणाईआ। सरगुण दरस आपणे अंदर, निरगुण निरगुण पाईआ। निरगुण सरगुण उप्पर कर तरस, स्वच्छ

१२७८

सरूप रूप वटाईआ। गुरसिख गुरु गुर आप आपणे लए परख, परीख्या विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ।

पाटे चीथड़ आया चम्यार, तन चमढ़ी रिहा वखाईआ। नित नवित बणया रहे यार, यारी यारां नाल निभाईआ। भुक्ख्यां देवें मार, जगत गरीबी झोली पाईआ। आपणी लज्जया विच गए हार, आपणा दुःख ना सके सुणाईआ। तेरा दुःख ना झल्लया जाए निरँकार, बिन भगतां तैनूं चैन कदे ना आईआ। सचखण्ड खेड़ा भड्ठ दिसे मेरे मीत मुरार, जिस खेड़े तेरा गुरमुख कदे ना जाईआ। अग्गे क्यों सुत्ता पैर पसार, जुग चौकड़ी रही कुरलाईआ। तेरा रूप निराकार, निरवैर तेरी वड्याईआ। तूं शाह पातशाह सची सरकार, इन्साफ़ तेरी सिफ्त सालाहीआ। कलम शाही होई ख़ाकसार, तेरी सार किसे ना पाईआ। तेरा खेल अपर अपार, तेरी खेल विच ख़ुशी मनाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक नर अवतार, सरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सन्त मनी सिँघ दए हुलार, हद्द हदूद पार कराईआ। घर सद करे प्यार, वस्त अमोलक झोली पाईआ। आपणा लद्द सिर ते भार, जगत गठड़ी सीस टिकाईआ। अड्ड हो आप करतार, सरगुण मन्दिर बैठा मुख छुपाईआ। मनी सिँघ करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जिस नूं लभ्भणे गुर पीर अवतार, सो आया सचा माहीआ। जिस बेड़ा लाउणा पार, गुरमुख साचे लए तराईआ। ग़रीब निमाणयां दए सहार, आप आपणे गले लगाईआ। कलिजुग नींह दए उखाड़, सतिजुग साची नींह धराईआ। शाह सुल्तानां करे ख्वार, ग़रीब निमाणयां राज जोग समझाईआ। गुरसिख साचे कर त्यार, त्रैभवन धनी त्रैलोकी दए उलटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तख्तों दए उतार, तख्त निवासी हुक्म सुणाईआ। साची बण आप सरकार, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सन्त मनी सिँघ इक्क समझाईआ। मनी सिँघ समझिआ हरि समझाया, समझ समझ विच रखाईआ। आपणा धन झोली पाया, सच खजाना आप लुटाईआ। आपणा राग कन्न सुणाया, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। साचा बेड़ा बन्नॄ वखाया, समरथ हथ्थ वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए जणाईआ। सन्त मनी सिँघ कर कर ध्यान, नित नवित ख़ुशी मनाईआ। बिन अक्खर होया ज्ञान, निषअक्खर करी पढ़ाईआ। घर मिल्या श्री भगवान, गगन मंडल वज्जी वधाईआ। तन कर विटूह कुरबान, मन आपणा भेंट चढ़ाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, दो जहान तेरी सची शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्ॄाईआ। खुल्ॄिआ भेव पाया अभेव, भेद अभेद जणाइंदा। तूं

१२८०

पारब्रह्म अबिनाशी ठाकर हउँ मंगां साची सेव, सेवक सेवा मंग मंगाइंदा। करोड़ तेतीसा बन्न्हां देवी देव, दर तेरे बन्न्ह बहाइंदा। जो भुल्ले रसना नाउँ तेरा जिहव, कलिजुग अन्तिम फंद पवाइंदा। तेरा धाम अटल सदा निहकेव, निहचल तेरा दर सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सरगुण तेरी सिफ्त सलाह, सरगुण रूप आप सालांहयदा। सतिगुर सचा शहिनशाह, सरगुण सरगुण रिहा समझाईआ। मनी सिँघ मन्न इक्क सलाह, मन मनसा पूरी दए कराईआ। निरगुण हो के बणां मलाह, तेरा बेड़ा दयाँ चलाईआ। जो जन गाए मेरा नाँ, दो जहानां पार कराईआ। सिर रक्खां ठंडी छाँ, एथे उथे होवां सहाईआ। पकड़ बांह फिर छड्डां ना, रीत अवल्लड़ी इक्क रखाईआ। जुग जुग विछड़े वेखां थांउँ थाँ, लक्ख चुरासी अंदर दर दर घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण निरगुण भेव खुल्हाईआ। सन्त मनी सिँघ करे पुकार, प्रभ अगे सीस झुकाइंदा। तूं आदि जुगादि निराकार, निरवैर खेल खिलाइंदा। मैं सरगुण बणया तेरा यार, आपणा पल्लू तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। अन्तिम वेखां तेरा सच सच्चा दरबार, कवण रूप मातलोक लगाइंदा। तेरी जोत मेरा आधार, मेरी जोत तेरा घर सुहाइंदा। एका बख्शश कर मेरे निरँकार, एका आपणी झोली अगे डांहयदा। तूं जोद्धा सूरबीर बलकार, तेरा अन्त कोए ना आइंदा। मैं होका देवां वारो वार, गली गली आप सुणाइंदा। मैं जावां तेरे दरबार, हरि मन्दिर तेरा चरन टिकाइंदा। मैं अनन्दपुर वेखां तेरी गुलज़ार, घर साचा सोभा पाइंदा। तूं देणा दरस दीदार, दर एका मंग मंगाइंदा। अगों बोले शब्दी धार, निरगुण निरगुण हुक्म जणाइंदा। सन्त मनी सिँघ तेरी सुणे ना कोए पुकार, मेरा पड़दा तेरे उप्पर छाइंदा। अन्त फेर आए दूजी वार, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। दिवस दिहाढ़ा कर विचार, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। सन्त मनी सिँघ सच संदेसा, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण आप जणाईआ। निराकार निरवैर पुरख अकाल वटाए वेसा, सिँघ शेर पंज तत्त नज़र ना आईआ। मनी सिँघ नेत्र एका पेखा, दोए लोयण ना कोए वड्याईआ। प्रगट होए माझे देसा, सम्बल रुत आप सुहाईआ। पकड़ उठाए नर नरेशा, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। निरगुण हो हो डंक वजाउणा, शब्द अनादी नाद सुणाइंदा। ब्रह्मंड खण्ड वेख वखाउणा, लोआं पुरीआं पर्दा लांहयदा। एका हुक्म आप वरताउणा, हुक्मी हुक्म सर्ब भुआइंदा। गुरमुख सज्जण माण दवाउणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। ब्रह्मे वेला अन्त कराउणा, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। शंकर आपणी गोद बहाउणा, लहिणा देणा मूल मुकाइंदा। सुरपति राजा तख्तों लाउहणा, सीस

ताज ना कोए टिकाइंदा। ध्रू दरबान ना कोए अख्वाउणा, आप आपणी खेल खिलाइंदा। इक्क इकल्ला हो के आउणा, दूजी धार वेख वखाइंदा। तीजे नैण रूप दरसाउणा, चौथे पद सोभा पाइंदा। पंचम मेला मेल मिलाउणा, छेवें दर आसण लाइंदा। सति सतिवादी संग निभाउणा, अठ्ठां तत्तां बन्धन पाइंदा। नौं दुआरे राह तकाउणा, दसवें सोभा पाइंदा। इक्क इक्क नाल मिलाउणा, दोए दोए वेख वखाइंदा। इक्क तिन्न धार चलाउणा, इक्क चार हट्ट विकाइंदा। इक्क पंज भेव खुलाउणा, इक्क छे जोग कमाइंदा। इक्क सत सतार वजाउणा, शाह सुल्तानां आप उठाइंदा। इक्क अठ्ठ हुक्म सुणाउणा, गुर अवतारां दर मंगाइंदा। सन्त मनी सिँघ तेरा रूप अनूप जोत सरूप तेरे दर मंगाउणा, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। गुरसिखां तेरे नाल मिलाउणा, आपणी हथ्थीं गंढु दिवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, इक्क अठ्ठ अठ्ठ वड्याईआ। निरगुण निरगुण हो उज्यार, निरगुण निरगुण लए बुलाईआ। पहली अस्सू सच विहार, बिवहारी आप कराईआ। सचखण्ड बणाए सच्चा दरबार, लोकमात दए वड्याईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, निरवैर आसण लाईआ। शाह पातशाह बण सच्ची सरकार, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शब्द परवाना देवे एका वार, दूसर एलची नाल ना कोए रलाईआ। सुण संदेसा आउणा चल दरबार, दर दरवाज़ा दए समझाईआ। सम्बल नगर धाम न्यार, गोबिन्द गा के गया अन्तिम माहीआ। आउणा पुछ के साचे यार, कवण कूटे फेरा पाईआ। अगों बोल कहे आप करतार, शब्दी शब्द शब्द जणाईआ। जिस दर चार जुग दे विछड़े गुरसिख बैठे होण मीत मुरार, तिस दर जाणा वाहो दाहीआ। अगे मिले आप निरँकार, बैठा आस तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। सच संदेशा हरि निरँकारा, शब्दी शब्द जणाइंदा। सच सिँघासण सोहे सच्ची सरकारा, तख्त निवासी आसण लाइंदा। मनी सिँघ आउणा चल दुआरा, पुरख अबिनाशी आप सुणाइंदा। अन्तिम करना सच विहारा, भेव अभेद खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त मनी सिँघ आप बुलाइंदा। सन्त मनी सिँघ निरगुण धार, धार धार विच लए अंगड़ाईआ। निउँ निउँ निरगुण कर निमस्कार, निरगुण सीस झुकाईआ। मैं कल्ला किस तऱां आवां तेरे दरबार, तेरी महिमा मैं इक्क इकल्ला कहिण ना जाईआ। एका वर देणा सच्ची सरकार, हउँ भिखक मंग मंगाईआ। सचखण्ड बैठे तेरे गुरसिख दुलार, अठ्ठे पहर ध्यान लगाईआ। मेरा बणया सच प्यार, विछोड़ा झल ना सकां राईआ। रल मिल आईए तेरे दुआर, मेल मिलावा भइया भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणा हुक्म इक्क सुणाईआ। साचा हुक्म इक्क जणा, तेरी ओट रखाईआ। सचखण्ड बैठे तेरा राह रहे राह तका,

तक्क तक्क नैण रहे शरमाईआ। धन्न भाग तूं बणया अन्त मलाह, लोकमात वज्जी वधाईआ। गुरसिख तेरे चरन लैण पनाह, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। तेरी वड्याई तूं बख्शें सदा गुनाह, पतित पापी लए तराईआ। करे प्यार जिउँ पुत्तर मां, पिता पूत गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, असीं आईए चाँईं चाईआ। पुरख अबिनाशी सच संदेशा, त्रैभवण धनी आप जणाईआ। त्रै दिन पहले लिख्या लेखा, दिल्ली दुआरे चरन छुहाईआ। मनी सिँघ तेरा लिख्या लिखे लेखा, लिख लिख पूरा दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दए जणाईआ। हुक्म जणाए श्री भगवान, शब्दी शब्द सुणाया। चल के आउणा बण नादान, बाली बुध इक्क वखाया। सरन सरनाई मंगणा दान, निवण सु अक्खर इक्क समझाया। पारब्रह्म प्रभ देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। गुरमुख पंज नाल लिआउणे नौजवान, साचा हुक्म आप फ़रमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए जणाया। सन्त मनी सिँघ हो त्यार, शब्दी शब्द जणाईआ। पाल सिँघ नाल सच प्यार, प्यार प्यार नाल वटाईआ। मनजीता मन दए आधार, एका रंग वखाईआ। जगत जगदीसा होए ख़बरदार, दादे पोतरे एका गंढु पवाईआ। तेग़ बहादर तिक्खी धार, ज़ुलम कटार सीस टिकाईआ। धरती रोवे ज़ारो ज़ार, छोटे बाले जो बैठे सीस झुकाईआ। गोबिन्द मंग मंगी एका वार, तेरा लहिणा तेरी झोली पाईआ। पुरख अबिनाशी कर्ज़ा दए उतार, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी धार चलाईआ। आउणा चल सचे दरबार, साची सिख्या इक्क समझाईआ। नाल लिआउणा विछड़या यार, बाल बाले दए वड्याईआ। चेत सिँघ दा सुत दुलार, सवरन मिले वड्याईआ। पंचम राह तक्के कवण वेला मिले मीत मुरार, जुग चौकड़ी बैठा राह तकाईआ। धरती उप्पर चुक्कया भार, पाताल पाताल सोभा पाईआ। त्रैगुण मारी मार, माया मोह ना सके राईआ। अन्तिम कीता कौल इकरार, बल बावन भुल ना जाईआ। लहिणा दिता कर्ज़ उतार, देणा सभ दी झोली पाईआ। अन्त खड़या सचखण्ड सच्चे दरबार, मेल मिलावा सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, दर आउणा चाँईं चाईआ। सन्त मनी सिँघ चढ़या चाअ, गुरमुखां आप सुणाइंदा। उठो सिखो पइए राह, पुरख अबिनाशी राह तकाइंदा। दो जहानां बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। चलो रल के दर्शन आईए पा, बिन दरस चैन ना आइंदा। पिछली हरस आईए मिटा, अग्गे हिरस ना कोए वधाइंदा। जिस फर्श उत्ते आपणा तन आए रुला, तिस फर्श उत्ते साहिब सच्चा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। सिँघ पाल कर त्यारी, दर साचे ख़ुशी मनाइंदा। बाला उँगली नाल लाए वारो वारी, आप आपणा

१२८२

पल्लू फड़ाइंदा। सिँघ सवरन कर निमस्कारी, सतिगुर साचा मात बुलाइंदा। करे खेल अगम्म अपारी, पंचम एका रंग रंगाइंदा। साचे लाल हरि दया धारी, लाल लालां नाल मिलाइंदा। सिँघ गुरदयाल अन्त आई वारी, सतिगुर गोद आप सुहाइंदा। चार जुग दी लग्गी यारी, पाताल आकाश आप निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दर आप सुहाइंदा। निरगुण ख़ुशी मनाउँदा, उठे सिख बलकार। सचखण्ड सोभा पाउँदा, जिथे वसे भगत कुमार। थिर घर आपणा कुण्डा आपे लाहउँदा, खुल्ले रहिण किवाड़। निराकार निरवैर एका नज़री आउँदा, चारों कुण्ट उज्यार। तेई अवतार दस गुरु अगे हो हो हथ्थ मिलाउँदा, मेल मिलावा सज्जण यार। सन्त मनी सिँघ तेरा पीआ तेरा राह तकाउँदा, लोकमात लै अवतार। गीत गुरसिखां दे गाउँदा, दूसर होर ना कोए विहार । लक्ख चुरासी कोलों आप शर्माउँदा, आपणा मुख ना सके वखाल। आपणा दुःख गुरसिखां झोली पाउँदा, विछोड़ा झल्ले ना सांझा यार। साचा सुख इक्क उपजाउँदा, जिस दे चले नाल नाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आप निरँकार। पुरख अकाल एका तुट्ठे, श्री भगवान दया कमाईआ। सन्त मनी सिँघ एका उठे, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। गोबिन्द मिले साचा सुते, मेल मिलावा चाँईं चाईआ। लोकमात सुहाउणी साची रुत्ते, रुत रुतड़ी वेख वखाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुते, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरगुण धार चलाईआ। गुर गोबिन्द साचा मेला, दर साचे आप कराइंदा। रंगे रंग गुरु गुर चेला, साचा रंग इक्क वखाइंदा। देवे वड्याई सज्जण सुहेला, सगला संग रखाइंदा। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, थित वार ना कोए लिखाइंदा। आदि जुगादि वसे सदा नवेला, भेव अभेद आप छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेस वटाइंदा। सन्त मनी सिँघ बणया पान्धी, आपणा पन्ध मुकाईआ। कलिजुग वेखे अन्धेरी आंधी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत जगत वासना झूठी नहांदी, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। माया ममता जगत फास बणया फांदी, कोई फंद ना सके तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह दए वखाईआ। साचा राह हरि वखाया, आप आपणी किरपा धार। सन्त मनी सिँघ चल के आया, पंचम कर प्यार। दूर खलोता रिहा सीस झुकाया, दोए जोड़ करे निमस्कार। धन्न सो वेला तेरा दरसन पाया, चढ़या इक्क ख़ुमार। गुरमुख तेरा नज़री आया, सोहया बंक दुआर। हरिसंगत साचा मेल मिलाया, ऊँच नीच कर ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हउँ आए चल दुआर। पुरख अबिनाशी दया कमा, आपणीआं भुजां आप उठाईआ। आपणी गोद लए बहा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आप जणाए आपणा नाँ, लोकमात

गुण जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे अंग लगाईआ। लग्गयां अंग वज्जा मृदंग, मृदंगा नाम वजाया। मिल्या मेल सूरे सरबंग, घर मन्दिर सोभा पाया। गृह उपज्या एका अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाया। दर चढ़या साचा चन्द, रवि ससि नज़र ना आया। कन्न सुणया एका छन्द, गीत सुहागी गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए वखाया। पुरख अबिनाशी खेल वखाउणा, सन्त कन्त दए समझाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड आप उठाउणा, लोआं पुरीआं डेरा ढाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव पन्ध मुकाउणा, अन्तिम लहिणा दए चुकाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग लेखा पूर कराउणा, लेखा लेख ना कोए वखाईआ। गोबिन्द विचोला इक्क बणाउणा, एका वार दए सलाहीआ। जो घड़या भन्न वखाउणा, एका वार धक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। मंगो वर आए दर, आस आसा पूर कराईआ। निर्भय हो चुकाओ डर, भय अवर ना कोए रखाईआ। एका ओट साचे हरि, दूसर ओट ना कोए जणाईआ। एका कोट साचा घर, सचखण्ड दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। आपणा भेव अन्त खुल्हाउणा, एका वार समझाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट मिटाउणा, जूठा झूठा नाता तोड़ तुड़ाइंदा। सच सुच्च मार्ग लाउणा, एका राह वखाइंदा। गुरमुख साचे मेल मिलाउणा, आप आपणा मेल मिलाइंदा। पहली चेत्र दिवस सुहाउणा, सच अदालत आप कमाइंदा। गोबिन्द सालस इक्क बणाउणा, एका हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म सिंघ पाल, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। छोटे बाले बण दलाल, मनजीते भेव चुकाईआ। जगदीसे चले नाल नाल, सगला संग निभाईआ। सवरन साचे ढांचे ल्या ढाल, नाम कसवटी एका लाईआ। गुरु बणाया गुरदयाल लाल, गुरमुख मुखड़ा मुख सालाहीआ। दर मंगाए दीन दयाल, कलिजुग आपणी रुत्त सुहाईआ। वेला अन्त कोई कर लउ सवाल, वेला गया हथ्थ ना आईआ। फिर थाउँ थाई दयाँ बहाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपणी घालण लओ घाल, सेवक साची सेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप सुणाईआ। सिंघ पाल कर निमस्कार, एका मंग मंगाइंदा। ब्रह्म पुरी तेरा धाम न्यार, बिन पारब्रह्म ना सोभा पाइंदा। एका मंगां तेरी अमृत धार, अठ्ठे पहर मुख रखाइंदा। एका जल्वा तेरा दीदार, नूर नूर विच टिकाइंदा। विष्नूं आवे जावे वारो वार, नित नवित मेल मिलाइंदा। अगे चले नवीं धार, पिछली कीती तेरी उलटाइंदा। इक्क वार आवां रोज़ तेरे दरबार, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए वेख वखाइंदा। पुरख अबिनाशी

दयानिध, आपणी दया कमाईआ। गुरमुख कारज करे सिद्ध, करता कीमत आपे पाईआ। तेरे मिलण दी साची बिध, आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरसिख बण के करीं ना ज़िद, दर तेरे आवां चाँईं चाँईंआ। तूं चादर बणया हिन्द, तेरा पर्दा बणे सच्चा शहिनशाहीआ। तेरी गोबिन्द बणया बिन्द, पुरख अकाल दए वड्याईआ। तेरा झिरना झिरे मेरा अमृत सागर सिन्ध, अठ्ठे पहर धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी आसा पूर कराईआ। सिँघ मनजीता छोटा बाला, बाली बुध ख़ुशी मनाइंदा। धन्न भाग दिता राह सुखाला, राह विच ना कोए अटकाइंदा। मेरा तुट्टा जगत जंजाला, तेरा जंजाल मोहे भाइंदा। मैं आउँदा जगा के आया बटवारा सिँघ पाला, तेरे तेरे नाल रलाइंदा। मेरी प्रीती निभे तेरे नाला, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। तूं चली अवल्लड़ी चाला, तेरा भेव कोए ना पाइंदा। मैं तेरी पाई माला, सोहँ तेरा रूप समाइंदा। मैं वेखी तेरी सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। मेरा इक्को इक्क सवाला, सवाल तेरे अग्गे रखाइंदा। तेरे सिख ना खाए काल महाकाला, तेरे अग्गे झोली डांहयदा। साढे तिन्न हथ्थ कुल्ली वखा के आया जगत जहाना, गुरमुख विरला बूझ बुझाइंदा। जिस ने सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाया सच तराना, मात गर्भ फेर ना आइंदा। जे तुट्ठां दे दातां, दूजी मंग ना कोए मंगाइंदा। तेरा झुलदा रहे निशाना, हउँ सेवक वेख वखाइंदा। गुरसिख बन्नृण तेरे नाम दा गाना, दूजा सगन ना कोए मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ साची झोली डांहयदा। पुरख अबिनाशी दीन दयाल, आपणी दया कमाईआ। मनजीत तेरी सुरत संभाल, आप आपणा करे सहाईआ। तूं दस्सया राह सुखाल, जग रीती मात चलाईआ। गुरसिख विंगा होए ना वाल, जिस मिल्या सच्चा माहीआ। लक्ख चुरासी तोड़े जंजाल, राए धर्म फंद कटाईआ। सचंखड दुआरे दए बहाल, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। सिँघ जगदीश आ दुआरे, हस्स हस्स ख़ुशी मनाइंदा। वाह वा तेरे खेल न्यारे, भेव कोई ना पाइंदा। शंकर वरगे फड़ उतारे, सीस ख़ाक ना कोए रखाइंदा। बाशक तशक लथ्थे शंगारे, कंठ माला ना सोभा पाइंदा। हथ्थों त्रिशूल परां मारे, डिगी फेर ना कोए उठाइंदा। कलिजुग आया अन्त किनारे, तेरी खेल वेख वखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड लैण हुलारे, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। रवि ससि करन पुकारे, धरत धवल सर्ब कुरलाइंदा। राज राजान मारन नाअरे, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। शाह सुल्तानां झण्डे पाड़े, सच निशान ना कोए झुलाइंदा। अन्तिम दिन आए माढ़े, साचा राह ना कोए वखाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मैं आया तेरे दुआरे, एका मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ख़ाली झोली अगे डांहयदा। साची

१२८५

झोली रिहा वखा, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। एका भिच्छया देणी पा, वस्त अमोलक दे जणाईआ। तेरा झुलदा रहे निशां, चवीं हथ्थ वड वड्याईआ। साढे तिन्न हथ्थ करनी कल्याण, जो आए तेरी सरनाईआ। तूं करना सच न्यॉं, साचे तख्त बैठ सच्चे शहिनशाहीआ। गुर अवतारां फड़नी बांह, जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। वेखीं अगों कर ना देवीं ना, बेपरवाह मेरे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच निशाना हथ्थ उठाईआ। सच निशाना तेरा झुल्ले, लोकमात वज्जे वधाईआ। हरिसंगत तेरी फले फुले, पत्त डाल्ही आप महिकाईआ। गुरसिख तेरा कदे ना रुले, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। भाग लगाउणा साची कुले, जो जन तेरा दरसन पेखे चाँईं चाँईंआ। हरि भगती बूटा कदे ना हुल्ले, सिम्मल रुक्ख ना रूप वटाईआ। तेरा सिख तेरे तोल तुले, दूसर हट ना कदे विकाईआ। तूं आपणे भण्डारे देणे खुल्ल्हे, अतुट तेरी वड्याईआ। गुरसिख भुल्ले तूं सदा अभुल्ले, अभुल देणी ना कदे सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चवीं हथ्थ झुले निशाना, करे खेल श्री भगवाना, कलिजुग अन्तिम वण्ड वंडाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणा हुक्म जणाइंदा। चवीं हथ्थ झुलदा रहे निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी मन्ने आण, साचा हुक्म मनाइंदा। चार जुग रहे निशान, जुग चौकड़ी बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हुक्म वरताइंदा। गुरु दुआरे आया गुरदयाल, दोए दोए करे निमस्कारा। चौथे जुग ल्या भाल, विछड़या मीत मुरारा। आप सुणाए मुरीदां हाल, आपणा बोल बोल करारा। बल बावन खेल महान, खेले खेल अगम्म अपारा। मैं आपा कीता कुरबान, तूं खोल्ह्या हट्ट किवाड़ा। मैं बणया बाल नादान, तूं हुक्मी हुक्म कीता इक्क वरतारा। मैं सितल लोक वेख्या मार ध्यान, कवण दुआरे तेरा महल्ल मुनारा। चौथे जुग होया परवान, माणस जन्म दीआ आधारा। आपणी किरपा कर गुण निधान, कीता सच प्यारा। मेरा चौथे जुग लेखे लाया कीता दान, लंगर चलाया अपर अपारा। तेई मग्घर दिवस महान, पुरख अबिनाशी करया खेल न्यारा। वीह सौ सोलां बिक्रमी कर परवान, लोह चुर पुट लाया मिटी गारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे पावणहारा सारा। धन्न भाग जे पाई सार, आपणा बिरद कमाया। तेरा लहिणा देणा बड़ा औखा मेरे यार, जुग जुग विछोड़ा सहि ना सकां राया। कलिजुग अन्तिम मिल्या आपणी धार, धार धार विच मिलाया। मैं सुणया तूं लाउणा सच दरबार, पहली चेत्र दिवस सुहाया। तूं शाह पातशाह पातशाहां दा शाह सिक्दार, शहिनशाह तेरा नाउँ वड्याआ। छत्ती जुग नानक पाई तेरी सार, चवी हथ्थ निशान फेर चढ़ाया। छत्ती फुट्ट जगत विहार, फुट्टां नाल जगत नाप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१२८६

किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ निउँ निउँ सीस झुकाया। चार जुग दा भूपत राजा, तेरे अगे मंग मंगाइंदा। तूं शाह पातशाह बण बण करे काजा, दर साचा इक्क सुहाइंदा। तूं शब्द अगम्मी मारे वाजां, अनादी नाद सुणाइंदा। तूं भगतां जुग जुग रक्खे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सन्त सुहेला फिरे भाजा, आपणी सेव कमाइंदा। अन्तिम प्रगट होइउँ देस माझा, सम्बल आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, एका मंग मंगाइंदा। तूं राजा मैं दरबारी, तेरी सेवा सच कमाईआ। मेरी नानक गोबिन्द नाल बज्झी यारी, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। झल्ले आई तेरी वारी, डल्ले देणी इक्क सलाहीआ। गोबिन्द आए तेरे दुआरी, दर साचे मेरे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं एका वस्त मंग मंगाईआ। पहली चेत्र गोबिन्द आउणा, लै के धुर परवाना। कवण दुआरे दस्स बहाउणा, कवण तेरा टिकाणा। छत्ती फ़ुट्ट निशान झुलाउणा, नानक देवे धुर परवाना। छत्ती जुग भेव खुल्हाउणा, खोल्हे भेव गुण निधाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बालक मंग मंगाना। मंगां मंग दे के ज़ोर, टालयां टल कदी ना जाईआ। दर आयां जे देवें होड़, तेरी करे ना कोए वड्याईआ। टुट्टी जे ना देवें जोड़, टुट्टी गंढुणहार ना फेर अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१२८७ कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी कहे दस्स, की कुछ तेरी मंग। तेरे अन्तर जावां १२८७

वस, चाढ़ां आपणा रंग। तेरे कोल आवां नस्स, माणां सेज पलँघ। आपणा मार्ग देवां दस्स, कट्टां भुक्ख नंग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे हुक्म सूरा सरबंग। आपणी ख़ातर ना कोई मंग, घाटा कोई नज़र ना आईआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, तेरी सच्ची शहिनशाहीआ। छत्ती जुग तेरा मृदंग, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गाईआ। तेरे गृह इक्क अनन्द, मंगल तेरी वड्याईआ। तेरा नाम सुहागी छन्द, तेरा गीत सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा दुआरा तोहे सोभा पाईआ। तेरा दुआरा होए छत्ती फुट्ट, छत्ती छत्ती नाल मिलाईआ। सत्तर बहत्तर चुहत्तर तेरी नींह लैण पुट्ट, चौदां चौदां सेव कमाईआ। चार कुण्ट पए लुट्ट, मच्चदी जाए दुहाईआ। गोबिन्द बूटा जाए फुट्ट, जो नीहां विच गया दबाईआ। तेरा सिख सोया जाए उठ, जगत नींदर दए मिटाईआ। छब्बी पोह देवे भण्डारा अत्तुट, आपणे हथ्थ वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छत्ती छत्ती तेरी लकीर, सिँघ गुरदयाल मंग मंगाईआ। त्रेता द्वापर कलिजुग बणया रहे फ़कीर, सतिजुग वेला चेते कराइंदा। तेरे नाम दी मार ज़ंजीर, आपणे तन बन्धन पाइंदा। एका रक्खी आस अन्त चोटी चढ़ना अख़ीर, साचा डण्डा एका हथ्थ फड़ाइंदा।

तूं पीरन वड पीर, बेनज़ीर तेरी नज़र ना कोए बदलाइंदा। तेरे हथ्थ तेरी शमशीर, तेरी शरअ ना कोए वखाइंदा। छत्ती राग वहावण नीर, छत्ती छत्ती घेरा पाइंदा। फेर वखाई आपणी तस्वीर, पन्थ ख़ालसा आप उठाइंदा। पहली चेत बदल तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। जिस नूं कहिन्दे उच्च दा पीर, बण हकीर सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। सत्तर सिख रहिण त्यार, सतिगुर पूरा आप जणाईआ। इक्क इक्क इट्ट देण उखाड़, इट्ट इट नाल रहिण ना पाईआ। छत्ती छत्ती कर प्यार, छत्ती छत्ती बन्धन पाईआ। बहत्तर बहत्तर देवे धार, धार धार विच जणाईआ। चुहत्तर चुहत्तर ल्ए उठाल, सति सति सति सति सेव कमाईआ। चौदां चौदां कर बहाल, गलों ज़ंजीर दए कटाईआ। सचखण्ड बणा सच्ची धर्मसाल, लोकमात दए सुहाईआ। उप्पर बैठ दीन दयाल, साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। गोबिन्द आए चल के लाल, पहली चेत रुत सुहाईआ। औंदा जांदा किसे ना दिसे करे खेल कमाल, कमली वाला इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तर बहत्तर चुहत्तर छब्बी पोह दए प्रगटाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, करे खेल वाली दो जहान, छत्ती दिवस सेव कमाईआ।

★ ३ अस्सू २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★ ६

१० सच्च निशाना साची धार, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। निरगुण लै चवीआं अवतार, चवीं हथ्थ बणत बणाईआ। चारों कुण्ट बोल जैकार, नाअरा एका वार सुणाईआ। धूंआँधार वेख संसार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। वरन बरन वेख वपार, नाम वणज इक्क कराईआ। मन्दिर मस्जिद हट्ट वेख गुरदुआर, साचा मन्दिर इक्क खुल्हाईआ। तीर्थ तट वेख किनार, सच सरोवर इक्क नुहाईआ। इष्ट देव घर घर होए निमस्कार, नमो एका इष्ट कराईआ। गृह गृह भूपत भूप दिसण सिक्दार, इक्क सिक्दारी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना इक्क झुलाईआ। सच निशाना सत रंग, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। मेहरवान सूरा सरबंग, महिबान खेल खिलाइंदा। नाम वजाए इक्क मृदंग, ब्रह्मण्ड खण्ड सुणाइंदा। आपे पाए आपणी वण्ड, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, सो पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। निमस्कार करन सूरज चन्द, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव गाए छन्द, शब्द अनादी नाद अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच निशाना इक्क वखाइंदा। सच निशाना एका भेख, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। चार जुग दी मिटे रेख, रेखा आपणी आप बदलाइंदा। करे खेल आपणे देस, साचे देस सोभा

पाइंदा। नर नरायण बण नरेश, निरँकार हुक्म चलाइंदा। भाग लग्गा माझे देस, महिव आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना आप झुलाइंदा। सच निशाना जाए झुल, झूला एका नाम लगाईआ। करे खेल साहिब अभुल्ल, भुल कदे ना जाईआ। जिस उपजाई आपणी कुल, कुलवन्ता वेख वखाईआ। पावणहारा आपे मुल्ल, साचे हट्ट आप विकाईआ। साचा हट्ट जाए खुल्ल, पुरख अबिनाशी सेव कमाईआ। गुरमुख सज्जण ना जाए रुल, कीमत करता आपे पाईआ। आदि जुगादि रहे अडुल्ल, अडोल वडी वड्याईआ। सच दुआरा आपे खोल्ह, आपे वेखे चाँईं चाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाने इक्क समझाईआ। सच निशाने तेरा रंग सति, सतिवादी आप रंगाया। तेरे अंदर कमलापति, जोती जोत जोत समाया। तेरे अन्तर खेल समरथ, निरगुण आपणा आप कराया। तेरी वण्डण चवी हथ्थ, चार जुग भेव चुकाया। चवीआं अवतार हो प्रगट, परम परमात्म खेल खिलाया। आपणा मार्ग आपे दस्स, दहि दिशा वेख वखाया। निरगुण सरगुण अंदर आपे वस, निरगुण बैठा मुख छुपाया। आपणी करे पूरी आस, आसा आसा विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना इक्क सालाहया। सच निशाना कर त्यार, त्रैगुण अतीता सेव कमाईआ। मित्र मिले मित्र प्यार, प्यार प्यार नाल प्रनाईआ। सत्थर वेख्या तेरा यार, यारड़ा सत्थर आप हंढाईआ । राह तक्कां एका वार, एका नैण उठाईआ। कवण मेला होए सच दरबार, दर दरवाज़ा दए खुल्हाईआ। तेरा जल्वा वेखां अपर अपार, नूरी मुखड़ा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप समझाईआ। धुर फ़रमाना सच निशान, हरि सच्चा सच जणाइंदा। तुध बिन सोहे ना कोए राज राजान, शाह पातशाह तेरा राह तकाइंदा। तुध बिन मन्ने ना कोए आण, निउँ निउँ सीस ना कोए झुकाइंदा। तुध बिन हुक्म ना करे कोए परवान, हुक्म हाकम ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव हरि निरँकार, सति सतिवादी आप खुल्हाईआ। शाह सुल्ताना हो त्यार, मेहरवाना वेस वटाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, आदि जुगादि भेव ना राईआ। जुग जुग सुहाए बंक दुआर, जिस दुआरे फेरा पाईआ। जिस जन करें परवान, तिस देवें माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दे वखाईआ। तेरा गुण साची धार, हरि सज्जण आप जणाइंदा। तुध बिन बणे ना कोई सरकार, शाह पातशाह ना कोए अख्वाइंदा। तुध बिन बणे ना कोई सेवादार, चाकर रूप ना कोए वटाइंदा। तुध बिन कोई ना बणे हुक्मरान, हुक्मी हुक्म ना कोए सुणाइंदा। तुध बिन कोई ना करे किसे पछाण, सीस सीस ना कोए झुकाइंदा। तेरा मेला विच जहान, पुरख अबिनाशी आप जणाइंदा। साहिब

दयाल ठाकर स्वामी मिले आण, ठोकर फेर ना कोए लगाइंदा। दर दुआरे देवे माण, अभिमान नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाना आप समझाइंदा। समझणहारे जाणा समझ, समझ समझ विच टिकाईआ। निरगुण कहिणा निरगुण रमज़, निरगुण इशारा रिहा जणाईआ। निरगुण रोग सुख निरगुण मर्ज़, निरगुण मरम पट्टी आप लगाईआ। आपणा पूरा करन आया फ़र्ज़, फ़रद जुरम आपणे उप्पर आप लगाईआ। जन भगतां जो होया हर्ज, कलिजुग आपणा धक्का लाईआ। जगत प्यार चढ़या कर्ज़, मकरूज होई ख़ुदाईआ। काल नगारा रिहा गरज, चार कुण्ट शनवाईआ। धरत धवल रही लरज़, धीर धीर ना कोए धराईआ। अवतार गुर भगत सन्त जीव जंत गए वरज, मार्ग पन्थ जगत वखाईआ। गोबिन्द सूरा अन्तिम कल एका वार आउणा चल करे अरज़, अर्ज़ी आपणी हथ्थीं पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर चार जुग दी फोल फ़रद, अगे दए टिकाईआ। नेत्र पेख पुठी होई नरद, सार पाशा खेल खिलाईआ। खेलणहारा एका मर्द, मरदानगी आपणे हथ्थ रखाईआ। अस्सू तिंन सभ नूं पैणी दर्द, निम्मी निम्मी आप लगाईआ। चार कुण्ट होई नपड़द, पर्दा उत्ते ना कोई पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क निशाना लए वखाईआ। सत रंग निशाना करे फ़रयाद, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। चवीं हथ्थ बणी मेरी याद, छत्ती फुट्ट रूप वटाइंदा। जिस दुआरे करना लाड, सो दुआरा मोहे भाइंदा। चारों कुण्ट बणे हाद, छत्ती जुग राह तकाइंदा। अंदर वज्जे तेरा नाद, भेव कोए ना पाइंदा। चार जुग दे विछड़े मेले साध, सन्त रूप जो तैनूं ध्यांअदा। मेरा वसे आंढ गवांढ, उच्च निशाना एका मंग मंगाइंदा। तेरे चरनां हेठ ब्रह्मांड, तूं स्वांगी वरच्छया सांग, रूप रंग नज़र कोए ना आइंदा। नानक गोबिन्द रक्खी तांघ, वेद व्यासा थक्का मांद, जुग चौकड़ी बीती जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा देवीं मेरा साथ, साची वस्त तेरे हाथ, ख़ाली झोली अग्गे डांहयदा। झोली डाहे उच्च निशाना, निउँ निउँ करे निमस्कार। तूं साहिब सच्चा बणया दाना, अतुट्ट तेरा भण्डार। जुग जुग करें ठांडा सीना, निरगुण सरगुण लै अवतार। तेरा नाउँ रंग एका भीन्ना, उतर ना जाए दूजी वार। तेरे दुआरे मरना जीणा, आवां जावां वारो वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त झोली डार। साची वस्त झोली पा, बणया दर भिखारी। तूं शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह, वड तेरी सिक्दारी। निरगुण निरगुण करे न्याँ, सरगुण बणया खेल खिलाड़ी। कलिजुग अन्तिम निहकलंक रखाए नाँ, निरगुण जोत इक्क निरँकारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे चरन जावां बलिहारी। वर दे दे मेरी दात, तुध अग्गे झोली डाहीआ। तेरे भगत मेरा साथ, बिन भगतां मेरा होर ना कोए सहाईआ। ना कोई मेरी ज़ात ना कोई पात,

एका तेरे रंग समाईआ। ना किनारा ना कोई घाट, ना कोई पत्तण आसण लाईआ। ना कोई मन्दिर मस्जिद गुरदुआर, मठ शिवदुआला ना कोए वड्याईआ। चार दीवार ना कोए हाट, तक्कड़ तोल ना कोए तुलाईआ। एका मंगां आपणी दात, निउँ निउँ ढह ढह सरनाईआ। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, मेरा रंग दे चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी पूरी आस कराईआ। पूरी आस देणी कर, दीन दयाल गुसांईआं। इक्क इकल्ला मैं रिहा डर, कूक कूक दयाँ दुहाईआं। आपणे गुरमुख आपणे सद घर, मैं उठ उठ औसीआं पाईआं। छत्ती जुग तेरा भाणा ल्या जर, हुण झल्लीआं ना जाण जुदाईआं। निर्भय हो के मैं तेरे अग्गे गया अड़, आपणीआं दोवें भुजां उठाईआं। तेरे भगतां आपणी हथ्थीं चरन लवां फड़, मेरीआं जुग जुग दीआं मिटण लग्गीआं शाहियां। मैं ख़ाली मुड़ के ना जाणा तेरे दर, दर तेरे एका आस तकाईआ। मेरा दे दे मैनूं वर, अभुल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं बैठा आस तकाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, सच निशाने आप जणाइंदा। करां खेल खेल महान, भेव अभेद भेव खुल्हाइंदा। एका वार देवां एका दान, एका हुक्म सुणाइंदा। करां खेल दो जहान, दोए दोए धार आप चलाइंदा। पहलां देवां गोबिन्द माण, जिस आपणे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। साचा पर्दा खोल्ह भगवान, हुक्मी हुक्म जणाईआ। गोबिन्द सूरा मिले आण, अस्सू तिन्न वडी वड्याईआ। आपणी मंग मंगे दान, एका वार झोली दयाँ भराईआ। इक्क दूजे दी करावां आप पछाण, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। जिस बाले कीते कुरबान, तिस लवां फेर उठाईआ। उठ जोधे वेखो मार ध्यान, पुरख अबिनाशी लई अंगड़ाईआ। छोटे बाले वेख नादान, सच निशान रहे झुलाईआ। जगत जगदीश कर परवान, परम पुरख खेल खिलाईआ। मनजीत जितया दो जहान, जित आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। गोबिन्द आवे चढ़े चा, मिले मेल भगवाना। एका वेखे सच्चा थाँ, साचा मन्दिर इक्क सुहाना। एका बैठा शहिनशाह, पातशाह नौजवाना। एका हुक्म रिहा वरता, धुरदरगाही धुर फ़रमाना। एका तख़्त रिहा हंढा, भूपत भूप राज राजाना। एका ताज सीस रिहा सुहा, पंचम पंच पंच प्रधाना। गुर अवतारां पीर पैग़म्बरां देवे सच सलाह, सन्तां भगतां सुणाए नाम तराना। कलिजुग करे सच न्याँ, पुरख अबिनाशी हो मेहरवाना। सभ दा लहिणा दए मुका, जगत झेड़ा आप चुकाना। गोबिन्द दर लए बुला, देवे शब्द परवाना। सत रंग निशाना दए झुला, जोद्धा सूरबीर मर्द मरदाना। तीर तुफंग तुरंग लए दौड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे दो जहानां। गोबिन्द आए दर दर परवान,

१२६२

दरदी दर्द दर्द वण्डाईआ। पूर्ब वेखे मार ध्यान, लहिणा लेखा दए समझाईआ। पूत सपूता चतुर सुजान, सुघड़ दए नाम वड्याईआ। भाणा मन्नया साची आण, सीस सीस टिकाईआ। अन्तिम मंगया एका दान, सत्थर सेज यार हंढाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। तेरा सत्थर करां परवान, तेरी काया सेज सोभा पाईआ। तेरे अंदर वड़ां आण, रूप रंग तुध बिन अवर ना किसे दसाईआ। निरगुण रूप बणया हुक्मरान, सरगुण साचा हुक्म मनाईआ। अंदर वड़ करां पछाण, भुल कदे ना जाईआ। एका देवां सच्चा दान, साची दात झोली पाईआ। एका डंका वज्जे दो जहान, तेरी नौबत नाम वजाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे गान, शरअ शरीअत ना कोए वखाईआ। कलिजुग झूठी मेट दुकान, सच भण्डार इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। गोबिन्द अन्तर तेरा मेला, हरि जू हरि हरि आप कराउणा। लेखा जाण गुरु गुर चेला, गुर चेला खेल खिलाउणा। आपणा धाम दस्स नवेला, निरगुण इक्क इकेला फेरा पाउणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप मनाउणा। गोबिन्द सूरा सीस झुका, एका वार मंग मंगाईआ। आपणा लेखा दए समझा, तेरा लेखा लिखण पढ़न विच ना आईआ। आपणा वेस दे वखा, जिस दुआरे डेरा लाईआ। आपणा भेख दे जणा, कवण वेस मात वटाईआ। कवण सनेहुड़ा देवें आ, मेरे साहिब सच्चे माहीआ। कवण खेड़ा दएँ वसा, होए नूर रुशनाईआ। कवण झेड़ा दएँ मुका, लुट्टी जाए लोकाईआ। कवण गेड़ा दएँ दवा, लक्ख चुरासी लड्ड भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दे खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी खोल्हे भेव, आपणी दया आप कमाइंदा। तेरी लगावां आपणी सेव, आपणी सेवा तेरे नाल कमाइंदा। तेरा गुण रसना जिहव, आपणी शब्दी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर आप समझाइंदा। आपणा घर आप बणाउणा, आपणी सेवा आप कमाईआ। आपणा दीप आप जगाउणा, आपे करे सच रुशनाईआ। आपणे मन्दिर आप टिकाउणा, आपे वेख वखाईआ। आपणे घर आपे गाउणा, आपे ख़ुशी मनाईआ। आपणी सेजा आपे सौणा, आपे सोभा पाईआ। आपणा दरसन आपे पाउणा, आप आपणा वेख वखाईआ। आपणा खेल आपे करे जो हरि जू भाउणा, दूसर संग ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। तेरा वरते हुक्म निरँकार, निरँकारी खेल कराया। तूं निरगुण लै अवतार, सरगुण आस पूर कराया। तेरा वसे धाम न्यार, सम्बल नाउँ रखाया। गुरमुखां करें प्यार, गुरसिख गोद बहाया। सन्त भगत लएँ उठाल, आपणा मेल मिलाया। लेखा जाणें शाह कंगाल, दीन दयाल दया कमाया। तूं मुरीदां सुणें हाल, मुर्शद बण बेपरवाहया। तेरा वज्जे एका ताल, सुणे सर्ब ख़ुदाया।

तूं सभ नूं करें बेहाल, तेरा अन्त किसे ना पाया। तूं चलें अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाया। सत रंग निशाना लएँ वखाल, कलिजुग वेला अन्त जणाया। गुरसिख सुहेले आपे करे भाल, लक्ख चुरासी विचों लए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं सदा सद तेरी सेव कमाया। तेरी सेव सुत दुलार, हरि साचा आप लगाईआ। नींह रक्खां तेरी अपर अपार, चार जुग ना सके कोई उखड़ाईआ। माणस देह नौं दुआर, नव नौं खण्ड वेख वखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ महल मनार, जगत मनारा दए समझाईआ। तेरी सेवा ला चार, दो दो वण्ड वंडाईआ। दो धरनी पैज देण संवार, दो ब्रह्मण्ड करन रुशनाईआ। दोहां विचोला बणे आप निरँकार, आपणी सेवा आप लगाईआ। सेवा करे सच्ची संसार, अभुल भुल कदे ना जाईआ। धाम बणाए इक्क न्यार, मन्दिर मस्जिद मठ गुरदुआर ना कोए वड्याईआ। जिस घर बहे निरँकार, सो दर सोभा पाईआ। जिस दर गुरु मिले करतार, गुर करतार एका रंग समाईआ। सो धरनी रहे जुग चार, चार जुग गुर अवतार सभ निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस घर आए तेई अवतार, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जिस घर आए भगत करन निमस्कार, सो घर सच्चा सोभा पाईआ। जिस गृह पीर पैग़म्बर करन सलाम, सजदा सीस जगदीस झुकाईआ। जिस घर दरस पायण दस गुर जायण बलिहार, निरगुण निरगुण निरगुण गुण गाईआ। जिस गृह लग्गे सच दरबार, सो घर सचखण्ड रूप वटाईआ। जिस तख्त बहे आप निरँकार, सो तख्त उलट ना जाईआ । अस्सू तिन्न वीह सौ चार बिक्रमी पहला कीता विहार, घनकपुर नींह रखाईआ। आर पार दिता उजाड़, वसदा नज़र कोए ना आईआ। फड़ फड़ बाहों दए उठाल, सोया कोए रहिण ना पाईआ। सम्मत अठारवें हो हुश्यिार, आपणी बणत आप बणाईआ। करे खेल अगम्म अपार, रूप अनूप आप वटाईआ। चवी हथ्थ निशान सुण पुकार, छत्ती छत्ती दए सलाहीआ। छत्ती चार बणे मनार, जगत मनारा इक्क वड्याईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। सतिजुग दया कमाए दीन दयाल, चवीं चवीं कर कुड़माईआ। त्रेता लेखा जाणे सदा कृपाल, बीस बीस नाल मिलाईआ। द्वापर वेखे आप धर्मसाल, सोलां सोलां वज्जे वधाईआ। कलिजुग खाए ना अन्तिम काल, बारां बारां सोभा पाईआ। चवी वीह रलाए नाल, सोलां बारां बन्धन पाईआ। बहत्तर भगत लए उठाल, लोकमात कर रुशनाईआ। साची सेवा दए वखाल, सेवक सेवा इक्क समझाईआ। बहत्तर बहत्तर नाल करे प्यार, सत्त दो पर्दा लाहीआ। एका रंग वेखे शाह कंगाल, माया ममता नाल रखाईआ। निरगुण सरगुण बण दलाल, जगत दलील दए बदलाईआ। चार वरन वखाए इक्क धर्मसाल, धुर धर्मी बैठा आसण लाईआ। सीस ताज दए वखाल, चारे मुख नाल रलाईआ। माझा मालवा वेखे लाल, दुआबा आपणी

गंढु पवाईआ। जम्मू नाम वस्त ख़ुशहाल, ज़म ज़म देवे सच्चा माहीआ। बहत्तर बहत्तर कर प्रितपाल, बहत्तर सेवा इक्क लगाईआ। छत्ती छत्ती खेल न्यार, जुग छत्ती खेड मुकाईआ। छत्ती राग जायण हार, बहत्तर भगत मिले वड्याईआ। चौदां गुरु करे ज़ाहर, आप आपणा पर्दा लाहीआ। छत्ती दिवस करे भाल, त्रै त्रै आपणा रूप वखाईआ। छे घर पावे आपे सार, शास्त्र सिमरत भेव ना राईआ। सच दुआर कर त्यार, त्रैगुण अतीता गोबिन्द मीता सच सिँघासण सोभा पाईआ। नौं दुआर खोलू किवाड़, सत्त सत्त वेखे एका वार, नौं सत्त बन्धन पाईआ। पहली चेत लाए सच दरबार। पंज प्यारे रखे नाल, बहत्तर सिख लए उठाल, करे खेल आप निराल, सति सतिवादी सीस जगदीस पगड़ी दए बंधाईआ। गुरदयाल सिँघ तेरा पूरा करे सवाल, तेरी राज बणतर दए वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे फ़रमान राशटर पति दए समझाईआ।

★ राष्ट्रपती अते पंडत नेहरू नूं शब्द भेजया ★

राष्ट्रपत मार ध्यान, त्रैगुण अतीता करे जणाईआ। लोकमात बणाए सच निशान, सच निशाना इक्क समझाईआ। छत्ती
१२६४ जुग दी चुक्के आण, छत्ती छत्ती बन्धन पाईआ। चार वरन करे परवान, ज़ात पात भेव मिटाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी देवे १२६४
इक्क ज्ञान, सोहँ शब्द करे पढ़ाईआ। पहली चेत जिस तलवार ना रक्खी विच म्यान, सच वस्त गया हथ्थ फड़ाईआ। सो साहिब प्रगट होया आण, विष्नूं भगवान नाउँ धराईआ। जिस दी मन्नणी पए आण, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। अन्तिम देवे इक्क फ़रमान, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेश रिहा पुचाईआ। सतिजुग बणे सच निशाना, श्री भगवान आप बणाइंदा। कलिजुग मिटे कूड़ जहाना, कूड़ परजा कूड़ राजा सति नज़र कोए ना आइंदा। भगत भगवन्त बन्ने नाम गाना, साचा तन्द इक्क वखाइंदा। निरगुण निरगुण हो प्रधाना, सरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। छब्बी पोह दिवस महाना, जोती जाता आप समझाइंदा। बहत्तर भगत करे प्रधाना, चार जुग दा लेखा पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप जणाइंदा। साचा हुक्म श्री भगवन्त, निर्भय हो जणाईआ। सर्ब जीआं दा एका कन्त, एका हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग आया अन्तिम अन्त, लोकमात रहिण ना पाईआ। जगत ख्वारी झूठी बणत, बिन हरि नाम ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर दए वखाईआ। एका अक्खर जगत मलाह, खेवट खेटा आप समझाइंदा। पंडत नहर नाल कर सलाह, कवण लिख लिख लेख पुचाइंदा। कवण बणे अन्त मलाह, बेड़ा पार कराइंदा। कवण नदीआं थल वेखे अस्गाह, समुंद सागर

फेरा पाइंदा। कवण चार वरन पकड़े बांह, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। कवण जपाए सच्चा नाँ, सोहँ आत्म परमात्म खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराइंदा। रूप धरे हरि निरँकार, निहकलंक नाउँ रखाईआ। पंडत पांधे करन विचार, शास्त्र सिमरत भेव ना राईआ। सतिजुग नींह रिहा उसार, साचे भगतां सेवा लाईआ। सम्बल बणे धाम न्यार, चवीं हथ्थ निशान झुलाईआ। छत्ती फुट्ट बणे मनार, चार कुण्ट दीवार जणाईआ। अंदर बहे सच्ची सरकार, साढे तिन्न हथ्थ सेव कमाईआ। सेवा कर लै अन्तिम वार, वेला गया हथ्थ ना आईआ। भगत भगवन्त जुग जुग करे ख़बरदार, नाम हलूणा एका लाईआ। दर आ के दे गया तलवार, सीस आपणे ताज टिकाईआ। चुरासी कलीआं कर श्रृंगार, लक्ख चुरासी आपणे नाल बंधाईआ। छब्बी पोह कलिजुग जड़ दए उखाड़, सतिजुग साचा बूटा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बहत्तर सिक्खां एका वार, एका सेव इक्को इक्क समझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल जगत महान, राष्ट्रपत पंडत नहरू कर ध्यान, इक्क दूजे नाल मिल मिल सच सलाहीआ।

★ ७ अस्सू २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

१२६५

सो पुरख निरँजण खेल अपारा, हरि अपरम्पर आप कराईआ। निरगुण खेल सरगुण धारा, सति सतिवादी आप चलाईआ। जोती जाता हो उज्यारा, जाग्रत जोत करे रुशनाईआ। जुगा जुगन्तर पावे सारा, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। नाम सति बोल जैकारा, ब्रह्म मति दए जणाईआ। कमलापति हरि गिरधारा, निराकार सचा शहिनशाहीआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाह पातशाह हुक्म जणाईआ। आदि अन्त रहे न्यारा, निरवैर खेल खिलाईआ। शब्द अनाद एका नाअरा, नाम निधाना आपे गाईआ। धरनी धवल दे सहारा, धरत दए वड्याईआ। जल जल रूप ठंडी ठारा, तीर्थ तट सुहाईआ। गुर अवतार दे सहारा, भेव अभेद खुल्ाईआ। करे कराए आपणी कारा, करता पुरख वड वड्याईआ। सतिजुग त्रेता वेख अखाड़ा, द्वापर फेरा पाईआ। कलिजुग सुणे आप पुकारा, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। जीव जंत हाहाकारा, मछ कछ रिहा कुरलाईआ। गगन मंडल धूंआँधारा, रवि ससि ना कोए रुशनाईआ। नव नौं डुँघी गारा, सति सतिवादी चन्द ना कोई चढ़ाईआ। पारब्रह्म ना कोए प्यारा, ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। सच महल्ल ना कोए मुनारा, जगत वासना फिरे लोकाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरदुआरा, शिवदुआला मठ जगत लड़ाईआ। पुरख अबिनाशी वसे बाहरा, हथ्थ किसे ना आईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर वड वड्याईआ। निहकलंक लै अवतारा, सम्बल आपणा धाम सुहाईआ। गोबिन्द मेला मीत मुरारा, गुर चेला

रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाईआ। बन्धन पाए हरि निरँकार, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग चौकड़ी खेल अपार, रूप अनूप धराईआ। निरगुण सरगुण हो उज्यार, सरगुण सरगुण लए समझाईआ। सरगुण मीत बण मुरार, सगला संग निभाईआ। सरगुण इष्ट विच संसार, दृष्ट इक्क दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। साचा खेल हरि करतारा, आदि जुगादि कराइंदा। जुग जुग वेखे वेखणहारा, दिस किसे ना आइंदा। गुर अवतार दे सहारा, लोकमात प्रगटाइंदा। आपे जाणे अगम्मी धारा, नाम सतारा इक्क वजाइंदा। शब्द अनाद अनादी धुन्कारा, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। निरगुण दीआ कर उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। काया मन्दिर सच मनारा, महल्ल अटल आप वड्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साचा खेल करनेयोग, युगत आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा जाणे लोक परलोक, ब्रह्मण्ड खण्ड भेव चुकाईआ। नाम जणाए सच सलोक, जुगा जुगन्तर जगत पढ़ाईआ। भाग लगाए साचे कोट, काया बंक सोभा पाईआ। नाम भण्डारा दे अतोट, अतुट आप वरताईआ। कढ्ढणहारा वासना खोट, सच सुच विच समाईआ। इक्क जणाए साची ओट, पुरख अकाल इष्ट मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचा खेल श्री भगवान, जुग करता आप कराइंदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। साचे तख्त बैठ सुल्तान, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। शाहो भूप बण राजान, हुक्मी हुक्म आप मनाइंदा। देवणहारा दानी दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। सर्ब घटां घट जाणी जाण, जानणहार भेव खुल्हाइंदा। प्रगट हो विच जहान, निरगुण आपणा नाउँ रखाइंदा। शब्द उडाए इक्क बबाण, पुरीआं लोआं आप फिराइंदा। आपे वेखे मार ध्यान, वेखणहारा दिस ना आइंदा। सत रंगाए इक्क निशान, दो जहाना आप झुलाइंदा। परम पुरख हो मेहरवान, दीन दयाल दया कमाइंदा। गुरमुख साचे चतुर सुजान, लोकमात उठाइंदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, आपणा दरस कराइंदा। नाता तोड़ जीव जहान, एका बन्धन पाइंदा। एका राग सुणाए कान, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, नौं दुआर खोल्ह खुल्हाइंदा। एका घर मिले भगवान, दूजे दर ना मंगण जाइंदा। इक्क वखाए सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। इक्क जणाए आपणी आण, दूसर ओट ना कोए वखाइंदा। आपे होए बेपहचान, दिस किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। खेल कर पुरख समरथ, आपणी बणत आप बणाईआ। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही सेव कमाईआ। आपे जाणे महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे

१२९६

लए लगाईआ। आपणे मन्दिर आपे वस, आपे सोभा पाईआ। आपे जाणे आपणा रस, रस रसीआ साचा माहीआ। आपणा आपे होए आपणे वस, आपणी आस आप तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाउणा, खेलणहारा इक्क अख्वाइंदा। सचखण्ड दुआरे भाग लगाउणा, सचखण्ड दुआर सोभा पाइंदा। निरगुण हो हो वेस वटाउणा, रूप अनूप धराइंदा। निहकलंका नाउँ रखाउणा, ज़ात पात ना कोए जणाइंदा। सति सतिवादी मार्ग लाउणा, वेद कतेब भेव ना आइंदा। सतिजुग साचा राह चलाउणा, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। नौं दुआरे खोल्ह खुल्हाउणा, दर आपणा बन्द वखाइंदा। साचा सगन आप मनाउणा, आप आपणा दिन समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना संग रलाइंदा। ना कोई संग ना कोई संगी, सगला संग ना कोए रखाईआ। जन भगतां देवे दात अनमंगी, वस्त अमोलक आपणे हथ्थ रखाईआ। जन्म जन्म दी कट्टे तंगी, रोग सोग गंवाईआ। विचों कढ्ढे वासना गंदी, सोहँ अक्खर इक्क पढ़ाईआ। राए धर्म ना पाए फंदी, जगत जंजाला दए मिटाईआ। सृष्ट सबाई होई अन्धी, हरि का रूप नज़र ना आईआ। लक्ख चुरासी खड़ी कंधी, कलिजुग एका धक्का लाईआ। सच सिँघासण बह बह पाए वण्डी, वण्डणहारा इक्क अख्वाईआ। गोबिन्द लै के आए गंढ्ढी, आपणी गंढ्ढ एका पाईआ। जन भगतां देवे पवण ठंडी, नाम सुगंधी विच रलाईआ। बिन रसना जिहवा चलाए तन्दी, तार सितार आप हिलाईआ। लक्ख चुरासी वहे वैहन्दी नदी, पार किनारा ना कोए रखाईआ। लहिणा मुक्के चौधवीं सदी, सद सद सनेहुड़ा रिहा पुचाईआ। आपे वण्डणहारा हद्दी, अन्त हदूद दए वखाईआ। चार जुग दा पिछला लेखा होया रद्दी, अग्गे कीमत कोए ना पाईआ। ना कोई सुदी ना कोई वदी, थित वार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आप जणाईआ। साचा मार्ग हरि लगाउणा, सति सतिवादी दया कमाइंदा। साल सत्तवें खेल खिलाउणा, सत सत आपणा बन्धन पाइंदा। साची रत रंग चढ़ाउणा, रंगया रंग उतर ना जाइंदा। जन भगतां परमानंद वखाउणा, अनन्द अनन्द आपणा रूप वटाइंदा। गृह गृह आपणा चन्द चढ़ाउणा, निरगुण जोत डगमगाइंदा। गीत सुहागी छन्द सुणाउणा, गोबिन्द आप अल्हाइंदा। जन्म जन्म दा पन्ध मुकाउणा, जगत खेड़ा आपे ढांहयदा। आपणे खेड़े सद बहाउणा, साचा खेड़ा आप वसाइंदा। नेरन नेरे हो हो दरस दिखाउणा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जुग जुग टुट्टी गंढ्ढ पवाउणा, आप आपणी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, कलिजुग तेरा वेख वखाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। धरत धवल हो उज्यार, रूप अनूप वटाईआ। भगत भगवन्त कर

१२६७

प्यार, दर साचे मेल मिलाईआ। काया भाण्डे काचे करे ठंडे ठार, सीतल धार अमृत मुख चुआईआ। एका रंग रंगाए पुरख नार, जो जन चरन ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे दए वड्याईआ। दर घर साचा सच सुहाउणा, सोभावन्त आप सुहाइंदा। पुरख अबिनाशी आप उपजाउणा, आपणा हुक्म आप मनाइंदा। सम्मत पंदरां चेते कराउणा, पहली पोह हुक्म सुणाइंदा। नौं सिख नौ दर बहाउणा, नौं नौं जोड़े नाल रलाइंदा। नव नौं बस्त्र इक्क वखाउणा, एका रंग चढ़ाइंदा। साची इक्की एका घर पाउणा, साची सिक्खी मूल मुकाइंदा। धारों तिक्खी आप जणाउणा, वालों निक्की आपणे विच छुपाइंदा। अनडिठी खेल आप कराउणा, चार जुग वेद कतेब शास्त्र सिमरत भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप जणाइंदा।

★ १३ अस्सू २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

हरिभगत दुआरा भगती रंग, श्री भगवान आप चढ़ाइंदा। मेहरवान मेहरवान मेहरवान सूरा सरबंग, शाह पातशाह दया कमाइंदा। हरिजन सुहावणी वेख सेज पलँघ, पुरख अबिनाशी आसण लाइंदा। निर्धन घर वजाए मृदंग, साची सेवा सेव कमाइंदा। चार जुग दे विछड़े लाए अंग, अंगीकार आप अख्वाइंदा। जन्म जन्म दी कट्टे भुक्ख नंग, नाम वस्त अमोलक आप वरताइंदा। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। गृह मन्दिर सुणाए छन्द, गीत गोबिन्द आप अलाइंदा। दो जहान वखाए इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच जणाइंदा। जुग चौकड़ी मुक्या पन्ध, पान्धी आपणा पन्ध मुकाइंदा। भगतन पाए एका बंध, एका डोर हत्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा वेख वखाइंदा। भगत दुआरा भगतन मेल, श्री भगवान खेल खिलाइंदा। गृह मन्दिर चढ़े तेल, घर साचा सगन मनाइंदा। करे खेल जगत नवेल, भेव कोए ना पाइंदा। जुगा जुगन्तर सज्जण सुहेल, सगला संग रखाइंदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ना होया वेहल, निहकेव आपणी धार ना कोए चलाइंदा। कलिजुग अन्तिम लेखा जाण गुरु गुर चेल, गोबिन्द साची खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उपाइंदा। हरिजन सच्चा भगत भगवान, निरभउ आप उठाईआ। निर्भय देवे दान, भयानक रूप ना कोए जणाईआ। धर्म रखा इक्क निशान, निगहबान दए समझाईआ। आपे बख्शे आपणी सच पहचान, रहिमत आपणी आप कमाईआ। साचे तख्त बैठ सुल्तान, तख्त निवासी खेल कराईआ। हुक्मी हुक्म बण हुक्मरान, हिकमत आपणे हत्थ रखाईआ। शरअ शरीअत इक्क ईमान, इबनुल वक्त करे जणाईआ। जोती जोत

१२६८

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा दए सुहाईआ। सच दुआरा भगत गृह, भगवन आप सुहाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, निरगुण सरगुण अंदर बह, वेस अनेक धराइंदा। आपणी निष्अक्खर बाणी आपे कह, हरिजन साचे आप पढ़ाइंदा। जन भगतां भाणा आपणे सिर ते सहि, सीस जगदीस भार उठाइंदा। जो जन भाणे अंदर रहे, तिन्ह आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन घर आप वड्यांअदा। भगतन घर सच दुआर, दरगाह साची खेल खिलाईआ। निरगुण खेल ना जाणे कोए संसार, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। लोकमात लै अवतार, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। हरि सज्जण साचे लए उठाल, पारब्रह्म दया कमाईआ। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, सच दुआरा आप सुहाईआ। जिस दर आए ना काल महाकाल, सो घर लए प्रगटाईआ। जिस दर सुणे हाल, हाल मुरीदां झोली पाईआ। जिस गृह तोड़े जंजाल, जीवण जुगत दए बताईआ। जिस मन्दिर देवे धन माल, नाम ख़ज़ाना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर इक्क वड्याईआ। गृह मन्दिर हरि सजणा, सोभावन्त करतार। भगत भगवन्त बह बह सजणा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। चार वरन कराए मजना, दुरमति मैल उतार। नाम नगारा एका वजणा, आप वजाए एकँकार। जन भगतां रक्खे लज्जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए पहरेदार। पहरेदार

१२६६ चार दुआर, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलकार, बल बावन खेल खिलाईआ। धनुष तोड़े एका वार, चिल्ला आपणा आप उठाईआ। आपे तोले गोवर्धन भार, करे खेल बेपरवाहीआ। आपे कोहतूर दए हुलार, जल्वा नूर नूर प्रगटाईआ। आपे नाम सति बोल जैकार, सचखण्ड दुआर वेख वखाईआ। आप बणाए सुत दुलार, पूत सपूता सोभा पाईआ। आपे निरगुण लै अवतार, निरँकारा वेस वटाईआ। जुग जुग विछड़े मेले यार, यारी यारां नाल निभाईआ। एका देवे वर करतार, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा वेख वखाईआ। भगत दुआरा उच्च महल्ला, सोभावन्त आप सुहाइंदा। वेखणहारा इक्क इकल्ला, एकँकारा खेल खिलाइंदा। भगतन अंदर आपे रला, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। शब्दी शब्द फड़ाया पल्ला, एका गंढु पवाइंदा। निहकर्मी आपणे कर्म कराया हल्ला, साचा कर्म इक्क वखाइंदा। गुरमुख गुर गुर गुर जोत अन्तर रला, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत दुआरा वेख वखाइंदा। भगत दुआरा वेखण जोग, वेखणहारा वेख वखाईआ। छत्ती जुग धुर संजोग, सच संजोगी मेल मिलाईआ। जन्म जन्म दा कट्ट कट्ट रोग, औखध एका दारू नाम प्याईआ। चरन प्रीती साचा जोग, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। इष्ट मनाउणा निर्मल जोत, निरगुण रूप इक्क दरसाईआ। सच दुआरा

किला कोट, पुरख अबिनाशी आप उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत निशाना दए बणाईआ। भगत निशाना हरि की धार, हरि साचा आप जणाइंदा। वेखे विगसे करे विचार, वेखणहारा दिस ना आइंदा। रहिबर बण निराकार, दर दर साची सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां वसे आप घर, भगत दुआरा आपणा घर वसाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जुगत जुग उलटी रीती, करे खेल अगम्म अनडीठी, वेद कतेब शास्त्र सिमरत भेव कोए ना पाइंदा।

★ १७ अस्सू २०१८ बिक्रमी ठेकेदार ठाकर सिँघ दे गृह जेठूवाल ★

सच्च निशाना श्री भगवान, तख्त निवासी सति रखाइंदा। सचखण्ड सुहाए सच मकान, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। शाहो भूप राज राजान, भूपत आपणी खेल खिलाइंदा। शब्द अनादी धुर फ़रमान, ब्रह्मादी ब्रह्म जणाइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधान, लोकमात खेल खिलाइंदा। जुगा जुगन्तर खेल महान, वेस अनेका आप वटाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे आण, गेड़ा गेड़े विच भवाइंदा। सति सरूपी निगहवान, निरवैर वेख वखाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, परम पुरख वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जाता खेल कराइंदा। जोती जाता खेल अपारा, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। निरगुण निरगुण लै अवतारा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। निरगुण उपाए सच दुआरा, दर घर साचा आप सुहाईआ। निरगुण बण शाह सिक्दारा, शहिनशाह नाउँ धराईआ। निरगुण हुक्म वरते वरतारा, हुक्मी हुक्म आप जणाईआ। निरगुण खेल करे संसारा, वेद कतेब भेव ना राईआ। प्रगट हो निहकलंक नर अवतारा, हरिजन साचे ल्ए तराईआ। बाल बाली कर प्यारा, प्रेम प्याला आप प्याईआ। आपे बन्न्हे साची धारा, दरगाह साची दए वड्याईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। गा गा थक्के पीर पैग़म्बर गुर अवतारा, साध सन्त ध्यान लगाईआ। हरि का अन्त ना पारावारा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहे ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाउणा, खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। वीह सौ दस बिक्रमी सतारां मग्घर पिछला चेता फेर कराउणा, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। जिस दुआरे बह बह आपणा लेख लिखाउणा, सो लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। चव्ही हथ्थ निशान जिस प्रगटाउणा, प्रगट हो हो आपणा रूप धराइंदा। छत्ती फ़ुट रंग रंगाउणा, छत्ती राग भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। वीह सौ दस बिक्रमी खेल अपारा, पुरख अबिनाशी आप कराईआ।

सत्त रंग निशाना लेख न्यारा, निरगुण निरवैर आप लिखाईआ। लेखा जाणे सच दुआरा, बंक दुआरी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना कोए वड्याईआ। दूसर कोए ना जगत वड्याई, वड वडा ना कोए अख्वाइंदा। करे खेल बेपरवाही, परवाह आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुगा जुगन्तर बण मलाही, जन भगतां बेड़ा आप चलाइंदा। एका देवे नाम सलाही, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं, निरगुण सरगुण सेव कमाइंदा। करे प्यार जिउँ बालक माई, पिता पूत गोद सुहाइंदा। करे खेल सच्चा शहिनशाही, अछल अछल रूप धराइंदा। बल बावन वेखे चाँईं चाँईं, नेत्र नैण इक्क खुल्हाइंदा। सर्ब जीआं दा हरि गोसाँईं, गोबिन्द आपणा भेख वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराइंदा। आपणा वेस आपे रख, आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल हो प्रतक्ख, परम पुरख खेल खिलाईआ। लेखा जाणे दो चार चवी हथ्थ, तिन्न छे बन्धन पाईआ। सर्ब कल आपे समरथ, समरथ पुरख वड वड्याईआ। आपणी महिमा जाणे अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। गुर अवतारां मार्ग दस्स, जुग जुग आपणा पन्थ वखाईआ। हिरदे अंदर हरि जू वस, हरि का पौड़ा आप चढ़ाईआ। अमृत आत्म देवे रस, निझर झिरना इक्क झिराईआ। दरसन देवे हस्स हस्स, हँस मुख सच्चा शहिनशाहीआ।
१३०१ तीर निराला मारे कस, शब्दी बाण चलाईआ। जन भगतां होए सदा वस, प्रेम बन्धन एका पाईआ। धुर दरगाही लोकमात आए नस्स, रूप अनूप आप वटाईआ। पूरी करे साहिब आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लहिणा, जन भगतां दरस दिखाए नेत्र नैणां, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। तृष्ना भुक्ख होए दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। प्रगट होए हाज़र हज़ूर, हरि जू आपणा रूप धराइंदा। जोती जाता साचा नूर, निराकार आप वखाइंदा। शब्द अनादी एका तूर, अनहद राग सुणाइंदा। सर्ब कल आपे भरपूर, परम पुरख नाउँ धराइंदा। वसणहारा नेड़े दूर, जन भगतां आपणा मेल मिलाइंदा। लहिणा देणा लेखे लाए ज़रूर, आपणी ज़रूरत पूरी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची बणत आप बणाइंदा। साची बणत श्री भगवन्त, आदि अन्त बणाईआ। सर्ब जीआं दा एका कन्त, निरवैर पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। एका गुण एका मंत, एका शब्द करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे लक्ख चुरासी जीव जंत, घट घट अंदर आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा आप सुहाईआ। दर घर साचा हरि सुहाउणा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी रूप धराउणा, लोक परलोक ख़ुशी मनाईआ। गुर अवतारां दरसन पाउणा, नेत्र नैणां राह तकाईआ। भगत भगवान

दर बहाउणा, वेला वक्त दए सुहाईआ। साचे सन्तां गले लगाउणा, आप आपणे अंग लगाईआ। गुरमुखां भेव आप खुल्हाउणा, अनबोलत करे पढ़ाईआ। गुरसिखां मार्ग इक्क दरसाउणा, निवण सु अक्खर इक्क समझाईआ। सर्ब जीआं दा दाता एका नज़री आउणा, दूसर इष्ट ना कोए मनाईआ। पुरख अकाल सभ ने गाउणा, नव खण्ड वज्जे वधाईआ। सति सतिवादी सत रंग निशाना इक्क चढ़ाउणा, लोआं पुरीआं आण उठाईआ। लोकमात सचखण्ड बणाउणा, ब्रह्मण्ड वेखे चाँईं चाँईंआ। जेरज अंड पन्ध मुकाउणा, उत्भुज सेत्ज लहिणा दए मुकाईआ। गीत सुहागी छन्द एका गाउणा, सतिजुग करे सच पढ़ाईआ। परमानंद इक्क दरसाउणा, निजानंद करे रसाईआ। द्वैती कंध आपे ढाउणा, भरम गढ़ दए तुड़ाईआ। सच दुआरा इक्क सुहाउणा, भगत भगवन्त मेल मिलाईआ। पिछला लेखा पूर कराउणा, गुर अवतारां गया समझाईआ। सति सतिवादी एका साता अक्खर पाउणा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दूआ साते नाल मिलाईआ। बहत्तर रूप मात प्रगटाउणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सच दुआरा इक्क सुहाउणा, सोभावन्त दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन हरि जू लए जगाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपणा लेखा जाणे महान, भगतां अंदर वस भगवान, आपणा वस ना कोए रखाईआ।

★ २१ अस्सू २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

हरि सतिगुर खोल्हे ताक, त्रैगुण अतीता दया कमाईआ। जुग जुग पूरा करे वाक, भविख्त लेख लेख समझाईआ। जन भगतां पुछे वात, वातावरन आपणे हथ्थ रखाईआ। जग मेट अन्धेरी रात, साचा नूर करे रुशनाईआ। नाम निधान सुणाए गाथ, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। लहिणा चुक्के ज़ात पात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगाईआ। नव नौं जणाए घाट, एका पतण सच्चा माहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वखाए हाट, हट हटवाणा शहिनशाहीआ। निरगुण सरगुण देवे साथ, सगला संग निभाईआ। पूर्ब लहिणा वेखे माथ, मस्तक लेखा आप चुकाईआ। किनारा वखाए एका घाट, तट तीर्थ इक्क दरसाईआ। हरिजन पुछे आपे वात, पुरख अबिनाशी सेव कमाईआ। करे खेल बहु बिध भांत, भेव अभेद आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रखाईआ। खोल्हे ताक होए प्रकाश, परम पुरख दया कमाईआ । राह तक्के पृथ्मी आकाश, ब्रह्मण्ड खण्ड नैण उठाईआ। सन्त साजण लग्गी आस, दिवस रैण राह तकाईआ। जन भगतां प्रभ मिलण दी प्यास, तृखावन्त एका ओट तकाईआ। कवण वेला करे बन्द ख़ुलास, बन्दी आपणा नाम पाईआ।

गृह मन्दिर पावे रास, मंडल साची रास रचाईआ। सखा सहेला वसे पास, सद मेला चाँईं चाँईंआ। आदि जुगादि ना होए उदास, एका रंग समाईआ। शाहो भूप शाह शबास, शहिनशाह बेपरवाहीआ। हरिजन करे ना कदे निरास, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निज आत्म कर कर वास, घर घर लेखा दए चुकाईआ। लहिणा चुकाए पवण स्वास, स्वास पवण नाल समाईआ। सेवा करे बण बण दास, दासी दास आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा ताक आप खुल्हाईआ। खुल्ले ताक होए चानण, निरगुण नूर नूर धराइंदा। लहिणा चुक्के ज़िमीं अस्मानन, इस्म आपणा इक्क वखाइंदा। निरवैर पुरख पकड़ाए दामन, दामनगीर आप हो जाइंदा। दो जहानां बणे ज़ामन, साची ज़ामनी आप कमाइंदा। वेख वखाए क्षत्री शूद्र वैश ब्राह्मण, ब्रह्म नाता जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण नूर कोटन भानण, नूर नूराना डगमगाइंदा। शब्द निशाना मारे एका कानन, तीर निराला इक्क चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बन्द ताकी आप खुल्हाइंदा। बन्द ताक देवे खोल्ह, खोल्हणहारा इक्क अख्वाईआ। साचे मन्दिर आपे बोल, सच जैकारा दए सुणाईआ। साचे घर वजाए ढोल, नाम ढोला एका गाईआ। साचे गृह जाए मौल, निरगुण निरगुण खेल खिलाईआ। आप चुकाए आपणा पड़दा ओहल, दूई द्वैत दए मिटाईआ। हरिजन उठाए आप अनभोल, अभुल आपणी दया कमाईआ। सच वस्त वखावे कोल, एका वार दए वरताईआ। एका कंडे तोले तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। लक्ख चुरासी ल्ए वरोल, चार कुण्ट फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बन्द ताक आप खुल्हाईआ। खोल्हे ताक मेहरवान, दीनन आपणी दया कमाइंदा। प्रगट हो श्री भगवान, सरगुण आपणे रंग रंगाइंदा। इक्क वखाए सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, दोए रूप आप धराइंदा। सर्ब जीआं दा साचा काहन, एका बंसरी नाम वजाइंदा। एका रूप रमइया राम, राम रामा खेल खिलाइंदा। एका निउँ निउँ करे सलाम, अलैकम आपणी धार चलाइंदा। एका जैकारा बोले सतिनाम, नाम सति आपणा संग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ताक आप खुल्हाइंदा। साचा ताक सचखण्ड, सचखण्ड निवासी आप खुल्हाईआ। निराकार पावे वण्ड, वण्डणहार आप हो आईआ। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज भेव ना राईआ। दीन दयाल साहिब बख्शंद, करे खेल बेपरवाहीआ। हरिजन वेखे साचे चन्द, चन्द चादनी मुख भवाईआ। इक्क जणाए परमानंद, अनन्द अनन्द दए वड्याईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, गीत गोबिन्द आप जणाईआ। जुग चौकड़ी मुकाए पन्ध, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढ, गंढणहार इक्क हो जाईआ। जन भगतां पाए ठंड, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। ख़ुशी कराए बन्द बन्द,

१३०३

बन्दी तोड़ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ताक आपे लाहीआ। साचा ताक जाए लथ, नव नौं खेल खिलाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। जुग चौकड़ी आपे मथ, गेड़ा गेड़े विच रखाइंदा। कलिजुग गेड़नहारा लद्व, आप आपणा खेल कराइंदा। हरि सज्जण साचे लए रक्ख, लोकमात उठाइंदा। लेखा जाणे काया रत, रती रत मेल मिलाइंदा। नाता जोड़ कमलापति, कँवल नैण वेख वखाइंदा। एका देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। सति सन्तोख धीरज जति, सति आपणा रंग रंगाइंदा। मेल मिलावा नस्स नस्स, जुग जुग आपणा पन्ध मुकाइंदा। गुरमुखां करे पूरी आस, निरासा कोए नजर ना आइंदा। एका वार करे बन्द ख़ुलास, जगत ज़ंजीर ना बन्धन पाइंदा। मेल मिलावा शाहो शाबास, शाह पातशाह दया कमाइंदा। हरिजन पूरी करे आस, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ताक आप खुल्हाइंदा। खुल्ल्हे ताक सच महल्ला, महल्ला कोए रहिण ना पाईआ। करे खेल इक्क इकल्ला, अकल सभ दी रिहा गंवाईआ। एका फड़या नाम पल्ला, भाल सभ दी आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ताक दए समझाईआ। साचा ताक नौं दुआर,
१३०४ नव नौं आप खुल्हाया। पुरख अबिनाशी हो त्यार, निरगुण वेस वटाया। जुग चौकड़ी लाए पार, गुर अवतारां सीस उठाया। १३०४
भगतां कर्ज़ा दए उतार, सालस बणके हरि हरि आया। साची वस्त झोली देवे डार, नाम अमोलक आप वरताया। एथे उथे ना आए हार, हरि के पौड़े दए चढ़ाया। माणस जन्म पैज संवार, मानुख आपणे लेखे लाया। एका करे सच विहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर आप खुल्हाया। साचा मन्दिर जाए खुल्ह, खोल्हणहार आप अख्वाईआ। चार जुग जो बैठे भुल्ल, वेले अन्तिम लए मिलाईआ। आपे होए सलहकुल, सभ दी सुलाह दए कराईआ। गुरमुख सज्जण लए वरोल, नव खण्ड फोल फुलाईआ। आपे तोले आपणे तोल, नाम कंडा इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त लए मिलाईआ। भगतन मेला भगवन्त दुआर, दर दरबारी आप कराइंदा। जुग चौकड़ी उतरे पार, कोटन काल खेल खिलाइंदा। त्रैभवन धनी हो त्यार, मूर्त अकाल रूप वटाइंदा। अजूनी रहत शाह सवार, शाह सुल्ताना फेरा पाइंदा। कागद कलम ना लिखणहार, वेद कतेब भेव ना आइंदा। गुर अवतार करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। जुग चौकड़ी बीते चार, चार नव नौं मिलाइंदा। नव चार कर पसार, आपणी धार आप वखाइंदा। कलिजुग खेल करे अपार, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, जोती जाता वेस वटाइंदा। नाम खण्डा इक्क हथिआर, साचा शस्त्र हथ्थ वखाइंदा। त्रैगुण मारनहारा मार, पंज तत्त सर्ब कुरलाइंदा। लक्ख चुरासी

करे विचार, लुकया कोए रहिण ना पाइंदा। हरिजन साचे लए उठाल, जुग जुग आपणा मेल मिलाइंदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लेखे लाए घाली घाल, घाली घाल वेख वखाइंदा। आपे करे हल सवाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा ताक आप वखाइंदा। हरि का ताक सदा अनडिठ, दिस किसे ना आया। जो जन सतिगुर करे हेत, तिस सतिगुर लए मिलाया। काया वेखे साचा खेत, आप आपणा फेरा पाया। जन भगतां खोलृे भेत अभेत, दूई पर्दा आप चुकाया। आपणे नेत्र आपे पेख, नैण नैण नाल मिलाया। जुग जुग करे साचा हेत, नित नवित वेस वटाया। कलिजुग बालू तपे रेत, चारों कुण्ट रंग रंगाया। जन भगत रहे वेख, कवण वेला होए सहाया। जिस दा मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, सो पुरख निरँजण होए अन्त सहाया। जिस दा सच्चा इक्को देस, सचखण्ड बैठा आसण लाया। जिस दा नूर इक्क प्रवेश, घट घट जोत करे रुशनाया। जिस दा जुग जुग अवल्लड़ा भेस, गुर अवतार रहे जस गाया। कलिजुग अन्तिम आउणा माझा देस, गोबिन्द सम्बल नगर नाउँ वड्याआ। नानक निरगुण करे आदेश, निउँ निउँ सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा ताक दए वड्याआ। साचा ताक दर दरवाज़ा, दरदी दर्द आप समझाइंदा। करे खेल ग़रीब निवाज़ा, गिरहा आपणी खोलृ खुलृाइंदा। जन भगतां मारे वाजां, दिवस रैण सेव कमाइंदा।

१३०५
कलिजुग अन्तिम रक्खे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। निरगुण निरगुण रचया काजा, सरगुण सरगुण बन्धन पाइंदा। जिस नूं निउँ निउँ करन निमाज़ां, सो निमाज़ी वेख वखाइंदा। जिस नूं कूक कूक मारन वाजां, सो वाजां मार आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे मन्दिर सोभा पाइंदा। मन्दिर सहाउणा सति पुरख, सति सतिवादी मीत बणाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, हरख सोग ना कोए जणाईआ। चार जुग दी करे परख, प्रीख्या आपणे हथ्थ जणाईआ। गुरमुख विरले देवे दरस, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। जन्म जन्म दी मेटे हरस, हवस होर ना कोए वधाईआ। ग़रीब निमाणयां उप्पर कर कर तरस, जगत जलंदे लए तराईआ। लहिणा चुकाए अर्श फर्श, बिरहों रोग दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि दुआरा इक्क वखाईआ। हरि दुआरा सच मनारा, तपी तपीशर राह तकाइंदा। कोटन कोटि करे निमस्कारा, निउँ निउँ सीस सर्ब निवाइंदा। चढ़ चढ़ थक्के जीव संसारा, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। उच्ची कूक कूक करन पुकारा, नाअरा हक हक जणाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, धाम अवल्लड़े सोभा पाइंदा। निरगुण नूर कर उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। नाउँ रक्ख आप निरँकारा, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, साचा ताज सीस टिकाइंदा। हुक्मी हुक्म बण वरतारा, साचा हुक्म इक्क सुणाइंदा। जुग जुग लोकमात लए

अवतारा, गुर सतिगुर खेल खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम कर पसारा, निराधारा कार कमाइंदा। जोती जोत हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। शब्दी शब्द नाद धुन्कारा, अनादी नाद नाद वजाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादि खोल्ह किवाड़ा, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाइंदा। प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतारा, जन भगतां मेल मिलाइंदा। सत्त सत्त बणे वणजारा, बहत्तर आपणी गंढु पवाइंदा। वाह वा सोहे बंक दुआरा, जिस दुआरे बंक हरिजन साचे आप बहाइंदा। छत्ती छत्ती पार किनारा, छत्ती छत्ती आपणा बन्धन पाइंदा। छत्ती बणे सच मिनारा, साढे तिन्न हथ्थ रंग रंगाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, गोबिन्द हुक्म इक्क जणाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा करे खेल आपणी वारा, पिछला खेल ना कोए जणाइंदा।

★ २२ अस्सू २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

नव चार बन्धन पाउणा, समरथ पुरख हुक्म जणाइंदा। साचा मार्ग इक्क लगाउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड राह तकाइंदा। दो जहान वेख वखाउणा, लोआं पुरीआं पर्दा लांहयदा। गुर अवतारां आप समझाउणा, एका अक्खर निश पढ़ाइंदा। चार जुग दा खेड़ा ढाउणा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। अगम्म रूप घेरा पाउणा, शब्दी फेरा आपणे हथ्थ वखाइंदा। हो दलेरा
१३०६ खेल कराउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। १३०६
साचा हुक्म शाह सुल्तान, शहिनशाह आप वरताईआ। सचखण्ड निवासी हो प्रधान, सच दुआरा दए सुहाईआ । छत्ती जुग दी चुक्के आण, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। नव चार मिटे माण, अभिमाण ना कोए वखाईआ। गुर अवतार जो दे दे गए दान, दाता दानी आपणी वस्त आपणे विच फेर मिलाईआ। लहिणा चुकाए गोपी काहन, राम रामा झोली डाहीआ। लेखा जाणे इलाही कलाम, कलमा आपणे विच समाईआ। भेव मुक्के सतिनाम, नाम सति आपणा बन्द रखाईआ। एका देवे सच पैग़ाम, पीर पैग़म्बर रहे सालाहीआ। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। हरिजन साचे कर पहचान, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। तीर निराला मारे बाण, मारनहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप समझाईआ। साचा हुक्म शहिनशाह, शाह पातशाह आप जणाइंदा। लेखा जाणे दो जहां, दोए दोए रूप आप धराइंदा। जुग चौकड़ी पन्ध मुका, पान्धी आपणा पन्ध आपणे हथ्थ रखाइंदा। शब्द अनादी सच सुणा, आपणा गीत आप अल्हाइंदा। लक्ख चुरासी मार्ग पा, एका राह वखाइंदा। चार वरन दा कट्टे फाह, बरन वरन ना कोए वखाइंदा। एका मन्दिर दए वखा, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। डूँघी कंदर जोत जगा, जोती जाता डगमगाइंदा। नौं दुआरे वेख

वखा, नव नौं आपे डेरा ढांहयदा। चौथे पद रिहा समा, चौथे जुग खेल खिलाइंदा। चार वेद वेखे थाउँ थाँ, कतेब आपणे रंग रंगाइंदा। भेव अभेद आप खुल्हा, अछल अछेद वेस वटाइंदा। एका हुक्म दए सुणा, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। आपणी कीती आपे ल्ए उलटा, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। गोबिन्द लेखा पूर करा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म राउ भूप, शाह सुल्तान आप जणाईआ। एका नाउँ चारों कूट, दहि दिशा दए वड्याईआ। दीन दयाल ठाकर गया तुठ्ठ, अतुट बेपरवाहीआ। निरगुण हो हो गया उठ, निरवैर नज़र किसे ना आईआ। करे खेल बिन काया बुत, पंज तत ना कोए वड्याईआ। जिस नूं कहिन्दे गोबिन्द पुरख अकाल दा सुत, सो सुत ल्या जगाईआ। आप सुहाए आपणी रुत्त, सम्बल देवे माण वड्याईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, ठगौरी जगत ना कोए रखाईआ। लेखा जाणे छत्ती फ़ुट, आप आपणा बन्धन पाईआ। जगत विद्या कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। सच दवारिउँ जो बैठे रुठ, वेले अन्त दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म वरताउणा हरि, हरि जू साचा सच जणाइंदा। जन भगत चुकाए एका डर, निरभउ भय ना कोए रखाइंदा। निराकार वखाए साचा घर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। ग़रीब निवाज़ा पल्लू फड़, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। सरगुण अंदर आपे वड़, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। जगत महल्ले जावे चढ़, बंक दुआरा सोभा पाइंदा। करे खेल नरायण नर, नर हरि आपणी धार बंधाइंदा। चार जुग दा दिता वर, कलिजुग अन्तिम पूर कराइंदा। अमृत नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह आप हो आइंदा। शाह पातशाह श्री भगवाना, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। साचे तख्त बैठ नौजवाना, निरगुण आपणा खेल कराईआ। नाम सति इक्क तराना, तुरीआ राग आप अल्हाईआ। शब्द अगम्मी गाए गाना, अनहद ताल वजाईआ। लक्ख चुरासी जाणी जाणा, विष्न ब्रह्मा शिव भेव खुल्हाईआ। आपे वरते आपणा भाणा, सद भाणे विच समाईआ। लेखा जाणे दो जहानां, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाईआ। जेरज अंड दए परवाना, उत्भुज सेत्ज करे शनवाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप वखाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल हो प्रधाना, सच प्रधानगी दए जणाईआ। नव नौं पाए आणां, हुक्मी एका हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलंदड़ा, इक्क इकल्ला एकँकार। कलिजुग अन्तिम वेस वटंदड़ा, निहकलंक नरायण नर अवतार। शब्द खण्डा हथ्थ उठंदड़ा, आपे तिक्खी रक्खे धार। दो जहानां वेख वखंदड़ा, ज़िमीं अस्मानां पावे सार। विष्न ब्रह्मा शिव उठंदड़ा, करोड़ तेतीसा करे ख्वार।

एका साचा नाम जपंदड़ा, आत्म परमात्म मेला नार कन्त भतार। एका साचा धाम सुहंदड़ा, आप सुहाए बंक दुआर। जिस दुआरे चरन छुहंदड़ा, सो दुआरा होए परवान। गुरमुख साचे मेल मिलंदड़ा, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान। सच निशाना इक्क झुलंदड़ा, चव्ही हथ्थ देवे दान। दाता दानी आप अख्वंदड़ा, आदि जुगादी मेहरवान। विष्नूं विश्व वेख वखंदड़ा, वेखणहारा नौजवान। ब्रह्मा अन्तिम पन्ध मुकंदड़ा, लेखा मुक्के विच जहान। शंकर नेत्र रो रो नीर वहंदड़ा, चौथे जुग होया हैरान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हुक्मरान। हुक्मरान राजन राजा, एकँकार वडी वड्याईआ। आदि जुगादी रच रच काजा, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। जन भगतां रक्खे जुग जुग लाजा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। शब्द अगम्मी मारे वाजा, तार सितार आप हिलाईआ। दर दरवेश नर नरेश हरिजन दुआरे आवे भाजा, पान्धी आपणा पन्ध मुकाईआ। अनहद सुणाए साचा वाजा, छत्ती राग भेव ना राईआ। जिस जन देवे आपणा ताजा, शब्द घोड़े लए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह श्री भगवन्त, आपणी खेल कराइंदा। हरिजन वेखे साचे सन्त, लोकमात आप जगाइंदा। नाम जणाए मणीआ मंत, निज आत्म मेल मिलाइंदा। देवे वड्याई विच जीव जंत, जाग्रत जोत खेल खिलाइंदा। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, साची संगत संग निभाइंदा। हरिजन होए ना कदे मंगत, जिस जन आपणी भिच्छया पाइंदा। नाम निधाना चाढ़े रंगत, रंगया रंग उतर ना जाइंदा। नाता तोड़े भुक्ख नंगत, माया ममता मोह मिटाइंदा। आप बणाए साची बणत, घड़न भन्नणहार आप अख्वाइंदा। आपे आदि आपे अन्त, मध्ध आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नरायण नर, नर हरि आपणा हुक्म वरताइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमान, दो जहानां आप जणाईआ। जुग चौकड़ी होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त गुर अवतार सर्ब गाण, बैठे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सचखण्ड वसे श्री भगवान, तख्त निवासी सोभा पाईआ। थिर घर वेखे मार ध्यान, आप आपणी दया कमाईआ। शब्दी सुत कर परवान, सीस आपणा हथ्थ रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। गुर अवतार कर प्रधान, लोकमात दए वड्याईआ। अन्तिम आपे वेखे आण, निरवैर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाईआ। पर्दा चुक्के हरि भगवाना, भगवन आपणी दया कमाइंदा। कलिजुग कूड़ा मिटे निशाना, कूड़ी क्रिया आप मिटाइंदा। सतिजुग खेल करे महाना, सति सतिवादी धार चलाइंदा। सर्ब जीआं दा एका कान्हा, नौं खण्ड पृथ्मी आप अख्वाइंदा। लक्ख चुरासी बन्न्हे गाना, नाम तन्द हथ्थ वखाइंदा। अनहद राग सुणाए गाणा, घर घर विच तार हिलाइंदा।

१३०८

अमृत आत्म देवे पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। निरगुण प्रगट हो विच संसार, सरगुण सज्जण लए मिलाईआ। भगत भगवन्त करे प्यार, नित नवित वेस वटाईआ। लक्ख चुरासी विचों लए उठाल, आप आपणा दरस दिखाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, एका गुण दए समझाईआ। हरिजन नेड़ ना आए काल, महाकाल मुख शरमाईआ। लोकमात वखाए सच्ची धर्मसाल, छत्ती जुग दा पन्ध मुकाईआ। हरिजन बहाए साचे लाल, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। आपे रिहा सुरत संभाल, सुरती शब्द बन्धन पाईआ। गुर अवतारां हल करे सवाल, बण बण सवाली जो अग्गे गए टिकाईआ। जगत जुग चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। वड्डी वड्याई रक्खी हथ्थ, हरि का भेव किसे ना आया। जुग जुग चलाए आपणा रथ, गुर अवतार सेव लगाया। नाम डोरी पावे नथ्थ, चारों कुण्ट भवाया। जिस जन देवे आपणी वथ, एका मन्त्र नाम पढ़ाया। साहिब सुल्तान सुणाए गाथ, वाह वा आपणा राग अलाया। आपणा मार्ग आपे दस्स, साचा धन्दा इक्क जणाया। हिरदे अन्तर आपे वस, साचा मन्त्र इक्क पढ़ाया। तीर निराला मारे कस, दूई द्वैती पर्दा लाहया। जन भगतां आपे होए वस, घर घर आपणा रूप धराया। मेल मिलावा नस्स नस्स, पान्धी आपणा पन्ध मुकाया। भगत भगवान इक्क दूजे दा करन जस, गुर गुर लेख इक्क समझाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाया। गुरमुख जन्म जन्म दी बुझाए प्यास, अमृत मेघ मुख चुआया। नाता तोड़ पृथ्मी आकाश, गगन मंडल पन्ध मुकाया। आपे करे बन्द ख़ुलास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे जिस मिलाया। सच दुआरा साचा मेला, सतिगुर सज्जण आप मिलाइंदा। एका घर वसे गुरु गुर चेला, गुर चेला खेल खिलाइंदा। आदि जुगादी सज्जण सहेला, सदा सद संग निभाइंदा। वसणहारा इक्क इकेला, लोकमात वेस वटाइंदा। आपे जाणे आपणा वेला, वार थित ना कोए रखाइंदा । अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, वेद कतेब भेव ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे सोभा पाइंदा। सच दुआरा ठाकर घर, हरि ठाकर आप बणाईआ। कलिजुग अन्तर देवे धर, वस्त अमोलक आप वरताईआ। कृपानिध करनी कर, करता पुरख खेल खिलाईआ। जो जन भाणा रहे जर, अजर वस्त इक्क वरताईआ। भगत भगवन्त लए फड़, एका डोर नाम बंधाईआ। दरस दिखाए अगे खड़, स्वच्छ सरूप रूप धराईआ। ना जन्मे ना जाए मर, सतिगुर पूरा सो अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मन्दिर लए बहाईआ। साचा मन्दिर

सचखण्ड, सति पुरख निरँजण आप बणाइंदा। आपे जाणे आपणी कंध, आपणा पर्दा आप वखाइंदा। आपे बहे सेज पलँघ, सच सिँघासण आप सुहाइंदा। आपे रंगे आपणा रंग, रंग रंगीला आप हो जाइंदा। आपे चाढ़े आपणा चन्द, निरगुण जोत डगमगाइंदा। आपे गाए आपणा छन्द, बोध अगाधी आप अख्वाइंदा। आपे पावे आपणा बन्धन बंध, बन्दीखाना आप सुहाइंदा। आपे होए साहिब बख्शंद, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक्क वड्यांअदा। सच दुआरा भगतन दात, दाता दानी आप वरताईआ। बहत्तर सिखां जणाए पिछली गाथ, पूर्ब लहिणा मुकाईआ। लहिणा मुकाए तत आठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध बन्धन रहे ना राईआ। आप बंधाए साचा नात, सुरती शब्द मेल मिलाईआ। मेल मिलावा कमलापात, घर साचे वज्जे वधाईआ। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। चार वरन तेरी मुकी वाट, बाकी नज़र कोई ना आईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला विके ना कोई किसे मठ, बिन हरि इष्ट ना कोए जणाईआ। कल्लर कंध जाए ढठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी गेड़े लठ, जुग गेड़ा आप दिवाईआ। लहिणा मुके तीर्थ अठसठ, जगत सरोवर ना कोए वखाईआ। एका पूजा पुरख समरथ, सतिजुग आपणी आप जणाईआ। चार वरन दा साचा मन्दिर होए चव्वी हथ्थ, चारों कुण्ट वण्ड वंडाईआ।
१३१० सगल विसूरे जायण लथ, जो जन अंदर वड़ दरसन पाईआ। पुरख अकाल महिमा सुणाए अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। निउँ निउँ सीस झुकाए राम दुलारा दसरथ, नेत्र नैणां नीर वहाईआ । कान्हा कृष्ना चरनी डिगे ढठ्ठ, कँवल नैण नैण मटकाईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद दूर दुराडे जाणे ढठ्ठ, गल विच पल्लू एका पाईआ। नानक गोबिन्द भाणा मन्ने सति, सति पुरख अबिनाशी अगे सीस झुकाईआ। सच दुआरा कर उत्पत, पिछला लेखा पूर वखाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी देणी एका मति, ब्रह्म मति इक्क समझाईआ। बीज बीजणा साचे वत, काया खेत हल चलाईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बले रत, बहत्तर सिखां दए समझाईआ। तूं वसणहारा घट घट, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तेरा दुआरा आदि जुगादि ना जाए ढठ्ठ, सच निशाना इक्क झुलाईआ। चार जुग चार वरन इक्क दूजे नालों जो कीते अड्ड अड्ड, अन्तिम आपे लए मिलाईआ। जिउँ गोबिन्द करया साचा लड, पूत सपूता गोद सुहाईआ। तेरी प्रगट होए यद, तेरे नाम वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ तेरी इक्को हद्द, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार साध सन्त जुग जुग आपणा भार गए लद, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जिस भेजें तिस लवें सद, बचया कोई रहिण ना पाईआ। पंज तत काया चोला जाण छड, छत्ती छत्ती मुख भवाईआ। तेरा खेल सदा ब्रह्मादि, ब्रह्म तेरा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका घर देणा वसाईआ। साचा घर इक्क वसाउणा, पुरख अकाल आप जणाइंदा। बहत्तर भगतां मात प्रगटाउणा, आप आपणा हुक्म मनाइंदा। पिछला लहिणा मूल चुकाउणा, अगे कर्ज ना कोए रखाइंदा। साचा मन्दिर इक्क सुहाउणा, मंडल आपणा रंग रंगाइंदा। सच सिँघासण डेरा लाउणा, आसण साचे सोभा पाइंदा। मंडल रासन रास रचाउणा, गोपी काहन आप नचाइंदा। पृथ्मी आकाश फेरा पाउणा, गगन गगनंतर वेख वखाइंदा। कागद कलम मुख शर्माउणा, लिख लिख लेख ना कोए जणाइंदा। गोबिन्द लेखा आपणे लेखे लाउणा, आप आपणे विच छुपाइंदा। छत्ती छत्ती धार रखाउणा, छत्ती उच्च मुनार सुहाउणा, बहत्तर फड़ दर बहौंणा, सम्बल नाउँ फेर प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साढे तिन्न हथ्थ अंदर रिहा वड़, दिस किसे ना आइंदा। सम्बल रक्खया साढे तिन्न हथ्थ, घर घर विच आप प्रगटाईआ। उप्पर बहे पुरख समरथ, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। छत्ती जुग चलाया रथ, बहत्तर भगत लए प्रगटाईआ। नानक पूरी करे आस, जो आस गया रखाईआ। गृह आपणे कर कर वास, साचा मन्दिर सोभा पाईआ। निरगुण जोत करे प्रकाश, दीवा बाती ना कोए रखाईआ। सतिगुर पूरा शाह पातशाह शाहो शाबास, शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण चोला सरगुण लिबास, निरगुण ढोला सरगुण रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्बल

१३११ देवे माण वड्याईआ। सम्बल तेरा उपजे धाम, सो पुरख निरँजण आप उपाइंदा। आपणा करे पूरा काम, करता पुरख दया कमाइंदा। भगतां पकड़े आपे दाम, दामनगीर आप अख्वाइंदा। आपे मेले साचे राम, राम रूप आप वटाइंदा। आप प्याए साचा जाम, नाम प्याला हथ्थ रखाइंदा। आपे करे प्रकाश कोटन भान, जोती नूर डगमगाइंदा। आप सुहाए सच मकान, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। आप उठाए सच निशान, लोकमात आप झुलाइंदा। आपे शाह पातशाह बणे हुक्मरान, राज राजाना आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। आपे जन भगतां देवे माण, जगत निमाणे आपणे गले लगाइंदा। लक्ख चुरासी विचों कर पहचान, आप आपणा दरस दिखाइंदा। मेल मिलावा हाणी हाण, शब्दी सुरती बन्धन एका पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप उपाइंदा। सच दुआरा उपमा योग, पुरख अबिनाशी आप सुणाईआ। जिस दा राह तक्कण चौदां लोक, परलोक नैण उठाईआ। जिस दुआरे गुर अवतार चल आयण सुणन सलोक, पतिपरमेश्वर एका गाईआ। जिस दा भाणा सके ना कोई रोक, तिस दा दर्शन ब्रह्मा विष्न शिव नेत्र नैणां वेख वखाईआ। जिस दा कोई रोम ना दिसे सोत, घट घट बैठा आसण लाईआ। सच दुआरा इक्क बणाए किला कोट, चार दीवार ना कोए वड्याईआ। जिस दा जस ना गायण रसना होंट, कलम शाही लिख लिख लेख ना कोए मुकाईआ। सो साहिब आपे जाणे आपणा ओत

पोत, गुर अवतार पोतरे रूप खिडाईआ। आदि जुगादी निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाईआ। जन भगतां बख्शे एका ओट, दूसर अवर ना कोए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा लए प्रगटाईआ। प्रगटाउणा दुआरा लोकमात, त्रै पंज मेला सहिज सुभाया। पारब्रह्म प्रभ खोल्हे ताक, त्रैगुण अतीता सेव कमाया। जुग जुग दा पूरा करे भविख्त वाक, गुर अवतारां जो जस गाया। सज्जण सुहेले लए राख, भगत भगवन्त मेल मिलाया। आपे होए पाकी पाक, पतित पुनीत बेपरवाहया। सन्तां बणे सज्जण साक, सगला संग आप निभाया। आपे खोल्हे बन्द ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाया। एका मन्दिर वखाए साचा हाट, सतिगुर बैठा आसण लाया। निरगुण खेल बाज़ीगर नाट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताया। ना कोई ज़ात ना कोई पात, रूप रंग रेख ना कोए वखाया। जन भगतां वसे सदा साथ, विछड़ कदे ना जाया। जोत जगाए मस्तक ललाट, नूर नुराना डगमगाया। आत्म सेजा सुहाए साची खाट, सच सिंघासण सोभा पाया। जुगा जुगन्तर पुछे वात, जुग विछड़े लए मिलाया। अन्तिम मेटे अन्धेरी रात, निरगुण जोत कर रुशनाया। दरस दिखाए इक्क इकांत, इक्क इकल्ला रूप धराया। हरिजन वेखे जिउँ बालक मात, पिता पूत गोद सुहाया। एका बंधे साचा नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। दरगाह साची देवे दात, नाम वण्डण वण्ड वण्डाया। अन्तिम वखाए एका घाट, जिस दा किनारा नज़र किसे ना आया। साहिब दयाल पुरख समराथ, अबिनाशी आपणा रूप वटाया। सम्बल लेखा साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चम्यारा गया समझाया। जिस दा करदे पूजा पाठ, सो पुरख निरँजण मात आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाया। हरिजन जगाउणा किरपा धार, हरि आपणी बूझ बुझाईआ। माणस जन्म देवे पैज संवार, मानुख आपणे लेखे लाईआ। रातीं सुत्तयां करे गुफ्तार, गुफ़त शनीद खेल खिलाईआ। बेऐब परवरदिगार, नूर नुराना सच्चा शहिनशाहीआ। कादर खेल करे करतार, कुदरत वेखे चाँईं चाँईंआ। मुकामे हक मीत मुरार, सांझा यार लए मिलाईआ। एका हक बोल जैकार, लाशरीक दए वड्याईआ। तालब तल्ब ना कोए तल्बगार, तालब तुलबा आप पढ़ाईआ। आलम उल्मा खेल करे अपार, आल्मीन वेस वटाईआ। सोहबत जाणे सर्ब संसार, अभुल भुल कदे ना जाईआ। ग़फ्लत वेखे जीव गंवार, आलस निन्दरा खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए साचा घर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा नव नौं दर, दर दरवेश सुहाईआ। साढे तिन्न तिन्न देवे वर, घर घर वज्जे वधाईआ। सत सत वेखे आपे खड़, रूप अनूप वटाईआ। निरगुण अंदर सरगुण वड़, सरगुण अंदर निरगुण धार चलाईआ। आपणी करनी आपे कर, करता कीमत आप मुकाईआ। एका घाड़न लए घड़, घड़न भन्नणहार हथ्थ वड्याईआ।

लेखा जाणे चोटी जड़, जगत नींह आप धराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लए फड़, एका हुक्म सुणाईआ। सेव कमाउणी आउणा दर, एका घर वखाईआ। छत्ती जुग जिस दा रक्खदे रहे डर, सो डर रिहा मिटाईआ। मेरे भगतां सरन सरनाई जाउ पड़, वेले अन्त लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। सुणो संदेशा एका कन्न, एका वार जणाइंदा। धुर फ़रमाना लैणा मन्न, धुरदरगाही आप सुणाइंदा। जो घड़या सो देवे भन्न, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। कोटन कोटि वेस वटाए सूरज चन्न, कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाइंदा। एका दिवस रसना कहिणा धन्न धन्न, वड धनी आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन सलाह, सुणया हरि परवाना। कलिजुग अन्तिम प्रगट होया, नाउँ धरा विष्नूं भगवाना। विष्नूं पहलां डिग्गीं चरनी आ, सुणना सच तराना। ब्रह्मे दर्शन लैणा पा, वेला गया हथ्थ ना आणा। शंकर धूढ़ी टिक्का मस्तक लैणा ला, तुट्टे माण अभिमाना। पुरख अबिनाशी खेल रिहा करा, लोकमात हो प्रधाना। सचखण्ड दुआरा दए बणा, इक्क झुलाए सच निशाना। शाह सुल्तानां देवे ख़ाक मिला, सीस ताज ना कोए टिकाना। एका हुक्म दए वरता, नौं खण्ड पृथ्मी हो प्रधाना। चार वरनां दए खपा, दीन मज़्हब ना कोए ईमाना। साची शरअ दए वखा, एका इष्ट श्री भगवाना। साचा मन्दिर दए बणा, लेखा जाणे गुण निधाना। चल के दर्शन आईए पा, लै के आईए धुर परवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ सीस रहे झुका। झुकया सीस अगे जगदीस, जगदीसर दया कमाइंदा। नव नौं चार पीसण ल्या पीस, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। जुगा जुगन्तर आप जणावां सच हदीस, मन्त्र अन्तर नाम पढ़ाइंदा। कलिजुग लहिणा देणा चुक्कणा बीस इकीस, बीस बीसा मोह मिटाइंदा। किसे ताज ना रक्खणा सीस, राज राजान ना कोए अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाइंदा। सच दुआरा हरि बणाउणा, हरिजन साची सेव जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर मंगाउणा, एका हुक्म सुणाईआ। निउँ निउँ सभ ने सीस झुकाउणा, नेत्र नैण शरमाईआ। मस्तक टिक्का एका लाउणा, चरन धूढ़ वडी वड्याईआ। तेरयां भगतां दा दर्शन पाउणा, चल के आए पान्धी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाउणे साचे घर, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका वार समझाइंदा। नेत्र नैण लओ उठा, नैण नैणां नाल मिलाइंदा। जो सोहँ ढोला रहे गा, सो भगत भगवन्त बणाइंदा। जिस दा तोला बणया बेपरवाह, साचे कंडे तोल तुलाइंदा। गुरसिखां दा काया चोला ल्या बदला, आपणा चोला आप छुडाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा पर्दा ओहला ल्या उठा, गुरसिखां नाल मिलाइंदा।

चरन धूढ़ी लवो ला, एका दात झोली पाइंदा। साचा मंगल लैणा गा, गीत गोबिन्द सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आवण जावण जावण आवण आपणा खेल कराइंदा। जगत सियासत झूठी धार, राज राजान रुड़्हाईआ। आत्म ब्रह्म ना कोए ज्ञान, जगत विद्या होए शौदाईआ। इक्क दूजे दा करन माण, माण अभिमान वधाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी सर्ब पछतान, मन्त्री प्रधान ना कोई अख्वाईआ। करे खेल श्री भगवान, जिस दा कीता ना कोए उलटाईआ। इक्को साहिब सच्चा हुक्मरान, कोटन कोटि राज भूपत रिहा चलाईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमान, इक्क संदेशा रिहा जणाईआ। सियासत वरासत होए वैरान, सियासत सियासत नाल टकराईआ। जिउँ ऐहरन नाल वज्जे वदाण, सार सार नाल मिलाईआ। तिउँ नाता तुट्टे बेईमान, बेवा दिसे सर्ब लोकाईआ। ख़ावंद सके ना कोए पहचान, ख़लकत रोवे मारे धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जगत सियासत दए मिटाईआ। जगत सियासत जाए खप, सो पुरख निरँजण आप खपाइंदा। अठ्ठे पहर जो तन अग्नी रहे तप, सोच समझ ना कोए रखाइंदा। अन्त किसे ना आउणा किछ हथ्थ, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। जगत सियासत जगत पाए नथ्थ, वांग बन्दर आप नचाइंदा। अन्तिम विकणा झूठे हट्ट, कौडी मुल्ल ना कोए रखाइंदा। जोधे सूरबीर सुल्तान बिन मारयां जाण ढट्ठ, हरि शब्दी खेल वरताइंदा। कोई ना रक्खे किसे दी पत, पितम्बर सीस ना कोए टिकाइंदा। सभ दा खेड़ा होणा भट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत सियासत वेख वखाइंदा। जगत सियासत जगत खेड़ा, चार कुण्ट प्रधानयां। पारब्रह्म प्रभ देवे एका गेड़ा, नव नौ करे वैरानयां। अंदर वड़ छेड़नहारा छेड़ां, करे खेल श्री भगवानयां। अन्तिम धरत मात दा खुल्ल्हा करे वेहड़ा, एका मारे नाम तीर निशानयां। हरि की सियासत जाणे केहड़ा, जुग जुग चले चलावे आपणे भाणयां। जगत वड्याई पाया जेड़ा, जगत सियासत बन्न्हे गानयां। अन्तिम वेला आया नेड़ा, मिटे सर्ब निशानयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल जोद्धा सूरबीर बली बलवानयां। हरि सियासत रक्खे अपर अपार, जुग जुग खेल खिलाईआ। एस सियासत अंदर घल्ले गुर अवतार, गुर अवतार सेवा लाईआ। साध सन्त कर कर गए पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। साचे तख्त बहे सच्ची सरकार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। एका हुक्म वरते एका वार, एका वार करे जणाईआ। कोई मोड़ ना सके विच संसार, कोटन कोटि बैठे सीस झुकाईआ। प्रभ की सियासत ना जाए हार, जगत सियासत ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सियासत सियासत नाल टकराईआ। सियासत नाल सियासत लाए टक्कर, जग टोटे आप कराइंदा। निरगुण निराकार

चारों कुण्ट फिरे बण बण फक्कर, फ़िकर होर ना कोए रखाइंदा। जिस दा जुग चौकड़ी कर के आए ज़िकर, ज़रे ज़रे विच समाइंदा। सो साहिब सतिगुर पूरा सूरबीर बलवान कलिजुग अन्तिम आपणे अखाड़े आए नितर, तीर तलवार हथ्थ ना कोए रखाइंदा। नाम निधाना फड़े छित्र, शरअ शरीअत सर्ब मिटाइंदा। लेखा जाणे जगत पितर, पिता पूत खेल खिलाइंदा। जगत स्यासी वेंहदे रहि जाण बिटर बिटर, बीतया हाल ना किसे जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नाम सियासत आप वड्यांअदा। जिस सियासत दा रखण माण, सो सियासत खाण नूं आईआ। बहत्तर सिखां लौहणी एका वार मुकाण, जगत सत्थर दए विछाईआ ।

★ २३ अस्सू २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच दया होई ★

हुक्मे अंदर धुर फ़रमाना, धुर धामी हरि जणाइंदा। सति पुरख निरँजण साचा राणा, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। अलख अगोचर बेमुहाणा, अगम्म अथाह भेव ना आइंदा। जुगा जुगन्तर वरते भाणा, सद भाणे खेल खिलाइंदा। निरगुण सरगुण जाणे आवण जाणा, आवण जावण, वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी एका गाणा, निरवैर पुरख अलाइंदा। भगतां देवे
१३१५ साचा दाना, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। सति सन्तोखी बन्ने गाना, साचा सगन मनाइंदा। अन्तर आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना, १३१५
ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। साचा देवे पीणा खाणा, अमृत रस आप चखाइंदा। लेखा जाणे मरना जीणा, जीवण मरन आपणे हथ्थ रखाइंदा। जिस जन बख्शे साची सरना, सरनगत आप हो जाइंदा। नेत्र खोले हरना फरना, रूप अनूप आप दरसाइंदा। आपे होए करनी करना, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। आपणा अक्खर आपे पढ़ना, जगत विद्या आप पढ़ाइंदा। निरभउ चुकाए दूजा डरना, भय अवर ना कोए रखाइंदा। साचा घाड़न आपे घड़ना, आपे घड़ घड़ आपे भन्न धराइंदा। जिस दुआरे हरि जू वड़ना, सो मन्दिर सोभा पाइंदा। साचे पौड़े एका चढ़ना, औंदा जांदा दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। धुर धामी हरि निरँकारा, एका एक अख्वाइंदा। सचखण्ड निवासी खेल अपारा, खेलणहारा आप खिलाइंदा। आपे जाणे आपणी धारा, आदि जुगादि चलाइंदा। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, गुर पीर आप पढ़ाइंदा। एका नाम दए सहारा, साची सिख्या सिख समझाइंदा। चरन कँवल दे सहारा, लोकमात प्रगटाइंदा। दीपक जोती कर उज्यारा, जोती जाता वेख वखाइंदा। रागी नादी खेल अपारा, अनहद नादी नाद वजाइंदा। अलख अगोचर आपे जाणे आपणी धारा, दूजी धार ना कोए बणाइंदा। जिस जन खोल्हे बन्द किवाड़ा, सो जन सोझी पाइंदा।

१३१६

गुर अवतार आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निउँ निउँ सीस जगदीस अगे करन हाढ़ा, नेत्र नैण नीर सर्ब वहाइंदा। तेरे हुक्मे साडी कारा, साडी कार तेरी सेवा विच रखाइंदा। तूं साहिब सच्चा मीत मुरारा, तुध बिन धाम ना कोए सुहाइंदा। तूं शाह पातशाह सच्ची सरकारा, शहिनशाह इक्क अख्वाइंदा। सचखण्ड सोहे तेरा मुनारा, उच्च अटल्ला आप वड्यांअदा। निर्मल जोत जगे अपारा, जोती जाता डगमगाइंदा। रूप रंग ते वसे बाहरा, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप धराइंदा। वेस अवल्ला एकँकार, आदि जुगादि धराईआ। जुग चौकड़ी पावे सार, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। भगत भगवन्त दए आधार, सन्त सुहेले गले लगाईआ। गुरमुखां करे सच प्यार, गुरसिख साचे सदा सालाहीआ। निरगुण सरगुण खेल सच्ची सरकार, शाहो भूप आप कराईआ। नाम वणज कराए इक्क वपार, लोकमात हट्ट खुल्हाईआ। चौदां लोक करन पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गगन मंडल रोवे ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गया हार, हरि का भेव कोए ना पाईआ। गुर अवतार करन पुकार, अन्तर एका ओट रखाईआ। कलिजुग आए आपणी वार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शब्द डंका वजाए अगम्म अपार, नौबत आपणा नाउँ वजाईआ। दो जहानां करे ख़बरदार, पुरीआं लोआं आप हिलाईआ। रवि ससि दए आधार, सूरज चन्न वेख वखाईआ। गुरमुख सज्जण लए उठाल, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, एका तत्त दए समझाईआ। मार्ग दस्से हरि सुखाल, निश अक्खर कर पढ़ाईआ। हँ ब्रह्म करे प्रितपाल, सो पुरख निरँजण सच्चा शहिनशाहीआ। इक्क बणाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा दए वड्याईआ। एका घर बहाए शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। धर्मसाल हरि धर्म दुआरा, एका एक जणाइंदा। वरन बरन ना कोए अखाड़ा, ज़ात पात ना नाच नचाइंदा। दीन मज़्हब ना कोए जैकारा, एका पुरख अकाल अल्हाइंदा। चार जुग दा होए छुटकारा, पिछला कीता आपणी झोली पाइंदा। गुर अवतार जो दे दे गए लारा, अन्तिम हरि जू आप पूर कराइंदा। गुरमुख कदे ना रहे कुँवारा, जिस पारब्रह्म प्रनाइंदा। सो सुहञ्जणी होए नारा, जिस हरि कन्त गले गलाइंदा। आप बहाए सच्चे दरबारा, सचखण्ड सिँघासण सोभा पाइंदा। अठ्ठे पहर वजाए प्रेम सतारा, सुर ताल ना कोए रखाइंदा। शब्द अगम्मी सुणाए सच्ची धुन्कारा, छत्ती राग भेव ना आइंदा। इक्क वखाए ठाकर दुआरा, हरि ठाकर आप खुल्हाइंदा। भगतां देवे सति भण्डारा, सति सतिवादी आप वरताइंदा। माणस जन्म ना आए हारा, जन्म अजन्म आपणे लेखे पाइंदा। पूरा करे कौल इकरारा, कीता कौल भुल ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप धराइंदा।

रूप धराए धरनी धर, धरत धवल वड्याईआ। साचे मन्दिर बहे वड़, सम्बल एका नाउँ रखाईआ। गोबिन्द सूरा लए फड़, गुर चेला मेल मिलाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। जगत विद्या ना लए पढ़, आपणी करे सच पढ़ाईआ। चार जुग दे विछड़े लाए आपणे लड़, एका बन्धन नाम पाईआ। दरस दिखाए अगे खड़, स्वच्छ रूप वटाईआ। पुरख अबिनाशी देवे वर, वर दाता सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। सच दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण बणाए बणत, एकँकारा वेख वखाइंदा। आदि निरँजण महिमा अगणत, नूर नुराना डगमगाइंदा। श्री भगवान सोभावन्त, अबिनाशी करता खेल खिलाइंदा। पारब्रह्म आप जणाए आपणा मणीआ मंत, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। नाम नामा वेखे साचे सन्त, भगत भगवन्त आप उठाइंदा। देवे वड्याई विचों जीव जंत, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, हरि का रंग उतर कदे ना जाइंदा । जिस नूं कहिन्दे बेअन्त बेअन्त बेअन्त, सो साहिब वेख वखाइंदा। सर्ब जीआं दा एका कन्त, लक्ख चुरासी आप प्रनाइंदा। जन भगत बणाए तेरी बणत, बन्धन आपणे हथ्थ रखाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाइंदा। नाता तोड़ भुक्ख नंगत, नाम भण्डारा इक्क वरताइंदा। मेल मिलावा साची संगत, संग आपणा आप रखाइंदा। गुरसिख
१३१७ तेरा राह जुग जुग तक्कण जन्नत, स्वर्ग तेरे चरन धूढ़ रमाइंदा। तेरा मेला श्री भगवन्त, जिथे वेखण कोए ना आइंदा। १३१७
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क सुहाइंदा। सच दुआरा हरि सुहाउणा, निरगुण सरगुण बणत बणाईआ। भगत भगवन्त मेल मिलाउणा, भगौती सेव कमाईआ। भगवती निउँ निउँ सीस झुकाउणा, वाह वा वज्जदी रहे वधाईआ। आदि शक्ति नाल मिलाउणा, मिल सख़ीआं मंगल गाईआ। चतुर्भुज सीस झुकाउणा, निउँ निउँ पए सरनाईआ। गुर अवतारां गल विच पल्लू पाउणा, नेत्र नैण ना सके कोए उठाईआ। चार जुग दा लेखा सभ दे अगे धराउणा, अभुल भुल कदे ना जाईआ। अपणयां वेख सर्ब शरमाउणा, आपा किसे कोल नज़र ना आईआ। राम कृष्न ना किसे मनाउणा, ईसा मूसा ना कोए वड्याईआ। मुहम्मद लेख ना किसे चुकाउणा, राणी अल्ला मुख भुआईआ। नानक पल्लू ना किसे फड़ाउणा, दर देवे धक्का लाईआ। गोबिन्द अमृत जाम ना किसे पलाउणा, कलिजुग जीव भुल्ले पान्धी राहीआ। मुर्शद मुरीदां कोलों पल्लू छडाउणा, गुरु सिख किसे ना होए सहाईआ। सभ ने पारब्रह्म अग्गे निउँ निउँ सीस झुकाउणा, तेरी मन्नदे रहे सरनाईआ। आपे कर जो तुध भाउणा, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। हुक्म वरताए श्री भगवाना, भगौती आप जणाइंदा। भगवती बन्ने एका गाना, एका सगन मनाइंदा। एका वार

करे परवाना, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। दाता दानी देवे दाना, दया निध आपणी दया कमाइंदा। आपे होया जाणी जाणा, भेव अभेद खुल्हाइंदा। नव नौं होए प्रधाना, रूप अनूप जणाइंदा। नाद अनादी सच तराना, एका वार सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव होए हैराना, हरि का भेव कोए ना आइंदा। लोकमात करे खेल महाना, निरवैर धार चलाइंदा। चार जुग दा मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला वेखे मकाना, ख़ाली सर्ब कराइंदा। दीन मज़्हब होया दीवाना, दर दर घर घर धक्का लाइंदा। सतिगुर शब्द बैठ मस्ताना, मुख सभ तों आप भुआइंदा। जे कोई दूर दुराडा करे सलामा, लुक लुक आपणा वक्त लँघाइंदा। जे कोई कूक कूक गाए रामा, मन्दिर टल खड़काइंदा। जे कोई सीस ताज रक्ख बणे कान्हा, तिस आपणा रूप ना कदे वखाइंदा। जो नाम सति झूठा गायण गाना, अन्तर विकार ना कोए कढाइंदा। नानक करे ना दर परवाना, दूर दुराडा धक्का लाइंदा। जे कोई फ़तह डंका कहे वजाना, गोबिन्द रूप ना कोए वखाइंदा। कलिजुग कूड़ होया बलवाना, सभ नूं धक्का लाइंदा। एका भुल्लया श्री भगवाना, जो घट घट आसण लाइंदा। जिस दी गुर अवतार मन्नदे रहे आणा, सीस अगे जगदीस ना कोए उठाइंदा। सो कलिजुग अन्तिम लै के आए धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। गुरमुख विरला चतुर सुघड़ सुजाना, जिस जन आपणा मेल मिलाइंदा। देवे दरस श्री भगवाना, जगत तृष्ना हरस मिटाइंदा। एका राग सुणाए काना, धुन अनादी नाद वजाइंदा। आत्म सेजा सोभा पाणा, ब्रह्म पारब्रह्म खेल खिलाइंदा। भाग लगाए साचे मन्दिर सच मकाना, साढे तिन्न हथ्थ रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। हरिजन मेला रविदास चम्यारा, चमढ़ी आपणे हट्ट विकाईआ। निरगुण सरगुण कर प्यारा, सरगुण निरगुण धार वखाईआ। कागद कलम दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जगत जुग दा पार किनारा, जुगत करे बेपरवाहीआ। एका बणे सच मनारा, साढे तिन्न हथ्थ वण्ड वंडाईआ। नव चार लग्गे अखाड़ा, छत्ती छत्ती नाच नचाईआ। नानक निरगुण सरगुण करे पुकारा, एका ओट तकाईआ। तेरा रूप अगम्म अपारा, वड वड्डी तेरी वड्याईआ। तेरा धाम सचखण्ड न्यारा, दिस किसे ना आईआ। आदि जुगादि इक्क इकल्ला सचखण्ड बैठा रहे कुँवारा, तेरा संग ना कोए दसाईआ। तेरा एका वेखां जगत विहारा, लोकमात वेस वटाईआ। भगवन देणा नाम आधारा, भगतन एका दात झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा गुण दए समझाईआ। आपणा गुण हरि समझाया, निष्अक्खर हरि हरि बोल। आपणा आप लए प्रनाया, आदि जुगादी आपे रक्खे कोल। लोकमात लए वेस वटाया, पारब्रह्म अतुल अतोल। हरिजन साचे लए जगाया, घर घर विच कुण्डा खोल्ह। आपणा रूप दए दरसाया, निज आत्म जाए मौल। जोती जोत

१३१८

१३१८

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धरनी धरत धौल। धौल उप्पर भाग लगाउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। सचखण्ड दुआरा आप प्रगटाउणा, सचखण्ड निवासी सोभा पाइंदा। दीन मज़्ह्ब दा डेरा ढाउणा, ज़ात पात पन्ध मुकाइंदा। गुर अवतारां दा हिस्सा अन्तिम सभ दा सभ दी झोली पाउणा, बाकी अवर ना कोए रखाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल दो जहान एका नज़री आउणा, दूजा इष्ट ना कोए मनाइंदा। जगत दुआरा डेरा ढाउणा, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक मिलाइंदा। भगत दुआरा इक्क उपजाउणा, हरिजन साचे विच बहाइंदा। सीस जगदीस छत्र झुलाउणा, छत्ती रागां आसा पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा लेखा हरि निरँकार, निरगुण आपणे हथ्थ रखाईआ। वण्डे वण्ड अगम्म अपार, हिसाब किताब ना कोए रखाईआ। लिख्त लेख ना सके विचार, विद्या गुण ना कोए वखाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी करे पुकार, गुर अवतार रहे जस गाईआ। सो साहिब आपणा करे आप विहार, थित वार आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड निवासी वसणहारा सचखण्ड दुआर, सचखण्ड लोकमात प्रगटाईआ। जिस गृह निरगुण जोत करे उज्यार, सो गृह आपणे रंग रंगाईआ। जिस दर बोले नाम जैकार, तिस घर वज्जे वधाईआ। हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख लए उभार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सोहँ शब्द सच प्यार, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हिस्सा एका वण्ड, पावणहारा उत्भुज सेत्ज जेरज अंड, लहिणा देणा मुकाए लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड, गुरमुखां वखाए इक्क अनन्द, परमानंद आपणा रूप दरसाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि रहे बेपहचान, पहचान विच कदे ना आईआ।

१३१८

जगत सियासत नाता कूड़, कूड़े तन्द नाल बंधाईआ। जन भगतां अंदर सच्चा नूर, नूर नुराना आप धराईआ। सियासत करे मूर्ख मूढ़, चतुर सुघड़ दए भुलाईआ। गुरसिखां मिले चरन धूढ़, दुरमति मैल धुआईआ। बहत्तर भगत कढ्ढे होण ज़रूर, कलिजुग तेरी ज़रूरत पूरी देणी कराईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, आप कराए महूरत महूर, थित वार आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दा पैंडा तक्कदे रहे दूर, सो नेड़े गया आईआ। जिस नूं कहिन्दे सच्चा हज़ूर, हाज़र हो हो दरस दिखाईआ। जगत सियासत डोबे पूर, धक्का एका वार लगाईआ। शाह पातशाह रहे झूर, रातीं सुत्तयां नींद ना आईआ। अन्तिम आपणा मन्नण आप कसूर, एका भुल्लया बेपरवाहीआ। मन वासना करदे रहे ग़रूर, ग़ुरबत काया विच टिकाईआ। मन हंगता करया फ़तूर, फ़तवा इक्क दूजे ते लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वड्याईआ।

हरिजन वड्डा कोल साची वस्त, हरि एका एक फड़ाइंदा। एका रंग वखाए कीट हस्त, ऊँच नीच ना कोए जणाइंदा। नाम ख़ुमारी रक्खे मस्त, धन दौलत पल्ले ना कोए पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप सालांहयदा। जगत सियासत मंगे मंग, दिवस रैण कुरलाईआ। शाह पातशाह बणे रहिण नंग, सीस पल्लू ना कोए टिकाईआ। जगत तृष्ना भरया गंद, झूठी वासना ना कोए मुकाईआ। पिउ दादा पुत पोतरे दी बन्नृदे गए गंढु, अन्तिम ख़ाली हथ्थ वखाईआ। वेखो सियासत हुंदी रंड, रंडी दुहागण चारों कुण्ट दए दुहाईआ। नठ नठ थक्की मुक्या ना पन्ध, जगत भुल्ली रही कुरलाईआ। चार कुण्ट अन्धेरा अन्ध, साचा चन्द ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सभ दी एका वार लाहे डण्ड, डण्ड फेर कोए ना पाईआ। सियासत रोवे जगत कुरलावे, कूक कूक जणाया। इक्क दूजे दे मरन हावे, हाहाकार मचाया। प्रधान मन्त्री कोई नज़र ना आवे, हुक्मी हुक्म ना कोए सुणाया। दर दरवेश होण निथावें, निथाव्याँ थाँव ना कोए दसाया। करे कराए जो प्रभ भावे, प्रभ भाणा आप वरताया। गुरमुख आपणे तोल तुल रहिण सांवें, एथे उथे दो जहानां एका कन्ढा नज़री आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त श्री भगवन्त, सभ दा करे सफ़ाया।

ज़ीरो सिफ़रा जाए लथ, एका कदे ना मुख छुपाईआ। एके नाल कहाणी अकथ, कोटन कोटि इकाई नाल मिलाईआ। इकाई दहाई सैंकड़िआं आपणा मार्ग दस्स, आपणा राह दए वखाईआ। कर खेल पुरख समरथ, अन्तिम सभ दी करे सफ़ाईआ। जिउँ भावे तिउँ करे इक्टठ, मुड़ मुड़ फेर मिलाईआ। कोटन कोटि जुग चौकड़ी गए ढट्ठ, ढा ढा आपणी ढेरी फेर बणाईआ। कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव लै लै वथ, त्रैगुण आपणा रंग रंगाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार पीर उठा उठा हथ्थ, लोकमात गए ताल वजाईआ। कोटन कोटि भगत सन्त गा गा गाथ, उच्ची कूक कूक गए सुणाईआ। आदि जुगादि किसे ना आई हाथ, डूँघे सागर साची भँवर अंदर गए तारीआं लाईआ। आप वेंहदा रिहा खेल तमाश, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। जिस जन देवे आपणा किरन जोत प्रकाश, सो गुरु रूप मात अख्वाईआ। आपणी किरन खिच्चे आपणे पास, पंज तत ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। गिआं पिच्छों गौदे गाथ, ना एथे ना उथे होए कोए सहाईआ। जो आया सो चढ़ के गया हरि के राथ, हरि आपणा आप रथवाहीआ। अन्तिम लै के गया साथ, पिच्छे छड्ड कोई ना जाईआ। जिस नूं कहिन्दे त्रिलोकी नाथ, कोटन कोटि त्रलोकी नाथ चरनां विच सेव कमाईआ । जिस नूं कहिन्दे राम वसे पास, सो राम साचे राम राह तकाईआ। जिस नूं कहिन्दे ईसा मूसा दए पैग़ाम, सो पैग़म्बर इक्क मनाईआ। सभ नूं देंदा रिहा कलाम, आपणी कलाम ना किसे जणाईआ।

आपणा इशारा दए इल्हाम, आपणा भेव ना किसे खुल्हाईआ। आपणी धूढ़ देवे सतिनाम, चरन चरनां उप्पर रगड़ाईआ। नानक निरगुण सरगुण कर प्रनाम, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। पंज तत्त काया माटी लेखे लग्गे चाम, जिस मिल्या सच्चा माहीआ। गोबिन्द निउँ निउँ करे प्रनाम, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। अन्तिम सभ दा पकड़े दाम, दामनगीर फेरा पाईआ। बण के आए बेपहचान, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर आपणी सियासत आप चलाईआ। नेत्र नैण अलक पलक, कदम कदम कदम नाल मिलाईआ। मख़लूक वेखे हरि जू ख़लक, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। लेखा जाणे अर्श फर्श, कुर्श कुरा फोल फुलाईआ। नूर नुराना देवे दरस, बातन आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका पलक एका कदम नाल मिलाईआ।

★ २७ अस्सू २०१८ बिक्रमी हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड छीने जसतर वाल ज़िला अमृतसर ★

शाह पातशाह हरि निरँकार, निरगुण आदि जुगादि समाइंदा। भूपत भूप बण सिक्दार, निरवैर आपणा हुक्म चलाइंदा। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। आदि पुरख हो त्यार, आपणी धारा आप प्रगटाइंदा। सो पुरख निरँजण ख़बरदार, रूप अनूप आप वटाइंदा। हरि पुरख निरँजण पावे सार, अकल कल आपणी कार कमाइंदा। एकँकारा वसे धाम न्यार, अनुभव प्रकाश कराइंदा। आदि निरँजण जोती धार, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता बेऐब परवरदिगार, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। श्री भगवान आपे जाणे आपणी कार, करनी करता आप कमाइंदा। पारब्रह्म आप आपणा कर पसार, हरि आपे वेख वखाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। धुर फ़रमाना इक्क जैकार, नाद अनादी नाद वजाइंदा। थिर घर खोल्हे आप किवाड़, चरन कँवल आप टिकाइंदा। आपे करे आपणा सच प्यार, पिया प्रीतम आप हो जाइंदा। नारी कन्त खेल न्यार, अपरम्पर आपणा आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आप कराइंदा। खेलणहारा इक्क इकल्ला, एका घर सोभा पाइंदा। वसणहारा सच महल्ला, सचखण्ड दुआरे आसण लाइंदा। आपणी जोत आपे रल्ला, जोती जाता डगमगाइंदा। आपणा फड़े आपे पल्ला, आपणा संग आप निभाइंदा। आपणा आसण आपे मल्ला, हरि आपे वेख वखाइंदा। आपणा संदेश नर नरेश आपे घल्ला, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, आदि पुरख सोभा पाइंदा। आदि पुरख पुरख अपारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आप सुहाए सच दुआरा, सचखण्ड निवासी

सोभा पाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनारा, निहचल धाम दए वड्याईआ। जोती जाता हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। कमलापाती खेल न्यारा, कँवल नैण आप कराईआ। हुक्मी हुक्म सच वरतारा, शाह पातशाह आप सुणाईआ। साचे तख्त बैठ साची सरकारा, सीस जगदीश ताज सुहाईआ। आपे निउँ निउँ करे निमस्कारा, दर दरवेश सेव कमाईआ। सो पुरख निरँजण वसणहारा ठांडे दरबारा, हरि पुरख निरँजण रंग रंगाईआ। एकँकार करे सच विहारा, आदि निरँजण जोती धारा, रूप अनूप आप वखाईआ। अबिनाशी करता पावे सारा, श्री भगवान करे खेल न्यारा, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। सचखण्ड वेखे आप अखाड़ा, थिर घर सोहे साचा लाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा भेव हरि निरँकार, आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादी खेल अपार, खेलणहारा आप खिलाइंदा। दाई दाया बण अगम्म अपार, साची सेवा आप कमाइंदा। जननी जन जणे सुत दुलार, शब्दी शब्द नाउँ धराइंदा। थिर घर साचे दए बहाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आपे वसे नाल नाल, विछड़ कदे ना जाइंदा। सचखण्ड निवासी बण दलाल, साचा रंग आप रंगाइंदा। आपणी किरपा रूप प्रगटाए महाकाल, भेव अभेद आप खुलाइंदा। लेखा जाणे सच सच्ची धर्मसाल, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। जोती दीपक एका बाल, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, आपणा खेल आप खिलाइंदा। खेल करे पुरख समरथ, समरथ हथ्थ वडी वड्याईआ। थिर घर देवे साची वथ, शब्द शब्दी झोली पाईआ। निरवैर चलाए आपणा रथ, निराकार बेपरवाहीआ। अगम्म अगम्मड़ी सुणाए गाथ, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। निराकार निराकार निराकार निभाए साथ, सगला संग आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका हरि, आदि पुरख बेपरवाहीआ। आदि पुरख बेपरवाह, आपणा खेल आप कराइंदा। थिर घर साचा आप सुहा, सुत दुलारा आप बहाइंदा। आपे मार्ग देवे पा, साचा राह आप जणाइंदा। हुक्मी हुक्म दए जणा, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। आपणा बन्धन आपे पा, एका गंढु दिवाइंदा। सचखण्ड दुआरा खेल करा, थिर घर आपणे विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वसे एका नर, नर नरायण धार आप प्रगटाइंदा। थिर घर वासा शब्द दुलार, हरि साचा आप रखाईआ। सचखण्ड वसे आप निरँकार, निरगुण बैठा आसण लाईआ। इक्क जणाए साची कार, करता पुरख बेपरवाहीआ। पूत सपूत बणे दुलार, परवरदिगार इक्क जणाईआ। तेरा रंग मेरी धार, मेरी धार तेरे विच समाईआ। मेरा हुक्म सच फ़रमान, साचे सुत सुणना कर ध्यान, सुणावनहारा आप जणाईआ। मेरा नाउँ इक्क ज्ञान, आदि जुगादि बेपहचान, लेखा लिख्त विच ना आईआ।

तेरा वसे थिर घर मकान, सचखण्ड वसे श्री भगवान, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। निष्अक्खर शब्दी दात, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। आपे बैठा रहे इकांत, इक्क इकल्ला खेल खिलाइंदा। आपे पिता आपे मात, सुत दुलारा गोद सुहाइंदा। आपे पुच्छणहारा वात, सीस जगदीस हत्थ रखाइंदा। आपे खोल्हे बन्द ताक, बन्द किवाड़ा आप खुल्हाइंदा। थिर घर वखाए एका हाट, थिर घर साचा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव हरि करतारा, आपणा आप जणाईआ। साचे सुत हो ख़बरदारा, पुरख अबिनाशी रिहा उठाईआ। तेरी सेवा लाए अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। तेरा रूप साची धारा, धार धार विचों प्रगटाईआ। तेरे अंदर खेल न्यारा, निराकारा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख आपणे हत्थ रक्खे वड्याईआ। हत्थ वड्याई आपणे रक्ख, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। करे खेल आप समरथ, आपणा रंग आप रंगाइंदा। बीज बीजे साचे वत, आपणी सेवा आप कमाइंदा। आप बंधाए आपणा नत, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, शब्द सुत हरि प्रगटाइंदा। हरि शब्द अंदर विश्व धार, सो
१३२३ पुरख निरँजण आप जणाईआ। निरगुण प्रगट हो निराकार, आपणा खेल खिलाईआ। साचा पलँघ सेजा साची कर त्यार, १३२३
सच सिँघासण आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी शब्द आप सलाहीआ। सच सलाह देवणहारा, एका हुक्म सुणाइंदा। पारब्रह्म निरगुण धारा, निरवैर वेख वखाइंदा। विष्न विश्व कर उज्यारा, आपणे रंग रंगाइंदा। लेखा जाणे अंदर बाहर गुप्त ज़ाहरा, आपणा दर दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा हरि हरि खोल्ह, एका एक करे जणाईआ। नाउँ निरँकारा आपे बोल, आपणा नाउँ दए जणाईआ। सति सतिवादी तोले तोल, एका तोल दए वखाईआ। वस्त अगम्मी दए अडोल, अडुल बेपरवाहीआ। शब्दी सुत करे चोल्ह, पिता पूत बण माईआ। अन्तर अन्तर जाए मौल, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। विष्नूं अंदर धरे कौल, अमृत मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए जणाईआ। लेखा जणाए हरि करतारा, आपणी खेल खिलाइंदा। विष्नूं नूर नूर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। शब्दी शब्द शब्द पसारा, नेत्र नैण ना कोए रखाइंदा। अलख अगम्म हो त्यारा, आपणी धारा आप जणाइंदा। वेखे विगसे वेखणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, एकँकारा

आप जणाईआ। शाह पातशाह बण बण राणा, साचे तख्त सोभा पाईआ। करे खेल श्री भगवाना, भगवन आपणी धार बंधाईआ। विष्नूं सुण लै कर ध्याना, एका वार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। आपणा पर्दा हरि हरि चुका, आपणा भेव खुल्हाइंदा। जल्वा जलाल नूर प्रगटा, नूर नुराना डगमगाइंदा। विष्नूं सीस जाए झुक, सीस जगदीस अगे टिकाइंदा। तेरी धार गया फुट, मात पित ना कोए रखाइंदा। आदि जुगादि तेरी ओट, एका राह तकाइंदा। तेरा मन्दिर मेरा कोट, चरन दुआर सोभा पाइंदा। तेरा नूर मेरी जोत, जोती जाता डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आपे लांहयदा। हरि हरि पर्दा गया लथ, पारब्रह्म आप लुहाईआ। दरस दिखाए हो प्रगट, निरगुण नूर डगमगाईआ। विष्नूं चरन दुआरे गया ढठ्ठ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। एका देणी साची वथ, मंगां शरन सच्ची सरनाईआ। सगल विसूरे जायण लथ, प्रभ तेरा दर्शन पाईआ। तेरी महिमा इक्क अकथ, आदि जुगादि सदा जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ढह प्या सरनाईआ। देवणहारा वर दातारा, दया आपणी आप कमाइंदा। साची वस्त हरि अपर अपारा, पारब्रह्म आप वरताइंदा। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म पसारा, तेरी कँवल धराइंदा। तेरा नूर कर उज्यारा, नूरो नूर नूर प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि का खेल, भेव अभेद आप जणाईआ। निरगुण निरगुण करया मेल, ना कोई पिता ना कोई माईआ। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेल, आपे बणे दाया दाईआ। आपे गुरु आपे चेल, आपे भिच्छया इच्छया समझाईआ। आपे वसे रंग नवेल, निराकार सच्चा शहिनशाहीआ। ना कोई वक्त ना कोई वेल, थित वार ना कोए गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्नूं एका गुण जणाईआ। विष्नूं सुण कर ध्यान, हरि साचा सच सुणाइंदा। भुल ना जाणा बण नादान, पुरख अबिनाशी एका वार जणाइंदा। आदि जुगादी मेरा खेल महान, भेव कोए ना पाइंदा। मेरा झुलदा रहे निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। सचखण्ड मेरा मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। ना कोई दर किसे दरबान, दरवेश नज़र कोए ना आइंदा। आदि जुगादी एका काहन, इक्क इकल्ला हरि अख्वाइंदा। देंदा रहे धुर फ़रमान, आप आपणा नाम वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, एका राह वखाइंदा। साचा राह श्री भगवान, आदि पुरख जणाईआ। विष्नूं तेरा एका दान, एका वस्त वखाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म करे परवान, पारब्रह्म बंस सुहाईआ। शंकर मेला करे आण, सुन्न अगम्म वड्याईआ। त्रैगुण माया कर प्रधान, झोली दए भराईआ। पंच तत्त कर कल्याण, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रंग रंगाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप सुणाईआ। विष्नूं तेरा सच भण्डारा, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाइंदा। त्रैगुण माया दे सहारा, पंज तत खेल खिलाइंदा। लक्ख चुरासी बण वणजारा, घड़ घड़ भाण्डे आप घड़ाइंदा। एका वस्त दए हरि थारा, अतोट अतुट रखाइंदा। निखुट ना जाए विच संसारा, लोकमात राह चलाइंदा। मेरा नाउँ तेरा जैकारा, साची बाणी आप समझाइंदा। परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाए वारो वारा, चारे ब्रह्मा मुख सालांहयदा। चारे वेदां लाए अखाड़ा, त्रैगुण अतीता आप नचाइंदा। पंचम तत्त बणाए लाड़ा, सीस जगदीस आप गुंदाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, निरगुण सरगुण धार बंधाइंदा। मन मति बुध दए हुलारा, नटूआ आपणा सांग वरताइंदा। जुग चौकड़ी बण लिखारा, जुग जुग आपणी खेल वखाइंदा। सेव लगाए गुर अवतारा, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। भगत भगवन्त दए सहारा, अन्तर आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाइंदा। सन्तन खोल्हे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। गुरमुखां दे नाम आधारा, निर्धन सरधन एका वस्त झोली पाइंदा। गुरसिखां करे सच प्यारा, आप आपणा मेल मिलाइंदा । निरगुण जोत कर उज्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। सूरज चन्न ना कोए सतारा, मंडल मण्डप ना कोए वखाइंदा। एका शब्द नाद धुन्कारा, अनहद नादी नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। विष्नूं सुणया धुर फ़रमान, प्रभ

१३२५ अगे सीस झुकाईआ। तूं आदि जुगादि सदा मेहरवान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। हउँ सेवक बाल नादान, जुग जुग सेव १३२५

कमाईआ। लक्ख चुरासी करां परवान, जो मेरी झोली पाईआ। दर दर सेवा करां आण, बण दरवेश सेव कमाईआ। तेरे भगतां लवां पछाण, जो तेरा नाउँ ध्याईआ। तेरे नाउँ विटुह कुरबान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला कवण वक्त, कवण वार कवण थित, कवण जुग करे हित, आपणा मेल लए मिलाईआ। आपणा वेला हरि जू दस्स, कवण वेला मेल हस्स हस्स, नैण नैणां नाल मिलाइंदा। कवण अमृत देवे रस, रस एका मुख चुआइंदा। हउँ होवां तेरे वस, तुध बिन अवर ना कोए रखाइंदा। मेरी पूरी करनी आस, मैं एका राह तकाइंदा। कद वसां तेरे पास, तेरा विछोड़ा झल्लया ना जाइंदा। तेरा खेल वेख तमाश, तेरी धार चलाइंदा। तेरा रंग वेखां लक्ख चुरासी जोत प्रकाश, घट घट अंदर तेरा रूप नज़री आइंदा। कवण वेला करे बन्द ख़ुलास, कीती घाल लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ भिखक मंग मंगाइंदा। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका हुक्म दए सुणाईआ। विष्नूं सेवा दिती ला, नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग रिहा समझाईआ । इस विचों घटे ना रा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कोटन कोटि जुग चौकड़ी जाण विहा, लोकमात फेरा पाईआ। कोटन कोटिन गुर अवतार जावण सेव

कमा, सरगुण पंज तत्त चोला जगत हंढाईआ। कोटन कोटि भगत भगवन्त गावण जा, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। कोटन कोटि सन्त मंगण साचा थाँ, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका वस्त रिहा वरताईआ। साची वस्त हरि करतारा, करता पुरख आप वरताइंदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग निरगुण सरगुण वरते जगत विहारा, पुरख अबिनाशी आप वरताइंदा। सेवा लगाए गुरु अवतारा, जुग जुग हुक्म जणाइंदा। नाम वस्त भर भण्डारा, लोकमात घलाइंदा। जो आए सो गाए हरि निरँकारा, पुरख अकाल ओट तकाइंदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह पाउण छुटकारा, अन्त हथ्थ किसे ना आइंदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग उतरे पार किनारा, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। विष्नूं तैनूं दए सहारा, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। लोकमात ल्ए अवतारा, निरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा वेला वक्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। विष्नूं वेला अन्तिम आउणा, हरि साचा सच जणाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण निरवैर जोती जामा भेख वटाउणा, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। तेई अवतारां लहिणा देणा चुकाउणा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख वखाइंदा। भगत भगवन्त लेखे पाउणा, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। साचे सन्त दर बहाउणा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्ह्हाइंदा। पीर पैग़म्बर औलीआ मुला शेख़ आपणे रंग रंगाउणा, दस्तगीर आपणा बन्धन पाइंदा। दस गुर गुर भेव चुकाउणा, शब्दी शब्द शब्द अल्ह्हाइंदा। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाउणा, वेद कतेब शास्त्र सिमरत आपणे हथ्थ रखाइंदा। अञ्जील कुराना आपे गाउणा, गीता ज्ञान आप दृढ़ाइंदा। खाणी बाणी आप सुणाउणा, आपणा नाद आप अल्ह्हाइंदा। तीर्थ तट आप बणाउणा, सर सरोवर आप सुहाइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ चढ़ आसण लाउणा, समुंद सागर वेख वखाइंदा। घट घट अंदर जोत जगाउणा, नूर नुराना डगमगाइंदा। गृह गृह अंदर धाम सुहाउणा, साचा मन्दिर आप बणाइंदा। निझर झिरना निज घर चवाउणा, अमृत रस चखाइंदा। गुरमुख विरले भेव खुल्ह्हाउणा, जिस आपणा दरस कराइंदा। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। लिख्या लेख हरि पूर कराउणा, वेद व्यास भुल ना जाइंदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, आपणा नाउँ धराउणा, ज़ात पात ना कोए जणाइंदा। ईसा आस झोली पाउणा, नूर नुराना डगमगाइंदा। मुहम्मद पन्ध आप मुकाउणा, चौदस चौदां वेख वखाइंदा। नानक गोबिन्द आस पूर कराउणा, पूरी आस आपणे हथ्थ रखाइंदा। निहकलंका नाउँ रखाउणा, मात पित ना कोए बणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आप उठाउणा, विष्नूं पल्ला तेरा आपणे नाल बंधाइंदा। चार जुग दा लहिणा देणा मूल चुकाउणा, छत्ती छत्ती खेल खिलाइंदा। भगत भगवन्त आप प्रगटाउणा, भगती आपणी आप दृढ़ाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला गुरसिख काया घर

१३२६

बणाउणा, चार दीवार ना कोए जणाइंदा। अनहद ढोला एका गाउणा, नाद अनादी आप सुणाइंदा। उच्ची कूक ना रौला पाउणा, अजपा जाप आप कराइंदा। आपणा पर्दा आपे लाउहणा, दूई द्वैत ना कोए रखाइंदा। जन भगतां अंदर निरगुण जोत आप जगाउणा, तेल बाती ना कोए पाइंदा। काया खेड़ा लेखे लाउणा, आप आपणे रंग रंगाइंदा। घर विच घर आप वसाउणा, अंदर मन्दिर सोभा पाइंदा। विष्नूं तेरी विश्व धार चलाउणा, चार वरन ना कोए रखाइंदा। ज़ात पात सभ मेट मिटाउणा, मज़्हब दीन ना कोए बणाइंदा। आत्म ब्रह्म सर्ब दरसाउणा, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। वेला वक्त आपणे हथ्थ रखाउणा, शास्त्र सिमरत भेव ना आइंदा। चार वेदां अन्त कराउणा, अञ्जील कुरानां मूल चुकाइंदा। गुर अवतारां निउँ निउँ सीस झुकाउणा, सचखण्ड पुरख अबिनाशी आपणा आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, इक्क इकल्ला वसणहारा सच महल्ला, लोकमात मार झात, लक्ख चुरासी आपणी धार बंधाइंदा। साची धार पुरख अगम्म, आपणी आप बंधाईआ। निहकर्मी करे आपणा कम्म, कर्म गुण ना कोए वड्याईआ। जो घड़या सो देवे भन्न, त्रैगुण बैठी नीर वहाईआ। पंज तत देवणहारा डन्न, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। हरिजन वेखे साचे चन्न, लक्ख चुरासी विचों लए प्रगटाईआ। एका देवे नाम धन, धन ख़जाना इक्क वखाईआ। एका राग सुणाए कन्न, दूजे घर गुरसिख पढ़न ना जाईआ। मन मनूआ देवे बन्न्ह, मन मनसा दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। विष्नूं तेरा मेल मिलाउणा, कलिजुग अन्तिम हरि जणाइंदा। निहकलंकी जामा पाउणा, निरगुण खेल खिलाइंदा। गोबिन्द सूरा इक्क उठाउणा, पूत सपूता नाउँ धराइंदा। राम रूप हरि नज़री आउणा, घट घट रमिआ राम वखाइंदा। कान्हा कृष्ना खेल खिलाउणा, लक्ख चुरासी गोपी आप नचाइंदा। ईसा मूसा रंग चढ़ाउणा, काला सूसा तन छुहाइंदा। मुकामे हक डेरा लाउणा, हक हकीकत फोल फुलाइंदा। लाशरीक इक्क अख्वाउणा, वाहद आपणी कार कमाइंदा। आलमीन फेरा पाउणा, नूर नुराना नूर धराइंदा। बिस्मिल हो हरि घट अंदर डेरा लाउणा, हू हू आपणा नाअरा लाइंदा। एका कलमा नबी पढ़ाउणा, आलम उल्मा आप जणाइंदा। तालब तुलबा आप सिखाउणा, तल्ब अवर ना कोए जणाइंदा। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाउणा, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। निरगुण सरगुण रूप वटाउणा, पंज तत्त काया मेल मिलाइंदा। नानक नानक नानक नाम रखाउणा, त्रैगुण नानक डन्न लगाइंदा। गोबिन्द गोबिन्द गढ़ सुहाउणा, गोबिन्द आपणा सुत बणाइंदा। चार वरन दा डेरा ढाउणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग वखाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। चौदां विद्या एका डोर बंधाउणा, चौदां लोक फोल फुलाइंदा। चौदां

तबकां कुण्डा लाउहणा, आप आपणा हुक्म सुणाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी लक्ख चुरासी एका इष्ट नज़री आउणा, दूजा इष्ट ना कोए जणाइंदा। चतुर्भुज रूप धराउणा, आदि शक्ति नाउँ रखाउणा, शक्ती आपणे रंग रंगाइंदा। साची भगती मार्ग लाउणा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। विष्नूं तेरी गंढु पवाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आदि अन्त श्री भगवन्त, आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणे हथ्थ रक्खे डोर, गुर अवतार भेव ना आया। जुग जुग मातलोक देवे तोर, धुर फरमाना हुक्म सुणाया। जो आया सो चल्लया कर कर ओट, एका ओट पुरख अकाल तकाया। अन्तिम मिल्या निरगुण जोत, जोती जोत जोत समाया। काया छडिआ जगत कोट, थिर घर साचे डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम वेखे हरि भगवन्त, वेखणहार वडी वड्याईआ। वेस वटाए जुगा जुगन्त, जुग करता सच्चा शहिनशाहीआ। हरिजन वेखे साचे सन्त, बेपरवाह बेपरवाहीआ। आपे जणाए आपणा मंत, आत्म परमात्म इक्क पढ़ाईआ। मेल मिलावा नारी कन्त, सच सुहञ्जणी सेज सुहाईआ। गुरमुख उठाए विचों लक्ख चुरासी जंत, जीव जाणे ना कोए वड्याईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, निवण सु अक्खर इक्क समझाईआ । आप बणाए साची बणत, अन्तिम बेड़ा बन्न् चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। जन भगतां सदा होए सहाए, निरगुण आपणी दया कमाइंदा। कलिजुग अन्तिम लहिणा देणा दए चुकाए, पूर्ब लेखा वेख वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े लए मिलाए, आपणा मेला आप कराइंदा। गुर चेला एका धाम बहाए, चेला गुर आप अख्वाइंदा। सज्जण सुहेला सेव कमाए, सो पुरख निरँजण नज़र किसे ना आइंदा। आपणा वेला आपणे हथ्थ रखाए, थित वार ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे आप जगाइंदा। हरिजन साचे जाणा जाग, हरि शब्दी आप जणाईआ। काया मन्दिर अंदर जगे चिराग़, बिन तेल बाती आप जगाईआ । दुरमति मैल धोवे दाग़, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, सोहँ हँसा चोग चुगाईआ। अन्तर उपजे इक्क वैराग, बाहर नज़र किसे ना आईआ। जिस सतिगुर सज्जण गया लाध, सो सगला संग तजाईआ। घर मेल मिलावा मोहण माधव माध, लखमी नरायण दरस दिखाईआ। लक्ख चुरासी विचों लए काढ, त्रैगुण माया लहिणा दए चुकाईआ। एथे उथे रक्खे दे कर हाथ, समरथ हथ्थ वडी वड्याईआ। लहिणा देणा चुक्के पूजा पाठ, जिस मिले सच्चा माहीआ। नहावण जाए ना तीर्थ आठ साठ, जिस जन अन्तर आत्म अशनान कराईआ। दूसर दर सुणन ना जाए पाठ, जिस जन अंदरे अंदर रिहा सुणाईआ। दूजे अगे ना डाहे हाथ, जिस सतिगुर पूरा झोली नाम भराईआ।

ना कोई पुछे जात पात, ऊँच नीच वरन गोत ना कोए रखाईआ। जगत अन्धेरी मेटे रात, घर जोत करे रुशनाईआ। चरन कँवल बंधाए नात, सतिगुर पूरा सो अख्वाईआ। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूर्ब लेखा वेख वखाईआ। अन्त उतारे आपणे घाट, शौह दरया ना कोए रुड़्हाईआ। जन्म जन्म दी मुक्के वाट, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। साहिब दयाल ठाकर कमलापात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। तारनहारा इक्को गुर, हरि शब्दी गुर अख्वाइंदा। आदि जुगादि आवे जावे धाम धुर, धुर धाम आपणा आसण लाइंदा। एका राग एका ताल एका सुर, नाद अनादी आप वजाइंदा। एका अश्व एका घुड़, शाह अस्वार इक्क हो जाइंदा। जुगा जुगन्तर एका जाए बौहड़, रूप अनूप आप वटाइंदा। दो जहानां लाए पौड़, नाम खण्डा हथ्थ रखाइंदा। जन्म जन्म दी बुझाए लग्गी औड़, अमृत मेघ इक्क बरसाइंदा। रस वेखे मिट्ठा कौड़, लक्ख चुरासी फोल फुलाइंदा। वेखणहारा कर कर ग़ौर, बेनज़ीर आपणी नज़र ना कदे बदलाइंदा। जिस जन सतिगुर सज्जण जाए बौहड़, उच्ची शोर ना कदे मचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन विरले आपणे संग लए जोड़, टुट्टी गंढु आप वखाइंदा। टुट्टी गंढुणहार गोपाला, आदि जुगादि दया कमाईआ। भगत भगवन्त वेखे साचे लाला, लाल अनमुल्लड़े आप उठाईआ। पावे सार काया मन्दिर सच्ची धर्मसाला, नौं दुआरे पार कराईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, जाग्रत जोत करे रुशनाईआ। लहिणा देणा चुक्के काल महाकाला, काल ग्रास ना अन्त खाईआ। एका दस्से राह सुखाला, सुख सागर आप समाईआ। सर्ब जीआं करे प्रितपाला, सतिगुर सच्चा सदा सहाईआ। फल लाए काया डाल्ही, पत्त डाल्ही आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त लए मिलाईआ। भगत भगवन्त आप मिलाउणा, आपणी दया कमाइंदा। स्वच्छ सरूपी दरस दिखाउणा, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। जोती नूर डगमगाउणा, नूर नुराना आप अख्वाइंदा। हरि का मन्दिर इक्क वखाउणा, चार दीवार ना कोए बणाइंदा। सूरज चन्द ना कोए चढ़ाउणा, मंडल मण्डप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा। मेल मिलावा हरि हरि धार, जोती जोत मेल मिलाइंदा। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लए उठाल, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। करोड़ तेतीसा लए बहाल, सुरपति राजा इन्द नाल मिलाइंदा। करे खेल दीन दयाल, दीनन आपणा रूप वटाइंदा। कलिजुग अन्तिम होया बेहाल, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। मुहम्मद संग ना निभया नाल, अल्ला राणी मुख शरमाइंदा। अन्तिम सभ दे सिर ते कूके काल, सिर हथ्थ ना कोए रखाइंदा। इक्क दूजे दी करन भाल, सगला संग

ना कोए निभाइंदा। साची वस्त ना दिसे धन माल, नाम धन ना कोए रखाइंदा। आपणा आप गए गाल, करता कीमत कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, विष्नूं पल्ला लए फड़, आपणा बन्धन पाइंदा। हरि वेखणहारा नौं खण्ड महल्ला, मंडल मण्डप वेख वखाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, निरगुण नूर डगमगाईआ। एका वार बोले हल्ला, सफ़ा सभ दी दए उठाईआ। गुरमुखां अंदर आपे रला, जोती जोत कर रुशनाईआ। लेखा जाणे राणी अल्ला, हू हू नाअरा कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए समझाईआ। समझणहारा जाए समझ, हरि साचा शब्द समझाइंदा। हरि का नाउँ साची रमज़, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, ना कोई राग ना कोए तर्ज़, आपणा गीत आप अलाइंदा। विष्नूं भण्डारा देवे दात, हरि साचा आप वरताइंदा। अन्तिम वेख अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। ग्रन्थी पन्थी भुल्ले साची गाथ, अन्तिम निभे ना कोए साथ, सगला संग ना कोए निभाइंदा। किसे नज़र ना आए त्रिलोकी नाथ, कोटन कोटि टल्ल खड़काइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। विष्नूं तेरा निभाए संग, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। कलिजुग नच्चे बण मलंग, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी नार दुहागण होई रंड, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। घर घर अंदर गृह गृह होया घमंड, मन मति करे लड़ाईआ। गुरमति ना गाए कोए सुहागी छन्द, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। किसे ना आए परमानंद, निजानंद गए गंवाईआ। उप्पर चढ़या वेखण चन्द, घर चन्द ना कोए चढ़ाईआ। रसना लाया मदिरा मास गंद, हरि का नाउँ ना सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, तेरा लेखा दए मुकाईआ। कलिजुग तेरा लेखा फोले, हरि साचा वेख वखाईआ। सरगुण अंदर निरगुण बोले, निराकार धार चलाईआ। निरगुण वसे सरगुण ओहले, बिन निज नेत्र नज़र ना आईआ। पहलां आपणा पर्दा खोले, फिर सतिगुर वेखण पाईआ। बोलणहारा कदे ना डोले, अडुल सच्चा शहिनशाहीआ। जिस जन दुआरा आपणा खोले, सो जन वेखण पाईआ। जिस दे गौंदे रहे ढोले, सो चल के आया माहीआ। चार जुग दा तोल तोले, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। गुरमुख मनमुख दोवें फोले, लुकया कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग जीव जगत वरोले, नाम मधाणा एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बोलणहारा रिहा समझाईआ। सरगुण अंदर निरगुण लुक, लुकवीं खेल खिलाईआ। जिस जन पर्दा दए चुक्क, तिस जन नज़री आईआ। अंदरे अंदर पए उठ, आपणा दरस दिखाईआ। सरगुण उत्ते निरगुण

गया तुट्ठ, निरगुण सरगुण रंग रंगाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख जाणे साचा सुत, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। बाहरों दिसे पंज तत काया बुत्त, अंदर पारब्रह्म पति परमेश्वर आपणा आसण लाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म सुहाई रुत्त, फुल फलवाड़ी आप महिकाईआ। जिस ने सवाल कीता उठ, तिस जन आप समझाईआ। निरगुण सरगुण साध संगत, गुरमुख मेल मिलाईआ। अंदर चढ़े नाम रंगत, बाहर काया माटी ख़ाक दिसाईआ। अद्धे बैठे नाम मंगत, अद्धे बैठे खेल खिलाईआ। जिस जन प्रभ मिलण दी बणे बणत, तिस मेले सच्चा शहिनशाहीआ। सरगुण बैठी साध संगत, निरगुण अंदरे अंदर खेल खिलाईआ। सरगुण दिसे पंज तत्त चोला, जो जन दुआरे नज़री आइंदा। निरगुण अन्तर रक्खया ओहला, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। आपणा आप जीव ना जाणे मेरे अंदर कवण बोला, कवण कूटे आसण लाइंदा। कवण मां पिउ भैण भ्रा साक सज्जण गाए ढोला, रसना जिहवा कवण हिलाइंदा। कवण कवण जूठ झूठ पावन रौला, कवण सच सुच्च जणाइंदा। कवण चलाए उप्पर धौला, कवण कूटो कूट फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल कर, संगत अंदर हरि जू वड़, आसण सिँघासण सोभा पाइंदा। सरगुण संगत हरि हरि जोत, निरवैर निरवैर निरवैर आप अखाईआ। काया बणया किला कोट, अंदर लुकया बेपरवाहीआ। जिस जन कढ्ढे हउमे खोट, तिस आपणा आप बुझाईआ। घर तन नगारे लगाए चोट, एका डंका नाम वजाईआ। अंदर जगाए निर्मल जोत, अंदर वसणहारा फेर नज़री आईआ। झगड़न वाले बहुत, नाम पकड़न वाला विरला गुरमुख गुरसिख मिले सच्चे माहीआ। बाहरों दिसदे हिलदे होठ, अंदर हिलाउण वाला दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साध संगत देवे माण वड्याईआ। अद्धे रक्खण सतिगुर आस, दिवस रैण ध्याईआ। अद्धे होए मन के दास, मन वासना फिरे भजाईआ। अद्धे जपण रसन स्वास स्वास, अद्धे गालीआं रहे कढ्ढाईआ। अध्याँ करके जाणी आपणी बन्द ख़ुलास, अद्धे ख़ाली हथ्थ भुआईआ। अध्याँ वसे सदा पास, अद्धे निरास रोवण मारन धाहींआ। सतिगुर नज़र ना आए पृथ्मी आकाश, जो जन बैठे मुख भुआईआ। तिन्हां सतिगुर वसे पास, जो हरि सतिगुर निउँ निउँ सीस झुकाईआ। एथे ओथे करे बन्द ख़ुलास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक्को वर, मंगणहारी सर्ब लोकाईआ। अद्धे मंगण शब्द घनघोर, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। अद्धे रातीं उठ उठ फिरदे चोर, लुट्ट लुट्ट जीवां रहे सताईआ। अद्धे चढ़दे नाम घोड़, सोलां कलीआं आसण पाईआ। अद्धे आपणा आप रहे रोड़, विषे विकारा वक्त गंवाईआ। सतिगुर पूरे दी सदा लोड़, बिन सतिगुर पार ना कोए कराईआ। निरगुण सरगुण तेरी आपणे हथ्थ रक्खी डोर,

१३३१

जिध्धर चाहे रिहा भुआईआ। गुर अवतारां आपणे हुक्मे देवे तोर, अन्तिम आपणे विच लए मिलाईआ। बिन बूझे जीव पावे शोर, समझ समझ विच ना आईआ। अद्धे मंगदे कुछ होर, अधे मंगदे कुछ होर, देवणहारे घर कोई ना थोड़, जो मंगे सो वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरमुख मनमुख मनमुख गुरमुख दोवें राह चलाईआ। निरगुण सुणे निरगुण सुणाए, सरगुण निरगुण आपणी धार रखाइंदा। निरगुण बोले निरगुण गाए, निरगुण आपणी झोली पाइंदा। निरगुण बह बह ख़ुशी मनाए, निरगुण आपणे रंग समाइंदा। सरगुण चोला पर्दा पाए, काया माटी हट्ट वखाइंदा। बिन निरगुण सरगुण रहिण ना पाए, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक वखाइंदा। सरगुण अंदरों निरगुण आपणा बाहर कढाए, पवण स्वास ना कोए चलाइंदा। मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण सभ करे हाए हाए, सरगुण अंदर निरगुण नज़र ना आइंदा। बिन निरगुण सरगुण किसे ना थाए, सरगुण निरगुण बिना ना सोभा पाइंदा। जिस सरगुण अंदर निरगुण डेरा लाए, सो सरगुण लोकमात बूझ बुझाइंदा। गुरु गरंथ अंदर शब्दी धार, नानक नाम सालाहीआ। निष्अक्खर अक्खर कर प्यार, अगम्मड़ा रूप वटाईआ। त्रैगुण माया कर आधार, पंचम होए सहाईआ। पैंतीस अक्खर खोल्ह किवाड़, तिन्न पंज करे कुड़माईआ। निरगुण सरगुण खोल किवाड़, आपणा गुण जणाईआ। भगत भगवन्त दए आधार, भगवन्त रहे जस गाईआ। जिस मिल्या गुर करतार, सो हरि जस रिहा सुणाईआ। नानक अंगद कर प्यार, शब्द गुर वड्याईआ। जोत नूर दे आधार, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। अंगद आपणा खोल्ह किवाड़, एका नैण उठाईआ। अमर दास कर प्यार, अमृत सरोवर नहाईआ। अमृत सरोवर अपर अपार, काया मन्दिर अंदर आप नुहाईआ। तन मन करया ठंडा ठार, अग्नी अग्ग बुझाईआ। बूंद स्वांती अपर अपार, निझर झिरना इक्क झिराईआ। पाया गुर एका वार, गुर कीमत कहिण ना जाईआ। गुर मिलाया एकँकार, निराकार सहिज सुखदाईआ। अमर दास दे आधार, राम दास दए वड्याईआ। राम दास काया मन्दिर अंदर हरि मन्दिर दए वखाल, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण आप फिराईआ। निरगुण जोती जोती जुम्माल, घर घर विच करी रुशनाईआ। अंदरे अंदर वज्जे ताल, नाद अनाद धुन अल्हाईआ। नाम निधाना गाए बेमिसाल, लिखण पढ़न विच ना आईआ। सच दुआरा ल्या भाल, सतिगुर पूरे दया कमाईआ। रामदास दा हल्ल होया सवाल, अंकड़ा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ। काया मन्दिर शब्द नाद, राम दास वज्जी वधाईआ। घर घर विच वेख्या ब्रह्म ब्रह्मादि, पारब्रह्म प्रभ नज़री आईआ। बिन रसना जिहवा खादा स्वाद, रसना रस ना कोए चखाईआ। हरि का नाउँ बोध अगाध, गुर किरपा आप कमाईआ। अर्जन एका ल्या लाध, सुत दुलारे

दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत शब्द देह त्रै मेला सहिज मिलाईआ। पंज तत्त काया देह, अर्जन गुर हंढाइंदा। शब्दी लग्गा साचा नेह, गुरु राम दास लगाइंदा। जोती जाता बरखे मेंह, अमृत मेघ बरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द धार चलाइंदा। गुर अरजण शब्द बाण, हरि शब्दी शब्द लगाया। लेखा जाणे धुर फ़रमान, अगम्म अगम्मड़ा गाया। नानक अंगद अमर रामदास मिल्या आण, एका घर वसाया। चौथे पद होया परवान, घर चौथा एका पाया। पंचम मेल श्री भगवान, विछड़ कदे ना जाया। भगत भगवन्त वेखे आण, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। देवे सच संदेशा वाली दो जहान, लोकमात आप सुणाया। चार वरनां इक्क ज्ञान, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। हिन्दू मुस्लिम ना कोए ईमान, शरअ शरीअत ना कोए बणाया। काया मन्दिर वखाया सच मकान, जन भगतां नाल मिलाया। इक्क इकल्ला जगत बबाण, पुरख अबिनाशी रिहा उडाया। आओ भगतों चढ़ो आण, उच्ची कूक कूक सुणाया। भुल ना जाए कोई बण नादान, बिन सतिगुर पूरे पार ना कोए कराया। सतिगुर पूरा हरि का शब्द सदा मेहरवान, पंज तत्त खेड़ा दए वसाया। आपे वसे नाल भगवान, साचे मन्दिर सोभा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी आपणी वण्ड वंडाया। देह जोत कीती अड्ड, पारब्रह्म दया कमाईआ। पंज तत्त अंदरों शब्द कढ्ढ, काग़ज कलम लिखी शाहीआ। भगतां दिती एका मति, ब्रह्म मति गया समझाईआ। उत्तम रक्खया हरि का तत्त, रूप रंग ना कोए रखाईआ। गा गा सुणाया हरि जू जस, रसना जिहवा एका गुण सुणाईआ। पूरी करे सभ दी आस, जो चले प्रभ रज़ाईआ। शतरी ब्रह्मण शूद्र वैश गुर का शब्द दासी दास, सेवक सेवा सेव कमाईआ। नानक अर्जन हरि गुण गाया। कोई ना जाए निरास, जो जन अग्गे झोली डाहया। सतिगुर सदा वसे पास, ना मरे ना जाया। पंचम शब्द कर प्रकाश, गुर अर्जन अंक मुकाया। नौं दुआरे कर तमाश, नावां गुर खेल कराया। अन्तिम सभ दा लेखे वेखे स्वास, बिन हरि लेखा कोए ना पाया। दसवें घर कर प्रकाश, गोबिन्द सूरा हरि उठाया। अन्तिम करया खेल तमाश, जगत नदेड़ दए वसाया। गोदावरी पूरी कीती आस, चरन कँवल छुहाया। एका साता छीका पांजा कर प्रकाश, परम पुरख राह तकाया। गुर का शब्द ना होए विनास, एका वाक मुख अल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द गुर प्रगटाया। गुरु ग्रन्थ गोबिन्द संदेश, गुरमुखां करे पढ़ाईआ। तिस साहिब को करो आदेस, जो घट घट रिहा समाईआ। सो साहिब नानक ल्या वेख, अंगद अमरदास गया वखाईआ। तिस दा मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, राम दास रिहा सालाहीआ। गुर अरजण लिख्या लेख, गुर बाणी रूप प्रगटाईआ। जिस दा ना कोई रूप ना कोई भेख, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। आदि

१३३३

जुगादि नेतन नेत, नेरन नेर नेर अख्वाईआ। गुर शब्द खोजो काया खेत, अट्ठे पहर करे शनवाईआ। अर्जन सीस पवाई तत्ती रेत, गुरसिखां सांतक सति गया वरताईआ। जो जन सतिगुर करे हेत, तिस गुरु ग्रन्थ रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरबाणी दिता शब्द ज्ञान, गुरु ग्रन्थ वेखणा मार ध्यान, त्रैगुण पंज तत्त करे परवान, देह रूप दए वड्याईआ। बिन देह ना गुर की धार, गुर सतिगुर आप जणाइंदा। बिन देह ना गुर का शिंगार, गुर रंग ना कोए रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरु ग्रन्थ गुर ज्ञान जणाइंदा। साचा घर निरभउ चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोए रखाया। गुरु ग्रन्थ मन्नणा गुरदेव, गुर महिमा लेख लिखाया। सतिगुर साचे दी साची सेव, धुर फ़रमाना रिहा जणाया। आत्म परमात्म मिले मेव, साचा रस इक्क खुआया। होए सहाई अलख अभेव, अलख अगोचर बेपरवाहया। आदि जुगादि सदा निहकेव, निहचल धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म धुर फ़रमाना, पुरख अबिनाशी देवे राणा, गुर गुर गाया साचा गाणा, लक्ख चुरासी जीव समझाया। गुण गाया पुरख समरथ, गुरु ग्रन्थ जगत वड्याईआ। जगत विकारे पावे नथ्थ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए मिटाईआ।
१३३४ आसा तृष्ना दए मथ, माया ममता नाल रलाईआ। नाम चढ़ाए साचे रथ, जो जन चढ़े चाँईं चाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, फड़ मार्ग देवे पाईआ। मुख मोड़ जो जाए नस्स, तिस धक्का देवे लाईआ। बिरहों तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। गुर का शब्द जन हिरदे जाए वस, सो खोजत खोजत पाईआ। भाई खोजो करो ना बस, प्रभ आवे वाहो दाहीआ। जुग जुग भगत दुआरे रिहा नस्स, गुरु ग्रन्थ रिहा समझाईआ। ध्रू प्रहिलाद पूरी करी आस, निरासा कोई नज़र ना आईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर बन्द ख़ुलास, बन्दी छोड़ बेपरवाहीआ। अमरीक बधक गनका तारी बिदर सुदामे वसया पास, कबीर जुलाहे दए वड्याईआ। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड पार कराईआ। रविदास चम्मयारा ना होया नास, कसीरा कंगण आप बणाईआ। सैण होया दासी दास, बण बण सेवक सेव कमाईआ। जनक दिती साची रास, नाम अनमुल्ल इक्क वरताईआ। पूतना कर इक्क प्रकाश, अन्तिम आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, काया अंदर वेखे वड़, गुर का शब्द रिहा जगाईआ। काया अंदर गुरमुख वड़, गुरु ग्रन्थ समझाया। सुरत शब्द लए फड़, शब्द सुरती मेल मिलाया। बजर कपाटी तुट्टे गढ़, अज्ञान अन्धेर चुकाया। अमृत झिरना झिरे झर, निझर मुख खुल्हाया। आत्म ब्रह्म मिले वर, पारब्रह्म मिलाया। साची सेजा बहणा चढ़, सच सिँघासण सोभा पाया। सतिगुर पूरा दरस दिखाए अग्गे खड़, निरगुण निरगुण मेल मिलाया। नानक अक्खर १३३४

जो जन जाए पढ़, तिस गुरु ग्रन्थ होए सहाया। जो जन जगत अग्न रहे सड़, तिस गुर ना करे प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपे जाणे साची धारा।

★ २८ अस्सू २०१८ बिक्रमी गुरदित सिँघ दे गृह पिण्ड मानां वाला ज़िला अमृतसर ★

शब्द निशाना करे पुकार, प्रभ अगे सीस झुकाईआ। कर किरपा मेरे शाह सिक्दार, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल अपार, वेद पुराण रहे जस गाईआ। तूं शाह पातशाह सच्ची सरकार, तख्त निवासी सच्चा शहिनशाहीआ। हुक्मी हुक्म तेरा वरतार, हुक्मे अंदर खेल खिलाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार, हुक्मे अंदर बूझ बुझाईआ। हुक्मे अंदर जुग जुग हो उज्यार, जोती नूर करे रुशनाईआ। हुक्मे अंदर वेखे अन्त किनार, सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकाईआ। हुक्मे अंदर नाद शब्द धुन्कार, हुक्मे अंदर राग अलाईआ। हुक्मे अंदर ब्रह्मण्ड खण्ड पसार, हुक्मे अंदर जेरज अंड वज्जे वधाईआ। हुक्मे अंदर मेल मिलावा पुरख नार, हुक्मे अंदर लक्ख चुरासी आपे जाईआ। हुक्मे अंदर तीर्थ तट किनार, हुक्मे अंदर जलधारा सेव कमाईआ। हुक्मे अंदर मन्दिर मस्जिद मठ गुरदुआर, हुक्मे अंदर रंग रंगाईआ। हुक्मे अंदर भरे सर्ब भण्डार, बण दाता
१३३५ बेपरवाहीआ। हुक्मे अंदर वरते सच वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हुक्मे अंदर आई अन्तिम वार, कलिजुग कूक १३३५
कूक कुरलाईआ। हुक्मे अंदर राह तक्के मुरार, दिवस रैण नैण उठाईआ। हुक्मे अंदर मदीने मक्के फिरे परवरदिगार, हुक्मे अंदर काया काअबा साचा हुजरा दए सुहाईआ। हुक्मे अंदर नाम सति बोल जैकार, हुक्मे अंदर वाहिगुरु फ़तह गजाईआ। हुक्मे अंदर वरन बरन कर प्यार, हुक्मे अंदर ज़ात पात वण्ड वंडाईआ। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण लै अवतार, भगत भगवन्त लए तराईआ। हुक्मे अंदर सच प्रीती निभाए नाल, लग्गी प्रीत तुट ना जाईआ। हुक्मे अंदर करे प्रितपाल, सेवक साची सेव कमाईआ। हुक्मे अंदर गगन मंडल दीपक वेखे थाल, साचे मन्दिर आप सुहाईआ। हुक्मे अंदर शाह कंगाल, हुक्मे अंदर दर दर घर घर फेरा पाईआ। हुक्मे अंदर करे सवाल, बण सवाली अलख जगाईआ। हुक्मे अंदर काल महाकाल, लक्ख चुरासी फड़ फड़ खाईआ। हुक्मे अंदर राए धर्म आपणे दर ल्या बहाल, चित्रगुप्त लिख लिख लेख वखाईआ। हुक्मे अंदर पत्त रहिण ना देवे किसे डाल्, हुक्मे अंदर फुल फलवाड़ी आप महिकाईआ। हुक्मे अंदर कलिजुग करे खेल न्यार, तेरे हथ्थ वडी वड्याईआ। हुक्मे अंदर मेल मिलावा सिँघ पाल, दर घर साचे सोभा पाईआ। हुक्मे अंदर माण दवाए छोटे बाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हुक्मे अंदर नौं दुआरे खोल् किवाड़, जगत संदेशा रिहा सुणाईआ। हुक्मे अंदर साढे तिन्न

हथ्थ मुनार, जगत मुनारा देवे डाहीआ। हुक्मे अंदर भगत भगवन्त कर त्यार, भगतन साची बूझ बुझाईआ। हुक्मे अंदर सच निशाना उच्ची कूक कूक करे पुकार, नेत्र नैणां रो रो नीर वहाईआ। मेरा बण मददगार, एका मंग मंगाईआ। हुक्मे अंदर कर आपणा खेल न्यार, तेरा हुक्म मेरे शहिनशाहीआ। हुक्मे अंदर तेरा रंग अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। हुक्मे अंदर तेरा रंग, हुक्मे आप चढ़ाइंदा। हुक्मे अंदर तेरा संग, सगला संग आप वखाइंदा। हुक्मे अंदर तेरा अनन्द, अनन्द अनन्द विच प्रगटाइंदा। हुक्मे अंदर सूरज चन्द, कोह करोड़ी आप भवाइंदा। हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी मेटे पन्ध, गेड़ा गेड़े विच भवाइंदा। हुक्म अंदर गीत सुहागी गाए छन्द, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। हुक्मे अंदर टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार गोपाल आपणी गंढु पवाइंदा। हुक्मे अंदर पावे ठंड, सीतल धारा इक्क चुआइंदा। हुक्मे अंदर नाता तोड़ रंड, आत्म परमात्म एका घर बहाइंदा। हुक्मे अंदर ढावे झूठी कंध, दूई द्वैती ना कोई रखाइंदा। हुक्मे अंदर रक्खया बन्द, बन्द दुआरा ना कोए खुलाइंदा। हुक्मे अंदर भगत भगवन्त जन गा गा गए बत्ती दन्द, रसना जिहवा सर्ब हिलाइंदा। तूं क्यों सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट ना आप बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप वसाउणा आपणा घर, सच दुआर जग जणाइंदा। हुक्मे अंदर सच दुआर, पुरख अबिनाशी खेल कराइंदा। भगत

१३३६
भगवन्त दए सहार, भेव अभेव जणाइंदा। हुक्मे अंदर बण बण मीत मुरार, सगला संग निभाइंदा। हुक्मे अंदर साची सेजा आत्म खाट पावे सार, सच सिँघासण आसण लाइंदा। हुक्मे अंदर हुक्म वरतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच निशाने एह समझाइंदा। सच निशाने मेरे संगी, प्रभ सज्जण दया कमाईआ। देवां वस्त इक्क अणमंगी, अमोलक झोली पाईआ। तेरी कंड ना होवे नंगी, हरिजन तेरे नाल मिलाईआ। वरभण्ड ना पाए कोई भंडी, भंडी सभ दी दयाँ कराईआ। इक्क चलावां साची डण्डी, रहिबर बणां बेपरवाहीआ। भेव खुल्लावां जेरज अंडी, उत्भुज सेत्ज सोभा पाईआ। जगत वासना कढुां गंदी, कूड़ी क्रिया कर सफ़ाईआ। कलिजुग औंध अन्तिम हंढी, लहिणा देणा दयाँ चुकाईआ। एका पाठ एका छन्दी, गीत गोबिन्द रिहा अल्लाईआ। ना कोई पुजावे पिण्डी, देवत मंग ना कोए मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच निशाने रिहा समझाईआ। सच निशाना सुण फ़रयाद, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। तेरा मेला आदि जुगादि, जुग जुग संग निभाइंदा। भगतां देवां भगती दाद, नाम भण्डारा आप वरताइंदा। लक्ख चुरासी विचों काढ, तेरा मेल मिलाइंदा। पिता पूत लडाए लाड, साची गोद आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सिर रक्खे हथ्थ निरँकारा, हरिजन साचे सच प्रगटाईआ। तेरा दर सुहाए

सच्चा दुआरा, धुर दरबारा नाउँ रखाईआ। भगत भगवन्त कर उज्यारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। इक्क वखाए ठाकर दुआरा, हरि ठाकर ठोकर लाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोई मुकाईआ। आपणी किरपा करे अगम्म अपारा, किरपा निध सच्चा शहिनशाहीआ। जन्म कर्म धर्म आपे जाणे जानणहारा, पूर्ब पूर्ब लेखा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा संग इक्क वखाईआ। तेरा संग विच संसार, वड संसारी आप कराइंदा। तेरा मृदंग नाम नगार, निराकार आप वजाइंदा। तेरा हुक्म सच वरतार, चार कुण्ट सुणाइंदा। तेरा भगत नाम भण्डार, भगती दान झोली पाइंदा। दर करे अकट्ठे एका वार, गुण अवगुण ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मेला मेल मिलाइंदा। तेरा मेला हरि मिलाउणा, शब्द विचोला दए सलाहीआ। भगत दुआरा इक्क खल्हाउणा, बहत्तर नाड़ ख़ुशी मनाईआ। साता दूआ दूआ साता, कँवल कँवला अमृत झिरना आप झिराउणा, निझर झिरना आप झिराईआ। अव्वल अल्ला नूर दिसाउणा, कुदरत वेखे चाँईं चाईआ। सच महिराबे आपे आसण लाउणा, बांग हदीस इक्क अल्हाईआ। पीर पैग़म्बर दस्तगीर दर मंगाउणा, एका कलमा करे पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी लेखा लिख लिख हथ्थ फड़ाउणा, हथ्थ रक्खे कलम शाहीआ। हरिजन साचे तेरे संग रलाउणा, सख़ी सरवर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत दुआरा कर परवान, सतिजुग वखाए इक्क निशान, जगत निशाना नज़र कोए ना आईआ।

१३३७

★ २८ अस्सू २०१८ बिक्रमी चरन सिँघ दे घर ★

सेवा करे श्री भगवान, भगतन चाकर चाक अख्वाइंदा। भगत झुलाए सच निशान, निशाना आप उठाइंदा। दर घर कर परवान, नाम परवाना इक्क वखाइंदा। गृह गृह होए जाणी जाण, जानणहारा भेव खुल्हाइंदा। कलिजुग अन्तिम देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। साचा मन्दिर हरि का दुआर, हरी हरि आप उपजाईआ। भगतन मेले हरि जू आण, भगती देवे माण वड्याईआ। नाता तोड़ जगत जहान, साची शरअ दए समझाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। अलिफ़ ये कर कर थक्की ब्यान, पैंतीस अक्खर देण ग्वाहीआ। बावन खेल करे मेहरवान, अछल अछल वडी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, आपणी दया आप कमाईआ। दयावान होए महिरवान, महिबान नूर अलाहीआ। हरिजन साचे करे सवाधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क सुहाईआ। सच दुआरा हरि सुहाउणा, सोभावन्ता आप सुहाइंदा।

सचखण्ड लोकमात बणाउणा, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ाइंदा। पंचम रंग इक्क चढ़ाउणा, नाड़ बहत्तर वेख वखाइंदा। सच सिँघासण सोभा पाउणा, तख्त निवासी आसण लाइंदा। नाम निधाना एका गाउणा, दूसर राग ना कोए अल्ाइंदा। हरिजन सज्जण आप मिलाउणा, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। लोकमात पुरख अबिनाशी सच निशान झलाउणा, सच निशाना आप उपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर दरबारा आप सुहाइंदा। दर दरबार सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणी धार चलाईआ। हरिजन उठाए साचे सन्त, सतिगुर सच्चा बेपरवाहीआ। इक्क जपाए नाम मंत, मन का मणका आप भुआईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए दरसाईआ। जिउँ नानक अंग लगाया अंगद, अंगीकार आप हो जाईआ। मेल मिलावा साची संगत, घर साचे वज्जे वधाईआ। काया चोली चाढ़े रंगत, रंग चिट्टा इक्क वखाईआ। नाता तोड़े भुक्ख नंगत, जगत तृष्ना दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे दए वड्याईआ। सच दुआरे सेवक बण, हरि जू हरि हरि सेव कमाइंदा। आप उठाए आपणे जन, जन जननी वेख वखाइंदा। रागी राग सुणाए कन्न, तार सितार ना कोई हिलाइंदा। भाण्डा भरम देवे भन्न, मन का भरम चुकाइंदा। भाग लगाए साचे तन, पंज तत काया चोला आप हंढाइंदा।

१३३८ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप प्रगटाइंदा। भगत दुआरा करे प्रगट, प्रगट होए आप निरँकारा। लहिणा चुक्के चौदां लोक चौदां हट्ट, चौदां तबक करे निमस्कारा। नाता तुट्टे अठसठ, पन्ध मुक्के तट किनारा। लहिणा चुक्के मन्दिर मस्जिद मठ, करे खेल अपर अपारा। हरिजन साचे लए रक्ख, निहकलंक नरायण नर अवतारा। लोकमात करे प्रतक्ख, करे सच विहारा। लक्ख चुरासी नारी करे वक्ख, इक्क बणाए नाम वणजारा। सतिजुग साचा मार्ग दस्स, देवे नाम सहारा। मेल मिलाए हस्स हस्स, इक्क इकल्ला एकँकारा। जुग चौकड़ी पूरी करे आस, खोल्ह सच किवाड़ा। लहिणा देणा चुक्के जगत प्रभास, मन्दिर सोहे अपर अपारा। जन भगतां मिल मिल पाए रास, गोपी काहन खेल न्यारा। सेवा करे बण बण दास, सेवक रूप आप निरँकारा। लहिणा वेखे पृथ्मी अकाश, भेव चुकाए रवि ससि सतारा। जन भगतां करे बन्द ख़लास, लक्ख चुरासी पार किनारा। अठ्ठे पहर रहे प्रभात, वेला वक्त ना कोई विचारा। निरगुण सरगुण देवे साथ, हरि सज्जण मीत मुरारा। नाम निधान सुणाए गाथ, लिखण पढ़ण ते वसे बाहरा। लेखा जाणे तत्त अठ्ठ अप तेज वाए पृथ्मी आकास, मन मति बुध दए सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप बणाए सच मुनारा। सच मुनारा साढे तिन्न हथ्थ, त्रैगुण अतीता आप बणाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ हथ्थ वड्याईआ। सन्त सुहेले

कर इक्टठ, भगत भगवन्त लए जगाईआ। सगल विसूरे जायण लथ, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। लेखे लाए रती रत, पंज प्यारे सेव कमाईआ। बीज बीजया आपणे वत, फल आपे वेख वखाईआ। गोबिन्द नीआं गया रक्ख, बाले नीआं हेठ चणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा दए जणाईआ। भेव जणाउणा गोबिन्द धार, धार धार नाल मिलाईआ। सत्थर हंढाया साचे यार, सूलां सेज इक्क विछाईआ। मेल मिलावा अन्तिम वार, एका घर वज्जे वधाईआ। पहला कर्जा दए उतार, अगे लहिणा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा दए सुहाईआ। सच दरबारा डूँघी गार, साढे तिन्न तिन्न आप जणाइंदा। आपे जाणे आपणी कार, करनी करता कार कमाइंदा। नगर खेड़ा वेखे विच संसार, जग आपणा रूप वटाइंदा। गुरमुखां महल्ल अपर अपार, निरगुण दीप इक्क जगाइंदा। कमलापाती मीत मुरार, घर घर विच ख़ुशी मनाइंदा। गावे गीत सुहागी आपणी वार, छत्ती राग भेव ना आइंदा। भगतन साचे लए उठाल, भगवन दया कमाइंदा। छत्ती जुग दी निभे नाल, नौं नौं चार बन्धन पाइंदा। नौं नौं चार खा खा गया काल, हड्ड मास नाड़ी रत नज़र किसे ना आइंदा। अन्तिम खेल करे हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। मानस मानस कर परवान, मानस जन्म दवाइंदा। आपणा मेला मेले आण, मिल्या मेल ना कोई तुड़ाइंदा। आपणी बख़्शे आप पहचान, बेपहचान पहचान विच कदे ना आइंदा। इक्क वखाए सच मकान, भगत दुआरा सोभा पाइंदा। सृष्ट सबाई होए हैरान, हरि कवण खेल कराइंदा। जिस सिर हथ्थ धरे हो मेहरवान, सो जन भगत भगवन्त अख्वाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन पढ़यां देवे इक्क ज्ञान, जगत विद्या लेखे किसे ना लाइंदा।

१३३८

★ २८ अस्सू २०१८ बिक्रमी सरिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड भुल्लर ज़िला अमृतसर तहिसील अजनाला ★

तख्त निवासी साचे तख्त बहणा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। थिर घर वासी मन्नया कहिणा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव भाणा सहिणा, सद भाणा इक्क वखाईआ। लक्ख चुरासी वेखे नैणां, निरगुण सरगुण फोल फोलाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग चुक्के लहिणा देणा, अन्तिम अन्त झोली पाईआ। जूठ झूठ झूठे वहण वहणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। साचे तख्त सोहे भगवाना, नूर नुराना डगमगाइंदा। थिर घर बोले नाद तराना, शब्दी शब्द अलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे परवाना, निउँ निउँ सीस जगदीस झुकाइंदा। लक्ख चुरासी देवे दाना, एका वस्त वरताइंदा। नाद अनादी धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी आप सुणाइंदा।

आत्म परमात्म मेल महाना, पारब्रह्म ब्रह्म प्रगटाइंदा। ईश जीव बन्ने गाना, जगदीस सेव कमाइंदा। इक्क वखाए हरि मकाना, साचा मन्दिर आप सुहाइंदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप रखाइंदा। पावे सार दो जहानां, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाइंदा। शाह पातशाह राज राजाना, भूपत भूप आप हो आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा। साचे तख्त बहे श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड झुलाए सच निशान, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। दर दरवेश बण दरबान, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमान, सच संदेशा दए जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाईआ। लक्ख चुरासी कर परवान, लोकमात खेल खिलाईआ। मन मति बुध कर प्रधान, तत्व तत इक्क समझाईआ। काया मन्दिर वेख मकान, सच सिँघासण दए वड्याईआ। करे खेल नौजवान, बिरध बाल ना रूप धराईआ। आदि जुगादी एका काहन, साचे मंडल रास रचाईआ। घट घट जोती जगे आण, दीपक दीआ ना कोई वखाईआ। राग अनाद शब्द धुन्कान, गृह मन्दिर आप वजाईआ। करे खेल हो मेहरवान, दयावान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। तख्त बह हरि राजन राजा, राज जोग आप कमाइंदा। आपे आपणा रच रच काजा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। शब्द अगम्मी रक्खे ताजा, अश्व घोड़ा आप दुड़ाइंदा। दो जहानां फिरे भाजा, लोकमात वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तख्त आप सुहाइंदा। साचे तख्त आपे चढ़, घर साचा आप सुहाइंदा। करे खेल नरायण नर, नर नरायण धार बंधाइंदा। जोती जाता देवे वर, पुरख बिधाता झोली पाइंदा। दर दुआरे आपे खड़, सच महल्ला आप सुहाइंदा। सचखण्ड बणाए एका गढ़, चार दीवार ना कोई जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। आपणा भेव खोल्हे निरँकार, आदि पुरख वडी वड्याईआ। सचखण्ड वसे धाम न्यार, थिर घर साचे बणत बणाईआ। सुन्न अगम्मी खेल न्यार, निराकार आप वखाईआ । शब्दी शब्द कर प्यार, सुत दुलारा लए समझाईआ। विश्व विष्नूं लए उठाल, आप आपणा रंग रंगाईआ। अमृत आत्म इक्क प्याल, कँवल नाभी खेल खिलाईआ। ब्रह्मे कर सदा प्रितपाल, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। शंकर वेखे आपणा लाल, आप आपणी गोद सुहाईआ। तिन्नां विचोला बण दलाल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। चरन कँवल वखाए सच्ची धर्मसाल, सच दुआरा लए प्रगटाईआ। एका अग्गे रक्खे सवाल, आपणा नाउँ नाउँ समझाईआ। एका वस्त दए धन माल, सच ख़ज़ाना आप वरताईआ। एका प्रीत निभाए नाल, महाकाल वडी वड्याईआ। एका फल लगाए डाल्ह, पत्त डाल्ही आप महिकाईआ। आदि पुरख आपणी घाल आपे घाल, आपणा

१३४०

रूप अनूप समझाईआ। त्रैगुण देवे इक्क दान, पंचम मेला मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मी हुक्म आप वरताईआ। सचखण्ड बहे साचे तख्त सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह नाउँ धराइंदा। आदि जुगादी इक्क मलाह, जुग जुग वेस वटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे सच सलाह, साची सिख्या इक्क रखाइंदा। निष्अक्खर नाउँ दए पढ़ा, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। निरगुण निरगुण पकड़े बांह, आपणा मेला आप मिलाइंदा। सदा सुहेला सिर रक्खे ठंडी छाँ, समरथ आपणा हथ्थ आप उठाइंदा। इक्क वखाए साचा थाँ, थिर दरबारा सोभा पाइंदा। आपे बणे पिता मां, दाई दया सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, विष्न ब्रह्मा शिव देवे वर, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। वस्त अमोलक साची दात, पुरख अबिनाशी आप वरताईआ। करे खेल बहु बिध भांत, भेव अभेदा भेव खुल्ह्राईआ। चरन कँवल वखाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। बैठा रहे आप इकांत, इक्क इकल्ला साचा माहीआ। आपे खोल्ह्रे बन्द ताक, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। आप वखाए साचा हाट, हट्ट हटवाना सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाईआ। साचे तख्त हरि जू चढ़या, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। आपणे मन्दिर आपे वड़या, नज़र किसे ना आईआ। आपणा पल्लू आपे फड़या, आपणा संग निभाईआ। निर्भय होए कदे ना डरया, भय अवर ना कोई जणाईआ। आपणा कारज आपे करया, आपे वेखे चाँईं चाईआ। आपणा आप आपे वरया, नारी कन्त रूप वटाईआ। आपणे दुआरे आप खड़्या, दर दरवेश वेस वटाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़या, ना मरे ना जाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़या, लिख लिख लेख ना कोए समझाईआ। अग्नी हवन कदे ना सड़या, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ वखाईआ। साचे तख्त बैठा आदि निरँजण, आपणी दया आप कमाइंदा। जुगा जुगन्तर दीनां नाथ बणे दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराइंदा। जन भगतां देवे नाम अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। एथे ओथे बणे सज्जण, सगला संग आप निभाइंदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल धुआइंदा। आपे होए परदे कजन, नाम दोशाला हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तख्त आप सुहाइंदा। साचे तख्त वड सिक्दारा, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, अपरम्पर आप कराइंदा। लक्ख चुरासी कर उज्यारा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज खेल खिलाइंदा। चारे बाणी बोल जैकारा, परा बसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। चारे वेदां बण लिखारा, ब्रह्म मति आप पढ़ाइंदा। अबिनाशी अचुत जाणे आपणी कारा, करनी करता आप कमाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे वारो वारा,

निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। सेवा लाए गुर अवतारा, हुक्मी हुक्म समझाइंदा। आपे खेल करे करतारा, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। मुकामे हक इक्क जैकारा, साचा नाअरा आप लगाइंदा। लाशरीक परवरदिगारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा करदा रिहा विहारा, जगत विहारी आप अख्वाइंदा। लेखा जाणे गुर अवतारा, भगत अठारां मेल मिलाइंदा। दस गुरु दए सहारा, घर घर विच सोभा पाइंदा। एका मन्त्र नाम कर प्यारा, चार वरन आप पढ़ाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दए आधारा, ज़ात पात ना कोई रखाइंदा। ऊँच नीच ना कोई विचारा, राउ रंक ना कोई वड्यांअदा। दो जहानां लगाए नाम अखाड़ा, लोआं पुरीआं नाच नचाइंदा। पंचम नाद शब्द धुन्कारा, त्रैगुण आपणा नाम सुणाइंदा। मन्दिर मसीत साचा गुरदुआरा, ब्रह्म काया अंदर आप वखाइंदा। अमृत भरया ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिराइंदा। दीवा बाती कर उज्यारा, जोत निरँजण डगमगाइंदा। आत्म ब्रह्म कर प्यारा, पारब्रह्म मेल मिलाइंदा। हरिजन साचे लए उभारा, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। लेखा जाणे लिखणहारा, लिख लिख लेख आप मुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दर मंगदे रहिण भिखारा, जुग जुग वस्त अमोलक झोली पाइंदा। गुर अवतार कट्ट कट्ट जाण वगारा, हुक्मी हुक्म आप फिराइंदा। भगतां देवे इक्क प्यारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सन्तां देवे नाम प्यारा, नाम नामा झोली पाइंदा। गुरमुखां वेखे इक्को वारा, गुरमुख आपणी गोद बहाइंदा। गुरसिखां करे पार किनारा, अद्धविचकार ना कोई रुढ़ाइंदा। चार जुग जुग करता करदा आया आपणी कारा, करनी करता आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेस आप वटाइंदा। वेस वटाए इक्क इकल्ला, अगम्म अथाह वडी वड्याईआ। सचखण्ड वसाए सच महल्ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। कलिजुग अन्तिम सच संदेश एका घल्ला, नानक गोबिन्द गया सुणाईआ। पुरख अकाल फड़या पल्ला, छुट्ट कदे ना जाईआ। जोती शब्दी आपे रला, रूप रंग ना कोए वखाईआ। आपणे दीपक आपे बला, आदि जुगादि करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी भुलाया कर कर वल छला, ज्ञान ध्यान ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरे आपे चढ़, सच दरबारा इक्क लगाईआ। सच दरबार हरि लगाउणा, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। पंज तत्त काया खेड़ा वेख वखाउणा, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। मनमति तेरा पर्दा लाउहणा, दूई द्वैत मेट मिटाईआ। जूठ झूठ तेरा डेरा ढौहणा, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। हउमे हंगता गढ़ तुड़ाउणा, माया ममता दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा वेखे चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दुआरे चढ़या चाअ, प्रभ साचा ख़ुशी मनाइंदा। सच दरबार लए लगा, पहली चेत्र राह तकाइंदा। गुर अवतार लए दर बहा, गोबिन्द सूरा आप उठाइंदा। शब्दी शब्द देणी सच सलाह,

सलाहकार आप हो जाइंदा। उठो वेखो मार ध्यान, चार कुण्टां राह वखाइंदा। राम कृष्न ईसा मूसा जल्वा नूर गए भुला, नूर नुराना रंग ना कोए चढ़ाइंदा। नाम सति मिले ना कोई थाँ, चारों कुण्ट फेरा पाइंदा। फ़तह डंका ना सके कोई वजा, वाह वा गुरु ना कोई मिलाइंदा। वरनां बरनां प्या फाह, लोकमात ना कोई तुड़ाइंदा। पुरख अकाल भुल्लया नाँ, पति परमेश्वर ना कोई गाइंदा। जगत जुग आपणा राह गया भुला, जाग्रत जोत ना कोई जगाइंदा। विभचार करन गुनाह, पिता पूत ना सोभा पाइंदा। तीर्थ तट नारी पुरष नंगे रहे नहा, दुरमति मैल ना कोई धुआइंदा। उच्ची कूक पंडत पांधे रहे सुणा, आत्म ज्ञान ना कोए दृढ़ाइंदा। वाहद लाशरीक कहिण ख़ुदा, ख़ुदी माण ना कोए मिटाइंदा। शरीयत नाम रहे पढ़ा, नाम सति नज़र किसे ना आइंदा। ब्रह्म मति ना मिल्या राह, गुरमति ना कोई वखाइंदा। कलिजुग जीव हँस होए काँ, काग हँस ना रूप वटाइंदा। वेखणहारा, वेखे सच्चा शहिनशाह, सचखण्ड वासी भुल ना जाइंदा। गुर अवतार बख़्शे जिस गुनाह, तिस बेड़ा पार कराइंदा। कलिजुग अन्तिम पकड़े बांह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरे आपे चढ़, तख़्त निवासी साचा तख़्त सुहाइंदा। तख़्त सुहाए आदि अन्त, आदि पुरख अबिनाशा। नाम जपाए साचा मंत, लोकमात दए भरवासा। हरिजन मेला नारी कन्त, सेवक सेवा करे बण बण दासी दासा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, किसे हट्ट ना विकाए तोला मासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेखे खेल तमाशा। खेल तमाशा वेखे काहन, निरगुण हथ्थ वडी वड्याईआ। लेखा जाणे दो जहान, दो जहानां रूप धराईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, जगत प्रधानगी रिहा वखाईआ। सच उठाए इक्क निशान, नौं खण्ड पृथ्मी निशाना दए लगाईआ। दो जहानां पाए एका आण, दूसर आण ना कोए रखाईआ। वरन बरन एका गाण, एका करे सच पढ़ाईआ। एका नर नरायण प्रगट होवे आण, निहकलंक नाउँ रखाईआ। एका राग इक्क तरान, तुरीआ नाद आप वजाईआ। एका तीर एका बाण, एका चिले लए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा बन्धन आपे पाईआ। कलिजुग अन्तिम बन्धन पाउणा, हरि साचा सच समझाइंदा। जूठा झूठा मोह चुकाउणा, माया ममता पर्दा लांहयदा। साचा मार्ग एका लाउणा, चार वरन रंग रंगाइंदा। ज़ातां पातां डेरा ढौहणा, दीन मज़्ब ना कोई रखाइंदा। आत्म पर्दा आपे लाउहणा, परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क समझाइंदा। साचा मार्ग हरि जू दस्स, जन भगतां करे पढ़ाईआ। हिरदे अंदर आपे वस, आप आपणा मेल मिलाईआ। निझर झिरना देवे रस, अमृत रस छुहाईआ। दरस दिखाए हस्स हस्स, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। लोकमात आए नस्स नस्स, आप आपणा

१३४३

पन्ध मुकाईआ। जन भगतां दुआरे जाए ढट्ठ, माण ताण ना कोई वड्याईआ। सर्ब कला आपे समरथ, समरथ पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। जुगा जुगन्तर चलाए रथ, रथ रथवाही सेव कमाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रगट, निहकलंका नाउँ रखाईआ। लहिणा देणा चुकाए चौदां लोक चौदां हट्ट, चौदां तबकां पन्ध मुकाईआ। करे खेल बाजीगर नट, स्वांगी आपणा सांग रचाईआ। पन्ध मुकाए तीर्थ अठसठ, लेखा आपणी झोली पाईआ। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, चारों कुण्ट भवाईआ। लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्थ, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। जन भगतां करे इक्क इक्टठ, सति दुआरा आप सहाईआ। आपे देवे साचा हठ, सति सन्तोख धीर बंधाईआ। मेल मिलाए कमलापति, कँवल नैण वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन साचा आप प्रगटाउणा, शब्दी शब्द आप प्रगटाइंदा। पूर्ब लहिणा देणा झोली पाउणा, लिख्या लेख ना कोई मिटाइंदा। कलिजुग भेख पखण्डा दूर कराउणा, अन्ध अन्धेर आप गवाइंदा। सोहँ सुहागी छन्द आपे गाउणा, विष्न ब्रह्मा शिव सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप सलांहयदा। हरिजन वड्याई वड्डी वड, वड्डा आप सलांहयदा। जिस जन लडाए आपणा लड, तिस आपणा बन्धन पाइंदा। लक्ख चुरासी विचों कढ्ढ, मात गर्भ फंद तुड़ाइंदा। सच दुआरे सद, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जन भगतां पूरी करे आस, नित नवित खेल कराइंदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड विच प्रभास, समुंद सागर डूँघी कंदर फोल फुलाइंदा। निरगुण जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। लेखे लाए पवण स्वास, जिहवा आपणा गुण समझाइंदा। हरिजन होए ना अन्त निरास, कीती घाल लेखे पाइंदा। तोड़नहारा जम का फास, जम दंड ना कोए लगाइंदा। भगत भगवन्त सद रक्खे पास, आपणा घर आप सुहाइंदा। करे खेल शाहो शाबास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप प्रगटाइंदा। हरिजन प्रगटे हरि हरि धार, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। हरि पुरख निरँजण करे प्यार, एकँकारा गोद सुहाईआ। आदि निरँजण कर उज्यार, जोत निरँजण दए जगाईआ। अबिनाशी करता धाम वखाए ठांडा दरबारा, अग्नी तत ना कोई जलाईआ। श्री भगवान करे संभाल, दिवस रैण सेव कमाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आपे भाल, आपे मेला लए मिलाईआ। अन्तिम नाता तुट्टे काल महाकाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन सज्जण हरि मिलाउणा, मिल सखीआं मंगल गाया। दुआर बंक आप सुहाउणा, घर वज्जदी रहे वधाया। कन्त भगवन्त एका पाउणा, परम पुरख वड वड्याआ। सन्त सतिगुर संग निभाउणा, विछड़ कदे

१३४४

ना जाया। सतिजुग दुआरा इक्क बहाउणा, कलिजुग अन्तिम वण्ड वण्डाया। छत्ती जुग दे सलाहया साढे तिन्न तिन्न हथ्थ एका आसण लाउणा, रविदास चम्यारा गया लिखाया। कलिजुग मुनार इक्क बणाउणा, चवीं हथ्थ पुरख समरथ लए प्रगटाया। पूजा पाठ इक्क कराउणा, इष्ट देव इक्क समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुर अवतारां आपणे दर बहाया। गुर अवतार सद्दे दर, सम्मत सम्मती खेल खिलाइंदा। लोकमात जो दिता वर, कवण पूर कराइंदा। उठो वेखो आपणा घर, नेत्र नैणां आप जणाइंदा। पल्लू कोई ना रिहा फड़, ख़ाली हथ्थ सर्ब फिराइंदा। साचे मन्दिर ना कोई जाए चढ़, आपणा कुण्डा ना कोई लांहयदा। साध सन्त अद्धविचकार बैठे अड़, पार किनारा ना कोई कराइंदा। मात अग्नी रहे सड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार सर्ब सताइंदा। जिस दी लाई लोकमात जड़, बूटा सभ नूं आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा एका हुक्म सुणाइंदा। गुर अवतार मारो ध्यान, जन भगतां नाल रलाईआ। लोकमात जो दे के आए ज्ञान, अन्तिम भुल्ली सर्ब लोकाईआ। कलिजुग कूड़ होया प्रधान, चारों कुण्ट डंका लाईआ। नाल रल्लया पंज शैतान, घर घर विच फेरा पाईआ। ज़ात अज़ाती होए बेईमान, शरअ शरीअत ना कोई वड्याईआ। सिदक सबूरी ना कोई ईमान, इबनुल वक्त ना कोई सहाईआ। नौं खण्ड

१३४५ पृथ्मी कोटन कोटि गुरु बण बण खोल्ही बैठे दुकान, हरि का नाम हथ्थ ना किसे वखाईआ। पुरख अबिनाशी एका वार वेखे १३४५

मार ध्यान, अभुल भुल कदे ना जाईआ। आपणे आपणे लओ पछाण, वेला गया हथ्थ ना आईआ। सम्मत वीह सौ उन्नी चढ़े विच जहान, प्रभ लेखा दए चुकाईआ। एका सभ नूं मन्नणी पए आण, एका इष्ट देव मनाईआ। विष्नूं ब्रह्मा शिव कर परवान, निउँ निउँ सीस जगदीस झुकाईआ। तेरा हुक्म शाह सुल्तान, अटल अटल अटल तेरी वड्याईआ। भुल्ल ना जाईए बण नादान, तेरी एक ओट तकाईआ। चरन दुआरे देणा माण, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। हउँ भिखक मंगां दान, इच्छया भिच्छया झोली दे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण देणा समझाईआ। साची भिच्छया भगतन हथ्थ, विष्न ब्रह्मे शिव हरि जणाइंदा। छब्बी पोह दवाए हथ्थो हथ्थ, हथ्थ नाल हथ्थ मिलाइंदा। शब्द सरूपी करे इकट्ठ, घर साचे आप सदाइंदा। इक्क दूजे दा नाम आपे देवे दस्स, बण विचोला मुलाकात आप कराइंदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग दी पूरी आस, छत्ती जुग मूल चुकाइंदा। आपे भरे आपणा खात, खाता आपणा फेर खुलाइंदा। चार जुग दी मुक्के गाथ, पिछला लेखा बन्द कराइंदा। अग्गे देवे आपणा साथ, साचा मार्ग आपे लाइंदा। बहत्तर भगत उतारे आपणे घाट, बहत्तर देसां आप समझाइंदा। कलिजुग मुक्के अन्तिम वाट, पान्धी आपणा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे खड़, नूर नुराना दरस कराइंदा। नूर नुराना देवे दरस, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जन भगतां मेटे झूठी हरस, हउमे होर ना कोई वधाईआ। अमृत मेघ एका बरस, सांतक सति सति दए कराईआ। लेखा चुकाए अर्श फर्श, काया कुरा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, भगत भगवन्त दए वड्याईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जीवण जुगत जग देवे दान, जोती जाता पुरख बिधाता इक्क इकल्ला इक्क इकांता अकल कल अछल छल आपणा खेल कराईआ।

कलिजुग अन्तिम थक्का मांदा, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। उठ उठ बह बह राह तकांदा, कवण दुआरे हरि जू आइंदा। रसना जिहवा एका गाउँदा, आपणी भुल बख़्शाइंदा। जन भगतां बोल बोल सुणांदा, गीत गोबिन्द इक्क अल़ाइंदा। मेरा अन्तिम तुट्टा नाता, बिधाता जोड़ ना कोई जुड़ाइंदा। वेखो मेरा ख़ाली खाता, हिसाब नज़र कोई ना आइंदा। ना कोई

१३४६ दिसे पिता माता, सीस हथ्थ ना कोई रखाइंदा। ना कोई गाए पूजा पाठा, ज्ञान ध्यान ना कोई दरसाइंदा। ना कोई सरोवर तीर्थ ताटा, सर अमृत ना कोई नुहाइंदा। ख़ाली दिसे भरया बाटा, गोबिन्द जाम ना कोए प्यांअदा। धरत धवल खुल्ल़ा झाटा, मेंढी सीस ना कोई गुंदाइंदा। ना कोई मेटे झगड़ा ज़ाता पाता, वरन बरन ना कोई समझाइंदा। नज़र ना आए पुरख समराथा, चारों कूट वेख वखाइंदा। जुग जुग लेखा त्रिलोकी नाथा, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण मुक्ट बैण ना नज़री आइंदा। होया अन्धेरा दीप साता, नौ खण्ड दीप ना कोई जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ भिखक मंग मंगाइंदा। नेत्र रोवे मारे धाह, आपणी कूक सुणाईआ। मेरा वेला अन्तिम गया आ, ना सके कोई बचाईआ। जिस बूटा दिता ला, सो जड़ रिहा उखड़ाईआ। जिस वस्त झोली दिती पा, सो आपणी हथ्थीं बाहर कढ्ढाईआ। जिस रक्खया मेरा नाँ, सो मेरा नाउँ दए कटाईआ। मैं जांवा केहड़े थाँ, अन्तर नज़र ना कोई रखाईआ। बिन हरि नामे होया काँ, बुधी काग वांग कुरलाईआ। सिर देवे कोई ना ठंडी छाँ, समरथ पुरख बैठा मुख भवाईआ। ना कोई मिले भैण भ्रा, साक सैण सैण ना कोई सहाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर साध सन्त कर गए नांह, दस्तगीर दामन ना कोई फड़ाईआ। अज़मत देवे इक्क सलाह, ग़फ़लत मेरी कम्म किसे ना आईआ। करया खेल बेपरवाह, बेपरवाह धार चलाईआ। शब्द शब्दी डंक वजा, मेरा डंका बन्द कराईआ। तख़्त ताज दए मिटा, तख़्त निवासी हुक्म सुणाईआ। वसदे खेड़े देवे ढाह, कल्लर कंध रहिण ना पाईआ। जल थल वेखे असगाह, डूँघी कंदर फोल फुलाईआ। १३४६

१३४७

जंगल जूह उजाड़ पहाड फेरा पा, उच्चे टिल्ले पर्बत फिरे चाँईं चाईआ। लक्ख चुरासी आत्म पर्दा आपे लाह, लिख लिख लेखा दए मुकाईआ। चित्रगुप्त दर बहा, हुक्मी हुक्म मनाईआ। राए धर्म लए उठा, एका डण्डा लाईआ। लाड़ी मौत दए सुणा, लक्ख चुरासी तेरी झोली पाईआ। जो घड़या भन्न दए वखा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग तेरा सत्थर दए विछा, सगला संग ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना कोई वड्याईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा रिहा कूक, चार कुण्ट हल्काया। मेरी अन्तिम चुक्के चूक, वेले अन्त ना कोई सहाया। त्रैगुण माया रही फूक, पंज तत जलाया। मेरी मिटे ना तृष्ना भूख, आसा तृष्ना ना पूर कराया। मैं दर दर घर घर मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले धुखाया धूप, जगत सुगंधी एका पाया। कूड़ कुड़यारा घर घर वखाया रूप, अनूप दरस ना किसे पाया। मैं सतिगुर साहिब दा लाडला पूत, छोटा बाला नाउँ रखाया। मेरा डंका वज्जया चार कूट, शाह सुल्तान बचया कोई रहिण ना पाया। मैं एका वेख्या ताणा पेटा सूत, आपणी हथ्थीं गंढु दवाया। कलिजुग अन्तिम साध सन्त मैं कीते पूत कपूत, पिता पूत ना कोई मिलाया। झूठी ख़ाक रमा होए अवधूत, अवगत आवण जावण गेड़ बणाया। वेले अन्तिम राए धर्म मारे जूत, जिन हरि हरि नाम भुलाया। लक्ख चुरासी जामा प्रेत भूत, भव सागर पार ना कोई कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। कलिजुग उठ उठ तक्के राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। वेले अन्तिम बणे हरि मलाह, बेड़ा पार कराईआ। गुर गोबिन्द देवे सच सलाह, सलाहगीर इक्क हो जाईआ। जगत विछोड़ा दए कटा, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। मेरा खेड़ा रिहा ढाह, बाले नीहां हेठ दबाईआ। मेरी जड़ रिहा उखड़ा, अन्त शब्द हलूणा लाईआ। मैं गल विच पल्लू पा, दोवें जोड़ पवां सरनाईआ। मेरा कर अन्त बचा, निथाव्याँ थाँव नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेरा फंद दए कटाईआ। कलिजुग उठ उठ बल धारे, बल आपणा आप जणाईआ। मेरा तुट्टा माण हँकारे, हंगता गढ़ नज़र ना आईआ। मैं भुल्लया भुलाया सर्ब संसारे, अभुल तेरी वड्याईआ। मैं शाह सुल्ताना दर दर घर घर सर्ब उजाड़े, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। धरनी धरत धवल मेरे अग्गे कढ्ढे हाढ़े, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चोर यार मेरी छाती रहे लताड़े, साचा सीर मुख ना कोई रखाईआ। आ मिल गोबिन्द मेरे प्यारे, राह तक्के तेरा राहीआ। तेरा रूप पंज प्यारे, पंचम तेरा रंग समाईआ। चार जुग गुर अवतार दे दे गए लारे, अन्त एका ओट तकाईआ। तेरे भगत रहे कँवारे, तुध बिन अन्त ना कोई प्रनाईआ। आ वेख मित्र प्यारे, तेरा सत्थर रहे हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुण अवगुण ना कोई जणाईआ। कलिजुग

१३४७

उठ करे निमस्कार, दोए दोए निमस्कारया। तूं साहिब बेऐब परवरदिगार, वसणहारा धाम नयारया। तूं मेल मिलाया चार यार, लोकमात कर शिंगारया। करया मुहम्मद इक्क प्यार, दर दर घर घर आपणा खेल नयारया। एका मंगी मंग भिखार, चौदां तबकां दए हुलारया। सदी चौधवीं तेरी धार, तेरी धारा नाल मिला रिहा। कलि आई अन्तिम वार, कलि लेखा सर्ब चुका ल्या। लहिणा देणा देणा लहिणा कर्ज उतार, हौला भार इक्क उठा ल्या। दर मंग सच दरबार, दर दरवेश सीस झुका ल्या। तेरे भगत करन पुकार, भेव किसे ना आ रिहा। प्रगट हो विच संसार, गुर अवतार राह तका रिहा। वरन बरन रोवण ज़ारो ज़ार, ज़ात पात मुख शरमा रिहा। मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला हाहाकार, गुरदुआरे गुरु नज़र कोई ना आ रिहा। पुरख अकाल कर विचार, तेरा नैण नैणां विच समा रिहा। जामा लै अन्तिम वार, दोए जोड़ वास्ता पा रिहा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणा हुक्म आप जणा रिहा। मैं आवां आपणी धार, पिता पूत ना कोई वखा ल्या। शब्दी शब्द बोल जैकार, साचा सोहला आपे गा ल्या। जोती जोत जोत उज्यार, जोती जाता वखा ल्या। नाउँ रक्ख निहकलंक नरायण नर अवतार, कलिजुग दुआरा इक्क सुहा ल्या। गुर चेला सोहे इक्क दुआर, गुर गोबिन्द मेल मिला ल्या। कलिजुग तेरा तोड़े बन्धन विच संसार, जगत जंजाला आप मिटा रिहा। साची रीती करे अपार, पारब्रह्म ब्रह्म वेख वखा रिहा। एका नाम शब्द धुन्कार, धुन आत्मक आप सुणा रिहा। नौं खण्ड पृथमी सत दीप ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड सुणे आप पुकार, घट घट आपणा आसण ला रिहा। भगत भगवन्त लए उठाल, करया खेल दीन दयाल, दीनन आपणे गले लगा रिहा। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, जिस दे नेड़ ना आए काल, महाकाल सीस झुका ल्या। पहरेदार बणे आप प्रितपाल, गुरमुख लए विच बहाईआ। साची सेवा करे सेवक बण गोपाल, आपणी सेव कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग हुक्मी हुक्मीयत आप जणा रिहा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, शब्द संदेशा इक्क जणाईआ। प्रगट होए श्री भगवाना, निरवैर पुरख वडी वड्याईआ। जन भगत बन्न्हे हथ्थीं गाना, नाम तन्द हथ्थ उठाईआ। आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। चरन कँवल कँवल चरन बख्शे इक्क टिकाना, सरनगत इक्क समझाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक वखाईआ। चार खाणी दस्से इक्को गाणा, सोहँ करे सच पढ़ाईआ। घर बैठिआं सतिगुर पाणा, दूजा दर ना वेखण पाईआ। बिन सन्तां नज़र ना आए किसे टिकाणा, भुल्ली भरम सर्ब लोकाईआ। गुरुमख विरला चतुर सुघड़ सयाना, जिस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मिले चाँईं चाँईंआ।

★ २६ अस्सू २०२८ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड लेलीआं ज़िला अमृतसर ★

आपणी बाज़ी गया हार, जित नज़र कोए ना आईआ। कलिजुग कर्म करे विचार, धर्म धीर ना कोई वखाईआ। जन्म ल्या विच संसार, चौथा जुग नाउँ धराईआ। कूड़ कुड़यारा वड भण्डार, विच संसार ल्या वरताईआ। जूठ झूठ कर पसार, एका डंका ल्या सुणाईआ। ठग्ग चोर यार कर कर ख़बरदार, तेरा नाउँ भुलाईआ। नारी कन्त वखाए विभचार, विभचारी रंग वखाईआ। तेरे नाउँ ना करया कोई प्यार, गीत सुहाग ना कोई गाईआ। नाल रलाया मुहम्मद यार, यारी यारां नाल निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला अन्त होया दुखदाईआ। वेला अन्त लग्गा दुक्ख, दुखियां दुःख ना कोई मिटाइंदा। मैं एका सुक्खणा रिहा सुक्ख, तेरी अन्तिम ओट तकाइंदा। ना मानस ना मैं मनुक्ख, मेरा रूप नज़र किसे ना आइंदा। धरत मात दी बैठा कुक्ख, गोदी अवर ना कोई सुहाइंदा। सभ दे अंदर बैठा लुक, अनडिठी खेल कराइंदा। शेर वांग रिहा बुक, एका भबक जणाइंदा। अन्तिम वेला गया ढुक, पहला लेख ना कोई समझाइंदा। मेरा बूटा रिहा सुक्क, फल नज़र कोई ना आइंदा। आपणी गोदी अन्तिम चुक्क, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। चारों कुण्ट पैंदा थुक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैं तेरा राह तकाइंदा। अन्तिम वेला गया हर, हरि पूरा नज़र

१३४६ कोई ना आईआ। लोकमात बैठा रिहा डर, भय भयानक होवे कौण सहाईआ। जिस घाड़न मेरा ल्या घड़, सो अन्तिम भन्न वखाईआ। वेले अन्तिम फड़ां किस दा लड़, सारे पल्लू रहे छुडाईआ। गुर अवतार कहिण असीं भाणा रहे जर, सद भाणे विच समाईआ। पुरख अबिनाशी एका भगतां देवे वर, वर दाता बेपरवाहीआ। अन्तिम बन्ने आपणे लड़, नाम बन्धन एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतार देण ग्वाहीआ। गुर अवतार दस्सण राह, कलिजुग सुण नादान। तेरा अन्त ना कोई मलाह, मिटे झूठ निशान। पारब्रह्म पुरख अबनाशी अगे वास्ते पा पा पा, होवे मेहरवान। निथाव्याँ देवणहारा थाँ, आदि जुगादि खेल महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे दो जहान। दो जहानां हरि हरि वाली, निर्भय आपणी धार चलाईआ। कलिजुग फिरे हथ्थां ख़ाली, विच ख़लक वाहो दाहीआ। कवण दुआर बणां सवाली, प्रभ अगे सीस झुकाईआ। अन्तिम चले अवल्लड़ी चाली, भेव अभेद आप रखाईआ। नौं खण्ड पृथमी रैण काली, साचा नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा आपणा वर, एका आस रखाईआ, ख़ाली हथ्थ फिरे भिखारी, दर दर अलख जगाइंदा। कवण कूटे मिले जोत निरँकारी, निरगुण आपणी दया कमाइंदा। मेरी पैज देवे संवारी, भुल आपणी आप बख्शाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप १३४६

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रूप आप वटाइंदा। साचा रूप हरि हरि धर, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख खेल खिलाईआ। आपे जाणे गुर अवतार, भगत भगवन्त वेख वखाईआ। गोबिन्द सूरा अग्गे खड़, एका गुण रिहा समझाईआ। एका फल जाणा झड़, पत्त डाल्ही रहिण ना पाईआ। अन्त पासा जाणा हर, जित हथ्थ ना कोई वखाईआ। एका आउण हरि के दर, दर दर दयाँ समझाईआ। किरपा तेरे उप्पर देवे कर, कृपानिध बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातसाह सच्चा शहिनशाहीआ। गोबिन्द दस्से एका राह, एका शब्द जणाईआ। पुरख अबिनासी बेपरवाह, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जुग जुग फेरा पाए रूप वटा, रंग रेख ना कोई वखाईआ। सच सिँघासण सोभा पा, तख्त निवासी साचे तख्त दए वड्याईआ। अन्तिम तेरे आवे निरगुण निहकलंक नाउँ रखा, ना कोई पिता ना कोई माईआ। नाम डंका दए वजा, चार कुण्ट दए सुणाईआ। साचे सन्तां ल्ए उठा, भगतन मेला सहिज सभाईआ। निरगुण आपणा मंगल आपे गा, आपणी बूझ बुझाईआ। त्रै त्रै संगल दए कटा, पंचम पर्दा दए उठाईआ। निजानंद अनन्द दरसा, निज आत्म करे रसाईआ। परमानंद खेल करा, परम पुरख दए वड्याईआ। जूठा झूठा डेरा ढाह, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। माया ममता मोह चुका, आसा तृष्ना दए खपाईआ। एका हुक्म सच वरता, धुर फ़रमाना करे जणाईआ। राजा राणा तख्तों लाह, दर दरवेश दए बणाईआ। वरनां बरनां मेट मिटा, एका रंग दए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। साचा मार्ग तेरे अंदर, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। कलिजुग तेरा ढैहणा मंदर, वेला अन्त दए समझाईआ। गढ़ हँकारी तुट्टे जंदर, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। मन वासना तेरी मेटे बन्दर, उठ उठ दहि दिश ना धाईआ। लेखा जाणे डूँग्घी कंदर, घट घट खेले खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप चले आपणी सच रज़ाईआ। आपणी रज़ा आपे चला, चलणहार निरँकारा। सच सिँघासण अन्तिम मल्ला, वसे धाम न्यारा। भगत भगवन्त सच संदेश एका घल्ला, जोती शब्द कर उज्यारा। निरगुण सरगुण फड़े पल्ला, सरगुण निरगुण खेल न्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए साची कारा। साची कार करे करतार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। हरिजन साचे कर प्यार, प्रीतम आपणे नाल मिलाईआ। रोग सोग दए निवार, जन्म अजन्म लेखे पाईआ। दुरमति मैल दए उतार, निर्मल नीर सीर प्याईआ। लेखा जाणे अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह खेल खिलाउणा, रूप अनूप धराया। तेरा बुरज अन्तिम ढाउहणा, उच्चा

टिल्ला ना कोई वखाइंदा। साचा मार्ग एका लाउणा, चार वरन समझाइंदा। राउ रंक राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम बहाउणा, एका मन्दिर सोभा पाइंदा। एका राम नज़री आउणा, एका कृष्न रूप वटाइंदा। एका नानक गोबिन्द जोत जगाउणा, एका नूर नुराना नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। कलिजुग सुणया हरि का खेल, गोबिन्द करे जणाईआ। कवण दुआरे होवे मेल, मिल्या मेला पान्धी राहीआ। प्रभ मिले सज्जण सहेल, मेरा बन्धन दए तुड़ाईआ। आपणा दस्से वक्त वेल, थित वार दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर अवर ना कोई वड्याईआ। गोबिन्द मार्ग साचा दस्स, कलिजुग नैणां नीर वहाइंदा। मैं हरि चरन दुआरे जावां नस्स, कवण कूटे फेरा पाइंदा। मेरा मिटे अन्धेरा मस, चांद चांदना कवण चमकाइंदा। मेरी पूरी करे आस, हो निरासा जगत कुरलाइंदा। कवण देह वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। एका देवे सच धरवास, मेरी तदबीर तकदीर आप बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण दुआरे वसे घर, कवण कूट सोभा पाइंदा। गोबिन्द वसे सच टिकाना, एका वार जणाईआ। पारब्रह्म श्री भगवाना, निरगुण आपणा नूर धराईआ। शब्द अगम्मी इक्क बिबाना, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वज्जे वधाईआ। गोबिन्द सूरा करे परवाना, लोकमात वेख वखाईआ। सम्बल नगर सच टिकाना, हरि बैठा सच्चा माहीआ। लेखा जाणे दो जहानां, चौदां लोक रिहा सुणाईआ। चौदां तबकां दए ज्ञाना, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपे रक्खे आपणे भाणा, सद भाणे आप सुहाईआ। जो दर आए बण निमाणा, तिस आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सेव आप कराईआ। बण निमाणा जावां दर, कलिजुग कूक कूक सुणाया। सरन सरनाई जावां पड़, नेत्र नैणां नीर वहाया। अन्तिम मेरा रूप देवे मैनूं डर, भय भउ इक्क रखाया। मैं आपणी करनी आपे रिहा भर, दूजी किरत ना नाल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच्चा वर, मेरी भुल लए बख्शाया। मैं भुल्ला बण वैरागी, बिरहों अग्नी अग्ग जलाईआ। मैं होया अन्त त्यागी, लक्ख चुरासी रिहा तजाईआ। मैं हँस बणया कागी, सोहँ हँसा चोग नज़र किसे ना आईआ। मैं दुरमति मैल भरया दाग़ी, मेरी मैल ना कोई धुआईआ। साची वस्त ना मेरी हाण्डी, साची कुन्नी रिहा वखाईआ। अन्तिम बणया एका गाडी, चार वरन रिहा चलाईआ। लाड़ी मौत मंगे वर, लक्ख चुरासी करनी शादी, बचया कोए रहिण ना पाईआ। मैं डरदा उठ के बणया पान्धी, प्रभ सच्चे दा सच्चा राह तकाईआ। मेरी काया थक्की मांदी, अगे संग ना कोई रखाईआ। जिध्धर वेख्या चले आंधी, नूर नुराना बैठा मुख छुपाईआ। मेरी करनी मेरी बणी फांदी, ना कोई

सके ज़ंजीर तुड़ाईआ। किसे कम्म ना आउणा सोना चांदी, ख़ाली हथ्थ दए दुहाईआ। त्रैगुण माया बणी बांदी, निउँ निउँ बैठी सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा होए अन्त सहाईआ। थक्का मांदा आपे नट्ठ, प्रभ तक्कां इक्क दुआरा। मेरा खेड़ा रिहा ढट्ठ, ना चले कोई चारा। आपणा जति हर गया तीर्थ तट, अठसठ ख़ाली दिसे किनारा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला रोवे मठ, नज़र आए ना हरि निरँकारा। साध सन्त जगत माला रहे रट, आत्म अन्तर ना कोई प्यारा। चार वरन खट्टी कोए ना सके खट्ट, घर घर वड़या लोभ मोह हँकारा। क्रोध मारे आपणी सट, ठोकर मारे विच संसारा। मनमति चुक्की अत्त, ब्रह्म मति ना कोई प्यारा। मैं आपणा सत्थर बैठा घत, दस्से ना कोई किनारा। नेत्र अथ्थर वगावां आपणे वत, मिले मेल परवरदिगारा। मेरा तुट्टा धीरज जत। सति सन्तोख ना कोई सहारा। मेरी उब्बले चारों कुण्ट रत, नौं नौं लग्गा इक्क अखाड़ा। पारब्रह्म सिर ते रक्ख हथ्थ, मेरा होए पार किनारा। गोबिन्द मार्ग साचा दस्स, मंग मंगी बण भिखारा। मैं अन्तिम वसां कुल्ली कक्ख, ना मंगां कोई चुबारा। सद गावां साहिब दा जस, जिस करया पार उतारा। नित दरसन पांवा हस्स हस्स, नेत्र नैण नैण उग्घाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच सहारा। गोबिन्द सुणाए साची गाथ, सुण सज्जण मीत मुरारे। पुरख अबिनाशी खेल तमाश, करे विच संसारे। लक्ख चुरासी भोग बिलास, लुटया दिन दिहाढ़े। सच वस्त ना किसे पास, मानस मानस जन्म हारे। अन्तिम वेले होए निरास, दिन थोड़े रहि गए चारे। लेखे लग्गे ना किसे स्वास, पवण पवणी ना कोई प्यारे। बिन भगतां हरि पूरी करे ना किसे आस, लक्ख चुरासी होए ख्वारे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उभारे। पुरख अबिनाशी खेल खिलाउणा, कलिजुग अन्तिम गोबिन्द इक्क समझाइंदा। साचे भगतां मात प्रगटाउणा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। अगला मार्ग इक्क समझाउणा, दे मति आप जणाइंदा। चार जुग दा लहिणा मूल चुकाउणा, सतिजुग साचा राह वखाइंदा। साचा मन्दिर इक्क बणाउणा, अंदरे अंदर वेख वखाइंदा। छत्ती जुग दा कर्जा लाउहणा, पिछला लहिणा झोली पाइंदा। छत्ती फ़ुट निशान झुलाउणा, चवी हथ्थ बन्धन पाइंदा। चार वरनां विच बहाउणा, जात पात दीन मज़्ब ना कोई वड्यांअदा। ऊँचां नीचां गले लगाउणा, एका गोद सुहाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ सिँघासण मात सुहाउणा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जो दर आए तिस पार कराउणा, पोह छब्बी दिवस मनाइंदा। आपणा हाल आप जणाउणा, जगत राह इक्क वखाइंदा। जिस ढाउणा तिस फेर बणाउणा, घड़न भन्नण आपणी खेल कराइंदा। जन भगतां पुरख अबिनाशी मनाउणा, मिल मिल आपणा हाल जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग चौकड़ चौकड़ी सार पाश आपणी खेल कराइंदा।

★ २६ अस्सू २०१८ बिक्रमी मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड सारंगड़ा ★

गोबिन्द देवे इक्क संदेशा, सहिज सहिज समझाईआ। कलिजुग तेरी मिटे रेखा, रेखा विच मिलाईआ। प्रगट होए साहिब एका, एका गुण वडी वड्याईआ। लाए भाग माझे देशा, सम्बल रुत्त सुहाईआ। चार वरन दा वेखे पेशा, पेशवा बेपरवाहीआ। शाहो भूप नर नरेशा, साचे तख्त सोभा पाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोई केसा, सीस जगदीस मूंड मुंडाईआ। नौं नौं चार दर वेखे लेखा, लुकया लेखा लए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर आप दरसाईआ। सच संदेशा सुण लै कन्न, गुर सतिगुर आप जणाइंदा। एका नूर चढ़े चन्न, नूर नुराना डगमगाइंदा। सभ दा बेड़ा देवे बन्न्, जो जन सीस झुकाइंदा। मन मनका देवणहारा डन्न, नाम खण्डा हथ्थ रखाइंदा। जूठा ठीकर देवे भन्न, भन्नणहार आप हो जाइंदा। जन भगतां अगे आपणा कीता आपे जाए मन्न, ममता होर ना कोई वखाइंदा। ना कोई धड़ ना कोई तन, तत्व तत ना कोई रखाइंदा। ना कोई जननी ना कोई जन, गोदी गोद ना कोई सहाइंदा। ना कोई नेत्र दिसे अन्न्, आदि जुगादी वेख वखाइंदा। ना छप्पर ना कोई छन्न, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। सतिजुग त्रेता

१३५३ द्वापर कलिजुग गुर अवतार कर कर गए धन्न धन्न, रसना जिहवा सर्ब अल्लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १३५३

जोत धर, आपणा खेल आप प्रगटाइंदा। सच संदेशा सुणाए मीत, मीत मुरारा आप जणाईआ। तेरी वेखण आए रीत, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सरगुण होए पतित पुनीत, निरगुण आपणे नाल मिलाईआ। लहिणा देणा चुकाए मन्दिर मसीत, मठ वेखे थाउँ थाईंआ। नाम प्रगटाए इक्क अनडीठ, अनडिठड़ा गीत सुणाईआ। लक्ख चुरासी लए जीत, एका डंका नाम वजाईआ। ख़ाली करे सभ दे खीस, त्रैगुण माया लए छुपाईआ। तेरे यार दी चौधवीं सदी रही बीत, अन्तिम लैणा हथ्थ मिलाईआ। प्रभ नंगी करनहारा पीठ, आपणा पर्दा लए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सच सुनेहड़ा देवे दस्स, एका वार समझाया। पुरख अबिनाशी करे खेल समरथ, समरथ रूप धराया। नौं नौं खेड़ा वखाए सत्थर सथ, आपणा यार हंढाया। जो दिसे सो जाए ढठ्ठ, ढह ढह ढेरी ख़ाक मिलाया। तेरा वेखे चलदा रथ, चारो कुण्ट फेरा पाया। कवण वस्त विच बैठा रक्ख, झोली आपणी आप भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ दा लेखा दए चुकाया। कलिजुग सुण लै अन्तिम बात, गुर बातन करे पढ़ाईआ। तेरा रूप अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सच सुच्च ना दिसे कोई प्रभात, प्रभ मिलण दी आस ना कोई तकाईआ। माया ममता डूँघा खात, जग ख़ाता रिहा वखाईआ। किसे ना मिले अनाथा नाथ, नाथा ना कोई वड्याईआ। अन्त निभाए

ना कोई साथ, सभ पल्लू रहे छुडाईआ। झूठा चोला जाणा पाट, तन अल्फ़ी इक्क वखाईआ। अन्तिम मुल्ल ना पैणा किसे हाट, करता कीमत कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराईआ। सुणया सनेुहड़ा गोबिन्द मुख, कलिजुग लए अंगड़ाईआ। मैं बण निमाणा जांवा उठ, राह तक्कां साचे माहीआ। करां निमस्कार नेड़े ढुक, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पारब्रह्म मैं तेरा छोटा पुत, तूं बूटा ल्या लगाईआ। तेरे हुक्मे अंदर मैं कूड़ सुहाई रुत्त, कूड़ी क्रिया फल लगाईआ। अवगुण कर जे भुल्ल जाए पुत, पिता पूत लए बख्शाईआ। तेरा लड़ ना जावे मैथों छुट्ट, मैं एका मंग मंगाईआ। कर किरपा मेरे उप्पर तुट्ठ, आपणी बख्शिश कर बख्शनहार बेपरवाहीआ। मेरा तन ना कोई बुत, मेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। मैं सभ नूं फड़ फड़ ल्या कुट्ट, शाह सुल्तान बचया कोई रहिण ना पाईआ। मैं घर घर पाई फुट, तेरा हुक्म सीस टिकाईआ। मैं दर दर ल्या लुट्ट, वरभण्डी दए दुहाईआ। मैं साधा सन्तां मूंह दे भार

१३५४ ल्या सुट्ट, ना सके कोई सीस उठाईआ। अन्तिम अकट्ठे करने एका गुट्ठ, दक्खण दिशा दए वड्याईआ। वांग बन्दर बण कलंदर, दर दर नचावां अन्तिम कहां हुच्छ, होछी मति सर्ब वखाईआ। अगला हुक्म करां तैथों पुछ, मेरी चले ना कोई चतुराईआ। मेरा कीता आपणी हथ्थीं ना लुट्ट, तेरी लुट्ट मैनूं ना भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, १३५४

एका दिता साचा वर, हउ मंगां सरन सरनाईआ। पुरख अबिनाशी दीन दयाला, एका हुक्म जणाइंदा। कलिजुग तेरा मुखड़ा काला, काले रंग समाइंदा। धन्न भाग तूं कढुया दिवाला, ख़ाली हथ्थ वखाइंदा। दर दर घर घर फिरे बेहाला, तेरी सार कोए ना पाइंदा। बण दरवेश करे सवाला, अग्गे झोली डांहयदा। पुरख अबिनाशी करे प्रितपाला, सिर सभ दे हथ्थ रखाइंदा। आपणा खेल करे निराला, एका गुण जणाइंदा। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, भेव कोए ना पाइंदा। एका दस्से राह सुख़ाला, साचा मार्ग लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल हरि निरँकार, आपणा आप कराईआ। कलिजुग उठे आए दुआर, लुट्टी लुट्ट तेरे कोल रखाईआ। आपणी खेल करे अन्तिम वार, सीस जगदीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। चार जुग दे विछड़े मेले यार, भगत भगवन्त लए प्रगटाईआ। दोहां दस्से सच विहार, एका हुक्म आप सुणाईआ। कलिजुग लुट्टना विच संसार, लुट्टी लुट्ट देणी मुकाईआ। आपे वेखे वेखणहार, सचखण्ड दुआरे आसण लाईआ। सचखण्ड बणे धाम न्यार, लोकमात दए वड्याईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग ना सकया कोई उसार, ना कोई गया बणत बणाईआ। ना कोई कहे करे खेल करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप जणाईआ। बहत्तर भगत करे भगवन्त, भगवन दया कमाईआ। तेरा करना अन्तिम अन्त, तेरी ख़ाक

ख़ाक उडाईआ। तेरा वेखणा जीव जंत, जंत जीव फोल फुलाईआ। तेरा मेला अन्त होणा साचे कन्त, फड़ पल्लू गंढु दवाईआ। छब्बी पोह मिलना साची संगत, ख़ाली झोली देण भराईआ। तेरी मिटे भुक्ख नंगत, भुक्ख्यां भुक्ख दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग करता वड वड्याईआ। जुग करता हरि सद मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। भगतन देवे एका दान, नाम निधाना झोली पाइंदा। सति सतिवादी सच निशान, सति सति आप झुलाइंदा। मात लहिणा चुक्के आण, लेखा सभ दा पूर कराइंदा। चढ़के वेखे ना मार ध्यान, पिच्छे राह ना कोई तकाइंदा। करे खेल श्री भगवान, हरि का भेव कोई ना पाइंदा। अन्तिम भगत दुआरे लै के जाए नाम, सोहँ ढोला एका गाइंदा। मिले मेल साचे राम, राम रामा मेल मिलाइंदा। पूरन होए अन्तिम काम, कीती घाल लेखे पाइंदा। मिटे रैण अन्धेरी शाम, साचा चन्द आप चढ़ाइंदा। पीर पैग़बर जो देंदे रहे पैग़ाम, सच संदेशा आप सुणाइंदा। आपे जाणे सच कलाम, कायनात आप पढ़ाइंदा। आपे फड़ फड़ वेखे सर्ब गुलाम, दर दरवेश आप बहाइंदा। निउँ निउँ करे चरन सलाम, अलैकम आपणी धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरे वसे चढ़, सच निशाना सोभा पाइंदा। भगतां हथ्थ भगती दात, हरि भगवान आप रखाईआ। चार वरन दी इक्क जमात, हरि चाकर आप बणाईआ।
१३५५ आपे अंदर रक्खे वास, घर घर जोती जोत डगमगाईआ। कलिजुग तेरी पूरी करे आस, निरासा कोई रहिण ना पाईआ। १३५५
अन्तिम करे बन्द ख़ुलास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी वेख प्रभास, प्रभ साचा आप तराईआ। जन भगतां होए दासी दास, दास सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन लेखा दए समझाईआ। भगवन लेखा अपर अपारा, हरिजन साचे आप समझाइंदा। लिखण पढ़न तों वसे बाहरा, दिस किसे ना आइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, सरगुण निरगुण नाल मिलाइंदा। भगवान लेखा अपर अपारा, हरिजन साचे आप समझाइंदा। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, शब्दी डंक सुणाइंदा। अगे मेटे कूड़ पसारा, कूड़ी क्रिया आपणे खाते पाइंदा। सतिजुग साचा सच विहारा, सति सतिवादी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिभगत दुआरे आपे वड़, सन्त सहेले लए फड़, आपणा बन्धन पाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे आपणा नाम वर, सो जन जन्म मरन विच ना आइंदा।

★ ३० अस्सू २०१८ बिक्रमी अवतार सिंघ दे घर पिण्ड काउके ज़िला अमृतसर ★

कलिजुग ख़ुशी रिहा मना, अन्तर अन्तर वज्जे वधाईआ। गोबिन्द दस्सया एका राह, मार्ग इक्क समझाईआ। पुरख अबिनाशी चरनी डिगां आं, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ख़ाली झोली दयाँ वखा, वस्त अवर ना कोई वखाईआ। मैं निथावां फिरां थाउँ थाँ, थान थनंतर ना कोई सहाईआ। मेरी अन्त ना पकड़े कोई बांह, चार कुण्ट बैठी मुख भवाईआ। सिर रक्खे ना कोई ठंडी छाँ, गुर पीर अवतार सगला संग ना कोई रखाईआ। जिस दर जावां अगों करन ना, बैठे मुख भवाईआ। मैं अन्त हँस बणया काँ, मेरी बुध काग वांग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाउणा साचा घर, तुध बिन अवर ना कोई सुहाईआ। तुध बिन अवर ना खेड़ा, दर नज़र कोई ना आइंदा। मेरा बन्ने ना कोई बेड़ा, चप्पू नाम ना कोई लगाइंदा। अन्तिम लग्गा इक्क उखेड़ा, चार वरन जड़ उखड़ाइंदा। मैं जाणा तूं वसें नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। नौं सत प्या गेड़ा, मेरा बन्धन ना कोई तुड़ाइंदा। ना कोई सन्झ ना कोई सवेरा, साचा रंग ना कोई वखाइंदा। तुध बिन बन्ने ना कोई मेरा बेड़ा, पल्लू हथ्थ ना कोई फड़ाइंदा। अन्तिम ढैहणा झूठा डेरा, थिर कोई रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ साची मंग मंगाइंदा। मंगां मंग बण दरवेश, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। राह दस्सया गुर दस्मेश, साचे मार्ग गया पाईआ। कवण दुआर हरि जू लवां वेख, नेत्र नैण नैण उठाईआ। तेरे अगे मेरी चले ना कोई पेश, तेरा हुक्म वरते हर घट थाँईंआ। शाह पातशाह नर नरेश, शहिनशाह वडी वड्याईआ। आदि जुगादि निरगुण सरगुण धरे भेख, रूप अनूप आप वटाईआ। मेरा रक्खे ना संग कोई मुल्ला शेख़, पीर पैग़म्बर औलीए बैठे मुख शरमाईआ। मैं जावां केहड़े देस, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज लोआं पुरीआं चारों कुण्ट एका राह जणाईआ। विष्नूं रोवे उत्ते बाशक सेज, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ब्रह्मा दिसे खुलड़े केस, धीरज धीर ना कोई धराईआ। शंकर मिटदी जाए रेख, वेला अन्त ना कोई सुहाईआ। लक्ख चुरासी उजड़या खेत, हरयावल नज़र कोई ना आईआ। जूठ झूठ बालू रेत, तन रही तपाईआ। माया ममता हउमे हंगता बण बण प्रेत, जिन्न मेरी जान रहे कढ्ढाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तुध बिन कोई ना करे सच्चा हेत, ना कोई बख़्शे चरन सच्ची सरनाईआ। तूं साहिब सुल्तान सद रक्खीं साया हेठ, इक्क तेरी ओट तकाईआ। वरन बरन ज़ात पात अग्नी मेटे महीना जेठ, सांतक सति ना कोई वरताईआ। मैं भुल्ला दस आपणा भेत, अभेव तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं सुणया गोबिन्द आउणा तेरे दुआरे पहली चेत, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ जाचक सीस

१३५६

झुकाईआ। याचक मंगे दान, कलिजुग हो निमाणा, किरपा कर श्री भगवान, शाह पातशाह सच सुल्ताना। मैं होया अन्त वैरान, ना दीसे कोई टिकाना। शाह सुल्तान बेईमान, धर्मी धर्म ना कोई टिकाना। ना कोई दीन ना ईमान, ना कोई पढ़े सच कलामा। घर घर वड़या इक्क शैतान, भुल्लया हरि जू तेरा नामा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा देणा साचा वर, अन्तर अन्तर धुर फ़रमाना। धुर फरमाना दस्से निरँकार, हउँ अगे झोली डाहीआ। छोटा तेरा सुत दुलार, कलिजुग कूक कूक सुणाईआ। मेरा आया पासा हार, जित नज़र किसे ना आईआ। मैं दर दर मन्दिर मस्जिद गुरदुआर शिवदुआले मठ फिरया वारो वार, तेरा रूप नज़र किते ना आईआ। तूं लुकया रहें ना विच संसार, चार दिवार तेरा खेड़ा तोहे सोभा पाईआ। निरगुण जोत सदा निराकार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। ख़ालक ख़लक करे पसार, मख़लूक तेरी शहिनशाहीआ। बेऐब परवरदिगार, मुकामे हक इक्क सलाहीआ। करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कमाईआ। सचखण्ड वसे धाम न्यार, थिर घर आपणी रचन रचाईआ। सो पुरख निरँजण मीत मुरार, हरि पुरख निरँजण सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। एकँकारा तेरा सोहणा दरबार, आदि निरँजण जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता दए सहार, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। श्री भगवान तेरा सति हुलारा दो जहानां पावे सारा, ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे अखाड़ा, लोकमात वेख

१३५७ वखाईआ। पारब्रह्म तेरा ब्रह्म पसारा, त्रैगुण माया नाल भण्डारा, पंचम तत होया हल्कारा, एका लेखा हरि निरँकारा, शब्द १३५७

नाद ना कोई धुन्कारा, रसना जिहवा गा गा थक्के जीव गंवारा, अंदर मन्दिर साचे पौड़े चढ़ दरस कोई ना पाईआ। चारों तरफ़ नार विभचारा, मिले हरि कन्त भतार, सोहे मन्दिर ना सच मुनारा, महल्ल अटल ना कोई रुशनाईआ। वरनां बरनां लग्गा अखाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मारन धाड़ा, ठग्ग चोर यार चारों कुण्ट देण दुहाईआ। मैं इक्क इकल्ला की करां विचारा, तेरे हुक्म वरते सभ वरतारा, हुक्मी हुक्म खेल खिलाईआ। धरनी रोवे ज़ारो ज़ारा, दर दर करे इक्क पुकारा, नेत्र नैण नैण नीर नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अभुल भुल कदे ना जाईआ। दीन दयाल शाह पातशाह, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। शब्द अगम्मी इक्क सलाह, अनादी नाद वजाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, भेव कोई ना पाइंदा। जुग जुग चलाए आपणा राह, लोकमात खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार करा, कलिजुग तेरा रंग रंगाइंदा। तेरा रूप ल्या वटा, नौं खण्ड पृथ्मी आप धराइंदा। लक्ख चुरासी विच समा, घर घर नाच नचाइंदा। मन मति तेरी झोली पा, गुरमति मुख भवाइंदा। अन्तिम लेखा दए मुका, लहिणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। चारे वरनां दए मुका, चारे बाणी आपणे विच समाइंदा। चारे खाणी दए समझा, एका हुक्म वरताइंदा। चौथे जुग डेरा

देवे ढा, कल्लर कंध आप रुढ़ाइंदा। तेरे नैणां दए वखा, तेरी कीती तेरे अग्गे टिकाइंदा। गुर अवतार लए बुला, दर साचे सद बहाइंदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद लए रला, एका हुक्म वरताइंदा। भगत भगवन्त दए जणा, आपणी बूझ बुझाइंदा। साचे सन्तां दए उठा, सच संदेश सुणाइंदा। गुरमुख नाल लए रला, आपणा मेला आप कराइंदा। गुरसिख गोद लए बहा, काया कँवरी फोल फुलाइंदा। धुर फ़रमाना दए जणा, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। शाहो भूप राज राजाना शाह बण सच्चा शहिनशाह, आपणी खेल आप कराइंदा। एका दर दए समझा, दर साचा इक्क रखाइंदा। जो जन दर दरवेश नर नरेश चरनी डिगे आ, निरवैर आपणी गोद बहाइंदा। कालख टिक्का दए धवा, दुरमति दाग़ मिटाइंदा। आपणे मार्ग आपे पा, एका राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, कलिजुग हरी हरि आप आप समझाइंदा। कलिजुग आउणा साचे दर, हरि साचा सच जणाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा देवे कर, दर दुआरा वेख वखाईआ। आपणा घाड़न ल्या घड़, घड़नहार बेपरवाहीआ। तेरी करनी रही लड़, तेरी किरत वेख वखाईआ। तूं आपणी अग्नी जाणा सड़, तेरा हवन दए वखाईआ। तेरा तुट्टे हँकारी गढ़, हउमे रोग दए मिटाईआ। अन्तिम अन्त पारब्रह्म लए फड़, ना सके कोई छुडाईआ। जिस लगाई तेरी जड़, सो अन्त दए उखड़ाईआ। लक्ख चुरासी इक्क दूजे दे नाल पए लड़, घर घर पए दुहाईआ। जो जन्मे सो जाए मर, थिर कोए रहिण ना पाईआ। अबिनाशी करता खेल करे खड़, नगर खेड़ा डेरा ढाहीआ। निरभउ हो चुकाए डर, भय भयानक वेख वखाईआ। सन्त सुहेले लाए आपणे लड़, गुर चेले लए तराईआ। किरपा कर नरायण नर, नर आपणे लेखे पाईआ। आदि पुरख दिता वर, अन्तिम पूर कराईआ। भगत भगवन्त नुहाए साचे सर, अमृत एका वेख वखाईआ। दुरमति मैल जावे हर, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण समझाईआ। एका गुण हरि गुणवाना, गुणवन्ता आप जणाइंदा। जुग जुग वेस धरे श्री भगवाना, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम हो मेहरवाना, रूप अनूप आप वटाइंदा। नाउँ रक्ख निहकलंक बली बलवाना, बल आपणा आप जणाइंदा। चार जुग दा लेखा चुकाए आणा, नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा। छत्ती छत्ती वेखे मार ध्याना, त्रै त्रै विच मिलाइंदा। लहिणा देणा मुक्के शास्त्र सिमरत वेद पुराणा, अञ्जील कुरान गीता ज्ञान आपणी झोली पाइंदा। अठसठ ना कोई अशनान, तीर्थ तट होए वैरान, नीर सीर सीर नीर रूप ना कोई धराइंदा। खाणी बाणी तुट्टा माण, घर घर वड़या पंज शैतान, गुर का शब्द ना कोई ज्ञान, एका भुल्लया श्री भगवान, अन्तिम देवे सर्ब सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि आपणा भेव आप जणाईआ। साचा

१३५८

भेव जाणे कुल, हरि साचा सच जणाइंदा। करता कीमत पाए मुल्ल, लहिणा सभ दा आप मुकाइंदा। चरन प्रीती जो जन जाए घुल, आपणा लेखा आपणे लेखे विच रखाइंदा। नाम कंडे जो जन जाए तुल, तोला आपणे रंग रंगाइंदा। गुर का बचन जो गए भुल्ल, दो जहानां धक्का लाइंदा। करे खेल हरि अनमुल्ल, अनमुल्लड़ी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप समझाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाना, धुर दरगाही आप जणाईआ। कलिजुग वरते अन्तिम भाणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तख्तों लाहे राणा राजा, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। बरनां वरनां तुट्टे माणा, ज़ात पात ना कोई रखाईआ। करे खेल श्री भगवाना, भगवन आपणी दया कमाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश गायण इक्को गाना, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका बैठा आसण लाईआ। इष्ट देव गुर इक्क मनाना, दूसर सीस ना कोई झुकाईआ। एका मर्द इक्क मरदाना, सच मर्दानगी दए समझाईआ। एका राग इक्क तराना, एका अनहद ताल वजाईआ। एका अमृत पीणा खाणा, निझर झिरना दए झिराईआ। एका देवे साचा नामा, नाम अमोलक झोली पाईआ। एका बन्ने सति सन्तोखी गाना, तन्द आपणे हथ्थ उठाईआ। करे खेल हो मेहरवाना, हरिजन साचे आप जगाईआ। शब्द अगम्मी दे परवाना, सच संदेशा दए सुणाईआ। आदि पुरख हरि खेल महाना, भेव अभेद ना कोई जणाईआ। साचे भगत करे परवाना, लोकमात मात वड्याईआ। नाता तोड़े पंज शैतानां, पंचम नादि धुन शनवाईआ। चरन कँवल कँवल चरन देवे साचा माणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपे होए जाणी जाणा, जानणहार इक्क अख्वाईआ। कलिजुग तेरा लहिणा देणा चुक्के विच जहाना, बाकी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाउणा, एका हुक्म जणाया। बहत्तर भगत हरि प्रगटाउणा, आपणा रंग वखाया। एका नाद मृदंग वजाउणा, घट घट नाद अल्हाया। एका जोती दीप जगाउणा, दिवस रैण डगमगाया। एका अमृत जाम पिआउणा, तृष्ना भुक्ख गंवाया। एका मन्दिर घर घर विच आप वखाउणा, छप्पर छन्न ना कोई छुहाया । एका सेजा आप बहाउणा, सच सिँघासण सोभा पाया। कन्त कन्तूहल इक्क मनाउणा, विछड़ कदे ना जाया। समरथ हथ्थ सिर आप टिकाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए सदा सहाया। बहत्तर भगत करे प्रगट, प्रगट होया आप निरँकारा। चौदां लोक वेखे हट्ट, चौदां तबकां खोल किवाड़ा। आप वरोले तीर्थ तट, अठसठ खेले खेल न्यारा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला वेखे मठ, वेखणहार गुर अवतारा। वसणहारा घट घट, लक्ख चुरासी खोल्हे बन्द किवाड़ा। गुरमुख सज्जण विचों लए रख, जिस लहिणा देवे नाम अधारा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरि भगतां रक्खदा आया पत, हरि

बण बण सेवादारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अपारा। अगम्म अपार खेल अवल्ला, अलाही नूर आप कराईआ। आपणा आप कर बिस्मिला, बिस्मिल धार दए चलाईआ। आपे पहने बस्त्र नीला, नील बस्त्र तन छुहाईआ। आपे वेखे लक्ख चुरासी जगत कबीला, विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाईआ। आपे वेस वटाए लाल सूहा पीला, नीली धार आप समाईआ। आपे काला सूसा तन छुहाए छैल छबीला, जोबन आपणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख हरि हरि स्वामी, आदि जुगादि सदा निहकामी, जुग जुग आपणा रूप धराईआ। जुग जुग रूप अवल्लड़ा, निरगुण सरगुण खेल खिलाए। करे खेल इक्क अकल्लड़ा, अगम्म अगोचर बेपरवाहे। सच सिँघासण एका मलड़ा, सचखण्ड बैठा आसण लाए। जन भगतां फड़ाए नाम पल्लड़ा, साचा पल्लू इक्क वखाए। जोती धार शब्दी रलड़ा, शब्द अनादी नाद सुणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाए। हरिजन मेला धार एका दर, दर दरवाज़ा आप सुहाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, भगत भगवन्त लए मिलाईआ। इक्क नुहाए साचे सर, काग हँस बणाईआ। सोहँ हँसा चोग अग्गे धर, माणक मोती दए वखाईआ। दरस दिखाए अगे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। आपणा अक्खर आप पढ़, जन भगतां दए समझाईआ। चौदां विद्या जायण हर, हरि का भेव कोई ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कम्बण थर थर, दर बैठे सीस झुकाईआ। पारब्रह्म पति परमेश्वर आपणा घाड़न आपे घड़, निरगुण निरगुण निरगुण जोत जगाईआ। सरगुण अंदर बैठा वड़, दिस किसे ना आईआ। आपणी करनी रिहा कर, पिछली कीती आप उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग देवे इक्को वर, एका एक समझाईआ। एका एक इक्को धार, त्रैगुण बाहर रखाइंदा। त्रैगुण अतीता कर पसार, जुग जुग वेख वखाइंदा। ठांडा सीता एकँकार, एका राह चलाइंदा। साचा मार्ग अपर अपार, ब्रह्मा विष्न शिव जणाइंदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, घड़ घड़ भाण्डे सोभा पाइंदा। मन मति बुध दए अधार, आपणे रंग रंगाइंदा। शब्द अनादि सच्ची धुन्कार, अनहद नादी नाद वजाइंदा। सर सरोवर ठंडा ठार, कँवल अमृत आप भराइंदा। जोती जाता हो उज्यार, जोत निरँजण डगमगाइंदा। आत्म ब्रह्म कर पसार, ईश जीव खेल खिलाइंदा। साची सेजा कर त्यार, सोभावन्त सोभा पाइंदा । कोटन कोटि रवि ससि होए उज्यार, सूरज चन्न मुख शरमाइंदा। करे खेल अपर अपार, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। भगवन भगती भगवान देवे दान, दाता दानी आप हो आइंदा। करे खेल बण बण काहन, लक्ख चुरासी नाच नचाइंदा। साची सखीआं कर प्यार, निरगुण आपणी गोद बहाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणा रूप वटाइंदा। कलिजुग तेरा लहिणा चुकाए विच जहान, देणा आपणे

१३६०

हथ्थ रखाइंदा। एका हुक्म करे हुक्मरान, हाकम आपणा हुक्म चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जुग लेखा जुग लहिणा जगत आपणा आप मुकाइंदा।

सुण सुण होए निहाल, जिस अंदर नाम वड्याईआ। जिस मिल्या होए दयाल, तिस कलि नेड़ ना आईआ। जो वसे काया सच्ची धर्मसाल, तिन्ह सुणे सच्ची शनवाईआ। सतिगुर पूरा करे सदा प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हो मेहरवान फिरे नाल नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। जगत ज़ंजीर तुट्टे जंजाल, जगत जुगत सतिगुर आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरसिख विंगा ना होए वाल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। लग्गी प्रीती निभे नाल, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। काया माटी झूठी हाटी पंज तत्त किसे कम्म ना आउणी खाल, चमढ़ी कीमत कोए ना पाईआ। गुरसिख तेरे अंदर इक्को लाल, हरि आपणा नाउँ दिता टिकाईआ। मिल सतिगुर लैणा भाल, दूजे हथ्थ ना किसे वखाईआ। बण जाणा शाह ना रहिणा कंगाल, दर दवारिउँ देणा वखाईआ। दिवस रैण रक्खे ख़ुशहाल, साचा वणज जिस कराईआ। आपे पुछे मुरीदां हाल, मुर्शद आवे चाँईं चाईआ। सो गुरमुख होया निहाल, जिस सतिगुर मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
१३६१ किरपा कर, सर्ब जीवां एका गुण जणाईआ। १३६१

★ ३० अस्सू २०१८ बिक्रमी नरायण सिँघ दे गृह पिण्ड गुमान पुर ज़िला अमृतसर ★

आदि पुरख अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ी धार चलाइंदा। सचखण्ड वसे धाम नाम न्यारा, इक्क इकल्ला आसण लाइंदा। सो पुरख निरँजण आपे जाणे आपणी कारा, हरि पुरख निरँजण खेल खिलाइंदा। एकँकारा कर पसारा, आदि निरँजण जोती जोत डगमगाइंदा। अबिनाशी करता दए सहारा, श्री भगवान दया कमाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वेखणहारा, रूप अनूप आप वटाइंदा। थिर घर साचा खोल्ह किवाड़ा, आपणा बन्धन आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप समाइंदा। आपणे रंग वसे निरँकारा, आदि जुगादि वडी वड्याईआ। अलख अगोचर अगम्म अपारा, बैऐब बेपरवाहीआ। आपे बणे निरगुण धारा, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण कन्त निरगुण नारा, निरगुण साचा संग निभाईआ। निरगुण पिता पूत बण सुत दुलारा, दाई दया निरगुण सेव कमाईआ। सचखण्ड सुहाए इक्क दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, शहिनशाह वडी वड्याईआ। शब्द अनादि धुर फ़रमाना, अनादी नाद आप जणाईआ। निरगुण निरगुण कर पसारा, निरगुण वेखे चाँईं चाँईंआ। सुत दुलारा कर त्यारा, शब्दी शब्द नाउँ

प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाईआ। सुत दुलारा थिर घर वासा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण पूरी करे आसा, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। एकँकारा दए भरवासा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। आदि निरँजण कर प्रकाशा, नूर नुराना डगमगाइंदा। अबिनाशी करता निज घर कर कर वासा, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। श्री भगवान शाहो सबाशा, शाह पातशाह राज राजाना हुक्म चलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ वेखणहार तमाशा, आपणे मंडल आपणी रास आप रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा वेखे वड़, सुत दुलारा दए हुलारा खेल तमाशा आपणी खेल खलाइंदा। एकँकारा पुरख समरथ, आपणी दया आप कमाईआ। आपणा सुत कर प्रगट, थिर घर साचे दए बहाईआ। ना कोई छप्पर छन्न वसे छत्त, चार दिवार ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची दात सो पुरख निरँजण झोली पाईआ। सुत दुलारा तेरा पिता मात, पुरख अकाल इक्क जणाइंदा। आदि जुगादि पुछे तेरी वात, तेरा संग निभाइंदा। तेरे अंदर वेखे मार झात, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। वसणहारा इक्क इकांत, महल्ल अटल आप सुहाइंदा। साची बख्शी इक्को दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बणाए तेरा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। त्रैगुण माया साथ, सगला संग निभाइंदा। पंज तत कर प्रकाश, निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे खेल तमाश, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा नाम समझाइंदा। रवि ससि कर दास, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची रचना आप रचाइंदा। साची रचना रचनहारा, इक्को इक्क अख्वाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर पसारा, शब्दी बन्धन पाइंदा। शब्दी गुर शब्दी अवतारा, शब्दी ढोला गाइंदा। शब्दी मन्दिर शब्द मुनारा, शब्द आपणा आसण लाइंदा। शब्द नादि शब्द धुन्कारा, शब्द जै जैकार कराइंदा। शब्द सुणे शब्द सुणनेहारा, शब्द शब्दी आपणा राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका सुत आप प्रगटाइंदा। साचा सुत शब्द बलवान, हरि साचे सच समझाया। आप वसाया सच मकान, थिर घर साचा नाउँ धराया। सचखण्ड वसया श्री भगवान, एका हुक्म सुणाया। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, एका वस्त झोली पाया। सच संदेशा धुर फ़रमान, एका हुक्म जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेद अछल अछेद रूप रंग ना कोई रखाया। रूप रंग ना कोए रेख, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। सचखण्ड निवासी आपे रिहा वेख, आप आपणा पर्दा लाहया। आपे वसे आपणे देस, देस दसन्तर सोभा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा

 १३६३

वर, आपणी साची भिच्छया आपणी झोली आप भराया। साची भिच्छया हरि वरता, पारब्रह्म ख़ुशी मनाइंदा। सुत दुलारा वेखे राह, एका वस्त वखाइंदा। एका रंग लए रंगा, वाह वाह रंग चढ़ाइंदा। निरगुण सरगुण बण मलाह, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। शब्दी शब्द शब्द सलाह, सिफ्त सलाही आपणी सलाह आप जणाइंदा। इक्क जपाए आपणा नाँ, निॳक्खर आप पढ़ाइंदा। सिर रक्खे ठंडी छाँ, सदा सुहेला दया कमाइंदा। आपे पिता आपे मां, पूत सपूता गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वेखे साचा हरि, दर साचा आप खुलाइंदा। दर घर साचा जाए खुल्ह, सो पुरख निरँजण आप खुल्हाईआ। सुत दुलारा उपजाए आपणी कुल, कुलवन्त बेपरवाहीआ। शब्द भण्डार वड अनमुल्ल, करता कीमत कोई ना लाईआ। आपे फुल फुलवाड़ी लाए फुल्ल, ब्रह्मा विष्न शिव लए खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक्क समझाईआ। साचा मार्ग हरि जू दस्स, आपणा भेव खुल्हाइंदा। विष्नूं अंदर आपे वस, आपणा नूर धराइंदा। आपणी जोत कर प्रकाश, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपे करे पूरी आस, एका अमृत मुख चुआइंदा। आपे होए दासी दास, ब्रह्म पारब्रह्म वण्ड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, शब्दी शब्द सेवा इक्क लगाइंदा। साची सेवा श्री भगवान, सुत दुलारे आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बाल नादान, बाली बुध वखाईआ। एका देवे धुर फ़रमान, नाउँ निरँकारा करे पढ़ाईआ। एका बख्शे चरन ध्यान, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। भुल ना जाणा बण नादान, एका गुण रिहा वखाईआ। मेरा हुक्म तेरा फ़रमान, सीस जगदीस रिहा झुकाईआ। करां खेल दो जहान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां तेरी वस्त तेरी झोली पाईआ। एका अमृत देवां पीण खाण, तृष्ना भुक्ख ना कोई रखाईआ। एका नाद शब्द धुन्कान, अनादी नाद वजाईआ। एका घर मेरा मकान, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। दर दुआरे कर परवान, तेरी इच्छया पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे सुत रिहा समझाईआ। सुत दुलारे उठ बल धार, हरि साचा सच जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यार, पुरख अबिनाशी मेल मिलाइंदा। एका देणा सच भण्डार, विष्नूं अग्गे झोली डांहयदा। ब्रह्मा ढह ढह करे पुकार, प्रभ अगे सीस झुकाइंदा। शंकर खुलड़े केस रिहा वखाल, तन भिबूती ख़ाक रमाइंदा। कर किरपा गुण निधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउ भिखक मंग मंगाइंदा। भिखक मंगे मंग, आदि पुरख अग्गे आपणी झोली डाहीआ। एका चाढ़ना साचा रंग, उतर कदे ना जाईआ। सदा वसणा साडे संग, विछड़ कदे ना जाईआ। इक्क वजाउणा नाम मृदंग, आदि जुगादि शनवाईआ। एका देणा परमानंद, अनन्द तेरी वड्याईआ। साडी

नंगी ना होवे कंड, सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। तेरा हुक्म साडा पन्ध, हउँ पान्धी बणे राहीआ। तूं दस्सणा साचा धन्द, कवण धन्दे देणा लगाईआ। अन्तिम वसणा साडी हद्द, पार किनारा ना कोई रखाईआ। तेरी खेल होए विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मादि तेरी वड्याईआ। तूं प्रगट होया आदि, जुगादि तेरी शहिनशाहीआ। तूं सज्जण सच्चा साक, तूं बणया सच्चा माहीआ। एका देणी साची दात, अभुल भुल कदे ना जाईआ। हउँ गावां तेरी गाथ, गुण इक्को इक्क वखाईआ। अन्त निभाउणा सगला साथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, ख़ाली झोली दए भराईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, विष्नूं ब्रह्मा शिव समझाइंदा। आदि जुगादि होवां सहां, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। साचा मार्ग दयाँ जणा, पर्दा आप उठाइंदा। आपणा सुत देवां नाल मिला, मेल मिलावा आप कराइंदा। शब्दी शब्द ल्या प्रगटा, दो जहानां हुक्म चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी पकड़ी बांह, तेरा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। धुर फ़रमाना श्री भगवाना, एका एक जणाईआ। शाहो भूप बण साचा राणा, शाह पातशाह करे सच्ची शहिनशाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव मनाए भाणा, सद भाणे हरि रखाईआ। शब्दी शब्द अनाद गाउणा गाणा, तार सतार ना कोई हिलाईआ। पूत सपूत होए प्रधाना, साचा मार्ग दए वखाईआ। विष्नूं देवे आपणा दाना, वस्त अमोलक झोली पाईआ। ब्रह्मा तेरा ब्रह्म वखाना, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। शंकर तेरा सति निशाना, एका वार वखाईआ। बण विचोला श्री भगवाना, शब्दी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप समझाईआ। साचा हुक्म श्री भगवाना, भेव अभेद जणाइंदा। तिन्नां देवे इक्क ज्ञाना, लोआं पुरीआं वण्ड वंडायदा। त्रैगुण माया नाल मिलाउणा, पंचम खेल खिलाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न आप घड़ौना, साची सेवा सेव कमाइंदा। एका राग आप उपजाउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड आप सुणाइंदा। चारे कुण्ट वेख वखाउणा, आप आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप समझाइंदा। साचा शब्द साची धार, ब्रह्मे विष्न शिव करे पढ़ाईआ। लक्ख चुरासी कर प्रधान, घाड़त घड़त लए घड़ाईआ। करे खेल हो मेहरवान, आप आपणी दया कमाईआ। निरगुण सरगुण खेले खेल जीव जहान, आत्म ब्रह्म कर कुड़माईआ। नौं दुआरे खोल्ह दुकान हट्टो हट्ट वखाईआ। मन मति बुध कर परवान, निरगुण वण्ड वंडाईआ। घर विच घर सोहे मकान, सच दुआरा सोभा पाईआ। घर विच नाद शब्द धुंनकान, गृह गृह आपणा राग सुणाईआ। घर घर अमृत पीण खाण, निझर झिरना आप झिराईआ। घर घर दीपक जोत जगे महान, जोत निरँजण डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पुरख अबिनाशी आप सुणाईआ।

साची खेल जोती शब्दी धार, हरि साचा सच कराइंदा। लक्ख चुरासी कर त्यार, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। आत्म ब्रह्म कर पसार, पारब्रह्म रंग रंगाइंदा। ईश जीव दए अधार, जगदीश दया कमाइंदा। नौं दुआरे खोल किवाड़, जगत तृष्ना मेल मिलाइंदा। माया ममता हउमे हंगता कराए प्यार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। घट घट अंदर शब्द धार, सति पुरख निरँजण आप टिकाईआ। सर सरोवर अंदर अमृत भण्डार, निरवैर पुरख आप रखाईआ। घर घर अंदर जोत उज्यार, निरगुण बैठा मुख छुपाईआ। घर घर अंदर मन्दिर मुनार, सच दुआरा रिहा बणाईआ। घर घर वसे मीत मुरार, नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणे मिलण दी आपे बिध लोकमात समझाईआ। लोकमात हरि खेल अपारा, आदि पुरख अख्वाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, साचा हुक्म जणाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, रूप अनूप वटाइंदा। घर घर अंदर दए सहारा, एका रंग रंगाइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कारा, घट मन्दिर आप वजाइंदा। दीवा बाती कर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। अमृत सिंच ठंडा ठारा, सच प्याला जाम प्यांअदा। आपणा नाउँ रक्ख गुर अवतारा, निरगुण सरगुण खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। साचा मार्ग हरि करतार, कुदरत कादर आप लगाईआ। निरगुण सरगुण लए अवतार, जीव जंत लए पढ़ाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी फोल फुलाईआ। चारे बाणी करे पुकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाईआ। चारे वेदां दए अधार, ब्रह्म वेता आप जणाईआ। आपे वसे सभ तों बाहर, लेखा लिख ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। निरगुण सरगुण जामा पा, वरभण्डी खेल कराइंदा। भगत भगवन्त लए उठा, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। निज घर आत्म दरस दए वखा, परमात्म मेल मिलाइंदा। झूठ विकारा दए रुढ़ा, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा। ममता मोह दए चुका, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाइंदा। आपणे अंग लए लगा, साची गोद आप बहाइंदा। नौं दुआरे नाता दए तुड़ा, आपणा मेल मिलाइंदा। सुखमन टेडी बंक पार करा, ईड़ा पिंगल डेरा डांहयदा। अग्गों मिले बण मलाह, सतिगुर पूरा नाउँ रखाइंदा। शब्दी पल्लू दए फड़ा, दिस किसे ना आइंदा। गुरमुख सुरती साचे घोड़े लए चढ़ा, नाम घोड़ा इक्क दुड़ाइंदा। बजर कपाटी कुण्डा लाह, साचे मन्दिर राह वखाइंदा। अनहद ढोला आपे गा, पिछला मोह मिटाइंदा। अमृत जाम इक्क प्या, काग हँस बणाइंदा। आपणा दरसन आपे दए करा, तीजा नेत्र आप खुल्हाइंदा। आत्म सेजा दए विछा, सच सुहञ्जणी सेज हंढाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म लए मिला, मेल मिलावा आप कराइंदा।

नारी कन्त रूप वटा, नर नरायण ख़ुशी मनाइंदा। साचा मार्ग आपे ला, शब्दी शब्द आप समझाइंदा। आपे वेखे थाउँ थाँ, घर घर फेरा पाइंदा। सज्जण सहेला बण बण पकड़े बांह, साचा संग निभाइंदा। एथे ओथे दो जहानां सिर रक्खे ठंडी छाँ, अग्नी तत ना कोई जलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा। सुरती शब्दी साचा मेला, सतिगुर पूरा आप कराईआ। एका घर वसाए गुरु गुर चेला, गुर चेला रूप वटाईआ। भगत भगवन्त सज्जण सुहेला, घर घर विच लए कराईआ। राए धर्म दी कट्टे जेला, वेले अन्त ना दए सज़ाईआ। हरिजन वसाए धाम नवेला, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका तत्त जणाईआ। साचा तत्त ब्रह्म मति, पारब्रह्म जणाइंदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म तेरे वस, तेरे मार्ग लाइंदा। विष्नूं सभ दी पूरी करनी आस, घर घर रिज़क पुचाइंदा। शंकर अन्त करे विनास, जो घड़या भन्न वखाइंदा। पुरख अबिनाशी वेखे खेल तमाश, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। धरत धवल पृथ्मी अकाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा आप समझाइंदा। साची धारा हरि जू बन्नृ, हरि साचा मार्ग लाया। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणे हुक्म चलाया।
१३६६ हुक्मे अंदर सूरज चन्न, आदि जुगादि भवाया। हुक्मे अंदर विष्न ब्रह्मा शिव भाणा रहे मन्न, दर दर बैठे सीस झुकाया। १३६६
गुर अवतार बेड़ा बन्नृ, खेवट खेटा लोकमात राह चलाया। जननी जणे साचा जन, धन्न धन्न जणेंदी माया, साचा राग सुणाए कन्न, अनहद नादी नाद वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख साचे हरि, लोकमात राह चलाया। लोकमात हरिजन धार, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाइंदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, सेवक साची सेव कमाइंदा। कवण वेला करे प्यार, विछड़े मेल मिलाइंदा। कवण वेला दए अधार, आपणे घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा विछोड़ा मोहे ना भाइंदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, तिन्नां करे जणाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग कीती खेल महान, लक्ख चुरासी मेल मिलाईआ। गुर अवतार जुग जुग खेल वेखण आण, रूप अनूप वटाईआ। भगत भगवन्त करे प्रधान, लोकमात मात मात रुशनाईआ। सन्त उठाए चतुर सुजान, आत्म परमात्म वेख वखाईआ। गुरमुखां वखाए इक्क निशान, सच निशाना आप झुलाईआ। गुरसिखां देवे चरन ध्यान, हरि चरन सच्ची सरनाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, कोटन कोटि काल बिताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेशा आप सुणाईआ। धुर संदेशा श्री भगवन्त, आदि पुरख जणाया। जुग जुग मेरी महिमा अगणत, जस वेद पुराणी गाया। कोटन कोटि सेवा लग्गण साध सन्त, पारब्रह्म प्रभ दए लगाया। गुर अवतार

कहिण बेअन्त बेअन्त बेअन्त, मेरा भेव किसे ना आया। मैं वसां लक्ख चुरासी जीव जंत, निरगुण सरगुण आपणा रूप वटाया। आदि जुगादि मेरा इक्को मंत, मन्त्र सच्चा नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका गुण रिहा समझाया। हरि का गुण वड्डा वड, भेव कोए ना पाइंदा। पारब्रह्म अबिनाशी करते कर किरपा दुआरे लैणा सद, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाइंदा। जुग चौकड़ी आपणा भार जायण लद, थिर कोई रहिण ना पाइंदा। तेरी कोई ना जाणे हद, तेरा किनारा नज़र किसे ना आइंदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी तैथों रक्खे अड्ड, सिर तेरा हथ्थ रखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जुग चौकड़ी जुग जुग मुक्के पन्ध, पान्धी आपणा पन्ध मुकाइंदा। तेरे हिरदे तेरा बोलन छन्द, गुर अवतार सेव लगाइंदा। तेरा नाउँ वज्जे नद, हरि पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। तूं सचखण्ड दुआरे रहिणा सज, थिर घर तेरा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दए साचा वर, कवण वेला पन्ध मुकाइंदा। कवण वेला मुक्का पन्ध, सो पुरख निरँजण आप जणाया। नौं नौं चार टुट्टी गंढ, एका पल्लू हथ्थ फड़ाया। गुर अवतार वण्डन वण्ड, लोकमात राह चलाया। धरनी होए खण्ड खण्ड, लक्ख चुरासी बचे रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा गुण लए वखाया। साचा गुण श्री भगवान, आपणा आप जणाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग खेल विच जहान, कोटन कोटि रूप वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर खुल्ह्दी रहे दुकान, जगत वणजारा इक्क बणाईआ। चौदां लोक होण प्रधान, चौदां हट्ट वज्जे वधाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल महान, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। ईसा मूसा देवे दान, नूर नुराना झोली पाईआ। इक्क वखाए हक मकान, लाशरीक आप जणाईआ। महिबान बीदो बी खैर या अल्ला होए सदा मेहरवान, रहिमत रहीम आप कमाईआ। आपे जाणे आपणा सच कलाम, कलमा कायनात पढ़ाईआ। आपे जाणे इष्ट ईमान, आपे दृष्ट विच समाईआ। आपे पढ़े अञ्जील कुरान, हदीस जगदीस आप सुणाईआ। आपे लेखा जाणे शाह सुल्तान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आपे देवे शब्द दान, चार यारी नाल मिलाईआ। आपे अल्ला राणी करे परवान, कँवार कन्या संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। आपणा पर्दा देवे चुक्क, हरि साचा सच जणाइंदा। आदि जुगादि जो रहे लुक, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। निरगुण सरगुण करे उज्जल मुख, लोकमात सालांहयदा। धरत मात दी सुफल करे कुक्ख, जन जननी आप सुहाइंदा। ना कोई काया ना कोई बुत, पंज तत्त ना कोई रखाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, चित वित ठगोरी कोई ना पाइंदा। मात सुहाए आपणी रुत्त, पत्त डाल्ही आप महिकाइंदा। सूरबीर बलवान उठाए शब्दी सुत, दो जहानां

आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा वेला आपणा हथ्थ रखाइंदा। साचा वेला रक्खे हथ्थ, चार जुग भेव ना आया। बेअन्त बेअन्त कह कह गए दस्स, उच्ची कूक कूक सुणाया। गुर अवतार जोड़ जोड़ हथ्थ, निउँ निउँ गए सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी सभ दा चलाउणा एका रथ, बण रथवाही सेव कमाया। देवणहारा नाम वथ्थ, वस्त अमोलक आप वरताया। कोई कहे मौला कोए राम रिहा दस्स, कोई कृष्न इष्ट जणाया। कोई कहे वसे उप्पर अस्मानां सत्त, कोई पातालां हेठ रिहा दबाया। नानक कहे वसे घट घट, सो पुरख निरँजण हरि रघुराया। गोबिन्द आखे रक्खे मेरी पत, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहया। मैं एका ओट रिहा तक्क, पुरख अकाल मनाया। जुग चौकड़ी गए थक्क, गुर गुर आपणी सेव कमाया। अन्त निबेड़ा ना होया हक, हक अन्त ना कोई जणाया। द्वैती मेटे ना कोई फट, एका रंग ना कोई रंगाया। चार वरन लेखा हट, बरन अठारां वण्ड वंडाया। फिर फिर थक्के तीर्थ अठसठ, दुरमति मैल ना कोई धुआया। बिन सथर यार खेड़ा दिसे भट्ठ, गोबिन्द गीत एका गाया। जुगा जुगन्तर वेखे नट्ट नट्ट, वेस अनेक रूप वटाया। कलिजुग अन्तिम साचा मार्ग रिहा दस्स, जीव जंत जंत समझाया। निहकलंक होए प्रगट, जोती जामा भेख वटाया। वेद व्यासा गया रट, इक्क ध्यान लगाया। नानक निरगुण मेले फट, एका पट्टी नाम बंधाया। गोबिन्द अमृत रस ल्या चट, रस रसीआ मुख सुहाया। कलिजुग अन्तिम आए पुरख समरथ, सभ दा लहिणा दए चुकाया। चार कुण्ट नाम पाए नथ्थ, शब्द डोरी इक्क उठाया। भगत भगवन्त करे अकट्ठ, आप आपणा मेल मिलाया। लक्ख चुरासी दर दवारिउँ देवे धक्क, एका धक्का लाया। नौं खण्ड पृथमी करे ढक, साचा खण्डा नाम चमकाया। शाह सुल्ताना लथ्थे पत, सीस ताज ना कोई टिकाया। नौं नौं देवे मथ, सति सति करे जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुण आप जणाया। साचा गुण हरि जणाए, भेव अभेद खुल्हाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम आए, नौं नौ चार रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी वेस वटाए, जोती जोत डगमगाईआ। निहकलंक नाउँ रखाए, ना कोई पिता ना कोई माईआ। नाम डंका इक्क वजाए, दो जहानां आप सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ल्ए जगाए, सोया कोए रहिण ना पाईआ। विष्नूं तेरी धार आपणे विच लुकाए, लोकमात वज्जे वधाईआ। ब्रह्मे तेरा पन्ध मुकाए, जोती जोत जोत समाईआ। शंकर तेरा लहिणा देणा दए चुकाए, बाशक तशका गलों लाहीआ। क्रोड़ तेतीसा डेरा ढाहे, सुरपति राजा इन्द नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गण गंधर्ब सर्ब कुरलाए, वेला गया हथ्थ ना आईआ। लक्ख चुरासी करे हाए हाए, धीरज धीर ना कोई धराईआ। गुर पीर अवतार ना कोई सहाए, अन्त पल्लू गए छुडाईआ। पति परमेश्वर सच दरबारा इक्क लगाए, सचखण्ड सोभा पाईआ।

साचे सन्त भगत लए जगाए, सच हलूणा एका लाईआ। एका हुक्म इक्क वरताए, एका एक मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भाणा आप जणाईआ। साचा भाणा हथ्थ करतार, विष्न ब्रह्मा शिव जणाया। कलिजुग अन्तिम करे खेल अपार, निरगुण निरगुण वेस वटाया। सम्बल नगरी धाम न्यार, गोबिन्द रंग रंगाया। गोबिन्द चेला कर परवान, सज्जण सहेला दए सलाहया। इक्क अकेला नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाया। करे खेल श्री भगवान, ख़ालक ख़लक वेख वखाया। चण्ड प्रचण्ड खिच्च महान, दो जहानां दए जणाया। अन्तिम सभ दा लहिणा चुक्के विच जहान, देणा कोई रहे ना राया। पीर मुला शेख़ सर्ब कुरलाण, ऊँची कूक कूक देण दुहाया। नाता तुट्टे ज़िमीं अस्मान, लोक परलोक दए दुहाया। नाता तुट्टा अञ्जील कुरान, काया कुरा फोल फुलाया। मुकामे हक वसे श्री भगवान, आदि जुगादी वड वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा खेल आप वखाया। साचा खेल करे ख़लक, ख़ालक ख़लक आपणा रूप वटाईआ। नाता तोड़े ज़िमीं फ़लक, अर्श कुर्श आपे वेख वखाईआ। आपे देवे आपणी झलक, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाउणा, आप आपणा रूप धराइंदा। अमाम अमामा सिर आप अख्वाउणा, शाह नवाब आप हो जाइंदा। सच दमामा इक्क वजाउणा, साची धार आप सुणाइंदा। सच ईमान इक्क वखाउणा, शरअ शरीयत डेरा ढांहयदा। काया खेड़ा पर्दा लाउहणा, मक्का आपणा हज्ज कराइंदा। दो दो आबा मेल मिलाउणा, आब हयात आप प्यांअदा। चौदां तबकां वेख वखाउणा, चौधवीं सदी चन्द चढ़ाइंदा। सद आपणे दर बहाउणा, चार यारी दर दुरकाइंदा। अन्तिम आपणा पर्दा लाउहणा, मुख नकाब ना कोई रखाइंदा। धुर फ़रमाना इक्क सुणाउणा, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। कलिजुग तेरा कूड़ कुड़यारा पन्ध मुकाउणा, अन्तिम डेरा ढांहयदा। विष्नूं तेरा वक्त सुहाउणा, ब्रह्मे तेरा ब्रह्म फेर प्रगटाइंदा। साची बणत आप बणाउणा, सरबंस आपणे रंग वखाइंदा। पिछला लेखा आप चुकाउणा, अग्गे आपणा राह जणाइंदा। चार वेद नज़र ना आउणा, पुराण अठारां ना कोई सुणाइंदा। गीता ज्ञान ना किसे समझाउणा, शास्त्र सिमरत मुख छुपाइंदा। अञ्जील कुरानां डेरा ढाउहणा, मसला हल आप कराइंदा। खाणी बाणी पन्ध मुकाउणा, दो जहानां पार कराइंदा। धर्म राए दा दर खुल्हाउणा, एका हुक्म सुणाइंदा। चित्रगुप्त हिसाब वखाउणा, लिख लिख लेखा सर्ब मुकाइंदा। नेत्र नैणां कजला पाउणा, स्वांगी साचा सांग वरताइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी एका वार एका राह वखाउणा, लक्ख चुरासी नाल प्रनाइंदा। साचे सन्तां आप जगाउणा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाइंदा। रातीं सुत्तयां आप उठाउणा, दर दर घर घर सेव कमाइंदा। स्वच्छ सरूपी रूप वटाउणा, आप आपणा मेल मिलाइंदा। गुरमुख

बाल अंञाणे गोद बहाउणा, पिता पूत लाड लडाइंदा। नाम मृदंग सूरे सरबंग इक्क वजाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। लक्ख चुरासी वण्ड वंडाउणा, अनहद नादी नाद वजाइंदा। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, ख़ाकी ख़ाक आप मिलाइंदा। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, श्री भगवाना आप जनाउणा, दूसर संग ना कोई रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव तेरा पन्ध मुकाइंदा। विष्नूं तेरा पन्ध मुकाउणा, अन्त रहिण ना पाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म जपाउणा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। शंकर तेरा शंका लाउहणा, अन्त कलिजुग ना कोए रखाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, सच सुच्च करे जणाईआ। ब्रह्मे तेरा धाम सुहाउणा, गुरमुख साचे दए वड्याईआ। शंकर तेरा नाता तोड़ तुड़ाउणा, गुरसिख सज्जन दए बणाईआ। इन्दर इन्द्रासन आप तजाउणा, छोटा बाला दए सुणाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिलाउणा, मात आपणा सुत जणाईआ। कलिजुग अन्तिम वेला आओणा, निहकलंक गोबिन्द गया लिखाईआ। ऊँची कूक कूक सुनाउणा, मेरी अज़मत मेरा बेड़ा रुड़्हाईआ। ईसा राह तक्के श्री भगवाना, मेरा ख़ुदावंद आए वाली दो जहानां, मेरे पिच्छे रहिबर बणे सच्चा माहीआ। वेद व्यास दे गया परवाना, प्रगट होए ब्राह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दाता पुरख बिधाता, बेऐब नाम ख़ुदाईआ।

१३७० कलिजुग अन्तिम आया जग, हरि जाग्रत जोत जगाया। गोबिन्द मेल सूरा सर्बग्ग, समरथ रंग रंगाया। करे कराए पार हद्द, हद्द हदूद वेख वखाया। भगत भगवन्त जणाए यद, साचा बंस लए प्रगटाया। लक्ख चुरासी विचों करे अड्ड, आप आपणा बन्धन पाया। बाली बाला लडाए लड्ड, सिर आपणा हत्थ टिकाया। पंच विकारा देवे कढ्ढ, माया ममता मोह मिटाया। दर दुआरे लए सद्द, शब्दी हुक्म सुणाया। नाम प्याए साची मदि, एका रस चखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भेव दए खुल्हाया। भेव खुल्हाए सदा गुरसिख, गुर पूरे वड वड्याईआ। आपणा लेखा आपणी हत्थीं देवे लिख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। साची पाए नाम भिक्ख, भिच्छया मंगन दर किसे ना जाईआ। जन्म जन्म दी लाहे वख, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। आसा तृष्ना मिटे तृख, त्रैगुण बन्धन दए कटाईआ। निज नेत्र लए पेख, दोए लोचन मूंध वखाईआ। मेरा रूप ना मुछ दाढ़ी ना दिसे केस ना कोए मूंड मुंडाईआ। मेल मिलावा श्री दस्मेश, गोबिन्द वज्जे नाम वधाईआ। लहिणा देणा चुक्के रिखी केश, गोवर्धन धारी खेल खिलाईआ। राम रामा रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। आदि गुर अवतार करन आदेस, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तिस अग्गे चले ना कोई पेश, पुरख अबिनाशी आया चल सच्चा माहीआ। भाग लगाया माझे देस, सम्बल नगर दए वड्याईआ। विष्नूं बहिन्दे बाशक सेज,

सांगोपांग ना कोए हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भेव आपणा दए मुकाया। सभ दा लहिणा जाणा मुक्क, सतिगुर पूरा आप मुकाइंदा। हरया बूटा जाणा सुक्क, अमृत सिंच हरा ना कोए कराइंदा। गुर अवतार बैठे लुक, दरस कोए ना पाइंदा। वरण बरन ना लथ्थी भुक्ख, तृष्ना जगत ना कोई बुझाइंदा। सफल ना होए मात कुक्ख, हरि का दरस कोए ना पाइंदा। मर मर जम्मे मुड़ मुड़ आवे मात कुक्ख, गर्भ दिवस रैण ना कोए कटाइंदा। अजूनी जून उलटा रुख, अजूनी रहत ना दया कमाइंदा। देवे सुनेहड़ा अबिनाशी अचुत, लक्ख चुरासी आप भवाइंदा। गुरमुख विरले सोहे रुत्त, जिस जन आपणा दरस कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग आप समझाइंदा। साचा मार्ग सतिगुर चरन, सति पुरख निरँजण दए वड्याईआ। गुरसिख खुल्ह्ले हरन फरन, सुरत शब्द मेल मिलाईआ। किरपा करे हरि करनी करन, करता पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। भय चुकाए मरनी मरन, भयानक अवर ना कोए वखाईआ। इक्क जणाए साची सरन, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। गुरमुख विरले अन्तिम तरन, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सुरत शब्द साचा मेला, आप जणाए सज्जण सुहेला, डोरी बन्धन एका पाईआ। सुरती चढ़े आपणे घाट, सतिगुर पूरा आप चढ़ाइंदा। डूँग्घी कंदर मुक्के वाट, झूठा पन्ध मुकाइंदा। तन अन्धेरी मेटे रात, जोती चन्न चढ़ाइंदा। गीत सुणाए साची गाथ, छत्ती राग भेव ना आइंदा। मेल मिलाए कमलापात, नारी कन्त रूप सुहाइंदा। अठ्ठे पहर रक्खे प्रभात, दिवस रैण ना वण्ड वंडाइंदा। चरन कँवल बंधाए नात, ना कोए तोड़े तोड़ तुड़ाइंदा। गुरमुख तेरी उत्तम ज़ात, ज़ात अज़ाती मेट मिटाइंदा। साहिब सतिगुर वसे साथ, विछड़ कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुरती शब्दी साचा मेल, दीप जगाए बिन बाती तेल, नूर नुराना डगमगाइंदा। सुरत दुआरे जाए चढ़, सतिगुर पूरा आप चढ़ाईआ। आपणे घर जाए वड़, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। शब्दी पल्लू ल्ए फड़, ढह ढह पए सरनाईआ। तूं साहिब दाता दातार, बण तेरी नार, बण दुहागण तेरा अद्धविचकार, मेरी सार किसे ना पाईआ। होई दुहागण दुरमति मैल ना धोया दाग़न, खुलड़े केस फिराई हरि देस तेरा राह ना कोए जणाईआ। धन्न भाग मैं होई सुहागन, मिल्या मेल पुरख अबिनाशन, घर साचे वज्जी वधाईआ। मेरी पूरी होई आसन, मेरे लेखे लग्गे पवण स्वासन, पवण उनन्जा रही शरमाईआ। मेरा लहिणा देणा चुकया पृथ्मी अकाशन, मिली सच सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां एका राह वखाईआ। हरिजन साचे जाणा जाग, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ।

१३७१

निरगुण निरवैर पुरख अकाल लाया भाग, अजूनी रहत डगमगाइंदा। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता वसणहारा बिन मन्दिर मसीता इक्क उपजाए आपणा वैराग, वैरागी आपणा नाउँ धराईआ। कन्त कन्तूहल दर घर साचे लैणा लाध, वड भाग ख़ुशी मनाईआ। घर दीपक जोत जगाए चराग़, नाम देवे साची दात, दाता दानी झोली पाईआ। सुरती मिले कन्त सुहाग, दुरमति मैल धोवे दाग़, जन्म जन्म दी लाहे लग्गी शाहीआ। रातीं सुत्तयां मारे आवाज़, किरपा करे ग़रीब निवाज़, ग़रीबनिमाणे गले लगाईआ। सतिजुग चलाउणा अन्त जहाज, सति पुरख निरँजण रचया काज, भाग लग्गा देस माझ, गोबिन्द वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुरत शब्द लए मिलाईआ। शब्द आया सुरत दुआर, आपणी लए अंगड़ाईआ। फड़ बाहों सुत्ती लए उठाल, आलस निन्दरा दए मुकाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, एका डोरी बन्धन पाईआ। जिस दी आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करदी रही भाल, सो चल के आया माहीआ। जिस नूं गुर अवतार बणाउँदे रहे दलाल, सो सच दलाली रिहा कमाईआ। सदा सदा सद करे प्रितपाल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सुणे मरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। गुरसिख नेड़ ना आए काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेख ना सके वखाल, लाड़ी मौत ना लए प्रनाईआ। महाकाल अग्गे करे सवाल, बण सवाली झोली डाहीआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत जिस वसे धर्मसाल, सो दुआरा देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख सुरती शब्द बन्ने डोर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर चढ़ के आया आपणे घोड़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रिहा दौड़, लक्ख चुरासी वेखे परखे रीठा मिट्ठा कौड़, गुरमुख मनमुख मनमुख गुरमुख दोवें राह चलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि हो मेहरवान, भगतां देवे भगती दाना, भगतन अन्तर सति निशाना, गुरमुखां अंदर बोध ज्ञाना, गुरसिखां बख्शे चरन धूढ़ अशनाना, सर सरोवर तीर्थ तट जगत किनारा ना कोए वखाईआ।

★ ३१ अस्सू २०१८ बिक्रमी हरबंस सिँघ बलवन्त सिँघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ★

आदि जुगादि खेल न्यारा, जग करता हरि कराइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, रूप अनूप वेस वटाइंदा। जोती जाता हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। धुन अनाद सच्ची धुन्कारा, अनादी नाद सुणाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां दए सहारा, गगन मंडल सोभा पाइंदा। कर प्रकाश रवि ससि सतारा, चन्द चांदना आप चमकाइंदा। जल थल महीअल दए अधारा, धरत धवल वेख वखाइंदा। बंस सरबंस कर त्यारा, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। विष्णूं विश्व कर त्यारा, साचा मेला मेल

मिलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, आपणा बंस आप सुहाइंदा। कँवल कँवला साची धारा, निर्मल निर्मल कर उज्यारा, नूर नुराना आप अख्वाइंदा। आदि जुगादि एका हरि, साची धारा आप चलाइंदा। आदि जुगादि पुरख समरथ, सो पुरख निरँजण वडी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण महिमा अकथ, एकँकारा सिफ्त सलाहीआ। आदि निरँजण निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा साचे कोट, सचखण्ड बैठा आसन लाईआ। श्री भगवान आदि जुगादि एका बख्शे ओट, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण निरवैर जाए मिल आपणा ओत, विश्व सोहँ सो आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विश्व धार आप पढ़ाईआ। विश्व धार हरि का रंग, निरगुण आपणा आप जणाइंदा। पारब्रह्म सूरा सरबंग, शाह पातशाह खेल खिलाइंदा। नाद अनादी इक्क मृदंग, ब्रह्मादि आप वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा भेव हरि निरँकार, आदि पुरख आदि आदि आदि आपणे हथ्थ रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, निरगुण निरगुण निरगुण मेला मेल मिलाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतार, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, राजस तामस सातक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वस्त अपार,
१३७३ पंचम नाता जोड़ जुड़ाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, साचा घाड़न दए घड़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर पसार, ब्रह्म वेखे १३७३
चाँईं चाईआ। घर विच घर कर त्यार, महल्ल अटल सोभा पाईआ। ईश जीव निराकार, जगदीसा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग पुरख अबिनाशा, आदि जुगादि लगाइंदा। आपणे मंडल पावे रासा, गोपी काहन आप हो जाइंदा। आपे जाणे खेल तमाशा, पृथ्मी आकाश खेल कराइंदा। आपे विष्नूं अंदर कर कर वासा, अमृत आपणा आप प्रगटाइंदा। आपे नाभी कँवल दे भरवासा, फुल फुलवाड़ी आप महिकाइंदा। आपे पारब्रह्म ब्रह्म करे भोग बिलासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी धारा आप चलाइंदा। साची धार पुरख अगम्म, इक्क इकल्ला आप चलाईआ। आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपे बणे मलाहीआ। करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणी दया कमाईआ। आपे जननी आपे जन, दाई दाया आप अख्वाईआ। आपे घड़े आपे लए भन्न, घड़न भन्नणहार पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता, वस्त अमोलक आपणे हथ्थ रखाईआ। साची वस्त हरि गुणवन्त, आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि जुगादि महिमा अगणत, भेव कोए ना पाइंदा। आपे विश्व आपे मणीआ मंत, नाउँ निरँकारा आप अख्वाइंदा।

सोहँ साची धार, गुर चेला रूप जणाईआ। जुग जुग करन प्यार, प्रभ साचा मेल मिलाईआ। विछड़ हो हो होण ख्वार, अभुल भुल्ले साचा माहीआ। जग रोवन ज़ारो ज़ार, दोवें नैण वहाईआ। सोहे आप दुआर, बंस मिले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। सोहँ धार पारब्रह्म, ब्रह्म हरि साचे खेल खिलाया। जुगा जुगन्तर बेड़ा बन्नू, साचा मार्ग लाया। एका वसण एका तन, दोहां मेला सहिज सुभाया। साची छपरी सोहे छन्न, जिस गृह अंदर सोभा पाया। इक्क दूजे दा कहिणा लैण मन्न, मति सुमत ना कोए वड्याआ। मिल मंगल कहिण धन्न धन्न, घर सज्जण सच्चा पाया। झूठा भरम निकले जन, गढ़ हँकार तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ साचा बन्धन पाया। सोहँ बन्धन दूआ एक, इक्क अकाला आप प्रगटाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म साची टेक, एका ओट रखाईआ। जीव ईश लए वेख, दर्शन चाँई चाईआ। जगत अवल्लड़ा चले भेख, रूप रंग ना कोए वखाईआ। घर वसे साचा देस, मिल साची ख़ुशी मनाईआ। हँ ब्रह्म कर प्रवेश, सो आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप रखाईआ। आत्म परमात्म साचा संग, सदा सद रखाइंदा। जुगा जुगन्तर कारज अनन्द, अनन्द अनन्द वखाइंदा। गीत गोबिन्द साचा छन्द, हँ ब्रह्म सुणाइंदा। सो पुरख निरँजण मेटे पन्ध, पान्धी राह ना कोए वखाइंदा। पल्लू पल्लू देवे गंढ, साची गंढ, पवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर आप सुहाइंदा। साचा दर सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हँ ब्रह्म बणा बणत, घाड़न घड़त लए घड़ाईआ। लेखा जाणे जीव जंत, जीव जीव वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख विरले करे जणाईआ। गुरमुख विरला सोहँ रंग, काया तन चढ़ाइंदा। गुर चेला नच्चन बण मलंग, लोक लाज ना कोए वखाइंदा। बिन सितारों वज्जे तन्द, तन्दी राग ना कोए अलाइंदा। गुण ना जाणे कोए बत्ती दन्द, बिन रसना आप सुणाइंदा। गीत गोबिन्द सुहागी छन्द, घर मंगल आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे बूझ बुझाइंदा। सोहँ बुझे आपणा रूप, अनूप मिले वड्याईआ। घट प्रकाश चारे कूट, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। नाता तुट्टे जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। गोदी सोहे पूत सपूत, पिता वेखे चाँई चाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन तरया सोहँ बेड़ा, सुरत शब्द मेल मिलाया। काया वसया साचा खेड़ा, निरगुण साचा चन्द चढ़ाया। हक हकीकत कर नबेड़ा, पिछला पन्ध मुकाया। एका रंग वखाए सन्झ सवेरा, दिवस रैण ना कोए वड्याआ। गुरसिखां मन चाउ घनेरा, सतिगुर पूरा पाया। नाता तुट्टा मेरा तेरा, तेरा

मेरा सोहँ रूप अख्वाया। आवण जावण चुक्का गेड़ा, पान्धी झूठा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर चेला खेल खिलाया। गुर चेला खेले खेल, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। साचा मेला लए मेल, गुरमुख सज्जण मात उठाईआ। बणे साजन सखा सुहेल, साची प्रीत इक्क निभाईआ। निरगुण दीवा निरगुण बाती निरगुण जगाए बिन तेल, हवण हवणी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर चेला मिले एका घर, बंक दुआरा इक्क सुहाईआ। घर दुआरा सोहे बंक, गृह मेला हरि करतार। गुरमुख वड्याई जिउँ जन जनक, भगत भगवन्त लए अधार। नाम हलूणा लाए तनक, निरगुण खिच्चे सच सतार, करया खेल बार अनक, जुग जुग लै मात अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन करे सच प्यार। कर प्यार दिती दात, हरि सतिगुर दया कमाईआ। सोहँ नाम सच सौगात, रोग सोग दए गंवाईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, गुर चेला चन्द चढ़ाईआ। आत्म परमात्म इक्को गाथ, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। ईश जीव निभे साथ, जगदीस संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे इक्को वर, सोहँ शब्द वड करामात, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरमुख विरले चढ़न इस जमात, दूजी होर ना कोए पढ़ाईआ।

★ १ कत्तक २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच दया होई ★

आदि पुरख हरि शाह सुल्ताना, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। भूपत भूप वड राज राजाना, नूर नुराना नूर धराईआ। सो पुरख निरँजण हो प्रधाना, आपणा खेल आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण मर्द मरदाना, इक्क इकल्ला भेव ना राईआ। एकँकारा जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, बल आपणा आप वखाईआ। अबिनाशी करता करे खेल दो जहाना, निरगुण निरवैर नाउँ धराईआ। श्री भगवान झुलाए सच निशाना, सति सतिवादी आप रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ बण निमाणा, दर बैठे सीस झुकाईआ। दर दरवेश करे खेल महाना, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपे जाणे आपणी शहिनशाहीआ। शाह पातशाह हरि भगवाना, आदि जुगादि आप अख्वाइंदा। करे खेल वड बलवाना, भेव कोए ना पाइंदा। भूपत भूप राज राजाना, आपणा बल धराइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म महाना, पुरख अकाल आप जणाइंदा। जोती नूर नूर डगमगाना, जोती जोत खेल खिलाइंदा। आपणी इच्छया आपे कर परवाना, आपणी बणत आप बणाइंदा। सचखण्ड सुहाए सच मकाना, छप्पर छन्न ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। साचा मन्दिर सच महल्ला, सो पुरख निरँजण आप

प्रगटाईआ। हरि पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, एकँकारा सोभा पाईआ। आदि निरँजण आपणे दीपक आपे बला, नूर नुराना डगमगाईआ। अबिनाशी करता पकड़े पल्ला, साचा संग आप अख्वाईआ। श्री भगवान वसणहारा निहचल धाम अटल्ला, दर घर साचा आप सुहाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी जोत आपे रला, जोती जाता खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। रक्खे वड्याई आपणे हथ्थ, बेऐब परवरदिगारा। करे खेल पुरख समरथ, वसणहारा धाम न्यारा। सच दुआरे हो प्रगट, सेवक सेवा करे अगम्म अपारा, आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे देवणहार सहारा। आपणे अंदर आपे वस, आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा। आपणा नूर कर प्रकाश, आपे होए जोत उज्यारा। एका मंडल पावे रास, करे खेल सच्ची सरकारा। आपणे दर होए दासी दास, सेवक सेवा करे बण भिखारा। आपणी पूरी करे आस, आपे बणे सच वरतारा। आदि जुगादि आपे रक्खे आपणे साथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, करे खेल आप न्यारा। खेल न्यारा हरि करतार, आदि पुरख आप कराईआ। निरवैर निराकार अजूनी रहत हो त्यार, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, भूपत भूप दए वड्याईआ।
१३७६ सीस जगदीस सुहाए आप सच्ची दस्तार, रूप रंग ना कोए वखाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। १३७६
आपणे गृह आपे होए ख़बरदार, एका हुक्म आप जणाईआ। आपे निउँ निउँ करे निमस्कार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणे रंग आप समाईआ। आपणे रंग आपे राता, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। खेले खेल पुरख बिधाता, बेअन्त वडी वड्याईआ। आपे पिता आपे माता, बाल सख़ाई आपणा नाउँ धराईआ। आपे खेले खेल तमाशा, आपे आपणा दर सुहाईआ। आपे रक्खे आपणी उत्तम जाता, नूरो नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, अलख अगोचर अगम्म अपार, करे खेल परवरदिगार, बेपरवाह आप आपणी धार चलाइंदा। साची धार बेपरवाह, आदि पुरख आप चलाईआ। इक्क इकल्ला देवे सच सलाह, सलाहगीर भेव ना राईआ। आप सुहाए आपणा थाँ, थान थनंतर दए वड्याईआ। आप प्रगटाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप वखाईआ। आपणा रूप आपे धर, सचखण्ड दुआर सुहाइंदा। निराकार नरायण नर, आपणी कल आप वरताइंदा। आपणे मन्दिर आपे वड़, दर साचा आप सुहाइंदा। सच सिँघासण आपे चढ़, सति सतिवादी सोभा पाइंदा। आपणा पल्लू आपे फड़, आपणा मेल मिलाइंदा। आपे पुरख आपे नर, नार कन्त आप हो जाइंदा। आपे वसे सचखण्ड साचे घर, दीवा बाती ना कोई रखाइंदा। आपणा घाड़न आपे घड़, निरगुण निरवैर

वेख वखाइंदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख किरत कमाइंदा। एका देवे आपे डर, निरभउ आपणा नाउँ जणाइंदा। आप नुहाए आपणे सर, सर सरोवर आप सुहाइंदा। ना जन्मे ना जाए मर, पुरख अकाल खेल कराइंदा। साचे तख्त आपे चढ़, आपणा गीत आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगल आपणा आप सुणाइंदा। साचे तख्त आपे चढ़ चढ़, तख्त निवासी सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरे आपे वड़ वड़, आपणे बंक दए वड्याईआ। आपणी जोत आपे धर धर, जोती नूर करे रुशनाईआ। आपणा पल्लू आपे फड़ फड़, आपे ख़ुशी मनाईआ। आपणी नारी आपे वर वर, आपणी सेज सुहाईआ। जननी जन आपे बण बण, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। निरगुण अंदर निरगुण वड़ वड़, निरगुण आपणा रूप वखाईआ। पूत सपूता घाड़न घड़ घड़, शब्दी नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दरस आपे देवे घर घर, स्वच्छ सरूपी सच्चा शहिनशाहीआ। स्वच्छ सरूप एकँकारा, एका घर सुहाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अपारा, बेपरवाह आप हो जाइंदा। आपे जाणे आपणी कारा, करता आपणी खेल खिलाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, तख्त निवासी तख्त सुहाइंदा। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, धुर फरमाना आप जणाइंदा। शब्दी शब्द सुत दुलारा, बाल निधाना आप उपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१३७७

किरपा कर, आपणी धार आप चलाइंदा। सुत दुलारा जणया सुत, पारब्रह्म वड्याईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, कहिणा अकथ कथिआ ना जाईआ। आप सुहाए आपणी रुत्त, थित वार ना कोई रखाईआ। आप सुहाए आपणा कोट, चार दीवार ना कोई बणाईआ। आप प्रगटाए आपणी जोत, जोती जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द शब्द उपजाईआ। शब्द सुत दुलारा, सो पुरख निरँजण आप उपजाइंदा। हरि पुरख निरँजण करे प्यारा, एकँकारा गोद सुहाइंदा। आदि निरँजण कर उज्यारा, जोती नूर नूर वखाइंदा। अबिनाशी करता दए सहारा, श्री भगवान संग निभाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण वणजारा, साचा वणज कराइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खोल किवाड़ा, एका हुक्म सुणाइंदा। तेरा रूप अगम्म अपारा, दिस किसे ना आइंदा। तेरा धाम बणाए हरि करतारा, थिर घर साचा आप वड्यांअदा। थिर घर रक्खे तेरी धारा, रूप रंग ना कोई सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। थिर घर वसया शब्दी धार, नूर नुराना नूर नजरी ना आईआ। आपणी किरपा आपे धार, आपे वेखे सच्चा शहिनशाहीआ। आपे वणज आप वणजार, आपे वस्त हट्ट विकाईआ। आपे दर दरवेश बणे भिखार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। आपे होए देवणहार, अनमुल्ल बेपरवाहीआ। थिर घर साचे पावे सार, हरि शब्दी मेल मिलाईआ। शब्दी गुण

दए विचार, एका गुण समझाईआ। हरि का नूर तेरा प्यार, प्यार प्यार विच समाईआ। हरि हरि देवे इक्क सहार, सीस जगदीस हथ्थ टिकाईआ। तेरे अंदर रक्खे कुदरत धार, कादर करता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी सुत दए वड्याईआ। शब्दी सुत कर ध्यान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। थिर घर बणाया तेरा मकान, दिस किसे ना आइंदा। सति सतिवादी श्री भगवान, साची धार चलाइंदा। एका जोत खेल महान, खेलणहारा भेव ना आइंदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवान, तेरी बणत बणाइंदा। तूं बाले उठ कर ध्यान, ध्यान ध्यान विच जणाइंदा। तेरा खेल करां महान, आपणी वस्त तेरे विच टिकाइंदा। तेरी इच्छया ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं खेल महान, घाड़न घड़त तेरे हथ्थ रखाइंदा। इक्क वखावां सच निशान, आदि जुगादि ना कोई मिटाइंदा। एथे उथे देवां माण, दर दर तेरा राह तकाइंदा। एका हुक्म कर मेहरवान, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। करे खेल इक्क महान, श्री भगवान आप जणाइंदा। पहलां देवां विष्नूं दान, तेरी गोद सुहाइंदा। दूजा ब्रह्म कर प्रधान, ब्रह्मा वण्ड वंडाइंदा। तीजा शंकर मेल महान, हरि साचा सच जणाइंदा। तिन्नां विचोला श्री भगवान, शब्दी बन्धन पाइंदा। थिर घर वसे हो मेहरवान, रूप रंग ना कोई वखाइंदा। सचखण्ड साचे तख्त बहे राज राजान, सीस जगदीस ताज सुहाइंदा। सत रंग निशाना दो जहान, दो जहानां वाली आप चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख आपणी रचना आप रचाइंदा। आपणी रचना देवां दस्स, सो पुरख निरँजण भेव खुल्हाइंदा। सुत दुलारे अंदर तेरे जावां वस, रूप रंग ना कोई वखाइंदा। मेरा प्रकाश मेरा रस, दूसर हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा आपे चुक्क, नूर नूर दरस कराईआ। सचखण्ड दुआरे जो बैठा लुक, थिर घर रिहा मुख वखाईआ। शब्द साचे सुत तेरा बूटा ना जाए सुक्क, पुरख अकाल हरया आप कराईआ। बिन मेरे तेरी जड़ सके ना कोई पुट्ट, आदि जुगादि ना कोई उखड़ाईआ। जुगा जुगन्तर रखावां तेरी ओट, तुध बिन जीवन कोई ना पाईआ। तेरा बंस बणावां ओत पोत, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी गोद बहाईआ। तेरा ना कोई वरन ना कोई गोत, ना कोई पिता ना कोई माईआ। तेरा पिता निर्मल जोत, पुरख अकाल आप अख्वाईआ। तेरा दुआरा किला कोट, थिर घर साचे वज्जे वधाईआ। तेरा नूर तेरे उत्ते होए मोहत, नारी कन्त सेज हंढाईआ। तेरा प्यार तेरा सूत, दूसर पलँघ ना कोई वखाईआ। तेरी आस तेरा होंट, तेरी प्यास रसना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, थिर घर साचे आप बहाईआ। थिर घर बहाए हरि करतारा, आपणी महिमा आप जणाइंदा। मेरा नूर

अगम्म अपारा, तेरे दर सुहाइंदा। तेरा दर उच्च मुनारा, पुरख अबिनाशी आप बणाइंदा। सेवक बणे परवरदिगारा, साची सेवा आपणे हथ्थ रखाइंदा। वस्त अमोलक भरे भण्डारा, आपे तेरी झोली पाइंदा। तेरा रंग रंगे निरँकारा, रंगणहारा खेल खिलाइंदा। अलख अगोचर वेखे तेरा पसारा, तेरी धार चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा सहारा, तेरी ओट जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा गुण एका वार समझाइंदा। गुण समझाए वार एक, इक्क इकल्ला दया कमाईआ। शब्द सुत हरि लैणा वेख, प्रभ तेरा तेरा होए सहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे टेक, एका इष्ट जणाईआ। आप बणाए आपणा लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। करे खेल अलख अभेव, आपे जाणे आपणा भेख, भेव अवल्ला भेत ना राईआ। वसणहारा सचखण्ड साचे देस, थिर घर आपे बंक सुहाईआ। शाह सुल्ताना नर नरेश, शहिनशाह वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह दए समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव चाढ़े रंग, रंग रंगीला इक्क चढ़ाइंदा। आप सुहाए साची सेज पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। इक्क जोत जगाए अखण्ड, खण्ड खण्ड ना कोए कराइंदा। तिन्नां पावे वण्डण वण्ड, एका हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा
१३७८ कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। वड दाता हरि मेहरवाना, अनुभव प्रकाश कराईआ। दानी देवे एका दाना, दयावान १३७८
सच्चा शहिनशाहीआ। विष्न विश्व कर परवाना, सच भण्डारा झोली पाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म प्रधाना, पारब्रह्म खेल खिलाईआ। शंकर तेरा अन्त निशाना, सो पुरख निरँजण दए जणाईआ। जो घड़या सो भन्न वखाणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा शब्द धुर फ़रमाना, विष्न ब्रह्मा शिव लए अंगड़ाईआ। तूं शाह पातशाह सच्चा सुल्ताना, तेरी महिमा कथी ना जाईआ। हउँ बालक बाली बाल नादाना, तुध चलां सद रज़ाईआ। एका दे दे वस्त महाना, तेरे अगे झोली डाहीआ। कवण बिध खेल करां विच जहाना, विष्नूं मंग मंगाईआ। कवण धार बन्न्हा गाना, ब्रह्म आपणा बूटा लाईआ। कवण खण्डा तेज चमकाना, ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी सूरबीर, आदि आदी दया कमाइंदा। सति सन्तोखी देवे धीर, साचा मार्ग इक्क जणाइंदा। मेरी माया साचा सीर, साचा रूप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया विष्न ब्रह्मा शिव झोली पाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव इच्छया, आपणी आप प्रगटाईआ। पुरख अबिनाशी पावे भिच्छया, साची वस्त आपणे तोल तुलाईआ। आपणी हथ्थीं लेखा लिख्या, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। त्रैगुण माया तेरी करे प्रीख्या, तेरा बन्धन पाईआ। तिन्नां पाई एका

भिख्या, रजो तमो सतो रुत्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका राह दए वखाईआ। वस्त अमोलक झोली पा, एका राह वखाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न ल्या घड़ा, घाड़त घड़त आप जणाइंदा। रूप अनूप लैणा वटा, आपणी खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सुणया संदेशा, हरि जू हरि सुणाया। उठ उठ नेत्र हरि जू पेखा, एका वार दरसन पाया। पारब्रह्म तोहे सदा अदेसा, हउँ अभुल रहे शरमाया। सानूं दस्स दे साडा पेशा, कवण सेवा कमाया। कवण वसे तेरे देसा, तेरे धाम मिले वड्याआ। कवण होवे नर नरेशा, साचा हुक्म सुणाया। कवण कूटे तेरा भेता, पर्दा दए चुकाया। कवण होए घर घर लेटा, लक्ख चुरासी दए वड्याआ। कवण होए खेवट खेटा, बेड़ा लए तराया। कवण होए बेटी बेटा, कवण मात पित अख्वाया। कवण करे साचा हेता, नित नवित मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर बैठे सीस झुकाया। दयावान हरि दीन दयाला, आपणी दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा होए सदा रखवाला, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। मार्ग दस्से इक्क सुखाला, लक्ख चुरासी मेल मिलाईआ। त्रैगुण माया बण दलाला, साची वण्ड दए समझाईआ। आपणा रूप प्रगटाए पंज तत शब्दी खेल करे कमाला, तेरी गोद सुहाईआ। निरगुण चले अवल्लड़ी चाला, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाईआ। तेरा हल्ल करे सवाला, सवाली ख़ाली मुड़ ना कोई जाईआ। तख्त सोहे श्री भगवाना, भगवन आपणा बल वखाईआ। दीनन देवे एका दाना, वस्त एका वार वरताईआ। लक्ख चुरासी बन्न्णा गाना, आपणी वण्ड वंडाईआ। मति बुध करे प्रधाना, घट घट आप समाईआ। निरगुण जोत नूर निशाना, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्काना, अनहद नाद वजाईआ। पंचम पंच करे परवाना, मेल मिलावा सहिज सभाईआ। आसा तृष्ना खेल महाना, हउमे हंगता दए वड्याईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काना, इच्छया इच्छया दए वधाईआ। मातलोक वेखे खेल श्री भगवाना, ब्रह्म पारब्रह्म वण्ड वंडाईआ। शंकर तेरा धरे ध्याना, धीरज धीर इक्क समझाईआ। आपणा खण्डा खिच्च म्याना, आपणे विचों आपा लए प्रगटाईआ। वसणहारा सच मकाना, करे खेल बेपरवाहीआ। आपणे हथ्थ रखाए आवण जाणा, भेव अभेद ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव शब्द शब्दी करे कुड़माईआ। बण विचोला, पुरख अकाल दया कमाइंदा। शब्दी गाए साचा सोहला, विष्न ब्रह्मा शिव आप पढ़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आपे तोल तोला, शब्दी कंडा हथ्थ उठाइंदा। आप चुकाए पर्दा ओहला, जल्वा नूर आप दरसाइंदा। आपे वसणहारा सदा कोला, सद आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

१३८०

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निष्अक्खर आप पढ़ाइंदा। निष्अक्खर हरि हरि बोल जैकारा, तिन्नां करां पढ़ाईआ। मेरा नाउँ सदा निरँकारा, ना मरां ना जाईआ। सद वसां धाम न्यारा, सचखण्ड सोभा पाईआ। एका करां हुक्म वरतारा, मेरा हुक्म ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। बण शाहो भूप वड सिक्दारा, मेरी सच सच्ची शहिनशाहीआ। रूप रंग तों वसां बाहरा, अजूनी रहत वडी वड्याईआ। मेरा नूर मेरी धारा, मेरी धारा शब्दी शब्द लए प्रगटाईआ। शब्दी शब्द तेरा पसारा, विष्न ब्रह्मा शिव हरि समझाईआ। बिन हरि शब्द ना कोई सहारा, गुण अवर ना कोई वड्याईआ। आदि अन्त प्रभ आपणे हथ्थ रखाए किनारा, भेत ना किसे जणाईआ। सचखण्ड थिर घर करे सच विहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, आदि आदि आपणा खेल आप प्रगटाईआ। आपणा खेल करे भगवाना, भगवन आपणी दया कमाईआ। शब्दी शब्द कर परवाना, सच परवाना दए सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे माणा, त्रैगुण माया झोली पाईआ। पंज तत होए प्रधाना, लक्ख चुरासी वण्ड वंडाईआ। निरगुण सरगुण करे खेल महाना, रूप अनूप आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। सुण असीस चढ़या चा, विष्नूं ख़ुशी मनाइंदा। धन्न भाग प्रभ बणया मलाह, बेड़ा आप चलाइंदा। ब्रह्मा नैण रिहा उठा, नेत्र राह तकाइंदा। चरन

१३८१ सरन सरन चरन बल बख्शे शहिनशाह, सिर मेरे हथ्थ रखाइंदा। मेरी गंढु आपणे नाल बंधा, साचा पल्लू इक्क फड़ाइंदा। १३८१

मेरी ब्रह्म वण्ड वण्डा, लक्ख चुरासी विच टिकाइंदा। आपणा रंग दए चढ़ा, मेहरवान दया कमाइंदा। उप्पर पर्दा देवे पा, बन्धन आप रखाइंदा। आपणा भेत लए छुपा, मेरे भेत आपणे हथ्थ रखाइंदा। आपणा ढोला दए सुणा, मेरा ढोला कम्म ना कोई जणाइंदा। तोला बणे बेपरवाह, आपणा खण्डा हथ्थ उठाइंदा। लक्ख चुरासी तोले आपणा नाँ, वट्टा धड़ी ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल आप वरताइंदा। शंकर दोए जोड़ करे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तूं साहिब सच्चा दातार, हउँ सेवक सेव कमाईआ। मैं सुणया तूं सदा मीत मुरार, मीत मुरारा नाउँ रखाईआ। सेवा बख्शे एका धार, धार धार विच प्रगटाईआ। खण्डा फड़े एका वार, टुट्ट कदे ना जाईआ। मैं मारां वारो वार, इक्क तेरी ओट तकाईआ। तूं करता सदा करे प्यार, प्रभ भुल कदी ना जाईआ। आदि अन्त अन्त आदि तेरी कार, तूं करता कार कमाईआ। हउँ कट्टण आए विगार, जिउँ भावें तिउँ चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आदि आदि तेरी वड्याईआ। आदि पुरख तेरा मन्नया कहिणा, शब्दी सुत जणाया। विष्नूं भाणे अंदर रहिणा, सो भाणा इक्क मनाया। ब्रह्मे ब्रह्म पाया गहिणा, वेखे थाउँ थाँया।

शंकर चुकाए लहिणा देणा, देणा कोए रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला होए अन्त, किरपा करे श्री भगवन्त, आपणा मेल लए मिलाया। तेरे मिलण दा चाउ घनेरा, चारे बैठे सीस झुकाईआ। तूं साहिब मेरा मैं तेरा, विष्न ब्रह्मा शिव शब्दी मेले मेल एका गाईआ। तूं मन्दिर मेरा मकान तूं मेरा डेरा, तेरे अंदर आसण लाईआ। तूं हक हक करें निबेड़ा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। तूं चलाउणा साडा बेड़ा, इक्क तेरी ओट तकाईआ। तूं वसाउणा साचा खेड़ा, तेरे दर वज्जे वधाईआ। अन्त दस्सदे वक्त नेड़ा, तेरा विछोड़ा झल्लया ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका हुक्म दए समझाईआ। हुक्म जणाए श्री भगवन्त, आदि पुरख आपणा आप जणाया। शब्दी तेरी बणी बणत, हरि घाड़न आप घड़ाया। विष्न ब्रह्मा शिव दिता मंत, निष्अक्खर आप पढ़ाया। आपे बण बण हरि जू नारी कन्त, आपणा बंस आप सुहाया। आदि रचना लई रच वेखणहारा अन्त, अन्त आपणे हथ्थ रखाया। आपणी रुत सुहाए बसन्त, फुल फुलवाड़ी आप महिकाया। आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख ना किसे समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, एका धरवास रिहा धराया। सच्चा देवे धरवास, श्री भगवान दए वड्याईआ। शब्द सुत विष्न ब्रह्मा शिव तेरी पूरी करे आस, निरासा अन्त ना कोई रखाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी अकाश, खण्ड ब्रह्मण्ड पावे रास, मंडल मण्डप खेल रचाईआ। लक्ख चुरासी कर कर वास, निरगुण जोत करे प्रकाश, अनहद साचा नाद वजाईआ। साचे मंडल पावे रास, वेखे आप खेल तमाश, करे खेल बेपरवाहीआ। सेवक बणे दासी दास, अन्तिम करे बन्द ख़ुलास, लहिणा देणा दए चुकाईआ। सभ नूं मेले आपणे घाट, अन्तिम नेड़े रक्खे वाट, पान्धी आपणा पन्ध मुकाईआ। आप वखाए आपणा हाट, मेल मिलाए कमलापात, बेपरवाह बेपरवाहीआ। जिस ने रचना रची आदि, खेले खेल विच ब्रह्मादि, लेखा जाणे जगत जुगादि, अन्त भगवन्त आपणे विच छुपाईआ। साचा भेव हरि नरायण, एका गुण जणाइंदा। चारे मिल मिल अकट्ठे कहिण, एका घर सोभा पाइंदा। एका देवे लहण देण, वस्त अमोलक इक्क वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव हरि जणाए, जीवण दाता बेपरवाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी सेव लगाए, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। रवि ससि लए चमकाए, नूर नुराना नूर धराईआ। धरत धवल दए सुहाए, आकाश अकाश बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी रथ चलाए, बण रथवाही सेव कमाईआ। साची वण्डन वण्ड वंडाए, आपणा नाउँ लए प्रगटाईआ। ब्रह्मा वेता एका गुण जणाए, चारे वेद करे शनवाईआ। चारों कुण्ट सोभा पाए, सोभावन्त आप सहाईआ। साचा मार्ग आप लगाए, आपणी हथ्थीं आपणी सेव

१३८२

कमाईआ। साचा तोला बण रघुराए, तोल तोले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा दए उठाईआ। पर्दा चुकाए हरि निरँकारा, शब्दी भेव जणाइंदा। वरते खेल विच संसारा, हरि जीउ आपणी वण्ड वंडाइंदा। चारे वेद दए सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। चारे जुग खेल न्यारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेख वखाइंदा। चार वरन लग्गे अखाड़ा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नाच नचाइंदा। चार बाणी बोल जैकारा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। चारों कुण्ट खेल न्यारा, चौथे पद सोभा पाइंदा। चौथे घर बण वणजारा, नाम हट्ट इक्क खुल्हाइंदा। आपे वेखे वेखणहारा, रूप रंग ना कोई वखाइंदा। निरगुण सरगुण पावे सारा, सरगुण आपणा रूप वटाइंदा। गुर अवतार खेल न्यारा, जोती जाता डगमगाइंदा। ब्रह्म मेला पारब्रह्म विच संसारा, आपणा रंग आप रंगाइंदा। अगम्मी नादि बोल जैकारा, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। आपे खोल्ह बन्द किवाड़ा, भेव अभेद पर्दा लांहयदा। लक्ख चुरासी विचों पावे सारा, हरिजन आपणे आप उठाइंदा। अमृत देवे ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिराइंदा। मेल मिलाए एकँकारा, एका घर बहाइंदा। आवण जावण वारो वारा, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। करता पुरख करे साची कारा, कुदरत आपणे रंग रंगाइंदा। रहीम करीम बेऐब परवरदिगारा, मुकामे हक सोभा पाइंदा। अज़मतो कसमतो करे खेल न्यारा, रूप रंग ना कोए जणाइंदा। महिबान बीदो साचा यारा, जल्वा नूर डगमगाइंदा। करे खेल विच संसारा, जुग चौकड़ी नाच नचाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आवण वारो वारा, गेड़ा आपणा आप भवाइंदा। सेवा लाए गुर अवतारा, साचा हुक्म सुणाइंदा। वरन बरन दे सहारा, एका नाम समझाइंदा। तट तीर्थ वेख किनारा, सच सरोवर इक्क नुहाइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत लेखा जाणे डूँघी गारा, समुंद सागर फोल फुलाइंदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड नाम चमकाइंदा। तीर तुफ़ंग फड़े निरँकारा, सच निशाना इक्क लगाइंदा। जुग चौकड़ी करे पार किनारा, जो घड़या भन्न वखाइंदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी नौं नौं चार उतरे पारा, अन्तिम आपणे हट्ट विकाइंदा। चौदां लोकां बन्न्हे धारा, एका बन्धन आपे पाइंदा। चौदां तबकां वेख अखाड़ा, निरगुण नूर डगमगाइंदा। कोटन कोटि जुग बीतण आपणी वारा, कोटन कोटि गुर अवतार सेव कमाइंदा। कोटन कोटि भगत रहिण दुआरा, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। कोटन कोटि सन्त करन निमस्कारा, प्रभ चरन ध्यान लगाइंदा। गुरमुख चरन धूढ़ मंगण छारा, नेत्र नैण सर्ब तकाइंदा। मनमुख रोवण ज़ारो ज़ारा, बिन सतिगुर पार ना कोए कराइंदा। त्रैगुण माया अग्नी तपे तत्ती हाढ़ा, सांतक सति ना कोई वरताइंदा। पंच तत लग्गा अखाड़ा, जीव जंत नाच नचाइंदा। किसे नज़र ना आए धुर दरगाही साचा लाड़ा, नेत्र दरस कोए ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैग़म्बर औलीए मुल्ला शेख़ दस्तगीर अग्गे कढदे

गए हाढ़ा, बेनज़ीर नज़र ना आपणी पाइंदा। किसे मिले ना सच्चा यारा, उच्ची कूक कूक सर्ब सुणाइंदा। मुहम्मद रोवे अद्धविचकारा, अल्ला राणी आपणी ख़ाहिश नाल रलाइंदा। राह तक्कां तेरा परवरदिगारा, तेरा हक किनारा नज़र कोए ना आइंदा। नौं नौं चार वारो वार आए नानक अवतारा, नाम मन्त्र सति एका गाइंदा। कमलापति खेल करतारा, बण नारी सेव कमाइंदा। दर दुआर दर पाया सच्चा दरबारा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। दीपक जोत जगे अपारा, तेल बाती ना कोई रखाइंदा। हवनी हवन वसे बाहरा, सो नानक मिल्या मीत मुरारा, विछड़ कदे ना जाइंदा। दोए जोड़ करे निमस्कारा, तेरा अन्त ना पारा वारा, बेअन्त तेरी सिफ्त सलाह ना कोई जणाइंदा। चरन लग गुण गाया एकँकारा, मिल्या सतिनाम भण्डारा, करता पुरख बणया वणजारा, आपे दए सहारा, अजूनी रहत करे प्यारा, अकाल मूर्त रक्खे इक्क अधारा, आपणा गुण दए समझाईआ। मेरा नाउँ प्रगट होवे विच संसारा, नानक कूक कूक पुकारा, चारों कुण्ट वेख करे विचारा, धुर फ़रमाना हरि जणाईआ। भरया इक्क सच भण्डारा, दाता देवे देवणहारा, अतोट अतुट आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण एका एक छुपाईआ। एका गुण हरि छुपाया, नानक निरगुण अंदर रक्ख। आपणा नाम प्रगटाया, सरगुण निरगुण अंदर हो प्रतक्ख। आपणा मन्दिर आप वखाया, दरस कराया अलखना अलख। जोती जोत डगमगाया,
१३८४ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल पुरख समरथ। समरथ पुरख खेल अवल्ला, नानक निरगुण १३८४
करे जणाईआ । इक्क फड़ाया आपणा पल्ला, पल्लू आपणी गंढु बंधाईआ। धाम रखाया इक्क अटल्ला, निहचल दए वड्याईआ। नज़री आया रविआ जलां थलां, घट घट रिहा समाईआ। जोती शब्दी आपे रला, शब्दी धार मात प्रगटाईआ। सच संदेश एका घल्ला, चार वरन करे पढ़ाईआ। कोई कहे नानक झल्ला, झलक झल्ले दी झल्ली ना जाईआ। जिस नूं गौंदे एको अल्ला, सो अल्ला नानक अंदर मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए वड्याईआ। नानक गुण हरि हरि दीआ, देवणहारा दातारा। आपणे मिलण दा आपे कीआ हीआ, मिल्या मेल सचखण्ड सोहे दुआरा। नारी पाया साचा पीआ, घर वसया मीत मुरारा। नाम निधाना एका पीआ, नाम सति सति ख़ुमारा। गुरमुख विरला निर्मल करे जीआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका दए सच सहारा। सच सहारा दीआ गोपाल, आपणी दया कमाईआ। पुरख पुरखोतम हो कृपाल, किरपा निध आपणी किरपा दए समझाईआ। प्रभ मिलन दी साची बिध, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। नाम निधाना बोध अगाध, शब्दी शब्द दए प्रगटाईआ। भगत भगवन्त वेखे सज्जण साध, सन्त सतिगुर लए मिलाईआ। गुरमुखां लडाए आपणा लाड, आत्म परमात्म करे कुड़माईआ। गुरसिख साचे

लए राख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूर्ब लेखा दए मुकाईआ। नानक गाना सोहँ गाथ, शब्दी शब्द करे पढ़ाईआ। एका मन्दिर बह बह करया पाठ, दूजी वार ना रसन चलाईआ। इक्क सरोवर मारी ठाठ, निर्मल नीर नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर गया लुकाईआ। एका अक्खर हरि लुकाया, नानक रसना कहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाहया, जिस मेरी बणत बणाईआ। आदि अन्त होए सहाया, वसे हर घट थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पकड़नहारा आपे बांहीआ। पकड़े बांह आपणे जन, जन जणेंदी वेख वखाइंदा। सतिगुर पूरा कहे धन्न, फड़ बेड़ा पार कराइंदा। जगत विकारा देवे डन्न, ममता मोह मिटाइंदा। एका राग सुणाए कन्न, छत्ती राग भेव ना पाइंदा। करे प्रकाश बिन सूरज चन्न सतिगुर पूरा सो अख्वाइंदा। जुगा जुगन्तर बेड़ा देवे बन्न्ह, पुरख अकाल रूप धराइंदा। नानक निरगुण गया मन्न, सरगुण जीव सर्ब समझाइंदा। हँ ब्रह्म वसे तन, पारब्रह्म आपणे घर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव उठ जाग, हरि साचा सच जगाइंदा। नौं नौं चार चौकड़ी जुग लोकमात जगे चराग़, लक्ख चुरासी दीपक आप प्रगटाइंदा। सभ दी अन्तिम रक्खे हाद, आपणी वण्ड हरि वंडाइंदा। अन्त कूड़ नगारा वजाए नाद, सभ दी सफ़ा आप उठाइंदा। हुक्मे विचों जुग चौकड़ी आपे काड, हुक्मी हुक्म राह दसाइंदा। हुक्मी देवे साची दात, हरि आपणा नाउँ वरताइंदा। हुक्मे अंदर रक्खे याद, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल तमाश, जुग चौकड़ी आप कराइंदा। लेखा जाणे भोग बिलास, भस्मड़ आपणा रूप वटाइंदा। आदि जुगादि ना जाए विनास, अबिनाशी आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे अन्त, नौं नौं चार रहिण ना पाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, सुत दुलारा लए उठाईआ। आप बणाए आपणी बणत, पुरख अकाल सच्चा शहिनशाहीआ। माण दवाए लक्ख चुरासी जीव जंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल खिलाउणा, विष्न ब्रह्मा शिव हरि समझाईआ। गोबिन्द सुत इक्क उपजाउणा, पुरख अकाल नाउँ वटाईआ। साचा मार्ग जगत लगाउणा, वरन बरन ना कोई रखाईआ। ज़ात पात डेरा ढाउहणा, ऊँच नीच भेव चुकाईआ। एका डंका नाम वजाउणा, चार कुण्ट आख सुणाउणा, हुक्मी हुक्म आप जणाईआ। साची सेवा इक्क लगाउणा, सरगुण नाता मोह चुकाउणा, बंस सरबंस अन्त मुकाउणा, साक सज्जण सैण ना कोई अख्वाईआ। गुरमुखां साचा मेल मिलाउणा, आपणा बन्धन आपे पाउणा, गुरमुखां दे हट्ट विकाउणा, करता कीमत आपे

पाईआ। चेला गुरु नाउँ धराउणा, लोकमात नज़र किसे ना आउणा, लोक परलोक खेल खिलाउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड नाच नचाउणा, जेरज अंड आप उठाउणा, उत्भुज सेत्ज भेव चुकाईआ। नाम खण्डा इक्क उठाउणा, लुहार तरखाण ना किसे घड़ाउणा, म्यान विच ना किसे कराउणा, आपणे अन्तर लए छुपाईआ। सत्थर यारड़े दा इक्क हंढाउणा, नेत्र नैणां राह तकाउणा, मिले मेल साचे माहीआ। पुरख अबिनाशी चल के आउणा, सुत दुलारा गोद बहाउणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाउणा, दो जहानां राह वखाईआ। धुर फ़रमाना इक्क सुणाउणा, तेरी कीती घाल आपणे लेखे लाउणा, कीता कौल भुल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख देवणहारा वर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग करता बेपरवाहीआ। कलिजुग बणे अन्त मलाह, नर नर देवे इक्क सलाह, साचा मार्ग इक्क समझाईआ। सच सलाह देवे नित, मेरे साहिब वडी वड्याईआ। जिस सुहाई मेरी रुत्त, अन्त फुलवाड़ी दए महिकाईआ। मैं रक्खी एका ओट, दूजा इष्ट ना कोई जणाईआ। मेरे प्रभ दी निर्मल जोत, रूप रंग चक्कर चेहन नज़र ना आईआ। जिस दी आदि जुगादि वासना होवे ना खोट, सुगंधी नाम रिहा महिकाईआ। मैं उस दा ओत पोत, जिस नूं नानक गया ध्याईआ। मेरी शब्दी बण गई गोत, दूसर वण्ड ना कोई वण्डाईआ। मेरा बणया सचखण्ड किला कोट, अनन्दपुर झूठी ख़ुशी मनाईआ। जिस नूं गा गा थक्के होंट, सो मिल्या सच्चा माहीआ। अन्त आलणिओ डिगे चुक्के बोट, आपणी गोद बहाईआ। मैं अमृत प्याया गुरसिखां खोल्ह सोत, आपणा नूर विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह साचे खेल खिलाउणा, गुर गोबिन्द आप जणाइंदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा जिस कर्जा लाउहणा, पुरख अभुल भुल कदे ना जाइंदा। विष्नूं जिस ने तेरा पन्ध मुकाउणा, लहिणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म जिस आपणे विच समाउणा, सो आपणी नज़र ना कदे छुपाइंदा। शंकर तेरा त्रिशूल जिस हथ्थों सटाउणा, सो हुक्म भुल कदे ना जाइंदा। जिस मेरा बेड़ा बन्न्ह चलाउणा, सो मलाह बण खेवट खेटा लोकमात ना कदे शरमाइंदा। वरनां बरनां जिस डेरा ढाउहणा, चार वेद दा पन्ध मुकाइंदा। अठारां बरन जिस झोली पाउणा, शास्त्र सिमरत आपणी गोद सुहाइंदा। अञ्जील कुराना मुख शरमाउणा, खाणी बाणी आपणे रंग वखाइंदा। सो साहिब सतिगुर मेरा आउणा, जिस दी एका ओट तकाइंदा। एका वार लोकमात समझाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वड्याई साचा हरि, अबिनाशी अचुत भेव खुलाइंदा। सुत दुलारा बोल जैकारा, फ़तह डंका इक्क वजाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग घल्लदा रिहा जो गुर अवतारा, भगतां देंदा रिहा सहारा, निरगुण निरवैर सच्चा शहिनशाहीआ। कलिजुग वरोले अन्तिम वारा, साचे सन्तां करे प्यारा, लक्ख चुरासी

विचों मात प्रगटाईआ। जिस नूं मन्नदे रहे परवरदिगारा, मुकामे हक वसे सांझा यारा, सो जल्वा नूर धराईआ। जिस नूं गाया सचखण्ड वसे निरँकारा, करे खेल अगम्म अपारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। देवे संदेशा आपणी धारा, गोबिन्द लिखे बण लिखारा, लिख लिख लेखा गया समझाईआ। निहकलंक ल्ए अवतारा, लक्ख चुरासी पावे सारा, हरि शब्दी दए सहारा, विष्नूं ब्रह्मा शिव ल्ए जगाईआ। जूठ झूठ मेटे पसारा, माया ममता मारे मारा, कूड़ी क्रिया करे ख्वारा, ठग्ग चोर यार रहिण ना पाईआ। तट तीर्थ वेखे किनारा, मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले फोले गुरदुआरा, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। वेद कतेब शास्त्र सिमरत करे विचारा, अञ्जील कुराना पार किनारा, खाणी बाणी आपणी आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा दिता घर, हउँ संदेशा रिहा जणाईआ। गोबिन्द सुणाया सच संदेशा, हरि वड बली बलवाना। आदि जुगादी नर नरेशा, जुगा जुगन्तर खेल महाना। आपणा भाणा आपे वेखा, हरि भाणे सद समाणा। जुग जुग मेटदा आया रेखा, देवणहारा धुर फ़रमाना। कलिजुग अन्त वटाए वेसा, निहकलंक गुण निधाना। मुछ दाढ़ी ना कोई केसा, ना कोई मूंड मुंडाना। सम्बल वसे आपणे देसा, गोबिन्द मेला विच जहाना। गोबिन्द अंदर करे प्रवेशा, पारब्रह्म श्री भगवाना। बिन किरपा नेत्र कोई ना पेखे, भुल्ले भरम जहाना। भरम भुलाए औलीए पीर शेख़े, सार

१३८७ ना पाए इलम उल्माना। पंडत पांधा कोई ना जाणे रेखे, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा करे खेल महाना। कोहतूर ना दिसदा १३८७

नूरी वेसे, निरगुण नूर निगहबाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल मर्द मरदाना। मर्द मरदाना होए भगवान, गोबिन्द गया समझाईआ। नानक वखाया इक्क निशान, जो वेख्या सो रिहा सुणाईआ। सचखण्ड वसे आप भगवान, सत्त रंग निशाना आप झुलाईआ। सीस ताज रक्खे नौजवान, पंचम मुख मुख वड्याईआ। पहला मुख आपणा रक्खे नाउँ ज्ञान, चार मुख चार वेद चार वरन चार जुग चार कुण्ट चार यारी दए समझाईआ। जिस दी मन्नणी पए आण, लेखा कोई रहिण ना पाईआ। बण के आए बेपहचान, अछल अछल मात कराईआ। ज्ञानी ध्यानी विदवानी भेत ना पाण, जगत विद्या होए हल्काईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सतिगुर पूरा विके ना किसे दुकान, कीमत सके ना कोई चुकाईआ। गुरु गोबिन्द सिँघ दिता इक्क फ़रमान, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जो मैनूं मिले आण, मैं अग्गे दयाँ मिलाईआ। ओह मेरा पिता बलवान, जिस दी आदि जुगादि सच्ची शहिनशाहीआ। जिस नूं ईसा मूसा पीर पैग़म्बर करदे रहे सलाम, सलामा अलैकम एका वार बुलाईआ। देंदा रिहा आपणा पैग़ाम, पीर पैग़म्बर करदा रिहा पढ़ाईआ। मैं पकड़्या उस दा दाम, दामन छुट्ट कदे ना जाईआ। जिस नूं कहिन्दे रमिआ राम, सो मेरे अंदर डेरा लाईआ। जिस ने काहन कृष्न दी कीती अन्त कल्याण,

त्रिलोकी बाहर कढ्ढाईआ। जिस नूं तेई अवतार ना सके पछाण, सो मेरा सच्चा माहीआ। मैं गोदी बैठा आण, ना सके कोई बाहर कढ्ढाईआ। अन्तिम चल के वेखे मेरा मकान, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग मैं हूंझ हूंझ साफ़ कराईआ। मेरी दीद मेरी ईद मेरा चन्द मेरा भगवान चढ़े आण, दूसर चन्द नज़र कोई ना आईआ। आपणा वखाए सच निशान, सचखण्ड दुआर जो रिहा झुलाईआ। मैं ख़ुशी ख़ुशी करां परवान, सीस जगदीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह अन्तिम आउणा, अन्त किसे ना पाया। विष्न ब्रह्मे शिव तेरा पन्ध मुकाउणा, लेखा मूल दए चुकाया। साचा मार्ग फेर लगाउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड दए उलटाया। चार जुग दे गुर अवतारां दर बहाउणा, पिछला हिसाब लए बकाया। उठो वेखो दरस नेत्र पाओ हरि जू दिस किसे ना आउणा, नेत्र नैण सर्ब शरमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त आपणा खेल आप कराया। अन्त खेल हरि जू करना, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जाता जामा धरना, धरत धवल दए सुहाईआ। सरगुण अंदर निरगुण वड़ना, निरगुण सरगुण अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। निरगुण होए आपणे पौड़े चढ़ना, करया खेल बेपरवाहीआ। पौड़े चढ़के घाड़न घड़ना, गोबिन्द बणत बणाईआ। गोबिन्द चुक्के मरना डरना, जन्म मरन विच ना आईआ। इक्क रखाए आपणी सरना, सरनगत दए समझाईआ। साचे
१३८८ घोड़े सुत दुलारे चढ़ना, साचा घोड़ा आप वखाईआ। पुरख अबिनाशी तेरीआं वागां फड़ना, सेवक हो हो सेव कमाईआ। १३८८
निरभउ होए कदे ना डरना, भय अवर ना कोई जणाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां अंदर वड़ना, आपणा कुण्डा आपे लाहीआ। मेरा अक्खर एको पढ़ना, दूजी होर ना कोई पढ़ाईआ। तेरी सरनगत तेरा ब्रह्म तरना, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चौदां लोक त्रैभवन तेरे अग्गे कोई ना अड़ना, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दिता इक्को वर, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मिल्या वर हरि गोबिन्द, एका हुक्म सुणाया। अन्तिम मेटे तेरी चिन्द, पुरख अबिनाशी दए मिटाया। करया खेल गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, अमृत तेरे मुख चुआया। तेरी उपजाए गुरसिख बिन्द, आपणी गोद उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखाया। साचा मार्ग धुर फ़रमान, निरगुण आप सुणाईआ। शाहो भूप हरि निरँकार, निरगुण आपणा खेल वखाईआ। दर दर सद्द गुर अवतार, पिछला लेखा रिहा चुकाईआ। भगत भगवन्त दस्से बोल जैकार, घर घर करे पढ़ाईआ। सन्तन वखाए मीत मुरार, कवण सज्जण मात संग निभाईआ। कलिजुग आई अन्तिम वार, रैण अन्धेरा इक्को छाईआ। वरन बरन होण ख्वार, साची सरन ना कोई तकाईआ। तीर्थ तट हाहाकार, विभचार पई लड़ाईआ।

मन्दिर मस्जिद गुरदुआर, वेसवा घर रहे बणाईआ। एका बैठा गुर अवतार, जो देवणहार सज़ाईआ। लहिणा देवे अन्तिम वार, पंडत पांधे मुला शेख़ मुसायक पीर ग्रन्थी पन्थी पकड़े थांउँ थाँईआ। अन्तर नेत्र रोवण वहावण नीर, राए धर्म दए सज़ाईआ। ना कोई सहाई पीर फ़कीर, दस्तगीर ना कोई बचाईआ। लक्ख चुरासी वज्जा जंजीर, ना कोई सके तोड़ तुड़ाईआ। गुरसिख विरला चोटी चढ़े अख़ीर, जिस गोबिन्द लए मिलाईआ। तीर निराला मारे बिरहों जाए चीर, अमृत सीर इक्क चुआईआ। कट्टणहारा भीड़, दुःख दर्द लए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल खिलाउणा, कलिजुग अन्तिम वार। चार वरनां प्रभ आप प्रगटाउणा, एका दर सोहे दुआर। एका अमृत नाम दृढ़ाउणा, आत्म परमात्म कर प्यार। एका मन्दिर हरि सुहाउणा, घर घर विच कर उज्यार। एका राग आप अलाउणा, कोई तन्द ना कोई सतार। एका दीपक आप जगाउणा, नूरो नूर कर पसार। हस्त कीट एका रंग रंगाउणा, रंग चाढ़े अपर अपार। अनडिठ प्रभ खेल खिलाउणा, वेद कतेब ना पायण सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, एका जाणे धुर दरबार, साचा लेखा धुर दरबारा। धुरदरगाही आप जणाइंदा। गोबिन्द मेला मीत मुरारा, चेला गुर सोभा पाइंदा। अन्त विचोला बणे विच संसारा, चार जुग दा ओहला आप चुकाइंदा।
१३८६ गुर अवतार करन विचारा, विचार विच कदे ना आइंदा। जिस ने दित्ता मात सहारा, सो अन्तिम दर बहाइंदा। सभ नूं पुछे वारो वारा, आपणी किरत सर्ब वखाइंदा। कोई कहे आया राम अवतारा, कवण कृष्न नाच नचाइंदा। कवण कछ मछ खेल करे अपारा, कोई धरनी धवल डेरा लाइंदा। कवण बणे वड भिखारा, कवण गा गा गीत सुणाइंदा। कवण कहे मैं साचा दुलारा, कवण मेरी जात बणाइंदा। कवण कहे चौदां तबक मेरा हुलारा, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। नानक कहे मैं ग़रीब बेचारा, एका ओट अकाल रखाइंदा। गोबिन्द बणया सुत दुलारा, बह गोदी ख़ुशी मनाइंदा। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। कलिजुग आए अन्तिम वारा, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, सभ दा लेखा आप मुकाइंदा। अग्गे जाणे आपणी कारा, ना कोई जाणे हरि विहारा, बेअन्त बेअन्त कह कह पल्लू सर्ब छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा वेस आप वटाइंदा। गोबिन्द गुर नैण उठा, प्रभ अगे सीस झुकाईआ। कवण रूप बणया मलाह, लोकमात वेस वटाईआ। एका देण सच सलाह, लिखण पढ़न विच ना आईआ। तेरा ढोला कोई ना सके गा, तेरा ओहला सके ना कोई चुकाईआ। तूं मौला सभ में रिहा समा, बिस्मिल तेरी वड्याईआ। इललिल्ला पकड़े तेरी बांह, अल्ला हू हू कूक कूक सुणाईआ। तूं पाकी पाक परवरदिगार पीर पैग़म्बरां बख्शणहार

रूह, असलीअत आपणी आप कमाईआ। बिन रसना बिन जिहवा गावां तूं ही तूं, एक तूंही एक तूंही एक तूंही नाम ध्याईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बर कोटन कोटि साध सन्त तेरी आपणे अंदर वड़ वड़ कढ्ढदे गए सू, तेरा अन्त कोई ना पाईआ। जिध्धर वेखण नज़री आवें तूं, तेरे अगे सीस झुकाईआ। मैं ना जाणा तेरा वड्डा खाता खूह, जिस विच कोटन कोटि गुर अवतार रिहा छुपाईआ। तेरी नानक चढ़के वेखी जूह, जिथे बैठा आसण लाईआ। मुड़ के लोकमात ना वखाया मूंह, तेरी बैठा गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, गोबिन्द अग्गे झोली डाहीआ। गोबिन्द झोली दिती डाह, पुरख अकाल दया कमाइंदा। निरगुण हो के बणां मलाह, तेरा बेड़ा मात चलाइंदा। जे पुच्छे देवां सलाह, लेखा लेख ना कोई लिखाइंदा। आपणे चरनां देवां तैनूं पनाह, दूजे दर ना कोई बहाइंदा। लोकमात लवां प्रगटा, मात गुजरी सीर ना कोई प्यांअदा। आपणी जोत जोत नाल लवां मिला, शब्दी तेरा रंग वटाइंदा। तूं वसीं हर घट थाँ, तेरे मन्दिर सोभा पाइंदा। मैं करां सच न्याँ, देणा कदे मोहे ना भाइंदा। अन्त पकड़ां तेरी बांह, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। तेरे घर बह के ना कुछ पीआं ना कुछ खां, ना कोई ओडन तन हंढाइंदा। ना जपां किसे दा नाँ, ना ओट कोई रखाइंदा। ना किसे नूं कहिणा मां, ना पिता कोई बणाइंदा। जिध्धर वेखें नज़री जावां आ, तेरी नज़र नज़र

१३६० विच मिलाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त अक्खीं घट्टां देवां पा, मेरा भेव कोई ना पाइंदा। किसे दे मूंह विच १३६०

देवां सूर किसे दे मूंह विच देवां गां, मानस जन्म सर्ब रुढ़ाइंदा। इक्को इक्क आपणा सच जपावां नाँ, जिस जपया तिस पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणा वेला अन्त समझाइंदा। वेला अन्तिम जाणा आ, आपणा पन्ध मुकाईआ। गोबिन्द चढ़े इक्को चाअ, चाअ करे सच्चा शहिनशाहीआ। लभ्भण ग्याँ लभ्भे ना किसे राह, लभ्भ लभ्भ थक्की सर्ब लोकाईआ। मन्दिर मस्जिद कूक कूक टल्ल रहे खड़का, आत्म नाद ना कोई वजाईआ। बत्ती दन्द पढ़ पढ़ रहे गा, आत्म अन्तर हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम सभ दा लहिणा दए चुकाईआ। सभ दा लहिणा मुकाए करता पुरख, करनहार करतारा। आदि अन्त जुगा जुगन्त ना कोई सोग न कोई हरख, करे खेल अंगम अपारा। निरगुण सरगुण करे परख, अलख अगोचर अगम्म अपारा। गुरमुख विरले उप्पर करे तरस, बख्शे दरस दीदारा। जगत तृष्ना मेटे हरस, ममता मोह पार किनारा। अमृत मेघ देवे बरस, तन करे ठंडा ठारा। जून अजूनी जाए ना भटक, जिस मिल्या गुर करतारा। अद्धविचकार ना जाए अटक, सतिगुर करे पार किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे लिख्त पढ़त,

आपे हुक्मी हुक्म करे वरतारा। हुक्मी हुक्म सच वरतार, अन्तिम आप कराईआ। गुर अवतार करन निमस्कार, भगत भगवान सीस झुकाईआ। सन्तन मंगण एका दान, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। गुरमुख चरन कँवल करन ध्यान, नेत्र नैण नैण सरनाईआ। गुरमुख चरन धूढ़ करन परवान, मस्तक टिक्का एका लाईआ। गोबिन्द सूरा मिल्या आण, जिस हरि जू ल्या मिलाईआ। हरि जू विक्या इक्क दुकान, गोबिन्द हट्ट चलाईआ। गोबिन्द हट्ट जगत महान, दिस किसे ना आईआ। गुरमुख विरला लाहा लए खट्ट, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। डूंघे खाते पाए हथ्थ, नाम ख़ज़ाना लुट्टे चाँईं चाँईंआ। अंदर वड़ के गाए प्रभ आपणे दा जस, रसना जेहवा ना किसे सुणाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी पूरी करे आस, निरासा नज़र कोए ना आईआ। सदा सुहेला इक्क अकेला वसे पास, घर मन्दिर सच सुहाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए जणाईआ। एका गुण हरि जणाया, कलिजुग अन्त अन्त समझाईआ। चार वरन कोई रहिण ना पाया, जात पात ना कोई वड्याईआ। मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला ना कोई प्यार, गुरदुआर ना कोई सहाईआ। अन्तिम लहिणा देणा चुकणा तट किनार, अठसठ तीर्थ नहावन कोई ना जाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवण ज़ारो ज़ार, भोला नाथ ना कोई सहाईआ। जिस आदि दिती धार, सो अन्तिम लए मिटाईआ। सचखण्ड खेल करतार, आपणा आप समझाईआ। गुर पीर करो विचार, लोकमात ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाईआ। गुर अवतार नैण शरमा, प्रभ चरन ध्यान लगाया। तेरा हुक्म आए सुणा, सच संदेसा मात अलाया। तेरा मार्ग आए वखा, मार्ग एका एक जणाया। तूं सभ नूं दएँ भुला, तेरे अगे ना कोई चतुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण निरगुण लए मिलाया। निरगुण बोल बोले जैकारा नानक नानक नानक एका एक करे वड्याईआ। एका नानक नानक इक्क दादक, इक्क नानक हरि की गोद रिहा सुहाईआ। तिन्ने नानक प्रभ रक्खी रक्खी इक्को आदत, आदत विगड़ कदे ना जाईआ। जिस सच्ची दस्सी इक्क अबादत, हिन्दू मुस्लिम कर पढ़ाईआ। सो नानक सदा सलामत, निरँकार रिहा समाईआ। ना लग्गे कोई अलामत, अलैहिदा रूप ना कोई वटाईआ। गुरमुखां दी इक्को वार दे के गया ज़मानत, दूजी वार ज़िमनी होर ना कोई लिखाईआ। जिस मिल्या सतिगुर नानक, सो नानक आपणे सतिगुर लए मिलाईआ। पारब्रह्म बेअन्त स्वामी करे खेल अन्त अचानक, निहकलंक नाउँ रखाईआ। जिस दी करे ना कोई पछानत, पेशवा करे ना कोई पढ़ाईआ। चार वरन करके गया मुमानत, ज़ात पात करे ना कोई पढ़ाईआ। इक्क नाम सदा अमानत, घर घर गया टिकाईआ। पुरख अबिनाशी होए जानत, जानणहार भुल्ल

ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा जीव जंत गया समझाईआ। जीव जंत समझाया हरि का खेल, एका गुण विचार। पुरख अबिनाशी वसे आपणे देस, निरगुण जामा धार। ना मुच्छ दाढ़ी रक्खे केस, मूंड मुंडाए ना सच्ची सरकार। लक्ख चुरासी लए वेख, भुल्ले कदे ना भुल्लणहार। तिस अगे चले ना कोई पेश, सभ होए गुनाहगार। मेरा साहिब रहे हमेश, जिस दी सच्ची कार। मैं सेवा करां हत्थ फड़ खुंडी मोढ्ढे धर धर खेस, आप आपा आपे वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, करे सच विहार। सच विहार हरि कराउणा, गुर सतिगुर आप जणाइंदा। निहकलंक जामा पाउणा, डंका एका शब्द वजाइंदा। पिछला लहिणा सभ दा आपणे खाते पाउणा, आपणा खाता फेर बणाइंदा। गुरमुख साचे आप प्रगटाउणा, लोकमात माण दवाइंदा। सरगुण होए निरगुण आपणा खेल खिलाउणा, निरगुण होए आपणा ढोला आप जणाइंदा। सरगुण फेर रंग रंगाउणा, निरगुण धार चलाइंदा। सिँघ पाल पाल वडिआउणा, ब्रह्मे ब्रह्म जोत जगाइंदा। गुरमुख साचा साचे धाम रखाउणा, साचा मार्ग आपे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आपणा राह आप जणाइंदा। शंकर अन्तिम करे पार, सो पुरख निरँजण पार कराईआ। गुरमुख साचे लए उभार, लोकमात जन्म दवाईआ। फड़ फड़ बाहों लए उठाल, सेवक बण बण सेव कमाईआ।

१३६२ साचा मार्ग दए वखाल, अनडिठड़ा राह चलाईआ। चले चलाए अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। साचे सुत १३६२

साचे तख्त दए बहाल, जगदीस सीस छत्र झुलाईआ। मेल मिलावा दीन दयाल, दयानिध सदा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला मार्ग आप वखाईआ। अगला मार्ग हरि जू लाउणा, लहिणा सभ दा आप मुकाइंदा। इन्द इन्द्रारसन आप तजाउणा, क्रोड़ तेतीसा पन्ध मुकाइंदा। छोटे बाले माण दवाउणा, मनजीता जितया कदे ना जाइंदा। पुरख अबिनाशी एका ढोला गाउणा, एका हुक्म सुणाइंदा। दर दुआर आप प्रगटाउणा, भगत भगवन्त खेल खिलाइंदा। धू आपणे लेखे लाउणा, लेखा पिछला झोली पाइंदा। गुरमुख साचे बणत बणाउणा, सिँघ सवरन माण वड्यांअदा। साचा मार्ग राह वखाउणा, लोकमात वण्ड वंडाइंदा। सच दुआरा इक्क सुहाउणा, राज जोग इक्क कमाइंदा। बल बावन वेख वखाउणा, हुक्मी हुक्म आप फिराइंदा। चौथे जुग कर्ज़ा लाउहणा, कीता कौल पूर कराइंदा। सम्बल देस डेरा लाउणा, सांतक सति कराइंदा। आपणा मेल आप मिलाउणा, मेल मिलावा आपणे हत्थ रखाइंदा। त्रैगुण माया झोली पाउणा, एका इक्की वण्ड वंडाइंदा। जेठ अग्नी ठंडी ठार कराउणा, वाह वाह साची रुत सुहाइंदा। बण दानी साचा दान कराउणा, सम्मत सोलां राह चलाइंदा। सो पकवान इक्क पकाउणा, पुरख अबिनाशी सेव कमाइंदा। इक्क इक्क फुलका इक्क इक्क सिख आप

वरताउणा, वरतावणहार आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। अन्तिम लेखा आपणे लेखे पाउणा, तन मन्दिर आप सुहाइंदा। हड्डीआं बालण आप बणाउणा, जोती अग्नी लम्बू लाइंदा। अन्तिम मेला मेल मिलाउणा, मिल्या मेल विछड़ ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा रंग आप रंगाइंदा। रंगण रंग चलूल, रंगणहारा इक्क अख्वाईआ। सतिजुग कौल ना गया भूल, कलिजुग अन्तिम पूर कराईआ। लहिणा चुक्कया लैणा मूल, देणा देणा झोली भराईआ। आपणा दर करया कबूल, महबूब वडी वड्याईआ। दर पँघूड़ा रिहा झूल, चरन सरन मिली सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दरस आप कराईआ। पाया दरस श्री भगवन्त, वज्जी सच वधाईआ। दोए जोड़ करे बेनंत, वाह वाह तेरी वडी वड्याईआ। मैं मंगां मंग बणके मंगत, अग्गे झोली डाहीआ। चौथा जुग दिसे भुक्ख नंगत, नाम वस्त ना कोए रखाईआ। इक्क नानक लाया अंग अंगद, अंगीकार कर गया समझाईआ। अमर दास मंगी साची मंगत, राम दास भुक्ख नंगत दए मिटाईआ। गुर अर्जन तोड़े हउमे हंगत, बाणी बाण निराला तीर चलाईआ। हरि गोबिन्द देवे जनत, हिन्दू मुस्लिम ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव

१३६३ रिहा समझाईआ। साचा भेव खोल्ह बोल, बोल बोल सुणाया। हरि राए हरि गया मौल, हरि हरि रूप वटाया। कृष्ना १३६३

हरि हरि करया खेल उप्पर धवल, बाली बाला रूप जणाया। तेग़ बहादर साचा हरि घट घट गया मौल, रूप रंग रंग रूप ना कोई वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा दर इक्क वड्याआ। तेरा दर वड्डा दरबारा, वड वड्डी तेरी वड्याईआ। तेरे घर वड्डा भण्डारा, अतोट अतुट वरताईआ। तेरा नाम वड्डा वणजारा, साचा वणज इक्क वखाईआ। तेरा हद पार किनारा, बेहद्द तेरी शहिनशाहीआ। तेरा गोबिन्द सुत दुलारा, तेरे घर वसे चाँईं चाईआ। तेरीआं संगतां करे प्यारा, तेरे गुरसिख नाल मिलाईआ। नानक लिख के गया लेख अपारा, तेरी महिमा मात जणाईआ। तूं भगतां दएँ सहारा, निर्धन सरधन धीर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं बैठा सीस झुकाईआ। कब राजा मैं कब भिखारी, कब ताज सीस टिकाइंदा। कद दरवेश कद दरबारी, कद हुक्मी हुक्म सुणाइंदा। कद वेला तेरे चरन करां निमस्कारी, आपणा दुःख सुणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उडीक रक्खी तेरी आउण दी वारी, तूं कलिजुग अन्तिम आईआ। मैं आपा तेरे उत्तों दिता वारी, बंस भेंट चढ़ाईआ। जे कोई है दर्द निभा ले यारी, बेदर्द तेरी बेदर्दी मेरी शहिनशाहीआ। आपणा नाम करद फेर मेरे सीस इक्क वारी, मेरी रग रग ख़ुशी मनाईआ। मेरा ख़ून बण परचून तेरी खिलत नींह गया उसारी, मख़लूक तेरी जणाईआ। पीर पैग़म्बर जिस दुखड़े नूं रोवण ज़ारो ज़ारी, गोबिन्द झल झल

१३६४

ख़ुशी मनाईआ। आ वेख मेरी फुलवाड़ी, मैं तेरे पिच्छे बगीचा रिहा लगाईआ। तेरी साउणी तेरी हाढ़ी, मैं करन आया दिहाढ़ी, जे हुक्म देवें तेरी ढेरी वढ वढ तेरे अगे ढेरी लाईआ। तूं फिरे जंगल जूह उजाड़ पहाडी, तेरी महिमा समुंद सागर डूँग्घी खाड़ी, मैं अवगुण भरी तेरी पनहारी, आदि जुगादि बिन तेरे रहां कँवारी, दूजा कन्त ना कोई मनाईआ। आ कर नैण मेरे संगारी, मैं घोली तैथों वारी, तेरे वास्ते सेज संवारी, गल पल्लू पा पा माहीआ। तूं कन्त मैं तेरी नारी, तूं जितया मैं हारी, मैं वेखां तेरी इक्क अटारी, मेरी पूरी आस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, एका वस्त झोली पाईआ। वाह वाह मंगी मंग अपार, मंगत आपणी झोली डाहया। देवणहार एक दातार, जुग जुग देंदा आया। जिस दा राह तक्कदे रहे जुग चार, नेत्र नैण ध्यान लगाया। जिस दी कबीर करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाया। जिस नूं मन्नदे सच्चा यार, सो परवरदिगार फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दर दए वखाया। आ दुआरा वेख लै मीत, मित्र मित्रां नाल मिलाईआ। आ वेख वेख साची रीत, जिस दा लेख ना कोई जणाईआ। आ वेख जिस दा गुरदुआरा देहुरा मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ ना कोई मसीत, बिन चार दुआरी डेरा लाईआ। जेहड़ा वसया हस्त कीट, आदि जुगादि जाणे साची प्रीत, लग्गी प्रीत तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण आप वखाईआ। साचा गुण श्री भगवाना, आपणा आप जणाइंदा। आदि जुगादि सदा मेहरवाना, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। आ बल बावन देवे दाना, रूप अनूप वटाइंदा। गुरदयाल सिँघ सिँघ बण साचा लाला, लाल आपणी गोद बहाइंदा। मेरा घर तेरी धर्मसाला, सच दुआरे सोभा पाइंदा। तेरा राह तक्के सिँघ पाला, एका नैण उठाइंदा। जगदीस पुछे हाला, मनजीत ख़ुशी मनाइंदा। सवरन करे सवाला, आपणा हाल जणाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निहकलंक नरायण नर कलिजुग अन्तिम करे की ख्याला, कवण आपणी बिध बणाइंदा। बिन भगतां ना मिले पुरख अकाला, भगत भगत भगतां संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वेख्या साचा घर, मेरी इच्छया पूर कराइंदा। साची इच्छया मेरी पूर, अन्तिम आस तकाईआ। जन भगतां बेड़ा भर पूर, लोकमात दया कमाईआ। बण पूत कपूत जे कीता कसूर, साडे कसूर मुआफ दए कराईआ। असीं आपणी भुल मन्नीए ज़रूर, दर तेरे सीस झुकाईआ। तूं सतिगुर करीं मन्ज़ूर, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। तेरा सच्चा इक्को नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरे सज्जण मेरे नाल मिलाईआ। मेरे सज्जण दे मिला, मेरे साहिब सज्जण सुल्ताना। गोबिन्द रल्लया नाल मलाह, देवे धुर फ़रमाना। सतिजुग मार्ग दए वखा, तेरा झुल्ले सच निशाना। नानक

निरगुण उठ के दए सलाह, मेरे छत्ती जुग कर परवाना। तूं सभ दा पिता मां, आदि जुगादी बीना दाना। तेरे लेखे अंदर सभ दा नाँ, अभुल भुल कदे ना जाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे भगतां मिले सच टिकाणा। सच टिकाणा जगत बणाउणा, पारब्रह्म दया कमाईआ। भगत संग भगत मिलाउणा, भगती भगत करे कुड़माईआ। जोग अभ्यास ना कोई कराउणा, पूजा पाठ ना कोई रखाईआ। तीर्थ तट ना किसे नहाउणा, कर किरपा दुरमति मैल धवाईआ। रातीं सुत्तयां आपणा दरस कराउणा, कोट जन्म दी भगती मुख शरमाईआ। जिस जन आपणे चरन बहाउणा, तिस ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकाईआ। जिस जन आपणा नाम जपाउणा, तिस राह विचकार ना कोए उठाईआ। जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाउणा, सो गुरमुख मरे ना जाईआ। सतिजुग साचा राह चलाउणा, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। चार वरन दा चन्द चढ़ाउणा, जगत अन्धेरा दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाँईंआ। चार वरन दा सच दुआरा, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। छत्ती जुग दा सति विहारा, सति सतिवादी आप कराईआ। मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआला करे पार किनारा, आपणा हुक्म वरताईआ। एका ब्रह्म पारब्रह्म करे उज्यारा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका नाम सच जैकारा, नौं खण्ड पृथ्मी दए सुणाईआ। एका हुक्म इक्क वरतारा, शहिनशाह इक्क अख्वाईआ। एका चले सच विहारा, साची सिख्या दए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छत्ती छत्ती धार बंधाईआ। छत्ती छत्ती हरि जू धार, राग छतीस मंग मंगाइंदा। मैं भगतां दे गुण गा गा गया हार, मेरा बल मेरा साथ ना अन्त निभाइंदा। मैनूं पढ़न वाले जीव विभचार, आत्म अन्तर भेव कोई ना पाइंदा। मेरा राग गाउण मेरी वार, मेरा पुरख अटल ना कोई मनाइंदा। गुरदुआरे मन्दिर बैठे तक्कण नार मुटयार, नेत्र मूंध हरि का दरस कोई ना पाइंदा। आपणा आप गए हार, मैं हउँ शरमिंदा मुख ना किसे वखाइंदा। गुर नानक करया इक्क प्यार, हउँ दिता सच अधार, जिस दे आसरे मैं तेरा राह तकाइंदा। धन्न भाग तूं आया विच संसार, मेरे सिर तों लथ्था भार, तेरे अगे करां निमस्कार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाइंदा। तैनूं भावे तेरी कार, तेरा जुग तेरा विहार, तेरा अन्त कोई ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा चुक्का अन्तिम डर, निरभउ तेरी ओट तकाइंदा। दर चुक्के तेरा छतीसा, छत्ती छत्ती बन्धन पाईआ। चार वरन इक्क हदीसा, हिन्दू मुस्लिम सिख करे पढ़ाईआ। सभ दा लहिणा चुक्के बीसा, पीसण पीस सेव ना कोई कमाईआ। किसे छत्र ना रहे सीसा, राज राजना ख़ाक मिलाईआ। त्रैगुण माया ख़ाली ख़ीसा, चार कुण्ट फिरे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा सच दुआरा, भगतन वण्ड वंडाईआ।

छत्ती जुग भगतन वण्ड, हरि जू करदा आया। आत्म होए ना कदे रंड, जिस हरि कन्त कन्तूहल मनाया। निरगुण सुणाए सुहागी छन्द, सरगुण ढोला गाया। कलिजुग अन्तिम खेल करे भगवन्त, भगत साचे लए वड्याआ। लोकमात बणाए बणत, चारों कुण्ट लकीर खिचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा लए सुहाया। भगत दुआरा छत्ती फ़ुट, छत्ती छत्ती फ़ुट चार दीवार खिचाईआ। साचा गाना बन्ने गुट्ट, आपणा सगन मनाईआ। जिउँ पुरख अकाल गोबिन्द बणाया सुत, गोबिन्द गुरसिख सुत लए बणाईआ। भगत सुहाउणी साची रुत, पत्त डाली मात महिकाईआ। अन्तिम सोमा पए फुट, अमृत धार वहाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी धार विचों पए फुट, विष्न ब्रह्मा शिव तेरा कर्जा देवे लाहीआ। जगत जीव जहान भाग गए निखुट, भागां मंद रहे कुरलाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली बुत, जगत सियासत करी कुड़माईआ। अन्तिम घर घर पावे फुट्ट, दहि दिशा दए दुहाईआ। शाह सुल्ताना कढ्ढे कुट्ट, जगत राज ना कोई वड्याईआ। प्रभ मारया ना सके कोई उठ, मूंह दे भार सर्ब सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरा दए बणाईआ। भगत दुआरा बणे मात, चार जुग वड्यांअदा। सतिजुग साची दिती दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। आपे वेखे मार झात, नेत्र नैण नैण मटकाइंदा। बैठा रहे इक्क इकांत, अकल कल खेल कराइंदा। जन भगतां बख्शे आपे
१३६६ दात, दुःख सुख नाल मिलाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी बणे इक्क प्रांत, दूजी हद ना कोई बणाइंदा। लक्ख चुरासी बन्ने नात, १३६६
नाता बिधाता इक्क जुड़ाइंदा। सोहँ शब्द सुणाए गाथ, मन्त्र अन्तर आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा सोभा पाइंदा। छत्ती छत्ती फ़ुट चार दीवार, नौं नौं वण्ड वंडाईआ। त्रै त्रै दिशा बन्ने धार, चौथे रिहा समाईआ। पंज चार खेल अपार, सत चार सोभावन्त सोभा जणाईआ। डेड़ डेड़ वेख अखाड़, इक्क अद्धा नाम बध्धा, जन भगतां देवे सद्दा, हुक्मी हुक्म आप सुणाईआ। जगत दुआरे आए भज्जा, ना कोई रखे लोक लज्जा, लज्जया विच कदे ना आईआ। जुगा जुगन्तर जिस ने पर्दा कज्जा, अन्तिम संगत बह बह सजा, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। ना घड़या ना भज्जा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वण्ड आप वण्डाईआ। भगतन वण्ड सच दुआर, हरि दुआरी आप कराइंदा। पंज सत एका धार, चार चार नाल मिलाइंदा। छत्ती छत्ती जगत विहार, छत्ती पुरख अकाल वंडाइंदा। सोलां सोलां महल्ल उसार, महल्ल आपणा नाउँ वड्यांअदा। साडे तिन्न तिन्न कर उज्यार, अगला मुख आप सुहाइंदा। दुःख मेटे हरि करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप रंगाइंदा। तिन्न हथ्थ अद्धी वण्ड, साडे तिन्न हथ्थ मेल मिलाया। छत्ती जुग दे कोट ब्रह्मण्ड, आपणे चरनां हेठ दबाया। चार जुग दा

खिचिआ परमानंद, फिर आपणा अनन्द जणाया। चार खाणी दर कीता बन्द, आपणा छन्द फेर समझाया। आप गाया बिन बत्ती दन्द, बिन दन्दां गुरसिखां अंदर दए समाया। जिस नूं कहिन्दे साहिब बख्शंद, अनमुल्ल दात दए झोली पाया। गुरमुख नंगी ना होवे कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। नाता तोड़ जेरज अंड, लक्ख चुरासी पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप बंधाया। धार धार, नौं नौं चार चार वड्याईआ। त्रै त्रै दए सहार, खेले खेल बेपरवाहीआ। सोलां सोलां कर प्यार, साचा सोहला आप जणाईआ। हौला करे गुरसिखां भार, सिर आपणे भार उठाईआ। सिँघ जगदीश करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मनजीता वाजां रिहा मार, मन जित्तो मेरे भाईआ। सवरन सिँघ रिहा श्रृंगार, नेत्र राह तकाईआ। गुरदयाल लाल करे प्यार, गुरसिखां रिहा समझाईआ। पुरख अबिनाशी करे सच प्यार, साचा मार्ग ल्या लाईआ। मैं ढाई कर्म धरती दिती आपणी वार, अन्तिम ढाई मुट्ठी राख मेरी लेखे पाईआ। जगदीश मनजीत नाल रल के करे विहार, नीहां थल्ले दए दबाईआ। उत्ते उसरे इक्क दुआर, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। जो इक्क वेर आ के करे निमस्कार, मात गर्भ फेर ना आईआ। जो पंज वार बोले जैकार, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै, तिस जम ना सके मार, लाड़ी मौत ना करे कुड़माईआ। जिस दर्शन दए दिखाल, नैणां नाल मिलाईआ। सो शाह बणे कंगाल, आपणा ख़ज़ाना आपणी हथ्थीं रिहा लुटाईआ। वेखो लोकाई होई बेहाल, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। सभ दे सिर ते कूके काल, मात नगारा रिहा वजाईआ। गोबिन्द सुणे मुरीदां हाल, हाल मरीदां आप सुणाईआ। आओ सत्थर वेखो यार, बैठा आपणी सेज विछाईआ। जिस दी करदे रहे भाल, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। जिस अमृत दिता प्याल, सो चल के आया माहीआ। जिस दी लग्गी निभे नाल, तोड़ ना सके कोई राईआ। किसे दे अग्गे जा के क्यों करदा कोई सवाल, देवणहार इक्क अख्वाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, सभ दी सफा रिहा उठाईआ। दिन दिहाढ़े लुट्टी जाए माल, पहरेदार ना कोई बहाईआ। फिर मेरी करनी सभ ने भाल, मैं बहिणा मुख छुपाईआ। जिउँ गुर गुरसिख लै लै नाल, तिस गोदी लवां उठाईआ। एका दस्सां राह सुखाल, बहत्तर नाड़ी मेटे शाहीआ। सच महल्ल उत्ते बैठे आप करतार, दूर दुराडे गुरसिख वेखे चाँईं चाँईंआ। छत्ती जुग दे विछड़िआं नूं गल विच पावे हार, गुर नानक नाल मिलाईआ। गोबिन्द अगे हो हो करे प्यार, गलवकड़ी साची पाईआ। गुरसिखां दी धूढ़ी आपणे मस्तक लाए छार, विष्न ब्रह्मा शिव ख़ाक मिलाईआ। सतिजुग करे सच विहार, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां राह तकाईआ। भगतां आया राह तक्कण, तकदीर भगतां हथ्थ फड़ाईआ। भगतां आया अग्गों डक्कण, तदबीर भगतां हथ्थ

जणाईआ। भगतां हथ्थों आया आपणा नाम चक्खण, नाम भगतां रिहा जपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत लए तराईआ। भगत तराए हरि भगवान, भय भउ ना कोई जणाया। लेखा जाणे दो जहान, सति सतिवादी वेस धराया। साता दूआ कर परवान, अंक अंक नाल मिलाया। दूआ साता रिहा बेपहिचान, रूप रंग ना कोई वखाया। साता दूआ खेल करे महान, साची वण्डन वण्ड वंडाया। बहत्तर जन करे परवान, भगती भगत भगत समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। भगतां अंदर भगती धार, हरि साचा सच जणाइंदा। आत्मा सिँघ सिँघ कर प्यार, सिँघ फौजा नाल मिलाइंदा। दर्शन सिँघ देवे दरस दीदार, नेत्र नैण खुल्हाइंदा। सिँघ ठाकर मेले ठाकर दुआर, ठोकर नाम लगाइंदा। अमरजीत सिँघ अमरापद धार, अमर अमर कराइंदा। सरजीत सिँघ हरि सिरजण हार, सिँघ आपणी खेल खिलाइंदा। बख्शीश हरि बख्शणहार, बख्शश आपणी झोली पाइंदा। दलीप सिँघ देवे तार, सिँघ पाल नाल रलाइंदा। फौजा सिँघ भर भण्डार, सिँघ सोहण समझाइंदा। सिँघ कुंदन तारे आपणी वार, सुखदेव सुख समझाइंदा। मस्सा सिँघ मस्त मस्त मुनार, एका रंग चढ़ाइंदा। सुरजण सिँघ करे शिंगार, नरायण सिँघ नैण चमकाइंदा। अवतार सिँघ कर प्यार, सविंदर सिँघ संग निभाइंदा। काशी राम करिश्मा अमृत धार, सिँघ बंता झोली पाइंदा। जसबीर देवे धीर, चरन घते इक्क वहीर, सिँघ सन्ता संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। सिँघ केहर करे प्यार, मल सिँघ नाल मिलाईआ। गुरदास सिँघ दए अधार, जरनैल सिँघ सोभा पाईआ। सिँघ सरदारा देवे तार, गुरबचन सिँघ करे कुड़माईआ। राम सिँघ खोल्ह किवाड़, नेत्र नैण नैण समझाईआ। सिँघ सौदागर मन्दिर आपणे वाड़, काया गागर बूझ बुझाईआ। बूड़ सिँघ जोत निराकार, नूर नुराना आप दरसाईआ। अमर सिँघ अमरापद चाड़्ह, गुरदयाल गुर गुर रूप समाईआ। सिँघ नाज़र दए अधार, निरँजण सिँघ एका नैण खुल्हाईआ। सिँघ सरदारा करे विचार, गज्जण सिँघ सोभा पाईआ। हरबंस सिँघ उतरया पार, भाग सिँघ भाग वड्याईआ। सिँघ जागीर करे शिंगार, तन बस्त्र इक्क छुहाईआ। हरचन्द सिँघ होवे पार, ख़ुशी बन्द बन्द आपणा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। प्रीतम सिँघ प्रेम प्यार, सिँघ प्रगट नाल मिलाईआ। रतन सिँघ अमोलक लाल, सरूप अनूप दरसाईआ। सिँघ सरूप करे प्रितपाल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख सच्चा वेखे लाल, लाल सिँघ दए वड्याईआ। नसीब सिँघ करे बहाल, सिँघ रेशम नाल मिलाईआ। जसवन्त सिँघ ना खाए काल, गुरमीत सिँघ मिले वड्याईआ। गज्जन सिँघ ना होए कदे बेहाल,

१३६८

गुरमेज रंग वटाईआ। केसर सिँघ आपणा लाल, गुरदेव सिँघ ख़ुशी मनाईआ। तारू सिँघ होए दयाल, सिँघ वतन वज्जे वधाईआ। अरजण सिघ सुरत संभाल, सुरत शब्द करे कुड़माईआ। बलवन्त कौर देवे तार, धर्म सपत्नी सिँघ बिशन वड्याईआ। सुदर्शन देवे इक्क अधार, नारी रूप वटाईआ। भागन सोहे सच दुआर, नेत्र जागण ख़ुशी मनाईआ। रणजीत कौर मिल्या सच घर बार, शाह पातशाह होए सहाईआ। कुछ सिख रक्ख लए तीजे दिन फिर करे विहार, आपणा पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। बहत्तर भगत अकट्ठ, एका दर सुहाइंदा। चेला सिँघ नाम ल्या रट, तेज भान हरि गुण गाइंदा। गुरदित सिँघ लेखे लाई रत, सिँघ लछमण पार कराइंदा। देवा सिँघ खेड़ा ना होए भट्ठ, धर्म चन्द जोड़ जुड़ाइंदा। देवी सिँघ गेड़े लट्ठ, आपणा गेड़ा आप भवाइंदा। भगत सिँघ मार्ग दस्स, सिँघ जसवन्त राह चलाइंदा। सरिंदर सिँघ मेला हस्स हस्स, टोपन साचे घोड़ चढ़ाइंदा। बहत्तर तार ना करे बस, जो आया पार कराइंदा। चुहत्तरां पहलों पूरी करे आस, सत्तर आपणे अगे लाइंदा। सत्तर बहत्तर चुहत्तर इक्क इक्क नाल इकीआं करे बन्द ख़लास, इकीआं अगे इक्की इकी होर तराइंदा। कोई हो के ना जाए निरास, सभ दा लेखा आपणी झोली पाइंदा। सदा सहेला वसे पास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तर बहत्तर चुहत्तर तिन्नां अंक कर अकत्तर, तिन्नां विचोला बणे बहत्तर, सिफ्रा उडाए सत्तर, साता रहि जाए सभ दा मित्र, चौका चौथा जुग बणया चतर, साता सति सतिवादी मारे छित्र, सभ नूं मूंह दे भार सुटाइंदा। बहत्तर भगत जीव जंत देंदे रहि जाण पतर, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। अग्गों सभना पंज विकारा देवे लितड़, आपणा भार उठाईआ। गल लगावे भरयां चिक्कड़, दुरमति मैल धुआईआ। छत्ती जुग गुरसिखों तुहाड्डा करदा आया फ़िकर, फ़िकरा आपणा मात चलाईआ। जिस दे पिच्छे जिकरीए चिराया ज़िकर, सो तुहाड्डा ज़िकर कर आपणी ख़ुशी मनाईआ। जिस नूं कहिन्दे गए आदि जुगादि लेखा देंदा सो कलिजुग अन्तिम आया नित्तर, निरवैर पुरख बेपरवाहीआ। जिस नूं गोबिन्द बणाया मित्र, सो मित्र बण बण सेव कमाईआ। जो बण हँकारी बैठे विटर, अन्त सभ नूं ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। बहत्तर सिख बहत्तर नाड़ी, नाड़ नाड़ नाड़ समाइंदा। निरगुण फिरे पिच्छे अगाड़ी, सरगुण तेरी सेव कमाइंदा। रक्खे लाज चरन छुहाई दाढ़ी, लाजावन्त आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क समझाइंदा। साची सेवा बहत्तर जन, हरि साचा सच जणाइंदा। राज इन्दर प्रसादि जे जायण मन्न, अगला लेखा पूर कराइंदा। काया ठीकर देवे भन्न, जो घड़या भन्न वखाइंदा। पहली चेत्र जिस राज दरबारीआं अंदर लाउणी

सन्न, औदां जांदा दिस ना आइंदा। सुण सनेहुड़ा ला के कन्न, गुर गोबिन्द आप सुणाइंदा। भगत दुआरा बेड़ा देणा बन्न, बहत्तर बहत्तर साची सेव समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चुहत्तर देवे इक्को वर, सत्तर आपणा संग निभाइंदा। साचा संग निभाए सर्ब गुणवन्त, बेपरवाह वडी वड्याईआ। आदि जुगादि महिमा अगणत, गुण कहे ना कोई राईआ। मेल मिलाए भगत भगवन्त, भगवन दया कमाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, मध्ध आपणी धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां दर बहाईआ। साचे भगत आओ दर, दर दुआर खुल्हाया। जन्म जन्म दा चुक्के डर, डर आपणा रहे ना राया। मुड़ के जाणा आपणे घर, जो घर मात तजाया। जिस विछड़िआं जाईए मर, सो मेलणहारा फेरा पाया। जिस दा नाम बाणी रहे पढ़, सो दर दर आ आ दरस वखाया। जिस अगे अरदासे रहे कर, सो श्रद्धा पूर सर्ब सुखदाया। जिस दा भाणा रहे जर, सो भाणा रिहा वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, दर घर साचा आप सुहाया। सुहाए दर सोभावन्त, सिँघ गुरचरन मिले वड्याईआ। बिन इच्छया बणाए बणत, बणत बणाए सच्चा शहिनशाहीआ। सत्तरां मिले इक्को कन्त, नारी कन्त लए प्रनाईआ। रंग चाढ़े इक्क बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। लोकमात बणाए बणत, देवे माण वड्याईआ। उन्नी कत्तक दिवस सोभावन्त, हरि जू
१४०० हरिजन लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं १४००
भगवान, सत्तर देवे सति का दान, ब्रह्म मति इक्क निशान, तत्तव तत इक्क जणाईआ। बणत बणाए पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाया। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ चार कुण्ट थम्म, जगत सहारा दए जणाया। सोलां फुट्ट चढ़े चन्न, दस दस नाल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। नौं दुआरे जगत धार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। नौं दुआरे नौं खण्ड विचार, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। नौ दुआरे नौं निध मारे मार, गुरमुख नेड़ कदे ना आईआ। नौं दुआरे हरिजन करे पार, प्रभ मिले सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाईआ। नौं दुआरे नौं बारी, बारन बार बार कराइंदा। एका रंग रंगे पुरख नारी, नारी पुरख खेल खिलाइंदा। धर्म बन्न इक्क मारी, तेरा तेरां तेरा वण्ड वंडाइंदा। इंच सिंच हरी क्यारी, अद्धी आपणे विच समाइंदा। एका अद्धा डेउड़ा जा बलिहारी, चार कुण्ट बन्धन पाइंदा। दहि दिशा खेल खिलारी, एका वार वखाइंदा। साढे तिन्न पिच्छे विहारी, पिच्छा अग्गा आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ पिच्छे सिँघासण, हरि जू आपणी वण्ड वंडाइंदा। लेखा रहे पुरख अबिनाशन, दिस किसे ना आइंदा। जिस जन देवे धुर

भरवासन, दर साचा आप जणाइंदा। लहिणा तोड़ पृथ्मी अकाशन, गगन मंडल पार कराइंदा। पूर कराए हरि जू आसन, नौं दुआरे पन्ध मुकाइंदा। लुक लुक मारे सदा अवाज़न, लुकवीं आपणी खेल कराइंदा। आपे हाल जाणे बातन, ज़ाहरा आपणा रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौं नौ चार चार आपणे रंग रंगाइंदा। रंग रंगे सच महल्ला, सहिज सहिज सुखदाया। वसणहारा साढे तिन्न हथ्थ जगत उच्च अटल्ला, अटल आपणा नाउँ धराया। जीव भुलाए कर कर वल छला, अछल अछल भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग मार्ग राह वखाया। सतिजुग नींह रक्खे करतार, जगत जगदीश गया समझाईआ। जिस वेले होया संस्कार, सो वेला ल्या सुहाईआ। भगतां बणे इक्क दुआर, अनमुल्ली भगती झोली पाईआ। चव्वी हथ्थ हथ्थ निशान, समरथ दए झुलाईआ। बिन पढ़यां देणा ज्ञान, आपणा दरस कराईआ ।निथाव्याँ देणा थान, नयासरयां आस पुजाईआ। एका राग सुहाउणा कान, एका नाद वजाईआ। एका मन्दिर दसाउणा मकान, मस्त रहे लोकाईआ ।एका प्रकाश करना कोटन भान, जोती जोत रुशनाईआ। दर आयां बिन मंग्गयां देणा दान, जगदीश एका मंग मंगाईआ। नौं सौ चुरानावें चौकड़ी जुग पिच्छों आयो मात भगवान, आपणा बल रखाईआ। तेरी रक्ख के ओट ना आवे हाण, नेत्र दरगाहि ना फेर शरमाईआ। आदि जुगादी तेरी बाण, ग़रीबां गल लगाईआ। बिन तेरे नाम शाह पातशाह ख़ाली ख़ाक रहे छान, अन्त सीस खेह पवाईआ। तूं हाणीआं मिल्या हाण, तूं करी आप पछाण, हउँ बालक जीव अज्याण, गति मित तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। आपणा दिवस दस्स महान, तेरी सेवा करीए आण, दर दर सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा रिहा समझाईआ। सच संदेशा हरि सुणाइंदा, पुरख अगम्मा एका बोल। कलिजुग वेला अन्तिम आइंदा, गुरमुख रहिणा सदा अडोल। सतिगुर साची सेव कमाइंदा, सद वसणहारा कोल। भगतां मार्ग एका लाइंदा, देवे वस्त अनमोल। साचा मन्दिर इक्क बणाइंदा, छत्ती जुग दा तोलया तोल। निरगुण आपणा अंदर आसण लाइंदा, बाहर बैठा रहे अडोल। आपा भुल्ले आप जगाइंदा, अंदर वड़ वड़ पर्दा खोल्ह,। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे पूरा कीता कौल। कीता पूरा करे कौल इकरार, अकृतघन ना कदे अख्वाईआ। सतिजुग बणे सच्चा दरबार, नौं दुआरे दए खुल्हाईआ। नौं खिड़की करे प्यार, एका दूजा बन्धन पाईआ। पंज चार सच विहार, दोहां मेला सहिज सुभाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अगोचर आपणा रूप वटाईआ। साची नींह दए उसार, जगत नींह दए उखड़ाईआ। वाह वा कुदरत तेरी यार, तूं कुदरत कादर सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साची सिख्या सतिगुर रीत, सतिजुग राह चलाइंदा।

अन्तिम नाता तुटना मन्दिर मसीत, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। पुरख अकाल सभ ने गाउणा गीत, दूजा इष्ट ना कोई मनाइंदा। इक्क दुआरे लग्गे सच प्रीत, दूजा बन्धन ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सगल समग्री आप बणाइंदा। सगल समग्री कर त्यार, हरि साचा दए समझाईआ। हरि की समग्री हरिसंगत प्यार, दूजी वस्त ना कोई रखाईआ। आपे बण जाए सेवादार, सेवक बण बण सेव कमाईआ। गुरसिख महल्ल लए उसार, लोकमात करे रुशनाईआ। मानस जन्म ना आवे हार, कीती घाल लेखे पाईआ। जो करके जाए दीदार, दीद ईद चन्द शरमाईआ। लेखा सभ दा इक्को जेहा पुरख नार, छोटा वड्डा ना कोई वड्याईआ। बिरध बाल ना कोई धार, जवान बल ना कोई जणाईआ। अंदरे अंदर वेखे लग्गा सच प्यार, कवण प्रीती रिहा निभाईआ। गुरसिख संसार कोलों डर ना जाणा हार, जित हार हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची नींह नीहां हेठ दबाईआ। साची नींह रक्खे भगवाना, दर राखी आप कराइंदा। उन्नी कत्तक दिवस महाना, साढे दस वक्त सुहाइंदा। दर दर रोवे राजा राणा, हरि भाणा की वरताइंदा। छत्ती दिवस विहार कराना, हुक्मी हुक्म आप जणाइंदा। गुरमुख मिल मिल सेव कराना, सेवक सेवा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्न दिन वेखे अंदर वड़,

१४०२ गुरमुख सोया कोई रहिण ना पाइंदा। सवा पहर इक्क लहर, जन भगतां अंदर आपणे पौड़े जाए चढ़, चढ़ चढ़ आपणा दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप बणाइंदा। जन भगत दुआरा हरि बणत बणाउणा, हरि साची सेव समझाईआ। पहली चेत्र गुरु गोबिन्द सिँघ चल के आउणा, धुर फ़रमाना दए सुणाईआ। मिल मिल हरि हरि साचा मंगल गाउणा, वाह वाह वज्जे सच वधाईआ। कलिजुग लेखा जिस मुकाउणा, लेखा लिखे बण कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लोकमात दए वड्याईआ। लोकमात सोहे सचखण्ड, हरि साचा सच सुहाइंदा। लेखा जाणे पुरी अनन्द, अनन्द मंगल एका गाइंदा। मुका के आवे दूर दुराडा पन्ध, दर घर साचे सोभा पाइंदा। एका कूक सुणाए छन्द, शास्त्र सिमरत भेव ना आइंदा। कवण रूप देवे वण्ड, लोकमात हुक्म सुणाइंदा। कवण फड़े चण्ड प्रचण्ड, तिक्खी धार वेस वटाइंदा। कवण मारे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज भन्न वखाइंदा। कवण टुट्टी देवे गंढ, हरिजन साचे दर बहाइंदा। पहली चेत्र सच संदेशा पुरी अनन्द देवे घल्ल, लिख लिख नौं नौ सफे भराइंदा। जिस दा चिल्ला सभ नूं करदा खण्ड खण्ड, तीर बेनज़ीर शाह हकीर पार कराइंदा। सो वण्डण आया वण्ड, आपणा पर्दा ना कोई रखाइंदा। आओ टुट्टी फेर देवे गंढ, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। बिन मंग्गयां देवे मंग, आपणे

१४०२

गले लगाइंदा। जिस नूं गाउदें गुजरी चन्द, सो शब्दी खेल कराइंदा। जिस नूं कहिन्दे तेग बहादर बिन्द, सो बिना बिन्द एका रूप वटाइंदा। जिस नूं कहिन्दे चादर हिन्द, सो पर्दा एका हथ्थ उठाइंदा। जिस पन्ध चुकाउणा जीउ पिण्ड, इंड ब्रह्मण्ड पार कराइंदा। जे नहीं आउणा रज्ज के करो निन्द, निन्दक निन्दया मुख भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा।

जगत गाथा चौदां गुर, गुर गुर गुर ओट तकाईआ। इक्क गुर ना जाए थुड़, मुक्क कदे ना जाईआ। जिस गुर दी पई लोड़, सो सतिगुर दए समझाईआ। आदि अन्त जो जाए बौहड़, नानक निरगुण गया समझाईआ। जुगा जुगन्तर बुझाए औड़, एका मेघ बरसाईआ। मिट्ठा करे रीठा कौड़, फल अमृत रूप वटाईआ। प्रभ आपणी बिध धारी अवर की और, भेव कोई ना पाईआ। पंज तत उत्ते करदे फिरदे चौर, सतिगुर सच्चा नज़र किसे ना आईआ। जिस मिलयां कम्म जावण सौर, सौहरे पेईए मिले वड्याईआ। जो दो जहानां अगे मिले दौड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस सच्चा लाया पौड़, गुरमुख विरला चढ़ के वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौदां गुरु दए समझाईआ। चौदां गुर हरि समझाए, समझ समझ विच मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम कूक कुरलाए, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चौदां तबक करन हाए हाए, साचा सबक ना कोई पढ़ाईआ। अल्ला राणी जगत बीवी वास्ता पाए, बिन ख़ावंद बिन नैणां नीर वहाईआ। मिले मीआं सच्चा माही घर आए, तोबा तोबा रही सुणाईआ। मेरी घाल लेखे ना पाए, कोझी कमली हाल सुणाईआ। आब हयात ना कोई प्याए, अहिबाब रबाब ना कोई वजाए, भुल सवाब ना कोई वड्याईआ। पिसर पिदर ना कोई मनाए, राग वार ना कोई सुणाए, कर आदर ना चरन बहाए, मिले दर ना सीस शरनाईआ। तेग़ बहादर तैनूं अग्नी अग्ग गया लगाए, बिन गोबिन्द अन्त ना कोई बचाईआ। मुहम्मद रो रो वास्ता पाए, वेला अन्तिम गया आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुर दए समझाईआ। बहत्तर भगत दुआरा होए त्यार, चौदां गुर आप प्रगटाईआ। चौथा सिर हथ्थ रखे निरँकार, आप आपणी दया कमाईआ। एका हुक्म देवे एका वार, एका गुण समझाईआ। एका गुर करे अस्वार, शाह अस्वारा राह तकाईआ। एका नाम सच जैकार, एका नाअरा दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक लेखा पूर कराईआ। नानक लेखा चौदां गुर, गुर गुर नाम ध्याया। साहिब सच्चे दी इक्को लोड़, इक्को ताल वजाया। आपणे आप नाल जाए जोड़, आपे जोत शब्द नाद सुणाया। आपे करे आपणी पूरी लोड़, मंगण किसे दर

१४०३

ना जाया। कलिजुग अन्तिम जाए बौहड़, चौदां गुरु वेस वटाया। चौदां गुरु चौदां लोक, एका वार प्रगटाईआ। एका नाम इक्क सलोक, एका राग सुणाईआ। एका पुरख एका ओट, चरन ध्यान इक्क लगाईआ। इक्क वखाए निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाईआ। कलिजुग अन्तिम गुरु होए बहुत, लेखा लेख ना लिख्या जाईआ। जिस दा अजे ना खुल्हिआ सोत, दूसरयां सोत रिहा खुल्हाईआ। आप डिगे आलणिओ बोट, दूजी वार विच ना कोई टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौदां गुरु दए वड्याईआ। चौदां गुरु गुर बन्ने धार, कलिजुग खेल अपारा। घर घर बैठे गुरु पैर पसार, तन झूठा खेल न्यारा। अंदर आए ना शब्दी निरगुण धार, शब्दी शब्द ना कोई विहारा। बाहरों दिसे पंज तत अकार, तन बस्त्र नाल शिंगारा। झल्ले कहिन्दे गुरु अंदर वड़या किसे नाल ना करे गुफ्तार, आपणा खोल्हे ना बन्द किवाड़ा। अंदर वड़ वड़ रोवे ज़ारो ज़ार, अग्गे दिसे ना हरि करतारा। बाहर मैं किसे दा की सकां संवार, मैं आप ना उतरया किसे किनारा। वाह वाह पारब्रह्म ने दिती दात, लोकी करदे निमस्कारा। अन्तिम भांवे सुट्टे डूंग्घे खात, राए धर्म मारे मारा। वाह वा नींद औंदी सुत्तयां जागण वेला बाहर दस्सण प्रभात, अंदर नैण ना कोई उग्घाड़ा। सच्चे सतिगुर दी इक्को ज़ात, आदि जुगादी इक्क विहारा। जन भगतां देवे नाम दात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबारा। धुर दरबारी हरि हरि लेखा, लिख लिख अन्त समझाईआ। कलिजुग तेरा जगत भेखा, लोकमात पई दुहाईआ। चौदां लोकां कोई ना रक्खे साया हेठा, सिर हथ्थ ना कोई टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौदां लोक चौदां गुर आप जणाईआ। चौदां तबक चौदां गुर चौदां लोक, एका शब्द गुर अख्वाइंदा। शब्द अन्तिम देवे सच सलोक, दर दर आप सुणाइंदा। उठो जागो हरि दर भागो हरि का भाणा सके ना कोई रोक, नेत्र नीर सर्ब वहाइंदा। लक्ख चुरासी अन्तिम देवे झोक, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। जिस दा खेल लोक परलोक, सो सतिगुर आप अख्वाइंदा। चौदां लोक इक्को ओट, पुरख अबिनाशी आप जणाइंदा। सचा सतिगुर इक्को बहुत, कोटन कोटि पीर पैग़म्बर आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौदां गुर शब्द धार ना कोई वरन ना कोई गोत, किला कोट ना कोई रखाइंदा।

★ ३ कत्तक २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

आदि पुरख अगम्म अथाह, आदि आदि खेल कराइंदा। अलख अगोचर बेपरवाह, बेऐब नाउँ धराइंदा। वसणहारा

१४०४

सच मकां, मुकामे हक सोभा पाइंदा। आप आपणा नाउँ धरा, नर निरँकारा आप अख्वाइंदा। सच सिँघासण सोभा पा, तख्त निवासी तख्त सुहाइंदा। धुर फ़रमाना हुक्म जणा, शब्द अनादी नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा। दर घर साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। एकँकारा आप बणाए आपणी बणत, घड़ण भन्नणहार आप अख्वाईआ। आदि निरँजण आदि अन्त, निरगुण निरवैर वेस धराईआ। अबिनाशी करता जुगा जुगन्त, जुग करता खेल खिलाईआ। श्री भगवान साचा धाम इक्क सुहंत, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर आप धराईआ। साचा नूर नूर नुराना, निरगुण निरवैर आप उपजाइंदा। शाहो भूप बण सुल्ताना, साचे तख्त सोभा पाइंदा। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाना, धुर दरबारी आप सुणाइंदा। दर दरवेश बण दर दरबाना, दर आपणे सेव कमाइंदा। सो पुरख निरँजन हो प्रधाना, हरि पुरख निरँजन धीर धराइंदा। एका एक जोद्धा सूरबीर वड बलवाना, बल आपणे विच समाइंदा। आदि निरँजण डगमगाना, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। अबिनाशी करता वाली दो जहाना, अनुभव प्रकाश कराइंदा। श्री भगवान झुलाए सच निशाना, दरगाह साची हथ्थ उठाइंदा। पारब्रह्म आप आपणा मंगे दाना, निरगुण निरगुण अग्गे झोली डांहयदा। पुरख अकाल बण बण मर्द मरदाना, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे आपे वड़, आपणा घर आप सुहाइंदा। साचा घर सोभावन्त, आदि पुरख आप सुहाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवन्त, शाह पातशाह आसण लाईआ। आपे जाणे आपणी बणत, आपे जाणे सच पढ़ाईआ। करे खेल नारी कन्त, नर नरायण वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। दर घर सच सुहंजना, सोभावन्त करतार। जोत जगाए आदि निरँजणा, इक्क इकल्ला एकँकार। दीन दयाल ठाकर दर्द दुःख भय भंजना, करे खेल अगम्म अपार। आपणे दुआर अगे आपे सजना, ना कोई मीत ना मुरार। ना घड़या ना भज्जणा, आदि जुगादी एका कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार। धुर दरबार सचखण्ड, हरि साची जोत जगाईआ। आदि जुगादि रहे अखण्ड, ना कोई वण्डन वण्ड वंडाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाला दीन दयाला होए कदे ना रंड, नारी कन्त रूप समाईआ। इक्क गाए आपणा छन्द, आपे बह बह मंगल गाईआ। आपे वसया आपणे अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। आपे बणया आपणा बख्शंद, बख्शिश साची दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक्क जणाईआ। सच दुआरा श्री भगवाना, दरगाह साची आप सुहाइंदा। परम

१४०५

पुरख पुरख सुल्ताना, शाहो भूप आसण लाइंदा। राज राजाना श्री भगवाना, गुण अवगुण ना कोई रखाइंदा। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाना, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। निरगुण दाता निरगुण दाना, निरगुण भेखी निरगुण भिच्छया मंग मंग झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे आसण लाइंदा। सचखण्ड दुआरा हरि जू आसण, इक्क इकल्ला आप लगाईआ। करे खेल पृथ्मी अकाशन, बेपरवाह वडी वड्याईआ। आपे वेखे आपणा खेल तमाशन, आपे मंडल रास रचाईआ। आपे करे आपणी पूरी आसण, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। आपे भोग आप बलासन, आपे सेज हंढाईआ। आपे दास आपे दासी दासन, आपे दर बह आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआरा वड्डा वड, सो पुरख निरँजण आप उपाइंदा। आपणे विचों आपा कढ्ढ, आपे वेख वखाइंदा। आपे जाणे आपणी हद्द, पार किनारा ना कोई वखाइंदा। आपणा आप आपे सद, आप आपणा हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे वड़, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। दर दरवाज़ा आपे खोल्ह, निरगुण निरगुण आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। निश्अक्खर अक्खर आपे बोल, बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। आपे तोले साचा तोल, तोलणहारा इक्क अख्वाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, अडुल कदे ना जाईआ। आपणे अंदर आपे मौल, मौला आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सिँघासण आपे चढ़, सचखण्ड दुआरे करे खेल अगम्म अपारा, भेव अभेदा आप जणाईआ। सचखण्ड दुआरे भेव अवल्ला, हरि आपणा आप जणाइंदा। अजूनी रहत दिसे इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोई रखाइंदा। इक्क सहाए निहचल धाम अटल्ला, अटल महल्ल आप वड्यांअदा। आपणी जोत आपे रला, जोती जाता नाउँ धराइंदा। आपे फड़े आपणा पल्ला, नारी कन्त खेल खिलाइंदा। आपणा दर आपे मल्ला, दर घर साचा आप सुहाइंदा। आपणा संदेश आपे घला, आपे मिल मिल मंगल गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सच्चा घड़, घड़णहार हथ्थ वड्याईआ। ना कोई दीसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। ना कोई दीसे रवि ससि सूरज चन्न उज्यार, नूर ज़हूर ना कोई कराईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरार, सगला संग ना कोई वखाईआ। ना कोई दिसे सुत दुलार, मात पिता साक सज्जण ना कोई भैण भाईआ। ना कोई जंगल जूह दिसे उजाड़ पहाड, डूँघी कंदर भेव ना राईआ। ना कोई दिसे लक्ख चुरासी धार, पंज तत ना कोई वड्याईआ। त्रैगुण दिसे ना कोई अखाड़, विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए समझाईआ। ना कोई शब्द नाद धुन्कार, नादी नाद ना कोई सुणाईआ। ना कोई गुर पीर अवतार, मुला शेख़ मुसायक

१४०७

नज़र कोई ना आईआ। सर्ब जीआं दा इक्को नायक, इक्को दाता पुरख बिधाता, नर निरँकार खेल खिलाईआ। आपे पिता आपे माता, आपे बालक रूप वटाईआ। आपे बन्ने आपणा नाता, तुट कदे ना जाईआ। आपे होए जोती जाता, जोती जोत करे रुशनाईआ। आपे दिवस आपे राता, घड़ी पल आपणी वण्ड वंडाईआ। आपे ब्रह्मण्ड खण्ड देवे धरवासा, अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणे रंग टिकाईआ। आपे लुकया रहे कमलापाता, दिस किसे ना आईआ। सचखण्ड वसे इक्क अकांता, अकल कल खेल खिलाईआ। करे खेल बहु बिध भांता, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड आपणा घाड़न लए घड़ाईआ। सचखण्ड हरि जू घाड़न घड़या, घड़नहार निरँकारा। निरगुण आपे बाडी बणया, ना कोई दीसे ज़ात तखाना। आपणी सेवा आपे करया, आपे शाह आप निमाणा। आपणा भाणा आपे जरया, आपणे हुक्म आप समाना। आपणे मन्दिर आपे खड़्या, आपे वेखे मार ध्याना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवाना। श्री भगवान खेल अपारा, निरगुण निराकार आप कराईआ। सचखण्ड साचा खोल्ह दुआरा, इक्क इकल्ला सोभा पाईआ। दर दरवेश बणे भिखारा, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। भूपत भूप बण वणजारा, साचा वणज इक्क वखाईआ। एका वस्त अमोलक रक्खे थारा, थिर आपणी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपणे नाल मिलाईआ। आपणी इच्छया आपणे अग्गे रक्ख, पुरख अकाल खेल खिलाइंदा। आदि पुरख प्रभ हो प्रतक्ख, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। नाउँ धराए इक्क समरथ, समरथ आपणी धार जणाइंदा। आपणे गृह हो उतप्त, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आदि आपणी धार आप चलाइंदा। आदि पुरख साची धार, सचखण्ड दुआर चलाईआ। निरगुण रूप निराकार, निरवैर वेस वटाईआ। अजूनी रहत होया ख़बरदार, रूप रंग ना कोई वड्याईआ। वसणहारा धाम न्यार, दर साचे सोभा पाईआ। आपा कर आप विचार, आपे दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख दए वड्याईआ। आदि आपणी रचना रच, हरि हरि खेल खिलाया। आपणा नाउँ नाउँ धर धर, सच साचा मार्ग लाया। आपणे अन्तर आपे रच, आपणा रंग रंगाया। आपणे दुआर आपे नच्च, आपणा स्वांग वखाया। आपणे गृह आपे हस, आपे मंगल गाया। आपणे मन्दिर आपे होया वस, आप आपणा बन्धन पाईआ। करे खेल अलखना अलख, अलख अलख बेपरवाहया। आपे जाणे आपणा रस, रस रसीआ सच्चा शहिनशाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप समझाया। साचा मार्ग पुरख अगम्म, अगम्मड़ा आप जणाइंदा। साचा रूप पुरख अगम्म, अगम्मड़ा आप जणाइंदा। ना

मरे ना पए जम्म, रूप अनूप ना कोए रखाइंदा। ना कोई तत्व ना कोई तन, ना कोई तार सतार हिलाइंदा। ना कोई जननी ना कोई जन, मात पित ना कोई वड्यांअदा। ना कोई राग ना कोई कन्न, ना कोई वाज सुणाइंदा। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, ना कोई डेरा बणाइंदा। आदि पुरख इक्क भगवान, आपणी जोत आप प्रगटाइंदा। सच दुआरा चढ़या चन्न, सचखण्ड दुआरा आप रुशनाइंदा। आपणा हुक्म आपे मन्न, सद भाणे विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आपे बह, आपणा हुक्म मनाइंदा। साचा हुक्म श्री भगवान, आपणा आप जणाईआ। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, पारब्रह्म दर बुलाईआ। हरि पुरख निरँजण देवे दान, श्री भगवान झोली डाहीआ। एकँकारा वखाए सच मकान, अबिनाशी करता वेख वखाईआ। आदि निरँजण नूर महान, इक्क इकल्ला डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर आप सुहाईआ। सचखण्ड दुआर सुहाया, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आपणा खेल आपे दर दर, साचा आप सुहाईआ। पुरख अकाल आपे बण बण, आपणा रंग रंगाईआ। साचे पौड़े आपे चढ़ चढ़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। आपणा पल्लू आपे फड़ फड़, आपा ल्ए प्रनाईआ। नारी कन्त आपे बण बण, हरि साची सेज सुहाईआ। निरगुण अंदर निरगुण धर धर, साची धार चलाईआ। आपणी किरपा आपे कर कर, करता पुरख
१४०८ खेल वखाईआ। निरभउ चुका आपणा डर डर, भय अवर ना कोई वखाईआ। सचखण्ड दुआरा दे वर वर, दाता रूप १४०८
वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी भेव खुल्हाउणा, आपणा पर्दा हरि जू चुक्क। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाउणा, जिस अंदर बैठा लुक। सच निशाना इक्क झुलाउणा, सच दुआरे किले कोट। सच नगारा इक्क वजाउणा, हरि नामे लग्गे चोट। बंक दुआरा इक्क सुहाउणा, पुरख अकाला इक्को ओट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल निरगुण जोत। निरगुण जोत जोती धारा, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। हरि पुरख निरँजण करे प्यारा, एकँकार नाल मिलाईआ। आदि निरँजण कर उज्यारा, अबिनाशी करता वेखे चाँईं चाईआ। श्री भगवान दए हुलारा, सच निशाना इक्क उठाईआ। पारब्रह्म दर बण भिखारा, दरवेश आपणी झोली अगे डाहीआ। देवणहार आप वरतारा, इक्को इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पसारा करया इक्क, हरि हरि आपणा आप लेख लिख, लेखा लिख्त विच ना आईआ। साचा लेखा धुरदरगाह, धुरदरगाही आप जणाइंदा। सचखण्ड दुआरे सच मलाह, साचा मता पकाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्चा शहिनशाह, साचा हुक्म जणाइंदा। थिर घर सच्चा लवां वसा, सच आपणी बणत बणाइंदा। सुत दुलारा दयाँ टिका, शब्दी नाउँ धराइंदा। शब्दी हुक्म आप

समझा, आपणा भेव चुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी झोली पा, तेरा राह वखाइंदा। त्रै त्रै लेखा एका थाँ, पंचम जोड़ जुड़ाइंदा। चार चार हरि पकड़े बांह, पंचम आपणा रूप प्रगटाइंदा। छे छे घर डेरा ला, सत्तवें सति सतिवादी डंक वजाइंदा। अठ्ठां ततां रंग रंगा, नौं दुआर खोज खुजाइंदा। दसवें भेव आप मुका, लुक लुक वेख वखाइंदा। शब्दी मार्ग एका ला, सच महल्ल अटल सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत शब्द समझाइंदा। सुत शब्द मार ध्यान, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। थिर घर मिल्या तेरा दान, तेरी वड वडी वड्याईआ। आदि जुगादि सदा मेहरवान, देवणहार इक्क अख्वाईआ। रवि ससि कर प्रधान, किरन किरन करी रुशनाईआ। लोआं पुरीआं खेल महान, मंडल आपणी रास रचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तेरी धार सुणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म इक्क ज्ञान, ब्रह्म वेता करे पढ़ाईआ। जुग जुग खेल खेल महान, लोकमात दिआ कराईआ। निरगुण सरगुण इक्क निशान, गुर गुर वेस अनेक वटाईआ। भगत भगवन्त देदे माण, तेरी महिमा अकथ सुणाईआ। सन्त साजन इक्क मकान, सच दुआरा दयाँ वखाईआ। गुरमुखां राग सुणावां कान, धुन आत्मक आप जणाईआ। गुरसिखां चरन ध्यान, साचा मार्ग इक्क समझाईआ। करां खेल विच जहान, लक्ख चुरासी नाच नचाईआ। पीर पैग़म्बर पावां आण, हुक्मी हुक्म भवाईआ। जुग चौकड़ी कर कल्याण, अन्तिम आपणे विच छुपाईआ। एका सदा रक्खां आपणा नाम, नाम नाम विच सालाहीआ। तेरा अमृत सच्चा जाम, सच दुआरे दयाँ वखाईआ। तेरा सच संदेशा धुर पैग़ाम, पीर पीरां करां पढ़ाईआ। तेरा पकड़ाउणा एका दाम, दामनगीर सर्ब लोकाईआ। तूं हरि घट रमिआ राम, तूं मेरा पिता माईआ। सुत दुलारा शब्द निउँ निउँ करे सलाम, अलैकम तेरी शहिनशाहीआ। मुकामे हक तेरी कलाम, बेऐब मेरे ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शब्द सुत अग्गे अबिनाशी अचुत बैठा सीस झुकाईआ। सुत दुलारा गया झुक, प्रभ अगे सीस झुकाइंदा। तूं निरगुण बैठा लुक, दिस किसे ना आइंदा। मैं बणया तेरा सुत, तेरे अगे झोली डांहयदा। तूं सुहाउणी मेरी रुत्त, मैं तेरी फुलवाड़ी आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ भिखक झोली डांहयदा। भिखक मंगे याचक दान, प्रभ अगे सीस झुकाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। मैं बाला सुत अंञाण, तेरे अगे ना कोई चतुराईआ। तूं रक्खणा आदि जुगादि ध्यान, तेरी निगह बदल ना जाईआ। तूं महिबान बीदो मेहरवान बी खैर या अल्ला, सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अतोट अतुट रखाईआ। साचा सुत शब्द दुलारा, एका मंग मंगाइंदा। थिर घर तेरा रहे हुलारा, दूजा दर ना कोई पाइंदा। सचखण्ड

१४०६

तेरा हुंदा है दीदारा, मेरा रंग रंगाइंदा। तेरी किरपा तेरी दृष्ट मेरी इष्ट करे गुजारा, बिन तुध इष्ट ना कोई मनाइंदा। तूं साहिब बेऐब परवरदिगारा, तेरा जल्वा डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच सहारा, तेरी ओट तकाइंदा। तेरी ओट लई तक्क, बेऐब मेरे ख़ुदाया। आदि जुगादि ना जावां थक्क, सद रक्खीं सीस मेरे ते छाया। तेरा हुक्म उपजाउणा हक, भुल कदे ना जाया। तूं थिर घर लैणा रक्ख, बण बण जणेंदी माया। मैं तेरे कोलों होवां ना वक्ख, सुत शब्द रिहा कुरलाया। तूं आदि जुगादि करना मेरा पक्ख, तेरे चरना सीस निवाया। विष्न ब्रह्मा शिव करां प्रतक्ख, तेरा मार्ग दिआ वखाया। त्रैगुण माया पंज तत करां खेल अलख अलख, घट घट आपणी अलख जगाया। पारब्रह्म प्रभ गुण निधान, दयावान दया कमाईआ। सुत बाल निधान, तेरी बाली बुध दयाँ वड्याईआ। आदि जुगादि रक्खां तेरी पहचान, भुल कदे ना जाईआ। थिर घर तेरा वसदा रहे मकान, ढेरी ढाह ना कोई बणाईआ। लक्ख चुरासी इक्को दान, एका वार झोली पाईआ। निरगुण सरगुण लै लै जाए पैग़ाम, सच संदेशा मात सुणाईआ। खेलां खेल दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड वडी वड्याईआ। लोक परलोक जस तेरा गाण, तेरे नाउँ सच्ची शनवाईआ। तेरी वण्डां वण्ड महान, वण्ड आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत शब्द आप समझाईआ। सुत शब्द उठ कर ध्यान, पिता पूत समझाया। मेरा नाउँ तेरा ज्ञान, भेव किसे ना आया। मेरा चरन तेरा ध्यान, ध्यान किसे ना पाया। मेरा मन्दिर तेरा मकान, मकान हथ्थ किसे ना आया। मेरा नाद तेरा धुन्कान, तेरा नाद ना कोई सुणाया। मेरा रस तेरा पीण खाण, तेरा रस तेरे विच लुकाया। मेरा नाउँ श्री भगवान, तेरा शब्दी नाउँ धराया। तूं पुत्त मेरा बलवान, ना मरे ना जाया। जुग जुग तेरे हथ्थ वखावां सच निशान, लोकमात दएँ झुलाया। लक्ख चुरासी दईं ज्ञान, एका अक्खर आप पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताया। साची वस्त वस्त अपार, हरि आपणी इच्छया झोली पाईआ। जुग जुग खेल करे करतार, कुदरत तेरी धार बंधाईआ। गुर अवतार हो त्यार, पंज तत्त दए वड्याईआ। जुग चौकड़ी विच संसार, नौं नौं चार पन्ध वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप वरताईआ। मिल्या वर दीआ भगवन्त, देवणहारा दातारा। तेरी वड्याई तूहे जाणे बेअन्त, बेअन्त तेरा घर बारा। तेरा नाउँ तेरा अतीत, तेरे दर जैकारा। तूंहीं आदि तूंहीं अन्त, तुध तेरा पसारा। दोए जोड़ करां बेनंत, कर सच्चा कौल इकरारा। कवण वेला मेला अन्त, बण सज्जण मीत मुरारा। जुग चौकड़ी तेरी महिमा गायन भगत सन्त, गुरमुख कोटन वारो वारा। गुरसिख करन तेरी मिन्नत, निउँ निउँ चरन सरन निमस्कारा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, मेरा अन्त अन्त सहारा। अन्त सहारा दे दे ठाकर, शब्दी मंग मंगाया। जुग चौकड़ी तेरे दर बणया रहां सौदागर, एका वणज कराया। तूं साहिब देणा आदर, सीस मेरे हथ्थ टिकाया। तूं करीम करता कादर, कुदरत तेरी वेख वखाया। तूं मेरा बणना सादर, एका सबक पढ़ाया। तूं पिसर पिदर मादर, हउँ बाली बुध्ध अख्वाया। तूं सूरबीर बहादर, बलवान तेरी वड्डी शाहया। तूं मेरा रूप करना उजागर, तुध बिन नज़र कोए ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच संदेशा आप सुणाया। सच संदेशा श्री भगवाना, आदि आदि सुणाईआ। सुत दुलारे कर ध्याना, हरि साचा आप समझाईआ। करे खेल श्री भगवाना, जुग जुग वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बन्ने गाना, लक्ख चुरासी तन्द वखाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेखे मार ध्याना, दो जहानां हुक्म मनाईआ। नौं नौं चार पन्ध मुकाना, चौकड़ी जुग गेड़ दवाईआ। करे खेल वड मरदाना, गुर अवतार सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप लिखाईआ। आपणा लेखा ल्या लिख, लिखणहार करतारा। आपे जाणे आपणा भेख, भेख अवल्लड़ा अगम्म अपारा। आपे जाणे आपणी रेख, रेख रंग रूप ते वसे बाहरा। आपणा नैण आपे पेख, आपे नेत्र करे उज्यारा। आपे जाणे आपणा भेत, आपे खोलणहारा किवाड़ा। आपे जाणे आपणी वेंत, जिस बिध बणाया सचखण्ड सच्चा दरबारा। लभ्भ लभ्भ थक्के केती केत, किसे अन्त ना पारावारा। जिस आपणे चरना कराया हेत, तिस दिता दरस दीदारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला करे पार किनारा। कवण वेला मुक्के हद्द, हदूद दए समझाईआ। आपणे दुआरे आपे लए सद, लोकमात पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणाई तेरी यद, लक्ख चुरासी तेरा बंस सुहाईआ। तूं निरगुण सरगुण करया अड्ड, सरगुण निरगुण तेरा भेव ना जाणे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त मेला लए मिलाईआ। अन्तिम मेला लैण कर, कर किरपा गुण निधान। मैं वसां तेरे दर, पारब्रह्म श्री भगवान। मैं लक्ख चुरासी फिरां दर दर, अठ्ठ पहर हो निगहबान। गुर अवतार सेवा लावां फड़ फड़, लोकमात कर प्रधान। तेरा नाउँ अक्खर पढ़ पढ़, लक्ख चुरासी करन ज्ञान। अन्तिम जायण हर हर, पुरख अबिनाशी करन ध्यान। काया उपजे काया जाए मर, निरगुण वस्त निरगुण करे परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा दर ना सके कोई पछान। साचा वर हरि जू देणा, दयानिध दया कमाईआ। सुत शब्द तेरा ठांडा सीना, आदि जुगादि रक्खां अमृत रस इक्को भीन्नां, सांतक सति सति वरताईआ। त्रै त्रै खेल आपे कीना, पंचम पंच वजे वधाईआ। आपे जाणे मरना जीना, लक्ख चुरासी बन्धन

१४११

पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा अन्त दए समझाईआ। सुत शब्द तेरा अन्त मिलावा, प्रभ आपणे हथ्थ रखाइंदा। प्रभ मिलण दा करे दाअवा, कीता कौल भुल ना जाइंदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग लक्ख चुरासी आवा, सूरबीर आप बणाइंदा। अन्तिम सभ दा मेटे नावां, नावां नज़र कोई ना आइंदा। गुर अवतार जिस दा तक्कदा रहे प्रछांवा, सो आपणा रूप वटाइंदा। बल धारे बिना भुजां बाहवां, चतुर्भुज ना खेल खिलाइंदा। बिन जम्मे पुत मावां, पिता आपणा ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सो तेरा मेल मिलाइंदा। शब्द सुत जिस तेरा मेल मिलाउणा, सरगुण निरगुण नाउँ रखाइंदा। जिस ने पल्लू अन्त फड़ाउणा, निरवैर नाउँ धराइंदा। जिस ने मन्दिर भाग लगाउणा, अजूनी रहत वेख वखाइंदा। जिस ने सोहला साचा गाउणा, नाउँ निरँकारा आप सुणाइंदा। जिस ने पर्दा ओहला चुकाउणा, जोती जोत डगमगाइंदा। लक्ख चुरासी नाता जिस तुड़ाउणा, सो दिस किसे ना आइंदा। लोकमात जिस फेरा पाउणा, गुर अवतार राह समझाइंदा। भगत भगवन घर इक्क वखाउणा, साचे मन्दिर कुण्डा लांहयदा। साचे सन्तां जिस पर्दा लहाउणा, आपणा पल्लू नाम वधाइंदा। गुरमुखां जिस रंग रंगाउणा, रंग आपणा आप रंगाइंदा। गुरमुखां जिस सुख उपजाउणा, सुख आपणी वस्त वरताइंदा। वसदा खेड़ा जिस अन्तिम ढाउहणा, उस दा भेव कोई ना पाइंदा। शब्द सुत तेरी लाज रखाउणा, सो तैनूं आदि समझाइंदा। अन्त तेरा जिस मेल मिलाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप आप समझाइंदा। मेरा रूप अन्तिम वार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरार, साक सैण ना कोई वड्याईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, निरगुण निरगुण रूप वखाईआ। जोती जामा लै अवतार, निहकलंक नाउँ रखाईआ। डंका वज्जे सर्ब संसार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आपणी जोत कर उज्यार, निराकार रूप आपणा आप आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा गुण रिहा समझाईआ। कलिजुग आवां अन्तिम वार, निरगुण जोत जगा। सचखण्ड बणावां पहलों दुआर, दस्म दुआरी पन्ध मुका। साचा करां फेर विहार, गुरमुख सज्जण मात जगा। देवां वर कर प्यार, सिर आपणा हथ्थ टिका। ब्रह्मा शिव तख्तों दिआ उतार, सुरपति राजा इन्द मारे धाह। ब्रह्मण्ड खण्ड दिआ उलटा, लोआं पुरीआं कोई ना लभ्भे राह। धरत धवल दयाँ खपा, समुंद सागर दयाँ सुका, जोती लम्बू अग्नी एका ला। बिन चप्पू बणां मलाह, आपणे भगतां नाल रला। एका देवां नाम सलाह, साचा अक्खर इक्क पढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात सचखण्ड दुआरा आप बणा। सचखण्ड दुआरा एका दूआ धार, दूआ सिफ़रा नाल मिलाईआ। वीह सौ बारां कर प्यार, बिक्रमी लेखा रिहा मुकाईआ।

छे घर कर उज्यार, छे साल सेव कमाईआ। तेरां तेरा जगत विहार, शाह सुल्तानां आपणे कंडे तोल तुलाईआ। चौदां चौदां बण वणजार, चौदां लोक चौदां तबकां मारी मार, गुरमुख साचे लए जगाईआ। एका इक्की सच विहार, साची सिख्या सिख समझाईआ। पंदरां पंदरां खेल पार तीर्थ तट वेख मुनार, मन्दिर मस्जिद मठ शिवदयाल गुरदुआरा घर घर आपणा फेरा पाईआ। आपणी वस्त लै के आया आपणे नाल, ख़ाली भण्डारे सर्ब कराईआ। बे समझ होए बेहाल, रमज़ रमज़ विच ना कोई रलाईआ। कमच खेल करे करतार, अलनेक वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सोलां सोलां सच विहारा, हरि साचा सच कराइंदा। भगवन भगतन इक्क भण्डारा, एका वार वरताइंदा। चार वरन वरन पार किनारा, बरन अठारां डेरा ढांहयदा। साचा दिवस इक्क विचारा, पंदरां कत्तक मेल मिलाइंदा। सम्मत सत्तरां सच दिहाढ़ा, ख़ुशीआं नाल मिलाइंदा। प्रगट हो अगम्मी लाड़ा, रूप अनूप आप समझाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, लोकमात हुक्म जणाइंदा। चल के आया इक्क इकल्ला परवरदिगारा, रूप रंग ना कोई रखाइंदा। जिस राम पसरया पसारा, सो राम वेख वखाइंदा। जिस बद्धी साची धारा, सो धार पार कराइंदा। जानणहारा पार किनारा, आपणे तट डेरा लाइंदा। सीस जगदीस सोहे ताज अपारा, पंचम आपणा गंढु पवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा विच संसारा, निरगुण आपणा आप प्रगटाइंदा। सम्मत सतारां गया लँघ, थिर कोई रहिण ना पाया। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्क फड़या नाम मृदंग, शाह सुल्ताना रिहा सुणाया। जिस दी पूजा कर कर भिख्या रहे मंग, सो देवणहार वेस वटाया। जिस शाह सुल्ताना नंगी करनी कंड, आपणा खण्डा रिहा चमकाया। जिस लक्ख चुरासी करनी रंड, सरगुण रूप ना कोई दरसाया। जिस भगतां करनी अन्तिम वण्ड, सो भगवन फेरी पाया। ना कोई चिला ना कमंद, तीर निशान ना कोई वखाया। एका हुक्म देवे आपणे छोटे बाले फ़र्ज़ंद, सभ दा करे अन्त सफाया। जन भगतां ख़ुशी करे बन्द बन्द, लक्ख चुरासी बन्धन दए तुड़ाया। मेल मिलाए सहिज अनन्द, अनन्द पुर वासी एका घर नज़री आया। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, बिन तेल बाती दीपक दए जगाया। साहिब दयाल सदा बख्शंद, हरिभगत लए वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अठ दस वज्जे वधाया। अठ दस वज्जे वधाई, हरि सतिगुर आप वजाइंदा। भगत भगवन्त होए कुड़माई, साचा सगन मनाइंदा। आपे धी आप जवाई, सौहरा पिता आप अख्वाइंदा। आपे नैण आपे नाई, आपे बण बण सेव कमाइंदा। आपे डोले चढ़ चढ़ मारे उच्चीआं धाईं, आपे हस्स हस्स ख़ुशी मनाइंदा। आपे भगतां पकड़े बांही, आपणे गले लगाइंदा। आपे चुक्के चाँईं चाँईं, साची गोद सुहाइंदा। आपे देवे सच सलाही, सलाहकार आप हो आइंदा। उठो

मिलो भाईआं भाई, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। नानक नाम इक्क ध्याई, ध्यान ध्यान विच वखाइंदा। गोबिन्द बूटा पुटया काही, लक्ख चुरासी जड़ उखड़ाइंदा। बिन हरिभगत ना कोई वड्याई, लक्ख चुरासी कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत अठारां सच विहारा, करे कराए करनेहारा, आपणी कल आप धराइंदा। आपणी कल धरे करतार, जन भगतां आप जणाईआ। आदि जुगादी सच प्यार, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। जुग जुग जन भगत दुआरे गया सज, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। दर आया पूरी करके गया आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, सरगुण साची दए वड्याईआ। पुरख अकाला दीन दयाला वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप रखाईआ। सगला संग छेवें घर, घर विच घर आप मिलाया। भगत भगवन्त कोलो ना जायण डर, भगवन झूठा भय चुकाया। आपणी किरपा आपे कर, छे घर लोकमात समझाया। धरनी उप्पर वण्डे वण्ड, उप्पर एका वण्ड रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए जणाया। छे घर दा जगत पन्ध, प्रभ नेरन नेर मुकाईआ। छे फ़ुट वण्डे वण्ड, वण्डणहार इक्क अख्वाईआ। जोती जोत

१४१४ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन मेला रिहा दस्स, हरि सज्जण मीत मुरारा। १४१४

खब्बे पासे जाणा वस, सज्जे रहे आप निरँकारा। अगे साची संगत रक्ख, हरि जू हरिभगतां करे निमस्कारा। आदि जुगादि सदा होया वस, नस्स ना जाए सिरजणहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात प्रगटाए जगत दुआरा। खब्बा पासा, छे फ़ुट फ़ुट दूर कराईआ। नित नवित करदे रहिण हासा, भगत भगवन्त वडी वड्याईआ। इक्क दूजे दी पूरी करदे रहिण आसा, आसा आसा विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भरवासा दए समझाईआ। सच भरवासा हरि करतारा, हरि हरि आप जणाइंदा। साचा मन्दिर सच दुआरा, भगत उज्यारा आप कराइंदा। सति सतिवादी साची धारा, विच संसारा सतिजुग साचा राह चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी खेल आप खिलाइंदा। कलिजुग अन्तिम जाणा बीत, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सतिजुग साची चलणी रीत, हरि सतिगुर आप चलाईआ। वेखणहारा इक्क अतीत, बेअन्त वडी वड्याईआ। इक्क सुणाए सुहागी गीत, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। प्रभ दुआरा एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना वण्ड वंडाईआ। मानस जन्म जन लए जीत, जो दर दुआर दर्शन पाईआ। काया होए पतित पुनीत, पतित पापी पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत दुआरा दए समझाईआ। भगत दुआरा हरि करतारा, एका एका एक

मिलाइंदा। पिछली भुल बख्शे अन्तिम वारा, अभुल आपणी दया कमाइंदा। विशकर्मा बणे फिर भिखारा, आपणा हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्न कत्तक सच संदेशा जणाइंदा। सुण संदेश गया जाग, आपणी लए अंगड़ाईआ। वड वड होए धन्न भाग, प्रभ साचे ल्या मंगाईआ। कलिजुग मिटी अन्धेरी रात, सतिजुग साची होए रुशनाईआ। कवण खेल करे हरि जू विच मात, भेव अभेद इक्क जणाईआ। कवण दुआरे देवे दात, दात आपणी झोली पाईआ। मैं भुल्ला अगे करां ना हाथ, मेरे नैण रहे शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बैठा सीस झुकाईआ। विशकर्मा सीस बैठा सुट्ट, नेत्र नैण ना सके उठाईआ। तेरी वस्त मेरे कोलों लई लुट्ट, ख़ाली हथ्थ रिहा वखाईआ। कलिजुग अन्तिम जे गया तुट्ट, आपणी वस्त आपे दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विशकर्मा रिहा समझाईआ। विशकर्मा तूं गया भुल्ल, मेरा नाउँ भुलाया। मेरा सिख सदा अडोल, ना डोले डोल डुलाया। मेरा भगत सदा अतुल, ना कोई तोले तोल तुलाया। मेरा गुरमुख ना जाए रुल, ना कोई रोले रोल रुलाया। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर मैं ग़रीबां पौंदा मुल्ल, कीमत करता आपणे हथ्थ रखाया। आपणे भगत दो जहान दी सुगंधी बणावा फुल्ल, ब्रह्मण्ड खण्ड आप महिकाया। मेरा भगत सदा सुलहकुल, कुल्ल आलम दए पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव विशकर्मा रिहा जणाया। विशकर्मा वेखे भय निरँकारा, नेत्र नैणा नीर वहाइंदा। तेरा अन्त ना पारावारा, तूं बेअन्त सदा अख्वाइंदा। मैं भुलया बण गंवारा, मेरा बंस ना कोई सुहाइंदा। मैं बाढी तेरा यारा, तूं यारी क्यों तुड़ाइंदा। तूं आया घर तरखाना, तेसा रंदा हथ्थ रखाइंदा। तेरी आरी तिक्खी धारा, दो जहान चीर पवाइंदा। तेरा हथौड़ा मारे मारा, अग्गे सिर ना कोई उठाइंदा। तेरा वरमा रिहा पाड़ा, आर पार खेल खिलाइंदा। तेरा रंदा रंदे सर्ब संसारा, एका आपणा हथ्थ वखाइंदा। तूं गंदा बन्दा दएँ संवारा, मैं तेरे अगे झोली डांहयदा। की होया जे भुल गया गंवारा, तूं भुल क्यों नहीं बख्शाइंदा। मेरा वधे फुले परवारा, मैं सुणया तूं इक्क तों पंज बणाइंदा। तूं पंजां मीत मुरारा, सगला संग निभाइंदा। तेरी बिध तेरा नाम तेरे कारज करे विचारा, मैं मूर्ख भेत ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देदे साचा वर, तेरे अगे झोली डांहयदा। मंगी मंग इक्को वार, एका आस रखाईआ। कर किरपा सच्ची सरकार, तेरे घर तोट ना राईआ। अतुट तेरा भण्डार, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बण बाढी मंग मंगाईआ। तूं बाढी लक्ख चुरासी घड़दा, सेवा सेव कमाइंदा। मैं बाढी तेसा कुहाड़ा हथ्थ विच फड़दा, सभ दी आस पुचाइंदा। तूं बाढी

करें खेल नर हरि दा, आत्म सेजा इक्क बणाइंदा। मैं बाढी घर घर दा, पावा चूल ठोक सेज बणाइंदा। तूं बाढी किसे कोलों ना डरदा, मैं बाढी लोकमात डर डर वक्त लँघाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी कुल तेरे अग्गे इक्क रखाइंदा। तूं बाढी सच्चा तरखान, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। मैं कामां बणया रिहा जट्ट किसान, बिन मेरे तेरी लक्ख चुरासी खेती फुल ना सके राईआ। एका दे दे हरि जू दान, तेरे अगे मंग मंगाईआ। आपणी ज़ात लै पछाण, तेरी ज़ात मेरी सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मेहरवान होया मेहरवाना, आपणी दया कमाइंदा। दीनन देवे साचा दाना, दया भिच्छया पाइंदा। पंचम पंच करे प्रधाना, पंचम मेल मिलाइंदा। बाढीआं घर बाढी वेखे मार ध्याना, तरखान तरखानां नाल नाता जोड़ जुड़ाइंदा। पंजां देवे इक्क निशाना, एका राह चलाइंदा। उन्नी कत्तक बन्ने गाना, मौली तन्द हथ्थ उठाइंदा। साचा सगन इक्क मनाना, भगत दुआरा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पंचम मुख सालांहयदा। पंचम देवे माण, पंच वड्याईआ। पंचम पंच करे पहचान, पंचम सच्चा शहिनशाहीआ। पंचम देवे इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। पंचां सतिजुग बणे विधान, धारा
१४१६ अवर ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पंचम नाम जगत अपारा, १४१६
अपरम्पर आप जणाइंदा। सिँघ बिशन कर प्यारा, सिँघ लछमण नाल मिलाइंदा। सिँघ मल्ल दए हुलारा, सिँघ सोहण रंग चढ़ाइंदा। सिँघ सन्ता सति वणजारा, सति सतिवादी वेख वखाइंदा। पंचम दस्सां पंच विहारा, पंचम राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सलाहकार नाल रलाइंदा।

हरि का मन्दिर ना कोई ताकी ना कोई दर, दरवाज़ा नज़र कोई ना आईआ। ना कोई कुण्डा ना कोई ताला ना कोई तख्ता जाए अड़, अंदर बाहर ना कोई वखाईआ। चोर यार ना कोई डर, ठग्ग लुट्ट ना जाईआ। पौड़े चढ़ सके ना कोई फड़, डण्डा हथ्थ ना कोई रखाईआ। बिन इटां गारां घाड़न ल्या घड़, कांडी तेसी ना कोई खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्दिर दए समझाईआ। ना कोई सूत्र बन्ने धार, गुणां वण्ड ना कोई वंडाइंदा। ना कोई गज़ ना कोई साहल करे विचार, दूर नेड़ ना कोई वखाइंदा। ना कोई ठोकर सके मार, ठोक ठोक इट्ट ना कोई लगाइंदा। जिस दा महल्ल तिस ल्या उसार, अटल आपणा नाउँ रखाइंदा। नौं सत्त चार चार चौदस धार, तेरां अद्धा डेउडा, गुर नानक वण्ड वंडाइंदा। नानक पाया हरि का दुआर, रसना गाया एकँकार, कुदरत कादर खेल खिलाइंदा।

भगतां अंदर भगत उज्यार, भगती रूप आप करतार, भगवान आपणी दया कमाईआ। नौं दुआरे जगत विहार, एको वार समझाईआ। नौं खिड़की खोल्ह किवाड़, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। पंजे बणो सलाहकार, मिल मिल करो सलाहीआ। भगतां भगत करन विहार, भगवन वेखे चाँईं चाईआ। तिन्न कत्तक विशकर्मा ल्या अधार, अभुल भुल आप समझाईआ। सतिजुग साची बज्झे धार, पंजां मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगतां नाल मिलाईआ।

पहला घर गुर का चरन, एका एक समझाईआ। दूजा घर नाम वरन, हरि नामे बूझ बुझाईआ। तीजा घर खुले हरन फरन, नेत्र नैण नैण रुशनाईआ। चौथे घर गुरसिख वड़न, चौथे पद सोभा पाईआ। पंचम दरस निरगुण करन, सरगुण ख़ुशी मनाईआ। छेवें घर अन्तिम वड़न, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। बिन उपदेशों तरन, जिस मिल्या सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग रंगाईआ।

१४१७ पहला गुर जगत ज्ञान, जगत नाल मिलाइंदा। दूजा गुर विद्या विदान, विद्दत रूप वखाइंदा। तीजा गुर मारे पंज १४१७
शैतान, आपणी शरअ चलाइंदा। चौथा गुर हो मेहरवान, सन्त सज्जण रूप वटाइंदा। पंचम गुर मारे बान, तीर निराला नाम लगाइंदा। छेवां गुर गुरमुख सज्जण आप पछाण, आपणे गले लगाइंदा। छे गुर जगत बलवान, जगत विच टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन अन्त करे परवान, तिस गुर लेखे लाइंदा।

पहला उपदेश मात गर्भ, बिन मात पिता पढ़ाईआ। दूजा उपदेश जणाए अरब खरब, गणत गिण ना सके कोई राईआ। तीजा उपदेश बाली बुध मारे रमज़, आपणी रमज़ नाल मिलाईआ। चौथा उपदेश आवे समझ, विच संसार लए समझाईआ। पंजवें उपदेश मिल सतिगुर लभ्भे आपणे मरज़, सच दुआर वेख वखाईआ। साचा उपदेश गुर दा कहिणा मन्ने फ़र्ज़, आवण जावण विच ना आईआ। छेवें कुछ ना होवे हर्ज, अनमुल्लड़ी दात झोली पाईआ। जिस मार्ग सतिगुर देवे वरज, गुरसिख कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उपदेश उपदेश नाल मिलाईआ।

तेरां डयोढ़ पाउणी छत्त, इंच फुट्ट रूप बदलाईआ। अंदरे अंदर करना पक्ख, वाध घाट ना कोई जणाईआ। जिस

दर हरिजन चरन दए रक्ख, सो सतह दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाप गुरमुखां हथ्थ फड़ाईआ। प्रेम अन्तर प्रेम प्यार, हरि प्रीतम आप रखाइंदा। सुरती खिच्चे शब्दी धार, शब्दी धार बन्धन पाइंदा। दिस ना आए विच संसार, रूप रंग ना कोई वखाइंदा। डूँघी कंदर पावे सार, काया बंक वेख वखाइंदा। पूर्ब जन्म लहिणा कर्ज दए उतार, मानस जन्म लेखे लाइंदा। बिन बोलयां करे गुफ्तार, रसना जिहवा ना कोई हिलाइंदा। राती सुत्तयां वाजां मार, आलस निन्दरा विच टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। अंदरे अंदर नाम सतार, बिन तन्दी तन्द वजाईआ। जिस नूं लभ्भणे फिरदे बाहर, सो अंदर डेरा लाईआ। आदि जुगादि जन भगतां करदा सदा प्यार, थाउँ थाईं लए उठाईआ। लुकया रहे ना कोई हरिदुआर, रिखी केश ना मुख छुपाईआ। जिस वड़या अंदर आप निरँकार, तिस सज्जन लए मिलाईआ। आपे जाणे आपणा सच प्यार, प्यार प्यार विच रखाईआ। सिफ्त सालाही वसया बाहर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहारा इक्क वखाईआ। सच विहारा एका हद्द, हरिजन भगतां आप जणाईआ। इक्क दुआरा इक्क पद, एका घर वसाईआ। एका नाम एका नद, एका रिहा वजाईआ। एका लक्ख चुरासी विचों कढ्ढ, आपणे नाल मिलाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, एका करे पढ़ाईआ। इक्क जणाए परमानंद, निजानंद रसाईआ। एका जाणे लेखा बत्ती दन्द, रसना जिहवा नाल मिलाईआ। एका तोड़े फंदी फंद, फांदक कोई रहिण ना पाईआ। एका मेटे अन्धेरा अन्ध, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्यार प्यार नाल मिलाईआ। प्यार अंदर छड्डुया घर, मिल्या बाहर टिकाना। जिस नूं याद रहे कर, सो मिले श्री भगवाना। जिस दे कोलों रहे डर, सो देवणहारा दाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए सच निशाना। सच निशाना काया अंदर, हरि जू हरिजन आप जणाइंदा। पहलां बणे सरगुण मन्दिर, घर घर विच वेख वखाइंदा। बजर कपाटी तोड़े जंदर, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्यार प्यार इक्क वखाइंदा। प्यार अंदर प्रेम प्यारा, हरि प्रीतम नाउँ रखाईआ। प्यार अंदर पुरख नारा, जुग जुग संग निभाईआ। प्यार अंदर सुत दुलारा, प्यार अंदर पिता माईआ। प्यार अंदर भगत वणजारा, जग हट्टी इक्क वखाईआ। प्यार अंदर रवि ससि सितारा, मंडल मण्डप बैठे आसण लाईआ। प्यार अंदर भगत भगवन्त बणे भिखारा, जुग जुग आवे जावे वाहो दाहीआ। प्यार अंदर वेख्या हरी दुआरा, बन खण्ड फेरा पाईआ। बिन प्यार काया वसे जंगल जूह पहाड डूँघी गारा, निर्भय भयानक रूप वटाईआ। कर किरपा जिस जन देवे सहारा, आपणा प्यार इक्क समझाईआ। दे दरस करे काया ठंडी ठारा, सांतक

सति सति वरताईआ। जिस दा मरन दे पिच्छों लभ्भणा दुआरा, सो बिन मरयां लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी प्यार गंढु दवाईआ। प्यार अंदर प्यार गंढु, पीआ प्रीतम आप रखाइंदा। एका पाए साची ठंड, सति सति वरताइंदा। गुरमुख सुरत ना होए रंड, गुर शब्दी आप प्रनाइंदा। पंच विकारा करे खण्ड खण्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। जो जन गाए सुहागी छन्द, सोहँ सो आप दृढ़ाइंदा। एका देवे परमानंद, निजानंद रस चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्यार बन्धन प्यार नाता पुरख बिधाता आप चढ़ाइंदा।

पंज बणन सलाहकार, पंजां नाल मिलाईआ। पसौरा सिँघ दए अधार, सिँघ दिदार नाल मिलाईआ। महिन्दर सिँघ प्रेम विचार, सिँघ गुरनाम दस्से चाँईं चाईआ। गुरनाम सिँघ मिल सेवा करे अपार, साची ख़ुशी मनाईआ। पंचां नाल पंच प्यार, पंचम गंढु पुआईआ। पंज पंझी सेवादार, सेवक सेव वखाईआ। दर आए दरवेश निरँकार, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुण गुण विच दए वखाईआ।

★ ११ कत्तक २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

सचखण्ड हरी हरि मालक, अमुल बेपरवाहया। निरगुण सरगुण सदा प्रितपालक, पालणहार आप अख्वाया। जुगा जुगन्तर वेखे ख़लक ख़ालक, नूर नुराना नूर धराया। निराकार साकार बणे सालस, आप आपणा खेल खिलाया। निरवैर ना आए कदे विच आलस, निन्दरा रूप ना कोए प्रगटाया। अजूनी रहत एकँकारा इक्को ख़ालस, परम पुरख बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म खण्ड दुआर आप वड्याईआ। सचखण्ड वसे एकँकारा, अकल कल वड्याईआ। अलख अगोचर अगम्म अपारा, बेअन्त सच्चा शहिनशाहीआ। शाहो भूप बिन रंग रूप इक्क सिक्दारा, राजन राज वड वड्याईआ। हुक्मी हुक्म सच वरतारा, धुर फ़रमाना इक्क जणाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह श्री भगवाना, सचखण्ड दुआर सुहाइंदा। भूपत भूप राज राजाना, जगदीसर सोभा पाइंदा। अलख अगम्म हुक्म फ़रमाना, निरवैर पुरख जणाइंदा। दर दरबार इक्क सुहाना, सचखण्ड दुआर वड्यांअदा। दीपक जोत इक्क जगाना, निरगुण निरवैर डगमगाइंदा। दूसर संग ना कोई रखाना, इक्क इकल्ला सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनुभव आपणा रूप

वटाइंदा। अनुभव रूप हरि करतार, नेत्र नैण ना कोई जणाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपार, बेअन्त वडी वड्याईआ। वसणहारा धाम न्यार, साचा धाम रिहा सुहाईआ। करे कराए साची कार, करता पुरख नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप वटाईआ। आपणा रंग हरि करतारा, आदि जुगादि प्रगटाइंदा। वसणहारा धाम न्यारा, सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा। महल्ल अटल उच्च मुनारा, छप्पर छन्न ना कोई वखाइंदा। साचा मन्दिर इक्क दुआरा, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख इक्क इकल्ला इक्क वखाए सच महल्ला, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरा गया वस, सो पुरख निरँजण आप वसाईआ। हरि पुरख निरँजण आपे जाणे आपणा रस, रस रस आपणा वेख वखाईआ। एकँकारा खेल करे अलखना अलख, अलख अलख सच्चा शहिनशाहीआ। आदि निरँजण हो प्रतक्ख, नूरी जोत करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे बणे पान्धी राहीआ। श्री भगवान पन्ध मुकाए नस्स नस्स, चाल अवल्लड़ी इक्क रखाईआ। पारब्रह्म खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाईआ। आपे चलाए आपणा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। आपणा भेव आपे जाणे अकथना अकथ, लेखा लिख्त ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि लेखा जाणे सचखण्ड सच महल्ला,
१४२०
साची धार प्रगटाईआ। सचखण्ड महल्ला साची धार, हरि हरि आप प्रगटाइंदा। निहचल धाम उच्च अटल्ला, एका एक सोभा पाइंदा। आपे फड़ फड़ आपणा पल्ला, सगला संग निभाइंदा। जोती शब्द आपे रला, पूत सपूता वेस वटाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव आपे घल्ला, बंस सरबंस आप बणाइंदा। त्रैगुण अतीता हर घट आपे रला, पंचम आपणा जोड़ जुड़ाइंदा। आदि जुगादि अछल अछला, वल छल आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे आप बहाइंदा। सचखण्ड दुआर सुहावना, सोभावन्त करतार। आपणा खेल आप करावना, आदि जुगादी साची कार। शब्दी नाअरा इक्क सुनावणा, सुणे सुणाए सुनणेहार। विष्न ब्रह्मा शिव उठावना, हुक्मी हुक्म वरते वरतार। दो जहानां वेख वखावना, ब्रह्मण्ड खण्ड पाए सार। अवण गवण डेरा ढावना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए साची कार। साची कार करतारा, कुदरत आपणा खेल खिलाईआ। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, लक्ख चुरासी घाड़न घड़त घड़ाईआ। घट घट अन्तर कर पसारा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जुगा जुगन्तर वेखे विगसे वेखणहारा, आपणा नेत्र नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। जुग चौकड़ी पाए बन्धन, हरि सच्चा शहिनशाह। लेखा जाणे त्रिलोकी नंदन, दो जहान बण मलाह। सदा सहेला इक्क अकेला आप सुणाए साचा

छन्दन, नाउँ निरँकार नाम प्रगटा। आपे जाणे आपणा परमानंदन, घर घर विच रिहा समा। साहिब दयाल सदा बख्शंदन, बेपरवाह नाउँ अख्वा। आप चढ़ाए साचा चन्दन, जोती नूर कर रुशना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल करा। जुग जुग खेल कराइंदा, करता पुरख दयाल। निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा, भगत भगवन्त लाल निराल। सन्त साजन आप उठाइंदा, निरगुण सरगुण बण दलाल। आपणे रंग गुरमुख आप रंगाइंदा, आदि जुगादि अवल्लड़ी चाल। गुरसिख साची गोद बहाइंदा, सचखण्ड दुआरा सच्ची धर्मसाल। दूजा राह ना कोई वखाइंदा, वेले अन्त ना खाए काल। दर दर ना कोई फिराइंदा, जिस जन करे सदा प्रितपाल। लोचण तीजे सोभा पाइंदा, जोत नूराना बेमिसाल। घर चौथे सद बहाइंदा, इक्क इकल्ला चले नाल नाल। पंचम मेला मेल मिलाइंदा, आपे सुणे मुरीदां हाल। छेवें छप्पर छन्न छुहाइंदा, दीना बंधप दीन दयाल। सत्तवें सति सतिवादी रंग चढ़ाइंदा, गुरमुख वेखे साचे लाल। अठ्ठां तत्तां बन्धन आप तुड़ाइंदा, लेखा जाणे शाह कंगाल। नौंवे दर दर ठुकराइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दसवें वसे एका हरि, इक्क इकल्ला सच महल्ला वसाए आप मेहरवान। मेहरवान मेहरवान हरि मेहरवाना, मेहर मेहर समाईआ।

१४२१ आदि जुगादी धुर तराना, अनरागी राग सुणाईआ। गुर अवतार दे परवाना, लोकमात समझाईआ। अन्तर गायण इक्को गाना, एका अक्खर दए समझाईआ। एका ओट एका माणा, एका सीस जगदीस झुकाईआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, गुरदुआरा इक्क वखाईआ। एका हुक्म इक्क फ़रमाना, एका शहिनशाह सच्चा पातशाहीआ। एका जाणे आपणा भाणा, सद भाणे रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रंग आप वखाईआ। जुग जुग रंग पुरख समरथ, हरिजन साचे आप वखाइंदा। बिन रंगन रंगे नाम हथ्थ, हथ्थो हथ्थ लेखा आप चुकाइंदा। बिन करनी कीमत पाए कक्खों लक्ख लक्ख, लक्ख क्रोड़ी आप हो जाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, हरिजन साचे आप चलाइंदा। जुग चौकड़ी पन्ध पन्ध मुकाए नस्स नस्स, पान्धी आपणा राह आपणे चरनां हेठ दबाइंदा। जन भगतां पूरी करे आस, वेस अनेक आप वटाइंदा। काया मंडल पावे रास, गोपी काहन आप नचाइंदा। साहिब सुल्तान सदा वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। लेखा जाणे दासी दास, बण सेवक सेव कमाइंदा । अन्तिम करो बन्द ख़ुलास, फांदी फंद ना कोई जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन मेल मिलाइंदा। मेल मिलावा जुगो जुग, जुग करता आप कराईआ। जन भगतां कट्टे हउमे रोग, सोग दुःख ना कोई वखाईआ। नाम निधान चुगाए चोग, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। बिन तेल बाती जगाए जोत, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। नाम जपाए बिन रसना होंट, बत्ती दन्द ना कोई सलाहीआ। कर १४२१

किरपा कढ्ढे वासना खोट, जोग अभ्यास ना कोई वड्याईआ। आपणी हथ्थीं फड़ फड़ चढ़ाए साची चोट, चोटी एका एक वखाईआ। हरिजन हरि हरि रक्खे एका ओट, साची सिख्या सिख समझाईआ। नाता जोड़े ओत पोत, पूत पिता गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। सहिज सुभाउ हरिजन पाया, हरि हरि मीत मुरार। गृह बहि बहि मंगल गाया, घर मिल्या सांझा यार। मन मनका जिस भवाया, माया ममता कर ख्वार। हउमे हंगता गढ़ तुड़ाया, अमृत बख्शे ठंडी ठार। भगतां हरि गले लगाया, जगत दलिद्र रोग निवार। साचा सुख इक्क उपजाया, अन्तर मन्त्र सोहँ जै जैकार। सच संदेशा इक्क सुणाया, पुरख अगम्म हो त्यार। जुग जुग भगतां रक्खदा आया, रक्खणहारा विच संसार। मार्ग आपणा दस्सदा आया, निरगुण सरगुण लै अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन उभारे आप दयाला, दीनन दए वड्याईआ। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाला, लोकमात वज्जे वधाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाला, हरिजन साचे लए मिलाईआ। पूर्ब जन्म लेखा चुकाए विच जहाना, लहिणा कोई रहिण ना पाईआ। जिस जन बख्शे चरन ध्याना, सरन सरनाई दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१४२२ किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सदा सुहेला सिर रक्खे हथ्थ, भगवन भगतन दया कमाइंदा। अन्तिम मार्ग इक्को दस्स, एका राह चलाइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, नूरो नूर डगमगाइंदा। शब्द सनेहुड़ा देवे बिन पवण स्वास, हुक्मी हुक्म आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल हरि निरँकार, निरगुण आप कराईआ। जुग चौकड़ी जगत विहार, जुग करता वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलिजुग अन्तिम बैठा राह तकाईआ। राह तक्के परवरदिगार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण वेला आए सांझा यार, पीर पैग़म्बर देण ग्वाहीआ। मेरी हिरस मिटे अन्तिम वार, हवस होर ना कोए वधाईआ। धरनी फर्श दिसे गोर, पंखी ढोर रहे कुरलाईआ। ना कोई ज़र ना ज़ोरू ज़ोर, ज़ेर ज़बर होई हल्काईआ। प्रभ की बिध अवर की और, गति मित ना कोए जणाईआ। गुर पीर अवतार पा ना सके ठौर, लोकमात ठहर ना सके अन्त गए सफ़ा उठाईआ। निउँ निउँ निमस्कार करदे रहे दोए जोड़, सीस जगदीस झुकाईआ। सो साहिब कलिजुग अन्तिम आए दौड़, जिस दी ईद रहे मनाईआ। लक्ख चुरासी वेखे मिट्ठा कौड़, जगत शहीदी ना कोए पाईआ। जिस नूं लभ्भणे रहे ब्रह्मण गौड़, सो ब्रह्मण आया बिन पिता माईआ। जिस नूं कहिन्दे बुझौंदा औड़, गोबिन्द अमृत मेघ बरखाईआ। तिस साहिब लगाया पौड़, गुरमुख विरले रिहा चढ़ाईआ। लक्ख चुरासी आपणा बेड़ा आपे रही रोड़, खेवट खेट ना कोए मलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन १४२२

साचे संग रखाईआ। सगला संग हरिजन तेरा, तेरा तेरी धार वखाइंदा। तेरा पन्ध दुराडा आया नेरा, नेरन नेरा रूप वखाइंदा। तेरा चुकया झूठा गेड़ा, गेड़ा गेड़े आप भवाइंदा। तेरा वसया इक्को खेड़ा, पुरख अबिनाशी आप वसाइंदा। कलिजुग अन्तिम बन्ने बेड़ा, आपणे कंध उठाइंदा। हको हक करे नबेड़ा, हक हकीकत वेख वखाइंदा। हरिजन तेरा खुल्ल्हा वेहड़ा, जुग छत्ती पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल अन्तिम वेख वखाइंदा। छत्ती छत्ती खुल्ल्हा दर, खोल्हणहार निरँकारा। भगत भगवन्त लए फड़, करे खेल अपारा। आपणी करनी अंदर वड़, आपे पाए सारा। आपणी विद्या आपे पढ़, आपे देवे सच हुलारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए सच दुआरा। सच दुआरा एका बणना, हरि साचा सच बणाईआ। बिनां जननी हरिभगत आपे जनना, आपे बणे पिता माईआ। सचा बेड़ा आपे बन्न्हणा, बण मलाह सेव कमाईआ। आपणे मार्ग आपे चलणा, दूसर भेव ना कोए जणाईआ। आपणा आसण आपे मलणा, आपे साची सेज सुहाईआ। आपणी जोत आपे रलणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। आपणी गोत आपे फलणा फुलणा, हरिजन साचे नाल मिलाईआ। आपणे कोट आपे चढ़ चढ़ आदि जुगादि कदे ना भुलणा, अभुल नाउँ धराईआ।
१४२३ सन्त सुहेले आपे फड़ फड़ आपणा लेखा आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन दए आप वड्याईआ। भगतन वड्याई भगती दात, भगवन मूल रखाया। सच जणाई इक्को ज़ात, दूसर वण्ड ना कोए वंडाया। गुर गुर बध्धा साचा नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। कर किरपा खोल्हया ताक, आपणा मन्त्र नाम जपाया। निरगुण सरगुण बणया सज्जण साक, साचा बन्धन इक्क रखाया। पतित पापी करे पाकी पाक, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। हरिजन विके ना किसे हाट, करता कीमत आपे पाया। लोकमात जगत विछाउणा झूठी खाट, थिर कोए रहिण ना पाया। नाता तुट्टे माई बाप, भाई भैण ना संग निभाया। हरिजन मिलो जिस दा वड्डा प्रताप, ना मरे ना जाया। जिस दर कोए भुल ना कोए पाप, एका रंग समाया। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हाथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग आप रंगाया। आपणा रंग हरि करतार, गुरमुख आप रंगाईआ। जुग चौकड़ी सच विहार, बिवहारी आप वखाईआ। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, त्रैगुण अतीता वेस वटाईआ। ठांढा सीता वसे सच दरबार, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। भगतन मीता हो उज्यार, लोकमात वेस वटाईआ। हरिजन मेले आपणी वार, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भगवन भगती दए सालाहीआ। सच सलाही सच सलाह, हरि साचा सच जणाइंदा। नेत्र पेखो बेपरवाह, बेअन्त खेल कराइंदा। सभ दा नूरी इक्क ख़ुदा, नूर नुराना डगमगाइंदा। आदि १४२३

जुगादि ना होए जुदा, दूसर दर ना सोभा पाइंदा। चरन कँवल जो होए फ़िदा, फ़ितरत आपणी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हिरस आप मिटाइंदा। हरिजन मिटे झूठी हिरस, हरी हरि आप मिटाईआ। निहकर्मी करे तरस, कर्म कांड ना कोए वड्याईआ। लेखा जाणे अर्श फर्श, हरिजन साचे ल्ए तराईआ। बिन करनी देवे दरस, करनहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करया आपणा तरस, आपणी रहिमत नाल मिलाईआ। तरस नाल मिली रहिमत, रहिमान दया कमाइंदा। हरिजन रहे सदा सलामत, सलल आपणे रंग रंगाइंदा। धरत मात दी गोद बहाए कर अमानत, अन्तिम आपणे लेखे लाइंदा। गुर गोबिन्द दे के गया ज़मानत, पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा। मनमुखां वस्त मिली एका लाअनत, लहिणा सभ दा आप चुकाइंदा। बिन जाणयां करे पछानत, पहचान आपणी आप छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन उठे हरि बल धार, बल बावन आप समझाईआ। जुग जुग दा जगत प्यार, जुग करता भुल ना जाईआ। कलिजुग अन्त अन्त विहार, सतिजुग साचा राह चलाईआ। पूरन भगवन्त खेल अपार, बेअन्त वेख वखाईआ। भगत भगवन्त साध सन्त रहिण इक्क दुआर, गुरमुख गुरसिख नाल मिलाईआ। वरन बरन करे ख्वार, साची सरन इक्क निरँकार, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। पिछला लेखा मुक्के विच संसार, अगली बन्ने आपे धार, पारब्रह्म ब्रह्म दए समझाईआ। छत्ती छत्ती पार किनार, छत्ती छत्ती हरि विहार, छत्ती छत्ती होए त्यार, साढे तिन्न हथ्थ तेरी धार, रविदास चम्यार करे प्यार, लेखा लिख लिख इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा संग आप निभाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर एका रंग समाईआ।

थल्ले बैठयां जिथे आवे तेरा मुख, बत्ती दन्द करन सालाहीआ। ओथे रक्खणा भगतां रुख, रुक कदे ना जाईआ। दर दुआर उपजे सुख, सुख विच ख़ुशी मनाईआ। हरिजन बूटा जाए फुट, फुल फुलवाड़ी मात महिकाईआ। जगत जहान जीव जड़ देवे पुट्ट, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहार दए समझाईआ।

★ १८ कत्तक २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

इक पनाह एका ओट, एका घर समझाइंदा। एका नूर एका जोत, एका डगमगाइंदा। एका किला एका कोट, एका

मन्दिर सुहाइंदा। एका ओत एका पोत, एका बंस सरबंस जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप बंधाइंदा। एका ओट इक्क पनाह, एका घर समझाईआ। निरगुण सरगुण दए सलाह, साख्यात रूप धराईआ। निरवैर निराकार मलाह, अजूनी रहत सेव कमाईआ। अगम्म अगम्मड़ा पल्लू आपणा फड़ा, दिस किसे ना आईआ। भेव अभेद दए खुल्ला, बेऐब नाम ख़ुदाईआ। इक्क वखाए साचा राह, रैहबर बण सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लेख दए जणाईआ। एका लेख लेख करतारा, हरि सज्जण सच जणाइंदा। करे खेल अपर अपारा, भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण सरगुण खेल न्यारा, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। आपणी कल आपे कर पसारा, हरि जू आपे वेख वखाइंदा। आपणे मन्दिर कर उज्यारा, बंक दुआरी सोभा पाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दारा, शाह सुल्तान हुक्म जणाइंदा। हुक्मी हुक्म साची कारा, करता पुरख कार कमाइंदा। दर दरवेश बण भिखारा, घर घर आपणी अलख जगाइंदा। अलख अगोचर बेपरवाह इक्क इकल्ला बोल नाअरा, नरायण आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। सति सतिवादी सच विहारा, दोए दोए आपणा रंग वखाइंदा। निरगुण सरगुण कर प्यारा, प्रेम बन्धन एका पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१४२५ किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। आपणा पर्दा आपे खोल्ल, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। बिन रसना जिहवा आपे बोल, आपणा गुण आप समझाईआ। बिन कंडे तोले साचा तोल, तोलणहार सच्चा शहिनशाहीआ। बिन मृदंगे वजाए ढोल, नाम नगारा इक्क सुणाईआ। बिन मंग्गयां देवे वस्त अनमोल, बख्शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। बिन रुतड़ी हर घट अंदर जाए मौल, मौला आपणी खेल खिलाईआ। बिन अमर अमृत मेघ बरसे कौल, कँवल नैण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच पनाह इक्क समझाईआ। सच पनाह ओट इक्क, एका इक्क जणाइंदा। जिस दा लेखा कोई सके ना लिख, सो लिख लिख लेख समझाइंदा। जिस दा कोई ना जाणे देस, सो आपणा देस आप बणाइंदा। जिस दा कोए ना जाणे वेस, सो आपणा वेस धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची पनाह इक्क रखाइंदा। साची पनाह पुरख अकाल, पुनह पुनह निमस्कारया। आदि जुगादि दीन दयाल, शाह पातशाह सच्ची सरकारया। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, उच्च महल्ल अटल मुनारया। करे खेल खेल निराल, लेखा लिख्त विच ना आ रिहा। आपणा आपे करे हल्ल सवाल, दूजा अंक ना कोए बणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिला ल्या। खेले खेल पुरख अपारा, अपरम्पर वड वड्याईआ। निरगुण निराकार हो उज्यारा, निरवैर धार चलाईआ। जुग चौकड़ी दे सहारा, एका नाम ओट वखाईआ। अन्त वजाए ऊँच नगारा, थिर कोए रहिण

ना पाईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, घड़न भन्नणहार वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे हुलारा, गेड़ा गेड़े विच भवाईआ। हुक्मी हुक्म कर वरतारा, गुर अवतार सेवा लाईआ। साध सन्त दे दीदारा, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। जुग चौकड़ी पार किनारा, नव नौं चार रहिण ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम होया बेमुहारा, वाग हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। आदि मध्ध जो देंदा रिहा लारा, गुर अवतार ओट तकाईआ। लुकया रिहा सचखण्ड सच्चे दरबारा, जिस मन्दिर चढ़न कोए ना पाईआ। उच्ची कूक कूक गौंदे रहे वारा, नाउँ नाम नाम सालाहीआ। दोए जोड़ जोड़ करदे रहे निमस्कारा, पंज तत्त काया सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। साची खेल रक्खी हथ्थ, पुरख अगम्म वडी वड्याईआ। जुग चौकड़ी चलाया रथ, लोकमात वेस वटाईआ। नाम जणाई महिमा अकथ, शब्दी शब्द पढ़ाईआ। अमृत भण्डार अमोलक वथ, निझर झिरना इक्क वखाईआ। नेत्र लोचण खोल्ह अक्ख, प्रतक्ख रूप दरसाईआ। आपे सभ तों होया रिहा वक्ख, आपे घट घट रिहा समाईआ। आपणी वस्त आपणे अंदर रखी ढक, जिउँ भावे तिउँ गुर पीरां रिहा वरताईआ। जो आया सो कह कह गया अलखना अलख, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। नेत्र नैण मूंद कहिण नथ ख़सम हथ्थ, चारों कुण्ट कुण्ट भवाईआ। अन्तिम काया खेड़ा करया सभ दा भट्ठ, पंज तत तत तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा भेव छुपाईआ। निरगुण आपणा भेव छुपा, आदि मध्ध खेल खिलाया। गुर अवतार मात प्रगटा, नाम संदेशा इक्क सुणाया। पलक झलक दरस दिखा, दरदी दर्द मिटाया। अर्श फर्श काया कुरा पर्दा लाह, नूरो नूर डगमगाया। सति संदेशा दे सलाह, साचा मार्ग इक्क जणाया। आपे फड़ फड़ राहे पा, आपे लए भुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव ना किसे जणाया। आपणा भेव ना दिता दस्स, अनुभव आपणी धार चलाईआ। जिस नूं बख्शया चरन धूढ़ साचा रस, सो चरन कँवल बिगसाईआ। गुर अवतारां पूरी करी आस, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। बिन दीपक बाती जोत कर प्रकाश, जोती जोत जोत जगाईआ। बिन मन्दिर घर विच घर कर कर वास, आपणा घर समझाईआ। बिन मंडल पाए रास, गोपी काहन नचाईआ। बिन जिहवे रसन स्वास, बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। बिन नेत्र दिसे पास, रूप रंग रेख ना कोए वड्याईआ। हरि का नकशा कोई ना सके तराश, त्रैगुण बद्धी सर्ब लोकाईआ। जिस भावे तिस देवे प्रकाश, आपणी बूझ बुझाईआ। अन्त लहिणा रक्खे आपणे हाथ, समरथ वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कौल भुल ना जाईआ। आदि कौल कीआ इकरारा, अकल कल वड्याआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे सहारा, साची सेवा इक्क समझाया। सुत दुलारा कर

वणजारा, साचा वणज इक्क वखाया। त्रैगुण माया भर भण्डारा, त्रै त्रै मेला सहिज सुभाया। पंज तत तत शंगारा, निरगुण सरगुण बन्धन पाया। लक्ख चुरासी कर विहारा, घर घर रूप वटाया। नाद वेद शब्द धुन्कारा, हुक्मी हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। खेल कराया हरि निरँकार, आपणी किरत वखाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, घट घट जोत रुशनाईआ। गृह गृह शब्द नाद धुन्कार, साचे मन्दिर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे चले सच रज़ाईआ। आपे चले आपणे राह, आपणी दया कमाइंदा। आपणी वस्त आपणी झोली पा, आपे शुकर मनाइंदा। आपणा हुक्म आप सुणा, आपे हुक्मे कार कराइंदा। जुग चौकड़ी आपे बन्धन पा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वण्ड वंडाइंदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी आपे पन्ध मुका, गुर अवतार सेव कमाइंदा। अन्तिम लेखा सभ दा दए मुका, देणा कोए नज़र ना आइंदा। भाणा सहिणा इक्क समझा, अन्त संदेशा आप पुचाइंदा। एका ब्रह्म दए दृढ़ा, पारब्रह्म वण्ड वंडाइंदा। एका घर दए वखा, घर साचा आप सुहाइंदा। जिस घर वसे बेपरवाह, सो मन्दिर सोभा पाइंदा। साचे मन्दिर साचे भगत लए बुला, दूसर नेड़ कोए ना आइंदा। नव नौं चार शब्दी पल्लू रिहा फड़ा, आपणा मुख छुपाइंदा। कलिजुग अन्तिम चढ़या चा, पारब्रह्म ख़ुशी मनाइंदा। आपणा वेला वक्त सुहा, थित वार ना कोए वड्यांअदा। हरिजन साचे लए उठा, आपणी गोद सुहाइंदा। बिन भगतां किसे दा बणे ना पिता मां, सिर हथ्थ ना किसे टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग गुर अवतार दे सहार, लोकमात सेव लगाइंदा। लोकमात जो दे दे लारा, गुर अवतार सेव लगाईआ। आदि जुगादि बणया रिहा कुँवारा, कन्त कन्तूहल बेपरवाहीआ। नानक वर पाया एका वारा, लक्ख चुरासी गया समझाईआ। पुरख अगम्मा वसे सच दुआरा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। बिन तेल बाती दीपक कर उज्यारा, आदि जुगादि रुशनाईआ। बिन पवण ठंडा दरबारा, सीतल धार वहाईआ। बिन नारी करे खेल पुरख नारा, बिन कुक्खों सुत दुलारा शब्दी जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि खेल कराया, कलिजुग अन्तिम वार। चार जुग दा लहिणा वेख वखाया, आपे वेखे वेखणहार। हरिजन साचे लए उठाया, आप आपणी किरपा धार। सतिजुग साचा राह चलाया, निहकर्मी कर्म विचार। भगत भगवन्त लए मिलाया, एका मेला हरि दुआर। निरगुण हो हो फेरा मात पाया, करया खेल अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी सार। आपणी जाणे सार देवे पनाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इक्क जपाए निरगुण नाँ, सरगुण निरगुण रूप समाईआ। बिन हथ्थां पकड़े बांह, एका बन्धन रिहा वखाईआ। बिन जननी जन

१४२७

बणे पिता मां, बालक आपणी गोद उठाईआ। बिन थाउँ देवे थाँ, थान थनंतर आप सुहाईआ। बिन बिरख देवे ठंडी छाँ, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ। जन भगतां देवे सलाह, सलाहगीर नाल मिलाईआ। पंचम मेला मेल मिला, आपणा बन्धन पाईआ। गुरु चेला बण के सेव रिहा कमा, दिस किसे ना आईआ। जिस दा वेला सो लए सुहा, भुल्ले अभुल रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां एका हुक्म जणाईआ। उठो सिँघो कसो लंगोटे, हरि मातलोक विच आया। मच्छ कच्छ जो देंदा रिहा गोते, आपणा बन्धन पाया। बाले जिस नीहां हेठ दबाए कर कर टोटे, भेखी आपणा भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दए सुणाया। उठो सिखो फड़ो डांग, हरि आया निकल ना जाईआ। जिस नूं कहिन्दे स्वांगी रचदा रिहा स्वांग, सो आपणा वेस वटाईआ। जिस दी गुर पीर तकदे रहे तांघ, बिन तांघो दया कमाईआ। आपणे नाम दी आपणे नाल लै के आया कांग, बिन हड़ तों दए रुड़ाईआ। बिन डोरी पकड़े वाग, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। नेत्र खोल्ह जाणा जाग, वेला गया हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। उठो सिखो हरि जू लैणा घेर, हरि साचा सच जणाइंदा। जिस नूं कहिन्दे सिँघ शेर, सो शेर नज़र किसे ना आइंदा। जिस ने आपणा तन ढाह के कीता ढेर, लक्ख चुरासी ख़ाक मिलाइंदा।
१४२८ जुगा जुगन्तर आदि मध्ध करदा रिहा हेर फेर, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। बिन नेत्र आया नेड़, नैण आपणा आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप जणाइंदा। उठो सिखो लैणा फड़, हरि जू नठ्ठ किते ना जाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग सचखण्ड विच वड़ के जो मारदा रिहा तड़, कलिजुग अन्तिम फसया सच्चा माहीआ। कर प्रीती फड़ना लड़, लड़ छुट्ट कदे ना जाईआ। गुरसिख माणक मोती आपणे सीस जगदीस लए जड़, साचा ताज आप सुहाईआ। हरिसंगत बणे किला गढ़, चार कुण्ट दीवार इक्क वखाईआ। बिन तरकश तीर कमान, गुरसिख सूरा रिहा लड़, गुर अगे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहारा दए समझाईआ। सच विहार हरि करतार, कुदरत कादर नाल रलाइंदा। इक्क इकल्ला बणया रहे गंवार, बिन हरिभगतां हरि जू सोभा कदे ना पाइंदा। इक्क इकल्ला बणया रहे कंडा ख़ार, बिन गुरमुख पत्त डाल्ही फुल ना कोए महिकाइंदा। इक्क इकल्ला वसे धाम न्यार, बिन हरिभगतां साचा धाम ना कोए सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, लोकमात जोत धर, भगत भगवन्त लए फड़, साचा बणाए किला कोट गढ़, आपे वेखे उप्पर चढ़, त्रिलोकी निउँ निउँ सीस रही चरन धर, धरनी धवल ना कोए वड्याईआ। सच विहारा हरि निरँकारा,

सतिजुग धारा सति पुरख निरँजण आप चलाईआ। महाराज शेर सिँघ पंज तत्त कट्टण आया वगारा, तन छड्ड गया विच संसारा, जोत जगी अगम्म अपारा, शब्दी शब्द लगाया नाअरा, निरगुण आपणा नाउँ रखाईआ। मरन जम्मण तों वसे बाहरा, जन भगतां करे सदा प्यारा, बणया रहे दर भिखारा, दर दरवेश अलख जगाईआ। सत्तरां देवे इक्क सहारा, उँनी कत्तक सोहे दिहाढ़ा, गुरमुख वेखे साचा लाड़ा, आपणे दर ख़ुशी मनाईआ। जन्म जन्म जन्म लहिणा देण कर्ज़ उतारा, मकरूज करे खेल न्यारा, सबूत देवे विच संसारा, छत्ती जुग दा इक्क मनारा, छत्ती छत्ती बन्धन पाईआ। तिन्नां लोकां दए हुलारा, सोलां दस बण वणजारा, दस आपणी गंढु पवाईआ। हस्से रोवे खेल न्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, सत्तर सतिगुर अगे धर, धरनी धवल दए वड्याआ। निरभउ चुकाए भय डर, भव सागर पार कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन कीती देवे आपणा दान, दानी बण के मात आया।

१४२६ बिन याद रक्खया याद, सो विसर कदे ना जाईआ। बिन फ़रयाद सुणे फ़रयाद, अभुल भुल कदे ना जाईआ। बिन सन्त बणाए साध, आपणी साधना दए समझाईआ। बिन पिता लडाए लाड, बालक गोद बहाईआ। बिन भगती निहकर्मी कर्म कांड चों लए काढ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कर किरपा तारे आंढ गवांढ, जिस आपणा दरस दिखाईआ। कोटन कोटि साध सन्त दर दर घर घर आपणे काया भाण्डे रहे मांज, दिवस रैण घालण घाल घाल, अग्नी तन तपाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कलिजुग अन्तिम झूठी रक्खे ना किसे नाल सांझ, हिस्सा घर ना दूजे कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस मेलया तिस विछड़ कदे ना जाईआ। १४२६

★ श्री गुर नानक देव जी नूं सट्टां किस तरां लग्गीआं ★

कलिजुग अन्तिम गुर नानक लग्गी सट्ट, गुरमुख कोए नज़र ना आईआ। जिन्हां दे के आया नाम सति, नाम सति गए भुलाईआ। जिन्हां जणाई ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या कर पढ़ाईआ। जिन्हां अंदर रखाया धीरज सति, सतिवाद नींह रखाईआ। तिन्हां भुलया कमलापति, बैठे मुख छुपाईआ। मैं कह के आया कलिजुग आउणा पुरख समरथ, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जो सरनी जाए ढट्ठ, वेले अन्त लए बचाईआ। जो दर तों जाए नट्ठ, गुर नानक ना दए ग्वाहीआ। गोबिन्द आपणी लाई लेखे रत, गुरसिख रती मुल्ल ना पाईआ। घर घर आई मनमति, गुरमति गए भुलाईआ। आपणा बैठे सत्थर घत, यारड़ा सथर गए भुलाईआ। अन्तिम खेड़ा होणा भट्ठ, ना सके कोए बचाईआ। मैं दूई द्वैत मेट के आया फट, मेरयां सिखां मेरा

फट दिता चराईआ। मैं खोल्ह के आया साचा हट्ट, राम दास सेवा लाईआ। ओथे नफ़ा सके ना कोई खट, जो आए जाए पति गंवाईआ। मेरे प्रेम प्यार ज़ख़म उत्ते विकार लूण रहे घत, कुकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। जे कोई सच्ची देवे दस्स, अगों बैठे मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक निरगुण मिल्या हरि, हरि नानक रूप वटाईआ। नानक फट्ट लगा घा, घाओ सके ना कोए मिटाईआ। लोकमात आया बेपरवाह, परवाह ना कोए रखाईआ। जिस चलाए आपणे राह, सो राह गए भुलाईआ। अन्त कौण पकड़े बांह, बिन हरि ना कोए छुडाईआ। जो हरि गए भुल्ला, नानक गुर ना दए सफ़ाईआ। कलिजुग अन्त फट्ट लगा आ, मनमुखता आपणा वार रही चलाईआ। गुरमुख वेख चढ़या चा, सतिगुर नानक ख़ुशी मनाईआ। सिँघ गिरधार सेव रिहा कमा, जिस दी सार किसे ना पाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सीस आपणे लए उठा, बिन हथ्थां सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संदेशा आप जणाईआ।

★ १६ कत्तक २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

१४३० सचखण्ड वज्जी वधाई, हरि हरि खेल खिलाइंदा। जुलाहा उठे चाँईं चाँईं, कबीर ख़ुशी मनाइंदा। उठो भगतो लओ अंगड़ाई, एका हुक्म सुणाइंदा। जिस ने अन्त करी मेरी कुड़माई, सो साहिब वेस वटाइंदा। जिस नूं कह कह आए बेअन्त गोसाँईं, सो आपणी खेल खिलाइंदा। जिस ने लाज रखाई सैण नाई, शाह पातशाह सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाइंदा। कबीर जुलाहे चढ़या चा, नेत्र नैण उठाया। गंगा सागर जो मेरा बणया मलाह, बेड़ा मात तराया। जिस जपाया आपणा नाँ, अक्खर होर ना कोए पढ़ाया। अन्त कन्त जिस पकड़ी बांह, सो भगवन वेस वटाया। जिस दी मंगां छत्र छाँ, सो सीस जगदीस रिहा हथ्थ टिकाया। जिस दा गौंदा आया नाँ, सो आपणा नाउँ रिहा समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस वखाया। कबीर जुलाहया रिहा हस, आपणी ख़ुशी मनाईआ। ध्रू प्रहिलाद रिहा दस्स, बावन नाल मिलाईआ। बावन तेरे होया वस, तेरा साहिब सच्चा माहीआ। जुग जुग दी पूरी करे आस, निरास कोए नज़र ना आईआ। जिस नूं जपदे रहे स्वास स्वास, लिव अन्तर एका लाईआ। सो निरगुण हो प्रकाश, आपणी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सुनेहड़ा रिहा समझाईआ। कबीर जुलाहा रिहा बोल, अमरीक आप जणाइंदा। जिस दे पिच्छे जनक रिहा अडोल, सो जानणहारा वेस वटाइंदा। जिस कारन हरी चन्द कराए मखौल, बिदर आपणा रंग रंगाइंदा। सो बीर तेरा तोलणहारा तोल, जगत १४३०

दलिद्री गले लगाइंदा। जिस जै देव दिती वस्त अनमोल, सच भण्डारा आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा। कबीर जुलाहा कहे पुकार, उठ नामे वज्जी वधाईआ। जिस गाए दिती ज्वाल, सो गुसाँई फेरा पाईआ। उठ धन्ने सुरत संभाल, जट्ट जट्टां विच फेरा पाईआ। जिन शाहों करया कंगाल, सो शहिनशाह वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वखाईआ। कबीर जुलाहा पा पा फेरे, आपणी सेवा आप लगाईआ। आओ रविदास दे वसो नेड़े, जो पाहना गंढु वक्त लँघाईआ। जिन गंगा चुकाए झेड़े, ठग्ग ब्रह्मण बेड़ा पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। कबीर जुलाहा देवे सद्दा, एका हुक्म जणाइंदा। शाह पातशाह शहिनशाह इक्को लध्धा, दूसर ओट ना कोए तकाइंदा। जिस ने पार कराई हद्दा, सच दुआरा इक्क वखाइंदा। जिस दे हुक्मे अंदर बध्धा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। साचा भेव हरि जणा, एका नाद सुणाईआ। कबीर जुलाहे लैणा गा, गावन एका एक वखाईआ। पतित पापी दे समझा, अजामल वड्याईआ। गनका नाल दे रला, पूतना मेल वखाईआ। बधक लड़ दए फड़ा, फड़या लड़ छुट्ट ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप प्रगटाईआ।
कबीर जुलाहा सुण संदेसा, एका वार जणाईआ। जिस नूं करदे रहे आदेसा, सो साहिब हुक्म समझाईआ। जिस नूं मन्नया नर नरेशा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप समझाईआ। साचा हुक्म साची धार, हरि साचा सच जणाइंदा। आपणी दिशा आपे पावे सार, दूसर भेव ना कोए रखाइंदा। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कल आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा सांग आप वरताइंदा। सचखण्ड सोभावन्त, हरि साचे सच सुहाया। करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणा रूप वटाया। लेखा जाणे आदि अन्त, भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत लए समझाया। साचा भगत करे अरदास, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तेरी वस्त तेरे पास, दूसर अवर ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि करें पूरी आस, आसा आसा विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ सेवक मंग मंगाईआ। एका मंग दे दातार, कबीरा सीस झुकाइंदा। कलिजुग अन्तिम बण भिखार, अगे झोली डांहयदा। जे तेरा नाउँ लईए दुःख देवे संसार, सुख कोए नज़र ना आइंदा। मैं दस्स के आया किरपा करे सिरजणहार, जो जन ओट तकाइंदा। भुल ना जाणा बण गंवार, अभुल तेरे अग्गे वास्ता पाइंदा। कलिजुग तेरयां भगतां नाल करे खार, आपणा हुक्म मात वरताइंदा। तेरे रोवण

ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ साची मंग मंगाइंदा। वर दे दे मेरे भगवान, भगत दया कमाईआ। मैं मंगां सेवक दान, झोली अग्गे डाहीआ। हउँ पूत कपूत बाल अंञाण, ना कोई चले चतुराईआ। तूं दाता सुघड़ सुजान, तेरे हत्थ वड्याईआ। एका बख्श चरन ध्यान, दूसर नैण ना कोए मिलाईआ। आपणयां भगतां आप करीं पछाण, कलिजुग भगती कर कर थहु तेरा कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुण दए समझाईआ। साचा गुण हरि निरँकार, निरगुण निरगुण आपणा आप जणाया। जा के पुछ साचे मीत मुरार, जो सज्जण इक्क मनाया। सद मंगे चरन धूढ़ी छार, थले मस्तक आप टिकाया। एका गाए सति करतार, आपणी तार सतार हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कबीर जुलाहा मार्ग पाया। कबीर जुलाहे मार्ग ला, हरि हरि हुक्म जणाइंदा। नानक निरगुण कोलों पुछ सलाह, साचा संग वखाइंदा। जिस नूं पल्लू आया फड़ा, सो पल्लू ना मात तुड़ाइंदा। शब्द विचोला नाम भिखारी बण के आया मलाह, साचा बेड़ा इक्क रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड सच विहारा आपणा आप कराइंदा। कबीर जुलाहा निरगुण नानक पास, उठ उठ आपे जाईआ। दूरों कर डण्डौत अरदास, कर प्रनाम सीस झुकाईआ। हउँ सेवक हउँ दासी दास, हउँ चाकर चाकरी इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर आपणी ख़ुशी जणाईआ। निरगुण नानक कर प्यार, कबीर कबीर गले चुक्क लाया। आपणा दस्स सच विहार, कवण इच्छया इच्छया लए प्रगटाया। मेरा मित्र इक्क प्यार, साचा यार रिहा समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। कबीर जुलाहा रिहा दस्स, आपणी आस आस प्रगटाईआ। मैं तेरे दुआरे आया नस्स, दे मति इक्क समझाईआ। पुरख अबिनाशी एका गुण कह के गया हस्स हस्स, भेव अभेद छुपाईआ। बिन भगतां कदे ना होया वस, आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण दए वखाईआ। साचा गुण निरगुण नानक, नाना रूप समझाया। एको ओट एका आणत, एका हुक्म सीस रखाया। एका जाणे इक्क पहचानत, एका मेला मेल मिलाया। एका नाम देवे ज़मानत, वेले अन्त छुडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए चुकाया। एका नाम साची दात, निरगुण नानक आप जणाईआ। लेखा चुकाए लोकमात, आदि अन्त वड्याईआ। ना कोई ज़ात ना कोई पात, दीन मज़्ब ना कोए रखाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई साक, ना कोई सगला संग वखाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, ना सरोवर कोए वड्याईआ। ना कोई वणजारा ना दिसे हाट, वस्त अमोलक ना कोए रखाईआ। बिन

१४३२

हरि नामे कोए ना उतरे आपणे घाट, पार किनारा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। कबीर जुलाहा प्या रो, नेत्र नीर वहाया। लोकमात तेरा नाउँ कलिजुग ल्या खोह, हथ्थ किसे रहिण ना पाया। तेरे भगतां तेरे नाम पिच्छे देण कोह, वांग बकरे सीस कटाया। जेहड़ा सुणावे तेरा ढोआ ढो, तिस धक्का देण लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाया। कबीर जुलाहा मारे धाह, निरगुण नानक आप सुणाईआ। जो जन चले साचे राह, तिस कलिजुग दए सज़ाईआ। मैं कट्ट के आया पंज तत जगत चुरासी फाह, आपणा मूल मुकाईआ। धन्न भाग मेरा पल्ला ल्या छुडा, नाता तुट्टा जगत लोकाईआ। भुल के लोकमात कदी ना जां, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जे हुक्म दे भेजें आपणे थाँ, फिर भी बैठां मुख छुपाईआ। रसना नाल तेरा कदे ना लवां नाँ, अन्तर अन्तर आप ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। नानक कबीर देवे धीर, एका गुण समझाया। आ मिल मेरे छोटे वीर, पीरन पीर गले लगाया। मुख प्याला देवे सीर, अमृत रस चखाया। डोरी नाल बंध ज़ंजीर, आपणा बन्धन इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वक्त लए सुहाया। आ कबीर तेरा देवां साथ, नानक निरगुण आप समझाया। छत्ती जुग जिस दी गा गा आए गाथ, सो साहिब आपणे दर रिहा बहाया। जिस लोकमात चलाया राथ, रथ रथवाही खेल कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए मिटाया। नानक कबीर हो इक्टठे, प्रभ अगे सीस झुकाया। लोकमात वेखे तेरे मार्ग दस्से, जून अजून भवाया। तूं निरगुण सचखण्ड बह बह हस्सें, तेरा अन्त किसे ना पाया। तेरे भगत तेरा नाउँ लै लै लोकमात फसे, राज राजान देण सज़ाया। तेरे पिच्छे जंगल जूह उजाड़ पहाड डूँघी कंदर फिरदे नट्ठे, तूं आपणा मुख छुपाया। तेरे जीव करन ठट्ठे, डौरू डंका मगर लगाया। असीं कलिजुग अन्तिम वेख के आए, कोई ना उतरे पार बिन तेरे चरन ढट्ठे, एका तेरी ओट तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वर एका एक वखाया। पुरख अबिनाशी दयावान, आपणी दया कमाईआ। नानक निरगुण कर परवान, सच परवाना दए फड़ाईआ। तेरा मेरा इक्क निशान, एका घर झुलाईआ। आ आ भगत मिले भगवान, रूप अनूप आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन आपे पाईआ। आपणा बन्धन पाए भगवन्त, आपणी दया कमाईआ। कलिजुग आए अन्तिम अन्त, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण बणाए आपणी बणत, निरवैर कल धराईआ। लक्ख चुरासी वेखे जंत, घट घट फोल फुलाईआ। आपणा नाउँ आपणे कोल रक्खे आपे मंत, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप

१४३३

हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण आप वखाईआ। आपणा गुण आपे जाण, हरि निरगुण निरगुण आप जणाइंदा। कबीर जुलाहे कर ध्यान, तेरी कीती ना हरि उलटाइंदा। नानक निरगुण कर परवान, साचे दर सुहाइंदा। अन्तिम सेवा करे श्री भगवान, लोकमात वेस वटाइंदा। बिन नाम जपिआं आपणे करे पहचान, पूर्ब लेखा लेख वखाइंदा। बिन भगती देवे दान, दाता दानी आप वरताइंदा। भुलयां करे आप पहचान, अभुल भुल कदे ना जाइंदा। आपणा नाउँ रक्ख श्री भगवान, विष्नूं आपणी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाइंदा। नानक कबीर याद रक्ख, सचखण्ड दुआरे हरि हरि आप जणाईआ। कलिजुग अन्त होणा प्रतक्ख, निरगुण रूप अनूप धराईआ। जन भगतां करना आपे पक्ख, दूसर देवे ना कोए सज़ाईआ। हरिजन रुले ना कुल्ली कक्ख, दुःख भुक्ख ना कोए वखाईआ। बिन भगती खोल्हे अक्ख, आप आपणा दरस दिखाईआ। घर जा जा मार्ग देवे दस्स, आपणा नाम नाम जणाईआ। पुरख अबिनाशी आदि जुगादि आपणा कदे ना छड्डे हठ, औदां जांदा डेर ना लाईआ। जुग जुग विछोड़े आपणी किरपा जोड़े लोकमात करे इक्टठ, एका दर वखाईआ। जन्म जन्म दी रक्खे पत, गुर ज्ञान देवे मति, तत तत नाल मिलाईआ। आपणी लेखे लाए रत, फेर उपजाए डाल्ही पत्त, फुल फलवाड़ी आप महिकाईआ। नानक कबीर दोवें पए हस्स, शाह पातशाह तेरी वडी
१४३४ वड्याईआ। एथे ओथे असीं गाईए तेरा जस, दो जहान तेरी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १४३४
कर, आपणा खेल आप वरताईआ। नानक कबीर कर निमस्कार, आपणा शुकर मनाया। वाह वा तेरी कुदरत मेरे यार, तूं कुदरत विच समाया। तेरा नाउँ साडा मददगार, एका बैठे मंग मंगाया। तेरा खेल कौण जाणे करतार, तेरा अन्त किसे ना पाया। असीं सुते ठांडे दरबार, फेर सके ना कोए जगाया। जिउँ भावे तिउँ कर विहार, तूं साहिब सदा दयाल ठाकर बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी ख़ुशी आप प्रगटाया। आपणी ख़ुशी आप प्रगटा, आपणे घर सोभा पाइंदा। आपणा बंस आपे वेखां जा, आप आपणा हुक्म सुणाइंदा। पहलों छोटा पुत्त लवां मना, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा फेरा आपे पाइंदा। थिर घर साचे हरि जू आया, आपणी किरपा धार। आपणा मन्दिर आप खुल्हाया, आपे वेखे वेखणहार। साचा सूरा एका नज़री आया, जोद्धा सूरबीर बलकार। कल्गी तोड़ा जिस सीस टिकाया, महिमा अपर अपार। धुर फ़रमाना जिस सुणाया, उच्ची कूक कूक पुकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर करे सच प्यार। थिर घर वेख्या सुत दुलारा, पुरख अबिनाशी ख़ुशी मनाईआ। गोबिन्द लग्गा इक्क प्यारा, आपणा आप गया भुलाईआ। पुरख अबिनाशी दे सहारा, आपणी गोद उठाईआ।

उठया जोद्धा वड बलकारा, एका फ़तहि रिहा गजाईआ। तेरा डंका फड़या मैं परवरदिगारा, भुल्ल कदे ना जाईआ। तूं पिता तूं मात हमारा, हउँ बालक रूप सखाईआ। मैं इक्को जाणां सच विहारा, दूसर धार ना कोए बंधाईआ। तेरयां भगतां सदा प्यारा, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी गोबिन्द धार, थिर घर खेल खिलाया। पूत सपूत सुत दुलार, हउँ तोहे वेखण आया। तूं गहर गम्भीर वड्डा सरदार, सिदक सबूरी नाल भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चल दुआरे तेरे आया। गुरु गोबिन्द कहे बोल, एका बेनन्ती रिहा सुणाईआ। पिता पुत्तर संग वसे कोल, तेरी वड्डी ना कोए वड्याईआ। मैं कलिजुग अन्तिम वजा के आया ढोल, मेरा आउणा सच्चा माहीआ। जिस तोलणा पूरा तोल, नानक कंडा हथ्थ उठाईआ। आदि जुगादि रहे अडोल, डुल कदे ना जाईआ। जो नीहां थल्ले रक्ख के आया लाल अनमोल, आपणी सेव कमाईआ। जिस दे पिच्छे असीं करदे फिरदे घोल, दीन मज़्ह्ब पई लड़ाईआ। उह मेरा साहिब सदा अनभोल, अनभुलड़ी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मंगे एका वर, मेरा प्यार ना तेरी कोई चतुराईआ। मेरे नाल जे करना प्यार,
१४३५ लोकमात वेख वखा। तेरे भगत करन पुकार, घर घर बैठे रोवण मारन थाह। कलिजुग कूड़ होया सिक्दार, अन्तिम पकड़े १४३५
कोए ना बांह। मैं दुखियां दा दुख्यार, सुख आपणा जाणां कोई ना। जिन्हां उत्तों पूत सपूत आया वार, बण के ओनां दा पिता मां। कर किरपा पैज संवार, तेरे अगे मेरी निमस्कार, मैं पल्लू तेरा आया फड़ा। अन्त निहकलंक आए अवतार, जोद्धा सूरबीर बली बलकार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आपणी सच सलाह। सच सलाह देवे करतारा, साची बणत बणाइंदा। गोबिन्द तेरा खेल अपारा, निराकारा आप कराइंदा। सचखण्ड अंदर बणाया थिर घर दुआरा, तेरा महल्ल अटल सुहाइंदा। लोकमात होए उज्यारा, करे खेल अगम्म अपारा, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। घर विच घर कर त्यारा, सम्बल नाउँ खेल न्यारा, पुरख अबिनाशी पावे सारा, आप आपणा रंग रंगाइंदा। तेरे भगतां दए सहारा, तेरे सिखां करे प्यारा, साची सेवा आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संदेश आप सुणाइंदा। गोबिन्द बोल जैकारा, प्रभ अगे इक्क जणाइंदा। चार वरन मेरा सिख प्यारा, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। हिन्दू मुस्लिम ना कोए किनारा, शरअ शरीअत ना वण्ड वंडाइंदा। घट घट अंदर मेरी धारा, तेरा रूप घट घट नज़री आइंदा। लक्ख चुरासी तेरा पसारा, गोबिन्द खेल कराइंदा। जुगा जुगन्तर तेरा वरतारा, गुर अवतार सेव वखाइंदा। जो तेरा राह तक्के परवरदिगारा, तिस गोबिद मेल मिलाइंदा। गोबिन्द

नौं खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी वेखणहारा, आपणी वण्ड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, गोबिन्द धार प्रगटाईआ। लेखा जाणे अगम्म अपार, अगोचर वेखे सच्ची शहिनशाहीआ। नव नौं खोल्हे आप किवाड़, चार चार पर्दा लाहीआ। जन्म जन्म करे विचार, पूर्ब लेखा भुल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाउणा, हरि गोबिन्द आप जणाइंदा। तेरा लेखा आप मुकाउणा, लेखा आपणे विच समाइंदा। कलिजुग भेख अन्त मिटाउणा, कूड़ी क्रिया आप खपाइंदा। साचा मन्दिर इक्क जणाउणा, साचा राह चलाइंदा। साचा इष्ट इक्क प्रगटाउणा, पुरख अकाल मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आपे लाइंदा। गोबिन्द सेवा नौं खण्ड, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। नानक निरगुण मंगी मंग, चार वरन इक्क सरनाईआ। कबीर जुलाहे गाया छन्द, एका ओट तकाईआ। रविदास पाया परमानंद, निज आत्म कर रसाईआ। बल बावन टुट्टी देवे गंढु, आपणी गंढु आप बंधाईआ। तिन्न जुग कट्टया रंडेपा रंड, हरि कन्त नज़र ना आईआ। चौथे जुग मुक्कया पन्ध, लोकमात वज्जी वधाईआ। दीन दयाल होया बख्शंद, आपणे गले लगाईआ। सिँघ गुरदयाल चढ़या चन्द, दो जहान करे रुशनाईआ। लहिणा चुकाए गुजरी चन्द, शब्दी आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड वेख वखाईआ। सचखण्ड खेल अपारा, उन्नी कत्तक दिवस सुहाइंदा। पहलों लगा ओथे दरबारा, भगत भगवन्त दर बहाइंदा। नाल मिला गुर अवतारा, साचा संग रखाइंदा। मंगण मंग बण भिखारा, सभ अगे झोली डांहयदा। तेरा खेल आदि अन्त न्यारा, भेव कोए ना पाइंदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पिच्छों निरगुण ल्या अवतारा, सरगुण बह बह ख़ुशी मनाइंदा। गोबिन्द मिल्या सुत दुलारा, सम्बल आसण इक्क सुहाइंदा। साचे भगतां लाया अखाड़ा, पुरख अबिनाशी नाच नचाइंदा। साची सेवा सच दुआरा, सचखण्ड वासी लेखे लाइंदा। जिस दा बणया प्रसाद प्रसादी भोग लगाए विच संसारा, सो प्रसादि सचखण्ड गुर अवतार मंग मंगाइंदा। उँनी कत्तक पहलों कीआ एह विहारा, भेव कोए ना पाइंदा। एथे ओथे दो जहानां इक्क वरतारा, हरिसंगत तेरी रसद सचखण्ड आप पुचाइंदा। अग्गे नानक तोला बैठा बण वणजारा, आपणा छाबा अग्गे डांहयदा। पहली वार भरया भण्डारा, फिर मुक कदे ना जाइंदा। गुर अवतार करन निमस्कारा, लोकमात नैण उठाइंदा। प्रगट होया हरि करतारा, आपणा रंग आप वखाइंदा। सतिजुग साची बन्न्हे धारा, साचे भगतां आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सलाही सलाह रखाइंदा। आओ भगतो सचखण्ड वासीओ, हरि साचा सच बुलाइंदा। आओ कट्टो जम की फाँसीओ, फांदी फंद आप मिटाइंदा। आओ

मंडल बह बह पाओ रासीओ, हरि साची रास आप रचाइंदा। आओ धक्का देवो पंडत कांसीओ, जगत विद्या मूल चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भगत आप बुलाइंदा। आपणी किरपा कलिजुग धार, अन्त अन्त वखाईआ। सति सतिवादी कर प्यार, सति पुरखां लए बुलाईआ। सचखण्ड वेखे आप निरँकार, लोकमात ख़ुशी मनाईआ। पहलां सनेहुड़ा देवे आपणी वार, तार सतार ना कोए हिलाईआ। सिँघ पाल आए दुआर, एका धाम मिले वड्याईआ। सवरन सरनी ढह करे निमस्कार, प्रभ तेरी सच सरनाईआ। मनजीता नैण खोल्ह किवाड़, नैण नैणां नाल मिलाईआ। छोटे बाल्यां नाल करें प्यार, तेरी वड वड्याईआ। तेरा नीहां दा चुक्कया आपणे उत्ते भार, तेरी सेव कमाईआ। जगत जगदीश ल्या उठाल, आपणा हुक्म वरताईआ। जिन शाहों करे कंगाल, कंगालों शाह बणाईआ। जिस ने सुणया मुरीदां हाल, सो मुर्शद वेखे चाँईं चाईआ। नाल रलाया गुरदयाल लाल, आप आपणा रंग वखाईआ। पंजां हल्ल करे सवाल, पंचम अपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। आओ पंज दयो सलाह, हरि जू आख सुणाया। पहलां तुहानूं लिअ बुला, आपणा घर वसाया। पंजां आपणी डोर फड़ा, आपणा रंग चढ़ाया। चारे कुण्टां दवां बहा, चारे जुग वेख वखाया। पंजवां आपणी सेवा ला, साचा छत्र झुलाया। पिछला लेखा दयाँ मुका, वेद पुराण
१४३७ शास्त्र सिमरत कम्म किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम भेव रिहा खुल्हाया। नानक १४३७
गाया पंच परवान, पंच मिले वड्याईआ। पंचम दरगाह बैठे आण, पंचम पाया सच्चा शहिनशाहीआ। पंचम मिल्या राज राजान, शाहो भूप वडी वड्याईआ। पंचम देवे इक्क फ़रमान, धुर संदेशा आप सुणाईआ। पंचम ल्या कर परवान, प्रभ अगे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। पंच परवाना कर परवान, निउँ निउँ सीस झुकाया। तूं शाह पतशाह श्री भगवान, साचे तख्त सोभा पाया। हउँ बाले मंगीए दान, दाता दान देणा वरताया। लोकमात वेख मार ध्यान, गुरमुख तेरा राह रहे तकाया। तुध बिन करे ना कोए पछाण, जगत रंडेपा रिहा सताया। लक्ख चुरासी ना छुटे काण, जूनी जून ना कोए तुड़ाया। कर किरपा देणा माण, गुरसिख निमाणे गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देणी कर, हउँ एका मंग मंगाया। किरपा करनी आपणी ठाकर, ठग्गी ठग्ग ना कोए रखाईआ। कलिजुग वेखणा डूँगघा सागर, कूड़ी क्रिया भँवर रूप वटाईआ। चार वरन चार कूट कोई ना देवे आदर, दर दर घर घर पई लड़ाईआ। तेरे पिच्छे सीस कटाया तेग़ बहादर, आप आपणा भेंट चढ़ाईआ। तैनूं मन्नया करीम कादर, कुदरत भुल्ली तेरा राह मेरे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरिजन साचे

आप तराईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणी दया कमाइंदा। लोकमात खेल करां महान, भेव कोए ना पाइंदा। सति सतिवादी इक्क निशान, निरगुण आपणा आप प्रगटाइंदा। सतिजुग साचा बणे विधान, साची धारा आप रखाइंदा। एका हुक्म राज राजान, शाह पातशाह इक्क सुणाइंदा। लक्ख चुरासी मन्ने आण, लोकमात ना कोई अटकाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, एका घर वसाइंदा। एका भूमिका इक्क अस्थान, एका गीत गोबिन्द गाइंदा। इक्क सरोवर इक्क अशनान, एका दुरमति मैल धुआइंदा। एका नूर कोटन भान, जोती जोत डगमगाइंदा। एका नाद शब्द धुन्कान, एका रागी राग अलाइंदा। एका इष्ट देव भगवान, दूसर नज़र कोई ना आइंदा। जिस दे चरना हेठ कोटन कोटि राम करन प्रनाम, कोटन कोटि कृष्न सीस झुकाइंदा। जिस दा कोटन कोटि पीर पैग़म्बर सुणन कलाम, सो कलमा आप पढ़ाइंदा। जिस नूं कोटन कोटि करन सलाम, सो सही सलामत रूप वटाइंदा। जिस नूं आदि जुगादि मनमुख लगौंदे रहे इल्ज़ाम, सो आपणी अज़मत आप वखाइंदा। जो जुग जुग जन भगतां बणया रिहा ग़ुलाम, बण बरदा सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप जणाइंदा। साची धारा हरि करतारा, लोकमात टिकाईआ। आपणा गुण आप विचारा, जगत विद्या ना कोई पढ़ाईआ। सचखण्ड बणे इक्क दुआरा, नौं खण्ड पृथ्मी रुशनाईआ। मन्दिर मसीत पार किनारा, गुरदुआर ना कोई वड्याईआ। अठसठ तीर्थ ना कोई सहारा, साचा नीर ना कोई प्याईआ। बिन हरि नामे होया खारा, अमृत रस ना कोई वखाईआ। हरि का मन्दिर बणया बिन इट्टां गारा, बाढी कोए ना जड़त जड़ाईआ। लोकमात सच विहारा, पुरख अबिनाशी वेस वटाईआ। जन भगतां बणाए आप दुआरा, निरगुण हो हो सेव कमाईआ। पंचां मेल इक्क दुआरा, पूरी इच्छया आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पैज रक्ख रक्खे याद, हरि साचा सच सुणाइंदा। तुहाडे पिच्छे लोकमात सुण फ़रयाद, जन भगतां गले लगाइंदा। बिन नामे देवे आपणी दाद, आपणा नाउँ आप वरताइंदा। मेहरवान मेहरवान मेहरवान करे साचा लाड, आपणी गोद सुहाइंदा। लक्ख चुरासी विचों काढ, आपणे अंग लगाइंदा। मेल मिलावा मोहण माधव माध, साची सांझ आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी विचों लाध, हरिजन आपणा आप प्रगटाइंदा। साचा खेल हरि कराउणा, उँनी कत्तक वड वड्याईआ। बीस अठारां रंग रंगाउणा, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। लोकमात सोभा पाउणा, सच संदेशा रिहा जणाईआ। गुर अवतारां चल के आउणा, बण बण पान्धी राहीआ। कबीर आपणा संग वखाउणा, भगतां नाल मिलाईआ। चार वरन दर डेरा ढाउणा, झूठी किरपा दए खपाईआ। साचा मन्दिर इक्क बणाउणा, ना कोई वण्ड वंडाईआ। हिन्दू सिख ईसाई फड़ फड़ गले लगाउणा,

१४३८

बख्शे चरन सरन रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक लेखा पूर कर, बहत्तर भगत दए वड्याईआ। बहत्तरां देवे एका माण, हरिसंगत नाल मिलाया। बल तेरा इक्क मकान, लोकमात आप सुहाया। सतरां करे आप पहचान, सति सतिवादी पर्दा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाया। सत्तरां अंदर सति धार, सति सतिवादी आप चलाईआ। सत्तर सत्तर जन्म दा गेड़ निवार, आपणी गंढु पुआईआ। सत्तर सत्तर कुलां करे पार, नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग वेख वखाईआ। सत्तर सत्तर दए अधार, सति सन्तोख इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाईआ। सत्तर साता सिफ़रा मूल, हरि आपणा आप बणाया। सत्तरां अंदर सुत्ता बिन पावा चूल, पलँघ नज़र कोए ना आया। बिन बरखा बरखे फूल, आप आपणी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा आप चुकाया। साची सेवा करे गोबिन्द, पूरा करे कीता कौल इकरारा। भुल्ल ना जाए गुणी गहिन्द, सरसे तेरा अन्त किनारा। सत्तरां मंगी इक्को ओट हउँ गोबिन्द तेरी बिन्द, दूजा अवर ना कोई सहारा। मंगदे सेवा विच सागर सिन्ध, जिथे तेरा भेख न्यारा। सानूं वेख ना सके राजा इन्द, शिव आए ना चल दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे खेल अगम्म अपारा। गोबिन्द अन्त सुणाइंदा, निष्अक्खर आपे बोल। पुरख अकाल दी झोली पाइंदा, कीता सच्चा कौल। सरसा भेंट चढ़ाइंदा, रहिणा इक्क अडोल। अन्तिम मेला मेल मिलाइंदा, तोलां पूरा तोल। पुरख अबिनाशी नाल लिआइंदा, ना मारे कदे रोल। चरन प्रीती जो घोल घुमाइंदा, अन्तिम पर्दा देवे खोल्ह। सच दुआरे सोलां कला कृष्न नैण शरमाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अनमोल। खेल अवल्ला गुर गुर धार, आपणा आप जणाइंदा। पहलां सिख कर अरदास, गुर अगे सीस झुकाइंदा। कवण वेला करे बन्द ख़ुलास, नित नित तेरा अरदासा करया ना जाइंदा। मैं वसां तेरे पास, दूजा घर ना मोहे भाइंदा। वेले अन्त ना करीं निरास, एका मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर मेहर मेहर नज़र आप टिकाइंदा। पुरख अबिनाशी मेहरवान, गुर गोबिन्द विच समाईआ। गोबिन्द बण बण देवे दान, भेव कोए ना पाईआ। आपे पिता आपे पुत करे खेल श्री भगवान, वल छल खेल जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका हुक्म सुणाईआ। सच संदेशा गोबिन्द पूरा, गुर सतिगुर आप सुणाइंदा। तेरा अरदासा होए पूरा, वेला वक्त समझाइंदा। तेरे अंदर आए जोती नूरा, भेव कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बचन आप जणाइंदा। साचा बचन अन्तिम कौल, गुर गोबिन्द आप

१४३८

१४४०

जणाईआ। देवां वड्याई उप्पर धौल, धरनी भाग लगाईआ। पंज तत्त तेरे अंदर जाए मौल, आपणी खेल खिलाईआ। पुरख अबिनाशी आपणा अमृत देवे साची पाहुल, प्यावणहार नज़र ना आईआ। अठाई साल रहिणा अनभोल, अठाई कुण्डा नाल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी आपणा तोले फेर तोल, साचा कंडा हथ्थ उठाईआ। निरगुण सरगुण अंदर वजाए ढोल, मात पूत करे रुशनाईआ। तेरा पूत अरदासा करे ना किसे कोल, घर बैठा रहे सच्चा शहिनशाहीआ। सत्तरां रक्खे तेरा मूल, सति सतिवादी होए सहाईआ। एका बन्न के चल्लया असूल, असल आपणा विच छुपाईआ। कलिजुग अन्तिम मिले मासूल, चुंगीख़ाना तेरा गढ़ बणाईआ। जो तेरे सुत करे कबूल, तिस शाह पातशाह लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरसा किनारे दिता वर, सिँघ वीर ना जाणा डर, लोकमात तेरा उपजे पंज तत्त काया गढ़, गढ़ साचा आप बणाईआ। नारी रूप होए मिले वर, गुण अवगुण ना कोई जणाईआ। बिशन कौर नाम धर, सिँघ पूरन कुक्ख सुहाईआ। सत्तरां फड़ाए एका लड़, बसन्त कौर नाल वड्याईआ। जीवण सिँघ भुल्ला जाए तर, भुल्लयां मार्ग पाईआ। सिँघ जसबीर छोटा बाला लए फड़, टुटी गंढु वखाईआ। भगवान सिँघ देवे वर, ज़ात पात ना कोई रखाईआ। सिँघ हरभजन बन्ने लड़, बचन सिँघ मेल मिलाईआ। सिँघ अमरीक जाए तर, सिँघ मस्सा ख़ुशी मनाईआ। सिँघ सरैण मिल्या नर, इन्द्र सिँघ रंग चढ़ाईआ। सिँघ मोहण चुक्के डर, ऊधम सिँघ सिँघ रुशनाईआ। सिँघ गुरबचन तरनी जाए तर, तेजा सिँघ ख़ुशी मनाईआ। हीरा नंद मरनी ना जाए मर, सिँघ ईश्र गीत गोबिन्द अलाईआ। समुंद सिँघ मिले वर, मनी राम रंग चढ़ाईआ। हरबंस कौर एका अक्खर ल्या पढ़, अठ्ठे पहर ख़ुशी मनाईआ। सिँघ दलीप लगाई जड़, सिँघ दलीप होए रुशनाईआ। सिँघ करतार किरपा कर, मंगल सिँघ गोद बहाईआ। सिँघ हरबंस नुहाए साचे सर, सिँघ बलवन्त नाल मिलाईआ। सिँघ सवरन चुक्के डर, महिन्दर सिँघ भेव ना कोई रखाईआ। चरन सिँघ चरन सीस लए धर, बचन सिँघ बचन अमोलक एका गाईआ। मेला सिँघ ना जाए मर, दिदार सिँघ दरस चाँई चाँईआ। दलीप सिँघ लग्गी जड़, प्यारा सिँघ होई कुड़माईआ। माझे तेरी टुट्टी गंढी, अद्धी वण्ड तेरी झोली पाईआ। उँनी कत्तक जिस दा फड़या लड़, छुट्ट कदे ना जाईआ। पार किनारा देवे कर, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन साचा मेलया, सिँघ सीतल सीतल धार। अर्जन सिँघ आवण जावण चुक्या गेड़या, कर्म सिँघ कर प्यार। मुकंद सिँघ चाउ घनेरया, सिँघ दरबारा ना आए हार। भाग सिँघ वसे खेड़या, सिँघ मुखत्यार करे प्यार। सिँघ माधो गेड़ा गेड़या, सिँघ निरंजण करे उज्यार। सिँघ धन्ना ना ढाए ढेरया, हरबंस सिँघ देवे इक्क सहार। हरबंस सिँघ चुक्के मेरा तेरया, मेहर

सिँघ कर विचार। सरवण सिँघ लक्ख चुरासी विचों आप निखेड़या, आप आपणी किरपा धार। पुरख अबिनाशी बध्धा बेड़या, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारा। सच खेल हरि करतार, आपणी आप कराइंदा। कुलदीप कौर कर त्यार, सच सपुत्री नाल मिलाइंदा। सिँघ सेवा दए अधार, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। हरचरन सिँघ इक्क प्यार, हरि चरन सिँघ रंग रंगाइंदा। सतवन्त कौर उतरे पार, सिँघ पाल गंढु रखाइंदा। प्रीतम सिँघ वणज वपार, लाल सिँघ हट्ट विकाइंदा। मस्सा सिँघ कर श्रृंगार, ख्याल सिँघ जोबन आप हंढाइंदा। करे खेल सच्ची सरकार, साकी बण बण जाम प्यांअदा। साचा मन्दिर कर त्यार, साचे सज्जण सेव वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे मेल मिलाइंदा। मेल मिलावा हरि निरँकार, प्रकाश चन्द दए वड्याईआ। राम चन्द दए अधार, प्रेम चन्द नाल मिलाईआ। सिँघ शिव उतरे पार, गूढ़ा राम रंग वखाईआ। सिँघ बेला बेली बणया आप करतार, अंगरेज सिँघ आपणे रंग वखाईआ। ज्ञान चन्द डुब्बदा बेड़ा लाए पार, सिँघ सरदारा होए सहाईआ। अवतार सिँघ सच विहार, हरि साचा सच समझाईआ। हरदित सिँघ मिले आप निरँकार, बिन नेत्र दरसन पाईआ। सतरां नाल इक्क प्यार, सति सतिवादी आप रखाईआ। सत्तरां सत्तर सच विहार, साची सेवा बूझ बुझाईआ। छब्बी पोह उच्चे मन्दिर चढ़ मिनार, चुहत्तरां लए मात प्रगटाईआ। पंजां प्यारयां रहिणा ख़बरदार, शब्द संदेशा रिहा सुणाईआ। नाल रलाउणा सिँघ गिरधारा यार, तारा सिँघ मेल मिलाईआ। किशन सिँघ कर विचार, पल्लू सिँघ नाज़र हथ्थ फड़ाईआ। पंचां बाडीआं देवे प्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पंजे रखाए सलाहकार, लोकमात गुण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ।

★★ जेठूवाल दरवार ★★

★ १६ कत्तक २०१८ बिक्रमी भगत दुआर दी नींह दी इट्ट रक्खण समें शब्द ★

पाल सिँघ लल्लीआं वाले नूं सत्त साल पहलां इक्क रुपया दिता सी। उस नूं थल्ले नींह विच पूरन सिँघ दे मस्तक विचों लहू कढु के दब्बया अते बहत्तर भगतां दी याद विच सचखण्ड निवासी श्री पाल सिँघ जी, काका मनजीत सिँघ, काका जगदीश सिँघ, काका सवरन सिँघ, श्री गुरदयाल सिँघ जी दा जीवन दान दिता।

धरनी धवल सुण पुकार, हरि सतिगुर दया कमाईआ। मढ़ी गोर पावे सार, वेखे थाउँ थाईंआ। ज़ोर ज़र करे ख्वार,

लोकमात जगत लड़ाईआ। शाह पातशाह देवे हार, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। अन्त रोवण नारी नार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। धीरज देवे ना कोई विच संसार, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा समझाईआ। साचा हुक्म शाह सुल्तान, आपणा आप जणाइंदा। हरिसंगत सति कर ध्यान, साचा राह आप वखाइंदा। इक्को शब्द इक्क ज्ञान, दूजा अक्खर ना कोई पढ़ाइंदा। एका मन्दिर इक्क मकान, एका घर वखाइंदा। एका गुरु करे कल्याण, गुर शब्दी नाउँ प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाइंदा। साची धार साची नईआ, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। सति साल पिच्छों मंगया इक्क रुपया, जो सिँघ पाल हत्थ फड़ाईआ। कलिजुग नाता भैणां भईआ, पुरख अबिनाशी ना कोई ध्याईआ। नारी पुरख इक्क दूजे दीआं फड़ फड़ बईआं, जगत ख़ुशी रहे मनाईआ। अन्त सार कोए ना लईआ, जूनी जून भवाईआ। चित्रगुप्त कढ्ढे वहीआ, राए धर्म दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दए समझाईआ। एह धन माया झूठी छाया, लोकमात ना कोई वड्यांअदा। राज राजान जिस ने खाया, खा खा शुकर फेर मनाइंदा। सूरबीरां जिस सिर कटाया, सो रुपया हत्थ ना किसे आइंदा। जिस दे पिच्छे उच्ची कूक कूक प्रभ अबिनाशी गाया, सो अन्तिम खेह मिलाइंदा। जिस दे पिच्छे साध सन्त गुर पीर अवतार मनाया, वेले अन्त ना कोई छुडाइंदा। पुरख अबिनाशी कलिजुग अन्तिम आपणी दया आप कमाया, जगत माया गुरमुखां चरनां हेठ रखाइंदा। भगत दुआरे थल्ले दए चिणाया, उप्पर आपणी हत्थीं निशान लगाया ना कोई फेर बाहर कढाइंदा। सिँघ गुरदयाल दी झोली पाई त्रैगुण माया, जगत माया नाल वखाइंदा। प्रभ दी इक्को इक्क साया, जिस दा दिता सभ कोई पींदा खाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। जगत रोवे पुत प्यार, उच्ची कूक कूक कुरलाईआ। मां रोवे करे विचार, मेरा बाला नज़र ना आईआ। पिता कहे मेरा सरदार, मुड़ घर ना फेरा पाईआ। सज्जण कहिण साडा विछड़या यार, कवण बह बह मजलसां लाईआ। नारी रोवे नेत्र नैणां धार, छहबर इक्क वखाईआ। मेरी सेजा सुंञी होई विच संसार, अंगी अंग ना कोई रखाईआ। भैण भ्रावां करे प्यार, सिर दे खोवे केस, दर दरवेश बण बण आपणी जान रुलाईआ। अन्तिम सारे कहिण प्रभ अगे ना चले कोई पेश, आपणी हत्थीं अग्नी देण लगाईआ। कोई गणपति मनाए गणेश, कोई ब्रह्मा विष्न ध्याए ना सके कोई छुडाईआ। कोई गुर अवतारां करे आदेस, कोई पढ़ पढ़ थक्के वेद, पुराण अठारां कोई गाईआ। कोई कहे पांधे मेरी पत्तरी वेख, मेरी मिटदी जाए रेख, मेरा लेखा कवण मुकाईआ। कोई कहे मेरा होए सहाई, विष्नूं बाशक सुता शेष, अष्टभुज जगत भवानी मेरी वाग भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। कोई कहे तारे भगत, सन्त अगे सीस झुकाइंदा। कोई कहे गुरु तारन आया जगत, फड़ चरनां ओट तकाइंदा। कोए कहे वेद दस्से साचा मंत, मनवन्तर भेव खुल्हाइंदा। हरि का भेव सदा बेअन्त, आदि अन्त ना कोई जणाइंदा। बिन नारी रोवे कन्त, कन्त नार बिनां कुरलाइंदा। सदा सहेला इक्को सन्त, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग मार्ग आप समझाइंदा। पुत्तर पिच्छे रोवे जग, आपणी जाग खुल्हाईआ। पुत्तर पिच्छे सड़न काया अग्ग, अग्नी अग्ग वधाईआ। पुत्तर पिच्छे कहिण तुट्टा तग, नाता जगत नज़र ना आईआ। पुत्त दा मुख ना वेख्या रज्ज रज्ज, अन्त रोवे बुढी माईआ। आपणी हथ्थीं उत्ते पर्दा देण कज, मिल भाईआ देण नुहाईआ। जेहड़ी नार रखौदी रही उसदी लज, सो जहां ना संग निभाईआ। आपणा कन्त हरि जू छड्ड, जगत वेसवा रूप वटाईआ। जन भगतां विचों होए अड्ड, ना सके फेर मिलाईआ। काम क्रोध दी डिगी डूँघी खड्ड, अन्धेरा सके ना कोई मिटाईआ। बालण होया हड्डीआं हड्ड, चिखा तृष्ना रूप जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाईआ जिस पुत्तर दा करो प्यार, सो कम्म किसे ना आया। जिस सज्जण दी करो विचार, सो सज्जण पल्लू लए छुडाया। जिस कन्त दा कहो सहार, सो कन्त देवे धक्का लाया। अन्त बेड़ा ना पार ना उरार, मँझधार वेख वखाया। चार जुग डुब्बदा रिहा संसार, गुरमुख विरला पार कराया। कलिजुग आई अन्तिम वार, पुरख अबिनाशी होए सहाया। कबीर जुलाहे सुण पुकार, लोकमात फेरा पाया। नानक गोबिन्द पैज संवार, हरिजन साचे लए उठाया। अठ दस कर ख्वार, अठारां सिद्धां मेट मिटाया। नौं नौं दए पार उतार, आप आपणी नईआ इक्क चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झूठा संसा दए चुकाया। वीह सौ दस बिक्रमी सोलां मग्घर, हरि ख़ाक वण्ड वंडाईआ। उँनी कत्तक आपणी पूरी करके सधर, आपणी ख़ुशी मनाईआ। लेखा जाणे नौं खण्ड खण्ड भद्र, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची ख़ाक आपणे हथ्थ रखाईआ। सिँघ मनजीत तेरी ख़ाक, अठ साल गंढु रखाईआ। सिँघ जगदीश तेरी राख, सत्त साल वण्ड वंडाईआ। धरत मात तेरी इच्छया भाख, जगत माया गुरसिख झोली पाईआ। आपणा वेला रक्खया आपणे हाथ, ना भेव किसे समझाईआ। सिँघ गुरदयाल विक्या साचे हाट, करता कीमत आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लहिणा दए मुकाईआ। पूर्ब लहिणा ढाई करमां वण्ड, बल बावन खेल खिलाया। कलिजुग अन्तिम चढ़या चन्द, बिन चन्द होए रुशनाया। पुरख अबिनाशी सदा बख्शंद, आपणी बख्शिश दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

सच दिहाढ़ा रिहा सुहाया। सच दिहाढ़ा ढाई मुठी ख़ाक, धरनी ख़ाक विच दबाईआ। छत्ती जुग दा टुटा नात, फिर नाता दए जुड़ाईआ। जन भगतां बणया सज्जण साक, सगला संग तजाईआ। जिस दा करदे रहे पूजा पाठ, सो बण के पाठी गुरसिख तेरी बाणी आप अल्लाईआ। तेरे पिच्छे आपणा पूरा करे घाट, हरिसंगत अग्गे झोली डाहीआ। सत्तरां देवे साचा साथ, गोबिन्द सत्थर नाल मिलाईआ। करनहारा करके जाए पूरी आस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साची ख़ाक नीहां हेठ दबाईआ। साची ख़ाक साची धूढ़, धूंआँधार मिटाइंदा। लक्ख चुरासी कट्टया जूड़, झूठा बन्धन मात तुड़ाइंदा। चतुर सुघड़ बणाया मूर्ख मूढ़, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कर किरपा देवे जोती नूर, नूर नूर नाल मिलाइंदा। जिस घर जाए साहिब ग़फ़ूर, साचा ज़हूर आप वखाइंदा। मूसे तक्कया जल्वा उत्ते कोहतूर, नूरी जल्वा एका वार वखाइंदा। गुरसिखां आत्म करके जाए भरपूर, भरया भण्डारा आप वरताइंदा। जिस नूं कहिन्दे रहे नेड़े दूर, सो ज़रूर फेरा पाइंदा। जुग चौकड़ी बणया रिहा मफ़रूर, हथ्थ किसे ना आइंदा। साध सन्त लोकमात सफ़र कटदे गए ज़रूर, पान्धी पन्ध ना कोए मुकाइंदा। कलिजुग अन्तिम मन वासना मचाया फ़तूर, फ़तवा
१४४४ कोए ना मेट मिटाइंदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद अंदर वड़या ग़रूर, गुरबत कोई ना अवर जणाइंदा। किसे ना आया सच शऊर, साची सिख्या ना कोए समझाइंदा। मुला काज़ी शेख़ मुसायक रसना कहिण अगे मिले हूर, हूरां विच सर्ब रुलाइंदा। १४४४
मुहम्मद अन्त बख़्शावे आपणा कसूर, दिवस रैण सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची धार पुरख अबिनास, आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, सतिजुग राह चलाईआ। उन्नी कत्तक पिच्छों गुर अवतार ना सुणे कोई अरदास, कीती अरदास सभ दी बिरथा जाईआ। मन्दिर मस्जिद मठ शिवदुआले होण निरास, बैठण ढेरी ढाहीआ। प्रभ इक्को वार सद्द लए पास, पिच्छे फेर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा दए मुकाईआ। जिस मुकाया पिछला लेखा, सो साहिब नज़र ना आइंदा। भुल्ले फिरदे धारी केसा, मूंड मुंडाया मुख भवाइंदा। सभ दा होया ख़ाली ख़ीसा, राज राजान सर्ब कुरलाइंदा। कलिजुग वेसवा बण बण कराया पेशा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश घर घर विभचार वखाइंदा। जिस मन्दिर अंदर रक्खया गणपति गणेशा, तिस अंदर नारी पुरख संग वखाइंदा। जिस गुरदुआर अंदर रक्खया भरवासा, तिस घर ग्रन्थी बच्चीआं संग करन हासा, हासा हरि कदे ना भाइंदा। जिस अंदर राम कहिण प्रकाशा, तिस मन्दिर होए भोग बिलासा, पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा। जिस मस्जिद मुहम्मद कहिण देवे दिलासा, तिस मस्जिद अंदर मुला मेल ना कोई कराइंदा। वेखण आए साहिब गुणतासा,

सो आलमगीर फेरा पाइंदा। चार जुग चौकड़ी गुर अवतारां भगत भगवन्त वेखदा रिहा तमाशा, हुक्मी हुक्म हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सच दुआरा आप बणाइंदा। सच दुआरा जाए बण, हरि आपणी बणत बणाईआ। सेवा करन गंधर्ब गण, दर दर फेरी पाईआ। धन्न वड्याई जननी जिस भगत जन जणे जन, लोकमात मिली वड्याईआ। हरि संदेशा सुणया कन्न, रागी राग भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा दए वसाईआ। सच दुआरा नींह रक्ख, आपणा खेल कराइंदा। निरगुण निरगुण हो प्रतक्ख, सरगुण आप समझाइंदा। सचखण्ड दुआरे जिस जाणा वस, सो नाता मोह चुकाइंदा। पिता पुत मात सुत चिखा उप्पर रक्ख, ख़ुशी ख़ुशी फुल्ल चढ़ाइंदा। तेरी वस्त तेरे हथ्थ, साचा शुकर मनाइंदा। जे कोई नेत्र रोवे अथ्थ, दरगाह साची धाम ना पाइंदा। तिन्नां लोकां छत्ती जुग मनारा बणा के करे चठ, उप्पर आपणा आसण लाइंदा। हरि का मन्दिर ना जाए ढढ्ढ, सभ दी जड़ आप उखड़ाइंदा। सत्तर जन करना इक्टठ, दर साचे आपे मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा लेखे पाइंदा। सत्तर सिख सेवा जाण लग्ग, हरि साचा आप लगाईआ। करे खेल सूरा सर्बग्ग, बेअन्त बेपरवाहीआ। सतिजुग साचा बन्ने तग, साचा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

१४४५
आपणी किरपा कर, एका हुक्म सुणाईआ। सत्तर सिख सत्तर इट्ट देण उखेड़, चार कुण्ट जो आप बणाया। चार कुण्ट भिड़े भेड़, वाह वा खेल वखाया। गुरमुखां हथ्थीं छेड़ां छेड़, आपणा मुख छुपाया। पहलों आपणा तन कीता ढेर, फेर गुरसिखां नाल मिलाया। सिँघ हो के प्रगटया शेर, डंका शब्द सुणाया। जुग जन्म दे लयांदे घेर, आपणा मेल मिलाया। मिल्या मेल ना सके कोई नखेड़, एका बन्धन पाया। छत्ती जुग दा चुक्या फेर, छत्ती छत्ती रंग वखाया। बिन हथ्थां बांहवां होया दलेर, आपणा काज रिहा रचाया। जन भगतां बहत्तरां मिल्या पहली वेर, पहला सगन मनाया। पुरख अबिनाशी हो दलेर, आपणा पल्ला भारा आप कराया। बिन भगती कीती मेहर, बिन नामे नाम झोली पाया। ना कोई करया हेर फेर, गोबिन्द विचोला नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, भगत दुआरा विच संसार, साची नींह दए धराया।

हरिभगत तेरा चिटा रंग, आदि जुगादि रखाया। एह काग़ज़ होया बरंग, लोकमात ना कम्म किसे आया। एह माया तुट्टा संग, झूठा मोह चुकाया। जिस दे पिच्छे कट्टदे रहे पन्ध, सो पान्धी बण के फेरा पाया। जिस दे गौंदे रहे छन्द,

अज भगतां ढोला रिहा सुणाया। जिस नूं कहिन्दे वसे पुरी अनन्द, अनन्द गुरमुख हिरदा रिहा बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा रिहा चुकाया । पहला लेख चुकाया, कर किरपा हो मेहरवान। गोबिन्द सेवा लाया, दिते बाली बलीदान। आपणा तन गया छुपाया, मिल्या जा भगवान । पुरख अबिनाशी खेल रचाया, कलिजुग मेले अन्तिम आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल वाली दो जहान। बाल्यां रत कढ्ढी बाहर, सचखण्ड दुआर बणाया। शिव जी तख्तों दिता उतार, इन्दर धक्का लाया। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, नैणां नीर वहाया। विष्नूं आया बण भिखार, हरि दुआरे फेरा पाया। जुग चौकड़ी करन पुकार, बैठे सीस झुकाया। भगत भगवन्त बण भिखार, ख़ाली झोली रहे जणाया। धन्न भाग कलिजुग अन्त निहकलंक वेस वटाया करया खेल अगम्म अपार, गोबिन्द लेखा रिहा चुकाया। आप आपणा दस्स विहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाया। भगत फ़कीर सूफ़ी सन्त, लोकमात कष्ट गए उठाईआ। खल्ल लुहाई बण जंत, जीव वेखे लोकाईआ। अन्त कह गए हरि जू तेरी महिमा अगणत, भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए मुकाईआ। गुर अवतारां दिता काया दान, लोकमात सेव कमाईआ। गुरु गोबिन्द सिँघ दे के गया बाल नाधान, आपणा तन आप उठाईआ। अन्तिम सभ दी आण करे कल्याण, चार जुग दे विछड़े मेल मिलाईआ। आपणी रत देवे बलीदान, ब्रह्म मति इक्क समझाईआ। जिस माया कीता बेपछाण, सो माया आपणे रंग वखाईआ। खेले खेल नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। सतिजुग बन्ने इक्क निशान, पुरख अकाल नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विधान लए बणाईआ। सच विधान पंचम बाडी, एका हुक्म जणाया। भगतां पिच्छे तन ख़ाक रुलाया हाडी, भस्मी भस्म समाया। पोतरा अक्खीं ना वेखे दादी, पिता पूत ना रंग रंगाया। हरिजन तेरी सुणी फ़रयादी, फ़रयादी बण के हरि जू आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर दए बणाया। साचे मन्दिर लाई रत, रती रत रंगाइंदा । भगतां देवे इक्को मति, एका गुण समझाइंदा। जिस नूं कहिन्दे गए भगवान हुंदा वस, सो हो के वस वखाइंदा। जिस नूं कहिन्दे जुग जुग भगतां मार्ग देवे दस्स, सो साचा राह चलाइंदा। जिस नूं कहिन्दे पैंडा मुकौंदा नस्स नस्स, सो पान्धी दर दर फेरा पाइंदा। जिस नूं कहिन्दे पूरी करे आस, कलिजुग अन्तिम आसा पूर कराइंदा। जिस नूं कहिन्दे करे बन्द ख़ुलास, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाइंदा। जिस नूं कहिन्दे निरगुण जोत प्रकाश, सो निरगुण नूर डगमगाइंदा। जिस नूं कहिन्दे सद वसे पास, सो आपणा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, बण

सेवक सेव कमाइंदा। सेवा करे जोत निरँकारी, निरगुण वेस वटाया। गुरसिख तेरे प्रेम दी चुक्के तगारी, सिर आपणे भार उठाया। तेरे कर्म दी कांडी फेरे आपणी वारी, वार हथ्थ ना किसे फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द चाढ़े एका रंग, रंग रंग नाल मिलाया। गोबिन्द रंग भगतन धार, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। आपणी दिशा आप विचार, आपे नींह रखाईआ। धरत माता मुरदयां कोल जो रक्खदी रही उधार, सो रप्पया एका वार झोली पाईआ। मुड़के फेर ना करे कोई ख्वार, ख्वारी सभ दी दए मिटाईआ। सच महल्ला इक्क उसार, शब्द अटारी लए बणाईआ। जो जन करके जाए दरस दीदार, जन्म मरन दुःख रहि ना जाईआ। अंदर वड़ दूजी करे ना कोई गुफ्तार, एका चरन ध्यान लगाईआ। छब्बी पोह दस्से सच विहार, जिस कारन दुआरा ल्या बणाईआ। सेवा करे पुरख नार, नार पुरख आपणा रूप वटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचां मिस्तरीआं देवे दान, नींह उत्ते रक्खो निशान, बिन नेत्रां वेखे भगवान।

पहली इट्ट दयो ठोक, हरि ठोकर जगत लगाइंदा। दूजा भाणा ना सके कोई रोक, दो जहानां वेख वखाइंदा। तीजे तिन्नां लोकां सुणाए सलोक, सोहँ ढोला एका गाइंदा। चौथे चारे कुण्टां देवे मोख, जो जन सरनाई आइंदा। पंचम बख्शे एका ओट, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कर प्रेम कढुणा खोट, खोटी क्रिया सर्ब मिटाइंदा। हरि भण्डारा दए अतोट, अतुट्ट आप वरताइंदा। आलणिउँ डिगे उठाए बोट, आपणी गोद बहाइंदा। भगतां दुआरे हरिभगत जगी जोत, जगी जोत ना कोए बुझाइंदा। छत्ती जुग दा पहला कोट, किला कोट सर्ब ढांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्तर बहत्तर कर इकत्तर, शत्रु मित्र एका रंग वखाइंदा।

१४४७

शत्रु मित्र होए इक्टठे, वाहवा रंग रंगाया। मन वासना अगे मन ढट्ठे, गुर चरनी सीस निवाया। इन्दर सिँघ पहलवान गुरसिख तेरे पट्ठे, गुरज तेरे हथ्थ रखाया। घर कूक कर इक्टठे, एका हुक्म सुणाया। हरि के खेल मट्ठे मट्ठे, जुग चौकड़ी छिन भंगर पार कराया । सतिगुर सरनाई जो जन ढट्ठे, ढेरी ख़ाक ना कोए बणाया। कोई लोड़ ना रक्खे कफ़न लट्ठे, आपणा दोशाला उप्पर पाया। काहनी बण ना कोई चुक्के, सतिगुर आपणी सेव कमाया। मरन तों पहलों गुरसिख मुक्के, मरन सतिगुर झोली पाया। अन्त निशानउँ जो जन उक्के, दरगाह मिले ना कोई थाँया। गोबिन्द बूटे बिन गोबिन्द सुक्के, नज़र आए ना कोई छाया। मुहम्मद ख़ाली दिसण हुक्के, नड़ी हथ्थ ना कोए फड़ाया। पंडत पत्तरी आपणी सुट्टे, साचा सगन

ना कोए मनाया। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी एका उठे, सभ दा माण गंवाया। ग़रीब निमाणयां उप्पर तुट्ठे, कर किरपा मेल मिलाया। आप जगाए कलिजुग सुते, रातीं सुत्तयां लए उठाया। नंगी पैरीं जाए अग्गों पैण कुत्ते, हौली हौली कुत्तयां कोलों मुख छुपाया। औदां जांदा गवांढी कोई ना तक्के, हरि जू कवण कूटे फेरा पाया। गुरसिख उठाए आपणे बच्चे, आप आपणे गल लगाया। दर आयां रंग ना वखाए कच्चे, रंग एका नाम रंगाया। एथे उथे दो जहान सच्चे, जिन हरि जू दर्शन पाया। मन्दिर मकान ढह जाण कच्चे पक्के, थिर कोए रहिण ना पाया। पीर पैग़म्बर छड्ड गए मदीने मक्के, साचा हुजरा ना किसे सजाया। राम राम पैंडे सभ दे मुक्के, पान्धी आपणे पन्ध रखाया। कोटन कोटि कृष्न काहन बण बण मुक्के, हरि का अन्त किसे ना पाया। नानक निरगुण ओट एका उत्ते सुट्टे, घर आपणे ख़ुशी मनाया। कबीर कहे अबिनाशी अचुते, ना मरे ना जाया। गोबिन्द कहे सुहाए मेरी रुत्ते, मेरा बूटा मात महिकाया। कूड़ विकारा जड़ आपे पुट्टे, आपणा धक्का लाया। मेरा तन मेरा धन मेरा जन आपणे भगतां दी नींह हेठां सुट्टे, उत्ते सच महल्ल वसाया। गोबिन्द गुरसिखां हेठां सदा रहे सुत्ते, आलस निन्दरा ना कोए जणाया। वेखे खेल अबिनाशी अचुते, आपणा खेल रचाया। एधर लावे ते एधर पुट्टे, माली आपणी वण्ड वंडाया। कोई सुक्के ते कोई फुटे, जिस आपणी सेव कमाया। कलिजुग अन्तिम सभ दे भाग निखुटे, हरि जू हरि भुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची नींह दए धराया।

१४४८

बिन नबी रसूल मिलाइंदा, बिन कलमे कर प्यार। बिन शरअ रंग रंगाइंदा, बिन शरीअत दए आधार। बिन हुजरे अवाज़ लगाइंदा, बिन काअबे खोल्ह किवाड़। बिन नाद साज वजाइंदा, सदा लगाए अगम्म अपार। बिन रसना जिहवा बांग अल्लाइंदा, कूक कूक करे पुकार। मुर्शद मुरीद वेख वखाइंदा, मुरीदां मुर्शद कर दीदार। आपणी सिफ्त आप सुणाइंदा, सालाही सिफ्त बेऐब परवरदिगार। पर्दानशीं आपणा पर्दा आप उठाइंदा, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस सच दीदार। सच दीदार इक्क ख़ुदा, ख़ुद आपणा आप जणाईआ। मुर्शद मुरीदां उत्तों होए फ़िदा, आपणी फ़ितरत मात मिटाईआ। दर दुआरे आए सिध्धा, राह विच ना कोई अटकाईआ। कोटन कोटि रसूल दर दुआरे पाइन गिधा, हथ्थ नाल हथ्थ मिलाईआ। नूर अलाही किसे ना बध्धा, बंक दुआर ना कोई बहाईआ। आपणा देवे आपे सद्दा, आपणी सेव कमाईआ। करके आया पार हद्दा, शरअ हद्द ना कोई वखाईआ। बिन लत्तां बांहवां फिरे भज्जा,

बिन घोड़े होया अस्वार सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा जल्वा आप वखाईआ। आपणा जल्वा देवे नूर, जलाल आपणा खेल खिलाइंदा। आपे कलाम कलमा वजाए तूर, नाद अनादी नाद सुणाइंदा। आपे हज़रत हाज़र हज़ूर, आपे आपणा वेस वटाइंदा। आपे फ़तवा देवे ज़रूर, अन्त फातया सर्ब पढ़ाइंदा। आपे बख्शे सर्ब कसूर, आपणी रहिमत आप कमाइंदा। आपे मुर्शद मुरीदां अंदर वड़ वड़ बहे ज़रूर, जगत ज़रूरत पूर कराइंदा। कोई लभ्भे उत्ते कोहतूर, कुदरत हरि हरि वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अहिबाब रबाब आप वजाइंदा। सच रबाब वजाए बातन, आपणी बात सुणाईआ। करया खेल इक्क इकांतन, अकल कला वड्याईआ। जिस दा संग अल्ला राणी लभ्भे बण बण साथन, नक्क नथ्थ सुहाग वखाईआ। नेत्र सुरमा दन्द दन्दासन, रूप अनूप चढ़ाईआ। दर दर घर घर वेखे मेरी पूरी करे आसण, बेऐब मेरा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुजरा दए समझाईआ। साचा हुजरा ख़ुदावंद करीम, आपणा आप सुहाइंदा। आपे होए अज़ीमुल अज़ीम, आप आपणे रंग समाइंदा। आपे तालब तुलबा दए तालीम, तल्बगार ना कोई अख्वाइंदा। आपे नबी रसूलां करे तकसीम, मुत्फ़रक आपणा खेल कराइंदा।
१४४६ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग समाइंदा। सच ख़ुदावंद बेऐब, इक्क महल्ल सुहाया। १४४६
नूर नुराना सच्चा साहिब, सुल्तान वड वड्याआ। जुगा जुगन्तर होया रहे गैब, रूप रंग ना कोई वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूरी नूर लए मिलाया। होया ग़ायब ग़फ्लत कर, ग़फ्लत आपणी आपणे विच टिकाईआ। उल्फ़त फिराई दर दर, आरफ़ कर पढ़ाईआ। आपे बैठा रिहा दड़, मुखड़ा मुख भवाईआ। नबी रसूलां घाड़न घड़ घड़, लोकमात दए वड्याईआ। कलमा कलाम आपणी आप पढ़ पढ़, कायनात करे पढ़ाईआ। साचे हुजरे आपे चढ़ चढ़, ख़ालक वेखे ख़लक लोकाईआ। मरीद मुर्शद आपे फड़ फड़, आप आपणा मेल मिलाईआ। लेखा जाणे दर बदर, दर दरवेश वेस वटाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, करे खेल अनेक, अनक कल आप अख्वाईआ।

अन्तर बाहर इक्को रंग, एका घर वसाईआ। एका सेज इक्क पलँघ, एका गुर हंढाईआ। एका नाम इक्क मृदंग, एका नाद सुणाईआ । एका तीर इक्क कमंद, एका चिल्ला दए चढ़ाईआ। एका गीत एका छन्द, एका ढोला दए जणाईआ। एका नूर एका चन्द, एका एक करे रुशनाईआ। एका तोड़े बन्धन बन्द, बन्दीछोड़ इक्क अख्वाईआ। इक्क वखाए परमानंद, एका निजानंद करे रसाईआ। एका टुट्टी देवे गंढ, एका आपणी गंढ पुआईआ। एका नाता तोड़े नार दुहागन रंड, एका

कन्त बणे सच्चा गोसांईआ। एका लेखा चुकाए इंड पिण्ड जीउ ब्रह्मण्ड, एका आपणा घर वखाईआ। एका अमृत धार वगाए सागर सिन्ध, एका झिरना दए झिराईआ। एका अन्तिम कढ्ढे जिंद, जिस घड़या भन्न वखाईआ। एका बणाए साची बिन्द, सुत अनादी लए प्रगटाईआ। एका दाता गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंदर बाहर आपणा रंग वखाईआ। अंदर बाहर सतिगुर धार, शब्दी शब्द वखाइंदा। अंदर बाहर सतिगुर धार, गुर रसना गुर आप जणाइंदा। अंदर बाहर सतिगुर धार अगम्मी धुन्कार, धुन अनादी राग अलाइंदा। अंदर बाहर जोत उज्यार, नूर नुराना डगमगाइंदा। अंदर बाहर इक्को यार, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल खिलाइंदा। अंदर बाहर मारे झात, पर्दा आपणा आप उठाईआ। अंदर बाहर खोले ताक, बन्द किवाड़ा कुण्डा लाहीआ। अंदर बाहर वखाए हाट, साचा वणज कराईआ। अंदर बाहर तीर्थ ताट, घर सरोवर दए प्रगटाईआ। अंदर बाहर बन्ने नात, आपणा बन्धन पाईआ। अंदर बाहर देवे दात, देवणहार बेपरवाहीआ। अंदर बाहर पिता मात, निरगुण सरगुण संग समाईआ। अंदर बाहर जणाए गाथ, आपणी कर आप पढ़ाईआ। अंदर बाहर लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, सीस जगदीस हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंदर बाहर खेल कर, आपणे रंग समाईआ।

१४५०

पंज शब्द जगत जैकारा, रसना जिहवा वड्याईआ। हरि का शब्द सभ तों वसे बाहरा, गणित विच कदे ना आईआ। ना कोई अंकड़ा ना कोई अंक ना कोई लिखारा, लिख लिख लेख ना कोई वखाईआ। लोकमात गुरुआं पीरां दए सहारा, लक्ख चुरासी नाल प्रनाईआ। कोई कहे सतिनाम अधारा, कोई कहे सोहँ जैकारा, कोई रारंकार वखाईआ। कोई कहे जोत निरँजण उज्यारा, कोई कहे जोती जोत डगमगाईआ। कोई कहे ओंकार पसारा, निराकार नज़र ना आईआ। दोए दोए जोड़ करदे गए निमस्कारा, लोकमात राह तकाईआ। तेरा वसदा रहे दुआरा, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। अलख अगम्म तेरा खेल न्यारा, सति पुरख तेरी वड्याईआ। तेरे नाम दी सच्ची धारा, तेरी महिमा सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम शब्द जगत नाता बन्धन पाईआ। अल्ला अलाही नूर, आलमीन अख्वाइंदा। करे खेल ज़ाहर ज़रूर, भेव कोए ना पाइंदा। बध्धा रहे सच दस्तूर, हुक्मी हुक्म ना कोई उलटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खिलाइंदा। आपे आपणा नाउँ रक्ख, तत्ता तख्त इक्क रचाईआ। राम पुरख समरथ, रहीम वेस वटाईआ। अबूतर खेल अकथ, लोकमात समझाईआ। पंज तत मार्ग आपणा दस्स, पर्दा दए

चुकाईआ। जोत उजाला नूर प्रकाश सच्च, सदा बांग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर आपणे नाल मिलाईआ। अल्ला ऐली इक्क ख़ुदा, ख़ुदी ना कोई रखाइंदा। अबूतर दिता बणा, विच आपणा नूर टिकाइंदा। शरअ नाल शरअ टकरा, शरीयत वण्ड वंडाइंदा। बेनिकाहियां करे निकाह, आपणा खेल आप वरताइंदा। बजरतर वेस वटा, सीस नार कोलों कटाइंदा। अल्ला ऐब ना करे ख़ुदा, तीर तलवार धार पार ना कोई वखाइंदा। बिस्मिल हो होए फ़िदा, बिस्त्रे मरग ना कोई विछाइंदा। ऐली शाह ना रूप वटा, दुलदल ज़ीन ना कोई कसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अबूतर आपणा रूप समझाइंदा।

नकाब पोश होया रूपोश, नज़र किसे ना आइंदा। सदा बणया रहे खामोश, आपणी अवाज़ ना किसे सुणाइंदा। मुकामे हक बैठा वेखे सभ दा दोष, निरदोष नज़र कोए ना आइंदा। जिस देवे प्याला जाम करे मदहोश, होश सभ दी आप भुलाइंदा। आपे बणया नकाबपोश, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। क्या कोई सोचां सके सोच, सोच विच कदे ना आइंदा। सांडनी अस्वार बणया आप बलोच, आप आपणे संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाइंदा।
१४५१ देवे ताकत ताकतवर, तख्ता सभ दा दए उलटाईआ। निरभउ रखाए आपणा डर, सभ दा भय मुकाईआ। जो जन भाणा १४५१
लए जर, तिस भाणे लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराईआ।

★ २० कत्तक २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

वेखो खेल हरी हरि दा, बिन रसना कबीर रिहा अलाईआ। जन भगतां कोलों डरदा, लोकमात सेव कमाईआ। अछल अछल जो रिहा करदा, आदि जुगादि सभ नूं आप भुलाईआ। आपणा नाउँ लोकमात भगतां अग्गे जो रिहा धरदा, वस्त अनमोल वरताईआ। अक्खर बिना जो रिहा पढ़दा, पढ़ पढ़ खेल खिलाईआ। वड बलवान जुग जुग जो रिहा लड़दा, नित नवित वेस वटाईआ। थम्मां नाल जो रिहा सड़दा, आपणा रूप वटाईआ। आदि जुगादि जुग जुग लुकया रिहा विच पर्दा, भगतां सनेहुड़ा रिहा घलाईआ। कलिजुग अन्तिम धरे रूप नर हरि दा, नर नरायण वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कराईआ। उठो वेखो मार ध्यान, कबीर बिन सरीर करे जणाईआ। निरगुण रूप श्री भगवान, भगवान आपणा वेस वटाईआ। छत्ती जुग गुर अवतारां दे परवान, परवाना मात घलाईआ। नाम निधाना

अंदर दे दे दान, बिन रसना जिहवा सुणाईआ। इक्क वखा सच निशान, आपणे रंग रंगाईआ। आपे हो बेपहचान, बैठा रहे मुख छुपाईआ। गुर अवतार लगाए ध्यान, आपणा ध्यान समझाईआ। आपणा प्रेम इक्क ज्ञान, प्यार प्यार नाल प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप छुपाईआ। उठो वेखो हरि का रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। बिन अश्व कसया तंग, शाह सवार फेरा पाइंदा। बिन मृदंगे वजाए मृदंग, साचा ढोला आपे गाइंदा। बिन प्रकाश वेखे अन्धेरा अन्ध, पान्धी आपणा पन्ध मुकाइंदा। बिन राग गाए छन्द, राग रागनी मोह चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप वखाइंदा। साची धारा वेखो सन्त, सति सतिवादी आप चलाईआ। हुक्म देंदा रिहा जो जुगा जुगन्त, हुक्मी हुक्म भवाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे बेअन्त, बेनज़ीर नज़र कदे ना आईआ। जिस नूं मन्नदे रहे कन्त, बण बण नार सेव कमाईआ। जिस नूं कहिन्दे दाता जीव जंत, जोती नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाईआ। उठो वेखो तक्को राह, हरि तदबीर आप बणाइंदा। बिन बेड़े बणया मलाह, चप्पू हथ्थ ना कोई वखाइंदा। जिस दी मन्न के आए रज़ा, हुक्मी हुक्म हुक्म भुआइंदा। जेहड़ा भुल्ले देवे सज़ा, सो अभुल खेल खिलाइंदा। जो रुलयां ल्ए उठा, आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वटाइंदा। उठो चलो हरि हरि दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। जुग जुग जिस दा मन्नदे रहे डर, सो डर रिहा चुकाईआ। नेत्र मीट मीट जिस दा लभ्भणे रहे घर, बिन नेत्र घर वखाईआ। जिस दी बिरहों अंदर आए सड़, सो अग्नी तत बुझाईआ। जिस दा भाणा आए जर, सो भाणे रिहा वखाईआ। जिस दा नाउँ कोटन कोटि अक्खर आए पढ़, दर आ वेख्या अक्खर नज़र कोए ना आईआ। जिस दी पूजा करदा रिहा सीस धड़, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तिस दी ना चोटी ना कोई जड़, रूप रंग ना कोई प्रगटाईआ। जिस दे पिच्छे मरनी गए मर, सो मरन जन्म विच कदे ना आईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे हरी हरि, सो हरि जू रूप धराईआ। आओ चल के वेखीए नरायण नर, जो सद्दा रिहा घलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। उठे भगत होए त्यार, थित वार ना कोई रखाया। वाह वाह खेल तेरा करतार, भेव किसे ना पाया। असीं रुलदे रहे विच संसार, तेरा नाम लै लै धक्का खाया। लुकदे रहे विच डूँग्घी गार, आपणा मुख छुपाया। तेरे पिच्छे खांदे रहे मार, आपणी खल्ल लुहाया। मानस जन्म आए हार, काया चोला ना संग रखाया। छड्डके आए जगत घर बार, नार प्यार ना कोए वखाया। पुत्तर धी ना कोई अधार, वेले अन्त देवण धक्का लाया। तुध बिन देवे ना कोई सहार, वेख्या जगत सबाया। तूं किरपा करीं आप

निरँकार, आप आपणा मेल मिलाया। डूँघी भगती विच वाड़, आपणा सागर ना फेर वखाया। काया गागर बणाके रक्खी गार, दिवस रैण भँवर विच भवाया। कदी लभ्भणे रहे सुखमन टेडी नाड़, ईड़ा पिंगल वेख वखाया। कदी मंगदे रहे अमृत धार, कवण वेला झिरना दए झिराया। कदे मंगदे रहे जोत उज्यार, जोत निरँजण दए टिकाया। कदी मंगदे रहे दरस दीदार, आत्म सेजा दए सहाया। कदे मंगदे रहे तेरा प्यार, दोए जोड़ जोड़ सीस झुकाया। तैनूं रहिम ना आया मेरी सरकार, मेहर नज़र ना कदे उठाया। तेरी कूक करी पुकार, ऐनलहक तेरा नाअरा लाया। तेरे नाअरे उत्तों पई मार, आपणी खल्ल लुहाया। शक्क विच प्या संसार, शकवा तेरा ना कोए समझाया। फ़तवा लग्गा पहली वार, दूजी वार ना दई सज़ाया। मैं निउँ निउँ करां निमस्कार, सलाम अलैकम नाल मिलाया। वाह तेरी कुदरत मेरे यार, तूं कुदरत खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप जणाया। उठो वेखो पीर पैग़म्बर, सच्चा पराह आप बणाईआ। आदि जुगादि जो रचदा रिहा अडम्बर, अड्ड बैठा सच्चा माहीआ। कलिजुग अन्तिम रचया सुअम्बर, साची रुत्त सुहाईआ। आपणे सिर ओडिआ इक्क पीत पितम्बर, ढाकन को पत हरि घट थाँईंआ। आपणे घर बणया इक्को मिम्बर, दूजा संग ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। उठो वेखो करता धार, करनहार कराइंदा। जिस दा मंगदे रहे दीदार, सो दयाल दया कमाइंदा। जिस दे पिच्छे करदे रहे शिंगार, सोलां शंगार वेस वटाइंदा। जिस दे पिच्छे सेवा करदे रहे बण बण नार, सो कन्त वेस वटाइंदा। जिस दा लभ्भणे रहे महल्ल मुनार, अटल मुनारा नज़र किसे ना आइंदा। जिस दी कट्ट के आए वगार, सो बण वगारी सेव कमाइंदा। जिस नूं कहिन्दे रहे करीम कादर यार, सो आपणा नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप उठाइंदा। उठो वेखो हरि जू मेला, लोकमात आप मिलाया। इक्को घर वसे गुरु चेला, चेला गुर रूप वटाया। इक्को सतिगुर सज्जण सुहेला, इक्को गुरमुख लए बणाया। इक्को जाणे आपणा वेला, थित वार ना कोए वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आप सुहाया। साचा वेला लोकमात, हरि जू आप सुहाइंदा। उठो वेखो मार झात, की सांग वरताइंदा। जिस नूं लभ्भणे रहे इक्क इकांत, जुग जुग लुक लुक भगतां दरस दिखाइंदा। कलिजुग अन्तिम हरिजन बणाए इक्क जमात, इक्को पट्टी नाम पढ़ाइंदा। एका वार देवे दात, एका वस्त झोली पाइंदा। एका गाउणी साची गाथ, एका राह चलाइंदा। इक्को दस्से साची ज़ात, दूजी ज़ात ना कोए बणाइंदा। इक्क बंधाए सच्चा नात, नाता बध्धा ना कोए तुड़ाइंदा। इक्को पिता इक्को मात, एका बालक रूप वखाइंदा। एको पूरी करे आस, एका संग निभाइंदा। इक्को

वसे सदा पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। चार जुग इक्क इक्क करके साडी कीती बन्द ख़ुलास, फड़ फड़ आपणे चरन बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाइंदा। कलिजुग अन्त की करे कारा, हरि पुरख निरँजण वेस वटाईआ। जन भगतां देवे जगत सहारा, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस भाण्डा घड़या बण ठठयारा, आपणी वस्त विच टिकाईआ। सो वेखे विगसे वेखणहारा, वेख वेख ख़ुशी मनाईआ। बिन पैसे धेले बणया वणजारा, आपणा वणज कराईआ। छत्ती जुग जो करदा रिहा उधारा, अन्तिम लहिणा दए मुकाईआ। ध्रू कहे सुण प्रहिलाद यारा, प्रभ की सांग वरताईआ। साडे नाल की करया विहारा, जंगल जूहां विच फिराईआ। कलिजुग अन्तिम ग़रीब निमाणयां दए सहारा, फड़ बाहों गले लगाईआ। इक्को दसया सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नाम जैकारा, बिन भगती बेड़े दए चढ़ाईआ। बिन जंञों आए इक्को लाड़ा, हरिजन नारी लए प्रनाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करे प्यारा, प्यार प्यार विच मिलाईआ। नेत्र नैण नैण शंगारा, गुरमुख नैण नैण नैण नाल मिलाईआ। आए चल गिरवर गिरधारा, गृह गृह आपणा पन्ध मुकाईआ। जन भगतां कर दरस दीदारा, आपणी ख़ुशी मनाईआ। करया खेल अपर अपारा, साची रीत वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। प्रहिलाद कहे सुण ध्रू मीत, की की हाल सुणावां। वेखो प्रभ दी उलटी रीत, रातीं सुत्तयां पकड़े बांहवां। कलिजुग अन्त ठुकराई मन्दिर मसीत, जिस दा करदे झूठा दाअवा। अंदरे अंदर परखे नीत, करे प्यार जिउँ पुत्तरां मावां। जन भगतां हिरदा करे ठंडा सीत, उप्पर रक्खे ठंडी छाँवां। साहिब सतिगुर पतित पुनीत, हँस बणाए फड़ फड़ काँवां। बिन चेतिउँ वसया चीत, बिन चेतन्न निरगुण सरगुण आपणे घर लाया नावां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत उधारन आपणा बध्धा दाअवा। ध्रू कहे सुण प्रहिलाद, प्रभ की की सांग वरताइंदा। बाली बुध जिस लाई जाग, सो साहिब वेखण आवां। बिन धुन वजाए नाद, बिन रसना गीत गावां। बिन जिहवा आए स्वाद, नाम निधाना एका खावां। सो सज्जण लैणा लाध, आदि जुगादि करे खेल बिन लत्तां बांहवां। जन भगतां रक्खे याद, निथाव्याँ देवे सच्चा थावां। कलिजुग अन्त सुणे फ़रयाद, सानूं विछड़िआं मेले नाल भ्रावां। लक्ख चुरासी विचों काढ, साडे नाल करे सावां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा भाणा। की ध्रू तूं किहा सच्च, प्रहिलाद अग्गों सुणाईआ। हां जो वेख्या सो रिहा दस्स, पुरख अबिनाशी वेस वटाईआ। लोकमात गया नस्स, आपणा पन्ध मुकाईआ। एथे असीं उहदे वस, ओथे चले भगत रज़ाईआ। जांदा जांदा शब्द सनेहुड़ा गया दस्स, उठो भगतो लोकमात राह वेखो चाँईं चाईआ। बिन भगती मैं होया वस, बिन शक्ती मैं देवां रस, बिन विअकती

पूरी करां आस, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। बिन दीवा बाती मेरा प्रकाश, बिन मन्दिर ताकी मेरा निवास, सच सिँघासण सोभा पाईआ। मैं गुरमुखां लोकमात जा के कहां शाबास, छत्ती जुग जो राह तकाईआ। तुहाढ्ढे मंडल पावां रास, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। बिन ख़ाहशों पूरी करे ख़ाहश, आप आपणी दया कमाईआ। सुफ़ने विच जो कदी ना गया भास, सो आपणा दरस दिखाईआ। जिस दी कदी ना आई याद, सो आपणी याद ताज़ा दए कराईआ। तुहाढ्ढे कोल करे आपणी फ़रयाद, तुहाढ्ढे बिनां मेरा दुआरा कम्म किसे ना आईआ। कोई कहे वाहिदो लाशरीक गॉड, कोई कहे सदा बेसवाद, कोई कहे अनादी अनाद, कोई कहे बोध अगाध, कोई कहे माधव माध, मोहणी आपणा रूप वटाईआ। कोई कहे लक्ख चुरासी विचों लए काढ, कोई कहे वसया पंज तत मास नाड़ी हाड, कोई कहे जल थल रिहा समाईआ। गोबिन्द कहे वांग पुत्तरां करे लाड, प्रेम गोद विच बहाईआ। गुरमुख विरला जाणे साध, जिन आपणी साधना साध सतिगुर अग्गे रखाईआ। कोई कहे वसे पार हद्द, हदूद अरबा ना कोए बणाईआ। कोई कहे आपे जाणे आपणी यद, बंस सरबंस बेपरवाहीआ। कोई कहे हो के बैठा अड्ड, निरगुण रूप वटाईआ। कबीर कहे भगतां ना जाए कदी छड्ड, जन भगतां सदा सेव कमाईआ। जिस वेले चाहो लउ सद्द, बिन तारों तार हिलाईआ। सदा बैठा रहे विच अध, गुरमुख तेरा पन्ध मुकाईआ। जे कोई कहे प्रभ दा केडा कद्द, नज़र किसे ना आईआ। बिन कद्दों डूँग्घी कंदर बहे वड़, आपणा मन्दिर आप सुहाईआ। जिउँ पूरन अंदर पूरन विद्या रिहा पढ़, पूरी सभ दी आस कराईआ। करके हिंमत लउ फड़, आया नट्ठ किते ना जाईआ। लोकाई विच ना जाणा अड़, सृष्ट सबाई धूंआँधार वखाईआ। कबीर कहे चढ़ के वेखो आपणा गढ़, जिथे बैठा तख़्त सुहाईआ। ना उह पुरख ना उह नार, नर नरायण बेपरवाहीआ। जन भगतां पैज रिहा संवार, आपणा स्वारथ ना कोए वखाईआ। देवणहारा चार पदारथ, नानक मंग मंगाईआ। जिउँ लोहा कंचन करे पारस, कबीर रामानंद वड्याईआ। दर मन्ने ना कोए सफ़ारश, सिफ़रा सर्ब रूप वखाईआ। चरन कँवल जो रक्खे ढारस, आपणी ढाक लए उठाईआ। लेखा जाणे रोम फ़ारस, फ़लक आपणा खेल खिलाईआ। बिन भगतां बणे ना किसे दा वारस, आपणी वसीअत भगतां हथ्थ फड़ाईआ। कोटन कोटि पढ़ पढ़ थक्के आरफ़, उल्फ़त विच लग्गी लोकाईआ। कोटन कोटि कर कर थक्के तुआरफ़, अन्त तामील ना किसे कराईआ। कोटन कोटि लिख लिख थक्के इबारत, कलम शाही नाल मिलाईआ। कोटन कोटि बणा बणा थक्के मन्दिर मस्जिद गुरदुआर इमारत, अमरापद ना कोए वखाईआ। कोटन कोटि वड़ वड़ थक्के ग़ारत, डूंग्घी भँवर ना कोए लँघाईआ। कोटन कोटि कर कर थक्के आड़्हत, बण बण गुरु हट्ट खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे

१४५५

विच छुपाईआ। धू सुण सज्जण, सहिज सहिज सुणावां। जिस नूं कहिन्दे परदे कज्जण, सो बणया फिरे निथावां। सानूं लौदां रिहा अजण पजण, बिन भगतीउँ कलिजुग अन्तिम पकड़े बांहवां। दर दर घर घर कराए साचा मजन, कहे बिन तीर्थ गुरमुख आप नुहावां। कर दरस हरिजन रज्जण, मैं हरिजन दरसन पावां। इक्क दुआरे बह बह सजण, लक्ख लक्ख शुकर मनावां। इक्क दूजे नूं आपणा हाल दस्सण, गल विच पा पा बांहवां। इक्क दूजे दे अंदर वसण, इक्को रंग वखावां। जो कुछ वेखण की लोकां दस्सण, किहनूं किहनूं समझावां। भगत भगवन्त घर बह बह हस्सण, नित नित वेखण जावां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्म अथावां। सुण प्रहिलाद मेरे भाई, मैं अज्ज दी दस्सां गल्ल। पुरख अबिनाशी बणया राही, कर गया वल छल। जिहनूं नामा धन्ना कहे गुसाँईं, वसणहार महल्ल अटल। लोकमात निथाव्याँ पकड़े बांहीं, ग़रीबां अंदर गया रल। शाह पातशाह मारन धाहीं, कलिजुग सन्तां मिल्या ना कोई फल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अबचल। धू छड्ड प्रभ दा खैहड़ा, अन्त किसे ना पाया। कोई कहे चंगा कोई कहे भैड़ा, भैड़िआं अंदर आप समाईआ। साध सन्त कलिजुग अन्त जंगल जूह पहाडां पर्बतां उत्ते लभ्भण प्रभ
१४५६ दीआं पैड़ां, खुरा खोज नज़र किसे ना आया। मन्दिर मठ बह बह कर गवेड़ गेड़या गेड़ा, मन मन नाल मता पकाया। १४५६
लोकां कहिण प्रभ वसया मेरे वेहड़ा, काया मन्दिर विच बहाया। मन मतीआ मन ममता नाल लेड़ा, काम क्रोध लोभ ख़ज़ाना अंदर भराया। सतिगुर पूरा मारे इक्क लफेड़ा, देवे मुख भवाया। क्यों, नाँ जू रक्खया सिँघ शेरा, शेर हो क्यों भय रखाया। लक्ख चुरासी पाए घेरा, आप आपणा हुक्म सुणाया। बिन भगती बन्नें भगतां बेड़ा, आप आपणे कंध उठाया। लोकमात करके वड्डा जेरा, आपणा पर्दा आप चुकाया। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग करदा रिहा हेरा फेरा, आपणा राग ना किसे सुणाया। गुर अवतारां कर कर मेहरां, आपणा राह चलाया। पीर पैग़म्बर कह कह गए मैं तेरा, तेरी कुदरत मेरे ख़ुदाया। कलिजुग अन्तिम पुरख अबिनाशी वसाया खेड़ा, खेड़े आपणा भाग लगाया। जिस नूं गोबिन्द कहे नेड़ा, सो गोबिन्द संग रखाया। गोबिन्द मन चाउँ घनेरा, घर पुरख अकाल सुहाया। तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा रंग नज़र किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आपणे घर, घर मन्दिर सोभा पाया। प्रहिलाद वेख सचखण्ड, सचखण्ड वसे निरँकारा। धू कहे मेरे वण्डे आई वण्ड, रहिणा चरन दुआरा। मेरे नैण ना तक्कण कोटन ब्रह्मण्ड, दोए जोड़ करां निमस्कारा। मैं नाता छड्डया जेरज अंड, जगत जहानों कीआ किनारा। मेरा मुक्या रंडेपा रंड, मिल्या पुरख भतारा। मेरे सीने पई ठंड, ठंडा होया मेरा अंग्यारा। मेरी नंगी ना होवे कंड, सिर मेरे परवरदिगारा। चरन कँवल परमानंद, आदि

जुगादि रहे ख़ुमारा। मैं गावां सोहँ छन्द, दूजा होर ना कोई विहारा। हे भगवान मेरे विच ना रक्खीं कंध, मैं करदा रहां दीदारा। वेखीं लोकमात किसे ख़ाने ना करीं बन्द, ना जावां मस्जिद गुरदुआरा। मुड़ के ना नाँ जपां बत्ती दन्द, रसना जिहवा ना कोए जैकारा। इक्क वार जे मुक्या पन्ध, पाया तेरा दुआरा। मेरी मेरे लैणी गंढु, मैं तेरा तूं मेरा तूं ही ढोला तूं ही विचोला तूं ही मेलणहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणा इक्क सहारा। धू सहारा देवां ज़रूर, हरि जू आख सुणाईआ। लोकमात वेख की मचिआ फ़तूर, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। त्रैगुण तपया इक्क तन्दूर, पंज तत रिहा जलाईआ। काया गढ़ बणया ग़रूर, गुरबत भरी सर्ब लोकाईआ। पीर पैग़म्बर मंगण हूरां हूर, आपणी हिरस वधाईआ। मूसा तक्क के मेरा नूर, मुख आपणा गया भन्नाईआ। मुड़ के मंगया ना फेर सरूर, शरअ विच लई वड्याईआ। सुफ़न विच कीता कसूर, कुँवार कन्या इक्क प्रनाईआ। वेखणहारा हाज़र हज़ूर, हज़रत इक्को शहिनशाहीआ। जिस दा पढ़दे हज़ारा दरूद, इस्मे आज़म रहे मनाईआ। जिस दा मन्नदे रहे दस्तूर, दस्तयाब इक्क ख़ुदाईआ। सो साहिब सर्ब गुणां भरपूर, जल्वा नूर नूर डगमगाईआ। अन्तिम लहिणा देणा दए ज़रूर, ज़रूरत सभ दी पूर कराईआ। मुरीद मुर्शदां रहे घूर, वेला वक्त दए ग्वाहीआ। मुर्शद वखाए ना कोए ज़हूर, ज़र्रा नूर ना कोए रुशनाईआ। मुरीद मुर्शद दोवें पए हदूद, आपणी हद्द गए भुलाईआ। कोई ना पहुंचे मंज़ले मकसूद, आपणा पन्ध मुकाईआ। नज़र ना आए सच्चा महबूब, मिल मिल ख़ुशी ना कोई मनाईआ। जिस नूं कह कह गए यकूब, जाबर जबर बेपरवाहीआ। किसे हद्द अंदर ना होया महिदूद, बन्दीख़ाना ना कोई रखाईआ। आदि जुगादि ना होए नेसतोनाबूद, बेपरवाह बेपरवाहीआ। आपणे घर सदा मौजूद, मुजरा अठ्ठे पहर लगाईआ। करे खेल आप बहु रूप, कोटन कोटि रूप वटाईआ। आपे होए सति सरूप, सही सलामत आपणा नाउँ रखाईआ। आपे होए शाहो भूप, राज राजान वडी वड्याईआ। आपे वसे आपणे कोट, आपणा हुजरा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराईआ। उठो पीरो वेखो मलक, मालक मख़लूक अख्वाइंदा। जिस नाल रक्खदे आए तुअलक, सो तलाक हथ्थ फड़ाइंदा। जिस दा सहारा तक्कया उप्पर फ़लक, फर्श सीस निवाइंदा। सो साहिब कलिजुग अन्तिम लोकमात देवे झलक, झाकी आपणी आप वखाइंदा। जिस नूं कहिन्दे धाम बैतुलमुकद्दस, सो आपणा धाम सुहाइंदा। जिस नूं कहिन्दे रहे सईदुलवक्त, सो साहिब आपणा वक्त वेख वखाइंदा। जिस नूं कहिन्दे रहे बिन बूंद रक्त, आलमीन नूर रखाइंदा। जिस नूं कहिन्दे रहे उहदी नज़र ना आए हरक्त, औदां जांदा ना कोई वेख वखाइंदा। जिस नूं कहिन्दे सभ ओहदी बरक्त, सो बुरका आपणा लांहयदा। जिस दी किसे नाल ना शरक्त,

१४५८

लाशरीक खेल खिलाइंदा। जिस दी कोई ना मेटे फ़ितरत, फ़िकरा पढ़ ना कोई मात मिटाइंदा। जिस दी कोई ना मेटे हसरत, सो साहिब खेल खिलाइंदा। जो पीर पैग़म्बर करौदा रिहा कसरत, इक्क दूजे नाल घुलाइंदा। सो सभ दी वेखे हशर्त, आपणे हुजरे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग समाइंदा। पीर पीरो करो कान, अनादी धुन सुणाईआ। जिस दी पढ़दे आए कलाम, सो कलमा रिहा सुणाईआ। जिस दा सुणदे रहे पैग़ाम, सो पैग़ाम देवे सच्चा माहीआ। जिस दा मन्नदे रहे ईमान, सो आपणा ईमान आप धराईआ। जिस दी सिफ्त करे ज़बान, सो सिफ्ती सिफ्त सलाहीआ। जिस नूं कूक कूक सुणौदे विच मस्जिद मकान, सो मसला हल कराईआ। जिस दा विछा मसल्ला करदे रहे ध्यान, सो आपणा ध्यान लगाईआ। जिस नूं निउँ निउँ करदे रहे सलाम, सो सही सलामत फेरा पाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे बाग़बान, चौदां तबकां बूटा लाईआ। जिस नूं कहिन्दे मेहरबान, रहिमत आपणी आप कमाईआ। आपणी किरपा लाया इक्क साइबान, रस्सा वञ्झ ना कोई रखाईआ। वेखो बिन कलमे देवे ज्ञान, शरअ शरीयत ना कोई बंधाईआ। भगतां देवे दान, बण दानी सच्चा माहीआ। बिन नबीउँ करे पछाण, कोई रसूल ना नाल रलाईआ। मुला मुसायक शेख़ ना कोई कलाम, अलिफ ये ना कोई पढ़ाईआ। नुकता नून ना कोई निशान, गूंना रूप ना कोई वटाईआ। हमज़ा रूप आप मेहरवान, अंग नाल अंग ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल खिलाईआ। उठो पीरो वेखो दस्तगीर, दस्त बदस्त खेल खिलाइंदा। ना कोई अल्फी ना कोई चीर, ख़ाकी तन ना कोई रखाइंदा। ना कोई शरअ ना ज़ंजीर, ना कोई कातब कलम चलाइंदा। ना कोई आयत कुरान अञ्जील, लेखा लेख ना कोए वखाइंदा। बिन पढ़यां देवे दलील, दिलबर आपणे रंग रंगाइंदा। ना कोई किला कोट फ़सील, चार दीवार ना कोए वखाइंदा। ना कोई दरवाज़ा करे सील, उप्पर मुहर ना कोए लगाइंदा। ना कोई बस्त्र पहरे नील, रंग बरंग ना कोए कराइंदा। उम्मत वेखे इक्क कुचील, चार कुण्ट फेरा पाइंदा। वेखणहारा ख़लक ख़लील, ख़लल आपणा आप मचाइंदा। उफ़ हाए मुहम्मद कहे मेरी मन्ने ना कोए अपील, मेरी कीती सभ उलटाइंदा। मेरी नईया डुब्बी मेरी झील, किनारा पार ना कोए वखाइंदा। जिउँ अर्जन फड़या भील, बिन कृष्ना ना कोए छुडाइंदा। मेरी कोई ना चले दलील, मेरा दिल ना धीर धराइंदा। मेरी इक्को अरज़ अख़ीर, गुफ़त शुनीद आप कराइंदा। मैं मंगां तेरी दीद, दूजा चन्द ना मोहे सुखाइंदा। मैं तेरी करां बकरीद, आपणा सीस कटाइंदा। इक्क लिख के दे दे रसीद, मैं तेरा तूं मेरा तेरा रसीदा मोहे भाइंदा। तूं साहिब सच्चा बईद, मैं बेईमान तेरे दर शरमाइंदा। पुट्ठे कन्न पकड़ पकड़ी नसीहत, मसीत फेरा कदे ना पाइंदा। मैं गावां तेरे गीत, मेरे ख़ुदावंद

तेरा दर मोहे भाइंदा। मैं तक्क के आया आपणी उम्मत नीत, नीतीवान नज़र कोए ना आइंदा। मैं हारया तूं गया जीत, आपणी भुल बख्शाइंदा। मैं की जाणां तूं सदा अनडीठ, बिन किरपा नज़र ना आइंदा। करवट लै ना बदली पीठ, पिच्छा तेरा ना मोहे सुखाइंदा। मैं बण के आया ढीठ, तेरे अग्गे झोली डांहयदा। मैं होया कौड़ा रीठ, बिन तेरे रस ना कोए भराइंदा। मैं सुणया तूं ठग्गां बणें मीत, चोरां गले लगाइंदा। की होया तेरे भुलयां भुल्ली मेरी नीत, तूं अभुल मेरी भुल नहीं क्यों बख्शाइंदा। तेरा कर दरस जे ना होवां ठंडा सीत, मेरी अग्न ना कोए बुझाइंदा। मेरा काअबा तेरे बिनां पलीत, पाकी पाक ना कोए अख्वाइंदा। वेख मेरा वेला रिहा बीत, वेला गया हथ्थ नहीं आइंदा। मेरी तोड़ ना दर प्रीत, प्रीतीवान तूं अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क देणा सच्चा वर, झोली अगे डांहयदा। सुण मुहम्मद मेरे ठग्ग, तेरी ठग्गी मेरी वड्याईआ। तूं फिर के आया जग, तेरी जुगत मेरी चतुराईआ। तूं ला के आया अग्ग, तेरी अग्ग मेरी रुशनाईआ। तूं बणा के आया जीव कग, मैं डार रिहा उडाईआ। तूं ला के आया धक्क, मैं धक्का दयाँ लगाईआ। तूं लाह के आया सक्क, मैं जड़्ह दयाँ कटाईआ। तूं नकेल पा के आया नक्क, मैं चारों कुण्ट दयाँ नचाईआ। तूं पा के आया शक्क, उम्मत विच लुकया सच्चा माहीआ। मैं सदा रिहा तक्क, आपणा नैण ना बन्द कराईआ। करां नबेड़ा हको हक, हकीकत मेरे हथ्थ हथ्थ विच डोर बंधाईआ। जिस भावां तिस लवां रक्ख, रहिमत आपणी आप कमाईआ। लोक परलोक करां लक्खों कक्ख, कीमत कोए ना पाईआ। कोटन कोटि मुहम्मद चरनां हेठां झस्स, चरन चरन नाल रगड़ाईआ। कोटन कोटि वार लक्ख चुरासी बणाई राख, मिटी खेह नाल मिलाईआ। फिर भी वेखां हस्स हस्स, ग़मी ख़ुशी ना कोए जणाईआ। इक्क मार्ग तैनूं देवां दस्स, होर सुणे ना कोए लोकाईआ। छब्बी पोह लोकमात जाणा नस्स, राह विच ना कोए अटकाईआ। अगे मिले पुरख समरथ, आपणा आसण लाईआ। दूर दुराडा जोड़ीं दोवें हथ्थ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ओथे मेरे भगतां दा होया इक्टठ, मेरे संग ख़ुशी मनाईआ। उन्हां दे चरनीं जाईं ढठ्ठ, जो तेरी देण ग्वाहीआ। ओथे छत्ती जुग दा झुल्ले निशान चव्ही हथ्थ, भेव कोए ना पाईआ। भगत भगवन्त दी नींह दिती रख, ना सके कोए उखड़ाईआ। ओथे किसे ना चले कोई वस, बेवस सर्ब लोकाईआ। जे बचणा भगतां विच जाईं फस, जे कोई कढ्ढे बाहर निकल कदे ना जाईआ। तेरी पूरी करन आस, साहिब तुठ्ठा सच्चा माहीआ। जो मेरे भगतां होवे दास, तिस आपे लए बचाईआ। भगत दुआरा ना कोई आम ख़ास, ख़ास एसे लई बणाईआ। तेरा कम्म जे आवे रास, मेरा विगड़ कुझ ना जाईआ। मैं भगतां दा दास, तूं भगतां सेव कमाईआ। भगतां मेरी पूरी करी आस, लोकमात वज्जी वधाईआ। जे दे देण तेरा साथ, तेरा

हौला भार कराईआ। लाउणा टिक्का मस्तक माथ, पिछली धोणी लग्गी शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे सच सलाहीआ। ऐं ख़ुदा तेरी ओट, मेरे परवरदिगार। बिन तेरे आलूणिउँ डिगा बोट, ना कोई मेरा यार। जिध्धर जावां लग्गे चोट, होया बहुत ख्वार। मुला शेख मुसायक कस खलोते लंगोट, नाल रलाया विभचार। वुज़ू कर ना निकलया खोट, आब हयात ना कोए रखाया। जगत प्याले पीते घोट, मस्ती नाम ना कोए जणाया। होटां नाल लग्गण होंट, नारी पुरष रंग चढ़ाया। तेरी नजर ना आए नूरी जोत, नूरी बैठा मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण बिध तेरा दरसन पाया। दया कर दया कमा, रहिमत रहीम रहिमाना। कवण वेला जावां आ, करां आण सलामा। कवण वेला पकड़ें बांह, भुजां नाल मिलावण बांहवां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मैं होया अन्त निथावां। निथाव्याँ देवां थाँ, आदि जुगादि मेरी वड्याईआ। तूं रक्खणा इक्क चाअ, चाउ घनेरा इक्क समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला लैणा गा, साचा सोहला इक्क सुणाईआ। हौली हौली आपणा पैंडा लैणा मुका, चौदां तबकां प्यार ना कोए वखाईआ। एका ओट लैणी तका, रहिमत कर बेपरवाहीआ। एका सदा लैणी लगा, नाअरा हक जणाईआ। तेरे चरन होया फ़िदा, तेरे भगतां संग मिलाईआ। मैं होवां ना कदे जुदा, जिध्धर वेखां तूं ही तूं नज़री आईआ। गल विच पल्लू लैणा पा, एसे वास्ते निउँ निउँ सजदा करना गया समझाईआ। कन्नां विच उँगलीआं लैणीआं टिका, दूजी गल्ल सुणन कोए ना पाईआ। छाती उत्ते हथ्थ लैणे टिका, ठंड पावे साचा माहीआ। दोवें गोडे लैणे झुका, धरती नाल रगड़ाईआ। सजदा कर कर लैणा मना, सयद बण ना कोए वड्याईआ। बेख़बर ना होए ख़ुदा, ख़बर लए थाउँ थाईंआ। बेसबर प्याला दए रुड़ा, सबर जाम इक्क वखाईआ। इज़त आबरू जो आया गंवा, फेर वेखे बेपरवाहीआ। बणे नवाब सच्चा शहिनशाह, बादे सहर सैर कराईआ। दोए जोड़ मंगणी पनाह, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। भुल के देणी ना कोई सलाह, सलाह विच कदे ना आईआ। जिन्हां दा बण के आइउँ मलाह, उन्हां दा बेड़ा कौण तराईआ। अन्तिम कन्ढी बैठे आ, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। मैं ना बणया अन्त मलाह, मुहम्मद बोल सुणाया। मैं दे के आया इक्क सलाह, सुणे लोक सबाया। मेरे पिच्छे मेरा अमाम जाए आ, मैहन्दी आपणा रंग रंगाया। दिशा लहिंदी फेरा लए पा, मुख नकाब पर्दा आप चुकाया। मेरी ख़ाहश अल्ला राणी भुल्ली लए मना, अभुल बेपरवाहया। आपणी कुल्ली दए वखा, इलाबुत डेरा लाया। सिर चुन्नी दए टिका, सालू एका रंग चढ़ाया। जगत रुल्ली लए उठा, आप आपणी दया कमाया। कोई रसूल ना बणे ग्वाह, असूल सके ना कोए समझाया।

१४६१

मकतूल कातल फसे आ, देवे कौण सफ़ाया। बातन जमाल इक्क ख़ुदा, ज़ाबता ज़बत दए कराया। फ़ातहा पढ़े दो जहां, फ़तवा इक्को वार लगाया। चौदां तबक ना सके सिर उठा, सबक सादर ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाया। मेरी दलील वेख ख़ाहश, अल्ला राणी रही कुरलाईआ। अन्त होई पाश पाश, जोड़ी जोड़ ना कोए वखाईआ। बण तरखान तूं दिती तराश, सथ्था तेसा हथ्थ उठाईआ। जिस नूं किहा मैं बूटा लाया ख़ास, तूं जड़ों कट्ट वखाईआ। मेरी आसा होई निरास, निरदोश दए दुहाईआ। मैं किस दे वसां पास, घर बार नज़र कोए ना आईआ। ना कोई सौहरा ना कोई सास, ना कोई धी ना कोई जवाईआ। ना कोई मीआं बीवी रक्खे पास, बैवा दर दर धक्के खाईआ। जे साहिब चाहे सिँघ गरधारे नाल मिलाए रास, जुग नाल जुग दए भवाईआ। जिस दा भगत ना होवे नास, नास होए सर्ब लोकाईआ। सो मेरी पूरी करे ख़ाहश, आपणी ख़ाहश ना कोए रखाईआ। कलिजुग अन्त भगवन्त बण कन्त भगतां वसया पास, मेरी सार कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर सोभा पाईआ। सलाह सलाह नाल करे सलाह, सलाहगीर ना कोए रखाया। की जेहड़ा भगतां ल्या प्रना, मैनूं देवे दर दुरकाया। मैं सुणया छब्बी पोह सुधाया साह, लोकमात खेल रचाया। मैं जा के मंगां इक्क पनाह, चरनां विच सीस टिकाया। तूं मेरा सच्चा शहिनशाह, मैं तेरी बरदी थाउँ कोए नज़र ना आया। कर किरपा जे पकड़े बांह, मेरा पिछला दुःख दए भुलाया। बौहड़ी जे कर जाए ना, चारे कूटां थाँ कोए नज़र ना आया। बिन मरनों पहलां मर जां, आपणा तन मन भेंट चढ़ाया। जे कोई बाहर कढे निकलां ना, जो मेरे साहिब मन्दिर बणाया। पंजां नाल करी सलाह, जिस दा नानक लेख लिखाया। जिस नूं कहिन्दे वसे थलां विच अस्गाह, सो साचे घर सोभा पाया। साचा घर ल्या बणा, आपणयां भगतां नाल रलाया। उधर गोबिन्द चढ़या चा, पहली चेत्र राह तकाया। जे मने ते लवां मना, इक्को माण रखाया। जे कहे ते देवां जुग उलटा जे कहे तां आपणे संग रखाया। मैं भाणा मन्नां सदा रज़ा, राज़ी आपणा पीर कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेड आप खडाया। की खेड तैनूं लगे चंगी, विष्न ब्रह्मा शिव रहे कुरलाईआ। तूं वेख साडी इक्को तंगी, बिन तेरे पई दुहाईआ। तेरी आत्मा परमात्मा होई भागां मंदी, मेरे ब्रह्म ना कोए वड्याईआ। तेरी सुआणी होई रंडी, लोकमात रही कुरलाईआ। किसे नक्क नथ्थ कन्न ना दिसे डण्डी, खुल्ली गुत्त रही वखाईआ। नैण शरमाउण सूरज चन्दी, बैठे मुख भुआईआ। रैण अन्धेरी होई अन्धी, आपणा रंग वखाईआ। तेरे जीवां वासना होई गंदी, सुगंधी रूप ना कोए प्रगटाईआ। काम क्रोध पाई फंदी, साध सन्त पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। शाह सुल्तान होए घुमंडी,

निवण सु अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई बाढी तेरे बिनां उच्ची नीवीं ना जाए रंदी, ना करे कोए सफ़ाईआ। तेरे हथ्थ सूत्र तन्दी, सभ दा देणा सक्क लाहीआ। तेरे हथ्थ तेसी कांडी, जिस चाहें देवें ढाह, जिस चाहें लए बणाईआ। तेरी ठोकर तेरी लोकाई खांदी, ठोक ठोक वेख सच्चे माहीआ। गुरमुख आत्मा तेरी बांदी, दोए नैण रही शरमाईआ। लोकमात विचों थक्की मांदी, चरनीं सीस रही टिकाईआ। प्रभ मेरे तुध बिन पति मेरी जांदी, ना होए कोए सहाईआ। देणा दरस बण के पान्धी, पन्ध आपणा आप मुकाईआ। मैं गीत गोबिन्द तेरे गांदी, इक्को गुण जणाईआ। जे बण के आवें ढाडी, तेरी वार सुणां चाँईं चाईआ। जे आखें ते दस्सां आंढी गवांढी, नहीं ते उँगलां कन्नां विच पाईआ। तेरी तेरे चरनां उत्तों बलिहार जांदी, बलिहारी गुर गुर सतिगुर सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। हाए खेल वरते भाणा, लोकमात कवण वरताईआ। दुहाई पीर दस्तगीर तख्तों लाहे राजा राणा, रुले सर्ब लोकाईआ। अलनेक कमचखेल खेल जिस कराना, बेऐब नाम ख़ुदाईआ। महिबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला जिस रूप वटाना, सो वेस कवण कराईआ। पीर दस्तगीर जिस वेख वखाना, वेखे सर्ब लोकाईआ। नकाब पोश पर्दा जिस उठाना, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। आबे हयात बेआबा जिस प्याना, पुन्न सवाब ना कोए वड्याईआ। अहिबाब रबाब जिस वजाना, तार सतार ना कोए हिलाईआ। पिसर पिदर जिस खेल खिलाना, सो आपणा रंग वखाईआ। इधर उधर जिस रंग चढ़ाना, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। फ़िकर विच जिस फ़िकरा गाणा, गुरमुखां नाउँ सालाहीआ। सो साहिब आपणा वरते भाणा, हरिजन साचे नाल मिलाईआ। चौदां तबकां देवे फ़रमाना, एका हुक्म सुणाईआ। उठो चलो जिस दरसन पाना, आया नूर ख़ुदाईआ। जिस नूं ईसा मूसा करे सलामां, मुहम्मद सीस झुकाईआ। सो साहिब देवे पैग़ामा, पैग़म्बर भुल्ल कोए ना जाईआ। जिस दा वज्जणा नाम दमामा, दामनगीर इक्क अख्वाईआ। जिस होणा अन्तरजामा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग याद ना जिस भुलाईआ। जो घलदा रिहा कृष्ना रामा, ईसा मूसा खेल खिलाईआ। जो नानक जपौंदा रिहा सति नामा, गोबिन्द पूत सपूत बणाईआ। सो आया पहर के जामा, जिस दी पिता ना कोई माईआ। आपे जाणे आपणा आवण जाणा, लिख लिख लेख ना कोए समझाईआ। त्रिलोकी अंदर फिर फिर गया कृष्ना कान्हा, तिन्नां लोकां डंक वजाईआ। सचखण्ड वसे आप भगवाना, सच सिँघासण सोभा पाईआ। गोबिन्द कहे मर्द मरदाना, आपणी मरदानगी ना किसे जणाईआ। जिउँ भावे तिउँ दए परवाना, गुर अवतार लोकमात सेव लगाईआ। जिउँ चाहे तिउँ वरते भाणा, ना कोई मेट मिटाईआ। कलिजुग अन्तिम जे कोई कहे मैं पछाणा, नज़र किसे ना आईआ। पूरन अंदर इक्क टिकाणा, पूर रिहा सभ ठाईआ। उडदा फिरे बिन

बबाणा, लोआं पुरीआं आपणा चरन टिकाईआ। बिन करनी जिस कीआ परवाना, सच परवानगी दए वखाईआ। जुग जन्म दे विछड़े मेले विच जहाना, आप आपणी दया कमाईआ। गुरसिखां घर आए ना कुछ पीणा ना कुछ खाणा, निरगुण रूप वटाईआ। बणा के जावे सच मकाना, चार जुग वज्जे वधाईआ। उप्पर बहे श्री भगवाना, अट्ठे पहर सहाईआ। आपे बीना आपे दाना, आपे रिज़क सबाईआ। हरिजन लेखा जिउँ जल मीना, जल मीन रूप वटाईआ। गुरसिख धक्का मारे लोक तीनां, तिन्न लोक चरनां हेठ दबाईआ। उप्पर मिले साहिब प्रबीना, पर्बत चोटी नज़र कोए ना आईआ। आपणा भगत बणाया सच नगीना, आपणे सीस ताज विच टिकाईआ। आपणा कढ्ढ कढ्ढ पसीना, गुरसिखां सेव कमाईआ। जे लग्गी सेव आए ना हीना, छड्ड मैदान भज्ज ना जाईआ। ना कोई मरना ना कोई जीणा, आपणी खेड खडाईआ। ना कोई पाटा ना कोई सीणा, ना कोई तन्द पवाईआ। गुरसिखां प्यार सिख्या इक्को खीणा, दूजी आदत ना कोए रखाईआ। जिहनूं कहिन्दे रहे पारब्रह्म बणया रहे बण के मीणा, ब्रह्म आपणे गेड़ भुआईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे उस साडा सभ कुछ छीना, ख़ाली हथ्थ दिता कराईआ। सो साहिब सदा प्रबीना, परम पुरख वडी वड्याईआ। जन भगतां दे होया अधीना, अदना हो हो सेव कमाईआ। रुस रुस बैठा मक्का मदीना, ननकाणे वाला नानक बैठा मुख भवाईआ। जिस नूं सतिगुर दिता धक्का, तिस सके कवण बचाईआ। बिन गोबिन्द लाए ना कोई डक्का, रुढ़दा बेड़ा ना कोए तराईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे हिन्दू मुस्लिम भाई सका, तिस नूं आपणा रंग वखाईआ। वेखो किधर गया बूरा कक्का, मनी सिँघ दी सुक्की ना अजे शाहीआ। हरिभगत दुआरा इक्को रक्खा, अन्त सभ दी करे सफ़ाईआ। जिस दुआरे हरि जू बह बह हस्सा, सो दुआरा सोभा पाईआ। जिस घर डरदा आए नट्ठा, डर भगतां रिहा सताईआ। बिन हथ्थां बांहवां ढट्ठा, बल आपणा आप मुकाईआ। प्रेमी अंदर प्रेम बध्धा, बिन प्रेम कोई ना फाहीआ, अठारां साल देंदा रिहा सदा, बण मरासी नाई डूम ढोलक जगत वजाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरदुआर वेंहदा रिहा हद्दां, अठसठ फेरा पाईआ। साधां सन्तां वेंहदा रिहा यद्दां, कवण यद मिले वड्याईआ। सतारां साल आपणा खेल कीता अद्धा, अद्धी धार आप लुकाईआ। साल अठारवें होया वड्डा, वड्डे दी वड वड्याईआ। जे कोई कहे मुंडा नढ्ढा, नढ्ढा मुंडा छेड़ां छेड़े आपणी खेड वखाईआ। जे कोई कहे घरों कढ्ढा, बेघर होया फिरे बेपरवाहीआ। जो कोई कहे मन्दिर मस्जिद गुरदुआर अंदर बध्धा, कागद कलम शाही नाल करी कुड़माईआ। सो मूर्ख डिगे डूँघी खड्डा, मूंह दे भार सुटाईआ। आदि जुगादि मध्ध जुग जुग गुरमुख विरले लध्धा, जिस लध्धा सो कूक कूक सुणाईआ। बिन नगारिउँ आपणे नाद आपे वज्जा, नादी नाद सुणाईआ। बिन कपड़ जिस पर्दा कज्जा, नाम दोशाला हथ्थ उठाईआ। सो साहिब

हरिसंगत विच सजा, सज्जी बांह संगत नाल मिलाईआ। आपे हो के आया नलज्जा, लोकलाज ना कोए रखाईआ। जिस नूं करदे रहे सजदा, सो स्याह पोश रूप वटाईआ। जिस दा बणदे रहे बरदा, सो बरीख़ाना इक्क खुल्हाईआ। जिस कोलों हर कोई रिहा डरदा, सो डर रिहा चुकाईआ। जिस नूं कहिन्दे खेल करे नर हरि दा, सो नर आपणी नारी लए प्रनाईआ। जिस नूं कहिन्दे भगतां पिच्छे पाणी भरदा, पीसण पीस सेव कमाईआ। जिस नूं कहिन्दे निरभउ कदे ना डरदा, भय अवर ना कोए वखाईआ। जिस नूं नानक कहिन्दा घर घर वड़दा, सो घर घर फोल फुलाईआ। बिन पौड़ीउँ आपे चढ़दा, आपणा डण्डा हथ्थ उठाईआ। बिन हथ्थां आपे फड़दा, आपणा बन्धन पाईआ। बिन हथिआरों आपे लड़दा, तीर तलवार ना कोए उठाईआ। बिन घाड़त आपे घड़दा, आपे भन्न वखाईआ। वेखो खेल सच्चे नर हरि दा, नर नारी ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार चलाईआ। आपणी धार जे ना चलाए, अचल ना कदे अख्वाईआ। आपणा विहार जे ना कराए, बिवहारी ना रूप वटाईआ। आपणा नाद जे ना सुणाए, अनादी ना कोए गाईआ। आपणा ब्रह्म जे ना प्रनाए, पारब्रह्म ना कोए सालाहीआ। आपणा कर्म जे ना कमाए, निहकर्मी ना नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अग्गा पिच्छा पिच्छा अग्गा आपणा संग रखाईआ। अगे पिच्छे साचा संग, हरि हरि आप रखाइंदा। पिच्छे डहे साढे तिन्न हथ्थ पलँघ, अंदर वड़दयां नज़री आइंदा। बाहर निकल नंगी होवे ना कंड, उत्ते बैठा ध्यान लगाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ वंडी वण्ड, कोटन ब्रह्मण्ड पन्ध चुकाइंदा। गुरसिख मेरा चमके चन्द, बिन गुरसिख मेरा नूर कम्म किसे ना आइंदा। मैं भगतां गावां छन्द, गुण आपणा आप समझाइंदा। मैं फसया विच फंद, रस्ता कोए नज़र ना आइंदा। जिध्धर वेखां दिसे गंद, सूखम राह ना कोए चलाइंदा। जे मारां झात पुरी अनन्द, अगों मेरा सिख मैनूं डराइंदा। जे करके गुस्सा वंडण जावां वण्ड, थाएँ किसे कोए नज़र ना आइंदा। मेरा नाउँ सदा बख्शंद, गुण अवगुण ना कोए जणाइंदा। जे कोई गालां कढ्ढे बत्ती दन्द, धन्न भाग कह शुकर मनाइंदा। जे कोई कहे गुजरी चन्द, ख़ुशी होर ना कोए बणाइंदा। जे कोई कहे टुट्टी गंढ्ढ, आपणी गंढ्ढ पवाइंदा। जिन्हां पिच्छे कट्टया पन्ध, सो आपणा मेल मिलाइंदा। जुग चौकड़ी गई हंढ, पार किनारा इक्क वखाइंदा। प्यार कहे मैं भगतां गौदां रहां छन्द, दूजा ढोला ना कोए सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अग्गे पिच्छे पिच्छे अगे गुरसिखां सेव कमाइंदा। अगे पिच्छे दोवें आसण, आसावान आप लगाईआ। आपे पुरख आप अबिनाशन, अबिनाशी आपणा नाउँ धराईआ। आपे दासी आपे दासन, बण सेवक सेव कमाईआ। आपे खेल आप तमाशन, जन भगतां खेल वखाईआ। आपे मंडल आपे रासन, आपे नटूआ सांग वरताईआ। आपे पृथ्मी

आपे आकासन, आपे गगन मंडल सोभा पाईआ। आपे फसया आपणी फासन, कर प्रेम प्यार पल्लू ल्या फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आपणे विच रखाईआ। तेरा संसा तेरा तन, सतिगुर संसे विच ना आईआ। तेरा संसा तेरा मन, सतिगुर मन ना कोए रखाईआ। तेरा संसा तेरा धन, सतिगुर संसे अग्गे ना झोली डाहीआ। तेरा संसा सुणे तेरा कन्न, सतिगुर संसा सुणन कदे ना आईआ। जिस दा इक्क वार मन गया मन्न, फिर होर ना कोए ढाहीआ। जिस नूं इक्क वार बणाया आपणा चन्न, आपणी गोद बहाईआ। तिस कोए ना करे खंन खंन, वण्डण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस आपा भेंटया मन तन, तिस पिच्छे की रहि जाईआ। सिँघ माहणा गया मन्न, मन्नी इक्क रज़ाईआ। तेजा सिँघ क्यों सहे डन्न, जो डंका रिहा वजाईआ। जे पुच्छे की दस्सां आपणा ढंग, जिस ढंग नाल गुरमुख रिहा मनाईआ। बिन रंगण चाड़्हां रंग, एका रंग वखाईआ। नंग्गयां नाल कट्टां नंग, गलों चीथड़े तन लुहाईआ। भिखारीआं नाल मंगां मंग, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। पहलों वारया आपणा तन, फेर गुरमुखां तन लेखे लाईआ। आपणा वास कीता बिन छप्परी छन्न, गुरमुखां दुआरा रिहा बणाईआ। जन भगतां कहे धन्न धन्न, आपणी करे ना कोए वड्याईआ। जिस घड़या तिस ल्या भन्न, आपणी ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संसा रोग ना कोए रखाईआ। जगत संसा जगत दवैख, जगत रिहा कुरलाया। जो गुरमुख वसया सतिगुर देस, तिस संसा नज़र ना आया। जे कोई जाणे मेरा साहिब वसे परदेस, पैंडा पन्ध ना कोए मुकाया। नानक किहा जैंह वेखां तैंह पेख, घट घट नज़री आया। गोबिन्द लिख के गया लेख, लिख्या लेख ना कोए मिटाया। जिस नूं मन्नदे दस दस्मेश, सो पूत सपूता नाउँ धराया। तिस दर्शन लैणा पेख, घर सज्जण सच्चा आया। कल कीआ अवल्लड़ा वेस, वाह वा आपणी पाई माया। जिस दे पिच्छे नानक खूंडी भूरी चुक्या खेस, बन बन फेरा पाया। सो साहिब जन भगतां करे आदेस, आदेस आदेस आप अल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण ना कोए रखाया। अवगुण फिरे आप भगवान, गुण ना कोए रखाइंदा। पहलों भगतां देवे दान, फेर आपणी सिफ्त कराइंदा। पहलां गुरुआं सुणाए कलाम, कलमा नबीआं आप पढ़ाइंदा। फेर शरअ बणाए तमाम, शरीअत आपणी वण्ड वंडाइंदा। करे खेल हो मेहरवान, दयावान धार चलाइंदा। जिस करे आप पहचान, आपणी पहचान आप वखाइंदा।

★ २२ कत्तक २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

निरगुण जोत जोत अकाली, अकल कला अख्वाईआ। आदि जुगादि खेल निराली, जुग जुग वेस वटाईआ। गगन मंडल वेखे दीपक थाली, त्रैभवन बेपरवाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड जोत उजाली, नूर नूराना डगमगाईआ। सचखण्ड वसे शाह सुल्तानी, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। नाम निधाना इक्क निशानी, निरवैर आप जणाईआ। आपे जाणे आपणी अकथ कहानी, कथ कथ रसना लेख ना कोए मुकाईआ। आपे हुक्म आपे हुक्मरानी, हुक्म हाकम आप अख्वाईआ। आपे दाता आपे दानी, दीन दयाल दया कमाईआ। आपे अक्खर आपे बाणी, निष्अक्खर आपणी धार समाईआ। आपे जोद्धा सूरबीर बली बलवानी, बल आपणा आप प्रगटाईआ। आपे होए गुण निधानी, अवगुण आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आपणे हथ्थ रखाईआ। साची धारा खेल अपारा, हरि सतिगुर आप कराइंदा। आदि जुगादी हो उज्यारा, नूर नूराना डगमगाइंदा। सति सतिवादी सच सहारा, साचा आप जणाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर भेव ना आइंदा। जगत जुग खेल न्यारा, निरगुण आपणा आप वखाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, पढ़ पढ़ पन्ध ना कोए मुकाइंदा। वसणहारा साचे दरबारा, थिर घर आपणा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१४६६ किरपा कर, आपणे रंग आप समाइंदा। आपणे रंग वसे निरँकार, त्रैगुण अतीता दिस ना आईआ। सचखण्ड दुआरा खोल्ह १४६६

किवाड़, सच सिंघासण सोभा पाईआ। जोती जाता हो उज्यार, पुरख बिधाता डगमगाईआ। इक्क इकांता शाह सिक्दार, शहिनशाह आपणा नाउँ धराईआ। रूप रंग रेख ते वसया बाहर, अनुभव प्रकाश धराईआ। आपे जाणे आपणी कार, करता पुरख वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आपणा खेल आप कराईआ। जुगा जुगन्तर खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण हो उज्यारा, नूर नुराना डगमगाइंदा। एकँकारा कर पसारा, आप आपणी खेल खिलाइंदा। आदि निरँजण हो उज्यारा, जोत निरँजण दीपक आप जगाइंदा। अबिनाशी करता पावे सारा, लक्ख चुरासी घट घट वेख वखाइंदा। श्री भगवान दए हुलारा, शब्द अनादी नाद वजाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म करे प्यारा, आपणा मेला आप मिलाइंदा। सोहे घर सच्चा दरबारा, जिस घर हरि जू आसण लाइंदा। बिन तेल बाती दीपक होए उज्यारा, आपणा नूर आप प्रगटाइंदा। सच महल्ल खेल अपारा, अपरम्पर आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। सचखण्ड बैठ श्री भगवान, आपणी दया कमाईआ। एका देवे धुर फ़रमान, सच संदेश सुणाईआ। उठ गंवार बाल नादान, धन्ने राह वखाईआ। दरस कर श्री भगवान, पुरख

अबिनाशी दया कमाईआ। लोकमात कर ध्यान, ध्यान ध्यान विच लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेशा आप सुणाईआ। शब्द संदेशा सुणया धन्ने, धन्न धन्न कहे लोकाईआ। बिन नेत्र पेख कदे ना मन्ने, नेत्र नैण ना कदे मिलाईआ। मैं जाणयां तूं भोग लगाए नामे छन्ने, छप्पर छन्न छुहाईआ। जब तक ना मेरा बेड़ा बन्ने, मेरी आस ना पूरी कराईआ। रोटी खाए ना फड़के खंने, मेरा संग निभाईआ। तैनूं पूजन झूठे अन्ने, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिंब तक मेरा साहिब ना मन्ने, मेरे मन सांत ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। दया कमाए हरि जू ठाकर, ठगौरी कोए ना रखाईआ। मेरे नाम बणया सौदागर, साचा वणज दए कराईआ। लोकमात देवे आदर, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, निरवैर मेल मिलाईआ। दर आ के देवे आदर, घर बह बह सेव कमाईआ। करे खेल करीम कादर, कुदरत वेखे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। दया कमा श्री भगवन्त, आपणा दरस दिखाइंदा। देवे वड्याई विच जीव जंत, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। मेल मिलावा अन्तिम अन्त, एका गुण जणाइंदा। धाम वखाए सोभावन्त, घर साचा आप सुहाइंदा। इक्को वार बणे बणत, दूजी वार ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

१४६७ दे दरस आप मनाइंदा। कर दरस धन्ना होया ना ख़ुश, अगों आपणा मुख भवाईआ। पुरख अबिनाशी रिहा पुछ, क्यों नैण नैण शरमाईआ। धन्ना कहे की तेरे कोल है कुछ, जो मंग मैं मंगाईआ। मैं रुस्सा तूं बैठा रुस्स, रुस्सयां कोलों मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। मैं नहीं रुस्सा दर दुआर, आया बण भिखारी। धन्ने कर इक्क प्यार, मैं जावां तैथों बलिहारी। तेरी सेवा करां अपर अपार, निरगुण धार जोत निरँकारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारी। धन्ना जट्ट रिहा दस्स, गंवार बुध्ध वड्याईआ। बचन देणा मैनूं हस्स, एका मंग मंगाईआ। इक्क इकल्ला जे मनावें नस्स, तेरी वड्डी ना कोई वड्याईआ। जे तेरे कोल कुझ नहीं कह दे बस, धन्ना तेरे दर ना मंगण जाईआ। जे तूं होया भगतां वस, घर मेरे फेरा पाईआ। मेरी पुरी करनी आस, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण शब्द रिहा जणाईआ। पूरी करां तेरी आसा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। धन्ने मेरा तेरे उत्ते भरवासा, तेरा भरवासा मेरे उत्ते ना आइंदा। मैं तेरे दर चल के आया तूं करदा हासा, जट्ट गंवार ना कोए समझाइंदा। जिध्धर वेखें उधर मेरा पासा, दूजा राह ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणा बचन आप प्रनाइंदा। हरि जू

बचन ल्या मन्न, धन्ना लए अंगड़ाईआ। पुरख अबिनाशी सुण लै कन्न, तेरा तैनूं रिहा सुणाईआ। धन्ना ख़ुश ना होवे बण के तेरा जन, इक्क इकल्ला रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ सेवक मंग मंगाईआ। धन्ना मंगे दान, प्रभ अगे सीस झुकाइंदा। कर किरपा श्री भगवान, हउँ भिखक झोली डांहयदा। तेरे चरन धूढ़ इक्क अशनान, दुरमति मैल धवाइंदा। तूं आदि जुगादी सच्चा काहन, हउँ बण बण गोपी सेव कमाइंदा। तूं एथे उथे देवें माण, निमाणयां गले लगाइंदा। मैं बालक भुल्लया विच जहान, तुध बिन बुध ना कोए प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कीता कौल भुल ना जाइंदा। साचा वर दे सज्जण मीत, धन्ने आख सुणाया। आपणी दस्सां साची रीत, आपणा पर्दा लाहया। कल्ला जट्ट ना गाए तेरा गीत, तेरा गीत मोहे ना भाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग दे निभाया । इक्क इकल्ला ना रहिवां संग, धन्ना आख सुणाईआ। मेरी चोली जे चाढ़या रंग, रंग रंगीला इक्क वखाईआ। मेरे गृह जे वजाया मृदंग, नाम धुन शनवाईआ। इक्क इकल्ला जे लाया अंग, अंगीकार आप कराईआ। मेरी कट्टी जे भुक्ख नंग, मेरी कुल पार ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अभुल भुल कदे ना जाईआ। आपणी कुल मंगां दात, प्रभ वड्डे बेपरवाहया। मेरे नाल मेल मिले भ्रात, भाई भाईआं संग रखाया। असीं अनपढ़ चढ़ीए इक्क जमात, अग्गा पिच्छा ना कोए रखाया। साडे कोल ना कोई शाही कलम दवात, पांधा पढ़ाउण कोए ना आया। साडी गंवारां दी इक्को ज़ात, ना कोई वण्ड वंडाया। जे तुद्धां बख़्श आपणा नात, ना कोई तोड़ तुड़ाया। जिउँ मैनूं वेख्या मार झात, तिउँ बंस लै गल लाया। पिच्छे रहे ना मेरा पिता मात, जिस दे जन्म तेरा दरस कराया। मेरा तुट्ट ना जाए नारी साक, तेरा संग निभाया। मेरा पूरा कर दे साथ, तेरे अग्गे झोली डाहया। रल मिल गाईए तेरी गाथ, तेरा ढोला मोहे भाया। जे ना पुछें साडी वात, धन्ना नाँ ना तेरा ध्याया। मैं तैनूं कहां तूं नार कमज़ात, भगत कन्त ना संग निभाया। जे कोई पुछे तेरी ज़ात, मैं बैठां मुख भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाया। पुरख अबिनाशी रिहा हस्स, दर धन्ने ख़ुशी मनाईआ। घर आ के मैं गया फस, ना कोई समझे ना समझाईआ। निरगुण हो जे जावां नस, भगत लाज ना कोए रखाईआ। जिस ने कीता मैनूं वस, वस प्रेम भुल ना जाईआ। जिंनां चिर धन्ना कहे ना बस बस, मुड़ के फेर घर ना जाईआ। अगला मार्ग जावां दस्स, इक्को गल्ल समझाईआ। धन्ने तेरा काया खेड़ा जाणा ढट्ठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। करे खेल पुरख समरथ, बेपरवाह वडी वड्याईआ। बिन डोरी पाए नथ्थ, स्वांगी आपणा सांग

रचाईआ। बिन अक्खर गाए गाथ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सन्तोख नाल समझाईआ। सति सन्तोख देवे दान, आपणी दया कमाईआ। धन्ने तेरा तेरा करे परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल महान, खेल खिलारी आप कराईआ। प्रगट होए श्री भगवान, निरगुण आपणा रूप धराईआ। तेरी कुल करे परवान, आपणी गोद बहाईआ। आपे वेखे मार ध्यान, नित नित आपणा नैण उठाईआ। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, आत्म अन्तर इक्क बुझाईआ। घर घर दरस देवे आण, दर दर आपणी सेव कमाईआ। करे खेल हो मेहरवान, पुरख अबिनाशी वड वड्याईआ। बिन मंग्गयां देवे दान, दाता दान झोली पाईआ। बिन मजन कराए अशनान, चरन धूढ़ आप नुहाईआ। बिन कन्न सुणाए धुन्कान, धुन आत्मक आप शनवाईआ। आपे होए बेपहचान, नज़र किसे ना आईआ। हरिजन वेखे चतुर सुघड़ सुजान, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। आपे मेले विच जहान, जीवण जुगत दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, एका गुण समझाईआ। सुणया हाल धुर फ़रमाना, धन्ने नैण उठाया। मैनूं लिख के दे परवाना, बिन लिखे लेख तेरा इतबार कदे ना आया। वल छल तेरा खेल महाना, जुग जुग अछल अछल कराईआ। तख्तों लाहे राजा राणा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाया। कोटन कोटि तेरा मन्न के गए भाणा, तेरे अगे सीस झुकाया। मैं अनपढ़ बाल अञ्याणा, तेरे धोखे विच कदे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ साची मंग मंगाया। पुरख अबिनाशी अन्तर धार, आपणी आप जणाईआ। करे खेल की करतार, राह नज़र कोए ना आईआ। भगत भगवन अग्गे बैठा पैर पसार, ना सके कोए उठाईआ। अन्त आप गया हार, भगत दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेख आप जणाईआ। आपणे मस्तक कढ्ढी इक्क रत, साचा लेख लिखाया। धन्ने तेरी रक्खे पत, कलिजुग अन्त होए सहाया। तेरा बीज बीजे बिन वत, आप आपणा हल चलाया। करे खेल पुरख समरथ, महिमा अकथ आपे गाया। तेरी कुल अंदर जाए वस, निरगुण आपणा रूप वटाया। अंदर बह के जाए हस्स, दिस किसे ना जाया। जिंनां चिर ना कहे बस्स बस्स, जट्ट गंवारा तेरे नाल दयाँ मिलाया। भ्रावां नाल मिलाउणा उठ के हथ्थ, हथ्थ हथ्थ नाल वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाया। धन्ने सुणया हरि फ़रमाना, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कलिजुग अन्त मेरा नाउँ सर्ब भुल जाण, मेरी रहे ना कोए वड्याईआ। जिस दे पिच्छे मैं छड्डया पीण खाण, एका मंग मंगाईआ। ओहनूं मन्ने ना कोए भगवान, भुल्ले सर्ब लोकाईआ। जट्ट जट्ट ना सकण पछाण, लुकवीं आपणी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सीस मेरे हथ्थ टिकाईआ। पुरख अबिनाशी शाह पातशाह, आपणी दया कमाइंदा। कीता कौल तोड़ दए निभा, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाइंदा। तेरा मेला ल्ए मिला, आपणा मेल आप कराइंदा। तेरा लेखा दए चुका, लिख परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाइंदा। पुरख अबिनाशी तेरा इकरार, धन्ना भुल कदे ना जाईआ। जगत माया तेरा विहार, लक्ख चुरासी विच फसाईआ। कोटन कोटी गए हार, तेरी हाथ किसे ना पाईआ। कोटन कोटि रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तूं किसे दा ना बणया यार, बैठा आपणा मुख छुपाईआ। तेरे पिच्छे जीव जंत होए ख्वार, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। त्रैगुण तेरी मारे मार, देवे मुख भवाईआ। तेरा नाउँ ना सके कोए उच्चार, तेरा राह ना कोए वखाईआ। कलिजुग रैण होए अन्धयार, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। माया ममता मोह होए विभचार, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। तेरे भगतां दिसे ना तेरा दुआर। तेरा नैण ना कोए खुल्हाईआ। कर किरपा दरस देणा आप निरँकार, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, वर दाता आप हो जाईआ। सुण धन्ने मन्न लै कहिणा, हरि साचा सच जणाइंदा। कलिजुग अन्त चुकावां लहिणा, देणा होर ना कोए वखाइंदा। तेरी कुल वखावां नैणां, जट्ट गंवारां बन्धन पाइंदा। घर घर अंदर आपे बहणा, घट घट आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप जणाइंदा। हुक्म जणाए हरि करतार, आपणी दया कमाईआ। कलिजुग आवे अन्तिम वार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अलख अगोचर अगम्म अपार, बेपरवाह वडी वड्याईआ। हरिजन साचे लवां उभार, आप आपणा दरस दिखाईआ। लोकमात कर प्यार, एका घर बहाईआ। इक्क अठ्ठ अठारां मेटे धाड़, धाड़वी बणे सच्चा शहिनशाहीआ। त्रैगुण माया मारे मार, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप चलाईआ। त्रैगुण मुकाउणा पन्ध, हरि सज्जण आप जणाइंदा। धन्ने गाउणा इक्क छन्द, सो पुरख निरँजण आप सुणाइंदा। कलिजुग अन्तिम मुक्के पन्ध, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। हरिजन आपणे नाल गंढु, आपणी गंढु पवाइंदा। जगत माया देवे दंड, दंडणहारा इक्क अख्वाइंदा। हरिजन उपजाए साचे चन्द, गुरमुख मुख आप सालांहयदा। भगतां देवे निजानंद, निज आत्म रस चखाइंदा। सन्तां देवे परमानंद, परम पुरख सेव कमाइंदा। करे खेल सूरा सरबंग, सूरबीर वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा पूर कराइंदा। मस्तक रत जो खिच्ची लकीर, आपणा परवाना आप जणाईआ। कलिजुग अन्त वेख अख़ीर, पुरख अबिनाशी वेस वटाईआ। साचे भगतां दे दे धीर, आपणा बन्धन पाईआ। लक्ख चुरासी कट्ट

१४७०

ज़ंजीर, आवण जावण गेड़ मिटाईआ। अमृत आत्म ठंडा सीर, निझर झिरना आप झिराईआ। हउमे कढ्ढे ममता पीड़, माया मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रत आपणे लेखे आपे पाईआ। रत नाल लिख्या लेख, लिख धन्ने हथ्थ फड़ाया। कलिजुग अन्तिम लैणा वेख, लहिणा झोली देवे पाया। पुरख अबिनाशी नर नरेश, आदि जुगादी खेल कराया। अगम्म अगम्मड़ा वसे आपणे देस, देस निराला इक्क सुहाया। आपे सुता बाशक सेज, सांगोपांग आप हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाया। साचा भेव करता पुरख, एका वार जणाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, ख़ुशी ग़म ना कोए वड्याईआ। जिस कर किरपा देवे दरस, दीनन आपणी गोद सुहाईआ। कलिजुग अन्तिम करे तरस, त्रैगुण डेरा आपे ढाहीआ। अमृत मेघ आपे बरख, हरिजन साचे लए जगाईआ। लेखा जाणे अर्श फर्श, काया कुरा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धन्ने तेरा चुकाए
१४७१ लहिणा, तन बस्त्र पाए एका गहिणा, सच शिंगार दए वखाईआ। लिख्या लेख आपणी रत, पारब्रह्म वडी वड्याईआ। अन्तिम खाते लए घत, हिसाब किताब मुकाईआ। उँनी कत्तक बीस अठारां बीज बीजया साचे वत, पत्त डाली आप महिकाईआ। आपे प्रगट करे बहत्तर भगत, सत्तरां एका रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा आप चुकाईआ। आपणी रत त्रैगुण माया, इक्को रंग चढ़ाईआ। जिस दी सभ दे उप्पर छाया, सो साहिब खेल कराईआ। जिस नूं धन्ने जट्ट ध्याया, सो भगतां रिहा ध्याईआ। जिस दा गुण सभ ने गाया, सो गुरमुखां गुण रिहा सुणाईआ। जिस दा भेव किसे ना पाया, सो आपणा पर्दा रिहा चुकाईआ। जिस नूं कहिन्दे गए दाई दया, सो दाई दया बण बण सेव कमाईआ। जिस नूं कहिन्दे आदि जुगादी पित माया, सो पिता पूत गोद बहाईआ। जिस नूं कहिन्दे बेअन्त बेपरवाहया, बेऐब नाम ख़ुदाईआ। सो मुर्शद मुरीदां पिच्छे फिर फिर आपणा हाल सुणाया, हाल मुरीदां आपणी झोली पाईआ। जिस नूं नानक गोबिन्द गाया, दोए जोड़ करी सरनाईआ। सो साहिब बिन रंग रूप लोकमात वेस वटाया, जट्टां नाल करे कुड़माईआ। दूजा साक ना कोए बणाया, आपणा कीता भुल ना जाईआ। भुल्ला कुटम्ब लए तराया, दूर दुराडे मेल मिलाईआ। वरन बरन ना कोए रखाया, ज़ात पात ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करया खेल साचे हरि, हरि आपणा खेल वखाया। त्रैगुण माया दिती दब्ब, आपणी रत रंगाईआ। भगत दुआरे कट्ठी होई सभ, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कलिजुग ख़ुमारी लथ्थी मदि, मदहोश फिरे सार कोए ना पाईआ। पीर पैग़म्बरां गुर अवतारां साधां सन्तां रही सद्द, कोई आओ लउ छुडाईआ। अग्गों सारे कहिण असीं आपणी आपणी वार भार गए लद, पिच्छे मुड़ फेरा

कोए ना पाईआ। तैनूं लोकमात गए छड्ड, तेरा संग ना कोए रखाईआ। तूं भगतां मार मार थोथे कीते हड्ड, तैथों बैठे मुख शरमाईआ। तूं आई साडे ना वस, कूक कूक गए सुणाईआ। तैनूं फड़या पुरख समरथ, ना सके कोए छुडाईआ। तेरे नक्क पाई नथ्थ, नथ्थ सुहाग दए तुड़ाईआ। तेरा कोई ना रिहा मित, तेरी प्रीत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। आपणा खेल कर निरँकार, धन्ना जट्ट उठाया। उठ वेख विच संसार, हरि जू आपणा वेस वटाया। तेरे संग तारे कई हज़ार, कोटन कोटिं विच माण दिवाया। तूं मेरा मंगया इक्क दीदार, आपणा हठ निभाया। मैं कलिजुग अन्तिम बिन मंग्गयां दिता तार, रातीं सुत्तयां दरस दिखाया। बिन हथ्थां ल्या उठाल, आप आपणी गोद बहाया। बिन लिखिआं कीता हल्ल सवाल, अलजबरा मात ना कोए सिखाया। बिन दलालीउँ बणया दलाल, सच दलाली आप कमाया। बिन छुरीउँ होया हलाल, गुरसिखां नींह थल्ले आपणी रत रखाया। शाहों करे कंगाल, कंगालों शाह आप बणाया। त्रैगुण माया कर बेहाल, भगतां चरनां हेठ दबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धन्ने नैणां नाल वखाया। धन्ना वेख ख़ुशी मनौदा, कलिजुग अन्तिम वार। पुरख अबिनाशी ढोला गाउँदा,
१४७२ गीत गोबिन्द एकँकार। सैण नाई उठ उठ कन्न लौंदा, कौण करे सच्ची गुफ्तार। कौण विछड़े मेल मिलौंदा, आप आपणा कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। सुणया राग उठया सैण, साँई ध्यान लगाया। हरि जू तेरा नाउँ कवण लैण, तेरे रंग समाया। कलिजुग माया सभ नूं खाए डैण, बचया कोए रहिण ना पाया। नाता तुट्टा भाई भैण, पिता पूत ना कोए मनाया। राए धर्म अन्त सभ दा चुकाए लहिण देण, वेले अन्त ना कोए छुडाया। लाड़ी मौत खाए डैण, चारों कुण्ट फेरा पाया। धन्न भाग जो जन तेरा भाणा सहिण, सैण निउँ निउँ सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया। धन्ने सुणी सैण आवाज, आपणी करवट लए बदलाईआ। आ यार मैं दस्सां राज़, भेव अभेद खुल्हाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे ग़रीब निवाज़, सो ग़रीब निमाणयां सेव कमाईआ। जेहड़ा तेरे पिच्छे गया दुआरे राज, बण सेवक सेव कमाईआ। सो लोकमात रचाए काज, आपणे भगतां नाल रलाईआ। बिन भगती देवे दाज, वेख पूत पिता ख़ुशी मनाईआ। आपणे बेड़े चाढ़े सच जहाज़, चप्पू आपणा नाम लगाईआ। मैनूं पहलों मार के गया आवाज़, फिर लोकमात आपणे गुरमुख लए उठाईआ। धन्न भाग जे तूं सुणया आज, साचे घर वज्जी वधाईआ। जिस मेरी रक्खी लाज, सो दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। सैण अग्गों कहे पुकार, निमी निमी धार जणाइंदा। कवण कूटे वेखां मैं सच्चा यार, परवरदिगार रूप

वटाइंदा। धन्ना कहे वेख खोल्ह किवाड़, लोकमात राह जणाइंदा। जिथे करे सच विहार, हरिजन साचे रिहा तार, जोती जोत डगमगाइंदा। नौं दुआरे खोल्ह किवाड़, बहत्तर भगतां अंदर देवे वाड़, सत्तरां साची सेव जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जोत डगमगाइंदा। धन्ना कहे हरि का नूर, निरगुण निरगुण निरगुण रुशनाईआ। सैण कहे शब्द साची तूर, नाद नाद नाद वजाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं सभ तों दूर, मेरा भेव कोए ना पाईआ। बहत्तर भगत कहिण हाज़र हज़ूर, घर साडे डेरा लाईआ। सत्तर कहिण सरधा पूर, साडी आसा पूर कराईआ। हरिसंगत कहे सानूं मिले ज़रूर, रातीं सुत्तयां दरस दिखाईआ। धन्ने सैण टुट्टा ग़रूर, प्रभ दर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। धन्ना कहे सैण चल वेखीए जोत अकाली, निरगुण आपणी धार जणाइंदा। सैण कहे धन्ने अज्ज दीवाली, हरि साचा ख़ुशी मनाइंदा। धन्ना कहे कलिजुग रैण अन्धेरी काली, दीपक कोए नज़र ना आइंदा। सैण कहे हरिभगत प्रभ अग्गे सवाली, सभ दी आसा पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। सैण कहे दीवाली रात, रातीं सुत्तयां बीत ना जाईआ। धन्ना कहे नार कमज़ात,

१४७३ ठग्गां चोरां नाल रलाईआ। गुरमुख कहिण मिल्या पुरख अबिनाश, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप १४७३

आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। धन्ना कहे जगत विहारा, घर घर लच्छमी राह तकाया। सैण कहे सभ होण ख्वारा, बिन हरि जू दया ना कोए कमाया। भगत कहिण मिल्या हरि नाम भण्डारा, निखुट कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बन्धन पाया। धन्ना कहे सुणो राग, दीपक राग जगत गुण गाईआ। सैण कहे नाता तुटया कन्त सुहाग, सुंञी सेज वेख वेख नेत्र नैण नीर वहाईआ। भगत कहिण होए वड वड भाग, प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। बिन दीपक जगया चिराग़, घर मन्दिर होई रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। धन्ना कहे सुण सैण प्यारे, कन्न नाल कन्न मिलाईआ। लोकमात खेल न्यारे, पुरख अबिनाशी आप कराईआ। भगतां बैठा जा दुआरे, निरगुण रूप वटाईआ। चल चलीए कर के आईए निमस्कारे, चरन धूढ़ मस्तक टिक्का लाईआ। कर किरपा जे घर आए हमारे, रज्ज रज्ज दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। दोवें उठ पए राह, आपणा पन्ध मुकाया। इक्क दूजे नाल करन सलाह, पुरख अबिनाशी खेल रचाया। जन भगतां बणया आप मलाह, बेड़ा लोकमात चलाया। आपणा जपाया इक्को नाँ, दूजा नाउँ ना कोए वखाया। आपे पकड़ी अन्तिम बांह, आप आपणे गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे खेल

कराया। दोए दुआरे गए आ, नेत्र नैण बिगसाईआ। चरन कँवल सीस टिका, सरन लई सरनाईआ। किरपा कर सच्चे शहिनशाह, एका मंग मंगाईआ। आपणयां भगतां दुआरा दे वखा, जिस थल्ले आपणी रत दबाईआ। मेरा लेखा पूर दिता करा, मेरा लहिणा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा पर्दा आप उठाईआ। पुरख अबिनाशी दीन दयाला, एका हुक्म सुणाइंदा। मेरे भगतां राह सुखाला, हथ्थ किसे ना आइंदा। कर किरपा तोड़या जगत जंजाला, जाग्रत जोत जगाइंदा। माणस जन्म ना मंगया हाला, काया खेती बण किरसाण साची सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा। भगत दुआर जे दरसण पाउणा, हरि साचा सच जणाईआ। कबीर जुलाहा नाल रलाउणा, एका संग वखाईआ। छब्बी पोह चल के आउणा, एका थित वड्याईआ। अग्गे भगतां विच हरि जू बण के बहे पराहुणा, घर घर विच ख़ुशी मनाईआ। रात मिले ना किसे नूं सौणा, अक्ख नींद करे कुड़माईआ। सवा सवा सवा पहर सभ ने गाउणा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी वड्याईआ। पुरख अबिनाशी आपणे दर बहाउणा, दर बह बह रंग रंगाईआ। भगतां कोलों भगत दुआर खुल्हाउणा, साचा सगन मनाईआ। फड़ कबीर अग्गे लाउणा, नौं दुआरे पन्ध मुकाईआ। जगत खेड़ा सभ ढाउणा, कूड़ी सफ़ा दए उठाईआ। डौरू डंका इक्क वजाउणा, नौबत वज्जे साचे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि खेल महान, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाईआ।

साचा नाम हरि की मेहर, मेहरवान दया कमाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े जो लए घेर, आप आपणे अंग लगाईआ। देवे दरस ना करे देर, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। सद वसे नेरन नेर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। पूर्ब लहिणा दए नबेड़, अगला आपणे लेखे पाईआ। आवण जावण चुक्के गेड़, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। तन ख़ाकी माटी ना होए ढेर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम इक्क रखाईआ। हरि का नाम सच्चा रंग, गुर सतिगुर आप चढ़ाइंदा। जिस जन देवे आपणी मंग, दूजे दर ना मंगण जाइंदा। जिस सुणाए आपणा छन्द, राग रागनी मुख शरमाइंदा। दूई द्वैत भरमां ढावे कंध, भाण्डा भरम भउ भनाइंदा। इक्क उपजाए परमानंद, आपणा दरस कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हँ ब्रह्म एका घर वखाइंदा। हँ ब्रह्म साची धार, पारब्रह्म प्रगटाईआ। सो पुरख निरँजण आप निरँकार, हँ जीव रूप समाईआ। सोहँ अक्खर भगत विचार, जगत विद्या भेव ना राईआ। महाराज खेल करे अपार, सिँघ शेर रूप

वटाईआ। शेर सिँघ इक्क भबकार, लोक परलोक रिहा सुणाईआ। विष्नूं बण सेवादार, जन भगतां सेव कमाईआ। भगवन वसे सचखण्ड दुआर, लोकमात जै जैकार आप सुणाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जो जन गाए पंज जैकार, जन्म मरन विच कदे ना आईआ।

कोटन कोटि चलाए नाँ, अनक बिधी समझाईआ। कन्नों फड़ फड़ लाए राह, रहिबर नाउँ धराईआ। लै ना सकण साह, गेड़ा गेड़े विच रखाईआ। अग्गों कर ना सके कोई ना, पिच्छे बैठा सच्चा माहीआ। उच्ची कूक कूक रहे सुणा, ढोला एका गाईआ। आओ विछड़े लईए मिला, मिल मिल मंगल गाईआ। जिन सानूं दिता घला, सो आपणा हुक्म सुणाईआ। भुल्ले ना बेपरवाह, मंगी इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आपे आप वखाईआ। कोई कहे विष्नूं दाता, कोए ब्रह्मा सीस झुकाईआ। कोई कहे शंकर नाथा, उच्चे टिल्ले आसण लाईआ। कोई कहे चतुर्भुज देवे साथा, आपणा संग निभाईआ। कोई कहे अष्टभुज माता, दुर्गा इष्ट रहे मनाईआ। कोई कहे गणेश मेटे अन्धेरी राता, गणपति सीस झुकाईआ। कोई कहे आदि शक्ति मेटे अन्धेरी राता, आपणी दया कमाईआ। हरिभगत इक्को कहे पुरख बिधाता,
१४७५ जो सभ दा पिता माईआ। कोई कहे वेद भगवान, पढ़ पढ़ वक्त लँघाईआ। कोई कहे सूरया महान, निउँ निउँ सीस १४७५
झुकाईआ। कोई कहे चन्दर देवता बलवान, सीतल धार वहाईआ। कोई कहे करोड़ तेतीसा देवे पीण खाण, सुरपति इन्द माण वड्याईआ। कोई कहे धरती मात देवे पकवान, आपणा रिज़क वखाईआ। भगत कहे बिन हरि ना कोए निशान, जो दीसे सो रहिण ना पाईआ। कोई कहे जल गुरदेव, धन्न धन्न लोकाईआ। कोई कहे अग्नी सेव, अग्न हवन वखाईआ। कोई कहे वायू अहंमेव, साचा फल लगाईआ। भगत कहे पारब्रह्म अलख अभेव, बेअन्त वडी वड्याईआ। कोई कहे तारे अवतार, कोए गुर गुर सीस झुकाइंदा। कोई कहे पुराण आधार, कोई शास्त्र सिमरत गाइंदा। कोई कहे बारां अक्षर करे निस्तार, नारद मुन समझाइंदा। कोई कहे कृष्न मुरार, कोई रामा सीस झुकाइंदा। भगत कहे इक्क करतार, जो गुर अवतार उपजाइंदा। कोई कहे पीर पैग़म्बर, कोई सजदा सीस झुकाया। कोई कहे कलमा कलाम रचाए सुअम्बर, सच अमाम मेल मिलाईआ। कोई कहे सीस रक्खे पीतम्बर, रूप अनूप वटाईआ। भगत कहे सर्ब भरतम्बर, घट घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल खिलाईआ। कोई कहे भगत भगवान, भगतां सीस झुकाइंदा। कोई कहे सन्त देवण दान, नाम दान इक्क वरताइंदा। कोई कहे गुरमुख देवे ज्ञान, ज्ञान गोझ समझाइंदा। कोई कहे

गुरसिख चतुर सुजान, साची सोझी पाइंदा। हरिभगत कहे इक्क भगवान, भगतां उप्पर जो दया कमाइंदा। कोई कहे नानक निरँकार, कोई अंगद गुरु मनाईआ। कोई कहे अमरदास आधार, कोई कहे राम दास सरनाईआ। कोई कहे अर्जन प्यार, कोई कहे हरि गोबिन्द वडी वड्याईआ। कोई कहे हरिराय पैज दए संवार, कोई कहे हरिकृष्न सदा ध्याईआ। कोई कहे तेग़ बहादर आपा वार, लोकमात लई वड्याईआ। कोई कहे गोबिन्द मीत मुरार, पुरख अकाल रूप वटाईआ। नानक गोबिन्द दोवें करन निमस्कार, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। कोई कहे वड्डा पन्थ, मार्ग पन्थ चलाया। कई कहे वड्डा बंस, गुरसिख रूप वटाया। कोई कहे हरि का खेल सहँस, सहँसर आपणा नाउँ धराया। कोई कहे गुरु ग्रन्थ, गुरु ग्रन्थ ओट रखाया। भगवान कहे मेरा किसे ना पाया अन्त, सभ मेरी सिफ्त सालाहया। मेरा गा गा थक्के मंत, लोकमात सर्ब कुरलाया। जिस बणाई आप बणत, तिस लहिणा मूल चुकाया। कलिजुग अन्त वड्याई साची संगत, जिस हरि जू संग निभाया। एथे ओथे किसे दर ना होवे मंगत, ख़ाली झोली ना कोए रखाया। माणस जन्म ना होवे भंगत, आवण जावण लेखे लाया। कबीर जुलाहा राह तक्के कदों बहां विच मिल के पंगत, जो लोकमात विहार चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मध्ध आपणा खेल आप कराया। दस्म दुआरी छोटी गुठ्ठ, हरि लोकमात बणाईआ। रुस के एहदे विच बहे लुक, आपणा

१४७६ आप छुपाईआ। अंदर बह बह रिहा कुट्ट, दिस किसे ना आईआ। कर किरपा जिस दे अंदरों पए फुट्ट, आपणा पर्दा देवे १४७६

लाहीआ। मां कुक्ख अंदर बणे पुत, बाहर बाला रूप अख्वाईआ। कोई ना जाणे अंदर रहे अबिनाशी अचुत, रूप रंग रेख ना कोए रखाईआ। जिस सुहाए आपणी रुत, आपणी महिक दए महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्म दुआरी जगत गुठ, लुकवीं खेल खिलाईआ। दस्म दुआरी छोटी नुकर, निक्का हो हो रूप वखाइंदा। जे कोई सच पुछे ते जाए मुकर, आपणा भेव ना किसे खुल्हाइंदा। जे कोई अग्गों मंगे उत्तर, अणभुल्ला हुक्म सुणाइंदा। जे कोई कहे मैं तेरा पुत्तर, फड़ फड़ गोद बहाइंदा। गुरमुखां वेख मनाए शुकर, आपणी ख़ुशी मनाइंदा। सच पुछो बणया रहे बुच्चड़, आपणी हथ्थीं आपणे जीव कुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्म दुआरी गुट्ठ इक्क वखाइंदा। दस्म दुआरी डूँग्घा खोला, आपणी खुड्ड पुटाईआ। आपे वसया रहे ओहला, दिस किसे ना आईआ। जे कोई कहे भाला भोला, भोले रूप वेस वटाईआ। जे कोई कहे कला सोलां, सोलां कला दए समझाईआ। जे कोई कहे रूप मौला, मौला आपणी धार जणाईआ। जे कोई कहे झूठा पौंदा रौला, झूठयां नाल झूठा रंग चढ़ाईआ। जे कोई कहे मेरा सतिगुर चुक्के मेरा डोला, तिस आपणे कंध उठाईआ। लोकमात भार करे हौला, अगला पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। हर अंदर दस्म दुआर, दस्म दुआर निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस अंदर लभ्भणे गए यार, यार हथ्थ ना आईआ। जिस दे पिच्छे हुंदे रहे ख्वार, जंगल जूह उजाड़ पहाड फेरा पाईआ। जिस दे पिच्छे तपदे रहे अंग्यार, जगत धूंणीआँ ताईआ। जिस दे पिच्छे काया रहे ठार, जल धारा सीस कराईआ। जिस दे पिच्छे छड्डदे रहे घर बार, नार कन्त होई जुदाईआ। जिस दे पिच्छे लुक लुक बैठे डूँग्घी गार, आपणा मुख छुपाईआ। जिस दे पिच्छे पढ़ पढ़ पत्तरे छड्डे पाड़, पतण मिल्या ना सच्चा माहीआ। जिस दे पिच्छे नट्ठ नट्ठ थक्के तीर्थ तट किनार, किनारा नज़र कोए ना आईआ। जिस दे पिच्छे फिर फिर थक्के मन्दिर मस्जिद गुरदुआर, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पंडत कहिण वसे हरी दुआर, हरिदुआर आसण लाईआ। क्षत्री कहिण ठाकर साडा यार, ठाकर दुआरे सोभा पाईआ। मुल्ला कहिण मसीत रहे सदा बेदार, ग़फ्लत विच कदे ना आईआ। ग्रन्थी कहिण वसे गुरदुआर, गुरु ग्रन्थ रिहा समझाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं वसां सभ तों बाहर, हर घट आपणी खेल कराईआ। बिन भगतां ना करां किसे प्यार, कोटन कोटि जीव जंत आए गए फेरा पाईआ। कलिजुग अन्त जो दर करे निमस्कार, दर दरवाज़ा पार लँघाईआ। डुबदे पाहन देवे तार, पाथर आपणा चरन छुहाईआ। हरिसंगत वेख जाए बलिहार, बलिहारी बलिहार गुरसिख रिहा सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस मेहर मिली वस्त, वस्तू होर ना कोए रखाइंदा। नाम सति मिली हस्त, घाटा कोए नज़र ना आइंदा। तिस नाल क्या कोई करे हसद, जिस प्रभ दया कमाइंदा। अट्ठे पहर रक्खे मस्त, नाम मस्ती इक्क चढ़ाइंदा। हथ्थ मिलाए नाल दस्त, बदस्त आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी मेहर आप वरताइंदा। सतिजुग करे पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। त्रेता रोवे ज़ारो ज़ार, कूक कूक सुणाईआ। द्वापर डिगा मूंह दे भार, खुलड़े केस रिहा वखाईआ। कलिजुग करी अन्त पुकार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। चारे कट्ठे होए यार, यार यारां नाल मिलाईआ। इक्क दूजे नाल करन विचार, बह बह मता पकाईआ। आपणा आप गए हार, सगला संग ना कोए रखाईआ। करया खेल हरि निरँकार, लोकमात जोत जगाईआ। चार जुग दी वेखे कार, जगत विहारा फोल फुलाईआ। दर सद्दे गुर अवतार, भगतां नाल मिलाईआ। आपणे गुण अवगुण लउ विचार, जीव जंत जो रहे कमाईआ। सारे अन्तिम गए हार, जित किसे हथ्थ ना आईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा तार, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म सुणाईआ। साचा हुक्म हरि करतार, आपणा आप जणाइंदा। सतारां हाढ़ दिवस विचार, एका राह वखाइंदा। कट्ठे होए गुर अवतार, पिछला लेखा आप जणाइंदा।

चारे जुग वेखो पाओ सार, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। आपणे आपणे लओ उठाल, सगला संग निभाइंदा। सारे कहिण होए कंगाल, जगत ख़ज़ाना सर्ब लुटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दिता साचा वर, एका रंग वखाइंदा। साचा वर दे निरँकार, एका वार समझाईआ। आपणी आपणी करो विचार, वेला गया हथ्थ ना आईआ। गुर अवतार करन पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। चार जुग दे दिन चार चार, सारयां मंग मंगाईआ। चारे जुग होए ख़बरदार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। तेरा हुक्म मन्नया सच्ची सरकार, जो सेवा साडी लाईआ। अन्त तूं कीता पार किनार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। आपणी हथ्थीं सानूं मार, क्यों देवें धक्का लाईआ। तूं सभ दा सिरजणहार, वड्डा बेपरवाहीआ। असीं डिगे तेरे दुआर, साडी भुल बख़्शाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। दया कमाए श्री भगवन्त, एका हुक्म जणाइंदा। मेरा खेल आदि अन्त, जुग जुग वेस वटाइंदा। जुग जुग बणाई साची बणत, लोकमात राह चलाइंदा। बिन भगतां ना मिले किसे भगवन्त, बिन भगत भगवन्त ना कोए मिलाइंदा। कलिजुग आया अन्तिम अन्त, सभ दा लेखा पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताइंदा। दीन दयाल सच तेरा कहिणा, चार जुग पए सरनाईआ। आदि जुगादि तूं भगत दुआरे रहिणा, तेरी वड वड्याईआ। असां मन्नया तेरा कहिणा, तेरी ओट तकाईआ। तूं दरस करा अपणयां भगतां नैणां, बैठे राह तकाईआ। असां तेरा भाणा सहिणा, तेरे सन्तां ओट जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यार, चार जुग उठाइंदा। आओ वेखो सच विहार, हरि सतिगुर आप कराइंदा। भगतां बणे इक्क दुआर, बण दुआरी सेव कमाइंदा। चार जुग दा चुक्कणा भार, तुहाढे सिर उप्पर टिकाइंदा। तेरां डेड़ कर विहार, अद्धी बख़्शिश नाल मिलाइंदा। करे खेल अपर अपार, चार जुग दे गुर अवतार आपणे दर मंगाइंदा। पहली चेत्र हो उज्यार, साचा खेल खिलाइंदा। गोबिन्द करे आ निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। बणे विचोला पहली वार, चारे जुग चारों कुण्ट बहाइंदा। सभ दी सुणे फेर फ़रयाद, लुकया कोए रहिण ना पाइंदा। सच दवारिउँ चार जुग बिन हरि कोई ना सके काढ, जगत लेखा ना कोए रखाइंदा। चार जुग जिन्नां नाल करया लाड, भगत भगवन्त रूप वटाइंदा। निरगुण सरगुण हो हो तारे सन्त साध, आपणी खेल वखाइंदा। सो कद्दे कीते अन्त आदि, आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा।

१४७८

★ २३ कत्तक २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

निराकार निरँकार उठे, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। आपणे कोलों आपा पुछे, आपणा भेव खुल्हाईआ। कवण हीरे मूंगे सुच्चे, माणक मोती रूप वटाईआ। कवण होण सभ तों उच्चे, अगम्म मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ। निरँकार निराकार दए सलाह, आपा आप जणाईआ। मेरा खेल बेपरवाह, मेरे विच समाईआ। सच सिँघासण ल्या सुहा, साचा तख्त रूप वटाईआ। शाहो भूप बण शहिनशाह, आपणा वेस वखाईआ। हुक्मी हुक्म आप जणा, धुर फ़रमाना इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। निराकार निरँकार आपणा आप जणाइंदा। आपणा पर्दा आपे खोल्ह, आपे वेख वखाइंदा। कवण वस्त मेरे रहे कोल, कवण रंग रंगाइंदा। कवण नाद वज्जे ढोल, कवण राग सुणाइंदा। कवण नूर जाए मौल, रूप रंग ना कोई रखाइंदा। कवण करे सच्चा कौल, इकरार कवण तोड़ चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस आप वखाइंदा। निराकार निरँकार कहे, कह कह ख़ुशी मनाईआ। तेरा दुआरा सदा रहे, सद वजदी रहे वधाईआ। शाह पातशाह तूं उत्ते बहें, बेअन्त तेरी वड्याईआ। आदि जुगादि तेरा रूप ना होवे लै, तेरी रेख ना कोई मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वर आपे रिहा वरताईआ। निराकार निरँकार वर, वर झोली रखाइंदा। तेरा खुल्ल्हा रहे सदा दर, दरवाज़ा बन्द ना कोई रखाइंदा। निरँकार आपणा नाउँ धर, एका डंक सुणाइंदा। एका बंक सोहे गढ़, एका गृह वड्यांअदा। इक्क सुहेला बहे चढ़, इक्क अकेला सोभा पाइंदा। मूर्त अकाल आपे कर, आपणी कल वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। निराकार निरँकार देवे सलाह, सलाहगीर ना कोई रखाईआ। तेरा बेड़ा तूं मलाह, तेरा भेव कोई ना पाईआ। तेरा घर तूं लैणा वसा, तेरे दर वज्जे वधाईआ। तेरा नाउँ तूं लैणा प्रगटा, नाउँ निरँकारा प्रगटाईआ। तेरा हुक्म तूं लैणा वरता, तेरा हुक्म सच्ची शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाईआ। रंगया रंग हरि निरँकार, आपणा रंग वखाया। निराकार कर प्यार, निरवैर मेल मिलाया। सच सिँघासण पावे सार, साची सेजा आप सुहाया। करे खेल पुरख नार, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आप चलाया। साचा राह हरि करतार, करता पुरख आप चलाईआ। सचखण्ड निवासी हो उज्यार, दर घर साचे सोभा पाईआ। आपणी घाड़त घड़े बण ठठयार, समरथ पुरख वडी वड्याईआ। आपणा मन्दिर सुहाए सच दुआर, महल्ल अटल उच्च रुशनाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार,

धुर फ़रमाना आप जणाईआ। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, साचा हुक्म आप वरताईआ। आपे होए मंगणहार, आपे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। करे खेल अगम्म अपार, बेअन्त तेरी शहिनशाहीआ। आपणी किरपा आपे धार, आपणा संग आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणे हथ्थ रक्ख वड्याई, हरि वड्डा वड अख्वाइंदा। आपणे नाल आपणी कर कुड़माई, आपणा बन्धन पाइंदा। आपे धी आप जवाई, सौहरे पेईए आपे सोभा पाइंदा। आपे खेल करे रघुराई, आपणा रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। आपे सच सुहञ्जणी सेज सुहाई, सोभावन्त श्री भगवन्त आपणा रंग आप रंगाइंदा। आपे खेल करे नर नरायण नारी कन्त, कन्त कन्तूहल आपणा वेस वटाइंदा। आपे बणाए साची बणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्हाइंदा। बणाए बणत हरि भगवान, आपणी दया कमाईआ। आपणा दर कर परवान, सच दुआरा इक्क सुहाईआ। शाह भूप बण राजान, शाह सुल्तान हुक्म प्रगटाईआ। सच निशाना इक्क मेहरवान, महिबान आप झुलाईआ। आपणा नाउँ कर प्रधान, बे ज़बान करे पढ़ाईआ। आपणा खेल कर महान, आपणी उल्फ़त वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप जणाईआ। आपणी धार आपे जाण, आपणा खेल खिलाया। आपणा रंग आपे माण, आपे वेख वखाया। आपणे मन्दिर हरि भगवान, आपणा हुक्म वरताया। आपा करे आप पहचान, आपणा पर्दा आप उठाया। आपे वेखे सच मकान, सचखण्ड दुआरा डेरा लाया। आपे वेखे चरन सरन निगहबान, कँवल आपणा रूप वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन बन्धन दए समझाया। आपे चरन आप कँवल, चरन कँवल आप समझाईआ। आपे दाता दानी आपे पए सरन, आपे जाणे सच सरनाईआ। आपे करता पुरख करनी करन, आपे किरती किरत कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका चरन कँवल दए समझाईआ। हरि का चरन उच्च अपारा, रूप अवर ना कोई रखाइंदा। हरि का नैण सदा उज्यारा, रूप रंग ना कोई वटाइंदा। हरि का घर सच्चा दरबारा, आदि अन्त सोभा पाइंदा। हरि का दर खुल्ह्ला किवाड़ा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाइंदा। निरगुण चरन निरगुण राजा, निरगुण भूपत भूप अख्वाईआ। निरगुण सरन निरगुण महाराजा, सेवक सेव कमाईआ। निरगुण परन निरगुण रक्खे लाजा, निरगुण निरगुण होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे चरन आपे सीस, हरि आपणी खेल खिलाइंदा। आपे नूर आपे जगदीस, आपे जगदीसर वेस वटाइंदा। आपे नाम आप हदीस, आपे हुक्मी हुक्म फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप

१४८०

समझाइंदा। आपणा चरन देवे दस्स, हरि भेद अभेद खुल्हाईआ। जिस दुआरे जाए वस, सो दुआरा चरन रूप वटाईआ। जिस गृह जाए वस, सो घर होए रुशनाईआ। जिस मन्दिर आए नस्स, सो मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा चरन इक्क समझाईआ। सचखण्ड हरि सच सिंघासण, एका एक सोभा पाइंदा। चरन कँवल हरि खेल तमाशन, आपणा रंग वखाइंदा। थिर घर नूर कर प्रकाशन, एका माण दवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पर्दा आप खुल्हाइंदा। चरन कँवल घर साचे रक्ख, आपणी दया कमाईआ। थिर घर दुआरा कर प्रतक्ख, एका बंक वड्याईआ। आपणा नूर अंदर रक्ख, करे खेल पिता माईआ। आप वखाया आपणा रस, बिन भोग बलास करी कुड़माईआ। आपणी करी आपे पूरी आस, आप आपा ल्ए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। चरन कँवल थिर दरबारा, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाया। करया खेल अपर अपारा, अपरम्पर रूप धराया। एका जाया सुत दुलारा, शब्दी नाउँ प्रगटाया। साचे घर होया जैकारा, वाह वा नाद अनाद वजाया। एका वेखे वेखणहारा, दूजा संग ना कोए रखाया। पुरख अबिनाशी करे प्यारा, आपणी गोद बहाया। घर विच घर तेरा सहारा, थिर दर दए वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क वसाया। सुत दुलारा हो त्यार, ढह प्या सरनाईआ। धन्न भाग तूं कीआ प्यार, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। एका मिल्या चरन सहार, कँवल मिली सरनाईआ। दर बरदा खड़ा सेवादार, बेपरद रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आस रखाईआ। एका आस लई रक्ख, शब्दी शब्द जणाइंदा। आपणे घर कीआ प्रतक्ख, दर साचा मोहे भाइंदा। आपणे नालों करीं ना वख, तेरा विछोड़ा ना मोहे सुखाइंदा। मैं तेरा उपज्या तेरी रत, होर पिता ना कोए बणाइंदा। तेरे चरन कँवलां विच रिहा वस, थिर घर आपणा आसण लाइंदा। कर कर दर्शन रिहा हस्स, तेरे नाल ख़ुशी मनाइंदा। मैं तेरे होया वस, दूजा राह ना कोए तकाइंदा। एका सेवा आपणी दस्स, हउँ बालक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा इक्क सुणाइंदा। सच संदेशा सुण लै सुत, सो पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। तेरी ना काया ना कोई बुत्त, तेरा रंग ना कोए वखाईआ। तेरा नाता अबिनाशी अचुत, ना मरे ना जाईआ। तूं मेरे विचों प्या फुट, मेरी गोद सुहाईआ। थिर घर सोहे तेरी रुत, साची रुतड़ी सोभा पाईआ। मेरा नूर तेरी जोत, तेरी जोत मेरी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण जणाईआ। सुण सुत मैं करां प्यार, प्यार प्यार नाल मिलाया। आदि जुगादि मेरा विहार, इक्क इकल्ला करदा आया। तैनूं करया ख़बरदार, एका वार

उठाया। तेरी सेवा लावां अपर अपार, भुल कदे ना जाया। निरगुण हो हो करां पसार, सरगुण तेरा अंग वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव सुणाया। सुणया भेव धुर फ़रमाना, पुरख अबिनाशी रिहा जणाईआ। चरनी डिगा हो निमाणा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तूं शाह पातशाह सच्चा राणा, सच्ची तेरी शहिनशाहीआ। तेरा हुक्म इक्क फ़रमाना, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरा दर ना छड्ड के जाणा, दूजे घर ना कोए वड्याईआ। चरन कँवल दे टिकाणा, विछड़ जाए ना मेरा माहीआ। मेरा बणया रहे तेरा घर आउँणा जाणा, दरस नेत्र नैण वखाईआ। सदा सद मन्नां तेरा भाणा, चलां तेरे हुक्म रज़ाईआ। जे कर मेरा भाणा मन्नें, तेरे हथ्थ दयाँ वड्याईआ। तेरा नूर प्रगटावां सूरज चन्ने, ब्रह्मण्ड खण्ड वेस वटाईआ। तेरे घर तेरा रूप बणे जननी जणे, विष्न ब्रह्मा शिव गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वर झोली पाईआ। एका वर देवे दात, आपणी दया कमाईआ। तेरे अन्तर वेखे मार झात, आपणा पर्दा दए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणाए तेरा साक, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। लक्ख चुरासी फल लगाए डाली पात, फुल पंखड़ीआं आप महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप वरताईआ। शब्द सुत चरन गया ढह्, दोए जोड़ करे पुकारा। तूं आपणा मार्ग दिता दस्स, तेरा खेल अपर अपारा। सीस मथ्थे रख्या हस्स हस्स, करां सच विहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा अन्त सहारा। अन्त सहारा मंगी मंग, प्रभ अगे सीस झुकाया। तेरा वजावां इक्क मृदंग, लक्ख चुरासी खेल खिलाया। लेखा जाणां जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज लए प्रगटाया। आवां जावां तेरा दुआरा लँघ, सचखण्ड साचा सोभा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। सिर मेरे हथ्थ देणा रक्ख, एका दुआर वण्ड वंडाईआ। आपणे नालों ना करीं वक्ख, तार सतार नाल बंधाईआ। जुग जुग करना मेरा पक्ख, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। अन्तिम पूरी करनी आस, निरास कोए नज़र ना आईआ। तेरे घर करां वास, दूजे दर ना फेरा पाईआ। साहिब सदा वसां पास, विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साची वस्त झोली पाईआ। देवे वस्त श्री भगवान, एका वार जणाईआ। अन्तिम मेला करां महान, मिल मिल आपणा रंग चढ़ाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, लोकमात कराईआ। नव नौं चार मिटे निशान, जगत निशाना दए गंवाईआ। प्रगट होए श्री भगवान, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। लेखा जाणे दो जहान, लोकमात करे रुशनाईआ। तेरा लहिणा चुकावे आण, देणा कोए रहिण ना पाईआ। तेरा मन्दिर वेखे मकान, घर घर विच आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप निभाईआ। जे कर

१४८२

मेल लोकमात मिलाउणा, शब्दी सुत मंग मंगाइंदा। इक्क इकल्ला बण के तेरे दर ना आउणा, तेरा दर ना सोभा पाइंदा। जिन्हां तेरा नाम ध्याउणा, तिन्हां आपणा अंग फड़ाइंदा। लोकमात मैं करां जो मेरे अंदर भाउणा, मैं आपणी खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर तेरे पुछ पुछाइंदा। पुरख अबिनाशी दीन दयाल, आदि दया कमाईआ। जो उपजे सो खाए काल, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जुग चौकड़ी हल्ल करे आप सवाल, आपणा अंकड़ा ना किसे जणाईआ। तेरा रूप बणाए दलाल, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। छोटे बच्चे तैनूं उँगली लाई रक्खे करे खेल कमाल, मेरा भेव कोए ना पाईआ। गुर अवतार करे खेल निराल, तेरा रंग चढ़ाईआ। जुग चौकड़ी अन्त सभ नूं करे बहाल, लेखा सभ दा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप समझाईआ। तेरी धारा लई जाण, तूं जाणी जाण जणाया। जुग चौकड़ी तेरा नाउँ प्रधान, लोकमात ढोला गाया। गुर अवतार करन कल्याण, लक्ख चुरासी तन्द बंधाया। बिन तेरे तेरा वखावे ना कोए मकान, तेरे दर ना कोए बहाया। जो आयण सो तैनूं गाण, गा गा तेरा शुकर मनाया। मैं वेखां मार ध्यान, वाह वा तेरी कुदरत वाह वा तेरी माया। तूं आपणा अक्खर

१४८३ इक्क इक्क दे ज्ञान, लोकमात दएँ वड्याआ। अन्तिम आपे मेटे निशान, सभ दा करे सफ़ाया। मेरे नाल कर ज़बान, कीता १४८३

कौल भुल ना जाया। मैं तेरा बाल नादान, तेरे अग्गे सीस झुकाया। दर देणा दानी दान, देवणहार बेपरवाहया। मेरा तुट ना जाए माण, ढह प्या सरनाया। लोकमात ना आए हाण, मैं तेरी ओट तकाया। जुग चौकड़ी रहां बेपछाण, रूप रंग रेख ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाया। दीन दयाल दया कर, आदि दए वड्याईआ। अन्तिम तेरा पल्लू लवां फड़, आपणे नाल बंधाईआ। आपणे बहावां आपे घर, घर घर विच सोभा पाईआ। तेरा चुकावां संसा रोग डर, सोग नेड़ कोए ना आईआ। निरगुण हो हो लवां फड़, साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा कौल रिहा कराईआ। सच सच मैं दिता दस्स, ना पर्दा कोए रखाया। इक्क इकल्ला ना आवां नस्स, तेरे दर ना फेरा पाया। कलिजुग अन्तिम मेरा चलणा ना कोए वस, मैं पहलों रिहा सुणाया। तूं आपणयां भगतां अंदर जाणा वस, तेरा भेव किसे ना आया। गुर अवतार गा गा आयण तेरा जस, जस वेद पुराण सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे भगतां रंग रंगाया। तेरे भगत मेरा साथ, मेरी बणत बणाईआ। तूं साहिब पुरख समराथ, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तूं अनाथां नाथ, अनाथां होएँ सहाईआ। तूं अणमंगी देवें दात, सच वस्त आप वरताईआ। तूं बिन अक्खर वखाए पढ़ाएँ गाथ, आपणा नाउँ सालाहीआ।

असीं रल के आईए इक्क जमात, एका पटी लेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग आप रखाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, एका हुक्म जणाइंदा। कलिजुग अन्त करां परवान, नव नौं चार पन्ध मुकाइंदा। प्रगट होवां विच जहान, निरगुण रूप वटाइंदा। साचे भगत करां परवान, आपणे रंग रंगाइंदा। बिन मंग्गयां देवां दान, नाम अमोलक वस्त आप वरताइंदा। बिन पुछिआं करां पछाण, आपणी पछाण भुल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव चुकाए भगवान, आपणी दया कमाईआ। साचे सुत कर ध्यान, हरि सतिगुर आप समझाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे आण, निराकार बेपरवाहीआ। भगत भगवन्त खेल महान, लोकमात कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। तेरी दया कवण रूप, लोकमात नज़र ना आईआ। सारे कह कह आए सति सरूप, तेरी रेख ना कोए वखाईआ। तेरा डंका वज्जे चारे कूट, दरोही तेरे नाम ख़ुदाईआ। तैनूं कहिन्दे वसया काया पंज तत कलबूत, नज़र किसे ना आईआ। तूं आदि जुगादि ना आया किसे दे सूत, सभ दा डेरा रिहा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा

१४८४ साचा वर, कलिजुग तेरी अन्त निशानी, कवण दए समझाईआ। बिन निशान ना कोए धार, पहचान कोए नज़र ना आईआ। १४८४

बिन डिठिआं कहिण सारे भगवान, नैणां दरस कोए ना पाईआ। निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाण, जगदीस सीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। बिन धन्ने ना खादा किसे दा पकवान, कोटन कोटि बैठे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलिजुग अन्तिम तेरी देवे कवण ग्वाहीआ। पुरख अबिनाशी हो निरासा, अग्गों एह समझाइंदा। तूं किहा सच बिन वेखिआं मेरे उत्ते करन भरवासा, मेरा भेव कोए ना पाइंदा। जे कोई कहे वखाले अग्गों करदे हासा, नेत्र नैण आप शरमाइंदा। आदि जुगादि मेरा खेल तमाशा, लुकवीं खेल आप खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। मेरा भेव जे अन्तिम पाउणा, हरि जू रिहा जणाईआ। मेरी ओट इक्क रखाउणा, वेले अन्त लए जगाईआ। आपणा पर्दा आपे लाउहणा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जन भगत दुआरे आपे भाउणा, फिर फिर सेव कमाईआ। बिन हरि जी डिठिआं चैन ना आउणा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। बण बण सेवक सेव कमाउणा, साची सेवा इक्क वखाईआ । सचखण्ड दुआरा मात प्रगटाउणा, साचे भगतां दए वड्याईआ। जींवदयां ही विच बहाउणा, आप आपणे नाल मिलाईआ। पहली वार पहला विहार आप कराउणा, आप आपणी दया कमाईआ। आपणा निशाना आप झुलाउणा, लोकमात करे रुशनाईआ। पिछला कीता अन्त मिटाउणा, आपणा लेखा आपणे विच छुपाईआ। एका नाउँ सभ

१४८५

ने गाउणा, एका करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन तारे आप करतारा, कलिजुग आपणा वेस वटाइंदा। दर सोहे सच दरबारा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। लेखा जाणे पुरख नारा, पुरख पुरखोतम वेख वखाइंदा। एका देवे नाम सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। आप उपजाए भगत दुआरा, जन भगतां विच बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग वेला अन्त आपणा आप आप प्रगटाइंदा। आपणा आप लए प्रगटा, शहिनशाह वडी वड्याईआ। चार जुग दे गुर अवतार दर लए बुला, एका हुक्म सुणाईआ। भगत संदेशा इक्क जणा, एका नैण खुल्हाईआ। आपणा वेसा आप वटा, करे खेल बेपरवाहीआ। साचा मन्दिर आप बणा, साचा घर आप वसाईआ। आपणी रत नीहां हेठ दबा, गोबिन्द रत लेखे पाईआ। ब्रह्म मति इक्क वखा, कमलापति दए सरनाईआ। धीरज जत इक्क समझा, सति सन्तोख दए वड्याईआ। दीपक जोत इक्क जगा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। कोट जन्म दे पाप गंवा, हरिसंगत लए तराईआ। आपणा दरस आप करा, पूजा पाठ ना कोए कराईआ। फड़ फड़ बाहों पार दए करा, अद्धविचकार ना कोए रुढ़ाईआ। साचा मार्ग दए लगा, साचा पन्थ इक्क वखाईआ। असंख असंख जिस नूं रहे गा, सो आपणी खेल कराईआ। जिस नूं विष्नूं रिहा ध्या, ब्रह्मा सीस झुकाईआ। जिस नूं शंकर कंठ रिहा लगा, सो मिले सच्चा माहीआ। जिस नूं गुर अवतार रहे ध्या, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस दी पीर पैग़म्बर मंगदे रहे दुआ, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जिस नूं ऐनलहक किहा ख़ुदा, नूर ज़हूर आप धराईआ। जिस नूं कहिन्दे मुकामे हक बैठा हो जुदा, आपणा आप छुपाईआ। सो कलिजुग अन्तिम आपणे भगतां उत्तों हो फ़िदा, आपणा नाम निशान मिटाईआ। गुरमुखां राह वखा सिध्धा, साचे मार्ग दए लगाईआ। नींहां हेठ दबाए अठारां सिद्धां, नौं निधां नरद आपणी इक्क भवाईआ। बिन तीरों गुरमुख हिरदा विधा, अणयाला तीर चलाईआ। जे कोई गुरमुखां कोलों पुछे हरि जू किडा, कोई दस्स ना सके राईआ। जे कोई हरि जू कोलों पुछे गुरसिख केडा, हरि सतिगुर दए समझाईआ। मेरे नालों बड़ा वड्डा, जिस दी सेवा रिहा कमाईआ। मैं आदि जुगादि बाला नढ्ढा, मेरी उमर ना कोए विहाईआ। मैं मिल के भगतां आपणी ख़ुशी दा पाया गिध्धा, हथ्थ नाल हथ्थ मिलाईआ। मैं नीहां हेठ रखाया आपणा पिण्डा, उप्पर आपणे भार उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम आपणा आप लए प्रगटाईआ। आप प्रगटे भगतां संग, बिन भगतां कम्म किसे ना आया। हरिजन चाढ़े आपणा रंग, रंग दए वखाया। गुरमुखां कोलों मंगे मंग, प्रभ आपणी झोली अग्गे डाहया। आ दुआर ना जाणा संग, हरि जू मन्दिर रिहा सुहाया। जन्म जन्म दी कट्टो भुक्ख नंग, वेला अन्तिम आया। जिस मिलयां पए ठंड, सो साहिब क्यों

मनों भुलाया। जिस विछड़िआं होए रंडेपा रंड, सो कन्त क्यों दर दुरकाया। जिन्ह तारना जीउ पिण्ड, ब्रह्मण्ड होए सहाया। सदा दयाल सदा बख्शंद, बख्शणहार बेपरवाहया। जिस नाल रलाया गुजरी चन्द, पूत सपूता संग वखाया। इक्को वार मंगो मंग, साची झोली दए भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाया। सच दुआरा बणे रमनीक, हरि रामा आप बणाईआ। तिस दा बणे ना कोए शरीक, लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। निशान लगाया लिख तरीख़, उन्नी कत्तक माण वड्याईआ। हरि का मार्ग इक्क बरीक, कोई चल ना सके राईआ। कोटन कोटि कहिन्दे असीं पहुंचे नज़ीक, पान्धी पन्ध सके ना कोए मुकाईआ। बिन कबीर किहा ना किसे ठीक, बिन नानक मिली ना किसे शरनाईआ। सारे मंगदे गए भीख, अगे आपणी झोली डाहीआ। लोकमात नित नवित करदे रहे उडीक, कवण वेला दर्शन देवे सच्चा माहीआ। गुर अवतार मंगदे गए चरन प्रीत, अठ्ठे पहर ध्यान लगाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी गई बीत, गेड़ा गेड़े नाल भवाईआ। किसे नूं कह के गया वड़या मन्दिर मसीत, मठ शिवदुआले किसे नूं रिहा फिराईआ। किसे नूं किहा तीर्थ तट अंदर होया पुनीत, पतित आपणा रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। कोई कहे मेरा ठाकर, सिल पूजस वक्त लँघाया। कोई कहे मेरा कादर, सजदा सीस झुकाया। कोई कहे मैनूं देवे आदर, सिर मेरे हथ्थ टिकाया। कोई कहे धन्न धन्न गुर तेग़ बहादर, जिस आपणा सीस भेंट चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ दा भेव दए खुल्हाया। वार सीस मंगी मंग, आपणे अग्गे झोली डाहीआ। तेरा प्यार तेरा रंग, मेरी धार तेरी सरनाईआ। तेरा गीत मेरा छन्द, मेरा छन्द तेरी शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपा तेरी झोली पाईआ। आपा तेरी झोली पाया, मापा जगत तजाया। थापन थापा तेरी आया, साची सेवा इक्क रखाया। जोती जाता तेरा भेव ना आया, नूर नुराना डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर रहे तेरी छाया। सिर साया रहे जगदीस, एका मंग मंगाईआ। पंज तत काया पीसण ल्या पीस, आपणी सेव कमाईआ। अन्तिम लेखे लग्गा तेरे सीस, तेरी झोली पाईआ। मेरा ख़ाली वेख खीस, नाल वस्त ना कोए रखाईआ। गोबिन्द दे के आया हदीस, एका कर पढ़ाईआ। तेरे सिर सोहे ताज सीस, जगदीश होए सहाईआ। तेरी कोई ना करे रीस, प्रभ देवे माण वड्याईआ। तेरा लेखे लग्गे जीत, जो जन तेरी रीत चलाईआ। तेरा फ़तहि डंका वज्जे मन्दिर मसीत, जोरावर तेरा ज़ोर वखाईआ। तेरी रत ब्रह्म मति करे ठंडा सीत, कलिजुग नीहां हेठ दबाईआ। सुत दुलारे रहिणा अतीत, मैं संदेशा देवां चाँईं चाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, मेरी पूरी आस कराईआ। तेग़ बहादर सच सुणाया हरि संदेशा, एका वार वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी नर नरेशा, आपणी दया कमाईआ। तेरा खेल आपे वेखा, आपणा खेल कराईआ। आपे वसां साचे देसा, परदेस मेरी वड्याईआ। आदि जुगादि मेरा पेशा, जो घड़या भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। आपणा भेव खोल्हे करतार, भावी आपणे रंग रंगाइंदा। कलिजुग आए अन्तिम वार, तेरा लहिणा मूल चुकाइंदा। डंक वजाए विच संसार, साचा डंका हथ्थ उठाइंदा। करे खेल अपर अपार, भेव किसे ना आइंदा। बल देवे आप बलधार, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। वल छल खेल करे निरँकार, अछल छल आपणी धार रखाइंदा। जोद्धा सूरबीर बलकार, आपणा मार्ग आप चलाइंदा। तेरी रत करे प्यार, रत रत नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा झोली पाइंदा। तेरा लहिणा अन्तिम देणा, देवणहारा निरँकारा। तूं ही मन्नया मेरा कहिणा, हुक्मी हुक्म सच वरतारा। अन्तिम वेखीं आपणे नैणां, वखाए सच दुआरा। लक्ख चुरासी तेरे मन्दिर बहणा, तेरा मन्दिर धाम न्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपारा। खेल अपार हरि कराउणा, देवे वड वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे तेरा संग निभाउणा, मिल बह बह ख़ुशी मनाईआ। छोटे बाले नाल रखाउणा, पिछला भेव चुकाईआ। पंजां

 १४८७

एका हुक्म सुणाउणा, एका वार समझाईआ। मंगो मंग जो घर भाउणा, पुरख अबिनाशी पूर कराईआ। मिल मिल सभ ने सीस झुकाउणा, प्रभ अगे झोली डाहीआ। आपणयां भगतां दरस कराउणा, जिस मिलयां वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम पूरी आस कराईआ। कलिजुग अन्तिम पूरी करे आस, दीन दयाल दया कमाईआ। भगत दुआर करे प्रकाश, लोकमात वेख वखाईआ। निरगुण बणे दासी दास, सरगुण साची सेव कमाईआ। साचे गृह कर कर वास, आपणा भेव दए खुल्हाईआ। पूर्ब लेखा रक्खे याद, भुल कदे ना जाईआ। लेखे लाए कीती फ़रयाद, फ़रमाबरदार बणे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर दए वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आपणा नाउँ रखाईआ। कलिजुग काया करनी पधर, गुरमुखां दए वड्याईआ। तेरी पूरी करनी पिछली सधर, पूर्ब जन्म जो मंग मंगाईआ। बिन डिठिआं वड़या अंदर, आपणी खेल वखाईआ। सृष्टी वेखे होई खण्डर, आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार चलाईआ। चार बलद चार जुग, नाम पंजाली उत्ते टिकाईआ। जगत कुकर्म कराहा पिच्छे रख्या चुक्क, तन्द तन्द नाल बंधाईआ। अग्गे पिच्छे रख्या रुख़, फिरे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क लगाईआ। थल्ले जुता हरि जी कलिजुग,

गुरसिख उत्तों आप दबाइंदा। सज्जे पासे लग्गा सतिजुग, बण सुआणी सेव कमाइंदा। सभ दी औध वारो वारी गई मुक्क, चारे करके कट्ठे गुरसिखां मन्दिर हेठ डांहयदा। गुरसिख भार लैण चुक्क, साची सेवा इक्क समझाइंदा। बिन रूप जे रहे लुक, इटां गारे नाल प्रगटाइंदा। कर कुकर्म जो गए सुक, हरे बूटे फेर कराइंदा। चार जुग गुरमुखां दा औंदयां वेखण मुख, जो मुख हरि जू दर्शन पाइंदा। धन्न भाग सफ़ल होए धरत मात दी कुक्ख, पुरख अबिनाशी जन भगतां महल्ल आप बणाइंदा। गोबिन्द सुखणा गया सुख, अन्तिम एका मंग मंगाइंदा। कवण वेला आए मात हरि जू भगतां करे पुछ, आप आपणे गले लगाइंदा। मेरा बूटा ना जाए सुक्क, हरी सिंच क्यारी आप कराइंदा। मैं वी नाल चल के आवां छोटा पुत्त, सदा छोटयां उँगली नाल लगाइंदा। सिंघ आत्मा कलिजुग नूं रज्ज रज्ज कुट्ट, तेरे हथ्थ नाम डण्डा इक्क फड़ाइंदा। पाउणा भार ना सके उठ, दोहां हथ्थां नाल दबाइंदा। खड़ोतिआं ज़ोर ना लग्गे ते उत्ते जाणा झुक, सतिगुर साचा राह बताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत कराह बेपरवाह बेवसाह आप फिराइंदा।

★ २७ कत्तक २०१८ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ★

१४८८

१० हरिजन सदा इक्क आशीर, आसरा नाम जणाईआ। भगत भगवन्त बदल तकदीर, तदबीर इक्क समझाईआ। त्रैगुण माया कट्ट ज़ंजीर, अमृत जाम प्याईआ। जगत विछोड़ा कट्ट भीड़, साचे राह चलाईआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। दरस दिखाए बेनज़ीर, नज़र नज़र नाल मिलाईआ। जिस जन देवे आप आशीर, वाद विवाद रहे ना राईआ। मेहरवान वड पीरन पीर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। एकँकारा क्या जाणे जगत हकीर, जुग जुग वेस वटाईआ। भगत भगवन्त देवे धीर, सति सन्तोख इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अशीर इक्क वखाईआ। मिले आशीर हरि हरि रंग, रंग रंगीला आप चढ़ाइंदा। हरिजन मंगे इक्को मंग, आत्म परमात्म खेल खिलाइंदा। काया अंदर सच पलँघ, सच महल्ल आप सुहाइंदा। अनहद अनादी इक्क मृदंग, बिन तार सतार वजाइंदा। लेखा जाणे जीउ पिण्ड ब्रह्मण्ड, इंड आपणी खेल खिलाइंदा। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, रस रसीआ इक्क चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आशीर इक्क वखाइंदा। इक्क आशीर एका घर, आदि जुगादि समाईआ। इक्को देवणहारा वर, वर दाता बेपरवाहीआ। जन भगतां रक्खे खुल्ल्हा दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। जगत विकार चुक्के डर, लोभ हँकार ना कोए जणाईआ। इक्क जणाए सच प्यार, प्रेम प्यार इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, सच अशीर इक्क रखाईआ। सच अशीर अर्शीवाद, वाद विवाद मेट मिटाइंदा। जगत वासना लेवे काढ, साचा संग निभाइंदा। सदा सुहेला करे लाड, गोद गोदी आप बहाइंदा। जन जन जन सुणे फ़रयाद, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। देवणहारा इक्को दाद, अतुट आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची अशीर इक्क जणाइंदा। अशीरवाद मिले हरि नाउँ, हरि नामा घर घर पाया। साचा वसे नगर खेड़ा ग्राउँ, गृह मन्दिर इक्क सुहाया। हरिजन करे सच न्याउँ, जूठ झूठ मोह चुकाया। सदा सुहेला सिर रखे ठंडी छाउँ, समरथ आपणी दया कमाया। आप उठाए फड़ फड़ बांहो, लोकमात दए वड्याआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाया। रंग रंगाए हरि निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। वस्त अमोलक झोली देवे डार, अतोट अतुट रखाईआ। लक्ख चुरासी वेख विचार, गुरमुख सज्जण लए मिलाईआ। बिन डिठयां करे प्यार, अनडिठ आपणा रंग वखाईआ। आत्म सेजा सुहाए बंक दुआर, बंक दुआरी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क आशीर एका वार झोली पाईआ। प्रिंसिपल दा इक्को प्रिंसीपल, पुरख अबिनाशी आप जणाइंदा। काया मन्दिर अंदर रक्खणा आत्म बल, मन मनसा सर्ब मिटाइंदा। आदि जुगादि अबिनाशी करता अछल अछल, वल छल आपणी खेल खिलाइंदा। जोती जाता जोती बहे रल, दिस किसे ना आइंदा। बिन अग्नी दीपक जाए बल, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रिंसीपल इक्क वखाइंदा। प्रिंसीपल हरि का दुआरा, एका घर वखाईआ। राज महल्ल उच्च मुनारा, राज जोग वड्याईआ। जगत विद्या खेल न्यारा, भगत विद्या बिन अक्खर करे पढ़ाईआ। लिखण पढ़न तों वसे बाहरा, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। जिस जन खोले बन्द किवाड़ा, आपणा राह वखाईआ। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़ा, अग्नी रूप ना कोए वटाईआ। अमृत बरसे ठंडी ठारा, सीतल धार वहाईआ। पढ़ पढ़ जगत ना मिल्या कोए किनारा, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जिस जन किरपा करे आप गिरधारा, गिरवर आपणी दया कमाईआ। नेत्र लोचण नैण खोल्हे आपणी धारा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। हरि का अक्खर जिस विचारा, मिल हरि हरि ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर भेव दए जणाईआ । अन्तर भेव मन उमंग, मन ममता रही कुरलाईआ। जगत वासना लग्गा जंग, अठ्ठे पहर लड़ाईआ। बिन नौबत वज्जे मृदंग, मन मनूआ रिहा वजाईआ। सुरती होई भंग, हरि का राह ना कोए वखाईआ। बिन हरि दरस ना आए परमानंद, निजानंद ना कोए रसाईआ। पढ़ पढ़ थक्के बत्ती दन्द, रसना जिहवा नाल मिलाईआ। वेख वेख तक्के सूरज चन्द, काया मन्दिर अंदर होए ना किसे रुशनाईआ। जिस जन साहिब सतिगुर

१४८६

सुणाए एका छन्द, गीत सुहागी आप जणाईआ। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म वासना दए बुझाईआ। मन वासना मन मन रंग, मन मती जगत रंगाया। बुद्धी होई अन्तिम नंग, पर्दा सीस ना कोए टिकाया। बिन सतिगुर पूरे कोए ना देवे सच्चा अनन्द, निझर झिरना ना कोए झिराया। घर विच मन्दिर घर विच धार घर विच वहे साची गंग, हरी दुआर घर बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए साचा दर, दर दरवाज़ा दए खुलाया। दर दरवाज़ा काया अंदर, अंदरे अंदर आप लगाया। हरि का नाउँ पढ़ वेखणा मन्दिर, हरि मन्दिर रिहा सुहाया। आपे तोड़े लग्गा जंदर, नाम हथौड़ा इक्क लगाया। मन मनूआ दहि दिश ना उठ उठ धाए बन्दर, जगत वासना बन्द कराया। भाग लगाए डूँग्घी कंदर, जोती जोत कर रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म वासना पूर कराया। मन वासना बहु बिध भांत, छिन छिन रूप वटाईआ। हरिजन बहे इक्क इकांत, एका हरि लिव लाईआ। हरि जू वसे इक्क प्रांत, एका राशटर रिहा समझाईआ। जो जन वेखे मार झात, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग हरिजन दए चढ़ाईआ।
१४६० जगत अशांती होए दूर, मन चिंता रहिण ना पाईआ। करया दरस हाज़र हज़ूर, हरि दुखड़ा दए मिटाईआ। आसा मनसा १४६०
पूरी होए ज़रूर, ज़रूरत कोए रहिण ना पाईआ। घर भण्डार करे भरपूर, एका भिच्छया दए वरताईआ। बिन ग्वाहां मुआफ़ करे कसूर, जिस जन आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जगत अशांती जाए नस्स, आपणा पन्ध मुकाईआ। घर विच मिले साचा रस, सुख सहिज सहिज वखाईआ। नाम निधाना तीर मारे कस, जगत औखद दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संकट गृह लेखा दए चुकाईआ। आज्ञा विच आज्ञाकार, डोर भगतां हथ्थ फड़ाईआ। भगतां दी प्रभ कढ्ढुण आए वगार, लोकमात वेस वटाईआ। आपणा कारज जाए विगाड़, जन भगतां विगड़े कारज ठीक कराईआ। आपे फिरे पिच्छे अगाड़, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। जिउँ हरनाक्ष चबाया आपणी दाढ़, प्रहिलाद होया सहाईआ। हरिजन कदे ना आवे हार, जिस एका ओट रखाईआ। फड़ बाहों करे पार, वेखे खेल युध लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी ख़ुशी मनाईआ। दु:ख दर्द जाए लथ, इक्को सोहँ नाम ध्याया। काया चले साचा रथ, रथ रथवाही सेव कमाया। सगल विसूरे जायण लथ, चिंता रोग दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाली बाला लए तराया। साची सरधा भगत वस्त, भगवान आपणी झोली पाईआ। जुग जुग जन भगतां अगे फिरे दस्त बदस्त, आपणी सेव कमाईआ। लेखा जाणे

कीट हस्त, ज़ात पात ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची श्रद्धा इक्क रखाईआ। साची श्रद्धा हरिजन प्यारा, प्रेम प्रेम नाल बंधाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणया रहे वणजारा, जन भगत दुआरे फेरा पाईआ। आवे जावे विच संसारा, जुग जुग वेस वटाईआ। गुरमुख विरला मिले आपणी वारा, लक्ख चुरासी दिस किसे ना आईआ। साची श्रद्धा हरि का भरे भण्डारा, हरि इक्को आस तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आपणी झोली पाईआ।

पठानकोट वसण कई हज़ार, गिणती गणत विच ना आईआ। अमीर ग़रीब रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। मन्दिर गुरदुआरे वेख वेख करन विचार, हरि जू नज़र किसे ना आईआ। पूजा पाठ कर कर करन निमस्कार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। तिलक ललाटी कर शिंगार, मस्तक रेखा रहे बदलाईआ। गल पा पा फूलन हार, तन सुगंधी रहे चढ़ाईआ। हरिभगत इक्को मंगे हरि का दरस दीदार, बिन डिठयां चैन ना आईआ। हरि जू आए चल दुआर, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। पठानकोट कोट वेखे संसार, हरिजन काया कोट नजर किसे ना आईआ। जिस जन अंदर

१४६१
वड़या आप मुरार, मुरली आपणा नाम वजाईआ। मुंकद मनोहर लख़मी नरायण कर शंगार, मुक्ट सीस जगदीस टिकाईआ। जिउँ बिपर सुदामे करया प्यार, आप आपणे गले लगाईआ। तिउँ काया कोट कर विचार, विभचार दए मिटाईआ। रातीं सुत्तयां दए दीदार, नूर बातन रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा खेल वखाईआ। अठ्ठ गृह अठ्ठ तत संग, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध नाल रलाईआ। करे खेल सूरा सरबंग, बेअन्त बेपरवाहीआ। आपे जाणे आपणा रंग, दो जहान वेख वखाईआ। जुग जुग मनमुखता देंदा आया दंड, आप आपणी बिध बणाईआ। लक्ख चुरासी कुरलाए विच नवखण्ड, सत्त दीप रिहा कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी छब्बी पोह वण्डे साची वण्ड, चार जुग दे तेई अवतार भगत अठारां नाल आधार, दर मंगाए गुरु दस हुक्मी हुक्म वरतार, ईसा मूसा संग मुहम्मद करे ख़बरदार, शब्द संदेशा इक्क जणाईआ। अठ गृह पावे सार, भाणा सहे सर्ब निरँकार, बिन भाणे बचया कोए रहिण ना पाईआ। सूरज चन्न करन विचार, मंगल बुध्ध रहे धाहां मार, बृहस्पत आपणी मन्ने हार, शुकर उठे बलधार, शनी वेखे सच अखाड़, वाह वा हरि जू खेल खिलाईआ। जिउँ भावे तिउँ करे करतार, डोर भगतां हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। भगत दुआरा रिहा बण, पुरख अबिनाशी आप

बणाइंदा। सेवा लाए गंधर्ब गण, करोड़ तेतीसा संग रलाइंदा। सुरपति राजा इन्द रिहा मन्न, प्रभ अग्गे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। शिव शंकर सुणे ला ला कन्न, सच संदेशा कवण अलाइंदा। ब्रह्मा वेता कहे धन्न धन्न धन्न, पारब्रह्म कवण खेल खिलाइंदा। विष्नूं निरगुण चढ़या चन्न, विश्व आपणा रंग वखाइंदा। भगवन जो घड़या सो देवे भन्न, घड़न भन्नणहार आप हो जाइंदा। जन भगतां कहिणा लए मन्न, जुग जुग आपणे भगत प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठ गृह नौं खण्ड नौं नौं करे इक्क वण्ड, इक्क अठ अठ नाल प्रनाइंदा। गुरमुख सज्जण साचा रंग, गुर सतिगुर आप चढ़ाईआ। नाम निधान वज्जे मृदंग, नौबत एका हथ्थ उठाईआ। लेखा जाणे पुरी अनन्द, पुर अनन्द सोभा पाईआ। जिस जन देवे आत्म परमानंद, आपणी बूझ बुझाईआ। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, अनहद नाद वजाईआ। आत्म सेजा सच पलँघ, गुर गोबिन्द आसण लाईआ। जिस टुट्टी लई गंढ, सो साहिब सदा सुखाईआ। तिस साहिब कोलों मंगीए मंग, देवणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। हरिजन सज्जण हरि हरि मीत, जुग जुग खेल खिलाया। घर मन्दिर गाओ हरि हरि गीत, गोबिन्द मेला सहिज सुभाया। करे कराए पतित पुनीत, पतित पावण दया कमाया। नाता तोड़ मन्दिर मसीत, गुरदुआरा विच घर वखाया। साहिब सुहेला वसे चीत, चितवित ठगौरी कोए ना पाया। चार वरन चलाई साची रीत, एका पन्थ सजाया। पुरख अकाल निभाउणी प्रीत, दूजा इष्ट ना कोए मनाया। गुर का शब्द ठांडा सीत, गुरु ग्रन्थ गुर वड्याआ। हरिजन सदा रहे अतीत, त्रैगुण पोह ना सके राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे अंग लगाया। गुरमुख लगाए आपणे अंग, पुरख अकाल वडी वड्याईआ। गुर गोबिन्द सूरा सरबंग, दीनां नाथां होए सहाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा मुकाए पन्ध, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। नौं खण्ड पृथमी करे खण्ड खण्ड, ब्रह्मण्ड देण दुहाईआ। चौदां लोक वेखण गुजरी चन्द, कवण कूट करे रुशनाईआ। निरगुण नूर सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सिँघ निहंग वजाउण नाम मृदंग, नाम मरदगा हथ्थ फड़ाईआ। मनमुखां वढ्ढे कन्ढ, मूंह दे भार सुटाईआ। एका हथ्थ फड़ाए चण्ड प्रचण्ड, चार कुण्ट पए दुहाईआ। जिस गोबिन्द गाया बत्ती दन्द, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे सदा तराईआ। गुरमुख तारे पुरख अकाल, अगम्म बेपरवाहया। सदा सदा सद दीन दयाल, दीनां नाथां होए सहाया। आपणे हथ्थ रखाए काल महाकाल, महाकाल भेव चुकाया। गुरसिख तोड़ जगत जंजाल, आप आपणे रंग रंगाया। गोबिन्द लेखा चुकाए शाह कंगाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। आपे बणया गुजरी लाल,

आपणे लाल नीहां हेठ दबाया। कलिजुग अन्तिम करे फेर संभाल, निरगुण नूर कर रुशनाया। सन्त सुहेले लए भाल, अंदर वड़ वड़ पर्दा दए चुकाया। आपणा फल लगाए आपणे डाल्, पत्त डाल्ही आप महिकाया। आपणा करे हल आप सवाल, दूसर भेव किसे ना आया। अन्तिम कल सम्बल लए सुरत संभाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सदा सालाहया। गुरमुख मंगे गोबिन्द दरस, गुर गोबिन्द दया कमाईआ। सिँघ मिटाए साची हरस, सिँघ सूरबीर शहिनशाहीआ। लेखा जाणे अर्श फर्श, जगत कुरा वेख वखाईआ। अमृत आत्म मेघ देवे बरस, निझर झिरना इक्क झिराईआ। गुरमुखां लाहे पिछला कर्ज, मकरूज आपणा आप वखाईआ। कलिजुग अन्तिम पूरा करे फ़र्ज, कीता कौल ना कदे भुलाईआ। जिस नूं आपणी हथ्थीं आपणे घर कीता दरज, तिस दा नाम ना कोए मिटाईआ। सिँघ रूप हो पए गरज, एका फ़तहि डंक वजाईआ। पहली वार पुरख अकाल गया वरज, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे थाँईंआ। हरिजन मेला सच दुआर, गुर गोबिन्द दर सुहाइंदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यार, निराकार आप कराइंदा। जोती जामा वेस अपार, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। सम्बल नगर धाम न्यार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। निरगुण जोत जगे अगम्म अपार, जोती जाता डगमगाइंदा। अनहद शब्द नाद धुन्कार, धुनी धुन नाद वजाइंदा। करे खेल आप करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, नूर नुराना डगमगाइंदा। मुकामे हक सांझा यार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला एका घर, गुरमुख घर विच घर सुहाइंदा। घर विच घर सोभावन्त, हरिजन मिले वड्याईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता सच्चा कन्त, हरिजन साचे लए प्रनाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। रसना जिहवा मणीआ मणत, एका नाम करे पढ़ाईआ। गढ़् तोड़े हउमे हंगत, माया ममता दए मिटाईआ। गुर गोबिन्द वड्याई इक्को संगत, गुर संगत गुर गुर रूप समाईआ। किसे कोल ना होए मंगत, जिस मिल्या गोबिन्द सच्चा माहीआ। इक्क नानक लाया अंग अंगद, गोबिन्द गुरसिख सारे गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन चुकाए जगत डर, भय अवर ना कोए रखाईआ। गोबिन्द मेला सच दरगाह, गुर नानक नाल मिलाइंदा। पुरख अकाल पकड़े बांह, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जिस जन जपाया आपणा नाँ, आप आपणे संग रखाइंदा। आपे बणे पिता मां, भाई भैण साक सज्जण आप अख्वाइंदा। एथे ओथे दो जहानां देवे ठंडी छाँ, अग्नी तत ना कोए रखाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जिस जन आपणा नाम जपाइंदा। निथाव्याँ देवे थाँ, दरगाह साची आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलाइंदा।

दरगाह साची सच टिकाणा, पुरख अकाल आपणे हथ्थ रखाईआ। ओथे कोई ना पुजे राजा राणा, कोटन कोटि बैठे राह तकाईआ। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, तिस आपणे मार्ग लाईआ। गोबिन्द गुर शब्द अगम्मी लै के आए बबाणा, गुरमुख साचे ल्ए चढ़ाईआ। सचखण्ड दुआरे देवे माणा, आप आपणी गोद बहाईआ। जिस जन मन्नया सतिगुर भाणा, तिस जन होए अन्त सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां देवे वड वड्याईआ। दो जहानां सतिगुर मालक, मलकुलमौत दर दुरकाइंदा। लेखा जाणे ख़लक ख़ालक, मख़लूक आपणी धार वखाइंदा। गुरमुखां बणे सदा प्रितपालक, बण सेवक सेव कमाइंदा। जिस जन गोबिन्द चरन घाली घालक, तिस पूरी घाल कराइंदा। दरगाह साची बणे सालस, राए धर्म नेड़ ना आइंदा। कलिजुग अन्तिम चार वरन पन्थ ख़ालसा बणाए ख़ालस, ख़ालस आपणा रूप वखाइंदा। जगत माया विच कदे ना आए आलस, निन्दरा संग ना कोए जणाइंदा। गुरमुख उठाए बालक, अमृत सीर मुख चुआइंदा। आपे होए सभ दा जाणत, अणजाणत मेल मिलाइंदा। बिन डिठिआं करे पछाणत, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। अन्तिम दे के गया ज़मानत, गुरमुख साचे पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। दरगाह साची सच महल्ला, सतिगुर पूरा आप समाईआ। पुरख अकाल इक्क इकल्ला, निरगुण बैठा आसण लाईआ। आपे रविआ जलां थलां, जल थल महीअल आप समाईआ। आपे दीपक जोती बला, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपे सच संदेश शब्दी घल्ला, नाम मृदंग इक्क वजाईआ। आपे गोबिन्द गुरसिख फड़ाया पल्ला, फड़या पल्लू छुट कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची होए सहाईआ। दरगाह साची गुरमुख घर, गुर सतिगुर आप बणाया। लक्ख चुरासी जम्मे पए मर, मरन जम्मण खेल खिलाया। हरिजन विरला ना रक्खे कोई डर, निरभउ एका एक ध्याया। एका पुरख अकाल ल्ए वर, दो जहानां होए सहाया। निरगुण सरगुण ल्ए फड़, आत्म परमात्म मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची देवे वड्याआ। दरस अंदर सर्ब दात, लक्ख चुरासी बन्धन पाईआ। दरस अंदर पिता मात, पूत सपूत दए वड्याईआ। दरस अंदर उत्तम ज़ात, ज़ात पात रहिण ना पाईआ। दरस अंदर सच्चा नात, गुर चरन सरन सरनाईआ। दरस अंदर उतरे घाट, पार किनार वखाईआ। दरस अंदर मिटे अन्धेरी रात, साचा नूर करे रुशनाईआ । दरस अंदर पुछे वात, गुरसिखां मेल मिलाईआ। दरस अंदर मिटे नाता मनमति कमज़ात, गुर सतिगुर करे पढ़ाईआ। दरस अंदर देवे नाम खात, सच भण्डारा आप भराईआ। दरस अंदर वेखे मार झात, बन्द ताकी आप खुल्हाईआ। दरस अंदर देवे अमृत बूंद स्वांत, निझर झिरना इक्क झिराईआ। दरस अंदर गुरसिख मेला इक्क

१४६४

इकांत, रूप अनूप आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दरस आपे दीद, देवणहार आप हो जाईआ। दरस अंदर गोबिन्द मेला, गुर गोबिन्द आप मिलाईआ। दरस अंदर गुरु गुर चेला, गुर चेला रूप वटाईआ। दरस अंदर सज्जण सुहेला, सगला संग निभाईआ। दरस अंदर मिले इक्क इकेला, निरगुण आपणा भेव चुकाईआ। दरस अंदर कट्ट दए राए धर्म दी जेला, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। दरस अंदर आप जणाए आपणा वेला, थित वार ना कोए जणाईआ। दरस अंदर गुर सतिगुर अचरज खेल खेला, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दरस दए वड्याईआ। दरस अंदर मिले गुरमीत, मित्र प्यारा दया कमाइंदा। दरस अंदर काया करे ठंडी सीत, अग्नी तत्त बुझाइंदा। दरस अंदर सुणाए सुहागी गीत, आपणा ढोला आपे गाइंदा। दरस अंदर करे काया पतित पुनीत, दुरमति मैल ध्वाइंदा। सदी चौधवीं रही बीत, चारों कुण्ट जगत समझाइंदा। अन्तिम नाता तुटणा मन्दिर मसीत, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल एका रंग रंगाउणा हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाइंदा। पुरख अकाल गाउणा सभ ने गीत, शरअ शरीअत मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस अंदर देवे दीदार, गुरसिखां करे सच प्यार, प्यार प्यार नाल प्रनाइंदा। प्यार अंदर गुरु गोबिन्द वसे, अन्त गया समझाईआ।

 घट मन्दिर बह बह आपे हस्से, आपणी ख़ुशी मनाईआ। करे प्रकाश बिन रव ससे, सूरज चन्न मुख शरमाईआ। जिस गुरसिख आपणा मार्ग दस्से, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। सो गुरसिख गोबिन्द तेरे चरन ढट्ठे, ढह ढह पए सरनाईआ। नाता तोड़े तीर्थ अठसठे, जमना सुरस्ती गंगा गोदावरी ना नहावण जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दरस दए समझाईआ। एका दरस काया गढ़, गोबिन्द आप जणाईआ। आपणे पौड़े जाए चढ़, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। बिन विद्या अक्खर जाए पढ़, एका अक्खर आप सुणाईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख वेस वटाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख लए फड़, सोया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे एका दरस दिखाईआ। एका दरस देवे करतार, हरिजन साचे आप जगाया। एका वस्त देवे नाम भण्डार, अनमुल्लड़ी दात वरताया। एका खोल्हे बन्द किवाड़, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाया। एका जोत करे उज्यार, जोत निरँजण डगमगाया। एका अमृत देवे ठंडा ठार, बूंद स्वांती मुख चुआया। एका साची सेजा करे प्यार, आत्म सेजा सोभा पाया। जिस गुरसिख देवे आप दीदार, तिस लोचण आप खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस तरस आप कमाया। विचार अंदर ना आए विचार, बुध मति ना कोए वड्याईआ। गुर गोबिन्द वसे सभ तों १४६५

बाहर, कहिणा कथन ना जाईआ। जिस किरपा करे अपर अपार, अपरम्पर बूझ बुझाईआ। आपे देवे दरस दीदार, नेत्र नैण नैण बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विचार विचार नाल मिलाईआ। भिन्नड़ी रैण चढ़या चा, गुरसिखां दरसन पाया। गुरसिख मेरा बणे मलाह, गोबिन्द लए मिलाया। ग़रीब निमाणयां जो पकड़े बांह, निथाव्याँ लए उठाया। अमृत जाम दए प्या, एका रंग वखाया। हँस काग दए बणा, कागों हँस उडाया। मेरी रैण अन्धेरी मिटे ना, मेरा अन्ध ना कोए गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराया। भिनड़ी रैण करे पुकार, गुरसिख अगे सीस झुकाईआ। मैं सुणया तेरा गोबिन्द मीत मुरार, तेरे संग वसे तेरा माहीआ। मैं कलिजुग अन्तिम आई विच संसार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। घर घर होए अन्त विभचार, हरि का नाम ना कोए ध्याईआ। नेत्र रो रो धाहां रही मार, खुलड़े केस रही वखाईआ। बिन गोबिन्द करे ना कोए प्यार, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जिस आपा दिता वार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। अन्तिम दे के गया सहार, एका नाअरा लाईआ। प्रगट होए आप निरँकार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गोबिन्द डंका वज्जे विच संसार, नौं खण्ड पृथ्मी आप सुणाईआ। प्रगट होवे जोद्धा सूरबीर बली बलकार, बल आपणा आप धराईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख्वार, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। साचे तख्त बहे आप करतार, करे कराए सच्ची शहिनशाहीआ। वीह सौ वीह बिक्रमी खेल अपार, लोकमात वज्जे वधाईआ। भिन्नड़ी रैण गुरमुखां आई दुआर, आपणी झोली अगे डाहीआ। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, जिस गोबिन्द ओट रखाईआ। गुर गोबिन्द ओट जिस लई रक्ख, एका आस तकाईआ। लक्ख चुरासी विचों होया वक्ख, आपणा पन्ध मुकाईआ। एका चढ़या साचे रथ, सच दुआर मिले वड्याईआ। लहिणा देणा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, रविदास चम्यार दए ग्वाहीआ। सतिगुर गुरु गुर जिस वसे पास, गुर गोबिन्द इक्क मलाहीआ। सो गुरसिख क्यों होए निरास, आसा आसा पूर कराईआ। निज आत्म करे वास, परमात्म मेल मिलाईआ। गुरसिख सदा शाबास, जिस तजी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां आदि जुगादि दए वड्याईआ।

सिँघ निहंग सोहणा बस्त्र, काया बस्ती आप वसाईआ। गुर गोबिन्द पहनाया आपणा शस्त्र, छतरू रिहा घाईआ। इक्क चढ़ाया साचे अस्त्र, नाम घोड़ा रिहा दौड़ाईआ। अठ्ठे पहर वाहिगुरु जाप करी कसरत, आपणा बल वधाईआ। अन्त गोबिन्द पूरी करे हसरत, देवे दरस सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बाणा आप सुहाईआ।

१४६६

काले पीले सोहणे चीरे, चीरे वाला वेख वखाईआ। गुरमुख लाल साचे हीरे, माणक मोती आप उठाईआ। मेल मिलाए वड पीरन पीरे, उच्च पीर होए सहाईआ। कलिजुग आया अन्त अख़ीरे, सभ दी करे सफ़ाईआ। आपणा खेल जाणे धीरे धीरे, धीरज आपणे विच समाईआ। जीव जंत बन्न्हे नाम ज़ंजीरे, हरि का नाउँ संगल इक्क उठाईआ। लहिणा देणा चुकाए हस्त कीड़े, कीट हस्त वेखे थाउँ थाँईंआ। समुंद सागर वरोले नीरे, नाम मधाणा एका पाईआ। दीन मज़्हब वरन बरन जो होए लीरो लीरे, अन्तिम एका गंढु बंधाईआ। जिउँ रविदास पाया मुल्ल कसीरे, कंगण दए वड्याईआ। तिउँ गुरमुखां अमृत प्याए साचा सीरे, रस अमृत मुख चुआईआ। अन्तिम आपे कट्टे भीड़े, सिर आपणे भार उठाईआ। निहंग सिँघ उठाउणा बीड़े, गुर गोबिन्द नाल मिलाईआ। धन्न भाग गुर मिल्या जीउड़े, जीवण मुक्त कराईआ। मनमुख अन्त शब्द वेलणे पीड़े, ना सके कोए बचाईआ। सोहण बस्त्र नीले लीड़े, पगड़ी दस्तार रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्रेम रंग रंगाईआ। लोहा पारस जाए बण, मणका माला मन नाल मिलाईआ। सतिगुर सुणे आपणे कन्न, सो गुरमुख हिरदे अंदर ध्याईआ। मिले वड्याई साचे तन, जिस रसना गोबिन्द नाम समाईआ। गुर गोबिन्द नज़र ना आए जीव अन्न्ह, गुरमुख वेखण चाँईं चाईआ। आदि जुगादि जुग जुग चढ़या रहे गुजरी चन्न, जिस दा इक्को पुरख अकाल पिता माईआ। तिस गोबिन्द कहो धन्न धन्न धन्न, जो गुरमुखां अमृत गया प्याईआ। जूठा झूठा ठूठा भन्न, एका रंग चढ़ाईआ। आपणी हत्थीं ला के गया डन्न, आपणा हुक्म समझाईआ। पुरख अकाल सभ ने लैणा मन्न, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका इष्ट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे घर मिलाईआ। साचा खण्डा सच कृपाल, कृपानिध आप पहनाईआ। बिन गुर घड़े ना कोए विच जहान, लोहार तरखान ना कोए वड्याईआ। काया अंदर रक्खे आप ज्ञान, माटी चम्म पोच पोचाईआ। तिस खण्डे मन्नणी सभ ने आण, जो खण्डा गोबिन्द गया वखाईआ। प्रगट करे आप भगवान, आपणी सेव कमाईआ। गुरसिखां मिल्या धुर दा दान, लोकमात ख़ुशी मनाईआ। कलिजुग अन्त रहे ना कोए अंजाण, भुल विच ना कोए भुलाईआ। गोबिन्द सूरा प्रगट होवे विच जहान, लोकमात करे रुशनाईआ। सतिजुग साचा लाए आण, कलिजुग कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी होए प्रधान, नौं खण्ड पृथ्मी एका हुक्म जणाईआ। लहिणा देण चुकाए कृष्ना काहन, राम नाम ना कोए वड्याईआ। ईसा मूसा ना कोए सलाम, मुहम्मद शरीअत ना कोए रखाईआ। अञ्जील कुरान ना कोए कलाम, मक्का काअबा ना फेरा पाईआ। पीर पैग़म्बर ना देवे कोई पैग़ाम, हुक्मी हुक्म ना कोए जणाईआ। एका हुक्म वरते श्री भगवान, ब्रह्मण्ड खण्ड बन्धन पाईआ। गोबिन्द झुल्ले इक्क निशान, सृष्ट सबाई दए वखाईआ।

१४६७

करे खेल आप मेहरवान, आपणी दया आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तन आप सजाईआ। सिर सोहे चक्कर दुमाला, चक्रवरती चक्कर चलाइंदा। एका दस्सया राह सुखाला, गोबिन्द आपणा पन्ध मुकाइंदा। मेरा सिख सभ तों निराला, आप आपणी वण्ड वंडाइंदा। हथ्थ फड़ाई साची माला, मन का मणका आप भवाइंदा। ना कोई सन्धया ना तरकाला, अमृत वेला इक्क वखाइंदा। गुरमुखां मुख पूंझे आप नाल रुमाला, बण सेवक सेव कमाइंदा। अन्त होए आप दलाला, सच दलाली आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे दर सुहाइंदा।

★ ★ ★ ★ ★